ओ३म सार्वदेशिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] मा देशिक आय प्रनिनिधि सभा का मुखपत्र दयाब दाम् १६२ दूरभाष २७४७७१
वप २ अक १] प ष क ५ स० २०४३ रविव र १ दिसम्बर १९८६ वार्षिक म य ०) एक प्रनि ५० पसे

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द को कल्पपुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द को श्रद्धांजलि

ऋषिवर तुम्हे भौतिक शरीर त्यागे ८१ वप (अव ३ वष— सम्पादक) हा चके परन्तु तुम्हा ी दि य मूर्त्ति मेर हृदय पर पर अव तक ो का यो अकित है। मेरे निवल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितना बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरणमात्र न मेरी आत्मिक रक्षा की है नूमन कितना गिरी हुई आत्माओ की काया पलट दी इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है परमात्मा के सिवा जिनकी प वत्र गोद म तुम इस समय विचार रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम रे ह्रदयो म निकली हुई अग्नि न ससार मे प्रचलित कितन पापा को दग्ध कर दिया है? परन्तु अपने विषय मे मै कह सकता हू कि तुम्हारे मन्वास ने मुझ कसी गि ी हुई अवस्था म उठाकर सच्चा लाभ करन के योग्य बनाया।

(शेष पृष्ठ १ प)



महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक का दिनांक २८ १२ ८६ का अक बन्द रहेगा। दिनांक ४ १ ८७ का अक सत्यार्थप्रकाश अक होगा।
—सम्पादक

इस अक मे पाढ़ये



स्वामी श्रद्धानन्द

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

पंजाब में सैनिक शासन स्थापित करने की मांग

चीनी घुसपैठ की निन्दा : हिन्दी विरोधी आंदोलन पर चिन्ता

सवाददाता सम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के प्रस्ताव प्रसारित

सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का अन्तरग अधिवेशन १४ दिसम्बर १९८६ को दिल्ली मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे देश की बिगडती हुई राजनतिक और सामाजिक स्थिति पर गम्भीरता पूवक विचार किया गया। साथ ही साथ अय सगठन सम्बन्धी मामलो पर भी विचार विमश हुआ। अन्तरग अधिवेशन की दो बठको के पश्चात् निम्नलिखित प्रस वक्तव्य जारी किया गया —

१—सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा का यह निश्चित मत है कि पजाब मे न तो अकाली दल का नेतृत्व परिवतन और न काग्रस अकाली दल की सयुक्त सरकार स्थिति को सामान्य बनाने मे सफल हो सकेगी। सभा का विचार है कि पाकिस्तान के साथ लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को पूणतया बन्द करके राज्य मे मिलिटरी गवनर का शासन ही वहा की स्थिति मे सुधार ला सकता है। हम चाहते हैं कि इस योजना पर अमल किया जाये। सावदेशिक सभा आतकवादियो अथवा उनके समथको से किसी प्रकार की बातचीत शुरू करने के पक्ष मे नही क्योकि उससे कोई ठोस परिणाम निकलने की आशा नही है। तथाकथित आतकवादी उन बाहरी शक्तियो के इशारे पर काय कर रहे हैं जो हमारे हितैषी नही हैं।

सावदेशिक सभा चाहती है कि सरकार उन बाहरी शक्तियो को स्पष्ट शब्दो मे बता दे कि वह उनके इन षडयन्त्रो की मूक दशक बनी नही रह सकती हमारा तो यह भी सुझाव है कि भारत सरकार ऐसी शक्तियो से अपना राजनतिक सम्बन्ध भी तोड दे। आतकवाद और आतकवाद का समथन दोनो को ही देशद्रोह घोषित करके इनसे सबधित व्यक्तियो को कडी से कडी सजा दी जाये जिससे दूसरे लोग सबक ले सकें।

२—अरुणाचल प्रदेश को राज्य का दर्जा दिए जाने पर चीन द्वारा उठाई गई आपत्ति की भी सभा निन्दा करती है क्योकि यह प्रदेश हमारे ही देश का एक अभिन्न अग है। चीन की इस प्रदेश मे घुसपठ तथा उसके प्रशासनिक परिवतन पर उठाई गई आपत्ति एक भडकाने वाली कारवाई है। जिस तरह से यह कारवाई की जा रही है उससे तो यही आशका होती है कि पश्चिम क्षत्र मे शत्रु के ऊपर हमारा सैनिक दबाव कम करने के लिए चीन पूव मे एक और मोर्चा खोलना चाहता है। हमे डर है कि कुछ विदेशी ताकतें जो भारत को एक सुदृढ और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप मे उभरते हुए नही देखना चाहती हैं यहा एक ऐसा क्षत्र बनाना चाहती हैं जहा वे अपने आधुनिकतम शस्त्रास्त्रो का परीक्षण कर सकें।

३—यह सभा दक्षिण भारत मे हिन्दी के विरोध और भाषा के नाम पर चलने वाले आन्दोलन के प्रति भी चिन्ता व्यक्त करती है। प्रदशनकारियो द्वारा तोड फोड तथा बम विस्फोट जसी कारवाई से सरकार पर दबाव डालकर नेहरू द्वारा दिए गए आश्वासन को कि हिन्दी किसी के ऊपर उसकी इच्छा के विरुद्ध नही लादी जायेगी सविधान मे सम्मिलित कराने का विरोध करती है। सभा सविधान मे किसी भी ऐसे सशोधन का विरोध करेगी जो हिन्दी को अनिश्चित काल तक सपक भाषा बनने से वचित कर दे। यह सभा भारत सरकार से माग करती है वह हिन्दी के सम्बन्ध मे जानबूझकर फलाई गई भ्रान्तियो को दूर करने का समुचित प्रयत्न करे। सविधान के अनुच्छेद ३५१ मे हिन्दी को देश की समस्त भाषाओ के प्रतिनिधि के रूप मे विकसित करने का स्पष्ट आदश है अन कुछ सत्ता लोलुप राजनेताओ से डरकर तोता रटत की तरह बार बार एक ही नारा लगाना कि हिन्दी किसी पर थोपी नहा जायेगी न केवल विवेकशून्य है बल्कि राष्ट्रीय भावना के भी विरुद्ध है।

साउदी अरब म रामकुमार भारद्वाज की गिरफ्तारी की कड़ी निन्दा

११ जनवरी १९८७ को सत्यार्थ प्रकाश रक्षा दिवस और १४ जनवरी १९८७ को अरब दूतावास पर प्रचड प्रदर्शन की घोषणा

सावदेशिक सभा साउदी अरब सरकार द्वारा भारत से नौकरी पर गये श्री रामकमार भारद्वाज को महर्षि दयानन्द कृत अमर वदिक ग्रन्थ सत्याथप्रकाश रखने पर जेल भेजने की कडी निन्दा करती है—यद्यपि भारत सरकार ने अरब सरकार से इस मामले मे उच्चस्तरीय कारवाई करके उन्हे जेल से छुडाने का आश्वासन दिया है।

सावदेशिक सभा के प्रधान ने घोषणा की है कि यदि श्री रामकमार भारद्वाज को जल्दी रिहा न किया गया तो देश और विदेश मे जहा जहा भी आयसमाज के सगठन हैं आगामी ११ जनवरी १९८७ को विरोधस्वरूप सत्याथप्रकाश रक्षा दिवस मनाया जायेगा और १४ जनवरी १९८७ को दिल्ली स्थित अरब दूतावास पर प्रचण्ड प्रदशन किया जायेगा जिसमे दिल्ली के आस पास और बाहर के भी हजारो लोग सम्मिलित होगे।

प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव
वरिष्ठ उपप्रधान
सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा दिल्ली



चार दिसम्बर को मगोलपुरी विस्थापित पुनर्वास केन्द्र मे आयोजित एक समारोह मे सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ एडवोकेट ने सकडो विस्थापितो को रजाइया बाटी। समारोह की अध्यक्षता सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की उसी अवसर का एक दृश्य। (विस्तृत समाचार सावदेशिक के पिछले अक मे प्रकाशित हो चुका है।)

स्पष्टीकरण

पिछले सप्ताह के सावदेशिक मे स्वतन्त्रता सेनानियो को पेन्शन अनेक रियायतो की घोषणा शीषक से एक समाचार प्रकाशित हुआ था। इस समाचार म जिस विज्ञप्ति का हवाला दिया गया है वह सन १९८३ मे जारी हुई थी और राजस्थान पत्रिका मे प्रकाशित हुई थी। उसका सम्बन्ध हैदराबाद सत्याग्रह से नही। तब तक तो सरकार ने हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रहियो को स्वतन्त्रता सेनानी के रूप मे मान्यता भी न दी थी। कृपया उक्त विज्ञप्ति को इस परिप्रेक्ष्य मे ही पढें।

—सम्पादक

सम्पादकीय

देश की सुरक्षा में सी. आर. पी.

देश की सुरक्षा व्यवस्था में जब-जब आवश्यकता प्रतीत होती है, तब-तब सी० आर० पी० वालों की नियुक्ति की जाती है। पर उनका कुछ करना या न करना स्थानीय पुलिस के अफसरों पर निर्भर है। वे आदेश दें तो कुछ करो, अन्यथा मार खाते रहो।

यह इन सी० आर० पी० वालों के साथ होता है।

आज पंजाब के बाद दिल्ली में बंगला साहब गुरुद्वारे के पास हुई दुर्घटना में भी इन पर प्रहार है कि वे दोषी हैं। परन्तु इनके तीन जवानों के कुचल कर मारे जाने से उनका कुपित होना स्वाभाविक है। सरकार केवल एक-एक लाख रुपया देकर उनके आंसू पोंछना चाहती है। पर घर में बुझे दीपक को जलाकर उजाला कौन करेगा ? उनके द्वारा किये गये कार्यों पर पंजाब मे पिछले वर्षों से अकाली दल द्वारा यह मांग की जाती रही है कि इन सी० आर० पी० वालों को वहां से हटाया जाये। क्यों ? इसलिए कि सी० आर० पी० वाले अकाली नेताओं की नहीं सुनते। पुलिस के मुकाबले वे सख्त हैं। पर देखना यह है कि पंजाब पुलिस का व्यवहार अपने मे कितना सही है ९० फीसदी सिख पुलिस वहां हिन्दुओं के हत्याकांड मे साझीदार है। सी० आर०पी० उन पुलिस वालों के मुकाबले मे हिन्दुओ की रक्षा करती है। इसी से न सिख नेता उन्हें पसन्द करतेहैं और न सिख पुलिस उन्हें चाहती है। अल्पसंख्यक हिन्दू उन्हें अपना रक्षक मानता है। इनकी छाया मे वह अपने आपको ज्यादा सुरक्षित मानता है। ये लोग अपने में कुछ नहीं हैं। इन्हें पंजाब पुलिस के साथ रहकर ही काम करना पड़ता है। इसके साथ वहां की राजनीति, स्थानीय पुलिस और आतंकवादियो—इन सभी के दबाव में रहकर काम करना होता है। इस कारण पंजाब मे सी० आर० पी० वाले अपने को बाहरी अनुभव करते हैं। इन सबके प्रभाव व दबाव के कारण वहां के हिन्दू से भी इनका सीधा सम्बन्ध नही हो पाता। यदि कुछ कार्य करना पड़ भी जाये तो सब का दुश्मन बनना पड़ता है। वहां की पुलिस बच निकलती है।

चारों तरफ की मार का परिणाम यह होता है कि सी० आर० पी० के जवानों में भी वैर, दुराव और प्रतिहिंसा के भाव पैदा होते हैं।

कुछ वर्ष पूर्व जब मुरादाबाद में दंगा हुआ था तब भी सी० आर० पी० के खिलाफ नारे बुलन्द किये गये थे, क्योंकि उन्होने सुरक्षा के लिए सख्ती से कार्य किया था। वहां से इन्हें अविलम्ब हटाने की मांग की गई, लेकिन किसी ने यह नहीं सोचा कि वहां थाना जलाया गया था, पुलिस की टुकड़ी मार दी गई थी, तब सी० आर० पी० काम में लाई गई थी।

बंगला साहब गुरुद्वारे की दुर्घटना को लेलें, व्यवस्था के लिए पुलिस को कार्य करना था—वह वहां नियुक्त थी। लेकिन सिरफिरे मरजीवड़ो ने उन्ही पर ट्रक था चढ़ाया। जिस प्रकार ट्रक से आकर चढ़ाया गया, उससे स्पष्ट है कि जान-बूझकर इन बेचारों पर हमला किया गया। ट्रक ने बंगला साहब से निकलकर गोल डाकघर के दो चक्कर लगाये और तलवारें भांजने वालों का काफिला सीसगंज गुरुद्वारे से नारे लगाते हुए आया। इतना ही नही, हवा में यह बात भी उड़ाई गई कि दो सिख मार दिये गये हैं।

इतना होने पर भी दिल्ली पुलिस शांत रही क्योंकि वह जानती थी कि अगर इसने पुलिस व सी० आर० पी० को ऐक्शन में ला दिया तो इसका प्रभाव सिख सारे देश में फैलाकर सरकार के विरुद्ध नये युद्ध का नारा देंगे। पुलिस के अफसरों ने सूझबूझ का परिचय दिया।

फौज के भगोड़े सिखों की तुलना में सी० आर० पी० के कनिष्ठ सैनिको का 'विद्रोह' नगण्य है। भगोड़े अपराधी हैं, देशद्रोही हैं। लेकिन सी० आर० पी०को कानून से ऊपर मानना भी उचित नही है। यह ठीक है कि उनके मन में अपने तीन मृत साथियों को लेकर रोष था। लेकिन सिखों मे धार्मिक जनून भड़क रहा था, जबकि इन जवानों में न मजहबी उन्माद था और न देशद्रोह के भाव। उचित यह होगा कि इन पर पुलिस का नियन्त्रण न रख कर इनके ऊपर इनके अपने ही आफिसरों को नियुक्त किया जाये। तब उनकी जिम्मेदारी होगी। फिर काम में कमी भी नहीं होगी।

फौज का अनुशासन तथा पुलिस का अनुशासन कानूनी तौर पर भिन्न है। फौज की कमान होने पर उसे किसी से हुक्म नही लेना पड़ता। वह स्वयं जिम्मेदार है। ठीक इसी प्रकार सी० आर० पी० भी अपने में स्वतन्त्र है। उसका अपना ही आदेश व कानून है। वह पुलिस के आदेश-निर्देश की प्रतीक्षा मे क्यों रहे ?

सी० आर० पी० अपने मे जिम्मेदार संस्था है। इसे बेकार करके फिर गलत-बयानी करना प्रशासन के हित में नही। इसके अतिरिक्त पंजाबके बाहर आग भड़काने वालों को बंगला साहब की दुर्घटना से शिक्षा लेनी चाहिए। दोषारोपण में ही लगे रहे तो सर्वनाश के दिन दूर नही। ●

बंगलौर में क्या हुआ ?

बंगलौर और कर्नाटक के कुछ अन्य नगरो में हुई हिंसा का कारण था एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक दक्कन हैरल्ड के रविवारीय परिशिष्ट में प्रकाशित एक कहानी। यह कहानी केरल के मलाबार क्षेत्र के ग्रामीण जीवन के बारे में है। कहानी का नायक अब्दुल्ला गाडी चलाता है। अब्दुल्ला के चार पुत्रियों के बाद एक पुत्र पैदा होता है। पुत्र को मुहम्मद नाम दिया जाता है। सारे घर की आशाये मुहम्मद पर टिक जाती है। अब्दुल्ला को भी यही आशा रहती है कि मुहम्मद बड़ा होकर उसका धन्धा सम्भाल लेगा, लेकिन बेचारा मुहम्मद गूंगा, बहरा और मूर्ख निकलता है। सारे घर की आशाये मिट्टी में मिल जाती हैं।

यह कहानी केरल के एक प्रमुख दैनिक समाचारपत्र में दस वर्ष पूर्व मूल रूप में मलयाली में प्रकाशित हो चुकी है। उस समय इस पर किसी ने कोई आपत्ति न उठाई थी। वैसे भी इस साधारण-सी कहानी में किसी की भावनाओ को चोट पहुंचाने वाली कोई बात तो दिखाई नही देती।

आपत्ति करने वालों का कहना है कि कहानी के शीर्षक "मूर्ख मुहम्मद" से हमारी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचती है।

हिंसा का प्रारम्भ सात दिसम्बर को हुआ। उस दिन रविवार था और उसी दिन दक्कन हैरल्ड का रविवारीय सस्करण प्रसारित हुआ था। ६ दिसम्बर को राज्यसभा में विपक्षी सदस्यों ने इस बात पर आपत्ति की कि बारीकी से जाच किये बिना ही कहानी को भडकाने वाली बताया जा रहा है।

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधि श्री के० मोहनन् ने आरोप लगाया कि ये दगे इन्दिरा कांग्रेस ने भड़काये हैं। असल में गुडूराव मन्त्रिमडल के सदस्य सी० एम० इब्राहीम ने मस्जिद में उत्तेजक भाषण दिया, जिसके फलस्वरूप ये दगे भडके। सी० एम० इब्राहीम गुडूराव के साथ हैं—कांग्रेस दल द्वारा तिरस्कृत है, इसलिए वे ऐसी हरकते करके अपने प्रभाव का प्रदर्शन करना चाहते हैं।

कर्नाटक सरकार के लिए यह जरुरी न था कि वह हिंसात्मक घटनाओं के अगले ही दिन पुलिस के महानिर्देशक श्री हलरकर को पदत्याग करने को कहती। श्री हलरकर होम गार्ड्स के महानिर्देशक बनकर जा रहे हैं, लेकिन ठीक ऐसे समय पर उनसे चार्ज लेकर कर्नाटक सरकार ने आम जनता पर यह असर डाला है कि सरकार मुस्लिम नेताओं के दबाव के आगे झुक रही है। यदि यह असर बना रहने दिया गया तो भविष्य में राज्य में कानून और व्यवस्था लागू करने का काम अधिक कठिन हो जायेगा।

—सत्यपाल शास्त्री

महर्षि दयानन्द की दार्शनिक मान्यतायें-१

-डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, संस्कृत विभाग, रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी-

सृष्टिविज्ञान के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का समाधान करने के लिए ही वैदिक ऋषियों ने वेद के उपांगभूत षड्दर्शनों (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा तथा वेदान्त) की रचना की है। इन शास्त्रों में मानव-जीवन के आधिभौतिक और आध्यात्मिक उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अधिभूत के साथ अध्यात्म का सर्वांगपूर्ण विवेचन प्रस्तुत किया गया है। दर्शन-प्रवक्ता मनीषियों की यह मूल भावना होने पर भी कालान्तर में अनेक दार्शनिक व्याख्याकारों ने उस लक्ष्य की उपेक्षा करके अपने विशिष्ट स्वार्थों की पूर्ति के लिए विभिन्न मतवादों की सृष्टि की। अपने-अपने सम्प्रदाय के सिद्धान्तों की पुष्टि के निमित्त एक को दूसरे दर्शन का विरोधी सिद्ध किया गया। एक ही दर्शन की भिन्न-भिन्न मतपरक व्याख्या करके नाना प्रकार के दार्शनिक सिद्धान्त माने गये। मूल ग्रन्थों के अनेकविध परिष्कार तथा टीका-प्रटीका की रचना प्रवृत्ति ने ही जडाद्वैत (लोकायत या चार्वाक, बौद्ध तथा आर्हत दर्शन) तथा चेतना द्वैत (अद्वैतवाद) तथा द्वैतपरक विशिष्टाद्वैत या प्रत्यभिज्ञापरक शैव दर्शन को जन्म दिया।

महर्षि दयानन्द ने दर्शनपरक विभिन्न वादों को व्यर्थ बताकर अनेक महत्त्वपूर्ण सुझाव या विचार दिये हैं। उनमें सर्वप्रथम मूलभूत बात यह है कि दर्शनों के वास्तविक रहस्य को समझने के लिए दर्शन शास्त्रों के मूल सूत्रों तथा उनके आर्ष भाष्यों का अध्ययन करना चाहिये। इस मौलिक केन्द्र बिन्दु के आधार पर महर्षि दयानन्द ने जिन दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, वे निम्न लिखित हैं—

(१) त्रैतवाद।
(२) जीवात्मपरिच्छिन्नतावाद।
(३) मुक्ति से पुनरावृत्ति।
(४) वैदिक दर्शन ईश्वरवादी है।
(५) षड्दर्शन समन्वय।

(१) त्रैतवाद

अखिल ब्रह्माण्ड के मूल उपादान सत्त्व रजस् तमस् के रूप में प्रकृति का, भोक्ता आत्मा का और सबके नियन्ता परमात्मा का अस्तित्व ही भारतीय दार्शनिक सिद्धान्त "त्रैतवाद" का मूल आधार है। सत्ता में यथार्थ एवं विस्तार, ज्ञान, आनन्द और कर्म में अनन्त, ऐसी सत्ता का नाम ब्रह्म, ईश्वर, प्रजापति आदि है। सत्ता में यथार्थ, विस्तार में अपरिमित किन्तु ज्ञान, आनन्द और कर्म में स्वयं शून्य, ऐसे तत्त्व का नाम प्रकृति है। सत्ता में यथार्थ विस्तार, ज्ञान, आनन्द और कर्म में अल्प या अणु ऐसे तत्त्व का नाम जीव, पुरुष या आत्मन् है। ब्रह्म में अनन्त विस्तार, अनन्त ज्ञान, अनन्त सामर्थ्य, अनन्त आनन्द होने के कारण इसे परमपुरुष, परमेश्वर या परमात्मन् भी कहते है। तीनों स्वभाव से ऐसे है। सदा से ऐसे ही रहे और सदा ऐसे ही रहेंगे। ब्रह्म ने अल्पज्ञान वाले जीव की सृष्टि नही की। जैसे ब्रह्म स्वभाव से सर्वज्ञ है, उसी प्रकार जीव स्वभाव से अल्पज्ञ है और प्रकृति स्वभाव से अज्ञ है। इन तीनों में से किसी एक सत्ता के स्वतन्त्र अस्तित्व का स्वीकार न करना हेत्वाभासमात्र है।

विश्व में चेतन वर्ग और जडवर्ग दोनो प्रकार के तत्त्वो का अस्तित्व वास्तविक है। दोनो की सत्ता अपने रूप में पृथक् व स्वतन्त्र है। कोई एक-दूसरे के रूप में कभी परिणत या परिवर्तित नही होता। चेतन वर्ग में परमात्मा के अतिरिक्त अन्य चेतन तत्त्व जीवात्मा है। इनमें परमात्मा एकमात्र तत्त्व है तथा जीवात्मा सख्या मे अनन्त है। इन दोनों के अतिरिक्त जड़ तत्त्व प्रकृति है, जो समस्त जड विश्व का उपादान कारण है। चेतन तत्त्व परमात्मा और जीवात्मा के भेद को ऊपर स्पष्ट किया गया है। संक्षेप में मूलभूत भेद है परमात्मा का भोक्ता न होना और जीवात्मा का भोक्ता होना। देहेन्द्रियादि के साथ सम्बद्ध होकर ही चेतन आत्मा भोगों को भोग सकता है—"आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः" (कठ० १/३/४)। परमात्मा का अभोक्ता होना यह स्पष्ट कर देता है कि वह देह के बन्धन में कभी नही आता। अतः ईश्वर का अवतार नही हो सकता। इसीलिए तत्परक साकारोपासना तथा मूर्तिपूजा करना ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप के विरुद्ध तथा अवैदिक है। परमात्मा की प्रेरणा से प्रकृति का परिणाम रूप जगत्सर्ग जीवात्माओं के भोग के लिए होता है—'संहतपरार्थत्वात्' (सांख्य सूत्र १/१४०)। यदि इन तीनो का इसी विशेषता के आधार पर वर्णन किया जाये तो कहना होगा कि परमात्मा अभोक्ता है, जीवात्मा भोक्ता है और प्रकृति भोग्य है। ईश्वर, जीव तथा प्रकृति का ऐसा ही स्वरूप वेद व वैदिक साहित्य में विस्तार के साथ वर्णन किया गया उपलब्ध होता है। विस्तारभय से यहां केवल संकेतमात्र प्रस्तुत है। ऋग्वेद ११६४/२० का प्रसिद्ध मन्त्र है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

इस मन्त्र में मूलभूत तीन तत्त्वों—भोक्ता जीवात्मा, अभोक्ता परमात्मा और भोग्य फलयुक्त वृक्ष के रूप में प्रकृति का उल्लेख हुआ है। इसी के अनुसार श्वेताश्वतर उपनिषद् (१/१२) में कहा है—

"भोक्ता भोग्यं प्रेरितारञ्च मत्वा सर्वंप्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममेतत्"

अर्थात भोक्ता, भोग्य और प्रेरिता को यथावत् समझ कर अखिल विश्व इन्ही तीन प्रकारो मे कह दिया गया है। ये ही तीन अनादि तत्त्व है। वैदिक संहितायें, छह वैदिक दर्शन, उपनिषद् आदि मिलकर इन्ही तत्त्वो का उपपादन करते है।

(२) जीवात्मपरिच्छिन्नवाद

जीवात्मा को सख्या की दृष्टि से अनन्त मानते हुए भी कतिपय दार्शनिक व्याख्याताओ ने जीवात्मा का विभु होना स्वीकार किया है। परन्तु सर्वत्र आत्मा के लिए प्रयुक्त "अणु" एवं "परिच्छिन्न" पद आत्मा के एकदेशी होने का कथन करते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि आत्मा न सर्वव्यापक है और न मध्यम परिमाण। नित्य निरवयव एवं निराकार होने के कारण वह अपने एकदेशी अस्तित्व से किसी स्पेस (स्थान) को घेरता नहीं। अत. ऐसे ही किसी अन्य तत्त्व का अस्तित्व उस प्रदेश में बना रहना सम्भव है। यदि प्रत्येक आत्मा को विभु माना जाता है तो प्रत्येक देह-इन्द्रिय आदि के साथ प्रत्येक आत्मा का सम्बन्ध बने रहने से कहीं भी देहान्तर में प्रत्येक आत्मा को ज्ञान होने का प्रसग प्राप्त होता है, जो सर्वथा प्रत्यक्षादि प्रमाणो के विपरीत एवं अनिष्ट है। फलत आत्मा को एकदेशी परिच्छिन्न माना जाना युक्तियुक्त और प्रामाणिक है। योग दर्शन के व्यासभाष्य में महर्षि कपिल के प्रशिष्य आचार्य पञ्चशिख का एक सन्दर्भ उपलब्ध होता है—

"तमणुमात्रमात्मानमनुविद्यास्मीत्येवं तावत् संप्रजानीते"

यह योगी के आत्म साक्षात्कार का निर्देश है। यहां साक्षात्कृत आत्मा को अणुमात्र एकदेशी अथवा परिच्छिन्न बताया गया है।

न्याय दर्शन के वात्स्यायन भाष्य (३/१/१५) में लिखा है—

"अस्त्येकः सर्वविषयः प्रतिदेहं स्वज्ञानप्रबन्धं स्मृतिप्रबन्धं च प्रतिसन्धत्ते इति।

(शेष पृष्ठ १० पर)

२३ दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष लेख

आत्म-बलिदान के प्रतीक स्वामी श्रद्धानन्द

–डा० भवानीलाल भारतीय–

सन् १९१९ मे रौलट एक्ट के विरोध मे महात्मा गाधी ने देशवासियो से सत्याग्रह करने का आह्वान किया था। ३०मार्च को राजधानी दिल्ली में व्यापक हडताल हुई। इसका नेतृत्व कर रहे थे स्वामी श्रद्धानन्द चादनीचौक में विशाल जनसमूह स्वामीजी के नेतृत्व में आगे बढ रहा था। अचानक गोरखा सिपाहियो ने सगीनें तानकर उसे रोकने का प्रयास किया। किसी सिपाही ने भूल से एक गोली भी चला दी। स्वामी जी ने आगे बढकर उससे शान्त जनसमूह पर गोली चलाने का कारण पूछा। सैनिको की सगीन स्वामी जी की ओर बढने लगी। निर्भीक सन्यासी ने अपना सीना खोल दिया। ऊचे स्वर से कहा—'मार दो गोली'। सगीनधारियो का साहस नही था कि गोली चलाये। कहना न होगा कि स्वाधीनता सग्राम के इन प्रारम्भिक दिनो में स्वामी श्रद्धानन्द दिल्ली की जनता के बेताज बादशाह थे। उन दिनो साम्प्रदायिक भेदभाव नही था। ४ अप्रैल १९१९ को दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर पर खडे होकर स्वामी श्रद्धानन्द ने अपार मुस्लिम जनसमूह को सम्बोधित करते हुए देशवासियो को एकजुट होकर स्वतन्त्रता के लिए सर्वस्व-त्याग करने की प्रेरणा दी।

स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीय भावनाओ से ओतप्रोत सार्वजनिक जीवन के लिए समर्पित त्याग, बलिदान और सेवा की साक्षात् प्रतिमा थे। जलियांवाला बाग की दुखद घटना के बाद अमृतसर काग्रेस अधिवेशन के सयोजन और व्यवस्था का दायित्व स्वामी जी को सौंपा गया। काग्रेस के इतिहास मे यह तिलक युग के अवसान और गाधी युग के आगमन की बेला थी। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में पढकर मानो यह सकेत कर दिया कि कोटि-कोटि देशवासियों के राजनैतिक अधिकारो की प्राप्ति की लडाई लोकभाषा को अपनाये बिना सफल नहीं होगी।

स्वामी श्रद्धानन्द के सार्वजनिक जीवन का आरम्भ आर्यसमाज से हुआ था। तब वे युवक ही थे जब उन्हे स्वामी दयानन्द के दर्शन करने तथा उनके विचार सुनने का अवसर प्राप्त हुआ था। उस समय युवक मुन्शीराम (सन्यास से पूर्व का उनका यही नाम था) पश्चिम के विचारको और वैज्ञानिको के विचारो का गम्भीर अनुशीलन कर अपने आपको नास्तिक कोटि मे मानने लगे परन्तु स्वामी दयानन्द के एक व्याख्यान ने उनके विचार ही बदल दिये। अब वे परम आस्तिक और पुरातन मूल्यो के प्रति आस्थावान् बन गये।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने वालो मे स्वामी श्रद्धानन्द का नाम पहली पक्ति मे है। उन्होने यह अनुभव कर लिया कि पुरातन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के बिना चारित्रिक और नैतिक उत्थान की सम्भावनायें क्षीण हो रहेगी। इसीलिए उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से गुरुकुल स्थापना का प्रस्ताव स्वीकृत कराया और गुरुकुल स्थापना के लक्ष्य की पूर्ति के लिए थोडे ही समय में तीस हजार रुपये की राशि एकत्रित कर ली। २ मार्च १९०२ को हरिद्वार के निकट कागडी ग्राम मे उस गुरुकुल की स्थापना हुई, जो कालान्तर मे एक विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ तथा अपनी राष्ट्रीय तथा सास्कृतिक शिक्षा पद्धति के लिए एक आदर्श शिक्षण सस्था के रूप में जाना गया।

स्वामी श्रद्धानन्द जहा कही मानवता को त्रस्त एव पीडित देखते, उसकी रक्षा के लिए व्याकुल हो जाते। यही कारण है कि १९२२ में जब सिखों के धार्मिक अधिकारो की रक्षा के लिए 'गुरु का बाग' सत्याग्रह आरम्भ हुआ तो स्वामी जी उसमे कूद पडे। इन्हे सत्रह माह के कारावास का दण्ड मिला। सत्याग्रह की समाप्ति पर वे मुक्त कर दिये गये। अब वे खुलकर राष्ट्रीय और राजनैतिक जीवन की मुख्य धारा मे आ गये थे। काग्रेस के शीर्षस्थ नेताओ में उनकी गणना होने लगी थी। काकीनाडा काग्रेस मे अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए मौलाना मुहम्मद अली ने सात करोड अछूतो को हिन्दुओ और मुसलमानो मे आधा-आधा बाट लेने की बात कही तो स्वामी जी रोष मे आ गये। उन्होने अविलम्ब काग्रेस के समक्ष दलितोद्धार का कार्यक्रम रखा, जिस पर राष्ट्रीय नेता सहमत हुए और महात्मा गाधी ने हरिजनो के उत्थान का कार्यक्रम व्यापक स्तर पर चलाया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने यह भी अनुभव किया कि स्वतन्त्रता सग्राम मे पूर्ण विजय तब तक प्राप्त नही हो सकती जब तक देश का बहुमत हिन्दू सामाजिक आर्थिक और सास्कृतिक प्रगति की दिशा में अग्रसर होकर अपने आपको बलवान् नही बना लेता। पफलत उन्होंने शुद्धि और सगठन का शखनाद किया और दलित वर्ग के लोगों की सर्वतोमुखी कल्याणकारी योजनाये बनाई। यह दुख की बात है कि स्वामी श्रद्धानन्द जैसे साम्प्रदायिक सौहार्द के प्रतीक महापुरुष को भी एक धर्मान्ध व्यक्ति की गोली का शिकार होना पडा पण्डित नेहरू ने उन्हे साहस का निर्भीक पुजारी बताया। सरदार पटेल के अनुसार उस वीर सन्यासी का स्मरण हमारे भीतर हमेशा वीरता और बलिदान की भावनायें भरता रहेगा। ●

तपोमूर्ति आचार्य देवप्रकाश जी-६

– भोलानाथ दिलावरी –

केन्द्रीय आर्य सभा की विशेष बैठक मे यह निश्चय हुआ कि आचार्य जी को मध्य प्रदेश से बुला लिया जाये और उन्ही की देख-रेख मे ईसाई बने बन्धुओ को वापिस पैतृक धर्म मे लाने के प्रयत्न किये जायें। आचार्य जी को वापिस लाने के लिए प्रेरित करने का काम ज्ञानी पिण्डीदास जी को सौंपा गया। भगवत् कृपा से हमारी इच्छा पूर्ण हुई। यह १९७४-७५ की बात है। आचार्य जी के निवासार्थ आर्यसमाज मन्दिर लोहगढ (अमृतसर) मे एक विशेष कक्ष का निर्माण किया गया जहा आचार्य जी अन्तिम काल तक रहकर कार्य करते रहे।

आचार्य जी के साथ प्रारम्भ मे ज्ञानी रामसिह जी, जो आर्य-समाज के अनुभवी कार्यकर्त्ता रहे है (हैदराबाद आर्य सत्याग्रह मे भी भाग ले चुके है और दयानन्द माल्वेशन मिशन मे भी वर्षों कार्य करते रहे हैं) ने आचार्य जी के साथ इस कार्य मे सहयोग देना स्वीकार कर लिया। बस फिर क्या था, बाहर देहात मे शुद्धि का कार्य जोरशोर से प्रारम्भ हो गया।

आर्य धर्म प्रचार समिति

इस कार्य को नियमित रूप से चलाने हेतु केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर के अधीन एक आर्य धर्म प्रचार समिति का गठन किया गया। निम्नलिखित सज्जन इसके अधिकारी एव सदस्य चुने गए—प्रधान आचार्य देवप्रकाश जी, महामन्त्री श्री रोशनलाल बहल, मन्त्री श्री श्यामलाल जी और कोषाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जी। सहायक सदस्य—ज्ञानी पिण्डीदास जी, श्री धर्मपाल जी बी० ए०, महाशय जगदीशराज जी, श्री शोरीलाल जी, श्री मुलखराज जी मेहता श्री केदारनाथ जी, ज्ञानी रामसिह जी, प० गुरुदत्त जी, श्री मोहनलाल जी अरोडा, श्री महाशय मुन्नीलाल जी, मलिक कोषराज जी, श्री भोलानाथ जी दिलावरी, श्री नन्दकिशोर जी आर्य और श्री जीवन प्रकाश जी 'जीवन'।

शुद्धि महायज्ञ एवं अन्य सेवायें

सर्वप्रथम नेपाल गाव, तहसील अजनाला मे शुद्धि समारोह २९ मई १९७६ को हुआ। इसमे १८६ ईसाइयो को वैदिक धर्म मे वापिस लाया गया। इस अवसर पर समिति के सदस्य और सब समाजो के गण्य-मान्य सज्जन एव स्वय आचार्य जी उपस्थित थे। अजनाला समाज के श्री अमोलक राम एव अन्य समाजप्रेमी भी उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। इस समिति द्वारा रोगग्रस्त ग्राम-वासियो को औषधिया भी बाटी जाती रही, जो श्री दिलावरी जी (मालिक कश्मीर आयुर्वेदिक वर्क्स) निःशुल्क देते रहे। श्री अमोलक-राम जी (प्रधान आर्यसमाज अजनाला) ऐसे शुद्धि-समागमो मे प्राय आते और अपने उपदेशो और रसीले भजनो से जनता को प्रभावित करते। यह बात उल्लेखनीय है कि आचार्य जी के पैतृक ग्राम कि्लांवाला (बटाला) मे भी शुद्धि-समागम हुआ, जिसमे ४६३ ईसाइयो को वापिस आर्य धर्म मे लिया गया। यह शुद्धि २१ मार्च १९७७ को हुई थी।

समिति द्वारा चलाया गया यह शुद्धि आन्दोलन पिछडी जातियो मे खूब प्रसिद्धि पाने लगा। इसका बडा कारण यह रहा कि सरकार ने हिन्दू हरिजनो को बहुत-सी रिआयते घोषित कर रखी हैं, जो हिन्दू धर्म से पतित हुए ईसाइयो और मुसलमानो को प्राप्त नहीं हो सकती। हमारी समिति ने अनेक भूमिहीन शुद्ध हुए व्यक्तियो को जमीने दिलवाई। सहायतार्थ धन राशि भी दिलाई। कई वृद्धो, अपाहिजो और अन्धो की सरकार से पेन्शन दिलाने मे सहायता की और उनके बच्चो को स्कूलो-कालेजो मे दाखिल कराने का प्रयत्न किया। कई व्यक्तियो को पुलिस तथा सेना मे भी भर्ती कराने मे सहायता दी। उनकी हालत अच्छी बनाने मे हर प्रकार से सहायता की गई। इस प्रकार शुद्धि महायज्ञ का कार्य करीब १९८० तक निर्विघ्न रूप से चलता रहा।

समिति के इस छोटे-से इतिहास मे २८ दिसम्बर १९८० का वह दुर्दिन सदा स्मरण रहेगा, जब आचार्य जी हम साथियो को छोड अपनी जीवन लीला समाप्त कर प्रभु को प्राप्त हुए। आचार्य जी करीब एक मास अमृतसर मे बीमार रहे। फिर स्वामी सर्वानन्द जी उन्हे दयानन्द मठ, दीनानगर ले गये। वहा कुछ दिन उपचार होता रहा, परन्तु सब व्यर्थ सिद्ध हुआ।

आचार्य जी की मृत्यु का दु खद समाचार अमृतसर निवासियो को मिला तो वे अपने कार्य छोडकर २९ दिसम्बर को आचार्य जी की अन्त्येष्टि मे सम्मिलित होने दीनानगर पहुचे।

आचार्य जी की मृत्यु के पश्चात् सब आर्य सज्जनो के सामने यह प्रश्न उपस्थित था कि इस समिति के कार्य को कैसे चलाया जाये। अब तक सब भार आचार्य जी के ही कन्धो पर था। समिति की कई बैठके हुई, जिनमे निर्णय हुआ कि हर हालत मे शुद्धि के कार्य को जारी रखा जाये। समिति के मन्त्री श्री श्यामलाल जी (जो सचमुच आर्यसमाज के परवाने थे) ने पूरा समय इस कार्य मे लगाने का सकल्प लिया। कुछ ही समय मे समिति का कार्य फिर नियमित रूप से चालू हो गया, जो अब तक चल रहा है। हमे दु ख है कि इस बीच श्री श्यामलाल एव महामन्त्री श्री रोशनलाल बहल का देहावसान हो गया।

समिति का रजिस्ट्रेशन

इस बीच केन्द्रीय आर्य सभा और धर्म प्रचार समिति ने मिल कर यह निर्णय लिया कि आचार्य जी के नाम को सदा के लिए अमर रखने के लिए इस समिति का नाम आचार्य देवप्रकाश धर्म प्रचार समिति कर दिया जाये और इसी नाम से नियमित रूप से रजिस्ट्रार आफ फर्म्ज ऐण्ड सोसाइटीज (पजाब, चण्डीगढ) से पजीकृत भी कराया जाये। यह कार्य श्री जुगलकिशोर जी गोयदा एडवोकेट (जो अमृतसर के प्रसिद्ध वकीलो मे से हैं, धार्मिक विचारो के है, तपस्वी और त्यागी है) की सहायता से ६ सितम्बर १९८३ को २८६ नम्बर के अधीन पजीकृत करवा लिया गया।

करीब ४० गण्यमान्य व्यक्ति आचार्य देवप्रकाश धर्म प्रचार समिति के आजीवन ट्रस्टी सदस्य हैं। इनकी सूची रजिस्ट्रेशन पत्रको मे अकित है। समिति का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए इन ट्रस्टी सदस्यो मे से निम्नलिखित सदस्यो पर आधारित कार्य-समिति वयोवृद्ध, वीतराग और आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती, दयानन्द मठ, दीनानगर के प्रधानत्व मे कार्य कर रही है। अन्य सदस्य ये हैं—उपप्रधान श्री जगदीशराज सराफ, महामन्त्री श्री भोलानाथ दिलावरी, मन्त्री श्री नन्दकिशोर एम०ए०, वाइस प्रिंसिपल, डी०ए०वी० हा० सै० स्कूल अमृतसर, कोषाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर, निरीक्षक श्री अमृतलाल सोनी, रिटायर्ड एस०डी० ओ० (पजाब)।

इसके पश्चात् समिति को आयकर विभाग मे धारा न० ८० जी के अन्तर्गत भी पजीकृत करवा लिया गया। ऐसा होने से अब दानी महानुभावो को आयकर मे काफी छूट मिल जाया करेगी। रजिस्ट्रेशन सम्बन्धी सब परिपत्र हमारे कार्यालय मे देखे जा सकते हैं।

आचार्य जी की रचनायें

इतने व्यस्त होते हुए भी आचार्य जी ने अनेक पुस्तक लिखी हैं। सक्षिप्त ब्यौरा निम्न प्रकार है—१ आस्तिक विचार २. ईसाई

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य बन्धुओ, दयानन्द का काम पूरा करो

–कैप्टन देवरत्न आर्य–

जिस समय महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की उस समय हमारे धर्म और संस्कृति पर चारो ओर से आक्रमण हो रहे थे। हमारी शिक्षा-प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करके शिक्षित समाज को धर्म और संस्कृति से दूर किया जा रहा था। शिक्षा और सेवा के माध्यम से ईसाई मिशनरी भोलेभाले भारतीयो को ईसाई धर्म की ओर आकृष्ट करके हिन्दू धर्म से घृणा और नफरत के बीज पैदा कर रहे थे। हिन्दू देवी-देवताओं पर कीचड उछाला जा रहा था। हम हिन्दूधर्म के नाम पर आपस में ही लड रहे थे और अनेक जातियो व उपजातियों मे बटकर हिन्दू एकता को समाप्त कर रहे थे। हिन्दू जाति छुआछूत और ऊचनीच की शिकार हो रही थी। अनेक देवी-देवताओ की कल्पना करके ईश्वर के नामो को लेकर हम आपस मे झगड रहे थे। अन्धविश्वास के कारण हिन्दू स्वय ही लुट रहा था, मर रहा था और काशी करवट लेकर कट रहा था। नारी जाति को शिक्षा से वचित करके सती प्रथा के नाम पर इस देश की नारियो को गाजे-बाजे के साथ जला रहा था। बाल विवाह, वृद्ध विवाह आदि कुरीतियो से यह जाति ग्रस्त थी। माता-पिता की सेवा का स्थान मृतकपूजा, श्मशानपूजा और कब्रपूजा ने ले लिया था। ऐसे भयानक समय मे हिन्दू जाति की रक्षा के लिए युग पुरुष महर्षि देव दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने सारी कुरीतियो से सघर्ष करके मरणासन्न हिन्दू जाति मे नव जीवन एव प्राण डालकर इसकी रक्षा की। यूरोप के प्रख्यात साहित्यकार सन्त रोमा रोला ने महर्षि दयानन्द के प्रभाव का उल्लेख करते हुए लिखा कि "सिंह के समान निर्भीक प्रकृति वाले महा-पुरुष दयानन्द के शब्दो की धधकती हुई आग से विधर्मियो का विरोध भस्मसात् हो जाता था।" ऐसे युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत के निष्प्राण शरीर मे अपना अदम्य उत्साह तथा सिंह जैसा रक्त भरकर उसे सजीव कर दिया।

आज हमारा देश विघटन के कगार पर खडा है। आज की परिस्थिति पुन. सन् १९४७ जैसी हो रही है, जब देश का विभाजन हुआ था। आज पजाब मे आतकवादियो का आतक बना हुआ है। भारत को पुन खण्डित करने के लिए पाकिस्तान योजनाबद्ध तरीके से आतकवाद का प्रशिक्षण देकर देश मे अशान्ति और अराजकता पैदा कर रहा है। हिन्दू एव हिन्दुत्व दोनों पर चारो ओर से प्रहार हो रहा है। पजाब से हिन्दुओ का पलायन हो रहा है, निहत्थे हिन्दू आतकवाद के शिकार हो रहे हैं। हिन्दुओ के त्योहारो धार्मिक जलूसो और धार्मिक आयोजनो पर प्रतिबन्ध लगाये जा रहे हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम एव योगिराज श्रीकृष्ण की इस पवित्र धरती पर आज उनके नाम से जलूस निकालना भी दूभर हो गया है। पुलिस कानून और व्यवस्था के नाम पर हिन्दुओ को प्रताडित कर रही है। साम्प्रदायिक तनाव के नाम पर हिन्दुओ को दबाया जा रहा है। दूसरी ओर श्रीलका मे तमिल हिन्दुओं की हत्याओ का सिलसिला अबाध गति से चल रहा है। साथ ही गोरखालैण्ड की माग से देश की अखण्डता पर एक नवीन प्रश्न चिन्ह लग गया है। असम मे विदेशी नागरिको की समस्या अभी तक हल नही हुई। कश्मीर में राष्ट्रविरोधी गतिविधिया चालू हैं। देश के समुद्री तटो का विस्तृत भूभाग तस्करो और राष्ट्रद्रोहियों का कार्य क्षेत्र और निवास क्षेत्र बना हुआ है। ऐसी परिस्थितियो मे देश की एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि समस्त हिन्दू जाति एक सगठन के सूत्र मे बधकर अपने को सगठित करे एव देश व जाति पर आने वाले सकटो पर गम्भीरतापूर्वक विचार करे और इस निर्णय पर पहुचे कि राष्ट्रीय एकात्मता हेतु हमे एकता के सूत्र मे बधकर क्या करना चाहिए। १९४७ से पहले मुसलमानों ने आवाज उठाईथी कि वे हिन्दुओं केसाथ मिलकर नहीं रह सकते और उसका यह परिणाम हुआ कि तात्कालिक नेताओकी तुष्टी-करण की नीति और ब्रिटिश सरकार की कूटनीति के कारण देश मे मुसलमानो की २३ प्र०श० जनसख्या को देश का ३० प्र०श० भूभाग देकर देश के टुकडे कर दिये गये। देश के टुकडे करने के बाद भी जो लोग इस देश मे रह गये वे अल्पसख्यक समुदाय की सुविधाए प्राप्त करने लगे, जिसके परिणाम-स्वरूप आज अल्पसख्यक बहुल क्षेत्र मे साम्प्रदायिक दगे होते हैं, राष्ट्रविरोधी गतिविधियो का प्रचार हो रहा है और शोर मचाया जा रहा है कि अल्पसख्यक अपने आपको असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। राजनैतिक पार्टिया और उनके मतो के लालच मे अल्पसख्यकों के हितो की आवाज उठाने की प्रतिस्पर्धा मे लगे हुए हैं और हमारी एकता न होने के कारण कोई भी राजनैतिक नेता हिन्दुओं के हित के लिए बोलने को तैयार नही। दूसरी ओर हम धर्म-निरपेक्षता और सर्वधर्म समभाव के स्वप्नलोक मे विचर रहे हैं जिसे अल्पसख्यक किसी भी कीमत पर मानने को तैयार नही। इसका एक ताजा उदाहरण यह है कि न्यायालय के निर्णयानुसार जब राम जन्मभूमि मुक्त हुई तो मुसलमानों ने कश्मीर मे पचासो हिन्दू मन्दिर तोड दिये। आज विश्व के इस्लामी देश भारत के इस्लामीकरण की योजना बना रहे हैं और उसके लिए २००० करोड रुपये व्यय करने को तैयार हो गये हैं। "आदम सेना" गठित की जा चुकी है और इस प्रकार भारत मे गृहयुद्ध छेडने के षडयन्त्र रचे जा रहे हैं।

विदेशी शक्तियो की मदद से ६,००० ईसाई मिशनरी सस्थाए तथा उनके १,११, ०० कार्यकर्त्ता व पादरी दिन रात हिन्दुओ के धर्मपरिवर्तन मे लगे हुए हैं। ईसाई देशो से लगभग ३०० करोड रुपया भारत मे ईसाईधर्म के विस्तार के लिए भेजा जा रहा है और धर्मपरिवतन के कारण ही आज नगालैण्ड मे ईसाइयो की सख्या बढ गई है।

मैं हिन्दू नेताओ से अपील करता हूँ कि हिन्दुत्व की रक्षा और एकता के लिए देश के ८५ प्रतिशत हिन्दुओ को एक सूत्र मे बाधकर राज-नैतिक नेताओं को चुनौती दें कि यदि वे हिन्दुत्व के लिए आवाज नही उठायेंगे तो आगामी चुनावो मे उन्हे हिन्दू मत नही मिलेंगे। राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए हमे अपना वोट बक बनाना ही होगा।

आज हमे अपनी राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दू शब्द पर गम्भीरता से विचार करना होगा। अल्पसख्यको को मिलने वाली सुविधाओ के लालच मे अनेक सगठन अपने आपको हिन्दू कहने से इन्कार कर रहे हैं। जैन और बौद्ध तो अपने आपको हिन्दू कहने से मना कर ही रहे थे सिख भी अपने को हिन्दू कहने से मना कर रहे हैं। जिस पन्थ ने हिन्दुओ की रक्षा के लिए अपने बलिदान किये, उसी के कुछ पथभ्रष्ट युवक आज हिन्दुओ की हत्या कर रहे हैं और अपने लिए अलग राष्ट्र खालिस्तान की माग कर रहे हैं। आज रामकृष्ण मिशन भी अपने आपको हिन्दू कहने से मना कर रहा है, जिसकी सारी परम्पराए हिन्दुत्व से ओतप्रोत हैं। इसका एक मात्र कारण यह है कि सभी मत मतान्तर अल्पसख्यको को मिलने वाली सुविधाओ का लाभ उठाने के लिए स्वय को हिन्दू धारा से अलग कर रहे हैं।

हिन्दुत्व से अलग होकर यदि हमे थोडी सुविधाए मिल भी जायें तो राष्ट्रीय एकता का क्या होगा? हमे राष्ट्रीय एकता के लिए जैन, बौद्ध सिख सभी सगठनो को हिन्दुत्व के साथ रहने के लिए बाध्य करना होगा चाहे इसके लिए बडे से बडा बलिदान ही क्यो न करना पडे। आर्यसमाज ने राष्ट्रीय एकता और देश की अखण्डता के लिए अनेक बलिदान किये हैं और आज फिर समय की माग है कि आर्यसमाज उसके लिए तैयार हो जाये।

●

बाल जगत्

ज्ञानवर्धक कहानियां

परमेश्वर क्या और कैसा है?

एक भद्र पुरुष ने अपने दो बेटे गुरुकुल पढने के लिए भेजे हुये थे ताकि वहा विद्या प्राप्त कर और सुख-शान्ति से अपना जीवन व्यतीत करने के लिये आचार्यजनो से शिक्षा प्राप्त करे। कई वर्ष की पढाई करने के पश्चात् वे घर वापिस आये। अपने माता-पिता तथा दूसरे सम्बन्धियो की उन्होंने नम्रतापूर्वक चरण-वन्दना की और बडी सभ्य तथा प्रशसनीय रीति से बात की। दूसरे दिन उनके पिता ने बड लडके से पूछा कि तुम परमात्मा के विषय मे क्या जानकर आये हो कि वह क्या है और कैसा है? यह सुनकर उस लडके ने वेदो, पुराणो उपनिषदो इत्यादि से प्रमाण बोलकर सुनाये और कहा कि आप चाहे तो मैं और भी शास्त्र वाक्य इस सबध मे सुना सकता हू। हमारे गुरुओ ने परमात्मा के विषय मे यह सब कुछ बताया है।

तब उनके बाप ने छोटे लडके से पूछा कि अब तुम इस विषय मे अपने भाव वर्णन करो। वह लडका खडा होकर मुस्कराता हुआ अपने पिता की ओर देखने लगा, किन्तु मुख से कुछ न बोला। उसके पिता ने फिर पूछा कि परमेश्वर का रूप बताओ। तब लडके ने उसी प्रकार मुस्कराते हुये अपनी आखो की पलक नीचे अपनी छाती की ओर झुकाली। यह देखकर पिता ने उसे छाती से लगा कर शाबाशी दी और कहा कि तुम ने ईश्वर को ठीक जाना है। वाणी द्वारा उसका रूप वर्णन नही किया जा सकता। उसकी प्रतीति तो हृदय स्थल मे ही हो सकती है जिसका सकेत तुम ने किया है।

शुभ दान का फल

जिन दिनो बगाल में अकाल पडा हुआ था और लोग भूख से मर रहे थे तो उन दिनो प्रसिद्ध विद्वान् श्री विद्या सागर जब बाजार में से जा रहे थे तो एक छोटे से लडके ने एक पैसा मागा। विद्यासागर जी ने कहा कि यदि मैं तुमको चार पैसे दू तो क्या करोगे? लडका बोला कि आप ठठोली कर रहे हैं। विद्यासागर जी ने फिर पूछा तो उसने कहा कि दो पसे का आध कुछ खाऊगा और दो पैसे का अपनी मां के लिए ले जाऊगा। विद्यासागर ने फिर दो आने कहे तो वह लडका निराश होकर चल पडा। विद्यासागर ने उसे पकड कर खडा कर लिया और कहा कि यदि चार आने दू तो क्या करोगे? वह बोला कि दो आने में तो मा-बेटा दो-तीन दिन के खाने-पीने का प्रबन्ध कर लेंगे और शेष दो आने के आम क्रय करूगा और फिर उनको बेच कर चार आने बनाऊगा। इसी प्रकार फिर करूगा और दुगने बनाता जाऊगा। लडके की इस बात का विद्यासागर जी के मन पर बडा गभीर प्रभाव पडा। उन्होने सोचा कि यह लडका यद्यपि छोटा-सा है, किन्तु बडा विचारशील और पुरुषार्थी प्रतीत होता है। ऐसा विचार कर उन्होने उसे एक रुपया दे दिया। उसे लेकर वह दौड गया और उसी प्रकार उसका शुभ प्रयोग करने लगा। कुछ वर्षों के पश्चात् विद्यासागर जी एक अवसर पर पुन उसी बाजार से गुजरे तो वह अच्छे वस्त्र पहने हुये एक नवयुवक उनके पैरो पर गिर गया और हाथ जोड कर बोला कि मैं वही आपका ऋणि हूं जिसको आपने एक रुपया दिया था। यह सामने की फलो की भारी दुकान मेरी है। यह आपकी शुभ कमाई के एक रुपये के शुभ दान ने बनाई है। विद्यासागर जी बडे प्रसन्न हुए और उसे शाबाशी दी। उसने कुछ फल देने चाहे किन्तु उन्होने नही लिये।

ईश्वर विश्वास

एक निर्धन आदमी मेहनत मजदूरी करके खाता था। किन्तु वह प्रभु-विश्वासी होने के कारण अपनी परिस्थिति में पूर्णतया सतुष्ट रहता था। उसके पास एक बैल था जिस पर बोझ लाद कर वह कुछ पैसे कमा लेता था। एक कुत्ता भी रखा हुआ था जो बैल के पास बैठा रहता था। एक तोता था जो प्रातःकाल उस आदमी को बोल कर जगा देता था। एक रात बैल को शेर मार गया। उस आदमी की पत्नी रोने लगी। पति बोला प्रभु की चीज थी, उसने ले ली। रोने का क्या लाभ है? दूसरे दिन पिंजरे से तोता बाहिर निकल गया और एक बिल्ली उसको ले गयी। उस आदमी ने कहा "जो प्रभु करते हैं वही ठीक होता है।" यह सुन कर उसकी पत्नी को बडा क्रोध आया और अपने पति को उसने कुछ अपशब्द भी कहे। फिर कुत्ता भी मर गया। तब भी उस आदमी ने यही कहा कि इसमें ही भलाई है। तब तो उसकी पत्नी ने सिर पीटा और पति से बोली कि तू पागल हो गया है।

उसके दो दिन पश्चात् उस ग्राम मे डाकू आ गये और माल-धन लूट कर ले गये और कई आदमियो को मार गये। उस निर्धन की ओर किसने जाना था? वे दोनो बच गये। तब पत्नी ने भी स्वीकार किया कि मेरी भूल थी। वास्तव मे भगवान् जो करते हैं उसी मे भलाई होती है। उसने अपने पति से क्षमा मागी। एक आदमी जिसको डाकू घायल कर गये थे, उसने मरने से पहले उस निर्धन आदमी को अपना बचा-खुचा माल दे दिया। उससे उसने पहले की तरह अपना काम आरम्भ कर दिया।

स्वार्थ त्याग

श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एक स्कूल मे पढाते थे और ५०/- वेतन मिलता था। सन् १८४४ की यह बात है। कलकत्ता के सस्कृत कालिज में व्याकरण के एक अध्यापक की आवश्यकता थी। उन्होंने समाचार-पत्रों में विज्ञापन दिया। कई लोगों ने प्रार्थना-पत्र भेजे। विद्यासागर जी ने भी उस स्थान के लिए अपना प्रार्थना-पत्र भेजा। कालिज के प्रबन्धकों ने सभी प्रार्थना-पत्रो की जाच की और अन्तत विद्यासागर जी को ही चुन लिया। जैसा कि पहले बताया गया है विद्यासागर जी स्कूल मे ५०/- वेतन ले रहे थे। किन्तु कालिज के व्याकरण के अध्यापक का वेतन ९०/- मासिक था। इस प्रकार विद्यासागर जी के वेतन में ४०/- मासिक की वृद्धि हो रही थी। उनकी नियुक्ति की सूचना उनको भेजी गई और यह कालिज मे पहुच गये। तब उन्होने दफ्तर में जाकर सारे प्रार्थना-पत्र साधारण रूप से देखे। किन्तु उन्होंने देखा कि उनमें एक प्रार्थना-पत्र श्री तर्क वाचस्पति का भी था। वह विद्यासागर जी के मित्र थे और वह यह भी जानते थे कि व्याकरण के विषय मे तर्क वाचस्पति की योग्यता उनकी योग्यता से बहुत अधिक है। तब वह प्रबधको के पास गये और बोले कि इस स्थान के लिए श्री तर्क वाचस्पति का अधिकार अधिक है क्योंकि वह उनसे अधिक योग्य हैं। प्रबधक विस्मित होकर बोले कि तुम्हारी नियुक्ति हो चुकी है और ४०/- की उन्नति मिल रही है। किन्तु वह नहीं माने। श्री तर्क वाचस्पति ने सुना तो उसने कहा कि विद्यासागर मनुष्य रूप मे एक देवता हैं।



बंसीलाल चौहान

कार्यकारी पार्षद (स्वास्थ्य),
दिल्ली प्रशासन,
दिल्ली।

सन्देश

बच्चे कल के भारत के निर्माता हैं। वे आने वाले भारत का स्वरूप हैं। उनकी शारीरिक, मानसिक एवं सर्वांगीण उन्नति से ही देश का उत्कृष्ट स्वरूप उजागर होता है। उनका स्वास्थ्य, शिक्षा-दीक्षा और सदाचरण हम सभी के मार्गदर्शन और सहयोग पर निर्भर है। वे हम सभी के भरपूर साथ के आकांक्षी हैं। वे नन्हे पौधे हैं जिन्हें सतत देखरेख की आवश्यकता है। यही कारण है कि पण्डित जवाहर-लाल नेहरू जी को बच्चे सर्वदा प्रिय थे। बच्चे भी उन्हें "चाचा नेहरू" के नाम से पुकारते थे।

बच्चों को सदैव उचित मार्गदर्शन और स्नेह दीजिये, जिससे वे शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ और सदाचारी बनें और आने वाले कल का जो स्वप्निल भारत है, उसकी बागडोर संभालें।

बंसीलाल चौहान

सू प्र नि—६९१/८६

सम्पादक के नाम पत्र

क्या हिन्दुओं को अपनी सुरक्षा का भी अधिकार नहीं ?

महोदय,

आज पजाब मे जो कुछ हो रहा है, उसे अनदेखा नही किया जा सकता। गत पाच वर्षों में आतकवादियो द्वारा हजारो निरपराध हिन्दू मार डाले गये और अब भी वह सिलसिला चल ही रहा है। प्रतिदिन चार-छह या अधिक मारे ही जाते हैं। किन्तु एक प्रकार से सरकार हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कुछ नही कर रही। पजाब की पुलिस और बरनाला सरकार के कई मन्त्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों की तो आतकवादियों से मिलीभगत है। यही कारण है कि आज तक कोई भी आतकवादी मौके पर पकडा नही जा सका। इसके विपरीत आतकवादियो द्वारा की जाने वाली हत्यार्ओं की प्रतिक्रिया-स्वरूप कही पर यदि हिन्दुओ ने कभी कुछ उपद्रव किया तो तुरन्त आदेश हो जाता है कि उपद्रवियो को देखते ही गोली मार दो। परन्तु ऐसी सख्ती पजाब में क्यो नही की जाती और जिन हत्यारे आतकवादियो की घटना स्थल पर ही शिनाख्त हो जाती है, पकडे जाने पर उन्हें तुरन्त गोली क्यो नहीं मार दी जाती ? जबकि आतकवादी अब तो पूरी निष्ठा से अपने कर्तव्य का पालन करने वाले पुलिस कर्मचारी या अधिकारी को अथवा उसके निर-पराध पुत्र को ही समाप्त कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि पजाब में आतकवादियो का शासन है।

अपवादस्वरूप कुछ को छोडकर किन्ही वर्गविशेष के लोगों ने आतक-वादियो की निन्दनीय और आपराधिक हरकतो की भर्त्सना नही की और न उनका जातीय या सामाजिक बहिष्कार ही किया गया। जिस किसी परिवार का कोई सदस्य या कुछ सदस्य मारे जाते हैं, तो मुख्य मन्त्री श्री सुरजीत सिंह बरनाला उस परिवार के शेष सदस्यो को सान्त्वना और उनकी सुरक्षा का कोरा आश्वासन देते हैं किन्तु उनकी या अन्य हिन्दुओ की सुरक्षा का कोई ठोस प्रबन्ध नही करते। यही कारण है कि पजाब से किसी तरह बचकर आये हिन्दू श्री बरनाला के बार-बार समझाने और आश्वासन देने पर भी वापस जाने को तैयार नही। दिये जायेंगे। परन्तु हथियार कहा यह गया था कि पजाब में हिन्दुओं को अपनी सुरक्षा के लिए हथि-यार देने की कौन कहे, यदि कोई हिन्दू सगठन हिन्दुओ मे अपनी सुरक्षा के लिए मनोबल उत्पन्न करने और उन्हें सगठित करने का प्रयत्न करता है तो साम्प्रदायिक कहकर उसे दबाने या समाप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। इस पर हमे यह शेर याद आता है—

"हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम,
वे कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नही होता।

—काशीनाथ शास्त्री
गोंदिया (महाराष्ट्र)



आचार्य देवप्रकाश जी

(पृष्ठ ६ का शेष)

मत का वास्तविक स्वरूप ३ ख्वाजा हसन निजामी का वास्तविक स्वरूप ४ घोर आक्रमण ५ मैदाने ,मछहर (इसमे कुरान वर्णित कयामत की विवेचना है)। ६ यथार्थ दर्शन—इसमें बहाई मुस्लिम मत की विवेचनाहै। ७ बहाई मत दर्शन ८ बहाई मत—इस्लाम की शाखा ९ कुरान परिचय (यह बडा ग्रन्थ है। तीन भागो मे लिखा गया है। १५०० पृष्ठ हैं। इसमे कुरान सम्बन्धी विस्तृत विवेचना है।) १० दाफाउल श्रोहाम (इसमें कादियानी मत की विवेचना है) ११ आर्यसमाज के महान् पुरुषों के जीवन एव कार्य। यह भी एक बृहद्ग्रन्थ है। इसमे लगभग २५० महापुरुषों के जीवन वृत्तान्त हैं।

आचार्य देवप्रकाश जी के जीवन काल मे मई १९७६ को उन्हीं द्वारा शुद्धि कार्य प्रारम्भ हुआ था। उनके स्वर्गवास होने अर्थात् २८ दिसम्बर १९८० तक (कुल ४ वर्ष ७ मास मे) कुल मिलाकर इकावन हजार इकासी शुद्धिया हुई थी।

[समाप्त]

दार्शनिक मान्यतायें

(पृष्ठ ४ का शेष)

यस्य देहान्तरेषु वृत्तेरभावान्न प्रतिसन्धान भवतीति ॥"

इस वचन के अनुसार एक आत्मा का एक देह मे रहना प्रमा-णित होता है, इसलिए जिस काल मे जो आत्मा जिस किसी एक देह मे रहता है, वही उसका निवास होने से आत्मा परिच्छिन्न है।

उपनिषदो मे अनेकत्र आत्मा को अणु अथवा परिच्छिन्न बताया गया है। मुण्डक उपनिषद् (३/१/९) मे कहा है—

'एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्य"। श्वेताश्वतर उपनिषद् ५—९ के अनुसार—"बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च। जीवो भाग स विज्ञेय स चानन्त्याय कल्पते।" एक बाल के अग्रभाग को दस सहस्र बार विभक्त किया जाये, जीवात्मा को उतने परिमाण वाला समझना चाहिये। (क्रमश)

"सरकार गोहत्या निरोध के लिए केन्द्रीय कानून बनाये"

फीरोजपुर झिरका। 'अब वह समय आ गया है जब केन्द्रीय सरकार को गोरक्षा के लिए गोहत्या निरोध कानून बना कर अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए अन्यथा आर्यसमाज को इसके लिए कोई निर्णायक पग उठाने को बाध्य होना पड़ेगा' ये शब्द सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान और मेवात गोरक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहे जिसका विशाल जनसमूह ने करतल ध्वनि और 'देश धर्म का नाता है गौ हमारी माता है' का जयघोष करके स्वागत किया। सम्मेलन मे सैकडो ट्रैक्टरो बसो टको आदि से सुदूरवर्ती ग्रामो तक से लगभग १० हजार लोग सम्मिलित हुए। लोग कर्कश स्वर मे पास मे बने कट्टीखाने के विरोध मे रोष प्रकट कर रहे थे। सम्मेलन के मच का सचालन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हस ने किया। राजमाता विजय राजे सिंधिया ने बहुत ही भाव विह्वल होकर कहा कि मैं गोरक्षा के पक्ष मे वात क्षेत्र के भाइयो से मिलकर प्रभावित हुई हू। देश भर को गोरक्षार्थ इनका अनुकरण करना चाहिए। यदि हम सगठित होकर अपनी आवाज बुलन्द कर तो सरकार को गोहत्या बन्द करनी होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने एक प्रस्ताव इस सम्बन्ध मे रखा और कहा कि गोवश की रक्षा से ही कृषि और किसान की रक्षा सम्भव है और धरती की उर्वरा शक्ति सुरक्षित हो सकती है। आपने हरयाणा सरकार से अनुरोध किया कि वह कडाई से गोहत्या निरोध कानून को अमल मे लाये।

अखिल भारतीय कृषि गोसेवा सघ के अध्यक्ष श्री राधाकृष्ण बजाज ने कहा कि गाय बैल बचे तो देश बचेगा। अन्यथा धरती बजर हो जायेगी। विदेशो की कृषि पद्धति का अन्धानुकरण करके ट्रैक्टरो पर निर्भर करना खतरनाक होगा। आपने मेव बन्धुओ को सत विनोबा भावे की याद दिलाते हुए अपील की कि उन्होने मरते दम तक गोहत्या निरोध कानून बनवाने के लिए अनथक प्रयास किया। अब मेव बन्धु आगे आकर गोहत्या का पचायत द्वारा निरोध कराने का प्रयास कर।

प्रो० विजयकुमार मल्होत्रा श्री महेन्द्र शास्त्री एम० एल० ए०, श्री रघवर दयाल एम० एल० ए० (राजस्थान) चौधरी राजेन्द्रसिंह (होडल) श्री किशोर सिंह सीतरोल, चौधरी राजेन्द्र बीसला (बल्लभगढ) आदि अनेक वक्ताओ ने मेवात क्षेत्र मे हो रहे गोवध पर रोष प्रकट किया और सरकार से अनुरोध किया कि वह स्थानीय राजनीतिज्ञो को पुलिस के काम मे दखलन्दाजी करने से रोके और निर्यात होने वाले पशुधन को हरयाणा मे रोकने के लिए आवश्यक मार्गो पर पुलिस चौकिया बिठाय।

मेवात गोरक्षा सम्मेलन मे स्वीकृत प्रस्ताव

मेवात क्षेत्र का यह गोरक्षा सम्मेलन भारत सरकार से निवेदन करता है कि कृषिप्रधान भारत मे किसी भी उम्र के गाय बैल की हत्या न हो इसलिए गोवश हत्याबदी का केन्द्रीय कानून अविलम्ब बनाया जाये और जीवित पशु या मास का निर्यात पूर्ण रूप से बद किया जाये।

यह सभा हरयाणा सरकार से माग करती है कि गोहत्याबन्दी के अपने कानून पर कडाई से अमल करे। कानून तोडने वालो को उचित सजा दे और गाय बछडो की निकासी पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाये।

यदि सरकार ने शीघ्र ठोस कदम न उठाये और जनता को आदोलन करना पडा तो इसकी जिम्मेदारी सरकार पर होगी।

यह सभा हरयाणा के किसानो से भी प्रार्थना करती है कि व पचायत सगठन के माध्यम से गोवश के बचने पर पाबन्दी लगवाय।



फीरोजपुर झिरका मे हुए मेवात गोरक्षा सम्मेलन के तीन दृश्य। बाई ओर से पहले चित्र मे मेवात वेदप्रचार मडल के प्रधान श्री सत्यपाल आर्य सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे हैं। दूसरे चित्र मे हरयाणा के भूतपूर्व विधायक श्री राजेन्द्र सिंह बीसला ध्वजारोहण कर रहे हैं। तीसरे चित्र मे राजमाता विजय राजे सिंधिया का स्वागत किया जा रहा है। पहले और दूसरे चित्र मे गाधी टोपी पहने खडे सज्जन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस हैं।

पंजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२१-१२-१९८६ बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ३१
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licen ^ ९ O on 19-12-86

राजभाषा होने के बावजूद हिन्दी को उचित स्थान नहीं
—जैल सिंह

जयपुर। राष्टपति ज्ञानी जल सिंह ने यहा इस बात पर क्षोभ व्यक्त किया कि सविधान सभा द्वारा हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देने के बावजूद इसे अभी तक देश मे इसका उचित स्थान नही मिला। हिन्दी को सब भारतीय भाषाओ की जननी बताते हुए उन्होने कहा कि हिन्दी के विद्वानो का तिरस्कार करने की बजाय उन्हे आदर की दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

उन्होने कहा कि हिन्दी का विरोध केवल एक दो राज्यो मे है लेकिन सोचने की बात यह है कि देश के अन्य भागो मे इस भाषा के विकास की रफ्तार धीमी क्यो है।

राष्टपति यहा एक समारोह मे बोल रहे थे। उन्होने कहा कि स्वतन्त्रता सग्राम के दौरान समाचारपत्रो ने जो भूमिका निभाई और वातावरण तैयार किया उसी का परिणाम है कि हमे स्वतन्त्रता मिली। राष्टपति ने हिन्दी को भारतीय भाषाओ की मा बताते हुए कहा कि इसे पूरे देश के लोग समझते है। उन्होने कहा कि मुट्ठी भर लोग ही इसका विरोध कर रहे है जबकि पूरे देश के लोग हिन्दी के साथ है।

बेटे राजगद्दी पर, मां दरवाजे के बाहर।

राष्टपति जैल सिंह ने कहा कि हिन्दी को पूरा सम्मान देने से ही देश मजबूत बनेगा। उन्होने हिन्दी की दुर्दशा की चर्चा करते हुए कहा कि सच तो यह है कि मा के बेटे राजगद्दी पर बैठे है और मा दरवाजे के बाहर खडी है। यहा एक समारोह मे बोलते हुए उन्होने अग्रेजी मे पहले से तैयार अपने भाषण को एक तरफ रखते हुए हिन्दी मे भाषण दिया।

[पृष्ठ १ का शेष]

तुम केवल वाणी द्वारा प्रचार करने वाले तत्ववेत्ता ही न थे अपितु जिन सच्चाइयो का तुम ससार मे प्रचार करना चाहते थे, उन्हे क्रिया मे लाकर सिद्ध कर देना भी तुम्हारा ही काम था। भगवान् कृष्ण की तरह तुम्हारे लिए भी तीनो लोको मे कोई कर्त्तव्य शेष नही रह गया था परन्तु तुमने मानव समाज को सीधा मार्ग दिखाने के लिए कम की उपेक्षा नही की।

भगवन् मैं तुम्हारा ऋणी हूं उस ऋण से मुक्त होना चाहता हू। इसलिए जिस परमपिता की असीम गोद मे तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो मैं उसी से प्राथना करता हू कि वे मुझ तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान कर।

विनीत
श्रद्धानन्द

गुरुकुल प्रभात आश्रम का उत्सव

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) डा० भोलाझाल का वार्षिकोत्सव १३ १४ जनवरी १९८७ मकर मौर मकान्ति के अवसर पर होगा।

पुरोहित की आवश्यकता

आयसमाज खण्डवा मे एक विद्वान पुरोहित की आवश्यकता है। गुरुकुल के स्नातक को वरीयता दी जायेगी जो संस्कार आदि सम्पन्न करा सकें। वेतन निर्धारण प्रत्यक्ष साक्षात्कार के समय हो जायेगा। पत्रव्यवहार निम्न लिखित पते पर करे।

रामचन्द्र आर्य
प्रधान आयसमाज खण्डवा ४५०००१ (म० प्र०)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

साउदी अरब की सरकार झुकी : श्री रामकुमार भारद्वाज रिहा

सार्वदेशिक सभा के प्रयत्नों से आर्यसमाज की शानदार विजय



श्री रामकुमार भारद्वाज

नई दिल्ली। सभी आर्य बंधुओं और राष्ट्रवादी सज्जनों को यह जानकर संतोष होगा कि मई १९८६ में साउदी अरब में सत्यार्थप्रकाश रखने पर गिरफ्तार श्री रामकुमार भारद्वाज को जेल से रिहा कर दिया गया है और अब वे अपने गांव शाहपुर, जिला जींद (हरयाणा) लौट आए है। गिरफ्तारी के समाचार पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री के सामने इस मामले को उठाया था और साउदी अरब स्थित भारतीय दूतावास और दिल्ली स्थित अरब दूतावास से उच्चस्तरीय संपर्क किया गया था। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने १० दिसम्बर १९८६ को सभा प्रधान जी को जो पत्र लिखा, वह इस प्रकार है—

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम पत्र

Dear Sir,

This is to acknowledge your letter No 2790 dated 30 10 1986 addressed to P M regarding the detention of Shri Ram Kumar Bharadwaj

Our Embassy in Riyadh has informed us that they are pursuing the matter with the local Ministry of Foreign Affairs The matter in fact, has been taken up at a higher level and it is hoped that the efforts of the mission will fructify

Yours sincerely
Shamma Jain
Under Secretary (Gulf)

सार्वदेशिक सभा की १४ दिसम्बर की अन्तरंग सभा की बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिनिधि ने आश्वासन दिया था कि वे श्री भारद्वाज के गांव जाकर पूरी रिपोर्ट सभा को भेजेंगे। अब उन्होंने रिपोर्ट दी है कि भारद्वाज जी जेल से रिहा होकर गांव लौट आए है।

सार्वदेशिक सभा ने आगामी ११ जनवरी को सत्यार्थप्रकाश रक्षा दिवस और १४ जनवरी को अरब दूतावास पर प्रचण्ड प्रदर्शन का जो निर्णय लिया था, वह स्थगित किया जा रहा है।



सत्यार्थप्रकाश अंक क्यों ?

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थप्रकाश विश्वविख्यात ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ सत्य-सत्य धर्म का प्रकाश, ईश्वर, वेद और वैदिक मान्यताओ का मार्गदर्शक, राजधर्म के राष्ट्रीय स्वरूप का विधायक, सर्वोत्तम शिक्षा का निर्देशक, मानवता का संस्थापक, मिथ्या विश्वासो का मूलोच्छेदक, कुरीतियो का विनाशक तथा ससार भर के सभी मतो और पन्थो के लिए महत्त्वपूर्ण विचार-ग्रन्थ है। महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश जहां भारत मे सस्कृत, हिन्दी, उर्दू, गुरुमुखी, बगला, गुजराती, मराठी, कन्नड, मलयाली, तमिल, तेलुगू, उडिया, सिन्धी आदि भारतीय भाषाओ मे छप चुका है, वहा अग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, चीनी, नेपाली आदि विदेशी भाषाओ मे भी प्रकाशित हो चुका है। ३० लाख प्रतियो से भी अधिक इस ग्रन्थ का मुद्रण हो चुका है।

यह महान् ग्रन्थ अब तक बडे-बडे धुरन्धर विद्वानो, विचारको एव मनीषियो के लिए प्रेरणाप्रद रहा है, जिन्होने एक बार नही अनेक बार इसका पारायण कर इसमे से मूल्यवान् रत्न प्राप्त करके जीवन को उच्चतम आदर्श तक पहुचाने मे सफलता प्राप्त की है।

किन्तु इस महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ऐसे भी लाखो भक्त हैं, जिन्हे इस पर पूर्ण श्रद्धा है, जो इसे हृदय से सत्य की कसौटी मानते हैं एव जिन्होने इस सत्यार्थप्रकाश रूपी समुद्र मे गोता लगाकर जीवन को पवित्र भी किया है परन्तु वे इसका आद्योपान्त अक्षरश पारायण अभी तक इस कारण नही कर पाये कि यह बृहदाकार है—पारायण के लिए पर्याप्त समय मागता है। यह बहुत ही गम्भीर विवेचनात्मक ग्रन्थ है। इसमे सस्कृत व्याकरण, वेदो और उपनिषदो, न्याय आदि दर्शनशास्त्रो, मनु आदि धर्मशास्त्रो, महाभारत, रामायण आदि ऐतिहासिक ग्रन्थो, ज्योतिष शास्त्र, आयुर्वेद शास्त्र, भूगोल-खगोल की गम्भीर एव तात्त्विक व्याख्या और विवेचन है। साथ ही इस विश्वविजयी ग्रन्थ मे जैन, बौद्ध चार्वाक, ईसाई और इस्लाम मतो की भी पूरी-पूरी और सत्य-सत्य छानबीन की गई है।

ऐसे महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का सर्वसाधारण के पठन-पाठन मे प्रवेश हो, इसमे रुचि और गहरी जिज्ञासा उत्पन्न हो, इसलिए हम सत्यार्थप्रकाश अक प्रकाशित कर रहे हैं।

पूर्ण आशा ही नही, विश्वास भी है कि अधिकाधिक जनता इससे लाभान्वित होगी।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

इस अंक में पढ़िए

सत्यार्थप्रकाश : चौदह पुष्पों की माला

यह ग्रन्थ चौदह समुल्लासो अर्थात् चौदह खण्डो मे रचा गया है। इसमे दस समुल्लास पूर्वार्ध और चार उत्तरार्ध मे हैं।

प्रथम समुल्लास मे ईश्वर के ओंकारादि सौ नामो की व्याख्या।

द्वितीय समुल्लास मे माता-पिता द्वारा सन्तानों को उत्तम शिक्षा एव कर्तव्यो का बोध।

तृतीय समुल्लास मे ब्रह्मचर्य, पठन-पाठन विधि-व्यवस्था, विद्यार्थी के प्रति आचार्य का कर्तव्य, सत्यासत्य ग्रन्थो के नाम।

चतुर्थ समुल्लास मे गृहस्थाश्रम व्यवस्था, विवाह, विधवा-विवाह, नियोग प्रकरण आदि।

पचम समुल्लास मे आश्रम मर्यादानुसार वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम की विधि।

षष्ठ समुल्लास मे शासन व्यवस्था मे राजा के कर्तव्य, राजधर्म प्रकरण।

सप्तम समुल्लास मे परमात्मा का ज्ञान, वेद-ईश्वर विषयक।

अष्टम समुल्लास मे जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय विषय का ज्ञान।

नवम समुल्लास मे विद्या-अविद्या, बन्ध और मोक्ष की व्याख्या।

दशम समुल्लास मे आचार-अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विषय का ज्ञान।

एकादश समुल्लास मे आर्यावर्तीय मत मतान्तरो का खण्डन-मण्डन विषय।

द्वादश समुल्लास में ईसाई मत का विवेचन, बाइबिल विषय।

चतुर्दश समुल्लास मे इस्लाम और कुरान का खण्डन विषय।

इसके उपरान्त आर्यों के लिए वेद विहित सनातन व्यवस्था है, जिसे स्वामीजी ने स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश के नाम से लिखा है।

सम्पादकीय

सत्यार्थप्रकाश--एक क्रान्तिकारी ग्रन्थ

स्वामी दयानन्द सरस्वती समस्त भारत में जिन विचारों के प्रचार-प्रसार में संलग्न थे, उन विचारों को एकत्र कर पुस्तक रूप मे छाप दिया जाये, यह सलाह स्वामी जी के भक्तों ने उन्हें दी। इसके प्रभाव से ही स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश की रचना हेतु प्रेरित होकर अपना शोधग्रन्थ लिखा, जिसका नाम सत्यार्थप्रकाश रखा गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अनुपम ग्रन्थ, आर्य जाति का अभेद्य कवच व सत्यान्वेषी और मुमुक्षु के लिए अमृत तुल्य है। जिस किसी ने पक्षपात रहित होकर पूर्ण मनोयोग से इस ग्रन्थरत्न का अध्ययन किया, उसके जीवन में परिवर्तन आ गया। अविद्या और अन्धविश्वास इसके पढ़ने मात्र से दूर हो जाते हैं।

श्री ऐयाज अहमद गौरी सिद्धान्तशास्त्री ने "धर्म की रक्षा और प्रचार कैसे हो?" लेख में लिखा था कि इस समय और भी बहुत-से धार्मिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं, जिन्हें जब भी पढ़ा जाये, वे कोई न कोई नई बात बताते हैं। लेकिन पता नहीं, स्वामी जी ने अपनी पुस्तक में क्या अमृत भर दिया है! गुरुदत्त जैसे अन्य कई विद्वानों का कथन है कि हमने इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश का कई बार अध्ययन किया है, मगर तृप्ति नहीं हुई। क्योंकि हर बार कोई न कोई नई बात मिलती थी। इसी कारण इसे पुन. पढ़ने को जी चाहता है।

मैं अपना विचार कहूं। मैंने इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ा। इस बात को आज ३६ वर्ष हो गये। उसके बाद नित्य प्रति पढ़ने पर नवीन गवेषणापूर्ण सत्य और तथ्य इसमें मिलते हैं।

स्वामी सर्वदानन्द जी एक नवीन वेदान्ती साधु थे। चित्रकूट पर भ्रमण करते हुए वहां ठहरे और बीमार हो गये। उन्हें एक भक्त ठाकुर साहब ने सेवा करके ठीक कर दिया। जब स्वामी जी जाने लगे तब उन्होंने स्वामी जी को एक पुस्तक भेंट में दी और उसे पढ़ने का आग्रह किया। स्वामी जी ने रेशमी वस्त्र में लिपटी पुस्तक खोलकर देखी तो सत्यार्थप्रकाश। आर्य भाषा मे सुन्दर प्रति थी। स्वामी जी ने सत्यार्थ-प्रकाश का नाम सुन रखा था परन्तु नवीन वेदान्ती होने से इसे पढ़ने से घृणा करते थे। किन्तु भक्त ठाकुर को उसे पढ़ने का वचन दे चुके थे अत: मन में आया कि इसे देखें तो सही कि इसमें है क्या? उन्होंने सत्यार्थप्रकाश पढना प्रारम्भ किया। आद्योपान्त पढ़ने के बाद वे कुछ से कुछ बन गये। सत्यार्थप्रकाश के पाठ ने नवीन वेदान्त की कपोलकल्पित मान्यता दूर करके सत्य के अर्थ का प्रकाश कर दिया और स्वामी सर्वदा-नन्द जी सच्चे वैदिकधर्मी बनकर यावज्जीवन ऋषि के मिशन को पूरा करते रहे।

एक उदाहरण और लीजिये। भारत की एक फौजी टुकडी मारीशस भेजी गई। उसमें एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई। मारीशस के कानून के अनुसार शव को दफनाया जाना था। लेकिन उस टुकड़ी ने चिता जलानी चाही। कानून तथा धार्मिक व्यवस्था में मतभेद पैदा हो गया। व्यवस्थानुसार शव को जलाने की अनुमति दी गई।

उस अंग्रेज अफसर ने सोचा कि यह टुकड़ी यहां रहेगी तोकोई नया गुल खिलायेगी अत. इसे वापस भारत भेज दिया जाये। जब टुकड़ी वापस जाने लगी, तब भोलानाथ नामक हवलदार ने सत्यार्थ प्रकाश व संस्कार विधि मारीशस के दो व्यक्तियों को दिये। संस्कारविधि भिखारी सिंह के हाथ लगी और सत्यार्थ-प्रकाश खेमलाल के। खेमलाल जी शिक्षित थे, बैरिस्टर थे—जनहित चिन्तक थे।

वे तत्कालीन भारतीयों की दुरवस्था व अन्य मतावलम्बियो के हमलों से सदा चिन्तित रहते थे। सत्यार्थप्रकाश पढ़ने पर उनकी आंखें खुल गईं। सत्य सनातन वैदिक धर्म का यथार्थ स्वरूप पता चला। खेमलाल और दलजीतलाल ने इसका अध्ययन किया और विधर्मियों तथा पाखण्डियों से लोहा लेने के लिए मानो उन्हें ब्रह्मास्त्र मिल गया।

यह घटना १८९७ के आस-पास की है। उस समय चार्ल्स ब्रूस मारीशस का गवर्नर था। वह संस्कृत का भी ज्ञाता था। उसने अथर्ववेद के मन्त्रों का अंग्रेजी मे अनुवाद किया था। अथर्ववेद व सत्यार्थ-प्रकाश लगभग साथ-साथ ही मारीशस पहुँचे थे पर उसने मारीशस के लोगों को इसका परिचय नहीं कराया। बाद में वह कमी भी पूरी हो गई।

शव जलाने की प्रक्रिया के विषय में अंग्रेज ने पूछा कि तुम्हें यह विधि कैसे ज्ञात हुई? उन सैनिकों ने अपने अफसर को सत्यार्थप्रकाश तथा संस्कारविधि दिखाकर कहा कि इससे हमें अपनी धार्मिक क्रियाओं का ज्ञान हुआ है।

मारीशस मे किसी शव की अग्निदाह क्रिया मे यह पहली अन्त्येष्टि थी। सत्यार्थप्रकाश ने न जाने कितने लोगों के जीवन में चमत्कार किया है। सत्यार्थ-प्रकाश की प्रमाणसमन्वित, तर्कसंगत और युक्तियुक्त विचारधारा अपने अनुयायियों को इन विधर्मियों तथा पोंगापन्थियों दोनों के हमलों से न केवल बचाती है अपितु विजयी होने का गौरव भी दिलाती है।

आक्रमण और प्रतिरक्षा की दोहरी सामरिक तैयारी के बिना न तो कोई सेना सफल हो सकती है और न ही कोई प्रगतिशील सुधार आन्दोलन। ऋषि दयानन्द की शिक्षा और उनका दर्शन हमें सामरिक सज्जा से सन्नद्ध करते हैं।

राष्ट्रकवि दिनकर ने "संस्कृति के चार अध्याय" में लिखा है—सत्यार्थ प्रकाश में जहां हिन्दुत्व के वैदिक रूप का गहन आख्यान है, वहां इसमें ईसाइयत और इस्लाम की आलोचना पर भी अलग-अलग दो समुल्लास हैं। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले निश्चिन्त थे कि हिन्दू अपना सुधार भले करता हो किन्तु उसे बदले में हमारी आलोचना करने का साहस नहीं होगा। किन्तु इस मेधावी एवं योद्धा सन्यासी ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया।

यही नहीं, प्रत्युत जो बात राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन और महादेव गोविन्द रानाडे के ध्यान में भी नहीं आई थी, उस बात को लेकर स्वामी दया-नन्द के शिष्य आगे बढ़े और उन्होंने घोषणा की कि धर्मच्युत व्यक्ति प्रत्येक अवस्था मे अपने धर्म मे वापस आ सकता है एवं अहिन्दू भी यदि चाहे तो हिन्दू धर्म में प्रवेश पा सकता है। यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी। जागृत हिन्दुत्व का समरनाद था और सच ही रणारूढ़ हिन्दुत्व के जसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए, वैसा विचारक क्रान्तिकारी और कोई पैदा नहीं हुआ।

क्या इससे भी अच्छा प्रमाणपत्र किसी को दिया जा सकता है?

—सच्चिदानन्द शास्त्री

सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश पर रोक का मामला : महात्मा गांधी ने क्या लिखा था ?

खयाल यह था कि सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश पर लगाई गई रोक की मियाद खत्म हो चुकी है। अब फिर कभी उस पर नई रोक नहीं लगाई जायेगी। लेकिन यह उम्मीद धोखा साबित हुई। उस पर फिर नई रोक लगा दी गई है।

सिन्ध की सरकार को ऐसा लगता है कि सिन्धी जबान में छपी सत्यार्थप्रकाश नाम की किताब के चौदहवें अध्याय में ऐसी बातें हैं, जो सम्राट् के प्रजाजनों के अलग-अलग फिरकों और वर्गों में वैर और नफरत पैदा करने वाली हैं।

इसीलिए अब सन् १८९८ के क्रिमिनल प्रोसीजर कोड की दफा ९९ए से हासिल किए गए अधिकार के मुताबिक सिन्ध सरकार यह ऐलान करती है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखी हुई और आर्य प्रतिनिधि सभा सिन्ध, कराची की ओर से से प्रो० ताराचन्द डी० गाजरा एम० ए० द्वारी छापी गई सिन्धी सत्यार्थप्रकाश की हर कापी, जहां कहीं भी वह मिले और उसकी नकलों वाले तमाम दस्तावेज, नये संस्करण या तर्जुमे या उस किताब के चौदहवें अध्याय के उद्धरणों को सम्राट् के लिए इस बिना पर जब्त कर लिया जाये कि ऊपर के अध्याय में लेखक (अ) मुसलमानों के कुछ धार्मिक विश्वासों का मजाक उड़ाता है (आ) कुरान के उपदेश को गलत तरीके से लोगों के सामने रखकर उसकी बुराई करता है (इ) पैगम्बर मुहम्मद की सत्ता पर हमला करके उसकी बुराई करता है और (ई) आम तौर पर उस अध्याय में ऐसी बातें पाई जाती हैं, जो मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचाने के लिए लिखी गई हैं और चोट पहुंचाती हैं।

नई रोक का दायरा पुरानी से भी बड़ा है। पहली रोक ने तो चौदहवें अध्याय की किताब को छापना या प्रकाशित करना ही गुनाह माना था। लेकिन नई रोक तो उस किताब को रखना भी गुनाह मानती हैं। मैं मानता हूं कि यह रोक लगाना निरी नासमझी है और इससे सारी दुनिया के आर्यसमाजियों की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचेगी। चालीस लाख आर्यसमाजियों की निगाह में सत्यार्थप्रकाश की वही इज्जत है, जो मुसलमानों की निगाह में कुरान की या ईसाइयों की निगाह में बाइबल की है। मौजूदा जमाने के किसी बहस-तलब साहित्य या अदब पर लगाई गई रोक को समझा जा सकता है, हालांकि आज के जमाने में लोकप्रिय सरकारें ऐसा होने पर भी अपनी हकूमत का इस्तेमाल नहीं करना चाहतीं। लेकिन मजहबी किताब पर रोक लगाना तो दुष्टतापूर्ण मालूम होता है। इसलिए मैं जोर देकर सिन्ध सरकार से कहूंगा कि वह इस रोक को हटाले। सत्यार्थप्रकाश का सिन्धी तर्जुमा नया प्रकाशन नहीं है। जिस किताब के इतने संस्करण निकल चुके हों और दुनिया की बहुत-सी जुबानों में जिसका तर्जुमा हो चुका हो, क्या उस किताब के बारे में यह कहना ठीक होगा कि उसमें ऐसी बातें लिखी हैं, जो सम्राट् के प्रजाजनों के अलग-अलग फिरकों में वैर या नफरत की भावना पैदा करेंगी ? सहिष्णुता के गुण की अति कभी नहीं होती—खासकर मजहबी बातों में। मजहबी खयालों के फर्क तो कयामत तक चलते ही रहेंगे। इसलिए सहिष्णुता के जरिये ही अलग-अलग मजहबों को मानने वाले लोग भले पड़ौसी और दोस्त बनकर रह सकते हैं। टीका करने वालों की अच्छी या बुरी टीका से मजहब का कुछ नहीं बिगड़ता। उसमें बिगाड़ पैदा होता है उसके मानने वालों की ढिलाई और लापरवाही से।

—मोहनदास करमचन्द गांधी

नई दिल्ली २६-१०-४६ (अंग्रेजी से अनूदित)

(हरिजन सेवक से उद्धृत)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सैकड़ों परिवारों को रजाइयां बांटीं

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने ११ दिसम्बर को दिल्ली के ज्वालापुरी क्षेत्र मे पजाब से आये हिन्दू विस्थापित परिवारो मे लगभग एक सौ रजाइयो का वितरण किया। इससे चार दिन पूर्व ही चार सौ से अधिक रजाइया मगोलपुरी क्षेत्र मे बाटी गई थी? सार्वदेशिक सभा पजाब से आये हिन्दू विस्थापितो की हर प्रकार से सहायता कर रही है।

कुछ दिन हुए, सार्वदेशिक सभा ने जिला होशियारपुर (पजाब) के खुड्डा ग्राम मे आतकवादियो द्वारा मारे गये २४ हिन्दुओ के सम्बन्धियो की सहायता की थी, जो उनके अस्थिकलश लेकर दिल्ली आये थे। दिल्ली पुलिस ने उन्हे सीमा पर ही रोककर गिरफ्तार कर लिया था। स्वामी आनन्दबोध ने प्रयत्न करके उन्हें जेल से रिहा करवाया और साथ ही प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री से भी उनकी भेट की व्यवस्था करवाई। बाद मे सरकार द्वारा मृतको की अस्थियो की ब्रजघाट (गढ मुक्तेश्वर) पर गगा मे प्रवाहित कराने की व्यवस्था करवाने मे भी स्वामी जी ने सहायता की। (चित्र सामने के पृष्ठ पर देख)



२२ नवम्बर को नागपुर में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के सभापतित्व मे अखिल भारतीय आर्य सिन्धी सम्मेलन के अन्तर्गत समाज सुधार सम्मेलन आयोजित हुआ। उसी अवसर का एक दृश्य। (अन्य चित्र कवर पृष्ठ सख्या तीन पर देखें)



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ज्वालापुरी (शिविर नागलोई) मे पंजाब के विस्थापित हिन्दुओं को रजाइयां बांटते हुए। उनके साथ सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पण्डित रामचन्द्रराव वन्देमातरम् खड़े है।

पंजाब के विस्थापितों की सहायता के लिए प्राप्त दान राशियां

कृष्णजी वढेरा डी २८ अमर कालोनी	१०० रु०
श्रीमती उप्पल डी २६ अमर कालोनी	५० रु०
भारती जी डी २५ अमर कालोनी	१० रु०
सत्या चौधरी डी २२ अमर कालोनी	२१ रु०
लज्जा जी डी २३ अमर कालोनी	२० रु०
तृप्ता जी डी २७ अमर कालोनी	२१ रु०
पुष्पा गुप्ता ई ३० अमर कालोनी	२१ रु०
शकुन्तला डी ३१ अमर कालोनी	१० रु०
सरला जी सी ११७ दयानन्द कालोनी	१० रु०
राजरानी सी ११६ दयानन्द कालोनी	११ रु०
रानी जी डी २८ अमर कालोनी	२१ रु०
कृष्णा जी डी ५१ अमर कालोनी	१० रु०
पुष्पा जी डी ५२ अमर कालोनी	२० रु०
मोहिनी जी ११६ अमर कालोनी	२१ रु०
स्वामी परमानन्द हरिद्वार	१० रु०
गुप्त दान	१० रु०
शशि डी ५१ अमर कालोनी	१० रु०
इन्द्रा डी ५४ अमर कालोनी	१० रु०
भारती डी ५५ अमर कालोनी	१० रु०
सुमन डी ५५ अमर कालोनी	१० रु०
सन्तोष ४१ अमर कालोनी	१० रु०
मोहिनी डी ४१ अमर कालोनी	१० रु०
पुष्पा डी ४६ अमर कालोनी	१५ रु०
कश्मीरी डी ४४ अमर कालोनी	५० रु०
कृष्णकुमार डी ४२ अमर कालोनी	१० रु०
चरनजीत डी ५० अमर कालोनी	१० रु०
प्रेमलता डी ४१ अमर कालोनी	११ रु०
विमला गुप्ता ई १८ अमर कालोनी	२० रु०
शान्ति गुप्ता ई १८ अमर कालोनी	२० रु०
राजदुलारी सी ४२ दयानन्द कालोनी	२० रु०
किरण गुप्ता ई १४-१५ अमर कालोनी	२० रु०
सन्ध्या ई १४ १५ अमर कालोनी	२० रु०
चपल ई १४-१५ अमर कालोनी	२० रु०
शोभा ई १० अमर कालोनी	२१ रु०
शान्ति गुप्ता ई० १६-१७ अमर कालोनी	३० रु०
कृष्णा जी डबल स्टोरी	५ रु०
गुप्त दान	५ रु०
शीला गुप्ता ई १६-१७ अमर कालोनी	२० रु०
पदमा कालरा बी ११२ अमर कालोनी	२१ रु०
शोभा जी द्वारा	११ रु०
वासुदेव दीवान, मुनीरका	५० रु०
बिमला गुप्ता ई ३५ अमर कालोनी	१०० रु०
प्रकाश गुप्ता ई २७ अमर कालोनी	२० रु०
निर्मल गुप्ता ए ५७ दयानन्द कालोनी	२१ रु०
मुन्नी कालका जी २५ रामपुरा	५० रु०
कान्ता गुप्ता ई ३५ अमर कालोनी	२१ रु०
आर्यसमाज पारिवारिक सत्संग से	७५ रु०
सर्वयोग	१०१२ रु०

यह धन आर्य स्त्री समाज अमर कालोनी, दिल्ली की बहिनों द्वारा एकत्रित किया गया। धन्यवाद।

किसी का मन दुखाना या किसी को हानि करना मेरा तात्पर्य नहीं

सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में स्वामी दयानन्द सरस्वती का निवेदन

सत्यार्थप्रकाश एक अर्थपूर्ण रचना है। इसकी भूमिका भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं। नीचे सत्यार्थप्रकाश की भूमिका अक्षरशः प्रकाशित की जा रही है—

ओ३म् सच्चिदानन्दायेश्वराय नमो नमः

भूमिका

जिस समय मैंने यह ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" बनाया था, उस समय और उस से पूर्व संस्कृत भाषण करने, पठन-पाठन मे संस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती होने के कारण से मुझको इस भाषा का विशेष परिज्ञान न था, इससे भाषा अशुद्ध बन गई थी। अब भाषा बोलने और लिखने का अभ्यास हो गया है। इसलिए इस ग्रन्थ की भाषा व्याकरणानुसार शुद्ध करके दूसरी बार छपवाया है। कहीं-कहीं शब्द, वाक्य रचना का भेद हुआ है सो करना उचित था क्योंकि इसके भेद किये बिना भाषा की परिपाटी सुधरनी कठिन थी, परन्तु अर्थ का भेद नहीं किया गया है, प्रत्युत विशेष तो लिखा गया है। हां, जो प्रथम छपने मे कहीं-कहीं भूल रही थी वह निकाल-शोधकर ठीक कर दी गई है।

यह ग्रन्थ १४ समुल्लास अर्थात् चौदह विभागो मे रचा गया है। इसमे १० समुल्लास पूर्वार्द्ध और ४ उत्तरार्द्ध मे बने हैं, परन्तु अन्त के दो समुल्लास और पश्चात् स्वसिद्धान्त किसी कारण से प्रथम नहीं छप सके थे, अब वे भी छपवा दिये हैं।

१. प्रथम समुल्लास मे ईश्वर के ओंकारादि नामों की व्याख्या।

२ द्वितीय समुल्लास मे सन्तानो की शिक्षा।

३. तृतीय समुल्लास मे ब्रह्मचर्य, पठन-पाठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थो के नाम और पढने-पढ़ाने की रीति।

४. चतुर्थ समुल्लास मे विवाह और गृहाश्रम का व्यवहार।

५. पञ्चम समुल्लास मे वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम की विधि।

६ छठे समुल्लास मे राजधर्म।

७ सप्तम समुल्लास मे वेदेश्वर विषय।

८ अष्टम समुल्लास मे जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय।

९ नवम समुल्लास मे विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष की व्याख्या।

१० दशवें समुल्लास मे आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विषय।

११ एकादश समुल्लास मे आर्यावर्तीय मत-मतान्तर का खण्डन-मण्डन विषय।

१२ द्वादश समुल्लास मे चार्वाक, बौद्ध और जैन मत का विषय।

१३ त्रयोदश समुल्लास मे ईसाई मत का विषय।

१४ चौदहवें समुल्लास मे मुसलमानो के मत का विषय।

और चौदह समुल्लासो के अन्त मे आर्यों के सनातन वेदविहित मत की विशेषतः व्याख्या लिखी है, जिसको मैं भी यथावत् मानता हूँ।

मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्या-

सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए विद्वान् आप्तो का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यो के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द मे रहें। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य मे झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ मे ऐसी बात नहीं रखी है, और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। क्योंकि सत्योपदेश के विना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

इस ग्रन्थ में जो कहीं-कहीं भूल-चूक से अथवा शोधने तथा छापने में भूल-चूक रह जाय उसको जानने जनाने पर जैसा वह सत्य होगा वैसा ही कर दिया जायगा। और जो कोई पक्षपात से अन्यथा शङ्का वा खण्डन-मण्डन करेगा, उस पर ध्यान न दिया जायेगा। हां, जो वह मनुष्यमात्र का हितैषी होकर कुछ जनावेगा उसको सत्य-सत्य समझने पर उसका मत संगृहीत होगा।

यद्यपि आजकल बहुत-से विद्वान् प्रत्येक मतो में हैं वे पक्षपात छोड़, सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब मे सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानो मे विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो कि स्वार्थी मनुष्यो को प्रिय है, सब मनुष्यो को दुःखसागर में डुबा दिया है। इनमे से जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य मे धर प्रवृत्त होता है, उससे स्वार्थी लोग विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं। परन्तु "सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः" अर्थात् सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानो का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थप्रकाश करने से नहीं हटते। यह बड़ा दृढ़ निश्चय है कि "यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्" यह गीता का वचन है। इसका अभिप्राय यह है कि जो-जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म हैं वे प्रथम करने मे विष के तुल्य और पश्चात् अमृत के सदृश होते हैं। ऐसी बातो को चित्त मे धर के मैंने इस ग्रन्थ को रचा है। श्रोता वा पाठकगण भी प्रथम प्रेम से देख के इस ग्रन्थ का सत्य-सत्य तात्पर्य जानकर यथेष्ट करें।

इसमे यह अभिप्राय रक्खा गया है कि जो-जो सब मतो में सत्य-सत्य बातें हैं वे-वे सब मे अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो-जो मतमतान्तरो मे मिथ्या बातें हैं, उन-उन का खण्डन किया है। इसमे यह भी अभिप्राय रक्खा है कि सब मतमतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातो का प्रकाश कर विद्वान्-अविद्वान् सब साधारण मनुष्यो के सामने रक्खा है जिससे सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी होके एक सत्य मतस्थ होवें।

यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश मे उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता

हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतोन्नति वालों के साथ भी वर्तता हूँ। जैसा स्वदेशवालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी, तथा सब सज्जनों को भी वर्तना योग्य है। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं। क्योंकि जैसे पशु बलवान् होकर निर्बलों को दुःख देते और मार भी डालते हैं। जब मनुष्य शरीर पाके वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभावयुक्त नहीं, किन्तु पशुवत् हैं। और जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर परहानिमात्र करता है, वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।

अब आर्यावर्तियों के विषय में विशेषकर ग्यारहवें समुल्लास तक लिखा है। इन समुल्लासों में जो कि सत्यमत प्रकाशित किया है, वह वेदोक्त होने से मुझको सर्वथा मन्तव्य है और जो नवीन पुराण तन्त्रादि ग्रन्थोक्त बातों का खण्डन किया है, वे त्यक्तव्य हैं।

जो बारहवें समुल्लास में दर्शाया चार्वाक का मत यद्यपि इस समय क्षीणास्त-सा है, और यह चार्वाक बौद्ध-जैन से बहुत सम्बन्ध अनीश्वरवादादि में रखता है। यह चार्वाक सबसे बड़ा नास्तिक है। उसकी चेष्टा का रोकना अवश्य है। क्योंकि जो मिथ्या बात न रोकी जाय तो संसार में बहुत-से अनर्थ प्रवृत्त हो जावें। चार्वाक का जो मत है वह तथा बौद्ध और जैन का जो मत है, वह भी १२वें समुल्लास में संक्षेप से लिखा गया है। और बौद्धों तथा जैनियों का भी चार्वाक के मत के साथ मेल है और कुछ थोड़ा-सा विरोध भी है। और जैन भी बहुत-से अंशों में चार्वाक और बौद्धों के साथ मेल रखता है और थोड़ी-सी बातों में भेद है। इसलिए जैनों की भिन्न शाखा गिनी जाती है। वह भेद बारहवें समुल्लास में लिख दिया है, यथायोग्य वहीं समझ लेना। जो इसका भेद है सो बारहवें समुल्लास में दिखलाया है। बौद्ध और जैन मत का विषय भी लिखा है।

इनमें से बौद्धों के दीपवंशादि प्राचीन ग्रन्थों में बौद्धमत संग्रह, सर्वदर्शनसंग्रह में दिखलाया है, उसमें से यहाँ लिखा है और जैनियों के निम्नलिखित सिद्धान्तों के पुस्तक हैं, उनमें से—

४ मूल सूत्र, जैसे—१ आवश्यक सूत्र, २ विशेष आवश्यकसूत्र, ३ दशवैकालिकसूत्र, और ४ पाक्षिकसूत्र।

११ अङ्ग, जैसे—१ आचारांगसूत्र, २ सुगडांगसूत्र, ३ थाणांगसूत्र, ४ समवायांगसूत्र, ५ भगवतीसूत्र, ६ ज्ञाताधर्मकथासूत्र, ७ उपासकदशासूत्र, ८ अन्तगडदशासूत्र, ९ अनुत्तरोववाईसूत्र, १० विपाकसूत्र, और ११ प्रश्नव्याकरणसूत्र।

१२ उपाङ्ग, जैसे—१ उपवाईसूत्र, २ रायपसेनीसूत्र, ३ जीवाभिगमसूत्र, ४ पन्नवणासूत्र, ५ जम्बूद्वीपपन्नतीसूत्र, ६ चन्दपन्नतीसूत्र, ७ सूरपन्नतीसूत्र, ८ निरियावलीसूत्र, ९ कप्पियासूत्र, १० कपवडीसयासूत्र, ११ पूप्फियासूत्र, १२ पुप्फचूलियासूत्र।

५ कल्पसूत्र, जैसे—१ उत्तराध्ययनसूत्र, २ निशीथसूत्र, ३ कल्पसूत्र, ४ व्यवहारसूत्र, और ५ जीतकल्पसूत्र।

६ छेद, जैसे—१ महानिशीथबृहद्वाचनासूत्र, २ महानिशीथलघुवाचनासूत्र, ३ मध्यमवाचनासूत्र, ४ पिण्डनिरुक्तिसूत्र, ५ औघनिरुक्ति सूत्र, ६ पर्यूषणासूत्र।

१० पयन्नासूत्र, जैसे—१ चतुस्सरणसूत्र, २ पञ्चखाणसूत्र, ३ तन्दुलवैयालिकसूत्र, ४ भक्तिपरिज्ञानसूत्र, ५ महाप्रत्याख्यानसूत्र, ६ चन्दाविजयसूत्र ७ गणीविजयसूत्र, ८ मरणसमाधिसूत्र, ९ देवेन्द्रस्तवनसूत्र और १० संसारसूत्र। तथा नन्दीसूत्र, योगोद्धारसूत्र भी प्रामाणिक मानते हैं।

५ पंचाङ्ग, जैसे—१ पूर्व सब ग्रन्थों की टीका, २ निरुक्ति, ३ चरणी, ४ भाष्य, ये चार अवयव और सब मूल मिलके पञ्चांग कहाते हैं।

इनमें ढूंढिया अवयवों को नहीं मानते। और इनसे भिन्न भी अनेक ग्रन्थ हैं कि जिनको जैनी लोग मानते हैं। इनके मत पर विशेष विचार बारहवें समुल्लास में देख लीजिए।

जैनियों के ग्रन्थों में लाखों पुनरुक्त दोष हैं और इनका यह भी स्वभाव है कि जो अपना ग्रन्थ दूसरे मत वाले के हाथ में हो वो छपा हो तो कोई-कोई उस ग्रन्थ को अप्रमाण कहते हैं, यह बात उनकी मिथ्या है। क्योंकि जिसको कोई माने कोई नहीं इससे वह ग्रन्थ जैन मत से बाहर नहीं हो सकता। हां, जिसको कोई न माने और न कभी किसी जैनी ने माना हो तब तो अग्राह्य हो सकता है, परन्तु ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं है कि जिसको कोई भी जैनी नहीं मानता हो। इसलिए जो जिस ग्रन्थ को मानता होगा उस ग्रन्थस्थ विषयक खण्डन-मण्डन भी उसी के लिए समझा जाता है। परन्तु कितने ही ऐसे भी हैं कि उस-उस ग्रन्थ को मानते जानते हों तो भी सभा वा संवाद में बदल जाते हैं। इसी हेतु से जैन लोग अपने ग्रन्थों को छिपा रखते हैं और दूसरे मतस्थ को न देते, न सुनाते और न पढ़ाते, इसलिए कि उनमें ऐसी-ऐसी असंभव बातें भरी हैं जिनका कोई भी उत्तर जैनियों में से नहीं दे सकता। झूठ बात को छोड़ देना ही उत्तर है।

१३वें समुल्लास मे ईसाइयों का मत लिखा है। ये लोग बाइबिल को अपना धर्म पुस्तक मानते हैं। इनका विशेष समाचार उसी १३वें समुल्लास में देखिये और १४वें समुल्लास में मुसलमानों के मत विषय में लिखा है, ये लोग कुरान को अपने मत का मूल पुस्तक मानते हैं। इनका भी विशेष व्यवहार १४वें समुल्लास में देखिये। और इसके आगे वैदिक मत के विषय में लिखा है।

जो कोई इसे ग्रन्थकर्ता के तात्पर्य से विरुद्ध मनसा से देखेगा उसको कुछ भी अभिप्राय विदित न होगा। क्योंकि वाक्यार्थबोध में चार कारण होते हैं—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति और तात्पर्य। जब इन चारों बातों पर ध्यान देकर जो पुरुष ग्रन्थ को देखता है, तब उसको ग्रन्थ का अभिप्राय यथायोग्य विदित होता है।

"आकाङ्क्षा" किसी विषय पर वक्ता की और वाक्यस्थ पदों की आकांक्षा परस्पर होती है। "योग्यता" वह कहाती है जिससे जो हो सके, जैसे जल से सींचना। "आसत्ति" जिस पद के साथ जिसका सम्बन्ध हो उसी के समीप उस पद का बोलना वा लिखना। "तात्पर्य" जिसके लिए वक्ता ने शब्दोच्चारण वा लेख किया हो उसी के साथ उस वचन वा लेख को युक्त करना।

बहुत-से हठी-दुराग्रही मनुष्य होते हैं कि जो वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना किया करते हैं, विशेषकर मतवाले लोग। क्योंकि मतके आग्रहसे उनकी बुद्धि अन्धकार में फस के नष्ट हो जाती है। इसलिए जैसा मैं पुराण, जैनियो के ग्रन्थ, बाइबिल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर उनमें से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग तथा अन्य मनुष्य जाति की उन्नति के लिए प्रयत्न करता हूं, वैसा सबको करना योग्य है।

इन मतों के थोड़े-थोड़े ही दोष प्रकाशित किये हैं, जिनको देखकर मनुष्य लोग सत्यासत्य मत का निर्णय कर सकें और सत्य का ग्रहण तथा असत्य का त्याग करने-कराने में समर्थ होवें। क्योंकि एक मनुष्य जाति में बहका कर, विरुद्ध बुद्धि कराके, एक दूसरे को शत्रु बना लड़ा मारना विद्वानों के स्वभाव से बहिः है। यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान् लोग अन्यथा ही विचारेंगे तथापि बुद्धिमान् लोग यथायोग्य इसका अभिप्राय समझेंगे, इसलिए मैं अपने परिश्रम को सफल समझता और अपना अभिप्राय सब सज्जनों के सामने धरता हूं। इसको देख-दिखला के मेरे श्रम को सफल करें और इसी प्रकार पक्षपात न करके सत्यार्थ का प्रकाश करना मेरा वा सब महाशयों का मुख्य कर्त्तव्य काम है।

सर्वात्मा सर्वान्तर्यामी सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करे॥

अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वरशिरोमणिषु।

इति भूमिका॥

स्थान महाराणा जी का उदयपुर,

भाद्रपद शुक्ल पक्ष, संवत् १९३९

—(स्वामी) दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द की दार्शनिक मान्यतायें-२

–डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री–
रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी

(३) मुक्ति से पुनरावृत्ति

मुक्ति के विषय में महर्षि दयानन्द का विचार अत्यन्त गम्भीर और विचारमूलक है। यद्यपि दर्शनो में "तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्ग" (न्याय १/१/२२) "अथ त्रिविध दु:खात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः" (सांख्य १/१) इत्यादि सूत्रों द्वारा सब प्रकार के दु:खों की अत्यन्त निवृत्ति को मोक्ष का स्वरूप बताया गया है, मध्यकालिक आचार्यों ने "अत्यन्त" पद का यही अर्थ समझा कि उस प्रकार की दु:ख की निवृत्ति हो जाने पर जीवात्मा फिर कभी संसार-बन्धन में नहीं आता, परन्तु ऋषि दयानन्द ने बताया कि अल्पज्ञ, अल्पशक्ति जीवात्मा में वह सामर्थ्य कभी नही आता, जिससे अनन्त काल तक ब्रह्मानन्द का भोग करता रहे। इसलिए दर्शनों के एतद्विषयक "अत्यन्त" पद का अर्थ "अनन्त" न होकर "अत्यधिक" समझना चाहिये। वह काल इतना अधिक है कि उसके लिए "अत्यन्त" पद का प्रयोग अकल्पनीय अथवा असमञ्जस नहीं है।

ऋषि दयानन्द ने मुण्डक उपनिषद् ३/२/६ के

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः
संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले
परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे॥

के इस सन्दर्भ के अनुसार उतने मोक्षकाल को "परान्तकाल" कहा है तथा उसकी गणना कर अवधि भी बताई है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ९)। उपनिषद् के उक्त सन्दर्भ में "परामृतात्" पद के पंचम्यन्त पाठ में कुछ लोग सन्देह करते हैं और इसके स्थान पर "परामृता" यह प्रथमान्त पाठ ठीक समझते है, परन्तु यह सन्देह सर्वथा निराधार है। क्योकि यही पचम्यन्त पाठ नारायणोपनिषद् १२/३ में उपलब्ध होता है। सूत्र सहिता की सायण-माधव कृत व्याख्या में मुण्डक से उद्धृत इस सन्दर्भ के उक्त पद का पञ्चम्यन्त पाठ दिया गया है। इससे पञ्चम्यन्त पाठ की प्रामाणिकता स्पष्ट है। इसके अनुसार प्राचीन ऋषियों की भावना मुक्ति से पुनरावृत्ति की रही है, यह स्पष्ट होता है। महर्षि कपिल ने मुक्ति से पुनरावृत्ति की भावना को सांख्य सूत्रों (१/१५९-६०) में भी अभिव्यक्त किया है। यह संसार अनादि काल से जैसा चला आया है, भविष्य में भी वैसा चलता रहेगा। अभी तक के समान इसका अत्यन्त उच्छेद सम्भव नहीं। इदानीमिव सर्वत्र नात्यन्तोच्छेदः' (सांख्य १।१५९) अर्थात् अत्यन्त मोक्ष नही होता। जैसे वर्त्तमान समय में जीव बद्ध और मुक्त हैं, वैसे ही सदा रहते हैं। बन्ध और मुक्ति का अत्यन्त उच्छेद (नाश) कभी नहीं होता। क्योंकि जब जीव का ज्ञान परिमित है, तब उस ज्ञान का जो फल है, वह अपरिमित या अनन्त कैसे हो सकता है?

(४) वैदिक दर्शन ईश्वरवादी हैं

यह कहना नितान्त अशुद्ध है कि कतिपय दर्शनों में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया। इस प्रसंग में विशेष रूप से सांख्य पूर्वमीमांसा और वैशेषिक दर्शन का नाम लिया जाता है। सांख्य में केवल उपादानभूत

ईश्वर को अस्वीकार किया गया है। सांख्य का प्रसिद्ध सूत्र "ईश्वरासिद्धेः" इसी विषय का उपपादन करता है। तात्पर्य है—ईश्वर जगत् का उपादान कारण नहीं हो सकता। उसके अधिष्ठाता और निमित्त कारण होने का उपपादन सांख्य में "तत्सन्निधानादधिष्ठातृत्व मणिवत्" (सां० सू० १।६६) "स हि सर्ववित् सर्वकर्त्ता" (सां० सू० ३।५६) "ईदृशेश्वरसिद्धिः सिद्धा" (सां० सू० ३।५७) और ५।२।१२ तक में किया गया है। इसके लिए ईश्वरकृष्णरचित सांख्यकारिका १७ एव ६१ के व्याख्या ग्रन्थ भी द्रष्टव्य हैं। पूर्वमीमांसा में ईश्वर निषेध में कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं होते। फलप्राप्ति में कार्य की प्रधानता को दिखाने से मध्यकालीन व्याख्याकारों ने उसका ऐसा अभिप्राय समझा कि शास्त्रकार ईश्वर के अस्तित्व को फलप्रदाता व जगत्कर्त्ता के रूप में स्वीकार नहीं करता, जब कि अन्य कोई प्रयोजन उसके अस्तित्व में बताया नहीं जाता। वस्तुतः जगत्सर्ग का विवरण देना मीमांसा का अपना प्रतिपाद्य विषय नहीं। इस सम्बन्ध में उसे कुछ भी कहना अनपेक्षित था। फल प्राप्ति में कर्म की प्रधानता भले ही रही पर इससे ईश्वर के अस्तित्व का निषेध नहीं होता, न मीमांसा शास्त्रकार का ऐसा अभिमत है।

वैशेषिक [१०।२।६] में स्पष्ट ईश्वरोक्त होने से वेद का प्रामाण्य बताया गया है। इस विषय में सूत्र १।१।३ भी द्रष्टव्य है। सूत्रकार ने २।१।१८ सूत्र में भी इस मान्यता की ओर संकेत किया है। वैशेषिक दर्शन के प्रशस्तपाद भाष्य के सर्गोत्पत्ति प्रसंग में जगत्कर्त्तारूप से महेश्वर का स्पष्ट निर्देश किया गया है। फलत सभी दर्शनों में ईश्वर के अस्तित्व को बिना किसी विरोध के स्वीकार किया गया है। मूल दर्शनों की इस भावना को शताब्दियों के अनन्तर ऋषि दयानन्द ने सुझाया।

(६) षड्दर्शन समन्वय

पर्याप्त समय से विद्वानों में यह धारणा रही है कि भारतीय वैदिक षड्दर्शन एक-दूसरे का विरोध करते है। वस्तुतः शास्त्रकारों की कभी यह भावना नहीरही कि वेकिसी अन्य दर्शन का विरोध करे। साम्प्रदायिक व्याख्याकारों ने विरोध की दीवारों को जितना दृढ बना डाला है, उसे देखते हुए दर्शनों के समन्वय का मार्ग जिस सुविधा और सरलता से ऋषि ने प्रशस्त किया वह एक चमत्कार ही है। महर्षि के ही शब्दों में—"छह शास्त्रो में अविरोध देखो इस प्रकार है मीमांसा में – ऐसा कोई भी कार्य जगत् में नही होता कि जिसके बनाने मे "कर्म" चेष्टा न की जाये। वैशेषिक में – समय न लगे बिना बने ही नही। न्याय में उपादान कारण न होने से कुछ भी नही बन सकता। सांख्य में तत्त्वों का मेल न होने से नही बन सकता और वेदांत में बनाने वाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न नही हो सके, इसलिए सृष्टि छह कारणों से बनती है। उन छह कारणों की व्याख्या एक-एक की एक शास्त्र में है। इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नही। सृष्टिरूप कार्य की व्याख्या छह शास्त्रों ने मिलकर पूरी की है" (सत्यार्थप्रकाश अष्टम समु०) जैसा एक विद्या में अनेक विद्याओ के अवयवो का एक-दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न-भिन्न छह अवयवों का छह शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नही।" (तृतीय समुल्लास—सत्यार्थप्रकाश) इस विवरण का तात्पर्य है—विरोध एक ही विषय में मतभेद होने के कारण उभरता है, परन्तु इन दर्शनों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय अलग-अलग

[शेष पृष्ठ १६ पर]

इतिहास के पृष्ठों से

बलात् काट-छांट के लिए सत्यार्थप्रकाश की जांच असह्य

जब्ती की मांग पर छठे आर्य महासम्मेलन का प्रस्ताव

सन् १९४३ मे मुस्लिम लीग ने माग की कि सत्यार्थप्रकाश को जब्त कर लिया जाये, क्योकि इसके चौदहवे समुल्लास मे ऐसी बात लिखी गई है, जिनसे मुसलमानो की धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुचती है। इस पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिल्ली मे (छठा) आर्य महासम्मेलन बुलाया इस सम्मेलन मे सत्यार्थप्रकाश जब्त करने की माग के सम्बन्ध मे जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, वह नीचे दिया जा रहा—

अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन का यह अधिवेशन बहुत गम्भीरता से अनुभव करता है कि मुस्लिम लीग (जो अपने को राजनैतिक सस्था कहती है) की ओर से हिन्दुओ की धार्मिक स्वतन्त्रता मे हस्तक्षेप करने का सगठित प्रयत्न किया जा रहा है और सत्यार्थप्रकाश का विरोध इस आन्दोलन का प्रारम्भमात्र है।

लाखो मनुष्य सत्यार्थप्रकाश के प्रति वैसी ही श्रद्धा और भक्ति की भावना रखते हैं, जैसी किसी भी धर्मग्रन्थ के प्रति उसके अनुयायियो में होती है। यह ग्रन्थ साठ वर्ष (अब एक सौ चार वर्ष—सम्पादक) से जनता के समक्ष है। इसका भारतवर्ष की भिन्न-भिन्न भाषाओ मे अनुवाद और प्रकाशन हो चुका है और देश भर में डंके की चोट इसका प्रचार होता रहा है। आर्यसमाज के बहुसख्य मचो पर यह व्याख्यानो का विषय रहा है। सत्सगो में इसका नित्य पाठ होता है, परन्तु इस पर देशवासियो के किसी भी वर्ग की ओर से आपत्ति नही उठाई गई।

यह सम्मेलन घोषणा करता है कि सत्यार्थप्रकाश में अन्य मतो अथवा सम्प्रदायो की समालोचना के रूप मे ऐसी कोई बात नही कही गई, जो अन्य मतावलम्बियो के धर्मग्रन्थो में विद्यमान न हो।

कहा जाता है कि सत्यार्थप्रकाश का विरोध इसलिए है कि इससे मुसलमानो की धार्मिक भावना को आघात पहुचता है, परन्तु यह बात ठीक नही। इसके पीछे तो स्पष्ट रूप से राजनैतिक चाल दृष्टिगोचर हो रही है। आर्यसमाज सर्वदा शास्त्रार्थ द्वारा सत्यासत्य का निर्णय करने के लिए उद्यत रहा है। परन्तु आर्यसमाज किसी प्रकार भी यह सहन नही कर सकता कि बलात् काट-छाट करने के प्रयोजन से किसी को भी सत्यार्थप्रकाश की जाच करने का अधिकार हो। ऐसी जाच का स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि अत्यन्त भीषण आन्तरिक झगडे उत्पन्न हो जायगे और अन्य मतावलम्बियो के धर्मग्रन्थो की इस प्रकार की समीक्षा के लिए भी द्वार खुल जायेगा।

इस सम्मेलन को आशा है कि न केवल सभी हिन्दू अपितु अन्य मतावलम्बी भी मुस्लिम

लीग के इस आन्दोलन के गम्भीर और भयावह परिणामो पर पूर्णरूपेण विचार करेगे। सत्यार्थ-प्रकाश का वर्त्तमान विरोध प्रारम्भमात्र है और हिन्दुओ व अन्य मतावलम्बियो के धर्म-ग्रन्थो मे हस्तक्षेप करने की दिशा मे प्रथम पग है। सभी मनुष्यो का, चाहे वे किसी भी मत, धर्म, सम्प्रदाय या जाति के क्यो न हो, कर्त्तव्य है कि इस आन्दोलन का तत्काल दृढतापूर्वक एव सगठित रूपेण विरोध करे।

यह सम्मेलन स्पष्ट घोषणा करता है कि सामान्यत हिन्दू जगत् और विशेषत आर्यसमाज अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने के लिए कोई कसर उठा न रखेगा और अपना सर्वस्व त्याग करने के लिए उद्यत रहेगा।

इस सम्मेलन की धारणा है कि मुस्लिम लीग की माग का मुख्य उद्देश्य यह है कि सरकार और आर्यसमाज तथा हिन्दुओ और मुसलमानो के मध्य गहरा विरोध उत्पन्न हो जाये। इस सम्मेलन का विचार है कि मुस्लिम लीग अपने इस उद्देश्य की पूर्त्ति मे अवश्य विफल होगी।

इस सम्मेलन को पूर्ण आशा है कि ब्रिटिश सरकार, जिसकी प्रारम्भ से ही धार्मिक तटस्थता की निश्चित नीति रही है, मुस्लिम लीग के जाल मे फसकर आर्यसमाज के धार्मिक अधिकारोमे पक्षपातपूर्ण हस्तक्षेप करना कदापि स्वीकार न करेगी।

प्रस्तावक—श्री पडित गगाप्रसाद जी एम०ए०, प्रधान, सार्वदेशिक सभा।

अनुमोदक—श्री पडित इन्द्रजी विद्यावाचस्पति, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा।

समर्थक—गोस्वामी गणेशदत्त जी, प्रधानमन्त्री, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, लाहौर, सरदार विचित्रसिंह जी, बाबा मिलखासिंह जी, कविराज हरनामदास जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, प० बुद्धदेव जी विद्यालकार, कुवर चादकरण जी शारदा, राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री, श्री पडित रामचन्द्र जी देहलवी, पडित ठाकुरदत्त जी शर्मा, श्रीमती अक्षयकुमारी देवी जी इत्यादि। ●

दार्शनिक मान्यतायें

(पृष्ठ १४ का शेष)

है। सृष्टिविज्ञान की स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए अर्थोपपादन का स्तर भी कही-कही पद्धति भेद का कारण होता है। जैसे न्याय-वैशेषिक सृष्टि के स्थूल स्तर का विवेचन प्रस्तुत करते है, जब कि साख्य अतिसूक्ष्म, पूर्ण मूलभूत स्तर तक का विवरण देता है। योग केवल उस प्रक्रिया को बतलाता है, जिससे प्रकृति, पुरुष अथवा जड-चेतन के भेद का साक्षात्कार होता है। न्याय और वैशेषिक मे भी वैशेषिक स्थूल स्तर के पदार्थ और उनके गुण-धर्मों का विवेचनपूर्वक स्वरूप बताता है, जब कि न्याय उनके जानने के लिए केवल "प्रमाण" रूप मे उस पद्धति का वितृत निरूपण करता है। मीमासा कर्म प्रतिपादन द्वारा सामाजिक सघटन तथा वेदान्त समस्त वेदो के मुख्य प्रतिपाद्य ब्रह्म का निरूपण प्रस्तुत करना है।

षड्दर्शनो की इस समन्वय बुद्धि से यह भलीभाति सिद्ध है कि न्याय-वैशेषिक साख्य-योग और दोनो (पूर्व तथा उत्तर) मीमासाय सभी दर्शन एक ही तत्त्वज्ञान के प्रतिपादक हैं। न्याय और वैशेषिक हीन श्रेणी का तत्त्वज्ञान है और उत्तरमीमासा (वेदान्त दर्शन) उच्चतम तत्त्वज्ञान है, यह आस्था समन्वयात्मक भावना के सर्वथा विपरीत है। साख्य को नास्तिक मानना, योग के ईश्वर को पुरुष विशेष की सज्ञा देकर तिरस्कृत करना, न्याय के तर्कशास्त्र को तत्त्वज्ञान के लिए भ्रमात्मक या अविश्वसनीय मानना वैदिक दर्शन की यथार्थता के विरुद्ध है। ●

फरवरी १९४४ में सम्पन्न आर्य महासम्मेलन में डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी का

अध्यक्षीय भाषण

आपका पंचम आर्य महासम्मेलन कार्यक्रमों तथा कार्यों पर विचार करने तथा विशेष परिस्थितियो का सामना करने के लिए हिन्दू समाज के अधिकारों से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के विषय में आर्य जनों का मत-निर्धारण करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आमन्त्रित किया जाता है। हमारे देश के जीवन की बहुत ही पेचीदा घड़ी उपस्थित है। एक ओर मानवीय सभ्यता की जडों को खोखला किया जा रहा है। देश के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक अधिकार भी खतरे में पड़े हैं।

आज मुझे राष्ट्र की जागृति के लिए आर्य-समाज द्वारा किये गये महान् कार्यों के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने का अवसर मिला है। इस समय हमारी प्यारी मातृभूमि के घटनापूर्ण इतिहास में भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर बराबर आक्रमण हो रहे हैं। पराधीन होते हुए समय-समय पर ऐसे महात्मा, ऋषि और आचार्य जन्म लेते रहे हैं, जो अपने विचारों व कार्यों के प्रभाव से जाति को गिरावट से बचाकर उसके मन में नये जीवन का संचार करते रहे हैं। हमारी जाति में अनेक श्रेष्ठ महापुरुष जन्म लेते रहे हैं, जो विचार और कार्य्य की दृष्टि से वीर कहलाने के अधिकारी थे। हिन्दू, बौद्ध, जैन, राजा, संरक्षक और धर्मगुरु, महान् सिद्ध और भक्त, ईश्वर भक्ति के मद में मस्त सन्त और भक्त ऐसे अटल विद्वान् आचार्य, जिन्होंने अपने बुद्धि बल से धर्म राज्य की स्थापना का प्रयत्न किया। ऐसे सन्त और साधु, वैरागी, जिन्होने मुसलमानों द्वारा भारत की विजय के पश्चात् उत्पन्न होकर मुसलमान सूफियों और फकीरों का स्वागत किया। जिन्होंने भारतीय सभ्यता की जबर्दस्त भावना के अनुरूप त्याग, सेवा और भक्ति का सन्देश ससार को सुनाया। ऐसे सब महापुरुष समय-समय पर आकर जाति को नाश से बचाते और जीवन का मार्ग दिखाते रहे।

फ्रान्स के महान् तत्त्वदर्शी रोमां रोलां का यह कथन सर्वथा सत्य है कि महर्षि दयानन्द ने भारत के शक्तिशून्य शरीर में अपनी दुर्धर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह सदृश पराक्रम फूंक दिये हैं।

ऋषि ने अपने देश के निवासियों तथा समस्त विश्व को सत्यार्थप्रकाश के रूप में जो अविनश्वर वसीयत दी है, वह उनकी प्रकाण्ड प्रतिभा का प्रतीक है। इस ग्रन्थ मे वह हमारे सम्मुख एक उत्पादक कलाकार, समीक्षक, संहारक और निर्माता के रूप में प्रकट हुआ है। वेदों में प्रतिपादित स्वाधीनता, समानता तथा सत्य के शाश्वत सिद्धान्तों में उसकी अविचल निष्ठा थी। वे अज्ञान, हठधर्मिता और मिथ्या विश्वासों के दुर्ग पर अविश्रान्त प्रहार करते रहे। उन्हें अपने प्रगतिशील विचारों का साथ देने में असमर्थ अपने देशवासियों के प्रभावशाली वर्ग के विरोध का सामना करना पड़ा। परन्तु वे अपने विश्वासानुमोदित सत्य मार्ग पर अविचल रहे और उन्होंने लक्ष्य के प्रति अपनी

विमल निष्ठा और विश्वास के प्रति अपने अप्रहित साहस के साथ पोषण की कि सत्य को सत्य के रूप मे और असत्य को असत्य के रूप मे प्रतिपादित करना ही सत्य का यथार्थ रूप है। असत्य को सत्य के तथा सत्य को असत्य के रूप मे प्रकट करना सत्य का प्रकाशन नही है।

ऋषि ने अपने महान् दर्शन सत्यार्थप्रकाश में एक ऐसे पुनर्गठित समाज का रूप उपस्थित किया है, जिसे स्वतन्त्र भारत वर्तमान परिस्थितियो तथा अवस्थाओ मे स्वकीय सस्कृति तथा सभ्यता की अमूल्य परम्पराओ के साथ समस्वर करके ही उसका निर्माण कर सकता है।

आज मुस्लिम लीग माग कर रही है कि सत्यार्थप्रकाश को जब्त कर लिया जाये, क्योकि इसके कुछ अश कुछ मुसलमानो की दृष्टि मे आपत्तिजनक है। अब यह सोचना आपका काम है कि ऐसी अनुचित और दुष्टतापूर्ण असहिष्णुता के प्रतीकार के लिए क्या उपाय किये जाये। वस्तुत यह आन्दोलन ही स्वय सत्य, साहस और विवेक के विचारो से परिपूर्ण उस ग्रन्थ को अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने मे सहायक होगा, जिसने लाखो आत्माओ को शक्ति व मुक्ति प्रदान की है और इस प्रकार इस ग्रन्थ ने जीवन्मुक्ति के उस भारतीय महालक्ष्य की सिद्धि मे सहायता दी है, जिसके लिए उसके प्रणेता ने अपना जीवन लगाया और प्राणो की भी आहुति दी।

आर्यसमाज के अनुयायियो के दृढ सगठन को जानते हुए ही मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि यदि हमारे धार्मिक अधिकारो मे हस्तक्षप करने का कोई भी दुष्प्रयत्न किया गया तो उसे परिणाम की चिन्ता किये बिना साहस और सगठित प्रतिरोध के बल पर छिन्न-भिन्न कर दिया जायेगा। मैं तो यहा तक कहने को तैयार हूँ कि सम्पूर्ण हिन्दू जाति और उसके सम्प्रदाय, वस्तुत धार्मिक मतवादो के रहते हुए भी सभी विचार स्वातन्त्र्य प्रेमी ऐसे हमले को चुनौती के रूप मे स्वीकार करेगे। हमे मुस्लिम लीग द्वारा की गई ऐसी बेहूदा माग के कारणो को नही भुला देना चाहिए। इसका कारण जहा एक ओर हमारे आपसी मतभेद और अपने पवित्र धर्मग्रन्थो आदि के प्रति उपेक्षा का भाव है, वही दूसरी ओर भारतवर्ष को गुलाम बनाये रखने के लिए हमारे शासको द्वारा प्रजा के एक भाग से पक्षपात करने की दुर्नीति भी है। ●

सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास की अनुभूमिका

—●—

जो यह चौदहवां समुल्लास मुसलमानों के मतविषय में लिखा है, सो केवल कुरान के अभिप्राय से, अन्य ग्रन्थ के मत से नहीं, क्योंकि मुसलमान कुरान पर ही पूरा-पूरा विश्वास रखते हैं, यद्यपि फिरके होने के कारण किसी शब्द, अर्थ आदि विषय में विरुद्ध बात है तथापि कुरान पर सब ऐकमत्य हैं। जो कुरान अरबी भाषा में है उस पर मौलवियों ने उर्दू में अर्थ लिखा है, उस अर्थ का देवनागरी अक्षर और आर्य भाषान्तर कराके पश्चात् अरबी के बड़े-बड़े विद्वानों से शुद्ध करवा के लिखा गया है। यदि कोई कहे कि यह अर्थ ठीक नहीं है तो उसको उचित है कि मौलवी साहबों के तर्जुमों का पहिले खण्डन करे पश्चात् इस विषय पर लिखे। क्योंकि यह लेख केवल मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय के लिए सब मतों के विषय का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान होवे, इससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक-दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों का ग्रहण करें। न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ-मूठ बुराई वा भलाई लगाने का प्रयोजन है किन्तु जो-जो भलाई है वही भलाई और जो बुराई है वही बुराई सबको विदित होवे। न कोई किसी पर झूठ चला सके और न सत्य को रोक सके और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किये जाने पर भी जिसकी इच्छा हो वह न माने वा माने। किसी पर बलात्कार नहीं किया जाता। और यही सज्जनों की रीति है कि अपने वा पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें और हठियों का हठ, दुराग्रह न्यून करें, करावें क्योंकि पक्षपात से क्या-क्या अनर्थ जगत् में न हुए और न होते हैं। सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षणभंग जीवन में पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्य को रखना मनुष्यपन से बहिः है।

इसमें जो कुछ विरुद्ध लिखा गया हो उसको सज्जन लोग विदित कर देंगे। तत्पश्चात् जो उचित होगा तो माना जायगा क्योंकि यह लेख हठ, दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वाद-विवाद और विरोध घटाने के लिए किया गया है न कि इनको बढ़ाने के अर्थ। क्योंकि एक-दूसरे की हानि से पृथक् रह परस्पर को लाभ पहुंचाना हमारा मुख्य कर्म है। अब यह चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों का मत सब सज्जनों के सामने निवेदन करता हूं। विचार कर इष्ट का ग्रहण, अनिष्ट का परित्याग कीजिये।

अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वर्य्येषु ।।

इत्यनुभूमिका ।।

सिन्ध के आर्य सत्याग्रह की समाप्ति पर महा. नारायण स्वामी जी का वक्तव्य

दिल्ली, २५-१-४७। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर के प्रधान श्री खुशहालचन्द जी आनन्द, आर्य प्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रांतके प्रधान श्री राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री जी और आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा के प्रधान श्री कुंवर चादकरण जी शारदा के साथ सत्यार्थप्रकाश पर लगे प्रतिबन्ध की प्रक्रियाओं का स्वयं निरीक्षण करने के उद्देश्य से ३ जनवरी १९४७ को मैं कराची पहुंचा था।

कराची मे अपने निवास काल के समय मैंने देखा कि बहुत-से आर्य भाइयों और अन्य व्यक्तियों के पास खुले रूप मे सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां थी। कुछ भाई इस पुस्तक को थैलों में लिये घूमते थे। इस प्रतिबन्ध के लगने से पूर्व जिस प्रकार आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों मे सत्यार्थप्रकाश की कथायें हुआ करती थीं, उसी प्रकार अब भी कथायें हुई। मकर संक्रान्ति के पवित्र दिन १४-१-४७ को सात सत्याग्रहियों ने सिन्ध के प्रधान मन्त्री को निम्नलिखित पत्र भेजकर प्रतिबन्ध तोड़ा—

ससार जानता है कि सत्यार्थप्रकाश आर्यसमाज का धर्मग्रन्थ है। वह हमारे लिए उतना ही पवित्र है, जितना ईसाइयों के लिए बाइबिल और मुसलमानों के लिए कुरआन। सिन्धी सत्यार्थप्रकाश की जब्ती के लिए प्रचारित सिन्ध सरकार की आज्ञा हमारे धार्मिक अधिकारों और स्वतन्त्रता पर जानबूझ कर किया गया आक्रमण है।

इस पवित्र ग्रन्थ को अपने पास रखने और उससे धार्मिक तथा आध्यात्मिक लाभ उठाने का हमारा अपरिहार्य अधिकार है, जिस पर हम गर्व करते हैं।

कहने की आवश्यकता नही कि हमारे पास सिन्धी भाषा मे पवित्र सत्यार्थप्रकाश विद्यमान है और इस ग्रन्थ से वंचित करने के किसी के भी अधिकार से हम इनकार करते हैं। हम कराची में एक सप्ताह ठहरेंगे।

इस पत्र के आने के पश्चात् सहस्रों व्यक्तियों ने प्रधान मन्त्री को इस प्रकार का पत्र भेजने की अनुमति मुझ से मांगी। कराची के लिए रवाना होने के लिए प्रतिदिन बहुत-से तार भी मुझे मिलते रहे। परन्तु इस आन्दोलन को यथासम्भव अधिक से अधिक शान्ति से चलाने की मेरी नीति रही है। इसी कारण मैं आने वाले सत्याग्रहियों को प्रेरणा करता रहा हूं कि मेरी स्पष्ट आज्ञा के बिना कोई भी अपने स्थान से न चले। इसी कारण मैंने प्रत्येक प्रकार से प्रदर्शन को रोका। न कोई जुलूस निकाले गये और न कोई विशेष सभायें की गई।

आज सात दिन समाप्त हो गये हैं। सरकार ने सत्याग्रहियों के पत्र का नियमित उत्तर नहीं दिया। २२ जनवरी १९४७ के सिन्ध आब्जर्वर और हिन्दुस्तान में प्रकाशित होम मिनिस्टर श्री बुन्देअली खां तालपुर के साथ प्रेस प्रतिनिधियों की भेंट की रिपोर्ट से इस विषय में सरकारी निर्देशों की सूचना मिल जाती है।

रिपोर्ट से स्पष्ट है कि सरकार का इरादा उन व्यक्तियों के विरुद्ध कोई कार्रवाई करने का नहीं, जिन्होंने खुले तौर पर यह घोषणा कर दी थी कि उनके पास उक्त पुस्तक की प्रतियां विद्यमान हैं। इसका अर्थ यह है कि सत्यार्थप्रकाश पर क्रियात्मक रूप से प्रतिबन्ध नहीं है और आर्यसमाजी अपने धर्मग्रन्थ का बिना किसी बाधा के प्रयोग तथा अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता का उपभोग कर सकते हैं।

अतः मैं सत्याग्रह बन्द कर करता हूं। मुझे विश्वास है कि सरकार की वर्तमान नीति जारी रहेगी और मेरे धर्म भाइयों को शिकायत का मौका न दिया जायेगा। यदि सरकार हस्तक्षेप न करने की वर्तमान नीति से हटेगी तो आर्यसमाज पुनः सत्याग्रह जारी करने के लिए विवश होगा।

(सार्वदेशिक साप्ताहिक के जनवरी १९४७ के अंक से)

सत्यासत्य निर्णय

बिस्मिल्ला ही गलत : मुहावरे की पृष्ठभूमि

—पं० शिव शर्मा जी महोपदेशक, संभल—

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने चौदहवें समुल्लास में १५९ संख्या में आक्षेप किये हैं। सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार कहती है कि महर्षि जी ने अर्थ अशुद्ध किये हैं और साथ-साथ आक्षेप भी अनुचित किये हैं।

स्मरण रहे कि महर्षि जी के समय में कुरान की जो-जो टीकायें विद्यमान थी, इनके अनुसार आक्षेपकर्त्ता का दोष नहीं। आगे चलकर चाहे और किसी प्रकार के अर्थ अथवा आशय अन्य मौलवियों ने किये या निकाले हों, उनका भार पूर्व आक्षेपकर्ता के कन्धों पर नहीं। उनके उत्तर तत्कालीन आर्य विद्वान् दे सकते हैं। पूर्व के टीकाकारों और 'भाष्यकारों का उत्तरदायित्व स्वयं उन टीकाकारों और भाष्यकारों पर है।

बिस्मिल्ला ही गलत

पहला आक्षेप महर्षि जी ने "बिस्मिल्ला" पर ही किया है और यह पूछा है कि वह कौन-सा दूसरा अल्लाह है जो कुरान को अल्लाह के नाम से आरम्भ करता है?

महात्मा गांधी जी ने भी यही महर्षि जी की समीक्षा पर दोष दिया था कि सारे ही मुसलमान टीकाकार शुरू साथ नाम अल्लाह के करते हैं।

परन्तु महर्षि जी ने "शुरू करता हूँ" यह अपनी ओर से कैसे लिख दिया? वास्तव में यह महर्षि जी पर दोषारोपण उस समय के टीकाकारों की टीका न देखने से ही किया गया है।

ज्ञात होता है कि महर्षि जी ने शाह रफीउद्दीन मुहद्दिस की टीका का अनुसरण किया है। शाह जी अपनी टीका में यही अनुवाद करते हैं। "शुरू करता हूं साथ नाम अल्लाह बख्शीश करने वाले मेहरबान के" हम इसकी पुष्टि मे कुरान से ही सिद्ध करते हैं कि शाह जी और महर्षि जी दोनों ही ने ठीक अर्थ किये हैं। कुरान मे सूरए "नम्ल" ब्यूटी हैं।

उसमें ह० सुलेमान के मलिक बिलकौन को एक चिट्ठी लिखने की चर्चा है। यह मलिका यमन बादशाह शरासैल की बेटी थी। उसके वीर्य से एक परी के पेट से कन्या उत्पन्न हुई थी। उस कन्याका नाम "बिलकैंस रक्खा गया। शरासैल के कोई पुत्र न था। इसलिए यह कन्या बिलकैंस ही राज्य की अधिकारिणी बनी थी। इस पर ह० सुलेमान मोहित हो गये थे। ह० सुलेमान ने इसके पास एक आज्ञापत्र भेजा था कि तू मुझ से विवाह कर ले। उस पत्र के आरम्भ में मुन्शी ने यह लिखा था—

"इन्नहू मिन सुलैमान व इन्नहू बिस्मिल्ला हिरर्हमानि-र्रहीमे अल्लाह तअलू अलैल्लय वासूनी मुस्लिमीनी
॥ सू० नम्ल स० १ ॥

अर्थात् बेशक यह खत सुलमान की तरफ से है, और यह लिखा है खुदा ताला के नाम से, जो वह खुदा ताला बड़ा मेहरबान रहम करने वाला है, और मुद्दआ खत का यह है कि वो बड़ाई अपनी न कर मुझ पर और आनकर हाजिर हो तावेदार हुकम मानने वाली होकर तफसील मूज: सफा ९३८

तफसीर मुबारकुर तंजील में इसका नाम शरीहील लिखा है।

दूसरा कारण और भी है—सुलह हुदैबिया के समय हजरत ने "बिस्मिल्लाह" लिखवाई थी। सहील मक्की अफसर ने कहा यह ठीक नहीं है। "बिस्मकल्लहुम" साथ नाम तेरे जो अल्लाह है,

लिखो। ह० अली ने अपने हाथ से "बिस्मिल्लाह" कर दी।

कहने का आशय यह कि यह बिस्मिल्लाह क़ुरान के आने से पूर्व ही विद्यमान थी। अतः यह क़ुरान ने दूसरे से—सुलैमान के मुन्शी से ली है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि मनुष्य भी अल्लाह के समान फ़सीह—ललित भाषा लिख सकता है। फिर क़ुरान की फ़साहत की क्या विशेषता रही ? ह० सुलैमान के मुन्शी की भाषा में भी यह अपनी कृति नहीं, क्योंकि ह० सुलैमान से पूर्व यह जिन्दावस्था की भाषा में इस प्रकार विद्यमान है जैसा आतिशपरस्तों की शुरू किताब में है कि "बनाम एजद बख्शाइन्दः बख्शायशगर" जो बजिन्सहू बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम" के मानी हैं।

देखो—तफ़जीहुल काजिबीन सैयद अमीर काजिम की लिखित, रयाजे फ़ैज छापेखाने नगीने में छपी सफ़ा ३१ ॥ यह सैयद साहब भी नगीना निवासी थे।

यही आक्षेप पादरी साहबान ने किया है। देखो "फ़साहतुल क़ुरान" पंजाब रिलिजियस बुक सोसायटी छपी फ़ैज बख्श प्रेस, फ़ीरोजपुर शहर सन् १९०९ ई० स० ९९, ६० ॥

बिस्मिल्लाह क़ुरान का भाग नहीं है

साहेब मावरक लिखते हैं "मदीनः बसरः" और के कारियों—क़ुरान पाठकों और फ़ुकहा का कौल है कि "बिस्मिल्लाह" न सू० फ़ातिहा का कोई भाग है और न किसी क़ुरान की सूरत का।

इसको वहां इसलिए लिख दिया गया है कि सूरतें अलग-अलग हो जावें या आरम्भ में बरकत के विचार से। और इमाम आजम (अबूहनीफ़ा) और उनके अनुयायियों का भी यही मत है और इसी कारण वे लोग बिस्मिल्लाह को नमाज में नहीं पढ़ते। साहबे मबारक कहते हैं कि सू० फ़ातिहा का आरम्भ अलहम्द से हुआ, जो इस बात का प्रमाण है कि बिस्मिल्लाह सू० फ़ातिहा का भाग नहीं। और यदि सू० फ़ातिहा का भाग नहीं तो यह सिद्ध हुआ कि अन्य सूरतों का भी भाग नहीं होसकता। वास्तव में यह बिस्मिल्लाह" ह० सुलेमान के मुन्शी ने पारसियों से ली है। हदीस में ह० अब्बास का कथन और स्वयं श्री हजरत का वचन भी "इतकान" में बिस्मिल्लाह" की बहस में विद्यमान हैं।

क़ुरान में बिस्मिल्लाह ११४ बार आई है—११३ बार सूरतों के आरम्भ में और एक बार सू० नमूल में। सब स्थानों पर अलिफ़ के बिना ऐसा पाठ आया है।

परन्तु एक स्थान पर सू० अलक़ में अलिफ़ सहित ऐसा लिखा है। परन्तु हम पूछते हैं कि ११४ स्थानों पर अलिफ़ का लोप क्यों किया गया ? अरबी के व्याकरण का कौन-सा विषय है ? वास्तव में इसका रूप है—"ब+इस्म=साथ नाम "इस्म" के अलिफ़ अक्षर का लोप कैसे हुआ।

इसलिए यह कहावत विख्यात हो गई कि "बिस्मिल्ला ही गलत"। लेख का सारांश यह है कि "बिस्मिल्ला" वाक्य क़ुरान से पूर्व इस ही रूप में विद्यमान था, जिसे सुलेमान के मुन्शी ने लिखा था। अतः यह मनुष्य का वाक्य अच्छा जानकर क़ुरान कर्ता ने क़ुरान में सम्मिलित कर लिया।

सुलेमान से भी पूर्व पारसियों की जिन्दावस्था में उनकी भाषा में विद्यमान था।

स्वर्गीय प्रो० श्रीप्रकाश : एक विनम्र श्रद्धांजलि

२३ नवम्बर (रविवार) को कानपुर में स्व० श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के तृतीय पुत्र प्रो० श्रीप्रकाश के निधन का दुःखद समाचार हम लोगों को प्राप्त हुआ। प्रो० श्रीप्रकाश गत दो वर्ष से मस्तिष्क रोग से पीड़ित थे। पिछले वर्ष ही वे डी०ए०-वी० कालेज कानपुर के रसायन शास्त्र के प्राध्यापक पद से सेवामुक्त हुए थे। दो वर्ष पूर्व उपाध्याय जी के द्वितीय पुत्र श्री विश्वप्रकाश जी का लगभग ७८ वर्ष की आयु में प्रयाग में निधन हो गया था। १९८५ के दिसम्बर में उनके कनिष्ठ पुत्र श्री रविप्रकाश जी का देहांत हो गया था। प्रो० श्रीप्रकाश जी के दिवंगत होने से उपाध्याय जी का बड़ा परिवार समाप्त हो गया।

प्रो० श्रीप्रकाश ने प्रयाग विश्वविद्यालय से रसायन विषय में एम० एससी० परीक्षा उत्तीर्ण की। विचित्र रुचियों के व्यक्ति थे वे, बड़े साहसी और स्नेहवत्सल। उन्हें काठमाण्डू (नेपाल) के डिग्री कालेज में रसायनशास्त्र पढ़ाने का सुयोग प्राप्त हुआ। उन दिनों नेपाल में आतरिक विद्रोह प्रारम्भ हो रहे थे। बड़ी चतुराई से श्री श्रीप्रकाश और उनकी धर्मपत्नी वहां से निकल कर प्रयाग आ गये। उसी समय डी०ए०-वी० कालेज कानपुर में उनकी नियुक्ति हो गई।

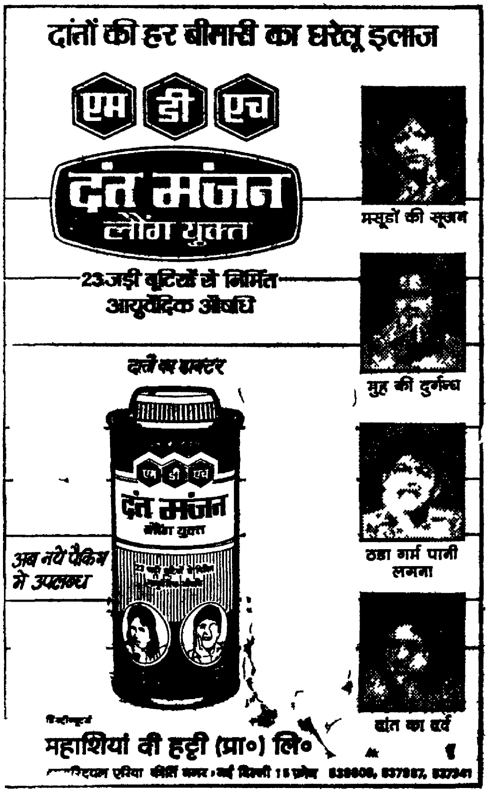
प्रो० श्रीप्रकाश को आर्यसमाज के कार्यों तथा बच्चों की शिक्षा में विशिष्ट रुचि थी। उन्होने स्वरूपनगर, कानपुर में अपना मकान बनवाया और परिवार सहित वहां रहने लगे। लेखनी के धनी थे, अनेक लेख आर्य मित्र आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हैं—"दयानन्द, देश और आर्यसमाज", "दयानन्द के सपनों का आर्यसमाज", जो क्रमशः सन् १९८३ और १९८४ में प्रकाशित हुई। दोनों पुस्तकें अति लोकप्रिय हुई। ये पुस्तकें प्रो० श्रीप्रकाश जी की स्मृति को जीवित रखेंगी।

—डा० विजयपाल शास्त्री
मन्त्री, आर्यसमाज मैस्टन रोड, कानपुर

दरबारीलाल जी को मातृशोक

श्री दरबारीलाल जी (सगठन सचिव डी० ए०-वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी एव कार्यकर्ता प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली) के बड़े भाई श्री प्रकाशचन्द्र जी को एक दुपहिया स्कूटर ने टक्कर मारकर घायल कर दिया। उन्हें तुरन्त पठानकोट अस्पताल ले जाया गया। काफी प्रयत्नों के बावजूद उन्हें बचाया न जा सका और उनका स्वर्गवास हो गया।

हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति और सद्गति प्राप्त हो तथा उनके परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो। —सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा


दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज
एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि
दांतों का डाक्टर
अब नये पैकिंग मे उपलब्ध
मसूड़ों की सूजन
मुह की दुर्गन्ध
ठंडा गर्म पानी लगना
दांत का दर्द
महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०

सत्यार्थप्रकाश के दशम समुल्लास पर एक दृष्टि

–स्वर्गीय बिहारीलाल जी शास्त्री–

इस १०वे समुल्लास मे स्वामी दयानन्द जी ने आचार, अनाचार, भक्ष्य और अभक्ष्य के विषय मे लिखा है। प्रत्येक विषय म स्वामी जी शास्त्र का आश्रय लेकर चलते है। अपनी ओर से वे कुछ नही कहते। इस समुल्लास मे भी उन्होने मनुस्मृति के श्लोक उद्धृत किये हैं।

वेदोऽखिलो धर्ममूल स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥

सम्पूर्ण वेद, मनुस्मृति तथा ऋषिप्रणीत शास्त्र, उत्तम मनुष्यो का आचार और जिस-जिस कार्य मे अपना आत्मा प्रसन्न रहे अर्थात् भय, शका, लज्जा न हो उन कर्मों का सेवन करना उचित है। देखो, जब कोई मनुष्य मिथ्या भाषण, चोरी आदि की इच्छा करता है तभी उसके आत्मा मे भय, शका, लज्जा अवश्य उत्पन्न होती है इसलिए यह कर्म करने योग्य नही।

यह प्रश्न उठता है कि आजकल सुरापान करने, अच्छे, मांस खाने और वेश्याओ से सम्बन्ध रखने मे लज्जा, शका, भय कहा उत्पन्न होता है? मुसलमानो और ईसाइयो को गोवध करने मे न लज्जा है, न शका और न भय तो यह लक्षण तो अव्याप्ति दोष से युक्त रहा। यह बात ठीक है। यह लक्षण नही है, सकेत-मात्र है। उत्तम समाज आस्तिक समाज की पहचान-मात्र है। वर्तमान समय मे न ईश्वर का भय है, न शासन से शका और न समाज से लज्जा। अत, अनाचार, आचार, भक्ष्य, अभक्ष्य का निर्णय इस कसौटी पर निर्णीत नहीं होगा। उसके लिए यही लक्षण रहेगा। वेदानुमोदित हो, सत्पुरुषो के आचार की परम्पराओ के विरुद्ध न हो और ऋषिप्रणीत शास्त्र सम्मत हो। इसीलिए स्वामी जी न स्मृति के प्रमाण प्रस्तुत किये है। हमारे शास्त्रो के उपदेश राग-द्वेष से रहित, पक्षपातशून्य और तर्कसगत है, जबकि अन्य मत वालो के विधि-निषेध अपने मत के पक्ष और अन्यो के विपक्ष से भरे हैं। तर्क को उनमे कोई स्थान नही जबकि हमारे शास्त्र तर्क को महत्त्व दे रहे हैं।

यस्तर्केणानुसधत्ते स धर्म वेद नेतर.।

जो बुद्धि से, तर्क से खोज करता है वह धर्म को जानता है। अब तर्क से विचारिये। सुरापान से बुद्धि नष्ट हो जाती है—अच्छे-बुरे का विवेक नही रहता। इसलिए सुरापान दुराचार है। मास भक्षण से जीवो के प्रति दया मर जाती है। स्वार्थभावना और स्वाद-लोलुपता बढती है। जीवो के प्रति न्यायवृत्ति नही रहती। सब जीवो को जीवित रहने का अधिकार है। मासाहारी अपने से निर्बल जीवो के इस अधिकार का अपहरण करता है तो यह वृत्ति निर्बलो पर अत्याचार की प्रचारक बन जाती है। अत मासभक्षण पाप है। अनाचार है। वेश्यागमन पति-पत्नी के प्रेम मे दरार पैदा कर देता है तो सन्तान मातृ-पितृभक्त नही बनेगी। अत व्यभिचारमात्र पाप है, अधम है।

स्वामी जी ने मनुस्मृति के प्रथम अध्याय का १०८वा (आधा) श्लोक दिया है—

आचार परमो धर्म श्रुत्युक्त स्मार्त एव च ॥

वेद का आदेश किया हुआ और स्मृतियो का निर्धारित किया हुआ आचरण ही परम धर्म है। आर्यों के सभी सम्प्रदायो ने वैदिक, बौद्ध, जैन, सिख, कबीर-पन्थी, राधास्वामी आदि सन्त मतवालो, सिख सम्प्रदाय और ईश्वर को न मानने वाले चार्वाक तक ने आचरण

पर बल दिया है। जबकि ईसाइयत, इस्लाम आदि विदेशी मतों मे आचरण को प्रमुखता न देकर ईमान को मुख्य माना गया है।

मौलाना मुहम्मद अली ने कहा था कि "एक फासिद और फाजिर मुसलमान गांधीजी से अच्छा है। (दुराचारी मुसलमान सदाचारी हिन्दू से श्रेष्ठ है।) यह इस्लाम के नेता की राय है। बिना बप्तिस्मा के उच्च कोटि का सदाचारी भी स्वर्ग नहीं जा सकता और आचरणहीन बप्तिस्मा वाला स्वर्ग पा सकता है। यह है ईसाई मत।

स्वामी जी ने आर्य लोगों के विदेश जाने का समर्थन किया है और महाभारत के प्रमाण दिये हैं।

वेद ने बताया है कि समुद्र यात्रा करने से गरीबी दूर होगी। बात सही भी है। स्पेन और इंग्लैण्ड ने सामुद्रिक व्यापार से धन भी कमाया और नाम भी। भारत के लोग भी पहिले विदेशों मे जाते थे किन्तु संकीर्णबुद्धि गुरुओं ने विदेश यात्रा पर प्रतिबन्ध लगा कर आर्य जाति की सम्पत्ति का विनाश करके रख दिया। अब से पचास-साठ वर्ष पूर्व इंग्लैण्ड जाने पर बिरादरी से निकाल दिया जाता था। राजा साहब शाहपुर और उनके भाई (श्याम शिव, शिवनाथ शिव) इंग्लैण्ड पढ़ने गये तो उनका जातीय बहिष्कार किया गया तथा उनको ईसाई बनना पड़ा। कपूरथला के राजा को भी ईसाई बनना पड़ा था। अब तो इस पोप मण्डल के सब हौसले पस्त हो गये हैं। चाहे जिस देश में जाओ-आओ। बिरादरी कुछ नहीं कर सकती। 'किसके हाथ का भोजन खाओ' इस विषय में स्वामी जी कहते हैं कि आर्यों के यहां भोजन बनाने वाले शूद्र हों। इस सम्बन्ध में स्वामी जी आपस्तम्ब धर्मसूत्र का प्रमाण देते हैं—

"आर्याधिष्ठिता वा शूद्राः संस्कर्त्तारः स्युः।

आ० ध०। प्रश्न २१। पटल २। खं० ३। ४

ठीक ही है। भोजन बनाने का काम शास्त्री, आचार्य और एम० ए० थोड़े ही करेंगे। यह तो अनपढ़ ही करेंगे, किन्तु वे सब अपने काम में निपुण होंगे और शुद्ध, स्वच्छ रहेंगे। स्वामी जी ने मनु का श्लोक दिया है—

"अभक्ष्याणि द्विजातीनाममेध्यप्रभवाणि च।" ५।५

और "वर्जयेन्मधु मांसं च॥" २। १७७

स्वामी जी अशुद्ध स्थानों में उत्पन्न हुए अन्न और फलों को अभक्ष्य ठहराते हैं, शराब और मांस को अभक्ष्य ठहराते हैं। जो भोजन हिंसा से आये, बुरे साधनों—चोरी आदि से आये, अरुचि, अश्रद्धा से खिलाया जाये, अशुद्ध हो, वे सब निषिद्ध हैं। अण्डे जीव सहित हों वा जीव रहित, अशुद्ध हैं, क्योंकि बुद्धि को तमोगुणी बनाते हैं।

स्वामी जी ने गोरक्षा के विषय मे जो विचार दिये हैं, वे बड़े उत्तम हैं। पढ़िये—जैसे किसी गाय से बीस सेर और किसी से दो सेर दूध प्रतिदिन होवे उसका मध्य भाग ग्यारह सेर प्रत्येक गाय से दूध होता है। कोई गाय अट्ठारह और कोई छः महीने तक दूध देती है, उसका मध्य भाग बारह महीने हुए। अब प्रत्येक गाय के जन्म के दूध से २४९६० मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं। उसके छः बछिया छः बछड़े होते हैं। उनमे से दो मर जायें तो भी दस रहे। उनमें से पांच बछड़ियों के जन्म भर के दूध को मिलाकर १२४८०० मनुष्य तृप्त हो सकते हैं। अब रहे पांच बैल, वे जन्म-भर मे ५००० मन अन्न न्यून से न्यून उत्पन्न कर सकते हैं। उस अन्न में से प्रत्येक मनुष्य तीन पाव खावे तो अढ़ाई लाख मनुष्योंकी तृप्ति होती है। दूध और अन्न मिलाकर ३७४८०० मनुष्य तृप्त होते हैं। दोनों संख्या मिला के एक गाय की एक पीढ़ी में ४७५६०० मनुष्य एक बार पालित होते हैं और पीढ़ी पर पीढ़ी बढ़ाकर लेखा करें तो असंख्यात मनुष्यों का पालन होता है। इससे भिन्न गाड़ी, सवारी, भार उठाने आदि कर्मों से मनुष्यों के बड़े उपकार होते हैं तथा गाय दूधमें अधिक उपकारक होती है। जैसे बैल उपकारक होते हैं वैसे भैंस भी हैं परन्तु

गाय के दूध-घी से जितने बुद्धि वृद्धि के काम होते हैं उतने भैंस के दूध से नहीं। इससे मुख्योपकारक आर्यों ने गाय को गिना है। और जो कोई अन्य विद्वान् होगा वह भी इसी प्रकार समझेगा। बकरी के दूध से २५९२० आदमियों का पालन होता है। वैसे हाथी, घोड़े, ऊंट, भेड़, गदहे आदि से भी बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा। देखो, जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे। तभी आर्यावर्त्त वा भूगोल के अन्य देशों में बड़े आनन्द से मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे, क्योंकि दूध-घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न-रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आकर गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपायी राज्याधिकारी हुए हैं, तब से क्रमश: आर्यों के दु:ख की बढ़ोतरी होती जाती है। क्योंकि—

नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम् ॥

(चाणक्य नीति १०। १३)

जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाये तो फल-फूल कहां से हों।"

स्वामी जी शिकार के विषय में बताते हैं कि 'यह राजपुरुषों का काम है कि जो हानिकारक पशु वा मनुष्य हैं उनको दण्ड देवें और प्राण से भी वियुक्त कर दें।' इन पंक्तियों से सिद्ध होता है कि स्वामी जी शौकिया शिकार के विरुद्ध हैं। शौकिया शिकार का परिणाम यह हुआ कि कई पशु-पक्षियों की नस्लें नष्ट हो गईं और अब सरकार ने सिंहों के शिकार पर प्रतिबन्ध लगाकर सिंहों की रक्षा की है। स्वामी जी मांस भक्षण के बिल्कुल विरुद्ध हैं। शिकार किये हुए पशु का मांस भी नहीं खाना चाहिए। स्वामी जी कहते हैं—"शिकार किये पशु का मांस चाहे फेंक दें, चाहे कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिला देवें अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है।"

ये पंक्तियां बताती हैं कि स्वामी जी मांस खाने के घोर विरोधी थे। एक साथ खाना और जूठा खाना इसे स्वामी जी गलत समझते हैं। पति-पत्नी भी एक-दूसरे का जूठा न खायें। सबके हाथ का भोजन खाने में स्वामी जी को आपत्ति है, क्योंकि सबके शरीरों के रक्त कण एक-से नहीं होते। कई गिरी हुई जातियां और जंगली जातियां वा मुसलमान पाखाना जाकर न हाथ मांजते हैं और न बर्तन। मशक भीतर से कभी नहीं धुलती और टोंटीदार लोटे की नली भीतर से कभी नहीं धुल सकती। मुस्लिम औरतें महीनों तक एक ही पाजामा पहन कर और जूते पहन कर रोटी बनाती हैं। ऐसा भोजन कोई बुद्धिमान् नहीं खा सकता। स्वामी जी कहते हैं, "जैसे मियां जी के रसोई के स्थान में कहीं कोयला, कहीं राख, कहीं लकड़ी, कहीं फूटी हांडी, कहीं जूठी रकेबी, कहीं हाड़-गोड़ पड़े रहते हैं। और मक्खियों का तो क्या कहना! वह स्थान ऐसा बुरा लगता है कि जो कोई श्रेष्ठ मनुष्य जाकर बैठे तो उसे वात होने का भी सम्भव है और वह दुर्गन्ध स्थान के समान ही वह स्थान दीखता है।"

अब सर्वभक्षी लोगों से पूछिये कि ऐसी जगह का भोजन बुद्धि को नष्ट करेगा या बढ़ायेगा। मुसलमानों के हाथ का भोजन करने से पूर्व मुसलमानों को भी तो यह शिक्षा दें कि वे वैज्ञानिक बातों का विरोध न करें। मुसलमान एक ही मटके में कुल्हड़ डाल-डाल कर पानी पीते जायेंगे। सब के होंठों से लगा हुआ कई तोला थूक उस मटके में पहुंच जायेगा। अब यह बीमारी करेगा या स्वास्थ्य ठीक करेगा? स्वामी जी ने वैद्यक के अनुसार बुद्धिपूर्वक भोजन का विधान किया है।

स्वामी जी रोटी और पूड़ी का भेद (जैसा आज-कल ब्राह्मण करते हैं) व्यर्थ समझते हैं। हां, यात्रा में जाओ तो रोटी और भात काम नहीं देगा। वहां पूड़ी, मठरी और शक्करपारे ही ले जाओ। स्वामी जी कहते हैं कि आर्यों का भोजन सम्मिलित होना चाहिए।

देखो स्वामी जी की सम्मति, "जो आर्यों में शुद्ध रीति से बनावे तो बराबर सब आर्यों के साथ खाने में कुछ भी हानि नहीं, क्योंकि जो ब्राह्मणादि वर्णस्थ स्त्री-पुरुष रसोई बनाने, चौका देने, बर्तन-भांडे मांजने आदि बखेड़े में पड़े रहें तो विद्यादि शुभ गुणों की वृद्धि कभी नहीं हो सके।"

यह है स्वामी जी की खान-पान में सम्मति, जिसे अब सनातनधर्मी भी अपनाते जाते हैं। आगे स्वामी जी ने बड़े तत्त्व की बात लिखी है—"परन्तु केवल खाना-पीना ही एक होने से सुधार नहीं हो सकता, किन्तु जब तक बुरी बातें नहीं छोड़ते और अच्छी बातें नहीं करते, तब तक बढ़ती के बदले हानि होती है।"

स्वामी जी यह भी कहते हैं, "विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना वा पढ़ाना तथा बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण, अविद्या का प्रचारादि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पञ्च बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारत की बातें, जो पांच सहस्र वर्ष के पहिले हुई थीं, उनको भी भूल गये? देखो, महाभारत युद्ध में सब लोग लड़ाई में सवारियों पर खाते-पीते थे, आपस की फूट से कौरव-पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख सागर में डुबा मारेगा?"

उक्त पंक्तियों में स्वामी जी के हृदय की वेदना प्रकट हो रही है। आर्य राष्ट्र की अवनति पर ऋषि को कितना दुःख है। क्या हमारे सनातनधर्मी संन्यासी महन्त और पण्डित इस पर ध्यान देंगे? आगे स्वामी जी यह भी कहते हैं—

"जब भूगोल में एक वेदोक्त मत था, उसी में सब की निष्ठा थी और एक-दूसरे का सुख-दुःख, हानि-लाभ आपस में अपने समान समझते थे, तभी भूगोल में सुख था।"

स्वामी जी चाहते थे कि सार्वभौम एकता रहे। आजकल भी सार्वभौमिक एकता का प्रयास प्रत्येक देश कर रहा है। मुस्लिम देश ईसाई देशों से सहायता ले रहे हैं। ईसाई देश मुसलमानों को मित्र बना रहे हैं। भारतवर्ष तो किसी भी देश से द्वेष नहीं रखता और सबकी सहायता को तैयार रहता है। वेदोक्त शब्द का स्वामी जी ने इस कारण प्रयोग किया है कि वेद आदि सृष्टि के धर्म पुस्तक हैं, जो सब मत वालों के लिए एक से ही हैं। अपने-अपने मतों पर चलते हुए भी यदि सब मत वाले वेद को भी मान्यता दें तो सब भूगोल में भावनात्मक एकता हो जाये। वेद ही क्यों महत्त्वपूर्ण हैं, इसके लिए मिस्टर जैकालियट जो कि फ्रेन्च थे, चन्द्रनगर (बंगाल) में जज थे, उनकी लिखी पुस्तक 'बाइबिल इन इण्डिया' पढ़ी जावे तो आप जान सकेंगे कि सब मतों ने भारत के धार्मिक साहित्य से सहायता ली है। भारत संसार-भर के मनुष्यों की गुरु भूमि है।

हैदराबाद सत्याग्रह : पेंशन के बारे में सूचना

भारत सरकार के गृह मन्त्रालय के स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान योजना के आर्यसमाज प्रकोष्ठ की सलाहकार समिति (गैर-सरकारी) की बैठक लोकनायक भवन में १२ दिसम्बर १९८६ को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में हुई। इसमें मनोनीत ६ सदस्य एव पर्यवेक्षक-सलाहकार के रूप में मैं भी उपस्थित था। बैठक का सयोजन आर्यसमाज प्रकोष्ठ की निर्देशक श्रीमती सुरेन्द्रकौर ने किया था।

परस्पर प्रारम्भिक परिचय के उपरान्त विभाग के संयुक्त सचिव श्री अरुणकुमार ने समिति के कार्यक्षेत्र पर विशद प्रकाश डाला। इस बैठक में सदस्यों ने आवेदन पत्र भेजने की तारीख बढाने और भविष्य में व्यापक सूचनाएं देने की आवश्यकता पर बल दिया और मांग की कि केन्द्रीय सरकार द्वारा पेंशन दिए जाने का आधार भोगी हुई सजा नही अपितु न्यायालय द्वारा दी गई सजा मानी जाये। एक सुझाव यह भी था कि १९८० की योजना के तहत नही अपितु १९७२ की योजना के अन्तर्गत तब से ही पेंशन दी जाये। कारावास और यातनाओं के अरिरिक्त संगठन और प्रचार करने वालों को भी इसमें शामिल किया जा ना चाहिए। कुछ अवसरों पर आवेदनकर्त्ता के आवेदन के पश्चात् निधन होने पर उनकी विधवाओं के लिए विशेष आधार पर जल्द ही पेंशन स्वीकृत की जानी चाहिए। १९३८-३९ के बाद और भारत विलय से पहले आर्यसमाज के जिन कार्यकर्त्ताओं ने विभिन्न आन्दोलनों में भाग लिया था उनकी शृंखला भी इसी के अन्तर्गत मानी जाये। तत्कालीन निजाम रियासत की सीमा पर स्थित आर्यसमाज के केन्द्रों और शिविरों में कार्य करने वालों को भी उनके सेवाकाल की अवधि देखकर पेंशन स्वीकार की जाये। एक सुझाव यह भी रखा गया कि वर्तमान पश्चिम पाकिस्तान और बगलादेश तथा फीजी, बर्मा और स्याम (थाईदेश) से सत्याग्रह में भाग लेने वालों की अवधि यात्रा के प्रारम्भ से मानी जाए। सयुक्त सचिव अरुणकुमार जी ने सदस्यो को विश्वास दिलाया कि मामले निबटाते समय १९८२ की योजना के ढांचे में सम्मिलित प्रावधानो को ध्यान में रखा जायेगा। बैठक सद्भावनापूर्ण वातावरण में समाप्त हुई।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
अवैतनिक प्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार
सा० आ० प्र० सभा, दिल्ली

नव वर्ष के लिए शुभ कामना

हे विभु, दया आनन्द युत नव वर्ष यह अघमर्ष हो।
सद्भावना संवृद्धि हो, दारिद्र्य का अपकर्ष हो॥
विकसित समग्र स्वदेश हो, सब भांति का उत्कर्ष हो।
विद्या तथा वीरत्व का फिर केन्द्र भारतवर्ष हो॥

—राजर्षि रणञ्जयसिंह
अमेठी

वैदिक साहित्य में आदर्श शासक

—प्रतिमा, शोधकर्त्री, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू—

वैदिक साहित्य में जहां धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक और पारलौकिक अभ्युदय वर्णित हैं, वहीं इनकी साधनभूत ऐहलौकिक प्रगति को भी महत्त्व दिया गया है। छान्दोग्योपनिषद् के सप्तम प्रपाठक में महर्षि सनत्कुमार के पूछने पर नारद ने अधीत विद्याओं के रूप में निम्नलिखित विद्यायें बताई थी— वेद, इतिहास, पुराण, पितृविद्या, राशिविद्या, दैवविद्या, भूतविद्या, युद्धनीति, नक्षत्रविद्या, सर्पविद्या और खनिविद्या। इससे वैदिक आर्यों का ऐहलौकिक ज्ञान स्पष्ट है। ऐहलौकिक ज्ञान के अन्तर्गत राष्ट्रीय प्रगति के सम्बन्ध में वैदिक साहित्य मे एक विशिष्ट दृष्टिकोण दिखाई पड़ता है। वहां "यस्मान्नान्यत्परमस्ति भूतम्" (अथर्ववेद) अर्थात् 'राष्ट्र से बढ़ कर कोई विभूति नहीं" कहकर राष्ट्रीय उन्नति के सम्बन्ध में विशेष बल दिया गया है।

राष्ट्रीय प्रगति, राष्ट्रीय सुरक्षा और सुव्यवस्था में शासक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसे वैदिक ऋषियों ने अच्छी तरह अनुभव कर लिया था, इसलिए वैदिक साहित्य में शासक को अद्वितीय गुणों से युक्त बताया गया है। वहां अनेक प्रकार के शासकों का वर्णन है। छोटे राज्यों के शासकों को राजा और बड़े राज्यों के शासकों को सम्राट् या चक्रवर्ती अथवा सार्वभौम कहा गया है। इन सब का चयन प्रजा ही करती है। राजा के सहयोग के लिए समिति और सभा नाम की दो सार्वजनिक संस्थाओं का उल्लेख आता है। समिति ही राजा का चयन करती है। सभा और समिति के सहयोग से राजा प्रतिदिन का कार्य करता है।

अथर्ववेद में राजा को अनेक विशेषणों से विभूषित बताया गया है।

त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्चदेवीः। वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो विभजा वसूनि ॥ अथर्व-३।४।२

अर्थात् "प्रजा राज्य के संचालन के लिए तुम्हारा वरण करती है, सब दिशाओं के लोग तुम्हारा वरण करते हैं। तुम राष्ट्ररूपी शरीर के सर्वोच्च स्थान पर आसीन रहो और वहां रहते हुए उग्र शासक के समान सब में सम्पत्ति का विभाजन करो। "स्वस्तिदा विशांपतिर्वृत्रहा विमृधो वशी" (अ० १।२१।१) अर्थात् तुम प्रजापालक, कल्याणकारी, शत्रुनाशक और घातकों को वश में करने वाले हो। "अहं राष्ट्रस्याभीवर्गे निजो भूयासमुत्तमः" अर्थात् मैं राजा राष्ट्र के श्रेष्ठ मनुष्यों में सबसे उत्तम बनूं। ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के बयालीसवें सूक्त में राजा के मुख से कहलवाया गया है—"हम इन्द्र और वरुण हैं। अत्यन्त महत्त्व के कारण विशालता को प्राप्त हुए सुन्दर रूप वाले हम पृथ्वी और आकाश हैं।"

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सप्तम अध्याय राजा के धर्म, कर्म और स्वरूप का ही प्रतिपादन करता है। वहां कहा गया है—"इन्द्र, पवन, यम, सूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्र और कुबेर इन सभी के सारभूत अंशों को खींच कर प्रभु ने राजा को बनाया है इसलिए वह सबसे बढ़कर है।"

उपर्युक्त सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि राजा साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि उसे असाधारण गुणों से युक्त होना चाहिए।

शतपथ ब्राह्मण में राजा को उसके राज्याभिषेक के समय कहा जाता है—"इयं ते राट् यन्तासि यमनो ध्रुवोऽसि धरुणः। कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा पोषाय त्वा।" ५-२-१-२५ अर्थात् तुम्हें यह राष्ट्र दिया जाता

है, तुम इसका नियमन करने वाले हो, तुम अप्रतिम हो। कृषि की वृद्धि के लिए, कल्याण के लिए, समृद्धि के लिए और पुष्टि के लिए तुम्हे यह राज्य दिया जाता है। उपर्युक्त पंक्तियों के अनुशीलन से राज्य-विषयिणी वैदिक धारणा का भव्य रूप हमारे समक्ष उपस्थित होता है। राज्य राजा को दैवी शक्ति से प्राप्त नही हुआ है प्रत्युत वह मानवों की ही एक सृष्टि है, जिसकी रक्षा करना राजा का परम कर्त्तव्य है। राज्य भोग की वस्तु नही जिसे राजा अपनी स्वच्छन्द अभिलाषाओ की पूर्ति के लिए भोगता है बल्कि राजा का प्रधान कर्त्तव्य कृषि द्वारा इनमे समृद्धि उत्पन्न करना, कल्याण तथा पुष्टि करना है। अथर्ववेद कहता है कि "स विशोऽनुव्यचलत्"। (अथर्व० १५।८।१) अर्थात् राजा प्रजा का अनुचर होकर रहता है। इस प्रकार वैदिक राजा प्रजा के कल्याण के निमित्त एक प्रतिष्ठित पदाधिकारी है। जब तक वह इस प्रतिज्ञा को निभाता है, तभी तक वह प्रजा का स्वामी है, प्रतिज्ञाभंग होने पर प्रजा को उसे हटाने का पूरा अधिकार है, इसलिए अथर्ववेद में कहा गया है—"हे राजन्, तुम्हें सभी लोग चाहें, तुम्हारे हाथो से राज्य कभी छीना न जा सके। तुम इन्द्र के समान स्थिर रहते हुए राज्य को धारण करो।" "हे राजन्, इसी राष्ट्र मे रहो, राष्ट्रोन्नति से पृथक् मत होओ। पर्वत और सूर्य के समान सदैव निश्चल और ध्रुव रूप में रहते हुए राष्ट्र का भरण-पोषण करो।" इस प्रकार वैदिक शासक स्वेच्छाचारी नही। वैसे भी कई विषयों में राजा के अधिकार सीमित हैं। कई प्रकार की सीमायें वैदिक साहित्य में वर्णित हैं। सभा और समिति के निर्णय के बिना राजा कोई भी निर्णय नहीं ले सकता।

अथर्ववेद में कहा गया है कि "सभा और समिति प्रजापति की दुहितायें यानी पुत्रियां हैं। वे मेरी(राजा की) रक्षा करे। वे मुझे उत्तम शिक्षा दें यानी समुचित परामर्श दें। सभा में उपस्थित सभी लोग समुचित भाषण करें।" (अथर्व० ७।१।६३) इस मन्त्र से स्पष्ट है कि सभा और समिति नामक संस्थायें प्रजापति की दुहितायें हैं। उन्हें राजा ने नही बनाया अपितु वे ईश्वरीय विधान की परिणाम हैं। वे राजा की रक्षा करती हैं और उसे समुचित परामर्श देती हैं। ब्राह्मणों के सम्बन्ध मे भी राजा का अधिकार सीमित है। गौतम धर्मसूत्र ११/१/७ मे कहा गया है कि राजा ब्राह्मणों को छोड़ कर सभी पर शासन करता है। ब्राह्मण को छोड़कर सभी को राजा का सम्मान करना चाहिए। बृहदारण्यकोपनिषद् (१।४।१४) मे कहा गया है कि "केवल ब्रह्म, क्षत्र और वैश्य की उत्पत्ति से कार्य नहीं चल सकता अतः उससे श्रेष्ठ रूप वाले "धर्म" की उत्पत्ति की गई। यह धर्म राजा को भी अपने शासन मे रखता है। धर्म से ऊपर कोई सत्ता नही। धर्म के कारण ही बलवान् और निर्बल—सब एक साथ मिलकर रहते हैं। राजा इसी धर्म द्वारा राज्य का शासन करता है। सत्य ही धर्म है। सत्य और धर्म एक ही बात है।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक राजा भले ही दैवी अधिकारों को जन्म से लेकर नही आता लेकिन शासक के रूप मे अलौकिक सत्ता से युक्त हुआ प्रजा के मध्य भगवान् बनकर आता है। उस पर प्रजा का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व होता है। "प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्" अर्थात् प्रजा के सुख में राजा अपने को सुखी समझता है और प्रजा के हित में अपना हित समझता है। उसका प्रत्येक कदम और सारा चिन्तन केवल प्रजा के उपकार और हित के लिए है। अपने दिव्य गुणों के कारण ही शासक राजा कहलाता है। राजा का अर्थ ही यह है-राजते—दीप्यते दिव्यगुणैः प्रजासु अर्थात् प्रजा के मध्य अपने दिव्य गुणों से विराजने—चमकने के कारण शासक राजा है।

सत्यार्थप्रकाश और मुस्लिम लीग

२६-११-१९४४ को लाहौर के सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन मे मध्य प्रदेश विधान सभा के तत्कालीन स्पीकर स्वर्गीय घनश्यामसिंह गुप्त का भाषण

आप लोगो को विदित ही है कि सिन्ध सरकार ने ऋषि दयानन्दकृत हमारे पवित्र ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पर जो प्रतिबन्ध लगाया है उसी के सम्बन्ध मे यह विशेष सम्मेलन बुलाया गया है।

इस कारंवाई के इतिहास से हम पर यह सुस्पष्ट हो जाता है कि इसके पीछे जो भावना कार्य कर रही है, वह विशुद्ध रूप से राजनैतिक है। इस बात को प्राय सभी जानते हैं कि सत्यार्थप्रकाश ६० वर्ष से अधिक समय से (अब १०४ वर्ष से—सम्पादक) जनता के सामने है।

इस ग्रन्थ का भारतवर्ष की करीब-करीब सभी मुख्य भाषाओ मे तर्जुमा हो चुका है और इसकी लाखो जिल्दें बिक चुकी हैं। पता नही कितनी बार वेदी और प्लैटफार्म से यह ग्रन्थ पढा तथा सुनाया जा चुका है। मुस्लिम लीग ने, जो अपने को राजनैतिक संस्था बतलाती है, अभी कुछ समय से इस ग्रन्थ के विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया है। लाहौर के इसी शहर मे मुस्लिम लीग ने सबसे पहले प्रस्ताव पास करके इस पुस्तक की जब्ती की माग की थी। जब भारत व सूबो की सरकार से अपनी माग को पुरा कराने मे मुस्लिम लीग सफल न हुई तो उसने फिर इस बार कराची मे इस माग पूरा करने पर जोर डाला। फल यह हुआ कि सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार ने आज्ञा का पालन करके १४वें समुल्लास को छपाई और प्रकाशन पर पाबन्दी लगा दी।

इस अनावश्यक और ऐसी कारंवाई के लिए, जो कभी नही हुई सिन्ध सरकार ने डिफेन्स आफ इण्डिया रूल्स की सहायता ली है। डिफेन्स आफ इण्डिया रूल्स (भारत रक्षा विधान) का यह मतलब नही था कि शान्ति और सुरक्षा के बहाने से किसी धर्म की पवित्र पुस्तको पर इस प्रकार पाबन्दी लगाई जावे। पुस्तक का पिछले ७० (अब १०४ वर्षों से—सम्पादक) से, खूब प्रचार हो रहा है। परन्तु इसके कारण कही भी सार्वजनिक शान्ति भग नही हुई। पिछले ५ साल से जब से युद्ध हो रहा है, भारत की सुरक्षा खतरे मे नही पडी। अचानक ही मुस्लिम लीग के प्रस्ताव ने सिन्ध सरकार के लिए सत्यार्थप्रकाश को खतरनाक बना दिया। पर्दा इतना महीन है कि इससे कोई भी धोखे मे नही आ सकता। यह तो भारत रक्षा विधान (डिफेन्स आफ इण्डिया रूल्स) का भयकर दुरुपयोग है।

किसी नासमझ व्यक्ति से भी यह छिपा नही रह सकता कि आर्यसमाजियो की धार्मिक स्वतन्त्रता पर यह हमला केवल राजनैतिक उद्देश्यो को पूरा करने के लिए किया गया है। वे उद्देश्य क्या हो सकते हैं? इन कारणो का अन्दाजा ही लगाया जा सकता हैं। यह स्पष्ट होगा कि यह कदम पाकिस्तान के कार्यक्रम की जजीर की एक कडी है। पाकिस्तान के विरोधियो मे वे लोग, जिनसे समझौता होना सम्भव नही, आर्यसमाजी और सिख ही हैं। मुस्लिम लीग और उसके नेता साफ तौर पर सिखो को फुसलाने और फसाने का और आर्यसमाजियो को कुचलने का यत्न कर रहे हैं, क्योकि वे (मुस्लिम लीग के नेता) जानते हैं कि आर्यसमाजी न फुसलाये जा सकते हैं और न फसाये एव बहादुर सिख कुचले नही जा सकते।

हमे यह पवित्र आशा है कि सिख जाति के नेता इस बात को समझेंगे और फुसलाने मे नहीं आवेंगे। मुझे आशा कि आप आर्य भाइयो की लोहे जैसी दृढता यह स्पष्ट कर देगी कि आर्यसमाज को कुचलना आसान काम नहीं।

परन्तु वे (मुस्लिम लीग के नेता) अपना खेल खूब खेल रहे हैं। मुस्लिमलीग को अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं है। वे चाहते हैं कि ब्रिटिश सरकार की ताकत से आर्यसमाज को कुचल दिया जाये। कोई कुछ कहे, मुझे तो इसमे जरा भी शक नहीं कि आर्यसमाज से निपटने के बाद मुस्लिम लीग सिखो तथा अन्य पार्टियो से निपटेगी और उन्हें अपने भावी पाकिस्तान मे मुस्लिम लीगी सरकार का नमूना पेश करेगी। धार्मिक सहिष्णुता का स्थान धार्मिक मतान्धता और धार्मिक स्वतन्त्रता स्थान धार्मिक अत्याचार ले लेगा। तब मध्यकालीन का समय का इतिहास दुहराया जायेगा, जिसमे आपके पजाब का काफी से ज्यादा हिस्सा है। यदि हम अभी से इस जरूरी चीज को समझने मे चूक गये और हम विभक्त रहे तो फिर चेतने से कोई लाभ न होगा और हमारा समस्त भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा। मैं सब समझदार हिन्दुओ, सिक्खो, मुसलमानों और अन्य जाति वालो से अपील करता हूँ कि वे इस धार्मिक अत्याचार से हिन्दुस्तान की रक्षा करने मे अपने सारे प्रभाव को काम मे लायें।

प्रत्येक व्यक्ति को समझ लेना चाहिए कि धार्मिक अत्याचार का आधार बनाने के लिए किसी भी धर्म-पुस्तक मे से अवतरण दिए जा सकते हैं और यदि एक बार भी इन चीजों की खुली छुट्टी दी गई तो कहीं भी धर्म की दृष्टि से थोडी सख्या वाले व्यक्ति सुरक्षित न होगे। इसलिए सबका कर्तव्य है कि वे इस खतरे से लोहा लें और सभ्य सरकार और सभ्य जीवन की रक्षा करे।

मैं विनम्रतापूर्वक ब्रिटिश सरकार से भी प्रार्थना करूगा कि वह आर्यसमाज पर हुए इस साफ धार्मिक अत्याचार मे एक पार्टी न बने। महारानी विक्टोरिया की प्रसिद्ध घोषणा के समयसे अब तक ब्रिटिश सरकार धार्मिक स्वतन्त्रता देने की नीति का पालन करती चली आ रही है। उसे पुरानी नीति पर धब्बा नहीं लगने देना चाहिए।

इस बयान में कोई सार नहीं है कि चू कि शान्ति और सुरक्षा एक प्रान्तीय विषय है अत इस आडर की तमाम जिम्मेदारी सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार की है। ब्रिटिश शासन और ब्रिटिश सरकार दोनो का दबदबा अभी मौजूद है और शान्ति और सुरक्षा के नाम पर किसी भी प्रान्तीय सरकार द्वारा धार्मिक अत्याचार नहीं होने देना चाहिए। मुझे यह एक दम कह देना चाहिए कि आर्यसमाज का झगडा न तो हमारे मुसलमान भाइयो से है और न ब्रिटिश सरकार से। मुस्लिम लीग की ओर से ही सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध माग उठी है और सिन्धके मुस्लिमलीगी मन्त्रि-मण्डल द्वारा ही इस माग पर कारवाई हुई है अत हमारी शिकायत मुस्लिम लीग से ही है। मैं बहुत नम्रता के साथ मुस्लिम लीग को भी चेतावनी के रूप मे एक बात कहता हूँ। यदि कभी पाकिस्तान मिला भी तो मुस्लिम लीग के मन्त्रिमण्डलके इस कार्य से यह बहुत दूर चला जायेगा। पूर्ण पाकिस्तान की) स्थापना के बहुत पहले ही हमे इसका यह नमूना मिला है।

जब मुस्लिम लीग पाकिस्तान के अपने भिन्न क्षेत्रो मे पूरे धार्मिक उत्साह और धार्मिक असहिष्णुताके साथ हकूमत करेगी तो हमारी क्या गति होगी? केवल ईश्वर ही यह जानता है। जो भी इस्लाम के विरुद्ध बोलेगा या उसके बडे बूढो ने कभी इस्लाम के विरुद्ध कुछ बोला होगा, उसकी खैर न होगी जब तक कि वह अपने या अपने बुजुर्गों के कहे हुए को वापस न ले लेगा। नये पाकिस्तान के सविधान का २०वी सदी का सस्करण अक्षरश. वही होगा जो ११वी सदी का मूल सस्करण था।

यह तो हमारे सामने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वैधानिक सवाल पेश करता है। यह धार्मिक अत्याचार आज की सिन्ध सरकार के हाथो हुआ है—सिन्ध की कल्पित पाकिस्तानी सरकारके हाथो नहीं। पाकिस्तान तो अभी विचाराधीन ही है। यह अभी अस्तित्व मे नहीं आया। सूबो और केन्द्रीय सरकार के पारस्परिक सम्बन्धो की स्थिति क्या होगी?

प्रान्तीय स्वराज्य

प्रान्तीय स्वराज्य आजकल का फैशन बन गया है और यह बहुत आकर्षक शब्द बना हुआ है। देश के बहुत-से प्रसिद्ध महानुभाव इस पर विचार करने लग गये हैं। इसलिए यह तो हो नही सकता कि इसके विरुद्ध जो कुछ कहा जायेगा, वह जनता के कानों तक न पहुचे। परन्तु इन वर्षों मे इसके बारे में मैं जो अनुभव करता हूँ, वह मुझे जरूर कहना है। मुझे इसमे जरा भी शक नही कि पाकिस्तान प्रान्तीय स्वराज्य का बच्चा है। इस युक्ति का कोई उत्तर नहीं हो सकता कि यदि सूबे स्वतन्त्र होने हैं तो उन्हे फेडरेशन में शामिल होने या न होने की स्वतन्त्रता है।

मेरी तो यह धारणा है कि प्रान्तीय स्वतन्त्रता के आधार पर बना फेडरेशन हमारे समय का सबसे बड़ा खतरा है। यह शब्द हमारे देश की दशाओं का ठीक सूचक नहीं है। यह तो गलत और धोखे मे रखने वाला फार्मूला है, जिस पर हमारे देश के बहुत-से बुद्धिमान अग्रणी नेता लट्टू हैं। यह तो हमारी अवस्थाओ के सर्वथा प्रतिकूल है। हमारे सूबे वैसे स्वतन्त्र और सर्वेसर्वा राज्य नही हैं जैसे अमेरिका मे थे। हमारे सूबे केन्द्र के आधीन रहे हैं और उसी से उन्हे शक्ति मिलती है। कम से कम ब्रिटिश शासन के गत १५० वर्षों मे भारतवर्ष न सिर्फ भौगोलिक दृष्टि से वरन् राजनैतिक दृष्टि से भी आवश्यक विषयो मे से एक रहा है।

मुझे इसमे सन्देह नही कि इस सम्मेलन मे आप लोग खतरे का सामना करने के उपाय सोचेंगे। मुझे तो यही कहना है कि जब तक धर्म पर हुए ऐसे आक्रमण का पुरा प्रतिकार न होगा, तब तक आर्य-समाज चैन न लेगा। मुझे आशा है कि उसे इस देश के सभी वर्गों के समझदार व्यक्तियो का साहाय्य और सहयोग मिलेगा। ●

क्या शराबबन्दी से व्यक्तिगत अधिकारों का हनन होता है?

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा—

सत्यार्थप्रकाश के दशम समुल्लास में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मदकारी द्रव्यों से बचने की शिक्षा दी है। प्रस्तुत लेख के विद्वान् लेखक ने इस आवश्यक विषय पर अपने सुचिन्तित विचार प्रकट किये हैं।

जैसे ही व्यसनमुक्ति, नशाबन्दी तथा जीवन के सयम की बात चलती है तो तथाकथित आधुनिक बुद्धिजीवी लोग इन्हें बोसीदा और दकियानूसी बात कह कर खिल्ली उड़ाने से नहीं चूकते। वे इसे मानव के बुनियादी अधिकारों पर कुठाराघात भी कहते हैं। व्यक्ति क्या खाता-पीता है, कैसा व्यवहार घर में और बाहर करता है, उसमें किसी का क्या लेना-देना, इस मामले में हर व्यक्ति स्वतन्त्र है और उसकी स्वतन्त्रता पर अंकुश लगाना उसे मानव के बुनियादी अधिकारों से वंचित करना है। सभ्य समाज में बैठने-बरतने के तौर-तरीकों को जानते ही नही। जब श्री मोरारजी देसाई ४ वर्ष में सारे भारत में शराबबन्दी लागू करने की बात कहते थे, तब श्री पीलू मोदी सदृश व्यक्ति के बुनियादी हकूक के संरक्षक आधुनिक बुद्धिजीवी के नाते विरोध करते थे।

ऐसे लोग अपने आपको अति आधुनिक कहते हैं और अपने चिन्तन को वैज्ञानिक चितन कहते हैं। परन्तु जब नशों के कारण शारीरिक और मानसिक रोगों से ग्रस्त लोग अपने उपचार के लिए डाक्टरों के पास पहुंचते है और उन डाक्टरों में से ही इन बीमारियों और बीमारों की खोजबीन करते हैं और मानव शरीर और मस्तिष्क पर होने वाले कुप्रभावों को गिनाने लगते है, तब तथाकथित बुद्धिजीवी अधिकारों के संरक्षक बगले झांकने लगते हैं। ऐसी हालत में वे एक ही बात कहकर पीछा छुड़वाने की कोशिश करते है कि माना नशों से मनुष्य का शरीर और मन रोगी होते हैं, उनकी उन्नति का मार्ग रुकता है, आर्थिक रूप से वह बर्बाद भी होता है, उसका पारिवारिक जीवन भी नष्ट होता है, परन्तु हम कौन होते हैं किसी को नशे से रोकने वाले। हर व्यक्ति को अपना भला-बुरा देखकर स्वयं ही फैसला करने दो, वह अपनी बर्बादी को देखकर स्वयं उस रास्ते को छोड देगा। हम किसी की स्वतन्त्रता पर छापा मारने वाले कौन होते है?

यहां आकर हमारे आधुनिक चिन्तन करने वाले लोग फंस जाते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने काम और व्यवहार से अपने लिए ही नहीं बल्कि दूसरों के लिए, अपने परिवार के लिए और समाज के लिए खतरा बनता है, तब शासन को उसे अपराधी मानना पडता है। उस के अपराध को रोकने के लिए कानून बनाना पडता है और अपराधी को सजा भी देनी पड़ती है। व्यक्ति की तथाकथित स्वतन्त्रता के पोषकों को तब अपनी दलील में अराजकता की भनक पड़ने लगती है। इन्हें यह भी सोचना पडता है कि क्या दूसरों के अनुभव का लाभ उठाकर उसे उनके द्वारा की गई गलतियों के कारण उन्हें जो हानियां उठानी पड़ीं, हम भी वही

गलतियां करके हानि उठायें या उनसे बचें। दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाकर आगे बढने वाला आधुनिक और वैज्ञानिक चिन्तन करने वाला है या अनुभव की हुई चीजों में ही सिर मारते रहने वाला ? दकियानूस वह है जो दूसरो के अनुभव से नही सीखता। आधुनिक और बुद्धिजीवी तथा वैज्ञानिक चिन्तन वाला वह है, जो पुरानी उपलब्धियों को आत्मसात् करके आगे बढता है और मानव समाज को नये से नये अनुसन्धानों से लाभ पहुंचाता है।

क्या इतिहास और रोज-रोज के जीवन से ये तथ्य सुस्पष्ट नहीं हो गये कि मादक द्रव्यों और नशीली वस्तुओं का सेवन करने वाला स्वास्थ्य खोता है, मानसिक सतुलन खोता है, संयमहीन हो जाता है, अपने बच्चों और परिवार को उत्पीड़ित करता है, जीवन संगिनी पर अत्याचार करता है, दुर्घटनाओं से निर्दोष व्यक्तियों की हत्या का कारण बनता है, अपनी उत्पादक शक्ति का ह्रास करता है, भ्रष्टाचार को पनपाता है, समाज के ढांचे को दूषित करता है, अपने परिवार और राष्ट्र की उन्नति में बाधक बनता है। जो इन बातो को समझकर मादक द्रव्य सेवन करने वालों के कारण होने वाली हानियों को देखकर अपने आपको तथा समाज को इनसे बचाने का यत्न करता है, क्या आप उसे दकियानूस कहेंगे या उसे जो सबको बर्बादी के रास्ते पर जाने की छूट देने की वकालत करता है?

आज विश्व के सभी चिन्तनशील व्यक्ति अनुभव करने लगे हैं कि यदि व्यसनों से मुक्त करने का बीड़ा न उठाया गया तो उनका राष्ट्र यही नहीं कि दूसरे राष्ट्रों से पिछड जायेगा बल्कि उसका उन्नति के मार्ग पर आगे बढना भी रुक जायेगा। मादक द्रव्यों के तस्करों और व्यापारियों से सब राष्ट्र त्रस्त है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार के कुत्सित व्यापार और अपराधों को रोकने के प्रयास किये जा रहे है। वैसे तो सभी उन्नत राष्ट्रों में व्यसन-मुक्ति का आन्दोलन आगे बढ रहा है परन्तु रूस ने तो बाकायदा अभियान ही छेड दिया है। रूसी नेता श्री गोर्बाचोव ने तो अपने मंत्रि-मंडल से नशा करने वाले और भ्रष्ट लोगों को निकालना शुरू कर दिया है। वे दूसरे देशों में जाते है, तब भी फलों का रस या चाय लेते है। शराब को पास तक नहीं फटकने देते। विद्यार्थियों और २१ वर्ष तक के सभी नवयुवकों के लिए नशे की वस्तुएं खरीदने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। अमेरिका के लोग भी व्यसनों मे मुक्ति के प्रयास में लग रहे हैं।

विज्ञान ने आज इतनी तरक्की कर लीहै कि कम्प्यूटर व इलैक्ट्रोनिकों के इस युग में बटन दबाकर ही बड़े से बड़े यन्त्रों, राकेटों, हथियारो, अन्तरिक्षयानों, प्रक्षेपास्त्रों और परमाणु अस्त्रों को चलाया जाता है। एक बटन गलत दबा दिया जाये तो कितना खतरनाक युद्ध छिड सकता है और मानवसमाज का कितना नुकसान हो सकता है, इसका अनुमान लगाना भी कठिन है। लाठी,भाले,तलवार,बन्दूक आदि की लड़ाई में बहुत अधिक सूझबूझ, मुस्तैदी, चेतना, विवेक आदि की आवश्यकता नहीं थी। शराब पिलाकर हथियार दे देने से योद्धा दुश्मन के लोगों पर पागल होकर पिल पड़ते थे और यदि बेहोशी में अपने पर भी वार कर जाते थे तो बहुत थोडा नुकसान हो सकता था। परन्तु विज्ञान के इस युग में थोडी-सी लापरवाही और नासमझी या नशे की बेहोशी में गलती हो जाये तो राष्ट्र के राष्ट्र नही पूरा मानव समाज ही खतरे में पड़ सकता है। इसलिए विज्ञान के इस युग में नशाबन्दी, स्वस्थ चिन्तन और संवेदनशीलता का महत्व बहुत अधिक हो गया है। ●

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

आर्यसमाजों के लिए वर्ष १९८७ (सम्वत् २०४३-२०४४) के पर्वों की सूची

सं०	पर्व	सौर तिथि		चान्द्र तिथि		अंग्रेजी तिथि	वार
१	मकर सङ्क्रान्ति	३०पौष व १ माघ	२०४३	पौष सुदि १४ १५	२०४३	१४ जनवरी १९८७	बुधवार
२	वसन्त पञ्चमी	१९-२० माघ	२०४३	माघ सुदि ४-५	२०४३	२ फरवरी १९८७	सोमवार
३	सीताष्टमी	९ फाल्गुन	२०४३	फाल्गुन बदि ८	२०४३	२१ फरवरी १९८७	शनिवार
४	दयानन्द बोधरात्रि	१४ फाल्गुन	२०४३	फाल्गुन बदि १३	२०४३	२६ फरवरी १९८७	बुधवार
५	वीर लेखराम तृतीया	१८ फाल्गुन	२०४३	फाल्गुन सुदि ३	२०४३	२ मार्च १९८७	सोमवार
६	नव सस्येष्टि (होली)	२ चैत्र	२०४३	फाल्गुन सुदि १६	२०४१	१६ मार्च १९८७	सोमवार
७	नवसम्वत्सरोत्सव (आर्यसमाज स्थापना दिवस)	९ चैत्र	२०४४	चैत्र सुदि १	२०४४	३० मार्च १९८७	सोमवार
८	रामनवमी	१७ चैत्र	२०४४	चैत्र सुदि ९	२०४४	७ अप्रैल १९८७	मंगलवार
९	हरि तृतीया	६ श्रावण	२०४४	श्रावण सुदि ३	२०४४	२८ जुलाई १९८७	मंगलवार
१०	श्रावणी उपाकर्म	१८ श्रावण	२०४४	श्रावण सुदि १६	२०४४	९ अगस्त १९८७	रविवार
११	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२५ भाद्रपद	२०४४	श्रावण बदि ८	२०४४	१६ अगस्त १९८७	रविवार
१२	विजयादशमी	१० आश्विन	२०४४	आश्विन सुदि१०	२०४४	२ अक्तूबर १९८७	शुक्रवार
१३	गुरु विरजानन्द दिवस	१३ आश्विन	२०४४	आश्विन सुदि१३	२०४४	५ अक्तूबर १९८७	सोमवार
१४	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	३० कार्तिक	२०४४	कार्तिक बदि३०	२०४४	२२ अक्तूबर १९८७	गुरुवार
१५	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२ पौष	२०४४	पौष बदि ३	२०४४	२३ दिसम्बर १९८७	बुधवार

(प्रस्तुति · पं० कीर्तिवल्लभ [illegible] शास्त्री)

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

वेद में उग्रवाद को समाप्त करने के उपाय

-रमेश मुनि वानप्रस्थ-

अथर्ववेद के दूसरे काण्ड का २४वां सूक्त उग्रवाद को समाप्त करने के सम्बन्ध में है। लाखों वर्ष पहले वेदों में उग्रवाद का अनुमान लगा लिया गया था और आज इस उग्रवाद को समाप्त करने के लिए हमे वेद द्वारा बताये गये उपायों का ही अनुसरण करना होगा। इस सूक्त मे आठ मंत्र हैं, जिनमें से चार में उग्रवादी पुरुषों का वर्णन है, और पांच से आठ तक उग्रवादी स्त्रियों का वर्णन है। उदाहरण के रूप में हम प्रथम मन्त्र (२/२४/१) प्रस्तुत करते हैं—

शेरभक शेरभपुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत् तमत्त स्वा मांसान्यत्त ॥१॥

भावार्थ—हे (शेरभक) उग्रवादी, आतंककारी, दूसरों का अन्त करते वाले, अकस्मात् मारने वाले, सर्प स्वभाव, नृशंस, घातक पुरुष, (शेरभ) हे हत्यारे पुरुष, और हे (किमीदिनः) 'किंकर्तव्यविमूढ़' 'यह क्या यह क्या' इस प्रकार राज्य व जनता के धनों पर चोर की-सी दृष्टि रखने वाले दुष्ट पुरुषो (यातवः) सब पीड़ाजनक कार्य (वः) तुम्हारे पास ही (यन्तु) जावें अर्थात् दुष्ट कार्यों का दण्ड पुनः तुम्हें ही प्राप्त हो। (पुनः हेतिः) और हथियार की पीड़ा तुम्हारे पास ही जाये। क्योंकि (यस्य स्थ) जिसके तुम संगी होते हो (तम् अत्त) उसे तुम खा जाते हो और (यः) जो (वः) तुमको (प्राहैत्) प्रेरणा, उपदेश या सीधा मार्ग बतलाता है (तम् अत्त) उसे तुम खा जाते हो और फिर जब तुम्हारे साथ कोई नहीं रहता, तब तुम (स्वामांसानि) अपने ही सम्बन्धियों के शरीरों का घात करके उन्हें (अत्त) खाते हो। दुर्जन पुरुष का स्वभाव आगे के तीन मंत्रों में भी इसी प्रकार बताया गया है। (२/२४/२-४)

इसी प्रकार पांच से लेकर आठ मन्त्रों में दुर्जन स्त्रियों का वर्णन किया गया है। उन्हें उग्रवादी नागिनीवत् दूसरों का नाश करने वाली, बदला लेने वाली, प्रजा को संताप देने वाली, कपटकारिणी, अपने सम्बन्धियों, पुत्रों और भाइयों तक के प्राण हरने वाली और अनेक पुरुषों से संग करने वाली बताया गया है। राजनीति और राष्ट्र पालन करने वाले, गृह सचिव, गृह मन्त्री, पुलिस विभाग और गुप्तचर विभाग वेद के इन मंत्रों को विस्तृत रूप में देखें तो उन्हें ज्ञात होगा कि वेद में उग्रवाद को समाप्त करने के कितने सफल उपाय दिये हुए हैं, जिनका पालन करने से उग्रवाद समूल नष्ट हो सकता है।

इसी उग्रवाद को समाप्त करने के लिए अथर्ववेद के अन्य मंत्र भी स्पष्ट निर्देश कर रहे हैं। यथा (अ० ४/१६/६,७) (अ०-४/१६/६) (अ० ४/१७, ४/१८, ४/१६) (५/११/१-१२) निष्कर्ष यह है कि उग्रवाद को समाप्त करने के लिए तीन मुख्य उपाय हैं—

प्रथम उपाय—वेद मंत्रों में निर्देश है कि उग्रवादी, आतककारी या हिंसाकारी पुरुषों व स्त्रियों को वैसी ही पीड़ाएं दी जायें, जैसी उन्होंने दूसरों को दी, वैसे ही शस्त्रों से उन्हें मारा जाये जैसे शस्त्रों से उन्होंने निरपराध व्यक्तियों को मारा है। यह कार्य तुरन्त किया जाये।

दूसरा उपाय—जिन उग्रवादियों को दण्ड दिया जाये उनके मां-बाप, वंश के रिश्तेदारों और सम्बंधियों के नाम सारी जनता में (अखबारों द्वारा) प्रचारित किये जायें और उनके उपरोक्त सभी रिश्तेदारों या उन्हें मदद करने वालों को जेल में डाल दिया जाये। उग्रवादियों को मदद देने वाले व्यक्तियों को उग्रवादी ही बताया गया है और उन्हें प्रथम उपाय के अनुसार दण्ड देने का विधान किया गया है।

तीसरा उपाय— वेद में 'अपामार्ग विधान' विस्तृत रूप से दिया हुआ है। इसे "कण्टकशोधन प्रकरण" से भी जाना जाता है। कौटल्य के अर्थशास्त्र में "कण्टकशोधन" विस्तृत रूप से वर्णित किया गया है। उग्रवादियों पर गुप्तचरों द्वारा नजर रखी जाये। जैसे ही उनका पता लगे वैसे ही उन्हें गुप्त हिंसाकारी प्रयोगों से मार दिया जाये। पुलिस से कृत्रिम मुठभेड़ दिखा कर ऐसे दुष्टों का नाश कर दिया जाये। उपरोक्त उपायों को अपनाने पर पंजाब की व अन्य सभी जगहों की समस्यायें हल हो जायेंगी।

बम्बई में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि सभा

बम्बई । महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के १०३वें निर्वाण दिवस के उपलक्ष में बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आठ नवम्बर को आर्यसमाज माटुंगा के सामने नप्पू उद्यान में सेठ प्रताप सिंह शूरजी वल्लभदास (भू०पू० प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) की अध्यक्षता में एक विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसका संचालन आर्यसमाज माटुंगा के प्रधान श्री भगवती प्रसाद जी गुप्त ने किया । सर्वप्रथम यज्ञ एवं संध्या के पश्चात् पं० ओम् प्रकाश जी भजनोपदेशक ने ऋषि चरणों में भजन द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। तत्पश्चात् श्री दयानन्द विद्यालय माटुंगा के छात्रों एवं छात्राओं ने प्रभावशाली ढंग से ऋषि को श्रद्धांजलि अर्पित की ।

तत्पश्चात् महाराष्ट्र शासन के संस्कृति के मानद प्रचारक कविवर श्रीपाद चुन्नीराम ने संस्कृत में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें युगपुरुष बताया और उनकी शिक्षा को सम्प्रति अतीव उपादेय कहा ।

डा० सोमदेव जी शास्त्री ने उपस्थित जन समूह को याद दिलाया कि ऋषि ने विभिन्न मतावलम्बियों को बुलाकर सब से एक सत्य मत को स्वीकार करने व उनके आपस के विरोध को छुड़ाने का प्रयत्न किया था । किन्तु लोगों ने व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण नहीं माना । शास्त्री जी ने बलपूर्वक कहा कि जब तक एक सत्य सनातन वैदिक धर्म को नहीं अपनाया जायेगा, देश की एकता व अखंडता की रक्षा संभव नहीं ।

कैप्टन देवरत्न आर्य ने ऋषि जीवन के दीन दुःखियों के प्रति हृदयद्रावक सहानुभूति के अनेकों संस्मरण प्रस्तुत किये और कहा कि समाज द्वारा सेवा कार्यों को अति तीव्र गति से करना चाहिये ।

महाराष्ट्र के विशिष्ट कार्यकर्ता प्रो० देवरत्न जी तुंगार ने कहा कि ऋषि की शिक्षाओं में देश की समस्त समस्याओं का समाधान है। महाराष्ट्र में मराठी भाषा में ऋषि का साहित्य प्रचुर मात्रा में तैयार करवाना चाहिए ।

नवयुवक आचार्य रामचन्द्र जी ने उत्साहवर्धक शब्दों में ऋषि के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की ।

आर्यसमाज काकड़वाडी (बम्बई) के पुरोहित एवं परामर्शदाता पं० दयाशंकर शर्मा जी ने प्रत्येक गृहस्थ को पंच यज्ञों को अपनाकर ऋषि के अनुसार बालकों एवं बालिकाओं के चरित्र निर्माण एव उनकी धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल दिया ।

पं० देवव्रत शास्त्री जी ने ऋषि के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । पं द्वारकाप्रसाद जी पटौदिया ने, जो विश्व हिन्दू परिषद् के वर्षों प्रचार-मंत्री रहे हैं, कहा कि ऋषि ने हिन्दुओं की रक्षा में संजीवनी बूटी का काम किया । वेदों पर आधारित उनकी शिक्षाएं ही देश का कल्याण कर सकती हैं । ऋषि ने समाज के उपेक्षित और कमजोर वर्ग की ओर विशेष ध्यान दिया था । हमें उनमें काम करना अत्यन्त आवश्यक है ।

महानगर बम्बई की महिला मन्त्री श्रीमती लज्जारानी जी गोयल ने महर्षि के नारी के प्रति किये गये उपकारों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि ने नारी को गौरव प्रदान किया । नारी को अपने गौरव की रक्षा करनी चाहिए ।

अन्त में प्रधान जी ने अपनी ओर से कुछ आवश्यक और सामयिक महत्त्व के प्रस्ताव पारित कराये और अपने अध्यक्षीय भाषण में ऋषि के विचारों के प्रसार व प्रचार की गति तीव्र करने पर बल दिया ।

भगवान्, इन नेताओं को सद्बुद्धि ऐसो दीजिए

हे देश के नरनारियो गौरव अपने को जान लो।
सब मान-मर्यादा गई इस बात को पहचान लो॥

परतन्त्रता की बेड़ियां काटी थी तुमने आर्यो।
स्वाधीन होकर भी दुखी मा भारती है आर्यो॥

रामराज्य हो देश मे गांधी का यह फरमान था।
कुर्बानियां जो दे गये उनका यही अरमान था॥

चालीस वर्षों में हुआ क्या स्वप्न यह साकार है।
नर्तक बनी है संस्कृति कैसा हुआ आकार है।

राष्ट्रभाषा का हमारी हो रहा अपमान है।
राजर्षि टंडन का हुआ सब धूलिधूसर मान है॥

गांधी तेरे इस देश मे क्या बात है यह हो रही।
स्वाधीन भारत में तेरे भी मात है जो रो रही॥

मूल मे सारी बुराई है सुरा के पान मे।
ध्यान में आता नहीं नेतागिरी की शान मे॥

शिक्षा कुशिक्षा हो रही चारित्र्य की क्या बात है।
दूरदर्शन की नयी कैसी अनोखी घात है॥

हे आर्यो, कब तक रहोगे देखते इस कृत्य को।
जिससे मनुजता घट रही ऐसे घिनौने दृश्य को॥

भगवान् इन नेताओं को सद्बुद्धि ऐसी दीजिए।
वैदिक सुधा के पान से कल्याण इनका कीजिए॥

—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति

—शास्त्री सदन ११/६२४ पश्चिमी आजाद नगर, दिल्ली-५१

फरवरी १९४४ में दिल्ली में आयोजित आर्य महासम्मेलन के अवसर पर पं० गंगाप्रसाद एम. ए. का भाषण

सत्यार्थप्रकाश की जब्ती की मुस्लिम लीगी माग सर्वथा अनुचित है।

यह हिन्दुओ की धार्मिक स्वतन्त्रता के अपहरण के लिए सत्यार्थप्रकाश को लेकर प्रारम्भ किया गया एक सगठित प्रयत्न है। इस ग्रन्थ का गत ६० वर्षो से (अब १०४ वर्षों से सम्पादक) डके की चोट से प्रचार हो रहा है। पर कभी कही कलह नही हुई और इसके विरुद्ध कही आपत्ति तक नही उठाई गई। आज तक केवल हिन्दी मे इस ग्रन्थ की लगभग दो लाख प्रतिया प्रकाशित हो चुकी हैं। भारत की सब भाषाओ के साथ ही साथ अ ग्रेजी, फ्रेंच तथा जर्मन भाषा मे भी इसका अनुवाद प्रकाशित हो चुका है।

आपने कहा कि दूसरे धर्मों के प्रति उत्तेजक वाक्य तो सभी धर्मग्रन्थो मे हैं। कुरानमे भी इनकी कमी नहीं।

इन्द्र विद्यावाचस्पति का भाषण

प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने कहा कि सत्यार्थ-प्रकाश वेदो का द्वार है और समाज का जीवन है। यह आर्य जनता को स्वामी दयानन्द की सबसे बडी और स्थायी वसीयत है। यदि हम इसकी रक्षा नही करेंगे, तो हम नालायक सिद्ध होगे। ठीक सोचने का सबको अधिकार है, अत आर्यसमाज अपनी इस माग द्वारा विचार स्वातन्त्र्य की माग करता है। यदि आज सत्यार्थप्रकाश जब्त कर लिया जाता है,तो क्या गारटी है कि कल वेदो को जब्त नही कर लिया जायेगा।

मुस्लिम लीग ने सत्यार्थप्रकाश की जब्ती की मांग क्यो उठाई है, इस पर प्रकाश डलते हुए आपने कहा कि हैदराबाद (दक्षिण), सिन्ध और पजाब मे क्रमश यह आवाज उठाई गई है। इसका कारण यह है कि वे तीनो प्रदेश मुस्लिम लीग के पाकिस्तानी स्वप्न के अन्तर्गत हैं और यहा उनकी पाकिस्तानी योजनामे सबसे बड़ा रोडा आर्यसमाज है। अत सत्यार्थप्रकाश की आड लेकर आर्यसमाज को कुचलने की कुचेष्टा की गई है।

सत्यार्थप्रकाश और उसके आलोचक

आईना चेहरे का हर दाग दिखा देता है
उसकी फितरत का तकाजा है यह शिकवा कैसा ?
आप सत्यार्थ की आलोचना से क्षुब्ध न हो
अपने चेहरे को धो डालिये, गुस्सा कैसा ?
जिसकी तालीम ने बिस्मिल के जमाये अरमा
जिसको स्वराज, स्वदेशी की पताका कहिये
ऐसे सत्यार्थ को जो शख्स बुरा कहता है
उसे गद्दार न कहिये तो भला क्या कहिये।

— उत्तमचन्द शरर एम० ए०

नेपाल में गायत्री यज्ञ

आर्यसमाज, वीरगज, नेपाल की ओर से स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती, प्रो० सत्यनारायण आर्य और नेपाल के विद्वान् श्री रामचन्द्र आर्य, श्री इन्द्रदेव सिंह आर्य व श्री सुवश राय आर्य की उपस्थिति मे वीरगज नगर पचायत वार्ड न० १४ रानीघाट स्थित श्री राम मन्दिर मे २२ से २६ नवम्बर तक विभिन्न कार्यक्रमो के साथ महागायत्री यज्ञ हुए। यज्ञ का शुभारम्भ श्रीमान् नारायणी अचलाधीश डा० दुर्गा प्रसाद रिजाल द्वारा सम्पन्न हुआ। आचार्यत्व स्वामी मोक्षानन्द और श्री रामकृष्ण शास्त्री जी ने किया।

पंडित विष्णुमित्र विद्यामार्त्तण्ड दिवंगत

कन्या गुरुकुल खानपुरकला के कुलपति पडित विष्णुमित्र जी विद्यामार्त्तण्ड का १७ दिसम्बर प्रात काल दिल की बीमारी के दौरे से अचानक देहान्त हो गया।

२९ दिसम्बर को गुरुकुल मे हुई शोक सभा मे उन्हे श्रद्धाजलिया अर्पित की गई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनके निधन पर गहरा दु ख प्रकट किया है।

राजधानी में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न

म्युनिसिपल पार्क का नाम श्रद्धानन्द पार्क और घंटाघर चौक का नाम श्रद्धानन्द चौक रखने की मांग

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का उद्बोधन : विशाल शोभायात्रा

(हमारे कार्यालय संवाददाता से)

दिल्ली २५ दिसम्बर। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का साठवां बलिदान दिवस आज यहां उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया।

इस अवसर पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा के सभापति पद से बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि आने वाली पीढ़ियां राष्ट्रीय एकता के लिए स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को सदा याद रखेंगी।

उन्होंने मांग की कि टाउन हाल के प्रांगण में जहां स्वामी जी की प्रतिमा लगी हुई है, उस स्थान का नाम स्वामी श्रद्धानन्द पार्क और घंटाघर चौक का, जहां ३० मार्च १९१९ को स्वामी जी ने रौलट एक्ट के विरोध में अंग्रेजों की संगीनों के सामने सीना तान दिया था, नाम स्वामी श्रद्धानन्द चौक रखा जाये।

स्वामी आनन्दबोध जी ने यह भी कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जीवन भर देश की स्वाधीनता, राष्ट्र की एकता और साम्प्रदायिक सौमनस्य के लिए काम किया। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सब अपने राष्ट्र को उन्नत करने के काम में जुट जाएं।

श्री रामकुमार भारद्वाज, जो साउदी अरब में गीता और सत्यार्थप्रकाश अपने पास रखने के 'अपराध' में जेल में डाल दिये गये थे और रिहा होकर हाल ही में स्वदेश लौटे हैं, भी सभा में पधारे। उनका पुष्पमालाओं से स्वागत किया गया।

सभा में श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री हरदयाल देवगुण (दोनों भूतपूर्व संसद् सदस्य) और आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महोपदेशक श्री रामकिशोर वैद्य ने भी स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। विख्यात कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी का कवितापाठ सदा की भांति खूब सराहा गया।

विशाल शोभायात्रा

इससे पूर्व प्रातः दस बजे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन श्रद्धानन्द बाजार से विशाल शोभायात्रा प्रारम्भ हुई जो चावड़ी बाजार नई सड़क और चांदनी चौक होती हुई दोपहर बाद लाल किले के सामने वाले मैदान में सार्वजनिक सभा में परिणत हो गई।

अनेक आर्य सन्यासी, विद्वान् और नेता इस शोभायात्रा में पैदल अथवा सुसज्जित हाथी-घोड़ों पर चल रहे थे। शोभायात्रा पांच किलोमीटर लम्बी थी। हजारों का जन-समुदाय था। लगभग एक सौ शिक्षण संस्थाओं के छात्र और छात्रायें बैंड बाजे, लेजिम आदि के साथ गीत गाते शोभायात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे।

अनेक संगठनों ने शोभायात्रा के मार्ग को सजाया और पुष्प वर्षा करके शोभायात्रियों का स्वागत किया। बच्चों को फल बांटे गये।

स्पष्टीकरण

सात दिसम्बर १९८६ के सार्वदेशिक में पृष्ठ दो पर एक सूचना प्रकाशित हुई थी, जिससे यह ध्वनि निकलती थी कि हैदराबाद सत्याग्रह के लिए मिलने वाली पेन्शन के लिए ३० जून १९८६ के बाद दिये गये आवेदनपत्रों पर भी विचार किया जायेगा। वस्तुस्थिति यह है कि सरकार ने यह रिआयत केवल उन आवेदनकर्ताओं को देने की घोषणा की है, जिन्होंने अपने आवेदनपत्र ३० जून से पहले भेज दिये थे, लेकिन किसी कारणवश वे ३० जून के बाद अपनी मंजिल पर पहुंचे। —सम्पादक

आर्यसमाज जंगपुरा विस्तार का उत्सव सम्पन्न

दिल्ली। आर्यसमाज जंगपुरा विस्तार का २७वां वार्षिकोत्सव २४ से ३० नवम्बर तक महात्मा दयानन्द जी (अधिष्ठाता तपोवन देहरादून) की अध्यक्षता मे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यजुर्वेदीय यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी थे। रात्रिकथा मे श्री यशपाल सुधांशु एवं आचार्य आर्य नरेश जी ने कथा प्रवाचक के रूप में ६ दिन तक मानसिक भोजन दिया। श्री राघव जी ने मनोहर भजनो द्वारा जनता को मन्त्रमुग्ध किया। २९ नवम्बर को आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। ३० नवम्बर (रविवार) को यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई।

वक्ताओं में श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय, श्री के नरेन्द्र (सम्पादक प्रताप), ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी, स्वामी दीक्षानन्द जी और महात्मा दयानन्द जी के नाम उल्लेखनीय हैं। समाज के भूतपूर्व सरक्षक एवं प्रधान स्वर्गीय चौधरी गोपालदास जी की पुण्य स्मृति मे उनके सुपुत्र श्री लक्ष्मीचन्द भाटिया द्वारा प्रकाशित पुस्तक "वैदिक सत्सग सुधा" का विमोचन हुआ।

आयुर्वेदाचार्य एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् तथा "संस्कृत [illegible] सरणी" के लेखक ९१-वर्षीय प्रज्ञाचक्षु आचार्य राजकरणी जी का अभिनन्दन किया गया।

भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन गलत : राजीव गांधी

दार्जीलिंग, १९ दिसम्बर। प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने आज यहा एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन करना भयकर भूल थी। स्वार्थी लोग इसे राजनैतिक हथकण्डे के रूप मे प्रयोग कर रहे हैं। पहाडी क्षेत्रो मे गोरखालैंड की माग अनुचित है।

आर्यसमाज पुलबंगश के उत्सव पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का उद्बोधन

आर्यसमाज पुलबंगश (दिल्ली) का ३६वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के महोपदेशक रामकिशोर जी वैद्य वानप्रस्थी के ब्रह्मत्व मे प्रतिदिन प्रात काल यज्ञ हुआ। प्रतिदिन प्रात व रात्रि उन्होंने वेदोपदेश दिया।

इस अवसर पर आर्यसमाज की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को एक शाल भेंट किया गया। स्वामी जी ने अपने सन्देश मे आर्यजनो को उत्साहित करते हुए कहा कि वेद की पवित्र शिक्षाओं का प्रचार ही हमारा ध्येय है। प्रत्येक आर्य का यही धर्म है। पुरोहित अखिलेश भारती जी को भी क्षेत्र के महानगर पार्षद चौ० नन्दलाल जी ने आर्यसमाज की ओर से एक शाल प्रदान कर सम्मानित किया।

पत्रिका हेतु पारितोषिक

आर्यसमाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना की ओर से एक पत्रिका निकालने का निर्णय हुआ है। इस पत्रिकार्थ नाम, जो वैदिक मान्यताओं से युक्त हों, उपरोक्त पते पर आमन्त्रित किये जाते हैं। जिसका नाम उपसमिति चुनेगी, उस व्यक्ति को नकद पुरस्कार दिया जायगा। —बलदेव राज आर्य, मन्त्री

नेपाल के गांव में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

ग्राम पचरा, जिला रोतहट (नेपाल) में पहली जनवरी से नौ जनवरी १९८७ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ आयोजित किया गया है। इसमें नेपाल के अधिकारी भी सम्मिलित होंगे। अनेक गण्यमान्य सज्जन यजमान बनेंगे।

श्री शान्तिस्वरूप आर्य का देहान्त

आर्यसमाज सिम्भावली (गाजियाबाद) के प्रधान श्री शान्तिस्वरूप आर्य का २७ नवम्बर को देहान्त हो गया।

लाला मदनमोहनलाल पट्टीवालों का निधन

चन्दौसी निवासी लाला मदनमोहनलाल पट्टीवालों का १५ दिसम्बर को फालिज की बीमारी से देहान्त हो गया। वे आर्यसमाज चन्दौसी के मन्त्री और रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला के मैनेजर रहे। उन्होंने स्वाधीनता आन्दोलन मे काफी काम किया। वे हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भी जेल गये थे।

फीरोजपुर झिरका आर्य वीर दल का चुनाव

फीरोजपुर झिरका मडल आर्य वीर दल के निम्नलिखित पदाधिकारी नियुक्त हुए—

कार्यवाहक मण्डलपति—श्री सुभाषचन्द्र सिंघला, बौद्धिकाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र सिंह राणा, मन्त्री—श्री मानकचन्द आर्य, उपमन्त्री—श्री शिवदत्त जी आर्य और श्री श्यामकुमार जी आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री नरदेव जी आर्य, शाखानिरीक्षक—श्री रामरत्न जी आर्य, व्यायामशिक्षक—श्री अनिलकुमार आर्य, उपमण्डलपति—सर्वश्री लाजपत आर्य (गुड़गांव क्षेत्र), नरेन्द्र कुमार (सोहना क्षेत्र), कृष्णकुमार (नूह क्षेत्र), सुरेन्द्र कुमार (पुनाहना क्षेत्र) और बलराज सेठी (फीरोजपुर झिरका क्षेत्र)

विशेष समिति—सर्वश्री सत्येन्द्र प्रकाश शास्त्री, वीरेन्द्र सिंह राणा, सुभाषचन्द्र सिंघला, मूलचन्द आर्य नरदेव आर्य आदि विशेष समिति के सदस्य बनाये गये।

आर्यसमाज मीरजापुर द्वारा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को ग्यारह हजार रुपये की थैली भेंट

मीरजापुर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री स्थानीय आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर यहां पधारे। रेलवे स्टेशन पर दोनों आर्य नेताओं का भव्य स्वागत किया गया।

स्वामी जी और शास्त्री जी ने विशाल जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर अपने विचार प्रकट किये। स्वामी जी ने एक संवाददाता सम्मेलन को भी सम्बोधित किया। वहां उन्होंने संवाददाताओं के प्रश्नों के युक्तियुक्त उत्तर दिये।

पंजाब को सेना के हवाले किया जाये : आर्यसमाज अजमेर का प्रस्ताव

अजमेर। स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को तार भेजकर आर्यसमाज अजमेर के इस प्रस्ताव की सूचना दी है कि देशद्रोहियों और आतकवादियों द्वारा पंजाब में हिन्दू यात्रियों की निर्मम हत्या के लिए उनकी कठोरतम शब्दो मे भर्त्सना की गई। प्रस्ताव मे मांग की गई कि राष्ट्र हित में पंजाब को सेना के हवाले किया जाये, निर्दोष नागरिकों की हत्याओं का सिलसिला बन्द किया जाये, नागरिकों के जानमाल की रक्षा की जाये और आतंकवादियों को दृढ़ता से कुचला जाये।

आर्यसमाज डस्का बाजार, बस्ती में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्यसमाज डस्का बाजार, बस्ती में पांच से नौ फरवरी तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर उच्च कोटि के अनेक विद्वान् और संन्यासी अपने विचार प्रकट करेंगे। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान आचार्य रामानन्द शास्त्री मुख्य अतिथि होंगे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और श्री सच्चिदानन्द शास्त्री गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालपुर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि वैदिक ज्ञान से ही विश्व का कल्याण हो सकता है। वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में गुरुकुल महाविद्यालय सराहनीय कार्य कर रहा है। छात्रों के वेदपाठ, श्लोकोच्चारण को सुनकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि वैदिक ज्ञान के प्रचार से ही राष्ट्र का कल्याण सम्भव है। राष्ट्र को विघटनकारी प्रवृत्तियों का एक मात्र निदान वैदिक ज्ञान है।

संस्था के प्राचार्य डा० हरिगोपाल शास्त्री ने स्वामी जी का स्वागत करते हुए कहा कि स्वामी जी अहर्निश आर्य-वैदिक धर्म के प्रचार में लगे रहते हैं।

रोहतक में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

महात्मा टेकचन्द प्रभु आश्रित जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्य नगर रोहतक में यजुर्वेद पारायण यज्ञ आगामी १५ फरवरी से २२ फरवरी तक महात्मा दयानन्दजी (संयोजक तपोवनाश्रम देहरादून व रोहतक) के ब्रह्मत्व में होगा।

१९, २० और २१ फरवरी को क्रमशः वेद सम्मेलन यज्ञ सम्मेलन व राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होंगे; जिनमें आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् अपने विचार प्रकट करेंगे।

महात्मा अमरस्वामी जी की धर्मपत्नी दिवंगत

श्रीमती नारायणी देवी प्रेमवती जी का ८२ वर्ष की आयु में ३० नवम्बर की रात्रि १० बजे अपने पुत्र कुंवर धनंजय सिंह जी के घर विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद में देहान्त हो गया। माता जी बहुत धर्मपरायण देवी थी। महात्मा अमर स्वामी जी की धर्मपत्नी थीं।

वेद संस्थान में साधना शिविर सम्पन्न

नई दिल्ली। वेद संस्थान में १० से १६ नवम्बर तक साधना शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। स्थानीय साधकों के अतिरिक्त उत्तर-प्रदेश, गुजरात, पंजाब, हरयाणा, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों से ३० से अधिक नर-नारी इसमें पधारे। १५ नवम्बर को संस्थापक स्वामी विद्यानन्द "विदेह" का ८८वां जन्मदिवस मनाया गया। इस अवसर पर डा० फतहसिंह ने "विदेह" के उद्‌गारोंके संकलन "वेदमाता" का विमोचन किया।

वैदिक रीति से स्पेन में पहला विवाह

स्पेन स्थित गर्नाडा स्थान पर जुलाई १९८६ में वैदिक रीति से पहला विवाह सम्पन्न हुआ। गोविन्द प्रसाद शर्मा (स्लाटियागो गौसिमो) और महानारायणी शर्मा (लूअनडायज) दोनों ही यूरोपियन मूल के हैं। उनका विवाह हिन्दू पद्धति से लगभग २ घंटे में सम्पन्न हुआ। पहले आस-पास की गलियो मे एक जुलूस निकाला गया और तत्पश्चात् विवाह समारोह मनाया गया, जिसमे पवित्र अग्नि के चारो ओर सप्तपदी की रस्म हुई। यह समारोह संस्कृत भाषा मे हुआ और अतिथियों को भिन्न-भिन्न धार्मिक विधियों के अर्थ बताये गये। तानपूरा और हारमोनियम पर मुख्य नन् द्वारा वैदिक संगीत गाया गया। संयोगवश ये नन् भारत के विभाजन से पहले बंगाल के अन्तिम अंग्रेज गवर्नर की पोती हैं। समारोह के अन्त में सब अतिथियों को शाकाहारी भोजन परोसा गया। (विश्व हिन्दू परिषद् के बुलेटिन से साभार)

आर्यसमाज गोरखपुर का उत्सव

आर्यसमाज रेलवे कालोनी (असुरन) वेद मन्दिर, गोरखपुर का ४४वां वार्षिकोत्सव २० फरवरी से २३ फरवरी तक मनाया जायेगा। उत्सव में आर्य जगत् के विद्वान् उपदेशक, शास्त्रार्थ महारथी, संन्यासी और भजनोपदेशक आमन्त्रित किये गये हैं।

सम्पादक के नाम पत्र

गंज मीरखां क्षेत्र में बूचड़खाने

महोदय

हम आपका ध्यान दिल्ली में डिलाइट सिनेमा के पीछे गंज मीरखां क्षेत्र में चल रहे लगभग १५० अवैध बूचड़खानों की ओर खींचना चाहते हैं। कुछ ही वर्षों में प्रशासन की नीतियों के कारण इनकी संख्या तीन से बढ़कर १५० तक पहुंच चुकी है, जिसके कारण इस क्षेत्र का वातावरण बहुत खराब हो गया है। सारा इलाका गन्दगी, मांस और खून से भरा रहता है। इससे यहां के निवासियों का रहना बहुत मुश्किल हो गया है। स्थानीय निवासियों के अनुसार यहां रात के समय गौओं को काटा जाता है जो हमारे धर्म को चुनौती है। प्रशासनिक अधिकारी सब नियम ताक पर रखकर इन कसाइयों की मदद करने में लगे हुए हैं। इन बूचड़खानों को हटवाने के लिए जब कुछ लोग दिल्ली नगर निगम के आयुक्त से मिले तो उन्होंने इन बूचड़खानों को हटवाने में अपनी असमर्थता प्रकट की। हमें अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी है। इसके लिए हमें जनता का सहयोग चाहिये।

—राधाकृष्ण बजाज, अन्सारी रोड, दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

१—ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	१२)	वीर वैरागी	८)
२—आत्मदर्शन (नवीन संस्करण)		बालपथ प्रदीप	८)
महात्मा नारायण स्वामीकृत	१०)	हमारे प्रेरक	१)५०
३—दयानन्द-दिव्य दर्शन (चित्रावली)	२५)	Bankim Tilak Dayanand	4)
४—कर्त्तव्य-दर्पण	४)	आर्य वीर दल लेखमाला	४)
५—आर्य पर्व-पद्धति	९)	गाण्डीव और गदा उठाओ	२)
६—ऋग्वेद (पांच भाग—सम्पूर्ण)	२००)	संघर्ष ही जीवन है	२)५०
७—यजुर्वेद एक ,, ,,	६०)	गोहत्या—राष्ट्रहत्या	२)
८—सामवेद ,, ,, ,,	४०)	उपनिषद् आठ	१३)७५
९—अथर्ववेद (दो भाग) ,,	१२०)	दयानन्द वचनामृत	१)
10—Introduction to the Vedas	30)	अमरहुतात्मा पं० लेखराम	१)
11—Atharva Ved (Eng. Part I)	65)	वैदिक सूक्ति-सुधा	१)५०
12—Atharva Ved (Eng. Part II)	65)	योग रहस्य	४)५०
(Acharya Vaidya Nath Shastri)		मृत्यु और परलोक	४)
13—Rigved I & II	40)	दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश	४)
14— ,, III	65)	संस्कार-विधि	६)
१५—वेदार्थ कल्पद्रुम (प्रथम खंड)	६०)	मेरे सपनों का भारत	४)
१६—सत्यार्थप्रकाश बंगाली	२०)	संस्कृत सत्यार्थप्रकाश	५०)
१७— ,, ,, उड़िया	२०)	जन्मगत जात-पांत वेद-विरुद्ध	
१८— ,, ,, कन्नड़	३०)	मत खण्डन	१)
१९—सत्यार्थप्रकाश हिन्दी	१०)	वैदिक युग और आदि मानव	१२)
२०—स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द	१२)		

चारों वेद—नौ जिल्दों में सरल हिन्दी अनुवाद सहित एक साथ लेने पर ४००) रुपये के स्थान पर केवल ३५०) रुपये में। अलग-अलग जिल्द लेने पर १० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

मन्त्री, सार्वदेशिक आ० प्रति० सभा दयानन्द भवन, ३/५ आसफअली रोड, नई दिल्ली-२



दिल्ली के स्थानीय विक्रेता —

(१) मै० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर, ३७७ चादना चौक (२) म० आयुर्वेदिक एण्ड जनरल स्टोर, सुभाष बाजार, कोटला मुबारकपुर (३) मै० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा, मेन बाजार, पहाड़गंज (४) मै० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी, गडोदिया रोड, आनन्दपर्वत (५) मै० प्रभात केमिकल क०, गली बताशा, खारी बावली, (६) मै० ईश्वरदास किसनलाल, मेन बाजार मोतीनगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री, ५३७ लाजपतराय मार्किट (८) दिसुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) वैद्य मदनलाल ११-शकर मार्किट, दिल्ली-६

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ, चावड़ी, बाजार, दिल्ली-६ फोन न० २६१८३८



सिन्धी आर्य सम्मेलन के अवसर पर आयोजित महिला सम्मेलन का एक दृश्य । पानी मीरा दति अपने विचार व्यक्त कर रही हैं । पास ही बैठी हैं सम्मेलन की अध्यक्षा और आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ की उपप्रधाना श्रीमती कौशल्या देवी ।

सार्वदेशिक साप्ताहिक "सत्यार्थप्रकाश अंक"
रजि० नं० डी० (सी०) १७८ (२१ ११८७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू० ६३
R.N 62?/57 Licensed to post without payment Licence No 93 Post in D P S O on 2 1-87

ओ३म्

आर्यसमाज के नियम तथा उद्देश्य

(विश्व शान्ति के आधार)

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज, नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सारे संसार को आर्य बनाओ।

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१

वर्ष २२ अक ३] पौष शु० १२ स० २०४३ रविवार ११ जनवरी १९८७ वार्षिक मूल्य १०) एक प्रति ५० पैसे

आर्यसमाज कलकत्ता के उत्सव पर पुलिस सत्यार्थप्रकाश की प्रतियां उठा ले गई

विरोध प्रदर्शित करने पर पुस्तकें लौटा दी गई

ऐसी घटना की पुनरावृत्ति रोकी जाये : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का प्रधानमंत्री को पत्र

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी को पत्र लिखकर उनसे माग की है कि जो तत्त्व बगाल मे मुस्लिम साम्प्रदायिक कठमुल्लावाद का विद्वेष फैलाने की चेष्टा कर रहे है, उनके विरुद्ध कडी कार्रवाई की जाये।

यह पत्र लिखने की आवश्यकता इसलिए पडी कि पुलिस के कुछ वरिष्ठ अधिकारी आर्यसमाज कलकत्ता के वार्षिक उत्सव पर पुस्तक विक्रेताओ के स्टालो से सत्यार्थप्रकाश की प्रतिया उठा ले गई। यह घटना २४ दिसम्बर को है। यह काड इसलिए हुआ क्योकि उसी दिन कलकत्ता की एक मस्जिदमे एक मुल्ला ने उत्तजक भाषण दिया था।

नीचे यह पत्र अविकल रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है—

प्रधानमन्त्री के नाम पत्र

मान्यवर श्री राजीव गाधी जी,

सादर नमस्ते।

पश्चिम बगाल की ज्योति बसु सरकार अपनी अकमण्यता के कारण अनेक समस्याओ को जन्म दे रही है। मैं इसी प्रकार की एक घटना की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ।

आर्यसमाज कलकत्ता का वार्षिक उत्सव २४-१२-८६ को मुहम्मद अली पार्क मे हो रहा था। दोपहर के समय महिला सभा का सम्मेलन चल रहा था। उस समय पुलिस के कुछ वरिष्ठ अधिकारी मुहम्मद अली पार्क मे आये और वहा से समस्त पुस्तक विक्रेताओ के स्टालो से सत्यार्थप्रकाश की प्रतिया उठा ले गये। उनकी इस कार्रवाई का महिला सभा ने कडा विरोध किया, लेकिन पुलिस ने सभी प्रतिया थाने मे भिजवा दी।

इस घटना से कलकत्ता के आर्य नेताओ व अन्य हिन्दू नेताओ को दुःख हुआ। उन्होने भी इसका विरोध किया। आर्यसमाज के वरिष्ठ विद्वान् और नेता थाने गये और पुलिस अधिकारी से मिले और उनसे पूछा कि सत्यार्थप्रकाश को उठाने का उन्हे किसने आदेश दिया था। बिना सरकारी अनुमति के इस प्रकार से उनका यह काय धार्मिक भावनाओ को चोट पहुचाता है। अन्त मे रात १० बजे पुलिस ने सब पुस्तके जहा से वह ले गई थी वही रख दी। यह सब काण्ड इसलिए हुआ कि उस दिन मस्जिद से एक मुल्ला ने उत्तेजक भाषण दिया था। किन्तु मुझे अफसोस है कि पुलिस अधिकारी उसके भडकावे मे आ गये और उन्होने सरकारी मान मर्यादा तथा अनुशासन का तो उल्लघन किया ही, धार्मिक पवित्रता को भी भग किया।

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द ने आज से १०६ वर्ष पूर्व यह ग्रन्थ लिखा था। यह ग्रन्थ ससार की २०-२२ भाषाओ मे छपकर करोडो की सख्या मे जनता तक पहुच चुका है। १९४६ मे जब सिन्ध मे मुस्लिम लीगी सरकार स्थापित हुई तो प्रधानमन्त्री सर गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला ने ११ अगस्त १९४६ को यह घोषणा कर दी कि सत्यार्थप्रकाश के १४वे समुल्लास का अरबी, सिन्धी, उर्दू, अग्रेजी और फारसी मे वहा वितरण व प्रकाशन अपराध माना जायेगा।

इस प्रतिबन्ध की घोषणा के समाचार से सारे आर्य जगत् मे व्यापक रोष पैदा हो गया और सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री नारायण स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश पर पाबन्दी के विरोध मे सत्याग्रह का ऐलान कर दिया। इस सत्याग्रह मे आर्यसमाजी नेताओ के अतिरिक्त राष्ट्रवादी हिन्दू सगठनो का भी पूरा समर्थन मिला और अन्तत सिन्ध सरकार ने सत्यार्थप्रकाश पर पाबन्दी का आदेश वापस ले लिया था।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

अग्निहोत्र से बीमारियां दूर होती हैं

–वीरेन्द्र मिश्र–

जैसे जैसे हम वैज्ञानिक तथ्यो मे डूबते गए अपनी वैदिक परम्पराओ को भूलते गए। अनिवृष्टि भूकम्प, मृत्यु बीमारिया, वर्षा व दुर्घटनाए बढती गई। इन सब के मूल मे है 'प्रदूषण' जिसने वायु और जल को ही नही, बल्कि समूचे वातावरण को प्रदूषित कर दिया है। इससे बचने के लिए वैज्ञानिक दिन-रात खोज कर रहे हैं। अब ज्यादातर वैज्ञानिक प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए अग्निहोत्र की भी शरण ले रहे हैं।

पूना विश्वविद्यालय मे अग्निहोत्र पर शोध कर रहे अमरीकी मनोवैज्ञानिक बैरी रैथनर का कहना है कि अग्निहोत्र से वातावरण का प्रदूषण दूर होता है और प्रभावकारी तत्त्व लहराने लगता है। यही नही, मानव मस्तिष्क पर अग्निहोत्र से निकलने वाला सुगन्धयुक्त धुआ अपना सकारात्मक प्रभाव डालता है। जब गहन आबादी वाले क्षेत्र में रोगो का आक्रमण होता है, खासकर जब श्वास नलिका प्रभावित होती है तो 'अग्नि' मे अग्निहोत्री कुछ विशेष प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियो की 'हवि' देता है, जिससे औषधियुक्त धुआ निकलता है, जो वातावरण मे मौजूद विषाणुओ का नाश करके फेफडो मे मौजूद बीमारियो के कीटाणुओं को नष्ट कर डालता है। इस प्रकार अग्निहोत्र मे उठने वाला धुआ आयुर्वेदिक औषधि भी है।

भारतीय शिक्षाविद् प्रो॰ के॰ पी॰ नारायणन् ने अपनी एक रिपोर्ट मे लिखा है कि हमें अपने को ही नही, बल्कि अपने परिवार, कुटुम्ब और राष्ट्र को भी प्रदूषण-मुक्त रखने वाली वैदिक विद्या अग्निहोत्र को लोग अपनी ही धरती पर भुला बैठे हैं किन्तु यह विदेशो में भी प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए एक मुख्य साधन बन गया है। राजस्थान के शाहपुर मे महर्षि दयानन्द के आश्रम मे ५२ वर्ष पहले अग्निहोत्र के लिए जो अग्नि प्रज्वलित की गई थी, वह आज भी सुरक्षित है और लोग उसका उपयोग करते रहते हैं। नोएडा स्थित महर्षि महेश योगी के आश्रम मे महर्षि वेद विज्ञान विद्यापीठ है, जहां १५ अग्निहोत्री हैं, जो विद्यापीठ के दो हजार विद्यार्थियो को अग्निहोत्र मे दक्ष बना रहे हैं। यहा के अग्निहोत्री राधेश्याम भार्गव अरणि मथन और मन्त्रोच्चार से अग्नि प्रज्वलित कर लेते हैं।

चार देशो अमरीका, चिली, पोलैंड और पश्चिम जर्मनी मे वातावरण को प्रदूषण मुक्त करने के लिए अग्निहोत्र का प्रयोग होता है। अमरीका के पूर्वी और पश्चिमी भागो में अग्निहोत्री बनने के प्रति काफी दिलचस्पी बढी है। वहा करीब ९० अग्निहोत्री जगह जगह नियमित अग्निहोत्र करा रहे हैं। ६ सितम्बर १९७८ से व्हाइट हाउस के पास मेरीलैंड और बाल्टिमोर में अग्निहोत्र करने के लिए हवन-कुड बने हैं। कभी अमरीका का वर्जीनिया सबसे ज्यादा प्रदूषण से प्रभावित था। वहा २२ सितम्बर सन १९७३ को एक वैदिक हवन कुण्ड बनाया गया और नियमित रूप से अग्निहोत्र आरम्भ हुआ। आज वहा के वातावरण मे प्रदूषण मे ५० प्रतिशत तक कमी बताई जाती है। इसी प्रकार अमरीका के चारो कोनो पर अग्निहोत्र के लिए हवन कुण्ड बने हैं, जहा सूर्य निकलने और डूबने पर अग्निहोत्र किया जाता है। हालाकि पुजारी वहा पर नही है, इसलिए पूजा नही होती।

पोलैंड मे वैज्ञानिको की काफी सख्या है। फिर भी ज्यादातर लोग वहां घरेलू उपचार पर विश्वास करते हैं। समूचे देश मे १७ स्थानो पर हवनकुण्ड मे नियमित रूप से होम किया जाता है। सबसे पहले यहा जब अग्निहोत्र का सूत्रपात हुआ तो इसमे शरीक होने के लिए ज्यादातर लोगो ने रुचि जाहिर की। पहले दिन ही अग्निहोत्र के बारे में जानकारी हासिल करने वाले लोगो मे २०० से भी अधिक वैज्ञानिक शरीक हुए थे।

अमरीका के बाद पश्चिमी जर्मनी मे सबसे ज्यादा अग्निहोत्र होता है। वहा तो जहा-जहा अग्निहोत्र का शुभारम्भ हुआ है, आज तक अग्नि उसी प्रकार से प्रज्वलित है, बुझी नही। इसके प्रभाव से वहा की दर्जनो बीमारियां समाप्त हो गई हैं। यह अग्निहोत्र के धुए के प्रभाव से सम्भव हो सका है—ऐसा वैज्ञानिक मानते हैं।

"जगल की मौत" नामक एक प्रकार की बीमारी यहा हुई थी, जिससे जगल के जगल सूख कर नष्ट होने लगे थे। उन जगलो के पास के क्षेत्रो मे लगातार तीन माह तक अग्निहोत्र कराया गया, जिसके प्रभाव से सन् १९४८ मे तो पतझड के मौसम के बाद ही हरियाली आनी शुरू हुई और सन् १९८४ के मध्य तक ज्यादातर पेड हरे-भरे हो गये। आज वहा रमणीक वातावरण है। यह सब अग्निहोत्र मे नियमित हवि से उठने वाले धुंए के प्रभाव से हुआ है। इसे वैज्ञानिको ने प्रयोग करके भी देखा है।

अग्निहोत्र करने के लिए भारतीय वैदिक पद्धति के अनुसार तांबे के पिरामिड आकार के बर्तन मे बिनौले कडे शुद्ध घी, चावल और काले तिलों की हवि दी जाती है। कडो मे ऐंटीसैप्टिक गुण होता है। तांबे के बर्तन में पानी भी रखा जाता है। इसके लिए उगते सूर्य और डूबते सूर्य का समय ही ठीक माना गया है, क्योंकि सुबह और शाम को सूर्य की सुनहरी किरणें तिरछी पडती हैं जिनमे औषधि के अनेक गुण मौजूद रहते हैं।

इन दिनो भोपाल में अग्निहोत्र का चलन बढा है। श्री वसत न्रांजपे सन् १९७८ से अग्निहोत्र कर रहे हैं। वे घरेलू उपचार के लिए बैरी रथनर के साथ अग्निहोत्र कर रहे हैं। हमे अपनी पुरानी वैदिक सस्कृति को जीवन्त कर इसकी खोई प्रतिष्ठा को पुनर्जागृत करना है।

(दैनिक हिन्दुस्तान से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैंड का गठन

पिछले सोलह नवम्बर को आर्यसमाजो के प्रतिनिधि राटरडम के आर्यसमाज मन्दिर मे एकत्रित हुए। सदस्यो की इच्छा पर आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड का गठन किया गया। निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान—डा॰ महेन्द्र स्वरूप, उपप्रधान—श्री बी॰ जयपाल और श्री लालता अयोध्या, मन्त्री—श्री एस॰ राम सुन्दर सिंह, उप-मन्त्री—श्री जीवन गणेश और कोषाध्यक्ष—श्री एस॰ शुभधन। श्री डी॰ शुभधन, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री रामजस चौधरी, प॰ रामदेव रामअवतार, प॰ बी॰ एल॰ कुशल आदि अन्तरंग सभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

रामकुमार भारद्वाज साउदी अरब कत्लगाह से बरी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अहर्निश। प्रयत्न रग लाये

बातिल से डरने वाले ऐ आसमां नहीं हम।
सौ बार कर चुका है, तू इम्तिहां हमारा॥

रामकुमार भारद्वाज नामक व्यक्ति को जो साउदी अरब मे सर्विस के लिए गये थे सत्यार्थप्रकाश रखने के आरोप मे गिरफ्तार कर लिया गया था। बिना कोई मुकददमा चलाये उन्हें काफिर करार दिया गया और काफिरो के लिए कुरान मे जिस प्रकार की सजा की व्यवस्था दी गई है, उसके अनुसार उन्हें कत्ल करने का फैसला कर लिया गया।

उनकी गिरफ्तारी की खबर यहा पहुचते ही सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा की ओर से जो आर्यों की शिरोमणि सभा है स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने विदेशमन्त्री को चिटठी लिखी और रामकुमार भारद्वाज को जेल से छुडवाने का आग्रह किया। परन्तु विदेश मन्त्रालय की ओर से दिये गये उत्तर मे कोई कारवाई करने की बजाय उल्टे सावदेशिक सभा से कहा गया कि साउदी अरब का सरकार का ऐसा ही कानन है। इस उत्तर पर और भारत सरकार की असमथता पर सावदेशिक सभा ने निदश दिया कि ११ जनवरी को देश विदेश मे सवत्र जहा जहा भी आयसमाजी निवास करते है साउदी अरब की धार्मिक असहिष्णुता के प्रति विरोध प्रकट किया जाये और भारत सरकार से इस विषय मे कारगर कदम उठाने की अपील की जाये।

सावदेशिक सभा ने यह भी निश्चय किया कि १४ जनवरी को दिल्ली स्थित साउदी अरब के दूतावास के सामने शान्तिपूण प्रदशन किया जाये। सावदेशिक सभा ने अपने इस निश्चय की घोषणा समाचारपत्रो मे कर दी और भारत सरकार के विदेश मन्त्री और प्रधानमन्त्री को भी अपने निश्चय से अवगत कर दिया।

इस बीच साउदी अरब मे इस विवाद की जड खत्म करने के लिए रामकुमार को चुपचाप कत्ल करने की तयारी कर ली गई और उन्हें सामान्य जेल से हटाकर उस काल कोठरी मे बन्द कर दिया गया जिसमे कत्ल किये जाने वाले लोगो को बन्द किया जाता है।

इसके बाद सावदेशिक सभा के प्रधान के नाते स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का प्रधानमन्त्री और विदेशमन्त्री से जो पत्रव्यवहार हुआ उसका विवरण आप पिछले अक मे पढ चके हैं। यहा इतना लिख देना पर्याप्त होगा कि स्वामी जी ने रामकुमार भारद्वाज की रिहाई के लिए अपने प्रयत्न जारी रखे। अपना सुख-सुविधा की चिन्ता न कर वे अहर्निश इस ओर अन्याय के निराकरण के लिए दौडधूप करते रहे। अन्तत इन प्रयत्नो का वाछित परिणाम निकला साउदी अरब की सरकार ने रामकुमार भारद्वाज को रात के १० बजे काल कोठरी से निकाल कर सीधा हवाई अडडे भेज दिया और हवाई जहाज से भारत रवाना कर दिया।

२३ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की सभा मे हजारो की उपस्थिति मे जब रामकुमार भारद्वाज ने अपनी आपबीती का मार्मिक वणन किया और अपनी प्राण रक्षा के लिए आय जनता तथा सावदेशिक सभा का धन्यवाद दिया तब जनता को सारी स्थिति पता लगी।

इस घटना से दो बात स्पष्ट हो गई —पहली तो यह कि इस्लाम को मानने वाली साउदी अरब की सरकार किस प्रकार धार्मिक असहिष्णुता की शिकार है और दूसरी यह कि आयसमाज सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के लिए बलिदान करने को सदा तयार है और वह किसी भी हालत में धर्म के नाम पर किये जाने वाला अन्याय और अत्याचार सहने को तैयार नहीं।



साउदी अरब मे मजहबी अत्याचारो के शिकार रामकमार भारद्वाज साउदी अरब की कत्लगाह से मुक्त होकर दिल्ली पहुचे और श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की सभा मे उन्होने अपनी आप बीती सुनाई। चित्र मे वे अपनी मुक्ति के लिए अहर्निश प्रयत्न करने वाले स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ खडे दिखाये गये हैं।

हैदराबाद सत्याग्रह पेन्शन सम्बन्धी सूचना

भारत सरकार के गृह मन्त्रालय के स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग से सम्बन्धित गैर-सरकारी सलाहकार समिति की बैठक मे, जो १२ दिसम्बर को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे हुई थी, अनेक उपयोगी विषयों पर चर्चा हुई। इस बैठक मे स्वीकृत निश्चय अभी घोषित होने हैं।

मुख्य समस्यायें दो प्रकार की हैं। पहली जिन्होंने पेन्शन के लिए समय पर निर्धारित फार्म पर आवेदन किया है, लेकिन उसमे विवरण (उदाहरणार्थ जेल का प्रमाणपत्र, कारावास और रिहाई की तारीख) या बाद मे एम.एल.ए. अथवा एम पी द्वारा आवेदक के साथ जेलों मे रहने का प्रमाणपत्र नहीं दिया और जहा जेलो के रिकार्ड नष्ट हो जाने या उपलब्ध न होने के कारण न्यायालय के फैसले की प्रतिलिपि संलग्न नही की गई, उनके मामलो के निपटारे मे देरी हो रही है। अनेक मित्रो ने इन कामो के लिए जेल अधिकारियो या सरकार से पत्रव्यवहार करने का काम सभा पर छोड दिया, जब कि यह काम उन्हीं को करना है। जेलो से प्रमाणपत्र पाने मे हमारे देखने में ऐसे भी मामले आये, जिनमे आवेदक सभा द्वारा भेजने पर अधिकारियो ने कुछ दिन के भीतर प्रमाणपत्र भेज दिये। प्रमाणपत्र देने मे जहा हैदराबाद और गुलबर्गा (कर्नाटक) जैसे स्थानो के अधिकारियों ने सुगमता से सारी कार्रवाई पूरी कर दी, वहा निजामाबाद और और नाबाद सदृश स्थानो से प्रमाणपत्र बहुत कठिनाई से मिले। कुछ छोटी जेलो से रिकार्ड नष्ट हो जाने के प्रमाणपत्र लोगो को मिले। कुछ स्थानों से पत्र भेजने और स्वयं जाने पर भी प्रमाणपत्र नही मिले। हमारे पास ऐसी सूचना भी है कि कुछ बिचौलियो और सरकारी कर्मचारियो ने इन कामो के लिए धन लिया। अनेक स्थानो पर आवेदको ने अपने कारावास या रिहाई की तारीखें ठीक तरह से याद न रहने के कारण अथवा कुछ ने कारावास की अवधि केन्द्रीय पेन्शन पाने की खातिर गलत बताई। उनका रिकार्ड उनके बताये विवरण से मेल न खाता था।

यह भी देखने मे आया है कि अनेक मामलो मे ऐसे आवेदनो को केन्द्र ने राज्य सरकार से जांच करने और फिर सिफारिश करके केन्द्र को रिपोर्ट करने के लिए कहा। इससे भी मामले तय होने मे कठिनाई का सामना करना पड रहा है। इस मामले मे दिल्ली प्रशासन ने चुस्ती से काम लिया है। कुछ मामलो मे दिल्ली प्रशासन ने केन्द्र से साढे चार मास कारावास भुगतने वालो की भी सिफारिश की है। अनेक सत्याग्रही, जिनके कारावास की अवधि केन्द्र द्वारा स्वीकृत (अन्य आन्दोलनो को जोडकर) पांच मास की बनती हो, वे भी केन्द्रीय सरकार से पेन्शन के अधिकारी हैं। पांच मास से कम कारावास भुगतने वालो के लिए राज्य सरकार द्वारा निर्धारित इस प्रकार की पेन्शन की राशि और नियम अलग-अलग हैं।

दूसरी समस्या ऐसे सत्याग्रहियो की है, जिन्होने सरकार द्वारा निर्धारित आवेदन की अन्तिम तारीख ३०-६-८६ तक अपने आवेदन निर्धारित फार्म पर केन्द्र और राज्य सरकारो को नही भेजे, लेकिन बाद मे उन्होने (विशेषत २२ नवम्बर के नवभारत टाइम्स मे प्रकाशित सूचना के बाद) अपने आवेदन-पत्र भेजे। इनमे से जिन आवेदको को निर्धारित फार्म ३० जून के बाद भेजे गये, वे उसके बाद भी केन्द्र/राज्यको अपने आवेदनपत्र भेज सकते हैं। सभी आवेदक अपने कारावास/यातना के प्रमाणपत्रो को शीघ्रातिशीघ्र सम्बन्धित सरकारो को भेज दें।

कुछ आवेदको ने ३० जून से पूर्व इस सभा मे अपने आवेदनपत्र भेजे। उनकी सूची (नाम और विवरण) केन्द्र के गृह मन्त्रालय को भेजी जा चुकी है। ऐसे व्यक्तियो को कारावास यातना के प्रमाण सरकारी रिकार्डों अथवा पुस्तको, समाचारपत्रो की कतरनो, फाटुओ आदि से सम्पुष्ट करने चाहिये।

कारावास की अवधि का निर्णय होना तब भी शेष रहता है। सरकार द्वारा बडे पैमाने पर पेन्शन सम्बन्धी सूचना न देने के कारण अब भी सैंकड़ों व्यक्तियों को इस योजना की जानकारी नही। आर्यसमाजों के अधिकारियो को इस ओर ध्यान देकर सत्याग्रहियों का मार्ग दर्शन करना चाहिये। ये लोग समाज की अमूल्य धरोहर और अभिमान की वस्तु हैं।

—अ० व० स्नातक

दिवंगत बन्धु श्री जयदेव आर्य

आये हैं सो जायेगे, राजा रंक फकीर। इस संसार मे आवागमन के चक्कर से न कोई बचा है और न बचेगा। 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' कौन जन्म लेकर काल का ग्रास नही बना? सभी मरते हैं। परन्तु कुछ ऐसे भी मरने वाले होते हैं, जिनकी मृत्यु पर अपने और पराये सभी आंसू बहाते हैं। ऐसो में से ही एक थे श्री जयदेव जी आर्य, जिनका पिछले वर्ष निधन हो गया। वे अपने पीछे पत्नी, तीन पुत्रो, दो पुत्रियो और नाती-पोतों को बिलखता छोड गये।

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

इस सूक्ति के अनुसार जो मनुष्य जन्म पाकर इन सात बातों मे से किसी एक से भी अपना रिश्ता नही रखता, वह मनुष्य के रूप मे पशु है, धरा पर भारस्वरूप है।

श्री जयदेव आर्य के नाम के साथ जुडा आर्य शब्द सर्वांश में सार्थक था। वे अपनी ऋजुता, सौमनस्य, निरभिमानिता, सहृदयता, दयालुता और स्नेहशीलता के कारण परिवार मे और समाज मे समान रूप से आदर के पात्र थे। अपने इन्ही गुणो के कारण वे सार्वदेशिक सभा के सम्मानित अन्तरंग सदस्य बने। मुंबई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, शताब्दी समिति के अधिकारी एवं आर्यसमाज चेम्बूर के २५ वर्ष से भी अधिक समय तक प्रधान रहे। वे अजातशत्रु थे। अपने बच्चो को भी ऐसी बाते समझाया करते थे। उनके पुत्र ने कहा कि पिता जी के इस परामर्श को मैंने अपने जीवन मे उतारने का भरसक प्रयास किया है।

श्री जयदेव जी का जीवन सादा जीवन और उच्च विचार का एक जीवित-जागत रूप था। परोपकार उनका स्वभाव था। अनेक लोगो की, जो उनकी अकारण निन्दा करते, वे आर्थिक सहायता करते थे। सहायता की आशा से उनके पास आने वाला कोई भी कभी निराश नही लौटा।

असत्य से समझौता उनके स्वभाव मे ही नही था। वे ऋषि दयानन्द के भक्त थे और कहा करते थे कि ऋषि ने आर्यसमाज के माध्यम से मेरे जीवन को जिस उत्कर्ष तक पहुंचाया है उसके लिए मैं उनका इतना ऋणी हूं कि उससे उऋण होने के लिए अनेक बार जन्म लेकर आर्यसमाज की सेवा मे अपना जीवन लगाना पडेगा।

उन्होने पाकिस्तान से आकर शरणार्थी के रूप मे मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) मे दलाली से अपना कार्य आरम्भ किया। फिर तेल के व्यापार का काम किया। इसी बीच बम्बई आकर कुछ समय के बाद कपडे का काम प्रारम्भ किया, जिसमे अन्तिम समय तक रहे।

आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार के लिए सिंधी मे सत्यार्थ-प्रकाश, 'दो बहनो की बातें' आदि अनेक पुस्तकें और ट्रैक्ट प्रकाशित कराके वितरित किये। सार्वदेशिक सभा द्वारा चारो वेदो के प्रकाशन मे भी दस हजार रुपये का सहयोग दिया।

ओ पंकिल सर के कमल पुष्प।
चहुंदिश यशगान तुम्हारा गुंजित।

—देवव्रत शास्त्री

वर-वधू की आवश्यकता

३५-वर्षीय, एम० ए०, बी० एड०, राजपूत कन्या और ३०-वर्षीय इंटरमीडिएट, सजातीय (निजी व्यवसाय व कूर्गा में अपनी कोठी वाले) युवक के लिए जीवन साथी की आवश्यकता है। कोई बन्धन नहीं।

—डा० जे० के० सिंह
मकान नं० ए ४११/१, शास्त्री नगर, दिल्ली-५२

१४ जनवरी की मकर संक्रान्ति के अवसर पर विशेष लेख

दानशीलता : मकर संक्रान्ति का मुख्य संदेश

— रघुवीरशरण आर्य

तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् हम अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ें, यह वैदिक संस्कृति का शाश्वत सन्देश है। भारत शब्द का अर्थ है भा–ज्ञान या प्रकाश की साधना में रत–लगा हुआ।

मकर सक्रान्ति के अवसर पर शीत अपनी यौवनावस्था मे होता है। रात अभी तक अपनी देह को बढाती ही चली जाती थी। मकर ने उसे निगलना आरम्भ कर दिया। सूर्य ने उत्तरायण मे प्रवेश किया। अब दिन लम्बा होने लगेगा, ऊष्मायुक्त होने लगेगा। यह प्राकृतिक परिवर्तन हमे जीवन मे आशा-वाद का पाठ पढाता है। हमारे सोये आत्मविश्वास को जगाता है और कहता है कि हमारे जीवन मे यदि कुछ शैथिल्य, निरुत्साह आदि दोष आ गये हैं, हमारी अवस्था दीन-हीन है तो वह सदैव रहने वाली नही। उसका अन्त सुनिश्चित है। हम उठ खडे हो और अपने जीवन मे सक्रान्ति लायें।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

सक्रान्ति का अर्थ है सम्यक् क्रान्ति अथवा सम्यक् परिवर्तन। जिसके करने से हमारी मातृभूमि और राष्ट्र नये प्रकाशमय जीवन से ज्योतिर्मय हो उठेगा। हमारा प्रत्येक कार्य विवेकयुक्त हो। विवेकशील या प्रकाश का उपा-सक वही होता है, जो उदार है, यज्ञशील है, मिल बाटकर खाता है। दान-शीलता ही इस पर्व का मुख्य सदेश है।

सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण को विशेष महत्त्वशाली मानकर ही मकर सक्रान्ति का पर्व मनाया जाता है। इस दिन तिल और गुड के लड्डू जो स्वास्थ्य रक्षा मे सहायक हैं तथा दीनो के शीत निवारणार्थ कम्बल और घृतदान करने की प्रथा प्राचीन काल से प्रचलित है।

गीता मे लिखा है—'भुञ्जते त्वघ पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्' अर्थात् जो अपने लिए ही पकाते हैं, वे पाप का अन्न खाते हैं। दान भी ऐसे सुपात्र व्यक्ति को दिया जाना चाहिए, जिसे उसकी नितान्त आवश्यकता हो तथा जिसमे सुपात्रता हो। ऐसा दान ही मनुष्य का कल्याण करता है। लोकैषणा के वशी-भूत किया गया दान सात्त्विक नही होता।

ऋग्वेद १०।५३।६ का कथन है —

तन्तु तन्वन् रजसो भानुमन्विहि, ज्योतिष्मत पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्बण वयत जोगुवामपो, मनुर्भव जनया दैव्य जनम् ॥

अर्थात् ससार का ताना बाना बुनता हुआ भी प्रकाश के पीछे जा। बुद्धि से परिष्कृत किये हुए ज्योतिर्मय अर्थात् प्रकाशयुक्त मार्गों की रक्षा कर, निरन्तर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान करने वालो के उलझन रहित कर्म को विस्तृत कर। इन सब उपायो से मनुष्य बन और देवो की हितकारी सन्तान उत्पन्न कर।

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान का अर्थ आविष्कार करना है। आविष्कार के उपकरणो मे पूजी लगाने वाले मनचाहा लाभ कमाते हैं। उसके पीछे यह विवेक नही जुडता कि इससे किसी के साथ अन्याय तो नही हो रहा, कोई व्यक्ति अनुचित लाभ तो नही उठा रहा। इसके अतिरिक्त आविष्कार के दूरगामी परिणामों पर भी कोई ध्यान नही दिया जाता। विज्ञान सुविधा जुटाने के नाम पर मनुष्य को हर तरीके से धन बटोरने की प्रेरणा देता है। वह ससार को नष्ट करने वाले बम बना सकता है किन्तु उसमें यह सोचने की शक्ति नहीं कि इसका परिणाम क्या होगा। विज्ञान स्वसचालित यन्त्रो से बना कारखाना तो लगा सकता है किन्तु उसमे यह सोचने की शक्ति नही कि इसका परिणाम क्या होगा। वह यह नहीं जानता कि ससार मे शांति किस प्रकार हो सकती है। वह ईश्वर की जगह धन को साध्य बनाकर उलटी दिशा मे परिवर्तन की प्रेरणा देता है। ट्रैक्टर भूमि को जल्दी और गहरा जोत तो देता है परन्तु भूमि मे वह आकर्षण शक्ति उत्पन्न नही कर पाता जो बैलों के खुरों से उत्पन्न होती है। बैलो के गोबर व मूत्र से भूमि को जीवाश प्राप्त होता है जबकि ट्रैक्टर टूट-फूट कर कबाडा बन जाता है। रासायनिक खाद अधिक अन्न उत्पादन तो करता है किन्तु भूमि की जीवनी शक्ति को नष्ट करता है। कीटाणुनाशक कीटो को तो मार देते हैं किन्तु मनुष्य के लिए कितने हानिकर हैं, यह बात भोपाल त्रासदी हमे बता रही है। यह परिवर्तन सम्यक् क्रांति की श्रेणी का नहीं।

गोघृत, आम की लकड़ी, पौष्टिक व सुगन्धित वनस्पति द्वारा किये यज्ञ से पर्यावरण प्रदूषण तो समाप्त होता ही है, साथ ही वर्षा के माध्यम से भूमि को प्राण पर्जन्य भी मिलता है, जिससे अन्न में पौष्टिकता आती है। यज्ञ में वसुधैव कुटुम्बकम् और गुप्त दान की भावना क्रियात्मक रूप मे सन्निहित है। गोदुग्ध से स्वर्ण और स्फूर्ति के साथ-साथ विवेक बुद्धि के पदार्थ सहज मे ही प्राप्त होते हैं। गोबर से पर्यावरण प्रदूषण की समाप्ति होती है, परमाणु विकिरण समाप्त होता है और खाद से भूमि को सर्वोत्तम जीवाश मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्यानुसार आसानी से गोपालन द्वारा अपना जीवन सहज में बिताकर राष्ट्रीय सम्यक् क्रांति में अपना योगदान कर सकता है।

मानव जाति मतपन्थ, प्रान्तवाद, भाषावाद आदि के चक्कर में फसकर नीचे की ओर जा रही है। आज का मानव असतो मा सद्गमय के आदर्श को सतो मा असद् गमय बनाने में लगा है। ससार में अशांति और दुखो का मूल कारण चरित्र का ह्रास है। वर्तमान दूषित साहित्य हमें सपनो के खारे सागर मे गोते लगवा रहा है, जबकि महापुरुषों के जीवन चरित्र ज्ञान, दान और वीरता से भरे हैं। महापुरुषो के चरित्र ही हमें सही दिशा मे ले जा सकते हैं।

यदि भारत सरकार सादा जीवन और उच्च विचार को राष्ट्रीय आदर्श बनाकर उसका पालन करे और कराये तो भारत माता के कष्ट सहज ही समाप्त हो जाये। हमारे मन, वाणी और कर्ममे एकता आना ही देशभक्ति है जब बुद्धि कहेगी कि यह राष्ट्र मेरा है, मुझे इसे सर्वस्व अर्पण करना है, मन बोलेगा कि इसे व्यवहार मे लाना है और शरीर की सब क्रियायें इसे पूर्ण करने मे लग जायेंगी, तभी भारत माता के कष्टो का निवारण होगा। सर्वे भवन्तु सुखिन का मकर सभी भेदभावो को निगल जायेगा। सत्य वद—धर्मं चर का नारा जन जीवन मे व्याप्त हो जायेगा।

यही कर्त्तव्य है, यही ध्येय है और यही सन्देश है; कि हम सत्यमेव जयते को ध्यान मे रखते हुए असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृत गमय के पथ पर चलकर वेदो की आज्ञाओ का पालन करते हुए जीवन मे क्रांति करें।

यम-यमी सम्बन्ध

भाई-बहिनो के विवाह का निषेध

-आचार्य दिनेशचन्द्र पाराशर-

इक्कीस सितम्बर सन् १९८६ के आर्य जगत् मे डा० प्रतिभा मिश्रा जी का लेख पढा जिसमे ऋग्वेद के दशम मडल सूक्त दस के मन्त्रो का भाव यह स्पष्ट कर रहा है कि "भाई-बहिनो का स्त्री-पुरुष (यम-यमी) का सम्बन्ध दर्शाया है।" महर्षि के ग्रन्थो का पठन, विचार और इन मन्त्रो पर श्रेष्ठ वैदिक विद्वानो का भली-भाति भाष्य न देखने-पढने के कारण लेखिका को यह भ्रम हुआ है। सायण और महीधर के भाष्य ठीक नही है। कोई भी बुद्धिमान् स्वाध्यायशील व्यक्ति इस बात को स्वीकार नही करेगा कि परस्पर भाई-बहिन को स्त्री-पुरुष रूप कहा जाये या उनका विवाह हो। यह अश्लीलता है। ऋग्वेद दशम मण्डल मे उन मन्त्रो का भाष्य पढ तथा स्व० स्वामी ब्रह्ममुनि जी विद्यामार्तण्ड का ऋग्वेद का दशम मण्डल देखे। महर्षि देव दयानन्द जी हमारे दुर्भाग्य से सम्पूर्ण ऋग्वेद का भाष्य नही कर पाये। श्रेष्ठ वैदिक विद्वानो ने शेष वेदों का भाष्य किया। महर्षि सत्यार्थप्रकाश मे लिखते हैं—

"जो कन्या माता के कुल की छ पीढियो मे न हो, और पिता के गोत्र की न हो, उस कन्या से विवाह करना उचित है। आगे वही इस प्रसग मे यहा तक लिखते है "जो अपने गोत्र वा माता के कुल मैं निकट सम्बन्ध की न हो, उसी कन्या से वर का विवाह होना चाहिए।" विवाह दूर देश मे होने से हितकारी होता है, निकट करने मे नही।" सस्कार विधि विवाह प्रकरण मे प्रश्नोत्तर मे लिखा है—

प्रश्न—विवाह निकटवासियो से अथवा दूरवासियो से करना चाहिए?

उत्तर—दुहिता दुर्हिता दूरे हिता भवतीति।

यह निरुक्त का प्रमाण है कि जितना दूर देश मे विवाह होगा, उतना ही उनको अधिक लाभ होगा।

प्रश्न—अपने गोत्र वा भाई-बहिनो का परस्पर विवाह क्यों नही होता?

उत्तर—एक दोष यह है कि इनके विवाह होने मे प्रीति कभी नही होती, क्योकि जितनी प्रीति परोक्ष पदार्थ मे होती है, उतनी प्रत्यक्ष मे नही और बाल्यावस्था के गुणदोष भी विदित रहते है तथा भयादि भी अधिक नही रहते। दूसरा—जब तक दूरस्थ एक-दूसरे कुल के साथ सम्बन्ध नही होता, तब तक शरीर आदि की पुष्टि भी पूर्ण नही होती। तीसरा—दूर सम्बन्ध होने से परस्पर प्रीति, उन्नति, ऐश्वर्य बढता है, निकट से नही।

अब ऋ० म० १० सू० १० के ११वे मन्त्र का भावाथ पढे। मन्त्र यह है—

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्।
काममूता बह्वे३ तद्रपामि तन्वा मे तन्वं१ सं पिपृग्धि॥

भावार्थ—पत्नी कहती है कि क्या तुम पति न होकर मेरे भाई हो, जो पति के कार्य को नही करना चाहते? क्या मैं आपकी पत्नी न होकर बहन हूँ, जो इस प्रकार दु खी होकर अन्यत्र चली जाऊ? यह सब कुछ मैं काम से मूर्छित होकर कह रही हूँ। अरे! मेरे शरीर से अपने शरीर को सगत कर॥११॥

न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्।
अन्येन मत्प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत्॥

भावार्थ—पति कहता है कि जब असमर्थ पति पत्नी को नियोग की आज्ञा दे देता है, तब स्वय भ्राता हो जाता है अत उसके साथ पुन समागम करने वाले को समाज और राष्ट्र के जन पापी कहते हैं। इसलिए अन्य पति के साथ समागम कर यह भाई हुआ पति अब तेरे साथ समागम कर्म नही करना चाहता॥१२॥ यह सारा सूक्त नियोग का है। इसमे भाई-बहन के विवाह की कल्पना भ्रान्त धारणा है और कोरी अनभिज्ञता है। इस ११वे मन्त्र का भावार्थ स्व० स्वामी ब्रह्ममुनि जी लिखते हैं—

भावार्थ—सन्तानोत्पत्ति या गर्भाधान की स्थापना मे असमर्थ स्त्री-पुरुष भाई-बहन की भाति रहें॥११॥

१२वे मन्त्र का भावार्थ इस प्रकार लिखते है—

भावार्थ—भाई-बहिन का विवाह नही होना चाहिए, ऐसा करना पाप है। कदाचित् कोई ऐसा करे भी तो समाज को पाप कहकर उसकी निन्दा करनी चाहिए और उसे रोकना चाहिए। गर्भाधान मे असमर्थ पति नियोग की आज्ञा देने के अनन्तर पत्नी के साथ भ्रातासम व्यवहार करे और पुन उसके द्वारा सम्भोग के लिए आग्रह किये जाने पर दृढता से निषेध कर दे॥१२॥

यम-यमी का अर्थ दिन और रात्रि भी है। यम-यमी का अर्थ इन मन्त्रो मे पति-पत्नी है। मन्त्रो मे गृहस्थ जनो के लिए उपदेश किया है कि विवाहित स्त्री-पुरुष सकट आने पर परस्पर सहयोग कर। एक-दूसरे का व्यवहार आपस मे स्नेहपूर्ण और सहयोग की भावना से युक्त हो। यमस्य=दिनस्य, यम्यम्=रात्रि। यमस्य=पति का, यम्यम्=पत्नी को है। यमीर्यमस्य=यमी रात्रिर्भवती मे पत्नी, यमस्य=मे दिनस्य पत्यु॥ यहा मन्त्रो के यम-यमी के अर्थो को भी लिखा है।

यह सबको ज्ञात हुआ कि ऋग्वेद के मण्डल दश सू० १० के मन्त्रो मे भाई-बहिन के परस्पर विवाह व स्त्री-पुरुष का निषेध किया है, भाई-बहिन के परस्पर विवाह की कल्पना भ्रान्तिपूर्ण है और अनभिज्ञता का सूचक है। भाई-बहन का विवाह स्त्री-पुरुष रूप होना अर्थात् पति पत्नी रूप होना पाप है। यहा सक्षपत लिखा है। ऐसी भ्रान्त कल्पना मे न आय। वास्तविक वैदिक सन्देश को समझे और विचार करे। ●

बीते वर्ष का लेखा-जोखा

१९८६ का वर्ष : देश आतंकवाद की आग में झुलसता रहा

–शिवकुमार गोयल–

वर्ष १९८६ यद्यपि शान्ति वर्ष था किन्तु पूरा वर्ष आतंकवादी गतिविधियो, हत्याओं, लूटमार और पृथकतावादी तत्त्वो द्वारा देश के विभिन्न भागो मे राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के कारण अशान्त ही रहा। पूरे वर्ष पंजाब, जम्मू-कश्मीर, त्रिपुरा, नगालैंड, असम, प० बंगाल, मिजोरम आदि क्षेत्रों में आतंकवादी गतिविधिया जारी रही।

पंजाब में इस वर्ष उग्रवादी व आतंकवादी तत्त्व प्राय प्रतिदिन कोई न कोई हत्या या लूटमार करते रहे। पाकिस्तान इन आतंकवादियो को हर प्रकार का प्रशिक्षण, शस्त्रास्त्र व धनराशि देता रहा, जिससे वे भारत मे हत्याओ, हिंसा व अराजकता का दौर-दौरा जारी रख सकें।

इन आतंकवादियों के हौसले इतने बुलन्द रहे कि वे १० अगस्त को पुणे मे भारतीय सेना के अवकाशप्राप्त स्थल सेनाध्यक्ष जनरल अरुण वैद्य की हत्या करने मे सफल रहे। जनरल वैद्य अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के ब्लूस्टार आपरेशन के कारण आतंकवादियो की "हिट लिस्ट" मे थे।

पंजाब के आतंकवादियो ने पूरे वर्ष अनेक पत्रकारो, राजनैतिक नेताओ, पुलिस अधिकारियों तथा निर्दोष व्यक्तियो की हत्याए कर अपना आतंक बैठाये रखा।

२ अक्तूबर को गांधी जयन्ती के दिन दिल्ली में राजघाट पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी पर गोलिया चलाकर उनकी हत्या का असफल प्रयास किया गया। दूसरे ही दिन पंजाब के पुलिस महानिदेशक श्री रिबेरो की हत्या का प्रयास किया गया। उनकी धर्मपत्नी गोलियो से घायल हुई तथा एक पहरेदार मार डाला गया।

इससे पूर्व १२ फरवरी को आतंकवादियो ने पंजाब के वरिष्ठ अकाली नेता श्री दलीपसिंह को गोली से उड़ाया, ११ मार्च को मोगा के पास तीन निरंकारियो की हत्या कर डाली, २४ मार्च को बटाला मे ९, २६ मार्च को आनन्दपुर साहब होला महल्ला समारोह मे आठ तथा २९ मार्च को १२ व्यक्तियों को प्राणों से हाथ धवाने पड़े।

५ अप्रैल को जालन्धर न्यायालय से सरेआम प्रसिद्ध पत्रकार तथा दैनिक "पंजाब केसरी" के स्वर्गीय संपादक श्री रमेशचन्द्र के तीन हत्यारो को आतंकवादी छुड़ा ले जाने मे सफल रहे।

सामूहिक नरसंहार–जुलाई तथा नवम्बर इन दो महीनो मे तो आतंकवादियों ने दिल दहलाने वाले ऐसे काण्ड किये, जिनसे न केवल भारत अपितु तमाम संसार कराह उठा।

२५ जुलाई को पंजाब के मुक्तसर कस्बे के पास एक बस का अपहरण कर १४ निर्दोष स्त्रियों, पुरुषो व बच्चो को गोलियो से छलनी कर मार डाला गया।

३० नवम्बर को होशियारपुर के पास खुडडा गाव के करीब बस ले जाकर २४ यात्रियों को गोलियो से भून डाला गया। इन निर्दोष लोगो की हत्या से यह स्पष्ट हो गया कि ये आतंकवादी पाकिस्तान से प्रशिक्षित कर भेजे गये राष्ट्रद्रोही थे तथा इनका लक्ष्य पूरे देश मे हिंसा का नंगा नाच करना था।

पंजाब में आतंकवादियो ने लगभग दो दर्जन राजनैतिक नेताओ को अपनी गोलियों का निशाना बनाया, जिनमे स्वाधीनता सेनानी व पंजाब के प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता श्री दर्शनसिंह कनेडियन (हत्या २५ सितम्बर को मार्क्सवादी नेता श्री बलदेवसिंह मान (हत्या २९ सितम्बर को), भारतीय जनता पार्टी के नेता डा० केवल कृष्ण भाटिया (हत्या १३ दिसम्बर को) तथा अनेक अकाली नेता भी शामिल हैं। आतंकवादियो को सीमा सुरक्षा बल तथा पंजाब पुलिस के कई दर्जन जवानों व अधिकारियों की भी जान लेने मे कोई हिचक नहीं हुई।

आतंकवादियो ने दिसम्बर मे लुधियाना के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश श्री आर० एस० आनन्द पर प्राणघातक हमला कर उन्हे गोलियो से बुरी तरह घायल कर डाला।

आठ सौ हत्यायें–पंजाब मे अकाली शासन के दौरान लगभग ८०० हत्यायें हो चुकी हैं। मरने वालो मे ५० से ज्यादा पुलिसकर्मी भी हैं।

सीमा सुरक्षा बल द्वारा पकड़े गये अनेक आतंकवादियो ने सनसनीखेज रहस्योद्घाटन किये हैं कि उन्हें पाकिस्तान के कम्पो मे प्रशिक्षण दिया गया तथा आधुनिक हथियार देकर पंजाब भेज दिया गया। यह भी रहस्योद्घाटन हुआ कि पाकिस्तान ने ऐसे नकली सिखो की एक सेना तैयार की है, जो सिख वेश मे भारत मे प्रवेश कर हिन्दू-सिखों के बीच दंगे कराकर "खालिस्तान" अर्थात् भारत के टुकड़े किये जाने का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

गोरखालैण्ड-नया शिगूफा–पंजाब के आतंकवादियो के अलावा पश्चिम बंगाल मे "गोरखालैण्ड" की मांग को लेकर एक नया पृथकतावादी आन्दोलन शुरू हुआ जिसने हिंसा का रूप ले लिया है। सुबास घीसिंग के नेतृत्व मे कुछ गोरखा नेता चीन, पाकिस्तान, बंगलादेश आदि से शह पाकर अलग राज्य की माग उठाने लगे हैं। दार्जीलिंग आदि क्षेत्रो मे इस आन्दोलन के नाम पर हिंसक घटनायें शुरू हो चुकी हैं।

उधर त्रिपुरा मे टी० एन० वी० विद्रोहियो ने निर्दोष लोगों व सेना के जवानो की हत्या का दुस्साहस किया। ८ मार्च तथा ११ मार्च को इन सशस्त्र विद्रोहियो ने दो परिवारो के चार-चार सदस्यो की हत्या कर डाली। १४ नवम्बर को इन छापामारो ने नौ गैर-कबाइलियो की गोली मारकर हत्या कर दी।

३ मार्च को इम्फाल के भूमिगत पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के सदस्यो ने पाच व्यक्तियो की नृशंस हत्या की। ये विद्रोही खुलकर सेना के जवानो व अफसरो से टक्कर ले रहे हैं और इस प्रकार चीन व बंगलादेश से प्राप्त सहयोग के बल पर भारत की अखण्डता को खुली चुनौती दे रहे हैं।

हिन्दी का विरोध व साम्प्रदायिक दंगे–एक ओर ये पृथकतावादी तत्त्व देश की एकता व अखण्डता के लिए चुनौती देते रहे, दूसरी ओर तमिलनाडु मे हिन्दी विरोध के नाम पर देश की राष्ट्रभाषा का खुला अपमान ही नही किया गया अपितु संविधान जलाने की देशद्रोहपूर्ण कार्रवाई भी की गई। हिन्दी विरोधी आंदोलन के पीछे निहितस्वार्थ तत्त्व ही हैं—यह किसी से छिपा नहीं।

वर्ष के दौरान उत्तर प्रदेश गुजरात, बिहार तथा कर्नाटक मे साम्प्रदायिक दंगे कराकर देश की एकता को चुनौती दी गई। अयोध्या की श्रीरामजन्म भूमि का न्यायालय द्वारा ताला खुलवाने के बाद जिस प्रकार 'बाबरी मस्जिद बचाओ समिति' का गठन कर इलाहाबाद, वाराणसी, मेरठ, दिल्ली आदि स्थानो पर दंगे कराये गये, बम छोड़े गये, निर्दोष लोगो को छुरे मार गये, उससे ये संकेत मिलते हैं कि देश के कुछ तत्त्व न्यायालयो के कानूनो की भी अवहेलना कर साम्प्रदायिकता का नंगा नाच करवाने मे नही हिचकते।

जम्मू कश्मीर मे भी पाकिस्तान-समर्थक तत्त्वो ने इस वर्ष अल्पसंख्यक हिन्दुओ पर न केवल हमले किये अपितु अनन्तनाग, राजौरी तथा अन्य क्षेत्रो मे दर्जनो मन्दिर तोड़ डाले। कश्मीरी पंडितो के घरो को आग लगा दी गई। इन सब घटनाओ के पीछे कश्मीर घाटी से हिन्दुओ को खदेड़ने की पाकिस्तानी साजिश ही थी। जहा हजारो हिन्दू पंजाब छोड़कर देश के अन्य भागो मे पहुचे, वही कश्मीर घाटी से भी हिन्दुओ का पलायन जारी रहा।

कट्टरपंथी साम्प्रदायिक तत्त्वो ने शाहबानो सम्बन्धी अदालती निर्णय के खिलाफ भी पूरे देश मे आतंक व तनाव पैदा किया। आरिफ मुहम्मद खा जैसे उदार व राष्ट्रवादी मुस्लिम नेताओ ने जब इन तत्त्वो का विरोध किया तो उन्हें मन्त्रिपद से हाथ धोना पड़ा और केन्द्रीय सरकार ने इन तत्त्वो के समक्ष घुटने टेक दिये।

२९ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर गुजरात के विभिन्न शहरो मे दंगे किये गये। धार्मिक जुलूसो पर हमले कर तनाव पैदा किया

(शेष पृष्ठ १० पर)

अथर्ववेद का एक और रत्न--पृथिवी सूक्त

— रामप्रताप शर्मा, पिलानी—

वेद जो आदि काव्य माने जाते हैं, बहुत विस्तृत और गहरे रत्न भण्डार हैं। समय के प्रभाव से लम्बे समय तक बागबानो की लापरवाही से उन रत्नभण्डारों के ऊपर धूल के ढेर जमा हो गये और झाड झखाड उग आये। कुछ लोगो ने व्याकरण के झाडुओ से उस धूल की सफाई और तर्क की दरातियो से झाड-झखाडों की कटाई करने की कोशिश की। इससे जगह-जगह अनेक रत्नो की चमक दिखाई देने लगी है। ऐसे ही एक रत्न "सकल्प सूत्र" की चर्चा मैं कर चुका हूं। (देखिये सार्वदेशिक ३० नवम्बर १९८६ का अ क) इस बार एक और उज्ज्वल रत्न "पृथिवी सूक्त" प्रस्तुत है।

इस सूक्त के ६१ रत्नों की आभा को जितनी बार जितनी गहरी निगाह से देखा जायेगा, हर बार एक नया र ग, एक नई झलक देखने को मिलेगी। इसीलिए अनेक भाष्यकार जोहरियो ने अनेक तरह से इन्हें अपनी भाषा का चोला पहनाया है। सीधे-सादे चोले मे इनका अपना स्वरूप देखने से यह धरती के अधिक समीप और अपने सहज सरल, स्वाभाविक सौन्दर्य मे सर्व-साधारण को आनन्द देने वाले हों, इस लिए सबसे पहले इन रत्नो को इनके अलकार रहित रूप मे ही देखना ठीक होगा। उस दशा मे भाष्य या व्याख्या के बिना ही ये अपने आप अपना मोल कहेंगे।

एक प्रकार से यह एक विकासोन्मुख, प्रगतिपथगामी, साहसी आर्य जाति की पृथिवी से प्रार्थना है कि हमारी आवश्यकताओ के अनुसार हमे उसके भर-पूर भण्डार मे से मिलता रहे। अन्य प्रकार से यह मन्त्र उस धरती माता की देन के लिए आभार प्रदर्शन है। कुछ मन्त्र कद्रदानी हैं और कुछ सेवा-समर्पण भावना के। कुछ लोगो ने इसे और अधिक नजदीकी रिश्ता कायम करने वाले स्वराष्ट्र और स्वदेश के अर्थ मे भी ग्रहण किया है। धरती माता को अपनी सन्तान के ये सब रिश्ते-नाते मजूर हैं। उसने तो राजस्थानी रेत को भी अपने ऊपर स्वीकारना है और विश्व के बोझीले-गर्वीले हिमालय को भी।

सत्य बृहदृतमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरु लोक पृथिवी न कृणोतु ॥१

महान सत्य व्यवस्था, दक्षता, कष्टसहन शक्ति, परमज्ञान और सत्कर्तव्य-पालन, ये बातें जिस पृथिवी को धारण किये हुए हैं, जो पृथिवी हमारे गुजरे कामो और आगे आने वाले कामो की नियामक शक्ति है, वह हमारे विकास और विस्तार के लिए विशाल स्थान प्रदान करे।

यस्याश्चतस्र प्रदिश पृथिव्या यस्यामन्न कृष्टय सबभूवु।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु ॥

जिस पृथिवी की चारो दिशायें विशाल हैं, जिस पर नाना प्रकार की फसलें होती हैं जो सब प्रकार के चलते-फिरते ससार का पालन-पोषण करती हैं हमारी वह भूमि पशु और अन्न से सदा भरपूर रहे।

यस्यामाप परिचरा समानीरहोरात्रे अप्रमाद क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयोदुहामथो उक्षतु वर्चसा ॥

जिस पृथिवी का जल निरन्तर लोक कल्याण मे बहता है, बहुत सी नदियो से युक्त वह पृथिवी हमे सदा पुष्टिकारक बल, अन्न आदि से भरपूर रखे।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्य ते पृथिवी स्योनमस्तु।
बभ्रु कृष्णा रोहिणी विश्वरूपा ध्रुवा भूमि पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्।
अजितोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठा पृथिवीमहम् ॥

हे पृथिवी, हिम से ढके तेरे विशाल पर्वत और जगल हैं। मेघो द्वारा सुरक्षित और पोषित कृषि भूमि है। ऐसी भूमि मे हम स्वतन्त्र, स्वस्थ और सुखी रहें।

विश्वस्य मातरमोषधीना ध्रुवा भूमि पृथिवी धर्मणाधृताम्।
शिवा स्योनामनुचरेम विश्वहा ॥

समस्त विश्व की औषधियो को उत्पन्न करने वाली सुदृढ, धर्म द्वारा प्रतिपालित, कल्याण और सुखकारी पृथ्वी पर हम सदा सब दिशाओं मे निर्भय विचरण करे।

यस्ते गन्ध पृथिवी सबभूव य बिभ्रत्योषधयो यमाप।
य गन्धर्वा अप्सरसश्च भेजिरे तेन मा सुरभि कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन।

स्वाभाविक रूप में तेरे अन्दर जो सुगन्ध विद्यमान है, जो सब प्रकार की वनस्पतियों और नदियो को सुरभित किये रहती है, जिसे सब जीव धारण करते हैं, उसके कारण हमसे कोई ईर्षा-द्वेष न करे।

यस्या वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा।
पृथिवी विश्वधायस धृतामच्छा वदामसि ॥

जिस पृथिवी मे नाना प्रकार के वृक्ष वनस्पतिया सदा बनी रहती हैं, समस्त जगत् और पदार्थों को धारण करने योग्य उस पृथिवी की जय-जयकार हो।

यावत् तेऽभि विपश्यामि भूमे सूर्येण मेदिना।
तावन्मे चक्षुर्मा मेष्ठोत्तरामुत्तरा समाम् ॥

हे सूर्य के प्रकाशयुक्त पृथिवी, जहा तक जितना भी तुझे देखें, ज्यो-ज्यों बरस बीतते जायें, त्यों त्यों वह रूप हमारी आंखों मे सदा बना रहे।

यस्या गायन्ति नृत्यन्ति भूम्या मर्त्या व्यैलबा।
युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्या वदति दुन्दुभि।
सा नो भूमि प्रणुदता सपत्नानसपत्न मा पृथिवी कृणोतु।

जिस भूमि पर नाना प्रकार की बोलियो मे लोग गाते, नाचते नगाडे बजाते, युद्ध करते हैं, उस भूमि मे हमारा कोई शत्रु न हो।

जन बिभ्रती बहुधा विवाचस नानाधर्माण पृथिवी यथौकसम्।
सहस्र धारा द्रविणस्य मे दुहा ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥

भिन्न-भिन्न भाषाये बोलने वाले, भिन्न-भिन्न धर्मो के अनुयायी जन समूह को उनके देश-निवास स्थान के अनुसार भिन्न भिन्न प्रकार से पालन-

(शेष पृष्ठ १० पर)

नव वर्ष मंगलमय होवे

सुन्दर सुखद सुवास लिये नित जीवन जन किसलय होवे ।
नव वर्ष मंगलमय होवे ॥
प्राची दिशि रवि किरण बिखेरे, लाये स्वर्णिम दिवस सवेरे ।
अ घ तमिस्रा का क्षय होवे ॥
विह्वर श्रुति मन्त्र उचारें, चहकें चिड़ियां पंख पसारे ।
निश्छल विमल शुद्ध हिम होवे ॥
उदीची दिशि मे खड़ा हिमालय, कहता आर्यों का यह आलय ।
दुष्ट जनों से नहिं भय होवे ॥
दक्षिण सिन्धु चरण पखारे, कहते भारत मा के प्यारे ।
जगती मे तेरी जय होवे ॥
प्रभु भक्ति मे सब लग जायें, शुचितम श्रुति का मन्त्र गु जायें ।
जन जीवन 'सिया' मधुमय होवे ॥

—सिया सुन्दरी आर्या,
मामपुरा, बरास्ता ताजपुर, जिला समस्तीपुर

सम्पादक के नाम पत्र

हैदराबाद सत्याग्रह हेतु पेन्शन प्रकरणों के निर्णय के सम्बंध में कुछ निवेदन

महोदय,

हैदराबाद सत्याग्रहियो के पेन्सन प्रकरणो पर विचार करने के लिए गठित समिति के समाचार से हम सत्याग्रही प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

इस विषय मे मैं निम्नलिखित निवेदन करना समयानुकूल समझता हू—

(१) केन्द्रीय सम्मान निधि हेतु ६ माह की जेल अवधि का नियम कठोरतापूर्वक हम पर ही लागू न किया जाये, क्योकि सत्याग्रह की पूरी अवधि ही सम्भवत ६ माह नही रही होगी। अन्य स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो को केवल कुछ ही समय की जेल-अवधि पर केन्द्रीय पेन्शन प्राप्त हो रही है।

(२) केन्द्रीय शासन द्वारा इस सत्याग्रह को स्वतन्त्रता सग्राम का एक अ ग मान लेने के उपरान्त भी मध्य प्रदेश शासन ने अब तक इसे मान्यता नही दी। फलस्वरूप हैदराबाद के सत्याग्रहियो के आवेदनपत्र, जो राज्य सम्मान निधि हेतु भेजे गये थे निरस्त कर दिये गये हैं। समिति गृह मत्रालय से सभी राज्य सरकारो की भी इस सत्याग्रह की मान्यता हेतु निर्देश भिजवाये।

(३) हैदराबाद सत्याग्रह मे सक्रिय भाग लेने वालो को पेन्शन प्राप्ति की पात्रता का प्रबल एव ठोस आधार है—सत्याग्रह सचालन समिति द्वारा दिया गया प्रशस्ति पत्र।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली या सम्बधित आर्यसमाज के कार्यालयो मे उपलब्ध तत्कालीन आय सत्याग्रहियो की नामावलियो से भी पुष्टि हो सकेगी।

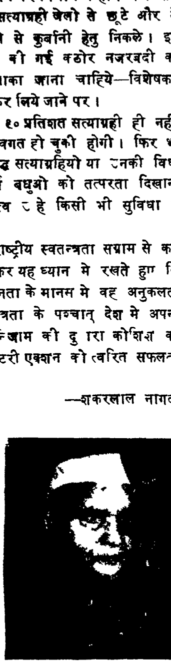
(४) स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी के रूप मे मान्यता हेतु चार श्र णियो का उल्लेख केन्द्रीय सम्मान निधि आवेदन पत्र मे है—(१) वास्तविक जेल (२) भूमिगत (३) निष्कासन (४) नजरबदी। हैदराबाद सत्याग्रहियो को भी जो इन चारो श्र णियो मे से किसी एक मे भी आते हैं, स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी के रूप मे मान्य किया जाना न्यायोचित गा।

उदाहरणस्वरू सत्याग्रह सचालन समिति की निजामशाही की बर्बरतापूर्ण शासन व्यवस्था को किकर्त्तव्य विमूढ बना देने की दृष्टि से सन् ३९ की मध्य जुलाई मे हैदराबाद राज्य मे चारो ओर से बडी सख्या मे सत्याग्रहियो के प्रवेश की योजना के अनुसार जैसे ही हजारो सत्याग्रही सीमा मे पहुँचने वाले थे निजाम ने समझौता वार्त्ता शुरू करने के बहाने सत्याग्रहियो को सीमा पर ही रुकवा दिया। समझौता-वार्त्ता लगभग एक माह तक खीची गई। इधर ब्रिटिश हुकूमत के इशारे पर स्थानीय पुलिस द्वारा इन सत्याग्रहियो को कडी नजरबदी मे रखा गया—इस बहाने कि कही साम्प्रदायिक तनाव या हिंसा न भडके। यह सब इस बदनीयती से किया गया कि इस लम्बे समय मे सत्याग्रहियो का मनोबल टूट जाये। किन्तु इसमे लेशमात्र भी सफलता न मिलने पर निजाम ने हार कर शर्त मान ली। सत्याग्रह सफल हुआ। सत्याग्रही जेलो से छूटे और वे नजरबद भी मुक्त हुए। अपने घरो से कुर्बानी हेतु निकले। इन सत्याग्रहियो की सैकडो मील दूर की गई कठोर नजरबदी का महत्त्व भी समान रूप मे ही आका जाना चाहिये—विशेषकर सम्मान निधि की अन्य शर्तें पूरी कर लिये जाने पर।

सम्भवत हैदराबाद के ८० या ९० प्रतिशत सत्याग्रही ही नही, उनकी पत्निया भी अब तक तो दिवगत हो चुकी होगी। फिर भी शेष बचे अशक्त, असमर्थ अजर वृद्ध सत्याग्रहियो या उनकी विधवाओ की सहायता के लिए आर्य बधुओ को तत्परता दिखानी चाहिए ताकि दलाल या भ्रष्ट तत्त्व उन्हे किसी भी सुविधा से वचित न कर सक।

सत्याग्रह को किसी भी तरह राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सग्राम से कम दर्जा नही मिलना चाहिए विशेषकर यह ध्यान मे रखते हुए कि इसी आदोलन ने हैदराबाद की जनता के मानस मे वह अनुकलता पैदा की थी जिसके कारण स्वतन्त्रता के पश्चात् देश मे अपनी आजाद हकूमत कायम करने की निजाम की दु रा कोशिश को कुचलने मे सरदार पटेल के 'मिलिटरी एक्शन' को त्वरित सफलता मिली थी।

—शकरलाल नागदा



आर्यसमाज शाहदरा के दिवगत कार्यकर्ता वैद्य निरजन लाल गौतम, जिनकी अब स्मृति ही शेष है।

पृथिवी सूक्त

(पृष्ठ ८ का शेष)

पोषण करती हुई बिना छल-कपट माँ के समान हमारे लिए वह धरती ऐश्वर्य की धारा बहाती रहे।

यां द्विपादः पक्षिणः सपतन्ति हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि ।
यस्यां वातो मातरिश्वेयते रजांसि कृण्वंश्च्यावयंश्च वृक्षान् ।
वातस्य प्रवामुप वामनु वात्यर्चिः ॥

इस पृथिवी पर सुन्दर पंखों वाले हंस, मोर, गरुड़ आदि पक्षी उड़ते हैं, धूल उड़ाने वाली वृक्षों को गिराती प्रचण्ड आंधियां भी चलती हैं और भयंकर लू भी।

यस्यां कृष्णमरुणं च संहिते अहोरात्रे विहिते भूम्यामधि ।
वर्षेण भूमिः पृथिवी वृतावृता सा नो दधातु भद्रया
प्रिये धामनि धामनि ॥

जिस भूमि पर काली रात्रि का अन्धकार और लाल सूर्य का प्रकाश रात-दिन एक-दूसरे के पीछे क्रमशः एक नियम से होते रहते हैं, वर्षा जल से तृप्त, कल्याणकारी वह प्रिय भूमि सब प्रकार से हमारा घर-घर में भरण-पोषण करती रहे।

अदो यद् देवि प्रथमाना पुरस्ताद् देवैरुक्ता व्यसर्पो महित्वम् ।
आ त्वा सुभूतमविशत् तदानीमकल्पयथाः प्रदिशश्चतस्रः ॥

हे देवी पृथिवी, जब मे तेरा महिमावान् विशाल स्वरूप विविध प्रकार से विस्तृत हुआ तब मे विद्वान् कवियों ने वैसा ही वर्णन किया। तू वैसे सुन्दर रूप चारों दिशाओं मे सदा रचाती रहे।

यामन्वैच्छद्धविषा विश्वकर्मान्तरर्णवे रजसि प्रविष्टाम् ।
भुजिष्यं पात्रं निहितं गुहा यदाविर्भोगे अभवन्मातृमद्भ्यः ।

महान् समुद्र में व्याप्त मिट्टी से बनी पृथिवी को सृष्टिकर्ता ने सृष्टि रचना के लिए उपयुक्त जानकर चुना है। वह भूमि इस महान् आकाश में भोज्य वस्तुओं भरी पूरी थाली के समान है। उस भूमि को माता के समान मानने वालों के लिए वह थाली सदा सामने है।

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः ।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ॥

हे पृथिवी, हमारी सन्तान तेरी गोद में रहकर रोग-रहित और हृष्ट-पुष्ट रहे। बड़ी लम्बी आयु वाले हम तेरे लिए आत्म-बलिदान करने की भावना वाले बने रहें।

भूमे मातर्निधेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम् ।
संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम् ॥

हे धरती माता, हमें कल्याणकारी और सुखकारी लक्ष्मी से भरपूर कर। हे क्रान्तदर्शिनि देवी तू प्रकाशमान सूर्य से संयुक्त रहते हुए हमे धन, सम्पत्ति और विभूति से सदा भरपूर रख।

निम्न कोटि के व्यक्तिगत स्वार्थ से लेकर सीमित राष्ट्रवाद और उच्चतम विज्ञान और अध्यात्म की खुराक तलाश करने वाले सबके लिए धरती माता के भण्डार मे सब कुछ है। कृषि से अन्न, खुदाई से रत्न एवं अन्य धातुएं इससे प्राप्त हैं। सृष्टिकर्त्ता को इसकी मिट्टी के समान पदार्थ और कहां से मिलता? सूर्य और मेघ, पवन और जलपूर्ण नदियां सबके सहज सहयोग से वरदान स्वरूप धरती का कौन-सा स्वरूप वन्दनीय नहीं है? कृतज्ञ आर्य जाति ने यह सब कुछ देखा, समझा और अपने हृदय के मुक्त भावो को गीतों का रूप दिया।

आज आदमी यह सब कुछ भुला बैठा है और चमकते सिक्कों की चकाचौंध मे गाय और गेहूँ की आभा से दूर हो गया है। यदि धरती की गोद में अन्तिम शरण लेने से पहले ही चेत जाये तो आदमी का रोग-शोक से घिरा जीवन फिर आनन्द-मंगल का जीवन बन जायेगा।

१९८६ का वर्ष

(पृष्ठ ७ का शेष)

गया। दिसम्बर के दौरान बंगलौर में एक समाचारपत्र में छपी लघु कथा के विरोध में जिस प्रकार पूरे कर्नाटक को आग की लपटों में झोंकने का प्रयास किया गया, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ तत्व पैट्रो-डालरों और विदेशी धन के बल पर देश में कट्टरपंथ को पनपाने में लगे हुए हैं।

श्रीलंका में तमिलों का संहार जारी रहा। हजारों तमिल भारतीयों को श्रीलंका छोड़कर भारत व अन्य देशों में शरण लेने को बाध्य होना पड़ा।

गोर्बाचोव की भारत यात्रा—सोवियत संघ के सर्वोच्च नेता श्री मिखाइल गोर्बाचोव की चार-दिवसीय यात्रा भारत के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण रही। २५ नवम्बर को वे दिल्ली पहुंचे तथा उनकी इस यात्रा के दौरान भारत के साथ अनेक समझौते संम्पन्न हुए। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी और गोर्बाचोव ने निरस्त्रीकरण के लिए दिल्ली घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये।

१६ नवम्बर को बंगलूर में सम्पन्न हुआ "सार्क" शिखर सम्मेलन भी एक उपलब्धि कहा जा सकता है। जिसमें सात देशों के राज्याध्यक्षों ने आतंकवाद के खिलाफ सामूहिक कारंवाई पर सहमति व्यक्त की।

विभूतियों का निधन—वर्ष १९८६ में देश अनेक विशिष्ट नेताओं, कलाकारो तथा साहित्य सेवियो से वंचित हो गया।

वरिष्ठ राजनेता तथा भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री जगजीवनराम का ६ जुलाई निधन हो गया। वे न केवल वयोवृद्ध राजनेता थे अपितु साहित्य, संस्कृति तथा वैदिक धर्म के प्रति भी उनकी निष्ठा अगाध थी। प्रख्यात नृत्यांगना श्रीमती रुक्मिणी देवी अरुंडेल का २४ फरवरी को मद्रास में निधन हो गया।

वयोवृद्ध गांधीवादी चिन्तक तथा सर्वोदयी नेता श्री गोकुलभाई भट्ट ६ अक्तूबर को हमसे बिछुड़ गये। शराबबन्दी अभियान के वे प्रमुख संचालक थे। एवरेस्ट विजेता तेनसिंह नोर्के का ९ मई को दार्जीलिंग में देहान्त हो गया।

हिन्दी कवि और पत्रकार श्री श्रीकान्त वर्मा का २५ मई को न्यूयार्क में देहान्त हो गया। हिन्दी के प्रख्यात हास्य कवि तथा पत्रकार काशीनाथ उपाध्याय उर्फ "बेधड़क बनारसी" १७ जून को हमसे बिछुड़ गये। ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता प्रसिद्ध साहित्यकार श्री मास्ति वेंकटेश अय्यंगार का ६ जून को देहान्त हो गया। फिल्मी गीतकार तथा कवि श्री सरस्वती कुमार दीपक भी बिछुड़ गये। फिल्म जगत् की प्रख्यात अभिनेत्री स्मिता पाटिल का १३ दिसम्बर को आकस्मिक निधन वर्ष वर्ष फिल्मी जगत् की सबसे बड़ी क्षति कहा जा सकता है। प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार अम्बिका प्रसाद दिव्य और काकोरी काण्ड के स्वतन्त्रता सेनानी श्री विष्णुशरण दुबलिश से भी हम इस वर्ष वंचित हो गये। उ० प्र० के भूतपूर्व विधान सभा अध्यक्ष और मन्त्री तथा निर्भीक हिन्दी सेवी प्रो० वासुदेवसिंह २३ दिसम्बर को दिल की बीमारी के दौरे से दिवंगत हो गये।

वर्ष की उपलब्धियो मे कृषि उत्पादन मे वृद्धि, आर्थिक क्षेत्र मे वित्तमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह द्वारा अनेक रिआयतों की घोषणा से अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाने के लिए उठाये गये कदम तथा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा दक्षिण एशिया सहयोग संगठन का नेतृत्व संभालना प्रमुख घटनायें कही जा सकती हैं।

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष में प्राप्त दान राशियां

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष मे ३१ दिसम्बर १६८६ तक प्राप्त दान राशिया और दानियो के नाम नीचे दिये जा रहे हैं—

देवलाली कैम्प से प्राप्त धन

सरदार गुरुमुखसिंह रावल कान्ट्रैक्टर	५००)
श्री रामराजपाल जैन कान्ट्रैक्टर	३००)
डा० किशनचन्द पजुमल दौलतानी	२५०)
श्री कृपालदास कुकरेजा	१२५)
श्री गोविन्दराम परशुराम खत्री	२००)
श्री गुरुबचनसिंह ग्रोवर कान्ट्रैक्टर	१५०)
श्री नेबनदास कपूर	१२५)
श्री दामोदरदास नामदेव	१२५)
श्री वरेलदास कपूर	१०१)
श्री लीलाराम (रामभरोसे होटल)	१०१)
श्री किशन शीतलदास रोहरा	१००)
श्रीमती विद्यावती स रवाल	५०)
श्रीमती मायादेवी अहमदनगर	१००)

खामगांव से प्राप्त धन

श्री जगदीश प्रसाद जी जागिड आर्य, प्रधान आर्यसमाज, खामगाव	२०१)
श्रीमती शालिनीदेवी वानप्रस्थी कार्यकारी प्रधान आर्यसमाज खामगाव	५१)
श्री नारायणलाल जी आर्य	२१)
श्री नथमल जी जानवाणी	५१)
डा० सन्तराम उधागी	२१)
श्री नथमल जी सावलाणी	५)
श्री मोहनलाल जी आर्य	५)
श्रीराम जी वशिष्ठ आर्य मन्त्री, आर्यसमाज खामगाव	२१)
श्री विश्वनाथ पोफले विद्यार्थी	६)
श्री मनोहर येलणे	५)
श्री वासुदेवसिंह दगले	२१)
श्री प्रकाश लोणकर विद्यार्थी	५)
श्री चेलाराज जी कामनदास	२५)
श्री पचमुखी गणेश मण्डल	५)
श्री एकता गणेश मण्डल	२१)
श्री भीमराज जी जागिड आर्य	५१)
श्री मु शीलाल रमेशचन्द्र बसल, जेवर, बुलन्दशहर	२१)
श्री मित्र वर्मा आर्य, कटोरी, पो० बेसरी मैनपुरी	१०)
श्री मन्त्री जी, आर्यसमाज बालोतरा, बाडमेर	३०)
श्री रामनाथ वर्मा, ५२ कैलाश वार्ड, बैतूल	५)
आर्यसमाज पश्चिम बिहार, नई दिल्ली	५७८)
श्री शकुन्तला चौधरी बी ३/३५५ पश्चिम विहार नई दिल्ली	५६०)
श्री विजय कुमार C/o यूनाइटेड ट्रेडर्स, सोहेनगज, छपरा	१०)
आर्यसमाज ब्रह्मपुरी, मेरठ	६००)
सचिव भारती उच्च विद्यालय, जमालपुर, मु गेर	२,०००)
श्री धर्मदेव आर्य, आर्यसमाज मसौढी, पटना	५००)
आर्यसमाज पखा रोड, सी ब्लाक, जनकपुरी, दिल्ली	७००)
श्री तेजनारायण कपूर, मो० खबाना बिलग्राम, हरदोई	१००)
श्री जमुना प्रसाद शर्मा, मकराना, नागौर	२५)
आर्यसमाज विजय नगर, दयानन्द मार्ग, अजमेर	७११)
नीमच (मध्य प्रदेश) क्षेत्र से डा० आनन्द सुमन द्वारा सग्रहीत	३५३१)
श्री हसराज सूरी, आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर	२००)
मन्त्री जी, आर्यसमाज लश्कर, ग्वालियर	२५१)
डी. डी पुरी, चैरिटी ट्रस्ट, कनाट सर्कस, नई दिल्ली	१०००)
श्री पारसनाथसिंह, पो० रिवाडी, वाया समझोता सारन, महाराष्ट्र	५)
उत्तम कैमिकल उद्योग, फरीदाबाद	१२५०)
आर्य स्त्री समाज, अमर कालोनी, नई दिल्ली	१०६२)
कु० रेणु त्यागी, अम्बेहटा शेखा, सहारनपुर	११)
श्री सोहनलाल शर्मा, पह सू मास्टरनान, बुलन्दशहर	२०)
मन्त्री जी आर्यसमाज लोधी रोड जोडबाग, नई दिल्ली	११००)
श्रीमती चननदेवी सोनी, आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर	५००)
श्री सत्यप्रकाश गुप्त, यूनाइटेड ट्रेडर्स, छपरा	१५)
श्री सीताराम आर्य, लक्ष्मी आटोमोबाइल्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली	२५१)
श्रीमती भागोदेवी ठाकुरदास प्रागपुर, कागडा	४०)
श्रमती लीलावती पृथ्वीचन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट, प्रागपुर, कागडा	४०)
आर्यसमाज, प्रागपुर, कागडा	२०)
श्रीमती सुखदादेवी आर्या, प्रागपुर कागडा	५०)
भारत बन्धु आर्य, प्रागपुर, कागडा	५०)
स्त्री आर्यसमाज जोडबाग, लोधी रोड, नई दिल्ली	११००)
मै० सत्य मैडिकल स्टार, दौलतगज, ग्वालियर	११००)
श्री यशपाल वालिया, सुनहरी रोड, मानवता नगर, होशियारपुर	१००)
श्री मदन मोहन सत्यदेव आर्य, शाहजहापुर, अलवर (राजस्थान)	१०१)
श्री बाबूलाल जी डावी, ग्राम मरनाऊ रानीवाडा, जालौर (राजस्थान)	२१)
श्री प्रदीप कुमार आय पशु चिकित्सालय, मरनाऊ रानीवाडा, जालौर	२०)
श्री सत्यप्रकाश गुप्ता यूनाइटेड ट्रेडर्स साहिबगज, छपरा	१०)
श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर मारफत आर्यसमाज मीरजापुर	११०००)
श्री चन्द्रिकासिंह प्रधान आर्यसमाज खडगपुर	१००)
श्री गणपतराय आय त्रिलोक सदन, सदर बाजार, लाडनू	२१)
श्री राधेश्याम केसरी आर्य, विश्रामपुर रेहला, जिला पलामू	११)
मन्त्री जी आर्यसमाज, मोतीहारी	१००)
श्री सुभाषचन्द्र आर्य, घरौण्डा	५०)
श्री कुमारचन्द्र भारती, सगरूर	२१)
श्री धर्म आनन्द प्रकाश, अम्बहटा, तरुण कुण्ड, सहारनपुर	१००)
श्री रामेश्वर यादव, फरक्का ब्रिज, मुर्शिदाबाद	५)
श्री नीति बनर्जी, फरक्का ब्रिज मुर्शिदाबाद	११)
श्री कीर्तिभाई मण्डल, फरक्का ब्रिज, मुर्शिदाबाद	११)
श्री गुरुचरणसिंह, फरक्का ब्रिज, मुर्शिदाबाद	१०१)
श्री विश्वनाथ साहो, फरक्का ब्रिज, मुर्शिदाबाद	१०)
श्री रामनिवास, फरक्का ब्रिज, मुर्शिदाबाद	५)
मन्त्री जी आर्यसमाज चाछर, रीवा	१००)



हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० बंसीलाल जी को अभिनन्दनपत्र भेंट करते हुए सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरयाणा के अधिष्ठाता प्रो० धर्मदेव विद्यार्थी और ला० इन्द्रजीत जी।

मंच पर संसद सदस्य हरद्वारीसिंह जी (प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष) तथा प्रो० शेरसिंह जी और बिजली सिंचाई मन्त्री चौ० शमशेरसिंह सुरजेवाला दिखाई दे रहे हैं।

नरवाना में नशाबन्दी सम्मेलन

नरवाना। अमर शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल और स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर आर्यसमाज के तत्त्वावधान में प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में नशाबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसे हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० बंसीलाल जी ने सम्बोधित किया। उन्होंने शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे गांव-गांव जाकर शराब के विरुद्ध जनजागरण करें। उन्होंने कहा कि यदि आर्यसमाज कोई शराब विरोधी आन्दोलन करेगा तो उसमें मेरा पूर्ण सहयोग रहेगा। शराब की बुराइयों की चर्चा की।

पत्र

इस सम्बन्ध में मेरा ...

(१) पश्चिम बंगाल के मुख्यमन्त्री ज्योति बसु इस घटना पर खेद प्रकट करें और मानें कि उनकी पुलिस ने गलती की है।

(२) जिन पुलिस कर्मचारियों और अधिकारियों ने मुल्ला के भाषण से उत्तेजित होकर सरकारी अनुशासन और अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया उन्हें कठोर दण्ड दिया जाये।

(३) इस मामले की जांच कराई जाये और जो तत्त्व बंगाल में साम्प्रदायिक मुस्लिम कठमुल्लावाद का विद्वेष फैलाने की चेष्टा कर रहे हैं उनके विरुद्ध कड़ी कारवाई की जाये। इसी प्रकार का जहर हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) में भी फैलाया किया जा रहा है।

यदि समय रहते इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो राष्ट्रीय एकता अखण्डता और साम्प्रदायिक सद्भाव को गहरा आघात लगेगा। कृपया यथोचित कारवाई कर अनुगृहीत करें।

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २१ अंक ४] | माघ कृ० ३ स० २०४३ रविवार १८ जनवरी १९८७ | वार्षिक मूल्य २५, एक प्रति ५० पैसे

दूरदर्शन व आकाशवाणी पर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह की पूर्ण उपेक्षा

समाचार बुलेटिनों में नाममात्र के लिए भी चर्चा न हुई

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की जांच की मांग : अजित पांजा के नाम पत्र

नई दिल्ली, ६ जनवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्री अजित पांजा को एक पत्र लिखकर इस बात पर दुःख प्रकट किया है कि पिछले २५ दिसम्बर को दिल्ली में निकाले गए स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह के जलूस का कोई समाचार न तो दूरदर्शन पर प्रदर्शित किया गया और न आकाशवाणी से सुनाया गया।

पत्र की प्रतिलिपियां राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री को भी भेजी गई हैं।

स्वामी जी ने मांग की है कि सरकार इस मामले की जांच कराकर वस्तु स्थिति से देश की बहुसंख्यक जनता में फैले असन्तोष को दूर करे।

पत्र अविकल रूप में इस प्रकार है —

महोदय,

२५ दिसम्बर, १९८६ को दिल्ली में लगभग ८ किलोमीटर लम्बे मार्ग से राष्ट्रीय स्वाधीनतासंग्राम के अग्रणी नेता स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस समारोह का विशाल जलूस निकाला गया था। यह जलूस पुरानी दिल्ली के प्रमुख बाजारों से होता हुआ लाल किले पर विशाल सार्वजनिक सभा में परिवर्तित हुआ था।

महात्मा गांधी दिल्ली को श्रद्धानन्द की दिल्ली कहा करते थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने ही दिल्ली की ऐतिहासिक जामा मस्जिद से हिन्दू मुस्लिम इत्तहाद का नारा लगाया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने ही चांदनी चौक में गोरों की संगीनों के आगे छाती खोलकर गोली चलाने के लिए ललकारा था। स्वामी श्रद्धानन्द (जो श्री मोतीलाल नेहरू के सहपाठी थे) ने ही जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड के बाद कांग्रेस अधिवेशन बुलाया था जिसके अध्यक्ष श्री मोतीलाल नेहरू और स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे। श्रद्धानन्द एक ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने इस देश की जनता को आजादी के लिए प्रेरित किया था। वे किसी धर्म या सम्प्रदाय विशेष के न होकर सारे भारत के एक माननीय नेता और संत थे।

मुझे अत्यधिक खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि २५ दिसम्बर १९८६ को दिल्ली में निकाले गये उक्त विशाल जलूस का कोई समाचार दिल्ली दूरदर्शन के राष्ट्रीय कार्यक्रम (८.४० बजे के अन्तर्गत प्रसारित नहीं हुआ जबकि

(शेष पृष्ठ १२ पर)



श्री रामकुमार भारद्वाज सऊदी अरब की जेल से मुक्त होकर स्वदेश लौटे। चित्र में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती उन्हें समझा रहे हैं कि उनकी मुक्ति मजहबी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

समृद्ध जीवन के लिए प्रभु से प्रार्थना

स्वदस्व हव्या समिधो दिदीहि, अस्मद्र्यक् संमिमीहि श्रवांसि।
विश्वां अग्ने पृत्सु तान् जेषि शत्रून्, अहा विश्वा सुमना दीदिही नः॥

ऋक् ३-५४-२२

विश्व के लिए प्रार्थना—

हे विश्वामित्र, प्रजापालक, जगदीश्वर ! स्वीकरणीय स्तुतियो से प्रसन्न होकर विश्व को आगे बढ़ाने की कामनाओं को प्रदीप्त कीजिये और फिर प्राणी-मात्र के लिए भोग्य पदार्थों को प्रवाहित कीजिए।

विश्व मे दूषण और हिंसा फैलानेवाली शत्रुरूप परिस्थितियो को दूर करके मानवमात्र के जीवन के प्रत्येक दिन को सौमनस्यपूर्ण बनाइए।

राष्ट्र के लिए प्रार्थना—

हे सर्वमित्र, मधुर-भाषिन् राष्ट्रनायक ! सुगमता से देय करों को ग्रहण करके सार्वजनीन कामनाओं को पूरा कीजिए, तथा भोजन के लिए अन्न, अन्य आवश्यकताओं के लिए धन और मानसिक सन्तोष के लिए यश हमारी ओर प्रवाहित कीजिए।

हे प्रजारक्षक अग्रनायक ! संग्रामों में सभी शत्रुओं को परास्त करके हमारे जीवन के प्रत्येक दिन को सुमन के समान प्रफुल्लित रखकर प्रदीप्त कीजिए।

व्यक्ति के लिए प्रार्थना—

हे जाठराग्ने ! खाद्य पदार्थों को स्वाद लेकर भोग और हम में महत्त्वाकांक्षाओ को प्रदीप्त कर। हे यज्ञाग्ने ! हमारी कामनाओ व महत्त्वाकांक्षाओं को यज्ञीय बना। हे सकल्पाग्ने ! हमारी महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए, अन्न, धन और यश को हमारी ओर प्रवाहित कर। हे प्राणाग्ने ! हमारे अन्दर चलने वाले संग्रामों मे काम-क्रोधादि आन्तर तथा बाह्य सभी शत्रुओं को परास्त करके हमारे सम्पूर्ण जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाकर प्रदीप्त कर।

इन प्रार्थनाओ को पूरा करने का साधन है—काम, क्रोध, लोभ के त्रिक का परित्याग और शरीर, प्राण, मन की त्रिविध उन्नति।

रूस में शराब की बिक्री घटी

मास्को, २८ दिसम्बर। सोवियत नेता मिखाइल गोर्बाचोव द्वारा नशाबन्दी के अभियान के फलस्वरूप १९८६ के पहले ग्यारह महीनों मे सोवियत संघ मे शराब की बिक्री में लगभग चालीस प्रतिशत की गिरावट आई।

रायटर ने केन्द्रीय सांख्यिकी बोर्ड द्वारा जारी आकड़ों के हवाले से समाचार दिया है कि शराब की बिक्री में इस कमी से अपराध दर में २५ प्रतिशत की गिरावट आई। सड़क दुर्घटनायें पहले की तुलना में बीस प्रतिशत कम हुई और पिछले वर्ष की तुलना में काम से लोगों की अनुपस्थिति के अनुपात मे भी एक तिहाई की गिरावट आई।

वेद संस्थान में वेद संगोष्ठी

मई, १९८६ मे 'वैदिक वाङ्मय में वसिष्ठ' विषय पर प्रथम वेद वेद सगोष्ठी संस्थान में सम्पन्न हुई थी। वसिष्ठ से सम्बद्ध विषय वसु तत्त्व पर अब द्वितीय वेद संगोष्ठी शनिवार-रविवार, ११-१२ अप्रैल, १९८७ को होगी। इसमें वसु-परक किसी पक्ष पर अपने निबन्ध का वाचन करने और चर्चा में भाग लेने लिए वैदिक विद्वान् और चिन्तक सादर आमन्त्रित हैं।

यदि कुछ वैदिक विद्वानों और वैदिक शोधछात्रों तक इस 'वेद संगोष्ठी' की सूचना या आमन्त्रण आप भिजवाना चाहें तो उनके नाम-पते भेजने का कष्ट कीजियेगा।

पत्राचार के लिए पता—अभयदेव शर्मा, एम. ए., पीएच. डी. (अध्यक्ष, वेद संस्थान), ११४८/३२, 'प्रकाशसदन', आर्यनगर, अजमेर-३०५००१

संगोष्ठी वेद सस्थान, सी २२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली में होगी।

गुरुकुल कृष्णपुर का उत्सव

फर्रुखाबाद। महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर का वार्षिकोत्सव ७, ८ और ९ मार्च को मनाया जा रहा है।

हिन्दी ही संपर्क भाषा हो सकती है

—जैलसिंह

बंगलूर, ६ जनवरी। राष्ट्रपति जैलसिंह ने कहा है कि वे गैर-हिन्दी-भाषी राज्यों पर जबरन हिन्दी थोपे जाने के खिलाफ हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि हिन्दी का राष्ट्रीय भाषा के तौर पर प्रेम और स्नेह से प्रचार किया जाना चाहिए। सभी राष्ट्रीय भाषाओं को फलने-फूलने का पूरा मौका दिया जाना चाहिए। लेकिन साथ ही एक संपर्क भाषा होनी चाहिए। यह भूमिका हिन्दी सबसे अच्छी तरह निभा सकती है।

राष्ट्रपति ने कहा कि भाषा को फूट डालने वालों के हाथों का खिलौना बनाने की बजाय इसे जनता को एक सूत्र में पिरोने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए। भाषा को लेकर कोई तनाव, संघर्ष या हिंसा नहीं होनी चाहिए।

राष्ट्रपति इस बात से सहमत थे कि सरकारी हिन्दी मुश्किल होती है और आम आदमी के लिए उसे समझना आसान नही होता। महात्मा गांधी जैसी हिन्दी चाहते थे वह सरल थी और उसे समझा जा सकता था। राष्ट्रपति ने सुझाव दिया कि भारत की कई भाषाओं के शब्दों को हिन्दी में लाए जाने की कोशिश होनी चाहिए ताकि हिन्दी और ज्यादा फलफूल सके और लोग इसे अपना सकें। राष्ट्रपति की राय थी कि आज की हिन्दी में संस्कृत के शब्द ज्यादा हैं।

उन्होंने कहा कि हिन्दी या किसी दूसरी भाषा को छोटा-बड़ा नहीं समझना चाहिए।

उन्होने कहा कि भारत मे १५ राष्ट्रीय भाषाए मानी गई हैं पर हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है ताकि अंग्रेजी को हटाया जा सके जो उपनिवेशवादी शासकों की भाषा थी। भारत की आबादी का काफी बड़ा हिस्सा हिन्दी बोलता और समझता है।

राष्ट्रपति ने कहा कि भाषा के मामले पर लड़ाई-झगड़े की बजाय 'भाईचारे' की भावना से रहना चाहिए। एक इलाके की साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विचारधारा को अनुवाद के जरिये दूसरे इलाके में पहुंचाया जाना चाहिए।

जैलसिंह ने पजाब का हवाला दिए बिना कहा—'सच्चा सिख ईश्वर और मानवता मे आस्था रखता है। वह जाति, नस्ल या धर्म के आधार पर भेद-भाव नही करता।

सोनपुर मेले पर वैदिक धर्म प्रचार

पटना। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे १५ से १९ नवम्बर, १९८६ तक आकर्षक आयोजन किया गया। प्रातः ८ बजे से रात्रि ११ बजे तक यज्ञ, प्रवचन, भजन, भाषण और सम्मेलनों का कार्यक्रम चलता रहा। गोरक्षा, राष्ट्र रक्षा तथा समाज सुधार सम्मेलनों की अध्यक्षता क्रमशः श्री धर्मवीरसिंह, श्री श्रीशचन्द्र शास्त्री तथा श्री भगवान् सहाय ने की। इनमें सरकार से अनुरोध किया गया कि सरकार गोहत्या पर पूर्ण पाबन्दी लगाये, देश की एकता तथा अखण्डता के लिए देश की पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाये और अन्तर्जातीय विवाह के लिए समुचित संरक्षण दे। खगड़िया के ब्रह्मचारी नरेन्द्र ने योगासन के प्रदर्शन से जनता को लाभान्वित किया।

सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री ने ओजस्वी शब्दों में जागृति का सन्देश सुनाते हुए समारोह का समापन किया।

डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री पुरस्कृत

उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज के प्रसिद्ध युवा विद्वान् डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री को 'दयानन्द दर्शन' शोध पत्रक प्रतियोगिता में प्रथम आने पर ११०० रुपये पुरस्कार देकर सम्मानित किया है। शास्त्री जी को ११०० रुपये के अतिरिक्त प्रशस्तिपत्र और रेशमी उत्तरीय भी इस्पात एवं खान मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त के करकमलों द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समापन समारोह में प्रदान किया गया।

श्री अजीत कुमार आर्य को मातृशोक

पलवल। श्री अजीत कुमार आर्य (उपसंचालक आर्य वीर दल हरयाणा) की पूज्या माता श्रीमती मार्गी देवी का देहावसान २३ दिसम्बर को सायं लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल, नई दिल्ली में हो गया। वे गत ५ दिनों से पक्षाघात से पीड़ित थीं।

सम्पादकीय

राष्ट्रीय भावना पर चोट

सय्यद शहाबुद्दीन ने राष्ट्रीयता पर जो प्रहार किया है, वह पीड़ाजनक है। इसके मुंह पर लगाम क्यों नही लगाई जाती? धर्मनिरपेक्षता का यह नया नमूना है। वह मि० जिन्ना बनने के सपने देख रहा है। स्वतन्त्र भारत में खुली छूट का अर्थ यह नही कि वह जो मुंह मे आये, बक दे। मतभेदों की दुनिया में भारत ही एक ऐसा देशहै, जहां नम्बर दो के नागरिकों को नम्बर एक के पूरे अधिकार प्राप्त हैं। क्या शहाबुद्दीन साहब बतायेंगे कि साउदी अरब में (जहा धार्मिक पुस्तक के रखने मात्र से उनका मजहब और ईमान खतरे में पड़ जाता है और हिन्दू को काफिर मानकर कैद तथा हत्या का पात्र बना दिया जाता है) क्या हो रहा है? आज भारत सरकार को इस प्रकार के व्यक्तियों को नम्बर दो का नागरिक ही नही बल्कि राष्ट्रद्रोह का अपराधी समझ कर सदा के लिए जमीदोज कर देना चाहिए। जो ढील इस देश मे भारत सरकार ने दे रखी है उसी का यह दुष्परिणाम है कि आये दिन भारत सरकार की नीद हराम की जा रही है।

सरकार को चाहिये था कि जब ऐसे लोगों ने फुफकारने या सिर उठाने की कोशिश की थी, तभी उनका सिर कुचल देती।

कभी भाषा का सवाल, कभी मुस्लिम महिला विधेयक का सवाल, पर इस बार मामला ज्यादा गम्भीर है—बाबरी मस्जिद के नाम पर यह घोषणा कि २६ जनवरी (गणतन्त्र दिवस) भारत के मुसलमान न मनायें और विरोध प्रकट करें। २६ जनवरी का दिन हमारी राष्ट्रीय भावनाओ के साथ जुड़ा है। इस समारोह के बहिष्कार की अपील करना देशवासियों की भावनाओं पर चोट करना है। शहाबुद्दीन ने बाबरी मस्जिद की ऐक्शन कमेटी के संयोजक के नाते विरोध करने का आह्वान किया है। यदि सरकार उचित कार्रवाई करती तो उन्हें सीमा से आगे बढने के अंजाम भी भुगतने पड जाते। साथ ही धर्मनिरपेक्ष नीति के अनुरूप अपने को ढालने के लिए मुस्लिम लीगी कट्टरता का परित्याग करना पड़ जाता। उनकी इस प्रकार की बयानबाजी की केवल निन्दा पर्याप्त नही, इसके विरुद्ध सख्त कदम उठाया जाना चाहिए। जलेपर नमक छिड़कने जैसा व्यवहार करना—यह पूछना कि धर्मनिरपेक्षता के नाम पर संविधान मे यह कहां लिखा है कि गणतन्त्र दिवस के समारोह का बहिष्कार राष्ट्रविरोधी है, अत्यन्त आपत्तिजनक कार्रवाई है।

दिवंगत आचार्य विष्णु मित्र जी : एक विनम्र श्रद्धांजलि

जैसा सूचित किया जा चुका है, आचार्य विष्णुमित्र (उपकुलपति कन्या गुरुकुल खानपुर कलां तथा गुरुकुल भैंसवाल कला, जिला सोनीपत) का १७ दिसम्बर को प्रातः ४ बजे देहांत हो गया। आचार्य जी गुरुकुल भैंसवाल के स्नातक थे। वे वेदों, दर्शनों, उपनिषदों तथा इतिहास के उच्चकोटि के विद्वान् थे। आचार्य जी शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सेवाओं के कारण भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किये गये थे। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सर्वोच्च उपाधि "विद्यामार्तण्ड" भी उनके साहित्य लेखन पर उन्हें प्रदान की गई थी। हरयाणा शिक्षा विभाग की ओर से हरयाणा के राज्यपाल द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया था। वे सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे। बड़ी से बड़ी आपत्ति में भी वे हंसते रहते थे। अनेकों पुस्तकों के लेखक थे। महाभारत का उन्होंने अभी-अभी हिन्दी मे अनुवाद किया था। उपनिषदों का भी हिन्दी में अनुवाद किया था। वे साधारण भाषा मे लिखते थे। वे "समाज सन्देश" अखबार के सम्पादक थे। हरयाणा साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित समारोहों में उनके उच्च कोटि के निबन्ध पढ़े जाते थे।

आचार्य जी के देहावसान से आर्यसमाज की बहुत क्षति हुई है। सार्वदेशिक की ओर से उन्हें सादर श्रद्धांजलि समर्पित है। उनके परिवारजनों को ईश्वर धैर्य प्रदान करे, यही प्रभु से प्रार्थना है।

नई शिक्षानीति में संस्कृत की उपेक्षा न कीजिये

—डा० कृष्णलाल—

इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रस्तावित राष्ट्रीय शिक्षा-नीति सुविचारित राष्ट्रीय नीति है। इसीलिए इसमें एक ओर जहां भावी नागरिक के लिए व्यावसायिक शिक्षा है, वहीं शारीरिक दृढता, चारित्रिक उत्थान और सांस्कृतिक एकता और सास्कृतिक एकता के उन्नयन पर भी समान बल दिया गया है। देश की भाषागत एकता का भी इसमें पूरा ध्यान रखा गया है।

इसी उद्देश्य से त्रिभाषा सूत्र पर बल दिया गया है। परन्तु इस राष्ट्र की एक सशक्त सांस्कृतिक धरोहर की इसमें अवहेलना की गई है। यह धरोहर संस्कृत है, जो सभी भारतीय भाषाओं में एकता के सूत्र के रूप में भाषाओं को ही नही, उन्हें बोलने वालों के हृदयों को भी जोडती आई है। यही हमारे पूर्वजो की ऐसी थाती है, जिसने ऐसा उत्कृष्ट समृद्ध साहित्य दिया, जिसे किसी भेदभाव के बिना समस्त भारत में पढा और समझा जाता है। इस साहित्य के आधार पर ही हमारे कलाकारों ने न जाने कितने गीतों, नृत्यों, नाट्यों की रचना की जिन्हें आज तक देख-सुनकर हम आह्लादित ही नही होते, अपितु, अटूट एकता का अनुभव भी करते हैं। इसी एकता की छवि को हमारे प्रतिष्ठित चित्रकारों तथा मूर्तिशिल्पियों ने अपनी कलाओं में उतारा है।

आज जब हम 'राष्ट्रीय शिक्षा-नीति बनाते है तो एकता के इस शक्तिशाली सूत्र को क्यों भूल जाते है? क्यो भूल जाते हैं उस सास्कृतिक माध्यम को जिसके द्वारा आदि शकराचार्य ने पैदल घूम-घूमकर सारे देश मे वेदान्त का प्रचार किया? क्यो भूल जाते हैं हम स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, योगी अरविन्द के एकता के उस सन्देश को, जो उन्होंने उदात्त सस्कृत साहित्य के आधार पर समस्त मानवता तक पहुचाया और जिसके द्वारा भारत ने सगठित होकर दासता की शृखलाओं को तोडने मे सफलता प्राप्त की? क्या महात्मा गांधी, प० जवाहरलाल नेहरू, तिलक, राजेन्द्र बाबू जैसे नेताओ ने कभी सस्कृत की महत्ता को नकारा?

फिर हमारे शिक्षा-नीति निर्माता त्रिभाषा सूत्र में इस महान् सयोजक सूत्र की उपेक्षा कैसे कर गए? माध्यमिक स्तर तक जो तीन भाषाए पढनी होंगी, उनमें दासता के समय हमारे ऊपर आरोपित अंग्रेजी को तो अनिवार्य रखा गया है, परन्तु सस्कृत जैसी सयोजक भाषा को पढने का विकल्प भी नही है।

भारत के प्राचीन ज्ञान-भडार में अवगाहन हेतु और उसे समसामयिक वास्तविकताओं से सम्बद्ध करने के लिए भारतीय विद्या में शोधकार्य पर इस राष्ट्रीय शिक्षानीति में बल दिया गया है। स्वाभाविक रूप से इसके लिए संस्कृत ही नही, पालि, प्राकृत और पुरानी तमिल का अध्ययन अनिवार्य है। किन्तु प्रश्न यह है कि जब निम्न स्तर पर किसी को ये भाषाए सीखने का जरा-सा भी अवसर नहीं मिलेगा तो वह आगे चलकर इनमे शोधकार्य कैसे करेगा इन भाषाओ के अध्ययन के लिए लम्बा समय अपेक्षित है। एक प्राचीन उक्ति के अनुसार व्याकरण का ज्ञान ही बारह वर्षों में होता है (द्वादशभिर्वर्षैर्व्याकरणमधीयते)।

क्या हम अपने बच्चो को इस अमूल्य निधि से पूर्णतया वंचित रखना चाहेंगे? क्या इस देश के बच्चे वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, कालिदास, पंचतन्त्र आदि से परिचित नही हो

(शेष पृष्ठ ४ पर)

नई शिक्षानीति

(पृष्ठ ३ का शेष)

पायगे ? क्या उन्हे कभी यह बोध हो पाएगा कि किस प्रकार उनकी भाषाओ की समृद्धि के पीछे सस्कृत जैसी समृद्ध भाषा है ?

हमारे सविधान-निर्माताओ ने सस्कृत के इस व्यापक और राष्ट्रीय एकता मूलक स्वरूप को ध्यान मे रखकर ही इसकी गणना सविधान की आठवी सूची मे अन्य भारतीय भाषाओ के साथ 'प्राचीन' या क्लासिकल' जैसा विशेषण जोडे बिना की है। उन्होने ३५१व अनुच्छेद मे सव भाषाओ के आधार के रूप मे सस्कृत को स्वीकार किया है। क्या नई शिक्षा-नीति मे सविधान-सम्मत भारतीय भाषाओ की इस सस्कृतमूलकता की उपेक्षा नही की गई ?

भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य मे सस्कृत की तुलना यूनानी, लातीनी आदि विदेशी भाषाओ से किया जाना अत्यन्त आश्चर्यजनक है। 'कार्यान्वियन कायक्रम' (एक्शन प्रोग्राम) के पृष्ठ १७० पर कहा गया है कि 'ग्रीक लैटिन, प्राचीन तमिल सस्कृत इत्यादि जैसी क्लासिकल भाषाओ मे अनेक समानताये है और इनका अध्ययन न केवल भारतीय सस्कृति के उन्नयन मे अपितु आधुनिक विचारो और धारणाओ को समृद्ध करने मे भी सहायक होगा।

भारतीय विद्या के उन्नयन के लिए प्रस्तावित अन्तर्राष्ट्रीय सस्थान के लिए अपेक्षित शैक्षिक कार्यकर्त्ता (शोधकर्त्ता, व्याख्याता आदि) कैसे प्राप्त हो सकेगे, यदि माध्यमिक स्तर पर उन्हे उस क्षेत्र मे जाने के लिए तैयार होने का अवसर नही मिलेगा ?

सस्कृत केवल प्राचीन या क्लासिकल भाषा नही है। यह सस्कृत की ही विशेषता है कि वह आज भी युगानुरूप चल रही है। सस्कृत मे भारतीय आकाशवाणी मे ही समाचारो का प्रसारण नही होता अपितु जर्मन रेडियो से भी नियमित प्रसारण होता है। भारत सरकार द्वारा मुद्रित नोटो पर अन्य भाषाओ के साथ सस्कृत मे भी मूल्य लिखा रहता है। हमारे राष्ट्रीय चिह्न पर 'सत्यमेव जयते', जीवन बीमा निगम का आदर्श वाक्य योगक्षेम वहाम्यहम इत्यादि सस्कृत मे ही तो है। सस्कृत माध्यम की अनेक साप्ताहिक मासिक पत्र-पत्रिकाए नियमित रूप से प्रकाशित होतीहै। आधुनिक विधाओ मे आधुनिक विषयो पर सस्कृत मे निरन्तर साहित्य रचना हो रही है। जवाहरलाल नेहरू महात्मा गाधी, स्वतन्त्रता आन्दोलन आदि से सम्बद्ध सस्कृत साहित्य पर अनेक शोधकार्य हो चुके है।

हमारे राष्ट्रीय राजनेताओ ने सदा सस्कृत के महत्त्व को स्वीकार किया है। इसके अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया है। अनेक नेताओं ने तो यहा तक कहा है कि सस्कृतका अध्ययन प्रत्येक भारतीय विद्यार्थी के लिए अनिवार्य होना चाहिए। सस्कृत आदिकाल से भारतभूमि के साथ रही है। सस्कृत का इतिहास भारतीय सस्कृति का इतिहास है। सस्कृति ने सदा हमे राष्ट्रीयता एकता तथा विश्वबन्धुत्व की प्रेरणा दी है। उदात्त विचार दिए हैं। सस्कृत का पठन-पाठन विद्यालयो मे निरन्तर होता रहा है। अब उसका अवरुद्ध हो जाना राष्ट्र के लिए कितना घातक होगा, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। एक ओर वैज्ञानिक यह मानने लगे हैं कि कम्प्यूटर के लिए सस्कृत सबसे उपयुक्त भाषा है दूसरी ओर सहज सुलभ इस बहुमूल्य सपत्ति को हम स्वय छोडने को तैयार हैं।

राष्ट्रीय नीतिया राष्ट्रीय विचारधारा से राष्ट्रीय मानदण्ड सामने रखकर निर्धारित की जानी चाहिये, केवल राजनैतिक आधार पर नही। विदेशी भाषा के अध्ययन अध्यापन मे श्रम और धन का अपव्यय दूर होना चाहिए। इसके विपरीत जो भाषा हमारे हृदयो तथा हमारी भाषाओ के अधिक निकट है, जो भाषा हमारी भाषाओ को आधार प्रदान करती रही है, उस सस्कृत भाषा को माध्यमिक स्तर पर स्थान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है। तदनुसार शिक्षानीति मे सशोधन किया जाना चाहिए, जिससे कम से कम वे छात्र तो इसका अध्ययन कर सके, जो इसका माध्यमिक स्कूल स्तर पर अध्ययन करने के इच्छुक हो।

हिन्दू नेता सदाजीवतलाल जी दिवंगत

सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में श्रद्धांजलि सभा

नई दिल्ली। विश्व हिन्दू परिषद् और भारत कल्याण मच के प्रमुख पदाधिकारी श्री सदाजीवतलाल चन्दूलाल बहल का पिछले दिनो बबई मे देहान्त हो गया।

ज्यो ही यह समाचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में पहुचा, सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के सभापतित्व मे एक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया।

सभा मे स्वामी जी ने सदाजीवतलाल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनका निधन वस्तुत राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है। सार्वदेशिक सभा से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। उन्होने समाज की रक्षा के लिए सदैव दिल खोलकर दान दिया। वे आजीवन देश की सेवा करते रहे। गोरक्षा के पुनीत कार्य मे भी उनका सहयोग मिलता रहा। उनका निधन मेरी व्यक्तिगत क्षति है।

अन्त मे गायत्री मन्त्र का तीन बार पाठ हुआ, दो मिनट का मौन रखा गया और शान्तिपाठ करके उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

पं० सोमदत्त शर्मा को मातृशोक

मेरी पूज्य माता श्रीमती विद्यावती शर्मा का १७ जुलाई को साय ६-४५ बजे भारत मे निधन हो गया। बहनो व भाइयो ने २ अगस्त को दिवगत आत्मा की शाति के लिए मन्दिर मे शाति यज्ञ मे भाग लिया तथा दिवगत आत्मा की शाति के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर हिन्दू समुदाय के अतिरिक्त अग्रेजी समुदाय से भी शोक समवेदना व्यक्त की गई।

—प० सोमदत्त शर्मा, प्रीस्ट, हिन्दू टेम्पल
नाटिघम, इग्लेड, टैलीफोन नबर-५६८२८४

आर्यसमाज जौनपुर का उत्सव

जौनपुर। नगर आर्यसमाज का तेरहवा वार्षिकोत्सव २६ फरवरी से पहली मार्च तक प्रेमचन्द नगर (नगरपालिका मैदान) मे धूमधाम से मनाया जायेगा। २६ फरवरी ऋषिबोध) के दिन विशाल शोभायात्रा निकाली जायेगी।

उत्सव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री डा० आनन्द-प्रकाश, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक आदि विद्वान् वक्ता पधार रहे हैं।

इस्लाम और कुरान पर सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव

-क्षितीश वेदालंकार-

अब से एक सौ ग्यारह वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द द्वारा प्रणीत सत्यार्थप्रकाश एक अद्भुत और क्रान्तिकारी ग्रन्थ है। उसमें जहां वेदादि शास्त्रों के आधार पर धर्म के सही स्वरूप का प्रतिपादन किया गया है, वहां वेद-विरुद्ध मतमतान्तरों की तर्क-संगत समीक्षा भी की गई है। इस समीक्षा में उन्होंने कहीं पक्षपात से काम नहीं लिया और सर्वत्र सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने की उनकी तीव्र इच्छा ही व्यक्त होती है। इसीलिए सत्यार्थ-प्रकाश के अन्तिम चार समुल्लासों को, जिनमें उन मतों की समीक्षा की गई है, लिखने से पूर्व उन्होने एक छोटी-सी अनुभूमिका भी लिखी है। उसमें उन्होंने लिखा है—"जो वेद-विरुद्ध पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी मत मुख्य हैं, वे क्रम से एक के पीछे दूसरा, तीसरा, चौथा चला है। अब इन चारो की शाखायें एक सहस्र से कम नहीं हैं। इन सब मतवादियों को परस्पर सत्य-असत्य का विचार करने में अधिक परिश्रम न हो, इसलिए यह ग्रन्थ बनाया है। इसमें जैसी मेरी बुद्धि, जितनी विद्या और जितना इन चारों मतों के मूल ग्रन्थ देखने से बोध हुआ है, उसको सबके आगे निवेदित कर देना मैंने उत्तम समझा है। पक्षपात छोड़ कर इसको देखने से सत्य-असत्य मत सबको विदित हो जायेगा। पश्चात् सबको अपनी-अपनी समझ के अनुसार सत्य मत का ग्रहण करना और असत्य मत को छोड़ना सहज होगा। मेरा तात्पर्य किसी की हानि वा विरोध करने में नहीं, किन्तु सत्य-असत्य का निर्णय करने-कराने का है। मनुष्य जन्म का होना सत्य या असत्य का निर्णय करने-कराने के लिए है न कि वाद-विवाद और विरोध के लिए। किसी मत-मतान्तर के विवाद से जगत् में जो-जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होगे, उनको पक्षपात-रहित विद्वज्जन जान सकते हैं।"

इस प्रकार ऋषि दयानन्द जीवन भर जिस सत्य की खोज के लिए प्रयास करते रहे, यह समीक्षा भी उसी का एक अंग है। अन्य मतावलम्बी धर्म के मामले में तर्क को या अक्ल के दखल को स्वीकार नहीं करते। परन्तु ऋषि दयानन्द मनुस्मृति के कथनानुसार

यस्तर्केणानुसंधत्ते स धर्मं वेद नेतरः।

जो तर्क से अनुसन्धान करता है वही धर्म को पहचान पाता है—तर्क को और बुद्धि को प्रमुखता देते हैं। तर्क की कसौटी को ऋषि ने अन्य मतों पर ही लागू नहीं किया, प्रत्युत वेदों के सम्बन्ध में भी इसी कसौटी को अपनाया है और वेद के सम्बन्ध में जितनी मिथ्या धारणायें प्रचलित थी, उनका तर्क के आधार पर ही खण्डन किया है। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि समस्त हिन्दू समाज में पंडितों द्वारा वेदों का नाम लेकर जिन कुरीतियों और अन्धविश्वासों का समर्थन किया जाता था, उन सबका खण्डन करने के लिए ऋषि दयानन्द ने वेदों को ही सबसे बड़ा आधार बनाया। जिस व्यक्ति ने अपने कहे जाने वाले पौराणिक मत और वैदिक धर्म की भी तर्क-युक्त समीक्षा करके धर्म का सही स्वरूप संसार के सामने रखा, वह व्यक्ति यदि तथाकथित पराये मतों की समीक्षा करने में संकोच करता तो वह पक्षपात का भागी होता। सबसे पहले व्यक्ति ऋषि दयानन्द हैं, जिन्होने संसार के इन प्रमुख मतों की अपनी ओर से निष्पक्ष समीक्षा करने का प्रयत्न किया है। ऋषि दयानन्द की इस समीक्षा का ही परिणाम है कि न केवल पौराणिकों और जैनियों ने बल्कि मुसलमानों और ईसाइयों ने भी अपनी पुरानी मान्यताओं को तिलांजलि देकर अपने धर्मग्रन्थो की बुद्धिसंगत व्याख्या करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। अन्य मतों के सम्बन्ध में यहां कहने की आवश्यकता नहीं, परन्तु इस्लाम ने अपनी मान्यताओं और कुरान की व्याख्या में किस प्रकार संशोधन किया है, उसका यहां संक्षेप में उल्लेख करना समीचीन होगा।

नये भाष्यकार

स्वयं मुसलमानों में ही कुछ ऐसे हिम्मती व्यक्ति पैदा हुए, जिन्होंने कुरान शरीफ के सब पुराने भाष्यों को एक तरफ रख दिया और अपनी ओर से नये सिरे से केवल कुरान के आधार पर ही कुरान का भाष्य करने का प्रयत्न किया। इसमें सबसे प्रमुख हैं अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक और प्रथम सुधारवादी नेता सर सैयद अहमद खां। यह सर्वविदित तथ्य है कि सर सैयद अहमद खां स्वामी जी के निकट सम्पर्क में आये थे और प्राय उनके सत्संग का लाभ उठाया करते थे। उन्होंने स्वामी जी के मुख से अनेक बार कुरान की बुद्धि-विरुद्ध बातों की आलोचना सुनी थी और वे उससे अत्यन्त प्रभावित भी थे। स्वामी जी ने जो भी आलोचना की, वह सब कुरान के पुराने भाष्यों के आधार पर थी। सर सैयद अहमद तथा उनके पीछे आने वाले अन्य भाष्यकारों ने तो स्वामी जी की आलोचना को ध्यान में रखकर ही अपनी मान्यताओं में सुधार किया। पाठकों को यह बता देना भी आवश्यक है कि स्वामी दयानन्द ही पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने कुरान शरीफ का सुबोध और सरल हिन्दी में अनुवाद करवाया। जिस शैली में अन्य भारतीय भाषायें लिखी व बोली जाती हैं, अरबी उस प्रकार से लिखी व बोली नहीं जाती, इसलिए कुरान शरीफ के उर्दू भाषा में किये गये अन्य अनुवाद स्वयं मुसलमानों के लिए भी दुर्बोध बने रहे। बाद में तो ऋषि दयानन्द द्वारा कराये गये भाष्य की शैली को इतना पसन्द किया गया कि अन्य भाष्यकारों ने भी उसी शैली में कुरान का अनुवाद किया।

इसमें सन्देह नहीं कि सर सैयद अहमद खां का अपने नये भाष्य के कारण काफी विरोध हुआ। उन्हें "नेचरिया" (प्रकृतिवादी), "दहरिया" (नास्तिक) आदि शब्दों से पुकारा गया परन्तु वे उससे विचलित नहीं हुए। उन्होंने बहिश्त (स्वर्ग), दोजख (नरक), फरिश्ते, जिन्न, शैतान आदि की जो बुद्धिगम्य व्याख्या की उस पर स्वामी जी की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्ही से प्रेरणा लेकर अहमदी सम्प्रदाय ने इस दिशा में पर्याप्त प्रयत्न किया। अहमदी सम्प्रदाय की लाहौरी शाखा के प्रधान मौलवी मुहम्मद अली एम० ए० ने पहले अंग्रेजी में और पीछे उर्दू में कुरान का एक विस्तृत भाष्य प्रकाशित किया, जिसमें इस्लामी सिद्धान्तों का रूप काफी बदल दिया गया। उनके बाद मौलाना अशरफ अली थानवी मुसलमानो में प्रतिष्ठित विद्वान् हुए है। हमीरपुर के पादरी अहमद-शाह और ख्वाजा हसन निजामी के भाष्यों पर भी स्वामी जी की समीक्षा की छाया दृष्टिगोचर होती है। मौलवी सनाउल्ला ने भी कुरान का "तफसीरे सनाई" नामक विस्तृत भाष्य लिखकर स्वामी जी के आक्षेपों का समाधान करने का प्रयत्न किया। भाष्यकारों में मौलाना अबुलकलाम आजाद का भाष्य भी बहुत महत्त्वपूर्ण है।

(क्रमशः)

क्या मांस मनुष्य का भोजन है ?

-धर्मपाल शास्त्री, साहित्यभास्कर-

मांस का खाना दया और न्याय के नियम के विरुद्ध होने के कारण न केवल एक नैतिक बुराई है बल्कि हमारे शरीर के लिए भी अत्यन्त हानिकारक है। क्योंकि मांसाहार न प्राकृतिक आहार है न ही पूर्ण, न ही स्वास्थ्यदायक और न ही मनुष्य की आत्मा को बेहतर बनाने वाला।

मनुष्य के हाजमे के निम्नलिखित अंग जो मांसाहारी पशुओं के अंगों से पूर्णतः भिन्न हैं, फल और अनाजखोर पशुओं से ही मिलते जुलते हैं—

१—मनुष्य के दांत क्या गिनती और क्या बनावट दोनों के विचार से फल और अनाजखोर पशुओं से बिल्कुल मिलते हैं और इनके दांत वैसे तेज, नोकदार, गौदुम (आगे से पतला और पीछे से मोटा) नहीं हैं, जैसे मांसाहारी पशुओं के होते हैं।

२—मनुष्य की जीभ की सतह फल और अनाज खाने वाले पशुओं की जीभ की तरह बिल्कुल समतल है, जब कि मांसाहारी पशुओं की जीभ बिल्कुल खुरदरी होती है।

३—मनुष्य के नाखून मांसाहारी पशुओं के पंजों से बिल्कुल भिन्न होते हैं, जो मांस फाड़ने के काम आते हैं। परन्तु मनुष्य का हाथ फलाहारी बन्दर के हाथ से पूर्णतः मिलता है।

४—मनुष्य का मेदा पेचीदार नहीं है। उसमे केवल एक खाना होता है। इसके विपरीत मांसाहारी पशुओं का मेदा प्रायः बहुत पेचदार होता है।

५—मनुष्य का जिगर मांसाहारी पशुओं के जिगर से बहुत छोटा होता है। मांसाहारी पशुओं का जिगर बहुत बड़ा और ताकतवर होता है और मनुष्य के जिगर की अपेक्षा दस या पन्द्रह गुणा यूरिक एसिड जज्ब कर सकता है या बाहर निकाल सकता है।

६—मनुष्य की अन्तड़ियां या खाने की नली की लम्बाई भी साफ तौर पर जाहिर करती है कि उसकी बनावट फल और अनाजखोर पशुओं से मिलती है। क्योंकि हम देखते हैं कि मनुष्य की अन्तड़ियों की लम्बाई फल और अनाजखोर लंगूर की अन्तड़ियों की तरह उसके शरीर की लम्बाई से बारह गुणा लम्बा होती है, जब कि घासखोर पशुओं की अन्तड़ियां उनके शरीर की लम्बाई से तीस गुणा लम्बी होती हैं, जैसे बकरी की।

सूअर और रीछ की सूरत में, जो मांस और सब्जी खाने वाले हैं, यह नली दस गुणा लम्बी होती है। परन्तु मांसाहारी पशु जैसे शेर और चीते की सूरत में यह नली उनके शरीरों से केवल तीन गुणा लम्बी होती है।

इस प्रकार मनुष्य के सब अंग, जो खुराक खाने और हजम करने से सम्बन्ध रखते हैं, तथा दांत, जीभ, मेदा, अन्तड़ियां, जिगर आदि फलाहारी लंगूरों और बन्दरों से मिलते-जुलते हैं—न कि मांसाहारी या मांस और सब्जी खाने वाले पशुओं से। इससे यह बात प्रमाणित होती है कि प्रकृति ने मनुष्य का शरीर मांस खाने के लिए बिल्कुल नहीं बनाया बल्कि अनाज और फल खाने के लायक बनाया है।

मनुष्य शरीर के बड़े ज्ञाता बैरिन क्योंवीर ने इस विषय में क्या ही अच्छा कहा है—पशुओं के शरीर के गठन का मुकाबला हमें सिखलाता है कि मनुष्य हर बात में फल और अनाज खाने वाले पशुओं से मिलता है और मांसाहारी पशुओं से किसी बात में भी नहीं मिलता।

सच पूछिए तो मनुष्य के दिल-दिमाग को मांस से कुदरती नफरत है। क्योंकि (१) जो लोग मांसाहारी नहीं, उन्हें और उनके बच्चों को मांस को देखते ही घृणा होती है। स्त्रियों और बच्चों को उलटी तक आ जाती है। उनके लिए मांस पकाना तो दूर रहा, पकते हुए मांस की बदबू से ही उनका दिल मितलाने लगता है (२) बकरे और मुर्गे को मरते-तड़पते देखकर तो अधिकतर मांसाहारियों का भी दिल कांप जाता है और कई तो कसाई की छुरी तले तड़पते पशुओं के दृश्य से बेहोश भी हो जाते हैं। पशु को स्वयं मारने के लिए शायद ७५ प्रतिशत मांसाहारी भी तैयार न हों। क्या इन बातों से यह सिद्ध नहीं होता कि मनुष्य का दिल-दिमाग भी कुदरत ने मांसाहार के लिए नहीं बनाया, क्योंकि वह हिंसा से कांपता है और दया करके खुश होता है। मांसाहारी जन्तु स्वयं मार कर खाते हैं। मरे मुर्दों को खाने वाले गीध, गीदड़, कौवे आदि सड़ांधले शवों को भी चट करने या सफाई के लिए कुदरत ने बनाये हैं। उनसे बराबरी करना मनुष्य की शान के खिलाफ है। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य को ऊंचे दर्जे का दिमाग ज्ञान-विज्ञान के ऊंचे काम करने के लिए मिला है न कि पशुओं जैसे खूनी काम करने के लिए। कुदरत ने मनुष्य से भी पशु कटवाने होते तो उसे भी वह पशुओं जैसा निर्दय दिल और खूंख्वारों जैसा दिमाग देती।

भारत में मांस का प्रचार

अधिकतर भारतीयों में मांस भक्षण की प्रथा विदेशियों के, विशेषकर अंग्रेजों के, आने से पूर्व प्रायः नहीं थी। इसके प्रमाणस्वरूप कुछ विदेशी यात्रियो के लेख हैं—

१—फाह्यान ने, जिसने ई० सन् ३९९ से ४१४ तक उत्तर भारत में भ्रमण किया था, लिखा है—

चांडालों के अतिरिक्त कोई भी किसी जीवित प्राणी का वध नहीं करता था, न मादक पेय पीता था और न जीवित पशुओं का व्यापार करता था। वधशालायें और मदिरा की दूकानें नहीं थी, केवल चांडालों को ही शिकार खेलने या मांस बेचने की आज्ञा थी। (जे० टी० व्हीलर द्वारा लिखित 'भारतवर्ष का इतिहास' द्वितीय भाग, पृष्ठ ३६३)

२—ह्यूनत्सांग ने भी लिखा है कि सम्राट् हर्ष के प्रयत्न से भारत के निकटवर्ती पांचों द्वीपों में पशु वध तथा मांस भक्षण बन्द हो गया था।

मांसाहार के विषय में डाक्टरों की राय

१—अमरीका के डाक्टर ए० वाचमैन और डा० डी० एम० वकरटीन के अनुसार मांस भक्षण से हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। उनके अनुसार जिनकी हड्डिया कमजोर हो उन्हें फल सब्जियां तथा दूध का सेवन अधिक करना चाहिए। मांस सर्वथा छोड देना चाहिए।

२—लन्दन के प्रसिद्ध डाक्टर हेग के अनुसार सभी प्रकार के मांस में एक प्रकार का विष पाया जाता है। जब यह विष खून में मिलता है तो इससे दिल की जलन, जिगर की खराबी, टी० बी०, सांस का रोग, खून की कमी, गठिया, हिस्टीरिया, सुस्ती, नींद का अधिक आना, अजीर्ण रोग, शरीर में तरह-तरह के दर्द, जुकाम, इन्फ्लुएंजा, मलेरिया, न्यूमोनिया आदि सैकड़ों रोग पैदा हो जाते हैं।

डा० रसल ने अपनी पुस्तक Strength and Diet of all Nations में दुनिया के कोने-कोने में किये गये अपने परीक्षणों के परिणामस्वरूप यह निर्णय दिया है—

(क) जो जातिया जितना अधिक मांस खाती हैं, उन्हें कैंसर का रोग उतना ही अधिक होता है।

(ख) जिन देशों मे मांस कम या बिल्कुल नहीं खाया जाता, वहां कैंसर का रोग भी कम होता है।

(ग) भोजन में मांस की मात्रा बढ़ाते ही कैंसर भी बढ़ जाता है।

विश्व के महान् विचारक, सुधारक और तत्त्ववेत्ता शाकाहारी रहे हैं। सभी धर्मों ने अहिंसा पर बल दिया है। पाइथागोरस, प्लैटो, सुकरात, टालस्टाय, टर्टलियन, क्रिस्मेष्ट, न्यूटन, मिल्टन, पिटमैन, बर्नार्ड शा आदि विशुद्ध शाकाहारी थे। एक बार बर्नार्ड शा को डाक्टरों ने कह दिया—'गोमांस खाओ तो तुम बच सकोगे, नहीं तो मर जाओगे।" बर्नार्ड शा ने कहा—"मुझे तजुर्बा कर लेने दो। यदि मैं न मरा तो तुम्हें मांसाहार छोड़ना पड़ेगा।" बर्नार्ड शा ने अपनी वसीयत में लिखा—"यदि मैं मर गया तो मेरी अर्थी के साथ रोते हुए लोगों से भरी गाड़ियों की जरूरत नहीं। मेरे साथ बैल, भेड़ें, मुर्गे और मछलियां होंगी, क्योंकि मैंने साथी प्राणियों को खाने के बदले मरना अच्छा समझा है।"

वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि संसार के सबसे अधिक स्वस्थ और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

हमारी संस्कृति

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा

-आचार्य रामकिशोर शर्मा, प्राचार्य, राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुर्जा, बुलन्दशहर-

हम भारतीय हैं। हमारे देश की अपनी संस्कृति है, जिसे विश्व भारतीय संस्कृति के नाम से जानता है। इस संस्कृति के मूल वेद हैं, अतः इसे वैदिक संस्कृति भी कहा जाता है। यह विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। संस्कृति शब्द के "जिसके द्वारा मानव जीवन परिष्कृत होकर भूषण तुल्य अपनी मूल्य वृद्धि के साथ-साथ अन्यों के भी उत्कर्ष को बढ़ाये" इस यौगिक अर्थ का आज भी इस संस्कृति में पूर्ण दर्शन होता है। 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्' सम्पूर्ण प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखो, "मा हिंस्यात् सर्वभूतानि" किसी प्राणी की हिंसा मत करो, "भद्र कर्णेभिः शृणुयाम" हम कानों से कल्याणी वाणी सुनें। इत्यादि भद्र भावों से ओत-प्रोत है अपनी अनुपम संस्कृति। जिस समय विश्व में अन्य संस्कृतियों का जन्म भी नहीं हुआ था, उस समय समस्त विश्व में यही संस्कृति थी—सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा। इसी के कारण सर्वत्र सुख व शान्ति का साम्राज्य था। इसके उपदेश किसी समय-विशेष अथवा देश-विशेष के लिए न होकर सार्वभौम तथा सार्वकालिक है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, अत. तन्मूलक होने से हमारी यह भारतीय संस्कृति ईश्वरीय संस्कृति है। मानव प्रसूत अनेक संस्कृतियां थोड़े समय चमककर समाप्त हो गई, किन्तु यह संस्कृति आज भी सुरक्षित है तथा मानवता का सन्देश दे रही है। इसी ने हमारी जाति को अमरत्व प्रदान किया है। इसके द्वारा ऐसे महापुरुषों का निर्माण हुआ है, जो आज भी विश्व में आदर्श माने जाते हैं।

'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः' जिससे भौतिक तथा परमात्मप्राप्ति रूप आध्यात्मिक समुन्नति हो, वह धर्म है। वेद इसी का प्रतिपादन करते हैं। तदनुप्राणित होने के कारण हमारी संस्कृति धर्ममयी है। इसमें भौतिक अभ्युन्नति को साधन तथा आध्यात्मिक अभ्युन्नति को साध्य माना गया है। साधन होने के कारण भौतिक अभ्युन्नति भी आवश्यक है, इसलिए वेदों में "वय स्याम पतयो रयीणाम्" हम धन-ऐश्वर्य के स्वामी बनें, "अदीनाः स्याम शरदः शतम्" हम सैकड़ों वर्ष तक दीन न बनें, "अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्" हे प्रभो! हमें सन्मार्ग से धन प्राप्त कराओ, इत्यादि प्रार्थनायें प्रभु से की गई है। किन्तु साधन को साध्य मानना अधर्म है। हमारे पूर्वजों ने इस तथ्य को यथावत् समझकर जगदाधिपत्य तथा जगद्गुरुत्व की उपाधियां प्राप्त की तथा "धर्मो रक्षति रक्षितः" रक्षित धर्म रक्षा करता है, इस वचनानुसार सुरक्षापूर्वक परमात्मसान्निध्य पाकर मानव जीवन को सफल बनाया। आज भी विश्व के मनीषी उनकी मान्यताओं को हृदय से स्वीकार करते हैं। जब तक व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन सुव्यवस्थित नहीं, तब तक भौतिक समुन्नति सम्भव नहीं। एतदर्थ हमारी संस्कृति हमें सतर्क करती दृष्टिगोचर होती है। मानव के सर्वाङ्गीण विकास का पथ प्रशस्त करने में भारतीय संस्कृति अप्रतिम है।

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसन्नमन्तु॥

अर्थात् सुखसाधनवेत्ता, कल्याणाभिलाषी महात्मजन तप (दुःख-सहिष्णुता) तथा दीक्षा (उद्योग) द्वारा राष्ट्र में बल और ओज उत्पन्न करते हैं। फिर उस राष्ट्र को देवता प्रणाम करते हैं) अर्थात् वह राष्ट्र सर्वथा प्रशंसनीय हो जाता है।

वेद ने प्रत्येक व्यक्ति को "मनुर्भव" मनुष्य अर्थात् मननशील बनो, यह आदेश दिया है। मननशीलता उन्नति का सोपान है। "मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद" वचन यह संकेत दे रहा है कि धार्मिक माता, पिता और आचार्य मानवता प्राप्ति हेतु आवश्यक हैं। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव इत्यादि वचन हम कृतज्ञता तथा विनम्रता आदि गुण सम्पन्न हों, यह प्रेरणा दे रहे हैं। सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः इत्यादि वाक्य हमें सत्यवादी, धर्मात्मा तथा स्वाध्यायशील बनने का उपदेश दे रहे है। इन्हीं सब शिक्षाओं के परिणामस्वरूप हमारे आप पूर्वजों ने उक्त सभी कार्यों में असाधारण दक्षता प्राप्त कर अपने तथा अपने देश को गौरवान्वित किया था। व्यक्तिगत जीवन सुन्दर हो जाने से पारिवारिक जीवन का सुन्दर हो जाना स्वाभाविक है, क्योंकि व्यक्तियों से ही परिवार का निर्माण होता है। परिवार के सभी व्यक्ति परस्पर किस प्रकार व्यवहार करें, इस विषय में वेद का यह वचन द्रष्टव्य है "अन्यो अन्यं अभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या" एक-दूसरे से ऐसा प्रेम करो जैसा गौ अपने नवजात बछड़े से करती है। जिस परिवार में ऐसा प्रेम होगा, उसके स्वर्ग होने में क्या सन्देह है? इसीलिए गृहस्थाश्रम को धरती का स्वर्ग कहा गया है।

जिस समाज के सदस्य एक-दूसरे के कल्याण हेतु कटिबद्ध रहते है, वह समाज समुन्नत तथा गौरवास्पद बन जाता है। स्वार्थ भावना सामाजिक जीवन को नरक बना देती है। इसलिए इस दिशा में सतर्क करते हुए वेद में 'मा गृधः कस्यस्विद्धनम्' किसी के धन को लेने की इच्छा मत करो—अर्थात् स्वार्थान्ध मत बनो, यह स्पष्ट निर्देश दिया गया है। "शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सकिर" सौ हाथों से इकट्ठा करो, हजार हाथों से बांटो, "केवलाघो भवति केवलादी" अपनी कमाई को अकेला खाने वाला पाप खाता है इत्यादि वेद वचन हमें परोपकार परायणता का उपदेश दे रहे हैं। सचमुच हमारे देश का सामाजिक जीवन अत्यन्त प्रशंसनीय था। सामाजिक उन्नतावस्था राष्ट्रीय उन्नति की आधार-शिला है। इसलिये हमारे राष्ट्र ने अपने अतीत में उन्नति की चरम सीमा प्राप्त कर ली थी। इसके समान सुखी सम्पन्न तथा सशक्त कोई भी राष्ट्र भूमण्डल पर नहीं था। सभी हमारे अधीन थे। इस स्थिति की रक्षार्थ हमारे पूर्वज इस वेदोपदेश को सदा ध्यान में रखते थे। स्वार्थ, आलस्य और विलासिता से दूर रहकर पूर्व पुरुषों ने राष्ट्र का गौरव बढ़ाया था।

हमारे पूर्वजों ने आध्यात्मिक क्षेत्र में भी चरमोत्कर्ष प्राप्त किया था। जब तक हमारे देश में हमारी संस्कृति का सम्मान रहा, तदनुसार ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य किया गया, तब तक सर्वत्र आश्चर्यजनक उन्नति होती रही। आज की दयनीय दशा अपनी संस्कृति के विस्मरण तथा अन्य संस्कृतियों के अन्धानुकरण का परिणाम है। स्वार्थपरता व विलासिता, जिन्हें अपनी संस्कृति में हेय माना गया है, आज देश में बढ़ रही है। ऐसे व्यक्तियों का प्रवेश हो गया है, जिनकी वाणी में तो भारतीय संस्कृति की प्रशंसा रहती है, किन्तु मन व कर्म में कुछ और ही रहता है। इन्हीं स्वार्थी तत्त्वों के कारण अन्य संस्कृतियां, जो देश की अखण्डता और एकता के लिए गम्भीर संकट, सशक्त होती जा रही हैं। प्रशिक्षित विदेशी नागरिक बड़ी संख्या में देश में प्रविष्ट हो चुके हैं तथा होने का प्रयास कर रहे हैं, जिनके कारण भाषा, धर्म तथा जाति के नाम पर यत्र-तत्र भयानक उपद्रव होते रहते हैं। यहां के प्राचीनतम धार्मिक समारोहों में भी बाधायें उत्पन्न की जा रही है। विभिन्न प्रकार से हमें अपमानित करने का प्रयास किया जाता है। ऐसी स्थिति में अपनी संस्कृति की पूर्ण रूप से प्रतिष्ठापना किये बिना देश में सुख और शान्ति सम्भव नहीं। आओ, आज हम अपनी संस्कृति के संरक्षण का व्रत लेकर अपने देश को अतीत की भांति गौरवान्वित करें।

सम्पादक के नाम पत्र

यह बात हिन्दू समाज की समझ में क्यों नहीं आती?

महोदय,

आज हिन्दू समाज लक्ष्यहीन है यह विचार मन को कचोटता है। इस देश में चार मुख्य समाज हैं—हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई तथा सिख समाज। हिन्दू समाज के अतिरिक्त शेष तीनों ही समाजों का कोई न कोई लक्ष्य और उद्देश्य है। मुस्लिम समाज का लक्ष्य इस देश को तथा समस्त विश्व को दार-उल-इस्लाम बनाना है। इसके लिए हमारी सरकार ने मुस्लिम समाज को मुस्लिम पर्सनल ला जैसी छूट प्रदान कर उसे चार-चार निकाह करने का अधिकार दे दिया है। साथ ही अन्य समाजों को मत परिवर्तन कर अपने साथ मिलने की भी छूट दे रखी है। यही नहीं, इस समाज को शासन और सरकार में भागीदार बनाया हुआ है।

इसी प्रकार ईसाई समाज भी पूरी तरह सक्रिय है और वह मानव सेवा के नाम पर अस्पताल और शिक्षण संस्थान खोल रहा है और अन्य समाजों के लोगों को अपनी ओर खींच रहा है। सिख समाज आज भरमा गया है और उसका लक्ष्य अभी तो केवल खालिस्तान प्राप्त करना है और उसके लिए उसने उग्रवाद का सहारा ले रखा है। वह पंजाब में गैर-सिख लोगों की निर्मम हत्यायें करने में संलग्न है। प्रश्न यह है कि हिन्दू समाज का लक्ष्य क्या है? हम इसी बात को लेकर चर्चा कर रहे हैं। यह बात सर्वमान्य और निश्चित है कि जिस व्यक्ति का कोई लक्ष्य नहीं होता, वह जीते हुए भी मरे समान होता है। इसी प्रकार जिस समाज का कोई उद्देश्य या लक्ष्य नहीं होता, वह समाज भी थोड़े समय में ही मर जाता है या नष्ट हो जाता है।

हिन्दू समाज बड़ी-बड़ी सामाजिक संस्थायें भी गठित किये हुए है। ये संस्थायें अपने आप को सारे समाज का ठेकेदार मानती हैं। किन्तु यदि इन संस्थाओं के कार्य का लेखा-जोखा किया जाये तो पता लगता है कि इनके कामों का हिन्दू समाज को कोई लाभ नहीं हुआ। हिन्दू दिन प्रति दिन अल्पसंख्या में होता जा रहा है। इसके अपने अभिन्न अंग ही इसे तिलांजलि दे अलग होते जा रहे हैं।

कारण सीधा-सा है—हिन्दू समाज लक्ष्यहीन होकर अपने अस्तित्व की समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहा है। जिस समाज का लक्ष्य राजनैतिक नहीं वह समाज आज नहीं तो कल समाप्त हो जायेगा।

आज हिन्दू समाज का बुद्धिजीवी सोया हुआ है और युवा शक्ति वासना, अपराधी मनोवृत्ति तथा नशीले पदार्थों के उपयोग में मगन है। इन दोनों को देश और समाज से कोई मतलब नहीं। किसी भी समाज के बुद्धिजीवी और युवा शक्ति ही उसे बदलने में अग्रसर होते हैं। किन्तु ये दोनों ही इस समय लक्ष्यहीन दिखाई पड़ते हैं। हमारे कुछ लोग हिन्दू राष्ट्र की बात करते हैं, हिन्दू जातपात समाप्त करने की बात करता है, शुद्धि करने की बात भी करता है। वह धर्मशालाओं, मन्दिरों का निर्माण करता है, वेद, गीता व रामायण का गुणगान करता है और देवी-देवताओं की पूजा भी करता है, किन्तु उसे अपने अतीत की चिन्ता नहीं और न ही वह उसके बारे में सोचता है। उसे अपने भविष्य की कोई फिक्र नहीं।

१९४७ से पूर्व हमारा लक्ष्य अंग्रेजों को देश से निकालने का था। वह हमने येन-केन प्रकारेण देश के विभाजन के साथ प्राप्त कर लिया। किन्तु इसके बाद हमारे देश की सत्ता ऐसे महानुभावों के हाथ में आई जो अपने आपको हिन्दू ही नहीं मानते, जब कि देश का विभाजन हिन्दू व मुस्लिम आधार पर ही हुआ था। हमें उसी समय यह चाहिये था कि जब मुसलमानों ने अपने हिस्से को पाकिस्तान का नाम देकर उसे इस्लामी राज्य घोषित कर दिया, ~~हम शेष~~ हिन्दुस्थान को हिन्दू राज्य घोषित कर देते। किन्तु ऐसा नहीं किया गया।

सत्ता के बिना कोई भी जाति अपना विस्तार या अपनी संस्कृति की रक्षा नहीं कर सकती। इसलिए जब तक हिन्दू समाज का लक्ष्य हिन्दू राज्य प्राप्त करना नहीं होगा, तब तक यह समाज इसी प्रकार गिरता रहेगा। आज जो संस्थायें हिन्दू संगठन या जागरण का कार्य करती हैं, वे इसे बचाने में अपने आपको असमर्थ पा रही हैं।

जब तक इस देश में हिन्दू राज्य नहीं होगा, तब तक यह न हिन्दू राष्ट्र रहेगा, न ही यहां मन्दिर, धर्मशालायें और शिवालय रहेंगे, जैसा हमें पाकिस्तान में देखने को मिलता है। वहां हिन्दू समाज के पास क्या नहीं था—सब समाप्त कर दिया गया है। यह हमारे ही देश का एक भाग है। इसी तरह अफ़गानिस्तान, बर्मा आदि अपना राज्य न होने के कारण सभ्यता और संस्कृति खो बैठे। पता नहीं, यह बात हिन्दू समाज की समझ में क्यों नहीं आती?

—बिशनस्वरूप गोयल
३३१४, बैंक स्ट्रीट
नई दिल्ली

डाक दरों में वृद्धि वापस ली जाये

महोदय,

छोटे और मझोले समाचारपत्रों के संचालक घोर तपस्या करके इन पत्रों को निकाल पा रहे हैं। घोर महंगाई ने उनका हुलिया बिगाड़ रक्खा है। कागज महंगा, छपाई महंगी, डिस्पैच फोल्डर बनवाना महंगा और अब डाक विभाग ने शुल्क में तीन गुनी वृद्धि कर संचालकों की समस्याओं को विषमतर बना दिया है।

छोटे पत्र बड़ी संख्या में निःशुल्क वितरित होते हैं। विज्ञापन की उपलब्धि ही उनके चलने का मुख्य साधन है। वह भी उन्हें सहज प्राप्त नहीं होता।

इन सब वास्तविकताओं को ध्यान में रखकर डाक-तार विभाग द्वारा अपना निर्णय वापस लिया जाना चाहिए, जिससे आम जनता तक पहुँचने वाले छोटे समाचारपत्रों के बन्द होने की नौबत न आये। —बालदिवाकर हंस, नई दिल्ली

मनुष्य का भोजन

(पृष्ठ ६ का शेष)

लम्बी आयु वाले लोग मध्य एशिया में रहने वाली हुंजा जाति के लोग हैं, जो शुद्ध शाकाहारी हैं। बम्बई के प्रसिद्ध पहलवान श्री सुधीर भीम से लोगों ने पूछा—"आपके सुन्दर स्वास्थ्य और अभूतपूर्व शक्ति का रहस्य क्या है?" भीम ने कहा—"शरीर के रहस्य और दीर्घायु के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण फल और हरी सब्जियां हैं। बन्दर, हाथी, भैंसा, जंगली सूअर आदि केवल शाकाहार द्वारा अपार शक्ति और स्फूर्ति प्राप्त करते हैं। मनुष्य में भी किसी समय पशुओं जैसी शक्ति थी, तब मनुष्य शाकाहारी और संयमी था। लेकिन आज अनावश्यक खान-पान और के कारण व्यायाम के बिना यह शरीर कमजोर और अल्प आयु वाला प्राणी बन गया है?"

मास्टर चन्दगीराम ने दो बार (सन् १९६८ और ६९ में) भारत केसरी उपाधि प्राप्त कर मांसाहारियों पर शाकाहारियों की विजय की दुन्दुभि बजा दी। जिस समय मास्टर चन्दगीराम मेहरदीन के मुकाबले में अखाड़े में उतरे तो वे मेहरदीन के समक्ष बालक-से लगते थे। मांसाहारी आरम्भ में ५-१० मिनट तो खूब उछल-कूद करता है; परन्तु फिर उसका दम फूल जाता है और वह हांफने लग जाता है। मेहरदीन भी आरम्भ में खूब जोश के साथ लड़ा। २५ मिनट तक घोर संघर्ष हुआ परन्तु अन्त में चन्दगीराम ने अपने भार से ६० पौंड भारी मेहरदीन को मिट्टी सुंघा दी।

साहित्य समीक्षा

अपने को पहचान

लेखक—विक्रमादित्य 'वसन्त' वेदवारिधि, प्रकाशक—वसन्त प्रकाशन, बी-६४ राजाजीपुरम्, लखनऊ-२२६०१७

पृष्ठ सख्या—१३८, मूल्य ५)

उक्त पुस्तक के लेखक श्री 'वसन्त' जी विगत ३८ वर्षों से वाणी द्वारा वेद प्रचार कर रहे हैं। अब उन्होने स० निदेशक, दूरसचार, लखनऊ के पद से सेवानिवृत्त होने पर पुस्तको का प्रकाशन भी आरम्भ कर दिया है। वर्ष १९८४ में तीन पुस्तकें यथा परमधाम के पथिक, स्वराज्य की अर्चना, आराध्य देव ! ध्यान तेरी ओर प्रकाशित की।

इस पुस्तक मे उनके द्वारा आर्यसमाज बिहारीपुर मे की गई वेद कथा के उन वेदोपदेशो का सकलन है, जिसमें अन्नमय कोश से आनन्दमय कोश तक की साधना यात्रा वेदमन्त्रो के आधार पर करवाई गई है। पुस्तक मे इस गूढ विषय को जिस सरल, सुबोध और सरस ढग से अनेक दृष्टात देकर समझाया गया है, वह प्रशसनीय है।

साधको के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। प्रत्येक विषय को प्रथम सक्षेप मे सार सहित प्रस्तुत कर फिर विस्तार से समझाया गया है। छपाई सफाई सुन्दर और आकर्षक है। प्रत्येक आर्यसमाज तथा उसके द्वारा सचालित पुस्तकालय में यह पुस्तक रखी जानी चाहिए।

योग यात्रिक

सम्पादक—विक्रमादित्य 'वसन्त' वेदवारिधि, बी-६४ राजाजीपुरम् लखनऊ-२२६०१७ प्रकाशक—वेद प्रचार समिति, आलमबाग, आर्यसमाज आदर्शनगर लखनऊ, पृष्ठ सख्या—७६, मूल्य—३-५०

यह पुस्तक श्री पृथिवीराज जी बरमानी की स्मृति मे श्रद्धा सुमन के रूप मे प्रकाशित की गई। श्री पृथिवीराज बरमानी कर्मठ आर्यसमाजी थे—उच्च कोटि के गायक थे।

चू कि श्री बरमानी जी का देहावसान ६७ वर्ष की आयु मे हुआ था, अतएव इस पुस्तक मे ६७ भजनो का सकलन है। जिन भजनो को वे नही गा सके थे, उनके भी ब्लाक बनाकर छाप दिये गये हैं। भजनो और अनमोल वचनो का सग्रह उनके द्वारा लिखित दैनन्दिनियो से किया गया है। भजनो का सग्रह आर्य जगत् के अनेक महानुभावो यथा चमूमति जी, प्रकाश कविरत्न सहदेव, रामस्वरूप, देश, शारद पाल, अभय नरसिंह, 'दीवाने' तथा 'वसन्त' को रचनाओं का है।

भजन प्रेमियो के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्यसमाज भारत को पुन: खण्डित नहीं होने देगा : स्वामी आनन्दबोध की घोषणा

मथुरा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने ओजस्वी स्वर मे घोषणा की कि पजाब की समस्या अब सरकार के हाथ से निकली-सी लगती है। इसका एक मात्र उपाय यह है कि राजस्थान के जैसलमेर से लेकर कश्मीर घाटी तक पाकिस्तान की सीमा से लगा क्षेत्र सील कर पाच मील चौडी सुरक्षा पट्टी बना दी जाये।

स्वामी आनन्दबोध जी ने स्थानीय आर्यसमाज तिलक द्वार के वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप मे भाषण देते हुए कहा कि हिन्दू सदैव और पूरी तरह राष्ट्रभक्त हैं। जहा हिन्दुओ का बहुमत है, वहा कभी उपद्रव नही होते। सम्मेलन का समापनित्व उत्तर-प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० इन्द्रराज जी ने किया।

आर्य देवियों द्वारा पीड़ित हिन्दुओं की सहायता

माता सरला कपिला जी, ग्रीनपार्क, नई दिल्ली ने पजाब से आये पीडित हिन्दुओ की सहायतार्थ २८ कम्बल (नये), ८ स्वैटर (नये), एक कोट (नया) और कुछ पुराने वस्त्रो के साथ २०२) रुपये नकद दान दिये।

निम्नलिखित दान राशिया भी प्राप्त हुई हैं—

श्रीमती अजित मेहता जी नई दिल्ली १००)
" सत्या आनन्द जी " ५०)
" सरोजनाथ जी " ५०)
" सत्या पल्टा जी " ५०)

गोहत्या रोकने के लिए सरकार से अनुरोध करने की अपील

नई दिल्ली। गोसेवा महाभियान समिति के अध्यक्ष श्री राधाकृष्ण बजाज ने अपील की थी कि आर्यसमाज सदृश गोसेवी सगठन ११ जनवरी को गोरक्षा दिवस मनायें और गोहत्या के विरुद्ध प्रस्ताव स्वीकृत करके प्रधानमन्त्री को भेजें।

अब श्री बजाज सूचित कर रहे हैं कि सूचना न मिलने के कारण जिन सस्थाओ ने उस दिन प्रस्ताव स्वीकृत करके नही भेजा, वे आगामी रविवार को अथवा अगले सप्ताह के किसी भी दिन प्रस्ताव स्वीकृत करके प्रधानमन्त्री को भेज दे।

श्री बजाज लिखते हैं कि जब तक गोहत्या पर पूर्ण रोक नही लग जाती तब तक सरकार से इस आशय का अनुरोध करने का महाभियान जारी रहना चाहिये।

आर्यसमाज अटवा अली मर्दानपुर का उत्सव

हरदोई। आर्यसमाज अटवा अली मर्दानपुर का वार्षिकोत्सव १३ १४ और १५ फरवरी को मनाया जा रहा है।

आर्यसमाज लाजपतनगर में नेताओं का उद्‌बोधन : विद्वानों का अभिनन्दन

नई दिल्ली। आर्यसमाज लाजपतनगर के वार्षिकोत्सव पर दो-दिवसीय हिन्दू सगठन सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का समारम्भ करते हुए श्री क्षितीश वेदालकार ने देश व राष्ट्र शब्द मे अन्तर व राष्ट्र के स्वरूप की व्याख्या करते हुए ज्वलन्त समस्याओ पर प्रकाश डाला।

भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता श्री अटलबिहारी वाजपेयी सासद ने कहा कि आज राष्ट्रीय एकता को सबसे बडा खतरा उन तत्त्वो से है, जो सम्प्रदाय, भाषा तथा जाति-बिरादरी के प्रति अपनी निष्ठाओ को राष्ट्र के प्रति निष्ठा से ऊचा समझते हैं। श्री नरेन्द्र अवस्थी ने 'देशद्रोह का दण्ड मौत हो' की माग करते हुए राजनीति के हिन्दूकरण व हिन्दुओ के सैनिकीकरण के वीर सावरकर के आह्वान को अमली जामा पहनाने पर बल दिया। आर्य विद्वान् प० रामकिशोर शास्त्री ने ईसाइयो के धर्मान्तरण व मुसलमानो की राष्ट्रविरोधी गतिविधियो का उल्लेख करते हुए हिन्दू एकता पर बल दिया। बहिन शकुन्तला आर्या ने भी सम्मेलन मे अपने विचार प्रस्तुत किये।

'अखण्ड भारत सम्मेलन' का शुभारम्भ करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने विघटनकारी तत्त्वो द्वारा राष्ट्र की अखण्डता व सुरक्षा के खतरे का सकेत देते हुए राष्ट्रवादियो को एकजुट होने का आह्वान किया। आपने पजाब को सेना के हवाले करने की माग की। प० शिवकुमार शास्त्री भूतपूर्व सासद ने देश में भावात्मक एकता के लिए समान नागरिक सहिता कायम करने की माग की। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने पजाब की स्थिति व दिल्ली मे खालिस्तान के नारे लगाये जाने पर रोष व चिन्ता प्रकट की। आपने सरकार को चेतावनी दी कि आर्यसमाज राष्ट्रविरोधी हरकतो को सहन नही करेगा।

आर्य विद्वानों का अभिनन्दन

अमरस्वामी जी, प० शिवकुमार शास्त्री प०, मेघश्याम वेदालकार और प० इन्द्रसेन शर्मा का उनकी आर्यसमाज के प्रति की गई सेवाओ और प्रचार-प्रसार मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेके लिए अभिनन्दन किया गया। इन सभी आर्य विद्वानो के कृतित्व व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए श्री पुरुषोत्तम जी शास्त्री ने आर्यसमाज की ओर से उन्हे एक एक शाल व धनराशि भेंट की।

आर्यसमाज राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए आगे आये : रामचन्द्र विकल

ग्वालियर। राष्ट्र की एकता और अखडता को अक्षुण्ण बनाये रखने की यदि चिन्ता है तो आर्यसमाज को, क्योकि आर्यसमाज ही इस देश की असली मा है और असली मा कभी नही चाहेगी कि उसके बच्चे के टुकडे हो—ये शब्द चित्रगुप्तगज, लश्कर आर्यसमाज के सभा भवन मे रामचन्द्र जी 'विकल' ससद् सदस्य ने स्वामी श्रद्धानन्द के ६०वें बलिदान दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे कहे।

आपने सरकार से माग की कि बलिदानियो की कहानिया और उनके जीवन चरित्र विद्यार्थियो की किताबों में समाविष्ट कर उन्हें पढ़ाई जायें।

इस सभा की अध्यक्षता श्री भारतभूषण जी त्यागी ने की। अध्यक्ष पद से बोलते हुए उन्होने कहा कि हम बलिदानियो के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके बनाये रास्ते पर चलें उन्हें यही हमारी सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

इससे पूर्व आर्यसमाज की ओर से विकल जी का स्वागत किया गया।

देहरादून में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान बलिदान दिवस

देहरादून। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान स्मृति समारोह इस जनपद मे विभिन्न स्थानो पर मनाया जा रहा है। यह क्रम १८ जनवरी को समाप्त होगा। मास भर से अधिक समय तक चलने वाले समारोहों के क्रम मे प्रथम आयोजन नगर की सुमन कालोनी मे १२ दिसम्बर को हुआ। १३ दिसम्बर को डाक पत्थर, फतहपुर तथा विकास नगर में तीन आयोजन हुए।

वैदिक आश्रम ऋषिकेश मे सभा की अध्यक्षता आर्यसमाज देहरादून के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, के अन्तरग सदस्य श्री धर्मपाल आर्य ने की। मुख्य वक्ता श्री देवदत्त बाली (प्रधान, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा) ने विस्तार से स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरित पर प्रकाश डाला और उनके कुमार्ग से हटकर सन्मार्ग का पथिक बनने, इतिहास में अमिट स्थान प्राप्त करने, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुन प्रवर्तन करने, देश के स्वतन्त्रता युद्ध मे जूझने, साम्प्रदायिक सद्‌भाव का वातावरण बनाने, हिन्दू समाज से छूतछात दूर करने और बिछुड़े हुओं को पुन गले लगाने सम्बन्धी उनके कार्य पर विस्तार से प्रकाश डाला।

आर्यसमाज वीरभद्र मे प्रधान प्रिंसिपल मेहता की अध्यक्षता मे सभा हुई। श्री यशपाल आर्य ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलि अर्पित की।

आर्यसमाजों के चुनाव

आर्यसमाज तेघडा (जिला समस्तीपुर) प्रधान श्री कृष्णानारायण पोद्दार, मन्त्री श्री उमाशकर आर्य और कोषाध्यक्ष श्री जयदेव साह।

आर्यसमाज गाम टाउन, सवाई माधोपुर—प्रधान श्री भीमसेन गोयल, मन्त्री श्री श्यामसुन्दर गुप्त एडवोकेट और कोषाध्यक्ष श्री हरिनारायण गुप्त।

आर्यसमाज आनन्दपुरी (जिला मुजफ्फरनगर)—प्रधान श्री गुरुदत्त आर्य, मन्त्री श्री नफलीराम आर्य और कोषाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र वर्मा।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मैनपुरी—प्रधान श्री सूबेदार आर्य, मन्त्री श्री कुलभूषण आर्य और कोषाध्यक्ष श्री रामेश्वरदयाल गुप्त।

पंजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१८-१-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No U 93 Post in D.P.S.O on 15 1 1987

सार्वदेशिक के प्रेमियों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठकों की सूचनार्थ निवेदन है अब तक सार्वदेशिक साप्ताहिक का मूल्य २० रुपये था किन्तु भारतीय डाक तार विभाग ने अपनी डाक दरें पहले से तीन गुना बढ़ा दी हैं। इसलिए अब सार्वदेशिक साप्ताहिक का वार्षिक मूल्य २५ रुपए होगा। यह शुल्क जनवरी १९८७ से लागू हो गया है। आशा है कि पाठक पूर्व की भांति हमें अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

अजित पांजा के नाम पत्र

(पृष्ठ १ का शेष)

ईसाइयों के देश विदेश के अनेक चर्चों मे प्रार्थना सभाओं के विस्तृत दृश्य और समाचार दिये गये थे। क्रिसमस के ग्रीटिंग कार्डों की दुकानों व बाजारों की सजावट के दृश्य लगभग एक सप्ताह तक प्रसारित होते रहे। ईसा मसीह के जीवन पर वृत्तचित्र भी दिखाया गया।

दिल्ली की निजामुद्दीन चिश्ती दरगाह के उर्स का कार्यक्रम, भाषण व कव्वालियों का भी प्रसारण विस्तार से किया गया था।

मुझे दुःख है कि राष्ट्रीय स्वाधीनता के अग्रिम पंक्ति के नेता स्वामी श्रद्धानन्द का सरकारी संचार माध्यमों के २५ दिसंबर के समाचार बुलेटिनों में कहीं नाम तक नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है कि दूरदर्शन और आकाशवाणी में कुछ ऐसे कर्मचारी कार्यरत हैं, जो किसी सम्प्रदाय-विशेष के साथ अधिक सहानुभूति रखते हैं और उन्हें भारतीय संस्कृति, दर्शन और इसके महापुरुषों के विषय मे कोई ज्ञान ही नहीं है अथवा वे जानबूझकर इसकी उपेक्षा करते हैं।

देश भर से मेरे पास शिकायतें आ रही हैं। मेरा निवेदन है कि सरकार इसकी खुली जांच कराकर वस्तुस्थिति से देश की बहुसंख्यक जनता मे फैले असन्तोष को दूर करे।

भवदीय

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

१२४१७—डा० सत्यकाम वर्मा
कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)



आप हैं श्री महेन्द्रपाल आर्य। आप पहले इस्लाम के अनुयायी थे और तब आपका नाम मौलवी महबूब था। उन दिनों आप बरवाला (जिला मेरठ) की बड़ी मस्जिद के इमाम थे। १० नवम्बर सन् १९८३ को आपने वैदिक धर्म मे प्रवेश किया और तब से आप वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। आजकल आप आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के उपदेशक हैं।

आप अरबी-फारसी के अतिरिक्त बंगला भाषा के भी विद्वान् हैं। बंगाल की आर्यसमाजों का कर्तव्य है कि वे अपने उत्सवों पर महेन्द्रपाल जी को अवश्य निमन्त्रित करें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

लास एंजलिस में वैदिक परम्परा सम्मेलन

लास एंजलिस। कैलिफोर्निया वैदिक हैरिटेज कान्फरैन्स (वैदिक परम्परा सम्मेलन) दस जनवरी १९८७ (शनिवार) को यहां रमादा इन, ११६० एन० वरमाट एवेन्यू, हालीवुड मे आयोजित हुई।

कान्फरैन्स प्रातः १० बजे से सायंकाल पांच बजे तक चली। दोपहर बाद एक बजे वयस्क गोष्ठी और तीन बजे युवक गोष्ठी हुई।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव — ओ३म्

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सारे संसार को आर्य बनाओ।

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९ ०८७] वर्ष २२ अक ५]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
माघ कृ० १० स० २०४३ रविवार २५ जनवरी १९८७

दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

कांग्रेस गणतन्त्र दिवस के अपमान की दोषी मुस्लिम लीग से सम्बन्ध तोड़े

बहिष्कार की अपील साम्प्रदायिक और अलगाववादी

इससे साम्प्रदायिक राजनीति का खतरा बढ़ा है : आरिफ मुहम्मद खां की खरी-खरी

नई दिल्ली। कांग्रेसी सासद श्री आरिफ मुहम्मद खान ने मुसलमानो से गणतन्त्र दिवस समारोहो का बहिष्कार करने की अपील की कडी भर्त्सना करते हुए कहा है कि कांग्रेस को गणतन्त्र दिवस के अपमान की दोषी मुस्लिम लीग से तत्काल अपने सम्बन्ध तोड लेने चाहिये।

श्री आरिफ ने एक विशेष भेंट मे कहा कि गणतन्त्र दिवस समारोहो का बहिष्कार करने की अपील करने वालो मे शहाबुद्दीन के साथ मुस्लिम लीग के अध्यक्ष सुलेमान सेठ के भी शामिल होने से केरल में कांग्रेस और मुस्लिम लीग की साझा सरकार को लेकर काफी शकाय पैदा हो रही हैं।

ऐसी स्थिति मे कांग्रेस को चाहिये कि मुस्लिम लीग से फौरन समझौता तोडकर यह साबित कर दे कि वह राष्ट्रीय एकता और देश को कमजोर करने वाली ऐसी ताकतो द्वारा खडी की जा रही चुनौतियो का मुकाबला करने के लिए तैयार है।

उन्होने कहा कि मुझे विश्वास है कि मुसलमान बडी सख्या मे गणतन्त्र दिवस समारोहो मे भाग लेगे और यह साबित कर देगे कि सुलेमान सेठ और शहाबुद्दीन मुसलमानो का नही बल्कि सिर्फ थोडे से साम्प्रदायिक दिमाग रखने वालो का प्रतिनिधित्व करते है। बाबरी मस्जिद सघर्ष समिति का 'बहिष्कार' का आह्वान विशुद्ध रूप से साम्प्रदायिक और अलगाववादी प्रवृत्तियो को बढावा देने वाला और तनाव पैदा करने वाला है। बहिष्कार या समारोह मे भाग न लेने की अपील तो केवल शब्दो मे हेरफर है। इससे भावना नही बदलती। सुलेमान सेठ और शहाबुद्दीन अपने वक्तव्यो मे यह स्पष्ट नही कर पाये कि इन दोनो के बीच अन्तर क्या है। फैसला जो भी हो, शब्दावलि जो भी हो, इस कदम से बाबरी मस्जिद समस्या का समाधान और ज्यादा कठिन हो गया है।

मै यह समझता हूँ कि यह फैसला बुनियादी तौर पर बाबरी मस्जिद को हासिल करने के लिए नही किया गया बल्कि इसके पीछे कुछ और खतनाक इरादे है। यह ठीक है कि हमारे पास ऐसा कोई साधन नही जिससे हम यह पता चला सके कि इस फैसले को कितने मुसलमानो का समर्थन हासिल है लेकिन इसके परिणाम-स्वरूप सन्देह और साम्प्रदायिक तनाव निश्चित रूप से पैदा होगा। कुल मिलाकर यह फैसला अल्पसख्यक वर्ग मे भय और असुरक्षा की भावना को जन्म देगा। भय तथा असुरक्षा की भावना से ग्रस्त कोई भी समुदाय अपने आपको साम्प्रदायिक राजनीति की कुचालो से नही बचा सकता।

श्री आरिफ ने कहा कि यह उस राजनीति का परिणाम है, जिसके कारण पिछले कुछ समय मे सरकार को ऐसे फैसले लेने के लिए बाध्य किया गया, जिनसे शहाबुद्दीन और सुलेमान सेठ सरीखे नेताओ को नई विश्वसनीयता, सम्मान और ताकत मिली। आज उसी ताकत का इस्तमाल कर, उसी साम्प्रदायिक राजनीति को और नये आयाम देने का प्रयास किया जा रहा है। गणतन्त्र दिवस समारोह के बहिष्कार का आह्वान पूरे देश के लिए चिन्ता का विषय बन चुका है। सभी स्तरो पर साम्प्रदायिक राजनीति के खतरा को महसूस किया जा रहा है।

गणतन्त्र दिवस पर हमारी शुभ कामनायें

गणतन्त्र दिवस पर हमारी ओर से हमारे सब लेखको, पाठको और प्रेमियो को हार्दिक बधाई और शुभ कामनाय अर्पित है। प्रभु से प्रार्थना है कि आने वाले दिन आप सबके लिए मगलमय हो।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

गणतन्त्र दिवस का सन्देश

अगले सप्ताह हमारा देश अडतीसवा गणतन्त्र दिवस मना रहा है। इस दिन हम ने अपने स्वाधीन देश का सविधान आत्मार्पित किया था। हमारे सविधान मे सबसे अधिक जोर व्यक्ति की गरिमा पर दिया गया है। समाज की अपनी पृथक् सत्ता नही। व्यक्तियो के समूह का ही नाम समाज है। व्यक्ति की गरिमा अक्षुण्ण रहनी चाहिये। यही बात वेद ने इन शब्दो मे कही है कि 'आत्मा का हनन न करो।' आत्मा की हत्या शरीर की हत्या से भी बडा पाप है।

यह दिन आत्मनिरीक्षण का भी दिन है। हम सोच कि हम कहा से चले थे और कहा आ पहुचे हैं। हमारी आज की हालत बहुत अच्छी तो नही लेकिन हमे निराश नही होना। इस सम्बन्ध मे भी वेद का सन्देश आशाजनक है—हम होगे कामयाब एक दिन हमको पूरा है विश्वास—मन मे पूरा है विश्वास।

गणतन्त्र दिवस प्रसन्नता का दिन है, लेकिन प्रसन्नता के मार्ग मे अनेक बाधाय है। हमारी अस्मिता पर जो घातक प्रहार किये जा रहे है उनकी अनदेखी नही की जा सकती। बीती बात भुला दी जाय तो भी आजकल मे होने वाली घटनाय भी हमे झिझोड कर रख दने वाली है। आज सुबह (१६ जनवरी) का ही अखबार यह चीखने वाला शीर्षक लेकर आया—पजाब मे उग्रवादियो द्वारा लेफ्टिनेट-कर्नल की हत्या। उग्रवादी चालीस मिनट तक गोलिया चलाते रहे। आगे समाचार मे बताया गया है कि हत्याकाड के एक घटे बाद तक भी कोई अधिकारी मौके पर न पहुचा।

ऐसी स्थिति मे कौन है जो सोचने पर विवश न होगा। पश्चिम मे जब दो दो महायुद्ध हुए, तब वहा के लोग सोचने पर विवश हो गये और उन्होने (गलत या सही) अपना मार्ग खोजा। आज हमारी भी वही हालत है। पाकिस्तान ने पजाब मे हमारे देश पर अघोषित युद्ध नाद दिया है। असम और त्रिपुरा की घटनाय बगलादेश की उपज है। (कल तक बगलादेश भी तो पाकिस्तान का ही हिस्सा था।)

पजाब की स्थिति के प्रसग मे हम प्राय कहते है कि सिख हमारे भाई हैं। जब सिख हमारे भाई हैं तो उनके और हमारे चिन्तन मे इतना अन्तर क्या? कारण स्पष्ट है। उनका विश्वास सैन्यवाद मे है, जब कि हमे रात-दिन अध्यात्मवाद और जगत् की अनित्यता की घुट्टी पिलाई जाती है। हमारे सिख भाई विजय के आकाक्षी हैं, जबकि हमारे तथाकथित धर्मगुरु हमें जीवन से ही भागना सिखाते हैं।

अपने देहान्त से कुछ ही दिन पूर्व सरदार पटेल ने अपने जीवन का अन्तिम भाषण दिल्ली के रामलीला मैदान मे ऋषि निर्वाण उत्सव पर दिया था। उस भाषण मे उन्होने कहा था कि "जिन ऋषि-मुनियो ने हमें अहिंसा का सन्देश दिया, उन्होने ही हिंसा की भी शिक्षा दी। हमे हिंसा की शिक्षा को छोड नही देना।" उन्होंने यह बात विवेकपूर्ण हिंसा के समर्थन मे कही थी। आज हमे इस शिक्षा की आवश्यकता है।

हम शिव सकल्पो की बात करते हैं। लेकिन केवल शिवसकल्प पर्याप्त नही। सकल्पो का दृढ होना भी उतना ही आवश्यक है। आज हमारे विपक्षी हमे निष्पक्षता के भुलावे मे डालकर अपने बुरे इरादो को पूरा करना चाहते हैं। तटस्थता की दुहाई देकर हमारे राष्ट्रीय हितो की हत्या की जा रही है। मुसलमानो की दुर्दशा' का कारुणिक चित्र खीच कर कुछ नेता नामधारी उन्हें गणतन्त्र दिवस के समारोहो का बहिष्कार करने के लिए उकसा रहे हैं। मुसलमानो अथवा कुछ अन्य वर्गो की दुर्दशा का कारण भेदभाव नही—कारण है उनकी अशिक्षा। यदि मुस्लिम नेता सच्चे दिल से अपने भाइयो का अभ्युदय चाहते है तो वे उनकी शिक्षा की व्यवस्था कर। गैर-मुस्लिमो के विरुद्ध उन्हे भडकाये नही।

एक अन्य समस्या है मुद्राप्रसार की, जिसे आमतौर पर महगाई का नाम दिया जाता है। मुद्राप्रसार का कारण है भोगवादी अर्थ-व्यवस्था। इसे अर्थव्यवस्था न कहकर अनर्थ व्यवस्था कहना चाहिये—अर्थशास्त्र न कहकर अनर्थशास्त्र कहना चाहिये। विज्ञापनो के जोर पर हम पर ऐसी चीज थोपी जा रही है जिनकी हमे बिलकुल आवश्यकता नही। परिणाम यह है कि आर्थिक क्षत्र मे आपाधापी और छीनाझपटी का वातावरण है। किसी भी दिन का अखबार उठा कर देख लिजिये—धरना प्रदर्शन, अनशन हडताल आदि की खबरो से भरा पडा मिलेगा। पैसा साधन नही रहा साध्य बन गया है।

ये हैं कुछ जलती समस्याय जो हमारे देश की उन्नति मे बाधा बनकर खडी है।

हमारी विचारधारा मे इन सब समस्याओ का सन्तोषजनक समाधान विद्यमान है। हिसा और अहिसा मे विवेक, सकल्पो की दृढता और भोगवाद से त्यागवाद की ओर जाकर हम अपनी विकराल समस्याओ का समाधान कर सकते हैं।

अन्त मे इतना और—

शानदार था भूत भविष्यत् भी महान् है,
अगर सभाल आप उसे जो वर्त्तमान है।

—सत्यपाल शास्त्री

गुलबर्गा में नया आर्यसमाज

गुलबर्गा। यहा नेहरूगज के दयानन्द चौक मे एक नये आर्यसमाज की स्थापना हुई है। चुनाव भी हो गया है। साप्ताहिक सत्सग नियमपूर्वक लग रहे हैं।

सिन्धी आर्यसभा का चुनाव

नागपुर। अखिल भारतीय आर्य सभा के चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए—प्रधान श्री देवीदास आर्य, मन्त्री श्री सगतराम आर्य और कोषाध्यक्ष श्रीयुत श्रीचन्द आर्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के चुनाव मे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—प्रधान श्री कृष्णलाल आर्य, मन्त्री श्री भगवान् देव 'चैतन्य" और कोषाध्यक्ष श्री अरुणेश सूद।

[illegible] और गणतन्त्र

[illegible] शाब्दिक अर्थ सुनिश्चित और सुव्यवस्थित [illegible] द्वारा बनाये गये विधान के अनुसार [illegible] लौकिक अर्थ लगाकर हम उसके अनुसार चल [illegible] करने और अनुशासनहीनता तथा अराजकता [illegible]। यह आचरण देश को भ्रष्टाचार की ओर [illegible] शरीर, मन और इन्द्रियो से सम्बन्धित न मानकर आत्मा को मानें तो यह आत्मा की अधीनता ही परमात्मा की अधीनता होगी और आत्मा का शासन ही एक प्रकार से ईश्वरीय शासन विधान होगा, जिसका पालन करना सच्ची नैतिकता है। हम स्वाधीनता का सही अर्थ लेकर चलें, तो सब ठीक चलेगा।

यहा शोषण रोकना धार्मिक क्षेत्र मे हस्तक्षेप माना जाता है और शासक राजनीति को धर्म से अलग रखना चाहते हैं। यह धारणा भारत के लिए उपयुक्त नही।

अभी तक हमारी स्वाधीनता-स्वतन्त्रता विदेशी राजनीति का जामा पहने हुए है। इसलिए स्वतन्त्रता का आध्यात्मिक पहलू हमारी दृष्टि से ओझल हो रहा है। अन्यथा हिन्दू कोड बिल (किसी भी रूप मे) प्रस्तुत नही होता। शासक एक ऐसा बिल प्रस्तुत करते हैं, जिसे भारतीय समाज ज्योका त्यो ग्रहण न कर पाया। उससे पति-पत्नी के सम्बन्धो—पिता-पुत्र के सम्बन्धो में दरार पडी। विकृत स्वच्छन्दता का लहर जन-जन मे दौड गई।

हमे स्वाधीनता चाहिये—स्वच्छन्दता नही। स्वच्छन्दता उच्छृखलता की जननी है, जब कि स्वाधीनता आत्मसयम सिखाती है—स्वार्थपूर्ण आजादी के मायाजाल को छिन्न-भिन्न करती है।

इस स्वाधीनता मे अपने ही मन और इन्द्रियो का स्वरूप सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। यह सच्ची स्वाधीनता अथवा स्वतन्त्रता नही है। स्वाधीनता प्रेमी तो सबको मिलाकर जीता है, सबको खिलाकर खाता है, स्वय कष्ट झेलकर देशवासियो के लिए सुख-सुविधायें जुटाता है। उसका जीवन जनहितार्थ होता है। वह सबके मगल मे अपना मगल मानता है। लोभ और स्वार्थ उसे छू तक नही पाते। छल-कपट उससे दूर रहते हैं। ईर्ष्या-द्वेष उसके चित्त को कलुषित नही करते। सेवा और त्याग उसके चिरसगी बनते हैं। सत्य और न्याय उसका पथ-प्रदर्शन करते हैं। प्रेम और अहिंसा उसे बल और साहस प्रदान करते हैं।

स्वाधीन देश के स्वतन्त्र वातावरण में शोषण, उत्पीडन, अन्याय और अत्याचार नही पनप सकते।

स्वराज्य और स्वतन्त्रता के सचालको का कर्तव्य है कि वे इन विचारो को प्रतिदिन स्मरण करे और इनके विपरीत मनोभावो को दूर करे।

आज गान्धी जी के नाम की बडी पूछ है पर उनकी बात का कौन पूछना है। वे जो कहते थे, उससे अधिक महत्त्व इस बात को दिया जाता है कि वे किस व्यक्ति को चाहते थे। स्वराज्य का अर्थ उलटा लगाया जा रहा है। यह तो महात्मा गाधी जी के रास्ते से भटकना हुआ। नेता लोग असमञ्जस मे हैं—वे नेता जिन्होने गाधी जी के साथ काम किया और उन्ही के कारण उच्च पदों पर आसीन हुए।

आज गांधी जी के आदर्शों की बात करना पाप हो गया है। क्यो कि हम स्वय पापी है, इसलिए उनके आदर्शों की चर्चामात्र से घबराते हैं। फिर गणतन्त्र दिवस पर और उनके कुछ ही दिन बाद ३० जनवरी को गाधी जी का नाम लेना कैसे सार्थक होगा ?

—सच्चिदानन्द शास्त्री

कन्या की आवश्यकता

हैदराबाद सत्याग्रह सम्बन्धी सूचना

(हमारे कार्यालय सम्वाददाता से)

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पिछले दिनों गृह राज्यमन्त्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही से मिले, जो भारत सरकार के गृह मन्त्रालय के पेन्शन विभाग के प्रभारी मन्त्री हैं। सार्वजनिक कार्यकर्ता डा० मदनमोहन चोपड़ा भी बातचीत के समय उपस्थित थे। बातचीत बहुत सौहार्दपूर्ण वातावरण मे हुई, जिसमे स्वामी जी ने आवेदकों के मामलो पर शीघ्र निर्णय करने पर ज़ोर दिया। मन्त्रि महोदय ने इस पर शीघ्र कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

बाद मे उसी दिन श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने मन्त्रिमहोदय से विस्तार से पेन्शन के आवेदको और आन्दोलन के राष्ट्रीय स्वरूप के बारे मे चर्चा की।

पिछले दिनो सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् दिल्ली आये हुए थे। उन्होने भी इस सम्बन्ध में स्वामी आनन्दबोध जी से विचार-विमर्श किया।

ताजा सूचना के अनुसार १४ जनवरी को स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान सलाहकार समिति के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् और श्री ब्रह्मदत्त स्नातक सलाहकार के रूप मे गृह मन्त्रालय के सम्बन्धित विभाग के सयुक्त सचिव श्री अरुण कुमार से मिले। विस्तार से बातचीत हुई। बाद मे विभाग की निदेशक श्रीमती सुरेन्द्रकौर को भी बुलाया गया। श्री अरुणकुमार ने उसी समय आन्ध्रप्रदेश के मुख्यसचिव श्री अरुणकुमार और जेल महानिरीक्षक श्री शफीउल्ला को पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया कि जेल के रिकार्ड तथा आवश्यक सरकारी प्रमाणों को जुटाने के लिए वे लोग समिति के सदस्यो को सब सुविधाएं प्रदान करें।

इस पत्र मे मुख्यसचिव और जेल महानिरीक्षक एव जिलाधीशो और पुलिस अधीक्षको से सलाहकार समिति के सदस्यो से मिलते समय उन्हें पूरा सहयोग और उचित सम्मान देने का अनुरोध किया गया।

इसके अतिरिक्त नलगोडा, निजामाबाद और वरगल के अधिकारियों से विशेष रूप से कहा गया है कि वे समिति के कार्य में आने वाली किसी प्रकार की भी बाधा को दूर करें।



पंडित रमेशचन्द्र शास्त्री द्वारा अपनी स्वर्गीया धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा शर्मा की स्मृति में २१००० रु० की स्थिर निधि की स्थापना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सात्विक दान



श्रीयुत प० रमेशचन्द्र जी शास्त्री

श्रीमती कृष्णा शर्मा (जन्म सन् १९२७, श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन—निधन ९ मई सन् १९८१)

श्री प० रमेशचन्द्र शास्त्री, एम ए, विद्याभास्कर ग्रोमना, जिला अली-गढ निवासी स्व० श्री प० शिवदत्त जी शर्मा के विद्वान् सुपुत्र हैं। पंडित जी का सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा मे ही व्यतीत हुआ था। लोकप्रिय उप-देशक के रूप मे, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे अध्यापन कार्य मे अथवा दयानन्द अनाथालय आगरा मे प्रबन्धक के रूप मे वे यावज्जीवन सेवारत रहे। महर्षि दयानन्द का प्रभाव उनके जीवन पर ऐसा पड़ा कि उन्होंने अपने एकाकी पुत्र श्री रमेशचन्द्र को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रवेश दिलाया। १२ वर्ष निरन्तर विद्याध्ययन करते हुए ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर पूर्ण स्नातक बने और विद्याभास्कर उपाधि प्राप्त की। साथ ही वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा भी उत्तीर्ण की। तभी आप पर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की धुन सवार हुई और आप पंजाब आर्य प्रति-निधि सभा मे महोपदेशक पद पर कार्य करने लगे। उसी समय आपका सम्बन्ध श्रीमती कृष्णा शर्मा से हुआ और आपने गृहस्थाश्रम मे प्रवेश किया।

कुछ काल कार्य करने के उपरान्त उपदेशकी छोड़कर आर्यमित्र साप्ताहिक (आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश) मे सम्पादन कार्य पर प० गोपालदत्त जी शास्त्री के सान्निध्य मे कई वर्ष तक सलग्न रहे। उसके बाद परिवार को लेकर आगरा अनाथालय मे रहने लगे।

आपके विवेकपूर्ण व्याख्यान, मृदुभाषी स्वभाव, सरलता और योग्यता ने दिल्ली के लोगो के दिलो मे आकर्षण पैदा किया और आप सरकारी विद्यालय मे अध्यापन कार्य करने लगे। अवकाश ग्रहण करने तक वहीं सेवा मे लगे रहे। सादा जीवन, सरल विचार और स्वभाव वाले शास्त्री जी की जीवनसंगिनी स्वर्गीया श्रीमती कृष्णा शर्मा भी सरल स्वभाव वाली देवी थी, जिन्होंने जीवन मे मृदुता छोड़ कटुता के भाव कभी न आनेदिये। सुख मे दु ख मे—सदा एकरस रहकर जीवन का निर्वाह किया। उनकी सरलता और सादगी ने शास्त्रीजी के जीवन मे चार चाँद लगा दिये। श्रीमती कृष्णा का कुछ समय की बीमारी के बाद १९८१ में निधन हो गया था।

शास्त्री जी ने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के मन्त्री, उपमन्त्री, अधिष्ठाता आदि पदो पर रहकर काफी समय तक उसकी सेवा की। बाद में आपने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे कार्यालयाध्यक्ष पद पर कई वर्ष तक कार्य किया।

शरीर की दशा कुछ बिगड़ी और शरीर पर फालिज ने हमला करके उन्हें काफी शिथिल कर दिया। उपचार से कुछ लाभ हुआ।

आपने अपनी स्वर्गीया सहधर्मिणी की स्मृति में सात्विक दान देकर सार्व-देशिक सभा मे इक्कीस हजार रुपये की स्थिर निधि स्थापित करवाई है। उसके ब्याज की राशि संस्कृत के छात्रो के गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे अध्ययनार्थ छात्रवृत्तियो तथा किसी उपयोगी पुस्तक के प्रकाशन मे काम आयेगो। प्रभु से प्रार्थना है कि स्व० श्रीमती कृष्णा जी की स्मृति चिरस्थायी बनी रहे और शास्त्री जी स्वस्थ रहते हुए हमारे प्रेरणास्रोत बने रहें। ●

टंकारा में ऋषिबोधोत्सव का आयोजन

नई दिल्ली। महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा (राजकोट) के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने सूचना दी है कि इस वर्ष टंकारा मे ऋषिबोधोत्सव २५, २६ और २७ फरवरी को धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। सात दिन तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ चलेगा, जिसके ब्रह्मा पण्डित मदनमोहन विद्यासागर होंगे।

सहगल जी ने जनता से अपील की है कि वह इस अवसर पर बड़ी सख्या से टंकारा पधारे और टंकारा में ट्रस्ट की ओर से चल रहे कार्य के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग दे।

ट्रस्ट का दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में है।

पण्डित धर्मपाल विद्यालंकार को पत्नीशोक

बदायूं। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के निजी सचिव पण्डित धर्मपाल जी विद्यालंकार की धर्मपत्नी श्रीमती राजेश्वरी देवी का २५ और २६ दिसम्बर की मध्यरात्रि को निधन हो गया। ११ दिसम्बर को अन्तिम शोक दिवस के अवसर पर गृहशुद्धि संस्कार हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने पण्डित जी को पत्र लिखा कर राजेश्वरी देवी जी के निधन पर गहरा दु.ख प्रकट करते हुए परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की है।

आर्यसमाज देश को सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बना सकता है: डा० प्रशान्त

कलकत्ता, २६ दिसम्बर। आज यहा कलकत्ता आर्यसमाज मे डा० प्रशान्त वेदालंकार (दिल्ली) ने आर्यसमाज को गतिशील बनाने के लिए उसके भावी रूप पर अपने विचार व्यक्त किये। डा. प्रशान्त ने कहा कि आज देशका युवक सांस्कृतिक रिक्तता अनुभव कर रहा है। यदि आर्यसमाज च हे तो वह अपने अतीत से प्रेरणा प्राप्त कर आज भी अपने देश की गौरवपूर्ण संस्कृति से देश को सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बना सकता है। इसी प्रकार देश की शिक्षा, भाषा, समाज व राजनीति को भी ठीक दिशा देने के लिए प्रबल विचार उसके पास हैं।

डा० प्रशान्त ने सुझाव दिया कि यदि विश्व की ५००० आर्यसमाजें १०-१० बालको को गोद लेकर उन्हें शिक्षित और संस्कारी बनाने का कार्य अपने हाथो में ले लें तो १०-१५ वर्ष मे उनके पास सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध तथा राष्ट्रीय विचारधारा से ओत-प्रोत ५० हजार नये युवक हो जायेंगे।

इस अवसर पर डा० प्रशान्त ने अमृतसर, जालन्धर या दिल्ली में एक सर्व महासम्मेलन करके पंजाब के हिन्दुओ का मनोबल बढ़ाने का प्रस्ताव भी रखा।

प० उमाकान्त उपाध्याय, प० देवनारायण, प० सत्यनारायण, श्री चांद-रतन दामाणी, श्री छबीलदास सैनी, श्री वामदेव आर्य, श्री अनन्तकुमार आर्य, श्री नरेश, श्री सुखदेव शर्मा आदि अनेक विद्वानों ने अपने सुझाव व्यक्त किये।

वेदोपदेश

इस हांडी को मत तोड़ : विशालता को प्राप्त कर

—विक्रमादित्य 'वसन्त'

उत्थाय बृहती भवोदुतिष्ठ ध्रुवा त्वम् ।
मित्रैतां त उखां परि ददाम्यभित्त्या एषा मा भेदि ॥
(यजु० ११।६४)

शब्दार्थ—

[१] (त्वम् ध्रुवा) तू सुस्थिर होकर (१) निश्चयात्मक रूप से (उत्+तिष्ठ) ऊंचा उठ।

[२] (उत्थाय बृहती भव) उठ कर विशाल बन।

[३] (मित्र) सखा ! (एताम् उखाम् ते परिददामि) इस उखा को तेरे लिए परिदानित करता हूँ (अभिन्त्यै) भय से रहित होने के लिए, अटूट स्थिरता के लिए

[४] (एषा मा भेदि) इसे मत तोड़

व्याख्या—मानव जीवन बड़ा अनमोल है। इसे दुर्लभ जन्म कहा गया है। यह श्रेष्ठ जीवन बारम्बार प्राप्त नहीं होता। यह हीरा जन्म अमोल है। संसार के समस्त जीव जगत् का सर्वश्रेष्ठ जीवन। यद्यपि प्रत्येक जीवन आत्मा और शरीर के समुच्चय को लेकर निर्मित होता है और इसमें आत्म-तत्त्व अजर अमर अविनश्वर है, तथापि देह अथवा काया तो नश्वर हैं। आत्मा का काया से वियोग ही मृत्यु है। आत्मा का शरीर से कब प्रस्थान हो जाए, यह मानव शरीरस्थ आत्मा भी नहीं जानता। यही कारण है कि जीवन को क्षणभंगुर, पानी का बुलबुला आदि कहा गया है। वेद ने उपमा अलंकार से इस मन्त्र में इसे उखा कहा है। उखा मिट्टी की हांडी को कहते हैं। मानव जीवन भी तो मिट्टी की एक कच्ची हांडी है, पर मानव के अभिन्न सखा परमात्मा ने इसे अपने मित्र को दिया है कि वह इस का सदुपयोग करे, क्योंकि सर्वश्रेष्ठ प्राणी ने इसके माध्यम से ही सकल साधनाओं को करना है। अपने अभीष्ट को प्राप्त करना है। इसे अटूट बनाये रखने के लिए, स्थिरता के लिए, जीवन लक्ष्य को सुगमता से प्राप्त करने के लिए मानव को यह सतत स्मरण रखना चाहिए कि—

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ॥
(अथर्व० १०।२।३१)

अर्थात् देवों की आठ चक्रोंवाली और नौ द्वारों की यह पुरी अयोध्या है, अजेय है। इसमें हिरण्य, ज्योतिर्मय कोष है, ज्योति से आच्छादित परम धाम स्वर्ग है। परम लक्ष्य आनन्दमय धाम की प्राप्ति के लिए यह अत्यावश्यक है कि—

(१) मानव का शरीर स्वस्थ रहे, नीरोग रहे ताकि मिट्टी की कच्ची हांडी सुदृढ़ रहे, सुस्थिर रहे।

(२) सुविचारों और सुभावनाओं के आधार पर किये गये सुकर्मों के माध्यम से इसमें आरोहणशीलता प्राप्त की जावे।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही वेद ने इस मन्त्र में आदेश दिया है कि 'एषा मा भेदि' इसे मत तोड़। मानव अपने दोषों से, दुर्गुणों और दुर्व्यसनों से इस जीवन रूपी हांडी को तोड़ता है। वेद ने मानव को स्पष्ट शब्दों में यह आदेश दिया था कि—

उदेहि पुरुष सर्वेण मनसा सह ।
दूतौ यमस्य मानु गा अधि जीवपुरा इहि ॥ (अथर्व० ५।३०।६)

अर्थात् हे पुरुष, यहां अतिशील होकर सम्पूर्ण मन के साथ कार्यरत हो। यम के उभय दूतों [व्यसन और विलास] का अनुगमन न कर। हे मानव, तू जीवित रहने का अभाव जीवपुरी में निवास करके दे। मानव अपने असंयमित जीवन से इस काया रूपी हांडी को शनैः-शनैः तोड़ता रहता है। आत्मा की कुत्सित इच्छायें जब मन को अशिव संकल्पों से युक्त करती हैं तब मन का दास मस्तिष्क के बुरे विचारों को जन्म देकर मानव को दुष्कर्मों में लीन करता है। वेद ने मानव जीवन को मर्यादित करने के लिए सात मर्यादाओं का विधान बनाया है यथा—

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात् ।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीळे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ ॥
(ऋ० १०।५।६ अ० ५।१।६)

अर्थात् कान्तदर्शी कवियों ने, ऋषियों ने सात मर्यादायें बनाई हैं। इनमें से यदि एक का भी उल्लंघन होता है तो मानव पापी बन जाता है। वास्तविक रूप में मानव जीवन का आधार है मर्यादाओं का पालन और इस निमित्त, जो परम मित्र परमात्मा के समीप में निवास करता है, उपासक बन कर अपने आसन को उसके समीपस्थ करता है, वही पथों के विसर्जन में, पाप उन्मूलन में, ऐसे अवसरों पर जहां धैर्य की आवश्यकता होती है, स्थिर रहा करता है। जिन सात मर्यादाओं का मन्त्र में उल्लेख किया गया है, वे हैं—कुदृष्टि, कुश्रुति, कुभक्षण, कुस्पर्श, कुविचार, कुभावना तथा कुभाषण।

प्रस्तुत मन्त्र में साधक को इसी हेतु प्रेरणा दी गई है कि वह अपने जीवन को संयत करके सर्वप्रथम सुस्थिर होकर खड़ा से खड़ा हो जाये। आगे बढ़ने और ऊंचा चढ़ने के लिए मानव को सर्वप्रथम मोहमाया की निद्रा से जागना है। आत्मविस्मृति से आत्मजागृति की अवस्था में आना है, उठकर बैठना है और खड़ा होना है। छोटा शिशु प्रथम अवस्था में केवल निद्रासन में लेटा रहता है। कुछ बड़ा होने पर बैठने का प्रयास करता है। बैठना सीख जाता है तो रेंगकर आगे बढ़ता है, फिर किसी वस्तु का आश्रय लेकर खड़ा होना सीखता है, फिर चलना और चलने में दक्ष होकर दौड़ने लगता है।

साधना के क्षेत्र में भी साधक को इसी भांति अग्रसर होना पड़ता है। जिस प्रकार शिशु अनेक बार बैठने, उठने, चलने में गिरता है पर अपना प्रयास जारी रखता है, उसी भांति साधक को बारम्बार प्रयास करना पड़ता है। यदि ज्ञान से जीवन में वैराग्य आता है तो अभ्यास उसे आगे बढ़ाना है।

साधारण जन से कुछ भिन्न होकर दृढ़तापूर्वक खड़े होने में ही सन्तुष्ट नहीं रहना है, अपितु प्रजन बनकर, द्विज बनकर और आगे बढ़कर प्रज्ञानी बनना है, सुकर्मों की धारा प्रवाहित कर यशस्वी बनना है अतएव वेद कहता कि उत्तिष्ठ—खड़ा हो। खड़ा होकर 'बृहती भव' विशालता को प्राप्त कर। संकीर्णता में जीवन का अपनत्व नहीं है, वह तो विशालता में अन्तर्निहित है यथा—

उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः ।
द्युमदिन्दो सुवीर्यम् ॥ (ऋ० ९-१३-४ साम० ११९०)

अर्थात् वाजसात्यार्थ आत्मा को विशाल आकांक्षाओं और प्रकाशित सुवीर्य का क्षरण करता है, उनकी धाराओं को प्रवाहित करता है। हमारे जीवन में जो सूक्ष्मतम चेतन बिन्दु है, उसे दिव्य ज्ञान प्रकाश और उससे प्राप्त ऐश्वर्य को धारण करने के लिए महत्त्वाकांक्षी बनना पड़ेगा, प्रदीप्त पराक्रमी बनना होगा।

विश्व के आर्यकरण की जिन्हें साध है, उन्हें इस मन्त्र से प्रेरित होकर सर्वप्रथम अपना आर्यकरण करना होगा। उनके अपने आर्यकरण से ही सकल विश्व का आर्यकरण होगा। अपने आर्यकरण के लिए उन्हें अपने आत्मप्रकाश में अपने वास्तविक स्वरूप का दर्शन करना होगा। यथा—

य इन्दो आ विवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः ।
द्युम्नाय सुतरा अपः ॥ (ऋ० ९-६०-११ साम० ११५०)

अर्थात् जो मानव दिव्य आनन्द के लिए आत्मा के प्रकाश में सुतारक साधता है, सुकर्म करता है, वही आनन्द पाता है।

अतएव हम आर्य बनकर अपने आर्यत्व का प्रदर्शन करें। अपने सुकर्मों के माध्यम से और स्वयं जीवन के आनन्द को प्राप्त कर अन्यों को भी सुखी और आनन्दित बनायें। विश्व के आर्यकरण का यही उपाय है। ●

इस्लाम और कुरान पर सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव-२

–क्षितीश वेदालंकार–

कुरान पर वेद की छाया

कुरान की भूमिका मे सात छोटी आयतें हैं जिन्हे कुरान का सार समझा जाता है। इन मुस्लिम भाष्यकारो के अनुसार उनमे एक ऐसी प्रार्थना है जो किसी अन्य मत मे दिखाई नही देती और जिसकी तुलना मे अन्य किसी उच्च आदर्श की कल्पना भी नही की जा सकती। कुरान शरीफ की इस सूरते फातिहा के साथ सात आयतो का अनुवाद इस प्रकार है—

"सब तरह की तारीफ (स्तुति) खुदा ही की है, बडा मेहरबान निहायत रहम वाला इन्साफ के दिन का हाकिम, हम तेरी ही इबादत (पूजा) करते हैं और तुझ से ही दुआ मागते हैं, हमको सीधे रास्ते चला, उन लोगो के रास्ते पर जिन पर तू अपना फजल व करम (दया तथा अनुग्रह) करता रहा, न उनके जिन पर गुस्से (क्रुद्ध) होता रहा और गुमराहो के।"

इस प्रार्थना पर मुसलमानो का गर्व करना उचित ही है, क्योकि यह अत्यन्त उच्च आदर्श से प्रेरित है। परन्तु यह जानकर किसे आश्चर्य न होगा कि यह सूरत यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के १६वें मन्त्र का करीब-करीब अक्षरश: अनुवाद है। वह मन्त्र यह है—

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्ति विधेम॥

इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार है—'हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! हमे उन्नति और समृद्धि के लिए सीधे रास्ते से ले चल, क्योकि हे सर्वज्ञ! तू ही हमारे विचारो और कर्मों को जानता है। हमसे टेढी चालो वाले पाप और कुटिलता को दूर कर। हम तुझे बारम्बार नमस्कार करते है।" पाठक देखेगे कि कुरान शरीफ का प्राण समझे जाने वाली उक्त सूरत और इस वेदमन्त्र मे कोई अन्तर नही। इससे यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि मौलवी मुहम्मदअली का यह कथन कि इस जैसी उच्च प्रार्थना अन्य किसी मत मे नही, उनके अज्ञान का द्योतक है। वेदो के आविर्भाव का समय कुछ भी क्यो न हो, पर यह बात निर्विवाद है कि वेद कुरान से बहुत पहले के है। इसलिए किसी भी समझदार व्यक्ति को यह बात मानने मे आपत्ति नही होगी कि कुरान मे यह सूरत वेद से आई है। इसलिए इस प्रार्थना की उत्तमता का श्रेय यदि किसी को है तो वह कुरान को नही, वेद को है।

इसके अतिरिक्त कुरान मे यह भी लिखा है कि कुरान के अतिरिक्त उससे पूर्व होने वाले इञ्जील, जबूर, तौरेत, जेन्द, वेद आदि सब ईश्वर-प्रदत्त इलहाम हैं। इस पर यह शका स्वाभाविक है कि यदि कुरान से पूर्व भी भगवान् ने भिन्न-भिन्न पैगम्बरो को इलहाम दिया था तो फिर कुरान की क्या आवश्यकता थी। इसके समाधान मे मौलवी मुहम्मदअली का कहना है कि उन पूर्ववर्ती इलहामो मे प्रक्षेप हो गया था, जब कि कुरान न केवल सार्वभौम है, बल्कि प्रगतिशील भी है और वही अन्तिम इलहाम है, इसलिए पूर्ण भी है। किन्तु कुरान को इलहामी सिद्ध करने के लिए मौलवी साहब ने जिस विकासवाद का सहारा लिया है उसके अनुसार तो मनुष्य की बौद्धिक उन्नति समाप्त नही हुई बल्कि वह आगे और होनी है। इसलिए अब से केवल १४ सौ वर्ष पहले दिया हुआ ज्ञान पूर्ण कैसे कहा जा सकता है? विकासवाद के अनुसार कुरान शरीफ को अन्तिम इल्हाम कहने की बात भी नही बनती।

इस्लाम के अनुयायियो को अपने एकेश्वरवाद पर बडा गर्व है। वे खम ठोककर कहते हैं कि सारे ससार को यदि एक परमात्मा की उपासना किसी ने सिखाई है तो वह केवल इस्लाम ने सिखाई है। हरेक मुसलमान बहुत गर्व के साथ कहता है—

तौहीद की अमानत सीने मे है हमारे

परन्तु यह दावा भी अज्ञान पर आधारित है। स्वय वेद मे एकेश्वरवाद का जैसा परिपुष्ट वर्णन है उसके सामने कुरान का एकेश्वरवाद फीका पड जाता है। वेद मे एकेश्वरवाद सम्बन्धी सैकडो मन्त्र हैं। यह ठीक है कि मध्यवर्ती काल मे वेद के अनुयायी ही एक ईश्वर की उपासना को भूल कर अनेक देवताओ की उपासना में लग गये। परन्तु यह दोष वेद का नही था। वेद मे तो स्पष्ट आया है—'भूतस्य जात पतिरेक आसीत्" अर्थात् ससार के सब प्राणियो का स्वामी एक परमात्मा है। परमात्मा की अनेकता का खण्डन भी जितने प्रबल रूप में वेद में विद्यमान है उतने अन्यत्र दुर्लभ है। अथर्ववेद (१३/४/२) में स्पष्ट लिखा है—

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।
न पचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते॥
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।
य एत देवमेकवृत वेद॥"

अर्थात् उसे न दूसरा, न तीसरा और न चौथा कह सकते हैं। न पाचवा, न छठा और न सातवा कह सकते हैं, न आठवा, न नौवा और न दसवा कह सकते हैं। जो उसे एक (अद्वितीय) और एक वृत (अकेला) ही जगत् सृष्टि आदि का व्यवहार करने वाला मानता है, वही उसे जानता है। (क्रमश)

महर्षि दयानन्द के प्रशंसक महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर

-डा० भवानीलाल भारतीय-

ब्राह्मसमाज के महान् नेता और सन्त प्रकृति के महापुरुष देवेन्द्रनाथ ठाकुर से स्वामी दयानन्द की प्रथम भेंट प्रयाग मे हुई थी। उस वर्ष (१९२६ वि —१८७० ई) प्रयाग में माघी कुम्भ का मेला था। दोनो महापुरुषो मे विचारों का आदान-प्रदान हुआ और ठाकुर महाशय ने स्वामी जी को कलकत्ता आने के लिए आमन्त्रित किया। लगभग दो वर्ष पश्चात् जब १८७२ के अन्त में स्वामी दयानन्द कलकत्ता पहुंचे तो देवेन्द्रनाथ ठाकुर से भेंट करने का उन्हें एक और अवसर मिला। इस वर्ष जब ब्राह्मसमाज का माघोत्सव कलकत्ता के जोडासांको मुहल्ले मे स्थित ठाकुर बाडी मे मनाया गया तो देवेन्द्रनाथ का आमन्त्रण स्वीकार कर स्वामीजी उक्त उत्सव मे सम्मिलित हुए और उन्होंने समयोचित प्रवचन किया। स्वामी जी को ठाकुर महाशय द्वारा सकलित ब्राह्म धर्मग्रन्थ को देखने का अवसर भी मिला तथा उन्होंने स्वामी जी से अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की।

देवेन्द्रनाथ के पिता प्रिंस द्वारकानाथ ठाकुर अपने युग के अत्यन्त सम्पन्न पुरुष थे, जिन्हें राजा राममोहनराय के मित्र तथा सहयोगी होने का गौरव प्राप्त हुआ था। देवेन्द्रनाथ का जन्म १८१७ में हुआ। वे अमीरी के वातावरण में पले और बढ़े किन्तु उन्हें सासारिक विरक्ति, आध्यात्मिकता की भावना तथा अध्यात्मप्रवण संस्कारवंश प्राप्त हुई थी। उनकी शिक्षा कलकत्ता के हिन्दू कालेज में हुई। उन पर अपनी दादी की धार्मिक आस्थाओ का गहरा प्रभाव पडा था। एक दिन उन्हें ईशोपनिषद् का एक फटा हुआ पन्ना मिला। इस पृष्ठ पर अंकित उपनिषद् के प्रथम मन्त्र "ईशा वास्यमिद सर्वम्" ने उनके जीवन की धारा को ही बदल दिया, यद्यपि मन्त्र का वास्तविक अभिप्राय जानने के लिए उन्हें ब्राह्मसमाज के तत्कालीन आचार्य प० रामचन्द्र विद्यावागीश की सहायता लेनी पडी थी।

ठाकुर महाशय ने ६ अक्टूबर १८३९ को तत्त्वरंजिनी सभा की स्थापना की, जिसे थोडे समय बाद तत्त्वबोधिनी सभा का नाम दे दिया गया। जब ज्ञात हुआ कि उनके विचारों और ब्राह्मसमाज के सिद्धान्तो मे पूर्ण समानता है तो उन्होंने तत्त्वबोधिनी सभा का विलय ब्राह्मसमाज मे कर दिया और ब्राह्म उपासना मे नियमितरूप से सम्मिलित होने लगे। इस समय तक ब्राह्मसमाज में राजा राममोहनराय द्वारा स्थापित मर्यादाओ के अनुसार वेदो को परम प्रमाण के रूप मे माना जाता था तथा ब्राह्म उपासना मे वेदमन्त्रो का पाठ भी किया जाता था। देवेन्द्रनाथ ने चार ब्राह्मण छात्रो को चारो वेद संहिताओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए काशी भेजा। उस समय काशी मे वेदों की व्यवस्थित शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं था और न वेदो के तथाकथित जानकारो को यह ज्ञान था कि इन ग्रन्थो मे क्या लिखा हुआ है। फलत जब वेद पढकर लौटे इन छात्रो ने ठाकुर महाशय के समक्ष वेदो के सम्बन्ध मे कोई अच्छी धारणा प्रकट नही की तो देवेन्द्रनाथ वेदो के सम्बन्ध मे उदासीन हो गए और आगे चल कर ब्राह्मसमाज से वेद प्रामाण्य के विचार को बहिष्कृत कर दिया गया।

१८४३ ई० मे ठाकुर महाशय ने तत्त्वबोधिनी पत्रिका निकाली और अक्षयकुमार दत्त को उसका सम्पादक नियुक्त किया। ब्राह्म धर्म और अनुष्ठान पद्धति जैसे ग्रन्थो की रचना कर देवेन्द्रनाथ ने ब्राह्मधर्म के सैद्धान्तिक आधार तथा उसके सदस्यों के लिए आचरणीय कर्मकाण्ड का व्यवस्थित निर्धारण किया। उन्होंने १८४० में तत्त्वबोधिनी पाठशाला की स्थापना की, जिसके माध्यम से छात्रों को वेदान्त की शिक्षा दी जाती थी। जब केशवचन्द्र सेन जैसे तपस्वी, प्रतिभाशाली तथा भावनाप्रवण युवक ने ब्राह्मसमाज मे प्रवेश किया तो महर्षि को अपार प्रसन्नता हुई। धीरे धीरे सेन महाशय का प्रभाव ब्राह्मसमाज मे बढ़ता गया।

देवेन्द्रनाथ ठाकुर मूलत भारत की परम्परागत धार्मिक और आध्यात्मिक आस्थाओ के प्रति ही निष्ठावान् थे। वे न तो राजा राममोहनराय की भांति ईसाई मत के आचारशास्त्र के प्रशसक थे और न उन्हें केशव की उस अति-प्रगतिशीलता से ही प्यार था, जो समाज मे द्रुत गति से सुधार और क्रान्ति लाने का स्वप्न देखती थी। परन्तु वे केशव की लोकप्रियता तथा ब्राह्मसमाज में उनके प्रभाव से भी परिचित थे। जब केशवचन्द्र ने ब्राह्मसमाज मे यज्ञोपवीत धारण के विरोध में आन्दोलन चलाया और ठाकुर महाशय को विवश किया कि कोई भी यज्ञोपवीतधारी आचार्य ब्राह्मसमाज की वेदी पर नहीं बैठ सकेगा, तो एक बार तो देवेन्द्रनाथ ने उनके इस सुझाव को स्वीकार कर यज्ञोपवीतधारी आचार्यों की वेदी बन्द कर दी, परन्तु धीरे धीरे उन्होंने यह अनुभव किया कि यदि वे इसी प्रकार केशवचन्द्र सेन की इन तथाकथित प्रगतिशील नीतियो के आगे झुकते जायेंगे तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब राजा राममोहनराय द्वारा प्रवर्तित ब्राह्मसमाज अपनी मौलिकता को ही खो बैठेगा। अब उन्होने निश्चय किया कि यज्ञोपवीतधारी आचार्यों को ब्राह्मसमाज की वेदी से उपासना कराने का अधिकार पुन दे देना चाहिए। उनके ऐसा करने पर केशवचन्द्र सेन अपने अनुयायियो के साथ ब्राह्मसमाज के मुख्य सगठन से पृथक हो गये और उन्होने पृथक भारतवर्षीय ब्राह्मसमाज की स्थापना की। अब ठाकुर महाशय के नेतृत्व वाला सगठन आदि ब्राह्मसमाज कहलाने लगा।

एक बहुत बडे परिवार के मुखिया तथा ठाकुर खानदान की अपार सम्पत्ति और वैभव के स्वामी होने पर भी देवेन्द्रनाथ ससाररूपी जल मे कमल पत्र की भांति निर्लिप्त होकर निवास करते थे। वे यदा-कदा शिमला के पर्वतीय स्थलों मे एकान्त साधना के लिए चले जाते थे। १९०५ मे महात्मा देवेन्द्रनाथ ठाकुर परलोकगामी हुए। फर्रुखाबाद से प्रकाशित होने वाले मासिक भारत सुदशाप्रवर्तक के पुराने अंको से ज्ञात होता है कि विगत शताब्दी के अन्तिम दशाब्द मे आर्यसमाज और देवेन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा सचालित आदि ब्राह्मसमाज को अधिकाधिक निकट लाने का भी प्रयत्न किया गया था, किन्तु कतिपय कारणो से यह प्रयत्न सफल नही हुआ।

२९ जनवरी को ४६वें बलिदान दिवस पर विशेष लेख

अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री के प्रेरक संस्मरण

—राजवीर शास्त्री—

२९ जनवरी १९४१ के दिन नेपाल के कुख्यात जंगल मे अर्धरात्रि के समय नेपाल की राजाशाही द्वारा अक्षम्य एव अमानवीय ढंग से महर्षि दयानन्द के एक शिष्य गुरुकुल सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) के स्नातक तथा वैदिक संस्कृति के अनन्य भक्त शुक्रराज शास्त्री को फासी दी गई थी, वह दिन चिरस्मरणीय रहेगा और विश्व के मानवता प्रेमी इस जघन्य कृत्य की सदा ही निन्दा करते रहेंगे।

भारतवर्ष के उत्तर में १२० मील लम्बा तथा १४० मील चौड़ा नेपाल राज्य एक घाटी मे स्थित है। यहा नेवा नामक जाति बहुत प्राचीन समय से बसती रही है। समस्त विश्व में नेपाल ही एक ऐसा प्रदेश है, जिसे हम हिन्दू राज्य कह सकते हैं। इसलिए इस प्रदेश में पौराणिक हिन्दू धर्म का अत्यधिक वर्चस्व रहा है। मूर्तिपूजा, पशु-बलि, मृतकश्राद्ध, तान्त्रिक विचार इत्यादि पर न केवल जन-सामान्य की आस्था ही है, प्रत्युत इन अवैदिक विचारो को राजकीय संरक्षण भी प्राप्त है। अतएव इन विचारो की अवहेलना करने वाले को राजदण्ड का भागी बनना पडता है। १९वीं सदी के प्रारम्भ में शाह राजाओ के प्रधान मन्त्री जंगबहादुर राणा ने राजा की शक्ति का पराजय करके सारी शक्ति प्रधान मन्त्री के पद मे सन्निहित कर ली थी और प्रधान मन्त्री का पद भी वंशानुगत ही घोषित कर दिया था। ये राणा लोग मुस्लिम शासन मे राजपूतो की पराजय होने पर नेपाल गये और वहा राजसत्ता को छीन कर स्वय राजा बन गये थे। किन्तु अत्याचारी राजा का वर्चस्व सदा नही रहता। इसी कारण शुक्रराज शास्त्री को फासी के १० वर्ष के अन्दर ही नेपाल से राणाशाही समाप्त हो गई और ये लोग वापस भारत मे आकर विभिन्न प्रदेशो में बस कर जीवन यापन करने को विवश हो गये। १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम मे भी राणाशाही ने अंग्रेजो का ही साथ दिया था और अपनी सेना, शस्त्र व धन से अंग्रेजों का पूरा साथ दिया था और इसीलिए भारत के क्रान्तिकारी नानासाहब आदि को नेपाल पहुँचने पर शरण नही दी गई थी।

अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री के पिता श्री माधवराज जोशी प्रसिद्ध ज्योतिषी प० जगन्नाथ जी के घर उत्पन्न हुए। बडे होकर राजा परिवार के आठ वष तक साथी तथा शिक्षक रहे। १८७६ में काशी गये और वहीं २७ नवम्बर के दिन उत्तम गिरि के बगीचे मे उन्हें महर्षि दयानन्द के दर्शन हुए। आपने महर्षि से कुछ प्रश्न किये, जिनका उत्तर पाकर आप बहुत प्रभावित हुए। दीपक से दीपक की भाति प्रकाशित होकर अपनी जन्मभूमि के उद्धार हेतु एक शिवसंकल्प लेकर नेपाल वापस चले गये। नेपाल मे तत्कालीन प्रधान मन्त्री हर्षजंग के विश्वासपात्र बनकर रहे, जिसके फलस्वरूप पालेश्वर मे आपको सप्लाई आफिसर बनाया गया। किन्तु कुछ समय पश्चात् किसी राजकीय षडयन्त्र मे प्रधान मन्त्री को नेपाल छोडकर भागना पड गया, इसका प्रभाव जोशी जी पर भी पडना था, अत वे भी काशी आकर रहने लगे। काशी मे ही १८९३ ई० मे शुक्रराज शास्त्री का जन्म हुआ। इसी बीच नेपाल मे हर्षजंग के छोटे भाई डम्बर जंग का पलडा भारी हो गया अत जोशी जी फिर नेपाल पहुच गये और पोखरा नामक नगर में जाकर रहने लगे। पोखरा मे रहते हुए एक वैद्य जी के घर पर रद्दी के कागजों में महर्षि दयानन्द की अमर कृति सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति आपके हाथ लग गई, जिसे पढ़कर जोशी जी का कायाकल्प ही हो गया और जिन विचारों का बीजारोपण १८७६ मे काशी मे महर्षि दयानन्द के दर्शन से हुआ था, मानो इस अमृत को पाकर वह बीज पल्लवित, पुष्पित व फलित हो गया। पोखरा नगर मे ही आपने नेपाल की पहली आर्यसमाज की स्थापना करके वैदिक धर्म प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार आपने नेपाल के नवकोट और १८९८ मे पाटन नगर में तीसरी आर्यसमाज की स्थापना की। नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में आर्यसमाज बनाने का निषेध होने पर भी वेदान्त विषयक ब्रह्म सभा नाम की संस्था बनाकर वैदिक धर्म का प्रचार चालू रखा। १९०१ में आपने पांचवी आर्यसमाज कान्तिपुर नामक उपनगर में स्थापित कर दी। इस वैदिक विचारधारा के उत्तरोत्तर प्रचार के प्रभाव को पौराणिक दल कैसे सहन कर सकता था? नेवर तथा छोटी जातियों को भी वेद पढ़ने का अधिकार देने से पौराणिक पण्डित चिढ़ने लगे। फलत: नेपाल के शासकों की देख रेख मे वेद पढ़ने का अधिकार सबको है, विषय पर शास्त्रार्थ भी हुआ, जिसका अच्छा प्रभाव हुआ।

तदनन्तर पौराणिक दल जोशी जी को नीचा दिखाने की ताक में रहने लगा। जोशी जी के पिता का १९०५ में देहान्त हो गया। अपने पिता का अन्त्येष्टि संस्कार जोशी जी ने नेपाल में पहली बार वैदिक विधि से कराया और तेरहवीं के दिन नेपाली परम्परा के अनुसार मासादि की व्यवस्था न देने के कारण आपकी शिकायत राजपुरोहित तक पहुचाई गई। चारों तरफ से नेपाली ब्राह्मणो का दबाव पडने पर जोशी जी को दो वर्ष का कठोर कारावास तथा देश निर्वासन का कठोर दण्ड दिया गया। जेल की यातनायें जोशी जी को इतना परेशान न कर सकीं, जितना परिवार को जाति से निकालना, बच्चों का स्कूल से निकालना आदि घटनाओं ने दु:खी किया। जोशी जी जेल से भागकर अपने परिवार सहित नेपाल से भारत में आ गये। यहां आकर परिवार सहित गोरखपुर, लखनऊ, देहरादून आदि नगरों में घूमते-फिरते रहे किन्तु निश्चित जीविका के बिना कहीं स्थायी निवास नहीं कर सके। बच्चों की शिक्षा का भी प्रबन्ध न हो सका। अन्त में मेरठ के प० तुलसीराम जी के सहयोग से शुक्रराज को गुरुकुल सिकन्दराबाद तथा पुत्री चन्द्रकान्ता को मेरठके एक कन्या विद्यालय में दाखिल करा दिया गया और स्वयं वे आर्यसमाज के प्रचार कार्य मे लग गये।

आर्य पिता के योग्य पुत्र ने सिकन्दराबाद से शिक्षा समाप्त कर पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री और बी० ए० परीक्षा पास की, और इलाहाबाद के डी० ए०-वी० हाई स्कूल में संस्कृत अध्यापक के पद पर कार्य करने लगे। किन्तु स्वदेश के प्रति अनुराग कैसे भुलाया जा सकता था! यद्यपि आपकी दृष्टि मे ने=नीचा पाल=स्थान अर्थात् त्रिविष्टप=तिब्बत की दृष्टि में नीचा होने से नेपाल कोई पृथक् देश नही था, फिर भी अपने देश में अपनी प्राचीन संस्कृति का वर्चस्व लाने के लिए शास्त्री जी इलाहाबाद की नौकरी छोड़कर नेपाल जा पहुचे। वहा जाकर इस आर्य युवक का पौराणिक विचारों से टकराव होना स्वाभाविक ही था। राजपुरोहित तथा पर्वतीय पण्डितों ने इसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। एक बार सिंह दरबार में राजपुरोहित के साथ आपका मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ भी कराया गया। पण्डितों ने शास्त्री जी के विरुद्ध नेपाल के धार्मिक नियमो की अवहेलना करने का अभियोग चलाया और उसका यह निर्णय सुनाया गया—दयानन्दी मत प्रचार गरेको कारण अधार्मिकवाद।

नेह सजाई। देश निकाला।

शुक्रराज शास्त्री को दयानन्दी मत का प्रचार करने के कारण देश निकाला तथा उनके बड़े भाई अमरराज और छोटे भाई [illegible] को दो वर्ष का कठोर कारावास का दण्ड दिया गया।

परन्तु वीर-धीर व्यक्ति ऐसे दण्डों से कब घबराते हैं? उनका तो कथन यही होता है—'कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्।' इस आर्य वीर ने नेपाल छोड़कर भारत को ही अपना कार्य क्षेत्र चुन लिया और नेपाल शासन के विरोध में एक आन्दोलन छेड़ दिया। ये महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस, प०जवाहरलाल नेहरू इत्यादि तत्कालीन प्रमुख भारतीय नेताओं से भी मिले।

(शेष पृष्ठ १० पर)

कविता १

रामशास्त्री प्रभुणे की प्रभुता

देखो दिशा आज की परखो, रुख पहले था किधर हवा का।
जब महाराष्ट्र में था शासन, श्री माधवराव पेशवा का॥
उनके अधीन विद्वान् एक थे, रामशास्त्री प्रभुणे जी।
सचिव न्यायपति धर्मज्ञ तीन पद, एक नही थे इतने जी॥
वे थे मेधावी विज्ञ प्रवर, था उनका शुभ सम्मान महा।
सर्वमान्य था कथन सत्य जब, जो कुछ विचार कर कभी कहा॥
परामर्श इनसे सदैव ही, लेना कभी न भूले राव।
निर्देश-न्याय की सब बाते डाल दृढ शासन पर प्रभाव॥
श्री रामशास्त्री प्रभुणे-सा, कितने महत्त्व का अधिकारी।
उस राजतन्त्र में भी था जो, सादा जीवन उच्च विचारी॥

यहां नहीं हमको करनी है, कोई उपदेशो की रटना।
पर तुम्हें सुनानी है उनके, जीवन की एक सत्य घटना॥
आया था नव वर्ष दिवस शुभ, पूरा शासन था मोदमगन।
हर ओर बहारें छाई थी, हो उठी धरा आमोदमगन॥
प्रभुणे की पत्नी इस अवसर, निज स्वस्ति कामनाये लेकर।
पहुची निकट राजमात के, मन मगल अभिनन्दन लेकर॥
वह राजमहल हर ओर जहा, था अभिनव हर शृङ्गार भरा।
हर ओर जहा खुशहाली थी, कण-कण मे हर्ष अपार भरा॥

प्रभुणे की पत्नी को लख कर, निज मुख सबने आह निकाली।
इतने ऊचे अधिकारी की, पत्नी की पोशाक निराली॥
वे नित्य दिवस के पहने थी, सर्वसुलभ कपडे साधारण।
उनके शरीर था तेज शेष, पर कही नही थे आभूषण॥
उनके स्वरूप का दर्शन कर, सबको आश्चर्य महान् हुआ।
प्रभुणे जी की निर्धनता का, तब राजमात को ज्ञान हुआ॥
माता ने सोचा एक ओर, वह महामान्य मम अधिकारी।
जो स्वय सरल है और सरल, उसकी है यह सुन्दर नारी॥

माता ने उपहार प्यार का, अपने मन मे उद्गार किया।
लेकर नूतन वर वस्त्र और आभूषण से शृङ्गार किया॥
प्रभुणे की पत्नी का कोई, सकोच नही स्वीकार किया।
निज वैभव से कुछ दान हेतु, मा ने उसको तैयार किया॥
विद्वान् प्रिया की सुगढ देह, नवल वस्त्र-आभूषण पाकर।
देने मयक को मात लगी, जैसे चेतन हुआ विभाकर॥
माता ने उनका सभी भाँति, निज हृदय सदय सम्मान किया।
वैभव से परिपूरित करके, बहु वन्दन कर प्रस्थान किया॥

सम्मान त्यागिनी देवी का, हर्ष घडी मे नये साल की।
फिर कई सेवको के द्वारा, विदा किया बैठाल पालकी॥
सेवक साधनसम्पन्न पूर्ण, रूप देवि का भिन्न विराजा।
निज निवास पर तुरत पहुचकर, खुलवाया अपना दरवाजा॥
रामशास्त्री ने खोल लखा, यह तो कोई धन देवी है।
पत्नी किसी धनी मानव की, वैभव विलास की सेवी है॥
आप अभी अन्यत्र कही जायें, धोखे से इधर पधारे हैं।
यह घर है निर्धन पडित का, ये नही धनी के द्वारे हैं॥

यह नारी कोई धन देवी, इनका है निवासस्थान किधर।
इनका होगा प्रासाद कही, हमको है लगता नही इधर॥
इतना कर बोधक सम्बोधन, श्री रामशास्त्री ने झटपट।
उन डाल उपेक्षापूर्ण दृष्टि, कर दिये बन्द द्वार के पट॥
रामशास्त्री की पत्नी ने, समझा सब रहस्य क्षण भर मे ही।
थोडा सकल्प-विकल्प हुआ, कर लिया सुनिर्णय मन में ही॥
लौटाय पालकी सब साधन, फिर राजमहल मे वे आई।
जो घटित हुई थी बाते वे, सब राजमात को बतलाई॥

सब उसी समय लौटा ल दिये, वस्त्र नवल सुन्दर आभूषण।
निज वस्त्र पुरातन धन्य समझ, कर लिये धैर्य से फिर धारण॥
रानी मा को दे धन्यवाद, सादगी सरल का वेश लिये।
वह पैदल ही चलदी देवी, शाश्वत स्वभाव परिवेश लिये॥
अपने घर पर सहज पहुच कर, खटकाया अपना दरवाजा।
खुल गया द्वार अविलम्ब तभी, प्रभुणे का विश्वास विराजा॥
झटपट वे घर मे जा पहुची, कोई अनुमति दरकार न थी।
सकोच सोच की बात न थी, कोई सशय की मार न थी॥

बात प्रिया से प्रभुणे अपनी, निश्छल हृदय लगे बतलाने।
बाद तुम्हारे एक नारि को मैंने नही दिया घर आने॥
निर्धन पडित के इस घर मे, धन की देवि कहा रख सकता।
सच्चा पत्नीव्रत पालक मैं, कैसे भला सहन कर सकता॥
वैभव विलास छा जाने से, अपनत्व कही खो जाता है।
विद्यानिवास हो जाने पर, अस्तित्व स्वय हो जाता है॥
सच्ची विद्या के व्यसनी को, सदा सुहाती विद्या वाणी।
लक्ष्मी तुम, तुम सरस्वती हो, प्रभुण की रानी प्रभुणानी॥

—देवनारायण भारद्वाज

आर्यसमाजों के चुनाव

आर्यसमाज मोती बाग, नई दिल्ली—प्रधान श्री खुशहाल मणि ध्यानी, मन्त्री श्री जयप्रकाश शास्त्री और कोषाध्यक्ष श्री कुलभूषण मल्ला।

आर्यसमाज पिलखुवा (जिला गाजियाबाद)—प्रधान श्री शान्तिप्रकाश, मन्त्री डा० देवप्रकाश और कोषाध्यक्ष श्री कृष्णानन्द।

आर्यसमाज बारा (जिला कोटा)—प्रधान श्री लक्ष्मणदास मन्त्री श्री रामकरण गुप्त और कोषाध्यक्ष श्री रेवती कुमार ठाकुर।

केन्द्रीय जिला आर्यसमाज, पलायमकोट्टई (तिरुनेलवेली —प्रधान श्री बी० रामचन्द्रन्, मन्त्री श्री बी० बी० आर० स्वामी और कोषाध्यक्ष श्री सुब्रह्मण्य पिल्लै।

आर्यसमाज विनयनगर (सरोजिनी नगर), नई दिल्ली—प्रधान डा० विजयकुमार सहगल, मन्त्री श्री तिलकराज चोपड़ा और कोषाध्यक्ष श्री मुलखराज कपूर।

आर्यसमाज भागलपुर—प्रधान श्री राजेन्द्र मडल और मन्त्री श्री लक्ष्मी-प्रसाद चोरसिया।

आर्यसमाज कोरबा (जिला बिलासपुर म० प्र०)—प्रधान श्री केवलकृष्ण, मन्त्री श्री बी० के० श्रीवास्तव और कोषाध्यक्ष श्री दीवानचन्द्र आहूजा।

आर्यसमाज पखा रोड, सी ब्लाक, जनकपुरी नई दिल्ली—प्रधान श्री रामकृष्ण सतीजा, मन्त्री श्री केशवदेव सूद और कोषाध्यक्ष श्री हरिकिशनलाल मुलाटी।

आर्यसमाज झाझा, मुगेर—प्रधान श्री कुजबिहारी दास मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्त और कोषाध्यक्ष श्री भरतलाल आर्य।

—आर्यसमाज कोडरमा (जिला हजारीबाग) प्रधान श्री हरिलाल आर्य, मन्त्री श्री बसंतप्रसाद आर्य और कोषाध्यक्ष श्री लक्ष्मण साव।

—आर्यसमाज साहबगज—प्रधान श्री महादेव आर्य, मन्त्री श्री सत्य-नारायण आर्य और कोषाध्यक्ष श्री मनोज कुमार आर्य।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा, भरतपुर जनपद प्रधान श्री वीरेन्द्र कोहर, मन्त्री श्री हरगोविन्द शर्मा और कोषाध्यक्ष श्री रामसिंह।

—आर्यसमाज पीपाड नगर—प्रधान श्री बसीलाल आर्य मन्त्री श्री शकरलाल आर्य और कोषाध्यक्ष श्री रामरख आर्य।

—आर्यसमाज प्राचीन मन्दिर कलोशर (गाजियाबाद)—प्रधान श्री सरबीतसिंह, मन्त्री श्री रणजीतसिंह राणा और कोषाध्यक्ष श्री रामकृष्ण सेठ।

आर्य वीर दल सहारनपुर जनपद का चुनाव

सार्वदेशिक आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश (सहारनपुर जनपद) के चुनाव मे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—सचालक श्री इलमचन्द आर्य, मन्त्री श्री रतिराम, कार्यालय मन्त्री व अधिष्ठाता श्री जगेश्वर प्रसाद और कोषाध्यक्ष श्री अमरसिंह।

शुकराज शास्त्री

(पृष्ठ ८ का शेष)

इन समस्त गतिविधियों की सूचना गुप्तचर विभाग द्वारा काठमाण्डू पहुंचती थी। इसलिए एक बार ये जैसे ही काठमाण्डू लौटे तो इन पर सख्त निगरानी की गई और काठमाण्डू के प्रसिद्ध इन्द्र चौक पर राज विरोधी भाषण देने और पर्चे बांटने पर इन पर राजद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया, जिसके परिणामस्वरूप शास्त्री जी को फांसी की सजा और सब सम्पत्ति जब्त करने की सजा सुनाई गई। समय से पूर्व ही २९ जनवरी १९४१ के दिन इस वीर युवक को पचली घाट के समीप एक सुनसान स्थान पर ले जाया गया और राणा परिवार के एक अधिकारी ने ही पेड़ से बांधकर फांसी पर लटका दिया। फांसी वाले दिन इस वीर को दिन भर भूखा रखा गया। मरते समय इस वीर ने अपनी अन्तिम इच्छा प्रकट करते हुए कहा— मैं फांसी से लेशमात्र भी भयभीत नहीं हूं। किन्तु मुझे राणाओं ने बिना कारण के ही फांसी पर लटकाया है अतः राणाशाही नेपाल से बहुत शीघ्र नष्ट हो जायेगी। जब दूसरे दिन ७८ वर्षीय वृद्ध पिता माधवराव जोशी को इस हृदयद्रावक घटना का पता लगा तो वे अपने पुत्र को देखने गये। अपने बेटे को वृक्ष पर लटका देखकर कौन ऐसा पिता होगा जो धैर्य धारण कर सकेगा, किन्तु धन्य है तुम्हें ऐ महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त माधवराव जोशी जो तुमने इस असह्य दुःख को भी सहकर अपने पुत्र को धन्यवाद देते हुए गर्व के साथ कहा—

शाबास बेटा! तुम दयानन्द सरस्वती के पथ के अनुगामी हुए जो धर्मप्रचार हेतु स्वेच्छा से कंटकाकीर्ण मार्ग को स्वीकार किया और अन्याय करने वाली राणाशाही के समूल नाश का शाप भी दिया।

अपने पुत्र को धर्म पर बलिदान करने वाले दयानन्द तथा वेद के परमभक्त स्वनामधन्य श्री माधवराव जोशी ने न केवल स्वयं को तिल तिल करके जलाया प्रत्युत प्रत्येक परिवार को भी उस प्रज्वलित क्रान्ति ज्वाला में झोंक दिया। गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों को धर्म की रक्षार्थ दीवार में चुनवा दिया गया था बालक हकीकतराय की धर्म न बदलने पर गर्दन कटवा दी गई थी और बन्दा वैरागी के पुत्र को पिता के सामने ही कत्ल करके वैरागी को भी धर्मरक्षा के अपराध में गर्म शलाकाओं से नोच नोच कर मार डाला गया था। न जाने ऐसे कितने धर्मवीरों ने धर्म पर कुरबानी दी है। आज हम उनका नाम श्रद्धा के साथ लेते हैं। तो क्या शुकराज शास्त्री का अमर बलिदान भारतीयों को धर्म रक्षा की प्रेरणा नहीं देगा? हमारा इतिहास ऐसे वीरों के बलिदानों की गौरव गाथाओं से भरा पड़ा है। फिर क्यों उनके वंशज युवक आज अपने स्वाभिमान व प्रतिष्ठा का लेशमात्र भी ध्यान नहीं रखते? हमारी रगों में भी वही उष्ण रक्त धारा अब भी बह रही है। हमारे युवक ऐसी कुर्बानियों से अवश्य प्रेरणा लेंगे ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है। ●



पंजाब के हिन्दू पीड़ितों के लिए अपील

[illegible] के [illegible] के १५ [illegible] से [illegible] विस्थापित हो चुके हैं। इनकी सहायता और पुनर्वास के लिए बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता है। सर्दी पूरे जोरों पर है। विस्थापितों के लिए गरम कपड़ों की तुरन्त आवश्यकता है। जिस किसी [illegible] तक मेरी अपील पहुंचे उन सबसे प्रार्थना है कि धन और सामान के रूप में अपनी सहायता तत्काल भेजें। देरी न करें अपनी सहायता शीघ्र ही भेजें।

—स्वामी [illegible]
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धन और सामान भेजने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष में प्राप्त दान राशियां

मन्त्री आर्यसमाज [illegible] प० चम्पारण	१००)
छीतरमल बहोरा, [illegible]	१०१)
आर्य युवा परिषद्, पोरबन्दर	५०)
चन्द्रकान्त भारद्वाज, फफूंद इटावा	५)
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश सुन्दर नगर	१००)
अध्यक्ष आर्य सभा, गया	२५०)
मन्त्री आर्यसमाज, गया	२२०)
मन्त्री आर्यसमाज शकरपुर, दिल्ली	२६०)
श्रीमती सत्या आनन्द, दिल्ली	५०)
श्री सरोज नाथ दिल्ली	५०)
श्रीमती सत्या पल्टा, दिल्ली	५०)
श्रीमती कान्तादेवी [illegible] कालोनी [illegible]	५१)
[illegible] बुक एजेन्सी, चौड़ा रास्ता, जयपुर	५०)
श्री विलासीराम आर्य, विरजानन्द वैदिक गुरुकुल महमूदाबाद	५००)
आर्यसमाज कारकौना गुड़ापुर, जि० मालदा	१००)
श्रीमती कौशल्यादेवी कश्मीरी गेट दिल्ली	२००)
श्री रामप्रसाद आर्य, ग्राम बडगुजरा गोविन्दगढ़ पटियाला	१००)
श्री के सी शर्मा आर्य, फरक्का [illegible] मुर्शिदाबाद	३५)
श्रीमती सरलादेवी ४०५/१ सिकन्दराबाद	१००)
श्री कृष्ण साधक ११८ [illegible], कोटा	३००)
श्री रघुराजसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज अलीगढ़	५००)
श्री मथुरादास मल्ला, घनेटा, हमीरपुर	५०)
श्रीमती निर्मला कुलश्रेष्ठ रसूलगंज अलीगढ़	५१)

ये राशियां ५ जनवरी तक प्राप्त दान की हैं। सब दानदाताओं का धन्यवाद।

—[illegible] शास्त्री

दानी महानुभावों से अपील

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संस्थापक [illegible] स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती की १२५वीं जयन्ती २५ जनवरी से २९ जनवरी तक मनाई जा रही है जिसमें अनेक धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

आपकी पत्रिका के माध्यम से उदारचेता और दानशील व्यक्तियों से प्रार्थना है कि इस शुभ अवसर पर यथाशक्ति दान राशि निम्नलिखित पते पर भेजकर पुण्य-लाभ प्राप्त करें।

—[illegible]
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर-२४९४०७

सम्पादक के नाम पत्र

हिन्दुस्तान राष्ट्रवादी मंच का गठन

महोदय,

धर्म के आधार पर देश के विभाजन के बाद हमारी भारतभूमि का जो भाग हिन्दुओं के पास रह गया था, उसे सुख-समृद्धि और शान्ति का क्षेत्र बनाया जा सकता था, जहां से वह सारे विश्व को मानवता और सह-अस्तित्व का सन्देश प्रसारित कर सकता। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे राजनेताओं की अदूरदर्शिता और उनके संकुचित व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण ऐसा नहीं हो सका। उन्होंने भारत के विभाजन और उससे उत्पन्न समस्याओं से कोई शिक्षा ग्रहण नहीं की। परिणामस्वरूप आज हिन्दुओं के देश में एक बार फिर वही परिस्थितियां पैदा हो रही हैं, जो विभाजन से पहले पैदा हुई थी। इस बार तो ये शायद पहले से भी अधिक गम्भीर हैं। विभाजन के बाद जो मुस्लिम समुदाय हमारे क्षेत्र में रह गया था, आज खुले-आम पाकिस्तान, बांग्लादेश और दूसरे मुस्लिम राष्ट्रों का समर्थन कर रहा है। उन्होंने एक बार फिर वही हरकतें करनी शुरू कर दी हैं, जो विभाजन से पहले की थी। उनकी देखा देखी ईसाई और सिख भी अपने लिए अलग राज्य की मांग उठा रहे हैं। मिजोरम और नागालैण्ड में ईसाइयों ने जो समस्या पैदा की हुई है, वही समस्या खालिस्तानियों ने पंजाब में और पाकिस्तानियों ने कश्मीर घाटी में खड़ी कर रखी है। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हमारी सरकार ने अल्पसंख्यक समुदायों के तुष्टीकरण की जो नीति अपना रखी है, उससे देश की एकता और अखण्डता को एक बड़ा खतरा पैदा हो गया है और हमारे देश की शान्ति भंग हो गई है।

राजनैतिक संगठन वोट बटोरने के लिए अल्पसंख्यक समुदायों का चरण चुम्बन करने में लगे हुए हैं—भले ही उससे देश का सवनाश हो जाये।

उपर्युक्त परिस्थितियों को देखते हुए देश के प्रबुद्ध नागरिकों को एक ऐसे मंच पर लाने की आवश्यकता का अनुभव किया गया है जहां वे देश की समस्याओं पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार कर सकें। प्रस्तावित मंच का नाम हिन्दुस्तान राष्ट्रवादी मंच रखा गया है। इस मंच के सदस्य किसी भी राजनैतिक पार्टी से सम्बद्ध होकर सक्रिय राजनीति में भाग लेने के लिए स्वतन्त्र होंगे।

३२६, फैज रोड	डा० मदनमोहन चोपड़ा
करौल बाग	संयोजक
नई दिल्ली-५	हिन्दुस्तान राष्ट्रवादी मंच

सार्वदेशिक नया प्रकाश देता है

महोदय,

आपका पत्र हमारे सभी साथियों को काफी रोचक व ज्ञानवर्द्धक तथा नया प्रकाश देने वाला है। बच्चे, बूढ़े व महिलाएं इसे पढ़ते हैं, मनन करते हैं व दूसरे साथियों को इसका ज्ञान करवाते हैं।

आशा है कि आप स्वामी दयानन्द जी के मिशन को बहुत आगे ले जायेंगे।

नव वर्ष सार्वदेशिक के सम्पादक मण्डल के लिए मंगलमय हो—यही कामना करता हूं। —सज्जन सिंह, वीरपुर (नारनौल)

सम्पादकीय अग्रलेख प्रशंसनीय

महोदय,

"सार्वदेशिक" का "सत्यार्थप्रकाश विशेषांक" वास्तव में सुन्दर और आकर्षक है। सभी लेख शिक्षाप्रद एवं पठनीय हैं। सम्पादकीय अग्रलेख का तो अपना अलग ही महत्व है। इस अंक से सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में काफी जानकारी प्राप्त हुई। 'सार्वदेशिक' के विशेषांकों की धूम रहती है। यह विशेषांक भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है।

यह पत्र वैदिक विचारधारा एवं ऋषि दयानन्द सरस्वती जी के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प है। इस विशेषांक के प्रकाशन पर मेरी बधाई।

—रामकुमार आर्य

ग्राम जोशी चौहान, सोनीपत

महाराष्ट्र में आर्य वीर दल के बढ़ते चरण

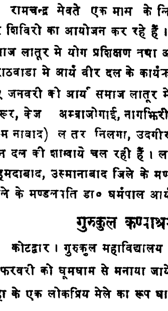
सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उप प्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य गत १६ नवम्बर से ३० जनवरी तक महाराष्ट्र के मराठवाडा क्षेत्र में आर्य वीर दल के शिविरों का आयोजन कर रहे हैं। इनके नेतृत्व में १६ से २५ नवम्बर तक किल्ले धारूर (जि० बीड) में १५० आर्य वीरों का शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात् परली बैजनाथ, उदगीर और निलंगा में शिविर लगे, जिनमें ३५० आर्य वीरों ने भाग लिया। उदगीर में १७ दिसम्बर को हुतात्मा भाई श्यामलाल के स्मृति दिवस पर ११० आर्य वीरों द्वारा आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन किया गया। आर्य वीर दल के शिक्षक श्री रामचन्द्र सेवते एक मास के लिए निलंगा ताल्लुका में विभिन्न स्थानों पर शिविरों का आयोजन कर रहे हैं। ३० जनवरी तक आचार्य जी आर्य-समाज लातूर में योग प्रशिक्षण तथा आर्य वीर दल का शिविर चला रहे हैं। मराठवाडा में आर्य वीर दल के कार्यक्रम को सुचारु रूप में चलाने के लिए २५ जनवरी को आर्य समाज लातूर में बैठक हो रही है। इस समय किल्ले धारूर, केज अम्बाजोगाई, नागझिरी, परली बैजनाथ, गुरुकुल येडशी (जि० उस्मानाबाद) लातूर निलंगा, उदगीर और बोरोल (जि० लातूर) में प्रति-दिन दल की शाखायें चल रही हैं। लातूर जिले के मण्डलपति श्री भाऊराव, अहमदाबाद, उस्मानाबाद जिले के मण्डलपति आचार्य सुभाषचन्द्र और बीड जिले के मण्डलपति डा० धर्मपाल आर्य नियुक्त किये गये हैं।

गुरुकुल कण्वाश्रम में वसन्तोत्सव

कोटद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम में वसन्तोत्सव ३, ४ और ५ फरवरी को धूमधाम से मनाया जायेगा। गुरुकुल के इस वसन्तोत्सव ने यहां के एक लोकप्रिय मेले का रूप धारण कर लिया है।

१६ ईसाई परिवारों की शुद्धि

बामनिया (जिला झाबुआ) पिछले ३० दिसम्बर को उमरी गांव में १६ ईसाई परिवारों को शुद्ध करके उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया।



बम्बई के सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता

दानवीर श्री सदाजीवतलाल चन्दूलाल बहल

जिनका पिछले दिनों निधन हो गया।

पंजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२५-१-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No.U 93 Post in D.P S.O.'on 23-1-1987

आर्य वीर दल की आवश्यकता

—ब्रह्मचारी अनिल कुमार आर्य, व्यायाम प्रशिक्षक,
सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नागपुर—

आज विश्व विषम परिस्थितियो मे से गुजर रहा है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का विनाश चाहता है। एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय को नष्ट करने पर तुला है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को सुखी नही देखना चाहता। मानवता और धर्म को छोडकर आज का मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत न जाने क्या क्या कर रहा है। अपने ही देश को लीजिए। आज पशुता चरम सीमा पर पहुच रही है दिन प्रतिदिन न जाने कितने निरपराध पुरुषो स्त्रियो और गाय जैसे उपयोगी पशुओ को मारा जाता है। मतान्ध लोग पूरी तैयारी के साथ देश की एकता और अखण्डता को नष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह सब हो रहा है और हम लोग चुप्पी साधे अत्याचार सहन कर रहे है। समाज इसका विरोध क्यो नही करता? विद्वानों ने कहा है कि अत्याचार करने वाले से अत्याचार सहने वाला अधिक पापी होता है। यह जानते हुए भी अत्याचार सहे जा रहे हैं। आखिर यह सब क्यो?

यदि हम गम्भीरतापूर्वक इन प्रश्नो का उत्तर खोजना चाहें तो एक ही उत्तर मिलेगा—आज समाज में ऐसे श्रेष्ठ पुरुषो की कमी है, जो सत्य की रक्षा के लिए गुण्डों का दमन कर सकें। दूसरे शब्दों में कहिए कि आर्य वीरों का अभाव है।

संसार मे तीन प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं—गुण्डे सत्य भीरु तथा वीर पुरुष। प्रथम प्रकार के पुरुष होते हैं, जो स्वार्थान्धता के कारण उचित अनुचित का ध्यान नही रखते [illegible], धर्मनिरपेक्षता की आड मे जनता को परेशान करना ही इनका [illegible] है। इनके सार्वभौम सगठन हैं। दूसरे प्रकार के पुरुष होते हैं, जिन्हें [illegible] कहते हैं। ये राष्ट्र विरोधी कार्य नहीं करते बल्कि गुण्डो का दमन चाहते हैं परन्तु स्वय कुछ कर नही सकते क्योंकि मृत्यु से डरते हैं। इनमे आत्मबल और सगठन की कमी है। तीसरे प्रकार के पुरुष वे होते हैं जो मृत्युस [illegible] सत्य की रक्षा के लिए अपने प्राणो की बाजी लगा देते हैं। [illegible] आत्मबल और विरोध की भावना कूट कूट कर भरी होती है। आज ऐसे व्यक्तियो का प्राय अभाव है। यदि ऐसे व्यक्ति हैं भी तो असगठित हैं। इस कारण गुण्डो का दमन नही हो रहा। अतएव आर्य वीर दल के माध्यम से हम हमें ऐसे ही श्रेष्ठ वीर पुरुषो का सगठन तैयार करना है। यदि हम आज के परिवेश मे चूक गये तो हमे सदा सदा के लिए पछताना पडेगा।

वैदिक धर्म के अनुसार समाज को चार प्रकार के व्यक्ति चाहिए—शिक्षक रक्षक, पोषक और सेवक अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र। आर्यसमाज के उपदेशक ब्राह्मण का कार्य करते हैं और शेष वैश्य तथा शूद्र बने हैं। क्षत्रिय कोई दिखाई नही देता। समाज मे जितना महत्त्व ब्राह्म बल का है उतना ही क्षात्र बल का है। जिस कार्य को ब्राह्मण वाणी द्वारा प्रचारित करता है, क्षत्रिय उसकी रक्षा शक्ति से करता है। ब्राह्मण और क्षत्रिय समाज के दो पहिये हैं। यदि एक भी टूट गया तो समाज मे अव्यवस्था फैल जायेगी, जैसा आज पंजाब, कश्मीर और अन्य राज्यों मे हो रहा है। यदि आज वीर पुरुष होते तो ये समस्यायें जन्म ही न लेती अर्थात् यदि आर्य वीर दल होता तो ये समस्यायें सिर नही उठाती।

परन्तु आश्चर्य है कि आर्यसमाज जो वेद के आधार पर चलता है, उसने भी ब्रह्म क्षात्र धर्म का प्रचार विशेष रूप से नही किया। प्रत्येक आर्यसमाज आर्य वीर दल की स्थापना अवश्य करे और दुष्टों का नाश तथा श्रेष्ठो का पालन करने से पीछे न हटे।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २२ अंक ६] माघ शु० ३ स० २०४३ रविवार १ फरवरी १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

पाकिस्तान से लगती भारतीय सीमा पर सेना तैनात किये जाने का स्वागत

सुरक्षा की खातिर बरनाला सरकार को बर्खास्त करने की मांग

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का प्रधानमन्त्री के नाम पत्र

दिल्ली, २४ जनवरी। भारत सरकार द्वारा पजाब की सीमा पर सैनिक कार्रवाई और पाकिस्तानी आक्रमण से किये जा रहे सुरक्षा प्रबन्धो की सराहना करते हुए सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी को बधाई का पत्र भेजकर उनसे निवेदन किया है कि देश पर बाहरी हमले की स्थिति मे आतरिक खतरे से निपटने के लिए पजाब मे बरनाला सरकार को बर्खास्त करके राष्ट्रपति शासन द्वारा सारे सीमा क्षेत्र को फौज के हवाले करने का समय आ गया है।

स्वामी जी ने अपने पत्र मे प्रधानमन्त्री से जोरदार शब्दो मे निवेदन किया है कि देश मे सच्ची राष्ट्रीय एकता के बिना बाहरी हमले का सामना करना कठिन होगा। पिछले अनुभव से और श्री बरनाला और उनके साथियो की उग्रवादी गतिविधियो से सहानुभूति तथा सुरक्षा पटटी का खुले रूप मे विरोध करने से सारी स्थिति स्पष्ट हो चुकी है। अत आपके इस सुदृढ कदम का देश की राष्ट्रवादी जनता प्रबल समर्थन करेगी। इस राष्ट्रीय सुरक्षा के काम मे देरी करना भविष्य के लिए खतरनाक हो सकता है।

स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री को बधाई देते हुए, उनके द्वारा उठाए गये साहसिक कदम की सफलता की कामना की है।

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

आर्य संन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी दिवंगत

आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी २२ जनवरी को वेद मन्दिर जालन्धर मे दिवगत हो गये। स्वामी जी का सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज की सेवा मे व्यतीत हुआ था और अन्तिम समय मे आप जालन्धर को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर अधिकतर वही निवास करते थे।

आपका जन्म मीरपुर (जम्मू कश्मीर) मे हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। उसके बाद आप मना र कार्यालय मे क्लर्क हो गये। आप स्वामी आत्मानन्द जी के सान्निध्य मे आये और गुरुकुल पोठोहार मे उन्ही के पास रहकर विद्याध्ययन करने लगे। इसके बाद उन्होने ब्राह्म महाविद्यालय (लाहौर) मे पडित रामगोपाल शास्त्री से शिक्षा ग्रहण की। विद्याध्ययन के पश्चात् आप गुरुकुल जेहलम के आचार्य पद पर नियुक्त हुए और भारत के विभाजन तक उसी गुरुकुल की सेवा करते रहे।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान पद पर भी आसीन रहे। उसके बाद आप पजाब जनसघ के अध्यक्ष रहे। तब तक आप आचार्य रामदेव के नाम से प्रसिद्ध थे। पजाबी सूबे की स्थापना की घोषणा पर आपने दिल्ली मे आमरण अनशन किया था। तब आप सन्यास ग्रहण कर चुके थे और आर्य जगत् मे स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने सभा कार्यालय मे हुई शोक सभा मे उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि स्वामी सत्यानन्द जी का निधन आर्य जगत् की एक अपूरणीय क्षति है। उनकी सेवाये आर्य समाज को सदैव प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। सार्वदेशिक परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

— सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

विशेष लेख

भारतीयों में आत्मरक्षा की भावना भरें

–सच्चिदानन्द शास्त्री–

राष्ट्र निर्माण के लिए आर्यसमाज जो कार्य करता है, वह भारत की जनता मे भारतीयता भर देने का है। आज भारत में भारतीयता खतरे मे है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्" सरीखे नारो की दुहाई हमे कमजोर बनाती जा रही है। हमारी मनोवृत्ति मे भारत और भारतीयता के प्रति जो श्रद्धा चाहिये, वह नही दीख पडती। अपने राष्ट्र के प्रतिद्वन्द्वियो के प्रति हम आत्मघाती गलत उदारता की मनोवृत्ति रखने मे तत्पर हैं। इस सबका जो परिणाम होता है, उसके लक्षण दिखाई पडने लगे हैं।

प्रत्येक स्वाभिमानी को अपनी स्वतन्त्रता के प्रति सदा ही जागरुक रहना चाहिये, परन्तु आज जिन परिस्थितियो से हमे दो-चार होना पड रहा है, उनमे तो इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

आज हिन्दू मुसलमान मे तथा हिन्दू सिख मे जो भावनात्मक खाई खोदी जा रही है वह हमारे भविष्य के खतरे की घन्टी है।

आज गणतन्त्र दिवस के विरोध का यह पहला अवसर नही। पहले भी हमारे राष्ट्रीय पर्वों का बहिष्कार किया गया है। भारत के उत्तर पश्चिम सीमावर्ती क्षेत्रो के कुछ भागो मे स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर काले झण्डे दिखाये गये। तमिलनाडु मे द्रविडमुन्नेत्र कडगम के कट्टरपन्थियो ने सविधान की प्रतियो को जलाया था।

अकालियो ने भी सविधान की अवहेलना की थी। लेकिन भारतीय नागरिकता के प्रति खुली चुनौती नम्बर दो के नागरिक शहाबुद्दीन द्वारा की गई। बहिष्कार के आह्वान की तीव्र प्रतिक्रिया देश के जातीय लोगो मे हुई। क्योकि यह अपील मुस्लिम समुदाय की गई है, इसलिए लोगो के मनो में विभाजन के पूर्व की स्मृतिया ताजी हो गई। (यह ठीक है कि कुछ मुस्लिम सगठनो मे इसके विपरीत भी प्रतिक्रिया हुई है और उन्होने इसकी कठोरतम निन्दा भी की है।) अराष्ट्रीयता के बीज बोये जा रहे हैं और सरकार उन्हे खुलकर खेलने का अवसर दे रही हैं। आप कितनी बार आख बन्द करके यह सब देखेंगे उदारता की भी एक सीमा है।

पृथ्वीराज ने एक बार गोरी के प्रति उदारता दिखाई थी। (यह एक ऐतिहासिक घटना है।) इस प्रकार की झूठी उदारता की मनोवृत्ति का घातक परिणाम हो सकता है। देश चारो ओर से सकटापन्न स्थिति से घिरता चला जा रहा है। धर्म के नाम पर आज जो खेल खेला जा रहा है।

इसे राष्ट्र के नेता चाहे अनुभव न करें परन्तु विगत इतिहास की भूलो की भाति आने वाली पीढीको इसके परिणामभुगतने पडेंग। यदि इससे बचना है,तो अराष्ट्रीय तत्त्वो की मनोभावनाओ को बदलना होगा या उन्हे सख्ती से कुचलना होगा।

किन्ही एक दो व्यक्तियो अथवा राजनैतिक सस्था को दोष देना निष्प्रयोजन है। हमारे नेता और अधिकारी हमारी सम्पूर्ण जनता के सामूहिक विचारधारा का प्रतीक है।

अत इन विषयो मे नेताओ का दृष्टिकोण बदलना होगा। दूसरी ओर जैसी हमारी सामूहिक भावनायें होगी, उन्ही भावनाओं वाले हमारे अगुआ होगे। यह अपरिहार्य है। इसमे परिवर्तन लाना सरल नहीं। कार्य कठिन और मार्ग कण्टकाकीर्ण है। सम्पूर्ण जनता की मनोवृत्ति की बात है। इसमें वाहवाही की परवाह न करने वाला सुसगठित नि स्वार्थ समुदाय ही कार्य कर सकता है और मेरी दृष्टि में ऐसी सस्था आर्यसमाज ही है। उपरोक्त परिस्थितियो मे परिवर्तन लाने का काम कर भी रहा है केवल आर्यसमाज ही।

अलगाववादी प्रवृत्तिया पुन मि० जिन्ना के पथ का अनुकरण कर रही हैं और आजादी से पूर्व की स्थिति पुन उत्पन्न की जा रही है। यदि इन सब बातो पर गम्भीरता से विचार न किया गया, तो भारत मे अलगाववादी शक्तिया भारत को पुन विभाजन के कगार पर खडा कर देंगी। ●

नव्य वेदांत यह बात कल्पित कही

जीव होकर बना अश ईश्वर का है, नव्य वेदान्त यह बात कल्पित कही।
हेतु इसके लिये जो दिये जा रहे, तर्क की क्या कसौटी पै कसते नही॥
सिन्धु से भिन्न होकर बना बिन्दु है, सिन्धु मे जा मिला यदि वही बिन्दु जब,
बिन्दु जब तक रहा सिन्धु से था अलग, सिन्धु मे मिल बना बिन्दु ही सिंधु तब,
मृतिका से अनेको हैं घट बन रहे, टूट कर घट सभी मृतिका ही रहे,
स्वर्ण से आभूषण हैं अनेको बने, नष्ट भूषण सभी स्वर्ण जाते कहे,
युक्तिया सभी कार्य कारण की हैं, जीव ईश्वर की सत्ता अमर अब रही।
जी होकर बना अश ईश्वर का है, नव्य वेदान्त यह बात कल्पित कही॥
जीव को ईश करने का षडयन्त्र यह, तर्क सम्मत न वेदान्तवादी का है,
कार्य मे गुण हैं कारण के आते रहे, शास्त्र का सूत्र ऐसा कारादी का है,
जीव सत्-चित सदा एकदेशी रहा, ईश तो सच्चिदानन्द सर्वत्र है,
ईश सर्वज्ञ है जीव अल्पज्ञ है, ईश स्वाधीन है जीव परतन्त्र है,
जीव होता अगर अश ईश्वर का तो, जीव भी सच्चिदानन्द होता यही।
जीव होकर बना अश ईश्वर का है नव्य वेदान्त यह बात कल्पित कही॥
जीव का गुण स्वाभाविक व आनन्द है, दुख भी जीव का गुण स्वाभाविक नही,
मुक्ति भी जीव का गुण स्वाभाविक न है और होता स्वाभाविक न बन्धन कही,
मुक्ति बन्धन तथा दुख आनन्द ये जीव के गण सभी हैं नैमित्तिक रहे,
प्रकृति के सग से जीव बन्धन पडे, ईश ससर्ग से मुक्ति का पथ गहे,
जिस तरह बर्फ से वस्तु ठण्डी बने अकर्म पद जा के है हवन होती वही।
जीव होकर बना अश ईश्वर का है, नव्य वेदान्त यह बात कल्पित कही॥
हेतु यह भी दिया जा रहा लोक मे, और दृष्टान्त है यह तो प्रचलित बडा,
एक देशी रहा सूर्य आकाश मे जल भरे भूमि पर बहुत रखा घडा,
जिस घडे को भी अवलोको जाके अगर सूर्य का ही तो प्रतिबिम्ब आता नजर,
जीव भी बिम्ब प्रतिबिम्ब है ईश का, जीव की स्वय सत्ता न होती अगर,
पक्ष प्रस्थापना के लिए तत् समय, बौद्ध मत को यही युक्ति शकरगही।
जीव होकर बना अश ईश्वर का है, नव्य वेदान्त यह बात कल्पित कही॥
बुद्ध सत्ता न ईश्वर की थे मानते, शकराचार्य ने सिद्ध ईश्वर किया,
कार्य निज छोड शकर अधूरा गये, ध्यान इस पर न वेदान्तियो ने दिया,
जीव और ईश की एकता का स्वमत, शकराचार्य का था तो अच्छा न था,
ब्रह्म है सत्य मिथ्या जगत् यह सभी, पक्ष आचार्य शकर का सच्चा न था,
शकराचार्य की तब प्रबल तर्क से, हो गई बौद्ध मत शून्य सारी मही।
जीव होकर बना अंश ईश्वर का है, नव्य वेदान्त यह बात कल्पित कही॥
ब्रह्म की सिद्धि मे शकराचार्य ने, जीव और प्रकृति की कर उपेक्षा वई,
शकराचार्य के बाद तो देश मे, सृष्टि सी रच गई मत पथो की नई,
मत-पथो के ही कारण भरत खण्ड को, हाथ स्वाधीनता से भी धोने पडे,
दासता और अज्ञान के पाश तो, ऋषि दयानन्द को आन खोलने पडे,
जीव ईश्वर प्रकृति की त्रिसत्ता को ऋषि, कर गये श्रुतिसुधा वृष्टि से वहजही।
जीव होकर बना अश ईश्वर का है, नव्य वेदान्त यह बात कल्पित कही॥

—सत्यव्रत चौहान सिद्धान्त शास्त्री

४८ वर्ष पूर्व, आज के दिन

आज (जिस दिन ये पंक्तियां लिखी जा रही हैं) २२ जनवरी है। आज से ४८ वर्ष पूर्व ठीक आज ही के दिन आर्यसमाज ने हैदराबाद में सत्याग्रह प्रारम्भ किया था।

अब जब भारत सरकार ने इस सत्याग्रह के सत्याग्रहियों को सम्मान पेन्शन देने का फैसला किया है, इस सत्याग्रह की पृष्ठभूमि और इतिहास की जानकारी देना अप्रासंगिक न होगा।

यह सत्याग्रह सन् १९३९ में आर्यसमाज द्वारा निजाम सरकार से धार्मिक और नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए किया गया था। निजाम के शासन में आर्यसमाजी प्रचारकों, आर्यसमाज की सभाओं तथा जुलूसों, यज्ञशालाओं, नगर कीर्तनों, भाषणों, लेखों, प्रार्थनाओं, धार्मिक कार्यक्रमों आदि पर प्रतिबन्ध था। आर्यसमाजी नेताओं, विद्वानों व कार्यकर्त्ताओं को चुन-चुन कर रियासत से निष्कासित किया जा रहा था। कोर्ट में केस करके उन्हें अकारण जेलों में ठूंसा जा रहा था। सरकार के इन क्रूर अत्याचारों के विरोध में आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली की ओर से अनेक विरोधपत्र देने के उपरान्त भी जब अत्याचारों में कमी न आई तो आर्य जनता को शांतिपूर्ण संघर्ष के लिए बाध्य होना पड़ा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्याग्रह के सचालन के लिए आर्य रक्षा समिति का गठन किया। किन्तु इससे पूर्व कि समिति कोई पग उठा पाती, निजाम सरकार ने हैदराबाद आर्यसमाज के सर्वाधिक प्रभावशाली एवं कर्मठ नेता पंडित नरेन्द्र को गिरफ्तार कर कोर्ट में बिना कोई केस चलाये तीन वर्ष के लिए मनानूर जेल भेज दिया। पंडित जी की गिरफ्तारी निजाम के लिए आत्मघाती सिद्ध हुई। इस गिरफ्तारी से आर्य जनता क्रुद्ध हो उठी एवं इसके विरोध में स्थानीय आर्य जनता ने सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान महात्मा नारायण स्वामी ने समस्त भारत की आर्य जनता की सम्मति लेने के लिए २३ दिसम्बर १९३८ को शोलापुर में अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन की अध्यक्षता महाराष्ट्र के प्रख्यात नेता (अब स्वर्गीय) श्रीयुत माधव श्रीहरि अणे ने की। सम्मेलन ने एक मत से हैदराबाद की आर्य जनता के सत्याग्रह एवं उसकी मांगों को उचित ठहराया। आर्य जनता की भावना को दृष्टिगत रखते हुए स्वामी जी ने स्पष्ट रूप से सत्याग्रह की घोषणा कर दी तथा साथ ही धार्मिक क्रियाकलापों पर से प्रतिबन्ध हटाने एवं अन्य नागरिक अधिकारों की प्राप्ति सम्बन्धी एक प्रस्ताव भी निजाम सरकार को प्रेषित कर दिया।

सत्याग्रह के प्रथम अधिनायक के रूप में बीस सत्याग्रहियों सहित नारायण स्वामी जी ने अपनी गिरफ्तारी दी। निजाम सरकार ने स्वामी जी और उनके साथियों को एक-एक वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया।

भारत के प्रसिद्ध समाजसेवी कुंवर चांदकरण जी शारदा ने सत्याग्रह के द्वितीय अधिनायक के रूप में अपनी गिरफ्तारी दी। शारदा जी की गिरफ्तारी के उपरांत पंजाब की प्रादेशिक सभा के प्रधान महाशय खुशहाल चन्द जी सत्याग्रह के तृतीय अधिनायक नियुक्त हुए। आपने १५४ सत्याग्रहियों के साथ गिरफ्तारी दी उन्हें एक वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया।

चतुर्थ अधिनायक के रूप में आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री ने २२ अप्रैल को अपने ५३१ साथियों सहित गिरफ्तारी दी। आपको एक वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया।

चूंकि सत्याग्रह को समस्त भारत का नैतिक समर्थन प्राप्त था अतः स्थिति की भयकरता को भांप कर निजाम सरकार ने समझौते में ही अपना हित समझा।

पर इससे पूर्व कि निजाम सरकार एवं सत्याग्रह समिति में समझौता हो पाता, कट्टर लीगी मुसलमानों ने निजाम पर दबाव डालकर समझौता प्रयासों को विफल कर दिया।

पचम अधिनायक बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान वेदव्रत जी के नेतृत्व में ५३४ व्यक्तियों ने सत्याग्रह कर अपनी गिरफ्तारियां दी। उल्लेखनीय है कि वेदव्रत जी के साथ श्री फौजअली एवं पांच सिख सज्जनों ने भी गिरफ्तारी दी।

दैनिक प्रताप के सचालक महाशय कृष्ण ने १९३९ सत्याग्रहियों सहित औरंगाबाद में छह जून को छठे अधिनायक के रूप में अपनी गिरफ्तारी दी। महाशय कृष्ण की गिरफ्तारी के बाद सप्तम अधिनायक पं० ज्ञानेन्द्र ने गुलबर्गा में अपने १७० साथियों सहित २३ जून को सत्याग्रह कर गिरफ्तारी दी। आप सभी को ६ महीने के कारावास का दण्ड मिला।

हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पंडित विनायकराव विद्यालंकार के नेतृत्व में २१०० सत्याग्रही २१ जुलाई को सत्याग्रह करने ही वाले थे कि निजाम सरकार ने अपने एक वक्तव्य द्वारा आर्यसमाज की सभी मांगें मानने एवं नये सुधार शीघ्र लागू करने की घोषणा कर दी।

जेल में सत्याग्रहियों पर बहुत अत्याचार किए गए। अभी हाल में प्रख्यात पत्रकार पंडित क्षितीश वेदालंकार ने 'निजाम की जेलों में छह मास' नामक एक संस्मरणात्मक पुस्तक लिखी है। अनेक सत्याग्रही सत्याग्रह की समाप्ति तक जेल में ही शहीद हो गए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के रिकार्ड के अनुसार सत्याग्रह में २४ सत्याग्रहियों का बलिदान हुआ।

—वीरेन्द्र कुमार आर्य

'पाक को अवाक्स दो' रैली में सिख भी

न्यूयार्क। छह सिखो सहित पचास लोगो ने यहा भारतीय वाणिज्य दूतावास के सामने प्रदर्शन किया। वे पाकिस्तान को अवाक्स विमान की बिक्री के लिए समर्थन व्यक्त कर रहे थे।

प्रत्यक्षदर्शियो के अनुसार यहा स्थित अनेक पाकिस्तान समर्थक सगठनो ने पाकिस्तान को अवाक्स बेचने के समर्थन मे चलाए जा रहे अभियान के अन्तर्गत यह रैली आयोजित की।

इस रैली मे इस क्षेत्र मे रह रहे छह सिखो और अनेक अफगान आप्रवासियो ने भाग लिया।

पाकिस्तान समर्थक अभियान उस समय सामने आया, जब अमरीका मे रह रहे भारतीय समुदाय के लोगो ने इस्लामाबाद को आवाक्स बेचे जाने का विरोध किया।

भारतीय राजनयिक सूत्रो के अनुसार भारतीय वाणिज्य दूतावास के बाहर ६ सिखो सहित पचास प्रदर्शनकारियो ने पाकिस्तान समर्थक नारे लगाए।

प्रदर्शनकारियो ने पर्चे भी बाटे, जिनमे सरकार पर आरोप लगा गया कि वह देश मे मुसलमानो के साथ भेदभाव बरत रही है।

इन पर्चों मे यह भी दावा किया गया है कि भारत मे आजादी से लेकर अब तक छह हजार साम्प्रदायिक दगे हुए हैं और इन कथित दगो में लगभग पांच लाख अल्पसख्यक लोग मारे गए हैं।

पाक समर्थको की रैली मे मुख्य नारे थे—सोवियत साम्राज्य समाप्त करने के लिए पाकिस्तान को अवाक्स बेचने को ही कहो। भारत को सुपर कप्यूटर बेचने को 'न कहो, क्योकि इससे अमरीक तकनीकी सोवियत सघ चली जाएगी।

भारत ने सुपर कप्यूटर प्राप्त करने की इच्छा केवल अपने मौसम विभाग को और अधिक प्रभावशाली बनाने की दृष्टि से की है।

पाक-समर्थको द्वारा इन रैलियो को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य अमरीकी नागरिको का भी समर्थन प्राप्त करना है ताकि वे अमरीकी प्रशासन पर पाकिस्तान को अवाक्स बेचने के लिए दबाव डाल सकें।

भारत ने पाकिस्तान को अवाक्स बेचने का जोरदार विरोध किया है। उसका कहना है कि इससे इस क्षेत्र मे पुन हथियारो की ताजा होड का सूत्रपात होगा।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस १२ फरवरी को

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म १२ फरवरी, १८२५ तदनुसार फाल्गुन बदि दसमी, शनिवार, सवत् १८८१ को हुआ था। इस तिथि का निर्णय सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा ने बहुत अनुसधान के बाद सन् १९६० मे किया था। सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा (२ अप्रैल १९६७) द्वारा इसकी पुष्टि की गई थी। पुन १४ दिसम्बर, १९८६ की अन्तरग सभा की बैठक ने इस तिथि की सपुष्टि की है। जिन महानुभावो को इस सम्बन्ध में जानकारी न हो, उनकी जानकारी के लिए ही यह सूचना है। सभी आर्य-समाजें अपने यहां १२ फरवरी को महर्षि दयानन्द जन्म दिवस समारोह का आयोजन उत्साह के साथ करें। —स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

विस्थापितों के लिए सरकारी अनुदान : क्या इसका सदुपयोग होगा ?

अमृतसर, २० जनवरी। पजाब सरकार ने ४ करोड रुपये से भी अधिक की राशि आतकवादियों द्वारा मारे गये व्यक्तियों, सुरक्षा बलों द्वारा और ब्लू "स्टार" आपरेशन में मारे गये व्यक्तियो के परिवारों में बांटने के लिए स्वीकृत की है।

राज्य के वित्तमन्त्री मेजरसिंह उबोके के कथनानुसार अगस्त सन् १९८२ से नवम्बर १९८६ तक आतकवाद से प्रभावित सभी परिवार इस अनुदान के अधिकारी होंगे। इसमे धर्म, जाति और वर्ण के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नही बर्ता जायेगा।

सतही तौर पर देखने मे तो पजाब सरकार का यह वक्तव्य धर्म-निरपेक्षता की भावना से भरा हुआ मालूम होता है, लेकिन बरनाला सरकार के अब तक के कार्यों के अनुभव के आधार पर यह कहना कठिन नहीं कि इसका वास्तविक लाभ किसे मिलेगा ? एक पुरानी कहावत है 'अन्धा बाटे रेवडी, मुड-मुड अपने को दे।" इस अनुदान का अधिकाश लाभ पजाब मे दूसरे राज्यो से आये सिख विस्थापित परिवारो और उन सिख उद्योगपतियों को मिलेगा, जिसकी सफाई दगो मे आर्थिक क्षति हुई है। कितने हिन्दू परिवार इस अनुदान का लाभ उठा सकेंगे, यह ईश्वर ही जानता है या फिर बरनाला सरकार।

बिहार के आदिवासी क्षेत्र में शुद्धि

गुमला (बिहार)। गुमला जिले की सिमडेगा तहसील के अन्तर्गत ग्राम पोजेंगा के श्रीराम रेखाधाम में श्री रुस्तम अनसारी की पुत्री रजिया अन्सारी को शुद्ध करके उसका नाम रजनी कुमारी रखा गया। उसका विवाह इसी ग्राम के श्री छत्रपाल सिंह के साथ कर दिया गया।

याद रहे कि यह आदिवासी क्षेत्र है।

महाशय धर्मपाल पुनः आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान निर्वाचित

नई दिल्ली। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के चुनाव मे सर्वसम्मति से महाशय धर्मपाल जी प्रधान और श्री राजेन्द्र दुर्गा महामन्त्री निर्वाचित हुए। कार्यकारिणी के गठन का अधिकार भी उपर्युक्त दोनो महानुभावोको सौंपागया। निर्वाचन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के सभापतित्व मे सम्पन्न हुआ। स्वामी जी ने उपस्थित सभासदो को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमे देश की एकता और अखण्डता के लिए मिलकर काय करना है।

महंगाई रोकने के लिए सरकारी खर्चों में कमी आवश्यक

—काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)—

देश मे एक ओर जहा भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, कालाबाजारी और महगाई से जनता त्रस्त है वहा दूसरी ओर सरकारी खर्च और उसके परिणामस्वरूप रेल-भाडा, डाक-तार शुल्क और करो में वृद्धि से जनता पिसी जा रही है। इन सबका मुख्य कारण अनाप शनाप सरकारी खर्च हैं। सरकार की फजूलखर्ची के अभी कुछ दिन पहले के कतिपय कारनामे इस प्रकार हैं—

(१) राज्यसभा मे स्वय खेल राज्य मन्त्री श्रीमती मारग्रेट अलवा के बताये अनुसार सियोल के एशियाई खेलों मे भाग लेने गये प्रति खिलाडी पर लगभग ६० हजार रुपये खर्च हुए। यो तो ३२०-सदस्यीय भारतीय खिलाडी दल सियोल गया था। परन्तु यदि सरकारी रिपोर्ट को ही सही माना जाये तो भी भाग लेने वाले १८६ खिलाडियो को सरकार द्वारा भुगतान किया गया। इस प्रकार ३०,००० × १८६ = ५५ ८०,००० (५५ लाख ८० हजार) रुपये खर्च हुए। तिस पर भी दो चार (मुख्यत पी० टी० उषा) को छोडकर शेष सभी भारतीय खिलाडियो ने सियोल के एशियाई खेलो मे घटिया प्रदर्शन किया, जबकि इन खिलाडियो द्वारा अच्छे प्रदर्शन के लिए सरकार ने अपनी तरफ से पूरे प्रयास किये अर्थात् दो वर्षों मे १५५ प्रशिक्षण शिविर लगाये और ११९ विदेशी विशेषज्ञो की सेवा ली गई। इस तरह खिलाडियो के प्रशिक्षण मे कितना पैसा खर्च हुआ होगा, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

(२) देश की सास्कृतिक एकता के नाम पर दिल्ली मे 'अपना उत्सव' मनाया गया, जिसमे चार हजार कलाकार डेढ महीना पहले से लगभग एक महीना उत्सव होने तक कुल अढाई महीने दिल्ली मे डटे रहे, जिसमे अधिकारी व्यक्तियो के कथनानुसार १० करोड रुपये खर्च हुए, किन्तु सुपरिणाम कुछ भी न निकला। इधर हमारे नेता और मन्त्री दिल्ली मे नाच तमाशा देखते रहे और उधर पजाब में आतकवादी प्रतिदिन चार-छह या अधिक को मारते रहे। सास्कृतिक एकता हेतु किये गये 'अपना उत्सव' के सुपरिणाम का परिचय आतकवादियो ने टाडा (जिला होशियारपुर) मे २४ निरपराध बस यात्रियों को गोलियों से भून कर दिया। भारत का यह सास्कृतिक मेला अब रूस में होने जा रहा है। वहा भी कलाकारो को भेजने आदि में कितना अपव्यय होगा, यह विचारणीय है।

इन सब फजूलखर्चियों से उत्पन्न घाटे को पूरा करने के लिए सरकार नये-नये कर लगाती और रेल भाडा डाक तार शुल्क इत्यादि बढाती चली जाती है। परिणामस्वरूप ज्यों-ज्यों सरकारी कर और शुल्क बढते हैं, त्यों-त्यो महगाई बढती जाती है। आम जनता को महगाई किसी तरह चुपचाप सहन करनी ही पडती है, परन्तु सरकारी कर्मचारी चिल्लाने लगते हैं कि हमारा वेतन और महगाई भत्ता बढाओ। सरकार को उनकी मागो के आगे झुकना पडता है। किन्तु जब कर्मचारियो के वेतनादि बढते हैं तो व्यपारी वर्ग भी कीमतें बढाता है। कीमतो के बढने पर महगाई और बढती है। इस तरह सरकारी खर्चों की वृद्धि के परिणामस्वरूप कर शुल्क-वृद्धि, शुल्कादि की वृद्धि के परिणामस्वरूप महगाई, महगाई के परिणामस्वरूप कर्मचारियो के वेतनादि में वृद्धि और पुन सरकारी कर, शुल्कादि की वृद्धि चलती रहती है अर्थात् जिस तरह रहट के डिब्बे एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा आते रहता जाता है, उसी तरह सरकारी खर्च मे वृद्धि और महगाई का मह चक्र बराबर चलता रहता है।

पहले पेट्रोल, गैस व डीजल की दरो मे वृद्धि हुई तो महगाई बढ गई। पुनः जब माल भाडी का भाडा बढा तो खाद्य पदार्थों, खाने के तेल इत्यादि के भाव दुगुने और तिगुने हो गये। यहां तक कि साग-भाजी के भी भाव आसमान को छूने लगे। व्यापारी तो केवल १०-१५ प्रतिशत ही भाव बढाते हैं, परन्तु सरकार तो १०० प्रतिशत और २०० प्रतिशत तक दाम बढाती है। उदाहरण के लिए जो समाचारपत्र अभी ५ पैसे के टिकट में जाता था, वह अब १५ पैसे में जायेगा। इसी प्रकार १० ग्राम तक वजन का लिफाफा जो ५० पैसे में जाता था, अब ६० पैसे मे जायेगा और लिफाफे की कीमत अतिरिक्त १० पैसे लिये जायेंगे। इसके बाद प्रत्येक दस ग्राम या उसके किसी अश पर अब २० पैसे के स्थान पर ४० पैसे की दर से अतिरिक्त टिकट लगेंगे। पहले जितने का टिकट कम लगा हो, उसका दुगुना बैरग का अधिभार देना पडता था। परन्तु अब यदि भूल से ५ पैसे का भी टिकट कम लगा हो तो एक रुपया देना पडता है। विडम्बना यह है कि अधाधुध भाडा और शुल्क-वृद्धि करने पर भी प्रतिवर्ष बजट मे करोडो रुपयो का घाटा ही बताया जाता है। अभी केन्द्रीय वित्तमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने आगामी वित्तीय वर्ष मे ५० अरब रुपयो का घाटा बने रहने की आशका व्यक्त की है। इसका कारण यह है कि सरकार की अन्य फजूलखर्चियो के अतिरिक्त डाक-तार इत्यादि जो विभाग सरकार के कमाऊ पूत समझे जाते हैं, उनके ही कर्मचारी ज्यादा चिल्ल-पो मचाते हैं और उन्हीं की मागे पूरी करने मे बढाया गया किराया व शुल्क समाप्त हो जाता है, जबकि कार्यकुशलता और कर्त्तव्यपरायणता मे लापरवाही करने मे उन विभागो के लोग किसी से कम नही।

पचवर्षीय योजनाओ और विकास कार्यों के लिए विदेशो से अरबो रुपये के जो कर्ज लिए गये, उनका ब्याज भी प्रतिवर्ष अदा नही हो पाता। परन्तु विदेशी कर्ज पर खडे किये गये उद्योगो से देश को लाभ कुछ भी नही हुआ। अस्तु दूसरे देशो का अनुकरण करते हुए विकास और आधुनिकीकरण के लिए और अधिक कर्ज लेना और पानी के समान पैसा बहाना बुद्धिमत्ता नही। इनके अतिरिक्त दिल्ली मे कोई न कोई सरकारी समारोह और सम्मेलन होते रहते हैं जिनमें बाहर के लोग भी आमन्त्रित किये जाते हैं। इन समारोहो और सम्मेलनो पर भी हजारो रुपयो का अपव्यय होता है। अतएव इन सम्मेलनो आदि को भी कम किया जाना चाहिए, क्योंकि आखिरकार इन सबका भार किसी न किसी रूप मे जनता को ही सहन करना पडता है।

आज भी जब भारत के सैकडो गावो मे पीने का पानी उपलब्ध नही है, आवागमन के साधन दुर्लभ हैं, हजारो व्यक्ति बडे शहरो में रात मे फुटपाथ पर सोते हैं और गरीब गरीबी की चक्की में पिसता चला जा रहा है तो करोडों रुपये खर्च करके नाच-गाने कराने का और हमारे नेताओ व मन्त्रियों के विदेशो का सैर-सपाटा करने का कोई औचित्य नही।

भारत सरकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने खर्चों को कम करे, विदेशो से कर्ज लेना बन्द करे और वेतनभोगियो के वेतन और महगाई भत्ते बढाने के स्थान पर चीजो के भावों मे कमी कराये। अन्यथा महगाई और गरीबी बढती जायेगी। ○

इस्लाम और कुरान पर सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव-३

–क्षितीश वेदालंकार–

यह कैसी तौहीद ?

यदि यह कहा जाये कि वेद मे भले ही विशुद्ध एकेश्वरवाद का निरूपण हो, किन्तु हिन्दुओ के दैनिक आचरण में बहुदेववाद ओत-प्रोत है, उसका निराकरण करने के निमित्त ही कुरान का अवतरण हुआ, तो यह भी सही नही। ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसकी पूजा केवल हिन्दू करते हो और मुसलमान न करते हो ? कब्रो, पेडो और पीरो की पूजा मुसलमानो मे कम तो नही है। प्रसिद्ध शायर मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली ने अपने मुसद्दस मे लिखा है—

कर गैर गर बुत की पूजा तो काफिर,
जो ठहरायें बेटा खुदा का तो काफिर।
झुक आग पर बहरे सिज्दा तो काफिर
कवाकब मे माने करिश्मा तो काफिर॥
मगर मोमिनो पर कुशादह हैं राहें
परस्तिश कर शौक से जिसकी चाहे।
नबी को जो चाहे खुदा कर दिखाये,
इमामो का रुतबा नबी से बढाय॥
मजारो पै दिन रात नजरे चढाये,
शहीदो से जा जा के माग दुआये।
न तौहीद मे कुछ खलल इससे आये,
न इस्लाम बिगडे न ईमान जाये॥

यदि मौलाना हाली को अपने हम-मजहब लोगो मे सुधार के लिए इस प्रकार की आलोचना का अधिकार है तो ऋषि दयानन्द को क्यो नही ? इसके अलावा एकेश्वरवाद का प्रबल समर्थक होने के बावजूद कुरान मे मुहम्मद साहब को बार-बार खुदा का रसूल कहकर और अपने कलमा मे मुहम्मद साहब को शामिल करके मुसलमानो ने एकेश्वरवाद को भी शुद्ध और साफ सुथरा कहा रहने दिया ? वेद में परमात्मा के साथ किसी मनुष्य को नही मिलाया गया जब कि कुरान मे अल्लाह ताला के साथ हजरत मुहम्मद साहब की शिरकत अनिवार्य है। उसी का यह परिणाम है कि धीरे-धीरे इस्लाम के मानने वालो में खुदा से भी अधिक दर्जा अपने पैगम्बर को दिया जाने लगा और खुदा की लगातार उपेक्षा होती रही। आम मुसलमान की मनोवृत्ति क्या है उसके बारे मे शायर ने ठीक ही लिखा है—

अल्लाह के पल्ले मे वहदत के सिवा क्या है।
लेना है जो ले लेगे, हम अपने मुहम्मद से॥

जिन्हें अपने पैगम्बर के रहते अल्लाह की रत्ती भर फिक्र नही, वे एकेश्वरवाद की महिमा का दम्भ करे तो इसमे क्या तुक है ? फिर मुसलमानो का एकेश्वरवाद भी ममेश्वरवाद ही है।

मुसलमान परमात्मा की कोई मूर्ति नही बनाते और न उसकी पूजा करते हैं परन्तु विचार करने पर उनका यह अभिमान भी मिथ्या सिद्ध होता है। मक्का मे स्थित काबा की परिक्रमा करना, वहा संगे असवद को चूमना, कब्रो के आगे माथा झुकाना और एक खास दिशा मे मुह करके नमाज पढना आदि बाते मुसलमानों को मूर्तिभजक नही, मूर्तिपूजक ही सिद्ध करती हैं।

स्वर्ग, नरक और आदम

इस्लाम के अनुसार बहिश्त और दोजख भी आसमान पर अलग स्थान बने हुए है। परन्तु मौलवी मुहम्मद अली और सर सय्यद अहमद खा दोनो का कहना यह है कि स्वर्ग और नरक स्थान विशेष नहीं,बल्कि अवस्था-विशेषहैं। उत्तम कर्म करने वालोके लिए अवस्था-विशेष की बात कहकर उसे तकसंगत रूप देना निश्चित रूप से ऋषि दयानन्द द्वारा की गई आलोचना का परिणाम है। परन्तु क्या वे नये भाष्यकार अपने साथी अन्य मुसलमान विद्वानों से यह बात मनवा सकेंगे ? कहने की आवश्यकता नही कि ऋषि दयानन्द ने "स्व-मन्तव्यामन्तव्यप्रकाश" मे स्वर्ग को सुख-विशेष-भोग और नरक को दुःख-विशेष-भोग का नाम दिया है। इससे स्पष्ट होता है कि ऋषि दयानन्द की तर्कयुक्त विचारधारा निरन्तर अपना कार्य कर रही है।

आम मुसलमानो मे यह धारणा प्रचलित है कि अल्लाह ने आरम्भ मे अर्थात् आज से लगभग ५ ६ हजार वर्ष पूर्व मिट्टी से आदम को उत्पन्न किया और उसकी पसली से हव्वा की रचना की। स्वामी दयानन्द ने इस पर आक्षेप किया तो आधुनिक कुरान शरीफ के भाष्यकारो ने आदम सम्बन्धी इस सारे कथानक को बदल दिया। अब वे आदम को एक आदमी नही बल्कि 'आदमियो की जाति' बताने लगे हैं। स्वामी जी का आक्षेप था कि यदि आज से ५-६ हजार वर्ष पूर्व आदम की रचना की गई थी तो क्या उससे पूर्व खुदा निठल्ला बैठा रहा ? उनका दूसरा आरोप यह था कि एक आदम का सृष्टि के आरम्भ मे होना सुसगत नही और हव्वा का आदम की पसली से पैदा होना भी विज्ञान के विरुद्ध है। इन तीनो आक्षेपो की सत्यता को स्वीकार करके मौलाना मुहम्मद अली ने इन तीनो बातो मे परिवर्तन कर दिया है। उनका कहना है कि एक आदम नही, बल्कि लाखो आदमी पैदा हुए और वे भी ५ ६ हजार वर्ष पूर्व नही, बल्कि लाखो वर्ष पूर्व हुए और हव्वा की उत्पत्ति भी आदम से नही बल्कि उसी तत्त्व से हुई थी, जिस तत्व से आदम का निर्माण हुआ था। उन्होने इन मान्यताओ को स्वीकार करने मे शियाओ या सुन्नियो के किसी ग्रन्थ का हवाला नही दिया, इसलिए यह उनकी अपनी कल्पना की उपज लगती है। परन्तु मुसलमान बन्धु मौलाना मुहम्मद अली द्वारा सुझाये गये परिष्कार को स्वीकार कर ले तो वैदिक धर्म और इस्लाम के मतभेदो की एक बहुत बडी खाई पाटी जा सकती है।

फरिश्ते, जिन्न तथा शैतान

इस्लाम मे फरिश्ते, जिन्न तथा शैतान का भी बडा महत्त्व है। शैतान को जिन्नो मे से ही माना जाता है। उसकी उत्पत्ति कुरान मे आग से बताई गई है। परन्तु मौलाना मुहम्मद अली ने इस वर्णन को आलकारिक बता कर सारा पासा ही पलट दिया है। उनका कहना है कि फरिश्ते और शैतान मन की भली और बुरी प्रवृत्तियो के द्योतक हैं। उनका कोई अलग से अस्तित्व नही।

कुरान मे आदम के साथ-साथ बागे अदन का भी वर्णन है। बाइबिल मे तो उस बागे अदन का पूरा भौगोलिक ढांचा भी बताया गया है। परन्तु मौलाना मुहम्मद अली के कथनानुसार यह बाग भी पृथ्वी पर नहीं और न ही यह भौतिक है। उनका यह कहना मुस्लिम परम्परा के नितान्त विरुद्ध है। फिर भी मौलवी साहब की इस बात की प्रशसा करनी ही पडेगी कि उन्होने इस्लाम के इस मन्तव्य को विज्ञान से अनुमोदित और बुद्धिसगत रूप देने का प्रयत्न किया है।

कुरान मे स्थान-स्थान पर जिन्नो का वर्णन है। कुरान में यह भी कहा गया है कि हजरत सुलेमान के पास जिन्नो की भी सेना थी, जिसमे लोकोत्तर चमत्कारपूर्ण शक्ति विद्यमान थी और जिन्नों की यह सेना ही मुस्लिम योद्धाओ को विभिन्न युद्धों में विजय दिलवाती थी। मुस्लिम विजेताओं के इतिहास में इन जिन्नो की चमत्कारपूर्ण घटनाओं का उल्लेख निरन्तर मिलता है। परन्तु मौलवी मुहम्मद अली के कथनानुसार ये जिन्न कोई वायवीय या आग्नेय ईश्वरीय शक्तियां नही थीं, बल्कि वे विदेशी कैदी थे, जिन्हें गुलाम बनाकर युद्धों मे लडने के लिए बाधित किया जाता था और वे अपनी जान

की बाजी लगाकर लड़ते थे, क्योंकि उनके पास इसके सिवा कोई चारा नहीं था।

कयामत

मुसलमान बन्धु केवल वर्तमान जन्म को ही मानते हैं। उससे पूर्व और पश्चात् किसी और जन्म को वे स्वीकार नहीं करते। हां, इतना अवश्य मानते हैं कि कयामत के दिन सब मुर्दों को कब्रों से उठाकर जिलाया जायेगा और उनके भले या बुरे ऐमाल के अनुसार उन्हें स्वर्ग या नरक में भेज दिया जायेगा। स्वामी जी की इस पर आपत्ति यह थी कि कब्रों में हजारों साल तक पड़े रहने वाले मुर्दों के शरीर जब सड़-गल जायेंगे तब उन्हें दुबारा कैसे जिला दिया जायेगा। मौलाना अशरफ अली ने इसका समाधान इस प्रकार किया है कि कर्म के अनुसार स्वर्ग और नरक में भेजने का नियम हर क्षण कार्य करता रहता है और वह किसी विशेष दिन लागू नहीं होता। यह बात कितनी ही बुद्धिसंगत क्यों न हो, परन्तु क्या आम मुसलमान कयामत के प्रचलित सिद्धान्त को आसानी से तिलांजलि दे सकेंगे?

बाइबिल और कुरान के तुलनात्मक अध्ययन से ऋषि दयानन्द इस परिणाम पर पहुंचे कि कुरान में बहुत कुछ बाइबिल से लिया गया है। अनेक यूरोपीय और मुसलमान विद्वान् भी इस बात से सहमत हैं। परन्तु मुसलमान मौलवी यह मानने को तैयार नहीं कि कुरान ने कोई बात बाइबिल से ली। हम इस विवाद में नहीं पड़ना चाहते कि कुरान ने बाइबिल से कुछ लिया या नहीं लिया। परन्तु इस बात से कोई मुसलमान विद्वान् भी इन्कार नहीं कर सकता कि कुरान में अनेक ऐसी बातों का वर्णन है, जो पहले बाइबिल में वर्णित हो चुकी हैं। बाइबिल में वर्णित प्रायः सभी पैगम्बरों का वर्णन कुरान में भी मिलता है। इसलिए अब कुछ समझदार मुसलमान विद्वानों ने यह कहना शुरू किया है कि कुरान शरीफ बाइबिल का एक पूरक और संशोधित ग्रन्थ है।

इब्राहीम-अब्राहम-ब्रह्मा

कुरान शरीफ में इब्राहीम के दीन पर बहुत बल दिया गया है। इब्राहीम अंग्रेजी का "अब्राहम" ही है, जो वस्तुतः ब्रह्मा का ही विकृत रूप है। जैसे स्कूल को अल्पशिक्षित लोग 'इस्कूल' या 'अस्कूल' बोल देते हैं, इबरानी और अरबी आदि सभी भाषाओं पर भी यही प्रभाव पड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे हमारे यहां चारों वेदों के पूर्ण ज्ञानी को ब्रह्मा की उपाधि दी जाती है, वैसे ही प्राचीन काल में कोई ब्रह्मा अरब देश में गया होगा और वहां उसने वैदिक धर्म के विशुद्ध एकेश्वरवाद का प्रचार किया होगा। हजरत मुहम्मद साहब अपने आपको उसी इब्राहीम या ब्रह्मा का वंशज बताते हैं और उसी के दीन के प्रचार को अपना लक्ष्य घोषित करते हैं।

ऋषि दयानन्द की आलोचना के प्रकाश में यदि मुस्लिम बन्धु अपनी बुद्धिविरुद्ध मान्यताओं को छोड़कर उन्हें तर्कसंगत रूप दे दें तो इस्लाम और वैदिक धर्म की दूरी बहुत कम हो सकती है, दोनों निकट आ सकते हैं। कुरान के भावी भाष्यकार इसके लिए ऋषि दयानन्द के उपकार को स्वीकार करें या न करें, परन्तु सत्य का अन्वेषण करने वालों के लिए तो सारी स्थिति स्पष्ट ही है। सबको सम्मति दे भगवान्। ●

सम्पादक के नाम पत्र

धर्म परिवर्तन और गांधी जी

महोदय,

भारतीय सेना पर भारतीय मूल के लोगों द्वारा आक्रमण की सर्वाधिक घटनायें नगालेंड में होती हैं। अपने देश के सैनिकों की हत्या राष्ट्रद्रोह है। इस राष्ट्रद्रोह का कारण नगालैंड और मिजोरम में धर्म परिवर्तन करके बने ईसाई हैं। आज समूचे राष्ट्र की सेना का २० प्रतिशत भाग इस क्षेत्र के नियन्त्रण में लगता है। खुद जवाहरलाल नेहरू ने यह स्वीकारा था कि नगालेंड क्षेत्र में विद्रोह का कारण वहां कार्यरत ईसाई मिशनरी हैं।

महात्मा गांधी १९३१ में ही धर्म परिवर्तन से किस प्रकार चिंतित थे, इसका उदाहरण २३ अप्रेल १९३१ के यंग इण्डिया में उनके एक लेख से मिलता है, जिसमें उन्होंने लिखा था—"मत-परिवर्तन तो इन दिनों एक व्यापार बन गया है। मुझे एक प्रतिवेदन का स्मरण है, जिसमें यह वर्णन किया गया था कि प्रतिव्यक्ति धर्म परिवर्तन पर कितना खर्च आता है और उसमें अगले वर्ष खर्च हेतु बजट प्रस्तुत किया गयाथा।" उन्होंने यह भी कहा कि "यदि मेरे पास शक्ति हो और मैं कानून बना सकूं तो मैं किसी भी प्रकार के धर्मान्तिरण पर रोक लगा दूं। हिन्दुओं के लिए एक मिशनरी के आने का अर्थ है, उनके परिवार का टूटना, जो देश, भाषा, व्यवहार, खानपान में परिवर्तन के कारण निश्चय ही होता है।"

आजादी से पूर्व संविधान निर्माता डा० आम्बेडकर ने कहा—"मैं उपासना पद्धति अवश्य बदलूंगा। यदि मैं ईसाई बना तो इस देश में अंग्रेजी साम्राज्य की जडें और मजबूत होंगी।" इन सब महान् राष्ट्र निर्माताओं की बात को गलत सिद्ध कर मदर टेरेसा ने मई १९८२ में इण्डिया टुडे नामक पत्रिकाको दिये साक्षात्कारमें कहा कि धर्म परिवर्तन तो स्वेच्छा से किया गया हृदय परिवर्तन है।

इन राष्ट्र निर्माताओं के विचारों से यही अन्दाज लगता है कि पोप की राजकीय आज्ञा से भारत में कार्यरत ईसाई मिशनरियों के मनोबल ने आकाश को छुआ है और अब देश में धर्म परिवर्तन की बाढ़ आ जायेगी। फिर भी पोप सरकारी खर्च पर भारत आये। पोप महात्मा गांधी की समाधि पर गये। जो व्यक्ति धर्मान्तिरण प्रचारक हो वह धर्मान्तिरण के विरोधी की समाधि पर दिखावे की माला चढ़ाये—क्या यह गांधी जी की आत्मा की हत्या नहीं?

—(डा०) मुनीश्वर, सरोजिनी नायडू मेडिकल कालेज व अस्पताल, आगरा

सिम्मो, जिसे अपने दो पिछले जन्मों की स्मृति है

—एम. एस. सोढी—

सुन्दरनगर की १०-वर्षीय सिम्मी को एक नहीं दो पूर्व-जन्मों की याद है। कुछ समय पूर्व उसने अपने पिछले जन्म के पति, बच्चों, रिश्तेदारों और उनके घर को ढूंढ लिया और वहां पहुंच गई।

सिम्मी अब १० वर्ष की हो गई है किन्तु अपने में अभी तक एक नहीं, अपितु दो पूर्व जन्मो की यादें भली भांति सजोये है।

२ फरवरी १९७६ को सिम्मी का जन्म श्री ईश्वरदत्त पाठक के घर पजाब के एक कस्बे नगल मे हुआ था। उस समय श्री पाठक जन स्वास्थ्य उपमडल मे एक साधारण क्लर्क थे। जब सिम्मी पौने तीन साल की हुई तो अक्सर खोई खोई रहने लगी। मा बाप की परेशानी बढती रही क्योंकि परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी और इस पर सिम्मी का बिगडता स्वास्थ्य एक उलझन बन गया।

एक दिन सिम्मी ने अपने पिता श्री पाठक से कहा "पापा 'मैंनू अपने घर जाणा है। मेरे बाल बच्चे हैं। नाल मेरे बडे मुडे दे सिर पर चोट लगी होई है। उथा इलाज करवाणा है।" यही नही, उसने फिर कहा कि "मेरे घर वाले दा ना महिन्द्रसिंह हैगा, जेडा मोटर चलादा है।" ऐसी बातें श्री पाठक के लिए पहेली बन गई। आखिर कौन-सा घर है सिम्मी का और कौन है महिन्द्रसिंह, जो उसके खयालो मे बार बार आ रहे हैं।

जब सिम्मी तीन वर्ष की हुई तो श्री पाठक का स्थानातरण व्यास सतलुज लिंक परियोजना मे सुन्दरनगर हो गया। यह समाचार जब सिम्मी ने सुना तो उसकी प्रसन्नता की सीमा न रही और पिता के वक्ष से लिपट कर कहने लगी कि मैंनू सुन्दरनगर लै चलो। उत्थे मेरा घर ते बाल बच्चे हैंगे।'

यह सुन कर पाठक जी का माथा ठनका, क्योंकि यह मामूली बात नही थी। सिम्मी बार बार सुन्दरनगर का नाम रटती रही थी, अवश्य कोई विचित्र घटना सामने आने वाली थी। श्री पाठक का तबादला सुन्दरनगर से २० कि मी दूर सलापड कालोनी मे हो गया, जहा व्यास परियोजना का जन स्वास्थ्य उपमडल था। सलापड पहुच कर सिम्मी पश्चिम की ओर दूर तक फैली पहाडियो को अपने आगन से निहारती रहती और मा बाप को अक्सर कहती रहती कि वहा दूर मेरा मायका है। सलापड मे रह कर सिम्मी बार-बार सुन्दरनगर मे अपने घर और बाल बच्चो से मिलने की जिद करने लगी। आखिर ११ मार्च १९८० को श्री पाठक सिम्मी को लेकर सुन्दरनगर के मुख्य बाजार भोजपुर पहुच गये, जहा महिन्द्र-सिंह नाम के कई व्यक्तियो से मिल कर इस गुत्थी को सुलझाना चाहा, किन्तु ये वह नही थे, जिसकी सिम्मी को तलाश थी। आखिर एक व्यक्ति द्वारा एक अन्य महिन्द्रसिंह सेन का नाम प्रस्तावित किया गया, जो राज्य पथ परिवहन निगम मे बस चालक था और बनायक गाव का निवासी है। उसकी पत्नी कृष्णा की सिविल अस्पताल मे टिटनस की बीमारी से १९६६ मे मृत्यु हो गई थी। ज्योंही श्री पाठक सिम्मी को गोद मे बिठाये वापिस गाव की ओर बढे, गाव से एक किलोमीटर पीछे सिम्मी गोद से उतर गई और ऊबड-खाबड रास्तो से भागती हुई बनायक गांव पहुच गई। वहा उसे 'अपना घर' ढूढने मे देरी न लगी, एक दम घर मे भागती हुई प्रवेश कर गई तथा अपने कमरे तक पहुंच कर कहने लगी "यही है मेरा घर"। इस बीच गांव तथा आसपास के लोग इकट्ठे हो गये और सिम्मी को निहारते रहे। सिम्मी ने घर की बूढी महिलाओं को तुरन्त पहचान लिया और अपने बच्चों का कुशल-क्षेम पूछा। जब सिम्मी को बताया गया कि तीनों लड़कियो निर्मला, ललिता और राजेश्वरी के विवाह हो चुके हैं और दो लड़कों मे से एक राजकुमार नौकरी कर रहा है और पप्पू पढ़ाई के सिलसिले मे अपनी एक बहिन के पास रहता है तो उसने चैन की सास ली। अगला प्रश्न था कि महिन्द्रसिंह कहां है? बताया गया कि वह ड्यूटी पर गडी गया हुआ है तो वह कुछ निराश हो गई। सिम्मी ने घर का एक एक कोना छान मारा और परिजनों के नाम लेकर मुलाकात करती रही। अपने कमरे में टगा फोटो, जो पूर्व जन्म की कृष्णा थी, को भी सिम्मी ने पहचान कर कहा कि वह उसका फोटो है। साथ ही सटके महिन्द्रसिंह का फोटो देख कर उसने कहा कि "वह मेरा घरोला (पति) महिन्द्रसिंह है।"

मां से मुलाकात

आखिर ३१ मार्च को महिन्द्रसिंह और उसकी पुत्र-वधु सिम्मी से मिलने सलापड गये, जहा उसने महिन्द्रसिंह को फौरन पहचान लिया। पुत्र-वधु ने जब सिम्मी को कुछ फल दिये तो उसने सहर्ष स्वीकार कर लिए किन्तु महिन्द्रसिंह से लेने इनकार कर दिया। ज्योही महिन्द्रसिंह ने उसे गोद में लेना चाहा, सिम्मी ने शरमा कर गोद में आने से इन्कार कर दिया। इस बीच पूर्व-जन्म की कृष्णा का सिम्मी के रूप में इस संसार में आना उसके मायके वालो के लिए उत्सुकता का कारण बन गया। कृष्णा के दो भाई श्री नन्दसिंह (फायर अफसर व्यास सतलुज परियोजना) तथा श्री बलवन्तसिंह उसे मिलने सलापड आए। सिम्मी ने दोनों को तुरन्त पहचान लिया और गले मिल कर रोने लगी। दोनो भाई उसे अपने गाव सलणु, बिलासपुर ले गए जहा उसने अपनी ७० वर्षीया मा को पहचान लिया और अपने पिता का फोटो देख कर कहा कि ये मेरे बडे डैडी हैं। मा ने परीक्षा के रूप में उसे एक रूमाल दिया, जिसे देख कर सिम्मी ने तपाक से कहा कि यह वही कपडा है, जिसका सूट आपने मुझे दिया था, किन्तु मैं बीमार रहने के कारण इसे पहन नही पाई थी। मां का गला रुध गया तथा आलिगन मे बध कर फूट फूट कर रोने लगी। सिम्मी ने मायके के कई स्त्री-पुरुषों को पहचान लिया तथा उनकी कुशलता पूछी।

इस तरह सिम्मी के पूर्व जन्म की याद की खबर सारे क्षेत्र में फैल गई। अखबारो मे सुर्खिया बनीं और देश-विदेश से लोग सिम्मी को देखने उमड पडे।

दास्तान दूसरे जन्म की

इस बीच सिम्मी ने एक बार फिर अपने एक और पूर्व-जन्म की याद ताजा कर परिवार तथा अन्य निकट मित्रों को हैरान कर दिया, क्योंकि पूर्व-जन्म की कृष्णा की मृत्यु १९६६ मे हुई थी और सिम्मी का जन्म १९७६ मे। आखिर १० वर्ष तक आत्मा कहा भटकी? यह एक प्रश्न था, जिसकी गुत्थी सुलझाना अनिवार्य समझा गया, क्योंकि कृष्णा की मृत्यु अस्पताल में हुई थी और उसके अन्तिम सस्कार शायद हिन्दू रीति-रिवाजों के अनुसार न हो पाए थे। इसलिए भ्रम रहा कि आत्मा भटक गई होगी किन्तु एक दिन जब सुन्दरनगर मे रामलीला हो रही थी (इस समय श्री पाठक सलापड से तबदील होकर सुन्दरनगर आ गए थे) सिम्मी ने अपने दूसरे पूर्व-जन्म का किस्सा सुना दिया। उसने कहा कि मैं मरने के बाद (कृष्णा के रूप मे) एक व्यक्ति बुधीसिंह के घर पैदा हुई, जहां ९ वर्ष की होकर फिर मर गई। बुधीसिंह व्यास परियोजना की सुरक्षा व्यवस्था मे कार्यरत था और व्यास परियोजना की ही सुन्दरनगर कालोनी मे रहता रहा है। सिम्मी कुछ लोगों के साथ उस क्वार्टर में पहुंच गई, जहां वह जन्म से लेकर मृत्यु तक रही। पड़ोस के कई लोगो ने इस बात की भी पुष्टि कर दी कि बुधीसिंह नाम का एक कर्मचारी इस क्वार्टर में रहता रहा है और उसकी एक लड़की थी, किन्तु अब वह तबादला परियोजना में चला गया है। यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी पुत्री जिन्दा है अथवा मृत। क्योंकि वह जन्म काफी छोटा था, सिम्मी को इस बारे में पूरा ज्ञान नहीं है। वह उस क्वार्टर को अवश्य पहचान गई थी, जहा उसका बचपन बीता था।

एक अमेरिकी पत्रकार जब उसके पूर्व जन्म का समाचार पढ़ कर सिम्मी को देखने सुन्दरनगर आया था तो सिम्मी का पहला प्रश्न उसके बड़े लड़के टोनी के बारे में था। उसने पत्रकार से पूछा कि टोनी आपके साथ भारत आने की जिद कर रहा था, उसे क्यो नहीं लाए? पत्रकार महोदय यह सुन कर हैरान हो गए क्योंकि वह या उसका परिवार पहले कभी भारत नहीं आया था तथा उनके बड़े लड़के ने भी भारत आने की इच्छा प्रकट की थी।

(शेष पृष्ठ १० पर)

बसन्त पंचमी (तीन फरवरी) के अवसर पर विशेष लेख

सुगन्धि और मधुरता का पर्व बसन्त पंचमी

–रघुवीर शरण आर्य, नरायन टोला, बहजोई, २०२४१०–

वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृताः स्तुताः ।
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः ।

परमात्मा कहते है कि हे मनुष्यो, तुम प्रथम कक्षा वाले विद्वान् लोगो, जिन्होंने प्रथम श्रणी का ब्रह्मचय व्रत धारण किया है, के साथ और जो दिव्य गुणो से युक्त एव स्तुति के योग्य हैं, उनके साथ सगति करो। तीनो कालो मे त्रिवमान, जिसमे सुख से रहते है, उस प्राप्त होने योग्य बसन्त ऋतु के साथ तया तीक्ष्ण रूप से सूर्य के प्रकाश मे आयु बढाने वाली वस्तुओ को धारण करो अर्थात् सूर्य पृथिवी आदि लोको अथवा प्रकृति की सगति कर सुख को प्राप्त करो। यर्वजुद अध्याय १३ मन्त्र २५ के अनुसार मधुश्च माधवश्च अर्थात् मधुर सुगन्ध युक्त चैत्र ओर मधुरता आदि गुण का निमित बैशाख ये दोनो वसन्त के महीने हैं। यजुर्वेद अध्याय १३ के मन्त्र २७,२८,२९ के अनुसार वसन्त ऋतु मे वायु मधुरता के साथ जल की भाति चलता है रात्रि कोमलता से युक्त और प्रात.काल से लेकर दिन मधुर है, प्रकाश भी मधुरता से युक्त पिता के समान रक्षा करने वाला है। जिस प्रकार पक्षी मधुर वाणी बोलते है हम भी माधुर्य युक्त वाणी बोले, कोमल गुणो वाली किरणो की तरह हम भी अपने व्यवहार मे कोमलता लाय, जिससे वसन्त ऋतु के सुख को सभी लोग प्राप्त हो।

हमारे आर्य ऋषियो ने वर्ष के बारह महीनो और छह ऋतुओ को गुणो के अनुसार वसन्त, ग्रीष्म पावस शरद हेमन्त और शिशिर मे विभक्त किया था। इनमे वसन्त ऋतु का समय अतिरम्य मनोहर और आनन्ददायक होता है । इसे ऋतुराज कहते हैं। ससार के समस्त जीवो का शुद्ध श्रद्धापात्र ऋतुराज ही है। इसीलिए ऋतुराज के शुभागमन के उपलक्ष मे प्रकृति अपने विकृत कलेवर को बदलना प्रारम्भ करती है। पृथ्वी वासन्ती परिधान पहनती है। पेडो मे नई कोपल और पुष्पो मे कलिया दिखाई देनी है। कोकिल सुमधुर सुरीली आवाज करती हैं भौंरे गू जने लगते हैं। भुवन भास्कर सुय धीरे धीरे अपनी किरणो को प्रखर करके प्रकट करते हुए कहते हैं बस अन्त है आज से जाड का अन्त समझो। तुम भी अकमण्यता का अन्त करके बसन्त पचमी के दिन से ही उत्साहपूवक कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाओ। इसी उपलक्ष्यमे प्रतिवष माघ शुक्ला पचमीको बसत पचमी का उत्सव तनाया जाता है। प्राचीन काल मे ऋषिगण आज के दिन से 'यवेष्टि' नामक यज्ञ प्रारम्भ करते थे अर्थात् जौ की बालिया तोडकर साफ करके घी शक्कर मिलाकर यज्ञ करते थे, जिससे वायु मण्डल मे 'प्राण-पजन्य' की वृद्धि हो । जब तक हम महापर्वों को विधिपूर्वक मनाते रहे, हमारा देश ज्ञान, बल और धन-धान्य से परिपूर्ण रहा किन्तु आज यज्ञादि के अभाव से हमारे देश मे नाना प्रकार की व्याधियो का बोलबाला है।

बसन्त पचमी के दिन ही सरस्वती पूजन की प्रथा है ऋग्वेद मे देवताओं के साथ-साथ उषस, अदिति और सरस्वती देवी को भी ख्याति प्राप्त है—

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुव ।
बर्हिः सीदन्त्वस्रिध ।। (ऋ० १।१३।९)

[illegible], मातृसस्कृति और मातृभूमि ये तीन देविया कल्याण करने वाली हैं। न भूलते हुए ये अन्त करण मे स्थिर रहे । यजुर्वेद २०/६४, २०/६५, २०/[illegible] सरस्वती को [illegible] बताया गया है। [illegible] २०/५० मे बताया गया है कि सरस्वती प्राणशक्ति के साथ वीर्य देती है । सरस्वती निर्धनो को धनी बनाती है। इसके आश्रय से अन्न उत्पन्न होता है,यह उपासकों पर दया करती है और आश्रयदाता वृक्ष के समान आश्रय देती है। सृष्टि रचना के मूल मे जो समष्टि मन विद्यमान है, वही सरस्वती है।

मनुष्य के शरीर मे पाच ज्ञानेन्द्रिया मन व प्राण ये सात ऋषि काय कर रहे हैं। शरीर ही आठ चक्रो और नौ द्वारो वाला ३३ कोटि (प्रकार) के देवो के निवास योग्य अयोध्या नगरी है जिसमे आत्माराम विराजमान है। मानव शरीर परमेश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति या मन्दिर है। मानव शरीर ही पचमुखी महादेव है जिसमे ग्यारह रुद्र हैं। सरस्वती के वाहन श्वेतहस का तात्पय प्राण से है। उच्छ्वास बाहर आते समय ह की ध्वनि करता है और अन्दर जाने के समय स की ध्वनि करता है और अश ग्रहण करने के कारण हस बन जाता है। हृदय सरस्वती की वीणा है जिसमे से झकार उठती है। पुष्प हमे जीवन पुष्प से काटो के बीच खिलने पर भी सुगन्धि देने की प्रेरणा देते है । यद्यपि मनुष्य पुष्प के शरीर पर आघात करता है, किन्तु फिर भी वह दुखी नही होता, क्रोध नही करता अपितु हसते हसते सजावट का माध्यम बनता है। बसन्त हमे आशावादी दृष्टिकोण देता है । वाल्मीकि, व्यास और कालिदास के साथ साथ जयदेव, पदमाकर बिहारी रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रसाद पत और सूयकात त्रिपाठी निराला ने अपनी कविताओ के माध्यम से बसन्त महिमा का हृदयग्राही वणन किया है। वासन्ती वसन के गायक निराला जी ने तो बसन्त पचमी को अपना जन्म दिन ही मान लिया था।

बसन्त ने ही देशभक्तो को देश और धम की बलिवेदी पर हसते-हसते प्राणोत्सग करने की प्ररणा दी है। बसन्तपचमी के दिन ही सत्रहवी शताब्दी मे मुहम्मद शाह रगीले के शासन काल मे वीर बालक हकीकतराय ने इस्लाम स्वीकार करने के प्रस्ताव को ठकरा कर शीश कटाया था। भगतसिंह सदृश अनेकानेक क्रान्तिकारियो ने भी 'मेरा रग दे बसन्ती चोला' का गीत गाकर स्वतन्त्रता सग्राम मे आत्माहुतिया दी थी। सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'वीरो का कैसा हो बसन्त' कविता से राष्ट को जगाया था। यह भारत के वीन स्वर्णिम काल का सन्देशवाहक ही नही आगामी स्वर्णिम काल की कल्पना का विधायक भी है। हमारा जीवन भी फल जसा तपोमय हो, उज्ज्वल हो हम इस पव से यही प्ररणा लेकर पशुता से मनुष्यता, अज्ञात से ज्ञान और अविवेक से विवेक की ओर बढने का दृढ सकल्प ले। जहा जहा ज्ञान की साधना है वही वही भाग्य है। यदि ब्राह्मण वैदिक ज्ञान से राष्ट्र को जगाय वेद विद्या प्राप्त कर पढाने मे जुट जाय, क्षत्रिय अपने बल से निबलो की रक्षा करने और दुष्टो को दण्ड को देने कटिबद्ध हो जाये वैश्य व्यापार कृषि काय और गोपालन द्वारा धन कमाने लग जाये और शूद्र कारीगर कला कौशल की उन्नति मे लग जाये तो वह दिन दूर नही जब भारत विश्वगुरु के पद पर पुन विराजमान हो जायेगा।

हमारी अवनति का मुख्य कारण अशिक्षा और आलस्य हैं। भौतिककता की चकाचौंध देखकर हमारे हृदयो मे कामदेव और विलासिता की देवी प्रवेश कर गये हैं। इन्द्रिय सुख के लिए हम जघन्य से जघन्य अपराध कर जाते है। स्वार्थ के कारण अथ का अनर्थ करते हैं। हमारे उपयोग से बचा अन्न भूखो का है बचा वस्त्र नगो का है, बचा धन गरीबो का है जन्मभूमि और गोमाता दोनो ही हमारी आराध्य देवी हैं। हमने कालकूट विष पीकर भी ससार को जीवनदान किया है, चोरो और लुटेरो को गले लगाया है अज्ञानियो को ज्ञान दिया है। तो क्या हम पुन ऐसा नही कर सकते ? यदि हम पूवजो के जीवन से शिक्षा प्राप्त कर कुछ कर पाये, तभी बसन्त की सार्थकता है। ●

आर्य जगत् के समाचार

ईसाई युवक की शुद्धि

आर्यसमाज वसन्त विहार, नई दिल्ली मे ३ जनवरी को श्री सेमुएल जेम्स (सुपुत्र श्री एम एम जेम्स) महरौली, दिल्ली निवासी को शुद्ध करके वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया। श्री जेम्स का नवीन नाम वेद रखा गया। तत्पश्चात् उनका विवाह कु० रेखा नूना (सुपुत्री स्वर्गीय श्री ए के नूना टीकमगढ निवासी) के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। विवाह में दोनों परिवारो के अभिभावक सम्मिलित हुए। अन्त मे सम्मिलित जलपान हुआ।

गुवाहाटी में डी० ए०-वी० शताब्दी समारोह

गुवाहाटी। आर्यसमाज गुवाहाटी द्वारा संचालित डी० ए०-वी० हाई स्कूल गुवाहाटी मे २८ दिसम्बर को डी० ए०-वी० शताब्दी समारोह उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल की छात्र-छात्राओं एव अध्यापिकाओ द्वारा रग बिरगे मनोरजक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

शताब्दी समारोह के अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की गई जिसका विमोचन समारोह के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध उद्योगपति श्री पी० सी० गोयनका (मैनेजिंग डायरेक्टर, आसाम कार्बन प्रोडक्ट्स लिमिटेड, गुवाहाटी) द्वारा किया गया।

शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य मे गुवाहाटी नगर के अन्तर्गत २७ दिसम्बर को शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया।

गुरुकुल गदपुरी का उत्सव

गुरुकुल गदपुरी का अर्ध शताब्दी समारोह १३, १४ और १५ फरवरी को हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जा रहा है, जिसमे सम्पूर्ण भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान्, भजनोपदेशक, सन्यासी और राजनैतिक नेता पधार रहे हैं। पहली फरवरी से १५ फरवरी तक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ चलेगा। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा संस्कृत भाषण, व्यायाम, योगासन, लाठी,मुद्गर, भाला, मल्लखम्भ, सरिया मोडना, काच पीसना, चलती कार रोकना आदि का प्रदर्शन किया जायेगा।

पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक को पत्नीशोक

'वेदवाणी' के सम्पादक, विख्यात वैदिक विद्वान् पण्डित युधिष्ठिर मीमासक की धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी का ११ जनवरी को निधन हो गया। स्वर्गीया माता जी की अवस्था सत्तर वर्ष से अधिक थी और वे कैंसर रोग से पीडित थी। १३ जनवरी को आर्यसमाज करौलबाग मे शोक सभा हुई और पाणिनि महाविद्यालय, बहालगढ (सोनीपत) मे विशेष यज्ञ के पश्चात् उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

पिछले जन्मों की स्मृति

(पृष्ठ ८ का शेष)

महिलाओं को पिछले दिनों सिम्मी ने अपने पूर्व-जन्म की एक बहिन के मराहीराट गाव मे मृत्यु की बात कही जो सच थी। श्री पाठक को इस बात की पुष्टि सिम्मी के पूर्व-जन्म के भाई नर्मदसिंह से कुछ दिन बाद हुई थी।

पिछले सात वर्षों से सिम्मी अपने पूर्व मायके समय-समय पर आती जाती रहती है, जहा उसके दोनो भाई, मा तथा अन्य परिवार जन उसे कृष्णा के रूप मे बेहद प्यार करते हैं। उधर ससुराल में उसे अपने पूर्व बेटे राजकुमार तथा पप्पू से मिलने मे बेहद आनन्द आता है। सिम्मी के पूर्व मायके तथा ससुराल वालो ने उसे जायदाद का हिस्सा देने की पेशकश भी की है किन्तु उसने कुछ भी लेने से इनकार कर दिया है। उसके पूर्व बेटे ने अब तीन माह पूर्व बनायक गांव में दीदिया से लौट कर एक नया घर बनाया है, जहा सिम्मी गृह प्रवेश के समय गई थी और वहां वह पूरे मकान में घूम कर राजकुमार तथा उसके परिवार को आशीर्वाद देती रहीं।

आर्यसमाज मैस्टन रोड, कानपुर का उत्सव

कानपुर। आर्यसमाज मेस्टन रोड का एक सौ सातवा वार्षिकोत्सव २३ से २६ फरवरी तक समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। इस उत्सव पर श्री शिवकुमार शास्त्री भूतपूर्व ससद् सदस्य, प्रो० रत्नसिंह, प्रो० उत्तमचन्द्र 'शरर' आदि विद्वान् वक्ता अपने विचार प्रकट करेंगे। २३ फरवरी को शोभायात्रा का आयोजन है।

उत्सव पर वेद सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, आर्य वीर दल सम्मेलन, महिला सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, दहेज प्रथा उन्मूलन सम्मेलन आदि का कार्यक्रम रखा गया है।

कार्रवाई प्रतिदिन प्रात सात से साढे ग्यारह बजे तक और दोपहर बाद तीन से साढे दस बजे तक हुआ करेगी।

आर्यसमाज लौकहवा (गोंडा) का उत्सव

आर्यसमाज लौकहवा (जिला गोंडा) का वार्षिकोत्सव ८, ९ और १० फरवरी को बहुत उल्लास और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। अन्य वक्ताओ के अतिरिक्त ओजस्वी गायक कुंवर महिपालसिंह भी पधार रहे हैं।

संन्यास आश्रम में प्रवेश

वेद प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्रजी वानप्रस्थी पहली फरवरी को प्रात १० बजे ६०/१३ रामजस रोड,करौलबाग, दिल्ली में सन्यास की दीक्षा लेंगे। दीक्षा स्वामी ओमानन्द जी देंगे।

आर्यसमाज सदर बाजार का शताब्दी समारोह

आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली आगामी अप्रैल मे अपने शताब्दी समारोह पर स्मारिका का प्रकाशन कर रहा है। निवेदन है कि आर्यसमाज से सम्बन्धित जिन महानुभावो के पास सस्मरण हो वे कृपया फरवरी के अन्त तक मन्त्री जी, आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली के पास भेजने का कष्ट करें।

उपभोक्ताओं की सेवा में

चलता--फिरता बाजार

"चलते-फिरने बाजार" की ३५ चलती-फिरती दुकानों ने दिसम्बर, १९८६ तक ६ करोड़ ६० लाख रुपये मूल्य की प्रतिदिन काम में आने वाली वस्तुओं की बिक्री की है। इस बाजार की स्थापना अक्तूबर, १९८३ की गई थी।

पिछले तीन वर्षों में इस बाजार को बहुत लोकप्रियता मिली है और उपभोक्ताओं में एक नई चेतना जागृत हुई है। इस बाजार से दूर-दराज की कालोनियों के, विशेषकर जहां कमजोर वर्गों के लोग रहते हैं, २५ लाख २५ हजार से अधिक परिवारों को लाभ पहुंचा है।

ये चलती-फिरती गाड़ियां प्रतिदिन १०० से अधिक स्थानों से रोजमर्रा के काम आने वाली वस्तुएं उचित मूल्य पर लोगों को उनके घर के पास उपलब्ध कराती हैं।

प्रशासन इस बाजार के लिए गाड़ियों की संख्या में तथा प्रतिदिन काम मे आने वाली वस्तुओं की संख्या में वृद्धि करके इसे और मजबूत बनाने का प्रयास कर रहा है। प्रशासन का लक्ष्य है कि यह व्यवस्था दिल्ली के सभी क्षेत्रों के लिए उपलब्ध हो।

दिल्ली प्रशासन ने उपभोक्ता-मामलों के निदेशालय की भी स्थापना की है जो सरकारी तथा स्वैच्छिक संगठनों के प्रयासों में तालमेल रखकर उपभोक्ताओं के हित के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली को मजबूत बनाने का कार्य कर रहा है।

उपभोक्ता-आन्दोलन को मजबूत करने के लिए यदि आपके पास कोई सुझाव है तो कृपया लिखें:--

जगप्रवेश चन्द्र
मुख्य कार्यकारी पार्षद
पुराना सचिवालय, दिल्ली-११००५४

सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली द्वारा प्रसारित

नैतिक शिक्षा संस्थान का शुभारम्भ

आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे रविवार, एक फरवरी को प्रात ११ बजे डी० ए०-वी० नैतिक शिक्षा सस्थान का शुभारम्भ समारोह होगा। समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी करेंगे। आर्यसमाज के यशस्वी सन्यासी अमरस्वामी जी शुभारम्भ करेंगे।

हिसार में सामूहिक यज्ञ

मकर सक्रान्ति की पूर्व सध्या पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल हिसार की ओर से आर्य पब्लिक स्कूल भामाशाह नगर, हिसार मे एक सामूहिक यज्ञ का आयोजन श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री (उपमन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) के पौरोहित्य मे धूमधाम से सम्पन्न किया गया। बाद मे स्कूल के बच्चो का रोचक कार्यक्रम हुआ, जिसमे स्थानीय आर्यसमाज और नगर के प्रतिष्ठित नागरिको ने भाग लिया।

आर्यसमाज देवबन्द का उत्सव

आर्यसमाज देवबन्द का वार्षिक उत्सव ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर २६, २७ और २८ फरवरीको मनाया जायेगा। इस अवसरपर कई सम्मेलन, भाषण प्रतियोगिता और आर्य वीर दल के क्षेत्रीय सगठन के कार्यक्रम रखे गये हैं।

उच्च कोटि के सन्यासी, विद्वान् और भजनीक आमन्त्रित किये गये हैं।

आवश्यकता है

ला० रामशरणदास स्मारक स्थिर निधि, आर्यसमाज मन्दिर, हासी के लिए एक अच्छी भजन मण्डली की, जो कि जिला हिसार के अन्तर्गत प्रचार कार्य कर सके। अच्छा वेतन। इस निधि का प्रधान कार्यालय —आर्यसमाज मदिर, हासी मे है। सम्पर्क करें—

प्रधान, आर्यसमाज मन्दिर, हासी (हिसार) हरियाणा

/का उत्सव

आर्यसमाज नैनी, प्रय /त्सव आगामी २३, २४ और २५ फरवरी को धर्मशाला, /ा निश्चित हुआ है।

आर्यवीर दल संचालक का दौरा सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिमी उत्तर प्रदेश (बिन्दकी) के सर सचालक डा० बालकृष्ण आर्य 'विकल" अपना १५ दिवसीय दौरा करके वापस आ गये हैं। सचालक जी लखनऊ, सीतापुर, हरदोई, लखीमपुर, शाहजहापुर, बरेली, रामपुर, मुरादाबाद गाजियाबाद, इस्लामनगर आदि जिलो का दौरा किया। सभी स्थानो मे सचालक जी का स्वागत किया गया। सभी आर्य वीर दल अधिकारियो मे काफी उत्साह रहा और दल सगठन हेतु कई शिविरो का आश्वासन दिया गया, मुरादाबाद और गाजियाबाद मे निश्चितरूप से शिविर लगेंगे। सचालक जी ने नये वर्ष की नियुक्तिया की गयी शीघ्र ही समिति की घोषणा की जायेगी।

—प्रान्तीय मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

राष्ट्र देवो भव

राष्ट्र को देवता मानो

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७]
वर्ष २२ अंक ७]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
माघ शु० १० स० २०४३ रविवार ८ फरवरी १९८७

दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

पंजाबके विस्थापित परिवारोंको बसानेकी मांग

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती उपराज्यपाल से मिले

दिल्ली, २८ जनवरी।

पजाब से पलायन करके दिल्ली मे सैकडो विस्थापित हिन्दू परिवार कड़ी सर्दी मे सडको के किनारे राते बिता रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती ने आज उपराज्यपाल श्री कपूर को मिलकर इन बेसहारा शरणार्थियो के पुनर्वास की माग की।

श्री स्वामी जी ने बताया कि पीडागढी विस्थापित कैम्प मे अभी १०२ टैण्ट खाली पडे हैं जबकि ६४ परिवार सडक के किनारे खुले आसमान के नीचे रातें काट रहे हैं। ४५ परिवार जिन्हे छोलदारीयो मे स्थान मिल गया है किन्तु सरकार की ओर से राशन का कोई प्रबन्ध नही किया गया है। ज्वालापुरी आर० ब्लाक न० ५ प्लास्टिक मार्किट मे खटीक भाईयो के ३१ परिवार भी सरकारी सहायता व आवास के बिना बाहर खुले आसमान के नीचे बैठे हुए हैं। लगभग १२० परिवार ऐसे है जिन्होने अपने राशन कार्ड कई दिन पूर्व जमा करा दिए है किन्तु अभी तक उन्हे कोई राहत सरकार की ओर से नही मिली है। इनके अतिरिक्त गोविन्द-पुरी तथा सुभाषनगर आर्य समाज मे भी विस्थापितो के कैंप लगे हुए हैं इन सब लोगो को भी सरकार की ओर से आवास तथा अन्य सब सहायता प्रबन्धो की तुरन्त आवश्यकता है।

श्री स्वामी आनन्द बोध जी ने बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से वह कई बार शरणार्थी कैम्पो का दौरा करके शरणार्थी लोगो से मिल चुके है। कई जगहो पर आर्य समाजों की ओर से शरणार्थियो की सहायता राशन आवास आदि से की जा रही है। सार्वदेशिक सभा अब तक सैकडो रजाइया, कम्बल वस्त्र तथा कई हजार रुपया नकद रूपमे शरणार्थियो को दे चुकी है। कई क्षेत्रो मे राशन की भी व्यवस्था सभा की ओर से की गई है।



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पीडागढी के सामने पजाब से आये हिन्दू शरणार्थियो का जो आसमान के नीचे अपनी रातें काट रहे हैं। उनका निरीक्षण करते हुए।

श्री स्वामी जी ने उपराज्यपाल महोदय को ज्ञापन देते हुए माग की कि शरणार्थियो को बसाने और उन्हे हर प्रकारसे सहायता दिलाने के लिए सरकार द्वारा तुरन्त उचित कदम उठावे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

सरकारी समारोहों में हिन्दी की उपेक्षा पर राष्ट्रपति क्षुब्ध

'अंग्रेज चले गए, लेकिन हम अभी तक अंग्रेजी का दामन थामे बैठे हैं'

उच्चाधिकारियों को राष्ट्रभाषा में काम करने की सलाह

नई दिल्ली २९ जनवरी (भाषा) राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने सरकार में और हिन्दी भाषियो मे हिन्दी के प्रति हीन दृष्टिकोण पर गहरा कटाक्ष किया। राष्ट्रपति ने राजभाषा शील्ड पुरस्कार समारोह मे आज अपने लिखित भाषण से हटकर कहा कि अंग्रेज तो चले गए लेकिन अपने पीछे अंग्रेजी छोड गए और हम अभी तक उसका दामन थामे बैठे है।

उन्होने कहा कि अंग्रेजी बोलना और पढना एक फैशन बन गया है चाहे अंग्रेजी आती ही नही हो। लोग यात्रा में अपने साथ अंग्रेजी का समाचार पत्र लेकर गर्व समझते है। भले ही अन्दर उन्होने हिन्दी अथवा अपनी भाषा का समाचार पत्र ही क्यो न रख रखा हो।

राष्ट्रपति ने कहा कि सैकडो लोग रोज उनसे मिलने आते हैं लेकिन आश्चर्य तब होता है जब लखनऊ और जयपुर से लोग भी उनसे अंग्रेजी मे बोलते है। सरकारी समारोहो मे अंग्रेजी के उपयोग पर कटाक्ष करते हुए उन्होने कहा कि अधिकांश समारोहो की कार्यवाही अंग्रेजी मे होती है। पिछले दिनो एक फिल्म समारोह की चर्चा करते हुए कहा कि यदि यही समारोह अंग्रेजी पुरस्कारो का होता तो बडा हाल लिया जाता और उसमें अतिरिक्त कुर्सिया डालनी पडती। लेकिन चूंकि यह हिन्दी का समारोह है, इसलिए इसके लिए छोटा हाल लिया गया लेकिन फिर भी काफी कुर्सिया खाली पडी है। आज का समारोह विज्ञान भवन के कमीशन हाल में हुआ।

राष्ट्रपति ने सरकारी कामकाज मे हिन्दी के उपयोग पर गृह मन्त्री को सम्बोधित करते हुए कहा कि बूटा सिंह जी आपकी रिपोर्ट तो शानदार है लेकिन इस बार मे वाकई कुछ ठोस काम भी होना चाहिए।

सरकार और आम लोगो में हिन्दी के उपयोग के प्रति जो रवैया है उसके बारे मे उन्होने कहा कि सोये हुए को तो जगाया जा सकता है लेकिन जो जाग रहा हो उसे कैसे जगाया जाए।

श्री जैल सिंह ने हिन्दी की प्रशंसा मे कहा अंग्रेजो के इरादे तो नेक नही थे लेकिन हम नही जानते जोन करने जा रहे हैं। राष्ट्रपति के इस कटाक्षपूर्ण भाषण के दौरान उपस्थित लोग हंसते और ठहाके लगाते रहे।

राष्ट्रपति ने उच्चपदासीन व्यक्तियो को सरकारी काम हिन्दी में करने की सलाह दी। उन्होने कहा कि जब तक उच्चाधिकारी स्वयं हिन्दी में काम नही करेगे तब तक उनके अधीनस्थ भी हिन्दी मे काम करना पसन्द नही करेगे।

श्री जैल सिंह ने कहा कि हिन्दी का कही विरोध नही है। तमिलनाड मे भी हिन्दी का विरोध नही है। वहा हिन्दी विरोध सिर्फ उनकी राजनीतिक आवश्यकता है। उन्होने कहा कि हिन्दी प्रेम की भाषा है और प्रेम से ही उन तक पहुंचाना चाहते हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि हिन्दी से भारत किसी भी भाषा का कोई टकराव नही है और किसी भी क्षेत्रीय भाषा की कीमत पर इसका विकास नही किया जा सकता। भारत की सभी भाषाये अपनी है।

उन्होने कहा कि हिन्दी और उर्दू एक दूसरे की पूरक है इन्हे आपस मे एक दूसरे का विरोध नही करना चाहिये। उन्होने कहा कि सभी भाषाओ का साहित्य हमारे देश का साहित्य है। परन्तु हिन्दी की सरलता और व्यापकता के कारण ही हमे सम्पर्क भाषा के रूप मे इसका उपयोग करना होगा।

उन्होने कहा कि यह एक महत्वपूर्ण बात है कि हिन्दी का प्रचार एवं उसकी वकालत करने वालो मे महात्मा गांधी सुभाष चन्द्र बोस केशव चन्द्र सेन दयानन्द सरस्वती तथा लाला लाजपत राय जैसे सभी लोग अहिन्दी भाषी थे। उन्होने कहा कि नेताजी सुभाष बोस का तो यहा तक कहना था हिन्दी विरोधी कोई भी आंदोलन राष्ट्र की प्रगति मे बाधक है।

गृहमन्त्री बूटा सिंह ने इस अवसर पर कहा कि सरकार की यह नीति रही है हिन्दी को किसी पर थोपा नही जाये। इसे अपनाने के लिए लोगो को प्रेरित किया जाये। उन्होने सरकारी कामकाज में हिन्दी के उपयोग को बढाने के लिए उठाये जा रहे विभिन्न कदमो की जानकारी दी।

जिन १२ अधिकारियो और कर्मचारियो को व्यक्तिगत काम के लिए पुरस्कृत किया गया है वे है खाद्य विभाग के एन त्यागराजन और डी एस रावत रेलवे बोर्ड के हेत चन्द्र मिश्र और जोगासिंह सिंचाई विभाग के जगदीश प्रसाद और राम किशन, खान विभाग के सतीश कौण्डल और लालचन्द मराठी श्रम मन्त्रालय के महेन्द्रसिंह और हरिसिंह तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कल्याण मन्त्रालय आर०डी० बसीवाल और राजपालसिंह।

(३० १-८७ पंजाब केसरी से सभार)

आर्य वीर दल मण्डल मुरादाबाद द्वारा बिजनौर मे आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

बिजनौर २७ जनवरी

आर्यसमाज बिजनौर (झालू) मे आर्य वीर दल मण्डल मुरादाबाद के मण्डल संचालक डा० श्री पूर्णप्रकाश ६ फरवरी से १२ फरवरी १९८७ तक आमन्त्रित कर रहे हैं।

इस शिविर मे श्री गिरिराजसिंह झालू, श्री हरपालसिंह नामसजट, श्री बिन्दुश्वर जी बिजनौर, श्री सुखलेश झालू, श्री महेन्द्र झालू श्री मुकन्दीसिंह नामसजट श्री जयपालसिंह झालू श्री रामचन्द्रसिंह, श्री सम्पूर्णसिंह श्री करणवीरसिंह, श्री जयपालसिंह आदि अपना अपूर्व सहयोग प्रदान कर रहे हैं। आर्यसमाज झालू तथा बिजनौर (अपना पूरा रू समर्थन दे रहे हैं। श्रीमती कमला मित्तल श्री स्त्री आर्यसमाज के सहसंचालिका रही हैं।

उपमन्त्री आर्य वीर दल मुरादाबाद मण्डल

॥ ओ३म् ॥

निमन्त्रण-पत्र

महात्मा प्रभु आश्रित जन्म-शताब्दी समारोह के भव्य आकर्षण

१४ फरवरी १९८७ से २२ फरवरी १९८७

स्थान-वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक

(१) स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता एवम् महात्मा दयानन्द के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद व राष्ट्रभृत यज्ञ।
(२) वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक से शोभा-यात्रा (१४-२-८७) मध्याह्न २ से ५ बजे तक।
(३) वेद सम्मेलन योग सम्मेलन एवं यज्ञ सम्मेलन की त्रिवेणी।
(४) महात्मा दयानन्द, स्वामी आनन्द बोध, पं० जैमिनि शास्त्री, महात्मा बलदेव, पं० पृथ्वीराज शास्त्री एवं ब्र० आर्य नरेश के मनोहर प्रवचन।
(५) आचार्य रामदत्त शर्मा, पं० वागीश जी का सस्वर वेद-पाठ।
(६) साधकों, वेदकंठस्थियों एवं याज्ञिकों का सम्मान।
(७) भक्ति संगीत पं० सत्यपाल जी पथिक, पं० जयदेव जतोई वाले, भक्त मदनलाल एवं नन्दराम जी।
(८) लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ की अध्यक्षता में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन।

आप सबसे अनुरोध है कि अपने परिवार-जनों व इष्ट-मित्रों सहित पधार कर इस उत्सव की शोभा में वृद्धि करें।

मन्त्री
लखपति शास्त्री

विनीत
दयानन्द (प्रधान)

प्रभु आश्रित जन्म शताब्दी समिति

आर्यसमाज छांयसा (गाजियाबाद) का वार्षिकोत्सव उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न

छायसा

आर्यसमाज छायसा जिला गाजियाबाद उत्तर प्रदेश का वार्षिकोत्सव ९, १०, ११ जनवरी १९८७ की उत्साहपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

उत्सव मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर हस के साथ २ अनेक उपदेशक गण, भजनोपदेशको और सन्यासी महानुभावो ने भाग लेकर जनता को वैदिक धर्म के उद्देश्यो एव उपलब्धियो से अवगत् कराया।

इस अवसर पर डा० देवेन्दकुमार आर्य मन्त्री तथा श्री जगरामसिह आर्य (प्रधान) तथा तेजवीरसिह (कोषाध्यक्ष) चुने गये। —सवाददाता

उत्सव समाचार

—आर्यसमाज पलामू, हैदरनगर। गायत्री महायज्ञ २१ जन० से २३ जन० ८७ तक बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया।

—आर्यसमाज भेलूपुर वाराणसी का उत्सव २६ से २८ दिसम्बर ८६ तक धूमधाम से मनाया गया। जिसमे प० ज्वलन्त कुमार, प० सत्यदेन शास्त्री, बीरेन्द्र भजनोपदेशक पधारे। सम्मेलनो के आयोजन भी किये गये। सऊदी अरब मे रामकुमार भारद्वाज को कैद से छुडाकर लाया गया।

—आर्यसमाज भिवन्डी, का उत्सव ७ से ९ जन० ८७ तक धूमधाम से मनाया गया। स्वामी सच्चिदानन्द जी अमृतसरी के व्याख्यान, निर्भय जी के व्याख्यान भी हुए।

—आर्यसमाज प्रथरा—नैपाल मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ ५-१-८७ तक सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज इटारसी मे मकरसक्रान्ति पर्व धूमधाम से मनाया।

—आर्यसमाज मुसाढ़ी नालन्दा बिहार ३०वा वार्षिकोत्सव मनाया गया। मोक्षानन्द जी तथा श्री ओमप्रकाश शास्त्री के व्याख्यान श्री बैजनाथ जी के भजन हुए।

ज्ञान की पुकार

आख खोल कर देखो प्यारे, मैं हूं तेरे पास मे,
भटक रहा क्यो भोले प्राणी, गुरुओ के जजाल मे।
इन्हे चाहिए धन सम्पत्ती, काम नही कुछ धर्म से,
पाठ पढा कर उल्टा सीधा, बिमुख करे सत्कर्म से।
पत्थर को भगवान बताते, पुजवाते यजमान से,
पूजन करवा झोली भरते, क्या है काम भगवान से,
बच्चा बच्चा जान रहा जो, उतना भी है ज्ञान नही।
मृतक भला कैसे खा सकता, पर दिलवाते चावल पानी,
गऊ की पूछ धरा बेटे को, कहते देख पिता तेरा।
बैतरणी पार चला है करने, छोड चुका यम का डेरा,
साक्षी है पीपल विशाल, जहा ढोगी ढोग रचाता है।
अन्न वस्त्र और द्रव्य मगाकर, गठरी तक बधवाता है,
पिता तेरा पायेगा सब कुछ, दुख नही वह पायेगा।
कहता दान करो अगर भूमी, राजा वहा कहायेगा।
शिक्षा देकर इस प्रकार की, मूड रहा भोले जन को।
बन्द आख से क्या देखोगे, मूर्खों के पागल पन को,
वेद ऋचा का अर्थ समझना, इनके वश की बात नही।
धर्म, कर्म, और मोक्ष के मार्ग, अबतक इनको ज्ञान नही,
बन्धन तोड निकल भागो तुम, मैं हूं तेरे साथ मे,
आख खोल कर देखो प्यारे, मैं हूं तेरे पास मे।

—आर्य ललन 'अज्ञानी'
बेदौलिया

पंजाब के हिन्दू पीड़ितों के लिए
सहायता दान सूचि

मन्त्री, आर्यसमाज कैमथल अलीगढ द्वारा एकत्रित धन की सूची

सर्वश्री रामनिवास दीक्षित प्रधानाचार्य कैमथल अलीगढ (उ० प्र०)	
महावीर प्रसाद गौड ,, ,	१०)
लालता प्रसाद वार्ष्णेय ,, ,,	१०)
हरिपाल देव शर्मा ,, ,,	५)
पशुपति नाथ उपाध्याय ,, ,,	५)
बाबूराम गुप्ता ,, ,,	५)
पूरनमल गौतम , ,	५)
रामवीर सिंह योगेश ,, ,,	५)
रनवीर सिंह आर्य ,, ,,	५)
द्वारिका प्रसाद शर्मा ,, ,,	५)
रामसिंह राठोर ,, ,,	५)
मुलवीर सिंह राणा ,, ,,	५)
बनवारी लाल कश्यप ,, ,	५)
चन्द्रपाल गुप्त ,, ,,	५)
रमेश चन्द्र शर्मा ,, ,,	५)
अतर सिंह जी ,, ,,	५)
दुलारे लाल बनगर ,, ,,	५)
किशनसिंह चौहान ,, ,,	५)
डा० मक्खनलाल वार्ष्णेय ,, ,,	५)
रघुराज सिंह आर्य ,, ,,	११५)
डा० राजेन्द्र प्रसाद गुप्त सरक्षक आर्य समाज दानापुर कैन्ट पटना (बिहार)	५१)
प्रधान जी आर्य समाज मोगरवा ता० औसा जि० लातूर (महा०)	५०)
श्री शिवनन्दन प्रसाद द्वारा ओम दाल मिल, बाढ पटना (बिहार)	११)
प्रधान जी, आर्य समाज जगतपुर जिला मैनपुरी (उ० प्र०)	२५)
श्री रामचन्द्र गुप्ता त्रिकुटानगर जिसवा से १ जम्मू	२०)
श्री राम नारायण सीर [illegible]	
श्री शिव कुमार पवन [illegible]	
श्री हरवशलाल जी [illegible]	
श्री शकरलाल आर्य [illegible]	
श्री कृष्ण चन्द्र नागर ग्राम आवा जि०	
,, चन्द्रकान्ता शर्मा प्रधानाचार्य कन्या जू० हाई स्कूल फर्रुखाबाद	१०)
,, लाला त्रिलोक चन्द्र व सूरजमल, ग्राम बरधावल जि० मुजफ्फरनगर	१००)
श्री घमण्डी लाल स्वणकार मो० चोहट्टा, बरथावल मु० नगर	५०)
,, पी० के० गुप्ता म० प्र० इलेक्ट्रीसिटी बोर्ड ब्यावर	२५)
,, भारत सिंह राणा म०प्र० इलैक्ट्रीसिटी बोर्ड ब्यावर	१५)
,, सुरेन्द्र सिंह राघव, म० प्र० इलैक्ट्रीसिटी बोर्ड ब्यावर	३०)
,, ज्ञान प्रकाश सिंघल रि० टीचर नकुड़ जि० सहारनपुर	५०)
छात्र एवं अध्यापक वर्ग लाजपत राय आर्य कन्या विद्यालय समकर	५००)
श्री मन्त्री जी, आर्यसमाज अमृतक्ति भवानगर मरोरा बुलन्दशहर	१०१)
श्री देवराज शर्मा, ८७ द्वारिका पुरी मुजफ्फर नगर (उ० प्र०)	२१)
,, बी डी. गुप्ता, प्रधान आर्यसमाज भांडुप बम्बई-७८	१५०)
,, मन्त्री जी, आर्य समाज तिलक द्वार मथुरा	५०)
,, सुदर्शन देवी कपूर द्वारा डा० मथुरादास जी, २० राजपुर रोड दिल्ली	१०५०)
श्रीमती सुमित्रा देवी खन्ना द्वारा डा० मथुरादास जी, २० राजपुर रोड दिल्ली	१०००)
कु० टी आनन्द पूर्ण देवी शामनान बस्ती बेगम पेठ हैदराबाद	११)
श्री रवि प्रकाश गुप्ता आर्य ग्राम सपुरूद्दीन नगर नहौर बिजनौर	५०)



सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र FREE

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] वर्ष २२ अंक ८] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र फाल्गुन कृ० २ स० २०४३ रविवार १५ फरवरी १९८७ | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

निर्दोष लोगों की हत्याएं हो रही हैं

सरकारी तन्त्र बेकार होकर रह गया है

पंजाब का तमाशा

पंजाब की परिस्थितिया नाजुक तो हो रही हैं किन्तु इसके साथ ही दिलचस्प भी हो रही है। श्री सुरजीतसिंह बरनाला समझ गये हैं कि पाच ग्रन्थी न केवल गलत ढग से अधिकार मे आये हैं बल्कि अपने अधिकार का अनुचित प्रयोग करके राजनैतिक मामलो मे भी टाग अडा रहे हैं। आपकी ओर से घोषणा की गई है कि आप इन व्यक्तियो का पूरा सम्मान करते हैं लेकिन जिस ढग से वह कार्य कर रहे हैं इससे यह स्पष्ट प्रकट है कि वह किसी के हाथ मे कठपुतली बने हुए हैं।

इन पाच प्यारो ने अकाली धडो मे मित्रता और समझौता कराने की घोषणा की। लेकिन इसके लिये इन्होने तरीका क्या अपनाया। शासनारूढ अकाली धड से किसी प्रकार की बात किये बिना इसे तोड दिया और जब इसका एक प्रतिनिधि मडल इनसे मिलने गया तो इमे न तो दरबार साहब मे प्रवेश करने दिया गया और न अकाल तख्त के जत्थेदार साहब ज्ञानी दर्शनसिंह जी दरबार साहब के बाहर आये। इस प्रतिनिधि मडल मे पजाब सरकार के मन्त्री थे जो आपको इस हिदायत नामे की कानूनी जटिलताए समझना चाहते थे। किन्तु आपने इनसे मिलने की आवश्यकता ही न समझी। इसके बाद अगर श्री सुरजीतसिंह बरनाला यह घोषणा करते हैं कि वे इन ग्रन्थियो की बात मानकर अपना दल तोडने को तैयार नही तो कौन इन्हे दोष देगा। अब प्रत्येक यह जानना चाहता है कि इसके बाद क्या होगा। कोई आश्चर्य नही यदि पाच प्यारे श्री सुरजीतसिंह बरनाला के विरुद्ध फतवा जारी कर दे और आपको तनखैया घोषित कर दे।

आशा करनी चाहिये कि ये ग्रन्थी साहवान ऐसी हिमाकत न करेंगे। वो जो कुछ इस समय तक हुआ है और जिस प्रकार ये लोग व्यवहार कर रहे है इसे देखते हुए तो यह कहा जायेगा कि श्री बरनाला को सिख पन्थ से पृथक किया जाना केवल समय की बात है। सच्चाई यह है कि रागी दर्शनसिंह इस समय जिन लोगो के हाथ मे कठपुतली बने हुए हैं वे एक विशेष उद्देश्य से कार्य कर रहे है। वे पजाब मे अराजकता फैलाना चाहते है। इन्हे इस बात से कोई सरोकार नही कि निर्दोषो की हत्याए हो रही है और सारा सरकारी तन्त्र बेकार होकर रह गया है सारे अकाली दलो को तोडकर अब इन्होने जिन नये पदाधिकारियो की घोषणा की है इनको देखकर ही कोई अनुमान कर सकता है कि इनकी नकेल किन लोगो के हाथ मे है।

एक हटाये गये पुलिस अफसर सिमरनजीतसिंह को जो इस समय भागलपुर जेल मे नजरबन्द है अकाली दल का प्रधान बनाकर इन लोगो ने न केवल पजाब के शान्तिप्रिय लोगो को ही बल्कि सारे देश को ही नोटिस दे दिया है कि वे किस बात की आशा करें। इनके इरादो को समझते हुए केन्द्रीय सरकार ने एक असाधारण व्यवहार

(शेष पृष्ठ २ पर)

धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत

उडीसा में शुद्धि सम्मेलन दिनांक ६, ७, ८ फरवरी

दिल्ली ४ फरवरी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से प्रकाशित सूचना के अनुसार सभा के उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज शास्त्री ६ फरवरी को उडीसा मे शुद्धि सम्मेलन मे सम्मिलित होने के लिए पहुच गये है।

सभा की ओर से शुद्धि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए १० हजार रुपये की राशि भेजी गई है।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश भर की आर्य समाजो तथा दानी सज्जनो से खुले दिल से धर्मरक्षा महाभियान को सफल बनाने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के पते पर सहायता राशि भेजने की अपील की है।

१० दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर

दिनांक २१ मार्च ८७ से ३१ मार्च ८७ तक

आर्यवन विकास फार्म-रोजड, पोस्ट—सागपुर,
जिला—साबरकाठा (गुजरात)

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि यहा आर्य वन विकास फाम मे चैत्र कृष्णा ६ से चैत्र शुक्ला १ तदनुसार २१ मार्च से ३१ मार्च १९८७ प्रातःकाल तक एक १० दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमे माताए भी भाग ले सकती है। ३० मार्च दोपहर से उत्सव का कार्यक्रम प्रारम्भ होगा जो ३१ मार्च दोपहर तक चलेगा।

शिविरार्थियो को योग-दर्शन के सूत्रो का अध्यापन तथा क्रियात्मक योग-साधना सिखाने के साथ साथ यम नियम-आसन प्राणायाम-प्रत्याहार धारणा-ध्यान समाधि, विवेक वैराग्य-अभ्यास, जपविधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामि-सम्बन्ध (ममत्व) को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयो पर विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

दिव्य जीवन का निर्माण

ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम् ।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ॥ यजु० १-५

पदार्थ—(अग्ने) हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर (व्रतपते) आप व्रतों के पालक वा रक्षक हैं। मैं इस (व्रतम) व्रत को धारण करके उस पर (चरिष्यामि) चलू गा। (तत्) उस व्रत के पालन करने मे मुझे (शकेयं) सामर्थ्यवान बनाइये (तत्) उस व्रत मे (मे) मुझे (राध्यताम्) पालन करने मे सफल वा समृद्ध कीजिये (इदम्) अब इस व्रत मे (अहम्) मैं (अहम्) असत्य से (सत्यम्) सत्य को (उपैमि) अनुष्ठान पूर्वक ग्रहण वा धारण करता हूँ।

भावार्थ—हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर आप अनन्त शक्ति और ज्ञान के असीम भण्डार हैं। और आप सभी व्रतो के पालक वा रक्षक हैं। आज मैं असत्य को छोड कर सत्य को धारण करने का व्रत ग्रहण करता हूँ। आप इस व्रत के पालन करने मे मुझे सफल समृद्ध कीजिये। जिससे मैं व्रत का अनुष्ठान दृढता के साथ करता रहूँ।

व्याख्या

कोई भी मनुष्य केवल याचना करने से ही अपने अभीष्टो की प्राप्ति नहीं कर सकता। अपितु अपने मनोर्थों को प्राप्त करने के लिये उसे सतत पुरुषार्थ करना पडता है। तभी इष्ट सिद्धि ही हुआ करती है। प्रार्थना के द्वारा हम अपने इष्ट देव परमेश्वर से जो कुछ मांगते हैं वह हमारी प्राप्ति का लक्ष्य बन जाता है। उस लक्ष्य की प्राप्ति वा पूर्ति के लिये हमे ईश्वर की व्यवस्था के अन्तर्गत सतत पुरुषार्थ करना पडता है। तभी उसकी प्राप्ति सम्भव हुआ करती है। महर्षि दयानन्द जी ने अपने स्वमन्तव्य अमन्तव्य प्रकाश मे भी प्रार्थना के सम्बन्ध मे यही लिखा है कि प्रार्थना का अर्थ अपने पूर्ण पुरुषार्थ के पश्चात् उसकी प्राप्ति के लिये उससे सहायता की याचना करना। इस वेद मन्त्र से भी यही प्रेरणा मिलती है कि केवल व्रतो (सत्य नियमो) के ग्रहण और धारण करने से ही इष्ट सिद्धि सम्भव नही हुआ करती अपितु उन व्रतो (नियमो) का दृढता से पालन करने से वा उन व्रतो के पालन को अपने आचरण का अभिन्न वा अटूट अग बना लेने से ही इष्ट सिद्धि हुआ करती है।

इस मन्त्र के शब्दो से यही प्रेरणा मिलती है कि हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर जिस प्रकार आप अपनी व्यवस्थाओ सृष्टि नियमो का दृढता वा कठोरता से परिपालन कर रहे हैं। उसी प्रकार आप मुझे भी ऐसा सामर्थ प्रदान कीजिये कि मैंने जो असत्य को त्याग कर केवल सत्यानुरूप ही अपना आचरण बनाने का व्रत लिया है। मैं भी अपने सत्याचरण को दृढता से स्थिर बनाये रखू। और इस सत्य पालन के सम्भावित और आवश्यम्भावी परिणामों और फलो से अपने इस जीवन को इसके राध्यो (ऐश्वर्यों) से सम्पन्न बना सकू। साधको को यह तथ्य कभी नहो भूलना चाहिये के व्रतो के केवल धारण कर लेने से नही अपितु व्रतो के निरन्तर शाश्वत रूप से पालन करने से अर्थात् इनके दृढता पूवक अनुष्ठान से ही इष्ट सिद्धि हुआ करती है।

—व्रतपाल साधक, रामधन आर्य लुधियाना

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक निरीक्षण दौरे पर

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बाल-दिवाकर जी हस उत्तर प्रदेश और आर्य वीर दल गतिविधियों का निरीक्षण करने दौरे पर जायेंगे। १२ फरवरी को आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर झालू बिजनौर, १३ फरवरी को कासगज उत्तर प्रदेश, १४ फरवरी को ओरगाबाद मीत रौल तथा २७ फरवरी को मुगालपुर बांसली (मुरादाबाद मण्डल) के प्रशिक्षण शिविर मे दीक्षान्त भाषण करेंगे।

स्मरण रहे गत ८ फरवरी को श्री हस ने आर्य वीर दल समिति हरियाणा प्रदेश की बैठक को सम्बोधित किया। उन्होने कहा पूर्व सचालक श्री उत्तमचन्द शरर योग्यतम व्यक्तित्व के धनी रहकर बडी निष्ठा से आर्य वीर दल हरियाणा के सचालन का उत्तरदायित्व सम्भाल रहे। नए सचालक श्री उम्मेद शर्मा एम ए दीक्षित व्यक्तित्व हैं आशा करता हूँ कि वे हरियाणा प्रान्त मे आर्य वीर दल को नया आयाम देंगे।

(पृष्ठ १ का शेष)

अपनाते हुए पजाब के अकालियो के आपसी झगडे पर अपने विचारों को प्रकट किया है। इसकी ओर से कहा गया है कि वह बडी अच्छी तरह समझ रही है कि ये अकाली पजाब मे क्या परिस्थितियां उत्पन्न करके रख देना चाहते हैं किन्तु केन्द्र इन्हे किसी स्थिति में भी सफल होने की आज्ञा न देगा। इन लोगो ने आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव का जिक्र किया है लेकिन वास्तविकता यह है कि जिन लोगो को अकाली दल का नेता बनाया जा रहा है वे इस आनन्दपुर साहब प्रस्ताव की व्याख्या ऐसी कर रहे हैं जिनका तात्पर्य है कि पजाब चाहे भारत से न कटे लेकिन व्यवहारिक रूप से इसका खालिस्तान बन जाये जहा ये लोग स्वतन्त्रता पूर्वक व्यवहार कर सके। कोई सरकार किसी पार्टी की आतरिक कलह मे किसी प्रकार की कोई दिलचस्पी नही ले सकती। किन्तु जब यह स्पष्ट दिखाई दे रहा हो कि इस पार्टी के ईरादे क्या है और किस प्रकार देश की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था को यन्त्र बनाकर एक प्रान्त को बाकी के देश से किसी दिन भी काटने का बहाना तलाश कर रहा हो तो केन्द्र सब कुछ शान्ति से नही देख सकता।

सच्चाई यह है कि वर्षों से केन्द्र ने पजाब के कुछ अकालियो को आवश्यकता से अधिक छूट दे रखी है जिसका परिणाम यह हुआ है कि आज पजाब में अन्धेर मच चुका है। सरकार नाम की कोई चीज वहा नही रही दिन-दिहाडे हत्याए हो रही है और डाके पड रहे है। कोई दिन नही जाता जब निर्दोषो की हत्या न हो। जो लोग परिस्थितियो को और भी अधिक तीव्रता देना चाहते हैं इनको कितने दिन सहन किया जायेगा। श्री सुरजीतसिंह बरनालाको आज जिस स्थिति से दोचार होना पड रहा है इसके लिये आप स्वय जिम्मेदार है। इसके लिये आप किसी दूसरे को दोष नही दे सकते। आप भी काफी दिन केन्द्र से मजाक करते आ रहे हैं और अन्त मे जब पानी सिर से गुजरने वाला है तो आप को होश आ गया है। कहना कठिन है कि आप इस क्राइसिस से निकल भी सकेंगे या नही। गो इस नाजुक समय पर साहस और बहादुरी दिखाने के लिए आपकी प्रशसा करनी होगी। किन्तु यह सब व्यर्थ होगा यदि आप यह समझने का प्रयास न करे कि इस समय तक आप जिस प्रकार की राजनीति पर व्यवहार करते रहे हैं इसने आपके लिए और देश के लिए क्या कठिनाई खडी करके रख दी है। सच्चाई तो यह है कि वर्षो से अकाली जो दृष्टिकोण अपनाये हुए हैं यह आज इसका अन्तिम चरण है। यह सब होना ही था। इसलिए यदि आपने इसका अगला और अन्तिम पग नही उठने देना तो आप को अपनी सारी राजनीति बदलनी होगी। आज तक यह सारी अकाली राजनीति देश के और टुकडे करने के मार्ग साफ कर रही थी। आपके विरोधी इसका लाभ उठा रहे हैं। इनकी नीति का परिणाम देश के लिए विनाशकारी तो है ही, आप भी किसी गलत फहमी मे न रहे। आप अपने विरोधियो को इनके चुने हुए युद्ध के मैदान मे पछाड नही सकते। इसलिए आपको कुछ हगामी निर्णय करने होंगे। इनमे सबसे प्रमुख यह है कि आपने कब तक इस राजनीति को अपनाना है जिसका आज आपके सम्मुख है और जो धीरे धीरे पजाब को खालिस्तान की ओर ले जा रही है।

—के० नरेन्द्र

भगतपुर आजमगढ़

आपको सूचित करना है कि मेरे गाव भगतपुर, डा० गोविन्दपुर, जनपद-आजमगढ का वार्षिक उत्सव १२ से १४ मार्च ८७ तक मनाया जायगा जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के उपदेशक व भजनोपदेशक के अतिरिक्त अन्य लोग भी भाग लेंगे।

—शिवधर

आर्य समाज कासिमपुर गढी

आर्यसमाज विद्युत गृह कासिमपुर अलीगढ का १६वा वार्षिकोत्सव ८, ९, १० मार्च १९८७ को होना निश्चित हुआ है।

—चन्द्रपालसिंह सिरोद

सऊदी अरब--जहां सत्यार्थ प्रकाश और गीता रखना जुर्म है

(पंजाब केसरी के सम्पादक श्री अश्विनी की कलम से)

यह कहानी हरियाणा के शाहपुर गांव जिला जींद के एक निवासी श्री रामकुमार भारद्वाज की है, जिसे कुछ वर्ष पहले सऊदी अरब की सरकार ने इसलिए काल कोठरी में बन्द कर दिया, क्योंकि भारत से सऊदी अरब जाते वक्त यह व्यक्ति अपने साथ सत्यार्थ प्रकाश और गीता आदि कुछ धार्मिक पुस्तकें वहा ले गया था। वहा उसके कुछ मुसलमान साथियों ने उसकी शिकायत सऊदी अरब के सेना कार्यालय को कर दी। इस पर श्री भारद्वाज को वहां की सरकार ने हिरासत मे ले लिया और उनके मुताबिक जेल मे उनके साथ अमानुषिक व्यवहार किया गया। अगर समय पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को श्री भारद्वाज पत्र न लिखते और अपनी हालत बयान न करते, अगर स्वामी जी प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी विदेशमन्त्री श्री तिवारी और भारत स्थित सऊदी अरब के दूतावास में इस मामले को न उठाते, अगर श्री गांधी इस मामले में व्यक्तिगत रुचि न दिखाते तो शायद अब तक श्री रामकुमार भारद्वाज वहीं सऊदी सऊदी अरब की जेल मे ही पड़े सड़ रहे होते।



दिल्ली मे आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के आयोजन पर श्री रामकुमार भारद्वाज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ।

१४ मई, १९८६ के दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम अरब की जेल से श्री भारद्वाज ने पत्र लिखा। यह पत्र श्री भारद्वाज ने सऊदी अरब की जेल से ३० अप्रैल, १९८६ को लिखा था।

पत्र में श्री भारद्वाज ने लिखा था कि भारत से आते समय वह अपने साथ सत्यार्थ प्रकाश, गीता आदि कुछ धार्मिक पुस्तकें ले गये थे। जब वह अवकाश के समय इन पुस्तकों को देख रहे थे तो उसके ही एक मुस्लिम दोस्त ने वहा सेना कार्यालय में शिकायत कर दी। इस कारण उन्हे जेल में बन्द कर दिया गया और उनके साथ अमानुषिक व्यवहार किया गया। उनके पावो को रस्सी से बांधकर और हाथों को जकड कर लिटा कर कोडों से निदयता पूर्वक मारा गया। उनके साथ ही जो अन्य हिन्दू थे, उनके साथ भी ऐसा ही दुर्व्यवहार किया गया। उन्हें बहुत यातनाए दी गई। सऊदिया अलफर अलबैतीन सैंट्रल जेल से भेजे गये अपने पत्र में श्री भारद्वाज ने लिखा था कि उनके साथ आगे भी दुर्व्यवहार किया जायेगा और कठोर दण्ड दिया जायेगा। सहायता की प्रार्थना करते हुए उन्होंने लिखा था कि वहां भारतीय हिन्दुओ पर जो अत्याचार किये जा रहे हैं, उनके विरुद्ध कार्यवाही का जाए और सऊदी अरब में भारत के दूतावास तथा भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को भी उनके विषय में सूचित किया जाए।

इस पत्र के प्राप्त होते ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय को २० मई १९८६ को पत्र लिखकर रामकुमार भारद्वाज की रिहाई की मांग की। मन्त्रालय ने अपने ४ सितम्बर, १९८६ के पत्र द्वारा उत्तर दिया कि रियाद में हमारे दूतावास ने सऊदी अरबिया के विदेश मन्त्रालय से श्री रामकुमार भारद्वाज को तुरन्त रिहा कराने की मांग कर दी है। साथ ही साथ यह भी लिखा कि सऊदी अरबिया में इस्लाम को छोडकर किसी भी अन्य धार्मिक पूजा, उनके साहित्य तथा प्रचार पर पाबन्दी है। सभा प्रधान ने पुन भारत स्थित अरबिया दूतावास को श्री भारद्वाज की रिहाई के लिए १८ अक्तूबर, १९८६ को एक पत्र लिखा। इसके अतिरिक्त विदेशमन्त्री श्री नारायण दत्त तिवारी तथा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी को भी ३० अक्तूबर १९८६ को [illegible] पत्र लिखकर भारद्वाज की तुरन्त रिहाई की मांग की।

प्रधानमन्त्री के हस्तक्षेप करने की प्रार्थना के आधार पर इस मामले में बडी तेजी से कारवाई हुई। विदेश मन्त्रालय के खाड़ी विभाग के अवर सचिव ने १० नवम्बर ८६ को पत्र लिखकर सूचित किया कि भारतीय दूतावास इस मामले पर जरूरी कार्रवाई कर रहा है।

इधर भारत मे केवल आर्य सामाजिक क्षेत्र मे ही नही अपितु समस्त राष्ट्रवादी जनता मे भारद्वाज की गिरफ्तारी पर कडी प्रतिक्रियाए हुई। सबने भारत के धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत और उसके मित्र राष्ट्रों द्वारा उसके नागरिकों के साथ इस प्रकार के अत्याचारों पर कडी आपत्ति की। सार्वदेशिक सभा ने यह घोषणा कर दी थी कि यदि रामकुमार भारद्वाज को ११ जनवरी, ८७ तक नही छोडा गया तो उस दिन सत्यार्थप्रकाश रक्षा दिवस और १४ जनवरी १९८७ को दिल्ली मे अरब दूतावास पर विशाल प्रदर्शन करके विरोध किया जायेगा।

इस घोषणा पर विदेश मन्त्रालय ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को अपने १० दिसम्बर १९८६ के पत्र मे लिखा कि रामकुमार भारद्वाज के सम्बन्ध मे प्रधानमन्त्री जी को लिखे गये पत्र के सन्दर्भ मे अरब सरकार के विदेश मन्त्रालय के साथ उच्च स्तरीय कार्रवाई प्रारम्भ हो गई है और शीघ्र ही भारद्वाज की रिहाई की आशा है।

प्रधान मन्त्री के हस्तक्षेप के परिणाम स्वरूप श्री रामकुमार भारद्वाज को सऊदी अरबिया सरकार ने दिसम्बर १९८६ मे एक दिन रात्रि १० बजे चुप चाप जेल से रिहा करके उनको तत्काल भारत भिजवा दिया।

गत २५ दिसम्बर १९८६ को दिल्ली मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आयोजित विशाल जनसभा मे श्री भारद्वाज भी उपस्थित थे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनका हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर श्री भारद्वाज ने पूरी घटना का विवरण देते हुए यह भी बताया कि वह खाली समय मे सत्यार्थ प्रकाश देख रहा था, तो हैदराबाद (भारत) के ही उसके एक मुसलमान दोस्त ने उसके साथ गद्दारी की थी।

अपनी रिहाई के लिए उन्होने सार्वदेशिक सभा तथा उसके प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी का आभार प्रकट किया जिनकी तत्परता से उन्हे काल कोठरी से मुक्ति मिली।

यह कहानी तो एक भारद्वाज की है, जिसने स्वामी जी को पत्र लिखा और यह उसकी खुशकिस्मती थी, जो स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और प्रधान

(शेष पृष्ठ ४ पर)

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी से शिक्षा लें !

अपने भारत देश मे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति जितना अनादर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी कर रहे है उतना तो तामिलनाडु के ससद सदस्य व वहा की जनता भी नही करती ।

रूसी प्रतिनिधि श्री गोर्वाच्योव ने जगह २ पर अपनी मातृभाषा मे ही भाषण दिये । परन्तु भारत की जनता का सिर शर्म से तब झुक गया जब प्रधानमन्त्री राजीव जी हर जगह अग्रेजी में ही बोले, क्या राजीव जी को हिन्दी नही आती या वे विदेशी मेहमानों के सामने हिन्दी बोलने मे अपमान महसूस करते हैं ? शायद राजीवजी यह भूल गये कि उनके नाना जवाहरलाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पडित को सोवियत शासको ने उनके अग्रेजी में बने प्रमाण पत्र यह कहकर लौटा दिये थे कि यह भाषा आपके देश की है और न हमारे देश की है ।

अग्रेजी हटाओ हिन्दी लाओ ! हिन्दी एकता की कडी है । राजीव सरकार के नारे क्या देशवासियो को धोखा देने के लिये हैं ? राष्ट्रपति देश मे कही भी जायें या विदेश मे जाय अपना भाषण हिन्दी मे ही देते हैं ।

फिर राजीव गाधी को हिन्दी से परहेज क्यो ?

हिन्दी से प्रेम क्यों ?

राष्ट्रभाषा हिन्दी के अपमान मे समय २ पर सदा लिखा जाता है परन्तु आर्य समाज का वो वर्ग जो अपनी भाषा के प्रति जागरूक है । वह आज स्वय पूर्णत हिन्दी को अपनाने के लिये तैयार है ? क्या बच्चो को हिन्दी के माध्यम से पढाने को तैयार है ? क्या अपने विद्यालय हिन्दी माध्यम से चलाने को तैयार है ?

क्या आज किसी समाज या सस्था व व्यक्ति मे राष्ट्रभाषा को प्रगति देने हेतु नेतृत्व देने की क्षमता है ? दूसरो पर आरोप करना सरल है । यदि हमे अपनी भाषा पर व गहन ज्ञान से सन्तोष है तो हमे सफलता की मजिल अवश्य मिलेगी ।

राष्ट्रभाषा उन्नति के लिये आत्म विश्वास लगन व मेहनत चाहिये । दोषी कौन है यह न देखकर आगे बढकर हिन्दी को बढायें ।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद हमारे सम्विधान निर्माताओ ने दिया था बहुत सोच समझकर ? आज विरोधी बहुत खोखले तक देकर अपनी सकीर्णता का परिचय दे रहे हैं । यह कहना कि अग्रेजी ही ज्ञान विज्ञान की भाषा है यदि हिन्दी पढाई गई तो हम ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र मे पिछड जायेंगे । इन गुलाम मानसिकता के लोगो से प्रश्न है कि रूस चीन जापान जर्मनी जैसे देश अपनी भाषा के प्रयोग से ही विज्ञान की तकनीक चरम सीमायें छू रहे हैं । फिर भारत मे क्यो नही ? हिन्दी समृद्ध भाषा है यह ज्ञान विज्ञान की सम्वाहिका बन सकती है ।

सत्यार्थप्रकाश और गीता रखना जुर्म

(पृष्ठ ३ का शेष)

मन्त्री श्री गाधी के प्रयासो से सऊदी अरब की जेल से छुटकारा मिल गया लेकिन प्रश्न यह उठता है कि इस समय हजारो की सख्या मे भारतीय नागरिक अरब देशो मे रोजी रोटी की तलाश मे काम कर रहे हैं । हम यह भी मानते हैं कि इन देशो मे न तो लोकतन्त्र है और न ही इस्लाम धर्म के अलावा किसी भी अन्य धर्म की पूजा और उसका साहित्य रखने की इजाजत है । इसका अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है कि इन देशो मे अगर कोई भी व्यक्ति इस्लाम को छोड कर अन्य किसी भी धर्म की पूजा करता पकडा गया तो उसे कैद कर लिया जायेगा ।

न तो मुझे इस बात से कोई सरोकार है और न ही इस बात पर कोई ऐतराज है कि अरब देशो से केवल इस्लाम धर्म के अलावा अन्य धर्मों की पूजा की इजाजत क्यो नही है ? क्योंकि यह इन देशो के शासको का अपना मामला है । लेकिन दुख इस बात का है कि भारत का इन सभी अरब देशों के साथ दोस्ती का सम्बन्ध है । अगर यह मान भी लिया जाए कि श्री भारद्वाज ने हिन्दू धर्म की पुस्तकें सऊदी अरब मे ले जाकर वहा के कानून को तोडा था, तो क्या वहा की सरकार को श्री भारद्वाज को हिरासत मे लेने की बजाए इसके तथ्यो से भारत सरकार को अवगत नही करवाना चाहिए था ? क्या मालूम कि इस समय अरब देशो की जेलो मे भारद्वाज जैसे और भी कितने भारतीय नागरिक सड रहे होगे ? क्यो अरब देशो से हमारी सरकार के दोस्ती के सम्बन्ध हैं, इसलिए मेरी अपनी व्यक्तिगत राय मे भारत सरकार को दोस्ताना अन्दाज मे यह मामला सभी अरब राष्ट्रो के समक्ष उठाना चाहिए, जहा भारतीय नागरिक काम कर रहे हैं ताकि जो हालत श्री रामकुमार भारद्वाज की सऊदी अरब मे हुई है, ऐसी दुर्दशा किसी अन्य भारतीय की इन अरब देशो मे न हो ।

इन्दुप्रभा अन्य साध्वियों को भी मुक्ति चाहती है

इन्दौर ६ फरवरी । भूतपूर्व जैन साध्वी इन्दुप्रभा ने आज इन्दौर प्रेस क्लब मे स्पष्ट शब्दो मे कहा कि उस पर न पुलिस का और न ही राधेश्याम के समर्थको का कोई दबाव है । जिस समय इन्दुप्रभा पत्रकारो से बात कर रही थी, बाहर जैन समाज के लगभग पाच सौ व्यक्ति प्रदर्शन कर रहे थे ।

इन्दुप्रभा ने बताया कि अपने अपहरण का नाटक उसने और राधेश्याम ने मिलकर रचा था । क्योकि वह समाज तथा जैन साध्वियो के चगुल से मुक्त होने मे कठिनाई अनुभव कर रही थी ।

इन्दुप्रभा को, जब वह अन्य जैन साध्वियो के साथ पैदल जा रही थी सिमरौल के निकट से राधेश्याम के दो साथी उसे मोटर साइकिल पर बैठाकर ले गए थे । इस घटना की रिपोर्ट पुलिस थाने मे दर्ज की गई थी । जैन समाज के आह्वान पर दूसरे दिन पाच जनवरी इन्दौर और आसपास के कई नगरो मे बन्द रहा, मगर उसी दिन इन्दुप्रभा ने यहा पुलिस के समक्ष उपस्थित होकर बताया था कि वह अपनी इच्छा से मोटर साइकिल सवारो के साथ गई थी और उसने जैन साध्वी पद को त्याग दिया है ।

जैन समाज के कुछ लोग अभी इस बात को लेकर आदोलन कर रहे है । उनकी माग है कि जिला पुलिस अधिकारियो तथा जिला प्रशासन के खिलाफ कार्यवाही की जाए । उनका कहना है कि इन्दुप्रभा को दबाव मे रखा गया है और उसकी मा से भी नही मिलने दिया जा रहा है ।

इन्दुप्रभा आज इन्दौर प्रेस क्लब के निमन्त्रण पर वहा उपस्थित हुई । उसने अकेले ही प्रश्नो के उत्तर दिए । उसने कहा कि उस पर किसी ओर से कोई दबाव नही है और वह इस समय राधेश्याम के साथ रह रही है ।

प्रश्नो के उत्तर देने के दौरान इन्दुप्रभा ने अपना एक बयान पढा । बयान मे उसने कहा कि वह जैन साध्वी पद त्याग चुकी है क्योकि उसमे काफी दिक्कत थीं । वह समाज मे व्याप्त कुरीतियो से सघर्ष करने के लिए एक सगठन बनाना चाहती है ।

इन्दुप्रभा ने अव्यस्क लडकियो को साध्वी बनाए जाने की भी निन्दा की और सुधारवादियो से आग्रह किया कि वे आगे आकर इस सघर्ष मे उसकी मदद करें ।

उसने बताया कि उसके समान ही अन्य जैन साध्वी स्त्रिया, जिनमे उसकी अपनी छोटी बहन प्रीति भी है, बहुत कठिन जीवन जी रही है, और सुखी नही है । प्रीति भी जैन साध्वी पद से मुक्त होने की इच्छुक है मगर अन्य साध्वियो का उस पर भारी दबाव है ।

यह पूछने पर कि क्या वह विवाह करेगी इन्दुप्रभा ने कहा— अभी इस बारे मे उसने कोई निर्णय नही किया है । उसने कहा— वह इस समय राधेश्याम के साथ खुशी से रह रही है ।

(दिनाक ७/२/८७ के नवभारत टाइम्स से उद्धृत)

पंजाब के हिन्दू पीड़ितों के लिए अपील

ताजा सूचना के अनुसार पंजाब से ३० हजार से अधिक हिन्दू परिवार दिल्ली आ चुके हैं । इनकी सहायता और पुनर्वास के लिए बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता है । सर्दी पूरे यौवन पर है । विस्थापितों के लिए गरम कपड़ों की तुरन्त आवश्यकता है । भिन्न-भिन्न स्थान तक मेरी अपील पहुंचे, उन सबसे प्रार्थना है कि धन और सामान के रूप में अपनी सहायता तत्काल भेजें । देरी न करें, अपनी सहायता आज ही भेजें ।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धन और सामान भेजने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

भारतीय त्यौहारों की विविधता में झांकती एकता

—चन्द्रदत्त "इन्दु"—

हम सामाजिकता के अनेक परिवेशों में रहते हुए भी, धार्मिकता अपने-अपने दायरों में बंधे होने पर भी, विभिन्न वेश-भूषा, साज-सज्जा में अपनी अलग पहचान बनाकर भी प्रकृति के माधुर्य में एक ही रस पाते हैं। इस माधुर्य में हम अपने देश की विराटता के दर्शन करते हैं। जीवन जीने के इस पूरे तारतम्य में, हमें कुछ ऐसा भी चाहिए, जो लोक व्यवहार की ओर उन्मुख करे। हम अपनी खिड़कियां खोलकर बाहर की ताजी हवा को अन्दर लायें। उस ताजगी में जीवन की एक नई अनुभूति को जगायें और उस प्रबुद्धता से तरंगित होकर शाश्वत सत्य की, यानी सत, चित आनन्द की तलाश करें।

इसी तलाश की चाह पैदा करने और उसे लोक व्यवहार में मूर्त रूप देने के लिए ही संस्कृति ने हमारी सम्पूर्ण रागात्मक प्रवृत्तियों और अनुभूतियों के साथ जन्म लिया। हमने सुख के क्षणों को मिल-बैठकर बांटने के लिए ही संस्कारित होकर अर्थात् मानवता के कल्याणकारी और परहित चिन्तन की कामना से भाईचारे को जाति-धर्म और वर्गवाद के घेरे से निकालकर केवल मानव के नाते पास लाने, दुलारने, अपनत्व उडेलने के लिए त्यौहारों की संरचना की।

त्यौहार एक अनौपचारिक सम्मेलन है, एक रंगमंच विहीन सम्मेलन, जहां इकट्ठा होकर हम एक दूसरे के पास आते हैं, जानते-पहचानते हैं। अपनी तथाकथित स्वार्थी मर्यादाओं के घेरे तोड़कर किसी हित-अहित का आकलन किए बिना एक दूसरे से मिलते हैं। मिलते ही नहीं, हंसते-बोलते, नाचते-गाते, खुशियो की बौछारों का रंग एक दूसरे पर उड़ेलते नजर आते हैं।

त्यौहारों की रसमयता

त्यौहार लोक जीवन की प्रगाढता की धुरी हैं। त्यौहारों की कल्पना भी इसीलिए की गई कि इसी बहाने हम जीवन की व्यस्तता की यातना से छुट्टी पा, कुछ घण्टों या कुछ दिनों तक अपने को लोक धर्म की ऐसी धारा से जोड सके, जहां मानवीय कर्त्तव्य बोध से हमारा सीधा परिचय होता है। ईर्ष्या द्वेष, धार्मिक घुटन, जातीय घृणा, भले मन में हो, मगर उभरकर सामसे नहीं आती।

त्यौहारों की छवि इतनी मनोरम होती है, उनकी वाणी इतनी कल्याणकारी होती है कि हम उस खुशी में डूबकर स्वार्थों से घिरे अपने व्यक्तित्व की पेचदगियों के दर्द को बिना किसी दवा के महज त्यौहारों की गन्ध पाकर भूल जाते हैं। यानी त्यौहार हमारे मिलन संगम हैं। त्यौहार वे शक्तिशाली पुल हैं, जो मन की दरारों से ऊपर उठकर भाई-चारे के दूर फटे-बंटे तटों को एक दूसरे से जोड़कर राष्ट्रीयता की मंजिल तक पहुंचाने के लिए मार्ग बनाते हैं। त्यौहार जाते है, आते हैं। हर मौसम के अलग-अलग त्यौहार। बदलती-सवरती प्राकृतिक छटा से चित्रित रंजित, ये त्यौहार वर्षभर आते-जाते रहते हैं। महीनों का क्रम इनसे बंध गया है। महीने की क्या, हमारे जीवन का क्रम भी इनसे बंधा है। हमारी आकांक्षाएं, मनोकामनाएं, सुख सन्देश सभी त्यौहारों के साथ जुड़ गया है। त्यौहारों पर हम एक दूसरे को शुभ संदेश भेजते हैं—कहते हैं यह त्यौहार आपके लिए मंगलकारी हो। इस तरह सौभाग्य की सिंदूरी लालिमा इन त्यौहारों के बहाने हम अपने ललाट पर चित्रित करते हैं, मांग में भरते है उस मधुर कल्पना की लाली। आह्लादित हो उठते है, वह सब कहते, करते। इस तरह त्यौहार हमारे जीवन में आशा के केन्द्र बन गए है। हमारा सुख-समृद्धि वैभव त्यौहारों के आगमन से जैसे फलने-फूलने लगता है।

त्यौहारों की विविधता हमें आकर्षित करती है। ठीक रंग बदलते फूलों के सौन्दर्य की तरह। उस आकर्षण में कहीं अपनेपन का गहरा रंग दीख पडता है। जीवन की यांत्रिकता को तोड़ने, मानसिकता को उल्लास के भावबोध से जोड़ने में त्यौहारों का महत्व सर्वमान्य है। वस्तुतः व्यवहार में सरलता, सहृदयता, सहिष्णुता लाने में त्यौहारों को अपनी भूमिका है। त्यौहार रास-रंग के स्वर में हमें गहराई से कल्याणकारी, समाजोपयोगी शिक्षा दे जाते हैं। वे बार-बार आकर हमारी टूटन को कहीं न कहीं से जोड़ते हैं। त्यौहारों का काम ही जोड़ना है।

यूं त्यौहार भी जाति और धर्म के पर्दों पर अवतरित होते हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई के रूप में सम्बोधित भी होते हैं, पहचान भी बनाए हुए हैं, किन्तु त्यौहार धर्म या जाति की संकुचित सीमा में कभी नहीं रहे। इनका स्वरूप सहज स्नेह की, भाई-चारे की अन्तता में समाया हुआ है। जब तक सभी धर्मों का सही अर्थों में समन्वय न हो, तब तक उस त्यौहार का सही रूप उजागर नहीं होता।

होली हो या दशहरा। गुरुपर्व हो या ईद, बडा दिन हो या कोई और त्यौहार। इनके आते ही उमंग चारों ओर ऐसे बिछ जाती है, जैसे हरी घास के लानों पर जोड़े की सुहानी गुनगुनाती धूप। सभी इन त्यौहारों की खुशियों में, इनके राग-रंग मे इनके जनकल्याणी स्वरूप की भूमिका में हिस्सा लेते है।

दशहरे की रामलीला सभी देखते हैं। दूसरे धर्म वालों में भले ही हिन्दू धर्म की मान्यताओं की आस्था न हो, किन्तु रामलीला में उनका मन रमता है। यह त्यौहार की महिमा। भाई-चारे के बन्धन इससे और मजबूत होते हैं। मेल-मिलाप बढता है। दूरी मिटती है। सामाजिक सामंजस्य का सही रंगमंच है ये त्यौहार।

इसी तरह हम दीवाली को ले या फिर बडा दिन या ईद को ले। इन त्यौहारों का ताना-बाना आपसी सद्भाव को बढाने के लिए भी पग उठाया गया है। गुरु गोविन्दसिंह के जन्म दिन पर सिख भाइयों द्वारा सड़कों पर जगह-जगह शर्बत पिलाते हुए देखा जा सकता है। राह चलते रुककर सब शर्बत पीते हैं। यह शर्बत मजहबी घृणा को गले से नीचे उतारकर उसमें गुरु की सद्वाणी जगाता है। राम नाम का मतलब गुरुग्रन्थ और रामायण में एक ही है। एक नाम जग को तारण वाला। अल्लाह कहें या परवर दिगार

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सत्संग में भाग लेना

स्वर्गीय ओम्प्रकाश त्यागी

दुनियां को ईश्वर ने क्यों बनाया

ईश्वर ने इस दुनिया को प्राणियों के भोग के लिये बनाया है। संसार में भोग-योनी वाले पशु पक्षी पतंग आदि बनाये हैं, और मानव को स्वतन्त्र कर्म करने वाला बनाया है। अपने स्वतन्त्र कर्मों के साथ मानव को पिछले जीवन के आधार पर जाति आयु और भोग भी मिलते हैं। मानव अपने भाग्य को स्वयं बनाने वाला होता है। वह अपने लिये दुनिया को स्वर्ग या नरक जैसा बनाना चाहे बना सकता है और अपने शुभ आचरण के द्वारा मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है। मानव ही वास्तव में मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। मोक्ष-प्राप्ति के लिये ही ईश्वर ने उसे यह सृष्टि दी है।

ज्ञान मनन और प्राप्ति यह मानव की प्रगति का सीधा मार्ग है। कहने का तात्पय यह है कि अन्य प्राणियो को जहां ईश्वर ने भोग पदार्थ और जीवन को चलाने के लिये साधारण ज्ञान दिया वहां मानव को अपना वेद ज्ञान दिया उसे समझने के लिये बुद्धि दी और फल की प्राप्ति के लिये उसे इन्द्रियां दी हैं। इसे भी प्रगति के लिए ईश्वर ने सब कुछ दे दिया है।

ज्ञान की प्राप्ति कैसे करें

मानव का सब से पहला कतव्य ज्ञान की प्राप्ति करना है। अपने जीवन यापन तथा मोक्ष के लिये ज्ञान प्राप्त करना ही होगा। ज्ञान की प्राप्ति गुरुकुल तथा स्कूल मे होती है स्वाध्याय से भी होती है, तथा विद्वान व्यक्तियों के भाषण सत्संगो मे सुन सकते हैं। विद्वान व्यक्तियों का प्रवचन सत्संगो मे भाषण हो यही आयोजक प्रयत्न करते हैं।

प्रत्येक सत्सग मे प्रत्येक को प्राप्ति नहीं होती है

सत् रज और तम तीन प्रकार के व्यक्ति समाज में होते हैं। सत्सग मे किसी एक विषय का व्यक्ति होगा, इसलिये दूसरे व्यक्ति कोरे रहजाते हैं। प्रवचन अच्छा हुआ परन्तु कई व्यक्तियो को उसमे रुचि ही नही आई। ऐसी घटनाओ को ध्यान मे रखकर सत्सग मे नही जाना चाहिये। प्रभु हमारे कल्याण की बात भी करने वाला कोई व्यक्ति आयेगा इसी की खोज में वहां जाना चाहिये। आप कितने ही बड़े विद्वान क्यो न हो, आपको सत्सग मे विद्यार्थी बनकर ही जाना होगा, अन्यथा आपको वहां कुछ भी नही मिलेगा। कहने का तात्पय यह है कि अपने कल्याणार्थ सत्सग निरभिमान जाना चाहिये।

बुद्धि का प्रयोग

कोई भी विद्वान सत्सग मे भाषण दे उसकी प्रत्येक बात को व्यक्ति और और समाज के कल्याणकारी हैं या नही इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिये। ऐसा होने पर ही उसे ग्रहण करना चाहिये अन्यथा नही। महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि सब सत्य विद्यायें और सब सत्य विद्याओं से प्राप्त ज्ञान का मूल्य ईश्वर होता है। ईश्वर सत्य है। उसका ज्ञान भी सत्य होता है। सत्य बुद्धि की कसौटी पर खरा उतरने वाला होता है। जो बुद्धि की कसौटी पर ठीक न उतरे उसे स्वीकार नही करना चाहिये। महर्षि ने इसे इस रूप मे कहा है कि सत्य है उसे ग्रहण करो, और जो असत्य है। उसे छोड़ो और उसका विरोध करो।

अपने कल्याण की भावना हो

सत्सग मे अपने कल्याण की भावना अवश्य हो। अपना कल्याण कब किस बात से होगा इसे कहा नही जा सकता है। महर्षि दयानन्द बचपनमे अच्छे विद्वान थे। शिवरात्रि के दिन उनका उपवास हुआ और रात्रि में शिव मन्दिर मे बैठ। दयानन्द जगते रहे। रात्रि मे उन्होने देखा कि भगवान के भोजन को चूहे खा रहे थे। घटना साधारण और छोटी थी, परन्तु दयानन्द की अन्तरात्मा को लगी और कहा कि जो भगवान अपने भोजन की भी रक्षा नही कर सकता वह भगवान कैसे हो सकता है। बस वह मन्दिर को छोड़कर घर आ गये और अपना व्रत तोड़कर भोजन कर लिया लिया। इसी घटना ने दयानन्द को घर छुड़ाकर उसे विद्वान बना दिया।

एक बहुत बड़े वैज्ञानिक एक सेव के वृक्ष के नीचे सो रहे थे। सेब का फल पेड़ से गिर कर उनके सीने पर पड़ा। वह उठे और सोचने लगे कि फल नीचे के सीने पर क्यों गिरा। [illegible] 'ला आफ ग्रावीटेशन' निकाल डाला। इससे संसार में नाना प्रकार के कल्याण हुए हैं।

लाहौर में एक छज्जूराम रहता था। वह नित्य सोचता था कि वह घर छोड़कर जंगल में रहे, परन्तु [illegible] रावी नदी के किनारे जा रहे थे कि [illegible] महारानी [illegible] महारानी के [illegible] महाराजा क्या कह सकेगे। उसने फिर नहीं [illegible] रावी नदी के किनारे गये और लौटे नहीं। उन्हें महारानी की बात याद रही— महाराज एक तरफ हो जांय—सो हो गये।

मनन शीलता और आचरण

सत्सग मे जो बातें सुनी हैं उन पर अपने घर में लगातार मनन करना चाहिये। मनन करने से ज्ञान अपने जीवन का अंग बन जाता है। ज्ञान अपनी बुद्धि की शोभा बन जाय यह अच्छी बात है, परन्तु वह जब तक आचरण मे न आवे तब तक उसके गुण अवगुण दिखाई नही पड़ते हैं। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को अपने सुने हुये ज्ञान पर मनन और उसपर आचरण करना चाहिये।

सर्व कल्याणकारी ज्ञान को आदर दें

जो ज्ञान सर्व कल्याणकारी हैं उसे सब से पहिले स्वीकार करें, क्योंकि उसी से मानव अपने छोटे दायरे से बड़ दायरे में आता है। यही उसका मानवपन है। स्वार्थी तो जानवर भी होते हैं परन्तु अपने साथ सबका कल्याण करता है। इसी गुण को धारण करना मानव का कर्तव्य है। यह कार्य उसे हैवानियत से ऊंचा उठाकर उसे देव बना देता है, और मोक्ष के मार्ग पर डाल देता है। जो कर्म बिना कामना के किये जाते हैं वही व्यक्ति के लिये शुभ होते हैं। उन्ही को करने का प्रयास मानव को करना चाहिये। मोक्ष का मार्ग यही है कि मानव अपने सुख शान्ति को प्राप्त कर मोक्ष की दिशा मे बढ़। सब कल्याणकारी कार्य उसके इसी लक्ष्य की पूर्ति करते हैं।

आर्यसमाजी बनना

यदि व्यक्ति बुद्धिपूर्वक सत्सगो का लाभ उठावे तो निश्चित रूप से वह आर्यसमाजी बन जायगा। आर्यसमाजी बनने के बाद प्रकार की अनेकों समस्याओ का समाधान हो जायगा। धर्म में प्रेमपूर्वक बुद्धि का प्रयोग होगा और सभी बातें समझ मे आवेंगी और ढोंग-ढकोसला भाग जायगा भूत प्रेत आदि भी साफ हो जायगे और देश-परदेश का ढांचा समझ मे आकर व्यक्ति सच्चा राष्ट्रीय बन जायगा। जीवन का समस्त कार्य-क्रम उसके सम्मुख आ जायेगा। एक आर्यसमाजी बन जाने पर वह-पुरुष देशभक्त चरित्रवान और निष्ठावान बन जायेगा। इसके लिये यह आवश्यक होगा कि वह आर्यसमाज के ही सत्सग में भाग ले। इसी मे उसका कल्याण होगा।

आयुर्वेद की प्रमुख मूल्यवान् औषधियां

—लेखक : रूपनारायण शर्मा 'वैद्य'

आयुर्वेदिक जड़ी बूटियां और औषधियां भारतीय जन जीवन में विशेष महत्व रखती हैं, इनके सेवन से शारीरिक एवं मानसिक रोगों को दूर करने में समर्थ और शक्ति रखती हैं। भले ही पाश्चात्य देशों के डाक्टर इनकी उपेक्षा की दृष्टि से देखें परन्तु ये सर्व काल और आयु तथा रोगों के असाध्य रोगों को दूर कर मनुष्य जीवन में नवस्फूर्ति का संचालन करती हैं।

अनेक रोगों के लिए अनेक जड़ी ग्राम और नगर वन उपवन उद्यान आदि में मिलती हैं। जैसे नीम को शारीरिक रोगों को दूर करने में समर्थ रखता है, शरीर को शीतल रखता है इसको सदाचार सेवन ऋतु के अनुसार करें तो वह दीर्घायु प्राप्त करता है। उसी तरह पीपल वृक्ष को बड़ा ही उपयोगी माना गया है, यह कई असाध्य रोगो को दूर करने में अचूक माना गया है। भले ही इसे शास्त्रकारो ने धार्मिक मान्यता देकर इसकी उपयोगिता बढ़ा दी है। इसमें विद्युत शक्ति प्राप्त होती है। इसे प्रातः काल ५ से ६ बजे तक सेवन करना चाहिए। उसी तरह औषधि में सर्वोत्तम बेल का विशेष महत्व है यदि इसको पेट तथा उदर सम्बन्धी रोगों की शिकायत हो आंव पड़ती हो, तो इसके सेवन से ठीक हो जाता है। इस तरह औषधियो का राजा-आंवला, हर्रा बहेड़ा है जो त्रिदोष नाशक है जो उदर सम्बन्धी रोगो को दूर करने में क्षमता रखते हैं।

श्री रमेशचन्द्र वेदी ने 'त्रिफला' अपनी अन्वेषणात्मक पुस्तक में इसकी काफी प्रशंसा की है और इनके विशिष्ट गुणो पर वृहद प्रकाश डाला है। इसी तरह हम शतावरी के बीज और ईसबगोल की प्रशंसा करेंगे जो वीर्य वर्द्धक तथा शक्ति वर्धक औषधि है जो मूत्र कृच्छ रोग के लिए अत्यन्त उपयोगी है जिसे प्रतिदिन सेवन करना चाहिए। उदर के रोगों को शमन करने की अपूर्व शक्ति है। उसी तरह हमारे यहां तुलसी पत्र का विशेष महत्व है जो धार्मिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के अपेक्षा इसको सेवन कर व्यक्ति अनेक असाध्य रोगो से मुक्ति पा सकता है। इसी से हमारे आचार्योंने मन्दिर एवं देवालय में प्रतिदिन धार्मिक रूप से पंचामृत में इसे सर्वश्रेष्ठ माना है।

श्री हनुमान प्रसाद जी शर्मा, वैद्य ने आम नीबू अदरक, आलूबुखारा का विशेष महत्व माना है। जो धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्व का शोभा स्वरूप तथा प्रसन्न चित्तों से अलंकृत है, सभी श्रेष्ठ पर्वों में बन्दनवार के रूप में सुशोभित है। उसी तरह बुद्धिवर्द्धक औषधियो मे प्रमुख ब्राह्मी, मालकांगनी शंखपुष्पी, मण्डूकपर्णी, गुलकन्द, असगन्ध शतावर विधारा मुलहटी मुसली विदारी कन्द कूठ अखरोट कालबट्टा मीठीवच बोवच आदि औषधियो शारीरिक एवं मानसिक कष्टों को दूर कर स्मरण शक्ति की अभिवृद्धि मे विशेष उपयोगी सिद्ध हुई हैं। उसी तरह हमारे यहा रक्त शुद्धि करने के लिए विशेष उपयोगी गोरखमुन्डी बड़ी उपयोगी मानी गई है। जो ग्राम एवं नगर के क्षेत्रों में बहुतायत से होती है, जो गोरखी रंग होने पर वह गोरख मुन्डी के नाम से विशेष प्रसिद्ध है। उसी तरह हमारे यहां जुलाब के लिए सोना-मक्खी, अमलतास जमालगोटा का सूक्ष्म अंश विशेष माना गया है।

बुखार दूर करने के लिए अनन्त मूल की जड़ी विशेष रूप से उपयोगी मानी गयी है। यदि आप उसे उपयोग में न लाये तो आप नीम की छाल विशेष कालीमिर्च चिरायता का काढ़ा को आप शक्कर या मिश्री मे सेवन करें तो बुखार जड़मूल से नष्ट हो जायेगा। उसी तरह दांत को स्वच्छ और सुन्दर बनाने हेतु आप प्रतिदिन मौलश्री की दतौन या नीम की प्रतिदिन करें तो आपके दांत स्वच्छ और सुन्दर होंगे। आंखों के लिए विशेषकर निमकी काजल सुलाकमूल काजल तथा विशुद्ध मधु अंजन की तरह प्रयोग करें। या नासिका के द्वारा दाहिने स्वर से आप प्रतिदिन एक पाव से सेर भर तक जल सेवन करें तो आपकी दृष्टि गीद्ध की तरह तेज दूरदर्शी हो जायेगी। उसी तरह हमारे यहां लहसुन, प्याज, टमाटर मूली आदि का विशेष महत्व है जो शरीर के अन्दर अपूर्व शक्ति का संचार करती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष उपयोगी है।

प्राचीन काल में प्याज और लहसुन प्रायः क्षत्रिय और शूद्र वर्ग विशेष सेवन करते थे परन्तु [illegible] और वर्ग इसे जरूरी दृष्टिकोण से सेवन कर [illegible] के लिए प्याज और पुदीना का अर्क विशेष उपयोगी माना गया है। लहसुन की प्रशंसा में स्वर्गीय श्रद्धेय स्वामी श्री सत्यदेव परिव्राजक जी ने अपनी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक "लहसुन बादशाह" मे इसे सर्वश्रेष्ठ उपयोगी वस्तु माना है। जर्मनी के कई विद्वानों एवं डाक्टरो ने इसकी विशेष प्रशंसा की है। राजनीति के प्रकाण्डपण्डित श्री महात्मा गांधी ने भी इसे उपयोगी खाद्य घोषित किया है। कुष्ठ रोग के लिए बावची विशेष मानी गई है। बवासीर बवासीर आदि रोगों के लिए 'त्रिफला' विशेष उपयोगी मानी गयी है उसी तरह वातरोग के लिए हर हर नामक औषधि श्रेष्ठ मानी गई है। जिसकी हड्डी टूट गई हो उसे हडजोड नामक जडी को पीस कर उस स्थान मे लगाना चाहिए जिससे वह ठीक हो उसी तरह स्त्रियो के मासिक धर्म एवं शारीरिक रोगो एवं श्वेत तथा लाल प्रदर की शिकायत हो तो उसे अशोकारिष्ट का सेवन करना चाहिए। पथ्य का विशेष ख्याल रखें। उसी तरह हमारे यहाके आचार्यों तथा विद्वानोंने रुद्राक्ष माला को धारण करने की आज्ञा दी हैं जिसे प्रतिदिन कंठहार बनाने से अनेक रोगो का शमन होता है। भगवान शंकर तथा लंकाधिपति महापण्डित राजनीतिज्ञ रावण उसे सदैव धारण कर यशस्वी एवं दीर्घजीवी हुए हैं। उसी तरह हमारे वैद्यराज शिरोमणि चन्दन कपूर जटामांसी गुग्गुल सुगन्ध बाला आदि औषधिया अगर तगर इलायची जायपत्री सुगन्ध द्रव्य मे श्रेष्ठ मानी गई जिस तरह फूलो मे चम्पा गुलाब मगरमस्त केवड़ा गेंदा कमल, दौना चमेली जूही कुन्दन बेला आदि श्रेष्ठ माने गये हैं। उसी तरह हमारे यहा के अनेक वृक्ष—पेड जड एवं शाखा प्रशाखा हैं जिन्हें हमारे यहा के आचार्यों ने बड़ी प्रशंसा की है जो बहुत उपयोगी है।

हमारे यहा के प्राचीन आयुर्वेदाचार्य सर्वशास्त्र शिरोमणि भगवान धन्वन्तरि महर्षि चरक महर्षि भेल महर्षि अत्रि सुश्रुत वाग्भट्ट चक्रदत्त महापण्डित रावण महर्षि शारंगधर आदि विद्वानो ने आयुर्वेद की विशद् महिमा अपने ग्रन्थो मे की है जो सर्वोत्तम है। अजीर्ण सम्बन्धी रोगो एवं पेट सम्बन्धी रोगो के लिए निदान तथा उपचार शल्य चिकित्सा आदि का सांगोपांग वर्णन किया है जो प्रत्येक आयुर्वेदमर्मज्ञ एवं जिज्ञासु के लिए उपयोगी प्रेरणाप्रद हैं। ●

भारतीय त्यौहारों की विविधता

(पृष्ठ ५ का शेष)

अथवा ईश्वर कहें या भगवान । शब्द भिन्न हैं, मगर खुदा के, ईश्वर के अर्थ कभी अलग नही हो सकते। इन्ही अर्थों की सच्ची पहचान कराते हैं ये त्यौहार ।

मानव मूल्यों के प्रतीक

सभी त्यौहारो का सारतत्व एक महत्वपूर्ण चिन्तन के साथ जुडा है । वह है सद्गुणो का प्रचार-प्रसार । त्यौहारो का सिलसिला राम की कथा के साथ जुडकर उस चरित्र के माध्यम से मर्यादा, त्याग, भातृ प्रेम, दया करुणा और साहस की बेजोड कथा प्रस्तुत कर, हमें इन गुणो को अपनाने की सतत् प्रेरणा देता रहा है ।

इसी तरह लोकरजन और निष्काम कर्मयोग की शिक्षा हमे कृष्ण चरित्र के साथ जुड त्यौहारो से मिलती है । ईद सौहार्द की सबल भावना का प्रतीक है तो ईसा के त्याग और सच्चाई की बात बार-बार उनके जीवन और कर्म के साथ जुड त्यौहारो मे परिलक्षित होती है । सिखो के गुरु अपनी सद्वाणी, समाज सेवा बलिदान और सकल्प के प्रतीक हैं । उनसे सम्बन्धित त्यौहार हर वर्ष आकर यही तो कहते हैं—गुरुओ के जीवन से शिक्षा लो । उनकी पवित्र वाणी के उपदेश से जीवन के भवताप को हरो ।

युग-युगो पहले त्यौहारो की सरचना हुई, मगर यह सरचना रुकी नही, आज भी चराचर चली आ रही है। मनुष्य धन-वैभव, ऐश्वर्य सत्ता पाकर भटकता है । त्यौहार उसी के आस-पास फैले सद्गुणो के वे गुलदस्ते है जिनकी महक आदमी तक पहुचती है। त्यौहार अच्छाइयो की धरोहर है। अतीत के गुणों की सतरगी झालर जिन्हे हर वर्ष लटकाकर हम मानवीय सद्गुणो को सद् सकल्पो को बार-बार दोहराकर अपने को जसे सचेत करते रहते हैं।

आज भी त्यौहारो की सरचना का सिलसिला रुका नहीं है। राम से लेकर गाधी और नेहरू तक ये फैल गए हैं । बात स्पष्ट है—युग पुरुष आत हैं—कर्मक्षेत्र मे अपने महान् कार्यों के बीज बोकर चले जात हैं । बे नही रहते मगर समाज उनकी याद को, उनके महान् कार्यों की त्यौहारो के रूप मे सचित किए रहता है । यह सचय हमारी अमूल्य निधि है। यही एक मात्र पुरखो की ऐसी धरोहर है, जो हमे विविधता मे एकता का मन्त्र सिखाती है । भूली-भटकी व्यस्त जिन्दगी मे कुछ क्षणो के लिए अलगाव की कालिमा अपनत्व के प्रकाश से सबको गले मिलाती है । राष्ट्रीयता की सही और सबल पहचान हैं हमारे त्यौहार ।

यही नही—त्यौहार हमारे जीवन के बहुत ही नजदीक हैं। ये हमारी खुशहाली के साथ जुडे हैं । खेतो में नई फसल आने पर या फिर घर मे नया अन्न आने पर श्रम के पुजारियो के मन मे उमग का एक सैलाव-सा जैसे इन्ही त्यौहारो के रूप उमड पडता है। खेती करते हैं । खेती भारत का आज भी प्रमुख व्यवसाय है । सभी जातिया धर्मों के मानने वाले खेती करते हैं । फसल की खुशी सभी को समान होती है । और जब ये समानता पोगल के त्यौहार के रूप मे या वैशाखी की थिरकन के रूप में नाचने-गाने लगती है तो कौन पूछता है—तू किस जात का है ? कोई नही पूछता—सब एक स्वर मे तालबद्ध होकर जैसे अपने सुखों मे खो जाते हैं। मस्ती में झूमते ये त्यौहार हमारे सुखो को अपने दुलार से थपथपाते हैं। त्यौहारो के रगो के ये मेले अलग-अलग छटा लिए होते हैं। जैसे होली की फुहार के छीटो से भीगी सतरगी चुनरी के रगोकी पहचान मुश्किल है । कौन रग कितना पडा, यह भी बताना कठिन है । उसी तरह इन त्यौहारो का रग है, जिसमे सभी सराबोर हो जाते हैं। वस्तुत एकता का सच्चा स्वरूप है ये प्यार बाटते रहो—भाई-चारे को बाधते रहो । सद्गुणो को फैलाते रहो—यही कहते हैं त्यौहार ।

राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होकर देश की एकता व अखण्डता की रक्षा करनी चाहिये

जब तक किसी राष्ट्र का सविधान (जो मुख्यस्रोत माना जाता है) नही होता तब स्वतन्त्रता पूर्ण नहीं कही जाती है, इसलिए १५ अगस्त १९४७ के राजनीतिक स्वतन्त्रता के पश्चात डा० भीमराव अम्बेदकर की अध्यक्षता में धर्मनिरपेक्षता के आधार पर सबका समानता के दृष्टिकोण से २६ जनवरी १९५० को सवैधानिक स्वतन्त्रता प्राप्त होकरभारत गणतन्त्र घोषित हुआ। इस सविधान मे भारतीय नागरिको के मौलिक अधिकार एव कर्तव्य बताए गये। उसमें यह नियम बनाया गया कि जीवन के हर क्षेत्र में हम ऐसा कार्य करे जो देश हित मैं हो । आज दूसरे देशों के लोग जितनी राष्ट्रीय भावना से कार्य करते हैं उतना हमारे देश के लोग नही करते । अत हमे राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होकर अपने कर्तव्य को करते हुए देश की एकता और अखडता की रक्षा करनी चाहिए और देश की उन्नति मे सहायक होना चाहिये ।

उक्त उदगार आर्य कन्या डिग्री कालेज, इलाहाबाद मे आयोजित गणतत्र दिवस समारोह मे इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री बनवारी लाल यादव ने व्यक्त किये उन्होने कहा कि हमारे देश मे प्रजातत्र के सिद्धान्त एव न्याय प्रणाली के सिद्धान्त प्राचीन काल मे ही वेदो आदि के माध्यम से प्रचलित थे, जबकि आज कहा जाता है कि वर्तमान न न्याय प्रणाली एव प्रजातत्र के सिद्धन्त विदेशो के हैं। प्राचीनकाल के गौतम, वशिष्ठ नारद, मनु-आदि की स्मृतियो के न्याय सिद्धन्त आज की अपेक्षा कई गुना समृद्ध हैं, जो सस्कृत भाषा मे ही हैं। ससार की किसी भाषा व साहित्य में इतनी समृद्धता नही मिलती है जितना सस्कृत भाषा में अत इसी आधार पर मैंने उच्च न्यायालय का सस्कृत में निर्णय देने का नगण्य प्रयास प्रारम्भ किया । अपने अतीत के गौरव की ओर ध्यान आकृष्ट किया है ।

श्री यादवने अनेक उद्धरणो के माध्यम से जर्मनी, जापान आदि देशों की प्रगति का कारण हमारे वेद शास्त्रों को ही बताते हुए कहा कि गुलामी की भावना को समाप्त करने के लिए सस्कृत भाषा को इण्टर स्तर तक अनिवार्य बना देने से ही देश की उन्नति सभव है । इस भाषा की महत्ता के सबध मे महात्मा गांधी, प०-जवाहर लाल नेहरू ने भी माना था कि सस्कृत भाषा हमारी आत्मा की तरह है । स्व० श्रीमती इन्दिरा गाधी ने भी कहा था कि संस्कृत भाषा जब तक देश में रहेगी तब तक हमारी सस्कृति रहेगी। अत सस्कृत का अध्ययन हिन्दुस्तान के लिए अत्यावश्यक है। गणतत्र दिवस पर आज के दिन हमे यही सकल्प लेना चाहिये कि अपने देश व सस्कृति की रक्षाके लिए सस्कृत का अध्ययन करें।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे महाविद्यालय के प्रधान डा० विमलेश ने कहा कि आज के दिन हमे यही सकल्प लेना चाहिये कि हम अपने देश की एकता और अखडता की रक्षा के साथ-२ सस्कृत भाषा की रक्षा के लिए कार्य कर ।

गौ अवध्य प्राणी है ! मानवता के पुजारियो रक्षा करो !

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् ।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथानोऽसोऽवीरहा ॥ अथर्व०

परम पवित्र ईश्वरीय ज्ञान वेद गोहत्यारे को शीशे की गोली से बेधने का आदेश कर रहा है । इसलिए गौ की रक्षा का पावन संकल्प लेकर पुण्य के भागी बनें । गाय हम भारतीयों के जीवन का आधार है अतः वैदिक धर्म मे इसे माता का स्थान दिया गया है । जब हम जन्म लेते हैं तो सर्वप्रथम गाय का दूध ही हमें पान कराया जाता है ।

महामुनि यास्क ने निघण्टु मे गो के पर्यायवाची शब्दो का निरूपण किया है । वे निम्न हैं—अघ्न्या उस्रा उस्रिया अही मही अदिति इडा जगती और शक्वरी । निघण्टु अ० २ । खण्ड ११

इन नामों में अघ्न्या शब्द पर विचार करेंगे अघ्न्या शब्द की निरुक्ति में मुनिवर यास्क लिखते हैं । अघ्न्या अहन्तव्या भवति ॥ नि० ११ । ४४

अर्थात् गौ का नाम अघ्न्या इसलिए है कि वह मारने योग्य नही है ! यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में भी गाय को अघ्न्या इसलिए कहा गया है क्योकि वह अवध्य है ।

महाभारत शान्ति पर्व मे भी लिखा है कि—

अघ्न्या इति गवां नाम क एतां हन्तु मर्हति ।
महच्चकारा कुशलं वृषं गां वाऽऽलभेत्तु यः ॥

अर्थात् अघ्न्या यह गौ का नाम है इनको कोई मार नही सकता । जो गाय या बैल का हनन करता है वह महापापी है ।

आगे दूसरा नाम है अही जिस पर विचार करना है निघण्टु के टीकाकार ने लिखा है कि अही न हन्तव्या गौ का नाम अही इसलिए है कि यह न हन्तव्या न मारी जावे

गौ का तीसरा नाम है अदिति यह दोऽवखण्डने धातु से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ हुआ अ+दिति अर्थात् गौर खण्डन करने योग्य नही है अदिति शब्द के निर्वचन मे टीकाकार श्री देवराज यज्वा लिखते हैं कि नदति अखण्डनीया वा गौ का नाम अदिति इसलिए है क्योकि वह अखण्डनीय है ।

अर्थात् उसका तन खण्ड-खण्ड करने योग्य नही है । यदि गाय वध्य होती तो वेद मे ऐसे नाम न होते ऋग्वेद मे गौ महिमा विस्तृत ढंग से वर्णित है एक मन्त्र मे कहा गया है कि—

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः ।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट ॥

ऋ० ८ १०१ १५

यह गाय रुद्र ब्रह्मचारियो की माता है वसुओ की कन्या तथा आदित्य ब्रह्मचारियो की बहिन तुल्य है यह दुग्ध रूपी अमृत की जननी है मैं भली प्रकार ज्ञानियो को कहे देता हूं कि तुम निरपराध गौ को मत मारो । क्योकि वह अदिति है ! अवध्य है । यजुर्वेद मे भी गाय की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है । यथा—

इमं साहस्रं शतधारमुत्सं व्यच्यमानं सरिरस्य मध्ये ।
घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् ॥

यजु० १३ ४९

सैकड़ो तथा हजारों को धारण करने वाली दूध का कुआं मनुष्यो के लिए घृत देने वाली नही मारने योग्य जो गौ है उसकी हिंसा मत करो ।

शतपथ ब्राह्मण में इस मन्त्र की व्याख्या बड़ ही रोचक ढंग से की गई है ।

अब गौ ! इमं साहस्रं शतधारमुत्समिति । साहस्रो वा एष शतधार उत्सो यद् गौः । व्यच्यमानं सरिरस्य मध्ये इति । इमे वै लोकाः सरिरम् उप जीव्य मानेषु लोकेषु इत्येतद् । घृतं दुहानामदितिं जनायेति । घृत वा एषा अदितिर्जनाय दुहे अग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन्निति । इमे वै लोकाः परमव्योम एषु लोकेषु एव मा हिंसीरिति ॥ शतपथ ब्रा० ७ । ५ । २ । ३४

अवध्य गौ का वर्णन करते है । गौ निश्चय पूर्वक सैकड़ो तथा हजारो का धारण करने वाला दुग्ध कूप है गाय इन लोगों मे जीवन का आधार है यह मनुष्यो को घृत देती है । इसका नाम अदिति है अतः इसकी है अतः इसकी हिंसा मत करो ।

जिस देश के साहित्य मे इस प्रकार की महिमा भरी हो फिर भी यदि उस देश मे गौओ का वध होता हो तो मैं उस देश का बहुत बड़ा दुर्भाग्य समझता हूं ।

आर्यो तुम्हे पता नहीं है क्या ? यह भारत सरकार आगरा के समीपवर्ती क्षेत्र की १५६ एकड़ भूमि मे एक विशाल वधशाला का निर्माण कराने जा रही है क्या मूक पशुओ के करुण क्रन्दन से इस देश का वातावरण भयावह नही बनेगा । अभी समय है हम लोग सार्वदेशिक सभा के सानिध्य मे सघाठत शक्ति के द्वारा आंदोलन करके इस देश की सरकार के ऊपर दबाव डालें तथा इस महान पुण्य कार्य मे अपना सवस्व समर्पित कर दें तभी भारत का पुनः सौभाग्य उदय होगा ।

एक कवि आर्यो को उद्बोधित करता हुआ कहता है—

गौ मा पर है आज विपत्ति चले रोज तलवार ।
आर्यो तुम्हारा है जीना धिक्कार । टेक ॥
जिस माता का दुग्धामृत है पान किया ।
उस मा पर है आज यह संकट पड़ा हुआ ॥
लेकर व्रत मा की रक्षा का कर्जा देवो उतार ॥ आर्यो०
जो कोई भी गाय आदि की है हिंसा करता ।
उसके लिए वेद हमको सीधा निर्देशन करता ।
ऐसे दुष्ट अधर्मी को गोली से देवो मार । आर्यो०
जो तुम स्वयं अपने को आर्य कहलाते हो ।
गौ मा की रक्षा मे अगर सकुचाते हो ॥
तो फिर आर्य कहाना तेरा होवेगा बेकार ॥ आर्यो०
अरे आर्यों गर शासन यह करता नही सुनाई ॥
करो संगठन आर्य बनो फिर जिहाद छेड़ो भाई ।
गौ मा की रक्षा हित अपने को करदो न्यौछार ।
आर्यो तुम्हारा जीना है धिक्कार ॥

उपरोक्त कविता को जीवन मे चरितार्थ करें तथा कर्तव्य समझकर गायो की रक्षा करे । तभी हमारा आर्य नाम सार्थक होगा ।

आचार्य राजदेव नैष्ठिक
प्रधानाचार्य
आर्ष गुरुकुल एक्षा कटरा इटावा (उ० प्र०)

आर्य जगत् के समाचार

आर्य समाज, सान्ताक्रुज बम्बई का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती के निरन्तर सात दिनो तक प्रवचन होते रहे। तथा श्री गुलाब सिंह राघव दिल्ली के सुमधुर भजन हुए।

दिनांक २५.१.८७ को वेद सम्मेलन समारोह सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध वैज्ञानिक संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने की। इस अवसर पर बोलते हुए पुज्य स्वामी जी महाराज ने कहा वेद सृष्टि के आदि का ज्ञान है इस विषय में अभी भी बहुत सा अनुसंधान करना बाकी है जो अभी तक किसी ने नही किया। वेद मे प्रत्येक वस्तु का ज्ञान बीज रूप में विद्यमान है। इसका विस्तार कैसे हो इस विषय मे विचार करना होगा। इसके लिए वेद का पढना उससे सम्बन्धित ग्रन्थो का अध्ययन किये बिना वहा तक पहुंचना कदापि सम्भव नही है। यह काम आर्य समाज को ही करना होगा। इसके बिना और कोई करने वाला नही है।

दिनाक २६.१.८७ को यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पुर्णाहुति के साथ ही गणतन्त्र दिवस समारोह का कार्यक्रम ध्यावजारोहण के साथ प्रारम्भ हुआ देवेन्द्र कुमार जो कपुर के कर कमलो द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। ठीक १० बजे राष्टीय एकता दिवस आर्य नेता श्री रामचन्द्र आर्य की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री सेठ प्रताप सिंह शुरजी वल्लभदास थे। इस अवसर पर बोलते हुए वक्ताओ ने कहा आज देश की जहा बाहरी शक्तियो से खतरा है, वहा आन्तरिक मत भेद भी इस देश को अन्दर ही अन्दर से खोखला करने पर उतारु हैं। इन विघटकारी शक्तियो के विरुद्ध शख्त से सख्त कार्यवाही की जानी चाहिये। इस समय सारा देश जल रहा है? हर ओर हा हा कार मचा हुआ हैं। पजाब समस्या, आसाम समस्या, नागालेण्ड समस्या, गोरखालेण्ड समस्या आदि अनेक समस्याए विदेशी ताकतों के बल पर इस देश के टुकडे करने पर उतारी हुए हैं। यह समय हिन्दु जाति के जागरण का समय है। यदि इस समय भी हम न जागे तो भविष्य ही बतायेगा कि इसके क्या परिणाम हो सकते है, आज हिन्दु बहुमत मे होते भी दूसरे दर्जे का नागरिक है यह सब इसलिए क्यो कि हममे जागृत नही हैं। इस देश रक्षा के लिए, इस देश को सगठित बनाने लिए हमे आगे आना पडगा। अपने अधिकारो की रक्षा हमे स्वय करनी है। यदि इसी प्रकार सोते रहे तो हमे फिर से दासता को बेडियो मे जकडा जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वी ने हमे आजादी का सन्देश इसलिए दिया था कि हम अपनी भाषा अपना धर्म और अपना स्वाभिमान कायम रख सके। किन्तु आज इन मे से हमारा कुछ भी सुरक्षित नही हैं। इसका मुख्य कारण हमारी ही कमजोरी है। यदि हम दृढता पुवक खडे हो जाए तो ससार की कोई शक्ति हमे नीचे नही हटा सकती।

इस वार्षिक समारोह के अवसर पर युवा, महिला सम्मेलन, कार्यकर्त्ता सम्मेलन भी आयोजित किये गये। जिनमें आर्य समाज की उन्नति पर विचार किया गया और आगामी योजनाओ पर विचार किया गया।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर बिजनौर का वार्षिकोत्सव दिनांक ११, १२ व १३ फरवरी को आयोजित हो रहा है। इस अवसर पर श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सभा प्रधान का आगमन तथा आर्यजगत् के बडे-बडे विद्वान साधु सन्यासी आर्य नेतागण इस उत्सव में आ रहे हैं।

—मन्त्री

आर्यसमाज सिलीगुड़ी का उत्सव

आज देश सकट की घडी से गुजर रहा है। विघटनकारी शक्तियो सिर उठा रही हैं। देश की एकता को तोडने की गहरी साजिश चल रही है। देश का युवा वर्ग दिग्भ्रान्त है। चारों ओर अनैतिकता का बोलबाला है। धर्म की सही दृष्टि खो गई है। देश को आज जरूरत है धर्म की सही दृष्टि देने की, आज जरूरत है नैतिकता जानने की, आज जरूरत है देश को एकता के सूत्र में बांधने की, आज जरूरत है हमारे आत्मा की शक्ति को जगाने की। हाथ पर हाथ धर कर बैठ रहने का अब समय नही है, आइए हम आगे बढ, आइए हम जागरण का शख फूके, आइए हम प्रकाश की ओर लोगो को उन्मुख करे। इसी उद्देश्य से आर्य समाज सिलीगुडी ने आर्य समाज मदिर, सिलीगुडी मे दि० २०-२-८७ शुक्रवार से लेकर दि० २२.२.८७ रविवार तक तीन दिनो के एक समारोह का आयोजन किया है उक्त समारोह में आप अपने-अपने इष्ट मित्रो के साथ सादर आमन्त्रित हैं।

डा० द्विवेदी पुनः कुलपति नियुक्त

ज्वालापुर (हरिद्वार) सस्कृत और हिन्दी के प्रख्यात विद्वान डा० कपिलदेव द्विवेदी को पुन पाच वर्षों के लिए गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) का कुलपति नियुक्त किया गया है। डा० द्विवेदी वेद, सस्कृत साहित्य और भाषा विज्ञान के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान है। आपके ५० से भी अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। आजकल आप वेदामृतम् ग्रन्थमाला प्रकाशित कर रहे हैं, जिसके १० खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। डा० द्विवेदी के पाच ग्रन्थ उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुके है।

डा० द्विवेदी के पुनः कुलपति नियुक्ति पर गुरुकुल परिवार की ओर से हार्दिक अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर डा० गौरीशंकर आचार्य (प्रधान), श्री अशोक शास्त्री (मुख्याधिष्ठाता), एवं श्री डा० हरिगोपाल शास्त्री (आचार्य) ने डा० द्विवेदी के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए आपके मार्गदर्शन मे गुरुकुल की निरन्तर उन्नति की कामना की।

— [illegible] आर्य, ज्वालापुर

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य का वार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का वार्षिक साधारण अधिवेशन रविवार १८ जनवरी १९८७ को आर्यसमाज मन्दिर १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से महाशय धर्मपाल जी को प्रधान तथा राजेन्द्र दुर्गा जी को महामन्त्री बनाया गया और अपने सहयोगी अधिकारियों तथा अन्तरग सभा बनाने का अधिकार भी उपयुक्त दोनों महानुभावों को दिया गया। उसी प्रदत्त अधिकार के अनुसार वर्ष १९८६-८७ के लिए अन्तरग सभा की सूची निम्न प्रकार घोषित की गयी—

प्रधान	महाशय धर्मपाल जी
उप प्रधान	सर्वश्री रतनचन्द सूद, सूर्य देव, सत्यानन्द आर्य, हरबंस सिंह खेर
महा मन्त्री	श्री राजेन्द्र दुर्गा
उप मन्त्री	सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार हिन्दो, रामसिंह शर्मा, ओमप्रकाश आर्य, शिवकुमार शास्त्री, शिवशंकर गुप्ता, श्रीमती प्रकाश आर्या।
कोषाध्यक्ष	श्री रोशनलाल गुप्ता
लेखा परीक्षक	श्री राम लाल खुराना

गोवंश की रक्षा हेतु प्रस्ताव

भारतीय सस्कृति में गो के साथ पवित्र और भावनात्मक सम्बन्ध जुड़ा हुआ है तथा गो को माता का स्तर देकर उसकी सम्पूर्ण रक्षा का दायित्व हम सब पर है। गो हमारे देश की आर्थिक जनजीवन की मूलभूत आधार है। इसकी रक्षा हमारा परमधर्म और कर्तव्य है।"

यह सभा सर्वसम्मति से भारत सरकार से यह मांग करती है कि गोवश के वध को रोकने हेतु कठोर कदम उठायें।

— [illegible], उपमन्त्री आ. स. [illegible]

आवश्यक द्रष्टव्य

सर्व सज्जनों को सूचित किया जाता है कि—

'निर्णय के तट पर' (शास्त्रार्थ संग्रह का प्रथम व तृतीय भाग

प्रकाशित कराने की योजना बनाई गई है। तृतीय भाग जिसमे शेष शास्त्रार्थ जो प्रथम व द्वितीय भाग मे नही आ पाये उनको सग्रहीत किया जायेगा। यह सामग्री भी अत्यन्त प्राचीन व अप्राप्य सामग्री ही होगी, जिसमे प० आत्माराम जी अमृतसरी, प० रामचन्द्र जी देहलवी, प० बिहारीलाल जी शास्त्री, प० ओमप्रकाश जी शास्त्री प० रामदयालु जी शास्त्री, स्वामी दर्शनानन्द जी, प० बुद्धदेव जी विद्यालकार, प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय, स्वामी ब्रह्ममुनी जी, महात्मा अमर स्वामी जी, प० आर्य मुनि जी श्री इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, प० शिव शर्मा जी, महात्मा हसराज जी, लाला मुन्शीराम जी आदि आदि अनेको विद्वानो के शास्त्रार्थों की अप्राप्य सामग्री आ सकेगी।

पुस्तक का प्रारूप द्वितीय भाग की तरह ही होगा पेज भी ४०० के लगभग होगे। जिसका मूल्य छपने पर १२५) रुपये प्रति भाग होगा परन्तु जो सज्जन छपने से पूर्व अपना पैसा भेजगे उन्हे मात्र ६०) रु० प्रति भाग की दर दिया जावेगा।

आप अभी केवल अपना आर्डर बुक करा दें, पैसा (पुस्तक के प्रेस मे जाने पर) लिया जावेगा, अभी कोई पैसा न भेजें :

छपने के बाद मात्र पोस्टेज खर्च ग्राहक को देना होगा। अपना नाम व पता साफ साफ हिदी या कैपिटल अग्रेजी शब्दो मे पिन कोड न० सहित लिख।

इस महान कार्य मे जो भी सज्जन आर्थिक सहयोग देना चाहें अवश्य दें। ताकि यह कार्य सुगमता पूर्वक पूरा हो सके।

बेक ड्राफ्ट "अमर स्वामी प्रकाशन विभाग-गाजियाबाद २०१००१" नाम निम्न पते पर भेज एव इसी पते पर अपनी प्रतिया बुक कराव, किस-किस भाग की कितनी-कितनी कापी आपको चाहिए चैक स्वीकार्य नही होगे।

नोट सभी आर्य भाईयो से मेरा पुन अनुरोध है कि डूबती हुई सम्पत्ति को पुर्नजिविन करने मे हृदय खोलकर सहयोग द।

पता

किमधिकम् लेखेन् ॥

प्रबन्धक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर (कार्यालय)

गाजियाबाद-२०१००१ (उ० प्र०)

वैदिक धर्म का—

"अमर स्वामी सरस्वती"

॥ ओ३म् ॥

निमन्त्रण-पत्र

महात्मा प्रभु आश्रित जन्म-शताब्दी समारोह के भव्य आकर्षण

१४ फरवरी १९८७ से २२ फरवरी १९८७

स्थान–वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक

(१) स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता एवम् महात्मा दयानन्द के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद व राष्ट्रभृत यज्ञ।

(२) वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक से शोभा-यात्रा (१४-२-८७) मध्याह्न २ से ५ बजे तक।

(३) वेद सम्मेलन योग सम्मेलन एवं यज्ञ सम्मेलन की त्रिवेणी।

(४) महात्मा दयानन्द, स्वामी आनन्द बोध, पं० जैमिनि शास्त्री, महात्मा बलदेव, पं० पृथ्वीराज शास्त्री एवं ब्र० आर्य नरेश के मनोहर प्रवचन।

(५) आचार्य रामदत्त शर्मा, पं० वागीश जी का सस्वर वेद-पाठ।

(६) साधको, वेदकंठस्थियों एवं याज्ञिकों का सम्मान।

(७) भक्ति संगीत पं० सत्यपाल जी पथिक, पं० जयदेव जतोई वाले, भक्त मदनलाल एवं यादराम जी।

(८) लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ की अध्यक्षता में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन।

आप सबसे अनुरोध है कि अपने परिवार-जनों व इष्ट-मित्रों सहित पधार कर इस उत्सव की शोभा में वृद्धि करें।

मन्त्री

लखपति शास्त्री

विनीत

दयानन्द (प्रधान)

प्रभु आश्रित जन्म शताब्दी समिति

महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी देन

आज धर्म के नाम पर एक दूसरे की हत्या हो रही है। वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य सभी मत-मतान्तर एक-दूसरे मे मतभेद उत्पन्न करते है। वेद ही दुनिया मे एक ऐसा ग्रन्थ है जो सारे मानव मात्र को कल्याण का मार्ग दिखाता है। हम मरते तक सच्चाई को सीखते रहे, यही मनुष्य का कर्तव्य है। यदि हम अपने बच्चो को अपने धर्म, संस्कृति को सिखायेगे तभी महर्षि दयानन्द का नारा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" सफल हो सकता है। महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी देन वेद रूपी ज्ञान है जो आज सारे विश्व में आर्यसमाज के माध्यम से समानता का धर्म सिखा रहा है।

उक्त विचार आर्य प्रतिनिधि सभा हालैण्ड के प्रधान एम्सटाईम निवासी डा० महेन्द्रस्वरूप ने आर्य युवक सभा, प्रयाग के महामन्त्री श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री, प्रचारमन्त्री श्री रामनिहोरेसिंह तथा अन्य कार्यकर्ताओ से हुई भेंट वार्ता मे व्यक्त किये।

उन्होने हालैण्ड मे आर्य समाज की गतिविधियो की जानकारी देते हुए बताया कि लगभग कि लगभग ८०००० (अस्सी हजार) हिन्दुओ को सगठित करने के उद्देश्य से उन्होने वहा आर्यसमाज की स्थापना की है, जहा पर अब तक लगभग ३५००० व्यक्ति १४ आर्य समाजो से सम्बद्ध हो चुके है। आर्यसमाज को अन्तर्राष्ट्रीय सगठन मानते हुए उनका प्रयास है कि आगामी एक वर्ष में वह संयुक्त राष्ट्रसघ का सदस्य आर्यसमाज को बना दे।

श्री स्वरूप ने बताया कि १०४ हालैण्ड देश एक भारतवर्ष के बराबर है परन्तु वह विश्व मे दस समृद्ध देशो मे गिना जाता है। वहा भेदभाव नाम की कोई चीज नही है तथा मनुष्य के अधिकार की बडी कीमत है। उन्होने आर्य समाजो में हिन्दी भाषा को सिखाने का भी कार्य प्रारम्भ किया है जिसमे सरकार से भी सहयोग प्राप्त कर रहे हैं।

सुरेशचन्द्र शास्त्री, महामन्त्री
आर्य युवक सभा प्रयाग (उ० प्र०)

याग

(पृष्ठ १ का शेष)

शिविरार्थी में निम्न योग्यताएं अपेक्षित हैं

(१) कम से कम ८ कक्षा तक की योग्यता,
(२) हिन्दी भाषा को समझ व लिख सकना,
(३, धूम्रपान आदि व्यसनो से रहित होना,
(४) अतिवृद्ध अथवा रोगी न होना,
(५) १५ वर्ष से अधिक अवस्था वाला होना,
(६) पूर्ण अनुशासन मे चलने वाला होना,

शिविर के प्रबन्ध, भोजन, आवासादि की समुचित व्यवस्था आर्य वन विकास फार्म संस्था की ओर से होगी। शिविर शुल्क १५०-०० रुपये होगा। शिविर मे भाग लेने वाले सज्जनों से निवेदन है कि वे अपनी योग्यता व व्यवसाय सहित आवेदन पत्र भेजकर १ मार्च १९८७ से पूर्व ही प्रवेश की स्वीकृति ले लेवें।

शिविरार्थी ३० की सीमित संख्या मे ही लिये जावेंगे और जिनका आवेदन पत्र पूर्व आवेगा उनको प्राथमिकता दी जावेगी। अतः शीघ्र ही आवेदन पत्र भेजकर स्वीकृति प्राप्त करके शिविर शुल्क मन्त्री आर्य वन विकास फार्म के पास जमा करवा देवें।

विशेष जानकारी के लिए उपरोक्त पते पत्रव्यवहार करे।

निवेदक

मन्त्री
आय वन विकाम फाम, (व्यवस्थापक)

स्वामी सत्यपति
(शिविराध्यक्ष)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

राष्ट्र का उन्नत माना

सारे समाज को आर्य बनाओ

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २२ अक ६] फाल्गुन कृ० ६ स० २०४३ रविवार २२ फरवरी १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

धर्मरक्षा महाभियान

एक हजार ईसाई हिन्दू समाज में दीक्षित

पादरियों का घोर विरोध

गुरुकुल आमसेना (उडीसा)

८ फरवरी १९८७ को सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री प० पृथ्वीराज शास्त्री तथा गुरुकुल आमसेना के सचालक स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के अथक प्रयास एव आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओ की प्रेरणा से १००० ईसाइयो ने स्वेच्छा पूर्वक वैदिक धर्म मे प्रवेश किया—

शुद्धि महायज्ञ की सूचना से सारे क्षत्र में सनसनी फैल गई थी ईसाई पादरियो ने लोभ-लालच, भय व प्रलोभन से किसी भी तरह इस शुद्धि कार्यक्रम को रोकने का प्रयत्न किया और लोगो को इसमे आने से रोका गया। किन्तु आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता और गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के तपस्वी अभियान का सामना विदेशी पादरी नही कर सके और उनका विरोध विफल हो गया।

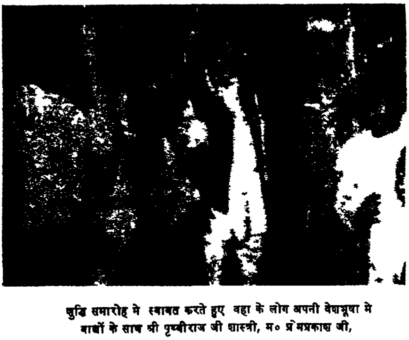
८ फरवरी को गुरुकुल आमसेना के प्रागण मे ४० परिवारो के २०० ईसाइयो का शुद्धि सस्कार किया गया। इस अवसर पर कुल भूमि वैदिक धर्म के जय-जयकार से ग ज उठी।

१० फरवरी ८७ को के-उटिपाली (बालगीर) में जो खरियार रोड से १५० किलोमीटर की दूरी पर है, स्वामी धर्मानन्द प० पृथ्वीराज शास्त्री तथा आर्य पण्डितो के साथ गुरुकुल के ब्रह्मचारी पहुच गए और सायकाल ३ बजे ओ३म् पताका की छाया मे शुद्धि महायज्ञ प्रारम्भ हुआ।

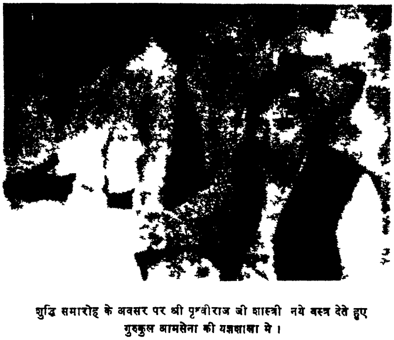
इस ग्राम मे ८०० ईसाई स्त्री पुरुषा का यज्ञोपवीत देकर वैदिक धम में प्रविष्ट किया गया। इस अवसर पर सावदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा प्रदत्त लगभग १० हजार रुपए के वस्त्र आदि प० पृथ्वीराज शास्त्री ने नव दीक्षित भाई-बहिनो को प्रदान किए।

यह ज्ञातव्य है कि गत वष भी २ फरवरी ८६ को इसी गुरुकुल मे लगभग २५०० ईसाई शुद्ध होकर विशाल हिन्दू समाज के अग बनेथे।

इस अवसर पर दूरदूर के आर्य समाजो के कायकर्त्ता व धमप्रेमी जन बडी सख्या मे उपस्थित थे।



शुद्धि समारोह मे स्वागत करते हुए वहा के लोग अपनी वेशभूषा मे बाजों के साथ श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री, म० प्रेमप्रकाश जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी (हरिद्वार)



शुद्धि समारोह के अवसर पर श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री नये वस्त्र देते हुए गुरुकुल आमसेना की यज्ञशाला मे।

पंजाब को सेना के हवाले कर आतंकवादियों से निपटा जाए

स्वामी आनन्दबोध की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

दिल्ली १५ फरवरी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री आनन्द बोध सरस्वती और प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के प्रधान श्री मदनलाल खुराना ने आज सयुक्त रूप से एक ही मच से पजाब को फौज के हवाले करने की माग की। आर्यसमाज दीवान हाल मे आयोजित एक विशाल सभा मे शहीद भगतसिंह की भानजी श्रीमती गुरदीपकौर को श्रांजलि अर्पित करते हुए स्वामी आनन्द बोध ने कहा कि देश द्रोहियो ने शहीदे-आजम भगतसिंह की भानजी की हत्या करके पूरे देश को चुनौती दी है।

उन्होने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकारें हिन्दुओ की सुरक्षा करने मे असफल रही है। यदि सख्त कार्रवाई मे विलम्ब हुआ तो समूचे देश मे विपरीत प्रतिक्रिया भी हो सकती है।

भाजपा प्रधान श्री मदनलाल खुराना ने कहा कि केवल ६ हत्याओ पर श्री दरबारासिंह सरकार को अपदस्थ कर दिया गया था, किन्तु आज तो २४ २४ लोग एक दिन मे मार दिये जाते हैं।

श्री खुराना ने कहा कि मजहबी राज्य कायम करने की धुन मे एक वर्ग निरन्तर हत्याओ का सहारा ले रहा है तथा तनखाइया का हुक्मनामा जारी करने वालो की अपनी स्थिति अनिश्चित व भ्रम की बनी हुई है। यह मौका अब पजाब मे फौज को भेजकर देश द्रोहियो से आसानी से निपटा जा सकता है।

उन्होने कहा कि श्री बरनाला पगू मुख्य मन्त्री साबित हुए हैं तथा आज उनके पर कुतरने के लिए उनके अपने ही अलम्बरदार सक्रिय हो गए है। ऐसी अनिश्चय की हालत मे आम जनता स्वय को असुरक्षित समझने लगी है। जत्थेदार रिछपालसिंह ने भी पजाब मे फौज भेजने का समर्थन करते हुए स्पष्ट किया कि कौम के असली दुश्मनो को नष्ट करने में यदि सरकार सबल कदम उठाती है तो उनका बल पूर्ण समर्थन देना।

श्री बलराज मधोक ने पजाब स्थिति की चर्चा करते हुए कहा कि देश के हिन्दू को जगाने की जरूरत है। और पजाब मे उग्रवादियो से सख्ती से निपटा जाये। ●

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को धामपुर में चार हजार की थैली भेंट

धामपुर। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा सभामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री धामपुर पधारे।

श्री राजकुमार जी आय तथा श्री देवप्रकाश जी के साथ आर्य समाज के प्रधान व मन्त्री सहित सभी आर्यजन बडी मण्डी धामपुर मे भव्य स्वागत करके विभिन्न आर्य समाजो द्वारा ४ हजार रुपये की थैली पजाब रक्षा कोष मे सहायता हेतु भेट की। सभी-आर्य समाजो द्वारा स्वामी जी का मालाओ से स्वागत किया गया मडी मे हजारो नागरिको से मैदान खचाखच भरा हुआ था।

स्वामी जी ने देश की विषम परिस्थितियो की चर्चा करते हुए कहा कि भारत की राष्ट्रीयता को जो खतरा पैदा हुआहै आर्यसमाज द्वारा किये गये कार्यो से जनता को अवगत कराया। हजारो की जनता को प्ररणा देते हुए आय जनो को एक जुट होकर राष्ट्र की रक्षा का सकल्प दोहराया।

आर्यसमाज बिजनौर में स्वामी जी को ११०१)रु० की थैली भेंट

जिलोपसभा के मान्य प्रधान श्री जयनारायण अरुण ने सभा प्रधान जी के स्वागत के साथ जनपद की ओर से ११०१) रु० की थैली पजाब रक्षा के लिये भेंट की।

स्वामी जी ने आज पजाब [के हिन्दुओं की जो दशा है उसकी चर्चा करते हुए सरकार को सावधान किया कि यदि समय रहते सरकार न चेती तो अराष्ट्रीय तत्वो द्वारा जो विघटित करने के मन्सूब बन रहे हैं उन्हे दूर करने में पजाब, कश्मीर को फौज के हवाले किया जाय। आर्य समाज के विगत कार्यों की चर्चा करते हुए आज हम अपने कर्त्तव्य का पालन मात्र कर रहे हैं। करना तो सरकार को है। आज हिन्दू मिट रहा है। समय आने पर आर्य-समाज ने सदा ही राष्ट्र हित मे कार्य किया है। एक नवीन आर्यसमाज की आधार शिला भी स्वामी जी के करकमलो द्वारा रखी गई।

राजनीतिज्ञों के कीचड़ में फंसकर सिख दूसरी अग्निपरीक्षा से गुजर रहे हैं

–खुशवन्त सिंह–

अमृतसर मे जो कुछ हो रहा है उसमे कोई तुक नजर नही आती। यह शिव के ताण्डव नृत्य' जैसा प्रतीत होता है जो सपूर्ण प्रलय से पहले किया जाता है। खिन्नता के क्षणो मे मुझे महसूस होता है कि खालसा पथ का एक भाग मृत्यु-कामना के खब्त से ग्रस्त हो गया है और यह कि गुरुओ ने अपनी अनन्त बुद्धि से एक अकाली धडे द्वारा स्थापित महान ग्रन्थियो को धार्मिक अधिकार की हैसियत देकर इस मृत्यु-कामना की पूर्ति के लिये सामान उपलब्ध कर दिया है। वरना गुरु अपने अनुयायियो के रूप मे ऐसे नेताओ को क्यो गद्दी पर बिठाते जो बुद्धि दूरदर्शिता से वचित हैं तथा सम्प्रदाय के भविष्य से उन्हे कोई सरोकार नही है? राष्ट्रो के उत्थान और पतन से सबधित अल्लामा इकबाल की पक्तिया मन मे आती हैं।

"और तपे हुए लोहे की तरह शुद्ध होकर निकलेंगे * गुरुओं ने एक धड़े द्वारा स्थापित ग्रन्थियों को धार्मिक अधिकार देकर पन्थ के एक भाग की मृत्यु-कामना पूरी करने का सामान उपलब्ध करवा दिया है।

आ तुझ को बताऊ तकदीरे-उमा क्या है।
शमशीर-ओ-साना अव्वल, ताऊस-ओ-रबाब आखिर।

आओ मैं तुम्हें राष्ट्रो के उत्थान और पतन के बारे में बताऊ। पहले चरण मे यह तलवार और खजर है, अत में वीणा और सारगी है।

हमे मालूम है कि किस प्रकार सिख तलवार और खजर के बल पर सत्ता मे पहुचे हैं। अब हम देखते हैं कि सम्प्रदाय के भविष्य को निबटाने के लिए एक ऐसा आदमी बैठा है जो भारतीय शास्त्रीय सगीत, ताऊस और रबाब के लिए विख्यात है। वह दर्शन सिंह रागी है, एक प्रसिद्ध भजन गायक। (शेष पृष्ठ १९ पर)

सम्पादकीय

समाज सुधारक स्वामी दयानन्द

शिव रात्रि के महापर्व पर जब हम इन घटनाओ का स्मरण करते हैं। जिनका इस पर्व के साथ सम्बन्ध है तो हम उन शानदार क्रान्ति के जन्मदाताओ मे महर्षि दयानन्द प्रमुख हैं। इस पावन दिन ही बालक मूलशकर के मन मे परमात्मा के दर्शन करके अमर पद पाने की इच्छा उत्पन्न हुई थी घटना साधारण थी पर आत्मा पर गहरा असर हुआ, जिससे प्रभावित हो मूलशकर ने घरबार छोडकर योगियों की तलाश में मारा-मारा फिरा।

पहले ब्रह्मचारी फिर सन्यासी बनकर आत्मा को शान्ति देने का यत्न किया। पर जब कृत्रिम साधनो से शान्ति न मिली, तब मथुरा जाकर महापण्डित दण्डी विरजानन्द से वेदो तथा वेदागो का ज्ञान प्राप्त किया। योग का अभ्यास दयानन्द ने हिमालय की यात्रा मे ही प्रारम्भ कर दिया था। विद्याध्ययन कर कार्य क्षेत्र मे जाने पर साधना और ज्ञान प्राप्त करके ही मिशन पर जाने हेतु तैयार हो चुके थे। तब गुरु ने शिष्य को कहा था।

देश का उपकार करो ! सत् शास्त्रो का उद्धार करो। अविद्या को मिटाओ और सत्य धर्म का प्रकाश करो।

१८६३ मे वाणी और लेख द्वारा प्रचार प्रारम्भ किया। और २० वर्ष तक अनवरत जो विस्तृत काम कर सके, उसे देख आश्चर्य होता है। प्रचार का कार्य झझावत की तरह किया। इन बीस वर्षों मे प्रान्त नगर शहर से प्रचार और शास्त्रार्थ साथ ही आर्य समाजो की स्थापना कर इतना विशाल कार्य किया जो असम्भव को भी सम्भव बना दिया। यदि थोडे से शब्दो मे कहना चाहे तो उन्होने भारतीयो की पराजित मनोवृत्ति को एक जबर्दस्त ठोकर लगाकर उन्हे नीद से जगाकर खडा कर दिया। समाज पर अपनी हीनता और कमजोरी का जो भारी भाव पत्थर की तरह बैठा हुआ था। भारत की सस्कृति धर्म और इतिहास का गौरव बताकर उसे तोडकर फेक दिया। योरोपीय विद्वानो द्वारा धर्म को ढोग बताया जा रहा था। हमारे साहित्य को कूडा कहा था।

महर्षि दयानन्द ने कहा—पीछे की ओर चलो ! का नारा दिया और शिक्षित भारतवासियो को पश्चिम की ओर जमी आंखो को अपने सिंहनाद द्वारा खेच कर बीते इतिहास की ओर मोड दिया। उनके हृदयों मे राष्ट्र का गौरव जाग उठा। जिससे वह जान सके कि हम दास बनने के लिये नही अपितु स्वाधीन और श्रेष्ठ बनने के लिये उत्पन्न हुए हैं।

दूसरा उपकार—समाज मे फैली हुई सामाजिक कुरीतियो के दोष दिखाकर उन्हे छोडने की प्ररणा दी। बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, छुआछूत आदि के सामाजिक रोग राष्ट्र की नसो मे कीटाणुओ की तरह व्याप्त थे। उन पर सुधार रूपी दवा का प्रयोग किया। स्त्रियोमे शिक्षा का अभाव, पर्दे की कुप्रथा और विधवाओं की दुर्दशा को दूर करने का प्रयास किया। पराधीनता और हीनता की मनोवृत्ति नष्ट हो गई तथा उन्नति के साथ स्वाधीनता का प्रकाश फैलने लगी।

अपने मिशन को स्थायी रूप देने के लिये जिस सगठन का जन्म दिया गया वह शायद नवीन भारत मे जनतन्त्र प्रणाली का प्रथम नमूना ही था।

आर्यसमाज के सगठन की बडी विशेषता यह है कि वह शुरू से अन्त तक जनतन्त्र सिद्धान्त पर बना है। इस जनतन्त्र शासन पर बने सगठन का असली गौरव तब समझ मे आता है। कांग्रेस से १० वर्ष पूर्व ऐसी सस्था को जन्म दिया जो अग्रेजी भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ थे। तब कुछ ने जाना कि भारत को जनतन्त्र का उपदेश हमे पश्चिम से मिला। पर यह बात भ्रामक है—भारत की भूमि मे गणतन्त्र का बीज बोने वाला सबसे प्रथम कृषक कह सकते हैं।

१—महर्षि ने अपने जीवन से दो अत्यावश्यक महत्वपूर्ण सिक्षाये दी। केवल वाणी से नही अपितु दृष्टान्त से। निर्भयता महर्षि का विशेष गुण था। काशी का शास्त्रार्थ स्वामी जी के जीवन मे बल्कि हिन्दू धर्म के इतिहास मे अजीब ही घटना थी। प्रश्न करने वाले हजार पर उत्तरदाता—एक था। महर्षि ने जिस निर्भयता व वीरता से उत्तर दिया, उसने विदेशियो तक को चकित किया उस दृश्य को देखकर ईसाई जगत् ने स्वामी जी की तुलना ईसाई धर्म के सुधारक लूथर से करने लगे।

शास्त्रो के अतिरिक्त शस्त्रो से भी स्वामी जी कभी विचलित नही हुए। स्वामी जी के जीवन मे अनेक अवसर आये और प्राणो का भय दिखाया गया, पर वह पीछे न हटे तथा आगे ही बढते रहे।

२—दूसरी शिक्षा—स्वामी जी ने मानव को सयम की शिक्षा दी, जिसे हम ब्रह्मचर्य भी कहते है वह आजन्म ब्रह्मचारी रहे तथा ब्रह्मचय का पाठ पढाते रहे। स्वामी जी का शरीर/जितना विशाल था उनका मन और आत्मा भी विशाल थे। आत्मिक बल के तो वह भण्डार ही थे। सुधार का काय तो कठिन था। पुरानी रूढियो को तोडना फौलाद से भी कठिन था। स्वामी जी आत्मिक बल का जीता-जागता नमूना थे। अपने जीवन से यह बतला दिया कि मनुष्य यदि सयम द्वारा अपने मन-आत्मा और शरीर को दृढ बनाये तो वह अद्भुत कार्य कर सकता है।

एक विदेशी लेखक ने लिखा है कि अनेक विषयो पर मतभेद रहते भी यह कहना है कि स्वामी दयानन्द मानवता के प्रतीक हैं।

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन से राष्ट्र को उस समय स्वाभिमान, स्वाधीनता और स्वधर्म का पाठ पढाया। जब राष्ट्र पराधीनता और उदासी के प्रभाव से बिलकुल बेदिल हुआ पडा था। जिस प्रेरणा के प्रभाव से बालक मूलशकर सुधारक दयानन्द बना। वह उसे शिवरात्रि के जागरण से प्राप्त हुई।

इस बात को आज हम भुला नही सकते।

पंजाब के हिन्दू पीड़ितों के लिए अपील

ताजा सूचना के अनुसार पंजाब से ३० हजार से अधिक हिन्दू परिवार दिल्ली आ चुके हैं। इनकी सहायता और पुनर्वास के लिए बडी मात्रा मे धन की आवश्यकता है। सर्दी पूरे यौवन पर है। विस्थापितों के लिए गरम कपडों की तुरन्त आवश्यकताहै। जिस जिस सज्जन तक मेरी अपील पहुँचे, उन सबसे प्रार्थना है कि धन और सामान के रूप मे अपनी सहायता तत्काल भेजें। देरी न करें, अपनी सहायता आज ही भेजें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धन और सामान भेजने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

दया का सागर दयानन्द

—मीरापति आर्य वानप्रस्थ आश्रम [illegible]—

महर्षि दयानन्द जी का जीवन हंस जैसा निर्मल और कमल के फूल की तरह सुवासित था। उन्होंने बाल्यकाल से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक जितने भी काम किए वह संसार के महापुरुषो से निराले ही थे जब हम गम्भीर दृष्टि से विवेचन करते हैं तो हमे उनका जीवन सूर्य जैसा तेजस्वी और चन्द्रमा जैसा शान्त और व शीतल प्रतीत होता है। वह क्या थे उसको तो वही मनुष्य समझ सकता है जिसकी अन्तरात्मा पवित्र हो। दयानन्द को समझने के लिए मनुष्य का हृदय शुद्ध, पवित्र और मस्तिष्क प्रखर होना आवश्यक है। जिस प्रकार समुद्र मे मोती निकालने के लिए उसके नीचे जाकर डुबकी लगाने से ही मोती प्राप्त किए जा सकते है। बस इसी प्रकार से प्रत्येक मनुष्य को एकान्त मे बैठकर साधना द्वारा चिन्तन करने से दयानन्द रूपी रत्न की जानकारी प्राप्त हो सकती है। दयानन्द, ही थे।

उसके मुकाबले का आज तक कोई हुवा ही नही तो किससे उपमा दी जाये। वह महान् गुणों के भण्डार थे, वह योगी थे, वह तपस्वी थे वह ऋषि थे वह युगस्रष्टा थे वह क्रान्तिकारी थे वह दीन अनाथ विधवा के सच्चे हितैषी थे वह सत्यवादी थे वह साधक थे वह योगी थे वह देश हितैषी थे इतना ही नही वह समाज सुधारक थे। प्रभु के बनाये हुए पशु पक्षियो का दर्द भी उनके हृदय मे था। कहा तक लिखा जाये हमारे में इतनी शक्ति ही कहा है जो उनके सम्पूर्ण गुणो का वर्णन कर सके।

फिर भी हमे प्रयत्न तो करना ही चाहिए कि दयानन्द रूपी रत्नागार मे से कुछ रत्न मोती हीरे माणिक जो भी चिन्तन करके विचार की मथनी से मथकर निकाल सकें तो निकालें और अपने जीवन को मालामाल करने के लिए भरसक प्रयत्न करे।

दयानन्द तू सचमुच ही दया का समुद्र था। यदि समुद्र न होता तो किसी दु:खी अनाथ के ऊपर दया करता किसी से निर्दयता पूर्ण व्यवहार करता। परन्तु समुद्र तो लबालब भरा रहता है इसलिए तू हमेशा दया से भरपूर ही रहा। अनूप शहर मे पान में विष देने वाले के ऊपर दया ही तो की यदि दया न करता तो उसको जेल भिजवा देता।

वृन्दावन मे विरोधी लोगो के ईंट पत्थर बरसाने पर तूने दया दिखाकर मुस्कुरा दिया और यह कहा कि जो कुछ इनके पास था वह ले आये वरन अपने को यह भी तो कह सकते थे कि तुम भी जवाब में पत्थर मारो परन्तु ऐसा करने से दया निर्दयता मे बदल सकती थी फिर दयानन्द नाम कैसे सार्थक होता। फिर दया के समुद्र की शोभा ही क्या रह जाती है पर धन्य तू देव दयानन्द ही सचमुच ही तू दया का सागर था।

मथुरा मे वैश्या आकर कुन्दनसम जीवन को कलंकित करने का प्रयास करने लगी। परन्तु वहा पर भी तो दया के समुद्र ने अथाह दया की बूंदें बरसा बरसा कर वैश्या को चरणो मे गिरने के लिए विवश कर दिया। यह कोई मामूली बात थी यह कोई छोटी घटना थी यदि आप दया का भण्डार अपना खजाना न खोलता तो सदा २ के लिए उस पुरातन काल के ऋषि की तरह दूषित हो जाता जैसा कि विश्वामित्र जी के विषय मे सुनते आये हैं क्या वैश्या से अछूते रह गए थे नही नही वह अपने साधना के पथ को भूलकर विषय पथ के अनुगामी हो गए थे और सब लोग जानते हैं कि उन्होंने शकुन्तला को जन्म दिया था। तभी तो लाखों वर्षों के पश्चात् भी उनके जीवन पर कलंक का टीका दिखा ही जाता है।

परन्तु देव दयानन्द ने शरीर की सफेद चादर को जरा भी काला धब्बा नही लगने दिया और अपने भूषित जीवन को सुरक्षित कर दिया।

एक दिन मेरा ऋषि हजारो लोगो के बीच अपनी मीठी और ओजस्वी वाणी से लोगो के मानस पटल की काई को धोने के लिए बोल रहा था अपनी मधुर वाणी को विराम दिया ही था तो एक नन्हें शिशु ने उनके मस्तक पर पत्थर मारा और उस पत्थर से दयानन्द के माथे से खून की धारा बह निकली। परन्तु दया के समुद्र ने खून की धारा की तनिक भी परवाह न करके प्रेम की धारा बहाते हुए कहा—क्यो पकड़ते हो इस अबोध बालक को, तुरन्त मुझे क्या चाहिए मुझे यह डर रहा था कांप रहा है भय से बोल नही पा रहा। परन्तु दयानन्द ने दया के हाथ आगे बढ़ाकर उसे प्यार देते हुए यह कहा कहो क्या चाहते हो? उसने कहा क्षमाकर दो मेरा दोष नही लड्डू देने का लालच देकर मुझे कहा गया कि आपके पत्थर मारा जाये।

दयानन्द ने कहा हो सकता है वे लोग तुम्हें लड्डू दें परन्तु मेरे से तो लेते ही जाओ। यह लो पांच रुपये इसके लड्डू लेकर स्वय भी खाना और अपने साथी मित्रो को भी देना।

धन्य दयानन्द तेरी दया। तेरे पास अटूट दया का भण्डार था उसी को जीवन भर बांटता रहा। तेरे जीवन की लीला समाप्त ही दया के साथ हुई। क्या अवस्था है जगन्नाथ पापी ने दूध मे कांच घोलकर पिला दिया सारे शरीर मे जलन हो रही है रोम रोम छलनी हो गया परन्तु दया से भरपूर दयानन्द को न अपने कष्ट की चिन्ता न शरीर से मोह केवल है तो इस बात का है कि कहीं जगन्नाथ पकड़ा न जावे। अच्छा जगन्नाथ जरा इधर आओ क्या करू? बस यही कि तुम भाग जाओ कैसे भागना होगा मेरे पास तो रुपए भी नहीं यात्रा का खर्च मैं दूंगा। अच्छा यह बात है तो लो यह थैली इसमें रुपए हैं इस से आपका काम चल जाएगा।

आज इस काम को करके दयानन्द ने महर्षि की पदवी को प्राप्त कर लिया। अपने दयानन्द नाम को तो सार्थक किया ही था परन्तु आज विश्व के इतिहास मे सुनेहरी अक्षरो में लिखे जाने वाले काम करने का सौभाग्य भी प्राप्त कर लिया। संसार के लोगो को यह दिखा दिया कि तुम भी अपने जीवन को सुरभित करना चाहते हो तो मेरी तरह सुख दु:ख की परवाह न करके अपमान की चिन्ता किए बिना कर्मक्षेत्र में उतर कर भूले भटके लोगो को मार्ग दिखाना तभी विश्व का कल्याण होगा अन्यथा नहीं हो सकता।

"बोधोत्सव का दिव्य सन्देश"

—भगवानदेव "चैतन्य" एम. ए. साहित्यालंकार महामन्त्री : आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को शिवरात्रि के दिन बोध हुआ था कि इस पत्थर की मूर्ति के समक्ष चाहे आजीवन जागरण में, व्रत-उपवास करके बैठे रहें मगर वह परमात्मा ऐसे कदापि नही मिल सकता है, जिसको मिलना इस मनुष्य जन्म का मुख्य लक्ष्य है। इसी प्रकार प्रिय बहिन और चाचा की आकस्मिक मृत्यु ने बोध कराया कि इस ससार मे उत्पन्न हुए जीव को अवश्यमेव मृत्यु का ग्रास बनना है। ये दोनो बोध मात्र थे—ईश्वर प्राप्ती और मृत्युञ्जयी बनने के लिए। इस दिशा मे मूलशकर ने तत्काल प्रयास आरम्भ कर दिये। इस दिव्य किशोर को लगा कि अब एक क्षण बर्बाद करना भी इस प्राप्ती के मार्ग मे बहुत बडा रोडा है। वह तुरन्त बढ चला। जब आख खुले तभी सवेरा वाली उक्ति उस पर चरितार्थ सिद्ध हुई। मार्ग मे बाधाओ के अम्बार आ खडे हुए मगर भूख प्यास, सर्दी-गर्मी, मान-अपमान यह सब तो उसके लिए अब गौण बन चुके थे—मुख्य था, लक्ष्य को प्राप्त करना। मार्ग में कडी से कडी परीक्षाए हुई—डराया गया, बहकाया गया, बडी-बडी जागीर प्रस्तुत की गई। यहा तक कि लोगो ने उसे ईश्वर का अवतार घोषित करना चाहा मगर जो कदम लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढे थे वे नही रुके, वे नही झुके। बल्कि वे कुछ और ही अधिक गतिवान होते चले गए। किसी व्यक्ति ने कहा है "असफलता केवल यह दर्शाती है कि सफलता का प्रयास पूरे मन से नही किया गया।" यहा यह बात तो थी हो नही 'इसलिए असफल होने का प्रश्न ही नही।' यह बालक मूलशकर अन्तत महर्षि दयानन्द सरस्वती बनकर ईश्वरीय प्रकाश से जगमगा उठा, मृत्युञ्जयी बन गया। अब इन्होने देखा कि लोग इस ईश्वरीय आनन्द को विस्मृत करके पत्थर, मढी, पुस्तके और न जाने किन-२ जड वस्तुओ मे अपना धन और समय बर्बाद कर रहे हैं। एक चेतन रूप—मगर सब ओर जडता और अकर्मण्यता का साम्राज्य। महर्षि का हृदय पसीज गया—स्वय तो जो पाना था पा लिया मगर ससार को इस पाप से ऊपर उठाने के लिए कार्यक्षेत्र मे कूद पडे। पोप, पादरी, पण्डे, मूल्ला, ग्रन्थी आदि जिन्होने अनेक अनेक डर, भ्रान्तिया तथा प्रलोभन देकर जन-साधारण को बुद्धू बना रखा था—सभी सकपका गए। भवे तन गई। हमारा हलवामाण्डा समाप्त करवाने यह कौन आ गया? दयानन्द ने कहा—घबराओ नही, मैं तुम्हे वह आख देने आया हू जो परख सके कि पाप क्या हो और पुण्य क्या है? धर्म क्या है और अधर्म क्या है, त्यागने योग्य क्या है और ग्रहण करने योग्य क्या हो? मैं तुम्हे बताने आया हूँ कि परमात्मा एक है, हम सब उसके पुत्र हैं, हमारी एक मनुष्य जाति है, बाहर के निशाना से नही बल्कि सुकर्म के पथ पर लगाकर मैं तुम्हारे हृदय पवित्र करने की प्रेरणा लेकर आया हू। मैं धर्म की सही-सही परिभाषा लेकर आया हूँ ताकि मजहब के नाम पर जो धोखाधडी, लूटपाट, छलकपट तथा मारकाट हो रही है वह समाप्त हो जाए। मैं तुम्हे बताने आया हूँ कि जैसे परमात्मा एक है—वैसे ही हमारा धर्म भी एक है—वैदिक धर्म। वेद ही वह आख है जिसे मैं स्वत प्रमाण मानता हूँ। मैं तुम्हे एक वेद की छत्रछाया मे सुख, शान्ति, समृद्धि तथा आपसी भाईचारे के लिए एकत्रित करने आया हू ताकि यह अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग समाप्त होकर समूची मानवता एकता के सूत्र मे बधकर सुख की सास ले सके। मैं तुम्हारा परममित्र और हितैषी हूँ।

जिन्होने पूर्वाग्रह त्याग कर महर्षि दयानन्द की बात को सुना और समझा—वे निहाल हो गए। पूर्वाग्रही और हठधर्मियो ने पुन शत्रुता मोल ले ली। महर्षि ने शास्त्रार्थ के लिए ललकारा मगर यहा भी विरोधियो को मुह की खानी पडी। कोई भी अपने मजहब को वैदिक धर्म के सदृश श्रेष्ठ निर्भ्रान्त और सार्वभौमिक तथा ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध नही कर सका। इस महान योगी को जब शास्त्रार्थ मे नही हरा सके तो बहुत से नीचतापूर्ण और अमानवीय षडयन्त्र रचे ताकि यह दिव्य महापुरुष बदनाम हो जाए मगर अपनी पवित्रता सचरित्रता और दिव्यता के कारण पानी के कमल की भाति निर्लेप यह सन्त विष पी-पीकर भी हसता रहा, मुस्कराता रहा तथा सभी को एक ईश्वर का, वेद का, मानवता का और आपसी भाईचारे का सदेश देता रहा। ऐसी विचारधारा का पहले कभी प्रादुर्भाव नही हुआ था। समूचे विश्व मे इस योगी ने उथल-पुथल मचा दी। यह कैसा मानव जो विष पीकर भी मुस्कराता है, अपमानित और लज्जित करवाये जाने पर भी हसता हो, पत्थर, ईट, कीचड और गोबर की बौछार सहकर भी लोगो को मानवता का उपदेश बाटता हो तलवारो के सायो मे भी वेद प्रचार का कार्य नही छोडता। ज्ञान से ऐसा परिस्कृत कि बडो-बडो की घिग्घी बध जाए। लोगो का सोच की एक नई आख मिली। गली-सडी परम्पराए ध्वस्त होने लगी ईश्वर का वास्तविक स्वरूप सामने आने लगा। लोगो को समझ मे आने लगा कि हमारी धर्म पुस्तक वेद हो मगर विरोधियो की चाल भी निरन्तर चलती रही। उन्होने अन्तत ऐसा कालकूट जहर पिलाया जिसने भारत के ही नही विश्व के इस भाग्यविधाता को चिरनिद्रा मे सुला ही दिया। भारत मे और विश्व मे मजहब, मत एव सम्प्रदायवाद का जो घिनौना ताण्डव नृत्य और नर-सहार हो रहा है यह कदापि न होने पाता यदि उस अनुपम ब्रह्मचारी को कार्य करने के लिए कुछ समय और मिल जाता। जो बीत गई सो बात गई। आज वह नर श्रेष्ठ हमारे बीच नही मगर उनके विचार तो मौजूद हैं। हम शिवरात्रि वाले दिन उन्ही का बोधोत्सव मनाने जा रहे हैं। आज जबकि साम्प्रदायवाद और मजहब एव क्षत्रीयतावाद मानव-मानव का लहू पानी की तरह बहा रहा है। मानव भूल गया है कि मैं मानव हू। आज इस विकट परिस्थिति मे उस महापुरुष की असाम्प्रदायिक विचारधारा ही हमे इस नरसहार से ऊपर उठा सकती है क्योकि उसने हमे जो सोच की आख दी है—उस सोच के सामने ईसाई मुसलमान या सिख नही बल्कि इन सबके पीछे छुपा हुआ मनुष्य ही नजर आता

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महर्षि दयानन्द बोध दिवस पर

लेखक : सीताराम आर्य, हिसार

आज शिवरात्रि है। इसी को महर्षि दयानन्द बोध रात्रि के रूप मे मनाते है क्योकि इसी रात्रि ने इस देश के सोये हुए भाग्य को जगाया था। जिस समय इस देश को बौद्धिक सामाजिक राजनैतिक व आर्थिक गुलामी ने जकड़ा हुआ था हम भारतीय अपने ही भाईयो को अछूत समझकर दूर कर रहे थे, वेद पढने का अधिकार सीमित करके रख दिया गया था। ५ ५ वर्ष के बाल विवाह हो रहे थे १६ १६ वर्ष की विधवाए बेसहारा बैठी थी। विदेशियो के अत्याचार के नीचे कुचले जा रहे थे। भगवान के वास्तविक रूप को न समझकर पत्थरो को भगवान मान बैठे थे।

ऐसी अन्धकारी रात्रि मे महर्षि दयानन्द को बोध हुआ वो सच्चे ईश्वर की खोज मे निकले गुरु विरजानन्द के चरणो मे बैठकर पूर्ण वेदो का अध्ययन किया तथा विश्व को ज्ञान की ज्योति प्रदान की।

ऋषिवर दयानन्द ने १८५७ में गुप्त रह कर स्वतन्त्रता आन्दोलन चलाया, देश मे सर्वप्रथम सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक के माध्यम से स्वराज्य की आवाज उठाई और इस प्रकार स्वतन्त्रता के बीज को बो दिया। जिसके फलस्वरूप १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ सदियों से परतन्त्रता की बेड़ियो मे जकड़े भारतवर्ष ने आजादी का जश्न मनाया। वास्तव में आज हम ऋषिवर दयानन्द के प्रयत्नो से तैयार हुए फलों का ही तो रसास्वादन कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द जैसे महापुरुषो के कार्यों व उपदेशो को आज ससद ने समझा तथा बाल विवाह को समाप्त करने के लिए १८ वर्ष से कम आयु की लड़की तथा २१ वर्ष से कम लड़के की शादी पर प्रतिबन्ध लगा दिया। पुन विवाह को वैध घोषित किया तथा सतीप्रथा करवाने वालो के लिए दण्ड का विधान बनाया।

यदि स्वामी दयानन्द के बताये ब्रह्मचर्य के मार्ग पर हम चलें तो परिवार नियोजन की समस्या हल हो जाए। ऋषिवर दयानन्द लिखते हैं —

१६ वर्ष तक लडकी व २५ वर्ष तक लडका ब्रह्मचारी रहे उसके उपरान्त विवाह कराकर अपने सामर्थ्य अनुसार सन्तान पैदा करें तथा गृहस्थ जीवन भी सयम रखे ताकि उनका शरीर हृष्ट पुष्ट रहे। ५० वर्ष के बाद गृहस्थ जीवन त्याग कर वानप्रस्थी बनकर अपना तथा राष्ट्र को कल्याण मार्ग पर ले जाने के लिए भरसक प्रयत्न करें। देश के बच्चो को वह नि:शुल्क शिक्षा देने का कार्य करे। जिससे न शिक्षक रखने पड़े न ही देश के खजाने बोझ पड़े।

७५ वर्ष की आयु के बाद सन्यास लेकर देश की जनता को बुराईयों से बचाए। देश मे हो रहे अन्य सामग्री व धन आदि के अपव्यय को बचाये। जैसे —

१—देश का अरबो रुपया रोजाना धूम्रपान व शराब पर खर्च हो रहा है।

२—इसी कारण लाखो करोड़ों रुपये का अपव्यय मुकदमों व दुर्घटनाओं मे होता है। देश की वार्षिक आय का चौथा हिस्सा इन्ही मुकदमों के फैसलों पर लगता है।

३—भ्रष्टाचार तथा चोर बाजारी के कारण अमीर और धन बटोरता जाता है। तथा गरीब और गरीब होकर गरीबी की रेखा के भी नीचे रहकर कीड़ा मकोड़ो की जिन्दगी जीने के लिए मजबूर हो जाता है और जिसका कारण है कि —

१—मेरे देश सीता और सावित्री के देश मे लाखों बहने अपना पेट भरने के लिए जिस्म बेचने को मजबूर है।

२—मेरे देश मे लगभग ३० प्रतिशत बच्चे गरीबी के कारण तथा उपयुक्त चिकित्सा न मिलने के कारण प्रति वर्ष अपनी आखो की रोशनी खो बैठते है।

यदि हम महर्षि के बताये मार्ग पर उनकी द्वारा बताई गई वर्ण व्यवस्था का अनुकरण करे तो देश मे परिवार नियोजन पर अरबो रुपये शिक्षा एव न्यायालय पर अरबो रुपये न खर्च करने पड़ें तथा दुर्घटनाओं तथा युद्धों मे खरबो रुपये बर्बाद हो परमपिता परमात्मा की सन्तान, हममे कोई छोटा या कोई बड़ा नही है। जो जैसा कार्य करता है या कर सकता है उसका वही वर्ण है। उनकी वर्ण व्यवस्था के अनुसार —

१—देश का विचारक, विज्ञानिक, चिकित्सक, प्राध्यापक ब्राह्मण है।

२—राजधिकारी, सैनिक क्षत्रीय है।

३—व्यापारी, कृषि, पशुपालक आदि वैश्य है।

४—जो शिल्प शिक्षा ग्रहण, हाथ का काम सीखने की बुद्धि न रखती हो व शूद्र है चाहे वे किसी के भी घर पैदा हुए थे।

आइये हम महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलकर स्वयं सुखी हो तथा दुनिया को सुखी करे। जिससे महर्षि के स्वप्नों को पूरा कर सकें। यही शिव रात्रि या बोध मनाने का मूल भूत उद्देश्य है। ●

दिव्य सन्देश

(पृष्ठ ५ का शेष)

है। मजहब और सम्प्रदाय की दीवारो को फादकर जब मनुष्य को दूसरा भी मनुष्य ही नजर आयेगा तभी शान्ति, सौहाद और भाई चारे का वातावरण बन सकेगा। यही है उस महर्षि दयानन्द की विचारधारा जिसका हम बोधोत्सव मना रहे हैं। इसे मनाने का उद्देश्य तभी सफल होगा यदि हम लोगो में इतना तो बोध हो जाए कि हमने स्वय उस विचारधारा पर दृढता से चलना है और सारे ससार का उपकार करने के लिए उसी मानवतावादी विचारधारा के प्रचार और प्रसार मे अपना तन-मन-धन अर्पित करना है। आलस्य और प्रमाद ही अज्ञानता का जनक है—आओ इसे त्याग कर अपना एक ही लक्ष्य रख कि जब तक वैदिक विचारधारा का मानवीय सदेश जन-जन के हृदयो मे मातृभाव का सृजन नही कर पाता है तब तक कर्मपथ पर निष्ठा के साथ अविरल चलते चल चलते चल चलते चल ●

ऋषिबोध रात्रि

लेखनी उस महर्षि का आज फिर गुण गान हो।
जिसने वैदिक धर्म मे डाली फिर नई जान हो ॥
शिव रात्रि का जागरण था और पूजा भार थी।
मूल शकर को पिता ने आज सौंपा था सभी ॥
आज मन मे हर्ष था ना भूख थी ना प्यास थी।
प्रेम श्रद्धा और भक्ति दर्शनो की आश थी ॥
एक आसन पर पिता थे एक आसन पर आप थे।
शिव के नामो का वहा पर जप रहे वह आप थे ॥
रात आधी जब हुई उनके पिता तो सो गए।
मानो पिता से पुत्र के बचन असत्य सब हो गए ॥
देखते ही देखते बिल से चूहा निकला वहा।
बहु बार कूदा और उछला शिव की पिण्डी पी वहा ॥
भोग जो शिव को लगाया था वही खाने लगा।
दृश्य ऐसा देख कर सन्देह मन आने लगा ॥
जो पिताजी थे बताते क्या वही शिव है यही।
पर मुझे ऐसा यहा कुछ जान पड़ता है नहीं ॥
एक चूहे से भी रक्षा कर नहीं सकता है जो।
कैसे रक्षा विश्व की वह कर सकेगा फिर कहो ॥
सर्व शक्तिमान है वह यह तो शक्तिहीन है।
वह बुद्ध है वह शुद्ध है पर यह तो बुद्धिहीन है ॥
दीन पालक दीन बन्धु निर्बलों का प्राण है।
चैतन्यता इसमे कहां यह तो निरा पाषाण है ॥
अब ऋषि को सच्चे शिव का ज्ञान मन में हो गया।
अज्ञान का जो था अंधेरा दूर "शीतल" हो गया ॥

—जगदीश शरण "शीतल"
प्रधान, आर्य समाज चांदपुर (बिजनौर)

दयानन्द की ज्वलन्त प्रतिभा

—धर्मवीर विद्यालंकार—

आज शिवरात्रि-पर्व है। सम्पूर्ण भारत में यह पर्व अत्यन्त उल्लास और श्रद्धा से आर्यजन (सभी सम्प्रदायों के हिन्दू मात्र) मनाते हैं। आज से १४१ वर्ष पूर्व एक चौदह वर्षीय बालक व्रत-उपवास पूर्वक यह पर्व मना रहा था। उसने आज के दिन जो कुछ पाया, उसके लिए १९ वर्ष तक अथक परिश्रम किया। वह बालक, महर्षि दयानन्द के रूप मे आज से ११३ वर्ष पूर्व सन् १८८३ के दीपावलि पर्व से क्षितिज मे अपूर्व ज्योति के रूप मे आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रहा है। श्रद्धा, तप, विद्या, निष्ठा, योग और ब्रह्मचर्य के मूर्तस्वरूप का आज के दिन स्मरण, आज की पवित्र वेला मे परम कल्याणकारी है।

साधारणतया आज का सन्यासी अशिक्षा, आर्थिक विपन्नता के कारण दु:खों से छुटकारा पाने मे असमर्थ हो सन्यास ग्रहण करता है। परन्तु महर्षि दयानन्द की परिस्थितिया इससे सर्वथा विपरीत थी। सौराष्ट्र (काठियावाड) की मोर्वी राज्य के प्रभु सत्ता-सम्पन्न दिवान श्री करसन जी लाल जी तिवारी के घर ग्राम टकारा में सन् १८२९ के फाल्गुन मास‡ में उज्वल ज्योति के रूप मे प्रादुर्भूत हुए। "होनहार विरवान के होत चीकने पात।" बचपन मे ही कठिन शास्त्र पढ लिए। यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया। शिवरात्रि व्रत-उपवास पूर्ण निष्ठा से किया। अर्धरात्रि तक सभी सो गए। पर बालक मूलशंकर आंखो को ठण्डे जल से धोता रहा और जागता रहा। पिता, गुरु, पुजारी जगाए गए और सो गए। पर वह ऐसा जागा कि आजन्म जागा और आजन्म ही सम्पूर्ण मानव-जाति को जगाता रहा। उसने जो पाया, उससे जगत् का महान् उपकार हुआ। ईश्वर के सत्यस्वरूप को पा ही लिया।

प्यारी बहिन, हितैषी चाचा की मृत्यु के अवसर पर मृत्यु पर विजय पाने का जो सकल्प किया, उसे पूरा कर दिखाया। १७ बार विषपान कराया गया। सन् १८८३ की दीपावलि पर्व के दिन उस ब्रह्मचर्य से प्रदीप्त, सुशिक्षा से सुशोभित, सुविद्या से प्रकाशित, प्रचण्ड ज्वलन्त ज्योति महर्षि दयानन्द ने मृत्यु पर विजय पाने का सुन्दर, प्रभावशाली दृष्टान्त प्रस्तुत किया। सायकाल [६]बजे भूमि को गोबर से लिपवाया गया। उस पवित्र स्थान पर बैठ सस्वर, सुमधुर कण्ठ से ऋचाओ का भक्तिपूर्ण निष्ठा से, समर्पित भावना से मनोहारी पाठ किया। फिर लेटे। तीन बार बोले "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो—" वह दिव्य आत्मा इस नश्वर शरीर छोड कर चल दिया। उस समय उनके चेहरे पर दारुण रोग के कष्ट के चिह्न नही थे। अपितु स्वच्छ, सात्विक, पवित्र दिव्य आभा के दर्शन हुए। जिसे देखकर प० गुरुदत्त विद्यार्थी के हृदय की समस्त आशकाए शरदभ्र की भांति विलीन हो गई।

नवयुवक, विद्वान् एव जिज्ञासु मूलशंकर ने सुख-सम्पन्न माता-पिता के मोह को, सुख सम्पत्ति के लालच को छोडा। पर्वत की उपत्यकाओ मे, बीहड सुनसान वनों मे, हिमालय की बर्फीली चोटियो पर हिंस्र पशुओ से घिरी कन्दराओं मे, ग्रामो में, नगरों मे, मन्दिरो मे, मेलो मे, जहा जो भी विद्वान्, साधु, सन्त-महात्मा, सन्यासी मिला, उसे गुरु धारण किया। उससे जो कुछ ज्ञान, योगसाधना मिले, उसे भूखे की तरह तुरन्त आत्मसात् किया। सैकडों जटिल ग्रन्थ पढे। विभिन्न सम्प्रदायों के धर्म-ग्रन्थो का गहरा अध्ययन किया। तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र, शल्य-क्रिया सीखें। योग-विद्या का सफल अभ्यास किया। परन्तु सन्तोष तभी मिला जब परमगुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी के चरणो, अपूर्व निष्ठा एव तप से बहुत विद्याभ्यास किया।

योग-विद्या में निष्णात, वेद-विद्या से प्रदीप्त, निर्विकल्प समाधि के अभ्यस्त की समाधि हजारो वर्षों के अनन्तर टूटती है। यह दयानन्द समाधिस्थ हो गया, तो वेदों का उद्धार कौन करेगा? भारत को परतन्त्रता और दुष्टदेवों की अतिशयता से कौन छुडवाता दक्षिणारूप लौंग की थाली हाथ मे लिए उपस्थित निष्ठावान् शिष्य स्वामी दयानन्द से प्रज्ञाचक्षु, भविष्य को गहराई तक देखने वाले गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी बोले—"प्रिय दयानन्द। तुमसे भौतिक दक्षिणा नही चाहिए। जाओ, वेदो के उस सत्यार्थ का प्रकाश फैलाओ, जो तुमने यहा पाया है।" समाधि के सात्विक घनीभूत परम आनन्द का परित्याग कर गुरु दक्षिणा रूप मे किये सकल्प-व्रत का सम्यक पालन अनुरूप शिष्य ने आजन्म निभाया।

अनेक ईश्वरो की उपासना, अन्धविश्वास और अशिक्षा से भ्रमित भारतवासी कुरीतियो के जाल मे फसे दारुण दु:ख भोग रहे थे। अविद्या, कुशिक्षा, कुसग, कुसस्कार, मिथ्या भिमान से विघटित समाज और ईर्ष्या-द्वेष कलह से अविवेकी बने समाज पर अंग्रेजी शासन का दुर्दान्त अन्यायपूर्ण व्यवहार, बाल विवाह, विधवाओ का नारकीय जीवन, नारीमात्र का क्रन्दन, आदि देखकर सन्यासी एव निर्मोही देव दयानन्द बहुत रोया, जो नवे युवक, सासारी मूलशंकर अपनी प्यारी बहिन की मृत्यु पर दो आसू न रोया। मृतक श्राद्ध वर्णव्यवस्था का नाम, से भारतवासी असहाय और किंकर्तव्य विमूढ हो चुके थे। परस्पर द्वेष-ईर्ष्या-कलह-फूट से, भारत छोटे २ राज्यो मे विभक्त हो असगठित हो रहा था। कूटनीतिज्ञ अंग्रेज के क्रूर पजे दिनोदिन मजबूत हो रहे थे। राजाओ का भोग मे, शिकार मे, विलास मे, मद्य-मास-वैश्यागमन मे बडप्पन के झूठे जाल मे फस कर, असहाय निर्बल, निरुत्साही और पुंग समान प्रिय-प्रजापर क्रूरतापूर्ण अन्याय करने वाला अंग्रेजो ने बना दिया था।

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मना।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्याम् सर्वमानवा॥"

विश्व का गुरु भारत राष्ट्र की निकृष्टतम अधोगति देख निर्मोही सन्यासी दयानन्द बहुत रोया। जब कि जवानी का ससारी मूलशंकर अपनी प्यारी बहिन की मृत्यु पर दो आसू न रोया। शेर की सन्तान के स्वाभिमान को जगाने का सकल्प किया और गुरु विरजानन्द की दूरदर्शिता को सराहा।

इस पतिततम अवस्था से उद्धार का एकमात्र सहारा एक ईश्वर है और ईश्वरोक्त उदात्त कल्याणकारिणी पवित्र वेदवाणी का सुमगल ज्ञान है। राष्ट्र को सगठित करने के लिए एक ईश्वर, एक धार्मिक ग्रन्थ वेद की स्थापना ही एकमात्र साधन है।

बगाल की खाडी से अरब सागर तक, पेशावर से विन्ध्याचल तक गगा-यमुना-नर्मदा के तटवर्ती तीर्थ-स्थलो छोटे २ ग्रामो, बडे २ नगरो वेद की पवित्र ऋचाओ को स्वामी दयानन्द, मधुर कण्ठ से, गम्भीर स्वर मे तन्मय हो गाने लगे। सत्य अर्थ के प्रकाश मे जन-जीवन उठ खडा हुआ। स्थानीय छोटे २ विद्वानो को समझाया, धुरधर पण्डितो मे शास्त्रार्थ किया। प्रकाण्ड विद्वानो की विश्व-विख्यात नगरी काशी मे वेदो की दुन्दुभि बजाई। हरद्वार के कुम्भ-मेले पर "पाखण्ड-खण्डिनी पताका" फहराई। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन, आदि समाज-सुधारको ने दिल खोलकर स्वागत किया। अमेरिका के थियोसोफिस्ट कर्नल अलकाट् उनसे मिलने भारत आए। जर्मनी के विद्वान् मैक्समूलर ने स्वामी जी की प्रतिभा का लोहा माना। प्रखर किरणो वाले सूर्य के समान वेद के प्रकाश मे पाप, अविद्या, अन्ध-विश्वास, कुरीतियों, रूढियो के बादल छिटक कर दूर हट गए। निरभ्र आकाश में वेद रूपी सूर्य की ऋचाए रूपी किरणें चमकने लगी। दु:ख दारिद्रय-शोक-त्रिविधसताप दूर हुए। जन-जन सुखी और आनन्दित हुआ।

वेदोद्धारक —१९ वी शताब्दी मे वेदो के नाम से बहुत गलत बातो का प्रचार हो रहा था। "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" कहकर यज्ञ मे मूक प्राणियो की हत्या को वेदके नाम से किया जा रहा था—जो भारतवासी बुद्ध ने उसे मानने से इन्कार कर दिया था। इसी प्रकार से अन्य बहुत पाखण्ड वेद के नाम से हो रहे थे। क्योंकि उन्हें पढता कोई नही था।

(१) अत स्वामी जी ने सभी को वेद पढने का अधिकार दिया। स्त्री शूद्रो नाधीयताम् के उत्तर मे यजुर्वेद की ऋचा उद्धृत की—

"यथेमा वाच कल्याणी मावदानि जनेभ्य।
ब्रह्मराजन्याभ्या ७ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।"

(शेष पृष्ठ ८ पर)

‡ "वेद सविता" मासिक अजमेर के दिसम्बर १९८६ के अंक मे प्रकाशित समाचार के अनुसार महर्षि का जन्म भाद्रपद शुक्ला ९, है—ऐसा शोध हुआ है।

शिव संकल्प

यह पर्व समस्त भारतवासियो के कल्याण की कामना करने वाला महा पर्व है। महायोगी देवाधिदेव महादेव शकर के जीवन के साथ तो इस रात्रि का सम्बन्ध है ही, इस युग के भी मूलत शङ्कर अथवा दयात शङ्कर दया-आनन्द सरस्वती रूपी त्रिवेणीभूत दयानन्द सरस्वती के पावन जीवन के साथ भी है।

सामान्यतया द्विज दो जन्मा होता है। माता पिता से वा विद्या आचार्य से। पर दयानन्द सरस्वती द्विजो से ऊपर हैं। यह द्विज त्रिजन्मा हैं। इनका प्रथम जन्म माता पिता से हुआ। दूसरा जन्म पूर्व सस्कार एव भगवत् कृपा के सयोग से शिवरात्रि मे शिव-प्रतिमा की अर्चना करते हुए सत्यान्वेषक के रूप मे हुआ। दयानन्द का यह नया जन्म उनके भावी समस्त कार्य कलापों का मूल है। अतः माता पितृ जन्म की अपेक्षा यह जन्म अधिक महत्वपूर्ण है। तृतीय जन्म आचार्य प्रवर विरजानन्द की कुटिया मे हुआ। जिसमे भारत-वासियो को स्वदेश, स्वधर्म, स्वसस्कृति, स्वभाषा, स्वविद्या आदि विविध प्रकार के स्वत्व से प्रेम करना सिखाया, मानव मात्र को विविध मतो से ऊपर उठाकर स्वतन्त्र चिन्तन करने की शक्ति प्रदान की।

यह पवित्र पर्व जो दयानन्द के मानसिक जन्म का दिन है, हमे आत्म-चिन्तन की प्रेरणा देता है कि हमने गतवर्ष मे कितनी प्रगति की, हम लक्ष्य से अभी कितनी दूर हैं। लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अभी हमे क्या करना होगा। इस पर विचार करना चाहिए।

महाभारत मे अनेक स्थानो पर शिव के महत्वपूर्ण कार्यों का वर्णन है। 'शिव सहस्रनाम स्तोत्र' तो एक एक नाम से महात्मा शिव के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का सकेत करते हैं। महात्मा शिव सपत्नीक होते हुए भी पूर्ण ब्रह्मचारी थे। उनका पार्वती के साथ शारीरिक सम्बन्ध हुआ ही नही। इसको बतलाने दो नाम यहा उपस्थित हैं—

उत्तानपाप—इसका अर्थ है सदा सीधा सोने वाला। स्त्री ससर्ग मे पुरुष अधोमुख होता है। अत यह नाम बताता है कि शिव ने पार्वती के साथ यौन सम्बन्ध नही किया था।

स्थानु—स्थानु का अर्थ होता है पत्रपुष्प फटा से रहि वृक्ष। यह नाम बताता है कि इसी आजन्म ब्रह्मचर्य के कारण शिव सन्तान रूपी फल से रहित थे। कार्तिकम शिव के औरस पुत्र नही थे। वे उनके पालित पुत्र थे, जैसे गणेश।

इस शिवरात्रि के साथ महान् तत्ववेत्ता महर्षि दयानन्द का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। बालक मूलशकर को इस रात्रि में ही कुल परम्परा से प्राप्त शिव-मूर्ति की पूजा करते हुए तत्व का बोध हुआ था। इतिहास पुराणो मे जिस त्रिपुरारि शिव का वर्णन मिलता है। वह यह प्रस्तर मूर्ति नहीं है। महादेव ने तो बडे-२ राक्षसो को मारा था और यह तो अपने ऊपर चढाए हुए नैवेद्य को खाने वाले चूहों को भी हटाने में असमर्थ है। इसलिए मैं उस सच्चे शिव (महादेव) की खोज करूंगा, जिसका वर्णन शास्त्रों मे मिलता है। इस प्रकार मूलशकर के लिए यह रात्रि वास्तव मे शिव अर्थात् कल्याण की रात्रि बन गई।

सच्चे शिव के दर्शन के लिए योग की आवश्यकता का अनुभव करने पर योगियो की खोज में लगे। कुछ मिले और उनसे योग विद्या सीखकर समाधि पर्यन्त उत्कृष्ट योग मे सफलता प्राप्त की। परन्तु फिर भी उन्हे सन्तोष नहीं हुआ। किसी परम विद्वान को खोजते हुए उन्हे मथुरावासी प्रज्ञाचक्षु गुरुवर दण्डी विरजानन्द के दर्शन हुए। इस गुरुवर से तीन वर्ष तक व्याकरण का अध्ययन करने पर उनके ज्ञान कपाट खुल गए और वे वेदार्थ के बोध मे सफल हुए। इस दृष्टि से शिवरात्रि में शिवार्चन करते हुए बालक मूलशकर को जो बोध हुआ उसी की महिमा है कि वे सच्चे शिव को प्राप्त करने में सफल हुए।

यह पर्व वस्तुत आत्म निरीक्षण का है अपनी न्यूनताओ को पूरा करने के लिए किसी शिवसकल्प को धारण करने का है। यदि आर्य जनता इस शुभ-अवसर पर आर्षग्रन्थो के स्वाध्याय का शुभसकल्प लें और स्वाध्याय मे प्रयत्न-शील तो उसके लिए यह पर्व वस्तुत शिव स्वरूप हो सकता है।

महर्षि दयानन्द ने इसी पावन ज्योति को इस अवसर पर उपलब्ध किया था और आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए अपने सच्चे गुरु दण्डी विरजानन्द के सपनो को सार्थक करते हुए वेदोद्धार मे लगकर समाज का सुधार किया। यदि उनके विचारानुसार आर्य जन कार्य करे तो अब भी आर्यों की प्रतिष्ठा विश्व म बढ सकती है और हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का वैदिक नाद बजाते हुए अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं।

महर्षि के जीवन से हम यह व्रत ले सकते हैं कि सत्य की रक्षा के लिए हमे चाहे जितने सकटो का सामना करना पडे। हम विचलित नहीं होंगे एवं वेद की विचारधाराओ को प्रवाहित करते हुए उस पावन ज्ञान गंगा में निरन्तर गोते लगाकर परम सत्य की प्राप्ति के लिये सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

दयानन्द

(पृष्ठ ७ का शेष)

वेद "जनेभ्य" कहकर सन्तुष्ट नही हुआ। "जन" शब्द के अन्तर्गत जिनका ग्रहण है, उन्हे स्पष्ट किया अगली पक्ति मे। अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, घर की महिलाए व भृत्य तथा अतिशूद्र। फिर कहा कि—

"इद मन्त्रम् पत्नी पठेत्।"

ब्रह्मचर्येण कन्या युवान विन्दते पति।"

पढी-लिखी कन्या ही मन्त्र पाठ कर सकेगी। विद्याध्ययन से ही तो ब्रह्मचर्य पूर्ण होगी। माता विदुषी होगी,, तो सन्तान सच्चरित्र होगी।

(२) यह प्रमाणित किया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है, स्वत प्रमाण है। मानव मात्र के कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है।

(३) घनपाठ, जटापाठ, आदि से वेदो का शुद्ध पाठ स्थापित किया।

(४) वैदिक शब्दो के अर्थ व्याकरण एव निरुक्त से निश्चित किए। यौगिक अर्थों को मान्यता दी। रूढि अर्थों का निराकरण किया।

(५) वेदो के भाष्य किए जो युक्ति युक्त, विज्ञान सम्मत और सृष्टि क्रम के अनुकूल है।

(६) वेद मे सभी विद्याओं—आत्मा, परमात्मा, प्रकृति, धर्म, आचरण, कर्तव्यकर्म, शिल्प, विज्ञान—चुम्बकत्व, विद्युत, ताप आदि भौतिक पदार्थों का ज्ञान है।

मूलशंकर और स्वामी दयानन्द

—प्रदीप कुमार आर्य, सांचोर, जिला जालोर

इसी तरह उन्नसवी सदी के घोर अन्धकारमय युग मे १२ फरवरी १८२५ ई० तदनुसार फल्गुन वदि दसमी दिन शनिवार सम्वत् १८८१ को कर्षण जी तिवारी के घर गुजरात प्रदेश के मौरवीं राज्य के टकारा नामक ग्राम मे माता श्रीमती यशोदावाई के गर्भ से बालक मूलशकर का जन्म हुआ। जिसे सब प्यार से दयाल जी कहते थे। इस बालक के सभी सस्कार वैदिक रीति से किये गये थे। इन्हे सामवेद, रुद्राष्टाध्यायी और यजुर्वेद कण्ठस्थ कराया गया जो चौदह वर्ष की अवस्था तक याद हो गये थे। सम्वत् १८९४ मे बालक मूलशकर शिवरात्रि का व्रत कराया गया और बताया गया कि रात्रि को भगवान शिव दर्शन देंगे। लेकिन इसके स्थान पर बालक ने देखा कि शिव पिंडी पर कुछ मूषक चढ आये है जो नैवेद्य का भक्षण करने के साथ-साथ लघुशका करके तिरस्कृत कर रहे हैं। बाल मन मे प्रश्न उठा यह कैसा शिव है। वे तो त्रिपुरारि है। यह तो क्षुद्र मूषकों से भी अपनी रक्षा नही कर पा रहा है। वह कोई और है। मैं सच्चे शिव की खोज अवश्य करूगा।

उन्होंने, सश्रुतेन गमेमहि। मा श्रुतेन विराधिषि।

(अथर्व० १-१-४)

का स्मरण करते हुए सम्वत् १९०३ मे शादी और वैभव के प्रलोभन को त्यागकर रात्रि को ही घर त्याग दिया। एक बार पता चलने पर पिता उन्हे वापिस ले भी गये किन्तु वे पुन घर छोडकर आ गये क्योकि उन्हे तो सच्चे शिव के दर्शन करने थे। काफी समय तक वे इधर-उधर भटकते रहे। यहा वहा से जो भी ज्ञान मिला प्राप्त करते रहे। साधु सन्यासियो मे राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करते रहे और कानपुर के स्वतन्त्रता सग्राह मे भी भाग लिया। सवत् १९१७ में मथुरा मे आकर गुरुवर विरजानन्द जी से शिक्षा प्राप्त की। गुरुजी ने उन्हे गुप्त से गुप्त ज्ञान दिया। उन्होने भी गुरु दीक्षा के उपरान्त वे पाखण्डों का खण्डन करते रहे। हरिद्वार सप्त-ऋषि आश्रम पर और वाराणसी मे शास्त्रार्थ किया। राव कर्णसिंह को करनवास में तलवार तोड़कर परास्त किया। सोते हुए क्रान्तिकारियो को जगाते रहे। राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार किया अनेक पुस्तके लिखी। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ की रचना की। गोरक्षा, छुआछूत की समाप्ति, विधवा का विवाह कर देने की सलाह, शुद्धि आन्दोलन, दहेज की समाप्ति, पाखण्डो व कुरीतियो की समाप्ति की प्रेरणा देते रहे। उन्होने ही सर्वप्रथम स्वराज्य व स्वदेशी का नारा दिया था। वे कहा करते थे धर्म पूर्वक धन कमाकर राष्ट्रोन्नति के कार्यों मे लगाना चाहिए, सादा जीवन उच्च विचार के नियम का पालन करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द जी ने ही बताया था कि समस्त ससार आर्यों की सन्तान है। भारत समस्त ससार की माता है, गोमाता उपकारी व उपयोगी हैं, वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। सारा ससार एक परिवार है। ईश्वर एक है। दीनदुखी बन्धु की यथायोग्य सेवा ही परमेश्वर की पूजा है। जीवो की सेवा करना ही धर्म है। हम स्वय आर्य बनकर समस्त भूमण्डल को आर्य बनाये। उन्होंने बम्बई मे सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना की। उन्ही की प्रेरणा से देश मे जगह-जगह डी०ए०वी० स्कूल खोले गये। गुरुकुल खोले गये। उन्हे अनेक बार विष दिया गया। जिसे वे न्यौली क्रिया से निकालते रहे। अपने मारने वाले जगन्नाथ पर दया करके पाच सौ रुपये दे गये। उन्होने दयानन्द नाम को सार्थक करके दिखाया। वे महान् योगी, देशभक्त, भविष्य दृष्टा, वेदो के विद्वान् थे। हम आज के पर्व पर महापुरुषो के जीवन चरित्रो से शिक्षा लेकर अपने व राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की शपथ ले। इस महापर्व पर आध्यात्मिक, आदि दैविक, आदि भौतिक चेतना को एकत्व प्रदान करने की दिशा मे शुद्ध ज्ञान प्राप्त करे। यही है यही शकर है। हम अकेले ही महर्षि दयानन्द की तरह पाखण्ड, शोषण, भ्रष्टाचार के विरुद्ध लडते हुए देश की एकता व अखण्डता गोरव को बनाये रख।

वन्देमातरम्। भारतमाता की जय।

दयानन्द से पूर्व भारत

घनघोर घटा घमटी दमकी, तब दामिनी दानवी द्वन्दो की।
मानवता मे महा मातम था वन आई मूढ परिन्दो की॥
कलि काल कठोर कराल हुआ, विकराल ज्वाल दावानल था।
तब पुण्य प्रभा का पलायन हो, परचड हुआ पापानल था।

कुठा कुत्सा कलुषा सकट, कटक मे भटके राही थे।
तव वेद सुधा की शान गई, सत्र सोये सतन सिपाही थे॥
आर्यत्व आदर्श अतुल आभा, आसू भर आहे भरती थी।
धृतिधीर धमधारी ध्रुव की, हो हद अधो विलखती थी॥

वैदिक विद्या वीरान हुई, अविद्या की बदली छाई थी।
शुचि वाट बिसार बटोही चले नभ नील निराशा सी आई थी॥
वेद विहीन बने विद्वान विद्या विसराने जाते थे।
पाखण्डी पोप पतित पापी, भारत मे पूजे जाते थे॥

गार्गी मैत्रयी सीता को शुचि सत्य सोम से दूर किया।
वेदो का विद्वान् बाल्मीक, बेचैन सा मरणासन्न किया॥
विधवा कुन्दन सुन वसुधा थी, रोनी अरु रोता था अम्बर।
कुत्सित कामी कुविचारी तव, मन्दिर मे करते जप हर-हर॥

कितनी सदियो से सत्य धर्म, शुचि सोम सुधा खो सोता रहा।
पापी पतित पोप पथाई, बीज पाप के बोता रहा॥
ऐसा भासित भारत मे था, भूकम्प विनाशक आया है।
बिन पराग वैदिक भारत का, सब कुज कुसुम कुम्हलाया है॥

विश्वेश्वर विश्वम्भर विधि ने, तब विश्व वेदना को जाना
देव-दिव्य दूत भेज दिया, जो था वेदो का दीवाना॥
एक सूर्य था शून्य व्योम मे, श्रुती सूर्य उत्पन्न हुआ।
होता है हर्ष 'आर्य' को अब, अन्धर असत का छिन्न हुआ॥

—प्रदीपकुमार आर्य, सांचोर जालोर

काव्य सुधा

"गूंज उठा फिर भूमण्डल पर"

बन अजेय जूझा एकाकी, सघर्षों से प्यार किया,
नव्य नवल उत्क्रान्ति लिए धरती को नया विचार दिया।
अपराजेय बना सेनानी दानवता सहार किया,
'ऋषिवर-दयानन्द' ने पूरा, भारत का शृगार किया।

महिमण्डल भर के पाखण्डो, को निर्भय हो ललकारा,
हिली धरा हिल उठा व्योम, जब शास्त्रार्थ का चला दुधारा,
ढोगी ठग-सारे पाखण्डी, चुपके से कस लिए किनारा,
'ऋषिवर-दयानन्द' ने निर्भय, दूर किया विस्तृत अधियारा।

ज्योतिमान किया भूतल को, कर वेदो का अनुसधान,
नयी किरण पा दिव्य ज्ञान की, जाग उठा यह देश महान,
आर्यसमाज किया स्थापित रखी जिसने मा की आन,
'ऋषिवर-दयानन्द' ने डाला मृतक जाति मे जाग्रत प्रान।

गूज उठा फिर भूमण्डल पर, सामवेद का मधु सगीत,
स्वतत्रता के प्रतिजन जन की, बढने लगी निरन्तर प्रीति,
मानवता की दानवता पर, हुई पुन अभिनव सी जीत,
ऋषिवर-दयानन्द' स्वामी ने, दिया हमे विद्या-नवनीत ॥

—राधश्याम 'आर्य'

ऋषिबोध

तुम्ही ने दिया विश्व को था उजाला,
तुम्ही ने दिया दृष्टि का दान भी तो!

तुम्ही देख पाये कि वह शिव नही था,
अपावन जिसे कर रहा क्षुद्र चूहा,
अनोखा न कुछ क्योकि यह नित्य होता
जगी किन्तु तुम मे प्रबल सत्य-ऊहा।

न हो मुग्ध क्यो सूक्ष्म पर जग तुम्हारी—
न था क्योकि अनुभव न था ज्ञान भी तो!

दिशा की सुनिश्चित बढा पग दिये फिर—
स्नेही स्वजन के न रोके रुके तुम,
कहा कज सी देह कैशोर वय की?
कहा कष्ट मातग? पर क्या झुके तुम?

निदर्शन तुम्ही सत्य-सकल्प के थे—
व्रती वीर की पुष्ट पचान भी तो!

मठो-मन्दिरो का तिमिर देख तुमने
अगम गिरि गुहा विकष्ट कान्तार छाने,
निरन्तर निरत तत्त्व खोज मे तुम
भयातक मे भी रहे वक्ष ताने।

प्रखर शौर्य, साहस अडिग ध्येय-निष्ठा—
विलक्षण स्व गन्तव्य-निर्माण भी तो!

हुई धन्य मथुरा तुम्हे छात्र पाकर
सुधी वह अमर ज्ञान-गुरु जो तुम्हारा,
अमर प्रेरणा का दिया दीप जिसने
न क्या दक्षिणा लौंग की दीप्त-सारा।

न गुरु ज्ञान का सिन्धु उनके सरीखा—
हुआ शिष्य तुम-सा न मतिमान् भी तो!

पराधीनता थी निरवलम्ब जन था
छुआ-छूत के भूत का भक्त मन था,
हुआ छिन्न ही वृक्ष था सगठन का
वितथ चातुरी थी चतुर्दिक् पतन था।

उसी शून्यता मे उठे ध्वान्त-हर तुम—
दिया स्वप्न नूतन भरे प्राण भी तो!

अनधिकारिणी वेद के अध्ययन की
न पात्री स्त्रिया मन्त्रमय सस्तवन की।
कडी चोट दे इस कुटिल धारणा पर
तुम्ही ने उन्हें कर दिया श्री भुवन की।

सुलभ ज्यो हुई वेद-विद्या सभी को—
सुलभ विश्व को वेद-विद्वान् भी तो!

नयन तर्क के पा गयी अध श्रद्धा
सरणि मिल गयी वेद-मन्त्रार्थ को नव,
हुआ स्वत्व का शीघ्र ही ज्ञान हमको
मिटी हीनता जग गया आत्म-गौरव।

दिया आर्यता का हमें बोध तुमने—
सिखाये सदाचार-सोपान भी तो।

अहोरात्र जागे अहोरात्र भागे
सजग सन्तरी धर्म के देश के तुम,
सफल क्रान्ति के क्रान्तदर्शी यतीश्वर!
कहें क्यो न थे दूत विश्वेश के तुम।

न केवल तजे सर्वथा देह के सुख—
किया सत्य-रक्षार्थ विष-पान भी तो!

न निभ्रन्ति तुम सा, न निर्भीक तुम-सा
दया-सिन्धु सचमुच दयानन्द ही थे,
चमक और थी तेज मे कुछ तुम्हारे
जिसे देख लगते नरवत मद ही थे।

गया छोड जग मे जले कोटि दीपक—
तुम्हारा मुने! मूक निर्वाण भी तो!

—धर्मवीर शास्त्री
बी-१/५१ पश्चिम बिहार, नई दिल्ली-६३

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत स्थिर निधियां

ये निधियां २८ फरवरी १९८७ तक स्थापित हुई है

वर्ष १९८५-८६

(१) रायपूर्ण वाली स्थिर निधि १ हजार)

(अन्तरंग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत)

(सस्थापक—श्री रायपूर्ण वाला एम० आई० जी न० १८ बोदा-बाग, कालोनी (रीवा) इस निधि का ब्याज वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे खर्च किया जायगा। वर्ष के अन्त मे ब्याज के २२०,रु० जमा थे।

(२) श्री हनुमान प्रसाद स्थिर निधि २६ हजार),

(अन्तरंग ३ जून, १९८४ द्वारा स्वीकृत)

(सस्थापक - स्व० हनुमान प्रसाद जी गाजीपुर) श्री हनुमान प्रसाद जी ने सभा को १३ हजार रुपए दिये थे। बाद मे उनका देहान्त हो गया। आर्य समाज गाजीपुर के मन्त्री श्री नारायण प्रसाद जी ने सभा को सूचित किया कि इस राशि को सभा ६ वर्ष के लिए फिक्सड डिपाजिट मे रख दे। उसके बाद यह राशि जब २६ हजार हो जावेगी तो इसकी निधि स्व० हनुमान प्रसाद स्थिर निधि के नाम से सभा बना दे और इस निधि के ब्याज को सभा धर्म प्रचार आदि जिसमे भी उचित समझ व्यय करे। स्व० हनुमान प्रसाद जी की यही इच्छा थी।

(३) स्व० श्री सुरेशचन्द एवं श्रीमती शकुन्तला नरूला वनवासी उपकार स्थिर निधि ५ हजार)

(सस्थापक—श्रीमती शकुन्तला नरूला) अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत। इस निधि का ब्याज अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा वनवासी क्षेत्रो मे नवयुवक और नवयुवतियो मे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार तथा उन्हे आर्य वीर और वीरागना बनाने मे शिक्षार्थ व्यय किया जावे। यह धन अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के खाते मे जमा रहेगा। प्रतिवर्ष १४ मार्च को स्व० सुरेशचन्द के जन्म दिवस प[र] पति पत्नी का फोटो सार्वदेशिक मे प्रकाशित करना अनिवार्य होगा। वर्ष के अन्त मे ५००) रुपए ब्याज के जमा थे।

(४) श्री मोलाराम कृष्णा कुमारी ग्रोवर स्थिर निधि ५० हजार रुपए (अन्तरंग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत)

सस्थापक—श्रीमती कृष्णा कुमारी ग्रोवर) यह निधि ५० हजार रुपये के मूलधन से सैण्ट्रल बैक मे जमा की गयी है। इस निधि का ब्याज तिमाही लेकर आर्यवीर, आर्य वीरागना दल वनवासी क्षेत्रो में वनवासी विद्यार्थियो, धर्मिक पुस्तको के प्रकाशन अथवा शुद्धि (पुर्नमिलन) कार्यो पर व्यय किया जावे। ८ नवम्बर को प्रतिवर्ष दोनो (पति-पत्नी) के चित्र सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित किए जावें। यह पत्र श्रीमती कृष्णा कुमारी ग्रोवर २३२ गली मस्जिद-वाली, छोटी बजरिया, रेलवे रोड गाजियाबाद तथा क्रमश चन्द्रमान ग्रोवर, गाजियाबाद, आनन्द स्वरूप मलिक नई दिल्ली तथा श्री-सुमन राजकुमार बत्रा नई दिल्ली को उनके पतो पर भेजा जावे। वर्ष के अन्त मे ब्याज के ३०४७, रुपये जमा थे।

(५) श्री कृष्णदत्त शर्मा तथा आनन्दीबाई स्मृति स्थिर निधि ३ हजार) (अन्तरंग १५।१२।८४)

निधिकर्ता—श्री शरदचन्द औदुम्बि परपूमरी बक्स धार (म० प्रदेश) शर्ते—निधि का ब्याज अनाथ बच्चो के विद्याध्ययन, [illegible] के निःशुल्क वितरण, अथवा वेद प्रचारार्थ ट्रैक्टादि के प्रकाशन पर सभा व्यय करेगी।

(६) श्री जे० नारायणराव स्थिर निधि १० हजार

सस्थापक—श्री जे० नारायणराव, २५ वेद मन्दिर के० आर० रोड बसवान गुडी (बगलौर)। यह निधि कन्नड सत्यार्थ प्रकाश के लिए है। इसके ब्याज से कन्नड सत्यार्थ प्रकाश पढने वाला को एक प्रति पर ५) पाच रुपये की छूट सभा दे। यदि ब्याज बच जावे तो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका यदि कन्नड मे हो तो उसको पढने वालो को भी पाच रुपया प्रति छूट दी जावे। (अन्तरग १५।१२।८४ द्वारा स्वीकृत) वर्ष के अन्त मे ८०० रु० ब्याज के शेष जमा थे।

(७) श्री माखन सिंह पटेल स्थिर निधि १ हजार

निधिकर्त्ता—श्री माखन सिह पटेल-खाटसूर जि० साजापुर (म० प्र०) यह राशि छ वर्ष के लिए फिक्सड डिपाजिट मे रखी जावे तदुपरान्त इस निधि का ब्याज वानप्रस्थाश्रम में सहायता के पात्र व्यक्तियो को सभा देवे। (अन्तरग १५-१२-८४ द्वारा स्वीकृत)

(८) श्री ओमप्रकाश परमार स्थिर निधि २००१)

(सस्थापक—श्री प्रहलादसिह परमार पो० खाटसूर जि० साजापुर (म० प्रदेश) शर्ते—यह राशि पहले छ वर्ष के लिए फिक्सड डिपाजिट मैं रखी जावे। तदुपरान्त स्थिर निधि बनाकार इसका ब्याज सन्यासियो व वानप्रस्थियो की सहायतार्थ सभा व्यय करे। (अन्तरग १५।१२।८४)

(९) मास्टर मेहरचन्द मेहन होशियारपुर स्मृति स्थिर निधि २०, ४००)

(सस्थापक—श्री शान्ति स्वरूप मेहन) शर्ते—प्रत्येक ५१००) के निधि के हिसाब से इसका ब्याज टकारा मे किसी विद्यार्थी की विद्या पर (ख) मोहन आश्रम मे दवाई हेतु (ग) किसी गुरुकुल के योग्य और निर्धन विद्यार्थी की सहायता पर (घ) किसी कन्या गुरुकुल की योग्य एव समाज प्रचार मे लगनशील कन्या के अध्ययन पर सभा इन चार कामो मे हिसाब मे खर्च करे। (अन्तरग १५।१२।८४ द्वारा स्वीकृत)।

(१०) श्रीमती सुशीला देवी स्थिर निधि ६०००)

(सस्थापक—श्री राजकृष्ण नैय्यर ११३५१ सर्विस आफीसर्ज फ्लैट सरदार पटेल मार्ग नई दिल्ली। शर्ते—इस निधि का ब्याज सभा द्वारा वेद प्रचार तथा शुद्धि कार्य पर व्यय किया जावे। (अन्तरग १५-१२ ८४ द्वारा स्वीकृत)

(११) श्रीमती चनन देवी ज्वालापुर स्थिर निधि १३०००) हजार

यह निधि प्रारम्भ मे ४०००)रु० से स्थापित की गई थी तथा आगे बढाने की स्वीकृति भी दी गई थी। (स्वीकृति अन्तरग १६-१०-८२) शर्ते—इस निधि के ब्याज से वृद्ध सन्यासी, बूढ उपदेशक एव असहाय विद्यार्थियो की सहायता की जावे। वर्ष के अन्त मे ब्याज के २८१३)३५ जमा थे।

(१२) श्रीमती छाया अरोडा स्थिर निधि ६१००)

यह निधि प्रारम्भ में ५०००) रुपए से स्थापित की गई थी। बाद में ११००) की वृद्धि की गई। (अन्तरग २३-५-८२ द्वारा स्वीकृत) शर्ते—इस निधि के ब्याज की राशि आर्य अनाथालय बरेली को भेजी जाय।

(१३) श्री मेजर विश्वम्भरदयाल दमयन्ती देवी स्थिर निधि ५ हजार

(अन्तरग दिनाक १६ १०-८२ द्वारा स्वीकृत) शर्ते—ब्याज राशि सभा वेद प्रचारार्थ व्यय करेगी। वर्ष के अन्त मे ब्याज के ४००,रुपए जमा थे।

(१४) श्री शम्भूसिंह सूबेदार स्थिर निधि ५ हजार रुपए

इस निधि का ब्याज वेद प्रचारार्थ सभा व्यय करेगी। (अन्तरग दिनाक १६ १०-८२ द्वारा स्वीकृत) वर्ष के अन्त मे ब्याज के ४००,-रुपए शेष जमा थे।

(१५) स्व. श्रीमती चन्द्रवती नई-दिल्ली स्थिर निधि तीन लाख पच्चास हजार रुपये मात्र

की यह निधि स्थापित की गई। अन्तरग दिनाक १५-१२-८४ द्वारा स्वीकृत हुई। जिसका ब्याज आर्य कन्याओ की शिक्षादि की व्यवस्था आदि पर व्यय किया जायेगा।

(१६) वीर विद्यासागर शुद्धि एवं दलितोद्धार स्थिर निधि ६ हजार

यह निधि श्री विद्यासागर जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री देवेन्द्रनाथ शास्त्री १५ आय कुटीर नरेला ने अपने कनिष्ठ भ्राता की स्मृति मे स्थापित की १९८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृति दी गई। वर्ष के अन्त मे ४८० रुपये व्य ज के शेष जमा थे।

(१७) श्री चौ. टारनदास व श्रीमती रामदेवी नासा सहायता स्थिर निधि

इस निधि की ब्याज भूकम्प, बाढ अकाल, सूखा आदि से पीडितो की सेवा, सहायता एव रक्षा कार्य पर व्यय किया जायगा ६।४।८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृत हुई। इस समय तक ३०००) प्राप्त हुआ है आगे बढाने की स्वीकृत दी गई।

(१८) श्री कल्याणमल मांगीलाल तापड़िया साहित्य प्रकाशन स्थिर निधि ५ हजार रुपए

शर्तें

(१) इस निधि का ब्याज ही वैदिक साहित्य के प्रकाशनार्थ खर्च होना। मूल राशि नही।

(२) इस राशि को कभी भी निधि कर्त्ता अथवा उसके किसी सम्बन्धी को वापस लेने का अधिकार न होगा।

(१९) श्रीमती रामजीबाई श्री मूलचन्द भूटानी धर्मार्थ औषधालय स्थिर निधि एक लाख रुपए

(संस्थापक श्री गोविन्दराम भूटानी)

शर्तें

(१) इसका ब्याज ही व्यय होगा। मूल राशि नही।

(२) इस निधि मे वृद्धि करने का भी दानी को अधिकार होगा।

(३) औषधालय ग्रेटर कैलाश मे खोला जायगा।

(४) ब्याज श्री गोविन्दराम जी या मन्त्री आर्य समाज ग्रेटर कैलाश द्वारा प्रमाणित औषधियो के बिलो के भुगतान मे खर्च होना रहेगा। यह निधि १५।१२।८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृत हुई।

(२०) श्रीमती यशोदा देवी सहायता स्थिर निधि ४ हजार रुपए

इस निधि का ब्याज अनाथ बच्चो की पढाई पर खर्च होगा और सभा को खर्च करने का अधिकार होगा। निधि कर्त्ताओ या उसके किसी सम्बन्धी को मूल राशि वापस लेने का अधिकार न होगा। (१५।१२।१९८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृत) वर्ष के अन्त मे ब्याज के ३२०, शेष जमा थे।

२१—श्री हरिकिशन लाल स्मृति (गाजियाबाद) स्थिर निधि १ लाख रुपए

(संस्थापक श्रीमती इन्द्रावती आर्या)

५००००) बैंक में फिक्सड डिपाजिट मे जमा है जो सात वर्ष में ब्याज दूना होकर १ लाख हो जायगा तभी निधि की शर्तों के अनुसार ब्याज खर्च किया जायेगा।

इस निधि का ब्याज निम्न प्रकार खर्च होगा।

१०००) वार्षिक अनुदान उपदेशक विद्यालय टकारा।

५००) वार्षिक आर्य अनाथालय पटौदी हाउस दरियागज दिल्ली। विकलांगो की सहायतार्थ।

५००) आर्य अनाथालय फिरोजपुर की लडकियों की शादियों के लिए।

१००००) वेद प्रचार आर्य वीर दल दयानन्द सेवाश्रम सघ मुख्यत बांसवाडा, नागालैड, आसाम पर्वतीय क्षेत्रो के पिछडे वर्गों के उत्थान, धर्म रक्षा महाभियान, मीनाक्षीपुरम आदि के सेवा कार्यार्थ, अथवा यदि कभी किसी पुस्तक के प्रकाशन मे इस निधि के ब्याज का उपयोग आवश्यक हो तो पुस्तक मे मेरे पतिदेव के साथ मेरा चित्र भी निधि के ब्याज से प्रकाशित करने के विवरण के साथ निधि का उल्लेख किया जाय।

प्रति वर्ष १७ सितम्बर को मेरे पूज्य पतिदेव हरिकिशनलाल जी की स्मृति मे चित्र सहित सक्षिप्त जीवन परिचय भी निधि के उद्देश्य के उल्लेख सहित सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित किया जाय।

इस निधि के सचालन आदि पर सार्वदेशिक सभा का पूर्ण स्वत्व होगा।

जिस पत्र मे इस निधि के विवरण का उल्लेख हो उसकी ३ प्रतिया निम्न पते पर भेजी जाती रहें —

१—श्री दयाराम गोयल एडवोकेट (नोटरी)
रमतेराम रोड गाजियाबाद

२—श्री जय किशन गुप्त १९/४९
पजाबी बाग नई दिल्ली

३—श्रीमती जयश्री दीवान द्वारा बी के दीवान
गुजरात रोड लश्कर ग्वालियर

२२—यशोवर्धन स्थिर निधि ६ हजार रुपए

(संस्थापित द्वारा श्री म० बनवारी लाल आर्य गाजियाबाद)

(पुत्र की पुण्य स्मृति मे)।

शर्त इस प्रकार है

(१) कम से कम सार्वदेशिक पत्र निर्धन व अधिकारी व्यक्तियो को निःशुल्क हर वर्ष बदलते रहकर भेज दिया जाया करे।

(२) इस निधि के ब्याज से मुख्यत स्व० प० रामचन्द्र जी देहलवी तथा स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज कृत साहित्य प्रकाशित करके उसका लाभ इस निधि मे जमा करके उन्नत किया जाय।

दानी महोदय ने इस निधि की राशि बढ़ाने की भी स्वीकृति चाही थी जो दी गई। प्रारम्भ मे यह राशि ३१००) थी। इस निधि की स्वीकृति ३०-५-८१ की अन्तरग बैठक ने दी यह निधि अब ६०००) रु० की हो गई।

२३—श्री सरदारी लाल आर्य नश्वर स्थिरनिधि ५ हजार रुपए

शर्त

(१) इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जायेगा, मूल नही।

(२) इस निधि का ब्याज प्रतिवर्ष गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में अध्ययन कर रहे किसी निर्धन होनहार व मेधावी वेदपाठी छात्र के अध्ययन पर छात्रवृत्ति के रूप मे व्यय किया जायेगा। यदि किसी अन्य गुरुकुल मे भी ऐसे ही वेदपाठी को सहायता की आवश्यकता हो तो सभा को अधिकार होगा कि वह ब्याज की पूरी राशि दूसरे विद्यार्थियों को देकर उक्त निधि से सहायता कर दें। ऐसा न होने पर ब्याज की पूरी राशि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रों को ही दे दी जाय।

(३) इस निधि के ब्याज से सभा प्रति वर्ष २ प्रतिशत का व्यय ले सकेगी।

(४) इस निधि की मूल राशि दानी को या उसके किसी उत्तराधिकारी को वापिस लेने का अधिकार न होगा।

(५) दानी अपनी इच्छानुसार इस निधि में राशि को बढ़ा सकेंगे।

२४—श्री चिरजीलाल भल्ला स्थायी स्थिर निधि १ लाख रु०
(चिरजी लाल भल्ला चैरीटेबिल ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मुल्कराज भल्ला द्वारा स्थापित।

(१) सभा अधिक से अधिक आय प्राप्त करने के लिए अपनी इच्छा से इस राशि का विनियम करेगी।

(२) इस निधि से प्राप्त आय गोवंश की रक्षा, नस्ल सुधार उसके हित, पालन पोषण आदि मे व्यय तथा अन्य किसी ढंग से प्रयुक्त की जा सकेगी जिससे कि गोसंवर्धन तथा दुग्ध उत्पादन मे वृद्धि हो और सर्वसाधारण जनता विशेषत पिछड़ी जातियो के स्वास्थ्य मे सुधार हो।

(३) पशुओं की बीमारियो की रोकथाम के लिए अनुसधान कार्य मे व्यय करना।

(४) इस निधि की आय सम्पूर्ण अथवा आशिक धन राशि का उपयोग पशु चिकित्सालय पशुओ के रोगो पर अनुसधान नस्ल सुधारक शोध केन्द्रो की स्थापना पर इस शर्त के साथ किया जा सकेगा कि इस प्रकार के केन्द्र। (चिकित्सालय) का नाम 'लाला चिरजी लाल भल्ला' रखना होगा।

(५) इस निधि की राशि को 'चिरजी लाल भल्ला' चैरिटेबिल ट्रस्ट को वापिस लेने का अधिकार न होगा।

इस निधि की स्वीकृति १२-९-८१ की अन्तरग सभा ने दी।

२५—स्त्री आर्य समाज (पारिवारिक सत्सग मडल)
डी ब्लाक सुदर्शन पार्क नई दिल्ली
स्थिर निधि १८ हजार नौ सौ अड़तीस रुपए चौसठ पैसे

स्त्री आर्य समाज (पारिवारिक सत्सग मडल) डी ब्लाक सुदर्शन पार्क नई दिल्ली ने १८,९३८)६४ की एक स्थिर निधि सभा मे कायम की है। इस निधि के ब्याज का उपयोग निम्न कार्यों मे होगा।

धार्मिक पुस्तको के प्रकाशन, गरीब छात्र-छात्राओ की छात्रवृत्ति। प्रकाशित पुस्तको पर श्रीमती ईश्वरी देवी जी आर्य समाज डी० ब्लाक सुदर्शन पार्क दिल्ली की स्थिर निधि के ब्याज से प्रकाशित किये जाने का उल्लेख हो। इस निधि के धन को कोई भी कभी वापिस लेने का अधिकारी न होगा। २१-२-८२ की अन्तरग सभा ने इसकी स्वीकृति दी।

२६—श्री चमनलाल शर्मा एव श्रीमती पुरुषोत्तम देवी ५ हजार रुपए

श्री चमनलाल शर्मा एव श्रीमती पुरुषोत्तम देवी वेद प्रचार हिन्दी भाषा प्रचार निधि, इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जा सकेगा। श्री चमनलाल जी कलेरकला (गुरुदासपुर) के निवासी हैं।

२६-१२-८० को अन्तरग बैठक ने यह निधि स्वीकार की। वर्ष के अन्त मे इस निधि मे ५०) ब्याज के शेष जमा रहे।

२७ - श्रीमती विद्यावती कौड़ा स्थिर निधि

५००० रुपए पाच हजार रुपए) की स्थिर निधि श्रीमती विद्यावती कौड़ा धर्मपत्नी श्री निरजन देव जो विद्यालकार बी० ५/१५८ सफदरजग इन्क्लेव नई दिल्ली ने अपने ज्येष्ठ पुत्र स्व फ्लाइट लेफ्टिनेंट श्री प्रियदेव कौड़ा की पुण्य स्मृति मे १-४-७८ को सभा मे स्थापित की थी। इस निधि के ब्याज का आधा भाग हवन आदि हेतु शम्भूदयाल वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद को श्री अनार्दन भिक्षु जी को जब तक उनका इस आश्रम से सम्बन्ध रहेगा, दी जायेगी। शेष राशि सभा किसी विधवा को सहायतार्थ देगी। ब्याज की शेष राशि इस समय ३५०)०० शेष है।

२८—श्री भवानी लाल गब्बूमल शर्मा स्थिर निधि

विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिज्जो देवी भवानीलाल शर्मा गब्बूमल की पुण्य स्मृति मे स्व० भवानीलाल शर्मा (कानपुर) अमरावती जिला निवासी ने सार्वदेशिक पत्र के हितार्थ पाच हजार रुपये की स्थिर निधि १९५९ मे स्थापित की थी जिसके ब्याज का आधा सार्वदेशिक पत्र को दिया जाता तथा आधा असल राशि मे जमा कर दिया जाता है।

शर्मा जी ने ५००० रुपये के दान से एक दूसरी निधि सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशनार्थ कायम की थी। इस निधि से गतवर्ष तक सत्यार्थ प्रकाश के ४ अच्छे सस्करण ५-५, १० तथा २० हजार की सख्या में छप चुके थे।

इस निधि मे ब्याज के १२५०) शेष बचा है।

२९—चन्द्रभानु वेद मित्र स्मारक निधि

यह निधि स्व० श्री चन्द्रभानु जी रईस तीतरो (सहारनपुर उत्तर प्रदेश निवासी की पुण्य स्मृति मे उनके सुपुत्र स्व० श्री म० वेदमित्र जी जिज्ञासु द्वारा प्रदत्त ५ हजार के दान से १९२५ मे मथुरा शताब्दी के अवसर पर स्थापित हुई थी। दानी की इच्छानुसार इस राशि के ब्याज से आर्य साहित्य प्रकाशित किया जाता है।

इस निधि के ब्याज से अब तक कर्त्तव्य दर्पण आदि २० पुस्तके छप चुकी है। वर्ष के अन्त मे ब्याज के ५००) रुपए जमा थे।

३०—गगाप्रसाद गढवाल प्रचार ट्रस्ट

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्व० श्री प० गगाप्रसाद जी चीफ जज ने २ हजार के दान से एक स्थिर निधि स्थापित की थी जिसका ब्याज दानी महोदय तथा उनके बाद आर्य समाज टिहरी (गढवाल) की अनुमति से उक्त समाज के कार्यों पर खर्च किये जाने का प्रावधान किया गया था। इस समय ब्याज १६९०)४६ जमा हैं।

३१—श्री मूलचन्द बजरगलाल डीडवानी पीलवा (राजस्थान)
स्थिर निधि

स्व० श्री प० मूलचन्द जी ने अपने जीवन काल मे ५ हजार की राशि सभा को दान की थी जो उपर्युक्त निधि के नाम से जमा है। इसके ब्याज से महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य साहित्य के प्रकाशन का प्रावधान हुआ था। इस निधि के ब्याज से दयानन्द दी मैन एण्ड हिज मिशन ट्रैक्ट छप चुका है। इस वर्ष ब्याज के २५०) रु० जमा हुए गतवर्ष ३७६६)०१ जमा थे अब ४०१६)०१ जमा हैं।

३२—श्री डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिर निधि

श्री डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० डी० लिट (अजमेर) ने सत्यार्थ प्रकाश के १ वा १॥ रु० मूल्य के सस्करण के प्रकाशनार्थ १० हजार रुपये की स्थिर निधि कायम की जिसके ब्याज से यह ग्रन्थ छपा करेगा। पहले ४ हजार रुपये की स्थिर निधि सार्वदेशिक की सहायतार्थ कायम की थी जिसकी स्वीकृति २३-४-६३ की अन्तरग बैठक ने दी थी। श्री शर्मा जी ने ६ हजार रुपये की राशि प्रदान करके इस स्थिर निधि के स्थान मे सत्यार्थ प्रकाश निधि कायम की है। इसकी स्वीकृति १४-११-७६ की अन्तरग बैठक ने दी। इस वर्ष इस निधि के ब्याज के ८ सौ रुपये जमा हुए। वर्ष के अन्त मे कुल ५ हजार ७ सौ रुपये जमा थे।

३३—श्री देवव्रत एव श्रीमती सावित्रीदेवी आर्य साहित्य प्रकाशन
स्थिर निधि

दिल्ली निवासी स्व० प० देवव्रत जी धर्मेन्दु के दो हजार के दान से ११-२-१९६३ की अन्तरग की स्वीकृति से यह स्थिर निधि कायम हुई थी जिसके ब्याज मे उनकी दयानन्द वचनामृत वैदिक सूक्ति सुधा और वेद सन्देश नामक पुस्तको के प्रकाशन का प्रावधान किया गया था। अब यह राशि १२ हजार कर दी गई है।

गत वर्ष दयानन्द वचनामृत व वेदसन्देश पुस्तकें छपाई गई। १०-११-७९ की अन्तरग के निश्चयानुसार इस निधि का नाम देवव्रत धर्मेन्दु सावित्री देवी पुस्तक प्रचार निधि रखा गया।

वर्ष के अन्त मे १५८०) रुपए ब्याज के जमा थे।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

कुरान और मकान का किराया

—के० नरेन्द्र

पाकिस्तान के कठमुल्ला इस्लाम का क्या रूप ससार को पेश कर रहे है यह बताने की आवश्कता नही। पिछले दिनों एक ड्रामे मे एक पति ने अपनी पत्नी को तीन बार तलाक कह कर अपने घर से निकल दिया। सयोग से ये एक्टर और एक्ट्रेस वास्तविक जीवन मे भी पति पत्नी है। जब खेल समाप्त हो गया तो ये लोग अपने घर मे आ कर आराम से सो गये किन्तु दूसरे दिन सुबह ही इस्लाम के रक्षक एक मौलवी साहब इनके घर आ धमके और कहने लगे कि ये दोनो हराम का जीवन व्यतीत कर रहे है। दोनो इसकी बात सुनकर अचभे मे रह गये कि इनकी बात समझे नही। इस पर मुल्ला ने कडकते हुए कहा कि समझे, क्या है मैं आपको अच्छी तरह समझता हूँ। कल आपके मिया साहब ने पत्नी को सारी जनता के सम्मुख तीन बार तलाक कहा या नही। इसके बाद इन दोना का एक साथ रहना हराम है और इस्लाम के अनुसार ये दोनो नई शादी करके ही पति पत्नी रह सकते है। पत्नी को किसी और से शादी करनी होगी और इससे तलाक लेना होगा और इसके बाद अपने पहले पति से शादी करके इस की बन सकती है। जिस नये व्यक्ति से इसे शादी करके तलाक लेना होगा इसे इसको ढूढने का कष्ट न उठाना पडगा क्योकि इस काम के लिये सेवक उपस्थित है। जितने दिन इस सेवक की पत्नी बन कर रहना चाहती हैं वह रहे। इसके बाद इसे तलाक हो जायेगा और यह अपने पहले पति के पास दोबारा जा सकती है। यह सब कुरान शरीफ के आदेशो के अनुसार है।

मुल्ला साहब के इस फतवे पर लोगो मे दिलचस्पी होना स्वाभाविक थी। कई दिल फेंक नवयुवको ने मुल्ला को बधाई दी कि इसने इतनी सुन्दर स्त्री को स्वतत्र कर दिया ताकि ये लोग अपना भाग्य आजमा सके। किन्तु इन सब का दुर्भाग्य यह था कि पति पत्नी ने इस मुल्ला की बात मानने से इकार कर दिया और मुल्ला साहब को उत्तर दिया कि जो करना हो कर लो। अब यह मामला सारे पाकिस्तान के धार्मिक विचारको के बहस का कारण बन चुका है और सब जगह इस पर ले दे हो रही है। मजा यह हैं कि कई रिटायर्ड जज और धार्मिक नेता भी इस बहस मे भाग ले रहे हैं। ऐसे लोगो की कौन न प्रशसा करेगा कि इन्हे इस्लाम की इन शानदार मागो के सम्मान का इतना विचार है। हा! वह मौलवी दुखी है जो यह आशा कर रहा था कि पत्नी अकेली हो जाये और इसकी सेवाओ का लाभ उठाने को तैयार हो जायेगी।

अब इसी प्रकार का एक और मामला पाकिस्तान की जनता के लिये दिलचास्पी का कारण बन गया है और वह यह कि क्या कुरान शरीफ मकान पर किराये की आज्ञा देती है या नही। यार लोगो का कहना है कि कुरान शरीफ मे किसी भी व्यक्ति को पेश आने वाली समस्या का समाधान मिल सकता है। यह किराये का मसला तो है ही क्या। कोई इसे मजाक न समझ। सच्चाई यह है कि यह मसला इस समय पाकिस्तान की फैडरल शरई कोर्ट के सामने विचाराधीन है। इसमे इस बात का निर्णय होना है कि किराया या लीज को कुरान शरीफ की आज्ञा है या नही। इस मसले को इसलिये भी अधिक महत्व प्राप्त हो गया है क्योकि पाकिस्तान के बड-बड नगरो मे भी किराये आकाश छूने लग गये है। साधरण मकानो के लिये भी पाच पाच सात सात हजार प्रति माह माग जा रहा है। कुछ दिनो पहले शरई न्यायालय ने मौलवियों से पूछा था कि कुरान शरीफ इस मसले के बारे मे क्या कहता है किस प्रकार कोई मकान किराये पर ले सकता है और किराया तय करने का ढग क्या होता है। किस प्रकार किरायेदारी समाप्त की जाती है। मकान मालिक के अधिकार क्या होते है और किरायेदार के क्या। और कि क्या सरकार इन दोनो के झगडे में हस्तक्षेप कर सकती है आदि आदि इन सपूर्ण मामलो मे इस्लामी विशेषज्ञो में मत भिन्नता है मौलना रियाज हुसैन नरी का कहना है कि एक हदीस है जिसके अनुसार किरायेदार और मकान मालिक किरायानामा की शर्तों के पाबद है। इस पर मौलाना सैय्यद मतीन हाशमी का कहना है कि सकार का कर्तव्य है कि किरायेदार के अधिकारो की रक्षा करना। इन दोनो का खडन करते हुए डाक्टर यूसुक गोदिया का कहना है कि कुरान शरीफ या हदीश मे कोई मकान के किराये का वर्णन नही है। हमारे इस्लामी इतिहास मे केवल किसी व्यक्ति की शारीरिक या दिमाक शक्तियो को किराये पर प्राप्त करने का वर्णन है। उक्त डाक्टर ने एक पुस्तक किताब अम्बुवाल का उद्धरण दे कर बताया कि अगर कोई व्यक्ति मकान के किराये पर जीवित रहता है तो वह अपने पेट मे जहन्नुम की आग उत्पन्न कर रहा है। तो भी सारे इस्लामी इतिहास मे कोई ऐसा जिक्र नही किहजरत के किसी साथी ने अपना मकान किराये पर दिया हो और आपने इसे रोका हो। एक फतवा यह है कि मकान मालिक कोई भी किराया मागने मे स्वतत्र है। हालांकि हदीस मे ऐसा करने का विरोध है। कई मुसलमान इस समय मक्का मे किराये पर मकान ले रहे हैं ताकि हज के समय लोगों को इनमे ठहरा कर मनमाने किराये ले सकें। कई मौलवियो का कहना है कि जहा कुरान शरीफ कई मामलो मे खामोश है तो इसका लाभ उठाना हराम नही है। एक और प्रौफेसर रफीक अल्ला साहब का कहना है कि मकान का किराया एक प्रकार का जजिया है यह पूजीपतियों ने चलाया है और इस्लाम मे इसका कोई जिक्र नही। आपने यह भी कहा कि गो कुरान शरीफ इस मामले मे खामोश है मक्का मे कहा जा रहा है कि हजरत मौहम्मद है ने जमीन किसी दूसरे को देने पर प्रतिबध लगा दिया था।

इन सारे दृष्टिकोणो मे ठीक कोन सा है इसका निर्णय अब फैडरल शरई कोर्ट करेगी। बहरहाल पाकिस्तानी सौभाग्यशाली हैं कि इनकी इस पवित्रतम पुस्तक मे कैसे कैसे जीवन और मृत्यु के प्रश्नो पर प्रकाश डाला गया है।

(वीर अर्जुन से साभार)

स्थिर निधियां (पृष्ठ १३ का शेष)

३४—श्री जगतराम महाजन १०० दयानन्द नगर अमृतसर

यह निधि १९६५ में श्री स्व० लाला जगत राम जी अमृतसर निवासी द्वारा प्रदत्त ४०००) के दान से स्थापित हुई और अन्तरंग ने इसकी २९-१२-१९६५ की बैठक में स्वीकृति प्रदान की। इस निधि के ब्याज से उड़ीसा के स्वामी ब्रह्मानन्द जी, केरल में आर्य युवक समाज द्वारा वहां की क्षत्रीय भाषाओं में बारी-बारी से फ्री वितरण के लिए ट्रेक्टों के प्रकाशन की व्यवस्था हुई है। इस व्यवस्था के भग होने की अवस्था में ईसाई मत खण्डन विषयक साहित्य के प्रकाशन के लिए सार्वदेशिक सभा अधिकृत की गई।

इस वर्ष ब्याज के २००) रु० जमा हुए। वर्ष के अन्त में १६००) रु० जमा हैं।

३५—श्री लाला लब्भू राम (जालन्धर, स्मारक वैदिक साहित्य वितरण निधि

यह निधि लाला लब्भूराम जी ने ५ हजार की राशि से कायम की थी। इसके ब्याज से सत्यार्थ-प्रकाश एवं अन्य वैदिक साहित्य देश-देशान्तर में फ्री वितरण किए जाने की व्यवस्था की गई है। विदेशी भाषाओं में प्रकाशित साहित्य के लिए भी इस निधि का ब्याज प्रयुक्त हो सकेगा।

देश में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का भी आवश्यकतानुसार साहित्य वितरित हो सकेगा। यह सहायता योग्य व्यक्तियों को मुफ्त वा आधे मूल्य पर दी जायेगी।

दानी महोदय के निधन के पश्चात् इसके क्रियान्वयन की सूचना उनके सुपुत्र श्री विश्वमित्र जी कपूर जालन्धर को दी जाया करेगी और वे यथासमय अपना प्रतिनिधि नियुक्त करेंगे। इस प्रकार परम्परागत यह प्रथा चलती रहेगी। प्रचुर साहित्य नि.शुल्क देश-देशान्तर में वितरित किया गया।

वर्ष के अन्त में ब्याज के २३०) रु० जमा थे।

३६—श्री मोहनलाल जी मोहित मोरिशस स्थिर निधि

यह निधि १३-१-१९६५ की अन्तरंग के निश्चयानुसार ३ हजार रुपए के प्रारम्भिक दान से स्थापित हुई थी। सन् १९७५ में यह राशि ५० हजार रुपये की गई।

इस निधि का ब्याज किसी आर्य विद्वान द्वारा लिखित और सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत ग्रन्थ के प्रकाशन में सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रयुक्त होगा। साथ ही मोरिशस के उन आर्य विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार सहायता दी जायेगी जो गुरुकुल व आर्य महाविद्यालय आदि में आर्य समाज की सेवार्थ उपदेश का प्रशिक्षण प्राप्त करते हों। वर्ष के अन्त में २६३८४,७० रु० निधि के ब्याज के जमा थे।

३७—श्री स्व० बनवारी लाल पचेरी वाला (साहिब गंज बिहार) स्थिर निधि

यह निधि तीन हजार रुपये से कायम की गई थी। इसके ब्याज की अंग्रेजी साहित्य व सत्यार्थ प्रकाश के भारतीय भाषाओ के प्रकाशन व वितरण पर खर्च किये जाने की व्यवस्था की गई है।

उपर्युक्त व्यक्तियों एवं संस्थाओं को साहित्य मुफ्त दिये जाने की भी एक शर्त निर्धारित की गई थी और इसका निर्णय सार्वदेशिक सभा पर छोड़ा गया था। इस निधि की राशिमय ब्याज के सन १९८६ में ५९२५) रु० बैंक से मिलेगी जो बौंड के रूप में जमा है।

३८—श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती स्थिर निधि

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी १९ सिविक सेक्टर भिलाई (म० प्र०) ने ४० हजार रु० (चालीस हजार मात्र) दान देकर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती 'स्थिर निधि' स्थापित की थी जिसकी स्वीकृति १४-१०-१९७३ की अन्तरंग बैठक ने दी। श्री स्वामी जी ने यह राशि ५० हजार कर दी है।

इस निधि के ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश और आर्य्याभिविनय पुस्तक हिन्दी तथा देश-विदेश की विविध भाषाओं में छपा करेगी। प्रत्येक प्रकाशन पर अच्छे स्थान पर इस निधि का उल्लेख करना होगा। गत वर्ष इसी निधि के ब्याज के २१,२००) रु० जमा थे। वर्ष के अन्त में ४ हजार रुपए जमा हुए। इस प्रकार २५,२००) रु० ब्याज के शेष जमा है।

३९—श्रीमती कौशल्या देवी (अमृतसर) स्थिर निधि

श्रीमती कौशल्या देवी (१६ मजीठा रोड अमृतसर) ने (दस हजार रुपया मात्र) के दान से यह स्थिर निधि कायम की है। इसके ब्याज से वेदाध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्तियां दी जाया करेगी। २१-३-१९७९ की अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। बाद में इस निधि को बढ़ाकर इन्होने १२०००) कर दिया। इस वर्ष ब्याज का छात्रवृत्ति के रूप में ९९०) व्यय हुआ।

४०—स्व० राजवैद्य मूलचन्द जी आर्य (दिल्ली) स्थिर निधि

६५००) (छः हजार पांच सौ रुपया मात्र) के दान से स्व० राजवैद्य मूलचन्द आर्य स्थिर निधि स्थापित की गई है। इसके ब्याज से आर्ष गुरुकुल एटा (उ० प्र०) मे पढ़ने वाले छात्र को सहायता दी जाया करेगी। २७-३-७७ की अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। इस वर्ष ब्याज के ५२०) जमा हुए। गत शेष ५४८)८० था। आर्ष गुरुकुल एटा को पांच सौ बीस रुपये दिये गये। शेष ५४८)८० रहा।

४१—श्रीमती माधोप्रसाद तथा श्रीमती विद्यावती स्थिर निधि

यह निधि श्री माधो प्रसाद आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) ने दस हजार के दान से कायम की है। इसकी स्वीकृति १६-११-१९७५ की अन्तरंग बैठक ने दी। इस निधि का ब्याज वैदिक धर्म के प्रचार एवं समाज कल्याण पर खर्च होगा। बाद में बढ़ाकर यह राशि २० हजार रुपए कर दी गई। इसके अतिरिक्त उन्होने १५ हजार रुपए धरोहर रूप में जमा कराया था जो बढाकर ३६ हजार रुपया कर दिया गया, तथा यथा समय स्थिर निधि मे परिवर्तित होगा। वर्ष के अन्त मे १६००) ब्याज के शेष जमा थे।

४२—स्व० लाला बाबूराम शाहदरा दिल्ली स्मारक स्थिर निधि

दिल्ली शाहदरा के प्रसिद्ध एवं वयोवृद्ध आर्य स्व० लाला बाबूराम जी ने एक वसीयत के द्वारा जो दान किया था उसमें से इस सभा को लगभग ४५ हजार नकद १ मकान, १ प्लाट २ सौ वर्ग गज का प्राप्तव्य था। ४६०५१)५३ नकद प्राप्त हुआ तथा शहादरा का मकान ४ हजार रुपये में बेच दिया गया। १९-३-६४ की अन्तरंग ने यह दान स्वीकृत किया था। इस दान से सभा शहादरा में बाबूराम आर्य औषधालय के नाम से एक आयुर्वेदिक औषधालय चलाती रही है जो अब अनिवार्य कारणो से बन्द है।

४३—दयानन्द आश्रम

२२५०) की यह निधि शुद्ध हुए मुसलमान बन्धुओं (अब मुस्लिमों) की सहायतार्थ १९२७ मे कायम की गई थी। इसका ब्याज इसी कार्य में व्यय होता है।

४४—श्री थरियालाल जी का दान

श्री थरियाल जी जानकीगंज लश्कर ग्वालियर निवासी ने वेद प्रचारार्थ ५ हजार रुपए की राशि २९-१-१९६० को सभा को दान में दी थी।

४५ - श्री लाला जगन्नाथ जी का दान

स्व० श्री लाला जगन्नाथ जी दिल्ली निवासी ने अपनी पांच हजार रुपए की पोस्ट आफिस की जीवन बीमा पालिसी इस सभा को दान में दी थी। इसमें से दो हजार रुपए दानी के निर्देशानुसार सर्वदानन्द साधु आश्रम हरदुआगज को दे दिए गए थे, शेष ५३०५)८६ सभा को प्राप्त हुए थे। इसका ब्याज वैदिक साहित्य के प्रकाशन पर व्यय किया जाता है। शेष ५३०५)८६ पर गत वर्ष तक ब्याज के ३७९५)६६ जमा थे। इस वर्ष ब्याज के २६५) जमा हुए। वर्ष के अन्त में ४०६०)६६ जमा रहे।

इस ब्याज से श्री स्व० वैद्य रामगोपाल शास्त्री जी की 'आर्य दास बार' अंग्रेजी पुस्तक २ हजार छपवाई थी।

४६ श्री मोहनलाल लखोटिया स्थिर निधि

श्री मोहनलाल जी लखोटिया, लखोटिया निकेतन १/ए, नवलोक प्रेस कलकत्ता द्वारा प्रदत्त (पाच हजार रुपये मात्र) के दान से यह स्थिर निधि कायम की गई। २१-३-१९७८ की अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। वर्ष के अन्त मे ४००) ब्याज के जमा रहे।

४७—श्री स्व० रामलुभायापुरी साहित्य प्रचार निधि

श्री रामलुभायापुरी दिल्ली के दस हजार के दान से श्री रामलुभायापुरी साहित्य प्रचार तथा सहायता निधि के नाम से यह निधि स्थापित हुई। १६-११-१९७५ की अन्तरंग ने इसकी स्वीकृति दी। वर्ष के अन्त मे ८००) जमा में शेष रहे।

(क्रमशः)

पूना मे नवीन आर्यसमाज स्थापित

पुण शहर के एक ओर कोथरुड मे एक नवीन आयसमाज की स्थापना हुई है। ग्राम पचायत द्वारा कुछ भूमि उपलब्ध करायी गयी थी जिस पर तीन मास मे ही उस स्थान पर रहने वाले कुछ उत्तर भारतीय व्यक्तियो ने मिल कर आर्यसमाज स्थापित कर दिखाया। उल्लेखनीय है कि स्थानीय मराठी भाषियो ने भी परा सहयोग दिया है। सीमित काल मे हुई यह प्रगति उत्साहजनक है।

—हरिश्चन्द्र

सिख अग्नि परीक्षा से गुजर रहे है

(पृष्ठ २ का सेष)

जहा तक मेरा सबध है मैं हालातो को इस नजरिए से देखता हू कि यह उन लोगो के बीच युद्ध सीमा रेखा का खीचा जाना है जिसके एक ओर तो वे लोग है जो खालिस्तान की अपनी माग से देश के साथ-साथ पथ को भी नष्ट कर देना चाहते हैं और दूसरी ओर वे हैं जो चाहते है कि पथ भारत राष्ट्र के रक्षको के रूप मे अपनी ऐतिहासिक नियति की पूर्ति करे। यदि वे गृहयुद्ध थोपना चाहते है तो हम उस गृहयुद्ध का सामना करेगे। प्रत्येक गुरुद्वारे से अब सिखो को घोषणा करनी होगी कि भारत मे कोई खालिस्तान नही होगा खालिस्तान खालसा पथ को अधकार मे ढकेल देगा और हम पथ तथा भारत दोनो की समृद्धि चाहते हैं।

मेरे अदर कुछ मुझे भरोसा दिलाता है कि सिख एक दूसरी अग्निपरीक्षा से गुजर रहे हैं और गदगी मे लिपटे राजनीतिज्ञो की कीचड मे से तपे हुए लोहे की तरह शुद्ध होकर निकलेगे जिन्होने इसे विनाश के कगार पर ला खडा किया है। एक बार फिर अल्लामा इकबाल कहते है

निशान यही है जमाने मे जिदा कौमा का कि सुबह ओ शाम बदलती है इनकी तकदीर।

पजाब केसरी मे साभार १४ २ ८७

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास का रजत जैयन्ती समारोह

सभी आर्य सज्जनो को यह जानकर अपार हर्ष होगा कि दि० २६ फरवरी से १ मार्च १९८७ तक इस सस्थान का 'रजत जयन्ती समारोह' सोल्लास सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर ... आदि गणमान्य नेता एव देश के प्रसिद्ध आर्य विद्वान पधार रहे हैं।

विशाल शोभायात्रा, वेद पारायण यज्ञ वेद सम्मेलन, सस्कृत सम्मेलन आदि विभिन्न सम्मेलन तथा भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन एव महाविद्यालय भवन का शिलान्यास इस समारोह के विशेष कार्यक्रम रहेगे।

सभी आय सज्जनो से निवेदन है कि तन मन धन से सहयोग कर इस समारोह को सफल बनाये।

—आचार्य देवव्रत, अधिष्ठाता
गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला-४१

शोक सभा

आर्यसमाज माडल टाउन पठानकोट मे श्री सुभाषचन्द्र जी मित्तल की अध्यक्षता मे एक शोक सभा हुई जिसमे आर्यसमाज के महान् सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के निधन पर शोक व्यक्त किया गया परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—बलदेवराज यदुवशी, मन्त्री

शोक समाचार

स्व० श्री गुरुप्रसाद श्रीवास्तव ग्राम विनौरा, पत्रालय उतरौजा जिला-गोडा के निधन पर आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर कानपुर ने दिनाक २५-१-८७ को प्रात साप्ताहिक सत्सग मे शोक प्रस्ताव पारित किया तथा दो मिनट का मौन धारण करके दिवगत आत्मा को शान्ति एव सद्गति तथा सतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की परमात्मा से प्रार्थना की गई।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] वर्ष २२ अंक १०} | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र फाल्गुन शु० २ स० २०४३ रविवार १ मार्च १९८७ | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष . २७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

हैदराबाद सत्याग्रह सेनानी सम्मान पेंशन

केन्द्रीय गैर सरकारी समिति की दूसरी बैठक :

गांधी भवन हैदराबाद में

आर्य नेताओं का अद्वितीय स्वागत, सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का महबूबनगर तथा वारंगल में अभूतपूर्व दौरा : आर्य जनता में भारी उत्साह


स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

हैदराबाद १६ फरवरी।

भारत सरकार द्वारा गठित हैदराबाद आर्यसमाज सत्याग्रह सम्मान पेंशन सम्बन्धी केन्द्रीय गैर सरकारी समिति की टीम जब दिल्ली से रात्रि २ बजे हैदराबाद हवाई अड्डे पर पहुंची तो सैकड़ों आर्य जनों ने वैदिक धर्म के जय-जयकार से भावपूर्ण स्वागत किया। हवाई अड्डे पर पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश के अध्यक्ष श्री रामचन्द्रराव कल्याणी तथा सैकड़ों वीरों ने समिति के सदस्यो का स्वागत किया । श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, श्री बाबू सोमनाथ एडवोकेट, पं० शिवकुमार शास्त्री, चोधरी रणवीरसिंह और पं० ब्रह्मदत्त स्नातक थे । हवाई अड्डे से समिति के सदस्य सीधे ग्रीन अतिथि भवन में पहुंचे जहां सरकार की ओर से उनके आवास की समुचित व्यवस्था की गई थी।

दो दिन तक लगातार समिति के सदस्यो के साथ प० बन्देमातरम् जी तथा श्री कल्याणी जी के अतिरिक्त आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र, तीनों प्रदेशों के जेल अधिकारी तथा पुलिस अफसरों के अतिरिक्त गृहमन्त्रालय भारत सरकार, लोकनायक भवन के अवर सचिव श्री एच० ए० गाबा ने बैठक में भाग लिया। समिति ने सत्याग्रह में जेल जाने वाले तथा भूमिगत रहने वाले आर्य वीरो को भी सूची में शामिल करने पर विचार किया।


श्री बाबू सोमनाथ जी मरवाह

हैदराबाद के गांधी भवन में १८ फरवरी की सायंकाल सभी नेताओं का सार्वजनिक स्वागत किया गया। सभा में निजामशाही के रोमांचकारी अत्याचारो को सहन करने वाले अनेक आर्य वीर भी उपस्थित थे।

१९ फरवरी को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पं० बन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा श्री रामचन्द्रराव कल्याणी के साथ महबूबनगर पहुंचे—सारा महबूबनगर ओ३म् पताकाओं से अच्छी तरह सजाया गया था। एक भव्य शोभा यात्रा के साथ श्री स्वामी आनन्दबोध जी के नगर में प्रवेश करने पर आर्य वीरों का जोश ठाठें मार रहा था। खुले मैदान में हजारों आर्य जन तथा स्कूली विद्यार्थी इस स्वागत समारोह में शामिल थे।

२० फरवरी को श्री स्वामी जी हैदराबाद से कार द्वारा वारंगल पहुंचे। जहां पर वेद मन्त्रों से यज्ञाग्नि के समक्ष देवियों

(शेष पृष्ठ २ पर)


श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष में प्राप्त दान राशियां

१— श्री सूरज प्रकाश नागपाल, मिठाई स्ट्रीट देवलाली (महा०) १०००)
२— „ जयरामसिंह लोधी, ग्राम दौला मु० अहमदगढ़ जि० बुलन्दशहर (उ० प्र०) १०)
३— „ रेमलदास तनेजा, मन्त्री आर्यसमाज खखडी, मु० नारनौल (चौ०) १००)
४—श्रीमती पुष्पा सचदेवा C/o आर्यसमाज, शालीमार बाग दिल्ली १०१)
५—श्री बालकृष्ण शर्मा, राधारानी शर्मा, हुन्टिम्मवीच साउथ अफ्रीका २७००)
६— , राज त्यागी, म० न० ८/२१२ अरविन्द शर्मा, सेक्टर राजेन्द्रनगर गाजियाबाद ५१)
७— , राजवीरसिंह गौतम, जन सेवाश्रम फिरोजपुर गविरा पो० सुगई बदायूं (उ० प्र० ११)
८— „ जगनूमल मित्तल आर्य तालडा डा० जानसठ मुजफ्फरनगर १००)
९— „ रामशरण प्रसाद आर्य, पो० शेरघाटी जि० गया (बिहार) २१)
१०— „ डा० अनीता कान्त एम० डी० आस्कोर्ट मेडिकल सेन्टर न्यू टाउन फरीदाबाद १०१)
११—श्रीमती सुशीला भाटिया, म० न० ८१ महेशनगर अम्बाला कैण्ट ४००)
१२—श्रीमती शान्तिराज वशी प्रधाना महिला आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ (उ० प्र०) २५०)
१३—श्रीमती रूपमणिदेवी रावत मलकापुर जि० बुलडाणा २०)
१४—श्री भगवत सरन रस्तोगी अखिल फार्मास्यूटिकल्स स० कानसैन रोड बदायू १००)
१५— , नावल्टी प्रोसेस स्टूडियो खममाम लेन बम्बई २००)
१६— „ एम० एल० सैनी, पहाड़गंज नई दिल्ली २५)
१७— „ शक्ति कुमार भिम्मन, रोहताश नगर शाहदरा दिल्ली २५)
१८— „ आर्यसमाज जामनगर हजारी बाग २५)
१९— „ रतनसिंह आर्य कुन्दरखी मुरादाबाद ५०)
२०— „ बंशीधर आर्य आर्यसमाज जामनगर हजारीबाग ५०)
२१— „ वीरेन्द्र प्रतापसिंह हजारी बाग २)
२२— „ कु० रेणु त्यागी (द्वारा सत्यव्रत) अम्बहटाखेल सहारनपुर ३२)
२३— „ मन्त्री जी आर्यसमाज काकर (राज०) ५००)
२४— „ गगाप्रसाद जी आर्यसमाज नीदर लैण्ड १०)
२५— , धनवन्तरसिंह कोहनूर भवन डलहौजी चम्बा ३०३)
२६— „ मोहनलाल कपूर जनरल मर्चेन्ट दर्शनी ड्योढी अमृतसर १३०)
२७— „ जयप्रकाश जी नकुड सहारनपुर ५)
२८— „ इन्डस्ट्रियल एरिया होजरी मिल दिल्ली ५००)
२९— „ मन्त्री जी आर्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली ५००)

दूसरी बैठक

(पृष्ठ १ का शेष)

तथा आर्य पुरुषो ने सामूहिक प्रार्थना तथा सध्या के पश्चात् श्री स्वामी जी का भावपूर्ण स्वागत किया गया।

श्री स्वामी जी ने हैदराबाद के स्वतन्त्रता युद्ध मे आर्यसमाज सत्याग्रह की सशक्त भूमिका की चर्चा करते हुए आज के परिवेश मे भारत की एकता और अखण्डता की रक्षा करने का सकल्प दोहराते हुए आर्यसमाज के सगठन को मजबूत बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि दक्षिण भारत मे वैदिक धर्म के प्रचार व राष्ट्रवादी भावनाओ की स्थापना के लिए आर्य जन अगडाई लेकर खडे हो जाव, जिससे एक हजार वर्ष के उपरान्त अनेक बलिदानो से प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा की जा सके।

बोधरात्रि

पाहन शिव को देख दयानन्द,
सच्चा शिव की खोज करी।
कैसा ? शिव है, कहा रहता है, तडफ रही थी मन अन्दर।
घूमे वन-वन पुर-पुर अन्दर मठाधीश देखे थे मन्दिर॥
बोले सभी "मन्दिर मे शिव है, देखो! उनको जा करके।
बैठो ध्यान लगा कर आगे, जानो जिसको पा करके॥
मन नही माने शिव के हेतु, छोड चले घर-बार खरी।
पाहन शिव को देख दयानन्द,सच्चा शिव की खोज करी।
पाहन है वो बात न करता, बोल न सकता है बानी।
खा नही सकता है वो भोजन, पी नही सकता है पानी॥
भोग लगाते बैठा पीडा, माया है सब मठ-मण्डकी।
मानुष की आकृति है जिसकी प्रतिमा भी है वो जडकी॥
हर-हर-हर महादेव पुकारो, शख बजाकर ध्वनि परी।
पाहन शिव को देख दयानन्द सच्चा शिव की खोज करी॥
चित्त मे चैन नही है पडता, गहरी खोज लगाते चले।
सन्यासी, साधो के सग मे, तितिक्षा साथ सहाते चले॥
सशय भगा न फिरा जगत् मे, पता न शिवका है पाया।
मथुरा मे इक वैदिक ज्योति देख उसी दिश को धाया॥
तीव्र वराग विवेक साथ मे अखण्ड ब्रह्मचर्य दृढ शक्ति भरी।
पाहन शिव को देख दयानन्द,सच्चा शिव की खोज करी॥
पढे वेद-सद् गुरुमुख द्वारा सद विद्या का ज्ञान हुआ।
ज्यो ज्यो हुआ प्रकाश वेद का, त्यो त्यो सशय हान हुआ॥
आर्ष-ग्रन्थ वेद सद् पढके पोथा तजके वेद विरुद्ध।
पाया शिव सत्य परिपूरण, मिली विशद ऋतम्भरा बुद्ध॥
तभी अन्धरा भागा जग से दुख दायक तमसा को हरी।
पाहन शिव को देख दयानन्द,सच्चा शिव की खोज करी॥

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'
कवि कुटीर, पीपाड शहर, (राज०)

अन्ततः मालिक को गर्भवती महिला कर्मचारी से विवाह करना ही पड़ा

कानपुर। गत दिवस आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य के सद्प्रयासो से आर्यसमाज मन्दिर गोविन्दनगर मे एक फैक्ट्री मालिक का विवाह उनके फैक्ट्री की गर्भवती महिला कर्मचारी से अनोखा विवाह कराया गया। जो चर्चा का विषय बना हुआ है।

घटना इस प्रकार बतायी जाती है कि परेड निवासी एक निर्धन टेलर श्री सूरजप्रसाद की २५ वर्षीय पुत्री कुमारी सरोजनी साकेत नगर मे स्थित एक वस्त्र फैक्ट्री मे काम करती है। किसी प्रकार कुली बाजार निवासी फक्ट्री मालिक श्री रामकृष्ण का उससे अवैध सम्बन्ध स्थापित हो गया। सरोजनी जब गर्भवती हो गयी तब यह रहस्य प्रकट हो गया। इससे जहा यह कुवारी कन्या घबराई। वहा उसके परिवार के लोग परेशान हो गये।

इस लडकी के पिता ने लडकी को लेकर प्रसिद्ध महिला उद्धारक आर्यसमाज के नेता श्री देवीदास आर्य से फरियाद की। श्री आर्य ने फक्ट्री मालिक जो फलो का आढती भी है उससे सम्पर्क किया।

अन्तत उसे कुमारी सरोजनी से विवाह करने पर राजी किया। यद्यपि ३५ वर्षीय रामकृष्ण विधुर है तथा चार बच्चो का पिता है।

आर्य समाज मन्दिर मे सम्पन्न इस अनोखे विवाह का सभी लोगो ने स्वागत किया और उन्हे आशीर्वाद दिया। इस प्रकार निर्धन महिला कर्मचारी फैक्ट्री की स्वामिनी भी बन गई। वरना वह आत्महत्या की सोच रही थी।

—मन्त्री
आ०स० गोविन्दनगर कानपुर

सम्पादकीय

शिवरात्रि या बोधरात्रि

शिवरात्रि की रात भारत वर्ष के कल्याण की वह प्रभात की सूचक थी जिसमें भारतीय आत्मा दयानन्द के रूप मे सजग हो उठी। टकारा के छोटे से मन्दिर की शिव प्रतिमा पर चढे हुए मूषक ने मूलशकर को जगा-कर "असतो मा सद् गमय" की ध्वनि की। जब बडे बूढे झोके खा रहे थे तब एक दिव्य बालक जाग रहा था। 'या निशा सर्व भूताना तस्या जागर्ति सयमी" बालक ने विचार किया कि सच्चा शिव मूर्ति मे कसे रह सकता है ? वह तो अणु-२ सोम-२ मे रमा हुआ है। जिस महादेव की शान्त मूर्त्ति की कथा, जिस महादेव के पाशुपतास्त्र की बात, और जिस महादेव के वृषभा-रोहण की कथा सुनी थी क्या वह महादेव वास्तव मे यही है इस प्रकार मूल-शकर विचलित हो उठा फिर सोचा कि यदि यथार्थ मे यही प्रबल प्रतापी, दुर्दान्त दैत्य दलनकारी महादेव है तो फिर, यह अपने ऊपर से चूहों तक को क्यो प्रताडित नही कर सकता है। महर्षि के अन्दर इस घटना से ईश्वर के स्वरूप को समझने, उसकी पूर्ण जानकारी प्राप्त करने की प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न हुई। वृक्ष से सदा फल गिरते रहते हैं परन्तु न्यूटन ने यह विचार करके गुरुत्वाकर्षण का नियम प्रगट किया था। इसी तरह शिव पर मूषक को कूदते देख विश्वव्यापी, सर्वशक्तिमान् शिव की प्राप्ति के लिए मूलशकर के हृदय मे जिज्ञासा हुई।

सम्बन्धियो की मृत्यु ने इस जिज्ञासा को अधिक बढाया। शाक्यमुनि-सिद्धार्थ ने ३० वर्ष के भरे यौवन मे जरा, रोग और मृत्यु को देखकर ही महाभि निष्क्रमण किया था तो मूलशकर ने कोमल बाल्यावस्था मे ही घर को लात मारकर महाभि निष्क्रमण किया। अनेक साधु महात्माओ के द्वार खटखटाये परन्तु मथुरा मे स्वामी विरजानन्द की कुटी मे ही मन को शान्ति मिली।

यमुना नदी ने दयानन्द को साम्राज्यो के उत्थान-पतन का इतिहास सुनाया और ऋषि ने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का जयघोष किया। वेद की टकार सुनकर विलासी राजाओ के सिंहासन डोल उठे, मन्दिरो के महन्तो की गद्दिया हिलने लगी। अबलायें वेदमन्त्र गाने लगी। दलित एव शूद्र सिर ऊचा कर चलने लगे, विधवायें देश एव धर्म की सेवा करने लगी। नैष्ठिक ब्रह्मचारी ने भारत के कोने-कोने मे घूम-घूम कर धूम मचा दी। शकर स्वामी ने उपनिषदो का सहारा लिया, तो दयानन्द ने वेदो का आश्रय लिया।

शकर स्वामी की निष्ठा तथा बुद्धदेव की मानव दया ये दोनो ही नैष्ठिक ब्रह्मचारी की बहनें हैं। शकर की ब्रह्मदृष्टि शूद्र व स्त्री को पवित्र नही कर सकी। ऋषि की आखो के आसुओ ने असख्य विधवाओ को पवित्र कर दिया। बुद्धदेव की करुणा मे पशुओ की आह को अवश्य शान्ति दी परन्तु स्त्री जाति के आसू तो स्वामी दयानन्द ने धोये। महर्षि के हृदय मे स्त्री, शूद्र, गाय, ब्राह्मण, हाथी, कुत्ता, कीट पतग सब बस सकते थे। मुहम्मद ने मूर्तिपूजा का खण्डन किया परन्तु कुरान की पूजा अवश्य सिखाई। ऋषि ने अपने को कभी निर्भ्रान्ति न मानकर अपूर्व निरभिमानता दिखाई। कविराज सावलदास को अपनी हड्डियो की राख को खेत मे डलवाने की प्रेरणा करके मूर्तिपूजा का क्रियात्मक विरोध किया। ईसा मसीह ने ससार को प्रेम राज्य स्थापित करने के निमित्त सूली पर चढते हुए आसू गिराए। विरोधियो को क्षमा दी। ऋषि ने आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य बनाने के लिए अपने देह को हसते-२ छलनी कर दिया और प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो, का उच्चारण किया।

स्वामी दयानन्द मे मुहम्मद का सा जोश, ईसा का प्रेम, बुद्ध का चरित्र, शकर की प्रतिभा और बन्दा वैरागी का सा बलिदान कूट-कूट कर भरा हुआ था। महर्षि का सत्यार्थ प्रकाश, ईसा, मूसा, मुहम्मद महावीर, नानक, शकर और कबीर सब विचारो की कसौटी पर कसा जाकर कुन्दन बन चुका था। स्वतन्त्रता की ओर कदम बढाता हुआ भारतवर्ष अनुभव कर रहा था कि नैष्ठिक ब्रह्मचारी के विचारो की विजय हो रही है। यदि हिन्दू समाज ने हरिजनो और स्त्रियो के साथ अत्याचार न किया होता तो भारत मे नोआ-खाली और बिहार व पजाब के दृश्य सामने न होते। अगर हिन्दू मानव ने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" तथा स्व-स्व चरित्रम् शिक्षेरन् पृथिव्या सर्व मानवा" के आर्य चक्रवर्ती साम्राज्य के स्वप्न लिए हुए होकर बृहत्तर-भारत की उडान ली होती तो आज पाकिस्तान के नारे बुलन्द न होते। आज की अधियारी रात मे महर्षि के विचारो की किरणो से ही शिवप्रभात का दर्शन हो सकेगा।

आओ हम सब मिलकर शिवरात्रि मे सच्चा शिवप्रभात देखें। महर्षि के आदर्श, धर्म प्रचारक और समाज सुधारक थे उनकी दृष्टि मे सबसे आवश्यक लक्ष्य व्यक्ति का निर्माण था आर्य समाज के छठे नियम मे ससार का उपकार करने का मुख्य उद्देश्य यह था कि ईश्वर का स्वरूप सबकी समझ में आये। उन्होने सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर को बताया है, वेद ईश्वरीय ज्ञान है उसे पढने-पढाने, सुनने-सुनाने को परमधर्म बताया है।

आदिमूल परमेश्वर के स्वरूप को समझने और उसके ज्ञान वेदो के प्रचार से व्यक्ति का निमाण हो सकता है। इसी से ससार के उपकार करने का मुख्य उद्देश्य बनाया है। आदि-मूल और परमधर्म से मुख्य उद्देश्य की पूर्ति का होना सम्भव है। ससार के उपकार मे शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक और मानसिक उन्नति से व्यक्तियो का पूर्ण रूप से निर्माण होता है व्यक्तियो के पूर्ण निर्माण से ससार का उपकार होता है।

निष्ठावान अध्यापकों व उपदेशकों से ही आर्य समाज का प्रचार कार्य बढ़ेगा

श्री रामनाथ सहगल मन्त्री प्रा० सभा

—: डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान का उद्घाटन :—

नई दिल्ली। आर्य समाज के यशस्वी सन्यासी अमर स्वामी जी महाराज ने आर्य समाज, मन्दिर मार्ग मे डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान का उद्घाटन करते हुए कहा कि केवल निष्ठावान अध्यापको एव उपदेशको से ही आर्य सिद्धान्तो का प्रचार सम्भव है। उपदेशक एव उपदेश के बिना कभी प्रचार नही चल सकता। महर्षि दयानन्द की दृष्टि मे उपदेशक एव अध्यापक मे भेद नही है। लक्ष्य दोनो का एक ही है। उपदेशक तो शिक्षित-अशिक्षित सभी को उपदेश देता है। परन्तु अध्यापक एक निश्चित स्तर के व्यक्तियो को उपदेश देता है। आर्य समाज के जन्मकाल से ही वैदिक धर्म प्रचार मे अध्यापको का योगदान रहा है। स्वामी जी ने नैतिक शिक्षा संस्थान खोलने के लिए डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति की बधाई देते हुए आशा प्रकट की कि इस संस्थान के माध्यम से योग्य अध्यापक तैयार होगे और आर्य समाज का अधिकाधिक प्रचार होगा और प्रो० वेद व्यास जी, श्री दरबारीलाल तथा प्रो० रत्नसिंह के सहयोग से यह संस्था निरन्तर उन्नति करती रहेगी।

समारोह के अध्यक्ष पद से बोलते हुए प्रो० वेद व्यास जी ने कहा कि डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति की हार्दिक कामना है कि स्कूलो व कालेजो के माध्यम से आर्य समाज का खूब प्रचार हो। कमेटी ने इस दिशा मे पर्याप्त कार्य किया है। परन्तु जितना करना चाहिए था उतना नही किया। इस कमी को पूरा करने के लिए डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान की स्थापना की गई है। आपने घोषणा की कि हम धर्म शिक्षको को अन्य विषय पढाने वाले शिक्षको के समान वेतन देंगे। जिससे वे निश्चिन्त होकर सम्मानपूर्वक जीवन यापन कर सकें।

इस अवसर पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० बलभद्र कुमार हूजा ने कहा कि इस संस्थान के खुलने से मुझे बडी प्रसन्नता हुई है। डी०ए०वी० कालेज ने यह एक अपूर्व पग उठाया है। मुझे विश्वास है कि इस संस्थान के माध्यम से वेद का अमर सन्देश सर्वत्र फैलेगा।

डी० ए० वी० कालेज कमेटी के सगठन सचिव श्री दरबारीलाल जी ने अपने ओजस्वी विचार प्रकट करते हुए कहा कि शिक्षण संस्थाओ का चलाना हमारा ध्येय नही है, यह संस्थाए तो आर्य समाज के प्रचार के साधन मात्र हैं।

वर्तमान मे दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार तथा टकारा उपदेशक विद्यालय से हम अच्छे उपदेशक तैयार कर रहे है। परन्तु डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलो मे अध्यापन हेतु धर्म शिक्षको की इनसे पूर्ति नही हो पाती इसलिए योग्य धर्म शिक्षक तैयार करने के लिए इस संस्थान की स्थापना की गई है। आपने इस बात पर विशेष बल दिया कि हमारे धर्म शिक्षको को पूर्ण निष्ठा के साथ काम करते हुए स्कूलो का वातावरण वैदिक बनाना चाहिए।

"आर्य जगत्" के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार ने इस अवसर पर भाव-विभोर होकर कहा कि आज मेरी व प्रो० रत्नसिंह जी की जो मन. स्थिति है, उसका दूसरे लोग अनुमान न लगा सकेंगे। मुझे लगता है कि डी० ए० वी० कालेज कमेटी एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के साथ हम दोनो का सम्बन्ध होना आज सार्थक हो गया है। आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार की सराहना करते हुए श्री क्षितीश वेदालकार जी ने कहा कि प्रत्येक युग की अपनी चुनौती होती हैं। जो इस चुनौती का सामना नहीं करते वे इतिहास के पन्नो मे विलीन हो जाते हैं। इस चुनौती का सामना डी० ए० वी० कमेटी ने किया है। अपने प्रचार के बल पर डी० ए० वी० आन्दोलन ने सारे पजाब को मुस्लिम बाहुल्य होने से बचाया है। हमारे जो भाई विधर्मी बन चुके हैं। उन्हे पुन वैदिक धर्म में दीक्षित किया है। समय के परिवर्तन के साथ हमे ऐसे अध्यापक प्रचारक चाहिए जो हिन्दी-सस्कृत के साथ अ ग्रेजी भाषा की भी योग्यता रखते हो। हिन्दी-अ ग्रेजी के माध्यम से तथा क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार कर सकते हों। इस उद्देश्य से इस संस्थान को आरम्भ किया है।

आर्य विद्या सभा के मन्त्री प्रि० तिलकराज गुप्ता ने कहा कि हम चाहते हैं कि उत्तरी भारत के डी० ए० वी० स्कूलो मे, दक्षिणी भारत की कोई भाषा पढाई जाए और दक्षिण भारत के स्कूलों मे हिन्दी पढाई जावे। इससे देश की एकता और अखण्डता को बल मिलेगा। आपने आशा प्रकट की कि इस संस्थान के माध्यम से वैदिक धर्म व भारतीय सस्कृति के प्रचार को बल मिलेगा।

संस्थान के छात्रो ने इस अवसर पर सस्वर वेद पाठ का जो कार्यक्रम प्रस्तुत किया उसकी सभी ने सराहना की। कार्यक्रम के सयोजक प्रो० रत्नसिंह ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

दयानन्द की सेना आई है

शिवरात्रि आज फिर आई है, नूतन सदेशा लाई है।
तुम पडे हुए किस उलझन मे, ग्रन्थियां सभी हैं सुलझाओ॥
सत्यार्थ कसौटी लो कर मे सन्मार्ग बताने आई है॥ शिवरात्रि···
मजहबी दीवाने चमके हैं, भगवान् बहुत आ धमके है।
पाखण्ड खण्डिनी लो कर मे, ऋषि याद दिलाने आई है॥ शिवरात्रि···
एक भगवतियो की फौज चली, उस परमेश्वर को छोड चली।
पाषाण की पूजा जारी है, खण्डन की बारी आई है॥ शिवरात्रि···
श्री राम लक्ष्मण और सीता, भगवान कृष्ण की लो गीता।
रामायण और महाभारत का इतिहास बताने आई है॥ शिवरात्रि···
अश्लील ग्रन्थो को पढ़ने से ही पतन राष्ट्र का होता है।
स्वाध्याय करो नित वेदो का जो देववाणी कहलाई है॥ शिवरात्रि···
फिर मतवालो का जोर हुआ, गुरुडम का फिर से शोर हुआ।
चैलेन्ज करो स्वीकार पुन शास्त्रार्थ कराने आई है॥ शिवरात्रि···
मस्जिद गुरुद्वारे बनते हैं, मन्दिर भी बहुत पनपते हैं।
घट-घट मे बसा अन्तर्यामी उपनिषद बताने आई है॥ शिवरात्रि···
अय जग के मतवालो ! तुम सब कान खोलकर सुन लेना।
फिर ओ३म् पताका लेकर मे दयानन्द की सेना आई है॥ शिवरात्रि···

—ब्रह्म प्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
शास्त्री सदन, ११/१२४ पश्चिमी आजाद नगर, दिल्ली-३१

आर्य समाज को भावी रूप रेखा

(बुद्धि जीवियों के सम्मेलन की आवश्यकता)

-डा० प्रशान्त वेदालंकार ७/२, रूपनगर, दिल्ली-७-

आर्य समाज स्थापना शताब्दी १९७५ में सम्पन्न हुई और महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी १९८३ में। १९८६ का वर्ष डी०ए०वी शताब्दी वर्ष है, इसका महाधिवेशन फरवरी १९८७ में हो रहा है। सत्यार्थप्रकाश रचना शताब्दी भी सम्पन्न हो चुकी हैं। इस काल में मैं निरन्तर अपने लेखों तथा आर्यसमाज के मंचों से यह प्रश्न उठाता रहा हूं कि आर्य समाज के बुद्धिजीवियों की एक संगोष्ठी करके आर्यसमाज की भावी रूपरेखा निश्चित करनी चाहिए। विशेष रूप से अजमेर में सफल निर्वाण शताब्दी पर जब आर्यसमाजियों का कुम्भ देखा, उनकी महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति आस्था और विश्वास के दर्शन किये तो मैं उक्त बात को ओर भी जोर-जोर से कहने लगा। पर कहीं इस प्रकार की विचारगोष्ठी आयोजित नहीं की गई।

जब मैं आर्यसमाज की भावी रूपरेखा निर्धारित करने के लिए बुद्धिजीवियों की चर्चा करता हूं तब मैं यह मानकर चलता हूं कि राष्ट्र के निर्माण में आर्यसमाज की एक महत्वपूण भूमिका रही है, उसका योगदान ब्रिटिश शासन द्वारा प्रवर्तित शिक्षा-प्रणाली के समक्ष भारतीय एवं गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के माध्यम से देश को वास्तविक शिक्षा देने की दृष्टि से अनुपम रहा है। अंग्रेजों ने भारत पर अंग्रेजी लादनी चाही तो आर्यसमाज ने स्वभाषा का नारा बुलन्द करके हिन्दी और संस्कृत की आवश्यकता पर बल दिया कि भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही राष्ट्र उन्नति कर सकता है। राष्ट्र की भावात्मक एकता के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य भाषा हिन्दी तथा संस्कृत पर बल दिया, उसका प्रचार और प्रसार किया। महर्षि दयानन्द ने ही स्वाधीनता का महत्व प्रतिपादित कर दिया था, १८५७ के राष्ट्रीय विप्लव में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था, अपनी आयु के अन्तिम तीन वर्षों में स्वयं राजस्थान में रहकर राजपूत राजाओं को विदेशी शासन के विरुद्ध लोहा लेने के लिए वे तय्यार करते रहे। बाद में उन्हीं की प्रेरणा प्राप्त कर लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, सरदार अजीतसिंह, श्री मदनलाल ढींगरा, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गेंदालाल, ठा० रोशनसिंह, सरदार भगतसिंह, चौ० मुख्त्यारसिंह, श्री हरविलास शारदा तथा अन्य अनेकों ने स्वाधीनता यज्ञमें अपनी-अपनी आहुतियां दीं। राष्ट्र की स्वाधीनता के इतिहास में इनका योगदान सर्वोपरि है। अस्पृश्यता निवारण, गोसवर्द्धन, स्वदेशी आन्दोलन, मद्यनिषेध, मांस व धूम्रपान आदि नशीली वस्तुओं का विरोध, व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता व निष्ठा का प्रतिपादन आदि अनेक ऐसे कार्य थे, जिनमें आर्यसमाज अग्रणी रहा और देश के पथ-भ्रष्ट लोगों का मार्गदर्शन करता रहा। उस समय का पथभ्रष्ट युवक आर्यसमाज की ज्योति से प्रकाश ग्रहण करता रहा और उसकी स्वधर्म और स्वराष्ट्र के प्रति निष्ठा बनी रही। उसकी विचारधारा भारतीय बनी रही, अपने महान् धार्मिक ग्रन्थों, अपने साहित्य की अनुपम रचनाओ, अपने गौरवपूर्ण इतिहास व अपने महान् पुरुषों, अपने भौगोलिक व विविध प्रदेशों की अनुपम सम्पदाओं के प्रति उनकी आस्था उत्पन्न करके उन्होंने कभी भारतीय युवक को हतोत्साहित नहीं होने दिया, उसने आर्यसमाज के कारण कभी सांस्कृतिक रिक्तता अनुभव नहीं की।

पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हम ऐसा नहीं कह सकते। १९५६-५७ में पंजाब में हिन्दी का संकट आने पर हिन्दी रक्षा आंदोलन चलाने से लगा कि वह स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी देश-निर्माण व देश को ठीक दिशा देने का कार्य सम्पन्न करता रहेगा फिर भी उस आन्दोलन की सफलता पर आज भी प्रश्नवाचक चिह्न लगा हुआ है। बाद में भी कभी गोरक्षा आन्दोलन, कभी मद्यनिषेध, कभी भाषायी-विवादों में आर्यसमाज के सदस्य भाग लेते रहे है पर कभी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका नहीं रही। दूसरो के नेतृत्व में उसके उत्साही सदस्य केवल अपने मन की उत्तेजना को शान्त करते रहे, पर वे कुछ कर पा रहे हैं, ऐसा उनको कभी आभास नहीं हुआ।

यह बात नहीं कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी आर्यसमाज के मंचों से राष्ट्र निर्माण की बाते नहीं होती रहीं। यह कहना भी गलत है कि आर्यसमाज ने राष्ट्र को ठीक दिशा दिखाने में कमी या कोई कृपणता की हो। जब-जब राष्ट्र ने गलत दिशा में सोचा तभी आर्यसमाज ने उसको चेतावनी दी। पर उसकी चेतावनी में इतना बल नहीं रहा कि राष्ट्र के कर्णधार उसको सुन ले। भाषावार प्रांतों हिन्दू कोड बिल, शिक्षा में भारतीय मूल्यों की अवहेलना, चीन का आक्रमण, साम्प्रदायिकता, पंजाब व आसाम जैसी समस्याएं, धर्मान्तरण, अस्पृश्यता निवारण, शोषण, मद्यनिषेध आदि अनेक ऐसे प्रश्न हैं,जब कि आर्यसमाज के मचों से आर्यसमाजी नेता चेतावनियां देते रहे हैं, पर परनाला वहीं रहा। इसके कोई कारण थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व आर्यसमाज का प्राय: सम्पूर्ण नेतृत्व कांग्रेस साथ मिलकर स्वतन्त्रता प्राप्ति का प्रयत्न करता रहा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी उसके नेता कांग्रेसी थे, अत: कांग्रेस की गलत नीतियों का विरोध करने में उनको व्यवहारिक कठिनाइयां प्रतीत हुईं। कुछ आर्यसमाजी कांग्रेस की ही सहायता से लोकसभा व राज्यसभा तथा विधानसभाओं तथा अनेक महत्वपूर्ण सरकारी पदों पर आसीन हो गये, उनमें कांग्रेस द्वारा राष्ट्र को कमजोर करने की नीतियों का विरोध करने का उतना नैतिक साहस नहीं था। इनका लाभ कांग्रेस विरोधी राजनीतिक व अराजनीतिक संगठनों ने उठाने का प्रयत्न किया, पर वहां आयसमाजी को अपने अस्तित्व को लीन करना पड़ा, परिणामस्वरूप वहां भी उसकी प्रभावी भूमिका न रह सकी। कुछ ने निर्दलीय रूप में राजनीति में प्रवेश किया, पर इस दलीय राजनीति में अधिक दिनो तक उनकी दाल न गल सकी। इन सबका दुष्परिणाम यह रहा कि आर्यसमाजी राजनीतिक दृष्टि से विभक्त होता रहा और अन्दर ही अन्दर उसने अपने को खोखला भी अनुभव किया। ऐसा भी समय आया और सम्भवत: आज भी यही स्थिति है कि प्रमुख आर्यसमाजी उधर चल दिये जिधर उनको कुछ लाभ दिखायी दिया। अर्थात् राष्ट्र निर्माण कम अपना भविष्य अधिक की नीति धीरे-धीरे उन्होंने अपना ली। अपना संगठन कमजोर देखकर आर्य समाजियों ने अपने शैक्षणिक व दूसरी संस्थाओं के लिए सरकारी अनुदान प्राप्त करने के लिए सत्तारूढ दल के साथ तालमेल बिठाना आरम्भ किया। आर्यसमाज के मचों पर सत्तारूढ़ दलों के नेता मुख्य अतिथि बनकर आने लगे, वे ही उनके समारोह

की शोभा बनने लगे। इन लोगो को निमन्त्रित करने मे उन लोगो का आर्यसमाज के सैद्धान्तिक मतो से कितनी समानता है ? उनका चरित्र आर्यसमाज के मच के उपयुक्त भी है या नही ? आदि बातों की भी उपेक्षा होती रही। आज भी हो रही है। देखा यह गया कि निमन्त्रित नेता 'हमारा' कितना 'कल्याण' कर सकता है। दूसरी ओर अनेक आर्यसमाजी विभिन्न राजनीतिक दलो के साथ मिलकर राजनीति मे आगे बढ, पर वे आर्यसमाज का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते रहे और आज भी उनकी दृष्टि आर्यसमाज का कार्य करने की कम, अपन स्वार्थ साधन तथा आयसमाजी कार्यकर्ताओ व मतदाताओ का सक्रिय समथन प्राप्त करने की अधिक रहती है। इस समय इन्दिरा काग्रेस, जनता पार्टी लोकदल तथा अन्य दलो मे भी आयसमाजी है पर उनकी वहा आर्यसमाज की दृष्टि से कोई भूमिका नही है।

ये सब बात हम किसी व्यक्ति विशेष पर दोषारोपण करने के लिए नही लिख रहे हम इसमे प्रत्येक आर्यसमाजी को समान रूप से दोषी मानते है। आयसमाज किसी व्यक्ति विशेष का नाम नही है। हमारी यह निश्चित मान्यता है कि नेतृत्व भी तभी कमजोर पडता है जब उसके अनुयायियो मे कोई दम नही होता। इसका अर्थ यह भी नही है कि प्रत्येक आयसमाजी दुर्बल और सिद्धान्त-हीन है। आज भी ऐसे अनेक ठोस आर्यसमाजी है जो अपने व्यक्तिगत जीवन व सिद्धान्तो मे दृढ है। इनमे से अनेक उसे ठीक मार्ग पर लाने के लिए अपने हाथ पैर मार रहे है उनमे से कुछ देश और आर्यसमाज दोनो की दुरवस्था को देखकर चिन्तित है, कुछ थककर उदासीन हो गये हैं, कुछ केवल देख रहे हैं कि आगे क्या होता है ?

यह लिखना पुनरावृत्ति होगी कि देश ठीक दिशा मे आगे नही बढ पा रहा। राष्ट्रीय नेताओ मे चारित्रिक गरिमा नही है। उसके दलो की नीतिया खोखली है। उसका कारण अवसरवादिता के सिद्धान्तो का अनुसरण है। देश मे विघटन है। अनैतिकता और भ्रष्टाचार है देश के युवक दिशाहीन होकर इधर-उधर भटक रहे हैं और उन्हे कोई भी व्यक्ति या सस्था ठीक माग दशन नही कर पा रही। ऐसे समय मे उन सभी सस्थाओ का दायित्व है कि वह अपने सैद्धान्तिक पक्ष व गौरवपूण इतिहास को स्मरण कर राष्ट्र के सास्कृतिक खोखलेपन को दूर कर। आर्यसमाज अपने सिद्धान्त व व्यवहार मैं स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व यह कार्य करता रहा है। अत उसका यह काम करना और देश को ठीक दिशा देने के लिए आगे आना और भी आवश्यक है।

हम कहते रहे है कि आर्यसमाज को अमृतसर दार्जिलिग और गोहाटी मे आर्य महासम्मेलन आयोजित करके वहा के लोगो को राष्ट्रीय धारा मे लाने का एक क्रान्तिकारी कार्य आरम्भ करना चाहिए। इससे वहा रहने वाले हिन्दुओ व राष्ट्रीय भावात्मक एकता के समर्थक लोगो का मनोबल भी बढेगा। इन विदेशो मे विशेषत भारत के सभी सीमावर्ती प्रदेशो मे आर्य सिद्धान्तो के आधार पर चलने वाली सस्थाओ की स्थापना पर हमने हमेशा बल दिया है। हमने निरन्तर यह लिखा है कि ईसाई मिशनरियो व पेट्रोडालर के बल पर मुसलमानो के कार्यों की समीक्षा करके उनके नापाक षडयन्त्रो के विरुद्ध एक आन्दोलन करके भारत सरकार से उनके अवैध काम पर रोक लगाने का काम करना चाहिए। हमने अनेक स्थानो पर यह प्रतिपादित किया है कि वे सभी धर्म व व्यक्ति जिनकी निष्ठा भारत से अधिक कहीं बाहर है, उनके मतदान के अधिकार पर एक प्रश्नचिह्न लगाना चाहिए।

आज यदि आर्यसमाज के कुछ कर्णधार अग्रजी की ओर झुक रहे हैं, तो उसका कारण हमारी दुबलता है हम सरकार से अपनी भाषा के लिए भी लड नही पा रहे। आज यदि हम गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के स्थान पर पब्लिक स्कूलो की नकल करना चाह रहे है तो यह भी हमारी दुबलता की निशानी है क्योकि हम सरकार को देश के लिए उपयोगी किसी शिक्षा प्रणाली को प्रवर्तित करने के लिए बाध्य नही कर पा रहे और न हममे स्वय उस प्रकार की राष्ट्र हित मे साधक शिक्षा सस्थापित करने की शक्ति रह गई है।

हमारे सदस्यो मे मद्यनिषेध के आन्दोलन चलाना तो दूर मद्यपान करने वाले लोगो का विरोध करने का भी नैतिक साहस नही है। अनेक आर्यसमाजी तो मद्यपान भी करने लगे है। यही स्थिति सिगरेट और अन्य नशीली वस्तुओ की है। आज हम दहेज, मिथ्या-आडम्बर, स्त्री-स्वतन्त्रता, अस्पृश्यता निवारण, स्वदेश प्रेम जैसे रचनात्मक विषयो पर केवल भाषण तो देते हैं, पर राष्ट्र इसे व्यवहार मे क्यो नही ला पा रहा, इसका कारण या आत्मनिरीक्षण हम नही कर पा रहे है। हम सैद्धान्तिक रूप से वर्ण व्यवस्था को मानते है, आश्रम-प्रणाली पर हमारा विश्वास है पर व्यवहार में ये व्यवस्थाए कितनी व्यवहारिक हैं यह सोचने की हमने कभी आवश्यकता अनुभव नही की। हमने शैक्षणिक व सामाजिक दृष्टि से उन्नत "हरिजन" वर्ग को उच्च वण मे लाकर उनमे स्वाभिमान उत्पन्न करने के आन्दोलन भी नही चलाए। आखिर वे कब तक विशेषाधिकार की वैशाखी से चलते रहेगे। जो "हरिजन" आज भी उपेक्षित है और प्रताडित है उनकी उन्नति के लिए हमारे क्या प्रयत्न है ?

हम मीनाक्षीपुरम् मे हरिजनो के मुसलमान बनाने पर या आदिवासियो को पोप द्वारा ईसाई बनाने पर जागते अवश्य है, पर उनमे हमारा काम नही है। यदि काम हो तो हमे मुसलमान व ईसाइयो से कोई चिन्ता न हो ? इसी प्रकार वनवासी व गिरिजन क्षेत्रो मे गुरुकुलो की स्थापना करके उन्हे भी शिक्षित और सस्कारी करने का हमने प्रयत्न नही किया। हम कहते रहे हैं कि यदि विश्व की ५००० आर्य समाज दस-दस हरिजन या उपेक्षित या वनवासी गिरिजन बालको को गोद ले लें और उन्हे अपने सिद्धातो के अनुसार सस्कारी कर तो आयसमाज की युवा पीढी तय्यार हो सकती है। आर्यसमाज का यह काय ऐतिहासिक दृष्टि से एक क्रान्ति कर सकता है। (क्रमश)

ऋषि दयानन्द के क्षत्रिय भक्त

मेदपाटेश्वर महाराणा श्री सज्जनसिंह

—डा० भवानीलाल भारतीय—

उदयपुर नरेश महाराणा सज्जनसिंह स्वामी दयानन्द के परम भक्त, अनुयायी तथा प्रशसक थे। स्वामी जी अपने निधन के पश्चात् अपने ग्रन्थो के प्रकाशन तथा अन्य धर्म कार्यों को सुचारू रूप से सम्पादित करने का अधिकार जिस परोपकारिणी सभा को प्रदान किया था, उसके प्रथम प्रधान भी महाराणा जी ही थे। महाराणा सज्जनसिंह का जन्म आषाढ शुक्ला ६, १९१६ वि० (८ जुलाई १८५९ ई०) को महाराज शक्तिसिंह के यहा हुआ था। अपने चचेरे भाई महाराणा शम्भुसिंह की मृत्यु होने पर उनके उत्तराधिकारी के रूप मे वे १५ वर्ष की आयु मे ७ अक्टूबर १८७४ (आश्विन कृष्णा १३ स० १९३१ वि०) को मेवाड (उदयपुर) की गद्दी पर आसीन हुए। आयु मे कम होने पर भी महाराणा सज्जनसिंह परम बुद्धिमान, देश हितैषी तथा दूरदर्शी थे। स्वामी दयानन्द से उनकी भेंट चित्तौड मे उस समय हुई थी जब कि महाराणा को तत्कालीन वायसराय लार्ड रिपन द्वारा जी० सी० एस० आई० की उपाधि दी जाने वाली थी और इस उपलक्ष्य में वहा एक बहुत बडे दरबार का आयोजन किया गया था।

स्वामी जी कार्तिक शुक्ला ५ स० १९३८ (२७ अक्टूबर १८८१) को चित्तौड पहुचे और उनका निवास गम्भीरी नदी के तटवर्ती रुण्डेश्वर महादेव के मन्दिर मे हुआ। उस समय तक महाराणा सज्जनसिंह मे पर्याप्त विचार-शीलता, अध्ययन-प्रियता आदि गुणो का विश्वास हो चुका था, किन्तु यौवनोचित चापल्य तथा सामन्ती जीवन प्रणाली के वशवर्ती होकर वे विलासी जीवनयापन करने लगे थे। उनके बुद्धिमान पदाधिकारीद्वय कवि राजा श्यामलदास तथा प० मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या की यह हार्दिक इच्छा थी कि महाराणा जी व्यसनी जीवन से मुक्त होकर सन्मार्ग के पथिक बनें। फलत स्वामी जी तथा महाराणा को भेंट की व्यवस्था की गई। एक दिन स्वय महाराणा ही स्वामी जी के उपदेश के समय श्रोताओ की मण्डली मे सामान्य पुरुष की भाति आकर बैठ गये किन्तु जब स्वामी जी ने इस असाधारण तेजस्वी पुरुष के बारे मे जिज्ञासा की, तो शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह जी ने उनसे महाराणा जी का परिचय करवाया। इसके पश्चात् दोनों मे पर्याप्त देर तक सौहार्दपूर्ण वार्तालाप हुआ और महाराणा ने मेवाड की राजधानी उदयपुर मे आने का स्वामी जी से अनुरोध किया। स्वामी जी के उपदेशो मे महाराणा के साथ आसीन्द के राव अर्जुनसिंह, भीमबाडा के राजा फतहसिंह, कानोड के रावत उमेदसिंह, बडी सादडी के राजा रायसिंह आदि सामन्तगण भी उपस्थित होते थे। महाराणा के आग्रह से स्वामी जी ने चित्तौड दुर्ग पर जाकर वहाँ के पुरातन प्रासादो तथा भव्य स्थानो को देखा। उस समय इस दुर्ग की प्राचीनता तथा पुरातात्विक महत्ता को देखकर स्वामी जी को क्षत्रियो के गौरवपूर्ण कारनामो का स्मरण हो आया और उन्होने कहा—"क्षत" (चोट) से त्राण करने के कारण ही "क्षत्रिय" नाम की सार्थकता है जो प्राणियो की रक्षा नही करता वह क्षत्रिय कहलाने का अधिकारी नही है। इसी अवसर पर स्वामी जी ने चित्तौड की वीरभूमि मे एक गुरुकुल की स्थापना की आवश्यकता बताई। महाराणा जी ने इसके लिये ५० हजार रुपया देने की इच्छा भी व्यक्त की।

कालान्तर मे स्वामी दयानन्द ने बम्बई से लौट कर उदयपुर की यात्रा की। वे ६ मास से कुछ अधिक काल तक उदयपुर रहे। इस दीर्घ अवधि मे महाराणा सज्जनसिंह प्राय नित्य ही श्री सेवा मे उपस्थित होकर स्वामीजी के उपदेशो से लाभान्वित होते थे। इस समय महाराणा ने स्वामीजी से सस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान प्राप्त किया और मनुस्मृति के अतिरिक्त न्याय, वैशेषिक और योगदर्शन के अनेक प्रकरण पढे। उन्होने स्वामी जी के उपदेशो को ग्रहण कर अपने राज्य मे अनेक जनोपयोगी कार्य किये तथा अपने विलासी जीवन पर भी अकुश लगाया। स्वामीजी की प्रेरणा से ही उदयपुर की शासकीय कार्यवाही मे हिन्दी का प्रचुर प्रयोग होने लगा। उदयपुर राज्य के राजपत्र का नाम सज्जनकीर्ति सुधाकर तथा सर्वोच्च शासक सभा का नाम महद्राज सभा रक्खा गया। महाराज ने स्वामी जी को षड् दर्शनो का भाष्य करने के लिये २० हजार रुपये प्रदान करने की इच्छा व्यक्त की तथा उदयपुर से उनकी विदाई के समय वेदभाष्य निधि मे १२०० रुपये प्रदान किये। उन्होने इस अवसर पर स्वामीजी की सेवा मे वह हस्ताक्षरो से युक्त एक अभिनन्दन पत्र भी प्रस्तुत किया जिसमे श्री महाराज के लोकहित के कार्यो की प्रभूत प्रशसा की गई थी। इस मान पत्र पर फाल्गुन कृष्णा ५ स० १९३९ वि० मगलवार की तिथि अकित है।

स्वामी दयानन्द का ३० अक्टूबर १८८३ को अजमेर मे निधन हो गया। उससे पूर्व महाराणा जी ने इच्छा व्यक्त की थी कि यदि दुर्दैववश महाराज का शरीर छूट जाय, तो उनकी मृतदेह को २-३ दिन तक सुरक्षित रखा जाना चाहिए ताकि वे अजमेर आकर आचार्य प्रवर के अन्तिम दर्शन कर सकें। किन्तु स्वामी जी के द्वारा लिखित स्वीकार पत्र की अन्त्येष्टि विषयक धाराओ को दृष्टि मे रखते हुए ऐसा करना उचित नही समझा गया। महाराणा जी ने स्वामी जी के निधन पर शोकोद्गार व्यक्त करते हुए एक दोहा तथा एक कवित्त लिखा जो देश हितैषी (अजमेर से प्रकाशित) के अतिरिक्त रसिक विनोद तथा राजरसनामृत नामक ग्रन्थो मे उद्धृत हुए हैं।

स्वामी दयानन्द के निधन के लगभग १ वर्ष पश्चात् महाराणा सज्जनसिंह का भी २६ दिसम्बर १८८४ (पौष शुक्ला ९ स० १९४१ वि०) को पच्चीस वर्ष की आयु मे निधन हो गया। यदि महाराणा सज्जनसिंह दीर्घजीवी होते तो निश्चय ही वे स्वामी जी की इच्छानुकूल अपनी शासक व्यवस्था मे अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाते और वैदिक धर्म के प्रचारार्थ अधिकाधिक सहयोग प्रदान करते। महाराणा की प्रेरणा से ही स्वामी जी ने परोपकारिणी सभा मे मेवाड के अनेक सामन्तो को सभासद पद पर नियुक्त किया था। खेद है महाराणा जी की मृत्यु के पश्चात् उनके वशजो मे आर्यसमाज के प्रति वैसी आस्था और निष्ठा के दर्शन नहीं हुए, जो महाराणा सज्जनसिंह मे थी।

लेखक की पुस्तक ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशासक और सत्सगी मे उल्लिखित विवरण।

●

पजाब के हिन्दू पीड़ितों के लिए अपील

ताजा सूचना के अनुसार पजाब से ३० हजार से अधिक हिन्दू परिवार दिल्ली आ चुके हैं। इनकी सहायता और पुनर्वास के लिए बडी मात्रा मे धन की आवश्यकता है। सर्दी पूरे यौवन पर है। विस्थापितो के लिए गरम कपडो की तुरन्त आवश्यकता है। जिस-जिस सज्जन तक मेरी अपील पहुचे, उन सबसे प्रार्थना है कि धन और सामान के रूप मे अपनी सहायता तत्काल भेजें। देरी न करें, अपनी सहायता आज ही भेजें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धन और सामान भेजने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

हैदराबाद सत्याग्रह की मधुर स्मृतियां

—जयेन्द्र शास्त्री, ग्रा.पो.-हीरावाली अवै. उपदेशक दयानन्द संघ, आ.प्र.स. (उ.प्र.)

पूज्यपाद श्री म० नारायण स्वामीजी के रियासत हैदराबादमे सत्याग्रह की सूचना मिलने पर मुझ जैसे भावुक युवक आर्योपदेशक के मानसपटल पर सत्याग्रह मे सम्मिलित होने की प्रबल भावना का समुद्भूत होना स्वाभाविक था। मैं उन दिनो आर्य समाज मशीन मुहल्ला जेहलम मे पौरोहित्य कार्य सम्पन्न करता था। दैवयोग से श्री स्वामी मगलानन्द जी अपने दो साथियो सहित जेहलम पधारे। मैंने भी उनके साथ सत्याग्रह मे भाग लेने की इच्छा प्रकट की। अनुमति मिलने पर मैंने आर्यसमाज से अवैतनिक अवकाश स्वीकार करा लिया। हम चारो व्यक्ति गुजरानवाला से दिल्ली होते हुए मार्ग के प्रसिद्ध स्टेशनो पर सत्याग्रही सम्बन्धी भाषण तथा प्रचार करते हुए झासी जकशन पर पहुचे जहा अपार जनसमूह स्वागतार्थ उपस्थित था। रेलगाडी एक घण्टा रुकी और लगभग ४० मिनट मुझे भाषण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जहा तक मुझे स्मरण है वह भाषण मेरे समस्त पूर्व भाषणो मे अधिक ओजस्वी तथा जोशीला था।

शोलापुर शिविर मे श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के आदेशानुसार श्री ब्रह्मचारी सत्यपाल जी के ३५ सत्याग्रहियो के जत्थे मे गुलबर्गा स्टेशन के अन्दर ही निजामी पुलिस ने हमे अपने सरक्षण मे लेकर जेल पहुचा दिया।

गिरफ्तारी से पाचवे दिन हमे अदालत मे उपस्थित किया गया। सरकारी वकील ने हमारे ऊपर कठिन उर्दू के प्रयोग द्वारा कुछ आरोप लगाये। हमारे जत्थेदार ने कठिन उर्दू भाषा को समझने तथा उत्तर देने मे अपने को असमर्थ पाकर उत्तर देने का मुझे सकेत किया।

मैंने बहस करते हुए प्रश्न किया कि मैं अदालत आलिया उच्च न्यायाधीश से दरयाफ्त करना चाहता हूँ कि अभी जो साहब हमारे ऊपर इलजाम आयद आरोप स्थापन कर रहे थे क्या यह वस्तुत: वकील हैं या कोई ऐरा-गैरा नत्थू खैरा व्यक्ति हैं क्योकि इन्हे हालात हाजरा: सत्य वृतान्त का कतअन किंचिन्मात्र भी ज्ञान नही है। उदाहरणतया :—

१—इनका कथन है कि इस जत्थे को पुलिस ने स्टेशन के बाहर नारे (उदघोष) लगाते हुए गिरफ्तार किया था क्योकि पुलिस को स्टेशन के अन्दर जाकर गिरफ्तार करने का कोई अधिकार नही है। मैंने कहा कि वकील साहब को पता होना चाहिए कि हमारी गिरफ्तारी से अगले दिन श्री लाला खुशहाल चन्द जी खुर्सन्द का १६० सत्याग्रहियो का जत्था जिसके पास गुलबर्गा से अगले स्टेशन का टिकट था। रेलगाडी मे सवार सत्याग्रहियो को बलपूर्वक उतारकर गिरफ्तार किया है जिससे पुलिस का स्टेशन के अन्दर जाकर सत्याग्रहियो को गिरफ्तार न करने का दावा सर्वथा मिथ्या है।

२—वकील साहब ने दूसरी बात रियासत मे हिन्दू मुसलमानो के साथ मसावात (समान बर्ताव) की बात कहकर हमारे सत्याग्रह को व्यर्थ सिद्ध करने की चेष्टा की है। क्या वकील साहब मुझे बता सकेंगे कि आपके जेलखाने मे मुसलमान कैदियो को नमाज पढने के लिए मस्जिद बनी है वहा हिन्दू कैदियो के लिए पूजा पाठार्थ मन्दिर का निर्माण क्यो नही है। केवल हिन्दुओ को जलूस और अखाडो आदि पर ही प्रतिबन्ध क्यो है।

३—गिरफ्तारी के समय मेरे पास पुराने रिफार्मर समाचार पत्र के जीर्ण शीर्ण एक पन्ने की पुडिया के आरोप मे एक अभियोग क्यो उपस्थित किया गया।

४—हिन्दू मन्दिरो मे घन्टे घडियाल बजाने पर ही आपत्ति क्यो है।

५—वकील साहब ने एक यह आरोप लगाया है कि इस जत्थे मे ३६ सत्याग्रही थे जिनमे से एक माफी माग कर चला गया है। मैंने इसका प्रतिवाद करते हुए कहा कि हमारा जत्था ३५ व्यक्तियो ही का था। पुलिस ने हमारे सत्याग्रह को बदनाम करने के लिए एक नकली सत्याग्रही को सम्मिलित किया और छोड दिया।

मेरी बहस के पश्चात् अदालत ने ३४ सत्याग्रहियो को ६ ६ मास तथा मुझे ७ मास का कारावास दण्ड सुनाकर जेल भेज दिया।

जेल मे श्री चादकरण जी शारदा (अजमेर) मेरी बहस को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और मुझे शाबासी दी।

इसके दो तीन दिन पश्चात् जेल के मोहतमिम (मुख्य प्रबन्धक) ने जेल के एकान्त मे मुझे बुलाकर पूछा कि क्या आप वकील हैं। मैंने कहा कि मैं वकील तो नही किन्तु वकीलो का गुरु जरूर हूँ, उपदेश देता हूँ जिस पर वकील आदि उपस्थित लोग मेरे चरण छूकर नमस्कार करते हैं। मोहतमिम साहब मेरे कथन को सुनकर मुस्कराये और बतलाया कि जज महोदय ने आपके विषय मे पूरी जानकारी लेने का सकेत किया था क्योंकि आपकी बहस से जज महोदय अत्यन्त प्रभावित हुए थे। अस्तु। फिर उन्होंने कहा कि आपको जेल से विशेष सुविधा की आवश्यकता है। मैंने कहा हम सत्याग्रही समान हैं और सबके समान ही सुविधा का इच्छुक हूँ। विशेष कुछ नही चाहिए। यह आपकी हमे सत्याग्रहियो मे फूट डालने की नीति पसन्द नही है।

हमारे भोजन मे प्राय ज्वरी की रोटी, लहसन, प्याज युक्त सब्जी तथा दाल खाने को मिलते थे। मैंने वैसी सब्जी खाना पसन्द नहीं किया। कई दिन तक नमक से रोटी खाई। पश्चात् हम दो तीन व्यक्तियों के लिए प्याज रहित सब्जी मिलने लगी। हमारी विशेष सब्जी को देखकर अन्य कई सत्याग्रही भी विशेष सब्जी की माग करने लगे तथा प्रतिदिन ऐसी सख्या बढने लगी। इस पर भोजन सेवको ने हमसे कहा कि प्रतिदिन सख्या बढते जाने से अलग सब्जी की व्यवस्था मे कठिनाई हो रही है। मैंने इस पर कहा कि यदि ऐसी बात है तो हमारी विशेष सब्जी बन्द कर दें। ऐसा कहने पर फिर हम ३,४ व्यक्ति ही सब्जी के लिए प्रमाणित रहे और केवल हमारे लिए ही विशेष सब्जी आने लगी।

लगभग २४,२५ दिन बाद हमे हैदराबाद सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया जहा हमे अनेक परिचित साथी यथा प० कपिल देव जी द्विवेदी, कुवर सुखलाल जी आदि मिले. वहा भोजन बनाने का कार्य भी सत्याग्रहियो ने स्वय समाल लिया। प्रतिदिन प्रात सायकाल सन्ध्या यज्ञ का कार्यक्रम सामूहिक रूप से चलता था। सत्सग मे मेरे प्रवचन होते थे जिसके कारण मुझे भोजन व्यवस्था से मुक्ति मिली हुई थी।

हैदराबाद जेल मे किसी बात पर कर्मचारी वर्ग के साथ किसी दिन विवाद छिडने पर जेल के उच्चाधिकारी ने हमारे दो प्रतिनिधि बुला भेजे। इस पर मण्डी बहाउद्दीन के श्री सन्तराम जी तथा मैं उपस्थित हुए। उक्त महोदय ने फरमाया कि देखिये जेल के नियमानुसार किसी बन्दी के साथ दो जवान (सिपाही) जाने आवश्यक होते हैं और कहा कि आपके १०, ३० सत्याग्रही पानी लेने बाहर जाते है और हमारा एक ही जवान आपके साथ होता है। रियासत ने आपके साथ कितनी रियायत की हुई है फिर भी आप लोग शान्त नही रहते।

मैंने निवेदन किया कि श्रीमान जी यह तो सत्याग्रहियो की सज्जनता तथा कृपा है कि जिन्होने अपने साथ न जाने वाले ५९ जवानो का व्यय बचाया हुआ है। आपको मालूम होना चाहिए कि हम लोग यहा भागने के लिए नहीं आये हैं। हम लोग चोरी आदि अनैतिक अपराधी तो हैं नहीं। हम तो अपनी इच्छा से अपना अधिकार मागने आये हैं। यदि आप हमे खुले मैदान मे भी रखेंगे, हम फिर भी भागने वाले नही हैं।

मेरे उत्तर को सुनकर साहब बोले कि आर्यसमाजी लोगो से कोई पार नही बसाती। मैंने कहा कि सच्चे लोग सत्य से ही विजय पाते हैं। आप हम पर मिथ्या आरोप लगाकर क्यों दबाना चाहते हैं। यह कहकर हम वापस जेल मे आ गए।

जेल मे मुक्ति से २, ३ दिन पूर्व आयसमाज के नेता लाला देशबन्धु गुप्ता आदि हमसे मिलने आए और बताया कि निजाम सरकार कुछ झुक रही है और समझौता हो रहा है। हमने कहा कि आर्य समाज को गिरकर समझौता नही करना चाहिए। हम प्राणो को दाव पर रखकर यहा आए हैं।

तत्पश्चात् निजाम सरकार ने आर्य समाज की समस्त मांगें स्वीकार कर ली और हम लोग वार्धा आश्रम मे श्री महात्मा गाधी से मिलकर और उनका साधुवाद प्राप्त कर दिल्ली होते हुए अपने गन्तव्य स्थानों को चले आए।

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत स्थिर निधियां

ये निधियां २८ फरवरी १९८७ तक स्थापित हुई हैं

वर्ष १९८५-८६

(गतांक से आगे)

४८ श्री अमोलक राम स्थिर निधि

श्री अमोलक राम जी दिल्ली ने दस हजार के दान से स्थिर निधि कायम की है। गत वर्ष एक हजार रुपए बढ़ाकर ११०००) कर दी गई। जिसका ब्याज आर्य साहित्य के प्रकाशन मे खर्च होगा।

१-३-१९७९ की अन्तरग ने इसकी स्वीकृति दी। वर्ष के अन्त में ब्याज के २१७३)३० जमा थे।

४९—श्रीमती जानकीदेवी ज्योति प्रसाद (दिल्ली) स्थिर निधि

१२६७२५) (एक लाख छब्बीस हजार सात सौ पच्चीस रुपया मात्र) के दान से यह निधि स्थापित की गई है जिसका ब्याज मुख्यत संस्कृत के प्रचार तथा छात्र-छात्राओं की सहायता मे व्यय हुआ करेगा। अन्तरग दिनाक २७-१०-७४ ने स्वीकृति दी। इस वर्ष इस निधि मे ६१३६)२५ ब्याज के शेष जमा थे।

५०—महाशय शिवचरणदास शोध ग्रन्थ प्रकाशन स्थिर निधि

श्री महात्मा शिवचरणदास जी दरियागज दिल्ली के ५०११) (पाच हजार ग्यारह रु०) के दान से वैदिक सिद्धातो एव आर्य समाज के विषयों पर लिखे गये शोध ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ १९७५ मे स्थापित की गई।

इस निधि से ए-क्रीटिकल स्टडी आफ दी कन्ट्रीब्यूशन आफ आर्य समाज टू दी इण्डियन एजुकेशन शोधग्रन्थ छप चुका है।

वसीयतें

१ ५-६६ की अन्तरग सभा मे दो वसीयतें स्वीकृत हुई।

एक वसीयत के अनुसार जो श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु जी आर्योपदेशक ने की सभा को एक मकान गाजियाबाद में प्राप्त होना है जिसका मूल्य लगभग ४० हजार है। इसके अतिरिक्त बैंको मे जमा रुपया भी प्राप्त होगा।

दूसरी वसीयत के अनुसार सभा को ४० हजार के मूल्य के मकान के अतिरिक्त जेवर तथा बैंको व डाकखाने मे जमा रुपया भी प्राप्त होना है। यह वसीयत स्व० प० साधुराम जी शाहदरा ने की थी।

पहली वसीयत से प्राप्त धन आर्य कुमारो और कुमारियो के लाभार्थ वैदिक साहित्य के प्रकाशन मे व्यय होगा तथा दूसरी से प्राप्त धन, धर्म कार्यो, विद्वानो तथा सन्यासी, महात्माओ की वृद्धावस्था मे सहायता देने में व्यय होगा।

१८-७-७० की अन्तरग के निश्चयानुसार शाहदरा की एक और वसीयत स्वीकृत हो गई थी जिसके अनुसार सम्पत्ति का विवरण इस प्रकार है

१—३ प्लाट जिनका क्षेत्रफल १ हजार वर्ग गज से अधिक है। वर्तमान मूल्य लगभग एक लाख रुपया।

२—३ मकान जिसकी कीमत लगभग ३० हजार रुपया। १७८) मासिक किराया प्राप्त हो रहा है।

वसीयतकर्त्री श्रीमती गगादेवी का देहान्त हो जाने से इस वसीयत की सम्पत्ति को अधिकृत किए जाने के लिए कानूनी कार्यवाही की जा रही है। सम्पत्ति पर उसके रिश्तेदारो ने अवैध कब्जा किया हुआ है।

जोधपुर की सम्पत्ति

आर्य समाज जोधपुर की निम्नलिखित सम्पत्ति सभा के नाम है—

—५६५० वर्ग गज भूमि प्रताप हाई स्कूल के सामने श्री रणछोड मन्दिर के पास।

२—आर्य श्मशान भूमि २७७२ वर्ग गज

३—गुरुकुल मारवाड मण्डोर ७ मकान कुल भूमि २५३६६ वर्ग गज।

४—गौशाला मारवाड मण्डोर ५ कोठरी (चारे की) ४ अन्य कोठरिया, ३० हजार वर्ग गज।

रणछोड मन्दिर के पास जो प्लाट था उसे सरकार ने हस्तगत करके उसके बदले ३ प्लाट अलाट किये हैं।

इस सम्पत्ति पर कुछेक व्यक्तियों ने अवैध कब्जा किया हुआ है। जिसकी मुक्ति के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्वावधान मे समुचित कार्यवाही की जा रही है।

५१—महर्षि दयानन्द विदेश प्रचार स्थिर निधि

श्रीयुत प० हरदयाल शर्मा (फिजी) द्वारा प्रदत्त ५० हजार (पचास हजार) के दान से महर्षि दयानन्द विदेश प्रचार के नाम से एक स्थिर निधि कायम की गई थी जिसकी स्वीकृति ३०-३-१८ की अन्तरग बैठक ने दी थी। इस निधि के ब्याज से भारत से बाहर मुख्यत फिजी मे प्रचारार्थ एक उपदेशक रखने का प्रावधान किया गया था।

गत वर्ष इस निधि का ब्याज १७७१२)६३ जमा था। इस वर्ष ब्याज के ४ हजार रुपये जमा हुए। वर्ष के अन्त मे जमा २१ ७१२)६३ रुपया था।

सभा फिजी मे किसी सुयोग्य प्रचारक को भेजने के लिए प्रयत्नशील है।

५२—श्रीमती रत्नादेवी मनुमित्र वेद प्रचार निधि

यह निधि हैदराबाद(आन्ध्र प्रदेश)के श्री प० मुन्नालाल जी ने ११२००) की राशि से स्थापित कराई है। यह राशि सभा के नाम मे कनारा बैंक दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली में जमा है जो १९८६ मे १० वर्ष के बाद ३० हजार के ऊपर होगी। इसका ब्याज सभा जहा भी उचित समझेगी वैदिक धर्म के प्रचारार्थ खर्च किया जायेगा। २० जुलाई १९७७ की अन्तरग ने इसकी स्वीकृति दी।

श्री मुन्ना लाल जी ने इस निधि मे वृद्धि कर ६७५७)०६ का १ कैश सर्टिफिकेट क्रय करके दिया है जिसका धन आन्ध्र प्रदेश महेश कोआपरेटिव अरबन बैंक लिमिटेड बेगम बाजार हैदराबाद मे जमा है और सभा को २-४-१९९१ मे २०,०००) प्राप्त होगा।

इन राशियो को पुन फिक्स डिपोजिट मे रखना होगा और जनवरी २००१ मे यह राशि १,८००००) (एक लाख अस्सी हजार मात्र) हो जायेगी। उसके पश्चात् सभा उक्त शर्तों के अनुसार इसका ब्याज खर्च कर सकेगी।

इस सर्टिफिकेट के परिवर्तन की स्वीकृति २१ २ ८२ की अन्तरग बैठक ने दी।

५३—श्री बख्शी खुशहाल स्वास्थ्यानन्द स्थिर निधि

यह स्थिर निधि ५०००) (पाच हजार रुपया मात्र) की राशि से बख्शी खुशहाल जी ने स्थापित की है। जिसकी १७-१-७७ की अन्तरग बैठक ने स्वीकृति दी, इस निधि के ब्याज से बख्शी जी की निजी पुस्तकें छपा करेंगी। इस निधि का ब्याज ३५५०) जमा है।

५४—दयानन्द दलितोद्धार निधि

यह निधि ३०००) की है जो स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने दलितोद्धार के कार्यार्थ १९२१ मे स्थापित की थी। इसका ब्याज दलित कहे जाने वाले बन्धुओ एव छात्र छात्राओ की सहायता पर खर्च किया जाता है।

५५—स्वामी ब्रह्ममुनि जी की वसीयत

१९८० मे निधन से पूर्व श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने अपनी धन राशि पुस्तको के स्टाक तथा उनके प्रकाशन के अधिकार की वसीयत इस सभा के नाम मे की थी। इस वसीयत के अनुसार नकद (बैंको मे जमा) धन पुस्तको का स्टाक वा बिक्री की राशि प्राप्त करने का अधिकार सभा को है। सहारनपुर मे एक कोर्ट से प्रोबेट प्राप्त कर लिया गया तथा डाकखाना व बैंको आदि से १,०१७३०)०५ रु० प्राप्त हुए थे। कोर्ट की फीस आदि पर ६५९७)३५ व्यय हुए। शेष ९५१३२)७० रु० जमा हैं।

५६—डा० नन्दलाल व श्रीमती सावित्री देवी स्थिर निधि

१० हजार की यह स्थिर निधि १६-११-७९ की अन्तरग सभा द्वारा स्वीकृत हुई थी। इस निधि के दो भाग हैं। प्रथम ५०००) की निधि के ब्याज से आर्य सन्यासियो, उपदेशको तथा भजनीको के रोगग्रस्त होने पर चिकित्सा कराई जायेगी। दूसरी ५०००) की निधि का ब्याज पहाडी क्षेत्रो वा नेत्र रोग की रोकथाम पर खर्च किया जायेगा। वर्ष के अन्त मे निधि के ब्याज के ७००) रुपये शेष जमा थे।

५७—श्री रामरखामल व मथुरा देवी कलेरकला स्थिर निधि दो हजार रुपए श्री नानकचन्द (मथुरादेवी स्थिर निधि तीन हजार रुपए।

य निधिया वेद प्रचार, हिन्दी भाषा प्रचार व समाज कल्याण कार्यों के सम्पादनार्थ स्थापित की गई है। इनकी स्वीकृति १०-११-७९ की अन्तरग द्वारा हुई। इनके क्रमश १४०) व २१०) ब्याज के जमा हैं।

५८—श्री मनोहर सिह पनगडिया बनेडा (राजस्थान) स्थिर निधि

यह निधि श्री गुमान सिंह जी (पूर्व एकाउण्टेण्ट जनरल न्यू इन्स्योरेन्स कम्पनी) ११ दरियागज, नई दिल्ली तथा लेखा निरीक्षक देहली राज्य आर्य केन्द्रीय सभा ने ५ हजार रुपए के दान स अपने अग्रज श्री मनोहरसिंह के नाम से १९६७ मे स्थापित की थी। ५ १ ६७ को अन्तरग सभा ने इसकी स्वीकृति दी थी।

इसका ब्याज निधन छात्र छात्राओ को जिनके अभिभावको की अथवा माता पिता की मासिक आय ७५०) या इससे कम होगी और पुस्तकें खरीदने मे जो असमर्थ होगे उनकी पुस्तको के क्रय कराने मे व्यय होना निश्चित हुआ है। सहायता प्राप्त करने वाले छात्र को नियत फार्म पर आवेदन पत्र देना होता है जिसकी स्वीकृति अब श्री गुमानसिंह जी के सुपुत्र श्री प्रतापसिंह पनगडिया, ए० ४३ मानसरोवर टोकरोड, जयपुर देते हैं। यदि ब्याज की राशि पुस्तको के रूप मे खर्च न हो तो दो वर्ष बाद यह राशि श्री प्रतापसिंह जी पनगडिया की अनुमति लेकर सभा किसी दीन, हीन विधवा अथवा अबला आदि की सहायता मे खच कर सकेगी। गत वर्ष इस निधि मे २१११)८५ शेष थे। वर्ष के अन्त मे ब्याज के २३०३)८५ जमा थे।

५९ श्री धन्नाराम कुकरेजा वेद प्रचार स्थिर निधि

श्री सेठ प्रीतमदेव कुकरेजा ने अपने पिता श्री धन्नाराम कुकरेजा की स्मृति मे ११००) की स्थिर निधि सभा मे कायम की थी जिसकी स्वीकृति १ ४ ७८ की अन्तरग बैठक ने दी थी। इसका ब्याज आर्य समाज के प्रचारको अथवा उनकी आर्थिक सहायता पर खच किया जायेगा।

दानी को इस राशि मे वृद्धि करने की भी अनुमति दी गई थी। वर्ष के अन्त मे इस निधि का ५१००) और ब्याज १८६९) जमा हैं।

६०—स्त्री आर्य समाज लोहगढ अमृतसर स्थिर निधि

यह निधि १०,०००) की है। २६ ११ ७८ की अन्तरग द्वारा स्वीकृति हुई। इस निधि का ब्याज निर्धन छात्रो की छात्र वृत्ति पर व्यय होगा। इस निधि का ७००)०२ ब्याज जमा है।

६१ श्रीमती विद्यावती बहल (लन्दन निवासी) स्थिरनिधि ५०००)

यह निधि महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रो की छात्रवृत्ति के लिए है इसकी स्वीकृति २६ ४-८० की अन्तरग द्वारा हुई। वर्ष के अन्त मे ७००) ब्याज का जमा रहा।

६२—वैदिक आश्रम ऋषिकेश

यह आश्रम ऋषिकेश मे रेलवे रोड मार्ग पर है। यह आश्रम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की मिलकियत है। आजकल आश्रम की सेवा कार्य के लिए धर्ममुनि प्रबन्धक है। यात्रियो के ठहरने के लिए सभी प्रकार की सुख सुविधायें उपलब्ध है। दैनिक यज्ञ व भजन नित्य होता है। इसके अलावा श्री लालीभाई मोतीभाई धर्मशाला मे जो एक कमरा और एक रसोईघर श्री लाला केदार नाथ जी की धर्मपत्नी गेंदादेवी जी सहारनपुर मो० चिलाला का स० १९८८ मे बनवाया था, वैदिक आश्रम ऋषिकेश को दान मे प्राप्त हुआ है। यह इस आश्रम की अचल सम्पत्ति है और इस समय परमेश्वरी देवी को आश्रम ने ११) मासिक किराये मे दे रखा है और आदर्श नगर ऋषिकेश स्थित प्लाट न० ८७८ पर सार्वदेशिक सभा की ओर से मुकदमा चल रहा है।

६३ श्री नन्दलाल कश्यास तथा श्रीमती चावकौर उर्फ भगवानदेवी सहायता स्थिर निधि

श्री कल्याण जी ने ८०००) आठ हजार रुपए की यह स्थिर निधि स्थापित कराई है। इसके ब्याज को गरीबो विधवाओं अनाथो व असहाय व्यक्तियो की सहायता, वस्त्रादि के वितरण तथा अनाथ बच्चो को पुस्तकें आदि देने पर व्यय किया जाया करेगा। निधि की स्वीकृति ११ ८-८५ की अन्तरग द्वारा की गई।

६४—श्रीमती सरस्वतीदेवी शर्मा स्मृति स्थिर निधि दस हजार रु०

इस निधि की स्थापना उनके सुपुत्रो श्री अमरनाथ शर्मा व श्री विचित्र देव शर्मा द्वारा की गई है। इस निधि का ब्याज, शम्भूदयाल वैदिक सन्यास आश्रम को देना होगा। यदि यह बन्द हो जाय तो दयानन्द सस्कृत गुरुकुल महाविद्यालय पटेल मार्ग गाजियाबाद को यदि यह भी न रहे तो सार्वदेशिक सभा अपनी इच्छानुसार व्यय करेगी। अन्तरग दिनाक २९ १२-८५ द्वारा स्वीकृत।



स्व० माता सरस्वतीदेवी आर्य धर्मपत्नी श्री जनार्दन शर्मा वानप्रस्थ गाजियाबाद

३५—श्री मोतीलाल आर्य एव श्रीमती स्वरूपी देवी सहायता स्थिर निधि दस हजार एक रुपया

इस निधि के ब्याज स प्रतिवष ५०५) रुपए आर्य अनाथालय फिरोजपुर को भेजा जाया करेगा। शेष राशि को कन्या गुरुकुल हाथरस की किसी होनहार छात्रा की सहायता तथा किसी अनाथ, असहाय निधन छात्र-छात्राओं को दिया जाया करेगा। अन्तरग दिनाक २९ १२ ८५ द्वारा स्वीकृत। (समाप्त)

हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरियाणा

कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर संभालखा जिला करनाल दिनांक २६-१-८७ को शाम के ४ बजे गांव गुढ़ीगांव (रामनाथपुर) में यज्ञ हवन किया गया और ईसाई लोगों ने अपना स्वेच्छा से वैदिक हिन्दू धर्म गृहण किया और प्रतिज्ञा की कि हम वैदिक धर्म का पालन करेंगे।

उक्त शुद्धि कार्यक्रम में सहदेव शिवलाल, बलराम, अयोध्या प्रसाद आर्यों की तथा उक्त ग्राम के आदिवासियों की भीड़ भी उपस्थित थी। यह कार्यक्रम-सार्वदेशिक आर्य प्रतितिधि सभा के तत्वावधान मे किया गया। कुल सख्या

पुराना नाम	नया नाम	पिता का नाम	
१—समारू मसीहा	सभारूराम	वीरसाय	१०
२—पाचो मसीहा	पाचोबाई	समारूराम	११
३—रूपधर	रूपधर आर्य	सीमारूराम	१३
४—तेजकुंवर	तेजकुंवर आर्य	,,	१५
५—जहरसाय	जहरसाय आर्य	,,	१४
६—फुलसाय	फुलसाय आर्य	,,	७
७—गोकुल	गोकुल आर्य	,,	१५
८—कोन्दा	कोन्दाराम आर्य	बन्धना	१०
९—गुरु	रूणुराम आर्य	मथुरा	१८
१०—हरिहर	हरिहरसाय आर्य	ननकीराम	९
११—मोहरमती	मोहरमती आर्या	रूगु	१०
१२—भक्तुराम	भक्तुराम आर्य	कोन्दा	१२
१३—नोहरसाय	नोहरसाय आर्य	कोन्दा	१७
१४—शालिकराम	शालिकराम सार्य	,,	१५
१५—ढोलोबाई	ढोलोबाई आर्या	कोन्दा	१६
१६—लिकोराम	लिकोराम आर्य	बोलवा	१
१७—फुलमती	फुलमती आर्या	लिकोराम	१३
१८—सुखदेव	सुखदेव आर्य	लिकोराम	१२

श्रीमती रामप्यारी आहूजा के निधन पर श्रद्धांजलि-सभा

आर्य स्त्री समाज, पंजाबी बाग, नई दिल्ली की धर्म-परायणा एवं लग्न शील प्रधाना श्रीमती रामप्यारी जी आहूजा का ७५ वर्ष की आयु में १७ जनवरी, १९८७ को देहान्त हो गया था।

उनके एकाकी सुपुत्र श्री सुदर्शन कुमार आहूजा के विदेश (जाम्बिया) में होने के कारण अन्तिम शान्ति-यज्ञ श्रद्धांजलि-सभा एवं रस्म पगडी २९ जनवरी, ८७ को साय आर्यसमाज मन्दिर पंजाबी बाग में सम्पन्न हुई। समाज के पुरोहित प० सत्यपाल मधुर जी ने बड़े शान्त वातावरण में यज्ञ करवाया। उसमें उनकी पुत्र बधू श्रीमती संगीता आहूजा, पुत्रिया श्रीमती सरला व सुषमा, भाई डा० चमनलाल व डा० दीनानाथ मानिकटाला के अतिरिक्त उनके परिवार, जन तथा भारी संख्या में आर्य बहन-भाई उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद-प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी ने मृत्यु की अवश्यम्भाविता पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि दी।

आर्य स्त्री ममाज पजाबी बाग की मन्त्रिणी श्रीमती आदर्श कुमारी तलवार ने भावविभोर होकर श्रद्धा के पुष्प भेंट करते हुए कहा कि उनकी प्रधानता मे हमारी स्त्री समाज की सदस्याओं में जो स्नेह, संगठनभावना बढ़ी, वह अनोखी है। लेकिन धर्म के प्रति उनकी निष्ठा आर्यसमाज के सिद्धांतो मे उनकी आस्था और महर्षि-मिशन के प्रचार-प्रसार में उनकी लगन हमे प्रेरणा देती रहेगी। मेरे साथ तो उनका मां-बेटी मा रिश्ता हो गया था। अत उनका वियोग मुझे दारुण दुःख देता रहेगा। सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग की प्रिंसिपल वृजबाला भल्ला ने कहा कि संगठन की जो उच्च भावना मैंने आर्य स्त्री समाज पंजाबी बाग में देखी है, वह आज आर्यसमाज मे विरले ही मिलती है और उनका श्रेय माता रामप्यारी जी को है।

सभा में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल और आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री राजेन्द्र दुर्गा भी पधारे थे।

बसन्त पंचमी पर वीर हकीकतराय बलिदान दिवस मनाया गया

कानपुर आर्यसमाज गोविन्दनगर के तत्वावधान मे आयोजित बसन्तपचमी समारोह पर वीर हकीकत राय का बलिदान दिवस मनाया गया।

समारोहकी अध्यक्षता करते हुए आर्यसमाजी नेता श्रीदेवीदास आर्य ने कहा कि अत्याचारी व धर्मान्ध मुगल हकूमत मे बलात् धर्म परिवर्तन करने से इन्कार करने पर बलिदानी वीर हकीकतराय का लाहौर मे सर काट दिया गया था। उनका बलिदान हमको प्रेरणा देता है।

आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री ने कहा कि आज भी देश मे बलात् व प्रलोभन से निर्धन हिन्दुओ का धर्म परिवतन किया जा रहा है। सरकार चुपी धारण किये है।

समारोह मे सवश्री जगन्नाथ शास्त्री शुभकुमार वोहरा, श्रीमती दर्शना कपूर, वीरा चोपडा आदि के भाषण हये। प्रारम्भ मे बृहद् यज्ञ किया गया। —मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मन्दिर पिलखवा, जिला गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव २४,२५ २६ फरवरी ८७ को बड धम धाम से मनाया जायेगा। उच्च कोटि के विद्वान् तथा भजनोपदेशक भाग लगे। बाहर से आने वाले सज्जनो को भोजन तथा आवास की व्यवस्था है। सभी सादर आमन्त्रित हैं। —डा० वेदप्रकाश गुप्त मन्त्री आ०स० पिलखुआ

धर्मवीर हकी... ...त मेला

अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति और आयसमाज सरोजिनी नगर नई दिल्ली के तत्वावधान मे धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस बसन्त मेला रविवार ८ फरवरी, १९८७ को आर्य समाज मे बडे धूमधाम से मनाया गया। प्रात ८॥ से ९॥ बजे तक यज्ञ पडित उदय श्रेष्ठ द्वारा, ९॥ से १० बजे तक भजन, १० से १२ बजे तक स्कूलो के बच्चो द्वारा बाल हकीकत राय के जीवन पर भाषण कविता, गायन की प्रतियोगिता हुई और रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर के बच्चो ने गीत, नाटक आदि से आकर्षण कार्यक्रम प्रस्तुत किया। १२ से १॥ बजे तक स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सा० आ० प्र० सभा की अध्यक्षता मे श्रद्धाजलि सभा हुई जिसमे आर्य नेता श्री सोमनाथ मरवाह, श्री सूर्यदेव जी, प्रधान दिल्ली आ० प्र० सभा, डा० धमपाल, श्री राम मूर्तीकेला, प्रधान-आर्य समाज हनुमान रोड, श्री रतनलाल सहदेव श्री सरदारी लाल वर्मा, प० शिवकुमार शास्त्री, श्री यशपाल सुधाशु सपादक आय सन्देश श्री राम भज जी (स० महा० परिष) के भाषण हुए। प्रसिद्ध कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी की प्रभावशाली कविता और श्री गुलाब सिंह राघव के मनोहर भजन भी हुए। अन्त मे श्री सत्यपाल चोपडा (कैपिटल सर्जिल कम्पनी) के परिवार के सौजन्य से प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। इस समारोह मे दिल्ली के अन्य आर्य समाजो के अधिकारियो व सदस्यो ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

—रोशनलाल गुप्ता, मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
राष्ट्र देवो भव
FREE

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७]
वष २२ अक ११]
मा दशिक आय प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
फा गुन शु० ८ स० २०४३ रविवार ८ माच १९८७
दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५ एक प्रति ६० पस

महर्षि दयानन्द भारतीय स्वतन्त्रता के प्रथम सूत्रधार :
आर्य वीरों के बलिदानों की अवहेलना न की जाय :

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

आर्यसमाज ने देश को विनाश से बचाया

पुनः विनाश से बचाने को कमर कसे : रामचन्द्र विकल

हजारों वर्ष में कोई दयानन्द सा प्रखर नेता आता है : विनोद मिश्र

सदा की भाति इस वष भी दिल्ली की आय केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे 'ऋषि बोधो त्सव'' बड समारोहपूवक फिरोज शाह कोटला दिल्ली के मैदान मे मनाया गया । प्रात यज्ञ ध्वजारोहण के पश्चात् मध्या ह्लोत्तर मे एक विशाल साव जनिक सभा श्री आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सावदेशिक सभा की अध्यक्षता मे हुई। स्वामी आनन्द बोध जी ने महर्षि को



स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

देश की स्वतन्त्रता का प्रथम सूत्रधार सिद्ध क ते हुए कहा जिन आय युवको ने अपने बलिदान किए आज का शासन उनकी उपेक्षा कर रहा है। सभास्थल के सामने स्थापित मैडिकल कालेज की भूमि पर पुरानी जेल थी जहा भाई बालमुकुन्द व अमरचन्द को देशभक्ति का दण्ड फासी के रूप मे मिला । हम शासन से उनके समुचित स्मारक बनाने की माग करते हैं।

प्रसिद्ध पत्रकार व दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री विनोद मिश्र ने कहा महर्षि दयानन्द असाधरण प्रतिभा के धनी थे। भूमि माता हजारो वष मे ही ऐसा सपूत पदा कर पाती है । हमे महर्षि के पथ को सुदृढ व विस्तृत बनाते चलना चाहिए ।

स्वतन्त्रता सेनानी श्री रामचन्द्र विकल सदस्य राज्यसभा ने कहा—आयसमाज ने नष्ट होने हुए देश का एक वार वचाया ही नही था उसे सुखी सुसम्पन्न व सुदृढ बनाने की सारी योजनाए भी प्रदान की। परन्तु आय समाज के राजनीति से दूर रहने के कारण आज फिर अधकचरे राजनीतिज्ञो के हाथा देश विनाश के पथ पर जा रहा है। क्या आयसमाज मौनदशक बना रहेगा । आयसमाज एक बार फिर देश का नेतृत्व सम्भाले तभी सब समस्याओ का समाधान होगा।

मूध य पत्रकार श्री क्षितीश वेदालकार ने भावभीन शब्दो मे महर्षि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। इस अवसर पर सावदेशिक सभा के मन्त्री श्री सच्चिदान द शास्त्री दिल्ली आय प्रनिनिधि सभा के प्रधान श्री सूयदेव जी महामन्त्री श्री डा० धमपाल आय केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री राजेन्द्र दुर्गा ने भी महर्षि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। ●

आय युवा महासम्मेल सम्पन्न

राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज का योगदान महत्त्वपूर्ण

—श्री अजु नसिंह सचारमन्त्री

२२ फरवरी दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा द्वारा आयवीर दल के तत्त्वावधान मे आयोजित आय युवा महासम्मेलन बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम हजारो तालियो की गडगडाहट से ग ज उठा। जब समारोह मे खेलकूद भाषण सगीत आदि प्रतियोगिताओ मे विजयी १८३ छात्र छात्राओ को पुर स्कृत किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय सचार मन्त्री श्री अजु न सिंह ने विजयी छात्र छात्राओ को पुरस्कार वितरित किये।

के द्रीय सचार मत्री श्री अजु नसिह ने इस अवसर पर बोलते हुए

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक — सच्चिदानन्द शास्त्री

पादरियों में पनप रहा है एड्स रोग

नई दिल्ली २४ फरवरी। एड्स ने अमेरिका के रोमन कैथोलिक क्षेत्र में भी हलचल मचा दी है। इससे कई ऐसे पादरियों की कलई खुल गयी जो अब तक ब्रह्मचर्य का मुखौटा ओढ़ रहते थे।

डाक्टरों, समाज सेवकों और दूसरों ने इस बात की पुष्टि की है कि दूसरे क्षेत्रों के अमेरिकनों की तरह कैथोलिक पादरी भी एड्स के शिकार हो कर मर रहे हैं। ऐसे बीमार पादरियों की संख्या की सही जानकारी मिलनी इसलिए सम्भव नहीं कि बहुत से रोगी अपनी बीमारी छुपा रहे हैं।

चर्च के अधिकारी भी उन्हें बेनकाब नहीं करना चाह रहे हैं। यौन सबंधों से फैलने वाली यह बीमारी कभी कभी दूषित खून लेने से हो जाती। आज तक किसी एड्स के मरीज के ठीक होने की खबर नहीं है।

पूरे अमेरिका में ४७००० कैथोलिक पादरी हैं। इसलिए दर्जन भर पादरियों की एड्स से मौत को बहुत गम्भीरता में लिया गया है कि यह जानलेवा बीमारी पादरियों में दिन ब दिन फैल रही है। सरकार को सलाह देने के लिए नियुक्त रेवरेड जेम्स लिच का मानना है कि कई पादरियों के इस रोग से मरने की जानकारी इसलिए नहीं मिली क्योंकि वे अपनी बीमारी छुपा गये।

एड्स ने रोमन कैथोलिक चर्च के सामने एक बड़ी समस्या खड़ी कर दी है। उन पादरियों का क्या किया जाये जिन्होंने ब्रह्मचारी रहने का वचन तोड़ कर धर्म के साथ गद्दारी की। यह बीमारी ज्यादातर समलैंगिकों का घर दर्शाती है। इसलिए अगर इस वजह से कोई पादरी बीमार हुआ है तो उसे भी धार्मिक अपराध माना जायेगा।

एड्स के बारे में धर्म गुरुओं की राय अलग अलग है। कुछ लोगों ने एड्स के रोगियों से सहानुभूति दिखाते हुए उन्हें माफ कर देने की सिफारिश की है। कुछ चाहते हैं कि उन्हें धर्म से बाहर कर दिया जाये।

चिकित्सक कहते हैं कि हर एड्स के मरीज की तरह बीमार पादरी भी यह जानते हुए कि उनका बचना नामुमकिन है हताश होकर दिन काटते हैं।

एक पादरी के लिए बची जिंदगी पूरी करना और भी कठिन हो जाता है। असलियत सामने आते ही एक झटके में वह अपनी नौकरी, ओहदा और समर्थन सबसे हाथ धो बैठता है।

इस मानसिक यातना झेलने में असमय कुछ ऐसे पादरियों की खबर है जो अपनी बीमारी छुपाये रखने के लिए अचानक गायब हो गये। कुछ बीमार होने के बाद समलैंगिकों के प्रति चर्च की बेरुखी से निंदा कर रहे हैं और कुछ न जाने क्यों इस बीमारी को भगवान की सेवा करने का एक रास्ता बता रहे हैं।

यह कैसा धर्म प्रचार

धर्म प्रचार का अधिकार केवल उस ब्राह्मण को दिया गया था जो ब्रह्मचर्याश्रम की सम्पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर प्रजा के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित कर। ईसाइयत में इस प्रकार की किसी नैतिक शिक्षा का अभाव होते हुए भी स्त्री पुरुषों को केवल अविवाहित रखकर ईसा के विचार का भार जिन पादरियों को सौंपा गया। फलत विकृत यौन सम्बन्धों से पीडित पादरी बहुचर्चित व भयकर ऐड्स रोग से पीडित हो रहे हैं।

जो शाखे नाजुक पे आशियाना बनेगा ना पायेदार होगा।

—शिवराम शास्त्री

ज्ञान का यह पर्व आया

जागरण का नाद होता,
चेतना का पुष्प खिलता,
सुप्त जन के चक्षुओं को-
ज्ञान का जन आज धोता
है भरा गरिमा गहन से-
ऋषि दयानन्द को जगाया।
ज्ञान का यह पर्व आया॥

आज, आओ। आर्य पुत्रो।
मातृ भू के हे सुपुत्रो!
बढ चलो, संकल्प पथ पर-
प्रण करो, निर्विघ्न, पुत्रो!
वेद का मधु गीत अनुपम
भूमि मण्डल को सुनाया।
ज्ञान का यह पर्व आया॥

वेद का ध्वज लहलहाए,
वेद का संगीत गाए-
विश्व यह, वैदिक पथों पर-
चल, सफलता ही बढाए,
दिव्य मानवता पथों पर-
चल, समृद्धि संगीत गाया।
ज्ञान का यह पर्व आया॥

—राधेश्याम आर्य

आर्यसमाज का योगदान

(पृष्ठ १ का शेष)

कहा—राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज ने उत्कृष्ट सेवाए प्रदान की हैं तथा आर्य युवाओं की राष्ट्र के लिए उल्लेखनीय भूमिकाएं रही हैं। उन्होंने कहा—भारत की तरुणाई को निर्माण और सृजन के कार्यों में अपने आपको लगाने की आज नितान्त आवश्यकता है। उन्होंने कहा-आज राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को हर कीमत पर बनाए रखना है। हमें व्यक्तिगत धर्म के साथ राष्ट्र धर्म का भी पालन करना चाहिए।

समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) श्री कुलानन्द भारतीय ने कहा—महर्षि दयानन्द ने सर्वांगीण विकास का मार्ग दिखाया है जिस पर चल कर नैतिक और सामाजिक उत्थान सम्भव है। युवाशक्ति में चारित्रिक और नैतिक शिक्षा का होना भी आज की आवश्यकता है। उन्होंने कहा—आर्यसमाज ने विभिन्न क्षेत्रों में सदैव उत्कृष्ट सेवाए की हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अध्यक्षता करते हुए कहा—राष्ट्रनिर्माण के लिए शराब, स्मैक आदि नशे और गोहत्या आदि के विरुद्ध युवकों को विशेष अभियान चलाना चाहिए।

सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की गतिविधियों का परिचय देते हुए राष्ट्रीय चेतना व जागृति में युवकों को आगे बढकर कार्य करने की अपील की।

सभामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने संस्था की गतिविधिओं पर प्रकाश डाला।

सम्पादकीय

पं० लेखराम जी बलिदान दिवस

शहीदे अकबर प० लेखराम जी के बलिदान दिवस पर ६ मार्च को शुद्धि का चक्र चलाकर अपने बिछुड़े भाई बहनो को वैदिक धर्म के झण्डे के नीचे लाकर शहीद के आदेशानुसार तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनो को साकार करके देश धर्म की रक्षा का व्रत हम सभी को लेना चाहिये।

प० लेखराम जी ने इस्लाम की आंधी और ईसाइयत के धार्मिक प्रलोभनो से समाज को बचाकर, वैदिक ज्ञान, आत्मबल और शक्ति से केवल रोका ही नही। किन्तु मुसलमान और ईसाई धर्म मे चले गये हिन्दुओ को शुद्धि चक्र से वापस पुन अपने घर मे ले लिया था।

शुद्धि के लिये अपने एक मात्र बालक सुखदेव को भी बलि कर दिया—अहमदिया मुसलमान उनकी विद्वत्ता और वैदिक तर्क के तीरो से बेहद परेशान थे और उनका मुकाबला करने मे असमर्थ थे इसी कारण उनकी मृत्यु ही एक साधन मात्र रास्ते से हटाने को मानकर मार डालने का षडयन्त्र रचने लगे। वह लेखराम लेखनी के धनी व तकरीर से कायल करने वाले महान् दयानन्द के सिपाही थे।

इतिहास के पृष्ट-परिवार मोह पुत्र मोह से ग्रसित हैं पुत्र मोह मे दशरथ को मरते देखा। यह मोह मानव की कोमल रेखा ही है। लेखराम तुम वस्तुत रेखा को लाघ कर उसदुर्बलता से पार पा गये। आप धन्य थे जो दयानन्द की अमर वाणी को जगमे प्रसारितकर नव सन्देश दिया। जग आपके अमर बलदान को कभी भुला नही सकेगा। सदा आपका नाम अपनी जिह्वा पर लेकर कहेगा कि दयानन्द के सन्देश को तहरीर और तकरीर से बन्द नही होने देना है।

मुहम्मदी मत की जडो को खोखला करके उनके मतो को पन्थ से हटाकर किनारे पर गोते लगवाये थे। इसी से परेशान होकर धर्मान्ध लोगो ने सन् १८९७,४ मार्च को लाहौर मे ईद का दिन था उसी दिन पडित जी प्रचारार्थ बाहर गये थे उस दिन हमला करने करने की योजना व्यर्थ हो गई।

६ मार्च को महर्षि दयानन्द की जीवन चरित्र लिखते हुए नई जीवन की अगडाई ले ही रहे थे। उसी समय एक मुसलमान ने छुरे से वार कर दिया ८-१० घाव आये। पडित जी उससे उलझ भी गये पर घाव होने से वह उन्हें गिराकर भागने मे सफल हो गया। अन्तडिया पेट से बाहर आ गई थी। इस घटना का समाचार सारे शहर मे आग की तरह फैल गया।

म० मुन्शीराम जी उसी दिन लाहौर आये हुए थे। प० जी को अस्पताल ले जाया गया। डाक्टरो ने अन्तडियो को जोडने का काम शुरू किया। वह मृत्युञ्जयी निश्चिन्त अपने दोनो हाथ सिर के नीचे रखे हुए थे म० मुन्शीराम जी को देखकर बोले नमस्ते लाला जी ? आप भी आ गये हजारो नर नारियो की भीड अस्पताल के बाहर खडी थी।

महात्मा मुन्शीराम जी ने उनके धैर्य व साहस को देखा उन्हे देखकर महात्मा जी का दिल दहल गया। हृदय भावुक हो उठा, प० जी बोले कि महात्मा जी "भूल-चूक क्षमा करना' यह सुनते ही म० मुन्शीराम जी पडित जी से बोले। पण्डित जी ! आप तो बडे-बडे सकटो मे कभी भी विचलित नही हुए और भगवान को सदा स्मरण करते रहे, अब भी उसी का स्मरण करें।

प० जी पवित्र गायत्री मन्त्र तथा विश्वानि देव मन्त्र का पाठ करने लगे। जो अन्त समय तक चलता रहा। शरीर से रक्त काफी जा चुका था शिथिलता अधिक आ गई थी, शरीर मे प्राण ही मात्र शेष थे। ४ बजे रात्रि तक निरन्तर सचेत रहे, न घर वालो की चिन्ता और न घातक पर क्रोध और न मृत्यु का भय अगर किसी बात की चिन्ता थी तो वही थी ऋषि दयानन्द के मिशन की तथा वैदिक धर्म के सिद्धान्तो की रक्षा हो—

प्राणो के निकलने तक अन्तिम सन्देश था आर्यों को तहरीर और तकरीर का काम बन्द नही होना चाहिये निरन्तर चलता ही रहे।"

उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस अमर शहीद प० लेखराम की मृत्यु पर जो सन्देश दिया था वह था कि—

शहीद के खून की एक एक बूद से एक एक वीर इस भारत भूमि पर पैदा होगा जो वैदिक धर्म की रक्षा और उसके प्रचार-प्रसार हेतु अपना जीवन-अर्पित करेगा।

आज उस महापुरुष के अमर-बलिदान दिवस पर यह व्रत ले कि हम आपस के भेद-भावो से हटकर परस्पर प्रीतिपूर्वक मिलकर कार्य करेंगे। तथा शहीद के शेष काम को पूण करेंगे।

सूचना

श्री आचाय वैद्यनाथ शास्त्री धर्माधिकारी सावदेशिक धर्मार्य सभा दिल्ली आये हैं और सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे अपने विभागीय एव आवश्यक काय को सम्पन्न करने के लिए ३० मार्च १९८७ तक निवास करगे। मिलने वाले आवश्यक कार्य से सभा कार्यालय में ४ बजे साय से ५॥ बजे साय तक मिल सकते हैं।

—सम्पादक

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ नियम ८

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान—	महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मदान नई दिल्ली-२
प्रकाशन का समय—	प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम—	सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता—	भारतीय
पता—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२
सम्पादक—	सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता—	भारतीय
पता—	पूर्ववत्
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी हैं, भागीदार या हिस्सेदार हैं सम्पूर्ण पूंजी के १ प्रतिशत से अधिक—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पत्र की स्वामिनी है
हिस्सेदार हैं उनके नाम व पते—	

मैं सच्चिदानन्द शास्त्री इस पत्र के द्वारा घोषणा करता हू ! कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान एव विश्वास है, सही है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रकाशक व मुद्रक

अकाली दल राजनीतिक पार्टी नहीं भारतीय सविधान का खुला उल्लंघन

नई दिल्ली २४ फरवरी। आज ससद के अधिवेशन मे इस प्रश्न से एक अत्यन्त सवेदनशील वातावरण उपस्थित हो गया कि क्या भारतीय सविधान के अनुसार अकाली दल को राजनीतिक पार्टी स्वीकार किया जा सकता है।

जनता पक्ष के नेता प्रोफसर मधु दण्डवते ने स्मरण दिलाया कि सविधान निर्मातृ सभा ने धर्म को राजनीति से पृथक रखने के प्रश्न पर गम्भीरता से विचार विनिमय किया था। परन्तु दुर्भाग्यवश भारत सरकार इस आशय का कोई वैधानिक बिल ससद मे नही लाई।

ससद के स्पीकर श्री बलराम जाखड ने स्वय मधुदण्डवते के प्रस्तावो से सहमति प्रकट की। और कहा कि हमारे यह वाद विवाद स्वय इस समस्या का समाधान उस समय तक नही कर सकते जब तक उनको कार्यान्वित न किया जाए।

श्री प्रो० मधुदण्डवते ने नह सिद्ध करने के लिए कि अकाली दल एक साम्प्रदायिक पार्टी है अकाली दल के विधान से एक उद्धरण प्रस्तुत किया जिसके आधार पर सिद्ध होता है कि अकाली दल के सदस्य केवल सिख ही बन सकते हैं और उसके पदाधिकारी का अमृतधारी होना अनिवार्य है। प्रोफेसर सा० ने यह माग की कि पजाब के मुख्यमन्त्री श्री सुरजीतसिंह बरनाला भारतीय भाषा मे यह घोषणा करे कि वह धर्मनिरपेक्षता (सैक्यूल-रिज्म) के सन्देश वाहक हैं। यदि वे धर्मनिरपेक्षता पर वचनबद्ध है अकाली दल के सविधान मे परिवर्तन लाना चाहिए।

तीन घटे के इस वाद विवाद के उत्तर मे गृहमन्त्री ने कहा कि सरकार इस आशय का विधान बनाने पर विचार करेगी। गृहमन्त्री ने अपने ३५ मिनट के भाषण मे अकाली दल (बादल ग्रुप) के सदस्य श्री चरणजीतसिंह बालिया को इस बात पर आडे हाथो लिया कि वे क्यो खालिस्तान व आतकवाद पर अपनी पर्टी के मन्तव्य के सम्बन्ध मे स्पष्टीकरण देने से जी चुरा रहे हैं। गृहमन्त्री ने श्री बालिया को सरबत खालसा मे पारित उस प्रस्ताव के उद्धरण सुनाए जिस मे खालिस्तान की माग का समथन किया गया। और श्रीमती गाधी, जनरल वैद्य और सन्त लोगोवाल के हत्यारो को सम्मानित किया गया। श्री बूटासिंह ने श्रीबालिया को चैलेंज दिया कि यह प्रमाण सग्रह सत्य नही है तो उत्तर दीजिए। श्री बालिया ने इसका कोई उत्तर नही दिया।

सारा सदन इस विषय पर एक मत था कि आतकवाद व धार्मिक अति-वादी शक्तियो का मिलकर व डट कर मुकाबिला किया जाए।

खालिस्तानियों को अन्तर्राष्ट्रीय फटकार

यह कहना कठिन है कि वे कौन से सिख हैं जिन्होंने राष्ट्रसघ मे परामर्श दाता का पद प्राप्त करने की प्रयत्न किया। यह उनका दुर्भाग्य है कि एक भी सदस्य ने उनके दृष्टिकोण का समर्थन नही किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि ऐसे प्रश्नो का निर्णय करने वाली समिति ने सर्वसम्मति से उनकी माग को निरस्त कर दिया। कहा जाता है कि राष्ट्रसघ ने लगभग ७०० सस्थाओं को ऐसी मान्यता दे रखी है। जिसका अर्थ यह है कि उनकी ओर से प्रस्तुत आपत्तिओ अथवा विज्ञप्तिओ पर विचार होता है। यद्यपि इसका तात्पर्य यह नही होता कि विचार के पश्चात् जो निर्णय होते हैं उनकी कोई वैधानिक स्थिति बन जाती है। अधिक से अधिक उनकी नैतिक महत्ता ही होती है। सम्बन्धित समिति ने सर्वसम्मति से इस सिख सगठन का महत्व मानने से इन्कार कर दिया है। उसने यथाशक्ति यह सिद्ध करने का प्रयास किया था कि सिख भारतवर्ष मे एक पृथक राष्ट्र है और भारत सरकार उनके विरुद्ध वश विरोधी भेद भाव की नीति बरतते हुए उन्हे अपने अत्याचारो व आतकवाद का शिकार बना रही है। इस क्रम मे सब से बडी व विचारणीय बात यह है कि अमेरिकन सरकार के प्रतिनिधि ने सब से पहले स्पष्ट शब्दो मे कहा कि यह एक अवैधानिक बनावटी सस्था है जिसकी कोई प्रतिनिधित्व पूण स्थिति नही। अमेरिका की भान्ति रूस ने भी इसी भान्ति इस सस्था की माग को निरस्त कर दिया। उसने अपने प्रतिनिधि स्वरूप को वर्णन करते हुए कहा कि ससार भर के देशों में उसके लगभग २५ हजार सदस्य हैं। इस सबके होते भी राष्ट्रसघ ने उसे स्वीकृत करने से इन्कार कर दिया।

आशा करनी चाहिए कि इस स्पष्ट फटकार के पश्चात् भारत व भारत के बाहर के खालिस्तान समर्थको को यह पता चल गया होगा कि उनकी करतूतो का प्रभाव ससार पर क्या हुआ है। भारत के लोग तो जानते ही थे कि खालिस्तान के नाम पर कुछ लोग खुली गुण्डागर्दी हत्या काण्डो, चोरी डाको और छीनाझपटी मे लगे हुए हैं। अपने इन निन्दनीय राजनीतिक गतिविधियो के लिये एक राजनीतिक ढोग रच लिया था। उनका विचार था कि इस प्रकार वे उन सरकारो को पथभ्रष्ट करने में सफल हो जायेंगे। उनके प्रयासो की गर्हिता और निराशाओ का प्रमाण इससे बढकर और क्या हो सकता है कि पाकिस्तान तकको भी यह साहस नही हुआ कि उनके समर्थन मे मतदान ही कर दे। इससे पूर्व पाकिस्तान भारत सरकार से सधि कर चुका है कि दोनो ने दोनो देशो के टुकडे करने के प्रयासो की कोई सहायता नही करनी।

सच तो यह है कि खालिस्तान केवल एक आतकवादी सस्था है जो अपने अपवित्र उद्देश्यो की सफलता के लिए सिखो की धार्मिक भावनाओ से खिल-वाड करती है। भारत के सिखो की बडी भारी बहुसख्या उस खालिस्तान को ठुकरा चुकी है। विदेशो मे भी ऐसा ही हो रहा है। यही कारण है कल तक जो स्वतन्त्र खालिस्तान की माग करते थे आज भारत के टुकडे न करने की दुहाई दे रहे हैं।

— के, नरेन्द्र प्रताप दिल्ली

महिलाएँ पादरी बन सकेंगी चर्च आफ इंग्लैण्ड का निर्णय

लदन। एक ऐतिहासिक निर्णय मे चर्च आफ इग्लैण्ड ने एक विधान की आज्ञा दे दी है जिसके अन्तर्गत महिलायें भी अब पादरी बन सकेंगी। यह पेशा अभी तक केवल पुरुषो के लिए सुरक्षित था। यह निर्णय इग्लैण्ड के चर्च ने ४४ पादरियो की रिपोर्ट पर दिया है। निर्णय के पक्ष मे ३१७ और (विरोध मे १४५ मत आए। दो पादरियों ने मतदान मे भाग नही लिया। एक पादरी पीटर बोल्वेज ने कहा है कि यदि महिलाओं को पादरी बनाया गया तो वे एक वनवासी चर्च आफ इग्लैण्ड की स्थापना करेंगे।

इस्लामी भ्रातृभाव के नमूने

खुदा का नाम लेकर एक दूसरे की हत्या

-श्री के० नरेन्द्र सम्पादक प्रताप दिल्ली-

मुस्लिम दार्शनिक एव बुद्धिजीवी लोग सदा इस्लामी भ्रातृभाव की दुहाई देते रहते हैं। मुसलमानो के जितने सम्मेलन होते हैं। उनकी जितनी सरकार हैं उनमे इसी बात पर विशेष बल दिया जाता है कि वह मुसलमान हैं। कल्मा पढने वाले हैं और ससारभर के कल्मा पढने वाले लोग परस्पर भाई-भाई हैं एक ही खुदा के बन्दे हैं। इसलिए इन सम्मेलनो में पद-पद पर इस बात पर बल दिया जाता है कि इस्लाम के जितने नाम लेवा है वह सब भाई-भाई हैं और ससार की कोई शक्ति उन्हे एक दूसरे से दूर या एक दूसरे के प्रति आक्रामक नही बना सकती। यह लोग इस घोषणा के इतने दास हैं कि सूर्य की भाति प्रकाशमान वास्तविकता भी उन्हे दिखाई नही देती है।

ईरान-इराक गत सात वर्ष से एक दूसरे के रक्त के पिपासु है परन्तु दोनो ही दम इस्लाम का भरते हैं। ईरान भी इस्लाम की दुहाई देता है। इराक भी अपने को इस्लाम का सेवक बताता है। परन्तु इसी इस्लामी भ्रातृभाव का प्रमाण यह है कि गत सात वर्ष मे कई लाख मुसलमान एक दूसरे के आक्रमणो का शिकार बनकर मृत्यु का ग्रास बन चुके हैं। आश्चर्य यह है कि जब कोई इराकी मरता है तो वह अपने आपको मुहम्मद का सेवक कहकर दम तोडता है और जब कोई ईरानी मरता है तो वह भी इस्लाम के सम्मान की रक्षा मे बलिदानी कहलाता है। इसी प्रकार इस्लामी भ्रातृभाव के नाम पर लाखो ही कल्मा पढने वाले परस्पर एक दूसरे की हत्या कर चुके हैं।

पाकिस्तान व बगला देश के मुसलमान मुहम्मद व अल्लाह का नाम लेकर एक दूसरे की गर्दन पर सवार हुए। जैसे आजकल पाकिस्तान के शहर कराची मे मुहाजिरीन और पठान इस्लाम की दुहाई देकर एक दूसरे की गर्दनो का काटना प्रारम्भ कर देते हैं। लेबनान मे फिलिस्तीनी मुसलमानो के खून के प्यासे सीरियन व अमली मुसल्मान हो रहे हैं। इन्ही दिनो मे सीमा प्रान्त में १७० मुसल्मान मर चुके है। इन्हे काफिरो ने या किसी गैर मुस्लिम ने वध नही किया। अपितु उन्होने ही जो अपने को कल्मा पढने वाला कहते हैं। पाकिस्तान के शिया सुन्नी एक दूसरे को एक आख देख नही सकते। शिया और सुन्नी दोनो ने मिलकर अहमदियो को गैर मुस्लिम घोषित कर दिया है। और जहा कोई अहमदी उन्हें दिखाई दे उनका दिल यही करता है कि उसकी हत्या करके उसे जहन्नुम भेज दे। और स्वय जन्नत मे उनकी प्रतीक्षा करने वाली हूरो (अप्सराओ) से जाकर गले मिल जाए।

ऐसा क्या है? क्यो मुसल्मान मुसल्मान के रक्त का प्यासा हो रहा है। केवल इसलिए कि इस्लाम का सारा इतिहास उसकी सारी शिक्षाए उसकी सारी परम्पराए उसमे ऐसा अन्ध विश्वास उत्पन्न करती है। आज इस्लामिक फण्डामेन्टलिजम का आदोलन (इस्लामी बुनियादी स्थापना) प्रकट हो रहा है। वह भी इन्हीं इस्लामी परम्पराओ को जीवित रखने के लिए पैदा हो रहा है। सत्य यह है कि यह भ्रातृभाव केवल प्रस्ताव व भाषणो के शब्दो तक ही सीमित है। मुसल्मान चूकि इन नारो की गुलामी स मुक्त होने को तैयार नही। इसलिए उनके सामने यह तमाशा बन रहा है कि दोनो ओर से अल्लाहो अकबर का नारा लगाकर एक दूसरे की गर्दन धड से अलग की जा रही है। आज तक जो तमाशा मुसलमानो मे हो रहा था अब कुछ उन्मादी सिख उसे सिखो मे भी देखना चाहते हैं और इसके उदाहरण हमें नित्य प्रति मिलने प्रारम्भ हो गए हैं। ●

कलकत्ता के भ्रमित मुसलमानों को सही मार्ग दर्शन की आवश्यकता

गत दिसम्बर मास मे आर्यसमाज कलकत्ता के वार्षिकोत्सव पर कुछ मतान्ध मुसलमानो के बहकावे मे आकर पुलिस सत्यार्थप्रकाश की प्रतियां उठा कर ले गई थी परन्तु शीघ्र ही उसको सद्बुद्धि आ जाने से स्थिति सुधर गई। सत्यार्थ प्रकाश न केवल आर्यों का धर्म ग्रन्थ बन गया है अपितु वह ससार भर के करोडो बुद्धिजीवियो का प्रेरणा स्रोत बन चुका है। ससार की दर्जनों भाषाओ मे उसके अनुवाद लाखो की सख्या मे प्रकाशित हो चुके हैं। अनेक उच्च जीवनो का इस पवित्र ग्रन्थ ने निर्माण किया है। यह शाश्वत सत्य का सन्देश वाहक है।

अब फिर कुछ मुस्लिम सम्प्रदायवादी पत्र इस आन्दोलन को हवा दे रहे हैं कि सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध मे मुसलमानो मे भ्रम भ्रान्ति उत्पन्न की जाए। आर्यसमाज कलकत्ता के आचार्य प० उमाकान्त जी उपाध्याय ने एक वक्तव्य इस विषय म हमे भेजा है जिसमे किसी कलकत्ता के साप्ताहिक बगला "दामाल" को उद्धृत किया है। प० जी बडे सुलझे विचार के हैं उन्होने सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध मे फैलाई जानेवाली भूल भ्रान्तियो का सुन्दर निराकरण किया है। वास्तव मे सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए जिस उच्चकोटि के आलोचक की मानव मात्र की अपेक्षा होती है महर्षि दयानन्द उसी उच्चस्तर के समालोचक थे।

महर्षि ने कुरान की आलोचना की है। पैगम्बर मुहम्मद सा० के सम्बन्ध मे उन्होने १ शब्द भी चौदहवें समुल्लास मे नही लिखा। न इस्लाम के किन्ही और ग्रन्थो की कोई चर्चा उन्होंने की। यह उनकी आलोचना का ही सफल था १४ वें समुल्लास के प्रकाशन के बाद जो कुरान के भाष्य प्रकाशित हुए उन सभी मे महर्षि दयानन्द के विचारों की छाप है। वे पुराने अनुवादो से सर्वथा भिन्न सुधारवादी है।

अलीगढ विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सय्यद अहमद ने अपने कुरान के भाष्य मे लिखा —

एक कूढ मगज मुल्ला यह समझता है कि दोजख व जन्नत किसी स्थान विशेष पर है और वहा वह सभी सम्मान मिलेंगे जो आजकल के गन्दे भटियार खानो मे मिलते हैं।

सर डा० मुहम्मद इकबाल ने लिखा —

अमल से जिन्दगी बनती है दोजख भी जहन्नुम भी।
ये खाकी अपनी सीरत मे नूरी है न नारी है॥

इस प्रकार के सैकडो उदाहरण प्रचलित इस्लामी साहित्य से प्रस्तुत किए जा सकते हैं जिनमें महर्षि की आलोचना ही नही सत्य-दर्शन का स्पष्ट प्रभाव है।

वास्तव मे ऐसे साहित्य का निर्माण आवश्यक है जो मुसलमानो को सही मार्गदर्शन कर सके व महापुरुषो के कार्यों का सही मूल्यांकन हो सके।

कलकत्ता समाज अपने साहित्य का बगला भाषा मे प्रकाशन करे ताकि जिस क्षेत्र से आन्दोलन उठे उसी क्षेत्र की जनता सत्य असत्य का निर्णय कर सके।

दिल्ली के स्कूलों में पंजाबी की शिक्षा को आवश्यक बनाने का षडयंत्र

पजाबी अकादमी (दिल्ली प्रशासन) द्वारा स्थानीय नगर निगम के सभी स्कूलो को एक परिपत्र भेजकर यह आदेश दिया गया है कि वे अकादमी द्वारा प्रस्तावित पजाबी (गुरुमुखी) के शिक्षको को अपने यहा नियुक्त करे। यह परिपत्र एक प्रकार से स्कूलो के मुख्याध्यापको के नाम जारी किया गया हुक्मनामा है। जिसके द्वारा दिल्ली के स्कूलो मे पजाबी की शिक्षा को अनिवार्य बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग ने अकादमी को पजाबी के शिक्षको के चुनाव एव नियुक्ति का एकाधिकार दे दिया है। इस तरह प्रकारान्तर से निगम ने एक सम्प्रदाय विशेष की तुष्टिकरण की नीति का ही परिचय दिया है। अन्यथा यह विचारणीय है कि स्थानीय स्कूलो मे कितने विद्यार्थी होगे जो पजाबी पढना चाहेंगे ? उनकी गणना उगलियो पर की जा सकती है। दूसरी बात यह कि यदि पजाबी पढना जरूरी समझा जा सकता है तो सस्कृत पढाने की व्यवस्था क्यो नहीं की जा सकती ? सभी विद्वान मानते हैं कि सस्कृत समस्त भारतीय भाषाओ की जननी है तो फिर उसकी उपेक्षा क्यो ? यदि नगर निगम अपने स्कूलो मे सस्कृत पढाने की व्यवस्था करे तो पजाबी पढने वाले विद्यार्थियो की अपेक्षा सस्कृत पढने वाले विद्यार्थियो की सख्या कही अधिक होगी।

दिल्ली के स्कूलो के अधिकाश विद्यार्थी हिन्दी के साथ अग्रेजी पढते हैं। फिर पजाबी की शिक्षा की कौन सी ऐसी आवश्यकता आ पडी है जो नगर निगम पजाबी शिक्षको की नियुक्ति पर इतना व्यय करके जनता के ऊपर व्यर्थ का आर्थिक बोझ लाद रहा है ? सम्भवत इस योजना के पीछे दिल्ली के महापौर की व्यक्तिगत आकाक्षा काम कर रही है। जिसका सामाजिक दृष्टिकोण मे कोई औचित्य नही है।

दिल्ली मे, जहा पजाबी पढने वालो की सख्या नगण्य है नगर प्रशासन उसके शिक्षण के लिए इतना प्रयत्नशील है। इसके विपरीत पजाब मे, जहां ४८ प्रतिशत हिन्दू रहते हैं, और जिनके बच्चे हिन्दी पढना चाहते हैं, वहां राज्य सरकार की ओर से किसी भी स्कूल मे हिन्दी की शिक्षा का कोई प्रबन्ध नही किया गया है? क्या यह वहा रहने वाले हिन्दुओ के मौलिक अधिकारो का हनन नही है। हमारी केन्द्रीय सरकार इस विषय मे क्यो चुप है ? सरकारी तन्त्र की नीतियो मे इस प्रकार की विसगति जन-आक्रोश को जन्म देती है, जिसके लिये सरकार स्वय जिम्मेदार है। इस प्रकार विसगतियो को जितनी जल्दी दूर किया जाय जन हित मे उतना ही अच्छा होगा।

उपर्युक्त सदर्भ मे हमारी माग है कि पंजाबी अकादमी द्वारा जारी किये गये परिपत्र को तुरन्त वापिस लिया जाय। दिल्ली एक महानगर है, जहा देश के विभिन्न प्रान्तो और प्रदेशो मे आये हुए हजारों लोग रहते हैं और उनके बच्चे सरकारी स्कूलो मे भी पढते हैं। यदि वे लोग भी नगर, निगम के स्कूलो मे गुजराती, मराठी, तमिल या तेलगु आदि भाषायें पढाने की माग करने लगें तो उनकी माग की अवहेलना करना कहां तक न्यायसगत होगा ? दिल्ली प्रशासन इस पर गम्भीरता से विचार करे।

—शिवराज शास्त्री

आर्य समाज की भावी रूप रेखा

(बुद्धि जीवियों के सम्मेलन की आवश्यकता)

-डा० प्रशान्त वेदालंकार ७/२, रूपनगर, दिल्ली-७-

(गताक से आगे)

जब मैंने देखा कि आर्यसमाज की कोई सस्था इस महान् कार्य की ओर ध्यान नहीं दे रही तब मैंने तक मई १९८६ मे कुछ लोगो को एकत्र किया। यह बैठक श्री स्वामी विद्यानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। इसमे दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के प्रोफेसर डा० कृष्णलाल, डा० सत्यदेव चौधरी (भू० पू० प्रोफेसर पश्चिमी जमनी, सुप्रसिद्ध साहित्यकार पद्मभूषण श्री क्षेमचन्द्र जी सुमन, गुरुकुल कागडी के भूतपूर्व इतिहास के प्रोफेसर वेदव्रत जी, श्री राजेन्द्र दुर्गा (मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा) तथा अनेक गण्यमान्य विद्वान् एव विचारक एकत्र हुए। मैंने सबके सामने अपने मन की उक्त पीडा का वर्णन किया। मैंने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि बुद्धिजीवियो प्राध्यापक, चिन्तक, विवेचक, शास्त्र अनुशीलक आदि का एक सम्मेलन बुलाकर आर्यसमाज की भावी रूपरेखा पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाए। सबने मेरे इस प्रस्ताव का न केवल समर्थन किया वरन् इस प्रकार की सगोष्ठी के द्वारा आर्यसमाज को गतिशील बनाने के लिए इसे बहुत आवश्यक समझा। वहा यह निर्णय लिया गया कि बडे स्तर पर एक विचार गोष्ठी करने से पूर्व छोटे स्तर पर विभिन्न प्रान्तो मे कुछ बैठकें आयोजित की जाए। उनमे उक्त गोष्ठी की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जाए और उन बैठको मे उपस्थित आर्य सज्जनो से इस सम्बन्ध मे उनके विचारो को सुना जाए।

इसी मध्य मेरा यूरोप जाने का कार्यक्रम बन गया। मैंने यह आवश्यक समझा कि यूरोप जाने से पूर्व इस सम्बन्ध में एक पत्रक विभिन्न बुद्धिजीवियो व विभिन्न आर्य-पत्र-पत्रिकाओ को भेज दिया जाए। उस पत्रक मे मैंने बुद्धिजीवी सम्मेलन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए लिखा 'हमें उन कारणों का अनुसन्धान करना चाहिए जिस कारण हमारे आर्यसमाज के आन्दोलन में शिथिलता आई है और जिन कारणो से आर्यसमाज के परिवारो की सन्तान आर्यसमाज के प्रति उदासीन हो रही है। मैंने लिखा कि आज अनेक ऊचे ऊचे पदो पर आर्यसमाजी आसीन हैं, पर आर्यसमाज के सगठन मे वे रुचि ग्रहण नही करते। '' ''आदि आदि।

यूरोप में ११ जून से १० सितम्बर १९८६ तक रहा। यूरोप मे इगलैण्ड तथा हालैण्ड मे आर्यसमाज का अच्छा कार्य है। हमने फ्रास तथा इटली मे यज्ञ करके वेदमन्त्रो का यूरोपीय लोगो को अर्थ समझाया। उन सभी को वैदिक मन्त्रो मे विश्वशान्ति व विश्वबन्धुत्व का भाव उत्पन्न करने की शक्ति प्रतीत हुई। इस समय सारा विश्व किसी ऐसे सार्वभौम ज्ञान को प्राप्त करने के लिए लालायित है जो उन्हें व्यक्तिगत तनावो से हटाकर पारस्परिक सामाजिक, राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय शान्ति प्रदान कर सके। मुझे बराबर इस यात्रा में यह लगता रहा कि आर्यसमाज ही अपने कार्य का नई दिशाओ मे विस्तार करके विश्व की उक्त आवश्यकता को पूरा कर सकता है। मुझे वहा भी आर्यसमाज के मच पर बुद्धिजीवियो के सम्मेलन के द्वारा आर्यसमाज की भावी रूपरेखा निर्धारित करने की आवश्यकता का निरन्तर अनुभव होता रहा।

जब मै लौटा तो मैंने देखा कि अनेक आर्यसमाजी सस्थाओ ने मेरे द्वारा भेजे गये पत्रकों का उत्तर दिया। अनेक आर्यसमाजी पत्र-पत्रिकाओ ने मेरे उस पत्रक को अपने-अपने पत्रो मे प्रकाशित किया। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य मर्यादा मे उस पत्रक को आधार बना कर तीन सम्पादकीय लिखे। श्री भवानीलाल जी भारतीय (अध्यक्ष दयानन्द पीठ, पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़) ने उस विषय पर लम्बा पत्र व्यवहार किया और इसकी महती आवश्यकता अनुभव की। आर्यमित्र के सम्पादक श्री रमेशचन्द्र जी ने भी इस कार्य मे अपनी रुचि प्रदर्शित की। श्री भद्रसेन जी (साधु आश्रम होशयारपुर) ने लिखा 'मेरी दृष्टि मे एक वास्तु कलाविद् की तरह एक विकास का आदर्श मानचित्र बनाया जाए, जिसको सभी के सहयोग से सम्पन्न किया जाए। वस्तुत इस समय बिना योजना के श्रम, शक्ति, समय, वित्त आर्यसमाज का लग रहा है। योजना तो कुछ व्यक्ति ही मिलकर बना सकते हैं। उन्होने इस कार्य का आरम्भ दिल्ली से करने का परामर्श दिया। श्री लल्लन (मन्त्री आर्यसमाज बदायू'' ने लिखा—यह सत्य है कि आर्यसमाज राष्ट्र का नेतृत्व कर सकता है जनमानस को प्रेरित कर सकता है। आर्यसमाज की जागरूक भूमिका को अपना कर ही राष्ट्र की टूटन को बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्यसमाज मे गतिशीलता की आवश्यकता है, परन्तु भौतिकवादी बढती प्रकृति, अधिकार प्राप्त करने की मनोवृत्ति और उसके गम्भीर परिणामो से जनमानस के मस्तिष्क पर अच्छी छाप नही है। शक्ति, सत्ता और धन ही लक्ष्य है जो देश के लिए घातक है, हर क्षेत्र मे मर्यादा टूटती जा रही है। सदाचार और नैतिकता मखौल बनकर रह गया है। आपके प्रयासो मे हम भी सम्मिलित है।' इस प्रकार के अनेक पत्र आए। बम्बई से डा० रवीन्द्र अग्निहोत्री (राजभाषा अधिकारी स्टेट बैंक) ने इस कार्य मे उत्साह दिखाया और बुद्धिजीवियो की एक लम्बी सूची भेजी जो पूरे देश भर के बैंको व अन्य क्षेत्रो मे उच्च पदो पर कार्यरत हैं। वे सभी आर्यसमाज से सहानुभूति रखते हैं, परन्तु आर्यसमाज मे निष्क्रिय हैं। मेरे पास अनेक पत्र हैं, जिनमे अनेक विद्वानो ने देश की दुरवस्था पर आसू बहाये हैं और इस अवस्था के सुधार के लिए आर्यसमाज को गतिशील बनाने के लिए अनेक सुझाव दिये हैं।

मैंने इस सम्बन्ध मे विभिन्न प्रदेशो मे कुछ विचार गोष्ठिया भी आयोजित की। जालन्धर मे श्री वीरेन्द्र जी से, अबोहर मे प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' तथा डा० मनु विश्वबन्धु (डी० ए० वी० कालिज), लखनऊ मे डा० हर्षनारायण, श्री जयदेव शर्मा तथा श्री इन्द्रचन्द्र जी से मैं मिला और उक्त सगोष्ठी की रूपरेखा पर मैंने विस्तार से चर्चा की। सभी ने उसकी सफलता के लिए अपना सहयोग देने का विश्वास दिलाया। जयपुर मे श्री सत्यव्रत सामवेदी (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान) का कहना था कि यह सच है यदि अभी आर्यसमाज न सभला तो सामने महान् विनाश ही विनाश है। आर्यसमाज को राष्ट्रीय समस्याओं के सशोधन मे जुटना चाहिए उसके बिना यह धर्म व आध्यात्मिकता का प्रचार न कर सकेगा। कलकत्ता मे श्री सीताराम जी आर्य (प्रधान आर्यसमाज कलकत्ता) श्री गजानन्द आर्य (उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली) तथा श्री आनन्द आर्य (कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल) ने आर्यसमाज कलकत्ता मे वहा के बुद्धिजीवियो की एक सगोष्ठी आयोजित की जिसमे लगभग ७५ उत्साही बुद्धिजीवी आर्यसमाजियो ने भाग लिया। लगभग २० व्यक्तियो ने उस गोष्ठी मे अपने विचार व्यक्त किये, जिसमे प० उमाकान्त उपाध्याय आदि प्रमुख थे, सभी ने कहा कि इस विषय पर गम्भीरता से विचार होना चाहिए। इसी प्रकार सिलीगुडी मे वहा के आर्यसमाज के मन्त्री श्री सर्वेश्वर झा ने दो दिवसीय एक विचार गोष्ठी आयोजित की जिसमे वहा के अध्यापको, प्राध्यापको, सपादको, शिक्षाशास्त्रियो ने भाग लिया और अपने अपने विचार रखे। विशेष रूप से शिक्षा के माध्यम को लेकर आर्यसमाज की भूमिका इस विषय पर वक्ता बोले। यह सबने कहा कि इस प्रकार के विषयो पर वर्तमान परिस्थितियो मे एक विचारगोष्ठी के द्वारा आर्यसमाज को अपनी नीति निर्धारित करनी चाहिए।

आपको स्मरण होगा कि जब बौद्ध मत मे शिथिलता आने लगी थी तो धर्म सगीतिका आयोजन करके उसके शैथिल्य को दूर करने व उसकी रूप रेखा मे युगानुरूप परिवर्तन करने तथा उसे प्रभावी बनाने के लिए व्यापक

योजना बनायी गयी थी। इस प्रकार की तीन संगीतियां हुईं। इतिहास प्रमाण है कि शिथिल बौद्धमत सक्रिय हुआ, उसमें समयानुसार अनेक परिवर्तन हुए तथा उसका व्यापक प्रसार हुआ। आज २५०० वर्षों के उपरान्त भी उसमे जीवन है, वह ससार का एक प्रमुख मत है।

मेरी योजना यह है कि पहले बुद्धिजीवी आर्यसमाजियों का एक तीन-दिवसीय सम्मेलन हो, जिसमे विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, प्राध्यापक, उच्च पदों पर आसीन प्रशासनाधिकारी, सम्पादक, लेखक, अभियन्ता, चिकित्सक तथा अन्य प्रमुख व्यक्ति इसमें एकत्र हो, और उसमें अपने अपने विचार व्यक्त करें। ये विचार लिखित रूप मे हों। उन लिखित निबन्धों पर प्रतिनिधि अपने विचार व्यक्त करें। बाद मे उन लिखित निबन्धों व प्रतिनिधियों के विचारो को प्रकाशित करके उन्हें प्रचारित और प्रसारित किया जाए, और कुछ समय के उपरान्त उन पर पुनः विचार हो और अन्त में सार्वदेशिक सभा, प्रतिनिधि सभाओं व प्रादेशिक सभा को वे विचार क्रियान्वित करने के लिए दिये जाएं।

यह सच है कि किसी विषय पर सैद्धान्तिक विचार उतना कठिन नहीं है जितना कि उसको व्यवहार रूप में लाना। अतः उक्त सम्मेलन में सैद्धान्तिक विचारों के क्रियान्वयन पर भी एक सगोष्ठी आयोजित करने का विचार है।

इस सारी योजना मे विपुल धनराशि के व्यय होने का अनुमान है। हम विद्वानों को उनके लिखित वक्तव्यों पर पारिश्रमिक न भी दे सकें तो भी उनके मार्ग व्यय आदि की व्यवस्था करनी ही होगी। उनके सम्मानपूर्वक निवास आदि का प्रबन्ध जहां वह सम्मेलन हो, उस स्थान के प्रसिद्ध आर्य-समाजी परिवारों में किया जाए। एक मोटे अनुमान के अनुसार इस सब पर कम से कम ५० हजार रुपये व्यय होगा। इसके लिए हमे आर्यसमाज को गतिशील बनाने के इच्छुक व्यक्ति व्यक्तियों के सक्रिय सहयोग की आवश्यकता है। हम विभिन्न आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं व सार्वदेशिक सभा से भी इसमें सहयोग देने की अपील करते हैं। हमें विश्वास है कि आप शीघ्र ही धनराशि भेजकर अपने निर्णय से हमें अवगत कराएंगे।

इसके लिए हमने 'आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन' नाम से एक संस्था का गठन किया है, धन प्राप्त होने पर उसी के नाम से एक खाता खोलकर कार्य का समुचित संचालन एक समिति करेगी। समिति के पदाधिकारियों का निर्णय शीघ्र ही एक बैठक में किया जाएगा। उसके लिए पाठक भी अपने सुझाव भेज सकते हैं।

प्रस्तावित विचारगोष्ठी में मुख्य रूप से तीन विषयों पर विचार होगा—

(१) 'भारत की शिक्षा समस्या : विशेष रूप से आर्यसमाज से सम्बद्ध शिक्षा सस्थाएं।' भारत की शिक्षा समस्या में भारतीयता व शिक्षा के माध्यम की समस्या प्रमुख है। आर्यसमाज से सम्बद्ध शिक्षा संस्थाएं तीन प्रकार की हैं—(क) गुरुकुल (ख) आर्य विद्यालय एव आर्य महाविद्यालय तथा (ग) डी ए वी. सस्थाए। ये सभी प्रकार की संस्थाएं अपने आदर्शों से हट चुकी हैं। उसका मूल कारण भारत सरकार की शिक्षा नीति है। हम अपनी संस्थाओं का विकास अपने आदर्शों के अनुरूप न करके उसे सरकारी शिक्षा-नीति के अनुसार चलाने के लिए बाध्य हो गये हैं। इसमे न उनका स्वतन्त्र विकास करने की क्षमता है और न भारत सरकार से संघर्ष कर उनको अपने अनुरूप बनाने की शक्ति है। डी. ए. वी. सस्थाओं का विकास हम 'पब्लिक स्कूलों' की नकल पर कर रहे हैं। उसके अपने आदर्श तिरोहित हो चुके हैं। निबन्ध लेखक इस पर दिशा निर्देश करेंगे। इसी प्रसंग में भारतीय युवकों के चरित्र निर्माण एव उनमें सांस्कृतिक रिक्तता की समस्या पर भी विचार किया जाएगा।

(२) 'राष्ट्रीय समस्या और आर्यसमाजें। हमारा राष्ट्र इस समय एक ओर विघटनकारी तत्वों से जूझ रहा है। उस पर विदेशी शक्तियां दबाव डालकर उसे फिर से पराधीन करने के उपक्रम में लगी हैं। दूसरी ओर अभारतीय एवं भारतीय संस्कृति से भिन्न तत्व हावी होकर हिन्दुत्व को समाप्त करने में लगे हैं। देश मे अल्पसंख्यकों की समस्याएं भयंकर रूप से है। सत्तारूढ़ दल संतुष्टीकरण की नीति को अपना रहा है। सविधान में अल्पसंख्यकों व हरिजनवर्ग को दिये गये विशेषाधिकारों का वैदिक वर्णव्यवस्था से क्या सम्बन्ध है? क्या आश्रम व्यवस्था देश की बेकारी समस्या को आज भी दूर कर सकती है? भारतीय स्त्री क्या आज भी घर की सम्राज्ञी बनने में समर्थ है? दहेज तथा अन्य कारणों से स्त्री की दुर्दशा को दूर करने में आर्य-... क्या करे? आदि प्रश्नों का विवेचन दूसरे विषय के अन्तर्गत होगा।

(३) 'आर्यसमाजों के पारस्परिक संघर्ष : आर्यसमाज के संविधान व कार्यक्रमों में युगानुरूप परिवर्तन की आवश्यकता' : आर्यसमाज एक संस्था अथवा संगठन भी है और एक विचार एव सिद्धान्त भी। आर्यसमाज के सिद्धान्त सर्वथा वैज्ञानिक हैं और आज के युग में भी सर्वथा उपयोगी हैं, पर हम उनका प्रचार उतने सशक्त रूप से नहीं कर पा रहे। उनका एक कारण हमारे सगठन की कुछ दुर्बलताएं हैं। हमे उन दुर्बलताओं को दूर करने के लिए उसकी कार्य-प्रणाली व सविधान में कुछ अपेक्षित परिवर्तन करने होंगे जिससे उसके पारस्परिक संघर्ष समाप्त हो सकें। कम से कम न्यायालय में हमें न जाना पड़े। यह भी देखना होगा कि महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज तथा आर्यसिद्धान्तों पर आस्था रखने वाली संस्थाएं संगठन से परे न रहें। हमारा लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' है। व्यष्टि से समष्टि, व्यक्तिगत उन्नति से अन्तः राष्ट्रीय उन्नति करना हमारा लक्ष्य है। इस महान् लक्ष्य को प्राप्त करने में हमें उपाय सुझाने होंगे, हमें अपने मन्तव्यों को पूरे विश्व में पहुंचाना है। व्यक्तिगत चरित्र व ज्ञान के विकास के लिए अच्छे साहित्य का होना आवश्यक है। आज आर्यसमाज पुस्तकालय पर ध्यान नहीं देते, उनका आरोप है कि लोगों की पढ़ने में रुचि नही है। इसी प्रकार आर्यसमाज की अपनी कोई साहित्यिक पत्रिका नहीं है, ये सब प्रश्न भी नये परिपेक्ष्य में विचारणीय हैं। प्रचार के आधुनिकतम साधनों का प्रयोग भी हमे करना होगा। जो बुद्धिजीवी हमसे दूर हो गये हैं, उन्हें अपने निकट लाने के प्रयास करने होंगे। युवावर्ग आज कई कार्यक्रम लेने के लिए तड़प रहा है, उसे नये नये कार्यक्रम देने होंगे। और भी अनेक प्रश्न हैं जिन पर विचार की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में हम आर्य-सस्थाओं के पदाधिकारियों के अतिरिक्त अन्य विद्वानों के विचार प्रस्तुत करना चाहेंगे।

हमने अपने इस लेख मे आर्यसमाज की भावी रूपरेखा के लिए बुद्धि-जीवियों से सम्मेलन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है तथा उसकी एक संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत की है। इसके लिए मुझे पाठकों के सहयोग की आवश्यकता है। पाठकों से निवेदन है कि—

(१) उक्त सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करें तथा अपने सुझावों से हमें अवगत कराएं, पत्र-पत्रिकाओं में भी इसका विचार मंच आरम्भ होना चाहिए।

(२) उक्त विचारगोष्ठी की अभी तिथि तय नहीं की गयी, शीघ्र ही उसकी घोषणा होगी। पर उसके लिए जो प्रतिनिधि बनना चाहें अभी से सम्पर्क करना प्रारम्भ करें। सभी आर्य-संस्थाओं से निवेदन है कि उक्त विचार गोष्ठी के लिए अपने यहां से अधिक प्रतिनिधि बनाएं।

(३) यद्यपि हम आर्यसमाज बुद्धिजीवी विचार गोष्ठी की सभी सूचनाएं समाचार पत्रों में देते रहेंगे तो भी आपसे निवेदन है कि आप ५१ रुपया भेज कर इसके सदस्य बनें। ताकि व्यापक स्तर पर पत्र व्यवहार द्वारा भी सपर्क किया जा सके।

(४) आप अपने नगर के उन विद्वानों के नाम एवं पते भेजें जिनको कि आपकी दृष्टि में उक्त विचारगोष्ठी में भाग लेना चाहिए। यह आवश्यक नहीं है कि वे किसी आर्यसमाज के सदस्य ही हों। पर हां, उनका आर्यसमाज से परोक्ष सम्बन्ध अथवा सहानुभूति आवश्यक है।

आपकी यज्ञ में रुचि है। आप अनेक भौतिक यज्ञ सम्पन्न करते हैं। पर यह विचार-यज्ञ उन भौतिक यज्ञों के उद्देश्य को और अधिक सार्थकता प्रदान कर सकता है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस विचार यज्ञ मे भी आप अपनी 'आहुति' डालेंगे और आर्यसमाज की भावी रूपरेखा निश्चित करने में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर पुण्य के भागी बनेंगे।

कहीं हम शिव को अशिव तो नहीं मान रहे ?

श्री गजानन्द आर्य, उ० प्रधान सार्वदेशिक आ० प्र० सभा—

ऋषि जीवन की घटना है, महाराज पूना मे ठहरे थे, प्रतिदिन प्रवचन, शका समाधान और शास्त्रार्थ की चर्चाओ से पूना निवासी बहुत प्रभावित थे। स्वामी जी को विद्याबल से परास्त न कर सकने वाले स्वार्थी लोग उनको बदनाम करने और मखौल उडाने के नये-नये हथकडे अपनाने लग रहे थे "एक दिन भक्तजनो ने स्वामीजी को बतलाया कि एक आदमी को रग से रगकर गले मे पट्टी डाली है, जिस पर लिखा है पाडित दयानन्द। उस आदमी को एक गधे पर उल्टा मुह करके बैठाया है कुछ शरारती बच्चे पीछे पीछे शोर मचाते जा रहे हैं।" स्वामीजी कुछ मुस्कराए, पर पास बैठे नवयुवको से चुप नही रहा गया कहने लगे स्वामी जी आप यदि अनुचित न समझे तो हम उन दुष्टो को मजा चखा आये। स्वामीजी ने शान्त करते हुए समझाया कि देखो ! असली दयानन्द तुम्हारे सामने बैठा है, उनके पास कोई नकली दयानन्द हैं, जिसका वे मखौल उडा रहे हैं। नकलचियो की यही दशा होती है अत आप लोग जीवन मे असली चीज को असली कहे, नकली को असली समझने की भूल न करे।

उपरोक्त घटनाचक्र मे मखौल उडाने वाले वे जन थे, जो स्वामी जी के द्वेषी बने हुए थे। उनके द्वेषी होने का कारण था कि उनके स्वार्थ पर आच जो आ रही थी। पर समय का फर देखिये कि स्वामी जी के प्रति श्रद्धा शक्ति रखने वाले हम आर्य लोगो ने पूना वाले ड्रामे को बडे जोर-शोर से अपनाना शुरू कर दिया। हमारा वह ड्रामा विभिन्न स्थानो पर विभिन्न नामो से होता हुआ भी दृश्य एक जैसा प्रस्तुत करता है। यदि हमे समाचार पत्रो से निम्न प्रकार के समाचार पढने को मिल जाये कि (१) आज पुलिस ने दयानन्द मार्ग मे एक जुए के अड्डे पर छापा मारा। (२) दयानन्द नगर निवासी एक व्यक्ति आज बलात्कार के आरोप मे पकडा गया। (३) कोर्ट मे आज दयानन्द मार्केट मे हुए मकान मालिक और किरायेदारों के बीच हुई मारपीट काड की सुनवाई हुई इत्यादि ऐसे समाचारो से हमे सभवत मानसिक वेदना न हो, किन्तु ऐसी घटनाओ के साथ दयानन्द का नाम जुडने से दयानन्द के प्रति हमने सम्मान किया या ? जरा और आगे की कल्पना कीजिये सैकडो वर्षों के पश्चात् के आर्य समाजी अथवा गैर आर्यसमाजो पुराने समाचार पत्रो अथवा कोर्ट के केसो के माध्यम से आर्य समाज को जानने का प्रयास करेगे, तब उनको कैसा मसाला मिलेगा।

दूसरे मतावलम्बियो के देखादेखी हमने ऋषि के नाम को उजागर करने के सस्ते फारमूले अपनाने चालू कर दिये। हर किसी बस्ती का नाम दयानन्द के स्मारक स्वरूप रख देना कोई महत्व नही रखता, जब तक उस बस्ती मे अथवा सस्थान मे दयानन्द के कार्यों की कुछ चहल पहल न हो। मात्र नाम रख देने से वहा के निवासी कुछ भी प्रभावित होते हो ऐसा भी नही है। श्रद्धानन्द मार्ग अगर वेश्याओ के कोठ के लिये प्रसिद्ध हो और वहा शर ब व माम धडल्ले से बिकते हो तो क्या वह कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति हमारी श्रद्धा का प्रतीक है ? नामकरण से सस्ती प्रसिद्धि के अलावा कुछ उपलब्धि नही है।

नगर ग्राम मौहल्ले और सडके चिर स्थायी नही हैं। इनके माध्यम से यदि चिरस्मरणीय रहा जाता तब महात्मा बुद्ध और उनके उपदेशो को भूलना नही चाहिए था, क्योकि २५०० वर्ष पहले देश का चप्पा-चप्पा बुद्ध धर्म के उपदेशो से पत्थरो पर अकित कर दिया गया था। आज वह पत्थर सम्भवत किसी अजायबघर में देखे जा सके। आर्य समाज मे हर किसी स्थान का नाम दयानन्द रख देने की प्रवृति स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आई है। पहले इतना अवश्य होता था कि जिस स्थान पर आर्य समाज का विशेष सम्मेलन व अधिवेशन किया जाता था उस स्थान का प्यारा सा नाम आयोजन के दिनो तक के लिये रख दिया जाता था, जितने दिनो तक वह आयोजन चलता था तब तक उस अस्थायी नाम की सार्थकता एव गरिमा थी।

इस लेख द्वारा मेरा अभिप्राय ऋषि के नाम को मार्गो-नगरा अथवा बस्तियो के साथ जोडने के विरोध मे नही है। मात्र यह आग्रह है कि ऋषि के पवित्र नाम को सरकारी आई० एस० आई० ट्रेड मार्क की तरह बहुत सोच समझकर प्रदर्शित कर। यह नाम इतना गौरवशाली रहना चाहिए कि हर किसी जगह को यह नाम नही मिले। आई० एस० आई ट्रेड मार्क लगाने का अधिकार हर किसी निर्माता को नही होता। विशेष नियमो व प्रक्रियाओ के पालन करने पर आई० एस० आई० लगाने की अनुमति मिलती है इससे उस वस्तु की विश्वसनीयता बनी रहती है। इसी प्रकार जिस स्थान पर आर्य समाज का वर्चस्व और गतिविधिया हो उसी क्षत्र को दयानन्द नाम दिया जाना चाहिये। आर्य समाज और ऋषि दयानन्द हमारे आदर्श हैं उनके नाम आदर्श के प्रतीक है। ऐसे प्रतीको को पूना की तरह नकली बनाने की भूल हमसे नही होनी चाहिये। अन्य मतावलम्बी अपने महापुरुषो का नाम जोडकर यदि सस्ती प्रसिद्धि लेते हो तो हमे वैसा अनुकरण नही करना ही श्रेष्ठ है। पडित गुरुदत्त जी ने ऋषि निर्वाण के पश्चात् ऋषि के स्मारक पर अपने विचार देते हुए कहा था "ऋषि का स्मारक ईट पर नाम खुदवाकर नही बन सकता।"

शिवरात्रि का जागरण सारा शिवभक्त जगत कर रहा था। भक्तो की उसी परम्परा मे छोटा सा बालक मूलशकर भी रत जगा कर रहा था। जागरूक मूलशकर ने शिवनामधारी प्रतिमा पर चूहो के अशोभनीय कायो को देखकर उस प्रतिमा को शिव मानने से अस्वोकार कर दिया था। ऋषि बोध के इस पावन प्रसग पर हम आर्यो को नकली का भेद समझना चाहिये। ●

आर्य समाजों के चुनाव

—आर्यसमाज शाहगज जौनपुर श्री सन्तप्रसाद अ य प्रधान, श्री दयाशकर आर्य मन्त्री, श्री राधेश्याम आर्य, श्री विनोद कुमार आर्य कोषाध्यक्ष अधि० आर्य वीर दल चुने गये।

—आर्यसमाज चादपुर बिजनौर श्री जगदीशशरण शीतल प्रधान श्री देवेन्द्रकुमार त्यागी मन्त्री, ओमप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज विटावदा मु० नगर श्री चाहीराम सरस प्रधान, श्री ऋषिपाल वर्मा एडवोकेट मन्त्री, श्री विजयसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज भागलपुर बिहार श्री तेजनारायण ठाकुर प्रधान, श्री त्रिगुणप्रसाद आय मन्त्री, श्री ठा० प्रसाद मोदी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज बीसलपुर पीलीभीत उ० प्र० श्री डा पूर्णानन्द जी प्रधान, श्री रामस्वरूप शास्त्री मन्त्री, श्री चन्द्रपाल जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—माडलटाउन पठानकोट श्री बलदेवराज यदुवशी प्रधान, श्री आदर्श वर्मा मन्त्री, सतपाल सैनी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज असुरन रेलवे कालोनी गोरखपुर श्री के. एन सिंह प्रधान, श्री कल्पनाथ आर्य मन्त्री, श्री रामजी वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज शास्त्री नगर मेरठ (उ० प्र०) श्री वेदप्रकाश जी प्रधान, श्री राजेन्द्र कुमार जी मन्त्री, श्री अनिल कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का १६२वां जन्म दिवस

दिनाक १२-२-८७ वीरवार साय ६ बजे महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट कीर्तिनगर द्वारा सचालित वेदप्रचार विभाग के तत्वावधान (एम०डी०एच० सत्सग भवन) मे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का १६२ वा जन्म दिवस बड़े हर्ष एव उल्लास से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने आर्य जनता से वैदिक सिद्धान्तो पर दृढता से चलने की प्रेरणा दी।

डा० महेश विद्यालकार जी ने बताया कि स्वामी दयानन्द शारीरिक तथा आत्मबल के धनी थे।

वेदप्रचार अधिष्ठाता आचार्य खुशीराम जी ने बताया कि आज आवश्यकता है कि हम ऋषि के सिद्धान्तो के दीवाने बने। हमें इस मार्ग पर चलने मे कितनी ही कठिनाइया हो हमे उनका दृढता से मुकाबला करना चाहिये।

स्वामी स्वरूपानन्द जी आचार्य रघुराज जी शास्त्री तथा श्री कचन आर्य जी ने ऋषि भक्ति के प्रेरणादायक भजन गाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी ने भी ऋषि के द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

सभा मे दिल्ली की प्रमुख आर्य समाजो के अधिकारी तथा स्थानीय व्यक्तियो ने भाग लिया।

अन्त मे महाशय धर्मपाल जी ने पधारने वाले सभी वक्ताओं तथा श्रोताओ का धन्यवाद किया।

महाशय धर्मपाल　　आचार्य खुशीराम शर्मा
वेदप्रचार अध्यक्ष　　वेदप्रचार अधिष्ठाता

सूचना

आर्य बहिनों को सूचित किया जाता है कि ऋषिबोधोत्सव तथा सीताष्टमी पर्व ९-३-८७ सोमवार राजौरी गार्डन स्त्री आर्यसमाज मे होगा। निर्वाचन की तिथि २३-३-८७ सोमवार दीवान हाल में करने की निश्चित की गई है। आपसे विनम्र निवेदन है कि अपनी समाज की प्रतिनिधि बहिनो के नाम, वार्षिक रिपोर्ट और चन्दे शीघ्रता शीघ्र भेजने की कृपा करे। धन्यवाद,

मन्त्रिणी श्रीमती प्रकाश आर्या
प्रान्तीय आर्य महिला सभा
३ सी/२१ न्यू रोहतक रोड
फोन ५८११६१

शिरोमणि कमेटी के कार्यालय में

बेरोजगार सिख युवकों का आक्रमण अमृतसर २६ फरवरी, लगभग १ सौ सिख युवकों ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के मुख्यालय पर हल्ला बोल दिया और तेजासिंह समुद्री हाल और गुरु नानक निवास में स्थित उसके कार्यालयों और उसके विभिन्न विभागों के टायप राइटर और खिड़कियों के शीशे तोड़ दिए। अलमारियों के ताले भी तोड़ दिए, फाइलों को फाड़ दिया, प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि उपद्रवियों ने कार्यालय के एक कर्मचारियों से मारपीट भी की। बताया जाता है कि रोजगार की तलाश में निकले नवयुवकों ने कुछ फार्म भर कर दिए थे। परन्तु कार्यालय वालों का कहना था कि उन पर कमेटी के मन्त्री व प्रधान के बनावटी हस्ताक्षर हैं। इस पर नवयुवक भड़क उठे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस समारोह

१२ फरवरी १९८७ बुधवार को आर्य समाज बुरहानपुर द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के १६२ वें जन्म दिवस समारोह का आयोजन किया गया। हवन, वैदिक प्रार्थना के पश्चात् एक सार्वजनिक सभा में प्रधान श्री पाटीदार, मन्त्री महाजन एवं अन्य आर्य जनों ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला।

सभा प्रधान श्री आनन्दबोध जी का पंजाब दौरा

गत २८ फरवरी से २ मार्च तक सभा प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के विशेष निमन्त्रण पर लुधियाना व जालन्धर पहुंचे। सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री व राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान छोटूराम जी एडवोकेट आपके साथ रहे। २ दिन के व्यस्त कार्यक्रमों में पंजाब की समस्याओं पर पंजाब के वरिष्ठ आर्य नेताओं से विचार विमर्श होकर प्रस्ताव पास हुए जिसकी विस्तृत रिपोर्ट आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी।

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी में दि० १५-१-८७ से १ फरवरी ८७ तक निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर नेशनल इन्टीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन वाराणसी के सौजन्य से लगाया गया। शिविर का उद्घाटन प्रो० डा० के एन० उडप्पा भूतपूर्व निर्देशक चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी ने किया एवं आपरेशन डा० एस० डी० पाठक (एम० एस०) नेत्र चिकित्सक तथा डा० आर० पी० त्रिपाठी के देख रेख में किया गया। आर्यसमाज लल्लापुरा ने २१ मरीजों के दुग्ध चाय भोजन व चश्मे की व्यवस्था की। कार्यक्रम सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न हो गया।

आर्यसमाज गया का ६४वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, गया का ६४वां वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ दिनांक २, ३, ४ एवं ५ अप्रैल १९८७ को मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्य जगत् के विख्यात तपस्वी साधु, सन्यासी एवं महात्माओं के साथ वेद के दिग्गज विद्वान तथा कुशल भजनोपदेशक पधारेंगे। वेद सम्मेलन, राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन, गो-रक्षा सम्मेलन, सांस्कृतिक सम्मेलन, महिला सम्मेलन, हरिजन स्नेह सम्मेलन आदि का आयोजन किया जा रहा है। —मन्त्री

आर्य समाज कलकत्ता समाचार

सत्यार्थ प्रकाश को लेकर कलकत्ता में अच्छा मोर्चा लगा है। यहां के मुसलमान यह कहते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश में उनके पैगम्बर और कुरान की तौहीन लिखी गयी है। हम अपनी ओर से बौद्धिक स्तर पर और राजनीतिक स्तर पर पूरी चेष्टा में यह कैसे सभाल रहे है। हमें अपने पक्ष की मजबूती के लिए मुसलमानों द्वारा लिखित हिन्दू देवी देवताओं के विरुद्ध एवम् आर्य समाज और स्वामी दयानन्द के विरुद्ध पुस्तकों की आवश्यकता है। हम हमारे पक्ष के समर्थक पुलिस अधिकारियों और सरकारी क्षेत्रों में इन हिन्दू विरोधी साहित्यों को देकर सामयिक लाभ उठाना चाह रहे हैं। विद्वान् बंधु हमारी सहायता करें। इस सबन्ध में जो व्यय की अपेक्षा होगी उसे हम सहर्ष स्वीकार करेंगे। आप शीघ्रातिशीघ्र हमें इस प्रकार का साहित्य भेजने की कृपा करें।

—शिवनाथराम
मन्त्री

आर्यसमाज कांचरा पाड़ा का स्वर्णिम इतिहास का शुभारम्भ

आर्यसमाज कांचरा पाड़ा का ६२वां वार्षिकोत्सव २३ जनवरी ८७ से २७ जनवरी ८७ तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आर्यसमाज मन्दिर जिस मार्ग में स्थापित है—उस मार्ग का नाम अब से "महर्षि दयानन्द मार्ग" के नाम से जाना जायगा। (भूतपूर्व नाम कचहरी बाड़ी रोड था) २५ जनवरी ८७ रविवार को "महर्षि दयानन्द मार्ग" का उद्घाटन कांचरा पाड़ा म्यूनिसिपैलेटी के चेयरमैन डा० श्री ब.सुदेम मडल "हिमकर जी" के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। —अम्बिका प्रसाद आर्य, मन्त्री

पुस्तक समीक्षा

योग के आसन सर्वश्रेष्ठ व्यायाम

लेखक श्री रामवीर जी शास्त्री गुरुकुल झज्झर हरियाणा
मूल्य ५०) रु०

श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज, प्रधान सचालक तथा श्री रामवीर जी शास्त्री द्वारा लिखित 'सर्वश्रेष्ठ व्यायाम योग के आसन" नामक पुस्तक पढी आज के इस भौतिकता के युग मे अनेक विध व्यायामो की प्रणालियां प्रचलित हैं परन्तु सर्वविध स्थायी लाभप्रद और सरल पद्धति योगासनो की ही है, इसमे किसी प्रकार की दो राय नही हो सकती, लेखक ने स्वय गुरुकुल झज्जर मे अनेक वर्षों तक निरन्तर अभ्यास किया है तथा सरकारी तौर पर भी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी के जम्मू काश्मीर स्थित आश्रम मे रहकर प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

लेखक स्वय एक प्रबुद्ध प्रतिभा के धनी हैं, आसनो के नाम, विधि, लाभ, सावधानी तथा आसनो से चिकित्सा की सरल पद्धति लेखक द्वारा बहुत ही सरल ढग से दिखाई गई है, पुस्तक पठनीय है और प्रत्येक पुस्तकालय मे रखने योग्य है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वामी दर्शनानन्द कृत भाष्य उपनिषद्-प्रकाश

पुस्तक नाम—उपनिषद् प्रकाश, भाष्यकार स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज पृष्ठ सख्या —५० प्रकाशक—मधुर प्रकाशन, आर्यसमाज मन्दिर, बाजार सीताराम, दिल्ली ६, मूल्य ३०) सजिल्द।

प्रस्तुत 'उपनिषद्-प्रकाश' मुद्रित होकर तैयार है। इसमें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक तथा माण्डूक्य उपनिषदों की सरल एवं विशद व्याख्या पढ़ेंगे। अध्यात्म शैली से किया हुआ भाष्य आज जितने उपनिषदों पर भाष्य मिलते हैं उन सब में सर्वश्रेष्ठ है। श्री स्वामी जी की तार्किक शैली प्रसिद्ध है। स्वाध्याय प्रेमियों के लिए उत्तम ग्रन्थ बन पाया है।

प्रस्तुत पुस्तक का कागज बढ़िया छपाई भी बढ़िया है। सजिल्द पुस्तक का टाईटिल आकर्षक है। पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क कीजिए—'मधुर-प्रकाशन, २८०४ बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६

—सच्चिदानन्द शास्त्री

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में शोक सभा

२० जनवरी। आर्यजगत् के प्रकाण्ड वैदिक विद्वान् पूज्यपाद प० युधिष्ठिर मीमांसक जी की धर्मपत्नी पूज्या माता यशोदादेवी जी के निधन की सूचना मिलते ही पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में तत्काल एक शोक सभा बुलाई गई। विद्यालय की पूज्या आचार्या सुश्री डा० प्रज्ञादेवी जी ने अत्यन्त दुख भरे हृदय से पूज्या माता जी के सरल, साधु, निस्पृह एवं त्यागमय स्वभाव की चर्चा करते हुवे भामती और महान् वैयाकरण कैयट की पत्नी से तुलना की।

इसके अतिरिक्त वेदवाणी कार्यालय के मन्त्री श्री जीवनरामजी विद्यालय की उपाचार्या सुश्री मेधादेवी जी तथा स्नातिकाओं ने शोकाकुल हो श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्त में दो मिनट मौन के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

—माधुरी
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
तुलसीपुर, वाराणसी-१०

दक्षिण भारत में आर्यसमाज की प्रगति

दक्षिण भारत मे आर्यसमाज के सयोजक तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री म० नारायणस्वामी द्वारा गत जनवरी १९८७ मासमे एक मुस्लिम और ६ ईसाईयो को शुद्ध करके वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया।

श्री नारायणस्वामी गाव गाव मे घूमकर वैदिक धर्म के प्रचार के साथ-साथ शुद्धि का कार्य भी कर रहे हैं। उनके प्रयत्नो से रामनद तथा परमकुडी स्थानो मे शीघ्र ही आर्यसमाज के स्थापित होने की आशा है। यह हर्ष का विषय है कि धीरे धीरे दक्षिण भारत मे वैदिक धर्म का प्रचार बढता जा रहा है, और वहा हिन्दुओ मे अपने धर्म और सस्कृति के प्रति नई जागृति पैदा हो रही है।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा संचालक जी का तूफानी दौरा

दल की शाखाओ के माध्यम से, आर्यसमाज की ओर युवको को आकृष्ट करना एक प्रभावी साधन है। इसी उद्देश्य को लेकर संचालक श्री उमेदसिंह जी शर्मा संचालक आर्य वीर दल हरियाणा व श्री सर्वदेव जी विद्यार्थी अधिष्ठाता आर्य वीर दल हरियाणा का दौरा कर रहे हैं। इस क्षेत्र मे आ आर्य वीर दल की शाखायें लग सके इस विषय मे युवको के साथ बैठकर विचार विमर्श करते हैं।

बैठको का कार्यक्रम

७-३-८७ रात्रि ८ से १० तक आर्यसमाज कृष्णा नगर भिवानी
८-३-८७ प्रातः १० से १२ तक आर्यसमाज सिरसा
८-३-८७ दोपहर २ से ४ तक कार्यालय आर्य वीर दल बालसमद रोड हिसार
८-३-८७ मध्यानोत्तर ५ से ६ तक आर्यसमाज हांसी

— सीताराम आर्य

आर्य वीर दल शिविर

(२) आर्य वीर दल की एक रैली दिनाक २५-१-८७ को शाखा रुद्रपुर मे सम्पन्न हुई जिसमे ३६ आर्य वीरो ने भाग लिया इस अवसर पर मण्डल स्तर के सभी अधिकारी उपस्थित थे। सभी ने आर्य वीरो को सामयिक प्रेरणा दी।

(३) आर्य वीर दलका एक शिविर दिनाक ५-२-८७ गुरुवार से ८-२-८७ रविवार तक आर्यसमाज मन्दिर पिपरी मे सम्पन्न हुआ जिसमे ३४ आर्य वीरो को प्रमाण पत्र दिये गये ३६ पजीकृत हुए। शिक्षक का कार्य मण्डल अधिकारी श्री युद्धवीरसिंह जी ने किया। शिविर की अध्यक्षता पूज्य स्वामी सेवानन्द ओमाश्रित ने की। आर्य वीरो को सम्बोधित करते हुए पूज्य स्वामी जी ने कहा कि देश जाति धर्म उस समय भयकर सकट मे हैं। अत आर्य वीरो तुम्हें अपने को इस बात के लिए तैयार करना पड़ेगा। शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

—युद्धवीरसिंह आर्य

आच:
रउ

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आचार्यकुल ... (... विद्यालय) लोवा कला का पच्चीसवा रजत जयन्ती महोत्सव ७, ८ मार्च शनिवार व रविवार को बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। इसमे बड़े-बड़े विद्वान्, वक्ता, सन्यासी व महोपदेशक आयेंगे। सभी आर्य-पुरुष इस महोत्सव मे सम्मिलित होकर धर्मलाभ उठावें।

—चौ० प्रियव्रत ठेकेदार
कुलपति

—चौ० पृथ्वीसिंह वरव
प्रधान

परीक्षा प्रतियोगिता परिणाम

(१) तहसील आर्य सभा तिलहर द्वारा आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता परीक्षा का परिणाम घोषित हो गया है जिसमे निम्नलिखित प्रतियोगी पुरस्कार विजेता हुए—

१, श्री वीरेन्द्र कुमारसिंह प्रथम, २ अशोक कुमारसिंह द्वितीय, ३ पातीरामसिंह तृतीय, ४. श्री रामशंकर आर्य चतुर्थ एव सुरेन्द्रसिंह यादव को पाचवा पुरस्कार मिला।

शोक-प्रस्ताव

आर्यसमाज केराकत के सस्थापक श्री जगदम्बा प्रसाद जी मुख्तार की धर्मपत्नी एव आर्यसमाज के सहयोगी सदस्य श्री कमला कान्त सेवा निवृत्त इन्जीनियर (आकाशवाणी) की माता का देहावसान दिनाक ९-२-८७ को प्रात वाराणसी मे हो गया। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि मृतक आत्मा को शान्ति प्रदान हो तथा सम्बन्धित शोक सतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की क्षमता उत्पन्न हो।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव

DUPLICATE

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७]
वष २२ अक ११]

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
चत्र कृ ७ स० २०४३ रविवार २२ माच १९८७

दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५ एक प्रति ६० पसे

ईसाइयत तूफान के घेरे में

चर्च आफ इंग्लैंड में संकट

स्त्रियों के पादरी बनाने पर आपत्ति

चच आफ इ ग्लण्ड पर इस सुझाव के कारण सकट आ गया है कि स्त्रियो को भी पादरी बनने का अवसर मिलना चाहिए। चच की जनरल कोसिल मे सरकार के सदस्य श्री जोहन सिलवान ने जो कि मन्त्री का दर्जा रखते हैं धमकी दी है कि यदि इस सुझाव पर अमल किया गया तो मैं और कई दूसरे सदस्य त्याग पत्र दे देंगे। उ होने कहा कि हमारा चच एक प्रकार से रोमन कैथोलिक चच है और इसमे कोई महिला पादरी नही बन सकती। स्त्रियो को पादरी बना देना ईसाइयत क सिद्धा तो का उल्लघन करना होगा। यसूमसीह ने किसी महिला को धमप्रचारक नहीबनाया था यदि अब महिल ओ को पादरी बनाया गया तो यह बाइबिल को गलत प्रमाणित करना हागा। इस हालत मे हम रोमन कथोलिक सम्प्रदाय के सदस्य नही रहेगे। बल्कि हमारा अलग सम्प्रदाय बन जायगा। इसके उत्तरमे कुमारी जोस्तोकर ने एक लेख मे लिखा है कि पादरी बनना स्त्रियो का अधिकार है। यह अलग बात है कि हम कुछ वष और प्रतीक्षा कर लगी मैं अपने तौर पर दस वर्षो से इसके लिए प्रतीक्षा कर रही हू। परमा मा की दृष्टि मे पुरुष और महिलाए एक जमा दर्जा रखती है इसके विरुद्ध सभी तक मिथ्या है हम रे चच क पुरुष पादरियो को भी काननी तौर पर रोम पादरी नहा मानता। रोम की ओर देखने से पहले हमे अपने चच मे एकता लानी चाहिए। यह समस्या केवल इ ग्लण्ड की नही सारे ससार की स्म इत की है नारी का जो घोर अपमान समेटिक मतो ने किया है उसका निवारण भारतीय सस्कृति के अपनाने से ही सम्भव है।

> रोम मे ईसाई पादरियो द्वारा यह कहने पर कि स्त्रियो मे जान नही स्त्रियो ने सरे बाज र पादरी को जते लगाए थे। बडा हगामा मचा। पादरियो ने अदालत का द्वार खटखटाया। अदालत के स्त्रियो मे यह पूछने पर कि क्या आपने जते मारे स्त्रियो ने कहा कि पादरी साहब तो कहते हैं कि स्त्रियो मे जान ही नहा फिर हम जते कस मार सकती हैं आज फिर नारी जाति के सम्मान की परीक्षा है। भारत ने करोडा वष स पुरुष क समान ही नारी को प्र येक प्रकार के विकास का अवसर प्रदान किया है। भारतवष तो इस दिशा मे ससार भर का आज भी नेतृ व कर रह है
>
> सम्पादक

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली का होली महोत्सव

रविवार १५ माच ८७ को आयसमाज मदिर दीवान हाल मे होली का उत्सव बड समारोह पूवक मनाया गया। अनेक मनोरजक कायक्रम प्रस्तुत किए गए। यह पव शालीनता शिष्टाचार की मर्यादा मे कैसे मनाना चाहिए इसका एक आदश प्रतीक था। दिल्ली के प्रत्येक क्षत्र के आय बन्धुओ ने इस समारोह मे भाग लिया। इस अवसर पर सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने होली पव की महत्ता पर प्रकाश डाला। अन्न की सबसे बडी फसल का यह प्रजा मे यज्ञो के द्वारा ध यवाद देने व आनन्दोत्सव का पव है। भारत की प्रजा आन दातिरेक मे कभी कभी भान भूलकर अश्लीलता व अशालीनता के माग पर चल पडती है। आय समाज का कत्तव्य है कि वह जनता का उचित माग दशन करे। आय समाज की ओर से आगन्तुको का अल्पाहार व जलपान से स्वागत किया गया।

आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाइए सभा प्रधान का आह्वान

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक वक्तव्य मे देश की सभी समाजो मे प्राथना की है क आज देश की इस सकट की घड़ियो मे केवल आय समाज ही देश को सही नेतृ व दे सकता है अत सभी आय समाज अ य समाज स्थापना दिवस दिनाक २० माच ८७ का बड समारोह पूवक मनाए।

आय समाज के अपने विद्वानो के अतिरिक्त बस्ती के विद्वान व समाज सेवक वक्ताओ को सभाओ मे आमन्त्रित किया जावे देश भर मे फली हजारो आय समाजो के द्वारा किया जाने वाला प्रचार जनता मे नवजीवन व जागरण उत्प न करेगा। देश को एक बार आयसमाज ने मागदशन कराया था हम दासता व अध विश्वास के घोर अ धकार स बाहर आकर स्वतन्त्रता के स्व छ वातावरण मे सास लेने योग्य बने। पर तु फिर वही समस्याओ व सकटो का अम्बार आज दिखाई दे रहा है। अत आय समाज समय की न डी को पहचान कर पुन देश को मागदशन कर ए।

पंजाबी आतंकवाद व श्री श्रीराम शर्मा

श्रद्धेय श्री पण्डित जी पजाब की राजनीति में बहुत ही कर्मठ व सुलझे हुए कार्यकर्त्ता रहे हैं। अकाली राजनीति का उनका पर्याप्त पुख्ता अनुभव है। उन्होंने काफी देरसे राजनीति से सन्यास ले रखा है परन्तु पजाब के महाविनाश ने उनकी आत्मा को उद्वेलित किया है और बडे ही दुखी हृदय से उन्होने एक वक्तव्य दिया है जिसमे निम्न मुद्दो पर अपना बहुमूल्य मत प्रकट किया है —

(१) पजाब के लोमहर्षक अत्याचारो मे काग्रेस व अकाली दोनो ही समान रूप से दोषी हैं। भिंडरावाले के प्रति अपनाया गया नरम रुख ही पजाब मे विनाश के बीज बो गया, जिसका फल आज पजाब को भोगना पड रहा है।

(२) श्रीमती इन्दिरा गाधी द्वारा सिखों को प्रसन्न रखने की नीति व उनका समर्थन पाने की आशा मे ज्ञानी जैलसिंह को राष्ट्रपति जैसे प्रतिष्ठित पद पर बिठाना भूल थी जिसके परिणाम पजाब को उठाने पड रहे हैं।

(३) अकाली नेता अवसरवादी हैं किसी एक सिद्धात पर वे नही चलते इसीलिए पजाब समस्या का हल नही निकला हा फलत पजाब की घटनाओ से देश की एकता व अखण्डता खतरे मे पड गई है।

(४) उग्रवादियो के प्रति नरम रुख अपनाने से पजाब समस्या और जटिल बनेगी। पजाब पुलिस के उन वरिष्ठ अधिकारियो को जिन पर उग्रवादियो से मिली भगत का सन्देह है पजाब से बाहर भेजकर उनके स्थान पर बाहर के राज्यो से ईमानदार पुलिस अधिकारियो को नियुक्त करना चाहिए।

(५) पाकिस्तान से प्रशिक्षित, पैसा व हथियार लाने वाले उग्रवादियो के प्रवेश पर कडाई से रोक लगाई जानी चाहिए। सीमा पर सुरक्षा पट्टी अवश्य बनाई जानी चाहिए।

(६) अकाल तख्तको हत्यारोके विरोध मे हुकमनामे जारी करने पर जोर दिया जाना चाहिए। जो दुरुपयोग अकाल तख्त का हो रहा है उसे रोकने का पूर्ण प्रयत्न किया जाना चाहिए। अकाल तख्त ने उग्रवादियों की ही सहायता करके सिखो के एक बडे वर्ग का विश्वास खो दिया है।

(७) महा पजाब से समस्या हल नही हो पाएगी। इससे तो हरियाणा व हिमाचल प्रदेश मे और समस्यायें खडी हो जाएगी।

पण्डित जी अनुभवी कुशल प्रशासक भी रह चुके हैं। आपके ठोस विचारो से आशा है भारत सरकार प्रेरणा लेकर पजाब मे खेली जा रही है इस खून की होली को बन्द कराने का कोई मार्ग प्रशस्त कर सकेगी। —सम्पादक

नेपाल में वैदिक धर्म का प्रचार

सार्वदेशिक सभा के महोपदेशक जी की रिपोर्ट

दिनाक २६,२७,२८ २-८७ को रगोली बाजार में चतुर्वेद शतक त्रिदिवसीय यज्ञ और आर्यसमाज का प्रचार बहुत सुन्दर ढग से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम शिवरात्रि (दयानन्द बोध रात्रि) के नाम से सम्पन्न हुआ। श्री हरिराम गोयल रगेली मोरग ने बाह्य आगन्तुक ४० व्यक्तियो के आवास भोजन मे पूर्ण सहयोग करके प्रतिवर्ष यज्ञ और आर्यसमाज का उत्सव कराने का वचन दिया। रगेली बाजार के प्रसिद्ध समाज सेवी, शिक्षा प्रेमी श्री बद्रीप्रसाद बाबू जी ने पूर्ण सहायता की। आर्यसमाज दवेंशा ने यह कार्य करने का सकल्प किया था। आर्यसमाज झापा के महासचिव श्री नरपति उप्रेती, सहसचिव श्री महेन्द्र प्रसाद गौतम एव अनेक बाल-बालिकाओ का कार्यक्रम रहा। इस कार्यक्रम मे निम्नलिखित विद्वानो ने उपस्थित होकर आय समाज का सन्देश जनता मे फैलाया—

१—प० कमला कान्त आत्रय [असम]

२—प० पुण्यप्रसाद उप्रेती झापा [नेपाल]

३—प० प्रेमनारायण प्रसाद उपाध्याय [मोरग]

४—श्री नित्यानन्द वशिष्ठ विद्यावाचस्पति, झापा [नेपाल]

५—कु० राधिका उप्रेती झापा, [नेपाल]

वेद मन्दिर की ओर से

नये वर्ष पर शुभ कामना

वेद, दिशा नभ, नेत्र विक्रमी सवत् शुभ हो आपको।
निकट न आने दें परमेश्वर शोक और सन्ताप को॥
दो सहस्र शुभ चवालीस है वीर विक्रमादित्य का।
नित्य सुखो के साथ आपको दर्शन हो आदित्य का॥
मैकाले के पुत्र जनवरी मे नव वर्ष मनाते हैं।
अपनी भूल भ्रान्ति से भारत को इग्लैण्ड बनाते हैं॥
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा आपका शुभ दिन है नव वर्ष का।
देता है सन्देश आपको हर्ष और उत्कर्ष का॥
घर-घर मे हो यज्ञ वेद का पाठ सुखी परिवार हो।
धर्म, सभ्यता, सस्कृति का भूमण्डल मे विस्तार हो॥
ईशकृपा से सुख प्रसन्नता प्रेम रहे परिवार मे।
अमर, धर्म के साथ आपका यश फैले ससार मे॥

अमर स्वामी सरस्वती

वेद मन्दिर विवेकानन्द नगर गाजियाबाद

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली १०२वें वार्षिकोत्सव की रूपरेखा

सदा की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली का १०२वा वार्षिकोत्सव २७, २८, २९ मार्च १९८७ को ऐतिहासिक लालकिले के सुविस्तृत प्रागण मे बडे समारोह पूर्वक, मनाया जाएगा। इस उपलक्ष्य मे प्रसिद्ध याज्ञिक श्री राजगुरु शर्मा के ब्रह्मत्व मे २३ से २५ तक वेदो का विशाल यज्ञ होगा जो इसी रूप मे २६ २७, २८, २९ को लाल किला के मैदान मे होगा और २९ मार्च को प्रात उसकी पूर्णाहुति होगी।

वेद कथा

२३ से २६ मार्च तक प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्रो० वाचस्पति उपाध्याय (दिल्ली विश्व विद्यालय) सायकाल ८ से ९ बजे तक वेद की कथा करेंगे। २६ मार्च को लाल किले के मैदान मे ध्वजा रोहण आर्य समाज के विद्वान सन्यासी स्वा० विद्यानन्द जी करेंगे।

२७, २८, २९ तीन दिनो तक, कवि सम्मेलन, स्कूल कालेजों के छात्राओ की प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा राष्ट्रीय अखण्डता सम्मेलन होगे, राष्ट्रीय अखण्डता सम्मेलन की अध्यक्षता केन्द्रीय मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त करेंगे।

२९ मार्च को २ बजे से दिल्ली की सभी आर्य सस्थाओ की ओर से सम्मिलित रूप से "आर्य समाज स्थापना" दिवस मनाया जाएगा। जिसके मुख्य अतिथि ससद के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड होगे।

उत्सव मे भाग लेने वाले हैं। सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती वयोवृद्ध विद्वान प० शिवकुमार शास्त्री भू० पू० ससद सदस्य, वैदिक वाङ्मय के महाविद्वान आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, श्री प्रो० वाचस्पति उपाध्याय, प्रसिद्ध विद्वान व पत्रकार डा० वेद प्रताप वैदिक, श्री प० यशपाल सुधाशु आदि।

एक परिचय—

श्री प० रामचन्द्र शर्मा

रुस्तमपुर न्यावली मुरादाबाद के निवासी ऋषि के अनन्य भक्त आर्य समाज के सफल प्रचारक, सगीत रत्न, मधुर गायक वह काफी समय तक उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक रहे है।

आप प्रचार कार्य मे सदा ही रुचि लेते रहे हैं। सादा जीवन, स्वच्छ विचारों के व्यक्तित्व वाले श्री शर्मा जी ऋषि के मिशन में ही उठाये बिस्तर यात्रा में रहते हैं। आपके जीवन से जनता को लाभ मिले। इस विचार से आर्य समाज में उन्हें आमन्त्रित कर, उत्सव, कथा, सत्सगो का लाभ उठावे।

पता—ऊपर ही स्पष्ट है। —[illegible]

[illegible]

होली का सामाजिक स्वरूप

होली के पर्व की एक सामाजिक विशेषता भी विचारणीय है जैसे—

> चैत्रेमासि महाबाहो पुण्ये तु प्रतिपद्दिने ।
> यस्तत्र श्वपचं स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तम ॥
> न तस्य दुरितं किञ्चिन्नाधयो व्याधयो नृपेति ॥

चैत्र मास की प्रतिपदा को जो उत्तम पुरुष श्वपच करके स्नान करता है उसको किसी प्रकार की आधि-व्याधि नहीं सताती है । विश्वबन्धुत्व का कैसा अनुपम भाव है । आज होली के पश्चात् सब छोटे बड़े बिना किसी भेद भाव के आपस में गले मिलते हैं । अन्य किसी पर्व या त्योहार मे परस्पर मिलन के भाव नहीं देखे जाते । इसी से यह पर्व सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

आजकल होली के नाम से जो निन्दनीय कार्य पवित्र पर्व का बहाना कर किए जाते हैं वह हमें प्रयत्न करके बन्द करने चाहिए ।

कीचड़ फेंकना, शराब पीकर गाली बकना मां बहनों के प्रति गालियां देना, निन्दनीय गर्हित कार्य हैं । सांस्कृतिक कार्यक्रमों को रखाकर भले व्यक्तियों को प्रभावशाली सुधार के कार्य कराये जाय । पर्व की महत्ता पर ज्ञान बढ़ाया जाए और प्रचलित भ्रष्टाचार को बन्द किया जाय ।

होली की पौराणिक चर्चा श्रीमद्भागवत मे एक आख्यायिका इस प्रकार है कि हिरण्यकश्यप नाम का राजा बड़ा ही अन्यायी तथा ईश्वर को न मानने वाला था । उसका पुत्र प्रह्लाद ईश्वर भक्त था । पिता पुत्र की गतिविधियों को पसन्द नहीं करता था और उसे नाना प्रकार से कष्ट भी देता था । अन्त में नृसिंहावतार होकर हिरण्यकश्यप का संहार होता है । यह आलंकारिक शिक्षाप्रद आख्यायिका है जिसका अभिप्राय यह है कि माया में फंसे रहने वाले व्यक्ति का नाम हिरण्यकश्यपु है अर्थात् जो सदैव हिरण्य-धन और वैभव को देखे उसे हिरण्य कश्यपु कहते हैं ।

जो माया ही में रत रहे परमात्मा की ही सत्ता को न माने वह हिरण्य कश्यपु है । परमात्मा के भक्त इस प्रकार के सत्ताधीश की चिन्ता नहीं करते । जब पाप बहुत बढ़ जाता है तब कोई सिंह पुरुष उत्पन्न होकर उसका संहार करता है ।

परमात्मा की भक्ति में सदैव मग्न रहने के कारण जिसको लाभ प्राप्त होता है इसी से उसका नाम प्रह्लाद है । प्रह्लाद स्वयं सताये जाने पर भी सबकी कल्याण कामना करता है । वह कहता है कि—

> [illegible] किमपि नो हृदयीय मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम् ।

किसी को गाली न दें, कुछ हरण न करें, किन्तु जो लोग माया मे ही रत रहते हैं उनका आदर नहीं करना चाहिए ।

यदि इस प्रकार आचरण किया जाय तो होली पर्व मे सुधार आ जायेगा ।

वैदिक स्वरूप

इस पर्व का नाम "नवसस्येष्टि" भी कहा है । नवीन-अन्न प्राप्त होने पर उस अन्न को प्रभु को अर्पण किया करते थे । बिना यज्ञ किये कोई अन्न नहीं खाता था ।

'[illegible] [illegible] अन्न [illegible]' नया अन्न आने पर यज्ञ करें वास्तव में अन्न परमात्मा की कृपा से प्राप्त है ।

आज भी ग्रामीणों में होली पर कच्चा अन्न होली में भूनकर डालते हैं । यह यज्ञ का ही विकृत रूप है । पुरोहित अग्नि की प्रतिष्ठा करके फिर अन्न आहुति डालते हैं । होली का नाम अनेक 'होलका' नवान्न से ग्रहण किया जाता है । विद्वानों को चाहिए कि अवांछनीय तत्वों को हटाकर विशुद्ध रूप होली का वैदिक [illegible] परिपाटी को प्रचलित बनावें ।

आर्य समाज में नवजीवन लाओ !

आर्य समाज की स्थिति की चर्चा करते हुए आर्य समाज के ही कुछ पुराने लोग [illegible] कहते हैं कि आर्य समाज नहीं रहा, शिथिलता आ गई है । कुछ व्यक्ति यदि यह अनुसन्धान करें कि कारण क्या है ? शिथिलता कैसे दूर हो ?

वास्तव में अपनी आराम कुर्सी पर बैठकर कल्याण की कल्पना करना सरल है परन्तु वास्तविकता को जानने के लिए समस्या की गहराई मे जाना आवश्यक है ।

पहले से अपेक्षाकृत समाजों की संख्या भी बढ़ी है आर्य संस्थाएं भी यथावत चल रही हैं । परन्तु प्रचार के अभाव मे हमारी गति शिथिल हो गई है । प्रचारकों में वह मिशनरी भावना भी नहीं रही जो पुरानी पीढ़ी के उपदेशकों मे थी । इसके अनेक कारणों मे से मुख्य कारण यह है कि हम जांच नहीं कर पा रहे हैं कि समाजों मे सैद्धान्तिक प्रेम पैदा करने के क्या प्रयत्न किए जा रहे हैं । कितनी समाजें अपना उत्सव नहीं कर पाती हैं । नहीं कर रही हैं तो उसके कारणों की खोज की जाए । प्रान्तीय सभाओं का कर्तव्य है कि वे अपने अधिकारियों को दायित्व सौंपे कि वे समाज मन्दिरों मे जाकर प्रचार की आवश्यकता समझाकर प्रत्येक समाज को वार्षिकोत्सव मनाने को प्रोत्साहित करें ।

समाज की शक्ति पारस्परिक घरेलू विवादों मे न लगाकर ठोस प्रचार मे लगाएं प्रत्येक समाज मे पुस्तकालय, वाचनालय नियमित रूप से खुलें, बालकों युवकों वृद्धों व महिलाओं में प्रचार की पृथक पृथक योजनाएं हों और उनमे पारस्परिक समन्वय व सद्भाव बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न हो ।

ऐसा नहीं कि समाज के विचारों के प्रति जनता की रुचि नहीं सच तो यह है कि आर्य समाज के बाहर तो ऐसा लगता है कि जन जागरण का हमसे अधिक कार्य तो दूसरे लोग कर रहे हैं । हमने जो किया उसी पद्धति पर दूसरे भी भीड़ें जुटा रहे हैं । विकास भी कर रहे हैं । परन्तु आर्य समाज जैसी सम्पूर्णता उनमे नहीं उनके कार्यक्रम एकांगी ही रह जाते हैं । आज देश अनेक समस्याओं से जूझ रहा है । प्रजा आर्य समाज से सही मार्गदर्शन की अपेक्षा रखती है । हमारे सामने काम का ढेर पड़ा है यदि हमी शिथिल हो गये तो —

> घर दयानन्द से योगी के बनाए न बने
> और आएगा हमें कौन जगाने के लिए ।

यह कार्य केवल प्रस्तावों कल्पनाओं से पूरा नहीं होगा । समाज का क्षेत्र शिक्षण संस्थाओं के कारण इतना विस्तृत है कि हम चाहें तो विद्वानों उपदेशकों की कमी नहीं रहेगी । नए-नए विद्वान भी उत्पन्न हो रहे हैं । आवश्यकता उनका उचित उपयोग करने की है योजक तत्र दुर्लभ (काम लेने वाले नहीं ।)

शीतकाल समाप्त होते ही वर्षा तक यह ४ महीने हमें पूरी शक्ति से प्रयोग करने चाहिए । हम एक दूसरे की कमी ढूंढें उसी मे अपनी शक्ति का अपव्यय करें इससे कहीं उत्तम है कि हम स्वयं क्षेत्र मे उतर कर कर्मठता से आगे बढ़ें । उच्चकोटि के कार्यकर्ता भी हमें मिलेंगे । विद्वान प्रचारक भी । समाज की शिथिलता भी दूर होगी ।

आवश्यकता है कि आज समाज मे नवजीवन लाने के लिए सभी तत्परता से कार्य क्षेत्र में जुट जावें । आज भी जनता हमारे मार्गदर्शन की राह देख रही है । देश समाज विश्व की हजारों समस्यायें जिनका समाधान देवदयानन्द ने प्रस्तुत किया उनके आधार पर हम जनता का मार्गदर्शन करें, अवश्य आर्य समाज विश्वविजयी बनेगा ।

अपने बोए कांटों में उलझे हुए बरनाला जत्थेदारों के 'हुकमनामों' से परेशान

श्री यश, मिलाप जालन्धर

पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री, भूतपूर्व इंकांनिधायक, प्रदेश इंका के वरिष्ठ नेता जम्मू-कश्मीर में इंका के चुनाव प्रचार के इंचार्ज पत्रकार श्री यश ने 'धर्म व राजनीति' के तालमेल से पंजाब में उत्पन्न हो गई विषम स्थिति का अपने लेख में विश्लेषण किया है। उनके अनुसार आज पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री सुरजीतसिंह बरनाला को सिंह साहिबान के 'हुकमनामों' से जिस समस्या का सामना करना पड़ रहा है, उसके लिए वह काफी सीमा तक स्वयं जिम्मेदार हैं। हम श्री यश के लेख को यथावत प्रकाशित कर रहे हैं। — सम्पादक

'भारत' एक धार्मिक देश है।

इसलिए धर्म के साथ जुड़ी भावनाओ से विमुख नही हुआ जा सकता और न ही उसका महत्व कम किया जा सकता है। इसलिए जब धर्म और राजनीति को अलग-अलग करने की बातचीत की जाती है तो अधिकाश लोग झिझक जाते हैं। वह खुल कर बात नही करते और जिन लोगो ने अपने राजनीतिक स्वार्थों का महल धर्म की आड़ मे बनाया हुआ है, वह और भी अधिक सकोच से काम लेते हैं और जिनकी राजनीति का आधार ही धर्म हो उनकी दुविधा का अनुमान लगाना कठिन है। अकाली दल भी ऐसी दुविधा से ग्रस्त है।

बात जितनी कड़वी है, उतनी ही सच है कि सरदार सुरजीतसिंह बरनाला और उनके साथी आज चाहें जत्थेदारो के हुकमनामो से कितने परेशान हों, किन्तु यह काटे उनके अपने ही बोए हुए हैं। पुरानी बातो को जाने दीजिए, १९८५ मे मुख्यमन्त्री बनने के बाद सरदार सुरजीतसिंह बरनाला ने अपने प्रशासन मे जत्थेदारो का दखल लगातार सहन किया। पजाब में अकाली सरकार बनते ही जब दरबार साहब मे एक बार फिर आतकवादियों का कब्जा हो गया और २६ जनवरी, १९८६ को उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी दोनो को खूड्डे लाइन लगा कर अकालतख्त को गिराना शुरू कर दिया तो पजाब सरकार फौरन हरकत मे नही आई। २६ जनवरी के सरबत खालसा का जवाब देने के लिए १६ फरवरी को एक और सरबत खालसा बुलाया गया। पहला सरबत खालसा आतकवादियों ने अमृतसर मे बुलाया था, दूसरा सरबत खालसा मुख्यमन्त्री व उनके साथियो ने आनन्दपुर साहब मे बुलाया। उस समय बादल, टोहरा, तलवडी व अमरेन्द्रसिंह सब उनके साथ थे। उन लोगो के साथ होने के बावजूद दरबार साहब से आतकवादियो को निकालने के लिए आदेश सरबत खालसा से लिया गया। अकालियो के लिए सरबत खालसा का कितना भी महत्व हो, पजाब सरकार के साथ उनका क्या सम्बन्ध ?

गलत परम्परा तो श्री बरनाला व उनके साथियों ने स्वय स्थापित की अब शिकायत कर रहे हैं कि जत्थेदार सरकार के मामलों मे दखल क्यो दे रहे हैं। पहले हस्तक्षेप का निमन्त्रण दिया जाता है, फिर आपत्ति की जाती है, इसके क्या अर्थ ? अकाली सरकार ने केवल दरबार साहब से आतकवादियो को निकालने के लिए ही सरबत खालसा का हुकम लेकर एक गलती नही की, बल्कि इससे बड़ी गलती तब की जब सरदार सुरजीतसिंह बरनाला ने जोड़े साफ करने की सजा कबूल की। आतकवादियो को दरबार साहब से निकालने का आदेश अकाली दल के प्रधान ने नही दिया था, पजाब के मुख्यमन्त्री ने दिया था। आदेश गलत था या सही, सरकार का था। फिर उसके लिए श्री बरनाला को सजा क्यो भुगतनी पड़ी ? इतना ही नही, श्री बरनाला बार-बार कहते रहे, मैंने जो कुछ किया, वह केवल सरबत खालसा के हुकम से किया। क्या इसके यह स्पष्ट अर्थ नही है कि पुलिस भेजने का फैसला, पुलिस की कारंवाई यह सब पजाब सरकार के आदेश से नही हुई, बल्कि सरबत खालसा के आदेश से हुई ?

जो आपत्ति बरनाला आज कर रहे हैं, यह आपत्ति गतवर्ष मई के महीने मे करनी चाहिए थी। उन्हें कहना चाहिए था कि दरबार साहब मे पजाब सरकार के फैसले के अनुसार पुलिस भेजी गई। जो पुलिस दाखिल हुई वह सरकार की थी। यदि मैंने गलत कारंवाई की तो उसकी सजा देनेका अधिकार केवल पजाब की जनता को है। जब मैं फिर उनसे वोट मांगने जाऊं तो वह मुझे इंकार कर दें। उन्होंने यह लोकतान्त्रिक ढंग नहीं अपनाया। एक अभियुक्त के रूप मे जत्थेदारो के सामने पेश हुए और अपना अपराध कबूल करते हुए सजा भुगत ली। उन दिनों सरदार बरनाला से पूछा गया कि जोड़े साफ करते समय क्या महसूस करते हैं तो उन्होने कहा, "बड़ा मजा आता है। यदि उस समय मजा महसूस होता था तो अब आपत्ति क्योंकर की जा रही है।

श्री बरनाला ने महसूस ही नहीं किया कि उन्होंने कितनी गलत परम्परा कायम कर दी, कितनी बड़ी गलती की। धर्म और राजनीति को अलग-अलग रखने के सिद्धात की ही धज्जियां नही उड़ाई, बल्कि प्रशासन के लिए भी अनेक कठिनाइयां पैदा कर दी, सरदार बरनाला ने तो जोड़े साफ किए और बरी हो गए, किन्तु जिन पुलिस अफसरों और कर्मचारियो ने इस आप्रेशन मे भाग लिया, उनका क्या हुआ ? जब गुरुद्वारों मे बरनाला साहब जोड़े साफ कर रहे थे तो वह अफसर और कर्मचारी खुल्लमखुल्ला कांपते थे कि पता नही उनका क्या होगा ? एक बड़े पुलिस अफसर ने मुझे कहा, "बरनाला साहब को तो माफ कर दिया गया है, किन्तु हमे माफ कौन करेगा ?" बरनाला साहब की इस कारंवाई से जहा पुलिस वालो के हौंसले पस्त हुए, वहां आतकवादियो के हौंसले ऊंचे उठे। आतकवादियों और उनके साथी यह नही कह रहे थे कि हमने एक बड़े सिख नेता से जोड़े साफ करवाए, बल्कि यह कहते थे कि हमने एक मुख्यमन्त्री को जोड़े साफ करने पर पर मजबूर कर दिया।

कहा जा सकता है कि श्री बरनाला पजाब के मुख्यमन्त्री बन जाने के बावजूद एक सिख तो रहते हैं। ठीक वह सिख बनकर रहते हैं किन्तु वह केवल सिखो के मुख्यमन्त्री नही हैं, वह पूरे पजाब के मुख्यमन्त्री हैं। जिनमे सिखों के अतिरिक्त हिन्दू-मुसलमान और ईसाई भी हैं। जब वह कोई आदेश देते हैं तो सब की ओर से देते हैं। यदि वह अपनी किसी कारंवाई के लिए कोई सजा कबूल करते हैं तो सबकी ओर से। यदि बरनाला साहब महसूस करते थे कि उन्होने दरबार साहब मे पुलिस भेज कर गलती की है, तो उन्हें मुख्यमन्त्री पद से त्यागपत्र देकर अपनी गलती को स्वीकार कर लेना चाहिए था। त्यागपत्र देने के बाद वह जो सजा चाहते भुगत लेते। किन्तु मुख्यमन्त्री रहते हुए सजा भुगतना सरासर गलत था और इस बात की स्वीकारोक्ति थी कि धार्मिक पेशवाओ को राजनीति मे दखल देने का हक है।

आज भी अकाली नेता, जिनमें श्री बरनाला साहब भी शामिल हैं, यह नही कहते कि अकाल तख्त को राजनीति में दखल देने का हक नहीं है, वह कहते हैं कि हुकमनामा जारी करने से पूर्व उनकी बात नहीं सुनी गई, उनसे सलाह नही ली गई। जोशी और स्लेटरी करते हैं तो कहते हैं कि हुकमनामा से पथ को क्षति पहुंचती है। यदि यह हुकमनामा मान लिया जाता तो पथ की सरकार गिर जाती। आज भी अकाली नेता यह कहते हैं कि अकाल तख्त को सरकारी मामलों में दखल देने का कोई हक नहीं है। जब तक यह वह बात नहीं कहते, धार्मिक पेशवाओं का हस्तक्षेप बन्द नहीं किया जा सकता। जब तक हस्तक्षेप बन्द नहीं होगें तब तक धार्मिक स्थानों का दुरुपयोग होना नहीं रोका जा सकता।

सच्चे गुरु के सच्चे शिष्य, भारत के महान् स्वप्न द्रष्टा

अमर हुतात्मा पं० लेखराम

आचार्य शिवराज शास्त्री, एम. ए. मौलवी फाजिल

गत १००० वर्षों से भारत विचित्र अमानवीय आतंकों का शिकार बना रहा। १९वी शताब्दी को भारतीय इतिहास का संक्रमण काल ही कहा जाएगा। योरोप की एक छोटी सी जाति अंग्रेजो ने अपनी व्यापारिक गतिविधियों के साथ ही अपने बुद्धि कौशल व साम, दाम, दण्ड भेद के द्वारा भारत मे अपना साम्राज्य स्थापित किया व १८५८ के एक विशेष दिल्ली दरबार मे इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया को कैसरे हिन्द भारत को साम्राज्ञी घोषित किया। अंग्रेज जाति ने मुसलमानो की भांति भारतीय इतिहास वाङ्मय की होली नही जलाई अपितु उसमे से सत्य शिव सुन्दरम् को ग्रहण कर अपना कल्याण किया व योरोप की क्रूर ईसाइयत का प्रचार उस देश मे किया और उस जाति मे जो कपिल, कणाद गौतम की दिव्य शिक्षाओ की उत्तराधिकारिणी थी।

दुर्भाग्यवश भारतीय राम, कृष्ण की संस्कृति को भूलकर पाषाण पूजा मे लग गए थे और देश की सुरक्षा की बात कौन करे, स्वतन्त्रता के अमर सेनानी महाराणा प्रताप के बच्चे घास की रोटिया खाने को बाध्य थे व भारत की समस्त धन राशि भगवान को भोग लगाने के नाम पर बड-बडे मन्दिरो मे एकत्रित कर दी गई थी जिसे निर्विरोध लूट ले जाने के लिए यवन आक्रामक भारत में रक्त की नदिया बहाते रहे।

भारतीय जनता धर्म की इस दुर्दशा पर सिर धुनती धुनती अन्त मे मुसलमान शासको व मुस्लिम धर्माचार्यों व सन्तो के प्रभाव मे आकर करोडो की सख्या में मुसलमान बन गई। विदेशो से आए अरबी, ईरानी, तातारी, मुगल, पठानो की नसल आज के भारतीय या पाकिस्तानी मुसलमान नहीं हैं। भारत के ब्राह्मणो क्षत्रिया, वैश्यो व शूद्रो की ही यह सन्तान है। आज हमे इन्हे पहचान पाने के लिए जो इतिहास का ज्ञान आवश्यक है वह लिपिबद्ध उपलब्ध नही है।

अंग्रेजो ने बची खुची हिन्दू जाति को ईसायत के बाडे मे बन्द करने का अभियान चलाया। जो पाश्चात्य जातिया विज्ञान के आश्चर्यजनक आविष्कार कर रही थी वे भारतीय प्रजा को धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक अन्धेरे मे बनाए रखने के लिए असख्य धनराशि खर्च करके भारतीय प्रजा को ईसा का भक्त बना रही थी। अनपढ आदिम जातिया व हरिजन वर्ग उनके प्रचार के मुख्य केन्द्र थे। राजकीय सुविधाओ के प्रलोभन मे सवर्णों के भी लाखो हिन्दू ईसाई बन चुके थे।



यदि ऐसे विकट समय मे महर्षि दयानन्द देश को न सम्भालते तो आज सारा भारतवर्ष हिन्दू समाज से रहित हो जाता। महर्षि ने न केवल भारतीय तत्वज्ञान के स्रोत बहाए विधर्मी बनाने वाले ईसाई, मुसलमानो का भी न केवल खण्डन किया अपितु उन्हें पुन हिन्दू जाति का ही अग बनाने को आर्यसमाज का विशाल सगठन गठित किया। ऋषिवर ने अपने छोटे से जीवनकाल मे जो सेवा भारतीय वाङ्मय की की हजारो शास्त्री, आचार्य धर्माध्यक्ष मिलकर भी नही कर पाए। उनके जीवन काल मे ही एक पजाबी युवक जिसके हृदय मे हिन्दू जाति के इस घोर विनाश से विद्रोह की ज्वाला जल रही थी महर्षि की सेवा मे १७ मई १८८० को अजमेर पहुचा। इसका नाम प० लेखराम था जो ब्रिटिश सरकार के पुलिस विभाग का एक कर्मचारी था। ऋषिवर के सत्सग से उसे जो प्रकाश व प्रेरणा मिली तो उसने सरकारी नौकरी पर लात मार कर अपना सारा जीवन आर्यसमाज सस्था के चरणो मे अर्पण कर दिया। सर्वप्रथम वे फिरोजपुर से प्रकाशित होने वाले 'आर्यगजट" के सम्पादक बने, तत्पश्चात् उन्होने अपनी सेवाए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को सौंप दी और रात दिन एक करके सारे देश मे महर्षि के मिशन के प्रचार की धूम मचा दी, अनेको शास्त्रार्थ किए, अनेको पुस्तक लिखी। काशी विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष स्व० साधु महेशप्रसाद जी ने लिखा है कि पण्डित लेखराम जी ने अपनी पुस्तको मे जितनी पुस्तको के प्रमाण दिए हैं उनकी पूरी सूची बनाने पर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना हो सकती है। उन्होने ३३ पुस्तक लिखी। वे हिन्दी, उर्दू अरबी, फारसी संस्कृत व पजाबी के विद्वान् थे अंग्रेजी नही जानते थे। परन्तु बड परिश्रम पूर्वक अंग्रेजी पुस्तको को पढवा कर उन्होने अपने ग्रन्थ मे २१३ अंग्रेजी पुस्तको के प्रमाण दिए है।

पण्डित जी की सीधी टक्कर एक ऐसे मुसलमान से हुई जो इस्लाम की मौलिक मान्यताओ को सर्वथा नकारता हुआ भी मुसलमानो की वकालत करता था और आर्यसमाज को जी भर कर गालिया देता था। उसका नाम था मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी। मुहम्मद को मुसलमान अन्तिम नबी मानते है मिर्जा ने स्वय को नबी घोषित कर अहमदिया सम्प्रदाय की स्थापना की। प० लेखराम जी ने मिर्जा को अपनी लौह लेखनी से परास्त किया। केवल एक उदाहरण इस विजय का पर्याप्त है। मिर्जा ने अपने एक लेख में वेद के सम्बन्ध मे लिखा था—

'वेद किसी लोहार बढई या राज के पुराने विचार है।" 'वेद नास्तिक मत के समर्थक है।" 'वेद ईश्वरीय गुणो के विरोधी है।'

प० लेखराम जी के अदभुत व अकाट्य लेखो से निरुत्तर होकर मिर्जा साहब ने घटने टेक दिए और अपने जीवन मे उन्होने एक पुस्तक पैगामे सुलह" नामक लिखी जिसमे उन्होने लिखा—

हम खुदा से डर कर यह कहने पर विवश है कि वेद सचमुच ही परमात्मा का पहला ज्ञान है। वेद मनुष्यो का बनाया नही है। क्योकि मनुष्य की बनाई किसी पुस्तक मे यह आकर्षण शक्ति नहीं

होती कि वह करोड़ों वर्ष तक करोड़ो मनुष्यों का आकर्षण केन्द्र बनी रहे। वेद की शिक्षा मे जो भूल दिखाई देती है वह उसके भाष्यकारो द्वारा पैदा की गई है। जितनी सच्ची शिक्षा इस्लाम मे पाई जाती है वह वेद मे पहले से ही विद्यमान है। वेद ने ऐसी कोई शिक्षा नही दी जो बुद्धि के विरुद्ध हो या ईश्वर पर पक्षपात का आरोप लगाती हो। भारत के करोडो व्यक्ति हजारो वर्ष से वेद को ही ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं।"

मिर्जा साहब के इस लेख के बाद तो मुसलमान विद्वानो के विचारो मे क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। प० लेखराम जी ने मुसलमानो से पुनर्जन्म के विषय पर अनेक शास्त्रार्थ भी किए एक पुस्तक भी उन्होने लिखी। कुरान के स्वर्ग, नर्क की भी कडी आलोचना की। फलत मुसलमानो ने कुरान के पुराने सिद्धान्तो को बदल कर उनकी नई व्याख्याए प्रकाशित कर डाली।

पुनर्जन्म के बारे मे मुसलमाना के सबसे बडे महाकवि इकबाल ने लिखा—

मौत इक जिदगी का वक्फा (बिराम) है।
यानी आगे चलेगे दम लेकर

खुदा ही दोजख व जन्नत के लिए नियुक्त मनुष्य पैदा करता है कोई जीव स्वतन्त्र नही, इसके विरुद्ध डा० इकबाल लिखते है—

अमल से जिन्दगी बनती है, दोजख भी जहन्नुम भी।
यह खाकी (मिट्टी का पुतला)
अपनी सीरत मे न नूरी है न नारी है॥

सर सैयद अहमद ने अपने कुरान भाष्य मे लिखा—

एक कूढ मगज मुल्ला यह समझता है कि स्वर्ग मे अल्ला ताला ने भटियारखाना (वेश्यालय) खोला हुआ है।

एक नही इस प्रकार के सैकडो उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते है जो महर्षि दयानन्द व पण्डित लेखराम जी की जादूई कलम के ही चमत्कार कहे जा सकते हैं।

पण्डित जी ने महर्षि के जीवन चरित्र के सग्रह मे अद्भुत परिश्रम किया। उन्ही की कृपा से ऋषि-जीवन को हम जान पाए, इसी प्रसग मे वे एक बार अजमेर गए तो उन्होने देखा कि ब्राह्मण कुलोत्पन्न पौराणिक पण्डित ऋषि के ग्रन्थो मे अपनी मान्यताए भी घुसेडने का प्रयत्न कर रहे हैं। परोपकारिणी सभा को इसकी जब पण्डित जी ने सूचना दी तो सभा ने एक प्रस्ताव पास करके ऋषि के ग्रन्थो के सशोधन का भार पण्डित जी पर ही सौंपा। वे अपनी प्रचार यात्राओ मे मनो पुस्तको का बोझ उठाकर चलते थे। उन्होने २३ प्रकार की मनुस्मृतिया सग्रह की थी जिनमे एक काश्मीर की दुर्लभ प्रति भी थी।

अपने जीवनकाल मे केवल १७ वर्ष की अल्पावधि मे पण्डित जी ने जो सेवा आर्यसमाज की की वह सकडो उपदेशक मिलकर भी नही कर पा सके।

मुसलमान पण्डित जी के सेवाओ से इतने भयभीत व आतकित थे कि ६ मार्च १८९७ को एक हत्यारे मुसलमान के द्वारा उनका बलिदान करा ही दिया। और आर्यसमाज का यह अजेय महारथी वैदिक धर्म की विचारधारा की विजय वैजयन्ती फहराता हुआ प्रभु की शरण मे चला गया। अपने जीवन मे अपने पुत्र की मृत्यु पर पण्डित जी विचलित नही हुए थे। मृत्यु के समय भी उन्हें यह चिन्ता नही थी कि मेरे बाद मेरे परिवार का भविष्य क्या होगा? चिन्ता थी तो एक ही बात की कि 'मेरे बाद कही आर्यसमाज से लेखनी का कार्य बन्द न हो जाए।"

पण्डित जी की बलिदान की एक एक बूद से अनेको प्रचारक व उपदेशक उत्पन्न हुए जिन्होने देश भर मे आर्यसमाज के प्रचार की धूम मचा दी। देश के जागरण मे इस बलिदान का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

आर्यसमाजो का कर्तव्य है कि ऐसे महापुरुष के बलिदान दिवस को सदा बड उत्साहपूर्वक मनाए ताकि देश मे फैले साम्प्रदायिक व अलगाववाद के बादल छटकर वैदिक सूर्य का प्रकाश फैले।

होलिका जली नहीं

स्वराज्य मे सुराज की है कामना फली नही।
यह आसुरी प्रवृत्तियो की होलिका जली नही॥

सुतन्त्रता का तन्त्र आज लक्ष्मी है चूमती।
उलूक पै सवार जो स्वदेश मे है घूमती॥
प्रसुप्त न्याय हो चुका उलूक की चपेट मे।
प्रबुद्ध जन भी लक्ष्मी की आ चुके लपेट मे॥

प्रजा के तन्त्र मन्त्र की है दाल कुछ गली नही।
यह आसुरी प्रवृत्तियो की होलिका जली नहीं॥

स्वतन्त्र देश मे स्वतन्त्र जन अभी मिरे नही।
ढके कफन दफन समय मे तन अभी निरे नही॥
स्वदेश का दरिद्र वर्ग आज भी अछूत है।
विवेक जग सका नही भगा न छूत-भूत है॥

विडम्बना पुजारियो की आज भी टली नही।
यह आसुरी प्रवृत्तियो की होलिका जली नही॥

सुगन्धि यज्ञ का कर न धूम्र पान होम है।
प्रमत्त पेय पी रहे सुरा का आज सोम है॥
पिशाच सा बना लिया मनुष्य ने यह अग है।
बसन्त मे अनन्त आज कीचडो का रग है॥

शरीर पै सुगन्धि अब लगे इन्हे भली नही।
यह आसुरी प्रवृत्तियो की होलिका जली नही॥

विचारको की दृष्टि दाम वाम मे लगी हुई।
बिसार राम नामवृत्ति काम की जगी हुई॥
विशुद्ध आज देश मे मिले कही दवा नही।
सुमानवी चरित्र की मिले कही हवा नही॥

मनीषियो की मन्त्र शान्ति भी चली नही।
यह आसुरी प्रवृत्तियो की होलिका जली नही॥

— मुक्तक —

रोक दो गति विधि विदेशी शक्तियो की सब।
यदि शहीदाने वतन को है बचाना अब॥
पीर औ पैगम्बरो का ज्ञान है इसमे।
आज मिलकर बोलना है "राष्ट्र देवो भव"॥

—सत्यत चौहान सिद्धान्त शास्त्री
पुड्री मैनपुरी (यू० पी०)

साधुओं की अमृतसर की पदयात्रा

विश्व हिन्दू परिषद् के भोले बादशाह

ले० श्री के. नरेन्द्र प्रताप दिल्ली

हमारे पूर्वजों का कहना है कि "जिसका काम उसी को साजे और करे तो ..." ऐसा कहना मिथ्या होगा, कि विश्व परिषद् के नेताओं ने यह कहावत नहीं सुन रखी। यदि सुनी होती तो इन साधुओं, सन्तों को भर्ती करके अमृतसर न भिजवाते और यदि भिजवाना ही था तो कम से कम उन्हें परिस्थिति से अवगत कराके यह समझाते कि वाणी से क्या निकालना है और क्या नहीं। यह लोग अमृतसर गए और अकालतख्त के जत्थेदार के दरबार में हाजिर हो गए। अपने आप मे यह भी कोई आपत्ति जनक बात नहीं परन्तु जत्थेदार दर्शनसिंह रागी से भेंट करके जो सम्मिलित अपील की है उसका अर्थ केवल यही लोग समझ सकते हैं।

यह कहना सम्भव है भूल नहीं होगी कि जिस प्रकार पंजाब समझौता करते समय प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने किसी से परामर्श नहीं किया और ऐसी शर्तों पर अंगूठा लगा दिया जिनका न सिर है न पैर, और जिनके कारण हानी ले दे हो रही है। इसी प्रकार इन भोले बादशाहो ने जत्थेदार दर्शनसिंह के कहने पर एक वक्तव्य दे मारा जिसमे आतकवादियो व सरकारी आतक की समाप्ति की अपीलकर दी। और इस प्रकार आपने खालिस्तानियो के लोम हर्षक अत्याचारो के अभियान को और उन लोगों का प्रतिकार करने पंजाबकी जनता को सुरक्षित करने के अच्छे या बुरे सफल या असफल प्रयत्नो को एक ही स्तर पर लाकर खड़ा कर दिया प्रश्न यह है कि क्या इन अनाड़ी साधुओ और महन्तो के पास इस बात का कोई प्रमाण है कि सरकार जो कुछ कर रही है उसे सरकारी आतक बताया जा सके।

श्री दर्शनसिंह रागी यह कहे तो समझ मे आता है वह तो खालिस्तानिओ का समर्थन कर ही रहे हैं अत उनका यह प्रयत्न है कि ससार को यह बतायें कि खालिस्तानी नवयुवक तो हिंसा मे विश्वास नहीं करते परन्तु पंजाब सरकार केन्द्र की प्रेरणा से निर्दोष व निरपराध सिख नवयुवको की हत्या कर रही है और इसका परिणाम यह है कि सिख नवयुवको को आत्मरक्षा के लिए प्रतिरोधात्मक कार्यवाही करना पड़ रही है।

मेरे लिए तो यह आश्चर्य की बात है कि किस समझदार व्यक्ति ने इन लोगो को समझाया है कि पंजाब म सरकार आतक फैला रही है। हा अकाली नेता अवश्य यह कह रहे हैं। इनसे भी कोई पूछे कि कितनी बार पुलिस ने निर्दोषों की हत्या की है जो इन अकल के ठकेदारो ने उनकी बात मानकर यह वक्तव्य दे मारा कि सरकार भी उसी प्रकार की हत्यायें कर रही है जैसा कि खालिस्तानी व आतकवादी कर रहे हैं। इन मठाधीशो और जगत गुरुओं से कोई पूछे कि क्या सरकारी कार्यवाही को सरकारी आतक कहा जा सकता है। इन लोगो को यह भी याद नहीं किपिछले दिनो जब यह सिद्ध हो गया कि एक गाव मे कुछ अनुचित काम हुए तो पुलिस के डाइरैक्टर जनरल श्री रिबेरो ने क्षमा माग ली इस प्रकार इन खालिस्तानियो की अन्धाधुन्ध हत्याओं के उत्तर मे यदि पुलिस द्वारा कोई उन्नीस बीस बात हो गई तो उसे सरकारी आतक कहना इन महन्तों व साधुओ का ही काम है। सच यह है कि इन खालिस्तानियो ने आज पूरी अराजकता फैला रखी है। किसी विधान या व्यवस्था का इनकी आखो मे कोई मूल्य नहीं। जो साक्षी इनके विरुद्ध गवाही देता है उसे यह गोली का निशाना बना देते हैं। जो जज या मजिस्ट्रेट किसी आतकवादी को अपराधी ठहराता है उसकी हत्या कर देते हैं परिणाम उसका यह है कि सारी कानून व्यवस्था का ढाचा निरर्थक बनकर रह गया है। इन खालिस्तानिओ ने अपनी ओर से तो न्यायालयो के प्रबन्ध की धज्जियां उड़ादी हैं। परन्तु पुलिस से यह आशा करते हैं कि वह इनके विरुद्ध कोई ऐसी बात न करे जो विधान या नियम से जराभी इधर उधर है।

मैं यह मानने को तैयार हूं कि गत तीन चार वर्षों मे दो एक घटनायें ऐसी हुई होंगी जब पुलिस ने कुछ ज्यादती की है। परन्तु इन दो एक घटनाओं के आधार पर यह कह देना कि पुलिस का प्रतिरक्षात्मक आतक उसी प्रकार का है जैसा आतकवादियो का है अपनी अज्ञानता का प्रमाण देने के समान है।

मैं उन सन्तो व गुरुओ की नियत पर सन्देह नहीं करता उनकी बुद्धि हीनता पर अश्रुपात अवश्य करता हूं। उन्होने अपनी अज्ञानता व बुद्धि हीनता से उन आतकवादियो को एक प्रमाण पत्र प्रसारित कर दिया है जिसका यह लोग जी भर कर लाभ उठा सकते हैं। सारी दुनिया मे अब यह बात कहते फिरेंगे कि उन पर व्यर्थ ही आरोप लगाया जा रहा है कि यह लोग निर्दोष हिन्दुओ को हत्या कर रहे हैं। सच्चाई यह है कि पुलिस ने उनका जीना भारी कर दिया है अत वे सुरक्षात्मक कार्यवाही पर विवश है। इसे किसी प्रकार का आतकवाद नहीं कहा जा सकता है और इसका प्रमाण यह है हिन्दू नेताओ का दिया हुआ प्रमाणपत्र कि आतकवादी तो सरकारी आतक का उत्तर दे रहे हैं।

मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि विश्व हिन्दू परिषद के नेताओ ने बिना सोचे समझे एक ऐसी बातकर दी है जिससे पंजाब के हिन्दुओ से भीषण टकराव हो सकता है। इन लोगो पर लोम हर्षक अत्याचार ढाए जा रहे हैं। उनकी हत्या की जा रही है उनके घर लूटे जा रहे हैं। उनके कारोबार नष्ट हो चुके हैं। उनकी हत्या की धमकिया देकर अपने घरो व सम्पत्तिओ को छोड़ने पर विवश किया जा रहा है। पाकिस्तान उन आतकवादिओ के खुले रूप से सहायता कर रहा है। पुलिस इन पीड़ित हिन्दुओ को बचाने का प्रयत्न कर रही है। स्पष्ट है कि खालिस्तानी आतकवादी तो पंजाब की पुलिस के विरुद्ध कोई शिकायत नहीं करते क्योंकि वह तो उनकी सहायता कर रही है। उन्हे शिकायत है केन्द्रीय सुरक्षा बल के विरुद्ध और इन सन्तो व महापुरुषों ने अपने प्रमाणपत्र मे इसी पुलिस की निन्दा करके रख दी है जो इन पीड़ित हिन्दुओ को बचाने का थोड़ा बहुत उपाय कर रही है। धन्य है विश्व हिन्दू परिषद के नेता व धन्य हैं यह साधु सन्त। ●

हैदराबाद सत्याग्रह स्वतन्त्रता सैनानी पेंशन के सम्बन्ध में

सार्वदेशिक सभा व भारत सरकार का पत्र व्यवहार

सार्वदेशिक सभा हैदराबाद सत्याग्रहियों की पेंशन के लिए पूर्ण प्रयत्न कर रही है। समिति द्वारा सरकार से जो पत्र व्यवहार हो रहा है। उसकी एक भाकी पाठको के ज्ञानवधन के लिए प्रस्तुत है। —सम्पादक

स० १३५/पालिसी/आयसमाज १ ८६ ए० एस ८६

भारत सरकार गृह मन्त्रालय

सुरेन्द्रकौर

दिनाक २१ जनवरी १९८७

निर्देशक

आदरणीय स्वामी जी !

आप अपने तीनो पत्रो १४, १६ तथा १९ जनवरी को अवलोकन करें। स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन योजना के अन्तगत जो भी नियम बनाए गए हैं। उन सभी की एक प्रतिलिपि श्री बी० डी० स्नातक को दे दी गई है।

इस पत्र के साथमें १२ दिसम्बर की मीटिंग के रिकार्ड की एक प्रतिलिपि भी भिजवा रही हूँ। इस मीटिंग मे जो सुझाव आपने किए थे। जैसा कि १२ जनवरी को श्री अरुण कुमार जी ने आपको बताया वह सरकार के विचाराधीन हैं। और उस पर जो निणय लिया जाएगा उसके बारे मे आपको शीघ्र ही अवगत कराया जाएगा।

इस पत्र के साथ मैं ११०९ आवेदको की सूची भेज रही हूँ। यह पूर्ण सूची है इस सूची मे ३५१ ऐसे आवेदक हैं जिनकी यातना उनके खुद के कथनानुसार ६ महीने से कम है। और आज के नियमो के अनुसार यह पेंशन के हकदार नही है। इस सूची में १६१ आवेदक ऐसे हैं जिनकी अर्जिया तारीख के बाद आई थी परन्तु उनके कथनानुसार उन्होने ६ महीने से अधिक जेल यातना सही है। और उनके सबूत मे जेल रिकार्ड उपलब्ध है। इन केसों व दूसरे ५९४ केसो का जिनकी अर्जिया ३०-६-८६ से पहले प्राप्त हो चुकी है, फैसला राज्य सरकारो की रिपोट प्राप्त होने पर ही किया जा सकेगा। इस विषय मे हमने आंध्र, कर्नाटक तथा महाराष्ट्र सरकार को लिख दिया है। हमारे पत्रो की प्रतिलिपिया सलग्न हैं। आप सलग्न सूचियो से मिलान करके हमे यह बताऐ कि ऊपरी आवेदकों के अतिरिक्त किन किन आवेदको के प्राथना पत्र आपके पास ३० ६-८६ के पहले पहुँच चुके थे।

जहा तक राज्य सरकारो की पेंशन का प्रश्न हैं इसमे भारत सरकार का कोई हाथ नही।

भारत सरकार ने कुछ आर्यसमाजी सत्याग्रहियो को पेन्शन मजूर करदी है। इन सबको पेशन राज्य सरकारो के अभिलेख प्राप्त होने पर ही दी गई है। यह सारे ऐसे केस हैं जिनकी अर्जिया ३१ ३ ८२ से पहले आई थीं और उनको आय समाज सत्याग्रही मान्य होने पर ही पेंशन स्वीकृत की गई। परन्तु ऐसे केसो की अलग से सूची तैयार करना सम्भव नही हैं।

हम आंध्र सरकार को १६ १७ फरवरी की मीटिंग के बारे मे लिख रहे हैं। उसकी प्रतिलिपि आपको भेज देंगे।

आप हमारे १४ जून १९८६ (प्रतिलिप सलग्न) का अवलोकन करें जिसमे यह कहा गया था कि आर्य समाज आन्दोलन के सम्बन्ध मे सम्भवतया कोई सत्याग्रही भूमिगत नही रहा। आपके उत्तर की प्रतिक्षा है। उनके आने पर ही १६२ ऐसे दर्जे के केसो पर फैसला किया जा सकेगा।

श्री आनन्दबोध सरस्वती

सुरिन्द्र कौर

प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मदान, नई दिल्ली

सेवा में

९ मार्च ८७

श्रीमती सुरिन्द्र कौर !

निर्देशक स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेन्शन विभाग

गृह मन्त्रालय लोक नायक भवन

नई दिल्ली-११०००३

नमस्ते,

आप अपने पत्र सख्या १३५ दिनाक २१ जनवरी १९८७ का अवलोकन कीजिए। मैंने अपने पत्र स० ४१०८ दिनांक ३० जनवरी ८७ द्वारा आपसे कुछ मामलो पर यथा शीघ्र कार्यवाही करने की प्रार्थना की थी। पुन: आपकी सेवा मे निवेदन है कि—(१) आपने अपने २१ जनवरी ८७ के पत्र पैरा ३ मे ऐसे १६१ आवेदको का जिक्र किया है जिनकी सजा की अवधि ६ महीने से अधिक है और जिनके सबूत जेल रिकार्ड में उपलब्ध है। कृपया इस आवेदको के नाम व पते सूची सहित हमे भेज दीजिए जिससे उनके बारे मे समिति विचार कर निर्णय दे सके।

(२) इसी पैरा मे आपने लिखा है कि उन दूसरे ५९४ केसों का जिनकी अर्जिया ३० जून ८६ से पहले प्राप्त हो चुकी है फैसला राज्य सरकारो की रिपोट प्राप्त होने पर किया जा सकेगा। मुझे विश्वस्त सूत्रो से पता चला है कि आपने तीनो राज्यों मे जाच हेतु सरकारी दल भेजा था। इसकी जाच रिपोर्ट आपको मिल गई है। अत ५९४ सत्याग्रहियो की सूची व आवेदन पत्र अपनी टिप्पणी के साथ जाच व निर्णय हेतु हमारे पास तुरन्त भेजे जावें।

(३) अन्तिम पैरा मे लिखा है—"आर्य समाज आन्दोलन के सम्बन्ध मे सम्भवतया कोई सत्याग्रही भूमिगत नही रहा।

मैंने अपने ३० जनवरी ८७ के पत्र द्वारा आपको उत्तर दिया था। सूचनार्थ है कि हैदराबाद सत्याग्रह के अधिकाश आर्यसमाजी सत्याग्रही भूमिगत रहे हैं जिनकी सूची हमारे पास है। इनके मामले में हमारी समिति विचार करेगी जिसकी चर्चा १७ १८ फरवरी को हैदराबाद की बैठक मे की गई थी।

कृपया पत्रोत्तर शीघ्र उचित रिकार्ड सहित भेजने का कष्ट करे।

भवदीय

आनन्दबोध सरस्वती

तथाकथित धर्मनिरपेक्षता

पंडित शिवकुमार शास्त्री, भू. पू. संसद्सदस्य

भारत की शासन नीति के विषय मे हमारे राष्ट्र के कर्णधारो के द्वारा "धर्म निरपेक्षता" शब्द की घोषणा ने राष्ट्र का भारी अहित किया है। यद्यपि इस शब्द की सृजना करने वालो के मन मे मात्र इतनी ही बात थी कि हम किसी सम्प्रदाय का लिहाज या उपेक्षा बिना किये न्यायानुसार शासन चलायेगे। किन्तु इस भाव के लिए वे "असाम्प्रदायिक" शब्द रखते तो कुछ अच्छा था।

इस धर्म निरपेक्षता शब्द ने तो युवको के मन मे धर्म के प्रति अनास्था और घृणा के भाव उत्पन्न कर दिये। परिणाम यह हुआ है कि स्वाधीनता के पश्चात् के शिक्षित युवक ९५ प्रतिशत बेनकेल के ऊट हो गये हैं।

ऋषियो के दृष्टिकोण से मनुष्य बनने के लिए "धर्म" अनिवार्य है—धर्मेणहीना पशुभि समाना" ठीक ही है।

मानव जीवन के लक्ष्यभूत 'फल चतुष्टय" मे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मे धर्म जड के स्थान पर है जैसे जड से रस ग्रहण कर वृक्ष पल्लवित, पुष्पित और फलित होता है, उसी प्रकार धर्मपूर्वक कामनापूर्ति, "काम" है। धर्मपूर्वक धन का अर्जन ही अर्थ है और जब धर्म, अर्थ और काम मर्यादित रूप मे ठीक-ठीक निभ जावे तो मनुष्य को चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त हो जाता है। यही उसकी समस्त जीवन यात्रा का लक्ष्य है। मोक्ष एक स्वय सिद्ध फल है, उसकी साधना धर्म, अर्थ और काम के परिणाम स्वरूप है। जैसे कपडे के १२ गज के थान के एक-एक गज के टुकडे किये जावे तो ग्यारह गज तक तो टुकडे करने पडेगे। १२वा गज तो अपने आप फटाफटाया रह जायेगा। इसीलिए किसी नीतिकार ने ठीक लिखा है—

धर्मार्थकाममोक्षाणा यस्येकोऽपिन विद्यते।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ॥

मानव शरीर पाकर जिसने धर्मादि फलो मे से कोई भी प्राप्त नहीं किया उसका जन्म बकरी के गले के थन के समान निरर्थक है। महर्षि दयानन्द की दृष्टि मे धर्म की महत्ता का परिज्ञान "सत्यार्थ प्रकाश" के अन्त मे महाभारत के उद्धृत दो निम्न श्लोको से चल जाता है।

न जातु कामान्नभयान्न लोभात्।
धर्मत्यजेज्जीवितस्यापि हेतो ॥
धर्मेनित्य सुखदु खे त्वनित्ये।
जीवोनित्योहेतुरस्यत्वनित्य ॥

श्लोकार्थ स्पष्ट है, लिखने की आवश्यकता नही।

ऋषि ने एक मनु का श्लोक भी लिखा—

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति य।
शरीरेण समनाश सर्वमन्यद्धि गच्छति ॥

इसका अर्थ भी स्पष्ट है।

ऐतिहासिक विश्लेषण—

अपने प्राचीन ग्रन्थो से पता चलता है कि बहुत लम्बे समय तक बिना राजतन्त्र के ही समाज व्यवस्थित रूप से चलता रहा। क्योकि सभी मनुष्य सात्विक और धार्मिक थे। शनै शनै राजसी और तामसी वृत्ति के मनुष्य भी पैदा हो गये। परिणामत उनका व्यवहार अनिमर्यादित हो गया। ऋषियो ने इस स्थिति को देखकर मनु से कहा कि अब ससार को व्यवस्थित करने के लिए राज्य की स्थापना होनी चाहिए सभी निर्बल बलवानो से और धार्मिक पापियो से सुरक्षित हो सकते हैं—विवरण निम्न प्रकार है—

क्वचिन्नराजातत्रासीत् न दण्डो न च दाण्डिक।

धर्मेणैव प्रजा सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम ॥ अर्थ स्पष्ट है।

ऋषियो की प्रार्थना सुनकर महर्षि मनु ने मानव धर्म शास्त्र बनाया और राज्य को चलाने के लिये अयोध्या राजधानी बनाई।

अयोध्यानाम तत्रासीत् नगरीलोक विश्रुता।
मनुनामानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम ॥

स्पष्ट है कि धर्म की स्थापना के लिए ही राजतन्त्र की उत्पत्ति हुई। राजनीति पर धर्म का अकुश अवश्य होना चाहिए। नही तो वह नीति प्रजा का शोषण करेगी। इस पर उर्दू शायर अकबर इलाहाबादी ने बहुत उत्तम लिखा है—

जलालेि बादशाही हो या जमहूरी तमाशा हो।
जुदा हो दी सयासत से, तो रह जाती है चगेजी ॥

अत राष्ट्र की घोषित शासन पद्धति धर्मपूर्वक राज्य चलाने की होनी चाहिए। धर्म शब्द मे सत्य और न्याय का स्वय अन्तर्भाव हो जाता है। धर्मनिरपेक्षता, शब्द अनर्थकारी है। इस शब्द के प्रथम प्रचलन के समय ही बिनोवा भावे ने इसका विरोध किया था।

होली पर्व

क्या ही सुन्दर दृश्य है इस मस्त फागुन मास का।
एक नया सदेश है सबके लिये मधु हास का॥
बह रहा शीतल पवन चहु ओर नभ हरषा रहा।
आज हस-हस कर सुधाकर है सुधा बरसा रहा॥
मालती चम्पा जुही हाथो मे ले पिचकारिया।
खेलने को फाग पिय से कर रही तैयारिया॥
आज देखो कैसा उत्सव हो रहा आकाश मे।
एक अद्भुत ही छटा है चन्द्र के प्रकाश मे॥
नाचते गाते सितारे रतजगा है रात भर।
आज रजनी बनके सजनी जा रही साजन के घर॥
चिरकाल से अपने हमे हर पर्व पर ही गर्व है।
पर यह होली आर्यो का इक अनोखा पर्व है॥
वृद्ध बालक और युवा क्या रक है क्या राव है।
आज तो सबके मनो मे एक जैसा चाव है॥
ग्वाल बालो की यह टोली ग्राम मे सजने लगी।
कृष्ण की मुरली मधुर भी फिर यहा बजने लगी॥
देखकर हर बाल मे मोती जड अनमोल है।
हो रहे है कृषक हर्षित गाते बजाते ढोल है॥
अन्न पककर खेत मे देखो खडा है इस समय।
यज्ञ कर इस अन्न का भगवान से करते विनय॥
हे प्रभो ! रक्षा करो इसकी नही यह नष्ट हो।
हो सुखी धन धान्य से नाही किसी को कष्ट हो॥
आज तो मिलकर गले से दूर कर दो शत्रुता।
हो परस्पर और भी दृढ हम सभी की मित्रता॥
भाई-भाई की तरह सब प्यार से शीतल रहे।
अज्ञानता का नाश हो सन्मार्ग पर चलते रहे॥

—जगदीश शरण 'शीतल'
प्रधान आर्यसमाज चादपुर

आर्य जगत् के समाचार

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का भव्य समारोह

हजारों भक्तों ने ऋषि दयानन्द को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी ऋषि बोधोत्सव दिनांक २५, २६ २७ फरवरी को टकारा मे बडी धूमधाम से मनाया गया। उत्सव के आरम्भ में ही श्री प० आनन्दप्रिय जी का अभिनन्दन किया गया और उनका प्ररणादायक प्रवचन हुआ।

२० फरवरी से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ प० मदनमोहन जी विद्यासागर के ब्रह्मत्व मे हुआ जिसकी पूर्णाहुति २६ फरवरी को प्रात १० बजे हुई। इस अवसर पर जहा देश के विभिन्न भागों से आर्य जन यहा पधारे, वहा आर्य कन्या महाविद्यालय बडौदा, जामनगर, कन्या गुरुकुल पोरबन्दर, गुरुकुल सूपा, गुरुकुल ध्रागध्रा के छात्र छात्राए भी आए। दिल्ली से दो विशेष बसें, हरियाणा से दो विशेष बसे, पजाब में इतना आतकवाद होने के बावजूद जालधर और लुधियाना से ऐसे अनेक ऋषि भक्त ऋषि को श्रद्धाञ्जलि देने वहा पधारे। अब हर वर्ष ऋषि बोधोत्सव होने के कारण टकारा में आर्य समाज के प्रति अधिक सहानुभूति पैदा हो रही है।

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी ऋषि लगर का प्रबन्ध आर्य समाज भुज (कच्छ) ने किया। नेतृत्व डा० एच० वी० पटेल, होस्पीटल रोड, भुज (कच्छ) ने किया। पिछले पाच वर्षों से वे इसी तरह कार्य कर रहे हैं। २६ फरवरी को विशेष भोजन का सारा व्यय श्री जयदेव आर्य सूरत वालो ने किया। २६ फरवरी को प्रात पूर्णाहुति का दृश्य देखने योग्य था, जब हजारो ऋषि-भक्त श्रद्धा से यज्ञ मे आहुति डाल रहे थे।

२६ फरवरी को ही ११ बजे ध्वजारोहण श्री जयदेव आर्य सूरत वालो ने किया। महात्मा आर्य भिक्षु जी ने उद्बोधन किया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश से पधारे हुए स्वतन्त्रता सेनानियो का जिन्हें श्री बजाज मोदी नगर वाले अपने साथ लाये थे, भी पुष्पमाला द्वारा स्वागत किया। स्वतन्त्रता सेनानियो में मुख्यतया ये थे—डा० सूर्यपाल, सरदारसिंह, सन्त प्रकाश, मुन्शीराम, सुभद्रा देवी, वीर धनञ्जय। इसके बाद भव्य शोभा यात्रा निकली। जिसमे सभी प्रदेशो से आए आर्य जन सम्मिलित हुए। शोभा यात्रा का सचालन टकारा ट्रस्ट के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने किया। २६ फरवरी को ही आर्य महासम्मेलन श्री मदनमोहन विद्यासागर की अध्यक्षता मे हुआ।

रात्रि को श्रद्धाञ्जलि सम्मेलन हुआ लोगो ने अपील पर उदारता से दान दिया। इस अवसर पर कलकत्ता से पधारे श्री फूलचन्द आर्य एव दिल्ली से श्री नवनीतलाल एडवोकेट आदि का पुष्पमाला द्वारा स्वागत किया गया। महात्मा आर्य भिक्षु जी के उपदेश के बाद रात्रि को एक बजे सभा समाप्त हुई।

२७ फरवरी शुक्रवार प्रात आयुर्वेद महासम्मेलन गुजरात सरकार के माननीय आरोग्य मन्त्री श्री बल्लभ भाई पटेल ने आयोजित किया। जिसके सयोजक श्री दयाल भाई आर्य थे।

अन्त मे ट्रस्ट के मन्त्री एव ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओकार नाथ एव श्री आर० के० मुन्शी ने सभी समागत आर्य जनो का धन्यवाद किया। विशेषकर आर्य समाज भुज (कच्छ) की भूरि-भूरि प्रशसा की।

वह चाह कर भी पादरी नहीं बन सकती !

नई दिल्ली ११ मार्च। लाहौर की एस्थर इनायत में महिला पादरी बनने का हर गुण एव योग्यता है लेकिन वह चाहकर भी महिला पादरी नही बन सकती।

३१ वर्षीया एस्थर ने अब तक का अपना पूरा जीवन आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने और अध्ययन में बिताया है। एस्थर ने लाहौर के साप्ताहिक व्यू प्वाईट को एक भेंट में बताया कि पाकिस्तान के सांस्कृतिक परिवेश में उनका पादरी बनना सभव नही है।

साप्ताहिक के अनुसार पाकिस्तान के चर्च में महिलाओं को पादरी बनाये जाने की इजाजत नही है क्योंकि ऐसी आशका है कि पाकिस्तान की सास्कृतिक पृष्ठभूमि मे महिला पादरी स्वीकार नहीं की जायेगी।

एस्थर के पिता इस सबसे काफी हताश हैं। उन्होंने फैसला किया था कि वे अपनी पहली सन्तान को ईश्वर को समर्पित कर देंगे। लेकिन उनकी पहली सन्तान (एक पुत्र) बचपन में ही चल बसी। अब उनके दस बेटिया हैं जिनमें एस्थर सबसे बडी है।

एस्थर ने कोरिया से आध्यात्म में स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त की। चर्च एस्थर को महिला पादरी बनने की इजाजत नही दे रहा है। लेकिन एस्थर ने ईसाइयो विशेषत महिलाओं की सेवा करने का पक्का व्रत ले लिया है और आजीवन विवाह नहीं करने का भी फैसला किया है।

सत्यार्थ प्रकाश एक चर्चा

इस महान शोध ग्रन्थ के दो भाग है एक पूर्वार्ध, दूसरा उत्तरार्द्ध, पूर्वार्द्ध में दस समुल्लास हैं और उनमें सार्वभौमिक सिद्धान्तों पर व्याख्या की गई है और यह मण्डन भाग कहलाता है। उत्तरार्द्ध मे चार समुल्लास हैं जिनमें पुराणी, जैनी, बौद्ध, चारवाक्, किरानी, कुरानी, मत मतान्तरों पर विस्तृत समालोचना की गई है। यह वस्तुत खण्डन भाग कहलाता है खण्डन भाग रोगी के लिए औषधि रूप है और मण्डन भाग निरोगी पुरुषों के लिए पथ्य रूप है।

इस पुस्तक के लिखने से महर्षि का यही प्रयोजन प्रतीत होता है कि मनुष्य जाति को अन्धकार से निकाल कर वैदिक सूर्य का प्रकाश दिखलाना चाहते थे। उन्होंने स्वय इस पुस्तक में लिखा है कि—

"मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है। उत्तरार्द्ध मे महर्षि ने अपनी अकाट्य युक्तियो और प्रमाणों के बल से अवैदिक मतो का बलपूर्वक खण्डन किया है इसी सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में स्वर्गीय श्री प० गुरुदत्त जी एम. ए कहा करते थे कि यदि सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रुपया होता, तो भी मैं उसे अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर (भी) खरीदता, मैं जिधर देखता हूँ उधर ही "सत्यार्थ प्रकाश" में वह विद्या की बातें भरी पडी पाता हूँ कि जिनका वर्णन करते हुए मनुष्य की बुद्धि आश्चर्य चकित हो जाती है। मैंने ग्यारह बार "सत्यार्थ प्रकाश" को विचार पूर्वक पढ़ा है और जब जब उसे पढ़ा, तब तब नये से नये अर्थों का भाव मेरे मन मे हुआ है। "सत्यार्थ प्रकाश" समाज आज की बीमारियों का होम्योपैथिक दवाई का बक्सा है—जो बीमारी ठीक नहीं कर सकें, बीमारी भाव जायेगी जनमानस की चेतना के केन्द्र सत्यार्थप्रकाश में मैं अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत करता हूँ। जो बीमारी के लिए इलाज और दुष्टों हेतु कराल-काल बना है।

दक्षिण भारत में आर्यसमाज की प्रगति

आर्यसमाज मदुरै (दक्षिण भारत) के व्यवस्थापक श्री म० नारायण स्वामी के कठिन प्रयासो से दक्षिण भारत मे आर्य समाज के प्रचार एव प्रसार का कार्य दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है। उनके सतत् प्रयत्नों से मदुरै के अतिरिक्त तिरुनैलवल्ली, मीनाक्षीपुरम् और नागरकोइल में भी आर्य समाज की विधिवत् स्थापना हो चुकी है और सम्भवत. मई १९८७ के अन्त तक सेनकोट्टाई में भी एक आर्यसमाज स्थापित हो जायगा।

शुद्धि के क्षेत्र में भी श्री नारायण स्वामी प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। फरवरी मास १९८७ में उन्होंने विशेष रूप से आयोजित समारोहों में १९ ईसाइयो और एक मुस्लिम व्यक्ति की शुद्धि करके उन्हें पुन वैदिक धर्म में दीक्षित किया। साप्ताहिक [illegible] के अवसरों पर उन्होंने तमिल भाषा में सत्यार्थप्रकाश की प्रतियां भी विशिष्ट व्यक्तियों को प्रदान की जिन्होंने आर्य समाज के कार्यों और वैदिक धर्म में काफी रुचि दिखलाई।

आर्य समाज मद्रास का वार्षिकोत्सव

गायत्री-यज्ञ के आयोजन के साथ २३-१-८७ आरम्भ होकर १-२-८७ को सम्पन्न हुआ। मद्रास महानगर की जनता ने अत्यन्त श्रद्धा भक्ति एव उत्साह से इस यज्ञ में भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान श्री पृथ्वीराज शास्त्री मद्रास आर्य समाज के निमन्त्रण पर मद्रास पधारे और यज्ञ का पौरोहित्य स्वीकार किया।

यज्ञ का कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातः ६ बजे से ७-४५ तक चलता तथा साय ८-१५ से ६-४५ तक। अपने सारगर्भित वेदोपदेश से श्री शास्त्री जी के प्रथम दिन ही से वेदों की अमृत वाणी का रस पानकर के मद्रास की जनता धन्य होने लगी। और अगले दिन से प्रार्थना भवन स्थान पाना कठिन हो गया। श्रोताओं में वेदों के प्रति जिज्ञासा हुई और वेद पठन की लालसा जागी।

पिछले बीस वर्षों से गायत्री यज्ञ का अनुष्ठान मद्रास आर्य समाज के उपप्रधान तथा डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी स्कूल मद्रास के सेक्रेटरी, कर्मठ कार्यकर्ता श्री जयदेव जी के प्रयत्नो से सफल होता आ रहा है। मद्रास आर्य समाज के अन्य सदस्य मुक्त-हृदय से उन्हे सहयोग देते हैं।

पूर्णाहुति के अवसर पर पूज्य शास्त्री जी ने श्री वेलायुधन आर्य द्वारा अनूदित दो पुस्तको के लिए उन्हें पुस्तक ५०० रुपये का पुरस्कार दिया। तमिल भाषा मे वैदिक साहित्य के प्रकाशन और प्रचार का सारा श्रेय मद्रास आर्य समाज के जनरल सेक्रेटरी श्री पाडुरंग राव को जाता है

रविवार २५-१-८७ के यज्ञ में आर्यसमाज मद्रास द्वारा सचालित डी.ए.वी. हायर सेकेण्डरी स्कूल के प्राचार्य, शिक्षक, तथा ५०० छात्र-छात्राओं ने सोत्साह यज्ञ में भाग लिया। शास्त्री जी ने बच्चो को वैदिक परम्परा से अवगत करा कर आशीर्वाद दिया।

— सुरेन्द्र कुमार, मन्त्री
आर्यसमाज माउ ट रोड, मद्रास

बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ऋषि बोधोत्सव समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में १-३-८७ को श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता में बम्बई की सभी आर्य समाजो की ओर से आर्य समाज चैम्बूर में ऋषिबोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। वक्ताओं मे डा० सोमदेव शास्त्री, स्वामी सुमेधानन्द ने इस अवसर पर महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलने की आवश्यकता समझाई। दयानन्द बालिका विद्यालय की छात्राओं ने भी महर्षि दयानन्द और आर्य समाज सम्बन्धी भाषण दिए। सभा का सचालन आर्यसमाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री श्री के० देवरत्न आर्य ने किया। उन्होने अपने भाषण मे देश में बढ़ती साम्प्रदायिकता और सरकार की कमजोरियों पर ध्यान दिलाया। श्रीमती शिवराजवती और श्रीमती लज्जा रानी गोयल के भजन हुये। श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि आर्य समाज हिन्दुओं का कोई सम्प्रदाय नही परन्तु वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार के लिये है यदि सब मजहब वाले मनुष्य और ईश्वर के बीच आने वाले तीसरे व्यक्ति अर्थात पैगम्बर, अवतार, गुरु को अलग कर दें तो मनुष्य मात्र एक हो सकते हैं। अन्त मे सभा प्रधान श्री ओंकारनाथ ने धन्यवाद का प्रस्ताव करते हुये कहा कि आर्य समाज का भविष्य बहुत उज्ज्वल है आपने आर्य समाज के कार्य की जो गुजरात मे पोरबन्दर, जामनगर, अहमदाबाद, राजकोट और टकारा मे हो रहा है उसकी जानकारी दी और इस आयोजन के लिये आर्य समाज चैम्बूर के अधिकारियों का जिन्होंने पधारने वाले सब भाइयो के भोजन का सुन्दर प्रबन्ध किया था धन्यवाद दिया।

—धर्मवीर गुलाटी
महामन्त्री

आर्ष गुरुकुल : धर्म व संस्कृति के संस्थापक

आर्ष महाविद्यालय किरठल मेरठ का ७०वां वार्षिकोत्सव ६ से ८ मार्च तक समारोह पूर्वक मनाया गया। ८ मार्च को समापन समारोह के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री तथा उच्चकोटि के विचारक व वक्ता श्री डा० धर्मपाल जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा—गुरुकुलो की महानता इसी में है कि इन्ही सस्थाओ ने वैदिक काल से आज तक वैदिक धर्म व आर्य सस्कृति की स्थापनाए व रक्षा की है। आज भारतीय संस्कृति के सकट को अनुभव करते हुए हमें गुरुकुलो मे बड़ी आशाए है कि यही देश की अखण्डता व राष्ट्र रक्षा का महान कार्य अपने हाथ में लेकर देश को सकट से बचाए गी। आर्य समाज की महान उपलब्धि उनकी चर्चा करते हुए उन्होने कहा कि रोम के पोपपाल के भारत आगमन को जहां हम अपनी सस्कृति के लिए चैलेज समझ रहे थे, वहां आर्य समाज ने कालाहांडी के ३ लाख आदिवासियो को ईसाई बनने से रुकवाया और इसी अवसर पर २५०० ईसाइयों को भी वैदिक धर्म में दीक्षित किया।

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट जनकपुरी दिल्ली के महामंत्री तथा दिल्ली सभा के मंत्री श्री ओमप्रकाश जी, सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता कर्मठ मिशनरी स्वा० स्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने हार्दिक उद्गार प्रकट करते हुए आर्य समाज के मिशन को जन-जन तक पहुंचाने की अपील की।

जिलाधीश श्री राधेश्याम जी कौशिक ने महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज की महानता पर अपने भावभीने शब्दों में जनता से ऋषि मिशन को अधिक से अधिक जनता तक पहुंचाने का आह्वान किया।

आचार्य श्री ब्रह्मसिंह जी के हार्दिक सहयोग व कर्मठता ने उत्सव की सफलता में चारचांद लगाए।

शोक समाचार

बिहार में आर्य की धूम मचाने वाले श्री नन्दलाल शाह का ६८ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। उनका स्थान जो रिक्त हुआ उसकी पूर्ति सम्भव नही कारण नन्दलाल जी की ऋषि भक्ति, व मिशनरी भावना विरले ही देखने में आती है।

—शिवराज शास्त्री

आर्य समाज रामनगर गुड़गांव का ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि पर्व)

२६ २ ८७ को उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रातःकाल नगर मे प्रभातफेरी निकाली गई रात्रि को श्री सत्यपाल जी की अध्यक्षता मे समारोह हुआ जिसमे आर्य जगत के विद्वान् श्री शिवकान्त उपाध्याय ने सच्चे शिव का स्वरूप बताया और महर्षि दयानन्द के जीवन की चर्चा करते हुए उनके चलाये हुए मिशन को पूरा करने का सन्देश दिया। लोगो ने अधिक सख्या मे भाग लिया।

आर्य समाज राम नगर गुडगावा का वार्षिक चुनाव सवसम्मति से इस प्रकार हुआ —

प्रधान—श्री राजेन्द्र प्रसाद

मन्त्री— ओमप्रकाश चयनी

कोषाध्यक्ष— , प्रमदास कुमार

कन्या गुरुकुल नरेला, देहली का वार्षिक महोत्सव

कन्या गुरुकुल नरेला का वार्षिकोत्सव उमग के साथ २१ २२ मार्च को मनाया जा रहा है जिसमे राजनेता व धर्मनेता निम्न प्रकार से पधार रहे है।

श्री बलराम जी जाखड (स्पीकर लोकसभा)

श्री हरकिशन लाल जी भगत (मन्त्री भारत सरकार)

श्री बशीलाल जी चौहान (मन्त्री स्वास्थ्य महा परिषद दिल्ली)

श्री महेन्द्र सिंह जा माथी (महापौर नगर निगम दिल्ली)

श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

स्थापना दिवस समारोह

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान मे ११२वा आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह लाल किला मैदान मे दिल्ली की समस्त आर्य समाजो एव सस्थाओ की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा इस वर्ष रविवार, २९ मार्च १९८७ को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक लाल किला मैदान मे आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह का विशाल आयोजन कर रही है।

भारतीय सस्कृति मे इस पावन दिन का विशेष महत्व है। आप से सानुरोध प्रार्थना है कि इस पावन पर्व पर अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर अपनी श्रद्धा एव आस्था का परिचय द

महाशय धर्मपाल — प्रधान

राजेन्द्र दुर्गा — महामन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

FREE

ओ३म्

राष्ट्र देवो भव

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सारे संसार को आर्य बनाओ

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१

वर्ष २२ अंक १४] चैत्र कृ० १५ सं० २०४४ रविवार २९ मार्च १९८७ वार्षिक मूल्य २५, एक प्रति ६० पैसे

हैदराबाद सत्याग्रह सम्मान पेंशन

सभाप्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, प्रो० शेरसिंह जी व सोमनाथ जी मरवाह को गृहराज्य मन्त्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही से भेंट

सरकार द्वारा उचित समाधान का आश्वासन

दिल्ली २० मार्च।

आज ३ बजे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ प्रो० शेरसिंह बाबू सोमनाथ एडवोकेट गृहराज्यमन्त्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही से मिले—हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने वाले सेनानियों के सम्बन्ध में गृहमन्त्रालय के अधिकारियों द्वारा की जा रही लापरवाही की ओर मन्त्री महोदय का ध्यान आकृष्ट किया गया जिससे पेन्शन के अधिकारी स्वतन्त्रता सेनानियों मे असन्तोष हो रहा है। लगभग एक घण्टे तक आर्य नेताओं ने अपना दृष्टिकोण रखा।

श्री पाणिग्रही जी ने पेन्शन प्राप्त करने के अधिकारी सत्याग्रहियों के प्रति बडी सहानुभूति से सभी मुद्दों पर विचार करने का आश्वासन दिया। गैर सरकारी सलाहकार समिति का कार्य काल ३१ मार्च को समाप्त हो रहा था। समिति का कार्य पूरा करने के लिए सभा प्रधान के लिखित अनुरोध पर इसे आगामी ३० सितम्बर तक बढा दिया गया।

समिति की आगामी बैठक जिसे गृहमन्त्रालय के सैल ने रोक दिया था श्री पाणिग्रही ने २५ मार्च को बैठक बुलाकर अपनी सिफारिशें भेजने के अनुरोध को भी स्वीकार कर लिया।

—

हैदराबाद आर्य सत्याग्रही सम्मान पेंशन

गैर सरकारी सलाहकार समिति

समिति की एक आवश्यक बैठक २५ मार्च १९८७ बुधवार मध्याह्नोत्तर ३ बजे सार्वदेशिक सभा कार्यालय दयानन्द भवन रामलीला मैदान पर हुई जिसमें निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रो० शेरसिंह जी
श्री रणवीरसिंह
प० शिवकुमार जी शास्त्री
बाबू सोमनाथ जी मरवाह
प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम्
श्री रामचन्द्र राव कल्याणी

बैठक की अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की।

बैठक की सम्पूर्ण कार्यवाही आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी।

हरियाणा राजस्थान से गोधन बाहर नहीं जायेगा, गौहत्या विरोधार्थ आर्य प्रचारकों के सत्-प्रयास

अखिल भारतीय गौराष्ट्र रक्षा सघर्ष समिति की ओर से आचार्य सत्यप्रिय जी के नेतृत्व में स्वा० सिंह मुनि (बादशाहपुर) स्वामी अमरानन्द जी (मेवात केसरी) श्री भक्त भगतराम जी, कुंवरसिंह जी ने २१ ग्रामो की पचायत ग्राम जोटिया त० कोट कासिम (अलवर) में तथा २० मार्च को ३१ ग्रामो की पचायत नन्दरामपुर वास त० महेन्द्रगढ मे और २२-३-८७ को ५१ ग्रामो की पचायत आर्यसमाज रेवाडी मे तथा २५ मार्च ३५ ग्रामो की पचायत तावडू मे एव २६ को सोडावास मे (अलवर) मे पचायत का निर्णय किया कि कोई हिन्दू गौ धन को मेव को न बेचे और राजस्थान हरियाणा से गौ धन बाहर ले जाने वालो की सूचना तुरन्त पुलिस को दे और यदि पुलिस कार्यवाही मे उदासीनता दिखाये तो जन समर्थन से गौवें छुडा कर गौशाला आदि मे भेज दी जावें और यदि गौशाला भार उठाने मे असमर्थता प्रकट करे तो गऊए गौभक्त सेवकों को दे दी जावे—"जो पाले सो दूध पीये" के नाद को ग्राम-ग्राम और डगर डगर मे गुंजारित कर दिया जाय।

आर्यसमाज और श्रीराम

श्री सत्यानन्द आर्य

आर्य समाज श्री रामचन्द्र को महापुरुष मानता है। यह भ्रान्ति गलत है कि श्री राम की आर्य समाज अवहेलना करता है। अपितु सच्चाई यह है कि आर्य समाज ही श्री राम को सच्चे रूप मे मानता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन को आदर्श जीवन मानकर और समझकर आर्यजन अपने जीवन के सुधार की प्रेरणा लेता है।

श्री राम को ईश्वर का अवतार बताना लोगो की अनभिज्ञता का प्रतीक है। आर्यसमाज इन मान्यताओ के विरुद्ध है। ईश्वर को अवतार लेने की आवश्यकता ही नहीं होती। महर्षि दयानन्द के शब्दो मे—"जो ईश्वर अवतार शरीर धारण किये बिना जगत की उत्पत्ति किया हो, प्रलय करता है, उसके सामने कस और रावणादि एक कीडी के समान भी नही। वह सर्वव्यापक होने से कस रावणादि के शरीरो मे भी परिपूर्ण हो रहा है। जब चाहे उसी समय मर्मच्छेदन कर नाश कर सकता है। भला उस अनन्त गुण कर्म स्वभाव युक्त परमात्मा को एक क्षुद्र जीव के मारने के लिए जन्म-मरणयुक्त कहने वाले को मूर्खपन से अन्य कुछ विशेष उपमा मिल सकती है।" ईश्वर अजर और अमर है, जबकि श्रीराम व तथाकथित अवतारों ने जन्म लिया है और मृत्यु को भी प्राप्त हुए हैं।

आर्य समाज के स्थापना से लाखो वर्ष पूर्व ससार के इतिहास मे अपना अविस्मरणीय अमर नाम अकित करने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मजयन्ती ७ अप्रैल को सारे देशभर मे मनाई जाती है। श्रीराम कौन थे कैसे थे महर्षि बाल्मीकि जी ने उन्हें आर्यसमाजी ही लिखा है

आर्य सर्वसमश्चैव सदैव समदर्शिन
—बाल्मीकि बालकाण्ड

महर्षि दयानन्द ने उन्हें आप्त पुरुष लिखा है।

आर्य समाज शुद्ध रूप से उनकी जयन्ती मनाता है जबकि आज उनके नाम पर कितने ही अन्य सम्प्रदाय तथाकथित रामभक्तो ने खडे कर रखे हैं और उनका नाम तथाकथित सनातन धर्म बताया जाता है। धर्म का धन्धा करने वालो से बचकर शुद्ध रामचरित्र को मानव मात्र के हृदयग्राही बनाने की आवश्यकता है। इस दिशा मे आर्यसमाज के युवक विचारक परम्परागत आर्य श्री सत्यानन्द आर्य का लेख प्रस्तुत है। —सम्पादक

लेकिन आर्य समाज बडी श्रद्धा और भक्ति से श्रीराम के गुणो का कायल है। राम को ईश्वर का अवतार न बनाकर आर्य समाज भले ही उसकी पूजा पाठ, चन्दन चढावा का दिखावा न करता हो, लेकिन राम के चारित्रिक गुणो का जितना प्रचार प्रसार उसने किया है वह अतुलनीय है। उनके गुणो और कार्यों को अपना ध्येय व कार्यक्रम का अग माना है। श्रीराम ने राष्ट्र उद्धार व दैत्यो से मुक्ति के लिए सघर्ष किया, उसकी प्रेरणा पाकर आर्य समाज निरन्तर राष्ट्र निर्माण की योजना में अग्रसर रहा है तथा राष्ट्र विरोधी विध्वन्सक तत्वो के साथ जूझता रहा है।

श्री राम सा आदर्श जीवन उनके गुण, मातृ पितृ भक्ति, भ्रात प्रेम व उन जैसे कुशल योद्धा व प्रशासक हरेक राष्ट्र नेता के लिए अनुकरणीय है। आर्य समाज श्री राम के राष्ट्रधर्म व मानव के लिए किये गये कार्यो का गुण गान करता रहता है सबको ही ग्रहण करने के लिए प्रेरित करता है।

कई लोगो द्वारा श्री राम के लिए की जाने वाली रामलीला को आर्य समाज मान्यता नही देता। जिन तरीको और पत्रो द्वारा इन महापुरुषो के जीवन व नाम से खिलवाड किया जाता है, वह उनके प्रति भक्ति या श्रद्धा का प्रतीक न होकर कृतघ्नता ही मानी जायेगी। आर्य समाज सच्चे अर्थो मे जीवन मे उनके गुणो को ग्रहण करने व धारण करने की प्रेरणा देता है।

आर्य समाज का श्रीराम व अन्य महापुरुषों के चित्र लगाने मे भी कोई विरोध नही। हम इन महापुरुषो के चित्र बडी श्रद्धा से लगाते हैं ताकि उन पूज्य जनो के उपकार विशेषतायें स्मृति में निरन्तर बने रहें साथ ही आने वाली पीढिया भी सहज मे ही उनके जीवन से परिचित और उनके गुणो से प्रेरित होती रहे।

आर्य समाज चित्र की नही चरित्र की पूजा सिखाता है। यदि राम की पूजा करने वाला चरित्रहीन भ्रष्टाचारी व अनार्यत्व के गुणवाला हो तो उसे कदापि रामभक्त नही कहा जा सकता।

आज समाज मे जिस प्रकार भाई-भाई धन सम्पत्ति, राजसत्ता के लिए परस्पर सग्राम रत है। नारी जाति का न केवल अपमान व दुरुपयोग हो रहा है। जीवित नारिया जलाई जा रहीं हैं। ऐसे विषाक्त व विषम वातावरण को सुधारने के लिए घर घर रामचरित्र सुनने-सुनाने व उससे प्रेरणाए लेने की परम आवश्यकता है। आर्योपदेशक व आर्य भजनोपदेशक सभी मीठे स्वरों मे गाते हैं —

सिखा दे रही थी, हमको रामायण अति प्यारी

वेदामृत—

जो जागता है, वह पाता है

अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते,
अग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति।
अग्निर्जागार तमयं सोम आह,
तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥

ऋग० ५-४४-१५, साम० १८२७

शब्दार्थ—(अग्नि) अग्नि या तेजस्वी व्यक्ति, (जागार) जागता है, (तम्) उसको (ऋच) ऋचाए, (कामयन्ते) चाहती है। (अग्नि जागार तम् उ) अग्नि जागता है, उसको ही, (सामानि) सामवेद की ऋचाए, (यन्ति) प्राप्त होती है। (अग्नि जागार) अग्नि जागता है, (तम आय सोम आह) उससे यह सोम कहता है, (अहम्) मैं, (तव) तेरी, (सख्ये) मित्रता मे, (न्योका) सुखपूर्वक निवास वाले, प्रसन्नचित्त, (अस्मि) हूँ।

हिन्दी अर्थ—अग्नि (या तेजस्वी व्यक्ति) जागता है, उसको ही ऋचाए चाहती है। अग्नि जागता है, उससे पास ही सामवेद की ऋचाए आती हैं। अग्नि जागता है, उससे सोम कहता है कि मैं तुम्हारी मित्रता मे सुखपूर्वक निवास करता हूँ (प्रसन्न रहता हूँ)।

भारत-द० अमरीका कभी एक ही द्वीप थे

गेइसविले (अमरीका)। ११ मार्च (डी पी ए)।

इस धारणा के अकाट्य प्रमाण मिले हैं कि वर्तमान भारतीय उपमहाद्वीप आस्ट्रेलिया, अन्टार्कटीक अफ्रीका, दक्षिणी अमरीका तथा दक्षिणीपूर्वी एशिया के कुछ भाग कभी एक बृहद महाद्वीप के हिस्से थे।

फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के भूगर्भवेत्ताओ के एक दल की रिपोर्ट के आधार पर उस दल के प्रमुख नील ओपडिके ने कल यहा यह दावा किया।

उन्होने बताया कि फ्लोरिडा मे तेल खनन के दौरान पृथ्वी की सतह से तीन हजार मीटर नीचे से ऐसे पत्थर मिले है जिनके अन्वेषण से इस धारणा की पुष्टि होती है कि फ्लोरिडा कभी उत्तरी अमरीका का भाग होने की बजाये अफ्रीका का हिस्सा था।

सम्पादकीय

हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य ?

महाकवि अकबर ने उस समय जब हिन्दू-मुस्लिम एकता का नारा लगाते हुए आठ-दस वर्ष ही लिये थे और मजहबी जनून बढ़ता ही जा रहा था जो बात कही थी वह आज तो और भी बढ़-कर लागू होती है—

कि इतने दिन हुए तो भी हमें हमदम नही मिलते।
घरों से घर मिले है पर दिलो से दिल नहीं मिलते॥

और मिलें भी तो कैसे ? जिनके राग का केन्द्र बिन्दु-भारत नहीं है और जब भी उन्हें प्रेरणा लेने की आवश्यकता होती है तो जो मक्का और मदीना व पाकिस्तान की ओर आख उठाकर देखते हैं उनसे फिर राष्ट्र प्रेम की आशा ? जिनका अधिकाश भाग पांच-पांच समय तो नियमित रूप से भारत से बाहर की ओर एक दिन में झाककर देखता है एक मास रोजा रखते हैं और प्रात छुहारा खाकर रोजा खोलते हैं क्योकि छुहारा अरब में पैदा होता है जबकि बाद मे पेट भारत की दाल-रोटी से भरना है। जिसे कोयल की जगह बुलबुल, हिमालय के स्थान पर कोहेनूर, गगा जल के स्थान पर आबे जमजम, वीरो मे शिवा-प्रताप के स्थान पर रुस्तम और सोहराब, राजाओ मे भोज और विक्रम के स्थान पर हातमताई और और मौलेरवा बाल्मीकि व व्यास के स्थान पर हरीरी व उमरउल कैस याद आते हैं उनसे और भारतीय दृष्टि-कोण की आशा कैसी ?

गाधी टोपी लगाने से राष्ट्रीयता की गारन्टी नही मिल जाती वफादारी की शपथों का प्रारम्भ करने वाले खलीकुज्जमा और जहरुल हसन लारी, पाकिस्तान चुपके से निकल भागे थे। केवल वेश बदलने से राष्ट्रीयता नही आ जाती, जब तक मनोवृत्ति न बदले तब तक वह असम्भव है। हमारे विचार में मनोवृत्ति परि-वर्तन का काम आर्य समाज के द्वारा कराया जाता, तो उपयोगी रहता जोकि प्रारम्भ से कर हो रहा है। सरकार ने बहुत से काम किये हैं और विदेशीय सत्ताधीशो को बाहर निकाला है पर बाहर के शत्रुओ को आप बाहर करे परन्तु घर के अन्दर का सुधार महर्षि दयानन्द के बताये उपाय से ही चल सकेगा।

विदेशी मनोवृत्ति को कुचलने का काम आर्य समाज के द्वारा ही करना चाहिये। कुछ दिन पीठ थपथपा दीजिये फिर देखिये यह कठिन माग कैसा सुगम हो जायगा। हिन्सा में आर्य समाज को बिल्कुल विश्वास नही है। यदि होता तो जब इसके नेता स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, म० राजपाल आदि मारे गये यह भी उत्पात कर सकते थे पर हमारा लक्ष्य कुछ और ही था।

अछूतोद्धार-आन्दोलन जिसे आर्य समाज ने चलाया था। आज छोटा सा राज्य सहयोग मिलने से चार चाद लग जायेंगे। ठीक इसी प्रकार यदि भारतीयकरण (शुद्धि) आन्दोलन के साथ आपकी सहानुभूति व सहयोग मिलने से कठिन कार्य भी आसान हो जायगा। साथ ही सात सौ साल पुरानी अभारतीयता पौने नौ वर्ष मे समाप्त हो सकती हैं। ऐसा करके उनकी भावी पीढी के साथ बडा ही उपकार कर सकेंगे। कोयलो को साबुन से धोकर सफेद करने का ढोंग न रचिये। किन्तु वह कालिमा बढी ही अन्त में देश का विभाजन भी करा करके ही शान्त हो सका। विदेशी कालिमा मानव मन में बढी है। इन अभारतीय मस्तिष्क रूपी कोयलो को साबुन से सफद होने को छोडकर दयानन्द की शुद्धि की आग मे छोड दीजिए देखो फिर क्या परिणाम होता है ? भट्टी मे जाने के बाद कोयला स्वय कालिमा छोड कर सफेद हो जायगा। वैचारिक मतभेदो के कारण वह मानसिक जहरीले तत्व हैं जो परस्पर प्रम-भाव से मिलने नही देते हैं। रहीम ने लिखा है कि—

रहिमन मोहि सोहत नही केर-बेर को सग।
वे डोलत रस आपने इनके फाटत अग॥

केला और काटेदार बेर के पेड को एक साथ लगाकर भारतोदय की शोभा को नष्ट मत होने दीजिये। अन्यथा अहिन्सा की हवा चलने पर अहिन्सा और दया का अवतार यह अकेला (हिन्दू) नष्ट हो जायेगा।

आसाम और मद्रास के ईसाइयो ने भी कुछ इसी प्रकार के अराष्ट्रीय भाव उत्पन्न करके अभारतीयता के बीज बोये हैं सैकडो मन्दिरो को तोड कर पृथक्-२ प्रान्तो की माग की हैं। चतुर अग्रेज ने अपने साथ-२ क्रिश्चियनिटी का जो बीज बोया था उसकी जड मे भारतियो का ही रक्त डाल कर उसे पल्लवित भी किया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ यह दोनों वर्गीय तत्व कुछ मुरझाने लगे थे। दक्षिण के बडे-२ साठ से ऊपर भवन भी बिक गये थे। किन्तु धर्म निरपेक्षता की आड में वह अराष्ट्रीय तत्व पुन अपनी कमर सीधी कर रहे हैं। अखण्ड भारत में उतने पादरी भारत मे नही थे जितने आज खण्डित भारत मे विद्यमान हैं। 'डिस्कवरी आफ इण्डिया" नामक प० नेहरू की पुस्तक का उद्धरण देते हुए सर था-मस की शताब्दी मनाते हुए कहा था कि भारत में ईसाइयत की आज की आवश्यक माग है। केवल धर्म प्रचार ही उनका उद्देश्य होता और मन्दिर आदि को बिना गिराये यदि वह शान्ति से चलता रहता तो कुछ सहन हो सकता था पर जब ईसा और यरूसलम की ओर आखे उठी हो तो चिन्ता होनी स्वाभाविक है। अभारतीयता सबसे बडा पाप है वह चाहे हिन्दू मे हो या मुसलमान ईसाई-यहूदी मे किन्तु भारत मे रहकर अपने राष्ट्रधर्म को कभी न भूलना भी एक महान् कर्त्तव्य है।

महात्मनो हंसराजस्य स्तवनम्

—धर्मवीर शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य
BI/२१ पश्चिम विहार न० दिल्ली-६३

१ — आमृत्योर्वै श्रुतिषु विहित स्वामिभोद् घाटित च
धर्मालोकोज्ज्वलितचरित ब्रह्मचर्य-प्रधानम् ।
शिक्षादर्श व्रतमिव शुभ मन्यमान सिषेवे
श्रद्धेय त गुणिगणगुरु हसराज नमामि ॥

२— दीप्ति याते श्वसन ततिभिस्त्याग-यज्ञो समिद्भि
कामानां यो भजन निपुणो देहमुक्त सदासीत् ।
यश्चारण्ये मुनिरिव पुरेऽकिञ्चन सन्नुवास
नौमीडयम त प्रणतशिरसा हसराज मुनीन्द्रम ॥

३— आत्मत्यागमय तदा समकरोद् याग यतीन्द्रस्तु स
तस्याद्याप्यनुभूयते परिमलो व्याप्तो भुवं सर्वत ।
विद्वांस शतश परार्थमतयस्तस्याशिषा भूतले
छात्रानभ्युपकुर्वतेऽनवरत सस्थाप्य विद्यालयान् ॥

४ नीर क्षीर विवेक विश्रुत यथा हसो भुवि ज्ञायते
भोगेभ्य खलु हसराज विदुषा त्यागो वरीयान् वृत ।
मत्वा कञ्चरमन्यदत्र सकल मुक्ता मरालोऽस्ति वै
सौजन्य शुचितादिदिव्यसुगुणास्तेनापि किं नार्जिता ॥

५— पौरस्त्य पूर्वाग्रह मुक्ति काम निरस्त पाश्चात्य दुराग्रहं वै ।
सम्पादितान्योन्य समन्वय त नमामि लोकार्चित हसराज ॥

६— श्रद्धामूर्ति सरलहृदय सौम्यवेषा सुशील
शान्तो दान्तस्तपसि निरत सयमी सद्गृहस्थ ।
साध्वाचार परहितरतो धार्मिक कर्मवीरो
न स्यात् कस्य प्रिय इह परो हसराजो महात्मा ॥

७— वटवृक्ष समव्याप्ति दयानन्दाख्य वैदिक ।
न्यासो यामद्य सम्प्राप्तस्तत्प्रतापोऽस्य कारणम् ॥

हिन्दी अनुवाद

१—वेदादि शास्त्रो मे निर्दिष्ट तथा स्वा० दयानन्द सरस्वती द्वारा इस युग मे उद्घाटित, धर्म से आलोकित चरित्र वाले ब्रह्मचर्य-प्रधान शिक्षादर्श की मृत्यु पर्यन्त सेवा की, उस गुणिगणाग्र गण्य श्रद्धेय महात्मा हसराज की मैं वन्दना करता हूँ ।

२—जिसके त्याग की यज्ञाग्नि को श्वास ही समिधा बनकर प्रदीप्त करते थे तथा जो उस अग्नि मे अपनी समस्त कामनाओं को हुत करने मे निपुण था, अत जो सदा जीवनमुक्त जैसा था एव जिसने नगर में भी वनवासी मुनि का जीवनादर्श अपनाए रखा, मैं उस पूजनीय मुनीन्द्र हसराज को सिर झुकाकर नमस्कार करता हू ।

३— उस यतीन्द्र ने उस समय आत्मत्यागमय जो यज्ञ आरम्भ किया था उसकी सुगन्ध की सर्वत्र व्याप्ति आज भी अनुभव होती है । सैकडो विद्वान् राष्ट्र और समाज का हित सम्पन्न करने की इच्छा से उसी महात्मा के परम्परया आशीर्वाद से विद्यालयो के माध्यम से छात्रो को शिक्षा देते हैं ।

४—कवि सत्य है कि हस नीर क्षीर विवेकी होता है । म० हसराज ने भी भोगो की तुलना मे त्याग का चुनाव किया । हस शेष सब कुछ को हेय मानकर केवल मोती चुगता है हमारे चरितनायक हसराज ने भी क्या सज्जनता, शुचिता आदि दिव्य गुण अर्जित नही किए ।

५—पौरस्त्य (प्राचीन सस्कृति के पूर्वाग्रह अर्थात् प्राचीन सस्कृति में सब कुछ श्रेष्ठ है— ग्राह्य है, से मुक्ति का अभिलाषी तथा जिसने पाश्चात्यो के श्रेष्ठता के दुराग्रह को भी निरस्त कर दिया था तथा दोनों विचार-धाराओ मे जिनन उत्तम के चुनाव द्वारा पूर्ण समन्वय स्थापित कर दिया, ऐसे उस लोकपूज्य हसराज को नमस्कार है ।

६—जो श्रद्धा की मूर्ति था सरल हृदय था, जिसका परिधान सौम्य था, जो सुशील था शान्त, दान्त, तपोनिरत, सयमी सद्गृहस्थ था, जिसका आचार साधु था, जो परिहत मे जुटा हुआ था, धर्म निष्ठ एव कर्मवीर था ऐसा सद्गुण विभूषित महात्मा हसराज किसके प्यार और आदर का पात्र न होगा ।

७—आज जो डी० ए० वी० ट्रस्ट ने वट वृक्ष का महाकार और देश-विदेश मे व्यापकता प्राप्त की हुई, यह उसी तपस्वी के प्रताप का सुपरिणाम है ।

आर्य गुरुकुल : धर्म व संस्कृत के संवाहक

आर्य महाविद्यालय किरठल, मेरठ, का ७०वां वार्षिकोत्सव ६ मार्च १९८७ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ —

८ मार्च को समापन समारोह के अध्यक्ष पद से सम्बोधित करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डॉ० धर्मपाल आर्य ने गुरुकुलों की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा इन्हें धर्म व संस्कृति के संरक्षक बताया। गुरुकुलों मे शिक्षित युवकों को वेदप्रचार, समाज सुधार, राष्ट्रनिर्माण एव राष्ट्रीय एकता व अखण्डता बनाए रखने में सदैव की भांति सक्रिय योगदान देते रहने का भी उन्होंने आवाहन किया । डा० धर्मपाल ने आर्य समाज की श्रेष्ठ उपलब्धियो की विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि आर्यसमाज ने पोपपाल के आगमन पर काला झाण्डी क्षेत्र मे ३ लाख आदिवासियों को न केवल ईसाई बनने से रुकवाया अपितु इस अवसर पर २,५०० ईसाईयों को भी हिन्दु धर्म में पुन प्रविष्ठ करवाया ।

इस अवसर पर महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट, जनकपुरी के महामन्त्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओमप्रकाश ने आर्य राष्ट्रभाषा हिन्दी को एकता का मूल मन्त्र बताते हुए कहा कि दूरदर्शन में अग्रेजी कार्यक्रमों का बोलबाला है । उन्होंने आगे कहा कि दूरदर्शन पक्षपात पूर्ण रवैया अपना कर आर्य समाज के कार्यक्रमों को अपेक्षा कृत बहुत कम समय दे रहा है । पजाब की स्थिति की चर्चा करते हुए उन्होंने वहां तुरन्त फौज भेजने की माग की । पृथकतावादी शक्तियों से कडाई से निपटने की अपील करते हुए श्री आर्य ने कहा कि राष्ट्रीय अखण्डता को हर कीमत पर बनाए रखने मे आर्य समाज को अपनी परम्परा के अनुसार आगे बढ़कर काम करते रहना है ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी ने कहा कि हमें सब व्यसनो को त्याग कर जीवन मे आर्यत्व लाकर महर्षि दयानन्द जी के कृण्वन्तोविश्वमार्यम के मिशन को तेजी से पूरा करना है ।

जिलाधीश श्री राधेश्याम कौशिक ने आर्य समाज की अहनी सेवाओं का जिक्र किया । उन्होंने महर्षि दयानन्द को आधुनिक युग का महान समाज-सुधारक बताते हुए स्वामी जी द्वारा बताये उच्च आदर्शों पर चलने का आह्वान किया । श्री कौशिक ने गुरुकुल एव क्षेत्र की स्थानीय समस्याओं की चर्चा करते हुए उनके रचनात्मक समाधान के लिए भरसक प्रयास करने का भी आश्वासन दिया ।

श्री ब्रह्मसिंह आचार्य ने गुरुकुलों को वैदिक धर्म प्रचार का केन्द्र बताया । उन्होंने यजुर्वेदीय यज्ञ एव वार्षिकोत्सव के सयोजक मे भी सक्रिय सहयोग दिया ।

इस अवसर पर स्वामी दर्शनानन्द जी, पहलवान टीकाराम, प्रिंसिपल माधवसिंह आदि ने भी विचार व्यक्त किए । समारोह में एस० डी० एम०, श्री मुकेश कुमार गुप्ता, तहसीलदार श्री रामप्रकाश अनेक गणमान्य महानुभाव भी उपस्थित थे । उल्लेखनीय है कि पूर्व सासद सर्वश्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती एव रघुवीरसिंह ने इस गुरुकुल के उत्थान के लिए अविस्मरणीय सहयोग दिया था । इस गुरुकुल की स्थापना सन् १९१७ में हुई थी ।

— विमल कान्त शर्मा
प्रचार विभाग

जीवन स्मरण

महानता के स्तम्भ : महात्मा हंसराज

—श्री अमर स्वामी सरस्वती—

(आगामी १९ अप्रैल को महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस है। इस उपलक्ष में महात्मा जी के २१ वर्षीय सहयोगी श्री अमर स्वामी सरस्वती का लेख प्रस्तुत है—सम्पादक)

आर्य समाज के सपोषक पूज्य महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस १९ अप्रैल को सारे देश भर मे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

मैं जब उनके महान व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे अपनी स्मृतियों की लाया जगाता हूं तो मैं बड़ा आश्चर्य मिश्रित गौरव का अनुभव करता हूं कि मुझे भी लगभग २० वर्ष तक उनके चरणों मे बैठकर आर्यसमाज की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अलवीक स्वभाव की इतनी ऊंचाई व श्रेष्ठता मैंने अन्यत्र कहीं नहीं देखी। मैंने अत्यन्त निकट से उनके सभी कार्यों को देखा इन २० वर्षों में केवल एक बार क्रोध से लाल उनकी आंखें देखीं। हमारे एक माननीय पण्डित जी ने सनातन धर्म के एक वितण्डावादी शास्त्रार्थ कर्ता की हेत्वाभासी युक्तियों के जाल मे फसकर महान महर्षि के कागज पर बने चित्र पर जूता मार दिया था। महात्मा जी ने जब यह समाचार सुना तो क्रोध मे भरकर बोले यहां क्या कोई आर्यसमाजी नही था जो उसकी चूची (जबड़ा) तोड़ देता। दूसरी बार मैंने उनको आंसू बहाते देखा। जब महात्मा स्वा० श्रद्धानन्द जी के बलिदान का समाचार उन्होंने सुना तो शोकाकुल होकर रो उठे। ऐसा था उनका उच्च मानवीय स्वभाव।

सामान्यतया सदा ही मैंने उनके अन्दर सागर की सी गहराई देखी। उनके विरोधी प्राय बड़े ही कडवे शब्दो मे उनको पत्र लिखते थे। जब पत्र उनके पास आते तो वे क्रोधित होने की बजाय मुस्करा देते थे और उनका उत्तर कभी नही देते थे। नहीं इसका कोई बुरा मानते थे।

बीस वर्ष में मैंने कभी उनके मुख से कोई बात झूठी या निरर्थक नही सुनी। एक विशेषता उनमें देखी कि जिस बात को वे मुख से कहकर बताना नही चाहते थे, मौन हो जाते थे परन्तु झूठ कभी नही बोलते थे। मैंने एक बार एक बात पूछी तो हंस कर बोले पण्डित जी यह बात मत पूछिए यह मैं नही बताऊंगा। औरो की भांति यह भी कहा जा सकता था कि यह बात ऐसी नहीं ऐसी है। परन्तु असत्य का सहारा कभी नहीं लिया और सत्य का दामन कभी नहीं छोड़ा।

कलकत्ता कांग्रेस के लाला लाजपतराय जी अध्यक्ष थे। जब वे वहां से लौटकर लाहौर आए, तो जिन स्कूल कालेजों की स्थापना में उन्होंने जीवन के अमूल्य समय का सदुपयोग कर शिक्षा जगत् में क्रान्ति उत्पन्न करदी थी उन्हीं के सम्बन्ध में उनके विचार सर्वथा बदल गये थे। फलत: उन्होंने महात्मा गांधी की इस घोषणा के समर्थन मे कि कुछ वर्षों के लिए स्कूल व कालेज बन्द कर दिए जाएं अपनी सम्मति प्रकट करदी। इससे पहले लाला जी गांधी जी के उक्त विचारों के विरोधी थे। कलकत्ता कांग्रेस से लौटकर उन्होंने तत्कालीन समाचारों में एक वक्तव्य दिया जिसमें लिखा था कि महात्मा हंसराज जी को डी० ए० वी० कालेज बन्द कर देना चाहिए इस वक्तव्य का प्रभाव स्वभावत: कालेज के विद्यार्थियों पर बहुत हुआ। सारे पंजाब में खलबली मच गई कि डी० ए० वी० कालेज का अब क्या बनेगा। इस पर एक वक्तव्य द्वारा महात्मा हंसराज जी ने अपना स्पष्टीकरण किया जिसमे लिखा श्री लाला लाजपतराय डी० ए० वी० कालेज के केवल संस्थापक ही नहीं है वे उसके संचालक भी रहे हैं। मेरे व लाला जी के बड़े घनिष्ट सम्बन्ध हैं। वे हर एक बात मुझसे कह सकते हैं और मैं उनसे कह सकता हूं। लाला जी के घर से मेरे घर तक का ५ मिनट का मार्ग है परन्तु उन्होंने मुझसे बात न करके समाचार पत्रों में वक्तव्य प्रकाशित किया है। वे कभी भी मुझे बुला सकते थे और कभी भी मेरे पास तक आ सकते थे। परन्तु उन्होंने मुझसे बात न करके समाचार पत्रों में वक्तव्य प्रकाशित करना ठीक समझा। इसका मुझे आश्चर्य है। मुझे यह व्यवहार समझ नहीं आया। साथ ही यह भी बात है कि मैं न तो कालेज का प्रिंसीपल हूं और न ही मैं डी० ए० वी० कालेज कमेटी का प्रधान हूं। उस समय तक महात्मा जी अपना पूरा समय वेद प्रचार के लिए दे चुके थे। मैं तो एक सामान्य सदस्य हूं। कालेज को बन्द करने या न करने का अधिकार मुझको कैसे है यह लाला जी ही अधिक जानते हैं। मैं तो केवल अपने अधिकारों को ही जानता हूं क्योंकि मैं कमेटी का एक साधारण सदस्य मात्र हूं।

श्री लाला साईं दास जी डी० ए० वी० कालेज के प्रिंसीपल हैं। कालेज के बारे मे वे ही श्री प्रधान जी की सम्मति से कुछ कहे या कर सकते हैं। इसके पश्चात् दूसरे दिन श्री लाला साईं दास जी का एक वक्तव्य समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ जो इस प्रकार था—मैं अपने कालेज में तीन प्रकार के विद्यार्थी देखता हू। एक वे हैं जो यूनीवर्सिटी शिक्षा के विद्यार्थी हैं। दूसरे वे हैं जो यूनीवर्सिटी से सम्बन्ध न रखते हुए शिक्षा लेना चाहते हैं। तीसरे वे विद्यार्थी हैं जो इस समय दोनों ही प्रकार की शिक्षा न लेकर केवल कांग्रेस का ही काम करना चाहते हैं। तीनों प्रकार के विद्यार्थियों के लिए कालेज की ओर से कोई रुकावट नहीं है। जो यूनीवर्सिटी की शिक्षा लेना चाहते हैं वे ले ही रहे हैं। उनके लिए कालेज को बन्द करना उनके साथ अन्याय करना है। दूसरे वे विद्यार्थी हैं जो यूनीवर्सिटी की शिक्षा नहीं लेना चाहते स्वतन्त्र रूप से पढ़ना चाहते हैं। उनके लिए मैं घोषणा करता हूं कि ऐसे १०० विद्यार्थी अपने माता पिता से लिखवाकर दे देवें तो डी० ए० वी० कालेज कमेटी एक नान यूनीवर्सिटी कालेज उनके लिए खोल देगी। तीसरे विद्यार्थी वह जो कांग्रेस आन्दोलन मे भाग लेना चाहते हैं और आवश्यकता पड़ने पर जेल जाने को भी तैयार हैं। उनके लिए भी द्वार खुला है। वे जब चाहे कालेज छोड सकते हैं और जब फिर कभी वे कालेज मे आना चाहेंगे तो उनके लिए कालेज का द्वार खुला है उनके लिए केवल इस कारण से कोई बाधा नही होगी कि वे कांग्रेस में क्यो गए थे वे जब चाहे कालेज में अपना प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं। इसके पश्चात कालेज में एक दिन भी कोई हलचल नही हुई। न ही एक दिन के लिए भी कालेज बन्द हुआ।

लाहौर मे नान यूनीवर्सिटी 'नैशनल कालेज' भी खुला, तिलक स्कूल आफ पोलिटिक्स भी खुला। अब तो लाहौर पाकिस्तान मे चला गया है परन्तु यह दोनो संस्थाए बहुत पहले ही बन्द हो गई थी। जिनका कही कोई नामो-निशान भी शेष नही रहा। परन्तु डी० ए० वी० संस्था आज तक जीवित है। दिन पर दिन उन्नति के नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है।

नानयूनीवर्सिटी नेशनल कालेज के प्रिंसीपल लाला छबीलदास जी एम ए. बनाए गये थे जो गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य प्रो० रामदेव जी के जामाता थे। तिलक स्कूल आफ पालिटिक्स के प्रिंसिपल देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी नियुक्त हुए थे। दोनों संस्थाऐं शीघ्र ही समाप्त हो गईं। कारण स्पष्ट है कि राजनीतिक आन्दोलन एक सामयिक भावावेश होता है जबकि डी० ए० वी० का आधार महर्षि की शास्वत विचारधारा है।

इसके साथ ही एक महत्त्वपूर्ण अनुभव यह है कि माननीय ला० लाजपतराय जी के पूज्य पिता श्री राधाकिशन जी के नाम पर जगरांवा मे एक हाई स्कूल था जिसका सम्बन्ध यूनीवर्सिटी से था। लाला जी के विचारों से प्रभावित हाईस्कूल के अधिकारियों ने यूनिवर्सिटी से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। फलत: हाई स्कूल ही बन्द हो गया। इसके अधिकारियों को यूनिवर्सिटी से सम्बन्ध बनाना पड़ा तब स्कूल चल सका। मेरे हृदय पर महात्मा हंसराज जी की दृढ़ता, दूरदर्शिता विलक्षण शालीनता पूर्ण सेवा के दिव्य गुणो का ऐसा प्रभाव पड़ा जैसा आज तक किसी नेता का नहीं पड़ा।

मैं आशा करता हूं कि लोग मुझे पक्षपाती नही समझेंगे अपितु वे स्वयं भी महात्मा जी के इस उज्ज्वल चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर आर्य समाज के सेवा कार्यो मे व उपयोगी संस्थाओ के संचालन मे गम्भीरता, विवेक, विनम्र सेवा भाव को कभी हाथ से नहीं जाने देंगे। वास्तव में इन १०० से ऊपर वर्षों में समाज भौतिक रूप से काफी विकास कर चुका है परन्तु प्राय उक्त गुणों के अभाव में विकास व उन्नति का वह रूप नही बन पाता जो पुरानी पीढ़ी के नेताओं के पास थोड़े सीमित साधन होते हुए भी बन गया था। आज फिर देश को उसी दिव्य शालीन व परोपकारी सेवा भाव की आवश्यकता है तभी समाज व राष्ट्र का कल्याण होगा।

उग्रवाद के विरुद्ध हाथ उठा तो पूरे देश का उठेगा

—प्रसिद्ध पत्रकार श्री एम० जे० अकबर—

पंजाब की लोमहर्षक घटनाओं से दुखित हृदय, भारत के प्रसिद्ध पत्रकार कलकत्ता के दैनिक अंग्रेजी पत्र टेलीग्राफ के यशस्वी सम्पादक श्री एम० जे० अकबर ने जालन्धर मे पंजाब की पीड़ित जनता को अत्यन्त प्रेरणात्मक आशाजनक संदेश दिया है उसे हम दैनिक पंजाब केसरी से उद्धृत कर रहे हैं— सम्पादक

जालन्धर १७ मार्च हिन्द समाचार समूह के शहीद परिवार फंड के सहायता वितरण समारोह मे मुख्य अतिथि रूप में भाग लेते हुए श्री अकबर ने कहा—

यह ठीक है कि भारत के लोगो मे सहनशीलता बहुत है। इसी कारण से वे उग्रवादियो व अलगाववादियो की हिंसक व देशघातक कार्यवाहियों को सहन करते जा रहे हैं परन्तु जब सहनशीलता की सीमा टूटेगी और उनके विरुद्ध हाथ उठेगा तो केवल पंजाब के लोगों का ही नहीं पूरे भारत वर्ष का हाथ उठेगा और यह आतंकवादी व अलगाववादी कहीं नजर नहीं आयेंगे।

श्री अकबर ने कहा—उग्रवादी समझ लें कि आज का भारत १९४७ का भारत का नहीं जब यहा एक तीसरी ताकत थी और उसने यहा की राज नीति तथा कुछ राजनैतिक लोगों का इस्तेमाल कर देश का बटवारा सम्भव बना दिया। तब स्वतन्त्र भारत की परिकल्पना हो रही थी। परन्तु आज का भारत अपने अस्तित्व की पूर्ण अनुभूति रखता है। इसलिए यह उग्रवादी भूलते हैं कि अब यहा कोई तीसरी शक्ति नही। जो हमारे फैसलों और हमारे भाग्य पर छा सकती है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक और बर्मा की सीमा से सौराष्ट्र तक के भारतीय एक ही धड़कन का अनुभव करते हैं।

श्री अकबर ने कहा—इस सारी जीवन्त व शक्तिशाली एकता के बाद जब हम बहुत सीमा तक आघात प्रत्याघात सहने की हिम्मत रखते हैं। परन्तु ऐसी ही हिम्मत देश की रक्षा करने की भी उनके पास है। उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि सभी दलो के लोग गावों मे जाकर यह सन्देश लोगो को दे दे कि पूरा देश उनके साथ है।

श्री अकबर ने कहा १९४७ मे मजहब के नाम पर बना पाकिस्तान १९७१ मे टूट गया। जबकि विभिन्नताओ से मंडित भारत केवल एक इकाई बना सुदृढ रूप मे खड़ा है। बल्कि उसने खूब प्रगति भी की है जिसका उदाहरण स्वयं पंजाब रहा है। मगर कुछ देश के अन्दर व बाहर के दुश्मनो को प्रगति करता व शक्तिशाली बनता भारत सहन नहीं हुआ जिसके कारण १९७१ से ही उसे कमजोर व खण्डित करने का षडयन्त्र प्रारम्भ हो गया था।

श्री अकबर ने कहा आज पंजाब के लोगों को कुछ शिकायतें होने की चर्चा है। यह बात ठीक भी होगी कि गत पांच वर्षों मे कुछ शिकायतें पैदा हो गई होंगी। किन्तु १९७१ तक तो सिखों के बारे मे कोई सोच भी नहीं सकता था कि वे किसी शिकायत के शिकार हैं। वे किसी शिकायत पर इतने बेचैन हैं। तब तो सिख भारत के प्रथम श्रेणी के नागरिक के रूप में मान्यता रखते थे।

किन्तु न जाने क्यो १९७१ के कुछ ही समय पश्चात् कुछ लोगों को आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव पारित करने की आवश्यकता अनुभव हुई। वास्तव मे यह किसी गहरे षडयन्त्र से प्रेरित पग था। जो आज उग्रवाद व अलगाव वाद के रूप मे फलीभूत हुआ दिखाई देता है।

उन्होंने कहा कि भारत का दिल बहुत बड़ा है। यहा के लोग मिलकर चलने की प्रवृत्ति रखते हैं किसी अल्पसंख्यक या अलगाववादी पर जल्दी से हाथ नही उठाते। परन्तु जब यहा हाथ उठेगा तो सारे भारतवर्ष का हाथ उठेगा। सोचता हूँ कि परमात्मा हमे सहन करने की और शक्ति दे क्योंकि एक बार हाथ उठा तो कुछ करके ही रहेगा। ●

२१ मार्च जिनकी पुण्य तिथि है

आर्य क्रांतिकारी प्रो० श्यामजी कृष्ण वर्मा

संस्कृत के अद्वितीय विद्वान तथा क्रान्तिकारी राष्ट्रभक्त श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म कच्छ राज्य के माडवी नामक नगर मे कार्तिक कृष्णा २ सं० १९१४ वि० तदनुसार ४ अक्टूबर १८५७ को हुआ था। श्याम जी का परिवार साधारण स्थिति का था। कुशाग्र बुद्धि होते हुए भी अर्थाभाव के कारण उनकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था नही हो सकी थी। अक्तूबर १८७४ मे श्याम जी की प्रथम भेंट स्वामी जी से बम्बई की भाटिया धर्मशाला मे हुई। स्वामी जी इस मेधावी तरुण की अध्ययन प्रवणता को पहचान गये थे। अतः उन्होंने उनके संस्कृत शिक्षण की समुचित व्यवस्था कर दी। स्वामी जी की ही प्रेरणा से श्याम जी का विवाह भी हुआ था। स्वामी जी ने श्याम जी को १८७९ के मार्च माह मे उच्चतर शिक्षा के लिये इंगलैंड भेजा। वहा वे औक्सफोर्ड विश्व-विद्यालय मे संस्कृत के अध्यापक बन गये और स्वयं भी अध्ययन करते रहे। स्वामी जी से उनका निरन्तर पत्र व्यवहार चलता रहता।

१८८५ मे बैरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्णकर श्याम जी स्वदेश वापस आए। तदन्तर वे रतलाम, उदयपुर, जूनागढ आदि राज्यो मे प्रधानमन्त्री पद पर कार्य करते रहे। श्यामजी का ध्यान राजनीतिक गतिविधियो पर अधिक रहने लगा। इसी प्रसंग मे वे पुनः इंग्लैंड गए और १८ फरवरी सन् १९०५ मे उन्होंने लंदन होम रूल सोसायटी की स्थापना की तभी उन्होंने "इण्डियन सोशियोलोजिस्ट" नामक पत्र भी निकाला।

'श्याम जी कृष्ण वर्मा के शिष्यो मे स्वातन्त्र्यवीर महान् क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर जैसे देशभक्त लोगो का नाम गिना जा सकता है। श्याम जी कृष्ण वर्मा स्वयं महान् क्रान्तिकारी थे। परिणामत आपको इंग्लैंड से निष्कासित होनापडा।

श्यामजी कृष्ण वर्मा का इसी निर्वासनावस्था मे २१ मार्च १९३० को स्वीटजरलैंड के जिनेवा नगर मे देहान्त हो गया।

भारत में रहते हुए श्याम जी कृष्ण वर्मा ने आर्यसमाज की गतिविधियो मे अनेक प्रकार से भाग लिया और अपना सहयोग प्रदान किया। वे कुछ काल के लिए परोपकारिणी सभा के उपमन्त्री पद पर भी रहे।

श्याम जी कृष्ण वर्मा का आर्यसमाज की गतिविधियो में जितना योगदान है उतना ही भारत की स्वतन्त्रता के लिये क्रान्ति की ज्योति प्रज्जवलित करने का श्रेय भी उनको है। इंग्लैंड स्थित भारतीय क्रान्तिकारियो के लिये वे न केवल प्रेरणास्रोत ही रहे अपितु उनके पोषक के रूप मे भी उनका योगदान सराहनीय रहा है। भारतमाता उनके इन पावन सपूत को सदा स्मरण करती रहेगी। ●

राष्ट्रभाषा हिन्दी के समुत्थान में महर्षि दयानन्द का अमूल्य योगदान

श्री सोमदत्त शर्मा एम.ए. हिन्दी, रिसर्च स्कालर, डी. विशारद
हिन्दू टेम्पल एण्ड हिन्दी स्कूल, नौटिंघम, इंग्लैंड

महर्षि दयानन्द गुजराती थे और संस्कृतज्ञ होने के कारण संस्कृत में ही भाष्य लेखन आदि करते थे। कलकत्ता में ब्रह्म समाज के नेता बाबू केशवचन्द्र सेन के परामर्श पर उन्होंने हिन्दी को अपनाया आधुनिक खड़ी बोली के हिन्दी में सम्भवत पहले सार्वजनिक लेखक वही थे और उनकी कृति सत्यार्थप्रकाश ही हिन्दी की सर्वप्रथम ऐसी पुस्तक रही जो अधिकाधिक जनता में पहुंची। आर्य समाज की स्थापना के साथ ही हिन्दी को संगठन की नियमित भाषा बना दिया गया। स्वामी जी ने शिक्षा के प्रकरण में सत्यार्थप्रकाश में लिखा है "जब पांच वर्ष के लड़का लड़की हो तब देवनागरी अक्षरो का अभ्यास कराये। इस प्रकार यह निर्विवाद सत्य है कि महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की हिन्दी के प्रचार प्रसार में एक व्यापक तथा विशिष्ट भूमिका रही।

सन् १९२८ में कलकत्ते में राष्ट्रभाषा सम्मेलन स्वागत समिति के सभापति पद से बोलते हुए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था "हिन्दी हमारी सच्ची राष्ट्रभाषा है। भारत के विभिन्न प्रान्तो के भाइयों को हिन्दी बोलनी चाहिए नही तो अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे हम दूसरी जाति तथा भाषा का मुकाबला नही कर सकते। मैं व्यर्थ अभिमान नहीं करता पर इतना तो अवश्य कहूंगा कि हिन्दी प्रचार का कार्य हिन्दी भाषी प्रान्तो को छोड़कर और किसी प्रान्त के निवासियो ने शायद ही किया हो, इसके लिए ऋषि दयानन्द ने जो कुछ किया और महात्मा गांधी जो कुछ कर रहे हैं उसके लिए हम सब उनके कृतज्ञ हैं।"

ये थे हमारे वीर नेता के विचार। यदि आज भी हम तन मन धन से उनकी भावनाओं का अनुसरण कर तो वह दिन दूर नहीं जब उनकी आकांक्षा पूर्ण होगी। तभी हिन्दी सही अर्थों में भारत की राष्ट्रभाषा और राजभाषा बनेगी। हमे प्रान्तीयता के संकुचित दायरे में पड़कर अपने राष्ट्रीय प्रेम से दूर नहीं हटना चाहिए। कुछ लोग महर्षि दयानन्द तथा नेताजी के वाक्यामृत से प्रभावित नही होना चाहते। आज हिन्दी बोलने वालों की संख्या संसार मे तीसरी है। डा० अर्नाल्ड के आंकड़ो के अनुसार संसार में ७८ करोड लोग चीनी बोलते हैं। दूसरा स्थान अंग्रेजी का है इसे संसार के ३२ करोड लोग बोलते हैं। तीसरे स्थान पर हिन्दी आती है जिसे पहले २८ करोड लोग बोलते थे लेकिन आज नवीनतम आंकड़ो के अनुसार लगभग ४० करोड लोग बोलने लगे हैं। हिन्दी संसार मे आज दूसरे स्थान पर अधिक बोले जाने वाली भाषा है। इसके बाद स्पेनिश का स्थान है जिसे २१.५० करोड लोग बोलते हैं। पांचवा स्थान रूसी और फ्रेंच बोलने वालो का है। इन दोनो भाषाओ के बोलने वाले लगभग १४ करोड हैं। अन्तिम स्थान अरबी का है जिसे लगभग १० करोड लोग ही बोल पाते हैं।

पिछले दशको मे भारत में तो हिन्दी भाषियो की संख्या मे लगातार वृद्धि हुई हो है। साथ ही साथ विदेशो मे हिन्दी प्रगति के पथ पर है। आज संसार के अनेकों विश्वविद्यालयो मे हिन्दी पढाई जा रही है। जिनमे इंग्लैंड ('ए' तथा 'ओ' लेवल) मारिशस, सिंगापुर, फिजी जर्मन, बर्मा, नैरोबी नेपाल, मैक्सिको रूमानिया, यूगोस्लाविया, गुयाना सूरीनाम, त्रिनीदाद, श्रीलंका, आदि उल्लेखनीय हैं। इसके अलावा रेडियो प्रसारण मे भी बी०बी० सी० लन्दन, बी०बी० सी० रेडियो लेस्टर तथा नाटेघम वायस आफ अमेरिका, रेडियो मास्को, सिंगापुर, नेपाल, चीन आदि स्टेशनो का नाम प्रमुख है। इसके अलावा हिन्दी के पुस्तकालय भी विदेशो मे यत्र तत्र देखने को मिलते हैं। फिर भी हिन्दी अब तक राष्ट्रसंघ की मान्य भाषाओ की सूचि मे नही आ सकी है क्योकि अपने ही देश मे—

१— हिन्दी के प्रति इतना स्वाभिमान नही है जितना होना चाहिए।
२— प्रान्तवाद भाषा के नाम पर घृणा, विद्वेष, संकीर्णता से युक्त भावनाओ का बाहुल्य है।
३— वर्तमान शिक्षा प्रणाली पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति की अधिक तथा स्वदेश, स्वसंस्कृति तथा प्राचीन भारतीय वैदिक सनातन परम्पराओं का कम विश्लेषण करती हैं।
४— जानते हुए भी सम्पर्क भाषा के स्थान पर प्रीति नही अर्थात् हिन्दी के साथ अन्याय किया जाता है।
५— हिन्दी राजनीति दावपेच से अभी मुक्त नही हुई है।

यही हाल रहा तो हिन्दी अपने गौरव को नही पा सकेगी। प्रबल जन बल होते हुए भी आज हिन्दी राष्ट्रसंघ मे उपेक्षित है। क्या वर्तमान भारत के विदेश मन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी राष्ट्रसंघ मे हिन्दी में भाषण देकर अनुगृहीत करेंगे जैसा कि ४ अक्तूबर १९७७ को तत्कालीन विदेशमन्त्री श्री अटल विहारी बाजपेयी जी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा मे अपना भाषण हिन्दी में देकर नये इतिहास का निर्माण किया और हिन्दी को शीघ्र मान्यता देने की आवश्यकता पर बल दिया। हिन्दी का भविष्य उज्जवल है यह बात हम जितनी जल्दी जान सकते उसी में हमारी बुद्धिमता है। बापू ने कहा था—"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।"

आइये हम सब मिलकर हिन्दी के विकास मे अपना योगदान देने की शपथ ग्रहण कर। सदा हिन्दी मे लिखने, बोलने तथा पढने मे समुद्यत रहने की प्रतिज्ञा करे। मातृ भाषाओ से भी प्रेम कर परन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दी पर गर्व करे। ●

मोतिया बिन्द की उत्तम चिकित्सा

नई दिल्ली, (भाषा) डा राजेन्द्र प्रसाद नेत्र विज्ञान केन्द्र के निदेशक प्रो मदनमोहन ने कहा कि इंट्राकुलर लेंस रोपण (आईओएल) प्रक्रिया के जरिए मोतियाबिन्द दूर करके आंखों की रोशनी पहले जैसी लौट सकती है।

प्रो मदनमोहन आज यहां डा राजेन्द्र प्रसाद नेत्र विज्ञान केन्द्र की स्थापना की बीसवीं वर्षगांठ के उपलक्ष मे आयोजित मोतिया बिन्द शल्य क्रिया और इन्ट्राकुलर लेन्स इम्प्लांटेशन' विषय पर बोल रहे थे। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के जवाहरलाल नेहरू सभागार मे इस व्याख्यान का आयोजन किया गया।

प्रोफेसर मदनमोहन ने बताया कि विज्ञान की इतनी प्रगति के बाद भी आज तक मोतियाबिंद रोग के इलाज के लिए कोई भी कारगर दवा नही निकल पाई है केवल शल्य क्रिया के जरिए ही इस रोग का इलाज हो सकता है।

प्रो मदनमोहन ने कहा कि अमेरिका जैसे विकसित देशों मे इंट्राकुलर लेन्स रोपण (आईओएल) प्रक्रिया इतनी अधिक लोकप्रिय हो चुकी है कि मोतियाबिंद के ७० फीसदी रोगी इस प्रक्रिया को अपनाते हैं लेकिन भारत में यह सुविधा अभी कुछ प्रमुख स्थानो में ही मिली हुई है।

प्रो मदनमोहन ने कहा कि आई ओएल प्रक्रिया की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मोतियाबिंद का रोगी कभी भी इस तरीके से शल्य क्रिया करा सकता है, जबकि इससे पहले मोतियाबिंद पूरा विकसित होने पर ही शल्य क्रिया की जा सकती थी। इस प्रक्रिया के बाद भी मोतियाबिंद के रोगी को जितनी रोशनी मिलती है उतनी दूसरी प्रक्रिया से नहीं मिलती है।

प्रो मदनमोहन ने कहा आईओएल प्रक्रिया को सबसे पहले डा. हेरल्ड रीडले ने १९४७ मे इंग्लैंड मे अपनाया था। उसके बाद इस लेंस के रूप और किस्म मे बराबर सुधार होता जा रहा है। इस समय दुनिया मे आई ओएल प्रक्रिया के प्रमुख तीन किस्म के लेंस मिलते हैं। ये हैं इंटीरियर चेम्बर, आइरिस और पोस्टीटीरियर चेम्बर।

उन्होंने कहा कि भारत में आईओएल के सारे किस्म के लेंस हैं, लेकिन इनमे ज्यादातर अच्छे लेन्स विदेशों से आयात किए जाते है। अब तक पोस्टीरियर चेम्बर लेन्स के द्वारा इससे ज्यादा अच्छे नतीजे मिले हैं।

उन्होंने कहा कि आईओएल प्रक्रिया से रोगी को जल्दी और कारगर चिकित्सा सुविधा मिल जाती है। सरकारी अस्पतालों में मोतियाबिंद की साधारण शल्यक्रिया में लगभग १०० रुपए लगते हैं। लेकिन रोगी का काफी समय बरबाद होता है, उसके बाद भी पूरी आंखों की रोशनी नही मिलती है।

भारत में आईओएल प्रक्रिया से मोतियाबिंद के इलाज मे एक हजार से डेढ़ हजार तक रुपए लगते हैं एक दिन के अंदर इस प्रक्रिया की शल्य क्रिया हो जाती है, और रोगी को दो दिन के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी जाती है। इस प्रकार आईओएल प्रक्रिया में किसी प्रकार की हानि का भी अंदेशा नही होता।

प्रो मदनमोहन ने कहा कि आईओएल प्रक्रिया अभी तक बच्चो के लिए बड़े पैमाने पर नही अपनाई गई है, क्योंकि बच्चों के लिए ज्यादा [illegible] के समय तक यह कारगर नही है, लेकिन इस दिशा में अनुसंधान जारी है।

उन्होंने कहा कि आइओएल प्रक्रिया के जरिए किसी उम्र के रोगी का इलाज किया जा सकता है, इसमें आयु की कोई पाबंदी [illegible] मोतियाबिंद के रोग को इस बात का ध्यान रखना चाहिए की जानकार लोगों से ही यह शल्य क्रिया करवाए क्योंकि भारत में अभी बहुत कम स्थानों मे यह सुविधा मिली है।

प्रो मदनमोहन ने कहा कि दुनिया में नेत्रहीनों में भारत का प्रमुख स्थान है, यहा पर हर पाचवा व्यक्ति नेत्ररोग से पीड़ित है। इसका मुख्य कारण यह है कि हम नेत्र रोग के इलाज समय पर नहीं करते हैं, उनके प्रति लापरवाही बरतते हैं।

विशेष सूचना

१—सार्वदेशिकपत्र के ग्राहकों से निवेदन है कि वे मनीआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता तथा ग्राहक संख्या स्पष्ट रूप से लिखें।

२—चैक अथवा ड्राफ्ट 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम ही भेजें।

३—जिन सदस्यों पर कई वर्षों का वार्षिक शुल्क शेष है और समय पर सूचित भी किया जा चुका है वे तुरन्त अपना वार्षिक शुल्क [illegible] प्रेषित करें। ऐसे सदस्यों के शुल्क न आने पर १५ [illegible] पत्र नहीं भेजा जायेगा।

४—कुछ सदस्य अपना मकान बदलने पर हमें सूचित नहीं करते हैं और पुराने पते पर ही पत्र/अखबार जाता रहता है। [illegible] है कि मकान परिवर्तन की सूचना तत्काल सार्वदेशिक को भेजें। पत्र व्यवहार में सदस्य संख्या अवश्य लिखें।

विशेष: बारम्बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए एक बार २५०) भेज कर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनिये। —सभा-मन्त्री



आर्य जगत् के समाचार

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर चल रहा है

कुरुक्षेत्र

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान संचालक श्री डा० देवव्रत आचार्य-आचार्य १५ मार्च से ४ अप्रैल तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों को आर्य वीर दल के शिविर में व्यायाम एवं बौद्धिक प्रशिक्षण देकर "आर्य वीर" तैयार कर रहे हैं। स्मरण रहे यह पहला गुरुकुल है जहां आर्य वीर दल की नियमित शाखा लगती है और उसके पश्चात् सन्ध्या यज्ञानुष्ठान के पश्चात् पढ़ाई शुरू होती है। गुरुकुल मे हरियाणा मल्ल और विदेशी मल्ल की अनेक मार्टें हैं जिन्होंने प्रान्तीय और केन्द्रीय प्रतियोगिता मे पुरस्कार प्राप्त किये हैं। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री प० बालदिवाकर जी हंस ने स्वयं गुरुकुल पधार कर प्रबन्ध समिति की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की थी।

— संवाददाता

आर्यसमाज हरफरी बदायूं का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सभा प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती का प्रेरणाप्रद भाषण

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दिल्ली से बदायूं के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में नरोरा आर्यसमाज मे क्षेत्र के आर्यों द्वारा सभा प्रधान जी का स्वागत किया गया। साथ मे सभा मन्त्री सच्चिदानन्द शास्त्री भी थे। कार्य की प्रगति को देखकर सन्तोष व्यक्त किया। उसके बाद कुन्नौर डी०ए०वी० स्कूल और आर्यसमाज द्वारा स्वागत किया गया। हरफरी-पहुंचने पर क्षेत्र की जनता मे बड़ा उत्साह पाया।

श्री स्वामी जी ने सामयिक स्थिति पर आर्य समाज के कार्य की समीक्षा की और भूतकाल की भांति भविष्य में आर्य समाज की और अधिक आवश्यकता बताई। राष्ट्ररक्षा मे आज आर्यसमाज जो कार्य कर रहा है—उसमें हैदराबाद सत्याग्रह और पंजाब की सुरक्षा पर विशेष चर्चा की।

ग्रामीण अञ्चल में उत्साह देखने योग्य था। सभा मन्त्री के अतिरिक्त अन्य उपदेशक प्रचारक भी पधारे थे।

आर्य समाज मानपुर (फरीदाबाद) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक ७, ८ मार्च, शनिवार, रविवार को आर्य समाज मानपुर (फरीदाबाद) का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। उत्सव की कार्यवाही यज्ञ, हवन से आरम्भ हुई।

इस सम्मेलन में मद्य निषेध, जाति पाति तोड़, दहेज विरोध, पाखण्ड खण्डन, स्त्री सम्मेलन एव राष्ट्र रक्षा सम्मेलनो का आयोजन किया गया। कई युवकों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की।

इस सम्मेलन को श्री चरणसिंह आर्य, श्री गुरुदत्त आर्य मथुरा, श्री हरिश्चन्द्र पथिक, श्री रघुनाथ आर्य भजनोपदेशक लालपुर क्षेत्रीय आर्य समाज हसीन के महामन्त्री पंडित नन्दलाल निर्भय पत्रकार तथा स्वामी वेदानन्द जी ने सम्बोधित किया। श्री जवाहर सिंह शास्त्री ने मंच संचालन सुचारु रूप से किया।

—नन्दलाल निर्भय

नये प्रकाशन

रियायती मूल्य पर

१—वीर बैरागी लेखक—भाई परमानन्द
कीमत ८) सभा ने केवल ४) कर दी है।

२—Bankim-Tilak-Dayanand by Aurobindo.
कीमत ४) सभा ने केवल २)५० कर दी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

—: शिवरात का मूल :—

श्री रणवीर भाटिया, लुधियाना

भूल नहीं सकते कुरबान दयानन्द के हम पर है बड़े एहसान दयानन्द के।
लाखों लोगों की बिगड़ी बनाई थी छूआछूत की लानत खत्म करके॥
अधिकार दिया फिर समानता का इस बात पर कुरबान दयानन्द के।
हम भूल ·····

शिवरात को व्रत रखा सब भक्तों ने पर सच्चा व्रती बना मूलशंकर।
ऊंघने लगे सभी आधी रात को जो भक्त थे सच्चे शिवानन्द के॥
फिर गहरी निद्रा में भक्त सो गये जब चले ठंडी हवा के झोंके।
पर नींद कहां मूल शंकर की आंखों मे दर्शनाभिलाषी थे शिवानन्द के॥
भूल नहीं ·····

फिर चूहों की सेना ने किया हमला चढ़ गये वह सब शिव मूर्ति पर।
लगे थे खाने सभी ओर से प्रसाद जो चढ़ाया था वहां भक्तों ने॥
मूल शंकर ने जब यह देखा सब एक ओर तुफान उठा उसके मस्तिक में।
यह कैसा शिव शक्ति का देवता है जो कमजोर है आगे उन चूहों के॥
भूल नहीं

बोध हुआ फिर मूल शंकर को यह सच्चा शिव देवता है ही नहीं।
यह पत्थर है केवल पत्थर है तोड़ दिया व्रत सामने शिवमूर्ति के॥
सच्चे शिव की तलाश में फिर घूमा मूल शंकर घनघोर जंगलों मे।
नदी पहाड़ों पर किया तलाश समीप पहुंच न सके सच्चे भगवान के॥
भूल नहीं

ज्ञान की ज्योति मिली विरजानन्द से जब पहुंचे वह मथुरा मे।
शिक्षा पाई वहां पूर्ण वेदो की दिखलाये सच्चे मार्ग के॥
वेदों का डंका बजाया सारे भारत मे विदेश भेजा श्याम कुमारे को।
मैक्समूलर ने भी माना यह नहीं है बराबर विद्वान दयानन्द के॥
भूल नहीं

शुद्धि सुधार का फिर कार्य किया स्थापित करके उन्होंने आर्य समाज।
एक क्रान्ति फैला दी सारे भारत मे बलिहारी जाये हम दयानन्द के॥
ऐय्याश राजो को किया सीधा धार्मिक भाव किये उनमे पैदा।
धर्म की होने लगी फिर जयजयकार हर ओर चर्चे हुये दयानन्द के॥
भूल नहीं ·····

स्वामी जी की बढ़ती ख्याती देख वायसराय पहुंचा उनके पास।
अंग्रेजी राज की बरकत यह सब स्वामी जी करो चर्चे अंग्रेजी राज के॥
निर्भय वह स्वामी दयानन्द था वायसराये को भी लताड़ दिया।
तुम कहते हो प्रचार करो व्याख्यानो मे मैं स्वप्न लेता हूं स्वराज्य के॥
हम भूल

यह मठ सम्पति कुछ भी नहीं मैंने यह सब कुछ लेकर है क्या करना।
तुम सोचो उत्थान भारत वासियो का रहते हैं अन्दर जो मेरे हृदय के॥
मैंने किसी को सजा नहीं दिलानी खोल दो जंजीर इस दोषी की।
स्वयं बदलेगा मानव फिर भाटिया जब छूटेंगे बंधन अज्ञानता के॥
हम भूल

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कुठिला जिला हरदोई उ० प्र० का वार्षिकोत्सव ११ जनवरी से २ फरवरी तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। ब्र० महावीर आर्य के उपदेश तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ब्रह्मानन्दार्य श्री नेमप्रकाश धनुर्धर श्री युगुल किशोर जी के भजन तथा श्री रामावतार जी मैजिक लेटर्न श्री अमर सिंह चौहान के प्रभावशाली भजन हुए। आर्य जनता पर विशेष प्रभाव प्रभाव पड़ा।

गुरुकुल मटिण्डू का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल मटिण्डू का वार्षिकोत्सव १९,२०,२१ मार्च को बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। उच्च कोटि के विद्वानों व भजनोपदेशकों द्वारा जनता को वैदिक धर्म का नव जागरण का सन्देश प्राप्त हुआ। २१ मार्च को क्षेत्र के डिप्टी कमिश्नर साहब ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा—महर्षि दयानन्द ने भारतवर्ष मे शिक्षा प्रचार द्वारा जो महान् क्रान्ति की है उसके ही फलस्वरूप देश को स्वतन्त्रता मिली। आज भी देश की समस्याओं के समाधान मे आर्यसमाज महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध जी सरस्वती ने गुरुकुल मटिण्डू के संस्थापक चौधरी पीरुसिंह जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए बताया कि उनके जीवन में जो परिवर्तन आया उसका श्रेय आर्य समाज के महान् सन्यासी स्वामी दर्शनानन्द जी को जाता है। पीरुसिंह जी का पूर्व जीवन घोर अपराधी का था जिसमे स्वामी जी के उपदेश ने चमत्कारिक रूप से परिवर्तन कर दिया। स्वामी जी ने गुरुकुल की आर्थिक स्थिति मे सुधार के लिए जनता से अपील की। गुरुकुल के संचालकों द्वारा खरखोदा मे कन्या कालेज खोलने का आयोजन किया जा रहा है।

जींद के एक आर्य परिवार मे लड़की का आदर्श वैदिक रीति से विवाह

गत सप्ताह जीद आर्यसमाज के एक सक्रिय सदस्य श्री सौदागर चन्द जी आर्य ने अपनी सुपुत्री शकुन्तला रानी का शुभ विवाह दिल्ली निवासी श्री श्रीकृष्ण (सुपुत्र श्री ओम्प्रकाश जी मल्होत्रा) के साथ पूर्ण वैदिक रीति से किया। पुरोहित श्री दयाकृष्ण जी आर्य ने यह पुनीत रस्म सम्पन्न करवाई। अत्यन्त सादगी, बिना किसी दहेज और बिना किसी आडम्बर के यह विवाह हुआ। कई आर्य सदस्य सदस्यायें तथा अन्य नागरिक उपस्थित थे तथा नगर के सुप्रतिष्ठित वकील तथा आर्यसमाज जीद शहर के भूतपूर्व प्रधान चौ० देशराज जी पूनिया और श्रीमती शान्ति पूनिया ने भी वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

प्रो० ओमकुमार आर्य मन्त्री
आर्यसमाज रामनगर जीद

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बक्सर का ८०वां वार्षिकोत्सव बडी धूम धाम के साथ २-४ ८७ से ७ ४ ८७ तक मनाने का कार्यक्रम है जिसमे भारतवर्ष के उच्च कोटि के विद्वान् वक्ता और अनेक भजनीक पधार रहे हैं।

—राजेश्वरीप्रसाद आर्य, मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हैवी इलेक्ट्रिकल्स भोपाल का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

अध्यक्ष— श्री बद्रीनाथ
उपाध्यक्ष— „ देवा शंकर चौधरी
उपाध्यक्ष— „ तिलक राज गुलियानी
सचिव— „ विनोद कुमार आर्य
सहसचिव— „ नरेन्द्र आर्य
सहसचिव— „ विनय कुमार तनेजा
कोषाध्यक्ष— „ तुलीचन्द वर्मा
पुस्तकाध्यक्ष— „ ललित मोहन सक्सेना

आर्य समाज खामगांव

आर्य समाज स्थापना दिवस आगामी चैत्र सुदी १ वर्ष प्रतिपदा तदनुसार सोमवार दि० ३० मार्च ८७ को बडे उत्साह के मनाया जाता है। इस अवसर पर खामगांव आर्य समाज के मन्त्री श्रीराम कहेकर वशिष्ठ आर्य, बीए बी टी विशारद, (सेवा निवृत्त प्रकल्प अधिकारी, शिक्षा) द्वारा आर्य समाज का परिचय प्राप्त होवे, प्रचार प्रसार होवे इसलिये ८ पृष्ठ की हस्तपत्रिका (Folder मढी पत्रिका) हिन्दी मे लिखकर आर्य समाज द्वारा प्रसिद्ध की जा रही है। इस प्रकार की यह पत्रिका बडी अनोखी होगी। मुख पृष्ठ पर आकर्षक ओ३म् (चित्र) (ब्लाक) होगा। बढ़िया कागज और छपाई होगी। इसका मूल्य प्रचारार्थ केवल ५० पैसे प्रति रखा है। (सैकडा ४०) होगा। सभी समाजें इसका वितरण कर हमे प्रोत्साहित करें।

नशा बन्दी प्रदर्शनी का आयोजन

दिल्ली ३० जनवरी। महावीरपुरी मे ग्रामीण शिक्षा समिति के तत्वावधान मे नशाबन्दी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन शिक्षा विभाग के अतिरिक्त शिक्षा निदेशक श्री कालीचरण जी ने किया, शिक्षा निदेशक महोदय ने बढ़ती हुई नशा खोरी के प्रति चिन्ता व्यक्त की। प्रदर्शनी मे श्री प० खुशीराम जी, डा० जे. के सिंह, श्री छज्जूराम जी, पी एल. ग्रेवाल आदि ने भाग लिया। समिति के सचिव श्री देवशर्मा जी ने सभी आगन्तुको का धन्यवाद प्रकट किया।

चुनाव

आर्य समाज, जौनपुर का चुनाव पूर्ण रूप से सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान श्री अयोध्या प्रसाद शास्त्री, उपप्रधान श्री तारानाथ, रामनाथ जी, मन्त्री श्री सुरेन्द्र कुमार, उपमन्त्री श्री सतेन्द्रनाथ जी, गिरीशचन्द्र जी, किशोरीलाल जी, कोषाध्यक्ष श्री पन्नालाल जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री नारायण दत्त जी, पुस्तक विक्रेता श्री नरेन्द्र कुमार प्रधान अधिष्ठाता आर्य वीर दल श्री धर्मेन्द्रकुमार।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जौनपुर का वार्षिकोत्सव ६ से १२ अप्रैल तक मनाया जाएगा। जिसमे स्वामी स्वरूपानन्द जी आगरा, श्रीमती सावित्री देवी वेदाचार्या बरेली, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री महिपाल सिंह जी पधार रहे हैं। पुस्तक विक्रेताओं से निवेदन है कि अवश्य आने का कष्ट करें।

मन्त्री सुरेन्द्र कुमार प्रधान,

महर्षि दयानन्द आर्किटेक्ट थे

आर्य समाज जबलपुर मे स्वामी दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर २६-२-८७ को आर्य समाज मन्दिर नेपियर टाऊन जबलपुर मे बोलते हुए मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के जस्टिस श्री गुलाब गुप्ता ने कहा कि महर्षि महान आर्किटेक्ट थे और उनके द्वारा बनाए गए ब्लू प्रिंट को साकार करने के लिए आज जनता मे जागृति लाना जरूरी है। यह एक विडम्बना ही है कि जिस भारत देश मे वैदिक काल मे नारियो को देवीतुल्य माना गया फिर स्त्रियों को वेद पढने से मना कर दिया गया और आज तो जरा से दहेज के लिए स्त्रियो को जलाकर मार तक डाला जाता है। यदि किसी भी देश की आधी जनता लगभग अनपढ सी हो तो उसका भविष्य उज्जवल कैसे हो सकता है।

—जस्टिस श्री गुलाब गुप्ता

हमीरपुर में ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हमीरपुर द्वारा ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य मे हमीरपुर नगर मे प्रभात फेरी की गयी, तथा इस अवसर पर डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के छात्र एव छात्राओ ने सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

ऋषि बोधोत्सव की अध्यक्षता प्रधान श्री ज्ञानचन्द जी आर्य ने की। इस अवसर पर प्राचार्य श्री रोशनलाल जी शर्मा, श्री परमवीर जी शास्त्री ने स्वामी दयानन्द जी की जीवनी पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले बच्चों को आर्यसमाज की ओर से १००) एक सौ रुपए उपहार के रूप मे दिये।

होलीकोत्सव पर प्रचार

जीन्द १५ मार्च। आर्य समाज रामनगर तथा आर्यवीर दल जीन्द की ओर से हरिजन रोड स्थित पाठशाला मे नवशस्येष्टि पर्व (होलिकोत्सव) पर दोपहर ११ बजे से २ बजे तक प्रचार कार्य का आयोजन हुआ जिसम हरिजन भाईयो की ओर से विशेष सहयोग मिला सहयोगी पहलवान श्री सीताराम जी, रिटायर्ड तहसीलदार श्री कुन्दनलाल जी, नम्बरदार श्री मौजीराम जी तथा कुछ युवको का खास योगदान रहा।

—दलबीर सिंह आर्य, मन्त्री

महात्मा हंसराज दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, डी० ए० वी० सस्थाओ एव समस्त आर्य सस्थाओ की ओर से सम्मिलित रूप से हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी महात्मा हसराज दिवस रविवार, १९ अप्रैल १९८७ को प्रात ९ से १ बजे तक तालकटोरा गार्डन, इण्डोर स्टेडियम नई दिल्ली मे बडे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

मेरी दिल्ली व दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रो की समस्त आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो एव शिक्षण सस्थाओ तथा समस्त आर्य सस्थाओ से प्रार्थना है कि उस दिन अपनी आर्य समाज का साप्ताहिक सत्सग स्थगित कर अधिकाधिक सख्या मे इस कार्यक्रम मे सम्मिलित हो।

मुझे पूरी आशा है कि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर अधिकाधिक सख्या मे इस कार्यक्रम मे सम्मिलित होगे। विस्तृत कार्यक्रम प्रकाशित होने पर शीघ्र आपको भेज दिया जायेगा।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री-आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

नगर महिला आर्यसमाज गाजियाबाद का उत्सव सानन्द सम्पन्न

गाजियाबाद

नगर महिला आ०स० गाजियाबाद का उत्सव ४ मार्च से ८ मार्च १९८७ तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर वेद विभूषिता ब्र० सुश्री सुमित्रा जी आचार्या कन्या गुरुकुल नरेला के ब्रह्मत्व मे गुरुकुल की कन्या ने अथर्ववेद का पाठ करके जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

महा विदुषी बहिनो ने श्रीमती ऊषा शास्त्री गुडगावा श्रीमती शकुन्तला जी आर्या लाजपत नगर दिल्ली, प्रकाश जी आर्या प्रधाना प्रान्तीय महिला सभा दिल्ली, आदि देवियो ने मातृत्व की महानता का बखान करते हुए उन्हे समाज सेवार्थ कर्मक्षेत्र मे कूदने की सलाह दी। श्री हरिशरण जी सिद्धान्तालकार सगीताचार्य श्री गुलाबसिह जी राघव, स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग दिल्ली ने वैदिक मूल्यो को स्त्री जाति मे फैलाने के लिये आर्य देवियो का आह्वान किया अन्तिम दिवस महिला समाज की ओर से प्रीतिभोज का आयोजन हुआ।

—शकुन्तला नरूला
मन्त्री

ज मर

न अ त थनत वदिक मरम आश्रम गाजियाब क व
कार्षिक ज्ञमान मर पिन चत्र शुक्ला १४ सोमवार से वश
कृष्णा रविवार ४ तनुसार १३ अप्रल से १८ अप्रल १९
तक आश्रम के प्रागण म समरोह पूवक सम्पन्न हुआ स्वामी ज मान जी
रस्वती (आश्रम प्रम स्वामी मनीश्वरानन्द जी जिज्ञासीय स्वामी यज्ञानन्द
जी सरस्वती वामी चन्द्रदव जी सरस्वती प० स यान द जी वेदत गत
ब्रह्मचारी अखिले वर जी वदिक प्रवक्ता) के वेदोपदेश तथा श्री मामच द जी
आदि सगीतज्ञ भ य ले रहे है

—प्र मानन्द सरस्वती अ श्रम च य

आय ममाज तिलहर का वार्षिक निर्वाचन

आय समाज तिलहर शाहजहापुर का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

सरंक्षक—श्री शिवशकर लाल जी आय सर्राफ

प्रधान—श्री बजनन्दन प्रसाद जी आय

उपप्रधान वरिष्ट—श्री पातीराम जी आय
— कनिष्ट श्री ओमशकर जी आय

मन्त्री श्री लोकेश कुमार आय

उपमत्री—वरिष्ट—श्री रवि कुमार जी आय
कनिष्ट— श्री मायाशकर जी आय

कोषाध्यक्ष—श्री सुरेश चन्द्र जी आय

पुस्तकाध्यक्ष—श्री बालीराम जी आय

लेखानिरीक्षक—श्री मदन लाल जी आय

आर्य उपप्रतिनिधि सभा भीलवाड़ा का वार्षिक निर्वाचन

आय उपप्रतिनिधि सभा जिला भीलवाड़ा के १ माच १९८७ को सम्पन्न साधारण अधिवेशन मे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए —

प्रधान डा० मनमोहन ज नलिय
उपप्रधान श्री बनारसीलाल मानसिह का तथा श्री वेदप्रकाश शर्मा
मन्त्री—श्री कन्हैयालाल तली
उपमन्त्री श्री मवरलाल अमर तथा श्री लादूराम मयराजी
कोषाध्यक्ष—श्री रघश्याम अग्रवाल
प्रचार मन्त्री—श्री स यन रायण निभय तथा श्री गणपतलाल शर्मा
आय वीर दल अधिष्ठाता—श्री मनोहरसिह चौधरी
सचालक—श्री भीमसिह

वार्षिकोत्सव

आय समाज पूना (रजि०) का वार्षिक चनाव सवसाधारण सभा में पूर्ण रूप से सम्पन्न हुआ जिसम निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान—सर्वश्री चानन लाल जी गुप्ता
उप प्रधान—जयराम जी गुलाटी अशोक बजाज
मन्त्री—प० सामव्रत जी वाचस्पति
उप मन्त्री—राजार म जी अकम भूमय्या वेल्ली
कोषाध्यक्ष—दवराज जी आनन्द
पुस्तकाध्यक्ष—दयाकृष्ण जी वद्य

दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २२ अंक १५] | चैत्र शु० ७ स० २०४४ रविवार ५ अप्रैल १९८७ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

आर्य वीर शहीद भगतसिंह का बलिदान व्यर्थ न होने पाए
धर्म के नाम पर घृणा फैलाने वालों से सावधान

—श्री बलराम जाखड़

पाकिस्तान बम का मुकाबला भारतीय बम से

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

भारतीय संस्कृति की प्राणपण से रक्षा करो

—श्री कृष्णचन्द पन्त

दिल्ली की सबसे पुरानी आर्यसमाज "दीवानहाल" का १०२वा वार्षिकोत्सव २७,२८,२९, मार्च को अत्यन्त समारोहपूर्वक ऐतिहासिक लालकिले के प्रागण मे मनाया गया। इस उपलक्ष मे आर्यसमाज स्थापना दिवस के सम्बन्ध मे भाषण देते हुए लोकसभा के अध्यक्ष "महामति" श्री बलराम जाखड ने आर्यसमाज के प्रवर्तक देव दयानन्द के प्रादुर्भाव से पूर्व के भारत की अवस्था वर्णन करते हुए कहा कि भारत पर महर्षि के इतने उपकार है कि हम उनसे उऋण नही हो सकते। आज धर्म के धन्धेबाज साम्प्रदायकता को बढावा दे रहे हैं। ऋषि ने सत्य और निर्भयता का सहारा लेकर देश को उठाने का प्रयास किया था। हमें आज परस्पर घृणा उत्पन्न करने वालो से देश को बचाना है। जिसके कारण आज पजाब मे शहीदे आजम भगतसिह की बहन की भी हत्या कर दी गई है।

ऋषि की सत्यनिष्ठा व निर्भयता से ही देश को विनाश से बचाया जा सकता है। देश की अखण्डता और अलगाववाद पर भीषण प्रहार करने की उन्होने आवश्यकता बतलाई।

सम्मेलन मे भाषण करते हुए केन्द्रीय इस्पात मन्त्री श्री कृष्णचन्द पन्त ने कहा—हमारी सभ्यता व सस्कृति आज करोड़ों वर्ष से इसीलिए जीवित व सुरक्षित है कि हमने सदा अपने परम्परागत नैतिक मूल्यो को सम्भालकर रखा हुआ है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की विभिन्न समस्याओ पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण से प्रकाश डालते हुए कहा कि पाकिस्तान के इस्लामी बम से देश की सुरक्षा को खतरा है। भारत को भी भारतीय बम बनाना ही चाहिए। आर्यसमाज देश के हर सकट मे देश वासियो व भारत सरकार का सही मार्ग दर्शन करता रहा है और आज भी आर्यसमाज सिर पर कफन बाध कर राष्ट्र रक्षा के हर मुद्दे पर लड रहा है। आर्यसमाज का जन्म ही इसलिए हुआ है, उसके सेवक आत्म त्यागी बलिदानी भावना से समाज की सेवा करे उसके पुरस्कार स्वरूप न उन्हे सरकारी शासन की गद्दिया चाहिये नही कोई पुरस्कार चाहिए। हमारी सेवा का महान् इतिहास है जिसकी धाक व ख्याति भारतीय प्रजा के जन-जन में व्याप्त है। आर्यसमाज सरकार से पजाब की रक्षा की माग करता है —

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली के तत्वावधान में श्री रामचन्द्र-राव वन्देमातरम् की अध्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन सम्पन्न हुआ। इसका उद्घाटन केन्द्रीय मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने किया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने विशेष अतिथि के रूप मे सम्मेलन को सम्बोधित किया। इस अवसर पर सलग्न चार प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए।

राजनीति में साम्प्रदायिक दलो पर रोक

प्रस्ताव १

यह राष्ट्र रक्षा सम्मेलन इस बात पर गम्भीर चिन्ता प्रकट करता है कि देश मे बिभाजन से पूर्व की साम्प्रदायिक एव विघटनकारी प्रवृत्तिया पुन सिर उठाने लगी है। इसलिए इस सम्मेलन के मन मे साम्प्रदायिक या मजहबी आधार पर बने राजनीतिक दलो पर चुनाव मे भाग लेने पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। अनेक धार्मिक सगठन राजनीति के लबादे मे अलगाववादी और विघटनकारी षडयन्त्र कर देश की अखण्डता को क्षति पहुचाने के लिए कटिबद्ध हैं तथा देश को एक और विभाजन के कगार की ओर धकेल रहे है।

इस सम्बन्ध मे यह सम्मेलन लोक सभा मे जनता पार्टी के सासद श्री थमपन थामस के उस निजी बिधेयक का स्वागत और समर्थन करता है जिसमे चुनाव आयोग को किसी धर्म या सम्प्रदाय पर बने राजनीतिक दल को मान्यता प्रदान न करने का अधिकार देने की माग की गई है। यह सम्मेलन भारत सरकार तथा ससद

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सिद्धान्त चर्चा

पुनर्जन्म

—आचार्य शिवराज शास्त्री, एम. ए. मौलवी फाजिल

आर्य सभ्यता के प्रत्येक वर्ग में वे चाहे वैदिक धर्मी, पौराणिक जैन बौद्ध कोई भी हो जीवात्मा के अस्तित्व को अनिवार्य रूप से स्वीकार किया गया है। आत्मा अनादि नित्य है। कर्मफल के अनुसार अनेक योनियो मे निरन्तर आता जाता है। जन्म और मृत्यु केवल योनि परिवर्तन के ही साधन हैं। महर्षि यास्काचार्य ने बडे सुन्दर शब्दो मे इस रहस्य का वर्णन किया है—

मृतश्चाहं पुनर्जातो, जातश्चाहं पुनर्मृत
नानायोनि सहस्राणि मयोषितानि यानि वै।

अध्याय १४ खण्ड ६

अर्थात् जीव मरकर पुन जन्म लेता और जीवित होकर फिर मृत्यु को प्राप्त होता है इस प्रकार असख्य योनियो मे जाता है।

श्रीमद्भगवद् गीता मे यही सिद्धात इस प्रकार निरूपित किया गया है

जातस्यहि ध्रुवो मृत्यु ध्रुव जन्म मृतस्य च ॥ गीता २। २७

जो वस्तु उत्पन्न होती है उसका विनाश निश्चित है और नाशवान वस्तु ही पुन जन्म लेती है।

गीता के चतुर्थ अध्याय मे स्पष्ट कहा है—

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानितव चार्जुन।

हे अर्जुन तेरे और मेरे असख्य जन्म हुए हैं।

वेद भगवान मे तो इस सिद्धात की पुष्टि मे अनेक उद्धरण हैं—

ऋग्वेद १६४।३०

अनच्छए तुरगातु जीवमेजद् ध्रुव पस्त्यानाम, जीवो मृतस्यचरति स्वधामि रमत्यो मर्त्येना सयोनि। अर्थात् परमात्मा, जीव के जल्दी जल्दी शरीर परिवर्तन को संभालता है। जीव इस शरीर मे अनादि, मृत्यु रहित, मरणधर्मा अन्नादि वस्तुओ से अपना निर्वाह करता है।

ऋग्वेद ३। १। २०

एताते अग्ने जनिमा सनानि। अर्थात् परमात्मा मानव के अनेक जन्मो को जानता है। ऋग्वेद ३। १। २१ जन्मन जन्म निहितो जातवेदा, अर्थात परन्तु जीवात्मा को उसके कर्मों के अनुसार अनेक जन्म प्रदान करता है।

ऋग्वेद १०। १४। ८

सगच्छ स्व पितृभि सयमे नेष्टा पूर्तेन परमेव्योमन्। हित्वा वा या अव पुनरस्तमेहि सगच्छस्व तन्वा सुवर्चा ॥ अर्थात् हे मनुष्यो अपने माता पिता से सत्सग करके अपने नियन्ता प्रभु की शरण मे रहो। निन्दनीय कर्म छोडो क्योकि प्रभु तुम्हे बारम्बार यह शरीर व ससार मे आने को पुनर्जन्म देता है।

यजुर्वेद ४। १५

पुनर्मन पुनरायुर्मऽआगन् पुन प्राण पुनरात्मा मऽआगन् पुनश्चक्षु श्रोत्रं-मऽआगन् ॥

प्रभु की कृपा से मुझे पुनर्जन्मो के साधन से बारम्बार मन, आयु, प्राण, आख कान प्राप्त होते हैं क्योकि मैं अजर अमर आत्मा हूँ।

जिन सैमेटिक सम्प्रदायो ने पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार नही किया उनका सबसे बडा कारण यही है कि इन सम्प्रदायो के प्रवर्तको को स्वय आत्मा का ज्ञान नही था फिर वे आत्मा की मृत्यु या जीवन पर विचार ही कैसे करते।

इस्लाम के प्रवत्तक हजरत मुहम्मद सा० से उनके जीवन मे जब लोग पूछते थे कि आत्मा क्या है तो वे मौन हो जाते थे। जब पूछने वालो के प्रश्नो से वे तग आ गए तो उन्होने खुदा की ओर से एक आयत बनाकर लोगो को सुनाई—

यसइलूनका मनिरुह, कुलबलरुहा मिन अमरे रब्बी।

ऐ मुहम्मद! लोग तुझसे रूह (आत्मा) के सम्बन्ध मे प्रश्न करते हैं। तू उत्तर मे कहदे कि मुझे इसका कोई ज्ञान नही, रूह ईश्वर के ही रहस्यो मे से एक वस्तु है।

भला जब रूह के सम्बन्ध मेही अज्ञान की घोषणा कर दी गई तो उनके जीवन मृत्यु के रहस्य का कौन वर्णन करता। इसी भ्रम में मुसलमान भाई ऐसा मानते हैं कि आत्मा एक बार खुदा उत्पन्न कर देता है फिर मरने के बाद वह शरीर की भाति कबर में लिटा दी जाती है। अन्तिम न्याय के दिन वह फिर उठेगी और फिर स्थायी रूप से उनके लिए स्वर्ग अथवा नर्क में रहने का निर्णय ईश्वर करेगा।

स्वर्ग की बडी बडी विचित्र मोहक व आकर्षक कहानियां घडी गई हैं जिसके प्रलोभन मे खुदा के नाम पर मुसलमानो ने ससार को कई बार रक्त स्नान कराया। आज भी इसी मिथ्या भ्रम ने उन्हें इस प्रलोभन मे फसा रखा है। एक मुसलमान कवि ने इस्लामी वहदत (ईश्वर की एकता) का उपहास करते हुए लिखा है

कहता है कौन मौलवी वहदत परस्त है,
हूरो पै मर रहा है यह शहवत परस्त है।

एक और कवि लिखता है—

ये शेख जी जो मुसल्ला बिछाए बैठे हैं,
किसी की याद मे आसन जमाए बैठे हैं।

मुसलमान देशो मे ईरान एक ऐसा देश था जिसने इस्लाम के इस सिद्धात का विरोध किया कि आत्मा अजर अमर नही एक ही बार पैदा और एक ही बार मरता है। अर्थात् पुनजन्म नही होता। यह मुसलमान अपने आपको सूफी कहते थे। ईश्वर के परमभक्त थे और पुनर्जन्म मे विश्वास रखते थे क्योकि ईरान सदा आर्य विचारो से प्रभावित रहा है। खुमैनी की क्रान्ति से पहले ईरान के सम्राट अपने आपको आर्य सम्राट मानते थे। ईरान के प्रसिद्ध कवि मौलाना रुमी ने लिखा है

हम चू सब्जा बारहा रोईदाअम
हफ्तसद हफ्ताद कालिब दीदाअम्

मैं पृथ्वी की घास की भाति असख्य बार उत्पन्न हुआ हूं और शरीर की असख्य योनियो को मैंने पुनर्जन्म के रूप मे प्राप्त किया है।

ईरानी सभ्यता से ही प्रभावित मुसलमानो के महाकवि डाक्टर सर मुहम्मद इकबाल एम ए-पी. एच. डी. बार एटला मानते हैं—

मौत एक जिन्दगी का वक्फा है
यानी आगे चलेंगे दम लेकर

मृत्यु आत्मा के लिए एक विराम स्थल होता है जो इस शरीर को छोडकर आगामी जीवन के लिये पडाव का काम देता है।

आत्मा स्वतन्त्र सत्ता है। ईश्वर भी उसके अस्तित्व को मिटा नहीं सकता इस भाव को इकबाल ने लिखा है—आत्मा की महानता पर वे लिखते हैं—

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से यह पूछे बता तेरी रजा क्या है।

पुनर्जन्म की इससे अधिक स्पष्ट स्वीकारोक्ति और क्या होगी।

सम्पादकीय

आर्यसमाज का भविष्य

आर्य समाज की स्थापना शताब्दी हम मना चुके हैं और हमने अपना सारा लेखा-जोखा देखा उसमें क्या उपलब्धियां रही, उन पर विचार भी किया। किन्तु आर्य समाज के कार्य एवं भविष्य के विषय में हम इतने चिंतित न थे जितने होने चाहिए? आज देश के विभाजन के पश्चात् असाम्प्रदायिक राष्ट्र की घोषणा ने आर्य समाज की स्थिति को कुछ विचारणीय प्रश्नों के घेरे मे लाकर खड़ा कर दिया है।

आज आर्य समाज अपने भविष्य की देहलीज पर खड़ा है। डा० एन्ड्रू जेक्सन डेविस के शब्दों मे आर्य समाज एक जाज्वल्यमान प्रेम और ज्ञान के अग्निपुंज के रूप मे संसार की सम्पूर्ण अपवित्रताओ तथा दुर्बलताओ को भस्म कर देने वाली संस्था बनी थी। इसी कारण स्वामी दयानन्द तथा उनके सम्पर्क में आये सज्जनो के काल मे आर्य समाज का आन्दोलन आंधी की तरह सर्वत्र फैल गया। साथ ही देश में एक धार्मिक व सामाजिक क्रान्ति लाने मे सफल हुआ।

आर्य समाज का दूसरा युग कुछ क्रान्तिकारी न रहकर कुछ सीमा मे बंट कर रह गया। इस काल मे शरीर का विस्तार अधिक तथा आत्मा का प्रश्न मन्द, पड़ता गया। वही पश्चिमी सभ्यता के तीव्र वेग ने उसकी विचार धारा को कुछ कुण्ठित किया तथा विदेशी शक्ति समय समय पर प्रच्छन्न भाव से उसकी गति मे रुकावटें खड़ी करती रही। जिससे आन्दोलन अप्रमित दिशा की ओर अग्रसर होने का उचित मार्ग न पाकर सामान्य क्रिया कलाप तथा कुछ अंश तक सामाजिक सुधार ही कर सका।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद आज आर्य समाज तीसरे युग मे चला है आज की नई परिस्थितियों मे उसे फिर से अपना मार्ग निर्धारित करना होगा। केवल पूर्व पुरुषों के नाम पर ढिंढोरा पीटने से काम नही चलेगा। यदि हमने अपनी गति का उचित मार्ग नहीं खोजा तो हम पिछली ख्याति को भी खो बैठेंगे। और आर्य समाज का भविष्य भी खतरे में पड़ जायेगा।

वस्तुतः यह समय आर्य समाज को कठोर तपस्या कार्यशीलता की परीक्षा का है। यदि उसने हमारे हृदय की तन्त्री को झंकृत कर दिया तो सैकड़ो विपत्तियों व बाधाओ के बीच मे से भी आर्य समाज अपना मार्ग निकाल लेगा।

आज भी हमारे मार्ग मे विदेशीय भावनायें खड़ी हैं। उसकी शक्ति अन्दर अन्दर हमें बिगाड़ने में जो काम कर रही है उस शक्ति का सीधा संघर्ष बाहर व भीतरी शक्तियों से करना ही पड़ेगा। साथ ही राजनैतिक रूप से भटकने से पूर्व हमें सांस्कृतिक दृष्टि से उलझना पड़ेगा। आज अधिकांश शिक्षित जन मानस पश्चिमी आदर्शवाद पर विश्वास करके चल रहे हैं केवल नारा ही हमारा लग रहा है। उसी परिभाषा व सूत्रो मे देश की उन्नति करना चाहते हैं।

वर्तमान राष्ट्रीय सरकार के संचालको के हृदय मे भी यह बात कार्य करती हुई दीख रही है। अतएव म० गांधी के नाम की दुहाई देकर भी उनके विशिष्ट स्वप्नों को साकार करने मे तत्पर न होकर, भ्रमित हो रही है। इसलिए मैं सरकार द्वारा भारत की असाम्प्रदायिक राष्ट्र बनाने की घोषणा को भारतीय संस्कृति प्रेमी संस्था के लिए इतना बाधक नहीं मानता। जितना पश्चिमी सभ्यता की प्रबल धारा को। प्रजातन्त्र मे प्रजा की आवाज अवश्य बुलन्द होकर रहेगी क्योंकि जनता पश्चिमी जगत के अन्धानुसरण को पसन्द नहीं करती है। यह हृदय से भारत वर्ष प्राचीन संस्कृति का जीवन ही जीकर जीना चाहती है तो उसे कोई सरकार रोक नही सकती। राष्ट्र की इच्छा सरकार में अवश्य प्रतिबिम्बित होकर ही रहेगी। परन्तु यदि हमारे देश की जनता ही पश्चिमी सभ्यता के प्रवाह मे बह गई तो फिर किसी भी प्रकार से आर्य समाज को अपने उद्देश्य में सहायक होने की आशा नही करनी चाहिए।

आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य जनता के लिए यह दिवस बड़े महत्व का और एक महान पर्व है। इसे समारोह पूर्वक मनाना चाहिए साथ ही आर्यसमाज की शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए वेद प्रचार मे स्थिर निधि भी बनानी चाहिए। सार्वदेशिक सभा ने इस दिन को आर्य हिन्दू समाज महर्षि दयानन्द की कल्पनाओं को मूर्त रूप देने हेतु तन-मन धन से जुटकर कार्य करने के लिए नियत किया है।

सभा की अपील का अर्थ है अपील का उत्साह वर्धक उत्तर देना? वेद प्रचार ईसाई प्रचार निरोध, शुद्धि कार्य गोरक्षा तथा नयी पीढ़ी को ऋषि के मन्तव्यों का ज्ञान वर्धन करना अभीष्ट है।

आर्य समाज का स्थापना दिवस आर्य समाज के स्वीकृत पर्वों में से एक महान पर्व सभा ने माना है। सभा ने इस पर्व को इस वर्ष १० मार्च का मनाने का निश्चय लिया है। इस दिन समस्त आर्य समाजें अपने यहा विस्तार पूर्वक अच्छे ढग से कार्यक्रम को सम्पन्न करें और आर्य समाज की स्थापना का महत्व बतायें।

नगरो मे प्रात प्रभात फेरिया निकालें, आर्यसमाज में हवन करके शिक्षा-प्रद उपदेशो का आयोजन करें। आर्य समाज के स्थापना दिवस का सन्देश, विश्वशान्ति और आध्यात्मिक तथा सामाजिक उन्नति का सन्देश भी है इसी को लक्ष्य मे रखकर कार्यक्रम करें।

सार्वजनिक सभाए भी स्वसुविधानुसार करें। घर से बाहर निकल कर महर्षि का सन्देश जन-जन तक पहुचाने की व्यवस्था करें। जिसमे आर्य समाज स्थापना का इतिहास, उसकी उपयोगिता अब तक के प्रमुख कार्य-कलाप, सार्वजनिक सेवाए, अछूतोद्धार पर भावनादि करके विचार दें। देश काल और स्थिति के अनुसार पुरोगम रखें। जिससे लोग कह सकें कि इस प्रकार के वातावरण से हमने कुछ प्राप्त किया है।

इस प्रकार के कार्यक्रमो से आर्य समाज के सद्गुणों और आर्य समाज की इस युग मे आवश्यकता पर बल देना चाहिए।

परिवारो में पारस्परिक मेल-जोल, प्रेम प्रदर्शन और सम्वर्धन को भी बढ़ावा दे। आर्य समाज के प्रति सद्भाव रखने वाले नागरिको को आमन्त्रित किया जाय।

मन्दिरों पर दीपमाला

अतिशयोक्ति न होगी कि आर्यो के लिए यह पर्व दीपमाला के बराबर मनाए। यद्यपि समय की माग है कि स्वतन्त्र भारत में आज जो विघटन कारी तत्व संगठित भारत को पुन खण्डित करने तथा भाई चारे को तोड़कर वैमनस्य हत्याओं का वातावरण बना रहे हैं तब प्रसन्नता का प्रदर्शन कैसे करें। फिर ऋषि मिशन पर यदि दृष्टिपात किया जाय तो विचारों के आदान प्रदान करने मे कोई हानि नही है।

पुरातन गिरी संस्कृति के पुनरुत्थान और नवीन आर्य समाजो की स्थापना। विस्मृत न हो कि पिछले समयों मे इस प्रकार के आयोजन करके वेद प्रचार स्थिर निधि का कायम करके अपने को सुदृढ़ करें।

साहित्य वितरण भी करें और वेद प्रचार निधि म आप अधिक से अधिक धन एकत्रित करके सार्वदेशिक सभा को दान रूप मे अवश्य भेजें।

इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज अपने स्थापना काल से सदा ही प्रचार प्रसार मे संलग्न है।

सनातनधर्म सभा सोपुर (कश्मीर) के प्रधान जा सार्वदेशिक सभा कार्यालय में

दिल्ली १- फरवरी।

प्रधान सनातन धर्म सभा सोपुर (श्रीनगर) कश्मीरी पण्डितो के साथ दिल्ली मे सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से मिले और उन्हे बताया कि आपकी कृपा व सहयोग से हमारे सभी मन्दिरो का पुन निर्माण का कार्य पूरा हो गया है और जो क्षति हुई थी उसकी भी व्यवस्था सरकार की ओर से हो चुकी है। आपने कठिन समय मे काश्मीर प्रचार कर हिन्दुओ को जो सबल प्रदान किया है, उसके लिए हम आभार प्रकट करते हैं और कश्मीरी पण्डितो की ओर सेब आभार स्वरूप सेबो की पेटी भेंट करते हैं। सभा प्रधान श्री स्वामी जी ने उन्हे विश्वास दिलाया कि आर्यसमाज सदैव हिन्दुओ के हितो व उनके धर्म स्थलो की रक्षा के लिए उनके साथ रहेगा।

डा० कर्णसिंह द्वारा हाईकोर्ट में मुकद्दमा

वैष्णो देवी प्रबन्ध समिति का मामला

हिन्दू समाज में फूट डालने का प्रयास

आर्यसमाजी कार्य कर्त्ताओं पर नुकताचीनी

गत वर्ष अगस्त मास मे जम्मू कश्मीर मे राष्ट्रपति शासन के दौरान राज्यपाल जगमोहन ने वैष्णव देवी तीर्थ स्थान का काम काज एक स्वतन्त्र बोर्ड को सौंपने का फैसला किया था। वही अब विवाद का विषय बन गया है और डा० कर्णसिंह के धर्मार्थ ट्रस्ट ने इस फैसले के विरुद्ध अदालत मे अपील की है।

त्रिकुटा की पहाड़ियो पर १०००० फुट की ऊचाई पर स्थित इस तीर्थ स्थान मे हर साल लाखो यात्री आते हैं। परन्तु उन यात्रियो की सुविधा की तरफ कोई ध्यान नही दिया जाता था। इस गुफा रूपी मन्दिर की सारी आमदनी बारीदारो के कुछ परिवारो मे बट जाती थी। सख्या मे बारीदारो के तीन परिवार थे, विस्तार होते-होते अब उनके वशजो की ५००० से ऊपर पहुच गई है। राज्य के जिस धर्मार्थ ट्रस्ट पर इसके एकमात्र ट्रस्टी पूर्व महाराज डा० कर्णसिह थे। परन्तु बारीदारो के एकाधिकार पर उनका भी कोई बश नही था, वे स्वय अदालत मे मुकदमा करके भी कामयाब नही हुए थे। इसलिये यात्रियो की असुविधा की कोई सीमा नही थी।

जब से सरकार ने इसका प्रबन्ध अपने हाथ मे लिया तब से यात्रियो के लिए अनेक सुविधाये जुटाई गई जिनकी प्राय सभी हिन्दू सगठनो ने प्रशसा की है। परन्तु पहले डा० कर्ण सिह के ट्रस्ट को राज्यपाल का यह कदम पसन्द नही आया क्योकि इससे उनके हितो को हानि पहुचती थी। इसलिये वे इस मामले को अदालत मे ले गए।

वादी के रूप मे डा० कर्णसिह के धर्मार्थ ट्रस्ट ने राज्यपाल पर आरोप लगाया है कि श्री जगमोहन आर्य समाजी हैं और मूर्तिपूजा के विरोधी है इसलिये उन्होने हिन्दुओ के इस तीर्थ स्थान के मामले मे दखल देकर सनातनी हिन्दुओ के अधिकारो पर पानी फेर दिया है। जो बोर्ड राज्यपाल ने बनाया है, उसमे अब ऐसे आर्य समाजियो को भी रख दिया है जिनकी मूर्तिपूजा मे आस्था नही है। राज्यपाल ने इस प्रकार सविधान के अन्तर्गत मिले अपने वैधानिक अधिकारो का दुरुपयोग किया है।

प्रतिवादी के रूप मे धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से पेश की गई याचिका के उत्तर मे राज्यपाल की ओर से कहा गया है कि धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना हिन्दू धर्म के किसी विशेष वर्ग को बढावा देने के लिये नहीं की गई थी। ये सब मन्दिर और तीर्थ स्थल केवल राजघराने या केवल किसी एक व्यक्ति के दान से नही चलते, बल्कि सरकारी कोष और आम जनता के चढावे की रकम से ही चलते हैं।

प्रतिवादी का कहना है कि यह तीर्थ स्थल केवल मूर्तिपूजकों का नही, बल्कि उन सभी हिंदुओ का है जिनमे मूर्तिपूजक न होते हुए भी आपको हिन्दू कहने वाले सभी वर्ग शामिल हैं। श्री जगमोहन न मूर्तिपूजा के विरोधी हैं और नही उन्होने मूर्तिपूजा के विरोध मे कभी कुछ कहा है या किसी को मूर्तिपूजा करने से रोका है। ट्रस्ट से होने वाली आय को डा० कर्ण सिह अपने चुनाव मे खर्च करते रहे हैं। इसलिए उनका यह कहना गलत है कि धर्मार्थ ट्रस्ट को तीर्थ स्थान मे ऐसी कोई आमदनी नही होती जिससे वहा यात्रियो को सुविधाये दी जा सके जब से यह स्थान बोर्ड के अधीन आया है तब से छ महिने के अन्दर ही एक करोड रुपये की आमदनी हुई है जिससे अनेकानेक सुविधाओ की व्यवस्था करना सम्भव हुआ है। ●

डा० कर्णसिह जी ने जम्मू कश्मीर हाई कोट मे एक याचिका दायर की है जिसमे वैष्णो देवी तीर्थ के प्रबन्ध तथा यात्रियो की सुविधाओ के मामले मे बनाई गई समिति पर इसलिए आपत्ति की है कि उसमे कुछ आर्यसमाजी लोग लिए गए है और राज्यपाल श्री जगमोहन स्वय एक आर्य समाजी हैं।

वादी प्रतिवादी के अलावा इस काण्ड का एक दुखद पहलू यह है कि धर्मार्थ ट्रस्ट ने इस मुकदमे के द्वारा हिन्दुओ और आर्य समाजियो मे दरार पैदा करने की कोशिश की है। सत्य तो यह है कि आर्यसमाजी भले ही मूर्ति पूजा न करते हो परन्तु मूर्ति पूजक हिन्दुओ के अधिकारो की रक्षा करने मे आर्यसमाजी सदा ही सबसे आगे रहे हैं।

यही कारण है कि गतवर्ष के दगो मे जब कश्मीर मे लगभग १०० हिन्दू मन्दिरो को क्षति पहुचाई गई तब कोई सनातनी नेता या स्वय डा० कर्णसिह वहा नही पहुचे बल्कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वा० आनन्दबोध सरस्वती ने मौके पर पहुचकर क्षति-ग्रस्त मन्दिरो व धर्मशालाओ के चित्र लिए वे दिल्ली आकर सभी फोटो व उनका विवरण सहित श्री प्रधानमन्त्री राजीवगाधी से मिले और सरकार से माग की इन मन्दिरो का पुन निर्माण कराया जाए तब केन्द्र के आदेश पर काश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन ने १० करोड रुपया खर्च करके मन्दिरो का पुन निर्माण करा कर हिन्दू मन्दिरो क्षतिपूर्ति पूर्ति की।

—सम्पादक

पंजाब समस्या एवं आर्य समाज

डा० रघुवीर वेदालंकार, रामजस कालेज, दिल्ली

आप वहां मत जाइए, ऊपर छत पर आतंकवादी छिपे बैठे हैं जो कि छत पर चढने वाले किसी भी व्यक्ति को गोली का निशाना बना सकते हैं इसे अनसुनी करके वह लौह पुरुष बोला—यदि ऐसी बात है तो मैं वहा अवश्य जाऊ गा। साथियो ने आग्रह किया—हम भी साथ चलेगे। वह झल्लाया—नही, तुम सब यही ठहरो। वहा मैं अकेला जाऊ गा। कौन था भद्र निर्भीक दृढव्रती? एक जीवित शहीद।

सुनने में अवश्य अटपटा लगता होगा—भद्र कौन सा प्राणी है जो जीवित अवस्था मे ही शहीद जैसा है। शहीद तो मृत्यु के उपरान्त कहलाते हैं। आर्य समाज रूपी बगीचा शहीदो के रक्त से सींचा गया है। स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, महाशय राजपाल सदृश अनेक शहीदो का बलिदान अमर है जिनके बलिदानी रक्त की ऊष्मा ही आज तक हमरी धमनियो मे दौड रही है। कोई भी धर्म तथा जाति ऐसे बलिदानो के कारण ही जीवित रहती है। आर्यसमाज मे यदि कुछ शैथिल्य कही पर दृष्टिगोचर होता भी है तो उसके मूल मे इसी आत्मसमर्पण, स्वार्थ त्याग एव बलिदानी भावना की न्यूनता है।

यह तो नही कहना चाहिए कि धर्म तथा जाति के ऊपर जबरदस्ती किसी का बलिदान होना ही चाहिए या कर ही देना चाहिए किन्तु इतना तो नि सकोच कहा जा सकता है कि ऐसी बलिदान भावना से युक्त, ऐसे दृढव्रती अवश्य होने चाहिए जो सदैव प्राणो को हथेली पर लिए फिरते हो। जिनके जीवन तथा मृत्यु मे अन्तर प्रतीत न होता हो, जो शरीर की अपेक्षा समाज को महत्त्वपूर्ण समझ कर वहा जाने से भी न झिझकते हो जहा मृत्यु साक्षात् खडी दिखलायी दे रही हो। ऐसे ही जीवन निर्मोही व्यक्तियो को कहते हैं—जीवित शहीद। इन्होने जीवन के प्रति मोह सर्वथा छोडा होता है। समाज तथा राष्ट्र के लिए ऐसे व्यक्ति प्राणोत्सर्ग तक करने को सर्वदा उद्यत रहते हैं।

दिल्ली के घण्टाघर पर गोरो की सगीनो के सामने श्रद्धानन्द के रूप में ऐसे ही एक जीवित शहीद को दिल्ली वासियो ने देखा था। उनके ही पदचिह्नो पर चलने वाले उनके एक दृढव्रती शिष्य को पजाब के दौरे के समय आतंकवादियो की गोलियो के खतरे मे भी निर्भीक रूप से अकेले जाते हुए देखा था—प्रो० शेरसिह प० राजगुरु शर्मा श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् श्री मदनमोहन तिवारी तथा श्री लक्ष्मीचन्द चौधरी पजाब दौरे के समय मे सब उनके साथ थे। इन साथियो को आपने अपने साथ ऊपर जाने से इसीलिए मना कर दिया कि उनके बलिदान के पश्चात् ये शेष व्यक्ति आर्यसमाज की गति की मन्द न होने दे।

पिछले ही वर्ष हमने दीवान हाल मे आनन्दबोध के रूप मे जन्म लेते हुए इस कर्मवीर के मुह से सुना था-लोकैषणा, वित्तैषणा, पुत्रैषणा मया परित्यक्ता, मत्त सर्वभूतेभ्योऽभयमस्तु। किन्तु पजाब दौरे के समय हमने पाया कि भद्र व्यक्ति अपने साहसपूर्ण कर्म से यह मूक घोषणा भी कर रहा था—प्राणैषणा मया परित्यक्ता, मत्त सर्वभूतेभ्योऽभयमस्तु। उक्त तीनो ऐषणाओं के साथ मैंने प्राणैषणा भी छोड दी, अब मुझ किसी से भी डर नही है। यह जीवन राष्ट्र को समर्पित है।

इन्होने अन्य आर्यसमाजो, आर्य सभाओं तथा अनेक आर्यसमाजियो ने पजाब समस्या को सुलझाने एव समस्या पीडितो की सहायता करने मे जो अनूठा कार्य किया है, वह सर्वथा श्लाघनीय है। आर्यसमाज का दायित्व था तथा है कि वह इस विषय मे मूक दर्शक बन कर न बैठा रहे अपितु इसमे अपना सक्रिय योगदान दे और इसने वह योगदान दिया तथा आगे भी देता रहेगा। इस सन्दर्भ मे आर्य प्रादेशिक सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सक्रिय योगदान रहा है। पजाब समस्याओ के सन्दर्भ मे जहा एक ओर आर्यो का शिष्टमण्डल पजाब की स्थिति का प्रत्यक्ष आकलन करने लुधियाना, जालन्धर, पट्टी, तरनतारन अमृतसर आदि स्थानो पर गया, वहा जाकर दुखियो को सात्वना दी गले लगाया वहा दूसरी ओर दिल्ली मे १२ जुलाई को दीवानहाल मे तथा १३ जुलाई को सप्रू हाउस मे पजाब समस्या पर सम्मेलन आयोजित करके जनजागरण भी किया। इतना ही नही अपितु स्वामी आनन्दबोध जी तथा उससे पूर्व लाला रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे कई बार आर्यों का शिष्टमण्डल श्रीमती इन्दिरा गाधी राजीव गाधी, अरुण नेहरू, अर्जुनसिह आदि से भी मिला। उनको समय-समय पर उचित जानकारिया तथा परामर्श दिये। उदाहरण के रूप मे इसी प्रतिनिधि मण्डल ने स्वर्ण मन्दिर मे कार्यवाही करने का सुझाव आप्रेशन ब्लू स्टार से केवल तीन दिन पूर्व ही दिया था। जिसे तात्कालिक प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने स्वीकार कर लिया था। ११ जुलाई को ऐसा ही एक शिष्टमण्डल राजीव गाधी से भी मिला तथा उनको विस्थापितो की समस्या से अवगत कराने के साथ-साथ सुरक्षा-पट्टी के निर्माण का लिखित आश्वासन भी प्रधानमन्त्री से ले लिया था। इसी प्रकार के अथक प्रयासो के फलस्वरूप सरकार ने एक हजार रुपये प्रति मास पजाब से आये विस्थापितो के लिए स्वीकार किये। आतंकवादियो की दिन प्रतिदिन बढी हुई क्रूर एव गम्भीर हरकतो को देखते हुए पजाब के सीमावर्ती जिले या पूरा पजाब ही सेना को सौपने की माग भी इन्होने की जिसे कि अभी भी केन्द्रीय सरकार न मानकर गलती कर रही है। जब तक ऐसा नही होगा आतंकवाद पर काबू पाना मुश्किल रहेगा। सरकार को यह नीति समझ लेनी चाहिए—आर्जवं हि कुटिलेषु न नीति। दुष्ट व्यक्तियों के साथ सरलता दिखलाना बुद्धिमत्ता नही है। अत यदि मोरार जी देसाई के अनुसार आतंकवादियो को जेलो मे न डालकर उनके ऊपर राष्ट्र का पैसा बरबाद करने के बजाय उनको गोली से उडा दिया जाए तो यह आतंकवाद कुछ ही दिनो मे समाप्त हो जायेगा। यही ठोस एव एकमात्र इलाज है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

काम-काजी महिलाएं

— श्री रामेश्वरदास गुप्त

भारतीय महिलाओ के लिए धन उपार्जनार्थ कार्य करना कोई नई बात नही है। माता-पिता, भाई-बहिन, सास-ससुर अथवा पति के संरक्षण में वह सदा-सदा से धन उपार्जनार्थ कार्य करती रही हैं और आज भी कर रही है। खेत मे बुवाई से लेकर कटाई तक, खलिहानो मे अन्न की बरसाई से सफाई, ढुलाई तक, गाय, भैंस आदि पशुओ की देखरेख करना, दूध निकालना, उसे बिलोना, सूत कातना, कपड़ा बुनना, दरी बुनना, कालीन बुनना, जूती बनाना, कपड़े धोना, रंगना, दुकानदारी करना, मजदूरी करना ये सभी प्रकार के कार्य वह चिरकाल से करती आई है। उस कार्य से होने वाली आय का उस पर अलग से अधिकार नही होता था। उस कार्य पर परिवार का अधिकार होता था और हां, पुरुष वर्ग भी धन उपार्जन के लिए जो कार्य करता था वह भी संयुक्त रूप से ही खर्च किया जाता था। नौकरी भी करता था तो भी पगार लाकर पिता, माता अथवा पत्नी के हाथ में सौंप देता था क्योंकि भारतीय जन-जीवन मे परिवार अथवा संयुक्त परिवार की सत्ता होती थी। वही देश की इकाई होती थी, व्यक्ति इकाई नही होता था।

महिलाओ और पुरुषो की आवश्यकताएं बहुत सीमित होती थी। रोटी, कपड़ा रहने को स्थान और प्यार, बस इतना ही तो पर्याप्त था। संयुक्त रूप से कमाना, संयुक्त रूप से खाना, संतान उत्पन्न करना, परिवार का पालन करना, उसे संगठित करना, जो भी कुछ करना पर अर्थ (अपने से दूसरे के लिए करना, स्वार्थ (अपने लिए) कुछ भी नही करना।

आज की शहरी और सभ्य महिलाओ की आवश्यकताओ का कोई अन्त नही रहा। उनकी आवश्यकताओ की पूर्ति ने जन्म दिया है—अहम को, स्वतन्त्रता के विचार और स्वयं के लिए स्वतन्त्र रूप से धन उपार्जन की चाह को। सम्भवत यही कारण है कि परिवार से बाहर निकलकर धन उपार्जन करने के लिए महिलाओ का नौकरी करना, साथ ही आर्थिक रूप से समान अधिकार की इच्छा करना, पति और परिवार से स्वतन्त्र होना, इतना ही नही स्वेच्छाचारिणी बनने के न केवल स्वप्न देखना, अपितु बनना।

महिलाओ के रोजगार करने के अनेक कारण हैं। कुछ महिलाएं बढ़ती हुई महंगाई और परिवार की आर्थिक विपिन्नता के कारण परिवार का खर्च चलाने मे सहायता करने के लिए नौकरी आदि करती हैं। कुछ अपने परिवार से छुटकारा पाने के लिए कार्य करती हैं। कुछ अपने फैशन के शौक को पूरा करने और फिजूलखर्ची को बढ़ावा देने तथा उन्मुक्त जीवन जीने के लिए घर से बाहर निकलती हैं।

महिलाएं जब पुरुष के समान कार्य करती हैं तो स्त्रियों मे जो शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विशेषताएं होती हैं तो वे प्राय समाप्त हो जाती हैं। उनमे पुरुष के गुणो का प्रादुर्भाव हो जाता है। वह नारी से पुरुष तो बन ही नही पाती, साथ ही नारी भी नही रहती। पुरुषो के समान आचरण करने लगती हैं।

महिलाओ को यह अहसास रहना चाहिए कि पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रो मे उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। पुरुष तो इन विषयो का केवल उपदेशक होता है। महिलाएं व्यवहारिक रूप से अंगीकार करती हैं, चलाती हैं, कायम रखती हैं, सुधारती हैं।

बच्चे उत्पन्न करना, उनका पालन-पोषण करना, उन्हे अपनी परम्पराओ, अपनी संस्कृति, अपने वातावरण के साथ ढालना, उन्हें दुर्गुणो से बचाना, उनमे सद्गुणो का समावेश करना और उनके भविष्य का निर्माण करना। कितनी बड़ी जिम्मेदारी कितना बड़ा उत्तर दायित्व है महिलाओ का, भले ही वह किसी भी देश की क्यो न हो, खासकर भारतीय महिलाओ का।

धन उपार्जन करने वाली महिलाओ का जहां तक सम्बन्ध है उन्हे दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। सर्वप्रथम अपने कार्यालय मे पूरी ड्यूटी देनी होती है। नियत समय पर दफ्तर में, मिल में, कारखाने में, फैक्टरी में अथवा दुकान आदि पर पहुंचना होता है। शाम को अपनी ड्यूटी पूरी करने के बाद बस में, बस से निकलकर घर से, पति की सार-संभाल की, भोजन करा दिया, प्रात: दौड़ धूप मे स्वयं भी कुछ निगला और तुरन्त निकल पड़ी घर से, पहुंची बसस्टैण्ड पर, खड़े-खड़े टांगे दुख गई। तीन बसें निकल गई। भाग-दौड़ कर पूरी कशमकश के बाद चौथी बस मे चढ़ पाई। वहां भी बैठने को जगह नही थी।

समान अधिकार, आर्थिक स्वतन्त्रता, स्वेच्छाचार और फैशन की होड़ मे आगे निकलने के लिए जो महिलाएं धनोपार्जन करती हैं उनकी लगभग वही दुर्दशा होती जा रही है जो पश्चिम की नारी की हो चुकी है। इस तथ्य से आज वह स्वयं भी अनभिज्ञ नही है। इस विषय मे एक सिने अभिनेत्री अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती है—"नारी स्वतन्त्रता ऐय्याशी का पर्याय है। दूसरी सिने अभिनेत्री कहती है—"स्त्री को पति के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।" तीसरी कहती है—"औरत, औरत ही है" (देखिये गृहशोभा, जुलाई अंक १९८६)।

इस युग का भगवान (राजनीतिज्ञ) भी इस अग्नि मे घी का काम कर रहा है। आए दिन एक नया नारा लगा-लगा कर प्रभावित करता रहता है। कहता है—"महिलाओ का शोषण हो रहा है", "महिलाओ का उद्धार करेंगे।" साथ ही वह यह भी चाहता है कि कोई महिला अपने पति अथवा परिवार के अनुशासन मे नही रहे। कोई लड़की अपने मां बाप के अनुशासन मे नही रहे। किसी व्यक्ति पर समाज का भी कोई अनुशासन क्यो हो? हां व्यक्ति चाहे वह लड़की हो, महिला हो, अथवा पुरुष हो, मेरे अनुशासन मे रहे, केवल मेरे अनुशासन मे। मैं ही पति हूं, मैं ही बेटी का पिता हूं, मैं ही माता हूं, मैं ही भाई हूं, मैं ही परिवार हूं, मैं ही समाज हूं, मैं ही जाति हूं, मैं ही सब कुछ हूं, मैं ही भगवान हूं, इसलिए सब को मेरी शरण में ही आना चाहिए, केवल मेरी शरण में।

कुछ मनीषियो का कहना है कि स्वेच्छाचारिणी महिला अपनी भूल को समझेगी, अपने परिवार मे वापिस लौट आएगी। परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत नही होता। मेरे विचार से अब वह वापिस नही लौटेगी क्योंकि रस्सी टूट चुकी है, जुड़ेगी भी तो वह गांठ गठीली हो जायेगी। इतना और समझ लीजिए कि पुरुष का स्वेच्छाचार भी किसी हालत मे क्षमा नही किया जा सकता। उसे भी परमात्मा अथवा सूर्य और चन्द्रमा के समान अनुशासित और अटल रहना ही होगा क्योंकि स्त्री एवम् पुरुष परिवार, समाज और राष्ट्र की गाड़ी के दो पहिये हैं। इनमे से एक का भी संतुलन बिगड़ने से सब कुछ विनिष्ट हो जाएगा, मटिया-मेट हो जाएगा। उसे भी स्त्री के साथ उतना ही सहयोग करना होगा जितना वह चाहता है कि स्त्री उसके साथ करे और हां, जब हर काम-काजी पत्नी और हर काम-काजी पति समन्वय के साथ समझौतावादी दृष्टिकोण लेकर चलेंगे तो अपने आपको सुखी एवं आनन्दित तो रखेंगे ही साथ ही अपने परिवार को स्वर्ग बना लेंगे। जब परिवार स्वर्ग बन जाएगा तो उसके साथ-साथ समाज और राष्ट्र भी स्वर्ग का रूप धारण कर लेंगे।

वीरांगना कैकेयी

श्री गजानन्द आर्य, कलकत्ता

रामकथा में महारानी कैकेयी एक ऐसे चरित्र के रूप में प्रस्तुत है, जिसे उपेक्षा एवं घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। रामचरित मानस के अनन्य गोस्वामी तुलसीदास राम के चरित्र को देवत्व तक पहुँचाने के लिए अन्य चरित्रों के साथ न्याय न कर पाए। जिनको धूमिल ही नहीं अपितु कलंकित होना पड़ा है। रामकथा में कैकेयी को वे उचित सहानुभूति प्रदान नहीं कर सके, जबकि श्रीराम को महामानव और विश्वबन्द्य बनानेवाली कैकेयी ही है।

सदियों से इतिहासकारों, नाटककारों व कवियों ने महारानी कैकेयी के चरित्र पर लाछन लगाकर उसे प्रताड़ित उपेक्षित किया है। जहां कैकेयी एक वीरांगना, राजनीति कुशला पति परायणा थी, किन्तु बना दिया पतिहत्यारी, कुलकलंकिनी, स्वार्थिनी इत्यादि। देश, धर्म और सत्य की रक्षा के लिए जैसा कौशल, साहस और दृढ़ता कैकेयी ने प्रस्तुत किया है वैसा अन्य दुर्लभ है। वस्तुतः कैकेयी का गौरव महान है।

आर्यावर्त के तत्कालीन इतिहास में देवो और असुरों के संघर्ष मे कई राजाओं और योद्धाओं ने भाग लिया था, पर सफलता नही मिल रही थी। इन संघर्षों में महाराजा दशरथ के साथ महारानी कैकेयी की वीरता, कौशल्य, साहस और प्रतिभा से युद्ध में सम्मिलित देव और ऋषि मुनि बहुत प्रभावित हुये तथा उन्होंने राक्षसों के विनाश के लिए महारानी कैकेयी के साथ एक योजना का निर्माण किया। राष्ट्र उद्धार की उस योजना में महारानी कैकेयी को साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया और उस माता ने सारे अपमान, अपयश, कलक सहकर भी राष्ट्रहित की भावना को सर्वोपरि रखकर उस योजना को सफल किया। यह कोई कोरी कल्पना मात्र नही है, बल्कि ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में वर्णित घटनाक्रमो में ऐसे सूत्रों की भरमार है, जो राष्ट्ररक्षा की इस विषद योजना का संकेत है।

रामायणकालीन धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों के तथ्यपरक विश्लेषण के आधार पर रामराज्य की वास्तविक संस्थापिका पवित्र हृदया वीरांगना महारानी कैकेयी की चरित्रगत विशेषताओं एव उसकी तद्विषयक भूमिका को समझा जा सकता है। इस सम्बन्ध मे सर्वाधिक प्रामाणिक इतिहास ग्रन्थ वाल्मीकीय रामायण के अध्ययनोपरान्त रचित इस शोध-प्रबन्ध के अनुसार यह विश्लेषण निम्न प्रकार प्रस्तुत हैं :—

(१) शासकीय शिथिलता

अयोध्या के चक्रवर्ती सम्राट दशरथ की राज्य व्यवस्था मे अत्यधिक शिथिलता आ गई थी। यही कारण है कि—

(क) "अयोध्या राज्यान्तर्गत किष्किन्धा का राजा "बाली" स्वेच्छाचारी होकर अपनी मनमानी चला रहा था।" (अरण्यकाण्ड)

(ख) "अयोध्या के चक्रवर्ती साम्राज्य का ही एक भाग "दण्डकारण्य" राक्षसों से आक्रान्त था। छोटे-छोटे रामायण एवं वनवासी तपस्वीगण राक्षस "खर" एवं उसके अनुचरों द्वारा मारे जा रहे थे।" (अरण्यकाण्ड)

(ग) "चक्रवर्ती सम्राट कहे जाने पर भी महाराजा दशरथ लका के राजा रावण को अजेय मानकर उसके प्रभाव को समाप्त करने का कोई उपक्रम नही कर रहे थे या यो कहें वे क्षमताहीन हो रहे थे।" (बालकाण्ड)

महारानी कैकेयी को जिसने देवासुर संग्राम के समय युद्धभूमि में महाराज दशरथ की सारथी बन स्वयं को एक अद्भुत वीरांगना के रूप मे कभी प्रस्तुत किया था, महाराज की यह कायरता स्वीकार्य नही हो सकती थी।

(घ) "महाराज दशरथ की शासन व्यवस्था शिथिल पड़ जाने से अयोध्यावासी, यही नही सारे देश की प्रजा अनिष्टों व दुःखों से ग्रस्त थी तभी तो राम के राज्याभिषेक की घोषणा पर प्रजा ने राज्य की विसंगतियों से मुक्ति पा जाने की आशा से बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की थी।" (अयोध्याकाण्ड)

(ङ) "राज्य का कोष, सेना, कोठार और विकास अवरुद्धप्राय था. यही कारण है कि मात्र चौदह वर्ष की अवधि में ही "भरत" उसे दस गुना करके राम को लौटा सके।" (युद्धकाण्ड)

(२) युवराज को निपुण बनाने की देवों (ब्राह्मणों, ऋषियों) की दायित्वपूर्ण प्रक्रिया--

अयोध्या के युवराज को इस योग्य बनाना आवश्यक था कि सम्राट बनते से पूर्व राष्ट्र में विद्यमान संकटों को प्रत्यक्ष कर प्रजा को उससे मुक्ति दिलाने का उपक्रम करे। युवराज राम को योग्य बनाने की देवों की इस प्रक्रिया मे जो राम महाराज दशरथ की दृष्टि में धनुर्विद्या से रहित था, अस्त्रबल एव बलाबल का जिसको ज्ञान नहीं था, युद्ध में निपुण नही था, महर्षि विश्वामित्र की छत्र छाया एवं निर्देशन में मुनि द्वारा प्रदत्त परिस्थितियों से जूझने के परिणामस्वरूप वही राम को सब विद्या, निर्भयता और युद्ध कौशल में निपुण होकर समस्त पृथ्वी का सम्राट होने योग्य बना दिया गया। देवों की वह प्रक्रिया निश्चय ही एक विषद् योजना का अंग थी जो सम्भवतः राम जन्म से पूर्व ही तत्कालीन ऋषि मुनियों (देवों) ने राष्ट्र के प्रति अपना महान् दायित्व बोध करते हुए बनी थी।

(३) दण्डकारण्य के उद्धार की योजना

राक्षसी अत्याचारों से आक्रान्त दण्डकारण्य क्षेत्र के उद्धार के लिये देवगण मुनि विश्वामित्र द्वारा उपेक्षित वीर योद्धा राम को पीड़ित प्रजाजनो के बीच ले आना आवश्यक समझते थे उन्हें पक्का भरोसा था कि युवराज राम मे राक्षसो को समाप्त करने की पूर्ण क्षमता, सम्पन्नता है। यह भी उनकी योजना का अंग ही था कि राम अयोध्या के राजा के रूप नही एक तपस्वी के रूप में वहां जाकर रहें, ताकि राक्षसों की बड़ी शक्तियों से एकसी टक्कर न लेनी पड़ जाय। देवों ने राम के उतरने की, मार्ग की, अस्त्र-शस्त्र एव परामर्शों प्राप्त करने की सारी योजना तैयार कर छोड़ी थी।

योजना बड़ी गोपनीय थी। स्वयं राम को, जिनके बलबूते पर वह सब व्यूह रचना की गई थी देवों ने अपनी योजना का संकेत राक्षस "खर" के पश्चात् इस रूप मे दिया कि महर्षियों द्वारा आप यहां पर लाये गये हैं।

(४) कैकेयी पर दोषारोपण व्यर्थ

क—पुत्र स्वार्थ

देवी कैकेयी के प्रति फैलाया गया एक आरोप यह चला आ रहा है कि उसने अपने पुत्र भरत को राजगद्दी दिलाने के स्वार्थ के वशीभूत होकर ही यह सारी अभिसंधि की थी। यह आरोप सर्वथा मिथ्या है क्योंकि यदि भरत को राजगद्दी दिलाना कैकेयी का अभिप्राय रहा होता तो उसे महाराज दशरथ को उनके पास धरोहर मे रखे दो वर प्रदान करने हेतु वचनबद्ध करने की कोई आवश्यकता न होती क्योंकि महाराज दशरथ अपने पाणिग्रहण के समय से ही अपने श्वसुर कैकेयराज से प्रतिज्ञाबद्ध थे कि कैकेयी से होने वाली संतान अयोध्या की युवराज बनेगी। राम जैसा पुत्र पाने के बाद महाराज दशरथ द्वारा उक्त प्रतिज्ञा को पूर्ण करने का आग्रह करने की कोई आवश्यकता भी कैकेयी को कभी प्रतीत नही हुई—नही उसे ऐसा कुछ भी अभिप्रेत न था।

ख—राम का राज्याभिषेक कैकेयी द्वारा देवो को दिये वचन की अवहेलना

भरत को राजगद्दी दिलाने की स्थिति उस समय आ खड़ी हुई, जब महाराज दशरथ ने देवी कैकेयी से छिपाकर रातोरात स्वय को वयोवृद्ध घोषित कर राम को राजगद्दी देने का यकायक उपाय कर देवी कैकेयी द्वारा देवो को दिये हुए वचन की अवहेलना कर दी। इसके विकल्प मे अभिषेक समारोह के लिये राम के स्थान पर भरत का नाम बड़ी दृढ़ता और निर्लज्जता पूर्वक रख देने के अतिरिक्त कैकेयी के सामने और कोई उपाय भी नही रह गया था। यो कैकेयी ने भरत को शासकीय योग्यता उनके नाना कैकेयराज के पास भेजकर दिलायी थी।

ग—वनवास १४ वर्ष ही क्यों, आजीवन क्यो नही ?

भरत को राजगद्दी दिलाना ही यदि कैकेयी का ध्येय रहा होता तो राम को मात्र चौदह वर्ष के लिये और वह भी अपने ही राज्य के एक हिस्से दण्डकारण्य मे भेजने का प्रस्ताव क्यों करती ? आजीवन देश निकाले की भी तो मांग वह कर सकती थी वस्तुतः उस वीर माता को वह सब अभीष्ट न था। अपने राज्य मे अपनी प्रजा की सुरक्षा के स्थायी हल के लिये ही तो राम को चौदह वर्ष के लिये वन भेजना जरूरी हो गया था। माता कौशल्या और स्वयं राम के सम्मुख यह भी स्पष्ट हो चुका था ? पन्द्रहवें वर्ष मे

वापस लौटने पर राम की अयोध्या की राजगद्दी प्राप्त करेंगे ।

घ—भरत द्वारा राज्य को न्यास समझना—राम की पादुकाएं सिंहासन आरूढ़ करना—

राम के बदले भरत को अयोध्या का चक्रवर्ती सम्राट बनाना होता तो चित्रकूट मे भरत के साथ गई माता कैकेयी क्यों कहलाती "भरत अकेला अयोध्या का राज्य नही सम्हाल सकता था, अत राम की पादुकाए सिंहासन पर रख कर उनकी अनुपस्थिति मे एक न्यासी (ट्रस्टी) की तरह शासन कार्य चलायेंगे ।' (अयोध्याकाण्ड)

ङ—राम को राजसिंहासन हस्तान्तरण—

वनवास काल मे धरती को राक्षसी अत्याचारो से मुक्त कर अभिनन्दनीय राम के पुन लौटने पर भाई भरत ने राजसिंहासन बडी श्रद्धा और प्रेम से यह कहकर सौंपा कि आपने मेरी माता का सम्मान करके जो राज्य दिया था वह आपका राज्य आपको अर्पित है । यहा भी माता कैकेयी की ओर से कोई व्यवधान नही बल्कि व्यवधान तब भी नही जब राम ने भाई लक्ष्मण को युवराज पद देने की इच्छा व्यक्त की, भले ही लक्ष्मण के आग्रह पर पद भरत को मिल गया ।

उसके अपने सानिध्य मे देवो द्वारा राष्ट्र रक्षार्थ तैयार हुई योजना की गोपनीयता रक्षा की आवश्यकता ही एक मात्र ऐसा कारण बन गया जिसने परम विदुषी उस वीर माता को लांछित किया परन्तु यथा समय योजना के रहस्योद्घाटन के बाद उस देवी की यशोगाथा चतुर्दिश फैल गई भले ही कालान्तर में कवियों की कल्पनाओं के आवरण में पुन विलुप्त हो गई । इसी का निराकरण ऐतिह्य की रक्षार्थ आवश्यक है और यही पवित्र लक्ष्य सामने रख पूर्ण ऐतिहासिकता का आश्रय लेकर हमने एक शोध प्रबन्ध को रचा है ।

(५) प्रजाओं द्वारा कैकेयी की लांछना—देवों द्वारा योजना का प्रकाश, कैकेयी की प्रशस्ति—योजना कैकेयी से देवों के पूर्व परिचय के कारण बन सकी ।

अयोध्या राजपरिवार एव प्रजाजनो का यही कहना था कि कैकेयी द्वारा राम वन को भेजे गये हैं—उधर देवो का रहस्योद्घाटन कि हमारे द्वारा राम लाये गये हैं इस विरोधाभास का समाधान मुनि भारद्वाज के उस संकेत से होता है जो उन्होंने भरत को अपनी माता पर क्रोधित न होने का उपदेश देते हुए इन शब्दो मे किया था—

'भरत तुम्हें कैकेयी पर दोषारोपण नही करना चाहिये । क्योंकि सम्भव है राम का वन गमन परिणाम में सुखकारी हो । रामचन्द्र के वनवास से देवो राक्षसों और आत्मज्ञानी महर्षियों का कल्याण होने वाला है ।"

(अरण्यकाण्ड)

इस गुत्थी के सुलझने के पश्चात् एक और प्रश्न जो उपस्थित होता है वह यह कि देवो की पहुच कैकेयी तक हुई कैसे ? देवगण सीधे महाराज दशरथ से क्यो नही ?

इसका समाधान पूर्व घटनाओं में मिल जाता है वह कि देवासुर संग्राम में महाराज दशरथ के साथ उनकी सारथी बनकर युद्ध मे गई हुई देवी कैकेयी की योग्यता और प्रतिभा का परिचय देवों को हो चुका था । देवो ने महाराज दशरथ के पुत्र मोह को भी महर्षि विश्वामित्र द्वारा यज्ञ-रक्षार्थ राम की याचना के समय जान लिया था । इस बात पर कोई सन्देह नही रह जाता कि महर्षि विश्वामित्र द्वारा अयोध्या दरबार मे आकर राम को ले जाकर उसे सर्वविद्यासम्पन्न कर देने की महती कृपा देवी कैकेयी के अनुरोध पर ही हुई थी वरना महर्षि को इतनी कोशिश करके राम को प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नही थी । निश्चय ही देवी कैकेयी का महर्षि महर्षियो से परिचित रहना ही राष्ट्र रक्षा की उस विषद योजना के निर्माण का कारण बना । इस प्रकार निष्कर्ष यही निकला कि अयोध्या के चक्रवर्ती साम्राज्य की सुरक्षा और अभिवृद्धि के लिये देवो द्वारा रानी कैकेयी के माध्यम से युवराज राम को चौदह वर्ष के लिये तपस्वी के रूप मे दण्डकारण्य भेजा गया था । देवी सीता और भाई लक्ष्मण स्वभावत राम के साथ गये थे ।

इन सब परिस्थितियो व घटनाक्रमो पर गम्भीरतापूर्वक निष्पक्ष भाव से चिन्तन करने पर वीरांगना महारानी कैकेयी का चरित्र अत्यन्त उदात्त, उज्जवल और पवित्र दृष्टिगोचर होता है तथा यही परिलक्षित होता है कि वह मा एक ऐसे कुशल राज्य चिकित्सक की भांति शल्य क्रिया मे संलग्न थी जो अपने रोगी की चीरफाड़ बडी सावधानी से करते हुए भी बडी निर्दयता से करता प्रतीत होता है और रोगी कष्ट के चलते अपने चिकित्सक (डाक्टर) को कटु-वचन कहता है पर स्वस्थ हो जाने पर वही रोगी अपने उसी चिकित्सक की पूजा बडे आदर भाव से करता है । काश , हम भी अपने रामराज्य सरीखे आदर्श राज्य की वास्तविक संस्थापिका उस वीर माता का शत-शत अभिनन्दन कर जनमानस मे राष्ट्र निर्माण की सच्ची रचना कर स्वयं को धन्य कर सकते ।

पंजाब समस्या

(पृष्ठ ५ का शेष)

खर यह तो सरकार पर निर्भर करता है कि वह क्या करे या क्या कर रही है । आर्यसमाज ने जहा एक ओर इस समस्या को सुलझाने के प्रयत्न राजनीतिक स्तर पर किए वहा सामाजिक स्तर पर भी उसका योगदान स्मरणीय रहेगा । विस्थापितो को आवास तथा वस्त्र, भोजन आदि की व्यवस्था करने से भी आर्यबन्धु एवम् आर्यसमाज अहर्निश जुटे हुए हैं । इसका एक यही उदाहरण पर्याप्त होगा कि सुभाषनगर आर्यसमाज मे १३० निष्कासित परिवार रुके हुए हैं जहा उनकी व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से सूचारु रूप मे दी जा रही है । उनके रहने खाने का प्रबन्ध किया जा रहा है । उनमे रजाईया, कम्बल आदि बाटे जा रहे हैं तथा धनादि के रूप मे उनकी सभी प्रकार की सहायता की जा रही है । इस कार्य के लिए आर्यजनो से उदार सहायता प्राप्त हो रही है । हम सबका कर्त्तव्य है कि तन मन, धन से इस कार्य मे योगदान दे । इस प्रकार आर्य समाज पजाब समस्या के लिए तीन प्रकार से कार्य कर रहा है । (१) समस्या के स्थायी हल करने के लिए राजनीतिक स्तर पर राज नेताओ से बातचीत (२) सभा सम्मेलन आदि के द्वारा जन जागरण (३) विस्थापितो की सहायता ।

ये सब अति श्रम एव शक्ति साध्य कार्य हैं । पुनरपि मेरा अनुमान है कि आर्यसमाज मे इस दिशा मे इससे भी अधिक काय करने की क्षमता है । आर्य समाज की इस सुदृढ क्षमता का देश ने अवलोकन किया था—हैदराबाद सत्याग्रह के समय तथा हिन्दी रक्षा सत्याग्रह के समय तब बलिदान भी हमने दिये किन्तु विजय भी ऐसी पायी जिसकी अब तक धाक जमी है । पजाब के सन्दर्भ मे भी आर्यसमाज पजाब मे शहीदी जत्थे भेजकर पंजाब की सरकार को कुछ ठोस कदम उठाने को बाध्य कर सकता था । शान्तिप्रिय जलूस निकाल कर, सकता था विशेष तौर पर वहा के सिख भाइयो के सामने समस्या का वास्तविक रूप रख सकता था । अभी वहा आतकवाद को क्षम एव जनता का गुप्त समर्थन मिल रहा है अन्यथा यह कैसे सम्भव है कि यदि जनशक्ति उठ खडी हो तो आतंकवाद नष्ट न होने पाए । इसके साथ ही आर्यसमाज दिल्ली में सत्याग्रह करके केन्द्रीय सरकार को भी कुछ न कुछ शीघ्र ही करने के लिए बाध्य कर सकता था । यदि ऐसा होता तो सरकार इस विषय में शैथिल्य न दिखलाती ।

क्या पाक ने सचमुच बम बना लिया है !

—भास्कर

रीगन प्रशासन ने पाक के बम बनाने के तथ्य पर चुप्पी लगाकर अमरीकी कांग्रेस को यह सूचना दी है कि अमरीकी सहायता पाकिस्तान को देने का रास्ता साफ करने की साइमिन्टन नियम संशोधित कर दिया जाए। यही नहीं दिया जाए। यही नहीं सुनियोजित षड्यन्त्र के अन्तर्गत अमरीकी कांग्रेस का पाकिस्तान के बम से ध्यान हटाने के लिए ही डा० खान ने अपनी भेंट में यह कहा लगता है कि भारत व इजरायल पाक के काहूटा के पाक अणु संयन्त्र पर बम गिराने की सोच रहे हैं।

क्या पाक ने सचमुच बम बना लिया है, यह अभी भी पुष्ट नहीं हो सका है। अवश्य यह तथ्य अब प्रस्थापित हो चुका है कि पाकिस्तानी परमाणु बम के जनक डा० अब्दुल कादर खान ने भारत के पत्रकार कुलदीप नैय्यर को डेढ़ माह पूर्व के पाकिस्तान के पास परमाणु बम बना लेने की बात कही थी। अवश्य शुरू में उन्होंने इस भेंट से इन्कार किया व कहा कि मेरे एक पाकिस्तानी मित्र मेरे निवास पर एक व्यक्ति को लेकर अवश्य आये थे जिसने अपना परिचय कुलदीप नैय्यर के रूप में दिया था और उनसे सामाजिक तौर पर ही वे मिले थे, परमाणु के बारे मे कोई बात नही हुई थी। पर उनके इस खंडन के शीघ्र बाद जब पाकिस्तान के प्रमुख अंग्रेजी दैनिक मुस्लिम के १८ वर्षीय सम्पादक डा० मुशाहिद हुसैन ने कहा कि वे ही कुलदीप नैय्यर को फोन पर तय करके डा० खान के पास ले गए थे तो डा० खान ने अपना अलग स्पष्टीकरण जारी किया कि श्री कुलदीप नैय्यर समय तय कर मेरे पास आए थे।

उसके बाद पाक दैनिक मुस्लिम ने अपने सम्पादकीय मे भी डा० खान द्वारा कुलदीप नैय्यर को इस बारे मे कहे बयान का औचित्य सिद्ध किया। पत्र ने सम्पादकीय मे लिखा कि पाक परमाणु वैज्ञानिक ने ऐसा इसलिये कुलदीप नैय्यर को कहा था कि भारत पाकिस्तान से अपने हाथ दूर रखे। यह बात ऐसे समय कही गई थी जब भारत सीमा पर सैनिक अभ्यास कर रहा था। पत्र ने लिखा कि डा० खान का कथन अमेरिका को एक सिग्नल था कि वह परमाणु मामले को अमेरिका द्वारा दी जाने वाली ४२ मिलियन डालर की सहायता से न जोड़े।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पाक के इस प्रसिद्ध दैनिक मुस्लिम के सम्पादक को यह सम्पादकीय लिखने व कुलदीप नैय्यर की भेंट वार्ता छापने के कारण सम्पादक को अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा। स्मरण रहे कि कुलदीप नैय्यर की यह भेंट लन्दन के प्रसिद्ध साप्ताहिक आब्जर्वर व पाक दैनिक मुस्लिम मे एक साथ १ मार्च को छपी थी। इस भेंट मे इस्लामाबाद के निकट काहूटा स्थित पाक यूरेनियम प्रयोगशाला के अध्यक्ष डा० अब्दुल कादर खान ने कहा था कि पाकिस्तान के पास परमाणु बम है और पाकिस्तान अपना अस्तित्व खतरे मे होने पर उसका प्रयोग करने मे देरी नही लगाएगा। डा० खान ने नैय्यर से कहा कि तुम्हीं लोगो ने हमे परमाणु सम्पन्न देश बनने पर मजबूर किया है। पाकिस्तान द्वारा अपने परमाणु कार्यक्रम के लिए विदेशों से चीजें चुराने (हालैंड की प्रयोगशाला से डा० खान द्वारा परमाणु बम बनाने का ब्लूप्रिन्ट चुराने का मामला पहले ही सामने आ चुका है) के आरोप के जवाब मे डा० खान ने कहा कि मैं यह बात साफ कह दू कि राष्ट्रीय हित मे हम कुछ भी करें। डा० खान ने कहा कि पाक ने ९३.५ प्रतिशत समृद्ध यूरेनियम बनाना व प्लूटोनियम रिप्रोसिंग की प्रक्रिया जान ली है। भारत हम से बहुत पीछे है। डा० खान ने यह भी बताया कि इस बम के लिए परीक्षण विस्फोट नही किया है। यह लेबोरटरी मे परीक्षण पद्धति से बना है।

आब्जर्वर ने इस भेंट के साथ अपनी टिप्पणी भी दी कि पाक बम कार्यक्रम पर अनुमानित व्यय पाच अरब डालर आया है। अरब देशो ने यह पैसा दिया है व लीबिया के नेता गद्दाफी ने बक्से भर कर करसी भेजी थी। पत्र ने लिखा है कि अमरीकी सी० आई० ए० ने पहले ही पाक बम की सूचना दे दी थी।

यहां प्रश्न है कि क्या डा० खान का यह दावा सही है कि पाक ने यह बम बिना परीक्षण विस्फोट किए लेबोरेटरी मे टैस्ट कर बनाया है। इस बारे में पूछे जाने पर अमेरीकी विशेषज्ञ श्री लियानार्ड स्पेन्सर ने कहा कि अत्युच्च निर्भर योग्य प्रणाली से बिना परीक्षण किए परमाणु बम बनाया जा सकता है। यह बहुत कैफिस्टिकेटेड या विकसित प्रणाली नही है। इजरायल ने भी बिना परीक्षण किए अपना परमाणु बम बनाया है।

इस खबर के बाद भी यह अभी भी पुष्ट नहीं हुआ है कि पाक का बम बन गया है। यह आश्चर्यजनक लगता है कि डा० खान ने कुलदीप नैय्यर को ऐसी गोपनीय बात क्यों बताई। भारतीय व विदेशी पर्यवेक्षकों ने इससे निष्कर्ष निकाला है कि डा० खान ने यह बात पाक राष्ट्रपति जिया की सहमति से ही बताई होगी। पाक सरकार व डा० खान अब भले ही इस भेंट का खण्डन कर रहे हैं पर लगता है कि यह सब सुनियोजित है। पाकिस्तानी दैनिक मुस्लिम ने भी अपने सम्पादकीय मे प्रकारान्तर से इसका रहस्य दे दिया है। पाक ने डा० खान के मुख से यह बात ऐसे अवसर पर कहलाई जब कि पाकिस्तान की भारत से लड़ाई का खतरा आ गया था। अत पाकिस्तान ने यह धमकी देकर कि हमारे पास अणु बम है, भारतीय सेना के अभ्यास को रोक लिया। दूसरे पाकिस्तान ने डा० खान के मुख से यह बात इस उद्देश्य से इस अवसर पर कहलाई जब कि अमरीकी कांग्रेस पाक को ४२ बिलियन डालर पर विचार कर रही है।

यहा उल्लेखनीय है कि १९८१ मे अमरीका कांग्रेस साईमिन्गटन संशोधन नाम के प्रसिद्ध नियम बना चुकी है कि जो देश परमाणु बम बना रहा हो उसे अधिक सहायता न दी जाए। यह नियम ६ वर्ष के लिए बनाया था और यह अवधि सितम्बर १९८६ मे समाप्त हो गई है। अत पाक सरकार ने डा० खान के मुख से बम की बात अमरीकी कांग्रेस को यह चेतावनी देने के लिए कहलाई है कि उसे उक्त सहायता व एवेक्स विमान न दिए तो वह अणु बम को इस्तेमाल कर सकता है। स्वय पाक नेशनल असेंबली मे विरोधी दल के सदस्यो ने इस भेंट का यही अर्थ बताया है। कुमारी बेनजीर भुट्टो ने भी कहा है कि भारतीय पत्रकार को डा० खान से भेंट की अनुमति पाक सरकार ने जान बूझकर दी है जिससे पाक भारत को ब्लैकमेल कर सके और वास्तव में उसके फलस्वरूप पश्चिमी देशो से ब्लैकमेल न किया जा सके।

आर्य जगत् के समाचार

शहीद भगतसिंह को यज्ञोपवीत से प्रेरणा

शहीद का अन्तिम पत्र

पूज्य पिता जी,

नमस्ते !

मेरी जिन्दगी मकसदे आला यानि आजादिए हिन्द के असूल के लिए वक्फ हो चुकी है। इसलिए मेरी जिन्दगी मे और दुनिया की ख्वाहशात बायसे कशिश नही है।

आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था तो बापू जी ने मेरे यज्ञोपवीत के समय ऐलान किया था कि मुझे खिदमते वतन के लिए वक्फ कर दिया गया है। लिहाजा मैं उस समय की पूरी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उम्मीद है कि आप मुझे मुआफ फरमाए गे।

आपका ताबेदार
भगतसिंह

उडीसा का रजत-जयन्ती समारोह सम्पन्न

उडीसा प्रान्त के आदिवासी क्षेत्रो में ईसाइयो के बढते हुए प्रभाव को रोकने तथा वहा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार को बढाने के लिए स्वतन्त्रता सेनानी एव तपोनिष्ठ सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने २५ वर्ष पहले गुरुकुल वेदव्यास रूपी पौधे को आरोपित किया था।

वेद व्यास का रजत जयन्ती समारोह विशाल स्तर पर मनाया गया जिसमे देशभर से आर्य जन सम्मिलित हुए। गुरुकुल के प्रधान श्री सीताराम आर्य के नेतृत्व मे कलकत्ता से तथा गुरुकुल के सरक्षक श्री ओमप्रकाश गुप्ता के नेतृत्व मे आर्य समाज शक्तिनगर दिल्ली से स्त्री पुरुषों की टोलिया समारोह मे पधारी। समारोह के प्रथम दिन प्रसिद्ध युवा सन्यासी एव भू०पू० ससद सदस्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने ध्वजारोहण किया तथा २५ दीपको को प्रज्ज्वलित करके समारोह का उद्घाटन किया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रघुहरि डालमिया ने की तथा इसमे मुख्य अतिथि जिले के कलेक्टर रहे।

अपने उद्घाटन भाषण मे स्वामी इन्द्रवेश जी ने गुरुकुल वेदव्यास के माध्यम से किए जा रहे रचनात्मक कार्यो की जोरदार शब्दो मे प्रशसा की। उन्होंने स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज को इस महत्वपूर्ण कार्य में पूर्ण सहयोग देने के लिए आर्य जनता का आह्वान किया। इसी प्रकार वेद सम्मेलन, ऋषि बोध सम्मेलन, एव व्यायाम सम्मेलन का आयोजन भी किया गया जिनमे स्वामी इन्द्रवेश जी के अतिरिक्त डा० भवानीलाल जी भारतीय अध्यक्ष दयानन्द चयर (चण्डीगढ), श्री आत्मानन्द शास्त्री, बृजविहारीराय, प्रेमपाल शास्त्री, जगवीर सिंह एडवोकेट (हरियाणा) आदि विद्वानो के व्याख्यान होते रहे। २७ फरवरी को राउरकेला नगर मे विशाल शोभायात्रा निकाली गयी जिसका नगर निवासियो ने शानदार स्वागत किया। समारोह सस्था के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। गुरुकुल आचार्य प० देवव्रत जी ने समारोह का सयोजन किया। गुरुकुल के सस्थापक व सचालक स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने यहा आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर महाविद्यालय भवन की आधार शिला श्री डालमिया के कर कमलो से रखी गई।

—जगवीर सिंह

प० गगाप्रसाद उपाध्याय लिखित

स्वामी दयानन्दस कन्ट्रीब्यूशन हिन्दू सोलिडेरिटी

Swami Diyands Contribution to Hiundu Solidariuty

का हिन्दी अनुवाद

(अनुवादक डा० आनन्द सुमन)

३०० पृष्ठ

अग्रिम ग्राहक बनने पर २५) मे बाद मे ४०) रुपया

कान्ति प्रकाशन

तपोवन आश्रम देहरादून

२४८००८

कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) का सफल उत्सव

भारत में कन्याओं की आर्ष पद्धति की एकमात्र शिक्षण सस्था जहा भारत के दस राज्यो एव मारीशस तक की कन्याओं को आचार्य (एम. ए) पर्यन्त प्राचीन व आधुनिक विषयो की शिक्षा प्रदान की जाती है, कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) का ३१ वा वार्षिक महोत्सव १५ मार्च से २२ मार्च तक धूमधाम से मनाया गया। सप्ताह भर सामवेदीय यज्ञ हुआ। यज्ञ की ब्रह्मा नैष्ठिका ब्रह्मचारिणी सुश्री सुमित्रा जी प्रधानाचार्या थी। दिल्ली के क्षेत्रीय कमाडर जनरल एस० एस० जम्वाल ने अपने भाषणों मे जीवन मे धर्म की महत्ता तथा पुरातन व आधुनिक शिक्षा के समन्वय पर बल दिया। लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड ने महर्षि दयानन्द की, आर्य समाज के कार्य कलापो एव संस्कृत की महत्ता पर विचार व्यक्त किए पजाब मे आतकवादियों की कठोर निन्दा व राष्ट्रीय एकता की रक्षा पर बल दिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने आतकवादी हत्याकांडों के प्रति सरकार को चेतावनी दी एव भारत की एकता व अखण्डता की रक्षा मे आर्य नर नारियो को बलिदान के लिए आह्वान किया। डा० महावीर जी प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय ने कम्प्यूटर मे आचार्य पाणिनि की दूरदर्शिता योग्यता सर्वोत्तम सिद्ध की। केन्द्रीय मन्त्री श्री हरिकिशन लाल भगत ने गुरुकुल की प्रगति पर सन्तोष व्यक्त किया। उत्तीर्ण कन्याओ को प्रमाण पत्र एव उपाधि वितरण से पुरस्कृत किया। आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री (वाराणसी), कुलपति श्री स्वामी ओमानन्द जी के प्रभावशाली प्रवचन हुए। अपील पर कन्या गुरुकुल के लिए लगभग ५० हजार रु० दान प्राप्त हुआ।

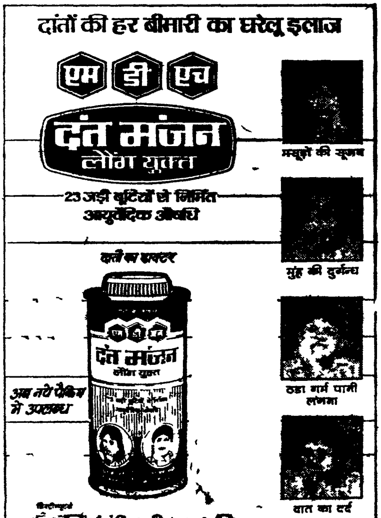
—मन्त्री

नये प्रकाशन

१—वीर वैरागी लेखक—भाई परमानन्द
कीमत ८) सभा ने केवल ४) कर दी है।

२—Bankim-Tilak-Dayanand by Aurobindo.
कीमत ४) सभा ने केवल २)५० कर दी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली १



पाकिस्तानी बम

(पृष्ठ १ का शेष`

के सभी राजनीतिक दलो के सदस्यो से अनुरोध करता है कि वे राष्ट्र व्यापक और सर्वोपरि हित मे श्री थामस के इस विधेयक का पूर्ण समर्थन दे तथा राष्ट्र को साम्प्रदायिक राजनीति की लपटो मे भस्म होने से बचावे।

खेलों में राष्ट्रीय पराभव

प्रस्ताव २

यह सम्मेलन इस बात पर अत्यधिक लज्जा अनुभव करता है कि खेलो की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे ७०करोड की जनसख्या वाला हमारा देश अपना कोई सम्मानपूर्ण स्थान नही बना सका है। हमारी पराजय का मुख्य कारण महत्वपूण खेलो की उपेक्षा तथा क्रिकेट जैसे निरर्थक खेल मे समय व धन का अपव्यय है। हाल मे पाकिस्तान से पराजय आख खोल देने वाली है। इस पराजय से युवाशक्ति मे वडी निराशा व्याप्त हो गई है।

अत यह सम्मेलन आग्रह करता है कि उन्ही खेल प्रतियोगिताओ मे ध्यान दिया जाय जो ओलम्पिक मे मान्य है तथा इन प्रतियोगिताओ मे पूरी तैयारी के बाद ही भाग लिया जाय। क्रिकेट जसी प्रतियोगिताए समाप्त कर समय व धन के अपव्यय को रोका जाय।

इस्लामी बम का अब भारत बम

प्रस्ताव ३

यह राष्ट्र रक्षा सम्मेलन स्पष्ट रूप से यह घोषणा करता है कि पकिस्तान द्वारा इस्लामी बम बनाने का रहस्योद्घाटन देश के लिए एक गम्भीर चुनौती है जिसका समूचे राष्ट्र को एकजुट होकर मुकाबला करना है। विश्व शान्ति के लिए प्रयास करना अच्छी बात है, परन्तु यदि कोई नष्ट करने पर तुल जाय तो उसका प्रतिकार शान्तिपाठ से नही हो सकता। इस्लामी बम के दो ही लक्ष्य होगे—पहला भारत और दूसरा इजरायल। भारत सरकार को चाहिए कि वह इस्लामी बम के जवाब मे भारती बम बनाये और उसकी स्पष्ट घोषणा करे तभी पाकिस्तान को सद्बुद्धि आ सकती है।

सम्मेलन के मत मे भारत को राजनीतिक स्तर पर भी इस्लामी बम के प्रतिकार के लिए इजरायल से अपने सम्बन्ध सुधारने चाहिए। राजनीति का यही तकाजा है।

बाबरी मस्जिद

प्रस्ताव ४

बावरी मस्जिद का विवाद दिन प्रतिदिन तूल पकडता जा रहा है। हिन्दुओ के लिए श्री राम मर्यादा पुरुष है। धार्मिक और राजनीतिक दोनो ही दृष्टिकोण से वे पूज्य और सर्वमान्य है। अयोध्या में श्री राम का जन्म स्थल निर्विवाद है। ऐसे पवित्र स्थल पर मस्जिद के होने की बात मे कोई औचित्य नही है। बावरी मस्जिद का नारा लगाकर जो गणतन्त्र दिवस के वहिष्कार का आह्वान करते है, उनका लक्ष्य मस्जिद के नाम पर विघटनकारी प्रवृत्तियो को बढावा देना और पाकिस्तान के हाथ मजबूत करना है। सम्मेलन का सरकार से आग्रह है कि वह ऐसे तत्वो को जो देश मे उपद्रव करना चाहते हैं, कठोरता से दमन करे। सम्मेलन के मत मे श्री रामजन्म स्थल परम्परा से भगवान राम की जन्म भूमि है तथा सरकार को चाहिए कि उसकी रक्षा करे।

वार्षिकोत्सव से पूर्व दिल्ली विश्व विद्यालय के विद्वान प्रवक्ता आचार्य वाचस्पति की अत्यन्त विद्वत्तापूण कथा हुई। मध्यप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० राजगुरु शर्मा के ब्रह्मत्व में विशाल यज्ञ हुआ। प्रसिद्ध विद्वान् सच्चरी-स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने ध्वजोन्तोलन करते हुए अत्यन्त प्रेरणादायक ..

इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वावधान

स्थापना दिवस मनाया गया जिसमे दिल्ली की सभी आर्यसम। आर्य बन्धुआ ने हजारो की सख्या मे भाग लिया। उत्सव का सफल बनाने मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के व दीवान हाल समाज के भी प्रधान युवक हृदय श्री सूर्यदेव जी व उनके अनन्यतम सहयोगी विद्वान् विचारक डा० धर्मपाल जी, उत्साही मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त, आर्य सन्देश के यशस्वी सम्पादक श्री यशपाल सुधाशु चौधरी लक्ष्मीचन्द जी ने अथक परिश्रम के साथ कार्य सम्पन्न कराया। यह उत्सव दिल्ली के ऐतिहासिक उत्सव के रूप मे सफल हुआ।

वैदिक ज्योतिष की शिक्षा

महर्षि दयानन्द ने व ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त सभी ने ज्योतिष को वेद का महत्वपूर्ण अ ग माना है। आय समाज के विद्वानों ने इस ओर परिश्रम कर केवल फलित ज्योतिष के द्वारा होने वाले मिथ्याचार पर ही ध्यान दिया है। ब्रह्मचारी वेदव्रत जी मीमासक ने 'ज्योतिष विवेक" पुस्तक लिखकर प्रथमवार आर्य विद्वानो का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है। आवश्यकता है कि हमारी धार्मिक शिक्षा सस्थाऐ इस ओर विशेष ध्यान देकर शुद्ध व सच्चे ज्योतिष के शिक्षण की व्यवस्था करे।

—रामशरणदास, ५५३ जोशी रोड नई दिल्ली

आर्य समाज को दान

'ग्राम कुन्डेसा, तहसील-ठाकुरद्वारा, जिला मुरादाबाद के तहसील सम्मेलन मे सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत किया गया। उनके साथ श्री विक्रम सिह जी, प्रधान जिला सभा एव श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य, जिला सभा एव प्रधान आर्य समाज सम्भल थे। विशाल जन समूह को सूचित करते हुए उन्होने हिन्दुओ को एक जुट होकर वर्तमान विघटनकारी शक्तियो का मुकाबला करने का आह्वान किया। उन्होने पजाब और कश्मीर समस्या पर बोलते हुए वहा राष्ट्रपति शासन लागू करने की माग की तथा उग्रवाद की समस्या से निबटने के लिए सेना को ये क्षेत्र सोपने की माग की। तत्पश्चात श्री बत्तू सिह जी ने अपना भव्य मकान आर्य समाज के लिए दान किया। जिसका विधिवत प्रवेश सभा प्रधान जी द्वारा कराया गया। हजारो व्यक्तियो के मध्य सभा प्रधान ने पति-पत्नी को आशीर्वाद दिया एव उनके इस दान की सराहना की।

'मित्र सवाददाता द्वारा प्रेषित'

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (५-४-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ६१
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No.U 93 Post in D.P.S.O on 3-4-1987

संस्कृत गोष्ठी का आयोजन

५ अप्रैल १९८७ को सायकाल ५॥ बजे आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल मे एक गोष्ठी का आयोजन सार्वदेशिक सभा की ओर से हो रहा है। सभी संस्कृत प्रेमी महानुभाव व विद्वान् सादर आमन्त्रित है। —स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

राष्ट्रीय दर्शन महासम्मेलन एवं उत्तरप्रदेश दर्शन परिषद् का बारहवां वार्षिक अधिवेशन

दिनाक १६,१७,१८ मई १९८७ को गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे डा० जयदेव जी विद्यालकार के निर्देशकत्व मे सम्पन्न होगा। देशभर के चोटि के विद्वान् इसमे निबन्ध पाठ करेगे। उसके विषय निम्न हैं।

१—भर्तृहरि का भाषा दर्शन
२—विट्गेनस्टाइन का भाषा विश्लेषण दर्शन
३—भाषा और राष्ट्रीय एकता
४—नैयायिको का भाषा दर्शन
५—पतञ्जलि का स्फोटवाद
६—निरुक्त का भाषा दर्शन
७—आधुनिक भाषा विज्ञान मे शब्द तत्त्व
८—आधुनिक युग और दर्शन
९—जीवन मूल्य और दर्शन
१०—मध्यकालीन दर्शन परम्परा
११—शिक्षा और दर्शन

निवेदक
डा० वीरेन्द्र अरोडा, कुल सचिव
डा० रामनाथ शर्मा, अध्यक्ष
प्रो० रामप्रसाद प्रो वाइस चासलर

श्री स्वामी के
अवसर पर उ होविद्य। ।दल्ली आयोजित संस्कृत भाषण एव सूत्रान्साक्षरी प्रतियोगिता में प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी वाचस्पति, राजेन्द्र बृहस्पति विजयी हुए और प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त कर दो चलवैजयन्ती उपहार जीते, विजयी बन्धुओ को बहुत-बहुत धन्यवाद। उन्होंने प्रभात आश्रम एव मेरठ का गौरव बढाया।

निर्वाचन

आर्यसमाज कायमगज (फर्रुखाबाद) का वार्षिक निर्वाचन हुआ। जिसमे निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये।

श्री जवाहरलाल आर्य (प्रधान)
श्री गोपीनाथ आर्य (उपप्रधान)
श्री कर्मवीर आर्य मन्त्री)
श्री रामरक्षपाल आर्य (उपमन्त्री)
इनके अतिरिक्त १२ अन्तरंग सभासद भी चुने गये।

शोक समाचार

आर्यसमाज बेहटा गोकुल जि० हरदोई उ० प्र० के प्रधान प० शान्तिस्वरूप जी का देहावसान ११ मार्च को हो गया। दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार किया गया।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति, एवम दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करे।

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली से मुद्रित तथा श्री चमनानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

वेदामृत

नित्य धन-संग्रह और दान करो

शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त सं किर।
कृतस्य कार्यस्य, चेह स्फातिं समावह ॥
अथर्व० ३-२४-५ ॥

हिन्दी अर्थ—हे मनुष्यो ! तुम सौ हाथ वाले होकर धन संग्रह करो। हे मनुष्यो ! तुम हजार हाथ वाले होकर (उस धन को) बांट दो (दान कर दो)। इस प्रकार तुम अपने किए हुए और आगे करने योग्य कार्यों की समृद्धि को सम्पन्न करो। —डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] वर्ष २२ अंक १६]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
चैत्र शु० १३ सं० २०४४ रविवार १२ अप्रैल १९८७

दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

दरबार साहब परिसर में आतंकवाद का अड्डा

हिन्दू दुकानदारों से जबरन वसूली

देखने को यह घटना, जिसका यहां उल्लेख किया जा रहा है, चाहे छोटी-सी है परन्तु है महत्वपूर्ण। यह घटना दरबार साहिब परिसर में नरेन्द्र सिंह निंदी की कथित हत्या से सम्बन्धित है। यदि इसके सभी पहलुओं को जोड़कर देखा जाय तो दरबार साहिब तथा इसके गिर्द पिछले काफी समय से जो कुछ हो रहा है उसका सारा नक्शा सामने आ जाता है।

घटना इस प्रकार है। नरेन्द्र सिंह निंदी, जो कि सिख स्टूडेंट्स फैडरेशन का भूतपूर्व सक्रिय सदस्य था, २५ मार्च को दरबार साहिब में अपने पुराने साथियों के पास गया। किस काम से ? इसके एक पड़ोसी दुकानदार से इन फैडरेशन वालों ने मोटी रकम मांगी थी तथा न देने की सूरत में उसका टिकट काटने' की धमकी दी थी। उस बेचारे दुकानदार ने निंदी से सहायता मांगी कि वह अपने पुराने प्रभाव के कारण उसे इस विपदा से बचाए।

दुकानदार तो यही चाहता था कि उसका 'जुर्माना' कुछ सहन करने योग्य हो जाए परन्तु उसे क्या पता था कि उसने जिससे मदद मांगी है वह अपने प्राणों से हाथ धो बैठेगा।

निंदी दरबार साहिब में गया परन्तु वापिस नहीं आया। उसके भाई त्रिलोचन सिंह के अनुसार और तो कोई सुराग नहीं निकला है परन्तु उसे मुख्य ग्रन्थी ज्ञानी पूर्णसिंह ने बताया है कि २५ मार्च को जब वह नवगठित अकाली दल के कार्यालय की ओर से गुजरने लगे तो कुछ युवकों ने उन्हें उधर जाने से रोका तथा कहा कि अमुक कमरे के सामने से मत गुजरना, वहां एक युवक को 'सोधा' जा रहा है। यह बात त्रिलोचनसिंह ने, पुलिस में अपने भाई के गुम शुदा होने के बारे में लिखाई रिपोर्ट में भी कही है।

दरबार साहब में निंदी की हत्या कर दिय जाने का शोर तो अगले दिन ही मच गया था तथा यह भी खबर उड़ी थी कि निंदी का शव गटर में फेंक दिया गया है। पुलिस ने जब गटर से लाश बरामद की तो वह निंदी की नहीं निकली।

इसके बाद एक ऐसी घटना हुई जो गत चार-पांच सालों में नहीं हुई और यदि कहीं पहले हो जाती तो पंजाब की स्थिति आज कुछ और ही होती।

निंदी की हत्या का समाचार जंगल की आग की तरह फैल गया। दरबार साहिब के गिर्द सभी बाजार—आटा मंडी, दाल मंडी, चावल मंडी, बाजार पापड़ा कोलसर तथा बाबा साहिब बन्द हो गये। इस रोज हड़ताल में हिंदू और सिख दुकानदार मिलकर शामिल हुए। फिर यह बात मात्र हड़ताल तक ही सीमित नहीं रही।

निंदी के सम्बन्धी तथा अन्य लोग उसके शव की तलाश में दरबारसाहिब में प्रवेश कर गये। उन्होंने फैडरेशन के कार्यालय के समक्ष जाकर शव की मांग की। उस दिन फैडरेशन के सभी 'बहादुर' नेता छिपे रहे।

सैकड़ों की संख्या में औरतें भी दरबार साहिब में इकट्ठी हो गई। इन्होंने फैडरेशन और एकीकृत अकाली दल के कार्यालयों के सामने 'स्यापा' किया। इन औरतों में हिन्दू तथा सिख दोनों वर्गों की औरतें शामिल थीं। उन्होंने तथा अन्य लोगों ने परिसर के अन्दर के कमरों की तलाशी की मांग की तथा इन्होंने घेरा डाल लिया। इन्होंने तब तक परिसर से बाहर जाने से इंकार कर दिया जब तक शव उनको नहीं सौंपा जाता और यह स्थिति २८ मार्च को देर रात तक बनी हुई थी।

पुलिस दरबार साहिब में जाने का तो साहस न कर सकी परन्तु उसने परिसर के गिर्द सुरक्षा कड़ी कर दी। अन्तिम सूचनाएं मिलने तक भी स्थिति तनावपूर्ण बनी हुई है।

यह सारी स्थिति किस बात की सूचक है ?

परिक्रमा के कमरा नं० ४७ में जो कुछ गत दिनों किया गया था, जब माथा टेकने गये एक सिपाही को पकड़ कर उसके पांवों में चीरे लगाकर उनमें नमक भरा गया था, वह सब आज भी जारी है। परिसर पर आतंकवादियों का कब्जा है तथा वे अपने विरोधियों या संदिग्ध व्यक्तियों पर अत्याचार करने का क्रम जारी रखे हुए है।

लेखक
जगजीतसिंह आनन्द भूतपूर्व सांसद

निर्दोषों की हत्या करके उनके शव गटर में फेंकने का वह क्रम आज भी जारी है जो भिंडरावाला के समय में था क्योंकि पुलिस को गटर से मिला शव चाहे निंदी का नहीं था परन्तु वह था तो इन आतंकवादियों का ही कोई शिकार।

इन आतंकवादी तत्वों के समक्ष न तो शिरोमणि कमेटी और न ही सिंह साहिबान सर उठा सके हैं। मुख्य ग्रन्थी ज्ञानी पूर्ण सिंह उन्हीं पांच मुख्य-ग्रन्थियों में से हैं जो आजकल फतवे जारी कर रहे हैं परन्तु इन तत्वों ने उन्हें भी एकीकृत अकाली दल के कार्यालय के सामने से गुजरने से रोक दिया तथा वह जानते भी होंगे कि अन्दर किस युवक की पिटाई की जा रही है परन्तु वह उसको बचाने के लिये कुछ करने में विवश रहे। सिंह साहिब प्रो० दर्शन सिंह तो उस दिन शायद जीरकपुर गये हुए थे, अब हमें इस बात का इंतजार है कि इस सम्बन्ध में वह क्या कहते हैं। परिसर में सिख युवकों की हत्याओं के बारे में 'हुक्मनामा' जारी करते हैं या आतंकवादियों के सामने घुटने टेक देते हैं।

परन्तु इन सभी बातों से बड़ी बात हिंदू और सिख समुदाय द्वारा संयुक्त रूप से हड़ताल करना तथा फिर परिसर में जा कर फैडरेशन और एकीकृत दल के कार्यालयों को घेरना है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सिद्धान्तचर्चा

वेद मे गुरुत्वाकर्षण विषयक मन्त्र

लेखक—श्री जीवानन्द नैलवाल, एम० ए० अल्मोडा

वर्तमान वैज्ञानिक युग मे सभी वैज्ञानिको व साधारण व्यक्तियो की यही धारणा है कि गुरुत्वाकर्षण विषयक खोज सर्वप्रथम सन् १६८७ मे ब्रिटिश वज्ञानिक श्री 'आइजक न्यूटन' महोदय ने की है। न्यूटन के अनुसार किसी भी वस्तु मे भार गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण ही होता है। इसी सिद्धान्त के अनुसार यह भी सिद्ध किया गया है कि सभी ग्रह और उपग्रह अपनी, अपनी कक्षाओ मे गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण ही टिके हुए हैं। इतना तो कहना सत्य है कि जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन न्यूटन महोदय ने किया है, यह तो उनकी बुद्धि की पराकाष्ठा है। लेकिन यह कहना तर्कसगत नही है कि न्यूटन महोदय ने ही यह बात सर्वप्रथम कही है। वेद का अध्ययन न करने से पश्चिम की हरबात का अनुसरण आज भारतीय वैज्ञानिक अनुसधानक, व नागरिक आख बन्द करके करने लगे हैं चाहे हानि हो या लाभ। जबकि सबसे बडी विज्ञान, सदाचार व शिक्षा की पुस्तक वेद हम भारतीयो के पास मौजूद है।

वेदो के मर्मज्ञ व अनुसधानकर्त्ता महर्षि दयानन्द महाराज जी ने अपनी पुस्तक ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' मे वेदो ये कहा-कहा गुरुत्वाकर्षण विषय मन्त्र हैं। बडे ही वैज्ञानिक ढग से प्रस्तुत लिये हैं। गुरुत्वाकर्षण विषयक सबसे पहला मन्त्र द्रष्टव्य है। यथा—

यदा ते हर्य्यता हरी वावृधाते दिवेदिवे।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे॥

ऋ० म० ८, सू० १२ म० २८

ऋग्वेद के इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि सब ग्रहो का सूर्य के साथ- और सूर्य का अन्य सभी ग्रहो के साथ आकर्षण है। अर्थात् सभी ग्रह एक दूसरे क आकर्षण शक्ति पर टिके हुए हैं। तथा सभी ग्रहो और तारो के साथ परमेश्वर का आकर्षण बल है। निम्न मन्त्र इस बात की पुष्टि और अच्छे ढग से करता है। यथा —

यदा सूर्य्यममु दिवि शुक्र ज्योतिरधारय।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे॥

ऋ० ८। १२। ३०

अर्थात् हे परमात्मा! जब उन सूर्यादि लोको को आपने रचा, और जो आपके प्रकाश से ही प्रकाशित हो रहे हैं। तथा अपनी अनन्त सामर्थ्य से उनका धारणा कर रहे हो, इसी प्रकार से सूर्य और पृथ्वी आदि, लोकों और अपने स्वरूप को धारण कर रहे हैं। इन सूर्य आदि लोको का सब लोकों के साथ आकर्षण से धारण होता है।

उपरोक्त दोनो मन्त्र ऋग्वेद से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार से गुरुत्वाकर्षण विषयक मन्त्र वेदो मे भरे पडे हैं। अब एक मन्त्र यजुर्वेद से उद्धृत है —

आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृत मार्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

यजु० अ० ३३। म० ४३

मन्त्रो का सही अर्थ न समझने के कारण फलितज्योतिष के महापण्डितो ने सूर्य्य को ग्रह मानकर सूर्य्य ग्रह की शान्ति के लिए इस मन्त्र का जप करने का विधान बनाया। लेकिन थोडा भी विवेक से सोचा जाय तो सूर्य्य ग्रह न होकर एक तारा है। उपरोक्त मन्त्र गुरुत्वाकर्षण विषयक सिद्धान्त की पुष्टि करता है। मन्त्र मे सविता शब्द का अर्थ सूर्य्य से है। मन्त्र का भाव निम्न प्रकार है।

सूर्य्य सभी अन्य ग्रहो के साथ समान रूप से गुरुत्व बल को धारण किये हुए हैं। जिस प्रकार परमात्मा प्रत्येक आत्मा मे प्रकाशित होकर प्रकाश प्रदान करता हूँ उसी प्रकार सूर्य्य लोक भी रस आदि पदार्थों को मनुष्य लोक मे प्रदान करता है और सब लोको की व्यवस्था से अपने-अपने स्थान मे रखता है। इस प्रकार स्पष्ट हो गया कि इस मन्त्र मे गुरुत्वाकर्षण अनुसधान विषयक विचार भरा पडा है।

आज विश्व मे जितने भी अनुसधान हो रहे हैं इन सब खोजो का आधार वेद ही है चाहे शब्दावली मे कितना हि परिवर्तन क्यो न हुआ हो। वेदो मे विमान निर्माण विषयक, भवन निर्माण, युद्ध मे काम आने वाले भयानक शस्त्रों के निर्माण और निर्माण करके इन्ही अस्त्रो को निष्क्रिय बनाने विषयक अनेको मन्त्र भरे पडे हैं। इतना तो निश्चित है कि यदि भारत मे वेदो का अध्ययन व अनुसधान पर बल दिया जाय तो फिर से भारत विश्वगुरु बन सकता है।

आतंकवाद का अड्डा

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

माताओ-बहनो का दरबार साहिब मे आकर निर्दोष निंदी की हत्या पर स्यापा करना भी जनरोष की पराकाष्ठा का सूचक है।

यह सब इस बात का सूचक है कि आतकवादियो की गुण्डागर्दी और जबरी उगराही से दरबार साहिब के गिर्द के दुकानदार इतने पीडित हो गये हैं कि वे हर तरह से आतक से ऊपर उठकर अमल पर उतर आये हैं।

यह काम करने वाले साधारण लोग सभी सहृदय वर्गों की ओर से बधाई के पात्र हैं क्योंकि उन्होने अपने ऊपर से आतक की चादर उतारने के साथ-साथ परिसर के अन्दर की क्रूर सच्चाई का भी पर्दाफाश किया है।

साथ ही इस घटना ने कुछ पुरानी घटनाओ को भी ताजा किया है तथा सत्य को दर्शाया है।

'प्रीत लडी' के युवा सम्पादक सुमीत सिंह की हत्या के पश्चात् उनकी पत्नी बीबी पूनम ने श्रद्धाजलि समारोह मे कहा था, "आपका, गूगा होकर रह गया, गुरु गुरुद्वारे मे कैद है। सिख सगतो। गुरुद्वारे की सुरक्षा नही रही है, अपने गुरु को रिहा करा कर लाओ। नादानो! आप तो मुर्दे गिन रहे हैं, आपका गुरु कैद है।

शहीद दर्शन सिंह कैनेडियन ने अपने लेख, "क्या आतकवादी गुरु सिख हैं?' मे गुरुवाणी के उद्धरण देकर सिद्ध किया था कि आज के पथभ्रष्ट आतकवादी 'सत खालसा' के पद चिन्हो पर नही चल रहे हैं।

१९८६ मे आनन्दपुर मे हुए सरबत खालसा मे सिंह साहिब ज्ञानी कृपाल सिंह ने कहा था, "यह सम्मेलन अमृतसर की बजाय आनन्दपुर मे इसलिए करना पडा हैं क्योकि आज दरबार साहिब पर उन पर लोगो का कब्जा है जिन्होने गुरु तेगबहादुर जी को दर्शन से रोक दिया था।"

आज भी दशा यह है कि एक समाचार पत्र की रिपोर्ट के अनुसार शिरोमणि कमेटी के सचिव तथा श्री टोहरा' के सहायक श्री भान सिंह को जन रोष देखते हुए निंदी के शव की खोज हेतु कोई बीस कमरो के ताले इन लोगो के साथ जाकर तुडवाने पडे तथा यह मानना पडा कि आतकवादियो के कामो के सामने उनकी नही चलती तथा न ही उनका कोई नियन्त्रण है। वे तो वहा दम साधे दिन काट रहे हैं।

इस घटना ने सभी सच्चाइया प्रकट कर दी हैं। दरबार साहिब के गिर्द रहने वाले लोगो ने जो कर दिखाया है उसकी पैरवी करते हुए सभी सहृदय लोग दरबार साहिब को इन नए मस्से रघड़ी से मुक्त कराने के लिए आगे बढें।

('जन जागरण' के आभार)

सम्पादकीय

परमार्थ में दान देने से पुण्य लाभ

रहीम के शब्दो में—

> तबही लगि जीबो भलो, दीबो परै न धीम
> बिन दीबो जीबो जगत, हमहिन रुचै रहीम ॥

लोक हित के लिए स्वार्थ त्याग यही परम्परा सनातन आदर्श रही है तपस्या भी यही है, और है यही सर्वोदय का मूलमन्त्र भी, यही अमरत्व का मूल मन्त्र भी, यही जीवन का मूल मन्त्र और महायज्ञ भी। इन बातों को ध्यान में रखकर प्रत्येक व्यक्ति को लोक सेवा दान-परोपकार मे प्रवृत होना चाहिए। इसी में जीवन की सार्थकता है—

सात्विक दान सहजभाव से सम्मान पूर्वक दिया जाता है। मांगने पर तिरस्कार के साथ देने से उसकी महिमा घट जातीहै। न उसका उद्देश्य दूसरो को ऊंचा उठाना है। अत किसी को नीच या पतित बनाकर कुछ देना या कुछ सहायता करना अनुचित है। स्वेच्छापूर्वक सत्कार के साथ देने से साधारण वस्तु भी असाधारण बन जाती है मान का पान भी हीरे के समान होता है। गुप्त दान का महत्व इसी से है कि उससे लेने वाले को अपमानित नही होना पडता है। और दाता का अहकार भी प्रकट नही होता।

सत्पुरुष के लक्षण उदार होकर प्रियवक्ता हो, शूर होकर जल्पक न हो, दाता होकर अपात्र पर धन की वर्षा न करें— साथ ही अनावश्यक या अनुपयोगी वस्तुओं से अपना पिण्ड छुडाने के लिए भी दान देना व्यर्थ है। उपनिषदो में वाजश्रवा नामक ऋषि के पास बहुत सी गायें थी। दूध देते समय सेवा भी की गई और दूध न देने पर, बूढ़ी होने पर ऋषि के लिए वे भार स्वरूप हो गई। एक दिन चेलो से घोषणा करा दी, कि अमुक तिथि को महात्मा जी गोदान करेंगे। उस दिन बहुत से ब्राह्मण मन्त्रोच्चार करते हुए आश्रम पर पधारे। फिर एक-एक गाय दान कर उदारता दिखाई। ब्राह्मणो के जाने पर ऋषि ने बडी ही सन्तोष की सास ली, कारण कि एक तो सिर पर से व्यय की बला टली और दानियो मे नाम भी हो गया। इसी को कहते हैं (मरी बछिया बाह्मण को)। ऐसे दान से न दूसरों का भला न सुयश ही मिलता है। ऐसा दान किस काम का—ऐसा दान परोपकार नही बल्कि उल्टे धोखा ही कहा जायेगा।

परमार्थ के काम में अपनी सुविधा की अपेक्षा दूसरे की सुविधा देखनी चाहिए। जिसे जिस प्रकार की आवश्यकता हो वैसी ही सहायता देना सच्चा परोपकार है।

मजे को कभी देने मे क्या लाभ

भगवान कृष्ण ने कहा है कि —

> दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।

आज पजाब की समस्या ने सारे मानवों को विचलित करके रख दिया है। कौन जानता है बिना सकट की घडियों के, आज पाकिस्तान बनने के समय की स्थिति पुन आंखों के सामने हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस सकट काल में उन निराश्रित असहाय परिवारों की तन-मन-धन से मदद करने में तत्पर हैं—इस घडी मे प्राप्त धन ही सात्विक दान है। आपने जो दिल खोल कर दिया उसका हजारों परिवारों पर ईमानदारी से व्यय किया है। पर जब तक समस्या का समाधान नही हो जाता, तब तक सेठो की थैलियों के मुह खुले ही रहने चाहिए। जिससे सार्वदेशिक सभा द्वारा किया जा रहा सेवा कार्य निरन्तर प्रगति पथ पर चलता रहे।

भगवान करे किसी पर दुर्दिन न आवे। परन्तु आने पर जो सहयोगी न बने, उससे पतित मानव और कौन हो सकता है। आइये ! हमारी झोली में मुक्त हस्त से दान दो जिससे हमे अधिक से अधिक पुण्य कार्य के करने में अभिवृद्धि हो।

एक नारा

काश ! बीस करोड मुसलमान सडक पर निकल आय तो देश का सम्हालना मुश्किल होगा। पाकिस्तान के बनने से पूर्व के दृश्य प्रत्यक्ष ही हैं।

नई दिल्ली के बोट क्लब पर आयोजित रैली मे जो उत्तेजनात्मक भाषणो का सिलसिला चला। उससे स्पष्ट है कि आयोजको का आचरण गैर जिम्मेदाराना रहा है। भारत सरकार को ऐसे प्रदर्शनो तथा इस प्रकार के भाषण कर्त्ताओ पर सख्ती से प्रतिबन्ध लगाना चाहिये। भारत-एक स्वतन्त्र और धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है यहा सभी मत वालो को पूरी सुविधाये सुलभ हैं। जब कि मुस्लिम देशो मे अल्प-सख्यको के साथ नम्बर दो के नागरिको का सा व्यवहार है।

अभी हाल मे ही रामकुमार भारद्वाज का अरब मे व्यवहार आपने पढा ही है।

१६वी शताब्दी का बाबर एक विदेशी हमलावर था। इतिहास इस बात का साक्षी है। जो लोग गढ मुर्दे उखाड कर इतिहास के पन्नो से साम्प्रदायिकता की आग को भडकाना चाहते है। उनसे जनता और सरकार को सदा ही सतर्क रहना चाहिये। सच तो यह है कि सरकार को परेशान करने और मुसलमानो का राजनीतिक समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से ही बाबरी मस्जिद का सैयद साहब-व-बुखारी साहब ने यह आन्दोलन चलाया है इससे राजनीतिक नेता बरी नही हो सकते।

भारत सरकार को अविलम्ब भावी ख रो से सावधान होने के लिये राजनीतिक पार्टियो पर प्रतिबन्ध न लगाया गया तो भविष्य अन्धकारमय दिखाई दे रहा है। धर्म और साम्प्रदायिकता को राजनीति से दूर रखने का नारा देना ही पर्याप्त नही है। इस प्रकार धर्म की आड लेकर राजनीति चलाने की अनुमति न देकर सख्ती से कुचलना ही पडेगा।

रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद विवाद का सरकार शीघ्र निर्णय लेकर शरारती तत्वा को उभरने न दिया जाय। कुछ सिर-फिरे हिन्दू नेता भी वाहवाही लूटने मच पर भाषण देने मे तत्पर होकर विषवमन कर रहे हैं।

इस प्रकार की राजनीति से भारत की स्वतन्त्रता को खतरा पैदा होने के लक्षण स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। ●

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के धर्माधिकारी का निवेदन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की धर्मार्य सभा द्वारा निर्धारित निर्णित तथा प्रकाशित 'यज्ञ पद्धति प्रकाश" की प्रतिया समाप्त हो गई थी। उसकी माग आर्य समाजो द्वारा बहुत दिनो से हो रही थी। माग को देखकर और सभी आर्य समाजो मे समान पद्धति चले और किसी प्रकार की विषमता न हो यज्ञ पद्धति प्रकाश' को पुन छपा दिया गया है। उसकी प्रतिया सार्वदेशिक सभा के पुस्तक विक्रय विभाग से उपलब्ध हो सकती हैं।

सभी आर्य समाजो, प्रतिनिधि सभाओ, आर्य समाज के व्यक्तियो और आर्य सस्थानो से निवेदन है कि वे इस पुस्तक को मगावे और इसी के अनुसार यज्ञ विधि करे और करावे। विदेश की समाजो में यह विधि प्रचलित है और होने वाले यज्ञो में सर्वत्र एक रूपता आती जा रही है। आप लोग भी इसी विधि का पालन करे और सर्वत्र एक रूपता आवे, ऐसा करे। यही है निवेदन निर्देश और आदेश।

—वैद्यनाथ शास्त्री धर्माधिकारी
सार्वदेशिक धर्मार्य सभा

बाबर के अत्याचारों की कहानी—

बाबर की अपनी जुबानी

सर्वधर्म समभाव की धुन में इतिहास के साथ कितना अन्याय किया जाता है कि कुछ इतिहासकारो ने बाबर को बहुत न्यायप्रिय व दयालु तक कह डाला है। उनका यह वक्तव्य कितना भ्रामक है। इसका अनुमान स्वय बाबर की लेखनी से लिखे बाबर नामा के निम्न उदधरणो से पाठको को मिलेगा। बाबर लिखता है:—

७ जनवरी १५१६ ई० को बीजापुर दुर्ग के लिए युद्ध हुआ। अल्लाताला के रहमोकरम से इस शक्तिशाली किले को कुछ घण्टो मे ही जीत लिया गया। क्योकि बीजापुरी विद्रोही थे और इस्लाम के बन्दो के शत्रु थे। अपनी शत्रुता पूर्ण व इस्लाम विरोधी रीति-रिवाज के कारण जो इन लोगो मे प्रचलित थी। इन लोगों ने परिवारो मे इस्लाम का नाम तक मिटाकर रख दिया था इसलिए उनकी हत्याए कर दी गई। उनके बच्चे व स्त्रिया बन्दी बनाए गए। एक अनुमान के अनुसार लगभग ३ हजार व्यक्ति मृत्यु के घाट उतारे गए।

८ फरवरी १५१६ ख्वाजा कलाम की प्रार्थना पर शेष बन्दियो को रिहा कर दिया गया। और उनके बच्चो व स्त्रियो को मिला दिया गया। उन्हें अपने-अपने घर जाने की आज्ञा दे दी गई। परन्तु उनके कई राजे जो अधिक अहकारी थे उनको मौत के घाट उतार दिया गया। कुछ राजाओ के सिर काटकर अपनी विजय के समाचारो के साथ काबुल भेज दिए गए और कुछ को विजय के पत्रो के साथ बदख्शा कन्दूसव बलख भिजवा दिया गया।

११ जनवरी १५१६ को बाजीपुर के किले के मामलो से सन्तुष्ट होकर हमने मुहर्रम की ६ तारीख मगलवार के दिन बाजीपुर से दो को सदूर बिठूर की पहाडी से नीचे की ओर बढना प्रारम्भ किया और यह आज्ञा दी गई कि ऊची भूमि पर कटे हुए शीशो का एक स्तम्भ खडा किया जाए।

२१ दिसम्बर १५२७ को विषाक्त भोजन के द्वारा बाबर को समाप्त करने का प्रयत्न जब असफल हो गया तो बाबर ने अपराधियो को दिए गए दण्ड का वर्णन किया है। जिस व्यक्ति का काम हमारे भोजन को चखने का था उसके काट-काट कर टुकडे कर दिए गए। जो बावर्ची था उसकी खाल उधेड दी गई। एक स्त्री को हमारी आज्ञा से हाथी के पाव तले कुचल दिया गया। एक बूढी औरत को मैंने अपनी निगरानी मे रखा और वह अपने किए का दण्ड भुगतेगी।

१७ मार्च १५२७ को युद्ध मे राणा सागा को परास्त करके युद्ध मे हारे हुए भारतीयो की लाशो की एक पहाडी सी बना दी गई और उनके सिरो का स्तम्भ बना दिया गया।

२६ जनवरी १५२८ को चन्देरी के दुर्ग को विजय करके मूर्ति पूजको के सिरो को काट कर एक बडा स्तम्भ बनाया गया।

—प्रताप दैनिक दिल्ली से साभार

नये प्रकाशन

पाकिस्तानी बम और अरब देश

श्री राजीव गाधी की स्पष्ट वादिता पर अरब लीग के राजदूत श्री कलबास मकसूद ने कहा कि राजीव गाधी के वक्तव्य से अरब राष्ट्रो के प्रति एक गैर-दुश्मनी की झलक आती है। आगे वे कहते हैं कि समय आने पर यह इस्लामी बम अरबों को प्राप्त हो सकता है। श्री मकसूद ने कहा कि आगे चलकर भारत व अरब देशो के सम्बन्ध कटु हो सकते हैं। किन्तु यह मेरे निजी विचार हैं।

पाठक जानते है कि पाकिस्तानी बम के प्रथम समर्थक श्री जुलफिकार अली भुट्टो ने भारत के प्रथम परमाणु विस्फोट पर घोषणा की थी कि पाकिस्तान इस्लामी बम बनायेगा। चाहें उसे घास खाकर ही गुजारा करना पडे। भुट्टो ने अरब राष्ट्रो व लीबिया आदि से सहायता की याचना की और अरब राष्ट्रो ने दिल खोलकर पाकिस्तान के इस्लामी बम बनाने मे आर्थिक सहायता की। इस पर यदि भारत के प्रधानमन्त्री ने एक सचाई को उजागर कर दिया तो अरब राष्ट्रो को बेचैनी हो रही है।

अरब राष्ट्रो को दिया इस्लामी बम मिल गया तो वे उसे पीछे इस्राईल पर चलायगे और पाकिस्तान उसे भारत के विरुद्ध इस्तेमाल करेगा। अतएव भारत को इस्राईल से अपने सम्बन्ध सुधारने की आवश्यकता है।

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर लालकिले के मैदान मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्यसमाज की ओर से भारत सरकार से अनुरोध किया था कि इस्राईल से भारत मित्रता करे क्योकि इस्लामी बम भारत व इस्राईल दोनो के लिए ही साझा खतरा है।

पुस्तक—समालोचना

वरेण्यं

लेखक—श्री हुकमलाल साधक

प्रकाशक—एच० एस० सहगल चैरिटेबल ट्रस्ट

टी० १६६८ मल्कागज रोड दिल्ली

मूल्य—दोनो भाग ६०) पृष्ठ सख्या लगभग ८२५

महात्मा प्रभुआश्रित जी के शिष्य श्री सहगल जी ने बडी योग्यता व परिश्रम पूर्वक अध्यात्मिक तत्वों का मनन निदिध्यासन कर योग व साधना का बडा सरस सुबोध व सग्रहणीय सकलन किया है। पुस्तक आत्मतत्व के जिज्ञासुओ को पठनीय व माननीय है। पुस्तक की साज सज्जा उत्तम व मुद्रण सुन्दर है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री, सम्पादक

राष्ट्रीय एकता और धर्म निरपेक्षता

डा० भवानीलाल भारतीय

हमारे देश में ज्यो ज्यो विघटनकारी शक्तिया अधिक बलवती होती जाती हैं, त्यो त्यो राष्ट्रीय एकता की आवाज वातावरण मे अधिक शक्ति के साथ गूजने लगती है। किसी भी साम्प्रदायिक उपद्रव अथवा अन्य प्रकार के हिंसात्मक काण्ड के पश्चात् राष्ट्रीय एकता की रस्मी बैठक आयोजित की जाती है, जिसमें शासक दल, विरोधी दल तथा कुछ पत्रकार किस्म के व्यक्ति मिल बैठकर लम्बी चौडी तकरीरें करते हैं, साम्प्रदायिकता को तिलाजलि देने की कसमें खाते हैं और सभा की समाप्ति के पश्चात् अपनी उन्ही पुरानी हरकतो को करने लगते हैं जिनसे राष्ट्रीय एकता को हानि ही पहुचती है। समस्या की जड तक जाने का कोई प्रयास नही किया जाता और वृक्ष की जड को सींचने की अपेक्षा उसकी डालो को ही पानी से सीचने की चेष्टा की जाती है।

इधर पजाब की भयकर समस्या, बगाल में गोरखालैण्ड की माग, काश्मीर में इस्लामी मोर्चे की गतिविधियो तथा बिहार मे पृथक् झारखण्ड की माग जैसी विध्वसात्मक कार्यवाहियाँ को उभरता हुआ देखकर राजनीति को धर्म से पृथक् करने की बात की जाती है। देश के नेता इस प्रश्न पर एक राष्ट्रीय बहस कराना चाहते हैं, परन्तु वे स्वय इस बात को लेकर स्पष्ट नही हैं कि क्या वे सचमुच धर्म को राजनीति से पृथक् करना चाहते है, या केवल इसे एक प्रचार का मुद्दा बनाये रखना चाहते हैं। वस्तुत राष्ट्रीय एकता का सवाल किसी भी राष्ट्र के लिये सर्वोपरि महत्व का होता है और इसे लेकर किसी भी सम्प्रदाय, दल या वर्ग से समझौता करना घातक हो सकता है। जब महर्षि दयानन्द से राष्ट्रीय एकता की व्यावहारिकता या सम्भाव्यता को लेकर उदयपुर के प० मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या ने प्रश्न पूछा था तो दूरदर्शी ऋषि का उत्तर स्पष्ट था—जब तक इस देश के सभी लोग एक ही प्रकार के भाव और विचार नही रखेंगे, जब तक इस देश के निवासियो की भाषा, वेषभूषा और अभिव्यक्ति एक सी नही होगी, अथवा जब तक समस्त देशवासी राष्ट्र की सामान्य जीवनधारा में बहना नहीं सीखेंगे तब तक भारत की एकता असम्भव ही है। महर्षि दयानन्द का १०२ वर्ष पूर्व कहा गया यह कथन आज भी उतना ही सार्थक है, जितना उस समय था।

आज हमारे राष्ट्र नेता इस देश को गुलदस्ते की उपमा देते हैं जिसमें विभिन्न धर्मों, भाषाओ, सस्कृतियो तथा विचारो के फूल सजे हुए हैं। अनेकता मे एकता की बात भी कही जाती है। तथा यह भी कहा जाता है कि इस देश में सभी प्रकार के धर्म, मत, पन्थ, भाषा, सस्कृति तथा जीवन प्रणालियों के मानने वाले लोग बसते हैं तथा उनकी भिन्न-भिन्न भाषाओं, सस्कृतियो तथा विचार प्रणालियों को फलने फूलने तथा पनपने एव विकसित होने का पूरा अवसर दिया जायेगा। यह बात कहने मे जितनी सरल और आपातरमणीय लगती है, वस्तु स्थिति इसके विपरीत ही है। हम यह तो मानते हैं कि इस देश मे नाना धर्मों और मत पन्थों के मानने वाले लोग निवास करते हैं और प्रत्येक को अपनी आस्था के अनुकूल उपासना प्रणाली को चुनने का पूर्ण अधिकार है, किन्तु हम इससे एक कदम आगे बढकर यह कहने की हिम्मत नही जुटा पाते कि धर्म और मत के नाम पर देश को विखण्डित करने की किसी भी चेष्टा को निर्मूल कर दिया जायेगा। हम देश मे बोली जाने वाली सभी भाषाओ के विकास पर जोर देते हैं किन्तु हमारे शासको में यह कहने का साहस नहीं है कि देश की एक सामान्य राष्ट्रभाषा को उसके पद और गौरव से च्युत करने की किसी भी साजिश को नाकाम कर दिया जायेगा। हम देश के विभिन्न क्षेत्रो में प्रचलित नृत्य, संगीत, कला और साहित्य की विविधता को देखकर देश में व्याप्त अनेकता की बात तो करते हैं, तथा इस अनेकता को यथातथा रखने की प्रतिज्ञा भी करते हैं, किन्तु इस देश के सत्तर करोड निवासियो में उस एकता के सूत्र को तलाशने का प्रयत्न नही करते जिसके कारण काश्मीर से कन्याकुमारी तथा गुजरात से असम तक विस्तृत इस विशाल भूभाग का प्रत्येक नागरिक अपने आपको भारतवासी कहता है। इस विशाल और पुरातन राष्ट्र की एकता की बुनियाद जिन सास्कृतिक तत्वो में निहित है, उन्हें पहचानने और मजबूत करने की अपेक्षा हम नागालैण्ड, मिजो, गोआ, असम, तमिलनाडु आदि भिन्न-भिन्न प्रान्तो की पृथक्-पृथक् सस्कृतियो का गौरवगान करने लग जाते हैं और इन प्रान्तो के निवासियो को महान् भारत राष्ट्र का नागरिक समझने के महत्व पर जोर डालने का यत्न नही करते।

हमारे कथन का यह अभिप्राय नही है कि क्षेत्रीय भाषाओ, जीवन-पद्धतियो तथा वहा की कला एव सस्कृति के विकास का राष्ट्रीय एकता के साथ कोई मौलिक विरोध है। यदि पजाब मे पजाबी भाषा और साहित्य का विकास होना है, वहा के नर-नारी गिद्दा और भागडा नृत्यो के द्वारा अपना मनोरजन करते हैं तो देश के अन्य राज्यो के निवासियो को इसमे क्या आपत्ति है, किन्तु यदि यहा के निवासी एक पृथक् राज्य की माग करे, जहा किसी सम्प्रदाय विशेष के ही प्रमुख होने का स्वप्न सजोया गया हो, तो उसे देश के व्यापक हित मे कैसे सहन किया जा सकता है। मिजो लोग यदि ईसाई धर्म का पालन कर और चर्च मे जाकर खुदावन्द ईसा मसीह को याद करे तो देश के बहुमत को कोई आपत्ति नही, किन्तु यदि इन चर्चों में विदेशी पादरी भारत राष्ट्र को दुर्बल बनाने के षडयन्त्र करे और विद्रोही लोगो को पडौसी देशो से सहायता लेकर देश को छिन्न-भिन्न करने की बात करे तो उनकी इन कार्यवाहियो को राष्ट्र विरोधी ही माना जायेगा। तमिलनाडु

संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए अकादमी गठित

नई दिल्ली। दिल्ली प्रशासन ने सस्कृत भाषा एव साहित्य के प्रचार-प्रसार तथा सवर्द्धन के लिए सस्कृत अकादमी का गठन किया है।

कार्यकारी पार्षद श्री कुलानन्द भारतीय ने आज यहा बताया कि वर्ष १९८७-८८ मे सस्कृत अकादमी अपने कार्यों के सचालन के लिए छह लाख १४ हजार रुपए खर्च करेगी। यह अकादमी सस्कृत विद्वानो को प्रोत्साहन देने व नवोदित सस्कृत सेवियो को इस भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए नए अवसर प्रदान करेगी।

इसके अलावा यह अकादमी सास्कृतिक, साहित्यिक और शैक्षणिक महत्व की मूल कृतियो का प्रकाशन करेगी और अनुवाद का काम भी बडे पैमाने पर होगा।

श्री भारतीय ने कहा कि सस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रो मे सस्कृत केन्द्रो, पुस्तकालयो व विद्यालयो की स्थापना की जायेगी। उन्होने कहा कि सस्कृत साहित्य का प्रचार-प्रसार हमे भारतीय सभ्यता के अनुकूल नैतिक मूल्यो और मान्यताओ के पालन की प्रेरणा देता है।

सस्कृत अकादमी के गठन से सम्बन्धित जारी की गई अधिसूचना के अनुसार उपराज्यपाल इसके अध्यक्ष हैं और कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) कार्यकारी अध्यक्ष।

अपने सरकारी काम-काज तथा शिक्षा में तमिल भाषा का प्रयोग करे तो इस पर आपत्ति करने का कोई प्रश्न ही नही है, किन्तु देश के सविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बन्द कराने के लिये यदि कोई भावुक तमिल युवक आत्मदाह करता है तो उसे शहीद का दर्जा कैसे दिया जा सकता है।

सच तो यह है कि हमारे सविधान निर्माताओ ने 'धर्म निरपेक्षता" को जिस अर्थ मे समझा था, उसे उसी अर्थ मे हम समझने मे आनाकानी कर रहे हैं। सविधान मे धर्म निरपेक्षता का अभिप्राय राज्य के "सम्प्रदाय निर्लेप" होने से लिया गया था। आज हमारे शासक अधिक से अधिक साम्प्रदायिक गतिविधियो में लिप्त होने को ही अपनी लोकप्रियता की कसौटी मानते हैं। तभी तो मुसलमान फकीरो की कब्रो पर हमारे मन्त्रीगण चद्दर चढाते हैं, गुरुद्वारो मे जाकर मत्था टेकते हैं, मन्दिरो और मठो मे पुजारियो और आचार्यों का प्रसाद ग्रहण करते है, कैथालिक सम्प्रदाय के पोप का राष्ट्रीय स्तर पर स्वागत करते है सरकारी दूरदर्शन पर ईद क्रिसमस, सूफी सन्तो के मकबरो पर भरने वाले उर्स, कृष्ण जन्माष्टमी पर मथुरा और वृन्दावन की रासलीला आदि के दृश्य प्रदर्शित करते हैं और यह सब कुछ करके भी वे यह चाहते हैं कि भारत को धर्म निरपेक्ष राष्ट्र माना जाय। हमारे कथन का यह अर्थ नही कि कोई भी मन्त्री या शासक व्यक्तिश किसी धर्म स्थान पर न जाय या किसी प्रकार की पूजा उपासना मे व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित न हो आपत्ति तो तब होती है जब साम्प्रदायिक तुष्टीकरण के लिए मन्दिरो मस्जिदो, गिरजो और गुरुद्वारो के प्रति सरकारी रूप से श्रद्धा प्रकट की जाती है, केवल इन धर्म स्थानो पर एकत्र होने वाली भीड को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये।

भारत में सम्प्रदायिकता के प्रसार का एक प्रमुख कारण यह भी है कि हमारे राजनीतिज्ञो ने बहुमत और अल्पमत की त्रुटिपूर्ण तथा सिद्धान्तहीन धारणाओ को लोगा मे अत्यन्त उग्र रूप मे प्रतिष्ठित कर दिया है। जब सविधान ने प्रत्येक नागरिक को सभी प्रकार के अधिकार समान रूप से प्रदान किये हैं तो बहुमत और अल्पमत के आधार पर एक वग के साथ विशेष पक्षपात करने अथवा दूसरे वग की उपेक्षा करने का औचित्य ही नही रहेगा। देखा जाय तो 'धार्मिक दृष्टि से अल्पमत के सिद्धान्त को स्वीकार करना ही धर्म निरपेक्षता पर कुठाराघात करना है।

यदि भारत के १० करोड मुसलमान इस्लाम की रीति नीति के अनुसार एक अल्लाह की उपासना करते है और पैगम्बर साहब पर ईमान लाते है तो इस बात का क्या औचित्य है कि सरकारी नौकरियो मे उनके लिये स्थान सुरक्षित किये जाये, मेडिकल और इन्जीनियरिग कालेजो मे उनके प्रवेश आरक्षित किया जाय अथवा उनकी मस्जिदो और खानकाहो की मरम्मत के लिये सरकारी धन उपलब्ध कराया जाय। यदि धार्मिक आधार पर ही अल्पमतो को सरक्षण देना है तो कुछ लाख पारसी लोग ही इन अधिकारो को पाने के सच्चे पात्र है, १० करोड की भारी भरकम आबादी वाले मुसलमान किस प्रकार "अल्प" कहला सकते हैं और इसके अलावा आश्चर्य यही है कि निश्चय ही धार्मिक अल्पमत कहलाने वाले अग्निपूजक पारसी वर्ग के लोगो ने कभी सरकार से किसी भी प्रकार के सरक्षण या आरक्षण की माग नही की। इस दृष्टि से वे ही सच्चे भारतीय नागरिक हैं। जो साम्प्रदायिकता से कोसो दूर हैं और अपने मत का दृढता से पालन करते हुए भी राष्ट्र के पुननिर्माण के कार्य मे सर्वात्मना जुटे हुए है।

तथ्य यह है कि आज की राजनीति वोट जुटाने की राजनीति बन गई है। अल्प मत वालो से वोट प्राप्त करने के लिये उनकी जायज और नाजायज सभी प्रकार की मागो को मान लिया जाता है और बहुमत की अवहेलना और उपेक्षा करके भी धार्मिक अल्पमतो को सन्तुष्ट करने की राष्ट्रघाती नीति अपनाई जाती है। प० जवाहरलाल नेहरू ने जब केरल मे मुस्लिम लीग से गठबन्धन किया तो उन्हे झूठ मूठ ही यह कहना पडा कि केरल की लीग जिन्ना की मुस्लिम लीग से भिन्न है, जब कि भारतीय मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना की विचारधारा को आज भी कट्टरता से अपनाये हुए हैं।

यदि राष्ट्रीय एकता को सचमुच सुदृढ बनाना है तो धर्म निरपेक्षता की नीति को बिना किसी भेद-भाव और लाग लपेट के अपनाना होगा। भारत के नागरिको को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और सिक्ख के रूप मे न पहचान कर मात्र भारतीय के रूप मे स्वीकार करना होगा। धर्म व्यक्तिगत आचरण की वस्तु हैं अत धार्मिक मतवादो को राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा के मार्ग की बाधा नही बनने दिया जायेगा। किन्तु धर्म के मूल भूत तत्वो तथा नैतिक मूल्यो का तो राजनीति से कोई विरोध ही नही है। यदि राजनैतिक आचरण को नैतिकता पर आधारित करना है तो धर्म से उसको पृथक् करने की बात सोची ही नही जा सकती, किन्तु यह धर्म मानव धर्म ही है, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और पारसी आदि मतो से उसका कोई सम्बन्ध नही है।

बाबरी मस्जिद विवाद : ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में

-आचार्य शिवराज शास्त्री एम. ए. मौलवी फाजिल

भारत वर्ष का इतिहास करोड़ों वर्ष पुराना है जिसकी शेष स्मृतियां इतिहास के प्राय सभी मूल ग्रन्थों में उपलब्ध है। भारत की राज्यव्यवस्था मे महर्षि मनु का नाम अमर है। उनके काल में प्रजा वेद मर्यादाओं का पालन करती हुई स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करती थी। वैदिक धर्म का पालन ही उन्हें राज्य व समाज की सभी सुरक्षाए व व्यवस्थाए प्रदान करता था। समय एक सा नही रहता व भावी प्रजा कैसी होगी यह विचार कर तत्कालीन ऋषियो ने महर्षि मनु से प्रार्थना की कि वे भावी भारत का सविधान व उसकी राजधानी निश्चित करदें। फलत मनु जी ने मानव धर्म शास्त्र के रूप मे जो भारत का विधान बनाया वह आज तक भारतीय राष्ट्र व भारतीय जन समाज का आदर्श ग्रन्थ प्रजा मे सुरक्षित व प्रचलित हैं। यह मनुस्मृति के नाम से उपलब्ध है।

मनु महाराज ने भारत की राजधानी की केवल कल्पना ही नही की थी अपितु स्वय अयोध्या नाम की एक नगरी के रूप मे भारतीयो के लिए उसे राजधानी का स्वरूप प्रदान किया। जो लाखो वर्ष तक भारत सम्राटो की जननी भी रही।

अयोध्या नाम तत्रासीत् नगरी लोक विश्रुत ।
मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मित स्वय ।

अर्थात् मानवो में इन्द्र के तुल्य राजा मनु ने भारत की राजधानी के रूप मे अयोध्या नगरी का निर्माण स्वय किया था। ससार में आर्यों का चक्रवर्ती राज्य था।

यह ऐतिहासिक सच्चाई है कि उसी उच्च कुल वश मे अयोध्या के राजकुमार के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का आविर्भाव हुआ। उनका जीवन चरित्र इतना महत्वपूर्ण रहा है कि लाखों वर्षों से ससार उसे आज तक नही भूल पाया। ससार की प्राय सभी भाषाओ मे आदर्श राजा के रूप मे उनका चरित्र उपलब्ध है।

भारतीय राष्ट्र के उत्थान का जब पूज्य महात्मा गांधी ने बीड़ा उठाया था तो उन्ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम को अपना आदर्श बनाया। नौआखाली के प्रवास मे एक बार वार्तालाप मे उन्होंने यह बताया कि ससार की प्राचीनतम आर्य जाति के महान सम्राट आर्य राम का आदर्श ही भारतीय भावी स्वराज्य का आदर्श होगा। राम राम जपते ही उन्होंने अपनी जीवन यात्रा बिताई।

अयोध्या नगरी से भारतीयो की भावात्मक निष्ठा, श्रद्धा व प्रेम को इसी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे देखना व समझना आवश्यक है।

आर्य लोग मूर्तिपूजक नही थे परन्तु श्री राम के काल्पनिक चित्रो व प्रतीको को उसी श्रद्धा भक्ति से देखते व सम्मान देते थे जैसे आज भी ऐसा करना राष्ट्रीय कर्तव्य माना जाता है। यह भारत की प्राचीन धार्मिक परम्परा है। राम के चित्र के साथ ही उनके आदर्श चरित्रो की याद आ जाती है। इसीलिए हिन्दुओं के घर घर में रामायण धार्मिक ग्रन्थ के रूप मे मानी जाती है।

लाखो वर्ष राम जी की राजधानी को आर्य हिन्दुओ ने इस आशा से सुरक्षित व सुपूजित रखा कि भारत का यह अतीत गौरव भविष्य मे भी हमे गौरव पूर्ण जीवन प्रेरणाए प्रदान करेगा। आर्य लोग वेद को अपना धर्म मानते रहे। निश्चय आर्य राम वैदिक धर्मी थे। महर्षि बाल्मीकि लिखते हैं

आर्य सर्व समश्चैव सदैव प्रियदर्शिन
वेद वेदाग तत्वज्ञ धनुर्वेदे च तिष्ठित

उक्त उद्धरण से अयोध्या व राम के प्रति आर्य (हिन्दू) जाति का सम्बद्ध कितना महत्वपूर्ण है यह स्पष्ट विदित है।

कालान्तर मे आर्य (हिन्दू) जाति अपना वर्चस्व स्थापित नही रख पाई और विदेशी आक्रमकों ने भारत के साथ जो व्यवहार किया उन रोमांचकारी व खूनी कहानियो से ससार के सभी इतिहासकार परिचित हैं।

मुसलमानो का दूसरे देशों पर आधिपत्य स्थापित करने का एक तरीका था। वे पहले अपने मौलवियो को धर्म प्रचारक के रूप मे भेजते थे फिर जब वे अपनी गुप्त योजनाए बना चुकते थे तो उन्ही की सहायता व मार्ग दर्शन से अन्य देशों पर अधिकार करते थे। यह सभी आक्रमको का नियम रहा है।

बाबर ने भारत पर जब आक्रमण किया उससे पूर्व अयोध्या मे मुसलमानो के दो मोलवी अपनी षडयन्त्रकारी योजनाओ मे व्यस्त थे जिनका नाम शाह-जलालुद्दीन व हजरत मूसा था। बाबर ने आक्रमण से पूर्व इन दोनो की आन्तरिक सहायता प्राप्त करके ही भारत पर हमला किया। इस हमले ने भारत मे एक महान धार्मिक चेतना उत्पन्न की। जहा आज मुसलमान बाबरी मस्जिद की चर्चा करते हैं। वहा पर गृह त्यागी साधु व वैरागी रहते थे। उन्होंने भगवान राम की स्मृति मे अनेक भवन बना रखे थे। उनमे वे भगवान राम की मूर्तिया भी रखते थे। उनका जीवन ही रामभक्ति को समर्पित तथा तुलसीदास जी की रामकथा के यही प्रेरक थे।

यह सत्य किसी प्रमाण की अपेक्षा नही रखता कि मुसलमान आक्रामको का लक्ष्य भारत के धार्मिक ध्वस ही रहे। बाबर ने अपने गुप्तचरो के इशारे पर वैरागियो से यह भूमि व भवन छीनकर उन्हे नष्ट भ्रष्ट किया। मुगलो के शासन के अन्त मे उस क्षेत्र का शासन अवध के नवाबो के हाथ में था। वैरागियो व मुल्लाओं का विवाद बहुत बढ गया और यह शिकायत वाजिद अलीशाह के दरबार मे पहुँची। नवाब वाजिद अली मुगल सम्राटो की भांति अत्याचारी व कटमुल्ला नहीं थे। हिन्दुओ ने इसे रामजन्म भूमि बताया था मुसलमानो ने अपने दावे मे इसे औरगजेबी मस्जिद लिखा था। नवाब वाजिद अली औरगजेबी अत्याचारों से पहले ही भड़का हुआ था। उसने अपने हिन्दू और मुसलमान परामर्शदाताओ से विचार किया और यह समझकर कि राज्य की ओर से इस विषय मे कोई भी निर्णय लखनऊ की नवाबी के लिए घोर घातक सिद्ध हो सकता है। राम का जन्म स्थान होने से हिन्दू यह कभी सहन नही करेंगे कि इसे मुसलमानों के हवाले कर दिया जाए। वे अवश्य विद्रोह करेंगे यदि मैं हिन्दुओ की हिमायत करूगा तो मुसलमान होने के नाते मैं ही स्वय ग्रहयुद्ध का शिकार बन जाऊगा। ऐसी परिस्थितियो मे वाजिद अली शाह ने जो निर्णय दिया उसके बाद सैकडो वर्ष तक कभी मुसलमानो ने बाबरी मस्जिद पर कोई प्रश्न नहीं उठाया और अयोध्या नगरी राम की जन्मभूमि व राम मन्दिरो की ही भूमि बनी रही। हिन्दू तब तक घोर मूर्तिपूजक बन ही चुके थे। उन्होने मन्दिर का निर्माण कराया।

नवाब वाजिद अली शाह ने दोनो पक्षो (हिन्दुओ व मुसलमानो) को अपने दरबार मे बुलाया। दोनो के बयान सुनने के बाद मुकदमे की फाइल पर अपनी एक स्वरचित कविता लिखकर फाइल दाखिल दफ्तर कर दी। कविता है—

हम इश्क के बन्दे हैं, मजहब से नहीं वाकिफ
गर काबा हुआ तो क्या, बुतखाना हुआ तो क्या।

जिस मस्जिद को आज बाबरी मस्जिद कहकर मुसलमानों को भड़काया जा रहा है। मुसलमान इतिहासकारों का इसमें मतभेद है। एक इतिहासकार के अनुसार इसका नाम बाबरी मस्जिद तो बिगाड़ कर बोला गया है। वास्तव में यह बाबरक मस्जिद है।

बाबर से पूर्व सिकन्दर लोदी के एक सेनापति ने जब बंगाल को विजय किया तो उसने मार्ग में वापिस लौटते हुए एक ऊंचे टीले पर पड़ाव डाला। और अपनी विजय की खुशी मे बाबरक मस्जिद के नाम से मुसलमानो के लिए वहां एक पूजा स्थल बनाया। इस मस्जिद के बनने की भयंकर प्रतिक्रिया हुई और मुगलकाल मे अयोध्या व रामजन्म स्थान को लेकर राजपूत राजाओ ने मुगल सेनापतियों से अनेक युद्ध हुए और धर्मरक्षा के लिए महान बलिदान किए। अयोध्या हिन्दू मात्र की पुण्य भूमि रही। जो कालान्तर में नष्ट हो गई वहा फिर बैरागियो ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। उसी प्रसंग मे कुछ कट्टर पंथी मुसलमानो ने नवाब वाजिद अलीशाह से शिकायत की थी। जिसका निर्णय भी मुसलमानो की ही सिफारिश पर नवाब वाजिद अली शाह ने उक्त उर्दू शेर के रूप मे दिया था और यह विवाद सदा के लिए समाप्त हो गया था। फैजाबाद के डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के लेखक आर० नोइल ने पृष्ठ १७३ पर लिखा है कि यह मस्जिद मन्दिरो को तोड़कर बनाई गई थी। तब से अनेक मुकद्दमे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच हुए हैं।

१८८५ मे महन्त रघुबीरदास ने दावा किया था कि यह रामजन्म भूमि है इस पर केवल हिन्दुओ का अधिकार होना चाहिए। मुसलमान शासन समाप्त हो चुका था परन्तु मुसलमानो का आतंक हिन्दू अफसरों पर था अतः निर्णय महन्त जी के पक्ष मे न हो सका।

परन्तु भारत के सभी इतिहास का एक स्वर से इसे रामजन्म भूमि ही सिद्ध करते हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार श्री के० एस लाल का कथन है—

इस बात के बहुत सारे प्रमाण हैं कि उस काल में बहुत व्यक्तियो, मंदिरों व नगरों के नाम का धर्मान्तरण किया गया।

पुरातत्व विशेषज्ञ के० वाई सुन्दर राजन ने कहा है—

वहां जो चबूतरा मिला है उसका स्वरूप शेष इमारत से भिन्न है यह बड़े असाधारण प्रकार की मस्जिद है।

इतिहासकार श्री लाल बहादुर का कथन है। मस्जिद में एक बुर्ज का होना आवश्यक है जहां से अजान दी जाती है। श्री रेवतीनन्दन अग्रवाल का कहना है कि यहा कभी नमाज पढी ही नहीं गई। प्रसिद्ध इतिहासकार लेखक अबुल फजल के लेखों के अनुसार अयोध्या हिन्दुओ का परम पवित्र स्थान है।

डा० गणेशलाल वर्मा ने कहा है—

यह मन्दिर ही था जिसका स्वरूप बदल दिया गया है। डा० वाई कृष्णन ने कहा मस्जिद मे जो चबूतरा है उसका निर्माण मस्जिद भवन से भिन्न प्रकार का है।

बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि स्वयं बाबर द्वारा लिखित बाबर नामा या तुजके बाबरी मे इस मस्जिद या इसके निर्माण के सम्बन्ध में कोई चर्चा तक नही जिसके नाम पर आज मुसलमान हू-हल्ला मचा रहे हैं। यह सत्य है कि तथाकथित मस्जिद में कोई मुसलमान नमाज पढ़ने नहीं जाता फिर भी मुगलीय साम्राज्य के पुनर्स्थापन के सपने देखने वाले मुसलमानों को बाबर, मस्जिद व इस्लाम के नाम पर भड़काकर अब कुछ महत्वाकांक्षी अपना उल्लू सीधा करने की योजनाएं बना रहे हैं।

हिन्दू जाति अपने राम व अयोध्या के प्रति अपनी निष्ठा व भक्ति कैसे त्याग सकती है। आर्य समाज ने एक स्वर से राम जन्म भूमि के सम्बन्ध मे इस विवादास्पद विषय पर अपना मन्तव्य घोषित कर दिया है कि राम जन्म भूमि पर हिन्दुओ के अधिकार को ही मान्यता मिलनी चाहिए। आज सैकड़ों वर्ष बाद हिन्दू विरोधी यह नारा कि यह मस्जिद बाबरी है, ऐतिहासिक व राजनैतिक व धार्मिक किसी भी दृष्टि से न्यायोचित नहीं कहा जा सकता।

आर्य का कुल युक्त प्रभु विनय

हो निर्भय, निर्वैर तथा निश्छल मन वाले।
सन्ध्या, सत-संग, स्वाध्याय, सद्गुण धन वाले॥
ब्रह्म ज्ञान हो, ही ब्राह्मण जग के शुभ चिन्तक।
ब्रह्मचर्य के बल से कोसो भागे अन्तक॥

स्वाभिमान, सद्ज्ञान, सदाचारी जीवन हो।
देश धर्म अरु जाति हेतु अर्पित तन-मन हो॥
निर्बल के रक्षक दुर्जन के लिये काल हो।
सत्य अहिंसा स्तेय अपरिग्रह लिये ढाल हो॥

स्वावलम्ब अवलम्ब समय की कीमत जाने।
अनुशासन मे ही स्वतन्त्रता की जड़ माने॥
सुख दुःख मे सम रहे,सदा नियमित जीवन हो।
कर भक्ति निष्काम, कर्म से अमित लगन हो॥

रहें मुदित हर हाल आपकी इच्छाओं में।
विचलित कभी न होवें कड़ी परीक्षाओं मे॥
अहोरात्रि हो प्रीति तुम्हारी अटल हृदय मे।
अधर पटल मे नाम बसे छवि नयन निलय मे॥

आस्तिक जीवन बने आर्य सच्चे कहलाय।
अखिल विश्व को आर्य ध्वजा के नीचे लाये॥
हे व्रतपति जगदीश करो व्रत पूर्ण हमारे।
हम सब बालक आन पड़े हैं शरण तुम्हारे॥

—योगेश्वर प्रसाद 'निर्मल' राजस्थान

गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव

विश्व विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव दिनांक ११ से १४ अप्रैल तक बड़े समारोहपूर्वक बृहद यज्ञ, अनेक महत्वपूर्ण सम्मेलन देश के कोटि के विद्वानो के भाषण होंगे। यह उत्सव आर्यों को एक मेले के रूप मे सदा मनाया जाता रहा है। इस वर्ष भी हजारों की संख्या मे आर्य जन इसमें भाग लेंगे।

आर्य जगत् के समाचार

आर्य समाज का निर्वाचन

आर्य समाज बैंकाक (थाईलैण्ड)

प्रधान—श्री रामप्रसाद पाण्डे

मन्त्री—श्री लालबहादुरसिंह

इन्दौर मल्हारगंज

प्रधान—श्री रामस्वरूप गोद

मन्त्री—हरिचरणलाल वर्मा

तुरहैलिया बाजार (चम्पारण)

प्रधान—श्री रामबाबूसिंह

मन्त्री—श्री चन्द्रदेव शर्मा

चैनपुर (चम्पारण)

प्रधान—श्री वीरबहादुर प्रसाद

मन्त्री—श्री आलोक कुमारसिंह

नकुड़ जिला सहारनपुर

प्रधान श्री साधुराम जी

मन्त्री—श्री भूपेन्द्र कुमार जी

देसराज कालोनी पानीपत

प्रधान—श्री इन्द्रसेन चोपड़ा

मन्त्री—प० जगदीशचन्द्र वसु

बालोतरा राजस्थान

प्रधान—श्री रामेस्वरूप आर्य

मन्त्री—श्री रामलाल आर्य

वेद प्रचार सभा अतरौली अलीगढ़

प्रधान—श्री वीरीसिंह जी

मन्त्री—श्री रामलाल आर्य

आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर का निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—प्रिन्सिपल विजय बिहारीलाल जी माथुर,

मन्त्री—डा० ओमशरण 'विजय'

—डा० ओमशरण 'विजय'

आर्यसमाज लालबाग लखनऊ का निर्वाचन —श्रीमती उर्मिला प्रधान, प० सत्यदेव सैनी चुने गये।

आर्यसमाज जवाहर नगर (शास्त्री) मेरठ कैंट का वार्षिक साधारण अधिवेशन में निम्नांकित पदाधिकारियों का चयन सर्व सम्मति से हुआ।

प्रधान श्री केशवचन्द्र रस्तोगी

मन्त्री श्री देवप्रकाश गुप्ता

कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश अग्रवाल

आर्यसमाज नगीना (बिजनौर) उ० प्र० का निर्वाचन—

प्रधान श्री रामचरण जी शास्त्री

मन्त्री अनिल कुमार

—आर्य समाज बरबीघा (मुंगेर) के निर्वाचन मे प्रधान श्री रामधनी राम जी, मन्त्री डा० दामोदर आर्य, चुने गये।

—आर्यसमाज सरायतरीन हयातनगर के निर्वाचन मे प्रधान श्री देवेन्द्र आर्य जी, मन्त्री भूमित्र आर्य जी चुने गये।

—आर्यसमाज २ अन्सारी रोड दरियागंज नई दिल्ली-२ का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ। प्रधान श्री बी०बी० सिंगल, मन्त्री वीरेन्द्रपाल चुने गये।

—आर्य समाज गांधी धाम (कच्छ) में श्री मोतीराम जेठवानी प्रधान, श्री भगवानदत्त शर्मा मन्त्री चुने गये।

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर का १६ वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

आपके प्रिय महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) का १६ वां वार्षिक महोत्सव दि० ७, ८, ९ मार्च ८७ को गुरुकुल प्रांगण मे वेद, धर्मरक्षा, राष्ट्ररक्षा, गौरक्षा आदि सम्मेलनों के रूप मे अति हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री स्वामी देवानन्द जी मेधावी आचार्य प्रणव जी शास्त्री श्री देवीदासजी आर्य (कानपुर) प० महेन्द्रपालजी आर्य प० सोहनलाल जी पथिक आदि सुप्रसिद्ध विद्वानों ने भाग लिया।

आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री
कुलपति

आर्यसमाज अल्मोड़ा संस्कृत रक्षा का प्रस्ताव

आर्यसमाज अल्मोड़ा ने भारत सरकार की नई शिक्षा नीति से असन्तोष व्यक्त करते हुए सरकार से प्रार्थना की है कि वह भारत की संस्कृति की रक्षा के लिए संस्कृत की अवहेलना न करे।

—डा० जयदत्त उप्रेती शास्त्री
मन्त्री

वेद कथा का आयोजन

आर्य समाज दरियागंज दिल्ली द्वारा होली के उपलक्ष्य में वेद कथा का आयोजन ९ से १५ मार्च तक किया गया। वेदकथा आचार्य श्री सत्यप्रिय व्रती, भजनोपदेश श्री चुन्नीलाल आर्य, नित्य प्रातः यज्ञ प० शिववीर शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज के कर्मठ प्रधान श्री बी बी सिंगल तथा मन्त्री श्री वीरेन्द्रपाल ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया।

अहमदगढ़ में आर्य समाज की स्थापना

दि० २२-३-८७ को अहमद गढ जिला बुलन्दशहर मे आर्य समाज की स्थापना हुई। जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान श्री भगवान सिंह जी, मन्त्री श्री ओम भद्र जी, कोषाध्यक्ष श्री गिरराज जी चुने गए।

वार्षिक महोत्सव

दिनांक ७ और ८ अप्रैल १९८७ को गुरुकुल योगाश्रम नृसिंहनाथ का नवम वार्षिक महोत्सव तथा स्वर्गीय सेवानन्द वानप्रस्थी जी की ७०वी जयन्ती सहित अत्यन्त समारोह के साथ मनाया गया।

वार्षिकोत्सव

संस्कृत एवं आर्य शिक्षण के केन्द्र श्री नि शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या फैजाबाद का वार्षिकोत्सव ६, ७, ८ अप्रैल तक राष्ट्र भृत यज्ञ के साप्ताहिक कार्यक्रम के साथ मनाया जायगा। आर्य जगत के योग्य महोपदेशक एवं भजनोपदेशकों के अतिरिक्त गुरुकुलीय ब्रह्मचारियो के विभिन्न कार्यक्रम होंगे।

—वसुमित्र चतुर्वेदी कुलपति

शोक समाचार

आर्यसमाज लहेरिया सराय के भूतपूर्व प्रधान श्री विश्वनाथ आर्य का आकस्मिक एवं असामयिक निधन दिनांक २७ २,८७ को पटना मे हो गया। वे पुराने कर्मठ तथा सुयोग्य व्यक्ति थे जिनके निधन से स्थानीय आर्यसमाज को अपार क्षति हुई है।

—ध्रुवनारायण काय मन्त्री

तपोवन का वार्षिक बृहद् यज्ञ २० अप्रैल से

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का वार्षिक बृहद् सामवेद पारायण यज्ञ सोमवार दिनांक ३० अप्रैल से प्रारम्भ होकर रविवार दिनांक २६ अप्रैल को पूर्ण होगा। यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द वानप्रस्थ होंगे। इस अवसर पर वेद प्रवचन करने के लिए नई दिल्ली से प० पृथ्वीराज शास्त्री और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से वहां के उपकुलपति प० रामप्रसाद वेदालंकार पधार रहे हैं। ब्रह्मचारी आर्य नरेश भी पधारेंगे।

सप्ताहभर तक योग-साधना शिविर चलेगा जिसका निर्देशन स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, ज्वालापुर वाले करेंगे।

आर्यसमाज पिठौरागढ़ (उ० प्र०) द्वारा कांधी (कानपुर) में वेद प्रचार

कानपुर। ग्राम कांधी में सुरेन्द्रमुनि जी (गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मा-वर्त-बिठूर) की प्रेरणा से पं० राधाकृष्ण तिवारी के १२ वर्षीय दौहित्र आर्यकुमार (पुत्र डा० राजनारायण शर्मा बी०ए०एम०एस०) के उपनयन वेदारम्भ सस्कार के अवसर पर ९ व १० मार्च १९८७ को स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी के प्रवचन संयम-नियम, संस्कार और सृष्टि रचना पर हुये। स्वामी जी ने संस्कार कराते हुये पं० छेदालाल जी द्विवेदी को वैदिक पुरोहित बनने की प्रेरणा दी।

लालमन आर्य जयन्ती समारोह

महान् समाजसेवी लालमन आर्य जी की ११वी जयन्ती लालमन आर्य पार्क माडल टाऊन हिसार में ५ अप्रैल को प्रातः ९-०० बजे भव्य रूप में मनाई गई।

सूचना

श्री उदयनारायण शास्त्री जो आर्य समाज "सी" ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली में चन्दा लाने हेतु सहायक के रूप में कार्य कर रहे थे उन्हें समाज की सेवाओं से अलग कर दिया गया है, क्योंकि उनका व्यवहार तथा उनकी कार्य पद्धति समाज के प्रति-कूल पाई गई है।

अत. सभी समाजें इनकी नियुक्ति करते समय सावधान रहें।

केशवदेव सूद, मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज (वेद मन्दिर) (नहर का पुल ब्लाक १३) पृथ्वीराज चौहान मार्ग, गोविन्द नगर कानपुर का १९वां वार्षिकोत्सव दिनांक १५, १६, १७ मई १९८७ दिन शुक्रवार, शनिवार एव रविवार को आर्य समाज (वेद मन्दिर) में होगा।

—मन्त्री

शोक समाचार

आर्य जगत् को सूचना देते हुए अत्यन्त खेद होता है कि श्री विश्वम्भरनाथ जी भ्राता श्री महात्मा दयानन्द जी तपोवन वालोका हृदयगति रुकने के कारण से १ अप्रैल १९८७ को देहान्त हो गया है। श्री विश्वम्भरनाथ जी वैदिक साधना आश्रम तपोवन मे रहते हुए सपत्नीक साधना मय वानप्रस्थ जीवन व्यतीत कर रहे थे। सार्वदेशिक परिवार वहां प्रभु से उस दिवंगत आत्मा की शान्ति की कामना करता है वहां उनके परिवार को यह दुःख सहने की शक्ति प्राप्त हो ऐसी प्रभु से प्रार्थना करता है।

—पृथ्वीराज शास्त्री
सभा उपमन्त्री

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष में प्राप्त धन

१—श्री मोहनलाल आर्य, मु० मुखीरियान सदर बाजार मथुरा ११)
२—श्री हरिराम सुरेशचन्द्र ८१ काजी टोला बदायूं १५)
३—मन्त्री जी आर्यसमाज अग्रवाल मण्डी टटीरी मेरठ (एक हजार एक) १००१)
४—श्री लालसिंह जी ड्राइवर मसानी कन्स्ट्रक्शन डिवीजन रेवाड़ी २१)
५— श्री धर्मवीर कुमार आर्य जमालपुर सबड़िया ६०)
६—श्री बलराजनाथ ७-दयाल नगर दयाल बाग आगरा १००)
७—श्री प्रधान जी नगर आर्यसमाज दयानन्दाश्रम केसरगंज अजमेर १०१)
८—श्री धनवन्तरसिंह कोहनूर भवन डलहौजी जि० चम्बा (हि०प्र०) २०००)
९—श्रीमती सुशीलादेवी जी नैय्यर हरी निवास हिसार ५०१)
१०—हनुमान मन्दिर रामपुरा कालोनी यमुना नगर अम्बाला ११)
११—भोला करियाणा स्टोर रामपुरा कालोनी मथुरा नगर अम्बाला ३१)
१२—मन्त्री जी आर्यसमाज हरपुरी तहसील गुन्नौर जि० बदायूं १०१)
१३—श्री चिरञ्जीलाल जी गजाधरपुर द्वारा आ०स० हरफरी बदायूं १०१)
१४—रजपुरा द्वारा आर्यसमाज हरफरी बदायूं १०१)
१५—परमानन्द नगर डाकपाल हरदोई ११)
१६—श्री जगदीश प्रसाद भारद्वाज आराकशा गली रामनगर दिल्ली २०)
१७—श्री भगवतसरन रस्तोगी अखिल फार्मेस्यूटिकल्स कालसैन रोड बदायूं ५०)
१८—श्री स्नातक डा० रमेशचन्द्र आर्यकृत फतपुर बदायूं ५०)
१९—श्री डी० डी० पुरी चैरिटी ट्रस्ट सरस्वती भवन नई दिल्ली १०००)
२०—श्री विक्रमादित्या भार्गव द्वारा आर्यसमाज लश्कर ग्वालियर ११)

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष हेतु आर्यसमाज मन्दिर तिलहर, शाहजहांपुर उ० प्र० द्वारा एकत्रित दान की सूची

१—श्री भुवनेश्वरसिंह आदि श्यानपुर ३६)
२— श्री पातीरामसिंह आदि तिलहर २९)
३—श्री बाबूराम द्विवेदी आर्य मित्रपुर बसवा २५)
४ श्री रामपालसिंह आदि नगरायाजी ११)
५—श्री कृपालसिंह जी सरोवर नगर ६)
६— राम बहादुरसिंह जी ढका २)
७—अध्यापक गण इन्टर कालेज निमोही ६)
८ - श्री ओमप्रकाश जी इन्टर कालेज निमोही ५)
९— श्री रघुनन्दर प्रसाद जी बैंक आफ बड़ौदा निमोही ५)
१०—अध्यापक गण पाठशाला पिपरी २४)
११—श्री मानवेन्द्र जी दुर्गाप्रसाद जी पिपरी ३)
१२—श्री रामपालसिंह जी श्री राजपालसिंह जी पिपरी २०)
१३—श्री नवाबसिंह जी बनवारीलाल जी पिपरी १०)
१४ - श्री रामभरोसेलाल त्रिवेदी पिपरी १०)
१५—श्री वेदप्रकाश आर्य दातागंज तिलहर ११)
१६—श्री दासीराम आर्य कटरा ५)
१७—श्री सुरेशचन्द आर्य कटरा ५)

शुद्धि समाचार

दिनांक—१२-२-८७ को श्री देशपाल दीक्षित जी एवं महन्त रामरेखा-धाम के सहयोग से आर्यसमाज सिमडेगा बिहार द्वारा ३ परिवारों के ९ सदस्यों को हिन्दू धर्म मे दीक्षित किया गया।

शोक समाचार

सार्वदेशिक प्रेस के कर्मठ व्यवस्थापक श्री बाबूरामजी शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती का दिनांक ३ अप्रैल को अचानक देहावसान हो गया है। हम दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना व शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान कराने की कामना करते हैं। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

—सम्पादक

नया सबेरा लाएं

वेदो के इस दिव्य देश मे, फैला आज अन्धेरा,
रहा नही है मानवता का, सुन्दर सुखद बसेरा।
जाने पुनरपिकब आएगा अब तो नया सबेरा॥
दानवता के तिमिर जाल ने महिमण्डल को घेरा।
शत-शत दीपक जला ज्ञान के, नया सबेरा लाए॥

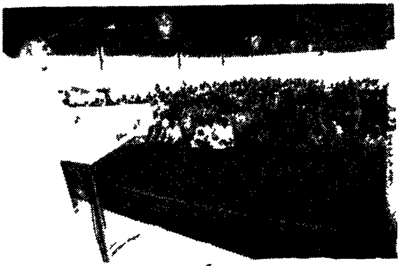
भ्रातृ भाव-समता-समृद्धि के जाग्रत हो प्रतिमान,
फिर से गूंजे इस धरती पर देवगुणो का गान।
लोभ मोह मद मत्सर छूटे दूर हटे अभिमान॥
जन-जन को फिर मिले यहा पर सच्चा न्याय महान्।
त्याग-तपो के, दया प्रेम के, अमर तत्व अपनाए॥

ज्ञान उषा की नवल रश्मियो से जग हो आह्लादित,
शीतलता शुचि मिले उन्हे जो रहे अभी तक शापित।
नष्ट प्राय हो तत्वसमीके जिनसे नर अभिशापित।
प्रमुदित हो धरती का कण कण मानवता हो हर्षित॥
भूमण्डल पर मनज मात्र को बन्धन मुक्त कराए॥

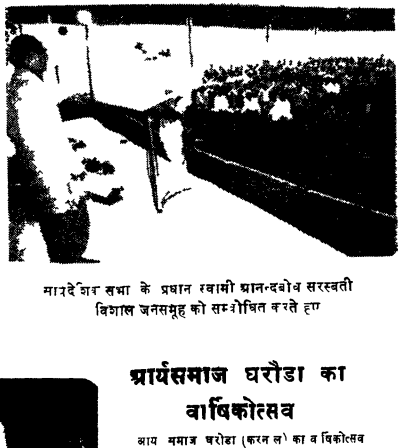
ज्ञान प्रभा के सम्मुखतम का बचे नही अवशेष
शान्ति सफलता के बन्धन मे मानव बन्धु विशेष।
पुण्य प्रभासा प्रभावान हो, अनुपम बने स्वदेश॥
अन्धकार मे भटक रहे, मानव को मार्ग दिखाए।
शत-शत दीपक जला ज्ञान के, नया सबेरा लाए।

—राधश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, मुलतानपुर (उ०प्र०)

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर



राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का उदघाटन करते हुए
केन्द्रीय मन्त्री श्री कृष्णचन्द पन्त



सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए



सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती घरौंडा उत्सव मे
उनके साथ श्री रामचन्द्र राव कल्याणी बैठे है।

आर्यसमाज घरौडा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज घरोंडा (करनाल) का वार्षिकोत्सव २५, २६, २७ मार्च १६८७ को बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भाषण देते हुए कहा, देश की राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी भाषा का अधिक से अधिक व्यवहार अत्यावश्यक है। आर्य समाज की महान उपलब्धियो पर प्रकाश डाला। हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामचन्द्र राव कल्याणी ने हैदराबाद सत्याग्रह के संस्मरणो पर प्रकाश डाला। आर्य समाज के त्याग बलिदान से प्रेरणा लेने का आग्रह किया। श्री सत्यपाल पथिक के प्रेरणात्मक भजनोपदेश हुए। सार्वदेशिक सभा को वेद प्रचार के लिए ११००) की थैली भेंट की।

—मन्त्री

ई शिक्षा नीति पर असन्तोष

देववाणी संस्कृत की रक्षा का संकल्प

दिल्ली ५ अप्रैल ।

सार्वदेशिक आ० प्रति० सभा के सरक्षण मे आज साय ५ बजे आर्यसमाज दीवान हाल मे देश के गण्यमान्य विद्वानो ने नई शिक्षा नीति पर असन्तोष व्यक्त किया । सभा की अध्यक्षता वेदो के महाविद्वान आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने की । सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पण्डित राज-स्वामी विद्यानन्द जी डा० सत्यकेतु विद्यालकार, डा० किशनलाल जी, डा० रघुवीर जी विद्यालकार, डा० धर्मपाल जी, डा० निरूपण वेदालकार, प० सच्चिदानन्द शास्त्री, प० विमलदेव, डा० ब्रह्मदत्त अवस्थी जी, श्री सूर्यदेव जी अमेरिका मे सस्कृत के प्रचारक प० धर्मदेव जिज्ञासु आदि अनेक विद्वानो ने भाग लिया । गोष्ठी मे महत्वपूर्ण विचार विनिमय हुआ। जिससे नई शिक्षा नीति के प्रहार से देववाणी सस्कृत की रक्षा की जा सके । स्वामी आनन्दबोध जी के नेतृत्व मे एक समिनि गठित करने का निश्चय व अखिल भारतीय स्तर पर 'सस्कृत सुरक्षा दिवस' मनाना तै हुआ । समिति का एक प्रतिनिधि मडल देशभर के विद्वानो की ओर से प्रधान मन्त्री राजीव गाधी से भेंट कर सस्कृत रक्षा के सुझाव प्रस्तुत करेगा और नई शिक्षा नीति से सस्कृत को होने वाली हानि से बचाएगा । सभी विद्वानो ने सस्कृत की रक्षा का सकल्प लिया ।

स्वा० आनन्दबोध जी ने अपने प्रेरणास्पद प्रवचन मे आश्वासन दिया कि आर्यसमाज देववाणी सस्कृत की रक्षा मे जी जान से जुट जाएगा । सस्कृत ही तो देश की सभी भाषाओ की मा हैं, हम मा की हत्या कैसे होने देगे ।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक विशाल सस्कृत सम्मेलन आगामी ११ से १६ अप्रैल तक होने वाले विश्व विद्यालय गुरुकुल कागडी के वार्षिकोत्सव पर हो रहा है जिसमे चोटि के विद्वान भाग लेगे ।

आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया अलवर

रजत जयंती महोत्सव का निमंत्रण एवं अपील

अरावली पर्वत उपत्यकाओ की तलहटी मे नदी के किनारे स्थित राजस्थान के एकमात्र आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया का रजत जयन्ती महोत्सव २४ से ३१ मई १९८७ मे सम्पन्न होने वाला है । इस सस्था मे इस समय आर्य महाविद्यालय, वेद प्रचार, गोशाला, कृषि उद्योग, उद्यान तथा योग प्रशिक्षण आदि विभाग एव महिला वानप्रस्थ आश्रम सुचारु रूप से चल रहे हैं । कन्या गुरुकुल मे नि शुल्क शिक्षा प्राप्त करने वाली ५० छात्राए हैं जिनमे से २० छात्राओ का भोजन वस्त्र पाठ्य पुस्तकें आदि का सारा भार गुरुकुल ही वहन करता है । गुरुकुल का समस्त कार्य दानी महानुभावो की सहायता मे ही चलता है ।

छोटूसिंह एडवोकेट	बालदिवाकर हंस	रामनाथ सहगल	सुशीला आचार्या
स्वागताध्यक्ष	मन्त्री	कोषाध्यक्ष	आचार्या

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा श्री सदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली - से प्रकाशित ।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] वर्ष २२ अक १७]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
वैशाख कृ ० ६ स० २०४४ रविवार १९ अप्रैल १९८७

दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ६० पैसे

१० मई १९८७ को संस्कृत रक्षा दिवस

देश भर की धार्मिक संस्थाओं और संस्कृत विद्यालयो के संचालकों से अपील

आपको विदित है कि भारत सरकार की नई शिक्षा नीति १९८६ मे सस्कृत भाषा की ओर उपेक्षा की गई है, जिसके अनुसार सस्कृत पढ़ने की इच्छा करके भी कोई विद्यार्थी विश्व विद्यालय स्तर से नीचे सस्कृत के अध्ययन की सुविधा प्राप्त नही कर सकता है। इसका परिणाम होगा भारतीय सस्कृति और राष्ट्रीय एकता का सर्वनाश। इस वास्तविकता को ध्यान मे रखकर दिनांक १ ३-८७ रविवार को दिल्ली की शिक्षा सस्थाओ के प्रतिनिधियो एव सस्कृत के विद्वानो की एक सयुक्त गोष्ठी मे स्वामी आनन्द बोध जी की अध्यक्षता में एक सस्कृत रक्षा समिति का गठन किया गया है।

इस समिति ने सर्वसम्मति से आगामी दिनाक १० मई १९८७ रविवार को सस्कृत रक्षा दिवस मनाने का निश्चय किया है।

इस अवसर पर आपसे निवेदन है कि आप अपनी शिक्षा सस्थान विद्यालय महा विद्यालय शोध सस्थान, आर्य समाज, सनातन धर्म सभा आदि सस्थाओ मे भारी सख्या में एकत्र होकर सस्कृत की रक्षा के लिए सस्कृत के पठन पाठन की व्यवस्था के लिए सकल्प ग्रहण करे। साथ ही इस आशय का प्रस्ताव पास कर प्रधान मन्त्री, मानव ससाधन विकास मन्त्री एव शिक्षामन्त्री भारत सरकार के नाम एव एक प्रति अखिल भारतीय सस्कृत रक्षा समिति के अध्यक्ष के नाम सार्वदेशिक सभा कोभेजें। साथ ही इस प्रस्ताव को स्थानीय एव अखिल भारतीय समाचार एजेंसियो एव समाचार पत्रो मे प्रकाशनार्थ भेजें।

पंजाब का आतंकवाद नए दौर में

भांति भांति के क्रूर हुकमनामे

—श्री जमनादास अख्तर—

बीडी सिगरेट न तो पियो और न ही बेचो। शराब मास और अडे न तो बेचो और न ही इनका सेवन करो। हजामत करना और कराना जुर्म है। जो इन आदेशो का उल्लघन करेगा, उसे गोलियो का निशाना बना दिया जाएगा पजाब मे यह आदेश उन उग्रवादी सगठनो की ओर से जारी किए जा रहे हैं जो प जाब को खालिस्तान बनाना चाहते हैं। प जाब मे जगह जगह इन निर्देशो के पोस्टर लगाए जा रहे हैं। मांस, शराब और सिगरेट पान बेचने वालो की दुकान जलाई जा रही हैं। इन लोगो पर गोलिया चलाई जा रही हैं।

प जाब का नक्शा बदल देने के इच्छुक यह लोग इस मामले को यहा तक ही सीमित नही कर रहे। नित नए निर्देश और हुकमनामे जारी किए जा रहे हैं। एक पोस्टर में कहा गया है कि लडकिया न तो साडी और न ही जीन पहन सकती है। लडके भी पेंट नही पहन सकते।। दर्जी पट और जीन सी नहीं सकते। इस निर्देश का उल्लघन करने वालो को गोलियो का निशाना बना दिया जायेगा। दुकानदारो को एक पोस्टर मे हुकम दिया गया है कि वे साड़िया बेचना छोड दे। ऐसा नहीं करेंगे तो उन्हें सोध दिया जायेगा। आमतौर पर हत्या के लिए आतकवादी सोध देना के शब्द का इस्तेमाल करते हैं। स्कूलो और कालेजो के मुख्य अध्यापको स कहा जा रहा है कि वह विद्यार्थियों को पतलून पहनने से रोक दे। लडकिया केसरी दुपट्टे, श्वेत कमीज और सलवार ही पहने। यदि इस हुकम पर सख्ती से अमल न कराया गया तो गोलियो का इस्तेमाल किया जायेगा। दहेज लेने व देने वाले को सजा दी जाएगी। दहेज जला दिया जायेगा। कलाकार विवाहो पर गीत नहीं गा सकते। यह फैसला उग्रवादियो के सगठन करेंगे कि कौन से गीतो के कैसेट बिकें और कौन से जला दिए जायें। सरकार नही बल्कि प थ के यह तथाकथित रक्षक फैसला करेंगे कि कौन से गीत अश्लील हैं। बरातो में झगडा डालने वालो को सजा दी जायेगी।

उग्रवादी अकाली दल के नेता सरदार अमरेन्द्र सिंह भी इन हुकमनामो से परेशान दिखाई देते है। उन्होने एक बयान मे कहा कि सामाजिक सुधार के लिए हिंसा का प्रयोग नही करना चाहिए उन्होने यह भी कहा कि यह लोग बल पूवक लोगो का धम परिवतन कर रहे हैं। सिख गुरुओ ने इसी का विरोध करने क लिए ओरगजेब से टक्कर ली थी। परन्तु आज यही हरकत धम प्रचार की आट लेकर प जाब मे की जा रही हैं। हत्या की धमकिया देकर अमृतपान कराया जा रहा है। पोस्टरो द्वारा धमकी दी गई है कि जो व्यक्ति राधा स्वामियो के सत्सग मे या देवी के जगरातो मे हिस्सा लेगा उसे गोलियो का निशाना बना दिया जायेगा।

मेरी तौबा

लदन से प्रकाशित होने वाले खालिस्तान समथक स प्ताहिक देस परदेस' के सम्पादक सरदार तरसेम सिंह से फोन पर मेरी बातचीत हुई। उ होने कहा कि पोस्टरो द्वारा जो यह हुकमनामे जारी किए जा रहे हैं उनकी मोजूदगी म मैं प जाब मे जाने का खतरा मोल नही ले सकता क्योकि यह लोग मुझे भी गोलियों का निशाना बना दे गे। सुरजीत सिंह जालधरी प्रमुख पत्रकार और कवि हैं। वर्षो से ब्रिटेन मे ही रह रहे हैं। उ होने लदन के ही एक प जाबी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक - सच्चिदानन्द शास्त्री

वेदों में विज्ञान

अन्तरिक्ष विज्ञान में गन्धर्व

ले० श्री छैल बिहारीलाल गोयल हाथरस

वेदो मे मूलत विज्ञान का एक अदम्य स्रोत हैं और चारो ही वेद पूर्णत एक वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं जो एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। आधुनिक विज्ञान मे अन्तरिक्ष विज्ञान विकास की अग्रसर है किन्तु हमारे वेदो मे इसका पूर्णत विकास करके वेदो मे भर दिया गया है।

अन्तरिक्ष विज्ञान के लिए सामवेद पूर्वार्चिक के मन्त्र स० ३२० 'नाके सुपर्णमुप" मे अन्तरिक्ष विज्ञान के लिए एक विद्या का बीज डाला गयी है। इसका विस्तार सामवेद १८४६ से १८४८ वाले त्रिक मे विस्तार किया गया है। इसके ऋषि वेन हैं, देवता इन्द्र, छन्द त्रिष्टुप, इस त्रिक मे अन्तरिक्ष से सम्बन्धित अनेकानेक विज्ञान के सिद्धान्त एक-एक शब्द में दिये गये है। इनका और अधिक विस्तार ऋग्वेद के मण्डल १० के सूक्त १२३ मे मन्त्र स० ६ से ८ तक के वर्ग मे किया गया है तथा इस विद्या का अथर्ववेद १८ । ३ । ६६ मे भी विधान है। इसमें मुख्यत हमको गन्धर्व विज्ञान को को लेकर चलना हैं। इस विद्या से सम्बन्धित कुछ सदर्भ त्रैतीय ब्राह्मण २ । ५ । ८ । ५ त्रै० ब्रा० ६ । ३ । १ मे भी कोई सिद्धान्त है। इसी तरह से ए० ब्रा० ४ । ६ । २२ मे भी सग्रहीत किया गया है।

मेधातिथि ऋषि ने गन्धर्व शक्ति के सन्दर्भ मे ऋग्वेद ८ । १ । ११ से १५ वाले वर्ग मे अन्तरिक्ष विज्ञान से सम्बन्धित सिद्धान्तो पर प्रकाश डाला है। इसका देवता इन्द्र (विद्युत), छन्द त्रिष्टुप, स्वर. धैवत है। यह प्रकरण सामवेद मन्त्र स० २४४, अथर्ववेद १४ । २ । ४७, जै० आरण्यक ४।२०।१, है। शतपथ ब्राह्मण ६ । १० । १, आश्वलायन श्रौत सूत्र २१ । ५ । ३, तथा अथर्ववेद २० । ११६ द्वारा वर्णित है।

पवित्र ऋषि ने गन्धव की या अन्तरिक्ष की गन्धर्व शक्ति के लिए ऋग्वेद मण्डल ९ सूत्र ८३ एक से पाच वाले वर्ग में प्रकाश डाला है। इस प्रसग में पृथ्यादि शक्ति का ग्रहण गन्धर्व कहलाया गया है। इसके अनेकानेक सिद्धान्त इस प्रसग मे दिये गये हैं। इन प्रसग का सदर्भ सामवेद ५६५ ८७५ से ७७, त्र० आरण्यक १ । ११ । १, तै० ब्रा० १ । २ । ८, ए० ब्रा० ४ । ४ । २० भी कुछ सम्बन्ध है।

त्रय ऋषिगणो ने आपने ऋग्वेद मण्डल ९ ८६ । ३६ से ४० वाले प्रसग मे गन्धर्व विज्ञान को पृथ्वी को धारण करने वाली शक्ति से सम्बन्धित विभिन्न सिद्धान्तो का वणन किया है। यह प्रसग सामवेद ९५५ से ५७ तक के प्रसग द्वारा जुडा हुआ है।

परमेष्टि प्रजापति ऋषि ने भी गन्धर्व शक्ति का विधान यजुर्वेद के अध्याय २ के मन्त्र स० १ से ६ वाले प्रसग मे पृथ्वी को धारण करने वाले प्रसग मे प्रकाश डाला है। इसका देवता आग्ने, छन्द-त्रिष्टुप, स्वर धैवत है।

बृहस्पति ऋषि ने यजुर्वेद अध्याय ९ के १ से ४ वाले प्रसग में भी गन्धर्व शक्ति के विभिन्न सिद्धान्तो के समन्वय करने का प्रकाश डाला है। इसी तरह से इन्ही ऋषि ने अध्याय ९ के २ ने ९ वाले प्रसग में भी गन्धर्व शक्ति का विधान किया है।

प्रजापति ऋषि ने यजुर्वेद का अध्याय ११ के १ से ११ वाले प्रसग में गन्धर्व शक्ति के सिद्धान्तो को समन्वय करने के सिद्धान्त दिये हैं। इसका देवता सविता है। इन सिद्धान्तो का और अधिक विस्तार ऋग्वेद १० । १३ । १, और ५ । ८१ । ३ वाले प्रसगो मे भी है। तथा यजुर्वेद ५ । १४, और ३७ । २ मे भी इस सदम में प्रकाश डाला गया है। यह प्रसग त्रै० स० ४ । १ । १ एक से २ तदा १ । २ । १३ । १ द्वारा भी वेद क अ य स्थलो स जो [illegible]

वरुण ऋषि ने यजर्वेद बारहव अध्याय के २८८ ९८वें मन्त्र वाल प्रसग म वैदक विद्या से सदभित ग धव विद्या के सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रसग ऋग्वेद १० । ९७ । २१ से २५ वाले पसग से जुडा हुआ है।

विश्वकर्मा ऋषि ने यजुर्वेद अध्याय १७ के २५ से ३२ वाले चौथे अनुवाक मे गन्धर्व शक्ति को प्रयोग करने के सिद्धान्त दर्शाये हैं।

देवा ऋषि ने भी यजुर्वेद अध्याय १८ के ३८ से ५० वाले अनुवक मे गन्धर्व शक्ति के समन्वय करने के विभिन्न सिद्धान्त दर्शाये हैं।

भार्गवो जमदग्नि ऋषि ने २९वें अध्याय के गन्धर्व शक्ति के द्वारा पृथ्वी को रोकने के विभिन्न सिद्धान्त दर्शाये हुए हैं।

नारायण ऋषि ने यजुर्वेद तीसरे अध्याय के प्रथम अनुवाक के ६ मन्त्रों में पृथ्वी को धारण करने वाली शक्ति का दिग्दर्शन कराया है। यह प्रसग ऋग्वेद ५ । ८२ । ३, यजुर्वेद ३६ । ३, ३ । ३५, २२ । ९, सामवेद १४ से ६२, ऋग्वेद १ । २२ । ७, मै आरण्यक १० । २ । १, तथा १० । १० । २, त्रै० ब्रा० २ । ४ । ६ । ३, द्वारा एक दूसरे से सदर्भित है।

इस तरह से गन्धर्व शक्ति के चारो वेदो मे अनेकानेक प्रसग मिलते हैं। इस शक्ति के द्वारा पृथ्वी और अन्य लोक लोकान्तर को स्थिर करने वाला सिद्धान्त दर्शाया गया है। अगर हमारे यहा के विद्वान इसको एक वैज्ञानिक ग्रन्थ मानते हुए वेदो का अध्ययन करें और अध्ययन से निकलने वाले परिणामों को आधुनिक विज्ञान के वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत करें तो इस प्रकृति के बहुत अधिक रहस्यो को प्राप्त किया जा सकता है।

अन्तरिक्ष विज्ञान मे गन्धर्व शक्ति पर शोध कार्य हेतु वेदो मे कुछ स्थल

ऋग्वेद १ । २२ । ११-१५, १ । १६३ । १ ५, २ । २२ । ११-१४,
८ । ११-१५, ९ । ८३ । १-५, ९ । ८६ । ३६ ४०, ९ । ११३ । १ ५, १० । ११ । १ ५, १० । ८५ । ४०-४१ १०।१२३।६-१०, १०।१३९।१-६, १० । १३६ । १-७, वर्ग क्रम देखना चाहिये।

सामवेद ३२०, २४४, ५६५, ८७५-७७, ९५५-५७, १८४७,

यजुर्वेद १ । ३, वाला पूरा अनुवाक क्रम देखना चाहिये २ । ३, ९ । १, ९ । ७, ११ । ७, १२ । ९८, १८ । ३८-४-२, १७ । ३२, २४ । ३७, ३० । १, २९ । १३, ३२ । ६, ३३ । ४७, ३० । ८,

अथर्ववेद २ । १ । १, २ । २ । १ ५ ४ । ३७ । ४-१२, ७ । १०९ । ३, ८ । ७ । २१, ८ । १० । ५-८, ६ । ८० । १, १० । ९ । ९, ११ । ५ । २, ११ । ६ । ५, ११ । ९ । १६, १२ । १ । २३, १२ । १ । ५०, १४ । २ । ४, १७, १८ । ४०, ४८, ३५, २० । ११६ । १, २, २० । १२८ । ४, १३ । १ । २१, १९ । । ५ । ५, आदि तैत्तरीय संहिता ४ । ५ । ७ । १, तैत्तरीय आरण्यक १ । ११ । १, ३ । ११ । ११ ४ । २० । १ ४ । ११ । ५, ७, १०, ५ । ९ । २२, १९ । ३२, ६ । ३ । १ १० । १ । ३, १० । २० । १

तैत्तरीय ब्राह्मण २ । ५ । ८ । ५ ताडय ब्राह्मण २ । २ । ८, कात्यायन श्रौत सूत्र ३५ । ३ । ३, तैत्तरीयोपनिषद २ । ८, १०, छान्दोग्य उपनिषद २ । २१ । १,

सम्पादकीय

संस्कृत रक्षा : कमर कसो !

भारत सरकार के शिक्षा विभाग मे जो लोग सत्ता सम्पन्न बैठे हैं उन्हें भारतीय संस्कृति व सभ्यता से कितना प्रेम है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण यह है कि भारतीय भाषाओ की जननी देववाणी संस्कृत पर ही जडमूल से प्रहार कर दिया है। उसे अंग्रेजी के महत्व के लिए हटा दिया गया है। भारतीय संविधान मे संस्कृत को भारत की १५ भाषाओ मे जो सम्माननीय स्थान प्राप्त था वह भी समाप्त कर दिया है। अंग्रेजी भाषा को संविधान रचयिताओ ने केवल १५ वर्ष तक के लिए व्यवहार की भाषा, मान्यता दी थी। अब उसे शिक्षा का आवश्यक अंग बना दिया गया है। ऐसा लगता है कि २१ वी शताब्दी का बहुश्रुत नारा भारत में काले अंग्रेजो की ही तूती बोलने का साधन बनेगा। भारतीय संस्कृति व सभ्यता जिसे मैकाले की योजना नहीं नष्ट कर पाई और जिसके विरुद्ध एक बार सारे देश ने सास्कृतिक समर जीता था, अब वह फिर भारतीयो के सिर पर चढ कर बोलेगी। भारतीय सभ्यता खतरे मे पड जायेगी।

पिछले दिनो दिल्ली के विद्वानो ने इसके विरुद्ध सघर्ष का आह्वान किया था। आर्य समाज की ही नही बल्कि समस्त हिन्दू जाति की मूलाधार संस्कृत भाषा की यह अवहेलना व अदवामता अब सहन नही होगी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व मे एक समिति का गठन हुआ है जिसकी विधिवत् रचना गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर आगामी सप्ताह मे हो रही है। आशा है एक देशव्यापी आन्दोलन इसी निमित्त प्रारम्भ होगा। आर्य समाजो से निवेदन है कि वे देववाणी संस्कृत की रक्षा के लिए निज कर्त्तव्य पथ पर आरूढ हो जायें। संस्कृत दिवस पर अपने स्थानीय सभी विद्वानो व सामान्य जनता का जनमत सग्रह करें व भारत सरकार की वर्तमान शिक्षा नीति के विरोध मे प्रस्ताव पास करके भारत सरकार को भेजें उसकी प्रतिलिपि सार्वदेशिक सभा को भी अवश्य भेजे। सार्वदेशिक सभा एक विस्तृत योजना इस सम्बन्ध मे बना रही है।

सुविख्यात संस्कृत विद्वान व पं० चारुदेव शास्त्री दिवंगत

आधुनिक पाणिनि के नाम से जाने माने विद्वान पडित चारुदेवजी शास्त्री का हृदय गति रुकने से देहावसान हो गया। इस समय उनकी आयु ९० वर्ष की थी। उनका पार्थिव शरीर रूपनगर स्थित उनके सुपुत्र के आवास पर दर्शनों हेतु रखा गया था। कल निगमबोध घाट पर उनका अन्तिम सस्कार सपन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने शोक सभा मे दिवगत आत्मा के प्रति गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि आर्य जगत् के विद्वान के प्रयाण से महत्ती क्षति हुई है।

श्री स्वामी जी ने कहा श्री चारुदेव जी शास्त्री ने संस्कृत, व्याकरण आदि के कई ग्रन्थ लिखे हैं। उनकी विद्वतापूर्ण लेखन शैली को साहित्यिक क्षेत्र में बड़ा सम्मान मिला है। १९७४ मे उनका सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया गया था। संस्कृत के विद्वानो मे वह सदैव प्रशसा व सम्मान के योग्य रहे हैं। उनकी महान प्रतिभा व व्यक्तित्व के आधार पर बनारस विश्व-विद्यालय द्वारा डी-लिट की उपाधि से उन्हे सम्मानित किया गया था। पजाब सरकार ने भी उन्हें संस्कृत शिरोमणि साहित्यकार घोषित किया था। वह अनेक सस्थाओं के छात्र भी थे। लाहौर और अम्बाला मे डी० ए० वी० कालेज मे अध्यापक का कार्य भी करते थे। आर्यसमाज के साथ उनका गहरा सम्बन्ध था। उनके निधन से संस्कृत का एक महान विद्वान हमने खो दिया है।

शोक सभा मे दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की गई।

— सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री

आह ! पं० चारुदेव जी !

हमे यह लिखते हुए गहरी पीडा का अनुभव हो रहा है कि वर्तमान काल के पाणिनी की उपाधि से सुपरिचित आचार्य प्रवर प० चारुदेव जी शास्त्री कालकवलित हो गए।

प० चारुदेव जी का पूर्व नाम श्री चरणदास था। वे होशियारपुर जिले के टकमुख टाण्डा ग्राम मे एक कुलीन ब्राह्मण परिवार मे जन्मे। लाहौर में शिक्षा पाई चरणदास एम० ए० के नाम से उन्होने संस्कृत शिक्षा की उपयोगी पुस्तकें रची। बाद मे आपने अपना नाम परिवर्तन कर चारुदेव रखा।

जिन्होने लाहौर पजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण सैकडों-हजारो छात्रो का समूह देखा है वे दिवगत आचार्य प्रवर की प्रतिभा से प्रभावित हुए बिना नही रह सकते। आज लाहौर पाकिस्तान मे चला गया है परन्तु अविभाजित पजाब का लाहौर संस्कृत का काशी कहलाता था। जहा जर्मन स्कालर श्री एफ० लफ० सी० वुलनर के कुलपतित्व में संस्कृत भाषा के अनेक उच्चकोटि के सेवक पैदा हुए थे। उन मणिरत्नो मे आचार्य चारुदेव जी उज्ज्वलतम रत्न थे जिन्हें अपने अध्यापनकाल मे विद्यार्थी व्याकरण का सूर्य भी कहा करते थे। उनका विद्यार्थियो के प्रतिस्नेह, देववाणी संस्कृत की गरिमा सम्वर्धन के लिए समर्पण दश भर के संस्कृत छात्रो को उनकी साधना स्थली ओरिएण्टल कालेज मे खींच लाती थी। ओरिएण्टल कालेज लाहौर का ऐसा प्राच्य विद्याओ का केन्द्र था जहा अरबी फार्सी संस्कृत पजाबी की अध्ययन व्यवस्था थी परन्तु विद्यार्थियो की सख्या की दृष्टि से बहुमत संस्कृत के विद्यार्थियो का था।

पण्डित चारुदत्त जी का चिन्तन मनन शुद्ध मानवीय था। वैदिक वाङ्मय के प्रगाढ पण्डित होने के कारण वे सभी के पूज्य माने जाते थे, परन्तु उन्होने कभी किसी से रागद्वेष नही रखा। वे सचमुच सरस्वती के उपासक थे विद्या दान ही उनका एक मात्र व्यसन या व्यवसाय था।

डी० ए० वी० कालेज मे प्रोफेसर रहते हुए आर्यसमाज को भी महान सेवा उन्होंने की।

९० वर्ष की आयु मे भी वे सदा ज्ञान की साधना मे ही लगे रहे।

भारत सरकार ने उन्हे सम्मानित किया। उन्हें सम्माननीय डीलिट की डिग्री भी प्रदान की गई परन्तु उनके स्वभाव की सबसे बडी विशेषतया यह थी कि वे विद्वानो मे मुकुट बनकर व विद्यार्थियों मे पितृवत व्यवहार करते थे। अनेक सस्थाओ से उनका सम्बन्ध रहा परन्तु आर्यसमाज की सस्था के प्रति उनकी आत्मीयता अगाध थी। वे कहा करते थे कि यह तो मेरी मातृ सस्था है। आर्यसमाज के अनेक विद्वान उनकी दिव्य सेवाओं के लिए सदा ऋणि रहेंगे।

हम सार्वदेशिक के द्वारा अपनी हार्दिक सम्वेदना प्रस्तुत करते हैं। प्रभु उनके शोक सन्तप्त परिवार एव उनके शिष्यो को धैर्य व शान्ति प्रदान करें।

गैर सरकारी कमेटी बैठक ३० अप्रेल ८७ को

हैदराबाद सत्याग्रह (१९३८ ३९) सम्बन्धी गैर सरकारी कमेटी की आगामी बैठक दिनाक ३० अप्रैल १९८७ को प्रात १०-३० बजे गृहराज्य मन्त्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही के कार्यालय मे नार्थ ब्लाक, नई दिल्ली मे होगी। समिति के सभी सदस्यो से निवेदन है कि उक्त बैठक मे यथा समय उपस्थित होने का कष्ट करें।

—आनन्दबोध सरस्वती
चैयरमैन
गैर सरकारी कमेटी

जन्म दिवस के अवसर पर

पंडित रामचन्द्र जी देहलवी

—कविरत्न जगदीश प्रसाद एरन, नीमच

स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी, आर्य जगत के महान तार्किक शास्त्रार्थ महारथी श्री पंडित रामचन्द्र जी देहलवी, प्राय देहलवी जी के नाम से सम्बोधित किये जाते थे। आपकी आर्य जगत मे ही क्या सारे भारत में अपनी विद्वत्ता, तार्किक शैली, शीरी जुबानी, अथक परिश्रमी व धुन के धनी होने के कारण प्रसिद्धी थी। आप अंग्रेजी, हिन्दी संस्कृत अरबी तथा फारसी के विद्वान थे। आपने वैदिक साहित्य के साथ साथ हिन्दू व जैन सनातनी, ईसाई व मुसलिम धर्म का भी पूर्ण अध्ययन किया था।

इस महान विभूति का जन्म सन १८८१ मे रामनवमी के पवित्र दिन नीमच केन्ट (म० प्र०) के नया बाजार स्थित छोटे से मकान मे हुआ था। आपके पूज्य पिताजी श्री मुंशी छोटेलाल जी धार्मिक प्रवृत्ति के थे। आपकी माता जी श्रीमती रामदेई दिल्ली की रहने वाली थी। प० रामचन्द्र जी को आर्यसमाजी बनाने का श्रय उन्ही को है आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा नीमच मे ही प्राप्त की, बाद मे आप इन्दौर उच्च शिक्षा लेने चले गये।

१८ वर्ष की अल्पायु मे ही आपका विवाह दिल्ली निवासी श्रीमती कमला देवी नामक विदुषी कन्या से हो गया था। जीवकोपार्जन के लिए आपने नीमच मे ही एक प्राइमरी स्कूल मे अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर दिया, किन्तु परमात्मा को जिस विभूति से महान कार्य करने हों, वह एक जगह कैसे ठहर सकती है। गृह कलह के कारण कुछ दिन बाद आप अपनी ससुराल देहली आ गए।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी न थी, फिर भी धर्मप्रचार के लिए कहीं भी जाते तो तागा खर्च तक अपनी जेब से दे देते थे। धर्म प्रचार की ऐसी लगन थी कि लगातार १५ वर्ष (सन १९१० से १९२५ तक) दिल्ली के फव्वारे तथा गांधी ग्राउण्ड पर आप वैदिक धर्म के सत्यस्वरूप पर व्याख्यान देते रहे। प्रतिदिन हजारो की संख्या मे उपस्थिति रहती। धुन के इतने पक्के थे कि पुत्र तथा पत्नी के देहावसान के दिन भी आपने कथा बन्द न रखी। इस काम मे पण्डित जी की तार्किक शैली, प्रत्युत्पन्नमति व अनुपम कार्य प्रणाली का बोलबाला सारे भारत मे हो गया। विद्या ग्रहण करने की ऐसी तड़प थी कि नीमच में आप तथा आपके मित्र श्री रामनिवास जी एरन (मौलवी) एक गूंगे मौलवी से कुरान पढ़ा करते थे। उस हाफिज को कन्धो पर बैठाकर रोज जल्दी सुबह मस्जिद से ले आया करते थे तथा श्री रामनिवास जी कन्धो पर ही बैठाकर रोज जल्दी सुबह मस्जिद में छोड आया करते थे। इसी प्रकार बडी कठिनाई से आपने बाइबिल व जैन ग्रन्थो का भी अध्ययन किया। आप जब सस्वर आयत पढते थे, तो अच्छे २ मौलवी दांतो तले उंगली दबा लेते थे। फिरोजपुर वार्षिकोत्सव पर तो इसीलिए एक पठान महिला ने आपके स्वर पर प्रसन्न होकर १० रु० भेंट किए थे।

आपका पहला शास्त्रार्थ बाडा हिन्दू राव मे मुसलमानो से हुआ, जिसके निर्णायक न्यायाधीश रेवरेन्ट मिस्टर जुडास थे। विजय श्री का सेहरा आपके मस्तक पर बधा। आप वैदिक शास्त्रार्थ समर मे "भीम" नाम से विख्यात हुए। इसके बाद आपने जीवन समर मे भारत के प्रत्येक शहर मे घूम घूमकर विविध मतावलम्बियो से शास्त्रार्थ किए। आपकी सफलता का राज यह था कि आपको सभी सिद्धान्तो का सही व गम्भीर अध्ययन था। आप दूसरे मतावलम्बियो के महापुरुषो को सदा सम्मान सूचक शब्दो से सम्बोधित करते थे तथा जैसा दूसरो को उपदेश देते स्वय के जीवन में भी वैसा ही आचरण करते थे।

लगभग ८० वर्ष की आयु तक घूम घूम कर आप देशवासियो को राष्ट्र-भक्ति की प्रेरणा देते हुए धर्म ध्वजा फहराते रहे। इसके बाद एक रिक्शा दुर्घटना के कारण आपके बाए हाथ मे कम्पन होने लगा और पण्डित जी लगातार कमजोर होते चले गये।

अक्तूबर १९६७ में ही आपकी रुग्णावस्था का हाल सुनकर सार्वदेशिक सभा के वर्तमान प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री ओमप्रकाश त्यागी व वैद्य श्री प्रहलाद जी आपको देहली ले आये।

लगातार ३ माह तक मृत्यु से संघर्ष करते रहने के बाद ३ फरवरी को यह ज्योतिमय दीप बुझ गया। आल इण्डिया रेडियो से यह दुखद समाचार सुनकर सारा आर्य जगत् स्तब्ध रह गया।

वैदिक धर्म का प्रबल प्रहरी शास्त्रार्थ केहरि, महर्षि का अनन्य भक्त, ओ३म का जाप करता हुआ 'ओ३म मे विलीन हो गया। निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक पद्धति से आपका अन्तिम सस्कार किया गया। ●

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रान्तीय संचालक गण ध्यान दें

नई दिल्ली। समस्त भारत के प्रान्तीय आर्य वीर दल संचालकों अधिष्ठाताओं को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि, प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) की पुण्य भूमि में आर्य वीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हो रहा है। यह प्रशिक्षण शिविर ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा से ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी २०४४ विक्रमी तदनुसार ११ जून से २५ जून १९८७ तक लगाया जा रहा है।

इस शिविर में वही वीर भाग ले सकेंगे जिन्होंने पूर्व काल में कम से कम दो शिविरों मे भाग ले लिया हो और उनकी आयु किसी भी अवस्था में १८ वर्ष से कम न हो। शैक्षणिक योग्यता भी शास्त्री अथवा दशम कक्षा से कम नहीं होनी चाहिए।

प्रत्येक प्रान्त को अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक ५ वीर शिक्षक प्रशिक्षण शिविर मे भेजने का अधिकार होगा।

शिविर में भाग लेने के इच्छुक वीर अपने अपने अधिष्ठाता अथवा प्रान्तीय संचालक से सस्तुति कराकर अपना प्रार्थना-पत्र आचार्य, गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक-को भेज दें जिससे उनके भोजन, आवासादि का समुचित प्रबन्ध किया जा सके। प्रतिलिपि सार्वदेशिक आर्य वीर दल दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली ११० ००२ को भी अवश्य भेजनी होगी।

— बाल दिवाकर हंस
प्रधान संचालक

हमारी शिक्षा नीति क्या हो?

—श्री गंगा प्रसाद विद्यार्थी, एम. ए. जबलपुर

शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा के मुख्यतः चार उद्देश्य हैं –(१) ज्ञानवान बनाना, (२) निर्भय, स्वस्थ व सबल बनाना, (३) सच्चरित्र व सुसंस्कार सम्पन्न बनाना, और (४) आजीविका कमाने योग्य बनाना। ज्ञान ही मुख्य बल है। बल सम्पन्न व्यक्ति ही निर्भय होता है। सच्चरित्रता मनुष्य का सर्वोत्तम गुण है। मनुष्य में संस्कार सम्पन्नता की गंध उसके प्रत्येक व्यवहार, वार्तालाप और कार्य से आती है। क्षुधा पूर्ति एक बहुत बड़ी दैनिक आवश्यकता है जिसके लिए प्रत्येक व्यक्ति के पास उसकी आजीविका के साधन होने ही चाहिए।

मां का महत्व

तीन ही गुरु होते हैं—माता, पिता और आचार्य। मा ही इस जीवन की सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण गुरु है। उसके द्वारा बच्चे का शिक्षण उस दिन से ही प्रारम्भ हो जाता है, जिस दिन उसकी कुक्षि मे गर्भ स्थापना होती है। मा जैसा सोचती, विचारती है, जैसा खान-पान व व्यवहार करती है, उस सबका प्रभाव उसके गर्भस्थ और उसका दूध पीते बच्चे पर पड़ता है। उसका यह प्रभाव जीवन भर अमिट रहता है। यही वह समय है कि मा चाहे तो बच्चे को वीर बना दे या कायर, योगी बना दे या भोगी, कर्मठ बना दे या आलसी। कहते हैं कि अष्टावक्र की मा मदालसा अपने गर्भस्थ शिशु से प्रतिदिन बातें करते हुए उससे अनेक बार कहती थी—"शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि, निरंजनोऽसि, संसारमाया परिवर्जितोऽसि"। और उसका प्रभाव यह हुआ कि उसकी आठो संतानें आत्म ज्ञानी व वैराग्यवान हुई। यह एक प्रक्रिया है, इसे आकस्मिक घटना नही कहा जा सकता है। मा द्वारा शिक्षण के महत्व को मनु ने इस प्रकार कहा है—

> उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणा शत पिता।
> सहस्त्रतु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते ॥ मनु० २/१४५

अर्थात गौरव-गरिमा और प्रभाव मे दश उपाध्यायो से एक आचार्य, सौ आचार्यों से एक पिता, और पिता से हजार गुना माता बढ़कर है। इस प्रकार माता का मान उपाध्याय अर्थात् शिक्षक से दस लाख गुना बढ़ कर है।

शिक्षा संस्कार और चरित्र

जन्म से भी पूर्व बच्चे की शिक्षा का विधान योरोप, अमेरिका और रूस में अभी तक तो नही है, क्योंकि वे इस विज्ञान से अनभिज्ञ हैं। यह उत्कृष्टता तो भारत वर्ष मे ऋषि मुनि प्रणीत शिक्षा विधान मे ही है। भारतवर्ष के जो विद्वान विदेशियो के पिछलग्गू, नकलची, और परमुखापेक्षी हैं वे तो विषय में "कूप मण्डूक" ही हैं। हमें उनका अनुसरण करते हुए भी उनसे कुछ भिन्न और श्रेष्ठतर करना चाहिए, तभी हम उन से बढ़कर उन्नति कर सकेंगे।

आर्यों (हिन्दुओ) के १६ संस्कारो में से प्रथम तीन (गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोनयन) तो बच्चे के जन्म से पूर्व ही किये जाते हैं। जन्मते ही जातकर्म संस्कार होता है, ११ वें दिन नामकरण संस्कार, तीसरे पक्ष मे निष्क्रमण संस्कार, ५ वें मास मे अन्न प्राशन संस्कार और एक वर्ष की वयस् के भीतर ही चूड़ा कर्म संस्कार कर दिए जाते हैं। इस प्रकार आठ संस्कार तो बच्चे को एक वर्ष की आयु पूर्ण करने से पहले ही हो जाते हैं। फिर क्रमश कर्णवेध, उपनयन व वेदारम्भ संस्कार किये जाते हैं। शिक्षा समाप्त होने पर समावर्तन ("कनवोकेशन") और बाद मे आवश्यकतानुसार विवाह वानप्रस्थ व सन्यास संस्कार होते हैं। मरणोपरात शरीर का अन्त्येष्टि संस्कार किया जाता है। अन्य संस्कार शरीर, अन्तःकरण और प्रकारातर से जीवात्मा के भी होते हैं। संस्कारों द्वारा ही व्यक्ति को संस्कार सम्पन्न बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ की जाती है।

यदि हम मनोविज्ञान पूर्ण संस्कार विधान का सहारा लेकर बच्चो को सुसंस्कार सम्पन्न बनायें, तो हमारे देश से सभी चारित्रिक दुर्बलताएं, बहुत ही प्रभावी ढंग से और अत्यल्प समय मे दूर की जा सकती हैं। छोटी-छोटी समस्यायें मिलकर वृहतकाय और दुर्जेय हो जाती हैं। यदि हम उन्हे विभाजित कर दें तो वे क्षीणकाय, अल्प और अल्पशक्ति वाली होकर सहज ही काबू मे आ जाती हैं।

शिक्षा में पिता की भूमिका

प्रत्येक बच्चे के रक्त के प्रत्येक कण मे जो गुण सूत्रो के २३ युग्म (जोड़े) पाये जाते हैं उनमे से २३ अर्द्धांश पिता के शुक्राणु से ओर २३ अर्द्धांश माता के अण्डाणु से प्राप्त होते हैं, जब उनका मिलन होकर गर्भाधान होता है। इन २३ गुणो सूत्रो के मिलन के अरबो भेद हो सकते हैं इसीलिये संसार का प्रत्येक व्यक्ति अन्य सभी लोगो से रंग रूप, शक्ल सूरत और गुणो मे भी भिन्न होता है। ये गुण सूत्र पुष्ट, बलशाली व उत्तम हो इसके लिए माता व पिता दोनो को ही स्वयं बलवान, स्वस्थ, सदाचारी और उत्तम जीवन के आकांक्षी होना चाहिए। इसके लिए आयुर्वेद के ग्रन्थो मे बताए भोजन, छादन, व्यवहार व ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। शिक्षा की नींव ब्रह्मचर्य पर रखने से ही शरीर, अंतःकरण एवं आत्मा निश्चित रूप से बलवान बनते और बलवान रहते हैं। ब्रह्मचर्य के लगातार या अधिक नाश से कालांतर मे ओज, तेज एवं बलक्षीण होकर मनुष्य शक्तिहीन, नपुंसक, तथा पागल तक हो जाते हैं तथा रोगाक्रांत होकर अल्पायु को प्राप्त करते हैं।

शिक्षा में ताड़न का महत्त्व

शिक्षा मे स्नेह और भय दोनो का ही महत्व है क्योंकि बिनु भय होय न प्रीत। महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" के द्वितीय समुल्लास मे शिक्षा विषय पर लिखते हुए पाणिनि के व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी" पर पतञ्जलि के महाभाष्य का एक श्लोक उद्धृत करते हैं:

> सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।
> लालनाश्रयिणो दोषास् ताडनाश्रयिणो गुणाः॥ महा० ८।१।८

अर्थात् जब गुरुजन (माता, पिता व आचार्य) बच्चो की ताड़ना करें तो उनको भलाई ही उनका लक्ष्य हो। इस लिए ताड़ना देने वाले हाथ अमृत से पूर्ण हो, न कि ईर्ष्या या द्वेष रूप विष से युक्त हो। केवल लालन का आश्रय लेने में बहुत दोष हैं और ताड़न का भी आश्रय लेने मे बहुत गुण हैं। "स्वामी जी लिखते हैं माता-पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या द्वेष से ताड़न न करें, किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें।

कोई भी व्यक्ति लालन और ताड़न एक साथ नही कर सकता है। इसलिये अतिशय कोमल हृदया ममतामयी मां यदि लालन करें तो बाह्य संसार की रूक्षता, कठोरता और वैषम्य का अनुभव रखने वाला पिता आवश्यकता पड़ने पर भय युक्त ताड़न भी करें। शुभ भावना होने पर परिणाम भी शुभ होता है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सरकारी धर्म निरपेक्षवाद और आर्यसमाज

रघुवीर सरन आर्य विश्वसेवक, बहजोई मुरादाबाद

भारतीय सविधान मे मूल अधिकारो के साथ ४२ वे सशोधन द्वारा मूलकर्तव्य का एक नया भाग ४ के रूप मे जोडा गया था। (नवम्बर १९४८ में सविधान बनाते समय समाविष्ट मूल अधिकारो मे लगभग २८ सशोधन किये गये।)

यह नया अनुच्छेद (५१ क) ३ जनवरी १९७७ से लागू किया गया।

४२व सशोधन द्वारा सविधान की प्रस्तावना, जिसे बाद मे सशोधित करके "उद्देशिका" कहा गया है, मे भी "पथ निरपेक्ष", "समाजवादी" तथा "अखण्डता" शब्द जोडे गये हैं। इन शब्दों को जोडने से मूलभाव मे कोई अन्तर नही पडता। इन शब्दो से केवल निहित भाव और स्पष्ट हो गये हैं। वर्तमान उद्देशिका (प्रस्तावना) निम्न प्रकार है—

"हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पथ निरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिको को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिये तथा उन सबमे व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढाने के लिए दृढ सकल्प होकर अपनी इस सविधान सभा मे आज तारीख २६ नवम्बर १९४९ ई० (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सवत् दो हजार छ विक्रमी) को एतद्द्वारा इस सविधान को अगीकृत अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

सुप्रीमकोर्ट की राय में हमारा सविधान कुछ ऐसे अविनाशी तत्वो से निर्मित है कि उनमे से किसी एक का भी अभाव उसके मूल स्वरूप को ही परिवर्तित कर देगा। 'सेक्युलरिज्म' भारतीय सविधान के ऐसे ही तत्वो मे से है जो बुनियादी है तथा किसी भी सशोधन द्वारा सविधान के सेक्युलर' चरित्र को बदलना ससद के अधिकार क्षेत्र के बाहर है। सुप्रीमकोर्ट ने यह व्याख्या १९७३ मे केशवानन्द भारती के मुकदमें मे दी थी। किन्तु दलीय बहुमत के आधार पर जनमत की उपेक्षा करते हुए तथा उच्चतम न्यायालय के फैसले की अवहेलना करते हुए भारतीय ससद ने १९७६ मे एक अधिनियम द्वारा सविधान की प्रस्ताविकी मे जहा भारत को 'सम्प्रभुता सम्पन्न, जनतात्रिक गणतन्त्र' बनाने का सकल्प उल्लिखित था वहा 'सम्प्रभुता सम्पन्न, सेक्युलर, समाजवादी, जनतात्रिक गणतन्त्र" बनाने का सशोधन कर दिया? इस समय आपातकाल ने विचार स्वातन्त्र्य को ग्रसित कर रखा था। विपक्ष जेलो मे था जिससे महत्वपूर्ण विषयो पर बहस नितान्त असम्भव थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद की भारतीय राजनीति मे राजनीतिक प्रतिस्पर्धा मे बहस की दिशा सामाजिक आर्थिक कार्यक्रमो की बजाय पार्टियो के "सेक्युलर" और 'साम्प्रदायिक" चरित्र की ओर मोड देना कुर्सी हथियाये रहने के लिये लाभकारी सिद्ध हुआ है। प्रतिद्वन्द्वियो को पटकने का सबसे सरल और कारगर उपाय उन पर साम्प्रदायिकता का लेबल चिपका देना है। सेक्युलरिज्म की यह अवधारणा नकारात्मक है। भारत की राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिये सकारात्मक सेक्युलरिज्म की परिकल्पना को विकसित करने की महती आवश्यकता है। सविधान के बुनियादी ढाचे का मूल सम्बन्धित देश के जीवन दर्शन मे ही खोजना चाहिए। राज्य सस्था को चिरजीवी बनाये रखने के लिए बुनियादी ढाचे को दृढ रखना आवश्यक है। यह तब ही सम्भव है जब ढाचे के आधार स्तम्भ भारतीय जीवन दर्शन के ठोस धरातल पर टिके हो।

भारतीय सविधान में "सेक्युलर" शब्द की कोई व्याख्या नही की गई है। अत उसके "सेक्युलर" चरित्र का अभिज्ञान विभिन्न अनुच्छेदो के परीक्षण से ही किया जा सकता है "सेक्युलर" का शाब्दिक अर्थ है 'शतवार्षिक' / "दीर्घकालिक" / "सांसारिक" / "लौकिक' / "चिरतन" / "युगीन वा युगीय" / "धर्मनिरपेक्ष" लेकिन जो सविधान व्यक्तियो को अन्त करण की स्वतन्त्रता एव धार्मिक विश्वास की आजादी की गारटी प्रदान करता है वह मात्र "लौकिक" विषयो तक सीमित है, ऐसा नही कहा जा सकता है।

सेक्युलर-इस्ट का अर्थ अधर्मवादी/धर्म निरपेक्षवादी है। भारतीय सविधान प्रत्येक व्यक्ति को धर्म प्रचार एव धर्माचरण की स्वतन्त्रता प्रदान करता है। अत यह धर्म विरोधी कभी नही हो सकता है।

सविधान के २७व व २८व अनुच्छेदो के अनुसार सविधान राज्य को किसी धर्म विशेष को प्रोत्साहित करने से वर्जित करता है। जब कि सविधान के २९वे और ३०वे अनुच्छेद धार्मिक अल्पसख्यको को उत्पीडन एव भेदभाव से सरक्षण की पूर्ण आश्वस्ति प्रदान करते हैं।

सविधान के "सेक्युलर" चरित्र को प्रकट करने वाले अनुच्छेदों का सार यह है कि—भारत में प्रत्येक व्यक्ति को सार्वजनिक व्यवस्था, स्वास्थ्य एव नैतिकता की मर्यादाओं के अन्तर्गत धार्मिक विश्वास रखने, धर्म प्रचार एव धर्माचरण करने, धार्मिक सस्थाओं की स्थापना करने एव सचालन करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है, परन्तु राज्य किसी धार्मिक विश्वास पर आधारित नही होगा, राज्य किसी धर्म विशेष को प्रोत्साहित नहीकरेगा और न ही किसी व्यक्ति को किसी धर्म विशेष के उपयोग हेतु कोई टेक्स देने पर विवश करेगा, न तो राजकीय मान्यता अथवा सहायता प्राप्त सस्थाओ मे कोई धार्मिक शिक्षा दी जा सकेगी और न ही किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध धार्मिक शिक्षा दी जा सकेगी और न ही किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध धार्मिक शिक्षा में भाग लेने को विवश किया जा सकेगा, तथा मात्र धार्मिक आधार पर किसी को इन सस्थाओ मे प्रवेश से वचित नहीं किया जा सकेगा और धार्मिक अल्पसख्यको को अपनी पसन्द की शिक्षा सस्थाए स्थापित एव सचालित करने तथा अपनी सास्कृति के सरक्षण का अधिकार भी होगा। सविधान के मान्य हिन्दी रूपान्तर मे 'सेक्युलर" के लिये "पथ-निरपेक्ष' शब्द प्रयोग किया गया है। पथ का तात्पर्य है विशेष उपासना पद्धति तथा पथ निरपेक्ष राज्य का तात्पर्य हुआ ऐसा राज्य जो किसी उपासना पद्धति से जुड़ा न हो। इस-दृष्टि से भारतीय सविधान का "पथ निरपेक्ष चरित्र" एक ऐसा तत्व है जिसे नष्ट नही किया जा सकता है।

सम्प्रदाय का एक अर्थ है परम्परा से चली आई पूजा पद्धति की मानने वाला समूह। साम्प्रदायिक का अर्थहै जो किसी सम्प्रदाय से जुडा हो या उसके हितो का सरक्षण करता है। इस प्रकार 'पथ सापेक्षता' एव "साम्प्रदायिकता" समानार्थी कहे जा सकते हैं। जब कि धार्मिक अल्पसख्यको को अपनी पसन्द की शिक्षा सस्थाए स्थापित करने सचालित करने तथा सास्कृति की सुरक्षा का अधिकार पहले ही प्रदान कर साम्प्रदायिकता को बढावा दिया जा चुका है। भारतीय संसद भवन के एक द्वार लिखा है—

"एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'

यह मन्त्र भारत के समस्त सास्कृतिक एव दार्शनिक चिन्तन का अमृत सूत्र है मन्त्र का बहुधा इसका प्राण है।

संसद भवन में विराजमान भारतीय जन प्रतिनिधि किस मान-सिकता से सोचें यह इसी मन्त्र का सकेत है। अब विविध विचारें

में 'बहुरूपता' दिखाई दे तो वे सोचें कि सत् तत्व तो एक है, बस वर्णन भिन्न-भिन्न है।

धर्म निरपेक्षता का अर्थ है धर्म को राज्य से अलग करना, उसे पूरी तरह व्यक्तिगत विषय बना देना, राजनीति से काटकर उसकी जनविरोधी सामाजिक भूमिका को खत्म कर देना। राजसत्ता पर उसी वर्ग का विशेष अधिकार होता है जिसके हाथ मे उत्पादन के साधन और पूजी होती है। राज्य धर्म का सहारा लेकर सम्पत्तिवान वर्ग के हितों को सुरक्षा प्रदान करता है। पूजीवादी अर्थ व्यवस्था की स्थापना के लिये सामन्ती व्यवस्था को नष्ट करना जरूरी होता है जिससे मशीनो को कच्चा माल, मजदूर, क्रय शक्ति विस्तार, खपत का क्षेत्र मिल सके। लेकिन धर्म पर प्रहार किये बिना ईश्वर के बेटे राजा को समाप्त नही किया जा सकता है। अतः धर्म और ईश्वर पर आक्रमण करने वाले योरोप में पूजीवाद के विकास ने 'धर्म निरपेक्षता' के सिद्धान्त को जन्म दिया। योरोप मे इहलोकवाद के स्थान पर परलोकवाद का प्रचार और अपने साम्राज्यवादी शोषण-उत्पीडन को जारी रखने के उद्देश्य से भारत जैसे उपनिवेशो में जनता को विभाजित करके जनसंघर्षों को कमजोर बनाने के लिये व्यापक स्तर पर धर्म का सहारा लिया जाने लगा। पाकिस्तान के निर्माण के रूप मे भारत का विभाजन धर्म निरपेक्षता में आस्था रखने वाले ब्रिटिश शासन की इसी अन्तर्विरोधपूर्ण ऐतिहासिक नियति का ही परिणाम है।

स्वाधीनता के बाद भारत के संविधान में भी राज्य किसी विशेष धर्म की मान्यता न देकर सभी धर्मों को समान दृष्टि से देखता है, जब कि धार्मिक राज्य किसी एक धर्म पर आधारित नहीं होता, उसमें एक धर्म के नागरिको को विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं जब कि अन्य धर्मावलम्बियो के साथ भेदभाव किया जाता है। ऐसे राज्यो मे अन्य धर्मों के नागरिको पर होने वाले अनाचार को वैधानिक मान्यता प्राप्त होती है।

धार्मिक राज्य के शासक जब शोषण उत्पीडन के कारण प्रतिरोध से घिरने लगते हैं तो वे जनसाधारण की धार्मिक भावनाओं का फायदा उठाकर जनसंघर्षों को निर्मम दमन का शिकार बनाने के लिये राज्य धर्म के अनुयाइयो के पैरो में गुलामी की बेडिया डाल देते हैं। धर्म निरपेक्षता में धर्म को राज्य से अलग करके व्यक्तिगत विषय बना दिया जाता है जिससे धर्म की सामाजिक और राजनैतिक भूमिका समाप्त हो जाती है, वह जनविरोधी आचारण की सामर्थ्य खो देता है। हमारे यहा स्वतन्त्रता के बाद संविधान मे धर्म निरपेक्षता की व्यवस्था करके भी "सर्वधर्म समभाव" के आधार पर सब धर्मों के राज्य की स्थापना की गई जिससे धर्म शोषक शासक वर्ग हाथो में एक प्रभावशाली अस्त्र बन गया। विभिन्न राजनैतिक दल सत्ता प्राप्त करने के लिये धर्म जाति के आधार पर उम्मीदवार खडे करके तथा साम्प्रदायिक तत्वों से गठबधन करके ही धर्म का प्रयोग नही करते वरन् आर्थिक सकट के कारण जब भी जनसघर्ष विस्फोटक रूप लेते हैं, अपनी शोषण की परम्परा को सुरक्षित बनाये रखने के उद्देश्य से जनता को विभाजित करके कमजोर बनाने के लिये धार्मिक दगे करा देते हैं धार्मिकता का दम्भ भरने वाले लोग जब शासको, पूजीपतियो से मिल जाते हैं तो जनता तीन तरह के शोषण का शिकार हो जाती है। शोषण से उसकी अर्थ व्यवस्था चरमरा जाती है। विलासिता देवी और कामदेव घर-घर मे डेरा जमा लेते हैं। श्रम शक्ति घट जाती है, कर्ज पर कर्ज लेना पडता है जिसका मूल तो क्या ब्याज भी नही चुकाया जा पाता है। कुतर्क तर्क बन जाता है देश भेडिया धसान बन जाता है। इस भेडियाधसान से देश को निकालने और राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिये राम, हनुमान, कृष्ण, अर्जुन जैसे सेवाभावी धर्म के संस्थापक हुए, महावीर बुद्ध हुए, कबीर, नानक, शकराचार्य जैसे महापुरुष हुए किन्तु इन लोगो के काल मे आशिक सफलता ही मिली विश्व कल्याण की भावना—

सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग भवेत्॥

का पूर्ण विकास नही हो पाया।

आर्यसमाज—१९वी शताब्दी के घनघोरतम काल मे जब हमारा देश अशिक्षा, अज्ञानान्धकार के साथ-साथ अंग्रेजो के शोषण का शिकार हुआ तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बालक मूलशकर के रूप में जन्म लिया। उन्होंने यात्राओ द्वारा देश की दुर्दशा को देखा। योग और व्याकरण की शिक्षा प्राप्त कर वेदो, स्मृतियो, उपनिषदो, महाभारतादि ग्रन्थो का अध्ययन किया। इसी बीच कानपुर के क्षेत्र में क्रान्तिकारियो को जाग्रत किया, "सत्यार्थ प्रकाश' के माध्यम से क्रान्ति की मशाल जलाई तथा सन् १८७५ ई० में बम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की। उन्होने मानव धर्म के १० सूत्र जिन्हे आर्यसमाज के नियम कहा जाता है बनाये। यह सूत्र समस्त ससार के मानव समुदाय द्वारा व्यक्तिगत रूपसे अपनाये जाने तथा प्रशसा योग्य है क्योकि इनका सम्बन्ध विश्वकल्याण और इहलोक सुधार से है। समस्त ब्रह्माण्ड मे आर्यसमाज से उत्तम रचनात्मक आन्दोलन आज तक न तो हुआ है, और न है तथा न ही होगा। यह आन्दोलन सार्वदेशिक, सर्वकालिक तथा सबके अपनाने योग्य है क्योंकि इस आन्दोलन का मुख्य आधार परमेश्वर, वेद, सत्य, उपकार, प्रीतिपूर्वक व्यवहार, सबकी उन्नति, सर्वहितकारी नियमोमे परतन्त्रता, अविद्या का नाश, एकेश्वरवाद कीप्राण प्रतिष्ठा युक्त परमेश्वर कृति मानव शरीर रूपी मन्दिर से ऊपर उठने की शिक्षा देने वाला तथा प्राणपर्जन्य और विवेक की वृद्धि के साथ-साथ वातावरण शुद्ध करने की वैज्ञानिक यज्ञ प्रक्रिया, छुआछूत, विधवा विवाह की समाप्ति, कर्म से वर्ण व्यवस्था, चार आश्रम, ईशावस्य मिद का सन्देश, परिहत चिन्तन, भौतिकवाद अध्यात्मवाद का समन्वय, स्व राज्य शासन की परिकल्पना को साकार करने के उपाय "माताभूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या' (अथर्ववेद १२।१।१२) आदि हैं जिन्हे अब तक के समाज सुधारको, पथ सस्थापको ने आशिक रूप से स्वीकार किया था।

आर्य समाज सस्कारो, अध्ययन के माध्यम से व्यक्ति के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देता है जिससे उत्तम समाज का निर्माण हो, समाज से उत्तम राष्ट्र का निर्माण हो, राष्ट्र से वसुधैव कुटुम्बकम् की परिकल्पना पूर्ण हो तथा शान्तिरेव, शान्ति सामा शान्तिरेधि का नाद समस्त सृष्टि में गूज उठे। आर्यसमाज कोई नया पन्थ, सम्प्रदाय या धार्मिक सगठन नही है। यह अनादि काल से चले आये सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाली, सर्वहितकारी नियमो का रचनात्मक आन्दोलन है। ●

हमारी शिक्षा नीति

(पृष्ठ ९ का शेष)

घर की शिक्षा

आजकल बालको को ३ से ५ वर्ष तक वयस्क के लिए नर्सरी स्कूल खोले गये हैं, जिनमे नर्सरी, लोअर के. जी, और अपर के जी. के नाम से अ ग्रेजी के अक्षरो, अ को, पहाडो व पद्यों को रटा रटा कर अभ्यास कराया जाता हैं वह कोमल मति बालको के लिए अत्यन्त कठिन व हानिकारक होता है रटाना ही है तो मातृभाषा में रटाओं कि जिससे वह सहज मे ही सुग्राह्य हो और वे चीजें रटाओ जो जीवन भर के लिए उपयोगी व महत्वपूर्ण हो। जैसे नीति, सदाचार व स्वास्थ्य शिक्षा इत्यादि के पद्य न कि जैक एण्ड जिल जैसी सारहीन और निरर्थक कविताए । यह शिक्षा बालको के घर पर हो उनके माता पिता, दादा दादी या नाना-नानी द्वारा दी जानी चाहिए न कि मात्र अ ग्रेजी कपड व नेकटाई इत्यादि पहनना सिखाकर बहुत ऊंची फीस लेकर निकृष्ट शिक्षा देने वालो के द्वारा ।

प्राथमिक शिक्षा

यह ५ वर्ष की होनी चाहिए (कक्षा १ से ५ तक) इसका माध्यम केवल मातृभाषा होना चाहिए । इन वर्षों में बच्चे को अपनी मातृभाषा में लिखने-पढने व बोलने का सामान्यत अच्छा अभ्यास हो जाना चाहिए, साथ ही अ कगणित भूगोल, स्वास्थ्य रक्षा, सदाचार, व्यवहार व नीति की भी अच्छी शिक्षा देनी चाहिए ताकि दोनो विषयों में नींव पक्की हो जाए उनके पाठो मे सामान्य ज्ञान विज्ञान तथा अपने देश के महान पुरुषो के व्यवहार उपयोगी सरल वृतान्त होने चाहिए ना कि तिथियों, (स्थानो इत्यादि के नामों से बोझिल युद्ध आदि का शुल्क इतिहास ।

माध्यमिक शिक्षा

माध्यमिक शिक्षा का काल भी ५ वर्ष का ही होना चाहिए (कक्षा ६ से १० तक) इसमे प्रारम्भ से ही २ भाषाए पढ़ाई जानी चाहिए । मातृभाषा, २ देश को अन्य भाषा जो उत्तर भारतीयों के लिये दक्षिण की चार भाषाओ (तमिल तेलगू कन्नड व मलयालम) में से एक हो और दक्षिण भारतीयो के लिये राष्ट्र भाषा हिन्दी हो इससे उत्तर दक्षिण सम्पर्क विस्तृत होगा और उसके लिए अ ग्रेजी की आवश्यकता न होगी । कक्षा ९ व १० मे एक तीसरी अतिरिक्त भाषा अ ग्रेजी या संस्कृत या हिन्दी में से एक पढाई जाये ।

सत्र प्रणाली या सेमेस्टर सिस्टम

कक्षा १० के बाद सभी पढ़ाई सत्र प्रणाली (सेमेस्टर सिस्टम) से हो । उच्च कक्षाओ मे सत्र प्रणाली से पढ़ाने से छात्रो व शिक्षको दोनों मे ही समय कम होने के कारण सक्रियता अधिक रहती है और कार्यशाला की अपेक्षा गृह कार्य मे तथा पुस्तकालयान्वेषण में वृद्धि हो जाती है यदि छात्र रूग्णता अथवा अन्य कारणो से पढ़ाई में व्यवधान हो जाये या छात्र अनुत्तीर्ण हो जायें तो इसमें पूरा वर्ष बरबाद नहीं होता क्योंकि १ वर्ष मे ६ ६ महीनों के २ सत्र किए जा सकते हैं । ४॥ मास पढाई, १५ दिन परीक्षा १५ दिन परिणाम प्राप्ति और १५ दिन सत्रावकाश के रहें । अवकाश के अन्तिम सप्ताह मे ही अगले सत्र के लिए प्रवेश भी हों।

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा

यह शिक्षा २ वर्ष या ४ सेमेस्टर की हो और इसमें विश्वविद्यालयों व स्नातकीय शिक्षा के लिए विभिन्न विषयों की तैयारी तथा यान्त्रिकी (इन्जीनियरिंग) चिकित्सकीय (मेडिकल) और सेवा सम्बन्धी व्यवसायों के लिए पूर्व तैयारी व प्रारम्भिक शिक्षा के रूप मे पाठ्यक्रम रखे जायें और इन व्यवसायो की शिक्षा के काल में १ वर्ष बढ़ाया जाए अर्थात् इनके लिए उच्च माध्यमिक स्तर के ४ सत्र, स्नातक स्तर के ६ सत्र और स्नातकोत्तर (पोस्ट-ग्रेज्युएट) शिक्षा के लिए भी ४ सत्र ही रखे जावें ।

व्यावसायिक शिक्षा

प्रत्येक युवक के लिए व्यवसाय प्राप्त करने का मौलिक अधिकार हो इसके लिए व्यावसायिक शिक्षा ३ स्तरों पर दी जाय । (१) वर्ष का प्रमाण-पत्र या सार्टीफिकेट (पाठ्यक्रम १) (२) २ वर्षों का पदोपाधि या डिप्लोमा पाठ्यक्रम (३) ३ वर्षों की उपाधि (डिग्री) पाठ्यक्रम इनमें बढ़ईगीरी, लोहारगीरी, दर्जीगीरी, चमडे के काम, मिट्टी या लकड़ी, प्लास्टिक, कांच या टिन इत्यादि के खिलौने या अन्य उपयोगी वस्तुए बनाना, बिजली का काम स्कूटर, मोटर व फ्रिज तथा रेडियो, टी वी, ट्रांजिस्टर आदि बनाने व सुधारने के कार्य इत्यादि की कक्षाए हों ।

एक ही भवन में अनेक बार कक्षाएं लगें

विद्यालय भवन और उसमें स्थित फर्नीचर इत्यादि उपस्करों आदि का अधिकाधिक उपयोग की दृष्टि से एक ही भवन मे २ या ३ बार कक्षाए लगें यथा प्रात ७॥ से ११॥ बजे तक, मध्याह्न में १२ से ४॥ बजे तक और सायंकाल ५ से ८॥ तक कक्षाए लग सकती हैं । सायंकालीन कक्षाओं की संख्या में पर्याप्त वृद्धि करनी चाहिए कि जिससे काम काजी लोग भी अपनी योग्यता बढ़ा सकें और नई विद्यायें व व्यवसाय सीख सकें तथा प्रमाण-पत्र प्राप्त कर सकें ।

नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा

भारत वर्ष मे अनेक धर्मो व सम्प्रदायो के मानने वाले रहते हैं अतएव किसी भी एक सम्प्रदाय की शिक्षा विद्यालयो में देना उचित न होगा । धार्मिक शिक्षा का आयोजन उस-उस सम्प्रदाय वाले अपने-अपने पूजा स्थलों मे अलग से करें । परन्तु छोटे से लकर बड़े से बड़े विद्यालय तक मे नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध अवश्य किया जाय जिससे भारतीय बच्चो मे चरित्र का अवमूल्यन रुके, मादक द्रव्य आदि सेवन रूप भूलो का निराकरण हो और उच्च तथा आदर्श चरित्र विकसित करने की परम्परा का उद्धार हो । व्यावसायिक नीतिया भी नैतिक शिक्षा का ही अ ग हों । प्रत्येक सप्ताह मे ३ से ६ काल खण्ड (पीरियडस) इस प्रकार की शिक्षा के लिए हों और निर्धारित पाठ्यक्रम तथा पुस्तकें भी हो और इसमे परीक्षा भी हो तथा उसे उत्तीर्ण करना भी अनिवार्य हो । प्रतिदिन विद्यालय लगने से १५ मिनट पूर्व सभी छात्र व अध्यापक एक स्थान पर एकत्रित हो या अपनी अपनी कक्षा में खड़े होकर एक समवेत संक्षिप्त प्रार्थना या राष्ट्रीय गीत के साथ लगभग १० मिनट का नीति व सदाचार पर व्यावहारिक प्रवचन भी हों ।

मुस्लिम-कानून के अधिकार

पहली पत्नी को गुजारा भत्ता देना होगा

सुप्रीमकोर्ट का महत्वपूर्ण फैसला

पाठको को स्मरण होगा कि तलाकशुदा (पति परित्यक्ता) मुसलमान महिलाओं को इस्लामी शरीअत बेसहारा न छोड़ सके इस निमित्त भारत सरकार ने एक विशेष प्रावधान इस आशय का किया था कि मुस्लिम वक्फ बोर्ड द्वारा उन्हें निर्वाह राशि प्रदान की जाए। परन्तु उससे भी आगे बढ़कर सुप्रीमकोर्ट द्वारा पहली पत्नी को निर्वाह राशि देना अनिवार्य घोषित कर दिया गया है। जिसका विवरण प्रस्तुत है। —सम्पादक

नई दिल्ली। कानून की दृष्टि से दोबारा शादी कर लेने वाले मुस्लिम व्यक्ति की पत्नी तथा रखैल रखने वाले व्यक्ति की पत्नी को गुजारा भत्ता मांगने का समान अधिकार है।

उच्चतम न्यायालय ने यह निर्णय देते हुए कहा कि १९७३ की दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा १२५ के तहत इन दो वर्गों मे भेद नहीं किया जा सकता।

न्यायालय की खण्डपीठ ने यह निर्णय एक मुस्लिम पत्नी द्वारा गुजारे भत्ते के लिए अपने पति के खिलाफ दायर मुकदमे मे सुनाया। खण्डपीठ मे न्यायाधीश ए० पी० सेन तथा न्यायाधीश एस० नटराजन शामिल थे।

न्यायालय ने अभियुक्त ए० एम० अब्दुल गफूर को निर्देश दिया है कि वह अपनी पत्नी बेगम सुबान उर्फ सायरा बानो को १०० प्रतिमास गुजारा भत्ता दें। निर्णय के अनुसार उसे यह गुजारा भी १८ अक्तूबर १९८४ से देना होगा जिस दिन उसने दूसरी शादी की थी।

अब तक की बकाया राशि पांच समान किश्तों में दी जा सकती है। पहली किश्त इस साल जून के पहले सप्ताह मे देय होगी। जबकि अन्तिम किश्त अगले साल जून तक चुकानी होगी। इसके अलावा मासिक गुजारा भत्ता हर महीने की १० तारीख तक दे दिया जाना चाहिए।

न्यायालय ने श्रीमती सुबान की अवयस्क पुत्री का गुजारा भत्ता भी इस साल एक जनवरी से २०० रुपए कर दिया है। अब तक उसे १०० प्रतिमाह दिया जाता था।

बेगम सुबान तथा अब्दुल गफूर का विवाह ११ मई को हुआ था और अगले ही वर्ष उनकी एक पुत्री हुई। श्रीमती सुबान ने उनकी उपेक्षा करने तथा गुजारे के लिए पर्याप्त धन न देने के आरोप मे अपने पति के खिलाफ केरल में स्थानीय न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत मे मुकदमा दायर किया।

मजिस्ट्रेट ने उनका मुकदमा यह कह कर खारिज कर दिया कि वह इस बात का औचित्य सिद्ध नहीं कर सकी है कि उनके लिए पति से अलग रहना आवश्यक है।

जिस समय अपील का मामला तलिचेरी सत्र न्यायालय में चल रहा था तभी श्री गफूर ने एक अन्य महिला साहिदा बेगम से शादी कर ली। अपील मे कहा गया कि दूसरे मामलो को छोड़ भी दिया जाए तो भी प्रतिवादी की दूसरी शादी गुजारा भत्ता दिलाने का पर्याप्त आधार है।

सत्र न्यायाधीश ने अपने निर्णय मे कहा कि प्रतिवादी ने दूसरी शादी करने से पहले वादी को वापिस लौटने का पूरा मौका दिया था और वह अभी भी उसे वापिस लेने के लिए तैयार है। अत वादी गुजारा भत्ते की हकदार नही है। बच्चो के लिए एक सौ रुपए प्रतिमाह की दर से भत्ता देने का निर्णय दिया गया।

बेगम सुबान ने केरल उच्च न्यायालय मे अपील की किन्तु उच्च न्यायालय ने निचली अदालत के फैसले मे हस्तक्षेप करने से इकार कर दिया। अत उन्हें उच्चतम न्यायालय मे आना पड़ा।

उच्चतम न्यायालय के सामने विचार का मुख्य मुद्दा यह था कि प्रतिवादी द्वारा दूसरा विवाह कर लेने पर क्या वादी को अलग रहने का अधिकार मिल जाता है या प्रतिवादी को शादियां करने की छूट की वजह से वादी को अलग रहने का कोई अधिकार नही है। इसके अलावा दूसरा प्रमुख मुद्दा यह था कि बेगम सुबान का पति उसे साथ रखने के लिए तैयार है इस स्थिति मे क्या उसे गुजारा भत्ता मांगने का हक है।

अनेक उच्च न्यायालयो के निर्णयों तथा शाहबानो मुकदमे के निर्णय का हवाला देते हुए न्यायाधीशो ने कहा कि न्यायालय का मत है कि धारा १२५ का विश्लेषण अब तक किए गए विश्लेषणो के बजाय कही गम्भीरता से किया जाना चाहिए।

न्यायाधीशो ने कहा कि इस मामले में विवाह सम्बन्धो पर दो प्रकार से असर पड़ने की सभावना व्यक्त की गई। पहली स्थिति वह है जिससे पति दूसरी शादी कर लेता है जब कि दूसरी स्थिति मे वह रखैल ले आता है। उन्होने कहा वैवाहिक कानून के तहत रखैल तथा दूसरी पत्नी की स्थिति समान है।

निर्णय मे कहा गया है कि प्रभावित पत्नी के दृष्टिकोण से अन्तर नही कि इस बात से पति की कानून के तहत ब्याहता दूसरी पत्नी है या रखैल।

निर्णय के अनुसार निश्चित रूप से यह स्थिति बड़ी अजीब होगी कि किसी व्यक्ति द्वारा रखैल रखने पर तो उसकी पत्नी को यह अधिकार दिया जाए कि वह चाहे तो पति से अलग रह सकती है। पर यदि उसका पति दूसरा विवाह कर लेता है, तो उससे यह अधिकार छीन लिया जाए।

इसमे कहा गया है कि धारा की व्याख्या यह देखकर की जानी चाहिए कि पत्नी पर इसका क्या प्रभाव है, इस आधार पर नही कि पति का दूसरी शादी करने का अधिकार है या नहीं।

न्यायाधीशो ने कहा कि इस धारा की व्याख्या इसके पूरे परिपेक्ष्य मे की जानी चाहिए अन्यथा यह उन पत्नियो के प्रति भेदभावपूर्ण होगा जिनके पति दूसरी शादी कर लेते हैं और जिनके पति शादी किए बिना रखैल रख लेते हैं। ●

स्वर्ण मन्दिर में यातना और हत्या का सिलसिला जारी

अमृतसर, ८ अप्रैल। जिला पुलिस प्रमुख मोहम्मद इजहार आलम ने आज आरोप लगाया कि स्वर्ण मन्दिर परिसर में लोगो को यातना देने और उनकी हत्या करने का सिलसिला जारी है। संवाददाताओ से बातचीत करते हुए उन्होने कहा कि पुलिस को अब तक सात आठ ऐसे लोगो की खबर मिली है जो अमृतसर आने के बाद गायब हो गए। उन्हें न तो सुरक्षा बल ने पकडा और न ही पुलिस ने तो माना जा सकता है कि उन्हें स्वर्ण मन्दिर मे छिपे उग्रवादी सगठनो ने पकड कर उनकी हत्या कर दी होगी।

अपने दावे के सबूत के तौर पर श्री आलम ने लोपोक थाने मे आने वाले गौरे गाव के २४ साल के पिंदरसिंह को संवाददाताओं से मिलाया। उसे रविवार से स्वर्ण मन्दिर की 'परिक्रमा' के चौदह नम्बर के कमरे में कैद करके रखा हुआ था। उस पर आरोप था कि वह होमगार्ड के जवानो के जरिए पुलिस को खबरें देता था। उसके अमृतधारी होने के बावजूद उसे यातना दी गई। नाखून-उखाडे गए और नाक पर चोट की गई।

श्री आलम ने बताया कि कल जब पिंदरसिंह से बाहर जाकर वहा खडी कार मे बैठने को कहा गया। जब वह बाहर निकला तो 'बन्दूकधारी उसके पीछे थे।

बाहर पिंदरसिंह को कोई कार नही दिखाई दी तो खतरा भाप कर वह भाग निकला। आतकवादियो ने उस पर गोली चलाई पर वह बच गया।

भगवान् भारतवर्ष को फिर सन्त नानक देव दो !

इतिहास अपने को मेरे हे सिंह वीरो! जान लो।
बलिदान गुरुओ का अनोखा ध्यान से पहचान लो ॥

धर्म रक्षा के लिए गुरुओ ने तन मन धन दिया।
इतिहास के पन्नो को अपने रक्त से रजित किया ॥

असुरो के अत्याचार से जब त्राहि त्राहि हो रही।
चोटी जनेऊ कट रहे गो मात भी जब रो रही ॥

धर्म पर सकट समझ गुरु तेग ने सिर दे दिया।
बलिदान की श्रेणी मे अपना नाम पहला ले लिया ॥

गोविन्द भी निज तात सम सर्वस्व अर्पण कर गया।
चारो सुतोको वारकर इतिहास उज्ज्वल कर गया ॥

हे सिंह वीरो! आज फिर आतकवादी बढ रहे
देखते कब तक रहोगे राष्ट्र द्रोही चढ रहे ॥

ऐसे भयकर काल मे कर्तव्य अपना जान लो।
राष्ट्र से बढकर न कोई धर्म है यह मान लो ॥

सन्त नानक देव के उपदेश का चिन्तन करो।
गुरु ग्रन्थका क्या है कथन इस मर्मका मन्थन करो ॥

आज तो काल से भी हो रहा बेहाल है।
निश्चय करो प्रणठान लो तो दुष्ट जनका काल है ॥

गौतम कणाद पतञ्जलि दयानन्द का यह देश है।
मा भारती के देश मे अब रह गया क्या शेष है ॥

इस धरा के देश सारे ही सदा गुणवान् हो।
कामी कुचाली ना रहे श्री राम से बलवान् हो ॥

भगवान भारतवर्ष को फिर सन्त नानक देव दो।
गोविन्द राणा और शिवा से वीर फिर से भेज दो ॥

—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
११/१२४ पश्चिमी आजाद नगर दिल्ली-५१

सार्वदेशिक सभा के दानदाता

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता



वेद रत्न जी ग्रोवर



श्रीमती चन्द्रवती आर्या

दिल्ली निवासी श्री वेद रत्न जी ग्रोवर तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रवती आर्या आर्य समाज के लिए अपना जीवन लगाए हुए हैं। आप जहा भिन्न स्थानो पर जा जा कर यज्ञ का प्रचार करते हैं वहा दान करने मे भी अग्रसर रहते हैं। आपके पूज्य पितामह श्री सेठ नारायण दास जी जो कि जामपुर (पाकिस्तान मे) आर्य समाज के प्रथम भाग्यशाली व्यक्ति हैं जिन्होने मुलतान मे स्वामी दयानन्द जी के साक्षात् दर्शन किए थे। आपने अमर कालोनी आर्य समाज मे एक कमरा यज्ञ शाला अपनी पवित्र कमाई से बनवाया। अब उन्होंने सार्वदेशिक सभा को पाच हजार रु० स्थिर निधि मे जमा कराए हैं। सभा उनका धन्यवाद करती है।

महाराष्ट्र में बीड़ी, सिगरेट पीने पर पाबन्दी लगेगी अगर—

बम्बई, । राज्य सरकार के विचाराधीन एक प्रस्ताव पर अगर अमल हुआ तो महाराष्ट्र के सरकारी दफ्तरों, अस्पतालो और उनके आस पास और सार्वजनिक जगहो पर धूम्रपान पर पाबन्दी लग जाएगी। ऐसा करने वाला वह देश का पहला राज्य होगा।

स्वास्थ्य मन्त्री भाई सावत ने आज विधानसभा में यह जानकारी दी। उन्होने कहा कि ऐसा कदम तभी उठाया जा सकता है जब उसके कानूनी विभाग से राय मागी गई है वह अनुकूल हो।

पंजाब के विस्थापितों को सुरक्षा व आर्थिक मदद की पेशकश

नई दिल्ली, (भाषा)। पंजाब के कुछ मन्त्रियो और विधायको ने राज्य से पलायन करके यहा आए हिन्दुओ को राज्य के सुरक्षित क्षेत्रो में बसाने और ठोस वित्तीय सहायता देने की पेशकश की है।

पजाब के राजस्व राज्यमन्त्री मेजर सिह उवोके के नेतृत्व मे नौ सदस्यीय प्रतिनिधिमन्डल ने आज यहा शरणार्थी शिविरो का दौरा किया और हिन्दू नेताओ से पजाब सरकार के पुनर्वास-कार्यक्रम पर बातचीत की।

सरकारी सूत्रो के अनुसार प जाब सरकार इन शरणार्थियो को राज्य के अपेक्षाकृत सुरक्षित क्षेत्र राजपुर, पठानकोट, भटिंडा और पटियाला जिलो मे बसाने के लिए तैयार है। प जाब से पलायन कर दिल्ली आए बारह सौ परिवारो मे अधिकाश अमृतसर और गुरदासपुर जिले के है।

हिन्दुओ के पुनर्वास के सबध मे यहा पजाब भवन मे शुरू हुई पहले दौर की वार्ता के दौरान हिन्दू शरणार्थियो मे अनेक लोगों ने जिनकी अभी ठीक से पहचान नही हो पाई है, शिकायत की कि पिछले तीन महीनो से उन्हे फुटपाथ पर अथवा काग्रेस (इ) के महासचिव रघुनन्दन लाल भाटिया के घर के बाहर सोना पड रहा है।

पजाब से आए प्रतिनिधिमन्डल के एक प्रवक्ता ने बताया कि इन शरणार्थियो के लगभग बीस प्रतिशत मामले गलत पाए गए हैं क्योंकि या तो इनके पास राशन कार्ड नही है, अथवा वे अभी भी प जाब मे रह रहे अपने परिवार के सदस्यो के लिए राहत माग रहे हैं।

दिल्ली प्रशासन द्वारा ऐसे मामलो की जाच के लिए नियुक्त जिला एव सत्र न्यायधीश पी एल सिगला के अनुसार अधिकाश मामलो मे प जाब के जिला प्रशासनो द्वारा की गई जाच सही पाई गई है।

प जाब से आए हिन्दू शरणार्थियो को उनकी सही पहचान के बाद प्रति दिन दस रुपए प्रति व्यक्ति के हिसाब से सहायता दी जाती है। यह राशि प्रति परिवार एक हजार रुपए से ज्यादा नही होती। इसके अलावा विभिन्न होस्टलो और शिविरो मे इनकी निःशुल्क आवास व्यवस्था है।

प जाब सरकार के वित्त आयुक्त तेजिन्दर खन्ना ने बताया कि प जाब लौटने वाले शरणार्थियो को कम ब्याज पर २५ हजार रुपए तक बेंक ऋण दिया जा रहा है। इसमें पाच हजार रुपए सहायता राशि भी शामिल है।

इसके अलावा इन परिवारो को उन क्षेत्रो मे मकान बनाने के लिए भूखड भी उपलब्ध कराए जाए गे, जहा उनका पुनर्वास होगा। बाद मे जब वे अपने जिलो मे लौट जाए गे तब भी उनकी यह जगह बनी रहेगी।

सरकारी सूत्रो के अनुसार प जाब से पलायन करके आने वालो की सख्या मे पिछले तीन महीनो में काफी वृद्धि हुई है।

सरकारी आकडो के अनुसार जनवरी, १९८७ तक ऐसे परिवारों की सख्या १०४५ थी, लेकिन मार्च के अत तक यह सख्या बढकर १२४५ हो गई।

(पृष्ठ एक का शेष)

समाचार पत्र मे लिखा है कि पहले तो अकाली दल दो फाड हुआ करता था परन्तु अब प थ को ही दो फाड कर दिया है। अकाली विधायक सरदार अमरजीत सिह को गोलियो का निशाना बनाया गया और कई और अकालियो को मौत के घाट उतार दिया गया। यह सब कुछ शिरोमणि कमेटी के के अध्यक्ष सरदार टोहरा की करतूत है। उसने १५ वी बार अध्यक्ष बनने के लिए प जाब मे आग लगाई। पहले तो इसने अपने आपको महान त्यागी जाहिर करने के लिए इस्तीफा दिया, यह सोचकर कि इसे स्वीकार नही किया जावेगा। इसके बाद जब इसे मजूर कर लिया गया तो अकाल तख्त के जत्थेदार ज्ञानी किरपाल सिह को इस्तेमाल करके समझौता करने की कोशिश की गई। कामयाबी न हुई तो उग्रवादियो से गठजोड करके पुन अध्यक्ष बन गये।

सरदार बरनाला ने नजरबद किया तो जेल से साजिश करना शुरू कर दिया। आतकवादियो का विश्वास प्राप्त करने के लिए सगीतकार प्रोफसर रागी को अकाल तख्त का जत्थेदार नियुक्त करा दिया और चार दूसरे सिह साहब वह नियुक्त करा दिये जिन्हे खालिस्तान की माग करने वाली प थक कमेटी का विश्वास प्राप्त था। उन्होने रागीका इस्तेमाल करके प थक एकता के नाम पर सरदार बरनाला को मुख्यमन्त्री पद से हटाने की साजिश की बरनाला काबू में नही आये तो जत्थेदार जी ने हुकमनामा जारी करके उन्हे पथ से निष्कासित करने की घोषणा कर दी। इसकी प्रतिक्रिया यह हुई कि सरदार बरनाला के हक मे प्रदर्शन होने लगे दो तख्तो के जत्थेदारो ने सरदार बरनाला के हक मे बयान जारी कर दिये इसका नतीजा यह हुआ कि पथ और उसके तख्त दो हिस्सो मे विभाजित हो गये। अब रागी जी कहते है कि मैं आनन्द पुर साहब के प्रस्ताव के अनुसार प जाब का मामला हल करना चाहता हू जबकि आतकवादी भारत से अलग खालिस्तान कायम करने की बाते कर रहे हैं। इस तरह पथ मे गृहयुद्ध की बुनियाद रख दी गयी है। इससे खून खराबा होगा और तमाम ससार में पंथ का मजाक उड़ाया जावेगा।

श्री सुरजीत जालधरी ने लिखा है रागी थे तो अच्छे पर एक घटे के प्रोग्राम के ४ हजार रुपये वसूल करते थे। एक फिल्म मे छोटा सा पार्ट अदा किया तो २४ हजार रुपये मिल गये। यहा क्या मिला।

मुसीबत मे हम सोचते होगे कि अमृतसर की बजाये बम्बई चला जाता तो ठीक था।

लन्दन मे ही रहने वाले सरदार मलकियत सिह का कहना है कि मेरे बच्चे जब पजाब के समाचार पढते हैं तो कहते हैं कि हम तो अब कभी पजाब जाने का नाम नही लेगे। हम जीन पहनते है। हम साडी का इस्तेमाल भी करते है। इसलिए पजाब मे कौन जिंदा रहने देगा।

ब्रिटेन मे ९० प्रतिशत सिख हमारी तरह है। वह अमृतधारी भी नही इन्हे तो आतकवादी गोलियो का निशाना बना दगे।

बरमिघम के सरदार गोपाल सिह का कहना है कि पहले हम नही मानते थे। यही समझते थे कि भारत सरकार झूठा प्रापेगडा कर रही है परन्तु अब तो हमे अपने निकट सम्बन्धियो के पत्र आ रहे है कि उनका जीवन खतरे मे है। हम समझते है यह तमाम आग टोहरा की लगाई है। प्रोफसर रागी उनके बिछाये जाल मे फस गये है।

कनाडा के एक रागी जत्थे के नेता ने कहा कि अब मैं और मेरी पत्नी पजाब मे जाने का नाम नही लेगे क्योकि हम गीतकार हैं। हमारे गीतो को यह लोग कब सहन करेगे। हम बाज ही आये। हम कनाडा मे ही रहना पसन्द करेगे। यह लोग ईरान के मुल्ला खुमैनी से भी कही आगे जाना चाहते है। इन्होने स्वर्णमन्दिर की महानता पर प्रहार किया है। वह दिन निकट आ रहा है जब तमाम सिख जगत इनके खिलाफ उठ खडा होगा। हमारे कनाडा मे इस तरह की हरकत सहन नही की जाती।

हिन्दी के खिलाफ याचिका खारिज

मद्रास, ८ अप्रैल (जनसत्ता)। सरकारी भाषा कानन १९८३ को असवैधानिक करार देने के लिए दायर एक रिट याचिका मद्रास हाइकोर्ट ने खारिज कर दी है। पेशे से वकील और हिन्दी विरोधी एम एन रामचन्द्रन ने अपनी याचिका मे कहा था कि सरकारी भाषा कानून के तहत लाई गई हिन्दी प्रादेशिक भाषा है, 'राष्ट्रीय' नही जैसा कि सविधान मे कहा गया है। 'खडी बोली हिन्दी दिल्ली और आस पास के इलाको और पश्चिमी उ०प्र० मे बोली जाती है। सरकार ने देवनागरी मे लिखी जाने वाली दूसरी बोलियो मे से इसे चुना था। लेकिन सरकार इसे पूरे देश मे विकसित कर पाने मे नाकाम रही है। इसलिए सरकारी भाषा कानून से सविधान के तहत दिए गए मूल अधिकारो का हनन होता है। सविधान के १५वें और १६वें अनुच्छेद मे हिन्दी भाषी लोगो को काफी सुविधाए दी गई हैं।

इन सभी तर्कों को नामन्जूर करते हुए न्यायमूर्ति एस मोहन ने कहा कि कानून की धारा (३) मे सरकारी कामों मे हिन्दी के साथ साथ अग्रेजी का प्रयोग करने की इजाजत दी गई है। इसी के तहत अब तक हिन्दी के साथ अग्रेजी का प्रयोग होता आ रहा है।

न्यायमूर्ति ने हिन्दी को 'प्रादेशिक' भाषा भी नही माना। उन्होने कहा कि ऐतिहासिक कारणो और सवैधानिक प्रावधानो के चलते अग्रेजी अब भी बनी हुई है। इसी तरह हिन्दी की अपनी अलग जगह है। यह भारत की सरकारी भाषा है और सविधान मे व्यवस्था है कि हिन्दी धीरे-धीरे अग्रेजी की जगह लेगी।

इसलिए, न्यायमूर्ति ने कहा, हिन्दी का अपना अलग स्तर है जब कि आठवी अनुसूची की दूसरी भाषाए अलग महत्व रखती हैं। इस अन्तर को ध्यान मे रखा जाना चाहिए।

हिन्दी को बढावा देने से न तो सम्बन्धित अनुच्छेद और न ही धारा १६ और २१ का उल्लघन होता है। इन सभी कारणो से न्यायमूर्ति ने रिट याचिका खारिज कर दी।

पुस्तकालय गुरुकुल कांगडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

कुछ सिख आधुनिक औरंगजेब बन रहे है : उमरानंगल

चडीगढ १० अप्रैल (भाषा) सत्तारुढ अकाली दल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष जीवन सिह उमरानगल ने आज यहा कहा कि जबरन धर्मान्तरण के कार्य मे लिप्त लोगो का सामाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिए। उन्होने कहा कि इस कार्य का सिख धर्म के गुरुओ ने भी विरोध किया था।

श्री उमरानगल ने एक बयान मे कहा कि ऐसे कार्यों मे लिप्त होना सिख धर्म के आधार भूत सिद्धानो का उल्लघन है। साम्प्रदायिक दमन और धार्मिक असहिष्णुता के खिलाफ ही सिख का जन्म हुआ था।

श्री उमरानगल ने सिख जनता को प्रेरित करने के लिए अमृतसर जिले का दो दिन का दौरा करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि जो सिख 'आधुनिक औरगजेब' बन रहे हैं उन्हे गुरुओ द्वारा अपराधी घोषित किया जायेगा।

उन्होने आरोप लगाया कि पाकिस्तानी मालिको का खुश करने के लिए कुछ लोग अपनी कट्टरवादिता लोगो पर लाद रहे हैं। ये लोग अपनी करतूतो से प्रगतिशील पजाबी समाज को मध्ययुगीन बनाना चाहते हैं। सिख समुदाय इस कट्टरवाद का डटकर विरोध करेगा।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २२ अंक १८] बैशाख कृ० १३ सं० २०४४ रविवार २६ अप्रैल १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

काश ! सुनीलदत्त पंजाब के पीड़ित लोगों से भी बातचीत करते ? उनका दर्द पहचानते

वरिष्ठ इंका नेता तथा पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री श्री यश ने प्रख्यात अभिनेता व इंका सांसद श्री सुनील दत्त की पंजाब मे शांति के लिए बम्बई से अमृतसर तक की गई महाशांति पदयात्रा पूर्ण होने पर १५ अप्रैल के दैनिक मिलाप मे "यात्रा तो हो गई, परन्तु शांति ...?" शीर्षक से प्रकाशित अपने लेख मे जो विचार प्रकट किए हैं, उन्हे हम यहां अपने पाठको के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। —सम्पादक

श्री सुनील दत्त की महाशांति पद यात्रा समाप्त हो गई।
यात्रा तो हो गई,
परन्तु शांति नहीं हुई।

यात्रा करना उनके वश मे था। उन्होने अपना अलाप बदला है न ताल। वे तबले की उसी ताल पर नाच रहे हैं जिसकी आवाज मे नक्कारे की गूंज है।

यह अपेक्षा तो किसी ने नहीं की थी कि इधर सुनील दत्त अमृतसर पहुंचेंगे, और उधर उग्रवादी युद्धबन्दी की घोषणा कर देंगे। काफी टेढ़ी और उलझी हुई समस्या है जो अभी तक हल को पास तक फटकने नही देती। सुनील दत्त के हाथ मे कोई अलादीन का चिराग नही था कि वे आनन फानन मे परिस्थितियो को बदल देते। परन्तु दो हजार किलोमीटर से अधिक लम्बी पैदल यात्रा के बाद शांति स्थापित होने की जो आशा उत्पन्न होनी चाहिए थी, वह भी नही हुई। यह ठीक है कि उनकी इतनी लम्बी यात्रा और उनके द्वारा दरबार साहिब के दर्शनो के दौरान कोई असुखद घटना नही हुई। इसकी सम्भावना भी नहीं थी। यात्रा के दौरान उनकी सुरक्षा के इतने कड़े प्रबन्ध थे, कि कोई उग्रवादी तो क्या, उनका कोई शुभचिंतक भी उनके निकट तक नही जा सकता था। सुरक्षा की इस सख्ती के कारण कई स्थानो पर कटुता भी पैदा हुई। कई अवसरो पर पत्रकारो को भी दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ा। कई स्थानो पर उनके दर्शन करने वालों को पुलिस की लाठियां सहन करनी पड़ी। दरबार साहिब में भी उनकी दोहरी सुरक्षा व्यवस्था थी। सादा कपड़ों मे पुलिस वाले तो थे ही, सिख छात्र फैडरेशन वालो ने भी पूर्ण सहयोग दिया। यात्रा मे कोई असुखद घटना तो नही हुई, परन्तु हवा का सुखद झोंका भी नही आया।

श्री सुनील दत्त ने पंजाब मे प्रविष्ट होते ही अपील की थी कि वह जब तक पंजाब मे रहें तब तक कोई हत्या न की जाए। यह अपील बहरे कानो पर पड़ी। इसके विपरीत उग्रवादियो ने इन दिनो अपनी गतिविधियां और तेज कर दी। जिस दिन वह दरबार साहिब गए भटिंडा के निकट दो व्यक्तियों को बस से उतार कर हत्या कर दी गई। हत्याएं तो प्रतिदिन होती रही, इस घटना का विशेष रूप से उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ कि टांडा के निकट दर्जनो बस यात्रियो को एक साथ मौत के घाट उतारने के बाद बस के यात्रियो की हत्या करने की यह प्रथम घटना है। ये यात्री न तो पुलिस के मुखबिर थे, और न ही किसी राजनीतिक पार्टी के सक्रिय कार्यकर्त्ता। उग्रवादियो की आपसी धड़ेबन्दी से भी उनका कोई सम्बन्ध नही था। वे मात्र इस लिए मारे गये कि वे हिन्दू थे।

दरबार साहिब मे सुनील दत्त का स्वागत अवश्य हुआ, परन्तु किस प्रकार ? कई स्थानो पर खालिस्तान के झंडे लगे हुए थे, और बार-बार खालिस्तान जिन्दाबाद के नारे लग रहे थे। श्री सुनील दत्त ने विशेष रूप से श्री गुरुग्रन्थ साहिब का पाठ रखवाया हुआ था। उसका भोग तो पड़ा, परन्तु कोई प्रमुख अकाली नेता उसमे शामिल नही हुआ। दरबार साहिब के मुख्य-ग्रन्थी भी नही आए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी का कोई प्रतिनिधि भी नही था। पता नही, उन्हे सरोपा भेंट किया गया या नही। समाचारो मे इसका कोई उल्लेख नही। यह ठीक है कि श्री सुनील दत्त दरबार साहब मे अपनी श्रद्धा के अनुसार गये। उन्होने पंजाब मे शांति के लिए अरदास करनी थी, कर ली, परन्तु जिस सदभावना के साथ उन्होने दो हजार किलोमीटर पैदल यात्रा की, इस यात्रा की कठिनाइयां सहन की, उनके पांवो मे छाले पड़ गये, बीमार होने के बावजूद वह चलते रहे, उस सदभावना का कोई जवाब नही मिला, खालिस्तान के नारे लगाने वालो ने भी स्पष्ट कर दिया कि वे भारत की एकता मे विश्वास नही रखते। जत्थेदार दर्शनसिंह ने भी अपनी बातचीत से यही प्रभाव दिया कि उग्रवादी तो दूधो नहाए हैं। सारा दोष भारत सरकार का है या फिर पंजाब के नेताओ का।

सुनील दत्त और मुख्यग्रन्थियो की बातचीत की जो रिपोर्ट विभिन्न समाचार पत्रो मे प्रकाशित हुई है, उससे ऐसे लगता है कि सुनील दत्त की स्थिति शांति के एक दूत की नही थी, अपितु अकालियो और उग्रवादियो की अदालत मे खड़े एक अभियुक्त की थी। जत्थेदार आरोप पर आरोप लगा रहे थे, और कटघरे मे सुनील दत्त उनको सिर झुकाए सुन रहे थे। उन्होने किसी आरोप का उत्तर नही दिया। एक बार यह भी नही कहा कि आपके आरोप सही भी हो सकते हैं, परन्तु ताली कभी एक हाथ से नही बजती। सुनील दत्त ने किसी आरोप का जवाब नही दिया। यह अवश्य पूछा कि इस समस्या का हल क्या है ? जवाब मे जत्थेदार दर्शनसिंह ने वही बातें कह दी जो आज से पहले कई बार कही जा चुकी हैं—

(१) जोधपुर के नजरबन्द रिहा करो। (२) सिख युवकों पर अत्याचार बन्द करो। उनकी गिरफ्तारियां रोको। (३) 'लड़को' से बातचीत करो। कुर्सी के भूखे लोगो से बातचीत का कोई परिणाम नही निकल सकता।

जत्थेदार दर्शन सिंह ने खालिस्तान के नारे लगाने वालो को दोषी नही ठहराया, अपितु उनकी सफाई पेश करते हुए कहा—'खालिस्तान की मांग इसलिये की जा रही है कि उन्हें न्याय नही मिला, उन पर सख्ती की गई'। जत्थेदार ने तो अपनी बात कह दी, परन्तु सुनील दत्त उनसे यह भी न पूछ सके कि पंजाब भर मे नाइयो की दुकानें क्यो बन्द कराई जा रही हैं। यह कहां का न्याय है ? दर्जियो को ग्राहको की इच्छा के अनुसार कपड़े सीने की इजाजत नही दी जाती, यह कहां का न्याय है ? लोगो से कारोबार करने की

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वेदों में विज्ञान

इध्म: समिद्धो: अग्नि

—श्री छैल बिहारीलाल गोयल हाथरस

वेदो मे विज्ञान का अथाह स्रोत है। जो आधुनिक विज्ञान के साथ समन्वय करने पर सब का सब पूर्ण सत्य प्रमाणित होता है। यह बड़े ही आश्चर्य का विषय है कि प्राचीन समय में वेदो के अन्दर आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्त बीज रूप मे वेदों के मन्त्रो में किस तरह से भर दिये गए हैं। वेद-मन्त्रो के पाद, छन्द, और अक्षरो को वैदिक शिक्षा पद्धति के द्वारा अत्यधिक विस्तार करके विज्ञान के प्रत्येक चरण के सिद्धान्त प्राप्त किये जा सकते हैं।

सर्व प्रथम वेद मन्त्रो मे त्रयी विद्या द्वारा उपनिषदो के आधार पर कुछ अक्षर विशेषो द्वारा वेद मन्त्रो के आगे पीछे ऋषि, देवता, और मनुष्य रूप के बीच एक बस्ती अथवा प्रश्न उत्तर, आज्ञा और प्रार्थना द्वारा त्रयी वार्ता का रूप प्रकट होता है। बिना के जाने वेद मन्त्रो उनके आशय को नही जाना जा सकता है। फिर ओकार अक्षरो के माध्यम से इसका अधिक विस्तार होता है। इन विद्याओ के एक एक अक्षर के इतने अधिक अर्थ निकलने के कारण यही प्रतीत होता है कि इतने थोड़े अक्षरो के अन्दर इतने अर्थो को क्या कोई मनुष्य निर्माण कर सकता है। इसी लिए वेदो का ज्ञान ईश्वर द्वारा प्रदत्त बतलाया है। अथवा इसका निर्माता ही हमारे लिए ईश्वर सिद्ध है।

वेदो मे अग्नि विज्ञान की अनेक विद्याओ का वर्णन है। इसमे इध्म समिद्धो अग्नि के माध्यम से अग्नि विज्ञान के अनेकों अनेक सिद्धान्तो का दिग्दर्शन कराया गया है। ऋग्वेद १।१३।१ मे मेध्यातिथि ऋषि ने इस अग्नि को पदार्थो को देने तथा ग्रहण करने वाले शुद्ध करने वाले सम्यक प्रकाश से प्रकाशमान तथा दिव्य पदार्थों को अच्छी प्रकार से प्रकाशित करने वाले सिद्धान्त दर्शाये हैं। सदर्भित प्रकरण सामवेद १३४७ वाले त्रिक मे भी हैं।

यजुर्वेद २२।१५ मे सुतम्भर ऋषि ने भी इस अग्नि के द्वारा दीप्तता हुआ अग्नि द्वारा वायु आदि पदार्थो मे लेने-देने योग्य पदार्थो को हमारे लिए धारण करता है उस कारण रूप अर्थात् परमाणु भाव से विनाश होने के धर्म से रहित आपको ईधन समूह से अच्छे प्रकार से जलाने का निर्देश दिया है। इस प्रकरण का सवर्ग ऋग्वेद ५।१४।१ ५ वाले वर्ग तथा तैत्तरीय सहिता ६।१।१११४ मे से भी है।

ऋग्वेद ६।१६।३४, वाले वर्ग मे भारद्वाजो, बृहस्पत्यो वितव्यो ऋषि ने भी इस अग्नि के लिए सूर्य अग्नि तथा मेघ विज्ञान के लिए अनेक सिद्धान्त दर्शाए हैं। सदर्भित प्रकरण सामवेद पूर्वाचिक ४, उत्तराचिक १३६६ वाला त्रिक यजुर्वेद ३३।६, त्तैतरीय सहिता ६।३।१३।१, त्तैतरीय ब्राह्मण ३।५।६।१, हैं।

यजुर्वेद अध्याय ३३, १७ वाले अनुवाक मे सुसोवानाक ऋषि ने इसके उत्पादक सिद्धान्तो पर प्रकाश डाला है। सदर्भित प्रकरण ऋग्वेद १८।३६।१२ वाला वर्ग।

स्वस्थ आत्रय ऋषि ने भी यजुर्वेद २१।१२ वाले अनुवाक मे इसके ऊपर प्रकाश डाला है। इन्ही ऋषि ने यजुर्वेद २१।२६ वाले अनुवाक मे भी औषधि आदि पदार्थो मे शक्ति देने वाले सिद्धान्त दर्शाये हैं। यजुर्वेद २७।२, वाले अनुवाक मे अग्नि ऋषि ने प्रकाश विज्ञान से इसका सम्बन्ध बतलाया है, ब्रह्मा ऋषि ने भी अथर्ववेद ५।२७।१ वाले प्रसग मे इस विद्या के ऊपर कुछ प्रकाश डाला है। दीघतमा ऋषि ने भी ऋग्वेद १।१४२।१ वाले वग मे भी इस विद्या के किसी चरण विशेष पर प्रकाश डाला है। वसुश्रुतमात्रेय ऋषि ने ऋग्वेद ५।५।१ वाले वर्ग मे इस अग्नि विशेष के लिए ईधन आदि विज्ञान पर प्रकाश डाला है सुश्रुन ऋषि ने यजुर्वेद ३।२ वाल अनुवाक मे इस विद्या विशेष मे होने वाले दोषो को नष्ट करने के उपायो पर प्रकाश डाला है।

अमितकाप्यो देवलोक ऋषि ने भी यजुर्वेद ६।५।१ वाले अनुवाक मे इस अग्नि विशेष के द्वारा शुद्ध करने व ले सिद्धांतों के ऊपर प्रकाश डाला है।

भारद्वाज ऋषि ने यजुर्वेद अध्याय ३।३ के अनुवाक मे इस अग्नि को पदार्थ प्राप्त करने तथा पदार्थों के भेद करने वाले सिद्धान्तो पर प्रकाश डाला है। सदर्भित प्रकरण ऋग्वेद ६।१६।११ वाला वर्ग सामवेद ६६१ वाला त्रिक, तैत्तरीय ब्राह्मण ३।२।६।१, ३।१।२।१, त्तैतरीय संहिता २।१।८।१

बृहदुक्तो वामदेव ऋषि ने यजुर्वेद २८।१ वाले अनुवाक में भूमि के अन्दर तथा प्रकाश विज्ञान मे होने वाले सिद्धान्तो का दर्शन दिया है। यजुर्वेद २८।२४ वाले तीसरे अनुवाक मे सरस्वती ऋषि ने भी इसके सम्यक वाले विभिन्न सिद्धान्तो पर प्रकाश डाला है।

इस तरह से हमारे चारों वेद पूर्णत वैज्ञानिक ग्रन्थ प्रमाणित हो रहे हैं। महाभारत काल के उपरान्त साधनो की कमी के कारण सम्भवत कोई भी भाष्यकार या विद्वान इसके वास्तविक अर्थो को समझने मे पूर्णत, सक्षम नही हो पाया सकता है। इसी कारण वश वेद हमारे यहा उपेक्षित होकर केवल पूजा मात्र की वस्तु बने रह गए हैं। इस विद्या विशेष पर शोध कार्य करने के लिए वेदो पर अनेकानेक स्थल हैं जिनमे से कुछ इस तरह से हैं। ऋग्वेद ३।५।६, ३।२७।४, ३।५५।३, ४।२८।१, ६।१।५, ६।१६।११, ७।३।१, ८।१६।५, ८।१६।१४, ८।४४।१, १०।३।१, १ ।६६।३।४ १०।१५०।१, १०।१६।११, आदि वाले वर्ग। यजुर्वेद २१।३६, २०।५५ २३।१८ २७।११, २।४।५, २०।३६, ११।१२, २१।२६ वाले अनवाक। अथर्ववेद ५।२७।१, ५।२६ १४-१५ १२।२।११।१८, १५।१।२८, १३।१।२८ प्रसग।

सामवेद १५४६, तथा १५६७ वाले त्रिक, एत्रेय ब्राह्मण ६।४।३४, ७।२।४२ वाले आदि प्रसगो मे इनका वर्णन मिलता है।

भारतीय विद्वान और विश्वविद्यालयो के कुलपतियो से अनुरोध है कि इस विषय पर शोध कार्य करके उपलब्ध जानकारियों को ससार के वैज्ञानिको के समक्ष प्रस्तुत करे ताकि वैज्ञानिक क्षेत्र मे और अधिक उपलब्धिया प्राप्त हो सके।

दक्षिण भारत में व्यापक शुद्धि समारोह

दक्षिण भारत मे सार्वदेशिक सभा के प्रमुख कार्यकर्त्ता और प्रचारक श्री एम० नारायण स्वामी ने दिनाक २७ मार्च १९८७ की बड़े समारोह के साथ ग्राम नाधर्म पट्टी मुधु रामलिंगापुरम पचायत (तमिलनाडु के ईसाई ग्राम) के अन्तर्गत ४६ परिवारो के २५० सदस्यो को वैदिक धम मे दीक्षित किया। शुद्धि के बाद उनको जनेऊ दी गई। इस कार्यक्रम मे पचायत के प्रधान श्री जगरक्षक ने बड़ी सहायता की। आर्य समाज मदुराई के तीन सदस्यो ने भी बड़ा सहयोग दिया।

इसके अतिरिक्त २१ मार्च ८७ को कुडुकराई ग्राम (कन्याकुमारी जिले) मे ७ ईसाई परिवारो के १६ सदस्यो को वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया। यहा स्थानीय आर्य समाजो के कार्यकर्ताओ ने बड़ा सहयोग दिया। इस ग्राम मे गत माह भी ५ ईसाई परिवार शुद्ध किए गए थे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री-सार्वदेशिक सभा

वैदिक पद्धति से सामूहिक विवाह

प्रगति मडल वेलफयर ट्रस्ट, पटना के तत्वावधान मे अन्धविश्वास एव दहेज विरोधी सम्मेलन सह तिलक-दहेज रहित सामूहिक विवाह समारोह लेडी स्टीफन्सन हाल मैदान, पटना मे १ मई १९८७ तदनुसार वैशाख सुदी अक्षय तृतीय को सम्पन्न होगा। उक्त समारोह मे लगभग १०० विवाह आर्य पुरोहित प० बनारसी सिंह विजयी मन्त्री, सस्कार प्रशिक्षण विद्यालय यारपुर पटना-१ द्वारा वैदिक रीति से कराया जायेगा। वर कन्या और विवाह पर होने वाले सारा खर्च ट्रस्ट द्वारा किया जायेगा।

बनारसीसिंह 'विजयी' मन्त्री
सस्कार प्रशिक्षण विद्यालय
यारपुर, पटना-१

सम्पादकीय

श्री सुनील दत्त की पदयात्रा

देशभर में बहुचर्चित श्री सुनीलदत्त की महाशान्ति पद यात्रा, जिससे पजाब में शान्ति स्थापना की बड़ी-बड़ी आशाओ के महल खड़े किए गए थे उसके जो समाचार पत्रो मे प्रकाशित हो रहे हैं। उन्हें पढकर देशवासियो को घोर निराशा अनुभव हुई है।

कुछ समय पहले भी हिन्दू सन्तो का एक दल शान्ति स्थापना का उद्देश्य लेकर दरबार साहब मे पहुचा था। वहा जाकर उन्होने मत्था टेका व अरदास की। उनने रागी दर्शनसिंह जी से वार्तालाप भी किया और वार्तालाप के पश्चात् एक सयुक्त वक्तव्य प्रकाशित हुआ। उस वक्तव्य को पढकर देशवासी आश्चर्य चकित रह गए। इस वक्तव्य में आतकवाद का सारा दोष पजाब मे गए सुरक्षा बलो के सिर थोप दिया गया था। कौन नही जानता कि यदि पजाब से केन्द्रीय सुरक्षा दल को हटा लिया जाए तो सारा पजाब हिन्दुओ से खाली होने के हालात पैदा होने मे कोई देर नही लगेगी खालिस्तानी यही तो चाहते हैं। हिन्दू सन्तो पर ऐसा जादू श्री रागी ने डाल दिया कि वे रागी जी के सुर मे सुर मिलाकर ही सन्तुष्ट हो गए।

वही नीति श्री सुनीलदत्त ने अपनाई है। वे पजाब के किसी हिन्दू नेता से नही मिले उन्होने पीडित व आतकित हिन्दुओ को मिलने व उनसे सम्पर्क स्थापित करने की उनकी दुख दर्द के हालात जानने की कोई कोशिश नही की। वे सीधे दर्शनसिंह रागी से मिलने दरबार साहब में पहुचे हैं। वहा मत्था टेकने के बाद अरदास की। ११०००) की भेट चढाने के बाद वे अकाल तख्त के जत्थेदार दर्शनसिंह रागी से जाकर मिले हैं। उन्हे पजाब मे कुछ अघटित नजर नही आया। उनकी बात व्यवहार का ढग ऐसा रहा है कि जैसे वे अनुभव करते हैं कि पजाब मे सिखों के साथ कोई अन्याय हो रहा है जिसके निवारण मे वे रागी दर्शनसिंह की सहायता करना चाहते हैं। उन्होने ऐसी-ऐसी बाते कही है जिन्हें सुनकर सारा देश स्तब्ध रह गया है। उन्होंने रागी दर्शनसिंह से एक बार भी नही कहा कि पजाब के हिन्दुओ पर जो अत्याचार हो रहे है उन्हे रोकने के लिए आप क्या उपाय कर रहेहैं? सुनीलदत्त जी ने हिन्दुओ को आतकवाद से बचाने के बारे में अपनी वाणी से एक शब्द भी नही कहा। उन्हे इस बात की कोई पीडा नही कि आतकवाद के भय से हजारो हिन्दू पलायन कर चुके है और बचे खुचे भी रात दिन आतकवाद की छाया में ही जी रहे हैं। जैसे पजाब के हिन्दुओ के दुख दर्द से उन्हे कुछ वास्ता ही नहीं वे केवल रागी दर्शनसिंह व केन्द्र सरकार की मध्यस्थता के लिए ही पजाब गए है। इससे हिन्दुओ का क्या भला होगा इसे सुनीलदत्त ही अधिक समझ सकते हैं।

या तो श्री सुनीलदत्त समझते हैं कि रागी दर्शनसिंह हिन्दुओं की कोई मदद नहीं कर पाएँगी। वे आतकवादियो की सहायता से ही गद्दी सम्भाले हुए हैं। जब स्थिति यह हो कि —

वही कातिल वही मुखबिर वही मुन्सिफ भी हैं।
अकरिबा मेरे करें खून का दावा किस पर॥

आवश्यकता है

आर्यसमाज दीवानहाल, देहली के लिये एक भजन मण्डली की आवश्यकता है जो वैदिक धर्म के प्रचार के लिये निष्ठापूर्वक कार्य कर सकें। जिनको इस कार्य में रुचि हो वे आर्यसमाज कार्यालय से सम्पर्क करने का कष्ट करें।

—मूलचन्द मन्त्री
आर्यसमाज दीवान हाल
दिल्ली।

श्री सोमनाथ जी गुरुकुल कांगड़ी के परिदृष्टा-निर्वाचित

हरिद्वार १५ अप्रैल। गुरुकुल विश्वविद्यालय की सीनेट की एक विशेष बैठक पुस्तकालय कक्ष मे कुलाधिपति श्री प्रो० सत्यकेतु विद्यालकार की अध्यक्षता मे हुई। जिसमे ३ घण्टे तक लगातार गम्भीर विचार विनिमय के पश्चात सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी



आनन्दबोध सरस्वती के प्रस्ताव पर गुरुकुल के परिदृष्टा (Visitor) पद पर श्री सोमनाथ मरवाहा का सर्वसम्मत निर्वाचन हुआ। स्वामी ओमानन्द जी ने प्रस्ताव का समर्थन किया और इस निर्वाचन को सवसम्मति से स्वीकार करने की अपील की। इस प्रस्ताव का हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रो० शेरसिंह पूर्व कुलपति श्री बलभद्र जी हूजा व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने समर्थन किया इस अवसर पर श्री मरवाहा जी का पुष्पमालाओ से हार्दिक स्वागत किया गया।

हैदराबाद सत्याग्रह सम्मान पेंशन गैर सरकारी सलाहकार समिति

आगामी बैठक जो ३० अप्रैल को होने का निर्णय हुआ था अब वह स्थगित बैठक ४ मई ८७ को प्रात १०॥ बजे गृहराज्य मन्त्री श्री चिन्तामणि पाणीग्रही के कार्यालय नार्थ ब्लाक नई दिल्ली मे होगी। समिति के सभी सदस्यो से निवेदन है कि उक्त बैठक मे यथा समय उपस्थित होने का कष्ट करे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
चैयरमैन गैरसरकारी समिति

फिर वे पजाब मे शान्ति स्थापना कर तो कैसे ? एक अभिनेता के नाते जो अभिनय करना उन्हे पसन्द आया है वह यह है कि वे किसी प्रकार रागी दर्शनसिंह जी की हा में हा मिलाते चलें जिससे इस एक फिल्म की सफलता का श्रेय वे प्राप्त कर सके। वे श्री रागी की सभी माग केन्द्र सरकार से मनवाने का बीड़ा उठा रहे हैं। और उनमे ऐसी माग भी सम्मिलित हैं। जिनका सीधा सम्बन्ध हिन्दू-सिखो के जीवन मृत्यु के प्रश्नो से है।

श्री दर्शनसिंह श्री गुरुचरनसिंह टोहरा व श्री भिण्डरावाला के सीधे प्रतिनिधि हैं। वे खालिस्तान की स्थापना के लिए ही आतकवादियो के लिए अकाल तख्त का दुरुपयोग कर रहे हैं। उन्होने अपने धार्मिक आचार व्यवहार मे सार्वजनिक जीवन की सभी आचार सहिताओ की हत्या करके पजाब मे अपने कार्य कलापो द्वारा आतकवाद को प्रोत्साहन दिया है। पजाब मे परिस्थिति आज भी बद से बदतर है। सभी राजनीतिक नेता हैरान है पजाब मे शान्ति की कोई आसार ही नजर नही आते —

हकीमो के चेहरे भी उतरे हुए हैं।
मर्ज इस कदर लादवा बन चुका है॥

इन परिस्थितियो मे श्री सुनीलदत्त की पदयात्रा से किसी सुखद भविष्य की कल्पना करना मूर्खों के स्वर्ग मे रहने जैसा ही है।

भारत में सक्रिय विघटन कारी शक्तियां तथा आर्य समाज का महान् दायित्व

श्री श्रीराम अवतार आर्य, ४६ गलीभरन, बरेली

इस समय जो हमारे प्राचीन महान् गौरवशाली देश राष्ट्र तथा सनातन वैदिक धर्म की वीभत्स अधोगति होती जा रही है, जिसके लिये हम स्वय ही उत्तरदाई है, उस पर प्रत्येक देश राष्ट्र भक्त नागरिक को चिन्तित होना स्वाभाविक है। एक समस्या हो तो कही जावे परन्तु यहा तो समस्याय ही समस्याये और नवीन प्रतिदिन उठ रही है और हम शान्त, निश्चेष्ट तथा निष्क्रिय हैं। पचनद प्रदेश जल रहा है आसाम काश्मीर मिजोरम आदि मे चिगारिया उठ रही है तथा इन प्रदेशो सहित बिहार, पश्चिमी बगाल राजस्थान गुजरात ही नही सम्पूर्ण भारत मे विघटनकारी पाकिस्तानी बगला देशी तत्वो की भारी घुसपैठ तीव्र गति से हो रही है और हमारे देश के नेता अपनी संतुष्टीकरण की नीति तथा स्वार्थ सत्ता लोलुपता मे मस्त हो चैन की वशी बजा रहे हैं। हिन्दी की सयुक्त राष्ट्र सभा की भाषा बनाने की बात कहने वाले नेता हिन्दी को भारत की राष्ट्र भाषा ही बनाने को प्रस्तुत नही है और डके की चोट पर कहते हैं कि "हिन्दी किसी पर थोपी नही जावेगी" और उधर तामिलनाडु मे अग्रेजी विधान सभा की भाषा बनाने का प्रस्ताव पारित हो गया। बिहार मे उर्दू को भी महत्व देकर उत्तर प्रदेश मे जहा १५ प्रतिशत भी उर्दू भाषी नही हैं, उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने की माग तथा प्रयत्न चल रहे हैं परन्तु ५८ प्रतिशत हिन्दी भाषी पजाब मे, हिन्दी को यह स्थान प्राप्त कराने मे असमथ है।

हमारे नेताओ तथा देश मे व्यापक चरित्रहीनता अनैनिकता, भ्रष्टाचार फैला है, असमानता, मूल्य वृद्धि अराजकता, साम्प्रदायिक विद्रोह, अलगाव वाद, पृथकतावाद की गति तीव्र है परन्तु सामान्य नागरिक सुविधाओ का अभाव है। कार्यपालिका पर नेताओ का प्रभाव व दबाव रहता है वे स्वतन्त्ररूप मे जनहित के कार्य करने मे असमर्थ रहते हैं और प्रत्येक कार्य नेताओ विधायको मन्त्रियो की सन्तुष्टी को ध्यान मे रखकर ही करते हैं अन्यथा अयोग्य अकुशल सिद्ध हो जाते हैं।

इसी प्रकार न्यायपालिका पर भी अकुश रखने की कुचेष्टाय हो रही हैं जिससे वे प्रशासन के हित को ध्यान में रखकर ही अपने निर्णय दे। केन्द्रीय मन्त्री जिन्होने सविधान की निष्ठा और सत्यता के पालन की शपथ ली होती है, वह भी समान नागरिक सहिता का विरोध कर अल्प सख्यको को भडका रहे हैं। तथाकथित अल्पो के नाम पर साम्प्रदायिक तत्वो को विशेषाधिकार तथा अलग पहचान की स्वतन्त्रता प्रदान की गई है जो परिवार नियोजन जिसकी अत्यावश्यकता आर्थिक विकास हेतु अनिवार्य है पालन न कर भारी जन सख्या वृद्धि कर रहे हैं। स्थान-स्थान पर बलात् सामूहिक धर्म परिवर्तन किए जा रहे हैं तथा अवैध अस्त्र शस्त्र बम, दारुल उलूम देवबन्द अलीगढ मुस्लिम विश्व विद्यालय तथा मुस्लिम बहुल क्षेत्रो मे निर्माण हो रहे हैं और साम्प्रदायिक उत्पात भडकाने वाले पोस्टर लेख आदि कितनी ही जगह बरामद हुए हैं। नेता, विधायक, सासद, मन्त्रियो के भी सम्बन्ध डाकुओ तस्करो से अन्य असमाजिक तत्वो से होने के समाचार भी प्रकाशित हुएहैं। हिरोइन, हशिश स्मैक जैसे मादक द्रव्यो के क्रय विक्रय सग्रह मे लिप्त हैं। मेरठ मुरादाबाद, सम्भल न्यूरिया नेहटौर, इलाहाबाद अहमदाबाद, हैदराबाद आदि-आदि अनेक महानगरो, नगरो, ग्रामो मे खलकर साम्प्रदायिक विप्लव हुए हैं जिनमे शान्त सहिष्ण बहुसख्यक समुदाय व्यक्तियो की निमम क्रूर हत्याय सैकडो की सख्या मे की गई है। पजाब म तो ऐसी घटनाय नित्य प्रति की साधारण बात हैं—और भारत सरकार तथा प्रदेश प्रशासन पूर्ण रूप से शिथिल तथा निकम्मा सिद्ध हो चुका है।

केवल आर्य समाज ही एक ऐसी सुदृढ बुद्धि जीवी सस्था है, जिसके पास ठोस कार्यक्रम साधन साहसी तथा सगठन शक्ति है तप, त्याग, बलिदान, सब कुछ करने की, मर मिटने की भावना है। वह प्रत्येक सम्भव उपाय से देश, राष्ट्र धर्म सबकी रक्षा करने हेतु दृढ सकल्प धारी एव पूण व्रती है जिसका प्रत्यक्ष और स्पष्ट प्रदर्शन उसने अनेक बार किया है, चाहे हैदराबाद धार्मिक आदोलन हो चाहे सन् १९७५ की आर्य समाज शताब्दी समारोह दिल्ली अथवा सन् १९७५ की आर्यसमाज शताब्दी समारोह दिल्ली अथवा सन् १९८३ का ऋषि निर्वाण शताब्दी या गत वर्ष का उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह जहा लाखो की सख्या मे आर्य जनो की उपस्थिति थी।

जिसकी शोभा यात्राओ, मे सम्पूर्ण भारत के काश्मीर से कन्या कुमारी अटक से कटक तक के असख्य नर-नारी, बाल वृद्ध, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थो, गृहस्थ, सन्यासी, भजनीक, उपदेशक, प्रचारक आदि का क्रमपक्तिबद्ध समुदाय वैदिक मन्त्र, जयध्वनि, प्रेरक गीत गु जाता, रग-बिरगे सहस्त्रो पताकाओ, मोहक बैंड बाजे, आर्य वीर दल के युवको का आकर्षक शरीरिक प्रदर्शन, सैकडो भव्य स्तम्भ, अनेको प्रवेश द्वार, स्थान-स्थान पर स्वागत सत्कार जल-पान की व्यवस्था अनुपम अलौकिक शोभायमान् नैसर्गिक हृदय की छटा के मध्य पूर्ण शान्ति पूर्वक, सोल्लास मीलो लम्बे मार्ग पर प्रवाहित होता है।

प्रश्न यह है, कि किस प्रकार हम अपनी अतुलित शक्ति-बल, सगठन, आदर्शों, परम्पराओ मर्यादाओ का सदुपयोग कर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का स्वप्न साकार करने मे समर्थ हो। आर्यसमाज कदापि इस देश धर्म की अधोगति पर आख मूद कर नही बैठ सकता है जिसका लक्ष्य तथा महान् दायित्व सम्पूर्ण विश्व में आर्य वैदिक सिद्धान्त एव सभी के प्रसार प्रसार है, परन्तु विडम्बना है आज हमारे समक्ष दूरदर्शी, तपोनिष्ट, कर्मठ, व्रती महापुरुषो द्वारा नेतृत्व का अभाव और समस्यायें वृद्धि पर है। विश्वास पूर्वक यह कहा जा सकता है, कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्धारित मार्ग पर चलकर, आर्यसमाज ही इस सकट पूर्ण बेला की घडी में समुचित मार्ग दर्शन मे समर्थ है और यह सिद्ध कर सकेगा कि उसके सदस्य, सदा अपने पूज्यनीय ऋषियो ज्ञानियों, मनीषियो, महापुरुषो से अविरल प्रेरणाग्रहण करते रहे हैं और अनेको विघ्न बाधाओ के मध्य भी सत्य और धर्म के मार्ग से कदापि विचलित नही होंगे।

स्वामी दयानन्द ने भी इसी उद्देश्य को समक्ष रखकर भारत के समस्त धर्म और मत-मतान्तर अनुयायियो की एक सभा का आयोजन किया था, जिसमे उन्हे आरम्भ मे तो पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई थी, परन्तु कतिपय दुराग्रहियो की हठवादिता के कारण जो वेद के अतिरिक्त पुराणो, कुरान, बाईबिल को भी ईश्वरीय कृतिया स्वीकार कराने पर तुले थे, मतैक्य न हो सका। यही कारण है कि यह गम्भीर आपात स्थिति पुन विकराल मुख खोले हमारे सम्मुख है और हमारी सस्कृति सभ्यता, मान्यताओ के ही नष्ट हो जाने की परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। महर्षि की इस महत्वाकांक्षा को पूर्ण और सफल बनाने हेतु सार्वदेशिक प्रदेशीय, उप-प्रतिनिधि आय समाजो का दायित्व है कि वे देश-विदेश के आर्य जगत के सम्पूण मनीषियो से सम्पर्क कर, सगठित होकर इस महत्वपूर्ण

(शेष पृष्ठ ११ पर)

धर्मनिर्पेक्षता और आर्य समाज

लेखक : श्री श्यामकिशोर आर्य प्रयाग

भारत ही नहीं समस्त विश्व इन दिनों एक ऐसी सीमा पर वैचारिक युद्ध कर रहा है कि साम्प्रदायिकता विषैली वस्तु है इसका परित्याग करने में ही कल्याण है।

भारत से बाहर व भारत में, ईरान-ईराक, इसराईल-अरब, अमेरिका-रूस शिया-सुन्नी, ईसाई-मुसलमान, हिन्दू-मुसलमान, हिन्दू-सिख। सभी कही काबा, कही गुरुद्वारा, कहीं अलअक्सा मस्जिद व अयोध्या के राम जन्म मन्दिर (बाबरी मस्जिद) का बहाना बना कर मानव-मानव रक्त की होली खेल रहे हैं।

विद्वद्वर पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ने इसी प्रकार की समस्याओं पर ध्यानाकृष्ट किया है—

आये दिन मन्दिरो मस्जिदों के हैं झगड़े रहते।
दिल मे हैं ईंटें भरी, सब पै खुदा होता है॥

फ्रान्स देश के प्रसिद्ध विद्वान् बर्थोले ने जनवरी १९०१ मे अपने व्याख्यान में कहा था—

अब धर्म के दिन चले गये। अब धर्म के स्थान पर विज्ञान का राज्य होगा। प्राचीन युग में दो शक्तियां थी जिनका प्रभाव मानव जाति पर पड़ता था—एक बल और दूसरा धर्म। अब दोनों शक्तियां अनावश्यक हो गई क्योंकि दोनों का स्थान विज्ञान ने ले लिया।

धर्म व ईश्वर के नाम पर घृणा फैलाने वाले विशेष कम्यूनिस्ट लोग हैं उनके प्रसिद्ध विचारक काउन्ट लियो तालस्ताय ने घोषणा की—

"धर्म का युग चला गया। विज्ञान के अतिरिक्त अन्य किसी बात पर बात करना मूर्खता है।"

उपरोक्त पंक्तियां बड़ी महत्वपूर्ण हैं। इन विचारों में बड़ा बल है क्योंकि धर्म जो कि आत्मा-परमात्मा को मिलाने का साधन है।

आत्मवत् पश्यति। य: पश्यति स: पश्यति।
विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि:।
शुनिचैव श्वपाके च पण्डिता: समदर्शिन:॥ गीता

ऐतिहासिक घटना है कि इस प्रकार धर्म से एक घोरतम अंगुलिमाल डाकू महान अहिंसक बन गया। शंकर काले नाग का उपचार एवं सिंहो द्वारा अपने में अन्य प्राणी की रक्षा की गई है।

कविवर बिहारीलाल जी की उक्ति—

कहलाने एकहि बसत अहिमयूर मृग बाघ।
जगत तपोवन सो कियो दीरघ दाघ निदाघ॥

यह धर्म क्यो बदनाम हो गया? और लड़ाई धर्म के खिलाफ लड़ी जा रही है?

इसका समाधान ऋषि दयानन्द ने किया जिन्होने कहा—प्रभु द्वारा प्रदत्त मार्ग दर्शक वेद सूर्य की ओर मुंह फेरने से हमे मार्ग दिखेगा। आज हम परछाई में मार्ग ढूढते हैं। जो स्वयं प्रकाश हीन है। जहां दीपक तले अंधेरा है।

सूर्य अन्यों को प्रकाश देता है और स्वयं अंधकार से रहित हैं।

"आदित्य वर्णं तमस: परस्तात्"

अतः वेद की ओर मुंह कर, पीछे मुड़कर। भूतपूर्व राष्ट्रपति विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक डाक्टर सर्वपल्ली राधा कृष्णन के शब्दों में—

"यह आवश्यक है कि हम वास्तविकता को प्राप्त करने के लिये सांसारिक विषयों से विमुख हो जायें और नई उर्जा तथा संकल्प के साथ इतिहास के अतीत जगत की ओर लौट पड़े। (धर्म और समाज पृष्ठ ५३)

इतिहास शिक्षा देता है—

वेद ने चातुर्वर्ण्य एवं चतुराश्रम की व्यवस्था की। मानव ने उसकी मौलिक शिक्षा को भुलाकर वर्णाश्रम के स्थान पर कल्पित जातपात प्रारम्भ कर दी।

विश्वामित्र एवं वशिष्ट का उपाख्यान।

परशुराम एवं भीष्म व परशुराम-राम का इतिहास प्रमाण है। दोनों का अन्त एवं निर्णय भारत का इतिहास बतला हमें मार्ग दर्शन कर रहा है कि—

बुद्धि एवं भुजा दोनों साधन हैं, आत्मा व परमात्मा को जानने व प्राप्त करने के लिये।

धर्म प्रभु का विधान वेद का उपदेशक ब्राह्मण—"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे" का प्रचार करता है। इसमें बाधक तत्वों का परिहार (क्षात्र बल) क्षत्रिय करता है।

क्षत्रिय बल राजा होता है और प्रचारक व व्यावहारिक प्रदर्शक ब्राह्मण होता है। यही नीति राजनीति कहाती है। इसी को धर्मनीति कहते हैं।

राजा यदि उच्छृंखल हो उठता है तब चाणक्य जैसे योगी का अपमान करता है। फिर कलह और खानपान का ताण्डव आरम्भ हो जाता है।

बाहुबल सैन्य बल के अभिमानी को स्वीकार करना पड़ा कि—

धिक्धिक क्षत्रिय बल ब्राह्मण बलं महत्।

"बुद्धि यस्य बल तस्य"

गुण-कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था स्वीकार करने के कारण पुन: वैदिक धर्म स्थापित हुआ।

यह युद्ध भड़क उठता है जब वैदिक मर्यादा (आज्ञा) को तोड़ दिया जाता है। बलों के बल बुद्धिबल को ताक पर रखकर (बुद्धिहीन) अन्ध श्रद्धा का प्राबल्य हो जाता है।

धर्म का नाम लेकर धर्म ध्वजी,पाखंडी अनाचार आरम्भ कर देते हैं। लोग वर्ण संकर होने लगते हैं या हो जाते हैं।

क्षत्री राजा जब ब्राह्मण का भी अधिकार ले लेता है या लेना चाहता है अथवा ब्राह्मण (धर्मोपदेष्टा) जब क्षत्रिय का अधिकार राज्य व शासन को अपने हाथ मे लेना चाहता है तब वर्तमान विश्व जैसा माहौल (वातावरण) बन जाता है, और तालस्ताय जैसे वक्तव्य की आवश्यकता हो जाती है।

योग्यता अयोग्यता की अवहेलना वर्ण संकरता है। इसीलिये—वैदिक वर्ण धर्म के प्रचारक मनु ने चेतावनी दी है—

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानाञ्च व्यतिक्रम:।
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दुर्भिक्ष मरणं भयं॥

इतिहास की शिक्षा यही है। इसी के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा—

वेदो की ओर देखो Back to the Vadas.

लिखा:—

लोग कहते हैं एकेश्वरवाद इस्लाम से नानक ने स्वीकारा परन्तु सचाई है हजरत मुहम्मद ने एकेश्वर की बात वेदों की सरजमी से सीखी। रुहेनबी को आई ठंठी हवा यहा से।

जगद्गुरु दयानन्द ने महर्षि वेदव्यास तक आई ऋषि परम्परा जिसे कृष्ण ने गुजरात मे स्थापित की थी उसे पुन: अवतरित होकर, गुजरात से मथुरा में जाकर बंशी की ध्वनि से 'वेदानां सामवेदोऽस्मि' की गूंज हिमालय की चोटी से की।

उसी गुजरातकी पुण्य भूमि रूप ससर्ग में हजरत मोहम्मद भी आए उत्कर्ष काल जब वह माई लुदेवा के विश्वस्त के अनुचर के एकेश्वर वाद के सन्देश सुनें। वह ठीक मक्का से पूर्व में है।

आज कभी काशी का विश्वनाथ का झगड़ा था, फिर काबा का झगड़ा उठा था अब अमृतसर के गुरुद्वारा का झगड़ा बनाया जा रहा है।

मन्दिर वाले पुराणों को, काबा वाले—कुरान को तथा गुरुद्वारा वाले परस्पर विरोधी मान्यता वाले ग्रन्थ साहब को प्रमाण बना कर झगड़ा उठा रहे हैं।

जब कि इन सभी ग्रन्थों का मूल एवं प्रमाण वेद है। अब सूर्य की ओर पीठ किये हुये छायारूपी अपनी पुस्तकों का प्रमाण लेकर लड़ाई कर रहे हैं।

दयानन्द इस सब गलाजत से गुरु-गंगोत्री के जल से परिचित कराना

चाहते हैं जिसे पीकर मानव को—

"दैहिक दैविक भौतिक ताप" समाप्त हो जाते हैं।

काशी के शास्त्रार्थ मे उन्होंने पंडितो से पूछा था बताओ धर्म के लक्षण—पंडितो को धर्म के लक्षण भी नही मालूम थे। तब उन्होंने—

धृति क्षमादमोऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह.।
धीर्विद्यासत्यऽक्रोधो दशक धर्म लक्षण ॥ मनु०

बता कर बाल शास्त्री, विशुद्धानन्दादि को चकित कर दिया था।

आज भी दयानन्द की यह घोषणा यथावत् है।

जो लोग धर्म को खिलवाड बना बैठे हैं। धर्म की कमाई खा रहे हैं और लोगो को धर्म से विमुख कर रहे हैं—उन्हे पंडितवर स्वर्गीय गगाप्रसाद उपाध्याय कह रहे हैं—

हम 'धर्म" शब्द को प्राय उसी अर्थ मे प्रयुक्त करते हैं जिसमे अग्रेजी का रिलीजन (Raligion) या फारसी का मजहब शब्द आता है। बहुत से लोगो की सम्मति है और कई अशो मे ठीक सम्मति है कि सस्कृत के धर्म शब्द का पर्याय किसी भाषा मे नही।

किसी समय धर्म को विशेष महत्व दिया जाता था। धर्म व्यक्तिगत जीवन का तो विकास करता था, सामाजिक सगठन मे इसका विशेष हाथ था। पर अब धर्म रूढि ग्रहिता मात्र रह गया है और न प्रेरणा ही। इस सबका परिणाम यह भी हुआ कि एक नवीन समाज का निर्माण हो गया। जिसने धर्म के प्रति उदासीनता ही नही रखी, इसको भावी चरित्र निर्माण मे बाधक बताया।

आज पथ व सम्प्रदाय को धर्म के पर्याय के रूप मे प्रदर्शित किया जाता है जो अशुद्ध है। इसी को न समझने के कारण लोग धर्म की उपेक्षा करने लगे हैं। आज धर्म के विरोध मे झण्डे गाड दिये गये हैं। शासन धर्म की बात को उठाने पर निर्णय देने मे असहाय अनुभव करता है।

धर्म को वैयक्तिक मामला बताया जाने लगा है। जब कि धर्म वैयक्तिक सामाजिक एव राजनैतिक भी है।

हमारे वर्तमान नेता एव विद्वान जिन्होंने धम का क ख ग नही जाना वे व्यवस्था देते हैं। दयानन्द को तर्कणा से प्रभावित होकर स्वामी श्रद्धानन्द ने हरियाणा मे गुरुकुल, ऋषि कुल तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मुसलमानो के नेता—सरसय्यद महमद खा ने अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय मोलाना अब्दुल कासिम न मदरसा देवबन्द उलूम बनाया।

ईसाइयो के रूढिवादी कैथोलिक अब भारतीयता का पुट स्वीकार करते जा रहे हैं। क्योंकि यदि भारत के रूढिवादी इन्हे पुन सबको हूणो व शोको जैसा अपने मे खपा दें तो ये वेदो की जय, राम कृष्ण की जय बोलकर शिखा सूत्रधारी हो जाय।

पाकिस्तान खालिस्तान व ईसास्थान की माग उठे ही न।

समझौतावाद तथा अवसरवादिता को छोड दिया जाय।

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गाधी जी जैसी कि राजनैतिक स्वार्थवश अजमेर जाने पर दयानन्द को श्रद्धाजलि देने के पहले ख्वाजा के दरबार पर गई। यदि न जाती तो हगामा मच जाता।

इसी प्रकार वर्तमान के राजनेता हैं जो जिस उद्देश्य राजनीति अवसरवादिता के आधार पर कहलाते हैं।

हमारे सविधान निर्माताओ का "एक ही विचार था" कि धर्म जिसे रिलीजन, मजहब सम्प्रदाय पथ आदि नामो से पुकारा जाता था। इसका नाम लेकर विश्व में जगह जगह लडाइयाँ हो रही थी। ऊचा नीचा, छोटा बडा अपना पराया का बाजार गर्म था।

योरोप-अरबों तथा वैष्णवों शैवों शाक्तो की प्रसिद्ध लडाइया अपना बीभत्स इतिहास का पन्ना खोले बैठी थी।

शिया सुन्नी तथा उसके बहत्तर सम्प्रदाय उन फतवों तथा अज्ञानी विधियो को सजोये बैठे थे जिसमे परस्पर विरोधी हो उठते थे तलवारें उठ जाती थी। ऐसी दशा मे सविधान निर्माता माननीय डाक्टर भीमराव अम्बेडकर जो स्वय इस त्रास के शिकार थे, किस धर्म की व्यवस्था रखते। जिस सम्प्रदाय का पक्ष लेते अन्य तलवार उठाते, खिलाफत का अलम बुलन्द करते।

विवश होकर धर्म (वर्तमान सम्प्रदाय) निरपेक्ष राज्य की घोषणा करनी पडी। परन्तु हमारे नेता धर्म विहीन राज्य इसकी व्याख्या करने लगे, उसके निर्माण मे जुट गये जिसका परिणाम वर्तमान भारत है।

आजादी से पूर्व १९४७ से पूर्व चरित्रवान अधिकारी थे। देश भक्त अधिक थे सुखी अधिक थे, झगडे कम थे बलात्कार कम था चोरी कम थी।

सभी कुरान चिन्तक जिन्होंने वे सुहाने देशभक्ति के तराने सुने हैं गाया है, शराब की दुकानो पर सत्याग्रह किया है। मास से घृणा करने वाले महात्मा गाधी का शिष्यत्व प्राप्त किया है। आज दरवाजे-दरवाजे पर मांस-शराब अण्डे की चाट वालो की दुकान, सास्कृतिक कार्यक्रमो के नाम पर चाहे रेडियो, टेलीविजन व कोई भी सभा नाच बिना सूनी हैं। रसियों, इश्कियो, गजलो की दुहाई को देख कर रो रहे हैं।

अतएव आर्यसमाज को इस धर्म विषयक सत्य अवधारणाओं की स्थापना हेतु धर्मनिरपेक्षता की सत्य व्याख्या करनी चाहिये।

राजनीति जो धर्म की अभिवृद्धि के लिये होती है। उसमे अपना हाथ डालना चाहिये। जो भी राजनेता हैं और जो वोट के भय से सत्य कहने मे हिचकिचाते हैं उन्हें खुल कर समर्थन देना चाहिये।

उन सभी वाणी के धनी, सरस्वती पुत्रो को दयानन्द द्वारा दिग्दर्शित वेदानुसार धर्म की व्याख्या समझा कर उसके व्यवहार मे अपना तन-मन-धन लगा कर शासन के सभी साधनो का पूरा बल से उपयोग करना चाहिये।

क्योंकि यह स्पष्ट है साम्प्रदायिक दल अपने पूरे दल से शासन प्रर हावी है। शासन तन्त्र चाह न्याय हो, पालिका हो या प्रचार तन्त्र हो उसमे अपने स्वार्थ एव व्यापार से अछूना नही है।

हमारा सविधान एक किनारे उपेक्षित पडा है। उसका व्यवहार भ्रष्टाचार से नही हो पाता।

युग पुरुष दयानन्द के मानस पुत्र आर्यसमाज को निरपेक्ष रूपी नये पाखण्ड से खुलकर सघर्ष के लिये कमर कस कर तैयार होना चाहिये। ●

समाज सेवा के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत साहित्य की प्रयोगनीयता

डा० आशा रानी राय उपमन्त्री, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर

साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब है, मानव की इच्छाए, भाव विचार, अन्तर्द्वन्द्व साहित्य के माध्यम से ही मुखरित होते हैं। जैसे मानव की शारीरिक आवश्यकताए होती हैं, तद्वत मानसिक भी, शारीरिक क्षुधा भोजन से किन्तु मानसिक साहित्य से शान्त होती है, अतएव इसे "ब्रह्मानन्द सहोदर" आनन्द की सज्ञा एव सम्मत जैसे आचार्यों ने इसका प्रयोजन "शिवेतर क्षतये" बताया। सहस्रों वर्षो के व्यतीत होने पर भी इसका प्रभाव जनमानस पर "कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे" तुल्य होता है। वैज्ञानिक विषयो के ज्ञान से बुद्धि विकास किन्तु साहित्य के हृदय का विकास होता है। प्रत्येक साहित्य की एक भाषा होती है जो समाज के क्रिया कलापो, कर्मों तथा व्यवहारो से प्रभावित होती है, जो मानवीय अनुभूतियो, सवेदनाओं और हृदयगत भावभावों को ले जाने, प्रेरित करने तथा तदनुकूल आचरण करने मे समर्थ होती हैं। सहित के भाव से युक्त साहित्य मे सस्कृत साहित्य सर्वप्राचीन व देववाणी से विभूषित है। सृष्टि मे अनादि काल से समाज-सेवा का अस्तित्व रहा, इतिहास के सुनहरे पृष्ठ पलटें तो ज्ञान होगा कि समाज सेवा से तात्पर्य ऐसे नियमो व कार्यो का विकास तथा विस्तार करना है, जिससे समाज मे विकसित अन्ध विश्वास, कुप्रथाए व रूढ़िया दूर हो और समाज तथा देश का कल्याण हो। भारतीय सस्कृति मे दान, विश्वप्रेम की भावना, आवश्यकता मे पड़े व्यक्ति व समाज के अटूट सम्बन्ध को महाभारत के उद्योतपर्व मे दर्शाया गया है—

त्यजेदेक कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुल त्यजेत्।
ग्राम जनपदस्यार्थे ह्यात्मार्थे पृथिवी त्यजेत्॥

अर्थात कुल की रक्षा के लिये एक को त्याग देना चाहिए, ग्राम की रक्षा के लिये कुल छोड़ देना चाहिये, जनपद के लिये गाव आत्मा की रक्षा के लिये पृथिवी को छोड़ देना चाहिए।

अत निश्चित है कि समाज मे घटित नियमो की उपेक्षा करके कोई भी व्यक्ति स्वमीष्ट प्राप्ति कदापि नही कर सकता है। प्राचीन काल मे जब वेद ज्ञान का दिनकर समाज मे प्रकाशित रहा, तब कभी किसी प्रकार की समस्या न हुई, किन्तु क्रमश शनै शनै समाज मे वेदों, उपनिषदो एव ब्राह्मणो आदि का अध्ययन अध्यापन कम हो गया है, जिससे सत्य पर आवरण पड़ गया आर्ष साहित्य की उपेक्षा से अनेक भ्रान्तियो कमान्यताओ, कुप्रथाओ तथा अन्धविश्वासो का प्रचार हो गया। लोग यह प्रचारित करने लगे–'स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्" अर्थात् स्त्री एव शूद्रो को अध्ययन एव धार्मिक ग्रन्थो के पठन की अनुमति नही है, जिसके कारण ससार की निर्णायक शक्ति व समाज का एक वर्ग ही अविद्या के गहन अधकार मे डूबता गया। इस अधकार मे सत्य के दीप को लेकर ऋषि दयानन्द आए, उन्होने वेद और उपनिषदो को पुन प्रकाश मे लाकर सत्य का मार्ग प्रशस्त किया। यजुर्वेद के २६वें अध्याय मे बिना किसी भेद-भाव का अधिकार है—

यथेमा वाच कल्याणी मावदानि जनेभ्य।
ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च॥

शतपथ-ब्राह्मण मे कहा गया है—

मातृमान् पितृमान् आचार्यवान पुरुषो वेद।

जब तक कन्याए शिक्षित न होगी, वह मातृमान् के पद को नही प्राप्त कर सकती है। चाणक्य नीति मे तो ऐसे माता-पिता को शत्रु की सज्ञा दी है, जो अपने बच्चों का लालन-पालन करते हुए, उन्हे अध्ययन से वचित रखते हैं—

माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठित।
न शोभते सभामध्ये हसमध्ये बको यथा॥

अर्थात् शिक्षा से बच्चों को रहित रखने वाले माता-पिता शत्रु हैं, वह बच्चे सभ्यजनो के मध्य तथैव कुशोभित होते हैं जैसे हसों के मध्य बगुला।

श्रौतसूत्रादि मे "इम मन्त्र पत्नी पठेत्" अर्थात इस मन्त्र को पत्नी पढ़े से भी यह तात्पर्य है कि यदि कन्या विदुषी न होगी तो मन्त्र पाठ कैसे करेगी?

यहा तक कि मनुस्मृति मे आचार्य मनु ने कन्याओ को सम्पत्ति पर समान रूप से पुत्र के समान अधिकारी बताया।

अविशेषेण पुत्राणा दायो भवति धर्मत।
मिथुनानी विसर्गादौ मनु स्वायम्भुवोऽब्रवीत्॥

इस प्रकार समाज मे व्याप्त कुरीतियो, बालविवाह, वृद्धविवाह, विधवा-विवाह विरोध, बगाल मे सती प्रथा प्रचलन आदि के निवारणार्थ सस्कृत साहित्य यश मनीषियो ने आवाज उठाई। ऋग्वेद के २१वे मण्डल के ३५वें सूक्त के मन्त्र ४ के अनुसार—

तमस्मेरा युवतयो युवान मर्मृज्यमाना परियन्त्याप।
स शुक्रेभि शिक्वभी रेवदस्मै दीदायानिध्मो घृतनिर्णिगप्सु॥

इसी प्रकार ऋग्वेद के उपर्युक्त सूक्त के मन्त्र पाचवें छटे मे सूक्त ३१ वें के मन्त्र ३ ३१वें सूक्त के सातवें मन्त्र मे पूर्ण युवावस्था मे विवाह का विधान है।

विधवाओ का जीवन समाज में तिरस्कृत था, उन्हे या तो पति के साथ चिता मे जल जाना पड़ता था अथवा आजीवन प्रतिदिन कटुता, व्यग्यवाणो ग्लानी रूपी विषपान करना पड़ता था। ऋग्वेद के १०/८५/४५ मन्त्र मे विधवा विवाह हेतु प्रमाण है।

इस प्रकार बाल विवाह प्रचार व विधवा विवाह निषेध से जो समाज मे अव्यवस्था व्याप्त थी, सस्कृत आर्ष साहित्य के प्रचार से इसका समाधान सम्भव हो सका है।

ससार मे कुछ जन ऐसे भी होते हैं, जिनका कोई अवलम्बन नही होता है, वे गरीब, असहाय और निराश्रित होते हैं, परन्तु भारतीय सस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले मनीषियों ने उनके लिए भी मानव को प्रेरणा दी। योगशास्त्र मे वर्णित है—

आत्मवत् सर्वभूतेषु दुखे, सुखे प्रिया प्रिये।
चिन्तयन्नात्मनोनिष्ठ हिसामन्यस्य नाचरेत्॥

अर्थात् ससार के सभी प्राणियो से प्रिय अथवा अप्रिय प्रसग मे, सुख अथवा दुख मे आत्मवत् चिन्तन चाहिए तथा कभी किसी के प्रति अनिष्ट व हिंसात्मक कार्य न करना चाहिए।

इसी प्रकार से हितोपदेश मे मानवीय सम्बन्धो का विवेचन—

नकश्चित्कस्यचिनिमित्र न कश्चित्कस्यचिद्रिपु।
व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा॥

अर्थात न कोई किसी का मित्र होता है न शत्रु, व्यवहार से ही शत्रु या मित्र बनते है, अत सदैव दूसरो की सहायता करते हुए परोपकार से युक्त जीवन होना चाहिए—

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥ यजुर्वेद ३६/१८

अर्थात हम परस्पर एक दूसरे से मित्रवत् दृष्टि स व्यवहार करते हुए प्रीतिपूर्वक कार्य करे तथा हृदयगत समस्त कलुषता, मलिनता काम, क्रोध, लोभ, मोह-मद एव अहकार आदि व्याधियो को अपने हृदय पटल से बहिष्कृत कर दे—

योस्मान् द्वेष्टी य वय द्विष्मस्त वो जम्भे दध्म॥

अथर्व० ३२७।१

अर्थात् जो हमसे द्वेष करते हैं एव जिससे हम द्वेष व ईर्ष्या करते, उस भावना को ही समाप्त कर दीजिये। मानव परस्पर सौहार्द भावना से दूसरों के कष्ट को अपना कष्ट समझ कर कार्य करे, यहा तक कि हमारे चतुर्दिक प्रकृति भी स्वय स्वार्थ का चिन्तन न करती हुई, दूसरो के भलाई व कल्याणार्थ रत रहती है, जैसे सूर्य, चन्द्रमा, नदी व वृक्षादि तथैव श्रेष्ठ जन भी परोपकार मे रत रहते हैं—

भवन्ति नम्रस्तरव फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घना
अनुद्धता सत्पुरुषा समृद्धिभि स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥

नीतिशतकम -७१

अर्थात फल से युक्त वृक्ष झुक जाते हैं, नवीन जलभार से मेघ नीचे आ जाते हैं, सज्जन ऐश्वर्य से विनम्र हो जाते हैं, यह परोपकारियो का स्वभाव

(शेष पृष्ठ ८ पर)

हथियार बदलते आए हैं ?

जो काम नहीं सत्तावन में निकला नंगी तलवारों से,
हो गया वही सैंतालिस में सम्भव खादी के तारों से।
जैसा अवसर हो वैसा ही हथियार सफलता पाता है,
अनुसार हमेशा गायक के सुरताल हृदय को भाता है।
अरि पर जय पाने के अमोघ साधन थे तीखे तीर कभी,
हैं राम बाण के लिए प्रथित जगतीभर में रघुवीर अभी।
गांडीव धनुष भी अर्जुन का अपने युग में लासानी था,
माधव के चक्रसुदर्शन के सम्मुख अरि भरता पानी था।
बदला युग गौतम हुए उदित हिंसा पर विजयी प्रेम हुआ,
तज रक्तपात जगती-जय का साधन तब विश्वक्षेम हुआ।
भारत का अम्बर गूंज उठा 'बुद्धं शरणं' के घोषों से,
पल्लवित धर्म-तरु किया महीपतियों ने अपने कोषों से।
जब हुई अहिंसा भीरु धर्म पौरुष प्रायः लाचार हुआ,
सर्वांग पतन का भारत के तब बौद्धधर्म आधार हुआ।
उस शून्यवाद से भिड़ने को अग्रेसर शंकर वीर हुआ,
शास्त्रार्थ दार्शनिक समर में तीरों से तीखा तीर हुआ।
फिर समय एक ऐसा आया गोरे भारत की धरती के,
स्वामी थे, उनसे बचने के साधन थे असफल सब दीखे।
तब गांधी ने आगे बढ़कर सत्याग्रह का हथियार दिया,
साहस सहिष्णुता विक्रम का जिसने मन मे संचार किया।
सत्याग्रह का ब्रह्मास्त्र लिये खाली हाथों भी जनता ने,
जग-जेता गोरे शासन के भूने लोहे के भी दाने।
लेकिन अब सत्य-अहिंसा के नारों में कोई जोर नहीं,
है सत्य आज का ईंटों का उत्तर पत्थर से और नहीं।
युग है अणुबम का, अणुबम ही सामयिक एक हथियार बना,
जिस पर यह नहीं उसे समझो वही औरों का आहार बना।
दुश्मन के पास अगर अणुबम दुविधा यह कैसी फिर मन में,
अणुबम हो पास हमारे भी—स्वर गूंज रहा यह जन-जन में।
है अस्त्र कौन-सा उपादेय युग ही इसका निर्णायक है;
युग के विपरीत गमन करना युग-युग तक अभिशापक है।
होते हैं वही जयी रखते परिचय जो युग की नाड़ी का,
होने वे देते नहीं कभी अवरुद्ध मार्ग निज गाड़ी का।
हठ मे दृढ़ता मे अन्तर है हठ जहां रही वह हारी है,
दृढ़ता के पैर टिकाने का साधन रक्षा तैयारी है।
जैसा युग आया वैसे ही हथियार बदलते आए हैं,
युग की चुनौतियों से बचने वाले कर मलते आये हैं।
जिसके वैरी हों तीन-तीन घटिया भी और कुचाली भी,
बेखौफ नहीं वह सो सकता चाहे जितना बलशाली हो।
कर रहा वसीयत आज यही आने वाले कल जरा सुनो,
वैरी को वैरी समझ सदा अपना रक्षा-पथ आप चुनो।

—धर्मवीर शास्त्री, एम० ए० साहित्याचार्य
बी-१/२१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

संस्कृत साहित्य

(पृष्ठ ७ का शेष)

होता है। इस प्रकार सज्जन अपने कार्यों से समाज के निम्न व आपन्नग्रस्त जनों को सहारा देकर समाज-सेवा का कार्य करते हैं—

वेद में आर्थिक दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है कि व्यक्ति को धनसम्पत्ति प्राप्ति हेतु प्रयास करना चाहिए "वयम् स्याम् पतयो रयीणाम्" परन्तु फिर भी उसका उपभोग "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः" त्यागभाव से उपयोग करना चाहिए, दान, श्रेष्ठ कार्य तथा सत्पात्र का ध्यान रखें। नीतिशतककार भर्तृहरि ने समाज को ध्यान में रखकर मानव कल्याण का श्रेष्ठ मार्ग बताया—

प्राणाघातान्निवृत्तिः परधनहरणेसंयमः सत्यवाक्यं,
काले शक्त्या प्रदानं युवतिजन कथामूकभावः परेषाम्।
तृष्णास्रोतोविभङ्गो गुरुषु च विनयः सर्वभूतानुकम्पा,
सामान्यसर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः श्रेयसामेष पन्थाः॥

नीतिशतकम्—श्लोक २६

अर्थात् प्राणीहिंसा से दूर रहना, पराये धन को चुराने से मन को हटाना, सत्य बोलना, सामर्थ्यानुसार अवसर पर दान देना, परस्त्री चर्चा से विमुख रहना, कामनाओं के प्रवाह को रोकना, पूज्यों के प्रति नम्रता का आचरण, प्राणिमात्र पर दया व शास्त्रानुसार व्यवहार करना।

उपर्युक्त भावनाओं से ओत-प्रोत जन ही समाज व देश का कल्याण कर सकता है और आजीवन श्रेष्ठ कर्म करते हुए अपना जीवन व्यतीत कर सकता है—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

रामायण में रावण की मृत्यु पर मन्दोदरी दुःख प्रकट करते हुए कहती है—

शुभकृत शुभमाप्नोति पापकृत पापमश्नुते।
विभीषणे सुखं प्राप्तः त्वं प्राप्तः पापमीदृशम्॥

अर्थात शुभ कर्मों का फल सर्वदा शुभ व अशुभ का अशुभ होता है। सत्कर्मों मे प्रेरित विभीषण को सुख प्राप्त हुआ किन्तु हे रावण, तुम पापकर्म में रत रहे, तो तुम्हें कष्ट प्राप्त हुआ।

इस प्रकार संस्कृत साहित्य उपर्युक्त प्रकार से निष्काम समाजसेवा के उदाहरणों से भरा हुआ है, चाहे हम वेद, उपनिषद गीता अथवा लौकिक साहित्य कहीं भी दृष्टि डालें। संस्कृत साहित्य में केवल क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर समाज-सेवा की ही प्रेरणा नहीं अपितु राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु प्रेरित किया गया है जैसे—

"वसुधैव कुटुम्बकम्" एवं माता पृथिवी पुत्रोऽहम्"
एवं 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"।

आज भी संस्कृत भाषा उपर्युक्त तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में समाज-सेवा व चेतना एवं राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय भावना व सद्भाव का विकास करने मे समर्थ है।

बापू बाघमारे दिवंगत

जन्म० ई० स० १९२५ मृत्यु० १२-३-१९८७

नांदेड आर्य समाज के उपमन्त्री श्री बापूराव जी हनुमन्तराव बाघमारे जी का ६२ वर्ष की अवस्था में हृदय गति रुक जाने से १२-३-१९८७ को निधन हुआ। अन्तिम समय तक वे स्वस्थ और कार्यक्षम थे। अन्त्य संस्कार गोदा घाट पर वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

श्री बापूराव जी आर्यसमाज के कर्मठ और सक्रिय कार्यकर्ता थे। उन्होंने अपने इकलौते सुपुत्र ब्र० संजयकुमार को गुरुकुल झज्जर रोहतक हरियाणा मे अध्ययन के लिये भेजा। एक साल पूर्व उन्होने कैलाशनगर क्षेत्र में ऋषि दयानन्द की स्मृति में 'स्वामी दयानन्द मार्केट' का निर्माण किया था। वैदिक सेवा आश्रम के भी वे अनेक वर्षों तक ट्रस्टी रहे। उनके निधन से आर्यसमाज की बहुत बड़ी हानि हुई।

—सम्पादक

स्वास्थ्य सुधा

मालिश

डा० सुबोध भटनागर हैल्थ होम शकरपुर, दिल्ली-१२

परिभाषा की दृष्टि से "मांसपेशियों को दबाने और संधि स्थानों पर मसलने या रगड़ने की कला को मालिश कहते हैं" किन्तु यह किसी अनभिज्ञ व्यक्ति से नहीं करानी चाहिए, कहा भी है—

'नीम हकीम खतरये जान'

किसी मर्म स्थान पर अधिक दबाव पड़ने पर, लेने के देने पड़ सकते हैं। रोगी की विशेष नसों को रगड़कर हल्के दबाव (accupressure) द्वारा रोग दूर करने वाले विशेषज्ञ "हैल्थ-होम' जैसे स्थानो पर आज भी उपलब्ध हैं।

चरक-संहिता, अष्टांग-हृदय, सुश्रुत संहिता आदि प्राचीन वैदिक ग्रन्थो मे भी मालिश का विस्तृत वर्णन मिलता है। धनुर्विद्या सीखते समय अंग-प्रत्यंग मोड़ने और घुमाने के लिए धनुर्धारी मालिश का सहारा लेते थे। युद्ध स्थल से वापसी पर शरीर की थकावट दूर करने के लिए भी मालिश की जाती थी। भारत ही नहीं यूनान के योद्धाओ की स्त्रियां मालिश से उनकी थकावट दूर किया करती थीं। जापान देश में आज भी मालिश का प्रचलन है। विदेशी लोग सूर्य किरणो में मालिश का आनन्द लेते हैं।

जूलियस सीजर की नाड़ी संस्थान विकार (Nervous Disorder) होने के कारण नित्य मालिश की जाती थी।

मालिश एक प्रकार की उंगलियो की शल्य-क्रिया (Finger surgery) है। इस वैज्ञानिक सहलाव (Madical rubbing) का योरुप से आराम-चिकित्सा (rest cure) के नाम से विकास हुआ है।

वास्तव मे दिन भर के काम से थकी मांदी ५१९ मांस-पेशियो नस-नाड़ियों को शिथिल कर नींद लाने तथा पुनः कार्यान्वित करने के लिए, शरीर में नव जीवन, स्फूर्ति, लचीलापन लाने के लिए, रक्त संचालन को सुचारु तथा सुव्यवस्थित करने के लिए, शरीर की सुदृढ़ता सहनशीलता तथा प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए, गर्मी की सुरक्षा के लिए, वात व कफ सम्बन्धी रोग निवारण के लिए, इसका प्रतिरोधक संचलन, रक्त संचार, श्वासोच्छ्वास पाचन तथा मल-विसर्जन क्रियाओं में सहायक है। उपवास के समय मालिश करने पर वह कई सप्ताह आसानी से चल सकता है।

सर्वसाधारण की जानकारी के लिए मालिश के प्रभाव व लाभ निम्न-लिखित कहे जा सकते हैं—

(१) मांसपेशियों मे दूषित पदार्थ थकान पैदा करते हैं। मालिश उन्हे दूर कर थकान मिटाती है।

(२) यह मांसपेशियों की कसरत है। अतः उन्हें सजग रखती है तथा शारीरिक, मानसिक क्षमता बढ़ाती है। शरीर को स्वस्थ एवं सुडौल बनाती है।

(३) नाड़ी नसो को उत्तेजना देती है। उनके जाग्रत होने पर मांसपेशियां सबल बनती हैं तथा आलस्य दूर होता है।

(४) कंधे, गर्दन व पीठ की मालिश सुषुम्ना, अन्य नाड़ी जाल, मेरुदण्ड से फैली नसों और शिराओं पर अच्छा प्रभाव डालती है।

(५) रक्त संचार व्यवस्थित होने से विकार, मैल (उच्छ्वास), पसीना, पेशाब, शौच द्वारा दूर हो जाते हैं और शरीर के अन्य दोष भी क्षीण होते हैं।

(६) रोम कूप विकसित होते हैं तथा त्वचा शुद्ध होती है।

(७) फेफड़ों, आंतों, गुर्दों, त्वचा को बल मिलता है।

(८) पाचन-क्रिया, जीगर को उत्तेजना मिलती है।

(९) हल्की, तेज, मालिश से चर्बी घटती है और मोटापा दूर होता है।

(१०) अर्धांग वायु, बच्चों का लकवा, मांसपेशियो और स्नायु-रोग, सिर दर्द में लाभदायक है।

(११) हड्डियों को पोषक तत्व देकर उनका विकास करती है। हड्डी टूटने व सरकने पर उपयोगी है।

(१२) यह शरीर को सीधी खुराक पहुंचाती है।

(१३) कमजोरी दूर करने के लिए मालिश राम बाण है। दुबले-पतले शरीर के लिए यह व्यायाम का लाभ देती है।

(१४) यह शरीर का कायाकल्प कर देती है।

(१५) योद्धा और सरकस वालों को शरीर के मोड़ने आदि मे सहायक है। चूंकि यह अंग लचीले व कर्मशील बनाती है।

(१६) बुढ़ापे को नजदीक नही आने देती, उसे टालकर दीर्घायुष्य प्रदान करती है।

(१७) प्राण संचारी कार्यों को ऊंचे स्तर पर ले जाती है।

(१८) घर्षण-मालिश से जोड़ की गांठें धीरे धीरे ठीक हो जाती हैं। इससे कमर व संधियो के दर्द भी दूर होते हैं।

(१९) दलन मालिश से तनावपूर्ण पेशियां नरम पड़ती हैं। मोटापा, वात तथा अर्धांग रोग दूर होते हैं।

(२०) मरोड़ना से थकावट, अर्धांग तथा लकवा दूर होते हैं।

(२१) दबाना द्वारा बूढ़ो के दर्द दूर होते हैं।

(२२) बेलन मालिश द्वारा पेट पर दायी ओर से बायी ओर गोलाई मे हल्के हाथ से मालिश करने पर चर्बी दूर होती हैं।

(२३) थपकाना तथा कटोरी की थपकी के बाद कंपन मालिश करना शरीर के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

प्रत्येक प्राणी को हर हालत मे मालिश करना लाभदायक नही हैं। निम्न अवस्थाओं मे मालिश वर्जित है—

(१) अल्सर से पीड़ित व्यक्ति के पेट की मालिश भूलकर भी न करें।

(२) बुखार के समय रोगी की मालिश न करें।

(३) सूजन के स्थान पर भी मालिश नही करनी चाहिए।

(४) गर्भावस्था तथा मासिक स्राव मे पेट की मालिश हानिकर है।

(५) एक रोगी की मालिश के बाद बिना हाथ साफ किए दूसरे रोगी की मालिश नही करनी चाहिए।

चीन और इस्राइल के अधिकारियों में वार्ता

—मृत्युबोध—

पेइचिंग १२ अप्रैल। इस्राइल के चीन से राजनयिक सम्बन्ध स्थापित कर पाने की कोशिशो पर सयुक्त राष्ट्र मे चीन के स्थायी प्रतिनिधि ली लचे ने इस्राइली विदेश मन्त्रालय के महानिर्देशक अब्राह्म तारिक से मुलाकात की है। चीन और इस्राइल के प्रतिनिधियो के बीच गुप्त बातचीत होने की खबरे पहले भी आती रही है। लेकिन इस बार मार्च के अन्त मे दोनों देशो के वरिष्ठ अधिकारियो के बीच मध्यपूर्व के बारे मे हुई बातची, की चीन की अधिकारिक सवाद समिति शिनहवा ने भी रपट जारी की है। उधर इस्राइल द्वारा काहुटा मे परमाणु हथियारो के विकास के लिए पाकिस्तानी सन्यन्त्र को तबाह करने के लिए भारतको,उससे सहयोग करने के बारे में दिए गए गुप्त सुझावो का विवरण इस सम्वाददाता को मिला है।

राजनयिक सूत्रो के अनुसार पिछले कुछ सालो के दौरान इस्राइली प्रतिनिधियो ने भारत के नुमाइन्दो से मुलाकातो मे कम स कम तीन बार काहुटा परमाणु सन्यन्त्र उडा देने मे सहयोग करने की पेशकश की लेकिन भारत ने हर बार इन्कार कर दिया। विश्लेषको का कहना है कि उसके इस फैसले का मतलब है कि उसने अपने परमाणु हथियार कार्यक्रम के बराबर पहुचने की पाकिस्तान की योजना को मौन स्वीकृति दे दी है। इस सिलसिले मे वे स्पष्ट करते है कि हाल ही मे पाकिस्तान के एक विस्फोटक यन्त्र का परीक्षण करने की कोशिशो पर भारतीय नाराजगी बडबडाहट से ज्यादा कुछ नही थी।

राजनयिक सूत्रो के मुताबिक भारतीय विशेषज्ञो ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी को बताया था कि देश की वायु सेना सन्यन्त्र की सुनिश्चित तबाही के लिए जरूरी परिशुद्धता से काहुट पर बमबारी करने मे सक्षम उपकरणो से लैस नही है। लेकिन इस्राइली वायुसेना सन्यन्त्र को सूई को नोक पर बमबारी से तबाह करने मे सक्षम समझी जाती है। इस्राइल के लिए जासूसी करते रहे जोनाथन पोलरड द्वारा इस्राइल को काहुटा के विवरणात्मक उपग्रह चित्र और इसके बारे मे अन्य बेहद खुफिया अमेरिकी आसूचना मुहैया करवाई गई है।

इस्राइल की पाकिस्तानी सन्यन्त्र के बारे में मुख्य चिन्ता यही है कि पाकिस्तान की बागडोर इस्लामी कट्टरपथियो के हाथ मे आ जाने पर उसकी बम परियोजना का क्या होगा। वह किसी भी इस्लामी देश के परमाणु बम या उस तक उसकी पहुच होने के खिलाफ है। सैनिक विश्लेषको के अनुसार १९-१ मे इस्राइल इराक मे बगदाद के बाहर उसके परमाणु सयन्त्र को स्थल करके उसके बम वषको के दायरे मे होने की वजह से तबाह कर सका था लेकिन काहुटा तक पहुच पाने के लिए उसे पश्चिमी भारत मे तेल भर पाने के लिए आधार की जरूरत है।

राजनयिक सूत्रो के अनुसार इस्राइल के प्रतिनिधियो की इस सिलसिले मे कोशिश पहली बार एक भारतीय राजनीतिज्ञ और दूसरी बार एक भारतीय राजनयिक से मुलाकातो के दौरान हुई। दोनो बार नई दिल्ली को इसकी पूरी जानकारी दी गई। इसी सुझाव को लेकर तीसरी ओर सबसे सारगर्भित पेशकश जुलाई १९८५ मे पेरिस मे तीन दिन चली कही जाती श्री राजीव गाधी के निजी दूत और इस्राइली राजनयिको की मीटिंग मे की गई बताई जाती है। ऐसा समझा जाता है कि उस बैठक में दोनो पक्षो ने जानकारी और आदान प्रदान किया, काहुटा पर बमबारी के तरीको और इस काम को मुस्तैदी से कामयाब बनाने की प्रक्रिया पर बहस हुई। इसके पीछे आशय मिशन को शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण कर पाने की दृष्टि से "डिल और आर्डरस" तय करने का था।

इन राजनयिक सूत्रों का कहना है कि इस्राइल ने भारत को अपने हथियार और इलेक्ट्रानिक युद्ध उपकरणो की बिक्री कर पाने, सैनिक आसूचना और आतकवाद विरोधी कारवाइयों में सहयोग के खुफिया समझौतो पर हस्ताक्षर करने की पेशकश भी की थी। श्री गाधी पर सिख या अन्य भारतीय उग्रवादियो के पहले से सुरक्षा की गारटी कर पाने वाली इस्राइली तकनीको पर भी बहस हुई।

श्री सुनीलदत्त की अग्नि परीक्षा

आदर्श अभिनेता श्री सुनीलदत्त की बहुचर्चित पदयात्रा का एक चरण अमृतसर दरबार साहब में बैसाखी पर्व के साथ सम्पन्न हुआ। इसे भारत का सौभाग्य ही कहा जाए कि ऐसे धुन के धनी भारतीय युवक भी है जो सकटो से लोहा लेकर भी भारत माता की अखण्डता के लिए कृत सकल्प है।

सुनील जी के प्रवेश से पूर्व खालिस्तान जिन्दाबाद भिडरावाला जिन्दाबाद तथा सिख स्टूडेंट फैडरेशन के भी नारे लगाए गए। परिसर का वातावरण कितना विषाक्त रहा होगा कि श्री सुनीलदत्त के साथ प्रवेश कर रहे अनेक पत्र प्रतिनिधियो ने जेबें कट जाने व कैमरे के उपकरण चोरी हो जाने की शिकायतें की। स्वर्ण मन्दिर परिसर अपराधियो, हत्यारों व भारत के नाम को कलकित करने वालो से भरा रहता है।

पजाब की ऐसी भयावह परिस्थितिओ मे श्री सुनीलदत्त की महाशान्ति पदयात्रा अपराधियो का कितना हृदय परिवतन कर सकेगी वह कहा नही जा सकता। सारे देश का हिन्सा के प्रति विरोधी भाव भी आजतक कोई प्रभाव नही डाल पाया है। वास्तविकता यह कि अकाल तख्त पर ऐसे लोगो ने अधिकार जमा रखा है जो बाहर शान्ति की चर्चा भी करते हैं परन्तु आन्तरिक रूप से वे आतकवादियो के हाथों का खिलोना मात्र बनकर रह गए हैं। अकालतख्त के जत्थेदारो मे यदि मानवता का कोई अश भी शेष होता तो आज पजाब मे जो लोम हर्षक हत्याओ व लूट मारका निकृष्टतम ताण्डव हो रहा है वह न होता। सिख युवको का प्रारम्भ से ही अपराधों की शिक्षा दी जा रही है। गुरुओ की नैतिक शिक्षा को ताक पर रख दिया गया है। कोई पूछने वाला नही कि खालिस्तान का यह नग्न नृत्य किस धर्मग्रन्थ के आधार पर चल रहा है। यह राजनीति व यह धर्म मानवता को कहा ले जाएगी। औरगजेबी पद्धति से भारत ने मुक्ति की सास ली थी कि अब नई चगेजी गुरुओ के नाम पर चलाई जा रही है। औरगजेब ने मुगल साम्राज्य का अन्त अपनी जिन अदूरदर्शी नीतियों के कारण किया सिखी का अन्त भी दिखाई दे रहा है।

यह इनकी तहजीब इनके खजर से, खुद ही जाकर हलाक होगी।
जो शाखे नाजुक पैआशिआना, बनेगा ना पायदार होगा॥

औरगजेब विदेशी था आज उसका कोई नाम लेवा पानी देवा भी शेष नही है। परन्तु सिखी को ता हिन्दुओ ने ही अपने रक्त से सीचा था। आज हिन्दुओ का ही लगाया हुआ पोधा विष वृक्ष के रूप मे परिवर्तित हो गया।

देश की बुद्धि जीविओ क सामने आज पहचान का प्रश्न चिन्ह खडा हो गया है। कौन अपना कौन पराया हम पाकिस्तान से क्या शिकवा करें जब घर में ही आग लगाने वालो की कमी नही है।

सुनीलदत्त जी ने पजाब समस्या पर मध्यस्थता करने की भी बात कही है। यह सब शान्ति व सद्भावना के वातावरण मे ही सम्भव हो सकता है। मुख्य बात तो हृदय परिवतन की है। यह काम सिख जत्थेदारो का था। वे अपना कर्तव्य पालन करते तो हिन्दू सिखो की आपसी खाई पट सकती थी।

आज देशभक्तो के विवेक की परीक्षा का समय है कि वे किस प्रकार देश को नष्ट होने से बचाते हैं।

—शिवराज शास्त्री

आर्य जगत के समाचार

सभा प्रधान की शोक संवेदना

प्रिय भाई श्री सत्यव्रत जी शास्त्री,

नमस्ते।

आज यह जानकर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ कि आपके पूज्य पिता और हमारे अग्रज मूर्धन्य विद्वान श्री प० वासुदेव जी शास्त्री का ९० वर्ष की आयु में हृदय गति रुक जाने से शरीर पचतत्वो में विलीन हो गया है। उनके निधन से आर्य जगत् की एक अपूर्णीय क्षति हुई है। आप उनके सुयोग्य सुपुत्र हैं। हमारे भी पिता तुल्य थे। हमे आशा है आप उनके पदचिन्हो पर चलकर उनके नाम और यश को और बढायेंगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस महान वियोग पर आपके शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करती है।

आपके दुःख मे हम सबकी ओर से हार्दिक संवेदना,

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

प्रधान

काशीनाथ शास्त्री प्रधान शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीर दल का भव्य अभिनन्दन!

शाहगंज

शाहगंज (जौनपुर) आर्य समाज द्वारा श्री प० काशीनाथ शास्त्री प्रधान शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीर दल का भव्य अभिनन्दन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री प० बालदिवाकरजी हंस की अध्यक्षता में किया। जौनपुर मण्डल समाजो और आर्य वीर दल के प्रतिनिधियो ने फूल मालाए पहिना कर श्री शास्त्री का अभिनन्दन किया।

श्री सन्त प्रकाश जी ने अभिनन्दन पत्र पढकर श्री शास्त्री को सुन्दर शाल उढाकर ११००) की थैली भी भेंट की।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री बालदिवाकर जी हंस ने कहा ब्राह्मण बल क्षात्र बल और (सेवा बल से युवकों कोवेष्ठित करके हम सच्चे राष्ट्र भक्त युवजनो की अनन्त शक्ति बनाने में जुटे है। मैं सार्वदेशिक आर्य वीर दल एवं सभा की ओर से उनकी हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। अनेक वक्ताओ ने श्री शास्त्री के स्नेहिल स्वभाव कर्तव्य निष्ठता की भूरि २ प्रशंसा की और जिले के प्रतिनिधि आर्य वीरो की शाखा लगाई गई।

—संवाददाता

श्राद्ध भोज के बदले श्री गोकुल ठाकुर महाविद्यालय की स्थापना

श्री कर्पूरी ठाकुर भूतपूर्व मुख्यमन्त्री बिहार के स्वर्गीय पिता श्री गोकुल ठाकुर, का देहावसान ११० वर्ष की आयु मे १९ मार्च ८७ को हो गया। दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए वेद पद्धति से हवन यज्ञ, आर्य पुरोहित प० बनारसीसिंह 'विजयी द्वारा ३० मार्च १९८७ को सम्पन्न कराया गया। महायज्ञ मे उपस्थित ईसाई सिख और मुस्लिम धर्म के आचार्यो ने भी अन्त्येष्टि संस्कार एवं यज्ञ की सराहना की।

श्री कर्पूरी ठाकुर ने अपने पिता जी की स्मृति मे अपनी जन्मभूमि ग्रा० पो० पितौंझिया जिला समस्तीपुर (बिहार) मे गोकुल ठाकुर महाविद्यालय की स्थापना की घोषणा की जिसका स्वागत समारोह मे उपस्थित मन्त्रियो विधायको एवं जनता ने किया।

—बनारसीसिंह 'विजयी,

मन्त्री

संस्कार प्रशिक्षण विद्यालय

यारपुर, पटना-१

संस्कार शास्त्री परीक्षा

संस्कार प्रशिक्षण विद्यालय आर्य समाज मन्दिर यारपुर, पटना १ की संस्कार शास्त्री परीक्षा भारत के विभिन्न परीक्षा केन्द्रो मे रविवार दिनांक ५ जुलाई १९८७ को होगी और परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियो को संस्कार शास्त्री की उपाधि दीक्षान्त समारोह मे दी जायेगी। उक्त विद्यालय मे १६ संस्कारो को करने कराने की व्यवहारिक शिक्षा १५ दिनो मे दी जाती एक स्थान पर १५-२० शिक्षार्थी होने पर वहा व्यवहारिक प्रशिक्षण शिविर लगाया जाता है और डाक से नाम लिखा कर आप निकटतम परीक्षा केन्द्र से परीक्षा दे सकते है।

—बनारसीसिंह विजय

मन्त्री

संस्कार प्रशिक्षण विद्यालय

आर्य समाज मन्दिर

यारपुर पटना

विघटनकारी शक्तियां

(पृष्ठ ४ का शेष)

अनिवार्य कार्य को पूर्ण करने की व्यवस्था कर जिसमे उन्हे प्रत्येक देश भक्त आर्य संस्थाए पूरी तरह समर्पित भावना से सहयोग देगी। यह कार्य कठिन अवश्य है परन्तु दुष्कर और असाध्य नही है और हमे इस पुनीत कार्य को हर सम्भव उपाय से सफल बनाना है। विलम्ब घातक होगा।

इस अणु परमाणु युग मे सम्पूर्ण सृष्टि का विनाश एक निश्चित तथ्य है। संसार मे सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मानवता विश्व बन्धुत्व सौहार्द वसुधैव कुटुम्बकम् के पवित्र सन्देश को प्रसार करना समय की पुकार है अन्यथा मनुष्य और पशु मे कोई अन्तर नही है। इस पुनीत कार्य मे कोई विरोध किस प्रकार कर सकेगा और आर्यसमाज अवश्य सफल होगा इसमे कोई संशय नही है।

सार्वदेशिक पत्र के बढ़ते आजीवन सदस्यों की सूची

ग्राहक संख्या	नाम व पता
१०७७३	चौ० जगतराम मिल कोठी नं० १६३४ ग्राम पो० बशा जालन्धर
१३३४१	मन्त्री जी, आर्यसमाज मन्दिर, बी. के. कालोनी १००/२ इन्दौर
११११६	पृथ्वीनाथ सुभाषचन्द्र आर्य मण्डी मनीराम बरोन्डा जिला करनाल
१०६३१	काशीनाथ जी बसल आई रोड नं० ६ महारानी बाग दिल्ली
८५१४	मन्त्री जी आर्यसमाज बिहार शरीफ (बिहार)
११४६२	राजेश कुमार आर्य ग्राम पो० अल्लापुर पीलीभीत (उ० प्र०)
१३५०८	वसन्तराव हरीदाम द्वारा जार रूपण ट्रेडर्सकोल मर्चेन्ट औरगाबाद
४६११	महेन्द्र कुमार त्यागी, राजेन्द्रनगर साहिबाबाद गाजियाबाद
१२१०४	राजकुमारी जी, ६ ए मिशन कम्पाउन्ड सहारनपुर
२८६८	शादीलाल मन्त्री, आर्य समाज बगा जालन्धर
११३३६	प्रधानाचार्या, आर्यकन्या पाठशाला इन्टर कालेज मिरजापुर उ०प्र०
८६४३	कमलादेवी मन्त्राणि, स्त्री आर्यसमाज कोटली कालोनी जम्मू
५०३७	डा० एस के वशिष्ठ बरेरा कालोनी भोपाल
५०२४	कोषाध्यक्ष आर्यसमाज तात्याटोपे नगर भदभदा रोड भोपाल
७७३४	मन्त्री जी, आर्यसमाज मानसा जि० भटिन्डा
३५३६	आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर

वार्षिक शुल्क—२५) रुपये

आजीवन सदस्यता शुल्क—२५०) रुपये

निर्वाचन

आर्य महिला समाज पिपराइच (गोरखपुर)। प्रधान श्रीमती इसरावती, मन्त्री श्रीमती इन्द्रावती देवी।

—आर्य समाज उमन्ड बेहट (सहारनपुर)। प्रधान श्री जगदीश प्रसाद व मन्त्री श्री विजेन्द्र कुमार जी चुने गए।

१०१२०—पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

पंजाब

स्वतन्त्रता छीनी जा रही ... कानून के अन्तर्गत किया जा रहा है ? लाखो लोगो से उनका रोजगार छीना जा रहा है। क्या यह न्याय है ? श्री सुनीलदत्त ने कुछ भी नहीं पूछा, वह शांति का फार्मूला पूछते रहे और जत्थेदार आरोप पर आरोप लगाते रहे।

सुनील दत्त जबाव देने की स्थिति मे ही नही थे। एक तो वह सद्भावना पैदा करने गए थे ? दूसरे उन्होने अपनी यात्रा के दौरान पजाब के लोगो से उनका दुःख दर्द पूछा ही नही, अच्छा होता यदि वह जत्थेदारो और उग्रवादियो से बातचीत करने से पहले पजाब के लोगो से भी बात करते जो कई वर्षो से लटकती तलवारो और बरसती गोलियो के बीच जिन्दगी बिता रहे हैं। जिनकी जिन्दगी का मूल्य केवल २० हजार रुपया है। जो मर जाए, सरकार उसके परिवार को २० हजार रुपए दे देती है। हत्यारे प्रथम तो पकडे नही जाते, पकडे जाए तो उन पर मुकद्दमा नही चलता। मुकदमा चले तो गवाह नही मिलते। गवाह मिल जाए तो मजिस्ट्रेट फैसला करने से डरते हैं।

यह क्यो हो रहा है ?

यात्रा तो हो गई। सुनील दत्त माता वैष्णो देवी के दरबार मे भी शांति मागने गए हैं। उनका इरादा अच्छा है। उनकी भावना अच्छी है। उन्होंने कहा कि वह केन्द्र से बात करेंगे। अवश्य करें, परन्तु किसी से भी बात करने से पहले वह पजाब के लोगो से अवश्य बात कर लें। कोई भी अदालत यदि एक ही पक्ष की बात सुनकर फैसला करेगी तो वह गलत होगा।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदामृत

प्रतिथि-सत्कार का महत्व

[illegible] वा एष पूर्तं च गृहाणामश्नाति,
यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥
ऊर्जां च वा एष स्फातिं च च गृहाणामश्नाति,
यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥
अथर्व० ६ । ६ । ३१ । ३ ॥

हिन्दी अर्थ—जो अतिथि से पहले खाना खा लेता है, वह अपने घर के इष्ट (यज्ञादि) और पूत (धर्मार्थ-कार्य) को खा जाता है। जो अतिथि से पहले खाना खा लेता है वह अपने घर की शक्ति और समृद्धि को खा जाता है।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र [illegible] १९३ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक ११] वैशाख शु० ५ स० २०४४ रविवार ३ मई १९८७ वार्षिक मूल्य २१) एक प्रति ६० पैसे

कलियुग और रामायण, फिल्म का प्रदर्शन स्थगित

दिल्ली। राजधानी मे प्रदर्शित होने वाली फिल्म "कलियुग और रामायण का प्रदर्शन स्थगित कर दिया गया है।

आज यहा आयोजित एक सम्वाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि इस सम्बन्ध मे उनके नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मण्डल आज उपराज्यपाल से मिला था। उपराज्यपाल ने उन्हे आश्वासन दिया है कि यह फिल्म उक्त नाम से प्रदर्शित नही होगी।

सनातन धर्म एव आर्य समाजी सगठनो के नेताओ ने कलियुग और रामायण फिल्म के सार्वजनिक प्रदर्शन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाए जाने की माग की है।

इस अवसर पर उपस्थित बम्बई के आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि केवल नाम बदलने से कुछ नही होगा। अगर यह फिल्म चलेगी तो हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओ को चोट पहुचेगी। अत इसका सार्वजनिक प्रदर्शन रोका जाना चाहिए।

सनातन धर्म के नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने कहा कि यह फिल्म युवा पीढी के मस्तिष्क मे भारतीय संस्कृति के विपरीत विचार उत्पन्न करेगी। अत भारतीय संस्कृति के प्रति घृणा के बीज बोएगी उन्होने कहा कि फिल्म मे हनुमान को चोर, साला, बेईमान का भाई आदि शब्दो से सम्बोधित किया गया है। अनेक सम्वाद इतने आपत्तिजनक हैं कि जिसे सुनकर शर्म आती है। उदाहरण के लिए यह रेडीमेड हनुमान है। मैं गली का हनुमान लेकर आता हूं आदि उन्होने कहा कि फिल्म मे अनेक आपत्तिजनक दृश्य भी हैं।

आर्यसमाज व सनातन धर्म के नेताओं ने सेंसर बोर्ड के विरुद्ध भी कार्यवाही किए जाने की माग की है जिसने इस प्रकार की घोर आपत्तिजनक फिल्म को प्रदर्शन का प्रमाण पत्र दिया है।

अखिल भारत हिन्दू महासभा के डा० मदनलाल गोपाल ने यहा एक वक्तव्य जारी करके इस फिल्म पर रोक लगाए जाने की माग की।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा द्वारा जारी एक प्रेस वक्तव्य मे कहा गया है कि दिल्ली की सनातन धर्म सभाओ के प्रतिनिधियो और कार्यकारणी के सदस्यो की एक सयुक्त बैठक मे यह निर्णय लिया गया कि निर्माता निर्देशक मनोजकुमार द्वारा निर्मित फिल्म कलियुग और रामायण धार्मिक जनता की दृष्टि में आपत्तिजनक है इसलिए मनोजकुमार को लिखा जाए कि वह इस फिल्म को पहले हमे दिखाये। मनोजकुमार ने यह फिल्म लगभग डेढ सौ व्यक्तियो को आज पैलेस सिनेमा दिल्ली में दिखाई। जिसमे सनातन धर्मियो के अतिरिक्त सभी हिन्दू सस्थाओ के प्रतिनिधि मौजूद थे। फिल्म के नाम पात्रो के नाम के साथ सम्वादो और गीतो पर भी आपत्ति की गई। जिन्हे बाद मे मनोजकुमार ने परिवर्तित कर दिया।

इस सिलसिले में आज हुए प्रदर्शन मे तोड फोड के अपराध मे विद्यारत्न सोनी, देशराज भाटिया, बी०एल० वर्मा, मजीत तथा रामलाल (निगम पार्षद) गिरफ्तार किए गए है। जिन्हे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कहने पर रिहा कर दिया गया है।

संस्कृत भाषा की रक्षा को सन्नद्ध हो

सस्कृत भाषा प्रभुदत्त देववाणी है। इस महान् वाणी के कारण देश करोडो वर्ष तक न केवल स्वातन्त्र्य सुख समृद्धि का उपभोग करता रहा। सच्चाई तो यह है कि ससार को बोलना भी इसी भाषा ने सिखाया।

बाइबिल का मूल हिब्रू भाषा मे उपलब्ध है। उसकी प्रथम उक्ति निम्न है —

ससार मे सर्वप्रथम भाषा उत्पन्न हुई, भाषा प्रभु के साथ थी वह भाषा कौनसी थी इसका कोई वर्णन वहा नही केवल एक ही दावा रहा है। वह भाषा ससार भर के विद्वानो ने एक स्वर से स्वीकार किया है कि देवभाषा सस्कृत ही थी। ससार का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद है ऐसा ससार भर के भाषा विज्ञान शास्त्री व भाषा विशारद एक मत से स्वीकार करते है।

करोडो वर्ष तक सस्कृत मानव मात्र की भाषा रही। उसी के स्वरो व व्यजनो के उच्चारण के थोड थोड परिवर्तनो के साथ ही ससार भर मे हजारो भाषाओ का प्रचलन हो गया। आज की सभी भाषाओ मे स्वर व व्यजन वे ही प्रयोग किए जाते है जो सस्कृत भाषा मे प्रयोग होते हैं। कोई अन्य भाषा शास्त्री उसमे लेश मात्र भी परिवर्तन नही कर पाया।

देववाणी सस्कृत के ही अपभ्रंश के रूप मे हजारो भाषाय ससार मे पाई जाती हैं। भारतवासियो को यह गौरव है कि सस्कृत उनकी पुण्य भाषा है। भारतीयो के सभी धर्म ग्रन्थ इसी भाषा मे करोडो वर्ष से लिखे चले आ रहे हैं। ऐसी दिव्य एव पवित्र भाषा को भारतीय सविधान के रचयिताओ ने सरक्षण प्रदान किया था इसे राज्यभाषाओ मे सम्मिलित किया गया था।

भाषा विज्ञान के न जानने वाले कुछ सस्कृत विद्वेषियो को न जाने कैसे साहस हुआ कि उन्होने इस दिव्य भाषा पर जिसके बिना भारतीय प्रान्तीय भाषाओ का शब्द कोष ही तैयार नही हो सकता है, प्रहार कर दिया है और नवीन शिक्षा पद्धति मे ऐसा प्रावधान किया गया है कि २४ दशको मे ही सस्कृत भाषा का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। (शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द और संस्कृत भाषा

लेखक-आचार्य दिनेशचन्द्र शास्त्री एल जयप्रकाश नगर,दिल्ली-३

महर्षि दयानन्द सरस्वती युग निर्माता हुए। जहां उनकी कृतिया हमे प्राचीन विशुद्ध सस्कृति सभ्यता और साहित्य का वास्तविक दिग्दर्शन कराती हैं, वहां उनके पूना के व्याख्यान अर्थात् उपदेश मञ्जरी भी बड़े महत्त्व के है तथा पत्र व्यवहारादि से हमें मानव समाज के हित से प्रेरित होकर किये गये उनके भागीरथ प्रयत्नो को समझने मे अत्यन्त सहायता मिलती है। महापुरुषो के रचित ग्रन्थ जहा उनकी अपूर्व योग्यता, भावना और प्राणी-मात्र के लिये हित चिन्तना के परिचायक होते हैं, वहा उनके जीवनवृत्त उनके महापुरुषत्व तक पहुचने के सभी उपायों का प्रकाशन करते हैं। उनके सामान्य व्यवहार तथा वार्तालापादि विशेषकर उनका पत्र व्यवहार हमे उनके व्यक्तिगत जीवन के प्राय सभी अङ्गो के अत्यन्त समीप तक ले जाने मे सहायक होते हैं और अपने उद्देश्य व सिद्धान्तों की पूर्ति के लिये उनके द्वारा किये भागीरथ प्रयत्नो को जनता के समक्ष रख देते हैं। यह भी निर्विवाद है कि इन सब मे महापुरुषो की कृतिया उनके सिद्धान्तो व धारणाओ की मुख्य प्रकाशक होती हैं। स० १९२९ तक महर्षि दयानन्द का सारा पत्र-व्यवहार और सम्भाषण सस्कृत मे ही था। बहुत सा पत्र व्यवहार वह दूसरो को बोल कर लिखवाते व लिखने को कह दिया करते थे और हस्ताक्षर कर देते थे, ऐसी अवस्था मे निस्सन्देह इन पत्रों की प्रामाणिकता ऋषिकृत सत्यार्थ-प्रकाशादि के समान नही हो सकती, तथापि इनसे अनेक परमावश्यक गम्भीर विषयो तथा सिद्धान्तो पर प्रकाश अवश्य पड़ता है, जो अत्यन्त मूल्यवान् हैं। ऋषि दयानन्द का नियम पूर्वक पत्र व्यवहार स० १९३० के अन्त से प्रारम्भ होता हैं, और वह आश्विनबदी ३० स० १९४० तक चलता रहा। महर्षि दयानन्द २३ मई १८८१ के पत्र मे फर्रुखाबाद के सेठ निर्भराम को लिखते हैं—'सस्कृतरूपी मातृभाषा की जगह अग्रेजी लोगो की मातृभाषा हो चली है। परन्तु सस्कृत की अवहेलना करके अग्रेजी के प्रचार के वे विरुद्ध थे। इसी दृष्टि से ऋषि दयानन्द ने वै० ब० ३ स० १९४० (२५ अप्रैल १८८३ को फर्रुखाबाद के लाला कालीचरण रामचरण को लिखे पत्र मे लिखा है "तुम्हारी पाठशाला मे अलिफ बे और केट बेट की भर्मार है, जो कि आर्य समाजों का विशेष कर्त्तव्य नही है।" महर्षि दयानन्द के अनेक ऐसे पत्र छपे हैं, जिनमे सस्कृत भाषा के प्रचार पर विशेष ध्यान देने के लिये और अग्रेजी फारसी (उर्दू) पर व्यर्थ धन नष्ट करने के लिये ऋषि दयानन्द ने अपने अनुयायियो को लिखा है। हमारे आर्य स्कूलो विद्यालयो डी०ए०वी० स्कूलों मे भी सस्कृत भाषा एवम् देव नागरी-हिन्दी भाषा अनिवार्य रूपेण पढायी जानी चाहिये। अन्य अग्रेजी भाषा अनिवार्य न हो। वैसे अन्य देशीय भाषाओ का भी ज्ञान करें करावें। मुख्य मातृभाषा सस्कृति यह देववाणी और राष्ट्र भाषा हमारी हिन्दी अनिवार्य हो। हमारी सरकार ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित की है तथा प्रथम स्थान दिया है। देववाणी मातृभाषा सस्कृत विषय को अग्रेजी के स्थान मे अनिवार्य रखा जाय तो कितना अच्छा हो। ऋषि दयानन्द चाहते थे कि आर्य समाज का प्रत्येक अधिकारी व सदस्य सस्कृत पढें, समाजो और शिरोमणि सभाओ के अधिकारी सदस्यो को तो सस्कृत का ज्ञान अवश्य होना चाहिये। महर्षि १२ मई १८८१ के पत्र मे लाला कालीचरण रामचरण से पूछते हैं—"इस सस्कृत पाठशाला मे केवल लडके ही पढते हैं। अथवा हमारे रईस लोगो मे से भी कोई पढता है? ऋषि दयानन्द केवल भारतीय जनो को ही सस्कृत पढने की प्रेरणा नही देते थे, अपितु वे विदेशिओ को भी सस्कृत के लिये प्रेरित करते थे। २६ मार्च १८७९ को लिखा ऋषि दयानन्द का पत्र देखिये। वे प्रबन्ध कर्त्ता वेद भाष्य कार्यालय (बम्बई) से पूछते हैं—"इन्होने अमेरिकावासी कर्नल आल्काट आदि ने) सस्कृत पढने का आरम्भ किया या नही? तथा आर्यभाषा (हिन्दी) के प्रचार प्रसार मे ऋषि दयानन्द ने कितना प्रयत्न किया था, आर्य पुरुषो को यह सब ज्ञात होना चाहिये। आर्ष ग्रन्थो के महत्त्व को स्थापित करने वाले प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द और स्वामी दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार कितना अमूल्य होगा, पत्र और विज्ञापनो मे ऋषि के उज्ज्वल विचार, भारत की भाषा सस्कृत जो कि आर्यावर्त्त देश की उन्नति होगी। आर्यावर्त देश की स्वाभाविक सनातन विद्या सस्कृत ही है।······उसी से इस देश का कल्याण होगा। अन्य भाषा से नही। यदि वेद का ज्ञान सारे देश मे फैला दिया जाय तो भारत में से अज्ञानान्धकार ·····एक दिन नष्ट हो जायेगा। यदि अग्रेजी अथवा उर्दू मे वेद भाष्य का अनुवाद किया जायेगा तो सस्कृत पढने के प्रति जनता का उत्साह मन्द हो जायेगा। सस्कृत विद्या की उन्नति करनी चाहिये। प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के ज्ञान के बिना किसी को सस्कृत विद्या का यथार्थ फल नही हो सकता। सस्कृत भारत की मातृ भाषा है अथवा आर्यावर्त की स्वाभाविक सनातन विद्या सस्कृत ही है। वर्तमान काल मे सस्कृत के अतिरिक्त अग्रेजी आदि भाषाओ पर आर्यसमाज का धन व्यय नही होना चाहिये तथा राजा लोगो को सस्कृत की ही उन्नति करनी चाहिये। उन्हें अपने राज्यो मे सस्कृत से विभिन्न भाषाओं का आदर मान न करना चाहिए। सस्कृत पढकर सब आर्यावर्तीय लोगों को आर्ष ग्रन्थो का अभ्यास करना चाहिये। अग्रेजी लोगो की मातृभाषा का प्रतिकार करना चाहिये और सस्कृत से ही भारत और मनुष्य मात्र का कल्याण होगा।

संस्कृत भाषा की रक्षा

(पृष्ठ १ का शेष)

सस्कृत भाषा की समाप्ति की क्या कोई प्रबुद्ध राष्ट्रवादी कल्पना भी कर सकता है। सस्कृत ही तो भारतीय राष्ट्र की स्थायी सम्पत्ति है जिसके आधार पर लाखों वर्ष से भारतीय जीवन के उत्थान पतन सहते हुए भी हम जीवित है।

इसी भाषा के माध्यम से भारत की महान् सस्कृति ससार भर का मार्ग दर्शन करती रही है। न जाने ऐसे कौन अदूरदर्शी राज-नीतिज्ञ है जो इतिहास के इस नग्न सत्य को भी मानने से इन्कार करते है और न जाने ऐसे सकीर्ण व परमुखापेक्षी राजनीतिज्ञो के भारत राष्ट्र को नष्ट कर डालने के मन्सूबे देश को किस अन्धकार-मय भविष्य मे ले जाना चाहते हैं।

सच तो यह है कि त्रिभाषा फार्मूला की आड मे अनावश्यक प्रान्तीयतावाद को प्रोत्साहन देते हुए हिन्दी भाषियो को प्रान्तीय भाषाय पढने की जो अनिवार्यता स्वीकार कर ली गई है जब कि राष्ट्र भाषा हिन्दी की जननी मातृभाषा सस्कृत को दिखावे के तौर पर बढावा दिया गया है परन्तु विद्यार्थियो को उसके सीखने की सुविधा व आवश्यकता को समाप्त कर दिया गया है।

सार्वदेशिक सभा ने इस गम्भीर समस्या पर विचार करने के लिए दिल्ली के विद्वानो की जो समिति आयोजित की थी उसने १० मई को देशभर मे सस्कृत दिवस मनाने का आवाह्न किया है। सभी सार्वजनिक व शिक्षण सस्थाओ से अपील की है कि वे सस्कृत भाषा की रक्षा के लिए तत्परता से आन्दोलन व हस्ताक्षर अभियान प्रारम्भ कर दे। आज की सरकार आदोलन की भाषा ही समझती है। कोई कारण नही कि भारत सरकार जनता के एक अत्यन्त व महत्वपूर्ण प्रश्न पर निष्क्रिय होकर बैठ जाए जनता की आवाज मे शक्ति होगी तो सरकार अवश्य झुकेगी व अपनी भूल स्वीकार करेगी।

—शिवराज शास्त्री

सम्पादकीय

आर्यसमाज नैतिक मूल्यों की स्थापना को सन्नद्ध

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का अपमान सहन नहीं

फिल्म संसार ने नैतिक व धार्मिक मूल्यों का सर्वथा परित्याग करके भारतीय इतिहास के महान पुरुषों का उपहास एक खेल बना लिया है। पिछले दिनों भगवती सीता के चरित्र को लेकर एक नाटक पर बम्बई में हंगामा हुआ। आर्य नेता श्री देवरत्न आर्य ने उसमें सफलता प्राप्त की।

दिल्ली में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती को यह पता लगने पर कि बम्बई के एक प्रसिद्ध फिल्म निर्माता मनोज कुमार ने एक बार फिर रामायण के महान पात्रों का उपहास करना अपना रोजगार बनाया है। स्वामी जी दिल्ली के उपराज्यपाल श्री एच०एल० कपूर से एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ मिले। प्रतिनिधि मण्डल में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के नेता श्री मनोहरलाल कुमार व प्रेमचन्द गुप्ता आदि भी सम्मिलित थे।

दिल्ली में यह फिल्म जिस सिनेमा घर में दिखाई जा रही थी उस शीला नामक सिनेमा पर पथराव हुआ और भारी संख्या में जनता ने अपना विरोध प्रदर्शन किया। सरकार ने कुछ लोगों को गिरफ्तार भी किया परन्तु स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के आग्रह पर तुरन्त रिहा कर दिया गया। यह स्थिति इसलिए उत्पन्न हुई कि फिल्म निर्माता श्री मनोज कुमार ने अपनी फिल्म कलियुग और रामायण में हिन्दुओं के महान ग्रन्थ रामायण के पात्रों के नामों का न केवल उपहास किया है अपितु उनके प्रति अपशब्दों का प्रयोग किया गया है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी के श्रीमुख से अश्लील शब्दों का प्रयोग कराया गया है।

आज जब कि भारत की सारी हिन्दू प्रजा श्रीराम के नाम पर संगठित है। मनोजकुमार जैसे निर्माता की यह धृष्टता हिन्दू प्रजा कैसे सहन कर सकती थी।

उपराज्यपाल श्री कपूर से प्रतिनिधि मण्डल के मिलने पर स्थिति मे परिवर्तन आया। फिल्म निर्माता श्री मनोजकुमार द्वारा अपनी फिल्म का नाम बदलकर केवल "कलियुग और"··· कर दिया गया है।

श्री आनन्द बोध सरस्वती महाराज के प्रयत्नो से ही दिल्ली के उप-राज्यपाल ने फिल्म निर्माता श्री मनोजकुमार पर दबाव डाला कि वह हिन्दू प्रजा के पवित्र मनोभावों का उपहास न उड़ाए। श्री मनोजकुमार ने अपनी फिल्म कलियुग और रामायण में आवश्यक परिवर्तन स्वीकार कर लिया है।

फिल्म निर्माता ने यह परिवर्तन स्वीकार किया कि राम के स्थान पर रमन तथा लक्ष्मण के स्थान पर दमन कहा जाएगा। सीता के स्थान पर सविता शब्द प्रयोग किया। रावण की भूमिका कर रहे प्रेम चोपड़ा को मंगेर-सिंह का नाम दिया गया है।

प्रश्न तो यह है कि कपूर परिवार के वंशज जिनके अग्रज पृथ्वीराज कपूर जीवन भर भारतीय संस्कृति के मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्ष करते रहे। जो अपने आप को शुद्ध आर्य कहने मे गौरव का अनुभव करते थे उनके ही वंशधर आर्य राम का उपहास करने का साहस कर सके। माता सीता उन्हीं श्रीराम की अर्धांगिनी थी। जिन्होंने लाखों वर्ष भारतीय राष्ट्र की मान-मर्यादा को अपने उज्ज्वल चरित्र के कारण रक्षा की। राष्ट्रपिता बापू महात्मा गांधी जिनके नाम पर जिए और जिनके नाम पर मरे। उन्हीं के राष्ट्र का कोई नागरिक उनके आदर्शों का उल्लंघन करके राष्ट्र की सांस्कृतिक धारा को भ्रष्ट करे यह कैसे सहन किया जा सकता है।

आज भी राष्ट्र की रक्षा में मर्यादा पुरुषोत्तम राम की ही मर्यादाऐं राष्ट्र की रक्षा कर रही है। गुरु नानकदेव जी ने जिस महापुरुष को अपने पवित्र ग्रन्थ में आठ सौ बार स्मरण किया। देव दयानन्द ने जिन श्री राम को आप्त पुरुष कहकर अभिनन्दित किया। सनातन धर्म ने जिन महापुरुष राम के हजारों मन्दिर बनाकर उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़ रखा। कोई भी राष्ट्र प्रेमी उस मर्यादा पुरुषोत्तम राम का अपमान कैसे सहन कर सकता है।

१० मई १९८७ को संस्कृत रक्षा दिवस

संस्कृत के समर्थन में हस्ताक्षर अभियान प्रारम्भ करें

आपको विदित है कि भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा की नितान्त उपेक्षा की गई है। इसका परिणाम स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का सर्वनाश होगा। इस वास्तविकता को ध्यान में रख-कर ५ अप्रैल १९८७ को दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में संस्कृत के चुने हुए विद्वानों की बैठक, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी। इस अवसर पर प्रस्ताव के अतिरिक्त एक अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति का गठन श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में किया गया।

समिति ने सर्वसम्मति से आगामी १० मई, १९८७ को अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत रक्षा दिवस का आह्वान किया है। आपसे निवेदन है कि अपनी शिक्षा संस्थाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों, शोध संस्थान, आर्यसमाज; सनातन धर्म सभा आदि संस्थाओं में भारी संख्या में एकत्र होकर संस्कृत की रक्षा तथा इसके पठन-पाठन की व्यवस्था के लिए संकल्प करें। इस आशय का प्रस्ताव पारित कर प्रधान मन्त्री, मानव संसाधन विकास मन्त्री, शिक्षा मन्त्री भारत सरकार, समाचार पत्रों व समाचार एजेंसियों को भेजें। एक प्रति अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा; रामलीला मैदान नई दिल्ली को भी भेजें। (प्रस्ताव का प्रारूप संलग्न है)।

प्रस्ताव

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत निर्धारित पाठ्यक्रम में किसी न किसी स्तर पर प्रत्येक भारतीय के लिए अनिवार्य रूप से संस्कृत के पठन पाठन की व्यवस्था की जाए। एतदर्थ आवश्यक है कि त्रिभाषा सूत्र में मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा के साथ तीसरी भाषा के रूप मे संस्कृत को अनिवार्य बनाया जाए। यह भी निश्चित है कि जब तक अंग्रेजी की अनिवार्यता रहेगी, तब तक संस्कृत को उसका समुचित स्थान दिया जाना संभव न होगा। इसलिए हमारी मांग है कि पाठ्यक्रम मे त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत अंग्रेजी के अध्ययन की व्यवस्था विश्वविद्यालयो मे ऐच्छिक विषय के रूप में की जाए।

समिति ने यह भी निर्णय लिया है कि शिक्षा पाठ्यक्रम मे इसकी अनि-वार्यता के लिए एक जोरदार हस्ताक्षर अभियान चलाया जावे। अत. आप अपने क्षेत्र मे अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर कराकर, पत्रो को यहां अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति के पास भिजवाने का कष्ट करें, ताकि यहा से बड़ी भारी संख्या मे उसे सरकार के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सके।

—ब्रह्ममित्र अवस्थी

पंजाब में साड़ी वालों और दर्जियों की शामत

अमृतसर। शराब, मांस, बीड़ी सिगरेट, तम्बाकू वालो के बाद अब पंजाब मे साड़ी बेचने और सीने वाले दर्जियो की भी शामत आ गई है। साड़ी बेचने और पहनने का निषेध कर दिया गया है। दर्जियो से कहा गया है कि वे पेंट और शर्ट न सिलें। वे केवल कुर्ता पायजामा और कच्छा सिल सकते हैं।

उग्रवादी सगठनो ने उन्हें धमकी दी है कि अगर हुक्म उदूली होगी तो खैर नही है। साड़ी के स्थान पर औरतो को सलवार कुर्ता पहनने के आदेश दिए गए हैं। उनसे कहा है कि वह सादा रहे और किसी प्रकार शृगार साधनो का प्रयोग न करें।

बब्बर खालसा इण्टरनेशनल ने जालन्धर मे कारो के काले शीशे हटा कर १५ अप्रैल तक उन्हें सफेद करवा लेने की चेतावनी दी है। बब्बर खालसा का आरोप है कि काले शीशे वाली कारो मे बैठ कर मुखबिर सिंहो (शेरो) को पकड़वाते हैं। खत पर जत्थेदार सुखदेवसिंह के हस्ताक्षर हैं।

उग्रवादी सगठनो ने अण्डे बेचने वालो को भी चेतावनी दी है।

उधर शराब के ठेके और पान की दुकानों पर हमले जारी हैं और इनकी रक्षा के लिए पजाब सरकार की टास्क फोर्स अभी कागजो पर ही है। शहरो की अपेक्षा गाव और छोटे छोटे कस्बो की हालत ज्यादा खराब है। नशा बेचने वालो के अलावा उग्रवादी अब नशा करने वालो को भी पकड़ने लगे हैं। कई ऐसी वारदातें हुई हैं कि तम्बाकू खाने वाले का मुह खोलकर उसका तम्बाकू निकलवा दिया गया और उसे चेतावनी दी गई। सरकार की कोशिशो के बाद भी गाव के कई शराब के ठेके जो नए साल के लिए नीलाम भी हो चुके है, नही खुल सके है। कई ठेकेदारो ने सरकार से अपनी सिक्योरिटी वापस करने की माग की है।

कई शराब ठेकेदारो ने फैसला किया है कि वे दरबार साहिब मे हाजिर होकर अरज करेंगे कि केवल इस साल के लिए उन्हे शराब बेचने की इजाजत दी जाए। अगले साल से वे अपने कान पकड़ेगे और तौबा करेंगे। उनका कहना है कि इस साल उनका काफी पैसा लग गया है और वह बरबाद हो गए हैं।

अकाल तख्त के जत्थेदार श्री दर्शनसिंह का कहना है कि अगर सरकार छह महीने के भीतर पूर्ण नशाबन्दी कर दे तो वह अपील कर सकते हैं कि उस समय तक दूकानदारों को कुछ नही कहा जाए।

आबकारी से राजस्व के रूप मे हर साल २५० करोड़ प्राप्त करने वाली पजाब सरकार के सामने अब समस्या यह है कि या तो वह इसे धमकी मान ले या फिर सारे पजाब मे शराब, पान, बीड़ी, दर्जियो और मांस वालो की दुकानो और उनके घरो के बाहर कम से कम २० हजार पुलिस खड़ी कर दे। इस पर उसका करोड़ो रुपया खर्च होगा और फिर भी कोई गारटी नही होगी।

उधर दहेज विरोधी धमकिया भी अमल मे लाई जा रही हैं। बड़ी बारातो को रोक कर उनकी गिनती की जाती है और ११ से ज्यादा बाराती हुए तो बाकी को वापस कर दिया जाता है। धमकियो का यह असर हो रहा है गाव के लोगो ने दहेज के सामान के लिए महीनों पूर्व दिए अपने आर्डर रद्द कर दिए हैं और फर्नीचर, जेवरात वालो से अपना अग्रिम धन वापस माग रहे हैं।

इन दुकानदारो की मुसीबत यह है कि वह काफी लागत लगाकर आर्डर का सामान तैयार कर चुके हैं। अगर वे ग्राहक का अग्रिम धन वापस करते हैं तो उनका भट्टा बैठ जाएगा। शादी विवाह के समय मनोरजन के लिए जाने वाले बेंड और आर्केस्ट्रा वालो ने गाव जाने से इनकार कर दिया है। कुछ दिनो मे बेंड बाजे वाले अगर भूखो मरने लगे तो कोई आश्चर्य नही होना चाहिए। अगर यह हालत चलती रही तो अमृतसर तो क्या पूरा पजाब ही बन्दूको के बल पर पवित्र प्रदेश हो जाएगा।

चण्डीगढ से हमारे विशेष सवाददाता के अनुसार 'पजाब के सिखों को आज एक अनूठे किस्म के आन्दोलन का सामना करना पड़ रहा है। अनेक जगहो पर सिख छात्र सघ और गरम मिजाज वाले अन्य सगठनो के सदस्यो ने एक नया हुक्म जारी किया है कि सिख अपनी दाढी खुली रखें।

कमरा नम्बर १४

अमृतसर। कमरा नम्बर ४७ के बाद अब स्वर्ण मन्दिर परिसर में कमरा १४ नए यातना केन्द्र के रूप मे सामने आया है, जहा शराब पीने अथवा पुलिस की मुखबरी करने के आरोप मे पकड़ कर लाए गए लोगों को यातनाए दी जाती हैं।

अमृतसर के वरिष्ठ अधीक्षक मो० इजहार आलम ने ऐसी ही यातना भोग कर और मौत से बाल-बाल बच कर निकल भागे एक अमृत चखे सिख युवक को पेश किया।

सारी कहानी पिन्दर सिंह (२३) की जुबानी सुनें "मैं भोरे गाव पुलिस स्टेशन का रहने वाला हूं और मजदूरी के साथ गुरु ग्रन्थ साहब का अखण्ड पाठ करने का काम करता हूं। तीन चार दिन पूर्व मुझे एक ही लिफाफे मे दो खत मिले जिसमे कहा गया था कि मैं शराब पीता हूं और पुलिस के लिए मुखबरी करता हूं। इसके लिए सजा मिलेगी। मैं अपनी सफाई देने दरबार साहिब मे हाजिर हुआ, जहा मुझे पकड़ कर अकाल रेस्ट हाउस ले जाया गया। फिर रात को मन्दिर परिसर की परिक्रमा के कमरा नम्बर १४ मे रखा गया। सारी रात इस कमरे मे मुझे भारी यातना दी गई और फिर गोली मार देने का फैसला किया गया। कहा गया कि बाहर कार मे बैठ जाओ पिंड चले जाओगे। मैं बात मान कर आटा मण्डी वाले दरवाजे से बाहर आया। लेकिन उस स्थान पर कोई कार नही थी। यह सोच कर कि जान तो बचनी नही है, मैं भाग पड़ा। पीछे से गोलिया चली लेकिन मैं किस्मत वाला था। आटा मण्डी सी० आर० पी० की पोस्ट तक किसी तरह पहुंचने मे सफल हो गया और अब आपके सामने हूं।"

पिन्दरसिंह बताता है कि उसके सामने इसी कमरे मे एक और आदमी के टुकड़े टुकड़े काट दिए गए और उसे गटर मे डाल दिया गया। पुलिस पुलिस अधीक्षक का कहना है कि पुलिस इसके बयान के बाद गटर से शव बरामद करने का यत्न कर रही है और हत्या का एक और मामला दर्ज कर लिया गया है।

मो० इजहार आलम के अनुसार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के सचिव और डा० बरार का अभी तक कोई अता-पता नही चला है। दिल्ली के एक दैनिक मे छपी खबर के आधार पर उन्हें जिन्दा या मुर्दा तलाशने का पूरा यत्न कर रही है।

पुलिस अधीक्षक ने सवाददाता सम्मेलन मे एक दुर्दान्त आतकवादी राजा उर्फ बब्बर की गिरफ्तारी की सूचना दी। इसे पुलिस ने तरनतारन से पकड़ा। अमृतसर मे माच मे करतारचन्द की हत्या के सिलसिले मे पुलिस को इसकी तलाश थी। करतारचन्द की हत्या अमृतसर मे दिन मे ही बाजार मे कर दी गई थी। इसके साथ एक और आतकवादी पकड़ा गया है। इसने दो माह पूर्व रय्या (अमृतसर) के सहायक पुलिस अधीक्षक की भी हत्या की थी इसके पास से असला भी बरामद हुआ है।

हिन्दु-मुस्लिम नेताओं की भेंट और राम जन्मभूमि का निर्णय

—डॉ० अमरेश, अफ़ज़ल उलूम उलमा, मद्रास यूनीवर्सिटी

विगत १० मार्च १९८७ ई० के दिल्ली नगर के प्रसिद्ध पर्यटन अशोक होटल के कमरा नम्बर ४०६ में विश्व हिन्दू परिषद, रामजन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति, तथा ऑल इण्डिया बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के बीच जो भेंट हुई थी, वह वर्तमान परिस्थिति में प्रमुख चर्चा का विषय बना हुआ है। यद्यपि दो घण्टे की दीर्घावधि चर्चा में किसी प्रकार की निर्णयात्मक वार्ता न हो सकी।

इस मीटिंग में श्री सैयद शहाबुद्दीन एम० पी० ने अपनी धूर्तता का परिचय प्रदर्शित करते हुए प्रस्तुत कार्य के सम्पादन के लिए बड़ी दक्षता एवं चतुराई से सभा के आयोजन के पूर्व ही समाचार संवाददाताओं को बड़ी कुटिलता से उन्हें वहां से निष्कासित किया। यद्यपि हिन्दू प्रतिनिधियों की ओर से पत्रकारों की उपस्थिति से सम्बन्धित कोई आपत्ति नहीं उठाई गई थी तथापि श्री शहाबुद्दीन साहब ये नहीं चाहते कि संवाददाताओं के माध्यम से अपनी कुटिलता का पर्दाफाश हो जाये। हिन्दुस्तान के कट्टर संकीर्ण साम्प्रदायिकता के समर्थक व पोषक श्री गुलाम मुहम्मद बनातवाला एम० पी० तो प्रारम्भ से लेकर मीटिंग के अन्तिम क्षण तक साम्प्रदायिकता का विष उगलते रहे। जितने वक्तव्य मुसलमानों की ओर से दिये गए हैं उससे यह स्पष्ट होता है कि वे इस ज्वलन्त समस्या को सुलझाने के पक्ष में नहीं हैं, अपितु दीर्घकाल तक उलझाना ही चाहते हैं।

मुसलमानों की ओर से अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए एक नया षड्यन्त्र रचा जा रहा है। जिसके कारण हिन्दु प्रतिनिधियों के समक्ष एक प्रश्न उपस्थित किया गया है, "क्या हिन्दू इस बात को सिद्ध कर सकते हैं कि इस संसार में भगवान राम नाम की कोई महान विभूति का जन्म हुआ था? मान कर लिया जाए कि भगवान रामचन्द्र जी का इस देश में जन्म हुआ था?

क्या यह प्रमाणित किया जा सकता है कि विवाद ग्रस्त क्षेत्र अयोध्या में ही उनका जन्म हुआ था।' उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर हिन्दु नेताओं द्वारा जिस ढंग से देना चाहिए था उस प्रकार से नहीं दिया गया। समीचीन उत्तर न देने के कारण मुसलमानों का दुस्साहस बढ़ने लगा और ऊल जलूल बातें करने लगे। अतः समय और विषय की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत किए गए उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर सम्यक रूप से दिया जाना चाहिए।

यह सत्य है कि श्री भगवान राम की महान विभूति इस संसार में विद्यमान थी। इसके लिए अनेक प्रमाण प्रस्तुत हैं। भारत की समस्त भाषाओं में जहां उनका उल्लेख है, वहीं अरबी तथा फारसी भाषा के ग्रन्थों में उनके जीवन का सविस्तृत परिचय उपलब्ध होता है। स्वयं मुस्लिम उलमा इन ग्रन्थों के प्रणेता हैं और उन्होंने भी रामजी के प्रति अनन्य श्रद्धा निष्ठा, एवं आस्था प्रकट की है। उनकी मान्यता यही रही है कि भगवान राम जी का अवतरण इसी पुनीत अयोध्या नगरी में ही हुआ था। इसके अतिरिक्त अंग्रेज तथा योरोपीय भाषाओं में ऐसे अकाट्य प्रमाण दिए गए हैं जिन्हें कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। हम मुस्लिम बन्धुओं को सच्चे हृदय तथा निश्चित मन से यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि आवश्यकता पड़ने पर इन प्रमाणों को निर्भयतापूर्वक न्यायालय में प्रस्तुत करने के लिए सिद्ध हैं। इसमें हमें किसी प्रकार का संकोच व भय नहीं है। उनसे पुनश्च अनुरोध है कि वे इस भ्रम में न रहें कि भोले-भाले कुछ हिन्दुओं की आखों में धूल डालकर अपने स्वार्थ की पूर्ति में अनायास सफल हो जायेंगे।

क्या मुसलमान अपना मुंह इस दुनिया के समक्ष दिखा सकेंगे जब कि हम उनके धार्मिक ग्रन्थों के आधारों पर ही उनके अनुचित कृत्यों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। अतः इस सम्बन्ध में आपको संकेत करना चाहते हैं कि भविष्य में इस प्रकार साम्प्रदायिक उन्माद को भड़काने वाली निम्न स्तर के कार्य कलापों से सावधान रहें।

इस समय सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे समक्ष यह उपस्थित होता है कि क्या इस्लामी शरीअत के सिद्धांतों के आधार पर अयोध्या के रामजन्म भूमि जैसे विवाद ग्रस्त क्षेत्र में एक मस्जिद हो सकती है अथवा नहीं? जहां तक इस्लामी शरीयत का सम्बन्ध है उसके आधार पर किसी भी अवस्था में उस स्थान पर एक मस्जिद हो भी नहीं सकती। इसलिए कि

(१) उस स्थान के आसपास उतनी मुस्लिम आबादी नहीं है जितनी एक मस्जिद के लिए इस्लामी शरीअत के अनुसार होनी चाहिये।

(२) यदि उस स्थान को मस्जिद मान भी जाए तो वह एक ऐसी मस्जिद होगी जो अनुचित प्रकार से कब्जा की हुई जगह पर निर्माण की गई है। अनुचित रूप से कब्जा की गई जगह पर खड़ी की गई मस्जिद अथवा अनुचित रूप से कब्जा की हुई इमारत को मस्जिद के रूप में रूपान्तरित कर उसमें नमाज पढ़ना, प्रवेश होना अथवा उसमें नाम जाना शरीअत के आधार पर अनुचित एवं निषिद्ध है (मुअर्मरात)

(३) जिस स्थान पर मूर्ति पूजा की जाती हो ऐसे स्थान को मस्जिद में रूपान्तर करना शरीअत के अनुसार दण्डनीय अपराध है। (अलमनार)

(४) अन्य मतावलम्बियों के पूजागृहों को मस्जिद में परिवर्तित करना शरीयत के आधार पर दण्डनीय अपराध है। (आलमगिरिया)

(५) किसी स्थान या इमारत के विषयों में जब तक इस बात का प्रामाणिक आधार (दस्तावेज) न हो कि वह स्थान समस्त मुस्लिम जाति के नाम प्रतिष्ठापित की गयी है। ऐसे स्थानों के सम्बन्धों में मुतालबा करने का अधिकार हर मुसलमान को शरीयत के अनुसार प्राप्त नहीं है। (मुहल्ला)

(६) किसी स्थान पर कोई मस्जिद हो अथवा किसी इमारत को मस्जिद का रूप दिया गया हो। जब इसके सम्बन्ध में इस प्रकार की जानकारी मिल जाए कि वह अनुचित कब्जा करके बनायी गयी है। केवल इस प्रकार की जानकारी प्राप्त होने पर ऐसे मस्जिदों की मस्जिदी हैसियत समाप्त हो जाती है। यद्यपि वहां पर नमाज भी क्यों न पढ़ी जाती हो। (अलमजहरिया)

इस प्रकार के अनेक प्रमाण इस्लामी शरीयत के अमीकृत एवं प्रमाणिकृत ग्रन्थों में विद्यमान है। इन सभी धार्मिक तथ्यों से आंख मींचकर केवल राजनैतिक स्वार्थ साधने के लिए पवित्र रामजन्म भूमि को बाबरी मस्जिद में रूपान्तरित करने के लिए जो संघर्ष किया जा रहा है वह शरीयत के साथ कोई न्यायोचित कार्य नहीं है। यदि कोई इस भ्रम में पड़ा हो कि हम हिन्दुओं को बड़ी सुगमता से मूर्ख बना सकते हैं तो ऐसों से हमारा अनुरोध है कि वे तुरन्त ऐसे कार्यों का परित्याग कर दें। यदि भारतीय मुसलमानों को अपने इस्लामिक स्मारकों की रक्षा की इतनी बड़ी चिन्ता है तो आगे आए इस समस्या को अपने ही शरीयत के आधार पर समस्या सुलझाने के निमन्त्रण को स्वीकार करे। यदि उन्हें अपने ही शरीयत की जानकारी नहीं है तो हम उन्हें उसकी जानकारी देने को तैयार हैं।

ऋषि दयानन्द की प्रशंसिक रूसी महिला

मैडम एच० पी० ब्लैवेट्स्की

डा० भवानीलाल भारतीय

थियोसोफिकल सोसायटी की संस्थापिका श्रीमती ब्लैवेट्स्की का पूरा नाम हेलेना पेट्रोव्ना ब्लैवेट्स्की था। इनका जन्म १२ अगस्त १८३१ को दक्षिण रूस के नगर में हुआ इनके पिता कर्नल पीटरहान मूलतः जर्मन थे जो रूस में आकर बस गये थे। १८४८में जब उसकी आयु १७ वर्ष की थी, उनका विवाह एन०वी० ब्लैवेट्स्की नामक एक रूसी से हुआ जो आयु में हेलेना से काफी बड़ा था। हेलेना को इस विवाहित जीवन मे कोई रुचि नही थी अतः उसे अपने पति के साथ रहना कठिन लगा और वह शीघ्र ही उससे अपना सम्बन्ध तोड बैठी। १८४८ से १८७२ तक का उसका जीवन अन्धकार से ढका है। इस अवधि में वह कहां रही, क्या करती रही, इस सबका अधिकारिक विवरण नही मिलता। १८७२ ई० तथा इसके बाद के वर्षों की उसकी जीवन कथा सिससिलेवार मिल जाती है १८७२ के वर्ष का कुछ काल उसने मिस्र की राजधानी काहिरा (कोअरो) मे व्यतीत किया। यहां वह कुछ अतीन्द्रिय और परामनोवैज्ञानिक परीक्षणों और साधनाओं मे लगी रही।

७ जुलाई १८७३ को मैडम न्यूयार्क आयी। यहीं उसकी भेट अमरीकी सेना के एक अवकाश प्राप्त कर्नल हेनरी स्टील आल्काट से हुई। संयुक्त राज्य अमेरिका के वरमाण्ट राज्य स्थिति चिटेनडेन नामक स्थान में मैडम ब्लैवेट्स्की ने अपनी आध्यात्मिक अलोकिक साधनाओं के चमत्कार दिखाने का एक आयोजन किया था। १८ अक्तूबर १८७४ के दिन जब उक्त स्थान पर अनेक लोग मैडम के द्वारा किये जाने वाले करिश्मों को देखने के लिए एकत्र हुये तो उनमें कर्नल आंल्काट भी सम्मिलित थे जो न्यूयार्क से प्रकाशित होने वाले ग्राफिक नामक पत्र के सवाददाता के रूप में वहां उपस्थित थे। दोनों ने अनुभव किया कि उन दोनों के शील एव व्यसन समान है अतः इनमें सख्य भाव उत्पन्न हो गया, जो जीवन पर्यन्त स्थिर रहा। अन्ततः दोनों ने पारस्परिक विचार विमर्श के पश्चात् १७ १८७५को न्यूयार्क में विधिवत थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना की। इससे पूर्व ७ सितम्बर १८७५ को न्यूयार्क के इर्विग प्लस नामक स्थान के कमरा नं० ४६ में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना के विषय मे प्रारम्भिक विचार विमर्श हो चुका था। कर्नल आल्काट को इस सस्था का अध्यक्ष तथा मैडम को मन्त्री चुना गया।

३ अप्रैल १८७५ को ब्लैवेट्स्की ने अमेरिका मे रहते हुए माइकेल टेटले नामक एक आर्मीनियम से विवाह कर लिया। यह विवाह भी उसके पूर्व विवाह की भांति सफल नही रहा—१८७७ में ब्लैवेट्स्की की प्रसिद्ध पुस्तक Isis unveileds प्रकाशित हुई। यह अत्यधिक चर्चित हुई क्योंकि इसमें प्रथम बार हिन्दू पारसी, बौद्ध आदि प्राचीन प्राच्यधर्मों के समर्थन में अनेक बाते कही गई थी, साथ ही अध्यात्मविद्या विषय साधनाओं तथा उनसे उत्पन्न चमत्कारपूर्ण परिणामों की भी रोचक चर्चा थी पुस्तक का चटपटापन इसलिए और भी बढ़ गया था क्योंकि इसमें लेखिका ने आधुनिक विज्ञान तथा ईसाइयत की तीखी आलोचना भी की थी।

इसी बीच थियोसोफी के प्रवर्तकों को एक गुजराती पुरुष मूलजी ठाकरसी से स्वामी दयानन्द के कार्य एवं विचारों का परिचय मिला। परिणामस्वरूप इन लोगों ने स्वामी जी से नियमित रूप से पत्र व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। अन्ततः २१ मई १८७८ को श्रीमती ब्लैवेट्स्की ने आर्यसमाज बम्बई के प्रधान श्री हरिश्चन्द्र चिन्तामणि को एक पत्र लिखकर सूचित किया कि वे और कर्नल आल्काट दोनों ही भारत आ रहे हैं। कर्नल आल्काट ने अपनी व मैडम की इस प्रथम भारत यात्रा का विस्तृत वर्णन अपनी पुस्तक ओल्ड डायरी लीव्ज में किया हे। १६ फरवरी १८७९ को ये लोग बम्बई पहुंचे। बन्दरगाह पर उनका स्वागत मूलजी ठाकरसी तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा ने किया कुछ साल बम्बई में व्यतीतकर कर्नल तथा मैडम उत्तर भारत की यात्रा के लिए निकले। सहारनपुर में उनकी स्वामी दयानन्द से प्रथम भेट में निश्चय हुआ कि थियोसोफिकल सोसाइटी और आर्यसमाज के बीच प्रगाढ़ सम्बन्ध होने चाहिए। स्वामी दयानन्द ने स्वलिखित अनेक पत्रों में कर्नल और मैडम की प्रशंसा की। उन्हें यह आशा थी कि इन विदेशी धर्म जिज्ञासुओं के पुरुषार्थ से यूरोप और अमरीका में वैदिक धर्म के प्रचार का मार्ग प्रशस्त होगा और आर्य सभ्यता एवं संस्कृति एक बार पुनः विश्व व्यापक हो जायेगी।

सहारनपुर से ये लोग स्वामी जी के साथ ही मेरठ आये जहां श्री शिवनारायण के घर पर उनके निवास को व्यवस्था की गई। कुछ दिन मेरठ में स्वामी जी के सान्निध्य में रहकर दोनों बम्बई लौट गये। स्वामी दयानन्द से थियोसोफी के नेताओं की दूसरी भेंट १५ दिसम्बर १८७९ को काशी में हुई। इस समय मैडम ने अपनी योगज सिद्धियों का लोगो के समक्ष प्रदर्शन किया जिससे अनेक लोग प्रभावित हुये किन्तु स्वामी दयानन्द ने उपस्थित जनसमूह को बताया कि इन चमत्कारों का रहस्य क्या है। अगस्त १८८० में ये लोग फिर मेरठ आये और स्वामी जी से मिले। मेरठ से कर्नल और मैडम शिमला चले गये। शिमला से लौट कर ये अमृतसर और लाहौर गये जहां के आर्यसमाजियों ने उनका हार्दिक आतिथ्य किया। कालान्तर मे आर्य समाज और थियोसोफिकल सोसाइटी के बीच सैद्धान्तिक मतभेद उभरे और स्वामी जी ने अनुभव किया कि विशुद्ध वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित आर्यसमाज तथा विभिन्न मत मतान्तरों में समान निष्ठा रखने वाले, नाना प्रकार की अलौकिक साधनाओं एव उनसे उत्पन्न चमत्कारों में विश्वास रखने वाले, तिब्बत में निवास करके समस्त विश्व का नियन्त्रण रखने वाले कूट-होमी आदि अनेक काल्पनिक महात्माओं का अस्तित्व स्वीकार करने वाले और समय-समय पर अदृश्य साधनों द्वारा उनसे संकेत एव आदेश पाने वाले तथा भूतप्रेतादि अलौकिक योनियों में विश्वास रखने वाले थियोसोफी के इन नेताओं से आर्यसमाज का ताल-मेल नहीं बैठेगा। फलतः उन्होंने २८ मार्च १८८८ को बम्बई में दोनों सस्थाओं के सम्बन्ध विच्छेद की विधिवत् घोषणा कर दी।

मैडम ब्लैवेट्स्की के जीवन की अन्य घटनाओं का वर्णन तथा उनके विचारों के विश्लेषण या विवेचन हमारे प्रसग से बाहर की वस्तु है। अक्टूबर १८७९ में थियोसोफिकल सोसाइटी का मासिक मुख्य पत्र दि थियोसोफिस्ट बम्बई से मैडम ब्लैवेट्स्की के सम्पादन में प्रकाशित होने लगा। इसके अक्तूबर १८७९ दिसम्बर तथा नवम्बर १८८० के अंकों में स्वामी दयानन्द का स्वलिखित जीवन वृतान्त (अपूर्ण) प्रकाशित हुआ है। मूल इतिवृत स्वामी जी ने हिन्दी में लिखा था जिनका अंग्रेजी में अनुवाद श्रीमती ब्लैवेट्स्की ने किया यह पृथक पुस्तकाकार भी छप चुका है श्रीमती ब्लैवेट्स्कीय ने Caves and Jangle of Hindustan शीर्षक एक ग्रन्थ लिखा जिसमें उसने स्वामी जी के सम्बन्ध में निम्न घटना लिखी है। एक बार स्वामी जी के ऊपर किसी शैव उपासक ने काशी में विषैला सांप फेका तो उन्होंने उसे अपने पांव से कुचलते हुए कहा था कि तुम्हारे नकली देवताओं का यही हाल होता है यह घटना सबसे पहले श्रीमती ब्लैवट्स्की द्वारा वर्णित की गई थी इसी पुस्तक में स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलि देते हुए। श्रीमती ब्लैवेट्स्की ने लिखा था। भारत में शंकराचार्य के बाद दयानन्द से बढ़कर कोई अन्य संस्कृत विद्वान गम्भीर दार्शनिकआश्चर्यजनक वक्ता तथा बुराइयों का निर्भीक आलोचक नहीं हुआ।

८ मई १८९१ को श्रीमती ब्लैवेट्स्की का निधन हुआ।

इतिहास का एक शिक्षाप्रद पृष्ठ

वैदिक धर्म का प्रचारक मुहम्मद दाराशिकोह

आचार्य शिवराज शास्त्री एम०ए० मौलवी फाजिल

संसार में राज्यों में सदा परिवर्तन होते आए हैं परन्तु धर्म एक ऐसा शाश्वत आधार है जिसका सम्बन्ध प्रभु की रचना के शाश्वत नियमों से होता है। सत्य धर्म कभी परिवर्तित नहीं होता। ऐसे ही धर्मों में यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वह वैदिक धर्म है इसका इतिहास अनादि काल से आज तक सुरक्षित है। यह आश्चर्यजनक सत्य है कि वैदिक धर्म के विरुद्ध लेखबद्ध किसी धर्म प्रवर्तक को कभी कुछ भी कहने व लिखने का साहस नहीं हुआ। यहां तक कि कुरान ने तो यह कहा है कि सृष्टि में सारे मनुष्य एक विचार एक धर्म के मानने वाले थे।

माकानन्नासइल्ला उम्मतन वाहिदतन

इस्लाम जिसका जन्म आज से केवल चौदह सौ वर्ष पूर्व हुआ, इस्लाम के प्रादुर्भाव से संसार में आर्य धर्म का उतना प्रचार नहीं रहा था। मुहम्मद साहब ने वेद को उम्मुलकिताब पुस्तकों की जननी, के नाम से स्मरण किया है।

शक्ति सम्पदा की तलाश में अरबों ने भारत पर भी आक्रमण किया। बाबर उन्हीं आक्रामकों में से एक था जिसके नाम को लेकर आज हिन्दू मुसलमान विवादग्रस्त हैं। परन्तु क्या यह कम आश्चर्य की बात है कि उसी बाबर के वंशजों ने भारत में आकर भारतीय सभ्यता के रंग में अपने को रंगने का प्रयत्न किया। सम्राट अकबर ने दीने इलाही के नाम से कुछ प्रयत्न किया। हिन्दू, मुसलमानों को एकता के सूत्र में बांधने प्रयत्न किया था।

अकबर अपने प्रयत्नों में इतना सफल था कि उसके पुत्र शाहजहां को स्थापित साम्राज्य प्राप्त हो गया और उसने अपना सारा जीवन भोग-विलास में ही बिताया। औरंगजेब शाहजहां का द्वितीय पुत्र था। नियमानुसार राजगद्दी औरंगजेब को नहीं मिल सकती थी। राजगद्दी का अधिकारी शाहजहां का बड़ा पुत्र दारा शिकोह था। शाहजहां ने उसे राजगद्दी प्रदान करने की सभी तैयारी कर ली थी।

मुहम्मद दारा शिकोह का जन्म २० मार्च १६१५ को हुआ। वह अत्यन्त मेधावी व सत्यशोधक प्रकृति का राजकुमार था उसने जहां इस्लाम धर्म के ग्रन्थों का सम्पूर्ण अध्ययन किया था वहां उसकी बड़ी उत्कट अभिलाषा थी संसार के सबसे पुराने धर्म वैदिक धर्म के ग्रन्थों का भी अध्ययन करे। इसके काल में हिन्दू धर्म के पण्डित इतनी संकीर्ण वृत्ति के बन चुके थे कि कोई भी पण्डित दारा शिकोह को वेद तो क्या संस्कृत भाषा भी पढ़ाने को तैयार नहीं हुआ। विवश दारा शिकोह ने प्रसिद्ध विद्वान लाल बाबा की शरण ली और इतने मनोयोग पूर्वक संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया तथा वैदिक धर्म ग्रन्थों का फारसी भाषा में अनुवाद कराया। साथ ही वैदिकधर्म की प्रशंसा का एक अत्यन्त उच्चकोटि का संस्कृत का ग्रन्थ लिखा जो "समुद्रसंगम" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि दारा शिकोह के काल की भण्डारकर इन्स्टीट्यूट पूना में सुरक्षित है जिसका आकार १०×४१/२ है जिसके निर्माण काल पर सम्वत् १७६१ विक्रमी मार्ग शिर बदि सप्तमी चन्द्रवासर अंकित है।

दारा शिकोह की वेद भक्ति का एक ही उदाहरण पर्याप्त है। ओम शब्द की व्याख्या करते हुए दारा शिकोह लिखते हैं—अयं वर्णनात्मकः शब्दः सरस्वती सम्बन्धी एतस्माद् शब्दात् नाम्नां महा नामास्कं मध्ये सहस्रे आजम (अकबर, बड़ा सर्वश्रेष्ठ) उच्यते। सिद्धास्तुतं वेद मुख इतिवदन्ति ओम अस्य वेदमुख स्यार्थः तदेव आकारोकार मकारावदति सोऽस्तिगुणत्रयस्वामी। गुणत्रयेतु उत्पत्ति, स्थिति लयनिमित्तम्। समुद्र संगम पृष्ठ ६

यह व्याख्या व वर्णन करने वाला महान् शब्द है सरस्वती स्वरूप सिद्ध लोग इसे वेद का मुख बताते हैं। यह तीन गुणों का स्वामी है वे गुण हैं सृष्टि की रचना सृष्टि का संचालन व सृष्टि की प्रलय। इसी से इसी से इसके तीन स्वर हैं अकार उकार व मकार।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में जैसे ईश्वर के १०० नामों का वर्णन किया है। वैसे ही दारा शिकोह लिखते हैं—परमेश्वरस्य अनन्तानि नामानि। मर्यादा परिच्छेदा तीतानि मुतलक वहत् शुद्ध चैतन्यस्य सिद्धः शून्य, निर्गुणं निराकारं निरंजनं सतचितआनन्द इतिवदन्ति। अस्मद् वेदमुखस्य अल्लाह इत्यस्य ओमिति वदन्ति। समुद्र संगम पृष्ठ ८

परमात्मा के असंख्य नाम हैं कोई सीमा नहीं बनाई जा सकती। शुद्ध चैतन्य निर्गुण निरंजन सत् चित् आनन्द आदि। कुरान का अल्लाह भी वेद के मुख में से ही ओम की भांति निकला है।

मर्यादानुसार शाहजहां दारा शिकोह को ही अपनी राजगद्दी देना चाहता था उसके लिए बड़े राजकुमार को जो पदवियां व साधन सामग्री आवश्यक थी वे सभी दारा शिकोह को शाहजहां ने प्रदान कर दी थी। सभी राजकुमारों से अधिक उसके मन सब जात व सवार निश्चित किए गए। उसका सम्राट होना निश्चित ही था। परन्तु औरंगजेब इतना विकट महत्वाकांक्षी था कि सभी मर्यादाओं परम्पराओं पर लात मार कर केवल शक्ति व चालाकियों से उसने गद्दी हथिया ली। अपने पिता सम्राट शाहजहां को बन्दी बना लिया और उसका जीवन नारकीय बना डाला। बड़े भाई दारा शिकोह के प्रति तो उसका व्यवहार अत्यन्त लोमहर्षक रहा। उसे न केवल वध किया गया जनता में उसकी छवि बिगाड़ने के लिए घोर अपमानित भी किया।

यदि दारा का शासन भारत में स्थापित हो जाता तो आज भारत का रूप ही कुछ और होता। परन्तु धर्मान्ध मुस्लिम धर्माचार्यों का संगठन करके औरंगजेब ने दारा की हत्या कर डाली।

इस हत्या का आंखों देखा वर्णन प्रसिद्ध फ्रांससीसी यात्री डा० बर्नियर ने किया है। जो उस समय दिल्ली के राजपथ पर खड़ी भीड़ के साथ यह दृश्य देख रहा था।

मयूर सिंहासन के निमित्त उस पर अधिकार जमा कर औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को तो बन्दी बना दिया। जेलखाने में उसे पानी तक के लिए तरसाया तथा और उस पीड़ा से पीड़ित शाहजहां कहा करता था कि ए बेटे औरंगजेब तू कैसा मुसलमान है कि जीवित पिता को ही पानी के लिए तरसा रहा है। तुझसे तो वे हिन्दू बहुत उत्तम हैं। जो मरने के बाद भी अपने पिता को पानी पिलाते हैं श्राद्ध करते हैं।

एपिसर तू कुजा मुसलमानी।
जिंदा पिदरत बे अब तरसानी॥

शाहजहां के बड़े पुत्र मुहम्मद दारा शिकोह को बन्दी बनाकर अधिक से अधिक अपमानित किया गया।

अट्ठाईस अगस्त १६५६ ईस्वी घनघोर वर्षाकाल में एक बूढ़ी हथिनी पर दिल्ली के राजपथ पर दारा शिकोह व उसका पुत्र सिपहर गन्दे कपड़े पहनाकर बिठाए हुए थे दारा एक फटा काश्मीरी शाल ओढ़े हुए था उसके पैरों में बेड़ियां पड़ी हुई थी और एक गुलाम नंगी तलवार लिए उनके पीछे बैठा हुआ था। हाथी के आसपास नंगी तलवार लिए घुड़सवार सैनिक चल रहे थे। और ऐसी अपमान पूर्ण अवस्था में दारा सिर नीचा किए उस बूढ़ी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सरकारी निरपेक्षवाद और आर्यसमाज

—श्री नेत्रपाल शास्त्री श्रीनगर काश्मीर

कहना न होगा—भूत और वर्तमान काल मे धर्म निरपेक्षवाद के अर्थ के सम्बन्ध में केवल आर्य समाज के अतिरिक्त और किसी को न भ्रान्ति थी और न है। वैसे तो सैद्धान्तिक अन्तर को छोड़कर व्यावहारिक क्षेत्र में एक आर्य समाजी और सनातनी में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

हिन्दुओं का धर्म तो मन्दिरों तथा विकृत कर्मकाण्ड तक ही सीमित है। उनको धर्म निरपेक्षवाद से कुछ लेना देना नहीं है। मुसलमान और ईसाइयों ने निरपेक्षवाद का वास्तविक अर्थ सम्यक् रूप से समझा हुआ है। वे कभी भी भ्रान्ति मे नहीं रहे उनके लिए तो धर्मनिरपेक्षवाद का सिद्धान्त वरदान सिद्ध हो रहा है।

रही बात धर्मनिरपेक्षवाद शब्द की व्याख्या अथवा परिभाषा की। सर्वप्रथम तो उक्त शब्द अपने स्वरूप की अभिव्यक्ति में सक्षम नहीं है। द्वितीय यह शब्द अग्राह्य है। मेरे विचार से इसकी परिभाषा नहीं हो सकती है जिस धार्मिक सोपान के द्वारा विधायक और सांसद सत्ता के चौबारे पर चढ़ने मे सफल हो जाने के उपरान्त उस सोपान को चौबारे के पिछवाड़े रखकर अपने को निरपेक्षवादी मानने लगता है। दूसरे शब्दों में सत्ताधारियों का अपना कोई धर्म नही होता। शपथ धर्म के नाम पर ही लेता है।

संवैधानिक रूप से राष्ट्रीय धर्म घोषित न होने के कारण ही निरपेक्षवाद का उद्भव हुआ। जिसका पालन सरकार को करना अनिवार्य है जनता को नही। इस स्पष्ट अर्थ को मुसलमानो ने समझा, ईसाइयो ने समझा। खेद है कि अभी तक आर्य समाज ने नहीं समझा। अभी भी वह भ्रान्ति मे निमग्न है।

कौन नही जानता है कि महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए की थी। किसी भी राष्ट्र के आधार बच्चे होते हैं। उनमे डाले हुए उत्तम संस्कार ही महानता का प्रतीक होते हैं। इसी महान उद्देश्य की पूर्ति हेतु आर्य समाज ने शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की थी। स्वतन्त्रता से पूर्व तक शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति धर्म तथा देश भक्ति के विचार निर्भीकता के साथ दिए जाते थे। आर्य समाज की संस्थाओं से पढ़ा हुआ विद्यार्थी क्रान्तिकारी देशभक्त तथा धार्मिक होता था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त आर्य समाज धर्म निरपेक्षवाद के "हव्वा" से इतना आतंकित हो चुका है कि इसने अपनी शिक्षण संस्थाओं से धर्मशिक्षा को ही समाप्त कर दिया है। साथ में संस्कृत भाषा को भी। इतना ही नहीं अपितु आर्य समाज ने तो धर्म निरपेक्षवाद के अनुयायियो की वृद्धि में अपने शिक्षा मन्दिरो से धर्म को ताक मे रख दिया है।

अनेक सम्प्रदायो द्वारा जितनी भी शिक्षण संस्थाएं चलाई जा रही है, लगभग सभी संस्थाएं प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सरकार से सहायता व अनुदान ले रही है। परन्तु आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं को छोड़कर शेष सभी मोरल साइंस के नाम से धार्मिक शिक्षा बराबर दे रही है। एक आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो अपने स्कूल कालिजों में धर्म निरपेक्षवाद का अक्षरशः पालन कर रही है।

धर्म के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान तो आर्य समाज के द्वारा ही सम्भव है और आर्य समाज धर्म निरपेक्षवाद की बुरी तरह चपेट में आने के कारण अपने लक्ष्य को भुला चुका है।

मैंने पूर्व भी कहा है कि आर्य समाज को छोड़कर और कोई भ्रान्ति में नहीं पड़ा है। आवश्यकता है—सम्प्रति आर्य समाज की स्वयं को भ्रान्तियों से निकालने की। यदि समय रहते आर्य समाज भ्रान्तियों से मुक्त न हुआ तो वह समय भी दूर नही है जब राष्ट्र मे विरोधी तत्व छा जाएगा।

समय आ गया है निम्नलिखित बातों पर विचार करने का—

(१) आर्य समाज शक्ति सम्पन्न होने पर भी सक्षम क्यों नहीं है?

(२) वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में गतिशीलता क्यों नहीं है?

(३) शिक्षण संस्थाएं आर्य समाज के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक न होकर, भार क्यों बन गई है?

(४) आर्य समाज में शिथिलता क्यों आती जा रही है?

(५) कहीं आर्य समाज के संगठन-सूत्र में तो कमी नहीं है?

(६) आर्य समाज का जन सम्पर्क क्यों टूटता जा रहा है?

(७) आधुनिक युग में क्या हमारे प्रचार-साधन संतोषजनक है?

(८) आपकी दृष्टि में वे कौन से उपाय व साधन है जिनके द्वारा आर्य समाज मे क्रान्ति आ सकती है?

मुहम्मद दाराशिकोह

(पृष्ठ ७ का शेष)

हथिनी पर बैठा था। इस दृश्य को देखकर दिल्ली की प्रजा हाहाकार कर उठी। लोग दारा के इस दुर्भाग्य पर हृदय विदारक रुदन मचा रहे थे। पुरुष स्त्रियां और बच्चे इस प्रकार रो रहे थे जैसे वह विपत्ति स्वयं उनके ऊपर पड़ी है।

इस घटना के तीसरे दिन ३१ अगस्त १६५६ को दिल्ली वासियो ने एक ऐसा ही जलूस फिर देखा जब उसी हथिनी पर दारा की लाश का जलूस निकाला गया। औरंगजेब के अत्याचारों का एक चरम सीमा पर पहुँचा हुआ यह कुकृत्य था, जिसकी याद आज तक दिल्ली वासियो के हृदय मे ताजा है।

धर्मान्ध शासन कितने अत्याचार कर सकता है इसका यह ज्वलन्त उदाहरण है। धर्म जब धर्म नही रहता शक्ति व सत्ता प्राप्त करने का हथियार बना दिया जाता है तो उसका अन्त भी शीघ्र ही हो जाता है।

आज का मुसलमान केवल औरंगजेब को अपना पथ प्रदर्शक मानता है। काश! कि दारा शिकोह की महान् रचनाओं को बुद्धि जीवियो द्वारा मुसलमानो तक पहुँचाया जाता तो आज जो विकट हिन्दू मुस्लिम विवाद खड़े हो रहे हैं उनकी कोई आवश्यकता व सम्भावना न रहती।

इस उदाहरण से हमे अपनी राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करने मे भी अनेक प्रेरक व दूरदर्शी मार्ग दर्शन प्राप्त होते हैं। औरंगजेब ने दारा की ही हत्या नही की दारा के विचार सम्मत भारत के जनसमूह की भी आंख खोल दी। कौन नहीं जानता कि बाबर के वंश का अन्त मे इन्हीं लोमहर्षक अत्याचारो की ही परिणति थी।

धर्म कभी नष्ट नही होता। मत पंथ बनते बिगड़ते रहते हैं। वैदिक धर्म शाश्वत है अजेय है। मानव धर्म जीवनाधार है।

पतित पावन राम

प्ररणा के स्रोत मर्यादा समन्वित काम।
भूल सकता कौन तुमको पतित पावन राम॥
ब्रह्मनिष्ठ वशिष्ठ से कर के श्रुति का पान।
गुरुजनो का तुम सदा करते रहे सम्मान॥
बन गया जब धर्म का द्रोही असुर समुदाय।
बाल पन मे यज्ञ कौशिक का रचाया जाय॥
कर समाजी करण गौतम से विचार विमर्श।
धर्म परित्यक्ता अहिल्या के किये स्पर्श॥
कर धनुष को भग सीता को बनाया वाम।
भूल सकता कौन तुमको पतित पावन राम॥
देश हित मे केकई के थे वचन वर्दान।
तुम चले बनवास को आज्ञा पिता की मान॥
लक्ष्य भी लक्ष्मण न भूले भ्रात का अनुराग]
मिल गया तरुणी तपस्वनि उर्मिला का त्याग।
सग सीता के चले बन को न हर्ष विषाद॥
मिल गया भागीरथी पर धीर वीर निषाद्।
पच सो पावन वटी मे जा बनाया धाम।
भूल सकता कौन तुमको पतित पावन राम॥
बन गया सारा अवध का राज्य ही कुटवाल।
भरत ने जग को दिखाया भ्रात प्र म विशाल॥
सग सीता के बने तुम ब्रह्मचारी भीष्म।
थी तुम्हे पिघला न पाई कामना की ग्रीष्म॥
नित्य-प्रति सत्सग कर खाते रहे फल-फूल।
तुम गये बनवास मे सुख राजसी सब भूल॥
ओढकर आया वही मारीच मृग का चाम।
भूल सकता कौन तुमको पतित पावन राम॥
जानकी हर ले गया लकेश अवसर पाय।
बानप्रस्थ जटायु की अन्तिम क्रिया की जाय॥
प्रम से आतिथ्य शबरी का किया स्वीकार।
दे दिया सन्यासिनी ने ज्ञान का उपहार।
मन्थरा का भड शिवरी का हुआ कृत कार्य।
मिल गये पथ मे प्रवर हनुमान से आचार्य।
यज्ञ वेदी पर लिया सुग्रीव का कर थाम।
भूल सकता कौन तुमको पतित पावन राम॥
देशद्रोही बलि वध कर ली सिया की खोज।
पवन के सुत ने दिखाया बुद्धि बल का ओज॥
सिन्धु पर पुल बाध असुरो का किया सहार।
मार रावण को किया जनतन्त्र का उद्धार॥
शरण मे आये विभीषण को दिया फिर ताज।
मान बढ आये अवध का फिर सजाया साज॥
मर नही सकता अमर शाश्वत तुम्हारा नाम।
भूल सकता कौन तुमको पतित पावन राम॥
सूर्यकुल मे हो गये तुम युग पुरुष दिन मान।
कौन कर सकता है तुम्हारे वृत्त का गुण गान॥
अनुकरण जीवन तुम्हारे का न करते आप।
पाप मोचन के लिये जपते तुम्हारा जाप॥
पुत्रवत् पाला प्रजा को बन हृदय सम्राट।
राज्य लव-कुश को दिया फिर बन गये परिव्राट॥
यज्ञ सध्या साधना करते सुबह ओ शाम।
भूल सकता कौन तुमको पतित पावन राम॥

—सत्यव्रत मोहन सिद्धान्त शास्त्री
पुडरी, मैनपुरी,(उ०प्र०)

अतिशय सुन्दर देश हमारा

स्वर्ग सदृश यह गौरवमण्डित देवों को भी है यह प्यारा।
महिमण्डल की ज्योतिकिरण सा, अतिशय सुन्दर देश हमारा॥
गगा के पावन पुलिनो पर, जहा हुआ था धर्म विकास।
ऋषि-मुनियो ने जहां किया था, योग क्रियाओ का अभ्यास॥
वेद रश्मिया जहा प्रथमतम, बिखराती है ज्ञान प्रकाश।
मानवता के तत्व जहा पर क्रीडा करते हैं सविलास॥
हिमगिरि के उत्तुग शिखर से गूज रहा है विजयी नारा।
महिमण्डल की ज्योति किरण सा, अतिशय सुन्दर देश हमारा॥
ब्रह्मपुत्र है जहा लहरती, सिन्धु नदी की पावन घाटी।
मस्तक पर चढती है जिसकी पुण्यमयी पावन माटी॥
स्वतन्त्रता हित मर मिटना ही है जिसकी पावन परिपाटी।
गूज रही है जहा आज भी, महाराणा की हल्दी घाटी॥
बलिवेदी पर मातृभूमि की, चढती आहुतियो की धारा।
महिमण्डल की ज्योतिकिरण सा, अतिशय सुन्दर देश हमारा॥
राम कृष्णगौतम गाधी ने जहा लिया अवतार है।
जिसके बालक वृद्ध युवा को, स्वतन्त्रता से प्यार है॥
जहा गूजती है कवियो की, मगलकारक शुचि शुभती बाणी।
गूज रही हैं वेद ऋचाए, सारे जग की कल्याणी॥
वसुन्धरा पर जो सर्वोपरि, सारे जग से है न्यारा।
महिमण्डल की ज्योति किरण सा, अतिशय सुन्दर देश हमारा॥
कण्व सदृश ऋषियो की टोली, जिसकी धरती पर आती।
दयानन्द जैसे ऋषियो की वाणी—जाग्रत ज्योति जगाती॥
जिसका किया महापुरुषो नें, सदा सदा ही शुचि शृगार।
जिसने ढोया सदियो तक हैं, सारे महिमण्डल का भार॥
जिसके वीर सपूतो ने है दानवता को दुत्कारा।
महिमण्डल की ज्योति किरण सा, अतिशय सुन्दर देश हमारा॥

—राधेश्याम 'आर्य'

आर्य जगत के समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न श्री छोटूसिंह एडवोकेट प्रधान तथा श्री ओम्प्रकाश आर्य ब्यावर महामन्त्री निर्वाचित हुए

अलवर।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की साधारण सभा का अधिवेशन ११,१२ अप्रैल १९८७ को वैदिक विद्या मन्दिर अलवर के दयानन्द सभागार मे सानन्द सम्पन्न हुआ।

श्री छोटूसिंह एडवोकेट पूर्ववत् सभा प्रधान और श्री ओम्प्रकाश आर्य (ब्यावर) सभाके महामन्त्री चुने गये। अधिवेशन मे लगभग २५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भोजन और आवास का अति उत्तम प्रबन्ध किया गया था।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर जी हस, श्री दत्तात्रेय बाब्ले अजमेर आचार्य श्री भगवानदेव सू० पू० एम० पी० ने सभासदो को सम्बोधित किया। विद्या मन्दिर की बालिकाओं ने अत्यन्त प्रभावोत्पादक ईश अर्चना के साथ २ महर्षि गौरव गान विशेषमुद्रा मे प्रस्तुत कर प्रतिनिधि सभा गणो को प्रभावित कर दिया।

—सवाददाता

गौ-रक्षार्थ आर्य समाज के बढ़ते कदम आचार्य सत्यव्रत पूर्णतः सक्रिय

अलवर

ग्राम पचायतो के माध्यम से हरियाणा और राजस्थान से बाहर जाने वाले गोधन पर प्रतिबन्ध लगाने की पुरजोर माग दोहराते हुए आचार्य सत्यव्रत ने २२ ग्रामो की पचायत चिकानी (जि० अलवर) ३० ग्रामो की पचायत मागेसर मे, पाटोदी, भोंडसी, नारनौल, कनीना, गूहावास कामा, (भरतपुर) अलग २ पचायते आयोजन कर जनमत जाग्रत कर रहे हैं। इस कार्य मे श्री सिंह मुनि बादशाहपुर, श्री स्वामी अमरासन, श्री स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती आदि गोभक्त पूर्णत गोवध बन्द कराने हेतु कृत सकल्प हैं। अभियान जारी रहेगा।

स्वामी श्रद्धानन्द भवन, आर्य समाज विश्वेश्वरपुरम (बंगलौर) के समाचार

श्रीमती स्वतन्त्रलता शर्मा का विशेष पत्र सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के नाम प्राप्त हुआ जिसके अनुसार आर्य समाज श्रद्धानन्द भवन विश्वेश्वरपुरम को जो कुछ समय से कतिपय स्वार्थी तत्वों ने अपने कार्य कलाप का अड्डा बना रखा था, अब आर्य समाज के युवा कार्यकर्त्ताओं के सगठित अभियान से मुक्त कराकर समाज के वैध अधिकारियो ने कब्जा ले लिया है।

बहिन स्वतन्त्र लता के अनुसार अब आर्य समाज के कार्यक्रम बड़े उत्साहपूर्वक वातावरण मे सपन्न हो रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आर्य समाज विश्वेश्वर पुरम के अधिकारियों को बधाई एव धन्यवाद का सन्देश भेजा है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

गुरुकुल वेद मन्दिर में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बद्ध गुरुकुल वेद मन्दिर मतानाडिग्गी, फतेहाबाद मे पाचवी, छठी एव सातवी कक्षाओ के साथ ही महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की विशारद तथा शास्त्री कक्षाओं मे प्रवेश आरम्भ है। सभी कक्षाओ मे प्रवेश मात्र २१ मई तक चलेंगे।

१००) रु० मासिक भोजन शुल्क, १००) रु० प्रवेश शुल्क, १००) रु० सुरक्षा धन। मात्र ३००) रु० प्रारम्भिक व्यय।

सस्कृत महाविद्यालय
गुरुकुल वेद मन्दिर जी० टी० रोड
फतेहाबाद- हिसार (हरियाणा)

ईसाइयों की शुद्धि

सार्वदेशिक सभा के मिशनरी श्री नारायण स्वामी द्वारा २६ मार्च को कन्याकुमारी जिले के ग्राम कुड्डा कराई मे ७ परिवारो के २४ ईसाई सदस्य वैदिक धर्म मे दीक्षित किए गए।

निर्वाचन

आर्य समाज नामनेर प्रधान श्री बृजमोहनलाल खण्डेलवाल, मन्त्री श्री ललित कुमार चुने गए।

आर्य समाज चावगेट ब्यावर प्रधान श्री जुझारसिंह चौधरी मन्त्री श्री रामचन्द्र गोयल चुने गये।

आर्य समाज बहजोई मुरादाबाद प्रधान श्री चन्द्रपाल आर्य, मन्त्री डा० जयकुमार गर्ग चुने गए।

आर्य समाज रामनगर रोहतक प्रधान श्री जगन्नाथ आर्य, मन्त्री प्रो० ओमकुमर आर्य चुने गए।

आर्य समाज बस्ती परमानन्द बीकानेर प्रधान डा० रवीन्द्र कुलश्रेष्ठ मन्त्री डा० जयकृष्ण चुने गए।

आर्य समाज घटपुरी बदायु प्रधान श्री पालसिंह जी, मन्त्री सुरेशचन्द्र मिश्र चुने गए।

आर्य समाज एन० सी० पीसी० जमनी पाली कोरबा प्रधान प० देवीप्रसाद शुक्ल मन्त्री राजेन्द्रसिंह चुने गए।

आर्य समाज सैक्टर २२-ए चण्डीगढ़ प्रधान चौ० रूपचन्द ऐडवोकेट, मन्त्री सन्तराम अग्रवाल चुने गए।

—आर्य समाज चपुरी गढवाल, प्रधान श्री शान्ति प्रकाश, मन्त्री श्री वासुदेव जी चुने गए।

—आर्य समाज कपूर थला प्रधान श्री हरि सिंह व मन्त्री श्री रोशन-लाल चुने गए।

—आर्य समाज बसव कल्याणी बीदर कर्नाटक। प्रधान श्री रामानन्द लाड, मन्त्री श्री माणिक राव लाड चुने गए।

—आर्य समाज अल्मोड़ा श्री जगत प्रकाश प्रधान व डा० जगदत्त उप्रेती मन्त्री चुने गए।

विश्व की समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत है

संस्कृत की उपेक्षा से संस्कृत नष्ट हो जायेगी

लेखक श्री इन्द्रराज प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

सम्पूर्ण विश्व मे भारत राष्ट्र भारतीय सस्कृति और भारतीय वाङमय का अपना एक अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान है।

विश्व की प्राचीनतम भाषा सस्कृत है। यह सर्वमान्य सिद्धान्त है। प्राय समस्त भाषाओं का उद्गम सस्कृत से है। इसीलिये इसे सर्व भाषाओ की जननी कहा जाता है। विशाल वाङ्मय मानव सस्कृति एव सचित ज्ञान का अक्षय भण्डार है। इसके विविध विषयो पर विश्व के मनीषी निरन्तर शोध कार्यो मे सलग्न रहते हैं।

१—सस्कृत भाषा सम्पूर्ण विश्व मे मनीषियो द्वारा अपने भाषा की अभिव्यक्ति के लिये सशक्त भाषा के रूप से प्रयोग मे लाई जाती है।

२—सस्कृत मे आज भी सैकडो पत्र पत्र पत्रिकायें निकलती हैं एव नवीन साहित्य सृजन होता है।

३—कम्प्यूटर प्रयोग के लिये वैज्ञानिको ने सस्कृत को सर्वश्रेष्ठ उपयोगी भाषा स्वीकारा है।

४—अपनी सर्वाङ्गीणता के कारण सस्कृत भारतीय जीवन मे—सस्कारो से भरी हुयी हैं। आयु विज्ञान सस्कृत मे अनुपमेय है। विधिक्षेम-न्यायपालिका के क्षेत्र मे भी सस्कृत साहित्य का अपना वर्चस्व है। विधि वेत्ताओ के लिये मनु आदि के मन्तव्य जो सर्वाङ्गीण न्याय उपलब्ध कराने मे सहायक होते हैं सस्कृत मे है।

फिर भी पता नही कैसे और क्यो? भारत की नई शिक्षा नीति मे नई शिक्षा पद्धति मे सस्कृत को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम से निष्कासित कर दिया गया है। यह निष्कासन दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत का प्रबुद्ध जनमानस इससे उद्वेलित है।

देश के शासक—राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, मानव ससाधन मन्त्री का दायित्व है कि वे अपना दृष्टि निक्षेप कर तथा अपना ध्यान इस भयकर भूल के लिये लगाये।

बिना सस्कृत के सस्कृति नष्ट हो जायेगी इस सत्य को स्वीकार करके माध्यमिक पाठ्यक्रम से सस्कृत को अनिवार्य करायें।

शासको का ध्यान आकृष्ट करने के लिये आर्य समाजें, शिक्षण सस्थायें एव अन्य सामाजिक सस्थायें अपने अपने यहा एतदर्थ प्रस्ताव पारित करके उन्हे सरकार को भेजें। तार भेजकर सस्कृत की उपेक्षा का प्रबल विरोध करें।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज की सस्कृत शिक्षा की महान् सस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव सदा की भाति इस वर्ष भी १२, १३ अप्रैल को गुरुकुल के विशाल प्रागण मे बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। वेद सम्मेलन गुरुकुल के कुलपति श्री डा० कपिलदेव द्विवेदी की अध्यक्षता मे, आयुर्वेद सम्मेलन श्री पारसकुमार जैन कनखल की अध्यक्षता में, शिक्षा सम्मेलन श्री आर० के शर्मा नौटियाल सहायक शिक्षा सलाहकार शिक्षा मन्त्रालय दिल्ली, दीक्षान्त भाषण माननीय श्री प्रवीणकुमार शर्मा उच्च शिक्षामन्त्री उ०प्र० सरकार द्वारा दिया गया। माननीय मन्त्री महोदय ने गुरुकुल की प्रगति पर सन्तोष व्यक्त किया और गुरुकुल की आवश्यकताओ के लिए सरकार के सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। राष्ट्ररक्षा सम्मेलन हरियाणा सरकार की कृषि मन्त्राणी श्रीमती प्रसन्नी देवी अध्यक्षता की, कवि सम्मेलन डा० श्यामसुन्दर महामण्डलेश्वर की अध्यक्षता में हुआ। उपस्थिति सन्तोषजनक रही। गुरुकुल मे ३५० विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे है। २०० विद्यार्थी आयुर्वेद की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

ज्वालापुर की इस महान् सस्था ने देश को उच्च कोटि के सस्कृत विद्वान वक्ता व लेखक प्रदान किए हैं। आर्यसमाज वास्तव में अपनी इस उपलब्धि पर गर्व कर सकता है।

हैदराबाद सत्याग्रही द्वारा सार्वदेशिक सभा को धन्यवाद

लातूर से श्री विट्ठलराव शामदेव जोशी लिखते हैं—

महाराष्ट्र सरकार ने आर्य सत्याग्रहियो को पेंशन देने के आदेश जारी कर दिए हैं यह अभिनन्दनीय निर्णय है परन्तु एक समस्या विचार योग्य है कि कांग्रेस के भूमिगत सैनिको को १-८-१९८० से मान्यता दी है उन्हे महाराष्ट्र सरकार १९८० से पेंशन दे रही है जबकि आर्य सत्याग्रहियो को १-५-८५ से पेन्शन स्वीकृत की है। यह भेदभाव समाप्त होना चाहिए। महाराष्ट्र सरकार को इस सम्बन्ध मे लिखा जाए।

यह सब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सद्प्रयत्नो से ही हुआ कि हैदराबाद सत्याग्रह के सैनानियो को भी मान्यता मिली है। सभा धन्यवाद की पात्र है।

वार्षिकोत्सव

६, ७, ८ अप्रैल १९८७ तक निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद का वार्षिकोत्सव राजकीय प्रतिबन्ध के कारण गुरुकुल हाल मे धूमधाम से मनाया गया। वक्ताओ मे श्री प० सत्यमित्र जी शास्त्री एव श्री प० प्रभ मित्र जी आचार्य एव स्थानीय विविध विषयक आचार्यो के द्वारा निर्देशित ब्रह्मचारियो के सस्कृत प्रोग्राम हुए। राष्ट्रभाषा की गरिमा विषय पर वाद-प्रतिवाद आदि विषयो की समीक्षा कुल के प्रधान राजर्षि राजा रणञ्जय सिंह जी, अमेठी ने की।

उत्सव की ध्वस्त परम्परा को सदा चैत्र नवमी के अवसर पर करने की घोषणा कुल के महामन्त्री श्री ज्ञानेन्द्र जी भटनागर ने की।

—वसुमित्र श्रुतवेद

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश प्रारम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महा विद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगडी विश्व विद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त मे नए छात्रो का प्रवेश एक मई १९८७ से आरम्भ हो रहा हैं। सरकारी स्कूलो मे पढाये जाने वाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, समाज शास्त्र आदि सभी विषयो के साथ सस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा हिन्दी माध्यम योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की मात्र ३० रुपए मासिक पर समुचित व्यवस्था, शुद्ध घृत व दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताए हैं।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पाच पास होना जरूरी है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिले अथवा पत्राचार करें।

—नरेश कुमार शास्त्री, जालन्धर

वैवाहिक सम्बन्ध

वधू चाहिए—सुयोग्य आर्य विचारधारा के युवक २५ वर्ष रग गेहुआ गुजरात मे राष्ट्रीयकृत बैंक मे कार्यरत मासिक आय २१००) शैक्षणिक योग्यता बी०एस०सी०ए०, आई० बी०, मूल उत्तर प्रदेश निवासी प्रतिष्ठित आर्य स्वतन्त्रता सेनानी के पुत्र हेतु सुशील सुशिक्षित सुन्दर गृह कार्यदक्ष व्यक्तित्व की वैश्यकुल वधु चाहिए।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करे।

व्यवस्थापक सार्वदेशिक साप्ताहिक
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२

वधु चाहिए

केवट परिवार के आयु २८ वर्ष दैनिक आय ५०) स्वतन्त्र आर्य विचारो के लेखक प्रकाशक विक्रेता इन्टरमीडियट पास के लिए योग्य मधुर भाषिणी वधु चाहिए।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करे।

आत्माराम अध्यापक म० न० २२७
सुभाषनगर,टाउन एरिया, हैदराबाद
जि० उन्नाव (उ०प्र०)

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३ ५-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसस न० U ४३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U 03 Post in D.P S.O on 30 4-1987

आर्य समाज तिलहर द्वारा संग्रहीत पंजाब सहायता राशियां

नाम ग्राम	
श्री वीरपालसिंह कीरतपुर बिहारी तिलहर शाहजहापुर	११)
श्री मू गालाल जी अथा तिलहर शाहजहापुर	११)
श्री राजबहादुर सडा तिलहर शाहजहापुर	११)
श्री रामचरनलाल पालया तिलहर शाहजहापुर	११)
श्री पुत्तूसिह पहर' तिलहर शाहजहापुर	११)
श्री भूदरसिंह परमार भारतीय स्टेट बक न्यूरिमा पीलीभीत	५)
श्री दिनेशसिंह कु वरगज तिलहर शाहजहापुर	५)
श्री प्रकाशचन्द शर्मा सहा० अध्यापक हरीराम विद्यालय खुदागज सहारनपुर	५)
श्री वीरेन्द्र कुमार आय खुदागज तिलहर शाहजहापुर	५)
श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा तिलहर शाहजहापुर	५)
श्री सुनील कुमार पुस्तक बिक्रेता तिलहर शाहजहापुर	५)
श्री बैजनाथ ममवार बरखेम तिलहर श हजहापुर	२)
डा० वीरपालसिंह गगवाल घेरखोवा तिलहर शाहजहापुर	५)
डा० नन्दकिशोर रस्तोगी मेडिकल हाल तिलहर शाहजहापुर	५)
श्री ओमप्रकाश आय वस्त्र बिक्रेता तिलहर शाहजहापुर	१०)
श्री वेदप्रकाश शर्मा हिन्दू पट्टी तिलहर शाहजहापुर	५)
श्री विश्वनाथ गुप्त नव हलुवा तिलहर शाहजहापुर	५)
श्री ज्ञान प्रकाश भारती तिलहर शाहजहापुर	५)
श्री रवि कुमार आर्य वस्त्र बिक्रेता तिलकर शाहजहापुर	२)
श्री ओमशकर आर्य सर्राफ तिलहरा शाहजहापुर	२०१)
श्री नवल किशोर गुप्त वस्त्र बिक्रेता तिलहर शाहजहापुर	२)
प० हरिशकर पाडे पुस्तक बिक्रेता तिलहर शाहजहापुर	५)
श्री युक्	५१)
आचार्य ... पुर	५१)
श्री ...	५१)
श्री ... पुर	२०)
श्री वीरसिंह ...	११)
श्री अशोक कुमारसिंह आय आर्य समाज ... पुर	५)
योग	५२४)

गुरुकुल कांगडी विश्व विद्यालय ८७ वां वार्षिकोत्सव

सदा की भाति इस वष भी ८ अप्रैल से १४ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया गया। वेदो के विद्वान आचार्य बैद्यनाथ जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद पारायण हुआ जिसकी पूर्णाहुति १४ अप्रैल को वेदारम्भ सस्कार के साथ सम्पन्न हुई।

प्रसिद्ध इतिहास कार डा० सत्यकेतु विद्यालकार कुलाधिपति जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया। ११ अप्रैल को कवि सम्मेलन हुआ। १२ को मध्याह्नोत्तर मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता मे राष्ट्रीय एकता सम्मेलन हुआ। स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे व्यायाम सम्मेलन हुआ। उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री वीर बहादुर सिंह जी के द्वारा उपाधि वितरण व दीक्षान्त सस्कार हुआ। वेदारम्भ श्री डा० निरुपणजी वेदालकार के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

राष्ट्र देवो भव

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७]
वर्ष २२ अंक २०]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
वैशाख शु० १२ सं० २०४४ रविवार १० मई १९८७

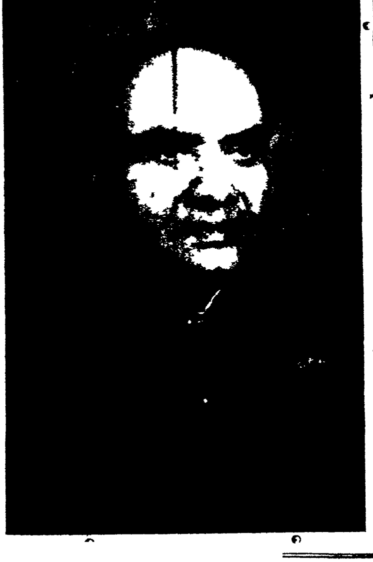
दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

गौ-जाति के पशुओं को हरियाणा से बाहर नहीं ले जाया जा सकता

स्वा० आनन्दबोध जी की मांग पर निर्णय

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने एक पत्र द्वारा हरियाणा सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया था कि हरियाणा से गौ जाति के पशु गौ बैल बछड़ा आदि का निर्यात बन्द किया जाए। इसके उत्तर मे हरियाणा सरकार ने अपने पत्र सख्या १९६४ पप/५/८७/७८२६ द्वारा स्वामी जी महाराज को सूचित किया है कि हरियाणा राज्य मे गऊ जाति के पशुओ का हरियाणा से बाहर भेजने पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है। यदि कोई व्यक्ति उक्त जाति का पशु बाहर ले जाना चाहे तो उसमे भी शर्त है कि छोटे गाय बछड़े आदि नही ले जाए जा सकते। केवल २०००) से अधिक मूल्य वाले ऐसे पशु उपनिर्देशक की विशेष आज्ञा प्राप्त करके केवल ऐसे राज्यो के लिए ही बाहर ले जाए जा सकते है जिन राज्यो मे गोवध पर कानूनी तौर पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है।

स्वामी जी महाराज ने वध हेतु जाने की आशका व्यक्त की थी जिसका निराकरण उक्त स्पष्टीकरण से हो गया है।



सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी, जिनका प्रथम स्मृति दिवस १० मई को है

आपका जन्म बुलन्दशहर की अनूपशहर तेहसील के ग्राम खोली मे हुआ। आपकी शिक्षा दीक्षा एव आर्य संस्कृति के सस्कारो का अध्ययन काशी हिन्दू विश्व विद्यालय मे हुआ। प्रारम्भ से ही हिन्दू जाति की सेवा का आपका सकल्प व कार्यान्वयन रहा। आर्य समाज को आपने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वोत्तम मान अपना सारा जीवन समर्पण कर दिया। राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री जी से आपने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। वीरता व ध्येय निष्ठता आपके रोम रोम मे बसी थी। आर्य समाज आपके कारण गौरवान्वित अनुभव करता था।— सार्वदेशिक सभा की ओर से सादर श्रद्धाजलि अर्पित हैं।

सम्पादक - सच्चिदानन्द शास्त्री

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के मुसलमान भक्त लेखक व कवि

आज के बाबरी मस्जिद व राम जन्म भूमि के झगडो मे क्या यह कोई मानेगा कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन नि सन्देह राजनीतिक विवादों से सर्वथा रहित मानव मात्र के लिए आदर्श व शिक्षाप्रद रहा है। मुस्लिम शासन काल मे भी कभी रामचरित्र को सन्देह या उपेक्षा की दृष्टि से नही देखा गया। इसी कारण इस्लाम के असख्य लेखको ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को सदा बडी श्रद्धा व आस्था सहित वर्णन किया है।

अल्लामा डा० इकबाल ने श्री राम के सम्बन्ध मे लिखा .—

है राम के वजूद पर हिन्दुस्तां को नाज
अहले नजर समझते है उसको इमामे हिन्द
ऐजाज इस चिरागे हिमायत से है यही
रोशन तर अज् सहर है जमाने मे शामे हिन्द
तलवार का धनी व शुजाअत में फर्द था
पाकीजगी मे जोशे मुहब्बत मे फरद था

पाकिस्तानानी कवि जफरअलीखा,, मुसल्मान होते हुए भी श्री राम की महानता स्वीकार करते हैं और इस्लाम से उनके सम्बन्ध की कल्पना भी कर डालते हैं। उन्होने लिखा —

नक्शे तहजीब हनूद अपनी नुमाया है अगर,
तो वो सीता से है, लक्ष्मण से है और राम से है।
मैं तेरे साज ए तसलीम पै सर धुनता हूँ,
कि यह इक दूर की निस्बत तुझे इस्लाम से है।

हजरत सागर निजामी लिखते हैं —

हिन्दियो के दिल मे बाकी है मुहब्बत राम की
मिट नही सकती कयामत तक हकूमत राम की

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र की महानता को अपनी लेखनी का विषय बनाने वाले अन्य मुसलमान लेखकों के नाम हैं —

डा० नुरजहा बेगम, श्री नूरुलहसन, डा० मलिक मुहम्मद, डा० जफररजा जैदी, शैलेश जैदी, डा० निजामुद्दीन, श्री शमसुद्दीन, डा० बशीर अहमद मयूख, श्री जहीर नियाजी, श्री मुहम्मद हयात, मौलाना इसराईल अ सारी, सैयद कासिमअली, सैयद महफूजहसन रिजवी, 'पुण्डरीक' मिर्जा हसन नासिर डा० इकबाल अहमद, डा० जमीलाअली जाफरी, डा० अब्दुल अजीज श्रीमती जरीना रहमत, दीन मुहम्मद दीन, अहमदअली सिद्दीकी, इकबाल बिस्वानी की, सलीम शेख डा० किश्वर सुलतान, श्री अब्दुल रशीदखा रशीद, काजी नजरूल इस्लाम, मुहम्मद फैयाजुद्दीन, अहमदखा, सलीमखा नशूरवाहिदी, कुमारी आसियाखातून सिद्दीकी, शौकतअली शौकत, सैयद महफूज रिजवी, जलाल अहमदखा तनवीर, अब्बासअलीखा बास, कमलअहमद उत्साही,

१० मई १९८७ को अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत रक्षा दिवस मनाया जायगा

दिल्ली २९ अप्रैल। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा अखिल भारतीय सस्कृत रक्षा समिति के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि आगामी १० मई १९८७ को अखिल भारतीय स्तर पर सस्कृत रक्षा दिवस मनाया जायगा।

उन्होने कहा भारत सरकार की नई शिक्षा नीति मे सस्कृत की घोर उपेक्षा की गई है। सस्कृत सब भाषाओ की जननी है और हमारी राष्ट्रीय एकता, देश का इतिहास तथा धार्मिक, सामाजिक एव सास्कृतिक परम्पराएं इसके बिना सुरक्षित नही रह सकती है।

श्री स्वामी जी ने सभी सस्कृत सस्थानो आर्य समाजों, विद्यालयो, गुरुकुलो, कालेजो, सनातन धर्म सभा की सस्थाओ व शिक्षण संस्थाओं तथा राष्ट्रवादी सगठनो से जोरदार अपील करते हुए १० मई को सस्कृत रक्षा दिवस मनाने का आह्वान किया है। वक्तव्य मे यह भी कहा गया है कि सभी सस्थाए प्रस्ताव पारित कर सरकार पर जोर डालें कि अनिवार्य रूप से सस्कृत के पठन पाठन की व्यवस्था की जाए और त्रिभाषा फार्मूले के अन्तर्गत उसे अनिवार्य विषय घोषित किया जावे। और अंग्रेजी के अध्ययन की व्यवस्था ऐच्छिक रूप मे ही हो।

उन्होने प्रस्ताव के साथ २ अधिक से अधिक सस्कृत प्रेमियो के हस्ताक्षर कराकर भिजवाने की भी अपील की।

सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री-सार्वदेशिक सभा
अखिल भारतीय सस्कृत रक्षा समिति

मिर्जाहसन नासिर, हसीब अहमद राही, जुमईखा आजाद, डा रफीकरससिंघु, बालकवि इफ्तखार खाना, वसी सीतापुरी, इकबाल बिस्वानी शमीम कौसर सिद्दीकी, वलीउल्ला सिद्दीकी, लारेश दीनमुहम्मद दीन बहाउद्दीन बहाउ बादवी, फदा बादवी, बताब केवसाखी, नाजिश प्रतापगढी, फारुखहुसैन सरस, मुस्तफा हुसैन मुरिफक, गुलाम किबरिया सूफी, कुमारी रजिया बेगम तकी रायपुरी, इकबाल कादरी, अब्दुलरहीम खानखाना, मिर्जाहसन नासिर।

आधुनिक रसखान कहे जाने वाले अब्दुल रशीद रशीद ने भी सर्व धर्म बहुत लिखा है।

अमीर खुसरो ने श्री राम के बारे मे कहा था .—

तन मन धन का वह है मालिक,
वाने दिया मेरे गोद मे बालक।
वाले निकला जी को काम,
ऐ सखी साजन ना सखी राम।
बचन वे बखत मोव धीकी आस,
रात दिना वह रहवत पास।
मेरे मन को सब करत हैं काम,
ऐ सखी साजन ना सखी राम।

सन १८७१ मे फोर्ट विलियम कालेज मे फार्सी अरबी पढाने वाले अदाल तख्त ने 'राम चरित मानस' के अयोध्या काण्ड का अंग्रेजी मे अनुवाद किया था।

डा० शैलेश जैदी के लेख से पता चलता है कि बाबर के पौत्र सम्राट् अकबर के आदेश से अब्दुल कादर बदायूनवीने फारसी भाषा मे रामकथा लिखी थी।

काश्मीर मे प्रसिद्ध लेखक जैनुल आबिदीन ने रामायण फारसी मे अनुवाद किया था।

—शिवराज शास्त्री

सम्पादकीय

साम्प्रदायिकता का विष

मुस्लिम जन संख्या यदि इसी प्रकार बढ़ती रही तो कुछ समय के बाद भारत का हिन्दू अल्प संख्यक निश्चित ही बन जायगा और अपने ही देश में बेगाना बनकर रहेगा। तब इसकी दशा वैसी ही होगी जैसी पाकिस्तान बनने पर हुई थी।

१९८१ में ८ अगस्त को 'इकोनोमिस्ट' पत्र लन्दन में यह समाचार छपा था कि कुवैत के "अरब टाइम्स" के अनुसार लन्दन की इस्लामिक कल्चरल सोसाइटी की एक विशेष योजना यह है कि १२ करोड़ हरिजनों में से यदि आठ करोड़ हरिजन मुसलमान बना लिए जाय और धर्म परिवर्तन की लहर को तेज किया जाय, तो सारा भारत इस्लामिक क्षेत्र में शीघ्र ही परिवर्तित हो जायगा। फिर इस देश में उनका उपयोग अधिक किया जा सकेगा। सच्चाई यह है कि यह सभी जानते हैं कि भारत को युद्ध में नहीं जीता जा सकता है। परन्तु उसे सांस्कृतिक तोड़-फोड़, षडयन्त्र विश्वासघात करके अपने अधिकार में किया जा सकता है। इस कार्य में पाक सबसे आगे भागीदार है। साथ ही वह अपने घर में हमारे लिए नई-नई समस्यायें पैदा कर रहा है फिर अमित कुछ विजातीय तत्वों को भड़का कर उन्हें सहायता पहुँचा कर भारत में गड़बड़ करके भारी हानि पहुँचा रहा है। साऊदी अरब से लेकर इन्डोनेशिया तक सम्पूर्ण दक्षिण अंचल को अपने राजनीतिक लाभ के दायरे में समस्त जनता को धीरे-२ धर्म परिवर्तन करके इस्लामिक क्षेत्र में बदलना चाहते हैं।

यह षडयन्त्र एकात्मकता यात्रा तथा अन्य प्रयत्नों द्वारा रोकने में आर्य समाज फिर भी अग्रणी है। परन्तु समस्त विद्रोही शक्तियां इस कार्य में लगी हुई हैं। हिन्दू आर्य की कमजोरी का परिणाम ही भारत का विभाजन रहा है। भारत राष्ट्र तभी तक शुद्ध है जब तक हिन्दू समाज शुद्ध है। भारत की समान नागरिक आचार संहिता एक न होकर तुष्टीकरण पर आधारित है। यदि समान नागरिक संहिता मान ली जाय और हिन्दुओं के समान मुसलमान भी चार चार विवाह न करके एक ही विवाह करे तथा दो या तीन बच्चे बस ? तो इसका परिणाम यह होगा कि परिवार नियोजन की सही प्रक्रिया तब बनेगी। वैसे कई इस्लामिक देशों में बन्द किया गया है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय जो मुस्लिम जन संख्या कुछ करोड़ रह गई थी वह आज १० करोड़ के लगभग हो चुकी है जबकि हिन्दुओं की जनसंख्या मुस्लिमों के मुकाबले कम बढ़ रही है, इस प्रकार से अर्धशती के पहुँचते २ ५० प्रतिशत कम हो जायगी। यदि परिवार नियोजन को सफल बनाना है तो पूरे भारत में एक प्रकार का विवाह कानून सम्पूर्ण सम्प्रदायों के लिए बनाना होगा तथा सब पर सख्ती से लागू भी करना होगा 'हम दो हमारे दो' के नारों से हिन्दू के सामने मुसलमान '४ बीबियों से २५ ३० बच्चों को जन्म देगा।

साम्प्रदायिक विवाद और विभाजन के पिछले अनुभव स्पष्ट करते हैं यदि यही स्थिति रही तो आज मिनी पाकिस्तान की मांग क्यों मांगी जा रही है।

पाक व बंगला देश का लाखों नागरिक, पाक० से निकल कर भारत में घुसकर यहां का नागरिक भी बन रहा है, इस प्रकार से भी जनसंख्या वृद्धि की जा रही है, उन्हें अल्पसंख्यकों के सभी अधिकार भी दिए गये हैं। जो भारत में हिन्दुओं को भी नहीं मिले हुए हैं।

विदेशों से आये मुस्लिम नागरिक नगरों-शहरों के मुहल्लों में इन अराष्ट्रीय तत्वों ने अपने गुप्त अड्डे भी बना रखे हैं जिनसे भारत विरोधी कार्य करना और उन्हें समय समय पर भारत के विपरीत उभारना ही मूल उद्देश्य है।

इस प्रकार भारत में विषमताओं का लाभ उठाकर विरोधी ताकतें हमारी शक्ति को अन्दर से खोखली करके दुर्बल बनाने में लगी हैं, पंजाब में सिक्खों को [illegible] का दर्द तथा गुजरात में आरक्षण विरोधी आन्दोलन में हरिजनों को मुसलमानों ने अपने साथ लेने का प्रयास किया था, इससे उसका [illegible] साम्प्रदायिक दंगों में बदल गया था।

असम में अल्प संख्यक मोर्चा बनाकर हिन्दुओं के कुछ वर्गों को अलग करने का प्रयास किया था। राम जन्म भूमि के विवाद से भी साम्प्रदायिकता उभर कर सामने आ गई है समय समय पर भारत में यत्र-तत्र मन्दिरों व शहरों पर आक्रमण हुए हैं मन्दिरों का तोड़ा जाना—मूर्तियों को तोड़कर अपमानित करना अल्पसंख्यक स्वरूप का खुले रूप में अवहेलना ही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारी दुर्बल धर्म निरपेक्षता का अनुचित लाभ ही तो उठाया जा रहा है। फिर भी देश चुपचाप देखता रहा है।

भारत सरकार की तुष्टिकरण की नीति और दूसरी ओर सारे देश में अलगाववाद की आग को सुलगाने दिया गया। समय समय पाकिस्तानी झण्डों को फहराना देश में बगावत करने का प्रयास व प्रदर्शन आज खुले विद्रोह की चुनौती दी जा रही है। काश्मीर तथा नागालैण्ड आदि क्षेत्रों में हमारी फौज न पड़ी हो तो वह सारा प्रदेश भारतीय भू-भाग से अलग होकर-गैरों के साथ मिल जायगा।

जिस समय हमारे नेताओं ने दूध पिलाया तो वह फुफकारने लगा और काटने भी लगा। अगर इसका प्रत्युत्तर शक्ति के साथ दिया गया तो इसके जवाब में उसे साम्प्रदायिक कहा गया और उसे कुचलने के सभी उपाय इस्तेमाल किए गये।

पाकिस्तान बनते समय जिस प्रकार का विष वमन कर वातावरण दूषित किया था ठीक उसी प्रकार के नेता वैसे ही गन्दे देशद्रोही नारों का प्रचलन हो रहा है।

सारा देश साम्प्रदायिक मनोवृत्तियों का शिकार हो रहा है परिणामत देश दावानल की आग में झुलस रहा है देश धर्म संस्कृति सभी इस साम्प्रदायिकता की आग में जल जायेंगे। फिर न यह सरकार रहेगी और न रहेगा यह हमारा राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा—

देश का तब बनेगा—दारुल हरब दारुल इस्लाम

आर्यसमाज और उसके कार्य

अमर शहीद प० लेखराम जी के आदेशानुसार आर्य समाज द्वारा तहरीर और तकरीर का काम बन्द नहीं होना चाहियें। अर्थात व्याख्यान और लेखन का काम चलते रहना चाहियें कभी भी बन्द नहीं किया जाय। महर्षि दयानन्द से प्रारम्भ करके लेखन का कार्य तथा मंच से भाषण माला निरन्तर चलती आ रही है।

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द जी, म० नारायण स्वामी जी आदि अनेक विद्वानों ने आर्यसमाज की परम्परा को जिन्दा ही नहीं रखा। किन्तु उसके आगे भी नयी परम्परा चली। जिनमें प० गंगाप्रसाद उपाध्याय से लेकर प० रामचन्द्र देहलवी और आर्य समाज के नाना विद्वानों ने पिछली परम्परा को जिन्दा रखा। आज की नवीन पीढ़ी में ऐसे कितने विद्वानों के नाम लिये जा सकते हैं जिन्होंने आर्य समाज को नया साहित्य दिया है। प० सत्यकेतु विद्यालंकार, आचार्य उदयवीर शास्त्री शास्त्री, प० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, डा० कपिलदेव द्विवेदी, भवानीलाल भारतीय आदि की नयी-पंक्ति चल रही हैं। इसी प्रकार व्याख्यान वाचस्पतियों की भी कमी नहीं हैं।

साथ ही यह भी निवेदन कर दू, किसी व्यक्ति या संस्था ने जो भी साहित्य प्रकाशित किया उसे आर्य जनता ने हाथों हाथ लिया। पहले कुछ चन्द प्रकाशक थे आज उससे कहीं अधिक प्रकाशक हैं और व्यक्तिगत प्रकाशन इतना किया गया है वह सब जनता ने सिर माथे स्वीकार किया है ?

सार्वदेशिक सभा ने पिछले समय में केवल म० नारायणस्वामी जी का कुछ साहित्य छापा था। किन्तु आज सार्वदेशिक सभा ने ही लाखों रुपयों का साहित्य कई भाषाओं में प्रकाशित किया है और वह भी १५ सालों में आर्य नर-नारियों ने हाथों-हाथ लिया है।

लिखने वाले बहुत और भाषणकर्ता भी बहुत है परन्तु आज हमारे नेताओं को काम नहीं चाहिये। जीवित रहने के लिये घर में संघर्ष चाहिये।

यदि लेखन का कार्य तथा व्याख्यान की शैली पर सभा के नेता "पचास साल पहले की आर्य समाज की गतिविधियों से तुलना करें, तो उस समय

(शेष पृष्ठ ९ पर)

अणुबम के प्रथम निर्माता

राबर्ट श्रोपन हैमर वैदिक संस्कारों की देन

लेखक : आचार्य शिवराज शास्त्री एम० ए० मौलवी फाजिल

द्वितीय महायुद्ध का अन्त करने के लिए अमरीका ने जिस घोर विनाशकारी अणुबम का प्रयोग किया था, उसके प्रथम निर्माता जिन्हें ससार मे एटमबम का जनक के नाम से जाना जाता है, उनका शिक्षण व अनुसधान सम्बन्धी ज्ञान का उद्गम कहा से है, यह अत्यन्त रहस्यमय बना हुआ है परन्तु राबर्ट ओपन हैमर के जीवन चरित्र का सम्यक अध्ययन करने के पश्चात यह सत्य स्वय सिद्ध हो जाता है कि उनके खोज की प्रेरणा का स्रोत वैदिक मय ही है।

इसका प्रबल प्रमाण इससे अधिक और क्या हो सकता है कि न्यू मैक्सिको के अलामा गोर्डो जगल मे अणुबम्ब का परीक्षण करते हुए जब आकाश प्रचण्ड प्रकाश के तेज से प्रज्वलित सा हो गया तो उस समय राबर्ट ओपन हैमर के मुख से उपस्थित लोगो के सन्मुख जो वाणी सुनी गई वह श्रीमद्भगवद्गीता का निम्न श्लोक था जो टेप करके सारे ससार में प्रचारित किया गया —

दिविसूर्यं सहस्रस्य भवेद् युगपदुत्थिता।
यदिभा सदृशीसा स्याद् भासस्तस्य महात्मन ॥

गीता अ० ११ श्लोक १२

अर्थात् यदि आकाश मे १ हजार सूर्यों की आभा एक साथ दमक उठे तो वह आभा उस महात्मा के आभा जैसी कदाचित हो सके।

राबर्ट के जीवन चरित्र से ज्ञात होता है कि राबर्ट अमेरिकन नही थे। जर्मन छोडकर अमरीका मे आबसे माता पिता की सन्तान थे। उनका जन्म २२ अप्रैल १९०४ मे हुआ। यह वह काल था जब जर्मन देश वैदिक शिक्षाओं वैदिक स्कालरो के कारण ससार मे प्रख्यात था जिस देश ने ससार को उस समय मैक्समूलर एव एफ सी वुलनर (पजाब विश्वविद्यालय के वाइस चासलर) जैसे वेदों के विद्वान पैदा किए, जिन्होंने सस्कृत भाषा पर महान ग्रन्थों की रचना की।

महर्षि दयानन्द के प्रभाव से जर्मन विद्वानो ने वैदिक ग्रन्थो का अनुशीलन ऋषिवर के दृष्टिकोण से विज्ञान परक करना प्रारम्भ कर दिया था। अन्यथा अमेरिका तो बाइबिल के ऐसे अन्धकूप मे डूबा हुआ था जिसके इतिहास की कडवी सच्चाइया आज भी वैज्ञानिकों को कपकपी ला देती है क्योकि ईसाइयो ने वैज्ञानिको को सूली पर लटकाया। बाईबिल तो जमीन को चपटी बताती है। खुदा की रूह पानियो पर तैरती है। सूरज कीचड में जा डूबता है। अमेरिकन वाड्मय से विज्ञान की किसी महान खोज की कल्पना तो की ही नही जा सकती थी।

राबर्ट को १७ वर्ष की आयु मे ही विज्ञान के विकास की चेतना जागृत हुई जब कि वे अभी स्कूल के ही छात्र थे अत्यन्त मेधावी छात्र के रूप मे अत्यल्पायु मे ही वे न्यूयार्क की प्रसिद्ध माइनरोलोजीकल क्लब के सदस्य बनाए गए। उनके अधिक मित्र नहीं थे परन्तु उनके सम्पर्क मे जो भी आता उनके अत्यन्त असाधारण व्यक्तित्व के प्रभावित हुए बिना न रहता।

राबर्ट सितम्बर २२ में प्रसिद्ध हावर्ड कालेज मे प्रविष्ट हुए जहा उस समय अमेरिका के उच्च स्तरीय बुद्धिजीवियों का समूह था। यह उनका अत्यन्त प्रेरणा दायक काल था परन्तु न जाने क्यो उनका हृदय उस अत्यन्त भौतिकवादी वातावरण को सहन न कर सका। हार्वर्ड से कैमेस्ट्री से स्नातक होकर आप इग्लैण्ड की कैम्ब्रिज यूनी० सिटी के प्रसिद्ध कैवेन्डिश प्रयोगशाला मे विज्ञान के परीक्षणो के लिए चले गये। वहा से वे अपनी मातृ भूमि जर्मनी के विश्व विख्यात गोटिन्गम विश्व विद्यालय में क्वेन्टम थ्योरी पर पी० एच० डी० करने चले गये। यह विश्व विद्यालय सस्कृत के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों के लिए भी प्रसिद्ध था। स्वभावत वे उनके सम्पर्क में आए जहा उन्हें विज्ञान की गहराइयो का पता लगा।

पी० एच० डी० करके उन्हें किसी सुअवसर की तलाश की जहा वे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें।

२ अगस्त १९३९ को अमेरिका के विश्व विख्यात वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्स्टीन ने अमेरिका के तत्कालीन प्रेसीडेंट रुजवेल्ट को लिखा, विज्ञान की खोज इस स्तर तक पहुच चुकी है कि अब अणुबम बनाया जा सकता है। प्रेसीडेंट की स्वीकृति प्राप्त होने पर नवम्बर १९४० मे राबर्ट ओपन हैमर के निर्देशन में विशेष प्रयोग शाला का निर्माण हुआ जिसमे उन्होंने अनुसधान, करना, प्रारम्भ किया। आइन्स्टीन के पत्राचार के ६ वर्ष पश्चात १६ जुलाई १९४५ को प्रात काल ५-३० पर ससार ने सर्वप्रथम एटमबम के परीक्षण का सफल समाचार सुना। मैक्सिको के अलामा गोर्डो जगल में किये गए इस असाधारण परीक्षण ने ससार मे मानवता के इतिहास को एक नया मोड प्रदान किया। जो आज उसी आधार पर अपनी चरमसीमा पर पहुच रहा है।

कुरान जलाने वाले को लाश मिली

गाजियाबाद, २७ अप्रैल। कोतवाली पुलिस कडे बन्दोबस्त के बावजूद कुरान जलाने वाले अब्दुल रशीद को नही बचा पाई। आज रात कुछ "धर्म प्रेमी' लोगो ने उसकी चाकुओ से गोद कर हत्या कर दी।

२५ अप्रैल कोकेला भट्टा निवासी अब्दुल रशीद ने दारू के नशे में अपने ही आगन मे धार्मिक पुस्तक कुरान शरीफ मे आग लगा दी थी और फिर वह फरार हो गया था। उसके बाद इस मोहल्ले के करीब पाच हजार लोगों ने रशीद के घर को घेर लिया और पथराव किया था। नतीजतन, थाना कोतवाली को दो कम्पनी पी ए सी. बुलानी पड़ी और भीड को तितर बितर करने के लिये हल्का लाठी चार्ज भी करना पडा। इसके बावजूद पुलिस रशीद को नही बचा पाई।

कहते हैं कि आज सवेरे पाच बजे जब कुछ लोग नमाज अदा करने के लिये उठे तो उन्होने खून से लथपथ रशीद की लाश पडी देखी। आस पास की दीवारें तक खून से रगी थी। लाश देखकर कुछ लोगो ने पुलिस को इत्तला दी।

जानकार सूत्रो के मुताबिक रशीद कम्युनिस्ट कार्यकर्ता था। वह धार्मिक मामलो मे और एक तरह से धर्म मे रुचि नही रखता था। हत्या के पीछे कुरान शरीफ जलाना और इस्लाम विरोधी शब्दो का इस्तेमाल करना बताया गया है। मोहल्ले कैला मे इस काड को लेकर तनाव बना हुआ है।

पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर लिया है और हत्यारों को जल्दी पकडने का दावा किया है।

शोषित समाज के महासचिव शिवकुमार मिश्र, भारतीय जनता पार्टी के रमेश चन्द तोमर, बालेश्वर त्यागी, कम्युनिस्ट पार्टी के नेता जितेन्द्र शर्मा ने जिलाधिकारी डा० नसीम जैदी से इस हत्या काड की तुरन्त जाच कराने और रशीद के हत्यारो का पता लगाने मे मुस्तैदी दिखाने की माग की है।

(जन सत्ता सवाददाता)

१९४१ स १९४५ तक ओपन हैमर अमेरीका के एटम बम्ब प्लान मे ही व्यस्त अनुसधान रत रहे। १९४१ मे ही अमेरिका के वैज्ञानिक आर्थर होली काम्पटन व अमेरीका के कर्नल ग्रोव के साथ २ बिलियन पौण्ड के इस मान नहट्टन प्रोजेक्ट पर राबर्ट के नेतृत्व में काम करते रहे तब कही सफलता प्राप्त हुई।

राबर्ट अत्यन्त मानवतावादी आध्यात्मिक व परपीडा द्रवित व्यक्ति थे यहा तक कि कम्यूनिस्टों से भी वे अपने सम्पर्क स्थापित रखते थे। इसी कारण जब मेकार्थरी का प्रेसीडेंसी युग आया' तो उन्हें पीडा दायक यातनाओ से गुजरना पड़ा। अमेरिकन गुप्तचर सस्थाओ ने उनपर अनेक प्रकार के आरोप लगाए परन्तु वे अपनी दैवीय प्रतिभा के आधार पर प्रत्येक परीक्षा से उत्तीर्ण होकर सफलता की सीढिया चढ़ते चले गये। पाश्चात्य सभ्यता के कोई अवगुण उनकी निर्मल छवि को धूमिल नही बना सके। यह उनके अन्दर विद्यमान शाश्वत वैदिक सस्कारो का ही प्रताप था। वैदिक संस्कृति के आधार पर ही विश्व विजय की कल्पना साकार की जाती रही है। भविष्य में भी वैदिक विचारधारा का ही आधार लिए बिना कुछ नहीं बन सकेगा यह ध्रुव सत्य है। अतएव कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ही एक मात्र [illegible] को बचा सकता है। मृत्यु व जीवन प्रभु के ही हाथ है। प्रभु-वाणी समझो व अपनाओ—

ब्रिटिश के प्रधानमन्त्री श्री रैम्जे मैकडानल्ड ८ नवम्बर १९१३ को गुरुकुल कांगड़ी में पधारे

सन् १९१३ में श्री रैम्जे मैकडानल्ड—जो उस समय ब्रिटिश पार्लियामेंट में मजदूर दल के नेता थे। और बाद में वहां के प्रधान मन्त्री बने—भारत आये थे और उन्होंने ८ नवम्बर १९१३ को गुरुकुल कांगड़ी का भी अवलोकन किया था। उन्होंने अपनी इस गुरुकुल यात्रा के संस्मरण लिखे थे। जो डेली क्रानिकल में प्रकाशित हुए थे। उन्हीं स्मृतियों का हिन्दी अनुवाद यहां प्रस्तुत है।

—सम्पादक

जिन्होंने भारतीय राज विद्रोह का अध्ययन किया है उन्होंने गुरुकुल—जहां आर्य समाज के कुमारों को शिक्षा दी जाती है—का नाम अवश्य सुना होगा। यह शिक्षणालय आर्यों की कृतियों और आदर्शों का सबसे अधिक अनुरूप प्रतिबिम्ब है और इस प्रगतिशील धार्मिक संस्था (आर्य समाज) के विरुद्ध उठाये गये सभी सन्देह इस पर केन्द्रित हो गये हैं। इसी कारण सरकार की इस पर वक्र दृष्टि रही है। पुलिस के कर्मचारियों ने इस पर रिपोर्ट तैयार की है तथा अधिकांश कर्मचारियों के दोषारोपों का यह पात्र रहा है। मुझे बताया गया कि रात्रि में यात्रा करना, सप्ताह के अन्तिम दिनों में इस शिक्षण संस्था का अवलोकन मेरे लिये बहुत अनुकूल रहेगा। मैं दिल्ली से हरिद्वार जाने वाली गाड़ी में जिसकी चाल मध्यवर्ती स्टेशनो पर विराम करने के कारण अनुमानत दस मील प्रति घण्टा रही होगी, सवार हुआ। निद्रा लाने का प्रयत्न करते हुये जैसे तैसे रात कटी।

प्रातः वेला में हरिद्वार पहुंचा, जहां गंगा नदी पर्वतों की गोद छोड़कर नीचे मैदान में उतरी है। स्टेशन वास्तविक पापमुक्ति की विश्वव्यापिनी और और सातवक्र-निपात से प्रेरित तीर्थ यात्रियों से भरा पड़ा था। यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि इनमें से बहुत से लोग बहुत दूर से आये हुये हैं। वृक्षों से ढकी हुई पहाड़िया शीष उठाये खड़ी थी। पावन इ अभिस्तात्म के शिशिर काल के प्रभातिक झोंकों-सा तन को काटता हुआ वायु बह रहा था। हमने पैदल ही यात्रा प्रारम्भ की। नदी तीर पर पहुंचते ही सामने का दृश्य खुल गया। समीपवर्ती पहाड़ियां महान हिमालय के हिममण्डित शिखरो के चरणों में सविनय साष्टांग प्रणिपात करती हुई सी दीख रही थीं। सरिता की एक-एक तरंग अविरमता का एक-एक कुसुम, और एक एक हिम मण्डित प्रदेश सूर्य की स्वर्णमयी आभा से भासमान था।

किनारे के पत्थरों पर एक तमेड़ (बांस की खपच्चियो से सुबद्ध मिट्टी के तेल के पीपों का एक बेड़ा) खड़ी थी। इस पर बैठा कर हमे धारा में लाया गया।

थोड़े ही विलम्ब में हम मध्यधारा में पहुंच गये।

थोड़े काल में हम निश्चल बह रहे थे। अकस्मात नदी की तली हमारे नीचे सरकती हुई मालूम हुई। तमेड़ झटके के साथ टकराई। पानी छींटो में उड़ा नन्हा बेड़ा तत्क्षण ही भाग्य पे होकर गहरे जल की भंवरियो तथा लहरियों में पड़कर पूर्ववत स्थिर हो गया। चक्कर देती हुई भूले दिखाती हुई और छींटे उड़ाती हुई नदी अपने भार को वेग से लिये जा रही थी। बन्दर हमें देखकर दांत किटकिटाते थे।

वन के अद्भुत दृश्य क्षण भर झांकी दिखाकर दूसरे ही क्षण लम्बी झाड़ियों में मुंह छिपा लेते थे। एक रेतीली खाड़ी में हम उतरे और एक उत्तप्त और बालुकामय मार्ग से वन में प्रविष्ट हुये। हमारे सिरो से कहीं ऊंची पीली घास खड़ी थी। पर्वतीय शीतल पवन की हिलोरें अब बन्द हो गई थी, सूर्य का ताप शनैः शनैः दुःसह होता जा रहा था। अन्त को हम वृक्षो से अंशत आच्छादित एक लम्बी और सीधी सड़क पर पहुंचे। सुदूर एक उन्नत बांस के सिरे पर, एक पताका दीख पड़ी। गुरुकुल दृष्टि-गोचर होने लगा।

गुलाब और चमेली के पुष्पो से सुवासित मार्गों से भोजनालय और पुष्प वाटिकाओं में से होकर गुरुकुल पहुंचते हैं। चारों ओर क्रीड़ा क्षेत्र हैं। मध्य में वर्गाकार छात्रावास स्थित है। सिंह द्वार (प्रवेश द्वार) पर वेदों के सनातन सूत्र पवित्र ओ३म नाम से अंकित ध्वजा फहराती है। सम्प्रति यहां ३०० बालक शिक्षा पा रहे हैं। प्रवेश के समय इनकी उम्र अनिवार्यत ६ से १० वर्ष के अन्दर होनी चाहिये। पच्चीस वर्ष की आयु तक उन्हें यहां रहना होता है। उन्हें मुन्शीराम जी जो कि अब महात्मा जी इस उपनाम से प्रसिद्ध हैं, के न्यायोचित संरक्षण में छोड़ दिया जाता है। वह उनके पिता हैं और ये उनके बालक चार बजे प्रात वे अपनी कठोर चीड़ के तख्तो की शैय्या छोड़ कर उठ बैठते हैं। व्यायाम करते हैं और शीतल जल से स्नान करते हैं। तब प्राभातिक सन्ध्या (प्रार्थना) होती है। उष्ण ऋतु में नंगे सिर नंगे पांव चलते हैं।

सम्भव है, उन्हें संयोगवश कभी कठोर जीवन व्यतीत करना पड़े। अत हमें उनको इसके लिए अभ्यास कराना चाहिये।'

महात्मा जी ने मुस्कराते हुये मुझे कहा, पीताम्बर शिक्षणालय का गणवेश है। यहां रहते हुये विद्यार्थी अपने माता पिता को बहुत कम देख पाते हैं। परन्तु यहां विद्यालय भूमि में प्रति वर्ष एक बड़ा मेला (उत्सव) भरता है। सहस्रो की संख्या में जनता आती है। माता पिता इसमें सम्मिलित होते हैं। विशेष झोंपड़ियां तैयार की जाती हैं।

प्राचीन अंग्रेजी मेलों की सी भीड़ एकत्र होती है। दीर्घावकाश में बालकों को उनके अध्यापक भारत भूमि के प्रसिद्ध स्थानों में ले जाते हैं। इन यात्राओं में वे कश्मीर तक भी हो आये हैं।

शासक वर्ग के मानस और दृष्टि के लिए यह सब एक अशान्ति जनक समस्या है। कार्यकर्ताओं और अध्यापकों में कोई अंग्रेजी नहीं, अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम नहीं पंजाब विश्व विद्यालय द्वारा भारतीयों की उच्च शिक्षा के मूल स्तम्भ के तौर पर निर्दिष्ट अंग्रेजी साहित्य की पाठ्य-पुस्तकें

यहा प्रयुक्त नही होती। विद्यार्थी सरकारी विश्वविद्यालयों में नहीं भेजे जाते। महाविद्यालय अपनी ही पदविया देता है। सर्वथा यह कानून भंग है। आश्चर्य से स्तब्ध अधिकारियों का इसे एक ही सांस में राजद्रोह कहना अनिवार्य था। परन्तु उसे गुरुकुल पर अन्तिम निर्णय कदापि नहीं कह सकते। सन १८३५ मे मैकाले ने सहकारी पत्रक में अपने विचार प्रस्तुत किये थे। तब से भारतीय शिक्षा के सम्बन्ध में किये गये प्रयत्नों में यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। उन विचारों से भारत में प्रत्येक असन्तुष्ट है।

परन्तु जहां तक मैं जान पाया हूं। गुरुकुल के प्रवर्तकों के अतिरिक्त किसी ने भी अपने असन्तोष को नवीन प्रयोग के रूप मे परिणत नहीं किया है।

एक उन्नत काय दर्शनीय मूर्ति (प्रभावपूर्ण सौन्दर्य की प्रतिमा) हम से भेंट करने आती हैं। आधुनिक सम्प्रदाय का कलाकार ईसा की प्रतिकृति गढने के लिए आदर्श के रूप मे इसका स्वागत करता है और मध्य कालिक रश्मि का चित्रकार इसमे सन्त पीटर का रूप दिखाता। महात्मा जी हमे नमस्कार करते हैं। और हम उनके अभ्रक जटित "ओ३म" नाम से अलकृत सादा साज-सज्जा वाले कमरे में प्रवेश करते हैं।

मुझे दिये गये कमरे में शुद्ध वस्त्र से ढकी मेज पर उज्ज्वल वर्ण की पत्तियों से मिश्रित लाल फूलो से भरे दो गुलदस्ते रक्खे हुवे हैं। किसी अतिथि को कभी इससे अधिक मनोहर कोठरी नहीं मिली। एक सेवक हमारे हाथो पर पानी डालता है और हमे एक अगोछा देता है। जूते बाहर कर हम एक कमरे में प्रवेश करते हैं जहा भोजन परोसा गया है। महात्मा जी भोजन से पूर्व प्रार्थना करते हैं। हमारा मस्तक नत हो जाता है। मैंने अनेक प्रार्थनाए सुनी हैं, पर ऐसी नहीं सुनी थी। हमारे मेजमान की सस्कृत स्वरों पर झूल देती हुई गहन गम्भीर वाणी पापशुद्धि के आभार सम्बन्धी सगीत का पूरा-पूरा अनुकरण कर रही है।

भोजन समाप्त होता है और हम शिक्षणालय की परिक्रमा करने को निकलते हैं। सर्वत्र सुव्यवस्था और प्रसन्नता है। उज्ज्वल चमकीले नयनों वाले बालबटु और प्रशान्त मुद्रा वाले बड़े कुमार, कही मिट्टी में खिलौने बनाते हुवे कहीं मिलकर अपना पाठ दुहराते हुवे कहीं श्लोक पाठ करते हुए और कही अपने गुरुओं के व्याख्यान सुनते हुवे (क्योंकि गुरुकुलों मे व्याख्यान द्वारा ही अधिकृत अध्यापन होता है। श्रेणियों में बैठे हैं। विद्यालय समाप्त होता है। तुरन्त छात्र गुजरता हुवा अपने आचार्य के पांवों में झुक कर और अजलिबद्ध हाथों को उठाकर अभिवादन करता है।

दोपहर ढल जाने पर हम वन में भ्रमणार्थ जाते हैं। महात्मा जी हमसे सुनी गई बातों की चर्चा करते जाते हैं। वह परिधान अगों का वह गठन, वह चाल ढाल वह लम्बा दण्ड किशोरावस्था में प्रति रविवार को प्रार्थनालय के द्वार पर देखे हुए मेलिलि के भ्रमण के दृश्य आचार्य स्मृति कराते हैं। एक मैं ही अपने अग्रेजी वेश में मण्डली और उसके अभिनयों मे उपहासास्पद हो रहा हूं। प्रतीची दिशा अस्तोन्मुख।

सूर्य के प्रभा-मण्डल से झिलमिला रही हैं। अर्धचन्द्र कब से ऊचे सिर पर आकर रजत वर्ण की चन्द्रिका छिटका रहा हैं। रात्रि का पवन तथा उसके साथ सम्बी वनस्पतिया भी मौन धारण कर रही है। कम्पित वस्तुओ की मर्मर ध्वनि स्पष्ट सुन पड़ती हैं। शीत हमारे ऊपर उतर रहा है। गुरुकुल अन्धकार में मग्न हैं। परन्तु छात्रावास के मध्य भाग में जलने वाली अग्नि शिखायें आश्रम के द्वारो मे से दिखाई दे रही है। आश्रम कण्ठोच्चारण के शब्द से परिपूर्ण हो रहा है। [illegible] गुरु की प्रतिमा की छोटी-छोटी मूर्तियां बैठी हैं [illegible] हमारी ओर दृष्टि भी नहीं उठाते। उनकी सामूहिक प्रार्थना (सन्ध्या) समाप्त हो चुकी है। अब वे अलग-अलग एकाग्र चित्त होकर ध्यान में मग्न हैं।

कमरे के अन्दर फर्श में स्थित एक कुण्ड में अग्नि प्रज्वलित है। चारों ओर अध्यापक वृन्द और छात्र मण्डल बैठा है। वह अपने एक प्राचीन धर्मकार्य (अग्निहोत्र) का अनुष्ठान कर रहा है।

ज्वाला के हल्के प्रकाश में अपने सम्मुख रखे हुवे निहारते हैं। सहसा लौ ऊपर उठती है। एक स्वर में कोमल वाणियां पुकारने लगती हैं—"सर्वज्ञ ज्ञान के दाता ज्योतियों के ज्योति परमेश्वर को हम आत्मार्पण करते हैं। अब कुछ काल विराम होता है। ज्वाला नीचे उतरने लगती है। इतने में एक दूसरी आहुति डाली जाती है। ज्वाला पुन भभक उठती। कमरो की भित्तियों में और छतों पर पीली आभा छा जाती है और प्रहसन नृत्यों के से दृश्य अकित हो जाते हैं। पुन तोतली बोलियां पुकारती हैं—हे प्रभो, हम तुझे आत्मदान करते हैं जो तू एक एक मे रम रहा है। इसी प्रकार क्रमश विराम प्रकाश और मन्त्र पाठ होता है। अन्त मे शान्तिपाठ होता है। अग्नि शान्त हो जाती है। गुरुकुल के आंगन को प्रकाशित करने के लिये अब एक मात्र तारे रह गये।

एक बार फिर हम अपने हाथ बाहर निकालते हैं। नौकर उन पर पानी डालता है। जूते उतार कर हम उन्मुक्त पवन मे सायंकालिक भोजन के लिये चटाइयो पर बैठते हैं। हमारे चरणों में गगा आह्लादकारी कलकल करती हुई पत्थरो में से होकर वेग से बह रही है ऊंची-ऊंची चासों की ऊंची ऊंची शिखायें चन्द्र ज्योत्स्ना को खेल रही हैं। वन भूमि ओस से व्याप्त हुई सी झिलमिला रही हैं। दूर बहुत दूर से आते हुए अस्फुट वन्य शब्द भूतो और पथभ्रष्ट आत्माओं का भान कराते हैं। मानो स्वप्न मे मैं किसी को कहते सुनता हूं—

"हमें और कुछ नहीं चाहिए। हमे शान्ति से प्रभु का काम करने दो" क्या यह राजद्रोह है ?

नये प्रकाशन

१—वीर वैरागी बैंदक—भाई परमानन्द

कीमत ८) सभा ने केवल ४) कर दी है।

२—Bankim-Tilak-Dayanand by Aurobindo.

कीमत ४) सभा ने केवल २)२० कर दी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

भारत की राजनीति में धर्म की आवश्यकता

श्री [illegible] स्नातक

भारत में आज स्थितिप्रज्ञ राजनीतिज्ञ इस प्रयत्न में है कि जनता के मानसपटल पर अंकित धर्म सभ्यता, सस्कृति और समाज सम्बन्धी प्राचीन विचारों को हटाकर अपने विचारो को उनके स्थान पर प्रतिष्ठापित कर दे ।

पश्चिम में जहां आधुनिकता एव भौतिकवाद का बोलबाला है, आज धार्मिक प्रवचनों और उत्सवो पर पहुचकर भाग लेने वाली जनता की सख्या लाखो में पहुच जाती है और जनसाधारण की ही भाति वहा का राजनीतिज्ञ भी उनमे श्रद्धापूर्वक भाग लेता है। वही शान्ति व आदर के साथ वहा धर्माचार्यों के प्रवचन सुने जाते हैं और उनको सम्मान दिया जाता है प्रति रविवार को वहा गिर्जाघरो में पहुचने वालो मे सरकार के प्रमुख व्यक्ति सम्मिलित होते हैं । समस्त विश्व के कैथोलिक ईसाई जिसमे कि दार्शनिक, वैज्ञानिक करोडपति व्यवसायी, कृषक मजदूर तथा उच्च शासक व नरेश सभी होते हैं, धर्म गुरु पोप के वार्षिक सन्देश को ग्रहण करने के लिए आश्चर्यजनक श्रद्धा के साथ वेटिकन नगर मे एकत्र होते हैं। आज भी वहा के व्यक्ति किसी भी ईसाइयत-विरोधी कार्य के लिए अपने आपको लज्जित अनुभव करते हैं ।

इस्लामी देशों में

इस्लामी देशो मे भी सामाजिक और राजनीतिक जीवन का निर्माण वहा के धर्म के अनुरूप करने का पूर्ण प्रयत्न किया जाता है । इस्लामनिषिद्ध कार्य करना वहा राष्ट्रीय तथा नैतिक अपराध है ।

धर्म केवल उपासना की पद्धति विशेष मात्र है, ऐसा कदापि नही माना जा सकता । भौगोलिक और सामयिक परिस्थितियो के अतिरिक्त जीवन के विभिन्न पहलुओ का निर्माण अवश्य ही धर्म के द्वारा विशेष रूप से होता देखा जाता है । सभ्यता और सस्कृति, भाषा और भूषा, कला और साहित्य, विज्ञान और दर्शन, इतिहास और परम्परा इन सभी के प्रति जीवन के विशिष्टकोण का निर्माण धर्म के द्वारा ही मुख्यत सम्पन्न होता है । धर्म ही इस दृष्टि से राष्ट्र का मूलाधार है ।

आज का भारतीय राजनीतिज्ञ धर्म को विश्वासकी आधार वस्तु तथा उपासना की पद्धति मात्र बनाकर देश का धार्मिक ही नही अपितु सामाजिक कलात्मक तथा सास्कृतिक नाश करने पर तुला हुआ है। महात्मा गाधी जहा धर्म और उस पर आधारित भारतीयता को साथ लेकर राजनीतिक अभ्युत्थान की बात कहते थे, वहां आज अन्तर्राष्ट्रीयता एव बुद्धिवाद के नाम पर सभी श्रेष्ठ परम्पराये देश मे अनादृत की जा रही है । धर्म का अवश्य सुधार किया जाय, अयोग्य और स्वार्थी धर्माचार्यों और पण्डितो के स्थान पर योग्य और उदात्त धर्माचार्यों को प्रतिष्ठापित करे यह तो ठीक है, परन्तु धर्म और भारतीयता के श्रद्धालु ज्ञानी विद्वानो के स्थान पर आज के राजनीतिक को बैठाने का परिणाम भयावह होगा ।

धर्म की स्थिति

आज हमारे जीवन में धर्म की स्थिति इतनी शून्य सी हो गयी है कि प्रात काल चारपाई से उठने पर ईश्वर स्तुति को धर्म ग्रन्थो के पारायण के स्थान पर महामहिम राजनीतिज्ञों के कूटनीतिपूर्ण द्वेष एव स्वार्थ से भरे हुए वक्तव्य का पाठ अखबारों से किया जाता है । विश्वमैत्री या चरित्र की उदारता का पाठ भला उसमे होता ही क्या ? आत्म-शुद्धि के स्थान पर अन्यों का तिरस्कार करने की भावनाए उनमे रहती हैं । एक वीतराग, निस्पृह आध्यात्मिक विद्वान सन्त के दर्शन से अपने जीवन को पवित्र बनाने की अपेक्षा स्वार्थलोलुप, कुर्सी से चिपकने वाले, ऐश्वर्य के मद से मस्त तथा देश सेवा के नाम पर अपना व अपने समर्थको का हित सर्वोपरि रखने वाले नेता नामधारी जन्तु का दर्शन कर हम व्यर्थ ही अपने आपको सच्चे देशवासियो की गिनती में रखने लगते हैं । जो आत्म निर्माण नहीं करता, उससे देश सेवा क्या होगी ? चरित्र के बिना राष्ट्र का निर्माण कभी सम्भव नहीं हुआ है ।

राजनीति और महन्त

रविवार के साप्ताहिक सत्सग या धार्मिक गोष्ठी मे जाने की अपेक्षा इन नेताओं के व्याख्यानो मे पहुचने वाले लाखो लोगो की मनोवृत्ति पर तो जरा विचार कीजिए । क्या भारतीयो का धर्म ही इतना निकम्मा या प्रेरणाहीन है कि उनको केवल इन राजनीतिज्ञो के भाषणो से स्फूर्ति मिलती है । निकृष्ट समझ जाने वाले इस्लाम और ईसायत के अनुयायी तो अपने सम्प्रदायो को इतना हेय नही मानते । भारतीय धनिक समाज जो पहले धार्मिक प्रचार और मानवता की सेवा के लिए अपना धन दान करता था, अब राजनीतिक दलो को करोडो रुपये दे रहा है । यदि हमारी प्राचीन दान प्रणाली से अयोग्य लोगो ने लाभ उठाया है तो आज राजनीतिज्ञ इससे विशुद्ध स्वार्थ साधन और राजनीति द्वारा पेश कर रहे हैं । मठो के महन्तो से ये गद्दीधारी नेता भी कम विलासी नही हैं । राजनीति मे जो विरासत की कमी थी, गाधी जी की लोकप्रियता को देखते हुए वह इन स्वार्थियो ने राष्ट्र के बजाय स्वय हडपने के लिए जवाहरलाल नेहरू के नाम प्रचारित कर दी । महात्मा गाधी की अन्तिम वसीयत अर्थात् काग्रेस का विघटन और लोक सेवक दल का निर्माण इसकी ओर स्वार्थवश ध्यान नही दिया गया । उनके प्रिय आदर्श राष्ट्र भाषा हिन्दी, गोवध निषध, वनस्पति घी पर प्रतिबन्ध, मद्य निषेध, कन्ट्रोल निवारण और उद्योग व्यवसायों का विकेन्द्रीकरण आदि अनेक लोकोपयोगी काय व्यवहारिक कार्य क्रम से निकाल दिये गये हैं । अब तो शासको का आदर्श सादगी के स्थान पर अपव्ययिता हो गया है । महात्मा के बाद आज के शासक वर्ग का आदर्श स्वेच्छाचारिता बन गया है ।

> स्नेह दया च सौख्य च यदि वा जानकीमपि ।
> आराधनाय लोकाना मु चतो नास्ति मे व्यथा ॥

उपरोक्त वचन के अनुसार प्रजाहित के लिये सर्वस्व देने की उत्कृष्ट कामना की तुलना मे काग्रेस के एक स्वर्गीय अध्यक्ष द्वारा जनता की सवसम्मत वनस्पति घी पर प्रतिबन्ध लगाने की माग करने पर काग्रेसी तत्कालीन प्रधानमन्त्री का यह कहना कि— "इस काम के लिये अन्य कोई प्रधान मन्त्री ढ ढिये' तथा 'हिन्दू कोड बिल पास न होने पर में त्याग पत्र दे दू गा' या जनता मूर्ख है । हम उसके कहने पर नहीं चल सकते । 'इत्यादि उक्तिया जहा हमारे नेताओ के अनार्य चरित्र का निर्देश करती है, वहा यह भी स्पष्ट है कि धर्म विहीन ये राजनीतिज्ञ राष्ट्र को गढ मे ले जा रहे हैं । धर्म के द्वारा ही इन लोगो की निरकुशता पर नियन्त्रण लगाया जा सकता है । धर्मकी नकेल लगाये बिना राजनीतिज्ञ कभी सुमार्ग पर नहीं लगाये जा सकते ।

धर्म और संस्कृति आवश्यक

काग्रेसी जैसी अन्य राजनैतिक सस्थाओ के उद्देश्य मे चरित्र को ऊचा करने का ध्येय सम्मिलित नही है । ऐसी दशा मे वास्तविक धर्म, सच्चे, धार्मिक पुरुष और भारतीय परम्पराओ की न केवल उपेक्षा अपितु उनको अपदस्थ करने का एक मेव परिणाम इन सस्थाओ व राष्ट्रीय-चरित्र में गिरावट सिद्ध हो रहा है । धम और सस्कृति का तिरस्कार किसी राष्ट्र या जाति को सुदृढ नही बनाता । पाठ्य पुस्तक, रेडियो, समाचार पत्र और अन्य शासन के अन्य साधनो द्वारा प्राप्त इन राजनीतिज्ञो की क्षणभुगुर लोकप्रियता राष्ट्र के नैतिक आधार को कदापि चिरस्थायी नही रख सकती। यह सत्य जितनी शीघ्रता से हम स्वीकार कर लें, उतना ही राष्ट्र का भला होगा ।

त्यागी जी की याद

ले० पं० धर्मवीर घूरा शास्त्री उपदेशक आर्य सभा मौरिशस अध्यक्ष हिन्दी लेखक संघ (वाक्वा)

श्री ओम प्रकाश त्यागी जी के मन में मौरिशस के लिए प्रगाढ़ प्रेम था, दया थी, आत्मीयता थी। इस बात का पता मुझे सन् १९७५ में हुआ था जब मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित आर्य महासम्मेलन में परिवार सहित शामिल होने के लिए देहली गया था। आप उन दिनो बहुत व्यस्त रहते थे पर जब आपने मोरिशस का नाम सुना था तो एकाएक कलम नीचे रख दी फाइल देखना छोड़ दिया और दफ्तर मे आने के लिए आग्रह किया। हम अन्दर गये। प्रेम से कुर्सियों पर बैठने के लिए आग्रह किया। चाय मगवाई और बस हम मे बातें चलने लगीं थी।

आपने सबसे पहले आर्य सभा मोरिशस के तत्कालीन प्रधान डाक्टर इ० घूरा जी का समाचार पूछा। मन्त्री श्री तिलकप्रसाद कालीचरण जी का समाचार पूछा और मौरिशस आर्य समाज के शिरोमणी नेता श्री मोहनलाल मोहित जी 'आर्य रत्न' जी का भी समाचार बड़े प्यार से पूछा।

हमने उनसे कहा कि हमारा सामान देहली कही सन्त नगर में, ग्रेटर कैलाश के पास पड़ा है और रहने का कोई प्रबन्ध नहीं हो पाया है तो आपको बहुत दुःख हुआ। आपने कहा कि चिन्ता नहीं कीजिएगा सब कुछ ठीक हो जाएगा। हमे सभा की मोटर दिलाई और हम अपना सामान लाए, फिर रामलीला मैदान के पास एक शानदार जगह में हमारे रहने का स्थान सुरक्षित करवाया। ये सब कार्य हमारे लिए चुटकियों में हो गया।

दिसम्बर मास चल रहा था। जोरों की तैयारी हो रही थी। उन्होंने मुझे कहा था कि, "देखिए मोरिशस के यात्री आ रहे हैं अभी अभी समाचार आया है, यदि पहले से पत्र आते तो हमारी तैयारी मे कोई कठिनाई नही होती। देखिए मोहित जी को आप बताइएगा कि वे हमे बताए कि कब कब कितने कितने यात्री आ रहे हैं?"

उनकी कृपा से मोरिशस के हिन्दी साहित्य पर बात चीत करने के लिए देहली के टेलीविजन द्वारा और रेडियो द्वारा मेरा इन्टरव्यू भिन्न भिन्न भागो मे लिया गया। श्री रामचन्द्र विकल जी एम पी वहीं पर बैठे थे उन्होंने अपनी मोटर द्वारा इन स्थानों मे जाने के लिए हमारा प्रबन्ध कर डाला था। अपनी बात-चीत के दौरान मोरिशस में आर्य समाज की गतिविधियों पर भी हमने अपना विचार दिया था। मेरे साथ प्रबन्ध कर्ता श्री सोमेन्द्र शर्मा जी ने बात विचार किया था। बहन सावित्री ठाकुर जी ने (जो ए.आई. आर में) काम करती हैं) उन्होंने कार्यक्रम की तैयारी के लिए पूरा सहयोग प्रदान किया था। उस आर्य महा सम्मेलन में आपने सार्वदेशिक सभा के मन्त्री की हैसियत से मुझे भी अपना विचार व्यक्त करने का मौका दिया था।

आप जब भी भाषण देते थे मैं चाव से सुनता था और यथासम्भव नोट कर लिया करता था। आप ने एक रोज अपने लम्बें भाषण के दौरान यह भी कहा था कि—"विदेशी मिशनरी सेवा और चिकित्सा की आड़ में भारत के जनपद निर्धन व भोले भाले वनवासियो का धर्म परिवर्तन करने के लिये पैसा पानी की तरह बहा रहे हैं।"

आप जब भी मौरिशस आते थे मुझे श्री मोहनलाल मोहित जी के पास या आर्य सभा के भवन में आपसे मिलने और बात करने के लिये विशेष मौका मिला करता था। अनेक बार आप मेरे साथ यहां के रेडियो स्टेशन पर इन्टरव्यू भी दिये जिनके प्रसारित होने पर बधाई प्राप्त होती रहती थी। गत वर्ष दिसम्बर मास की बात है कि आप और स्वामी सत्यप्रकाश जी के दर्शन हमारे टेलीविजन सेन्टर मे ही हो पाये थे। हमने दिल खोलकर बातें कीं, साथ मे श्री सुभाष मोहित जी भी थे। आप उन्हीं के पास ठहरे थे। (सुभाष जी का विवाह बम्बई के श्री भगवती प्रसाद जी की पुत्री से हुआ था)।

आपकी अन्तिम मौरिशस यात्रा जो गत जनवरी मास में आपने की थी। उस मौके पर आपसे जब मैंने पूछा कि आर्य समाज के कार्यों में आपने कब से हाथ बटाना प्रारम्भ किया तो आपने दिल खोलकर मुझसे कहा कि— "सन् १९३८-४१ की बात है नवयुवको का सम्मेलन करने का मेरा विचार बना। उसकी तैयारी करने के लिए निकला और आर्य समाज में प्रविष्ट हुआ।

मैंने सब से पहले आर्य वीर दल के लिए काम करना प्रारम्भ किया और पेशावर से लेकर लगातार कलकत्ते तक समूचे भारत वर्ष में आर्य वीर दल स्थापित करने में हाथ बटाया और यह दल बहुत शक्ति के साथ बना। इसी के साथ सार्वदेशिक सभा की ओर से सन १९४२ मे हैदराबाद में, तत्पश्चात बगाल मे तूफान आया और उसके सहायता कार्य के लिए गया, फिर वहां अकाल पड़ा तो मैं साल भर तक वहा कार्य करता रहा उसके पश्चात फिर आसाम में भूकम्प आया तब हमारा सेवा कार्य वहां पर भी गया और मैं भी उस कार्य मे लगा रहा।"

आर्य जगत् के समाचार

अंग्रेजी से पिंड छूटा

नई दिल्ली, २० अप्रैल। दिल्ली बार कौंसिल ने हिंदी माध्यम से वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों के दिल्ली मे पजीकरण के लिए अग्रेजी की परीक्षा देने की शर्त समाप्त करने का फैसला किया है।

दिल्ली बार कौंसिल की २४ अप्रैल को हुई बैठक मे फैसला किया गया कि कौंसिल के नियम ८८ के प्रावधान समाप्त कर दिए जाए।

बार कौंसिल ने इस सम्बन्ध मे सबकी सम्मति से पारित प्रस्ताव की प्रति बार कौंसिल आफ इंडिया' के पास भेजने का फैसला किया है।

दिल्ली बार कौंसिल मे पजीकरण के लिए हिंदी भाषी क्षेत्र के लोगो का अग्रेजी की परीक्षा देना अनिवार्य था। बार कौंसिल के इस पक्षपात वाले रवैए के विरुद्ध गाजियाबाद के पुष्पेंद्र चौहान ने पिछले वर्ष नवम्बर मे और इस वर्ष नौ मार्च से तीन अप्रैल तक अनशन किया।

दिल्ली बार कौंसिल की पजीकरण नीति मे हिंदी के साथ भेदभाव बरते जाने के बारे मे ससद मे भी सवाल उठा था।

आर्यसमाज और उसके कार्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

की परिस्थितिया सामाजिक के साथ राजनैतिक मच अधिक शक्तिशाली था वह कार्य आर्यसमाज ने पूर्ण किया, आज वह स्थिति नही है। हा आज भी आर्य समाज ने जो भी आन्दोलन छेडा आर्य जनता ने तन-मन धन से हमारा साथ दिया। पहले से अधिक पत्र पत्रिकाये आज छप रही हैं और लिखने वाले भी पहले से अच्छे हैं। यदि पहले के नेताओ ने आर्य समाज की नीव को भरा था तो आज के समर्थ नेतृत्व ने उसे नीव पर खडा कर महलों के रूप मे निर्मित किया है।

एक बार कुछ समय पूर्व एक आर्य विद्वान ने इतना ही लिखा था कि सत्यार्थ प्रकाश मे से गुरु नानकदेव जी महाराज पर लिखी लाइनो को हटा कर सशोधन कर दिया जाए। बस फिर क्या था जो हल्ला मचा, तो लेखक महोदय को तोबा करनी पडी। ऐसे अनेक प्रसग आते रहते हैं जिन्दा किसी के ?

चाहे मीनाक्षीपुरम हो या पंजाब की शरणार्थी समस्या, भाषा का सवाल हो या गोरक्षा का, सभी प्रश्नो को लेकर आर्यसमाज अपने पुरातन पर ही जिन्दा है।

हा आर्य समाज का शास्त्रार्थयुग एक प्रकार से शान्त है वह भी क्यो ? शास्त्रार्थ करने वाले प० शान्ति प्रकाश जी, श्री अमरस्वामी जी महाराज, प० ओम्प्रकाश जी शास्त्री, प० रुद्रदत्त जी शास्त्री, प० सत्यमित्र जी आदि आज भी अखाडे के पुराने लडाका हैं पर जब कोई शास्त्रार्थ ही करने न आये तो क्या आप जबर्दस्ती सिर फुडवाने जायेंगे।

वक्ताओ की नई लाइन आज भी पहले से कम नही है और न लिखने वालो की कमी ? तर्क को जिन्दा रखना हमारा पुनीत कार्य है।

सा० सभा की धर्मार्य सभा मे आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवा व्यास, प० काशीनाथ शास्त्री गोदिया जैसे धुरन्धर बैठे हैं।

प० राजेन्द्र जिज्ञासु भवानीलाल भारतीय, श्री कुशवाहा जैसे समालोचक भी विद्यमान हैं।

आप अपने चारो ओर दृष्टिपात कीजिये—आर्य समाज की लहराती खेती दिखाई देती है। हमारा प्रत्येक क्षेत्र जागरूक है आवश्यकता है अपने मे झाँक कर देखें तो स्वय में प्रकाश नजर आयेगा। साथ ही विगत के इतिहास से आज के कार्य का तुलनात्मक अध्ययन करें, तो दुर्बल दृष्टि दोष हटकर नयी दृष्टि अवश्य मिलेगी और निराशा से हटकर आशावाद को बारम्बार आशा ही मिलेगी।

महात्मा हंसराज दिवस

१९ अप्रैल को डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकृत समिति एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में "महात्मा हसराज दिवस' तालकटोरा स्टेडियम मे बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता वयोवृद्ध सन्यासी श्री अमर स्वामी सरस्वती ने की। ब्रि० श्रीकृष्ण सिह चन्डीगढ, श्री प० शिवकुमार शास्त्री, प्रो० रतनसिंह, प्रो० वेदव्यास ऐडवोकेट, श्री दरबारी लाल जी ने महात्मा जी के जीवन की महानता व उनके महान कार्यों का दिग्दर्शन कराया। समारोह के मुख्य अतिथि भू पू वित्त एव रक्षा मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिह जी ने अपने सारगर्भित भाषण मे आर्यसमाज की महान सेवाओ की चर्चा की और कहा आज देश विभिन्न राष्ट्रीय समस्याओ मे उलझ रहा है। आज के राजनीतिज्ञ क्षणिक स्वार्थों की प्राप्ति के मोह मे राष्ट्र के महान हितो की ओर ध्यान नहीं देते हैं। आर्यसमाज देश मे नैतिक मूल्यो का उत्थान कर सकता है उसने पहले भी देश की रक्षा की है भविष्य मे वह रक्षा करने पर कमर कसे, ऐसी मेरी प्रार्थना व आशा है। समारोह की सफलता मे कर्मवीर श्री रामनाथ सहगल का विशेष योगदान रहा।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर मे महात्मा हसराज दिवस १९ अप्रैल को श्री बलदेव राज कमोत्रा की अध्यक्षता मे मनाया गया। श्री हरपाल सिह जी सभा मन्त्री, श्रीमती सन्ध्या चौधरी, श्रीमती डा० आशा रानी राय, डा० इन्द्रसेन कपिल एव श्री गोरखनाथ गुप्त ने महात्मा हसराज जी के महान आदर्श जीवन के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डाला।

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय खानपुर जि० महेन्द्रगढ हरियाणा का विश्व कल्याण यज्ञ एवं उत्सव

दिनाक २९ मई १९८७ से ७ जून १९८७ तक मनाया जाएगा। इस उत्सव मे पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा ध्वजारोहण किया जायेगा। उत्सव मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान सन्यासी एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती पधार रहे हैं।

उत्सव सम्पन्न

गुरुकुल मटिण्डू सोनीपत का उत्सव दिनाक २१ २२ मार्च १९८७ को सम्पन्न हुआ इस उत्सव मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सभा प्रधान एव हरियाणा के उद्योग मन्त्री श्री किशन दास एव श्री चौ० रिजक राम जी आदि ने अपने विचार रखे।

विमल देव भारद्वाज पं० गुरुदयाल शास्त्री संस्कृत संस्थान आर-९७ माडल टाउन दिल्ली की भारत की जनता से अपील

नई शिक्षा नीति मे सस्कृत की उपेक्षा की गई है। त्रिभाषा फार्मूले (अग्रेजी+हिन्दी एक आधुनिक भारतीय भाषा) के कारण ६ से १० कक्षा तक सस्कृत विषय समाप्त हो जाएगा।

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी की सेवा मे १० लाख शिक्षितो के हस्ताक्षर सहित ज्ञापन भेजा जाएगा।

सस्कृत ससार की प्रमुख भाषाओ एव मानव सभ्यता की जननी है।

देव वाणी सस्कृत की शिक्षा अनिवार्य हो—हर विषय के साथ सस्कृत पढाई जाए। हस्ताक्षर सग्रह अभियान में सहयोग कीजिए स्वय मिलकर अपनी सेवाए समर्पित कीजिए।

सेवा पुरस्कार

आगरा के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रोशनलाल गुप्त को उनकी विशेष सेवाओ के सम्मान मे आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा के प्रधान श्री पूर्णचन्द आर्य द्वारा १००१) रुपया प्रोत्साहन पुरस्कार किया गया।

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज नगीना (बिजनौर) उ०प्र० को एक वैदिक पुरोहित की आवश्यकता है जो सिद्धान्तानुकूल सभी सस्कारो तथा पर्वों को सम्पन्न कराने की योग्यता रखते हो। आवास की व्यवस्था आर्य समाज, भवन में निःशुल्क उपलब्ध है। वेतन एव अन्य सुविधाय योग्यता के अनुसार।"

—अनिलकुमार

पाणिनीय कन्या महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

सदा की भांति १६वां वार्षिकोत्सव ५, ६, ७ अप्रैल को विद्यालय परिसर मे मनाया गया। नगर निगम प्रशासक श्री हरमेन्दर सिंह ने ध्वजारोहण किया। विद्यालय के नवनिर्मित भवन 'बसन्त किसलय' का उद्घाटन बम्बई के श्री बसन्तराय आर. पटेल के करकमलों से हुआ।

उत्सव में वाग्वर्धनी प्रतियोगिता 'स्वमतव्यामन्तव्य' के सम्बन्ध में हुई। ब्रह्मचारिणियो के शारीरिक व्यायाम व योगासन धनुर्वेद आदि रोचक प्रदर्शन हुए। विद्यालय आर्य समाज के अपने ढंग की एक ही आदर्श संस्था है।

आर्य समाज बक्सर का ८० वां वार्षिकोत्सव

२ से ७ अप्रैल तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। ७ अप्रैल को उग्रवादियों द्वारा पण्डाल में आग लगा देने पर भी समाज के कार्यकर्ताओं व जनता के उत्साह में कोई कमी नही आई। महिलाओं का उत्साह सराहनीय था। जिला विद्यालय निरीक्षिका श्रीमती मनोरमासिंह की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन हुआ। श्री उत्तमचन्द शरर व पं० महेन्द्रपाल शास्त्री के प्रेरणात्मक भाषण हुए।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जौनपुर का ८७ वां वार्षिकोत्सव ६ से १६ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया गया मिश्नरी संन्यासी स्वा० स्वरूपानन्द जी, उत्तमचन्द जी शरर, महेन्द्रपाल जी के प्रेरणात्मक भाषण व भजनोपदेश हुए।

आर्य समाज टंकारा (गुजरात)

महर्षि की जन्मस्थली टंकारा में ऋषि बोधोत्सव के महामेले के पश्चात विधिवत आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

वयोवृद्ध विद्वान सम्मानित आर्य समाज के वयोवृद्ध कार्यकर्ता श्रीकृष्णदेव जी का समाज की ओर से हार्दिक सम्मान किया गया।

शुद्धि

२७ अप्रैल को आर्य समाज बंगलूर के तत्वावधान में श्री सहादत हुसैन को शुद्धि संस्कार कर श्रद्धानन्द बनाया गया। पश्चात उनका विवाह कुमारी निर्मला तिवारी से किया गया।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बिहारीपुर सहारनपुर दिनांक २१ से २३ मई तक मनाया जाएगा।

आर्य समाज शाहजहांपुर दिनांक २१ से २४ मई तक मनाया जाएगा।

चुनाव

वर्ष १९८७ के लिए आर्यसमाज बागपत का चुनाव १९-४-८७ को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान-वीरेन्द्र सिंह 'राणा', मन्त्री-मा० सत्यप्रकाश गौड, कोषाध्यक्ष-राधेश्याम शर्मा एडवोकेट आदि द्वारा आर्य समाज के प्रचार प्रसार हेतु शपथ ली गयी। —मन्त्री

– आर्य समाज तेराजाकट फर्रुखाबाद—प्रधान श्री जगबहादुर आर्य, मन्त्री डा० वीरचन्द्र आर्य चुने गए।

—नगर आर्य समाज साहब गंज गोरखपुर– प्रधान श्री देवीलाल आर्य, मन्त्री श्री रमेश प्रसाद गुप्त।

आर्य समा संडीला (हरदोई), प्रधान श्री जगन्नाथ, मन्त्री डा० सत्यप्रकाश चुने गये।

आर्यसमाज सावली आदि पंजपुरी (गढ़वाल), प्रधान शान्तिप्रकाश, मन्त्री वासुदेव विमल चुने गये।

आर्य समाज कपूरथला, प्रधान श्री दरबारीलाल, मन्त्री श्री हरीसिंह चुने गये।

आर्य समाज बसव कल्याण बीदर, प्रधान रामानन्द बड़, मन्त्री माणिक राव लाड चुने गये।

आर्य समाज गांधी कालोनी मुजफ्फरनगर, प्रधान श्री सन्तोष कुमार सूद, मन्त्री श्री गजेन्द्रसिंह राणा चुने गये।

आर्य प्रतिनिधि सभा गोरखपुर प्रधान श्री कलनाथ आर्य, मन्त्री श्री ए० एन० सिंह चुने गये।

आदर्श वीर सेवक

–श्री बाल दिवाकर हंस

किताबी पण्डितों की आर्य समाज में कमी नहीं, परन्तु आर्य समाज के प्रत्येक कार्य के लिए जान हथेली पर रखकर सफलता की सीढ़िया चढ़ने वाले विरले ही होते हैं। उन विरलों में अग्रणी स्थान रखने वाले थे श्री ओमप्रकाश त्यागी, जिनके जीवन का एक-एक क्षण आर्य समाज के लिए अत्यन्त मूल्यवान सिद्ध हुआ।

आर्य समाज के रचनात्मक कार्यों में उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी। चाहे वह आदिवासियों व पिछड़े वर्ग की सेवा का क्षेत्र हो, चाहे शुद्धि का, चाहे वैदिक धर्म के प्रचार का वे सदा अपनी बहुमूल्य सेवाओं के लिए स्मरण किये जायेंगे। त्यागी जी अपने आप में एक संस्था थे जिनके कार्यों से संस्थाऐं स्वयं निर्मित हो जाती थीं।

आर्य समाज द्वारा राजनीतिक क्षेत्र में की गई सेवाओं में उनका स्थान एक संयोजक का ही रहा। हिन्दू जाति के अभाव अभियोगों को सरकार तक पहुंचाने मे उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। देश भक्ति उनके अन्दर कूट-२ कर भरी थी।

त्यागी जी के आर्य समाज के गौरव वर्धन का युग १९४४ से प्रारम्भ होता है। जब विभाजित बगाल में अंग्रेजी राज्य में हुसन शहीद सुहरावर्दी के मुख्य मन्त्रित्व काल में बगाली भूख से तड़प तड़प कर ऐसे मर रहे थे जैसे मक्खी, मच्छर। कलकत्ता की सड़कें भूखे बंगालियो की लाशों से पटने लगी। तब आर्य समाज मौन न रह सका। अमृतसर के बाबा गुरमुख सिंह जी ने २० हजार मन चावल आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के द्वारा वितरण करने भेजा। डी० ए० वी० कालेज के विद्यार्थियों का एक दल आचार्य शिवराज शास्त्री के नेतृत्व मे सेवा के लिए बगाल भेजा गया। आर्य समाज कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता के कर्णधार पं० रघुनन्दन लाल जी की प्रार्थना पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री ओमप्रकाश जी त्यागी को सेवा के लिए भेजा गया। इसके पश्चात तो त्यागी जी ने आर्य समाज के सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में वीर हनुमान की भांति अद्भुत कार्य किये। सार्वदेशिक सभा से उनका सम्बन्ध ४० वर्ष पुराना है। वे इसके उपमन्त्री पद पर पहली बार नियुक्त हुए और मृत्युपर्यन्त सार्वदेशिक के लिए ही जिए उसी की सेवा करते करते देवलोक सिधारे। त्यागी जी की प्रतिभा सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में अविस्मरणीय रही। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के वे प्रमुख संचालक रहे। पिछड़ी जातियों व क्षेत्रों की सेवा के लिए उन्होने दयानन्द सेवा सदन की स्थापना की। आर्य वीर दल उनकी महान योजना थी जिसकी शाखाऐं देशभर मे फैली। आज भी हजारो आर्य वीर इस संगठन के लिए अहर्निश सेवारत हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल में प्रवेश प्रारम्भ

आपके प्रिय गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल, जि० मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) में एक मई से प्रवेश जारी है। यहां पर प्रथमा (कक्षा ६) से शास्त्री (बी०ए०) तक सभी विषयों (हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, वेद दर्शन) का अध्ययन कराया जाता है। यह संस्था सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से मान्यता प्राप्त है। पांचवी कक्षा उत्तीर्ण छात्र प्रवेश के अधिकारी हैं। शिक्षा के साथ-यहां यौगिक क्रियाएं, आसन-व्यायाम तथा धार्मिक शिक्षा का भी उत्तम प्रबन्ध है। शिक्षा एवं आवास की निशुल्क व्यवस्था है। मध्यमा के योग्यतम छात्रों को ५०) रुपये मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। उत्तम जलवायु, सुरम्य वातावरण, सादा रहन-सहन एवं सात्विक आहार यहां की विशेषता है। यहां के आचार्य वृन्द योग्य और कुशल अनुभवी है। अतः आप अपने पुत्रों को उत्तम शिक्षा दिलाने हेतु अविलम्ब सम्पर्क करें।

—आचार्य धर्मपाल प्रधानाचार्य

शिक्षा का मूलाधार राष्ट्रीय और नैतिक चरित्र

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कहा कि "आज का शिक्षक यदि विद्यार्थी मे प्रश्न करने की भावना उत्पन्न कर दे तो यह समझना चाहिए कि उसने यदि पूरी नही तो कुछ शिक्षा तो अवश्य दे दी है। शिक्षक को सोचना होगा कि वह जो शिक्षा दे रहा है, उससे छात्र का केवल बाहरी ज्ञान ही बढ रहा है अथवा उसके भीतर की चेतना को भी वह जगा पाया है या नही ?" ये शब्द आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, मे—आयोजित महात्मा हसराज दिवस के उपलक्ष मे मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए भू० पू० केन्द्रीय रक्षा मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कहे। उन्होने आगे कहा कि न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का सिद्धात उसके स्कूल जीवन के आरम्भ मे ही उसके मस्तिष्क मे कौधा था, जब उसने अपने अध्यापक से प्रश्न किया कि पेड से अलग होने वाला सेव नीचे को क्यो गिरता है, ऊपर क्यो नही जा पाता ? शिव लिग पर उछलकूद मचाने वाले चूहे को सर्व-शक्तिमान शिव भगा क्यो नही पा रहा है ? महर्षि दयानन्द के मन मे यह प्रश्न तब उठा जब वह बालक मूलशकर मात्र थे।

हमारी शिक्षा का मलाधार राष्ट्रीय और नैतिक चरित्र होना चाहिए, इसके लिए शिक्षको का चरित्रवान होना अत्यन्त आवश्यक है। डी०ए०वी० आन्दोलन के जन्म पर महात्मा हसराज के मन मस्तिष्क मे यह बात विद्यमान थी, इसलिए उन्होने उत्तम राष्ट्रीय और वैयक्तिक चरित्र का स्वय अपना उदाहरण अपने सहयोगियो के सम्मुख रखा। उसी का यह परिणाम है कि आज न केवल भारत वर्ष मे अपितु समस्त विश्व मे फैली हुई डी० ए० वी० सस्थाऐ शिक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय शिक्षा एव नैतिक चरित्र का पाठ भी भूले भटके इस मानव समाज का देने मे समर्थ हो सके हैं।

हमे महर्षि के जीवन से अनेक शिक्षाऐ प्राप्त होती हैं। जहा उनकी बोध-रात्रि की घटना बडी शिक्षा प्रद है, वहा उनके निर्वाण की घटना भी हमे निर्देश देती है कि जो तुम्हे विष का प्याला प्रस्तुत करे, उसको तुम अमृत का पान कराओ। यह बात केवल महर्षि दयानन्द सरीखा महापुरुष ही कर सकता था।

वेद वेदांग पुरस्कार १९८७ के लिए पंडित विश्वनाथ जी विद्यामातगड का नाम घोषित

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा निर्धारित वेद वेदाग पुरस्कार चयन समिति ने वर्ष १९८७ के लिए आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान पण्डित विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड का चयन किया गया है। ९३ वर्षीय प० विश्वनाथ जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक वाङ्मय के प्रचार प्रसार मे समर्पित किया है और आज भी अथर्ववेद का भाष्य पूर्ण करने मे सलग्न हैं।

इस पुरस्कार के लिए चुने गये विद्वान को २१००) की थैली, रजत ट्राफी अभिनन्दन पत्र एव शाल भेंट कर सम्मानित किया जाएगा।

इस वर्ष आर्य समाज सान्ताक्रुज ने एक और नवीन पुरस्कार की घोषणा की है। जिसके अन्तर्गत वेद वेदागो के विद्वान एव अनुसधान कर्ताओ के अतिरिक्त जिन विद्वानो ने उपदेशक, भजनोपदेशक एव कार्यकर्ता के रूप मे जीवन पर्यन्त आर्य समाज की सेवा की है, ऐसे एक विद्वान को प्रतिवर्ष ११०००) की थैली, रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र एव शाल से सम्मानित किया जाएगा।

इस द्वितीय पुरस्कार के लिए सर्वप्रथम आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी, शास्त्रार्थ महारथी पूजनीय अमर स्वामी जी महाराज का चयन किया गया है।

इस वर्ष से आर्य समाज सान्ताक्रुज ने प्रतिवर्ष दो विद्वानो के सम्मान का शुभारम्भ किया है। यह समारोह मई मास के अन्तिम सप्ताह मे आयोजित किया जाएगा।

—कैप्टन देवरत्न आर्य, महामन्त्री

तिथि परिवर्तन की सूचना

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली का शताब्दी समारोह स्मारिका (इतिहास) विमोचन का कार्य अप्रैल मास सन् १९८७ मे होना निश्चित हुआ था, किन्तु आदरणीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती महाराज से विचार विमर्श होने के पश्चात् उपरोक्त कार्यक्रम अक्तूबर मास सन् १९८७ मे होना निश्चय हुआ है।

हैदराबाद सत्याग्रह स्वतन्त्रता सेनानी गैर सरकारी सलाहकार समिति



हैदराबाद मे हुई बैठक मे अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् श्री रामचन्द्र राव कल्याणी एव सचिव श्री गवा।

संस्कृत विविधता में एकता की प्रतीक : वेंकटरामन

जयपुर, २ मई। उपराष्ट्रपति श्री आर वेंकटरामन ने सस्कृत को विविधता म एकता का प्रतीक बताते हुए कहा कि इस भाषा मे हमारी सस्कृति की पहचान बनती है।

श्री वेंकटरामन ने आज यहा तृतीय अखिल भारतीय सस्कृत शिक्षा सम्मेलन का उदघाटन करते हुए कहा कि सस्कृत देश की एकता एव सास्कृतिक अखण्डता को दर्शाने वाला एक सशक्त माध्यम रहा है।

उन्होने कहा कि सस्कृत पहले से ही सम्पर्क भाषा रही और अब भी सभी भाषाई गुटो से उसको उतना ही सम्मान प्राप्त है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि वेद, उपनिषद, पुराण और दर्शनशास्त्रो की महत्ता अभी युक्ति सगत है और उनकी उपेक्षा हानिकर सिद्ध होगी।

श्री वेंकटरामन ने सस्कृत की सार्वभौमिकता के बारे मे कहा कि पुरातन परम्परा देश की सास्कृतिक एकता और विश्व कल्याण के प्रति जागरूक रही है। देश मे सस्कृत शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाली एक इकाई राजस्थान ससद द्वारा चार दिवसीय सगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी और कुलपति श्री आर० पी० अग्रवाल ने भी विद्वानो को सम्बोधित किया।

पजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष में प्राप्त धन

श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, २३५१ लडोइया नवा शहर दोआवा जालधर	२४
श्रीमती ईश्वर देवी, बरतनलाल जी, प्रेमपुरी गाजियाबाद	२५०)
श्री शकरलाल कमल कृष्ण गुप्ता मोती बाजार दिल्ली	५०१)
श्रीमती आशा सहाय कलकत्ता	१००)
श्री महयानन्द शम्भूदयाल कैवल्य सन्यास आश्रम गाजियाबाद	५००)
,, डी डी ए पुरी चैरिटी ट्रस्ट कनाट सर्कस नई दिल्ली	२०००)
डा० सुरेन्द्र पनरा खुर्द गर्री कला हजारी बाग	१०)
श्री गगा सिह जी भोला नाथ नगर शाहदरा दिल्ली	१०००)
श्री मित्र दर्शन आर्य, ग्राम फिटौटी, पो० केसरी, मैनपुरी	१०)
चौ० भगवान सिह तुरावनगर गाजियाबाद	२००)
श्री परमवीर शास्त्री, डी ए वी पब्लिक स्कूल हमीरपुर	५०)
श्री श्याम सुन्दर गुप्ता धारेश्वर चौक	११)
धमवन्तर सिह जी, कोहनूर मैन्शन डलहौजी चम्बा	१५००)
सुशील कुमार गुप्ता द्वारा साउथ ईस्टर्न रोडवेज दाल मण्डी चौक कटक	५१)
वेदप्रकाश मन्त्री आर्य समाज दानापुर पटना	७५)

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१०-५-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसंस न० U ४१
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U 03 Post in D.P.S.O. ... 1987

आर्य समाज राईट टाउन जबलपुर (मध्यप्रदेश) द्वारा शुद्धियाँ सम्पन्न

१—लारेंस ओमा मकोघ एम० ए० ईसाई धर्म जिससे वैदिक धर्म मे प्रवेश किया उम्र ३१ वर्ष नया नाम लोकनाथ आर्य पूरा पता पी० बा० न० २४२६ कितुमु कीनिया दक्षिण अफीका विवाह जिसके साथ हुआ सुखवीरकौर एम० एस० सी० जबलपुर।

२—जान रवीन्द्रसिंह ईसाई धर्म जिससे वैदिक धर्म मे प्रवेश किया उम्र २६ वर्ष नया नाम रवीन्द्र आर्य पूरा पता जी० सी० एफ० स्टेट जबलपुर (म० प्र०) विवाह जिसके साथ हुआ कु० नीता शर्मा बी० ए० जबलपुर।

३—हसीना बी बी०ए० मुसलमान उम्र २७ वर्ष नया नाम कांचन बाला पूरा पता सुहागपुरा (म०प्र०) विवाह जिसके साथ हुआ मलिक वमन एडवोकेट।

४—मृदुबाला मिडियल एम० ए० ईसाई धम जिससे वैदिक धर्म मे प्रवेश किया उम्र २५ वर्ष नया नाम पूजा देवी पूरा पता बघेल निवास धमापुर जबलपुर विवाह जिसके साथ हुआ नरसिंह दास चौधरी सामाजिक नेता, जबलपुर।

५—मौनी थामस एम० एस० सी० पी० एच० डी० ईसाई धर्म जिससे वैदिक धर्म मे प्रवेश किया उम्र २५ वर्ष नया नाम अजीत कुमार आर्य पूरा पता व्हीकल स्टेट जबलपुर विवाह जिसके साथ हुआ कु० तजिन्दरकौर बी० एस० सी० जबलपुर। —सी० डी० शुक्ला एडवोकेट

शोक समाचार

डी०ए०वी० कालेज अजमेर के प्राध्यापक श्री सुधीर भार्गव जी का १८-४-१९८७ को आकस्मिक निधन हो गया।

आर्यसमाज सम्पत्ति रक्षा समिति द्वारा शोक सभा रख उनके द्वारा कालेज के प्रति की गई सेवाओं को अब स्मृतिमान श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर उनके परिवार के प्रति सवेदना प्रकट की गई।

यह सभा २२-४-८७ को हुई। —मघानी एच०डी० आर्य

आर्यसमाज का मत

संस्कृत नहीं संस्कृति को हटाने का षडयन्त्र

कानपुर। आर्यसमाज गोविन्दनगर के तत्वावधान मे आयोजित सभा मे उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने कहा कि नई शिक्षा नीति मे सस्कृत को हटाने के पीछे आय (भारतीय) सस्कृति को हटाने का षडयन्त्र है। आर्यसमाज जो अपने जन्मकाल से सस्कृत का पक्षपाती रहा है, इस नापाक साजिश को सफल नही होने देगा।

सभा मे स्वीकृत प्रस्ताव मे भारत सरकार से माग की गयी कि सस्कृत को एच्छिक नही बल्कि अनिवाय भाषा बनाया जाये। त्रिभाषा फार्मूले से आधुनिक भाषा शब्द हटाकर केवल भारतीय भाषा जोडा जाये।

दूसरे प्रस्ताव मे गणतन्त्र दिवस का बहिष्कार करने वालो को पाकिस्तानी बताया गया जो भारत का पुन दो कौमो के आधार पर विभाजन का षडयन्त्र रच रहे है।

सभा मे सर्व श्री जयरामसिह, डा० नन्दलाल गाधी शुभ कुमार आदि के भाषण हुये। सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य ने की।

—मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक २१] | ज्येष्ठ कृ० ४ सं० २०४४ रविवार १७ मई १९८७ | वार्षिक मूल्य २१) एक प्रति ६० पैसे

संस्कृत भाषा की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करूंगा

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सनातन धर्म व आर्यसमाज दोनों का आधार संस्कृत भाषा

—गोस्वामी गिरधारीलाल

संस्कृत अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है : श्रीमती कमला रत्नम

दिल्ली १० मई, आज सस्कृत रक्षा दिवस दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्यसमाज १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे अपराह्न ४ बजे बड़े उत्साह व प्रेरणात्मक रूप मे मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती महाराज ने की।

श्री गोस्वामी गिरधारीलाल जी ने अपने प्रेरणात्मक भाषण मे कहा आर्यसमाज व सनातन धर्म दो नही हैं। जैसे कैंची के दो फल अलग-अलग दिखाई देते हैं परन्तु इन दोनो फलो के बीच जो आ जाए उसकी खैर नही। कैंची को एक केन्द्रीय कील सम्भालती है। इसी प्रकार हम दोनो को वेद भगवान रूपी आधार है। सनातन धर्म पूर्ण रूप से आर्य समाज के सस्कृत रक्षा आन्दोलन के साथ है। श्रीमती कमलारत्नम ने अपने विद्वत्ता पूर्ण भाषण में सस्कृत की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि—"केवल सस्कृत ही अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है।" जिसका अध्ययन सारे ससार के विश्वविद्यालयो मे अनिवार्य रूप से कराया जाता है। ऐसी भाषा का अपमान उसकी अपनी भूमि मे कदापि सहन नही किया जाएगा।

सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध जी महाराज ने कहा कि अब तो इस समस्या को परिणामकारक बनाना ही होगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि आर्य समाज को चाहे जितना बलिदान करना पडे। हम इस लडाई की विजय-प्राप्ति तक लडेगे। सस्कृत का सिर कदापि झुकने नही देगे।

तीन विशेष प्रस्ताव पारित हुए

१—"भारत सरकार की नई शिक्षा नीति १९८६ मे भारत की प्राचीनतम भाषा एव ज्ञान विज्ञान की निधि की भण्डार सस्कृत को केवल विश्वविद्यालय के पाठय मे वैकल्पिक विषय के रूप मे स्वीकार करते हुए उससे नीचे की कक्षाओ (माध्यमिक कक्षाओ) के पाठ्यक्रम से उसे निकाल दिया गया है, जिसका परिणाम भारतीय सस्कृति, राष्ट्रीय एकता एव भारतीय अस्मिता का विनाश होना है। इस तथ्य को ध्यान मे रखते हुए साथ ही भारतीय सविधान की धारा ३४३ (१) जिसके अनुसार भारतीय सघ की राजभाषा हिन्दी एव लिपि देवनागरी स्वीकार की गयी है एव धारा-३५१, जिसके अनुसार राजभाषा के शब्द भण्डार को समृद्ध बनाने के सस्कृत को मुख्य स्रोत स्वीकार किया गया है, को भावना को ध्यान मे रखते हुए यह सभा सर्वसम्मति से भारत सरकार से सशक्त शब्दो मे माग करती है कि सम्पूर्ण भारत मे माध्यमिक कक्षाओ के पाठ्यक्रम में सस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप मे अध्यापन की व्यवस्था की जाए, जिससे भारतीय सस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा हो सके।

२—यह सभा भारत सरकार से यह भी माग करती है कि विधिशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान प्राविधिकी आदि के पाठ्यक्रम मे सस्कृत भाषा मे विद्यमान विधिशास्त्र प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान एव प्राचीन भारतीय प्राविधिकी आदि को भी वैकल्पिक पत्र के रूप मे स्थान दिया जाए एव इस विषय मे अनुसन्धान को प्रोत्साहित किया जाए।

३—यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि वह इस दिशा मे अर्थात् सस्कृत को अनिवार्य रूप से माध्यमिक एव उच्चतर माध्यमिक पाठ्क्रम मे स्थान देने की घोषणा कर आगामी ३० जून १९८७ तक कर। अन्यथा हमें इसके लिए अपना सर्वस्व समर्पित करते हुए आन्दोलन करने को विवश होना पडगा।

प्रस्तावो के समर्थन मे अन्तर्राष्ट्रीय सनातन धर्म के अध्यक्ष श्री डा० गोस्वामी गिरधारीलाल, श्रीमती कमला रत्नम, डा० विमलदेव भारद्वाज डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी डा०कृष्णलाल, आचार्य रामकिशोर शास्त्री, श्री सूर्यदेव श्री सीताराम सहगल आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। ●

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री अमरस्वामी को देखने गए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे ९ मई को जब यह पता चला कि श्री अमरस्वामीजी महाराज, वेदमन्दिर विवेकानन्दनगर गाजियाबाद बहुत अस्वस्थ हैं तो सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और सभा के उपमन्त्री प० [illegible] तुरन्त श्री अमरस्वामी जी का हालचाल जानने के लिए गाजियाबाद गए और उनसे भेंट करके उनके स्वास्थ्य का समाचार ज्ञात किया।

—सम्पादक

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

हथगोला फटा, तीन सैनिक मरे

चण्डीगढ, ९ मई (जनसत्ता और एजेन्सिया)। पंजाब मे सेना के तीन जवानो और एक खूखार आतकवादी समेत पाच लोग मारे गए।

पठानकोट छावनी मे कल शाम सिख रेजीमेंट की आवासीय बैरको मे दो हथगोले फटे जिससे तीन फौजी मर गए और एक घायल हो गया।

पुलिस के सूत्रो के मुताबिक हथगोले एक फौजी के सन्दूक मे रखे थे। जिस बैरक मे सन्दूक था उसमे चार फौजी बैठे थे। हथगोले अचानक फट गए जिससे तीन जवान मौके पर ही मर गए और चौथा घायल हो गया। मरने वालो के नाम नायक सुरिन्दरपालसिंह, लीलासिंह और बलविन्दरसिंह हैं। घायल का नाम रणजीतसिंह है।

यह पता नही चल पाया कि एचई ३६ किस्म के ये हथगोले फौजी के निजी सामान के साथ क्यो कैसे रखे गए थे।

सेना के अधिकारियो ने विस्फोट की जाच के आदेश दिए हैं। सूत्रो के मुताबिक इस मामले मे तोडफोड से भी इन्कार नही किया जा सकता।

अमृतसर से मिली रिपोर्ट के अनुसार पुलिस को आज पिंडिया गाव के नजदीक एक खेत से उसी गाव के 'बी' श्रेणी के आतकवादी बलदेवसिंह का गोलियों से छिदा शव मिला। इस आतकवादी पर ५० हजार रुपए का इनाम था।

अमृतसर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मुहम्मद इजहार आलम ने बताया कि बलदेवसिंह की हत्या और आतकवादी गतिविधियो के २० से ज्यादा मामलो मे तलाश थी। वह खूखार आतकवादी बलवीरसिंह बिल्ला का सहयोगी था। बिल्ला पिछले साल सितम्बर में मुठभेड मे मारा गया था।

'गलती से बम फट जाने से सैनिक मरे'

नई दिल्ली ९ मई (यू-न्यू)। रक्षा मन्त्रालय के एक प्रवक्ता ने बताया कि पठानकोट मे एक बैरक मे बम फटने से सेना के तीन जवान मारे गए।

प्रवक्ता के अनुसार यह दो इच मोटर बम था जो गलती से फट गया। वारदात के मौके पर बैरक मे चार सैनिक बैठे हुए थे। इनमे से तीन मारे गए और एक घायल हो गया।

श्री आलम ने बताया कि बलदेवसिंह की मौत की वजह आतकवादी गुटो की आपसी दुश्मनी हो सकती है।

उधर आज सुबह करीब ११ बजे अमृतसर मे दो आतकवादियो ने एक व्यक्ति की गोली मार कर हत्या कर दी और एक को जख्मी कर दिया।

पुलिस सूत्रो के मुताबिक शहर के लक्ष्मणसर चौक की गली सेनीवाल मे आतकवादी पैदल ही आए। वे लक्ष्मणसर चौक के प्रधान रमेश कुमार को मारना चाहते थे। मगर उसके न मिलने पर उन्होंने एक गली मे गोली चला दी। इससे कस्तूरीलाल नामक व्यक्ति की मौत हो गई और एक और व्यक्ति जख्मी हो गया।

मोगा मे अखिल भारतीय सिख छात्र सघ के एक कार्यकर्ता बलवीरसिंह लुथर का मारुति कार मे बैठ चार अनजान लोगो ने कल अपहरण कर लिया। श्री लुथर अपने गाव से बाघपुराना जा रहे थे तभी उनका अपहरण कर लिया गया।

होशियारपुर के निकट खुकला मे छह व्यक्तियो ने मोहिन्दरसिंह, सरूपसिंह और दीवानचन्द के मकान मे कल रात धावा बोला। हमलावर इन घरो से एक दुनाली बन्दूक और १७ कारतूस लेकर फरार हो गए। होशियारपुर चण्डीगढ मार्ग पर हडोवाल गाव के नजदीक कुछ हथियारबन्द व्यक्तियो ने जोगिन्दरसिंह का स्कूटर छीन लिया। और एक और वारदात माडल टाउन इलाके मे हुई। इसमे दो हथियारबन्द व्यक्तियो ने नरिन्दरसिंह के यहा से एक दुनाली बन्दूक लूट ली।

बस्ती दौलत खा इलाके मे आज तडके कुछ शरारती तत्वो ने एक डाकघर म आग लगा दी। इस अग्निकाड मे डाकघर का फर्नीचर और रिकार्ड जलकर स्वाहा हो गया।

जलधर से मिली एक रिपोर्ट के अनुसार बगा मे तीन आतकवादियो ने आदित्यानन्द नामक पुजारी को कल रात गोली मार कर घायल कर दिया। हमलावर मन्दिर की दीवार फाद कर भीतर आए और पुजारी पर गोलिया दाग दी।

इसी बीच नगर मे एक समुदाय के लोगों ने दुकानें बन्द कर दी और वे मन्दिर के अहाते मे जमा होगए। इस वारदात से शहर में तनाव बढ गया है।

इमाम के हुक्म से उजड़े खोमचे

नई दिल्ली, ९ मई। पजाब की तरह जोर जबर्दस्ती से धर्म की राह पर चलाने की शुरुआत दिल्ली में भी हो चुकी है। कल जामा मस्जिद के शाही इमाम सैय्यद अब्दुल्ला बुखारी के आदेश से खाने पीने का सामान बेचने वाली दर्जनो दूकानो का सामान सडको पर फेंक दिया गया। दोपहर दो से तीन बजे के बीच यह सब मटिया महल, चितली कबर, मीना बाजार और उर्दू बाजार मे हुआ। इस हगामे को देख दर्जनो दूकानदारो ने अपना सामान समेट लिया, वरना लपेटे मे आने वालो की सख्या सौ से ऊपर होती।

डर के कारण किसी ने पुलिस से शिकायत करने की जुर्रत नही की। "हमने भी आप ही की तरह सुना। कोई रिपोर्ट करने नही आया। किसी ने कन्ट्रोल रूम को फोन किया था। एस आई लाखाड और एक इमरजेंसी अफसर तफ्तीश के लिए गये थे। पर कोई सामने नही आया। यहा तो इमाम साहब का हुक्म चलता है। किसी को कोई शिकायत हो तो हमारे पास आने की जगह वह उन्ही के पास जाता है। कभी हम वारदात की जगह पहुंच भी जाए तो वे आपसी मामला कहकर खुद को पुलिस से दूर रखते हैं। आस-पास के तीन थानो के इलाको मे तो उन्ही की चलती है। जामा मस्जिद थाने के एस एच ओ अमर सिंह मल्लर ने बताया।

जिन दूकानदारो का सामान फेका गया था, उनका कसूर यही था कि उन्होने इमाम के मना करने के बावजूद रमजान के महीने मे खाने पीने का सामान बेचने की जुर्रत की थी। ये सभी दूकानदार मुसलमान हैं।

जामा मस्जिद के दक्षिणी गेट के ठीक सामने बाए कोने पर 'कल्लन स्वीट्स' के मालिक अजीजुर्रहमान ने बताया कि २९ अप्रैल को इमाम साहब ने जामा मस्जिद मे दूकानदारो की बैठक बुलाई थी। इस बैठक मे करीब ५० लोग थे। इनमे से ज्यादातर रेहडी खोमचे वाले थे। यहा इमाम साहब ने कहा कि रमजान के महीने मे रोजे के वक्त खाने पीने की चीज बेचना अल्लाह के साथ बगावत है। इसलिए शाम को ही दूकानें खोलें।

सूत्रो के अनुसार पिछले जुम्मे की तकरीर मे भी इमाम ने इस बारे मे कहा था। इसका असर कुछ दूकानदारो पर ही पडा। ज्यादातर आम दिनो की तरह काम कर रहे थे। फिर पता नही कल जुम्मे की नमाज के दौरान क्या हुआ। जोहर की नमाज खत्म होते ही जामा मस्जिद से उतरे लोगों के हुजूम ने मुसलमानो की दूकानो से सामान फेंकना शुरू कर दिया। लपेटे मे आए लोगो मे से काफी रोज कमाने खाने वाले रेहडी खोमचे वाले थे। जवाहर और करीम जैसे बडे होटल भी इस उत्पात के शिकार हुए।

जामा मस्जिद के मुख्य द्वार के सीढियो के नीचे आसिफ टी स्टाल के मालिक मो० सय्यद ने बताया इमाम साहब ने पहले ही मना कर दिया था कि हमारे मना करने पर भी जो दूकान खोलेंगे उनकी जिम्मेदारी हमारे ऊपर नही होगी। लोगो ने कल सामान फेका जरूर पर लूटा नही। मैंने तो इसकी भनक लगते ही सामान समेट लिया था।

इस वारदात के बाद कल शाम साढे छह बजे के आस पास जामामस्जिद के भीतर इमाम के दफ्तर मे इस बाबत मीटिंग हुई। आज सुबह मटिया महल के गरीब होटल मे करीब एक दजन दूकानदारो की बैठक हुई, इसमे लोगो की एक राय नही थी। किसी ने कहा कि दूकानें शाम को पाच बजे इमाम साहब के हुक्म के मुताबिक ही खोली जाए। किसी ने दो बजे दूकानें चादर से ढककर खोलने का प्रस्ताव किया। बहरहाल कुछ लोग इमाम साहब के पास पहुचे। इमाम साहब ने मुस्लिम लीग के नेता सैयद शईर अहमद से बात करने को कहा। शईर अहमद ने रमजान का एहतराम करने को कहा और दो बजे के बाद दुकान खोलने पर शाम पाच बजे तक चादर ढके रखने का हुक्म दिया।

जानकार सूत्रो के अनुसार दुकानो से सामान फेंकने की अगुवाई हवेली आजमखान के दोनो चौक और सुईवालान मे स्मैक का कारोबार करने वाले बदमाशों ने की। इस वारदात के बावजूद सब कुछ इमाम के हुक्म के मुताबिक अब भी नहीं हो रहा है। लोग तय समय के पहले ही सामान बेचना शुरू कर देते हैं। इसे देखते हुए अगर आने वाले दिनो में बवाल हो तो ताज्जुब नही। वैसे ज्यादातर लोगो का मानना है कि इमाम साहब से उलझना ठीक नहीं। कुछ दूकानदार इमाम साहब के हुक्म को सही मानते हैं।

सम्पादकीय

अन्धविश्वास का भण्डा फोड़ा जाए

भारत में कितना घोर अन्धकार आध्यात्मिक शक्तियों के नाम पर फैलाया जा रहा है इसका एक ज्वलन्त उदाहरण 'पंजाब केसरी' के यशस्वी सम्पादक श्री विजयकुमार जी के शब्दों में पढ़ें।

—सम्पादक

पिछले कुछ दिनों से चण्डीगढ़ का एक ऐसा मामला अखबारों में चर्चा का विषय बना हुआ है जिससे रहस्य, रोमांच और अन्धविश्वासों की शृंखला में एक और दुःखदायी कड़ी जुड़ गई है। हिमाचल के सहायक वन संरक्षक सी० आर० दत्ता की देह उनकी पत्नी श्रीमती कमलेश दत्ता ने चण्डीगढ़ के सेक्टर ८ स्थित अपने मुंह बोले भाई बलदेवसिंह के मकान में पिछले २२ महीने से अपने आध्यात्मिक गुरु श्री ए०सी० कौशल के कहने पर इस आशा से सम्भाल कर रखी हुई है कि उनके गुरु उसमें फिर से जीवन का संचार कर देंगे।

श्रीमती कमलेश दत्ता का कहना इस सम्बन्ध में यह है कि जून १९८५ में उनके पति की गर्दन पर एक फोड़ा हुआ और २७ जून से उन्होंने ४ दिन का आकस्मिक अवकाश लिया मगर उसके बाद से वह सामान्य नहीं हो पाए और तभी से आध्यात्मिक 'कोमा' (अचेतावस्था) में है।

श्रीमती दत्ता ६ महीने पहले तक अपने पति की छुट्टी भेजती रही कि वह 'कोमा' में हैं और कार्यालय में उपस्थित नहीं हो सकते मगर जब हिमाचल सरकार ने यह चेतावनी दी कि यदि वह मैडिकल बोर्ड के सामने पेश न हुए तो उन्हें बर्खास्त कर दिया जायेगा तो श्रीमती दत्ता ने उनकी छुट्टी भेजनी भी बन्द कर दी।

श्रीमती दत्ता यह मानने को कतई तैयार नहीं हैं कि उनके पति की मृत्यु हो चुकी है बल्कि उनका कहना यह है कि वह अपने पति की नब्ज को चलता हुआ महसूस करती है, उनके दिल की धड़कन भी सामान्य के निकट है, उनके साथ वाले बिस्तर पर ही वह सोती हैं और एक विवाहिता की तरह शृंगार भी वह करती हैं।

पहले श्रीमती दत्ता ने यह दावा भी किया था कि वह अपने पति को दूध पिलाती रही हैं मगर बाद में जब उनके गुरु श्री कौशल ने यह कहा कि श्री दत्ता २२ महीने से अचेत पड़े हैं, उन्होने एक बूंद पानी या किसी तरल पदार्थ का सेवन तक नहीं किया है और न ही पेशाब इत्यादि की एक बूंद की है तो श्रीमती दत्ता ने भी अपना यह बयान बदल दिया कि वह अपने पति को दूध पिलाती रही है।

श्रीमती दत्ता के गुरु का कहना है कि यह परमात्मा की शक्ति का कमाल है कि श्री दत्ता जीवित हैं और उनकी हालत दिन-प्रतिदिन सुधर रही है जब कि श्री दत्ता की देह को देखने वाले लोगों और पत्रकारों का कहना है कि उनके चेहरे की सिर्फ चमड़ी ही दिखाई देती है, सिर पर थोड़े से बाल है मुंह खुला है। उनका जो चित्र अखबारों में छपा है उसे देखकर भी कोई यह नहीं कह सकता कि वह किसी जीवित व्यक्ति का चित्र है—एक कंकाल से अधिक कुछ भी मालूम नहीं होता।

यहां उल्लेखनीय बात यह है कि श्री दत्ता की मां भी अपनी पुत्र वधू की तरह ही यह विश्वास करती है कि उनका बेटा गुरु की कृपा से दोबारा जी उठेगा मगर श्री दत्ता के भाई श्री अनिल दत्ता का कहना है कि जिस व्यक्ति को गुरु कहा जा रहा है वह केवल एक 'फ्रॉड' है—अगर इतना ही चमत्कारी वह होता तो सबसे पहले अपने बेटे की उस आंख को ठीक करके दिखाता जो एक खिलौना बंदूक के चलने से फूट गई थी। श्री अनिल दत्ता और श्रीमती दत्ता के गुरु श्री कौशल में गत दिनों काफी तू-तू मैं-मैं हुई : श्री अनिल दत्ता का कहना है कि पहले श्री कौशल ने १५० लोगों के सामने यह कहा था कि १५ सितम्बर १९८६ को भोपाल गैस कांड के सभी पीड़ित और श्री दत्ता एक ही दिन ठीक हो जायेंगे और अब वह यह कह रहे हैं कि जिस दिन विश्व स्वास्थ्य संगठन के निदेशक उनके साथ एक कप चाय पीयेंगे उसी दिन श्री दत्ता ठीक हो जायेंगे। श्री अनिल दत्ता का यह भी कहना है कि उन्हें अपने भाई का शव देखने से यह कहकर रोका जा रहा है कि ऐसा करने से मामला गड़बड़ हो जाएगा।

यहां यह लिखना भी असंगत न होगा कि केवल दत्ता परिवार की दो महिलाएं ही इस अन्धविश्वास का शिकार नही हुई हैं कि श्री कौशल श्री दत्ता की देह में दोबारा से जीवन का संचार कर देंगे बल्कि और भी अनेक लोग श्री कौशल के 'मायाजाल' में फंसे हुए हैं। श्रीमती दत्ता के निःसन्तान धर्म भाई और मालिक मकान श्री बलदेवसिंह का कहना है कि उनकी पत्नी श्रीमती दलजीत कौर पिछले ६४ महीने से गर्भवती है और जिस दिन श्रीमती कमलेश दत्ता की तपस्या उनके गुरु पूरी करेंगे उसी दिन उनकी पत्नी भी बच्चे को जन्म देगी।

राष्ट्रपति जी द्वारा वैदिक विद्यालय का उद्घाटन

राष्ट्रपति अलवर जा रहे हैं

कन्या विद्यालय अलवर के प्रधान श्री छोटूसिंह जी ऐडवोकेट ने बताया कि १४ मई ८७ को राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी अलवर पधार रहे हैं जहां वे वैदिक विद्यालय भवन का उद्घाटन करेंगे। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी तथा राजस्थान के राज्यपाल श्री बसन्त दादा पाटिल भी पधार रहे हैं।

कन्या विद्यालय की छात्राओं द्वारा विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया है जिसमे राष्ट्रपति जी भाग लेंगे।

श्री कौशल का कहना इन दोनों मामलों में यह है कि इन मामलों के माध्यम से मैं लोगों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मेडिकल साइन्स ही सब कुछ नही, आध्यात्मिक शक्ति भी कोई चीज है। इन सभी मामलों का परिणाम विश्व स्वास्थ्य संगठन से जुड़ा हुआ है। जब तक इस संगठन के निदेशक आकर बातचीत नहीं करते यह मामले इसी तरह उलझे रहेंगे।

हिमाचल प्रदेश के अन्य व्यक्ति डाक्टर तरुण कपूर को भी बिगड़ी हुई हालत में श्री कौशल के निर्देश पर इसी मकान पर रखा गया जो बाद में मर गए। डाक्टर कपूर के ससुर श्री चरणजीत हांडा का कहना है कि उनकी बेटी की जिन्दगी अन्धविश्वास में फंसे उसके ससुराल वालों के कारण तबाह हो गई है और खेदजनक बात यह है कि अपने बेटे को खोने के बावजूद यह परिवार इस ढोंगी गुरु के चक्कर में फंसा हुआ है। श्री हांडा का कहना है कि श्री कौशल ने कैंसर से पीड़ित डाक्टर कपूर को यथा समय अस्पताल में दाखिल नही होने दिया और यही बात उनकी मृत्यु का कारण बनी।

नही कहा जा सकता है कि ऐसे कितने लोग हैं जिनकी जिंदगी इस प्रकार के अन्धविश्वास से तबाह हुई है। बहरहाल, अब यह मामला इस हद तक बढ़ गया है कि गत दिवस चंडीगढ़ सघर्ष

(शेष पृष्ठ ६ पर)

नई शिक्षा नीति और संस्कृत

डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार)

भारत सरकार ने जो नई शिक्षा नीति १९८६ घोषित की है, उसमे सस्कृत भाषा की घोर उपेक्षा की गई है, इस शिक्षा नीति के द्वारा भारत का कोई भी छात्र चाहने पर भी विश्वविद्यालय स्तर से पहले न सस्कृत विषय ले सकता है और न पढ़ सकता है। इस सास्कृतिक षडयन्त्र के द्वारा भारतवर्ष से सस्कृत भाषा को समूल नष्ट करने का कुचक्र चलाया गया है। करोड़ों भारतीय सस्कृत भाषा को अपनी और अपने देश की आत्मा समझते हैं। नई शिक्षा नीति मे आधुनिक भारतीय भाषा शब्द देकर सस्कृत को मृत भाषा के तुल्य मानकर उसे छोडा गया है। वस्तुत सस्कृत भाषा आज भी जीवित और सशक्त भाषा है। इसकी उपेक्षा करोडो भारतीयो के लिए आक्रोश का विषय है। भारत सरकार से अनुरोध है कि वह तथ्यो के आधार पर सस्कृत भाषा को 'आधुनिक भारतीय भाषाओ मे स्थान देकर इसके गौरव की रक्षा करें और पूरे भारत वर्ष मे व्याप्त जनाक्रोश को शान्त करे।

सस्कृत जीवित और जनसाधारण में बहुलता से प्रयुक्त भाषा है। इसके लिए निम्नलिखित तथ्य विचारार्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

(१) सस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। विश्व की क्लासिकल आदि भाषाओ के तुल्य केवल सग्राहलय की भाषा न होकर आज के युग में भी जनसाधारण मे व्यवहार मे आ रही है। किसी भी प्रादेशिक भाषा से अधिक इसके प्रयोग करने वाले हैं।

(२) सस्कृत प्रान्तीय भाषा न होकर समग्र भारत की शिष्टजन एव विद्वत जन की भाषा है। इसका प्रयोग आज भी सम्पूर्ण भारतवर्ष मे २। प्रतिशत से अधिक व्यक्तियो द्वारा हो रहा है।

(३) किसी भी प्रान्तीय भाषा की तुलना मे सस्कृत बोलने, लिखने और पढने वालो की सख्या बहुत अधिक है।

(४) भारत सरकार का सस्कृत विभाग आज भी सस्कृत की मौलिक रचनाओ के लिए अनुदान दे रहा है। ऐसी रचनाओ की सख्या सैकडो मे है।

(५) आज भी भारत वर्ष मे लगभग ७० ८० सस्कृत पत्र पत्रिकायें प्रकाशित हो रही हैं जिनमे अर्द्धवार्षिक, मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक एव दैनिक हैं। इनमे से ३५-पत्रिकाओ को भारत सरकार से अनुदान प्राप्त होता है।

(६) भारत वर्ष मे आज भी अनेक विश्वविद्यालयो मे सस्कृत भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जा रही हैं। इनमे विशेष उल्लेखनीय हैं—सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, कामेश्वरसिंह सस्कृत विश्वविद्यालय दरभगा पुरी सस्कृत विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय सस्कृत सस्थान, नई दिल्ली लालबहादुर शास्त्री सस्कृत विद्यापीठ दिल्ली।

(७) इन विश्वविद्यालयो से सम्बद्ध महाविद्यालयो (कालेजो) मे सस्कृत भाषा के माध्यम से ही शिक्षा दी जाती है। ऐसी सस्थाओ की सख्या आठ हजार से अधिक है और इनमे पढने वाले छात्रो की सख्या लाखो मे है।

(८) शासन द्वारा सचालित १५० आयुर्वेदिक कालेजो मे सस्कृत भाषा के माध्यम से ही शिक्षा दी जाती है। अधिकाश मेडिकल कालेजो मे भी प्राचीन चिकित्सा शास्त्र चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट आदि ग्रन्थो का अध्यापन कराया जाता है।

(९) वर्तमान समय में सस्कृत माध्यम से पढे हुए स्नातको (ग्रेजुएट्स) की सख्या लाखो मे है।

(१०) विज्ञान के क्षेत्र मे भी लीलावती गणित प्रणाली, सूर्य सिद्धात, आर्यभट्ट प्रणाली एव तकनीकी शिक्षा मे वराहमिहिर आदि के सस्कृत ग्रन्थो का उपयोग किया जा रहा है।

(११) भारत सरकार द्वारा आयोजित अखिल भारतीय स्तर के वेद सम्मेलन एव वाद-विवाद प्रतियोगिताए आदि सस्कृत भाषा के माध्यम से ही सचालित होती हैं। एतदर्थ पत्रव्यवहार भी सस्कृत मे ही किया जाता है।

(१२) विश्व के शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है कि कम्प्यूटर साइस के लिए सस्कृत भाषा सर्वोत्तम है।

(१३) कुछ उच्च न्यायालयो मे आज भी न्यायाधीश सस्कृत मे ही अपना निर्णय घोषित करते हैं।

(१४) जनगणना मे भी अनेक प्रान्तो मे विभिन्न समुदायों ने सस्कृत को अपनी द्वितीय मातृभाषा अकित कराया है। आज भी कुछ शिष्ट परिवारो मे सस्कृत का मातृ भाषा के रूप मे प्रयोग होता है।

(१५) ससद मे सस्कृत मे शपथ लेने वाले, बोलने, जानने और भाषण देने वालो की सख्या बहुत बडी है।

(१६) सस्कृत सभी प्रान्तो की सम्पर्क भाषा के रूप में मान्य है। सस्कृत सभी प्रादेशिक भाषाओ की उपजीव्य भाषा है।

(१७ पूरे भारतवर्ष मे हिन्दुओ के सारे सस्कार सस्कृत भाषा मे ही होते हैं।

(१८) यूरोप और अमेरिका मे भारतीयो के लिए सस्कृत ही सम्पर्क का श्रेष्ठ माध्यम है।

उपर्युक्त तथ्यो के आधार पर यह निर्विवाद सिद्ध है कि सस्कृत आधुनिक भारतीय भाषा है। अत नवीन शिक्षानीति मे सस्कृत को आधुनिक भारतीय भाषा मे स्थान दिया जाना अनिवार्य है। इसकी उपेक्षा अराष्ट्रीय-भावना और सांस्कृतिक दुरभिसन्धि होगी।

अत भारतवर्ष का समस्त बुद्धिजीवी वर्ग भारत सरकार से अनुरोध करता है कि भारत सरकार नई शिक्षा नीति में सस्कृत को आधुनिक भारतीय भाषाओं में अवश्य स्थान दे। सस्कृत की उपेक्षा न केवल राष्ट्रद्रोह होगा अपितु आत्मघाती भी सिद्ध होगा। अत अविलम्ब सस्कृत को नई शिक्षा नीति में आधुनिक भारतीय भाषा घोषित किया जाय।

जब महात्मा गांधी कम्बल ओढ़कर गुरुकुल कांगड़ी पहुंचे

यजुर्वेद भाष्यकार श्री प० जयदेव विद्यालकार मीमासा तीर्थ, ने अपने गुरुदेव अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के सम्बन्ध मे अपनी पुस्तक "स्वामी श्रद्धानन्द एक विलक्षण व्यक्तित्व" के पृष्ठ १२० पर लिखा है, वह अविकल रूप मे प्रस्तुत है—(सम्पादक)

मैं (श्री जयदेव जी) १३ वीं कक्षा (१९१३ ई०) मे पढ़ता था सर्दियो के दिन थे कदाचित जनवरी का महीना था। स्वामी श्रद्धानन्द (तात्कालिक महात्मा मुशीराम) अपने खटुवा वाले गगा तट पर बने बगले मे रहते थे। हमारी बैरक ६ छात्रो की थी। उसके ऊपर टीन की छत, नीचे पक्की ईंटो का फर्श था और बगले के आगे पूर्व की ओर बनी थी। प्रात लगभग ७॥ बजे होगे। मैंने एक आवाज धीमी सी सुनी 'कोई है'। मैं फौरन अपने कक्ष से बाहर आया। देखा बगले को जाने वाली कच्ची सडक पर एक पतला सिकुडा आदमी काला कम्बल ओढे नगे पैर, सिर नगा बडी उत्सुक जिज्ञासा लिए खडा है। मैं पास आया, नमस्ते की और पूछा—"महाशय जी आप किसको पूछते हैं। उत्तर मिला—"श्री मुन्शीराज जी को। उनका बगला कहा हैं।

मैं जानता नही था कि कम्बल मे लिपटा यह पतला सिकुडा आदमी कौन है, बे मौके, बे-सूचना यह कौन हमारे आचार्य प्रवर को पूछ रहा है? कुछ देर सोचा। परन्तु मैंने सब विकल्प छोडकर उनसे कहा—आप मेरे साथ चलिए। मैं आगे, वे कम्बल वाले महाशय मेरे पीछे पीछे सीधा बगले मे पहुचा उनसे कहा—'ये महाशय आपको पूछते हैं। यह कहकर मैं तो चला आया। बाद मे पता चला कि ये महाशय महात्मा गाधी थे। हरिद्वार से सीधे चले आ रहे थे। मार्ग पूछते पूछते बगले पर आ गए उनके पास न बिस्तर न झोला बस तन पर एक कम्बल गले मे कुर्ता, एक आकट सादी सी, नीचे धोती और कुछ नही। यह बात उस समय खुली जब उनके स्वागत मे सभा हुई उनका परिचय कराया गया। महात्मा गाधी उस समय दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह के बाद भारत आए थे।

यह मेरे वैयक्तिक अनुभव की घटना है। मैं कुछ मिनटो के लिए दोनो महात्माओ के मिलवाने मे एक स्वल्पकालिक सहयोगी बना था, इसलिए इसकी स्मृति अभी तक बनी है।

ईसाई बनने पर ही सुविधायें

गिरधारीलाल जोशी

सथाल परगना और भागलपुर में सथालों के बरसों से हो रहे धुआंधार धर्मान्तरण से उनकी सस्कृति और सभ्यता खतरे मे है। यहा के जितने भी ईसाई सेवा संस्थान हैं, हर एक में सेवा के नाम पर धर्म का घिनौना प्रचार है। ईसाई मिशनरी उन असहाय लोगों को चुनते हैं जो मजबूर हो सकते हों। अपना धर्म-परिवर्तन करने के लिए, चाहे वजह गरीबी हो या सवाल। शिशु-कल्याण, नर्सिंग होम्स, शिक्षण सस्थान आदि सब जगह सेवा करने वालो और सामाश्रितो का धर्म-परिवर्तन करना पहली शर्त होती है। जो इससे सहमत नहीं होते उन्हें शोषण और अत्याचार का सामना करना पड़ता है। और अगर धर्म-परिवर्तन कर लिया तो उन्हे परम्परागत रीति-संस्कार, नृत्य और गीत, बांसुरी की मधुर धुन सब छोड़ देना पड़ता है।

जो सथाल ईसाई धर्म स्वीकार करने पर अब तक सहमत नही हुए हैं, वे स्वतन्त्रता के चालीस साल बाद भी तमाम कल्याणकारी विकास कार्यों का लाभ नहीं पा रहे। आज भी गरीबी की रेखा से नीचे तो क्या गरीबी की गुफा के गहरे अंधेरे तले में पड़े हैं। राज्य सरकार न्यूनतम मजदूरी कानून के पालन का ढोल पीट रही है। पर ये भोले-भाले सथाल आज तक बधुआ जीवन बिताने को मजबूर हैं। न तो उन्हे राष्ट्रीय ग्रामीण नियोजन कार्यक्रम का लाभ मिल पा रहा है न ग्रामीण भूमिहीन नियोजन गारण्टी कार्यक्रम का। आज भी बसों और रेलगाड़ियो मे भेड़-बकरियों की तरह बुरी तरह यात्रा करते सथाल आदिवासियो को देखा जा सकता है। अपने घर से दूर अनजान इलाको की यात्रा करते रोजी-रोटी की तलाश मे। पजाब, हिमाचल, हरियाणा, असम, मेघालय, मीजोरम, अरुणाचल, लद्दाख के क्षेत्रो अथवा सीमा सड़क सगठन की परियोजनाओ में विषम परिस्थितियो में काम करते मिल जाए गे।

जनजातीय क्षेत्रो के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओ का लाभ मूल सथालो तक नही पहुच पाने की एक खास वजह है कि उनका हक ईसाई धर्मान्तरित लोग हड़प लेते हैं। जो तीन-तीन तरह से लाभान्वित हो रहे हैं। पहला लाभ तो वे जनजाति के नाम पर उठाते हैं, दूसरा धार्मिक अल्पसख्यक के नाम पर फायदा और तीसरा विदेशी मिशनरियो से। दूसरी ओर मूल सथाल आदिवासी ईसाई धर्म स्वीकार न करने के कारण न केवल सारी सुविधाओं से वंचित हैं मिशनरियों के गुस्से के शिकार भी हैं। शिक्षण सस्थानों एव आवासीय विद्यालयो मे ईसाई छात्र-छात्राए ही जगहे हड़प लेते हैं। मूल सथाल ताकते रह जाते हैं।

सथाल नेताओ का कहना है कि ईसाई धर्मान्तरित लोगो को आदिवासी मानना अनियमित और असवैधानिक है। इसके पीछे वे यह तर्क देते हैं कि अगर अनुसूचित जाति का कोई सदस्य दूसरा धर्म ग्रहण कर लेता है तो वह सारी सुविधाओं से वंचित कर दिया जाता है जो उसे अनुसूचित जाति के सदस्य के रूप में मिलतीं। पर सरकार अनुसूचित जनजाति के सदस्यो को धर्मान्तरण के बाद भी भी सुविधाए देकर पक्षपात करती है। यह निर्धारित एव घोषित नीति के विरुद्ध ही नही प्राकृतिक न्याय के विपरीत भी है। सथाल नेता चाहते हैं। ईसाई बन गए लोगों को आदिवासियो को मिलने वाली सुविधाए न दी जाए ताकि मूल आदिवासी उनका लाभ उठा सकें।

सथाल नेता अब जागरूक हो रहे हैं। पर वे पृथकतावादी, आतकवादी झारखण्ड आन्दोलन के विरुद्ध हैं। उनका कहना है कि पृथक झारखण्ड की की मांग विदेशी मिशनरियों की देश की भावनात्मक एकता और अखण्डता को विखण्डित करने और राष्ट्र को कमजोर बनाने की एक घिनौनी चाल है। वे कांग्रेस पार्टी के प्रादेशिक नेतृत्व पर दोषारोपण करते हैं जिसकी वजह से आज एक भी मूल सथाल न तो विधान-मण्डल में प्रतिनिधित्व पा सका है और न किसी उच्च पद पर किसी विभाग का अध्यक्ष या किसी जिले का कलक्टर बन पाया है। वे भारतीय जनता पार्टी को 'सिक्खों और महाजनों का दल बतला कर उससे भी दूर रहना चाहते हैं तो भारतीय साम्यवादी जैसे वामपन्थी दलों को भी आग में घी झोंकने और अपने निहित स्वार्थ की सिद्धि करने वाला बताते हैं। उनका कहना है कि सथाल मूल आदिवासी देश की एकता और अखण्डता के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने स्वतन्त्रता सग्राम में कधे से कधा मिलाकर अपना बलिदान दिया है। इसके बावजूद उन्हें आजादी का लाभ नही मिला है।

ईंटो के भट्ठों पर काम करने वाले करीब १,००० सथाल मजदूरो का सर्वे करने पर पता चला कि उनमें से एक भी ईसाई नही था और वे ईसाई मिशनरियो की प्रताड़ना व शोषण से बचने के लिए रोजी-रोटी की तलाश मे अपना घर-द्वार छोड़कर मीलो दूर आए हैं। रेल के डिब्बो और बसो में जानवरों की तरह भरे हुए सथाल मजदूरो मे से भी एक भी मजदूर ऐसा नही मिला जो ईसाई हो। सुदूर गावो में आज तक न तो सड़कें ही बन पाई हैं न पीने के पानी का कोई सुनिश्चित स्रोत ही है। वहा न मीलो तक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मिल पाएगा और न प्राथमिक विद्यालय ही। अगर कही भूले-भटके ऐसा केन्द्र होगा भी तो कागज पर अथवा स्कूल मिलेगा न तो भवन होगा और न वहा 'मास्साब' ही मिलेंगे। प्राथमिक केन्द्र का भवन कही मिल भी गया तो वहां न स्वास्थ्य सेवक या सेविका जाती हैं और न डाक्टर के दर्शन होते हैं। केन्द्र के लिए आवन्टित दवाए केन्द्र से पहुचने के पहले ही चोर बाजार मे बिक जाती हैं। प्रधानमन्त्री ने आदिवासियो के लिए सस्ते अनाज की योजना घोषित की पर क्या ये सथाल उससे लाभान्वित हो पाते हैं। उनके गांवो से दूर कहीं हाट-बजार मे पहुचती है राज्य खाद्य निगम की गाड़ी जिससे उन्हें गेहूं लेने को कहा जाता है। दूर पचायत की जनवितरण प्रणाली की दुकान पर बतलाया जाता है कि गेहूं मिलेगा। पर यह गेहूं ही खाकर उनका पेट भर सकेगा। इसके पिसवाने के लिए आटा-चक्की तो मीलो दूर होगी। अगर गेहूं के बजाय उन्हें चावल मिलता तो लाभ भी होता। नतीजन, वे गेहूं लेते ही नही, पर कागज उन्हे नाम के आगे बोगस अंगूठे लगा सारा गेहूं चोरबाजार मे खाद्यनिगम के गोदाम से चला जाता है। अभी हाल मे दुमका नगर मे खाद्यनिगम के गोदाम मे चोरबाजार मे जा रहे खाद्यान्न के पकड़े जाने से इन बातो की पुष्टि भी हुई है। ग्रामीण विद्युतीकरण के नाम पर सरकार ने घोषणा की कि आदिवासियो को मुफ्त बिजली दी जाएगी पर या तो इनके गावो मे बिजली पहुची ही नही, अगर पहुची भी तो एक दिन बाद उनके या तो तार कट गए या ट्रांसफार्मर जल गया।

सथाल परगना मे परिवहन व्यवस्था का यह आलम है कि १९०६ मे भागलपुर से मदारहित होते हुए दुमका-देवघर-सिवढी रेल लाइन का सर्वे हुआ था। पर रेल लाइन आज भी एक सपना ही है। आज भी तमाम सथाल हैं जिन्होने रेल के इंजन का धुआ तो क्या मोटर या स्कूटर तक नहीं देखा है। दुमका से जोड़ने वाली सड़क आज तक नही बन पाई जबकि आजादी के चालीस सालो में इस पर निर्माण कार्य चल रहा है।

आज भी सथाल परगना और भागलपुर प्रमडल के आदिवासी क्षेत्रों मे लगने वाले हाट-बजारो में बाहर आपको मिल जाए गे बोरा बिछाकर बैठे महाजन जो आदिवासियो से उनकी वन-उपज औने-पौने दाम पर खरीद लेते हैं। आज भी सथाल ग्रामो मे घोड़े के साथ मिल जाए गे महाजन जो सथाल आदिवासियों की फसल से केवल अपना सूद फसल-दर पुश्तो तक, बरसो तक वसूलते रहते हैं। मूल ज्यों का त्यों कायम रहता है। हरिदास मरडी के बाबा ने महाजन से बीज के लिए दस किलो धान लिया था जिसका सूद उसने और उसके बेटे ने भराही और अब तक उसके पोते हरिदास को भरना पड रहा है मूल दस किलो ज्यों का त्यों कायम है।

निर्धनता, बीमारी, निरक्षरता, साधनो का अभाव ये सारी स्थितिया मूल सथाल आदिवासियो को सवेदनशील बना देती हैं शोषण का शिकार बनने के लिए चाहे यह शोषण दलालों द्वारा हो। महाजनो द्वारा हो या ईसाई मिशनरियो द्वारा हो। ईसाई बन गए आदिवासियों की सपन्नता देख उन्हे कभी-कभी अपनी पवित्रता छोड़ने को विवश होना पड़ता है। पर साथ ही छोड़ देने पड़ते हैं अपने रीति-रिवाज। सब कुछ फिर वैसे ही करना पड़ेगा जैसा मिशन के फादर कहेंगे। नाचना पड़ेगा उनके इशारों पर।

संस्कृत : एक जीवित भाषा

(प० श्याम जी कृष्ण वर्मा द्वारा पञ्चम अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्य-विद्या सम्मेलन के बर्लिन अधिवेशन मे पठित निबन्ध का साराश)

प्रेषक डा० भवानीलाल भारतीय

प्राय यह समझा जाता है कि सस्कृत एक मृत भाषा है। यूरोप तथा अन्य अनेक देशो के प्राच्य विद्या विद् सस्कृत को मृत ही मानते हैं। यहा तक ही नही, कुछ लोग तो इससे भी आगे जाकर यह भी कह देते हैं कि यह भाषा सामान्यतया आम आदमी द्वारा कभी प्रयोग में नही लाई गई। यहा मैं प्रारम्भ मे ही यह कह दू कि एक भारतवासी के लिये ऐसा कथन अत्यन्त आश्चर्योत्पादक तथा खेदजनक ही होगा जिसमे यह कहा जाय कि उसकी पवित्र भाषा कभी एक जीवित जागृत भाषा नही थी, आज तो वह जीवित न ही है, किन्तु विगत मे भी कभी नही रही।

मैं इस निबन्ध मे यह सिद्ध करने का प्रयत्न करूगा कि वह सस्कृत भाषा जिसे महर्षि पाणिनि ने अपने अष्टाध्यायी नामक ग्रन्थ में सुनिश्चित रूप प्रदान किया है, उनके युग में भी प्रयोग मे आने वाली भाषा थी। द्वितीयत मैं यह भी बताऊगा कि भारत के सभी भागो मे काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक विद्वानलोग पारस्परिक ।ार्तालाप तथा पत्र-व्यवहार मे आज भी इस भाषा का बहुतायत ने प्रयोग करते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि सस्कृत कभी बोली जाने वाली भाषा नही रही उन्हे यह बताना पडेगा कि जिस भाषा । प्रचुर मात्रा मे साहित्य है उस सस्कृत को भी ससार की उन ।चीन तथा अर्वाचीन भाषाओ के उस वर्ग मे क्यो न रक्खा जाय ो कि भिन्न-भिन्न युगो मे बोली जाती रही है। जब तक कि उप-'क्त कथन के विपरीत कोई प्रमाण नही मिलता, हमे सस्कृत को ो अन्य प्रायोगिक भाषाओ में ही स्थान देना होगा। लैटिन तथा ।क आज मृत भाषाए हैं किन्तु कोई भी व्यक्ति इस बात मे का नही करता कि वे किसी समय बोली जाने वाली भाषाए थी। पी तर्क का अनुसरण करते हुए यह समझना कठिन हो जाता है फिर सस्कृत को ही सन्देह का लाभ क्यो नही दिया जाता उसे सी समय सर्व साधारण के प्रयोग मे आने वाली भाषा क्यो नही ना जाता ?

कुछ लोग कहेगे कि भारत की पुरानी प्राकृत भाषाओ का रष्कृत रूप ही सस्कृत है परन्तु अनेक विद्वानो की धारणा है कि कृत तथा प्राकृत समकालीन हैं तथा उनका परस्पर भगिनीवत् बन्ध है। जैसा कि हम जानते हैं प्राचीन नाटको मे नायक सस्कृत गते हैं जब कि निम्न श्रेणी के लोग किसी प्रकार की प्राकृत का ।ग करते है। कुछ लोगो की यह धारणा है कि सस्कृत का वष्कार ब्राह्मणो ने इसीलिये किया था कि इस भाषा मे निहित । ज्ञान उन्ही के पास रहे। वे यह भी कहते हैं कि भारत का हित वर्ग सामान्य जनता को प्रवञ्चित करने के लिये ही सस्कृत प्रयोग धर्म कार्यों मे करता था। अपने कथन की पुष्टि मे वे यह कहते हैं कि पुरोहित वर्ग का मुख्य ध्येय तो जन सामान्य को न मे रखना ही था और उसी प्रयोजन की सिद्धि के लिये उन्होने ारण जनता को सस्कृत पढने से निरुत्साहित किया। यहा तक किसी विदेशी भाषा पढने पर तो उन्होने पूर्ण प्रतिबन्ध ही लगा जैसा कि सस्कृत के इस प्रसिद्ध श्लोक से ज्ञात होता है।

न वदेद्यावनी भाषा प्राणाकण्ठगतैरपि।
हस्तिनाताड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैनमदिरम्॥

ाणो पर विपत्ति आने पर भी हमे यावनी भाषा नही बोलनी ए तथा हाथी के द्वारा पीडित होने पर भी जैन मन्दिर के आश्रय लेना अनुचित है।

तिपय अन्य लोगो का कथन है कि सस्कृत मे व्याकरण क जो जटिलताए हैं, इसके व्याकरण मे जैसे अपवाद आदि मे समास आदि के जैसे जटिल नियम हैं तथा सधि के जैसे अत्यन्त व्यवस्थित किन्तु कृत्रिम नियम है, जो कि इसकी विकास गति को अवरुद्ध किये हुए हैं इन सबको देखते हुए यही जान पडता है कि सामान्य लोगों द्वारा शायद ही इसका कभी प्रयोग होता रहा हो।

जो लोग यह मानते है कि सस्कृत भाषा प्राकृतो की एक विकसित अवस्था है तथा प्राकृत एव सस्कृत एक दूसरे के निकट होने के कारण भगिनिवत् समकालीन है मेरे विचार से वे गलती पर हैं। ऐसे लोगो ने 'प्राकृत' शब्दो की व्युत्पत्ति को ही ठीक प्रकार से नही समझा। प्राकृत प्रकाश के लेखक वररुचि तथा प्रसिद्ध वैयाकरण एव कोश निर्माता हेमचन्द्र ने बताया है कि प्राकृत शब्द प्रकृति से बना है तथा यह तद्धित है जिसमे अण् प्रत्यय लगा है। अब यह भी जानना चाहिए कि 'प्रकृति' शब्द का अर्थ मूल या आदि स्रोत होता है तथा वररुचि के अनुसार सस्कृत ही वह प्रकृति (मूल) है जिससे अन्य सारी प्राकृत भाषाए निकली हैं। उसने अपने ग्रन्थ प्राकृत प्रकाश में पूर्णतया सिद्ध कर दिया है कि प्राकृत भाषाए अपनी 'प्रकृति' पर ही निर्भर होती है और उनकी वह प्रकृति निश्चय ही सस्कृत है। मैं दृढता पूर्वक कह सकता हू कि अष्टाध्यायी में एक भी ऐसा सूत्र नही है जिससे यह सिद्ध होता हो कि पाणिनि को अनेक प्राकृतो मे से एक का भी परिचय था। परन्तु यह बात पतञ्जलि के बारे मे नही कही जा सकती जो पाणिनि के कई शताब्दियो बाद हुए। भाष्यकार स्वय ही बतलाते हैं कि सस्कृत शब्दो के अनेक अपभ्रश रूप भी होते हैं। उदाहरण के रूप मे वे कहते हैं कि एक गो शब्द के ही गवि, गोनी, गोता आदि अपभ्रश रूप चल पडे है। पतञ्जलि अत्यन्त तत्परतापूर्वक सस्कृत व्याकरण का अध्ययन करने के लिये कहते हैं। इसी प्रसग मे वे यह भी बतलाते है कि व्याकरण का अध्ययन मनुष्य के लिये क्यो आवश्यक माना गया है। उनका कथन है कि हमे व्याकरण पढ़ना चाहिए अन्यथा हम म्लेच्छ' बन जायगे क्याकि जो व्यक्ति सस्कृत शब्दो का सही उच्चारण नही कर सकता उसी की 'म्लेच्छ' सज्ञा होती है। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य मे जिन 'अपशब्द' तथा 'अपभ्रश' आदि शब्दो का प्रयोग किया है वे अष्टाध्यायी मे प्रयुक्त नही हुए हैं। जो लोग यह मानते हैं कि पाणिनि भी सस्कृत का अपनी मातृभाषा के रूप मे प्रयोग नही करते थे उनके समक्ष एक अन्य कठिनाई उपस्थित होगी। जैसा कि हम देख चुके हैं, पाणिनि को किसी प्राकृत भाषा की जानकारी नही थी (अर्थात् पाणिनि युग मे किसी प्राकृत भाषा के होने का पता नही चलता) तब वह प्रश्न होता है कि पाणिनि स्वय कौन सी भाषा प्रयुक्त करते थे? इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर मिलना चाहिए। उनकी स्वरचित अष्टाध्यायी से ही यह प्रमाण मिलता है कि वे सस्कृत बोलते थे। उन्होने वैदिक तथा लौकिक दोनो सस्कृत भाषाओ के नियम दिये है। परन्तु अष्टाध्यायी मे अधिकाश मे प्रचलित (बोल चाल की सस्कृत) भाषा के नियम दिये गये हैं जिन्हे वे 'भाषा' कहते हैं। यह ध्यान देने की बात है कि पाणिनि जिस भाषा का व्याकरण लिख रहे है उसके लिये वे सस्कृत' शब्द का प्रयोग कही नही करते। वे इतने विनम्र हैं कि अपनी मातृभाषा के लिये उस 'सस्कृत' शब्द का प्रयोग नही करते जिसका अभिप्राय 'पूर्ण' तथा परिष्कृत से लिया जाता है।

(क्रमश)

धर्म-निरपेक्षता और एकता

—श्री विश्वनाथ, सीकर रोड, कुचामन सिटी

सूर्य पूरब से [illegible] पश्चिम में छिपता हुआ दिखाई देने के कारण सूर्य के पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले वैज्ञानिक [illegible] न [illegible] मिलेगी। [illegible] है। यद्यपि मानव में तथ्य जानने की नैसर्गिक शक्ति है तथापि [illegible] शक्ति का उपयोग साधारण व्यक्ति अपने चिन्तन और कर्म मे पूर्वाग्रही होने के कारण नहीं कर पाता। पूर्वाग्रहों के रूप में भावनाएं मानव-मन का एक भाग मात्र होती है, जबकि मानव-मन का पूर्ण रूप है, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार। विचार-विमर्श द्वारा भावनाओं और संकल्पों का शुद्धिकरण होने के पश्चात ही ये सर्वमान्य बन पाते हैं। शुद्ध, सात्विक भावनाएं हों, परिपक्व सन्तुलित विचार हों एवं संकल्पों मे दृढ़ता हो तो कर्मों मे दक्षता के साथ-२ मानवोचित सौन्दर्य भी आता है।

भारत का संविधान धर्म-निरपेक्षता को मान्यता देता है। उसके पृष्ठ मे विचार सर्व-धर्म-सम भाव कहिए, तटस्थता कहिए, अथवा कहिए धर्मों को न्यूनाधिक मान्यता देने के बन्धन से राज्य को मुक्त रखना है। धर्म शब्द के अर्थ किए जाने योग्य कर्म जो उन्नति के साधक हो।

मानव के लिए अधर्म अस्वाभाविक है क्योंकि वह उसमे लज्जा, भय, कुण्ठा आदि उत्पन्न करके आत्म हनन का जनक बनाता है। धर्म स्वाभाविक होता है। दूसरो को सुखी बनाने मे मानवता है, धार्मिकता है क्योंकि प्रदाता और पात्र दोनो उत्फुल्लित होते हैं, मानव के लिये अस्वाभाविक अत दुःखकारी हो उसे जब भी हितकारी माना जाने लगे तो फलस्वरूप त्रास ही मिलेगा। अधिकाधिक लोग 'ईंट का जवाब पत्थर' मानने लगे तो वैमनस्य, हिंसा बढ़ने लगे। मात्र बाह्य अलंकरण को स्वाभाविक माना तो शारीरिक सौष्ठव को भूल कर सूट-बूट और लिपस्टिक को मान्यता मिली। जीने दो को भुलाकर मात्र 'जियो' को मान्यता मिली तो धन का दुरुपयोग शस्त्रास्त्रो के जुटाने में होने लगा। पर निरा पशु ही तो मनुष्य है नही। यदि ईंट का जवाब पत्थर को सर्वांशत मान्यता मिली होती तो एक बार प्रारम्भ हुआ युद्ध कभी समाप्त ही न होता। बाह्य अलङ्करण को यदि सर्वांशत मान्यता मिली होती तो क्रीडाङ्गण और व्यायामशालाएं न बनाई जाती। जियो को सर्वांशत मान्यता मिली होती ही रैडक्रास द्वारा युद्ध भूमि में सेवा को मान्यता न मिलती।

अपनी इन विसंगतियो पर मानव को सोचने का अवकाश नही है क्या? सत्य यह है कि पूर्वाग्रहो के रहते उसे ये दिखाई नही देती। इसी लिए धर्म और मतमतान्तरों मे उसे भिन्नता नही दिखाई पड़ रही। पानी का धर्म शीतलता, आग का गर्मी और प्रकाश और मानव का धर्म प्रेम, शान्ति, करुणा अहिंसा आदि सत्कर्म हैं। 'आदमी नही जानवर है' ये शब्द तभी प्रयुक्त होते हैं जब मानवोचित मैत्री, करुणा, अहिंसा आदि को त्याग मानव द्वारा हिंसा, विद्वेष आदि अमानुषिक कर्म होने लगते हैं। मधुमय जीवन के लिए सभी स्वाभाविक धर्म अपरिहार्य हैं, क्या तो पानी की शीतलता, क्या अग्नि की गर्मी और प्रकाश एवं क्या मानव के सत्य अहिंसा आदि सत्कर्म। एक की भी अमान्यता हुई [illegible] दुःख। इस प्रकार सर्व-धर्म-समभाव में कुछ भी दोष नहीं।

झगड़े की जड़ धर्म को मत के रूप में देखने मे है।

समग्र चिन्तन का फल है धर्म और दृष्टिकोण विशेष जिसका आधार विज्ञान हो या न हो का फल है मत। समग्र चिन्तन यदि आधार हो तो मानव-मात्र को उसकी सब अच्छाइयो, बुराइयो सहित तत्वतः एक इकाई मानकर पारस्परिक सम्बन्ध ऐसे बनाने हाये कि विरोध होने पर भी वैमनस्य न हो। अहिंसक सत्याग्रह निश्चित ही सर्वोत्तम विरोध किया है पर यदि यह सफल न हो तो हिंसा ही धर्म है क्योंकि अत्याचार सहन तो आत्म हनन ही है। किन्तु [illegible] कि अत्याचारी की शारीरिक मृत्यु को अत्याचार का अन्त नहीं माना जा सकता क्योंकि वह नये व्यक्ति के रूप मे उभर सकता है। ऐसे में सहिष्णुता ही आवश्यक दिखने लगेगी जिसमें सत्याग्रह का स्थान निश्चित एवं सुरक्षित हो। ऐसी सहिष्णुता के आधार पर ही मानव जीवन मधुमय [illegible] है। [illegible] लोग मानवता को ताक पर रखकर सब प्रकार के अनुचित हथकण्डो द्वारा साधारण लोगो को भिन्न भिन्न प्रकार के झांसे देकर, असहिष्णुता का पाठ पढ़ा अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं। इकबाल ने जब कहा, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी' तो हमें उस 'कुछ बात' को समझने जानने की प्रेरणा दी। दो और दो का योग चार सभी को मानना पड़ेगा। हां, विचार एवं कर्म मे उतनी ही सुस्पष्टता होनी चाहिए जितनी स्पष्टता के कारण दो और दो का योग चार मान्यता प्राप्त करता है। मानवीय सम्पूर्ण चेतना की ओर न कि किसी दृष्टिकोण विशेष की ओर इकबाल ने इंगित किया था। यह सम्पूर्ण चेतना ही धर्म है। इसी चेतना के आधार पर सहिष्णुता, प्रेम, अहिंसा पर अवलम्बित समग्र रूप में सर्व सुख शान्ति कारक कर्म जिनमे प्राणोत्सर्ग मानवता की पराकाष्ठा और हत्या एवं आत्म हत्या पाप माने जाने लगे।

क्या कोई सिख भाई कहेंगे कि पहले नौ गुरु सिख नही थे क्योंकि उन्होने पंच ककार नहीं चलाये और क्या कोई भी यह कहेगा कि वह दसवें गुरु जिन्होंने पूजा शब्द के वास्तविक अर्थों को समझकर मा-भारती की अपने रक्त से पूजा कर 'पूजा' शब्द को धन्य बनाया और स्वयं को अमर बनाया, त्रिगुरूपा आद्या मातृ शक्ति के आर्य पुजारी नही थे? फिर भी सत्तालोलुपो का घिनोना खेल चल ही रहा है। तब तक चलता रहेगा जब तक व्यक्ति धर्म से अर्थात् सत्य से विमुख रहेगा।

धर्म के उक्त परिभाषित रूप को हम पचा नही पा रहे क्योंकि हम मत-मतान्तरो को धर्म की संज्ञा एवं व्यावहारिक मान्यता देते रहे हैं। हम आत्म निरीक्षण करें। यदि अब भी हम ठीक दिशा मे प्रयास नही करना चाहते और मत मतान्तरों के वितण्डावाद को ही धर्म मानने के हठपूर्ण आग्रह पर अड़े रहे तो वही गुल खिलते रहेंगे जो आज तक खिलते रहे हैं।

एकता के लिये निरन्तर प्रयत्न किए जाते दिखाई देते रहे परन्तु एकता दूर ही रही। सत्य को उजागर करें तो एकता अनुचरी के रूप मे स्वयं उपस्थित होगी। भूल हमारे प्रयासों मे है। सत्य को ढकने की चेष्टाओ से कुछ समय के लिये एकता का आभास भले ही मिले, सच्ची आन्तरिक एकता न आ पायेगी। सत्य जानने और पालने की उत्कट अभिलाषा ही एकता की जननी होगी। [illegible] कमी के कारण न्यायधीश ही कह रहे हैं कि न्यायिक ढांचा टूट सा रहा है। दूसरी ओर, उलझनें बढ़ती हुई दिखते भी तथाकथित धार्मिक, सामाजिक राजनीतिक नेता उन्हें सुलझाने के झांसे दिये ही जा रहे हैं।

कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता। उलझनों के कारण न ढूंढकर तथाकथित नेताओं के कोलाहल में साधारण जन भौंचक्का सा रह गया है। वह नहीं समझ पा रहा है कि धर्म एवं राजनीति मानव की उन्नति के साधन हैं न कि अवनति के।

बीरबल को चारपाई बुनते देख महाराज अकबर द्वारा प्रश्न किए जाने पर 'बीरबल यह क्या कर रहे हो?' बीरबल ने अन्धो की सूची मे सबसे ऊपर जहांपनाह का नाम रखा। यह जहांपनाह का पूर्वाग्रह था कि बीरबल कभी चारपाई बुनने नही बैठेगा। पूर्वाग्रह अन्धापन ही है। इस अन्धेपन के कारण हम कार्यों के कारण जानने की उपेक्षा कर सत्य को पाने मे असफल रहते हैं। 'बिन आपे चीन्हे मिटे न भ्रम की काई' कहा गुरु नानक ने। चीन्हा, पहिचाना, गुरु गोविन्द सिंह ने कि किस प्रकार आत्मा को अमर मानकर अत्याचार का सफल विरोध किया जा सकता था। आज उन्ही के नामलेवाओं मे से कुछ उनके प्रतिकूल कार्य करते नही लजाते। चीन्ह नही पा रहे, पहिचान नही पा रहे कि सत्य क्या है। कसौटी तो उनके पास भी है पहिचानने की। वातावरण ऐसा बनना चाहिए जिसमें वे सत्य पहचानने लगे और उसे अनदेखा करने की चाह ही उनमें उत्पन्न न हो। सत्य को उजागर करने के प्रयास इतने प्रबल हो कि उसे छिपाने के प्रयास सदैव विफल रहें। जो ऐसा करे वही नेता है।

मन्दिरों मस्जिदों, गुरुद्वारों, गिरजों में जाने वालो को कहते सुन लीजिए

(शेष पृष्ठ ८ पर)

अण्डा खाइए, और हृदय रोग बुलाइए

डा० योगेश कुमार अरोड़ा

१९८५ के नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले अमेरिका के हृदय रोग विशेषज्ञ डा० माईकल एस० ब्राउन तथा डा० जोसेफ एस० गोल्डस्टीन, जिनको हृदय रोग की खोज पर विश्व का सर्वोत्तम पुरस्कार मिला, जिसकी राशि २,२५,००० डालर है। नोबेल पुरस्कार के ८४ वर्षीय इतिहास मे यह राशि सबसे अधिक है। आप दोनों हृदय-रोग से बचने के लिए मांसाहार तथा अण्डे का सेवन न करने की सलाह देते हैं।

अमेरिका मे पचास प्रतिशत मौतें सिर्फ हृदय-रोग के कारण होती हैं। नोबेल पुरस्कार के संयोजकों ने बताया कि डा० माइकेल एस० ब्राउन तथा जासेफ एल० गोल्डस्टीन दोनो अमेरिकन डाक्टरों की आश्चर्यजनक खोज से अब इस रोग पर काबू पाया जा सकेगा। इनकी खोज के अनुसार हृदय रोग वंशानुगत तथा खानपान पर निर्भर करता है। इनके अनुसार यह रोग बच्चो को बचपन से शुरू हो जाता है पर इसका पता काफी देर बाद चलता है। अब तक वर्षों से चली आ रही यह धारणा कि बच्चों को अण्डा खाने से नुकसान नही होता, विपरीत निकली। भले ही वे ऊपर से हृष्ट पुष्ट दिखाई दें परन्तु अन्दर से हृदय रोग ग्रस्त हो जाते हैं। खोज के अनुसार प्रत्येक मानव के शरीर मे कोलस्ट्रोल नामक एक तत्व उत्पन्न होता है, यह भोजन द्वारा भी शरीर को प्राप्त होता है। यह तत्व वनस्पतियों में नहीं के बराबर होता है। पर मास, अण्डों तथा जानवरों में प्राप्त प्रचुर मात्रा में होता है। इस तत्व से शरीर में मेम्बरीन तथा हारमोन्स बनते हैं। यह तत्व शरीर के लिए आवश्यक भी है। लेकिन अगर यह कोलस्टेरोल रक्त वाहिनी में जमना शुरू हो जाता है तो रक्त प्रवाह में बाधा डालता है। यह धीरे धीरे जमते जमते इतना अधिक हो जाता है कि रक्त प्रवाह रुक जाता है और हृदय काम करना बन्द कर देता है, इसे 'हार्ट अटैक' कहते हैं। अगर मस्तिष्क मे रक्त न जा पाए तो उसे स्टोक कहते हैं। यही पदार्थ मूलाशय में पथरी का रूप धारण करता है।

नई खोज के अनुसार रक्त मे पाये जाने वाले पदार्थ लोडेंसिटि लिपोप्रोटीन या एल डी० एल० है जो कोलस्ट्रोल को रक्त मे अपने साथ प्रवाहित करता है। शरीर में जिगर तथा अन्य भागो के सेलो मे एक पदार्थ है जिसको रिस्पटर कहते हैं, वह एल. डी एल. तथा कोलस्टेरोल को रक्त मे से विलीन कर लेता है, जिसके परिणामस्वरूप रक्त-प्रवाह में कोई बाधा नहीं आती है। इन वैज्ञानिकों के अनुसार जो व्यक्ति मांसाहार तथा अण्डे खाते हैं उनके शरीर में रिस्पेटरों की संख्या मे कमी हो जाती है। इसकी कमी से रक्त के अन्दर कोलस्टेरोल की मात्रा अधिक हो जाती है। अधिक मात्रा होने से यह रक्त-वाहिनियों मे जमना शुरू हो जाता है तथा हृदय-रोग शुरू हो जाता है।

कोलस्टेरोल अण्डों में सबसे अधिक मात्रा में पाया जाता है जिसके परिणामस्वरूप चर्म रोग भी हो जाते हैं। अण्डे से कुछ लोगों को एलर्जी भी होती है। कुछ दिन दिन पूर्व इण्डियन काउंसिल आफ एग्रीकल्चर रिसर्च द्वारा किए गये सर्वेक्षण से पता लगा कि फल, सब्जियां अण्डे तथा मांस में डी० डी० टी० के अंश पाए गये। अण्डों में डी० डी० टी० का अंश अधिक मात्रा में होता है, क्योंकि पोल्ट्री फार्म में मुर्गियों को महामारी से बचाने के लिए डी० डी० टी० आदि दवाइयों का खूब धड़ल्ले से इस्तेमाल होता है। परिणामस्वरूप अण्डे खाने वाले लोगो के पेट मे इन दवाइयों के अंश आ जाते हैं। यहा तक कि स्त्रियों के दुग्ध मे डी० डी० टी० आदि के अंश पाए गये। इन दवाइयो के भयकर परिणाम हो सकते हैं। अमेरिका आदि देशों में डी० डी० टी० पर रोक लगी हुई है पर हमारे देश में इस पर खुली छूट है।

अब तक अण्डों को सुपाच्य समझा जाता था, क्योंकि यह प्रयोग जानवरों पर किए जाते थे। कुछ वैज्ञानिकों ने जब इनका प्रयोग मनुष्यों पर किया तब पाया गया कि अण्ड सुपाच्य नहीं होते हैं। वैसे भी अण्डे सुपाच्य नहीं होते हैं। वैसे भी अण्डे के छिलके पर लगभग १५००० सूक्ष्म छिद्र होते हैं जो कि सूक्ष्मदर्शी के द्वारा देखे जा सकते हैं। इनके द्वारा कई जीवाणु अण्डे में प्रवेश कर जाते हैं जो अण्डे को खराब कर देते हैं। आपने अण्डो के समूह से बदबू आती तो महसूस की होगी, वैसे भी अण्डे आठ डिग्री सैल्सियस के तापमान पर खराब होने शुरू हो जाते हैं। इनको रखने के लिए भारत मे इतना तापमान रखना कठिन बात है। आजकल विदेशो मे अण्डे आदि न खाने की राय दी जा रही है। ●

धर्म निरपेक्षता

(पृष्ठ ७ का शेष)

'मन नहीं लगता। ये सब भवन मूलत अचेतन मिट्टी, गारा, चूना, सीमेंट, लोहा, लकड़ी, पत्थर हैं और चेतन मानव के मन, बुद्धि, कर्म से विविध रूपो मे निर्मित हुए हैं। मानव मन इन सबसे ऊपर है, वह इनके तावे आ ही नहीं सकता। वैज्ञानिक आधार पर अपने आपको कम्युनिस्ट कहने वाले पञ्चाङ्ग-कारों की व्यवस्था का पालन कर रहे हैं यद्यपि ये पञ्चाङ्गकार तलवार युद्ध की व्यवस्था का ज न थे। भूगोल के ईसाई शिक्षक पूजागृह में पृथ्वी को गोल मानेंगे या नहीं ? आत्म प्रवञ्चना और आत्म विडम्बना सत्य की शरण में ही समाप्त हो सकते हैं। हमारा प्रयास इस ओर बढ़े। तभी ईश्वर हमें वह दृष्टि प्रदान करेंगे जिसमें हम अनेकता में एकता के दर्शन कर पावेंगे।

भारत पर इस्लामी साम्राज्य आने वाला है
जहादे इस्लामी एक नया आतंकवादी दल

आर्य समाज के नेताओं को धमकी भरे पत्र

दिल्ली ६ मई, आर्य समाज धर्म व राष्ट्र के हर मोर्चों पर देश रक्षा व अराष्ट्रीय तत्वो का विरोध करने में कमर कस कर खड़ा है, यह देखकर देश मे कुछ नए विघटनकारी तत्व सिर उठाकर आर्य समाज को भयभीत करने को आगे आ रहे हैं। ऐसी ही एक कथाकथित "जिहादे इस्लामी" नामक संस्था की ओर से "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेताओं को एक और धमकी भरा पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें लिखा है —

"भारत पर इस्लामी साम्राज्य आने वाला है। तुमने इस्लाम को नुकसान पहुँचाया है। एक एक का बदला लेंगे। हमारी तलवार दुधारी चमक उठी है। एक मुसल्मान एक हजार पर भारी पड़ेगा। तुम्हारे सब लीडर हमारी हिट लिस्ट में हैं। सिक्खों का बदला भी हमे लेना है।"

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध जी सरस्वती को पहले भी इस तरह के धमकी भरे पत्र सिख उग्रवादियो की ओर से कई बार मिल चुके हैं। सार्वदेशिक पत्र के सम्पादक को भी कुछ दिन पूर्व बड़ा धमकी भरा पत्र प्राप्त हुआ था।

श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के विचार में यह एक गम्भीर षडयन्त्रकारी योजना है जो हिन्दू जाति व भारत राष्ट्र के रक्षकों को भयभीत करने व उनके मनोबल को गिराने के लिए राष्ट्र द्रोही व विघटनकारी तत्वो की ओर से चलाई जा रही है। वे भारत मे अस्थिरता अराजकता का वातावरण बनाने मे जुटे हुए हैं।

इस धमकी भरे पत्र की फोटो प्रतिया दिल्ली पुलिस आयुक्त एव भारत सरकार को सूचनार्थ भिजवादी गई है। आर्य समाज तो बलिदानी संस्था है। उसके सेवक इन धमकियो से डरकर कभी कर्त्तव्य च्युत न ही हुए आज भी उनका मनोबल उच्चस्तर का है।

जिहादे इस्लामी का धमकी भरा पत्र

गोबर और मूत पीने वाली भारत पर इस्लामी साम्राज्य आने वाला है तुमने बहुत इस्लाम को नुकसान पहुँचाया है एक एक का बदला लेंगे हमारी तलवार दुधारा चमक उठी है एक मुस्समान एक हजार पर भारी पड़गा तुम्हारे सब लीडर हमारी हिट् लिस्ट मे हैं। सिखो का बदला भी अब हमे लेना है।

—जिहादे इस्लामी

श्री अमर स्वामी जी महाराज अस्वस्थ

यह सूचित करते हुए हार्दिक दुःख हो रहा है कि आर्य समाज के मूर्धन्य सन्यासी शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी सरस्वती गम्भीर रोग शैया पर अपने आश्रम "वेद मन्दिर विवेकानन्द नगर गाजियाबाद" मे पड़े हैं। डाक्टरों ने निदान करके उन्हे गले का कैंसर बताया है। उनका भोजन केवल तरल पदार्थ ही रह गए हैं। अन्नाहार अत्यन्त न्यून बन गया है। कृषकाय होने पर भी वे दिन रात नवनूतन साहित्य रचना मे लगे रहते हैं। हम परम-पिता परमात्मा से उनके स्वास्थ लाभ एव दीर्घायुष्य की कामना करते हैं।

—सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री
सार्वदेशिक सभा दिल्ली

सभा कर्मचारी का निधन

सार्वदेशिक सभा के पुस्तक बिक्री विभाग कर्मचारी श्री देवकीराम (निवासी बनवारीपुर जिला बुलन्दशहर) जो काफी समय से बीमार चल रहे थे उनका ३०-४-८७ को निधन हो गया। सार्वदेशिक की ओर से दिवगत आत्मा की शान्ति व शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना है।

—सम्पादक

अन्धविश्वास

(पृष्ठ ३ का शेष)

समिति ने श्री बलदेव सिंह के घर के बाहर जबरदस्त प्रदर्शन किया और प्रशासन तथा पुलिस से यह माग की कि शव को तुरन्त बाहर लाया जाए। मामले की जाच की जाए तथा कौशल और श्री बलदेवसिंह को गिरफ्तार करके सारे काण्ड का पर्दाफाश किया जाए। प्रदर्शनकारियो का कहना था कि यह एक आवासीय कालोनी है जिसमें इस प्रकार लाश नही रखी जा सकती।

श्री दत्ता के मामले में कुछ विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि —

- जिदा या मुर्दा आदमी की खबर लेने आए हिमाचल प्रदेश के पुलिस अधिकारी ने अपने सीनियर अफसरो को रिपोट दी है कि इस सारी स्थिति का सम्बन्ध किसी बड़े जुर्म से है।
- हिमाचल सरकार को सन्देह है कि श्रीदत्ता को सम्भवत हल्का जहर देकर मार दिया गया। सरकार ने यह भी सन्देह प्रकट किया है कि किसी औरत को अपने पति के फिर से जीवन पाने के लिए किसी और के घर मे रहकर इन्तजार करने की क्या जरूरत है। वह अपने घर मे रह कर ऐसा क्यो नही कर सकी ?
- ऐसी भी आशका व्यक्त की जा रही है कि दोषी व्यक्तिया को शव का निपटारा काफी मुश्किल लगा होगा इसलिए उन्होने उसे सुरक्षित रखने का यही तरीका निकाला और आने वालो से कहना शुरू कर दिया कि श्री दत्ता आध्यात्मिक बेहोशी मे हैं।
- हिमाचल सरकार ने कोशिश की कि प्रदेश के स्वास्थ्य निदेशक के माध्यम से श्री दत्ता का परीक्षण करवाया जाए परन्तु कोई रास्ता नही निकला क्योकि चण्डीगढ आने पर उन्हे 'बीमार' के कमरे मे जाने नही दिया गया।
- गत दिनो भी हिमाचल के जो पुलिस अधिकारी चण्डीगढ आए उन्हे भी श्री दत्ता से 'मिलने' की इजाजत नही दी गई परन्तु जब पुलिस अधिकारी ने यह जिद ही पकड ली कि वह अपनी ड्यूटी पूरी करके ही लौटेगा तो उसे बड़ी मुश्किल से मिलने' की इजाजत दी गई और बताया गया कि श्री दत्ता आध्यात्मिक बेहोशी मे हैं।
- हिमाचल के पुलिस अधिकारी ने पाया कि वहा केवल मानव ढाचा पड़ा है जिस पर एक पतली सी चमडी है।

हम समझते है कि आध्यात्मिकता जीवन देती है, जीवन लेती नही, मगर जो जानकारी इस काण्ड के बारे मे मिल रही है वह मनुष्य के जीवन से खिलवाड करने वाली और जीवन को लेने वाली है जिसे किसी भी स्थिति मे सहन नही किया जा सकता।

यह एक सन्तोषजनक बात है कि पजाब के राज्यपाल और चण्डीगढ के प्रशासक श्री सिद्धार्थ शकर रे ने इस काण्ड की रिपोर्ट प्रशासन से तुरन्त माग की है। हम समझते है कि श्री दत्ता की देह को तुरन्त बाहर निकाल कर उसका डाक्टरी परीक्षण कराया जाना चाहिए। आज जब कि यह ससार इक्कसवी शताब्दी मे जाने और अन्तरिक्ष मे बस्तिया बसाने की कोशिश कर रहा है, इस प्रकार के अन्धविश्वासो की बेडियो से भी मनुष्य को मुक्त कराया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

नोट—नवीन समाचार के अनुसार श्री दत्ता की मृत देह को अन्त्येष्टि कर दी गई है। तान्त्रिक कौशल श्रीमती दत्ता व उसके मुह बोले भाई बलदेवसिह को धारा ३०२ व १२० बी के अनुसार हत्या का आरोपी बनाया गया है।

—सम्पादक

आर्य जगत् के समाचार

आर्य समाज लन्दन की गतिविधियां

आर्य समाज लन्दन, ब्रिटिश राज्य में एक प्रमुख संस्था है। इसकी गतिविधिया एक महत्वपूर्ण स्थान निर्धारित करती है। श्री डा० यज्ञमित्र की पुरोहित पद पर नियुक्ति के उपरान्त इस आर्यसमाज के तत्वावधान मे अनेक कार्य क्रम आयोजित हुए।

श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज के मार्गदर्शन में भी इस समाज से, अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। श्री रमेश अरोड़ा, उपमुख्य आयुक्त भारत सरकार तथा अन्य विद्वानो के सारगर्भित भाषण हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा मिजिडाड के प्रधान श्री शिवप्रसाद ने यहां के कार्यक्रम की सराहना की।

आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष में इस आर्य समाज की ओर से गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया। जिसमें लगभग ५००० गायत्री-पाठ हुआ और उतनी ही आहुतियां प्रदान की गई। आर्य समाज के इस अनन्य प्रोग्राम में श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज के सत्प्रयत्नो से ७० यजमानों ने अपनी अमूल्य सेवायें अर्पित की। इनमे, श्रीमती सावित्री छाबड़ा, श्रीमती कैलाश भसीन, श्री उर्मिला चोपड़ा, श्रीमती उषा भसीन आदि महिलाओ एव श्री धर्मपाल भसीन, श्री प्रियव्रत चोपड़ा आदि पुरुषो ने अपना अमूल्य सहयोग दान किया। इस आयोजन का मुख्य भार श्री प्रो० भारद्वाज ने अपने पुष्ट कन्धो पर लिया, और बखूबी से निभाया। श्री विप्रबन्धु, श्री विनय कुमार, श्री गिरीश खोसला, श्री यज्ञमित्र, प्रो० भारद्वाज, ने ब्रह्मत्व का आसन ग्रहण किया। अन्त मे श्री भारद्वाज ने गायत्री के स्पष्ट उच्चारण का बोध करते हुए, गायत्री के महात्म्य का भी बोध कराया।

वेद सुधा—इस कार्यक्रम के अन्तर्गत काफी सुचारु रूप से वेद मन्त्रो की व्याख्या, श्री भारद्वाज, श्री विनय कुमार, श्री विप्रबन्धु, श्रीमती वेदवती, श्रीमती दयावती, श्री यज्ञमित्र प्रस्तुत करते रहे हैं। जब कि मुख्य वक्ता के रूप मे, श्री रमेश अरोड़ा, उपमुख्य आयुक्त, श्री शिवप्रसाद, श्री डा श्रुतिशील शर्मा, श्री वीरेन्द्र वर्मा, श्री गोवर्द्धन पटेल, श्री इन्द्रनाथ, अध्यक्ष पातञ्जल योग केन्द्र, लन्दन श्री यज्ञमित्र आदि यशस्वी विद्वान पधारते रहे हैं।

वेद पाठ मण्डल का कार्यक्रम श्रीमती सावित्री छाबड़ा जी के निर्देशन मे बहुत ही रोचक एव प्रेरक होता है श्रीमती स्वर्ण शर्मा, श्रीमती सन्तोष आसानन्द, श्रीमती सन्तोष वैद, श्रीमती ब्रह्म वेदी, आदि वेदपाठ मण्डल की महिलायें सुमधुर गान प्रस्तुत करती रही हैं।

इस समाज की उन्नति दिन प्रतिदिन दानी महानुभावो की कृपा से होती रही है। समय-समय पर कई दानी महानुभावों संरक्षक बन कर इस समाज की सेवा मे धन प्रदान करते रहे हैं।

यह समाज, लन्दन के बच्चो के लिये हिन्दी पाठशाला, नृत्यकला शिक्षणालय का भी कार्यभार देख रहा है। श्रीमती शेक्सपीयर भरतनाट्यम् की शिक्षा बच्चों को प्रदान करती हैं तथा २० बच्चों की उपस्थिति निरन्तर होती रही है।

इन सभी कार्यक्रमो की पृष्ठ भूमि में श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज का महत्वपूर्ण योगदान, एव श्री यज्ञमित्र का प्रेरक योगदान रहा है, जिसके लिये यह समाज इनका आभारी है।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज इस बार पुन प्रधान सर्वसम्मति से निर्वाचित किये गये। इस बार की अन्तरग सभा में श्रीमती प्रतिभा बहल मन्त्री, श्री प्रियव्रत चोपड़ा कोषाध्यक्ष, श्री धर्मपाल भसीन उपकोषाध्यक्ष, श्रीमती उषा भसीन, पुस्तकाध्यक्ष, आदि प्रमुख है। श्रीमती लाज चावला एव श्री जगदीश शर्मा उपप्रधान निर्वाचित हुए।

श्री भारद्वाज गत १३-१४ वर्षों से निरन्तर रूप एव सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित किये जाते रहे हैं। इस लन्दन के आर्य समाज की एक अपूर्व उपलब्धि है।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज चन्दैना का नौवा वार्षिक उत्सव १२, १३, १४ जून को निश्चित हुआ है। इसमे स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती व अन्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—मन्त्री आर्य समाज चन्दैना (सहारनपुर) उ०प्र०

आर्य समाज, अल्मोड़ा का नव निर्वाचन
(वर्ष २०४४ वि० १९८७ ई०)

१—श्री जगत् प्रकाश खुल्बे, प्रधान
२—श्री सुभाषचन्द्र आर्य, उपप्रधान
३—श्रीमती कुसुम अग्रवाल, उपप्रधान
४—डा० जयदत्त उप्रेती आचार्य, मन्त्री
५—श्री सोमप्रकाश मल्होत्रा, उपमन्त्री
६—श्री पूरनसिंह कोषाध्यक्ष तथा प्रबन्धक
७—श्री रामगोपालसिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष
८—श्री विक्रमसिंह, प्रचार मन्त्री
९—श्री शेरसिंह बिष्ट, लेखा-निरीक्षक

—आर्यसमाज वीरगाव टिटोटा जिला बुलन्दशहर श्री रणवीरसिंह राणा प्रधान, श्री कुशलपालसिंह मन्त्री, श्री डा० लोकेन्द्रसिंह कोषाध्यक्षचुने गये।

—आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर सहारनपुर श्री मक्खनलाल जी मायपाल प्रधान श्री महेन्द्र मुनि मन्त्री गुलशनराम सौम्य मुनि कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज एन० डी० ए० खड़क वासला श्री दीवानचन्द प्रधान श्री शान्तिप्रकाश मन्त्री श्री दियाराम कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ श्री अर्जुनदेव भाहना प्रधान श्री सत्यदेव सैनी श्री हरिराम गुप्ता कोषाध्यक्ष।

दत्तात्रेय बाल्ले का भव्य स्वागत

दयानन्द कालेज अजमेर के भू०पू० प्राचार्य दत्तात्रेय बाल्ले का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा ११ अप्रैल ८७ ई० को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान मे आयोजित नई दिल्ली के तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम के समारोह में गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री दत्तात्रेय बाल्ले का नई दिल्ली से मेल द्वारा दिनाक २४ ४ ८७ ई० को प्रात अजमेर पहुचने पर रेल्वे स्टेशन पर भव्य स्वागत किया गया।

एक रुपये मे शादी सम्पन्न

भोपाल । आदश विवाह मण्डल मध्यप्रदेश के प्रधान कार्यालय २३ चौकी तलया भोपाल के तत्वावधान मे एक रुपये मे शादी सम्पन्न हुई । आदश विवाह मण्डल मध्यप्रदेश ने अपनी पूव घोषणा के अनुसार विगत दिवस हरिजन सवण का विवाह मात्र एक रुपये मे सम्पन्न कराया अस्पृश्यता निवारणार्थ श्री बाबूलाल जाट व (हरिजन) एव कु० ग्याना (लोहार) का विवाह वैदिक पद्धति से प० हरिश्चन्द्र विद्यावाचस्पति ने सम्पन्न कराया वध पक्ष से मात्र एक रुपया गोदान स्वरूप खच हुआ तथा विवाह सस्कार का खर्च आदश विवाह मण्डल द्वारा वहन किया गया । विवाह के अवसर पर मण्डल के प्रधान श्री राजेन्द्रकुमार भटनागर उपप्रधान श्री शिवनारायण दशोरे उपमन्त्री हरीनाथ वर्मा ने वर वधू के सफल दाम्पत्य जीवन की कामना करते हुये आशीर्वाद दिया ।

—हरिश्चन्द्र विद्यावाचस्पति

शोक समाचार

रीवा ३० माच । स्थानीय आयसमाज के मन्त्री दुख के साथ सूचित करते हैं कि समाज के कमठ उपप्रधान श्री बलवन्तसिंह आय विद्यावाचस्पति का लम्बी बीमारी के कारण गत २७ मार्च ८७ को देहावसान हो गया । मृत्यु के समय आपकी अवस्था ८४ वष की थी तथा आपके पास पुत्र पुत्र बधुए पुत्रिया अन्य सम्बन्धी जन तथा समाज के अनेक सदस्य उपस्थित थे । प्रादेशिक आय प्रतिनिधि सभा म०प्र० व विदभ मे आप अनेक वर्षो तक उपप्रधान तथा आय गुरुकुल होशगाबाद की सचालन समिति की सदस्य रहे हैं ।

—मन्त्री आयसमाज रीवा

—महाराजपुर । आयसमाज के प्रधान श्री भागीरथ जी चौरसिया की दिनाक २१ ३ ८७ को जब वह प्रात छतरपुर मे अपने निवास से घूमने के लिये गये थे उस समय असामाजिक तत्वो द्वारा उनकी निमम हत्या दिन दहाड कर दी गई । श्री भागीरथ जी छतरपुर जिले के माने हुये व्यवसायी एव समाज सेवी तथा आय समाज के कमठ कायकर्त्ता थे । महाराजपुर मे उनके द्वारा अनेक सस्थाओ का निर्माण किया गया । छतरपुर नगर मे आयसमाज की स्थापना का श्रेय श्री भागीरथ जी को ही है उनके असामयिक निधन से आयसमाज व नगर को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना सम्भव नही है । परम पिता परमात्मा से उनकी दिवगत आत्मा को शान्ति एव परिवार को इस गहन दुख सहने के लिये ईश्वर क्षमता प्रदान करे इस हेतु प्राथना करते है ।

—मन्त्री आयसमाज महाराजपुर जिला छत्रपुर [म०प्र०]



भूल सुधार

ज्योतिष विवेक, लेखक श्री ब्रह्मचारी वेदव्रत स्नातककी महत्वपूण रचना की समालोचना १५ मार्च ८७ मे प्रकाशित हुई उसमे सुधार कर लें ।

प्रकाशक आर्ष गुरुकुल वडलूर का मारेडडी जिला निजामाबाद (आंध्र प्रदेश) मूल्य २१) सुन्दर जिल्द सहित ।

—सम्पादक

गुरुकुल दूल भूल (कानपुर) मे सामूहिक वानप्रस्थ सस्कार

कानपुर । गुरुकुल दूल भूल मे रामनवमी २०४४ विक्रमी को आचाय जयराम योगी के सयोजन मे सवश्री बाबूराम मिश्र (राममुनि) श्रीमती बिटान (विमला यति ब्रह्मसिंह (ब्रह्ममुनि) जलेश्वरसिंह भजनोपदेशक (जलेश्वर मनि) हनुमान (हनुमान मुनि) कृष्णकुमार (कृष्ण मुनि) एव रामकुमार रस्तोगी—आय समाज लालगज जनपद रायबरेली (कुमार मुनि) को स्वामी गुरुकुलानन्द कन्चाहारी द्वारा वानप्रस्थ की दीक्षा दी गई । उक्त अवसर पर ८८ वर्षीय वैद्य चन्द्रशेखर शुक्ल ने सन्यास की दीक्षा लेकर चन्द्रानन्द सरस्वती नाम ग्रहण किया । श्रीमती रानीदेवी (धमपत्नी प्रताप नारायण तिवारी) और श्रीमती मुनियादेवी (पुत्री ओकार द्विवेदी) ने गृहस्थाश्रम की शिक्षा दीक्षा ली ।

—लक्ष्मीचन्द्र मित्तल मन्त्री
आय समाज पिथौरागढ (उत्तर प्रदेश)

पुनर्विवाह सम्पन्न

आय समाज मस्टन रोड कानपुर मे दिनाक ६ ४ ८७ को विधवा कमला देवी आत्मजा श्री बद्रीविशाल जी वाजपेयी का पुनर्विवाह विधुर श्री बी यल तिवारी आत्मज स्व० श्रीराम अभिलाष तिवारी के साथ पुरोहित श्री सूय प्रकाश जी द्वारा प्रो० लक्ष्मीधर जी, श्री शम्भू राय उपमन्त्री आय समाज मेस्टन रोड कानपुर तथा श्री दिनेश्वर आय मन्त्री आय समाज समस्तीपुर बिहार की उपस्थिति मे सम्पन्न कराया गया ।

—शम्भूराय उपमन्त्री
आय समाज मेस्ट रोड कानपुर

उत्सव

आय समाज तिलहर का वार्षिक उत्सव आर्य समाज दिउनी मे ९ मई शनिवार मे ११ मई सोमवार तक सम्पन्न होने जा रहा है ।

—युद्धवीरसिंह आय

रजि० न० डो० (सी०) १७४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१७-५-१९८७) [illegible]
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. 1193 Post in D.P.S.O. on 14-5-1987

क्या द्रौपदी के पांच पति थे ?

ले० श्री अमर स्वामी सरस्वती

इतिहास की इस महान गुत्थी को महान इतिहास शोधक श्री स्वामी जी ने इतनी सुन्दरता से हल किया है कि पाठक आश्चर्य में आ जाता है। उक्त पुस्तक निम्न पतो पर उपलब्ध है। —मूल्य १०)

(१) सार्वदेशिक पुस्तकालय, दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली

(२) गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क दिल्ली

(३) वेद मन्दिर विवेकानन्द नगर गाजियाबाद

आर्य स[illegible] मई से
होना था [illegible] या
निश्चित

[stamp: ११०—पुस्तकाध्यक्ष पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार जि० सहारनपुर (उ० प्र०)]

—जिला आर्य उपप्र[illegible] [illegible]मकृष्ण, मन्त्री श्री राधेश्याम ऐडवोकेट को[illegible] [illegible]चुने गए।

—आर्य समाज ब्रह्मपुरी (घोण्डा) दिल्ला, [illegible]दनसिंह जी, मन्त्री श्री श्रीकिशन आर्य चुने गए।

—आर्यसमाज छोटी सादड़ी राजस्थान, प्रधान डा वृद्धिशंकर उपाध्याय, मन्त्री श्री विनयचन्द पचौरी चुने गए।

—आर्य समाज शकरपुर दिल्ली, प्रधान श्री नारायणदास [illegible], मन्त्री श्री पतराम त्यागी चुने गए।

—आर्य समाज सीसामऊ कानपुर, प्रधान श्री लक्ष्मण कुमार जी शास्त्री, मन्त्री श्री बसन्तराव [illegible] चुने गए।

—आर्य स्त्रीसमाज सीसामऊ कानपुर प्रधाना श्रीमती शक्तिकान्त शास्त्री, मन्त्रिणी श्रीमती स्वर्णा कुमारी अरोड़ा चुने गए।

— आर्य समाज माडल टाउन अम्बाला, प्रधान डा० एस०एन० मल्होत्रा, मन्त्री श्री नन्दलाल बतरा चुने गए।

—आर्य समाज रुड़की, प्रधान श्री हर्षवर्धन, मन्त्री श्री वेदराज आर्य चुने गए।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

राष्ट्र देवो भव

राष्ट्र का देवता माना

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९० ०] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष ९० ७७१

वर्ष २ अंक] ५ ठ म २०४४ रवबर मई १९ ७ वार्षिक मूल्य १५ एक प्रति ६० पैसे

महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाएं : पुस्तक का विमोचन

महर्षि दयानन्द राष्ट्र के महान् उद्धारक : राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

१४ मई १९८७ अलवर म वदिक क या विद्यालय क उदघाटन समारोह के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जलसिह जी ने दीप जलाकर वदिक क या विद्यालय का उद्घाटन किया। इमसे पूव अलवर के प्रमुख आय समाजी कायकर्त्ता स्व० हेतराम के नाम पर निर्मित यज्ञवेदी जहा केवल महिलाए और बालिकाए यज्ञ कर रही थी राष्टपति और राजस्थान के राज्यपाल श्री पाटिल ने आहुतिया दी। उसके पश्चात् महामहिम मुख्य मच पर पधारे।

आय प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट ने माननीय राष्टपति ज्ञानी जलसिंह और सावदेशिक

(शेष पृष्ठ ११ पर)



राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह व राजस्थान के गवनर श्री बस त दादा पाटिल क यामो द्वारा किए जा रहे यज्ञ मे आहुतिया दे रहे हैं। उनके साथ बैठ हैं सावदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती व श्री छोटूसिंह प्रधान राजस्थान सभा।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

भारतीय संस्कृति

—प्रो० कृष्ण लाल मल्ला

भारतीय सस्कृति का स्रोत सस्कृत है। इस सस्कृति को जीवित रखने के लिए सस्कृत का पठन पाठन बहुत जरूरी है। हमारे प्राचीन ग्रन्थ सस्कृत मे है इसलिए ठीक ही कहा है—'सस्कृत बिना सस्कृति पगु' सस्कृत के बिना हमारी सस्कृति लगडी है।

सस्कृति का सम्बन्ध सस्कारो से है। अच्छे सस्कार ही श्रेष्ठ समाज की रचना मे सहायक होते हैं। सस्कृति उन ऋषियो और मुनियो की देन है जिन्होने कडी तपस्या और चिन्तन करके उन परम्पराओ की स्थापना की जिसमे हम लौकिक और और आध्यात्मिक उन्नति कर सके।

भारतीय सस्कृति का आधार धर्म है जो हमारे जीवन को सत्य, शिव और सुन्दर बनाता है। मनुष्य सारी आयु सत्य, और सुन्दर की खोज मे लगा रहता है। उसे सफलता चाहे एक जन्म मे भले ही न मिले परन्तु उसका लक्ष्य परमतत्व की अनुभूति है।

विचार कर देखे तो हम इस निष्कर्ष पर पहुचेंगे कि जो सत्य है, वही शिव है और शिव ही सुन्दर है। जो सत्य के मार्ग पर चलता है उसी को शिव के दर्शन होते हैं और शिव की कृपा से ही जिन्दगी दिव्य बनती हैं।

शाश्वत धर्म और सत्य मे कोई अन्तर नही। सत्य आचार बिचार ही आत्मसाक्षात्कार मे सहायक होते हैं। हम धर्म मार्ग पर चल कर ही अपना उत्थान कर सकते हैं।

इतिहास मे कई समय ऐसे आये जब हमारा पतन हुआ और साथ ही सस्कृति का ह्रास भो परन्तु ऐसे काल मे भी कई सत महात्मा तथा बीरपुरुष हमारी सस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्नशील रहे। वैदिक सस्कृति लाखो वर्षो से चली आ रही है। विकट परिस्थितियो मे भी यह जीवित रही क्योकि इसका आधार वेद तथा उपनिषद हैं। परम सत्य एक है लेकिन महापुरुषो ने अपने अपने ढग से उसकी व्याख्या की है—'एक सत् विप्रा बहुधा वदन्ति।'

भारतीयता की भावना ही भारतीय सस्कृति है। यह भावना जातीय, भाषाई और धार्मिक भेदो के बावजूद हमे परस्पर बाध रखती है। आज के वक्त मे इसी भावना को और दृढ करने की जरूरत है जबकि विघटनकारी शक्तिया जगह जगह सक्रिय है।

कुछ सज्जनो का मत है कि विज्ञान के इस युग मे सस्कृति का कोई विशेष महत्व नही। ऐसी बात नही, विज्ञान के सभी अनुसन्धान भी सत्य को जानने के लिए किए जाते हैं ताकि हमारा कल्याण हो और हम अपनी दुनिया को खूबसूरत बना सके।

वेद के आदेशानुसार भगवान सत्य, शिव और सुन्दर है। सासारिक पदार्थो म हमे जो सत्य, शिव और सुन्दर तत्व का आभास थोडे समय के लिए होना है वह परमात्मा की सत्ता के कारण ही है।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी सस्कृति को जानने के लिए सस्कृत पढें और दूसरो को भी ऐसा करने की प्रेरणा करे। हमारी मान्यताऐ भिन्न २ हो सकती है परन्तु सस्कृति एक है। भारत मे कई प्रकार के लोग रहते हैं जिनकी भाषा, रहन सहन और पोशाक अलग अलग है मगर इस विविधता मे हम सब को जिसने अनेक युगो से इकट्ठा रखा वह वैदिक सस्कृति ही है।

आज जब परमाणु अस्त्रशस्त्रो के कारण सारी दुनिया भयभीत है भारतीय सस्कृति को और भी अधिक अपनाने की आवश्यकता है क्योकि इस विचारधारा का मूल सिद्धात है—'जियो और जीने दो'।

समालोचना

नाम—सन्ध्या, यज्ञ और आर्य समाज का साकेतिक परिचय।

लेखक—श्री पृथ्वीराज शास्त्री।

प्रकाशक—अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ नई दिल्ली-२

मूल्य ४ ५० पैसे।

पुस्तक मे सन्ध्या यज्ञ पद्धति की सुन्दर सुललित व्याख्या के साथ विद्यार्थियो को सुबोध भाषा मे आर्य समाज का पूर्ण परिचय कराया गया है। पुस्तक प्रत्येक दृष्टिकोण से आर्य विद्यालयो की धार्मिक कक्षाओ के पाठ्यक्रम क सर्वथा उपयोगी व महत्वपूर्ण है। यह पुस्तक विद्वान लेखक ने लिखकर अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ नई दिल्ली को भेंट कर दी जिसकी आय सघ को प्राप्त होगी। लेखक प्रशसा व बधाई के पात्र है। समाजे इसे मगाकर अपने अपने विद्यार्थियो के लिये सुलभ व लाभदायी बन ए—

—सम्पादक सार्वदेशिक सभा

आज से ११० वर्ष पूर्व

संस्कृति शिक्षा नीति

लेखक-श्री चैतन्य मुनि वानप्रस्थ

भारत सरकार भारतीय सस्कृति की सुरक्षा एव प्रचार-प्रसार के लिए कृत सकल्प है। खुशी होती है जब प्रधानमन्त्री एव अन्य महान् विभूतियो द्वारा इस सकल्प का रह रहकर उद्घोष भी किया जाता है, 'सत्यमेव जयते" को अपनी नीति का आधार दुहराया जाता है, परन्तु नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत जो भीषण प्रहार सस्कृत भाषा पर होने जा रहा है उसकी ओर ध्यान दिलाना प्रत्येक नागरिक एव सस्था का कर्तव्य है। इस नीति से अग्रेजी को अनिवार्य करने की दृष्टि से सस्कृत अध्ययन प्रायः लुप्त हो जाएगा। और यदि दुर्भाग्यवश ऐसा होता है तो सोचना होगा कि सस्कृति-निधि मे जो चिंतन के अमूल्य रत्न छिपे पडे हैं, उनका क्या होगा ? उन मूल्यो का जो वैदिक सस्कृति का मूलाधार हैं, जिनके कुछ प्रतीक वैदिक वाङ्मय एवम् अन्य सस्कृत साहित्य से नीचे दिए जा रहे हैं, क्या होगा —

सत्यमेव जयते, मनुर्भव, वय राष्ट्रे जागृयाम, ईशावास्यमिद सर्व, ··· सगच्छध्व सवदध्वम्····· मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे, एषा ते शुक्रतनू। एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। धृति क्षमादमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह ····· अक्षर ब्रह्म। कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन······उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि ··· सर्वे भवन्तु सुखिन ······यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

मातृवत् परदारेषु ···इत्यादि।

क्या इन महान् लक्ष्यो की पूर्ति और वह भी निष्पक्ष अनासक्त रूप मे साम्प्रदायिक अरबी मदरसे, अग्रेजी स्कूल एव अन्य भाषायी विद्यालय कर सकेंगे ? उत्तर प्रत्यक्ष है कि 'नही"। अत. भारत सरकार से पुरजोर निवेदन है कि वह, एक सविधान के प्रति उत्तरदायी सरकार होने के नाते ऐसी भूल न करे कि जिससे भारत की मूलाधार सस्कृति और उसकी भी मूलाधार सस्कृत भाषा इस देश से लुप्त हो जाए। कहा तो युरोपियन विद्वानो मैक्स-म्यूलर आदि से सस्कृत अध्ययन की नीति जो आज इग्लैड आदि देशो मे अनिवार्य सस्कृत पठन-पाठन के लिए कृत-सकल्प है और कहा हम कि सस्कृत का गला घोटने पर उतारू हैं—इसे विधि की विडम्बना कहा जाए या भारत सरकार की शिथिलता।

इस विश्वास से, भारत सरकार जल्दी अपनी शिक्षा नीति का पुनरावलोकन करेगी और सस्कृत के पठन-पाठन को किसी न किसी रूप मे, विशेषतया बाल्यकाल मे, अनिवार्य घोषित करेगी।

सम्पादकीय

सामाजिक जीवन की पवित्रता

आजकल लोग विविध उपायो से अपराधो को छिपाने की चेष्टा करते हैं सबसे सीधा उपाय है—

जीवन को पचाने के लिए लेट जाना और दुष्कर्म को पचाने के लिए चटमा स्थल से भाग जाना। नित्यप्रति कितने ही ऐसे ही दुष्कर्म होते हैं जिनके करने वालो का पता ही नही चलता है या फिर—अपने किए दुष्कर्म को दूसरो के सिर मढ देना और उसे फसाकर बच निकलना।

तीसरा उपाय है "राम नाम अपना पराया माल अपना" धर्म या किसी सस्थान-के नाम पर देश भक्ति या सज्जनता का पाखण्ड रचकर बहुत से दम्भी समाज की आखो मे धूल झोकते रहते हैं। ऐसे एक नही अनेक धर्म-ध्वजी, मार्जारलिंगी, कपट मुनि मिलेंगे। जो स्वभाव चरित्र से नीच होते हुए भी वेश भूषा व्यवहार से सभ्य बने रहते हैं भीतर कुटिल होते हुए भी ऊपर से सीधे लगते हैं। पाप की कमाई करते हुए भी थोडा बहुत दिखावटी दान देकर पुण्यात्मा कहलाते हैं कितने ही सन्त साधू भी बने हुए हैं और कितने ही मायावी पैसे लेकर माया मुक्ति की युक्ति बताने का व्यापार करते हैं।

"मुख मे राम बगल मे छुरी" वाले व्यक्ति नित्य ही देखे जाते हैं। इस प्रकार चरित्र हीनता सारे समाज मे व्याप्त है परन्तु वह व्यक्त कभी कम कभी ज्यादा होती ही रहती है। धूर्त धनी और अधिकार सम्पन्न लोग अपने दुराचारो पर आसानी से परदा डाल देते हैं। अथवा यू कहिए कि स्वय हस परमहस या बगुला भगत ही बनकर दूसरो को मूर्ख बना देते हैं। पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से सर्वसाधारण मे यह प्रवृत्ति बढती दिखाई देती है किसी भी उपाय से, चाहे वह उचित हो या अनुचित पर कार्य सिद्धि ही श्रेयस्कर है लोग किसी भी रीति से अपना काम निकाल कर समर्थ बनना चाहते हैं। समर्थ के दोष, दोष नही गिने जाते।"

ऊपरी आडम्बर से भीतरी शील का पता नहीं चलता। मिथ्या व्यक्तित्व से धोखा होता ही है।

बडे से बडा अपराध करके किसी तर्क सतर्क वकील के पास जाइये पहले तो वह सिखायेगा कि न्यायालय में जाकर अभियोग को स्वीकार मत करना। इसके बाद सच को झूठ झूठ को सच प्रमाणित करके सम्भवत आपको दण्ड से मुक्त करा देगा। अपराधी की दृष्टि मे वकील भगवान से भी अधिक काम का है पुलिस के अनुग्रह से बडे २ अपराध दब जाते हैं। डाक्टर वैद्य भी समय पर इस काम में बडे सहायक सिद्ध होते हैं। व्यभिचारियो की लाज वे ही बचाते हैं।

हमारे पत्रकार तथा पत्र सम्पादक अपने कृपा पात्रो और सरक्षको के विरुद्ध लोकापवाद को रोकने मे कम-काम नहीं करते। लोक मे तो इनसे काम चल जाता है परन्तु परलोक के पावक हैं, पण्डे और पण्डित जी? पैसे लेकर यजमान के पाप प्रक्षालन का भार अपने ऊपर ले लेते हैं। पडित जी गोदान के सवा रुपए लेकर महा कृपण्वी को भी विष्णुलोक का टिकट दे देते हैं। इस प्रकार के अन्ध विश्वासो से भी गुप्त अपराधों की अभिवृद्धि होती है। मूढ लोग इस भरोसे छिपकर अपराध करते रहते हैं कि पाप का रग हलका होता है पण्डा जी उसे नदी मे धो देंगे और पण्डित जी पतित से पतित को भी पाप पारावार से भी पार लगा देंगे।

उन्हे बुराई करने की प्रेरणा मिलती है और समाज के सामने एक बुरा आदर्श उपस्थित होता है।

परिणामत. गुप्त अपराधों की सख्या में वृद्धि होती ही जाती हैं इससे व्यक्ति और समाज दोनो की हानि होती है। व्यक्तिगत हानि यह है कि अपराधी की आत्मा पतित हो जाती है उसके सिर पर पाप सवार हो जाता है —

दूसरी बात यह है—यद्यपि अपराधी अपने दोषो को छिपाकर, राजदण्ड और लोक निन्दा से बच जाता है परन्तु भीतर ही भीतर वह मानसिक यन्त्र-णायें नरक की यन्त्रणाओ से बढकर है। अपराधी का मनस्ताप उसे भीतर से बहुत दिनो तक जलाता है यही असली प्राण दण्ड है।

प्रत्येक दोष चाहे वह छोटा हो या बडा, मनुष्य के व्यक्तित्व पर अपना धब्बा अवश्य छोडता है। वह गुप्त रोग बनकर शरीर को पीडित करता है। क्षणिक सुख से जीवन की स्थायी हानि होती है इसके अतिरिक्त जिस प्रकार गरिष्ट भोजन पेट मे जाकर अवश्य दुःख देता है। उसी प्रकार पाप अपने लिए अनिष्ट कर न प्रतीत होने पर भी बेटे-पोतो तक पहुचकर अपना प्रभाव दिखाता है।

> पुत्रेषु वा नप्तृषु वा नचेदात्मनि पश्यति ।
> फलत्येव ध्रुव पाप गुरुभक्त मिवोदरे ॥ आदि पर्व०

गुप्त अपराध से समाज का सारा वातावरण भीतर ही भीतर दूषित हो जाता है और एक दुष्ट व्यक्ति सारे समाज को दूषित करता है। उसकी बुरा-इयो का प्रभाव चुपचाप पडता है। जैसे क्षय के रोगी के दूषित श्वास का।

समाज मे जो भ्रष्टाचार फैलता है और उससे जो अनर्थ होते हैं—उनमे उन-उन बुराइयों का मुख्य हाथ होता है जो मलवत अन्दर रुकी रहती है। अनेक सामाजिक व्याधिया उन्ही से उत्पन्न होती हैं। महाभारत के अन्त मे कुन्ती ने इस तथ्य को स्वीकारा है कि—

मेरी ही दुर्बुद्धि के कारण यह सारा अनर्थ हुआ है इस मर्म को समझने वाले इससे सहमत होंगे।

प्रवेश सूचना

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरयाणा) मे १ जौलाई से ३१ जौलाई तक नवीन छात्रो का प्रवेश होगा, प्रवेश की योग्यता मैट्रिक उत्तीर्ण वा तत्समयोग्यता होना आवश्यक है, वहा छात्रो को भोजन, निवास, पुस्तक, शिक्षा, तेल, साबुनादि आवश्यक वस्तुए नि शुल्क देकर प्रशिक्षण दिया जाता है, अत वैदिक धर्म के प्रचारक बनने के अभिलाषी छात्र प्रवेश के लिये अपने आवेदन-पत्र जल्दी से जल्दी कार्यालय के पते पर भेजकर स्वीकृति प्राप्त कर ल, स्थान सीमित हैं, इसके बाद प्राप्त होने वाले आवेदनपत्रो पर विचार नहीं किया जायेगा।

निवेदक

सत्यप्रिय शास्त्री एम०ए० साहित्याचार्य
दयानन्द ब्राह्म विद्यालय
हिसार (हरियाणा)

आतंकवाद के विरुद्ध बरनाला सरकार का संघर्ष भाषणबाजी तक सीमित था

नई दिल्ली, १२ मई। पंजाब के राज्यपाल श्री सिद्धार्थ शंकरराय द्वारा राष्ट्रपति को दी गई रिपोर्ट जिसमें बरनाला सरकार को निलम्बित करने की सिफारिश की गई है और जिसे आज विदेश मन्त्री ने लोक सभा में प्रस्तुत किया है उसमे लिखा गया है कि —

वास्तव मे न तो शासन और नहीं उसे चलाने वाली पार्टी साम्प्रदायिक कट्टरता व आतंकवाद का मुकाबिला देहात में कर रही है न गुरुद्वारो मे अपितु कही भी नहीं कर रही है। ११ मई १९८७को यह रिपोर्ट चण्डीगढ़मे लेखबद्ध की गई है। इस अत्यन्त गोपनीय रिपोर्ट मे आगे कहा गया है कि एक मन्त्री शहरी इलाको मे विशेष राजनीतिक दृष्टिकोण के अनुयायी लोगो के सामने कुछ भाषण कर देते हैं। इन भाषणों का शायद ही कोई प्रभाव पड़ता हो, नही इन भाषणों से अतिरिक्त कभी कोई कार्यवाही की जाती। हत्या व लूट पाट मे वृद्धि हुई है। वास्तव मे उनकी अभी बीते अप्रेल मास मे तो यह सब से अधिक हो रही है। रिपोर्ट की पाण्डुलिपि कुछ इस प्रकार है —

गवर्नर राज भवन पंजाब

प्रिय राष्ट्रपति, चण्डीगढ़ १२००१९

११ मई १९८७

आपको स्मरण होगा कि विगत २५ अप्रेल को दिल्ली मे जब कि मैं आपसे मिला तो हमने परस्पर सुदीर्घ विचार विमर्श किया। मैंने तब आपको पंजाब की वतमान परिस्थितिओ की गम्भीरता व दशा से अवगत कराया था कि सर्वत्र भय व निराशा है। आपको स्मरण होगा मैंने बताया था कि परिस्थिति कितनी कठिन व दुर्निवार बनती आ रही है। तथा मैं प्रत्येक बात को बड़े ध्यान पूर्वक देख रहा हूँ और इस प्रतीक्षा मे हूँ कि अन्त मे परिस्थितिया क्या रुख अपनाती है।

आपसे भेंट के पश्चात विगत दो सप्ताहो से मैं यहा की परिस्थितिओ व घटनाओं को बड़े गम्भीरता व ध्यान पूर्वक देख रहा हू और बड़े दुर्भाग्य और खेद के साथ आपको यह रिपोर्ट दे रहा हूँ कि मुझे यह विश्वास हो गया है कि यह ऐसी परिस्थिति निर्माण हो गई है कि जिसमे प्रदेश की सरकार को विधान के प्रावधानों के अनुसार और नही चलाया जासकता। और आर्टीकल ३५६ के अनुसार आपका हस्तक्षेप स्पष्ट व तात्कालिक रूप मे आवश्यक है और कि इस प्रश्न पर प्रत्येक क्षण का विलम्ब परिथितिओ को अधिक से अधिक खराब व भयावह बनावेगा।

संसद के अधिवेशन के प्रारम्भ होने और उसके दोनों अधिवेशनो को आपके द्वारा सम्बोधित करने से तुरन्त पूर्व और इस समय भी यद्यपि परिस्थितिया पर्याप्त कठिन थी परन्तु कुछ नियन्त्रण में थी और मुख्यमन्त्री ने पूरी तरह से असाम्प्रदायिक समस्याओ मे भी अकाल तख्त के तथाकथित उच्चता के विरुद्ध कुछ साहसिकता पहले भी की थी जैसा कि आपने अपने राष्ट्रपति-अभिभाषण मे भी चर्चा की थी परन्तु जब से नया कट्टरपंथी आंदोलन पहले ११ सूत्रो से और फिर १३ सूत्रों का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ है तबसे परिस्थिति इतनी काबू से बाहर हो गई है। अप्रेल १९८७ के मध्य से न केवल यह कि मन्दिरों गुरुद्वारों मे कट्टरपंथियो व आतंकवादियो की समान्तर सरकार बन गई है अपितु प्रदेश मे आतंक का वातावरण बन गया है। प्रत्येक व्यक्ति भयभीत हैं जिसका अपरिहार्य परिणाम यह हुआ है कि प्रान्त से लोगो को पलायन और साम्प्रदायिक तनाव संघर्ष व कटुता फिर प्रारम्भ हो गई है।

तत्त्वों से मन्त्रियों की सांठगांठ

सारी पार्टी की रैलियों जिनके लाभदायक और लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ने का वचन दिया गया था उसके अर्थ व उद्देश्य ही समाप्त हो गए हैं। अधिक से अधिक शक्ति से अराजकता लूटमार, छीनाझपटी, बैंक डकैतियों दुकानो खोखों को जलाने निर्दोषों की हत्या आदि की घटनाए प्रारम्भ हो गई है। जिससे न केवल विधान के अनुसार मिले मौलिक अधिकारो की दुर्दशा हुई है अपितु अत्यन्त आवश्यक मौलिक अधिकारों अर्थात् जीवित रहने के अधिकार का अस्तित्व ही समाप्त हो गया है।

जिस बात ने परिस्थितियो को और भी दुर्दशा ग्रस्त बनाया है वह है वर्तमान मन्त्रिमण्डल के कुछ मन्त्रियो का और उनके सम्बन्धी आतंकवादियो से मिले हुए हैं। पुलिस की कार्यवाहियों में विशेषतया जिला व थाना स्तर के मामलो मे उनकी तथा शासक पार्टी के कुछ प्रभावशाली तत्वों द्वारा हस्तक्षेप किया गया है।

रिबैरो पर आरोप

इन सब से बढ़कर यह कि प्रमुख मन्त्रियो में से एक जो मन्त्री मण्डल में द्वितीय स्थान पर हैं उन्होंने समाचार पत्रों के द्वारा और अन्य उपायों से पुलिस के मुख्य महानिरीक्षक श्री रिबैरो पर खुलकर अनुत्तरदायित्वपूर्ण आक्रमण किए हैं उनके विरुद्ध हर प्रकार के आरोप लगाए गए हैं। यहां तक कि उन पर साम्प्रदायिकता भड़काने का आरोप भी लगाया गया है जिससे न केवल जनता का विश्वास डगमगा कर रह गया है अपितु पुलिस का मनोबल भी भयावह स्थिति तक गिर गया है।

भ्रष्टाचार का भी दौर दौरा है। स्थानान्तरण, नियुक्तिया और रोजगार आदि के सम्बन्ध मे आदेश जारी करने के लिए लोगो से कुछ मन्त्री उनके सम्बन्धी या साथी तथा कुछ महत्वपूर्ण सरकारी कार्पोरेशनों व विभागों के अध्यक्ष पैसा ले रहे हैं।

जैसाकि मैंने आपको बताया था कि १८ से २२ अप्रेल तक मैं स्वयं प्रदेश के हर जिले मे गया। इसके पश्चात् भी मैं १-१ बार कपूरथला, लुधियाना और २ बार कुछ विशेष कार्य से अमृतसर गया। परन्तु तब भी मैंने लोगो से फिर भेंट की और परिस्थितियों का अधिक अध्ययन किया। चण्डीगढ़ में भी सीधे मेरे पास ऐसी रिपोर्ट आई है और मुझे सरकारी रिपोर्टें देखने व उनसे परिणाम निकालने का अवसर मिला है।

निकम्मी सरकार

यह सर्वथा स्पष्ट है कि शासक पार्टी या उसकी सरकार का कट्टरपंथी आन्दोलन, या बरोक टोक बढ़ती आतंकवादी गतिविधियों या आतंकवाद से निपटने का कोई राजनीतिक ध्येय नहीं। और कि वह विधान के आर्टीकल, १४, १०, १९ २१ और ए ३०० व ३०१ अन्तर्गत मिले अधिकारो की रक्षा की बात तो कहना ही क्या उन्हें बनाए रखने का विश्वास दिलाने में भी अयोग्य सिद्ध हो गए हैं। प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों विशेष तथा देहाती इलाकों मे अब उसका सिक्का नही चलता।

आज जब कि हजारो लोगो के लिए वह अपना जीवन बिताना संकटमय हो गया है। प्रदेश सरकार मौन तमाशाई की भांति बैठी है। पूर्णरूप से अस्त व्यस्तता व अराजकता फैली हुई है। कुछ भी सुरक्षित नहीं है। चाहे काम या भ्रमण के लिए सरकारी वाहनो मे यात्रा करना हो। पूजा अर्चना के लिए मन्दिरों या गुरुद्वारों मे जाना हो। न्याय प्राप्ति के लिए न्यायालय मे जाना हो डाक्टर के पास या रोगी को देखने जाना हो या पर्यटन के लिए कहीं दूर जाना हो। कार्यालय जाना हो या किसी सभा समारोह में सम्मिलित होना हो। सिनेमा देखने जाना हो या भ्रमणार्थ कही दूर जाना हो। सामान खरीदने या किसी और काम के लिए मार्केट जाना हो खेतों में काम करना हो या शिक्षा के लिए कालेज या यूनिवर्सिटी जाना ही आदि आदि। वास्तव मे प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक क्षण भय है और वर्तमान सरकार विवश वह कुछ भी ऐसा करने योग्य नहीं है जिससे कहीं व्यवस्था सुधर जाए।

रिबैरो की प्रशंसा

वास्तव में आतंकवादियो का यदि कोई मुकाबिला कर रहा है (जैसा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

संस्कृत : एक जीवित भाषा

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा

(गताक से आगे)

'भाषा' शब्द 'भाष' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है बोलना। हमारी चर्चा के प्रसग में इस शब्द पर विचार करना आवश्यक है। पाणिनि ने 'भाषा' शब्द का प्रयोग (अ० ३ पाद २ सूत्र १०८) 'छांदस' नाम की उस प्राचीन भाषा के विलोम अर्थ मे किया है जिसका प्रयोग उनके समय मे बन्द हो गया था। 'भाषा' शब्द तो प्रयुक्त है। उस भाषा के लिये होता है जो बोली जाती है। इसके लिये प्रमाण ढू ढना भी कठिन नही है। वर्तमान काल मे भारत मे जो हिन्दी आदि आधुनिक भाषाए प्रचलित हैं, बोली जाती हैं, उन्हें भी 'भाषा' शब्द से ही अभिहित किया जाता है। 'छदस' के विपरीत 'भाषा' के बोलने के लिये पाणिनि ने जो सामान्य तथा विशेष नियम बनाये हैं उनका कोई अर्थ नहीं था यदि संस्कृत बोलचाल की भाषा नही होती। यही बात उन तद्धित प्रत्ययों के विषय में कही जा सकती है जो उनके ग्रन्थ में बहुतायत से मिलते हैं किसी कृत्रिम भाषा के व्याकरण में उनके विवेचन का कोई प्रसग ही नही होता।

यह कथन तो सर्वथा प्रमाण रहित ही है कि 'सस्कृत' उन ब्राह्मणों का अविष्कार है जिन्होने इस भाषा पर अपना एकाधिकार कर रक्खा था। यह आश्चर्य की बात है कि मेरे भी कुछ देशवासी सस्कृत के बारे मे ऐसी ही विचित्र धारणा रखते हैं। परन्तु इस सम्बन्ध मे मैं भी दृढता से कह सकता हू कि ऐसा कहने वाले अपनी पवित्र भाषा के बारे मे कुछ भी नही जानते, उनकी शिक्षा पूर्णतया पाश्चात्य पद्धति पर हुई है। हमे भारत के वर्तमान कालीन समाज को ध्यान मे रखकर उसके अतीत पर विचार नही करना चाहिए। आज जो भारतीय समाज मे जातिप्रथा, मूर्तिपूजा, बाल विवाह आदि जो अन्धविश्वास पूर्ण रीति-रिवाज चल पडे हैं वे ही आधुनिक भारतीय समाज की रूपरेखा बनाते हैं। आज के लोगों की मान्यताओं, स्वभाव तथा चिन्तन में प्राचीन काल की अपेक्षा इतना अधिक अन्तर आ गया है कि वर्तमान कालीन भारत को देखकर अतीतकाल के आर्यावर्त के बारे मे कुछ निष्कर्ष नही निकाला जा सकता। आज तो बहुत कम ब्राह्मण ऐसे मिलेंगे जो वेद के एक मन्त्र का भी उच्चारण कर सकते हो अथवा किसी निम्न जाति के व्यक्ति को सस्कृत सिखाते हो, परन्तु मेरा पक्का विश्वास है कि इस प्रकार की कट्टरता हमारे शास्त्रो द्वारा अनुमोदित नही है। इसके विपरीत वेदो, ब्राह्मण ग्रन्थो, उपनिषदो तथा सूत्रो से इस बात के भूरिश प्रमाण मिलते हैं कि प्राचीन काल मे जाति अथवा वर्ग का अन्तर किये बिना सस्कृत सभी लोगो की समान सम्पत्ति थी। भारतवासी सस्कृत भाषी आर्यों के धार्मिक तथा सामाजिक विधान उन सभी लोगो के लिये समान रूप से उपलब्ध थे जो ज्ञानोपार्जन करना चाहते थे। ऐसे उदाहरणो की कमी नही है जहा निम्न जाति के लोग भी अपने गुणों के बल पर सर्वोच्च पदो पर पहुचे थे। ऐतरेय ब्राह्मण मे हमें यह लिखा मिलता है कि शूद्रामा का पुत्र कवषरोलूष अपनी योग्यता एव विद्वता के कारण सम्मानित हुआ तथा ऋषियो की कोटि मे परिगणित हुआ। उसके जीवन का सर्वाधिक उल्लेखनीय प्रसग तो यही है कि शूद्र होने पर भी ऋग्वेद के कतिपय मन्त्रो का वह द्रष्टा बना। (ऋग्वेद १०-३०-३१) छान्दोग्योपनिषद् में यह स्पष्ट लिखा है कि सत्यकाम जाबाल का कोई गोत्र नही था।

उसके माता-पिता आदि के बारे मे हमारी जानकरी इतनी ही है कि वह 'जबाला' नामक स्त्री का पुत्र था तथा वह अपनी माता के नाम पर ही प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकार अज्ञात व्यक्तियो की सन्तान होने पर भी जाबाल यजुर्वेद की एक शाखा का प्रवर्त्तक माना गया है। आपस्तम्ब सूत्र (२-५-१०) तथा मनुस्मृति (१०-६५) मे तो यहा तक लिखा है कि अपने शुभ अथवा अशुभ कर्मों से एक शूद्र ब्राह्मण तथा ब्राह्मण शूद्र बन जाता है। शुक्ल यजुर्वेद के २६वें अध्याय मे एक प्रसिद्ध मन्त्र है जिसमे यह कहा गया है कि वेद की पवित्र एव कल्याणी वाणी का प्रचार तो ब्राह्मण, वैश्य यहा तक जातियो मे से निम्नतम तक को भी करना चाहिए। हमारे शास्त्रों के इन स्पष्ट प्रमाणो के रहते यह नही कहा जा सकता कि मात्र ब्राह्मणो के लिये ही वेद बनाये गये हैं।

पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (अ० ६ पाद १ सूत्र १३०) मे एक प्रसिद्ध वैयाकरण चक्र वर्मन का उल्लेख किया है। अब यह सिद्ध बात है कि चक्रवर्मन क्षत्रिय था क्योंकि उनके नाम के पीछे 'वर्मा' शब्द का प्रयोग मिलता है। उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्राह्मणो का ही सस्कृत पर एकाधिकार था, यह कथन तथ्यपूर्ण नही है। समस्त आर्यावर्त मे सभी वर्गों द्वारा इस भाषा का बिना किसी भेद भाव के निर्बाध प्रयोग किया जाता था।

प्राय लोग यह कहते हैं कि सस्कृत का व्याकरण इतना जटिल है कि उसके कभी बोली जाने वाली भाषा होने की कल्पना भी नही की जा सकती। परन्तु मेरे विचार से ऐसे लोगो का कथन बहुत युक्तिपूर्ण नही है। सस्कृत भाषा मे जो बहुत से अपवाद तथा अनियमित रूप आदि मिलते हैं वही इस बात के पुष्ट प्रमाण है कि यह किसी समय आम आदमियो द्वारा बोली जाती थी। प्राय यह कहा जाता है कि कुछ अशो मे शब्द सिक्को की तरह होते हैं तथा जो सिक्के हजारो हाथो मे से निकलते है उनकी आकृति भी विकृत हो जाती है, उसी प्रकार सबसे अधिक प्रयोग मे आने वाले शब्दो का रूप भी विकृत हो जाता है और उनमे अनेक प्रकार की विशिष्टतायें (विद्रूपता) आ जाती हैं। यह एक सर्व विदित तथ्य है कि प्राय, सभी प्राचीन तथा अर्वाचीन भाषाओ मे अनगढ रूपो वाले शब्द मिलते हैं। ये वही शब्द होते हैं जिनका प्रयोग अधिकाधिक होता है। सस्कृत भी इसी नियम के अन्तर्गत आ जाती है। सधि के नियमो का सम्बन्ध है, अन्य देशवासियो को ये कृत्रिम ही लगते होगे, किन्तु भारतवासी इन नियमो से इतने अधिक परिचित हैं कि इस तर्क के आधार पर सस्कृत को बोली

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ऋषि दयानन्द के क्रांतिकारी सहयोगी मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी

ले० डा. भवानी लाल भारतीय

स्वामी दयानन्द की क्रान्तिकारी एवं प्रगतिशील विचारधारा के परम-प्रशंसक, हिन्दू धर्म में व्याप्त कट्टरता, रूढ़िवाद तथा पाखण्ड के कटु आलोचक तथा स्वतन्त्र एवं रूढ़िमुक्त चिन्तन के प्रबल समर्थक मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी ने उन्नीसवीं शताब्दी के पंजाब प्रान्त में धार्मिक तथा सामाजिक परिवर्तन का शंखनाद किया था। उनका जन्म १८०६ में आगरा में हुआ। अलखधारी के पिता दीवान धर्मदास कर विभाग में अतिरिक्त सहायक आयुक्त के पद पर थे। अलखधारी की शिक्षा कलकत्ता में १८२६ से १८२९ तक हुई। तत्पश्चात वे बर्मा में कमिश्नर कार्यालय में लिपिक तथा लेखाकार के पद पर रहे। भारत लौटकर उन्होंने सहारनपुर, अम्बाला, शिमला, शाहपुर तथा मुजफ्फरगढ़ में कार्य किया। इस अवधि में वे ब्रिटिश सरकार के अतिरिक्त देशी राज्यों में सेवारत भी रहे। दिल्ली में उन्होंने ज्ञान प्रेस की स्थापना की और १८५३ में अपनी प्रथम सुधारवादी पुस्तक निकाली।

सन १८५७ की हलचल के समय वे लुधियाना में थे। विद्रोह के समाप्त होने पर वे आगरा आये और १८६३ से १८७० तक कोटला राज्य में कार्य किया। तत् पश्चात अक्टूबर १८७२ तक कलसिया राज्य में सेवारत रहे। अन्तत. लुधियाना में ही बस गए और मार्च १८७३ में नीति प्रकाश सभा की स्थापना की तथा नीति प्रकाश नामक उर्दू पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। शाहपुर(पाकिस्तान)में रहते समय उन्होंने 'चिराग ए हकीकत' तथा 'शाम ए मारिफत' नामक दो पुस्तकें लिखी जो आगरा में मुद्रित हुई। यों तो अलखधारी ने धर्म, गणित, भौतिकी, राजनीति आदि विभिन्न विषयों पर लिखा था, किन्तु उनके द्वारा किए गए भगवद्गीता उपनिषद् तथा योग वासिष्ठ के उर्दू अनुवादों से उन्हें धार्मिक जगत् में अधिक ख्याति मिली। हिन्दुओं को अन्य मतों से परिचित कराने की दृष्टि से उन्होंने इस्लाम के ग्रन्थों के कुछ अंशों का भी उर्दू में अनुवाद किया तथा ईसामसीह की जीवनी का लेखन किया।

सन १८६० तथा १८७० के बीच अलखधारी ने पंजाब का व्यापक भ्रमण कर धार्मिक पाखण्डों पर तीव्र प्रहार किए। प्रो० केनेथ जोन्स ने उन्हें कटु जिह्वा तथा तीखी कलम वाला एकाकी सुधारक कहा है। जब १८७२ में वे कलसिया राज्य की सेवा से निवृत्त हो चुके थे तो उनके कुछ मित्रों ने उन्हें परामर्श दिया कि वे सर सैयद अहमद खां की भांति जैसा कि उन्होंने मुस्लिम नवजागरण का अभियान चलाया है, हिन्दू पुनरुत्थान के लिए आन्दोलन चलायें। इस पर अलखधारी ने तल्खी के स्वर में कहा—मुसलमानों की बात भिन्न है। उनकी सत्ता को छिने अभी सौ वर्ष ही हुए हैं, जबकि हिन्दुओं के पराभव और पतन का आरम्भ ८०० वर्ष पूर्व ही होना आरम्भ हो गया था। इस जाति की उन्नति होना कठिन है, क्योंकि आर्य ऋषियों की सन्तान आज पेड़, पत्थर तथा नदियों की पूजा करने लग गई है। यहां तक कि सर्व-शक्तिमान परमात्मा के स्थान पर मुसलमानों के मकबरों को पूजने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं होता। वेदों तथा धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित आचार के स्थान पर आज के हिन्दू मिथ्या कदाचारों का ही पालन कर रहे हैं।"

तथापि मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी ने मार्च १८७३ में लुधियाने में नीतिप्रकाश सभा की स्थापना की तथा इसके माध्यम से हिन्दुओं में सुधारवादी विचारों का प्रचार किया। तथापि उन्हें अपने प्रयत्नों में अधिक सफलता नहीं मिली। मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के सुधार कार्यों के प्रबल विरोधी एक अन्य पंजाबी महानुभाव पं० श्रद्धाराम फिल्लौरी थे। जब अलखधारी ने नीतिप्रकाश सभा का आरम्भ किया था तो फिल्लौरी अपने साथियों सहित वहां उपस्थित थे। बाद में उन्होंने अलखधारी प्रवर्तित सुधार कार्यक्रमों का यह कह कर उपहास किया कि हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा तो वे लोग ही कर सकते हैं जो स्वयं अपने धर्म का कट्टरता से पालन करते हों। उन्होंने अलखधारी को दृढ़ हिन्दू मानने से इन्कार किया और अपनी बात के समर्थन में कहा—अलखधारी न तो चोटी और जनेऊ धारण करता है तथा जो अपने चौके को गोबर में लीपने में परहेज करता है, भला वह कैसा हिन्दू? जो मेज कुर्सी पर भोजन करता हो तथा भोजन को खाना कहकर पुकारे, भला उससे क्या रक्षा होगी?" निश्चय ही फिल्लौरी के आक्षेप नितान्त हास्यास्पद ही थे, किन्तु वह इन्हीं की ओट में अलखधारी का विरोध करना चाहता था। निश्चय ही अलखधारी अवतार, मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, जन्माधारित जाति व्यवस्था और तीर्थ यात्रा आदि पौराणिक आचार विचारों के कट्टर विरोधी थे और इन्हीं बातों को हिन्दुओं के सर्वविध पतन का कारण मानते थे।

अलखधारी और स्वामी दयानन्द

अलखधारी को स्वामी दयानन्द का परिचय उनके ग्रन्थों से ही मिला। स्वामी जी से उनकी भेंट जनवरी १८७७ में दिल्ली में हुई जबकि महारानी विक्टोरिया द्वारा भारत की साम्राज्ञी का पद ग्रहण करने के उपलक्ष्य में लार्ड लिटन (तत्कालीन वायसराय) द्वारा वहां एक दरबार का आयोजन किया गया था। मुन्शी जी स्वामी जी द्वारा आयोजित उस धर्म सम्मेलन में भी शामिल हुए जिसमें स्वामी जी ने देश के विभिन्न धार्मिक नेताओं के समक्ष राष्ट्रोत्थान के लिए कुछ सूत्र प्रस्तुत किए थे। इस सम्मेलन की कार्यवाही का विस्तृत विवरण तो नहीं मिलता किन्तु इतना अवश्य पता चलता है कि स्वामी जी द्वारा, वेदों के प्रामाण्य पर बल देने तथा वैदिक मान्यताओं को स्वीकार करने से ही राष्ट्र के विविध मत सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है, इस प्रकार कहने से ब्रह्म समाज के नेताओं का उनसे सहमत होना कठिन हो गया और यह सम्मेलन बिना किसी निर्णय पर पहुंचे समाप्त हो गया।

दिल्ली में ही अलखधारी ने स्वामी दयानन्द को पंजाब आने का आमन्त्रण दिया। तदनुसार स्वामी जी सर्वप्रथम लुधियाना गये और वहां से ही लाहौर के लिए प्रस्थान किया। अलखधारी ने स्वामी दयानन्द और उनके विचारों की चर्चा समय समय पर अपने पत्र नीति प्रकाश में की थी। इन्हीं उद्धरणों को एकत्र कर स्वामी दयानन्द का हाल 'शीर्षक एक उर्दू पुस्तक १८८७ ई० में लाला रामचन्द्र द्वारा मेरठ से प्रकाशित की गई। प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु ने इसका हिन्दी अनुवाद 'महर्षि दयानन्द का सर्वप्रथम जीवन वृत्त' शीर्षक से सम्पादित कर प्रकाशित किया है।

डा० केनेथजोन्स के इस कथन में पूर्ण सत्यता है कि अलखधारी की लेखनी तीखी थी जो मिथ्या पाखण्डों और अंधविश्वासों के प्रति अग्निवर्षा वृष्टि करने से कभी नहीं चूकती निश्चय ही वे स्वयं भी अग्निविहगु थे। अलखधारी को हिन्दुओं की जड़पूजा से सबसे अधिक चिढ़ थी। इसलिए उन्होंने हिन्दुओं को पत्थरों, वृक्षों और जलाशयों का पूजने वाला कहकर तिरस्कृत किया है। जब स्वामी दयानन्द अलखधारी के आग्रह को स्वीकार लुधियाना गए तो पुराणपन्थियों ने कहा—"जैसा कन्हैयालाल अधर्मी है वैसे ही उसके मित्र स्वामी जी पादरियों की ओर से हिन्दुओं को पथभ्रष्ट करने के लिए कन्हैयालाल के बुलाए यहां आये हैं।" इस मिथ्या आरोप से तिलमिला कर अलखधारी ने अपनी लेखनी से प्रचण्ड अग्निवर्षा करते हुए लिखा "ए

(शेष पृष्ठ ८ पर)

यज्ञ की वैदिक पद्धति

[लेखक—आर० सी० गोयल, बी० ए० वेद मार्तण्ड]

अग्निदेव सात्विक तत्व है वह किसी वस्तु को नष्ट नहीं करता अग्नि उसकी शक्ति को हजारों गुणा बढ़ा देता। यज्ञ सकाम कर्म है यहां हम यज्ञ के द्वारा देवताओं को हव्य पहुचाने के बारे मे विचार करेंगे।

इस सम्बन्ध में ऋग्वेद के मं० ५ सू० २१ म० ४ का उदरण प्रस्तुत करते हैं।

ऋषि-वसूयव आत्रेया देवता-अग्नि।
अग्निर्गो हव्यवाहनोऽग्नि धीभि सपर्यत।
अग्निस्तु विश्ववरम् तृषि ब्रह्माण्युत्तमम्॥

यहां पर हम सब मन्त्रों का अक्षरश अनुवाद नहीं देंगे। क्योंकि इससे कलेवर बढ़ने का भय है।

"अग्निर्गो हव्यवाहन" अग्नि हमारी "हवि" का वाहन है। ऋषि वसूयव आत्रेया।" मन्त्रद्रष्टा है। हम वेदोको इसलिए प्रमाण मानते हैं कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है जिस प्रकार ट्रांसपोर्ट कम्पनी में कोई बुक किया हुआ सामान भेजने के लिए जमा करवाया जावे तो वह ट्रांसपोर्ट कम्पनी अपना शुल्क लेकर उस सामान को निर्धारित व्यक्ति के पास पहुचा देती है। ठीक इसी प्रकार अग्नि हव्य को मन्त्र मे बोले गये देवता को पहुचा देती है। और अग्नि इतनी सात्विक है कि इस परिवहन का कोई शुल्क नहीं लेती। ठीक इसी प्रकार ऋग्वेद के ३। २६। ४ मन्त्र का भी प्रमाण दिया जा सकता है। जिसमे "अग्ने विश्वेभिरा वहि देवेभिर्हव्य दातये।"

इससे यह सिद्ध हुआ कि अग्नि देवताओं को हव्य पहुचाने वाली है जिसका वह कोई शुल्क नहीं लेती एव जिसमें कोई बेईमानी नही करती। अगर "इन्द्र" का हव्य है तो वह इन्द्र को ही पहुचेगा। अन्यों को नहीं। जब कि ट्रांसपोर्ट कम्पनी शुल्क लेकर गलत स्थान पर भी सामान को पहुचा देती है।

अब यजुर्वेद के अ० २ मन्त्र ३४ का उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है।

ऋषि-"प्राजापत्य" देवता 'आप'।"

"ओ३म् ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पय कीलालं परिस्रुतम् स्वधा स्थतर्पयत मे पितॄन्।"

इसमें अग्नि आप, देवता को वह हव्य पहुचाती है लेकिन वह आप देवता को हव्य तभी पहुचायेगी जब कि इसके लिए अग्नि से प्रार्थना की गई हो तथा—"इदं आप. देव य इदं न मम" हव्य की आहुति देने के बाद बोला जायेगा अर्थात् जिस प्रकार ट्रांसपोर्ट कम्पनी को लिख कर दिया जाता है कि अमुक व्यक्ति को सामान पहुचाओ लेकिन अग्नि तत्व को लिख कर देने की आवश्यकता नहीं केवल जबानी कहने की आवश्यकता है और अग्नि इतनी सात्विक है कि यजमान की जबानी प्रार्थना को मान लेती है। और इस सम्बन्ध में एक अलग अध्याय में विवेचन करेंगे।

इस सम्बन्ध में अथर्ववेद के काड ७। २० मन्त्र को भी हम यहा प्रमाण स्वरूप उद्धृत करते हैं।

ऋषि-अथर्वा, देवता अनुमति
अन्वद्य नोऽनुमतिर्यज्ञं देवेषु मन्यताम्।
अग्निश्च हव्यवाहनो भवतां दाशुषे मम॥

इस मन्त्र मे भी अथर्ववेद का प्रमाण है कि अग्नि हव्य वाहन है। लेकिन पाठक यह अवश्य ध्यान रखें कि इस मन्त्र से आहुति देने के बाद "इद अनुमतये" इद न मम "यह अवश्य कहें।

इस सम्बन्ध में हम पहले ही बता चुके हैं कि हम स्वतन्त्र अध्याय में इस विधि को विस्तार से बतायेंगे।

यज्ञ करने से पहले प्रार्थना मन्त्रों मे यह कहा गया है कि "कस्मै देवाय हविषा विधेम प्रमाण स्वरूप प्रार्थना मन्त्रों में हिरण्यगर्भ (य०अ० १३ म०४) में यह बताया है कि प्रकाश स्वरूप परमात्मा को जिन्होंने सूर्य चन्द्रमा आदि को उत्पन्न किया है। और जो सम्पूर्ण जगत का स्वामी है और जो भूमि की आदि पूर्ण विश्व का धारण करने वाला है उस सुखस्वरूप देवता के लिए हविर्द्रव्य का हम आयोजन करते हैं।"

इसी प्रकार "य आत्मदा, बलदा" (यजुर्वेद अ० २५ म० १३)

"य प्राणतो" (यजुर्वेद अ० २३ म० ३) "येन द्यौरुग्रा" (य० अ० ३२ म० ६) प्रमाण स्वरूप उद्धृत किये जाते हैं ये प्रार्थना मन्त्र उन देवताओ का आवाहन करते हैं जिनको कि हम हविष देने जा रहे हैं हम उन देवताओ की उपस्थिति के लिए उनका आवाहन करते हैं कि वे उस यज्ञ के समय उपस्थित रहें और हमारा दिया हुआ हव्य ग्रहण करें। उन प्रकृति की शक्तियों को हम हव्य यज्ञ के द्वारा ही प्रदान कर सकते हैं। महर्षि दयानन्द ने अनेको ग्रन्थो में से देख कर एवं वेदों को पढ कर यह संस्कार विधि बनाई है और यज्ञ का वेदोक्त विधान किया है जो हमको विस्मृत हो गया था और जो साहित्य हमारे ऋषियों ने बनाया था वह सब "मुसलमान" एव "मुगल बादशाहों" ने जला दिया था।

यह एक तथ्य है कि किसी जाति को गुलाम बनाना है तो उसके साहित्य को नष्ट कर दो। इसके लिए मुसलमान एव मुगलो ने साहित्य को खूब बहुतायत से नष्ट किया। नालन्दा विश्वविद्यालय मे संस्कृत की अनेक विषयों की इतनी पुस्तकें थी कि वहा की पुस्तको को जलने मे ६ महीने से भी अधिक समय लगा। मुगल बादशाहो के हमाम हमारे संस्कृत साहित्य से गर्म होते थे। और आप अनुमान लगाइये कि बादशाहो के 'हरम' मे बादशाह ही स्नान नहीं करता था उसकी सैकडो बेग मे शाहजादी व शाहजादे हमारो की संख्या में स्नान करते थे अगर वह साहित्य आज होता तो हम कोन विश्व मे सबसे ऊचे होते और अब भी कोई कमी नहीं है। अब भी वेदों के विद्वान यहा यहा हजारो की संख्या मे बिखरे पड़े हैं। अगर उनका उचित सम्मान किया जाए और उनको आर्थिक मदद की जाए, राष्ट्रीय स्तर पर उनको बुलाया जाए तो आज भारत देश की चतुर्मुखी उन्नति हो सकती है। किन्तु हमे बहुत दुःख है कि आर्यों का स्वशासन होते हुए भी वेदों के विद्वानों की खोज नही की जाती उनका उचित सम्मान नही किया जाता, उनकी आर्थिक मदद नही की जाती उनके ज्ञान का उपयोग नही किया जाता। उनको राज्य सभा का सदस्य नही बनाया जाता बल्कि नाचने गाने वाले सिनेमा के एक्टरो को, उर्दू के उस्तादों को पृथकतावादी विचारो को प्रचारित करने वाले व्यक्तियो को, और ऐसे व्यक्तियो को जो भारतीय संस्कृति के शत्रु राज्य सभा का सदस्य बनाया जाता है उन्हें राष्ट्रीय सम्मान किया जाता है एव अनेको राष्ट्रीय एव आर्थिक पुरस्कार दिये जाते हैं।

अगर अब हमारी राष्ट्रीय सरकार को केन्द्र मे व प्रान्तों मे सद्‌बुद्धि आवे तो आज भी वेदों के विद्वान भारतीय ज्वलन्त समस्योओं को चुटकियो में हल कर सकते हैं जैसे महंगाई की समस्या, करों की समस्या इत्यादि। क्या यह प्रमाण कम है कि अशोक के समय मे कोई महगाई नहीं थी और २०-२० व ३०-३० वर्ष तक वस्तुओ के भाव एक ही स्तर पर रहे जब कि आज एक दिन के भाव दूसरे दिन तक भी स्थिर नहीं रहते हैं। चाणक्य (कौटिल्य) के जमाने मे जो कर व्यवस्था थी उसमे प्रयत्न कर (डायरेक्ट टेक्स) नही थे जो आज हैं और जो अमरीका से उधार लिये गये हैं जो भारतीय नागरिक को भ्रष्ट बना रहे हैं। उदाहरणतया बिक्रीकर एवं आयकर को समाप्त कर दिया जाता है तो देश मे से भ्रष्टाचार अपने आप समाप्त हो जाता है किन्तु हम अपने प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार एव वेदो के अनुसार वेदोक्त अर्थव्यवस्था कौटिल्य की अर्थव्यवस्था (कौटिल्य का अर्थशास्त्र) पिशुन (नारद) बृहस्पति, इत्यादि ऋषियों की अर्थव्यवस्था व प्रशासन व्यवस्था अपनाए तो हमारा उद्धार होने मे कोई शक नही है। हम इस विषय को यही विराम देते हैं अन्यथा इस अध्याय का कलेवर बढ जाएगा। इस विषय को हम एक स्वतन्त्र अध्याय के रूप में आगे प्रस्तुत करेंगे।

संस्कृत एक जीवित भाषा

(पृष्ठ १ का शेष)

जाने वाली भाषा के रूप मे स्वीकार करने में कोई अड़चन नहीं आती। पाणिनि ने अपने ग्रन्थ में अनेक वैयाकरणों के नाम दिये हैं तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों मे प्रचलित उच्चारणो की विभिन्नता का भी सकेत किया है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि जिस समय अष्टाध्यायी की रचना हुई थी, उस समय सस्कृत सामान्य बोलचाल की भाषा थी।

अब मैं सक्षप मे यह बताना चाहता हूँ कि हम भारतवासी इस समय सस्कृत के बारे मे क्या विचार रखते हैं? सस्कृत के व्याकरण मे बताई जाने वाली तथाकथित कठिनाइयो के होने पर भी मैं यह कहने का साहस करता हू कि भारत का शिक्षित वर्ग आज भी सस्कृत को परस्पर विचार विनिमय के साधन के रूप मे प्रयोग कर सकता है। साथ ही मैं यह भी कह सकता हूँ कि सस्कृत एक प्रकार से जीवित भाषा है। वस्तुत सस्कृत भारत के पठित वर्ग की एक प्रकार से राष्ट्रभाषा ही है तथा उसमे किसी को कोई सदेह नही है कि यदि सस्कृत का प्रयोग राष्ट्रभाषा के रूप मे किया जाता है तो उसमे कोई असुविधा भी नही होगी। मेरे इस कथन का समर्थन वे भारत विद्याविद् करगे जो वर्षों तक भारत मे रहे हैं। मैं जानता हूँ कि जिस समय प्रो० मोनियर विलियम्स भारत में थे तो वे प्राय प्रति दिन पण्डितो से भेंट किया करते थे और उनका यह वार्तालाप सस्कृत मे ही होता था। डा० बूलर जब बम्बई और पुणे मे प्रोफेसर के पद पर रहे तो वे अपने कालेज के पण्डितो से प्राय हर रोज सस्कृत मे बोलते थे। इसी प्रकार डा० कीलहोर्न तथा अन्य प्राच्य विद्या विद् विद्वान् जो आज भारत में हैं वे पण्डितो से वार्तालाप करते समय सस्कृत का ही प्रयोग करते हैं। प्राच्य और पाश्चात्य विद्वानो के पारस्परिक विचार विनिमय में भी सस्कृत को ही माध्यम के रूप मे प्रयुक्त किया जाता है। मै अपने इस कथन के समर्थन मे प्रो० मैक्समूलर के कथन को उद्धृत करना चाहता हूँ उन्होने अपने हिबर्ट व्याख्यानो मे कहा था—"जो ब्राह्मण अपनी पवित्र परम्पराओ के पालन मे दृढ हैं, वे अंग्रेजी अथवा अन्य भाषाओ का भी प्रयोग नही करते। वे सस्कृत ही बोलते हैं और इसी भाषा मे लिखते हैं। मुझे प्राय उनके पत्र मिलते रहते हैं जो सर्वथा निर्दोष सस्कृत मे होते हैं।"

राजा सोरीनुमोहन ठाकुर तथा रामदास सेन ने इस परिषद् के सम्मुख अपने जो सस्कृत श्लोक पठनार्थ भेजे हैं वे भी मेरे इस कथन की पुष्टि ही करते हैं। बहुत कम यूरोपीय लोगो को इस बात का पता है कि हम भारतवासी किस सीमा तक सस्कृत का प्रयोग करते हैं? भारत के विभिन्न भागो मे मेरे अनेक मित्र हैं और वे सस्कृत के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा मे मुझसे पत्र-व्यवहार नही कर सकते। कुछ मास पूर्व ही प्रो० मोनियर विलियम्स ने एथेनियम नामक पत्र मे स्वामी दयानन्द द्वारा मुझे भेजे गये एक सस्कृत पत्र का अनुवाद प्रकाशित किया था। स्वामी जी तो किसी समय बच्चा तक से सस्कृत में वार्तालाप करते थे। यदि भारत के सभी भागो के पठित लोग सस्कृत तथा हिन्दी के माध्यम से अपनी बौद्धिक चर्चाओ को सम्पन्न न करें तो उनका पारस्परिक विचार विनिमय तो असम्भव ही हो जायेगा क्योकि उस विशाल देश के विभिन्न प्रान्तो मे बोली जाने वाली प्रादेशिक भाषाओ की सख्या बहुत अधिक है। मैं यह बात अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हू। मैने भारत के पश्चिमी तथा उत्तरी भागो मे सामाजिक तथा उत्तरी भागो मे सामाजिक तथा धार्मिक विषयो पर अनेक व्याख्यान दिये हैं तथा शास्त्रार्थ भी किये हैं किन्तु सस्कृत में बोलने से मुझे कही कोई कठिनाई नहीं हुई और मेरे देशवासियो ने मेरे कथन को भली भाति समझा। इस प्रकार मैंने भली भाति सिद्ध कर दिया है कि पाणिनि के समय सस्कृत बोलचाल की भाषा थी तथा आज भी यह भारत के शिक्षित नागरिकों द्वारा अधिकाश मे बोली तथा लिखी जाती है।

मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी

(पृष्ठ १ का शेष)

गोबर के कीड़े बनाओ, और स्वामी (वेदों) गुरु से नाक मत सिकोड़ो, हम लोग मेरे (मुझे) कुल्हाड़ी बनाने वालों के शत्रु हो, परन्तु हम कोई तुम्हारे शत्रु नहीं है। स्वामी जी के उपदेश को सुनो और शिक्षाओं उनको जो तुम्हें सच्चिदानन्द अद्वितीय के अतिरिक्त दूसरे किसी को पूजने की शिक्षा देते हैं।"

मुन्शी अलखधारी का स्वामी जी से सम्पर्क लुधियाना तथा लाहौर में बराबर रहा। उन्होंने अपने लेखों मे हिन्दुओं को निरन्तर परामर्श दिया कि "यदि वे अपने आपको प्राचीन शास्त्रों का भक्त रखना चाहते हैं, वे अगर किसी को गुरु बनाना चाहें या किसी से किसी समस्या का समाधान करने के इच्छुक हों, या किसी से उपदेश चाहें या किसी की कथा सुनना चाहें तो इसके लिए एकमात्र उपयुक्त दयानन्द सरस्वती है।" स्वामी जी की शिक्षाओं से अनुप्राणित होकर अलखधारी ने १८८० में पेशावर में आर्य समाज की स्थापना की। पं० लेखराम को स्वामी दयानन्द तथा उनके सिद्धान्तों का परिचय अलखधारी के ग्रन्थो का अध्ययन करने से ही हुआ था।

अलखधारी के द्वारा प्रवर्तित विचार क्रान्ति का मूल्यांकन करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने पं० लेखराम के जीवन चरित्र में लिखा था—"इस बात में मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के लेखों ने वैदिकधर्म को पुनरुज्जीवित करने में वही काम किया जो ईसाई मत की स्थापना के पहले जान दि बैप्टिस्ट के व्याख्यानों ने किया। यदि ईसाइयों को ईसा का उपदेश समझने के लिए जान के व्याख्यानों की आवश्यकता थी तो आर्य समाज को भी महर्षि दयानन्द का उद्देश्य समझाने के लिए अलखधारी की छपवाई पोथों की जरूरत अवश्य थी। उस समय के पढ़े-लिखे पंजाबी और कुछ-कुछ संयुक्त प्रान्त वाले भी अलखधारी को अपना पैगम्बर और रहबर मानते थे। अलखधारी ने अपने लेखो की पुष्टि में स्वामी दयानन्द के लेखों और व्याख्यानों का प्रकाश किया। यही कारण था कि मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के सैकड़ों भक्त अन्त को महर्षि दयानन्द की पवित्र शरण में आये और आर्य समाज के उत्साही सभासद बने।" अलखधारी की समस्त रचनाएं 'कुल्लियात अलखधारी' में संगृहीत हैं। उनका निधन १ मई १८८२ को हुआ।

सुप्रीमकोर्ट ने स्वतन्त्रता सेनानियों के पेंशन नियमों का विवरण मांगा

नई दिल्ली ४ मई। सुप्रीमकोर्ट ने आज एक वाद मे भारत सरकार से स्वतन्त्रता सेनानियो के लिए बनाये गए नियमो का विवरण मागा है कि इसका लाभ किन शर्तो पर मिल सकता है।

सुप्रीमकोर्ट स्वतन्त्रता सेनानी श्री नौरताराम मरवाह की उस याचिका पर विचार कर रही थी जिसमे कहा गया है कि श्री मरवाहा ने अपने नगर सियालकोट मे १६४१ मे स्वाधीनता सघर्ष मे भाग लिया था और उन्हे ३ मास की जेलयात्रा मिली थी। भारत सरकार के सशोधित नियमो मे यह प्रावधान है कि केवल ६ मास के जेलवासी सेनानियो को ही पशन का लाभ मिलेगा। केवल स्त्रिया व दलित व आदिवासी सेनानियो को ही ३ मास के जेलवास पर पेशन का लाभ मिल सकता है।

जजों ने सरकारी वकील से पूछा है कि क्या उक्त रियायत सभी के लिए बढाई जा सकती है।

श्री मरवाह ने स्वतन्त्रता सेनानी पशन की १६७२ सशोधित धारा ४ को चैलज किया है। जिनको अपनी मुख्यभूमि मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व ६ मास से कम का कारावास दण्ड मिला था और वे इसी कारण से हानि उठा रहे हैं।

१ अगस्त १६८० को सरकार ने स्त्रियो व पिछडे वर्ग के सैनिको के लिए कारावास अवधि घटाकर ३ मास का सशोधन कर दिया था।

भारत सरकार ने श्री मरवाह के दावे को १६८१ मे अस्वीकार कर दिया था इस आधार पर कि उन्होने ६ मास का कारावास नही भोगा है।

(टाइम्स आफ इण्डिया ५ ५ ८७ से उद्धृत)

आतंकवाद के विरुद्ध

(पृष्ठ ४ का शेष)

कि आज ही समकर में मुकाबिले है जैलसिंह और एक दूसरे आतकवादी का मारा जाना) तो वह है डाइरेक्टर जनरल पुलिस के नेतृत्व मे पुलिस का का कुछ भाव। इस मुकाबिला को किसी नेता या राज्य सरकार की सहायता या मनोबल बढ़ाए बिना किया जा रहा है।

वास्तव मे सरकार या उसे चलाने वाली पार्टी देहाती क्षेत्रो मे गुरुद्वारों मे या कही भी कट्टरपथियो आतकवादियो व अराजको का मुकाबिला नही कर रही। उनका मुकाबिला केवल इतना है कि वह एक मन्त्री शहरी क्षेत्र में विशेष राजनैतिक दल के लोगो के सामने भाषण दिया करते हैं। जिसका कठिनाई से ही कोई प्रभाव होता है नही उन पर कोई कार्यवाही की जाती है। हत्या व विनाश बढ़ रहा है। पिछले अप्रैल मास मे तो यह अति उग्र मात्रा मे बढ़ गया है। अभी आज के समाचार पत्रो का समाचार है कि १२ व्यक्ति मृत्यु के घाट उतार दिए गए।

इन सब बातों को देखते हुए और जो कुछ मैंने पहले कहा उसको दृष्टिगत रखते हुए मुझे किञ्चित भी सन्देह नही कि वर्तमान सरकार का चलना बने रहना न केवल व्यथ होगा अपितु प्रदेश की राज्य व्यवस्था विधान की धाराओ के अनुसार नही चलाई जा सकती।

अन्त मे यदि आप हस्तक्षेप करना चाहे और आर्टीकल ३५४ के अनुसार आदेश प्रसारित करें तो मैं यह समझा देना चाहूगा कि विधान सभा को स्थगित किया, उसे भग न किया जाए तथा आपके शासन का आदेश अपनी शर्तों पर हो जिन पर पहले भी एक बार प्रसारित किया गया था।

((हस्ताक्षर) एस एस रे

गवर्नर पजाब

नवीन-प्रवेश के लिए स्वर्णिम अवसर

गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय, सिराथू, इलाहाबाद का नया सत्र १ जुलाई १६८७ से प्रारम्भ हो रहा है। प्रवेश १५ अगस्त १६८७ तक चलेगा। यह महाविद्यालय राज्य सरकार से "क" वर्ग प्रथम श्रणी मे मान्यता प्राप्त तथा सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। यहा प्रथमा (कक्षा ६) से आचार्य (एम० ए०) पर्यन्त अध्ययन अध्यापन की ओर छात्रावास की उत्तम व्यवस्था है। यहा आधुनिक विषयो के अतिरिक्त वेद, निरुक्त, दर्शन, न्याय, धर्म शिक्षा, नैतिक शिक्षा, सगीत सन्ध्या-हवन, योगासन व्यायाम, धनुर्विद्या आदि का दैनिक अभ्यास एव प्रशिक्षण की सुयोग्यतम आचार्यों द्वारा अच्छी व्यवस्था है। अपने बच्चो को सुयोग्य सदाचारी, देशभक्त नागरिक बनाने के लिए गुरुकुल सिराथू मे प्रवेश कराना न भूले। स्थान सीमित है। शीघ्रता कर। विशेष जानकारी के लिए २) दो रुपये भेजकर नियमावली मगाये।

कक्षा ५ उत्तीर्ण छात्र प्रवेश के लिए आवश्यक है।

—डा० रमामिश्र शास्त्री प्राचार्य

वेदों में योग विद्या

(पी एच० डी० के लिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का सशोधित सस्करण)

लेखक—स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

वेद दर्शन तथा उपनिषद आदि वैदिक साहित्य से प्रमाणित अपूर्व ग्रन्थ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पुरस्कृत। मूल्य ६० रु० है। योग जिज्ञासुओ के लिए विशेष ज्ञान प्रदान करने वाला।

प्राप्ति स्थान—

१—यौगिक शोध सस्थान योगधाम ज्वालापुर हरिद्वार पिन २४६४०१

२—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली २

'गुड मार्निंग' और 'नेकटाई' का प्रयोग बन्द करें

सभी डी० ए-वी० संस्थाओं के प्रमुखों के नाम परिपत्र

आदरणीय महोदय,

आशा है आपको मेरा १३ अप्रैल, १९८७ का परिपत्र मिला होगा जिसमे मैंने आपसे प्रशासनिक कार्यों मे हिन्दी का प्रयोग करने का अनुरोध किया था। (यह परिपत्र 'आर्य जगत्' के 'महात्मा हंसराज विशेषांक मे छप चुका है।)

उसी क्रम मे मेरा आपसे यह भी अनुरोध है कि आप अपने छात्रों को किसी के अभिवादन के लिए "नमस्ते" शब्द का प्रयोग करने की प्रेरणा दें और जहा तक सभव हो नैकटाई का प्रयोग न करें। कारण यह है कि हमारी ओर से निरन्तर यही घोषणा होती है कि हम अपने पब्लिक स्कूलो मे भारतीय सभ्यता और सस्कृति के वातावरण में शिक्षा की व्यवस्था कर रहे हैं। अत यह आवश्यक है कि हमारी संस्थाओं का आचरण अपने उद्देश्य एवं घोषणा के अनुरूप हो और हमारे छात्रों की अभिवादन पद्धति भारतीय ही हो। वेद के आधार पर जिस "नमस्ते" का आर्य समाज ने प्रचार किया था, अब विदेशो मे भी उसका प्रचलन होने लगा है। अतः उसके स्थान पर अपने स्कूलों मे पाश्चात्य अभिवादन-पद्धति के रूप में 'गुडमार्निंग' को ग्रहण करना और नैकटाई का प्रयोग करना वांछनीय नहीं है।

कृपया मेरे १३ अप्रैल, १९८७ के पूर्व परिपत्र को और इस परिपत्र को अपने अध्यापको एव अन्य स्टाफ तथा छात्रों की जानकारी मे भी ला दें।

—दरबारी लाल, सगठन सचिव, डी० ए० वी० प्रबन्ध कर्त्री समिति नई दिल्ली।

महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द

डा० भवानीलाल भारतीय की अनुपम कृति

प्रस्तुत पुस्तक में महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द के मन्तव्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

विद्वान् लेखक ने दोनों महापुरुषों के अनेक लेखों, भाषणों और ग्रन्थों के आधार पर प्रमाणित सामग्री का संकलन किया है।

मूल्य : केवल १२ रुपये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

विशाल आर्य डायरेक्ट्री

हमने विशाल आर्य डायरेक्ट्री के नाम से यह पुस्तक आपकी सेवा में प्रस्तुत की है। उसमें आपको दिल्ली एव हापुड़ के बारे में हर प्रकार की जानकारी प्राप्त हो सकेगी। जैसे रेलवे सेवा समय सारणी, वायु सेवा सारणी, अन्तर्राष्ट्रीय बस सेवा, समस्त आर्य-समाज उनके पूरे पते डी०टी०सी० के समस्त मार्गों पर चलने वाले रुटों के नम्बर तथा प्रत्येक रुट कहां से शुरु होकर कहां होता हुआ कहां पर समाप्त होता है, मुख्य-मुख्य हस्पताल, डाक्टर, नर्सिंग होम, एम्बुलेन्स, धर्मशाला, होटल वहां कार्यरत संगठन, अखबारों की एजेन्सियां विदेशी दूतावासो के पते, डाक, टेलीफून सेवा एवं एस०टी०डी० कोडस, कौन सा बाजार कब बन्द रहता है, किस मडी में कौनसा माल मिलता है, समस्त आवश्यक सेवाओं के फोन नम्बर तथा समस्त ट्रान्सपोर्टों के पते एवं फोन नम्बर समस्त उपयोगी जानकारी आपको प्राप्त होगी।

अत. आप से अनुरोध है कि उपरोक्त पुस्तक को उसके लागत मूल्य पर अवश्य खरीदकर अपने पास अवश्य रखे।

लागत मूल्य १०) रुपये २०० पृष्ठ

भवदीय :

गगाप्रसाद आर्य, विजयकुमार आर्य, आर्य ट्रांसपोर्ट क० (रजि०)
३९४७, नया बाजार देहली-६, निवास—११ आर्य भवन
नई मन्डी, पक्का बाग, हापुड़ (गाजियाबाद)

आर्य महाविद्यालय किरठल (मेरठ) में १ मई से

प्रवेश प्रारम्भ

अनुभवी शिक्षाविदों के नेतृत्व में निरन्तर उन्नति पथ पर अग्रसर आर्य महाविद्यालय किरठल (मेरठ) में एक मई से छात्रों का नवीन प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। यहां सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की प्रथमा से आचार्य पर्यन्त शिक्षा के अध्यापन की पूर्ण व्यवस्था है। पंचम श्रेणी अथवा किसी भी पूर्व उत्तीर्ण कक्षानुसार छात्र अग्रिम कक्षा में प्रवेश ले सकता है। शिक्षा एवं आवास की व्यवस्था निःशुल्क होगी। खेल कूद, व्यायामादि की समुचित व्यवस्था है। अतः अपने बच्चों के बहुमुखी विकास के लिए विद्यालय में शीघ्र प्रवेश करायें। प्रवेश हेतु तुरन्त सम्पर्क करें।

मार्ग निर्देश—देहली से सहारनपुर जाने वाले बस मार्ग के रमाला स्टैण्ड से टाण्डा जाने वाले बस मार्ग पर किरठल है।

—समरभानु आचार्य, आर्य महाविद्यालय किरठल (मेरठ)

प्रवेश सूचना

(सत्र १९८७-८८)

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा सस्था

(अन्तर्गत आर्य विद्या सभा डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धक समिति, नई दिल्ली)

पद : धर्म शिक्षक

प्रवेश योग्यता : एम. ए. (सस्कृत) अथवा आचार्य। हिन्दी, अंग्रेजी भाषा तथा वैदिक सिद्धातो का ज्ञान आवश्यक।

पाठ्यक्रम अवधि : एक वर्ष

सुविधाएं : शिक्षा, आवास, पानी व बिजली सर्वथा निःशुल्क/योग्य छात्रों को २०० रु० मासिक छात्रवृत्ति

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद सफल अभ्यार्थियों को डी०ए०वी० शिक्षण संस्थाओ मे "धर्म शिक्षक" पद पर टी०जी०टी० वेतनक्रम में नियुक्ति की गारण्टी।

केवल निष्ठावान आर्य समाजी ही पूर्ण विवरण सहित आवेदन पत्र १५ जून, १९८७ तक निम्न पते पर भेजें—

—विजयपाल शास्त्री
डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान
आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय से आर्य समाज को हिन्दी कविता को देन विषय पर शोध प्रबन्ध पी.एच.डी. उपाधि हेतु स्वीकृति

चण्डीगढ़ ५ मई। आर्य जनता को यह जान कर अत्यन्त हर्ष होगा कि आर्य समाज की हिन्दी कविता को देन तथा ऋषि दयानन्द की विचारधारा का हिन्दी काव्य पर प्रभाव जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर पजाब विश्वविद्यालय ने श्रीमती वीणा कल्ला को पी० एच० डी० की उपाधि से सम्मानित किया है। श्रीमती कल्ला ने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक भारतेन्दु काल से लेकर अब तक के हिन्दी काव्य पर आर्य समाज की विचारधारा के प्रभाव का समीक्षात्मक मूल्यांकन किया है। इसी प्रसग मे उन्होने ऋषि दयानन्द के जीवन को लेकर लिखे गये अनेक काव्य ग्रन्थो तथा आर्य समाजी विचारधारा में दीक्षित हिन्दी कवियों के काव्य का भी सूक्ष्म परीक्षण किया है। श्रीमती वीणा कल्ला के शोध कार्य का निर्देशन पीठ के अध्यक्ष प्रो० भवानीलाल भारतीय ने किया था। यह उपाधि शोधकर्त्री को विश्वविद्यालय के गत ७ मार्च मे सम्पन्न हुए दीक्षान्त समारोह मे प्रदान की गई।

उत्सव समाचार

गुरुकुल प्रभात आश्रम का टीकरी भोला झाल मेरठ में गत दशहरा मेले पर दिनांक ७-६-८७ को प्रातः ९ से वेद कथा का आयोजन किया है।

—इन्द्रराज, मन्त्री

वेद प्रचार

गान्धी नगर (गुजरात मे श्री स्वामी मेधानन्द सरस्वती जी के द्वारा दिनाक १०-८-८७ को पौराणिक मन्दिर मे यज्ञ एवं वेद प्रवचन का कार्यक्रम रखा जिसका स्थानीय जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। —महेन्द्र गान्धी

राष्ट्र के महान उद्धारक

(पृष्ठ १ का शेष)

आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी ानन्दबोध सरस्वती का स्वागत किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित स्वर्गीय श्री पृथ्वीसिंह आजाद का पुस्तक सत्याथ प्रकाश की शिक्षाए का विमोचन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी ने किया।

ज्ञानी जैलसिंह ने आय समाज द्वारा शिक्षा व समाज सुधार के क्षेत्र मे मूल्यवान सेवाओ की सराहना करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द एक महापुरुष थे। उनकी शिक्षाओ व आदर्शों का अधिक से अधिक प्रचार मानव समाज के ... मे होना चाहिए।

महर्षि दयानन्द के उस महान् योगदान ... चर्चा करते हुए जो ऋषि ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए दिया राष्ट्रपति ने कहा महर्षि उन महान् व एक निष्ठ व्यक्तियो मे है जिन्होने राष्ट्र निर्माण किया। जिन्होने देश को कुरीतियो से बचाया तथा नारी जागरण का अभियान चलाया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाए नामक पुस्तक के लेखक महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिन्न मित्र पृथ्वीसिंह जी आजाद है जिनका देश के राष्ट्रीय आन्दोलन में बड़ा भारी सहयोग रहा था और आय समाज म भी वह अग्रिम पक्ति के नेता थे। हमे प्रसन्नता है कि उनकी पुस्तक का विमोचन राष्ट्रपति जी के ही कर कमलो द्वारा हुआ।

श्री स्वामी जी ने कहा आय समाज और महर्षि दयानन्द की कल्पना यही थी कि स्त्रियो को विद्या एव वेदाध्ययन का अधिकार मिले और समाज मे ... यथा स्थान प्राप्त हो।

श्री स्वामी जी ने गव स कहा कि देश मे सवप्रथम कन्या महा विद्यालय जालन्धर मे आय समाज की ओर से ही स्थापित हुआ था।

कब बढ़ेंगे हम सुपथ पर ?

क्या शहीदो का लहू बेकार जायेगा ?
क्या भरतभू पर तिमिर घनघोर छायेगा ?
भ्रष्टमरी कब तक रहेगी स्वण धरती पर ?
ज्ञान रवि की रश्मि चमकेगी अधरा हर ?
क्या नही होगे सभी हम शौय गुण से युक्त ?
मानसिक नतिक गुलामी से बनेगे मुक्त ?
ज्ञान की किरण की भू पर जगगी ज्योति ?
मनुष्य से होगा विभूषित सब कही अ योनित ?
रश्मि समता की खिलेगी स्वच्छ सी स्निग्ध ?
दनुज तत्वो को अनल मे कर पुनरपि दग्ध ?
सत्य का डका पुन कब भूमिमण्डल पर बजेगा ?
मनुजता से मनुज अनुपम कब सजेगा ?
कब धरा जो जल रही अभिषिक्त होगी ?
कब दनुजता से धरणि यह रिक्त होगी ?
कब जलेगा धम का पावन सुदीपक ?
कब मनुज को प्राप्त होगा वास्तविक सुख ?
कब बढ़ेगे हम सुपथ पर त्याग हिंसा ?
कब करेगी अचना जग की अहिंसा
कब धरा यह दिव्य होगी सद्गुणो से ?
जय ध्वजा लहरा उठेगी सद्मनो से ?
सत्य कहते हैं युवक जब शक्ति है पहचानता
देश की नौका भवर मे डूबने पर तरता
चल पडेगे जब युवक नव शक्ति का आह्वान ले
फिर बढ़ेगी भूमि अपनी ज्योति का पगाम ले ॥

—राधश्याम आय एडवोकेट
मनाफिरखाना सुलतानपुर (उ० प्र०)



स्व० श्री पृथ्वीसिंह आजाद की पुस्तक सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाए का विमोचन करते हुए राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह साथ में छोटसिंह जी व स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के शताब्दी समारोह पर स्वा. आनन्दबोध सरस्वती द्वारा ध्वजारोहण

दिनक १९ मई १९८७। आय प्रतिनिधि सभा हरियाणा का शताब्दी कायक्रम भव्य समारोह के साथ आज रोहतक मे प्रारम्भ हुआ। सावदशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रात ध्वजारोहण के साथ शताब्दी समारोह का उद्घाटन किया। श्री स्वामी जी ने आय समाज म युवाशक्ति के प्रवेश के लिए आय वीर दल सगठन से मजबूत होकर काम करने की अपील करते हुए कहा कि देश को विघटनकारी और अलगाववादी शक्तियो से सुरक्षित रखने के लिए आय वीर दल को गाव गाव मे पहुचकर प्रचार अभियान प्रारम्भ करना चाहिए। आय समाज एक आदोलन है यह कोई जाति मत सम्प्रदाय अथवा पथ नही है। प्राचीन वदिक धम की पुन स्थापना के लिए ही आय समाज की स्थापना हुई थी। आज देश जिन परिस्थितियो मे गुजर रहा है आय समाज रूपी आदोलन ही देश को बचा सकता है।

श्री स्वामी सवानन्द जी महाराज ने युवको को प्रेरणा करते हुए कहा कि वद सब विद्याओ की निधि है। महर्षि दयानन्द ने जो सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए दिया है उस पर हमे आचरण करना चाहिए यही वदिक धम है।

निर्वाचन

—आय समाज सुन्दर विहार दिल्ली ४१ श्री मदनलाल गोगया प्रधान श्री सत्यदेव गुप्त मन्त्री श्री ईश्वरी प्रसाद शर्मा कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

—नगर आय समाज राम कटिया जौनपुर श्री वसन्तलाल एडवोकेट प्रधान श्री राधमोहन गुप्त मन्त्री श्री धर्मेन्द्रनाथ जी कोषाध्यक्ष चने गए

—बिलासपुर (म० प्र०) श्री कृष्णबलदेव जी प्रधान श्री रामनारायण जी मन्त्री साहबराम जी कोषाध्यक्ष चने गए।

—बदायू (उ० प्र०) श्री राजेन्द्र कमार जी प्रधान श्री महेन्द्र कुमार एडवोकेट मन्त्री श्री आशा शकर जी कोषाध्यक्ष चने गए।

—आय समाज गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर श्री हरिसिंह साहि याचाय प्रधान सुरेन्द्र कुमार विद्याभास्कर मन्त्री डा० केशवप्रसाद उपाध्याय कोषाध्यक्ष चने गए।

आय समाज ताजगज आगरा श्री त्रिलोकीनाथ भटनागर प्रधान श्री बिरजा शकर आय मन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र कुलश्रेष्ठ कोषाध्यक्ष चने गए।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक



चौधरी चरणसिंह नहीं रहे

राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति

दिल्ली । २६ मई भू० पू० प्रधानमन्त्री चौधरी चरणसिंह के निधन पर एक शोक सभा मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गहरा दुख प्रकट करते हुए कहा —

चौधरी चरणसिंह प्रारम्भ मे आर्य समाज के बड़े सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे और जीवन भर आर्य समाजी

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] वर्ष २२ अंक २३]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
ज्येष्ठ शु० १० सं० २०४४ रविवार ७ जून १९८७

दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

दिल्ली, मेरठ के दंगों को सख्तीसे दबाने की मांग

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधानमंत्री राजीवगांधी से मिले

नई दिल्ली, २५ मई ।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज एक शिष्टमण्डल सहित प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से भेंट की । मेरठ की यात्रा करके श्री स्वामी जी हाल मे लौटे थे और उन्होंने आंखो देखे सारे हालात से प्रधानमन्त्री को अवगत कराया तथा कहा कि मेरठ मे श्रीमती मोहसिना किदवई के प्रशासन को निष्क्रिय बनाने के कारण हिन्दुओ को जो घोर विनाश का सामना करना पडा है उसकी निष्पक्ष न्यायिक जांच कराई जाय और पीडितो को उचित मुआविजा दिलाया जाए । शिष्टमण्डल द्वारा प्रधानमन्त्री को एक ज्ञापन दिया गया जिसमे मेरठ की लोमहर्षक विनाश लीला का विस्तृत वर्णन था । स्वामी जी ने कहा कि इस विनाश लीला का कारण यह है कि हिन्दुओके लाइसेन्स वाले हथियार तो एक आदेश देकर जमा कराये जा रहेहैं । परन्तु मुसल्मानो के पास जो अवैध हथियार असख्य मात्रा मे थे उनको न जमा करवाया गया नही उनको जमा कराने के लिए समुचित उपाय बर्ते गए । मेरठ मे जानोमाल मे जो विनाश लीला का सामना हिन्दुओं को करना पडा है वह देश के इतिहास पर एक कलंक का टीका बन कर रह गया है । अत शासनको दिल्ली व मेरठके दंगोको सख्ती से दबाने की कार्यवाही करना परमावश्यक है । स्थानीय प्रशासन नौचन्दी के मेले के अवसर पर हुए दंगे से भी कुछ नही सीख पाया । मुसल्मान बहुत दिन तक अन्दर ही अन्दर विनाश लीला की पूरी तैयारी कर रहे थे और योजना बद्ध तरीको से

(शेष पृष्ठ १५ पर)



बाए से श्री सूर्यदेव, श्रीमती कमला रत्नम, क्षितीश वेदालंकार, विमल देव भारद्वाज, मनोहरलाल कुमार प्रेमचन्द्र गुप्त राजीव गांधी, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सोमनाथ एडवोकेट सच्चिदानन्द शास्त्री रामरत्न शास्त्री

सम्पादक – सच्चिदानन्द शास्त्री

मेरठ में चारों तरफ आग और मौत का साया :

प्रशासन रक्षा करने में असमर्थ

समूचा मेरठ सेना के हवाले किया जाय : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मेरठ गए

दिल्ली २२ मई।

मेरठ नगर और बाहरी क्षेत्रों का दौरा करने के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि एक महीना पहले नौचन्दी मेला के अवसर पर मेरठ में जो उपद्रव हुए थे—यदि प्रशासन ने सतर्क रहकर पूरी खोज-बीन करके प्रभावी कार्यक्रम बनाकर भविष्य में उन्हें रोकने का समुचित प्रबन्ध किया होता, तो मेरठ को वर्तमान विनाशलीला से बचाया जा सकता था।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने बड़े दुःखी शब्दों में बताया कि "मैं अपने आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं के साथ मेरठ के जिस क्षेत्र में भी गया वहां एक ही आवाज सुनाई दे रही थी कि श्रीमती मोहसिना किदवई मेरठ के उपद्रवों पर हमेशा परदा डालकर सरकार पर सख्त कार्यवाही न करने का दबाव डालती रही है। मेरठ की राष्ट्रवादी जनता मोहसिना किदवई द्वारा किए जा रहे कार्यों को ही विघटनकारी तत्वों को प्रोत्साहित करने का कारण मानती है।"

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जिलाधीश से भी मिले। उन्होंने जिलाधीश से पूछा कि १४ अप्रैल को भयानक दंगे के पश्चात् मुख्यमन्त्री वीरबहादुरसिंह और दूसरे लोग मेरठ आए थे। आप लोगों ने उस समय परिस्थिति को सम्भालते हुए भविष्य में दंगा, लूटमार, आगजनी आदि न हो, इसका कोई प्रबन्ध किया था? जिलाधीश ने कहा कि हमें ऐसी कोई आशंका नहीं थी। उनके इस जवाब से यह बात साफ हो जाती है कि प्रशासन लापरवाह और निष्क्रिय था तथा उपद्रवी लोगों पर कोई अंकुश नहीं था। न ही उन्हें यह चिन्ता थी कि दूसरी बार भी शरारती तत्व सिर उठा सकते हैं।

स्वामी आनन्द बोध ने कहा कि मेरठ के हिन्दू भयभीत हैं। उन्हें अपनी सुरक्षा का कोई सहारा दिखाई नहीं देता।

— सारा भगतसिंह मार्किट जलाकर राख कर दिया गया है। यहां का नुकसान करोड़ों रुपए का है।
— सूत की ५ दुकानें भस्म हो गई हैं, इन दुकानों में भी लगभग २५ लाख रुपए की सम्पत्ति स्वाहा कर दी गई है।
— बैंक कालोनी की आग ने क्षेत्र की जनता को हिला कर रख दिया है।
— मेरठ का कोई हिस्सा ऐसा नहीं बचा जहां आग ही आग तथा नर-संहार का दृश्य न दिखाई देता हो।
— १८ मई की रात के नौ बजे से प्रातःकाल तक हापुड़ रोड पर वाहनों को रोकने का सिलसिला प्रारम्भ हो गया और ट्रकों तथा गाड़ियों में आग लगाने का कार्यक्रम चलता रहा।

अधिकारियों को विश्वास था कि रमजान का महीना होने के कारण मुसलमान कोई नया उपद्रव नहीं करेंगे। इसी गलत धारणा के कारण मेरठ चारों ओर से आग और लूट की लपेट में आ गया। लोग घरों में सो रहे थे और उपद्रवी चारों ओर आग लगा रहे थे।

पत्रकारों व जनता के बीच जाने पर ज्ञात हुआ कि—

१—छोटे मुस्लिम समुदाय के लोग अपनी दुकानों में स्वयं आग लगाकर मुआवजा लेने तथा हिन्दुओं पर दंगा करने का आरोप लगा रहे हैं।

२—गोलकुआं, भगतसिंह चौक, हापुड़ रोड पर पैट्रोल पम्प जले और सूतीमाल का भारी नुकसान हुआ। शाहदरा गेट, लिसारी गेट, हाशमपुरा, जली कोठी आदि अनेक स्थान मुस्लिम आतंकवादियों के मुख्य गढ़ हैं।

३—इस्लामाबाद कालोनी जो सरकार से मंजूरशुदा कालोनी नहीं है, मेरठ का सबसे बड़ा आतंकवादियों का गढ़ है। आज भी जैदी कालोनी व इस्लामाबाद कालोनी में पाकिस्तानी झण्डा लहरा रहा है। इस स्थान पर आज पुलिस अन्दर जाने की हिम्मत नहीं करती है।

४—हिन्दू स्त्रियां हाशमपुरा लोधियान की अफसरों के पास गईं, पर अफसरों ने टालकर कहा कि कुछ नहीं है। फिर भी छत्तों पर पुलिस के सिपाही तैनात कर दिए गए। पर हापुड़ रोड, शास्त्रीनगर, शामनगर, पड़ियान की सैकड़ों औरतों ने जब प्रदर्शन किया, तब सरकार ने सुरक्षा का प्रबन्ध किया।

५—इस पर भी पुलिस की राइफलें छीनी गईं। मुसलमानों की गिरफ्तारी के बाद हिन्दुओं की भी गिरफ्तारी की जा रही है। सरकार ने हिन्दुओं से लाइसेंस सुदा हथियारों को जमा करने के आदेश दे दिए हैं, जब कि पूरा अवैध शस्त्रों का भण्डार मस्जिदों व मुस्लिमों के घरों में अवैध रूप से जमा है। हिन्दू अपनी रक्षा कैसे कर सकेंगे। जब कि मेरठ के पत्रकारों का कहना है कि सैकड़ों को मारा जा चुका है।

६—स्टेट बैंक कालोनी में लड़कियों से बलात्कार किया गया और कई लड़कियां अभी तक गायब हैं। मुस्लिम बहुल एरिया के हिन्दू मारे गए हैं या संकट में पड़े हुए हैं।

७ हत्याकाण्ड से वह इलाका बदबू से भरा है। जानवरों और मनुष्यों की लाशों को उठाने वाला भी कोई नहीं है।

८—मैडिकल कालेज का मुर्दाघर लाशों से भरा है जिन्हें सरकार देखने तक नहीं देती है। ताला लगा रखा है।

जिलाधीश की यह मांग सर्वथा उचित है कि शहर को सेना के हवाले किया जाय।

इतना किस्सा इकतरफा हो जाने के बाद प्रशासन यदि १४ अप्रैल के बाद चुस्त होता तो इतनी बड़ी दुर्घटना नहीं होती और आपस की आतिशबाजी का ढोंग लोधियों के बच्चों के जसूठन का बहाना बनाकर बाजा न बजाने पर दंगा करने का बहाना न बताते।

डा० प्रो० हरिपालसिंह के लड़के को कार सहित जलाकर मार देना, इस बात का सबूत है कि यह सारा काण्ड योजनाबद्ध था।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ सभा के मन्त्री पण्डित सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री लक्ष्मीचन्द्र, ओम्प्रकाश आर्य तथा श्री सजयकुमार भी थे।

स्वामी जी के मेरठ पहुंचने पर दुःखी हिन्दू जनता ने सन्तोष व्यक्त किया कि आप ही पहली बार मेरठ आए हैं। सारा शहर सुनसान पड़ा है। पुलिस की गश्त जारी है। फिर भी हमारे रहने के समय पर भी गुदड़ी बाजार में फायरिंग हो रही थी। उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमन्त्री और गृहमन्त्री उस समय मौजूद थे।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

सम्पादकीय

संस्कृत प्रेमी विल्सन और हम

स्वामी दयानन्द का जन्म सन १८२४ को हुआ और उसी वर्ष कलकत्ता में विल्सन के प्रयत्नों से संस्कृत कालिज की स्थापना की गई थी। तब विल्सन ने भारत से चुने हुए संस्कृत के विद्वानों को इस कालेज में पढ़ाने हेतु स्थान दिया। मि० विल्सन स्वयं भी संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे।

परन्तु कालिज खुलने के ११ वर्ष पश्चात् लार्ड मैकाले नाम के व्यक्ति का प्रादुर्भाव और भारत में उच्चस्तर पर उसकी नियुक्ति से समस्त भारत ईसाइयत व पाश्चात्य सभ्यता में रंगने के लिये कटिबद्ध हो गया और संस्कृत भाषा के मूल पर ही कुठाराघात हुआ। सर्वप्रथम-कलकत्ता के संस्कृत कालिज पर ही चोट पड़ी। मैकाले ने सर्वप्रथम प्राध्यापक वर्ग का तिरस्कार किया, दुर्व्यवहार से परेशान कालिज के प्राचार्य ने विल्सन महादेय को एक पत्र लिखा—

कि इस संस्कृत विद्यालय रूपी सरोवर में आपके द्वारा नियुक्त जो अध्यापक रूपी हंस थे वे आपके दूर चले जाने पर कालवश पंख विहीन और सामर्थ्य हीन हो गये हैं। उस सरोवर के तट पर बाज धनुष पर बाण चढ़ाये कुछ बहेलिये आ बिराजे हैं। उन कार्यों से हम अध्यापक रूपी हंसों को आप यदि संरक्षण कर सके तो आपका यश-चिरस्थायी रहेगा।

इस पत्र से मर्माहत होकर विल्सन महोदय ने उत्तर दिया था वह भी स्मरणीय है। लिखा था कि—

विश्व का निर्माण करने वाले ब्रह्मा हैं, और हंस उनका प्रिय वाहन है अपना वाहन अत्यन्त प्रिय होने के कारण स्वयं ब्रह्मा ही अब अपने हंसों (अध्यापकों) की रक्षा करेंगे—

अमृत बहुत मधुर होता है परन्तु संस्कृत उस-अमृत से भी बढ़कर मधुर है। इसलिये देवता उसका उपभोग करते हैं और इसी कारण यह देव भाषा के नाम से विख्यात है।

मैं नही जानता कि संस्कृत भाषा मे ऐसी कौनसी माधुरी भरी है कि हम विदेशी होकर भी इस भाषा के दीवाने हैं।

जब तक, भारतवर्ष है, विन्ध्य और हिमालय है, गंगा व गोदावरी हैं, तब तक संस्कृत हमसे हटाई नहीं जा सकती—

मैकाले के भाषा के प्रति व्यवहार मे अन्य एक अध्यापक के भी अपने विचार दिये गये हैं विल्सन महोदय को—

कलकत्ता मे गोल्सर नामक सरोवर पर अनेक प्रकार के वृक्षों से आच्छादित तट पर संस्कृत विद्यालय रूपी मृग-बराबर नष्ट होता जा रहा है उस भयभीत मृग को मारने के लिये मैं कह नहीं सकता। मैकाले रूपी व्याधराज अपने हाथों में तीक्ष्ण बाण लिये खड़ा है। अतः यह विद्यालय रूपी मृग अपनी आंखों मे आंसू भरकर सम्बोधित कर कह रहा हैं।

हे विल्सन ! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो—

विल्सन इस प्रार्थना पर भी चिन्तित ही नही हुआ अपितु दुःखी हृदय से चिन्ता ग्रस्त होकर उत्तर मे कहा कि—

विविध-प्राणियों के पादाभ्यास से निरन्तर पददलित की जा रही अग्नि की चिनगारी के समान सूर्य की किरणें संतप्त होती रहती हैं। जानवर भी चरते हैं और प्राणियों के पैरो तले मे रौंदी भीजाती हैं। कुदालों से खोद कर नष्ट की जाती है। फिर भी वह घास कभी नहीं नही मरती है, क्योंकि दुर्बलो के ऊपर सदा भगवान की कृपा बनी रहती है।

हे व्याधराज मैकाले तुम तो चले गये—और तुम अपने सपनों को सर्वांश रूप मे पूर्ण भी नही कर पाये—परन्तु चिन्ता न करो—तुम्हारे जाने के बाद भी तुम्हारे मानस पुत्र यहा विद्यमान हैं और जो काम बाप नही कर सका, उसे बेटे पूरा कर के दिखायेंगे। बाप तो कफन ही उतारता था, अब मानस पुत्र मुर्दा सहित कफन उतारने में समर्थ होकर २१वी सदी की ओर बढ़ रहे हैं।

आज भारतीय संस्कृति और संस्कृति शिक्षा को समाप्त करने का संकल्प हमारी राष्ट्रीय सरकार ने अपनी शिक्षा नीति मे परिवर्तन करके जो परिचय दिया है उसका क्या परिणाम होगा। इस नीति की परिकल्पना आज के शिक्षा-विदो ने नहीं की है। काश ! उसके भयावह परिणामों की थोड़ी भी चिन्ता अनुभव की होती तो इस प्रकार निर्मम हत्या संस्कृत के न होती। संस्कृत के स्थान पर आधुनिक भाषाओं को पढ़ाई का महत्व दिया। जिस त्रिभाषा सूत्र की चर्चा की जाती है उसमें मातृभाषा के रूप में अपने प्रान्त की भाषा-मातृभाषा के रूप में, राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी; और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप मे अंग्रेजी है इन तीनों को त्रिभाषा फार्मूला को अनिवार्यता देकर-त्रिभाषा फार्मूला सूत्र की योजना पूरी हो जाती है।

इस प्रकार जिस पठन-पाठन से संस्कृत का सफाया किया गया हो। उससे बहुत बड़े षडयन्त्र का पता चलता है। यह सारा कार्य जानबूझ कर ही किया गया है अनजाने मे नहीं।

अंग्रेजी को अनिवार्य रूप से समस्त भारत पर थोपना ही यह सिद्ध करता है कि मानस पुत्र यह अनुभव करते हैं कि अंग्रेजी के बिना २१वीं सदी की ओर हम अग्रसर नही हो सकते हैं।

जब से शिक्षा मन्त्रालय को समाप्त करके भारत सरकार ने मानव संसाधन विकास मन्त्रालय बनाया है तब से २१वी सदी मे जाने का अभियान तीव्रता से प्रारम्भ हुआ है।

२१वी सदी के लिये जो नई पीढ़ी निर्माण करनी है उसकी बुनियाद का आधार-शिक्षा नीति ही हो सकती है। इस नयी शिक्षा-नीति में संस्कृत को जिस प्रकार अपदस्थ किया है वह महान-दुःखद एवं आश्चर्यकारी है।

नेताओ के भाषणों में सर्वदा ही संस्कृति की रक्षा की बात कही जाती है परन्तु आचरण उसके सर्वथा, विपरीत ही हो रहा है उनके मन में कौनसी भारतीय संस्कृति है जो बिना संस्कृत के जीवन पा सकती है।

पाश्चात्य संस्कृति और उसकी वाहक अंग्रेजी के भक्त नेताओं से विनम्र निवेदन करता हूं कि वे पाश्चात्य देशो में ही जो अनुराग संस्कृत साहित्य के विषय में—मिलता है उन्हें देखे समझें तब संस्कृत को हमारे देश से दूर करने की कल्पना करें। ●

व्याध का घातक तीर

श्री क्षितीश वेदालंकार 'सम्पादक रत्न'

जब से शिक्षा मन्त्रालय को समाप्त करके भारत सरकार ने मानव ससाधन विकास मन्त्रालय बनाया है तब से २१वी सदी में जाने का अभियान तेजी से हो गयाहै। सबसे पहले तो मानव को भी ससाधन मानकर उसको चेतना शून्य एक यन्त्र बना दिया गया। २१वी सदी के लिये जो नई पीढी तैयार करनी है उसका मूल आधार शिक्षा नीति ही हो सकती है। वह शिक्षा नीति किस प्रकार की होगी इसका आभास तथाकथित नई शिक्षा नीति से हो जाता है।

इस नई शिक्षा नीति में सस्कृत को जिस तरह से अपदस्थ किया गया है, वह आश्चर्यजनक है। नेताओं के भाषणों में हमेशा प्राचीन सस्कृति की रक्षा की दुहाई दी जाती है । परन्तु व्यवहार सर्वथा उसके विपरीत होता है। जो संस्कृत के बिना प्राचीन भारतीय सस्कृति की बात करते हैं उनके मन में ऐसा कौनसा भारत है और कौनसी सस्कृति है जो बिना संस्कृत के जी सकती हैं,यह हम नही जानते। संस्कृत के बिना संस्कृति की बात करना वैसा ही है जैसे कि बीज के बिना वृक्ष की बात करना।

सरकार ने जिस ढंग से संस्कृत को समाप्त किया है उसका क्या परिणाम होगा, इसकी कल्पना शायद उन लोगों ने नहीं की। यदि उसके भयावह परिणाम को तनिक सी भी कल्पना होती तो शायद इस प्रकार निर्मम व्याध की तरह वे संस्कृत को अपनी नासमझी के तीर का निशाना न बनाते। उन्होने अरबी फारसी के समकक्ष सस्कृत को रखकर सभी क्लासिकल भाषाओं की पढाई को महत्व दिया है। जिस त्रिभाषा सूत्र की बात कही जाती है उसमें मातृभाषा के रूप में अपने प्रदेश की भाषा, राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अंग्रेजी इन तीनों भाषाओ को अनिवार्य करने के बाद त्रिभाषा सूत्र की योजना पूरी हो गई। जिन लोगो की मातृ भाषा हिन्दी है वे दूसरी भाषा के रूप में भारत की कोई अन्य प्रान्तीय भाषा पढेंगे। इस प्रकार जिस सफाई से संस्कृत का सफाया किया गया है, उससे किसी गहन षड़यन्त्र का आभास होता है। यह सब अनजाने में हुआ हो, नहीं लगता।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद जिस प्रकार शुरु से ही भारत सरकार ने ऐसे लोगों के हाथ में शिक्षा मन्त्रालय सौंपा जिनको किसी भी दृष्टि से भारतीय संस्कृति का पक्षपाती नहीं कहा जा सकता, उसी से सरकारी रुझान का पता लगता है। अंग्रेजी को अनिवार्य रूप से समस्त भारत पर थोपने की गरज से यह षड़यन्त्र किया गया लगता है। क्योंकि सरकार को लगता है कि बिना अंग्रेजी के २१वी सदी में हम छलांग नहीं लगा सकते। इसीलिये कम्प्यूटर का निर्माण करने वाले मानव को भी एक यन्त्र बनाकर कम्प्यूटर युग का दास बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई है।

पाश्चात्य संस्कृति और उसकी वाहक अंग्रेजी के भक्त नेताओं की सेवा में निवेदन करना चाहते है कि स्वयं पाश्चात्य देशों में ही सस्कृत साहित्य के सम्बन्ध में जो अनुराग प्रदर्शित किया गया है, वह अद्भुत है। संस्कृत साहित्य के जैसे खोजी और मर्मज्ञ विद्वान् इन पाश्चात्य देशों ने प्रदान किये हैं उन पर भारतीय विद्वान् भी न केवल गर्व कर सकते है। प्रत्युत ईर्ष्या भी । आनुपातिक दृष्टि से इन पाश्चात्य विद्वानो ने संस्कृत साहित्य का जितना ठोस और तथ्यपूर्ण अनुसंधानात्मक कार्य किया है, उतना और वैसा हम भारतीयों ने भी नही किया। मैक्समूलर, ग्रिफिथ, मैक्डोनल, कीथ, पारजीटर, विन्टरनिटज बुलनर, विलसन, रेनु, और लुडविग आदि कुछ नाम गिनाये जा सकते हैं। हम यहां कलकत्ता में सस्कृत कालेज की स्थापना करने वाले वे एच०एच० विलसन के जीवन से सम्बद्ध एक प्रसंग का उल्लेख करना चाहते हैं।

यह ध्यान देने की बात है कि सन् १८२४ में ऋषि दयानन्द का जन्म हुआ और उसी वर्ष कलकत्ता में विलसन के प्रयत्नों से संस्कृत कालेज की स्थापना हुई। विलसन ने चुने हुए भारतीय विद्वानों को इस कालेज में प्राध्यापक नियुक्त किया। वह स्वयं भी संस्कृत वाङ्मय की प्रत्येक शाखा का मर्मस्पर्शी विद्वान् और भारतीय संस्कृति का प्रेमी था।

परन्तु कालेज खुलने के ११ साल बाद ही लार्ड मैकाले के नाम से जो नया धूम्रकेतु पैदा हुआ वह भारत में उच्च पदाधिकारी नियुक्त होने के पश्चात् समस्त भारत को ईसाइयत और पाश्चात्य सभ्यता के रग में रगने के लिये बद्धपरिकर हो उठा। भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के लिये उसने उसके मूल संस्कृत भाषा पर ही कुठाराघात करने का निश्चय किया और उसकी कोपदृष्टि सबसे पहले कलकत्ता के ही संस्कृत कालेज पर पड़ी। वहां संस्कृत के अध्यापकों के साथ दुर्व्यवहार और अपमान से खिन्न होकर कालेज से अन्यतम आचार्यों ने इस कालेज की सस्था पर श्री विलसन महोदय को निम्न श्लोक लिखकर भेजा —

> अस्मिन्सस्कृत पाठ समसरसि त्वत्स्थापिता ये सुधी
> हंसा: कालवशेन पक्षरहिता दूरं गते ते त्वयि।
> तत्तीरे निवसन्ति सहितशरा व्याधास्तदुच्छित्तये
> तेभ्यस्त्वं यदि पासि पालक तदा कीर्तिश्चिर स्थास्यति॥

अर्थात् इस संस्कृत विद्यालय रूपी सरोवर में आपके द्वारा नियुक्त अध्यापक रूपी हंस थे, वे कालवश पक्ष विहीन, पंख-विहीन और समर्थन-विहीन) हो गए है। उस सरोवर के तट पर आज धनुष पर बाण चढाए कुछ व्याध उपस्थित हैं। इन व्याधों से इन अध्यापक रूपी हंसों की आप यदि रक्षा कर सके तो आपकी कीर्ति चिरस्थायी होगी।

इस पद्यमय पत्र से मर्माहत होकर स्वयं विलसन ने संस्कृत के श्लोकों में ही पत्र का जो उत्तर भेजा था—वह सस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रति उसकी गहन आस्था को व्यक्त करता है। विलसन ने लिखा था।

> विधाता विश्वनिर्माता हसास्तत्प्रियवाहनम्।
> अत प्रियतरत्वेन रक्षिष्यति स एव तान्॥
> अमृतं मधुरं सम्यक् संस्कृतं हि ततोऽधिकम्।
> देवभोग्यमिदं यस्माद्देवभाषेति कथ्यते॥
> न जाने विद्यते किन्तन्माधुर्यमत्र संस्कृते।
> सर्वदेव समुन्मत्ता येन वैदेशिका वयम्॥
> यावद्भारतवर्षं स्यात्यावद्विन्ध्यहिमाचलौ।
> यावद्गंगा च गोदा च तावदेव हि संस्कृतम्॥

विश्व का निर्माण करने वाले ब्रह्मा हैं और हंस उनका प्रिय वाहन है। अपना वाहन अत्यन्त प्रिय होने के कारण स्वयं ब्रह्मा ही अब अपने अध्यापक-हंसों की रक्षा करेंगे। (२) अमृत बहुत मधुर होता है परन्तु संस्कृत उस अमृत से भी बढ़कर मधुर है। इसीलिये देवता इसका उपभोग करते हैं और इसी कारण यह देवभाषा के नाम से विख्यात है। (३) मैं नहीं जानता कि संस्कृत भाषा में ऐसी कौनसी माधुरी भरी हुई है कि हम विदेशी होकर भी इस संस्कृत के पीछे दीवाने है। (४) जब तक भारतवर्ष है, जब तक विन्ध्याचल और हिमालय है, और जब तक गंगा और गोदावरी नदियां हैं, तब तक संस्कृत रहेगी और उस पर कोई भी आघात सफल नहीं होगा।

जब मैकाले का कोप संस्कृत कालेज पर कम नहीं हुआ और इस महाविद्यालय की अवस्था दिनों दिन क्षीण होती गई तो कालेज

(शेष पृष्ठ १० पर)

स्वामी दयानन्द की भारतीयता

डा० धनपति पाण्डेय

भारतीय पुनर्जागरण के मुख्यत दो चरण हैं—उदारवादी चरण एव उग्रवादी चरण। इन दोनो चरणो मे भारत के समाज और राजनीति दोनो मे पुनर्जागरण आया। स्वामी दयानन्द सरस्वती उग्रवादी चरण के पुरोधा थे। उदारवादी परम्परा की व्याख्या करके ही हम दयानन्द की भारतीयता का सही मूल्याकन कर सकते हैं।

उदारवाद के सिद्धान्त

उदारवाद के प्रवत्तक और समर्थक पाश्चात्य शिक्षा की उपज थे। उनका मुख्य उद्देश्य भारत मे आधुनिकवाद की भावना का सचार करना अवश्य था, परन्तु उनके विचार तथा कार्य पश्चिम से प्रेरित थे। अग्रेजी राज के कल्याणकारी स्वरूप मे विश्वास, ब्रिटेन के साथ स्थायी राजनीतिक सम्बन्ध की इच्छा अग्रेजी शासन के प्रति निष्ठा और एकमात्र सवैधानिक आन्दोलन के साधनो पर ही निर्भरता भारतीय उदारवादियो के विश्वास का सार है। उदारवाद के प्रारम्भिक प्रतिपादक तथा समर्थक पाश्चात्य शिक्षा मे पले थे और उनके मस्तिष्क बर्क, मिल मैकाले, ग्लैड-स्टोन, हरबर्ट स्पेन्सर तथा अन्य अग्रेज उदारवादियो के विचारो से पोषित हुए थे। उदारवादी अग्रेज विचारको से ही स्वतन्त्रता, समानता,लोकतत्र तथा प्रतिनिधि सस्थाओं और व्यक्ति के गौरव की जीवनदायिनी धारणाए ग्रहण की गई थीं। उनके हृदय मे पाश्चात्य सस्कृति के लिए गहरा प्रेम था और प्ररणा तथा मार्गदर्शन के लिए वे इग्लैड की ओर देखते थे। वे यह भी मानते थे कि ब्रिटेन के साथ स्थायी सम्बन्ध देश की निरन्तर प्रगति के लिए आवश्यक था। उन्हें भय था कि कहीं अग्रेजी सत्ता के हट जाने अथवा कमजोर पड जाने से देश में फिर से अव्यवस्था तथा अराजकता न फैल जाय। इस प्रकार उदारवादियो की अग्रेजी शासन के प्रति अटल निष्ठा तथा सवैधानिक आन्दोलन के साधन में दृढ विश्वास था। यहां यह भी स्मरण रहे कि उदारवादी नेता नागरिक स्व-तन्त्रता, जातीय समानता तथा सुशासन की अपनी माग को अग्रेजो की प्रतिज्ञाओ तथा वचनों के ऊपर आधारित करते थे।

तत्कालीन परिस्थितियों का सहारा लेकर उदारवादी अपने सिद्धान्तो तथा विचारों को भले ही उपयुक्त बतावें, किन्तु उनकी विचारधारा मे गम्भीर दोष थे। वे प्राचीन भारतीय सास्कृतिक विरासत के मूल्य तथा सजीवता को न समझ सके क्योंकि वे पाश्चात्य शिक्षा तथा पाश्चात्य सभ्यता के महत्व और महत्ता पर आवश्यकता से कहीं और जोर देते थे। निस्सन्देह वे भारत के अतीत के लिए अपने हृदय में बहुत प्रेम तथा सम्मान रखते थे और देश के गौरवमय अतीत की प्रशसा करने मे किसी से पीछे न थे। परन्तु दुर्भाग्यवश वे प्रेरणा के लिए उसकी ओर नही देखते थे, उनकी दृष्टि पश्चिम की ओर लगी रहती थी जो कि उनका आध्यात्मिक गृह बन गया था। भारत का आधुनिकीकरण करने, पश्चिमी सस्थाओ की स्थापना करने तथा पश्चिमी शिक्षा और उद्योग को लाने की अपनी अत्यधिक इच्छा के कारण उन्होने अपनी प्राचीन सस्थाओ को खो दिया था। वे अतीत को एक सहायता की अपेक्षा एक भार अधिक, एक भलाई के स्रोत की अपेक्षा एक खतरे का स्रोत अधिक समझने लगे थे। ब्रिटिश सम्पर्क के प्रति वे अत्यधिक अनुराग रखते थे, क्योंकि उनके लिए उसका अर्थ था 'भारतीय मानस का एक निरर्थक अतीत के प्रति अन्धानुराग के बधन से धीरे-धीरे किन्तु निश्चित रूप से मुक्त हो जाना। वे चाहते थे कि भारत का पाश्चात्यकरण हो जाय, केवल बाह्य रूप में ही नही अपितु आत्मा में भी। वे भारत का कल्याण सर्वोत्तम पश्चिमी आदर्शों के पूर्णरूपेण आत्मसात मे देखते थे। वे एक स्वतन्त्र राज्य में एक स्वतन्त्र मनुष्य एक स्वतन्त्र राज्य मे एक स्वतन्त्र धर्म एक स्वतन्त्र समाज मे एक स्वतन्त्र नारी के आदर्श की प्राप्ति के लिए एक उत्कट कामना रखते थे। उनकी मुख्य कमजोरी का कारण उनका यह विश्वास था कि भारत के पुनरुत्थान के लिए ब्रिटेन का पथ-प्रदर्शन तथा सम्पर्क नितान्त आवश्यक थे। अपने पश्चिमी दृष्टिकोण तथा सिद्धान्त के कारण वे न केवल उस भूमिका को ही भली प्रकार समझ सके जो कि धार्मिक भावना की भारत मे रही है, बल्कि वे धर्म को ही अन्धविश्वास समझकर उसका तिरस्कार करने लगे। फलत वे पश्चिम से ग्रहण किये हुए विचारो का प्राचीन विरासत के साथ सामजस्य नही कर सके और भारत के वास्तविक मानस तथा आत्मा को नही देख सके। यही कारण था कि बगाल मे राजा राममोहन राय, तथा दक्षिण और पश्चिमी भारत मे महादेव गोविन्द राणाडे, बहरामजी मालाबारी तथा अन्य व्यक्तियो द्वारा चलाये गये सामाजिक तथा धार्मिक सुधार आन्दोलन बहुत अधिक लोकप्रिय नही हो पाए और सर्वसाधारण तक नही पहुच सके।

इसके विपरीत, स्वामी दयानन्द (रामकृष्ण परमहस तथा स्वामी विवेकानन्द द्वारा) चलाये गये आन्दोलन को कहीं अधिक सफलता मिली क्योंकि उन्होंने अपनी प्रेरणा भारत के अतीत से ली और इसलिये वे जनसाधारण को अधिक आकृष्ट कर सके। साराश यह कि भारतीय उदारवादी पश्चिम से अत्यधिक प्रभावित थे और उसमे भारत की अन्तरात्मा की झलक दिखलाई नहीं पाती थी। देश के अतीत पर एक आवरण डालकर स्वाभिमान को प्राप्त नहीं किया जा सकता था। मागने से स्वतन्त्रता भी मिलने वाली नही थी। इतिहास में हमे इस बात का एक भी दृष्टान्त नही मिलता कि एक पराधीन जाति ने शासक जाति की न्याय भावना तथा स्वतन्त्रता-प्रेम को अपील करके ही अपनी स्वा-धीनता प्राप्त कर ली हो। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता कोई उपहार नही है जो कि कोई उदार चित्त व्यक्ति किसी दूसरे को दे दे। वह तो एक अधिकार है जिसे कठोर सघर्ष और भारी कीमत चुकाकर प्राप्त करना पड़ता है। एक राष्ट्र को अपने आपको उसके लिए तैयार करना पडता है। भारत को भी स्वय यह तैयारी करनी थी। (क्रमश)

संस्कृत की रक्षा हमारी आत्मरक्षा का प्रश्न है

-प्रोफेसर श्रीमती कमला रत्नम्

हमारी आत्मा हमारी अस्मिता भारत की भारतीयता में है और भारत की भारतीयता उसकी सस्कृति मे है जिसका प्राण सस्कृत भाषा और उसका वाङ्मय है। सस्कृत भाषा के हनन का प्रयास यद्यपि शासकीय और राजनीतिक स्तर पर मुगलकाल से ही आरम्भ हो गया था, फिर भी जनसाधारण और विशेषकर बौद्धिक वर्ग पर उसका विशेष प्रभाव नही पडा था। शाहजहां के काल मे ही जगन्नाथ पण्डित राज और अप्पयय दीक्षित जैसे सस्कृत के उद्भट विद्वान थे और प्रत्येक गांव मे सस्कृत पाठशालाए थी। परन्तु १९४७ मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमें पूरी आशा थी कि अब देश की भाषा हिन्दी होगी और सस्कृत को उसके फलने-फूलने के पूरे अवसर भी मिलेंगे।

१९५२ मे सविधान मे इस आशा की पुष्टि भी हो गयी। परन्तु अत्यन्त दुःख और खेद की बात है कि हमारी यह आशा पूर्ण नही हुई, हमारे साथ धोखा किया गया और स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा मन्त्री मौलाना आजाद के रूप में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के हनन का षडयन्त्र प्रारम्भ किया गया। इसके बाद जब नूरुल हसन शिक्षा मन्त्री बने तो अपने हिन्दू-विरोधी और वामपन्थी विचारो के कारण उन्होने माध्यमिक स्तर पर सस्कृत को विषय के स्तर से हटाकर केवल भाषा का स्थान दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि विद्यार्थी विषय के रूप मे सस्कृत भाषा और वाङ्मय के गहन अध्ययन से वंचित हो गए, और भाषा के रूप मे सस्कृत पढने के इच्छुक छात्रो को तीन-तीन या कभी उससे अधिक भाषाओ का बोझ उठाना पडा। इतना सब होने पर भी प्रदेशों और केन्द्र में सस्कृत भाषा किसी न किसी प्रकार चली आ रही थी। केन्द्र की अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओ मे सस्कृत अनिवार्य थी, और अभी तक है।

परन्तु अब प्रचण्ड बहुमत से जीत कर आयी सरकार देश को जेट विमान की गति से २१ वी शताब्दी में ले जाने के लिए देश के समूचे शैक्षिक ढाचे को तहस-नहस कर रहीहै। अब शिक्षाको स्वतन्त्र, प्रभुतासम्पन्न, पृथक शिक्षा मन्त्रालय से हटाकर एक नए मन्त्रालय के अन्तर्गत मात्र एक विभाग का दर्जा दियागया हैं। यह नया मन्त्रालय है"मानव-ससाधन-विकास मन्त्रालय'। जिस प्रकार हम अन्य प्राकृतिक संसाधनों जल, विद्युत, यान्त्रिकी, प्रोद्योगिकी आदि का विकास करते हैं, उसी प्रकार यह मन्त्रालय अब मनुष्य रूपी ससाधनो (रिसोर्सेज) का विकास करेगा। सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य के सम्बन्ध मे इस प्रकार की यान्त्रिक कल्पना केवल एक पथभ्रष्ट, दिग्भ्रमित मस्तिष्क ही कर सकता है। किसी भी देश की यथार्थ और मूलभूत शक्ति उसकी सही शिक्षा नीति पर निर्भर करती है। जापान और रूस जैसे विश्व के सर्वाधिक विकसित देश अपनी अपनी शिक्षा नीति बहुत सोच समझ कर बनाते हैं, और उसे अपनी सस्कृति और परम्परा से जुडा रखते हैं, पर्याप्त धन भी व्यय करते हैं। परन्तु १९४७ से हमारे देश मे इसका उलटा हो रहा है। अग्रेजों ने अपने समय में शिक्षा की जो नीति चलाई, वह तो उन्हे अपनी जडें जमाने के लिए चलानी ही थी, परन्तु उसी नीति को और मजबूत करने का देशद्रोही काम अब हमारी सरकार ने किया है।

ऊपर वर्णित इस नए मन्त्रालय के शिक्षा विभाग की अनोखी सूझ तथाकथित "नयी शिक्षानीति" है। इस विभाग का भार ऐसे लोगो को सौपा गया है जो सस्कृत क्या हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का भी पर्याप्त और समुचित ज्ञान नही रखते। इस नयी नीति का मुख्य उद्देश्य देश के नवयुवकों को रोजी-रोटी कमाने योग्य बनाने के लिए है। आज रोजी रोटी का प्रमुख और इज्जतदार, सत्तासम्पन्न साधन मात्र अग्रेजी है, इसलिए प्रत्येक स्तर पर गांव, नगर, राजधानी, विभिन्न प्रदेश, सभी जगह शिक्षा का माध्यम चाहे साक्षात् अथवा प्रच्छन्न रूप से अग्रेजी है। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाए आसू पोंछने के रूप में जोड दी गयी हैं। नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत हर बालक को अग्रेजी पढनी पडेगी। शिक्षा के मूलभूत सिद्धांत "श्रेष्ठ और प्रभावी शिक्षा मातृभाषा में" को बिलकुल भुला दिया गया है। आश्चर्य नही कि गैर कांग्रेस शासित बहुत से प्रदेशो ने इस अग्रेजी माध्यम को अस्वीकार कर दिया हैं। आज के पाठ्यक्रम में बच्चों पर किताबों, कापियों, नोट्स और विषयों का इतना बोझ है कि वे सब कुछ सीखने के नाम पर मात्र कृत्रिमता के कुछ भी नही सीख पाते हैं। भाषा के नाम पर उन्हें अपनी मातृभाषा, अग्रेजी, और हिन्दी पढनी पडती है। नई शिक्षा नीति मे अग्रेजी, हिन्दी के साथ अपनी मातृभाषा अथवा एक अन्य आधुनिक भारतीय भाषा पढनी पडेगी। और आधुनिक भाषाओं की इस सूची मे से सस्कृत को जान बूझ कर बहिष्कृत कर दिया गया है। अर्थात अब विषय तो क्या, भाषा के रूप मे भी सस्कृत की जड ही काट दी गयी है। यह भारतीय सस्कृति और आत्मा पर खुला और निर्लज्ज प्रहार नहीं तो और क्या हैं? लगभग सभी हिन्दुओ के धार्मिक संस्कारों, आध्यात्मिक जीवन मे नित्यप्रति काम आने वाली, सैकडो पाठशालाओ, विद्यालयो और मन्दिरो, मठो मे पढ़ी जाने वाली लाखो विद्यार्थियो द्वारा सीखी जाने वाली, आज जिसमे १०० से भी अधिक पत्र-पत्रिकाए प्रकाशित होती हैं तथा जिसमे नित्य प्रति नया साहित्य लिखा जा रहा है, उस सस्कृत को आधुनिक भाषा नही माना गया है। उलटे उसे अरबी, फारसी के साथ तथाकथित "क्लासिकल" शास्त्रीय भाषा माना गया है। क्या आती है उन लोगों की बुद्धि पर जो विशाल इस्लामी जगत् मे बोली लिखी पढी जाती है, उस अरबी को क्लासिकल भाषा मानते हैं। अरबी इन लोगो की दृष्टि मे आधुनिक नहीं प्राचीन शास्त्रीय भाषा है। केवल इस लिए कि उनके अग्रेज मालिको ने अपने हित के लिए अरबी-फारसी को "क्लासिकल" भाषा माना और उसके साथ सस्कृत को भी जोड दिया। आज भी स्वतन्त्र भारत मे अरबी-फारसी विद्वानो के साथ राष्ट्रपति द्वारा सस्कृत के विद्वानों को भी सम्मानित कर दिया जाता है। स्वय अपने बलबूते पर न तो सस्कृत आधुनिक भाषा है उनकी दृष्टि मे, और न ही सम्मान करने योग्य।

"क्लासिकल" के नाम पर सस्कृत का गला घोटने के लिए उसके गले मे अरबी फारसी के पत्थर बाधे गए हैं। क्या तुलना है सस्कृत की अरबी-फारसी से? अरबी-फारसी को अपने-अपने देशो में वह स्थान प्राप्त नहीं है जो भारत मे, और भारत से बाहर के विश्वविद्यालयो बौद्धिक जगत में सस्कृत को प्राप्त है। सस्कृत न केवल सकल भारत की, भारतीय भाषाओ, भारतीय चिन्तन की जननी ही है, वह भारत की प्राण, भारत की आत्मा है। ससार की किसी भी नयी या पुरानी भाषा से सस्कृत की तुलना नहीं हो सकती। सस्कृत के बिना भारत नही रहेगा।

तर्क के लिए ही यदि हम राजनीतिक आचरण पर विचार करें तो देखेंगे कि राजनीति मे अन्य देशो से 'तुम जितना दोगे, हम भी उतना ही देंगे" अथवा 'रेसिप्रोसिटी" की नीति पर काम किया जाता है। यदि हम अपने देश मे अरबी और फारसी पढाते हैं। तो हमे यह भी देखना चाहिए कि अरब देश और ईरान भी सस्कृत पढाते हैं। क्या आज के अरब देशों में सुदूर भविष्य मे भी यह आशा है कि वहां सस्कृत पढ़ाई जाएगी? जबकि आज अरब देशों मे जाने वाले भारतीय मजदूर की जेब से आई गई "सत्यार्थ-प्रकाश" की प्रति जब्त की जाती है और ले जाने वाले को फासी दी जाती है। राजनीति मे जब सब जगह विदेशो से "परस्पर समान-विनिमय" की नीति अपनाई जाती है तो भाषा के स्तर पर क्यो नहीं? यहां पर क्यों कहा जाता है कि भारत मे अगर सस्कृत पढाई जायेगी तो उसी के समान अरबी-फारसी को भी पढ़ाना होगा? निश्चय ही यह एक नपुंसक और देशद्रोही शासन का विदेशी शासकों के प्रति आत्म-समर्पण है और भारतीय सभ्यता, भारती सस्कृति और उसकी अस्मिता के प्रति घोर विश्वासघात है।

संसद में तथा निजी स्तर पर सरकार को ज्ञापन देकर, प्रस्ताव पास कर बहुत कुछ किया जा चुका, परिणाम यह कि नयी शिक्षा नीति में सस्कृत का पत्ता साफ कर दिया गया। दिनांक १९-३-८७ को लोक सभा में संस्कृत के भविष्य के लिए चिन्तित और आशंकित सदस्यों के पूछने पर, जिनमे लोक सभा अध्यक्ष और संस्कृत के विवेकशील जानकार श्री बलराम जाखड भी सम्मिलित थे, "मानव-संसाधन विकास" मन्त्री नरसिंह राव ने बताया कि संस्कृत शिक्षा पर "नयी शिक्षा नीति" में उचित (?) ध्यान दिया जायगा, और यह भी कहा कि सरकार कुछ नयी नीतियों प्रस्तावों पर भी विचार कर रही है, जिनकी सहायता से संस्कृत के संवर्धन, विकास और लोकप्रियता

बढ़ाने के काम करेगी। जिससे पूरे देश में शिक्षा नीति के अन्तर्गत स स्कृत तथा अन्य "भ्रातिकृत" भाषाओं के अध्ययन में विकास हो सके।" बात फिर वही पर आकर रुक गई कि स स्कृत के साथ अरबी-फारसी को जोड़ना जरूरी है। हमें पूरी शक्ति से इस अप्राकृतिक गठबन्धन को रोकना, तोड़ना है, इसका विरोध करना है। इस देश में स स्कृत का अपना और अकेला, अन्य भाषा निरपेक्ष स्थान है, जो स सार में किसी और भाषा का नहीं है। अपने अपार गुणो के अतिरिक्त स स्कृत न केवल भारत मे वरन पूरे विश्व में सर्वाधिक प्राचीन भाषा है जिसका प्राचीनतम ग्रन्थ वेद आज भी विश्व मे अप्रतिम है। प्राचीनता के नाम पर हम स सार की अनेक भौतिक वस्तुए, ई ट, पत्थर शिल्प, चित्र, पाण्डुलिपि आदि सुरक्षित रखते हैं उनकी देख रेख के लिए विशाल भवन बनाते हैं परन्तु विश्व की प्राचीनतम अमूल्य आध्यात्मिक एव साहित्यिक निधि की हम घोर उपेक्षा कर रहे हैं। यह तर्क यह बुद्धि, चिन्तन का यह दीवालियापन समझ मे न आने वाला है।

इस तथाकथित "नयी शिक्षा नीति मे आगे चल कर, उच्चशिक्षा के लिए स स्कृत के महत्व को स्वीकार किया गया है। परन्तु यह नही सोचा गया कि जब बीज ही नहीं बोया तो फल कहा से आयेगा ? बचपन से सस्कृत का नाम भी न सुनने वाला विद्यार्थी विश्वविद्यालय में जाकर क्या खाक स स्कृत पढ़ेगा अथवा विश्वविद्यालयो को भी प्राथमिक शिशु-पाठशालाओ मे परिवर्तित करने का यह छलमय कूटनीतिक षड़यन्त्र है ? क्या विश्वविद्यालय मे अब उच्च शोध के स्थान पर स स्कृत की प्रारम्भिक रूप रचना सिखाई जायेगी ? सर्वाधिक दु खदायी दृष्टिकोण और आचरण इस सम्बन्ध मे उन लोगो का है जिनके हाथ मे आज के तथा कथित 'मीडिया' अथवा जनसपर्क साधन हैं। अ ग्रे जी के अखबार तो अपने गुलामी के चश्मे के कारण हिन्दी और स स्कृत को कोई महत्व ही नहीं देते उल्टे हिन्दी का आन्दोलन, प्रचार करने वालो को वे 'हिन्दी फोब" हिन्दी उन्मादी रोगी की स ज्ञा से विभूषित करते हैं।

हा हिन्दी के समाचार पत्रों मे बहुत दिनो के बाद डा० कृष्णलाल का एक अत्यन्त सशक्त, सुविचारित लेख छपा था जिसमें उन्होने नयी नीति मे सस्कृत की अपेक्षा की आलोचना करते हुए सस्कृत शिक्षा के महत्व और उसकी अनिवार्यता पर बल दिया था। उनका कहना था कि यदि माध्यमिक स्तर पर ही कोई छात्र सस्कृत पढ़ने का अवसर नहीं प्राप्त करेगा तो विश्व विद्यालय के स्तर पर उच्च शोध कार्य करने या सामान्य शिक्षा देने के लिये भी शिक्षक कहा से आयेंगे। लगता है नयी शिक्षा नीति के कर्णधारो ने कुछ नया कर दिखाने के चक्कर मे इन बुनियादी बातो पर ध्यान नही दिया। डा० कृष्णलाल के लेख के साथ एक प्रबुद्ध पाठक का सस्कृत के समथन मे एक और तर्क सगत पत्र छपा। पर न्तु उसके लगभग अगले ही दिन पत्र छपा आज सस्कृत की वकालत ठीक नही।

'इस पत्र के लेखक हिमाशुराय की बुद्धि को क्या कहा जाय ? क्या वह सस्कृत के बिना अपने नाम के अर्थ भी समझ सकता है ? हिमांशुराय कहना है कि सस्कृत भाषा 'अलोकप्रिय है और विकास की प्रक्रिया का विरोध करती है। सस्कृत के बिना क्या वह अलोकप्रिय जैसा अप्रचलित और अपने बुरे मसूबों को अभिव्यक्ति देने वाला शब्द बना सकता था ? इस शब्द को बनाने के लिये सस्कृत भाषा 'प्रिय हो गयी बहस करने के लिये विकास मे बाधक ? पत्र लेखक को नही मालूम कि सस्कृत केवल ब्राह्मणो को ही प्रिय नही है, उसे अब्दुल रहीम खानखाना गुरु गोविन्दसिंह, ईसाई बाइबिल लेखको तथा अनेक ब्राह्मणेतर हिन्दुओ का प्रेम और सम्मान प्राप्त है, जिन्होने अपना पूरा जीवन सस्कृत की सेवा मे अर्पित किया है। एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा, विश्व सस्कृत प्रतिष्ठान के अध्यक्ष बम्बई निवासी श्री गुलाम दस्तगीर महोदय हैं वे अपने दैनिक व्यवहार, मस्जिद मे पूजा नमाज आदि मे शुद्ध सरल सस्कृत का प्रयोग करते हैं और अपनी बेटी के विवाह का निमन्त्रण भी सस्कृत मे छापते हैं। इस पत्र लेखक को यह भी ज्ञात नही कि आकाशवाणी का "सस्कृत समाचार कार्यक्रम सर्वाधिक लोकप्रिय कार्यक्रम है और पूरे देश मे सावधानी से सुना जाता है। इसके अतिरिक्त सस्कृत प्रेमी जनता के आग्रह से पुणे, बम्बई लखनऊ इलाहाबाद दिल्ली तथा आन्ध्र और कर्नाटक के कई केन्द्रो से नियमपूर्वक सस्कृत मे वार्ता नाटक, रूपक आदि नियमित प्रसारित होते हैं। हिमाशुराय और उसके साथी या तो विचार मूढ, बुद्धिहीन हैं या प्रथम कोटि के देश द्रोही और उनके गिरोह के खरीदे हुए गुलाम हैं।

२६ जनवरी १९८७ के एक हिन्दी दैनिक मे छपा उपरोक्त पत्र देखा जा सकता है। इसके दूसरे अनुच्छेद के प्रारम्भ मे सस्कृत वाङमय के विषय मे ऐसी अनर्गल और असत्य बातें कही गयी हैं जिनका सपादकीय टिप्पणी मे विरोध करना चाहिये था, अथवा इस प्रकार के झूठे और राष्ट्र विरोधी पत्रों को छापना ही नहीं था। खेद की बात है कि इस पत्र का सहायक सम्पादक एक सस्कृत प्रोफेसर है, परन्तु यह भी असहाय प्रतीत होता है। जनवरी के बाद के समाचार पत्रो मे लगातर सस्कृत की माग करते हुए पाठको के पत्र छपे हैं। परन्तु इस सब को अन देखा करते हुए २० मार्च को बादा के किसी रणजीत का लेख डा० कृष्णलाल के लेख के जवाब मे छापा गया है कि 'सस्कृत हिन्दी का विकल्प नहीं हो सकती। यह तब जब कि डा० कृष्ण लाल ने कही हिन्दी से सस्कृत विकल्प होने की बात भी नही की थी। सस्कृत और हिन्दी, तथा सभी अन्य भारतीय भाषाए सस्कृत के साथ साथ चलेंगी। क्योकि ये सभी सस्कृत से पोषित, विकसित होती हैं। सविधान मे स्पष्ट कहा गया है कि हिन्दी अपने विकास के लिये प्रमुखतया सस्कृत से शब्दावली लेगी। पाठ्यक्रम में से सस्कृत को निकालना सविधान का खुला उल्लघन है।

रणजीत जैसे देश प्रेमी सस्कृत को हिन्दी के खिलाफ खड़ा करके वही खेल खेल रहे हैं जो आज पश्चिमी सभ्यता और भ्रष्ट अ ग्रेजी शिक्षा वाले परिवारों में हो रहा है। जिनमें बेटा और बेटी भी मा बाप को पिछड़ा हुआ 'आउटडटिट" और बेकार का मरा हुआ बोझ समझ कर उनसे अलग हो जाते हैं। माता पिता को वृद्धावस्था में भीख मागने की गलियो मे अथवा "बूढ़े आश्रमों" "होम फार एजेड" की शरण मे छोड़ दिया जाता है। योरोप और अमेरिका में ऐसा होता है, और उनकी देखा देखी भारत मे भी ऐसा किया जा रहा है। जो भी हो बेटा बेटी तो माता पिता के

बिना रह भी सकते हैं, परन्तु हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाए ? क्या वे संस्कृत की संजीवनी के बिना पनप सकेंगी । अपने जन्म के एक हजार वर्षों के बाद भी हिन्दी संस्कृत के बिना विकास नहीं कर सकती । इसका सबसे ज्वलन्त प्रमाण इस युग के दो मूर्धन्य लेखक अज्ञेय और राहुल सांकृत्यायन हैं । अज्ञेय ने अपनी रचनाओं में संस्कृत की सहायता से अनेक नये और कर्णप्रिय शब्दों का निर्माण किया है । उर्दू ने हिन्दी से नाता तोडकर अंगरेजी और अरबी फारसी का दामन पकडा है । संस्कृत का बहिष्कार कर के क्या हिन्दी को भी उसी राह पर पनपाना है ? ऐसा होने पर प्रतिदिन होती वैज्ञानिक खोज और भावी प्रगति के लिये हिन्दी कहा से शब्द लायेगी ?

१४ मार्च, ८७ को लिखे खुशवन्तसिंह के आलेख से संस्कृत विरोधियों की आखें खुल जानी चाहिए । खुशवन्तसिंह जैसा हिन्दी-संस्कृत का विरोधी किस प्रकार थाइलैण्ड की राजकुमारी और उनके गुरु के तर्कों से प्रभावित होकर अपना मत बदल सकता है, यह उनके प्रमाणो से भरपूर लेख से ज्ञात होता है । संक्षेप में भारत और संस्कृत भाषा यह दोनों शब्द परस्पर अन्योन्य भावी हैं । संस्कृत और भारत का सम्बन्ध अटूट है, दोनो को अलग करने से भारत भारत नहीं रहेगा । संस्कृत शिक्षा के लिये लोकप्रियता अथवा अर्थोपार्जन क्षमता का मानदण्ड ढूंढना भी असंगत है । यद्यपि यह सत्य है कि आज कोई भी संस्कृत शिक्षित भारतीय भूखा या बेरोजगार नहीं है, जब कि हजारो की संख्या में नये वैज्ञानिक, डाक्टर और इन्जीनियर बेकार दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं, या विदेशों के द्वार खटखटा कर प्रवासी भारतीयों के दुख-सुख भोग रहे हैं ।

हमारे शरीर मे हृदय का जो स्थान है वही स्थान हमारे राष्ट्रीय जीवन में संस्कृत का है । हृदय मे हमारी आत्मा निवास करती है, हृदय मे ही करुणा दया, देशप्रेम, पितृभक्ति आदि सद्गुण पनपते हैं । इन सब सद्गुणो की संवाहिका हमारे चरित्र मे, हमारी आत्मा मे संस्कृत और उससे पुष्पित, पल्लवित अन्यान्य भारतीय भाषाए हैं । पिछले ४० वर्षों में अंग्रेजी ने हमारे देश का जो राष्ट्रीय चरित्र बनाया है, वह हम देख ही रहे हैं । भूख, अत्याचार, भ्रष्टाचार का आज बोलबाला है । इनमें सद्गुणो का प्रादुर्भाव केवल संस्कृत और उसके पनपी अन्य भाषाओं की शिक्षा से ही हो सकता है । हृदय जैसे शुद्ध रक्त का सारे शरीर में संचार कर, शरीर और मस्तिष्क को स्वस्थ रखता है, उसी प्रकार संस्कृत भाषा अपने अथाह ज्ञान भण्डार से हमें स्वस्थ चरित्रवान् व्यक्तित्व प्रदान करती है । जब भी हम पर संकट आया संस्कृत ने हमारी रक्षा की । शंकराचार्य, स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द संस्कृत के ही बल पर अपने समय में पाखण्ड और मिथ्यावाद का खण्डन कर सके । अब तथाकथित स्वतन्त्र और स्वदेशी सरकार के अनाडी हाथों हम पर फिर संकट आया है, संस्कृत को खत्म किया जा रहा है, अत हमें आज और अभी संस्कृत रक्षा के लिये कटिबद्ध होकर कुछ संकल्प, निश्चय करने चाहियें और उन्हें अविलम्ब कार्यरूप में परिणत करना चाहिये । हमें निश्चय करना है कि (१) संस्कृत को समाप्त करके सरकार भारतीयता को नष्ट करना चाहती है । (२) कि भारतवर्ष, भारतीयता और भारत की अस्मिता, आत्मविश्वास की रक्षा के लिये संस्कृत का अपना अलग, विशिष्ट और अन्य विदेशी भाषा-निरपेक्ष स्थान है । उसकी इस स्थिति की रक्षा सर्वप्रथम और हर दृष्टि से करनी है । (३) कि हम संस्कृत को सदा-सर्वदा शिक्षा में स्थान देने के लिये अरबी-फारसी से नहीं जोड़ने देंगे । अंगरेजी ग्रीक, लेटिन, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाओं के मेल से बनी है, उसके विकास के लिये उसे इन भाषाओं से नहीं जोड़ा जाता । संस्कृत को अरबी-फारसी से जोड़ना अस्वाभाविक है क्योंकि संस्कृत अरबी-फारसी के योगदान से नहीं बनी । (४) कि अब मांगों, प्रस्तावों और अनुरोधों से काम नहीं चलेगा । सरकार मांगों और प्रस्तावों पर ध्यान नहीं देती जब तक कि उस पर पर्याप्त दबाव न डाला जाय, आन्दोलन न खड़ा किया जाय । रोते रहना और गिड़गिड़ाना कायरों और पतितों का काम है । हमें स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द की भाषा में "उत्तिष्ठत । जाग्रत । प्राप्य वरान्निबोधत ।" का मार्ग अपनाना होगा ।

उपरोक्त निश्चयों के बाद, हमारी सरकार से मांगें हैं :—

१—प्रारम्भिक नर्सरी से माध्यमिक कक्षा १२ तक, पूरे १४ वर्ष संस्कृत पढ़ने श्लोकवाचन आदि का प्रबन्ध हो ।

२—कक्षा १० तक संस्कृत अनिवार्य हो और उसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक हो ।

३—अंगरेजी की अनिवार्यता समाप्त कर, प्रत्येक स्तर पर उसे वैकल्पिक बनाया जाय । कक्षा ७ से पहले अंगरेजी न पढ़ाई जाय । शिक्षा का माध्यम मातृभाषा और हिन्दी हो, और सभी केन्द्रीय और प्रादेशिक परीक्षाओं के लिये हिन्दी भी स्वीकृत हो ।

४—माध्यमिक स्तर तक तीन अनिवार्य भाषाए हों—मातृभाषा, संस्कृत और हिन्दी । जिन विद्यार्थियो की मातृभाषा हिन्दी है उनके लिए उनकी रुचि और उपयोगिता के आधार पर मातृभाषा स्थान पर कोई अन्य भारतीय भाषा हो ।

उपरोक्त मांगें हमारी दृढ और अपरिवर्तनीय मांगें हैं । परन्तु बहुत सम्भव है कि सरकार हमारी इनमे से एक भी मांग न स्वीकार करें । इसलिए हमें साथ ही साथ अपनी ओर से भी प्रयत्न करने चाहियें । जैसे —

१—आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक सामाजिक संस्थाओं को अपने-अपने प्रतिष्ठानों में अविलम्ब संस्कृत कक्षाए आरम्भ करनी चाहियें ।

२—साप्ताहिक प्रवचनों में आवश्यक रूप से संस्कृत के महत्व को समझाया जाय, और उस पर बल दिया जाय ।

३—माता-पिता अपने घरो मे बच्चों में संस्कृत में रुचि उत्पन्न करके और उन्हे पढाने का प्रबन्ध करें ।

४—सार्वजनिक स्तर पर सभा, संगोष्ठी, व्याख्यान, आन्दोलन, प्रदर्शन आदि किये जायें ।

५—१० मई को सभा में दिल्ली के आर्य समाज मन्दिर में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा गोस्वामी गिरिधारीलाल ने हमें मिल कर नेतृत्व प्रदान करने का संकल्प किया है । उनके मार्ग-दर्शन में हमें निर्भय होकर आगे बढ़ना चाहिये ।

६—आवश्यकता पड़ने पर मन्त्रियो और प्रधान मन्त्रियों के पास भी चला जाय । डरने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि "यतो धर्मस्ततो जयः ।" इति

कुचाड़ी के नटों का धर्म परिवर्तन

रामेश्वर प्रसाद वर्मा

बिहार में बक्सर से लगभग उन्नीस किलोमीटर दूर राजपुर प्रखण्ड में एक गाव है कुचाडी। गाव की आबादी करीब दो हजार है जिसमे हरिजनों एव पिछडी जातियो के हो लोग हैं। यहा नटो के लगभग तीन दर्जन परिवार ऐसे हैं जो पुश्तैनी पेशे के बजाय खेतो में मजदूरी तथा भैस आदि की खरीद बिक्री करके जीविकोपार्जन करते हैं। पिछडी जातियो में ही कोईरी कुर्मी राजभर आदि जातियो के कुछ धनी घराने भी हैं। इन जातियो के लोग सवर्ण नही हैं लेकिन इस गाव के दबे कुचले लोगो का व्यवहार गरीबो के साथ सवर्णों की ही तरह होता है।

कुचाडी गाव की पूरब दिशा में एक टीला है। वही 'नटो' के परिवार रहते हैं। नटो के चार परिवार के मुखियो के नाम हैं— नथून नट राम विचार नट, सागर नट और श्याम नट। चारो भाई हैं। इनके सारे रीति-रिवाज हिन्दू और मुसलमान दोनो मजहबो के अनुसार होते हैं।

कुचाडी गाव के ही मुसलमान न बने बीता नट ने बताया है कि उनकी बिरादरी मे जन्म के समय के रीति-रिवाज हिन्दू धर्म के अनुसार होते हैं जब कि शादी के समय वे मण्डवा भी गाडते हैं और निकाह भी पढते हैं। मरने के बाद वे उनके सारे क्रिया-कलाप इस्लाम के अनुसार होते हैं। कुचाडी गाव से थोडी ही दूर कूदरा गाव के 'नटो' ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है। मुसलमान बने और नही बने दोनो तरह के 'नटो' ने यह स्वीकार किया है कि जो मान-मर्यादा उन्हें मुसलमानो से प्राप्त होती है वह हिन्दुओ से नही।

जिस टोले में धर्म-परिवर्तन की घटना हुई है उसमे कुल आठ परिवार 'नट' हैं। सभी आपस मे भाई ल ते हैं। इस गाव मे कभी बीरन नाम का एक 'नट' था जिसने दो शादिया की थी। पहली शादी से हुए चार लडके अलग रहते हैं और इनका इस्लाम से कोई सम्बन्ध नही है। दूसरी शादी से बीरन नट को चार बेटे हुए और उसके इन्ही चार बेटे ने इस्लाम स्वीकार किया है।

ढाई-तीन महीने पहले इस गाव में एक पचायत बैठी जिसमे यह तय किया गया कि इस टोले के सभी 'नट' मुसलमान बन जाए। प्रस्ताव लाने वाला नथूनी नट था।

बीरन नट की पहली शादी से हुए चार लडको मे से सबसे बड लडके नासिर नट ने मुसलमान बनने के प्रस्ताव का प्रतिरोध करते हुए अपने तीनों भाई समेत पचायत का बहिष्कार किया।

कहते हैं, पचायत के दूसरे ही दिन नथून नट श्याम नट, रामवचन नट और सागर नट ने अपने निजी परिवार के सभी सदस्यो के साथ शरजा के जामा मस्जिद के इमाम की रहनुमाई में इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। नथूनी नट के अनुसार उस दिन इमाम साहब ने हमें कलमा पढाकर मुसलमान बनाया और पूरे गाव मे मलीदा बाटा गया।

राजपुर क्षेत्र के युवा नेताओ का कहना है कि गाजीपुर के बारा गाव के एक दबग खा साहब और शरंजा जामा मस्जिद के इमाम काफी दिनो से कुचाडी गाव के 'नटो' की बस्ती मे आते रहे हैं।

गावो के 'नटो' की झोपडियो और कच्चे मकान बारा के दबग खा साहब की ही जमीन पर हैं। इसके अलावा इन 'नटो' को अपने धन्धे और मजदूरी के लिए भी बारा के धनाढय मुसलमानो पर आश्रित रहना पडता है।

मुसलमान बने नटो ने ऐसी बात होने से साफ इनकार कर दिया है। उनका कहना है कि जमीन उनकी अपनी जमीन है। श्याम से शमउल्ला खा हुए नट ने स्वीकार किया है कि उसने रामवचन ने आठ कट्ठा और नथूनी ने पूरे बारह कट्ठ जमीन खरीदी है। दूसरी तरफ मुसलमान नही बने नासिर नट ने बताया है कि वह सारी जिन्दगी मेहनत-मशक्कत करता रह गया लेकिन जमीन तो क्या माटी का एक अच्छा सा घर भी नही खडा कर पाया।

कुचाडी गाव के नजदीक पडने वाले पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर बहराइच गोण्डा आदि मुस्लिम बहुल जिले है। कहते हैं हाल ही इन जिलो मे हाजी मस्तान की गतिविधियो ने सरकार के कान खडे कर दिए हैं। पिछले महीने जौनपुर पुलिस ने दो व्यक्तियो को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से रुपए बरामद किए थे। यह भी कहते हैं कि गाजीपुर बहराइच बस्ती आजमगढ और जोनपुर के मदरसो और मस्जिदो मे बैठकर हाजी मस्तान के आदमियो ने रुपए बाटेहै। 'बारा' मे अरब नागरिको का आना जाना लगा रहता है तथा अभी पिछले महीने हाजी मस्तान भी वहा आया था।

कहते हैं बहुत साल पहले उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के मोहन गाव के हिन्दुओं ने जमीन के लालच मे इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। यह भी कहते हैं कि १९८५ के फरवरी महीने मे उत्तर प्रदेश के बहराइच के पाच नटो ने सामूहिक धर्म परिवतन किया था।

दूसरी तरफ शरजा जामा मस्जिद के इमाम मोहम्मद जन्नत अन्सारी का कहना है नटो के धर्म-परिवर्तन की बात ही गलत है। नट तो अपने आप मे मुसलमान है।

गरीब नटो की अपनी अपमानजनक जिन्दगी ही उन्हे हिन्दू धम से पलायन करने के लिए बाध्य करती है। स्वय एक नट युवक ने बताया कि बडी जाति के लोग हमे इतना हेय समझते है कि अगर वे खाने बैठे हो और हमे उनके भोजन को देख ले तो वे भोजन छोडकर उठ जाते हैं। आज भी कुचाडी गाव के 'नट' सवर्णों के सामने खाट पर नही बैठते।

दूसरी तरफ मुसलमान उनके साथ स्नेह के साथ पेश आते हैं। इसी गाव के एक नट युवक ने स्वीकार किया कि उसके घर की शादी मे 'बारा' के मुसलमानो ने काफी मदद की थी।

कुचाडी गाव के ही कुछ मुसलमान 'नटो के इस धर्म परिवतन से सन्तुष्ट नही दिखाई देते। उनका मानना है कि वे नट' असली मुसलमान कभी नही बन सकते। इसी गाव के एक सम्पन्न मुसलमान से जब यह पूछा गया कि अब तो उनके साथ मुसलमान बने नटो का हुक्का-पानी का सम्बन्ध हो जाएगा तो उन्होने तैश मे आकर इसे अस्वीकार किया।

क्या तमिलनाडू के मीनाक्षीपुरम् तथा उत्तर प्रदेश के बहराइच के बाद अब बिहार के कुचाडी जैसे गावो मे भी धर्म परिवर्तन का सिलसिला शुरु हो गया है। ●

शोक समाचार

श्री सोमाश्रित जी की धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी का दि० १२ ५ ८७ को मोतीनगर मे देहान्त हो गया।

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी एम ए ने इनके निधन पर बहुत गहरा दुःख प्रकट किया है।

व्याध का घातक तीर

(पृष्ठ ५ का शेष)

के एक अ य अध्यापक ने दु खी होकर फिर विलसन को श्लोक मे पत्र भेजा। वह पत्र इस प्रकार है—

गालश्रीदीर्घिकाया बहुविटपितटे कोलिकातानगर्या।
निस्सगो वतते सस्कृतपठनगृहाख्य कुरग कृशाग ॥
हन्तु त भीतचित्त विधृतखर शरो "मेकले", व्याधराज।
साश्रु ब्रूते स भो भो 'उइलसन' महाभाग मा रक्ष रक्ष ॥

कलकत्ता नगरी मे अवस्थित गोलसर नामक सरोवर के नाना वृक्षाच्छादित तट पर सस्कृत विद्यालय-रूपी एक मृग निरन्तर क्षीण होता चला जा रहा है। उस भयभीत मृग को मारने के लिये लार्ड मैकाले रूपी व्याध राज अपने हाथ मे तीक्ष्ण बाण लिये खडा है। इस अवस्था मे यह विद्यालय रूपी मृग अपनी आखो मे आसू भर कर आपको सम्बोधित करता हुआ कह रहा है—"हे विलसन! मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो।"

विलसन इस बार भी कम मर्माहत नहीं हुए। फिर अपने दु खी हृदय से निम्न उत्तर दिया—

निष्पिष्टापि पर पदाहतिशतै शश्वद्बहुप्राणिना
सन्तप्तापि करै सहस्रकिरणनाग्निस्फुलिंगोपमै।
छागाद्यैश्च विचर्वितापि सतत मृष्टापि कुद्दालकै
दूर्वा न म्रियते कृशापि सतत धातुर्दया दुर्बले ॥

विविध प्राणियो के पदाघात से घास निरन्तर पददलित होती रहती है अग्नि की चिनगारी के समान सूर्य किरणो से सतप्त रहती है, भेड-बकरी आदि उसे चरते रहते हैं और कुदालो से उसका उन्मूलन भी होता रहता है, फिर भी वह घास नही मरती क्योंकि दुर्बलो के ऊपर परमात्मा की सदा दया बनी रहती है।

हे व्याध राज मैकाले! तुम तो चले गये। तुम अपने सपनो को सर्वांश मे पूर्ण नही कर पाये। परन्तु चिन्ता मत करो। तुम्हारे जाने के बाद भी तुम्हारे मानसपुत्र यहा मौजूद हैं और जो काम बाप नही कर सका उसे ये बेटे पूरा करके दिखायगे। अगर पुत्र अपने पिता को पराजित न कर पाये तो २१वी सदी को क्या मुह दिखायेगा?

सुभाषित

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुष हारा न चन्द्रोज्ज्वला।
न स्नान न विलेपन न कुसुम नालङ्कृता मूर्धजा ॥
वाण्येका समलकरोति पुरुष या सस्कृता धार्यते।
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सतत वाग्भूषण भूषणम् ॥
—भर्तृहरि

हैं केयूर न नर की शोभा, औ न चन्द्र सम उज्ज्वल हार।
नही स्नान चन्दन का लेपन, अथवा केशों का शृगार ॥
वाणी हो नर का भूषण है सस्कारयुत धारित दिव्य।
और सभी भूषण क्षय होते वाणी ही है भूषण भव्य ॥
—गोपालदास गुप्त

सतत् साधना के सौ वर्ष

श्री दरबारी लाल, संगठन सचिव,
डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली।

(१) आर्य समाज, जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उन्नीसवी शताब्दी में की थी, एक अत्यन्त प्रभावशाली विचारधारा है। इस विचारधारा ने राष्ट्र के सामाजिक, नैतिक शैक्षणिक, राजनैतिक सभी क्षेत्रों में क्रांति पैदा की। ब्रिटिश शासन ने भारतीय सस्कृति और सभ्यता को मिटाने के लिए हर प्रकार के प्रयत्न किए और देश मे उनके कुप्रभाव भी होने लगे तब महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य व स्वदेश की प्रेरणा स्वदेश वासियो को दी। तब तक भारतीय कांग्रेस का जन्म भी नही हुआ था। भारतीय जन-मानस को विकृत करने वाले अन्ध विश्वासों व अन्य सामाजिक विकृतियों विशेषतया जातिवाद, बहुविवाह, बाल-विवाह, महिलाओं के असिट वैधव्य और दहेज-प्रथा आदि के विरुद्ध उन्होने आजीवन सघर्ष किया। साथ ही सस्कृत और आर्य भाषा हिन्दी के प्रचारार्थ परिश्रम किया और अपने प्राय सभी ग्रन्थ हिन्दी मे लिखे। ऐसे क्रान्तदर्शी महर्षि से शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नही रह सकता था। ससार के उपकार के लिए उन्होने आर्य समाज के जो नियम बनाए, उनमें शिक्षा के प्रचार प्रसार के माध्यम से अज्ञान व अशिक्षा के सम्मूलन उन्मूलन को उन्होने विशेष महत्व दिया। उन्ही के अभीष्ट लक्ष्य की पूर्ति के लिए समाज के कुछ प्रमुख सज्जनो ने एक बैठक सन १८८३ मे बुलाई तथा दयानन्द एग्लो (सक्षेप मे डी. ए वी) कालेज ट्रस्ट और प्रबन्धकर्तृ समिति का पजीकरण सन् १८८५ मे हुआ। इस प्रकार 'डी ए वी आन्दोलन" का शुभारम्भ हुआ।

(२) उपरोक्त डी ए वी. आन्दोलन को सिरे चढाने वालो मे लाला हसराज का विशेष योगदान रहा। एक जून १८८६ को लाहौर में स्थापित सर्वप्रथम डी ए वी स्कूल के अवैतनिक प्रधान अध्यापक लाला हसराज थे जो बाद मे अपने तप और तपस्या के कारण महात्मा कहलाए। उनका जीवन प्रबन्धकर्तृ समिति के प्रति कर्तव्यपरायणता का एक आदर्श है। २२ वर्ष की अल्प आयु मे ही उस जमाने मे अपनी अवैतनिक सेवाएं समर्पित करके उन्होंने आदर्श त्याग का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। धीरे-धीरे उनके साथ भारतीय सस्कृति व उसकी महान परम्पराओं मे विश्वास रखने वाले निष्ठावान, समर्पित तथा प्रगतिशील व्यक्तियो की सख्या जुड़ती गई। और एक कवि के शब्दों में—

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर,
आदमी मिलते गए और कारवां बढ़ता गया।

(३) महात्मा हसराज के साथ मे लाला लाजपतराय, लाला लालचन्द, भाई परमानन्द, लाला द्वारिकादास, प्रि० साई दास, बख्शी रामरत्न, डा० मुकुन्द लाल पुरी, बख्शी टेकचन्द, प० मेहरचन्द जैसे सज्जन थे। कुछ ही वर्षों में डी ए वी. सस्थाओं की एक दीर्घ शृखला अपने शक्तिशाली रूप मे प्रगट हो गई किन्तु देश के दुर्भाग्य से सन १९४७ में देश का विभाजन हो गया और इस सगठन को असीम हानि उठानी पड़ी, तब लाला बलराज, डा० सूरजभान, डा० मेहरचन्द महाजन, न्यायमूर्ति जीवन लाल कपूर, डा० जी एल दत्ता, प्रि० सूरजभान तथा प्रो० वेदव्यास जैसी विशिष्ट विभूतियो एव उनके सहयोगियो के अदम्य साहस एव सतत् प्रयत्नो के फलस्वरूप डी ए वी कालेज ट्रस्ट एव प्रबन्धकर्तृ समिति न केवल पुन. सुसगठित हो गई अपितु अपनी योजनाबद्ध एव विस्तार की गति मे भी अग्रगण्य हो गई।

(४) वर्तमान समय मे डी, ए वी कालेज ट्रस्ट एव प्रबन्धकर्तृ समिति भारत में सबसे बड़ा गैर सरकारी शैक्षणिक सगठन है, जो कि अपनी ३५० से अधिक सस्थाओं के माध्यम से सम्पूर्ण शैक्षणिक विषयो की शिक्षा के द्वारा राष्ट्र की अमूल्य सेवा कर रहा है। इसके द्वारा सचालित विभिन्न सस्थाओं के अन्तर्गत निम्नलिखित सस्थाएं भी हैं।

(१) ४० आर्टस, साईस और कोमर्स कालेज।

(२) ५ शैक्षणिक कालेज,

(३) लगभग २५० पब्लिक और सहायता प्राप्त स्कूल।

(४) तकनीकी सस्थाओ की एक वर्तमान शृ खला, जिसमे प्रबन्ध और व्यावसायिक अध्ययन सम्बन्धी सस्थाएं हैं।

(५) आयुर्वेदिक कालेज और फार्मेसी।

(६) धर्मदर्शन विद्यालय।

(७) विश्वेश्वरानन्द वैदिक अनुसधान सस्थान, होशियारपुर जो सस्कृत और वैदिक अनुसधान के लिए विश्व भर मे प्रसिद्ध सस्थान है।

(५) उत्तर भारत की सुविख्यात शिक्षण सस्थाओ मे दयानन्द कालेज, अजमेर, डी० ए० वी० बहु उद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, अमृतसर, डी०ए०वी० कालेज, चण्डीगढ़, एम०सी०एम० डी०ए०वी० कालेज चण्डीगढ़, डी०ए०वी० सीनियर माध्यमिक विद्यालय, चण्डीगढ़, हसराज कालेज, दिल्ली पी० जी० डी० ए० वी० कालेज, नई दिल्ली दयानन्द कालेज हिसार, डी० ए०वी० कालेज जालन्धर, हसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर व साई-दास ए० एस० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जालन्धर, आदि प्रमुख हैं, जिनका प्रबन्ध व सचालन डी०ए०वी० कालेज ट्रस्ट व प्रबन्धकर्तृ समिति करती है।

(६) इनके अतिरिक्त महाराष्ट्र राज्य के शोलापुर नगर मे एक विशाल प्रागण 'परिसर' मे स्थित विभिन्न सस्थाए कार्य कर रही हैं, जिनमे लडको व लडकियो के लिए एक विधि महाविद्यालय "ला कालेज" एक वाणिज्य महाविद्यालय 'कामर्स कालेज", एक कला व विज्ञान महाविद्यालय "आर्टस व साईस कालेज', एक शिक्षण महाविद्यालय "कालेज आफ एज्यूकेशन' के अतिरिक्त अनेक विद्यालय भी शामिल हैं।

(७) कुछ वर्ष पूर्व डी०ए०वी० कालेज ट्रस्ट व प्रबन्धकर्तृ समिति ने नई पीढी को वैज्ञानिक युग के उत्तरदायित्व के निर्वहन के निमित्त आवश्यक नैसर्गिक ज्ञान सुलभ कराने की आधुनिक पद्धति के अनुसार उच्च कोटि की शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बड़ी सख्या मे डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल खोलने का महत्वाकांक्षी कार्यक्रम आरम्भ किया है। समिति बच्चो का शारीरिक, मानसिक व नैतिक विकास करने वाले १०० से अधिक डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल चलाने का श्रेय अब तक प्राप्त कर चुकी है और इस पर वह गर्व कर सकती है। हमारे अनेक पब्लिक स्कूलो की गणना उनकी उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था के साथ साथ सांस्कृतिक गतिविधियों मे भी सर्वथा अग्रणी होने के कारण देश के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयो के अन्तर्गत होती है।

(८) डी०ए०वी० सस्थाओ से अब तक असख्यो विद्यार्थी पढकर निकले हैं "स्नातक बन हैं"। उनमे से बहुसख्य स्नातको ने न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे भी पर्याप्त ख्याति अर्जित की है।

विश्वभर म ऐसा कोई स्थान नही है जहा डी०ए०वी० विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त स्नातक न हो। इन सस्थाओ से पढ़कर निकले हुए विद्यार्थियों की प्रथम पक्ति मे शहीद ए आजम भगतसिंह और नोबेल पुरस्कार प्राप्त हरगोबिन्द खुराना का उल्लेख किया जा सकता है।

(९) अमेरिका, ब्रिटेन तथा अन्य विकासशील देशो मे बसे भारतीयो के बच्चे अफ्रीका व एशियाई विद्यार्थियो के साथ चण्डीगढ़, दिल्ली, जालन्धर तथा देश के दूसरे भागो मे स्थित डी०ए०वी० स्कूलों और कालेजो मे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। डी ए०वी० शताब्दी समारोह समिति और डी०ए०वी० समिति ने इस मांग पर विचार करके डी०ए०वी० सस्थान खोलने का निर्णय किया इस निणय को क्रियान्वित करने के उद्देश्य से डी०ए०वी० के एक दल ने गत् वर्ष इडोनेशिया, जापान, मलेशिया, सिंगापुर का भ्रमण किया। उन्होंने वहा डी०ए०वी० समिति की प्रचुर प्रतिष्ठा महसूस की। हमारी समिति ने इसमे के कुछ देशो मे डी०ए०वी० के सांस्कृतिक केन्द्र खोलने का निर्णय किया है। हाल ही मे मोरिशस के एक प्रतिनिधि मण्डल ने अपनी सद्भावना यात्रा के दौरान कुछ डी०ए०वी० सस्थाओ को देखा। इस प्रतिनिधि मण्डल मे वहा के माननीय शिक्षा मन्त्री भी शामिल थे। डी०ए०वी० सस्थाओ की कार्य-प्रणाली से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होने दोनो के सहयोग से एक पब्लिक स्कूल और सांस्कृतिक केन्द्र खोलने का प्रस्ताव रखा। इसे शीघ्र ही अन्तिम रूप दे दिया जायेगा। न्यूयार्क में डी०ए०वी० कालेज की योजना बन चुकी है और अगले सत्र से यह कालेज सिटी यूनिवर्सिटी आफ न्यूयार्क में खुल जायेगा। जिसके प्रथम प्रिंसिपल हसराज कालेज के वर्तमान प्रिंसिपल डा० ओबराय होगे।

(१०) शताब्दी सम्बन्धी कार्यक्रमो का समापन नई दिल्ली में सितम्बर, ८५ से होने वाले कार्यक्रमों के साथ होगा। इस अवसर पर एक विशेष स्मारिका भी प्रकाशित की जायेगी जिसमे डी०ए०वी० आन्दोलन का विस्तृत इतिहास होगा। किन्तु कार्यक्रमो के समापन के साथ हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ जायेगी। जनता जनार्दन के सहयोग से और परमपिता परमात्मा की कृपा से हम अपनी भावी योजनाओं को भी पूरा करने मे सफल होगे। अब तक का हमारा अतीत उज्ज्वल रहा है और निश्चित रूप से भविष्य भी उज्ज्वल होगा। ×

देश भर में संस्कृत दिवस की धूम

सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के आदेशानुसार देश भर में संस्कृत दिवस मनाया गया। आर्य समाज के सबसे बड़े संस्कृत शिक्षण केन्द्र महाविद्यालय ज्वालापुर के विस्तृत प्रस्ताव के बाद समाजों की सूची प्रकाशित की जा रही है। ज्वालापुर का प्रतिवेदन निम्न प्रकार है—

संस्कृत भाषा को आधुनिक भारतीय भाषाओं में स्थान न दिए जाने के कारण करोड़ों संस्कृत प्रेमी नागरिकों में अत्यन्त क्षोभ और रोष व्याप्त है। अतः तुरन्त आवश्यक कार्रवाई हेतु यह प्रतिवेदन आपकी सेवा में भेजा जा रहा है। कृपया तुरन्त ध्यान देकर संस्कृत भाषा को आधुनिक भारतीय भाषा में स्थान देकर व्याप्त जनाक्रोश और असन्तोष को समाप्त करें।

संस्कृत जीवित और जनसाधारण में बहुलता से प्रयुक्त भाषा है। इसके लिए निम्नलिखित तथ्य आपकी सेवा में प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

१—संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। विश्व की क्लासिकल भाषाओं में यह सर्वाधिक विकसित है। यह लेटिन, ग्रीक आदि भाषाओं के तुल्य केवल संग्रहालय की भाषा न होकर आज के युग में भी जन साधारण में व्यवहार में आ रही है। किसी भी प्रादेशिक भाषा से अधिक इसके प्रयोग करने वाले हैं।

२—संस्कृत प्रान्तीय भाषा न होकर समग्र भारत की शिष्टजन एवं विद्वत्-जन की भाषा है। इसका प्रयोग आज भी सम्पूर्ण भारत वर्ष २१ प्रतिशत से अधिक व्यक्तियों द्वारा हो रहा है।

३—किसी भी प्रान्तीय भाषा की तुलना में संस्कृत बोलने, लिखने और पढ़ने वालों की संख्या बहुत अधिक है।

४—भारत सरकार का संस्कृत विभाग आज भी संस्कृत की मौलिक रचनाओं के लिए अनुदान दे रहा है। ऐसी रचनाओं की संख्या सैकड़ों में है।

५—आज भी भारत वर्ष में लगभग ७०-८० संस्कृत पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। जिनमें अर्धवार्षिक, मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक एवं दैनिक पत्र हैं। इनमें से ३५ पत्र-पत्रिकाओं को भारत-सरकार से अनुदान प्राप्त होता है।

६—भारत वर्ष में आज भी अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जा रही है। इनमें विशेष उल्लेखनीय है—सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय, वाराणसी कामेश्वर सिंह वि० वि० दरभंगा, पुरी संस्कृत वि० वि०, राष्ट्रीय संस्थान, नई दिल्ली लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ दिल्ली।

७—इन विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध महाविद्यालयों (कालेजों) में संस्कृत भाषा के माध्यम से ही शिक्षा दी जाती है। ऐसी संस्थाओं की संख्या ८ हजार से अधिक है और इनमें पढ़ने वाले छात्रों की संख्या लाखों में है।

८—वर्तमान समय में संस्कृत माध्यम से पढ़े हुए स्नातकों, ग्रेजुएट्स की संख्या लाखों में है।

९—शासन द्वारा संचालित १५० आयुर्वेदिक कालेजों में संस्कृत भाषा के माध्यम से ही शिक्षा दी जाती है। अधिकांश मेडिकल कालेजों में भी प्राचीन चिकित्सा शास्त्र, चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट आदि ग्रन्थों का अध्यापन कराया जाता है।

१०—विज्ञान के क्षेत्र में भी लीलावती, गणित प्रणाली, सूर्य-सिद्धांत, आर्यभट्ट प्रणाली एवं तकनीकि शिक्षा में वराहमिहिर आदि के संस्कृत ग्रन्थों का उपयोग किया जा रहा है।

११—भारत सरकार द्वारा आयोजित अखिल भारतीय स्तर के वेद-सम्मेलन एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आदि संस्कृत भाषा के माध्यम से ही संचालित होती हैं। एतदर्थ पत्र व्यवहार भी संस्कृत में किया जाता है।

१२—विश्व के शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है कि कम्प्यूटर साइन्स के लिए संस्कृत भाषा सर्वोत्तम है।

१३—कुछ उच्च न्यायालयों में आज भी न्यायाधीश संस्कृत में ही अपना निर्णय घोषित करते हैं।

१४—जनगणना में भी अनेक प्रान्तों में विभिन्न समुदायों ने संस्कृत को अपनी द्वितीय मातृभाषा अंकित कराया है। आज भी कुछ विशिष्ट परिवारों में संस्कृत का मातृभाषा के रूप में प्रयोग होता है।

१५—संसद में संस्कृत में शपथ लेने वाले, बोलने, जानने और भाषण देने वालों की संख्या बहुत बड़ी है।

१६—संस्कृत सभी प्रान्तों की सम्पर्क भाषा के रूप में मान्य है: संस्कृत सभी प्रादेशिक भाषाओं की उपजीव्य भाषा है।

१७—पूरे भारत वर्ष में हिन्दुओं के सारे संस्कार संस्कृत भाषा में ही होते हैं।

१८—यूरोप और अमेरिका में भारतीयों के लिए संस्कृत ही संभाषण का श्रेष्ठ माध्यम है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह निर्विवाद सिद्ध है कि संस्कृत आधुनिक भारतीय भाषा है। अतः नवीन शिक्षा नीति में संस्कृत को आधुनिक भारतीय भाषा में स्थान दिया जाना अनिवार्य है। इसकी उपेक्षा अराष्ट्रीय भावना और सांस्कृतिक दुरभिसंधि होगी।

अतः भारत वर्ष का समस्त बुद्धिजीवी वर्ग आपसे अनुरोध करता है कि भारत सरकार नई शिक्षा नीति में संस्कृत को आधुनिक भारतीय भाषा में अवश्य स्थान दे। संस्कृत की उपेक्षा न केवल राष्ट्रद्रोह होगा, अपितु आत्मघाती सिद्ध होगा। अतः अविलम्ब संस्कृत को नई शिक्षा नीति में आधुनिक भारतीय भाषा घोषित करे।

डा० कपिलदेव द्विवेदी
कुलपति

डा० हरिगोपाल शास्त्री
आचार्य

निम्न स्थानों पर संस्कृत रक्षा दिवस सम्पन्न हुआ।

१—आर्य समाज लालबाग लखनऊ (उ० प्र०)
२—आर्य समाज आदर्श नगर लखनऊ (उ० प्र०)
३—आर्य समाज बागपत जिला मेरठ (उ० प्र०)
४—आर्य समाज नवाबगंज बरेली (उ० प्र०)
५—मेवात सुधार गोरक्षा रक्षा संघर्ष समिति रनसीका (ह० प्र०)
६—आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर (उ० प्र०)
७—गुरुकुल वैदिक संस्कृति महाविद्यालय सिराथू
८—आर्य समाज मन्दिर खामगांव जि० बुलढाना (महाराष्ट्र)
१०—आर्य समाज कैलाश ग्रेटर I दिल्ली
११—आर्य समाज शृंगार नगर आलम बाग लखनऊ
१२—बड़ौदा संस्कृत महाविद्यालय मांडवी
१३—आर्य गुरुकुल ऐंधा कटरा इटावा (उ० प्र०)
१४—आर्य समाज दिबियापुर इटावा (उ० प्र०)
१५—केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर (उ० प्र०)
१६—आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत (हरियाणा)
१७—आर्य समाज पूंगल जोधपुर (रजि०)
१८—आर्य समाज घरौन्डा (करनाल)
१९—आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई
२०—आर्य समाज लालबाग लखनऊ
२१—आर्य समाज अमरोहा
२२—आर्य समाज खड़गपुर (मेदिनीपुर) बंगाल
२३—संस्कृत सुरक्षा समिति हिंगोली
२४—आर्य समाज रम्मन का पुरा प्रयाग
२५—आर्य समाज सोहर दग्गा बिहार
२६—आर्य समाज मकई चौक धमतरी (म० प्र०)
२७—आर्य समाज सीसामऊ कानपुर
२८—अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा पिलखुवा
२९—आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद
३०—आर्य समाज बागपत मेरठ
३१—आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर
३२—गोरक्षा संघर्ष समिति रसीमाका फरीदाबाद
३३—आर्य समाज नामनेर आगरा

(शेष पृष्ठ १४ पर)

हमारे देश की विचित्र धर्म-निरपेक्षता

लेखक श्री दत्तात्रेय आर्य भूतपूर्व आचार्य, दयानन्द कालेज अजमेर

संसद के वर्तमान अधिवेशन में प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने अपने एक महत्वपूर्ण भाषण में कहा है कि अब समय आ गया है कि अब देश में धर्म और राजनीति के सम्बन्ध में और व्यापक विचार विनिमय किया जाय। स्पष्ट है कि उनका यह वक्तव्य देश की वर्तमान बढ़ती हुई पृथकतावादी प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर दिया गया है जिनका सबसे दुर्भाग्यपूर्ण प्रदर्शन आज कई वर्षों से पंजाब में हो रहा है।

इस सामयिक प्रासंगिकता से भी अधिक विचारणीय प्रश्न यह है कि स्वतन्त्र भारत के संविधान मे हमने जिस धर्म-निरपेक्ष राजनैतिक व्यवस्था को स्वीकार किया है वह कहां तक सफल या असफल हुई है। गत कुछ वर्षों की घटनाओ से स्पष्ट है कि धर्म-निरपेक्षता का यह आदर्श, सैद्धान्तिक दृष्टि से निर्विवाद होने पर भी व्यवहार मे असफल सिद्ध हुआ है।

धर्म-निरपेक्षता का अर्थ

इस असफलता के दो मुख्य कारण हैं। एक यह कि हमने परम्परागत धर्म-निरपेक्षता के आदर्श को अपने देश मे एक नवीन रूप देने का प्रयत्न किया है दूसरा यह कि पश्चिम के राष्ट्रों और विचारकों की धर्म-निरपेक्षता की मान्यताएं जिस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि मे विकसित हुई वह हमारे देश की परिस्थितियों और विशेषकर यहां की धार्मिक और सामाजिक भिन्नताओं से मेल नहीं खाती थी।

शासन व्यवस्था मे धर्म-निरपेक्षता के सिद्धान्त का अर्थ यह है कि राज्य का किसी एक धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। अर्थात वह अपने प्रशासन तथा देश के राजनैतिक जीवन मे किसी धार्मिक विश्वास को न स्वीकार करेगा और नहीं उससे प्रभावित होगा। दूसरे शब्दों में देश का प्रत्येक नागरिक चाहे वह किसी धर्म जाति या सम्प्रदाय का अनुयायी हो उसके साथ किसी प्रकार का पक्षपात नहीं किया जायेगा बल्कि सब नागरिकों के राजनैतिक अधिकार समान होंगे।

भारत का संविधान जब विचाराधीन था तो उस समय देश के सिर पर मुस्लिम लीग द्वारा की गई पाकिस्तान की मांग की छाया मंडरा रही थी इसीलिये देश को खण्डित न होने देने एक प्रयत्न के रूप में मुस्लिम बहुल प्रान्तों को कुछ विशेष अधिकार देकर एक भारतीय राज्य मे बनाये रखने का प्रयत्न किया गया किन्तु जब यह स्पष्ट हो गया कि पाकिस्तान के रूप मे देश का विभाजन अनिवार्य है तो हमारे नेताओं और विधान वेत्ताओं ने धर्म के नाम पर पृथक निर्वाचन तथा आरक्षण आदि की अंग्रेजी राज्य की परम्परा को समाप्त कर दिया।

हिन्दू मुस्लिम एकता की शर्तें

अंग्रेजी तथा मुस्लिम लीग की पृथकतावादी नीतियों के इस तात्कालिक निराकरण के उपरान्त भी हम एक विशुद्ध धर्म-निरपेक्ष संविधान क्यों नहीं बना सके? इसका उत्तर हमारे राजनैतिक आन्दोलन की पृष्ठ-भूमि से मिलता है। देश के स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व जब महात्मा गांधी के हाथ में आया तब उन्होंने सबसे अधिक बल इस बात पर दिया कि हिन्दू और मुसलमानों की एकता के बिना न हमारा देश आजाद हो सकता है और न ही हम अपनी आजादी को सुरक्षित रख सकते हैं। गांधीजी के लिए यह केवल एक नीति का प्रश्न नहीं था बल्कि उनके इस सर्वविदित विश्वास का परिणाम था कि संसार के सब धर्म न केवल सत्य हैं बल्कि उन सबके प्रति हमें समान आदर और सम्मान रखना चाहिये दूसरे शब्दों मे इसे हम सब धर्म कह सकते हैं।

स्पष्ट है कि गांधी जी और उनके जिन प्रमुख अनुयायियों की प्रेरणा से हमारे संविधान की रूपरेखा निर्धारित की गई उसका आधार प्रचलित अर्थों मे धर्म-निरपेक्ष राज्य न होकर एक ऐसा राज्य था जो सर्वधर्म सद्भाव के आदर्श को स्वीकार करता है।

धर्म-निरपेक्ष या सर्वधर्म सापेक्ष

धर्म-निरपेक्ष राज्य का परम्परागत अर्थ है कि राज्य न तो किसी धर्म का समर्थक है और न किसी धर्म का विरोधी है। किन्तु हमने इसके स्थान में सब धर्मों का समर्थन करना इसका अर्थ कर लिया है। यदि राज्य का किसी एक धर्म से सम्बन्ध अवांछनीय और हानिकर है तो अनेक धर्मों से इस प्रकार का सम्बन्ध स्वभावतः अनेक गुना हानिकारक है। गत लगभग ३८ वर्षों के अनुभव से भी यह स्पष्ट है कि सब धर्मों के प्रति निष्ठा या आदर राज्य या राजनीति में असम्भव है। किन्तु इस व्यर्थ के प्रयत्न मे हमने अपने सार्वजनिक और राजनैतिक जीवन को विकृत अवश्य कर लिया है। सब धर्मों के प्रति सद्‌भाव व्यक्तिगत आदर्श तो हो सकता है किन्तु वह किसी राज्य प्रशासन की नीति नहीं बन सकता। आज देश मे धर्म सम्प्रदाय और जाति के नाम पर जो अनेक संगठन पुनः उभर रहे हैं वह धर्म निरपेक्षता की इसी विकृत नीति का परिणाम है। दुर्भाग्य से इन धर्मों मे से अनेक तथा विशेषकर तथाकथित अल्पमत के धर्म प्रत्येक राष्ट्रीय और सार्वजनिक प्रश्न को अपने संकीर्ण धार्मिक और साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से देखने लगे हैं। और उनकी इस प्रवृत्ति को हमारी सर्वधर्म सम्भाव की इस नीति से प्रोत्साहन मिलता है। पंजाब मे अकाली दल खुले रूप से एक धार्मिक आधार पर बना राजनैतिक दल और यही कारण है कि सिखों के धार्मिक नेता और पुजारी पंजाब की राजनीति को भारतीय संविधान के अनुसार नहीं अपितु अपनी धार्मिक मान्यताओं के आधार पर संचालित करना अपना अधिकार समझते हैं। वहां की अकाली सरकार भी धर्म गुरुओं के इस हस्तक्षेप को सिद्धान्त रूप से चुनौती न देकर केवल धर्म गुरुओं की कार्यप्रणाली को अप्रजातन्त्रीय तथा एकतरफा कहकर कहती है मगर उनके सर्वोपरि अधिकार को स्वीकार करती है। दक्षिण ईसाई धर्म का एक सम्प्रदाय राष्ट्रगीत को अपने धर्म के विरुद्ध समझता है। अनेक धार्मिक संगठन संविधान तथा राष्ट्रीय झण्डे तक का अपमान करते हैं। और यहां तक कि उन्हे सार्वजनिक रूप से जलाते हैं। दो राष्ट्र के सिद्धान्त के आधार पर देश का विभाजन करने वाली मुस्लिम-लीग तक को स्वतन्त्र भारत मे कानूनी मान्यता प्राप्त है। केरल मे स्वयं राष्ट्रीय कांग्रेस ने उसके साथ राजनैतिक समझौता करके उसे मान्यता प्रदान कर दी। शाहबानो के विवाद ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इस्लाम धर्म के नाम पर देश की जनता का एक बहुत बड़ा भाग हमारे संविधान के धर्म निरपेक्ष आदर्श को खुले आम चुनौती देता है।

इस्लाम की धार्मिक राज्य व्यवस्था

वस्तुत इस्लाम की स्पष्ट मान्यता है कि राजनीति उनके धर्म का एक अनिवार्य अंग है। इसीलिए उन्हें इसी प्रकार की कोई राज्य व्यवस्था स्वीकार नहीं हो सकती जो उनके धार्मिक विश्वासों के प्रतिकूल हो। इतना ही नहीं विवाह, तलाक, गुजारे का भत्ता आदि जैसे प्रश्न जिनका महिलाओं के अधिकारों और समानता से सम्बन्ध है उन्हे भी वे देश के सब पर लागू होने वाले किसी कानून द्वारा नियमित करने के विरुद्ध है। यही कारण है कि संविधान मे सबके लिए समान सिविल कोड बनाने की व्यवस्था होने पर भी देश का बहुमत उसके पक्ष मे होने पर भी यह कोई अभी तक नहीं बन पाया है और अब जिस प्रस्तावित सिविल कोड की चर्चा है वह भी स्वेच्छिक होगा अर्थात मुसलमानों के लिए इसे मानना अनिवार्य नहीं इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि जब राष्ट्रीय और सार्वजनिक हित के प्रश्नों तक के बारे मे धर्मों की मान्यता भिन्न है तो इन सब धर्मों को राज्य समान समर्थन और आदर कैसे कर सकता है?

अन्धविश्वासों को प्रोत्साहन

धर्म निरपेक्षता की इस विकृति का एक और दुष्परिणाम यह हो रहा है कि हिन्दू धर्म की अनेक धार्मिक और सामाजिक कुरीतियां जिन्हें हमारे राष्ट्रीय नेताओं और धार्मिक सुधारकों ने देश की प्रगति और यहां तक कि स्वाधीनता तक मे बाधक समझकर दूर करने का प्रयत्न किया सब धर्मों के प्रति आदर के नाम पर वे अब पुनः उभर रही हैं। इसी प्रकार अनेक अन्धविश्वास हमारे राजनैतिक जीवन के अंग बनते जा रहे हैं। तान्त्रिक ज्योतिषी और धर्म गुरुओं का बढ़ता हुआ प्रभाव इसके प्रमाण हैं। अजमेर की ख्वाजा साहब की

(शेष पृष्ठ १४ पर)

स्वतन्त्रता सेनानी को चक्कर काटने के बाद भी पेंशन नहीं

(हमारे कार्यालय संवाददाता द्वारा)

नई दिल्ली, ११ मई। बिहार के स्वाधीनता सेनानी श्री रामलगन रावत ने आजादी की लड़ाई क्रान्तिकारियों के कधे से कंधा मिला कर लड़ी, लेकिन आज तक उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान पेंशन नही मिली। हालत यह हो गई है कि अपनी कहानी सुनाते हुए वे रो पड़ते हैं।

श्री रामलगन रावत ने अपनी पेंशन के लिए राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री जी से लेकर बिहार के मुख्यमन्त्री व राज्यपाल तक सभी जगह दरख्वास्त दी व असंख्य पत्र भेजे। नेताओं व अखबारों के जरिये भी ऊपर तक अपनी बात पहुचाई। लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नही हुई। अपनी गुजर बसर व बड़े परिवार का पेट पालने के लिए आज भी वे बिहार से दिल्ली आये हैं और किसी तरह अपना काम कराने की कोशिश मे भाग दौड़ में लगे हैं।

पटना के दफ्तर में उन्हें बताया गया कि उनकी फाइल गुम हो गई। अब अगर उनके पास आफसरों, क्लर्कों को "खिलाने-पिलाने," के लिए पैसे होते तो पेंशन ही क्यो मागते।

आखिर पेंशन के लिए तो वे स्वाधीनता के सग्राम में कूदे नही थे।

श्री रामलगन रावत को अखिल भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी सगठन के कार्यकारी अध्यक्ष शीलभद्र याजीव ने स्वाधीनता सेनानी होने का प्रमाण पत्र दिया है, पर पटना के सरकारी अफसरों के कान पर अभी भी जूं नही रेंग रही। (दैनिक हिन्दुस्तान १२ मई पृ० ५ का० ८)

आर्य समाज रामकृष्णपुरम् निर्माण योजना की अपील

महर्षि दयानन्द के मिशन को फैलाने के लिए यू तो देहली की प्राय: सभी कालोनियों मे आर्यो के भवन व प्रचार केन्द्र स्थापित हैं परन्तु रामकृष्ण-पुरम् भारत सरकार की केन्द्र कर्मचारियों की सब से बड़ी कालोनी है।

इस कालोनी के सैक्टर ९ मे आर्य समाज को १ हजार वर्गगज भूमि ४ वर्ष पूर्व ही प्राप्त कर गई थी। जिसका १ लाख १४ हजार रुपया भुगतान कर दिया गया है। वहा एक देवी की ५१०००) की दान राशि से यज्ञशाला का निर्माण हो रहा है। भवन व अन्य योजनाओं के लिए अभी लाखों रुपये की आवश्यकता है। धर्म प्रेमी व उदार बन्धुओं से प्रार्थना है इस महान कार्य मे दिल खोलकर समाज की सहायता करें। यहां २ लाख को जनसख्या का शिक्षित वर्ग आर्य समाज से प्रभावित होगा। इससे समाज की बहुत उन्नति व धर्म प्रचार का लाभ मिलेगा।

हरबन्सलाल कोहली — प्रधान

ओमप्रकाश कपूर — मन्त्री

आर्य समाज रामकृष्णपुरम् सैक्टर ९, नई दिल्ली-११००२२

धर्म-निरपेक्षता

(पृष्ठ १३ का शेष)

दरगाह तो अब एक प्रकार से सरकारी तीर्थ स्थान बन गई है। राज्यों और केन्द्रो के मन्त्री और यहा तक कि स्वयं प्रधानमन्त्री तक सिर पर रखकर इस मजार पर चादर चढ़ाते रहे हैं तो सर्वसाधारण व्यक्तियों के अन्धविश्वास को एक नया समर्थन और प्रोत्साहन मिलता है। यदि दरगाह पर मन्नत मानने से राजनेताओ को चुनाव मे सफलता मिल सकती है तो सन्तान प्राप्ति, मुकदमों मे सफलता, सट्टे मे लाभ आदि की मन्नतें मांगने वालों को हम अन्धविश्वासी कैसे कह सकते हैं?

यह सर्वविदित है कि इस प्रसिद्ध दरगाह की जियारत या उस पर चादर चढ़ाने का मुख्य उद्देश्य कोई न कोई मन्नत मांगना होता है। यदि आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व दिवगत फकीर के अवशेषों पर बनी समाधि या दरगाह आज भी ऐसा चमत्कार कर सकती है तो जीवित सन्त और भगवानों, धर्म गुरुओ द्वारा किये जाने वाले चमत्कारों को इक्कीसवीं सदी के नाम पर हम कैसे निषेध कर सकते हैं। विशेषकर जब इन चमत्कारों पर स्वयं सरकार की मोहर और छाप लगायी जा रही हो और वह भी धर्म निरपेक्ष राज्य के नाम पर

एक नई प्रथा

हमारी संस्कृति और हमारी परम्परा में मृत्यु दिवस नहीं मनाया जाता है जन्म दिवस महान पुरुषों के सार्वजनिक रूप से मनाये जाते हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और योगीराज श्री कृष्ण जी के जन्म दिवस चैत्रशुक्ल ९ नवमी और भादपद कृष्णपक्ष की अष्टमी सारे देश में मनायी जाती है और बच्चों को भी ये शुभ दिन याद है पर श्री राम जी की और कृष्ण जी की मृत्यु किस दिन हुई थी इसको बड़े-बड़े पण्डित भी नहीं जानते हैं।

हमारे यहां किसी भी महान पुरुष का मृत्यु दिवस नही मनाया जाता था कुछ राजनैतिक लोगों ने मृत्यु दिवस का नाम पुण्य दिवस रखकर मनाने की नयी प्रथा चलायी अब भूमण्डल भरके आर्यजनों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दिवगत महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी का प्रथम स्मृति दिवस मनाने की घोषणा सभा के मुखपत्र सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के मुख पृष्ठ पर पढ़कर मेरे हृदय को चोट पहुंची मैं रोग शय्या पर पड़ा हुआ हू हो सकता है कि इस शय्या से मैं जीवित न उठूं पर जब तक जीवित हूं तब तक अनुचित बात का विरोध नहीं करूंगा तो मुझको सन्ताप रहेगा।

चूं कुफ्र ज काबा बरखेजद् कुजा मानद मुसलमानी ?

काबे से ही कुफ्र पैदा होगा, तो मुसलमानी कहा रहेगी ?

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।

जो जो आर्य श्रेष्ठ जन करते हैं छोटे भी वही करने लग जाते हैं इसलिये—

न बुद्धि भेदं जनयेदज्ञानां कर्मसंगिताम्।

कर्म बन्धन मे फंसे हुए, अज्ञानियों की बुद्धि में भेद उत्पन्न न किया जाय।

सार्वदेशिक सभा का अनुकरण समाजें करेंगी तब मृतक श्राद्ध की प्रथा को कोई रोक नही सकेगा।

वैदिक धर्म का
अमर स्वामी सरस्वती

संस्कृत दिवस की धूम

(पृष्ठ १२ का शेष)

३४—आर्य समाज बस्ती
३५—श्री बैनीसिंह पू० मा० विद्यालय बालूगज आगरा
३६—आर्य समाज टाण्डा अफजल (मुरादाबाद)
३७—आर्य समाज खुर्जा
३८—आर्य समाज अजमेर
३९—आर्य समाज बक्सर भोजपुर बिहार
४०—आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू एव कश्मीर
४१—संस्कृत रक्षा समिति आर्य समाज पिलखुआ
४२—आदि गौड़ सभा खेड़ा पिलखुआ
४३—आर्य समाज सैक्टर ७ फरीदाबाद
४४—आर्य समाज काशीपुर नैनीताल
४५—आर्य समाज देवरामपुर (मोटाढाक) कोटद्वार पौढ़ी गढ़वाल
४६—नगर आर्य समाज समाज गंगाप्रसाद रोड लखनऊ
४७—आर्य समाज वैदिक आश्रम रेल्वे रोड ऋषिकेश
४८—दयानन्द आश्रम नरवाली बासवाड़ा (राजस्थान)
४९—आर्य समाज देहरादून
५०—जिला आर्य प्रतिनिधि सभा देहरादून
५१—साधुराम इन्टर कालेज देहरादून
५२—आर्य समाज विकास नगर देहरादून
५३—आर्य समाज धर्मपुरा देहरादून
५४—गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी (हरिद्वार)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा प्रधानमन्त्री राजीव गांधी को "बृहद् विमान शास्त्र" की प्रति भेंट

दिल्ली २५ मई। आज प्रातः ९-३० बजे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में एक शिष्टमण्डल मेरठ और दिल्लीके दगो की जानकारी देने के लिए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला। शिष्टमण्डल में बाबू सोमनाथ एडवोकेट, श्रीमती कमलारत्नम पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, पं० रामरत्न शास्त्री, श्री विमलदेव भारद्वाज, श्री सूर्यदेव, श्री मनोहरलाल कुमार, श्री प्रेमचन्द्र गुप्त, प० क्षितीश वेदालकार, प्रकाशचन्द्र शास्त्री, डा० रामप्रकाश तथा चौ० लक्ष्मीचन्द आदि सम्मिलित थे।

श्री स्वामी जी ने नई शिक्षा नीति मे संस्कृत की उपेक्षा पर प्रधानमन्त्री का ध्यान आकृष्ट करते हुए अनुरोध किया कि विश्व की सबसे प्राचीन तथा विपुल शब्द भण्डार की जननी सस्कृत भाषा को भारतीय शिक्षा विधान में उचित स्थान दिया जाय। उन्होने कहा कि सस्कृत ससार के सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों में पढाई जाती है। प्राचीन वैदिक ज्ञान विज्ञान भी सस्कृत के माध्यम से ही सुरक्षित रह सकते हैं।

इस अवसर पर स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री को महर्षि भारद्वाज कृत वृहद विमान शास्त्र की एक प्रति भेंट करते हुए बताया कि आज से ११० वर्ष पूर्व जब आधुनिक विमान का आविष्कार भी नही हुआ था, महर्षि दयानन्द ने वैदिक काल मे मनुष्य का वायुयान द्वारा आकाश में उड़ने की परिकल्पना को सत्य कहा था। तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमन्त्री रेमजे मैकडा-नेल्ड ने महर्षि दयानन्द के इस कथन का मजाक उडाते हुए कहा था कि महर्षि दयानन्द ने अन्य जो कार्य किए वे सभी प्रशसनीय है, किन्तु मनुष्य के आकाश में पक्षी की भांति उड़ने वाली बात कोरी गप्प है।" लेकिन महर्षि की उस समय गप्प कही जाने वाली बात आज सत्य सिद्ध हो रही है।

वृहद विमान शास्त्र प्राचीन वैज्ञानिकों द्वारा आकाश मे वायुयान उड़ाने का हजारों वर्ष पुराना फार्मूला है। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री को बताया कि भोजपत्रों पर लिखे हुए तीन हजार श्लोको के इस शास्त्र का स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज ने हिन्दी में अनुवाद करके सार्वदेशिक सभा को सौपा था। प्रधानमन्त्री ने जो स्वय एक कुशल विमान चालक रह चुके हैं, इस ग्रन्थ रत्न में रुचि दिखाते हुए पढ़ने का आश्वासन दिया।

वृहद विमान शास्त्र का हिन्दी रूपान्तर सार्वदेशिक सभा में उपलब्ध है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

चारों ओर मौत का साया

(पृष्ठ २ का शेष)

मुख्यमन्त्री की उपस्थिति में ही यह ताण्डव नृत्य हो रहा था। यदि उसी समय सख्ती से शरारती तत्वों को कुचल दिया जाता तो इतनी जन-धन की हानि न होती और प्रशासन भी सुख की सांस ले रहा होता।

इस सारे उपद्रव को न दबाने का कारण श्रीमती मोहसिना किदवई हैं। श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने प्रशासन से मांग की है कि—

शहर को मिलटरी के हवाले करके उच्च न्यायायिक जांच का आदेश दिया जाय। तथा जिन लोगों का करोडों का नुकसान हुआ है, उन्हें मुआवजा दिया जाय।

स्वामी जी ने कहा—यदि विघटनकारी तत्वों को न दबाया गया तो, सम्भावना है कि यह उपद्रव सारे उत्तर प्रदेश में फैल जायेगा।

इस बीभत्स काण्ड में विदेशी व बाहरी तत्वों का भी हाथ होने का सन्देह है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभामन्त्री

दिल्ली मेरठ के दंगे

(पृष्ठ १ का शेष)

उन्होंने हिन्दुओं की हत्याएं कीं व उनके अरबोंरुपे की सम्पत्ति को निर्दयता फूंका। भगतसिंह मार्कीट व अन्य बाजार पूर्णतया जलाकर राख बना दिए। पूर्वक मेरठ का दंगा पूर्व नियोजित व विदेशी तत्वों के सहयोग से हुआ है।

इसी प्रकार रमजान की अन्तिम नमाज की छूट से भी दिल्ली शासन ने धोका खाया। हजारो मुसलमानों ने नमाज समाप्त होते ही दिल्ली मे विनाश का नग्न ताण्डव उपस्थित कर दिया। लूटो और मारो का वह देश-द्रोही व देश विनाशक नारा मस्जिदों से उठा। मस्जिदें भी देश के द्रोहियों का अड्डा बनती जा रही हैं। इसका परिणाम कितना विनाशकारी हो सकता है। प्रधानमन्त्री ने परिस्थितिओं की इस विषमता को स्वीकार किया और कहा कि सरकार इन दगों को दबाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

शिष्टमण्डल मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी सार्वदेशिक के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह सार्वदेशिक के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सनातन धर्म सभा के श्री प्रेमचन्द गुप्ता आर्य जगत सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार सस्कृत रक्षा समिति के श्रीमती कमलारत्नम श्री विमलदेव भारद्वाज श्री प्रकाशचन्द शास्त्री श्री रामरूप शास्त्री श्री मनोहरलाल कुमार ला० रामप्रकाश दास भी सम्मिलित थे। शिष्टमण्डल ने अपने ज्ञापनों के द्वारा (१) गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की माग की।

(२) संस्कृत भाषा के प्रति सरकार की नीति मे सुधार की मांग की।

(३) हैदराबाद सत्याग्रह के सैनानियों के सम्मान पुरस्कार के सम्बन्ध में सरकार द्वारा अपनाई जा रही नीति में हस्तक्षेप करने की मांग की।

प्रधानमन्त्री ने बड़ी गम्भीरता से मांगों पर विचारकर समुचित समाधान का आश्वासन दिया।

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (७ ६-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसस न० U ४१
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U 93 Post in D.P S O on 4-6-1987

भारतवासियो ! सस्कृत की रक्षा के लिए कमर कसलो सभी भारतीय भाषाओ को मा को बचालो

संस्कृत भाषा की रक्षा के लिए बडे से बडा बलिदान करूंगा

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली)

संस्कृत भाषा आर्य समाज व सनातन धर्म दोनों का आधार है

—गोस्वामी गिरिधारीलाल (अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय सनातन धर्म सभा)

संस्कृत अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है

—श्रीमती रुमला रत्नम

आन्दोलन किए जायेंगे

धरने दिये जायेंगे। भूख हड़तालें की जायेंगी प्रदर्शन किये जायेंगे

बैठक में वक्ताओं के स्वर गूंजे

सर्वदलीय बैठक के निर्णय —

घण्टा घर पर साकेतिक भूख हडताल सात जून ८७ को प्रातः ८ बजे से साय ८ बजे तक (एक दिन)

निवेदन —इसमें गाजियाबाद की सभी सस्थाओ से भाग लेने की प्रार्थना है ७ जून को गाजियाबाद की सभी आर्य समाजों का साप्ताहिक सम्मिलित रूप से घण्टा घर पर ही होगा।

२९ मई को गाजियाबाद की सभी सस्थाओ के पदाधिकारियों की सर्वदलीय बैठक साय ७-३० बजे मनोहरी विद्या मन्दिर नवयुग मार्केट मे हुई।

इसमें साकेतिक भूख हडताल को सफल बनाने की योजना तथा आन्दोलन का भावी कार्यक्रम बना।

साकेतिक भूख हडताल में गाजियाबाद जनपद के प्रत्येक सस्कृत प्रेमी का स्वागत है।

राष्ट्रीय एकता एव समाज मे सद्भाव के कार्यक्रमो को प्रभावपूर्ण बनाने के उद्देश्य से—

आर्य समाज के विद्वानो का बुद्धिजीवी सम्मेलन आर्य समाज नया कविनगर मे साय ४ बजे १४ जून ८७ को बुलाया जा रहा है।

भारत सरकार से माग —माध्यमिक कक्षाओं मे सस्कृत को अनिवार्य विषय घोषित करो।

निवेदक —

जयचन्द आर्य	वीरपाल विद्यालंकार	शान्ति स्वरूप
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद

रहे। गाजियाबाद सम्मेलन मे देश मे क्रान्ति का शख फूका। ... प्रेस मे शामिल हो गए उत्तर प्रदेश की राजनीति पर छाए रहे। २ बार मुख्यमन्त्री बने। नेहरू वाद के विरोध को लेकर जनता पार्टी का साथ दिया। केन्द्र मे गृहमन्त्री तथा प्रधानमन्त्री पद तक पहुचे। नूरपुर जिला मेरठ मे जन्मे ८५ वर्षीय चौधरी सा० के निधन से राष्ट्र को एक अपूरणीय क्षति पहुची है। आज देश का ऐसे निष्ठावान देश भक्त की परमावश्यकता थी।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवा भव — ओ३म्

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक २८] | आषाढ कृ० ३ स० २०४४ रविवार १८ जून १९८७ | वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ६० पैसे

आर्यसमाज द्वारा सहायता का प्रशंसनीय कार्य

मेरठ के दंगा प्रभावित क्षेत्रों में : श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तीसरी बार पीड़ितों से मिले

दिल्ली ८ जून। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ७ जून ८७ को हरिद्वार से लौटते हुए तीसरी बार मेरठ के दौरे पर गये और वहा दंगाग्रस्त क्षेत्रो का दौरा करते हुए स्थिति का जायजा लिया। इससे पूर्व श्री स्वामी जी २१ मई और २४ मई ८७ को दो बार पहले भी मेरठ का दौरा कर चुके थे। श्री स्वामी जी ने मेरठ के दंगो की विस्तृत रिपोर्ट २५ व २६ मई प्रधानमन्त्री को दी थी और उनसे अनुरोध किया था कि वह मेरठ के दंगाग्रस्त क्षेत्रो मे जाकर स्वयं स्थिति का अध्ययन करे। इसी प्रेरणा पर श्री राजीव गांधी ३१ मई को मेरठ गए थे।

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को इससे बड़ा सन्तोष प्राप्त हुआ कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान और मेरठ के सक्रिय आर्यसमाजी नेता प० इन्द्रराज जी आर्य समाज थापर नगर और आर्य समाज बुढानागेट के कार्यकर्त्ताओ के साथ रात दिन हरिजनो व पीडितो को राशन आदि बाट रहे हैं। उनके इस राहत कार्य से दुखी जनता मे आत्म विश्वास की लहर पैदा हुई है। श्री स्वामी जी का मत है कि यद्यपि स्थिति मे शनै शनै सुधरने के आसार हैं किन्तु वहा हिन्दुओ की जो क्षति हुई है वह बहुत अधिक है। श्रीमती मोहसिना किदवई के बारे मे उनके वही विचार हैं जो पहले थे, कि मेरठ के दंगे ने उनकी नीति के कारण ज्यादा व विनाशकारी रूप धारण किया।

श्री स्वामी जी के साथ प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता प्रो० बलराज मधोक व समाजसेवी श्री पटवारी जी और सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री भी थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा

दिनाक १४ ७ ८७ को प्रात ११ बजे आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली मे होगी। देश भर के आर्य प्रतिनिधि इसमे भाग लेगे।

अन्तरंग सभा

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा १३-७ ८७ को मध्यान्होत्तर दो बजे से आर्य समाज दीवानहाल मे होगी।

—मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

मेरठ दंगे को लेकर मोहसिना और वीर बहादुर में ठनी

लखनऊ ८ जून। मेरठ दंगे को लेकर केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्री मोहसिना किदवई और प्रदेश के मुख्यमन्त्री वीर बहादुरसिंह के बीच टकराव की स्थिति पैदा हो गई है। जानकार सूत्रो के मुताबिक जहा मुख्यमन्त्री मेरठ के दंगे को इतना लम्बा खीचने के लिए मोहसिना किदवई की दखलदाजी को जिम्मेदार मान रहे हैं। वही मोहसिना किदवई का आरोप है कि मेरठ मे मलियाना और हाशिमपुरा जैसी घटनाए मुख्यमन्त्री वीर बहादुर सिंह के पुलिस को खुली छूट दिए जाने के कारण हुई।

मोहसिना किदवई के नजदीकी सूत्रो के मुताबिक मुख्यमन्त्री ने दंगो से निपटने के लिए जो रणनीति अपनाई उससे हिन्दू साम्प्रदायिकता, पुलिस और पी०ए०सी० को मुसलमानो पर हमला करने के लिए बढावा मिला। जानकार सूत्रो के मुताबिक मोहसिना किदवई और वीर बहादुरसिंह के बीच पहली बार खुला टकराव दंगाइयो को देखते ही गोली मार देनेके आदेश से हुआ। मोहसिना किदवई का कहना था कि अधिकार मिल जाने पर पी०ए०सी० अल्पसख्यको को सबसे अधिक मारेगी, जब कि मुख्यमन्त्री का कहना था कि अगर सडको पर उतर आए दंगाइयो को वापस घर भेजना है तो पुलिस पर भरोसा करना ही होगा।

बताते हैं कि इस सवाल पर दोनो मे इस कदर तू तू मैं-मैं हुई कि थोडी देर बाद शुरू हुई अधिकारियो के साथ बैठकमे मुख्यमन्त्री

(शेष पृष्ठ २ पर)

यह ज्ञातव्य है कि २२ मई को सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उपद्रवग्रस्त मेरठ का दौरा करके अपनी विस्तृत रिपोर्ट २५ मई को श्री राजीव गांधी को प्रस्तुत कर दी थी। इस रिपोर्ट में स्पष्टतया स्वामी जी ने लिखा था कि हिन्दुओं की विनाश लीला में मेरठ से सांसद चुनी गई श्रीमती मोहसिना किदवई का मुख्य हाथ है। श्रीमती किदवई ने जिस प्रकार राज्याधिकारियों को पथभ्रष्ट किया यह तथ्य अब खुलकर श्री वीरबहादुर (मुख्यमन्त्री) व मोहसिना जी के टकराव का कारण बना है उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत है।

—सम्पादक

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

मेरठ में दंगे

(पृष्ठ १ का शेष)

ने मोहसिना किदवई को बुलाया ही नही। अलबत्ता उन्होने दगाइयो को गोली मारने के आदेश का खण्डन जरूर करवा दिया ताकि कोई बात हो तो, उसकी जिम्मेदारी उन पर न आए।

मोहसिना खेमे के मुताबिक मुख्यमन्त्री ने पुलिस और पी०ए० सी० को दगा रोकने के बहाने न केवल अल्सख्यको के साथ ज्यादती करने की खुली छूट दे दी बल्कि वहा तैनात पुलिस अधिकारियो के हाथ से सारे अधिकार लेकर उन्होने अपने पसदीदा अफसरो को दे दिया जिन्हे जाहिरा तौर पर सिफ मदद करने के लिए भेजा गया था। काफी दिनो से किसी अच्छी जगह तैनाती के लिए परेशान इन अधिकारियो ने पुलिस बल का नेतृत्व अपने हाथ मे आते ही ज्यादा खैर ख्वाही दिखाने के लिए पुलिस और पी०ए०सी० को और बेलगाम कर दिया।

मोहसिना किदवई खेमे के मुताबिक दगो के दौरान ही मेरठ के पुलिस उपमहानिरीक्षक नाथूलाल वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बीके नायर और नगर पुलिस अध्यक्ष बीके चतुर्वेदी का तबादला करने से वहा तैनात पुलिस अफसरो का न केवल मनोबल गिरा बल्कि इन अफसरो के नेतृत्व मे वहा अल्पसख्यको पर ज्यादतिया भी हुई और उन्हे वहा स्थाई नियुक्ति देकर मुख्यमन्त्री ने पुरस्कृत भी कर दिया।

दूसरी तरफ मुख्यमन्त्री खेमे का कहना है कि मेरठ से हटाए गए पुलिस अधिकारी मोहसिना किदवई की मर्जी से वहा रखे गए थे। इन लोगो से मेरठ की स्थिति असामान्य होते हुए भी लापरवाही बरती और अराजक तत्वो के खिलाफ कठोर कारवाही नही की। और तो और कई इलाको मे हथियारो का जखीरा इकट्ठा होने से भी नही रोक सके।

मुख्यमन्त्री खेमे का आरोप है कि १९८० मे मोहसिना के मेरठ का सासद चुने जाने के बाद वहा साम्प्रदायिक सौहाद मे लगातार कमी आई है। पर उन्होने जन प्रतिनिधि और मन्त्री होने के बावजद वहा का माहौल ठीक करने की दिशा मे कभी कोई पहल नही की। उलटे पुलिस और प्रशासन मे हस्तक्षेप किया जिसका परिणाम है कि जिन लोगो को जेल मे होना चाहिए वे बाहर घूम रहे है। मुख्यमन्त्री के जानकारी के अनुसार अगर मोहसिना का दामन वाकई पाक साफ है तो उन्ही के कहने पर बनाई गई मेरठ की जिला काग्रेस कमेटी और शहर काग्रेस कमेटी सहित कई प्रकोष्ठो के पदाधिकारियो और कायकर्ताओ ने उन्ही के खिलाफ नारेबाजी और उनका घेराव क्यो किया? यही नही प्रधानमन्त्री के मेरठ दौरे के दिन मोहसिना के निजी सचिव अनवर अहमद की महिला काग्रेस कायकर्ताओ ने पिटाई तक कर दी बताते है। मुख्यमन्त्री ने मोहसिना के ऐसे नजदीकी लोगो की भूमिका पर एक विस्तृत रिपोट तैयार कराई है। जिनकी गतिविधिया दगे के पहले और सदिग्ध रही है।

उधर मोहसिना किदवई भी पुलिस को खुली छूट दिए जाने से अल्पसख्यको के साथ हुई ज्यादतियो का पूरा ब्योरा तैयार करा रही है ताकि प्रधानमन्त्री को यह बताया जा सके कि मुख्यमन्त्री की अदूरदर्शिता और जिदकी वजह से अल्पसख्यको मे काग्रेस की साख कितनी गिरी है। अल्पसख्यको पर जोर जुल्म को लेकर मोहसिना और वीर बहादुर के बीच इसके पहले भी कई मौको पर टकराव हो चुका है। पिछले साल बाराबकी मे बाबरी मस्जिद पर भी दोनो नेताओ मे ठन गई थी। पुलिस की गोली से १४ लोगो की मौत के सवाल पर दोनो मे ठन गई थी। मोहसिना ने पुलिस पर अकारण ही गोली चलाने का आरोप लगाते हुए वीर बहादुर के लिए समस्या पैदा कर दी। जो भी हो इस वक्त दोनों के बीच मेरठ की तनातनी को लेकर रस्साकसी चल रही है। जहा वीर बहादुर ज्यादा से ज्यादा दिनो तक मेरठ मे पी०ए०सी० बनाए रखना चाहते हैं वहा मोहसिना जल्दी से पी०ए०सी० की विदाई के हक मे है। दोनो मे कौन जीतता है इसका फैसला प्रधानमन्त्री के हाथ मे है जो खुद भी मौके का दौरा कर चुके हैं।

—जयप्रकाश शाही

पंजाब के बाद अब उ०प्र० को राख करने की पाक साजिश

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

बागपत। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध ने यहा कहा कि उत्तर प्रदेश में हर नगर या कस्बे को मेरठ नही बनने दिया जाएगा। उन्होने कहा कि पाकिस्तान ने पिछले पाच वर्षों से पजाब को जला रखा है और अब यही प्रयास उत्तर प्रदेश मे हो रहा है। उन्होने मेरठ को तत्काल सेना के हवाले किए जाने की माग की।

स्वामी आनन्दबोध जी निकटवर्ती कस्बा अग्रवाल मण्डी टटीरी मे डी ए वी इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य बाबूलाल शर्मा के सेवा निवृत्ति अभिनन्दन समारोह मे मुख्य अतिथि पद से बोल रहे थे। उन्होने कहा कि मेरठ के दगों मे पिछले छह दिनो मे तीन सौ से से अधिक व्यक्ति मारे जा चुके हैं जिनमे ५५ प्रतिशत से अधिक हिन्दू हैं। दूसरे सम्प्रदाय के मारे गए व्यक्ति हिंसा व आगजनी करते हुए पुलिस अथवा सुरक्षा बलो की गोली का ही शिकार हुए हैं।

उन्होने क्षत्र के किसानो, नवयुवको व नवयुवतियो का आह्वान किया कि वे सरकार के भरोसे न बैठकर एक हजार वर्षों के बाद मिली स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु स्वय आगे बढे। उन्होने कहा कि हमने कभी भी तलवार को म्यान मे नही रखा, जब जब सकट आया तब तब महाराणा प्रताप या छत्रपति शिवाजी के रूप मे तलवार हाथ मे लेकर आततायियो का मुकाबला किया।

आर्य नेता ने कहा कि मेरठ मे अब तक एक अरब से अधिक रुपया की सम्पत्ति नष्ट हो चुकी है। उन्होने कहा कि सेना तैनाती के बावजूद दगों का न रुकना उसके सुनियोजित होने का सकेत है। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भारत की विदेश नीति पर प्रहार करते हुए कहा कि अरब देशो के डर से इजरायल से मित्रता कायम न करना हमारी कमजोरी का प्रमाण है। उन्होने कहा कि पाकिस्तान को परमाणु बम बनाने से हमारी इसराईल से दोस्ती ही काफी होती।

आर्य नेता ने कहा कि यदि सस्कृत को नई शिक्षा नीति मे शामिल नही किया गया तो आर्य समाज देश व्यापी आन्दोलन चलायेगा।

उन्होने प्रधानाचार्य बाबूलाल की सेवानिवृत्ति को विवाह के समय पुत्री के पिता के घर से विदाई की सज्ञा देते हुए कहा कि समस्त आर्यजनो को आज हर्ष मिश्रित वियोग जैसा दुख है। इसके पूर्व आर्य नेता ने उन्हे शाल ओढाया और ओ३म का स्मृति चिह्न भेंट किया।

समारोह के आयोजक आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी के प्रधान वीरेन्द्र कुमार बसल ने २२ वर्ष के लम्बे सेवाकाल के बाद अवकाश ग्रहण कर रहे प्रधानाचार्य को अभिनन्दन पत्र भेंट किया। इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने क्षेत्र के प्रमुख व्यक्तियो को सत्यार्थ प्रकाश की प्रति भेंट कर सम्मानित किया। आर्य समाज बागपत के मन्त्री मास्टर सत्यप्रकाश गौड ने प्रधानाचार्य के सम्मान मे कविता पाठ किया।

स्वामी गोरक्षानन्द द्वारा कसाईयोसे दस ट्रक गाय, बछड़े व बैलो को मुक्त कर कराकर अराईपुरा गांव मे गो सदन स्थापित

स्वामी गोरक्षानन्द तथा उनके अन्य गोभक्त साथियो ने बड़े साहस के साथ ११ मई ८७ को दस ट्रक गाय बछडो तथा बैलो को कसाईयो से जमना के मगलोरा घाट से मुक्त कराया और उन्हे लेकर घरौण्डा (करनाल) से दो मील की दूरी पर गो सदन की स्थापना कर दी है। इस कार्य में उनके दस गोभक्त भी निशुल्क अपनी सेवाए दे रहे हैं।

—अखिलानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

भारत व पाक में हिन्दू की दशा

किसी भी राष्ट्र को बनाने मे उसके मूल मे एकता की भावना ही सदा काम करती है। परन्तु जिसके सिद्धान्तो मे ही जड उखाड कर नयी पौध लगाकर विष वृक्ष लगाने की मर्यादा हो, उसको क्या कहा जाय।

स्वतन्त्रता प्राप्त पर सारे देश ने सुख की सास ली और विचार किया कि चिरकाल की खोयी स्वतन्त्रता अब प्राप्त हुई है उसे सजोकर नये भारत का निर्माण करना है। परन्तु अभी सूर्य की किरणे फूटी भी न थी कि काले काले बादलो ने सूर्य के प्रकाश को ढक लिया।

इन ४० वर्षों मे भारत की स्थिति को सुदृढ बनाने के बजाय डावाडोल करके रख दिया।

आजादी के काल मे धर्म निरपेक्षता ने हमे सोचने विचारने का नया रास्ता दिया। हमने दुश्मनो को भी गले लगाया, यह कहकर कि हमारे भाई हैं। पर आज देश जिस स्थिति से गुजर रहा है उससे लगता है कि यह धर्म निरपेक्षता का लबादा ज्यादा देर तक नही ओढ़ा जा सकेगा। विदेशी शक्तिया समूचे भारत को पुन पददलित करने मे एक जुट हैं।

राजनीति का सिद्धान्त है कि कभी भी पडौसी को इतना सबल न बनने दो कि वह सदा तुम्हारी ही नीद हराम करता रहे। आज हमारे साथ यही हो रहा है।

बकरा खूटे से बधा हुआ एक तो है ही वदमाश फिर उसकी पीठ थपथपाने से वह और भी शरारत करेगा। यही दशा आज हमारे घर मे रहने वाले तत्वो की है। उन्हे भारत की राष्ट्रीयता से कोई लेना देना नही है। वह सदा घर से बाहर ही झाकते रहते हैं। आज दिल्ली मेरठ के दगो ने सिद्ध कर दिया है कि 'दारुल-हरब क्या चीज है उसके सिद्धान्त क्या हैं—

परन्तु हमारी सरकार जागते हुए सो रही है देखकर भी अनदेखी कर रही है। अन्याय का खेलवाला संकडो इन्सानो को काल के गाल मे ढकेल दिया और वे बेमौत मारे गये। सारे देश की अर्थ व्यवस्था चरमरा गई, करोडो का व्यापार ठप हो गया। बडी हाय-तोबा के बाद सुनवाई हुई सख्ती के साथ आग पर काबू पाया गया। दुनिया जानती है कि कभी भी उन तत्वो के हाथो मे लगाम नही थमाई जाती, जो काटे व खन्धक मे ले जाकर डाल दे। पर हमारी सरकार इस समय धर्म निरपेक्षता का जामा पहनकर दुनिया को दिखाती है कि हमारे दिल व दिमाग मे समत्वभाव हैं किसी के प्रति वैर-भाव नही।

छोटे से पाकिस्तान मे हिन्दू के साथ क्या व्यवहार है,वह नम्बर दो का नागरिक है—कही भी उसके साथ न्याय का सलूक नही है बत्तीस दातो के बीच जिह्वा की तरह दबा हुआ पडा है। यदि भारत मे कही भी आग लगी तो उसे सोचने के लिये बाध्य होना पड़ता है कि अब हमारी भी कमबख्ती आई—दगो में यही हुआ। भारत की चिनगारी पाकिस्तान मे पहुची फिर क्या था—

पाक मे हिन्दू विरोधी दगे होने लगे मन्दिरो को तोडा जाने लगा क्योकि भारत मे मुस्लिमो ने आग लगाई है। तो यह सिद्ध करो, भारत में मुसलमान सुरक्षित नही है, मारा जा रहा है इसका बदला पाक के हिन्दुओ से लो।

पाकिस्तान के हैदराबाद मे मुसलमान द्वारा हिन्दुओ पर हमला किये जाने तथा मन्दिरो को तोडने के बाद शहर की स्थिति काफी बिगड गई। तब कहते हैं कि फौज के हवाले हिन्दू रक्षार्थ किया गया। हमलों मे काफी सख्या मे हिन्दू मारे गये। दगो की शुरुआत उस समय हुई जब विभाजन के समय भारत छोडकर आये मुस्लिम प्रवासियो मोहाजिरो ने भारत के दगो में मुस्लिमो के मरने से शोक के प्रतीक रूप मे बाहो पर काली पट्टिया बाधकर तथा काले झण्डे लगाकर मनाने का अनुरोध किया गया। इस पर पिस्तौलो चाकुओ, लाठियो से तैयार मुस्लिम युवको ने यह अत्याचार पूर्ण दगा किया। लाखो की सम्पत्ति जलाई जान-माल की हानि हुई।

पिछले दिनो कराची स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास के निकट मुसलमानो ने भारत के खिलाफ प्रदर्शन भी किया।

यह है हमारी धर्म निरपेक्षता का जीता जागता उदाहरण।

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वह कत्ल भी करते हैं—तो शिकवा नही होता॥

एक ध्रुवतारा अस्त हो गया

जीवन क्या है इसका उदाहरण यदि देखे तो चौ० चरणसिह जी मे साक्षात देखा जा सकता है। वह एक धार्मिक व सच्चे राजनेता थे। उन्होने जीवन मे कभी छल बल का आश्रय नही लिया और न ही कभी उसे पसन्द कर बढावा ही दिया। भारतीय ८० प्रतिशत गरीब जनता के लिये उनके मन मे सदैव पीडा रही। क्योकि वह वास्तविकता से भली भाति परिचित थे कि गरीब को किन परिस्थितियो मे गुजर कर जीवन यापन करना पडता है।

गरीबी कितना बडा अभिशाप है उसे चौ० चरणसिह जी ने प्रारम्भिक जीवन के क्षणो मे गाजियाबाद मे जब आर्य समाज के अध्यक्ष पद पर बैठे तो निकट से उसे देखा। और कहा कि गुलामी से मुक्त हुए बिना गरीबी कभी नही मिटेगी, यह उन्होने भलीभाति समझा था। यही कारण था कि—

उन्होने वकालत के पेशे मे भी कभी धन को महत्त्व नही दिया और वह उस काल मे भी आर्थिक दृष्टि से दबे-थके लोगो की जीवन भर मदद करते रहे। भले ही स्वतन्त्रता आन्दोलन मे उन्हे उनके परिवार को आर्थिक सकटो मे सघर्ष रत रहना पडा था। लेकिन वह अपने कर्त्तव्य पथ से विचलित नही हुए।

सादा जीवन बनाय, अच्छे लक्ष्य लेकर चल। यही जीवन का उद्देश्य रहा।

आजादी के चालीस साल बाद भी गरीबी कहा समाप्त हुई यही अन्तस् की वेदना, उन्हे सताती रही। वे कहते थे कि महात्मा गाधी की आर्थिक स्वतन्त्रता का सपना कहा पूरा हुआ। वह केवल नारेबाजी नही? सच्चाई से—क्योकि गावो की खुशहाली का रास्ता गावो व खेतो से होकर गुजरता है।

आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द के अनुयायी होने के कारण सामाजिक कुरीतियो के खिलाफ किए गए सघर्ष और उनके निदान व निराकरण की दिशा मे किए गए रचनात्मक कार्यों मे अधिक रुचि ली। महर्षि दयानन्द के अनुयायी होने मे वह अपने को धन्य मानते थे।

महर्षि दयानन्द द्वारा खोदी गई नीव पर स्वतन्त्रता के विशाल महल मे बैठकर राष्ट्र निर्माण की चिरन्न धारा को प्रवाहित किया था।

बिखरे किसान को एक जगह बाधने मे भूमि विकास के सहकारी आन्दोलन का डटकर विरोध किया था और कृषक की भूमि को चकबन्दी मे घेरकर कार्य व समय मे बाधा था।

उत्तर प्रदेश की विधान सभा से लेकर लोकसभा तक की लम्बी यात्रा तय करके उ०प्र० के मुख्यमन्त्री तथा केन्द्र मे प्रधानमन्त्री जैसे गौरव पूर्ण पद पर सुशोभित हुए। ध्रुव की तरह अटल तेजस्वी विचारक के रूप मे प्रतिभावान बनकर चल।

महात्मा गाधी की तरह दरिद्रनारायण के सतत् प्रमी रहे। ऐसी कई बार परिस्थिति पैदा हुई जब बाहरी कारणो से प्रभावित

(शेष पृष्ठ ४ पर)

ऋषि दयानन्द के भक्त चौधरी चरणसिंह

डा. भवानीलाल भारतीय

चौधरी चरणसिंह के निधन के साथ ही गांधीवादी राजनीति के युग की समाप्ति हो गई। १९०२ में जन्मे चरणसिंह अपनी युवावस्था में ही आर्य-समाज के सम्पर्क में आये और ऋषि दयानन्द के कट्टर भक्त बन गये। गाजियाबाद और मेरठ मे वकालत करते समय वे आर्य समाज मे सक्रिय रूप से भाग लेते थे। उन्होंने इन नगरो की आर्य समाजो मे मन्त्री पद पर भी कार्य किया था। साप्ताहिक सत्सगों मे नियमित रूप में उपस्थित होने में कभी नागा नही करते थे। दयानन्द के राष्ट्रवादी विचारों ने ही उन्हें देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन मे भाग लेने की प्रेरणा दी और वे महात्मा गाधी के अनुयायी बन कर राजनीति मे प्रविष्ट हुए। ज्यों ज्यो राष्ट्रीय आन्दोलनों मे उनकी गतिविधिया बढ़ती गई आर्य सामाजिक कार्यों के लिये समय की न्यूनता होती रही, किन्तु ऋषि दयानन्द के क्रान्तिकारी सामाजिक और राष्ट्रीय विचारो के प्रति उनकी निष्ठा यथावत् बनी रही।

१९४९ से १९५२ तक वे भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद के प्रधान रहे। मैंने १९४९ में इसी परिषद् द्वारा सचालित सिद्धान्त शास्त्री तथा १९५२ में सिद्धान्त वाचस्पति की परीक्षाए प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इन दोनों परीक्षाओ के प्रमाणपत्रों पर परिषद् के प्रधान चरणसिंह एम०एल० ए० के हस्ताक्षर अकित हैं।

१९६९ मे जब काशी शास्त्रार्थ का शताब्दी समारोह वाराणसी मे आयोजित किया गया, उस समय चौधरी साहब उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री थे। वे स्वय समारोह मे पधारे और ऋषि को श्रद्धाजलि अर्पित की। अक्टूबर १९७९ में जब पानीपत मे सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी मनाई गई उस समय वे भारत के प्रधानमन्त्री पद पर थे। १४ अक्टूबर को जब उन्होंने इस समारोह मे पदार्पण किया तो परोपकारिणी सभा की ओर से मैंने तथा सभा के स्वर्गीय मन्त्री श्रीकरणजी शारदा ने उनका माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया था। उन्ही दिनों वे परोपकारिणी सभा के प्रधान भी थे। भारत के गृहमन्त्री के पद पर कार्य करते हुए उन्होंने ऋषि की निर्वाण शताब्दी पर केन्द्रीय सरकार की ओर से एक अच्छी राशि आर्थिक सहायता के रूप मे दिलाने का भी वचन किया था, किन्तु जनता सरकार की आन्तरिक उलझनो मे फसे रहने के कारण वे यह कार्य नही करा सके।

पानीपत के उक्त समारोह मे भाषण देते हुए चौधरी साहब ने स्पष्ट कहा था कि अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही मैं एक निष्ठावान आर्य-समाजी हू। मेरी यह सदा इच्छा रही है कि मैं जहा भी रहूँ आर्य समाज में सदा जाता रहूँ। उन्होंने इस बात को स्पष्टतया माना कि राजनीति तो कीचड है जिसमे वे स्वय आपाद मस्तक लिप्त हैं, तथापि ऋषि दयानन्द और आर्य समाज का गुणानुवाद करने मे उन्होंने स्वय को धन्य माना। अपने तर्कपूर्ण एव विश्लेषण प्रधान भाषण मे चौधरी साहब ने हिन्दू जाति के वर्तमान पतन के निम्न कारण बताये जो ऋषि दयानन्द के चिन्तन के सर्वथा अनुरूप ही थे —

१ हिन्दू जाति ने ससार को मिथ्या मान लिया, यही उसके पतन का कारण बना।

२ हिन्दू जाति ने पुरुषार्थ की अपेक्षा भाग्य को महत्व दिया, जिससे वे बलहीन होकर पराजित हुए।

३ हिन्दू समाज मे प्रचलित जाति प्रथा ने उसे दुर्बल बनाया।

अपने गृहमन्त्री काल मे गुजरात यात्रा के दौरान वे समय निकाल कर स्वामी दयानन्द की जन्मभूमि टकारा को देखने आये। महर्षि महालय तथा स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित अन्य स्थानों को उन्होंने भाव विभोर होकर देखा तथा महर्षि स्मारक को ५ हजार रुपया भेंट किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए पुन इस स्थान पर आने की इच्छा प्रकट की।

सुप्रसिद्ध साप्ताहिक रविवार को एक भेंट में उन्होने कहा था कि यों तो वे गाधी, रवीन्द्रनाथ तथा अन्य अनेक महापुरुषो से प्रभावित हुए हैं किन्तु उन्हें सच्चा प्यार तो दयानन्द से ही है। ●

चौधरी साहब का निधन

(पृष्ठ ३ का शेष)

होकर अदालतो ने न्याय के सिद्धान्त को ताक मे रख दिया। उस स्थिति मे भी वह अपने सिद्धान्त से डिगे नही।

राष्ट्रीयता के पोषक थे—जो कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तो से सदा ही बन्धे रहे। हिन्दू मुसलमान जातीय भेदभाव के अभिशाप से भी वे सदा ऊचे रहे। स्वभाव से कट्टर होने से उन्हे कोई अपनी सीमाओ मे बाध नही सका। हिन्दी को राष्ट्रीयता मे राष्ट्रभाषा बनाने को वह सदा प्रयत्नशील रहे। सज्जनता वश वे अराष्ट्रीय तत्वो के शिकार हो जाते थे। वह स्वभाव से सरल होने से दूसरे पर विश्वास भी करते थे। इसी कारण समय-समय पर चौधरी साहब को उनसे धोखा भी खाना पडा।

समाज धर्म के पक्के धागे से बन्धे होने के कारण वह समाज जाति धर्म में सदा ही श्रद्धा से पूजे जाते थे।

आज सूरज छिप गया, परन्तु लाख-लाख इन्सानो को एक नया सन्देश देकर। आओ हम सभी उस महामानव के आदर्शों पर चलकर उनके सच्चे अनुयायी कहलाये। ●

राष्ट्र की अखण्डता के लिए साम्प्रदायिक सद्भाव आवश्यक

दिल्ली २९ मई। आर्य नेता और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व मे दिल्ली मेरठ के साम्प्रदायिक दगों के सिलसिले मे दिल्ली के धार्मिक नेताओ के एक शिष्ट मण्डल ने प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी से स्थिति के बारे मे विचार विमर्श किया। प्रतिनिधि मण्डल में जैनाचार्य सुशील कुमार जी महाराज, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के श्री रमाकान्त गोस्वामी, श्री सोमनाथ मरवाह, चौ० लखमीचन्द, डा० धर्मपाल महाशय धर्मपाल, जैन समाज के प्रमुख नेता प्रेमचन्द जैन, लाला इन्द्र-नारायण, श्री तेज प्रकाश कौशिक आदि थे। प्रतिनिधि मण्डल ने लगभग ४३ मिनट तक साम्प्रदायिक दगो के सन्दर्भ मे विस्तार से चर्चा की।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने मेरठ तथा दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों के दौरे पर अपने कटु अनुभव को व्यक्त करते हुए कहा कि इन साम्प्रदायिक दगो को हिन्दू मुस्लिम दगा कहना बिल्कुल गलत है, यह तो देश की अखण्डता पर आक्रमण है और सुनियोजित षडयन्त्र है। इसमें बाहरी ताकतों का भी हाथ है। उन्होंने प्रधानमन्त्री से माग की कि धार्मिक स्थानो का राजनैतिक उपयोग नहीं होना चाहिए। दगाइयों को कड़ा दण्ड मिलना चाहिए ताकि भविष्य मे इस प्रकार के कार्य फिर न कर सकें।

जैनाचार्य मुनि सुशीलकुमार जी ने कहा कि किसी भी देश का रक्षक गृहमन्त्री होता है। विदेश से आकर कोई व्यक्ति देश की शांति व अखण्डता को नुकसान पहुचाता है और देश में आग लगाता है तो यही कहा जायगा कि गृहमन्त्रालय की कमजोरी है। हमारे इस शिष्टमण्डल के सभी सदस्य जानते हैं कि पिछले कुछ महीनो से हमारे देश मे घुसपैठ हो रही है और हमारे देश के मुसलमान भाइयो को उभाडा जा रहा है, इससे यह प्रमाणित होता है कि यह दगे नहीं है बरन पूर्व नियोजित षडयन्त्र है।

प्रधान मन्त्री से कहा—'मेरे विचार में सभी सम्प्रदायों और सभी धार्मिक नेताओं की एक सयुक्त विचार गोष्ठी होनी चाहिए जिससे किसी भी सम्प्रदाय का व्यक्ति एक दूसरे को पीड़ित न कर सके।"

प्रधान मन्त्री ने प्रतिनिधि मण्डल के सभी विचार बहुत ही शान्ति से सुने और साम्प्रदायिक दगों के जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध कड़े कदम उठाने का आश्वासन दिया।

मलियाना से पहले पिलोखड़ी उजड़ी थी

—श्री रमेश गौतम—

मेरठ। मेरठ का दूसरा मलियाना है पिलोखड़ी। जहां तमाम समाचार माध्यमों में केवल मलियाना गूंजता रहा है वहीं पिलोखड़ी काण्ड पर बहुत कम ध्यान गया है मलियाना के खून के छींटे श्री वीर बहादुर सिंह के दामन पर दाग बनकर साफ-साफ चमक रहे हैं तो पिलोखड़ी भी उनके माथे पर एक काला टीका बनने जा रही है।

जब १९ मई को पूरे पांच घण्टे तक पिलोखड़ी में हिंसा लूटपाट आगजनी और तबाही ही तबाही का मंजर था आज वहां राख बने इन्सान पूरी तरह से उजड़ हथकरघा वस्त्रों की बुनाई और छपाई के कारखानों से उठता काला धुआं और बस्ती में मकानों से झांकती दहशतजदा चन्द आंखें शेष हैं।

मेरठ महानगर के दक्षिण में कोतवाली से दो किलोमीटर दूर लिसाड़ी गेट थाने के अन्तर्गत बसी पिलोखड़ी छोटी सी बस्ती है इस बस्ती के अन्तर्गत पिलोखड़ी रोड और लक्खीपुरा में हैण्डलूम और पावरलूम के लगभग बीस-पच्चीस बड़े कारखाने हैं इन कारखानों में वस्त्रों की रंगाई और छपाई का काम भी होता है।

१९ मई को सुबह पांच बजे से दस बजे के बीच कोई तीन हजार दंगाइयों की भीड़ ने ११ कारखाने फूंक दिये इनका माल लूट लिया और दस जिन्दा इंसानों को लाश में बदल दिया। आठ का आंकड़ा तो इसलिए है कि अभी तक विभिन्न कारखानों और कृषि फार्म में आठ लाश के ढूह मिले हैं अभी कम से कम पचास व्यक्ति ऐसे हैं जिनके बारे में कहा नहीं जा सकता है कि यदि वे गुमशुदा नहीं हैं तो फिर मर चुके हैं।

हैण्डलूम वस्त्र व्यापारी संघ के प्रधान ओमप्रकाश बना की जुबानी सारी कहानी पेश है।

सुबह पांच बजे मेरी नींद एक झटके के साथ टूट गयी। मकान के नीचे ज़ोरों का शोर था लोग-बाग चिल्ला रहे थे कि लाला तुम्हारे कारखाने जल रहे हैं और तुम सो रहे हो। मैं भागकर मकान की छत पर गया तो लाउडस्पीकर पर एक ऐलान सुना, भाइयो आप लोग सड़क पर आ जाओ और अपने बच्चों को पीछे ही छोड़ दो हिन्दुओं ने हमारी नमाज और रोजा नापाक कर दिया है यह आवाज बहुत सधी हुई किन्तु उत्तेजित आवाज में हो रही थी बीच-बीच में एक दो बार मायदी लहजे में इसे दोहराया गया और कहा कि इन्हें कत्ल कर दो इन्हें लूट लो और इसी के बाद शुरू हो गया बलवाइयों का आपरेशन पिलोखड़ी।

पिलोखड़ी रोड की लक्खीपुरा स्थित श्री लक्ष्मी टेक्सटाइल्स के मालिक सुभाषचन्द भी ऐसा ही ऐलान सुनने की ताईद करते हैं वे कहते हैं कि तीन बजे रात में जबरदस्त तरीके से उत्तेजक नारे लगे और लोग-बाग संदिग्ध अवस्था में घूमते दिखाई दिये।

हैंडलूम वस्त्र व्यापारी संघ के मन्त्री सतीशचन्द्र सिंघल के अनुसार फरसों पेट्रोल मशालों और बन्दूकों से लैस हजारों बलवाइयों की पागल भीड़ ने सबसे पहले पिलोखड़ी रोड पर कमल प्रिंटर्स पर धावा बोला। पहले लोहे के मजबूत दरवाजे तोड़े गये फिर अन्दर घुसकर पूरे कारखाने में एक सफेद पाउडर और पेट्रोल छिड़क कर आग लगा दी गई बलवाईयों की भीड़ का एक हिस्सा पास की आर. के टेक्सटाइल और डिल्लन टेक्सटाइल्स। इसी इलाके में इनके पिता श्री० मेघासिंह का कृषि फार्म है इसी फार्म में जान और माल की सबसे ज्यादा तबाही हुई अनिरुद्ध ढिल्लन बताते हैं कि इनके फार्म पर बलवाइयों ने सुबह के धावे में ६ लोगों को मारा और शाम को ७ बजे पुनः लौटकर उन्हें फार्म पर जलती हुई आग में झोंक दिया।

छह लाशें की ढिल्लन को एक कमरे में राख का ढेर बने मिले ढिल्लन की सूचना के अनुसार उन के यहां उनके चौकीदार शौमी व उसकी पत्नी शांति और दो वर्ष के एक बच्चे को मौत के घाट उतारा गया। हापुड़ के पास का रहने वाला सुखबीर पवार का सपहर सिंह और राजबीर भी उन लोगों में से हैं जिनके बारे में ढिल्लन यह दावा करते हैं कि वे भी बलवाइयों के हाथों मारे गये श्री ढिल्लन यह आंसुओं को पोंछते हुए बताते हैं कि इन लोगों की राख तो उन्होंने अपने हाथों से बटोरी है।

सिंघल टेक्सटाइल के स्वामी श्यामलाल अपने चौकीदार रणजीत और वीर बहादुर के मारे जाने की पुष्टि करते हैं तो त्रिमूर्ति टेक्सटाइल के हरिकृष्ण पाहवा के अनुसार उनके कारखाने के दो चौकीदार गोपाल बहादुर और बहादुर नेपाली देखते-देखते बलवाइयों के हाथों मारे गये।

लक्ष्मी टेक्सटाइल्स के सुभाष के ५ चौकीदार लापता हैं सुभाष जी का कहना है कि वे मारे भी जा सकते हैं परन्तु अभी कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं हूं।

चन्द टेक्सटाइल अभी भी वीरान पड़ी है और अपनी तबाही का खुद सबूत दे रही है। कारखाने के मालिक अभी भी कर्फ्यू ग्रस्त छीपीवाड़ा (जहां वे रहते हैं) से निकलने का साहस नहीं जुटा पाए हैं।

हैंडलूम वस्त्र व्यापारी संघ के सारे पदाधिकारी का एक स्वर में कहना है कि १० मौतें तो सिद्ध हैं अभी पता नहीं कि उन पचास लापता लोगों में से कितने लोग जिन्दा बचे होंगे।

यह तो है इंसान की जानकी बर्बादी का किस्सा। आर्थिक बर्बादी का मोटा अनुमान इस प्रकार है।

मेरठ का हैंडलूम वस्त्रोद्योग भारत का सबसे बड़ा वस्त्रोद्योग है जिसका वार्षिक टर्न ओवर लगभग छः सौ करोड़ रुपये का है। प्रतिवर्ष यह उद्योग दो करोड़ रुपये का मुनाफा देता है। ५ लाख लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस उद्योग से जुड़े हैं। सतीश चन्द्र सिंघल बताते हैं कि अब सब बरबाद हो गया है। अगर सरकार हमारी मदद करे तो भी पूरा एक वर्ष लगेगा हमें अपने कारखाने फिर से खड़े करने में।

मुतहा पिलोखड़ी रोड पर होकर ओमप्रकाश बताते हैं कि प्रत्येक कारखाने में एक हजार से चार हजार मजदूर काम करते थे। अब एक साल तक उन्हें कौन रोटी देगा इनमें अधिकांश मजदूर बिहार के मुसलमान हैं।

मालिक और मजदूर दोनों सड़क पर आ गये हैं। बलवाइयों के समाजवाद का एक अनोखा गणित था। मेरे इस सवाल पर कि कौन बलवाई। सभी एक स्वर में बोले वे जो दिन रात हमारे पास बैठते थे जिनसे हमारा दांत काटी रोटी का रिश्ता था।

सभी कारखानेदार उन लोगों को खूब जानते हैं। वे बताते हैं कि ये लोग हमारे यहां से धुलाई और प्रेस के लिए कपड़े के थान ले जाते थे। हमारे कारखानों और गोदामों की उन्हें पूरी जानकारी थी।

सरकारी मदद के सवाल पर सारे वस्त्र निर्माता भड़क उठते हैं बल्कि उनका कहना है कि १९ मई को शाम सात बजे पी ए सी का एक ट्रक शवों को लेने पिलोखड़ी गया था तब तक बलवाई वहां मौजूद थे। उन्होंने पी ए सी पर हमला किया। पी०ए०सी० के ४५ जवान और अफसर वहां से लौट आए क्योंकि उस दिन पी०ए०सी० को गोली चलाने का अधिकार प्राप्त नहीं नहीं हुआ था।

इन कारखानों को कोई सरकारी मदद उस समय नसीब नहीं हुई बल्कि सुबह अपने कारखानों की तबाही के बाद शाम से आधी रात तक वे खंदक बाजार स्थित अपने पांच सौ शोरूमों को बलवाईयों से बचाने के लिए कोतवाली में मन्त्री से सन्त्री तक के पैर पकड़ते रहे पर हर चौखट से उन्हें दुतकार ही मिली। बलवाइयों ने कारखाने जलाने के बाद पिलोखड़ी में ऐलान किया था कि आज रात खंदक जला दी जाएगी। खंदक कोतवाली से नजदीक मेरठ के सघन इलाके में बसा हैंडलूम के वस्त्रों का उत्तर भारत का सबसे बड़ा बाजार है। अगर जलती तो आधा मेरठ जलने में कोई कसर नहीं रह जाती। बामुश्किल तमाम रात १२ बजे उन्हें १० डंडेधारी पुलिस सिपाही मिले।

सड़कों पर खड़े कारखानों के मालिकों ने मेरठ में मौजूद वीर बहादुर सिंह से मिलने की कोशिश की पर असफल रहे। बड़ी आरजू मिन्नत के बाद २७ मई को वे गृहमन्त्री गोपीनाथ दीक्षित को मौके पर ले जाने में सफल हुए परन्तु दो-चार कारखानों की तबाही और वहीं इधर-उधर सड़ती लाशों की दुर्गंध को दीक्षित जी सहन नहीं कर पाये उन्होंने कहा 'मैं जानता नहीं था कि पिलोखड़ी में भी इतना बड़ा काण्ड हुआ है।'

(शेष पृष्ठ ८ पर)

स्वामी दयानन्द की भारतीयता

डा० धनपति पाण्डेय

(गतांक से आगे)

दयानन्द के उग्रवादी विचार

इस समय भारत को एक नवीन पद्धति और नवीन राजनीतिक और सांस्कृतिक दर्शन की आवश्यकता थी। इस आवश्यकता की पूर्ति उग्रवादियों ने की। भारत में उग्रवादियों द्वारा आधुनिकीकरण का जो प्रयास किया जा रहा था उसके साथ ही एक प्रबल विरोधी धारा भी प्रवाहितहुई जिसमें अग्रगण्यथे की स्वामी दयानन्द इस विरोधी धारा ने पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति को तिरस्कृत करते हुए भारत के प्राचीन मूल्यो पर जोर दिया। यह उग्रवाद या नवीन राष्ट्रवाद की धारा थी। नवीन आन्दोलन पुनरोद्धार मात्र न था, अपितु उसे भावी प्रगति एवं स्वातन्त्र्य संग्राम का आधार बनाया जा सकता था। अतीत का ज्ञान, जिस पर स्वामी जी का सर्वाधिक बल था, प्रत्येक उस राष्ट्र के लिये नितान्त आवश्यक है जो कि प्रगति करना चाहता है। प्रगति का भवन अतीत की मजबूत बुनियादों पर ही खड़ा किया जा सकता है। दयानन्द सरस्वती ने अपनी समकालीन परिस्थितियों के प्रकाश में अतीत की पुनर्व्याख्या की। उनका महान् उद्देश्य भारत की जनता के हृदय में जाति के नये अभिमान को उत्पन्न करना था जिसमें से देश में एक नवीन राष्ट्रीय भावना की प्रामाणिक अभिव्यक्ति दी। जहां राजा राममोहन राय तथा अन्य उदारवादी इस बात में विश्वास करते थे कि भारत के लोग ब्रिटेन के साथ सम्पर्क करके और पाश्चात्य सभ्यता के कतिपय बिन्दुओं को ग्रहण करके ही अपनी दासता से मुक्ति पा सकते थे वहां स्वामी दयानन्द ने हमें यह सन्देश दिया है कि "हम स्वयं अपने अतीत की महानता को पुनः प्राप्त कर सकते थे।"

दयानन्द की भारतीयता

दयानन्द पूर्णतः भारतीय थे। उन्होने भारत की प्रगति के लिए पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान को अस्वीकार किया। उनका कहना था कि भारत के वेद, संस्कृति, शिक्षा, भाषा आदि अपने आप में सम्पन्न हैं और उनके सहयोग से, न कि पश्चिम के सम्पर्क से, देश का उत्थान सम्भव है। इसीलिये उन्होने प्राचीन भारत की महानता की पुष्टि के लिए वेद को सर्वोच्च बताया। उन्होंने यह कहा कि वेद समस्त ज्ञान और सत्य के भण्डार हैं और वैदिक मार्ग का ग्रहण भारत के उत्थान की कुञ्जी है। उनका दावा था कि वैदिक ज्ञान की पुरातन संहिताओं में स्वयं ईश्वर की ही वाणी निहित है, इसलिए वेदों में उनकी आस्था चट्टानवत दृढ़ और अडिग थी। श्री अरविन्द घोष ने लिखा है कि 'वेदों की व्याख्या के विषय में मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अन्तिम तथा पूर्ण व्याख्या चाहे कुछ भी क्यों न हो, उसकी सच्ची कुञ्जी को सर्वप्रथम खोजने का सम्मान दयानन्द को दिया जायेगा। युगों के अज्ञान तथा अविद्या के आवरण को चीर कर उनकी दृष्टि सत्य तक जा पहुंची और वह तत्व पर जा टिकी, उन्होने उस द्वार की कुंजी खोज निकाली है जिसको कालगति ने बन्द कर दिया था और उन्होंने बन्दी स्रोत की मुहरें तोड़ डालीं। वास्तविक बात यह है कि उन्होंने ठीक ही वेदों को भारत की युगों की चट्टान समझकर, पकड़ लिया, और उसमें उन्होंने तारुण्य की समग्र शिक्षा, एक समग्र पुरुषत्व तथा एक समग्र राष्ट्रीयता का जो दर्शन दिया, उसके ऊपर निर्णय करने का साहस दिखलाया।

उनमें राष्ट्रीय भावना थी और उन्होने उस भावना को एक आत्मानुभूति का रूप देकर उसे ज्योतिर्मय बना दिया। इसलिए उनकी कृतियां, चाहे वे परम्परागत विचारों से कितनी ही भिन्न क्यों न हों, अवश्य ही एक गहरी राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत हैं। वेद पर बल देकर स्वामी जी ने भारतीयों में तेज, वार्चस्यपूर्ण आस्था, नैतिक तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना तथा आत्म-विश्वास कूट-कूट कर भर दिया। अनेक दशाब्दियों के विदेशी आधिपत्य के कारण भारतीय आत्म-विश्वास तथा सामाजिक आदर्शवाद खो बैठे थे। दयानन्द ने निर्भय होकर वैदिक ज्ञान की सर्वोच्चता का डंका बजाया। उस युग में वैदिक तथा प्राचीन संस्कृति के ज्ञान के पक्ष पोषण के आश्चर्यजनक परिणाम हुए। भारतीयों ने अपने अधिकारों के विषय में आग्रह करना सीख लिया। उन्हें अपने जीवन को ढालने के लिए एक नई दृष्टि और एक नया आदर्श मिला।

दयानन्द सरस्वती ने यूरोप की तुलना में भारतीय संस्कृति को भी श्रेष्ठतर बतलाया। भारत की संस्कृति में देश की महानता तथा स्वावलम्बन के विचार थे। इस संस्कृति का महत्व इस बात में भी था कि इसने अखिल देश को एकता के सूत्र में बांध दिया था। भारत मे मुसलमानो के आने के पूर्व इसकी सांस्कृतिक श्रेष्ठता बुनियादी तौर पर विश्व के देशों ने स्वीकार किया था और इसकी गहरी छाप उन पर पड़ी थी। रालिन्सन ने स्वीकार किया है कि तीसरी शताब्दी ई० पू० में भारत की संस्कृति की धाक थी और यह देश यूनान, रोम तथा अन्य एशियाई तथा यूरोपीय देश का गुरु था। अतः भारत में यूरोप की संस्कृति की आवश्यकता नहीं थी, आवश्यकता थी देश की संस्कृति को ही प्रकाश में लाने की, उस पर पड़े आवरण के अनावरण करने का दयानन्द ने इसी आवश्यक काम को किया।

महर्षि दयानन्द ने भारत में राष्ट्रवादी चेतना के फैलाव के लिये हिन्दी भाषा को आवश्यक माना, अंग्रेजी भाषा को नहीं। हिन्दी तथा अन्य देशी भाषाओं को प्रोत्साहन देकर उन्होंने निश्चित रूप से राष्ट्रवाद के उत्थान में योग दिया। उन्होंने अपनी अनुपम कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' को रचना हिन्दी में की। वह दिन भारत के वैदिक इतिहास में वस्तुतः महान् था जब वे वेदों का भाष्य हिन्दी में लिखने बैठे। वेदों के जिस ज्ञान पर अब तक पुरोहित वर्ग का एकाधिपत्य रहा था उसे हिन्दी में उपलब्ध बनाकर उन्होंने भारत

(शेष पृष्ठ ८ पर)

मिर्जापुर के दक्षिण में :

दस लाख हताश आदिवासी

— नरेन्द्र नीरव

मिर्जापुर जिले के दक्षिणी आदिवासी अंचल मे देश की सबसे बडी सीमेंट और बिजली परियोजनाए चल रही हैं। जमीन के नीचे कोयला मिलने के कारण दो सौ साल तक बीस हजार मेगावाट बिजली पैदा करने की केन्द्रीय परियोजनाओ पर काम हो रहा है। फिर भी यहा के मूल निवासियो को इन उद्योगो से कोई लाभ नही मिला है। रोजगार, जगल, जमीन छिन रहे हैं।

आदिवासी एक बार फिर अपने लिए हो रहे इंतजाम को देख रहा है। जिस जमीन पर वह युगो से खेती करता चला आ रहा है उस पर उसे मालिकाना अधिकार देने के लिए नए सिरे से भूमि का सर्वेक्षण और बन्दोबस्त किया जा रहा है। बाप-दादों ने जगली जानवरों को खदेड कर, खूंटा पत्थर काट कर जिन जमीनों को बनाया और खेती शुरू की उन पर भी आदिवासियो को कोई हक नहीं है।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा किए गए एक ऐतिहासिक निर्णय के तहत उ प्र सरकार ने कैमूर भू सर्वेक्षण तथा बन्दोबस्त एजेंसी का गठन किया है। श्री हरगोविन्द डबराल आई ए एस के नेतृत्व में सात सौ अधिकारियों तथा कर्मचारियों का उच्चस्तरीय दल आदिवासी अंचल मे सक्रिय है।

यह सर्वेक्षण एजेंसी ही भूमि का बन्दोबस्त भी करेगी तथा वनवासी को स्थायी कागजात देगी। अब तक खेती की जमीन के कागजात न होने के कारण वनवासी अपने ही देश में परदेसी की भांति जी रहे थे। भारी भारी कल कारखानो के लिये उनके गावो को चिडिया की भांति उडाया जाता रहा। शक्तिशाली लोगो ने राजस्व तथा वन अधिकारियो को पटा कर उपयोगी भूमि हथिया ली। आदिवासियो को नगरीकरण और औद्योगीकरण से फायदा तो कुछ हुआ नही बल्कि उनका विश्वास विकास के ऊपर से ही उठ गया।

रिहन्द बांध के निर्माण के समय (सन १९५५ ६२) आदिवासियों से कहा गया कि देश की तरक्की के लिए उन्हे त्याग करना होगा। डेढ लाख लोग सिंगरोली के सुखी-समृद्धि १११ गावों को एक हजार वर्ग मील क्षेत्रफल के जलाशय मे विलीन कर उजड गए। 'जो गाव डूब' मे आए थे, वे कृषि, वानिकी और पशुपालन संस्कृति के समृद्ध प्रतीक थे। गृहनिर्माण, बागवानी और आवश्यकता से अधिक अन्न उत्पादन सिंगरोलीवासियो की पहचान थी। इसे वे अपने लोक गीतो मे 'कश्मीर की बेटी' और 'सोने की थारी' कहते थे।

रिहन्द के बाद उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिषद ने ओबरा मे पचास मेगावाट की पाच सौ मेगावाट की तीन व दो सौ मेगावाट की तीन तापीय बिजली इकाइया लगाई। रिहन्द बांध में पचास मेगावाट की छ तथा ओबरा मे रेणु नदी पर बने लघु रिहन्द बांध में ३३ मेगावाट की तीन, सिंगरोली मे कोयले की ११ खदानो और शक्तिनगर (कोटा) अनपरा, बीजपुर और बैढन में महातापीय बिजली घरों का काम शुरू हुआ। डाला सीमेंट फैक्ट्री कजरहट चुनार सीमेंट परियोजना तथा निजी क्षेत्र के हिंडालको व कानोडिया रसायन के कारखाने लगे। कालोनियों, बाजारो रेल लाइनों टावर लाइनो और कोठियो को बनाने मे भी गाव उजडते गए। इस तरह आजादी के बाद आदिवासी की आजादी कम होती गई। औद्योगिक सभ्यता ने आदि सभ्यता की विशेषताओ को निगल लिया।

'आदिवासी किसे कहते हैं यह मानवशास्त्रियो के सामने एक कुतूहलपूर्ण अनुत्तरित प्रश्न है। व्यावहारिक स्तर पर आदिवासी उन्हे कह सकते हैं जो वनों में रहते हैं और वनो मे ही रहना चाहते हैं। भारत मे लगभग दस करोड आदिवासी वनवासी गिरिजन रहते हैं। इनमे से आधे लोग वनो से अलग कर दिये गये है किन्तु वे रहना और जीना वनो मे ही चाहते हैं किन्तु उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में लगभग दस लाख वनवासी हैं जिनमे से डेढ लाख लोग नगरीकरण के आहार बन गये। शेष सात लाख वनवासी संघर्ष कर रहे हैं।

मुद्रा विहीन समाज मे वस्तु विनिमय (बदलौन) से अधिकांश काम होता था। गोंड और खरवार खेतिहर जातियां हैं। गोंड अन्न पैदा करने और पशु पालन के लिए सुख्यात थे। खरवार खैर (कत्था) निकालने का भी काम करते थे। बैगा पर्वत के पुत्र हैं। वे पहाड पहाड घूमते थे और सकडो किस्म के ऐसे फूलो, पत्तियो और कदमूलो से परिचित थे जिन्हे खाकर जी लेते थे। रामराज, विसकन्या, चनिया, धुरू, नकवा, बिरहिन, सनावत आदि कदमूलो बैगा महुआ, शहद मास और दारू के साथ खाते थे। वन विनाश ने बगाओ के सामने खाने पीने की चीज बहुत कम कर दी हैं। बैगा अपनी बेटी का विवाह करते समय पहाड को दान देते थे और जिस पहाड को पिता दान कर देता था स्वयं उस पर फिर कभी नही जाता था।

बैगा अपनी जुझारू एकता के लिए भी सुख्यात है। वे पहाड के पुजारी मन्त्रो के दाता, गाव के प्रहरी और जगल के वैद्य भी माने जाते हैं। प्रकृति की निकटता के कारण बैगाओ को वर्तमान औपनिवेशिक आर्थिक व्यवस्था में बहुत कष्ट उठाना पड रहा है। धरकार-बसार, सूपाभगत आदि बास का बर्तन, छिटवा दौरी, डलिया, मोनिया, सूप, बेनारी, पखा खलडर आदि बनाते हैं। ये सामान के बदले वस्त्र या अन्न ही प्राप्त करना चाहते हैं। फिर ये नटुआ लोकनृत्यों के लिए गाव गाव में पहचाने जाते हैं। डफ बजाकर तथा अन्य साज शृंगार करके ये किसानो के दरवाजे पर नाचते गाते थे—

आलू ले ले, भटा ले ले
अउर ले ले चौराई।
बीच बजारे भेंटा होइगे
देवर भौजाई तरकारी ले ले रे
कुरकु करैला तरकारी ल ले रे

धरकारो के जीवन पर नए औद्योगिकरण का अत्यंत प्रतिकूल प्रभाव पडा है। बास के जगल सरकार नीलाम कर देती है। अंग्रेजो के जमाने से राजा के जमाने तक बास मुफ्त मे मिलता था। अब वन विभाग और वन निगम का इंतजाम है। बास घूस देने पर तो मिल जाता है लेकिन खरीदने के लिए उचित रेट पर परमिट नही बनाया जाता।

धरकार अब कालोनियो और बाजारो मे नाचते गाते हैं तो लोग समझते हैं कि वह भीख माग रहा है। गरीबी के कारण गरमी के दिनो मे धरकार

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आदिवासी

(पृष्ठ ७ का शेष)

गांव छोड़कर वाराणसी, इलाहाबाद, मिर्जापुर आदि शहरों में भी मांगने-खाने चले आते हैं और अपनी फटेहाली के कारण आसानी से पहचान लिये जाते हैं।

पनिका कपड़ा बुनने का काम करते थे। उन्ही का बुना हुआ पनिकानी मोटिया वस्त्र यहा के मूल निवासी धारण करते थे। अब यह काम बन्द हो चुका है। चू कि श्री रामप्यारे पनिका मिर्जापुर के आदिवासी सासद हैं इसलिए लोग मजाक मे कहते हैं कि पनिका आदिवासी अब नेतागीरी करते हैं।

चेरो धांगर, कोल, भरौतिया केवट आदि सभी जातियो के अलग अलग परम्परागत उद्यम रहे हैं। बगई, लासा, काठी, महुआ, तेंदुपत्ती, बांस, वगैरह का काम भी वन-विनाश के कारण समाप्तप्राय है। नए रोजगार मिले नहीं, पुराने छिन गए। जिनकी जमीनों पर कारखाने लगे उन्हें नई सभ्यता में कोई रोजगार नही मिला। जब तक सस्ते श्रम और मुफ्त की जमीन की दरकार थी तब तक उन्हें इस्तेमाल किया गया। फिर अज्ञात भविष्य के अधकार में धकेल दिया गया।

जब तक पक्की सड़कें, रेल, कारखाने वगैरह नही थे तब तक अलग-अलग पड़ा हुआ आदिवासी कम से कम अभावो के मामले मे समान था। जो कुछ था सबके लिए। जो नहीं था वह किसी के लिए नही। अन्याय और असमानता तो तब पैदा होती है जब जंगल के गावों और खपरैलों-छपरेलों के बीच कोई कोठी बनती है।

कांग्रेस ने अपने लोक सभा के चुनाव प्रचार मे एक मार्मिक पोस्टर निकाला था। इसमें मतदाताओं को आगाह किया गया था कि कहीं आपके दरवाजे बदनवार की जगह कटीले तार से न घेर दिये जाऐ। आज यथार्थ मे आदिवासियों के घरो को कटीले तार से घेरा जा रहा है। जगल विभाग जगल की तो रत्तीभर हिफाजत नही कर पाता, उलटे खेती की जमीन को जगल घोषित करके गड्ढे खोदता है, तार घेरता है, घरों को उजाड़ता है। वन कर्मचारियों के कारण वृक्षारोपण जैसा पवित्र कार्यक्रम भी नसबन्दी की भांति बदनाम हो गया।

मिर्जापुर दक्षिणांचल के ओबरा शक्तिनगर, अनपरा, बीजपुर, रेणुकूट आदि नए नगरों मे आदिवासियो का प्रवेश वर्जित है। जो आदिवासी स्त्री-पुरुष दूध सब्जियां जलावन लकड़ी आदि बेचने जाते हैं उनके साथ भी कारखाना मजदूर का व्यवहार अमानवीय होता है। ट्रेड यूनियन आदोलन में नारा तो लगाया जाता है कि दुनिया के मजदूरो एक हो' लेकिन असगठित वन मजदूरो के प्रति जरा सी भी सवेदनशीलता नही बरती जाती। वनवासी स्त्रियां तो कालोनियो और बाजारों मे जाते हुए भी डरती हैं।

मलियाना से पहले

पृष्ठ ५ का शेष)

कहते हैं कि मुसीबत कभी अकेले नहीं आती अब ये कारखाने वाले इस खबर से काप गये हैं कि कर्फ्यू के कारण बिना बटी चिट्ठियां डाक विभाग जला देगा व्यापार सघ के मन्त्री श्री सतीश चन्द्र सिघल का कहना है कि अगर ऐसा हुआ तो समझो हम हमेशा के लिए मर जायेंगे। बिना बटी डाक में करोड़ो रुपये से ऊपर के हमारे ड्राफ्ट और बैंक चेक होंगे।

हैंडलूम वस्त्र निर्माताओं को एक चिन्ता यह भी है कि दगे के एक दिन पहले जो माल ट्रकों से दूसरे शहरों को रवाना किया गया उसका कोई अता-पता नही है। एक अनुमान के मुताबिक लगभग तीन करोड़ रुपये का माल कहीं बीच मे अटका है या मेरठ में ही किसी सड़क पर ट्रक में आग लगाकर फूक दिया गया। यह पता नहीं है।

डरे सहमे कापते से इन वस्त्र निर्माताओं की मांग है कि प्रशासन हिम्मत करके पिलोखड़ी के आस पास की बस्तियो की तलाशी ले ले तो सारी कहानी प्याज के छिलके की तरह सामने आ जायेगी।

सीमाओं पर सुरक्षा पट्टी बनाई जाय

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी सम्मेलन १५ से १७ मई तक दयानन्द मठ रोहतक मे बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। वेद सम्मेलन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, स्वदेशी सम्मेलन व्यसन मुक्ति सम्मेलन एव मातृशक्ति सम्मेलन आदि बड़ी सुन्दरता व विद्वता पूर्ण आयोजित किए गए। भू पू. केन्द्रीय मन्त्री तथा हरियाणा आ प्र सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आदि विद्वानों के भाषण हुए।

पजाब की गम्भीर समस्याओं से चिन्तित व सदा कर्मठ व जागरूक सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने भाषण में सुझाव दिया और केन्द्रीय सरकार से प्रार्थना की कि भारत की अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओ, पजाब व कश्मीर पर ५ किलोमीटर तक रक्षापट्टी बनाकर वहां भूतपूर्व सैनिकों के परिवारों को बसाया जाय ताकि भारत की एकता व व सुरक्षा सुदृढ़ बन सके।

शताब्दी समारोह के अध्यक्ष पद से बोलते हुए अपने संस्कृत भाषा की महानता व उसकी रक्षा पर विशेष बल दिया।

इस अवसर पर सांसद दरबार सिंह ने कहा—कोई भी धर्म राष्ट्र, राष्ट्रीय एकता व स विधान से ऊचा नही है। किसी को भी राष्ट्रीय एकता से खिलवाड़ की आज्ञा नही दी जा सकती है।

स्वामी दयानन्द

(पृष्ठ ६ का शेष)

की राजनीति मे एक महत्वपूण शक्ति को मुक्त किया। इसके साथ ही उन्होंने अपनी भारतीयता का परिचय दिया। जिस प्रकार पुनर्जागरण के समय से इतालवी, जर्मन तथा फ्रान्सीसी भाषाओ के विकास से यूरोप में राष्ट्रवाद के उत्थान को उत्तेजना मिली उसी प्रकार दयानन्द तथा उनके पक्षधरो की हिन्दी मे की गई रचनाओ से भारतीय राष्ट्रवाद के विकास मे भारी प्रेरणा मिली।

दयानन्द के विचार में भारत की सर्वांगीण प्रगति के लिये राष्ट्रीय शिक्षा की जरूरत थी, न कि पाश्चात्य शिक्षा की। उनकी दृष्टि में शिक्षा का अर्थ बड़ा ही व्यापक था। वे यह मानते थे कि वही शिक्षा उपयोगी है जो शरीर का निर्माण करे, बौद्धिक शक्तियों का विकास करे तथा इन्द्रियो की साधना मे सक्षम बनावे। यह राष्ट्रीय शिक्षा से ही सम्भव था। इसीलिए उन्होंने गुरुकुल शिक्षा को राष्ट्रीय शिक्षा का बुनियाद बतलाया जहा तरुण ब्रह्मचारी छात्र पश्चिमी जीवन के भ्रष्टाचारी प्रभाव से मुक्त होकर अपने विद्वान् तथा योग्य आचार्यों की निगरानी में समानता के आधार पर शिक्षा ग्रहण कर सकें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती सच्चे अर्थ में भारतीय थे और उनकी दृष्टि में आर्यावर्त सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र था। उन्होंने भारत के गरिमामय अतीत से प्रेम किया। उन्होने भारत के लोगो के हृदय मे भारतीयता की भावना को जागृत करने में अग्रदूत का काम किया। भारत के प्राचीन गौरव को उद्घाटित करके उन्होंने राष्ट्रवाद का पोषण करने वाले तत्वो को जन्म दिया, सुषुप्त राष्ट्रीय अहकार को जगाया और यह कहा था कि भारत ईश्वरप्रदत्त ज्ञान के व्याख्याताओ का देश है, यह पवित्र भूमि है जहां वैदिक संस्थाएं समुन्नत हुईं और अपने सर्वोत्तम फल प्रस्तुत किये, यह धर्मक्षेत्र है जहा वैदिक दर्शन और तत्व ज्ञान विकास के चरमोत्कर्ष को प्राप्त हुए और यह पवित्रीकृत वसुन्धरा है जहां ऐसे आदर्श पुरुष निवास करते थे जिन्होंने स्वय अपने आचरण में वेदों की नैतिक शिक्षाओं की उच्चतम धारणाओं का साक्षात्कार किया। (समाप्त)

मुण्डा जाति के ६०० से अधिक ईसाई हिन्दू धर्म में प्रविष्ट

श्री स्वामी धर्मानन्द जी के प्रयत्न और प्रेरणा पर राउर केला से ८० कि० मी० दूर "जमालत" ग्राम पंचायत मे "कहुपडा" ग्राम (जिला सुन्दरगढ) मे १० ११ मई को यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के अवसर पर ६०० से अधिक मुण्डा जाति के लोगों ने ईसाई धर्म छोडकर अपने प्राचीन हिन्दू (आर्य) धर्म को ग्रहण किया।

बहुत सघर्ष के पीछे यह शुद्धि हो पाई जहा आर्य समाज के कार्यकर्ता समझा बुझाकर उन्हे तैयार करते। पीछे २ ईसाई प्रचारक उन्हे फिर बहका देते, इस प्रकार महीनों यह खेल चलता रहा। पर अन्त मे आर्य समाज के कार्यकर्ता इस ईसाई प्रभाव को छोडने मे सफल हुए।

११ मई को मुण्डा समाज के प्रमुख एव हजारो लोगो की उपस्थिति मे श्री स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में श्री विशिकेसन शास्त्री एव श्री योगेन्द्र शास्त्री ने शुद्धि सस्कार कराया। जब आशीर्वाद प्रदान करते हुए श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने मुण्डा जाति की वीरता एव स्वाधीनता सग्राम में अपूर्व योगदान का वर्णन किया। तब सभी के नेत्रों मे हर्षाश्रु भर आए। इन लोगों को तैयार करने में श्री प० देवपाल जी एव श्री धन्तकुमार शास्त्री का विशेष सहयोग रहा। आप दोनों का ही इस क्षेत्र मे परिचय एव प्रभाव है।

इस शुद्धि कार्यक्रम से सभी लोग बहुत उत्साहित हुए। इनमे नई चेतना की लहर फैल गई है, आशा है आगे हजारो की सख्या मे शुद्धियां होगी।

—विशिकेसन शास्त्री
उप-कार्यालय मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्कल

हरियाणा एवं राजस्थान प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर आर्ष कन्या गुरुकुल खानपुर (हरियाणा)

मान्यवर, आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि प्रान्तीय आर्य वीर दल वर्ष ८४ तथा ८५ मे आबू पर्वत व बरबराना (अलवर) मे दो सफल विशाल प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने के बाद इस वर्ष पुन. दिनांक २९ मई से ७ जून १९८७ तक आर्ष गुरुकुल खानपुर मे आर्य वीर दल के विशाल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर रहा है। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी समाज से शिविर मे प्रशिक्षण हेतु कम से कम १० आर्यवीर अवश्य भेजें।

आवश्यक निर्देश

(१) शिविर में सम्मिलित होने के लिए प्रार्थना पत्र आर्यसमाज के प्रधान आर्य वीर दल के अधिकारी, अथवा अपने सरक्षक की स्वीकृति के साथ 'प्रान्तीय कार्यालय आर्य वीर दल राजस्थान आर्य समाज दयानन्द मार्ग अलवर (राज) को भेज देना चाहिए।

(२) शिविर का प्रवेश शुल्क मात्र २१) रुपए है।

(३) शिविरार्थी को कान तक की लाठी, खाकी नेकर, सफेद शर्ट सोल्डर लगी हुई, दो काले कच्छे, लगोट, ब्राउन कपड़े के जूते, सफेद जुराबें, सामान्य बिस्तर, बर्तन, कापी एव पैन साथ लाना चाहिए।

(४) गुरुकुल खानपुर पहुचने के लिए बहरोड एव नारनौल से हरियाणा तथा राजस्थान रोडवेज की बसें प्रात ८ बजे से साय ६ बजे तक उपलब्ध रहती हैं। गुरुकुल बहरोड नारनौल रोड पर स्थित है। इन्हीं बसो से 'मढाणा' स्टेण्ड पर उतर कर गुरुकुल पहुँचें। जयपुर, अजमेर, ब्यावर, पाली, शिवगज, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर की तरफ से आने वालों को वाया जयपुर कोटपूतली से बहरोड पहुचना चाहिए। गगानगर, बीकानेर, चूरू, झुन्झुनु से वाया रेवाडी नारनौल होकर आना चाहिए। भरतपुर, सवाईमाधोपुर, कोटा, बूदी, उदयपुर वाया अलवर से आयें।

—सत्यवीर आर्य, प्रान्तीय सचालक

क्षेत्रीय आर्य परिषद हरिद्वार द्वारा आयोजित–

आर्य वीरदल ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

आपको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि क्षेत्रीय आर्य परिषद हरिद्वार, आर्यसमाज रोहालकी (किशनपुर) के सहयोग से दि० २९ मई से ७ जून १९८७ तक एक आर्य वीरदल ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का राष्ट्रीय इन्टर कालेज रोहालकी (बहादराबाद) जिला सहारनपुर उ० प्र० मे आयोजन किया गया।

इस शिविर में लगभग १०० नवयुवको को ब्रह्मचर्य व्यायाम योग क्रियाओं का प्रारम्भिक ज्ञान, प्राकृतिक चिकित्सा आदि सभी प्रकार के प्रशिक्षण आदि के साथ उन्हे वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान कराकर, धार्मिक एव राष्ट्र भक्त बनाया गया।

इसका उद्घाटन २९ मई को प्रात ८ बजे यज्ञारम्भ के साथ माननीय श्री डा० यशवन्त सिंह प्रधान रा० इ० का० रोहालकी (बहादराबाद) की अध्यक्षता में, श्री अशोक कुमार शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गु० म०वि० ज्वालापुर के करकमलो द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमे उद्घाटन भाषण श्री सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एव श्री योगेन्द्रसिंह एडवोकेट अध्यक्ष कोपरेटिव बैंक रुडकी द्वारा हुआ।

प्रशिक्षण देने वाले शिक्षक आचार्य देवव्रत दिल्ली, प० फूलसिंह आर्य प्रधानाचार्य (मेरठ), श्री समरसिंह पलडी (मेरठ), श्री राजपाल सिंह आर्य पलडी (मेरठ), ब्रह्मचारी श्री अजयकुमार आर्य।

शिविर का दीक्षान्त समारोह ७ जून,८७ को साय ६ बजे श्री बालदिवाकर हंस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली की अध्यक्षता मे माननीय डा० सजयसिंह परिवहन मन्त्री उ० प्र० सरकार के दीक्षान्त भाषण द्वारा सम्पन्न हुआ।

सुखदेव सिंह शास्त्री	महेन्द्रसिंह आर्य	बसन्त सिंह चौहान	बाबु वीरेन्द्र सिंह
अध्यक्ष	प्रबन्धक भोजन	मुख्य सयोजक	स्वागताध्यक्ष

सिरजनहार

गह जगह पर, जगह जगह पर, बना दिये हैं सिरजनहार,
भी तो शरमाता होगा, क्यों बन बैठा सिरजनहार।

पत्थर की प्रतिमा में भी जब, सुनता है धड़कन आवाज,
तीन समय का भोग लगाना, कहना फिर भी पालनहार।

ज सवेरे घंट बजाकर, कहता उठो हे सिरजनहार,
आ सवेरा, थामो अब तुम, अपना ये नटखट संसार।

जटिल समस्या, व्याधि, व्यथा का उद्धारक समझा जिसको,
पर विडम्बना हाय, जगत मे चुर जाते वही सिरजनहार।
कोटि-कोटि जन इस समाज मे, भूखे नंगे पलते हैं,
बिन व्यंजन, बिन बिन प्रभु मार से मुक्त मुक्त है सिरजनहार।

ीन दुःखी औ श्रमिकों के, शोषण से जब भरता भण्डार,
ूटा डालते हैं सहर्ष सब, प्रस्तर प्रतिमा पर हर बार।

ऐ मानव तू उसे खोज, तुझमें ही बैठा सर्वाधार,
जन सेवा तू करे हमेशा, यही चाहता सिरजनहार।

अखिलेश 'स्नातक'
आदिपुर (कच्छ)

प्राणायाम से रोग निवृत्ति

मानव को प्रभु ने पांच महान शक्तियां प्रदान की है जिनको प्राण, अपान मान उदान व्यान कहते हैं। प्राण शक्ति ही जीवन का आधार है इसके शिथिल हो जाने पर ब्लडप्रेशर, हृदय धड़कन, हार्टफेल, टी बी. के रोग ाते हैं।

अपान की शिथिलता से बवासीर, स्वप्न दोष, प्रमेह हायड्रोशील, आंत ा बढ़ना, पेशाब अधिक आना अथवा रुक जाना, धातु का निकलना आदि ोग उत्पन्न होते हैं।

समान वायु की शिथिलता से अपच रोग, कब्ज, जिगर का काम न करना, शरीर का मोटा हो जाना, पेट बाहर निकलना, पेट का रोग संग्रहणी कमर मे दर्द, गुर्दों मे दर्द अनेको रोग उत्पन्न होते हैं।

व्यान वायु के बिगड़ने से शरीर की नस नाड़िया अपना काम करना छोड़ देती हैं उसी को फालिज मार जाना कहते हैं।

—स्वामी योगानन्द
आर्य समाज अशोक नगर कालोनी, पीलीभीत

नये प्रकाशन

१—वीर वैरागी बैबक—भाई परमानन्द
कीमत ८) सभा ने केवल ४) कर दी है।
२—Bankim-Tilak-Dayanand by Aurobindo.
कीमत ४) सभा ने केवल २)५० कर दी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का पटना में भव्य स्वागत, आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन सम्पन्न

पटना। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा घोषित बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन विधिवत ३१-५-८७ को बिहार राज्य से पधारे प्रतिनिधियो द्वारा सम्पन्न किया गया। समस्त प्रदेश से लगभग दो सौ प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ आचार्य प० वैद्यनाथ जी शास्त्री श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट सभा उपप्रधान, तथा सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री एव प० पृथ्वीराज शास्त्री उपमन्त्री सभा भी थे।

श्री स्वामी जी अपने अधिकारियो के सहित सम्माननीय श्री डा० दु खन राम जी से भी घर पर मिले, उनका स्वास्थ्य पूछकर इस निर्वाचन की प्रक्रिया स्वरूप उनका भी आशीर्वाद प्राप्त किया।

निर्वाचन बहुत ही शान्त वातावरण मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति से श्री भूपनारायण शास्त्री प्रधान घोषित किये गये। तथा श्री रामाज्ञा वैरागी मन्त्री व श्री द्वारिका प्रसाद जी ओज कोषाध्यक्ष चुने गये।

श्री स्वामी जी के स्वागत समारोह मे हजारो व्यक्तियो ने भाग लिया और स्वामी जी को मानपत्र भी भेंट किया।

आर्यसमाज में दीक्षित : भील प्रचारको का १४जून,८७ को आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली में दीक्षान्त समारोह

विदेशी ईसाई मिशनरी भारत के आदिवासी तथा जनजाति क्षेत्रो मे भोले-भाले नागरिको को अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर उनका धर्मान्तरण करते हैं। उत्तर पूर्वी भारत के आसाम, नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय, बिहार के छोटा नागपुर, उडीसा के आदिवासी क्षेत्र, महाराष्ट्र मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के अनेक क्षेत्रो मे ईसाईकरण की घटनाए बढ रही हैं। इस धर्मान्तरण का उद्देश्य भारत के हिन्दुओ का ईसाईकरण करके राजनीतिक सत्ता हथियाना है।

कई वर्षो से सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम इस चनौती का साहस के साथ मुकाबला कर रहा है। वर्तमान समय मे आसाम, नागालैण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि बहु क्षेत्रो मे सघ के केन्द्र कार्यरत हैं। आर्य समाज के रचनात्मक कार्यक्रमो म सघ के कार्यो का बडा महत्व है। इसी रचनात्मक श्रृखला मे रतलाम भबुआ और थादला जैसे आदिवासी क्षेत्रो के कुछ भील युवको को इस समय आर्य समाज रानीबाग दिल्ली मे धर्म शिक्षा शिविर के अन्तर्गत प्रशिक्षित किया जा रहा है। उक्त शिविर का समापन और प्रचारको का दीक्षान्त समारोह आगामी १४ जून, १९८७ को प्रात १० बजे आर्य समाज दीवानहाल मे सम्पन्न होगा।

सभी आर्य समाजो के अधिकारियो और सदस्यो से निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या मे उक्त कार्यक्रम मे सम्मिलित होकर भील युवको का उत्साह बढावें ताकि वे एक नई प्रेरणा और सकल्प के साथ आर्य समाज का प्रचार अपने-अपने क्षेत्रो मे करके, ईसाईकरण की रोकथाम के लिए मील के पत्थर सिद्ध हो सकें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान

बिहार में ग्राम समाजों के उत्सव सम्पन्न

पटना जिलान्तर्गत फतुहा प्रखण्ड मे तीन समाजो के वार्षिकोत्सव १५ अप्रेल से लगाकर ग्राम चक, बिहरी, उसका व खरफर के २३ अप्रेल तक समारोहपूर्वक मनाए गए। स्वामी मोक्षानन्द, ब्रह्मचारी नरेन्द्र कुमार, गजाधर शास्त्री व श्री देवेन्द्र सत्यार्थी के भाषण हुए।

श्री निगुणानन्द, श्री वासुदेवसिंह व श्री ओम्प्रकाश आर्य का सहयोग सराहनीय रहा।

माता ईश्वरी देवी का देहांत : आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति

स्वर्गीय प० कृष्णचन्द्र विद्यालकार की सहधर्मिणी, श्रीमती ईश्वरी देवी का ५ जून को शक्तिनगर देहली मे उनके निवास स्थान पर देहावसान हो गया।'

श्रीमती ईश्वरी देवी वर्षो तक आर्य महिला सभा की प्रधान रही। आर्य कन्या विद्यालय, बिडला लाइन्स, देहली की वे अध्यक्षा थी। आर्य समाज, सब्जीमण्डी की गतिविधियो मे भी उनका बडा सहयोग था। अपने वैवाहिक जीवन के पश्चात भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेने के कारण उन्होने कई बार जेल यात्रा भी की।

श्रीमती ईश्वरी देवी उन महिलाओ मे से थीं जिनका जीवन महर्षि दयानन्द की विचारधारा से पूर्णत प्रभावित तथा सात्विक प्रवृति का था। वे उच्चकोटि की प्रबन्धकर्त्री और व्याख्याता थी। वैदिक सिद्धातो पर उनका अटूट विश्वास था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि श्रीमती ईश्वरीदेवी के चले जाने से आर्य माताओ का सम्बल टूट गया है। उन्हे प्रेरणा देने वाला व्यक्ति लुप्त हो गया।

श्रद्धांजलि सभा

१४ जून ८७ को सायकाल ५ बजे आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज दीवानहाल आर्य महिला सभा व अन्य सस्थाओ की ओर से एक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया है जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे।

—डा० धर्मपाल, सभामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अनेक भारतीय भाषाओं में

सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन

१	सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी)	१०)
२	सत्यार्थप्रकाश (उर्दू)	१२)
३	सत्यार्थप्रकाश (बगला)	२०)
४	सत्यार्थप्रकाश (सस्कृत)	५०)
५	सत्यार्थप्रकाश (उड़िया)	१०)
६	सत्यार्थप्रकाश (अग्रेजी)	४०)
७	सत्यार्थप्रकाश (असमी)	२०)
८	सत्यार्थप्रकाश (कन्नड)	२०)
९	सत्यार्थप्रकाश (तमिल)	२०)
१०	सत्यार्थप्रकाश (चीनी)	१०)

पुस्तक प्राप्ति स्थान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान के समीप, नई दिल्ली-११०००२

संस्कृत बचाओ पद यात्रा

डा० वीरभद्र मिश्र के नेतृत्व में लखनऊ गोमती पक्का पुल से दिल्ली के लिए ७ जून को एक पदयात्रा प्रारम्भ हो रही हैं। जो सीतापुर, बहानखेडा, शाहजहापुर, तिलहर, बरेली, रामपुर, मुरादाबाद, गढमुक्तेश्वर, पिलखुवा, गाजियाबाद होती हुई २८ जून को दिल्ली पहुचेगी।

श्री तथा श्रीमती मुल्कराज मल्ला दुर्घटना में घायल

दिल्ली के आर्य नेता और दानवीर तथा सार्वदेशिक सभा के भूतपूर्व उपप्रधान श्री मुल्कराज जी भल्ला व उनकी धर्मपत्नी कार दुर्घटना मे घायल हो गए हैं। श्रीमती भल्ला जी को लगभग ३६ टाके लगे हैं। प्रभु कृपा से दोनो बाल बाल बच गए हैं। सार्वदेशिक सभा इन दोनो के दीर्घ जीवन की कामना करते हुए शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना करती है।

— आनन्दबोध सरस्वती प्रधान
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

१०१५—पुस्तकालयकयक
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

पृष्ठ सख्या—२०८, मूल्य सजिल्द १८) रुपये,

प्रकाशक—'मधुर-प्रकाशन, २८०४ गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६

प्रस्तुत पुस्तक मेरे सामने है। पुस्तक का आकार २०×३०/१६ है। टाईटिल आकर्षक एव मनमोहक है। पुस्तक को देखते ही पुस्तक पढने की चाह उत्पन्न होती है। अन्दर जब खोलकर देखा तो पुस्तक अत्यन्त रोचक है।

इसमे दिवगत आर्य नेताओ की प्रेरणाप्रद कहानिया तथा सकलन प्रस्तुत किया है। यो तो कहानी सदा से रोचक ही बन पाती हैं। फिर ये तो सच्ची एव प्रेरणाप्रद कहानियो का सकलन अति उत्तम बन पाया है।

आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द जी ने भी अपने भाषणों में व्याख्यानो मे और व्यवहार भानु जैसी पुस्तक को भी सुबोध और सरल बनाया।

मेरे विचार मे प्रत्येक वक्ता को उपदेशक तथा भजनोपदेशको के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें—

मधुर प्रकाशन
२८०४-बाजार सीताराम, दिल्ली-६

—सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ६०४७७१
वर्ष २२ अंक २५] आषाढ कृ० १० स० २०४४ रविवार २१ जून १९८७ वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ६० पैसे

संस्कृत का स्थान यथावत् रहेगा

हम संस्कृत को जन-जीवन के साथ जोड़ेंगे

—श्री नरसिंहा राव

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का प्रयास सफल

नई दिल्ली १५ जन। सस्कृत की न अवहेलना की है न की जायेगी और न ही सस्कृत के किसी अध्यापक को हटाया जाएगा। सन् १९६८ से जो शिक्षा नीति व्यवहार मे है, और उसमे सस्कृत को जो स्थान मिला हुआ है, उसमे सरकार ने कोई परिवर्तन नही किया है। नई शिक्षा नीति मे सस्कृत को उचित स्थान देने के लिए हम सारे देश मे विद्वानो से विचार विनिमय करके रचनात्मक पग उठाने के लिए कृतसकल्प है। हम सस्कृत को जनता के जीवन के साथ जोडना चाहते हैं क्योकि भारतीय सस्कृति और भारत की सभी भाषाओ का प्रेरणा स्रोत सस्कृत ही है। ये शब्द १३ जन १९८७ को मानवीय विकास एव ससाधन मन्त्री श्री नरसिंहाराव ने सस्कृत के विद्वानो के शिष्टमण्डल को कहे। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व मे इस शिष्टमण्डल मे आर्यसमाज और सनातन धर्म सभा के प्रमुख नेता, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत के प्राध्यापक तथा अन्य अनेक सस्कृत के विद्वान सम्मिलित थे।

शिष्टमण्डल ने इस सम्बन्ध मे जो सुझाव रखे उनको मन्त्री महोदय ने बड ध्यान से सुना और इसके बाद आश्वासन दिया कि सरकार सस्कृत की अवहेलना बिल्कुल नही करना चाहती है। परन्तु उसके लिए व्यापक मन्थन करके रचनात्मक हल निकालना चाहती है। इस विषय मे कोई राजनीतिक ढग का आन्दोलन करने से हानि ही हो सकती है, लाभ नही। आप लोगो से परामर्श करने के पश्चात् ही सरकार अन्तिम निर्णय करेगी।

शिष्टमण्डल मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, डा० कमला रत्नम श्री विजेन्द्र स्नातक, श्री क्षितीश वेदालकार, गोस्वामी गिरधारीलाल, श्री विमल भारद्वाज, डा० आनन्दप्रकाश, प० राजगुरु शर्मा श्री प्रेमचन्द गुप्ता, डा० धर्मपाल डा० कृष्णलाल, चौधरी लक्ष्मीचन्द व श्री जगदीश प्रसाद वैदिक आदि सम्मिलित थे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली साधारण अधिवेशन

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को ५० हजार रुपये की थैली भेंट

दिनाक १४ जून रविवार प्रात ११ बजे से आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन बडे उत्सुकता व गम्भीरतापूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। देश भर से बडी सख्या मे आर्य प्रतिनिधि एकत्रित हुए थे इस आशा से कि शिरोमणि सभा आज देश पर आई सकट की घडियो मे उनका मार्गदर्शन करेगी। वास्तविक रूप मे वे सभा की कार्यवाही से न केवल सन्तुष्ट हुए अपितु भावी कार्यक्रम की रूप रेखाओं के मानचित्र भी वे सकलन कर सके। सार्वदेशिक सभा द्वारा अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं पर समाधान कारक प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए जिनका सम्पूर्ण विवरण हम आगामी अक मे प्रकाशित कर रहे हैं। इस अवसर पर आदिवासी भील युवको के प्रशिक्षण का दीक्षान्त कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। अधिवेशन से पूर्व बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री ने सार्वदेशिक सभा कार्यों के लिए सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को ५० हजार रुपये की थैली भेंट की।

देश भर के प्रमुख आर्य प्रतिनिधियों ने काफी सख्या मे भाग लिया जिनमे प्रमुख थे, प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् श्री रामचन्द्रराव कल्याणी, प० राजगुरु शर्मा, प० वासुदेव शर्मा, प० विश्वम्भर प्रसाद शर्मा, श्री दौलतराम चड्ढा, श्री मक्खनसैन चोपडा श्री छोटूसिंह एडवोकेट, श्री योगेन्द्र पाल सेठ, श्री सूर्यदेव, श्री जयनारायण वरुण स्वामी धर्मानन्द, प० पृथ्वीराज शास्त्री, राजा वी० किशनलाल, तथा सभा मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री।

—आचार्य शिवराज शास्त्री

मलयाना गांव के हत्याकांड की झूठी खबर की जिम्मेदारी किस पर ?

कुछ समाचार पत्रो ने मलयाना गाव मे पी०ए०सी० द्वारा ७० से १० व्यक्तियो के मारे जाने का समाचार प्रकाशित किया था और सरकार ने मरने वालो की सख्या १५ बताई थी। लापता व्यक्तियो की सख्या १११ छापी गई थी। वास्तव मे श्री सलीम अख्तर सद्दिकी और बशीर खा ने ही पी०ए०सी० के अत्याचारो के सम्बन्ध प्रेस मे झूठा समाचार दिया था कि

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक — सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज देश का विघटन सहन नहीं करेगा
राजनीतिज्ञों को चेतावनी

नई दिल्ली १५ जून १९८७ ।

हमने कठिन संघर्ष और अनेक राष्ट्रवीरों के बलिदानों के पश्चात् सन १९४७ मे आजादी प्राप्त की थी। जिसकी हमें बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। देश का बटवारा हुआ। लाखों निर्दोष लोग साम्प्रदायिक दगों में मारे गए। हाल ही में दिल्ली और मेरठ में हुए दगों में जो वीभत्स हत्याकाण्ड, आगजनी और लूट-पाट हुई, उसने एक बार फिर देश के बटवारे के समय हुई बर्बादी की याद ताजा कर-दी है।

विडम्बना तो यह है कि आज देश का बहुसंख्यक हिन्दू समाज अपने ही देश मे सर्वनाश की तरफ जा रहा है। देश के बाहर-मुख्यतः पाकिस्तान में उसकी जो दुर्दशा है, उस पर आये दिन जो अत्याचार हो रहे हैं, उसे सुनकर खून खौलने लगता है। इसके विपरीत अल्पसंख्यक समुदाय के लोग, चाहे वे मुसलमान हों, ईसाई हों अथवा सिक्ख हों, भारत मे सब प्रकार की सुविधा प्राप्त कर रहे हैं। हमारे राजनेता वोटों की राजनीति में अपनी प्रभुसत्ता कायम रखने के लिए सदा उनके तुष्टीकरण का ही प्रयास करते हैं। हमारी सरकार मे इतना भी साहस नहीं है कि हिन्दुओ पर किए गए अत्याचारों के लिए उन्हे कुछ कह सकें।

मेरठ मे जिस प्रकार दगे हुए, उससे यह स्पष्ट है कि इसकी शुरूआत अल्पसख्यक वर्ग ने की थी और यह पूर्व नियोजित थी। इस बात के भी सबूत मिले हैं कि इसके पीछे पाकिस्तान का हाथ रहा है। सबसे अधिक दु.ख की बात तो यह है कि राज्य का प्रशासन तन्त्र इन दंगो को दबाने मे एकदम असफल रहा, जिससे हिन्दू समुदाय को जान-माल का भारी नुकसान उठाना पड़ा। मेरठ का अधिकारी वर्ग इस वीभत्स हत्याकाण्ड, आगजनी और लूटमार का केवल मूकदर्शक बना रहा और जब पुलिस ने विशेष कर प्रान्तीय सशस्त्र बल ने दगाइयों को सख्ती से दबाना शुरू किया तो सरकारी तन्त्र ने प्रशसा के बजाय उनकी भर्त्सना ही की, जिससे पुलिस का मनोबल गिरा है। परोक्ष रूप से अल्पसख्यक मुस्लिम वर्ग को इससे और प्रोत्साहन मिला है, जिसका परिणाम यह हुआ है कि मेरठ मे अभी तक पूरी तरह शान्ति स्थापित नही हुई हैं।

हम यह मानते हैं कि देश की प्रजातांत्रिक व्यवस्था मे विरोधी पार्टियों की प्रमुख भूमिका होती है, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों मे सर्वश्री चन्द्रशेखर, बहुगुणा, सुब्रमण्यम् स्वामी, शहाबुद्दीन और जामा मस्जिद के इमाम जो भूमिका निभा रहे हैं, उसके लक्षण अच्छे नहीं हैं। उनकी इस प्रकार की कार्यवाहियो से हमारे प्रजातन्त्र की हत्या होगी और देश टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जायगा। जनता को उनके इन विघटनकारी कार्यों को उद्घाटित करना चाहिए।

इस प्रकार के कई उदाहरण हैं, जहां हमारे राजनेताओं ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए देश हित का बलिदान कर दिया और देश को अपूर्णीय क्षति पहुंचाई। पंजाब का उदाहरण हमारे सामने है। वर्तमान पंजाब प्रान्त, पूर्व पंजाब प्रदेश का ही एक भाग है, जिसका विभाजन पंजाब तथा हरयाणा प्रान्तों में हुआ था। श्री देवीलाल इस विभाजन के लिए जिम्मेदार हैं। इसके कारण ही सिख कट्टरपंथियों को सिर उठाने का अवसर मिला है। अभी भी इस बात की क्या गारण्टी है कि श्री देवीलाल, श्री बादल के साथ जो उनके अभिन्न मित्र रहे हैं, फिर कोई सांठ-गांठ करके देश को कोई और क्षति नही पहुंचायेंगे।

हमे इस बात से भी बड़ी चिन्ता है कि हमारे ही देशवासियों में से कुछ लोग उन विदेशी ताकतों से पैसा प्राप्त करते हैं जो हमारी जनता को जाति, धर्म और सम्प्रदाय के आधार पर बांट कर देश का विघटन करना चाहते हैं। उस संदर्भ में नव गठित बहुजन समाज की गतिविधियां भी ध्यान देने योग्य हैं।

आर्यसमाज एक सामाजिक संस्था है, जिसका राजनीति से कोई सीधा सम्बन्ध नही है और जो अपने देश और देशवासियों के प्रति सदा वफादार रहा है। हमने एक समिति गठन करने का निश्चय किया है, जो देहली और मेरठ में हुए साम्प्रदायिक दगो की जांच करके लगभग एक महीने में अपनी रिपोर्ट दे देगी।

यह भी निश्चय किया गया है कि हिन्दू समाज के प्रमुख नेताओं और कार्यकर्त्ताओं की वे चाहे किसी भी विचारधारा के हों, एक मीटिंग बुलाकर हिन्दू जाति की वर्तमान स्थिति और उसके भविष्य पर विचार किया जाय। अगले महीने दिल्ली मे अखिल भारतीय स्तर पर एक सम्मेलन आयोजित करने का भी विचार है। हम सभी राजनैतिक पार्टियों के नेताओं को चेतावनी देना चाहते हैं कि हिन्दू जाति उनके ऐसे किसी भी कार्य को सहन नही करेगी, जो केवल अल्पसख्यक समुदाय को सन्तुष्ट करने की दृष्टि से किए जाए गे।

रामचन्द्रराव वन्देमातरम
वरिष्ठ उपप्रधान
सार्वदेशिक सभा

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
पूर्व नाम. रामगोपाल शालवाले
प्रधान : सार्वदेशिक सभा

सम्पादकीय

पागलों का टोला

घर में आग लगाना, पागलों का काम होता है। इससे देश मिट रहा है। पर वाह री राजनीति ? तेरे भी क्या २ रूप। आजादी के बाद इन पागलों के दिमाग कुछ दिनों के लिए ठीक हुए थे। पर राजनीतिज्ञ वह जो न स्वयं चैन से बैठे और न सोने वालों को शान्ति से बैठने दे।

पाकिस्तान बनाने पर भी देश मे इसी प्रकार के हुड़दंगे किए गए थे। अब भी वैसे ही नारे बाजी और हम बराबर के अधिकार चाहते हैं, यह मांग करते हुए देश की ज्वालामुखी के मुंह पर खड़ा कर रखा है।

हमारे राजनीतिज्ञों से हम पागलों ने पूछा हम एक बात कहें आप बुरा तो नहीं मानेंगे ? बोले कहिये—कि हम तीन व्यक्तियों के कहे का बुरा नहीं मानते हैं।

(१) कोई बच्चा शरारत करे तो क्षमा करने योग्य है ?

(२) बेवकूफ यदि बेवकूफी करे तो क्षमा के योग्य है और

(३) यदि कोई पागल शरारत करे तो उस पर भी हम ध्यान नहीं देते हैं।

सारे भारत को विघटित करने की भूल कोई बच्चा तो कर नही रहा है और न बेवकूफ ही नादानी कर रहा है। हां पागलो का टोला जरूर है जो आये दिन अपने हाथों से घर में आग लगाकर हाथ सेक रहा है और अपने पागलपन पर हंस रहा है। बुरा मानने की बात नहीं—

एक हमारे नेता अपनी बेवकूफी पर पश्चाताप न करके हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और नादानी पर हंस रहे हैं, पर मूर्ख या पागल की, नई दुर्घटना पर हमारे नेता उसे दवा देकर ठीक करने के बजाय विवाद को न बढ़ने देने की बात कहते हैं। वैसे ही वह शान्ति की सजा भी देते है।

महाराज सुशील मुनि और जनता पार्टी के नेता इसी कोटि मे आते हैं पागलों को दवा न देकर क्षमा मैत्री की बात करते हैं। तथा भगवान आप सबको अपनी शान्ति और खुशी को अपने ही हाथ में रखकर गम न होने देने की बात करते हैं। मेरठ दिल्ली में जो हुआ उसमें कौन मरा, किसकी हानि हुई इस पर ध्यान न देकर—मलियाना में क्या हुआ ?

मेरठ मे लाखों रुपयों की सम्पत्ति जली, सैकड़ों हिन्दू मारे गये। पर हमारे मान्य नेता मलियाना में मरे—पागलो को बचाने की रट लगा रहे थे और धरना देकर थाने में बैठे थे परन्तु अब क्या हुआ।

मलियाना के १११ लापता व्यक्तियों में से जो सरकारी सूचना के अनुसार ८१ व्यक्ति अपने अपने रिश्तेदारों के यहां सुरक्षित पाए गए हैं अब नेताजी क्यों मौन हैं और यह लाशों की गिनती है वह किसकी हैं यह प्रश्नचिन्ह सामने है तो फिर बहुगुणा जी, चन्द्रशेखर मुनि सुशील कुमार कहां मौन बैठे हैं अब धरना क्यों नहीं देते।

मलियाना के कथित रूप से लापता एक सौ ग्यारह व्यक्तियों में से तिरासी व्यक्ति कड़ी खोज से मिल गए हैं। यह जानकारी जिलाधिकारी श्री रामेश्वर श्री कौशिक ने पत्रकारों को दी है। साथ ही बताया कि मलियाना में केवल ११ व्यक्ति मारे गए हैं तथा १२ व्यक्ति लापता हैं जिनकी तलाश जारी है।

प्रधानमंत्री व गृहमंत्री को १११ एक सौ ग्यारह व्यक्तियों के लापता होने की जो रिपोर्ट दी गई है और कहा है कि उन्हें पी० ए० सी० के जवानों ने मौत के घाट उतारा है जिसका गलत प्रचार किया गया। उपलब्ध व्यक्तियों के मिलने से इस झूठ का भांडा फूट गया है और सारी पोल खुल गई है।

लेकिन नवीपुरा और अहमद नगर में तलाशी लेने पर ८२ व्यक्ति गिरफ्तार किए गए जिनके पास से अवैध हथियार बन्दूकें, कारतूस चाकू आदि बरामद किये गये हैं।

जैसा जानकारी बढ़ रही पकड़कर पुलिस ले जाने लगी तो ५ सौ स्त्री पुरुषों ने हमला कर उन्हें छुड़ाने की कोशिश की। जब नगर पुलिस सुरक्षात्मक कार्यवाही हेतु गोली चलावे, तो नेता इसे पर हाय तौबा करने लगेंगे पर पुलिस पर हमला हुआ तो सारे नेता मौन साधे बैठे हैं। यह वही क्षेत्र है जहां दो दिन पूर्व स्कूटर पर सवार एक हिन्दू युवक की हत्या कर दी गई थी इन सभी क्षेत्रों में पी०ए०सी० नियुक्त कर दी गई है। पर—

उनकी भी तो सुनो !

जिनके जान व माल का भारी नुकसान हुआ है हापुड़ रोड पर कार मे सवार लोगों को जलाकर समाप्त कर दिया, उनका तो भविष्य अन्धकार मे हो गया। किसी नेता ने भी उनके दु खड़ों को सुना तक नहीं।

मलियाना का राग अलापा और झूठ का भांडा फूटा, परन्तु पागलों के किये गये कार्यों पर किसी ने भी सुनवाई नहीं की। जामा मस्जिद के ताले बन्द हो गये। जब बुखारी साहब को अपनी भूल का पता चला तो बहाना बनाकर मस्जिद का ताला खुलवाया और कहा कि हमारी मांगों को तो मान लिया गया है—पागलों के हाथों सारा देश जल रहा है और हमारे नेता मौन हैं और पी० ए० सी० व सरकार को कोस रहे हैं ?

पोल खुलने के कारण भी क्या है ?

जो व्यक्ति मरने वालो की सूची में थे, उनके वारिस भी लोग बनने लगे और सरकार से सहायता राशि भी लेने लगे। एक घटना की ओर आपका ध्यान आकर्षित करता हूं।

चांद खां तो मिल गये और बशीर अहमद गायब हो गये।

मेरठ मे चांद खां के नाम से व्यक्ति को मृत घोषित किया गया और बशीर अहमद खां ने उन चांद खां को अपना सम्बन्धी घोषित कर सरकार से ३० हजार रुपया भी ले लिया। परन्तु जैसे एक सौ व्यक्ति मलियाना के सुरक्षित मिल गये। उसी प्रकार चांद खां भी मिल गये। झूठ का ढिंढोरा बहुत पीटा गया लेकिन अब बशीर अहमद जिन्होंने ३० हजार रुपया चांद खां के मरने पर लिया अब वे गायब हो गये। ३० हजार की पोल खुलेगी। बशीर अहमद ने ही राज्य सरकार से एकसौ ग्यारह व्यक्तियों के पी०ए०सी० द्वारा हत्याकाण्ड की चर्चा की थी। जिलाधीश श्री कौशिक ने बताया कि झूठ बोलकर मुआवजे को ऐंठ लेना और देश को गुमराह करने वाले बशीर अहमद के खिलाफ कार्यवाही की जायेगी। ●

वैदिक मिशनरी गुरुकुल भवन का उद्घाटन

सुविख्यात समाज सेवी स्व० लालमन जी आर्य के आर्य परिवार ने स्वदेश, स्वधर्म और स्व-संस्कृति की सेवार्थ समर्पित मिशनरी व्यक्तियो के निर्माणार्थ वेद मन्दिर मथुरा के अन्तर्गत भवन निर्माण कराया है।

दिनांक ३१ मई को प्रात ९॥ बजे यज्ञ एवं ओ३म् ध्वजोत्तोलन के पश्चात् वैदिक मूर्धन्य श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती द्वारा गुरुकुल भवन का उद्घाटन समारोह बड़े ही उत्साह एवं उल्लासमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ। सभा की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी ने की। इस अवसर पर आचार्य प्रेमभिक्षु जी ने वैदिक मिशनरी गुरुकुल की आवश्यकता और उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण की जन्मस्थली, गुरुवर दण्डी विरजानन्द की साधना स्थली और युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी की दीक्षास्थली, इस ऐतिहासिक नगरी मथुरा से इस गुरुकुल के रूप मे पुन एक बार धर्म संस्कृति राष्ट्रीयता और मानवता की पीयूष धारा प्रवाहित होकर बहते हुए विश्व को शान्ति प्रदान करें ऐसी कामना की।

ब्रह्मचारी स्वदेश आर्य, ब्रह्मचारी प्रदीप आर्य तथा ब्रह्मचारी नरेन्द्र आर्य ने तालियो की गड़गड़ाहट के बीच अपने जीवन को गुरुकुल के उद्देश्य हेतु समर्पित करने की घोषणा की। श्री गजानन्द जी आर्य एवं श्री सत्यानन्द जी आर्य ने अपने यशस्वी पिताजी की भावनानुसार गुरुकुल के सफल संचालन के लिए अपने सर्वात्मना योगदान का संकल्प व्यक्त करते हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री गजानन्द जी आर्य व श्री श्यामसुन्दर जी गुप्ता ने संस्था की ओर से धन्यवाद ज्ञापन किया।

धर्मवीर पं० लेखराम जी के सच्चे उत्तराधिकारी पं० भोजदत्त आर्य मुसाफिर

—आचार्य शिवराज शास्त्री एम. ए. मौलवी फाजिल

धर्मवीर पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर का मिशन था :—

(१) अपने मन्तव्यों का मण्डन तथा अमन्तव्यों का खण्डन, तहरीर (लेख) तथा तकरीर (भाषणों) द्वारा करना।

(२) विरोधियों विशेष रूप से ईसाइयों और मुसलमानों द्वारा वैदिक धर्म पर किये गए ऐतराज (आक्षेपों) का उत्तर देना और उनके माने हुए ग्रन्थों और मन्तव्यों में जो झूठ है उसको प्रकट करना।

(३) हिन्दुओं को ईसाई व मुसलमान होने से बचाना तथा ईसाई व मुसलमान बने हुओं को हिन्दुओं में वापिस लाना।

(४) केवल व्याख्यान ही नहीं देना बहस मुबाहिसे (शास्त्रार्थ) भी करना।

पण्डित लेखराम जी की एक मुसलमान गुण्डे ने पेट में छुरा भोंक कर ६ मार्च १८९६ को हत्या कर दी। आर्य समाज को भारी आघात पहुंचा। अब आर्य समाज के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए कोई योग्य व्यक्ति सामने आना चाहिए। चारों ओर अंधेरा छा गया था किसी ओर भी आशा की किरण दिखाई नहीं देती थी। तब जिन्होंने बीड़ा उठाया वह थे—

श्री पं० भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर

कस्बा थाना भवन जिला मुजफ्फरनगर के उच्च ब्राह्मण घराने में श्री पं० भोजदत्त जी का जन्म हुआ था। आपने विद्यार्थी काल में उर्दू फारसी और अरबी भी अच्छी तरह पढ़ी थी। ननौता जिला सहारनपुर के एक उच्च ब्राह्मण परिवार की परम सुन्दरी कन्या के साथ आपका विवाह हो गया था।

नहर के महकमे में वह रुड़की में किसी पद पर नियुक्त हो गये थे। नहर का अफसर एक अंग्रेज उनके काम व उनकी ईमानदारी पर बहुत ही प्रसन्न था। वह पण्डित जी को बहुत प्यार करता था।

उस अंग्रेज अफसर को मिण्टगुमरी पंजाब में नहर का बड़ा काम बनाने के लिए नियुक्त किया गया। वह अंग्रेज अफसर श्री पं० भोजदत्त जी को भी अपने साथ ले गया। नहर का कार्य सुचारु रूप से करते हुए भी पं० लेखराम जी के बलिदान के बाद श्री पं० भोजदत्त जी अपने नाम के साथ "आर्य मुसाफिर" लिखने लगे और धर्मवीर पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर की ही भांति मिर्जा गुलाम अहमद के बनाये अहमदी मजहब तथा उसके नये इस्लाम के खिलाफ लैक्चर देने लगे।

पंजाब की आर्य समाजों में प्रसिद्ध होने लगा कि धर्मवीर पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर का कार्य श्री पं० भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर करते हैं।

अंग्रेज अफसर के पास मुसलमान और ईसाई पण्डित जी के विरुद्ध शिकायतें ले लेकर आने लगे तब अंग्रेज अफसर पण्डित जी को बार-बार समझाने और खण्डन और मण्डन के लेक्चर देने से मना करने लगा। पण्डित जी ने कहा—साहिब यह तो मेरा धर्म है।

अंग्रेज अफसर ने एक दिन कहा—पण्डित जी आपको लेक्चर देना है या सरकारी सर्विस करना है दोनों में से एक काम छोड़ना पड़ेगा। इस पर पण्डित जी ने कहा – इस पर विचार करके मैं आपको कल बता दूंगा कि दोनों में से क्या छोड़ना है?

दूसरे दिन पण्डित जी ने सरकारी नौकरी से अपना त्याग पत्र लिखकर उस अंग्रेज अफसर को दे दिया और कहा कि आपको मेरे साथ अगाध प्रेम है। मैं उसके लिए आपका बहुत धन्यवाद करता हूँ परन्तु अपनी आत्मा के आग्रह और अपने कर्तव्य की उपेक्षा करने में मैं असमर्थ हूँ।

आगरा में—अंग्रेज अफसर ने पण्डित जी को त्याग पत्र देने से बार बार रोका बहुत समझाया पर पण्डित जी नहीं माने और सर्विस छोड़कर आगरे में आपने किराये का मकान ले लिया और आर्य मुसाफिर मिशन नाम से प्रचार कार्य आरम्भ कर दिया। एक व्यक्ति ने अपना दो मंजिला मकान थोड़े से रुपए के बदले में पण्डित जी को दे दिया।

आर्य मुसाफिर मिशन का कार्य

(१) आर्य मुसाफिर मिशन

(२) साप्ताहिक 'मुसाफिर' पत्र

(३) आर्य मुसाफिर विद्यालय

(४) शुद्धि सभा

(५) हितकारी प्रेस

उक्त कार्यों की पूर्ति के लिए पण्डित जी ने "आर्य मुसाफिर मिशन नाम की एक संस्था बनाई। 'हितकारी प्रेस' की स्थापना की। 'मुसाफिर' नाम का साप्ताहिक पत्र उर्दू भाषा में निकालना आरम्भ किया। मुसाफिर के लेख बड़े ओजपूर्ण होते थे। सवालों के जवाबात व खण्डन मण्डन के लेख भी बहुत ओजपूर्ण होते थे। पाठक मुसाफिर की फाइलें बड़ी रुचि से सुरक्षित रखते थे।

मुसाफिर विद्यालय—नाम से उपदेशक विद्यालय खोल दिया। जिसमें अर्बी संस्कृत की नियमित शिक्षा के साथ मुबाहिसा तथा शास्त्रार्थ करना सिखाया जाता था।

पंडित जी ने नामनेर मोहल्ले में भी शिवलाल जी के सहयोग से आर्यसमाज की स्थापना कर दी साथ ही समाज मन्दिर भी बनवा दिया।

मुसाफिर विद्यालय के विद्यार्थी छावनी मुहल्ले में पढ़ते थे। अध्यापन कार्य "आर्य समाज मन्दिर में होता था। स्वयं पण्डित जी सारे देश भर में यात्राएं कर मिशन का प्रचार करते थे।

अद्भुत आध्यात्मिक शक्ति

पं० लेखराम जी को तो हत्यारे ने वध किया। इसी प्रकार का एक अधिक लम्बा सा छुरा लेकर पंडित भोजदत्त जी के घर पर भी आया। परन्तु वह पण्डित जी की योग्यता व अद्भुत आध्यात्मिक शक्ति से इतना प्रभावित हुआ कि एक दिन उसने छुरा अपने वस्त्र में से निकाल कर पं० जी की धर्म पत्नी के चरणों में रख दिया। स्वयं शुद्ध होकर आर्य समाज का मिशनरी बन गया। उसका वर्णन पाठक पं० जी के शिष्यों के वर्णन में पढ़ेंगे।

पंडित जी पर १९०७ में इस बात के लिए मुकद्दमा चलाया गया था कि उन्होंने मुसलमानों के विरुद्ध भद्दी भद्दी व अश्लील भाषा में उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाले लेख प्रकाशित किये हैं। इसके उत्तर में पं० भोजदत्त जी की ओर से यह कहा गया था कि यह लेख पंजाब से छपने वाले एक मुस्लिम पत्र में प्रकाशित लेखों के उत्तर में लिखे गये थे। अंग्रेज मजिस्ट्रेट श्री हैम्पर्ड ने स्वयं यह स्वीकार किया कि मुस्लिम पत्र के लेख भी अतीव आपत्तिजनक थे।

१९०७ में अजमेर की आर्य समाज में उन्होंने एक बहुत अधिक भड़काने वाला भाषण दिया था। इस पर सरकार ने उन्हें चेतावनी दी थी कि वे भविष्य में ऐसे भाषण न दें।

१९०८ में पंडित जी ने भारत शुद्धि सभा की आगरा में स्थापना की जिसके द्वारा आर्य समाज एक नए ढंग तथा मुसलमानों को शुद्ध करने वाले ठोस आन्दोलन में प्रवृत्त हुआ। बाद में यही संगठन महात्मा मुंशीराम (स्वा० श्रद्धानन्द जी) व महात्मा हंसराज जी की अध्यक्षता में हजारों गैर-मुस्लिम मल्कानों की शुद्धि का साधन बना।

अंग्रेजों ने पंडित भोजदत्त जी पर राजद्रोह का मुकद्दमा चलाने का प्रयत्न किया। १९०८ में आगरा पुलिस के मुख्य अधिकारी श्री ह्वाईट ने पं० भोजदत्त जी द्वारा प्रकाशित पत्र मुसाफिर के कार्यालय की तलाशी ली और उनके यहां से क्रान्तिकारी अजीत सिंह व सूफी अम्बा प्रसाद द्वारा प्रकाशित निम्न पुस्तकें सरकार के हाथ लगीं—भूखार वतन, मुहिब्बाने वतन, बंगाल वाई तिलक व कौमियत आफ आर्यावर्त (तिलक के भाषण व लेखों की प्रतिलिपियाँ)

परन्तु पंडित भोजदत्त जी के इसी मुकद्दमे में सबूत न मिलने से सरकार ने उन्हें निर्दोष घोषित किया।

पं० भोजदत्त जी ने आर्य समाज को जो प्रचारक रत्न दिये उनकी चर्चा आगामी अंक में की जायेगी।

इतिहास के अनछुए पृष्ठ

स्वामी दयानन्द और योग

लेखक—कर्नल एच० एस० आल्काट
(अनुवादक एव प्रेषक डा० भवानीलाल भारतीय)

मैं तथा एच०पी०बी० (मैडम ब्लैवैटस्की) अपने पुराने नौकर बाबूलाल के साथ २७ अगस्त १८८० ई० की सायकालीन मेल गाडी से बम्बई से उत्तर भारत के लिये चले। इलाहाबाद मे रुकने के पश्चात् हम ३० अगस्त को मेरठ पहुचे। वहा की आर्यसमाज के सभी सभासदों ने रेलवे स्टेशन पर हमारा स्वागत किया तथा हमे ले जाकर श्री शिवनारायण के घर पर ठहराया। उसके पश्चात् हमने स्वामी दयानन्द से भेंट की। उनके अनुयायियों के समक्ष हमने उनके योग विषयक विचारो को जानने के लिये चर्चा आरम्भ की। हम योगज सिद्धियों के बारे में उनके विचारो को जानना चाहते थे। वे सिद्धिया, जो मनुष्य की मनोवैज्ञानिक एव आत्मिक शक्तियों से प्राप्त होती है। हमे यह बताया गया था कि स्वामी जी अपने अनुयायियो को वैराग्य के अभ्यास से दूर रहने की शिक्षा देते हैं तथा इन सिद्धियों से प्राप्त शक्तियो मे भी अविश्वास प्रकट करते हैं, जब कि उनसे हुए वार्तालाप से हमे भिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त हुई।

मैंने वार्तालाप का पूरा विवरण थियोसोफिस्ट के दिसम्बर १८८० के अक मे दिया है। मैं अपने पाठको को उसे ही पढने की अपील करता हू। किन्तु प्रथम तो थियोसोफिस्ट के उक्त अक को प्राप्त करना हर व्यक्ति के लिये सरल नही है, दूसरे यह कि यह विषय योग मे सामान्य रुचि रखने वालो के लिये भी रुचिकर हो सकता है, तथा अन्तिम बात, हमारी सोसाइटी (थियोसोफिकल सोसाइटी) के साथ स्वामी जी के ऐतिहासिक सम्बन्ध से भी यह विषय जुडा हुआ है, मैं इस प्रसग की न तो उपेक्षा कर सकता हूं और न इसे पूर्णतया भुला ही सकता हू। इसलिये यहा मे स्वामी दयानन्द से हुए योग विषयक सम्वाद का साराश निम्न प्रकार प्रस्तुत करू गा।

स्वामी दयानन्द से मेरा प्रथम प्रश्न यही था कि क्या योग एक वास्तविक विज्ञान है अथवा केवल दार्शनिक अनुमानो पर आधारित विद्या? पतञ्जलि ने जिन सिद्धियो का वर्णन किया है वे मनुष्य द्वारा प्राप्त की जा सकती है या नही? स्वामी जी का उत्तर था—योग सत्य विद्या है और यह प्रकृति के नियमो के ज्ञान पर आधारित है। उनसे पुनः पूछा गया कि क्या ये सिद्धियां आज भी प्राप्त की जा सकती है, या कि इन्हे प्राप्त करने का समय बीत गया? उत्तर था कि प्रकृति के नियम अपरिवर्तनीय हैं तथा उन्हे किसी सीमा मे भी नहीं बांधा जा सकता। जो कार्य पहले किये जा चुके हैं, वे अब भी किये जा सकते हैं। प्राचीन शास्त्रकारो ने जो बातें लिखी हैं मनुष्य आज भी उनकी क्रिया को सीख सकता है। यदि कोई व्यक्ति इन बातो को ईमानदारी से सीखना चाहे तो स्वामी जी इन योग साधनाओ को सिखा भी सकते हैं। कई लोग इसी अभिप्राय से उनके समीप सीखने के लिये आये। उनमे यह विश्वास भी था कि इसमे उन्हें (सीखने वालो को) सफलता मिलेगी। स्वामी जी ने इनमें से तीन को सिखाया भी किन्तु वे तीनों (सिद्धियां प्राप्त करने मे) असफल रहे। इनमे से एक आगरा का निवासी था। इसका आरम्भ तो अच्छा था किन्तु थोडे समय बाद ही इसका धैर्य समाप्त हो गया और वे इस साधना को छोड बैठे। योग सर्वाधिक कठिन विज्ञान है तथा आज के युग मे उसे प्राप्त करने की योग्यता बहुत कम लोगो में हैं। जब हमने स्वामी जी से पूछा कि क्या इस समय भी कोई वास्तविक योगी ससार में है जो आर्य शास्त्रो में वर्णित सिद्धिया रखते हो? उनका उत्तर था कि हा, ऐसे योगी आज भी जीवित है। किन्तु उनकी सख्या कम है। वे एकान्त स्थानों मे रहते हैं तथा शायद ही कभी लोगो के समक्ष आते हैं। वे अपात्र व्यक्तियों को इन गुप्त रहस्यो को नहीं बताते तथा जब तक वे अपने शिष्य की परीक्षा न ले ले वे इस विद्या को उन्हें नही सिखाते।

कर्नल आल्काट ने पूछा—क्या ये महात्मा (योगी) सदा साधारण सन्यासियो की भाति पीले (भगवा) वस्त्र पहने रहते हैं, जैसा कि हम प्राय देखते हैं, अथवा वे साधारण जन की वेश भूषा मे रहते हैं? स्वामी जी ने उत्तर दिया—दोनो मे से कोई सी वेषभूषा वे धारण किये रहते हैं, जैसी कि परिस्थितिया होती हैं। उनसे पुन पूछा गया कि एक अनुभवी योगी मे कौन कौन सी शक्तिया निहित रहती हैं, उनका उत्तर था, एक सच्चा योगी वह सब कर सकता है जिन्हें जनसाधारण चमत्कार कहता है। इन सारी शक्तियो की सूची बनाना आवश्यक है क्योंकि योगी की शक्तिया तो उसकी इच्छा से ही नियन्त्रित होती है। भाव यह है कि वह इन शक्तियो को अपनी इच्छा से ही प्रकट करता है या नही भी करता। अन्य बातो के अतिरिक्त वह दूर स्थित अपने योगी भ्राताओ से विचारो का आदान-प्रदान कर सकता है, चाहे वे ससार के किसी अन्य कोने मे ही क्यो न हो, तथा इन दोनो स्थानो को जोडने के लिये तार या डाक की कोई बाह्य सचार व्यवस्था भी न हो। वह दूसरो के भावो को भी जान सकता है।

वह एक स्थान से दूसरे स्थान तक गति कर सकता है—सामान्य आवागमन के साधनो के प्रयोग के बिना ही, उसकी यह गति रेलवे के इञ्जिन से भी तीव्रतर होती है। वह अपनी आत्मा को अपने शरीर से पृथक् कर थोडी अवधि के लिये अथवा अनेक वर्षों तक, जैसा वह चाहता है, अन्य व्यक्ति के शरीर मे प्रवेश करा सकता है। वह अपने शरीर की आयु को भी सामान्य अवधि से दीर्घ काल तक के लिये बढा सकता है, ऐसा करने के लिये वह निद्रा के समय अपनी आत्मा को शरीर से पृथक् कर लेता है, इस प्रकार शरीर की आंगिक गतिविधियां शून्य तक पहुच जाती हैं तथा इससे शरीर की कोशिकाओ को अधिक से अधिक आराम मिलता है। इस प्रकार शरीर से आत्मा को पृथक् रखने का समय उसके शरीर यन्त्र को प्रदत्त सामान्य आयु मे जुड जाता है। (क्रमश)

क्या राष्ट्राध्यक्ष शासन लागू करने से पंजाब का समाधान हो सकेगा ?

श्री विशनस्वरूप गोयल 'विचारक'

हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने पजाब के राज्यपाल श्री सिद्धार्थ शकर रे की सिफारिश पर पजाब मे राष्ट्राध्यक्ष शासन तो लागू कर दिया है किन्तु वहा की विधान सभा भग नही की जिसका होना भी आवश्यक था। यह तो ठीक है कि इस कार्यवाही से उग्रवादी तत्वो मे खलबली मची है और उन्हे परेशानी भी पैदा हो गई है। इसी के साथ पजाब मे बेगुनाह लोगो की हत्याओ पर भी कुछ अश तक अकुश लगने की सम्भावना भी हो सकती है। किन्तु अभी भी उग्रवादी एक दो हत्या प्रतिदिन कर रहे हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या राष्ट्राध्यक्ष शासन लागू करने से पजाब की उग्रवादी तथा खालिस्तान की माग का सदा के लिये स्थायी समाधान हो सकेगा ? ऐसा सम्भव दिखाई नही देता क्योंकि इस बारे मे श्रीमती इन्दिरा गाधी के कार्यकाल का कटुअनुभव इसकी पुष्टि करता है। क्योकि श्रीमती इन्दिरा गाधी ने भी पजाब विधानसभा भग कर वहा राष्ट्राध्यक्ष शासन लागू कर 'ब्लू स्टार आपरेशन' कराया था जिसमे उग्रवादियो के सरगना तथा रिंग लीडर श्री भिण्डरावाले सहित बहुत से आतकवादी मारे गये थे किन्तु उसके बाद भी इस समस्या का समाधान नही हो सका था इसके विपरीत श्रीमती इन्दिरा गाधी को ही उग्रवाद का शिकार होकर अपनी जान से हाथ धोने पड थे। इसी प्रकार श्री राजीव गाधी ने सन्त हरचन्दसिह लोगोवाल को पजाब का प्रतिनिधि मान कर उनके साथ राजीव लोगोवाल समझौता भी इसी दृष्टि से किया था कि पजाब समस्या का समाधान हो जाये किन्तु उसमे भी सफलता नही मिली और सन्त लोगोवाल भी उग्रवादियो के शिकार हो गये।

सच्चाई की बात तो यह है कि हमारे सत्ताधारी नेता, प्रधान मन्त्री तथा उनके सलाहकारो को यह जानकारी ही नही है कि उग्रवाद और खालिस्तान की माग के पीछे कौनसी मनोवृत्ति काम कर रही है। जब तक उस मनोवृत्ति को सदा के लिये समाप्त नहीं किया जायेगा तब तक पजाब समस्या का समाधान कठिन ही नहीं अपितु असम्भव है।

हमारे सत्ताधारी कर्णधार और प्रधानमन्त्री अपना आपा बचाने और अपनी गलतियो को छुपाने के लिये इस समस्या के पीछे विदेशी शक्तियो का हाथ होने की बात कर जनता को गुमराह कर रहे हैं। यह तो सम्भव है कि विदेशी ताकत इनकी गलतियो का लाभ उठा रही हो। यह बात भी बिल्कुल स्पष्ट हो चुकी है कि सन् १९४७ के विभाजन के बाद मिली स्वतन्त्रता के बाद से उस समय के सत्ताधारी नेताओं जिनमें विशेषत पण्डित जवाहरलाल नेहरू, जिन्हे महात्मा गाधी का पूरा समर्थन प्राप्त था उनकी गलत नीतियो से और १९४९ मे जो हमारे सविधान निर्माताओं ने देश को सविधान दिया उसमे ही अलगाववादी नीव रखने के मुददो और प्रावधानो को शामिल कर दिया था जिसके कारण अलगाव वादी तत्वो को सक्रिय होने मे बल मिला जिसका परिणाम आज हमारे सामने है कि देश मे चारो ओर अलगाववादी तत्व सिर उठा रहे हैं।

जिस प्रकार जिन्ना ने १९४७मे ही पाकिस्तान को एक इस्लामी राज्य घोषित कर दिया था यदि हमारे भी इन नेताओ ने इस शेष बचे खण्डित हिन्दुस्तान को जो हिन्दुओ का अपना ही हिस्सा था हिन्दू राज्य' घोषित कर दिया होता तो ये समस्याये आज देश मे पैदा ही नही होती और देश का नक्शा ही आज कुछ और ही होता। नेपाल विश्व का एक छोटा सा देश है जो हिन्दू राज्य है वहा कभी कोई इस प्रकार की अलगाववादी माग नही होती न ही वहा साम्प्रदायिक दगे ही होते हैं। किन्तु पण्डित नेहरू के हिन्दू विरोधी स्वभाव के कारण उन्होने इसे "हिन्दू राज्य" की बजाये धर्मनिरपेक्ष राज्य बना दिया। किन्तु जब बाद मे उन्हे यह जानकारी हुई कि धर्मनिरपेक्ष राज्य तो केवल हिन्दू राज्य ही हो सकता है तो उन्होने धर्मनिरपेक्षता की आड मे ही कांग्रेस के लिये वोट बैंक बनाने के लिये अल्पसंख्यक सम्प्रदायो विशेषकर मुसलमानों की तुष्टीकरण की नीति अपना कर उन्हे अनाप-शनाप, अनुचित-सुविधाये देनी आरम्भ कर दी। यही तक नही उनके शरीयत और कुरआन के आधार पर "मुस्लिम परसनल ला" भी बना दिया गया जो हिन्दू हितो की उपेक्षा कर उनकी बलि चढा कर ही किया गया। यहा तक कि हिन्दुओ के मानबिन्दू गोवश की हत्या को रोकने की माग को स्वीकार न कर आज तक ३७ सालो मे भी कोई केन्द्रीय कानून उस पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये नही बनाया।

वास्तव में पजाब के उग्रवाद और खालिस्तान की माग के पीछे प्रेरणा देने वाली काश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली सविधान की अस्थायी धारा ३७०ही है जो उस समय थोडी अवधि के लिये पण्डित नेहरू की कृपा से ही सविधान में जोडी गयी थी। जो आज तक उसी तरह स्थायी धारा की तरह ही मौजूद है जब कि उसे अब तक कभी का समाप्त कर दिया जाना चाहिए था। यह धारा ही न केवल पजाब अपितु सारे देश में पृथकतावादी तत्वो और मनोवृत्ति को बढावा देने की मुख्य जड है जिसके कारण काश्मीर घाटी पाकिस्तान बन चुकी है और इसी घाटी मे पजाब के उग्रवादी तत्वो को प्रशिक्षण देने तथा हथियारो की सप्लाई पाकिस्तान द्वारा,

इसी के माध्यम से सुविधायें उपलब्ध करायी जा रही है। अब तो काश्मीर घाटी के मुस्लिम कश्मीरी पण्डितो, जम्मू के हिन्दुओं तथा लद्दाख के बौद्धो को भी वहा से निकाल कर पूरे कश्मीर को ही दार-उल-इस्लाम बनाना चाहते हैं इसी कारण वे वहां के इन गैर मुस्लिमों को आतंकित कर वहा से निकलने के लिये विवश करना चाहते हैं।

पजाब की उग्रवादी तथा खालिस्तान की माग के पीछे भी यही धारा ३७० से प्रेरित होने वाली मनोवृत्ति ही काम कर रही है। पजाब के उग्रवादी कश्मीर घाटी के मुसलमानो की तरह ही पजाब के हिन्दुओ की हत्यायें कर उन्हे आतकित कर वहा से निकाल कर एक छत्र अपना बहुमत रखना चाहते हैं और वहा केवल सिखो को रहने देना चाहते हैं ताकि बिना सरकार से मांग ही उन्हे खालिस्तान मिल जायें क्योकि जब वहा सारे सिख ही होगे तो चुनावो मे सरकार भी उनकी ही बनेगी और उसके बाद फिर वे भी काश्मीर जैसी धारा ३७० की माग करगे जो सरकार को देनी ही पडेगी।

इन दिनो हमारे कुछ काग्र सी मित्रो ने श्री राजीव गाधी को दूसरा महात्मा गांधी कहना भी आरम्भ कर दियाहै वैसे यह कहना उनका ठीक ही है क्योकि महात्मा गाधी ने भी यही कहा था कि यहा पाकिस्तान नही बन सकता और यदि बना तो मेरी लाश पर बनेगा किन्तु पाकिस्तान बन गया, गाधी जी जिन्दा रहे और उन्होने ही उसकी स्वीकृति पर अपना ठप्पा लगाया। यही बात श्री राजीव गाधी ने दिनाक १६ मई को बोट क्लब पर भाषण देते जोरदार शब्दो मे कही है कि यहा खालिस्तान नही बन सकता। किन्तु जिन नीतियो पर अब वे चल रहे हैं तो खालिस्तान बनने को वह तो क्या कोई भी प्रधानमन्त्री नही रोक सकेगा और ऐसा लगता है कि इनके कार्यकाल मे ही यह बनेगा और महात्मा गाधी की तरह ही इन्हे भी उसकी स्वीकृति पर अपना ठप्पा लगाना पडेगा और धारा ३७० जैसी सुविधा भी देनी होगी। इस प्रकार तो ठीक दूसरे महात्मा गाधी की ही श्री राजीव जी भूमिका निभायेंगे। अभी १६ मई के हिन्दुस्तान टाइम्स के समाचारानुसार वहा पजाब में उग्रवादियो की "जोंइट फार पजाब पैरेलल गवनमेन्ट' पूरी तरह स्वर्ण मन्दिर से अपना काम चला रही है उनकी पुलिस, कमाडों दस्ते तथा अदालतें स्थापित हैं अभी हाल ही मे स्वर्ण मन्दिर स्थित अदालत से एक मास बेचने वाले दुकानदार को इस आशय का समन भेजा गया है कि वह अमुक तारीखको अदालत के सामने हाजिर होकर इसका स्पष्टीकरण दे कि मना करने पर भी वह मांस क्यों बेचता है? इसका यह अर्थ हुआ कि जनता मे यह भ्रम हो गया है अब देश मे कोई सरकार काम नहीं कर रही है जिसके मन मे जो आता है कह देता है और जो चाहे सो कर लेता हैं इसी प्रकार तेलगु देशम की सरकार ने मुख्यमन्त्री के चित्र के एक रुपये के नोट की करेन्सी भी चला रखी है और बाबरी मस्जिद की रैली पर बोट क्लब पर इमाम अब्दुल्लाह बुखारी ने तो खुलकर हजारो मुसलमानो के सामने यह फतवा भी दे दिया कि हम इस देश को नहीं मानते, इस सरकार को नहीं मानते, इसकी अदालतो को नही मानते और न ही मुसलमानो के मामले इन अदालतो के फैसलो को ही मानते हैं। इतना कुछ कहने पर भी दिल्ली तथा केन्द्र सरकार हरकत में नहीं आयी इसका यह अर्थ हुआ कि इस देश मे कोई सरकार ही नहीं हैं अन्यथा तो इस प्रकार के देशद्रोही भाषण देने वाला व्यक्ति पर अब तक जेल के सीखचो मे बन्द होकर देशद्रोह का केस चलाया जाना चाहिये था। अब जनता मे यह बात घर करती जा रही है कि हमारे देश मे अब कोई न सरकार है न कोई कानून ही है।

अभी समय है जब, कि हमारे सत्ताधारी राजनेता, तथा उनके सलाहकार सच्चाई को पहिचाने और स्वीकार करें और झूठी प्रतिष्ठा को छोडकर देश हित के लिये ईमानदारी से उग्रवाद और खालिस्तान की पजाब की समस्या को हल करना चाहते हैं तो उन्हें कुछ कडवे घूट निगलने होंगे। यह हो सकता है कि एक बार देश में थोडी बहुत खलबली मचे किन्तु उसे सख्ती से दबाया जा सकता है और किसी को बख्शा न जाये। अभी हाल ही मे जो कश्मीर में काग्रेस के साथ मिली-जुली सरकार बनी है उसके मुख्यमन्त्री फारूक अब्दुल्लाह ने यह बात पुन दोहरा दी है कि धारा ३७० को समाप्त नही किया जाएगा जब कि इस धारा का अविलम्ब समाप्त होना ही देश के अलगाववाद को समाप्त होना है। इस धारा को समाप्त करने के लिये ही सरकार को कडवा घूट निगलना होगा और कठोरता से कार्यवाही करनी होगी। उसे पजाब समस्या के स्थायी समाधान के लिए निम्न कार्यवाही करनी होगी —

१—कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली सविधान की अस्थायी धारा ३७० को अविलम्ब समाप्त कर दिया जाए। जो अब सरलता से की जा सकती है क्योकि अब काग्र स की मिली-जुली सरकार काश्मीर मे है।

२—पजाब से सिखो का बहुमत समाप्त करने के लिए एक बार पुन हिमाचल प्रदेश, हरियाणा प्रदेश तथा पजाब को मिलाकर एक ही प्रदेश बनाना होगा।

३—सिखो को पजाब नाम से भी विशेष लगाव होने के कारण इस समस्या को काफी प्रोत्साहन मिल रहा है। इसलिए इस प्रदेश का पजाब नाम बदल कर अन्य कोई नाम पचनद या जो उचित लगे रख दिया जाए।

यदि ऐसा किया गया तो ही इस पजाब समस्या का कोई स्थायी समाधान हो सकेगा जो बहुत जल्द ही हो जाएगा। अन्यथा तो कोई भी प्रधानमन्त्री आ जाए इस पजाब समस्या का कोई स्थायी हल नही निकल सकता और खालिस्तान बनकर ही रहेगा। ●

चौधरी चरणसिंह : संस्मरणों के आइने में

[लेखक : प्रसिद्ध पत्रकार श्री शिवकुमार गोयल]

लखनऊ की एक शाम। दिल्ली से उ० प्र० के दौरे पर गये हुए पत्रकारों का दल तत्कालीन मुख्यमन्त्री चौधरी चरणसिंह जी के बंगले के लान में बैठा हुआ था। चौधरी साहब चाहते थे कि मेरठ, बुलन्दशहर तथा अन्य स्थानों से उनसे भेंट करने आये कुछ व्यक्तियों से मुलाकात कर, उन्हें विदा करने के बाद वे हमसे बातें करें।

'विश्वम्भर तूने मेरठ से इतनी दूर आने की तकलीफ किसलिये की?' चौधरी साहब ने सबसे किनारे बैठे हुए एक युवक से पूछा।

चौधरी साहब, आपके दर्शनों के लिए यों ही चला आया हूँ।' उसने कहा तथा कुछ क्षण रुककर वह बोला, 'शराब की दुकान नीलाम मे होने वाली है। यदि आप किसी से कह दें तो काम हो जाये।'

मैं उनके बिलकुल पास की कुर्सी पर बैठा ये सब बातें सुन रहा था। चौधरी साहब का चेहरा तमतमा उठा। परन्तु उन्होंने गुस्से को दबाते हुये बहुत आहिस्ता से कहा, 'भले आदमी, तुझे और कोई काम नही मिला। अब खेतीबाडी छोडकर दलाली करके पैसा कमाना चाहता है। शराब और मुकदमेबाजी ने तुम लोगों नाश कर डाला। और तू मुझसे यह आशा करता है कि मैं तेरे लिये मौत का कुआं खोदने मे तेरी मदद करू ?'

एक पत्रकार के नाते मुझे चौधरी साहब से अनेक बार मिलने और खास तौर पर आने का अवसर प्राप्त होता रहा है। मैंने सदैव यह देखा है कि चौधरी साहब स्पष्टवादी दो टूक बात कहने वाले तथा किसी भी गलत बात को स्वीकार न करनेवाले तेजस्वी नेता हैं, अपनी दोटूक बातों तथा किसी गलत व हृदय के विपरीत काम न करने के स्वभाव ने उनके विरोधियों को भी जन्म दिया। परन्तु यह सब अहसास करने के बावजूद उन्होंने कभी अन्य राजनीतिक नेताओ की तरह व्यवहार कुशल बनने लगी चिपटी बातें करने तथा सभी को प्रसन्न करने के लिए 'झांसेबाजी' का सहारा लेना स्वीकार नही किया। चौधरी साहब का यह स्वभाव प्रारम्भ से ही रहा था।

बदमाश की पैरवी नहीं करूंगा !

वे १९३० मे गाजियाबाद मे वकालत करते थे। एकबार जब बलात्कार के आरोप मे एक युवक का केस उनके पास आया और उन्हें बताया गया कि झूठा है तथा आपसी रंजिश के कारण उस पर यह गम्भीर आरोप लगाया गया है' तो प्रारम्भ मे उन्होंने मामला पैरवी के लिए स्वीकार कर लिया। बाद मे एक दिन उसी गांव के एक विश्वस्त आदमी से उन्हें यह पता लगा कि उक्त युवक वास्तव में कुख्यात अपराधी है तथा इस प्रकार के अपराधो का आदी है तो उन्होंने अदालत में मुकदमा पेश होने वाले दिन युवक के आने पर पैरवी करने से स्पष्ट इंकार कर दिया तथा कहा 'मैं किसी बलात्कारी एवं बदनाम को कानून के शिकन्जे से छुड़ाने का पाप नहीं कर सकता। उनके एक साथी वकील ने तर्क भी दिया, 'हमें इन बातो से क्या लेना देना है। परन्तु चौधरी साहब अपने निर्णय से टस से मस न हुए तथा उन्होने एक सप्ताह पहले ली हुई फीस वापिस अपने मोहर्रिर से कह कर वापिस करा दी।

चौधरी साहब का जन्म २३ दिसम्बर सन १९०२ को मेरठ जिले ग्राम नूरपुर मे हुआ था। उनके पिता नूरपुर तथा भदौला आदि ग्रामो में खेती करते थे, वे इस क्षेत्र के सम्मानित किसानों में गिने जाते थे।

उन्होंने सन १९२३ में आगरा विश्वविद्यालय से बी० एस० सी० किया तथा १९२५ मे एम० ए० कानून की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत उन्होंने गाजियाबाद आकर वकालत शुरू की। उसी दौरान गाजियाबाद में प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता तथा शायर श्री गोपीनाथ 'अमन' भी वकालत तथा समाज सेवा में लगे थे, दोनों की भेंट हुई तथा दोनों ने २५ रुपये मासिक पर मकान लिया तथा एक साथ रहना शुरू कर दिया।

चौधरी साहब गाजियाबाद प्रैक्टिस के दौरान ही कांग्रेस तथा आर्य-समाज मे सक्रिय भाग लेने लगे। वयोवृद्ध बाबू सम्पूर्णानन्द मुख्तार उन दिनों उनके निकट के मित्रों में थे। उनका जीवन शुरू से ही सात्विक तथा नियमित था। बीडी सिगरेट, हुक्के का व्यसन उन्होंने कभी पास नहीं फटकने दिया, प्रारम्भ से ही अपने जीवन को सादा तथा सात्विक रखा।

गाजियाबाद में उन्हीं दिनों एक एक्जीक्यूटिव आफिसर ने किसी स्थानीय लडकी का अपहरण कर लिया तथा इस घटना से नगर में बवडर मच गया। नगर के सभ्रांत नागरिकों ने लडकी का पता चलाने के लिए एक समिति का गठन किया तो चौधरी साहब भी उसमें सक्रिय थे। वे वकालत की चिन्ता न करके लडकी की वापसी के लिए दौडधूप में लगे रहे तथा तब तक चुप न बैठे जब तक लडकी अपने घर वापस न आ गई।

इसी प्रकार एक पाखण्डी साधु ने गाजियाबाद आकर डेरा जमाया तथा अपने को अवतार व सिद्ध बता कर वह विशेष कर महिलाओं को अपने जाल में फांसने लगा। उसके चरित्र के विषय में लोगों का सन्देह हुआ तो नगर में सनसनी फैल गई, सभ्रांत नागरिकों ने उसके विरुद्ध अभियान चलाया चौधरी साहब उसमे भी सबसे आगे थे।

चौधरी साहब वकालत से अधिक रुचि आर्यसमाज तथा कांग्रेस के कार्यों में लेते थे। वे साप्ताहिक सत्संगों में सक्रिय भाग लेते थे। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान प० रामचन्द्र देहलवी व श्री कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर से उनका निकट का सम्पर्क रहा।

एक बार वयोवृद्ध नेता शायर श्री गोपीनाथ अमन ने अपने संस्मरण सुनाते हुए बताया था कि १९३० मे उन्हें तथा चौधरी साहब को नमक बनाने के आरोप में एक साथ आरोप में एक साथ गिरफ्तार किया गया था। इस प्रकार वे नमक कानून का उल्लंघन करते पकडे गए तथा मेरठ जेल में बन्द रहे।

इस संदर्भ में मजेदार बात यह है कि चौधरी साहब के मकान से उनकी भैंस कुर्क कर ली गई तो कांग्रेसी नेता मास्टर सुन्दरलाल जी ने जिलाधीश श्री बनर्जी के पास जाकर कहा भैंस से तो उनके परिवार को दूध मिलता है उसकी जगह आप चौधरी साहब की लाइब्रेरी कुर्क क्यों नहीं कर लेते? तब जाकर भैंस की कुर्की से मुक्त किया गया।

मेरठ जिले के छपरौली निर्वाचन क्षेत्र से वे सन १९३७ से हमेशा विधायक चुने जाते रहे। १९४६ में पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त की सरकार में संसदीय सचिव बनाये गये। इसके बाद १९४८ से १९५५ तक वे राज्य विधान मण्डल दल के मन्त्री रहे जून १९५१ में वे राज्य के मन्त्रिमण्डल में शामिल किये गये १९५२ मे वे डा० सम्पूर्णानन्द के मन्त्रिमण्डल में राजस्व और कृषिमन्त्री रहे, चौधरी साहब अपने सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भ से ही निर्भीक व स्पष्टवादी रहे हैं मन्त्रिमण्डल से अलग हो गये।

नेहरू जी अत्यन्त सबल प्रधानमन्त्री थे उनके समक्ष किसी भी नेता ने उनके विचारों को चुनौती देने का कभी साहस नहीं किया। किन्तु चौधरी साहब पहले व्यक्ति थे जिन्होंने १९४७ में नागपुर में हुए कांग्रेस कार्य समिति के अधिवेशन में नेहरू जी के सहकारी खेती सम्बन्धी विचारों को अव्यवहारिक बताकर चुनौती दी उन्होंने तर्कपूर्ण ढंग से यह सिद्ध किया कि सहकारी खेती में व्यक्तिगत रुचि के अभाव के कारण कृषि उत्पादन गिर जायेगा।

चौधरी साहब १९६० में श्री चन्द्रभान गुप्त के मन्त्रिमण्डल में गृह तथा कृषिमन्त्री सुचेता कृपलानी के मन्त्रिमण्डल में भी कृषि तथा वनमन्त्री रहे वे १९६७ में चुनाव के बाद कांग्रेस ने जैसे तैसे जोड़-तोड़ कर सरकार बनाने का प्रयास किया। श्री चन्द्रभान गुप्त कांग्रेस के नेता बने हुए। चौधरी साहब ने जब कांग्रेस की स्थापना कर कांग्रेस से अलग होने की घोषणा कर दी। इसी से उनका कांग्रेस से मतभेद हो गया तथा उन्होंने अप्रैल १९६७ में कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया।

१ अप्रैल को संयुक्त विधायक दल का गठन हुआ और ३ अप्रैल को वे मुख्यमन्त्री बने। संविद सरकार के विभिन्न घटकों में आपसी खींचतान शुरू

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य शिक्षा सभा की वार्षिक बैठक सम्पन्न

डी. ए. वी. [illegible] हिन्दी है [illegible]

आर्य शिक्षा सभा के अन्तर्गत डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति नई दिल्ली की वार्षिक अधिवेशन ३० मई १९८७ को सभा प्रधान श्री प्रो० वेद व्यास जी की अध्यक्षता में आर्य समाज, मन्दिर मार्ग में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित सज्जनों को सम्बोधित करते हुए डी० ए० वी० कालेज समिति के वयोवृद्ध सचिव श्री दरबारीलाल जी ने कहा कि डी० ए० वी० आन्दोलन का इतिहास बड़ा शानदार रहा है। इस आन्दोलन का आरम्भ आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए किया गया था। आपने कहा कि शिक्षा की व्यवस्था करना सरकार का दायित्व है। हम लोग डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाएं केवल इसलिए चलाते हैं कि इनके माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार हो। संस्थाएं चलाना हमारा साध्य नहीं है वरन् साधन मात्र है। आपने इस बात पर विशेष बल दिया कि प्रत्येक स्कूल व कालेज में छात्रों को अनिवार्यतः धर्मशिक्षा दी जाए। उन्होंने करतल ध्वनि के बीच में कहा कि उनके द्वारा जारी किए गए उन दो परिपत्रों का आम जनता में बहुत स्वागत हुआ जिसमें उन्होंने आज शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी का प्रयोग करने तथा गुडमार्निंग शब्द की बजाए नमस्ते का प्रयोग करने और नैकटाई का बहिष्कार करने के लिये कहा था। अनेक प्रतिनिधियों ने इस बात पर जोर दिया कि केवल परिपत्र जारी होना ही पर्याप्त नहीं है अपितु यह भी देखना होगा कि इन आदेशों का पालन भी हो।

उप प्रधान श्री गुलशनराय मल्हा ने अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप अपने आचरण से अपने शिष्यों में धर्म भावना उत्पन्न करें क्योंकि किताबी पढ़ाई की अपेक्षा अध्यापक का आचरण विद्यार्थियों पर विशेष प्रभाव डालता है।

वैदिक शिक्षा संस्थान के आचार्य प्रो० रत्नसिंह जी ने कहा कि आज के विक्षुब्ध वातावरण को देखकर और बाबू दरबारीलाल जी के परिपत्रों का जितना स्वागत हुआ है उससे मेरा गला रुंध गया है अतः अधिक कह पाना मेरे लिये कठिन है। श्री दरबारीलाल जी के भाषण से मुझे डी० ए० वी० आन्दोलन का पुराना युग याद आ गया है। उनके कार्यान्वयन मे सभी प्रिंसिपलों और अध्यापकों के हार्दिक सहयोग की कामना करता हूं। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रिंसिपलों और अध्यापकों का भी एक विशेष शिविर लगवाया जावे जिसमें उन्हें वैदिक सिद्धान्तों की गहन शिक्षा दी जाये ताकि वे अपने शिष्यों पर धर्म की छाप लगा सकें।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने श्री दरबारीलाल जी द्वारा प्रकाशित दोनों परिपत्रों की काफी अधिक प्रशंसा की। उन्होंने यह भी बताया कि स्थानाभाव के कारण हम वैदिक शिक्षा संस्थान में अधिक विद्यार्थी प्रविष्ट नहीं कर सके। आशा है इस वर्ष के पांच विद्यार्थियों की तुलना में अगले वर्ष हम अधिक विद्यार्थियों को संस्थान में प्रवेश दे सकेंगे। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि विद्यार्थियों को जो पुरस्कार दिए जा रहे हैं उनमें "सत्यार्थ प्रकाश" और "महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र" भी दिया जाए। आर्य शिक्षा सभा की बैठक की कार्यवाही वैदिक शिक्षा संस्थान के नव प्रविष्ट विद्यार्थियों के भाषणों से समाप्त हुई। उनके भाषणों की सभी उपस्थित सज्जनों ने सराहना की।

अन्त में सभा के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी ने कहा कि श्री दरबारी लाल जी ने नैकटाई के विरोध में परिपत्र जारी करके मेरे मन की बात कही है। उन्होंने यह भी कहा है कि मैं तो यह भी चाहता हूं कि बन्द गले के कोट का प्रयोग किया जाए क्योंकि भारतीय वेशभूषा मे इसका विशेष स्थान है।

सेवा का अवसर प्रदान करने आर्य शिक्षा सभा के मन्त्री श्री तिलकराज गुप्त ने शिक्षा और अपनी ओर से भी सभी प्रिंसिपलों अध्यापकों और अध्यापिकाओं का तथा विद्यार्थियों को धर्म शिक्षा और संस्कृत की परीक्षाओं को सफल बनाने में दिए गए सहयोग के लिये आभार प्रकट किया।

—रामनाथ सहगल मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा,
मन्दिर मार्ग नई दिल्ली।

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ

श्रद्धेय स्वामी सत्यप्रकाश जी के आशीर्वाद और सरक्षण मे "अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ" का पजीकृत सोसायटी के रूप में गठन किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य आर्य समाज के सिद्धातो को मानव के सर्वांगीण विकास के लिए स्थायी रूप देना धर्म और सस्कृति के सार की वृद्धि करना वैदिक साहित्य में अनुसन्धान और अध्ययन करने के लिए विद्वानों को प्रोत्साहित करना और इस कार्य की पूर्ति के लिए मिशनरी विद्वानों को तैयार करना है।

इस वर्ष वेद पीठ की अनुसन्धान पत्रिका का प्रवेशाक निकालने की योजना है। अतः विभिन्न विश्वविद्यालयो और सस्थाओ के विद्वान् अनुसन्धानकर्ताओं तथा अन्य वेदप्रेमी महानुभावो से अनुरोध है कि इन विषयो से सम्बन्धित क्षेत्रो में अनुसन्धान का कार्य कर और अपने शोधपत्र को जो अग्रेजी या सस्कृत भाषा मे ही हो वेद पीठ की पत्रिका में प्रकाशन के लिए भेज। पहले अंक के लिए ३१ अगस्त ८७ तक पत्र आ जाने चाहिए जो अनुसन्धान पत्र छपने के लिए स्वीकार हो जायेंगे उनको उचित पारिश्रमिक भी दिया जाएगा।

सत्यानन्द आर्य,
१ ई/९ स्वामी रामतीर्थ नगर,
झण्डेवालान एक्सटेंशन
नई दिल्ली ११००५५

प्रौढ़ वैदिक मिशनरी एवं अध्यापक शिविर सम्पन्न

वेद मन्दिर (वृन्दावन मार्ग) मथुरा मे दिनाक २४ से ३० मई तक व्यष्टि और समष्टि के निर्माण की भावना तथा पारिवारिक दायित्वो से मुक्त प्राय महानुभावो मे समाज ग्राम सेवा और अध्यापक बन्धुओं में कर्त्तव्य निष्ठा जगाने की भावना से आयोजित यह शिविर अत्यधिक सफल रहा।

शिविर मे ४० प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया जिनमे ८ अध्यापक थे। श्री स्वामी प्रकाशानन्द जी, श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती श्री डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी स्वामी ब्रह्मानन्द जी वेदभिक्षु श्री आचार्य प्रेमभिक्षु जी वानप्रस्थ एव श्री प० ओंकारमिश्र प्रणव शास्त्री आदि वैदिक विद्वानो ने योग वैदिक कर्मकाण्ड जनसेवा एव ग्राम सेवा सम्बन्धी क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया।

साधना स्वाध्याय एव सेवा विषयक व्रत दीक्षा आचार्य श्री महात्मा प्रेमभिक्षु जी द्वारा दी गई। श्री छीतरमल जी आर्य हर सौली (अलवर) ने वानप्रस्थ दीक्षा के साथ धर्ममुनि नाम धारण किया तथा साधना स्वाध्याय और सेवा का व्रत ग्रहण किया।

चौधरी साहब के संस्मरण

(पृष्ठ ९ का शेष)

हुई तथा अगले वर्ष अग्रह फरवरी ६८ को ही उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। विधानसभा भंग कर दी गयी तथा १९६९ से विधानसभा के मध्यावधि चुनाव हुए। चौधरी साहब ने ने एक नये दल भारतीय क्रांति दल का गठन किया जब उन्होंने राज्य विधानसभा के निर्वाचन में स्थान प्राप्त किये तो उनकी लोकप्रियता की धाक तमाम देश में जम गई।

फरवरी १९७० में पुन मुख्यमन्त्री निर्वाचित हुए। किन्तु दल बदल ने राजनीतिक अस्थिरता पुन उत्पन्न कर दी तथा अगस्त में ही उन्हें त्यागपत्र देना पड़ गया।

चौधरी साहब की राजनीतिक ध्रुवीकरण में प्रमुख भूमिका रही है। उनका कांग्रेस छोड़ने के बाद से ही यह मत रहा है कि जब तक देश में एक सशक्त विपक्षी दल न होगा तब तक लोकतन्त्र सुचारु रूप से चल न पायेगा।

२६ जून १९७५ को अन्य नेताओं के साथ नेताओं के साथ चौधरी साहब को भी जेल भेज दिया गया। दिल्ली की तिहाड़ जेल में वे बन्दी रखे गये।

मार्च १९७६ में उन्हें रिहा किया गया।

२३ मार्च १९७६ को उत्तर प्रदेश विधानसभा में विरोधी दल के नेता के रूप मे उन्होंने दो ढाई घण्टे तक अपने भाषण में आपात्काल तथा उसके दौरान हुए अत्याचारों के सप्रमाण प्रहार किये, उन्हें सुनकर कांग्रेसी सदस्य तथा मुख्यमन्त्री निरुत्तर हो गये थे।

जनवरी १९७७ मे चुनाव की घोषणा होने के बाद जयप्रकाश जी के आदेश पर चौधरी साहब ने जनता पार्टी के गठन की पहल की थी।

पता था कि पटवारी लोग रिश्वत के बल पर जमीन की हेराफेरी करने के लिये बदनाम हैं। एक बार जब उन्होंने हड़ताल की धमकी दी, तो उन्होंने उनके बस्ते रखवा कर पटवारी शब्द को ही हमेशा के लिये शब्दकोश से हटा दिया था भले ही बाद में उनका लेखपाल के रूप में पुनर्जन्म हो गया हो।

एक बार वे अपने प्रदेश के किसी जिले में गये। जिला उद्योग अधिकारी उनकी अगवानी के लिये आया तो उन्होंने सहज भाव से पूछ लिया, इस जिले मे कौनसा प्रमुख उद्योग है। उसने उत्तर दिया उद्योग तो यहा कोई नही है यह सुनकर उनका चेहरा तमतमा उठा तथा बोले, फिर आप किस कारण अपनी फौज के साथ यहां क्यों से जमे हुए हैं? और दूसरे ही दिन उद्योग विभाग को यहा से उठाकर अन्यत्र भेज दिया।

हिन्दी के अनन्य भक्त

चौधरी साहब हिन्दी तथा भारतीयता के अनन्य भक्त रहे हैं। १९४८ में मेरठ मे आयोजित अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आप स्वागताध्यक्ष थे। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, आचार्य नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ आदि ने सम्मेलन की सफलता का श्रेय आप ही को दिया था। चौधरी साहब ने अपने स्वागताध्यक्षीय भाषण में कहा था, जब तक हम अंग्रेजी की तरह अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी को राजकाज की भाषा नहीं बनायेंगे, हमारी आजादी अधूरी रहेगी।

चौधरी साहब ने अपने मन्त्रालयों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग प्रारम्भ करा कर आदर्श उपस्थित किया। हिन्दी साहित्यकारों तथा पत्रकारों का वे सदा आदर करते रहे हैं। मैंने अनेक बार देखा है कि वे मेरठ में वयोवृद्ध हिन्दी पत्रकार तथा वैदिक प्रभात के सम्पादक श्री वि० स० विनोद तथा प्रेमी जी को अंग्रेजी के समाचारपत्रों की अपेक्षा हमेशा अधिक महत्व देते थे।

चौधरी साहब समाजी थे परन्तु कट्टरपन्थी न होकर उदार थे। वे सभी धर्मों तथा सम्प्रदायों का सम्मान करते थे परन्तु वैदिक धर्म के प्रति उनकी विशेष निष्ठा थी।

चौधरी साहब महात्मा गांधी स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा लौहपुरुष सरदार पटेल को अपना आदर्श मानते थे। उनके विरोधी भी उन्हें कुशल प्रशासक तथा ईमानदार व्यक्ति के रूप में देखते थे।

आर्यरत्न स्व० चौधरी चरणसिंह जी के देहावसान पर

आर्य संस्थाओं द्वारा पारित प्रस्ताव—

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग (म०प्र०)

आर्यसमाज बीदराबाद

आर्यसमाज गया

आर्य उपप्रतिनिधि सभा पीलीभीत

गुरुकुल बमदार (मुजफ्फरनगर)

भवानी एम० डी० आर्य हिन्दी बाजार अजमेर

भारत सेवा दल कनाट्ट्रेट आगरा

नगर महिला आर्य समाज इलाहाबाद

राजनीतिक जयचन्दो के वक्तव्य

अंग्रेजी के समाचार पत्र, हिन्दुस्तान टाइम्स के दिनाक १० जून १९८७ के अक में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार लोकदल (अजीत) के महामन्त्री डा० सुब्रमण्यम स्वामी ने मुस्लिम समुदाय की पैरवी करते हुए कहा है कि मेरठ मे हुए साम्प्रदायिक दगो मे १५० से अधिक मुसलमान २२ मई १९८७ को पुलिस की गोलियो से मारे गए और उनकी लाशो को हाशिमपुरा के पास नदी मे फेंक दिया गया। श्री स्वामी के अनुसार अल्पसख्यक समुदाय का यह सामूहिक नरसहार उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा ही आयोजित किया गया था। केन्द्रीय सरकार को इसकी जाच करानी चाहिए।

श्री सुब्रमण्यम स्वामी जैसे एक जिम्मेदार राजनेता द्वारा इस प्रकार के गैर जिम्मेदार वक्तव्य देना बडे दुख की बात है। उनका यह वक्तव्य इस बात का प्रमाण है कि हमारे देश के नेता वोटो की राजनीति मे फसकर अपना विवेक भी खो बैठते हैं। या तो उन्हे वास्तव मे ही सत्य और असत्य का ज्ञान नही रहता या वे कुर्सी के लोभ मे, अल्पसख्यको के चरण चुम्बन की नीति के अनुसार, जानबूझकर सत्य पर परदा डालने का प्रयत्न करते हैं। डा० स्वामी को मेरठ के दगो मे मरने वाले मुसलमानो की सख्या तो याद रह गयी लेकिन १९ मई १९८७ की काली रात से २२ मई तक कितने हिन्दुओ को मुसलमानो द्वारा कत्ल किया गया कितनो को जिंदा जलाया गया, कितनी हिन्दू महिलाओं की अस्मत लूटी गयी कितने घटो मे पेट्रोल बमो से आग लगायी गयी, कितनी दूकानें लूटी गयी। इन सबका हिसाब क्या डा० स्वामी को नही मालूम ?

यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि इस बार मेरठ और दिल्ली मे हुए दगे महज साम्प्रदायिक झगडे नही थे, बल्कि एक पूर्व नियोजित षडयन्त्र के अनुसार हिन्दुओ पर हुए कातिलाना हमले थे। फिर इतना तो डा० स्वामी भी जानते होगे कि प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होना एक साधारण नियम है। इसके अनुसार यदि जवाबी हमलो मे, तथा पुलिस द्वारा सुरक्षा की प्रक्रिया मे मुस्लिम आततायी मारे गए तो यह कोई आश्चर्य की बात नही है। आश्चर्य केवल इस बात का है कि आजादी के ४० साल बाद भी हमारे राजनेता अपनी राष्ट्रीयता धर्म और संस्कृति को नही पहचान सके और अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए देश को एक बार फिर गुलामी की गर्त मे ढकेल रहे हैं। यदि यही हाल रहा तो वह दिन दूर नही जब हिन्दू अपने ही देश मे पराए होकर और गजेबी शासन मे गुलामो की जिन्दगी जीने पर मजबूर होगे यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि यहा ऋषियो मुनियो और साधु सन्तो के साथ साथ जयचन्द भी पैदा होते रहे हैं।

श्री गुरुकुल चित्तौडगढ मे प्रवेश आरम्भ

महायता व मान्यता प्राप्त, देश का सुप्रसिद्ध शिक्षणालय श्री गुरुकुल चित्तौडगढ अरावली की सुन्दर पहाडियो म गभीरी नदी के तट पर एकान्त स्थल पर अवस्थित है। शिक्षा यहा सर्वथा निशुल्क है। पहली से आठवी तक यहा सस्कृत विशेष के साथ अर्वाचीन सभी विषय पाठयक्रम मे हैं। सस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी से आर्ष पद्धति पर आधारित प्राचीन व्याकरण व वेद निश्चित प्रक्रिया से मध्यमा,शास्त्री व आचार्य कक्षा तक की पढाई व परीक्षा का समावेश है। विगत वर्षो से यहा का परीक्षा परिणाम उत्तम रह रहा है। पढाई १ जुलाई से आरम्भ होनी है। नवीन बालको का प्रवेश २० जून से आरम्भ होता है। आप भी अपने बालक के भविष्य निर्माण की दिशा मे उसे गुरुकुल चित्तौडगढ मे प्रवेश दिलाकर निश्चिन्त होसकते हैं। प्रवेश सम्बन्धी अन्य जानकारीके लिए मुख्याधिष्ठाता श्री गुरुकुल चित्तौडगढ, राजस्थान ३१२००१ इस पते से पत्रव्यवहार कर सम्पर्क करें।

श्री अमर स्वामी रोग शैया पर

आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी श्री अमर स्वामी सरस्वती अत्यन्त रुग्ण अवस्था मे ग्रस्त है। उनका उपचार चल रहा है फिर भी अहर्निश स्वाध्याय पुस्तक लेखन व सैकडो की सख्या मे दर्शनार्थ आने वाले भक्तो से बड धैय व सहनशीलता के साथ वार्तालाप करते है। चेहरे पर चिन्ता का लवलेश नही। वे आर्य समाज के महाधन हैं प्रभु उनको स्वास्थ्य प्रदान करे। —सम्पादक

समाजों के वार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज खामगाव महाराष्ट्र—प्रधान श्री जगदीशप्रसाद 'जामिड' आर्य मन्त्री श्री श्रीराम वसिष्ठ चुने गये।

आर्यसमाज रेलवे रोड अम्बाला शहर—प्रधान श्री डा० वेदप्रकाश गुप्ता मन्त्री श्री हरबंसल ल चानना चुने गए।

आर्यसमाज दार्जलिंग—प्रधान श्री रत्नबहादुर मन्त्री डा० रणवीरसिंह चुने गये।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद—प्रधान श्री विक्रमसिंह आर्य मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र आर्य चुने गये।

आर्यसमाज तिजारा (अलवर)—प्रधान श्री रामावतार आर्य मन्त्री श्री रतनलाल आर्य चुने गये

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा वाजेगाव नादेड वार्षिक निर्वाचन प्रधान श्री दौलतराम चडढा मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र गुरु जी कोषाध्यक्ष दौलतराव गिरवलकर वेद प्रचार अधिष्ठाता प० गणेशदेव आर्य चुने गए।

अतरौली (जिला अलीगढ) आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर २१ जून से ३० जून ८७ तक लगेगा

अतरौली (अलीगढ)

११ जून से २५ जून तक गुरुकुल झज्झर मे अखिल भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण शिविर होने से हमने अपनी तिथिया बदल दी हैं।

अब अतरौली अलीगढ के के०एम०बी० इन्टर कालेज मे आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर २१ जून से ३० जून १९८७ ई० तक लगेगा। जिसमे डा० देवव्रत व्यायामाचार्य उपप्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल एव प्रधान सचालक श्री प० बाल दिवाकर जी हस और सार्वदेशिक सभा प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती पधार कर आर्य वीरो का मार्ग दर्शन करेंगे। शिविर की तैयारिया जोर शोर से प्रारम्भ हो गई हैं कम से कम २०० आर्य वीर इस शिविर मे दीक्षित होगे।

—जयनारायण आर्य
उपसचालक

मलियाना हत्याकांड

(पृष्ठ १ का शेष)

पी०ए०सी०के जवानो ने बिना किसी कारण से वहा दो घण्टे तक गोली चलाई और एक समुदाय के लोगो को मारा गया। और मलयाना एक दूसरा बेरुत बन गया।

समाचार पत्रों के इस बयान पर कुछ राजनीतिक नेताओं ने जिनमे चन्द्र शेखर, शहाबुद्दीन आदि थे इस मामले को प्रेस मे उछाला कि मलयाना में मुसलमानो को बडी संख्या मे नरसहार किया गया है। उन्होने प्रधानमन्त्री को भी वहा जाने पर मजबूर किया। इन सबने पी०ए०सी० के कमाण्डण्ट आफीसर श्री आर०डी० त्रिपाठी के विरुद्ध जो कुछ कहा उससे प्रदेश के मुख्यमन्त्री ओर गृहमन्त्री भी इस झूठी कहानी पर विश्वास कर गए और त्रिपाठी को सस्पैण्ड कर दिया। दूसरे दिन उन्होने इसका प्रतिवाद भी कर दिया।

अब मलयाना गाव के जिन ११४ व्यक्तियो के मर जाने या लापता होने की घोषणा की गई थी उनमे से ८५ का पता लगा लिया गया है। बताया जाता है कि उनमे से ८७ व्यक्ति अपने नजदीकी गाव काजरी मे चले गए थे। दो व्यक्ति और हैं जिन्हे पुलिस थाने म ले गई थी। इनमे एक बुज्जा है जो ५४ वर्ष का है उसे पुलिस थाने ले गई थी, वह अब लौट आया है।

अब यह बात सिद्ध हो गई है कि मलयाना के कुछ मुसलमान लोगो ने पी०ए०सी० को बदनाम करने के लिए यह कहानी बनाई थी। बसीर खा और सद्दिकी ने इस अन्दाज से अत्याचारों का नक्शा खींचा था कि एक ही मकान मे १११ मुसलमानो को जिन्दा जला दिया गया था और उनकी लाशें बराबर के एक कुए मे फेंक दी हैं और दूसरे लोग फायरिंग और आगजनी से मरे हैं। यह भी बताया गया था कि १६ व्यक्तियो को गाव के कब्रिस्तान मे दबा दिया गया है।

मलयाना गाव की लाशें गंग नहर और हिन्डन में होने का जो समाचार था, वह भी अब गलत सिद्ध हो गया है वास्तव में वह लाशें हासिमपुर की थी। इनमे एक व्यक्ति जो बचकर वापस आया है, उसने बताया कि यह उस गिरोह की कारवाई है जो पुलिस वर्दी मे था और खेतो मे ६ व्यक्तियो को मारकर नदी मे फक दिया जिससे यह पता न चले कि वह हिन्दू थे या मुसलमान। पता चला है कि इस गिरोह के एक ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है जो पुलिस से डिसमिस था।

बसीर खा ने जिस व्यक्ति के नाम पर २० हजार रुपया लिया था वह भी जिन्दा वापस आ गया है। उसने मलयाना के चाहवा के मारे जाने व वारिस होने का दावा किया था और २० हजार रुपया ले लिया। बाद मे अब चाह्वा वापस आया तो उसने बशीर खा से कुछ राशि मागी तो बसीर-खा ने मना कर दिया, इस पर चाव ने पुलिस में जाकर सारी बात कही।

मलयाना गाव के इस झूठ समाचार के आधार पर चन्द्रशेखर व शहाबुद्दीन तथा अन्य विरोधी दलो के नेताओ के बयानों से पाकिस्तान मे हिन्दुओ का जो नरसहार हुआ है उसकी जिम्मेवारी इन्हीं लोगों पर आती है। इसी प्रकार के गलत बयानो स देश का बडा अहित हो रहा है और दिल्ली मे पिछले दिनो हुए दगे भी गलत बयानी के कारण ही हुए थे।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान—सार्वदेशिक सभा दिल्ली

१५ जन ८७

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव — ओ३म्

राष्ट्र को देवता मानो

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार मार (?) का ग्रा बन ग्रा

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७]
वर्ष २२ अंक २६]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
आषाढ शु० २ स० २०४४ रविवार २८ जून १९८७

दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष । २७४७७१
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ६० पैसे

हरियाणा की हार से सबक सीखो !

दिल्ली २० जून।

हरियाणा चुनाव मे देवीलाल की जीत तथा कांग्रेस पार्टी की कमरतोड हार पर टिप्पणी करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि यदि इस पराजय से कांग्रेसी नेताओ की मोह-निद्रा नही टूटी तो अन्य हिन्दी भाषी प्रान्तो मे भी उनके लिये इसी प्रकार की स्थिति उत्पन्न होगी।

स्वामी जी ने इस हार का मुख्य कारण पजाब मे आतकवादियो के साथ नरमी का व्यवहार तथा बरनाला सरकार को देर तक टिकाये रखने, राष्ट्रपति के अभिभाषण मे बरनाला जैसे साम्प्रदायिक मुख्यमन्त्री की अनावश्यक प्रशसा करना बडे पैमाने पर पजाब से हिन्दुओ का पलायन और उनके साथ सौतेला व्यवहार, अकाली नेताओ की खुशामद, आतकवादियो से बातचीत करने के लिये जैनाचार्य सुशील मुनि तथा अभिनेता सुनीलदत्त की पदयात्रा तथा दरबार साहब मे जाकर उनके द्वारा रागी दर्शनसिंह की खुशामद आदि अनेक तथ्य जुडे हुए हैं।

गत वर्ष १७ जौलाई को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्ट मण्डल प्रधानमन्त्री जी से मिला था और एक लिखित ज्ञापन द्वारा उन्हें बताया था कि पजाब की समस्या का एक मात्र हल यही है कि इस सीमावर्ती प्रान्त को पाच वर्ष के लिये सेना के हवाले किया जाय तथा सविधान मे यथोचित सशोधन करके पाच वर्ष तक राष्ट्रपति शासन का अधिकार लेकर भूतपूर्व सैनिक परिवारो को सीमावर्ती क्षेत्रो मे बसाकर पाच मील चौडी सुरक्षा पट्टी का निर्माण किया जाय। पाकिस्तानी घुसपैठ की रोकथाम करने के लिये यही एक मात्र रास्ता है।

१७ जौलाई के ज्ञापन मे अन्य कई सुझाव भी दिये गये थे। श्री राजीव गाधी ने शिष्ट मण्डल से लगभग ३५ मिनट तक एकान्त मे विचार विमर्श किया और अन्त मे उन्होने आश्वासन दिया कि यही रास्ता ठीक है और वे शीघ्र ही विपक्षी दलो से बातचीत करके उचित कदम उठायगे।

दूसरे दिन विपक्षी दलो के साथ हुई बातचीत में उनके सयाने नेताओ ने अपनी पुरानी नीतियो पर चलते हुए हमारे नौजवान प्रधानमन्त्री को कानूनी पेचीदगियो के जाल मे उलझाकर भ्रमित कर दिया। खेद की बात तो यह है कि प्रधानमत्री के अपने साथ भी डरपोक और अवसरवादी हैं और अपनी प्रभुसत्ता की कुर्सी से चिपके हुए हैं। उनमे इतना साहस नहीं कि सच्ची राय दे। केवल मुंहदेखी बात कहना ही धर्म है।

देश का बहुमत पजाब समझौता एव अकालियो की खुशामद तथा हिन्दुओं पर किये जा रहे रोमहर्षक अत्याचारो से क्षुब्ध हो चुका था। लाखो हिन्दू पजाब से भागकर हरियाणा आ चुके थे। अत हरियाणा मे उसकी प्रतिक्रिया होनी स्वाभाविक ही थी। हमारे नेताओ का यह सकुचित दृष्टिकोण कि पजाब मे केवल सिख ही रहते हैं हर बात मे उनकी ही रजामन्दी आवश्यक है, उनकी सब उचित अनुचित मागो पर विचार हो सकता है हिन्दुओ की कोई कीमत नही बहुत हद तक कांग्रेस पराजय का कारण सिद्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त विरोधी दलो की भूमिका भी इस मामले मे स्पष्ट नही रही। जब तक इन राजनैतिक पार्टियो की येन केन प्रकारेण वोट बटोरने की नीति मे परिवर्तन नही होगा भविष्य मे किसी भी सुधार की आशा करना व्यर्थ है।

इन दिनो समाचार पत्रो मे अल्पसख्यक समुदाय के अधिकारो की सुरक्षा के बारे मे प्रधानमन्त्री की तरफ से बडे-बडे विज्ञापन प्रकाशित हो रहे है। जहा एक ओर अन्य प्रान्तो मे अल्पसख्यको की सुरक्षा के लिए अपील की जा रही है वहा दूसरी ओर पजाब के अल्पसख्यक हिन्दुओ की कोई सुनवाई नही। मेरठ और दिल्ली के दगो के सम्बन्ध में भी विरोधी दलो की भूमिका से जनता क्षुब्ध है। झूठ को सच का जामा पहनाकर सैयद शहाबुद्दीन, सुब्रह्मण्यम स्वामी तथा चन्द्रशेखर जैसे नेताओ ने जिस धोखाधडी से मलियाना गाव मे मुसलमानो की सामूहिक हत्या के आकडे देकर जनता की आखो में धूल झोकने का प्रयत्न किया है उससे प्रधानमन्त्री की आख खुल जानी चाहिये।

हमने गत २५ तथा २९ मई ८७ को दो बार प्रधानमन्त्री से मिलकर उन्हे मेरठ और दिल्ली मे हुए दगो के बारे मे सही जानकारी दी थी, और उन्हे बताया था कि इनको हिन्दू मुस्लिम दगो की सज्ञा देना वस्तु स्थिति से इन्कार करना है। यह साम्प्रदायिक दगे नही थे बल्कि देश की एकता और सुरक्षा पर सुसगठित एव पूर्व नियोजित आक्रमण था और पाकिस्तानी हमले के समय अल्पसख्यक समुदाय द्वारा पीठ मे छुरा भोक नीति का पूर्वाभ्यास था। हमने प्रधानमन्त्री जी से मेरठ जाने के लिये कहा। वे ११ मई को मेरठ गए भी, किन्तु चतुर प्रशासन और स्वार्थी राजनेताओ ने उन्हे मेरठ के अत्याचार पीडित हिन्दुओ की जली हुई बस्तिया न दिखाकर मलियाना गाव पहुचा दिया जहा उन्हे १११ मुसलमानो के सामूहिक नरसहार की झूठी कहानी सुनाई गई।

अब वे मरे हुए और दफनाये गए मुसलमान जिन्दा होकर मलियाना वापिस आ रहे हैं। हमारी सरकार यदि इसी प्रकार झूठ और मनघडन्त प्रचार का शिकार होती रही तो भविष्य मे सारे देश मे उसकी यही गति होगी जो आज हरियाणा मे हुई है। अत सरकार को अवसरवादी राजनीति छोडकर सचाई को स्वीकार करना चाहिये। अन्यथा उसकी यह अल्पसख्यको के चरण चुम्बन की नीति ही उसके सर्वमुखी पतन का कारण सिद्ध होगी।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

दिल्ली में कहर बरपाने के लिए गुपचुप बम आए

नई दिल्ली १७ जून। दिल्ली पुलिस भी जान से उन २५ रिमोट कट्रोल बमों का पता लगाने मे लगी है जिन्हें लन्दन से एक नकली पैकेट में पिछले महीने भिजवाया गया था। बम भिजवाने वाले चार लोगों को स्काटलैंड यार्ड पुलिस ने पकड़ लिया है।

पुलिस सूत्रों का कहना है कि इन बमों का इस्तेमाल संसद, राष्ट्रपतिभवन या किसी मन्त्रालय की इमारत उड़ाने में किऐ जाने की आशंका है।

स्काटलैंड यार्ड, लन्दन ने भारत सरकार को खबर भेजी है कि २५ रिमोट कट्रोल बम भारत और खासतौर पर दिल्ली के लिए भेजे जा रहे हैं। यार्ड ने गुरदीपसिंह बिड, हरजिंदरसिंह रखावा और कुलवन्तसिंह गिलको लन्दन में इन आधुनिक बमों को खरीद करते हुए गिरफ्तार किया था। इनमें से कुलदीपसिंह गिल सिंगापुर का है और रखावा दिल्लीके एक बड़े व्यापारी खानदानका। इन तीनो ने लन्दन के एक रेस्तरा मालिक करतारसिंह ग्रेवाल को पकड़वाया और ५७ रिमोट कट्रोल बम बरामद करवाए। ग्रेवाल ने ही रहस्योद्घाटन किया कि असल में ७५ बम खरीदे गए थे जिनमें से २५ भारत भेज दिए गए हैं। यह खबर जिस दिन गृहमन्त्रालय पहुची उसी सुबह पजाबमे राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया। दिल्ली मे इन बमों की तलाश की जा रही है। प्रमाणों और घटनाओ से यह भी साफ है कि आतंकवादियो के लिए दिल्ली सिर्फ निशाना नही अभयारण्य बन गई है। दिल्ली पुलिसकी आपरेशन शाखा ने १८ मई को दक्षिण दिल्ली के महरौली के पास गोविन्द सदन गुरुद्वारे पर छापा मारा। स्वचालित हथियारों से गुरुद्वारे के भीतर से पुलिस पर गोलियां चलाई गई। काफी देर गोलीबार के बाद पुलिस गुरुद्वारे में गई और वहांसे कारबाइन और सेकड़ों गोलियां बरामद की। कुछ आपत्ति पत्रमोटें और तथाकथित खालिस्तान का साहित्य भी मिला। इस गुरुद्वारेको केन्द्रीय गृहमन्त्री बूटासिंह का समर्थन है और उनके बेटे की शादीके बाद का धार्मिक समारोह भी यहीं हुआ था जिसमें आतंकवादियों की हिट लिस्ट में नम्बर एक राजीव गांधी भी आए थे।

कनाडा में सिख आतकवादी संगठनों का संयोजक मेजर (रिटायर्ड) संतोखसिंह बग्गा आपरेशन ब्लू स्टार के बाद फरार था। लेकिन पुलिस एक और मामले में छापा मारने जब डिफेंस कालोनी में पहुंची तो पता चला कि संतोखसिंह, दीवानसिंहके नामसे डिफेंस कालोनी ए ब्लाक में रहता रहा था। बाद में भागने के लिए उसने बधारी (पाकिस्तान) का रास्ता लिया।

यह हैरत की बात है कि आतंकवादी हरजिंदरसिंह उर्फ जिंदा पंजाब में भागने के बाद कहां गया? असल में वह दिल्ली आया, कनाट प्लेस की रीगल बिल्डिंग के ट्रेवल एजेंट बलदेवसिंह और कश्मीरसिंह के जरिए जाली पासपोर्ट बनाकर अमेरिका चला गया। इसकी पुष्टि गुप्तचर ब्यूरो ने की जिस पर इन दोनों एजेंटों को पकड़ा गया तो पता चला कि मथुरसिंह और सम्मी समेत छह आतकवादियों को उन्होंने जाली पासपोर्ट से विदेश भिजवाया है।

जनवरी में दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा और गुप्तचर ब्यूरो के राजनैतिक मामले देखने वाले विभाग ने अलग-अलग रिपोर्ट में गृह मन्त्रालय को खबर दी थी कि दिल्ली के कई इलाकों में आतंकवादियों की गुप्त गतिविधियों के प्रमाण मिले हैं। ●

नवीन प्रवेश के लिए स्वर्णिम अवसर

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम पो० कलाल घाटी कोटद्वार, जि० पौड़ी गढ़वाल में प्रवेश सन २५ जून, सन ८७ से प्रारम्भ हो रहा है। प्रवेश ६ जौलाई तक चलेगा। यह महाविद्यालय, विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी से हाई स्कूल के समकक्ष (विद्याधिकारी) की परीक्षा तक के लिए सम्बद्ध है तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की परीक्षायें भी दिलाता है।

यहां कक्षा ४ से ६ तक के विद्यार्थी प्रविष्ट किये जा रहे हैं। आधुनिक विषयो के अतिरिक्त वेद, दर्शन, धर्म शिक्षा, नैतिक शिक्षा, सन्ध्या, हवन, योगासन, व्यायामादि का अध्ययन तथा अभ्यास कराया जाता है।

आप अपने बच्चो को सुयोग्य, सदाचारी देशभक्त नागरिक बनाने के लिए कण्वाश्रम मे प्रविष्ट कराना न भूलें। स्थान सीमित हैं, शीघ्रता करें।

मानव जीवन की सार्थकता

प्रस्तोता : श्री सत्यानन्द आर्य

नव स्नातक कुमारिल भट्टाचार्य वेदभाष्य में तल्लीन थे। उनकी विधवा माता आईं और बोली, "वत्स! तेरे विवाह की तैयारियां होरही हैं। आगामी सोमवार को संस्कार होना निश्चित हुआ है।" "तथास्तु:" अनयास ही आचार्य के मुख से निकला।

विवाह के कुछ ही दिन बाद, आचार्य की माता महाप्रयाण कर गईं। आचार्य ने स्वधर्मिणी को अपने अभिमुख आसन पर बिठाकर कहा, "देवि! मैंने चारो वेदों का अविकल भाष्य समाप्त होने तक अखण्ड ब्रह्मचर्य का सुसंकल्प धारण किया हुआ है। ब्रह्मस्थ हुआ मैं ब्रह्म के ब्रह्म (वेदज्ञान) का अनुवाद कर रहा हूं। मुझे अपने शरीर की रक्षा का लेशमात्र भान नही रहता। अब तक माताश्री मेरी देख रेख रखती थी, अब तुम रखना। अति प्रसन्न वदन और श्रद्धापूर्ण हृदय से देवी ने उत्तर दिया, "तथास्तु, देव!"

६८ वर्ष की आयु मे पूर्णिमा की सायं भट्टाचार्य ने चारो वेदों का भाष्य समाप्त किया। उस रात पति-पत्नि को बड़ी निश्चिन्तता से निद्रा आई। रात्रि के चतुर्थ प्रहर में आचार्य की निद्रा भग हुई। छत पर चटाई पर लेटे लेटे उन्होने इधर उधर देखा "चन्द्रिका मुस्करा रही है। प्रकृति हस रही है। वाम पार्श्व में एक तपस्विनी चटाई पर लेटी हुई है।"

आचार्य ने अपने और अपनी धर्मिणी के श्वेत केशों को देखकर मन ही मन कहा, "दोनों ही शिर चन्द्रिका के समान श्वेत हो गये।"

देवी ने अ गड़ाई ली और पति की ओर मुख किया। आचार्य ने अपनी बाह भुजा फैलाई। परन्तु पूर्व इसके कि वह देवी के शरीर का स्पर्श कर सकते, देवी उठकर खड़ी हो गई, और दोनों कर जोड़, पति को प्रणाम करती हुई बोली, देव! आयु के अन्तिम प्रहर में भी इन दोनों अछूते जीवनों को अछूते ही बने रहने दो। अब तक वेदभाष्य में लगे रहे। अब वेदप्रचार में लग जाइए।"

"तथास्तु" कहकर आचार्य उठे, पत्नी को प्रणाम किया चन्द्रमा की ओर देखकर गद्‌गद्‌ हृदय से बोले "सत्यं शिवं सुन्दरम्, ...

दूसरी ही प्रात: दोनों ने यथाविधि संन्यास लिया और शेष जीवन वेद प्रचार में लगाया। वे वे महान संकल्पवान...

सम्पादकीय

पराजय एक आईना

जो शाखे नाज़ुक पै आशियाना
बनेगा, ना पायदार होगा ।

पंजाब केसरी के यशस्वी सम्पादक श्री विजय ने २० ६-८७ के सम्पादकीय में हरियाणा में कांग्रेस के पतन पर महत्वपूर्ण सम्पादकीय लिखा है। हम उसके एक अंश को पाठकों के चिन्तन के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। ताकि पाठक विचार करें कि कोरी राजनीतिक चालबाजी सदा सफल नहीं हो पाती। सच्चाई ही विजय पाती है। पराजित कांग्रेस बन्धु इस आईने में अपना मुंह देखें —

१९८१ से खूनी खेल पंजाब में चलता रहा है, उसे खत्म करने की दृष्टि से जो राजीव-लौंगोवाल समझौता किया गया वह उस समय के राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह द्वारा जल्दी में करवाया गया एक समझौता था। हम बार-बार यह लिखते भी रहे कि पंजाब का समझौता अकाली दल समेत सभी प्रतिपक्षी दलों को एक साथ बैठा कर, उनकी पुष्टि की मोहर लगवा कर और तथ्योंकी पूरी गहराई तक जाकर ही किया जाना चाहिए था ताकि फिर किसी को भी उस पर आपत्ति की कोई गुंजाइश न रहे और सभी उसके पूरी तरह पाबंद हों। मगर ऐसा नहीं हुआ और श्री अर्जुनसिंह जो मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री का पद छोड़कर यहां आए थे यह समझौता जल्दी-जल्दी में केवल इसलिए करवा गये क्योंकि वह जल्दी से जल्दी अपने प्रदेश की राजनीति में या केन्द्र में वापिस चले जाना चाहते थे।

समझौते के बाद भी जब चुनाव हुए तो कांग्रेस ने जानबूझ कर अपने कमजोर उम्मीदवार खड़े किये और सत्ता सोनेकी तश्तरी में रखकर अकालियों को सौंप दी ताकि जैसे भी हो वे खुश रहें। अकाली शासन में जो भयावह मारकाट पंजाब में हुई, केवल १७ महीनों में ही ११०० से अधिक लोग मारे गये। खालिस्तानकी चीखचाकी जोर पुष्टिकी गई, अल्पसंख्यकों का व्यापक स्तर पर पहली बार पलायन हुआ और पंजाब के कुछ भागों में उग्रवादियों की समानान्तर सरकार बन गई। अगर श्री अर्जुनसिंह यहां रहते और यह सब अपनी आंखों से देखते तो समझ पाते कि उनकी जल्दबाजी के क्या परिणाम पंजाबियों को भुगतने पड़े हैं। मैं अब भी इतिहास इसके लिए माफ उन्हें नहीं करेगा।

जो कुछ पंचक सरकार के समय में पंजाब में होता रहा उसे देखकर एक बात आमतौर पर कही जाती रही कि आखिर उग्रवादियो और इस सरकार के कार्यों में कार्यविधि के अतिरिक्त और अन्तर क्या है? जिन लोगों के वोटों से इस सरकार ने अभूतपूर्व बहुमत प्राप्त किया था उन्हे पंजाब में सुरक्षा प्रदान करने का कोई भी कदम कभी नहीं किया गया जबकि बाहर के परिवारों को यहां ला-लाकर बसाया जाता रहा और भरपूर सुविधाए उन्हें दी जाती रहीं, इस स्थिति का असर स्वाभाविक रूप से हरियाणा के उन लोगों पर पड़ा जिनके रिश्तेदार और परिचित पंजाब में रहते हैं।

पंजाब कांग्रेस के प्रमुख नेता और बजुर्ग पत्रकार श्री यश ने हरियाणा का दौरा करने के बाद यह लिखा है कि भारत सरकार ने और अकाली सरकार ने पंजाब से पलायन के जो आंकड़े दिए हैं, हरियाणा का दौरा करने के बाद पता चला कि वह सब गलत थे जितना हम देख सुन रहे हैं पलायन उससे कहीं अधिक हुआ है। हरियाणा का कोई शहर ऐसा नहीं है जहां सैंकड़ों की संख्या में हिन्दू पंजाब से पलायन करके न गए हों।

श्री यश ने लिखा है कि सही आंकड़े तो सरकार ही बता सकती है मगर मेरा अनुमान है कि डेढ़ लाख से अधिक लोग पलायन करके हरियाणा में गए हैं और दुखदाई बात यह है कि कोई मदद हरियाणा सरकार ने इनकी नहीं की।

स्पष्ट है कि इस बात से भी हरियाणा मे कांग्रेस के प्रति क्षोभ बढ़ा। इतना ही नहीं खुड्डा लाहौर जैसे हत्याकांड होने पर भी जिसमें २४ बस यात्री एक ही साथ मार दिए गए, मगर पंचक सरकार के विरुद्ध कार्रवाई नहीं हुई जबकि दरबारासिंह सरकार की छुट्टी दिलवां काण्ड में केवल ६ बस यात्री मरने पर ही हो गई थी। उलटा संसद में बरनाला साहब की तारीफ की गई जिससे हरियाणा की जनता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

इससे भी, अधिक दुखदायी बात यह हुई कि पंजाब समझौते के अंश तो लागू हो गए जिनका सम्बन्ध अकालियो से था मगर चण्डीगढ़ और इलाको के तबादले, पानी और लिंक नहर का निर्माण जिसका सम्बन्ध पंजाब और हरियाणा दोनों से है, वह आज तक लटके हुए हैं, इससे भी हरियाणा के लोग कांग्रेस से विमुख हुए।

इतना ही नहीं यह बात भी आम कही जा रही थी कि पंजाब मे राष्ट्रपति राज हरियाणा के चुनाव के समय लागू होगा और हुआ भी ऐसा ही। अगर पहले ही ऐसा हो गया होता तो पंजाब में इतना खून खराबा न होता और लोग यह भी महसूस न करते कि यह काम हरियाणा मे चुनाव जीतने के लिए किया गया है।

हरियाणा के लोगों को इस बात का भी गुस्सा था कि जब उन्होने १९८२ में श्री देवीलाल को मुख्यमन्त्री मान कर बहुमत दिया था तो श्री भजनलाल ने राज्यपाल तपासे की सहायता से कांग्रेस की सरकार दल बदल का सहारा लेकर बना ली थी। उस का बदला भी कांग्रेस से अब उन्होने चुका लिया है।

चुनाव के नजदीक श्री राजीव गांधी ने जो तेल शोधक कारखाना लगाने और ४०० करोड़ से भी अधिक सहायता राशि हरियाणा को देने की घोषणा की उसे भी चुनाव जीतने का हथकंडा ही समझा गया और फिर संघर्ष समिति के लिए सोने पर सुहागे का काम रक्षा सौदों में हुए घोटालों ने किया उन्हें इस चुनाव मे जम कर उछाला गया। इसके अतिरिक्त वकौल श्री कमलापति त्रिपाठी कांग्रेस की फूट कांग्रेस की पराजय का कारण रही।

श्री देवीलाल ने जो थकान के कारण अस्पताल में हैं, कहा है कि हरियाणा की जनता ने बंसीलाल सरकार को ठुकरा दिया है। हम समझते हैं कि ये राजीव गांधी के लिए विचारणीय पल हैं। अगर अब भी उन्होंने बंसीलाल जैसे लोगो से छुटकारा हासिल नहीं किया तो एक दिन ऐसे लोग ही कांग्रेस की अर्थी उनके कधों पर उठवा देने का कारण बन जाए गे।

—विजय

धर्म ने पंडित बनाया राजनीति ने हरिजन

सन १९७० की बात है। आर्य नेता संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री के-१ कैनिंग लेन (नई दिल्ली) निवास में रहते थे।

एक दिन एक आर्य समाजी विद्वान शास्त्री जी से मिलने आये। शास्त्री जी ने परिचय कराया—'ये पंडित नरदेव स्नातक हैं—आर्य समाज के पंडित और कांग्रेस के 'हरिजन'।'

स्नातक जी शास्त्री जी के सहपाठी व परम मित्र थे। दोनो मिले तो जोरदार ठहाको से लान गूंज उठा।

आर्य समाज के पंडित और कांग्रेस के 'हरिजन' ये शब्द सबके कानो में गूंजते रहे। 'आखिर शास्त्री जी आपके इन शब्दों का अर्थ क्या है? —पूछ ही लिया।

शास्त्री जी बोले हम दोनों ज्वालापुर महाविद्यालय में साथ-साथ पढ़े। एक साथ पढ़ते, साथ-साथ खाते, साथ खेलते थे। हमें पता ही नहीं था कि नरदेव जी किस जाति के हैं। हमारी एक ही जाति थी—छात्र,

नरदेव जी स्नातक हुए तो आर्यसमाज के क्षेत्र में वे 'पंडित' माने गये। पंडित नरदेव स्नातक विवाह संस्कार कराने जाते तो कहीं भाषण देते इससे चारों ओर धूम मचने लगी। आर्यसमाज ने नरदेव जी को पंडित बना दिया।

विधानसभा के चुनाव आए तो कांग्रेस के कुछ लोगों ने नरदेव जी को प्रेरित किया। उत्तर प्रदेश की एक सुरक्षित सीट से उनका आवेदन दाखिल कराया गया। नरदेव जी ने मजिस्ट्रेट के समक्ष बयान-पत्र दाखिल किया—'मैं नरदेव स्नातक जन्म से हरिजन हूं।"

इसलिये मैं कहता हूं कि वैदिक धर्म ने आर्य समाज में इन्हें पंडित बनाया और राजनीति ने, कांग्रेस ने 'हरिजन'।

नरदेव जी शास्त्री जी की बात सुनकर स्तब्ध थे। लग रहा था जैसे शास्त्री जी ने पूरी राजनीति पर ही तेज-तर्रार व्यंग्य किया है—यह।

—सम्पादक

आर्य समाज क्यों ?

—महात्मा आर्य भिक्षु—

महा भारत के बाद महर्षि दयानन्द पहला महामानव था जिसने सोचा कि बुराइयां, दुरित सगठित रहती है उनमें सगठन की स्वतः क्षमता होती है परन्तु सज्जन न सगठित है और न उनमें स्वत सगठन की क्षमता है। अत सज्जन सुखी हों, सगठित हों, यह सोच महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की।

धर्मात्मा ही सज्जन होते हैं यह सोच महर्षि ने धर्म की ओर देखा तो पाया कि धर्म के प्रागण में विभाजन है। अत उन्हें एक करने के लिए सनातन धर्म प्रतिनिधि, ईसाई प्रतिनिधि, मुसलमान प्रतिनिधि और केशवचन्द्रसेन को पत्र लिखा—"यद्यपि प्रत्येक मत-पन्थ और सम्प्रदाय में अच्छी-अच्छी बातें हैं किन्तु आचार्यों मे परस्पर मतभेद होने के कारण (मुल्ला, पंडित आदि) अनुयायियों मे, मनुष्य समाज में घृणा द्वेष बना रहता है। क्या ही अच्छा होता सभी आचार्य प्रवर एक स्थान पर सर्वतन्त्र, सनातन, सार्वभौम नियम बनाकर दुनिया का मार्गदर्शन करते।

महर्षि के कथनानुसार सभी प्रतिनिधि एकत्र हुए, तब महाराज ने दो तरीके सभी आचार्य प्रवरों को एक होने के बताए—

(१) "तर्क, युक्ति, प्रमाण, प्रयोग जहां है वही सर्वतन्त्र, सनातन, सार्वभौम विचार होगा।" इस प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर कर आपस में धर्म का सही निर्णय कर लिया जाए।

परन्तु उस समय के सबसे बड़े बुद्धिमान श्री केशवचन्द्र ने इसे न माना।

(२) "अपने-अपने मजहब की अच्छी-अच्छी पाच बातें कागज पर लिखें जो सब मे है वही मान लें।"

इसे अन्य प्रतिनिधि तो मान गये पर श्री केशवचन्द्र ने नही माना। उनका कहना था महाराज की बातें तो सबो मे मिल जायेगी पर जिन बातो को लेकर हम लोग अपना-अपना पन्थ बनाये हुए हैं वे छूट जायेंगी। कारण स्पष्ट है दयानन्द धर्म वाले थे दूसरे मत वाले नहीं मतवाले थे।

दोनों तरीको के असफल होने के बाद महाराज ने तीसरा तरीका निकाला—"आर्य समाज की स्थापना की सर्वप्रथम हाजी अल्ला रखा ने समाज निर्माण में १०,००० दस हजार रुपये दिये। आर्य समाज के दस नियम भी खान बहादुर अब्दुल की कोठी पर ही बने। अत स्पष्ट है आर्य समाज मात्र सज्जन पुरुषो का सगठन है जिसकी प्रमुख घोषणा इस प्रकार है।

प्रथम घोषणा, मनुष्य एक जाति है और उसका एक ही भेद है, कुछ लायक हैं कुछ नालायक हैं जैसे—हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई और जैनी का एक भेद है वे सभी चोर हैं तो पुलिस उसे चोर कहेगी। विभेद नहीं है। सज्जन, लायक या आर्य उसे कहते हैं जो दूसरे को फायदा पहुंचाने [illegible]। अनार्य या नालायक वह है जो दूसरे से फायदा लेने के चक्कर में रहे। क्या खायें ? किसका खायें ? कैसे खायें ? यह बात जो सोचे वह नालायक है और क्या खिलायें ? किसको खिलायें ? कैसे खिलायें ? ऐसा सोचे वही लायक है, सज्जन है, आर्य है। आर्य समाज के नियम में लिखा है—संसार का उपकार करना। अत जो ऐसा करे वही सभासद है। यह काम वही करेगा जो विद्वान, सदाचारी और परोपकारी तीनों हो। दयानन्द तीनों गुणों में पूर्ण थे तभी तो १८ घण्टे की समाधि छोड़ी। ऐसे का यथायोग्य सत्कार करना चाहिए। केवल विद्वान हो तो चोरी का रिकार्ड तोड़ देगा। आज चोर एम॰ए॰, एम॰एस॰सी॰ ही नहीं डाक्टर की उपाधि प्राप्त है और पकड़ने वाला बी॰ए॰, बी॰एस॰सी॰ है। अतः दुनिया में कोलाहल मचा है। रावण विद्वान था पर बुराइयों का रेकार्ड तोड़ दिया। दूसरी घोषणा लायक चार हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। यह चारों छोटा बड़ा नहीं। वर्ण रुचि गति से बटा है। नालायक चार है—अज्ञान, अन्याय अभाव, आलस्य। अत इसे दूर चार ज्ञान-न्याय-भाव-शक्ति, सहयोग देने के लिए चार ही लायक बने हैं तीनो को शक्ति सहयोग देना आवश्यक है। अत तीनों के यह सवर्ण हैं। ये स्वेच्छा से बटे हैं जन्म से नहीं। रज और वीर्य से मानव बना है।" जैसे High school तक सभी एक पर बाद में I A. Isc I; Comr बना। वह ! इसी प्रकार जन्म से सभी एक, बाद में वर्ण बने। शूद्र नियामक हैं वरदान है यह दूसरी घोषणा है।

तीसरी घोषणा—'आर्य विशेषण है Adjective है नाम Noun नहीं। यह कर्म से है जन्म से नहीं। आर्य लायक है। आर्य पैदा नही होता, बनना होता है अत आर्य नाम की जाति कहना ही इतिहासकारों की भयंकर भूल है। जब आर्य स्वत नहीं होता किसी का बेटा लायक, आर्य हो सकता है। बस ! आज आवश्यकता है दूसरे के लायक, आर्य बेटा को अपना बेटा बना लिया जाये। इससे दो बात होगी उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा और तुम्हें आनन्द मिलेगा, चिन्ता मिटेगी।

चौथी घोषणा—सुख-दुःख जीवात्मा के शुभाशुभ का फल है परमात्मा नहीं देता। परमात्मा मे सुख नही है। उसमें वह लक्षण ही नहीं घटता, अत वह नहीं देता। परमात्मा के पास सुख दुःख है ही नहीं इसलिए उससे यह मत मांगो। सुख चाहो सही करो दुख चाहो गलत करो। दुःख में घबराओ नहीं, सुख में इतराओ नहीं। कहा गया है।

देह धरे ते दण्ड है सब काहू को होय।
ज्ञानी भुगते ज्ञान से मूरख भुगते रोय॥

इसलिए परमात्मा से आनन्द मांगों वही है उसके पास। अंत वह दे देगा।

('स्वाध्याय निर्झर' मुजफ्फरपुर से साभार)

वर चाहिए

२६॥ वर्षीया १६२ से॰मी॰ गौरवर्ण अति आकर्षक भव्याकृति विशुद्ध शाकाहारी एम॰ए॰ (संगीत) संगीत प्रभाकर अति मधुर, गृहकार्य मे दक्ष, केन्द्रीय विद्यालय मे कार्यरत मासिक वेतन १२००) कन्या हेतु आत्मनिर्भर सुयोग्य सुशिक्षित दहेज रहित वर अभीष्ट है उत्तम विवाह।

वधू चाहिए

उत्तर प्रदेशीय (सम्प्रति कश्मीर) (स्थायी निवास दिल्ली में है) ३३ वर्षीय १६६ से॰ मी॰ २५००) मासिक, गौरवर्ण, आकर्षक स्वस्थ सुडौल, सुगठित शरीर, सादा जीवन, उच्च विचार, शाकाहारी, व्यसन मुक्त, अत्रि गोत्र वाले वर हेतु सुयोग्य जीवन संगिनी चाहिए। पत्र-व्यवहार—

श्री शिवराज जी शास्त्री C/o सार्वदेशिक साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान
नई दिल्ली-२

विद्रोह को साम्प्रदायिक दंगे कहना विनाशकारी होगा

—श्री शिवकुमार गोयल—

दिल्ली और मेरठ में हुए साम्प्रदायिक दगों को साधारण दगा नहीं कहा जा सकता। मेरठ में १६३८ से लेकर अब तक एक दर्जन से ज्यादा दगे हो चुके हैं किन्तु इस बार का दगा सबसे ज्यादा वीभत्स था तथा राष्ट्रद्रोही व विदेशी तत्वो द्वारा पूर्ण योजना के साथ किया गया विद्रोह का पूर्वाभ्यास था।

पहले दिन का यह भयावह दृश्य हृदय को दहला देने वाला तो था ही इसे देखकर यह भी स्पष्ट हो जाता है कि यह विद्रोह प्रशिक्षित (ट्रेन्ड) मुस्लिम दगाइयो द्वारा महीनो तक तैयार की गयी पूरी योजना का दुष्परिणाम था।

लाउडस्पीकरों से जेहाद की घोषणा

मेरठ मे एक मास पूर्व १४ अप्रैल को भी इसी लिसाड़ी गेट क्षेत्र मे शबेरात के दिन दगा हुआ था किन्तु उसमे एक दर्जन लोगो को जान से हाथ धोना पडा था। इस बार के दगे को हत्याओ, लूट-मार और आगजनी में प्रवीण लोगो द्वारा ट्रेनिंग देने के बाद भडकाया गया था परिणामस्वरूप सैकडो लोग मारे गये।

इन दगो के लिए रमजान का महीना ही चुना गया इसीलिए राजधानी दिल्ली तथा मेरठ मे एक साथ दगा भडकाया गया।

जिस प्रकार दिल्ली मे जामा मस्जिद से भडकाने वाले भाषण देकर लूटमार व आगजनी शुरु हुई उसी प्रकार मेरठ में १९ मई की प्रात मोहल्ला इमलियान हाशिमपुरा व अन्य क्षेत्रो की मस्जिदो से, लाउडस्पीकरो पर इस्लाम की रक्षा के लिए सडक पर जाने, काफिरो की हत्या कर डालने, उनकी सम्पत्ति जला डालने की घोषणाए कर जुनूनी लोगो की भीड को आगजनी व हत्याओ के लिए उकसाया गया।

दंगे की शुरुआत

१९ मई की प्रात ५ बजे मस्जिदो के लाउडस्पीकरो से उत्तेजक आदेश सुनते ही इस्लामाबाद, इमलियान शाहपीर गेट आदि क्षेत्र के लगभग तीन हजार जुनूनी दगाई हाथो मे फरसे, बन्दूके, देशी कट्टे, जलती मशालें, पैट्रोल भरे कनस्तर, सीढियां लिए "पाकिस्तान जिन्दाबाद" के नारे लगाते हुए हापुड बस स्टेड के पीछे गोलकुआ पहुचे। उन्होने वहा सूत बाजार की १९ दुकानो के शटर तोडे, माल लूटा तथा दुकानो को आग लगा दी।

दगाइयों की भीड वहां से पिलोखडी रोड चल दी। वहा के श्यामनगर व लक्खीपुरा क्षेत्रों में स्थित कपडा बुनाई व छपाई के दो दर्जन से ज्यादा कारखानों को आग लगाई जाने लगी। कमला प्रिन्टर्स, लक्ष्मी टैक्सटाइल्स, सिन्धवाल टैक्सटाइलस, चन्द्रा टैक्सटाइल्स, आर०के० टैक्सटाइल्स, ढिल्लन टैक्सटाइल्स, आदि पर पहुचकर दरवाजे तोडे गये। अन्दर पहुचकर सफेद रग का पाउडर छिडका गया, पेट्रोल डाला गया और आग लगा दी गयी।

इन कारखानो के चौकीदारो व उनके परिवार के स्त्री-पुरुषो व बच्चो को भी आततायियों ने आग में झोंककर जिन्दा जला डाला।

हैण्डलूम वस्त्र व्यापारी सघ के प्रधान श्री ओमप्रकाश खन्ना तथा व्यापारी नेता श्री सतीशचन्द्र सिहल हमे बताते हैं—"चौधरी नेपालसिंह एडवोकेट के कृषि फार्म पर स्थित ढिल्लन टैक्सटाइल्स में ही उसके मैनेजर व चौकीदार सहित आठ लोगों को उन्मादियो ने जलाकर राख कर दिया। चौकीदार भोमी, उसकी पत्नी शान्ति तथा एक नन्हें-मुन्ने बच्चे को आग में झोक दिया गया। प्राय हर कारखाने के साथ-साथ उसके चौकीदारों व परिवार जनों की आततायियो ने नृशस हत्या कर डाली।

अरबो की क्षति

हैण्डलूम वस्त्र व्यापारी सघ ने पहले दिन की इस क्षति को ही लगभग ५० करोड आका है। मेरठ का हैन्डलूम व पावरलूम उद्योग सारे देश मे प्रसिद्ध हैं। यहा लाखो लोग इस उद्योग से आजीविका चलाते हैं। मेरठ की बनी खादी, खेस, लोई, चादरे, छीट विदेशो तक को निर्यात की जाती हैं। आततायी दगाइयो ने पूरा गणित लगाकर हिन्दुओ को इस उद्योग से अलग करने की साजिश के अन्तर्गत यह आगजनी की। वे आवेश मे यह भूल गये कि इसका दुष्परिणाम हजारो मुस्लिम बुनकरो व अन्य मजदूरों को भी बेकारी के रूप मे भोगना पडेगा।

इन दगो के पीछे विदेशी तत्व सक्रिय थे यह तथ्य तब सामने आया जब आगजनी व हत्याओ की घटना के दौरान चार पाकिस्तानी नागरिक पुलिस ने रगे हाथो पकडे। पकडे गये पाकिस्तानियो ने स्वीकार किया कि उन्हें पाकिस्तान मे ट्रेनिंग दी गई थी कि भारत मे जाकर किस प्रकार शान्तिभग करनी है, किस प्रकार दगे भडकाने हैं और किस प्रकार प्रशासन को पगु बना डालना है।

पहले ही दिन पचासो लोगों की हत्या कर दिये जाने तथा करोडो रुपये सम्पत्ति जला डालने से जब स्थिति प्रशासन व पुलिस के नियन्त्रणो मे नही रही तो अगले दिन पी०ए०सी० व सेना को बुलाना पडा। दगाइयो ने फैक्ट्रिया व दुकानें जलाने के बाद धर्म-स्थलो व मकानो की छत्तों पर मोर्चे लगाकर पुलिस, पी०ए०सी० व अन्य नागरिको पर गोलियो व बमो की बौछार शुरु कर दी। तेजाब की बोतल फकी जाने लगी।

साम्प्रदायिकता विरोधी कमेटी के नेता तथा नानकचन्द कालेज के राजनीति विभाग के अध्यक्ष डा० हरपालसिंह के एक मात्र युवा पुत्र डा० प्रभात किसी मुस्लिम मरीज की जान बचाने कार से हापुड जा रहे थे। हापुड रोड पर दगाइयो ने उनकी कार रोककर जला डाली। डा० प्रभात को छुरी से घायल कर जलती कार पर डालकर जला दिया गया। इस प्रकार हत्याओ, आगजनी व गोलीबारी का खुला ताण्डव चलता रहा। शास्त्री नगर के एल० ब्लाक पर भी हमला कर कोठियो मे आग लगाई गई।

राज्य मुख्यमन्त्री श्री वीर बहादुरसिंह भागे-भागे अगले ही दिन मेरठ पहुचे। उन्होने स्वय देखा कि दगाई पुलिस व पी०ए०सी० पर मोर्चे लगाकर गोलिया बरसा रहे हैं, बम फेंक रहे हैं। अन्त में सेना को बुलाना पडा।

सेना के जवान तलाशी लेने हाशिमपुरा, इमलियान, गुदडी बाजार, इस्लामाबाद आदि क्षेत्रो में पहुचे तो उन पर भी हमले किये गये।

मलियाना की वास्तविकता

यद्यपि अब मलियाना के मरे हुए मुसलमान फिर जीवित हो गए हैं फिर भी विपक्षी राजनीतिक दलो के ससद सदस्य मलियाना काड के नाम पर पी०ए०सी० के अत्याचारो का प्रचार कर रहे हैं। मलियाना गोलीकाड मे कुछ लोग मारे गये जो गायब पाए गए वे घर लौट आए हैं किन्तु काड क्यो हुआ इसकी पृष्ठभूमि मे जाने का किसी ने भी कष्ट नही किया। इन विपक्षी सासदो, जामा मस्जिद के इमाम मौलाना बुखारी तथा मिया शहाबुद्दीन ने मलियाना काड को तूल देकर पी०ए०सी० को दोषी ठहराना शुरू कर दिया। उस पर नरसहार करने के आरोप लगाये जाने लगे।

मैं मलियाना काड की सही जानकारी लेने मलियाना गया। वहा के अनेक हरिजन नेताओ तथा सम्भ्रात नागरिको ने अनेक प्रमाण देकर बताया कि २२ मई को यदि पी०ए०सी० दगाइयो की गोलियो से बचाव के लिए गोली नही चलाती तो पी०ए०सी० के

(शेष पृष्ठ ८ पर)

इतिहास का एक पृष्ठ

स्वामी दयानन्द और योग

लेखक—कर्नल एच० एस० आल्काट
(अनुवादक एव प्रेषक डा० भवानीलाल भारतीय)

(गताक से आगे)

प्रश्न—एक योगी इस प्रकार अपनी आत्मा को अन्य के शरीर मे प्रविष्ट करने की शक्ति अपने जीवन की किस घडी तक (घण्टा, मिनट या दिन तक) धारण किये रखता है ?

उत्तर—जीवन की सामान्य अवधि (आयु) के अन्तिम मिनट या पल तक यह शक्ति योगी मे रहती है। अपनी मृत्यु के पूर्व क्षण तक यह जानता है कि उसके शरीर का कब अन्त आने वाला है, और जब तक वह जीवन का अन्तिम क्षण नही आ जाता, वह अपनी आत्मा को अन्य के शरीर मे प्रविष्ट करा सकता है। किन्तु यदि वह क्षण बीत जाताहै तब कुछ भी करना सम्भव नहीं होता। जीवन तन्तु सदा के लिये टूट जाता है और यह योगी मोक्ष के लिये पर्याप्त पवित्रता और पूर्णता प्राप्त नही कर चुका होता है तो उसका पुनर्जन्म हो जाता है। उसके और सामान्य लोगो से अधिक बुद्धिमान, नेक तथा प्रज्ञावान होने के कारण अच्छी परिस्थितियो वाली योनि मे जन्म लेता है।

प्रश्न—क्या एक योगी अपने जीवन को इस सीमा तक बढा सकता है ?

उदाहरणार्थ मान लीजिये कि अमुक योगी की इस समय सत्तर वर्ष की आयु है, क्या वह इस शरीर की मृत्यु होने के पूर्व एक छ वर्ष के बालक के शरीर मे प्रविष्ट होकर पुन सत्तर वर्ष तक जीवित रह सकता है ? इसी प्रकार पुन सत्तर की आयु तक आते आते इस (बालकवाले) शरीर को भी त्याग कर किसी अन्य के शरीर मे पुन सत्तर वर्ष जीवित रहने के लिये प्रविष्ट हो सकता है ?

उत्तर—हा सम्भव है, किन्तु इस ससार मे वह अपनी आयु ४०० वर्ष तक बढा सकता है।

प्रश्न—क्या एक योगी इस प्रकार किसी स्त्री के शरीर मे भी स्व आत्मा को प्रवेश करा सकता है ?

उत्तर—हा उतनी ही सरलता से जिस प्रकार कोई पुरुष अपनी इच्छा से स्त्रियो की पोशाक पहन लेता है इसी प्रकार यह योगी भी अपनी आत्मा को स्त्री के भौतिक शरीर मे प्रविष्ट कर सकता है। बाह्यत तो वह प्रत्येक प्रकार से स्त्री ही दिखाई देगा, किन्तु आन्तरिक रूप से वह स्वय (योगी) नही होगा।

प्रश्न—मैं दो ऐसे लोगों से मिला हू जो स्त्री की भाति दिखाई पडते थे किन्तु शरीर के अतिरिक्त पूर्णत पुरुष तुल्य थे। आपको स्मरण होगा एक के पास तो हम बनारस में गये भी थे जो गगा के किनारे निवास करती थी।

उत्तर—हा, मा जी।

प्रश्न—योग के दोनों भेद बताये ?

उत्तर—योग दो प्रकार का है। हठ योग और राजयोग। हठयोग के अन्तर्गत शिक्षणार्थी को शारीरिक कठोर साधनाए करनी रहती हैं ताकि वह अपने शरीर पर यथेच्छ नियन्त्रण कर सके। उदाहरणार्थ अपने शरीर को किसी पेड से लटका देना तथा ऐसा करते समय सिर को नीचे की ओर कर लेना,पचाग्नि तपना आदि। किन्तु राजयोग मे एकसी किसी शारीरिक साधना की आवश्यकता नही होती। यह तो एक प्रकार का मानसिक सयम है जिससे मन पर मनुष्य की इच्छाशक्ति का अधिकार हो जाता है। हठयोग के द्वारा शारीरिक शक्तियो मे वृद्धि होती है जब कि राजयोग द्वारा आत्मिकशक्ति बढती है। राजयोग में पुण्य प्राप्त करने के लिये हठयोग की साधना से गुजरना पडता है।

प्रश्न—किन्तु क्या राजयोग से साधना करने वालो के पास वे सिद्धियां नही होती जिन्हें कि हठयोगी अनेक प्रकार की कठिन और त्रासदायक साधनो के द्वारा प्राप्त करता है? मैं ही ऐसे तीन राजयोगियो से मिला हू जिन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने अपने शरीर को हठयोग की यन्त्रणादायी क्रियाओ से सदा पृथक् ही रक्खा है।

उत्तर—ऐसी स्थिति मे यह सम्भव है कि उन्होने हठयोग का अभ्यास अपने पूर्वजन्म में किया होगा।

प्रश्न—कृपया यह बतायें कि अपने आपको योगी कहने वाले लोगो द्वारा बताई गई सत्य अथवा मिथ्या सिद्धियो की यथार्थता को हम कैसे जाने ?

उत्तर—इस प्रकार की सिद्धियां या उनसे उत्पन्न चमत्कार तीन प्रकार के होते हैं—प्रथम तो केवल हाथ की सफाई होती है। द्वितीय, रासायनिक द्रव्यो या क्रियाओ से सम्पन्न किये जाते हैं। किन्तु तृतीय, मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न होते हैं और यही सर्वोच्च माने जाते हैं। प्रथम दो के द्वारा जब कभी कोई आश्चर्यजनक क्रिया सम्पन्न की जाती है तो वह अप्राकृतिक अतीन्द्रिय अथवा अलौकिक तथा चमत्कारपूर्ण होती है, किन्तु इसे तमाशा ही मानना चाहिए क्योकि इसमें देखने वालो को बेईमानी वाले धोखे में ही रक्खा जाताहै। किन्तु यदि इस प्रकार के आश्चर्यजनक व्यवहार का कोई वास्तविक एव सही कारण बताया जाता है तो उसे वैज्ञानिक या प्राविधिक श्रणी के अन्तगत मानना चाहिए तथा उसे व्यवहार विद्या कहना अधिक उपयुक्त होगा। किन्तु मनुष्य की अनुशासित तथा प्रशिक्षित इच्छा शक्ति के द्वारा किसी यान्त्रिक अथवा उपकरणगत सहायता के बिना जो कार्य सम्पन्न किया जाता है उसे ही योग जन्य शक्ति कहेगे।

प्रश्न—जीवात्मा को परिभाषित करे ?

उत्तर—जीवात्मा मे २४ शक्तिया रहती हैं। इनमे इच्छा-शक्ति निर्लेपता, कर्मण्यता ज्ञान, तीव्र स्मरण शक्ति आदि उल्लेखनीय हैं। जब इन शक्तियों को एकीकृत कर बाह्य जगत् को प्रभावित किया जाता है तो अभ्यासकर्ता के द्वारा जो परिणाम प्राप्त किये जाते हैं उन्हे भौतिक विज्ञान के अन्तर्गत रक्खा जा सकता है। जब इन्हीं शक्तियो को वह भीतरी जगत् (अन्त करण) के वशीकार में नियोजित करताहै तो आध्यात्मिक दर्शन या योग (अन्तर्योग) का जन्म होता है। जब दो मनुष्य तार के माध्यम से दो दूरस्थ स्थानो से वार्तालाप करते हैं तो यह 'व्यवहार विद्या'' है। किन्तु जब वे यही काय तार के बाह्य उपकरण के बिना प्राकृतिक शक्तियो के ज्ञान और अन्तर्धाराओ की सहायता से करते हैं तो इसे योग विद्या कहा जाता है। ऐसी क्रिया को भी योग विद्या कहा जाता है। जब कोई साधक किसी दूरस्थ स्थान से कोई वस्तु, रेल, या किसी सदेश वाहक जैसे लाने ले जाने के प्रत्यक्ष साधन का उपयोग किये बिना ही मगा लेता है अथवा अपनी जगह से ऐसी किसी वस्तु को अन्य स्थान पर भेज देता है। वस्तु के मगाने को आकर्षण और भेजने को प्रेषण कहा जाता है। पूर्ववर्ती लोगो ने प्रकृति में विद्यमान आकर्षण और विकर्षण के नियमो को पूर्णरूपेण समझ लिया था तथा योग विद्या उनके इसी ज्ञान पर निर्भर थी। योगी अपनी इच्छा शक्ति से ही इस प्रकार के आकर्षण या विकर्षण को घटा भी सकता है।

प्रश्न—इस प्रकार की शक्तियां प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले को किन-किन बातो का ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर—ये हैं (१) सीखने की तीव्र इच्छा। ऐसी तीव्र इच्छा जो भूखे को भोजन के प्रति और प्यासे को जल के लिये होती है। (२) कामनाओं और वासनाओं पर पूर्ण नियन्त्रण (३) पवित्रता पवित्र व्यक्तियो का सग, शुद्ध भोजन—जिससे कि शरीर पर पवित्र प्रभाव पडे, पवित्र एव विशुद्ध स्थानो का भ्रमण, प्रत्येक प्रकार की

दुर्वृत्ति से पृथक् रहना, शुद्ध वायु का सेवन तथा एकान्तवास। उसमें इतनी प्रबुद्धता होनी चाहिए कि वह प्रकृति के नियमो को अनुभव कर सके। एकाग्रता—ताकि वह अपने विचारों को इधर-उधर भटकने से रोक सके। उसमें आत्मसयम भी होना चाहिए जिससे कि वह अपनी वासनाओ तथा दुर्बलताओं पर नियन्त्रण कर सके। उसे निम्न पाच को त्यागना होगा—अविद्या, अहकार, विषयवासना, स्वार्थवृत्ति तथा मृत्यु से भय।

प्रश्न—तब क्या आप यह नहीमानते कि योगी प्राकृतिक नियमो के प्रतिकूल भी कार्य कर सकता है।

उत्तर—नहीं प्रकृति के नियमो के प्रतिकूल कुछ भी नही होता। हठयोग के द्वारा वह कोई अत्यन्त गौण क्रिया एक सीमा तक ही कर सकता है। यथा, अपनी सम्पूर्ण शारीरिक शक्ति को एक अगुली में समाविष्ट कर लेना अथवा ध्यानावस्था मे अन्य व्यक्ति की मानसिक दशा का ज्ञान कर लेना। राजयोग के द्वारा वह सिद्ध बन जाता है। वह यथेच्छ कर सकता है, जहा जिसे जानना चाहे उसे जान सकता है, यहा तक कि जिन भाषाओ को उसने कभी नही पढा उनका भी ज्ञान उसे हो जाता है। किन्तु सब प्रकृति के नियमो के अनुकूल ही होता है।

प्रश्न—मैंने अपनी आखो से कई बार भौतिक (जड) पदार्थों को द्विगुणित होते देखा है। यथा, पत्र सिक्के, पैन्सिल, आभूषण, आदि। इसका क्या कारण है ?

उत्तर—वातावरण मे प्रत्येक दृष्टिगोचर होने वाले पदार्थों के कण अत्यन्त सश्लिष्ट अवस्था मे रहते हैं। योगी जानता है कि इन कणो को किस प्रकार समायोजित किया जा सकता है। अपनी इच्छा शक्ति के बल से वह ऐसा कर भी देता है तथा उन्हें इच्छित शकल देकर वह प्रकट कर देता है।

कर्नल आल्काट ने स्वामी दयानन्द ने पूछा कि वे मैडम ब्लैवेट्स्की द्वारा प्रदर्शित इन चमत्कारो के बारे मे क्या कहेगे जो कि उन्होने कई प्रत्यक्ष दर्शियो के समक्ष दिखाये है। उदाहरणार्थ, गत वर्ष उन्होने बनारस मे एक कमरे मे गुलाब के फूलो की वर्षा करा दी थी हवा मे घण्टिया बजने लगी थी। दिये की लौ धीरे धीरे कम होते-होते एक दम बुझ गई तथा दूसरे ही आदेश पर वह पुन जल उठी थी, जब कि चिमनी के नियन्त्रक का तनिक भी स्पर्श नही किया गया था। उत्तर मे स्वामी जी ने कहा कि यह योग के ही चमत्कार हैं। इनमें कुछ की नकल तमाशबीन लोग भी कर लेते हैं और तब उन्हे तमाशा ही कहा जाना उचित है किन्तु ये (मैडम के कार्य) इस कोटि के नही हैं।

मेरे विचार से ऊपर व्याख्यात प्रकरण योग के उच्च विज्ञान सर्वाधिक सरल, स्पष्ट तथा विश्वसनीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। मेरे प्रश्नो का उत्तर देने वाला (स्वामी दयानन्द) अपने युग का सर्वाधिक प्रतिष्ठित आर्य पुरुष, अत्यधिक पठित, अनुभवी तपस्वी, शक्तिशाली वक्ता तथा प्रचण्ड देशभक्त है। स्वामी जी के इस कथन की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए कि बिना हठयोग की शारीरिक क्रियाओ को सम्पन्न किये कोई व्यक्ति राजयोग की साधना नहीं कर सकता तथा यदि कोई साधक राजयोग मे सफलता प्राप्त कर लेता है तो यह बात स्वत सिद्ध ही माननी चाहिए कि उसने पूर्व जन्म में हठयोग की साधना की है। इस विचार का समर्थन उन सभी शिक्षित हिन्दुओ ने किया है, जिनसे मैं मिला हूं, किन्तु यह कथन तर्क पूर्ण है या नही, इसे मैं पाठको के विचार के लिये ही छोडता हू। किन्तु इतना अवश्य मानना चाहिए कि मानव अपनी आध्यात्मिक उन्नति की ओर जब अभिमुख होता है तो उसका वैयक्तिक विकास भी होता चलता है तथा मुक्ति से पूर्व इस साधक को पूर्ण स्वराज्य प्राप्त हो जाता है। पुर्नजन्म में विश्वास करने वालों के लिये उपर्युक्त कथन में कोई असगति नहीं है, किन्तु मैं इस बात को मानने में सकोच का अनुभव करता हूं कि आध्यात्मिक शक्ति के निम्नतम स्तर तक पहुंचने के लिये भी क्या हठयोग मे कथित निम्न शारीरिक क्रियाओ का किया जाना आवश्यक है—यथा कीलो पर शयन करना, अग्नि के बीच बैठना, धोती क्रिया (सूती कपडे को निगल कर उसे पुन निकालना) के द्वारा उदर की शुद्धि तथा कई गैलन पानी पेट मे भर कर उसे पुन निकालना आदि।

हमे शिवनारायण के घर पर प्रसिद्ध पण्डिता रमाबाई से मिलने का अवसर भी मिला। रमाबाई ने कालान्तर में एक बगाली वकील से विवाह कर लिया था, किन्तु उस समय वह अपने भाई के साथ भ्रमण करती हुई मेरठ आई थी। रमाबाई का नाम तथा इतिवृत अब ससार मे इतना विख्यात हो गया है कि उस समय वह गीता तथा रामायण मे व्युत्पन्न थी।

सस्कृत भाषा आशु गति से बोलने तथा लिखने मे उसे योग्यता प्राप्त थी तथा वह किसी भी बताये गये विषय पर अपने अध्ययन की सीमा मे श्लोक रचना कर सकती थी। ६ सितम्बर को मेरे व्याख्यान के बाद उसने प्रथम हिन्दी मे अपने विचार प्रकट किये और पुन आग्रह करने पर वह सस्कृत मे बोली। दोनो भाषाओ मे उसका भाषण समान रूप से प्रवाहपूर्ण था। उस समय तक उसे अग्रेजी का ज्ञान नही था, किन्तु वह सस्कृत, हिन्दी उर्दू, मराठी, गुजराती तथा कन्नड मे भाषण दे लेती थी। कन्नड उसकी मातृ-भाषा थी। उस समय उसकी आयु २२ वर्ष की थी। वह उस समय दुर्बल, कृशकाय तथा वैराग्योन्मुख स्त्री की भाति दिखाई देती थी, उस मजबूत कदकाठी वाली तथा दुनियादारी की तरफ से सावधान रमाबाई से भिन्न, जिसे मैंने हाल ही मे पूना में श्रीमती बेसेण्ट के व्याख्यान के समय देखा है, १८८० की रमाबाई उच्च साधना सम्पन्न ब्राह्मण नारी थी पूना मे रहने वाली वतमान रमाबाई तो पश्चिम की उस कामकाजी औरत की तरह दिखाई देती है जिसका साहित्य की अपेक्षा अपने शारदा आश्रम की निवासिनियो से अधिक परिचय है।

यद्यपि उन दिनो अत्यधिक गर्मी थी तथापि मेरा स्वामी दयानन्द से प्रति दिन प्रति साय वाद विवाद होता रहता था। एक प्रात काल सूर्योदय से पूर्व मैडम ब्लैवेट्स्की मेरे निकट आई और कहा कि हमे बिना विलम्ब किये शिमला के लिये प्रस्थान कर देना चाहिए अन्यथा हम लोग लू के शिकार हो जायगे। उन्हे इस बात का भी ध्यान नहीं रहा कि मेरे उपयुक्त व्याख्यान के सूचना पत्र भी प्रसारित किये जा चुके हैं। किन्तु जब उन्हे कहा गया कि भारत मे प्रचलित रिवाज के मुताबिक वे गर्मियो मे बाहर खुले आसमान के नीचे सोये तो उन्हें गर्मी का प्रकोप नही सतायेगा, उन्होने शिमला जाने का विचार बदल दिया तथा शिमला को भेजे गये एक तार (जिसमे कि वहा शीघ्र पहुचने की सूचना उन्होने दी थी) के प्रतिवाद मे दूसरा तार दे दिया। दूसरी रात उसने अपनी चारपाई बाहर ही डलवाई और मच्छरदानी का प्रयोग किया। उस रात उसे गहरी नीद आई और उसकी निद्रा तभी टूटी जब समीप के आम के वृक्ष पर प्रात काल कौवो ने शोर करना शुरू किया। उस दिन स्वामी दयानन्द और मैंने, जो क्रमश आर्यसमाज तथा थियोसोफिकल सोसाइटी के प्रधान थे, एकान्त मे देर तक बातचीत की। हमारे वार्तालाप का परिणाम इस प्रकार निकला—"हममे से कोई एक दूसरे के विचारो के लिये उत्तरदायी नही है। हम इस बात पर सहमत हुए कि दोनो सस्थाये मित्र की तरह किन्तु सर्वथा स्वतन्त्र रहेंगी।"

—ओल्ड डायरी लीव्ज अध्याय १४ का अनुवाद

विनाशकारी दंगे

(पृष्ठ ५ का शेष)

तमाम जवान तथा गाव के सैकड़ों लोग वही ढेर कर दिये जाते। इका हरिजन विधायक श्री नानकचन्द आजाद ने बताया कि मैं, तथा मेरठ जनपद के अन्य विधायक सासद श्री शान्ति त्यागी के नेतृत्व मे मलियाना आकर पूरी घटना की जाच कर चुके हैं। पी०ए०सी० अवैध शस्त्रो की तलाशी लेने यहा आयी थी। उस पर मस्जिद व मकानो की छतों से अन्धाधुन्ध गोलिया चलाई गई। जवान घिर गये। तब खबर मिलने पर और टुकडी आई। उसने आत्मरक्षा मे गोलिया चलाई तो हमलावर दगाई मारे गए।

गाव के हरिजन बताते हैं कि मुरादनगर बम फक्ट्री के कर्मचारी सत्तार ने घर मे बम इकट्ठे किये हुए थे। उसने गोलिया चलाई तो घर मे रखे बमों से विस्फोट हो गया। इन विस्फोटो से उसके परिवार के कई लोग मारे गये तथा मकान में आग लग गई।

गाव वाले बताते हैं, कि यदि पी०ए०सी० न आती तो दगाई पूरे गाव मे नरसहार कर डालते। किन्तु उनमे आक्रोश था कि पी०ए०सी० व नागरिको पर गोलिया चलाने वाले एक भी व्यक्ति को गिरफ्तार नही किया गया जबकि निदोष १०३ लोगो को पकडकर जेल मे डाल दिया गया।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी जब ३० मई को मेरठ के दगाग्रस्त क्षत्रो का दौरा करने आये तो मलियाना की अनेक हरिजन महिलाओ ने उनसे कहा कि क्या वे गाव छोड जाए? मजहब के जुनून में भरे लोग अभी भी उन्हे जान से मार डालने की धमकिया दे रहे हैं।

यह ओछी राजनीति

कुछ राजनीतिक दलो के नेता हर दगे की आग मे राजनीतिक रोटिया सकने का प्रयास करते हैं। वे दगाई मुसलमानो का पक्ष लेकर पी०ए०सी० को दोषी करार देकर अपने वोट बैंक भरने को उत्सुक रहते हैं। जब १९ व २० मई को मेरठ जल रहा था तब इन नेताओ ने दगा शुरु करने वालो की निन्दा क्यो नही की? उस समय मेरठ आने का कष्ट क्यो नही उठाया? विपक्षी दलो मे केवल भाजपा अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा है कि केवल मलियाना काड की नही पूरे मेरठ के दगो की एक साथ जाच की जाये। मुसलमानो की वोटो के भूखे विरोधी नेता यह जानते हैं कि यदि पूरे काण्ड की जाच हो गयी तो यह रहस्योद्घाटन होगा कि पाकिस्तान समर्थक तत्वो ने ही आगजनी व हत्याए शुरू की थी। ये राजनीतिक नेता पी०ए०सी० के खिलाफ बवडर केवल मुस्लिम, वोटो को प्रभावित करने के लिए मचा रहे।

विदेशी एजेन्ट सक्रिय

मेरठ व दिल्ली के दगो के पीछे निश्चय ही अलगाववादी व राष्ट्रद्रोही तत्वो का हाथ है। तलाशी के दौरान मेरठ के अनेको मौहल्लो में घरो से भारी मात्रा मे पाकिस्तान मे बनी राइफल बम तथा पिस्तौल पकडी गयी हैं। नादिर अली, नामक उद्योगपति के घर से पाकिस्तानी राइफल बम तथा पिस्तौल बरामद हुई हैं। पाकिस्तान मे छपा उत्तजक साहित्य भी बरामद हुआ है। इससे भी यह साफ हो जाता है कि कुछ बाहरी तत्व यहा तक विदेशी शस्त्र पहुचाते रहे हैं।

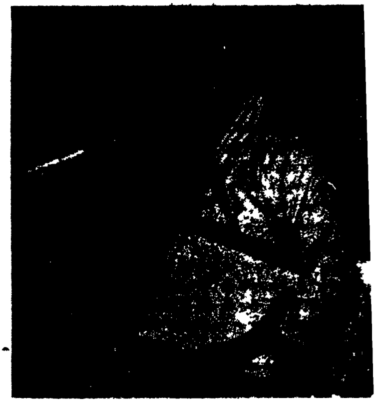
समय की चेतावनी

दगा के विश्लेषण से साफ जाहिर है कि विदेशी मदद से राष्ट्रद्रोही तत्व भारत मे गृहयुद्ध छेड़ने पर उतारू हैं। इन राष्ट्रद्रोही तत्वो के इरादे अब पूरा तरह बेनकाब हो चुके हैं। वोटो की राजनीति के कारण ऐसे राष्ट्रद्रोही तत्वो का अब और अधिक तुष्टीकरण करना घातक होगा। सत्ताधारी और विपक्षी दलों के नेताओ को चाहिए कि वे उन शहीदो का स्मरण करे जिन्होने अपना सर्वस्व होम कर देश को स्वाधीनता दिलाई है। नेतागण उनकी स्मृति के आलोक में निश्चय करें कि वे सत्ता स्वार्थ और दलीयहित से प्रेरित होकर राष्ट्रहितो की सीमा नही लाघेंगे। यदि देश के राजनीतिज्ञो ने अब भी राष्ट्रहितो को महत्व देकर राष्ट्रद्रोही तत्वों के विरुद्ध मुखर आवाज न उठाई तो देश की अखण्डता खतरे में पड जायेगी और आने वाली पीढिया इन राजनीतिज्ञो को कभी क्षमा नहीं करेंगी। ●

महान् वट वृक्ष : श्रीमती ईश्वर देवी जिनकी छाया में अनेक संस्थाएं पल्लवित और पुष्पित होती रहीं

—श्री प्रशान्त वेदालंकार—

४ जून १९८७ को रात्रि को ७ ४५ पर महान् समाज सेविका, देशभक्त, शिक्षाविद्, आर्यसमाज की स्तम्भ श्रीमती ईश्वर देवी का ७४ वर्ष (जन्म २६ मई १९१३) की आयु मे राममनोहर लोहिया अस्पताल में निधन हो गया। इस समाचार को जिसने भी सुना वह जून को प्रातः ११ बजे निगमबोध घाट पर उनकी अन्त्येष्टि में सम्मिलित हो गया। और जो वहाँ नहीं पहुंच सका वह उनकी उठावनी की रस्म और शोक सभा मे रविवार ७ जून १९८७ को आर्यसमाज शक्तिनगर पार्क के निकट बनाये गये सभामण्डप में आ पहुंचा। इस शोकसभा में अनेक पत्रकार, लेखक, समाज सेवक, शिक्षा शास्त्री, राजनीतिज्ञ, आर्यसमाजी तथा परिवार के सभी लोग उपस्थित थे।



श्रीमती माता ईश्वरी देवी जी

कार्यकारी पार्षद श्री कुलानन्द भारतीय, सार्वदेशिक सभा के स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, पूर्व महानगर पार्षद डा० सत्यपाल चुघ, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भू०पू० प्रोफेसर प० धर्मदेव जी वेदवाचस्पति, आर्ष गुरुकुल एटा के प्राचार्य श्री डा० वागीश शर्मा, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल, आर्य प्रान्तीय महिला सभा की प्रधान श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती कौशल्या मलिक श्रीमती कौशल बसल (मन्त्रिणी आर्यसमाज शक्तिनगर) श्री लाजपतराय (प्रधान आर्यसमाज प्रतापनगर), श्री शिवप्रसाद गुप्त (प्रधान आर्यसमाज सोहनगंज) श्री बृजलाल शास्त्री, श्री प्रेमपाल शास्त्री आदि ने अपनी श्रद्धा के सुमन स्वर्गीया श्रीमती ईश्वर देवी की स्मृति के उपलक्ष्य मे अर्पित किये। इस सभा मे गुरुकुलीय स्नातक मण्डल के राष्ट्रीय मन्त्री श्री विद्यासागर विद्यालकार, नवभारत टाइम्स के सहसम्पादक श्री अजय भल्ला प्रांतीय आर्य महिला सभा की उपप्रधाना श्रीमती शान्तिदेवी मलिक महामन्त्रिणी श्रीमती प्रकाश आर्या आर्य कन्या गुरुकुल, राजेन्द्र नगर की आचार्या श्रीमती शान्ति देवी श्रीमती कृष्णा चड्ढा श्रीमती शान्ति देवी अग्निहोत्री श्रीमती शकुन्तला दीक्षित व बिरला आर्य कन्या विद्यालय के प्रबन्धक श्री जसवन्तराय साही प्रधानाचार्या श्रीमती सुशीला सेठी तथा प्रबन्धकर्त्री सभा के पदाधिकारीगण व अध्यापिकाएं दिल्ली की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।

वक्ताओं ने अपनी श्रद्धाञ्जलि मे उस महान् देवी के गुणो का कीर्तन किया। उससे उनकी प्रतिभा के अनेक पक्ष प्रकट हो उठे।

श्रीमती ईश्वर देवी भी कुछ वर्ष पूर्व दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण अपना अन्तिम समय शारीरिक दृष्टि से कष्ट मे व्यतीत कर रही थी। पर अपने साहस ऊचे मनोबल व दृढ शक्ति के कारण वे अन्तिम समय तक शिक्षा के विकास व समाज सेवा के विविध कार्यों मे सलग्न रही। वे बिरला आर्य उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालय की अन्तिम समय तक प्रधाना थी। वे अस्पताल जाने से पहले तक उसके कार्यों मे रुचि लेती रही। रुग्ण होने पर भी अपने घर पर बैठक का आयोजन कर उसके विकास का काय करतीरही।

आर्य जगत् के समाचार

आर्य वीर दल बम्बई का १० दिवसीय शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल बम्बई का १० दिवसीय शिविर महाराष्ट्र आर्य वीर दल के संचालक श्री कैप्टन देवरत्न जी आर्य की देखरेख में आर्यसमाज सान्ताक्रूज मे दि० १५-५ ८७ से से २४ ५-८७ तक दस वर्ष से सोलह वर्ष तक के बच्चों का लगाया गया। जिसमे बच्चों को शारीरिक-बौद्धिक शिक्षण, वैदिक विचार-धारा से शिक्षित कराते हुये बच्चो की कोमल मन स्थिति को आर्य धर्म, आर्य सभ्यता, आर्य संस्कृति की ओर प्रेरित करने का सफल प्रयास किया जिन उत्साही विद्वानों ने अपनी नि शुल्क सेवा से इसे सफल बनाया उनमे प० प्रदीप शास्त्री, प० नामदेव जी प० रामावध प्रसाद जी, जी, प० धर्मधर शास्त्री और आर्य वीर दल बम्बई के मन्त्री ओ३मप्रकाश प० नरेन्द्र आर्य प्रमुख है।

शिविर संयोजक मेघराज जी गुप्त एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नारायणी देवी ने दिन रात छोटे बच्चों की देखभाल पुत्र के समान की। आर्यसमाज सान्ताक्रूज, श्री गुलजारीलाल जी आर्य श्री कैप्टन देवरत्न जी आर्य व अन्य दानी महानुभावो ने शिविर की व्यवस्था को अति उत्तम बनाने का अथक प्रयास किया।

समापन समारोह मे आर्य वीरों के शिक्षण का बौद्धिक-शारीरिक प्रदर्शन हुआ। जिससे प्रभावित होकर श्री रामचन्द्र जी आर्य, श्री सुन्दरलाल जी व अन्य लोगो ने प्रेरणाप्रद पारितोषिक प्रदान किये।

—ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री

कर्मठ कार्यकर्ता का निधन

डी० ए० वी० शताब्दी काले धुर्वा रांची के प्रधान श्री कपिल कान्त वेदी का आकस्मिक निधन होने से क्षेत्र की आर्य प्रवृत्तियो की अपूर्णीय क्षति हुई हैं।

प्रभु शोक सन्तप्त परिवार की सहनशक्ति व दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

— सम्पादक

शोक समाचार

फर्रुखाबाद मे वैदिक वाचनालय की स्थापना करने वाले श्री बाबूराम गुप्त का ८३ वर्ष की आयु मे देहावसान हो गया वैदिक वाचनालय में वैदिक साहित्य सम्बन्धी देश भर की १९ पत्रिकाए आती थी। गुप्त जी खुले दिल से वाचनालय का सचालन करते थे।

स्वतन्त्र प्रकाश भट्ट
व्यवस्थापक

आर्यसमाज तिलक नगर नई दिल्ली-१८ का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, तिलक नगर, नई दिल्ली-१८ का वार्षिकोत्सव बड़े उत्साह एव उल्लास के वातावरण में १८-५-८७ से २४-५-८७ तक मनाया गया। यज्ञ आचार्य विश्वबन्धुजी शास्त्री के ब्रह्मत्व में सुचारु रूप से चला, रात्रि को प० चुन्नीलाल जी के भजन तथा डा० महेश वेदालकार के वेदोपदेश हुए। दिन प्रति दिन उपस्थिति बढ़ती गई।

पूर्णाहुति रविवार के दिन ऋषि लगर में लगभग दो हजार जनता ने भोजन किया। इस अवसर पर आर्यसमाज के सचालन मे चल रहे दयानन्द आदर्श विद्यालय का वार्षिक अधिवेशन एव सांस्कृतिक कार्यक्रम की अध्यक्षता पश्चिमी जिला के उप शिक्षा निर्देशक श्री आर० एस० सिसोदिया ने की।

विशेष आमन्त्रित अतिथि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज की गतिविधियों पर अपना सुझाव दिया कि धर्म के प्रति बालकों में रुचि उत्पन्न करते हुए अध्यापिकाए भी सत्सगों में भाग लिया करें। उन्होने परामर्श देते हुए कहा कि सरकार से मान्यता अवश्य लें किन्तु सहायता न लें।

श्री जगकराज गुप्ता सांसद डा० धर्मपाल महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री धर्मपाल, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, श्री राजेन्द्र दुर्गा महामन्त्री ने भी सम्बोधित किया।

—मन्त्री

आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) में प्रवेश प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित पाठविधि पर आधारित एक मात्र शिक्षण सस्था, म० द० वि० रोहतक से सम्बद्ध आर्ष गुरुकुल ऐवा कटरा में इस समय बालकों का प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेश समय बालक की आयु ८ से १२ के मध्य होनी चाहिए तथा बालक का पञ्चम कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

गुरुकुल मे निर्धन, अनाथ सुयोग्य मेधावी बालकों से किसी प्रकार का कोई शुल्क नही लिया जाता है।

इच्छुक अभ्यार्थी पत्रादि भेज कर जानकारी प्राप्त करें स्थान सीमित है शीघ्रता करें।

—आचार्य राजदेव नैष्ठिक
प्रधानाचार्य
आर्ष गुरुकुल एवा कटरा
इटावा (उ० प्र०)

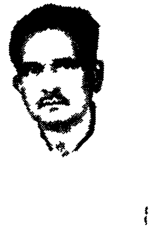
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के नवीन कर्णधार



श्री भूपनारायण शास्त्री
सभा प्रधान



श्री रामाज्ञा वैरागी
सभा मन्त्री



श्री द्वारकाप्रसाद ओज
सभा कोषाध्यक्ष

दिल्ली आर्य समाज दीवान हाल की एक सार्वजनिक सभा मे बिहार राज्य के नए पदाधिकारियो प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री मन्त्री श्री रामाज्ञा वैरागी कोषाध्यक्ष श्री द्वारिकाप्रसाद ओज का स्वागत किया गया। बिहार सभा की ओर से आपने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी को ५१०००) की थली भट की। स्वामी आनन्दबोध जी ने अपने आशीर्वाद भाषण मे कहा कि यह राशि स्थिरनिधि मे रखी जाएगी। और इसके ब्याज से बिहार मे आर्यसमाज की गतिविधियो को बढाने का आयोजन किया जाएगा।

माता कमलादेवी जिन्होंने सार्वदेशिक सभा को ५०००) स्थिर निधि में दान दिए है



धर्मपत्नी खुशीराम गुप्ता जो अनेक पदो पर आर्यसमाज बकसर (गाजियाबाद) की लगन से सेवा करते रहे। कमला जी धार्मिक मनोवृत्ति की महिला हैं और उदारता से आर्यसमाज के कार्यों मे सहायता करती रहती है।

सार्वदेशिक सभा को ५००००) दान



श्रीमती दयावती देवी   श्री विद्याप्रकाश जी

दिल्ली। श्री विद्याप्रकाश जी एम०एस०सी० निवृत स्टेशन इञ्जीनियर आल इण्डिया रेडियो ने अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी श्रीमती दयावती की स्मृति मे सार्वदेशिक सभा को ५००००) का दान दिया है जिसको स्थिरनिधि मे रखा जाएगा। श्रीमती दयावती जी अत्यन्त धार्मिक व मानवीय उच्च गुणो का समूह थी। जीवन भर समाज की सेवा आपका लक्ष्य रहा। श्री विद्याप्रकाश जी ने इस सेवा सूत्र को स्थायी बनाए रखने के लिए उनकी स्मृति स्थापित की है।

पंजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२८ ६-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसस न० U १३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U 93 Post in D.P.S.O. on 25.6-1987

प्रशिच्ण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा आयोजित व्यायामशिक्षक प्रशिक्षण शिविर दिनाक ११ से २४ जून १९८७ ई० का दीक्षान्त समारोह स्थान गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक मे २४ जून बृहस्पतिवार को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता मे मनाया गया । इस अवसर पर श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज गुरुकुल झज्जर, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर हस, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिह जी, आर्य वीर दल हरियाणा के सचालक श्री उमेद शर्मा, मन्त्री श्री वेदप्रकाश जी, अधिष्ठाता श्री धर्मदेव जी विद्यार्थी तथा अन्य गण्यमान्य नेताओ ने अपने आर्य वीरो को शुभाशीर्वाद तथा मार्ग दर्शन किया ।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पिलखुवा (गाजियाबाद) उ०प्र०

पिलखुवा । यहा आर्य वीर दल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एकता अखण्डता सम्मेलन मे मुख्य अतिथि प्रमुख पत्रकार श्री तेलूराम काम्बोज ने युवा शक्ति से सगठित होने का आहृवान किया—मेरठ के दगो के लिए उन्होने इमाम जैसे पाक परस्त लोगोको जिम्मेवार बताया । उन्हे किसी भी प्रकार का महत्व नही दिया जाना चाहिए ।

आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में धर्म की आड मे राजनीति करने वालो की कडे शब्दो मे निन्दा करते हुए कहा कि आज इस प्रकार के लोग देश को कमजोर करने मे लगे हुए हैं । इस अवसर पर स्वामी वृतानन्द, [illegible] धर्मपाल शास्त्री, वीरपाल विद्यालकार आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए ।

आर्य वीर दल के मन्त्री श्री दिनेश गुप्ता ने दल की गतिविधिओ पर प्रकाश डाला तथा वीर रस के राष्ट्रीय कवि श्री कृष्ण मित्र ने अपनी ओजपूर्ण कविता प्रस्तुत की ।

— दिनेश गुप्ता, मन्त्री
सा० आर्य वीर दल पिलखुवा (उ०प्र०)

श्री निशुल्क गुरुकुल

समस्त आर्यजनो की सेवा में सूचना
अयोध्या (फैजाबाद) का नवीन सत्र १० जुलाई १९८७
नवीन ब्रह्मचारियो का प्रवेश भी १ जुलाई ८७ से प्रारम्भ हो जायगा । प्रवेशार्थी कृपया पत्राचार द्वारा आचार्य जी से सम्पर्क स्थापित करें एव नियमावली के लिए लिखें ।

यह गुरुकुल स्व० स्वामी त्यागानन्द जी सरस्वती द्वारा सस्थापित है एव ६० वर्षों से आर्य जगत की सेवा मे तत्पर है । यह 'क' वर्गीय महाविद्यालय है । यहा प्रारम्भिक कक्षाओ से आचार्य स्तर तक अध्यापन होता है जिसकी मान्यता सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से भी प्राप्त है ।

— सोमामित्र पाण्डे

स्वामी वेदानन्द वेदवागीश नहीं रहे

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान लेखक आर्य गुरुकुल झज्जर विद्यापीठ के प्रस्तोता स्वामी वेदानन्द वेदवागीश का निधन ५-६-८७ को प्रातःकाल सफदरजग हस्पताल मे हो गया । स्वामी जी ६७ वर्ष के थे, वे पूज्य स्वामी आत्मानन्द सरस्वती के प्रमुख शिष्यों मे थे । श्मशान भूमिमे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, मन्त्री वेदव्रत शास्त्री सभा हरियाणा इत्यादि गण्यमान्य विद्वानो ने श्रद्धाजलि अर्पित की ।

—डा० नन्दकिशोर विद्यावाचस्पति
हरिद्वार

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित ।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक २७] | आषाढ शु० ९ सं० २०४४ रविवार ५ जुलाई १९८७ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

आर्य समाजें वेद प्रचार सप्ताह सोत्साह मनावें

राष्ट्र-संकट में : वीरों की भूमिका

—महात्मा श्री दयानन्द जी, तपोवन देहरादून

ओं धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो बृहद्दिवा अध्वराणामभिश्रियः ।
अग्निहोतार ऋतसापो अद्रुहः अपो असृजन्ननु वृत्रतूर्ये ॥

ऋ० १० । ६६ । ८

वृत्रतूर्ये अप असृजन् धृतव्रता क्षत्रिया बृहद्दिवा यज्ञ निष्कृत
अध्वराणाम् अभिश्रिय अग्नि होतार ऋतसाप अद्रुह

राष्ट्र व जाति पर संकट की घड़िया हो, घर में आततायी घुसे छिपे हो, अपने ही लोग स्वार्थ (वोट लोभ के) वशीभूत हो, सभ्यता संस्कृति का गला घोट रहे हों। निज कुर्सी सेवा की खातिर साधारण जनता को गुमराह कर रहे हों, भ्रान्तियां फैला रहे हो। अन्य देशों की भाषा मे देश के राज बेचते हो और पापियों को दण्ड न मिलता हो, ऐसे चारों ओर भीषण भ्रष्टाचार मे कौन राष्ट्र-जाति की रक्षा करेगा ? जो पवित्र वेद मन्त्र ने प्रकाश डाला है।

वृत्रतूर्ये अप: असृजन्—चारों ओर से अ धकार के घेरे मे, पाप की घनीभूत स्थिति के साथ संग्राम मे, तदनुकूल घोर कर्मों (Curative strong actions) के लिये वीरों को तैयार करो।

कैसे हो वे रण बांकुरे वीर ?

१ धृत व्रता:—क) व्रत के पक्के मजबूत सकल्पो वाले, सिद्धान्तों पर सुख-जीवन से राष्ट्र व जाति के सम्मान को बहुमूल्य मानने वाले, जिन्हें राष्ट्र की कमजोरियों कुरीतियो के निकालने के लिये प्राणों की आहुति देना जिनके लिए सहज कार्य हो। कोई भय व प्रलोभन जिन्हे पथभ्रष्ट न कर सकता हो।

ख) असफलता मे हार न मानना—अवश्य पुरुषार्थ मे कमी रही, उसे खोजकर पूरा करना और सफल होना।

२ बृहद् दिवा—अ) (१) युद्ध-विज्ञान के ज्ञाता।
(२) अपनी शक्ति व कमजोरी को पूरी तरह समझते हो।
(३) कमजोर स्थिति को कैसे संभाला जाए।
ब) (१) शत्रु की शक्ति का पता हो।
(२) शत्रु के चोट करने के पैंतरे समझते हो।
(३) शत्रु के फैलाए षडयन्त्र का प्रतिकार करना जाने।
(४) शत्रु दल मे अ धकार-फूट कैसे डाली जाए यह जानते हों।

३ क्षत्रिया —(१) स्वस्थ सुडौल शरीर, युद्ध विज्ञान के साथ शस्त्र विद्या में निपुण हों।
(२) पीडितों की रक्षा करने मे प्रवीण।
(३) न्यायकारी।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सार्वदेशिक सभा की अपील

सार्वदेशिक सभा द्वारा देश-विदेश की सभी आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं से निम्न अपील की गई है :

(१) श्रावणी पर्व श्रावण शुक्ल १५,२०४४ तदनुसार ९ अगस्त १९८७ को इस वर्ष पड रहा है।

(२) वेद का पढना-पढाना सुनना-सुनाना महर्षि दयानन्द ने आर्यों का परम धर्म बताया है। इसीलिए आर्य समाज अपने जन्म-काल से ही श्रावणी सप्ताह को वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाता रहा है।

(३) इन सप्ताह के सात दिनो मे नियमित वेद कथा यज्ञ तथा प्रवचनो का विशेष आयोजन किया जाता है।

(४) इस पर्व के साथ ही योगिराज महाराज कृष्णजी का जन्मदिवस भी मनाया जाता है। योगिराज कृष्ण को महर्षि दयानन्द ने आप्त पुरुष माना है और वे जीवन भर अपने प्रवचनो में गीता के प्रमाणो को आप्त शब्द के रूप मे प्रयोग करते रहे हैं। योगीराज श्री कृष्ण ने मानव धर्म की श्रेष्ठता इसी मे सिद्ध की है कि मनुष्य देवासुर संग्राम में निरालस रहे, कभी कर्त्तव्य च्युत न हो, समाज पर आए सकटो के निवारण का सदा तत्परता से सघर्ष करे। देव दयानन्द ने जीवन भर सत्यासत्य निर्णय का संग्राम किया और उसी सत्याचरण व सत्याग्रह के लिए अपने प्राणो की आहुति दी। आज समाज घोर अशान्ति जनक परिस्थितियो से घिरा हुआ है। राष्ट्र की नैया भवर मे डोल रही है। कोई दिन ऐसा नही आता जब सम्पूर्ण देश मे सुख शान्ति का साम्राज्य बनता दिखाई दे। कही आतकवाद का हौआ खाए जा रहा है कही राष्ट्र मे अलगाववादी आग लगाते दिखाई देते हैं। आर्यसमाज के अतिरिक्त कोई जानदार सस्था दिखाई नही देती जो निस्वार्थ व निष्काम भाव से राष्ट्र का सही नेतृत्व कर सके। ऐसी परिस्थितियो मे आर्यसमाज का कर्त्तव्य भार कितना बढ गया है यह सर्व विदित है। आर्यसमाज वेद भावना के उपदेशो व योगिराज कृष्ण के बुद्धि कौशलपूर्ण ज्ञान प्रकाश से जनता का मार्ग दर्शन कर सकता है।

इसीलिए सार्वदेशिक सभा की ओर से सभी आर्य बन्धुओ से साग्रह प्रार्थना की जाती है कि इस पवित्र पर्व (वेद प्रचार सप्ताह) मे कोई भी समाज निष्क्रिय न रहे। बडी समाज बड-बडे

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

राष्ट्र संकट में

(पृष्ठ १ का शेष)

(४) प्रजा के स्नेह पात्र विश्वास पात्र हों।

(५) जिन के लोहे (अस्त्र-शस्त्रो) को देख शत्रु भी किनारा करें।

४ यज्ञ निष्कृत.—पाप की वृद्धि को रोकने, पाप को मिटाने, निर्मूल करने के लिए असुरो, आततायियो के हनन को यज्ञ का अ ग समझते हो। यह केवल राष्ट्रहित मे हो, व्यक्तिगत स्वार्थ मे बिल्कुल न हो।

उदाहरण (१) ताडका पूतना को यज्ञो की रक्षा के लिए मारा गया।

(२) श्री राम जी ने बाली को मार कर राज्य सुग्रीव को दिया। रावण को मारकर लका का राज्य विभीषण को दिया।

(३) भगवान कृष्ण ने कौरवो को पराजित कराकर राज्य पाडवो को दिलवाया।

(४) तिब्बत के बार्डर की रक्षा, समुद्र तट की चौकसी के लिए अपने आराम को हराम करना भी राष्ट्र यज्ञ का अ ग है।

५ अध्वराणा अभिश्रियः—स्वार्थ, राग-द्वेष, नास्तिकता का त्याग करके कर्त्तव्य निष्ठा मे जूझना। धर्म व राष्ट्र की रक्षा हेतु सर्वस्व अर्पण करना। राष्ट्र वासियो के चरित्र व मनोबल को हर कीमत पर ऊचा बनाए रखना, हौंसला न हारे, भगदड न मचे।

देश वासियो को समझाना कि राष्ट्र के शत्रुओ को मारना उनका बीज समाप्त करना। हिंसा नही, अहिंसा है। ताकि आए दिन के झगडे, देश बटवारे की माग, देश में विदेशी प्रचार स्थिति को समाप्त करना धर्म है।

६ अग्नि होतार.— अग्नि को होता (मार्ग दर्शक) बनावें, अग्नि के गुण कर्म स्वभाव को धारण करें—राष्ट्र जन।

१) प्रकाश—परिस्थितियो की पहचान व उनके उपचार।

२) तप—तपस्वी जीवन, राष्ट्र की समृद्धि स्वतन्त्रता स्वाभिमान कायम रखने के लिए कष्ट सघर्ष सहने, कष्टो को आलिगन करना, कष्टो को कष्ट न मानना।

३) ऊपर की ओर बढना—अग्नि की लौ सर्वव ऊपर को जाती है। चरित्र, ज्ञान, धर्म, धन को बढाना।

४) विरोधी—तत्व को जला कर भस्म कर डालना।

५) सग्रह—की भावना न हो, जो मिले उसे सूक्ष्म शक्तिशाली बनाकर राष्ट्र के अर्पण करना।

७ ऋत साप —१, सत्य पथ पर सुदृढता से चलते जाना।

२) ईश्वरीय आज्ञाओ का सर्वत्र पालन करना।

३) सफलता मे पूर्ण विश्वास रखकर रुकावटो से कभी भी निरुत्साहित न होना-प्रयत्नो को न त्यागना।

८ अद्रुह—धोखा न देना। वचन देकर न निभाना बडा धोखा है। राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर पीठ दिखाना, कर्त्तव्य न निभाना बडा धोखा है। इन पापो से बचना। इस प्रकार के उपरोक्त गुण जिस राष्ट्र मे हो वही अपनी मुश्किलें आसान करते हैं, सम्मान के पात्र होते हैं। आने वाली सन्तानें उनके नाम से गौरव प्राप्त करती हैं तथा उनके पद चिन्हो पर निज राष्ट्र को समृद्धि शाली व सुखी बनाते हैं।

यदि इन गुणो मे कमी या कसर हो तो राष्ट्र के नेता भरसक प्रयत्न करके इन्हे उपजावें और प्रभु देव के आशीर्वाद का पात्र बनें।

—दयानन्द वानप्रस्थी

वेद सप्ताह

(पृष्ठ १ का शेष)

सम्मेलनो व शोभा यात्राओ द्वारा भी जन जागरण अभियान चला सकती है। आज समाज व देश को जगाने की जरूरत है।

आर्यसमाज को देश मे व्याप्त अत्याचार अनाचार भ्रष्टाचार के प्रति जनतामें अरुचि व पवित्राचरणकी भावना पैदा करने केलिए सद्धर्म का प्रचार करना चाहिए। राजनीतिक हल इस महारोग का कोई नही इसलिए ऋषिवर निर्देशित धर्म सदाचार की शिक्षाओ के प्रचार प्रसार की आवश्यकता समझकर समाज को सगठित किया गया था।

गर दयानन्द से योगी के जगाए न जगे।
और आएगा तुम्हे कौन जगाने के लिए॥

अत सभी आर्य बन्धु आपसी मतभेदो व वैर वैमनस्यो को ताक मे रखकर एक भाव होकर आर्य समाज के प्रचार तन्त्र को सबल सार्थक व सम्पुष्ट बनावे।

प्राय, देखा गया है कि समाज मे कार्य का बाहुल्य हो तो पारस्परिक मतभेद भी मनुष्य भूल जाता है अन्यथा —

खाली मन शैतान का कारखाना।

समाजो को शुद्ध सात्विक सक्रिय बनाने के लिए सदा कत्तव्य शीघ्र व सक्रिय बनाए रखना परमावश्यक है।

अभी से आर्य समाजे सप्ताह को सफल बनाने के कार्यक्रम में जुट जावे, ताकि देश भर मे आर्य सस्कृति के स्वर गू ज उठ।

—आचार्य शिवराज शास्त्री

गुजरात में वैदिक धर्म प्रचार

जिला राजकोट गुजरात द्वारा दिनाक १५ से २४ मई तक दस दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ एव आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। प० हरिओम जी ने ब्रह्मापद ग्रहण किया व वेद ज्ञान का स्रोत बहाया।

श्री श्याम जी भाई आर्य प्रो० दयाल आर्य प० लक्ष्मणदेव ब्र० जगदीश विद्यार्थी ने ग्रामीण जनता को अपने भाषणो से धर्म लाभ दिया। जाम नगर आर्य समाज के प्रधान श्री धर्म वीर खन्ना ने आर्य समाज मन्दिर के लिए भूमि खरीदने का वचन दिया। यह ६५ वर्ष से चल रहा समाज इस ग्रामीण क्षेत्र का आदर्श समाज है।

—मन्त्री

आर्यसमाज ठकारा (गुजरात)

सम्पादकीय

खतरे की घण्टी बज गई

अब फिर वही हो रहा है जो पक्षपात व त्रुटिपूर्ण कार्य अंग्रेजी काल में होते थे। साम्प्रदायिकता की विष बेल अमर बेल बनकर फैल रही है। आजादी के कुछ काल बाद तक तो भारत मे शांति रही। किन्तु राजनीति के स्वार्थी तत्वों ने कुचले हुए सांप को पुरवा हवा देकर फिर जीवित कर दिया। स्थान-स्थान पर दगा अराजकता भेदभाव को लेकर समानता के आधार पर नम्बर दो को नम्बर एक के अधिकारों से पूर्ण किया जा रहा है स्वार्थ कितना बुरा होता है इसके लिए मेरठ दिल्ली के दगो पर दृष्टि डालिए।

मेरठ में दगे हुए, किसने किए, कैसे हुए हानि किसकी हुई हथियार पकडे गए व्यक्ति मारे गए, परिवार घर बगर हो गए। पुलिस पर हमला हुआ। पर हाय रे! बेईमानी, तेरा सहारा। मोहसिना किदवई के दबाव पर अफसर बदले गए छोटे मोटे। महानिदेशक भटनागर के स्थान पर श्री राजनाथ गुप्त महानिदेशक बने क्यो ? उनकी व्यवस्था ठीक नही थी। क्या श्री भटनागर के हटाने से सारी पुलिस व्यवस्था मे परिवर्तन आ जायगा। या उन्हें इसलिए हटाया गया कि इससे चन्द लोग प्रसन्न हो जायेंगे। हमारे यहा पुलिस का विभाग गृह मन्त्रालय के आधीन होता है तो क्या गृहमन्त्री को इस्तीफा देने की जरूरत नही थी। यदि पुलिस विभाग के मोहरे को उठाकर कहीं भी किया जा सकता है तो गृहमन्त्री को क्यो नही ? अब मुख्यमन्त्री पर सकट है सरकार ने यदि सख्ती की तो भी बुरा और यदि नरमी बरती तो भी बुरा ?

मरने वाले मर गए—धन लेने वाले रुपए ले गये।

पुलिस को बदनाम किया जा रहा हैं सारे मुसलमान जिन्दा घर लौट आए। पर शहाबुद्दीन व बुखारी और दण्डवते, चन्द्रशेखर आदि नेता लोग पुलिस को कोसते रहे। पर सब जीवित मिल गए इस बारे में कोई नही बोल रहा है। हिन्दू नेता यदि अपने समाज की सुरक्षा हेतु बात कहें तो साम्प्रदायिक है। और शहाबुद्दीन जैसे नेता बोले कि—मारो-टाग काट दो, विद्रोह करो तो कोई अपराध नही ? वाहरी न्याय व्यवस्था।

ऐसे लोग ही समाज के दुश्मन है जिन्हे राजनीति के नाम पर उभारा जा रहा है और समूचे राष्ट्र मे बदअमनी फैलाने की प्रेरणा दी जा रही है। वास्तव मे ऐसे लोगों को ही कडी से कडी सजा देनी चाहिए थी। राष्ट्र का कल्याण यह क्या करेंगे इनके कारनामे तो राष्ट्रद्रोहियों से भी गिरे हुए हैं।

अब क्या हो रहा है ?

हरियाणा मे कांग्रेस की पराजय और लोकदल की विजय के बाद पार्टी का गठन किया गया। परन्तु तुष्टीकरण की नीति ने बन्टाधार कर दिया। जब मुख्यमन्त्री देवीलाल ने अपना चीफ सेक्रेटरी एक मुसलमान को चुना। इतना ही नहीं, पुलिस महानिदेशक भी मुसलमान को बनाया। प्रान्त की राजनीति में यह दोनों पद प्रान्तीय सरकार की धुरी हैं।

आज पजाब में जो हो रहा है उसका मुख्य कारण है वहा की पुलिस व्यवस्था। पुलिस सिखों की है और सभी विद्रोहियो को उनका आश्रय मिला हुआ है।

आज सारे देश में पजाब हत्याकाण्ड पर एक भी मुस्लिम ने यह नहीं कहा कि यह बुरा हो रहा हैं बल्कि यह नारे दिए जा रहे हैं कि हम सिख व मुसलमान दोनों मिलकर हिन्दुओं को मारेंगे। ऐसी स्थिति मे हरियाणा सरकार तुष्टीकरण की नीति अपनाए, इससे बुरी बात और क्या होगी।

एक समय चादनी चौक की आधी कोतवाली सिखों को खुश करने के के लिए भारतीय जनसघ ने दे दी थी, तभी दिल्ली के लिए खतरे की घण्टी बज गई थी। परन्तु शेष बची कोतवाली देवी इन्दिरा जी ने सिखो को प्रसन्न करने के लिए दे दी। जब इन्दिरा जी से कहा गया कि यह क्या किया आपने। अब तो चांदनी चौक की सुरक्षा खतरे मे पड गयी है इन्दिरा जी ने कहा कि पहले बी०जे०पी० ने दी, शेष मैंने भी इन्हे खुश करने के लिए दे दी है। परिणाम सबके सम्मुख ही है।

राष्ट्र राजनीति इस तुष्टीकरण की धूरी पर घूम रही है इसी का परिणाम है कि आज देश विघटन के कगार पर खडा है देश जल रहा है–पृथकवादी शक्तिया सिर उठा रही हैं और हम खुश करने के नाम पर बहुमत को ठुकरा कर अल्पमत को वरीयता दे रहे हैं। अब्दुल्ला बुखारी ने कहा था कि हम बीस करोड हैं यदि सडको पर उतर आए तो हमे सम्हालना भारी पडेगा।

इन दगों पर हाय तोबा मची है पर हिन्दुओं पर हमला उनकी जान माल को हानि इसकी चिन्ता का विषय नही है अपितु जिन विघटनकारी तत्वो ने राष्ट्र को हानि पहुचायी है उन्ही को सहायता देने के गीत गाए जा रहे हैं और उनकी गलत रिपोर्ट पर हमारी पुलिस या पी० ए० सी० को बदनाम किया जा रहा है यदि वह रक्षात्मक कारंवाई करे तो बदनाम, और न करे तो भी बदनाम। अत खतरे की घटी बज रही है राष्ट्र को सावधान रहना है। कुछ लोग साम्प्रदायिक दगो के लिए धार्मिक भावनायें भडका कर, उत्तेजनात्मक भाषण देकर देश मे अराजकता फैलाने की नीति फलीभूत करने के लिए जो व्यवहार करते हैं ऐसे लोग समाज के दुश्मन हैं और समाज का दुश्मन राष्ट्रद्रोही होता है। हमारी सरकार ऐसे लोगो को अधिक मुखरित होने के लिए बराबर मौके देती जा रही है जबकि उन्हे कुचलना चाहिए था जिससे शान्ति के इच्छुक लोगो के लिए घिनौने काण्ड आगे न हो सके। ●

सिकन्दर महान का पश्चाताप

अपार धन दौलत लूटकर देशो पर विजय प्राप्त कर स्वदेश रवाना हुआ तो सिकन्दर को याद आया कि गुरुदेव अरस्तु ने भारत से एक दार्शनिक लाने को कहा था, "सिकन्दर ने अपने सेनापति से कहा।

"बहुत बहुतर।"

कई दिन के बाद सेनापति को महान् दार्शनिक, योगी कालनूस का पता लगा।

"आपको सिकन्दर महान् ने याद किया है।"

"क्यो ?"

"वे आपका दर्शन करना चाहते हैं।"

सिकन्दर और सेनापति ने घोडो से उतरकर कालनूस को प्रणाम किया। सिकन्दर ने अपना अभिप्राय प्रकट किया। स्वीकृति मिलने पर अपार हर्ष हुआ।

बेबीलन मे विश्राम के लिए सेना ने डेरा डाला। "सिकन्दरको बुलाओ," कालीनूस ने एक रात को आदेश दिया।

"मैं उपस्थित हूं," सिकन्दर ने सप्रणाम कहा।

सिकन्दर! "मेरे लिए फौरन चिता चिनवाओ।" आदेश का पालन किया गया सिकन्दर हैरान था।

'सिकन्दर! इस देह मे निवास करते हुए सौ वर्ष हो गए इस पुराने शरीर को अब त्याग देना चाहता हूं।"

चिता तैयार हुई। कालीनूस उस पर समाधिस्थ हो गये। ब्रह्मरन्ध्र खुला और आत्मज्योत्सना देह से प्रयाण कर गई। चिता मे आग लगाई गई। देह जल कर भस्म हो गई।

ऐसे महान पुरुषो के महान देश पर आक्रमण करके मैंने महान पाप किया है, "सिकन्दर पश्चाताप करने लगा, उसी रात शोक से सिकन्दर को ज्वर हो गया और अगली प्रात इस ससार से चल बसा। मरने से पूर्व उसने सेनापति से कहा, "गुरुदेव से कहना, स्वय भारत आकर किसी सच्चे ऋषि से वहा सच्चा ज्ञान प्राप्त करें।"

—सत्यानन्द आर्य

चौ० चरणसिंह और जातिवाद : एक विहंगम दृष्टि

आचार्य दत्तात्रेय (बाब्ले) आर्य, अजमेर

चौधरी चरणसिंह के निधन पर देश के प्रमुख अंग्रेजी तथा हिन्दी समाचार पत्रो ने अपने-अपने दृष्टिकोण से कई प्रकार की प्रतिक्रियाये व्यक्त की हैं। अनेक प्रमुख नेताओ ने भी उनको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए अपने विचार व्यक्त किये हैं। चौधरी साहब जैसे राजनैतिक क्षेत्र के एक वरिष्ठ नेता के सम्बन्ध मे ऐसी प्रतिक्रियाएं स्वाभाविक हैं। उनकी राजनैतिक विचारधारा तथा दलगत राजनीति के सम्बन्ध मे मैं यहा कोई विवेचन नही करना चाहता। किन्तु इन सब मूल्याकनो मे जिस बात पर प्राय सब एक मत प्रतीत होते है वह यह है कि चौधरी साहब एक ईमानदार, निष्ठावान तथा स्पष्टवादी राजनेता थे। जैसा 'टाइम्स आफ इण्डिया आदि कुछ पत्रो ने लिखा है कि उनकी इन विशेषताओ का श्रेय आर्य समाज को है।

चौधरी साहब उन थोडे से गिने चुने प्रमुख राष्ट्रीय नेताओ मे से एक थे जिन्होने कभी ये स्वीकार करने मे सकोच नही किया कि उनका प्रारम्भिक जीवन व चरित्र निर्माण आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द की ही देन है। समाचार पत्रो मे उनके निवास स्थान के उस कमरे का चित्र प्रकाशित हुआ है जिनमे उनका पार्थिव शरीर जनता के दर्शनार्थ रखा हुआ था। उस कमरे मे २ चित्र साथ रखे हुए दिखाई देते है प्रथम ऋषि दयानन्द तथा दूसरा महात्मा गाधी का। इन दोनो ही की कुछ विशिष्ट शिक्षाओ के श्री चरणसिंह एक प्रतीक थे। देश के आर्थिक नव निर्माण और विशेषकर ग्रामीण किसानो की उन्नति के सम्बन्ध मे उनका दृष्टिकोण स्पष्टतया गाधीवादी था। उनका सादा जीवन तथा रहन-सहन भी एक गाधीवादी नेता का स्मरण दिलाता था किन्तु ऋषि दयानन्द ही उनके वास्तविक प्रेरणास्रोत व मार्गदर्शक रहे हैं तथ्य भी निर्विवाद है। उनकी निर्भीकता स्पष्टवादिता, सैद्धान्तिक दृढता तथा जन्मगत जात-पात जैसी कुरीतियो का विरोध इसका प्रमाण है। अपने इस सक्षिप्त लेख मे, मैं उसके केवल कुछ उदाहरण देकर उनके प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना चाहता हू।

जाट बनाम किसान

जातिवाद के विरोधी चौ० चरणसिंह जी के सम्बन्ध मे उनके समालोचक अक्सर ये कहते है कि उन्होने राजनीति मे जातिवाद और विशेषकर जाटवाद को प्रोत्साहन दिया किन्तु उनके जीवन, व्यवहार व विचार इन तीनो से इस आरोप का खण्डन होना है। उन्होने अपनी कन्याओ का विवाह जन्मगत जात पात तोडकर, गैर जाटो मे किया, मुझे स्मरण नही है कि वे कभी भी किसी जाट सस्था या सगठन से सम्बन्धित रहे हो और न ही किसी जाट सम्मेलन या सभा की उन्होने अध्यक्षता या सदस्यता स्वीकार की। ये सही है कि देश मे किसान वर्ग और विशेषकर उत्तर भारत मे किसानो मे एक बडी सख्या जाटो की है किन्तु साथ मे ये भी सही है कि चरणसिंह उनके समर्थक या नेता इसलिये नही थे कि वे जाट थे बल्कि इसलिये थे कि वे किसान थे। यही कारण है कि उनके समर्थको मे जाटो के अतिरिक्त गूजर, अहीर आदि अन्य पिछडी जाति के किसानो की बहुत बडी सख्या थी। अनेक उच्च जाति के लोग भी जिन्हे गाधी जी की ग्रामीण अर्थ व्यवस्था और बडे उद्योगो के स्थान मे कुटीर उद्योगो के महत्व मे विश्वास था, चौधरी साहब को अपना नेता स्वीकार करते थे। लोकदल आदि जिन दलो का नेतृत्व उन्होने किया उनमे प्राय सब जातियो के, यहा तक कि मुसलमान भी सदस्य व अधिकारी रहे हैं।

जाट राजपूत विवाद

राजस्थान मे जाटो के साथ राजपूतो द्वारा दुर्व्यवहार किये जाने के अनेक उदाहरण दिये जाते हैं उन्हे अपेक्षाकृत छोटी जाति का समझकर राजपूत राजा और ठिकानेदार सामाजिक दृष्टि से उसके साथ लगभग अछूतो जैसा व्यवहार करते थे। अपने विवाह मे जाट वर को घोडे पर नही बैठा सकते थे और न ही वधू को सोने के जेवर पहना सकते थे यहा तक कि वे अपने भोज मे देशी घी का प्रयोग नही कर सकते थे उन्हे तेल का ही उपयोग करने की छूट थी। जैसा चौधरी साहब ने एक बार कहा था—'जन्माभिमानी क्षत्रियो के इसी प्रकार के दुर्व्यवहार का परिणाम था कि पजाब मे लगभग ५१ प्रतिशत जाट या तो मुसलमान हो गये या फिर सिक्ख बन गये। आधुनिक युग मे ऋषि दयानन्द ही एक मात्र ऐसे महापुरुष थे जिन्होने वेद और शास्त्रो के आधार पर जाटो को क्षत्रिय घोषित किया। इतना ही नही आर्यसमाज के अनेक प्रसिद्ध सन्यासी विद्वान्, पण्डित आदि जाट कुल के पुत्र है। आज भी यदि किसी वर्ग विशेष के अधिकाश व्यक्ति आर्य समाज के अनुयायी हैं तो वे जाट ही हैं। चौ० चरणसिंह जी इसीलिये अन्त तक अपने आपको आर्य समाजी व ऋषि दयानन्द का अनुयायी घोषित करने मे गौरव अनुभव करते थे।

अन्तर्जातीय विवाह एक मात्र उपाय

मेरी सम्मति मे उनकी सबसे बडी देन उनका जातिवाद के विरुद्ध वह क्रान्तिकारी अभियान था, जिसे स्व० प० नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेता भी स्वीकार करने मे झिझकते थे। चौधरी साहब ने प० नेहरू से सन् १९४५ मे ही यह माग की थी कि वे कम से कम सरकारी अधिकारियो तथा कर्मचारियो के लिये अन्तर्जातीय विवाह अनिवार्य कर दे किन्तु नेहरू जी ने उनके सुझाव को यह कहकर अमान्य कर दिया कि विवाह एक व्यक्तिगत मामला है उसमे राज्य या कानून को हस्तक्षप नही करना चाहिये। नेहरू जी की यह दलील सैद्धान्तिक दृष्टि से सही थी, किन्तु भारत की परिस्थितियो मे उसका एक सामाजिक व राष्ट्रीय पहलू भी है। जन्मगत जात-पात न केवल हमारे सामाजिक अपितु राष्ट्रीय जीवन का भी एक बडा अभिशाप रहा है कुछ अपवादो को छोडकर कोई भारतीय और विशेषकर हिन्दू अपना विवाह केवल व्यक्तिगत गुण दोषो के आधार पर शायद ही करता हो। प्राय सब जाति व धर्मों के लोग विवाह सम्बन्ध अपनी जाति व धर्म की सीमा के अन्दर ही करते हैं यहा तक कि आर्यसमाज की स्थापना के पूर्व व बाद मे हिन्दू कोड बिल के पारित होने के पहले अपनी जाति मे ही विवाह करना कानून की दृष्टि से आवश्यक था। यदि कोई उच्च वर्ण का हिन्दू किसी अन्य जाति की कन्या से विवाह कर लेता था तो उसे कानून भी स्वीकार नही करता था। ऐसे विवाहो से उत्पन्न सतान अवध समझी जाती थी उन्हे अपनी पैतृक सम्पत्ति मे कोई अधिकार या हिस्सा नही मिल सकता था। ऐसी स्थिति मे चरणसिंह जी का सुझाव जातिवाद के उन्मूलन के लिए एक सर्वथा उपयुक्त और आवश्यक कदम समझना चाहिये था। कानून द्वारा अपनी ही जाति मे विवाह करने के लिये बाध्य किया जा सकता है तो अपनी ही जाति मे विवाह न करने का कानून अनुचित क्यों समझा जाये। वस्तुत जन्मगत जात-पात के निराकरण का वर्तमान परिस्थिति मे यही एक कारगर उपाय है।

जातिवाद को प्रोत्साहन

यह दुर्भाग्य की बात है कि स्वाधीनता के बाद चुनाव आदि राजनैतिक स्वार्थों के कारण हमारे अनेक प्रमुख नेता तक जात-पात के

(शेष पृष्ठ १० पर)

सन् १८५७ की क्रान्ति और स्वामी दयानन्दसरस्वती

श्री जयदेव शर्मा

सन् १८५७ की क्रान्ति जिसे सैनिक विद्रोह तथा स्वाधीनता सग्राम की सज्ञा दी गयी, आज इस पर बहुत सा साहित्य उपलब्ध है। परन्तु अब कुछ ऐसे नवीन प्रमाण प्राप्त हुये हैं जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि उस क्रान्ति ज्योति को इस देश के सन्यासी वर्ग ने प्रज्वलित किया था। सीमित स्थान के कारण यहा अति सक्षेप मे ही उन प्रमाणो को दिया जा रहा है जो १८५७ ई० की क्रान्ति को सन्यासियों द्वारा सचालित एव उसमे स्वामी दयानन्द के कृतत्व को उजागर करने वाला होगा।

क्रान्ति की सफलता के पश्चात् दक्षिण मे मैसूर के समीप गिरफ्तार हुये बाबा सीताराम की सैनिक कमीशन (मेजर एच बी देवरा तथा कैप्टेन जे०एल० पीयर्स) के सम्मुख दी गयी गवाही विशेष महत्वपूर्ण है। बाबा सीताराम की गवाही १८ जून से २५ जून १८५८ आठ दिन तक चली जो काफी लम्बी ५८ पृष्ठो की है। उसे दक्षिण में राजाओ और जागीरदारो के नाम अग्र जो के विरुद्ध विद्रोह फैलाने वाले पत्र ले जाते हुये पकडा गया था। वह उत्तर एव दक्षिण भारत में विद्रोहियो के मध्य सम्पर्क सूत्र था। सैनिक कमीशन के द्वारा अमानवीय असाध्य यन्त्रणा दिये जाने पर विवश होकर जो तथ्य उसने बताये उनका आशय इस प्रकार है" इस विद्रोह का सचालक एक १२५ वर्षीय दस्स बाबा है जो नाना साहब का गुरु भी है। जिसने लगभग २० वर्ष पूर्व अग्र जो के विरुद्ध षड्यन्त्र की नीव डाली थी।

सिन्धिया तथा अन्य अनेक राजाओ को अग्र जो से लडने की प्रेरणा दी थी। अब से लगभग छ वर्ष पूर्व उज्जैन जाकर सिन्धिया राजा की दादी बैजीबाई से भट कर अग्रेजो के विरुद्ध विचार विमर्श कर तदनुसार नाना साहब आदि को भी इस विद्रोह के लिए प्रेरित किया। दस्स बाबा का एक शिष्य दीनदयाल नामक युवा सन्यासी दक्षिण भारत में उनका प्रतिनिधित्व कर रहा है। दीनदयाल के द्वारा ही दस्स बाबा ने तिरुपति के शिवराम बाबा के पास पत्र भिजवाये थे। उसने यह भी बताया कि दीनदयाल के पास धन की कोई कमी नही है इसके पास उत्तरी सेठो से प्राप्त बहुत सी हुडिया हैं जो कि दक्षिणी साहूकार सहर्ष स्वीकार कर धन दे देते हैं। दीनदयाल के नेतृत्व मे लगभग २० अन्य सन्यासो इसी कार्य मे सलग्न हैं जो तावीजो और जड़ाओ आदि में सदेश छुपाकर यथा स्थान पहुचाते हैं।

सन् १८५७ की क्रान्ति का प्रधान क्षेत्र मेरठ से कानपुर और इलाहाबाद से वाराणसी तक था परन्तु इसकी ज्वालाए बिहार, मध्यप्रदेश तथा दिल्ली तक पहुची थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती (थियोसोफिस्ट प्रकाशित आत्म चरित के अनुसार (सन् १८५५ ५६ में इस क्रान्ति प्रधान क्षेत्रो मे ही भ्रमण करते रहे। अब विचारणीय यह है कि क्या दयानन्द इन क्रांति प्रधान क्षेत्रो में विचरण करते हुये इससे सर्वथा तटस्थ रहे अथवा सक्रिय। इस विषय पर सर्व प्रथम श्री पृथ्वीसिंह मेहता विद्यालकार ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "हमारा राजस्थान" मे जो विवेचन किया वह इस प्रकार है—"१८५६ के मई मास में वह (दयानन्द) नाना के नगर कानपुर गया आगे पाच मास तक कानपुर इलाहाबाद के बीच ही चक्कर काटता रहा। फिर बनारस, मिर्जापुर, चुनार होकर मई १८५७ मे जब क्रान्ति की तैयारिया लगभग पूरी हो चुकी थी तब दयानन्द भी बनारस से मिर्जापुर-चुनार होकर नर्मदा स्रोतो के लिए दक्षिण की ओर निकल पडा। उसकी आरम्भिक जीवनी का यहां एका एक अन्त हो जाता है। आगे तीन वर्ष क्रान्ति युद्ध के दिनो मे वह कहा रहा और क्या करता रहा इसकी कोई खिगत उसने कभी नही दी। यह कहना तो कठिन है कि क्रान्ति युद्ध में या उसके सगठन के प्रति उसका क्या रुख रहा और उसने भी उसमे कोई भाग लिया या नही, तो भी उसकी जीवन घटनाओ का जो सक्षिप्त सा वर्णन ऊपर दिया गया है उससे यह बात तो स्पष्ट हो ही सकती है कि क्रान्ति की तैयारिया आदि से उसे निकट परिचय प्राप्त करने का अवसर मिला। यह बात मान लेना आसान नही कि दयानन्द के सदृश भावना प्रवण और चेतनावान हृदय और मस्तिष्क का युवक उसके प्रभाव से अछूता बचा हो। (पृष्ठ २६७ ६८)

प्राचीन भारत मे पचायतो का विशेष महत्व था। उन्नीसवी सदी के मध्य तक यह पचायत विद्यमान थी। इसके पदाधिकारियो का चुनाव नही होता था वरन् ये पद कुछ विशिष्ट कुलो में स्थिर रहते थे। कुरु जनपद मे स्थित सोरम की पचायत विशेष महत्वपूर्ण थी। यहा के युवको ने विद्रोह मे खूब बढ-चढकर भाग लिया था। इसके पुराने अभिलेख सर्वखाप पचायत के महामन्त्री चौधरी कबूल सिंह के पास विद्यमान हैं। इन अभिलेखो मे पचायत के कासिद मुश्ताक मीर इलाही मिरासी का उर्दू में लिखा हुआ एक महत्वपूर्ण पत्र सुरक्षित है। स्थानाभाव के कारण यहा पूरा पत्र देना तो सम्भव नही है अत उसका साराश यहा दिया जा रहा है जिसके अनुसार—"स्वामी विरजानन्द नामक एक हिन्दू सन्यासी जो कि बहुत अर्से से मथुरा मे रहते और सस्कृत पढाते हैं? १८५७ की क्रान्ति के सचालको मे से थे। सन् १८५६ मे दूर दराज जगल मे एक पचायत हुई जिसमे अनेक हिन्दू-मुस्लिम फकीरो के अतिरिक्त बहादुर शाहजादा, नाना साहब तथा मौ० अजीमुल्ला खा ने भाग लिया, इस पचायत में नाबीना (नेत्रहीन) सन्यासी महात्मा विरजानन्द पालकी मे बैठ कर आये उनका शंख-तुरही आदि बजाकर स्वागत किया गया ईश्वर एव देश भक्ति के गीत गाये गये। स्वामी दयान्द भी इस पचायत मे सम्मिलित थे। अभिलेखो के अनुसार पहली सभा १८५५ के प्रारम्भ काल मे हरिद्वार में हुई थी जिसमें बहादुर शाह का पुत्र फिरोज शाह सहित १५०० लोग उपस्थित हुये, वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती द्वारा सैनिको मे विद्रोह की भावना का प्रसार करने के लिए कमल का फूल और चपाती के वितरण की योजना इसी सभा मे बनायी गयी थी। दूसरी सभा ५ अक्तूबर १८५५ को गढगगा के मेले मे और तीसरी सभा ११ अक्तूबर १८५५ को हरिद्वार के पहाड में हुई। इन सबके प्रधान स्वामी पूर्णानन्द ही थे। मौ० जहीर अहमद ने इस सभा में उपस्थित हुये प्रमुख साधुओ के नाम भी दिये हैं, जिसमे प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द और गोल मुखवाला नौजवान दयानन्द भी है।

(क्रमश)

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

देह में जीवात्मा कहां है ?

आचार्य श्री उदयवीर शास्त्री

भारतीय दर्शन मे जीवात्मा का परिमाण तीन रूपमे वर्णन किया गया है (१) विभु परिमाण, अथवा महा परिमाण (२) मध्यम परिमाण, अथवा देह परिमाण (३) परिच्छिन्न परिमाण अथवा अणु परिमाण।

पहले वर्णन में यह प्रश्न नहीं उठता है, देह मे जीवात्मा किस स्थान मे रहता है। क्योंकि जब उसे विभु माना गया तो यह स्वत सिद्ध है कि वह देह के बाहर और भीतर सब जगह एक समान विद्यमान है। दूसरे वर्णन मे भी यह प्रश्न नही उठता। क्योंकि मध्यम परिमाण का तात्पर्य है देह परिमाण देह के बाहर तो वह कही नही रहता, पर देह मे सर्वत्र व्याप्त रहता है। कीडो-कुञ्जर जैसा भी देह होगा, उसके अनुसार देह मे सर्वत्र आत्मा व्याप्त रहेगा। जीवात्मा के मध्यम परिमाण का यही तात्पर्य है कि वह देह के अनुसार परिमाण वाला रहता है। स्पष्ट है कि वह देह के अनुसार समस्त देह मे व्याप्त होगा। तीसरे वर्णन के अनुसार स्वभावत यह प्रश्न उठता है, कि जीवात्मा का निवास कहा सम्भव होगा ? कारण यह है कि जीवात्मा अणु परिमाण है, और देह बहुत बडा है। जीवात्मा को मानने वाले उसे चेतन मानते हैं। पर बाह्य स्पर्श आदि से चेतना का अनुभव समस्त देह मे होता है। तब सन्देह का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है कि इतने बडे देह मे वह अणु जीवात्मा कहा बैठा है ? इसकी खोज आवश्यक है।

कई देह इतने सूक्ष्म भी होते है, जिनको इन चक्षुओ से नही देखा जा सकता, शक्तिशाली सूक्ष्मवीक्षण यन्त्रो द्वारा ही अनेक भौतिक देहों का प्रत्यक्ष हो पाता है। सम्भव है, ऐसे भी सूक्ष्म देह हो, जो उन यन्त्रो की सहायता से भी न दीख सकते हो। पर यहा हम उन सब देहों मे आत्मा के निवास के निवास के विषय मे कोई विचार नही कर रहे। यहा केवल मानव देह मे आत्मा के निवास स्थान का विवेचन करना अभीष्ट है, कि यह विवेचन अन्य देहो में आत्मा के निवास के विषय मे लागू होगा या नही इसके साथ कोई सम्बन्ध इस विवेचन का नही है। यद्यपि वे सूक्ष्म अदृश्य देह स्थूल दृश्य देहो के समान ही भौतिक हैं, तथा इतना अधिक सूक्ष्म है फिर भी दार्शनिक दृष्टि से उन देहों की गणना स्थूल देहो मे ही होगी।

शास्त्रों मे क्या लिखा है

अध्यात्म शास्त्रो मे इस विषय का उल्लेख हुआ है कि मानव देह के किस विशेष प्रदेश मे आत्मा की स्थिति है, यह प्रदेश हृदय बताया गया है। 'स वा एव आत्मा हृदि' (छा० ८।३।३), 'कतम आत्मेति योऽय विज्ञानमय प्राणेषु हृदयन्तर्ज्योति पुरुष' (ब० ४-३।७) 'हृदिह्येष आत्मा (प्रश्न ३०६) इत्यादि अभिप्राय यह कि देह के 'हृदय प्रदेश' में रहता है। देह मे ऐसे दो स्थान हैं जहा के अग को हृदय' पद से कहा जाता है। अति प्रसिद्ध रूप मे यह पद देह के रक्त प्रक्षपक अग के लिए प्रयुक्त होता है। पर जहा तक शास्त्रीय सकेतो से अधिगत हुआ है, यह रक्त का प्रक्षप करने वाला 'हृदय' आत्मा का निवास स्थान प्रतीत नही होता। रक्त-प्रक्षेप की क्रिया शरीर मे आत्मा के अस्तित्व की निश्चायक अवश्य है। समस्त शरीर मे जाल की तरह बिछे हुए ज्ञान तन्तुओ का केन्द्र मस्तिष्क मे है, इसके अनुसार आत्मा का आवास वही माना जाना चाहिए। वहा से यह ज्ञान तन्तुओ के द्वारा सम्पूर्ण शरीर पर नियन्त्रण रखता है।

एक स्थान पर बैठ कर आत्मा समस्त शरीर पर किस प्रकार नियन्त्रण करता है और किस प्रकार चैतन्य से उसे प्रकाशित रखता है, यह अर्थ गीता के एक श्लोक के द्वारा बहुत सुन्दर रीति से वर्णित है, श्लोक है—

यथा प्रकाशयत्येक कृत्स्न लोकमिम रवि।
क्षेत्र क्षेत्री तथा कृत्स्न प्रकाशयति भारत॥ १३।३३॥

जैसे एक सूर्य इस सम्पूर्ण लोक को प्रकाशित करता है, वैसे क्षेत्री आत्मा सम्पूर्ण देह को प्रकाशित करता है। इस श्लोक मे उदाहरण की उपयुक्तता ध्यान देने योग्य है। सूर्य एक विशिष्ट स्थान पर केन्द्रित रहता है, और अपनी रश्मियो द्वारा सम्पूर्ण सौर-मण्डल को प्रकाशित करता है। सूर्य भौतिक पदार्थ है, उसकी रश्मिया उसका अपना रूप है। अभौतिक आत्मा मे इस प्रकार की रश्मियो की कल्पना करना युक्त न होगा, पर भौतिक ज्ञान तन्तु केन्द्र आत्मा को वही कार्य देता है जो सूर्य को रश्मिया।

अध्यात्मशास्त्रो के उल्लेखो के अनुसार आत्मा का निवास देह मे यदि कोई 'हृदय' नामक प्रदेश है, तो इस दृष्टि के अनुसार वह रक्त का प्रक्षप करने वाला हृदय नही होना चाहिए, प्रत्युत वह कोई-कोई मस्तिष्क का अग हो सकता है। उसका वर्णन अथर्ववेद के कतिपय मन्त्रो द्वारा किया गया प्रतीत होता है। यह अधिक सम्भव है प्राचीन साहित्य मे मस्तिष्क गत उस अग को हृदय' पद से व्याहृत किया गया हो, जहा आत्मा के निवास का उल्लेख उपलब्ध होता है। अथर्ववेद मन्त्र हैं—

अष्टचक्रा नवद्वारा देवाना पूरयोध्या।
तस्या हिरण्मय कोश स्वर्गो ज्योति षावृत॥
तस्मिन् हिरण्मये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठते।
तस्मिन् यद यक्षमात्मन्वत् तद्वै ब्रह्मविदो विदु॥
प्रभ्राजमाना हरिणी यशसा सपरीवृताम्।
पुर हिरण्मयी ब्रह्मा विवेशापराजिताम् ॥१०।२।३१ ३३॥

इन मन्त्रो में निम्नलिखित कतिपय पद विशेष ध्यान देने योग्य हैं— हिरण्मय कोश, हिरन्मय कोश, हिरण्मयी पुरी, स्वर्ग ज्योतिषावृत, त्र्यक, त्रिप्रतिष्ठित, यक्ष, आत्मन्वत् आदि। इनकी व्याख्या इस प्रकार समझनी चाहिए।

हिरण्यमयकोश—इन मन्त्रा मे यह मुख्य पद है। प्रथम मन्त्र के उत्तरार्द्ध मे इसका वर्णन है। इसको स्वर्ग' और ज्योतिषावृत' बताया गया है। अगले मन्त्र मे कहा है, कि उस हिरण्मय कोश के मध्यवर्ती त्र्यर त्रिप्रतिष्ठित स्थान मे आत्मा का निवास है। वेद के इन वर्णनो के आधार पर देह मे हम उस स्थान को ढूढ सकते हैं, जिसको 'हिरण्मयकोश' नाम दिया गया है, और जिसके मध्य अवकाश मे आत्मा वास करता है।

पाणिनि ने 'हिरण्मय पद मयट् प्रत्ययान्त निपातित किया है (६ ४।१७५) मयट् प्रत्यय प्रकृत अर्थात् प्राचुर्य अर्थ के कथन करने में होता है (५।४।२१) इसके अनुसार 'हिरण्मय' पद का अर्थ होगा। हिरण्य अर्थात् सुवर्ण की प्रचुरता या अधिकता से बना पदार्थ। अब देखना चाहिये, कि देवों ज्ञानेन्द्रियो की पुरी इस शरीर में ऐसा कौन सा अवयव है, जो सुवर्ण के प्राचुर्य से बना कहा जा सके। परीक्षा करने पर ज्ञात है, कि मस्तिष्क में एक ऐसा अवयव है, जो इसके पीले वर्ण वाले पदार्थ के आधिक्य से बना है। आधुनिक शरीरशास्त्र में इसका नाम 'आज्ञाकन्द' है, इसे 'आज्ञाचक्र' भी कहा जाता है। शरीर की समस्त क्रियाओं व चेष्टाओं का निर्देशक होने से यह नाम अन्वर्थ कहा जा सकता है। यह दक्षिण और वाम भेद से दो भागो मे विभक्त होता है। कविराज गणनाथ सेन ने 'प्रत्यक्ष शरीर' (भाग ३, अ० ६, पृष्ठ ७८)नामक ग्रन्थ में लिखा है—

आज्ञाकन्दो नाम धूसरवस्तु भूयिष्ठो कन्दो ब्रह्म गुहामुभयतो वर्तते।

'आज्ञाकन्द' नामक दो ग्रन्थियाँ हैं, जिनमें धूसर अर्थात् हलके

पीले रग की वस्तु का आधिक्य है। ये ग्रन्थिया 'ब्रह्मगुहा' के दोनों ओर विद्यमान रहती हैं। यह आज्ञाकन्द ही हिरण्मयकोश है। इनकी आकृति मनुष्य के अगूठे के अग्रपर्व के समान होती हैं, अगूठे के ऊपरले नाखून वाले भाग जैसी। जब इन दोनो को आमने-सामने मिलाकर बैठाया जाए तो इनके मध्य में थोडा अवकाश रहता है, इसका नाम 'ब्रह्मगुहा' है इसमे एक प्रकार का गाढा सा स्निग्ध तरल भरा रहता है, यही आत्मा का निवास है। दोनो आज्ञाकन्दो के मध्य का यह अवकाश त्रिकोण सा प्रतीत होता है, इसलिए इसका एक विशेषण त्र्यर' दिया गया है। निश्चयात्मक एव विपर्ययात्मक तीनो प्रकार के ज्ञान तन्तुओ का सम्पर्क इसी के साथ रहता है। उसकी आकृति ऐसी प्रतीत होती है, जैसे तिखटी या तीन पायो पर कोई वस्तु रखी हो, इसीलिए इसे 'त्रिप्रतिष्ठित' कहा गया है। समस्त शरीर मे और कोई ऐसा अवयव नही है, जिसके साथ इस वर्णन का सामञ्जस्य हो सके।

वेद के इस वर्णन के पूर्ण अनुरूप वर्णन छान्दोग्य उपनिषद् (८।१।) में हुआ है। वहा है 'अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहर पुण्डरीक वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाश तस्मिन् यदन्त तदन्वेष्टव्य तद्वाव विजिज्ञासितव्यम्।' अब जो यह इस ब्रह्मपुर मे छोटा सा (दहर) कमलाकृति घर है, उसमें अल्प (दहर) अवकाश हैं, उसमे अन्दर जो रहता है, उसको समझना व जानना चाहिए। 'ब्रह्मपुर' पद सन्दर्भ मे देह का वाचक है, अथवा देह के उस अग की इकाई का नाम है, जहा आत्मा का निवास है। इस ब्रह्मपुर मे 'छोटा सा घर' हिरण्मय कोश की ओर सकेत है। उसमे अल्प अवकाश है, ये पद आज्ञाचक्र नामक ग्रन्थियो के मध्यवर्ती रिक्त स्थान की ओर सकेत करते हैं, जिसमे गाढा स्निग्ध तरल भरा रहता है उसके अन्दर जो रहता है उसे जानना चाहिए, यह आत्मज्ञान के लिये उपदेश है। इससे स्पष्ट होता है, कि वह आत्मा का निवास है। वेद मे हिरण्मय-कोश (दहर वेश्म, छा,) के जो और विशेषण दिए गये हैं, उन पर दृष्टिपात करना भी अपेक्षित है।

स्वर्ग—हिरण्मय कोश शरीर के ऊर्ध्व भाग में अवस्थित है इस आधार पर यह स्वर्ग कहा गया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण (३।२।१।१५) में लिखा है 'ऊर्ध्व उवै स्वर्गो लोक, उपरीव स्वर्गो लोक स्वर्ग को ऊर्ध्व स्थानीय बताया गया है। ब्रह्माण्ड में स्वर्ग 'आदित्य' है, पृथिवी पर त्रिविष्टप (तिब्बत कैलाश मानसरोवर के आस पास का विस्तृत भू-भाग) स्वर्ग माना गया है, इस शरीर मे स्वर्ग मस्तिष्क का अवयवभूत यही हिरण्मय है। आदित्य में अजर अमर देवों-किरणो का निवास है त्रिविष्टप् में मानव देव जाति का निवास है, इस हिरण्मयकोश में देवों-इन्द्रियों की सूक्ष्म सवेदनात्मक शक्तियो का आवास हैं। इसी समानता के आधार पर वैदिक साहित्य में हिरण्मयकोश को 'आदित्य पद से व्यवहृत किया गया है, 'योऽसावादित्ये पुरुष सोऽसावहम्" (यजु० ४०।१७) इत्यादि स्थलो मे आदित्य पद का अर्थ मस्तिष्कगत हिरण्मयकोश समझना चाहिए। इसके आधार पर आत्मा के निवास स्थान का स्पष्टीकरण होता है।

ज्योतिषावृत—हिरण्मयकोष को ज्योति से आवृत कहा है। इसकी रचना पीताभ वर्ण वाले पदार्थों से हुई है, अत इसके लिए यह विशेषण सर्वथा उपयुक्त है। कठ उपनिषद्)४।१३) में अगुष्ठ-मात्र पुरुष को धूमरहित ज्योति के समान बताया है—'अगुष्ठमात्र पुरुषो ज्योतिरिवाधूमक'। यह अगुष्ठमात्र पुरुष का कथन उपर्युक्त आज्ञाकन्दो की ओर सकेत करता है। उनकी रचना अगुष्ठ पर्व के समान होने से और उनके मध्य अवकाश मे पुरुष का निवास होने से पुरुष को अगुष्ठमात्र कह दिया गया है। धूमरहित ज्योति के समान उसका वर्णन, उसकी पीताभवर्ण की स्थिति को स्पष्ट करता है।

यक्ष-आत्मन्वत्—यक्ष पद इस प्रसग मे जीवात्मा के लिये प्रयुक्त हुआ है, इस पद का प्रयोग जहा परमात्मा के लिये है, वहा इसके 'महत्' आदि विशेषणो का निर्देश विस्मृत नही किया गया। 'आत्मन्वत्' मे 'आत्म' पद का प्रयोग देह के अर्थ मे है, जिसका अर्थ होता है—देह से युक्त अर्थात् देही अथवा शरीरी।

वेद के इस समस्त वर्णन के आधार पर कोई भी विवेचक इस परिणाम पर पहुचता है, कि मस्तिष्क के अन्तर्गत पीताभ वर्ण वाले दोनो आज्ञाकन्दो के मध्य में जो स्निग्ध गाढ तरल से पूर्ण त्रिकोण परिखाकार स्थान है, उसमें जीवात्मा निवास करता है। योगीजन इसी को ब्रह्मगुहा या ब्रह्मयोनि कहते हैं। उपनिषद् तथा अन्य साहित्य मे इसी को 'ब्रह्मपुर' वा 'हृदय' आदि पदो द्वारा वर्णन किया गया है। कविराज गणनाथ सेन ने 'प्रत्यक्ष शरीर' (भाग १, अ० ६, पृष्ठ ८२) नामक ग्रन्थ में लिखा है—

'ब्रह्मगुहा ब्रह्मयोनिर्वानाम आज्ञानाकन्दयोरन्तराले मध्यरेखाया दृश्य गुहा तनुत्रिकोणपरिखाकारा। तदेव क्वचिद ब्रह्महृदयमिति हृदयमिति वा व्यवहरन्ति प्राञ्च।

दोनो आज्ञाकन्दो मे बीच दीखने वाला ब्रह्मगुहा अथवा ब्रह्म-योनि नामक थोडा-सा त्रिकोण परिखा के आकार मे स्थान है उसी को प्राचीन आचार्य कही ब्रह्महृदय अथवा हृदय नाम से व्यवहार करते हैं। वस्तु स्थिति यह है, कि मस्तिष्क के अन्तर्गत हिरण्मय-कोश अथवा आज्ञाकन्दो के मध्य जो छोटा-सा त्रिकोण रूप परिखा के अवकाश है, उसका नाम हृदय है। इसलिए वेद के वर्णन के साथ सामञ्जस्य करने पर 'अगुष्ठमात्र पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनना हृदये सन्निविष्ट (कठ० ६।१७) अथवा 'एषोऽन्तर्हृदय आकाश तस्मिन्नय पुरुषो मनोमय. (तै०उ० ६) इत्यादि उपनिषद् वाक्यो मे तथा 'हृदय चेतनास्थानम्' (सुश्रुत शरीर ४।३४) इत्यादि आयुर्वेद वचनो मे जो हृदय' पद का प्रयोग हुआ है, ऐसा निश्चित समझना चाहिए। कारण यह है, कि रक्त का आक्षेप-प्रक्षेप करने वाले हृदय के साथ इन वर्णनो का सामञ्जस्य नही बैठता।

साधारण रूप से यही समझा जाता है, कि रक्त का आक्षप-करने वाले देहावयव का ही नाम 'हृदय' है और उसी में जीवात्मा का निवास है। आधुनिक कतिपय तथा कथित योगीजन भी ऐसा ही मानते हैं, और उनका यह भी कहना है कि वे अपने अनुभव से ऐसा मानते व कहते हैं, पर प्रत्यक्ष शरीर के साथ उनके इस अनुभव व कथन का ताल-मेल बैठता प्रतीत नही होता।

पवित्र कर्म

—कर्म नारायण कपूर—

(१) सत्यार्थ प्रकाश (पृ० २११ नवम समुल्लास) में स्वामी दयानन्द जी कहते हैं कि "पवित्र कर्म, पवित्र उपासना और पवित्र ज्ञान" ही से मुक्ति होती है। अत यह सिद्ध है कि पवित्र कर्म ही आत्मोन्नति तथा मोक्ष का प्रधान कारण है।

(२) कर्म शब्द 'कृ' धातु से बना है जिसका अर्थ करना है। जो किया जाय वह ही कर्म होता है। (गीता ४।१६,१७,१८) कर्म, अकर्म और विकर्म मे भेद करती है। कर्म का तात्पर्य कर्तव्य कर्म, अकर्म का तात्पर्य कर्तव्य कर्म का न करना और विकर्म का अर्थ है उलटा कर्म करना। कोई भी मनुष्य (कुछ न कुछ) कर्म किए बिना क्षण भर भी नही रह सकता। (गीता ३।५)

(३) कर्म के दो भेद हैं—व्यक्तिगत कर्म तथा अव्यक्तिगत कर्म (अर्थात जिनका अन्य प्राणियो पर प्रभाव पड़ता है)। व्यक्तिगत कर्मों के पुन तीन भेद हैं। वह हैं—

(१) खाना, पीना, सोना, खेलना आदि। इन कर्मों के परिणाम स्वरूप मनुष्य का शरीर स्वच्छ रहता है।

(२) सत्य बोलना तथा मन से सब का भला सोचना। इनसे मन शुद्ध होता है। (मनु ५।१०९)

(३) विद्या (ज्ञान) प्राप्त करना तथा तप करना। इनसे आत्मा की शुद्धि होती है। (मनु ५।१०९)

(४) ईश-उपासना। इससे आत्मा को आनन्द प्राप्त होता है।

मनु महाराज ने कर्म के तीन भेद किये हैं। कायक, मानसिक तथा वाचक। (मनु १२।२) प्राणी शरीर से, मन से तथा वाणी से किए हुए शुभा-शुभ कर्मों के फलो को शरीर, मन तथा वाणी द्वारा ही भोगता है। जिस कर्म के करने से मनुष्य को लज्जा नही आती और जिसके करने से आत्मा प्रसन्न होता है वह कर्म सात्विक (शुभ) समझना चाहिए। (मनु १२।१४)

(४) कर्म का और धर्म का घनिष्ठ सम्बन्ध है। धर्म का तात्पर्य है 'जो धारण करे।" केवल कर्म ही मानव को धारण कर सकता है न कि कोरा विश्वास। कोरा विश्वास धर्म की परिभाषा के अन्तर्गत नहीं आ सकता है। इसीलिये मनु महाराज ने कहा है

आचार परमो धर्म। (मनु १। १०८)

संस्कृत साहित्य मे 'धर्म' शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है यथा स्वधर्म, पर धर्म (गीता १८।४७, ३।३५) जाति धर्म तथा कुल धर्म (गीता १।४३), राज धर्म (मनु ७।१) सन्यासियों के विशेष धर्म (सत्यार्थ प्रकाश पृ ११९), प्रजा धर्म, देश धर्म, स्त्री धर्म, आचार्य और शिष्य का धर्म (वही पृ० ७२), मनु और व्यास जी कहते हैं कि युगमान के अनुसार कृत, त्रेता, द्वापर और कलि के धर्म भी भिन्न २ होते हैं।" (इ० गीता रहस्य तिलक पृ ४७)

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कर्तव्य कर्म तथा धर्म पर्यायवाची शब्द हैं। इसकी पुष्टि गीता (२।३१) से होती है जहां श्रीकृष्ण कहते हैं—

"इसके सिवा स्वधर्म की ओर देखें तो भी इस समय तुम्हें हिम्मत हारनी उचित नही है।"

क्षत्रिय का धर्म युद्ध करना तथा राज्य व्यवस्था करना होता है, यह दोनों कर्म (कर्तव्य) ही हैं।

अपर च मनु (८।१७) का वचन है कि "धर्म ही एक सुहृदय है जो मृत्यु के उपरात भी साथ जाता है।' यह इस तथ्य का प्रमाण है कि धर्म शुभाशुभ कर्मों का द्योतक है।

(५) सक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि कल्याण कारक तथा परोप-कारक कर्म ही शुभ कम होते हैं इनकी गणना नही की जा सकती और न ही इन शुभ कर्मों की सीमा निर्धारित की जा सकती है। तथापि पाठकों की जानकारी हेतु कुछ शुभ (पवित्र) कर्मों की सूची दी जाती है

(१) सत्य बोलना—"न हि सत्यात्परो धर्मा।" अर्थात सत्य से बढ़कर कोई धर्म नही है (स प्र ५६०)। 'सत्यमेव जयते नानृतं" (वही)। "धर्म सत्येन वर्द्धते।" (मनु ८।८३) यह महावाक्य है जो सदैव ध्यान में रखने योग्य है। किसी घटना, कर्म स्थिति तथा वस्तु का ठीक-ठीक वर्णन करना ही सत्य कहलाता है। सत्य से ही राष्ट्र, समाज तथा न्याय की रक्षा हो सकती है इसके बिना राष्ट्र, समाज तथा न्याय छन्न-भिन्न हो जाता है और अपरिमित विप्लव अनिवार्य हो जाता है। इसीलिए ऋग्वेद (१०-८५-१) की सूक्ति है—

"सत्येनोत्तभिता भूमि" अर्थात सत्य से ही भूमि का धारण होता है। यहा भूमि का अर्थ भूमि निवासी मनुष्यों का है।

हिन्दी कवि का कथन है —

साच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जा के हृदय सांच है ताके हृदय आप॥

यह तो निर्विवाद है कि सत्य बोलने से कभी कभी कठिनाइयो का सामना करना पड़ता है। अपने व्यवसाय में हानि हो सकती है। मित्र और बन्धु रुष्ट हो जाते हैं और शत्रु बन जाते हैं। पर स्मरण रहे कि धर्माचरण कोई सरल बात नहीं। धर्म पर आचरण करना वैसा ही कठिन है जैसे छुरा की धार पर चलना। (कठ उप ३।१४) सत्य बोलने के नियम का एक अपवाद है - किसी निरापराधी व्यक्ति की जान बचाने के लिये असत्य बोलना पाप नहीं है।

नारद का कथन है कि "सच बोलना अच्छा है, परन्तु सत्य से भी अधिक ऐसा बोलना अच्छा है जिससे सब प्राणियों का हित हो, क्योंकि जिससे सब प्राणियों का अत्यन्त हित होता है—वही हमारे मत से सत्य है।"

(गीता रहस्य तिलक पृ ३४)

(२) सत्याचरण अथवा सत्यशीलता (इमानदारी)

सत्य बोलने का अवसर मनुष्य को कभी कभी मिलता है किन्तु जीवन के प्रत्येक अवसर पर हर व्यक्ति को सत्याचरण करने का और सत्यशीलता प्रकट करने के अवसर पग पग पर मिलते रहते हैं, चाहे वह दुकानदार हो, डाक्टर हो, वकील हो, अधिकारी हो अथवा साधारण कार्यकर्ता हो।

शुद्ध वस्तुओ का बेचना, उचित दर लेना और ठीक तोलना, गलती से प्राप्त अधिक धन व वस्तु का वापस करना, रोगों की ठीक ठीक जाच कर दवाई देना, मुवक्कल का ईमानदारी से काम करना, दिये हुए वचन का पालन करना, दुखियों की सेवा करना, मधुर वचन बोलना, नम्र रहना, प्राणीमात्र से प्रेम और सद्व्यवहार करना, अपकार करने वाले का भी उपकार करना, क्षमा करना, अपने कर्तव्य का पूर्ण रूप से पालन करना, रेलगाड़ी, में अपना अधिक सामान बुक कराना, चुगी कर स्वय देना, आय पर चुगी कर देना, सर्वहितकारी नियमों का पालन करना, घूस (रिश्वत) को ठुकराना, भय, प्रलोभन, आफीसर के स्पष्ट तथा साकेतिक अनुचित आज्ञा की उपेक्षा करते हुए अपने कर्तव्य का पालन करना, जल निमग्न व्यक्ति को बचाना, इत्यादि कर्मकर्ता के सत्याचरण तथा सत्यशीलता के कुछ बोलते उदाहरण हैं।

(३) माता, पिता, गुरुजनों, वृद्धजनों की आज्ञाओं का पालन करना तथा उनकी धन-धान्य, वस्त्र, औषधियों आदि द्वारा सेवा करनी चाहिए, यह प्रत्येक व्यक्ति का सबसे बड़ा कर्तव्य है।

तैत्तिरीय उपनिषद का वाक्य है—

"मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव। अतिथिदेवो भव।" अर्थात माता, पिता, आचार्य और अतिथि को देवता समझना चाहिए। किसी व्यक्ति ने स्वामी दयानन्द जी से प्रश्न किया था कि "आप इतने योगी हैं और पूर्ण ब्रह्मचारी हैं तो किस कारण आपको अपने कार्य में इतनी सफलता प्राप्त नहीं हुई जितनी कि होनी चाहिए थी।" स्वामी जी ने उत्तर दिया "इसका केवल एकमात्र कारण यह है कि मुझे केवल माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त न हो सका।"

(४) यज्ञ करना, दान देना और तप करना।

यजुर्वेद (१८।१-२७) में यज्ञ की महिमा का वर्णन किया है। यज्ञ से आयु, प्राण, अपान, व्यान, मन, वाणी, चक्षु,श्रोत्र, आत्मा आदि की सुव्यवस्था का वर्णन मिलता है।

रामायण काल में यज्ञो का विस्तार था। ऋषियों के आश्रमों में यज्ञ होते रहते थे। ऋषि विश्वामित्र अपने यज्ञ की (राक्षसों से) रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को ले गए थे। महाभारत काल में युधिष्ठिर का राजसूय

यज्ञ तो प्रसिद्ध ही है। उत्तर महाभारत काल में यज्ञों का प्राय: लोप हो गया। उपनिषद काल में ऋषि वनों में रहकर ब्रह्मचर्या किया करते थे। उपनिषदों में यज्ञों का विशेष उल्लेख नही मिलता।

तैत्तिरीय उपनिषद (१।३) में दान की महिमा इस प्रकार की गई है—"श्रद्धा से देना, अश्रद्धा से देना, अपनी बढ़ती श्री से देना, श्री न बढ़ रही हो तो भी देना, लोक लाज से देना, भय से देना, प्रेम से देना।

गीता (१८।५) में कहा है कि यज्ञ-दान और तप—इन कर्मों को करना ही चाहिए, ये बुद्धिमानों को भी पवित्र करने वाले हैं। इन कर्मों को बिना आसक्ति के, फलाशय को त्याग कर करने चाहिए।

जो यज्ञ फलाशय की आकाक्षा छोडकर अपना कर्तव्य समझ करके, शास्त्र की विधि के अनुसार, शान्त चित्त से किया जाता है वह सात्विक यज्ञ है। (गीता १८।११) वह दान सात्विक कहलाता है जो कर्तव्य बुद्धि से किया जाता है, जो योग्य देश-काल और पात्र का विचार करके किया जाता है, एव जो अपने ऊपर प्रत्युपकार न करने वाले को दिया जाता है। (गीता १८।२०)

देवता, ब्राह्मण, गुरु और विद्वानो की पूजा, शुद्धता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा को शरीर का तप कहते हैं, मन को उद्वेग न करने वाले सत्य, प्रिय और हितकर सम्भाषण को तथा स्वाध्याय को वाचिक तप कहते हैं, मन को प्रसन्न रखना, सौम्यता, मौन, मनोनिग्रह और शुद्ध भावना इनको मानस तप कहते हैं। इन तीनों प्रकार के तपो को यदि मनुष्य फल की आकाक्षा न रखकर, श्रद्धा से, योग युक्त बुद्धि से करे तो वे सात्विक कहलाते हैं।

(गीता १७/१४,१५,१६,१७)

वास्तव मे गर्मी-सरदी और कष्ट का सहन करना ही शरीर का तप है। आज के युग मे न यज्ञ रहा है और न तप रहा है। आर्य समाज के अग्निहोत्र से जलवायु अन्नादि की शुद्धि तो होती हैं किन्तु आधुनिक समय मे पेट्रोल, गैस, धूआ, धूलि आदि के कारण वायु इतनी दूषित हो गई है कि थोडे से रविवासरीय अग्निहोत्र इसका प्रतिकार नही कर सकते।

भारत एक निर्धन देश है अत वायु शुद्धि का कार्य व्यक्तिगत रूप से होना असम्भव है। यह बृहत कार्य तो सरकार ही कर सकती है।

जहा तक तप का प्रश्न है वह असम्भव सा हो गया है। साइन्स और टेकनालोजी ने मनुष्य के लिए इतनी भोग, ऐश्वर्य, विलासता की सामग्री प्रदान कर दी है कि इस वातावरण तथा स्थिति मे शारीरिक, मानसिक तथा वाणी के तप का सवाल उत्पन्न ही नही हो सकता।

यह सत्य है कि इस युग में दान की प्रवृति बहुत बढ गई है। धन अधिक सख्या मे मनुष्य को प्राप्त हो रहा है। यह दूषित धन-दान, सस्थाओ को भी दूषित कर मनुष्य को अधोगति की ओर ले जा रहा है। न सात्विक धन रहा है और न सात्विक दान, न सात्विक दानी रहे हैं और न ही सात्विक पात्र ही रहे हैं।

(५) दया—दया तो एक ईश्वरीय गुण है। भगवान कर्मानुसार न्याय तो करते हैं पर साथ ही दया भी करते हैं। वह पाप कर्मों को क्षमा तो नही करते पर उनकी दया की दृष्टि सब प्राणियो पर सदा रहती है। अग्रेजी की कहावत है Gods justice is imperesses with mercy—ईश्वर का न्याय दया से द्रवीभूत होता है। प्रत्येक प्राणी को दीनों दु खियो पर दया करनी चाहिए और उनकी यथा शक्ति सहायता करनी चाहिये। कवि कहता है—

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिए, जब लग घट मे प्राण॥

(६) क्षमा —जब किसी व्यक्ति को दूसरे से क्लेश मिलता है तो उसके मन की शान्ति भग हो जाती है। ऐसी स्थिति मे वह यदि अपकार करने वाले को क्षमा कर देवे तो उसका मन शात हो जावेगा। इसके प्रतिकूल वह अपकार करने वाले के मन मे पश्चाताप की भावना उत्पन्न कर उसके सुधार का भागी बन जावेगा।

क्षमा करना तो सन्यासियो का भूषण है और न्यायाधीश का अवगुण है।

(६) अब पाप (अशुभ) कर्मों का सक्षिप्त वर्णन करना उचित होगा, इन का वर्गीकरण निम्न प्रकार है —

(१) जीव हिंसा (२) चोरी करना (३) लालच करना (४) घूस (रिश्वत) लेना, (५) द्वेष करना, (६) जुआ खेलना, (७) पर स्त्री पुरुष गमन, (८) क्रोध करना, (९) कठोर शब्द और झूठ बोलना, चुगली करना, (१०) दूसरे का बुरा चाहना, (११) कर्तव्य कर्म न करना, (१२) माता पिता तथा वृद्ध-जनों का तिरस्कार करना (१३) वचन का पालन न करना (१४) राजकीय और सामाजिक नियमों का उल्लघन करना (१५) विश्वास घात करना (१६) मित्र द्रोह करना, (१७) खाद्य तथा अन्य वस्तुओं, औषधियों आदि में मिलावट करना (१८) काला धन कमाना, (१९) धोखा देना (२०) झूठे प्रमाण पत्र देना (२१) झूठे बिलों द्वारा धन प्राप्त करना (२२) व्यर्थ लडाई झगडा करना, (२३) दूसरे का अपमान करना (२४) धरोहर (सोपे हुए धन) वस्तु का वापस न करना (२५) अपशब्द बोलना (२६) उद्दण्डता करना, (२७) दूसरो के धन व सम्पत्ति पर अधिकार करने की चेष्टा करना इत्यादि-२।

(७) यह स्मरण रहे कि शिशु बालक और पागल व्यक्ति शुभाशुभ कर्म करने मे अशक्य होते है क्योकि उनको सत्य-असत्य, पाप-पुण्य का भेद नही होता है। न्याय मे वे अदण्डनीय होते हैं।

(८) अन्त मे भारतीय सन्तो तथा ईसाई पादरियो के ईश्वरीय विशेष अनुग्रह तथा ईश्वरीय अनुकम्पा का विवेचन करना है।

यह तो सत्य है कि शुभाशुभ कर्मों का फल तो अवश्यमेव भोगना होता है, उसमे किंचिनमात्र भी न्यूनाधिक नही होती। इसके अतिरिक्त व्यक्ति अपने शुभाचरण अथवा भक्ति के कारण ईश्वर की दया तथा अनुकम्पा का पात्र बन सकता है। इस सिद्धात पर कुछ आपत्ति नही हो सकती। कर्मफल सिद्धात तथा ईश्वरीय विशेष अनुग्रह में कोई विरोध नही है क्योकि ईश्वरीय अनुग्रह भी तो प्राणि के कर्म (भक्ति अथवा अन्य कर्मों) के फल स्वरूप होती है न कि अकारण।

गीता (५।१५) मे स्पष्ट लिखा है कि परमेश्वर किसी का पाप और किसी का पुण्य नही लेता है।

(९) मुण्डक उपनिषद (३।३) का कथन है कि परमात्मा बडे बडे भाषणो से नही मिलता न ही तर्क वितर्क से और न ही बहुत सुनने से। जिस को वह वरण कर लेता है वह ही उसे प्राप्त कर सकता है उसके सामने परमात्मा अपने स्वरूप का विवरण करता है।

ससार में यह देखा जाता है कि किसी वस्तु व व्यक्ति का वरण उसके गुणो के आधार पर होता है, यह असम्भव व तर्क विहीन है कि सर्व न्यायकारी परमेश्वर पात्र की योग्यता के बिना ही उसका वरण करता है। अत. यह निष्कर्ष सत्य है कि परमात्मा की विशेष अनुग्रह व्यक्ति के विशेष शुभ-कर्मो पर ही आधारित होती है। ●

एक विहंगम दृष्टि

(पृष्ठ ४ का शेष)

इस राष्ट्र विरोधी भस्मासुर को प्रोत्साहन देने मे सकोच नहीं करते। अंग्रेजी राज्य में जिन सामाजिक व धार्मिक सुधारो को हम अपनी राजनैतिक मुक्ति के लिये आवश्यक समझते थे, जातिप्रथा का निराकरण उनमे सबसे अधिक महत्व का प्रश्न था। ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम इसलिये गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था को ही वेदोक्त सिद्ध करके जन्मगत जात पात के आधार को ही नष्ट करने का प्रयत्न किया। छुआछूत अथवा हरिजनो की समस्या भी इसी सर्वभक्षी जाति व्यवस्था के वृक्ष के विषैले फल मात्र हैं। जन्म के स्थान मे कर्म के आधार पर तथाकथित अछूतो को ब्राह्मण आदि उच्च वर्गों मे सर्वथा आत्मसात करके इस समस्या का चिरस्थायी और कारगर उपाय किया जाना चाहिये था किन्तु स्वाधीनता के बाद इन वर्गों को उचित तात्कालिक के स्थान मे अब प्राय सदा के लिये स्वय उनके हित विरोधी, राजनैतिक व आर्थिक लाभ के प्रलोभन देकर हमने जन्म की दृष्टि से उन्हें हमेशा के लिये अछूत बना दिया है। आज स्थिति यह है कि हरिजनो के लिये निर्धारित आर्थिक व राजनैतिक लाभ उठाने के लिये ऊचो जाति के लोग भी झूठ प्रमाण पत्र देकर अछूत बन रहे हैं।

जाति सूचक नामों का निषेध

चौधरी साहब द्वारा अन्तर्जातीय विवाह का उपर्युक्त सुझाव स्वीकार करना यदि कठिन था तो कम से कम इस प्रकार का कानूनी या सवैधानिक प्रावधान तो किया ही जा सकताथा कि कोई सरकारी नौकरअपने नाम के आगे अपनी जाति का उल्लेख नकरें। जब हम रामसिंह और रैगर मजिस्ट्रेट या दयाराम जाट कलेक्टर अथवा जयदेव गुप्ता पुलिस अधीक्षक जैसे नाम पढते व सुनते हैं तो जातिवाद को प्रोत्साहन मिलता है चाहे जाति सूचक नाम के अधिकारी स्वय कितने ही निष्पक्ष हो उनकी जाति से सम्बन्धित व्यक्तियो के मन मे यह आशा और अपेक्षा उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि यह अधिकारी उनका पक्ष लगे। दूसरी तरफ अन्य जाति के लोगो मे उनके प्रति सही या गलत या आशका भी उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि भिन्न जाति के होने के कारण उससे न्याय की अपेक्षा नही कर सकते। मैंने स्वय चरणसिंह जी को जब वे प्रधान मन्त्री बने तब नेहरू जी को दिये गये उनके सुझाव का स्मरण दिलाते हुए आग्रह किया था कि यदि अपने कार्यकाल में वे हिन्दुओ की जाति प्रथा को सर्वथा गर कानूनी घोषित नहीं कर सकते तो कम से कम सरकारी क्षेत्रों में जाति सूचक नामो के उपयोग का कानून द्वारा निषेध अवश्य कर दे यह उनके प्रधानमन्त्रीकाल की बहुत बडी उपलब्धि होगी। मेरी भावना से सहमति सूचक उनके कार्यालय का पत्रोत्तर भी मुझे प्राप्त हुआ किन्तु दुर्भाग्य से उनके प्रधानमन्त्रित्व काल की लघु अवधि तथा विवादग्रस्तता के कारण वे यह कार्य नही कर सके।

वस्तुत मैंने स्व० श्रीमती इन्दिरा गाधी को भी इस प्रकार का सुझाव देकर निवेदन किया था कि वे केन्द्रीय तथा राज्य के मन्त्रियों तथा समस्त सरकारी कर्मचारियो को यह आदेश दे कि वे अपने सरकारी पदो के साथ अपने जाति सूचक नामो का प्रयोग न करे। यह बात निर्विवाद है कि जब तक हिन्दू समाज जन्मगत जाति प्रथा के अभिशापो से सर्वथा मुक्त नही हो जाता तब तक हमारा देश एक राष्ट्र तो दूर स्वय हिन्दू समाज का भी उसका एक शक्तिशाली राष्ट्रीय आधार नही बन सकता। हमारे प्राय सभी धार्मिक व सामाजिक सुधार भी जात-पात के इस नमक की खान मे विलीन होकर नष्ट होते जा रहे हैं। अतएव स्व० चौ० चरणसिंह के प्रति सबसे बडी श्रद्धाञ्जलि मेरी सम्मति मे यही हो सकती है कि हम उनकी स्मृति मे एक ऐसा देशव्यापी जात-पात उन्मूलक आन्दोलन प्रारम्भ करे कि जिसके परिणाम स्वरूप हमारे देश व समाज का यह ऐतिहासिक कलक सदा के लिये समाप्त हो जाये।



आर्य जगत् के समाचार

आर्य प्रचारक का नागरिक अभिनन्दन

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ प्रचारक पं० भगवती प्रसाद अभय (वर्तमान नाम श्री अभयमुनि) का आपके ८५ वे जन्म दिवस पर नागौर मे आर्य सस्कार समिति द्वारा नागरिक अभिनन्दन किया गया। आपने जीवन भर आर्य समाज की बडी लगन व योग्यतापूर्वक सेवा की है,

मेरी दो बड़ी इच्छाएं

मेरी दो बडी इच्छाए हैं जिनके कारण मैं जीवित हूँ। ये हैं, अछूतो की मुक्ति और गायो की रक्षा। जब मेरी ये दोनो इच्छाए पूरी हो जाएगी, तभी स्वराज्य मिल जायेगा और उन्ही की मुक्ति मे मेरा मोक्ष भी निहित है। —महात्मा गाधी (सन १९३२ के एक भाषण से)

यह कैसा राष्ट्रपति शासन

चण्डीगढ। विश्व वेद परिषद चण्डीगढ द्वारा एक प्रस्ताव पारित कर पजाब की वर्तमान हिंसक घटनाओ पर अत्यन्त चिन्ता व्यक्त की गई है। राष्ट्रपति शासन से जो आशाए बाधी गई थी यदि वे पूरी नही हो पाती हैं तो केन्द्र राष्ट्र का शासन व उसकी रक्षा कैसे करेगा यह घोर चिन्ता का विषय है।

एक प्रस्ताव द्वारा ग्रेटर कैलाश दिल्ली के नर सहार की घटना पर अत्यन्त आक्रोश प्रकट किया गया है। यदि राजधानी मे कानून व व्यवस्था का यह हाल है तो ७० करोड जनसख्या वाले महान राष्ट्र की रक्षा कैसे और कौन करेगा प्रस्ताव मे मृतक परिवारो के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट की गई है।

एक प्रस्ताव द्वारा भवानीगढ सगरूर के बस यात्रियो की दर्दनाक मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया। पजाब सरकार का परिवहन विभाग बसो की अन्धाधुन्ध भीड को नियन्त्रित नही कर पाता शासन भी जिम्मेदारी से बच नही सकता।

प्रभात आश्रम की ओर से मेला प्रचार

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी २०४४ रविवार दिनाक ७ जून को गगा दशहरा मेले पर भोलाझाल मे गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ की ओर से वेदप्रचार कार्यक्रम चलाया गया। इसमे सर्वप्रथम ब्रह्मचारियो ने शोभायात्रा निकाली। तत्पश्चात् यज्ञ, भजन तथा ब्र० वाचस्पति एव राजेन्द्र द्वारा भक्ति रस पूर्ण भजन हुआ। आचार्य वेदमर्मज्ञ तपोमूर्ति स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का सवा घण्टे तक मार्मिक प्रवचन हुआ। प्रवचन के पश्चात दानी महानुभावो ने हृदय खोलकर सात्विक दान प्रदान किया। श्री वत्स जी निगमालकार ने दानियो का धन्यवाद किया।

शुभ विवाह

आर्य समाज वेद मन्दिर महूरामऊ जिला उन्नाव के कर्मठ सदस्य व आर्य वीर दल के सचिव श्री सुरेशसिंह एडवोकेट का शुभ विवाह आचार्य शिवदास शास्त्री के पौरोहित्य मे २४-५-८७ को कु० रानीसिंह सुपुत्री छगा सिंह पहाडपुर निवासी के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ जिसमे जिले के गण्यमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया।

ऋषिभक्त पोद्दार जी का निधन

आगरा निवासी महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त तथा वैदिक सिद्धान्तो के प्रति दृढ आस्था रखने वाले श्री विष्णुदेव जी पोद्दार ने आर्ष साहित्य की प्रकाशन के लिये नब्बे हजार रुपये आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, ४५५ खारी-बावली, दिल्ली-६ को मई ८७ के अन्तिम सप्ताह मे दान मे दिये थे।

परन्तु हमे यह सूचना देते हुए अत्यन्त खेद होता है कि श्री पोद्दार जी का एक सप्ताह के पश्चात ही ६ जून ८७ को आकस्मिक निधन हो गया। अब वे इस ससार मे नही रहे हैं, परन्तु उनका दिया गया सात्विक दान सदा उनके विमलयश की गाथा है। परमपिता परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे। और उनके पारिवारिक जनो को धैर्य व साहस प्रदान करे। ट्रस्ट परिवार ४५५, खारीबावली दिल्ली-६

सच्चे आर्य जीवन के कुछ सूत्र

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी

[सयुक्त पजाब एव स्वातन्त्र्योत्तर काल के एक प्रखर आर्य सन्यासी एव नेता]

१—जो कुछ करो, कर्त्तव्य समझ कर करो।

२—विद्या मे भले ही कुछ न्यूनता हो, परन्तु विदेशो मे जाने वाले धर्मप्रचारक चरित्र के कच्चे नही होने चाहिए।

३—मनुष्य का कार्य ही उसका स्मारण होगा, यदि व्यक्ति ने कोई ऐसा कार्य नही किया, जो स्मरण करने योग्य हो तो फिर कोई भी स्मरण उसकी स्मृति को सुरक्षित व स्थिर न रख सकेगा।

४—केवल प्रार्थना करने वाला और तदनुसार कर्म न करने वाला भाड होना है। अत कर्मशील होना चाहिए।

५—यदि कोई मन्तव्य तो रखता हो परन्तु कर्त्तव्य न करता हो तो फलभागी नही हो सकता।

६—मोक्ष के दो ही मार्ग हैं। एक ज्ञान का, दूसरा कर्म का। वेदानुसार दोनो समन्वित साधन हैं।

७—जो प्रचार करते समय दुख से डरता है वह ऋषिभक्ति से शून्य प्रतीत होता है।

८—जो लेख द्वारा प्रचार है वह स्थायी होता है। यह निर्णीत सिद्धान्त है।

९—वह समय दूर नही जब ऋषि दयानन्द का ही अनुकरण होगा।

१०—शुद्ध मन से दृढतापूर्वक कार्य किया जाए तो ऐसा कोई कार्य नही जो सम्पादन न हो सके।

"कृत मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहिता।"

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का रजत जयन्ती समारोह सम्पन्न

राजस्थान का प्रसिद्ध आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का रजत जयन्ती समारोह २४ मई ८७ से ३१ मई ८७ तक बडे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। २८ मई से ३१ मई तक चतुर्वेद पारायण महायज्ञ हुआ। जिसमे हजारो व्यक्तियो ने भाग लिया। आसपास के लगभग ५०० गावो के लोग एकत्र हुए। वेद सम्मेलन, राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन, आर्य युवक सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन आदि हुए। स्वामी ओमानन्द जी, उत्तर प्रदेश के विश्वबन्धु जी तथा एटा के स्वामी जी आदि सम्मिलित हुए।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

डिबाई मे आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर जनपद बुलन्दशहर स्तर का ११ जून से २२ जून तक मथुरिया विद्यालय मे ६० आर्य वीरो की नैतिक, शारीरिक, धार्मिक प्रशिक्षण आसन व्यायाम, वैदिक सिद्धान्तो की शिक्षा के साथ सफलता से सम्पन्न हुआ। ग्रामीण क्षेत्रो मे लगभग ५० ग्रामो मे श्री घनेन्द्रसिंह अ ध अध्यक्ष जिला आय वीर दल बुलन्दशहर के नेतृत्व मे वैदिक धर्म प्रचार करने हेतु शोभायात्रा निकला। श्री बालदिवाकर हस अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने ग्रामीण क्षेत्रो मे आर्य रैली का निरीक्षण किया।

आर्य वीर राष्ट्र उत्थान में आगे आयें

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद मे आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर में दीक्षान्त समारोह मे उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल के प्रान्तीय सरक्षक सचालक डा० बालकृष्ण आर्य "विकल" बिन्दकी ने कहा 'आज देश मे चारो ओर तूफानी बादल छाये हुए हैं, कुछ असामाजिक तत्व हमारे राष्ट्र और सस्कृत का मिटाने मे लगे हैं। ऐसी भीषण स्थिति मे आर्य वीर दल आगे आये और राष्ट्र द्रोहियो को सबक सिखायें। जनता पर अच्छा प्रभाव पडा।

—आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री

ईसाई महिला की शुद्धि

आर्यसमाज जाम नगर द्वारा दिनाक ७ ६-८७ के दिन एक क्रिश्ची महिला को वैदिक विधि के अनुसार शुद्धि करके उनकी अपनी ही इच्छा से पुन उनके मूल आर्य धर्म मे दीक्षित किया गया और वैदिक विधि के अनुसार ही उन्होने शादी की है। यह घटना समग्र जाम नगर शहर के लिये गौरव समान है।

रजि० नं० डी० (डी०) १७७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (५ ७-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U 93 Post in D.P.S.O. on 2-7-1987

विवेक हीन सरकारी खर्च

डा० काशीनाथ शास्त्री गौदिया

केन्द्रीय सरकार ने विश्वविद्यालय तथा कालेज के शिक्षको के मूल वेतन मे भारी वृद्धि की घोषणा की है। उदाहरणार्थ एक लेक्चरर को अभी तक जहा ७०० १६०० रु० का वेतनमान मिलता था वहा अब उसे २२०० ४००० रुपये का वेतनमान दिया जायगा अर्थात् अब उसके वेतन मे ढाई से तीन गुना की वृद्धि होगी। इसी प्रकार रीडर और प्रोफेसरो के वेतनमान में भी अन्धाधुन्ध वृद्धि की गई है। समझ मे नही आता कि इस प्रकार के विवेकहीन सरकारी खर्च सरकार को कहा से आयेंगे और गरीब जनता का क्या हाल होगा? क्योंकि जब विश्वविद्यालय और कालेजो के शिक्षको के वेतनमान मे वृद्धि की जायगी तो विद्यालयो के भी शिक्षक ही नही अपितु दूसरे विभागो के भी कर्मचारी वेतन वृद्धि की माग करगे। इस प्रकार सरकारी खर्च न जाने कितने सौ गुना बढ जायगा।

पुन जब सरकारी खर्च बढते हैं तो सरकार उनकी पूर्ति करो मे वृद्धि करके या नये कर लगा कर करती है। किन्तु करों मे वृद्धि होने अथवा सरकारी कर्मचारियो के वेतन बढने पर व्यापारी वर्ग भी चुप नही बैठता। वह भी अवसर से लाभ उठाता है और चीजो के मूल्य बढाता है। जिससे महगाई बढती है। इस प्रकार कर या वेतन वृद्धि और महगाई का चक्र निरन्तर चलता रहता है जिसका कभी अन्त न होगा और वही कहावत चरितार्थ होगी कि "मर्ज बढता गया ज्यो-ज्यो दवा की।" उदाहरण के लिये सरकार ने ज्यों ही डाक की दरों मे दो से तीन गुना तक वृद्धि की त्यों ही आम जरूरत की चीजो के दाम आसमान छूने लगे। आज तुवर (अरहर) की दाल १० किलो और फली का तेल २८ किलो बिक रहा है। अस्तु वेतन और महगाई भत्ता बढाने से काम न चलेगा। इससे तो महगाई और अधिक बढ़ेगी। अत सरकार को चाहिये कि चीजो के भाव कम करे और सरकारी गैर सरकारी फिजूल खर्चियो को बन्द करे वर्ना इसके भयकर दुष्परिणाम होंगे और गरीब जनता भूखो मर जायगी।

१०५

२१८

आर्यसमा ... ।

आर्यसमाज ... ...ाधारण की सेवा कर रहा है। दिना ... रमेश प० प्रभु ने आर्यसमाज की नवीन राजकाहिका ...

इस अवसर पर बम्बई की समस्त आर्यसमाजो ... एवं विशिष्ट आर्य बन्धुओ द्वारा श्री रमेश प० प्रभु का बम्बई महानगर के महापौर बनने पर पुष्पमालाओ द्वारा स्वागत किया गया। महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने महापौर के परिचय के साथ आर्य समाज की धार्मिक एव सामाजिक गतिविधियो से जन साधारण का परिचय कराया।

इस अवसर पर वेद वेदाग पुरस्कार विजेता आचार्य प० विश्वनाथ जी विद्यालंकार का अभिनन्दन पत्र भी पढ़ा गया।

आर्यसमाज कृष्ण नगर का चुनाव

आर्यसमाज कृष्ण नगर का वार्षिक चुनाव १७ ५-८७ को सम्पन्न हुआ।

श्री मास्टर मनोहरलाल जी प्रधान निर्वाचित हुए एव अन्तरग के गठन का अधिकार उनको दिया गया।

प्रधान जी ने अन्तरग का गठन इस प्रकार किया। उपप्रधान श्री सीताराम सहगल एव श्री हसराज दीवाना मन्त्री जयप्रकाशसिंह, उपमन्त्री श्री श्यामबिहारीलाल जी तथा परिषद नायक श्री जगदीश भाटिया, कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश बुद्धिराज जी पुस्तकाध्यक्ष श्री विनोद कुमार।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : २७४७७१

वर्ष २२ अंक २८] | आषाढ कृ० १ सं० २०४४ रविवार १२ जुलाई १९८७ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् का तूफ़ानी दौरा

दिल्ली। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने २६ जून, १९८७ से लगातार ४ जुलाई ८७ तक दक्षिण भारत का तूफानी दौरा किया। आपके साथ सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् भी थे।

हैदराबाद होते हुए आप मद्रास पहुचे। जहा आर्यसमाज मद्रास के प्रधान श्री जयदेव जी व आर्य शिक्षण संस्थाओं के महामन्त्री श्री रवि मल्होत्रा व अनेक आर्य बन्धुओ ने हार्दिक स्वागत किया। श्री स्वामी जी व वन्देमातरम् जी ने मद्रास में आर्य समाज के तत्वावधान मे सचालित शिक्षण सस्थाओ का निरीक्षण किया तथा हार्दिक सतोष व्यक्त किया। स्वामी जी ने वहा अनेको कार्यकर्त्ताओं से भेंट की व उन्हे आर्य समाज के कार्यों को और आगे बढाने प्रेरणा की।

वेदामृत

ओ३म् पश्चात् पुरस्तादधरादुतोत्तरात् कविः काव्येन परिपाह्यग्ने।
सखा सखायमजरो जरिमो ऽग्ने मर्ता अमर्त्यस्त्व नः॥

अथर्व० ८।३।२०॥

(अग्ने) हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर (कवि काव्येन) आप अन्तर्यामी विवेक सहित बुद्धिमान है। (हम तो केवल बाहर से देखकर ही जान पाते हैं।) अतएव प्रभु आप ही हमारी (पश्चात्) पीछे से (पुरस्तात्) आगे से (अधरात्) नीचे से (उत्) और (उत्तरात्) ऊपर से रक्षा करे (अग्ने) विश्व नियामक (अजर) अमर (सखा) मित्र के समान (सखायम, मित्र की (जरिमो) स्तुति करते हैं कि (अमर्त्य) तू अमर है (नः मर्तान्) हेम मरणशील मनुष्यो की (परिपाहि) चारो ओर से रक्षा करे।

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

२७ जून को श्री स्वामी जी व वन्देमातरम् जी मदुराई विमान से चलकर उतरे वहाँ स्वामी जी का स्वागत सारे तामिलनाडु से वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त करने ४ दिवसीय शिविर में भाग लेने आए आर्य बन्धुओ ने ओ३म पताका फहराते हुए किया। इस शिविर का सचालन दक्षिण भारतीय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सयोजक श्री एम० नारायण स्वामी वानप्रस्थ द्वारा किया गया था। मदुराई समाज के प्रधान जी व मन्त्री तथा प्रो० सुमति नन्दन जी, श्री, श्री पाण्डुरंगराव मन्त्री समाज सैण्ट्रल मद्रास के ब्रह्मचारी राजगोपाल का पूर्ण सहयोग प्राप्त था। देहली वालो के होटल मालिको ने प्रशिक्षणार्थियो के लिए आवास व भोजन की व्यवस्था की। उन्होने अपने होटल के दो विशाल हाल जिसमे १ हजार से भी अधिक व्यक्ति बैठ सकें, शिविर के उपयोग के लिए निःशुल्क प्रदान किए। इन हालो को ओ३म के झण्डो से सजाया गया था।

सायकाल की सार्वजनिक सभा में श्रद्धेय स्वामी जी ने देश की वर्तमान परिस्थितियो पर विशद प्रकाश डाला। हिन्दू समाज किस प्रकार घोर सकटो मे ग्रस्त है इसकी चर्चा करते हुए स्वामी जी ने हिन्दुओं से अपील का कि वे आर्य समाज के झण्डे के नीचे सगठित होकर ही अपनी रक्षा कर सकते हैं।

देश मे अलगाववादी व देशद्रोही शक्तिया पूरे जोर से सिर उठा रही हैं अत आज हिन्दुओ के सगठन की परम आवश्यकता है। आर्य समाज ने हिन्दुओ की हर सकटमे जानहथेली पर रखकर सेवाए की हैं। श्री वन्देमतारम् जी ने कहा कि धर्म निरपेक्षवाद का सहारा लेकर सरकार अल्पसख्यको को सिर पर चढा रही है। चाहिए यह था कि देश मे ऐसा वातावरण बनाया जाता कि सभी धर्मों के लोग अन्य धर्मवालो से बुद्धि पूर्वक धर्म चर्चा करके ऐसे समाज का निर्माण करते जो सत्यान्वेषक और मानवतावादी होता। सच्ची राष्ट्रीयता पैदा करने का यही एक मात्र श्रेष्ठ मार्ग था जिसे महर्षि दयानन्द ने अपनाया था आज भी आर्य समाज उसी श्रेष्ठ मार्ग का अनुकरण व प्रचार करता है। सभा को मदुराई के भूतपूर्व मेयर श्री बालकृष्ण हैदराबाद के भूतपूर्व मेयर श्री बी० किशनलाल ने भी सबोधित किया।

मदुराई से श्री स्वामीजी पानपोली गए जहा शुद्ध हुए हरिजनो ने स्वामी जी का हार्दिक अभिनन्दन किया। वहासे श्री स्वामी जी मीनाक्षीपुरम पहुचे। जहा उन्होने सार्वदेशिकसभा द्वारा सचालित शिक्षा सस्थाओ एव निर्माणाधीन आर्य समाज मन्दिर व यज्ञशाला का निरीक्षण किया। विद्यार्थियो और अध्यापको ने श्री स्वामी जी का अभिनन्दन किया तथा हिन्दू जाति के अस्तित्व को ही समाप्त करने वाले घोर षडयन्त्रो से हिन्दुओ को बचाने पर स्वामी जी का हार्दिक धन्यवाद किया। आर्य समाज मीनाक्षीपुरम के श्री अनन्तराम सेक्सन एव रामचन्द्र केकर तथा अन्य सदस्यो ने भी स्वामी जी का

(शेष पृष्ठ २ पर)

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम का

वक्तव्य संयुक्त

हम तमिलनाडु के निवासियो के हार्दिक आभारी है जो उन्होंने आर्य समाज की गतिविधियो में प्राणवान उत्साह दिखाया है हम आशा करते हैं यह उत्साह सदा बना रहेगा।

आर्य समाज एक आन्दोलन है जिसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसे समाज का विकास करना है जो धार्मिक असहिष्णुता से मुक्त हो और जीवन के सच्चे रास्तो का निर्माण कर सके जिनका आधार पवित्र वेदों की शिक्षा हो। आर्य समाज विभिन्न मतावलम्बियो के मध्य स्वस्थ व लाभदायक वार्तालाप व विचार विमर्श करने को प्रोत्साहन देता है जिससे सत्यासत्य का निर्णय होता रहें और ससार मे जीवित रहने का मानव को उत्तम मार्ग मिले।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तमिल बन्धुओ के उत्साह और शक्ति-शाली प्रयत्नों की सराहना करती है जो उन्होंने श्रीलका मे सम्मान पूर्वक जीवन बिताने के लिए किए हैं। सभा तमिलो की हत्या की घोर निन्दा करती हैं जो श्रीलका सरकार द्वारा तमिलो पर अत्याचार रूप मे की गई है। जिसमे उसे बाह्य शक्तियो का भी समर्थन प्राप्त है। जो हिन्द महासागर को युद्ध की रगशाला बनाना चाहते हैं।

विघटनवादी शक्तिया उन शक्तियों को साथ लेकर चल रही हैं जो यह देखना पसन्द नहीं करते कि भारत देश शक्तिशाली बन जाए। यह लोग देश की राजनैतिक स्थिरता को नष्ट भ्रष्ट करना चाहते हैं। वे यह भी प्रयत्न कर रहे हैं कि भारत की शुद्ध राष्ट्रवादी हिन्दू समाज बहुसख्यक रूप मे न रहे वह एक अल्पसख्यक जमात बन जाए। इसके लिए हिन्दू समाज के कमजोर वर्गों मे उनकी पृथक पहचान बनाने की उनकी राष्ट्रघातक योजनाए चल रही हैं इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिए।

आर्य समाज चाहता है कि हिन्दू जागे और आने वाले भीषण सकटो को अभी से समझें। आर्यसमाज हिन्दू सिखों के अलगाववाद की भी निन्दा करता उसी प्रकार गोरखाओ की पृथक पहचान को भी खतरा समझता है। गोरखा व सिख दोनो ही हमारी सेनाओ के शक्तिशाली अग है। इसे कमजोर नहीं बनने देना चाहिए।

कुछ राज्य सरकारें दगे फिसादो के साम्प्रदायिक स्वरूप के प्रति जिस प्रकार का राष्ट्र विघातक रूख अपनाती है उसकी भी आर्य समाज को गम्भीर चिन्ता व पीडा है। विपक्षी दलो को राष्ट्र के हित मे इस सत्य का अनुभव करना चाहिए कि वे रचनात्मक रुख अपनावे बजाय पक्षपाती वोट प्राप्ति का इसे हथियार बनावें। आशा है विपक्षी दल अपनी इस भूल का परिष्कार करेंगे। और हल्की राजनीति के खेल मे राष्ट्र हित की उपेक्षा नहीं करेंगे।

आर्य समाज के लिए राष्ट्र की अखण्डता व समाज की एकता अधिक महत्वपूर्ण है वह अहर्निश उसी के लिए प्रयत्नशील है। हमारे लिए इसका कोई महत्व नही कि कौन सी राजनैतिक पार्टी राज कर रही है।

आर्यसमाज का अनुभव है कि श्री राजीवगाधी द्वारा बुलाई जाने वाली विपक्षी दलों की बैठकोसे भी समस्याओ का समाधान नही हो पाता है आर्यसमाज श्री राजीव गाधी को परामर्श देता है कि वे इसके बजाय वयोवृद्ध राष्ट्र नेता श्री मुरार जी भाई देसाई व निवृत्त सेनाध्यक्ष श्री मानकशा से राष्ट्रीय समस्याओं पर महत्वपूर्ण विचार विमर्श अपना कर्तव्य बनावे। इन महान राष्ट्र पुरुषों के परामर्श का बडा महत्व है। यह किसी भी राजनीतिक पार्टी से सम्बन्धित नही बल्कि राष्ट्र के निर्माताओ में से है। वे भविष्य के भी सच्चे पथ प्रदर्शक हैं।

हम तथाकथित अल्प सख्यको के साथ किए जाने वाले पक्षपाती रवैये का घोर विरोध करते हैं। इस घातक नीति से राष्ट्र अपने सच्चे हितैषियो को ही विरोधी दल मे धकेल रहा है यह स्थिति किसी भी राष्ट्र के भविष्य के लिए भयावह है। हमने अरब देशो की चापलूसी कर करके ईसराइल जैसे महान देश को अपना विरोधी बना रखा है। देश मे भी हम हिन्दुओं के हितों की कीमत पर घोर राष्ट्रद्रोही अल्प सख्यकों की चापलूसी में ही लगे रहते हैं। यह राष्ट्रनीति राष्ट्र को कहा ले जाएगी राष्ट्र के कर्णधारो को यह चिन्तन करना चाहिए।

आर्यसमाज के बढ़ते कदम

(पृष्ठ १ का शेष)

हार्दिक स्वागत किया। वहा से श्री स्वामी जी तिरुनावल्ली ग्राम गए जहा श्री स्वामी जी ने दयानन्द वैदिक गुरुकुल की आधारशिला रखी। गुरुकुल के लिए एक भूपति श्री बी० रामचन्द्रन ने भूमि प्रदान की है। इसके साथ ही वहा एक महर्षि दयानन्द कालोनी का भी विकास किया जाएगा। श्री स्वामी जी ने भारतीय विद्या भवन के सस्कृत परीक्षाओ में उत्तीर्ण विद्यार्थियो को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। इस अवसर पर श्री लक्ष्मन व श्री बी० रामचन्द्रन ने समारोह को सम्बोधित किया।

मद्रास लौटकर स्वामी जी ने एक जौलाई ८७ को डी० ए० वी० हाई स्कूल के छात्रो और अध्यापको द्वारा आयोजित विशेष यज्ञ समारोह मे भाग लिया जिसका आयोजन श्री जयदेव जी द्वारा किया गया था। स्वामी जी ने विद्यार्थियो और अध्यापको को वैदिक सस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न कराने के लिए प्रेरणात्मक उद्बोधन दिया। २ जुलाई को स्वामी जी ने हैदराबाद लौटकर विनायक भवन मे कार्यकर्ताओं की एक बडी सभा को सम्बोधित किया जिसकी अध्यक्षता हैदराबाद सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव कल्याणी ने की।

विमान शास्त्र का अंग्रेजी अनुवाद

स्वामी आनन्दबोध जी का सफल प्रयास

२५ जून के दिल्ली के सस्कृत के विद्वानो के एक शिष्ट मण्डल के साथ सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सस्कृत भाषा के प्रति सरकार की नई नीति के सम्बन्ध मे भेंट करते हुए श्री राजीव गाधी को सभा द्वारा प्रकाशित अलभ्य ग्रन्थ 'विमान शास्त्र' की मुद्रित प्रति भेंट कर कहा था कि सस्कृत भाषा मे अनुपम सामग्री उपलब्ध है। उसके आधार पर श्री राजीव गाधी ने वह पुस्तक अग्रेजी भाषा मे अनुवाद के लिए राष्ट्रीय सस्कृति सस्थान को भेजी है। सस्थान से सभा को प्राप्त पत्र की प्रतिलिपि नीचे प्रस्तुत है —

—सम्पादक

श्रद्धेय श्री आनन्दबोध सरस्वती जी,

सविनय प्रणाम।

सस्कृत और और वेदके प्रचार-प्रसार के लिए आपके नेतृत्व मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जो प्रयास कर रही है, उनके लिए मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ।

आपने माननीय प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी जी को "बृहद् विमान-शास्त्र (महर्षि भारद्वाज प्रणीत) की एक प्रति भेंट की है। इसके सम्पादक श्रद्धेय स्वा० ब्रह्ममुनि परिव्राजक हैं। इसे अग्रेजी मे अनुवाद कराने की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया गया है। इस पर होने वाला व्यय हम सरकार से स्वीकृत कराने का प्रयत्न करेंगे जिससे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पर इसका कोई भार न आए। यह अनुवाद हम आपके मार्ग-दर्शन मे ही कराना चाहते हैं क्योंकि यह सभा का प्रकाशन है और इसके साथ स्वामी ब्रह्ममुनि एव आपका भी नाम जुडा हुआ है। यदि अनुवाद करने के लिए एक-दो विद्वानो का नाम सुझा सकें तो हम उनसे सम्पर्क कर इस काम को आगे बढायेंगे।

एक बार फिर आपके प्रयासो के प्रति सम्मान प्रकट करता हूँ।

सादर,

— मण्डन मिश्र, निदेशक

प्रवेश प्रारम्भ

धर्म, सस्कृति और राष्ट्र की रक्षार्थ विगत ४ वर्षों से स्व० लालमन जी आर्य की पुण्य स्मृति मे आरम्भ हुए वैदिक मिशनरी दीक्षा केन्द्र, वेद मन्दिर, मथुरा द्वारा (वैदिक मिशनरी गुरुकुल) चालू हो गया है और इस गुरुकुल मे प्रवेश आरम्भ हो गया है। ११ जुलाई ८७ स नया सत्र चालू होने जा रहा है। अतः प्रवेश के इच्छुक छात्रो से अनुरोध है कि वे उक्त पते पर अपने अभिभावको सहित गुरुकुल मे सम्पर्क स्थापित करें या प्रवेश के लिए नियम व शर्तों की नियमावली मगवा लें।

—प्रेमभिक्षु आचार्य

सम्पादकीय

साम्प्रदायिक दंगे और शासन

देश में साम्प्रदायिक विभीषिका से भारत सरकार व भारतीय जनता त्राहि त्राहि कर रही है फिर भी न भारत सरकार की न ही प्रान्तीय सरकारों की आंख खुल रही है। साम्प्रदायिक दंगे भड़काने वालों के साथ शासन की सहानुभूति का एक सुन्दर उदाहरण दैनिक प्रताप के यशस्वी सम्पादक श्री के० नरेन्द्र ने अपने सम्पादकीय में प्रस्तुत किया है जिसे हम अविकल रूप मे प्रस्तुत कर रहे हैं। मेरठ का दंगा शीर्षक में सरकारी रूख पर टिप्पणी करते हुए श्री नरेन्द्र जी लिखते हैं —

मेरठ में दंगे के कई विवरण आ चुके हैं जिनसे पता चलता है कि किस प्रकार कांग्रेसी नेता स्थानीय अधिकारियो पर प्रभाव डालकर इनके सारे प्रयासो को असफल कर रहे है। फिर इन गरीबो को असफलता के लिए दोषी ठहराते हैं। ऐसी ही एक घटना का विवरण इन्ही दिनों मेरी दृष्टि से गुजरा है। मेरठमें एक व्यक्ति जाफर अली के घर की तलाशी ली गई, जिसमें से इसे पाकिस्तान निर्मित कई शस्त्र मिले जिस पर इसे गिरफ्तार करने का निर्णय लिया गया किन्तु जब केन्द्रीय मन्त्री श्रीमती मोहसिना किदवई को इसका समाचार मिला तो आपने इस व्यक्तिको रिहा करने के लिए अधिकारियों को विवश कर दिया। अब पता चला है कि इस पाकिस्तानी का प्रभाव श्रीमती मोहसिना किदवई पर ही नही बल्कि इसका काफी प्रभाव एक प्रमुख फिल्म स्टार दिलीप कुमार उर्फ यूसुफ खान पर भी है। कहा जाता है कि यूसुफ खान की सहायता से इस व्यक्ति ने पाकिस्तान से आई हुई अपनी तलाक शुदा बहन की शादी एक फिल्म स्टार से कर दी है। जब पुलिस ने जाफर के घर छापा मारा और पाकिस्तानी शस्त्र पकडे तो यह व्यक्ति घर पर न था और मसूरी चला गयाथा। जब इसे समाचार मिला कि इसके घर पर पुलिस ने छापा मारा है तो यह वापिस आ गया और ज्यों ही वह पहुंचा पुलिस ने इसे नेशनल सैक्योरिटी एक्ट के अधीन गिरफ्तार कर लिया। इस पर मोहसिना किदवई के पर्सनल असिस्टेंट अनवर अहमद ने फोन पर दिलीप कुमार साहिब से सम्पर्क किया। इसी समय हाजी मस्तान को भी खबर कर दी गई इसे भी कहा गया कि वह अपना प्रभाव डाले।

कहा जाता है कि दिलीप कुमार ने अमिताभ बच्चन से प्रार्थना की कि वह प्रधानमन्त्री के सेक्रेटियेट वालों से बात करे। इस पर अमिताभ बच्चन ने किसी से बात की और लखनऊ को सन्देश भेजा गया और थोड़ी देर के बाद जाफर को रिहा कर दिया गया।

इससे यह तो पता चलता ही है कि किस प्रकार पाकिस्तान समर्थक हमारे प्रधानमन्त्री के दफ्तर में भी पहुंचे हुए हैं किन्तु आश्चर्य है तो इस बात का कि वे यह नही समझते कि इसका प्रभाव अधिकारियों पर और साधारण हिन्दुओं पर क्या होगा।

कोई यह न समझे कि यह घटना अपनी तरह की अकेली है। प्रतिदिन ऐसी बाते हो रही हैं। जिनसे हिन्दुओं के दिलों में यह बात बैठती जाती है कि ये कांग्रेसी स्वयं तो पाकिस्तान समर्थक मुसलमानों के तलुवे चाटते हैं तो ये गरीब अधिकारी परिस्थितियों पर कैसे नियन्त्रण प्राप्त कर सकते हैं। और इसके बाद इन्हें असफल घोषित करके इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर और दूसरे से तीसरे स्थान पर बदल दिया जाता है। ये बेचारे अनुशासन के पाबन्द अपनी जबान नही खोलते लेकिन कौन यह बात न मानेगा कि इनके दिल और दिमाग पर इन बातों का प्रभाव होता है और इसके बाद शासक और नेता यह आशा करते हैं कि अफसर निष्पक्षता से काम लें। स्वयं तो इनके दिल में विष फैलाते हैं और यह कहते हैं कि इसका प्रभाव न हो

—नरेन्द्र

आर्यसमाज के मन्दिर को गिराने के गम्भीर परिणाम होंगे

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की चेतावनी

किंग्जवे कैम्प आर्यसमाज में सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार ने यदि आर्यसमाज भवन को गिराने की हिम्मत की, तो इसके परिणाम अच्छे नहीं होगे। उन्होने चेतावनी देते हुए कहा— कि पहले उन चार सौ नकली बने मकबरो को देखो जिनमें मुर्दे भी नही है उन्हे गिराओ। आर्यसमाज का भवन १९४८ से अपना कार्य कर रहा है आश्चर्य है नकशे में गुरुद्वारा दिखाया गया है पर आर्यसमाज मन्दिर नही है जब कि समय-समय पर सरकार से लिखा पढ़ी की गई है—इस पर भी मन्दिर नक्शे में नही है। हमने ग्रीन पार्क में गिराये गये मन्दिर की भूमि भी वही पर खी थी। तब भी सरकार ने मन्दिर गिराकर भूल की थी यदि वही भूल इस मन्दिर को गिराकर की तो उसे पश्चाताप करना पडेगा। सभा में अनेक विद्वानो ने अपने विचार व्यक्त किये। सभा की अध्यक्षता श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली सभा ने की।

क्या १९४८ का आर्यसमाज मन्दिर टूटेगा ? डी०डी०ए० के खिलाफ किंग्जवे कैम्प में रोष :

—कार्यालय संवाददाता द्वारा—

नई दिल्ली १ जुलाई १९८७। उत्तरी दिल्ली के किंग्जवे कैम्प क्षेत्र में डी०डी०ए० के अधिकारियों के खिलाफ काफी गुस्सा व जनता में रोष है। भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से आने वाले लोगो को यहा बसाया गया था। 'आर्यसमाजी विचार धारा के लोगों ने अपनी पूजा अर्चना के लिए हडसनलाईन में आर्यसमाज मन्दिर की स्थापना की जो कि दिल्ली की आर्य समाजों की रजिस्टर्ड सभा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा" से सम्बन्धित है। क्षेत्र की विभिन्न सामाजिक गतिविधियो के केन्द्र स्वरूप इस आर्य समाज मन्दिर के स्थान पर डी०डी०ए० ने किंग्जवे कैम्प पुर्नविकास योजना" में नवनिर्मित नक्शे में लोगो को प्लाट अलाट कर दिए हैं। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज के अधिकारियों ने क्षेत्रीय सांसद श्री जगदीश टाईटलर श्री चन्द्र अमृत (महानगर परिषद्) डी०डी० ए० के उपाध्यक्ष तथा अनेक उच्च अधिकारियों को ज्ञापन दिए हैं।

जनता की मांग है कि यह आर्यसमाज मन्दिर व यज्ञशाला इसी स्थान पर रहे तथा जानबूझ कर जनता की धार्मिक भावनाओ को न छेड़ा जाये। उपराज्यपाल व केन्द्र सरकार को चाहिए कि वह शीघ्र ही इस मसले में दखल देकर शान्ति पूर्वक ढग से सुलझाये जिससे स्थिति को बिगडने से समय रहते रोका जा सके, क्योकि हिन्दू हितों के साथ खिलवाड़ सहने को अब जनता तैयार नही है।

पी.ए.सी. का कर्त्तव्य व सरकार का दायित्व : एक निष्पक्ष आकलन

ऐसा लगता है कि पी०ए०सी० पर सुनियोजित आक्रमण किया जा रहा है। साफ जाहिर है कि इसका एक मात्र ध्येय इस दल के मनोबल को क्षति पहुचाना है। पी०ए०सी० पर पहले भी मेरठ मुरादाबाद इत्यादि के दगो में साम्प्रदायिकता का आरोप लगाया जा चुकाहै। यह बात विशेष रूप से समझने की है कि यदि यह दल मनोबल की हानि के कारण उदासीन हो गया तो इसका परिणाम यह होगा कि दगाग्रस्त क्षेत्र मे बहुल समाज चाहे वह हिन्दू हो अथवा मुसलमान कानून को अपने हाथ मे ले लेगा और यह स्थिति बहुत भयावह होगी। मेरठ के दगो के फलस्वरूप तथा सरकार द्वारा नियुक्त जाच कमेटी की रिपोर्ट आने से पहले ही डाइरेक्टर जनरल पुलिस को बलि बनाकर और पी०ए०सी० के स्थान पर मध्य प्रदेश के दल को भेजकर पी०ए०सी० की छवि और मनोबल को अपूर्व क्षति पहुच चुकी है। क्या सरकार इस प्रकार न्याय व्यवस्था चला सकती है।

पी०ए०सी० अथवा कोई भी दूसरा सशस्त्र सरकारी दल ही शासन दडहस्त है। और जब साम्प्रदायिक दगो मे उसे ड्यूटी पर लगाया जाता है तो उससे प्रहार की और असरदार प्रहार की आशा की जाती है। ऐसे मोको पर उससे यह आशा की जाती है कि वह दगाईयो को गुण्डागर्दी करने से बलपूर्वक रोक दे और एक उदासीन दर्शक मात्र बनकर न रह जाय। यदि यह दल सामाजिक और असरदार पग उठायेगा तो निश्चय ही दगे का प्रभाव व बल कम हो जायेगा और इससे होने वाली मृत्यु भी कम होगी।

यह दल अपने कर्त्तव्य का सफल पालन कर सके उसके लिये यह आवश्यक है कि इस दल का सरकार के इरादो की मजबूती मे और दल के विरुद्ध दगाईयो उनके रिश्तेदारो, मित्रो द्वारा लगाये गये झूठे आरोपो से सरकार द्वारा ईमानदारी से रक्षा की जाए व दल मे पूर्ण विश्वास हो—क्योकि यही तो वह लोग हैं जिन्हे दमन करने के लिये सरकार द्वारा यह दल भेजा जाता है।

कहा जाता है कि पिछले दिनो हुये लगभग सभी दगो मे सरकारी अफसरो व जवानो पर जब वह दगो के क्षेत्रो मे ड्यूटी दे रहे थे गोलिया चलाई गई जिनसे कुछ की मृत्यु हुई। यह भी कहा जाता है कि बहुत से मामलो मे दगाईयो के घर से बडी मात्रा मे अस्त्र-शस्त्र बरामद किये गये हैं। यह उन शस्त्रो से कही उत्तम हैं जो सरकारी दलो द्वारा उपयोग मे लाये जाते हैं। और यही वह लोग है जो पी०ए०सी० के विरुद्ध अनर्गल आरोप लगाने मे सबसे अधिक मुखर हैं। जब दगाई सरकारी पुलिस पर गोली चलाते हैं तो यह दगा मात्र न होकर शासन और कानून के विरुद्ध विद्रोह बन जाता है। ऐसी स्थिति मे इस विद्रोह को दमन करने के लिये मामूली दगो की रोकथाम से कही अधिक प्रभावी गोली वर्षा आवश्यक हो जाती है। ऐसी स्थिति मे इस प्रकार के दलो का व्यवहार कितना सतुलित होगा यह उन दलों की ट्रेनिंग पर आधारित है न कि इस बात पर कि उस दल मे कौन लोग हैं या दल पर गोली चलाने वाले कौन लोग हैं।

ऐसी परिस्थितियो में सरकार इन दलो से और अधिकारियो से क्या आशा करती है जब मौके पर स्थिति नाजुक होती है और क्षण-क्षण पर स्थिति को सम्भालने के लिये निर्णय लेने पडते हैं। जब इन दलो का मुकाबला आगजनी, बलात्कार और कत्ल पर आमादा दगाईयो से होता है तो यह बात कोई माने नही रखती कि दगाई किस पेशे के लोग हैं। भले ही वह विद्यार्थी हो, कर्मचारी हो अथवा दूसरे पेशे के लोग हो।

मेरठ के दगो के पश्चात् सरकार द्वारा लिया गया निर्णय बहुत जल्दबाजी मे लिया गया है। इससे आम लोगो की इस धारणा को बल मिलता है कि इसका कारण एक स्वर से की गई उन लोगों की शिकायतो के आधार पर किया गया है जिनके आश्रित लोगों ने ही मस्जिदो पर लगे, लाउडस्पीकरो से दगाईयो के दलों को सचालित किया। इससे पी०ए०सी० दलो मे इस शिकायत का पैदा होना स्वाभाविक है कि सरकार अपनी राजनैतिक रोटी सेकने के लिये अपने निष्ठावान अधिकारियो व जवानो की बलि देना आवश्यक समझती है।

इसलिये हम गम्भीरतापूर्वक यह सुझाव देते हैं कि इससे पहले कि शासन पी०ए०सी० अथवा किसी भी दूसरे सरकारी सशस्त्र दल के सगठन मे किसी प्रकार का रददो बदल करने से पहले अपने मस्तिष्क मे यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर ले कि इन दलो के बनाने का मकसद क्या है तथा उसका कर्त्तव्य और कार्यक्षेत्र क्या है ?

स्मृतियो में राजनीति व अर्थशास्त्र राष्ट्रपति द्वारा विमोचन

ज्ञानपुर (वाराणसी) स्थानीय विश्वभारती अनुसधान परिषद् द्वारा प्रकाशित एव श्रीमती डा० प्रतिभा आर्य द्वारा लिखित स्मृतियों में राजनीति और अर्थशास्त्र का विमोचन राष्ट्रपति भवनमें एक समारोहमें राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि इस ग्रन्थ की रचना द्वारा लेखिका ने महत्वपूर्ण सराहनीय कार्य किया है क्योंकि वर्तमान युग मे वेदो का अत्यधिक महत्व है।

इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय सस्कृति पर १४वी शताब्दी से लेकर अब तक निरन्तर उसे नष्ट करने का प्रयत्न होता रहा है, परन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे हुए हैं जिन्होंने भारतीय सस्कृति की इज्जत करने की जगह इसे बदनाम किया है, इससे हमारे समाज को बहुत हानि हुई है।

राष्ट्रपति ने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि स्वतन्त्रता के ४० वर्ष बाद भी इस सस्कृति को बचाने के लिए जितना प्रयत्न होना चाहिए था, वह नही हुआ है। बल्कि भारतीय सस्कृति को सकीर्ण रूप देकर उसे एक सम्प्रदाय विशेष की सस्कृति का रूप दे दिया गया। आपने कहा कि भारतीय सस्कृति को केवल हिन्दू सस्कृति नहीं मानना चाहिए बल्कि यह प्रत्येक भारती की गौरवमयी सस्कृति है। जो हमे भारतीय सस्कृति एकता और समन्वय का पाठ पढ़ाती है।

कार्यक्रम के आरम्भ मे सस्था के निदेशक डा० कपिलदेव द्विवेदी ने राष्ट्रपति का अभिनन्दन किया और परिषद के कार्यों का सक्षिप्त परिचय दिया। डा० द्विवेदी ने परिषद द्वारा प्रकाशित विषयानुसार प्रकाशित दस भागो मे वेदामृतम् ग्रन्थमाला भेंट की।

परिषद के अध्यक्ष डा० भारतेन्दु द्विवेदी एव सयोजक श्री अजीत आर्य ने माल्यार्पण कर राष्ट्रपति का स्वागत किया।

अन्त मे परिषद की ओर से पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन ने राष्ट्रपति और अभ्यागतों का धन्यवाद दिया।

—आर्येन्दु द्विवेदी

सन् १८५७ की क्रान्ति और स्वामी दयानन्दसरस्वती-२

श्री जयदेव शर्मा

सर्वखाप पचायत के अभिलेखो के अनुसार स्पष्ट होता है कि सन १८५७ के स्वाधीनता सग्राम के सचालक स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती दशनामी थे, स्वामी विरजानन्द इनके शिष्य थे। वे सैनिको और सर्वसाधारण को अ ग्रेजी शासन के विरुद्ध प्रेरित करते थे। मुख्य रूप से स्वतन्त्रता सग्राम की योजना यद्यपि स्वामी पूर्णानन्द (११० वर्ष) एव उनके गुरु स्वामी ओमानन्द (१६० वर्ष) के द्वारा तैयार की गयी थी परन्तु उसे क्रियान्वित करने मे स्वामी विरजानन्द ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। विद्रोह के पूर्व तीन वर्ष उन्होंने इसकी तैयारी मे लगाये। अपने शिष्यो के द्वारा उन्होने प्रचारित किया कि श्रीकृष्ण और बलदेव जी ने भगवान गिरि गोसाई को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि इस वर्ष जो हमारे जन्म स्थान मे तीर्थ करेगा उसकी सात पीढिया तर जाएगी। इसका परिणाम यह हुआ कि विद्रोह से पूर्व भारी सख्या मे लोग मथुरा पहुचे, वहां उनमे देशभक्ति की भावना जागृत करायी गयी और अ ग्रेजो के विरुद्ध तैयार किया जाता रहा। इस बात की पुष्टि ११ अप्रैल ८७ के दैनिक नवभारत टाइम्स (लखनऊ) के रविवारीय सस्करण मे प्रकाशित "आखों देखा गदर मे उसके लेख, श्री विष्णु भट्ट शास्त्री गोडसे पुरोहित ने लिखा है कि "शाके १७७८ माघ शिवरात्रि के करीब में यजमान कृत्य चलाने के लिए पुने गया था वहा सुना कि बायजाबाई साहब (शिंदे) मथुरा मे सर्वतोमुख यज्ञ कराने वाली हैं इस यज्ञ मे सात आठ लाख रुपए धर्मादाय मे खर्च होगे, इस आशय के पत्र नासिक पुणे आठ की विद्वान मण्डली के पास आये थे इसलिए तत्काल ही हिन्दुस्तान (अर्थात् उत्तरी भारत मथुरा) जाने का निश्चय किया। (आखो देखा गदर पढने से पहले)

अभिलेखों के अनुसार ३३ वर्षीय युवक दयानन्द स्वतन्त्रता सग्राम के सयोजक तो नही थे परन्तु उनका एक भावना प्रवण चेतनावान सहृदय सशक्त युवा सन्यासी के रूप मे इस सघर्ष मे महत्वपूर्ण योगदान रहा होगा ऐसा मानने मे कोई बाधा नही है वरन् इसके पर्याप्त कारण हैं। शकराचार्य द्वारा गठित सन्यासियो के दस (सरस्वती, पुरी, गिरी, सागर, अरण्य, पर्वत, बन, आश्रम, तीर्थ और भारती) सगठन हैं जिनके सदस्यो की दशनामी सज्ञा है। स्वामी पूर्णानन्द इसी परम्परा के होने से दशनामी कहलाते थे। सर जदुनाथ सरकार ने लिखा है कि "१८५७ में दशनामी सन्यासियो के महानिर्वाणी अखाडे द्वारा नाना साहब और झांसी की रानी के पक्ष मे सैनिक सहायता प्रदान की।" (A short history of Akhara Mahanirvani A history of Naga sanyasies)

सर्वखाप पचायत के अभिलेखो तथा तत्कालीन अन्य अनेक देशी व अ ग्रेज लेखकों के द्वारा लिखी गयी गदर की कहानी के आधार पर यह सहज ही माना जा सकता है कि सैनिक कमीशन के सम्मुख बाबा सीताराम द्वारा बताए गए विद्रोह के सचालक दस्सबाबा तथा उनके सहायक दीनदयाल वास्तव मे क्रमश दशनामी बाबा स्वामी पूर्णानन्द एव उनके शिष्य (दीक्षित) दयानन्द ही थे।

सन १८५७ से ६० तक स्वामी दयानन्द कहा रहे उसका वर्णन कही नही मिलता है। १४ नवम्बर १८६० को वह स्वामी विरजानन्द के पास मथुरा में सत्य विद्यार्जन हेतु पहुचे जिसका निर्देश उन्हें स्वामी पूर्णानन्द से कई वर्षो पूर्व सन्यास ग्रहण करते समय मिला था। दीक्षोपरात गुरु दक्षिणा मे देश मे व्याप्त अविद्या अन्धकार को नष्ट करने का गुरु को वचन देकर निकल पडे।

स्वामी दयानन्द विरचित ग्रन्थो पर दृष्टिपात करते यह सहज ही ज्ञात हो जाता है कि यह असम्भव है कि ऐसी विचारधारा वाला व्यक्ति 'स्वतन्त्रता सग्राम" से अपने को अलग रखकर तटस्थ रह सका होगा। स्वामी दयानन्द स्वतन्त्रता सग्राम की असफलता से निराश नही हुए वरन उसके कारणो का गम्भीर रूप से विवेचन कर अपने उद्देश्य की पूर्ति का प्रयत्न जारी रखा। विगत अनुभव के आधार पर उन्होंने देशवासियो में राष्ट्रीयता की भावना का सर्वथा अभाव देखा। लोग अपने को छोटे-छोटे क्षेत्रो में बांधे हुए थे। अपने को प्रान्त के नाम से जोडते थे देश के नाम से नहीं। प्रान्त भक्ति के गीत तो गाये जाते थे परन्तु देश भक्ति के गीत गाने वाले विरले ही थे। देशवासियो को ऐसी स्थिति से उभारने के लिए ही दयानन्द ने उन्हे स्मरण कराया कि इस देश का सनातन नाम आर्यावर्त है और इसके देशवासी आर्य हैं। एकता के लिए एक राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा के रूप मे आर्य भाषा (हिन्दी) की आवश्यकता को महसूस कर इसका प्रचार किया। देश प्रेम जागृत कराने के उद्देश्य से उन्होने देशवासियो को स्मरण कराया, "यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल मे दूसरा कोई देश नही है। इसलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है, क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नो को उत्पन्न करती है।" (स० प्र०) स्वराज्य के महत्व को बताते हुए कहा, "आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशो के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त मे भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नही है जो कुछ है वह भी विदेशियो से पादाक्रान्त हो रहा है।"

(स० प्र०/८) सन १८५७ के विद्रोह के पश्चात विक्टोरिया ने कुछ मत (धर्म) सम्बन्धी सुविधाए भारतीयो को प्रसन्न करने हेतु दे दी थी जिससे अल्प बुद्धि लोग प्रसन्न हो गए। इन देशवासियो को आगाह करते हुए दयानन्द ने कहा, "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है।" (स० प्र०।८) वेद-भाष्य मे मन्त्रो के राष्ट्रपरक अर्थों द्वारा स्वराज्य की घोषणा करते हुए कहते हैं " अन्य देशवासी राजा हमारे देश मे न हो तथा हम लोग पराधीन न रहें, मनुष्य को चाहिए कि पुरुषार्थ करने से पराधीनता छुडाकर स्वाधीनता निरन्तर स्वीकार करें" स्वदेशी के प्रयोग पर बल देते हुए कहा, "अपने ही देश के वस्तु वेष को अपनाने में शोभा है। 'देश की दुर्दशा का कारण बताते हुए लिखते हैं, "जबसे विदेशी इस देश में आकर राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमश आर्यो के दु खो की बढती होती जाती है।

"(स० प्र०) अ ग्रेजी शासन के प्रति उनके हृदय में कितना क्रोध था उसका अनुमान इन शब्दो से सहज ही लगाया जा सकता है, "जब सम्वत् १९१४ (सन १८५७) के वर्ष मे तोपो के मारे मन्दिर की मूर्तिया अ ग्रेजो ने उडा दी थी जो श्रीकृष्ण सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उडा देता और यह भागते फिरते।" (स० प्र० ११) अ ग्रेजी शासन काल मे ही स्वराज्य की शासन व्यवस्था का स्वरूप एव राजनीति पर सत्यार्थ प्रकाश में पूरा समुल्लास रख देने का साहस और योग्यता मात्र दयानन्द जैसे स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी मे ही दृष्टिगोचर होती है।

यहा स्थानाभाव के कारण अति सक्षेप में स्वामी दयानन्द के हृदय के उद्गारो को उजागर करने वाले शब्द उद्धृत किये गये हैं। उन्नीसवी शताब्दी मे अ ग्रेजी शासन के विरुद्ध इतनी सशक्त और निर्भय लेखनी उठाने वाला अद्वितीय व्यक्ति क्या सन १८५७ के स्वाधीनता सग्राम से अपने को बचा सका होगा, विशेषतया जबकि उसके पुरोहित उन्हीं के गुरु रहे हो। (आर्य समाज का इतिहास भाग १ तथा ४ में इन विचारो को विस्तार से जाना जा सकता है।)

इस्लामी शरीयत की धज्जियां उड़ीं : अरब देशों का नया इस्लाम

आचार्य शिवराज शास्त्री एम. ए. मौलवी फाजिल

हिन्दुस्तान मे मुस्लिम उलमा व इमाम शरीअत के नाम पर जो जो धांधलियां व अत्याचार करते रहे हैं वह सर्वविदित सच्चाई है। अरब देशों मे इसके सर्वथा विपरीत शरीअत की जो धज्जियां उड़ाई गई हैं उसका वर्णन अरब देशो के पत्रो के आधार पर प्रस्तुत है—

पचास के दशक की बात है जब राजा फैसल सऊदी अरबिस्तान मे राज करते थे उस समय एक प्राथमिक पाठशाला की बालिका ने शिक्षा विभाग के एक अधिकारी के सामने यह कह दिया कि मैं इस कविता से प्रेम करती हूँ बस प्रेम शब्द मुह से निकलते ही सऊदी सरकार के शिक्षा विभाग का पारा चढ़ गया वे लाल पीले होकर बोले—बेशर्म और बदतमीज लड़की को अभी स्कूल से निकाल दो वह लड़की होकर प्रेम शब्द का प्रयोग करती है? प्रेम शब्द के उच्चारण से न केवल उस बालिका को उस स्कूल से निकाल दिया गया बल्कि सारे देश में आदेश प्रसारित कर दिये कि इस बेहूदी लड़की को किसी स्कूल मे प्रवेश न दिया जाये।

एक समय वह था और अब सऊदी अरबिस्तान मे (१९८७ में) इतना परिवर्तन आया है कि वहा के दैनिक अखबारों मे 'बर्थ कंट्रोल' पर खुली बहस होती है न केवल लेख छापे जाते हैं बल्कि सम्पादक के नाम पत्र वाले स्तम्भ मे अरबी स्त्री पुरुष अपने अपने विचार व्यक्त करते हैं पिछले दिनो जिद्दा से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी दैनिक 'अरब न्यूज' ने एक लेख प्रकाशित किया है जिसका शीर्षक बर्थ कंट्रोल और इस्लामी चिन्तन है।

उक्त लेख ने अनेक उठने वाले प्रश्नो के उत्तर कुरान और हदीस को उद्धरित करके दिये हैं। लेखक का कहना है कि इस्लामी जगत के विद्वानो के अनुसार ऐच्छिक परिवार नियोजन की इस्लाम आज्ञा देता है और इस सम्बन्ध में विश्व के सभी इस्लामी विद्वान एक मत हैं। लेखक आगे कहता है कि पैदा करने वाला और पालने वाला परमपिता परमेश्वर है इसलिए सन्तान की इच्छा न होने पर भी यदि सन्तान जन्म ले लेती है तो फिर दुनिया मे उस पर किसी का बस नही। अतएव परिवार नियोजन शतप्रतिशत सफल होगा। यह आजमी इन्सान छाती ठोककर नही कह सकता। ईश्वर की इच्छा यह मुसलमान का बुनियादी ईमान है इसलिए उसे यह सब कुछ ऊपर वाले पर छोड़ देना चाहिए सन्तान उत्पत्ति एक बिल्कुल व्यक्तिगत बात है इसलिए इस्लाम में परिवार नियोजन भी एक व्यक्तिगत मसला है।

पत्र आगे लिखता है पैगम्बर साहब की कही गयी बातें साक्ष्य और वक्तव्य उपलब्ध है जिसके अनुसार स्वयं वो लोग गर्भ निरोधक तरीके उपयोग करते थे और उनके ऐसा करने पर पैगम्बर साहब की तरफ से न तो कभी उन्हें हतोत्साहित किया गया और नहीं इन्कार। जब किसी ने गर्भ निरोध के सम्बन्ध में पैगम्बर साहब से पूछा तो उन्हें जवाब मिला कि वह ईश्वर की इच्छा को बदल नहीं सकता गर्भ निरोध पर किसी प्रकार की पाबन्दी न लगने की वास्तविकता का अर्थ यह हुआ कि किसी विवाहित युवक को सतति निरोध की कोशिश करने से रोका नही गया यद्यपि उस युग में इसके तरीके अत्यन्त साधारण और नैसर्गिक थे फिर भी किसी ऐसे तरीके का घोर निरोध किया गया है जो पत्नी को बाधक बना दे।

अरब संगीत सम्मेलन

बुनियादी रूप से इसलाम ने संगीत को हराम घोषित किया है। एक हदीस मे उसे अलगिना अबहो मिनिज्जाल' यानी सूर विकाचना बलात्कार करने से बुरा है। अपने आपको समान कट्टर मुस्लिम कहलाने वाले आज भी हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध संगीत शास्त्रियो को काफिर से कम नही मानते। यह बात और है कि मोहम्मद रफी अथवा नौशाद की भारतीय मुसलमानों की पहचान मान कर, लड़ने मरने को तैयार हो जाते हैं। वही कट्टर पंथी इसलामी देश जहा पुरातनवाद और इस्लामी पुनर्जीवन वाद की हवाए चल रही हैं अच्छे संगीत को अपनी संस्कृति की सब से बड़ी विरासत मानते अपने पुराने संगीत और नृत्यो पर खोज कर लिखने वालो को पुरस्कृत करते हैं। २९ जनवरी के मिस्र के प्रसिद्ध दैनिक 'अल अहराम' मे प्रकाशित यह समाचार कम चोंका देने वाला नही है।

अफ्रीकी मुस्लिम देश सूडान की राजधानी से प्राप्त समाचार के अनुसार खारतूम में एक फरवरी को अरब म्यूजिक अकादमी' का दसवा वार्षिक सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। यह सम्मेलन आठ दिन तक चला। इस संगीत सम्मेलन मे लगभग सभी मुस्लिम देशो ने भाग लिया। उक्त परिषद को अरब देशों ने कितना महत्व दिया कि ईरान से चल रही रक्त रंजित लड़ाई के बावजूद ईराक ने सम्मेलन मे अपना प्रतिनिधि मण्डल भेजा, जिसका नेतृत्व वहा के संगीत विभाग के मुख्य संचालक श्री मुनीर बशीर ने किया। ईराक की ओर से इस परिषद मे अरब के संगीत पर पाच शोध पत्र पढ़े गए। अरबिस्तान की संगीत कला पर अन्य देशों ने भी अपने शोधपत्र पढ़े। यमन एक इस्लामी राष्ट्र है और विशेषत सऊदी अरबिस्तान के निकट ही नही बल्कि उसके राजनैतिक प्रमाण में भी हैं उसी यमन मे ऐसे डाक टिकट जारी किये जा रहे हैं जिस पर यमनी महिलाओं के नृत्य करते हुए चित्र है। कितनी विचित्र बात है कि जो इसलाम नाचने और गाने को हराम घोषित करता है अब उसी के मानने वाले देश उसे अपनी सांस्कृतिक विरासत समझ कर गर्व करते है। इसलामी शरीयत मे परिवर्तन नहीं होता, ऐसी रट लगाने वालो के लिये यह बदलती स्थिति अपने आप मे चुनौती है।

पर्दा और जैहाद

इसलामी शरीयत की डींग हाकने वाले पर्दे को मुस्लिम महिला के लिए धर्म की अनिवार्यता मानते थे। किन्तु समय के साथ पर्दा ही नहीं गया, बल्कि मुस्लिम महिलाको लड़ने के लिए मोर्चे पर भेजा जाने लगा। इसलाम में औरत के लिए जेहाद करना हराम घोषित किया गया है। जब वह अपने धर्म के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई में नहीं जा सकती तो फिर उसके सामने शेष क्या है? किन्तु इसलामी देशों ने शरीयत के इस कानून को भी ठोकर मार दी है। ईरान में जहा मुल्लाओंका राज है। १० लाख ईरानी महिलाए युद्ध का प्रशिक्षण ले रही हैं और मोर्चे पर जा रही हैं। इराक में पुरुष बल कम होने से उसे भी महिला फौज बनानी पड़ी है। लीबिया और फिलिस्तीन तो पहले ही महिला फौजियो को मोर्चे पर भेजते रहे हैं। अपने देश को बचाने के लिए इन इसलामी राष्ट्रों ने शरीयत बदल दी। पर्दा और जेहाद के नियम छूमन्तर हो गए।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

दूध गाय का ही क्यों ?

मानव देह-रचना मे मुख्यतया पन्द्रह तत्वो का समावेश है। जैसे आक्सीजन, कार्बन डाइटोजन, कैलशियम, फास्फोरस, सल्फर, पोटेशियम, सोडियम, क्लोरीन, मैगनीशियम, आइरन, कोपर, मैगनीज, आयोडीन, और कम मात्रा में लीड, टिन, सिलवर, निकल, जिन्क, अल्यूमीनियम, सिल्कान, आरसेनिक, सेलेनियम इत्यादि। ये मूल रासायनिक धातु खण्ड हैं, और इनकी योजनाबद्ध व्यवस्था मे विभिन्न प्रकार के अनेक सेल्स बने हुए हैं।

ये ही सेल्स विशेष प्रकार से मानव शरीर के हिस्सो और शरीरागो को आगे बढाते हैं। जैसे पेट, मासपेशिया, हड्डिया मैरोज या बिना मैरोज के चर्बी खून, गैसट्राइनटेस्टाइनल ढाचा, फेफडे, गुर्दे, किडनी, प्लीन, पेंक्रियाज, थिराइड, स्फिाइडटिस्सू, दिमाग, चमडी इत्यादि।

जन्म के समय बच्चे का वजन ३-४ किलोग्राम रहता है और उसका जीवित रहना तथा बढना मा के दूध पर निर्भर करता है। किन्तु इसके अतिरिक्त पशु के दूध का स्थान है। उसमे गाय बच्चे के जीवन को बचाने की दृष्टि से सबसे सुरक्षित प्राणी के रूप में हमारे सामने आती है। गाय के दूध मे आवश्यक सैकडो रासायनिक पदार्थ उपलब्ध होते हैं जो बच्चे की जिन्दगी को बचाने मे सक्षम होते हैं। गाय बच्चे को कैल्शियम मैगनीजियम, सिलीकान और दातो तथा हड्डियो के ढाचे के लिए क्लोराइन देती है। भीतर हड्डियों के खोखले भाग को लाल रक्त उत्पन्न करने तथा अन्य तन्तुओ को पोषण के लिए शक्ति प्रदान करती है। फिर ये सब मिलकर नसो तथा जोडने वाले तन्तुओ का निर्माण करते हैं। तत्पश्चात् चर्बी मास, जोड, रक्त, मज्जा, त्वचा इत्यादि निर्माण करते हैं जो शरीर मे अम्ल को जन्म देते हैं। इसके साथ ही सल्फर और फास्फोरस के सूक्ष्मतत्व भी जुड जाते हैं। इन तत्वो का अन्तिम परिणाम 'प्रोटीन' उत्पन्न करना है। मा और गाय, बच्चे लिए अपने दूध के माध्यम से सभी आवश्यक अमीनो एसिड यानी सम्पूर्ण आवश्यक किस्मो की प्रोटीन पदार्थ जुटाती है।

मानव मा अपने शरीर मे 'अमीनो एसिड' के कई प्रकारो को एक साथ घुला-मिला सकती है किन्तु यह आवश्यक नही कि वे तत्व जो पौधो के भोजन से मिलते हैं जैसे 'एजीनाइन', हिस्टीडाइन' ल्यूक्लान, आइसोल्यूस इन, मैथीयोनाइन आदि जिसे मा अपनी तई तैयार नही कर सकती। और वह मा को गाय के दूध से ही प्राप्त करना होगा तथा अपने बच्चे को देना पडेगा। इस प्रकार गाय केवल बच्चो की पोषक और बचाने वाली ही नही है वरन् वह दूसरे शब्दो मे बच्चे की मां है।

मानव की ही भाति अन्य अमानवीय माताय जैसे मुर्गी, घोडी, गधी कुतिया, हिरनी आदि अनेक पक्षी भी उपरोक्त एमिनो-एसिड मैं से दसो को एक में मिलाकर निर्माण नही कर सकती है। विकास के लिए महत्वपूर्ण विटामिन बी १२ का निर्माण तो कर ही नही सकती मुर्गी के बच्चो को सभी एमीनो-एसिड चर्बी कार्बो-हाइड्रेड, विटासिन्स एव धातुए पिलानी पडेगी क्योकि उनमे इन तत्वो मे किसी एक को उत्पन्न करने की शक्ति नही है। ये गायो और मनुष्यो की खुराक खाते हैं।

भेड बकरिया रोयेदार पशु होने के नाते उपर्युक्त अधिकाश विटामिन तथा प्रोटीन को पचा सकती है किन्तु वे उन मिली जुली वस्तुओ का उत्पादन नही कर सकती क्योकि वे डठल एव पुआल आदि नही खाती। इसलिए उनकी सताने गाय बैलो की भाति आवश्यक शक्ति जुटाने और ऊर्जा उत्पन्न करने मे असमर्थ होतीहै।

भारत करोडो टन खाद्यान्न उत्पन्न करता है। और इसके डठल पुआल आदि मे से लाखो टन नाइट्रोजन, पोटासियम और पोटासियम और फास्फोरस के अतिरिक्त लाखो टन रासायनिक पदार्थ भी मिलते हैं। ये उत्पादक तत्व इतनी बडी और उच्चकोटि की मात्रा मे भूमि की पूजी बढाते हैं। केवल गाय ही यह शक्ति रखती है कि डठल-पुआल को गांठ चबाकर उसके टुकडे टुकड कर डालती है। वे उनमे मिलने वाले सारे तत्वो को पचाकर तीनो भागो से बाहर निकालती हैं। अर्थात् वे सभी पचे हुए पदार्थ दूध, गोबर और मूत्र के उनके शरीर से बाहर निकलते हैं। इसमे से मूत्र के भीतर पर्याप्त मात्रा मे आर्गनिक पदार्थ मिलते हैं। ऊपर लिखी गई अधिकाश धातुए गर्म तरल पदार्थ के रूप मे निकलती है जिनमे ८ प्रतिशत सर्वोत्तम नाइट्रोजन होता है जो भोज्य पदार्थ और पेय पदार्थ द्वारा मनुष्यो को पोषक तत्व प्राप्त होते है। वह गाय के गोबर और मूत्र के गोबर और मूत्र के द्वारा जमीन मे बोये जाने वाले बीजो को बढने मे मदद करते हैं।

बच्चा देने वाले जानवरो मे केवल गाय ही एक ऐसा जानवर है जिसकी पोटी (आत) १८० फीट लम्बी होती है, जो पर्याप्त मात्रा मे डठल पुआल आदि मोटे पौधो को अपनी आतो मे रख सकती है। वे चार भागो मे विभाजित किये जाते है। उनमे से एक को 'ओमासुम' कहते हैं जो माइक्रोबस अथवा बैक्टीरिया से भरे रहते हैं। ये डठल और पुआल को टुकडे टुकडे करने, उनका घोल बनाने और एसिड के निर्माण मे मदद करते हैं यह एम्टिक एसिड आगे अन्य तीन भागो मे ले जाकर मलाई युक्त दूध मे से परिवर्तित करने मे सहायक होते हैं। गाय का दूध मनुष्य के लिए शक्ति, सौन्दर्य और उसके शरीर को कोमल बनाने म सहायक होती है और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यह मनुष्य के दिमाग के तन्तुओ को बनाने मे सहायक होती है। इस प्रकार यदि गर्भवती स्त्री को गाय का मलाई युक्त दूध नियमित रूप से मिलता रहे तो वह अपने साथ ही साथ अपने पेट मे पलने वाले बच्चे को भी सम्पूर्ण भोजन और आवश्यक तत्व देती रहेगी।

भैंस की मलाई छाछ अथवा घी आदि चिकनाई इतने उपयोगी नही होगे, क्योकि वे अलग० प्रकार से होते हैं। भैंस की चर्बी मे विद्यमान कण गाय की अपेक्षा आकार मे इतने बड-बडे होते हैं कि वे मनुष्य के शरीर मे पूरे पच नही पाते। इसलिए या तो वे बाहर अथवा ईधन की भाति भीतर ही भीतर जल जाते हैं। इस प्रकार या तो आवश्यकता से अधिक गर्मीयुक्त कैलरीज देते हैं अथवा शरीर को अन्य कार्बोहाईड्रेटस या अन्य प्रोटीन दे सकते हैं

ास के दूध चिकनाई कभी भी गाय के दूध की मलाई को पा नही कती। सचमुच विश्लेषणात्मक नक्से में देखने पर ऐसा लगता है क चिकनाइयो और ठोस पदार्थों की दृष्टि से गाय की अपेक्षा ास के दूध मे ये तत्व अधिक मात्रा में पाये जाते हैं किन्तु वे कच्चे ध मे दिखावा मात्र है। जब दूध गर्म किया जाता है तब उसके ीतर विद्यमान विटामिन तत्व गायब हो जाते हैं और उसी प्रकार सकी भावी चिकनाई और प्रोटीन तथा खनिज पदार्थ भाप के ाथ उडते हैं और न नष्ट होते हैं बल्कि वे सदैव विद्यमान रहते हैं।

ऊपर गाय के दूध के प्रयोग के सम्बन्ध मे जो कुछ कहा गया है सके अतिरिक्त अनेक कारण और परीक्षण हैं जो गाय और भैंस अन्तर को स्पष्ट करते है।

यह भली भाति देखा जा सकता है कि गाय का बच्चा पैदा ोते ही रबर के गद की भाति उछलने लगता है जब कि प्रयत्न के ावजूद भैंस का पाडा उछलना तो दूर रहा अपनी शक्ति पर खडा ोने मे असमर्थ होता है।

बीस गायो और बीस भैंसो को अलग-अलग कतारो मे खडा िया और उनके एक एक बच्चो को छोडा गया गाय के बछड सीधे ौडकर अपनी मा का थन चूसने लगे तब भैंस के पाडे किसी भी ास के थन मे अपना मुह मारने लगे, यानी वे अपनी मा को हचानने मे असफल रहे।

ग्रामीण क्षेत्रो मे मोटरकार अथवा ट्रक ड्राइवरो को अक्सर ार्न बजाकर गाय और भैंसो को हटाना पडता है। उनके अनुभव यह सिद्ध है कि गाय भोपू की आवाज सुनते ही रास्ते से हट ाती है जब कि भसे बार बार हार्न देने पर भी रास्ते से नही टती।

हृदयरोग विशेषज्ञो की एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी में बम्बई के प्रसिद्ध सर्जन डा० शान्तिलाल शाह ने अनुभव किया, भैंसो से ाप्त दूध के भीतर विभिन्न प्रकार की चिकनाई पाई गई जिसे ागचेन फैट कहते हैं। जब वह दूध रोगियो को पिलाया गया तो सके भीतर की चिकनाई नसो मे जम गई और उनका मार्ग अवरुद्ध र दिया जिसके फलस्वरूप रोगी को दिल का दौरा पड गया।"

भैंसे गन्दे पानी और कीचड मे बैठने मे आनन्द अनुभव करती जब कि गाय ऐसा नहीं करती।

अब भारतीयो को यह भलीभाति समझ लेना चाहिए कि यदि स्वय को और अपने बच्चो को बुद्धिमान शक्तिशाली, बलवान र क्रियाशील बनाना चाहते है तो उन्हें गाय का दूध पीने पर ही ार देना चाहिए। मनुष्य के लिए प्रकृति का एक पवित्र वरदान जो विभिन्न रूप में अपने गुणो का प्रदर्शन करता रहता है।

अरब देशों का नया इस्लाम

(पृष्ठ ६ का शेष)

इस्लाम ने मूर्ति पूजा और आकार मे बनने वाली वस्तुओ का हर क्षेत्र में विरोध किया, किन्तु मिस्री अपनी कला नही भूले। इस्लामी देश होने से अब मिस्र का सबसे बडा त्योहार पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म दिन है जिसे इसलामी भाषा मे बाराह वफात अथवा ईदे मीलादुन्नबी कहा जाता है। इस त्योहार पर उपहार और भेंट देने का आम रिवाज है। भेंट मे कोई और वस्तु नहीं बल्कि शक्कर की बनी गुडिया और अन्य मिस्री मिठाइयो की गुडिया पेश की जाती हैं जिसे यहा की भाषा मे उरूसतुल मोलूद की दुल्हिन कहा जाता है।

इस बार जब यह त्योहार मनाया गया तो इन गुडियो के विषय मे इजिप्शियन गजट नाम दैनिक ने एक विस्तृत लेख प्रकाशित किया और लोगों से सवाल किया कि क्या वे इन गुडियों की शक्ल में मिस्र की अपनी पुरानी देवियो के दर्शन नही करते?

शैतान और बाइबिल

ईरानी मुल्ला हर मोर्चे पर अमेरिका का विरोध करते रहे और उन्हें शैतान के नाम से सम्बोधित करके अपनी असीमित घृणा का परिचय देते रहे हैं। कट्टरपंथी मुस्लिम बाइबिल के बारे में भी मन चाहा फतवा देने में हिचकिचाते नही। किन्तु जब समय आता है तब शैतान और बाइबिल दोनों को गले लगा लेते हैं।

ईरान गेट के सम्बन्ध में आये तूफान मे राष्ट्रपति रीगन ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि उन्होंने ईरान सरकार को भेंट स्वरूप अपने हस्ताक्षरयुक्त बाइबिल की एक प्रति भेजी थी। यह बात रेगन ने स्वीकार की जब एक दिन पूर्व ईरान ससद के स्पीकर अली हाशिमीरफसनजानी ने पत्रकारो को रेगन के हस्ताक्षर वाली एक बाइबिल दिखलाई। उक्त हस्ताक्षर रेगन ने ३ अक्टूबर १९८६ को किये थे और अपनी ही लेखनी से ईरानी सरकार के लिये शुभकामना व्यक्त की थी। ईरानी स्पीकर ने यह भी कहा था कि अमेरिका के राष्ट्रपति ने एक केक भी उपहार स्वरूप भेजा था। यह केक ताले की चाबी के आकार का था। शैतानी चाबी से ईरान के मुल्लाओं को ताला खोलना पडा। यानी हथियारो के सम्बन्ध में अपनी अडियल नीति को त्याग कर शैतान की सहायता से इराक के विरुद्ध मोर्चा बन्दी करनी पडी।

दुर्लभ मानव जीवन

—धर्म नारायण कपूर—

(१) इस पृथिवी पर तीन प्रकार के जीवन हैं—मानव, पशु-पक्षी आदि तथा वनस्पति। इनमें मानव जीवन सबसे उत्तम तथा श्रेष्ठ है क्योंकि केवल मनुष्य में ही कर्म शक्ति होती है। मानव योनि उभय योनि है अर्थात यह कर्मयोनि और भोग योनि भी है। पशु-पक्षी आदि निम्न योनियां केवल भोग योनियां हैं जिसमें जीव केवल शुभाशुभ कर्मों का फल ही भोगता है। उनमें जीव को कर्म करने की क्षमता नही होती क्योंकि वह सत्य-असत्य, शुभाशुभ का ज्ञान नही रखता है।

(२) इन तीनों योनियों मे उत्तम, मध्यम तथा निकृष्ट कोटि के जीव होते हैं। मनुष्य योनि में राजे, महाराजे, धनवान, विद्यावान उत्तम कोटि मे आते हैं, साधारण व्यक्ति मध्यम कोटि में और निर्धन, विद्याहीन, मूर्ख आदि निकृष्ट कोटी में आते हैं।

धनवान घरो में पाले जाने वाले घोड़े, कुत्ते आदि जानवर उत्तम कोटि, रथो गाडियों में जोते जाने वाले घोड़े, बैल आदि मध्यम कोटी मे और वनो में बसने वाले जानवर निकृष्ट कोटी के होते हैं।

इसी प्रकार उद्यानों में लगे हुए गुलाब, चमेली, मोतिया आदि के पौधे उत्तम कोटि में, फल देने वाले वृक्षादि निकृष्ट कोटि मे गिने जाते हैं।

(३) भारतीय विचार धारा के अनुसार तीनों योनियो में बसने वाले जीवो में आत्माए होती है। इसकी पुष्टि निम्न प्रमाणो से होती है —

(क) (१) मेरी आत्मा यज्ञ से अधिक सामर्थवान है। (यजु० १८।३)

(२) अमर आत्मा मरण धर्मा शरीर के सम रहता हुआ एक रूप हो जाता है। (ऋ० १।१६४।३८)

(३) आत्मा को रथी जानो, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथि और मन को लगाम। (कठ उप-२।३।३)

(४) जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नए वस्त्र ग्रहण करता है, वैसे ही आत्मा जीर्ण शरीर को त्याग कर नवीन देह को प्राप्त करता है। (गीता २।२२)

(ख) (१) आत्मा औषधियो, वनस्पतियों तथा सब भूतों मे विद्यमान है। (यजु० १२।३७)

(२) जिन का आचरण बुरा होता है वे शीघ्र ही बुरी योनियों मे पहुच जाते हैं-कुत्ते की योनि में, सूअर की योनि मे, चाण्डाल की योनि में। (छान्द० उप ५।१०।७)

(३) वृक्ष जीवन तथा आत्मा से प्रभूत है वह पृथिवि से रस पान करता हुआ हरा भरा खड़ा रहता है। (छान्द उप० ६।११।१)

(४) जो नर शरीर से दुष्ट कर्म करता है उसको वृक्षादि स्थावर का जन्म, वाणी से किये पापों से पक्षी, मृगादि, तथा मन से दुष्ट कर्मों से चाण्डाल आदि का शरीर मिलता है।

(मनु १२।९, सत्य प्र० पृ २३९)

कवि और दार्शनिक की अनुदृष्टि की अब पुष्टी हो जाती है कि वनस्पतियां जीवित, श्वास लेने वाले तथा सवेदनशील प्राणी हैं जिनमे अपना व्यक्तित्व तथा आत्मा होती है। केवल हम ही अपनी अज्ञानता से उनको स्वत चालित समझने मे हठ कर रहे हैं।

(४) ईसाइमत के अनुसार ईश्वर गर्भाधान के समय आत्मा की रचना करता है। शरीर की मृत्यु के उपरान्त आत्मा कबर मे पडी रहती हैं परन्तु निर्णय दिवस को वह कबर से उठकर ईश्वर आज्ञा से सदा के लिए स्वर्ग तथा नर्क में भेजी जावेगी। उनके अनुसार यह प्रथम तथा अन्तिम जीवन है।

मुसलमानी मत भी न्यूनाधिक यही है।

(५) अब एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि इन तीनो योनियो मे आत्मा का आवागमन किस आधार और सिद्धांत पर होता है। इसका उत्तर स्वामी दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश में पृ० २१५ (नवम समुल्लास) पर इस प्रकार देते हैं—"जब पाप बढ़ जाता है और पुण्य न्यून होता है तब मनुष्य का जीव पश्वादि पूर्वादि नीच शरीर और जब धर्म अधिक तथा अधर्म न्यून होता है तब देव अर्थात विद्वानों का शरीर मिलता है और जब पुण्य-पाप बराबर होता है तब साधारण मनुष्य जन्म होता है जब अधिक पाप का फल पश्वादि शरीर मे भोग लिया पुन: पाप-पुण्य के तुल्य रहने से मनुष्य शरीर मे आता है।"

(६) पुराणो में योनियों में रहने वाले जीवो की सख्या की कल्पना चौरासी लाख की गई है। उनका वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है स्थावर—३० लाख, पशु—२० लाख, कृमि—११ लाख, पक्षी—१० लाख, जलचर—९ लाख, मनुष्य—४ लाख, योग—८४ लाख।

(लोकमान्य तिलक—गीता रहस्य पृ० १८५)

मनुष्य का और इतर योनियो के जीवो का यह अनुपात न्यूनाधिक ठीक ही प्रतीत होता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हर व्यक्ति अपने घर मे रहने वाले, मनुष्यो और इतर योनियो के जीवों—कीट, पतग कृमि, चीटी, चिड़िया, चूहो आदि के अनुमानिक अनुपात से प्राप्त कर सकता है।

ऊपर लिखित तालिका इस तथ्य की घोषणा करती है कि मानव जीवन अति दुर्लभ है तथा अति श्रेष्ठ है। अत इसको बडी सावधानी से व्यतीत करना चाहिए। शुभ कर्मों की बहुलता के कारण मानव शरीर मिलता है और इसकी सार्थकता भी शुभ कर्मों से होती है।

(७) शुभ कर्म क्या है और अशुभ कर्म क्या है इसका ज्ञान ईश्वरीय नियम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के मन में अकित रहता है चाहे वे अनपढ हो ग्रामीण हो व वनवासी हो। मन, स्मृति और ज्ञान का भण्डार है। इस ज्ञान की उपलब्धि के लिए उसे धर्म ग्रन्थों तथा धर्म प्रवचनो के सुनने की आवश्यकता नही रहती। किन्तु अपने अन्तरात्मा की आवाज सुनने की आवश्यकता है। क्या चोर को यह ज्ञान नही कि चोरी करना पाप है? क्या हत्यारे को ज्ञान नही कि जीव हत्या घोर पाप है? उस को ज्ञान तो है किन्तु वह जन्म-जन्मान्तरो मे उपार्जित अपनी प्रकृति से बाधित होकर स्वार्थ सिद्धि के लिए अशुभ कर्मो मे प्रवृत हो जाता है। महाभारत मे दुर्योधन ने कहा 'मैं जानता हूँ कि धर्म क्या है किन्तु उसमे मेरी प्रवृति नही, मैं यह भी जानता हूँ कि अधर्म क्या है किन्तु उससे मेरी निवृत्ति नही है।

सक्षेप से कहा जा सकता है कि जिस कर्म के करने मे प्रसन्नता, उल्लास तथा आनन्द प्राप्त होता है वह शुभ कर्म है किन्तु जिस कर्म के करने मे लज्जा, भय, आत्म-ग्लानी, शका उत्पन्न हो तो वह कर्म अशुभ होता है।

धर्म ग्रन्थों में वर्णित कतिपय धर्म-अधर्म सम्बन्धी आदेश निम्न प्रकार है —

(क) वैदिक धर्म—

(१) लालच मतकर। (यजु ४०।१)

(२) असत्य से दूर रह सत्य को प्राप्त कर। (यजु १।५)

(३) पृथिवी के प्राणियों, अन्तरिक्ष के प्राणियो और वनस्पतियो का नाश मत कर। (यजु० ११।४५)

(४) क्रोध मत कर, अजगर के समान हड़प करने वाला मत हो। (यजु० ६।१२)

(५) भाई बहन से द्वेष मत कर। (अथर्व ३ ३० ३)

(६) मधुर वाणी बोल। (अथर्व १-३४ २)

(७) माता पिता की आज्ञा का पालन कर। (अथर्व ३-३०-२)

(८) जूआ मत खेल, (ऋग० १०-३४ १३)

(९) हजारों हाथो से दान कर, (अथर्व ३-२४-५)

(१०) मन से शुभ सकल्प किया कर। (यजु ३४-१ ५)

(११) सब को मित्र की चक्षु से देख। (यजु० ३६।१८)

(ख) ईसाई मत—

(१) हिंसा मत कर, (२) चोरी मत कर, (३) व्यभिचार मत कर, (४) झूट मत बोल, (५) लालच मत कर (६) माता पिता का आदर कर। (इ बाईबल- ईएक्स यात्रा (२०-२ ०१७)

(८) मनीषियो ने पाप और पुण्य, शुभ और अशुभ कर्म का जानने के निमित्त एक सरल सी कसौटी बनाई है और वह यह है कि दूसरो के प्रति तुम वह ही व्यवहार (कर्म) करो जो तुम अपने प्रति दूसरा से करवाना चाहते हो। इस कसौटी के अनुसार पाप और पुण्य कर्मों का वर्गीकरण इस प्रकार हो जाता है—

पाप, अशुभ कर्म—चोरी करना, डाकना, ठग्गी (कपट) करना, धरोहर

का हड़पना, रिश्वत (घूस) लेना, जीव हत्या करना, प्राणियों को व्यर्थ कष्ट देना, मारना, गाली देना, झूठ बोलना, चुगली करना, घूस लेना; खाद्य, अन्य पदार्थों और ओषधियो मे मिलावट करना, अधिक कीमत लेना, कम तोलना, क्रोध करना, अपने कर्तव्य का पालन न करना, जूआ खेलना, पर स्त्री पुरुष से व्यभिचार करना, प्रतिकार करने की भावना रखना, गर्व करना, असत्य प्रमाण-पत्र देना, असत्य प्रमाण पत्र द्वारा धन प्राप्त करना, विश्वास घात करना, इत्यादि ।

पुण्य, शुभ कर्म —सत्य बोलना, दया करना, क्षमा करना, यथा शक्ति दूसरो की भलाई तथा सेवा करना, मधुर वचन बोलना, वृद्धो, दीनो दु खियों की तन, मन, धन से सेवा करना, अनाथालयों, हस्पतालों, विद्यालयों तथा निर्धन व्यक्तियो की सहायतार्थ धन देना, आपत्ति ग्रस्त व्यक्तियो की सहायता करना, नम्रता, मन से दूसरों की शुभकामना करना, ईश्वर मे सच्ची आस्था रखना, अतिथि की सेवा करना, विद्वानो और धर्मात्माओ का सत्सग करना, इत्यादि इत्यादि ।

मन मे यह ध्यान रखना चाहिए कि पूजा पाठ, ईश वन्दना, उपासना आदि का उद्देश्य मनुष्य को अशुभ कर्मों से बचाना है। यदि यह उद्देश्य सफल नही होता तो यह समझ लेना चाहिए कि हमारी यह पूजा पाठ आदि केवल आडम्बर, ढोग तथा व्यर्थ है ।

स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि मानव सेवा ही सबसे बडी ईश-पूजा है ।

एक उर्दू कवि ने ठीक ही कहा है —

दरदे दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को ।
वरना क्या कम थे इबादत के लिए कररोबिया ।।

पुस्तक समीक्षा

सामवेद (पूर्वार्चिक) भाषा भाष्य, लेखक—श्री प० हरिशरण सिद्धालकार, पृष्ठ सख्या—४५०, साईज—२०×३०=८ (बडा साईज), मूल्य—७०) रुपये, प्रकाशक—मधुर प्रकाशन, आर्य समाज मन्दिर, २८०४-बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६,

प्रस्तुत सामवेद (पूर्वार्चिक) भाषा भाष्य अपने ढग का अनोखा भाष्य है। श्री प० हरिशरण की शैली तथा भाषा भी विशेष रुचिकर है। प्रत्येक मन्त्र का पदार्थ तथा भावार्थ दिया गया है। भाष्य अत्यन्त विस्तृत है। आध्यात्मिक शैली से लिखा गया भाष्य पठनीय है ।

यह सजिल्द ग्रथ है। टाईटिल प्लास्टिक कोटिड चार रगो मे मुद्रित है। जुजबन्दी सिलाई वाला यह ग्रन्थ सभी के लिए उपयोगी पठनीय है।

सामवेद (उत्तरार्चिक) भी तैयार है। मूल्य ७०) रुपये । पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक दोनो का मूल्य १४०) रुपये ।

सम्पर्क कीजिये—मधुर प्रकाशन, २८०४, गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली ६

—सच्चिदानन्द शास्त्री

निर्णय के तट पर (शास्त्रार्थ-संग्रह) के प्रथम व तृतीय भाग का प्रकाशन

सर्व सज्जनो को विदित हो कि निर्णय के तट पर शास्त्रार्थ सग्रह। नामक ग्रन्थ के प्रथम व तृतीय भाग का प्रकाशन आधे से अधिक छप चुका है। कार्य प्रगति पर है। इसके प्रकाशन हेतु आधे मूल्य में अग्रिम बुकिंग की योजना निकाली गई थी। जिसमे पर्याप्त ग्राहक न बनने के कारण प्रकाशन मे आर्थिक सकट सामने आ रहा है। अत सभी आर्य भाईयों से निवेदन है कि ६०) प्रति भाग से बुक करावे। बाद मे १२१) रुपए मूल्य होगा। मैं कैंसर से पीडित हूँ। मैं चाहता हूँ यह ग्रथ मेरे जीवन काल मे ही प्रकाश मे आ जावे। ये तभी हो सकता है जब आप अधिक से अधिक बुकिंग करावें तथा इस ज्ञान यज्ञ में आर्थिक सहयोग दें। मेरा दावा है कि ऐसी शास्त्रार्थ सामग्री शायद ही भविष्य मे छप पाये ।

बुकिंग कराने का पता—

—अमर स्वामी सरस्वती प्रकाशन, प्रबन्धक
१०५८ विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)

आर्य जगत् के समाचार

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिमी उत्तर प्रदेश बिन्दकी (फतेहपुर)

कार्य समिति सत्र १९८७-८८

अस्माक वीरा उत्तरे भवन्तु

१ सर्वश्री बालकृष्ण आर्य —आर्य वीर निकेतन बिन्दकी फतेहपुर, प्रान्तीय सचालक प० उ० प्र०

२ आचार्य धर्मपाल आर्य—गुरुकुल महाविद्यालय तातारपुर गाजियाबाद, सार्वदेशिक प्रातीय सचालक प० उ० प्र०

३ वेदप्रकाश गुप्त नम्बरदार—बजाजागली बिन्दकी फतेहपुर, प्रातीय मन्त्री प० उ० प्र०

४ ज्ञान प्रकाश भारतीय – आर्य समाज तिलहर शाहजहापुर, उप प्रातीय मन्त्री प० उ० प्र०

५- भगवती प्रसाद गुप्त—सब्जी मण्डी बिन्दकी फतेहपुर, कोषाध्यक्ष प० उ० प्र०

६ आर्य प्रकाश आर्य—नआही बाजार बिन्दकी फतेहपुर, कार्यालय मन्त्री प० उ० प्र०

७ देवीदास आर्य – गोविन्द नगर कानपुर, सरक्षक प० उ० प्र०

८ शेखर जी हजरतगज लखनऊ, सरक्षक प० उ० प्र०

९ वेदप्रकाश जी सलूजा—सिविल लाइन मुरादाबाद सरक्षक प० उ० प्र०

१० पूरनचन्द आर्य —आर्यसमाज हीग की मण्डी आगरा सरक्षक प०उ०प्र०

११ भद्रसेन सर्राफ—सराफा बाजार बिन्दकी फतेहपुर सरक्षक प० उ० प्र०

१२ समरसिंह आर्य – आर्य समाज पलडी मेरठ प्रातीय शिक्षक प० उ० प्र०

१३ विद्याशकर अखिलेश—आर्यसमाज भूड बरेली प्रातीय शिक्षक प उ.प्र.

१४ विद्याराम आर्य—आर्यसमाज समरिया रामपुर प्रातीय शिक्षक प.उ प्र

१५ ब्र० सुरेन्द्रसिंह आजाद—बिजना की नगलिया शादीपुर (जट्टारी) अलीगढ प्रातीय शिक्षक प० उ० प्र०

१६ महात्मा आर्य भिक्षु—वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार (सहारनपुर) बौद्धिकाध्यक्ष प० उ० प्र०

१७ सुखदेव शास्त्री—५/११ गुरुद्वारा रोड सहारनपुर बौद्धिकाध्यक्ष प उ प्र

१८ हरवशलाल आर्य—ठाकुरगज लखनऊ आयव्यय निरीक्षक प० उ० प्र०

१९ हरिओ३म् गुप्ता—ट्रेन लाईटिंगफिटर उत्तरी रेलवे बरेली उपसचालक बरेली मुरादाबाद विभाग

२० जयनारायण आर्य—सराय ग्वाली, जयगज अलीगढ उपसचालक आगरा

२१ सुरेशचन्द्र सुयाल—आर्यसमाज अल्मोडा नैनीताल उपसचालक कुमायू-गढवाल

२२ नाथूराम आर्य—आर्यसमाज सीपरी बाजार भासी उपसचालक भासी

२३ प० फूलसिंह शास्त्री—आर्यसमाज धनौरा टीकरी मेरठ उपसचालक मेरठ

२४ बेचनसिंह आर्य—मु० पो० बगाहा मिर्जापुर अधिष्ठाता उ० प्र०

२५ मनमोहन तिवारी—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ पदेन सदस्य उ० प्र०

२६ वीरेन्द्र कुमार आर्य—आर्य समाज अमरोहा मुरादाबाद अन्तरग सदस्य उ० प्र०

२७ सतोष चन्द्र—४०, बाहुबाई ठेरा बरेली अन्तरग सदस्य उ० प्र०

२८. कृष्ण बल्देव महना—५६५क/२८ स्नेह नगर लखनऊ अन्तरग सदस्य उ० प्र०

२९. हरिश्चन्द्र आर्य—जैन मन्दिर मार्ग रामपुर स्टेट अन्तरग अन्तरग सदस्य उ० प्र०

३० शिवशकरलाल सर्राफ—तिलहर शाहजहापुर अन्तरग सदस्य उ० प्र०

३१. ओ३म प्रकाश आर्य—आर्यसमाज पलिया कला खीरी लखीमपुर अन्तरग सदस्य उ०प्र०

डा० बालकृष्ण आर्य "विकल"
प्रातीय सचालक प० उ० प्र०
"आर्य वीर निकेतन" बिन्दकी फतेहपुर

श्रीमती दयावन्ती स्मारक स्थिर निधि



श्रीमती दयावन्ती श्री ब्रह्मप्रकाश

दिल्ली। श्री विद्या प्रकाश जी एम० एस० सी० निवृत्त स्टेशन इजीनियर आल इण्डिया रेडियो ने अपनी स्वर्गीय धमपत्नी श्रीमती दयावन्ती की स्मृति मे सार्वदेशिक सभा को ५०,०००) का दान दिया है जिसको स्थिर-निधि मे रखा जाएगा। श्रीमती दयावन्ती जी अत्यन्त धार्मिक व मानवीय उच्च गुणो का समूह थी। जीवन भर समाज की सेवा आपका लक्ष्य रहा। श्री विद्याप्रकाश जी ने इस सेवा सूत्र को स्थायी बनाये रखने के लिए उनकी स्मृति स्थापित की है। जिसकी शर्ते निम्न हैं—

(१) निधि का नाम स्व० श्रीमती दयावन्ती स्मारक स्थिर निधि होगा।

(२) इस निधि के ब्याज को ही खर्च किया जाएगा।

(३) ब्याज का उपयोग बनवासी आदिवासियो के कल्याणार्थ आदिवासी क्षेत्रो मे ही सभा द्वारा व्यय किया जाएगा।

(४) इस निधि का उल्लेख प्रतिवर्ष सार्वदेशिक पत्र मे एक बार अवश्य किया जाएगा।

(५) इस निधि के मूल धन ५० हजार रुपए की राशि को भविष्य मे मुझे अथवा मेरे किसी सम्बन्धी अथवा परिवार के किसी भी सदस्य को वापिस लेने का कोई अधिकार नही होगा।

(६) सभा अन्य निधियो की तरह सभा कार्यालय के व्यय हेतु ब्याज राशि से दशाम ले सकेगी।

निवेदक
विद्याप्रकाश
४८, चन्द्रलोक इन्कलेव, नई दिल्ली-३४

महर्षि दयानंद काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल का कार्य प्रगति पर

महर्षि दयानन्द के विश्वप्रसिद्ध ऐतिहासिक काशी शास्त्रार्थ की स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए और इस ऐतिहासिक घटना के गौरव के अनुरूप निर्माण कार्य एव सैद्धातिक प्रचार के कार्यक्रमो का सचालन करने के लिए एक ट्रस्ट की स्थापना का निश्चय किया गया है। अनेक महानुभावो ने इस उपक्रम को अपना समर्थन और सहयोग देने का आश्वासन दिया है। काशी के दुर्गाकुण्ड स्थित आनन्द बाग का 'काशी शास्त्रार्थ स्थल' महर्षि दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित कुछ विशेष स्थलो मे से एक है और इस स्थल पर प्रचार कार्य निरन्तर प्रगति कर रहा है। प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला द्वादशी को काशी शास्त्रार्थ स्मृति दिवस" मनाया जाता है। इस स्थल पर निर्मित यज्ञशाला मे नित्य प्रात व साय यज्ञ एव वेदमन्त्रो का पाठ होता है। श्रीमान राजर्षि राजा रणञ्जय सिंह जी द्वारा एक पुस्तकालय का भी शिलान्यास किया गया है। ट्रस्ट के गठन से प्रचार प्रभावशाली ढग से चलेगा। ट्रस्ट का प्रमुख उद्देश्य आर्य समाज मे "शास्त्रार्थ की परम्परा" को गति देना होगा और इस दृष्टि से कुछ विशेष योजनाए लागू की जायेंगी।

—डा० आनन्द प्रकाश
एम २१ हैदराबाद कालोनी, हिन्दू विश्व विद्यालय, वाराणसी

अधि० नं० डी० (सी०) १९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१२-७-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R.N .626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U 93 Post in D.P.S.O. on 10-7-1987

यज्ञ विशेषज्ञो को सेवा मे

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, वाराणसी की यज्ञशाला का निर्माण प्राचीन ऋषि शैली पर करने का संकल्प है। यह यज्ञशाला प्रायोगिक होगी जिसमें वेदमन्त्र ध्वनि मिश्रित सूर्य किरणो पर वैज्ञानिक प्रयोग किये जायेंगे।

आर्य समाज व अन्यत्र अनेक सुविज्ञ विद्वान है जिनका वैदिक यज्ञो पर इसी दृष्टि से विस्तृत अध्ययन व क्रियात्मक अनुभव है। कृपया वे हमें इस विषय में पथप्रदर्शन करें। ऐसी यज्ञशाला का कोई चित्र तथा उपकरणों की सूची भी भेज सकें तो अति कृपा होगी। इस सम्बन्ध मे आवश्यक व्यय मातृ मन्दिर वहन करेगा।

यथासमय ऐसे विद्वानो की गोष्ठी भी आमन्त्रित की जायगी। आशा है सुविज्ञ माननीय विद्वद्गण इस पुनीत कार्य मे पूर्ण सहयोग प्रदान कर ऋषि ऋण उतारने की दिशा मे एक ठोस कदम उठाये व हमे कृतार्थ करें।

डा० पुष्पावती, अध्यक्षा, मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल
बी ४५/१२९ नई बस्ती रामापुरा, वाराणसी

आर्य समाज शान्ताक्रुज बम्बई

आर्य समाज सान्ताक्रुज का वार्षिक निर्वाचन श्री रामचन्द्र आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। वर्ष १९८७ ८८ के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित घोषित किये गये।

प्रधान—श्री ओंकारनाथ जी आर्य
उपप्रधान—कैप्टिन देवरत्न आर्य
उपप्रधान—श्री चन्द्रभान मल्होत्रा
महामन्त्री—श्री विमल स्वरूप सूद
मन्त्री—श्री विश्वभूषण आर्य
मन्त्री—श्री लालचन्द आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री कस्तूरीलाल मदान

प्रवेश

मान्यता प्राप्त मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी मे प्रवेश प्रारम्भ है। आर्ष पाठ विधि। विषय—वेद अष्टाध्यायी, हिन्दी, संस्कृत भूगोल, गणित, विज्ञान आदि। उच्च वेदाध्ययन तथा वैदिक शोध की सुविधाएं। निर्धन छात्रवृत्तिया भी। वरीयता—उपदेशको, कर्मठ समाज सेवियों तथा पंजाब व अन्यत्र के पीडित परिवारो की पुत्रियो को, प्रवेश चयन से।

ध्येयनिष्ठ वानप्रस्थियो के लिये निजी कमरा बनवाने हेतु नि शुल्क भूमि उपलब्ध है।

सम्पर्क सूत्र आचार्या पुष्पावती, पी एच० डी०, दर्शनाचार्य, विद्यावारिधि
डी ४५/१२९, नई बस्ती रामापुरा, वाराणसी

आर्य समाज माडल टाउन यमुनानगर (हरयाणा)

आर्य समाज का वार्षिक चुनाव —

प्रधान—लाला खैरातीराम जी मल्होत्रा
महामन्त्री—श्री मनोहरलाल जी साहनी चुने गए

मराठी प्रचारकों की आवश्यकता

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा बजिबाव नांदेड कार्यालय को महाराष्ट्र मे मराठी भाषिक, १ उपदेशक एवं एक भजनोपदेशक की आवश्यकता है। आवास निःशुल्क। वेतन योग्यतानुसार तुरन्त आवेदन करें।

—श्री हरिश्चन्द्र गुरुजी
मन्त्री सभा

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८७] | मार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१
वष २२ अक २९] | श्रावण कृ० ६ स० २०४४ रविवार १९ जुलाई १९८७ | वार्षिक मूल्य २१) एक प्रति ६० पैसे

भारत में अल्पसंख्यक नित नई समस्यायें उत्पन्न कर रहे हैं : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

ग्वालियर १२ जुलाई। यहा आयोजित मध्यप्रदेश हिन्दू महा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा भारत को स्वतन्त्र हुए ४० वर्ष बीत गये, किन्तु आज भी हम विभाजन पूव की स्थिति से ही गुजर रहे हैं। सारे विश्व मे बहुमत का राज्य होता है और शासन का आधार बहुमत की परम्परा और सस्कृति होती है किन्तु भारत मे हिन्दुओ के अधिकार को कुचला जा रहा है और अल्पसख्यको की खुशामद मे सारा शासन और विरोधी दल लगे हुए हैं, परिणामस्वरूप उनमे अलगाववाद की भावना निरन्तर बढती आ रही है। यदि विभाजन के तत्काल बाद हम बहुसख्यक अल्पसख्यक वाद को समाप्त कर सबके लिए एक शिक्षा और समान कानून बनाते तो आज हमे यह दुर्भाग्यपूण दिन नही देखने पडते।

पजाब की दुर्दान्त परिस्थिति व भीषण नर सहारो पर चिन्ता प्रकट करते हुए स्वामी जी ने कहा कि—पजाब को ५ वष के लिए सेना के हवाले कर दिया जाय। उन्होने कहा कि पजाब के प्रशासन मे आतकवादियो से सहानुभूति रखने वाले तत्व बडी सख्या मे घुसे हुए हैं जो किसी भी योजना को सफल नही होने दगे। पजाब के आतकवादियो को पाकिस्तान मे प्रशिक्षण दिया जा रहा है और उनकी शस्त्र और धन से वह पूरी सहायता कर रहा है इसलिए हमे जैसलमेर से काश्मीर तक पूरी सीमा को वन्द कर देना चाहिए हमने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी को यह सुझाव दिया था कि पाकिस्तान के सीमा पर ५ मील चौडी सुरक्षा पटटी बनाई जाय यदि हमारा सुझाव मान लिया गया होता तो आज जो पजाब मे हिन्दुओ का हत्याकाण्ड हो रहा है वह नही होता।

पुलिस म साम्प्रदायिकता फैलाने का प्रयास

अहमदाबाद बडोदा मेरठ दिल्ली तथा अन्य शहरो मे हुए साम्प्रदायिक दगो का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा कि यह दगे पूव नियोजित हैं। सी०आर०पी० और पी०ए०सी० के जवानो के विरुद्ध झूठी शिकायत कर पाकिस्तान समथक लोग इन बलो मे मुसलमानो की अधिक भर्ती की माग कर रहे है। उनका सही उददेश्य देशभर के सशस्त्र बलो को साम्प्रदायिक आधार पर दो भागो मे वाटना है यह हमे समझना चाहिए। इस सम्बन्ध मे राजनैतिक चर्चा करते हुए उन्होने कहा कि मार्गभ्रष्ट लोग नेता बन बैठ हैं। सत्ता हथियाने के एकमात्र उददेश्य से वह सभी प्रकार के देशद्रोही असामाजिक तत्वो की सहायता ले रहे है। आज देश मे रूसी लाबी है पाकिस्तानी लाबी है अमेरिकी लाबी है पर हमारा दुर्भाग्य है कि भारत के हितो की रक्षा करने के लिए कोई सशक्त लाबी आज भी देश मे नही है।

विरोधी दल साम्प्रदायिकता को बढावा दे रह ह

विरोधी दलो पर देश मे साम्प्रदायिकता को बढावा देने का आरोप लगाते हुए उन्होने जनता पार्टी अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर और लोकदल के श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा की कटु आलोचना की। उन्होने कहा सयद शाहबुद्दीन जसे कटटर धर्मान्ध को जहा श्री चन्द्रशेखर शह दे रहे हैं, वहा अब्दुल्ला बुखारी जसे खुनकर मुस्लिम साम्प्रदायिकता का प्रचार करने वाले के साथ श्री बहुगुणा अपनी मत्री निभा रहे हैं। मेरठ के दगे के बाद श्री चन्द्रशेखर ने ना

(शेष पृष्ठ २ प)

वेदामृत

सच्चा रक्षक

स्वस्तिदा विशा पतिर्वृत्रहा विमृधोवशी
वृषेन्द्र पुर एतु न सोमपा अभयकर

अथर्व० १।२१।१

(स्वास्तिदा) मगलकारी (विशाम) प्रजाओ का (पति) पालने हारा (वत्रहा) अन्धकार मिटाने वाला (विमृध) शत्रुओ को (वशी) वश मे करने हारा (वृषा) महा बलवान (सोमपा) अमृत रस का पीने वाला (अभयकर) अभय दान देने वाला (इन्द्र) बड ऐश्वय वाला राजा व परमात्मा (न) हमारे (पुर) आगे आगे (एतु) चले।

मानव प्रभु को ही अपना राजा रक्षक व नेता बनाकर सुखी व सुरक्षित रह सकता है। मनुष्य तो एकाकी होने से स्वय की रक्षा करने मे असमर्थ है।

—शिवराज शास्त्री एम ए

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

भारत के अल्पसंख्यक

(पृष्ठ १ का शेष)

वक्तव्य दिये हैं, वह नितान्त झूठे हैं। मलियाना की घटना जहां १२० लोगों की हत्या की बात करते हैं, उनमें से ८५ व्यक्ति जीवित गांव लौटगये। केवल कुछ लोग वोट पाने के लिए मुस्लिम साम्प्रदायिकता को हवा देकर, यह लोग देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं। मैं स्वय मेरठ गया था, वहां हिन्दुओं की दो अरब की सम्पत्ति नष्ट की गई है, किन्तु उन्हें मदद करने की बात इनको नहीं सूझती।

श्री देवीलाल दलगत राजनीति से ऊपर उठें

हरियाणा और पजाब में हिन्दुओं के सामूहिक हत्याकांड का उल्लेख करते हुए उन्होंने हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री देवोलाल को इस जघन्य हत्याकांड को दलगत राजनीति का प्रश्न न बनाने की सलाह दी और कहा कि हरियाणाकी जनता ने उन्हें पजाब समझौते के विरुद्ध मत देकर विजयी बनाया है। वह वास्तव में हिन्दू भावना की विजय है। इस हत्याकांड के लिए उत्तरदायी अपराधियों को खोज करने की बजाय भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल की ओर सकेत करना अपनी जिम्मेदारी को टालना और लोगों का ध्यान बटाना मात्र है। श्री भजनलाल जी के भाईयों को गिरफ्तार कर उन्होंने भूल की है।

प्रधानमन्त्री के सलाहकार

उन्होने प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के वर्तमान सलाहकारों को अनुभवहीन बताते हुए कहा कि केन्द्र में अनिश्चितता की स्थिति से देश कमजोर होगा। प्रधानमन्त्री को विघटनवादी देश-द्रोही ताकतों को सख्ती से दबाना होगा। उन्होंने प्रधानमन्त्री से आग्रह किया कि इस संकटापन्न स्थिति में उन्हें उन लोगों से सलाह लेनी चाहिए, जिनकी देशभक्ति की और राष्ट्रवादी भावना पर कोई ऊंगली न उठा सके। उन्होंने इस सम्बन्ध में भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मुरारजी देसाई और भूतपूर्व सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल मानिक शाह के नाम का विशेष रूप से उल्लेख किया।

हिन्दू युवक सशस्त्र बने

हिन्दुओं के जीवन और सम्मान की रक्षा करने के लिए हिन्दू युवको को आगे आने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दू युवको को आधुनिक शस्त्र चलाने की शिक्षा तुरन्त लेनी चाहिए। हमें अब केवल सरकार के भरोसे नहीं रहना चाहिए। उन्होंने भारत सरकार से मांग की कि या तो हिन्दुओं को शस्त्र रखने की अनुमति दे दें या जिनको किसी न किसी आधार पर शस्त्र रखने दिये जाते हैं, उनसे सारे शस्त्र वापिस लें। निरपराध हिन्दू केवल शस्त्र के अभाव में अब इन जल्लादों के हाथों मरना स्वीकार नहीं करेगे, यह मैं सरकार को स्पष्ट चेतावनी देना चाहता हूं।

हिन्दू विरोधियों को वोट नहीं

हमारे देश में प्रजातन्त्र है। यह एक दुःखद स्थिति है कि देश कोई सशक्त हिन्दू पार्टी नहीं है। हमारा किसी राजनैतिक दल से सम्बन्ध नहीं है, किन्तु हम यह अवश्य चाहते है कि इस देश को यदि जीवित रहना है तो ऐसे ही व्यक्ति अब सत्ता में आये, जिनका प्रथम लक्ष्य हिन्दू हितों को रक्षा करना हो। इसलिए हम आन्दोलन करेगे। हम ऐसा वातावरण बनायेगे कि हिन्दू केवल उसी दल को वोट दे जो प्रकट रूप मे घोषणा करेगा कि वह हिन्दू हितों की कभी अवहेलना नहीं करेगा।

●

आर्यसमाज का इतिहास (सातवां भाग)

आवश्यक निवेदन

"आर्य समाज का इतिहास" का छठा भाग प्रकाशित हो गया है। और अब सातवें भाग की पाण्डुलिपि तैयार की जा रही है। इस सातवें (अन्तिम) भाग में अन्य विषयों के साथ साथ निम्नलिखित का भी समावेश होगा—

(१) आर्य समाजों या आर्य नर-नारियों द्वारा संचालित विविध मठों, आश्रमों, साधना केन्द्रों, शोध संस्थानों, धर्मार्थ चिकित्सालयों तथा जनसेवा के लिए स्थापित संस्थाओं का परिचय। उनके कार्यकलाप का विवरण।

(२) आर्य युवक समाजों, युवा परिषदों एवं कुमार समाजों का परिचय तथा उनके कार्यकलाप का विवरण।

(३) विविध प्रदेशों में स्थापित आर्य वीर दलों का इतिहास तथा उनका सेवा कार्य।

(४) आर्य संन्यासियों, प्रचारकों, विद्वानों, साहित्यकारों, भजनोपदेशकों, दानियों, कर्मठ कार्यकर्ताओं और आर्य समाज की विविध प्रकार की संस्थाओं के संस्थापकों, संचालकों तथा पदाधिकारियों का परिचय एवं उनके कार्य का विवरण।

(५) भारत के सुदूर व दुर्गम क्षेत्रों (पूर्वाञ्चल, उड़ीसा, झारखण्ड, केरल तमिलनाडु, पार्वत्य प्रदेश आदि) में वैदिकधर्म के प्रचार का प्रयत्न एव उसकी सफलता।

(६) विविध आर्य प्रतिनिधि सभाओं के गत ४० वर्षों (सन १९४७ के पश्चात के काल) के कार्य का विवरण।

पाठकों से सानुरोध प्रार्थना है, कि उपयुक्त विषयों पर समुचित जानकारी भेजकर आर्य समाज के इस विस्तृत इतिहास को पूर्ण व निर्दोष बनाने में हमारी सहायता करें। साथ ही, अब तक प्रकाशित छः भागों में जो त्रुटियां रह गई हों या जो जानकारी देने से रह गई हो, उनसे भी हमें अवगत कराने की कृपा करें।

हमारी इच्छा है कि आर्यसमाज के विविध प्रकार के नेताओं व कार्यकर्ताओं के परिचय के साथ उनके चित्र भी दिये जा सके। पर चित्रों के प्रकाशन में जो व्यय होता है, वह १०० रुपए प्रति चित्र के लगभग बैठता है। हम यह भी अपेक्षा रखते हैं, कि आर्य नर-नारी इस व्यय को वहन करने में भी संकोच नहीं करेंगे।

—सत्यकेतु विद्यालंकार
आर्य स्वाध्याय केन्द्र
ए-१/३२ सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली

पुस्तक-समीक्षा

स्मृतियों में राजनीति और अर्थशास्त्र

लेखिका – डा० श्रीमती प्रतिभा आर्य,
प्रकाशक—विश्वभारती अनुसंधान परिषद, ज्ञानपुर (वाराणसी)
पृष्ठ संख्या—डिमाई २६६, मूल्य—७५)

प्रस्तुत शोधग्रन्थ में स्मृतियों में वर्णित राजनीति के विविध तत्व, राजनीति की गतिविधि, राजा और अधिकारियों के अधिकार और कर्तव्य, शासन व्यवस्था, कर-व्यवस्था, दंड-व्यवस्था, परराष्ट्रों से सन्धि-विग्रह आदि के सिद्धांतों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन किया गया है।

साथ ही अर्थशास्त्र से सम्बद्ध विषयों का भी विस्तृत वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है। जैसे—अर्थ, विनियोग, श्रम-श्रमिक, व्यापार-वाणिज्य, उद्योग-धन्धे, सम्पत्ति के उत्तराधिकार एव दायभाग के नियम आदि।

इस ग्रन्थ का विमोचन राष्ट्रपति श्री जैलसिंह जी ने राष्ट्रपति भवन मे १९ जून ८७ को किया था और इसे बहुत महत्वपूर्ण कार्य बताकर लेखिका के परिश्रम की सराहना की थी।

पुस्तक राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र से सम्बद्ध सभी छात्रों, विद्वानों और मनीषियों के लिए सग्रहणीय है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सम्पादकीय

देश की न्याय व्यवस्था

गत पाच वर्षो से भारत सरकार व प्रान्तीय सरकारें देश में बढते हुए साम्प्रदायिक उन्माद से जूझ रहे हैं परन्तु कोई समाधान होता नजर नही आ रहा अपितु

मरज बढता गया ज्यू ज्यू दवा की

इसका मुख्य कारण यह है कि जिन राज्य अधिकारिओ से शान्ति व न्याय व्यवस्था की आशा की जाती है वे आमूल चूल सम्प्रदायिकता मे डूबे रहते हैं। पजाब के पुलिस महानिरीक्षक श्री रिबेरो ने यह बात कितनी ही बार दुहराई है। आश्चर्य है कि अपराधियो को पकडने मे सरकार की असफलता का मुख्य कारण ही यह है कोई भी किसी सिख के विरुद्ध चाहे वह कितना ही दुर्दान्त अपराधी हो एक शब्द बोलने की साहस नही जुटा पाता, अपितु वह उनकी रक्षा करना ही अपना धर्म समझता है।

हाल ही मे ऋषिकेष के हत्याकाण्ड मे एक चौंकाने वाला रहस्य उद्घाटन हुआ है। एक आई० पी० एस० ग्रेड का पुलिस अधिकारी जो टेहरी जनपद के नरेन्द्र नगर मुख्यालय मे पुलिस अधीक्षक के पद पर था, ऋषिकेष के गुरुद्वारे मे सिखो की रक्षा के लिए पहुचा और उसने निहत्थे प्रदर्शनकारिओ पर गोलिया चलाई। जिसके परिणाम स्वरूप ६ व्यक्ति घटना स्थल पर ही मारे गए दर्जनो घायलो को हस्पताल पहुचाया गया। इस आई० पी० एस० अधिकारी का नाम राजदीपसिंह बताया गया है जिसे पुलिस सूत्रों के अनुसार गिरफ्तार कर लिया गया है। यह घटना इस सत्य को प्रमाणित करती है कि सम्प्रदायिक उन्माद मनुष्य को कितना कर्त्तव्यहीन व न्याय व्यवस्था से खिलवाड करने वाला बना सकता है।

अखिल भारतीय शासकीय सेवाओ के लिए जिस राष्ट्रीय चरित्र के प्रत्याशियोकी अपेक्षाकी जाती है, आचार सहिताका उन्हे जो पाठ पढाया जाता है उसका यदि पालन नही होगा तो शासन व न्याय व्यवस्था किस प्रकार स्थिर रह सकती है जब बाढ ही खेत को खाने लगेगी तो राष्ट्र का अमन चैन कैसे कायम होगा यहा तो यह दशा है :—

वही कातिल वही मुखबिर वही मुसिफ भी है
अकरिबा मेरे करें खून का दावा किस पर

वेद प्रचार सप्ताह का महत्व

आर्य समाज के महत्वपूर्ण पर्वो मे वेद प्रचार सप्ताह का बडा महत्व है। कारण इसका उद्देश्य वेद भगवान की शिक्षाओ के द्वारा मानव समाज के कल्याण की सभी समस्याओं पर प्रकाश व मार्ग दर्शन दिया जाता है। आज हमारा स्वतन्त्र देश भीषण सकटो मे से गुजर रहा है। देश की अनेक सस्थाए देश कल्याण के लिए अनेक सगठनो द्वारा कार्य कर रही हैं। राजनीतिक सस्थाए भी बरसाती मैंढक की भान्ति अपना-अपना राग अलापती रहती हैं। परन्तु मानव जीवन के सम्पूर्ण विकास का जो शाश्वत व सुस्थिर मार्ग वेद भगवान ने हमारे सामने रखा है वह ससार के किसी मत पथ अथवा पार्टी के पास नहीं।

देश की स्वतन्त्रता की ८० प्रतिशत लडाई केवल आर्य समाज ने लडी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हम कुछ निष्क्रिय व उदासीन से बन गए उसी का फल आर्य समाजों के सत्सगो व सभाओं मे शिथिलता दिखाई देती है। वास्तव मे तो आज जितनी आर्य समाज के प्रचार व मार्गदर्शनकी आवश्यकता है उतनी इससे पहले नही थी। आज तो राष्ट्र व समाज का अग अग रोग ग्रस्त है —

नश्तर को लेके हाथ मे फस्साद ने कहा।
रग रग मे है वरम मैं लगाऊ कहा कहा॥

इन परिस्थितियों मे आर्य समाज का यह पावन कर्त्तव्य है कि वह जनता के मार्गदर्शन के लिए अपने सत्सगो पर्वों व उत्सवो को अधिक से अधिक उत्साह व समारोह पूर्वक आयोजित करें।

देश के योग्य विद्वानो के भाषण, मधुर सगीत, राष्ट्रोपयोगी सम्मेलनो के द्वारा समाज को जनता मे अधिक से अधिक प्रभावशाली व उपयोगी बनाया जाए। आर्य समाज कोई नया मत पथ अथवा सकीर्ण विचारधारा नहीं आर्य समाज का लक्ष्य उसके गुरुवर दयानन्द ने ससार का उपकार बताया है। जिसमें शारीरिक तथा आत्मिक उन्नति का पूर्ण तत्व ज्ञान है। आशा है आर्य समाज के कर्मठ व लगनशील पदाधिकारी समय की नब्ज को पहचानेंगे और आर्य समाज को देश का महानतम आन्दोलन बनाने के लिए तन मन धन से जुट जाए गे। वेद प्रचार सप्ताह व श्री कृष्ण जन्माष्टमी की धूम गली-गली गांव-गांव में मचाने को आज ही से अपना बहुमूल्य समय व साधन लगा कर महर्षि के मिशन को सफल बनाए गे। ●

रूस में घूंसखोर मन्त्री को १३ वर्ष की कैद भारत में ऐसे मन्त्रियों को प्रोत्साहन और पुरस्कार

हमारे देश के वर्तमान शासक रूस को अपना आदर्श मानकर प्राय हर क्षेत्र में उनका अनुकरण करते हैं, परन्तु कतिपय ऐसे मामलो मे जो न्याय सगत होते हुए भी उनके हितो को हानि पहुचाते हैं, वे रूस के मार्ग से हट जाते हैं। इसका सबसे ताजा उदाहरण वहा हाल ही मे एक मन्त्री का ऐसे अभियोग मे जिसमे उसे रिश्वत लेते पकडा गया था, १३ वर्ष की कैद का दण्ड देने से मिलता है, जब कि भारत मे स्वतन्त्र होने के अनन्तर ४० वर्ष के काग्रेस शासन मे न मालूम केन्द्र और राज्यो के कितने मन्त्रियो के विरुद्ध रिश्वत लेने और कुछ और भी सगीन अपराधो के अभियोग लगे, परन्तु उनमे से किसी को दण्ड ही नही मिला। अपितु उनको पुरस्कार और प्रोत्साहन और दिया जाता है। यह है अन्तर अधिनायकवादी और लोकतान्त्रिक शासन पद्धति मे।

रूस का जो समाचार मास्को से १५ जून को प्रकाशित किया है वह इस प्रकार हैं —

सोवियत सघ के विदेश व्यापार के उपमन्त्री ब्लादिमीरसर को घूस लेने के अभियोग मे तेरह वर्ष की सजा दी गई है।

रायटर ने सरकारी सवाद समिति तास के हवाले से बताया कि इसी मामले मे उकोफ को पत्नी बेवेविना को ग्यारह वर्ष और उसके भूतपूर्व सहायक बरली कवि सन्यास को ६ साल की सजा दी गई हैं।

क्या भारत सरकार रूस के इस उदाहरण से कुछ सबक लेगा।

श्री कैलाशनाथसिंह, राजपाल आदि की याचिका उच्च न्यायालय इलाहाबाद द्वारा खारिज

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के निर्वाचन के विरुद्ध उपरोक्त व्यक्तियो द्वारा सार्वदेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वर्तमान अधिकारियो तथा रजिस्ट्रार सोसायटी लखनऊ के विरुद्ध दी गई याचिका उच्च न्यायालय इलाहाबाद द्वारा दिनाक २३ ४ ८७ को खारिज कर दी गई है। उच्च न्यायालय ने उनकी इस प्रार्थना को भी कि सभा का निर्वाचन उपरोक्त रजिस्ट्रार द्वारा कराया जाये, उस पर कोई भी विचार करना अस्वीकार कर दिया है।

अतएव उत्तर प्रदेश के आर्य समाजो के पदाधिकारियो और आर्यजगत् के अन्य महानुभावो को इस वास्तविकता से अवगत कराया जा रहा है ताकि विरोधियो द्वारा फैलाई जा रही भ्रान्तियो से वे सबको सचेत कर सकें।

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

संस्कृत भाषा ही भारतीय व अन्य भाषाओं की जननी

—आचार्य शिवराज शास्त्री एम. ए. मौलवी फाजिल—

विश्व मानव शारीरिक रूप से एक जैसा और सर्वथा एक ही वश की सन्तान होते हुए भी परस्पर एक दूसरे से इतना भिन्न दिखाई देता है कि जैसे उसका स्वरूप ही सर्वथा भिन्न भिन्न हो। ससार के ४ अरब मनुष्य हजारो भाषाओ सैकडो मतमतान्तरो, सैकडों देशों मे बटे होने पर भी विचार की दृष्टि से देखा जाए तो शारीरिक रचना के रूप में एक ही पिता की सतान है। सबको निर्माता ने दो ही हाथ दिए हैं दो ही पैर दिए हैं, आख, नाक, कान, व शरीर के सभी अग एक से ही सबके बनाए हैं। कोई अल्प बुद्धि मनुष्य भी यह कहने का साहस नही कर सकता कि इन सबका निर्माण करने वाला एक से दूसरा है। उस निर्माता ने जब इसे सर्व प्रथम बनाया होगा तो उसने कल्पना भी न की होगी कि कभी ऐसा समय भी आएगा कि एक मनुष्य दूसरे से केवल भाषा भूमि व भावना की दृष्टि से एक दूसरे से इतना दूर हो जाएगा कि एक भाई दूसरे भाई के सर्वनाश के लिए ही अहर्निश चिन्तन करता रहेगा।

आज ससार मे यही हो रहा है। भारत पाकिस्तान से बेचैन है। पाकिस्तान भारत के विनाश की हर घडी तजवीज करता रहता है। चालाक योरोप निवासी हमारे मतभेदो का लाभ उठाकर युद्ध सामग्री का ही निर्माण विक्रय अपना ध्येय बना कर मालामाल होने के मनसूबे बनाते रहते हैं। उनके अपार धन वैभव का स्रोत हमारी ही कमजोरिया हैं।

क्या विश्व निर्माता ने मानव की रचना इस निमित्त की थी वे एक दूसरे से इतनी दूर हो जाए परस्पर इतने वैर वैमनस्य मे ग्रस्त हो जाए कि शाति-सद्भावना सह अस्तित्व का स्वप्न ही समाप्त हो जाए।

विश्व के एकमात्र निर्माता प्रभु प्यारे ने अपनी कल्याणी वाणी मे तो मानव जीवन की जो कल्पना की थी वह ससार को स्वर्ग बनाने की थी। प्रभु प्यारे ने अपनी भाषा मे कहा था

यत्र विश्व भवत्येक नीड

ससार मे शान्ति तभी स्थापित होगी जब समस्त ससार एक स्वर मे एक नीड (आशियाने) पर निवास करेगा। आओ उस नीड की खोज करें। वह नीड है प्रभु की अपनी भाषा जहा से मनुष्य ने बोलना सीखा। आज भाषाओ के महाजाल मे फसे ससार मे भाषा के उदगम स्थान की खोज मे विश्व के विचारक लगे हैं। खोज रहे हैं भाषा का मूलरूप क्या था जिससे मनुष्य ने भाषा बोलते बोलते अनेक रूप बना लिए। ससार भर के भाषा विज्ञान शास्त्रियो ने इस समस्या का समाधान करने के लिए कि वे खोज सकें कि ससार के प्रथम मानव की भाषा क्या थी हजारों प्रकार के प्रयोग किये, सैकडो प्रकार की थ्योरियो (खोज पद्धतियो) का निर्माण किया, जिनमे पूह पूह थ्योरी सिंग साग थ्योरी, डिगडाग थ्योरी आदि। परन्तु बहुमत यह निकला कि भाषा भी मानव के विकास की भाति (जैसे डार्विन ने बन्दर से आदमी का विकास माना है) भाषा भी विकसित होती गई है। परन्तु आज भी यह निश्चय नही हो सका कि मानव की मूल भाषा क्या थी? क्योंकि अब डारविन का मानव विकासवाद तो मिथ्या होने के कारण अपनी मौत आप मर चुका है। ससार के भाषा शास्त्री अब फिर इस खोज में लगे है कि मनुष्य की पहली भाषा क्या थी। यह समस्या इसलिए उत्पन्न हुई है कि मानव का नाता आपस मे तभी भाई भाई का बनाया जा सकता है जबकि सब एक बोली एक स्वर व एक भाषा में बोले जैसा कि वेद माता कहती है —

स गच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम्

सभी मनुष्य अपनी जीवन पद्धतिया एक सी बनावे। सभी मनुष्य परस्पर एक भाषा मे बोले, सब एक दूसरे के हृदय के भावो को समझने की क्षमता वाले हों। तभी महर्षि दयानन्द ने वेद माता के स्वरो को मुखरित करते हुए कहा था—

ससार को आर्य (श्रेष्ठ) बनावे क्योंकि ससार का उपकार करना मनुष्य मात्र का लक्ष्य होना चाहिए। प्रश्न है कि यह महान लक्ष्य पूरा कैसे हो। भारतीय मनीषी तो एक स्वर से इन महान वाणियों का उच्चारण करते रहे। परन्तु ससार का भला चाहने वाले विदेशी मनीषियो ने भी भारत के स्वर में स्वर मिलाया। भाषावाद के पचडो मे पडे विद्वानो को फटकारते हुए प्रोफेसर एडगर जो कोलबिया विश्वविद्यालय के प्राध्यापक थे अपने ग्रन्थ एन इन्ट्रोडक्शन टु लिग्विस्टिक साइ स के पृष्ठ ४० पर लिखते हैं—

बहुत वाद विवाद के पश्चात् भाषा शास्त्री इस परिणाम पर पहुचे हैं कि जिन तथ्यों पर उन्होने खोज की है उससे मानव की मूलभाषा का अत्यन्त थोडा सा ही प्रमाण प्राप्त होता है।

इसीलिए डा० फ्लीमिंग ने लन्दन के ओविग हाल मे अपने भाषण में कहा था—हम पूर्ण ज्ञान मनुष्यो के मस्तिष्को से उत्पन्न किए अर्धविकसित विचारो से प्राप्त नही कर सकते अपितु पूर्ण तो तब प्राप्त होगा जब सर्वोच्च सत्ता ही नश्वर प्राणी को अपने उच्चस्तरीय प्रकाश से प्रकाशित करे। (अर्थात् ज्ञान का आदि स्रोत परमात्मा ही है।"

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के पहले नियम में यही बात कही कि "सब सत्य विद्या और पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।

ससार के प्रथम मानव ने प्रभु प्यारे से ही भाषा का ज्ञान प्राप्त किया और वास्तविकता तो यह है कि वेदमाता की देवभाषा सस्कृत ही ससार की सबसे पहले सबसे पूर्ण सबसे वैज्ञानिक व सर्वश्रेष्ठ भाषा है। इसी भाषा से ससार की सभी भाषाओ की उत्पत्ति हुई है।

भारत वर्ष की सभी भाषाऐ तो निश्चय पूर्वक ही सस्कृत भाषा की ही सन्तानें हैं।

इस सत्य को १२ वी शताब्दी के कन्नड भाषा के व्याकरणाचार्य श्री नाग वर्मा ने स्वीकार किया है कि सस्कृत ही भारत की उत्तर भारतीय व द्रविण भाषाओ की जननी है। थोडे थोडे उच्चारण भेद से भाषाऐ प्राकृत अपभ्र श व पैशाचिक के रूप मे विकसित हुई। उन्ही से तामिल तेलगू व कन्नड भाषाओ की उत्पत्ति हुई। ८०% कोष सारा सस्कृत भाषा से ही ग्रहण किया गया है।

तेलगू भाषा के १३वी शताब्दी के व्याकरणाचार्य श्री केतन कहते हैं कि सस्कृत भाषा ही सब भाषाओ की जननी है।

प्रसिद्ध मलियाली भाषा के व्याकरणाचार्य अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ लीला-तिलकम में लिखते हैं मलयाली भाषा का उद्गम स्थान सस्कृत ही है वे लिखते हैं—

इहतावत् सस्कृतमनादि अन्यदादिमत् तस्य सस्कृतात्प्रभवस्यात्। तत्र प्रकृतित्वेन स्थित क्वचिदूह विषयो भवति, क्वचित् अत्यन्त तिरोभावादूही न शक्यते, तत्र मुक्तत्वमयुज्यते, अन्यत्र सस्कृत भवतत्वम्।

दक्षिण के महाकवि उल्हार एस परमेश्वर अय्यर एम० ए० बी० एल ने १९३७ मे ओरियन्टल कान्फ्रेंस के ट्रावनकोर के अधिवेशन में कहा था कि सस्कृतभाषा अनादि है अन्य सभी भाषाए एक निश्चित समय मे पैदा हुई है।

यही सत्य दक्षिण के महाविद्वान श्री स्वामी नाथ अय्यर ने मद्रास की ओरियेन्टल कान्फ्रेंस मे दुहराया था कि न केवल द्रवेणियन भाषाए अपितु बाह्य देशों की भाषाओ का मूल भी सस्कृत भाषा ही है।

डा० नारायणराव प्रसिद्ध भाषा शास्त्री भाषाओं के इतिहास के सम्बन्ध मे लिखते हैं—तेलगु भाषा का उद्गम मूल आर्य भाषा से ही है।

ट्रावनकोर के श्री एल० ए० वर्मा ने अपने निबन्ध "आर्य व द्रविण भाषाए मे ७०० ऐसे शब्द उद्धृत किए हैं जो सस्कृत से ही निकले हैं।

महामहोपाध्याय श्रीकान्त शास्त्री ने प्रसिद्ध पत्र भारतीय विद्या जून ४७ के अ क लिखा कि द्रविडयन भाषाए सस्कृत से निकली है जैसे इटालियन भाषा का निकास लैटिन से है।

दक्षिण के महापण्डित जो लोकसभा के अध्यक्ष भी रहे हैं और जो दक्षिण के सस्कृत भाषा के महान विद्वान माने जाते थे उन्होंने दिल्ली विश्व विद्यालय मे सस्कृत परिषद मे भाषण देते हुए कहा था कि—

सस्कृत भाषा भारत वर्ष की सभी भाषाओं का आदि स्रोत है। मलयाली व तेलगू भाषाओं में ७५ प्रतिशत सस्कृत भाषा के शब्द है।

(क्रमश)

यज्ञ के नाम पर बरबादी क्यों ?

—आचार्य राम शास्त्री

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द की विशेषता यही है कि उन्होंने हमें बुद्धि-अनुकूल बातों को ग्रहण करने और अन्धविश्वास को त्यागने की शिक्षा दी है। किसी भी ऋषि ने नही कहा कि मेरे अन्दर भी कोई त्रुटि हो सकती है। केवल इन्ही ऋषिवर ने कहा कि यदि कुछ निष्पक्ष विद्वान लोग मुझमे भी कोई त्रुटि देखें, तो उसे न अपनाए।

एक बार किसी बालक द्वारा संस्कृत भाषण मे अपनी अशुद्धि पकडे जाने पर उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार किया था। पिछले दिनो आर्य समाज के कुछ लोग प्रत्यायनीय को छोडकर प्रतीक के पीछे बुरी तरह लग गए हैं। वे यह नही जानते कि यज्ञ प्रतीक है प्रत्यायनीय नही। प्रत्यायनीय है त्याग।

स्वामी जी ने जो दैनिक यज्ञ करने का निर्देश दिया है, उसका अभिप्राय है कि—एक तो अग्नि में विविध प्रकार की ओषधियो का हवन करने से बहुत सी बीमारिया दूर हो जाती हैं और वातावरण शुद्ध हो जाता है। दूसरी शिक्षा यह मिलती है कि जिस तरह अग्नि कोई वस्तु ग्रहण कर उसे सब दिशाओ मे बाट देती है, अपने पास कुछ भी नही रखती, उसी प्रकार व्यक्ति को भी बाटकर खाना चाहिए। तथा सब सुखो इत्यादि मे औरो को भागीदार बनाना चाहिए।

यज्ञ धातु का अर्थ है– देवपूजा, यानि विद्वानो (स्वामी जी ने देव का अर्थ विद्वान किया है) का सत्कार। वायु सूर्य, पृथ्वी आदि भी देव श्रेणी मेही आते हैं क्योंकि ये कुछ भी लेते नही अपितु देते ही हैं। 'दानात् दीपनात् देव' यानि देने वाले को देवता कहा गया है और संगति करना, विद्वानो की बात सुनकर ग्रहण करना तथा सुबह शाम स्वय को ईश्वर के निकट बैठने का सा अनुभव करना चाहिए क्योंकि उपासना का अर्थ है—पास बैठना। उपासना = आस उपवेशने धातु से युच् प्रत्यय करने पर उपासना शब्द बनता है।

किन्तु लोगों ने मात्र अग्नि मे वस्तुए डालने का अर्थ ही यज्ञ मान लिया है। शेष दो अर्थों को पूर्णतया त्याग दिया है। स्वामी जी ने बलिवैश्यव देव व अतिथि यज्ञ करने को लिखा है। उसका अर्थ कोई भी विद्वान अग्नि मे इन वस्तुओ, (अतिथि आदि), को डालने का अर्थ नही करेगा।

यजुर्वेद मे साधक भगवान से अपनी सभी वस्तुओ को गिना-गिनाकर प्रार्थना करता है कि 'यज्ञेन कल्पताम्' यानि ये सभी वस्तुए (धान, बैल इत्यादि) यज्ञमय हो जाए। कोई भी विद्वान या अज्ञानी भी कल्पताम् का यह अर्थ नहीं करेगा कि इन सभी वस्तुओं को अग्नि मे डालकर स्वाहा कर दिया जाय।

बुद्ध भगवान् के आने से पूर्व प्रत्येक गाव मे पशु मारने के लिए लम्बे (यूप) गडे हुए थे और उन्ही से यज्ञ होता था। किसी राजा के यहा सवा लाख पशुओं को यज्ञ के लिए (जिस तरह आजकल यज्ञ के कुण्डो मे अनेक मन घी प्रयोग किया गया है) जाते हुए देखकर बुद्ध तडप उठे और राजा से बोले कि—'राजन् क्या तुम इन पशुओं का एक बाल भी बना सकते हो? जिन्हें तुम नष्ट कर रहे हो।' यद्यपि तर्क द्वारा इस पर बहस की जा सकती थी। तथापि राजा को यह बात घर कर गई और उसने उन सभी पशुओ को छोड दिया।

पहले राजा को सम्राट बनने के लिए अपना सारा ऐश्वर्य दान करना पडता था। सुना है हर्ष वर्धन ने अपने वस्त्र तक दान कर दिए थे। यज्ञ के अर्थ की पुष्टि के लिए एक आख्यायिका आती है कि युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में एक विचित्र नेवला आया था, जिसका आधा शरीर स्वर्णमय था। जो ब्राह्मणो की जूठन पर लेट रहा था, कुछ खाता नही था। उस महान यज्ञ मे स्वर्णपात्रों में भोजन कराया गया था और उन पात्रो को भोजन के बाद ब्राह्मणो को ही दान कर दिया गया था। राजा के पास भोजन के लिए मिट्टी के बर्तन ही बचते थे। युधिष्ठिर के पूछने पर नेवले ने कहा कि—"मैं एक यज्ञ में जूठन पर लेटा था, जिससे मेरा आधा शरीर सोने का हो गया। मैं देखना चाहता था कि आपके यज्ञ मे जूठन पर लेटने से ऐसा हो सकता है या नहीं। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। मुझे दुःख है राजन्! कि आपका यज्ञ सफल नहीं हुआ है।" युधिष्ठिर के पूछने पर कि वो कौन सा यज्ञ था, नेवले ने निम्नलिखित यज्ञ बताया—

एक बार बहुत बडा अकाल पडा था। खाने को कहीं कुछ नही मिलता था। एक ब्राह्मण परिवार में चार प्राणी थे। ब्राह्मण, ब्राह्मणी, पुत्र व पुत्र-वधू। उन्होने कही से जगली अन्न की आठ रोटिया बनाई। खाने से पहले वहा एक अतिथि आया। जिसने कहा कि मैं बहुत भूखा हूँ। ब्राह्मण ने अपने हिस्से की दोनो रोटिया उसे दे दीं। और मागने पर ब्राह्मणी ने दे दी। तीसरी बार मागने पर पुत्र ने भी अपने हिस्से की दोनों रोटिया उसे दे दी। यह देखकर पुत्र-वधू ने अपने हिस्से की दोनो रोटिया खानी प्रारम्भ कर दी। अतिथि का पेट भर गया और चला गया। उस जूठन पर मेरे गुजरने से ही ही आधा शरीर सोने का हो गया। अब बताइये राजन्! कि मैं आपका यज्ञ सफल कैसे मानू।'

यद्यपि यह अर्थवाद है। किन्तु यह अर्थवाद भी त्याग की भावना को पुष्ट करता ही है। इससे सिद्ध होता है कि यज्ञ प्रतीक है और प्रत्यायनीय त्याग है। मेरे कथन का अभिप्राय है कि इस महगाई के समय मे लाखो रुपए का घी अग्नि कुण्ड मे डालना कहा उचित है? जबकि गरीब घी की एक बूद को भी तरसते हैं। इसका निर्णय कि यज्ञ प्रतीक है या प्रत्यायनीय' और घी का इस तरह फूकना, उचित है या अनुचित, मैं पाठकों पर छोडता हूं। मैं फिर कहता हूँ कि मैं दैनिक यज्ञ विरोधी नही हूँ अपितु उसका प्रबल समर्थक हूँ। मैं तो यही कहता हूँ कि उस बडे यज्ञ को किन्ही दूसरे रूपो मे सफल बनाया जा सकता था। अब पाठक स्वय विचारें।

हृदय रोग

—प० मातृदत्त पाण्डेय, वैद्य, रोहतक

आजकल सम्पन्न परिवारों मे तथा मिनिस्टरों आदि को हृदय रोग प्राय हो जाता है। जहां तक सम्पन्नता का सवाल है प्राचीन काल में आज से भी अधिक सम्पन्नता थी। परन्तु हृदयरोग बहुत ही कम था। जैसा कि माधव निदान के देखने से स्पष्ट है। यानि कुल ७ (सात) श्लोकों में हृदय रोग का अति संक्षिप्त वर्णन है। इसका मूल कारण केवल यह है कि प्राचीन काल में अति सम्पन्न व्यक्ति भी शारीरिक श्रम अवश्य करता था। शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से नही देखता था। आजकल सम्पन्न व्यक्ति शारीरिक श्रम को घृणा की दृष्टि से देखता है। यद्यपि शारीरिक श्रम के अनेक भेद थे। यथा मल्लयुद्ध, गदायुद्ध या इसी प्रकार के अन्य कार्य। डटकर शारीरिक श्रम करने से घृत या पौष्टिक पदार्थों का पूर्ण पाचन हो जाता था जिससे शरीर व शरीर के सभी अ ग पूर्ण स्वस्थ एव बलशाली होते थे। इसी के कारण उनकी रस रक्तादि धातुयें सही मात्रा मे बनती थी शरीर का सगठन ठीक व सबल होता था। परन्तु आजकल स्थिति यह है कि सम्पन्न व्यक्ति गरिष्ट भोजन दिन भर खाते रहते हैं परन्तु शारीरिक श्रम को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। यही कारण है उनका शारीरिक सगठन असतुलित होता है प्रत्यक्ष आप देख सकते हैं कि अधिकाश सम्पन्न व्यक्तियों की मृत्यु हार्ट अटैक से होती है। यानि सम्पन्न व्यक्तियो ने मानो हार्ट अटैक से मरने के लिए पेशगी रिजर्वेशन करा रखा है। वस्तु यह सच्चाई है।

हृदय मास पेशियों से निर्मित अ ग है। जवान पुरुष का हृदय ५॥ इ च लम्बा, ३॥ इ च चौड़ा व २॥ इ च मोटा होता है। स्त्रियो मे आकार व भार कम होता है। पुरुषो मे हृदय का भार प्राय ५ छटाक यानि ३०० ग्राम के लगभग होता है। हृदय के कपाट सौत्रिक तन्तु से बने होते हैं। हृदय का कार्य तमाम शरीर से आये अशुद्ध रक्त को फेफडो मे भेज देता है—वहा रक्त की अशुद्धिया निश्वास द्वारा निकल जाती है और शुद्ध प्राणवायु रक्त मिल जाने से रक्त शुद्ध हो जाता है। इसी शुद्ध रक्त को शरीर के अ ग मे लगा तार भेजता रहता है। जिससे हम सभी जीवित रहते हैं। शरीर मे हृदय ही ऐसा अ ग है जो आजीवन प्रतिक्षण क्रियाशील रहता है। हृदय का पोषण हृदय की एक धमनी से शुद्ध रक्त द्वारा होता है। यदि रक्त पोषणी धमनी मे रुकावट हो जाए तो हृदय प्रदेश से तीव्र पीडा प्रारम्भ होती है जो बायें बाहु की ओर जाती है। अगर पूर्ण अवरोध हो जाये तो तुरन्त मृत्यु हो जाती है। यदि अवरोध आशिक हो तो योग्य चिकित्सा द्वारा रोगी बच जाता है।

महाभारत काल तक भारत में विज्ञान चरम उत्कर्ष पर था। जैसा महाभारत में विभिन्न प्रकार के सहारक अस्त्रों व शस्त्रों आदि के वर्णन से मालूम पडता है। चू कि महाभारत के युद्ध में बहुत बड़ी सख्या में मनुष्यों का सहार हुआ जिसमे बडे-बड़े वैज्ञानिक भी थे अत वैज्ञानिकों के अभाव में विज्ञान पर अनुसधान बन्द हो गया। पृथ्वी पर मानवों की सख्या बहुत कम ही रही थी। बहुत समय बाद पृथ्वी पर वैज्ञानिक आने लगे। आज हर विकास शील देश व विकसित देश विज्ञान पर शोध के लिए अतुल धन राशि दे रहा है। चिकित्सा क्षेत्र में ऐलोपैथी पर सबसे अधिक अनुसधान हुए। लगभग ५-६ दशको में बहुत तेजी से अनुसधान कार्य हुए। भारत लगभग २०० वर्ष अ ग्रेजी साम्राज्य का गुलाम रहा। अत आयुर्वेद व भारत की हर वस्तु की जो विकसित थी की पूरी उपेक्षा होती रही।

हृदय रोग में हृदय पोषणी धमनी के अवरोध से बचने के लिए ऐलोपैथी की दवाइया तैयार की गई और उन्हीं का यथासभव प्रयोग होता है। जिससे रोगी को जीवन बचाने के लिए सदा औषधि अपने पास रखनी पड़ती हैं। अर्थात् ऐलोपैथिक इलाज अस्थाई है। स्थायी लाभ नहीं होता।

किन्तु भारत में कई लोगों ने अपनी अपनी खोज की है। स्वय मैंने कुछ सज्जनो का हार्ट अटैक होने पर ऐलोपैथी दवा बन्द कर शुद्ध आयुर्वेदिक औषधि का प्रयोग किया। और फिर रोगी कई वर्ष स्वस्थ जीवन बिता सके।

मेरा अपना अनुभव है कि ऋषियो ने आयुर्वेद के सम्बन्ध में सूत्र रूप मे करीब करीब सभी रोगों पर प्रकाश डाला है। उसी आधार पर मैंने सोचना व समझना शुरू किया व सफलता प्राप्त की। स्वय चरक मे लिखा है कि दोष प्रकुपित होते हैं तो वे तमाम शरीर में गतिशील रहते हैं। किन्तु पूरे शरीर मे व्याधि नही पैदा करते। दोष या अवरोध जहा भी होगी वही दोष वात-पित्त कफ में है फलत एक दो या सभी प्रकोपावस्थानुसार रुक कर व्याधि पैदा करते हैं।

इसका सीधा अर्थ यह निकला कि शरीर के जिस अ ग-उपाग या धातु में जहा कमजोरी होगी वहीं प्रकुपित दोष द्वारा रोगोत्पत्ति होगी।

अत इस पर मैंने यह निश्चय किया कि शरीर का जो अ ग उपाग या धातु कमजोर हो उसे अगर बलशाली बना दिया जावे तो रोग नष्ट हो जायेगा।

हृदय रोगो की चिकित्सा का सूत्र यही है। अत मैं हार्दिकी धमनी मे अवरोध को समाप्त कर साथ ही हृदय को शक्तिशाली बनाता हू। और रोगी अगर समय रहते पूरा इलाज करावे तो हृदय रोग द्वारा मृत्यु से निश्चित रूप से बच जायेगा इसमे मुझे सन्देह नही।

मध्य-मार्ग

(धर्मनारायण कपूर)

श्रेय-मार्ग अन्य है, प्रेय मार्ग अन्य है। दोनो भिन्न-भिन्न प्रयोजनो से पुरुष को बांधते हैं। जो श्रेय-मार्ग को अपनाता है उसका कल्याण होता है, किन्तु जो प्रेय-मार्ग पर चलता है वह लक्ष्य से हट जाता है। धीर व्यक्ति श्रेय-मार्ग का वरण करता है किन्तु जो सुख-चैन का जीवन व्यतीत करना चाहता है वह प्रेय-मार्ग का वरण करता है।

अविद्या में फसे हुए अपने को धीर तथा पडित माने फिरते रास्ते मे भटकते हुए ऐसे जा रहे हैं जैसा अन्धे को अन्धा मार्ग दिखा रहा हो। (कठ उ—२-१, ७, ५)

श्रेय-मार्ग तो तेज किये छुरे की धार के समान साधना कठिन है। कवि कहते है कि वह मार्ग दुर्गम है। (कठ उ—३ १४)

हजारो पुरुषो मे विरलो सिद्धि पाने का यत्न करता है और प्रयत्न करने वाले सिद्धो मे कोई ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करता है। (गीता—७ ३)

निश्चय श्रेय-मार्ग मोक्ष का माग है किन्तु प्रेय मार्ग जन्म मरण के चक्र घुमाने वाला है।

२—इन दोनो मार्गों के अतिरिक्त एक तीसरा मार्ग भी है जो उन्मार्ग कहलाता है है जिस पर चल कर व्यक्ति अधोगति को प्राप्त होता है और मृत्यु उपरान्त प्राय पशु पक्षि आदि की निम्न योनियो मे दु ख भोगता रहता है। उन्माग पर चलने वाला केवल पाप कम ही करता रहता है।

३—परमात्मा ने इन्द्रियों को बाहरी तरफ जाने वाला बनाया है। इस कारण मनुष्य बाहर की तरफ देखता है। कोई बिरला धीर पुरुष अन्दर बैठ आत्मा को देखता है। मन्दमति बाहर फैली हुई कामनाओ के पीछे भागता रहता है किन्तु उनकी प्राप्ति नही कर पाता। वे चारो ओर फैले हुए मृत्यु पाश मे गिर जाता है। (कठ उ ४ १, २)

४—इन्द्रियो का उनके विषयो (रूप रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श) में प्रीति एवं द्वेष स्वभावत् निश्चित है। मनुष्य को उनके वश मे नहीं आना चाहिये। वे मनुष्य के शत्रु हैं। (गीता ३ ३४)

यह सत्य है कि इन्द्रियो के जो स्वभाव सिद्ध व्यापार हैं वे कभी छूट नही सकते हैं। आंख से देखे बिना, कान से सुने बिना नाक से सूंघे बिना, जिह्वा से चखे बिना, त्वचा से स्पर्श किये बिना जीवन का निर्वाह नही चल सकता। इन्द्रिया तथा उनके तत विषय अति आवश्यक है। तो ये विषय किस प्रकार शत्रु है ? स्मरण रहे कि गीताकार ने केवल यह कहा कि मनष्य को विषयो के वश मे पडना नही चाहिए। यह कभी नही कहा है कि विषयो का उचित उपभोग नही करना चाहिये। जब मनष्य विषयों के वश मे पड जाता है तब ही विषय शत्रु बन जाते हैं। उसकी मति को भ्रष्ट कर देते हैं। उदाहरण के लिए जिह्वा इन्द्रिय को ले। यह इन्द्रिय-चखने से बता सकती है कि अमुक वस्तु खाने व पीने के योग्य है कि नही। यदि यह इन्द्रिय मद्य के वश मे आ जावे तो मनुष्य का सर्वस्व नाश हो जाता है। वह रात दिन मद्य मे मस्त रहने लगता है, धन को लुटा देता है। अन्त मे वह विवश होकर चोरी, डाका हत्या आदि कुकर्म करने लग जाता है। ऐसी स्थिति मे रसना का विषय शत्रु बन जाता है। इसी तरह अन्य विषयो में फसने के दुष्ट परिणामो को समझ लेना चाहिए।

इन्द्रिया घोडे हैं और उनके विषय वे मार्ग हैं जिन पर इन्द्रिया रूपी घोडे विचरते हैं। (कठ उ ३-४)। जब मन विचरती हुई इन्द्रियों के पीछे-पीछे चलता रहता है तब उस व्यक्ति की बुद्धि भी हर ली जाती है (गीता २-६७) यह तो निर्विवाद है कि बुद्धि के हर जाने पर मनुष्य का नाश अवश्य हो जाता है। अत मनुष्य को उचित ही है कि वह अपनी इन्द्रियो से उनका उचित व्यापार करता हुआ उनका दास न बन जावे।

५—महात्मा गौतम बुद्ध ने ४० वर्षों की घोर तपस्या के पश्चात मध्य-मार्ग का प्रचार किया जो विषयासक्ती और (बलात्कार) इन्द्रिनिग्रह के दोनो विपरीत अन्तो से पृथक रहने का है। इस मार्ग मे न ही विषयो मे आसक्ती होती है और न ही इन्द्रियो पर अनावश्यक दमन होता है।

गूढ दृष्टि से पता चलता है कि यह कोई नवीन माग नही है। यह तो केवल विषयों के उचित उपभोग का समर्थन करता है। वैदिक ऋषियो ने जीवन के चारो कालो में इस मार्ग पर चलने का विधान किया था। ब्रह्मचर्य आश्रम मे गन्ध, माला, खटाई, आखो मे अञ्जन जूता छाता, नाच, गाना आदि भोग वर्जित किये गए है। ब्रह्मचारी को एकाकी सोना चाहिये और स्त्री का दर्शन नही करना चाहिये (मनु २ १८०)। ब्रह्मचर्य आश्रम ही जीवन की नीव है जिसमे शरीर को बलवान तथा निरोग बनाना होता है। इस लिए इस काल मे उचित प्रतिबन्ध लगाये गये हैं।

गृहस्थाश्रम मे दम्पति को हार श्रृंगार सुख ऐश्वय जीवन का स्वादिष्ट खान पान आदि का पूर्ण अधिकार होता है उनको कठोर कनिष्ट और तप का जीवन नही व्यतीत करना पडता। किन्तु विषयो को भोगते हुए उनको उनमे फसना नही चाहिये इसमे ही उनका कल्याण है।

प्रत्येक व्यक्ति को स्मरण रखना होगा कि—

(क) जैसे अग्नि मे ईन्धन और घी डालने से अग्नि बढती ही जाती है वैसे कामो को भोगने से काम शान्त नही होत किन्तु बढते ही रहते हैं। (मनु)

(ख) कामो के भोगने से काम भोगे नही जाते किन्तु हम ही भोगे जाते हैं। (भर्तृहरि)

बृद्धावस्था (वानप्रस्थ तथा सन्यास आश्रम) मे ब्रह्मचर्य की भाति प्राणि को तप का तथा नियत्रित जीवन व्यतीत करना चाहिये। अपनी इन्द्रियो पर काबू रखना उचित है ताकि प्रमाद से कोई अनुचित कार्य न हो पावे। उसका केवल एक मात्र ध्येय अपना सुधार तथा विश्व का कल्याण होवे।

६—विषयाशक्ति मनुष्य का व्यक्तिगत दोष है। इससे पतन हो जाया करता है। इसके विपरीत पाप कर्म प्राय दूसरो को दुख व कष्ट देने के कारण होते हैं। व्यक्तिगत दोषो से प्राणी इसी जन्म मे दु ख पाते हैं किन्तु पाप कर्मो के फलकर्त्ता को प्राय दूसरे जन्मो मे भोगने पडते है। अत विषयासक्ति तथा पाप कम दोनो त्याजनीय है। विषयासक्त व्यक्ति के लिये पाप से बचना कठिन हो जाता है यह जरूरी नही कि विषयासक्त व्यक्ति पाप कम करता है।

वह अपनी इन्द्रियो के विषयो मे मस्त रहता हुआ पाप से बच कर रह भी सकता है यदि वह सावधान रहे। आखो मे सिनेमा, टेलीविजन नृत्य आदि को देखता हुआ कानो से सुरीले गीत सुनता हुआ, नाक से सुगन्धित वस्तुओ को सूंघता हुआ, जिह्वा से सब प्रकार के स्वादिष्ठ खाद्यो को खाता हुआ और गृहस्थ का मैथुन करता हुआ भी प्राणी दुष्कर्मों से दूर रह सकता है। विषयो का भोगना तथा पाप कर्म करना दो पृथक २ कर्म है। सीमित रूप से विषयो का भोगना दोष नही है। किन्तु पाप कर्म अवश्य त्याज्य है। हा मोक्षार्थी को दोनो से दूर रहना चाहिए।

भारतीय संस्कृति

प्रो० कृष्णलाल भल्ला

भारतीय सस्कृति का स्रोत सस्कृत है। इस सस्कृति को जीवित रखने के लिए सस्कृत का पठन पाठन बहुत जरूरी है। हमारे प्राचीन ग्रन्थ सस्कृत मे हैं इसलिये ठीक ही कहा है—'सस्कृत बिना सस्कृति पगु —

सस्कृत के बिना हमारी सस्कृति लगड़ी है।

सस्कृति का सम्बन्ध सस्कारों से है। अच्छे सस्कार ही श्रेष्ठ समाज की रचना मे सहायक होते हैं। सस्कृति जीवन के सभी पक्षो को परिष्कृत करती है। जिन्होने कड़ी तपस्या और चिन्तन कर के उन परम्पराओं की स्थापना की जिससे हम लौकिक और आध्यात्मिक उन्नति कर सकें।

भारतीय सस्कृति का आधार धर्म है जो हमारे जीवन को सत्य, शिव और सुन्दर बनाता है। मनुष्य सारी आयु सत्य, शिव और सुन्दर की खोज मे लगा रहता है। उसे सफलता चाहे एक जन्म मे भले ही न मिले परन्तु उसका लक्ष्य परमतत्त्व की अनुभूति है जो सत्य, शिव और सुन्दर है।

विचार कर देखें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुचेंगे कि जो सत्य है, वही शिव है, और शिव ही सुन्दर है। जो सत्य के मार्ग पर चलता है उसी को शिव के दर्शन होते हैं और शिव की कृपा से ही जिन्दगी दिव्य बनती है।

शाश्वत धर्म और सत्य मे कोई अन्तर नहीं। सत्य आचार विचार ही आत्म साक्षात्कार मे सहायक होते हैं। हम धर्म मार्ग पर चल कर ही अपना उत्थान कर सकते हैं।

इतिहास मे कई समय ऐसे आए जब हमारा पतन हुआ और साथ ही सस्कृति का ह्रास भी परन्तु ऐसे काल में भी कई सन्त महात्मा तथा वीर पुरुष हमारी सस्कृति को सुरक्षित करने के लिए प्रयत्नशील रहे। वैदिक सस्कृति लाखो वर्षों से चली आरही है। विकट परिस्थियो मे भी यह जीवित रही क्योंकि इसका आधार वेद तथा उपनिषद हैं। परम सत्य एक है लेकिन महापुरुषो ने अपने-अपने ढग से उसकी व्याख्या की है—

'एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'

भारतीयता की भावना ही भारतीय सस्कृति है। यह भावना भारतीय, भाषाई और धार्मिक भेदो के बावजूद हमें परस्पर बाध रखती है। आज के वक्त मे इसी भावना को और दृढ करने की जरूरत है जब कि विघटनकारी शक्तिया जगत् जगह जगह सक्रिय है।

कुछ सज्जनो का मत है कि विज्ञान के इस युग मे सस्कृति का कोई विशेष महत्त्व नही। ऐसी बात नही विज्ञान के सभी अनुसन्धान भी सत्य को जानने के लिए किए जाते हैं ताकि हमारा कल्याण हो और हम अपनी दुनिया को खूबसूरत बना सकें।

वेद के आदेशानुसार भगवान सत्य, शिव और सुन्दर हैं। ससारिक पदार्थों मे हमे जो सत्य, शिव और सुन्दर तत्त्व का आभास थोड़ समय के लिए होता है वह परमात्मा की सत्ता के कारण ही है।

हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी सस्कृति को जानने के लिए सस्कृत पढें और दूसरों को भी ऐसी करने की प्रेरणा करें। हमारी मान्यताए भिन्न-भिन्न हो सकती हैं परन्तु सस्कृति एक है। भारत में कई प्रकार के लोग रहते हैं मगर इस विविधता मे हम सब को जिसने अनेक युगो से इकट्ठा रखा वह वैदिक सस्कृति ही है।

आज जिन परमाणु अस्त्रशस्त्रों के कारण सब दुनिया भयभीत है भारतीय सस्कृति को और भी अधिक अपनाने की आवश्यकता है क्योंकि इस विचार-धारा का मूल सिद्धान्त है—'जियो और जीने दो।

नये प्रकाशन

१—वीर वैरागी लेखक—भाई परमानन्द
कीमत ८) सभा ने केवल ४) कर दी है।

२—Bankim-Tilak-Dayanand by Aurobindo.
कीमत ४) सभा ने केवल २)५० कर दी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सरकार को अल्पसंख्यकों के उत्थान की अधिक चिन्ता

यदि शासनकी यही नीति रही तो अल्पसंख्यक बहुसंख्यक और बहुसंख्यक अल्पसंख्यक हो जायेंगे

भारत सरकार को यदि देश मे किसी के लिये चिन्ता है तो केवल अल्प-सख्यको अर्थात एक सम्प्रदाय विशेष की। उनके उत्थान और विकास के लिये समय-समय पर कुछ न कुछ योजनाए तैयार और कार्यान्वित होती रहती हैं और उनके पूरा करने पर करोडो रुपये भी खर्च किये जाते रहे हैं जबकि बहु-सख्यकों को शांतिपूर्वक जीवन यापन करने की सुविधाओं से भी वंचित रखा जाता है।

उक्त सम्प्रदाय को अब तक भी अनेक क्षेत्रो मे लाभ पहुंचाने और उनको सन्तुष्ट रखने के कई कार्यक्रम चालू किये जा चुके हैं। उसके उपरान्त अभी हाल मे केन्द्र सरकार की ओर से उस समिति की सिफारिश पर जिसके अध्यक्ष स्वय प्रधानमन्त्री राजीव गाधी हैं, सभी राज्य सरकारों से जोरदार अनुरोध किया गया है कि वे अपने-अपने यहा अल्पसख्यको की शिक्षा, सरकारी नौकरियां, धन्धों, रोजमर्रा मे तरजीह देने के प्रश्न को सर्वोच्च स्थान दें।

तदनुसार उत्तर प्रदेश सरकार में तो कार्यक्रमो को कार्यान्वित करने हेतु जो कदम उठाये हैं उनमे उक्त सम्प्रदाय के लोगो वाले जिलो मे धर्मनिरपेक्ष भाव रखने वाले अधिकारी रखे जाने की व्यवस्था की है जो अल्पसख्को की शिकायतो पर दोषी व्यक्तियों को कठोर दण्ड दे। उस सम्प्रदाय के 'साम्प्रदायिक दगों से पीड़ित व्यक्तियो को फौरन वित्तीय सहायता दी जाये।

कार्यक्रम मे यह भी सुनिश्चित किया गया है कि पुलिस कर्मचारियों की भर्ती मे अल्पसख्यकों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाए। इसके लिये जो समिति बने उसमे अल्पसख्यको का प्रतिनिधित्व रखा जाए।

सहकारिता सेवाओं में अल्पसख्यको को उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाये। ऐसे ही औद्योगिक सस्थाओ मे भी उनका विशेष ध्यान रखा जाये।

अल्पसख्यक वर्ग की चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा हेतु चिकित्सालय आदि की विशेष व्यवस्था की जाये। अल्पसख्यकों को आर्थिक सहायता देने के लिये वित्तीय तथा विकास निगम की स्थापना की जायें।

अल्पसख्यको को नौकरी दिलाने के लिये विशेषत खाड़ी क्षेत्रों में भेजने की व्यवस्था की जाये। आदि आदि।

अब प्रश्न उठता है कि अल्पसख्यक वर्ग के लोगो को ये सारी सुविधा देने की योजना पर तो बड़ी मुस्तैदी से कार्यवाही की जा रही है, परन्तु इस देश के बहुसख्यक समुदाय की शिक्षा, रोजगार धन्धो तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं के लिये सरकार ने क्या किया या करने वाली है? इसका कहीं कोई उल्लेख तक नही हुआ? मानों अभागे बहुसख्यक लोग इस देशके नागरिक ही नही है।

सरकार द्वारा अल्पसख्यकों को जिस प्रकार प्रोत्साहन किया जा रहा है उनके द्वारा बड़े से बड़ा अपराध ही नहीं, हत्या अथवा कत्ल करने पर भी उनके प्रति मुलामियत बर्ती जा रही है, जिससे वे स्थान-स्थान पर बहुसख्यक समुदाय के लोगों का नृशस नरसहार कर रहे हैं। उनके मकानो, दुकानों तथा प्रतिष्ठानों को लूटने और उनमे आग लगाने में प्रवृत्त होते हैं और जब दण्ड दिया जाता है तो उसमें बहुसख्यक लोगों को समान रूप से भागीदार बनाया जाता है।

शासन की इस नीतिने यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक होगा, कि यदि शासन की यही नीति रही तो कुछ ही वर्षों में बहुसख्यक अल्पसंख्यक और अल्पसख्यक बहुसख्यक हो जायेंगे।

माथे पर शर्म और शोक

मन और शरीर सबके से सुन्न है। चण्डीगढ से बस मे ऋषिकेश जाते हुए जो चालीस लोग पाच राक्षसो के हाथो मौत के घाट उतार दिए गए उनके लिए समाज की आखो में अब उतने आसू भी नहीं हैं जो कोई चार साल पहले चार लोगो के लिए बहे थे। न खून वैसा खोलता है न आखो मे प्रतिहिंसा की चिनगारिया निकलती हैं। बस को अगुआ करके छिपा जाने और उसके बेकसूर हिन्दू मुसाफिरो को 'पुलिस के हाथो मारे जाने बेकसूर सिखो का बदला' लेने के लिए मार डालने की कबीलाई कारवाईया आतकवादी इतनी बार कर चुके हैं कि अब शोक और शर्म मे घर और दुकान बन्द करके ही बैठा जा सकता है। शोक और शर्म सिफ उन लोगो के लिए नही जो मारे गए। शोक और शर्म उन पुलिस वालो और प्रशासन के लिए भी जो इन राक्षसी करतूतो को रोक नही सकते। शोक और शम उस सिख समाज के लिए भी जो अपनी कोख से ऐसे राक्षस पैदा करता है। शोक और शर्म उन लोगो के लिए भी जो यह जानते हुए भी कि वे मारे जायेगे आतकवादियो पर झपटते नहीं। शोक और शर्म गुरुद्वारो के उन बन्दो के लिए भी जो ऐसे राक्षसीपन के मूक और निर्जीव गवाह होकर रह जाते हैं। जिस बस के चालीस लोग मारे गए उसका ड्राइवर सिख था और बस मे पाच छह और मुसाफिर सिख थे। उन्हें आतकवादियो ने जाने को कहा और वे जानते हुए भी कि इसके बाद क्या होगा बिना कुछ किए चले गए। ढिलवा पकड से लेकर लहरु खालड़ा के सारे नरसहार हमारे समाज के माथे पर शर्म और शोक से पुती कालिख है।

लेकिन इसके साथ जीने के अलावा चारा क्या है? पजाब पुलिस और प्रशासन के निकम्मेपन पर चिल्लाते हुए छह साल हो गए। एक बार सैनिक कार्रवाई के जरिए आतकवाद का गढ तोड दिया गया। दो बार राष्ट्रपति शासन लगाकर देख लिया और एक बार समझौता करके चुनाव के जरिए लोकप्रिय सरकार को कमान सौंप दी गई। लेकिन ऐसी कोई जादू की छडी नही है जो इस आतकवादी पागलपन को देखते देखते रोक सके। आतकवादियो ने हिन्दू और सिख दोनो समाजो को दहशत मे डाल रखा है। जो पुलिस वाले अपना कत्तव्य करते हैं उन्हें और उनको नही तो उनके घर वालो को मार कर धमका रखा है। सिख समाज मे ऐसे नेताओ की कमी नही जो पुलिस और सुरक्षावलो की कडी कारवाई को साम्प्रदायिकता के रग मे न रगे। स्थानीय पुलिस की पूरी चौकसी और मदद हो तो भी आतकवाद के खिलाफ ऐसी कोई कार्रवाई नही हो सकती जिसमे सिर्फ आतकवादी ही मारे जाते हो। और फिर आतकवादियो को भी 'बेकसूर सिख'' बताने वालो की भी कमी नहीं है। ऐसी हालत मे पुलिस और आतकवादियो के बीच दनादन चलती रहेगी और दोनो की गोलियो से बेकसूर मारे जायेगे।

तो फिर क्या रिबेरो को कह दिया जाए कि वे चुप हो ... जाए क्योकि उन पाच राक्षसो ने गोलियां चलाने के पहले कहा कि देखते हैं रिबेरो तुमको कब तक हमसे बचाता है? क्या ऐसे लोगो से बातचीत की जा सकती है जो बन्दूक के बल पर और बेकसूरो को मारते हुए खालिस्तान बनाना चाहते है? और मान लीजिए आज जो खालिस्तान की माग छोड कर बात कर भी ल और सरकार भी बना ल तो इसका क्या भरोसा कि कल दूसरे लोग बन्दूक लेकर यही सब नही करेगे। पिछले छह साल की घटनाए यह साबित करने के लिए काफी हैं कि पजाब मे आतकवाद एक समान्तर खूनी साजिश है जो कभी पन्थ तो कभी राजनीति की ढाल लेकर चलती है। कोई सिख धार्मिक नेता ऐसे नरसहारो को सच्चे सिखो का काम नहीं बताता, लेकिन उनमे से कोई भी आतकवादियो को धार्मिक स्थलो मे शरण लेने से रोक नही सकता। सिख समाज भी ऐसे नरसहार पर शोक और शर्म महसूस करता है। लेकिन वह अपनी बहादुरी अपने इन कायरो के सामने नही दिखा पाता। और सिख समाज और धार्मिक राजनतिक नेताओ के सक्रिय और साहसिक सहयोग के बिना आतकवाद से निपटा नही जा सकता। जब तक आम सिख और हिन्दू एक होकर पुलिस और प्रशासन की मदद नही करेगे बेकसूर मरते रहेगे। यह शोक गहराता रहेगा और सिखो के माथों पर शर्म की कालिख पुती रहेगी। यह कालिख वही खून है जो सोमवार की रात हरियाणा रोडवेज की बस मे फैल गया था। आप कमर कसने को तैयार हैं। शम की यह कालिख पोछने के लिए निश्चित मानिए आतकवाद के खिलाफ लडाई लम्बी चलेगी और अभी कई बेकसूर और मारे जायगे। लेकिन हम एक मजबूत राष्ट्र होकर तभी रह सकते है जब माथे से शर्म का यह कलक पोछ दे।

(जनसत्ता से साभार)

मेरठ में दंगा पीड़ित हिन्दुओं की रक्षा हेतु दान की अपील

मेरठ मे हुये दगो के उपरान्त वहां के हिन्दुओ की अतुलनीय क्षति हुई है। हजारो लोगो के रोजगार बन्द हो गये हैं। हरिजनो एव पिछडी जाति के लोगो की रोटी की समस्या उत्पन्न हो गई है। जिसके लिए सैंकडो मन आटा दाल चीनी एव अन्य आवश्यक सामग्री की आवश्यकता है। जिसकी पूर्ति की हेतु उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज की अध्यक्षता मे आर्य समाज मेरठ में एक सहायता कैम्प खोला गया है जिसके माध्यम से हरिजन एव गरीब व्यक्तियो के घरों मे आटा दाल चीनी दवाईया पहुँचाई जा रही हैं। समस्त हिन्दू जनता से निवेदन है कि हिन्दू आत्म रक्षा हेतु दिल खोल कर दान दें। दान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली ११०००२ के पते पर भेजें। हमे जो राशि दान में प्राप्त होगी उसे आर्य समाज मेरठ को भेज दिया जायेगा।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

आर्य जगत् के समाचार

गंगा बाबू की स्मृति में स्मारक निर्माण का निर्णय

रांची २६ जून । सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री गंगाप्रसाद बुधिया के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आज सायं गोविन्द भवन में रांची के नागरिकों की एक सभा हुई । सभा में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि श्री गंगाबाबू की सेवाओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने हेतु उनकी स्मृति में एक उपयुक्त स्मारक बनाया जाए । सर्वसम्मति से पारित एक प्रस्ताव में कहा गया है कि शहीद चौक से मारवाड़ी टोला, महावीर चौक होते हुए रात रोड मोड़ तक के मार्ग का नाम 'गंगाप्रसाद बुधिया मार्ग रखा जाए ।

इस प्रस्ताव के बारे में सर्वसम्मति से यह निर्णय हुआ कि इस क्षेत्र के नागरिकों से निवेदन किया जाय कि वे कल से ही इस मार्ग के नये नामकरण को अपने हर कार्य में प्रयोग करना शुरु कर दें ।

इसके लिए अन्य आवश्यक एवं उचित वैधानिक कारंवाई का प्रयास भी जारी रहेगा ।

एक अन्य प्रस्ताव में श्री बुधिया के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई तथा शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट की गई ।

शोक सभा की अध्यक्षता श्री गयाप्रसाद चौधरी ने की ।

मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी युवा मंच, माहेश्वरी सभा, आर्य समाज, नागरमल मोदी सेवा सदन, अग्रवाल सभा, चौधरी सेवा समिति, रांची होजरी विक्रेता संघ, रांची थोक विक्रेता संघ, रांची थोक विक्रेता सघ, रांची थोक खाद्य व्यापार संघ, छोटानागपुर चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इ डस्ट्रीज, आदर्श रामायण प्रचार मंडल, मारवाड़ी सहायक समिति के पदाधिकारियों के अलावा सर्वश्री आत्माराम शाह, सरदार अवतारसिंह आजाद, सत्यनारायण बजाज, हीरालाल साहू, पार्षद शालिग्राम गाड़ोदिया, पार्षद रतनेश कुमार जैन एवं भागचन्द पोद्दार ने भी गंगा बाबू के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलियां इस सभा में दी ।

इस सभा का सचालन श्री धर्मचन्द बजाज ने किया । मारवाडी कालेज, रांची, संस्कृत सेवक संघ रांची कला संगम, रांची चैती दुर्गा पूजा समिति, राची भारतीय जनता युवा मोर्चा बिहार प्रदेश, शिक्षकेत्तर कर्मचारी संघ, डा० राममनोहर लोहिया कालेज, नन्दलाल शर्मा, रांची जिला कौमी एकता कमेटी अपर बाजार प्रखण्ड, इण्डियन जेसीज, रांची ने भी श्री गंगाप्रसाद बुधिया के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है ।

वैदिक संध्या वर्ग

खामगाव । दिनांक १-७-८७ आर्य समाज खामगांव (महाराष्ट्र) द्वारा वैदिक सध्या शिक्षण वर्ग दिनाक २१-६-८७ से दिनांक ३०-६-८७ पर्यन्त सम्पन्न हुआ । इसमें ४ बालक तथा ४ वयस्क प्रौढ़ों ने नियमित रूप से सफलतापूर्वक वैदिक संध्या शिक्षा ग्रहण की, इसलिये उन्हें प्रमाणपत्र भी दिये गये हैं ।

—वसिष्ठ आर्य, मन्त्री
आर्य समाज, खामगांव

महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय की मांग

आर्य समाज गुमानपुरा कोटा ने एक प्रस्ताव पारित करके शासन से मांग की है कि वह महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाणस्थली व उनके पवित्र सेवा कार्यों की सेवास्थली का ध्यान रखते हुए अजमेर में खुलने वाले विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय रखे । इस आशय का आश्वासन निर्वाण शताब्दी पर श्रीमती इन्दिरा गांधी अपने भाषण में दे चुकी हैं ।

आर्य वीर दल शिविर

जालन्धर १६ जून से २१ जून तक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पंजाब का एक शिविर आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में लगाया गया । ५० आर्य वीर शिविर में सम्मिलित हुए । यह बच्चे, जालन्धर, गुरदासपुर, लुधियाना, करतारपुर की आर्य समाजों से आए थे । शिविर का संचालन श्री सत्यपाल जी आर्य व श्री सुखदेव जी शास्त्री ने किया था । बच्चों के भोजन एवं आवास का प्रबन्ध निःशुल्क था । समापन (दीक्षा) समारोह की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने की । बच्चे प्रेरणा लेकर गए और अपने-अपने स्थान पर जाकर अन्य बच्चों को सिखाने की प्रतिज्ञा भी कराई गई । बौद्धिक प्रशिक्षण स्थानीय विद्वानों द्वारा दिलवाया जाता रहा ।

शिविर मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले आर्य वीरों को एक-एक बंध और हर आर्य वीर को एक बनियान एक एक खाकी नीकर, एक सफेद टी शर्ट और शिविर मे प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र दिया गया ।

शिविर का प्रबन्ध बहुत अच्छा रहा और उसका प्रभाव स्थायी रूप से जनता पर पड़ा । पंजाब में अन्य स्थानों पर भी शिविर लगाने की योजनायें बनाई जा रही हैं ।

—ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा महामन्त्री

करौरा (बुलन्दशहर) में शुद्धि

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०) बुलन्दशहर द्वारा आयोजित जिला आर्य सम्मेलन के अवसर पर आदर्श वैदिक इन्टर कालेज 'करौरा' २५ जून ८७ को शुद्धि सम्मेलन का आयोजन हाथरस के ब्लाक प्रमुख श्री ठा० विक्रम सिंह जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ ।

इस अवसर पर पुनरावर्तित जनों का शानदार सम्मान किया गया । तथा श्री प० शिवचरनलाल गौतम के योगदान से अटेरना निवासी श्री 'नूरमोहम्मद' को यज्ञवेदी पर विधिवत् यज्ञोपवीत देकर "महावीरसिंह" बनाया गया ।

—धर्मेन्द्र शास्त्री
संयोजक

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज संगरूर का वार्षिक निर्वाचन

प्रधान—श्री सुरेन्द्रपाल गुप्ता
मन्त्री— श्री अशोक आर्य चुने गए

संगरूर समाज के नवनिर्वाचित शीर्षक बनायें अधिकारी वर्ग ने यज्ञवेदी पर अपनी कर्तव्य निष्ठा व कर्मठता की शपथ ग्रहण की यह एक आदर्श उदाहरण है । आर्य समाजों को भी इसका अनुकरण करना चाहिए ।

आर्य समाज गुमानपुरा कोटा
आगामी वर्ष के लिए निम्न पदाधिकारी चुने गए,

प्रधान—श्री शान्ताप्रसाद अग्रवाल
मन्त्री—श्री महेन्द्रसिंह सिद्धान्ती अयी

१७ व्यक्ति वैदिक धर्मी बने

मदुराई ९ जून । आर्य समाज के प्रयत्नो से मुस्लिम परिवारों के १६ व्यक्ति १ ईसाई कुल १७ व्यक्तिओं ने वैदिक धर्म स्वीकार किया ।

आर्य वीर देश की अखण्डता के लिये कार्य करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्य वीर दल का दस दिवसीय प्रशिक्षण शिविर समारोह १५ जून, ८७ को गुरुकुल एटा में सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने आर्य वीरो को देश की एकता व अखण्डता के सजग प्रहरी बताते हुये कहा कि उन्हे आर्य समाज की श्रेष्ठ परम्परा के अनुसार देश की रक्षा के लिये आगे बढकर कार्य करना चाहिये। उन्होने आगे कहा कि आर्य वीरो को न केवल बुराईयो एव मादक पदार्थो के सेवन से स्वय बचना है अपितु देश के दूसरे युवको को भी इनसे बचने के लिये प्रेरणा देनी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री प० राजगुरु शर्मा ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य वीरो को आर्य सभ्यता व संस्कृति तथा वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहना है। डा० महेश विद्यालकार, गुरुकुल के आचार्य श्री वागीश कुमार दिल्ली आर्य प्रान्तीय सभा की मन्त्राणी श्रीमती प्रकाशवती आय, श्री रामचन्द्र शर्मा, श्री जयप्रकाश आर्य आदि ने भी जनता को सम्बोधित करते हुये आर्य वीर दल को सुदृढ करने की अपील की।

समारोह की अध्यक्षता कर्मठ नेता श्री रामलाल मलिक ने की।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान श्री बालदिवाकर हस ने १२ जून को आर्य वीरो को सम्बोधित करते हुये उन्हे त्याग व निस्वार्थ भाव से समाज व राष्ट्र की सेवा करने का आह्वान किया। समापन समारोह मे श्री प्रकाशचन्द एडवोकेट ने ३८ प्रशिक्षित आर्य वीरो को प्रमाण पत्र व पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। इस प्रशिक्षण शिविर को सफल बनाने मे सवश्री ओमवीर शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री, खुशीराम शर्मा, एव अधिष्ठाता प्रियतमदास रसवन्त ने विशेष योगदान दिया। —विमलकान्त शर्मा

वैदिक विवाह सम्पन्न

२३-६-८७ को आर्यसमाज मोतिहारी के प्रधान डा० एस०पी० सिंह की लडकी की शादी वैदिक रीत्यानुसार बहुत धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुई। वैवाहिक सम्पूर्ण कृत्य प० गगाधर शास्त्री (पटना) एम०बी०के० शास्त्री (रक्सौल) ने सम्पन्न कराया।

—मन्त्री चम्पारण जिला आर्य सभा

६४० ईसाई वैदिक धर्म में दीक्षित

माता कौशल्यादेवी जी की तपस्या फलीभूत

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एव विदर्भ की अध्यक्षा श्रीमती माता कौशल्यादेवी ने बताया दी है कि सभा के उपदेशको के भागीरथ प्रयत्न स्वरूप देवगढ व रायगढ जि० के नेलुंगा ग्राम के यज्ञ व सम्मेन मे क्षेत्र के ६४० व्यक्तियो ने जो ईसाई हो चुके थ जिनमे कुछ २-३ पीढी के पुराने ईसाई थे, वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण करी है। यह धर्मरक्षा महायज्ञ २३ मई को तीन दिवसीय सम्मेलन मे सम्पन्न हुआ। इस महानयज्ञ मे उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वा० धर्मानन्द जी, प० वासुदेव शास्त्री, प० वेदव्यास एव प० सेवकराम जी ने भाग लिए। सामूहिक वैदिक प्रार्थना के साथ यज्ञोपवीत धारण किया। यज्ञकुण्ड के समीप ही अभिमन्त्रित जल से शुद्धिकरण हुआ तथा शुद्ध हुए बन्धुओ के हाथ से प्रसाद वितरण हुआ।

धर्मान्तरण की इतनी बडी सख्या इस क्षेत्र की पहली घटना है।

वेद सप्ताह

आर्य समाज करोलबाग, नई दिल्ली के तत्वावधान मे वेद सप्ताह, रक्षा बन्धन, सस्कृत दिवस दि० २ अगस्त रविवार मे १६ अगस्त रविवार १९८७ तक बडी धूम धाम से मनाया जाना निश्चित हुआ है जिसमे स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, प० यशपाल जी सुधांशु ब्रह्मचारी गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली, श्री वीरेन्द्र जी मालिक प्रताप जालन्धर, श्री प्रेमपाल जी शास्त्री, श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री पुरुषोत्तम जी एम० ए०, डा० धर्मपाल जी मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी स्वरुपानन्द जी, श्री क्षितीश जी वेदालकार आदि अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे।

एक हिन्दी भाषा भाषी दक्षिणी प्रायः द्वीप

रामेश्वरम। भारत के दक्षिण भाग मे जहा हिन्दी विरोधी समुद्र ठाठे मारता रहता है "रामेश्वरम्" एक हिन्दी भाषा भाषी प्राय द्वीप बन गया है। कारण कि वहा आने वाले ५ लाख यात्रियो मे से ७० प्रतिशत उत्तर भारतीय हैं। वहा के लोगो का हिन्दी जानना अनिवार्य है। वहा के व्यापारी, होटल मालिक पुजारी, मन्दिरो के कर्मचारी एव पथ प्रदर्शक सभी हिन्दी के बिना अपना काम नही चला सकते।

रामेश्वरम के सभी साइन बोर्डो पर तमिल व अग्रेजी भाषा के अतिरिक्त देव नागरी का प्रयोग आवश्यक है। यहा तक कि राजकीय मार्थो पोण्डियन स्थानीय बसें अपने साकेतिक बोर्डों पर हिन्दी मे ही नामाकन करती है।

"रामेश्वरम का सारा अर्थतन्त्र प्राय उत्तर भारत से आने वाले लाखो यात्रियो द्वारा होने वाली आय पर टिका है अत हम तामिलनाडु के अन्य हिन्दी विरोधियो की भाति अपना व्यवहार नही बना सकते" यह शब्द एक होटल मालिक ने कहे। (हिन्दुस्तान टाइम्स)

त्रिभाषा-सूत्र कैसा हो ?

भारत की (हिन्दी, असमिया, बगला, गुजराती, कन्नड, कश्मीरी, मलयालम, मराठी उडिया, पजाबी, सिन्धी, तमिल, तेलगू उर्दू, सस्कृत और कोकणी) १६ मान्य भाषाये हैं। सस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। सस्कृत के ज्ञान से सभी भाषायें एक दूसरे के समीप आती हैं। सभी मनीषी निम्नलिखित त्रिभाषा सूत्र पर विचार करें —

१—(हिन्दी+सस्कृत) एक भाषा के रूप मे,

२—अग्रेजी अथवा अन्य भाषा,

३—भारत की शेष भाषाओ मे कोई एक।

उक्त सूत्र कक्षा ६ से १२ तक लागू किया जाय। आगे की कक्षाओ मे हिन्दी एव सस्कृत अलग-अलग पढने की सुविधा हो।

— गुरुकुलानन्द सरस्वती

प्रशिक्षण शिविर

१८ से २१ जून तक 'प्रकाश कोल्ड स्टोरेज जमुईचुनार मीरजापुर मे मण्डल आर्य वीर दल मीरजापुर द्वारा श्री बचनसिह अधिष्ठाता की अध्यक्षता मे एक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमे ४० आर्य वीर दल व अधिकारियो भाग ने लिया।

आर्य समाज रजपुरा बदायूं

को श्री सुन्दरलाल आने अपनी १५० मीटर भूमि आर्य समाज मन्दिर बनाने के लिए दान दी है। —शिवकुमार आर्य, मन्त्री

र्जि॰ न॰ डी॰ (डी॰) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक ,८-७ (१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न॰ U ९२
R N 626/57 Licensed to post without payment Licence No. U 93 Post in D.P.S.O. on 17 7 1987

चुनाव सम्पन्न

—आर्य समाज, अनाज मण्डी, शाहदरा दिल्ली २ प्रधान—श्री हरपाल सिंह मन्त्री—श्री श्रद्धानन्द कोषाध्यक्ष—श्री लतराम आर्य।

—आर्य समाज जगपुरा भोगल का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ। प्रधान—डा॰ जे पी गुप्ता, मन्त्री—श्री पन्नालाल खुराना।

—आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी प्रधान—श्री कमला कान्त मन्त्री श्री रामगोपाल आर्य।

—आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली प्रधान श्री देसराज सेठी, मन्त्री श्री तिलकराज पुरी।

—महिला आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली प्रधान श्रीमती राम चमेली देवी मन्त्राणी श्रीमती राज पाण्ड।

—आर्य समाज जालना प्रधान श्री फूलचन्द अग्रवाल मन्त्री श्री शंकर लाल आर्य।

—आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद प्रधान—श्री केदारनाथ जी आनन्द, मन्त्री—श्री जयचन्द आर्य।

—आर्य समाज शाहपुरा जिला भीलवाड़ा आजीवन संरक्षक—श्रीमान राजाधिराज सुदर्शन देव जी प्रधान—श्री बंशीलाल जी छीपा मन्त्री—श्री बंशीलाल जी सोनी-हैदराबाद सत्याग्रही।

शोक समाचार

—आर्य समाज गया (बिहार) के कर्मठ प्रधान श्री प्रयाग नारायण जी का निधन हो गया। वे आर्यसमाज के स्तम्भ थे प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—जगदम्बा प्रसाद मन्त्री

—आर्य समाज बारा (कोटा) राजस्थान प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री व आर्य समाज बारा के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री सियावर शरण का देहान्त हो गया। आर्य समाज को महान क्षति अनुभव हुई है। प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—रामकरण गुप्ता मन्त्री

योग साधना शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ (रोहतक) द्वारा २७ जून से ७ जुलाई तक स्वा॰ धर्ममुनि जी की अध्यक्षता में योगसाधना शिविर मनाया गया। ज्वालापुर के स्वामी दिव्यानन्द जी व गाजियाबाद के स्वामी प्रेमानन्द जी ने आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया।

आश्रम-सेवा के लिए आह्वान

गृहस्थ से विरक्त (समाज से नहीं) स्वस्थ काम सुशील दफ्तर के साधारण कामकाज अथवा हिसाब किताब में दक्ष पेंशनर जो उपयोगी विरक्त जीवन व्यतीत करना चाहते हों सम्पर्क करें।

शुद्ध सात्विक आश्रम वातावरण में निःशुल्क निवासादि उपलब्ध। सम्पर्क मन्त्री वेद संस्थान सी २२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली २

दूरभाष ५०२३'६ ५३०२२०

छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा रांची

की स्थापना प॰ जयमंगल शर्मा की अध्यक्षता में ३१ मई ८७ को की गई जिसके प्रधान पं॰ जयमंगल शर्मा व मन्त्री श्री दयाराम पोद्दार चुने गए। सभा कार्यालय आर्य समाज मन्दिर रांची में ही रहेगा। सभा का विधिवत पंजीकरण कराने की व्यवस्था की जा रही है। आगामी रथयात्रा के अवसर सभा जगन्नाथपुरी में प्रचार कैम्प लगाएगी।

— गोविन्द प्रसाद शास्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

राष्ट्र को देवता मानो

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] वर्ष २२ अंक ३०]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
श्रावण शु० १ स० २०४४ रविवार २६ जुलाई १९८७

दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

अहमदी मुसलमानों पर पाक में अत्याचार

१३० मस्जिदें नापाक, ४ मस्जिद सील, २ मस्जिदें लूटीं १ मस्जिद जलाई १३५ पुस्तकें जब्त

कादिया (गुरदासपुर) १७ जुलाई (भाषा) भारत के अहमदिया मुसलमानो ने आज पूरे विश्व के सभ्य राष्ट्रो से अपील की कि वे पाकिस्तान के अहमदिया मुसलमानो को जुल्म से बचाए ।

सदर अंजुम ने अहमदिया द्वारा यहा स्थित मुख्यालय मे मानव अधिकार आयोग को दिए ज्ञापन मे कहा गया कि अहमदिया मुसलमानो पर पाक सरकार के बढते जुल्म, अत्याचार मानव अधिकारो के हनन की मिसाल हैं ।

ज्ञापन मे आयोग से अनुरोध किया गया कि वह पाकिस्तान सरकार को १९८४ का 'अध्यादेश' वापस लेने के लिए राजी करे और उसे धार्मिक रंगभेद की नीति पर चलने से रोके ताकि पाकि- मे अल्पसख्यको के हितो की रक्षा हो सके ।

यह ज्ञापन मानव अधिकार आयोग के उप आयोग के सदस्य एम०सी० भडारे को भेजा गया है। उनसे अनुरोध किया गया है कि वह इसे आयोग को प्रस्तुत करे ।

पाकिस्तान मे अहमदिया मुसलमानो की दुर्दशा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि छब्बीस अप्रैल, १९८४ को अध्यादेश लागू होने के बाद आततायियो ने एक महिला सहित चौदह अहमदिया मुसलमानो की हत्या कर दी, तीन सौ इकतालीस लोगो को काले बिल्ले धारण करने पर जेल मे डाल दिया एक सौ तीस मस्जिदो को नापाक किया दो मस्जिदो को सील कर दिया, एक मस्जिद जला दी अजान करने के कारण छह व्यक्तियो पर मुकदमा दायर किया। एक सौ पतीस धार्मिक किताबें जब्त कर ली और एकमात्र अहमदिया अखबार पर प्रतिबन्ध लगा दिया ।

वेदामृत

वेद वाणी के लिए तप

ओ३म् अग्नेतपस्तप्यामहे उपतप्यामहे तपः ।
श्रुतानि शृण्वन्तो वयम् आयुष्मन्तः सुमेधसः ॥

अथर्व० ७ । ६१ । ८ ॥

(अग्ने) हे अग्निस्वरूप प्रभु (तपः तप्यामहे) हम बौद्धिक साधना रूपी तपस्या करते है (तप उप तप्यामहे) इस तप को सफल बनाने के सभी साधनो रूपी तपस्या को भी करते हैं। (वयम् श्रुतानि शृण्वन्त) हम निरन्तर वेद शास्त्रो का गुरुमुख से पाठ सुनते हुए (आयुष्मन्त) दीर्घायु सफल आयवाले (सुमेधस) विवेकशील बुद्धि मत्ता पूर्वक (स्याम) जीवन बिताए

जीवन की सफलता व जीवन पथ की वास्तविक प्राप्ति के लिए परिश्रम तपस्यापूर्वक जीवनचर्या परमावश्यक जीवनदर्शन का ज्ञान तो गुरुओ के भी गुरु प्रभु प्यारे की कल्याणी वाणी द्वारा ही होगा । देवदयानन्द ने तभी घोर तपस्या पूर्वक विद्योपार्जन कर वेद माता की सच्ची सेवा की । ऐसी तपस्या से ही जीवन मे सार्थकता प्राप्त हो सकती है। प्रभु हमे हमारी साधना की प्रेरणा व सहारा दे ।

(आचार्य) शिवराज शास्त्री एम०ए०

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

तीन विदेशी पादरियों को भारत छोड़ने के आदेश

भोपाल १३ जुलाई । मध्य प्रदेश के सरगुजा जिले के तीन पादरियो को ३१ जुलाई तक भारत छोडने के आदेश दिये गये हैं। केन्द्र सरकारसे तसदीक होने के बाद देश निकाले के आदेश सरगुजा के पुलिस कप्तान ने जारी किये। जबकि छत्तीसगढ के दूसरे तीन पादरियो का देश मे रुकने का समय एकबार फिर ३१ दिसम्बर, १९८७ तक बढा दिया गया है ।

रामगढ और सरगुजा जिले मे सक्रिय छह विदेशी पादरियो को आदिवासियो के बीच शक पैदा करने वाली हरकतो के कारण जुलाई १९८५ और अक्तूबर, १९८५ मे देश निकाले के आदेश दिए गए थे । लेकिन कई दबावो के कारण यह आदेश कभी तीन महीने और कभी छह महीने चुपचाप बढाये जाते रहे । यहा तक कि १९८६मे इनमे से चार पादरियो को बेल्जियम सरकार ने नए पासपोर्ट जारी किए तो भारत सरकार ने बगैर एतराज वीजा दे दिया । (शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक – सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज सत्याग्रहियों के लिए पेंशन की स्वीकृति

फायल न० १३५ (१) पोलिसी ११।।८६ यू०एस० सैल
भारत सरकार, गृहमन्त्रालय, नई दिल्ली-११०००१
१० ७ ८७

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
अध्यक्ष गैर सरकारी उप समिति (आर्य समाज)
वास्ते आय समाज सत्याग्रह १९३८ ३९
सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

महोदय

सन १९३८-३९ के दौरान हैदराबाद रियासत मे आर्य समाज आदोलन मे भाग लेने वालो को कुछ और सुविधाए देने के सम्बन्ध मे प्रधान मन्त्री को भेजे गए अपने पत्र २५ मई १९८७ का अवलोकन करें।

(२) आपने अपने पत्र मे महिलाओ एव अनुसूचित जातियो अनुसूचित वर्गों के स्वतन्त्रता सेनानियो के मामलों मे केवल तीन मास के कारावास के मामले मे पेंशन के लिए आधार मानने के विषय मे जो मुद्दा उठाया है, उसके सम्बन्ध मे मेरा ख्याल है कि पहले भी इस सवाल पर विचार हो चुका है। परन्तु सामान्य राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आदोलन मे भाग लेने वालो के लिए निर्धारित अवधि से कम कारावास को आधार नही स्वीकार किया गया है। आपने आय प्रतिनिधि सभा द्वारा ३० जून, १९८६ से पूर्व प्राप्त २१४१ प्रार्थना-पत्रो को आपके पास जाच के लिए भेजने के बारे मे जो कहा है, उसके बारे मे मुझे यह कहना है कि इस मन्त्रालय को ऐसे व्यक्तियो के केवल नाम भेजे गए थे। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि उक्त प्रार्थना पत्रों को आवश्यक जाच पड़ताल और निपटाने के लिए इस मन्त्रालय को भेजिए।

(३) ऐसा लगता है कि कमेटी को विचारार्थ भेजे जाने वाले आवेदन पत्रो की श्रणी के सम्बन्ध मे कुछ गलत फहमी है। इस सम्बन्ध मे इस कमेटी के विचाराथ विषय सम्बन्धी पैरा ४ को देख लेना उचित होगा जो कि आपके अवलोकनाथ नीचे उद्धृत किया जाता है—

'इसलिए यह निष्कष निकलता है कि बाकी बचे वे प्रार्थना पत्र जिनमे कारावास की यातना का कोई रिकार्ड नही मिल रहा है, च हे वह बहुत समय बीत जाने के कारण या अन्य कारणो से हो, ऐसे मामले कमेटी के सामने रखे जायगे। इसके अनुसार हमने सम्बन्धित राज्य अधिकारियो को लिखकर जेल रिकार्डों की सम्पुष्टि का काम हाथ में लिया हुआ है। परन्तु यह केवल हमे यहा समय पर प्राप्त आवेदन पत्रो के बारे मे किया गया है। इसके साथ ही हम उन मामलो की भी जाच कर रहे हैं जिनमे यातनाओ के अभिनेख मिल गए हैं और ऐसे कुछ मामलो मे जिनमें कारावास का खण्ड ६ मास या उससे अधिक रहा हो और वस्तुत पाच मास या उससे अधिक जेल मे रहे हो। ऐसे कुछ मामलो मे तेजी लाने के लिए हमने कुछ निणय लिए हैं और आशा है इससे प्रगति बहुत जल्दी होगी

(४) इसके अलावा जिन मामलों मे जेल के रिकार्ड नही मिल रहे हैं या अधूरे हैं, ऐसे मामलो मे आपकी कमेटी को पूरी तरह साथ लेने पर विचार हो रहा है। ऐसे मामलो की जाच और सिफारिश के लिए आपकी कमेटी को भेजने योग्य मामलो को अलग से छटवा रहे हैं। इस काम में लगभग एक मास लगेगा। इस बीच आप कृपा करके हमारे साथ चलें।

आर्य समाज के मामलो को जल्दी से निबटाने के लिए हम आपके सुझावो का स्वागत करते हैं। आप इस बारे मे या तो मुझे लिखिए अथवा यहा पधारने का कष्ट करें।

भवदीय
ह० एस० एस० शर्मा
सयुक्त सचिव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली-११०००२

दिनाक २५-५ ८७

माननीय श्री राजीव गाधी जी
प्रधानमन्त्री भारत सरकार
नई दिल्ली

सेवा मे सादर नमस्ते!

आपकी सेवा मे निवेदन है कि भारत सरकार ने लगभग ४८ वर्ष के पश्चात् आय सत्याग्रह १९३८-३९ के सत्याग्रहियो को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित किया है और सत्याग्रहियो के मामलो को निपटाने के लिए एक ७ सदस्यीय गैर सरकारी कमेटी का गठन किया है।

अब तक समिति की कई बैठक हो चुकी है। किन्तु बहुत ही आश्चय और खेद है कि समिति के सुझावो पर गृहमन्त्रालय का सम्बद्ध विभाग ध्यान नही दे रहा है अपितु नई नई समस्याय पैदा कर रहा है।

विदित हो कि उक्त सत्याग्रह मे लगभग २८ हजार सत्याग्रही सम्मिलित हुए थे। किन्तु अब तक बहुत सारे लोग मर चुके है। केवल २१४२ जीवित सत्याग्रहियो की सूची हमने गृहमन्त्रालय को भेजी है उसमे भी वृद्धावस्था के कारण काफी लोग कम हो चुके हैं।

हमारा निवेदन है कि इस मामले मे आप विशेष रूप से हस्तक्षप करे और गृहमन्त्रालय के स्वत त्रता सेनानी विभाग को निर्देश कर कि वह समिति के परामश को स्वीकार करके इस मामले को निपटाने मे उसका सहयोग कर। आशा है आपके हस्तक्षप से वृद्ध आय सत्याग्रही और विधवाओ को बडी राहत प्राप्त होगी और जीवन के शेष दिन अच्छी प्रकार व्यतीत कर सकेंगे।

शुभ कामनाओ सहित

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
चैयरमैन
गैर सरकारी स्क्रीनिंग कमेटी

भारत छोड़ने के आदेश

(पृष्ठ १ का शेष)

जिन तीन पादरियो को देश निकाले के आदेश दिए गए हैं। उनके नाम हैं लईम दरेडट ६३ वोई जीटर (६३) और श्रीमती एसजे जीटर फादर रडट बल्जियम के नागरिक है और श्री और श्रीमती जीटर अमेरिकन।

सूत्रो का कहना है कि सरगुजा के पुलिस कप्तान ने भोपाल पुलिस मुख्यालय को हर बार चेतावनी भेजी थी कि इन विदेशी पादरियो के देश मे रहने का समय न बढाया जावे। ये उराव जाति के आदिवासियो का बडे पैमाने पर धम परिवतन कर रहे हैं। और सरकारी सूत्रो के मुताबिक सरगुजा और रायगढ के उराव जाति के ९० फीसदी आदिवासियो का धम परिवतन किया जा चुका है। पिछले दिनो भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कोषाध्यक्ष कैलाश सारग ने आरोप लगाया था कि सोनिया गाधी के दबाव में विदेशी पादरियो का समय बढाया जा रहा है।

बेल्जियम के नागरिक फादर रेडट १९७४ से मध्य प्रदेश मे हैं। उन्होने अपना पेशा सामाजिक काम करना बताया है। १९ ६ मे वहा की सरकार ने उन्हे पासपोट के न० ०२९६७९ जारी किया जिसकी मियाद १९९१ तक है। फादर रेडट का वीजा न० ३४४ है। अमेरिकी नागरिक श्री और श्रीमती जीटर सीटपुर सरगुजा जिले मे सक्रिय हैं। बोई जीटर का पासपोट १९८३ से जारी हुआ और मियाद १९८८ तक थी। उनका पासपोर्ट नम्बर २८७५९७०१ और मारथ्टी क्राइस्ट चच मिशन इण्डिया बिलासपुर की है। १९४८ से हिन्दुस्तान के अलग अलग हिस्सो में रह रहे फादर जीटर १९८४ मे सरगुजा आये। उन्होने अपना पेशा कम्प्यूटर सलाहकार और मिशन स्कूल मे कम्प्यूटर टेकनालोजी पढ ना बत या। उनकी पत्नी एसजे जीटर नम्बर २४७५९७०१ और वीसा नम्बर ५९८० है। उन्होंने अपना पेशा होस्टल अधीक्षक बताया है। जिन तीन विदेशी पादरियो के देश निकाले को ३१सित० तक स्थगित कर दिया गया है उनके नाम हैं—फांसिस जान बैचीन (८०) लुक वसट्रेट (६८)और जाक सोमर्स (६७)तीनो बेल्जियम के नागरिक है।

फादर सोमस १९४८ से हिन्दुस्तान मे हैं। निर्मला आश्रम सरगुजा के एक पते पर उन्होने सामाजिक शिक्षा और धार्मिक कार्यकर्ता होना बताया है। १९८६ मे जारी उनके नए पासपोट नम्बर २९१८०९ पर भारत सरकार ने वीसा नम्बर ५३७ जारी कर दिया। इसी तरह सेंट जेवियर्स स्कूल अम्बिकापुर के फादर बेन त १९ २ से भारत मे हैं। १९७६ से वे सरगुजा जिले मे सक्रिय हैं। तीसरे पादरी लुक वसट्रेट भी १९४८ से भारत मे हैं। वे १९७८ से सरगुजा मे काम कर रहे हैं।

सम्पादकीय

साम्प्रदायिक दंगे

वर्तमान परिस्थिति मे भारत मे साम्प्रदायिक उपद्रवो का होना अत्यधिक हानिकर और घातक है। इससे न केवल विविध वर्गों में कटुता ही उत्पन्न होती है, अपितु पाकिस्तान को भी भारत विरोधी प्रचार की प्रचुर सामग्री उपलब्ध हो जाती है। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान के हिन्दुओं से बदला लिया जाता है। साथ ही अल्प सख्यक वर्ग के कुछ लोगो में भारत से बाहर के क्षेत्रों के प्रति निष्ठा उत्पन्न होने की सम्भावना भी रहती है। यदि देश के कुछ लोग राष्ट्रद्रोही बन जाय, तो देश की एकता, अखण्डता शान्ति और सुव्यवस्था के लिए इससे बढ़कर घातक बात अन्य कोई नही हो सकती है।

अल्पसंख्यकों की कठिनाइयां

स्वतन्त्रता के पश्चात् ऐसे उदाहरण हैं जिनमें द गे का प्रारम्भ अल्पसख्यक वर्ग के एक या कुछ सदस्यों द्वारा ही किया गया है। जब ऐसा होता है तो बहुसख्यक वर्ग के कुछ वर्ग विशेष के सदस्य कानून को अपने हाथ मे लेकर बदला लेने को तत्पर होते हैं। जब वे ऐसा करते हैं तो बहुसख्यक होने के कारण स्वभावत. अल्पसख्यक वर्ग की कठिनाईया बढ जाती है।

उपद्रव करना सदैव बुरा होता है परन्तु बहुसख्यक वर्ग को अपनी बहुसख्या का लाभ उठाना या इस प्रकार का आभास देना और अल्पसख्यक वर्ग के निर्दोष व्यक्तियो से बदला लेना वीरता का कार्य नही है। बहुसख्यक वर्ग में कुछ व्यक्तियो की शक्ति का यहा भारत में और पाकिस्तान मे बडा दुरुपयोग किया जाता है।

मुसलमान काग्रेसी और तथा कथित राष्ट्रवादी मुसलमान दूर दृष्टि का परित्याग कर ऐसी नीति के प्रचार की उत्तरदायिता अपने ऊपर ले लेते हैं, जिनके दूरवर्ती परिणाम स्वय अल्पसख्यक वर्ग और राष्ट्र के लिये घातक होगे। जब राष्ट्रवादी मुसलमान साम्प्रदायिक नीतियो का प्रचार या समर्थन करते हैं—

तो हिन्दू सम्प्रदायवादी चैतन्य हो जाते हैं और पाकिस्तान मे बुरी से बुरी घटनाऐ हो जाती है। भारत मे हमारा शासन असाम्प्रदायिक है। बहुसख्यक वर्ग का फैलाया उन्माद थोड़ी बहुत क्षति के उपरान्त राज्य द्वारा शान्त कर दिया जाता हैं।

पाकिस्तान मे सरकार और बहुसख्यक लोगो का दृष्टिकोण साम्प्रदायिक होने से निर्दोष हिन्दुओ से बदला लिया जाता है वहा का शासन उसको रोकता नही भले ही वह सहायता न करें।

मेरठ-दिल्ली में दगे कैसे प्रारम्भ हुए, पर पी० ए० सी० का रक्षात्मक कार्य एक तरफा नही था फिर प्रचार उल्टा किया गया।

सरकार और पी-ए० सी० पर ही हमला हुआ और पाकिस्तान मे परिणाम उल्टे ही निकले। गरीब-असहाय, अल्पसख्यक हिन्दुओ पर हमला करके वहां बदला लिया गया।

अत. यह आवश्यक है कि भारत मे बहुसख्यक वर्ग को कुछ लोगो को अपने कुछ पथभ्रष्ट साम्प्रदायिक तत्वो पर पूर्ण नियन्त्रण रखना चाहिए। पर भारत मे द गे वही होते हैं जहा पर अल्पसख्यक, बहुमत में रहता है पर सारे भारत में जहा पर भी हिन्दू बहुमत मे निवास करता है कही पर भी दगा नहीं हुआ है। मेरठ मे बहुमत हिन्दू क्षेत्र पर योजना पूर्वक आक्रमण किया गया। जन-धन की हानि हिन्दू बहुमत की हुई पर झूठ का सहारा लिया गया और भगे हुए मुसलमानों को मरा दिखाकर सरकार से मुआवजा भी लिया गया। इस झूठ का बदला पाकिस्तान मे हिन्दुओ से लिया गया।

हमे यह मालूम है कि पाक० के बहुसख्यक वर्ग व प्रशासन के प्रकोप से सहधर्मी निर्दोष हिन्दुओ की पाकिस्तान मे रक्षा नही कर सकते ?

मुसलमानों का कर्तव्य

काग्रेस या इससे बाहर के मुसलमान नेताओ के लिए भी उचित है कि अपने लोगों को नियन्त्रण मे रखे। इसी मे उनके वर्ग और देश का भला है। उन्हें अनुभव करना चाहिए कि जनतंत्र में सख्या गिनी जाती है—

अत उन्हें बहुसख्यक वर्ग के साथ व्यवहार करने में बहुत ही सावधानी बरतनी चाहिए। ऐसा करते हुए कभी कभी उनके स्वाभिमान को ठेस लग सकती है। मैं समझता हूं कि इस वर्ग के लिए जो यह सोचता है कि उसने कभी हिन्दुस्तान पर हुकूमत की थी अपने अभिमान का दमन करना कुछ कठिन है। परन्तु मुसलमानों को यह अनुभव करना चाहिए कि वे यदि सख्या में अधिक अपने साथी देशवासियों के साथ शांतिपूर्वक रहना चाहें तो भारत की परिवर्तित स्थिति के अनुसार यह आवश्यक है कि उन्हें झगड़े से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि उनके हितों के प्रति वास्तविक या काल्पनिक अन्याय हो तो उन्हें राज्याधिकारियों को कहना चाहिए। यदि दोनों पक्ष देश की वर्तमान अशान्त साम्प्रदायिक परिस्थिति में विवेक और नियन्त्रण को हाथ से न जाने दें तो निश्चय ही शान्ति व्याप्त हो सकती है।

शासन को जो कानून और व्यवस्था का उत्तरदायी है अपने महान दायित्व को अनुभव करना चाहिए। उन्हें तत्काल न्याययुक्त और प्रभावशाली कार्यवाही करनी चाहिए। मेरठ में यदि पी० ए० सी० ने एक तरफा कार्यवाही की होती, तो अल्पसख्यक वर्ग की बडी हानि होती।

धार्मिक केन्द्र

समय समय पर मुस्लिम यूनिवर्सिटी के द्वारा फैलाये गये धार्मिक उन्माद से वहा के बहुमत हिन्दू समाज में जो प्रतिक्रिया हुई इस प्रश्न को प्रबल रूप से हमारे समक्ष समय २ पर उपस्थित किया कि असाम्प्रदायिक प्रशासन में धर्म और जाति के नाम पर चलने वाले शिक्षणालयों के सचालन की अनुमति होनी चाहिए या नही। जब से हमने सविधान का निर्माण किया, तब से ही प्रश्न हमारे समक्ष है। इस प्रकार की सस्थायें और उनके प्रमुख उस वर्ग या जाति के लोगों मे से रखे जाते हैं। इस प्रकार के कार्यकर्ता यह अनुभव करते हैं कि सस्था के धर्मीय स्वरूप पर बल देने से ही वे उत्तरदायित्व पूर्ण पदो पर बने रह सकते हैं। इस प्रकार धर्मीय सस्थाओ की बुराई जीवित रखकर बढाई जाती हैं।

समय की माग है कि राज्याधिकारी साहस बटोरकर ऐसे सस्थानों को चेतावनी दें कि यदि वे साम्प्रदायिक व जातिगत तथा साम्प्रदायिक स्वरूप बनाए रखने में अग्रसर होंगे, तो उन्हें न तो सरकारी अनुदान मिलेगा और न अन्य किसी प्रकार की सुविधा ही।

इस प्रकार प्रशासन सख्ती से व्यवहार करे तो निश्चय ही देश मे साम्प्रदायिकता को कम कर सकेंगे। साथ ही अधिक नही, तो कम से कम आने वाली पीढी को एक पक्षीय निष्ठा से बचा सकेंगे। जो हमे बीते युग से विरासत मे प्राप्त हुई है।

अमेरिका में इसराईली लाबी का प्रभाव व उपयोगिता

श्री के. नरेन्द्र, प्रताप दिल्ली

प्रत्येक देश अपने हितों को ध्यान में रखकर अपनी विदेश नीति बनाता है। परन्तु भारतवर्ष सम्भवतया पहला देश है जो केवल भावनात्मक ढंग से या कुछ व्यक्तियों के दृष्टिकोण के आधार पर अपनी विदेश नीति बनाए हुए हैं। आज जिस प्रकार भारतवर्ष शत्रुओं से घिरा हुआ है। उसका कर्त्तव्य था कि वह पहले यह देखे कि यह शत्रु कौन कौन से हैं और क्यों हमारे विरुद्ध हैं। उसके पश्चात् उन देशों से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करे। हर बुद्धिमान शासक इन बातों को ध्यान में रखकर ही अपनी नीति बनाता है।

परन्तु हमारी दशा क्या है। आज एक भी ऐसा पड़ोसी नहीं जिस पर हम निर्भरता से विश्वास कर सके। पाकिस्तान हमारा विरोधी, बगला देश अविश्वानीय, वह पाकिस्तान व चीन से घी-शकर होने का प्रयत्न कर रहा है। दोनों हमारे विरुद्ध है। श्री लंका हमारा खुला शत्रु, नेपाल इस परिणाम पर पहुंचा है कि वह हमारे ऊपर निर्भर नही रह सकता। अतः वह भी हम से अधिक चीन से निकटता का प्रयत्न करता है। जिन थोड़ी सी बातों के लिए हमारे तथाकथित समाज वादी शासकों ने नेपाल को शिकायत का अवसर दिया उनको चीन हमारी अपेक्षा अधिक नापसन्द करता है। परन्तु चीन ने अपनी नापसन्दी को राष्ट्रीय हितों पर महत्व नही दिया। यद्यपि नेपाल व भारतके धार्मिक सांस्कृतिक सामाजिक भोगोलिक हित ऐसे है कि यदि कोई दो देश निकट आ सकते थे तो वह भारत व नैपाल थे परन्तु हमारे अदूरदर्शी शासकों ने हर उस बात का अपमान किया जिससे नैपाली जनता और शासकों की भावनाये बनी हुई थी।

कहने को तो कहा जाता है कि हम चूकि लोकतन्त्र में विश्वास करते है अतएव हम प्रत्येक देश के लोकतान्त्रिक तत्वों को प्रोत्साहित करना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझते हैं। इससे बढकर और दृष्टिकोण क्या हो सकता था परन्तु उसमें एक ही दोष था कि हमने मध्य पूर्व के सभी मुस्लिम शासनो को अपना हार्दिक समर्थन प्रस्तुत कर दिया। जहां लोकतन्त्र का नामो निशान तक नही था।

सच्चाई तो यह है कि आज एक आध मुस्लिम देश को छोड़कर शेष सभी में सम्राटवादहै या कोई सैनिक अधिनायकत्व है और हम लोकतन्त्र व आत्म निर्णय की दुहाई अपने होठों से देते हुए इन सारे मुस्लिम शासको को अपने सीने से लगाए हुए है। परन्तु नेपाल की अवस्था में हम यह सहन नहीं कर सके।

क्या आश्चर्य है कि जो लोगों ने कहना प्रारम्भ कर दिया कि हमारे समाजवादी शासको के दिमाग में धर्म निरपेक्षता का कीड़ा तभी सक्रिय होता है जब उन्हें किसी हिन्दू से काम पड़े। मुसलमान लोकतन्त्र की कितनी ही मिट्टी पलीत करते रहे उन्हे इसमें कोई दोष दिखाई नहीं देता। परन्तु ज्यूं ही किसी हिन्दू राज्य ने ऐसी शासन पद्धति न अपनाई जैसी हमने अपना रखी है तो हम उसके पीछे पंजे झाड़कर पड़ जाते हैं, इस प्रकार नेपाल भी हमसे बिगड गया। भूटान की दशा यहहै कि उसकी विदेश नीति हमारे परामर्श से चलती है परन्तु वास्तव में वह स्वतन्त्र है और कोई विश्वास से यह नही कह सकता कि वह महत्वपूर्ण समस्याओ में हमारा साथ देने को तैयार होगा।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि लगभग सबके सब पड़ोसी हमसे रुष्ट हैं हमें सबसे अधिक भय पाकिस्तान से है और मध्य पूरब के जितने मुस्लिम देश हैं उनमें से एक-एक हमारे मुकाबिले पाकिस्तान का साथ देगा। सम्भव है मिश्र पाकिस्तान के साथ न जाए परन्तु मिश्र में भी जो फन्डामेन्टलिस्ट (कट्टर पंथी) शक्तियां जोर पकड रही हैं उन्हें देखते हुए कोई विश्वासपूर्वक नहीं क सकता कि वह कितने दिन हमारे साथ रहता है।

उपरोक्त परिस्थितियों में इसराईल एक ऐसा देश है जिससे हमें मैत्री सम्बन्ध बनाने चाहिए थे। इसराईल से मैत्री सम्बन्धों की दशा मैंन केवल पाकिस्तान और मध्यपूर्व के इस्लामी देशों से अधिक भय नहीं हो सकता था अपितु अमेरिका में भी हमारा इतना विरोध न होता जो आज हो रहा है। केवल इसलिए कि इसराईल की अपनी लाबी है जो आज अमेरिका में इतनी प्रभावी है कि यह अमेरिका के शासकों की दृष्टिकोण पर भी बड़ी सीमा तक प्रभाव डाल सकती है। अब तो यह दशा है कि मध्य पूरब के इस्लामी देशों के विरोध की परवाह न करके सोवियत रूस भी इसराईल को अपने निकट लाने को प्रयत्नशील है। इन्हीं कुछ दिनों में एक ऐसा प्रतिनिधि मण्डल इसराईल जा रहा है।

हमारे देश के शासकों द्वारा डेविस कप में इसराईल को खेलने की आज्ञा देने पर कट्टरपंथी तत्व भारत के पीछे पड़ गए। परन्तु सोवियत रूस जो इसराईल से अपने सम्बन्ध बढ़ा रहा है इस पर किसी अरब को साहस नहीं हुआ कि वह मास्को के खिलाफ शिकायत करें। सम्भवतया इसलिए कि वह भारत सरकार को अपनी बांदी समझते रहे हैं जिसका कोई अधिकार नहीं कि वह कोई ऐसी नीति अपनावे जो इन शासनों को पसन्द नही। डेविस कप में खेलने की आज्ञा देने पर अरब देशों की जो प्रतिक्रियाये थीं उन्हें देखकर हंसी भी आई और अपनी विवशता पर दया भी, अस्तु।

मैं यह लेख इसलिए लिख रहा हूं कि क्योंकि इन्हीं दिनों मेरी आंखों से एक लेख गुजरा है जिसमें बताया गया है कि अमेरिकन सरकार पर इसराईली लाबी का इतना प्रभाव है कि यदि हमने इसराईल से अपमानजनक व्यवहार न किया होता तो अमेरिका भी हमारे इतने विपरीत न जाता जितना आज जा रहा है। आश्चर्य की बात यह है कि अमेरिकन जानते हैं कि पाकिस्तान एक इस्लामी देश है और मध्य पूर्व के इस्लामी देशों का प्रत्येक अवस्था में समर्थन करेगा। परन्तु यह होते हुए भी वह पाकिस्तान को अपने साथ मिलाए हुए है। थोड़ा विचारिए कि भारत को अपने साथ रखने में उसे कितना लाभ था परन्तु भारत के शासकों ने यह आग्रह कर रखा है कि अपनी विदेश नीति वास्तविकताओं व राष्ट्रीय हितो की रक्षा के बजाय व्यक्तिगत मनोभावो व स्वार्थ पर आधारित करनी है।

जिस लेख का वर्णन मैंने ऊपर किया है उसके मुख्य अश में पाठकों के लिए प्रस्तुत करता हूं। इसकी लेखिका है शाहनाज इन्कलरिया अमीर आपका कहना है:—वाशिंगटन में यहूदियों की सबसे शक्तिशाली संस्था का यह दावा है कि आज की अमरीकन कांग्रेस इसराईल की बहुत पक्षपाती है। अतः भारत के सत्ताधारियों व दूसरे तत्वों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वह इसराईल के विरुद्ध जो कुछ कहेंगे और करेंगे उसका भारी प्रभाव अमरीकन कांग्रेस पर होगा। इस समय अमरीका में ५० लाख यहूदी है जो कुल जनसंख्या का ३ प्रतिशत है। परन्तु उनके हाथ इतनी भारी आर्थिक व राजनीतिक शक्ति है कि जब उसके पक्षधर कुछ कहते हैं तो अमेरिकन सरकार व कांग्रेस को उस पर अवश्य ध्यान देना पड़ता है। जिन लोगों ने वेस्ट बैंक के ईसराईली एकाधिकार के विरुद्ध कुछ कहा है उन्हें यहूदी संस्थाओं ने अपने लोगो के समर्थन से वंचित कर दिया है। यहूदियों की सबसे बड़ी संस्था अमेरिकन ईसराईली पब्लिकअफेयर्स कमेटीअपने अनुयायियों को सूचित कर देती है कि कौनसा अमरीकन यहूदियों के इसराईल का विरोधी है। और कौन उनके समर्थन में। जब भी कोई बात इसराईल के विरोध में होती है, यह अमरीका मुस्लिम देशों को.

(शेष पृष्ठ १० पर)

ऋषि दयानन्द प्रदर्शित आर्य समाज का मार्ग

—डा० भवानीलाल भारतीय

वैदिक रवि (मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख पत्र) के जून १९८७ के अंक मे श्री बिशन स्वरूप गोयल का एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसका शीर्षक है—

क्या आर्य समाज का वर्तमान ढाचा महर्षि के बताए मार्ग से हट रहा है ? श्री गोयल को इस बात का बडा गिला है कि आज अधिकाश आर्य-समाजी कांग्रेस मे शरीक हो रहे है। वे कांग्रेस को ऐसा दल मानते हैं जिसने देश का बटवारा किया और मुस्लिम लीग से हाथ मिलाया। इन पंक्तियों के लेखक का कांग्रेस के साथ न तो कोई सम्बन्ध है और न वह उससे सहानुभूति ही रखता है, किन्तु वह श्री गोयल को बता देना चाहता है कि आर्यसमाज ने अपने प्रत्येक सदस्य को किसी भी ऐसे राजनैतिक दल मे प्रविष्ट होने की आजादी दे रखी है, जहा रहकर वह अपने आर्य समाजी सिद्धातो को मानते हुए कार्य कर सके। कांग्रेस को देश के विभाजन के लिए उत्तरदायी मानने वाले श्री गोयल यह क्यो भूल जाते हैं कि किसी राष्ट्रीय परिस्थिति के लिए किसी एक ही दल को उत्तरदायी नही ठहराया जा सकता। कांग्रेस में स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय आदि आर्य समाज के मूर्धन्य नेता भी रह चुके हैं। यह दूसरी बात हैं कि उन्होने कांग्रेस द्वारा अपनाई जाने वाली मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति का कभी समर्थन नही किया। आर्यसमाज के लाखो अनु-यायी उस समय कांग्रेस में सम्मिलित हुए थे जब इस राष्ट्रीय संस्था ने नशा निवारण, गोसवर्धन, हिन्दी प्रचार, स्वदेशी प्रचार, अछूतोद्धार जैसी रचना-त्मक नीतियो को अपनाया था। जहा सैकडो आर्य समाजी गांधी जी के आह्वान पर कांग्रेस द्वारा प्रवर्तित आन्दोलनो मे सम्मिलित होकर देश को स्वतन्त्र कराने के लिए जेल में गए, वहा ऐसे आर्यसमाजियो की भी कमी नही थी, जिन्होंने देश सेवा के लिए कांग्रेस से भिन्न मार्ग अपनाया। भाई परमानन्द, लाला हरदयाल आदि को क्रान्तिकारी कार्य करने की प्रेरणा भी आर्य समाज से ही मिली थी। सच तो यह है कि स्वामी दयानन्द ने आर्य आर्य समाज का गठन एक धार्मिक आन्दोलन के रूप में किया है इसलिए वह संस्थागत रूप में सदा राजनीति निरपेक्ष ही रहेगा। किसी भी देश की प्रच-लित राजनीति में संस्था के रूप मे उसका प्रविष्ट होना सम्भव नही है। इस-लिये यदि आर्य समाज अपने सभासदों को अपनी इच्छा और रुचि के अनुसार किसी राजनैतिक दल मे शामिल होने का आदेश देता है, तो इसमे कुछ भी अनुचित नही है। आर्य समाज के हजारो सदस्य ऐसे भी हैं जिनकी राजनीति में किंचित भी रुचि नहीं है। इसलिये आर्य समाज का राजनीति निरपेक्ष रूप सर्वथा उचित ही है।

श्री गोयल को एक बडी भ्रान्ति यह है कि वे आर्यसमाज और हिन्दू को एक ही मानते हैं। यदि ये दोनो शब्द एकार्थवाची होते तो स्वामी दयानन्द को क्या पडी थी कि वे अपने आन्दोलन को आर्यसमाज का नाम देते। सच तो यह है कि हिन्दू शब्द के साथ ही हमारे देश के अधःपतन का इतिहास जुडा हुआ है। आर्य शब्द मे जो अर्थ गरिमा निहित है उसी को लक्ष्य मे रख कर स्वामी जी ने इस देश के निवासियों को इस उदात्त शब्द से अभिहित किया था। अन्धविश्वास, पाखण्ड, गतानुगति, रूढिवाद तथा प्रतिगामिता ही हिन्दुत्व का पर्याय है जबकि विवेक, तर्क प्रवणता, प्रगतिशीलता तथा आगे की ओर दृष्टि रखना आर्य समाजी का लक्षण है। यह दूसरी बात है कि स्वामी जी उसी हिन्दू समाज को उन्नति पथगामी बनाना चाहते थे, जिसके वे स्वय एक अंग थे तथा उनका यह भी विश्वास था कि हिन्दू समाज को राहे रास्त पर लाकर ही आर्यसमाज स्वकर्तव्य को पूरा कर पायेगा।

इस देश के हिन्दुओ ने यदि अपनी कोई अलग राजनैतिक पहचान नही बनाई, तो इसके लिए आर्य समाज को दोषी ठहराना अनुचित है। प्रथम तो हिन्दू नाम धारी प्राणी सदा से ही इतना स्वार्थी रहा है कि उसमे सामाजिक हित का भाव कभी जगा ही नही। यही कारण है कि कांग्रेस में रहकर वह मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति का विरोध नही करता, कम्युनिस्ट बनकर वह रूस की मानसिक दासता को ठुकराने का साहस नहीं जुटा पाता, आर. एस. एस. में रह कर वह उसके तानाशाही शिकंजे से मुक्त नहीं हो पाता आदि। और सच तो यह है कि इसके लिए बेचारे हिन्दू को ही दोष क्यो दिया जावे। वह तो स्वय भाषा, प्रान्त, वर्ग, सम्प्रदाय तथा जाति की संकीर्ण काराओं मे इतना अधिक जकडा हुआ है कि समष्टि हित तक उसका ध्यान ही नही जाता। स्वामी दयानन्द ने इसी बात को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय एक्य के लिए भाषा गत, उपासनागत तथा भाव और विचारगत समानता को सर्वोपरि माना था। खेद है कि हिन्दू धर्म पूजा और उपासना की विविधता तथा उपास्य देवो के बाहुल्य को ठुकराने मे संकोच करता है और यह भी आशा करता है कि वह किसी दिन ईसाइयत या इस्लाम के उन प्रहारो का सामना कर सकेगा जिनकी दुर्जेयता का एक मुख्य कारण धार्मिक एक्य तथा सामाजिक समानता मे उनकी दृढ आस्था है। यदि सिखों ने अकालियो और मुसलमानो ने मुस्लिम लीग के रूप मे अपनी अलग पहचान बना ली है तो देश के ७५-८० प्रतिशत हिन्दुओ को अपनी पृथक राजनैतिक पहचान बनाने के लिये रोक कौन रहा है ? इसके लिये श्री गोयल आर्यसमाज को क्यो दोष देते हैं ? आर्यसमाज ने यह कब कहा कि हिन्दू अपना पृथक राजनैतिक संगठन न बनायें। यदि हिन्दू उनकी बात न मानें तो इसमे किसका दोष है। फिर बात घूम फिर कर वही आ जाती है। सम्पूर्णतया स्वार्थ के भावो से घिरा तथा विभिन्न संकीर्ण काराओ मे आबद्ध हिन्दू यह सोच भी नही सकता कि वह अपने समाज को छिन्न भिन्न और विषाक्त करने वाली धार्मिक और सामा-जिक रूढियो से मुक्त होकर संगठन के सूत्र मे बंध भी सकता है।

श्री गोयल ने आर्यसमाजियो को कुर्सी और पदो का लालची बताया है। उन्हे यह पता होना चाहिए कि आज सत्ता की कुर्सी पर विराजमान आर्य-समाजी तो हमे कही नजर ही नही आते। आर्यसमाज यदि धर्म निरपेक्ष दलों मे सम्मिलित होता है तो इसके लिए उसकी आलोचना करने का श्री गोयल जैसे हिन्दू सभाई मानसिकता वाले व्यक्ति को कोई अधिकार नही है। आर्य-समाजी को किसी राजनैतिक दल मे सम्मान मिलता है तो वह उसके चरित्र तथा उसकी उदार विचारधारा के कारण मिलता है। यही कारण है कि चरणसिंह जैसा आर्यसमाजी कांग्रेस मे रहकर भी सम्मान का पात्र बना रहा और उस संस्था से पृथक होकर भी उसने अपने आदर्शों के प्रति अटूट आस्था के कारण स्व व्यक्तित्व को ऊंचा बनाये रखा। अत श्री गोयल को हमें यह सलाह देने का कोई अधिकार नही है कि हम अपने अभीष्ट राजनैतिक दलो का त्याग कर उनके द्वारा सुझाई गई हिन्दू निष्ठ राजनीति का अनुसरण करें। स्वामी दयानन्द ने जो राजार्य सभा की कल्पना की थी, वह कोई राज-नैतिक दल गठित करने के विचार से नही की। राजार्य सभा से उनका अभि-प्राय शासन को आर्यत्व के अनुकूल बनाने से था। यदि दुनिया के आर्यसमाजी श्री गोयल द्वारा सुझाये गये विचार का अनुसरण करने लगे तब तो भारत के ही अनुरूप मारिशस, अफ्रीका, फीजी आदि देशो में बसे आर्यसमाजी भी अपनी पृथक राज आर्यसभायें बनायेंगे और इस प्रकार वे विश्व राजनीति मे एक नई उथल-पुथल पैदा कर देंगे।

श्री गोयल यह तो स्वीकार करते हैं कि सनातन धर्मी लोगो को आर्य शब्द से एलर्जी है किन्तु वे उन्हें यह कहने का साहस नही जुटा पा रहे हैं कि वे अपनी इस पूर्वाग्रह युक्त धारणा का त्याग कर आर्य शब्द को अपनायें। जब सनातनी धर्म को आर्य शब्द से इतनी चिढ है तो आर्य समाज को क्या पडी है कि वह उस शब्द को अपनाये, जिसके साथ हमारे पतन, हमारी दासता तथा हमारे सार्वत्रिक ह्रास की गाथायें जुडी हुई हैं। अच्छा होता यदि वे यह सीख अपने सनातनी मित्रो को देते कि वे गौरवयुक्त आर्य नाम को स्वीकार करें ताकि संसार के सम्मुख अपना मस्तक ऊंचा उठाने का साहस जुटा सकें।

अन्त मे श्री गोयल ने भगवा ध्वज के नीचे आकर आर्यसमाजियों को हिन्दू नाम के राजनैतिक दल को गठित करने की सलाह दी है। अच्छा होता यदि वे अपनी सच्ची तथा हिन्दू सभाई मित्रो को आर्य नाम से संगठित होने तथा ओम् के झण्डे के नीचे आकर अपनी साम्प्रदायिकता संकीर्णता, सामा-जिक रूढिवादिता, पाखण्ड और अन्धविश्वास से मुक्त होने के लिए कहते।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सिख ही सिखों की जड़ें काट रहे हैं ?

श्री वीरेन्द्र प्रताप जालन्धर

मैंने जो कुछ लिखा था उसकी पुष्टि हो गई है । ऋषिकेश मे सेना बुलानी पडी है । इसका उल्लेख करते हुए मैंने लिखा था कि यदि इस क्षेत्र मे तनाव बना रहा तो सिखो के लिए हेमकु ट के दर्शन के लिए जाना कठिन हो जाएगा । अब प्रकाशित हुआ है कि हेमकु ट जाने वाले ७ सौ सिख यात्रियो मे से चार सौ को वापिस भेज दिया गया है । और तीन सौ को विभिन्न-विभिन्न गुरुद्वारो मे रखा है और इनकी सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध कर दिया गया है । यह सब कुछ उस तनाव के कारण हुआ है जो ऋषिकेश क्षत्र मे पैदा हो गया है ।

यह तनाव ऋषिकेश हरिद्वार अथवा उत्तर प्रदेश के किसी अन्य शहर मे किसी घटना के कारण नही पैदा हुआ यह लालडू तथा हिसार के खूनी काड के कारण हुआ है । और इसके लिए कुछ आतकवादी सिख नौजान जिम्मेदार हैं । इस प्रकार की घटनाए इससे पहले भी हुई हैं । लेकिन इस बार जो प्रतिक्रिया हुई है इससे पहले नही हुई थी । सारे देश मे शायद ही कोई बडा शहर हो जहा बन्द न हुआ हो । कई स्थानो पर टकराव भी हुआ है । आगजनी की घटनाए भी हुई हैं ।

वह सब लालडू और हिसार की घटनाओ के कारण हुआ है । पजाब से बाहर इस प्रकार को कोई घटना नही हुई जिसके कारण जगह जगह यह तनाव पैदा हो जाए । जो अब हो गया है । पजाब मे इनके शिकार हिन्दू हो रहे है पजाब से बाहर सिख हो रहे है ।

जब मैं कहता हू कि सिख ही सिखो की जड काट रहे हैं तो अकारण ही नही । मेरी यह पक्की राय है कि जो सिख पजाब से बाहर रह रहे हैं उनके विरुद्ध कोई जवाबी कार्यवाही नही होनी चाहिए । जो कुछ पजाब मे हो रहा है उसके लिए वे जिम्मेदार नही हैं । कठिनाई यह है कि पजाब मे सिखो को इस प्रकार की बर्बरता के विरुद्ध अपनी आवाज उठानी चाहिए वे खामोश हैं । जिसका अभिप्राय है कि वह आतकवाद का समर्थन करते हैं । और उन्हे कोई कष्ट नही है कि दूसरे राज्यो मे सिखो पर क्या बीत रही है । २४ घण्टे मे ७६ लोग मौत के घाट उतार दिए गए है उनमे महिलाए भी थी और बच्चे भी थे । लेकिन सिंह साहेबान ने इनके विरोध मे एक भी शब्द नही कहा । आखिर इसका अभिप्राय क्या सिवाए इसके कि सिंह साहेबान इस प्रकारकी कार्यवाही का समर्थन करते हैं । ऐसी स्थिति मे यदि मैं कहता हूं कि सिख ही सिखो की जडे काट रहे है तो मेरा यह आरोप निराधार नही है । दो अढाई वर्ष हुए जब कनेडा से आ रहे एयर इण्डिया के एक विमान मे बम रख दिया गया था । यह विमान हवा मे उडान भरते हुए फट गया था । और समुद्र मे गिर गया था । उसमे ३२६ लोग सवार थे । उनमे से एक भी नही बचा था । उनमे बच्चे भी थे और महिलाए भी थी । हिन्दू भी थे और सिख भी थे । इसके बावजूद सिखो मे आतकवाद के विरुद्ध वह आवाज नही उठी जो उठनी चाहिए थी । सिंह साहेबान उस समय मे भी खामोश रहे थे आज भी खामोश है । उसी का परिणाम है कि यदि हिन्दू मारे जा रहे है तो उनके साथ सिख भी मारे जा रहे । आज के समाचारपत्र मे जो आठ व्यक्तियो के मारे जाने की खबर प्रकाशित हुई है वह सब सिख हैं । लेकिन पजाब से बाहर लालडू और दरियापुर के खूनी काड की प्रतिक्रिया इसलिए तीव्र हुई है क्योकि एक तो मरने वालो की सख्या अधिक थी । दूसरे वे सब हिन्दू थे और तीसरा यह भी कि पहली बार पजाब से बाहर भी इस प्रकार की घटना हुई है । मुक्तसर, जालडू, खुड्डा ये सब पजाब मे ही हैं । इस बार आतकवादियो ने अपनी गतिविधियो का क्षत्र बढा दिया है । सिंह साहेबान इस पर से खामोश हैं ।

इसकी प्रतिक्रिया केवल मुझ पर ही नही औरो पर भी हुई है मैं नीचे सरदार खुशवन्तसिंह के विचार प्रस्तुत कर रहा हू । जो उन्होने हाल ही मे प्रकाशित किए हैं । सरदार खुशवन्तसिंह के राजनीतिक अथवा सामाजिक विचारो से किसी को चाहे कितना म-भेद क्यो न हो उनके सिख होने पर तो किसी को सन्देह नही हो सकता । उन्होने सिख इतिहास पर कई पुस्तके लिखी हैं । जब अमृतसर मे ब्लू स्टार हुआ था तो उन्होने उसके विरुद्ध प्रोटेस्ट के तौर पर इन्दिरा गाधी और उनकी सरकार से अपने सारे सम्बन्ध तोड लिए थे । जो कुछ अब हुआ है उस पर अपना शोक व्यक्त करते हुए सरदार खुशवन्त सिंह लिखते हैं ।

'मेरी हमेशा यह धारणा रही है कि खालिस्तानी आतकवाद को रोकने की जिम्मेदारी अधिकतर सिखो की है । उनमे भी सबसे अधिक जो पाच तख्त हैं उनके सिंह साहेबान की और श्री हरमन्दिर साहेब के मुख्यग्रन्थी की है । यही लोग पथ के प्रवक्ता समझे जाते हैं । हाल ही मे बस यात्रियो की जो पाशविक हत्याए हुई हैं उन्होने उन्हे एक अवसर दिया था जब वह आतकवाद के विरुद्ध बोल सकते हैं । और हमेशा के लिए इन आतकवादियो को तनखाइया घोषित कर सकते थे । इन सिंह साहेबान और उन ग्रन्थियो ने एक बार फिर गुरु साहेबान, पथ और देश से बेवफाई की है जो खामोश रहे हैं । दर्शनसिंह रागी एक कदम आगे चले गए है और उन्होंने सारी जिम्मेदारी राजनीतिज्ञो पर डाली है । इन हालात मे उनकी खामोशी न केवल उनकी कायरता है बल्कि उनका आतकवाद की उनके द्वारा निन्दा न करना एक तरह से उसका समर्थन करना है ।"

सरदार खुशवन्त सिंह ने जो कुछ लिखा है उससे बेहतर इस विषय पर और कोई नही लिख सकता । उनके विचार इसलिए भी महत्व रखते है क्योकि गुरु का एक सिंह यह कह रहा है । इसलिए उसे नजरअन्दाज नही किया जा सकता । सच्ची बात कहने का साहस किसी किसी मे होता है । गुरु ने वह साहस खुशवन्त सिंह को प्रदान किया है ।

सरदार खुशवन्त सिंह ने एक नया नुक्ता भी उठाया है । वह कहते हैं कि सिंह साहेबान आतकवादियो को तनखाइया क्यो नहीं घोषित करते । पाठक साक्षी हैं कि मैं भी कई बार लिख चुका हू कि सिंह साहेबान इस प्रकार की हिंसा के विरुद्ध हुक्मनामा जारी क्यो नही करते । वह सुरजीतसिंह बरनाला, बूटासिंह तथा रिछपाल सिंह को तनखाइया घोषित कर सकते है लेकिन हिंसा के विरुद्ध हुक्मनामा जारी करने को तैयार नही । न ही किसी आतकवादी को तनखाइया घोषित करने को तैयार है । उनकी इस खामोशी का परिणाम है कि पजाब के अन्दर हिन्दू और सिख दोनो मारे जा रहे हैं और पजाब से बाहर रहने वाले सिखो का जीना दूभर किया जा रहा है । सिंह साहेबान जो अपने आपको सिख धर्म और सिख कौम के सबसे बडे रक्षक कहते हैं आराम से बैठे यह तमाशा देख जगह-जगह बन्द और जो अन्य प्रदर्शन हो रहे है उसका सबसे अधिक प्रभाव पजाब से बाहर रहने वाले सिखों पर पड रहा है । वह पजाब की खूनी घटनाओ के लिए जिम्मेदार नहीं है । लेकिन उनको सजा उन्हे मिल रही है और आज वे उचित रूप से कह सकते हैं कि—

गुनाहगारो मे शामिल हैं गुनाहो से नही वाकिफ ।
सजा को जानते हैं हम खुदा जाने खता क्या है ॥

काश अकालतख्त के जत्थेदार और अन्य सिंह साहेबान अपने कर्त्तव्य और जिम्मेदारी को समझे और इस नाजुक समय में यदि हिन्दुओ को बचाने के लिए कुछ नही कर सकते तो सिखों को बचाने के लिए ही कुछ करें । जो कुछ पजाब में हो रहा है उसकी सजा दूसरे राज्यो मे रहने वाले सिखों को मिल रही है इस पर भी सिंह खामोश हैं तो क्यो ?

संस्कृत भाषा ही सब भाषाओं की जननी

—आचार्य शिवराज शास्त्री एम. ए. मौलवी फाजिल

(गताक से आगे)

श्री अनन्तशयनम् आयगर जो दक्षिण भारत के चोटि के विद्वान माने गए थे उन्होने १ मई १९५४ को दिल्ली मे इन्द्रप्रस्थ संस्कृत परिषद में भाषण देते हुए कहा था . तेलगु भाषा में ७५ प्रतिशत संस्कृत शब्दो का प्रयोग होता है, कन्नड भाषा में ८० प्रतिशत जबकि मलयालम भाषा में तो ९० प्रतिशत शब्दों का प्रयोग होता है ।

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व गवर्नर तथा आध्र प्रदेश के भू पू मुख्यमन्त्री श्री गोपाला रेड्डी ने विजयवाडा के आध्र हिन्दी परिषद के अधिवेशन मे ७ जून १९५५ को कहा कि संस्कृत भाषा सभी भाषाओ की मा है ।

भाषा साम्य के कुछ उदाहरण पाठको के ज्ञानवर्धन के लिए प्रस्तुत है । बगलौर के उत्तरादि मठ के महान सन्त श्री सत्यतीर्थ स्वामी जी अपने कन्नड भाषा मे लिखे ग्रन्थ "अद्वैतमत विचार" में लिखते हैं

ई जगत्तिनल्लि सर्वदा सुखवेद नययामलि दु:ख स्वल्पवादरु बेडेन्दू सर्व रिगू प्राथ्य भाववाद सुखवु जीवन स्वरूप वागिद्दरु अदर मेले प्रकृति रूपवाद वस्त्र (आवरण) इरुवद रिन्द अनुभवक्के बारदे जीवरु बन्धोम्मु बन्मदल्लि अनेक जन्मात्मक कर्मगळन्नु माडुता आकर्मगलिन्द सम्पादित देहानुभवद् कालदल्लि नानाविध दुःखगळन्नु अनुभवि सुव जीवर दु:ख निवृत्ति गोस्कर श्रवण, मनन, निदिध्यासनादि साधनगळन्नुसेवेक्षि सुव वेदगल अनुसार वागिमनवदर्पण शुद्धिविन्द सदाचार गळन्नु माडिवन्तःकरण शुद्धिन्नु होदि परमात्मन गुण गळन्नु श्रवणमाडि आविषयदल्लि अनेकवादिगल विवाद मूलक वस्त्र सन्देहद निवृत्तियागुवर समयादि ब्रह्ममीमासा शास्त्रोक्त प्रकार विचारविन्द तत्व निश्चय माडिकोण्डु अक्षय सुखम्नु अनुभ विसतक्कदेन्दु श्री श्री गुरुवर उपदेश-वन्नु माडिदरु । (अद्वैतमतविचार पृष्ठ १-२)

नई दिल्ली की अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस मे मार्च के अन्तिम सप्ताह १९७२ में प्रोफेसर वी० सीतारमय्या भू पूर्व प्रिंसिपल बगलौर मे "कन्नड भाषा के विचारों और सभ्यता पर संस्कृत भाषा का प्रभाव विषय पर बोलते हुए कहा—कन्नड भाषा के प्रायोगिक शब्द जो व्याकरण, विज्ञान, न्याय दर्शन व आलोचना में प्रयोग होते हैं । इसी कारण कन्नड के सभी व्यावहारिक तत्व-ज्ञान में संस्कृत की सभ्यता का गहरा असर है । संस्कृत भाषा ने ही कन्नड को उच्चारण व विचारो के प्रकटन का बहुत बड़ा सहारा दिया है ।

जो कोई थोडी सा भी संस्कृत से परिचित है वे अद्वैतमत विचार के उक्त उद्धरण से अनुभव करेगा कि कन्नड भाषा मे संस्कृत शब्दो का कितना प्राचुर्य है । इसी भांति हम तेलगु के कुछ पद्यो का उल्लेख करना चाहेंगे ताकि समझ आ सके बिना पढ़े सुने अलग भाषा समझे जाने वाली तेलगु भाषा मे भी संस्कृत के शब्दों की कितनी बहुलता है । तेलगु भाषा के महाकवि श्री दीक्षित की पदावली से निम्न कविता प्रस्तुत है—

सदा शिव शिखाग्र मध्ये प्रणव मूल ज्योति
हृदय पुण्डरीक कमल नित्य पर ज्योति
अङ्गुष्ठ मात्र परम पुरुष दिव्य परम ज्योति
भ्रम मध्ये शुभुमार नित्य परम ज्योति
वासना क्षमादि त्रिगुणातीत नील ज्योति
सासिराल जल ज्योति साम्ब शिव स्वरूपा
मात्रिकाक्षराग्र राम तारकाग्नि तेजमे
नित्य ममसाममूल प्रणव मन्त्र स्वरूपिणे

तेलगु भाषा के महान लेखक त्यागराय के लेख के शब्द लालित्य का आनन्द लीजिए—

ज्योतिर्मया खण्डरूप विनुतापहृत भक्तलाप सर्वग्रहाधार भूत गीर्वाण मुनिवन्द्य सुजनेष्टदात योगिजन हृदयाब्जमित्र श्रीदान्त कान्त निर्वाण फलद वेदान्त वेद्यावनी सुरत्राण (पृष्ठ २५३)

धरणाधर योगिवरसुत परिपूर्ण नरक्य निरतयु वरत्याग राज परिपाल सुरभूमि सुहृल (पृष्ठ १६७)

त्वां विना नान्यत्र जाने राम, त्वा विना को गति जनिकी जाने घोर भव सागरोत्तरण राम तारतर श्री त्यागराज नुतचरण (पृष्ठ २३५)

तेलगु भाषा के इस शब्द लालित्य का आनन्द लेने के लिए पाठक श्री डा० वी० राघवन द्वारा सम्पादित "हेरिटेज आफ त्यागराज" का अवलोकन करे तो पायेंगे कि दक्षिण की यह भाषा संस्कृत के प्रति हिन्दी भाषा से भी अधिक समीपता रखती है । उच्चारण के कारण थोड़ा दूरी लगती है । वैसे स्वय हिन्दी भाषा के उच्चारणो का विश्लेषण करे तो हिन्दी भाषी क्षेत्रो में ही शुद्ध हिन्दी भाषा के सर्वथा भिन्न सैकडो प्रकार के उच्चारण पाए जाते हैं जिन्हे सुनकर कोई भी उन्हें हिन्दी स्वीकार नही कर सकता परन्तु वह हिन्दी ही है इससे कौन इन्कार कर सकता है ।

मलयाली भाषा

इसी प्रकार दक्षिण भारत की मलयालम भाषा तो संस्कृत भाषा अत्यन्त ही समीप है । महाकवि वल्लाथोल की रचना देखिए ।

महाशय शील पदवर्थ सुमहात्मन् नमस्ते

जगद् गुरु सिद्ध वरेण्यवरद तपश्चरित सद्गुणर रत्नाकर विश्वैक महारत स्वच्छादित पादोपधान पादयुग्म उपास्य

गीतमकु माता बाप भूमिये अमितु मतिरिमोह धर्म योगिये प्रसविच हिमवद् विन्ध्याचल मध्यदेशरते कामु क्षाभये शीलदेव लुविदेर सिद्धिने

गमयारोलुकुन्न धरि विपक्ष मयल काट्कुमू वरूप पादप मुण्डादूरन गमर गतवर्ष । नमस्तेद् राघव नमस्ते सुमहात्मन नमस्ते जगद्गुरो

मलयालम भाषा का व्याकरण तो सर्वथा संस्कृत भाषा की ही प्रतिलिपि है जैसाकि मलयाली भाषा के व्याकरण ग्रन्थ लीला तिलक मे स्पष्ट उल्लेख है । (क्रमश

यह उलझन

—प्रो० भद्रसेन, होशियार पुर

यह एक औद्योगिक और व्यापारिक नगर है, इससे कुछ दूरी पर एक प्रसिद्ध नदी बहती है। इस नदी और नगर के मध्य मे राजमार्ग से कुछ हट कर एक सेवाश्रम' है। जिसमे एक वाचनालय, पुस्तकालय और धर्मार्थ औषधालय है जहा समीपवर्ती क्षेत्र के रोगी धन्वन्तरि जी की सेवाओ का लाभ उठाते हैं। इस आश्रम के सचालक का नाम सर्वप्रिय जी है, जो एक भूतपूर्व इ जीनियर तथा एक बडे औद्योगिक केन्द्र के भागीदार थे। सर्वप्रिय जी की कार्यकुशलता से जहा भागीदार प्रसन्न थे, वहा उनकी लोक सम्पर्क भावना से कर्मचारी भी उन्हें अपना हितैषी मानते थे। वे कर्मचारियो की खुशी-गम मे सदा उनके सहभागी बनते, अपने भागीदारों और कर्मचारियो के किसी भी बन्धु की मृत्यु होने पर सर्वप्रिय जी उसमें अवश्य भी सम्मिलित होते। इस परिवार के विशाल होने के कारण अकस्मात मौत की कुछ ऐसी घटनायें घटी, कि जिससे इन के मन में अनेक जिज्ञासायें उभरी। इनके समाधान के लिए बहुत कुछ पढा और समय समय पर आये जब ऐसे अवसर आए तो महात्माओ को आमन्त्रित करके सत्सग रचाए।

सर्वप्रिय जी का प्रथम पौत्र जब विशेषज्ञ बनकर आया, तो अपने पुत्र को लोकसम्पर्क का कार्य सोप कर, कुछ सेवाभावियो के साथ मिलकर सेवाश्रम की स्थापना की। दो वर्ष पश्चात यहा रविवार को साय के समय सत्सग का कार्यक्रम भी प्रारम्भ हो गया। एक दिन सत्सग से पूर्व कालेज के कुछ छात्र आए और सचालक जी से निवेदन किया, कि हमारा साथी कमलेश एक योग्य विद्यार्थी है। इसके पिताजी की अकस्मात मृत्यु हो जाने के कारण यह एक दम बदल गया है और बडे अजीब-अजीब प्रश्न पूछता है। हम इसके प्रश्नो का उत्तर किस प्रकार से दें, इसकी बातें सुनकर उलटा हमारे भी मन मे अनेक आशकायें उभरती रहती हैं। अत आपसे प्रार्थना है, कि भावी सत्सगों मे इन प्रश्नो पर प्रकाश डालें।

महात्मा जी ने उस दिन के सत्सग में विद्यार्थियो की समस्या को सामने रखकर प्रवचन प्रारम्भ किया और कहा 'कि जिस दुनिया मे हम रहते हैं, उसमे हजारो चीजें ऐसी हैं, जो स्पष्ट रूप से बनती हुई दिखाई देती हैं। समय के साथ वे चीजें फिर घिसने लगती हैं और वे जीर्ण होकर या किसी विशेष घटना से एक दम बिखर जाती हैं। अलग-अलग चीजो के उदाहरण देकर उनकी [illegible] और मनुष्य की मृत्यु [illegible] कहा, 'इसी दृष्टि [illegible] किसी के लिए मर गया, ठण्डा पड गया, प्राण पखेरु हो गए, खेल खत्म हो गया आदि शब्दों का प्रयोग होता है। कठ उपनिषद के ऋषि ने इसी कहानी को 'सस्यमिव मर्त्य पच्यते, सस्यमिवाजायते पुन' के शब्दों से खेती की प्रक्रिया के आधार पर समझाने का प्रयास किया है। हर तरह के प्रयास करने पर भी अजर अमर आत्मा इस भौतिक शरीर को छोडकर एक दिन अज्ञात दिशा का राही बन जाता है।

इस बदली हुई स्थिति को देखकर अनेकबार अनेको के मन में नानाविध जिज्ञासायें उभरती हैं, कि यह मौत किसकी होती है? जब आत्मा अमर है तो उसकी मौत कसी? फिर मौत के भय से प्रत्येक भयभीत क्यो है? और उसके लिए शोक क्यो होता है? हमारे ये रिश्ते नाते आत्मा के साथ हैं या भौतिक देह के साथ? ये प्रश्न हर सोचने वाले को भी इस अवसर पर बहुत कुछ सोचने के लिए विवश करते हैं। इन प्रश्नो के साथ विचारशील के मस्तिष्क मे एक प्रश्नमाला ही उभर आती है, कि इस अमर आत्मा का इस विनश्वर काया से सम्बन्ध कैसा होता है? वह इसमें स्वतन्त्र है या परतन्त्र? इस आत्मा की शरीर मे स्वतन्त्र सत्ता है या नही? शरीर से वियोग किसी निश्चित काल पर होता है या अकाल मृत्यु भी हो जाती है? क्या सभी प्राणियो के शरीर उनके लिए एक जी का जजाल हैं? या ये क्रमश आगे बढने का सुन्दर अवसर है? इन सभी जिज्ञासाओ को सर्वप्रिय जी ने अनेक सत्सगो मे क्रमश समझाने के लिए शास्त्रो के प्रमाणों और दृष्टान्तो द्वारा इस चर्चा को रोचक रूप दिया।

एक दिन आठवी बैठक में सगीत प्रिय जी के भजन के बाद महात्मा जी ने कहा—आज तक हमने जो चर्चा चलाई है, उसका यजुर्वेद के 'अश्वत्थे वो निषदनम्—१२, ७९ मन्त्र में बहुत ही सुन्दर विश्लेषण मिलता है। यहा यह बताया गया है, कि हमारा यह ससार (अश्वत्थ) चलायमान है। केवल हमारे द्वारा बर्ते जाने वाली भौतिक चीजें ही नही, अपितु हमारा यह प्रिय देह भी पीपल के पत्ते की तरह पतनशील है। पता नही कब, किधर से हवा का कैसा झोका आए और यह नीचे पडा हुआ दिखाई दे। अत इस सुन्दर मानव चोले को रखने वालो! इसके अनोखे पन को समझो और सोचो, क्या इस अनमोल अवसर को प्राप्त करके हम इसका लाभ उठा रहे हैं? या दूसरों को केवल यही कहने का मौका दे रहे हैं, कि 'चिडियो ने चुग खेत लिया, अब पछताए क्या होवत है'।

इस ससार मे आने जाने का यह क्रम न जाने कब से चला आ रहा है, पर इतिहास यह बता रहा है, कि यहां कुछ ऐसे भी आए, कि हजारो लाखों साल बीत जाने पर भी हम उनको भुला नही सके। अपनी विद्या, साधना, कला या प्रज्ञा से उन्होने ऐसी अमिट छाप छोडी है, कि समय उनको धूलिसात नही कर सका। उनकी यह अमरता हर आने वाले को एक सन्देश दे रही है, कि इस दुनिया मे चाहे कोई किसी हो, पर फिर भी वह इस चोले मे आने के अवसर का लाभ उठाकर, अपना और अन्यों का जीवन कृतार्थ कर सकता है, तभी तो कहा है—

'ऐसी करनी कर चलो, तुम हसो, जग रोए'।

अत इस अनोखे अवसर को प्राप्त करके हमें जीवन के रहस्यों को समझते हुए एक 'सुसगत जीवन पथ' को अपनाना चाहिए। जिससे हम मज़िल पर पहुच कर अपने लक्ष्य में सफल होने की खुशियो को अनुभव कर सकें। इन्हीं सारी चर्चाओ को 'जन्म मरण की उलझन' में विस्तार से समझाया गया है।

आर्यसमाज का मार्ग

(पृष्ठ ५ का शेष)

...रण स्पष्ट है कि जब तक हिन्दू नाम से स्वय को पुकारने वाले लोग अपने साम्प्रदायिक विभेदो तथा सामाजिक विषमता से मुक्ति नही पा लेंगे तब तक चाहे किसी ध्वजा के नीचे क्यो न खडे हों, वे राष्ट्रीय तौर पर न तो शक्तिशाली ही हो सकेंगे और न बाहरी चुनौतियो का ही मुकाबला कर सकेंगे। ...हा श्री गोयल का सुझाव है कि आर्यसमाज को सनातनधर्म, रा० स्व० सघ ...व हिन्दू परिषद को भी अपने द्वारा निर्मित उनके मनोनुकूल हिन्दू निष्ठा ...न राष्ट्रीय दल में सम्मिलित होने की अपील करनी चाहिए। मैं उन्हे ...ष्ट बता दू कि जो सनातन धर्म सभायें आर्यसमाज के सुधारवादी कार्यक्रमों ...ा लगातार विरोध करती रही, जिस राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ ने ऋषि दयान्द के विराट एव ओजस्वी व्यक्तित्व को तिरोहित करने के लिए स्वामी विवेकानन्द को उभारा, जो आज भी महर्षि को उचित सम्मान देने मे सकोच ...रता है, तथा जो विश्व हिन्दू परिषद मनाचस के पाठो को देश मे वितरण ...रन से ही धार्मिक एकता का विकास होगा मानता है, उनके साथ आर्य...माज का वैचारिक मेल त्रिकाल में भी सम्भव नही है। यह दूसरी बात है इन सस्थाओ ने समय समय पर अपनी चतुराई और चालाकी से आर्यसमाजियो को अपने साथ मिलाकर अपना ही उल्लू सीधा किया है। सच तो है कि श्री गोयल ने समस्या का समाधान करने के जो उपाय बताये हैं, उतने सरल नहीं है। परिस्थितियों की जटिलता को सही परिप्रेक्ष्य में ...ना होगा। आर्यसमाज हिन्दू जाति के तथाकथित खारे सागर में डूबकर ...य के विनाश को आमन्त्रित नही करेगा।

वाद

लेखक वैद्य ओमपालसिंह आयुर्वेद भास्कर
स्नातक गुरुकुल म० वि० ज्वालापुर

सम्प्रदाय जातिवाद, परम्परागत मान्यता को,
जहां धर्म निरपेक्षता के शब्द से सजाना है।
साम्प्रदायिक भावना को धर्म स्वीकार करके,
स्वतन्त्र देश भारत में भरम उपजाना है।
जन्मस्थली को राजनीति से जोड़ कर के,
मंदिर अरु मस्जिद की मात्र इक बहाना है।
बढ़ रहे राग द्वेष फूट के अरु बीज सभी,
शहीदों की भावना को किसी ने न जाना है।
धर्म है सापेक्ष न होता निरपेक्ष कभी,
वेद कवि ने मात्र वैदिक धर्म माना है।
भ्रमित हो दुश्मनों से स्वयं को जो भूल गये,
जिन्हें गुरु भावना को दिल से बिसराना है।
पाकिस्तान कौन कहे, खालिस्तान चाह रहे,
जिन्हें ताज, ताज में ही ताज बिखराना है।
उन्हें देश प्रेमी नहीं स्पष्ट देश द्रोही कहे,
जिन्हें गणतन्त्र का बहिष्कार ही कराना है।
घोल रहे विष के विषैले कृत्य रह रह के,
ऐसे विधर्मियों को देश से हटाना है।
भाषावाद, प्रान्तवाद से ही क्या भारत की,
एकता अखण्डता को जड़ से मिटाना है।
भाषा हो द्रविड़, बंगाली गुजराती चाहे,
अंग्रेजी भाषा को महत्व न दिलाना है।
तेलगू पंजाबी हो या उत्कल मराठी हो,
हिन्दी अहिन्दी भाषी प्रान्त न गिराना है।
हिन्दी राष्ट्र भाषा की अधिकारिणी बनी रहें
देववाणी संस्कृत का महत्व समझाना है।
काले काले बादल नित हैं मंडरा रहे
ऐसे बादलों से न कभी भी घबराना है।
पाश्चात्य संस्कृति के चढ़ रहे नये रंग,
भारतीय संस्कृति को उससे बचाना है।
आर्यवर्त भारत गारत न होवे कभी,
'आर्य समाज आन्दोलन को जमाना है।

कौन करे आह्वान ?

दयानन्द के दिव्य स्वप्न का कौन करे आह्वान।
गौरक्षा के पावन व्रत को कौन करें साकार।
भौतिकता में तो चेतनता, व्यथित हुआ संसार ॥१॥
पथभ्रष्ट हो विकल दीनता भूल गया उपकार।
घोर निराशा की आंधी में, डगमग डगमग पाव ॥२॥
सोच रहा है भ्रमित सा वे, कहां करू विश्राम।
ऋषिवर बता गये हम सबको, जीवन लक्ष महान ॥३॥
आर्य हिन्दू का एक लक्ष हो, एक राय हो आज।
जाति-पथ मत वाद दुर्ग को, तोड़ें कैसे आज ॥४॥
कौन करे गौ-मा का रक्षण दानवता का संहार।
मांग सभी को दे पायेगी, शान्ति सुधा रस पान ॥५॥
गूंज रहे है मस्तिष्को मे, प्रश्न यही अविराम।
जटिल समस्या आज बड़ी है, गो हत्याकी आज ॥६॥
महानाश की ज्वालाओं में, धधक रहा प्रिय राष्ट्र।
उजड चुकी है भारत वाटिका, राष्ट्र बना स्मशान ॥७॥
जाग उठी है मानवता की क्रन्दन की है तान।
आतंकवादी क्रूर भेड़िये, निर्लज्ज मतिस्वान ॥८॥
यही प्रश्न है जिनका उत्तर, मांग रहा कवि आज।
कौन बचायेगा गो-मा को, बन कर के शिवराज ॥९॥
सत्य धाम गो रक्षा की, करे घोषणा आज।
ओ३म् ध्वजा को लेकर 'केवल' करे आज आह्वान ॥१०॥

संग्रहकर्ता
स्वामी केवलानन्द सरस्वती
महर्षि दयानन्द कुटीर साधना स्थली
आर्य समाज मसूदा, जिला अजमेर

आर्य जगत् के समाचार

आर्य समाज विराट नगर (नैपाल)

का विधिवत गठन ६ जून को श्री किशनलाल यादव (पूर्व) महापौर विराट नगर की अध्यक्षता मे हो गया है जिसके अध्यक्ष श्री सीताराम अग्रवाल महामन्त्री श्री गणेशलालसिंह निर्वाचित हुए हैं।

अवसानी ग्राम में आर्य समाज का गठन

दिनाक १४-४-८७ को बी० के० शास्त्री मन्त्री चम्पारण जिला आर्यसभा की अध्यक्षता मे अवसानी (बगहा) ग्राम मे आर्य समाज का गठन हुआ। जिसमे निम्नलिखित अधिकारी एव सदस्य चुने गये।

प्रधान—श्री पृथ्वीनाथ तिवारी

मन्त्री—डा० जयप्रकाशसिंह

चम्पारण जिला आर्य सभा

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान में दिनाक १४ जून से १७ जून तक बाल्मीकि नगर मे, १९ जून से २३ जून तक रामनगर में, २४ जून से २८ जून तक जीतपुर (नेपाल) मे वैदिक धर्म प्रचार धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज मन्दिर पिथौरागढ़ में विवाह

पिथौरागढ। आर्य समाज मन्दिर—कच्चाहारी आश्रम मे २८ जून को पुष्पा नार्यूसिह तथा २९ जून १९८७ को गमा शकरसिह के विवाह सस्कार स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती द्वारा सयोजित किये गये। अब कुमाऊ मण्डल मे नैनीताल, हल्द्वानी, भवाली, रानीखेत, बागेश्वर व अलमोडा के साथ पिथौरागढ मे भी १६ सस्कारो के सम्पन्न कराने की व्यवस्था हो गई है।

—गुरुकुलानन्द सरस्वती

आर्य समाज अलीगढ़ के कर्मठ कार्यकर्त्ता नहीं रहे

अलीगढ जिले के कर्मठ कार्यकर्त्ता जिलासभा के पूर्व प्रधान, साधु आश्रम हरदुआगज के मन्त्री मास्टर बाबूराम जी के ३० मई को निधन होने से आर्य समाज सासनीद्वार अलीगढ ने शोक प्रस्ताव पारित कर इसे जिलेभर की अपूरणीय क्षति बताया है। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति व शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—जयनारायण मन्त्री

डरबन में शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा (दक्षिण अफ्रीका) के प्रधान ने डरबन से तार भेजा व पजाब और हरियाणामे उग्रवादियो द्वारा हिन्दुओ के सामूहिक नरसहार पर गहरा दुख प्रकट करते हुए वहा की जनता से हार्दिक सहानुभूति व्यक्त की है। उन्होने यह भी कहा है कि हम सब अपने देश की एकता को हर कीमत पर बनाये रखकर परमपिता परमात्मा से सर्वत्र शाति के लिये प्रार्थना करते रहे।

इसराईली लाबी

(पृष्ठ ४ का शेष)

हथियार बेचता है तो यह सब तत्व सक्रिय हो जाते है और हर प्रकार से इसराईल के हितो की सुरक्षा करने लग जाते है। आज से कुछ समयपूर्व यह समचार प्रकाशित हुआ था कि अमेरिकन सरकार सऊदी अरब को ६०० टैंक भेदी मिजाईल बेचने का विचार कर रही है इस समाचार के प्रकाशन के कुछ घण्टो पश्चात ही इसराईली लाबी सक्रिय हो गई और १३ दिन के भीतर २६०सदस्यो ने सरकार की नीति का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। यह सब उस समय हुआ कि जब अमेरिका को अरब खाडी मे अपने जहाजो की सुरक्षा के लिए सऊदी अरब की सहायता की आवश्यकता थी।

पश्चिम उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल का प्रान्तीय शिविर सम्पन्न

अतरौली, अलीगढ़ में २० जून से ३० जून तक पश्चिम उ० प्र० आर्य वीर दल का शिविर ३० जून को सम्पन्न हुआ। दीक्षान्त में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक प० बालदिवाकर जी हस (दिल्ली) उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय सचालक माननीय डा० बाल कृष्ण जी आर्य विकल (बिन्दकी) ने भाग लिया। श्री विकल ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे युवकों को राष्ट्रहित में जागरूक रहने को कहा। आर्य वीर दल चरित्र निर्माण का सब से बड़ा कारखाना है। प्रधान सचालक हस जी ने आर्य वीरों का आशीर्वाद दिया। उपप्रधान सचालक श्री आचार्य डा० देवव्रत जी ने भी आर्य वीरों को सन्देश दिया। शिविर में १७० शिक्षार्थी आर्य वीरों ने भाग लिया जो भिन्न भिन्न स्थानों से आये थे। फर्रुखाबाद, अल्मोडा, नैनीताल, अलीगढ, मथुरा, आगरा, भरतपुर (राजस्थान), बुलन्दशहर, ऐटा, गाजियाबाद प्रमुख हैं।

—जयनारायण आर्य, उपसचालक

न्यायालय ने इच्छानुसार जीने का अधिकार दिलाया

उत्तर बिहार आर्य सभाके सगठन मन्त्री श्री नवलकिशोर शास्त्री ने बेगुसराय मे नरगिस खातुन की शुद्धि कर उसका नाम कुमारी निवेदिता आर्या रखा तथा उसका विवाह सस्कार श्री जगदीश चौधरी के साथ सम्पन्न कराया।

ज्ञातव्य है कि लगभग वर्षों से प्रशासन द्वारा इस विवाह में प्रतिरोध उत्पन्न किया जा रहा था। जगदीश चौधरी एव नरगिस ने विवाह के लिए न्यायालय मे आवेदन किया था। परन्तु तत्कालीन समाहर्ता मु० सुलेमान ने साम्प्रदायिक भावना से ग्रसित होकर उन्हें झूटे मुकदमे मे फसाकर जगदीश चौधरी को जेल मे तथा नरगिस खातुन को दरभगा रिमाड होम मे भिजवा दिया। परन्तु माननीय उच्च न्यायालय ने दूध का दूध एव पानी का पानी कर दिया। अपने फैसले मे कहा कि नरगिस खातुन वयस्क है, उसे अपनी इच्छानुसार जीने का हक है तथा शासन उसके इच्छा के विरुद्ध उसे होम में रख सकती है।

उक्त विवाह सस्कार मे हजारो की सख्या में लोगों ने भाग लिया तथा वर-वधु का नागरिक अभिनन्दन किया गया।

इस कार्यक्रममे आर्य समाज विद्यार्थी परिषद,विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के कार्य कर्ताओ ने मिलकर सहयोग किया।

—राम वृक्षावन आर्य
समस्तीपुर आर्य समाज



आयसमाज मदुरै मे दिनाक २८ ८७ की आम सभा को सम्बोधित करते हुए श्री पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी महाराज, अनुवाद श्री प० सुमतीन्द्र जी एम० ए० हिन्दी प्रोफसर मदुरा कालेज कर हे है। अध्यक्ष श्री एस०के० बालकृष्णन पूव मेयर।



दिनाक ९-६-८७ कूरियूर ग्राम, जिला रामनाथपुरम् मे शुद्धि। ४ मुस्लिम कुटुम्ब के १६ सदस्य और एक ईसाई युवक वैदिक धम में दीक्षित हुए।

आर्य जगत से अपील

मेरा चण्डीगढ़ से कारणवश गाजियाबाद जाना हुआ। पूज्य अमर स्वामी जी के दर्शन वेद मन्दिर (कवि नगर) उनकी कुटिया मे किए। अमर स्वामी जी, गले के कष्ट से पीडित हैं शरीर मे काफी दुर्बलता थी। ईश्वर न करे कोई अन्दर की शिकायत हो। मैं आर्य जगत और और विशेषतया आय समाजो से अपील करता हूं कि इस रुग्णावस्था मे स्वामी जी की तन, मन और धन से विशेष सेवा होनी चाहिए उनको किसी प्रकार की कमी प्रतीत न हो।

—इन्द्रराज शर्मा, प्रधान
आर्य समाज सेक्टर २२
चण्डीगढ

श्रीमती प्रभातशोभा की बिदाई

प० श्रीमती प्रभातशोभा ३० जुलाई से अमेरिका जा रही है आप स्व० प० बुद्धदेव विद्यालकार की पुत्री व हरयाणा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह की पत्नी है १९ को प्रात १० बजे आर्य समाज दीवान हाल मे उन्हे सामुहिक बिदाई दी गई।

अनेक बन्धु इस अवसर पर उपस्थित थे।

श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित विदेश यात्रा पर

पण्डित प्रभात शोभा विश्व लकुता विश्वधर्म सम्मेलन मे सदस्यो के एक विशेष मण्डल के साथ हिन्दू धम का प्रतिनिधित्व करने के लिए को विदेश यात्रा पर जा रही हैं। शिष्टमण्डल मे वैदिक धम के अतिरिक्त अन्य मतमतान्तरो के विद्वान भी सम्मिलित हैं। पण्डत प्रभात शोभा जी कार्यक्रम के अनुसार ३० जुलाईसे ७ अगस्त तक कैलीफोरनिया की राजधानी सानफासिको मे तथा अमेरिका के न्यूयार्क नगर मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनो मे हिन्दू वैदिक धम का प्रतिनिधित्व करेगी।

स्मरण रहे पण्डित प्रभात शोभा गुरुकुल देहरादून की स्नातिका पण्डित बुद्धदेव विद्यालकार की सुपुत्री तथा सभाप्रधान प्रोफेसर शेरसिंह की धर्मपत्नी हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ, रोहतक

गुरुकुल वृन्दावन मे प्रवेश

१ जुलाई सन १९८७ से प्रारम्भ नि शुल्क बी० ए० स्तर तक शिक्षा सादा भोजन नियमित दिन कार्यालय, उत्तम देख भाल के लिए प्रारम्भिक भोजन शुल्क १००) रु० मात्र में कक्षा १ से आपके बालको का प्रवेश गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन मे दिलावें ।

—मुख्याधिष्ठ ता

साठ रुपए बचाइये

१६० रुपए के पांच कैसेट केवल एक सौ रुपए में

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि हम आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान भजनोपदेशको के भजनो के पाच नए कैसेट बनाने जा रहे हैं जिनका मूल्य तीस रुपए प्रति कैसेट होगा । किन्तु प्रचार के लिए हम उन ५०० ग्राहको को ये पाच कैसेट केवल एक सो रुपए मे देगे जिनके अग्रिम १०० रुपए हमे १४ अगस्त १९८७ तक प्राप्त हो जायेगे । अपने घर मे वैदिक विचारा का वातावरण बनाने तथा आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे अपना योग दान देने के लिए आज ही हमे सो रुपए भेजकर अपने कैसेट सुरक्षित करवा लीजिए । प्रथम दो कैसेट जन्माष्टमी तथा तीन कैसेट दीपावली तक आपको मिलेंगे । इस छूट की अब तिथि नही बढेगी ।

६० रुपए छूट मे ५० रुपए कैसेट मूल्य मे १० रुपए डाक व्यय की है ।

विशेष उपहार—दस कैसेट के दो सो रुपय भेजने वालो का एक कैसेट फ्री भेंट दिया जायेगा ।

प्रस्तुत कर्ता—संसार साहित्य मण्डल
१४१/२५ ३ मुलुण्ड कालोनी, बम्बई-४०००८२

… है । कानपुर के महान् स… रक्षक गतिविधियो से चिडकर खालसा राज… । धमकी भरा पत्र मिला है । पत्र मे श्री विलासीराम कत्याल, मोहनलाल अरोडा कृष्णलाल भाटिया देवेन्द्र सब्बरवाल के नामो का भी उल्लेख है । पत्र मे लिखा है तुम खालिस्तान का विरोध करते हो । तुम्हारा भी वही अन्त होगा जो हरियाणा के बस यात्रियो का हुआ तुम्हे गोली से उडा दिया जाएगा । खालिस्तानियो के ऐसे पत्र सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती को मिलते रहे हैं ।

डाक्टर राजबहादुर दिवंगत (लखीमपुर)

आर्यसमाज के पुराने समाज सेवी श्री डाक्टर राजबहादुरजी का महेशपुर (गोला गोकर्णनाथ) मे देहावसान हो गया । डाक्टर साहब वर्षो तक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० कार्यालय मे तथा उपदेश विभाग की सम्भाल कार्य करते रहे । आप तथा आपके भ्राता श्री व्रजबहादुर जो भजनोपदेशक के रूप मे सभा द्वारा प्रचारक थे । सारा जीवन समाज सेवा मे व्यतीत किया । कुछ समय पहले फालिज से पीडित थे ।

आप अपने पीछे चार सुपुत्र, एक पुत्री भरापूरा परिवार छोड गये हैं आपकी धर्मपत्नि जी का उनके जीवन मे पूरा सहयोग रहा । आपके निधन से आर्य समाज को भारी क्षति हुई है । प्रभू से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति मिले और परिवार को उनके वियोग के सहन करने की शक्ति मिले ।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२से प्रकाशित ।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष । २७४७७१
वर्ष २२ अक ३१] श्रावण शु० ७ स० २०४४ रविवार २ अगस्त १९८७ वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

अरब देशों में इस्लाम के नाम पर मानव अधिकारों की हत्या : हज के नाम पर शोषण

मिश्र के सबसे बड़े मुफ्ती ने एक फतवा दिया है कि इस्लाम धर्म के अनुसार कोई भी व्यक्ति दत्तक पुत्र नही बना सकता। एक जोड़े ने दत्तक पुत्र बनाने के सम्बन्ध मे मुफ्ती साहब से व्यवस्था मागी थी।

अरबो को अपनी भाषा का इतना पक्षपात है कि हिन्दुस्तान से जाने वाले यात्री उर्दू का कुरान लेकर जाते है तो अरब सीमा पर तलाशी लेने वाले अधिकारी उसे फाड कर फेंक देते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश रखने पर तो एक भारतीय को फासी का दण्ड सुना दिया गया था। जिसकी प्राण रक्षा सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती द्वारा की गई थी।

ससारभर के मुसलमान मक्का-मदीना को स्वर्ग स्थान ही मानते है। वहा जाने के लिए हज यात्रियो को कितना कष्ट व पीडा सहन करनी पडती है इसे मुक्त भोगी हज यात्री ही भली भाति जानते है। सऊदी अरब मे सारे ससार से हज करने के लिए आने वाले यात्रियो का भीषण शोषण होता है। प्रत्येक यात्री को मिलने वाली विदेशी मुद्रा मे से मुअल्लम फीस (ज्ञान देने का कर) के नाम पर ५४० रियाल (सऊदी अरब का सिक्का) पहले ही काट लिए जाते हैं। छोलदारी आदि की सुविधा के नाम पर ३०० रियाल वसूल किया जाता है। साऊदी अरब मे प्रवेश पर टक्स पृथक लिया जाता है। मक्का की परिक्रमा के समय जो चादर ओढी जाती है वह भी मनमाने दामो मे दी जाती है।

धर्मान्धता का यह गढ इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धम व

(शेष पृष्ठ २ पर)

वेदामृत

जीवात्मा की परिधि

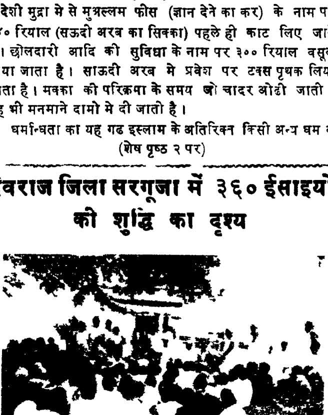
ओ३म् एहि जीव त्रायमाण पर्वतस्यायस्यक्ष्यम् ।
विश्वेभि देवैर्दत्त परिधिजीवनायकम् ॥

अथर्व ४ । ६ । १

(एहि) आ (जीवम) जीव को (त्रायमाण) पालता हुआ (पर्वतस्य) पूर्ति करने वाले (अक्ष्यम्) व्यवहार के लिए हितकारक (विश्वेभि) समस्त (देवै) दिव्य गुणो के साथ (दत्तम) दिया हुआ (कम) तू सुखस्वरूप ब्रह्म (जीवनाय) हमारे जीवन के लिए (परिधि) परकोटा (असि) है।

जीवात्मा का पालन जिन साधना से होता है उनका उत्पादक परमपिता परमात्मा ही है। उसी की कृपा से अन्न फल फूल पैदा होते हैं। दिव्यगुणो से युक्त प्रभु प्यारा हमारे जीवन मे भी दिव्यता का प्रसाद प्रदान करे। हमारे जीवन को प्रत्येक प्रकार के भय व आतंको से बचाता है। वही हमारे जीवन की परिधि चहार दीवारी। हम उसकी बनाई किसी सीमा का उल्लघन ही नही कर सकते। हमारी सब प्रकार से पालन पोषण उन्नति व रक्षा के लिए हम उसका आवाहन करते हैं। —आचार्य शिवराज शास्त्री

देवराज जिला सरगूजा में ३६० ईसाइयों की शुद्धि का दृश्य



शुद्ध हुए व्यक्तियों के साथ, विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रधान श्रीमती माता कौशल्यादेवी व कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री स्वामी धर्मानन्द जो।

अन्दर के पृष्ठो पर पढ़िये

शाकाहारी भोजन से फायदे क्यों ?

—प्रदीप मुखोपाध्याय

शाकाहार अच्छा है या मांसाहार ? इस पर हमेशा से ही विवाद रहा है। पर इसके पीछे के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जाने बगैर यह विवाद एक तरह से महत्वहीन हो जाता है।

दरअसल हमारे शरीर से अदृश्य किरणें विकिरण के रूप मे निकल रही हैं। इन किरणो के निरस्त्र होने के कारणो के बारे मे वैज्ञानिको ने शोध किए हैं। आन्द्रे बोविस नामक वैज्ञानिक के मतानुसार इन किरणो के निकलने का कारण पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति है। इस शक्ति को जिओमैग्नेटिज्म यानि भू चुम्बकत्व के नाम से जाना जाता है।

पृथ्वी की इस चुम्बकीय शक्ति के कारण धनात्मक तथा ऋणात्मक धाराए क्रम से उत्तर से दक्षिण दिशा तथा पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर पृथ्वी मे से होकर सतत प्रवाहित हो रही है। ये धाराए दाए पैर से हमारे शरीर के अन्दर प्रवेश कर बाए हाथ से बाहर आती हैं। इसी प्रकार बांए पैर से होकर भी हमारे शरीर के अन्दर ये धाराए प्रविष्ट होती हैं जो फिर दाए हाथ से बाहर निकलती हैं। इन धाराओ के अलावा पृथ्वी से परे की ब्रह्माड धाराए भी हमारे सिर से होकर हमारे शरीर के अन्दर प्रवेश पाती हैं और फिर हमारे हाथ, पैर और आखो के जरिए बाहर निकलती है। ये धाराए हमारे शरीर मे मौजूद पानी मे जज्ब होकर उसमे सन्निहित हो जाती है। पानी के अणुओ से क्रिया करके ये धाराए फिर विकिरण को जन्म देती हैं।

स्वस्थ मानव शरीर से निःसृत होने वाले विकिरण की तरग दैर्घ्य साढे छ हजार आगस्ट्राम या इससे कुछ अधिक होता है। आगस्ट्राम तरग दैर्घ्य को नापने की इकाई है और यह एक माइक्रान का दस हजारवा हिस्सा है। एक सेंटीमीटर के दस हजारवें हिस्से को माइक्रान कहते हैं यानि यथार्थ मे आगस्ट्राम एक सेंटीमीटर का दस करोड़वा हिस्सा होता है।

जोविस ने अपने ईजाद किए हुए विशेष उपकरण से विभिन्न खाद्य पदार्थो से निसृत होने वाले विकिरण के तरग दैर्घ्य को नापा। ताजे दूध से निसृत विकिरण का तरग दैर्घ्य ६,५०० आगस्ट्राम पाया गया। पर १२ घटे बीतते-बीतते तरग दैर्घ्य मे ४० प्रतिशत का ह्रास पाया गया और २४ घटो के अन्त तक यह ह्रास ६० प्रतिशत तक हो गया। डिब्बा बन्द खाद्य सामग्रियो से निसृत विकिरण का तरग दैर्घ्य यन्त्र ने शून्य के बराबर ही दिखाया। इसके विपरीत ताजे फल व सब्जियो से विकीर्ण ऊर्जा का तरग दैर्घ्य ६,५०० से लेकर १०,००० आगस्ट्राम या उससे भी ऊपर पाया गया।

वैज्ञानिको का मानना है कि भोजन द्वारा हमारे शरीर तन्त्र मे पहुचने वाली खाद्य सामग्री अगर तरग दैर्घ्य मे ६,५०० आगस्ट्राम से अधिक होगी तभी यह हमारे लिए फायदेमद साबित होगी। ६,५०० आगस्ट्राम से कम तरग दैर्घ्य वाले भोजन को ग्रहण करने पर वह हमारे शरीर की अदरूनी शक्ति को उल्टे निचोड़ता ही है।

साइमोनेटन नामक वैज्ञानिक का कहना है कि ६,५०० आगस्ट्राम से अधिक तरग दैर्घ्य वाला भोजन ही हममे सही शक्ति का सचार कर सकता है। अत शक्तिशाली और निरोग बने रहने के लिए हमारी खाद्य सामग्री मे ऐसे पदार्थ अधिकता मे मौजूद रहने चाहिये। अडो और मास मछलियो से निसृत होने वाले विकिरण का तरग दैर्घ्य आम तौर पर साढे छह हजार से कम ही होता है।

साइमोनेटन ने यह भी पाया है कि शराब, सिगरेट या बीडी आदि की लत रखने वाले या मांसाहारी व्यक्तियो के शरीर से विकिरण द्वारा जो ऊर्जा बाहर निकलती है उसका तरग दैर्घ्य अमूमन ६,५०० आगस्ट्राम से कम होता है। कैंसर से पीडित व्यक्ति द्वारा विकीर्ण तरग दैर्घ्य का मान ४८७४ आगस्ट्राम मात्र ही होता है। अत कोई व्यक्ति जो तरग दैर्घ्य अपने शरीर से विकीर्ण करता है, उसे नाप कर उसके स्वास्थ्य के 'स्तर' का अदाजा लगाया जा सकता है।

उक्त विश्लेषण से यह तो स्पष्ट ही है कि ताजे फल, दूध और सब्जियां आदि शरीर के तरग दैर्घ्य को ऊपर उठाने का कार्य करती है। अत शुद्ध शाकाहारी भोजन शरीर पर अपना प्रभावी असर डालकर शरीर को निरोग बनाए रखने मे मदद करता है जबकि तामसिक या मांसाहारी भोजन से शरीर से निसृत होने वाले विकिरण का तरग दैर्घ्य कम होता है। इससे शरीर मे तरह तरह की बीमारियों के लक्षण पैदा हो सकते हैं। ●

मानव अधिकारों की हत्या

(पृष्ठ १ का शेष)

पूजा स्थान बनाने की कभी स्वीकृति प्रदान नही करता। धार्मिक स्वतन्त्रता वाणी स्वतन्त्रता आदि की तो चर्चा ही कौन करे। अरब के मुफ्ती जनजीवन व मानव अधिकारो के नाम पर एक शब्द सुनने को तैयार नही। न जाने भारत के मुसलमान किस आधार पर इसे स्वर्ग मानते है। भारत मे उन्हे जो स्वतन्त्रता प्राप्त है उसका वहा नामो निशान तक नही।

अखिल भारतीय हज कमेटी ने सऊदी अरब की सरकार से भारत स्थित दूतावास की मार्फत यह माग की है कि यात्रियो से टैक्सो के नाम पर इतनी बडी राशिया न वसूल की जायें भारतवर्ष के १५० मुसलमान मौलनाओ ने यह मांग की है कि यात्रियो के इस शोषण को रोका जाए।

सम्पादकीय

साम्प्रदायिक उन्माद एवं आर्य समाज

भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुए ४० वर्ष हो गए। स्वतन्त्रता की भारी कीमत भी भारत ने चुकाई थी। १९४७ के वे घोर अन्धकारमय दारुण दृश्य जिसने देखे हैं वह भारतीय स्वतन्त्रता के मूल्यों का सही आकलन कर सकता है। आज ४० वर्ष में भी हम अपनी बीती घटनाओं का यदि सही मूल्यांकन नहीं कर सके तो हमें राज्य चलाना अथवा देश की रक्षा करना आता है यह कहने वाले देश के कर्णधार कब तक प्रजा के जानोमाल से खिलवाड़ करते रहेंगे।

राजनीति का बुर्का पहन कर वे अपने भारतीय स्वरूप को कितना ही पर्दे में रखकर राजनीति करे परन्तु सत्य हर घटना पर मुखर होकर प्रकट हो ही जाता है।

जिस मुसलिम लीगी उद्दाम आतंकवाद ने देश के टुकडे किए वह साम्प्रदायिकता का विषैला सांप आज भी देशवासियो के घरों में बिल बनाकर बसा हुआ है और अवसर पाते ही विषैला वातावरण बनाने का भरपूर प्रयत्न करता है।

पाकिस्तान का निर्माण इसलिए किया गया था कि मुसलमानों की होमलैण्ड (अपनी भूमि) मिल जाने से सम्भव है भारत के हिन्दू व मुसलमान सुख शान्ति का स्वप्न देखने लगेगे। परन्तु आज चालीस वर्ष का कटु अनुभव यह सिद्ध करता है कि छोटी सी चिनगारी भी देश का अमन चैन बर्बाद करने को दावानल का रूप धारण कर लेती है।

साम्प्रदायिकता की भीषण ज्वाला मे ५ वर्ष से पंजाब जल रहा है। देश के अत्यन्त सवेदनशील सीमा प्रान्त पंजाब में जिस पाकिस्तान ने यह आग लगाई है वही मेरठ गुजरात को भी अपनी लपेट में झोंकने में कोई कसर नही उठा रख रहा है।

दिल्ली भी आज उसी विषाक्त वातावरण की लपेट में आ गया है। यहां की मस्जिदे भी पंजाब के गुरुद्वारो का रूप धारण करती जा रही हैं।

देश के कर्णधारों ने विगत ४०वर्ष जिनकी चापलूसी व खुशामद में ही बिताए। इतिहास से जिन्होंने कभी कोई शिक्षा नहीं ली उनके हाथों में देश का शासन कैसे इस विनाश से देश को बचा सकेगा यह प्रत्येक देश भक्त के लिए घोर चिन्ता का विषय बनता जा रहा है।

देश का बहुसंख्यक समाज सदा से शान्ति प्रिय व अहिंसक ही रहा है। खरबूजा छुरी पर गिरे कि छुरी खरबूजे पर गिरे हानि खरबूजे की होगी यही दशा आज हिन्दू समाज की हो रही है। मेरठ में अरबों रुपये की आर्थिक क्षति व सैकडों की हत्यायों में हिन्दू ही लुटता पिटता रहा है।

सरकार के पास हर घटना को नापने का एक पैमाना है वह है उसकी वोट की राजनीति। ऐसी अवस्था में करोड़ों हिन्दुओं को अपनी जानो माल की रक्षा का नूतन आधार खोजना ही एकमात्र भविष्य का आधार रह गया है। वर्तमान राजनैतिक पार्टियों से उसे कोई सुरक्षा की आशा नहीं रखनी चाहिए। विपक्षी पार्टियों का रुख हिन्दुओं ने भली भांति देख व पहचान लिया है। वे भी वोट की राजनीतिक भाषा में ही साम्प्रदायिकता के विषैले नाग को पाले रखना आवश्यक समझते हैं।

स्वातन्त्र्य आन्दोलन के महान् स्तम्भ लाला लाजपतराय व महात्मा गांधी के अत्यन्त निकटस्थ अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इसीलिए समय रहते राजनीतिक विचार धाराओ का रुख शुद्ध हिन्दुत्ववादी तत्वों की ओर मोड़ा था परन्तु आज हिन्दुओ में कोई इतना प्रभावशाली व सशक्त नेता नजर नही आता है।

आर्य समाज हिन्दू हितो की रक्षा के लिए अहर्निश जागरुक रहा है और आज भी सिर पर कफन बांधकर आर्य समाज के नेता अहर्निश हिन्दू जनजागरण का अभियान चला रहे हैं।

आवश्यकता है कि हिन्दू अपना हित अनहित सोचकर हृदय से आर्यसमाज का साथ दें ताकि आर्यसमाज की आवाज आज के अवसरवादी राजनीतिज्ञो के कानो तक पहुंच सके। हिन्दू समाज संकट मे है इसमें किसे सन्देह हो सकता है। हिन्दुस्तान उनका होमलैण्ड बनाया गया था मगर उल्टे।

हैं घर वाले भूखे मगर गैर घर में।
मजे कर रहे हैं मजा हो रहा है॥

हिन्दुओ जागो! अपना कर्तव्य पहचानकर आर्यसमाज के झण्डे के नीचे सगठित हो तभी देश बचेगा, तभी हिन्दू जाति की सुरक्षा सम्भव होगी। आर्य समाज के प्रवर्तक देव दयानन्द ने इस खतरे को १२५ वर्ष पहले ही पहचान लिया था इसीलिए हिन्दुओं के शारीरिक आत्मिक व सामाजिक उत्थान के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी।

निःसन्देह गत १२५ वर्षों में हिन्दुओं के हर संकट में कोई काम आया है तो वह आर्य समाज ही है। हिन्दुओ की जनसंख्या को सम्भाले रखने का जो महान् कार्य समाज ने किया वह कौन नहीं जानता।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के मल्काना शुद्धि की याद को मीनाक्षीपुरम् में सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने ताजा किया। आज भी उनके हृदय में सोते, जागते, उठते बैठते हिन्दुओं की रक्षा की ही पीड़ा रहती है। इसी लगन के हजारों आर्य वीर आज देशभर में हिन्दू हितों की रक्षा के लिए कृतसकल्प है।

हिन्दू समाज अपने हितैषियो को पहचाने तभी हिन्दू बचेंगे वर्ना इस भीषण समय में जो हो रहा है वह देखकर तो विवश कहना पड़ता है:—

आंख जो कुछ देखती है लब पै आ सकता नही।
महवे हैरत हू कि दुनियां क्या से क्या हो जाएगी॥

भारत में संस्कृत भाषा को वैकल्पिक विषय रखा जाता है, जबकि लन्दन में वह अनिवार्य विषय है

—श्री नारायण भगत—

सस्कृत भाषा विश्व सस्कृति की संरक्षिका है। इसका उद्भव भारत मे ही हुआ है। आज भारत को छोड शेष विश्व में इसका सम्मान भी बढ रहा है, यह जापान, अमेरिका आदि विश्वविद्यालयो के जर्नलो तथा सर्वेक्षण के साहित्यो से ज्ञात होता है। पर आज भारत वर्ष मे सस्कृत-भाषा की बडी करुण स्थिति है। यह पाठशालाओ तथा महाविद्यालयो मे अब अतिरिक्त एव भार स्वरूप मानी जाने लगी है। अत सस्कृत भाषा अब ऐच्छिक होते होते मृतप्राय सी होती जा रही है। इन परिस्थितियो में 'लन्दन मे सस्कृत अनिवार्य जैसा शीर्षक देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक है, पर यह सत्य है। अस्तु।

कुछ वर्ष पहले हम लन्दन मे थे। वहा एक दिन पडित विष्णुनारायण जी के साथ वैदिक सस्कृति की चर्चा चल पडी। उन्ही से यह ज्ञात हुआ कि लन्दन मे एक ऐसा विद्यालय है जहा सस्कृत अनिवार्य विषय है। यह सुनकर सस्कृत के विद्यार्थी होने के कारण मुझे विशेष आश्चर्य हुआ और साथ साथ उस विद्यालय को देखने की लालसा भी जाग्रत हो गई। मुख्याध्यापक श्री निकोलस डेबनहैम से टेलीफोन पर मिलने का समय निश्चित हुआ। फिर हम कोन्सिगटन क्षेत्र मे क्वीन्स गेट पर 'सेन्ट जेम्स इण्डिपेण्डेण्ट स्कूल फार बायज एण्ड गर्ल्स के प्रवेश द्वार पर पहुचे। यह भाग मानो लन्दन का हृदय है। द्वार पर श्री डेबनहेम ने हमारा भावभीना स्वागत किया।

मैंने उनसे पूछा—"आपको सस्कृत शिक्षा की प्रेरणा कैसे प्राप्त हुई ?" इस पर उन्होने इस शिक्षा और इसके विकास के विषय मे विस्तार सहित बतलाते हुए कहा—'लगभग तीस वर्ष से इस क्षेत्र में स्कूल आफ फिलासफी नामक मण्डल की रात्रि कक्षाए नियमित रूप से चल रही है। इनमे बुद्धिवादी वर्ग तत्वज्ञान के विषय मे विचार विमर्श करता है। विभिन्न धर्मों के तत्वज्ञान का अध्ययन करते-करते इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मात्र तत्व चर्चा करने से कोई लाभ नही जब तक उस तत्वज्ञान के अनुसार हमारा जीवन न हो। इस विचार विमर्श के मध्य यह निश्चय हुआ कि विश्व की सबसे श्रेष्ठ सस्कृति केवल वैदिक सस्कृति ही है। यह सस्कृत मे निहित है। अत तत्वज्ञान के अनुसार जीवन व्यतीत करने के लिये इसका सूक्ष्मता से गहन अध्ययन किया जाना चाहिए। हमने देखा कि वैदिक सस्कृत की मूल तो सस्कृत भाषा ही है। सस्कृति के साथ भाषा का विशिष्ट सम्बन्ध है। अत सर्वप्रथम सस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य है। सयोगवश भारत से आये सस्कृत के विद्वान श्री जायसवाल का हमे मार्गदर्शन प्राप्त हो गया। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे मण्डल मे प्रोफेसर मेक्सोरी सस्कृत के अच्छे विद्वान है। वे ही सबको सस्कृत पढाने लगे।

हमे ऐसा अनुभव हुआ कि यह सुविचार बहुत देर से हमारे मन मे आया। विचार हुआ कि अपने यहा के 'सेन्ट जेम्स स्कूल' के विद्यार्थियो को आरम्भ से ही यदि सस्कृति पढाई जाय तो आगे चलकर वैदिक सस्कृति के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाला एक विशिष्ट समाज उत्पन्न हो सकेगा। यह सुविचार सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया और इस विद्यालय मे गत दस वर्षों से सस्कृत विषय अनिवार्य कर दिया गया। प्रोफेसर मेक्सोरीने सस्कृत के शिक्षको को तैयार किया,

बातचीत के प्रसग मे मैंने उनसे पूछा—यहा के विद्यार्थियो के लिए तो सस्कृत भाषा नितान्त नवीन विषय है। अंग्रेज विद्यार्थी तो यहा प्रवेश नही लेते होगे? इस पर उन्होने कहा 'हमारे विद्यालय मे९००विद्यार्थी हैं। इनमें से ९९ प्रतिशत विद्यार्थी अंग्रेज ही हैं। इनमे भी लगभग आधी सख्या बालिकाओ की है, पर हमारे यहा सह शिक्षा नही है। बालिकाओ के लिए कक्षाए पृथक लगती है। वार्षिक शुल्क १६०० पाउण्ड है, तथापि विद्यार्थियो की भीड बहुत है। इस विद्यालय मे समुचित स्थान न होने के कारण हमने 'हेम्सटेड हीथ' के निकट 'सेन्ट वेदास्ट' नाम से दूसरी शाखा आरम्भ की है। उसमें भी विद्यार्थी समा नही पा रहे हैं। प्रवेश के लिए बहुतों को निराश होना पडता है। अत्यधिक भीड के कारण हम लोग कोई बडा स्थान खोज रहे हैं। हमारे विद्यालय मे सभ्रान्त वर्ग के बच्चे ही पढने आते हैं। यहां सस्कृत भाषा पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाता है।

हम मुग्धभाव से श्री डेबन हेम की बात सुनते रहे। उन्होने एक और आश्चर्यजनक बात बतलाई। वह यह कि 'यहा विज्ञान, गणित, इतिहास, समाजशास्त्र, अथवा कोई अन्य विषय पढाने वाले शिक्षक को सस्कृत भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है। सस्कृत का ज्ञान हुए बिना किसी भी शिक्षक को यहा स्थान नही दिया जाता।'

तब तो आपको यहा सभी शिक्षक भारतीय ही होगे?' मैंने पूछा। जी नही। सभी शिक्षक अंग्रेज ही हैं। हमको अभ्यास म पूर्व की उडान और परिश्रम का वेग देखने को मिलता है। हम लोग ऊपरी अभ्यास पसन्द नहीं करते। आगे दौडकर पीछे लौटना न पडे। ऐसी हमारे सस्कृत शिक्षण की पद्धति है। यहा बाल्यकाल से ही महर्षि पाणिनिविरचित व्याकरण लघु-सिद्धातकोमुदी' के माध्यम से सस्कृत का गहन अभ्यास करवाया जाता है। इससे शिक्षा की आधारशिला दृढ होती है। इसके लिए हमारे विद्यालय से प्रत्येक विद्यार्थी को १८ वर्ष की आयु तक अनिवार्य रूप से सस्कृत पढना पडता है'—डेबनहेम ने उत्तर दिया।

"लघसिद्धातकोमुदी' तो सस्कृत भाषा मे है, अत छोटे छोटे बच्चो के लिए तो यह अति कठिन होती हागी।' मैंने पूछा।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सत्य का ऋषि महर्षि दयानन्द

डा० योगेन्द्रकुमार एम.ए. पी.एच.डी. (जम्मू)

जब महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश की भूमिका लिखने लगे तब सबसे पहले उन्होंने 'सच्चिदानन्देश्वराय नमः' लिखकर सत्यस्वरूप ईश्वर के लिए नमस्कार किया। इसके बाद अपने ग्रन्थ का प्रयोजन लिखा—

"मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है।"

इसके बाद सत्य की परिभाषा करते हुए लिखा—

जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहाता है।

उसके बाद मुण्डक उपनिषद् का यह वाक्य (सत्यमेव जयते) लिखकर कहा कि सत्य की विजय और असत्य का पराजय सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है।

महर्षि ने जब प्रथम समुल्लास लिखना प्रारम्भ किया तो सबसे पहले प्रतिज्ञा करते हुए लिखा—"सत्यं वदिष्यामि" अर्थात् मैं जो कहूंगा सत्य कहूँगा।

जब सत्यार्थ प्रकाश को स्वामी जी लिख चुके तो अन्त में फिर लिखा—"सत्यम् अवादिषम्" अर्थात् मैंने इस ग्रन्थ में जो भी कहा है वह सत्य ही कहा है।

स्वामी जी ने सभी मतों के विद्वानों से कहा कि—"वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बाते सबके अनुकूल सब में सत्य है उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बाते हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावे तो जगत् का पूर्ण हित होवे।

जब स्वामी जी ने आर्य समाज के दस नियम लिखे तो उनमें सत्य को प्रधानता दी।

पहला नियम ही सत्य से प्रारम्भ किया—"सब सत्य विद्या इत्यादि···"

दूसरे नियम में—ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप कहकर सत्य को प्रयोग किया उसके बाद बड़े ही स्पष्ट शब्दो में लिखा—"सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।"

धर्म भी स्वामी जी की दृष्टि में सत्य से अलग नहीं है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में फिर कहा—"सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।"

महर्षि दयानन्द ने व्यवहारभानु लिखकर व्यवहार में सत्य का प्रयोग करना चाहिये इस बात पर विशेष जोर दिया।

सत्य क्या है? जिसकी सत्ता है वह सत्य है। महर्षि के मत में ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति और सृष्टि इन सबकी सत्ता है इसलिये ये सब सत्य हैं। वेद में ईश्वर कहता है कि—मैंने सत्य में तुम्हारी श्रद्धा रख दी है और असत्यमें अश्रद्धा। इसे महर्षि ने सार्थक किया।

श्रद्धा शब्द का भी अर्थ है श्रत् सत्य को धारण करना। अर्थात् सत्य को अपनाना ही सच्ची श्रद्धा है। असत्य में अन्धविश्वासों में असम्भव बातों में, धोखे से युक्त चमत्कारों में कभी भी श्रद्धा मत करो।

महर्षि दयानन्द ने जीवन में सत्य को जाना, उसे ही माना और उसे ही कहा और लिखा तथा व्यवहार में भी अपनाया।

वस्तुतः ससार में सत्य को कहने वाले और सत्य को सुनने वाले ही दुर्लभ होते हैं।

सत्यस्य पत्थ्यस्य च वक्ता श्रोता च दुर्लभः।

महर्षि दयानन्द को यदि सत्य का ऋषि कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। सत्य ऋषि को सबसे अधिक प्यारा था।

सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वामी जी ने यह श्लोक इसी भावना से लिखा है—नहि सत्यात् परो धर्मः। नानृतात्पातकं परम्॥

अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं और असत्य से बढ़कर कोई पाप नहीं।

महर्षि ने सन्ध्या की व्यवस्था देते हुए भी सत्य को अधिक स्मरण किया है मार्जन मन्त्रों में "सत्यं पुनातु पुनः शिरसि" कहकर शिर में सत्य पवित्रता करें ऐसी प्रार्थना की है।

किसी गलत बात को गलत बतलाना भी उतना ही सत्य है जितना कि ठीक बात को ठीक बतलाना। महर्षि दयानन्द की यही विशेषता है कि उन्होंने विश्व की धार्मिक पुस्तकों में तथा भारतीय धार्मिक पुस्तकों में तथा सम्प्रदायों में जो बात अवैज्ञानिक असम्भव और असत्य है उसे वैसा ही कहा और लिखा चाहे इसके लिये उन्हें बहुत कष्ट सहन करने पड़े। इस सत्य को सुनने की हिम्मत न रखने वालो ने उन्हें अनेका कष्ट दिये यहां तक कि प्राण तक ले लिये और ऋषि ने सत्य के लिये अपना बलिदान तक दे दिया तथा सत्य मार्ग से गिराने के लिये चाहे कोई निन्दा करे चाहे कोई प्रशसा करे चाहे कोई लालचदे, मौत ही सामने क्यों न खड़ी हो परन्तु सत्य न्याय से धीर पुरुष कभी भी कदम नहीं हटाने। ऋषि ने जो कहा वह करके भी दिखलाया। ऋषि के ज्ञान में, कर्म में और व्यवहार में एक रूपता थी। यही तो सत्य है। ●

गीता और ऋषि दयानन्द जी

—श्री अमर स्वामी सरस्वती—

आर्य समाज के प्राय सभी विद्वान गीता का सम्मान करते और गीता को मानते रहे हैं और मानते हैं अब आर्य समाज में दो तीन सज्जन गीता के घोर विरोधी हैं। उनकी दृष्टि मे गीता से अधिक हानिकारक और बुरा ग्रन्थ दूसरा कोई भी नही है। वह दो तीन सज्जन गीता को न मानें, सबसे बुरा ग्रन्थ कहे उसको मीठा विष बतायें, ऐसा मानने और कहने मे वह स्वतन्त्र हैं, पर ऋषि दयानन्द जी गीता को त्रिदोष का सन्निपात या कल को राण्ड कहते हैं, ऐसा लिखना और कहना उचित नही है क्योकि—महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ में गीता के प्रमाण दिये हैं, वह अपने व्याख्यानो मे गीता के श्लोको का प्रयोग करते रहे, उनके जीवन चरित्रों के पढने से पता लगता है कि—वह गीता की कथा भी करते थे और सारी आयु भर गीता के श्लोको पर उठने वाली शकाओ का समाधान भी करते रहे। ऋषि के पत्र व्यवहार के पढ़ने से भी पता लगता है कि—ऋषि ने अपनी मृत्यु से कुछ मास पूर्व तक अपने पत्रों मे गीता के श्लोको का प्रयोग किया है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने गीता के श्लोको का प्रयोग कहा कहां किस प्रकार किया गया है यह बताने के लिए ही यह निबन्ध लिखा गया है इसमे दिये गये प्रमाणो को पढ़ें और विचार करें।

१. श्री देवेन्द्र जी मुखोपाध्याय के बनाये और सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रचारित—ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र "प्रथम भाग पृष्ठ ६९ पर लिखा है कि—(आगरा मे) सुन्दरलाल जी ने दयानन्द से अष्टाध्यायी और गीता पढ़नी आरम्भ की।

२. इसी ग्रन्थ के पृष्ठ ७० पर लिखा है कि—"कभी-कभी स्वामी जी भगवद् गीता की व्याख्या करने लगते थे। उनकी व्याख्या ऐसी अपूर्व और सरल होती थी कि—उसे पण्डित से लेकर साधारण मजदूर तक सभी समझ जाते थ।

३ इसी ग्रन्थ मे पृष्ट ७० के नीचे टिप्पणी मे लिखा है कि—दयानन्द ने भगवद् गीता की कथा भी की थी, जिसमे एक मास से अधिक लगा था।

४, स्वामी सत्यानन्द जी कृत "दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ ७१ पर भी यह वृत्त लिखा हुआ है।

५ 'ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र" पृष्ट ७१ की टिप्पणी मे लिखा कि—

एक दिन स्वामी कैलाश पर्वत ने गीता के श्लोक—



"सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज:" की व्याख्या की परन्तु उनके अर्थों से श्रोताओ की तृप्ति नही हुई तो लोगों ने स्वामी जी से प्रार्थना की कि—आप भी इस श्लोक का अर्थ समझाने कृपा करे। इस पर उन्होंने उसके ऐसे सुन्दर अर्थ किये कि—सब लोग चकित हो गये और कैलाश पर्वत जी ने कहा कि इन (दयानन्द जी) की विद्या बहुत है। उस समय स्वामी जी भागवत् का खण्डन करते थे और महाभारत विचारा करते थे।

६ इसी जीवन चरित्र के पृष्ठ ७२ की टिप्पणी में लिखा है कि—

"एक दिन कुछ लोगो ने स्वामी से प्रार्थना की कि—आप कोई ग्रन्थ बाचें जो काल व्यतीत हो और हम लोगो का भी लाभ हो। उन्होंने विद्यारण्य स्वामी कृत पचदशी बांचने को कहा महाराज ने इसे स्वीकार कर लिया। बाचते-बाचते उसमे ऐसा आया कि कभी-कभी ईश्वर को भी भ्रम हो जाया करता है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि—यह मनुष्य कृत ग्रन्थ है, फिर उसे नही बाचा, हा 'गीता की कथा करते रहे, यह कथा आश्विन मास से दिवाली के एक मास पश्चात् तक हुई" लगभग दो मास तक। यह वृत्त श्री महाराज के आगरा निवास का है जो वैशाख स० १९२० विक्रमी से आश्विनि स० १९२१ वि० अक्टूबर सन् १८६४ तक लगभग १६ मास का हुआ।

७ महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र भाग १ पृष्ट ७९ मे जयपुर वास स० १९२३ विक्रमी के वृत्त मे बताया है कि—

"अचरोल के ठाकुर रणजीतसिंह जी के बड़े पुत्र लक्ष्मणसिंह जी को "स्वामी जी ने भगवद्गीता पढ़ाई थी।

इसी जीवन चरित्र के भाग १ पृष्ठ ८३ पर लिखा है कि—स्वामी जी ने अचरोल के ठाकुर को गायत्री का उपदेश दिया, उनके लिये दशोपनिषद बम्बई से मगवाये गये थे। ठाकुर साहब ने उनके उपदेश से मूर्ति पूजा छोड दी थी।

जयपुर के ही प्रसग मे ही पृष्ठ ८४ पर लिखा है कि इस समय भी निर्भर उनका केवल वेद पर ही था और लोगो को सन्ध्या गायत्री ही का उपदेश देते ने।

यह सब यहा इसलिये बन या है कि—एक गीता विरोधी सज्जन ने यहा तक के गीता सम्बन्धी प्रसगो पर यह कह दिया था कि—स्वामी जी उस समय पौराणिक ही थे मूर्ति पूजा आदि मानते और विष्णु सहस्रनाम आदि को भी पढ़ते थे आपने देखा कि ऊपर के उदाहरणो से उनके पौराणिक होने और मूर्ति पूजा आदि मानने का खण्डन हो गया है।

८ चासी जिला बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) मे ऋषि दयानन्द जी ने स० १९२४ विक्रमी मे निवास किया इस प्रसग मे इसी जीवन चरित्र के भाग १ पृष्ठ १०८ पर लिखा है कि—

"चासोख जिला बुलन्दशहर निवासी ठाकुर महावीरसिंह जी भी दर्शनों को आया करते थे और महाराज से धर्म विषय पर बातचीत किया करते थे।

यही लिखा है कि—स्वामी जी ने ठाकुर महावीरसिंह जी को "भगवद्-गीता का पाठ करने को कहा था। इस समय स्वामी जी जीव और ब्रह्म का पृथकत्व मानते थे। पुराणो की जगह ब्राह्मणग्रन्थ पढने को कहते थे।

"मेरे ऊपर छल प्रयोग का आरोप"—एक सज्जन ने मेरे विषय मे यह लिखा है कि—"गीता के पक्ष पोषण मे अचरोल के ठा० रणजीतसिंह और चासोख के ठा० महावीरसिंह के उद्धरणो के कुछ भाग छपा कर छल प्रयोग कर बैठे हैं।'

इस विषय मे वास्तविकता यह है कि—मेरे उद्धरण देने के ढग मे छल कर नाम निशान भी नही है। प्रमाण देने का ढग ठीक यही है कि—प्रमाण का जितना भाग प्रस्तुत विषय से सम्बन्ध रखता है उतना ही उद्धृत किया जाय, अनावश्यक को भी लिख कर लेख का कलेवर व्यर्थ न बढ़ाया जाय। ऐसा जो भी करते हैं वह ठीक ही करते हैं, ऐसा ही मैंने भी किया है। जिन सज्जन ने मुझ पर छल प्रयोग का मिथ्या दोषारोपण किया था, उन्होने ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र भाग १ के पृष्ट २०४ से यह उद्धरण अपने लेखो में बार-बार दिया वह इस प्रकार है—

स्वामी जी भगवद् गीता को त्रिदोष का सन्निपात बतलाते थे और कहते थे कि—उसमें कही तो जीव ब्रह्म का एकत्व प्रतिपादित किया गया है और कही उनका पृथकत्व देखने मे आता है औरकही प्रकृति और पुरुष का पृथकत्व

जाना गया है ।" (यह भाषा भी) अद्भुत ही है ।

इसके नीचे ही एक पंक्ति मनुस्मृति के विषय मे भी है,उसको श्रीमान जी ने नहीं लिखा, वह इस प्रकार है—

"प्रचलित मनुस्मृति को वह (स्वामी जी) मनु संहिता नही मानते थे । और उसे भृगु संहिता कहते थे ।"

इसको उन्होंने छोड दिया, तो मैं उन पर छल प्रयोग का दोष नहीं लगाता हूँ ।

अब श्रीमान जी का कहना यह है कि यहा तक जो ऋषि के गीता पढने सम्बन्धी प्रमाण दिये हैं उनके साथ यह भी तो लिखा है कि—पचदशी आदि भी उस समय पढते थे । ठीक है पढते थे पर पचदशी उसी समय छोड़दी और गीता अन्त तक नहो छोडी, इसके प्रमाण आगे-आगे आते जायेंगे ।

९ महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र भाग १ पृष्ट १०९ में लिखा है कि—

"रामघाट मे स्वामी कृष्णानन्द के साथ महाराज का शास्त्रार्थ हुआ स्वामी कृष्णानन्द ने ईश्वरावतार सिद्ध करने के लिए—

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम् ॥ गीता ४-८ ॥

यह गीता का श्लोक बोला । श्री महाराज ने उत्तर मे कहा—

ईश्वर निराकार है वह देह धारण नहीं करता है यह (देह धारण करना) तो जीव का धर्म है ।

१०. इसी ग्रन्थ के पृष्ठ १२५ पर लिखा है कि—

कर्णवास में—शरत् पूर्णिमा के अवसर पर राव कर्णसिंह के भेजे हुए तीन गुण्डों ने—स्वामी जी पर रात्री के दो बजे घातक आक्रमण करना चाहा, स्वामी जी जाग पडे और (स्वामी जी ने) हुकार मारी, गुण्डे भाग गये । ऋषि के पास सोने वाले अ गरक्षक ने कहा कि—आप कही दूसरी जगह चले जाइये । ऋषि ने उत्तर मे गीता का श्लोक पढा—

नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैन दहति पावक ।
न चैन क्लेदयन्त्यापो, न शोषयनि मारुन ॥ गीता

और कहा कि—मुझको कोई नही मार सकता है ।

११ इसी ग्रन्थ के पृष्ठ १३३ पर लिखा है कि—

गगाराम शास्त्री बरतिया वाले बडी डीगे हाका करते थे कि—हम स्वामी जी से शास्त्रार्थ करेंगे । स्वामी जी ने उन्हें कहला भेजा कि वह गीता के इस श्लोक का अर्थ हमारे सम्मुख कर दें तो हम परास्त हो जायेंगे ।

"क्षेत्रज्ञ चापि मा विद्धि, सर्व क्षेत्रेषु भारत ।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञयोर्ज्ञान यत्तज्ज्ञान मतिर्मम ॥ गीता १३, २८

शास्त्री जी ने इसका कुछ अर्थ किया, परन्तु स्वामी जी ने उस अर्थ पर कटाक्ष किये कि—उन्हें उत्तर न आया ।

गीता के अर्थों को समझने वाले समझ सकते हैं कि कि—ऋषि दयानन्द जी ने यहा उभयपाशारज्जु का प्रयोग किया था उनका अभिप्राय यह था कि—यदि गगाराम शास्त्री इस श्लोक का सत्य अर्थ करेंगे तो श्री कृष्ण जी जीव सिद्ध हो जायेंगे क्योकि—क्षेत्रज्ञ का अर्थ जीवात्मा है और श्री कृष्ण जी ने अपने आपको जीव मानकर ही स्वय को क्षेत्रज्ञ कहा है ।

यदि वह क्षेत्रज्ञ का अर्थ ईश्वर करेंगे (जैसा कि श्री कृष्ण को ईश्वर मानने वाले कहते हैं) तो गीता से ही उसका खण्डन कर दिया जायेगा, क्योकि—इससे पहले ही श्लोक मे कहा जा चुका है कि

इद शरीर कौन्तेय, क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
एतद् यो वेत्ति त प्राहु, क्षेत्रज्ञ इति तद्विद ॥ गीता १३ । १

हे अर्जुन इस शरीर को क्षेत्र कहा गया है, इसको जो जानता है उसको उसके जानने वाले लोग क्षेत्रज्ञ कहते हैं । यहा ब्रह्माण्डो या ब्रह्माण्ड को क्षेत्र कहा नही गया है, शरीर के जानने वाले को क्षेत्रज्ञ कहा गया है ब्रह्माण्डो या ब्रह्माण्ड के जानने वाले को क्षेत्रज्ञ नही कहा है गगाराम शास्त्री ने अवतार मानने वालो का श्री कृष्ण जी को ईश्वर बताने वाला अर्थ किया होगा और ऋषि ने इसी श्लोक से उस अर्थ की धज्जियां उडादी ।

१२ इसी ग्रन्थ के इसी भाग में पृष्ठ १९१ पर सवत् १९२७ मिर्जापुर की एक घटना लिखी है कि—

एक दिन एक सज्जन जो गीता का बडा प्रेमी था—स्वामी के पास आकर बोला कि—महाराज मैंने गीता को अनेक टीकायें देखी हैं परन्तु इस श्लोक का अर्थ समझ में नही आया आप अनुग्रह करके समझा दें ।

"सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेक शरण व्रज ।"

"स्वामी जी ने इसका अर्थ किया कि "धर्मान्" शब्द को यहां "अधर्मा" समझना चाहिए —एकःपूर्वादिषु पररूप वाच्यम् । इस व्याकरण नियम के अनुसार "सर्व" के वकार में जो आकार है वह "सर्व" अधर्मान् था सो "सर्वधर्मान् हो गया । इस प्रकार यद्यपि "अधर्मान् शब्द ने धर्मान् का रूप धारण कर लिया परन्तु वास्तव मे वह "अधर्मान्" ही रहा ।" यह अर्थ सुन कर वह मनुष्य बहुत प्रसन्न हुआ और स्वामी जी से उसने इस अर्थ की पुष्टि मे जब प्रमाण मागे तो उन्होंने वेद के दो-तीन मन्त्रो का प्रमाण देकर उसका सन्तोष कर दिया ।

यहा स्वामी जी गीता को त्रिदोष का सन्निपात बता देते या कडक कर कह देते कि गीता कस को "राष्ड" है, इसके विषय मे हमसे कुछ न पूछो । यदि गीता को नही मानते थे तो वे इतने समाधानों के झगडे क्यो पडते और क्यो उसके अर्थ समझाने मे इतना परिश्रम करते रहे ? यह बात गीता विरोधियो की समझ मे नही आ सकती ।

१३ इसी ग्रन्थ के भाग २ पृष्ठ २३१ पर हैं सवत १९३७ विक्रमी मे महाराज काशी में विराजमान थे । उस प्रसग में लिखा है कि—"एक दिन एक नवीन वेदान्ती पण्डित का महाराज से वार्तालाप हो रहा था, उसमे गीता का श्लोक—

"ईश्वर सर्व भूताना, हृद्देशेऽर्जुन तिष्टति ।
भ्रामयन् सर्व भूतानि, यन्त्रारूढानि मायया ॥ गीता १८।६१

(क्रमश)

धर्म निरपेक्षता का सिद्धान्त और आर्यसमाज का दृष्टिकोण

(श्री काशीनाथ शास्त्री, आर्य निवास, राजेन्द्र वार्ड गोंदिया)

धर्म निरपेक्षता का सम्बन्ध मुख्यतः राजतन्त्र से है। अतः राज-काज में धर्म निरपेक्षता (तटस्थता) का आशय यह है कि मानव मात्र के साथ समानता और न्याय का व्यवहार हो चाहे वह व्यक्ति किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग या तथाकथित जाति का हो। किसी के साथ पक्षपात या द्वेषभाव से व्यवहार न किया जाय।

वेदों में जहां एक ओर 'समानी प्रपा सह वोऽन्न भागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि०" और "मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे०' इत्यादि मन्त्रों में मनुष्यों को परस्पर मिल-जुलकर काम करने, बांट-चूंट कर अन्न ग्रहण करने और अपने कुटुम्ब से लेकर समस्त संसार के मनुष्यों एवं समस्त प्राणियों तक के साथ प्रेम, दया, समता, सहानुभूति और मित्रता के भाव दर्शाने का उपदेश है वहां दूसरी ओर राजा या राजप्रमुख और राजसभा इत्यादि सभाओं के अधिकार और कर्त्तव्यों का निरूपण भी सहस्रों वेद-मन्त्रों में किया गया है। यतः राज व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य देश व प्रजा की रक्षा व पालन करना है अतः राजप्रमुख वही हो सकता है जो भली प्रकार देश व जनता की रक्षा कर सके। देश की रक्षा बाहरी और भीतरी दो प्रकार की होती है। भीतरी रक्षा देश-द्रोहियों, आतंकवादियों और दुष्टों से की जाती है जिसकी आज दिन परमावश्यकता है। बाहरी रक्षा के देश शत्रुओं से की जाती है। परन्तु देश की भीतरी और बाहरी रक्षा तभी सम्भव है जब राजतन्त्र अच्छा हो और राजतन्त्र तभी अच्छा हो सकता है जब राजतन्त्र प्रजा द्वारा स्वेच्छा एवं स्वच्छता से मनोनीत हो। राज्य का उत्तम काम चलाने के लिये राजपुरुषों और प्रजा जनों की सभाओं का भी आयोजन होना चाहिये अथर्ववेद में ऐसी उत्तम राज-व्यवस्था का स्थान-स्थान पर विशद वर्णन है। वेद आज्ञा देते हैं कि राष्ट्र को चाहिये कि वह सबसे पहिले अपने अन्तर्गत घुसे हुये दुष्ट मनुष्यों को ढूंढे, जाने और न्याय द्वारा दंड दे। ऋग्वेद और यजुर्वेद में भी दुष्ट स्वभाव वाले दुराचारियों को दंड देने का उपदेश है। साथ ही बाहरी शत्रुओं के भी नाश करने का उपाय बताया गया है। मनुस्मृति में भी राजधर्म और राजव्यवस्था का विशद वर्णन है। महर्षि दयानन्द ने भी इसी राज-प्रजा धर्म का अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में अनेक वेद मन्त्रों को उद्धृत करते हुये विस्तृत उल्लेख किया है।

सारांश यह है कि वेद सर्वथा पक्षपात और द्वेष रहित राजधर्म और कर्म का उपदेश देते हैं। राज-काज में ऐसा व्यवहार ही वास्तविक धर्म निरपेक्षता है। धर्म निरपेक्षता का यही सिद्धान्त आर्य समाज का दृष्टिकोण है अथवा होना चाहिये। परन्तु आज दिन सत्ता में बने रहने के लोभ ने राजतन्त्र को विवेकहीन बना दिया है। वोट-प्राप्ति के लिये अल्प संख्यकों के तुष्टिकरण हेतु उनकी प्रत्येक जा-बेजा मांग या हठ को पूरा करने, उन्हें हर प्रकार की सहूलियत देने और बहुसंख्यक समुदाय के लोगों की धार्मिक भावनाओं को चाहे जितनी ही ठेस लगे, किन्तु अल्पसंख्यकों के लिये पृथक् कानून बनाने और न्याय की व्यवस्था करने को ही सत्ताधारियों ने धर्म निरपेक्षता का जामा पहिना दिया है। परन्तु यह धर्म निरपेक्षता नहीं अपितु चाटुकारिता और अवसरवादिता है। इससे देश विनाश के कगार पर खड़ा हो गया है।

अत आर्य नेताओं को चाहिये कि देश में जन-जागृति करें और वेदानुकूल उपरोक्त प्रकार की धर्म निरपेक्षता को अमल में लाने के लिये राष्ट्र के कर्णधारों को प्रेरित करें।

फतेहाबाद बस हत्या काण्ड की पुनरावृत्ति रोकने हेतु अपराधियों को कड़ा दण्ड दिया जाये

प्रो० शेरसिंह—

७ जुलाई को फतेहाबाद जिला हिसार के ग्राम दरयापुर में उग्रवादियों द्वारा दो बसों को रोककर ३२ यात्रियों की कायरतापूर्ण निर्मम हत्या किये जाने का समाचार जानने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की कार्यकारिणी ने एक शोक प्रस्ताव पास करते हुए भारत तथा हरयाणा सरकारों से मांग की है कि इस प्रकार की दुःखद घटना की पुनरावृति रोकने के लिए अपराधियों को कड़े से कड़ा दण्ड दिया जाये।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह, उपप्रधान म० भरतसिंह, मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रघुबीरसिंह ने एक संयुक्त वक्तव्य में उग्रवादियों द्वारा लालडू (पंजाब) तथा दरियापुर (फतेहाबाद) में एक ही समुदाय के यात्रियों की बसों में की गई हत्याओं की ओर निन्दा और शोक संतिप्त परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट की है। दरियापुर की घटना में घायल यात्रियों को मेडीकल हस्पताल रोहतक में प्रविष्ट करवाया गया है।

जिन घायलों के परिवार वाले सूचना न मिलने के कारण मेडीकल में नहीं आ सके। उनके पतों की जानकारी प्राप्त करके सभा से उनके परिवारों को फोन द्वारा सूचना दी गई और उनके पहुंचने तक सभा के प्रचारक श्री सुमेरसिंह आर्य तथा श्री कंवरसिंह ने मेडीकल में उनके पास रहकर उनकी देखभाल तथा सेवा की।

सभा अधिकारियों ने स्वयं भी रोहतक मेडीकल, हिसार तथा फतेहाबाद के हस्पतालोंमें जाकर वहां उपचाराधीन बस यात्रियों के सम्बन्धमें जानकारी प्राप्तकी तथा उनके प्रति सहानुभूति प्रकटकी।

रोहतक, हिसार तथा फतेहाबाद का भ्रमण करने के पश्चात् सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने दिनांक १८ जुलाई को सिद्धान्ती भवन रोहतक में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में रोहतक के पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा कि लालडू तथा दरियापुर में हुई बस यात्रियों की हत्या का कारण विदेशी शक्तियों द्वारा उग्रवादियों को आर्थिक सहायता तथा हथियारों को ट्रेनिंग आदि देना है। ये शक्तियां राष्ट्र के टुकडे करना चाहती है। अम्बाला से डबवाली तक पंजाब की सीमा पर कड़ी निगरानी रखने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि संदिग्ध व्यक्तियों को हिरासत में लेकर उनकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियो की जांच पड़ताल करके उग्रवादियों की सहायता करने तथा उन्हें पनाह देने वालों को दण्ड दियाजाये।

सभा प्रधान जी ने १० जुलाई की रात्रि को आकाशवाणी रोहतक तथा दिल्ली केन्द्रों से एक भेंटवार्ता प्रसारित करते हुए हरयाणा वासियों को राष्ट्रद्रोहियों से सावधान रहने तथा साम्प्रदायिक सद्भावना बनाये रखने की अपील की और हरयाणा के नेताओं को सुझाव दिया कि वे परस्पर विरोधी वक्तव्य देने और राजनीतिक दलगत से दूर रहते हुए उग्रवादियों के इरादों को विफल करने में योगदान करें।

(पृष्ठ ४ का शेष)

श्री डेवनहेमने मेरी इस शंका का समाधान करते हुए कहा 'लघुसिद्धांत-कौमुदी' सरीखा सुव्यवस्थित और सरल व्याकरण ग्रन्थ तो विश्व की अन्य किसी भाषा में नहीं है। यह अच्छी तरह पढ़ाया जाय तो कोई भी विषय अधूरा न रहे। संस्कृत पढ़ाने की आधुनिक पद्धतियों में गहरापन नहीं होता, इससे विद्यार्थी उकता जाते हैं, इसीलिए हम लोगों ने यहां वैलेनटाइन-निर्दिष्ट यह प्राचीन प्रणाली अपनाई है।

भारतवर्ष की संस्कृत पाठशालाओं में विद्यार्थियों को आरम्भ से 'लघु-सिद्धांत कौमुदी' पढ़ाई जाती है और महाविद्यालय (कालेज) आदि में यह पुस्तक स्नातक (बी० ए०) अथवा स्नातकोत्तर (एम० ए०) में चलती है। इतने पर भी बहुतो के लिए यह अधूरी रह जाती है। पर यहां यहा अंग्रेज बच्चों को प्रारम्भ से ही पढ़ाई जाती है, यह जानकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। डेवनहेम के अनुसार 'भारत के जगन्नाथपुरी के गोवर्द्धनपीठ के ब्रह्मलीन जगद्गुरु शंकराचार्य श्री भारतीकृष्ण तीर्थ विरचित 'वैदिक गणित' भी यहां के विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है' यहां विद्यार्थियों को केवल शाकाहार का भोजन ही दिया जाता है। शाकाहार में भी तला हुआ, छौंका हुआ, अधिक चटपटा आदि भोजन न देकर केवल सादा, पौष्टिक एव सात्विक आहार ही दिया जाता है। इससे विद्यार्थियों का मन निर्मल रहता है। हमें पूरा भरोसा है कि हमारे यहां शिक्षा पाये हुए विद्यार्थी अपने भावी जीवन में पूर्ण शाकाहारी रहकर वैदिक संस्कृति के अनुसार अपना जीवन व्यापन करे गे।

श्री डेवनहेम की बातें सुनकर हमें उन विद्यार्थियों से मिलने की उत्सुकता हुई। मेरे मनोभावों को समझते हुए उन्होंने समयपत्रक देखा और बोले 'अभी ९ बजे फोर्म चार (भारत की ८वी कक्षा) के वर्ग की कक्षा होगी। वह मुझे ही लेनी है। आइये, हम कक्षा मे चलते हैं। हम दूसरे माले पर स्थित उक्त कक्षा में पहुंचे। विद्यार्थियों ने हाथ जोड़कर हमारा स्वागत किया। एक श्याम पट्टिका पर कौमुदी के व्याकरण सूत्र लिखे देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। कक्षा आरम्भ होने से पूर्व सभी विद्यार्थियों ने करबद्ध नेत्र मूंदकर श्री डेवनहेम के साथ-साथ 'ओम परमात्मने नमः' मगल मन्त्र का उच्चारण किया। तत्पश्चात वैदिक प्रार्थना 'श नो मित्रः शं वरुण....'(अर्थात् सूर्य हमारा मगल करने वाले हैं। वरुण हमारा करने वाले हैं।) आदि का वैदिकी स्वर—रचना में सुस्पष्ट उच्चारण के साथ मधुर कण्ठ से पाठ किया। भारत वर्ष में प्रायः संस्कृत उच्चारण मे प्रादेशिक भाषाओं का प्रभाव दिखलाई पड़ता है, परन्तु यहां तो शुद्ध संस्कृत उच्चारण सुनने को मिला। हमें भ्रम हुआ कि हम लन्दन में हैं या भारत के किसी प्राचीन गुरुकुल मे !

हमने विद्यार्थियों की अभ्यास पुस्तिकाएं भी देखी। उनमें अतिशय सुन्दर अक्षरों में पाणिनी सूत्र लिखे हुए थे। विद्यार्थियों ने बहुतेरे सूत्र मौखिक भी सुनाये। यहा की शिक्षा प्रणाली में स्नेहपूर्ण अनुशासन भी है। मैंने कुछ एक विद्यार्थियों से व्यक्तिगत रूप से पूछा, 'आपको सस्कृत भाषा भार स्वरूप तो प्रतीत नहीं होती।

'जी नहीं ! जी नहीं, उन्होंने आगे कहा—'हमें तो यह भाषा बहुत अच्छी लगती है। संस्कृत भाषा के उच्चारण से हमे एक अलौकिक शांति का अनुभव होता है।' श्री डेवनहेम का कहना है—सस्कृत के उच्चारण से विद्यार्थियो का शारीरिक स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा रहता है।'

एक विद्यार्थी ने मुझसे कहा 'आप सस्कृत भाषा मे बात कीजिए। मैंने संस्कृत भाषा में कुछ बातें कहकर उनका भावार्थ उन्हे अंग्रेजी में भी समझाया। श्री आत्मस्वरूप स्वामी जी ने भी भारतीय संस्कृति के विषय में कुछ बातें बतायी। तत्पश्चात विद्यार्थियों ने हमसे कहा—'आप दोनो संस्कृत मे वार्तालाप करे। हम सुनना चाहते हैं।' पर मेरे मित्र के भली प्रकार से संस्कृत भाषा नहीं जानने के कारण यह सम्भव नहीं हो पाया तो उन विद्यार्थियो को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे तो समझते थे कि भारतवासी सब सस्कृत ही बोलते होंगे। हम भारतवासियों के विषय में उन भोले भाले बालको की क्या-क्या कल्पनाएं एवं धारणायें हैं इसका दिग्दर्शन हुआ। वैदिक संस्कृति की प्राप्ति संस्कृत के बिना अंग्रेजी माध्यम से किस प्रकार हो सकती है ? इस प्रकार का आश्चर्य भी उनके मुख-मण्डल पर झलक रहा था।

सुरभारती के इस साम्राज्य में पौन घण्टा कैसे और कब व्यतीत हो गया इसका किंचित मात्र भी आभास हम लोगों को नहीं हुआ। हम लोगों ने विद्यार्थियों एवं श्री डेवनहेम से भावभीनी विदाई ली। संस्कृत भाषा एवं वैदिक संस्कृति का परम अनुराग इंगलैंड की भूमि पर अपने नेत्रों से देखकर हम कृतकृत्य हो गये। इस मिलन से मुझ में एक आशा का संचार हुआ। भारतवर्ष में कदाचित संस्कृत भुला भी दी जाय तो इस प्रकार के विदेशी विद्यालयों से निकले हुए विद्वान पुनः भारत को संस्कृत से प्लावित कर देगें। संस्कृत भाषा तो विश्व भाषा है। वह किसी एक देश की या व्यक्ति की निजी सम्पत्ति नहीं इसकी प्रतीत यहां सुस्पष्ट रूप से हुई। भारत के बाहर यह अमर भारती आज भी सर्वत्र अमर है, यह देखकर हमको अतिशय आनन्द हुआ।

इसी प्रवास मे दक्षिणी अफ्रीका मे भी सस्कृत भाषानुराग के दो प्रसंग अनुभव में आये। जोहान्सबर्ग मे हमें डच्च रिफार्म चर्च के पादरी डा० लरू मिले। उन्होंने श्रीरामकृष्ण मिशन की सामाजिक प्रवृत्तियो पर महानिबन्ध लिखा है। पूर्व-पश्चिम के तत्वज्ञान का भी उन्होने गहन अध्ययन किया है, उनके जीवन पर प्राप्त तत्वज्ञान का अच्छा प्रभाव प्रलक्षित हुआ। उनकी आयु पचपन वर्ष है। उनका दृढ़ विश्वास हैं कि संस्कृत भाषा के अध्ययन के बिना भारतीय तत्वज्ञान का सांगोपांग अध्ययन हो ही नही सकता एव उसके बिना जीवन में शांति प्राप्त नही हो सकती। इसीलिए वे एक बार भारत आकर सस्कृत का अध्ययन करने की तीव्र अभिलाषा रखते हैं।

डरबन में हम लोग वेस्टवील विश्वविद्यालय गये थे। वहा के उपकुलपति प्रोफेसर ओलिवियर से भेंट की। वहां के भारतीयों के लिए ही यह विश्वविद्यालय है, तो भी अनेक श्वेतवर्ण विद्यार्थी भी वहां शिक्षा ग्रहण करते हैं। इस विद्यालय का प्रतीक भारतीय राष्ट्रीय प्रतीक जैसा है। विश्वविद्यालय का मूलसूत्र—'सत्यमेव जयते' है। श्री ओलिवियर से हुए वार्तालाप के मध्य उन्होने बतलाया कि विश्व की प्राचीनतम भाषा सस्कृत ही है। यहा हम यही भाषा पढ़ाते हैं। संस्कृत द्वारा ही संस्कृति की रक्षा की जा सकती है—ऐसी हमारी श्रद्धा है। राजनीतिक परिस्थितियो के कारण भारत से हमको सस्कृत के पंडित नही मिलते। अतः हमने जर्मनी के संस्कृत प्रोफेसरों को यहां नियुक्त किया है। हमारी ऐसी इच्छा रहती है कि इस विश्व विद्यालय में ऐसे प्रोफेसर हों जो संस्कृत भाषा अच्छी तरह पढ़ा सकने के अतिरिक्त वैदिक कर्मकाण्ड भी अच्छी तरह करा सके। उनका अपना जीवन भी निर्मल और पवित्र होना चाहिए। यदि हमें ऐसे अध्यापक (प्रोफेसर) प्राप्त हो सकें तो हम ऊंचे से ऊंचे वेतन पर भी नियुक्त करने को सहर्ष तत्पर हैं।

(कल्याण से साभार)

देशद्रोही का दर्जा

एक चण्डालिनी श्मशान घाट में
मुर्दे की खोपड़ी में कौए का मांस पका रही थी
और मांस को पकाने के लिए, लकड़ी की जगह
एक मुर्दे को जला रही थी
मांस पकाने के बाद चण्डालिनी ने
उसे नीचे उतार और चमड़े से ढक दिया
उधर से गुजरने वाले एक व्यक्ति ने पूछा
दुनिया की सबसे घटिया चीज सबसे घटिया स्थान पर
सबसे घटिया व्यक्ति द्वारा सबसे घटिया बर्तन मे
तुमने इस मास को पकाया है
फिर किस चीज से बचाने के लिए
तुमने इस मांस को चमड़े से ढका है।
तो चण्डालिनी कहती है।
इधर से कोई देश-द्रोही गुजरे तो
उसके पांव की धूल इसमें न पड़ जावे
उससे बचाने के लिए मैंने
इसे चमड़े से ढका है।

—सुरेन्द्र शर्मा

आर्य जगत् के समाचार

१७४ सिख संदिग्ध रूप से कनाडा पहुंचे

चाल्मसविले (कनाडा), १३ जुलाई कनाडा, आप्रजन मन्त्री बेनोइट बाकाडं ने ओटावा मे बताया कि १७५ सिख शरणार्थी संदिग्ध रूप से कनाडा पहुचे हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार ये सिख शरणार्थी एक सदिग्ध जहाज से चाल्र्स विले के असकोटे से नाव नोवा स्कॉटिया में पहुंचे और स्थानीय निवासियों को बताया कि २० मई को भारत से नौकाओं पर चलकर वे यहां तक पहुचे हैं।

श्री बोकाडं ने बताया इस सिलसिले में दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होने बताया कि पुलिस और तटरक्षक दल के लोग उस सदिग्ध जहाज के बारे मे पता लगा रहे हैं।

कनाडा के अधिकारी इन शरणार्थियों द्वारा दी गई जानकारी पर विश्वास नही कर रहे हैं।

तट रक्षक दल के एक जहाज को इस छस 'संदिग्ध जहाज' के पीछे लगा दिया गया जिससे सभवत: ये शरणार्थी यहां पहुंचे हैं। अमरीकी शरणार्थी यहा पहुंचे हैं। अमरीकी तटरक्षकों से भी संदिग्ध जहाज का पता लगाने में सहायता मागी गई है। सदिग्ध जहाज संभवतः डेनमार्क का है। अधिकारी इस घटना की विस्तृत जानकारी अभी नहीं दे रहे हैं।

प्रवेश प्रारम्भ

वैदिक सस्कृत महाविद्यालय गुरुकुल रामलिंग येडशी धाराशिव (महाराष्ट्र) में १५ जून से १५ जुलाई तक नये छात्रों का प्रवेश चालू है। यहा पर प्रथमा (६वी) से आचार्य (एम० ए०) तक पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध है। छात्र कम से कम ५वी कक्षा उत्तीर्ण तथा शारीरिक मानसिक और बौद्धिक दृष्टि से अच्छा होना अनिवार्य है।

शिक्षा आवास की निशुल्क व्यवस्था है।

रामलिंग के निसर्ग रम्य वातावरण में उत्तम जलवायु सुरम्य वातावरण, सादा रहन-सहन एव सात्विक आहार यहां की विशेषता है। अत: आप अपने पुत्रों को अच्छी शिक्षा देने के लिए अविलम्ब सम्पर्क करें। स्थान सीमित है।

आचार्य सुभाषचन्द एम० ए०
प्रधानाचार्य

आवश्यक सूचना

१—सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के विदेश में रहने वाले ग्राहकों से निवेदन कि वह अपना वार्षिक शुल्क सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें। वार्षिक शुल्क AIR Mail 400/-
„ „ Sca Mail 150/-

२—सार्वदेशिक पत्र के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन सदस्यों ने वार्षिक शुल्क जमा नही किया है वह शीघ्र से शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क ऐ५/- कार्यालय में जमा करा दें। अथवा २५०/- रुपये भेजकर आजीवन सदस्यता प्राप्त करें।

—देव शर्मा
व्यवस्थापक : सार्वदेशिक पत्र

गणेशपुर (सरारनपुर) में भीषण अग्नि काण्ड
आर्य समाज गणेशपुर द्वारा राहत कार्य

३० जून को गणेशपुर में तेज आंधी के कारण भीषण अग्नि काण्ड के कारण २३५ परिवारो के २६० घर छप्परों के साथ उनमें सभी सामान जलकर भस्म हो गये। पशुओं की भी हानि हुई करोड़ों रुपये की सम्पत्ति नष्ट हो गई। पडोसी ग्रामो से ७० क्विटल अनाज बाटा गया सरकार ने १ लाख पचास हजार की सहायता दी। आर्यसमाज गणेशपुर के चतरसिंह जी व कार्यकर्त्ता तथा ठेकेदार रामसिंह वैद्य श्यामसिंह जी समाज प्रधान ने बडी दौड़धूप करके राहत कार्य किया। लगभग १॥ लाख रुपये की लकड़ी दान मे एकत्रित कर पुनर्निर्माण की योजना बनाई है। आर्य बन्धु बड़ी लगन से सहायता कार्य में जुटे हैं।

शस्येष्टि यज्ञ

वैदिक गुरुकुल लोहरदगा मे शान्ति नगर की ओर से भिषक देवदत्त वैयाकरण के प्रमुत्व से वर्षा के आवाहन निमित्त विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। पड़ोस के हजारों ग्रामवासियों ने श्रद्धा से इस यज्ञमें भाग लिया।

निर्वाचन

— नवगठित आर्य समाज कराहल मुरैना के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री तोताराम आर्य व मन्त्री श्री वीरसेन आर्य चुने गए।

—आर्य समाज मड़ियाहू (जौनपुर) के निर्वाचन में प्रधान श्री द्वारका प्रसाद व मन्त्री श्री शम्भूनाथ चुने गए।

—आर्य समाज महावीर नगर नई दिल्ली के निर्वाचन में प्रधान श्री यशपाल मलहोत्रा, मन्त्री श्री चन्द्रप्रकाश चुने गए।

—श्रीमद्दयानन्द वैदिक मिशन रायगढ़ की वार्षिक सभा पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में हुई।

मिशन के अध्यक्ष स्वामी देवानन्द सरस्वती, मन्त्री पं० जैमिनी कुमार शर्मा चुने गए। मिशन वैदिक धर्म प्रचार का छत्तीसगढ़ में महान कार्य कर रहा है।

—बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री, मन्त्री श्री रामाज्ञा वैरागी, कोषाध्यक्ष श्री द्वारका प्रसाद ओज, अन्तरंग सदस्य—सर्वश्री हरिराम आर्य, ओमप्रकाश राजपाल, जगदीश नारायण आर्य, बनारसी सिंह विजयी, केदारनाथ शास्त्री, ब्रजकिशोर जायसवाल, रामशोभित आर्य, पं० गंगाधर शास्त्री, सरयुग, नवलकिशोर शास्त्री, सरयुप्रसाद आर्य, सत्येन्द्र कुमार आर्य, श्यामनन्दन शास्त्री, ओमप्रकाश आर्य आदि।

—आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ने अपने गत चार वर्षों के कार्यकाल मे उल्लेखनीय उन्नति की है जिसका श्रेय सभा प्रधान श्री ओंकारनाथ जी आर्य उप प्रधान सर्वश्री गणपतराय जी आर्य, लखाभाई जी पटेल एवं कैप्टिन देवरत्न आर्य और अन्य अधिकारीगण एव अन्तरंग सदस्यों के कुशल एवं प्रभावशाली नेतृत्व को ही जाता है।

दि० २८-६-८७ को सभा की चौथी वार्षिक साधारण सभा की, आर्य समाज माटुंगा में हुई बैठक में दो वर्षों के लिए निर्वाचन हुआ है जो कि निम्न प्रकार है—

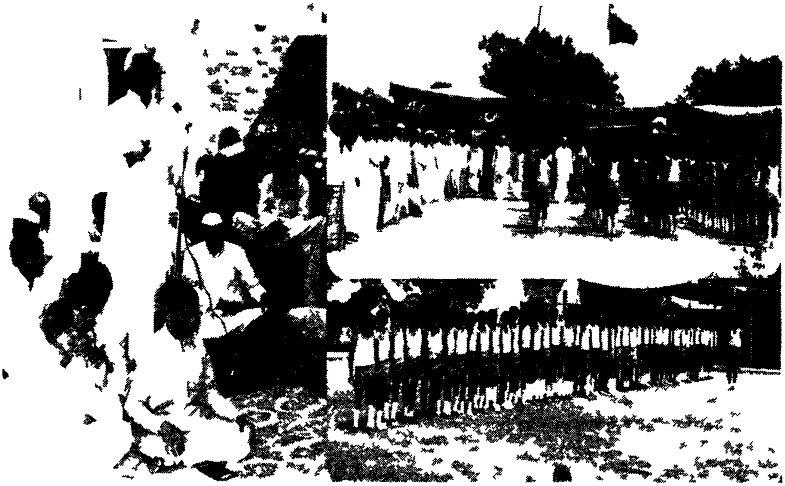
प्रधान : श्री ओंकारनाथ जी
उप प्रधान : सर्वश्री गणपतराय जी आर्य, लखाभाई जी पटेल; कै० देवरत्न जी आर्य
मन्त्री : श्री धर्मवीर जी गुलाटी
उपमन्त्री : सर्वश्री मेघराज जी, राजेन्द्रनाथ जी, कल्याण जी भाई
कोषाध्यक्ष : श्री कस्तूरीलाल जी मदान

—मन्त्री

—आर्य समाज रामपुरा कोटा के चुनाव में प्रधान श्री सोमेश्वर जी भूखियान, मन्त्री श्री भगवतीप्रसाद श्याम, कोषाध्यक्ष कल्याणमल मित्तल बने।

उत्सव

—आर्य समाज रामगढ़ वा पूर्वी चम्पारण बिहार का ४७वां वार्षिकोत्सव १९-६-८७ से २३-६-८७ तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ शोभा यात्रा संस्कृत रक्षा सम्मेलन हुआ। आचार्य रामकृष्ण व श्री रामचन्द्र क्रान्तिकारी व शिवधर जी ने भाग लिया।



गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) उ०प्र० मे आय वीर प्रशिक्षण शिविर मे प० बाल दिवाकर जी हस प्रधान सचालक आय वीर दल निरीक्षण करते हुए। आय वीर अपने कौशल पूण व्यायामो का प्रदशन उ ह दिखा रहे हैं।



श्री विश्वपाल जयन्त विश्व भ्रमण पर

आप जापान कनाडा अमेरिका में योग शिक्षा व वदिक धम प्रचाराथ गए हुए है। आपके बड सु दर सफल कायक्रम विदेशो मे हो रहे है। अक्तूबर मे आप भारत लौटगे।

हैदराबाद सत्याग्रह सेनानी आचार्य रामचन्द्र को गुजरात सरकार ने ३५०) मासिक पशन दी

आप १८ वष की अ ायु मे १९ ८ मे हैदराबाद आय स या ग्रह मे ब ी नाए गए आपने ३। मास कारवास क टा गुजरात सरकार ने आपको ५०) मासिक पशन स्वीकार की है। पहली पशन मे से १ ०) आपने सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा को दान दिया है।



हैदराबाद मे वैदिक यज्ञ से वर्षा
आर्य समाज की सर्वत्र जय जयकार

विगत चार वर्षों से हैदराबाद मे वर्षा का अभाव चल रहा था। पीने के पानी तक का सकट उपस्थित हो गया था रेल्वे के टैंकरो पर प्रतिदिन तीन लाख बीस हजार रुपये खर्च करके पानी मगवाया जा रहा था।

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान के अधिष्टाता श्री वेदभूषण के प्रयत्नो से हैदराबाद के प्रदर्शनी ग्राउन्ड मे एक सौ कुण्डो मे गोघृत व विशेष प्रकार की शुद्ध सामग्री के द्वारा पूर्ण वैदिक विधि से विशाल यज्ञ किया गया। प्रथम दिन ही आधा घण्टे तक जोरदार वर्षा हुई। दूसरे दिन तीव्र वर्षा हुई। पूर्णाहुति के पश्चात् तो इतनी मूसलाधार वर्षा हुई कि हैदराबाद मे आर्य समाज की जय जयकार हो गई।

आंध्र प्रदेश डेरी डेवलपमेंट कार्पोरेशन की चित्तूर शाखा से ६८० किलो गोघृत प्राप्त किया गया। १हजार किलो उत्तम शुद्ध सामग्री तैयार की गई। डेढ़सौ क्विटल आम पीपल की समिधाऐ प्राप्त की गई।

आचार्य वेदभूषण जी ने यज्ञ पर अनुसधान केन्द्रीय पर्यावरण मन्त्री श्री भजनलाल जी से भेंट कर यज्ञ की महत्ता पर उनका ध्यान खींचा कि पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ मे उत्तम कोई उपाय नही। माननीय मन्त्री जी ने श्री आचार्य जी को यह आश्वासन दिया है कि सरकार यज्ञ पर विशेष अनुसधान कराएगी।

अंग्रेजी के मोह मे राष्ट्र भाषा की निन्दा
आर्य समाज राष्ट्र का प्रहरी

आर्य समाज पिम्परी पूना से श्री सजय काबले आर्य सूचित करते हैं कि बम्बई के एक टैक्सी चालक पर नम्बर देवनागरी लिपि मे लिखा होने के कारण २०) दण्ड किया गया। मराठी भाषाकी लिपि भी देवनागरी है। फिर राष्ट्र भाषा का यह घोर अपमान क्यो? समाज प्रधान एव पिम्परी चिंचवड महानगर परिषद के सदस्य श्री कृष्णचन्द आर्य ने कठोर शब्दों में महाराष्ट्र शासन को राष्ट्र भाषा विरोध के लिए लताडा। आर्य समाज पिम्परी ने घोषणा की कि वह अपने क्षत्र के सभी वाहनो के पटल निशुल्क राष्ट्र-भाषा हिन्दी मे लिखा कर देगी। यह सुविधा २८ जून से २७ जुलाई तक रहेगी। इस सेवा के लाभ सैकडो नागरिक लाभ उठा रहे हैं।

गुरुकुल कृष्णपुर (फ…
प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिम उत्तर प्रदेश के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द गुरुकुल कृष्णपुर मझना फर्रुखाबाद उ० प्र० मे दिनाक ७ ६ ८७ से २६ ६ ७ तक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। समापन समारोह की अध्यक्षता श्री बालदिवाकर हस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर ने की।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री हस ने युवको को समूचे देश की जागृति के लिए प्रेरित किया तथा आवाहन किया कि अगर युवा दल एक जुट होकर अग्रसर हो तो समूची व्यवस्था मे परिवर्तन किया जा सकता है। समापन समारोह के अवसर पर श्री डा० कृष्णगोपाल आर्य सचालक आर्य वीर दल प० उत्तर प्रदेश, आचार्य श्री चन्द्रदेव शास्त्री कुलपति गुरुकुल कृष्णपुर मझना फर्रुखाबाद, तथा डा० शिवरामसिंह मन्त्री गुरुकुल कृष्णपुर ने विचार व्यक्त किये।

—शिव वीर शास्त्री



सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

राष्ट्र को देवता मानो

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक ३२] श्रावण सु० १५ सं० २०४४ रविवार ९ अगस्त १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

महर्षि दयानन्द के नवीन चित्र का राष्ट्रपति श्री आर० वेंकट रमन द्वारा अनावरण

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने राष्ट्रपति को वेद भेंट किए

दिल्ली १ अगस्त ।

आज प्रात १०॥ बजे राष्ट्रपति आर० वकट रमन ने पवन स्टूडियो हैदराबाद द्वारा निर्मित महर्षि दयानन्द के नतन चित्र का अनावरण किया। राष्ट्रपति भवन में श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे एक शिष्टमण्डल ने राष्ट्रपति से भट की जिसमें प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आय प्रतिनिधि सभा हरियाणा श्री सूयदेव प्रधान दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री प० शिवकुमार शास्त्री श्री यशपाल सुधांशु, श्री रामलाल मलिक श्री सजयकुमार, श्री लक्ष्मीचन्द श्रीमती प्रकाश आर्या तथा श्रीमती शान्ति मलिक सम्मिलित थे। श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने राष्ट्रपति को ऋग्वेद व अथववेद के अग्र जी भाषा भाष्य भट किए।



राष्टपति श्री आर० बेंकटरमन महर्षि दयान द सरस्वती के चित्र का अनावरण कर हे हैं।

वेदामृत

अशुभ धन से दूर रहो !

या मा लक्ष्मी पतयालुर जुष्टा अभिचस्कन्द व दनेव वक्षम्
अन्य त्रास्मत् सवितामित्तो धा हिरण्यहस्तो वसु न रराण ॥
अथव ७ । ११५ । २ ॥

(या) जो (पतयालू) भ्रष्टाचार की ओर ओर ले जाने वाली (अजुष्टा) निन्दनीय (लक्ष्मी) धन दौलत (मा) मुझको (अभिचस्कन्द) अपने जाल मे फसा बैठी है (वन्दना वक्ष इव) जैसे अमर बेल वक्ष को नष्ट कर डालती है (हे सवित) हे ससार के प्र रक प्रभो (मुझ उससे बचाकर, (हिरण्यहस्त) अपने सुनहरी हाथो से (न वसु रराण) हमे धन ऐश्वय प्रदान करके (ताम् अस्मत् इत अन्यत्र धा उस दुष्ट धन वैभव को हमारे से हटाकर दूसरी जगह ले जाओ।

वेद भगवान कितनी प्रखर शिक्षा प्रदान करता है। भ्रष्ट चार से व्यक्ति समाज राष्ट्र उन्नति नही कर सकता। उसके प्रभाव से बड बड साम्राज्य नष्ट हो जाते हैं। मानव जितना इस प्रकार के बुरे धन से बचेगा उतना ही सुरक्षित व चिरजीवी बनेगा। प्रभु की कृपा से ही ऐसी स्थिति बनना सम्भव है राष्ट समाज व व्यक्ति की रक्षा का यह मूलमन्त्र है। —आचाय शिवराज शास्त्री एम०ए०



सावदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आन दबोध सरस्वती राष्ट्रपति को वेद भाष्य भट कर रहे है।

सम्पादक सच्चिदानन्द शास्त्री

भ्रान्ति निवारण

श्री महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी, वैदिक आश्रम, तपोवन देहरादून

सार्वदेशिक साप्ताहिक दिनाक १६.७.८७ पृष्ठ ५ पर पूज्य आचार्य राम शास्त्री का लेख 'यज्ञ के नाम पर बरबादी क्यों" छपा उसमे कुछ बातें विवादास्पद हैं।

I पैरा ३—स्वामी जी ने वैदिक यज्ञ करने का निर्देश दिया है उसका अभिप्राय है।

(i) एक तो अग्नि मे विविध प्रकार की औषधियो का हवन करने से बहुत सी बीमारिया दूर हो जाती हैं, वातावरण शुद्ध हो जाता है।

(ii) दूसरी शिक्षा मिलती है कि अग्नि की तरह बाटकर खाना चाहिए।

उत्तर—दैनिक यज्ञ प्रायश्चित कर्म है कि जितनी दुर्गन्ध हम अपने शरीर से निकालते हैं उतना प्रतिशोध हर मनुष्य को करना चाहिए।

माननीय आचार्य जी का ध्यान सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास पृष्ठ ४२ पर दिलाना चाहता हूँ—यहा पूज्य स्वामी जी ने लिखा कि जितना घी सुगन्धित एक व्यक्ति खाता है उतने द्रव्य के होम से लाखो मनुष्यो का उपकार होता है इसलिए होम करना अति आवश्यक है।

आर्यवर शिरोमणि महाशय ऋषि महर्षि राजे महाराजे तो बहुत से बड़े बड़े होम करते व कराते थे, जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यवर्त देश रोगों से रहित, सुखों से परिपूर्ण था। अब भी प्रचार करे तो वैसा हो जाए।

II पैरा ५—बलि वैश्वदेव यज्ञ सम्बन्धी—श्री आचार्य जी ने लिखा है स्वामी जी ने बलि वैश्वदेव यज्ञ अतिथि यज्ञ करने के लिए लिखा है उसका अर्थ कोई भी विद्वान अग्नि में इन वस्तुओ को डालने का अर्थ नही करेगा।

उत्तर—श्री आचार्य जी का ध्यान सस्कार विधि गृहाश्रम प्रकरणम् पृष्ठ २७० (रामलाल कपूर द्वारा प्रकाशित तृतीय सस्करण अप्रैल १९७८ का) पर दिलाना है। महर्षि लिखते हैं इन दश मन्त्रो से घृत मिश्रित भात की—यदि भात न बना हो तो क्षार और लवण अन्न को छोड कर जो कुछ पाक में बना हो उसी की दश आहुति निस्सन्देह अग्नि मे ही होगी।

III पैरा ६—श्री आचार्य जी लिखते हैं यजुर्वेद मे साधक भगवान से अपनी सभी वस्तुए गिना कर प्रार्थना करता है "यज्ञेन कल्पन्ताम" कोई विद्वान या अज्ञान भी कल्पन्ता का यह अर्थ न ही करेगा कि इन सभी वस्तुओं को अग्नि मे डालकर स्वाहा कर दिया।

उत्तर—यज्ञेन कल्पन्ता के अक्षर यजुर्वेद के अठाहरवें अध्याय के प्रथम २७ मन्त्रो में हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी का भाष्य उपलब्ध है। कल्पन्ता के अर्थ सब मन्त्रो मे 'समथ' स्वामी जी ने किए हैं यज्ञेन के अर्थ प्रत्येक मन्त्र में प्रसग अनुसार भिन्न २ हैं। यदि इनका सार निकाला जाए, तो यज्ञेन का भाव निस्स्वार्थ परोपकार सेवा स्वार्थ बलिदान होता है जो कि व्यक्ति निजी पुरुषार्थ से करे।

यज्ञेन से लघू भावना केवल होम की न लेकर विभिन्न कल्याण राष्ट्र जाति सस्कृति के हित मे जो अपने पुरुषार्थ प्राण पसीना बहाता है वह भी निस्सन्देह यज्ञ कर रहा है। ऐसे यज्ञ से हर तत्व मे सामर्थ्य आती हैं। सामर्थ्य का साधन अग्नि/तप है।

IV पैरा ७—महात्मा बुद्ध की उपमा देकर पशुबलि नरबलि इत्यादि का निषेध किया—यह तो नितान्त सत्य है कि मध्यकाल मे अज्ञानतावश यज्ञ जैसी अध्वर क्रिया मे पशुबलि होने लगी, जो जाति की कुरीति थी।

परन्तु यह तो जघन्य पाप है कि गलती की उपमा देकर साधारण लोगो की सिद्धान्त मे भ्रान्ति पैदा करना सिद्धान्त से दूर करना।

V पैरा ८—इसमे आचार्य जी ने स्वय माना है कि राजा युधिष्ठर ने राज्यसू वृहद यज्ञ किया था, वृहद यज्ञो का होना रामयण व महाभारत काल मे सिद्ध होता है। न्योले का आख्यान जो उद्धृत किया गया उससे यह सिद्ध होता है कि राजा के फालतू धन से महान यज्ञ की अपेक्षा गरीब का अपना पेट काट कर दूसरे के जीवन को बचाना बड़ा यज्ञ है परन्तु इससे भी वृहद यज्ञों का निषेध तो सिद्ध नहीं होता।

VI पैरा १०—श्री आचार्य जी लिखते हैं कि इस महगाई के समय मे लाखो रुपयो का घी अग्नि कुण्ड मे डालना कहा उचित है जबकि गरीब घी को बून्द को तरसते हैं। घी का इस तरह फूकना उचित है या अनुचित मैं पाठको पर छोडता हू।

उत्तर—एक आर्य विद्वान घी को फूकना लिखे तथा वह आर्य पत्रिका मे आर्यों के पढने के लिए छपे एक दुर्भाग्यपूर्ण बात लगती है। मकान बनाना मुश्किल है मकान गिराना सहल है ठीक उसी तरह श्रद्धा उपजाना मुश्किल है और श्रद्धा को तोडना सहल है ईमानदारी यह है कि घी को फूकना लिखना जघन्य पाप है।

प्रमाण (क) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृष्ठ ६२, ६३, ६४ महर्षि जी लिखते हैं "घी व द्रव्य सूक्ष्म शक्तिशाली होकर दुर्गन्ध आदि दोषों का निवारण करते हैं। अन्य सुगन्धित पदार्थ दुर्गन्ध के प्रमाणुओं को दूर नही कर पाते। यज्ञ के माध्यम" से अग्नि यज्ञ में पडे द्रव्यो में शक्ति भरती है।

(ख) नोट—यहां ऊपर पैरा नम्बर I मे दिया सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास तीन का भाव जोडें।

(ग) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृष्ठ २८८।

अधिक होम करने की इच्छा हो तो स्वाहा शब्द अन्त में पढ़ कर गायत्री मन्त्र से करें।

(घ) सस्कार विधि पृष्ट २२, २३।

कुण्डो के परिमाण एक लाख, दो लाख, ५० हजार, २५ हजार, १० हजार, और २५०० मोहनभोग व खीर की आहुतियों का आदेश भी है।

विचारो श्री आचार्य जी, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी क्या लिख गए हैं।

(ङ) महाभारत मे भगवान कृष्ण जी ने राजा युधिष्ठिर से राज्यसू यज्ञ कराया था।

(च) रामायण मे

(i) राजा दशरथ ने पुत्रेष्ठि यज्ञ कराया था।

(ii) राम के राज्य अभिषेक पर महारानी कौशल्या ने यज्ञ किया।

(iii) लका पर आक्रमण करने से पूर्व राम जी ने रामेश्वरम मे वृहद यज्ञ किया।

(छ) वेद के प्रमाण

(i) स यज्ञेन वनवद् देव मर्तान्॥ ऋग्वेद ५। ३। ५

वह परमात्मा यज्ञ के द्वारा मनुष्यो को भक्ति से युक्त करता है।

(ii) प्राञ्च यज्ञ प्रणयता सखाय॥ ऋग्वेद १०। १०२। २

मित्रों प्रत्येक शुभकार्य को यज्ञ से प्रारम्भ करो।

ऐसे अनेक प्रमाण और भी आर्य साहित्य से दिए जा सकते हैं। अधिक विस्तार न हो यही पर्याप्त समझें।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी पर घातक वार बाल-बाल बचे

भगवान का कोटिश धन्यवाद है कि लका समझौते से असन्तुष्ट कुछ तत्वो ने श्री लका प्रवास के समय जब वे सैन्य अभिवादन स्वीकार कर रहे थे बन्दूक के कुन्दे से प्रधानमन्त्री पर घातक आक्रमण किया। युवा प्रधानमन्त्री सुसयोगवश बाल-बाल बच गए। देश भर मे उन पर आक्रमण की घोर निन्दा की गई है व उनके सकुशल स्वदेश लौट आने पर प्रसन्नता व्यक्त की गई है। प्रभु से उनकी दीर्घायु की सर्वत्र हार्दिक कामना की जा रही है। विशाल भारत के महानतर उत्तरदायित्व का भार उनके ही कधो पर है। प्रभु उनकी सदा सकटो मे रक्षा करे।

सम्पादकीय

श्रावणी पर्व की महानता

श्रवण अर्थात् सुनना शब्द से पर्व के रूप मे श्रावणी पर्व भारत मे 'युग-युगों' से मनाया जाता रहा है। श्रवण से ही श्रुति का शब्द प्रचलित हुआ। फलत: आर्य समाज इस पर्व को अपना सर्वोत्तम पर्व मानता है। कारण कि श्रुति वेद का प्रचार करना ही आर्य समाज अपना परम धर्म मानता है, आर्य समाज के अन्य कार्यों को धर्म कोटि मे रखा जा सकता है। परन्तु परम धर्म तो किसी अवस्था मे भी उपेक्षणीय नही माना जा सकता।

इसी उद्देश्य से आर्य समाज की सभी सभायें वेद प्रचार पर्व मनाने का विशेष आग्रह करती हैं, सार्वदेशिक सभा द्वारा इस विषय मे आवश्यक निर्देश प्रसारित किए जाते हैं।

आज समाज मे शब्द के रूप मे जिस प्रकार का अनर्गल साहित्य सिनेमा आदि का प्रचार है उसका परिणाम स्पष्ट दीख रहा है कि समाज का नैतिक धरातल गिरता ही जा रहा है। नेता कहे जाने वाले लोग एक ही बात बार-बार दुहराते हैं कि समाज का नैतिक धरातल उठाना चाहिए। वेद के इस आदेश का किसी ने पूरी तरह विचार नही किया कि

भद्र कर्णेभि श्रुणयाम देवा

हमारे कान में केवल अच्छी बाते तो सौ मे से एक ही पड पाती होगी परिणाम दिख रहा है कि जिन बुराइयो को रोकने की बहुत चेष्टा राजा प्रजा दोनों की ओर से की जा रही है वे निरन्तर बढ़ रही है।

ऐसी अवस्था में भद्र (श्रेष्ठ) के प्रचार की समाज व्यवस्था करे वह भी उत्तम से उत्तम व्यवस्था करे तभी समाज व राष्ट्र का कल्याण होगा।

आर्य समाजें आशा है अपने इस लक्ष्य की पूर्ति में ही अपनी सारी शक्ति लगायेंगी। देश समाज आज जिन परिस्थितियों मे होकर गुजर रहा है आर्य समाज का यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने कर्त्तव्य को पहचाने व इस महान श्रावणी पर्व को भगवान की कल्याणी वाणी के अधिक से अधिक प्रचारार्थ उपयोगी व प्रभावशाली बनावे।

इस अवसर पर विशाल यज्ञो का आयोजन हो वेद के विद्वानो के प्रवचन कराए जाए। भजनोपदेशक अपनी सुमधुर स्वर लहरी मे वेद माता के सदेश को जन-ग्राह्य बनावें। समाज का वातावरण वेदमय यज्ञमय व भद्र बन जावे। निश्चय ही वेदोपदेश मे यह शक्ति है कि वह समाज के दूषित वातावरण मे आश्चर्य जनक परिवर्तन ला सकता है।

अकेले महर्षि दयानन्द ने थोडे से समय मे ही वातावरण को केवल वेद की वसी बजाकर बदल दिया था आज तो हमारे पास विशाल मदिरो की पक्ति बद्धशक्ति है। हमारो आर्य ऋषि के मिशन को पूरा करने मे सलग्न है। श्रावणी पर्व की सार्थकता इसी मे है कि हम पूरी सामर्थ्य से देश का भद्र करे कल्याण मार्ग का पथ प्रशस्त करें।

ईसाइयत का कुचक्र

ईसाइयत का प्रभाव योरोप मे प्राय समाप्त हो चुका है। ज्ञान विज्ञान के सहारे ससार पर शासन स्थापित करने वाले योरोप को बाइबिल की शिक्षाओ से क्या लेना देना। यह साम्राज्य शाही की जूठन एशिया वालो को मूर्ख बनाए रखने के लिए लण्डन व अमेरिका की सम्मिलित सस्था बाइबिल सोसाइटी बाट रही है इस घोर घृणित दुष्कर्म के लिए जो हथकण्डे उसे भारत मे रचने पडते है उसका भण्डाफोड भारत सरकार के अर्थ विभाग ने बगलौर मे बाइबिल सोसाइटी आफ इण्डिया के १ टन कागज पत्र जब्त करके किया है जो पाठक इसी अक मे पढेगे।

मध्य प्रदेश, केरल, बिहार उनके मुख्य षडयन्त्र गृह है। सरकार ने पादरियो को भारत छोडने का आदेश भी दिया है फिर भी साम दाम दण्ड भेद के सहारे वे टिके हुए है। देश मे बचे खुचे मुसलमान तो सिर दर्द बने ही हुए है। धीरे-धीरे ईसाइयत का कुचक्र भी बढता ही जा रहा है।

साम्राज्यवादी अभी भी ईसाइत के हथियार का दुरुपयोग भारत मे कर रहे हैं। छोटी जातियो व आदिवासियो मे इनके मुख्य गढ़ बने हुए हैं। हम सरकार से प्रार्थना करते हैं कि वह बाढ आने से पहले पाल बाधे व ईसाइयो की देशद्रोही प्रवृत्तियो पर पाबन्दी लगावे।

श्री पं० पृथ्वीराज शास्त्री का आपरेशन सफल

दिल्ली २ अगस्त। सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री प० पृथ्वीराज शास्त्री की पथरी का आपरेशन मूलचन्द हस्पताल मे नए वैज्ञानिक ढग से सफलता पूर्वक हो गया श्री शास्त्री जी एक सप्ताह तक हस्पताल मे रहने के पश्चात् पूर्ण स्वस्थ होकर घर आ गए हैं।

इसे भी सुसयोग ही कहा जाएगा कि श्री शास्त्री जी की धर्म-पत्नी के घुटने का भी आपरेशन होकर वे स्वस्थ्य होकर घर आ गई है। पति हस्पताल मे रुग्ण शैया पर व पत्नी घर रुग्ण शैया पर थी।

आदरणीय शास्त्री जी दयानन्द सेवाश्रमसघ के मन्त्री है। उनके स्वस्थ होकर घर आ जाने से सभा कार्यालय व समाज के क्षेत्रो मे प्रसन्नता की लहर दौड गई है। परमात्मा का धन्यवाद है कि वे स्वस्थ होकर निरोगावस्था मे वैदिक धर्म की सेवा मे सलग्न हो जायेंगे।

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है के उद्‌बोधक

लोकमान्य तिलक [१८५६-१९२०]

—ब्रह्मदत्त स्नातक, भारतीय सूचना सेवा (रिटा०)—

१ अगस्त १९२०। बम्बई के समुद्र तट पर चौपाटी के मैदान मे तिलक महाराज का ज्यो ही शव चिता पर रखा गया एक मुस्लिम युवक आगे बढकर चिता प्रज्ज्वलित होते ही छलाग मारकर उसमे यह कहकर कूद पड़ा—तिलक महाराज आप कहा चले गये? युवक की आयु २०-२२ साल थी और वह उनके शव के साथ भस्म हो गया। पूरे ६७ साल पहले आज के ही दिन भारत के यशस्वी योद्धा लोकमान्य बलवन्त गगाधर तिलक को श्रद्धाञ्जलि देने पाच लाख नर-नारी एकत्र थे।

बाल गगाधर के सक्षिप्त नाम से इतिहास में विश्रुत और अपने राजनैतिक अभ्युदय के काल मे प्रख्यात त्रिमूर्ति बाल (बालगगाधर तिलक) पाल (विपिनचन्द्र पाल) लाल (लाला लाजपतराय) के अग्रगण्य इस महापुरुष को स्वाधीनता सग्राम का प्रथम सेनानी कहना सच्ची श्रद्धाजलि होगी। तब वर्तमान इतिहास के प्रख्यात गाधी युग का राष्ट्रीय क्षितिज पर उदय पूरी तरह नही हो पाया था। राजनीति मे वर्चस्व उन दिनो सर फिरोजशाह मेहता और गोपाल कृष्ण गोखले जैसे दिग्गज कामरेड नेताओ के हाथो मे था। उन्ही के सरक्षण एव परामर्श पर दक्षिण अफ्रीका मे बैरिस्टर मोहनदास करमचन्द गाधी सार्वजनिक क्षत्र मे प्रवेश कर चुके थे। प्रथम विश्व महायुद्ध के कुछ ही बाद १९१५ ई० मे जब युद्ध के बादल गहरा रहे थे, वे भारत लौट आए थे और उनके दक्षिण अफ्रीका मे जातिभेद के प्रश्न पर सविनय अवज्ञा आदोलन एव बोअरो के खिलाफ अग्रेज सरकार को भारतीयो का सहयोग देने के लिए कैसर-ए-हिन्द तमगा स्वीकार कर चुके थे। और उनके इन पहले परीक्षणो पर भारत मे चर्चा तब शुरु हो गई थी परन्तु प्रख्यात गाधी युग का सूर्य अभी मध्याह्न काल मे प्रवेश नही कर पाया था।

राष्ट्रीय महासभा की बागडोर तब नरमदलियो के हाथो मे थी। धाराप्रवाह भाषणो एव लेखो से सवैधानिक प्रगति की माग अग्रेज शासको से वे लोग किया करते थे। पूर्ण स्वराज्य अथवा औपनिवेशिक स्वराज्य के लिए नही, अपितु होमरूल के अन्तर्गत अग्रेजो के सरक्षण मे रहकर ऊची नौकरियो मे भारतीयो के प्रवेश की सुविधा, कतिपय आर्थिक सुधारो के श्री गणेश करने के लिए विदेशी शासको से मनुहार करने की प्रणाली उन दिनो प्रचलित थी। इस शताब्दी के दूसरे शतक तक वर्तमान राष्ट्रीय महासभा (काग्रेस) का ढाचा इसी नीव पर खड़ा हुआ था।

काग्रेस के जन्मदाता ओ०पी० ह्यूम एक अग्रेज कलक्टर रहने के बाद भारतीयो को शासन व्यवस्था एव आर्थिक ढाचे मे सहयोगी बनाने के पक्षधर बने थे। उनके परवर्ती दादा भाई नौरोजी सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, गोपालकृष्ण गोखले आदि काग्रेस के नेता इन्ही माडरेटो की श्रेणी मे से थे। तब तक कर्मवीर विशेषण से पुकारे जाने वाले मोहनदास कर्मचन्द गाधी के प्रारम्भिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले भी इसी वर्ग के नेता थे। कोटि-कोटि भारतीय जनो द्वारा बाद मे महात्मा नाम से समादृत और कर्मपथ पर निरन्तर बढते अहिंसक क्रान्तिकारी गाधी ने अपनी जीवन पर गोखले के कर्तृत्व की छाप के सस्मरण अपनी आत्मकथा मे बडे भावभीने शब्दो मे अनेक स्थलो पर किये हैं, परन्तु गाधी जी के सहयोगी हैनरी पोलक ने अपने सस्मरण मे स्पष्ट लिखा है कि दक्षिण अफ्रीका से भारत मे १९१५ मे बम्बई से आने के बाद गाधी जी पूना मे लोकमान्य का आशीर्वाद लेने गए थे।

बाइबिल सोसायटी पर छापा

करोड़ो का घोटाला

बगलौर, ३० जुलाई। वित्त मन्त्रालय के अधिकारियों ने यहा बुधवार को बाइबिल सोसाइटी आफ इण्डिया के भवन पर छापामार कर एक टन से भी अधिक मात्रा मे आपत्तिजनक कागज पत्र व सरकारी धनक प्राप्त किए हैं। बताया जाता है कि सोसाइटी की गतिविधियो के परिणाम स्वरूप १९८१ के पश्चात् से देश कम से कम १ लाख डालर की हानि उठा रहा है। १९८१ मे विदेश मन्त्रालय के अधिकारियों द्वारा इस सोसायटी पर छापा मारा गया था। इसके अतिरिक्त सोसायटी के सम्बन्ध मे समझा जाता है कि वह विदेशी मुद्रा के विनिमय के नियमो का उल्लघन करती हुई करोड़ो रुपये अपने अधिकार मे रखे हुए हैं। यह राशि सोसाइटी को पुस्तको की खरीदारी के द्वारा प्राप्त हुई है। यह पुस्तकें सोसायटी वितरण के लिए मुफ्त प्राप्त करती है। इस राशियों के सम्बन्ध में दुर्दीर्घ काल से शका की जा रही थी। बाइबिल सोसायटी आफ इण्डिया की शाखाए हर बडे महानगर मे हैं और इसे लन्दन व न्यूयार्क की युनाइटेड बाइबिल सोसायटी जो अरबों रुपये की स्वामिनी है आर्थिक सहायता देती है। बाइबिल सोसायटी भारत सरकार के पश्चात् देश की सबसे बडी मुद्रक व प्रकाशक सस्था है वैधानिक रूप से यह एक व्यावसायिक व प्रकाशक सस्था है। वित्त मन्त्रालय के अधिकारियों का कहना है कि यह मिशनरी के शीर्षक के अन्तर्गत काम करती है इसलिए सामान्य नियम व्यवस्था से मुक्त है। सोसायटी का बगलौर मुख्यालय छापे की तात्कालिक कारणों को गोपनीय रखे हुए है। परन्तु यह समझा जाता है कि इस सम्बन्ध मे सोसायटी की अपनी कोई कार्य पद्धति है। शासन के उच्चाधिकारियो ने प्रकट रूप से यह पूछा कि विदेशी सूत्रों से सम्पूर्ण राशि का चैक या ड्राफ्ट भेजते होंगे उसे प्रकट

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द के कतिपय उपदेश

—पं० सोमदत्त शर्मा, एम. ए., इंगलैंड—

(१) भगवान के रचे अद्‌भुत पदार्थ ही भगवान की महान् मूर्तियां हैं—जो मूर्ति के दर्शनमात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे है, तो परमेश्वर के बनाए पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ, जिनमे ईश्वर ने अद्‌भुत रचना की है, क्या ऐसी अद्‌भुत रचना युक्त पृथिवी, पहाड़ आदि परमेश्वर-रचित महामूर्तियां कि जिन पहाड़ आदि से वे मनुष्य कृत मूर्तियां बनती हैं, उनको देखकर परमेश्वर का स्मरण नही हो सकता ? (सत्या० प्र० ११ समु०)

(२) पुरुषार्थी पुरुष को परमेश्वर शीघ्र प्राप्त होता है—परमेश्वर अत्यन्त दयालु है। अत जो जीव उसकी प्राप्ति के लिए तन, मन, धन से श्रद्धा-पूर्वक पुरुषार्थ करता है, परमात्मा उसको शीघ्र ही प्राप्त होता है। (स० प्र० ९ समु०)

(३) ईश्वर को न मानना तथा उसकी भक्ति न करना कृतघ्नता है—जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नही करता, वह कृतघ्न और महामूर्ख है। क्योंकि जिस परमेश्वर ने इस जगत् के सब पदार्थ हम जीवो के सुख के लिए दे रखे हैं, उसका गुण भूल जाना और ईश्वर को ही न मानना अत्यन्त कृतघ्नता और मूर्खता है। (स० प्र० ७ समु०)

(४) प्रभु उपासना का फल—जब साधक यमनियमादि साधनो को करता है, उसका आत्मा और अन्त करण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्य प्रति ज्ञान विज्ञान बढ़ा कर मुक्ति तक पहुच जाता है। ·· जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष-दु ख छूट कर, परमेश्वर के गुण, कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव भी पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए। इससे इसका फल तो पृथक होगा ही, परन्तु आत्मा का फल इतना अधिक बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दु ख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सब दु खो तथा क्लेशो को सहन कर लेगा। (स० प्र० ७ समु०)

(५) परमेश्वर के योग से सब तृष्णाए नष्ट हो जाती हैं—यह जीव तृष्णा के वश हो, परमेश्वर से विमुख होकर उससे भिन्न पदार्थों मे सदा भटका करता है। परन्तु जब उसको परमेश्वर का योग प्राप्त हो जाता है। तब सब तृष्णा आदि दोष दूर हो जाते हैं। फिर वह पूर्ण काम परमेश्वर में ही सदा रमण करता है। (स० प्र० ९ समु०)

(६) प्रभु प्रेमी की पहचान—सच्चा प्रभु का प्रेमी किसी से घृणा नही करता, वह ऊच-नीचादि भेद-भावनाओं को त्याग देता है। वह उतने ही पुरुषार्थ से दूसरों के दु ख निवारण करता है, कष्ट और क्लेश हरता है, जितने पुरुषार्थ से वह अपने कार्य करता है। ऐसे ज्ञानी जन ही वास्तव मे आत्म-प्रेमी कहलाते हैं। (श्री दयानन्द प्रकाश)

(७) कौन बड़ा है ?—अभिमानी पुरुष बड़ा नही होता। बड़ा वही है जिसने अहकार को जीत लिया है। (श्री द० प्र०)

(८) हरि-कथा में नींद क्यों आती है ?—हरि कथा एक सुकोमल शय्या के समान है, फिर यदि उस पर नींद न आए, तो और कहां आए ? और नृत्य, गान आदि उत्तेजक भाव आत्मा के लिये काटो का बिछौना है, फिर भला उस पर नींद कैसे आ सकती है ? (श्री द० प्र०)

(९) अपने शरीर को बलवान बनाओ—खान-पान की तरह व्यायाम भी नित्य करना चाहिए। बलवान् मनुष्य ही सदा सुखी और प्रसन्न रहता है। निर्बल मनुष्य का जीवन सार-रहित, रोगो का घर और नरक धाम बना रहता है। (श्री द० प्र०)

(१०) द्वेषी का द्वेष, द्वेष करने से दूर नही होता—अपमान-कर्ता का अपमान करने से उसका सुधार नही होता, किन्तु सम्मान देने से सुधार हो जाता है। जैसे आग में आग डालने से वह शान्त नही होती, ऐसे ही द्वेषी की द्वेषबुद्धि उसके साथ द्वेष करने से दूर नही हो सकती। जैसे अग्नि को शान्त करने का साधन जल है, उसी प्रकार द्वेष को मिटाने का साधन भी शान्ति धारण करना है। (श्री द० प्र०)

(११) जितेन्द्रिय किसे कहते हैं—जितेन्द्रिय उसे कहते है, जो स्तुति सुन के हर्ष, निन्दा सुन के शोक, अच्छा स्पर्श करके सुख और बुरे स्पर्श से दु ख, सुन्दर रूप को देखकर प्रसन्न और बुरे रूप को देख कर अप्रसन्न, उत्तम भोजन करके आनन्दित और निकृष्ट भोजन करके दु खित तथा सुगन्ध में रुचि और दुर्गन्ध मे अरुचि नही करता। (स० प्र० १० समु०)

(१२) तप का स्वरूप—यथार्थ शुद्धभाव, सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना मन को अधर्म मे न जाने देना, बाह्येन्द्रियो को पापाचरणो में जाने से रोकना अर्थात् शरीर, इन्द्रिय और मन से सदा शुभकर्मों का आचरण करना, वेदादि सत्यविद्याओं का पढ़ना-पढ़ाना, वेदानुकूल आचरण करना आदि उत्तम धर्म-युक्त कर्मों का नाम तप है। (स० प्र० ११ समु०)

(१३) आनन्द प्राप्ति के उपाय—जो पुरुष विद्वान्, ज्ञानी, धार्मिक सत्पुरुषो का सङ्गी, योगी, पुरुषार्थी जितेन्द्रिय और सुशील होता है, वही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर इस जन्म और परजन्म मे सदा आनन्द मे रहता है। (स० प्र० ११ समु०)

(१४) तीर्थ—वेदादि सत् शास्त्रो का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानो का सग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैरता, सत्यभाषण, सत्य करना, ब्रह्मचर्य पालन, आचार्य अतिथि, माता पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञान-विज्ञान आदि—ये सब शुभ गुण और कर्म दु खों से तारने वाले तीर्थ कहलाते हैं। (स० प्र० ११ समु०)

(१५) पराए दोष न देखकर पहिले अपने दोषो को देखो—बहुत मनुष्य ऐसे हैं, जिन्हे अपने दोष तो नही दीखते, किन्तु दूसरो के दोष देखने में अति उद्यत रहते हैं। यह न्याय की बात नही, क्योंकि प्रथम अपने दोष देख निकाल के पश्चात् दूसरे के दोषो मे दृष्टि दे के निकाले। (स० प्र० अनुभूमिका २)

(१६) परहानि करना मनुष्यपन नही है—सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षण भगुर जीवन मे पराई हानि करके लाभ से स्वय रिक्त रहना और अन्य को रखना मनुष्यपन से सर्वथा बहि है। (स० प्र० अनुभूमिका ४)

(१७) जो प्राणी मृत्यु का ध्यान रखता है, वह पापो मे लिप्त नही होता—जो जीव यह विचार करेगा कि मुझे मरना अवश्य है, अत मुझे पाप कर्म नही करना चाहिए, वह जीव सदा विचार-पूर्वक ही कर्म करेगा और कभी भी पापो मे लिप्त न होगा। (स० प्र० ७ समु०)

(१८) किनके बिना मनुष्य को सुख नही मिलता ?—पुरुषार्थ, सत्यधर्म का अनुष्ठान, सत्यविद्या का ग्रहण, सत्सग, जितेन्द्रियता और परमेश्वर की प्राप्ति अर्थात् मोक्ष—इनके बिना जीव को कभी भी सुख नही होता। (स० प्र० ९ समु०)

(१९) आचार्य किसे कहते हैं ?—राग-द्वेष आदि दोषो को हृदय से छोड़ देना, सज्जनता, प्रीति आदि गुणों को धारण कर लेना ही आचार है। (स० प्र० १० समु०)

(२०) भारत की उन्नति का उपाय—एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य की प्राप्ति ही भारत की पूर्णोन्नति की साधक है। कड़े तथा खरे उपदेशो से जाति को जगाकर, कुरीतियो और कुनीतियों को नष्ट करना ही मेरे खण्डन का एक मात्र उद्देश्य है। इसीलिए मैं जाति के हित के लिए अनेक प्रकार के कष्ट, गालियां और विष-पान आदि भी सह लेता हूं। (उपदेश-मजरी)

महर्षि दयानन्द के भक्त—

मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी

- डा० भवानीलाल भारतीय—

स्वामी दयानन्द की क्रान्तिकारी एवं प्रगतिशील विचारधारा के परम प्रशंसक, हिन्दू धर्म में व्याप्त कट्टरता, रूढ़िवाद तथा पाखण्ड के कटु आलोचक तथा स्वतन्त्र एवं रूढ़िमुक्त चिन्तन के प्रबल समर्थक मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी ने उन्नीसवीं शताब्दी के पंजाब प्रान्त में धार्मिक तथा सामाजिक परिवर्तन का शंखनाद किया था। उनका जन्म १८०६ में आगरा में हुआ। अलखधारी के पिता दीवान धर्मदास कर-विभाग में अतिरिक्त सहायक आयुक्त के पद पर थे। अलखधारी की शिक्षा कलकत्ता में १८२६ से १८२९ तक हुई। तत्पश्चात् वे बर्मा में कमिश्नर कार्यालय में लिपिक तथा लेखाकार के पद पर रहे। भारत लौट कर उन्होंने सहारनपुर, अम्बाला, शिमला, शाहपुर तथा मुजफ्फरगढ में कार्य किया। इस अवधि में वे ब्रिटिश सरकार के अतिरिक्त देशी राज्यों में सेवारत भी रहे। दिल्ली में उन्होंने ज्ञान प्रेस की स्थापना की और १८५३ में अपनी प्रथम सुधारवादी पुस्तक निकाली।

सन् १८५७ की हलचल के समय वे लुधियाना में थे। विद्रोह के समाप्त होने पर वे आगरा आये और १८६३ से १८७० तक कोटला राज्य में कार्य किया। तत्पश्चात् अक्टूबर १८७२ तक कलसिया राज्य में सेवारत रहे। अन्ततः लुधियाना में ही बस गये और मार्च १८७३ में 'नीतिप्रकाश' नामक उर्दू पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। शाहपुर (पाकिस्तान) रहते समय उन्होने "चिराग ए हकीकत" तथा "साम ए मारिफत" नामक दो पुस्तकें लिखीं जो आगरा में मुद्रित हुई। यों तो अलखधारी ने धर्म, गणित, भौतिकी, राजनीति आदि विभिन्न विषयों पर लिखा था, किन्तु उनके द्वारा किये गये भगवत्गीता, उपनिषद् तथा योग वसिष्ठ के उर्दू अनुवादों से उन्हें धार्मिक जगत् में अधिक ख्याति मिली। हिन्दुओं को अन्य मतों से परिचित कराने की दृष्टि से उन्होने इस्लाम के ग्रन्थों के कुछ अंशों का भी उर्दू में अनुवाद किया तथा ईसामसीह की जीवनी का लेखन किया।

सन् १८६० तथा १८९० के बीच अलखधारी ने पंजाब का व्यापक भ्रमण कर धार्मिक पाखण्डों पर तीव्र प्रहार किये। प्रो० केनेथ जोन्स ने उन्हे Alone refOrmer with a bitter tongue and sharp pen कटु जिह्वा तथा तीखी कलमवाला एकाकी सुधारक कहा है। जब १८७५ में वे कलसिया राज्य की सेवा से निवृत्त हो चुके थे तो उनके कुछ मित्रों ने उन्हें परामर्श दिया कि वे सर सैयद अहमद खां की भांति, जैसा कि उन्होंने मुस्लिम नवजागरण का अभियान चलाया है, हिन्दू पुनरुत्थान के लिए आन्दोलन चलायें। इस पर अलखधारी ने तुलसी के स्वर में कहा—"मुसलमानों की बात भिन्न है। उनकी सत्ता को छिने अभी सौ वर्ष ही हुए हैं, जब कि हिन्दुओं के पराभव और पतन का प्रारम्भ ३०० वर्ष पूर्व ही होना आरम्भ था। इस जाति की उन्नति कठिन है, क्योंकि आर्य ऋषियों की सन्तान आज पेड़, पत्थर तथा नदियों की पूजा करने लग गई है। यहां तक कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा के स्थान पर मुसलमानों के मकबरों को पूजने में भी उन्हे कोई संकोच नहीं होता। वेदों तथा धर्म-शास्त्रों में प्रतिपादित आचार के स्थान पर आज के हिन्दू मिथ्या कदाचारों का ही पालन कर रहे हैं।"

तथापि मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी ने मार्च १८७३ में लुधियाने में नीति प्रकाश सभा की स्थापना की तथा उसके माध्यम से हिन्दुओं में सुधारवादी विचारों का प्रचार किया। तथापि उन्हें अपने प्रयत्नों से अधिक सफलता नही मिली। मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के सुधार कार्यों के प्रबल विरोधी एक अन्य पंजाबी महानुभाव प० श्रद्धाराम फिल्लौरी थे। जब अलखधारी ने नीति-प्रकाश सभा का आरम्भ किया था तो फिल्लौरी अपने साथियों सहित वहां उपस्थित थे। बाद में उन्होने अलखधारी द्वारा प्रवर्तित सुधार कार्यक्रमों का यह कह कर उपहास किया कि हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा तो वे लोग ही कर सकते हैं जो स्वयं अपने धर्म का कट्टरता से पालन करते हो। उन्होंने अलखधारी को दृढ हिन्दू मानने से इन्कार किया और अपनी बात के समर्थन में कहा अलखधारी न तो चोटी और जनेऊ धारण करता है तथा जो अपने चौके को गोबर से लीपने में परहेज करता है, भला वह कैसा हिन्दू ? जो मेज-कुर्सी पर भोजन करता हो तथा "भोजन" को 'खाना' कह कर पुकारे, भला इससे हिन्दू धर्म की क्या रक्षा होगी ?" निश्चय ही फिल्लौरी के आक्षेप नितान्त हास्यास्पद ही थे, किन्तु वह इन्हीं की ओट में अलखधारी का विरोध करना चाहता था। निश्चय ही अलखधारी अवतार, मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, जन्माधारित जाति-व्यवस्था और तीर्थयात्रा आदि पौराणिक आचार-विचारों के कट्टर विरोधी थे और इन्ही बातों को हिन्दुओं के सर्वविध पतन का कारण मानते थे।

अलखधारी और स्वामी दयानन्द

अलखधारी को स्वामी दयानन्द का परिचय उनके ग्रन्थों से ही मिला। स्वामी जी से उनकी भेंट जनवरी १८७७ में दिल्ली में हुई जब कि महारानी विक्टोरिया द्वारा भारत की साम्राज्ञी का पद ग्रहण करने के उपलक्ष्य में लार्ड लिटन (तत्कालीन वायसराय) द्वारा वहां एक दरबार का आयोजन किया गया था। मुन्शी जी स्वामी जी द्वारा आयोजित उस धर्म सम्मेलन में भी शामिल हुए जिसमें स्वामी जी ने देश के विभिन्न धार्मिक नेताओं के समक्ष राष्ट्रोत्थान के लिये कुछ सूत्र प्रस्तुत किये थे। इस सम्मेलन की कार्यवाही का विस्तृत विवरण तो नहीं मिलता किन्तु इतना अवश्य पता चलता है कि स्वामी जी द्वारा, वेदों के प्रामाण्य पर बल देने तथा वैदिक मान्यताओं को स्वीकार करने से ही राष्ट्र के विभिन्न मत, सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है, इस प्रकार कहने से ब्रह्मसमाज के नेताओं का उनसे सहमत होना कठिन

हो गया और वह सम्मेलन बिना किसी निर्णय पर पहुँचे समाप्त हो गया।

दिल्ली मे ही अलखधारी ने स्वामी दयानन्द को पजाब आने का आमन्त्रण दिया। तदनुसार स्वामी जी सर्वप्रथम लुधियाना गये और वहां से ही लाहौर के लिये प्रस्थान किया। अलखधारी ने स्वामी दयानन्द और उनके विचारो की चर्चा समय समय पर अपने पत्र नीतिप्रकाश में की थी। इन्हीं उद्धरणो को एकत्र कर "स्वामी दयानन्द का हाल" शीर्षक एक उर्दू पुस्तक १८८६ ई० में लाला रामचन्द्र द्वारा मेरठ से प्रकाशित कीगई। प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा इसका हिन्दी अनुवाद 'महर्षि दयानन्द का सर्वप्रथम जीवन वृत्त' शीर्षक से सम्पादित कर प्रकाशित है।

डा० केनेथ जान्स के इस कथन मे पूर्ण सत्यता है कि अलख-धारी की लेखनी तीखी थी जो मिथ्या पाखण्डो और अन्धविश्वासो के प्रति अभिशाप वृष्टि करने से कभी नही चूकती। निश्चय ही वे स्वय भी अग्निजिह्व थे। अलखधारी को हिन्दुओ की जड़पूजा से सबसे अधिक चिढ थी। इसलिये उन्होने हिन्दुओ को पत्थरो, वृक्षो और जलाशयो का पूजने वाला कहकर तिरस्कृत किया है।

जब स्वामी दयानन्द अलखधारी के आग्रह को स्वीकार कर लुधियाना गये तो पुराणपन्थियो ने कहा—'जैसा कन्हैयालाल अधर्मी है वसे ही उसके मित्र स्वामी जी। वे पादरियो की ओर से हिन्दुओ को पथभ्रष्ट करने के लिये कन्हैयालाल के बुलाये यहा आये हैं।" इस मिथ्या आरोप से तिलमिला कर अलखधारी अपनी लेखनी से प्रचण्ड अग्निवर्षा करते हुए लिखते हैं— 'गोबर के खाने-वालो और उनकी (बैलो) दुम से नाक रगडने वालो तुम लोग मेरे (मुझे) सन्मार्ग बताने वालो के शत्रु हो, परन्तु हम लोग तुम्हारे शत्रु नही हैं। स्वामी जी के उपदेश को सुनो और धिक्कारो उनको जो तुम्हे सच्चिदानन्द अद्वितीय के अतिरिक्त दूसरे किसी को पूजने की शिक्षा देते हैं।"

मुन्शी अलखधारी का स्वामी जी से सम्पर्क लुधियाना तथा लाहौर में बराबर रहा। उन्होने अपने लेखो मे हिन्दुओ को निरन्तर परामर्श दिया कि "यदि वे अपने आपको प्राचीन शास्त्रो का भक्त रखना चाहते हैं, वे अगर किसी को गुरु बनाना चाहें या किसी से किसी समस्या का समाधान करने के इच्छुक हो, या किसी से उपदेश चाहे या किसी की वक्तृता सुनना चाहें तो इसके लिये एक मात्र उपयुक्त दयानन्द सरस्वती ही हैं।" स्वामी जी की शिक्षाओ से अनुप्राणित होकर अलखधारी ने १८८० में पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की। प० लेखराम को स्वामी दयानन्द तथा उनके विचारों का परिचय अलखधारी के ग्रन्थो का अध्ययन करने से हुआ था।

अलखधारी के द्वारा प्रवर्तित विचारक्रान्ति का मूल्याकन करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने प० लेखराम के जीवनचरित मे लिखा था— "पजाब के मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के लेखो ने वैदिक धर्म को पुनरुज्जीवित करने में वही काम किया जो ईसाई मत की स्थापना के पहले जान दि बेप्टिस्ट के व्याख्यानो ने किया। यदि ईसाइयो को ईसा का उपदेश समझाने के लिये जान के व्याख्यानो की आव-श्यकता थी तो आर्य समाज को भी ऋषि दयानन्द का उद्देश्य समझाने के लिये अलखधारी की प्रचण्ड चोटो की जरूरत अवश्य थी। उस समय के नवशिक्षित पजाबी और कुछ सयुक्त प्रान्त वाले भी उनसे प्रभावित हुए। अलखधारी ने अपने लेखो की पुष्टि मे स्वामी दयानन्द के लेखो और व्याख्यानो का प्रमाण दिया। यही कारण था कि मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के सब चेले अन्त को ऋषि दयानन्द की पवित्र शरण मे आये और आर्यसमाज के उत्साही सभासद बने।' अलखधारी की समस्त रचनाए 'कुलियात अलख-धारी' मे सगृहीत हैं। उनका निधन १ मई १८८२ को हुआ। ●

गीता और ऋषि दयानन्द जी

—श्री अमर स्वामी सरस्वती—

(गतांक से आगे)

पढ़ कर कहा कि देखो जो कुछ करता है। ईश्वर ही करता है। जीव, कुछ नही करता, महाराज ने कहा कि इसका यह अर्थ है कि—ईश्वर पृथ्वी आदि सब भूतों को घुमा रहा है तुम स्वयं ही सब दोष ईश्वर के मत्थे मढ़ना चाहते हो यह सुनकर पण्डित तथा अन्य पण्डित जो उस समय वहा उपस्थित थे, चकित हो गये। और सबने महाराज के अर्थों की सत्यता स्वीकार की।

गीता का यही श्लोक और उसका महापौराणिकों वाला अर्थ लेकर ही हमारे एक विद्वान ने गीता को वैदिक सिद्धान्तो के विरुद्ध सिद्ध करने का यत्न किया था। उन्होने ऋषि दयानन्द जी महाराज के किए इस अर्थ को न पढा न सुना यदि वह इसको पढ या सुन लेते तो वह भी चकित हो जाते। और महाराज के अर्थ को स्वीकार करते।

बाबू देवेन्द्रनाथ जी मुखोपाध्याय तथा बाबू घासीराम जी एम ए द्वारा लिखे गये ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र से इतने प्रमाण दिये गये।

१४ श्री स्वामी सत्यानन्द जी द्वारा लिखे "दयानन्द प्रकाश" ग्रन्थ के पृष्ठ ७९ पर जयपुर के निकट अचरोल में महाराज के निवास का वर्णन है वहा लिखा है कि—

'स्वामी जी मनुस्मृति उपनिषद और गीता आदि ग्रन्थों के प्रकरण सुनाकर कृतार्थ किया करते थे।

१५ इसी पृष्ठ पर और लिखा है कि—

'स्वामी जी महाराज चार मास के लगभग वहा (अचरोल मे) टिके। नित्य प्रति उपनिषदो और गीता की कथा सुनाया करते थे, प्रतिमा पूजन का खण्डन करते थे, और कहते थे कि ध्यान भीतर करना चाहिये।"

दयानन्द प्रकाश पृष्ठ ९९ पर लिखा है कि—

'एक दिन सन्त अमीरसिंह निर्मले ने जिज्ञासुभी को एक पंक्ति स्वामीजी से पूछी। स्वामी जी ने उसे उत्तर देते हुए कहा कि—आपके लिए मैं इसका अर्थ कर देता हूँ। परन्तु वह अनार्ष ग्रन्थ हैं। इसे प्रमाण कोटि मे नही मानना चाहिये।

ऐसे वाक्य महाराज ने गीता के लिए कही भी नही कहे।

१६. भगवद्गीता प्रक्षिप्त नहीं है—

इस समय के दो तीन पण्डितम्मान्य अपना सारा बल यह सिद्ध करने में ही लगा रहे हैं कि गीता सारी ही सारी प्रक्षिप्त है।

वह लोग अपने आपको सारे आर्य समाजी पण्डितों से ही नहीं ऋषि दयानन्द जी से भी बडा समझदार प्रकट करना चाहते हैं।

दयानन्द प्रकाश पृष्ठ २०६ पर लिखा है।

मिर्जापुर मे बाल कृष्णदास नामक एक वैरागी महन्त रहता था। वह महाभारत के सशोधन मे लगा हुआ था। वास्तव में तो वह महाभारत के २४ सहस्र श्लोक रखना चाहता था। परन्तु उस समय उसने जो पुस्तक छपवाई थी उसमें ३० सहस्र ही श्लोक थे। उसने भगवत्गीता को भी प्रक्षिप्त समझ कर निकाल दिया था।

सुन्नीलाल नामक एक धनिक व्यक्ति गीता का बड़ा भक्त था। वह वैरागी बाबा की इस अनाधिकार चेष्टा से बहुत ही चिढ गया। उसने बाबा जी के इस अनर्थ को दुहाई स्वामी दयानन्द जी के आगे आकर दी। "महाराज ने कहा उसका गीता को प्रक्षिप्त कहना सत्य नही है। इस पर जब उसका जी चाहे शास्त्रार्थ कर ले।"

'उक्त बाबा जी ने गीता के प्रक्षिप्त होने पर शास्त्रार्थ नहीं किया छोटूराम नामक एक व्यक्ति स्वामी जी से उपनिषद् पढने आया करता था। छोटूराम ने बाबा जी को स्वामी जी की सम्मति सुना दी। इससे बाबा जी रुष्ट तो बहुत हुए। परन्तु शास्त्रार्थ को यह कह कर टालते रहे कि—हम दूसरे के स्थान पर नही जाया करते। स्वामी जी ने उन्हें बहुतेरा कहलाया कि यह स्थान भी हमारा नही है। यहां नहीं आ सकते तो पास के उद्यान मे आ जाइये। अथवा गंगा के पुलिन पर पर बैठ कर विचार कर लीजिए। परन्तु बाबा जी ने एक न मानी।

गीता प्रक्षिप्त नहीं—इस शीर्षक से यह वृत्त श्री प० हरिश्चन्द्र जी विद्यालकार कृत महर्षि दयानन्द सरस्वती नामक सचित्र प्रमाणिक जीवन-चरित्र के पृष्ठ ११५ पर भी अकित है।

सख्या १० में लिखा वृत्त भी इस पुस्तक के पृष्ठ सख्या ७२ पर विस्तार के साथ राव कर्णसिंह के भेजे गुण्डों के आक्रमण सम्बन्ध में लिखा है वहां स्वामी जी के अगरक्षक का नाम कँवलसिंह लिखा है।

सख्या १२ का वृत्त इस ग्रन्थ मे पृष्ठ १४४ पर अकित है जिसमें "सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेक शरण व्रज" का समाधान है।

१७ दयानन्द प्रकाश पृष्ठ १२२ १२३ पर डुमरांव में वहा के महा-अभिमानी शैव प० दुर्गादत्त से वार्तालाप का वृत्त लिखा है। वहां बताया गया है कि ऋषि दयानन्द जी और प० दुर्गादत्त मे गीता के श्लोक "सर्व धर्मान् परित्यज्य" पर भी विचार विनिमय हुआ था।

१८ "गीता को ऋषि ने शास्त्र कहा—देवेन्द्रनाथ जी मुखोपाध्याय कृत "महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र भाग १ पृष्ठ १४५ पर ऋषि के कन्नोज निवास का वर्णन है, वहा लिखा हैं कि—

बलिवैश्व देव यज्ञ के विषय में स्वामी जी ने कहा कि जो बलिवैश्व देव यज्ञ किये बिना भोजन करते हैं वह मानो गो-मांस भक्षण करते हैं। प० हरिशकर जी ने कहा कि—ऐसा न कहो, यहा तो कोई भी बलिवैश्व देव यज्ञ नही करता है। स्वामी जी ने कहा कि—मैं थोड़ा कहता हूँ शास्त्र मे तो इससे भी अधिक लिखा है, और गीता का श्लोक पढ़ा—

"यज्ञ शिष्टाशिन सन्तो मुच्यन्ते सर्व किल्बिषै।
भुंजते ते त्वघ पापा, ये पचन्त्यात्म कारणात् ॥ गीता ३। १३

अर्थात् वह पापी लोग पाप का ही भक्षण करते हैं जो यज्ञ किये बिना अपने ही लिए पकाते और आप ही खाते हैं।

१९ "सस्कार विधि और सत्यार्थ प्रकाश मे गीता के प्रमाण"—

सस्कार विधि मे गीता के केवल दो श्लोकों का प्रयोग हुआ है गृहस्थाश्रम प्रकरण में वर्ण व्यवस्था का भी वर्णन है वहा ब्राह्मणो में पहिले मनुस्मृति का श्लोक—

अध्यापनमध्ययनम्-आदि देकर नीचे गीता का—

शमोदमस्तप शौच, क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञान विज्ञानमास्तिक्य, ब्राह्मण कर्म स्वभावजम् ॥ गीता १८। ४२

यह श्लोक दिया है। आगे क्षत्रिय के गुण कर्म स्वभाव बताते हुए—पहिले मनुस्मृति श्लोक—

२० "प्रजाना रक्षण दानम् आदि देकर नीचे 'गीता १८। ४३ का।
शौर्य तेजो धृतिर्दाक्ष्य, युद्ध चाप्यपलायनम्।
दान ईश्वर भावश्च, क्षात्र कर्म स्वभावजम् ॥

दिया है। (क्रमश)

बलवान् बनो-बलवान् बनो !

(सुरेश चन्द वेदालंकार एम.ए., गोरखपुर)

आयुषायस्व ॥ अथर्व० ६।१०।१ ॥

(बलवान् बनो)

अथर्ववेद के इस छोटे से वाक्य में जीवन को आनन्दमय, सशक्त एवं शक्तिशाली बनाने के लिए मन्त्र का उद्‌बोधन है "बलवान् बनो"। यदि हम बलवान् और सशक्त होंगे तो हमारा राष्ट्र स्वस्थ एव सशक्त होगा। संस्कृत साहित्य का एक वाक्य है, वीर भोग्या व सुन्धरा' यह पृथ्वी वीरों द्वारा भोग्या है। निर्बल एवं कमजोर इस संसार का आनन्द नहीं उठा सकते।

महर्षि दयानन्द में शारीरिक आत्मिक और मानसिक सभी बल थे। उनकी आत्मा पवित्र थी, मन उन्नत था, शरीर पुष्ट था। एक दिन कास गंज में महाराज शौचादि से निवृत्त होने के लिए जंगल की ओर जा रहे थे। रास्ते में मनुष्यों की भीड़ लगी हुई थी। दो सांड पैंतरे बदल-बदल कर लड़ रहे थे। मार्ग रुक गया। महर्षि आगे बढ़े। लोगों ने रोका। पर वे रुके नहीं, और सांडों के सींग पकड़कर अलग कर दिया। सभी लोग देखते रह गए। चैन सुख ने स्वामी जी से कहा यदि सांड सींग मारता तो आप क्या करते? उन्होंने सहज भाव से कहा "मैं इन्हें अपने हाथों से परे धकेल देता।"

स्वामी जी मुस्कराये।

ऋषि दयानन्द का व्याख्यान हो रहा था। उनकी तेजस्वी मुख मुद्रा और दिव्यवाणी से प्रभावित श्रोता मन्त्र मुग्ध थे। स्वामी जी भक्ति का महत्व समझा रहे थे। उन्होंने कहा "वह भक्ति जिसमें शक्ति नहीं, वास्तविक भक्ति नहीं। प्रत्येक प्रकार की भक्ति के मूल में शक्ति का योग होना चाहिए। चाहे वह भक्ति ईश्वर भक्ति हो या देश भक्ति। भक्ति में बल ही मेरुदंड है। बलवान् जातियों की भक्ति निभती है, निर्बलों की नहीं। क्योंकि भक्ति को कदम-कदम पर अपनी परीक्षा देनी पड़ती है। यह परीक्षा कभी मनोबल की होती है, कभी शरीर बल की।

इस बीच सभास्थल में दो सांड लडते लड़ते पहुँच गए। वे सीधे औरतों की कतार में पहुंच गए। श्रोताओं में भगदड़ मच गई, सबको अपनी अपनी पड़ी थी। स्त्रियों की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया। स्वामी जी मंच से कूदे और दोनो सांडों के सींग पकड़ कर ऐसे अलग कर दिया जैसे कोई सयाना दो बच्चों को जुदा कर देता हो। दोनों सांडों ने अपने लाल लाल नेत्रो से क्षण भर स्वामी जी को देखा, फिर दोनों नीची गरदन किए विभिन्न दिशाओं में चले गए।

स्वामी श्रद्धानन्द बल और तेज के पुंज थे। दिल्ली में रौलट एक्ट के विरोध में विशाल प्रदर्शन हो रहा था। वहां का सम्पूर्ण उत्तर दायित्व स्वामी श्रद्धानन्द पर था। जलूस चांदनी चौक पहुंचा। स्वामी श्रद्धानन्द पीछे जलूस की व्यवस्था में लगे हुए थे। जलूस के सामने जिनके राज्य में सूर्य नहीं छिपता उन अंग्रेजो की सेना सपूर्ण शस्त्रों से सुसज्जित होकर डट गई और जलूस को तितर बितर होने का आदेश दिया। स्वामी जी को सूचना मिली। स्वामी श्रद्धानन्द वीर थे। वे आगे आए और जलूस के सामने आकर अंग्रेज कमांडर को ललकारते हुए बोले गोली बाद में चलाना, यदि हिम्मत हो तो गोली का पहला वार मेरे ऊपर करो। स्वामी श्रद्धानन्द के छाती खोलते ही अंग्रेजों की संगीने झुक गई और जलूस शान से स्वामी श्रद्धानन्द की जय-जयकार करता हुआ आगे बढ गया। स्वामी श्रद्धानन्द की अद्‌भुत् वीरता का कारण उनका चरित्र बल था। उनका कहना था, राष्ट्र का मेरुदंड उसका चरित्र बल होता है। उसमें शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल की स्थापना उसके चरित्र द्वारा होती है। चरित्र के केन्द्र विन्दु के चारो ओर ही राष्ट्र की स्वतन्त्रता निवास करती है। यह केन्द्र बिन्दु, जहां ओझल हुआ राष्ट्र और समाज की तमाम कड़ियां भी बिखर जाती हैं। इतिहास साक्षी है, चरित्र के अभाव में विशाल से विशाल राष्ट्र भी नाम शेष हो गए। चरित्र सम्पन्न छोटा-सा राष्ट्र भी महान् शक्तिशाली हो जाता है। राष्ट्र का स्वातन्त्र्य मदोन्मत्त हाथी की तरह होता है, कच्चे खूटे से बांधा नही जा सकता।"

दयानन्द कालेजों की नींव डालने वाले और देश के लिए अंग्रेजों की लाठी खाकर बलिदान होने वाले पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने कहा है, "अपने देशवासियों से मैं बार-बार कहना चाहता हूँ कि किसी जाति या राष्ट्र का निर्माण सपनों से नहीं होता, बल्कि लोहू और लोहे से होता है। हमारे शरीर में तेज बहने वाली लोहू की धारा हो और उस धारा मे बलि की लालसा हो। वैसे ही हमारे बदन लोहे के हों और उसी तरह लोहे की हमारी इच्छा शक्ति। इस योग्यता के साथ लोहे का दड जो हमारे हाथ में हो तो एक राष्ट्र क्या सारी पृथ्वी को हम भययुक्त कर सकते हैं।

महर्षि अरविन्द ने बड़ौदा कालेज के छात्रो को उपदेश देते हुए कहा "सब सत्यों का निचोड़ तुम्हारे सामने सिर्फ एक ही सत्य है कि निर्बलता से बड़ा पाप जीवन में कुछ नही है। तुम्हारे सारे मुक्ति अभियान इसी के लिए हों, यही कामना है। जहां तुम इस कुंभ कर्णा से मुक्त हो गए, इसे तुमने जीत लिया वहां तुम संसार के बडे से बडे गौरव को अनायास जीत लोगे।"

एक दिन कुछ युवकों ने स्वामी विवेकानन्द से दिव्यजीवन का सही मार्ग पूछा। उन्होने कहा "तुम्हारा धर्म है बलवान् बनना। वह मिलेगा अखाड़ों में खेल के मैदानों में पहाडों और नदियो की खतर-नाक घाटियों में। आज हमें अर्जुन चाहिए जो शक्ति की उपासना करे, जो दुर्जन और दुष्टों से इस पृथ्वी को मुक्त करे। नवयुवकों का स्वधर्म सदैव बल की पूजा करना रहा है। बलवान् बनोयही मेरा गुरु मन्त्र है।"

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य समाज रामकृष्णपुरम्

निर्माण योजना की अपील

महर्षि दयानन्द के मिशन को फैलाने के लिए यूं तो देहली की प्राय: सभी कालोनियों में आर्यो के भवन व प्रचार केन्द्र स्थापित हैं परन्तु रामकृष्णपुरम् भारत सरकार की केन्द्र कर्मचारियों की सबसे बड़ी कालोनी है।

इस कालोनी के सैक्टर ६ में आर्य समाज को १ हजार वर्ग गज भूमि ४ वर्ष पूर्व ही प्राप्त हो गई थी। जिसका १ लाख १४ हजार रुपया भुगतान कर दिया गया है। वहां एक देवी की ५१०००) की दान राशि से यज्ञशाला का निर्माण हो रहा है। भवन व अन्य योजनाओं के लिए अभी लाखों रुपये की आवश्यकता है। धर्म प्रेमी व उदार बन्धुओं से प्रार्थना है इस महान् कार्य में दिल खोलकर समाज की सहायता करें। यहां २ लाख की जनसंख्या का शिक्षित वर्ग आर्य समाज से प्रभावित होगा। इससे समाज की बहुत उन्नति व धर्म प्रचार का लाभ मिलेगा।

हरबंसलाल कोहली प्रधान	सुरेश प्रपाठक	ओमप्रकाश कपूर मन्त्री

आर्य समाज रामकृष्णपुरम् सैक्टर ६, नई दिल्ली-११००२२

बलवान बनो

(पृष्ठ ४ का शेष)

छत्रपति शिवाजी ने जब अपने पराक्रम और शौर्य द्वारा राज्य का निर्माण कर लिया और उसे अपने गुरु सन्त रामदास को दे दिया तो सन्त ने एक टक देखा और कहा 'मुझे राज्य नही चाहिए तुम्हारे जैसे एक सौ एक शिवा मुझे चाहिए। राज्य की रक्षा कमजोर नही कर सकते शिवाजी बोले 'गुरुदेव ! निर्माण आपने सिखाया अब रक्षा का उपाय भी सिखाइए।' गुरुदेव बोले "राज्य की रक्षा प्रजा करती है और प्रजा का निर्माण राजा करता है। प्रजा की पुष्ट देह चाहिए, स्वस्थ, सशक्त शरीर आत्म रक्षा का पहला पाया है। प्रजा की मजबूत देह राज्य की अभेद्यदीवारे होती हैं। शिवा आओ अपनी प्रजा को देह धर्म सिखाओ—शरीर के प्रति हमने बहुत उपेक्षा की है, यही हमारे पतन का मूल कारण है।"

वर्तमान तुर्की के निर्माता कमालपाशा ने अपने देश का शासन हाथ में लेते ही अपने देश के शिक्षा विभाग को आदेश दिया "एक साल में मुझे १० हजार ऐसे नवजवान चाहिए जो बन्दूक चला सकें, घोड़े पर चढ़ सकें और नदियों में तैर सकें शिक्षा विभाग ने उसके आदेश का पालन किया और उसने जो नवजवान दिए उनके शरीर स्वस्थ पुष्ट और दर्शनीय थे। मन उत्साह से भरे थे और चेहरे पर आत्मशक्ति की छाया थी। परिणाम यह हुआ कि उन युवकों को देखकर वहां के हर नवयुवक की यही आकांक्षा रहने लगी कि उसकी गिनती भी अगले दस हजार की श्रेणी में हो। बस तुर्की का भाग्य जग गया।

सन् १९०५ ई० मे जापान ने रूस को जो पराजय दी वह एशिया की यूरोप पर विजय थी तिलक ने उस समय जो शब्द कहे थे प्रत्येक नवयुवक के लिए ध्यान देने योग्य हैं। उन्होने कहा "छोटे से जापान ने रूस को पछाड़ दिया। जानते हो इसका रहस्य क्या है ? जापान के नवयुवको ने बल की उपासना की है। बल ही सारी सिद्धियों की कुंजी है। बल हीन कहीं कुछ नही कर सकता। जिस शरीर की नसों में गर्म खून दौड़ता है, वह शरीर कभी मुलायम नही बनाया जा सकता। शरीर सबसे प्रथम धर्म है। बड़ का पेड ही आंधियों सह सकता है; बल का उपासक सिंह ही निर्भय विचर सकता है जाओ, इस मुलायम शरीर में फौलाद भरों, इन रूखे चेहरे पर सुर्खी सीचो। आज थोडे से ऐसे नवजवान मुझे मिल जाये तो स्वराज मेरी मुट्ठी मे है।"

इसलिए वेद कहता है कि संसार में वही व्यक्ति, वही समाज, वही राष्ट्र जीवित रह सकता है जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल की उपासना करता है। स्वामी जगदीश्वरानन्द जी कहते है "शारीरिक बल के लिए व्यायाम करो, बौद्धिक बल के लिए ओ३म् का ध्यान करो और मानसिक बल के लिए स्वाध्याय और विद्वानो का सत्संग करो" (वेद कहता है 'आवृषायस्व-बलवान् बनो-बलवान् वनो। ●

(पृष्ठ ४ का शेष)

किया जाता है शेष २५ प्रतिशत राशि विदेशों में रखी जाती होगी जो कि विदेश यात्राओं आदि पर व्यय की जाती है। यह राशि लाखों में है। विदेशी सोसायटियां अथवा ऐसोसिएटेड बाइबिल की लाखों प्रतियां सोसायटी को मुफ्त भेजती है। मुद्रित सामग्री होने के कारण उन पर कस्टम ड्यूटी नही लगती परन्तु सोसायटी बाइबिल की यह प्रतियां बेच कर भारी लाभ अर्जन करती है। इस प्रकार भेजी जाने वाली पुस्तकों का मूल्य करोड़ों रुपये बनता है। जो कागज पत्र पकड़े गये हैं उनके सम्बन्ध मे समझा जाता है कि उनसे विदेशी दान नियम प्रणाली के नियमों की धारा, रिजर्व बैंक आफ इण्डिया के नियमों व विदेशी धन विनिमय के नियमों की धारा का उल्लंघन होता है। सोसायटी में इस प्रकार भ्रष्टाचार कोई नई बात नहीं। ●

आर्य जगत् के समाचार

दूर-दर्शन से निवेदन

देशभर की अनेक आर्यसमाजों ने दूर-दर्शन के निर्देशक से निम्न प्रार्थना की है :—

रविवार को दूर-दर्शन पर दिखाया जाने वाला धारावाहिक "रामायण" जनमानस द्वारा विशेष उत्सुकता से देखा जा रहा है, सराहनीय है। प्रायः रविवार छुट्टी का दिन होने से लगभग सभी धार्मिक संस्थाएं उसी दिन प्रातः ही अपने सत्संग, भारतीय जनमानस एवं युवा वर्ग को आध्यात्मिक भोजन देने के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति के अनमोल रत्न गीता, रामायण, वेद, उपनिषद आदि की जानकारी के लिए आयोजित करते आ रहे हैं। उक्त धारावाहिक का समय तथा उक्त सत्संगों का समय जो दशाब्दियों से चला आ रहा है एक ही होने से सभी जनमानस दोनों का लाभ नहीं ले पाते। परिणाम स्वरूप सत्संगो में जनमानस न्यून होता जा रहा है।

अतः आपसे विनम्र प्रार्थना व अपील है कि कृपाकर "रामायण" धारावाहिक का समय रविवार प्रातः ८ से ११ बजे को छोड़कर कोई अन्य उपयुक्त समय रखा जाय। ऐसा होने से भारत के करोड़ों सत्संग प्रेमी आभारी होंगे।

—सम्पादक

सूचना

सर्वसाधारण आर्य जनो को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या में पढ़ने वाले किसी भी विद्यार्थी ब्रह्मचारी को छात्रवृत्ति के नाम पर यदि नियमित धनराशि देते हैं तो उसे गुरुकुल मुख्याधिष्ठाता के नाम से ही भेजें। और साथ ही यह भी लिखें कि किसी भी मेधावी छात्र को ही उनके द्वारा प्रदत्त धनराशि दी जायें। जो नियमित व्यय विवरण के साथ मासिक आख्या सूचना उन्हें मिले और अपने दिये धन के सदुपयोग से सन्तुष्ट हों।

पता चला है कि कुछ छात्र वृत्तियां बाहर से आती हैं और कार्यालय को पता नहीं रहता और अनधिकारी लोग उसका लाभ लेते हैं। ऐसा करने से व्यवस्था में अनवस्था होती है। —विद्यावागीश वसुमित्र चतुर्वेदी

प्रवेश

प्राज्ञ : विशारद, शास्त्री श्रेणियों के लिए ३१ जुलाई ८७ तक प्रवेश खुला है। तीन रुपये मासिक पर भोजन, दूध, छात्रावास की सुविधा के साथ ही हिन्दी टाईपिंग व संगीत सिखाने का प्रबन्ध प्रवेश योग्यता कम से कम मैट्रिक पास।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की विद्याधिकारी (मैट्रिक-अंग्रेजी सहित सभी विषय) में क्रमशः प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता-कक्षा पांच पास। सम्पर्क करें। —आचार्य

श्री गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय,

करतारपुर-१४४८०१ (जिला जालन्धर) पंजाब

नेपाल सीमा पर प्रचार व यज्ञ

चम्पारण जिला आर्य सभा की ओर से चम्पारण जिला व तराई के क्षेत्रों में गायत्री महायज्ञ के माध्यम से २४ घण्टे का अखण्ड वेद पाठ हुआ। १७ एवं १८ जुलाई को श्री ध्रुव जी आर्य एवं रामचन्द्रसिंह क्रान्तिकारी तथा गुरुकुल विद्यालय डीपरा (रौतहट नेपाल) के ब्रह्मचारियों ने कार्यक्रम किया। —रामबचनसिंह, मठ लोहियार

शोक समाचार

श्रद्धेय श्री रणवीर जी शर्मा आर्यसमाज सिरोही (राज०) में पुरोहित्य एवं कोषाध्यक्षत्व को १७ वर्ष से त्यागमय सेवा करते हुए २० दिन की रुग्णता के बाद १-७-८७ की रात १०-४१ पर स्वर्ग सिधार गये। आर्यसमाज उनकी सेवाओं के लिए सदा ऋणी रहेगा।

ईश्वर उन्हें सद्गति प्रदान करें।

मन्त्री

आर्य समाज, सिरोही

आयुर्वेद का उद्धार आवश्यक

--स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

कन्या आयुर्वेद विद्यालय रजत जयन्ती

बडौदा, २५ जुलाई। आर्य कन्या महाविद्यालय के प्रागण मे १० बजे "आर्य कन्या आयुर्वेद महाविद्यालय" का २५ वा वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह का उद्घाटन गुजरात सरकार के आरोग्य मन्त्री श्री बल्लभ भाई पटेल ने किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समारोह की अध्यक्षता की। आर्य कुमार सभा बडौदा के प्रधान राजा मधुसूदन लाल पिती, गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मगलसेन चोपडा श्री जयन्ती भाई पटेल भू पू मेयर बडौदा श्री नवीन भाई ओझा आदि अनेक सम्भ्रान्त नागरिको ने इस समारोह मे भाग लिया।

अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए श्री आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि यदि सरकार आयुर्वेद की पूर्ण रूप से सहायता करे तो इसके माध्यम से गरीब जनता को सस्ता इलाज व सस्ती औषधिया और आरोग्यता के सुलभ साधन सरलता से उपलब्ध हो सकते हैं। यह आयुर्वेद महाविद्यालय देशभर मे छात्राओ के लिए एकमात्र विद्यालय है। गुजरात सरकार को भी चाहिए कि इसकी पूरी तरह से सहायता करे। आयुर्वेद वेद का ही एक अत्यावश्यक अ ग है जिसकी रक्षा व विकास भारतीयो का परम कर्तव्य है।

आरोग्य मन्त्री श्री बल्लभ भाई पटेल ने आर्यसमाज के द्वारा सस्थापित इस महान सस्था की प्रशसा करते हुए कहा कि गुजरात सरकार इसकी हर सभव सहायता करेगी।

वनस्पति उद्यान का उदघाटन आयुर्वेद विश्व विद्यालय के कुलपति श्री बी० आर० मेहता ने किया। उन्होंने इस अवसर पर अपने कर कमलो से उद्यान मे वृक्षारोपण किया। श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती व माननीय श्री मगलसेन जी चोपडा ने भी वृक्षारोपण किया।

गणेशपुर में भीषण अग्नि काण्ड आर्य समाज द्वारा सराहनीय कार्य

३० जून ८७ को भयकर आंधी के परिणाम स्वरूप ग्राम गणेशपुर जिला सहारनपुर मे भीषण अग्नि काण्ड के रूप में २३५ परिवारो के २६० घर, छप्पर आदि के साथ लोगो के अन्न वस्त्र आदि भस्म सात होगए। १ व्यक्ति तथा ९ पशुओं की मृत्यु हो गई। करोडो की सम्पत्ति नष्ट होजाने से पीडित ग्रामीणो मे आर्य समाज गणेशपुर के कार्यकर्त्ताओ ने दौडधूप करके राहत कार्य में पूरा सहयोग दिया। पडौसी ग्रामो से ६० ७० क्वन्टल अनाज की सहायता प्राप्त हुई। सरकारी सहायता के रूप मे डेढ लाख ग्रामीणों को प्राप्त हुआ। सिग्रेट फैक्टरी क्लब की ओर से १०४८० रुपये के बर्तन बाटे गए। आर्य समाज प्रधान श्री वैद्य ध्यानसिह के सयोजन मे समाज कार्यकर्त्ताओं ठेकेदार चतरसिह प्रधान रामसिह व पचायत के अन्य बन्धुओ ने हृदय से सहयोग दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू एण्ड काश्मीर का चुनाव

श्री स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे हुआ विदुषी बहन श्रीमती डा० वेदकुमारी जी प्रधानमन्त्री प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, वेद प्रचार अधिष्ठाता महात्मा सूर्यदेव जी चुने गए महात्मा सूर्यदेव जी वानप्रस्थ ने घूम घूमकर १ लाख ३३ हजार रुपया एकत्रित कर वेद प्रचार ट्रस्ट बना दिया है जिसके सूद से वेद प्रचार का कार्य सम्पन्न होगा। ट्रस्ट के निम्न ट्रस्टी होगे (१) महात्मा सूर्यदेव वानप्रस्थ (२) श्री अवतार कृष्णपुरी (३) श्रीमती शान्तीदेवी (४) प्रधान आय प्रतिनिधि सभा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा।

जम्मू में विशाल अभिनन्दन समारोह

२७ सितम्बर १९८७ को आर्य समाज पुरानी मण्डी जम्मू में एक विशाल अभिनन्दन समारोह होगा जिसमे प्रान्तभर के वयोवृद्ध आर्यसमाजी कायकर्त्ताओ का सम्मान किया जायेगा।

आर्य समाज किंग्सवे कैम्प का मन्दिर गिराने पर यूथ कांग्रेस (आई) की भर्त्सना

दिल्ली यूथ कांग्रेस (आई) के महामन्त्री श्री अशोक ग्रोवर ने आर्यसमाज किंग्जवे कैम्प नई दिल्ली के मन्दिर को गिराने के विरोध मे केन्द्रीय आवास-निवास मन्त्राणी श्रीमती मोहसिना किदवई को पत्र लिखकर माग की है कि किंग्जवे कैम्प हडसन लाइन स्थिति आर्य समाज मन्दिर को न गिराया जाए। श्री ग्रोवर ने लिखा है कि यह आर्य समाज मन्दिर सन् १९४८ से ही जनता की सेवा करता आया है। इस ३९ वर्ष पुराने मन्दिर को गिराने की योजना बनाना डी० डी० ए० के अधिकारिओ की अदूरदर्शिता व नादानी भरी हरकत है। इससे उत्तरी दिल्ली की जनता मे गुस्सा व रोष बढ़ता जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि किंग्जवे कैम्प मर्ने विकास योजना में डी० डी० ए० के नादान अधिकारिओ ने इस मन्दिर के स्थान पर लोगो को प्लाट व डेसु का सब स्टेशन नक्शे मे दिखाया है। आज देशकी स्थिति वैसे भी चिन्ताजनक है। ऐसी स्थिति मे डी० डी० ए० द्वारा किसी धर्म के मानने वालों की धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुचाना खतरनाक हो सकता है। इन्होने इसके लिए उपराज्यपाल व क्षेत्रीय सासद श्री जगदीश टाइटलर से अनुरोध किया है कि इस मामले मे दखल देकर शान्ति से सुलझाए तथा डी डी ए के अधिकारियो को निर्देश दे कि वह इस मन्दिर को न छेडें।

निर्वाचन

—आर्य समाज बल्लभगढ़ (फरीदाबाद) के प्रधान श्री बाबूराम जी मन्त्री श्री सुरेश कुमार चुने गये।

—आर्य समाज रुद्रपुर नैनीताल प्रधान श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता मन्त्री श्री रामकुमार आर्य चुने गये।

—आर्य समाज गोरमी प्रधान श्री अनोखेसिह मन्त्री श्री शेरबहादुरसिह चुने गये।

—आर्य समाज आबू रोड (राजस्थान) प्रधान श्री जेठमल आर्य सिद्धान्त शास्त्री मन्त्री श्री राधेश्याम जोशी चुने गये।

—श्री वैदिक कन्या विद्यालय प्रबन्ध समिति आबू रोड (राजस्थान) प्रधान श्री जेठमल आर्य (पूर्व विधायक) मन्त्री श्री राधेश्याम जोशी चुने गये।

राज॰ न॰ डा॰ (सी॰) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (९-८-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं॰ ११
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. 1103 Post in D.P.S.O. on 6-8-1987

श्री देवीदास आर्य को आतंकवादियों के धमकी भरे पत्र व फोन

कानपुर। आर्य समाजी नेता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा केन्द्रीय आर्य सभा के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य को आतंकवादियों ने गत सप्ताह एक एक करके दो पत्र भेजे हैं जिनमें उन्हें गोली से उड़ाने की धमकी दी गई है। फोन द्वारा भी धमकी दी गई उनके मकान को बम से उड़ा दिया जायेगा क्योंकि वह खालिस्तान व सिखों के विरोधी हैं। पत्रों में यह भी लिखा गया है कि वह हिन्दू नेता बनते हैं। यह नेतागीरी चलने नहीं दी जायेगी उनका भी वही हाल होगा जो हरियाणा के बस यात्रियों का किया गया। श्री देवीदास आर्य इन पत्रों के में सम्बन्ध में कहा कि सिख उग्रवादी तो अब पैदा हुए हैं इनसे पहले मेरे जीवन में दर्जनों मुस्लिम उग्रवादी व असामाजिक तत्वों द्वारा पत्र मुझे प्राप्त होते रहेहैं। परन्तु मैं अपना सेवा कार्य करता रहा और करता रहूँगा। ज्ञातव्य है कि उग्रवादियों ने कानपुर रेलवे स्टेशन व सरकारी भवनों को भी उड़ाने की धमकी भरे पत्र प्रशासन को भेजें हैं। प्रशासन इससे चौकन्ना है।

—मन्त्री, केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर

कर्मकांड प्रशिक्षण शिविर

विश्वभारती अनुसन्धान परिषद, ज्ञानपुर (वाराणसी) द्वारा मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, शिक्षा विभाग, भारत सरकार के सहयोग से २१ दिवसीय कर्मकांड प्रशिक्षण शिविर का आयोजन १९ अगस्त से ८ सितम्बर ८७ तक किया जा रहा है। २१ दिवसीय इस शिविर में सभी १६ वैदिक संस्कारों की विधि की शास्त्रीय पद्धति से शिक्षा दी जाएगी, साथ ही उनका क्रियात्मक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। विभिन्न संस्कारों आदि पर सूक्ष्म विज्ञानों के व्याख्यान भी कराए जायेंगे। प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता इण्टर संस्कृत सहित या संस्कृत से समकक्ष परीक्षा है। शिविर में प्रवेश नि शुल्क है। भाग लेने के इच्छुक व्यक्ति शीघ्र डा॰ कपिलदेव द्विवेदी निदेशक, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर (वाराणसी) से सम्पर्क करें।

—प्रचार मन्त्री

१०११०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि॰ सहारनपुर (उ॰ प्र॰)

वर्षा के लिए महायज्ञ

दिल्ली, ३ अगस्त। आर्य समाज दीवानहाल, दिल्ली में विश्व-शान्ति एवं देश के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में वृष्टि के लिए दिनांक ५ अगस्त १९८७ से प्रतिदिन प्रात काल ७ से ९ बजे वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। राजधानी के अनेक विद्वान इसमे भाग ले रहे हैं।

देश के अधिकाश भागो मे अनावृष्टि एव भयकर गर्मी के कारण लगभग ८५ वर्षों के बाद यह भयानक स्थिति उत्पन्न हुई है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन (दिनांक १६ अगस्त, १९८७) प्रात ९ ३० बजे इस यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने देश की समस्त आर्य समाजों से अपील की है कि वे श्रावणी महापर्व पर इस प्रकार के यज्ञ सब नगरो तथा ग्रामीण क्षेत्रो मे आयोजित करे।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष २२ अंक ३१] भाद्रपद कृ० ८ स० २०४४ रविवार १६ अगस्त १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

श्रावणी वेद सप्ताह पर वैदिक धर्म प्रचार का संकल्प लो

—श्री आनन्दबोध सरस्वती

दिल्ली ६ अगस्त। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने ससार भर की आर्य समाजो के नाम निम्न सन्देश प्रसारित किया है —

ससार का सर्व प्रथम धर्म व उसका पथ-प्रदशक वेद लाखो करोडो वर्ष तक एक छत्र ससार का मार्ग दर्शन करता रहा है। मनु जी ने इसे लाखो वर्ष पूर्व 'स्व स्व चरित्र शिक्षेरन्' के रूप मे स्वीकार किया था। वेद प्रचारको के अभाव मे ससार अज्ञान अन्धकार मे डूब गया और वेद ज्ञान के स्थान पर नाना मत पथो की बाढ सी आ गई जिससे परस्पर मतभेदो मे फसकर प्रजा मानवता के स्थान पर पाशविक स्वभाव की ओर बढ रही है।

हजारो वर्ष बाद महर्षि दयानन्द ने वेद के महत्व को ससार के सामने रखा व उसके निरन्तर प्रचार प्रसार के लिए विशाल आर्य समाज का सगठन किया। सौभाग्यवश आज जहा केवल भारतवर्ष मे ही ५००० से अधिक आर्य समाज हैं देश-विदेशो मे भी आर्य समाज की सैकडो शाखाय स्थापित हो चुकी है। भौतिक साधनो के रूप मे भी आर्य समाज महान् शक्तिशालिनी सस्था है। हजारो कमठ प्रबुद्ध लगन वाले कार्यकर्त्ता भी आर्य समाज के पास हैं।

सभी दृढ सकल्प से वैदिक धर्म के प्रचार मे सलग्न हो जाय तो ऋषि का कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का स्वप्न सत्य हो सकता है।

आज भौतिकवाद की भीषण राग द्वेषमयी ज्वाला मे ससार जल रहा है। विश्व के महान् विचारक विश्व को अणु अस्त्रो के ज्वालामुखी पर बैठ देखकर घोर चिन्ता मग्न है। ऐसी विकट परिस्थितियो मे ऋषि का Back to The vedas का सन्देश ही विश्व को सुख शान्ति का सन्देश दे सकता है। आर्यो उठो और वेद प्रचार का शुभ सकल्प लो! श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह व श्री कृष्ण जन्माष्टमी का यही पावन सन्देश है।

घर घर यज्ञो का आयोजन हो मानव प्रभुभक्त बन। सभी परस्पर प्रेमभाव से मानव समाज की सामाजिक शारीरिक व आत्मिक उन्नति मे प्रयत्नशील हो। परस्पर वैर विरोध मिटाकर ओम की पवित्र पताका के नीचे सगठित हो तो ससार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है आर्यसमाज के इस महान् लक्ष्य की प्राप्ति हो सकेगी। ●

मध्यप्रदेश में बड़े पैमाने पर ईसाई मिशनरियों को विदेशी सहायता

भोपाल ७ अगस्त मध्य प्रदेश मे ईसाई मिशनरियो को बडे पैमाने पर विदेशो से अनुदान के माध्यम से आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। राज्य सरकार को इस बात की शिकायत मिली हैं कि इस राशि का उपयोग आदिवासियो को धर्मान्तरण के लिए हो रहा है। कुछ क्षत्रो ने इस बात की भी आशका व्यक्त की है कि धर्मान्तरण जारी रहा तो कही मध्य प्रदेश दूसरा 'मिजोरम' न बन जाए।

राज्य मे सक्रिय लगभग २५००० मिशनरीज ने अपनी कार्य-पद्धति बदल दी है। ये अब आदिवासियों की आर्थिक कमजोरी तथा अज्ञानता का लाभ उठाते हुए, उन्हे सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओ की तुलना में ईसाई बनने पर होने वाले लाभो के भ्रम जाल मे फसाकर धर्म परिवर्तन कराकर ईसाई बना देते है।

इन्टेलीजस ब्यूरो की रिपोर्ट मे कहा गया है कि १९२१ से आरम्भ हुई मिशनरीय गतिविधियो के कारण १९५१ मे ईसाईयो की सख्या दुगनी हो गई। १९७१ मे ईसाई आबादी मात्र ३७००० थी थी अब १९८७ में केवल आदिवासी क्षत्र मे लाख से अधिक हो गई है, पूरे प्रदेश मे इनकी सख्या लगभग १० लाख होगी।

पुलिस की विशेष शाखा रिपोट के अनुसार १९८६ मे मिशनरीज ने २ अरब ६४ करोड, २२ लाख ६८ हजार १३० रुपए अनुदान के रूप मे विदेशो से प्राप्त किए।

दक्षिण अफ्रीका जिससे कि भारत के राजनयिक सम्बन्ध नही फिर भी वहा से ५५ लाख, ८६ हजार ४१४ रुपए अनुदान के रूप मे इन मिशनरीज को प्राप्त हुए।

आर्क डायोसिस से भोपाल को मिलने वाले अनुदान मे भी लगातार वृद्धि हुई है। १९८० के दौरान इसे ३ लाख ७५ हजार रुपए १९८२ मे १२ लाख ६० हजार १९८३ मे २० लाख ३२ हजार और १९८५ मे ६६ लाख ५० हजार रुपयो का अनुदान मिला। गुप्तचर रिपोर्ट मे विदेशियो के भारत आने तथा सदिग्ध गतिविधियो के लिए चर्चित मिशनरीज के ठहरने पर चिन्ता प्रकट की गई है। यहा विदेशी दीर्घकालीन बीसा प्राप्त करने मे भी सफल हो जाते है। मध्य प्रदेश में अनेको विदेशी बीसा अवधि समाप्त हो जाने के बाद भी रह रहे हैं।

मध्य प्रदेश के राजगढ जिले मे १६, इन्दौर मे १८, रायगढ मे ८, खडवा मे ७, सुरगुजामे ६, जबलपुरमे ५ भोपाल में २ बिलासपुर मे ३ भतरपुर में १, छिन्दवाडा मे १ धार मे १, होशगावाद मे ३ झाबुआ मे ५ खरगोन मे २, मदसौर मे २ राजनादगाव मे २, सिवनी मे २ रतलाम १ सागर मे १ मिशनरीज है। इन सभी की २५ से अधिक जिलो मे शाखाए भी है।

उल्लेखनीय है कि १९८५ मे सरकार ने छह पादरियो को भारत

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी का अनशन राजनीति से प्रेरित एक साम्प्रदायिक ढोंग।

दिल्ली ६ अगस्त,

श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी आज-कल बोट क्लब (देहली) पर आमरण अनशन कर रहे हैं यह अनशन हाशिमपुरा के हत्याकांड की न्यायिक जाच कराने के लिये किया जा रहा है कुछ राजनैतिक मुस्लिम नेता भी इस अनशन का समर्थन कर रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा कि डा० स्वामी को इससे पहले मेरठ और दिल्ली में हुए सामूहिक हत्याकांड, लूटमार, और आगजनी पर भी सरकार से न्यायिक जांच की मांग उठानी चाहिये थी। पंजाब में वर्षों से चल रहे संहार ने भी डा० स्वामी की आत्मा को इसके खिलाफ आवाज उठाने के लिये क्यों प्रेरित नही किया? हाशिमपुरा काड से पूर्व मलियाना गांव की घटना के सम्बन्ध मे भी जनता पार्टी के नेता श्री चन्द्रशेखर और शाहाबुद्दीन ने झूठे आरोप लगाकर ससार भर में भारत की छवि को धूमिल किया था। इन नेताओ को मलियाना गांव का तिनका तो नजर आ गया, लेकिन मेरठ मे हुए हिन्दुओं के दिल दहलाने वाले हत्याकांड उनके मकानों और दुकानों के भीषण अग्निकांड का शहतीर नजर नहीं आता? तब भी इन्होंने मलियाना गांव मे १११ मुसलमानों के मारे जाने का झूठा प्रचार किया था। कुछ दिनों बाद जब मरे हुए १११ मे से ८५ लोग (शायद कब्र में से उठकर) अपने घरों को वापिस आ गये तो इन नेताओं के झूठ की कलई खुल गयी।

अब इसी प्रकार दूसरा गलत प्रचार करके डा० स्वामी मुसलमानों की साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़का रहे हैं। उनका गलत तरीके से समर्थन करके उनकी वाहवाही लूटना चाहते है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे नेता अपने राजनैतिक स्वार्थों से अंधे होकर पेड़ की जिस डाल पर बैठे हैं उसी को काट रहे हैं।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने डा० स्वामी से पूछा है कि क्या वह अपने शैशव काल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता रहे थे? क्या उन्हें अपनी पुरानी जीवन गाथा याद नहीं रही? यदि यह सच है तो अब वे एक नया पाखण्ड खड़ा करके, देश में फैल रहे साम्प्रदायिक जहर को और प्रोत्साहन देकर शांति-प्रिय हिन्दू समाज को क्यों एक और मुसीबत में डालना चाहते है। —प्रचार विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

विदेशी सहायता

(पृष्ठ १ का शेष)

छोड़ने के आदेश दिए थे थे, मगर इसके बाद से लगातार ६-६ माह तक भारत में रहने की उन्हें छूट दी जाती रही। ये पादरी पिछले चार दशक से भारत में रह रहे हैं। इन पादरियों के नाम हैं फादर जे० वेवेट (१९६२ से), फादर एल०डी०केडेट (१९६७से), फादर लुक वास्टल (१९६७ से), फादर जे०जे० सोमस (१९६७ से) तथा श्री वी० गेटार (१९४८ से)।

गुप्तचर रिपोर्ट में कु० जोहाना का विशेष उल्लेख है। वे १९५५ में भारत में आई थीं।

वह बम्बई में रहती थी, लेकिन उसकी संदिग्ध गतिविधियों के कारण महाराष्ट्र सरकार ने उसे महाराष्ट्र छोड़ने को कहा था, फिर कु० जोहाना आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र अम्बिकापुर (म०प्र०) में रहने लगी। रायगढ़ जिले के पुलिस अधीक्षक एव जिलाधीश ने कु० जोहाना की सदिग्ध गतिविधियों को लेकर केन्द्र सरकार को उसके निष्कासन के लिए पत्र भी लिखा था लेकिन गृह मन्त्रालय से कोई जवाब नहीं मिला।

पूर्व अनुभवों की स्मृति ताजा होने के कारण राज्य सरकार इन गतिविधियों के खिलाफ कोई भी कार्यवाही करने का साहस नहीं कर पा रही, फिर भी मुख्यमन्त्री मोतीलाल वोरा ने क्रिश्चियन मिशनरीज से जुड़े विदेशियों की सूची जिला प्रशासनों से मांगी है।

"ईरानी हज यात्रियों के शव ईरान को"
"५७८ शीया यात्रियों की हत्या"

तेहरान ५ अगस्त, गत शुक्रवार को मुसलमानों के पवित्रस्थान मक्का में हुए उपद्रवो में सऊदी दैनिक पत्र "उकाज" के अनुसार १०५१ व्यक्ति मारे गए जिनमें ५७८ मृत व्यक्ति ईरान के शीआ सम्प्रदाय के हैं। उकाज के अनुसार ही डेढ लाखी ईरानी हज यात्री सऊदी अरब स्थित मक्का के उपद्रव के दिन उपस्थित थे और उनका लक्ष्य था कि मक्का नगर पर अपना अधिकार कर लिया जाए और ईरान के अध्यक्ष खुमैनी को इस्लामी जगत का खलीफा घोषित कर दिया जाए। हाजियों मे से १ लाख दस हजार यात्री तो विधिवत सैनिक व क्रान्तिकारी थे। गिरफ्तार यात्रियों से पूछने पर उन्होंने स्वीकार किया है कि वे शहर मक्का को सुन्नी सम्प्रदाय के पूजा गृहों को अग्नि लगा कर शीआ सम्प्रदाय का वर्चस्वस्थापित करना चाहते थे। लगातार कई दिनों तक ईरानी मृत शवो को रोके रखने के बाद पहली बार ५८ शव ईरान भेजे गए हैं। मक्का की इस महान दुर्घटना ने इस्लामी ससार में एक धार्मिक सकट उत्पन्न कर दिया है। और इस्लाम के प्रारम्भिक युग के शीआ सुन्नी युद्धों का सा वातावरण उत्पन्न हो गया है।

सरधना के पादरी की हत्याः

सरधना के चर्च के पादरी की कल रात हत्या कर दी गई। पादरी एडियो डाटस ७४ साल के थे। इटली निवासी डाटस पिछले पचास साल से इस चर्च के पादरी थे। डाटस को सरधना में ही दफनाया गया।

सरधना के इस चर्च का निर्माण बेगम समरू ने कराया था। इस चर्च में दुनियाभर के ईसाई यीशु की पूजा करने आते है। हत्यारे दो बताए गए हैं उन्होंने पहले चर्च के चौकीदार पर हमला किया। वह बेहोश हो गया। पर उसे मरा समझकर वे आगे बढ़े। चर्च के पादरी उस वक्त अपने फलैट में भोजन करके चर्च में जा रहे थे। हत्यारों ने उन्ही के गाउन की डोरी से उनका गला घोंट दिया। एसपी (देहात) सुरेन्द्र कुमार भगत ने बताया कि हत्यारों का इरादा चर्च मे चोरी का रहा होगा। इस चर्च में कीमती जेवरात और प्रतिमाए हैं। हत्यारों ने पादरी की जेब से चाबी भी निकाली पर वह चर्च की बजाए उनके फलेट की थी। वारदात की खबर पुलिस को चौकीदार ने होश में आने के बाद दी पर तब तक हत्यारे फरार हो चुके थे।

इस चर्च में पिछले साल भी मरियम का कीमती ताज और दूसरे जेवर चोरी हो गए थे। बाद में गाजियाबाद की पुलिस ने चोरों को तो पकड़ लिया था। लेकिन चोरी का माल नही मिला था।

"राजीव गांधी से मां ने क्षमा मांगी"

कोलम्बो, ५ अगस्त (एप्रे)। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी पर राइफल के कुन्दे से प्रहार करने वाले श्रीलंकाई नौसैनिक की मां ने भारत से क्षमायाचना की है। उसने अपने २२ वर्षीय पुत्र के कृत्य पर गहरा अफसोस जाहिर किया है।

श्रीमती नन्दा मेंडीज ने क्षमायाचना का औपचारिक पत्र भारतीय उच्चायुक्त को दिया। पत्र में कहा गया है कि इस घटना पर मुझे और मेरे परिवार के सभी सदस्यों को भारी अफसोस है।

श्री गांधी जब श्रीलंका में समझौता करने कोलम्बो गए थे तो उन पर हमला हुआ था।

सम्पादकीय

वेद प्रचार सप्ताह व जन्माष्टमी

श्रावणी पर्व लाखों वर्ष पूर्व राम काल मे भी उसी प्रकार मनाया जाता था जैसा आज । बाल्मीकि रामायण किष्किन्धा काण्ड सर्ग २८ श्लोक १० में लिखा है —

मासि प्रोष्ट पदे ब्रह्म ब्राह्मणाना विवक्षताम् ।
अयमध्याय समय साम गाना मुपस्थित ॥

वेद शास्त्रों का स्वाध्याय सामगान के अभ्यासी पण्डितों का यह भाद्रपद मास है जिसका शास्त्रीय नाम प्रोष्ट पद है ।

इसी प्रकार की मर्यादा महर्षि मनु ने अध्याय ४ श्लोक ९५, ९६ में की है ।

श्रावण्या प्रोष्ट पद्याबाऽप्युपाकृत्य यथाविधि ।

महाभारत काल तक यह परम्परा निरन्तर चली जिसे जीवित रखने व व धर्म सस्थापन के लिए योगिराज श्रीकृष्ण ने जीवन भर सघर्ष किया ।

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने योगिराज श्रीकृष्ण के सम्बन्ध मे लिखा

देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है । उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है । जिसमे कोई अधर्म का आचरण जन्म से मृत्यु पर्यन्त कभी नही किया । सदा धर्म का सत्याचरण ही उनका जीवन ध्येय रहा ।

सुसयोगवश वेद प्रचार सप्ताह व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व एक ही साथ आते हैं । जो एक ही माला के मोती समान है ।

मध्ययुग मे जैसे वेद की कल्याणी वाणी अदूरदर्शी स्वार्थी पण्डितो की मिथ्याचारिता का शिकार होकर जनकल्याणकारी न रहकर केवल कुछ पठित नामधारी व्यक्तियो की जीविका का साधन बन गई थी वैसे ही आज महान पुरुष योगिराज श्रीकृष्ण का जीवन इतना लाछनयुक्त बना दिया गया है कि श्रेष्ठ आर्यकृष्ण चरित, तथाकथित पौराणिको द्वारा बडेही वीभत्स रूपमे जनता के सामने प्रस्तुत किया जाता है । गोपियो के रासरगो मे डूबे कृष्ण को आप्त पुरुष सिद्ध करने मे आर्य समाज के विद्वानो का ऐडी से चोटी तक का जोर लगाना पडता है ।

निश्चय ही वेद वाद के जय जयकार व योगिराज कृष्ण के कर्म कौशल की सामयिक मधुर बशी की आज देश को परमावश्यकता है । इस महान कार्य को आर्य समाज के अतिरिक्त और कौन पूरा करेगा । इसलिए जहा वेद प्रचार सप्ताह मे समस्त वातावरण वेदमय बनाना आवश्यक है वहा आर्य जाति के महान नेता योगिराज श्रीकृष्ण के गीता सदेश को भी भारत के घर-घर में पहुचाने की परमावश्यकता है । तभी महर्षि का 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न सत्य हो सकेगा ।

आज के घोर भौतिकवादी युग मे जबकि सारा ससार भौतिक उन्नति के पथ मे मानव सहार के लिए एक नहीं अनेक महाभारतो की सृष्टि कर रहा है । धर्म सस्थापन के स्थान पर केवल निर्दोष मानव प्रजा का भीषण नर-सहार का क्रूर कृत्य ही युद्धों का लक्ष्य बन चुका है । आध्यात्मिक चेतना व मानव मानव का परस्पर प्रेम व सद्भाव स्थापित करने की परमावश्यकता है । वेद भगवान के—मा भ्रात भ्रातर द्विक्ष का सदेश कौन सुनाएगा । गीता के आत्मज्ञान का उपदेश कौन करेगा । आर्य सस्कृति के पुनरुद्धार का महा अभियान कौन चलाएगा, वेद सप्ताह के पवित्र अवसर पर जनमानस को वैदिक सस्कृति में रगने का बीडा कौन उठाएगा ।

आर्य बन्धु सकल्प करे कि महर्षि के ससार के उपकार करने के पवित्र सूत्र को अपने जीवन का मन्त्र बनावें व सकट ग्रस्त मानवता को वेदमाता का सुन्दर सदेश सुनावे ।

१५ अगस्त

भारतीय स्वातन्त्र्य युद्ध का इतिहास लिखने वालो ने अग्रेज कलक्टर आक्टर ह्यूम के द्वारा रचित कांग्रेस के इतिहास को लिखकर ही समाप्त कर दिया है । जबकि सच्चाई यह है कि भारत के पुनरुत्थान का बीड़ा महर्षि दयानन्द ने १२५ वर्ष पूर्व उठाया था । आर्य समाज जैसी सस्था का सगठन भी इसी योजना की एक कडी थी । यद्यपि आर्य जाति का इतिहास इतना पुराना है कि ससार के किसी भी देश या किसी भी समुदाय का इतना पुराना इतिहास वाङ्मय में उपलब्ध नही । मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम व योगिराज श्रीकृष्ण इसी आर्य जाति के जाज्वल्यमान रत्न है जिन्हें केवल हिन्दू अवतार कहकर भारतीय सन्तुष्ट हो जाते हैं । उसी परम्परा में महर्षि दयानन्द का नाम है । जिनके जाबाज शिष्यो ने कांग्रेस की स्वतन्त्रता की लडाई में अग्रेजों की जेले भर दी थी । स्वनाम धन्य श्री लाला लाजपतराय, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के बाद हजारो आर्यवीरो ने स्वतन्त्रता सग्राम जान हथेली पर रखकर लडा । आर्य समाज का मच स्वतन्त्रता सेनानियो का ही मच बन गया था । गाव गाव नगर नगर मे आर्योपदेशक मा भारती की स्वतन्त्रता का गीत गाते फिरते थे । जेल मे रहते हुए भी सितारे हिन्द कुवर सुखलाल आर्य मुसाफिर गाते थे —

चमन से दूर हैं लेकिन चमन का गीत गाते हैं,
हुए पर कैच उड सकते नही बस चहचहाते हैं,
चमन मे अब तलक सैयाद का चिक्कारना सुनकर,
हजारो वलवले उठ उठके दिल मे बैठ जाते है ।
मुसाफिर, आपके कुत्ते जिन्हें मुश्किल से खाऐंगे,
असीराने कफस वह रोटिया हस हस के खाते हैं ।

१५ अगस्त को अनेक अवसरवादी राजनीतिज्ञों को भी स्मरण किया जाएगा परन्तु आर्य समाज अपने स्वतन्त्रता सेनानियो को भुलाता जा रहा है । देश भक्ति का जो शाश्वत सन्देश महर्षि ने भारत को दिया था वह केवल एक दिवा स्वप्न बन कर रह गया है । १५ अगस्त जिन योगिराज अरविन्द के जन्मदिवस के रूप मे राष्ट्र नेताओ ने चुना था उन महर्षि योगिराज अरविन्द का आर्य सस्कृति का यशोगान भी भारतीय प्रजा भूल गई है । अरविन्द ने महर्षि दयानन्द को भारतीय स्वतन्त्रता का निर्माता कहकर उनकी यशोगाथा अपने अनेक लेखो मे की है । महर्षि के ही पदचिन्हों पर चलकर महात्मा गाधी ने भारतोदय की अभिनय योजनाए चलाई थी ।

देशभक्ति केवल वोट की राजनीति तक सीमित बनकर रह गई है जबकि राष्ट्र की असख्य समस्याऐ स्थायी उपाय के बिना नासूर बनती जा रही है । आवश्यकता है कि आर्यवीरो की इस दिशा मे की गई महान सेवा का भी स्मरण किया जाए और जिन महान लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए भारतीय प्रजा ने अविस्मरणीय बलिदान किए थे उनकी प्राप्ति के लिए नूतन अभियान चलाए जाऐ, वे हैं —

भारतीय राष्ट्र की सास्कृतिक परम्पराओ की रक्षा ।

भारतीय प्रजा की सामाजिक व आध्यात्मिक उन्नति का प्रयास

भारत की भौगोलिक एकता व अखण्डता के लिए महाभियान

भारतीय प्रजा के नैतिक स्तर को ऊचा उठाने के लिए आर्य सस्कृति व सभ्यता का प्रचार व प्रसार ।

इन लक्ष्यो की प्राप्ति के बिना देश बिखराव व अवनति के विनाशकारी तत्वो से सुरक्षित नही हो सकेगा ।

आर्यसमाज अपना कर्तव्य पहचाने व भटकाव में राष्ट्र की शक्तियो का दुरुपयोग करने वाले राजनीतिज्ञो का मार्गदर्शन करे ।

आह पंजाब ! तेरी बर्बादियों की योजना है आसमानों में

शरणार्थियों की करुण कहानी

गुरदासपुर (जसबीर वाजपा), अगर केन्द्र सरकार ने जल्दी पंजाब समस्या पर नियन्त्रण न पाया या अलगाववादी तत्वों को नकेल न डाली तो सीमान्त जिला गुरदासपुर से जो अब पलायन शुरू हुआ है इतना गम्भीर रूप धारण कर जायेगा कि ग्रामीण क्षेत्रो मे एक भी हिन्दू परिवार नही रहेगा।

संवाददाताओ की एक टोली ने जिला गुरदासपुर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रो का भ्रमण किया। फतहगढ़ चुडिया, डेरा बाबा नानक श्री हरगोविन्दपुर, कादिया, कलानौर व बटाला ग्रामीण क्षेत्रो का दौरा करने पर पाया कि भूतपूर्व लोक सम्पर्क मन्त्री श्री नत्थासिंह के गांव का ही सुभाष कुमार अपनी जमीन मुफ्त के भाव मन्त्री को ही देकर अपनी जान बचा कर चण्डीगढ आ बैठा है इन्ही मन्त्री जी के गांव के दो एक और परिवार हैं जो कि अमृतसर व पठानकोट भाग गये हैं।

राष्ट्रपति शासन के लागू होने पर लोगो का मनोबल बढ़ा था कि अब पंजाब में शांति का वातावरण हो जायेगा पलायन कर चुके परिवार वापस आयेंगे अपने घर के जंग लगे ताले खोलेंगे व पुराने बिजनिस शुरू करेंगे। फिर से पंजाब में पुराना माहौल हंसी खुशी का आ जायेगा। शायद ऊपर वाले को मंजूर नही था।

अलगाववादी ताकतों व खालिस्तानियो द्वारा ताबड़तोड़ की गई हत्याओ ने एक बार फिर सभी के दिल दहला दिये हिन्दू परिवार तो पलायन कर हीं रहे थे। मगर दंगाग्रस्त सिख परिवार जो दूसरे राज्यो से पलायन करके आये थे भी दहल गये। व पंजाब से बाहर सुरक्षित स्थानो की तरफ मुंह कर लिये। गत दिनो पंजाब के एक भूतपूर्व मन्त्री महोदय ने चण्डीगढ से बयान दिया था कि कोई भी परिवार गुरदासपुर से पलायन नही कर गया मगर यह आकडे बताते हैं कितने परिवार पंजाब छोड कर अपनी जान व आबरू बचाने के लिये दूसरे राज्यों को पलायन कर गये हैं।

जिला गुरदासपुर के ग्रामीण इलाके कादियां, कलानौर, श्री हरगोविन्दपुर फतहगढ चुडियां तथा डेरा बाबा नानकसे जो पिछले दो महीने मे पलायन हुआ है उसकी स्थिति कुछ इस तरह है गांव बागोवाल बेदियां का कवरसिंह बेदी कलानौर से नगरोटा हि. प्र., मास्टर फकीरचन्द गांव कोट भाई साहब से नगरोटा हि. प्र., अशोक कुमार डेरा बाबा नानक से दिल्ली, कपिल महाजन दिल्ली डा किरपाल दिल्ली, सुखदेव वर्मा दिल्ली, नरिन्द्र काला अफगाना से दिल्ली बुद्धीराम श्री हरगोविन्दपुर से दिल्ली, पवनकुमार श्री हरगोविन्दपुर से दिल्ली, हकीम कर्मचन्द कलानौर से दिल्ली, सुरिन्द्र सोढ कलानौर से दिल्ली सुदर्शनकुमार कलानौर से दिल्ली, जगमोहन यमुनानगर, कुन्दनलाल व तीन बेटों के अलग-अलग परिवार सुदेशकुमार कलानौर से यमुनानगर, नरिन्द्र कुमार पानीपत, बलदेवराज पानीपत, बलदेवराज के तीन पुत्र दिल्ली को, सुरिन्द्रपाल सराफ बिलासपुर को, राजीव कुमार दिल्ली को, सुदेश कुमार पहोवा को, अर्जुन चाचा खालिया बटाला से करनाल, बलदेव हलवाई श्री हरगोविन्दपुर से पीलीभीत को, ओमप्रकाश फिलहाल गुरदासपुर, बलबीरसिंह बेदी, पानीपत, ओमप्रकाश गांव पकीवां से नगरसेटा, हि प्र., तिलकराज पीलीभीत मे जा बसे हैं। यह लोग तो पैसे वाले थे मगर कुछ गरीब लोग आतंकवादियों द्वारा सताये हुए ग्रामीण क्षेत्रो से शहरी क्षेत्रों की तरफ भाग निकले। जिनमे पकीवां गांव बाला कलानौर के देसराज शर्मा व देसराज कश्यप गांव वाले कलानौर को, बडाला बांगर गांव से पठानकोट को गांव मीर कचाना के मेकचन्द कलानौर, मास्टर बख्शीराम रहीमाबाद से कलानौर पारी शाह, बडाला बांगर कलानौर, ओमप्रकाश, मीर कचाना से कलानौर व देसराज शर्मा बडाला बांगर से पठानकोट मे जा बसे हैं।

बहुत से सिख परिवार दंगा पीड़ित परिवार जो दूसरे राज्यों से पलायन करके पंजाब भाग आये थे अब पुनः सुरक्षित स्थानों की तरफ सिर छुपाने के लिये भाग निकले हैं। मगर यहां कोई नई बात नही है। पहले भी पंजाब से पलायन हुआ था अब भी हो रहा है। इसका कारण सिर्फ यही कहा जा सकता है कि डी जी रिबेरो की पुलिस व सिद्धार्थ शंकर रे भी पंजाबियों को पूरी सुरक्षा नही दे पा रहे हैं। इनके कार्यकाल मे हत्याओ की बाढ सी आ गई लगती है। विगत दिनो गुरदासपुर मे अकाली सरकार के एक मन्त्री ने सार्वजनिक सभा मे बोलते कहा था कि पंजाब से वह लोग पलायन कर रहे है जिन्होंने किसानों व सरकार का कर्ज देना है कितना गैर जुम्मेदाराना ब्यान दिया था लोग अपनी जान की सुरक्षा के लिये मारे मारे फिर रहे हैं किसका दिल करता है कि अपने प्रिय जन बन्धु सखा मातृभूमि को छोड कर जाये।

विगत दिनो चण्डीगढ़ से अकाली सरकार के हुक्म चलते थे व अलगाव-वादियो की सरकार के अमृतसर से हुक्म चला करते है जबकि सरकारी हुक्म की चाहे अवहेलना कर दें मगर आतंकवादियों की समान्तर चलाई जा रही सरकार का हुक्म अदूली नही किया जा सकता था।

पंजाब मे कुछ एक परिवार हिन्दू परिवारों को पलायन करने से रोकते थे। मगर आतंकवादियों की घुडकी के सामने उन्होंने भी घुटने टेक दिये या खुद ही छोड कर भाग गये हैं। शहरो में चाहे बरनाला का राज्य था मगर दिहातो में भी समानान्तर सरकार के आदेश चलते थे। गांवो के कुछ एक परिवारों ने संवाददाता को आल इण्डिया सिख स्टूडैंट फेडरेशन द्वारा लोगों को लिखे गये धमकी भरे पत्र दिखाये। यह पत्र कोर्ट के तामील पत्रों की तरह के छपे हुए थे। फेडरेशन की भाषा मे इन्हें शिकायत (फार्म) पत्र कहा जाता है इन फार्मों में व्यक्ति विशेष की शिकायत नाम व पता दर्ज रहता है व पेशी की तारीख व जगह का नाम भर कर व्यक्ति को भेजा जाता है। पेश न होने की सूरत मे खालिस्तान कमाडो फोर्स या मुक्ति सेना द्वारा धमकी दी होती है कि अंजाम के बारे मे अवगत कराया होता। ऐसे पत्रो से लोग बहुत परेशान थे एक व्यक्ति को जिसका जमीन का झगड़ा था को वार्निंग दी गई थी कि वह तारीख पे पेश न हो यदि वह न माना तो उसके परिवारक जनो को गोलियो से भून दिया जायेगा। उसके सामने उसके बच्चों को पहले भूना जायेगा।

इस तरह के धमकी पत्र दोनो समुदाय के लोगो को आते थे। अभी पिछले दिनों एक पंचायत अधिकारी बटाला को उन्ही के गांव में ही गोलियों से भून दिया था। क्योंकि उन्होने अपने लडके की साली की शादी में बरातियो को मीट (मांस) का सेवन कराया था उन्हें इसी बात की सजा दी गई थी।

सब से पहले रजिस्ट्रेशन टेबल पर जाना पडता है। धमकी पत्र का नंबर देख कर पेश होने की जगह बताई जाती है। जज के सामने अपनी सफाई में बताना पडता है जज व वहां मौजूद आपस के विचार विमर्श करते हैं व फैसला सुनाया जाता है। जुर्माना समय पर अदा करना पड़ता है समय से जुर्माना न अदा करने पर फेडरेशन के कार्यकर्ता खर्चा समेत सारा पैसा वसूल करते हैं। बैंक अधिकारी को भी रुपया भरना पड़ा था। वहां पर तारीखो पर पेशी वालो में सबसे ज्यादा वे लोग थे जिनका सम्बन्ध अकाली दल या कांग्रेस पार्टी से था। उसके बाद सफेद कपड़ों में पुलिस कर्मी थे व कुछ घरेलू झगड़ो वाले थे। काफी लम्बी लाइन थी।

फेडरेशन के कार्यकर्ता अभी भी आ धमकाते हैं सुरक्षा बल काफी प्रयत्न कर रहे हैं कि अलगाववादी तत्वो पर काबू पाया जा सके। मगर अब तो हद हो गई है सुरक्षा बलो के साथ भी गुरिल्ला युद्ध शुरू कर दिया है राष्ट्रपति शासन के दौरान भी कम से कम ३० सुरक्षा कर्मी मारे जा चुके हैं।

जिला गुरदासपुर से सिखों व हिन्दुओंका पलायन अब दुबारा शुरू होगया है। बहुत इण्डस्ट्रीज वाले अपनी कार्यशालाए लुधियाना, रोपड़ व जालन्धर से आगे जी. टी. रोड पर ले जा रहे हैं। पंजाब के १/३ कारखाने बन्द हो चुके हैं वे उनके मालिक व जियाबाद, फरीदाबाद, अम्बाला, पंचकूला, रोपड़, कानपुर, आगरा व गुजरात की तरफ नई जिन्दगी जीने के लिये जगह ढूंढ रहे हैं।

पंजाब में श्री रिबेरो का कार्यकाल एक साल बढ़ा दिया था क्या यह

(शेष पृष्ठ १६ पर)

श्रीकृष्ण विषयक आर्यसमाज की मान्यता

लेखक : धर्मवीर शास्त्री विद्यावाचस्पति जीतपुर (मेरठ)

कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि आर्यसमाज एक नास्तिक संगठन है, क्योंकि आर्यसमाज उनके विचार से न तो श्रीकृष्णजी को और न भगवान रामचन्द्रजी को मानता है परन्तु वे यह नहीं जानते कि वे स्वयं एक भ्रान्त धारणा के शिकार हैं। जहां तक नास्तिकता का प्रश्न है सो नास्तिक तो वह कहलाता है जो ईश्वर को न माने धर्म कर्म को न माने परन्तु हम देखते हैं कि आर्यसमाज सन्ध्या हवन योग उपासना आदि को मानता है स्वयं मानता ही नहीं बल्कि सन्ध्या ईश्वरोपासना स्वयं करता तथा उसका प्रचार भी करता है। आर्य समाज मन्दिरों में प्रतिदिन प्रातः और सायं सन्ध्या और हवन किया जाता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी आर्यसमाज के संस्थापक थे वे कितने पक्के आस्तिक थे यह सर्वविदित बात है वे ही प्रतिदिन योगाभ्यास करते थे तथा उन्होंने प्रत्येक आर्य के लिए योगाभ्यास का विधान किया है इसके अतिरिक्त एक बात और वह यह है कि मनु जी महाराज के अनुसार "नास्तिकोवेदनिन्दकः" नास्तिक वह है जो वेद की निन्दा करता है परन्तु यह सभी लोग जानते हैं कि महर्षि दयानन्द तथा उन द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने वेदों के प्रचार का कितना काम किया है? दूसरे शब्दों में तो आर्यों का परम धर्मग्रन्थ वेद है। वेद के प्रति आर्यसमाज की मान्यता है कि ये ईश्वर प्रणीत ग्रन्थ हैं, स्वामी जी महाराज ने वेदों का भाष्य किया यह अलग बात है कि वे पूरे वेदों का भाष्य असमय में बलिदान हो जाने से न कर पाये। यदि वे अधिक जीवित रहते तो पूरे वेदों पर भूतपूर्व भाष्य करते जैसा कि उन्होंने यजुर्वेद तथा ऋग्वेद के कुछ मण्डलों का भाष्य किया है। स्वामी जी महाराज ने आर्य समाज के दस नियमों में एक नियम यह भी बताया "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

उपरोक्त सभी बातों से यह बात सिद्ध होती है कि महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की विचारधारा वेदानुकूल है। तथा वेद की प्रशंसक है। "नास्तिको वेद निन्दकः" वाली जो बात है उसके अनुसार तो आर्यसमाज नास्तिक नहीं बल्कि पक्का आस्तिक संगठन है। जहां तक भगवान रामचन्द्र जी तथा भगवान श्री कृष्ण जी महाराज के न मानने वाली बात है वो भी गलत है क्योंकि यदि आर्यसमाज श्री रामचन्द्र जी महाराज और श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज को न मानता तो रामनवमी तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी जैसे राष्ट्रीय पर्वों को बड़ी धूमधाम के साथ बिल्कुल न मनाता परन्तु यह सभी लोग जानते हैं कि आर्यसमाज में ये दोनो ही पर्व बड़ी खुशी के साथ तथा उत्साह के साथ मनाये जाते हैं हां इतनी बात अवश्य है कि आर्यसमाज श्री कृष्ण जी व श्री रामचन्द्र जी महाराज को सृष्टि का कर्ताधर्ता अर्थात ईश्वर न मानकर महापुरुष के रूप में स्वीकार करता है। आर्यसमाज के सिद्धान्तानुसार अवतारवाद वेद प्रतिपादित न होकर अवैदिक व पौराणिक कल्पना है तथा वेद विरुद्ध बात है आर्यसमाज उसे स्वीकार नही करता, दूसरे शब्दों में अगर हम कहें तो यों कह सकते हैं कि आर्यसमाज इन महान पुरुषों के चित्र की नहीं बल्कि चरित्र की पूजा करना बतलाता है उस चरित्र की जिसके होने से वे महापुरुष कहलाये उस चरित्र को अपने अन्दर धारण करने की बात कहता है अगर महापुरुषों में चारित्रिक गुणों की कमी होती तो वे आज संसार में कभी न माने जाते। अतः उपरोक्त शंका तो स्वतः निर्मूल हो जाती है।

श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज के बारे में आर्यसमाज की क्या मान्यता है इस सम्बन्ध में विचार करने से पूर्व आज किस रूप में श्री कृष्ण जी को माना जा रहा है इस पर संक्षेप में विचार करते हैं।

आज श्री कृष्ण जी का पूरा सच्चा स्वरूप ही बिगाड़ कर रख दिया गया है और इसका कारण है पुराणों का धार्मिक दृष्टि से पठन पाठन करना आदि। पुराणों के अनुसार आज श्री कृष्ण जी को भगवान (ईश्वर) माना जा रहा है। उनकी बचपन की क्रीडाएं बड़े विचित्र ढंग से पेश की जाती हैं और युवावस्था तो उनकी ऐसे ढंग से प्रस्तुत की जाती है कि उन कथाओं को कोई भला आदमी सुनने में तथा कहने में बड़ी शर्म महसूस करता है इतने चारित्रिक दोष श्री कृष्ण जी महाराज पर लगाये गये हैं संभवत ही किसी पर लगाये गये हों, उन्हें चोर जार शिखामणि तक कह दिया जाता है, कहा जाता है कि वे माखन चोर थे—भला हम पूछते हैं कि जो श्री कृष्ण जी नन्द जी के पास पले बड़े हुए जिनके पास कई हजार गऊएं थीं जिनको चराकर श्री कृष्ण जी लाते थे, उन्हें भरपेट दूध दही मिलता था फिर माखन चोर कैसे हो गये? आज कहा जाता है कि श्री कृष्णजी की १६० पटरानियां थी भला हम सोचें यह कहां तक संभव हो सकता है इतनी तो पटरानियां थी इनसे नीचे स्तर पर की पता नही कितनी होंगी। जरा सोचें। भागवत पुराण में तो श्री कृष्ण जी को चारित्रिक दोष इतने लगाये गये हैं कि एक गया गुजरा भी व्यक्ति इस प्रकार का नही हो सकता जैसा कि श्री कृष्ण जी को पुराणकार ने बना कर रख दिया। कुब्जा दासी से समागम, पराई स्त्रियों के साथ हंसी मजाक तथा उनसे रमण गोपियों के साथ समागम अपनी पत्नी का ध्यान न रखकर राधा से विशेष प्यार व अनैतिक सम्बन्ध इत्यादि कितनी बातें गलत रूप में श्री कृष्ण जी के बारे में कही जाती हैं जबकि वे एक पत्नी व्रती थे बड़े सदाचारी थे। १२ वर्षों की तपस्या करके फिर एक पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम प्रद्युम्न रखा जो रूप, बल पराक्रम में श्री कृष्ण के सदृश था ऐसे चरित्रवान व्यक्ति को इन्द्रिय लोलुप महाकामी अमर्यादित जीवन वाला पुराणकार ने बना दिया जिसको आज पुराण प्रतिपादित रूप में ही माना जा रहा है और जब हम स्थान २ पर उन तस्वीरों को देखते हैं। जिनमें गोपियां यमुना मे नंगी नहा रही हैं तथा श्री कृष्ण जी उनके वस्त्र उठा कर पेड़ पर बैठ जाते हैं गोपियों के द्वारा कपड़े मांगने पर कृष्ण उन्हें कहते हैं कि पहले जल से बाहर नंगी ही निकल कर बाहर आओ तब वस्त्र मिलेंगे ऐसा चित्रित किया गया है। सचमुच उस तस्वीर को देखकर तो एक ऐसे दुराचारी व्यक्ति का नक्शा हमारे आता है जिसे सजा मिलनी चाहिए। भला इतिहास विरुद्ध ऐसे कृष्ण के रूप को ईश्वर मानना तो बिल्कुल ऐसे है जैसे हम किसी अपराधी को अपना भगवान मान बैठें। पुराण कथित ऐसे कृष्ण का हमारी भावी पीढ़ी पर तथा आधुनिक पीढ़ी पर कितना गलत असर पड़ेगा तथा पड़ रहा है जरा कभी हमने सोचा? आज हमारे ही घरों में लड़कियां अपने मां बाप के सामने ही ऐसे गन्दे गीत गाती हैं जिन्हें कोई समझदार व्यक्ति तो अच्छा समझेगा नहीं सिर्फ गीत में श्री कृष्ण जी का नाम जोड़ दिया जाता है, इसलिए माता-पिता भी कुछ नहीं कहते गीतों के भाव कुछ इस तरह होते हैं "हे श्याम तुम अंधेरे में कुंए के पास चले आना उस समय में पानी भरने के बहाने आ जाऊंगी तब मैं तुम्हें मिलूंगी।" अब बताओ ये गोपियों की श्री कृष्ण के विषय मे गन्दी भावनाएं। तथा वैसे ही हर लड़की स्वयं अपने आपको गोपी मानकर गन्दे गीत गा रही है कोई सभ्य समाज इसकी इजाजत नही दे सकता, सुख सागर प्रेम सागर जैसी रसिक पुस्तकों को पढ़ना ही धर्म समझ लिया गया है इन ग्रन्थों में श्री कृष्ण को बहुत दुश्चरित्रशील बताया गया है।

अब आप देखें कि आर्यसमाज श्री कृष्ण को किस रूप में मानता है आर्यसमाज पुराणों में वर्णित श्री कृष्ण जी के ऊपर वर्णित घिनौने स्वरूप को पसन्द नहीं करता बल्कि वह तो महाभारत के उस इतिहास प्रसिद्ध चरित्र नायक श्री कृष्ण को मानता है जो मुरलीधर, बंसीधर न होकर असिधर गदाधर, सुदर्शन चक्रधारी था, जिसने कंस जैसे दुष्टों का बड़ी वीरता से वध किया, तथा जनता के दुःखों को दूर किया जिसने जरासन्ध जैसे राजाओं जो कि ऋषि सन्तानों, देवताओं को कष्ट देने वाले थे, बड़े क्रूर थे ऐसे अत्याचारी राजाओं को मारकर उनकी कैद से अनेक राजाओंको मुक्त कराया। पाण्डवों का साथ देकर धर्म की रक्षा की अनेक राक्षसों को मारकर गरीबों के दुःखो को दूर कर जन जन के नेता बने जो धर्मोद्धारक, योगीराज, नीति निपुण महान सदाचारी, जिसने १२ वर्षों तक गृहस्थ में रहकर भी ब्रह्मचर्य व्रत का स्वयं पालन कर रुक्मणि से भी संयम करा प्रद्युम्न जैसे सुयोग्य पुत्र को

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ऋषि तर्पण

इस ऋषि तर्पण त्योहार की भूले जन शुद्ध प्रणाली।
वर्षा ऋतु के आषाढ़ सावन
इन दो मासो मे पहले जन
करते थे ग्रहवास मुदित मन
युद्ध और व्यापार की मण्डी रहती थी खाली
इस ऋषि तर्पण त्योहार की, भूले जन शुद्ध प्रणाली।
ऋषि मुनि नगरो मे थे आते थे
वेद कथा थे सरस सुनाते
यज्ञो द्वारा सुख पहुचाते
योग्य विप्र ससार की हरते थे व्याधि कराली
इस ऋषि तर्पण त्योहार की भूले जन शुद्ध प्रणाली।
वर्षा जब मन्दी पड जाती
श्रावण मास पूर्णिमा आती
जनता तब घी यज्ञ रचाती
ऋषिगण जन उद्धार की कहते थे कथा निराली
इस ऋषि तर्पण त्योहार की भूल जन शुद्ध प्रणाली।
मनुज करो मे रक्षा बन्धन
बाध ऋषि जब जाते वन
ऋषि रक्षण प्रण करते थे जन
वही रीति तो प्यार की अब बहिन भ्रात अपना ली
इस ऋषि तर्पण त्योहार की भूले जन शुद्ध प्रणाली।
अब ढोगी कर में धागा ले
फिर कहे राखी बन्धवाले
ब्राह्मण वर्ग लजान वाले
चले और बाजार की पैसो से जेब भराली
इस ऋषि तपण त्योहार की भूल जन शुद्ध प्रणाली।
तजो ढोग मिथ्या मत नाना
वदिक पथ पर चरण बढाना
स्वाध्याय व्रत यज्ञ रचाना
धुन हो वेद प्रचार की तब रहे लालमन लाली,
इस ऋषि तर्पण त्योहार की, भूले जल शुद्ध प्रणाली।

—रचयिता स्व० श्री लालमन आर्य

आर्यसमाज की मान्यता

(पृष्ठ ५ का शेष)

उत्पन्न कर जनता के सामने सदाचार का महान आदर्श रखा जिसने सुदामा जैसे गरीब मित्र की भी पूर्ण सहायता की तथा दरिद्रता हरी। एक मित्र का उदाहरण सामने रखा। जिसने पाण्डवो का दूत बनकर पाण्डव व कौरवों मे समझौता कराने का पूरा प्रयास किया, जिसने बहिन द्रोपदी की लाज बचा कर राखी का वायदा निभाया। ऐसे श्री कृष्ण को आर्यसमाज मानता है तथा उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा देता है।

श्री कृष्ण जी नीति के तो इतने पक्के थे कि उनकी नीति की वजह से ही पाण्डवो की विजय हुई। युद्ध से पूर्व समझौते का प्रयास किया उसमे कामयाब न होने पर कुरुक्षेत्र के मैदान मे अर्जुन का रथ दोनों सेनाओ के मध्य मे लाकर खडा कर दिया अर्जुन के मोह मे पड जाने पर उसे समझाया और कहा— 'हतो वा 'प्राप्स्यसि स्वर्गं' जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्। तस्मरदुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय ॥ गीता० ॥ अर्थात् हे अर्जुन युद्ध कर, यदि युद्ध मे मर गया तो स्वर्ग प्राप्त करेगा और यदि विजय प्राप्त करेगा तो राज्य सुख भोगेगा 'क्लैब्य मा स्म गम पार्थ नैतत त्वयि उपपद्यते' नपुसक मत बन (कायर मत बन) वीरोचित मार्ग का सहारा लेकर युद्ध कर। ये तेरे भाई बन्धु नही है जो तेरे जान के दुश्मन है पता नही कितने जन्मों में ये तुम्हारे या तुम इनके क्या-२ रहे हो ? आत्मा मरता नही, शरीर की मृत्यु होती है। आत्मा की नही शरीर तो बार-२ मिलते रहते हैं अपने कर्तव्य का पालन कर इस तरह उपदेश देकर अर्जुन को युद्ध के लिए तैयार किया। कौरव दल मे बडे-२ महारथी थे जैसे भीष्म गुरु द्रोण, कर्ण आदि उन्हें बडी नीति से समाप्त करा दिया यह था कृष्ण का असली रूप जिसे आर्यसमाज मानता है। श्री कृष्ण के विचार के अनुसार पापी को मारना हिंसा नही धर्म है और कौरव पाप मे प्रवृत्त थे उन्हे मरवा देना समुचित ही था फिर चाहे वे विद्वान हो सम्बन्धी हों कोई हो।

श्री कृष्ण जी के सम्बध म महर्षि दयानन्द की श्रद्धाञ्जलि हम सत्यार्थ-प्रकाश से जरूर उधृत करना च हगे उन्होने लिखा—

देखो श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नही लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मन माने दोष लगाये हैं, दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम परस्त्रियों से रास मण्डल क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी में लगाये हैं इसको पढ लिखा सुन सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत ही निन्दा करते हैं, जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती ? —सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास ॥

आपने देखा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जो आर्य समाज के सस्थापक थे उनकी श्री कृष्ण के बारे मे कितनी सुन्दर राय है जब स्वामी जी की यह राय है तो उन द्वारा स्थापित आर्य समाज की राय में श्री कृष्ण कैसे होंगे यह कहने की आवश्यकता नही है। अत आर्य समाज श्री कृष्ण को महापुरुष तथा उच्चादर्श रूप मे स्वीकार करता है। आर्ये हम भी आज यह व्रत लें कि श्री कृष्ण के समान मित्र भावना वाले वीरता वाले नीति वाले ईश्वर के उपासक सदाचार के धनी हम भी बने कुर्सी के भूखे नही बल्कि विद्वानों के चरण धोने जैसा सेवा का कार्य के करने मे अपमान न समझें।

मंत्र के आरम्भ में ओ३म् का उच्चारण : एक दृष्टिकोण

—डा० भवानीलाल भारतीय—

मधर लोक के जुलाई के अक मे आर्य समाज कृष्णनगर दिल्ली के सदस्य श्री दीवानन्द का एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमे उन्होने इस बात पर बल दिया है कि जब ओ३म् बोलने में पाप नही है तो सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत मध्या, यज्ञ विधि में प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ मे ओ३म् के उच्चारण को उचित क्यो नही माना गया है मे लेखक महोदय से निवेदन करुगा कि यहा प्रश्न ओ३म् के उच्चारण से होने वाले पाप या पुण्य का नही है, किन्तु कर्मकाण्ड में समानता तथा एक रुपता का है। आप जप के समय ओम् का उच्चारण चाहे कितनी ही बार करे, आपको कौन रोकता है। किन्तु सध्या एव यज्ञ के प्रसग मे जो भिन्न प्रकरण हैं उनमे से प्रत्येक के आरम्भ मे एक बार ही ओम् का उच्चारण किया जायगा। उदाहरणार्थ, सध्या मे अघमर्षण मनसा परिक्रमा तथा उपस्थान-ये तीन भिन्न भिन्न प्रकरण हैं। इनमे क्रमश ३,६ तथा ४ मन्त्र हैं। अत ऋषि ने इनमे से प्रत्येक के आरम्भ मे एक बार ही ओम् बोलने का विधान किया है। इसी प्रकार स्वस्ति वाचन तथा शान्ति करण एव स्तुति प्रार्थनोपासना एक ही प्रकरण के तीन अश हैं। अत विश्वानि देव' मन्त्र के आरम्भ मे ही एक बार ओम् का उच्चारण बताया गया है।

लेखक ने एक तर्क यह भी दिया है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तको मे भी मतभेद है। इस सम्बन्ध मे यह जानना आवश्यक है कि सध्या एव यज्ञ की प्रामाणिक विधिया, जो स्वय सार्वदेशिक सभा ने ही प्रकाशित की है, उन्ही को मान्यता देनी है। इसके आधार पर अन्य प्रकाशको ने जो विधिया प्रकाशित की हैं उनमे न्यूनाधिकता हो गई है। लेखक का यह तर्क तो हास्यास्पद ही है कि ओम् को प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ मे प्रयुक्त करने से ही एकरुपता आयेगी। वस्तुस्थिति यह है कि महर्षि दयानन्द के विधान को पूर्णतया स्वीकार करने से एकरुपता आयेगी। कर्मकाण्ड मे न्यूनाधिकता होना ही दोषपूर्ण माना गया है इसी प्रायश्चित करने के लिए ही हम स्विष्टकृत आहुति देते है। अत यह विचार त्यागना होगा कि मन्त्र के आरम्भ मे ओम् बोलना पुण्यदायी है। जो विधि है वही वरणीय है।

लेखक के अन्य तर्क अप्रासंगिक हैं कि ओम और जीव मे पिता पुत्र सम्बन्ध है ओम् और मन्त्र माला के मनको और धागे का सम्बन्ध है आदि। इसी प्रसग मे लेखक ने अष्टाध्यायी तथा मनु आदि के जो प्रमाण दिये हैं वे भी मूल प्रसग से सम्बन्ध नही रखते।

लेखक ने एक और विचित्र बात यह लिखी है कि सार्वदेशिक सभा के समक्ष बहुत बडी समस्याए है इसलिये उसे कर्मकाण्ड के विधान की बातो को 'जिन्हें लेखक छोटी-छोटी बाते कहता है 'क्षेत्रीय समाजो पर ही छोड देना चाहिए। लेखक महानुभाव का यह सुझाव अत्यन्त अनुत्तरदायित्वपूर्ण है। वास्तव मे कर्मकाण्ड में एकता को लागू करवाना सार्वदेशिक सभा का पुनीत कर्त्तव्य है। यदि इन मामलो को क्षेत्रीय समाजो पर छोड दिया जायगा, तब तो प्रत्येक समाज अपनी पृथक् विधि चलायेगा, जैसा कि हो भी रहा है। पृथक् पृथक् समाजो मे जाइये, आपको यज्ञ विधि मे सर्वत्र असमानता दिखाई पडेगी। लेखक सार्वदेशिक के एतद् विषयक आदेश को ऊपर का हस्तक्षेप कहता है जो सर्वथा अनुचित है। कर्मकाण्ड मे अनुशासन का पालन कराना हमारी शिरोमणि सभा का कर्त्तव्य और अधिकार दोनो ही है। ●

तो फिर हम क्या करें, अब मांस ही खायें ?

स्नातिका प्रियंवदा शाब्दिकी, पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वराणसी

(एक भ्रामक लेख का उत्तर)

गत १७ मई के साप्ताहिक 'आर्य सन्देश" पत्रिका अक २७ मे मे प्रकाशित श्री प० मनोहर विद्यालकार जी का "वेदनिर्दिष्ट वैयक्तिक जीवन के नित्य कृत्य" विषयक लेख पढकर किसी भी पाठक के मन मे स्पष्टतया यह विचार बन आता है कि मास मनुष्य का भोजन है और वह वेद समर्थित है। खेद की बात है कि यह भ्रामक लेख डा० प्रशान्त कुमार वेदालकार जैसे आर्य विद्वान् के सम्पादकत्व मे छपे "स्मृति और विचार" ग्रन्थ मे भी छप चुका है। मनुष्य के लिये मास जैसे अभक्ष्य पदार्थ के सेवन का वेद द्वारा समर्थन वेद-स्वाध्यायी डा० मनोहर विद्यालकार जैसे व्यक्ति का यह निश्चित रूप से हम सबके लिये दुर्भाग्य का विषय है। ऐसा प्रतीत होता है कि माननीय पण्डित जी वार्धक्य जन्य भ्रहक के घरे में आकर कुछ का कुछ लिख गये हैं, जो नितान्त अनुचित है। एतादृश सत्यता से हीन लेखो को आर्य पत्र पत्रिकाओ मे छापने से वेद विषय में अनास्था उत्पन्न होती है अत लेखक के साथ सम्पादक जनो को भी अपने उत्तरदायित्व का वहन करते हुए भ्रामक लेखो को कदापि प्रकाशित नही करना चाहिए।

अब प्रस्तुत हैं आपत्ति जनक लेख के कुछ नमूने—

"मास को वेद ने न खाने का विधान किया है न निषेध किया है इससे प्रतीत होता है कि वेद की दृष्टि मे मास भक्षण न तो लाभप्रद है और न ही इसमे कोई पाप है, क्योकि मास भक्षण के लिये कही दण्ड का विधान भी नही किया गया है।

इस भ्रान्तिपूर्ण मिथ्या प्रलाप के विषय मे मैं क्या कहू ? वेदो मे जब 'गा मा हिंसी यजु० १३ ४३, इममूर्णायु मा हिंसी यजु० १३ ५०, माहिंसीरेकशफ पशुम् यजु० १३,४८, द्विपादव चतुष्पात् पाहि १४ ८, पशून् पाहि यजु० १ १, मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे यजु० ३६ १८," जैसे सैकडो स्थल विद्यमान हैं तो वेद में मास भक्षण निषेध भी स्वत सिद्ध नही हो जाता है क्या ? यदि विद्यालकार जी साक्षात् मास भक्षण निषेधक वाक्यो के अभाव मे वेदो पर यह आरोप लगा रहे हो तो इस विषय मे भी वेद स्पष्ट कहता है—

य आम मासमदन्ति पौरुषेय च ये क्रवि ।
गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि ॥ अ०८।६।२३॥

जो कच्चे मास को (पौरुषेयम्) पुरुष द्वारा बनाये गये अर्थात् पके मास को या अण्डो को खाते हैं उन दुष्टो का नाश कर दिया जाये।

य पौरुषेयेण क्रविषा समक्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधान ।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषा शीर्षाणि हरसापि वृश्च ॥
ऋ० १०।८७।१६ ॥

जो राक्षस अश्वादि पशुओ का मास खाता है उसका सिर कुचल देना चाहिए।

ब्रह्मद्विषे क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायकिमीदिने ।
ऋ० ७ । १० । १२ ॥

धर्मात्मा जन मास भक्षक से पूर्णतया अप्रीति रख।

पाठक देखे कि मास भक्षण वेद की दृष्टि मे कितना बडा पाप है कि जो गर्भाश—अण्डे के रूप मे या कच्चे पक्के जिस किसी रूप मे मास खाते हैं ऐसे दुष्टो को सीधे नष्ट करने का आदेश वेद दे रहा है। इससे बढकर दूसरा दण्ड क्या हो सकता है ? किन्तु ऐसे मन्त्रों के रहते हुए भी श्रीमान् पण्डित जी फरमाते हैं कि मास भक्षण के लिये वेद मे कोई दण्ड का विधान ही नहीं।

अब प्रश्न यह होता है कि मनुष्य का भोजन वस्तुत क्या होना चाहिए तो इस विषय मे स्पष्ट वैदिक आज्ञा है—

अजीजन ओषधीर्भोजनाय कम (ऋ० ५।८३।१७)

अर्थात् मनुष्यों के भोजनार्थ ओषधिया उत्पन्न की गई हैं। "औषध्य फलपाकान्ता" (चरक स० १ ७२) के अनुसार चावल, जौ, गेहूं, चना आदि औषधि के अन्तर्गत आते ही हैं।

इस प्रकार मास भक्षण निषेध की स्पष्ट वैदिक आज्ञाओ के रहते किसी का भी मास भक्षण प्रतिपादन करना दु साहसपूर्ण वेदों पर मिथ्यारोप है। एक और भी बात है कि शब्दार्थ की यौगिक प्रक्रिया के रहते वेद मे कही पर भी भक्ष्य पदार्थों के साथ मास शब्द को देखकर एकदम बिदक उठना घोर अज्ञानता मूलक ही कहा जायेगा। "मनु अवबोधने" धातु व्युत्पन्न मास शब्द बुद्धिवर्धक पदार्थों की ओर सकेत कर रहा है। जिस प्रकार दुग्ध बुद्धिवर्धक है उसी प्रकार अन्य बुद्धिवर्धक पदार्थ अतिथि को दिये जायें यह— "एतद्वा उ स्वादीयो यदधिगव क्षीर वा मास वा तदेव नाश्नीयात्" अ० ९।६-३।९) मन्त्र में कहा गया है। यदि ऐसा अर्थ न किया जाये तो वेद हास्यास्पद बन जायेगे कि एक ओर बुद्धिवर्धक सात्विक दुग्ध देने का विधान वेद अतिथि के लिये करता है तो दूसरी ओर वही पर मास जैसे बुद्धिनाशक पदार्थ का ?

इस विषय के विस्तार के लिये गत वर्ष नवम्बर मास की 'वेद-वाणी" मे प्रकाशित 'एक वेदस्य असमाधेयस्थलम्" का हिन्दी अनुवाद देख लेना उचित होगा। जिसमे महामहोपाध्याय आचार्य विश्वश्रवा जी ने बडी, प्रबल युक्तियो से एव महर्षि यास्क के— "मास मानन वा मानस वा मनोऽस्मिन् सीदतीति वा (निरु०४।३) इस त्रिविध निवचन क आधार पर यह सिद्ध किया है कि त्रिविधार्थक तीन ही मास शब्द है। अतिथि प्रकरण के इस उपर्युक्त आक्षेपस्थल मे मास शब्द का कौन सा अर्थ लिया जाये इसका निर्धारण इसी प्रकरण मे पठित क्षीरमुपसिच्य, मधूपसिच्य, मासमुपसिच्य, उदकमुपसिच्य आदि वाक्य ही कर देते हैं। यहा सरस पदार्थों के साथ मास शब्द पढा गया है सो स्पष्ट प्रमाणित हो रहा है कि इस प्रकरण मे मास शब्द से घृत, दुग्ध, जलादि के समान कोई मन प्रिय सरल पदार्थ ही लेना वेद का अभीष्ट है। इस प्रकार प्रकृत मन्त्र के प्रकरणाविरुद्ध निर्विवादास्पद अर्थ के होने पर उसे मास-भक्षण-परक कुत्सित अर्थ की ओर घसीटना निन्दनीय है।

मासपोषक इस लेख मे पण्डित जी लिखते हैं—"कि प्राय निरामिषभोजी 'वर्जयेत् मधुमास" (मनु० २।१।७७) मनु के विधान को मास विरोधी दर्शाते है लेकिन उन्हे यह समझ लेना चाहिए कि यह श्लोक ब्रह्मचारियों के कर्त्तव्यो और नियमो के प्रसग का है, गृहस्थियो के प्रसग का नही।"

क्या मजे की बात है। पण्डित जी यहा किस प्रकार सबकी आंखो में धूल झोंक रहे हैं यह पाठक देख। मनु महाराज ने ब्रह्मचारी प्रकरण से अतिरिक्त अनेकत्र बडे प्रबल शब्दो में मासभक्षण का खण्डन किया है। तथा—

नाकृत्वा प्राणिना हिंसा मासमुत्पद्यते क्वचित् ।
न च प्राणिवध स्वर्ग्यस्तस्मान्मास विवर्जयेत् ॥
समुत्पत्तिच मांसस्य वधबन्धौ च देहिनाम् ।
प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात् ॥
अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।
सस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातका ॥
स्वमास परमासेन योवर्धयितुमिच्छति ।
अनभ्यर्च्य पितृन् देवास्ततोऽन्यो नास्त्यपुण्यकृत् ॥
(मनु० ५।४८।५१,५२)

मनुष्य के लिये मास भक्षण निषेध के मनु महाराज के ये सामान्य नियम हैं जिन्हें उन्होंने ब्रह्मचारी प्रकरण में भी विशेष बल

देने के लिये रख दिया तो इससे यह कैसे सिद्ध हो गया कि मांस खाना ब्रह्मचारी के लिये वर्जित है अन्यो के लिये नही ? यदि इस विषय में विद्यालङ्कार जी की बात मान ली जाये तो मनु महाराज के मांस भक्षण, निषेध-परक अनेकानेक व्यर्थ होने के साथ साथ ब्रह्मचारी को छोडकर अन्य आश्रमियो के लिये जुआ खेलना, मिथ्या भाषण पर निन्दा आदि दुर्गुण भी समर्थित हो जायेंगे क्योकि ब्रह्मचारी प्रकरण मे ही—द्यूत च जनवाद च परिवाद तथानृतम्" (मनु० २।१७९) भी कहा है। सो पण्डित जी के मत मे तो ब्रह्मचारी को जुआ नही खेलना चाहिए किन्तु गृहस्थी, वानप्रस्थी, सन्यासी आदि के लिये खुली छूट है। भले हो ऋग्वेद का द्यूत-क्रीडा निषध परक १० ३४ सूक्त व्यर्थ हो जाये तो इससे क्या ?

इसी लेख में पण्डित जी स्नानादि नित्य क्रियाओ का उपहास करते हुए मनुस्मृति के विषय मे लिखते हैं कि—बडी विचित्र बात है कि वेद की तरह मनु मे भी प्रात काल उठने का तो जिक्र है किन्तु स्नान की कोई चर्चा नही है।"

क्या कहू ? जिस "वर्जयेन्मधुमासच" श्लोक को विद्यालङ्कार जी महाराज उद्धृत कर रहे हैं इससे पूर्व निर्दिष्ट "नित्य स्नात्वा शुचि कुर्यात्" (मनु० १७६) श्लोक कुल्लूकभट्ट ने भी "प्रत्यह स्नात्वा" अर्थ ही किया है उन्हें नहीं दिखा। इसके अतिरिक्त स्नान के लिये स्पष्ट विधान करने वाले मनुस्मृति के अन्य श्लोक भी पण्डित जी पचा गये। क्या कहा जाये कि जैसे मध्य काल मे वेद कोई पढ़ता नहीं था अत वेद के विषय मे कोई भी प्रलाप जो तथाकथित पण्डित जन देते थे वह सब साधारण जनता मानती थी उसी प्रकार पण्डित जी मानते हैं कि मनुस्मृति उनके अतिरिक्त किसी ने देखी ही नही होगी अत वे जो कुछ कह दगे वह सत्यवचन महाराज ! कहकर ठीक मान लिया जायेगा। यहा पाठक देख मनुस्मृति के वे श्लोक जहा स्पष्ट नित्य एव नियमित स्नान का विधान है—

मैत्र प्रसाधन दन्तधावनमञ्जनम्।
पूर्वाह्ण एव कुर्वीत देवतानाञ्च पूजनम् ॥१॥ ४।१५२ ॥
न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा नातुरो न महानिशि।
न वासोभि सहाजस्र नाविज्ञाते जलाशये ॥२॥ ४।१२९ ॥

श्री पण्डित जी को इतने प्रमाणो के रहते शुचिता के लिये मनुस्मृति मे 'उत्थायावश्यक कृत्वा कृतशौच समाहित' एक ही प्रमाण मिला उसमें भी उनको दोष दीखा। मैं कहती हू कि इस श्लोक मे जिस स्नान शब्द के लिये पण्डित जी इतने व्याकुल हो रहे हैं वह भी तो "ईशुचिर् पूतीभावे" धातु की ही भाति व्यापक पवित्रता अर्थ वाले "ष्णा शौचे" धातु से ही निष्पन्न होता है सो वस्तुत स्नान एव शौच दोनो शब्द समानार्थक हैं। यही कारण है कि जहां यम नियमादि मे वर्णित शौच शब्द की प्राचीन ग्रन्थो मे त्रिविध शुद्धि परक व्याख्या हमे उपलब्ध होती है वहीं मनसा, वाचा, कर्मणा शुद्ध ब्रह्मचारी मे स्नातक शब्द का प्रयोग भी उपलब्ध होता है जिसका उच्चारण हम आज भी करते ही हैं। इन दोनों शब्दों में आजकल जो अर्थ भेद उपलब्ध होता है उसमें एक मात्र हेतु यही है कि कुछ काल पश्चात् स्नान शब्द तो बाह्य सर्वांग शुद्धि मात्र में रूढ हो गया पर शौच शब्द अपने पुराने व्यापक शब्द के रहते तत्त् स्थलो में स्नान शब्द का अभाव हमें कदापि नही खटकना चाहिए। शौच शब्द के बाह्य शुद्धि परक अर्थ में पूरे शरीर की शुद्धि अभिप्रेत है अकारण केवल हाथ मु ह धोकर शुद्धि मानना तो आलस्य का ही सूचक होगा। इस प्रकार लेखक का कुछ देश विशेषों को छोडकर सर्व साधारण के लिये भी स्नान को अनियमित ठहरा देना कहा तक सुसगत है पाठक स्वय सोचें।

एक स्थल पर वैयक्तिक कृत्य बत ते हुए पण्डित जी एक नई सूझ देते हैं—' कि वेद रचना काल में ये वस्तुए होती ही नही थी।" इस विषय में मैं पूछती हू कि लेखक महोदय वेदो का कौन सा काल मानते हैं पाश्चात्य या पौरस्त्य ? प्रथम मत मे तो यह कथन असगत है ही पर द्वितीय आर्ष मत में भी वेदो का और सृष्टि का कर्त्ता एक ही होने से इसकी असारता स्पष्ट है। सृष्टि का कोई भी पदार्थ चाहे उत्पन्न होकर नष्ट हो चुका है, दृश्यमान है या भविष्य के गभ में है उस सवज्ञ प्रभु के ज्ञान में तब वर्तमान है ही। वेद मे सिद्धान्त हैं तो सृष्टि मे उनका प्रयोगात्मक रूप, अन्तर केवल इतना ही है। वेदो मे उन्ही वस्तुओ का वर्णन आया है जो वेदोत्पत्ति काल मे वर्तमान थी यह धारणा बनाने पर तो चोर, लुटेरे, जुआरी और अथववेद मे चर्चित अनेक रोग भी उत्पत्ति कालिक मनुष्यो मे विद्यमान थे यह मानने को बाध्य होना पडेगा अत भूत भव्य भविष्यच्च सर्व वेदात् प्रसिध्यति" (मनु० १२ ९७) के अनुसार त्रिकालिक ज्ञान के अक्षय भण्डार वेदो के लिये किसी का कुछ कहना कोरा अनर्गल प्रलाप ही सिद्ध होगा।

कहा तक गिनाया जावे ? ऐसा लगता है कि यह सम्पूर्ण लेख ही जैसे वेदद्वेषी पक्षपाती, पाश्चात्य लेखकों के खेमे मे बैठकर लिखा गया है तभी तो पवित्र वैदिक सस्कृति सभ्यता का उपहास पदे पदे किया गया है। तथा वेदो में चू कि स्नान की चर्चा अति न्यून हुई है इस कारण स्नान साप्ताहिक पाक्षिक अथवा मासिक भी किया जा सकता है यह स्वेच्छाचरण सिखाते हुए लेखक मुस्लिम सभ्यता का ही तो समर्थन प्रच्छन्न रूप से कर रहे हैं। इसी प्रकार सन्ध्या की चर्चा के प्रसग मे—"अपनी रुचि या परम्परा के अनुसार प्राणायाम जप सन्ध्या, ध्यान, गान, याग यज्ञ कुछ ऐसा कृत्य करने का विधान है जिससे मानसिक समता या शान्ति बनी रहे—' कहा गया यह कथन भी भारतीयो को कम दिग्भ्रान्त करने वाला नही। सच तो यह है कि वेद के विषय मे ऐसी मन गढन्त बाता मे परिपूर्ण यह लेख अपनी मनोहरता विज्ञप्त न करके बुद्धि हरता को व्यक्त करने लगा है। अपनों द्वारा किये गये इस प्रहार से वेद माता भी कही न तिलमिला उठे और हम ईश्वरीय दण्ड के भागी न बन जाये अत शुद्ध वैदिक दृष्टिकोण ही हमें समाज को प्रस्तुत करना चाहिये। ●

गीता और ऋषि दयानन्द जी

—श्री अमर स्वामी सरस्वती—

(गतांक से आगे)

सत्यार्थ प्रकाश में गीता के श्लोकों का प्रयोग है—

२१. सत्यार्थ प्रकाश के आरम्भ की भूमिका में ही—

"यत्तदग्रे विषमिव; परिणामेऽमृतोपमम् ॥ १८ । ३७

यह श्लोकार्ध दिया है। और इस श्लोक को लिखकर ऋषि ने इसके नीचे लिखा है कि—यह गीता का श्लोक है।

२२. एक श्लोक गीता का सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम् समुल्लास अत्यावश्यक विषय में दिया है वह इस प्रकार है।

नासतो विद्यते भावो, नाभावो विद्यते सत: ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभि: ॥ गीता २।१६

अर्थात् असत् वस्तु का कभी भाव नहीं होता और सत् पदार्थ का कभी अभाव नहीं होता है इन दोनो बातों को तत्वदर्शियों ने जान लिया है।

"यत्तदग्रे विषमिव"—इस श्लोक के विषय मे एक गीता विरोधी सज्जन ने लिखा कि—इससे यह तात्पर्य निकालना कि ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश लिखने की प्रेरणा गीता से ली, एक मिथ्या कल्पना है।

मैंने यह बात कहीं भी न कही न लिखी कि—ऋषि ने गीता में ही सत्यार्थ प्रकाश लिखने की प्रेरणा ली। पर उनको अपने लिखे उद्धरण को पढ़ना और विचारना चाहिए था, जो उन्होंने 'ऋषि दयानन्द और गीता" नामक पुस्तक के पृष्ठ १४ पर सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में से दिया है—

यह बड़ा दृढ़ निश्चय है कि—"यत्तदग्रे विषमिव परिणामे अमृतोपमम्।" (यह गीता का वचन है) इसका अभिप्राय यह है कि—जो जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म हैं वे प्रथम करने में विष के तुल्य और पश्चात् अमृत के सदृश होते हैं। ऐसी बातों को चित्त में धरके मैंने इस ग्रन्थ कोलिखा है।"

इस श्लोक के विषय में उन्होंने यह भी लिखा कि—यह गीता की ही एक मात्र धरोहर नहीं है। उनका और किसी का भी यह कहना कि—यह गीता की एक मात्र धरोहर नहीं है सर्वथा असम्बद्ध और अप्रासंगिक है क्योंकि—यह प्रश्न ही नहीं है कि—कौन-बात किसकी धरोहर है प्रश्न तो यह है कि गीता के वचनों को ऋषि ने लिखा है या नहीं।

"नासतोविद्यते भावो०" इस श्लोक पर भी आपने ऐसी ही अनावश्यक बात लिखी है कि—इस पर गीता का एकाधिकार नहीं, प्रश्न यहा यह नहीं है कि—इन बातों पर एकाधिकार गीता का है कि नहीं या यह एक मात्र गीता की धरोहर है कि—नहीं? प्रश्न यहां केवल यह है कि—ऋषि दयानन्द जी गीता के श्लोकों का प्रयोग प्रमाण रूप में करते थे कि—नहीं सो स्पष्ट है कि गीता के वचनों का प्रमाण रूप से प्रयोग वह करते थे, इसके २२ प्रमाण यहां तक दिये जा चुके हैं आगे और भी देखिये।

२३. सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में - ऋषि ने संस्कार विधि की भांति ही ब्राह्मण के गुण कर्म स्वभाव बताने के लिए—मनुस्मृति और गीता के—

अध्यापन मध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥ मनु ४१ । ८८
शमोदमस्तप: शौच क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञान विज्ञानमास्तिक्यं, ब्राह्म कर्म स्वभावजम् ॥ गीता १८ । ४२

दोनों के श्लोक इकट्ठे लिए और क्षत्रिय के गुण कर्म बताने के लिए भी मनुस्मृति और गीता के श्लोक इकट्ठे लिखे यथा—

२४. प्रजानां रक्षण दान मिज्याध्ययन मेव च।
विषयेष्व नासक्तिश्च क्षत्रियस्य समासत ॥ मनु १ । ८९
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वर भावश्च क्षात्र कर्म स्वभावजम् ॥ गीता १८ । ४३

दोनों के श्लोकों को मिलाकर लिखा और दोनों को एक दूसरे के पूरक समझ कर दोनों श्लोकों को मिलाकर ही अर्थ लिखा इससे स्पष्ट है कि—ऋषि ने यहां दोनों के श्लोकों को समान रूप से आवश्यक तथा समान रूप से प्रमाण माना और प्रकट किया है।

ऋषि की ऋषिदृष्टि या आर्षदृष्टि थी जो यथार्थ देखती थी और इन असम्भव्यों की अनार्ष दृष्टियां हैं। दुःख की बात है कि—ये लोग न केवल अपने आपको आर्य समाज के सब पंडितों से बड़ा पंडित सबसे बड़ा बुद्धिमान तथा सबसे बड़ा सिद्धान्तवादी जताते हैं प्रत्युत ऋषि दयानन्द जी से भी बड़ा विद्वान और विचारशील मानते और अपने लेखों से ऐसा ही प्रकट करते हैं।

आप पहिले भी पढ़ चुके हैं कि—मिर्जापुर के बैरागी महन्त बालकृष्ण दास को उसके यह मानने पर कि—गीता प्रक्षिप्त है ऋषि ने शास्त्रार्थ के लिए ललकारा और बलपूर्वक कहा कि—गीता प्रक्षिप्त नहीं है और ये पण्डितम्मन्य कि जो सम्पूर्ण गीताको प्रक्षिप्त मानते हैं। जब महन्त बालकृष्ण दास का साहस ऋषि के साथ शास्त्रार्थ करने का नहीं हुआ था तब ये लोग होते तो ये लोग ऋषि को परास्त करने का शायद दुस्साहस करते।

बड़ा भारी आश्चर्य है कि ऋषि की मान्यता के विरुद्ध ये लोग लिखते और कहते हैं और आर्य समाज से सारे विद्वानों से अपने आपको ऋषि का भक्त और बहुत बड़ा अनुयायी प्रकट करते हैं।

ऋषि दयानन्द जी के पीछे—उनके शिष्य पण्डित भीमसेन जी पण्डित भूमित्र शर्मा जी, सामवेद भाष्यकार, पण्डित तुलसीराम जी स्वामी सिद्धान्त मूर्ति, तार्किक शिरोमणी, स्वामी दर्शनानन्द जी, ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी, दर्शनों और उपनिषदों के भाष्यकार महामहोपाध्याय पण्डित आर्य मुनि जी, अनेक ग्रन्थों के टीकाकार पण्डित राजाराम जी शास्त्री, आचार्य पण्डित मुक्तिराम जी उपाध्याय (स्वामी आत्मानन्द जी), आचार्य नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ, विद्या भास्कर पण्डित रामावतार जी शास्त्री, वेदतीर्थ, विद्याभास्कर पण्डित रामावतार जी शास्त्री, अनेक दर्शनों के भाष्यकार पण्डित उदयवीर जी शास्त्री सांख्य वेदान्तादि तीर्थ, शास्त्रार्थ महारथी पण्डित बुद्धदेव जी विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द जी), वेद भास्कर पण्डित पण्डित सातवलेकर जी, शास्त्रार्थ महारथी पण्डित बुद्धदेव जी मीरपुरी, शास्त्रार्थ महारथी पण्डित बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ, पण्डित सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार (पूर्व उपकुलपति विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी), त्याग-मूर्ति महात्मा हंसराज जी, देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी, तपोमूर्ति पण्डित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, रिसर्च स्कालर पण्डित भगवद्दत्त जी पण्डित रामावतार जी पंचतीर्थ, आचार्य पण्डित रामानन्दजी शास्त्री, महापण्डित पंडित रामगोपाल जी शास्त्री वैद्य, पण्डित कृष्णचन्द्र जी विद्यालंकार वर्तमान संसद सदस्य पण्डित शिवकुमार जी शास्त्री प्रसिद्ध गवेषक पण्डित शिवपूजनसिंह जी एम. ए., पण्डित रामस्वरूप जी शास्त्री काव्यतीर्थ कविरत्न पण्डित हरिशंकर जी पद्मभूषण आदि-२ सिद्धान्तवादी और महाविद्वान गीता के भाष्यकार और प्रशंसक रहे हैं। ●

हैदराबाद आर्यसमाज सत्याग्रहियों के लिए पेंशन सुविधाएं

पिछले कई मासों से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और गैर सरकारी सलाहकार समिति के सदस्य पेंशन के लिए आवेदन पत्रों को भारत सरकार के गृह-मन्त्रालय के स्वाधीनता सेनानी सम्मान प्रभाग के अधिकारियों के साथ पत्र-व्यवहार द्वारा एवं सम्पर्क स्थापित कर यथाशीघ्र इस मामले को निपटाने के लिए भरसक प्रयास करते रहे हैं। जब तक इस मामले में सरकार का लिखित निर्णय समिति को प्राप्त नहीं होता तब तक आवेदकों को निश्चित सूचना, जो कि सरकारी स्तर पर जारी होती है, आवेदकों को बताना मुश्किल है।

गृह-मन्त्रालय का पिछले मामलों को देखते हुए यह निर्णय अभी कायम है कि इस आर्यसमाज सत्याग्रह (१९३०-१९३९) के सिलसिले में जो व्यक्ति ६ मास से अधिक कारावास का दण्ड भुगत चुके हैं, उनको अथवा उनके जीवित न रहने की दशा में उनकी विधवाओं को पेंशन दी जा सकती है।

पिछले मास समिति के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव और श्री सोमनाथ मरवाह ने गृह-मन्त्रालय के संयुक्त सचिव एस०एम० शर्मा से भेंट की और पेंशन देने के मामलों में हो रही देरी की ओर उनका ध्यान खींचा। अमधिकृत सूचनाओं के वर्तमान नियमों की परिधि में आने वाले कुछ लोगों को पेंशन जारी हो गई है और शेष मामलों पर भी कार्यवाई चालू है। इसके लिए गृह-मन्त्रालय ने एक मास में मामलों को निपटाने का आश्वासन दिया है।

वर्तमान स्थिति यह है कि ३० जून १९८६ तक, सभा में जिन सज्जनों के आवेदन पत्र प्राप्त हो गये थे, उन पर कार्यवाई करने के लिए स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग को कहा गया है। उसके अनुसार पिछले सप्ताह और अब भी स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग के ४-५ अधिकारी प्रतिदिन सभा कार्यालय में आ रहे है सभा में प्राप्त [३० जून १९८७] आवेदन पत्रों की आवश्यक जांच पड़ताल कर रहे हैं और उसके पश्चात् उन्हें अपने कार्यालय में ले जाकर आवश्यक कार्यवाही करने का आश्वासन उन्होंने दिया है।

प्रेरक प्रसंग

महर्षि की बिरादरी

स्वामी दयानन्द बांकीपुर प्रथम बार पधारे और महाराज भूप-सिंह की वाटिका में ठहरे। एक दिन स्वामी जी शौच आदि के लिए जंगल को गये थे। जो ब्राह्मण भोजन बनाता था उसका चाचा आ गया। भोजन बन रहा था। चौके के निकट आकर उसने कहा कि जब भोजन बन चुकता होगा और स्वामी जी खा लेते होंगे तब ही आप लोग खाते होंगे? पाचक ने उत्तर दिया कि हां ऐसा ही करते हैं। उसने कहा कि चौका तो झूठा हो जाता है। तुमको चाहिए कि कुछ लकीर आदि का नियम कर लिया करो। उस पर वह ब्राह्मण चुप हो गया। भ्रमण से आकर स्वामी जी ने मुंह हाथ धोया और स्नान किया। फिर उसे मिट्टी को जो भीगी हुई रहती थी, शरीर पर लगाया और टहलते रहे। टहलने और मिट्टी सूखने के पश्चात् शरीर को मल दिया और बैठकर ध्यानावस्थित हो गये। तत्पश्चात् जब भोजन तैयार हो गया तो भोजन करने के लिए स्वामी जी को बुलाया, उन्होंने लकीर देखकर सारी बात भांप ली। स्वामी जी पूर्व नियम के विपरीत उस दिन चौके के बाहर ही बैठ गये और कहा कि हमको यहां ही भोजन लाओ। पाचक ने कहा कि महाराज, यह क्यों? स्वामी स्वामी जी बोले कि हमको किसी बिरादरी का डर नहीं कि हमको कोई बिरादरी से बाहर कर देगा।

—श्री सत्यानन्द आर्य

दिल्ली के नागरिको !

मुखतारनामे के लेन देन नियमित करने के लिये प्रस्ताव

दिल्ली महानगर परिषद ने ३१ जुलाई, १९८७ को एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया है जिसके परिणाम-स्वरूप मुखतारनामे (पावर आफ एटोरनी) के जरिये की गई खरीद-बिक्री या सम्पत्ति हस्तान्तरण के अन्य मामलों को नियमित करने में सहायता मिलेगी।

प्रस्ताव में कहा गया है कि इस प्रस्ताव के पास करने से पहले जो सौदे किये गये हैं उन्हें कानूनी मान्यता प्रदान की जाये। बड़ी संख्या में लोगों ने प्रस्ताव का पूरा विवरण बताये जाने का अनुरोध किया है जो इस प्रकार है :--

"यह सदन प्रस्ताव करता है कि भूमि और सम्पत्ति की खरीद-बिक्री और हस्तान्तरण के सभी लेन देन जो इस प्रस्ताव के पास होने से पहले जनरल पावर आफ एटोरनी के जरिये किये गये हैं, उन्हें व्यवहारिक उद्देश्यों के लिये वैध खरीद-बिक्री और हस्तान्तरण माना जाये और इस प्रस्ताव के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये कानून में उचित संशोधन किये जायें।"

यदि इस सम्बन्ध में आप कोई सुझाव देना चाहते हैं तो कृपया लिखें :--

जग प्रवेश चन्द्र
मुख्य कार्यकारी पार्षद
पुराना सचिवालय, दिल्ली-११००५४

सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, द्वारा प्रकाशित

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष में प्राप्त धन

उत्तर प्रदेश मर्चेन्ट फैडरेशन, अमीनाबाद लखनऊ	१५००)
अमरनाथ दर्शनकुमार नांगलोई दिल्ली	५०)
ओम्प्रकाश पारिक उ० मु० अधिकारी राजभाषा कार्यालय अहमदाबाद	५१)
धनवन्तर सिंह आर्य कोहनूर भवन डलहौजी चम्बा	१००)
शिवचरण लाल जी गुमानपुर कोटा	१००)
अध्यक्ष जिला आर्य सभा मधुपुर जि० देवघर	३०)
संयोजक स्व० सेनानी परिषद भोगांव मैनपुरी	५१)
धनवन्तर सिंह आर्य कोहनूर भवन डलहौजी चम्बा	१००)
मेघसिंह ठाकुर स० अभियन्ता मंडी	२०)
गुरुबख्श लाल रामपुरा कालोनी यमुनानगर	११)
मन्त्री आर्य समाज जनरियो अटरिया अर्रा नरसिंहपुर	१७०)
जगदीश पंडित मधुवनी घाट प० चम्पारण बिहार	५)
दयपुमल प्लाट सं० ३ टीचर्स कालोनी गुमानपुर कोटा	१००)
ओमप्रकाश अग्रवाल, लाल बाजार गंगटोक	११००)
राजसिंह, एम. आई. ओ. डी. हावड़ा	५१)
सुधीर मेहता गुमानपुरा कोटा	२१)
सरला कपिला ए-११ ग्रीन पार्क नई दिल्ली	२००)
चन्द्रा नन्द वानप्रस्थ, आर्य समाज मधुपुर देवघर	३०)

सभी दानदाताओं का धन्यवाद।

मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

अटल बिहारी वाजपेई का भटकाव

४ अगस्त के पंजाब केसरी में श्री विजयकुमार चोपड़ा ने अपने सम्पादकीय में पंजाब के सम्बन्ध में "सभी भटक रहे हैं" शीर्षक से चण्डीगढ़ में २ अगस्त को भाजपा नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी के पत्रकारों को किए गए सम्बोधन पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि पंजाब के मामले में वाजपेयी का अपनी पार्टी के नेताओं द्वारा दिए गए वक्तव्यों मे परस्पर विरोधाभास है।

श्री विजयकुमार ने आपत्ति की है कि श्री वाजपेयी का यह कथन कि राष्ट्रपति शासन से तो बरनाला सरकार के शासन काल में ही हालत अच्छी थी। जबकि पंजाब में भाजपा नेता बरनाला सरकार की नीतियों का विरोध करें रहे थे।

श्री वाजपेयी ने सरकार से मांग की है कि जोधपुर जेल से सिख नजरबन्दों को रिहा किया जाए और कथित पुलिस मुकाबलों में होने वाली निर्दोष हत्याओं की जांच कराई जाए।

वेद प्रचार सप्ताह

बागपत। आर्यसमाज बागपत में वेदप्रचार सप्ताह १७ से २३ अगस्त-८७ तक मनाया जायेगा जिसमें आचार्य शिवराज शास्त्री, श्री बाल दिवाकर हंस डा० देवव्रत आचार्य व प्रसिद्ध भजनोपदेशक नरदेव आर्य पधारेगे।

— मन्त्री, आर्य समाज बागपत

आह पंजाब !

(पृष्ठ ४ का शेष)

आतंकवाद पर काबू पा लेंगे ? हमें तो विश्वास नही। पंजाब की दिहाती जनता को जागरूक करना होगा कि वह आतंकवाद के खिलाफ खड़े हों। जब पंजाब के मां बाप जागरूक नहीं होते व अपने बच्चे को गलत कार्यवाहियों से रोकते नहीं तब तक बहुत मुश्किल है आतंकवादियो का वर्चस्व रहेगा तब तक बहुत मुश्किल है आतंकवाद पर पार पाना।

आतंकवाद देश भक्त नागरिकों के लिये वज्रपात की तरह है। पलायन जारी है।

केन्द्र सरकार अब तक गम्भीर नही होती व पलायन को रोकती नहीं। यह बूंद-बूंद तलाब घटता रहेगा, न जाने कब तक अल्लाह जाने, राम जाने, वाहिगुरू जाने मगर केन्द्र नही जानेगा।

आर्य समाज दीवान हाल में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

१६ अगस्त कृष्ण जन्माष्टमी को पूर्णाहुति

दिनांक ५ अगस्त से आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल में विश्वशान्ति तथा वर्षा के लिए यजुर्वेद पारायण महायज्ञ प्रारम्भ हो गया है। सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री यशपाल सुधांशु श्री ब्रह्मदत्त विद्यावाचस्पति तथा गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी वेद पाठ तथा मन्त्रोच्चारण द्वारा यज्ञ की शोभा बढ़ा रहे हैं।

आगामी १६ अगस्त कृष्ण जन्मोत्सव के दिन प्रातः ९॥ बजे इस पवित्र यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

इस अवसर पर पूर्णाहुति के दिन दिल्ली के उपराज्यपाल श्री एच० के० एल० कपूर व पंजाब केसरी पत्र के सम्पादक श्री अश्विनी कुमार पधारेंगे। अन्य विद्वान व गण्यमान्य नागरिक यज्ञ का आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करेंगे।

आर्य वीर महासम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महा सम्मेलन हरियाणा के ऐतिहासिक नगर जीन्द में शनिवार तथा रविवार, दिनांक २६ तथा २७ सितम्बर १९८७ को सोत्साह मनाया जा रहा है जिसमें उच्चकोटि के सन्यासी, विद्वान, भजनोपदेशक एवं संगीतकार तथा क्रान्तिकारी युवा विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है। इस अवसर पर एक हजार आर्यवीरों का विशाल प्रदर्शन, आर्य वीर गोष्ठी तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन होगा।

प्रवेश सूचना

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, खेड़ाखुर्द, दिल्ली, ८२ में १६ जौलाई, १९८७ से प्रवेश प्रारम्भ हो चुका हैं। गुरुकुल दिल्ली प्रशासन से मान्यता एवं सहायता प्राप्त है। यह गुरुकुल प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहां सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्याल वाराणसी की प्रथमा (८ वी) पूर्व मध्यमा (१०वी) उत्तरमध्यमा (१२वीं) शास्त्री (बी० ए०) आचार्य (एम० ए०) पर्यन्त परीक्षायें दिलाई जाती है। संस्कृत के अतिरिक्त व्याकरण, दर्शन साहित्य, अंग्रेजी, विज्ञान एवं अन्य आधुनिक विषयों की शिक्षा की पूरी व्यवस्था है। गुरुकुल का लक्ष्य शिक्षा के साथ-साथ वैदिक संस्कृति का प्रचार प्रसार करना है। यहां योग्य व अनुभवी अध्यापकों की देख रेख में शिक्षा दिलायी जाती है। गुरुकुल की ओर से आवास, बिजली एवं पानी की सुविधायें निःशुल्क हैं। योग्य एवं निर्धन छात्रों की निःशुल्क व्यवस्था है।

प्रवेश हेतु नियमावली एवं आवेदन पत्र ५) रु० शुल्क मय डाक व्यय के भेजकर मगाया जा सकता है।

—श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, खेड़ाखुर्द, दिल्ली-८२

श्री रामभूल शर्मा को महान शोक

सार्वदेशिक सभा के मुख्य अकाउटेंट श्री रामभूल शर्मा के बड़े भाई श्री प० देवदत्त शर्मा आयु ६० वर्ष की ग्राम गिनौरा थाना बुलन्दशहर में कुछ आततायिओं ने उनके पुत्र सहित निर्मम हत्या कर दी। पं० रामभूल जी के इस अत्यन्त शोक जनक समाचार से सभा में शोक छा गया परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति व शोक सतप्त परिवार को इस दारुण दुःख के समय धैर्य व शान्ति प्रदान करें।

—सम्पादक

वैवाहिक विज्ञापन

विवाह योग्य, सुन्दर सुशील, गोरवर्ण, सुशिक्षित, स्वस्थ, गृहकार्य में दक्ष कुलीन राजपूत कन्या की आवश्यकता है, कन्या की लम्बाई ५ फुट या कुछ अधिक होनी चाहिए। लडका सुशिक्षित आर्य परिवार का ग्रेजुएट, सुन्दर स्वस्थ, स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय करने वाला २५ वर्षीय, ५ फुट ८ इंच ऊंचाई, निजी मकान जायदाद वाला गढ़वाली रावत राजपूत वंशज है परिश्रमी, कुलीन एवं सुशील और मृदुभाषी है।

पत्र व्यवहार का पता— —डा० आनन्दराव, आनन्द पोलियो सेन्टर सावित्री संस्थान, १/१३ पंचकुइयां मार्ग आगरा-१०

संस्कृत भाषा राष्ट्र की आत्मा है

डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री एम. ए. पी. एच. डी. अमेठी

यह सर्वमान्य सत्य है कि भारत विश्व का सबसे प्राचीन देश है उसकी सभ्यता संस्कृति जिस भाषा मे है वह संस्कृत भाषा है। फलत संस्कृत भाषा भारत राष्ट्र की आत्मा है। इसे विश्व की बहुसंख्य भाषाओं की जननी होने का सौभाग्य प्राप्त है। इसके सुसमृद्ध वाङमय को मानव की संस्कृति के साथ विश्व के विभिन्न ज्ञान विज्ञान के आदि स्रोत होने का भी गौरव प्राप्त है।

इस भाषा का विशाल वाङमय मानव संस्कृति एव संचित ज्ञानका अक्षय भण्डार है। इसके विविध विषयो पर विश्व के मनीषी निरन्तर शोध कार्यो मे सलग्न रहकर गौरव का अनुभव करते हैं।

संस्कृत भाषा मे आज भी शताधिक पत्र और पत्रिकाए प्रकाशित हो रही है। तथा नित्य नूतन साहित्य की सरचना भी हो रही है। लाखो ही नही अपितु असख्य आबालवृद्ध जन संस्कृत भाषा के अध्ययनाध्यापन मे सलग्न हैं। कम्प्यूटर के प्रयोजनार्थ वैज्ञानिक वर्ग ने संस्कृत भाषा को ही सर्वश्रेष्ठ उपयोगी भाषा स्वीकार किया है। संस्कृत भाषा से ही संस्कृति मानवता, जीवन धारण करने की कलाओ और सम्पूर्ण ज्ञानराशि का सरक्षण सम्भव है। विशेषकर मानवता और संस्कृति की शिक्षा इस युग मे सर्वाधिक आवश्यक है और वह संस्कृत भाषा के सरक्षण से ही सम्भव है। भारत के भी प्रदेशो मे संस्कृत भाषा को ससम्मान स्थान प्राप्त है और इसका कही किसी प्रकार का विरोध भी नही है।

फिर भी अत्यन्त क्लेश एव दुर्भाग्य का विषय है कि सभी विशिष्टताओ की ओर अनदेखी करते हुए भारतीय सविधान की ८वी अनुसूची के ३५१वें अनुच्छेद मे निहित भारतीय भाषाओ मे विशिष्ट स्थान प्राप्त संस्कृत भाषा

आर्य समाज दीवान हाल में १२ - क सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती ने कलकत्ता से दिल्ली पदयात्री श्री डा० वीरभद्र एव अनिता मिश्रा का हार्दिक त किया। इस अवसर पर नगर के प्रमुख संस्कृत प्रेमी भी उपस्थित थे उनके स्वागत मे भावभीनी श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत की।

को आज इस नवीन शिक्षा नीति के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के लिए निर्धारित पाठयक्रम से सर्वथा ही निष्कासित कर भावी भारतीय पीढी को संस्कृताध्ययन से पूर्णत वंचित किया जा रहा है। यह विषय ही हमारे मौलिक अधिकार के हनन के साथ एक भयानक राष्ट्रघाती कुचक्र है, जिसका हमारे भारतीय जन मानस एव राष्ट्र की एकता, अखण्ड समृद्धि और चारित्रिक विकास पर विपरीत विनाशकारी प्रभाव पडना अवश्यम्भावी है।

अत आपसे अनुरोध है कि आप ऐसा प्रभावशाली कदम उठावें जिससे नवीन शिक्षा नीति के अन्तर्गत माध्यमिक कक्षाओ के लिए प्रस्तावित राष्ट्रीय पाठयक्रम मे संस्कृत भाषा को अपेक्षित महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो सकें और इसके साथ ही साथ भारत भर मे भारतीयता और संस्कृति को सरक्षण प्रदान किया जा सके। "यह ज्ञापन भारत सरकार को दिया गया।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मातृ देवो भव ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०७७ | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १५३ दूरभाष : २७४७७१

वर्ष २२ अंक ७ | भाद्र कृ० १४ सं० २०३४ रविवार ... १९७७ | वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

श्री कृष्णचन्द्र पन्त रक्षामन्त्री भारत सरकार एवं श्री हरकिशनलाल कपूर उपराज्यपाल की अनावृष्टि यज्ञ में पूर्णाहुति

आर्यसमाज दीवान हाल में अनावृष्टि यज्ञ सम्पन्न

दिल्ली १६ अगस्त। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर नगर के प्राचीनतम व विशाल मन्दिर दीवानहाल मे श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पर्व के उपलक्ष मे आयोजित सभा मे रक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने भारतीय प्रजा को कृष्ण जन्माष्टमी की बधाई देते हुए कहा कि ससार मे भारत ही ऐसा देश है जिसके निवासी अपने ५ हजार वर्ष पुराने इतिहास से प्रेरणा लेने के लिए इतने जीवित जागृत रूप में देश के महान् नायक का जन्म दिवस मनाते है। श्री कृष्ण हमारे लिए ज्योतिपुंज हैं।

आर्यसमाज की ओर से विशाल यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। यज्ञ का आयोजन देश मे घोर अनावृष्टि निवारण व शान्ति स्थापना के निमित्त था। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री प० महेन्द्रकुमार शास्त्री आचार्य यशपाल सुधांशु के साथ गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियो द्वारा सस्वर वेदपाठ सहित

(शेष पृष्ठ २ पर)



श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आर्यसमाज दीवान हाल मे श्री कृष्णचन्द्र पन्त (रक्षामन्त्री) भाषण दे रहे हैं। चित्र में श्री सूर्यदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री सोमनाथ जी मरवाह कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प० शिवकुमार शास्त्री, श्रीमती इलापन्त धर्मपत्नी के० सी० पन्त आदि दिखाई दे रहे हैं।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

अनावृष्टि यज्ञ की पूर्णाहुति

(पृष्ठ १ का शेष)

आहुतियां दी गईं। यह यज्ञ ३ अगस्त से प्रारम्भ हुआ और कृष्ण जन्माष्टमी के दिन पूर्णाहुति हुई पूर्णाहुति के अवसर पर भारत सरकार के रक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द पन्त सपरिवार मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। दिल्ली के उपराज्यपाल श्री हरकिशन लाल कपूर ने भी पूर्णाहुति में श्रद्धापूर्वक आहुतियां दी।

आयसमाज दीवानहाल मे ३ अगस्त से चल रहे यजुर्वेद पारायण यज्ञ के बाद योगीराज श्री कृष्ण जन्मोत्सव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दिल्ली के उपराज्यपाल हरकिशनलाल कपूर ने देशभर मे सूखे की ओर ध्यान दिलाते हुए देशवासियो से अपील की कि वे सादगी से जीवन बनाए।



श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आर्यसमाज दीवानहाल मे उपराज्यपाल श्री हरकिशनलाल कपूर भाषण देते हुए।

श्री आर० परमेश्वर का निधन



आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी के सरक्षक [illegible] श्री [illegible] परमेश्वर का स्वर्गवास हो गया। इस विदारक घटना से हृदय द्रवित हो उठता है। आपने जीवन भर धर्म के कार्यों में बड़ी उत्सुकता धैर्य एवं शांति से हाथ बढाया जिसका वर्णन करना कठिन है। आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी इस असामयिक देहावसान पर भगवान से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। तथा उनके परिवार को यह क्षमता प्रदान करे कि सभी इस घटना को सहन कर सकें।

स्वर्गीय परमेश्वर का जन्म २६ मई १९०१ को नकाईकोगा रेवा मे हुआ था। उनकी मृत्यु ८६ वर्ष की आयु में सुवा मे हो गई। उनके सबसे बड़े भाई वुनीमोनो नौसोरी के स्वर्गीय राम बिसेश्वर चौधरी थे।

अपने जीवन काल के लम्बे समय मे स्वर्गीय परमेश्वर ने आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी को एक प्रमुख कार्यकर्ता के रूप मे हमेशा योगदान दिया। सबसे अधिक सेवायें उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र मे प्रदान की।

वे आर्य समाज के मन्त्री लगभग ३० वर्षों तक रहे। बाद मे जब आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई तब वे सहायक मन्त्री उप प्रधान और पांच वर्षों तक प्रधान रहे।

१९८७ मे उन्हें एम बी ई की उपाधि दी गई और ६ साल बाद उन्हें जे पी नियुक्त किया गया था।

स्वर्गीय परमेश्वर की लम्बी सेवाओं के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा ने उन्हें आर्य रत्न की पदवी प्रदान की थी।

जितेन्द्र शर्मा घर लौटो!



आर्य प्रादेशिक सभा हरियाणा के महोपदेशक प० जगदीश चन्द्र वसु के सुपुत्र प्रिय जितेन्द्र आर्य १० वीं कक्षा मे अनुत्तीर्ण होने के कारण २४ जुलाई ८७ से ही लापता हो गए हैं। किन्हीं महानुभाव को मिले तो उन्हें समझाकर घर वापिस भेजें अथवा उनका पता हमे भेजें।

—गणेशदास आर्य
मन्त्री
डी ए वी महिला कालेज
करनाल

वेद रहस्य

वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का उपहार ग्रन्थ 'वेद रहस्य'। जो ४१६ पृष्ठ का प्लास्टिक कवर वाला है डाक महसूल मे प्रति वृद्धि होने के उपरान्त भी एक प्रति १७) रुपए की, वी०पी० द्वारा और एक से अधिक प्रतियो के मंगाने पर २० प्रतिशत की छूट धन व स्वकीय डाक व्यय अथवा रेल भाड़ा के साथ भेजा जाना सुनिश्चित किया गया है। वेद प्रेमी सज्जन स्वाध्यायार्थ वेद प्रचारार्थ वितरण हेतु आर्डर भेज अवसर का लाभ उठायें।

—[illegible] गांधी नगर आगरा ३

सम्पादकीय

वेद प्रचार सप्ताह पर आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव मात्र के विचारो मे क्रान्ति लाने के लिए आर्यसमाज को एक सक्षम माध्यम बनाया। यों तो महर्षि ने अपने कहे अनुसार उनके क्रान्तिकारी विचार ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्तके विचार ही है। जिनका मूल आधार तो वेद ही है। आर्यजाति अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करे और मानव मात्र को जीवन की दिशा दे सके, यह ऋषि की तीव्र अभिलाषा थी। गत सौ वर्षोंके इतिहास में आर्यसमाज ने मानवसमाज के हितके लिए चतुर्मुखी विकास योजनायें बनायी, उन्हे क्रियान्वित भी किया जिससे बौद्धिक वर्ग तो विशेष रूप से प्रभावित हुआ। सभी को आगे बढ़ने की प्रेरणा भी प्राप्त हुई। मात्र जीवन का चतुर्मुखी विकास कार्यक्रम शिथिल न होजाय, आगे चलता रहे इस दिशा मे विचार करना आज फिर आवश्यक है। इसी विचार से भविष्य मे आर्यसमाज के कार्यक्रमो की रूपरेखा मेरी दृष्टि मे निम्न प्रकार से होनी चाहिए —

१—आर्यसमाज के मन्दिर केवल बाह्यपूजा पद्धति के ही केन्द्र न बनें, अपितु उनमे आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आत्म प्रेरणा, धार्मिक भावना और अन्तर्ज्योति को प्राप्त कर सके, ऐसी व्यवस्था हो।

२—आर्य जाति की पूजा पद्धति में यज्ञ का विशेष स्थान है। वस्तुत: यज्ञ मानव जाति के सर्व कल्याण भाव का आदर्श कर्म है। इसकी प्रत्येक धार्मिक क्रिया, सत्य, श्रद्धा तथा भक्ति के साथ करने ही पर लाभ की आशा की जा सकती है। यदि थोड़ा ध्यान पूर्वक इसे किया जाये तो निश्चय ही धार्मिक भावना की वृद्धि होगी। उचित यही है कि केवल बाह्यकर्म न बना कर जीवन में इसी मूल भावना अर्थात् अनासक्ति-इदनमम की भावना को जीवन मे उतारा जाय।

३—वेदोपदेश मे सुधार-वेद ईश्वर की कल्याणी वाणी है जो मानव तथा मानव समाज के जीवन मे प्रत्येक अवस्था मे विचार देने मे समर्थ है। इसी लिए श्रद्धा पूर्वक यज्ञ कर्म के अनन्तर ऋषि ने इसका होना आवश्यक बताया है। उचित तो है कि स्वाध्याय-शील उपदेशक अपने चिन्तन के आधार पर अनुकूल भाषा मे अर्थात् देश की भाषा का ध्यान रखते हुए वेद प्रवचन करे। वेद का स्वाध्याय करें उसके प्रवचन का भी अभ्यास करें। आर्य जन भी घर से जो यदि यह सुविधा प्राप्त हो सके तो पुस्तक से ही वेद प्रवचन पढा जाय अथवा सुयोग्य विद्वानों के कैसटो का सदुपयोग भी किया जाना लाभकारी हो सकता है। ध्यान रहे कि वेदोपदेश से पूर्व वातावरण को सात्विक बनाने के लिए अच्छे स्तर पर वादिक भी आवश्यक है। सत्सगो मे सगीत के कार्यक्रम की उपेक्षा न की जाये।

४—योग साधना महर्षि दयानन्द ने यो तो बीज रूप मे सन्ध्या के मन्त्रों मे योग करने का सकेत अथवा जाप का भी सकेत दिया है। जिसका परम उद्देश्य जीवन में अनासक्त होकर अन्तर्मुखी होते हुए आत्मा तथा परमात्मा के दर्शन करना है। योग साधना के लिए प्राणायाम अर्थसहित जप का अभ्यास और यथार्थ चिन्तन का अभ्यास आवश्यक है, इसके बिना आर्य बन्धुओ की साधना सफलगामी न होगी।

५ शिक्षण-प्रत्येक आर्यसमाज की धर्म, संस्कृति, सभ्यता और आत्म चिन्तन के विचारों का प्रसार करने के लिए शिक्षा को भी उसी दिशा में आगे बढाना चाहिए। शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा नवयुवक तथा नवयुवतियों को भी आर्य समाज भौतिक और आध्यात्मिक जीवन की दिशा दे सके। शिक्षा एकांगी न हो अर्थात् केवल मात्र अक्षर ज्ञान ही शिक्षा का लक्ष्य न हो अपितु आचरण उसका उद्देश्य हो। आर्यसमाज की सभी शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य हो, जिससे वैदिक धर्म का अन्य धर्मों से तुलनात्मक परिचय प्राप्त हो।

६—नवयुवक तथा नवयुवतियो को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के लिए वैदिक धर्म के विषय मे सम्वाद, भाषण और कविताओ आदि का कार्यक्रम देकर प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ ही शारीरिक विकास के लिए व्यायाम आदि की रुचि का कार्यक्रम भी होना चाहिए। सभी प्रकार से ये नवयुवक अनुशासन प्रिय होते हुए धर्म प्रिय हो। शालीन बने और शिष्टाचारी हो। ऐसा प्रयत्न आर्यसमाजो को करना चाहिए।

७—पिछडे वर्ग मे सेवा प्रत्येक प्रान्त की प्रतिनिधि सभाए अपना कर्तव्य जानें कि उनके प्रात मे कम से कम एक ऐसा 'सेवाश्रम' हो जिसमे जाति के उपेक्षित बच्चों को युवा वर्ग को अथवा प्रौढ वर्ग को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कुटीर उद्योग के माध्यम से सहायता मिले। उनका जीवन स्तर गिरने न पाये अपितु उसमे निरन्तर उन्नति हो, यह सेवा कार्य हिन्दू जाति के धर्मान्तरण पर रोक लगाने पर निश्चय ही सहायक होगा।

८—आर्य समाज के अधिकारियो में आज सबसे बडी कमी यह है कि पुराने लोगो की भाति जन सम्पर्क का कार्यक्रम लुप्त हो गया है, जिसके परिणाम स्वरूप आर्य सदस्यो मे सहानुभूति, स्नेह और हित की भावना नही रही। आवश्यक है कि इस कार्यक्रम को पुन: शुरू किया जाये। कम से कम मास मे एक सप्ताह अथवा कुछ दिन ऐसी भी सुविधा हो, सभी सदस्यो के सुख-दु:ख का पता और सहायता की आवश्यकता को जाना जाय जिससे सभी आर्य सपर्क कार्यक्रम से वृहद् परिवार का रूप ले सकें।

यदि उपरोक्त विचारो को भावी वर्षों मे सक्रिय रूप से अपनाया जाय तो मेरे विचार मे निश्चय ही आर्यसमाजो की उन्नति होगी।

मेरठ के साम्प्रदायिक दंगों की जांच रिपोर्ट

—डा. आनन्द प्रकाश—

मेरठ नगर तथा जिले मे दुर्भाग्यवश सन १९३८ से अब तक अनेक बार भीषण साम्प्रदायिक उपद्रव हो चुके है जिनकी संख्या १२ से १७ तक कही जा सकती है, परन्तु इस बार के दंगे जिनका आरम्भ वस्तुतः १४ अप्रैल शब्बेरात को हुआ और जो १९ मई से लगातार चल रहे हैं, सबसे वीभत्स और विनाशकारी है।

पिछले ३ महीने की अवधि मे अब तक १०० से अधिक व्यक्ति मारे जा चुके है, हजारों लोगो की जीविका समाप्त हो चुकी है और कम से कम एक अरब मूल्य की सम्पत्ति व उद्योग धन्धे नष्ट हो चुके हैं। विद्वेष की आग बढ़ती जा रही है और नित्य नई घटनायें घटित हो रही हैं, जिन पर यदि समय रहते पूर्ण नियन्त्रण न किया गया तो वे आस पास के जिलों को भी अपने प्रभाव में ले सकती है।

इन दंगों को सत्ता और विरोध पक्ष, सभी ने पूर्व नियोजित, प्रशिक्षित दंगाइयों द्वारा आयोजित और विदेशी षडयन्त्र का अंग माना है। कुछ अंश में इसे राज्य के विरुद्ध विद्रोह की शुरुआत और आतंकवाद की उत्तर प्रदेश में प्रविष्ट भी कहा जा सकता है। इन दंगों के कारण पूरा नागरिक जीवन अस्त व्यस्त हो गया है और यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इनकी आयोजना राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिकता सौहार्द भंग करने के साथ ही मेरठ की आर्थिक रीढ़ को तोड़ने का कुचक्र भी है। दंगे की भयंकरता की चपेट मे प्रमुख से वह क्षेत्र आये जहां पर मेरठ के उद्योग धन्धों में हैण्डलूम खादी उद्योग केन्द्रित है।

ज्ञातव्य है कि मेरठ मे लगभग ६० प्रतिशत मजदूर व व्यापारी वस्त्र तथा खेल के सामानो के उद्योग पर आश्रित हैं। इन्ही क्षेत्रो मे यह प्रमुख व्यवसाय केन्द्रित है। बहुत आश्चर्य और खेद की बात यह है कि मेरठ नगर संसद की दृष्टि से श्रीमती मोहसिना किदवई का चुनाव क्षेत्र है जो केन्द्रीय मन्त्री मण्डल की प्रमुख सदस्या और सत्तारूढ़ दल की एक स्तम्भ हैं। ऐसे प्रमुख राजनेता के चुनाव क्षेत्र मे लम्बे समय तक साम्प्रदायिक दंगों का होते रहना बहुत ही अशोभनीय बात है। वैसे श्रीमती किदवई पर स्वयं यह आरोप है कि उन्होने दंगों के प्रारम्भ होने पर समुचित फोर्स इस्तेमाल करने से प्रशासन को रोका अन्यथा जान माल की हानि इतने बड़े पैमाने पर नही होती और परस्पर कटुता तथा अविश्वास की भावना भी इतनी तीव्र नही बनती।

इस बार के दंगों के प्रमुख कारण निम्नलिखित है—

(१) जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी, जनता पार्टी के सांसद सैयद शहाबुद्दीन तथा हाजी मस्तान के दौरे और उनके द्वारा दिये गये उत्तेजनात्मक भाषण। सैयद शहाबुद्दीन ने तो यहा तक घोषित किया कि "सरकार से १ करोड़ सिख तो काबू में नही हो पाये, अगर ८ करोड़ मुसलमान सड़को पर निकल आए तो भारत की फौज और पुलिस उन्हें कैसे रोक पायेगी।" निश्चित रूप से यह राष्ट्रद्रोह की धमकी थी और इसका स्पष्ट उद्देश्य गृहयुद्ध की भूमिका तैयार करना है।

(२) १४ अप्रैल को शब्बेरात के दिन जो दंगा हुआ था उसमें एक मुसलमान और एक हिन्दू मरा। प्रशासन की ओर से कहा तो यह गया कि मुसलमानों के ही दो गुटों में आतिशबाजी के मुकाबले को लेकर आपसी झगड़ा हुआ, परन्तु उसमें एक हिन्दू का भी मारा जाना और नगर के अन्य स्थानों पर भी उसी समय छुरेबाजी, लूटमार तथा आगजनी की घटनायें होना, यही सिद्ध करता है कि यह मात्र मुसलमानों का आपसी विवाद नहीं था। उन दिनों नौचन्दी का प्रसिद्ध मेला भी चल रहा था। गनीमत यही हुई कि प्रशासन ने झगड़े की खबर वहा पर नही फैलने दी और मेले को आदेशात्मक घोषणा कर दो दिनों मे ही समाप्त करा दिया अन्यथा जान-माल की अकल्पनीय क्षति होती। इस घटना के बाद पी० ए० सी० और सशस्त्र पुलिस कुछ दिनों रही, परन्तु बाद में उसे हटा लिया गया। पी० ए० सी० को हटाने का कारण उसका प्रशिक्षण बताया गया। इस प्रकार समय से पूर्व पशस्त्रों बलों को हटाया जाना एक बहुत भयंकर प्रशासनिक गलती थी।

(३) इन दंगों के पीछे पाकिस्तानी एजेण्टों की सक्रिय भूमिका भी स्पष्ट हो चुकी है। मेरठ में अवैध रूप से रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों की संख्या २०० से २००० तक बताई जाती है। मुसलमानों के घरों से जो तलाशी ली गयी उसमें पाकिस्तानी हथियार और पाकिस्तान में छपा साहित्य भी मिला। इन हथियारों मे टेलिस्कोप से लैस राइफलें शामिल हैं। पाकिस्तान की यात्रा पर जाने वाले लोग अपनी विदेशी मुद्रा वहां पर जमा कर देते हैं। जिसका दुरुपयोग भारत में हथियारों की तस्करी मे किया जाता है। इस षडयन्त्र के पीछे बड़े दिमाग काम कर रहे हैं। मेरठ में हथियारों का जखीरा इकट्ठा होने का यह भी एक रास्ता है। इस बात की भी चर्चा है कि मेरठ में जो लोग १६ मई की कांग्रेस की रैली में भाग लेने दिल्ली गये उनमें से कुछ मुसलमानों ने इस अवसर का लाभ इस रूप में उठाया कि वे बसों मे अपने साथ वापसी में हथियार लाए और कई बाहरी लोगो को भी लेते आये। इस सारे घटनाक्रम में पाकिस्तान की सक्रिय भूमिका रही। पाकिस्तानी दूतावास के अधिकारियो के अचानक दौरे, मुस्लिम देशों में उसके द्वारा धारावत पूर्ण प्रचार और पाकिस्तानी रेडियो द्वारा भड़काने वाले प्रसारण सभी कुछ बहुत सूझ-बूझ के साथ किया जा रहा है। दंगाइयो द्वारा खुलेआम पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाते रहना, इसी मत की पुष्टि करता है।

(४) मलियाना की घटना को बहुत तूल देकर अतिरंजित प्रचार ने इन दंगों के क्षेत्र को बढ़ाने मे आग में घी का कार्य किया। यह बहुत शर्म की बात है कि यह कार्य कुछ संसद सदस्यो ने किया। इस देश मे कुछ मुस्लिम परस्त राजनेता और पत्रकार सांप्रदायिक नजले के शिकार है। उन्होने इस घटना का अन्तर्राष्ट्रीयकरण कर दिया ताकि शरारती तत्वों को बाहरी शक्तियों का सहारा मिल सके और वे अपने कुकृत्यों को इस घटना की आड़ में छिपा सकें। यह सत्य है कि मलियाना में पी० ए० सी० ने गोली चलाई और उसमे कुछ मुसलमान मारे गये, पर यह कार्यवाही उन्हे आत्मरक्षा मे करनीपड़ी। यदि गोली नही चलाईजाती तो अवैध हथियारों की बरामदी हेतु की गई उस सशस्त्र पुलिस की टुकड़ी और अनेक निरीह नागरिकों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता। यहा पर कलकत्ता से प्रकाशित "दी टेलीग्राफ" समाचार पत्र का उदाहरण दे देना उपयुक्त होगा। इसके सम्पादक श्री एस० के० अकबर ने २९ जून के अंक मे अपने सम्पादकीय मे लिखा कि "मलियाना मे १११ मुसलमानो का कही पता नही है। उर्दू पत्रों ने इस संख्या को बढ़ाते बढ़ाते २००० तक पहुंचा दिया। इस प्रकार कई तथाकथित धर्म निरपेक्ष (पर वास्तव में घोर रूप से मुस्लिम परस्त) राजनेताओं एवं पत्रकारों ने इस आग को फैलाने मे काफी मदद की।

(५) दिल्ली के समीप होने के कारण मेरठ की भौगोलिक स्थिति का लाभ साम्प्रदायिक तत्व उठाते रहे है, क्योंकि यहा की घटनाओं को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस के माध्यम से प्रचार का लाभ मिलता है, मुस्लिम राष्ट्रों के दूतावासों से प्रचुर सहायता मिलती है, मुस्लिम तुष्टीकरण के हिमायती नेताओं से सम्पर्क रखा जा सकता है और भारत सरकार की छवि को धूमिल किया जा सकता है। पंजाब तो बर्बाद हो ही रहा है, अब राजधानी और उसके समीपवर्ती जिले मेरठ मे बराबर अशांति रखना तथा इसी प्रकार पूरे उत्तर प्रदेश की शांति भंग करना, इसका व्यापक उद्देश्य है।

(६) विदेशों से आने वाला धन मुसलमानो की मानसिकता को बिगाड़ रहा है। इस धन का उपयोग नई नई मस्जिदें, मजारें और मकबरे बनाने और पुरानों की मरम्मत कर उन्हें आलीशान रूप देने में हो रहा है। इस प्रकार की मजारें और मकबरे प्रायः सार्वजनिक स्थानों पर, सड़कों के मध्य, पुलों के पास, तीर्थ स्थानों में, रेलवे स्टेशनों पर और रेलवे लाइनों के किनारे तथा ऐसे सार्वजनिक महत्व के स्थानो पर होते हैं, जिनसे नागरिक जनजीवन में बाधा उत्पन्न होती हैं और झगड़े का अन्देशा बना रहता है। आजकल आधुनिक आवास कालोनियां बन रही हैं, उनमें भी बल पूर्वक कब्र और मजार बनाने और अनधिकृत निर्माण की घटनायें बड़े पैमाने पर हो रही हैं। सरकारी नीति भी भेदभाव बरतने की है और अल्पसंख्यक विशेष आयोग तथा अल्पसंख्यक कमीशन आदि बनाकर हिन्दुओं के मन में आशंका और आक्रोश को जन्म दिया है। इस भेदभावपूर्ण नीति से मुसलमानों का दुस्साहस बढ़ गया है।

(क्रमशः)

यज्ञों में एक रूपता आवश्यक है

[डा० काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)]

आर्य समाज के यज्ञों में भिन्नता सर्वत्र पायी जाती है। यहां तक कि यदि एक नगर में कई आर्य समाजें हैं तो उनकी भी यज्ञ पद्धति में भिन्नता है। किन्ही भी दो आर्य समाजों की यज्ञ पद्धति एक समान नही है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो कुछ न कुछ भिन्नता सब मे मिलेगी।

(१) यज्ञादि के मन्त्रों में ओ३म् का प्रयोग

यज्ञ के मन्त्रो के प्रारम्भ मे कहां पर ओ३म् का प्रयोग करना और कहा पर न करना यह विद्वानों में विवाद का विषय है। अतएव सर्वप्रथम हमे ओ३म् के प्रयोग पर ही विचार करना है। इस विषय में अधिकांश विद्वानों ने निम्न लिखित मत प्रकट किये हैं —

[१] जहा जैसा है वहा वैसा रखना चाहिये अर्थात् महर्षि दयानन्द ने जहा पर ओ३म् लगाया है वहा पर लगाना चाहिये। जहा पर नही लगाया है वहा पर नही लगाना चाहिये। उदाहरणार्थ-ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना और स्वस्तिवाचन एव शातिकरण के मन्त्रो के बोलने से पूर्व केवल प्रथम मन्त्र के प्रारम्भ मे ओ३म लगाना। शेष मन्त्रो के प्रारम्भ मे ओ३म लगाकर मन्त्रो का उच्चारण न करें। इसी प्रकार ब्रह्म यज्ञ (सन्ध्या) में करना चाहिये। जैसे अघमर्षण मन्त्र तीन है। तीनो मन्त्रो के साथ ओ३म लगाने की आवश्यकता नही है अपितु केवल प्रथम मन्त्र के प्रारम्भ मे ओ३म् लगाकर मन्त्रोच्चारण करें। मनसा परिक्रमा तथा उपस्थान मन्त्रो के भी प्रथम मन्त्र के आदि मे ओ३म् लगाकर उच्चारण कर।

[२] यदि वेद पारायण करने वाला किसी कारण से बीच मे रुक जाय, या अन्य कर्म करने लगे और कुछ मन्त्र से भिन्न बोलने लगे तो पुन मन्त्र का पाठ आरम्भ करने से पूर्व ओ३म का उच्चारण अवश्य करे।

[३] मन्त्र पाठ के बाद मे अपने मन्त्र से भिन्न अथवा इद न मम या अन्य कुछ वाक्य भी बोला हो तो पुन मन्त्रोच्चारण से पूर्व ओ३म् का उच्चारण अवश्य करे। क्योंकि मन्त्र से भिन्न जो कुछ भी बोला जाता है उससे मन्त्र पाठ का क्रम भग हो जाता है।

सम्भवत ये निष्कर्ष आर्य विद्वानों ने महर्षि की सस्कार विधि के आधार पर निकाले हैं। किन्तु खेद का विषय है कि आय विद्वानो के ये निष्कर्ष सस्कार विधि से मेल नहीं खाते। उदाहरणाथ —

(१) सस्कार विधि के प्रकरणो मे स्वस्तिवाचन और शातिकरण के प्रथम मन्त्र के भी प्रारम्भ मे ओ३म् नही लगा। सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित 'यज्ञ पद्धति- प्रकाश' में भी इन मन्त्रो के प्रथम मन्त्र के आदि मे ओ३म् नही लगा। (देखिये 'यज्ञ पद्धति प्रकाश द्वि० सस्करण पृष्ठ ९ व १४)

(२) गर्भाधान सस्कार मे भात की ६ आहुति देने के पश्चात् जिन ९ मन्त्रों से आज्याहुति देनी हैं उनमे से प्रथम मन्त्र ओ३म् विष्णुर्योनि० ।' के प्रारम्भ में ओ३म् लगा है, किन्तु शेष ८ मन्त्रो के प्रारम्भ मे ओ३म् नही लगा जब कि प्रत्येक मन्त्र के अन्त म स्वाहा है। अतएव विद्वानों के पूर्वोक्त निष्कर्षानुसार प्रत्येक मन्त्र का उच्चारण ओ३म के साथ होना चाहिये। इसी प्रकार सीमन्तोन्नयन सस्कार के अनेक मन्त्रो के आदि मे ओ३म् नहीं है जब कि उन मन्त्रो के साथ स्वाहा बोलकर आहुति दी जाती है। अन्त्येष्टि सस्कार के भी जिन १२१ प्रमुख मन्त्रो के साथ स्वाहा बोलकर आहुतिया दी जानी चाहियें उनमे भी ओ३म् नही लगा।

(३) सस्कार विधि मे ब्रह्म यज्ञ (सन्ध्या) के उपस्थान मन्त्रो के प्रथम मन्त्र के भी आदि में ओ३म् नही लगा तथा सस्कार विधि एव पचमहा यज्ञ विधि में लिखित उपस्थान मन्त्रों की सख्या तथा क्रम मे भी भेद है।

उपरोक्त सभी विसगतियों के परिपेक्ष्य में हमारे विचार से प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ में ओ३म का उच्चारण करने मे कोई सैद्धान्तिक हानि नही प्रतीत होती क्योकि प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण की समाप्ति पर कुछ न कुछ विराम या रुकावट हो ही जाती है। भलेही ऋषि दयानन्द की सस्कार विधि मे अनेक यज्ञ मन्त्रों के अन्त में स्वाहा लगा होने पर भी मन्त्र के प्रारम्भ मे ओ३म न लगा हो, परन्तु ऋषि का मन्तव्य यही ज्ञात होता है कि प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ मे ओ३म बोला जाय। मन्त्रों के पाठ के तारतम्य या प्रवाह मे प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ मे ओ३म् का उच्चारण सुविधाजनक भी है।

सन्ध्या और यज्ञ विधि की अन्य विसगतियो पर हम क्रमश अन्य लेखो मे सक्षिप्त प्रकाश डालेंगे।

उपसंहार

हमारा उद्देश्य ऋषि दयानन्द की सन्ध्या और यज्ञादि की पद्धतियों से विसगतिया ढू ढ निकालना नही है। हमारे विचारों मे सहमति भी आवश्यक नही है जो हमने सुझाव के रूप मे ऊपर दिये हैं। हम केवल यह चाहते हैं कि एक बार सार्वदेशिक सभा के विद्वान, परोपकारिणी सभा के विद्वान और उन सस्थानो के आय विद्वान (जो ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो की हस्तलिखित प्रति से मिलान करके सन्ध्या और यज्ञ की पद्धति प्रकाशित करने का दावा करते हैं) परस्पर मे विचार विमर्श करके सन्ध्या और यज्ञ पद्धति पर पुन निणय लें और एक ऐसी पद्धति पुस्तक तैयार करें जो सब मान्य हो। साथ ही उसमे ऐसे सरल और स्पष्ट निर्देश हो कि जिससे उस पद्धति के अनुसार सन्ध्या और यज्ञादि के करने मे कही भी कोई विसगति न हो सके अपितु सर्वत्र एक रूपता रह जैसी की ईसाईयो और मुसलमानो की प्राथना या नमाज मे सारे ससार मे एक रूपता है। यदि सभी सम्बन्धित आर्य विद्वानों का एक स्थल पर एकत्रित होना और सर्वसम्मति से कोई निर्णय लेना सम्भव न हो तो सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ही पुन एक पद्धति सरल व स्पष्ट निर्देशो सहित प्रकाशित करे। तदन्तर अन्यत्र जहा कही भी सन्ध्या और यज्ञ पद्धति प्रकाशित हो उसी के अनुसार हो।

बिहार का हिंदी प्रचारक जो तमिलनाडु में शहीद हुआ था!

· टी. एस. राजु शर्मा—

गांधी जी की प्रार्थना से अनेक युवक दक्षिण में हिन्दी प्रचार करने के लिए अग्रसर हुए थे। ऐसे ही चार युवक बिहार से प्रयाग आये थे, वे वहां साहित्य सम्मेलन के प्रधान से मिले। उन दिनों साहित्य सम्मेलन के कर्ता-धर्ता पुरुषोत्तमदास टंडन थे, जब दक्षिण में हिन्दी-प्रचार का प्रस्ताव साहित्य सम्मेलन के इंदौर अधिवेशन में स्वीकृत हो गया तो महात्मा जी ने पुरुषोत्तमदास जी के कन्धों पर दक्षिण के हिन्दी प्रचार का बोझ रख दिया और उत्तर के युवकों से प्रार्थना की कि वे इस पवित्र कार्य में टंडन जी को सहयोग दें।

बिहार व उत्तर प्रदेश के कई युवक प्रयाग आये और उन्होने मद्रास जा कर हिन्दी-प्रचार करने की अभिलाषा व्यक्त की, इन युवकों में एक दुबला-पतला युवक भी था, वह कृशकाय अवश्य था, परन्तु उसका सकल्प दृढ़ था, वह राजनीति से दूर रह कर हिन्दी-प्रचार द्वारा सारे भारत में एकता स्थापित करने की प्रतिज्ञा कर चुका था। बिहार की खादी की मोटी धोती और खादी का बेतुकी सिलाई का झब्बा पहने था, न पैरों में जूता था और न आराम की कोई वस्तु साथ लिये था।

टंडन जी को वह युवक बेहद पसन्द आया, उन्होंने उसे तमिलनाडु में हिन्दी-प्रचार सम्बन्धी कठिनाइयां समझायी। उन्होंने कहा, "देवदास गांधी और स्वामी सत्यदेव वहां प्रचार का कार्य आरम्भ कर चुके हैं, तमिल भाषा उत्तर की भाषाओं से भिन्न है, अत: वहां अक्षर सिखाना व व्याकरण सिखाना कठिन कार्य है। स्वामीजी ने इस ओर ठोस कदम उठाये थे, उन्होने दक्षिण के वातावरण के अनुकूल दो-तीन प्रारंभिक पुस्तकें भी लिखी है। हां साहित्य सम्मेलन के पास इतनी राशि नहीं कि तुम्हें संतोषजनक वेतन दे सके, फिर भी थोड़ी सहायता जरूर मिला करेगी, संभव है वह भी समय पर न मिल सके। यदि तुम इन व्यावहारिक कठिनाइयों से भिज्ञ हो जाओगे तो बड़ा अच्छा होगा, तुम समर्पित प्रचारक बन कर दक्षिण में प्रचार के लिए जा सकते हो।"

युवक ने शर्त मान ली, वह मितभाषी था, संयमी था। सेवा के लिए वह शरीर को एक साधन ही बनाना चाहता था। वह मित-भोजन, निःस्वार्थ जीवन व मौन सेवा के लिए तैयार हो गया। दक्षिण में हिन्दी-प्रचार के लिए टंडन जी का मौखिक आदेश पा कर मद्रास चल पड़ा, दक्षिण में मुख्यतया तमिलनाडु में उसका प्रचार-केन्द्र बना।

वह बिहार से तमिलनाडु में आया था हिन्दी-प्रचार करने के लिए, आदर्श सेवक बनने के लिए, सेवा करते-करते शहीद होने के लिए, तीन ही वर्षों के अन्दर उसकी मनोकामना पूरी हुई, उसने हिन्दी-प्रचार करते-करते तीन वर्षों के अन्दर ऐसे अनेक तमिल युवकों को तैयार कर दिया, जो उसके हिन्दी भाषण का अनुवाद तमिल में कर सकें।

वह युवक था प्रताप नारायण वाजपेय। वह कोई बीस वर्ष का था। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर चुका था। उन दिनों की परम्परा के अनुसार उसका बाल-विवाह भी हो चुका था।

पत्नी की मृत्यु का वह तार

एक दिन की घटना है, वह तमिलनाडु के तिरुच्चिनापल्लि नगर में हिन्दी की कक्षा चला रहा था, उसके सामने दस विद्यार्थी बैठे प्रताप नारायण के हाथों में पुस्तकें और खड़िया थी, वह तख्ते पर लिखकर व्याकरण समझा रहा था कि तभी उसके नाम एक तार आ पहुंचा, उसने कोई हड़बड़ी नही दिखायी शान्तिपूर्वक पढ़ाता रहा, कक्षा के समाप्त होने पर उसके एक शिष्य वकील ने तार को खोलकर पढा। तार में लिखा था कि प्रताप नारायण की पत्नी का स्वर्गवास हो गया है, शीघ्र आये।

वकील शिष्य का नाम हालास्यम था, वह बड़ा ही परेशान दिख रहा था। उसने कहा कि आप आज की गाडी से ही प्रस्थान करें, हम व्यय की राशि की व्यवस्था कर देंगे।

हिन्दी-प्रचारक नारायण ने अपने शिष्य हालास्यम से पूछा "जब मैं बिहार पहुंचूंगा तो क्या उसका शव रखा मिलेगा? उसकी अर्थी के साथ मैं 'राम नाम सत्य' कहते हुए चल पाऊंगा? क्या उसके मुख के अन्तिम दर्शन कर सकूंगा?"

शिष्यगण मौन धारण किये बैठे रहे, प्रताप नारायण ने आगे कहा, "जब वहां जाने से उसके दर्शन तक करना सम्भव नही तब वहां जाने का मतलब ही क्या रह जायेगा? वहां पहुंचने पर बन्धु-बांधवों के सहानुभूति के दो-चार शब्द सुन पाऊंगा। यहां भी वह मिल ही रहा है, अत मेरा वहां जाना और यही रह जाना, दोनों बराबर ही हैं, मेरा प्रस्थान धन का अपव्यय ही होगा।"

प्रताप नारायण बिहार न गया, अपनी इस कड़ी नीति के कारण वह तमिलनाडु में अपने हिन्दी विद्यार्थियों को महीनों रुलाता रहा, वह वकील शिष्य हालास्यम व उसका मित्र नारायणन तो अपने गुरु के इस त्याग भाव से गुरु के आत्मीय ही बन गये।

अब प्रताप नारायण तमिल युवकों के लिए सरल व्याकरण लिखने में लग गया। उसका लिखा हिन्दी का हीर व्याकरण दक्षिण में बीस वर्षों तक पढ़ाया जाता रहा, आज भी हिन्दी के पुराने प्रचारकों की राय है कि हम हिन्दी का हीर द्वारा जिस सरलता से हिन्दी पढ़ा पाते हैं, वैसे आज के व्याकरण ग्रन्थों द्वारा नहीं।

अनुशासन में बन्धा जीवन

प्रताप नारायण वाजपेय तिरुच्चिनापल्लि में तीन वर्ष तक हिन्दी का प्रचार करते रहे, उनकी सेवा की प्रशंसा करते हुए उनके शिष्यों में प्रमुख माने जाने वाले नारायण अयंगार ने लिखा है कि "वे कब खाते थे और कब स्नान करते थे, इसका पता किसी को न था, प्रात:काल पांच बजे किसी के घर में होने वाली कक्षा में जाना होता, वे पांच बजे के पहले ही पहुंच जाते थे, कभी-कभी वे ही अपने शिष्यों को जगाते भी थे।

"दिन में जब उनको फुरसत मिलती थी—सुक्खा रोटी (सूखी

रोटी) सेंक लेते थे, कभी-कभी दो दिन तक के लिए भी रोटी तैयार रख लेते थे, गुड़ और हरी मिर्च के साथ खा लेते थे।

"वे सारी नगरी में पैदल ही घूमते थे, व्यापारी वर्ग को, मंडी के व्यापारियो को दिन के तीन बजे अवकाश मिलता था, प्रताप नारायण ठीक तीन बजे मंडी मे पहुच जाते थे दो-चार व्यापारियो को जमा करके पढाने लगते थे। कालेज के छात्रो को और अध्यापको को, अनुकूल समय निकाल कर पढाने में वे कुशल थे। मोटी धोती और झब्बा पहने जब वे हमारे सामने आकर खड़े हो जाते थे, हमे हठात उठकर खडे होना पडता था, उनकी प्रतिभा ऐसी थी कि कही पढाने गये तो बिना पढाये लौटते ही न थे। इस नवयुवक के आगे, जिसकी उम्र शायद पचीस से भी कम थी, देश के बड़े-बड़े नेता सहम जाते थे कांग्रेस के बडे बडे नेता तिरुच्चि नगर मे आकर उनसे मिले बिना और तात्कालिक गतिविधि पर उनकी राय जाने बिना लौटते न थे।

"यह समर्पित हिन्दी प्रचारक यक्ष्मा का रोगी था, परन्तु वह इनकी परवाह नही करता था और कठिन परिश्रम करता था, दिन भर भिन्न-भिन्न जगहो पर जाकर दस कक्षाए दस घण्टो तक पढाता था, किसी के घर मे भोजन करते नही दीखता था, वह स्वयं अपने हाथ की बनायी रोटी ही खाता था।"

१९२२ की बात है, तिरुच्चि नगर के गाधी मैदान मे एक विराट सभा हुई थी। उसमे स्वय वाजपेय जी ने भी भाषण दिया था। उनके हिन्दी भाषण का अनुवाद उनके शिष्य एडवोकेट हालास्यम ने किया था। पुलिस ने अनुवाद को तमिल मे नोट किया और दूसरे दिन हालास्यम को गिरफ्तार कर लिया।

जब अदालत मे मुकदमा चल रहा था, हालास्यम को दण्ड सुनाया जाने वाला था, प्रताप नारायण वाजपेय अचानक अदालत मे न्यायाधीश के सामने हाजिर हुए और कहा, 'भाषण मेरा था, भाव मेरा था, अनुवादक हालास्यम ने केवल मेरी भाषा का अनुवाद ही किया। यदि कानून उनको अपराधी माने तो मैं भी अपराधी हू, अत मुझ पर भी मुकदमा चलाया जाये और दोनों को एक साथ ही दण्ड दिया जावे।"

जेल की कोठरी और बिगड़ता रोग

हालास्यम के सुपुत्र एच० सुब्रह्मण्यम ने, जो स्वय एक एडवोकेट हैं, एक भेंट मे इस लेखक से कहा, 'मेरे पिता पर पुलिस रुष्ट थी, अत बहाना ढूढ रही थी किसी तरह उनको जेल भेज देना चाहिए, अत अनुवादक के नाते मैं कैद किये गये। परन्तु वाजपेय का तर्क अकाट्य था, मेरे पिता के साथ उनको भी सजा सुनायी गयी। दोनो को न्यायाधीश ने दो वर्ष की सजादी। दोनो ही तिरुच्चि की जिला जेल मे बन्द कर दिये गये।"

एच०सुब्रह्मण्यम ने आगे बताया, "छह महीनो में ही वे यक्ष्मा के रोगी बने, जेल के अधिकारियो ने उनकी चिकित्सा की अच्छी व्यवस्था नहीकी। रोग चन्द हफ्नो के अन्दर जब काबू से बाहरहो गया तो वे मुक्त कर दिये गये, जेल से छूटने के दस दिनो के अन्दर हमारे घर में ही उनका स्वर्गवास हो गया।

प्रताप नारायण वाजपेय के बलिदान से सारा तमिलनाडु जाग उठा, तिरुच्चि मे उनकी शव-यात्रामे दस हजार से अधिक की भीड उमड पडी, उनके दसो शिष्य उनके पुत्र बने अपने हाथो मे जलती मशाले लेकर चिता पर डालते रहे।

यक्ष्मा के रोग से ग्रस्त वाजपेय की चिकित्सा की व्यवस्था न करने और पहले ही मुक्त न करने के विरोध मे तमिलनाडु भर मे सभाए हुई और सरकार की आलोचना की गयी। तिरुच्चि नगर इस समर्पित प्रचारक के त्याग से हिन्दी सीखने मे उत्सुकता दिखाने लगा। विद्यार्थियो की सख्या बढी और बिहार के हिन्दी प्रचारक अवधनन्दन स्थानीय प्रचारक बना कर भेजे गये।

वाजपेय का जिक्र आते ही अवधनन्दन गद्गद हो जाते थे। उन्होने तत्काल एक हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना की, जिसका नाम प्रताप नारायण वाजपेय पुस्तकालय रखा। यह पुस्तकालय आज भी चलाया जाता है और इसमें बीस हजार पुस्तके है। ●

प्रेरक प्रसंग

सच्चा-दान

फर्रुखाबाद मे एक दिन दान धर्म पर व्याख्यान देते हुए स्वामी दयानन्द बोले-"अन्न जल का दान कोई भूखा प्यासा मिले, उसे दे देना चाहिए। ऐसा दान पहले अपने दीन दुखी पडोसी को देना चाहिए। पास के रहने वालो का दारिद्रय दूर करने मे सच्ची अनुकम्पा और उदारता का प्रकाश होता है। इससे वाह वाही नही मिलती, इसलिए अभिमान को भी अवकाश नही मिलता।"

'समीपस्थ दुखी को देखकर और पीडित का अवलोकन करके ही दया, अनुकम्पा और सहानुभूति आदि हार्दिक भाव प्रकट होते हैं। समीपवर्ती दीन-दुखिया जन पर तो दयादि भाव को नही दिखलाता, किन्तु दूरस्थ मनुष्यो के प्रति उनका प्रकाश करता है, उसे दयावान्, अनुकम्पाकर्ता और सहानुभूति प्रकाशक नही कह सकते। ऐसे मनुष्य का दान बाहर का दिखावा और ऊपर का आडम्बर है। दानादि प्रवृत्तियो का विकास दीपक की ज्योति की भांति, समीप से दूर फैलना उचित है।"

—श्री सत्यानन्द आर्य

संस्कृत की रक्षा का अचूक उपाय

—धर्मवीर शास्त्री, एम. ए. साहित्याचार्य

सस्कृत का भारतीय भाषाओं में क्या, विश्व भाषाओं में महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व की भाषाओं को भाषा वैज्ञानिकों ने पारिवारिक ढग से विभाजित किया है, उसमें जितने भी भाषा परिवार हैं उनमें सबसे बड़ा एव व्यापक आर्यभाषा परिवार है। इस आर्यभाषा परिवार में भी ग्रीक लैटिन तथा सस्कृत इन तीन प्रारम्भिक भाषाओं मे मात्र सस्कृत ही जीवित है जिसमें आज भी पत्र-पत्रिकाए प्रकाशित होती हैं तथा जिसका न्यूनाधिक पठन-पाठन अभी तक प्रचलित है।

भारतीय भाषाओ मे आर्यमूल की भाषाओं का तो सस्कृत प्राण तत्व है। छन्द, अलकार, व्याकरण, शब्दकोष सभी कुछ तो इन भाषाओ ने सस्कृत से अधिगृहीत किया हुआ है ही दक्षिण भारतीय भाषाए जो भाषा वैज्ञानिको की दृष्टि मे सस्कृत मूल की नही हैं, अपने शब्दकोष का बहुत बड़ा प्रतिशत सस्कृत से लिए हुए हैं। इन भाषाओ की साहित्यिक अभिव्यक्ति के पीछे रामायण और महाभारत का जो योगदान है, उसे देखते हुए लगता ही नही कि वे सस्कृत से मौलिक रूप से पृथक हैं।

भारत से बाहर भी श्रीलका, इण्डोनेशिया आदि देशो की सज्ञाए एव प्रशासनिक शब्दावली देखें तो सस्कृत का सीधा प्रभाव स्पष्टतया परिलक्षित होता है। श्रीलका के भण्डार नायके, जयवर्द्धने और इण्डोनेशिया के सुकार्णो (सुकर्ण) सुहार्तो (सुहृत्) आदि नामो मे सस्कृत का प्रभाव नही तो और क्या है ?

इस प्रकार सस्कृत का प्रभाव बहुत ही व्यापक है, यह दो और दो, चार की तरह ध्रुव सत्य है एव स्पष्ट है। अग्रेजी आदि पाश्चात्य भाषाओं का सम्बन्ध भी सस्कृत से सगी मौसी जैसा है। प्रश्न है, क्या सस्कृत की इस व्यापकता एव मौलिक महत्ता को शासन मे बैठे लोग या बाहर उसके रक्षण का स्वाग रचने वाले हम जैसे लोग जानते नही। सब जानते हैं अपने भी, बेगाने भी। बेगानों से गिला क्या हो सकता है, जब उसके अपने ही उसका गला घोटने को तुले हुए दीखते हैं।

भाष् धातु से भाषा शब्द बना है। अस्तु, भाषा का अर्थ बोलना तो है ही। दूरस्थ व्यक्ति को सदेश भेजना है तो लिखे बिना काम नहीं चलता तथा बोले हुए और लिखे हुए को समझें नही, तो बोलने-लिखने का लाभ ही क्या! अस्तु, भाषा के तीन व्यावहारिक अग बन जाते हैं—बोलना, लिखना और समझना।

सस्कृत को जिन्दा रखना है तो सस्कृत को समझो, सस्कृत मे लिखो और सस्कृत मे बोलने की सामर्थ्य का यथाशक्ति विकास करो। इस सब के लिए सस्कृत पढना जरूरी है। सस्कृत के तथाकथित रक्षक बताने का कष्ट करें क्या सस्कृत की रक्षा बिना पढे, केवल नारा लगाने या शोर मचाने से हो जायेगी।

स्थिति तो यह है कि सनातनधर्मी गीता की रक्षा सस्कृत बिना पढ़े करना चाहता है और आर्यसमाजी सस्कृत से दूर रहकर वेद की रक्षा का नारा लगाता है। चलो सनातनधर्मी तो तुलसीकृत रामायण से गुजारा कर लेता है, पर आर्य समाजियो, आप अपने तीसरे नियम का क्या करोगे। आप भी कह दोगे कि परम धर्म में सुनना भी शामिल है, पढ़ने-पढ़ाने और सुनाने के लिए ग्यारह रुपये दक्षिणा पर गुजारा कर लेने वाले उत्तर प्रदेश और बिहार के निर्धन परिवारों के बालक गुरुकुलों के माध्यम से मिलते ही रहेंगे। नहीं तो क्या कारण है कि आर्य स्कूलों से अपना शैक्षणिक रिश्ता बताने वाले अस्सी-अस्सी साल के 'कृष्ण-चन्द्र' अभी तक अपना नाम किशन चन्दर ही लिखते हैं और वह भी ऐसी लिखावट में कि हिन्दी के धुरन्धर उसमें से किशन चन्दर को खोज लें तो बड़ी बात है।

एक ऐसे ही वैदिक स्कूल मे लगभग दो दशक तक काम करने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ। इन स्कूलो में सस्कृत अध्यापक से आर्य समाज का काम करने एव बच्चो को धर्म शिक्षा पढाने की भी अपेक्षा की जाती है। मतलब यह हुआ कि और तो छ दिन के नौकर तो शास्त्री जी सातों दिन के। इतने पर भी तुर्रा यह कि धर्म शिक्षा के पीरियड तथा समय-समय पर होने वाली परीक्षाओं के साथ धर्मशिक्षा की उत्तर पुस्तिकाओ का निरीक्षण किसी गिनती मे नही। खैर; यह भी सही। सस्कृत पढी थी, वह भी कालेज में नहीं, गुरुकुल मे तो उसकी सजा क्या कोई और भोगता। किन्तु विशेष दुख इस बात का रहा कि लाख यत्न करने पर भी बच्चो के मुख से निकलने वाले 'भूर भवै सवै सत्तर वित्तर बरेणियम्' को 'भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्' में न बदला जा सका।

अपना दुर्भाग्य तो इसमे हेतु रहा ही होगा, किन्तु तमस्थ अध्यापक वर्ग का योग-दान भी कम न था जो हिन्दी-सस्कृत को, धर्म को, धर्म-शिक्षा को, सन्ध्या-हवन को, आर्य समाज को, आर्य नेताओं को हिकारत की नजर से देखते थे, जिन्हें साहित्याचार्य और शकराचार्य का अन्तर मालूम नहीं था, जिनके लिये हसराज और श्रद्धानन्द मात्र नाम थे, दुनियाई अन्धेरे में काम आने वाले शुद्ध घी के दीपक नहीं।

अम्मुओ न जानना अपराध नही है। मैं बीमार होता हूँ तो अपनी बीमारी और उसकी चिकित्सा के सम्बन्ध मे अपने अज्ञान पर गर्व तो नहीं करता। डाक्टर से विनम्र भाव से पेश आता हूँ। पर जानबूझ कर की गई या दर्शायी गई उपेक्षा को आप क्या कहेंगे। 'सानू हिन्दी घट आन्दी है' यह वाक्य अपनी न्यूनता का वास्तविक बोध कराने वाला न होकर, सिर्फ यह जताने वाला यदि हो कि हिन्दी कोई पढ़ने वाला विषय ही नही, तो पीडा-जनक तो है ही। फिर सस्कृत! वह तो ऐसे महापुरुषो की दृष्टि मे लावा-फेरो के वक्त के लिए है। तो, पण्डित इनको बनना नही तो सस्कृत क्यो पढ़ें।

बस रह गई ठेकेदारी हिन्दी-सस्कृत की, धर्म कर्म की एव आर्यसमाज की सेवा की केवल सस्कृताध्यापक की अर्थात शास्त्री लोगो की। और ये शास्त्री लोग, या पाधा पुरोहित अपने और बेगाने सबकी उपेक्षा के शिकार अपनी जिन्दगी को हजार हजार लानतें भेजते हुए अपनी औलाद को सस्कृत से सौ कोस दूर रखकर उनका भविष्य बनाने की कसमें मन ही मन खाते हुए जीवन यापन करते हैं। उन बेचारो की धारणा है कि स्नातक जी कहलाकर अध-खाये सोने से तो राजमीरी सीख लेना अच्छा था। और अब तो स्नातक शब्द का भी अवमूल्यन हो गया है। १२-१४ वर्ष तक गुरुकुलों मे भिन्न-भिन्न शास्त्रो मे माथा पच्ची करने वाला कहां तो विद्या व्रत स्नातक सस्कृत का प्रौढ़ विद्वान और कहा साल छ महीने किसी अधकचरी सस्था में गुजार लेने वाला यह अधतम स्नातक, कर दिया न गुरुकुलों की उपाधियों को अर्थहीन! रही-सही मानमर्यादा भी समाप्त। सब धान बाइस पसेरी। और अब 'शास्त्री उपाधि का हाल भी देखिये। जून, १९८७ के 'सम्राट्' मे विज्ञापन छपा है १५ दिन मे १६ सस्कारो की शिक्षा और 'सस्कार शास्त्री' की डिग्री। खैर इतना सब होने पर भी सस्कृत और सस्कृति की रक्षा हो सके तो कोई बात नही। पर क्या यह सम्भव है। एक नवाब को शायरी का शौक था। उनकी रियासत के एक मशहूर शायर एक दिन नवाब साहब से मिलने गये। नवाब ने पूछ लिया कि एक दिन मे आप कितने शेर कह लेते हैं शायर ने जवाब दिया – हुजूर, कभी मन हुआ तो एक-आध कह ही लेता हूँ। नवाब बोले—आप भी खूब हैं—हम तो पाखाने मे बैठे बैठे पांच-छ शेर कह लेते हैं। शायर बोला—हुजूर, उनमें बू भी वैसी ही आती होगी। क्या यह ही बात आज सर्वत्र नही दिखाई दे रही। आर्य समाज का वक्ता और श्रोता दोनो स्वाध्याय से कोसो दूर। जमाना था जब श्रोता अपने स्वाध्याय के दौरान आने वाली समस्याओं, उलझनों को समय समय पर पधारने वाले महोपदेशकों शास्त्रार्थ महारथियों की सहायता से हल किया करते थे।

संस्कृत और सस्कृतज्ञों का इतना अवमूल्यन और फिर यह आशा करना कि सस्कृत जीवित रहे। वह बचेगी भी तो अपने दम-खम पर आपके भरोसे नही।

ऐसे भी कुछ लोग हैं जो सस्कृत की रक्षा के लिए भी कभी आगे नहीं दिखाई देते, किन्तु उन्हें संस्कृत से क्रियात्मक लगाव है। उदाहरण के लिए हमारे देश में एक प्रसिद्ध योगी है। उनकी योग सम्बन्धी पुस्तकों का संस्कृत-

पद्य में अनुवाद का प्रस्ताव लेकर मैं उनसे मिला। वे बोले—लोग तो सस्कृत ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद खोजते हैं, आप उलटी गगा बहाने की बात करते हैं। मैंने कहा—हिन्दी परिवर्तनशील है, उसके स्वरूप में स्थायित्व नहीं रह सकता। वह समय के साथ अवश्य बदलेगी, किन्तु सस्कृत मे स्थायित्व है, समय की चुनौती स्वीकार करने की क्षमता रखती है। 'सुपर सैनिक' बना तो सस्कृत ने 'अतिस्वम' दे दिया। शब्द निर्माण की अपनी इस उपयोगिता के कारण उसकी विशिष्टता सर्वदा अक्षुण्ण है। फिर उसमें अपार नियामक शक्ति है। मैंने कहा कि आप भी तो अपने कथन की पुष्टि मे उपनिषदों के प्रमाण प्रस्तुत करते हो। देखिए, मेरा कहना तो यह है—

कालावशा भवति रचना लोकभाषा निबद्धा
दैव्या वाच्येव तु विरचिता कालमत्येति सैव।

बात उनकी समझ मे आ गई और सचमुच उल्टी गगा बह गई। उन्होंने अपनी दो पुस्तको का सस्कृत-पद्यानुवाद करवाकर उन्हे आर्ट पेपर पर छपवा भी लिया।

इसके विपरीत, दो वर्ष हुए, मैं नमूने की रचना के साथ आर्य समाज के एक मूर्धन्य नेता के श्रीचरणो मे महात्मा हसराज के जीवन चरित्र को सस्कृत पद्य मे लिखने के सकल्प के साथ उनके परामर्श के लिए उपस्थित हुआ। उनका उत्तर था—सस्कृत मे कौन पढेगा। मैं उलटे पाव लौट आया।

कहिए, हो गई सस्कृत की रक्षा। सस्कृत पढोगे नहीं, लिखोगे या लिख-वाओगे नहीं, समझोगे नही और सस्कृत की रक्षा कर लोगे। एक उनकी ही नहीं, हमारे मुख-पत्रों की दशा यह है कि सस्कृत तो क्या, हिन्दी भी ठीक तरह छप जाय तो बडी बात है। 'चऽजुंन' का चारजुन छप जाय तो हिन्दी भाषी यह मानकर सन्तोष कर लेगा कि चार जून छपना था, गलती से ज पर छोटे उ की मात्रा लग गई। यह अतिरजना नही है। मेरे सामने एक प्रतिष्ठित आर्य पत्रिका का अक रखा है जिसमे महर्षि का सहर्षि छपा है, और भी पचास त्रुटिया हैं।

वास्तव मे हम इस मानसिकता के शिकार हैं कि जो हम चाहते हैं वह हमे न करना पडे, कोई और कर दे। आम हिन्दू अपनी रक्षा का भार अव-तारो पर छोडे रखता है और अपना काम मात्र इतना समझता है कि कीर्तन करता रहे उनके नाम का। हम आर्य समाजी भी बात तो पुरुषार्थ की करते हैं, पर करते कितना हैं, यह हमी जानते हैं। हमारी मानसिकता पर यह शेर कितना सटीक है—

हक अच्छा, पर हक के लिए कोई और मरे तो और अच्छा,
तुम कोई मन्सूर हो जो सूली पे चढो, खामोश रहो।

हम लोग सोचते हैं कि सस्कृत को सरकार जीवित रखे। भाई, सरकार लोकतन्त्री है, उसको वोटों की आवश्यकता है। यदि बहुसख्यक लोग सस्कृत पढने वाले हों सरकार की क्या मजाल कि सस्कृत को स्पर्श भी करे, पर विडम्बना यह है कि भारत का आधा शिक्षातन्त्र हमारे हाथो मे है और हम सस्कृत और सस्कृति की रक्षा के लिए सरकार से गुहार करते हैं, सरकारी सरक्षण किसी भाषा को जीवित रखने का आधार अवश्य है, पर उसकी वास्तविक जीवन्तता का आधार तो उसका प्रयोग है, उसमें साहित्य-सर्जन है तथा उसका पठन-पाठन है।

जब कभी मुझे कुछ कहने का अवसर मिलता है तो एक बात कहता हूँ कि चार विषय रोजी रोटी के लिए पढो तो एक विषय धर्म और सस्कृति की रक्षा के लिए पढो। क्या बिगडता है। खास तौर पर यदि पुत्रियो को अन्य विषयो के साथ एक विषय के रूप में उच्च स्तर तक सस्कृत पढा दी जाय तो आने वाली पीढ़िया सभल जायें। पर जहा सस्कृत पढना पिछडेपन की निशानी मानी जाती हो वहा इस अपील का क्या असर होना है। अस्तु, सस्कृत को अस्पृश्य समझना और सस्कृत की रक्षा की आवाज उठाना मिथ्याचार है और सरकार इसे खूब समझती है। यही कारण है कि समय समय सस्कृत की गर्दन पर तलवार लटका दी जाती है। किसी एक भाषा की उपेक्षा से हमारे पाठ्यक्रम निर्माताओ की उलझन यदि दूर होती हो तो वे सस्कृत पर सबसे पहले हाथ उठाते हैं।

सस्कृत मे जीवित रहने की काफी कुछ सामर्थ्य स्वाभाविक है। वह क्षीण तो हो सकती है पर नष्ट कभी शायद ही हो। उसने मुस्लिम शासन को झेला, अग्रेजी शासन को झेला। क्या अब वह इन काले अग्रेजों के षडयन्त्रो का सामना नही कर सकेगी। अवश्य कर लेगी। ऐसा समय भी सस्कृत ने देखा है जब पुस्तकालय जला दिए गए। लोगो ने—धुन के धनी लोगो ने ग्रन्थो को कण्ठस्थ कर लिया। जलाओ अब क्या जलाना है। किसी शहर मे गुड ले जाने पर पाबन्दी थी। एक देहाती के पास भेली थी। चुगी वाले ने रोका—भेली लेकर शहर मे नही जा सकते। देहाती ने कहा भेली के साथ क्यो नही जा सकते। देख तुझे अभी भेली के साथ जाकर दिखाता हूँ। देहाती ने भेली वही बैठ कर खाली और बोला देख, अब मैं भेली के साथ ही शहर मे दाखिल हो रहा हूँ। एक नहीं दस सरकारें भी सस्कृत का कुछ नही बिगाड सकती यदि उसकी रक्षा के दावेदार हम सस्कृत को गले लगायें उसके ज्ञान को आत्मसात् करें, उसमें अपनी प्रतिभा से नवीन कडिया जोडें।

हो सकता है, कभी ऐसा समय आवे, जब भारत मे भारतीयता का बोल-बाला हो—जब हममे हमारी अस्मिता प्राणवन्त हो—जब हम हर क्षेत्र मे 'स्व' को पहचानें। मैं समझता हूँ सस्कृत के लिए वह महान दिन होगा जब इस देश के वासी अपनी-अपनी मातृभाषाओ को वास्तविक महत्व देंगे। कारण, मैदान की गगा के प्रति जिसके मन मे आकर्षण होता है, उसे गगोत्री के दर्शन की भी चाह होती है, और ऐसा एक दिन होगा क्योंकि—

कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रति सप्ताह योग्य वरो की सूची प्रकाशित करने की योजना आरम्भ की जा रही है। अत सब महानुभाव योग्य वरो का निम्न विवरण भेजने की कृपा करें —

आयु कद, योग्यता, व्यवसाय। नौकरी-सरकारी अथवा कम्पनी माफक वेतन। आय—विशेष चाहना—प्रेषक का नाम पता।

दर —चार बार छापने के लिये रु० २५ एक बार छापने के लिये रु० १०।

उदाहरण

सख्या—ब्राह्मण २५, १५७, एम ए. बैंक आफिसर सरकारी, रु० २५०० शिक्षित घरेलू वधु चाहिये।

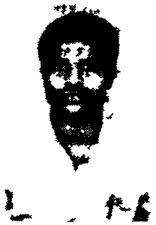
मेधावी छात्र



श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतमनगर नई दिल्ली ४९ के मेधावी छात्र श्री नरदेव यजुर्वेदी आत्मज श्री सागर नायक धवरामटा जिला सम्बलपुर (उडीसा) निवासी ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक आर्ष विभाग) सर्वगुरुकुलीय स्नातक परीक्षा शास्त्री मे सर्वोच्च अंक लेकर सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

आपने न केवल परीक्षा मे ही सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया अपितु केवलमात्र १३ वर्ष की आयु में सपूर्ण 'यजुर्वेद कण्ठस्थ कर आर्य जगत् में अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया।

मेधावी स्नातक



१३ जुलाई ८७। श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतमनगर नई दिल्ली-४९ के मेधावी स्नातक श्री धर्मेन्द्र कुमार आत्मज श्री रामभाऊ जी आर्य निमखेड बाजार जि० अमरावती (महाराष्ट्र) निवासी ने दिल्ली विश्व विद्यालय की स्नातकोत्तर एम० ए० (संस्कृत) परीक्षा मे सर्वोच्च ७१ प्रतिशत अंक लेकर इस विद्यालय के साथ साथ दिल्ली विश्वविद्यालय को भी गौरवान्वित किया।

इसलिए 'दीक्षान्त समारोह' विश्वविद्यालय की ओर से आपको स्वर्णपदक से सम्मानित किया जायेगा। वैसे भी आप सम्पूर्ण सामवेद कण्ठस्थ कर एव अन्य अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं मे भी अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।"

—आचार्य, हरिदेव

कानपुर वेश्यालय में बेची गयी युवती बरामद

कानपुर—सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता तथा केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवी दास आर्य ने थाना मूलगज पुलिस की सहायता से मूलगज वेश्यालय में बेची गयी २० वर्षीय युवती चन्दा को बरामद कर लिया। ज्ञातव्य है कि उक्त युवती को एक माह पूर्व दिनेश नामक युवक नौकरी का लालच देकर नेपाल से कानपुर लाया था। यहा पर उसने चन्दा को तीन हजार रुपये मे वेश्यालय मे बेच दिया और फरार हो गया वेश्यालय की सचालक उसे मार पीट कर शारीरिक व्यापार करने को बाध्य करने लगी। जिसके लिये वह तैयार नही हुई। किसी ने श्री आर्य को इसकी सूचना गुप्त रूप से दी। श्री आर्य ने जाच करने के पश्चात उक्त ठेके पर छापा मारा और चन्दा को बरामद कर लिया। परन्तु अभियुक्त मौका पाकर भाग निकले जिनकी तलाश जारी है। श्री आर्य ने उक्त युवती को उनके परिवार तक पहुँचा दिया। —मन्त्री

श्रावणी उपाकर्म पर्व

श्री माणिक राव जी शास्त्री मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद ने सूचित किया है कि प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष नगरद्वय के आर्य समाजो की सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व एव सत्याग्रह बलिदान दिवस 'आर्य समाज किशनगज" की ओर से दिनाक ९ अगस्त ८७ दिन रविवार को प्रात ८ बजे से 'महेश्वरी भवन' बेगम बाजार हैदराबाद में मनाया गया है। प्रो० अनूपसिंह जी देहरादून प० महावीर सिंह जी दर्शनाचार्य, प० सोमभित्र शास्त्री आधुनिक अर्जुन अयोध्या तथा आचार्य कृष्णदत्त जी सम्मिलित हुए।

सभी नर नारी तथा बच्चो ने पर्व के समारोह मे सम्मिलित होकर धर्म लाभ प्राप्त किया।

शुद्धि समाचार

श्री रामेश्वरी प्रसाद केशरी आर्य मन्त्री के प्रयत्न से एक ईसाई जिनका नाम साइमन जोसफ पिता दमरी जोसफ द्वारा जो तीन पुश्त से ईसाई बने हुए थे उन्हें २८ ६ ८७ रविवार को उनके घर जाकर प० शिवधर मिश्र के पुरोहित्व मे वैदिक सिद्धान्त की दीक्षा दी गई तथा उन्हें शुद्ध कर हिन्दू बना लिया गया अब उनका नाम बदल कर शिवमुनी प्रसाद आर्य तथा पत्नी का नाम तारा देवी आर्या एव बडी लडकी का नाम ममता कुमारी तथा गायत्री कुमारी आर्य रखा गया। इनके परिवार मे कुल सदस्य सख्या ४ है। आप ग्राम इकासी थाना इटाढी के रहने वाले हैं अब बक्सर मे रह रहे हैं। आप बक्सर पोस्ट आफिस मे क्लर्क का काम करते हैं। वैदिक विचारों से पूर्ण प्रभावित है। तथा साप्ताहिक अधिवेशन मे भाग लेते हैं। तथा वैदिक पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। —राजेश्वरी प्रसाद केशरी आर्य

सूचना

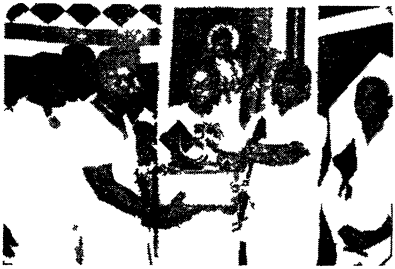
आवश्यकता है व्यायाम शिक्षक की

जो हरियाणवी भाषा जानता हो और आर्य वीरो को बौद्धिक भी दे सके। पूर्ण विवरण सहित निम्न पते पर सम्पर्क करें।

—सजय मारवाडी
मन्त्री आर्य वीर दल
बालसमन्द रोड, हिसार



रक्षाम त्री श्री के०सी० पन्त तथा उनकी धमपत्नी श्रीमती इला पन्त आयसमाज मन्दिर दीवानहाल मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ मे पूर्णाहुति मे भाग ले रहे हैं।



श्री सत्यपाल आय (पलवल) वरिष्ठ शिक्षक सावदेशिक आय वीर दल आय वीर दल प्रशिक्षण शिविर ज ल ग मे पुरस्कार ग्रहण करते हुए। साथ मे आय वार प्रस न मद्रा म खड है। जिन्हे सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी आशीर्वाद दे रहे है।



शिविर में भाग लेने आये आयवीर गणवेश मे दिखाई दे रहे हैं।

श्री ब्रह्मदत्त स्नातक का नया पता

मैं इन दिनो सावदेशिक सभा मे यदा कदा ही आ पाता हू। अत जो सज्जन सम्पक करना चाहें निम्नलिखित पते पर या फोन न० ५५४७५२ पर सम्पक कर।

— ब्रह्मदत्त स्नातक एम० ए० शास्त्री
सी ४ बी/३३२ बी जनकपुरी
नई दिल्ली ११००५८

श्री सुरेन्द्र शमा गाड काव्यतीथ दिवगत

ि ४ अगस्त सु सिद्ध वदिक विद्वान प० सुरेन्द्र शर्मा गौड क यतीथ की ८ ५प वी अ यु म उनके गृह ६८६ कबूलनगर गि ज्ञ न विद्यालय शाहदरा दि नी म हो गया श्री शमा जी अपने समय के अद्वितीय विद्वान व शास्त्राथ महारथी थे आपकी धम पत्नी भी सस्कृत की अद्वितीय विदुषी थी। इस दम्पति क अपने परिवार क सभी सदस्यो को सस्कृत भ ष मे ही परस्पर व र्तालाप का अभ्यास कराया था।

दिल्ली के पटौदी हाउस मे आपने आय समाज की ओर मे पौराणिको के साथ शास्त्राथ किया था जिसमे आपकी विदुषी धमपत्नी जी ने सराहनीय सहायता प्रदान की थी। आपके तीनो पुत्र सुयोग्य व सफल जीवन बिता रहे हैं। आप भरा पूरा परिवार छोड़कर गए है। प्रसिद्ध वेद प्रवचनकर्ता ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त को बचपन मे खोजकर आपने ही आयसमाज से सम्पक स्थापित कराया था।

सावदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने शोक सदेश मे कहा कि पण्डित जी के अद्वितीय पाण्डित्य स आयसमाज वचित हो गया है। परमात्मा उनकी आत्मा को सदगति व शोक सतप्त परिवार को धैय प्रदान करे।

शोक सभा

प० सुरेन्द्र शर्मा गौड के निधन पर आ य समाज शाहदरा दिल्ली म एक शोक सभा श्री बाल दिवाकर हंस की अध्यक्षता मे हुई। अनेक वक्ताओ ने श्री पण्डित जी को अपनी श्रद्धाजलिया दी।

पुरोहित की आवश्यकता

आयसमाज राजेन्द्रनगर दिल्ली के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। जो यज्ञ सस्कार, प्रवचन आदि करने का अनुभव रखता हो। गुरुकुल के स्नातक को वरीयता दी जायेगी। आवास निवास आय समाज मे होगा। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा।

—मन्त्री

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष । ३७४७७१
वर्ष २२ अंक ३५] भाद्रपद शु० ६ सं० २०४४ रविवार ३० अगस्त १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

पंजाब से पीड़ित हिन्दुओं का फिर पलायन
यदि सरकार ने ठोस कदम न उठाये तो परिणाम भयंकर होंगे

दिल्ली २३ अगस्त।

पजाब की स्थिति दिन प्रतिदिन बिगडती ही जा रही हैं। गुप्त रूप से, हिन्दुओ को वहा से बाहर निकालने का षडयन्त्र जारी है। प्राप्त सूचना के अनुसार अजनाला से ३०० हिन्दू परिवार अपना गाव छोडकर सुरक्षित स्थानो पर चले गये हैं। धारीवाल तहसील के अन्तगत फानपुरा गाव के भी अनेक परिवार पानीपत (हरियाणा) में आ चुके हैं। अन्य गावो से भी हिन्दू परिवार इसी प्रकार अपना घर-बार छोडकर सुरक्षा की तलाश मे अन्यत्र चले गये हैं। सारे पजाब मे आतकवाद की छाया गहरी होती जा रही है।

राष्ट्रपति शासन पर टिप्पणी करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक वक्तव्य मे बताया कि अब स्थिति इतनी भयानक हो चुकी है कि भारत सरकार के गृहमन्त्री श्री बूटासिंह के परिवार के व्यक्ति भी मौत के घाट उतार दिये गये हैं। सीमान्त क्षेत्रो मे भी स्थिति सरकार के हाथ से निकलती जा रही है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक विशेष पत्र प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी को लिखकर माग की है कि पजाब को तुरन्त सेना के हवाले किया जाये। अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाने का प्रस्ताव ससद मे स्वीकार हो चुका है। अत पाकिस्तान की सीमा के साथ जैसलमेर से पजाब और काश्मीर तक सुरक्षा पट्टी बनाई जावे और आतकवादियो से उसी भाषा मे बात की जावे, जिसे वे समझते है। स्वामी आनन्दबोध जी ने प्रधानमन्त्री को याद दिलाया कि गत वर्ष १६ जुलाई को आयसमाज का एक शिष्टमडल उनसे मिला था और एक ज्ञापन दिया था जिसमे सुरक्षापट्टी के साथ साथ भूतपूर्व सैनिको को बसाने की माग की गयी थी। प्रधानमन्त्री ने उस समय हमारी मागो से पूण सहमति प्रकट करते हुए पजाब के मामले को जल्दी ही हल करने का आश्वासन दिया था। स्वामी जी ने कहा कि अब पजाब सवनाश के कगार पर खडा है। भारत सरकार की जनता मूक दर्शक बनकर वहा हो रहे जघन्य नर-संहार को किस प्रकार सहन कर सकती है?

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि हम जल्दी ही देशभर के हिन्दू नेताओ की एक सर्वदलीय सभा बुलाकर इस मामले पर विचार करगे। स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री को यह लिखा है कि पजाब की इस समय बिगडी हुई स्थिति सरकार की दुरगी और अस्थिर नीति का ही परिणाम है जिससे आज देश मे अनेक विवाद खड हो रहे हैं।

भाई-बहिनों में प्रेम-भाव हो

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्-मा
स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा,
वाचं वदत भद्रया॥
अथर्व० ३।३०।३॥

शब्दार्थ—(भ्राता) भाई, (भ्रातरम्) भाई से, (मा) मत, (द्विक्षत्) द्वेष करे। (उत) और, (स्वसा) बहिन, (स्वसारम्) बहिन से, (मा द्विक्षत्) मत द्वेष करे। (सम्यञ्च) समान गति या एक विचार वाले, (सव्रता) एक प्रकार से कर्म करने वाले, (भूत्वा) होकर (भद्रया) उत्तम रीति से, कल्याणकारी ढग से, (वाच वदत) वाणी कहो, बोलो।

हिन्दी अर्थ—भाई-भाई से द्वेष न करे और बहिन बहिन से द्वेष न करे। एक विचार वाले और एक प्रकार से काम करने वाले होकर शिष्टता पूर्वक वार्तालाप करो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

संस्कृत ही वैज्ञानिक भाषा

गुरुकुल गोतमनगर श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय का ५३ वां स्थापना दिवस

दिल्ली २३ अगस्त। प्रात ८ बजे वृहद यज्ञोपरान्त श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय का ५३वा स्थापना दिवस ससमारोह मनाया गया। दिल्ली के भाय नर नारियां ने बडे उत्साह के साथ प्रात ८ बजे से १२ बजे तक कार्यक्रम मे भाग लिया। ब्रह्मचारियो को सस्कृत क्यो पढनी चाहिये इस पर एक रोचक ड्रामा प्रस्तुत किया जिसे जन सामान्य ने सराहा अन्त मे श्री क्षितीश वेदालकार तथा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आशीर्वाद दिया। स्वामी जी ने ब्रह्मचारियो से अनुशासन मे रहकर विद्याध्ययन करने और प्राचीन परम्परा पर मजबूती से दृढतापूर्वक चलने की प्रेरणा की। उन्होने कहा कि आप लोग ब्रह्मचर्य की कठिन असिधारा पर चलकर महर्षि दयानन्द का स्वप्न साकार करने मे प्रयत्नशील है। (शेष पृष्ठ २ पर)

गौरक्षा में कानूनी अड़चनें

—श्री अच्युत देश पाण्डे -

१९५८ मे हनीफ कुरेशी आदि बनाम बिहार-सरकार मुकद्दमे मे सर्वोच्च न्यायालय ने निम्नलिखित मुद्दे निश्चित किए—

(१) गोरक्षण एव गोसवर्धन राष्ट्रीय, धर्मातीत (सेक्युलर) विषय है।
(यह दृष्टि भारत म सर्वधर्म स्वीकृत है।)

(२) भारत मे गाय और बछडो की हत्या सर्वथैव निषिद्ध है।

(३) बैल, साड १५ साल की उम्र के बाद ही काटे जाये। (कोर्ट ने इस निर्णय का कारण यह बताया कि पूरे अग्रेजी राज मे कसाई गाय-बैल काटने का धधा करता आया है। उसे उस धधे से वचित करना ठीक नही होगा)।

केरल और बगाल को प्रान्त सरकारो ने सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय की अवहेलना की और आज तक गायो की हत्या जारी रखी।

(१) बगाल सरकार ने इस विषय को राष्ट्रीय एव धर्मातीत भी नही माना। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के विपरीत वहा गायो की कतल पर भी आशिक रोकवाले कानून मे भी एक छूट जान बूझकर रखी गयी है जिसके अनुसार धार्मिक उद्देश्य से कानून का अमल स्थगित कर दिया जा सकता है। इस बहाने बकरीद के ढाई दिनो मे बगाल मे जो भी अधूरा कानून बना है और जिसका कभी पालन नही किया जाता उसे भी पूरी तरह से खुले आम उठा ही दिया जाता है और कोई लिहाज किये बिना सभी उम्र के गाय बैल उन दिनो काटे जाते हैं।

सर्वोच्च न्यायालय ने इस विषय मे अपना निर्णय पहले ही दिया है, इस आधार पर बगाल के एक गोप्रेमी ने कलकत्ता उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। मुकद्दमा दाखिल कर लिया गया। यह बात बिलकुल स्पष्ट थी कि जिस दिन भी मुकद्दमे की सुनवाई होगी, गोप्रेमी यह मुकद्दमा जीतेगा और बगाल सरकार ने गोरक्षण कानून मे किया सशोधन अवैध करार दिया जायगा। वही हुआ परन्तु यह न्याय प्राप्त होने मे उच्च न्यायालय मे वर्ष लगे ग्यारह, बारह से एक कम।

(२) उच्च न्यायालय से न्याय तो मिला परन्तु बगाल सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में अपील की। सर्वोच्च न्यायालय ने १९५८ मे जो फैसला दिया उसके पुनरनिरीक्षण के लिए यह दरखास्त थी। इस अपील के कारण उच्च न्यायालय के निर्णय के कार्यान्वयन को स्थगित (स्टे) मिली। इसका अर्थ यह हुआ कि पहले की तरह ही बकरीद के ढाई दिनो मे सब उम्र के गाय बैल काटे जाने लगे। पाच साल हुए यह मुकद्दमा सर्वोच्च न्यायालय मे लटका पडा है, खुलता ही नही। यानि एक खुला न्याय प्राप्त करनेके लिए ११+५ सोलह साल गुजर गये और न मालूम कितने गुजरेंगे। तब तक गायो का बेतहाशा कतल होता रहेगा।

(३) दूसरे एक गोप्रेमी ने कलकत्ता उच्च न्यायालय से दूसरा एक न्याय मागा। सर्वोच्च न्यायालय ने १९५८ मे निर्णय दिया कि गाय के बारे मे कतल के लिए, की हुई आशिक मनाही कार्यान्वियन शील नही है। वैसे कानून के कारण उत्तमोत्तम गायें भी कटेंगी। इसलिए गायों की हत्या का पूर्ण निषेध ही कानून मे होना चाहिए। बगाल के गो प्रेमी भाई ने उच्च न्यायालय से माग की कि बगाल सरकार का बरताव उक्त निर्णय के ठेठ विरोधी है, इसलिए न्यायालय, सरकार को उचित व्यवहार करने बाध्य करे और सरकार के बनाये कानून को न्यायत गैर कानूनी करार दे।

सालो हो गये वह मुकद्दमा खुलता ही नही। और उसकी सुनवाई कब होगी इस बात को कोई मनुष्य नही जानता। अर्थात् निर्णय होने तक सालों भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पुख्ता फैसले के बावजूद लाखों की सख्या मे गायें कटती रहेगी। क्यों? क्योंकि सालो तक फैसला मिलता नही। इसाफ मे देरी गायो की गर्दन पर दे रही है छुरी।

(४) अनेक गोसेवी सस्थाए सर्वोच्च न्यायालय मे न्याय मागने गयी हैं। १९५८ मे सर्वोच्च न्यायालय ने जो निर्णय दिया उस निर्णय का, उस निर्णय के बाद और भी कई निर्णय दिये उनके अनुषग मे, ५८ के बाद कई नई वैज्ञानिक खोजें हुई उनके परिप्रेक्ष्य मे पुनर्निरीक्षण (रिव्यु) करे, यह है उन गोप्रेमियो की माग। उन्हें विश्वास हैं कि बदलती परिस्थितियो मे नये वैज्ञानिक वायुमडल मे सर्वोच्च न्यायालय ने जो निर्णय गाय के लिए दिया, वही न्याय बैल के लिए उसे देना होगा। क्यो कि वैसे सबल कारण उपस्थित हुए हैं। परन्तु यह न्याय तब ही तो मिलेगा, जब मुकदमे की सुनवायी होगी। पाच साल गुजर गये, मुकदमे का नसीब खुलता ही नही। उसकी सुनवाई कब होगी? कोई नही कह सकता क्योंकि उसका कोई गणित उपलब्ध नही।

हमारे एक मित्र आप बीती आफत का बयान करते थे। उनकी दुकान थी। उन्होने कुछ माल ग्राहक को उधार दिया। वह बेईमान हुआ। पैसा लौटाता ही नही। इन्तजार करते करते बेजार होने पर सालो बाद १९७६ मे कोर्ट की सीढी चढी। उन्हे उस मुकदमे का फैसला १९८५ मे मिला। भले ग्राहक डुबाये पर, कोर्ट मे जाऊगा नही ऐसा निर्णय हमारे उस मित्र ने कर लिया। वे तो निश्चय कर सके परन्तु कोर्ट जाने की मजबूरी से गो प्रेमी मुक्त नही हैं। वे न्याय चाहते हैं, परन्तु पाच साल हो गये, सर्वोच्च न्यायालय मे गोप्रेमियो का वह मुकदमा पडा है। उनके नसीब का दरवाजा खुलता ही नही। वे प्रतीक्षा मे है कि न्याय मिले। कहते हैं, न्यायालय में देर हुई तो भारत सरकार तो कानून कर सकती है। ससद सर्व समर्थ है। बात सही, पर ससद का वह सामर्थ्य गोप्रेमियो के काम नही आ रहा है। सरकार को गरीबो के प्रश्नो की ओर देखने की फुरसत नही। दुनिया जानती है कि भारत मे गायबैलों की रक्षा का प्रश्न मुख्यत गरीबो के जीने का प्रश्न है और उसके बाद सर्वसाधारणों का, परन्तु सरकार अर्थात सत्ताधारी और सत्ताकाक्षी लोग अपने ही ऊटपटाग झमेलों मे ऐसे व्यस्त और ग्रस्त हैं कि जीवन विषयक प्रश्नो की ओर ध्यान देने के लिए उन्हे अवकाश नही। गायबैलो की कमी से जैविक खाद की कमी होगी, खेती फलेगी-फूलेगी नही। लोग भूखे मरेंगे, इसकी चिन्ता देश के विचारक करते रहे और चिल्लाते रहे। सत्ताधारी एव सत्ताकाक्षी समूहो को उन प्रश्नो की फिक्र नही। ऐसा न कहा जाय कि अग्रेज यहा राज करता था तब कहता था कि इस देश मे शाति और सुव्यवस्था बनाये रखने के लिए हमारा यहा वजूद है, और जितनी अशाति और अव्यवस्था की जा सकती है, उतनी करके ही वे चलते बने, उसी तरह भारत के सारे राजनैतिक पक्ष भी कहते हैं कि वे गरीबों के हामी हैं। यदि वे सचमुच हामी होना चाहते हैं तो भारत के गायबैल बचायें, गरीबों के हालात बदलें तभी यह दावा सही होगा। हम उन पर विश्वास करते हैं क्योंकि हम जनता निष्ठ हैं।

संस्कृति ही वैज्ञानिक भाषा

पृष्ठ १ का शेष)

यानी भारत आपके पवित्र आदर्शों का समर्थन करेगा। सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने कहा कि सस्कृत सभी भाषाओ की जननी है।

अब तो कम्प्यूटर के अविश्कारो ने भी घोषणा कर दी है कि ससार की सभी भाषाओ मे सस्कृत ही मात्र वैज्ञानिक भाषा जिसे कम्प्यूटर सुगमता से ग्रहण कर सकता है स्वामी आनन्दबोध जी ने कहा वेदविद्यालयमे ब्रह्मचारियो चरैवेती चरैवेती चलते चलो विजय आपकी होगी।

यज्ञ भवन रूपनगर में चारो वेदों के महायज्ञ की पूर्णाहुति

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा यज्ञ की महिमा पर प्रवचन

दिल्ली २३ अगस्त। आज प्रात ९ बजे श्री लोकनाथ जी के निवास स्थान पर चारो वेदो के महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का हवन यज्ञ की महिमा पर सारगर्भित प्रवचन हुआ।

स्वामी जी ने प० लक्षपति शास्त्री तथा याज्ञिक श्री लोकनाथ जी को बधाई देते हुए यज्ञ की महिमा पर उपदेश दिया।

सम्पादकीय

भारत की राजनीति और हिन्दू जाति का भविष्य

भारत की राजनीति पर गहराई से विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हिन्दू जाति के गले मे धर्म निरपेक्षता के नाम पर ऐसी नीति का तौक कुछ इस ढंग से पहना दिया गया है कि आजादी के इस उपहार के बोझ को सम्भालते सम्हालते यह जाति धीरे धीरे स्वय ही समाप्त हो जाने की स्थिति मे आती जा रही है। यद्यपि भारत में हिन्दू जाति को बहुसख्यक कहा जाता है, लेकिन क्या अपनी बहुसख्यक राष्ट्रीय सत्ता को लोकतन्त्र की राजनीति मे हिन्दू समाज आज तक चरितार्थ कर सका है ? *यदि नही, तो क्या बहुसख्यक कही जाने वाली इस जाति की यह* राजनीतिक विफलता इसके क्षीण हो रहे अस्तित्व का प्रमाण नही है ?

धर्मनिरपेक्षता का केवल हिन्दू जाति पर ही कुप्रभाव पड रहा है, और यह अधार्मिकता व नास्तिकता के गर्त मे गिरती जा रही है, उदाहरणार्थ भारत के सभी अन्य अल्पसख्यक वर्गो को अपनी शिक्षा सस्थाओ मे शिक्षको की नियुक्तिया करने और बच्चो को धर्म शिक्षा देने की छूट है जबकि हिन्दू जाति को यह अधिकार नही। इसका यही एक पाप है कि यह भारत मे बहुसख्यक है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि भारत मे बहुसख्यक जाति को जीने का अधिकार नहीं।

सभवत स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद निरन्तर क्षीण हो रहे हिन्दू समाज के जीवन मूल्यो तथा उसके अस्तित्व के प्रति चिन्तित होने के कारण ही डा० सम्पूर्णानन्द ने अपनी विख्यात पुस्तक "प्रशासन समाजवाद और हम" मे विनम्रता के साथ धर्मनिरपेक्षता की नीति को गलत बताते हुए भारत की नई पीढी पर पड रहे इसके दुष्प्रभावो की ओर सकेत करते हुए, इस नीति को 'मजहब निरपेक्ष' की सज्ञा देने के लिए पुनर्विचार करने का आग्रह किया था। किन्तु अफसोस है कि उनका यह आग्रह अरण्य रोदन बनकर रह गया है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि जो सवाल मैंने उल्लिखित पक्तियो मे उठाया है, उसके लिए धर्मनिरपेक्ष भारत मे आज कोई जगह नही है। क्योकि हमारे तथा कथित प्रगतिशील राजनीतिक इस तरह के समीचीन सवालो को प्रतिक्रियावादी कहकर देश के अस्तित्व के मूल्य पर भी अपनी, प्रगतिशीलता को प्रमाणित करने की कोशिश करना अपना परम कर्त्तव्य मानते हैं। किन्तु फिर भी मैं यह पूछने का दुस्साहस करना चाहूँगा कि हिन्दू जाति यदि समाप्त हो जाती है तो इस देश का नाम 'आर्यावर्त्त' 'भारत' या हिन्दुस्तान क्या सार्थक रह जाएगा ? क्या फिर कोई सरकार धर्मनिरपेक्षता की नीति अपनाने का साहस कर सकेगी ?

यह एक स्वय सिद्ध सत्य है कि भारत का इतिहास हिन्दू जाति की उन्नति अवनति और सघर्षों, की गाथा है। भारत का जीवन दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, पुरातन साहित्य और राष्ट्रीय चेतना के तमाम स्रोत हिन्दू जाति की विरासत हैं। हिन्दुओ को अतीत से सहज ही प्राप्त इस परम्परागत वैभव पर गौरव भी है। इसके बावजूद अपने ही देश मे अपने को हिन्दू कहने मे वह सकोच करता है। जबकि स्वाभाविक तो यह होता कि स्वाधीन भारत मे हिन्दू स्वय को हिन्दू कहने में गौरव का अनुभव करता। लेकिन ऐसा क्यो नही हो पाया ?

अपने इतिहास अर्थात अपने महान पूर्वजो के प्रति गौरव का बोध किसी भी जाति के जिन्दा होने का प्रमाण होता है। इसी प्रकार वर्तमान के प्रति निश्चेष्ट, शकाग्रस्त दिग्भ्रान्त या भाग्य पर सब कुछ छोडकर चलने वाली जाति को मरणोन्मुख कहा जा सकता है। मेरे विचार से वर्तमान मे हिन्दू जाति मे जिन्दा और मरणोन्मुख होने के उल्लिखित दोनो ही लक्षण दिखाई पडते हैं। अत यह कहा जा सकता है कि भारत की यह महान राष्ट्रीय जाति आज अर्द्ध निद्रा मे डूबी हुई, अपने भविष्य के प्रति निश्चेष्ट, अधकार के रास्ते में भटक रही है।

जब भी कोई जाति ऐसी स्थिति में आ फसती है, स्वार्थी तत्व उसे विभाजित करके अपना ग्रास बना लेने के लिए सक्रिय हो जाते हैं। क्या आज हिन्दू समाज के साथ ऐसा ही नही हो रहा है ? राजनीतिज्ञों ने हरिजन, पिछडा वर्ग और सवर्ण के खेमे बनाकर हिन्दू जाति को विभाजित कर दिया है। विभाजन का यह क्रम यहीं समाप्त नही हो जाता, बल्कि राजपूत, यादव जाट कुर्मी, कोली, भूमिहार और ब्राह्मण इत्यादि के नाम पर दूर तक रेखाकित होता चला जाता है। जो हरिजन है, वे भी चमार, दुसाध और मुशहर के नाम से परस्पर विभाजित हो गये हैं। इस तरह सत्ता के भूखे राजनीतिज्ञो ने हिन्दू समाज को टुकडे-टुकडे करके विभाजित कर दिया है। इस परिप्रेक्ष्य मे सबसे ज्यादा खेद की बात यह है कि हिन्दू समाज को इस दुरावस्था से उबारने के लिए प्रयत्नशील हिन्दू सगठनों को भी प्रतिगामी और साम्प्रदायिक कहकर बदनाम करने तथा उसकी आवाज को दबाने के लिए हर प्रकार की कोशिश धर्म निरपेक्षतावादी नेताओ द्वारा की जाती है।

इस प्रकार राजनीतिज्ञो की सत्ता लिप्सा के कारण जहा हिन्दू जाति आपसी वैमनस्य और वर्ण विग्रह की शिकार होती जा रही है, वही इस जन्मगत विभाजन और इसके वैमनस्य का लाभ उठाकर विदेशी ईसाई मिशनरियो ने नए सिरे से तथाकथित सेवा सहायता की आड लेकर भारी तादाद मे हिन्दुओ को ईसाई बनाकर भारत की राजनीति मे ईसाई वोटों के सहारे अपनी पकड़ मजबूत बना ली है। अत वोटों की लालच मे विदेशी ईसाईयों द्वारा जारी गरीब हिन्दुओ के धर्मपरिवर्तन के देश विरोधी खेल मे धर्मनिरपेक्षता की बन्दूक का निशाना हमारे राजनीतिज्ञ हिन्दू जाति को बना रहे हैं। इससे क्या यह स्पष्ट नही हो जाता है कि धर्मनिरपेक्षता की दो मुही नीति का उपयोग सिर्फ हिन्दू समाज के सर्वनाश के लिए ही किया जा रहा है।

इस तरह अपने ही देश मे आज हिन्दू समाज अपने अधिकारों और अस्तित्व की रक्षा के लिए मोहताज बनाकर रह रहा है। जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद इत्यादि अनेको रोग इसे खाए जा रहे हैं। इसका धर्म, इसकी सस्कृति और जातीय गरिमा पर सब ओर से खुला प्रहार हो रहा है। यह सब देखकर ऐसा लगता है कि आगामी पच्चीस-पचास वर्षो में समाज अनेकों अल्पसख्यक समुदायो के रूप में परिवर्तन होकर रह जाएगा। ऐसी स्थिति में क्या भारत की यह गरिमा मडित जाति अपनी परम्परागत विशिष्ट पहचान को कायम रख सकेगी ?

आज भारत के राजनीतिक मच पर राष्ट्र के विघटन की जिस प्रक्रिया का नग्न नाच हो रहा है, उससे ऐसा आभास हो रहा है कि आगामी चन्द वर्षो मे ही भारत के विभिन्न प्रदेश अपनी पृथक स्वायत्तता कायम करना चाहेगे। उत्तर पूर्व भारत के नागालैण्ड, मिजोरम आदि मे आज जो कुछ हो रहा है, उससे इस सभावना की पुष्टि होती-सी प्रतीत होती है। इस प्रकार प्रान्तीय स्वायत्तता की राजनीति यदि भारत मे चल जाती है, तो सभी प्रदेशो का स्वरूप क्या कश्मीर जैसा ही नही हो जाएगा ? इस तरह यदि प्रादेशिक राष्ट्रवाद का जन्म होता है, और एक प्रदेश के नागरिक दूसरे प्रदेश मे बसने और व्यवसाय इत्यादि करने मे वचित कर दिये जाते हैं, तो ऐसी स्थिति मे क्या भारत अपनी आजादी को सुरक्षित रख सकेगा ?

भारत के राष्ट्रीय जीवन मे उभर रही इस विघटन की प्रवृति के कारणों का यदि विश्लेषण किया जाय, तो हम इसी निष्कर्ष पर पहुचेगे कि यह सब हिन्दू समाज के आतरिक विग्रह और वैमनस्य का परिणाम है। चाहे कोई कितना ही प्रगतिशील अथवा धर्मनिरपेक्ष क्यो न हो, यदि उसके हृदय मे देश भक्ति की किंचित भावना भी होगी तो उसे यह समझने मे कदापि कठिनाई नही होनी चाहिए कि हिन्दू समाज की भावात्मक एकता ही भारत को एक अविच्छन्न राष्ट्र के रूप मे बरकरार रखने मे समर्थ है ? क्या यह उम्मीद की जाय कि समय रहते हुए देश के कर्णधार इस सत्य को समझ सकेंगे ?

कुल मिलाकर यह स्पष्ट हो जाता है कि अपने आतरिक विग्रह से ग्रस्त हिन्दुसमाज आज अस्तित्व सकट के कगार पर खडा है। यदि समय रहते इस सिलसिला पर रोक नही लगाई गई, तो आश्चर्य नही कि आने वाले कुछ वर्षों मे ही यह महान जाति इतिहास के पन्नो की धरोहर बन कर जाए और इसकी स्मृति के रूप मे इसका जीवन दर्शन तथा परम्परागत साहित्य विश्व के पुस्तकालयो की श्री सम्पदा के रूप मे शेष रह।

श्री आनन्दशंकर पंडया द्वारा

श्री मुरारजी देसाई भूतपूर्व प्रधानमन्त्री का साक्षात्कार

"भय बिनु होय न प्रीति"

(१) प्रश्न—रामायण में ऐसे बहुत से निर्देश हैं जो आज के राजनीतिज्ञों के लिए दिशा दे सकते हैं भगवान श्री राम ने तीन दिन तक समुद्र से प्रार्थना करके लंका जाने का मार्ग मांगा, पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया तब श्रीराम जी ने धनुष उठाकर क्रोध से कहा—"भय बिनु होय न प्रीति" परिणामस्वरूप समुद्र ने तुरन्त मार्ग दे दिया हिन्दू धर्म के मुख्य ग्रन्थ रामायण के अनुसार जब प्रेम और अहिंसा का मार्ग असफल हो जाये तो राजा या शासक को भय का उपयोग करना पड़ता है।

देश की आज की स्थिति के संदर्भ में इस वचन से देशके शासकों को क्या निर्देश ग्रहण करना चाहिए। क्या इस तरह भय दिखाना गांधी जी की अहिंसा के सिद्धान्त के विरुद्ध नहीं होगा?

उत्तर—आम तौर से जब अहिंसा की चर्चा होती है तब उसमें अभय ही होता है उसमें भय का उपयोग नहीं करना चाहिये पर अहिंसा पर आचरण करने वाले कितने लोग होते हैं। राज अहिंसा का तो है नहीं राज में हिंसा है ही अत. दुष्ट लोगो को भय दिखाये बिना राज्य चल नहीं सकता दुष्ट लोगों का हृदय परिवर्तन करना राज्य का काम नहीं है वो सन्तो का काम है। पातजली के योगसूत्र मे कहा है "अहिंसा प्रतिष्ठायाम तत सन्निधो वेर नाशनम्" अर्थात् जिसके हृदय मे पूर्ण अहिंसा की प्रतिष्ठा हो जाती है उसके निकट जाने से वैर का नाश हो जाता है—ऋषियो के आश्रम मे शेर और गाय एक ही जगह पानी पीते थे क्योंकि उन ऋषियो में अहिंसा की पूर्ण प्रतिष्ठा हो चुकी थी पर अहिंसा का उपयोग तब है जब प्रत्येक पास में आने वाला व्यक्ति अहिंसक बन जावे ऐसा कितने लोग कर सकते हैं, ये व्यवहारिक नहीं है अतः राज्य को तो भय का उपयोग करना ही पड़ता है प्रेस की शक्ति द्वारा भी दबाव डालकर भय उत्पन्न किया जा सकता है, पर यह तभी हो सकता है जब प्रेस निर्भय होकर सत्य का प्रचार करे, गांधी जी तो पूर्ण अहिंसा द्वारा हृदय परिवर्तन ही करना चाहते थे और उन्होंने परिवर्तन किया भी उन्होंने कोई बल या भय से राज्य नहीं लिया अंग्रेज भारत का राज्य छोड़कर गये तब वो हमारे हाथ में आया यह अहिंसा का परिणाम था पर ऐसा हृदय परिवर्तन कितने लोग कर सकते हैं। यह कार्य आसान नहीं है। अत. राज्य को शक्ति व भय द्वारा देश में शान्ति रखना अनिवार्य हो जाता है जैसा कि रामायण में कहा गया है।

(२) प्रश्न—आज देश तथा विदेश में सर्वत्र दुष्ट लोग शक्तिशाली हो रहे हैं। आज यदि गांधी जी होते तो वे किस तरह से देश में आतंकवाद का सामना करते? वे हिन्दू और सिक्खों में किस तरह से भाईचारा उत्पन्न करते?

उत्तर—गांधी जी तो हर समस्या को अहिंसा द्वारा ही हल करते थे पर राज्य वो नहीं कर सकता है नहीं तो फौज की जरूरत ही क्या? फौज क्या अहिंसा पर आधारित है? राज्य का कर्तव्य है कि वो अपनी शक्ति से दुष्ट तत्वों का सफाया करे। आज गांधी जी होते तो वे आतंकवादियों को समझाने की कोशिश करते, पर वे शायद सफल नहीं होते।

(३) प्रश्न—यह आश्चर्य की बात है कि यद्यपि हिन्दुओं ने हमेशा विश्व के सब धर्मों का आदर देकर उनमें सद्भावना बनाने की कोशिश की हिन्दू राजाओं ने ईसाई व मुसलमानों को कई गिरजाघर व मस्जिद बनाकर दिये पर बदले में हिन्दुओं को हमेशा तिरस्कार मिला। किसी ने भी उनकी उदारता की प्रशंसा नहीं की, ऐसा क्यो होता है?

उत्तर—यह बात सत्य है कि सब धर्मों का समान आदर करना हिन्दू धर्म की ही विशिष्टता है अन्य किसी धर्म की नहीं। तथा आज जो धर्म प्रचलित हो गये है वे मानवधर्म नहीं है सिर्फ सम्प्रदाय है वो आपस में एक दूसरे का विरोध करके लड़ते रहते हैं पर फिर भी हिन्दू समाज को आदर नहीं मिलता। इसका कारण है हिन्दू समाज की अन्दरूनी कमजोरी जात-पांत व आपसी फूट के कारण हिन्दू समाज कमजोर है अत. उसे तिरस्कार मिलता है। पर मेरा विश्वास है कि जात-पांत की यह बीमारी १५-२० साल में खत्म हो जायेगी और भारत में एकता व शक्ति आयेगी तब इसके विरोधी इससे प्रेम करने लगेंगे।

(४) प्रश्न—कुछ लोगों का ख्याल है कि सारे देश में यदि सैनिक शिक्षा दी जाये तो देश शक्तिशाली हो सकता तथा यहीं की भावी प्रजा अनुशासन युक्त व ईमानदार हो सकती है जिससे देश में भ्रष्टाचार दुराचार व अत्याचार निकल जायेगा क्योंकि दुष्ट लोग भयभीत रहेंगे।

उत्तर—जनता को बचपन से सैनिक शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिये। जब प्रधानमन्त्री था तब मैंने सोचा था कि सारे देश में सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जाये क्योंकि सैनिक शिक्षा से जनता को शक्तिशाली व अनुशासित बनाया जा सकता है जिससे देश की कई समस्याओं का हल स्वयं निकल आयेगा। यदि अहिंसा का उपयोग करना हो तो पहले शक्तिशाली बनकर फिर अहिंसा दिखानी चाहिये, दुर्बल की अहिंसा निरर्थक है।

वेदों में किरण विज्ञान

—शैल बिहारीलाल गोयल—

आज विज्ञान में नित्य नवीन खोजे हो रही हैं और इसके द्वारा मनुष्य प्रकृति की नई से नई जानकारी प्राप्त करता जा रहा है। यह मनुष्य के लिए गर्व की ही चीज है किन्तु भारतीय संस्कृत का प्राचीनतम ज्ञान भी कम गर्वोत्पत्ति वाला नहीं है। आज आधुनिक विज्ञान में किरण विज्ञान को अति आधुनिक विज्ञान समझा जा रहा है। किन्तु हमारे वेदों के अन्दर सैकड़ों तरह की किरणों का वर्णन आया हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती कुछ वेदों का भाष्य करके हमारे लिए वेद विद्याओं का असीम द्वार खोल गये हैं किन्तु हमारे अभाग्य से उनका जीवन दीर्घायु न हो पाया जिसके कारण हम अभी तक उस ज्ञान से वंचित है किन्तु वह आर्य समाज के नियमों के द्वारा बतला गये हैं कि वेदों के अन्दर असीम ज्ञान मौजूद है यह बड़े दुख का विषय है कि आज का आर्यसमाज महर्षि दयानन्द के द्वारा इतने गुण गान के पश्चात् भी आज तक किसी भी वेदविद्या को उजागर नहीं कर पाया।

हमने आर्य समाज के नियमों से प्रेरित होकर वेद भाष्यों का अध्ययन किया उसमें से अध्ययन उपरान्त निष्कर्ष यही निकला है कि चारों वेद एक पूर्ण वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं तथा अनेक विद्यायें भरी निहित हैं। विद्याओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए उसमें से एक केतवा नामक किरण के कुछ सकलन यहां प्रस्तुत कर रहा हूं। कृपया इसके ऊपर शोध कार्य करके विद्वानों को इसे विश्व के वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाय जिससे हमारे ज्ञान के विषय में विश्व के मनुष्यों को कुछ ज्ञान प्राप्त हो सके। प्रस्कण्व ऋषि ने सामवेद पूर्वार्चिक मन्त्र स० ३१, 'उदु त्यं जातवेदसं' मन्त्र में सूर्य की केतवा नामक किरणों के द्वारा उत्पन्न किये हुए समस्त पदार्थों को देखने और दिखलाने और प्राप्त करने वाले सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रसंग ऋग्वेद १।५०।१ से ५ वाले वर्ग में विस्तारिक किया हुआ तथा यजुर्वेद ७।४१ से ४८ वाले अनुवाक में भी इस विद्या विशेष की क्रिया आदि पर प्रकाश डाला गया है। इसके अन्दर हमारे प्राचीन पुरातन साहित्य में गति की १२२ तरह के सिद्धान्त दिये हैं। इस विद्या के साथ गति की १२२ किस्मो में से 'वहते' नामक गति क्रिया को जोडा गया है। यह प्रकरण यजुर्वेद ८।४१ वाले अनुवाक में भी विस्तृत है। अथर्ववेद १३।२।१६ एव २०।४७।१३ वाले प्रकरणो में भी यह विस्तृत किया हुआ हैं। ऋ० स० १।२ ८ २ और १।४।७३।१ द्वारा इस प्रसंग को वेदों के अन्य स्थलों से जोडा गया है और निरुक्त १२।१५ द्वारा भी निर्देशित है। यजुर्वेद ३३।३० से लेकर ४३ वाले अनुवाक में भी सूर्य विज्ञान के साथ किरण विज्ञान को जोड़कर विस्तारित किया गया है।

त्रिशिरा: ऋषि ने अग्नि देवता के त्रिष्टुप छन्द के माध्यम से अन्तरिक्ष और द्यु लोकमें व्यापक होने वाले अनेक सिद्धांत दिये हुए हैं। और यह प्रकरण ऋग्वेद १०।८।१ से ५ वाले प्रकरण में विस्तार किया हुआ है। अथर्ववेद १८।३।६५ वाले प्रसंग से भी इसका सम्बन्ध हैं। ऋ० आ० ६।३।१ द्वारा भी इसे वेदों के अन्य स्थलों से जोड़ा गया है। सामवेद ८८६ से ८८ वाले त्रिक में अकुष्ट भाषा नामक ऋषि ने सोम देवता के जगती छन्द द्वारा किरण विज्ञान के पदार्थों के साथ होने वाले विभिन्न कर्मों पर प्रकाश डाला है। यह प्रकरण ऋग्वेद ९।८६।४ वाले वर्ग में और अधिक विस्तारित किया गया है।

कश्यप: ऋषि ने सोम देवता के गायत्री द्वारा सामवेद ९५८ से ९६० वाले त्रिक में इस विज्ञान पर और अधिक प्रकाश डाला गया है। यह प्रकरण ९।६४।७ वाले वर्ग में ही है। और सूर्य विज्ञान के साथ समन्वित किया गया है।

ऋग्वेद १।६।१ से ५ मधुछन्दा. ऋषि ने इन्द्र देवता और मरुत इन्द्रश्च देवता के गायत्री द्वारा ऋग्वेद १।६।१ से ५ वाले वर्ग में सूर्य किरणों के माध्यम से पदार्थ ज्ञान को संयोग-वियोग करने वाले सिद्धान्त किये हैं यह प्रकरण सामवेद १४६८ से ७० वाले त्रिक, अथर्ववेद २०।२६।४, २०।४७।११, २०।६९।९ वाले प्रसंग एवं यजुर्वेद २३।५ और २९।३७ वाले अनुवाकों द्वारा एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। इस प्रसंग को ऋ० स० ७।४।२०।१ एक दूसरे जोड़ते हैं।

ऋग्वेद १।२७ ११ से १३ आजीगर्ति शुन.शेप कृत्रिमोवैश्वामित्रो देवणति ऋषि ने वरुणश्च देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा सूर्य और केतवा किरणों के साथ विभिन्न पदार्थों के साथ होने वाले कर्म गुण, क्रिया के भिन्न-भिन्न सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रकरण यजुर्वेद ८।२३ वाले अनुवाक, ऋ० स० १।४।४१।१, ऋ० आ० १।११।२ निरुक्त ३।२० द्वारा निर्देशित है। १।२७।११ से १३ वाले प्रसंग में अग्नि एवं विश्वोदेवा देवता में भी इसका कुछ वर्णन मिलता है। यह प्रसंग सामवेद १६६४ ६५ वाले त्रिक तथा निरुक्त ३।२० द्वारा एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं।

ऋग्वेद १।३३।१ से ५ अंगिरसो हिरण्यस्तूप ऋषि इन्द्र देवता के त्रिष्टूप छन्द द्वारा सूर्य विद्युत विज्ञान के साथ केतवा नामक किरण तथा अन्य किरणों के साथ समन्वय किया है।

ऋग्वेद १।३६।११ से १५ घोर : काण्व ऋषि ने अग्नि देवता के वृहती पक्ति और अनुष्टूप छन्दों के माध्यम से ये मेघ विज्ञान और अग्नि विज्ञान के द्वारा केतवा नामक किरणों को जोड़कर पदार्थों के साथ विभिन्न सिद्धान्तों को दर्शाया है। यह प्रकरण सामवेद पूर्वार्चिक ५७। ऋ० आ० ३।६।१।२, ऐ ब्रा० ४।५।२२ द्वारा प्रकाश डाला गया है।

ऋग्वेद १।६०।१ से ५ गौतमो नोधा ऋषि ने अग्नि देवता त्रिष्टूप और पक्ति छन्द द्वारा अन्तरिक्षस्य पदार्थों के साथ केतु नामक किरण से होने वाले गुण दर्शाये हैं।

ऋग्वेद १।६९।१।५,आंगिरस ऋषि द्रविणोदा अग्नि कुद्रोऽग्नि वाले प्रसग में अग्नि और वायु के विशेष ज्ञान को अन्तर्निहित मातृरिश्वा नामक अन्तरिक्ष में सोने और बाहर-भीतर रहने। पवन के साथ ऋग्वेद १।६०।१ से ५ वाले प्रसग से जोड़ताहै। आंगिरस कुत्स ऋषि ने ऋग्वेद १।११३।११ से १५ वाले वर्ग में ऊषा देवता के लिए त्रिष्टूप और पंक्ति छन्द में किरण विज्ञान और उषा विज्ञान का समन्वय किया है।

दैघर्तमस: कक्षीवान् ऋषि प्रसंग में रजस नामक परमाणु पदार्थ और ऊषा विज्ञान और सूर्य मण्डल के साथ केतवा नामक किरण के साथ सम्बद्ध किया है। ऋग्वेद १२४।११ से १३ वाले प्रसंग में सूर्य की किरणों के साथ इसके गुण विशेषों पर प्रकाश डाला है। यह प्रसंग ऋग्वेद ६।६४।६ में भी है।

अंगिरस कुत्स ने ऋग्वेद १।११३।१९ वाले वर्ग में ही सूर्य ऊषा विज्ञान के साथ केतवा नामक किरण सिद्धांत का समन्वय किया है।

ऋग्वेद १।१६६।१ से ५ वाले वर्ग में मैत्रावरुण अगस्त्य ऋषि: मरुत देवता के जगती छन्द द्वारा केतवा नामक किरण विज्ञान के साथ वायु विज्ञान का समन्वय किया है।

अगस्त ऋषि ने अबोपधि सूर्य्या देवता के उष्णिग एवं अनुष्टुप छन्दों के माध्यम से ऋग्वेद १।१९१।१ से ५ वाले वर्ग में केतवा किरण विज्ञान द्वारा जीव विज्ञान के साथ समन्वय किया है। यह प्रकरण अथर्ववेद ६।५२।१ से ३ वाले में भी है। ●

समुद्र में डूबते देशों को सिर्फ गाय बचा सकती है

—दशरथ उपाध्याय—

अगले तीस वर्षों में उफनते हुए समुद्र से पूरे के पूरे कई देश बह जायेंगे तथा अमरीका के बोस्टन नगर से बम्बई तक बाढ के पानी में डूब जायेंगे। जाने-माने समुद्रीय वैज्ञानिक स्टीफन केवस ने यह चेतावनी देते हुए कहा है कि इस भयावह स्थिति के बावजूद कोई भी इस ओर ध्यान नही दे रहा है। उन्होंने कहा है कि उफनते हुए समुद्र से प्रशान्त महासागर की द्वीप किटीबाती तथा सूडनी ओपेरा हाऊस पूरे के पूरे जल समाधि ले सकते हैं। उनका यह भी कहना है कि बगला देश मे ही एक करोड पचास लाख लोगो को या तो वहा से हटाना होगा या वे डूब जायेंगे। बगला देश को जमीन का बडा हिस्सा खाली करना होगा क्योकि नीदरलेंड की तरह बाध बनाने के लिए उसके पास धन नही है। ऐसे मे यदि वे भारत में घुसपेठ करे तो उन्हे दोष नही दिया जा सकता। श्री केवस ने कहा कि वेनिस सकट मे घिर ही चुका है क्योकि न केवल यह धस रहा हैं बल्कि यहा का जल स्तर भी बढ रहा हैं।

वैज्ञानिको का कहना है कि पृथ्वी के वायु मडल मे कार्बन, डाई-आक्साइड बढने से तापमान बढता है, बर्फ पिघलती है और साथ ही समुद्र का जल स्तर भी बढता है। वैज्ञानिको ने आशका व्यक्त की है कि दक्षिण ध्रुव के एक बडे हिस्से मे व्यापक विखडन होने से यह प्रक्रिया और तेज होगी। आशका है कि अगले तीस वर्षों मे समुद्र का जल स्तर १ ५ से १.५ मीटर तक बढ जायेगा और फिजी जैसे निचले प्रशान्त द्वीपो के तट खेती के लायक नही रहेगे। पर्यावरण के बदलते हुए मिजाज की इस प्रक्रिया से हर स्थान के तटीय [illegible]रो को खतरा होगा। इससे बचने के लिए अरबो-खरबो खर्च करने होगे तथा इनके सामाजिक प्रभाव से देशो के बीच गहरे [illegible] खडे हो सकते हैं।

उक्त चेतावनी २१ फरवरी के समाचार पत्रो में छपी है।

श्री स्टीफन केवस ने अपनी चेतावनी में पृथ्वी पर कार्बन डाई-आक्साइड की बढती मात्रा को कारण विशेष माना है। यह सही दीखता है कि आज की भौतिकवादी दुनिया मे मानव जिन [illegible]णो का प्रयोग अपनी सुख-सुविधा के लिए कर रहा है, वे [illegible]ाजनक लगने वाले उपकरण ही दुविधाजनक बन रहे हैं। [illegible]को पर चलने वाले वाहन हो या कारखानो की चिमनिया अथवा उनमे प्रयुक्त होन वाली विषैली गैस, ये वायुमडल को दूषित ही नही करते, प्रकृति के सतुलन को भी प्रभावित करते हैं।

आज का मानव स्वय को प्रगतिशील वैज्ञानिक युगीन भले ही कहता हो पर जिस विज्ञान के आविष्कार से लाभ की बजाय हानि अधिक हो तथा प्रकृति सतुलन बिगडता रहे तो इसे प्रगतिशील नही कहा जा सकता।

इससे तो भारतीय चिन्तको का दृष्टिकोण हर दृष्टि से उत्तम कहा जा सकता है जिसमें किसी भी कार्य को सम्पादित करने से पूर्व उसके लाभ-हानि का मूल्याकन ही शामिल नही है वरन परमेष्ठी श्रेष्ठी व जिवेष्ठी आदि के प्रत्येक पहलू पर पूर्ण विचार करके ही कोई कार्य करने की बात भी कही है। भारतीय दर्शन मानव मात्र को यह सीख देता है कि जितना प्रदूषण तुम दिन भर मे करते हो उतनी ही मात्रा मे वायु मडल को शुद्ध करने का श्रम भी करो तथा प्रदूषण कम से कम हो यह प्रयास अपने नित्य कर्म में करते रहो, इसी मानसिकता के सुपरिणामस्वरूप नित्य यज्ञ-हवन करने की बात ऋषियो ने की है।

गऊघृत से शुद्धिकरण

वायुमडल को शुद्ध करने मे सुगन्धित वनस्पतियाँ औषधियों को गऊ के घृत के साथ हवन करते और जलाते हैं। गऊ के घृत में वायु मडल को शुद्ध करने की अलौकिक शक्ति है। वैसे तो गऊ मानव और वनस्पति के लिए इतनी उपयोगी है कि जीवन पर्यन्त लिखते रहने पर भी पूरा वर्णन कर पाना कठिन है।

वैज्ञानिको की उक्त चेतावनी कि "कई देश उफनते समुद्र में समा जायेगे के सन्दर्भ मे हिन्दुओ द्वारा गऊ को माता मानना और उस गऊ के द्वारा वैतरणी में तर जाने की बात विज्ञान सम्मत लगने लगी है। कुछ विदेशी वैज्ञानिको ने गऊ पर विभिन्न प्रकार के जो शोधकार्य किए हैं तथा 'गाय'' के सम्बन्ध मे जो विचार प्रकट किए हैं वे यहा उल्लेखनीय हैं। जिनसे यह स्वत स्पष्ट है कि गाय की उपयोगिता आज के इस परमाणु और रेडियेशन के युग मे कितनी बढ गई है।

रूस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री शिरोविच रूस मे गाय पर किए गए शोधो को बताते हुए लिखते हैं—

१ गाय के दूध में रेडियो विकरण से सुरक्षा की सर्वाधिक क्षमता है। २ जिन घरो को गाय के गोबर से लीपा जाता है उनमे रेडियो विकरण का प्रभाव नही होता। यदि घर की छत पर गाय का गोबर लीप दिया जाए तो घर के अन्दर रेडियेशन (विकिरण) का घुसना कठिन हो जाता है। कहा जाता है कि यदि बिजली चमक कर गोबर मे गिर जाए तो वहीं पर समाप्त हो जाती है। ३ यदि गोघृत आग में डालकर धुआ किया जाए तो वायुमडल में रेडियेशन का प्रभाव बहुत कम हो जाएगा। ४ श्री शिरोविच कहते हैं कि रूस मे गाय के 'पचगव्य' पर शोध कार्य हो रहा है। गाय के पचगव्य (दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र) के प्रलेप से अनेक चर्म रोग जीवन पर्यन्त के लिए ठीक हो जाते हैं। पचगव्य के सेवन से मनुष्य सदैव निरोग जीवन व्यतीत करता है।

हिन्दू व हिन्दू जीवन दर्शन को बुर्जुआ बताने वाले और अपने आपको प्रगतिशील मानने वालो को भारत के महान् ऋषियो द्वारा प्रतिपादित मानवकल्याण के गूढ रहस्यो को सहर्ष स्वीकार करने में हिचकना नही चाहिए इसी में सबका भला हैं। आज 'गाय' की जो दुर्दशा हो रही है उस ओर ध्यान दिया जाए तो कार्बनडाई-आक्साइड के बढते खतरे से बचा जा सकता है। तब न तो बर्फ पिघलने की प्रक्रिया होगी और न ही उफनते समुद्र में देश समा पायेंगे। इस प्रकार गऊ माता द्वारा सागर में डूबने से बचा जा सकता है या यो कहिए कि (जैसा कि हिन्दू मान्यता है) गऊ की पूछ पकड कर वैतरणी पार कर सकते हैं अन्यथा डूबने से कोई नही बचा पाएगा।

अमरीका द्वारा समय-समय पर बाजार भावो का सन्तुलन बनाए रखने के लिए मक्खन के पहाड के पहाड समुद्र मे डाले जाते हैं जिनका समुद्री जीवो के खाने के अलावा कोई उपयोग नहीं है। उक्त मक्खन को अगर, देवदार, चन्दन, पीपल, आम, बरगद आदि वृक्षों की लकडी और जौ, तिल आदि वनस्पति औषधियो को घी साथ बडी मात्रा में लगातार जलाया जाए तो प्राणी मात्र को ही अधिक लाभ हो सकता है। अत उचित है कि घी समुद्र मे न डुबोकर इसे अग्नि मे डाला जाए (यज्ञ हवन किया जाए)।

पीपल का वैज्ञानिक आधार

हिन्दू समाज के लोग पीपल की पूजा करते हैं श्रद्धा व भक्ति या परम्परा को देखते हुए, उसके महत्व को समझने अथवा नहीं समझने पर भी पूजन-अर्चन करते हैं। वे विष्णु भगवान का वास पीपल में मानते हैं तो साक्षात् धन की अधिष्ठात्री लक्ष्मी का निवास भी पीपल में माना गया। आज विज्ञान इस परिणाम पर पहुचा है कि दुनिया में एकमात्र पीपल का वृक्ष ही ऐसा वृक्ष है जो रात

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य समाज के प्रचार को नई दिशा दें एक सुझाव

—श्री भोलानाथ दिलावरी प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर—

आर्य समाज की नींव आज से ११२ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने रखी थी इस दृष्टि से कि लोप हुए वैदिक-धर्म, आर्य धर्म को पुनः स्थापित कर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" रूपी वेदाज्ञा, को मूर्त रूप दिया जावे। महर्षि ने अनुभव किया कि "आर्य-सन्तान" अपनी चेतना खो बैठी है। अपने को आर्य न मान हिन्दू कहलाना प्रारम्भ कर दिया है। और नाना प्रकार के मत-मतान्तरों के झाड-झंखाड में बुरी तरह उलझ कर रह गई है। सर्व प्रथम इन्हें चेतना दी जावे, आर्य सनातन धर्म का ज्ञान कराया जावे। इसी महान् कार्य में वह अपनी मुक्ति का ध्यान छोड, अपना सर्वस्व त्याग प्राणपन से जुट गए। स्वयं विष पी, हमें वेद ज्ञान, आर्यत्व का अमृत पिलाते-पिलाते जीवनोत्सर्ग "प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो" कहते-कहते कर दिया।

महर्षि हिन्दू आर्य सन्तानों को मुसलमान ईसाई बनाते देख अत्यन्त दुःखी रहते थे। उन्होंने हिन्दुओं की रक्षा का महाभियान चलाया।

सब ने देखा कि गत ११२ वर्ष के कार्य काल में "आर्य समाज" ने हिन्दुओं में आर्य चेतना जगाने के लिये अद्भुत कार्य किया। शिक्षा के क्षेत्र में तो अन्य किसी संस्था ने भी इतना कार्य न किया होगा।

इसके अतिरिक्त सामाजिक कुरीतियो, स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार विधर्मी, हुए हिन्दुओं को वापिस आर्य धारा मे लाने में तो मानो कमाल ही कर दिखाया। इस प्रकार हिन्दुओं मे नया जीवन लाने में कोई कसर न उठा रखी।

"आर्य समाज" अब कोई साधारण संस्था नही है। बडी विशाल समृद्ध हो चुकी है। राष्ट्र भर में, तो स्थान-स्थान पर इसकी समाए विद्यमान हैं। बाहर विदेशो मे भी हैं। डी० ए० वी० एवं अन्य आर्य स्कूल-कालेज हजारों की संख्या में देश-देशान्तरो में शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। एक सौ के करीब "गुरुकुल" भी कार्य कर रहे हैं। करीब-करीब सब प्रान्तों में आर्य प्रादेशिक सभाए भी हैं।

अब केवल इसकी गति में तेजी एवं कार्य पद्धति मे सुधार लाने की जरूरत है। बदले हालात में कार्य क्षेत्र का आकलन करना होगा। सुधरे नये-नये तरीकों से आर्य धर्म संस्कृति का सारे हिन्दू समाज मे प्रचार प्रसार करना नया जीवन जाग्रत चेतना लानी होगी।

इस पवित्र कार्य मे हमारी शिक्षण संस्थाए जिनमे हर वर्ष लाखों बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बडा महत्वपूर्ण योगदान दे सकी हैं। बच्चों मे आर्यत्व कूट-कूट कर भर सकती हैं। इसी सम्बन्ध मे मैंने अपने विचार आर्य बुद्धि जीवियों की गोष्ठी में भेजे थे, जो देहली मे २० से २३ तक अप्रैल ८७ को हुई थी। उसमे क्या निर्णय लिए गए, मुझे कोई जानकारी नही।

अब इस लेख में, मैं विशेष रूप से इस बात की ओर अपने विचार केन्द्रित कर रहा हूँ कि आर्यत्व के महत्वपुर्ण कार्य के, प्रचार प्रसार मे "आर्य समाजों के संगठन कैसे अद्भुत कार्य कर सकते हैं।

इस आधुनिक युग मे नए-नए आविष्कार हो गए हैं जिनसे प्रचार-प्रसार का कार्य बडी सफलता से किया जा सकता है। इन्हें कार्य में हम व्यापक रूप से, दूर समीप सब जगह छा सकते हैं। यात्रा आदि के खर्चे से बच सकते हैं। जनता मे आकर्षक भी सिद्ध हो सकते हैं। जब कि उपदेशक अपना जादू खो बैठा है। आधुनिक साधन द्वारा हम चाहें तो २ ३ वर्षों के अल्पकाल मे ही योजना बद्ध कार्य पद्धति से वह कार्य कर सकते हैं तो पूर्व मे १०० वर्षो मे भी सम्भव न था।

वह साधन है क्या ? वर्तमान युग का आविष्कार है, इसे वीडियो टी वी प्रणाली कहा जाता है। इसके द्वारा कैसटो पर प्रसिद्ध विद्वानों के व्याख्यान फिलमाए जा सकते हैं। आर्य महापुरुषों की जीवन झाकियां, नाटक एवं वैदिक धर्म सम्बन्धी अन्य रोचक प्रभावी कार्यक्रम तैयार करवाए जा सकते हैं और इन्हे बहुत कम खर्च पर, व्यापक रूप से, हर स्थान पर आसानी से भेजे जा सकते हैं। इस प्रकार प्रत्येक आर्य समाज में, जलसो में। स्कूलों मे बडी आसानी से दिखाया जा सकता है। मजे की बात यह है कि इन्हे देखने के लिए बाल-वृद्ध स्त्री पुरुष स्वयमेव खिचे चले आते हैं। जितनी प्रभावी सूचना होगी, उतनी अधिक देखने वालों की उपस्थित होगी।

योजना कार्य का रूप—

उपरोक्त उद्देश्य प्राप्ती अर्थ योजना का प्रारूप क्या हो ? सक्षेप से मोटे रूप से मेरे निम्न सुझाव हैं।

१ यह एक महान् एव दूर रस कार्य है। इसका कार्यक्षेत्र बडा विस्तृत है। इसे स्थाई रूप भी देना है। अत इस कार्यको सब प्रादेशिक आर्य सभाए एव सार्वदेशिक सभा, मिल कर करें तो इसे पूरा बल मिलेगा।

२ इस विशेष कार्य के लिए अलग संस्था का निर्माण करना होगा। इसमे उच्च कोटि के मूर्धन्य आर्य विद्वान, शिक्षा शास्त्री, लेखक, कवि, कलाकार, चित्रपट अनुभवी-विशेषज्ञ लेने होंगे।

३ धन, अनुमानत इस कार्य के लिए २०-२५ लाख की राशी तो होनी ही चाहिए। इसके लिए सब सभाए एक-एक लाख रुपया दें। ताकि कार्य शीघ्रातिशीघ्र प्रारम्भ किया जा सके। साथ ही इस नई संस्था की ओर से २०), ५) और १००) की रसीदें छपवा कर सब समाजों एव आर्य सज्जनो को दी जावें। ताकि धन में भी कमी न आने पाये। इस कार्य मे हमारी केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर से पूरी शक्ति के साथ हाथ बटाएगी। एक लाख तो कर ही देगी।

आर्य समाज का विशेष प्रभाव, सर्व साधारण हिन्दू जनता पर डालने के लिए वीडियो केसटो द्वारा भरे जानेवाले प्रोग्रामो मे कुछ कुछ समय के अन्तर पर निम्न नारे उदघोष) भी भरे जावें। इनका भी भारी प्रभाव पडेगा। ●

गाय बचा सकती है

(पृष्ठ ६ का शेष)

और दिन चौबीसों घण्टे आक्सीजन छोडता है और कार्बनडाई-आक्साइड ग्रहण करता है। इससे बडा मानव उपकारी कौन हो सकता है, जो इतना देता है। इसीलिए हिन्दू-समाज पीपल को देवता मानकर पूजन-अर्चन व उसके संवर्धन करने की सीख देता है।

अत दुनिया के वैज्ञानिको को कई देश व नगरो के कार्बनडाई-आक्साइड के बढते खतरे के कारण डूबने से डरने की कोई आवश्यकता नही है। वे निडर होकर हिन्दू समाज की उपरोक्त वैज्ञानिक अवधारणा को स्वीकार करते हुए उस पर अमल करे। यानी गाय के घृत का हवन संयुक्त राष्ट्रसंघ के माध्यम से सब देशो में कराया जाए और उसी माध्यम से पीपल के वृक्षो के रोपण का युद्ध स्तर पर कार्य किया जाए तो आने वाले तीस वर्षों मे कार्बनडाई-आक्साइड समाप्त नही होगी तो कम से कम वह अपना दुष्परिणाम दिखाने में भी सफल नहीं होगी। वैज्ञानिक इस ओर ध्यान दे तो दुनिया को डूबने से बचाया जा सकता है।

मेरठ के साम्प्रदायिक दंगों की जांच रिपोर्ट (२)

—डा. आनन्द प्रकाश—

साम्प्रदायिक उपद्रवों को रोकने तथा उनमें हुई जानमाल की हानि की क्षतिपूर्ति करने की दृष्टि से कुछ सुझाव नीचे दिये जा रहे हैं :—

(१) इन दंगों से निपटने में सशस्त्र पुलिस और पी.ए.सी. ने सराहनीय भूमिका निभाई है। ३ वर्ष पूर्व मुरादाबाद में जो व्यापक पैमाने पर साम्प्रदायिक दंगे हुए थे, उसकी जांच रिपोर्ट मिल गयी है, जिसमें यही कहा गया है कि पी० ए० सी० ने आवश्यकता से कम बल प्रयोग किया। मेरठ के बारे में भी सचाई यही है कि प्रशासन पर दबाव डालकर समुचित बल प्रयोग नहीं करने दिया गया। पुलिस, सशस्त्र पुलिस, पी.ए.सी. और सेना के जो जवान शान्तिप्रिय नागरिकों की जान माल की रक्षा करते हैं, उनके मनोबल को बढ़ाया जाना चाहिए : उन्हें अच्छे कामका पारितोषिक और प्रमोशन मिलना चाहिये। जिस स्थान पर दंगा हो वहांपर कमसे कम ६ महीने एक पी ए.सी को रहना चाहिए। इन सेवाओं में भर्ती धर्म और जाति के आधार पर नहीं, अपितु केवल मात्र योग्यता के आधार पर होनी चाहिए।

(२) जो धार्मिक और राजनैतिक नेता साम्प्रदायिकता भड़काते हैं और दंगे कराते हैं, उन पर देशद्रोह का मुकदमा चलाना चाहिए तथा उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा कानून मे बन्द कर देना चाहिए। केन्द्रीय सरकार अब्दुल्ला बुखारी के शहाबुद्दीन और हाजी मस्तान की गतिविधियों पर अंकुश लगाये। ऐसे संसद सदस्यों की संसद की सदस्यता तुरन्त समाप्तहो जानी चाहिए जो साम्प्रदायिक दंगों का कारण बनते हैं। जो राजनैतिक कार्यकर्ता इस प्रकार की मनोवृत्ति का हो उसे राजनैतिक दल टिकट न दें। स्मरणीय है कि १९८२ के दंगे के बाद मेरठ के एक कांग्रेसी विधायक श्री अहमद को श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कांग्रेस पार्टी से निकाल दिया था।

(३) धार्मिक स्थानों का दुरुपयोग रोका जाना चाहिए। इसका कटु अनुभव हमें पंजाब में पहले ही हो चुका है। पुलिस और सशस्त्र बलों को अधिकार होना चाहिये कि वे धार्मिक स्थानों की तलाशी ले सकें। धार्मिक स्थानों पर लाउडस्पीकर न लगाये जायें। साथ ही धार्मिक स्थलों पर प्रार्थना बाद राजनैतिक भाषण न किये जायें। इस नियम का पालन बहुत कड़ाई से होना चाहिए।

(४) जो पाकिस्तानी नागरिक भारत में आते हैं, उनके लिए एक अनिवार्य नियम बनना चाहिए कि वे अपनी पहचान के लिए एक परिचयपत्र हमेशा साथ मे रखेंगे और यदि किसी के पास यह परिचय पत्र नहीं होगा तो उसे कठोर दण्ड दिया जाएगा। वैसे तो पाकिस्तान से आने वाले लोगों की संख्या बहुत सीमित कर देना उचित होगी क्योंकि बड़ी संख्या में यह अवैध रूप से भारत में रहने लगते हैं और समस्या उत्पन्न करते हैं। अवैध रूप से रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों की छानबीन तेजी से की जाय और उनके लिये कठोर दण्ड का विधान हो।

(५) इन दंगों में जिन लोगों की सम्पत्ति नष्ट हुई है, उनकी क्षतिपूर्ति भी पूरी तरह से की जानी चाहिए। खासतौर से जो कल-कारखाने जलाकर नष्ट कर दिये गये हैं, उनकी इस प्रकार सहायता की जाय, ताकि वे फिर अपना उत्पादन प्रारम्भ कर सकें। यदि ऐसा नहीं किया गया तो मेरठका बहुत बड़ा आर्थिक आधार नष्ट हो जाएगा। जिन लोगों की दंगो में मृत्यु हुई है, उनके आश्रितों को सरकार आर्थिक सहायता देती है, परन्तु इनमें उन लोगों को सम्मिलित नहीं माना जाता जिनकी लाश बरामद न हुई हो। मेरठ में बहुत से लोगों को जिन्दा जला दिया गया है। लखीमपुर स्थित नैपालसिंह के फार्म में ही ८ व्यक्तियों को जिन्दा जला दिया गया। अतः उन मृतकों के आश्रितों को भी आर्थिक सहायता दी जाय जिन्हें जिन्दा जलाया गया और जिनकी लाश बरामद नहीं हुई। जिन क्षेत्रों में आगजनी हुई है, वहां सामूहिक जुर्माने करके क्षति पूर्ति का धन वसूला जाय।

(६) मेरठ का जामा मस्जिद क्षेत्र हिन्दू बहुल क्षेत्र है। इसकी ऊपर की मंजिल में छात्रावास के नाम से भवन बनाने का प्रयास किया जा रहा है, जो इस क्षेत्र की सुरक्षा के लिए खतरा बन सकता है। इस निर्माण कार्य को पहले भी २ बार रुकवाया जा चुका है, परन्तु फिर भी निर्माण के प्रयास हो रहे हैं। इस ओर ध्यान देना आवश्यक है। वैसे जिन स्थानों पर बराबर झगड़े होते रहते हैं वहां ६० फीट ऊंचे टावर बनाकर उनके ऊपर से निगरानी रखना उचित होगा। इन टावरों पर सैंच सर्च लाइट और टेलिस्कोप लगे होने चाहिए। नगर के ऐसे सारे टावर एक केन्द्रीय स्थान से जुड़े रहें और सभी का आपस में तालमेल रहे। ऐसी व्यवस्था से हरदम निगरानी की जा सकती है और सुरक्षा व्यवस्था बहुत प्रभावी होगी। साथ ही स्थाई रूप से तैनात पुलिस और पी० ए० सी० की संख्या को कम किया जा सकता है।

(७) इस बार के दंगों का एक चिन्ताजनक पहलू यह भी है कि इस बार पुलिस और पी० ए० सी० पर घात लगाकर हमले किए गये। कई जवान बहुत गम्भीर रूप से घायल हुए। यहां तक कि सेना का मुकाबला करने की कोशिश की गयी। सड़कों पर खाइयां खोदी गयी और अवरोधक खड़े किये गये। मुस्लिम बहुल इलाकों में किलेबन्दी जैसी तैयारी की गयी। यह सारी चीजें यह दर्शाती हैं कि बहुत बड़े पैमाने पर राष्ट्रद्रोह की तैयारी की जा रही है, जिसका उद्देश्य राजधानी के समीप अशांति उत्पन्न करना है। अतः हमारे गुप्तचर विभाग को इन सारीचीजों की छानबीन करना और ऐसे स्थाई उपाय सुझाना जरूरी है, जिससे इनकी पुनरावृत्ति न हो। प्रशासन को निष्पक्ष निर्णय लेने मे सक्षम होना चाहिये और दोषी व्यक्तियों को कठोर दण्ड देना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि दंगों के बाद वर्षों तक जांच और अदालती कार्यवाही चलती रहती है। और अन्त में अधिकतर सब समाप्त कर दिया जाता है। इस बार के मेरठ के दंगों में जो व्यक्ति दोषी ठहराये जावें, उनके साथ कोई नम्रता न बरती जाय।

(८) १४ अप्रैल से लेकर अब तक के सभी घटनाचक्र की जांच करने के लिए न्यायिक जांच कमेटी बनाई जाय। मलियाना की घटना की अलग से जांच से किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता। मलियाना की घटना से जुड़े हुए मूलभूत कारणों को भी उजागर किया जाय।

(९) जिन नागरिकों और सामाजिक संस्थाओं ने प्रशंसनीय कार्य किया है उनके मनोबल को बढ़ाया जाय। नागरिक समितियों के कार्य को मजबूत बनाया जाय। और जनजीवन को सामान्य रखने तथा नागरिक सुरक्षा की दृष्टि से इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। यह सराहना योग्य बात है कि मलियाना के सम्बन्ध में जिस समय अतिभ्रामक प्रचार चल रहा था, वहां के कांग्रेसी विधायक श्री नानकचन्द आजाद ने निष्पक्ष और सही वक्तव्य देकर सच्चाई का ज्ञान कराया और न्याय का पक्ष लिया। ऐसे व्यक्ति का सार्वजनिक अभिनन्दन होना चाहिए।

(१०) जिन थाना क्षेत्रों के अन्तर्गत बराबर दंगे हो रहे हैं, उन पुलिस थानों को और अधिक आधुनिक शस्त्रों और सुविधाओं से सुसज्जित किया जाय। इसी प्रकार जिन क्षेत्रों में निरन्तर दंगे चल रहे हैं, वहां पर साधन सम्पन्न पुलिस चौकियां स्थापित की जायें।

जीवन की घड़ी

—कर्मनारायण कपूर; दिल्ली

(१) अथर्ववेद (४ १६-५) की सूक्ति है—"सख्याता अस्य निमिषो जनानाम" अर्थात् परमात्मा ने मनुष्यों और प्राणियो के पलकों की झपको तक को गिन रक्खा है।

कई आयुर्वेद विद्वान निमेष का अर्थ श्वास लेते हैं और कहते हैं कि प्रत्येक प्राणी के श्वास परिगणित रहते हैं। इसी कारण योगी श्वासो को प्राणायाम द्वारा कम करने से अपनी आयु काल मे वृद्धि कर लेते हैं। यह अर्थ तर्क सगत प्रतीत नहीं होता है। किन्तु यह वैदिक सूक्ति प्राणायाम द्वारा आयु-काल वृद्धि की धारणा का रहस्य खोलकर रख देती है। आख का निमेष (पलक मारना) केवल जागृत अवस्था मे होता है निन्द्रा तथा ध्यान-अवस्था में कदापि नहीं हो सकता। अत यह सिद्ध हो जाता है कि ध्यान अवस्था मे योगी पलकों की झपकों को बन्द कर निर्धारित झपकों की गिनती को कम न करता हुआ अपनी आयु काल में वृद्धि कर सकता है।

(२) जाति आयु और भोग पूर्वकृत कर्मों के फल स्वरूप मिलते हैं। (योग दर्शन २।१३)। ऋग्वेद (८ ५ ७) का कथन है कि ऐश्वर्यवान प्रभु के अधीन समस्त जनों का जीवन है। (सन्ति आशिष इन्द्र आयु जनानाम्)

(३) जीवन की घड़ी आखो की पलको पर आधारित है। यह पलकें गिनी हुई तथा निर्धारित हैं। इस घड़ी की विशेषता यह है कि निद्रा तथा ध्यान अवस्था मे यह बन्द रहती है। जागृत अवस्था में स्वय चलने लगती है। जब गिनी हुई पलकें पूर्ण हो जाती है तो प्राणी की जीवन लीला समाप्त हो जाती है।

(४) अब यह प्रश्न विचारणीय हो जाता है कि इस जीवन, नेत्र, घड़ी से प्राणी की वर्ष, मास, दिन बाकी आयु का ज्ञान हो सकता है कि नहीं। इस प्रश्न का सीधा उत्तर यह है कि यह ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि एक तो किसी प्राणी को अपनी पलकों की निर्धारित सख्या का ज्ञान नही होता और दूसरे यह जानना असम्भव है कि प्रत्येक घण्टे में प्राणी कितनी बार आख की पलक को झपकता है। इसे जानने के लिए कोई नियम नहीं मिलता है। यह तो सत्य है कि भारतीय मनीषियों ने पलक झपकने के समय को माप-दण्ड बनाकर काल-गणना की स्थापना निम्न रूप से की है—

१८ पलक	=	१ काष्ठा
३० काष्ठा	=	१ कला
३० कला	=	१ महूर्त
३० महूर्त	=	एक दिन रात

इस माप-दण्ड के अनुसार दिन रात का काल ४८६००० पलकों के काल के तुल्य होता है। परन्तु इससे यह निष्कर्ष नही निकलता कि एक दिन रात में प्राणी ४८६ हजार पलकें झपकता है, सत्य तो ऐसा प्रतीत होता है कि रात-दिन में प्राणी ५० १०० बार पलक झपकता होगा होगा।

रात्रि में निद्रा अवस्था में पलको का झपकना बन्द रहता है। निद्रा के सम्बन्ध में यह स्मरण रहे कि शिशु तथा बालक चिरकाल तक निद्रा अवस्था में रहते हैं और वृद्धो को निन्द्रा कम प्राप्त होती है। इसी कारण, पलको के झपकने का कोई सामान्य नियम नही हो सकता।

(५) वेद की इस पलक सख्या सिद्धान्त की सम्पुष्टि आधुनिक मैडिकल विज्ञान करता है। डाक्टरो के अनुसार हृदय गति व श्वास प्रश्वास का बन्द होना तथा शरीर की उष्णता का न रहना मृत्यु का भले ही आपातत चिह्न हो, किन्तु पलक का न झपकना तथा आख की पुतली की स्थिरता ही मृत्यु का विश्वसनीय चिन्ह है। अत यह कहना सत्य ही होगा कि अन्तिम पलक के साथ मृत्यु हो जाया करती है।

यह तो सर्वविदित है कि योगी श्वास प्रश्वास, हृदय गति तथा शारीरिक उष्णता को अपनी शक्ति के द्वारा रोक सकते हैं। इनके बिना भी वे जीवित रहते हैं। इसलिए ऊपर वर्णित डाक्टरो के मत मे किसी प्रकार की शका का करना व्यर्थ है।

(६) मनीषियो का कहना है कि कोई व्यक्ति अचेतन दशा मे मृत्यु को प्राप्त नही होता है। अचेतन व्यक्ति भी अन्तिम समय मे विज्ञानवान होता और उसी दशा मे शरीर को त्यागता है (बृहदारणयक उ ४ ४ २) उस समय कुछ मिनटो मे ही वह अपने गत जीवन की मुख्य घटनाओ को देखता अथवा स्मरण करता है। वह अपनी आंख को एक बार खोलता है और बन्द कर लेता है। यह उसकी आख की अन्तिम झपक होती है। तब उसकी आत्मा इस पार्थिव शरीर को त्याग कर ब्रह्माण्ड की वायु मे मिल जाती है।

आर्यजगत् के समाचार

आर्यन क्लब का कार्य प्रगति पर

भारत राष्ट्र की अखण्डता व सांस्कृतिक एकता को सुदृढ बनाए रखने के उद्देश्य से १५ अगस्त १९८६ को आर्यन् क्लब की स्थापना की गई थी। इस अल्प अवधि मे आर्यन् क्लब द्वारा विचार गोठियों का आयोजन कर युवक-युवतियो को भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षित करने का प्रयास किया गया। दिसम्बर ८६ मे रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया। इन्डौर खेलो के माध्यम से किशोरो मे स्वास्थ्य एवं संगठन के भावो को जागृत करने का भी प्रयत्न किया जा रहा है। ६० सदस्यो के सहयोग के शुरू किये गये आर्यन् क्लब की सदस्यता इस एक वर्ष की अल्प अवधि मे बढकर डेढ सौ से ऊपर हो गई है जो क्लब की लोकप्रियता का सूचक है।

— अशोक आनन्द, संयोजक

उत्सव समाचार

— आर्य समाज भरथना इटावा मे ११ से १७ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। आचार्य राजदेव जी व नेमप्रकाश जी के प्रवचन व भजन हुए।

— आर्य समाज बहजोई (मुरादाबाद) मे वेद प्रचार व जन्माष्टमी समारोह पूर्वक मनाई गई ब्रह्मचारी रामलाल आर्य श्री प्रभात आर्य व स्वामी कडकक्षेत्र जी क प्रेरणात्मक भाषण हुए।

— आर्य समाज ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद) मे जनपदीय सम्मेलन समाज का वार्षिकोत्सव १५ से १८ अक्टूबर एक मनाया गया।

— गुरुकुल रामलिंग वेदश्री बेहली का चतुर्थ वार्षिकोत्सव महाराष्ट्रीय वैदिक वातावरण मे मनाया गया स्व० स्वात्मा नन्दबाबूर महात्मा उत्तममुनि धर्माबाद प० गणेशदेव आर्य नावेड, प० देवीदास हलर्डीकर प्रो० वेदकुमार वेदालकार उस्मानाबाद श्री दोलतराम चड्ढा नावेड़ डा० तानाजी आचार्य लातूर ने जनता को उदबोधन किया।

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई —

६ से १६ अगस्त तक, यजुर्वेद पारायण यज्ञ, ब्रह्मा डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू) संगीत श्रीमती निरपालकशी कार्मा का हुआ। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन श्री सूरजीवल्लभदास की अध्यक्षता में हुआ।

आर्य समाज सलावाली मण्डी हरियाणा —

श्री जयदेव अताई, मास्टर प्रेमप्रकाश आर्य द्वारा जलकथा पूव वेद वेद सप्ताह मनाया गया।

आर्य समाज जगपुरा नई दिल्ली १

६ से १६ तक सामवेद पारायण यज्ञ ब्रह्मा श्री आचार्यश्रीदेवी के ब्रह्मत्व मे सफलता पूर्वक मनाया गया। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी बड़े उत्साहपूर्वक मनाई गई।

आर्य समाज मथुरा मे —

६ से १६ तक उत्सव समारोहपूर्वक मनाया गया।

यज्ञ भवन जवाहर नगर दिल्ली में —

वेद प्रचार सप्ताह १२ अगस्त से २३ अगस्त तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ।

आर्य समाज मदुराई में —

६ से १६ अगस्त तक समारोह पूर्वक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया।

आर्य समाज अल्मोडा में आचार्य जयदत्त शास्त्री के द्वारा श्रवणी पर्व सोत्साह पूर्वक मनाया गया।

आर्य समाज रेलो रोड अम्बाला शहर में स्वामी दयानन्द जी विदेह की अध्यक्षता मे ६ से १७ अगस्त तक उत्सव मनाया गया।

चुनाव समाचार

— आर्य समाज इटारसी द्वारा विधिवत् श्रावणी उपाकर्म व हैदराबाद स त्याग्रह दिवस मनाया गया।

— आर्य समाज गुलाबाग वाराणसी के वार्षिक चुनाव मे श्री कृष्ण नारायणसिंह प्रधान व श्री रामवतीसिंह मन्त्री चुने गए।

आर्य समाज अनारकली नई दिल्ली

का वार्षिकोत्सव ६ नवम्बर से १५ नवम्बर ८७ तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। ६ से १४ तक प्रात गायत्री महायज्ञ होगा। १३ व ११ को आर्य महिला सम्मेलन १५ को आर्य युवक सम्मेलन होगा। उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी महात्माओ व भजनोपदेशकों द्वारा आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होगा।

नीदरलैण्ड में आदर्श विवाह

गत १५ जुलाई को आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड के तत्वावधान में दनहाक (Denhaag) मे प० सूर्यप्रसाद बीर्रे द्वारा एक सम्भ्रान्त परिवार की ईसाई कन्या ईवान जोऊतेनवीर जो एक सरकारी कर्मचारी की सुपुत्री है उन्हें शुद्ध करके वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया तथा सभा के अन्तरग सदस्य श्री लालता प्रसाद जी के सुपुत्र श्री विजय कुमार से वैदिक रीति के विवाह सम्पन्न कराया गया। हालैण्ड में अपने ढग का एक यह आदर्श विवाह है। डा० महेन्द्र स्वरूप सभा प्रधान ने इसमें सम्पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

असम आर्य प्रतिनिधि सभा

असम आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओमप्रकाश आनन्द की असामयिक मृत्यु के कारण उनके स्थान पर आर्य समाज गुहाटी में हुई बैठक में सर्वसम्मति से श्री अरुण शर्मा जी को मन्त्री नियुक्त किया है।

—नारायणदास, प्रधान

महात्मा प्रभु आश्रित जन्म शताब्दी —

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट तथा श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर इस बार अपना वार्षिकोत्सव "महात्मा प्रभु आश्रित जी की जन्म शताब्दी" के रूप में २० से २७ सितम्बर ८७ तक सोल्लास मना रहा है। जिसके अध्यक्ष महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी तपोवन देहरादून होंगे।

—चतुर्भुज मित्तल, मन्त्री



व्यक्तिगत चरित्र श्रेष्ठ होना चाहिए

—प० राजगुरु शर्मा—

गत ५ अगस्त से १२ अगस्त तक सुखद वर्षा हेतु मडी समिति प्रागण मे आय समाज खडवा की ओर से वृष्टि महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसमे ८ से १० इच तक वर्षा हुई। नित्य प्रात ८ से ११ दोपहर को २ से ३ बजे तक कानड की भजन मडली द्वारा भजन ३ से ६ तक पुन हवन एव रात्रि को नागपुर के भजनी श्री वेदपाल जी के भजन आचाय अमृतलाल जी होशगाबाद के प्रवचन साथ साथ ही यज्ञ के ब्रह्मा पडित राजगुरु शर्मा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि भारतीय सस्कृति म सबसे पहले व्यक्ति का चरित्र श्रेष्ठ होना चाहिए उसकी कथनी करनी म अ तर नही होना चाहिए। इसके बाद वह समाज सेवा करे एव राष्ट्र की राजनीति मे पदापण करे। जो खुद भ्रष्ट है जो खद चरित्रहीन है वह समाज का एव राष्ट्र का क्या निर्माण करेगा ? हम जो कुछ पढते हैं वह पढकर ना भूल वरन उसे अपने जीवन मे अ गीकृत कर। हमे आय समाज क अलावा अन्य धर्मो का भी अध्ययन करना चाहिए।

इस यज्ञ मे ३५ यजमान बैठ। प्रमुख यजमान श्री महेश नारायण जी सहाय खडलवाल थे। १२ तारीख का यज्ञ के समापन के बाद पडित राजगुरु का नागरिक अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर विषम अब्राहम विल्सन कुलगुरा सहर काजी कान्दरअली श्री स तोष सिह जी च वला पडित लक्ष्मी नारायण शर्मा का अभिन दन किया गया। श्रीफल फल एव शाल भट की गई। सभी धर्माध्यक्षो ने प डत राजगुरु शर्मा का पुष्पहार से स्वागत किया। सभी ने वृष्टि महायज्ञ की पूरी पूरी प्रशसा की।

पडित राजगुरु शर्मा ने समिति के अध्यक्ष श्री पूनमच द जी गुप्ता अध्यक्ष रामचन्द जी आय भ नालाल जन, नार यण सहाय खडलवाल एव आय समाज के युवा सचिव श्री कलाशचन्द जी पालीवाल का स्वागत कर उनके द्वारा किये गये काय की सर हना की गई।

इसके बाद ख डवा नगर के इतिहास मे विशाल चल समारोह घोड, बग्घी ट्राली कलशवाली महिलायें छात्र छात्रायें और सभी धर्मो के न ग रक वैदिक ध्वनि करते हुए चल रहे थे। जगह जगह पर से महिलाय एव पुरुष पुष्पहार से राजगुरु का स्वागत कर रहे थे। ८ दिन मे ख डवा नगर मे एक वैदिक वात वरण का निर्माण हो गया।

कायक्रम का सचालन यज्ञ की रिपोट एव आभार प्रदशन श्री कैलाशच द जी पालीवाल ने किया। यज्ञ को सफल बनाने मे श्री अमरच द जी कटारिया लक्ष्मीनारायण भागव बाबूलाल जी चौधरी क हैयालाल ख डल वाल छगनलाल चौधरी मनोहरलाल सेन विधायिका श्रीमती न दा मडलोई बालगगाधर शमा ज्ञानचन्द दनाज पूरनमल जी शर्मा दुर्गाप्रसाद खडलवाल, घनश्यामदास वेनानी वीरे द्र कुमार सोहनी पूनमचन्द जी आय आदि ने योगदान दिया।

रमेशचन्द्र शास्त्री विद्याभास्कर दिवंगत



दिल्ली २४ अगस्त। आज रात्रि १२ बजे श्री रमेशच द्र शास्त्री का देह वसान मूलच द अस्पताल मे हो गया। वह कुछ समय से फ लिज के आक्रमण से बीमार थे। श्री शास्त्री जी अलीगढ जिल के मोरना गाव के निवासी थे। पर प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आपकी शिक्षा गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर मे हुई। वहा रहते हुए प जाब से शास्त्री परीक्षा उत्तीण की। स्नातक होने के बाद प जाब लाहौर डी०ए०वी० स्कूल में अध्यापन काय किया उसके बाद विभाजन के पश्चात आर प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश मे सहा० सम्पादक के रूप मे आय मित्र का काय करते रहे। उसके बाद अमीनाबाद इण्टर कालेज लखनऊ मे अध्यापन काय किया उसके बाद दिल्ली आकर रामजस स्कूल सीताराम बाजार इसके बाद सन १९५४ से १९८४ तक दिल्ली प्रशासन के राजकीय विद्यालयो की सेवा से निवत हो गये। उ होने अपने जीवन काल मे महाविद्यालय ज्वालापुर के उपम त्री मन्त्री एव मुख्य अधिष्ठाता के पदो पर रह कर गुरुकुल की सेवा की। आयसमाज लोदी रोड के सदस्य थे और अधिकारी भी। कुछ समय सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के कार्यालय को भी सुचा रु रूप से चलाया। परिवार मे छ लडकिया थी जिनका विवाह आदि काय सम्प न कर चुके थे। च र वष पहले उनकी पत्नी का भी देहावसान हो चुका था। उनकी स्मृति मे आपने साव दशिक सभा को २१ हजार रुपए स्थिर निधि के रूप मे प्रदान किया। जिसके ब्याज से सस्कृत क विद्यार्थियो को छात्रवृत्ति दी जाया करेगी। ऐसे कमठ कायकर्ता श्री रमेशच द्र जी शास्त्री का उज्ज्वल स्वरूप था। आज वे हम सबसे विदा होकर जीवन का अ तिम अध्याय भी समाप्त कर प्रभु को प्यारे हो गये।

उनके इस असामयिक निधन पर प्रभु से प्राथना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे। और उनके पारिवारिक जनो तथा मित्रो को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सच्चिदान द शास्त्री
सभा मन्त्री

शान्तियज्ञ दिनाक ४ । ९ ८७ को ४ बजे सायकाल
स्थान एफ ११०१ पाकेट के
शेख सराय २ नई दिल्ली
चिराग दिल्ली के नजदीक

राजनीति की दोरंगी चाल

आचार्य शिवानन्द के अनुसार प्रशासन के अथक परिश्रम और अनेक सत्पुरुषो के सहयोग से यह खुशहाल शहर जिस पर दर्गों की वहशियत का बदनुमा दाग लग गया था, किसी तरह अब सामान्यता की ओर लडखडाता हुआ आ रहा है। किन्तु हाय, अभी सियासत के खिलाडियों को पूरा मजा नही आया। दूर दिल्ली और लखनऊ में बैठ हुए ये शातिर आग लगा कर स्वाथ की रोटी सेकते हैं और झूठी हिमायत में घडियाली आसू बहाकर अबोध जनो को छल लेते हैं। कदाचित कुछ लोग मेरठ को दिल्ली के समीप होने के कारण अराजकता का खेल खेलने के लिये यहा पूर्वाभ्यास का प्रयोग करना चाहते थे। इन राजनीतिक खिलाडियो ने पूरे नगर की अथवा देश की बात नही सोची तथा एकही सप्रदाय का पक्ष लिया। कोई पूछे श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी से क्यो मेरठ के एक ही क्षत्र हाशिमपुरा की क्यो उछाल कर अनशन करने की धमकी दे रहे हैं। नगर के अनेक अन्य क्षत्रो मे ह शिमपुरा से भी बढकर जान माल का नुकसान हुआ है। वे पूरे नगर के लिए जाच की माग क्यो नही कर रहे हैं? अल्प सख्यक वग को तुष्ट करने के प्रयत्न करने वाले श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी ने इस वष १ माच के इलसट्र टड वीकली मे राम ज म भूमि की वकालत करते हुए हि दुओ को भडकाने का प्रयास किया था। उन्होने कहा था कि मुसलमान दुनिया को दो हिस्सो मे बाटते हैं—एक दारुल इस्लाम जिसमे अरब पाकिस्तान इत्यादि हैं और दूसरा दारुल हरब जिसे तलवार से जीता जाना है। उन्होंने कहा 'यदि हिन्दू अब बलपूर्वक हठ करेंगे तो इक्कीसवी शताब्दी का हिन्दुस्तान बलशाली, सगठित और शांतिमय होगा अन्यथा कभी शाति नही होगी और भारत दारुल हरब हो जाएगा और झगडो से भर जाएगा।

आचार्य शिवानन्द ने सुझाव दिया है कि मेरठ के हाल को मेरठ के लोगों पर छोड दिया जाए और मेरठ के लोग परस्पर मिल कर त्योहार मनाए और सद्भाव एव प्रेम से मिल कर रहे। यदि बाहर के लोग कुछ करना चाहते हैं तो सकुचित भाव छोड कर और राजनीतिक चालाकी छोड कर, सभी सप्रदायो के पीडितों की सहायता करें तथा जख्मों को कुरेद कर उन्हे ताजा न करें। मेरठ के लोग सब मिलकर मेरठ को बचायें और परस्पर प्रेमपूर्वक रहना सीखें। इसी मे नगर का और देश का कल्याण है।

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

गुडगाव नगर की सभी आर्य समाजों (गुडगाव) मे ९ से १६ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह बडे ... मनाया गया। आर्य जगत् के युवा विद्वान डा० शिवकुमार शास्त्री, मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रभावशाली वेदोपदेश हुए। उपस्थिति दिन प्रति दिन बढती गई। प्रात काल प० जयदेव जी की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण यज्ञ चलता रहा, जिसकी पूर्णाहुति १५ अगस्त को हुई।

कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर डा० शिवकुमार शास्त्री ने योगीराज कृष्ण के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हुए उन्हें अपने समय का आप्त पुरुष महान राजनीतिज्ञ परम धार्मिक, सच्चा मित्र, ईश्वर भक्त एव अखण्ड राष्ट्र का नायक बताया।

इस अवसर पर प्रसिद्ध सगीतज्ञ श्री पुष्किन आर्य एव मुरारीलाल बेचैन के मधुर भजन हुए। समारोह की अध्यक्षता श्री वेदपाल आर्य ने की। दयानन्द शिशु विद्या मन्दिर की छात्राओं ने सामयिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री सत्यपाल आर्य का उद्बोधन सबको झकोरने वाला था। समारोह की समाप्ति पर प्रधान एव मन्त्रीजी ने सबका आभार व्यक्त किया।



दिल्ली के स्थानीय विक्रेता :—

(१) मै० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वैदिक स्टोर ३७७ चादनी चौक (२) म० ओम आयुर्वेदिक एण्ड जनरल स्टोर सुभाष बाजार, कोटला मुबारकपुर (३) म० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा मेन बाजार पहाडगज (४) म० शर्मा आयुर्वैदिक फार्मेसी गडोदिया रोड, आनन्द पर्वत (५) मै० प्रभात कैमिकल क०, गली बताशा, खारी बावली (६) मै० ईश्वर दास किशन लाल मेन बाजार मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री, १३७ लाजपतराय मार्किट (८) दि सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य मदन लाल ११-शंकर मार्किट दिल्ली।

शाखा कार्यालय :—
६३, गली राजा केदार नाथ
चावडी बाजार, दिल्ली-६
फोन नं० २६१८७१

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष । ३७४७७१

वर्ष २२ अंक ३६] | भाद्रपद शु० १४ सं० २०४४ रविवार ६ सितम्बर १९८७ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ५० पैसे

स्वर्णमंदिर फिर आतंकवाद का अड्डा बन रहा है

बूटासिंह के परिवार की हत्या का षड्यन्त्र वहीं रचा गया

दिल्ली में कुख्यात जिन्दा व बाबा गिरफ्तार

जालन्धर २९ अगस्त । पुलिस की जांच से पता चला है कि केन्द्रीय गृहमन्त्री बूटासिंह के सम्बन्धियो की हत्या का षडयन्त्र स्वर्ण मन्दिर परिसर में रचा गया था ।

जिले के मुजफ्फरपुर गाव मे १८ अगस्त को हुए हत्या काण्ड में बूटासिंह के सात सम्बन्धियो की हत्या कर दी गयी थी जब कि चार अन्य घायल हुए थे ।

पुलिस जाच के अनुसार पाच मे से कम से कम दो अभियुक्तो को यह काम स्वर्ण मन्दिर परिसर मे सौपा गया था ।

अभियुक्त गुरदयाल सिंह उर्फ लल्ली ने पूछताछ के दौरान कबूल किया कि एक फरार आतकवादी अवतारसिंह ने उससे १८ अगस्त की रात को परिसर में कहा था कि वह एक कार्रवाई के लिये मुस्तापुर गाव पहुचे । लल्ली को १९ अगस्त को सुबह उस समय गिरफ्तार किया गया था जब वह सुलतानविंड बस अड्डे पर एक बस की प्रतीक्षा कर रहा था ।

अवतारसिंह तथा कथित खालिस्तान कमाडो फोर्स का कार्यकर्त्ता है । पुलिस ने पाच करोड सत्तर लाख रुपये की लुधियाना बैंक डकैती मे से १३.२६ लाख रुपये १३ अप्रैल को उसके निवास से बरामद किये थे । अवतारसिंह तभी से फरार है ।

गुरदयाल सिंह गिरफ्तारी से बचने के लिये ग्यारह जुलाई से परिसर मे रह रहा था अवतारसिंह से उसकी मुलाकात १६ अगस्त को हुई । अवतारसिंह ने उसे बताया कि इस बात की जाच चल रही है कि कहीं उसने आतकवादी सोहनसिंह उर्फ सोनी के बारे मे पुलिस को जानकारी देकर उग्रवादियो को धोखा तो नही दिया । इस सूचना के बाद पुलिस मुठभेड मे सोहनसिंह मारा गया था ।

सोहनसिंह दयालपुर का रहने वाला और उसी गाव के अन्य निवासी से बीस हजार रुपये की फिरौती राशि लेने के बाद वह मारा गया था ।

दिल्ली मे जनरल वैद्य व ललित माकन के हत्यारे कुख्यात आतकवादी हरजिन्दरसिंह जिन्दा व सतनामसिंह बाबा दिल्ली पुलिस की सतर्कता से गिरफ्तार कर लिए गए हैं । लुधियाना की ५.७८ करोड़ की बैंक डकैती में भी इनका हाथ था ।

फिरौती के बारे मे सोहनसिंह तथा गाव के निवासी के बीच मध्यस्थता गुरदयालसिंह ने की थी । यह काम दस जुलाई विधिपुर रेलवे फाटक के निकट किया गया था ।

गुरदयालसिंह को सोहन सिंह के मुठभेड मे मरने की खबर सुनकर आशका होने लगी कि उस पर धोखा देने का सन्देह किया जा सकता है इसलिये वह खुद को बेगुनाह साबित करने के लिये अगले दिन स्वर्ण मन्दिर परिसर चला गया ।

अखिल भारतीय सिख छात्र (गुरजीतगुट) की करतारपुर इकाई के अध्यक्ष गुरदयाल सिंह ने दावा किया कि उसने मन्दिर के परिक्रमा कक्ष मे एक महीने से अधिक का समय बडी कठिनाई से बिताया ।

गुरदयाल सिंह की अवतारसिंह से भेट के आधा घण्टा बाद तीन और आतकवादी वहा पहुंचे । उन्हे भी इस हत्याकाड मे हिस्सा लेना था । इन तीनो से भी घटनास्थल पर पहुचने के लिये कहा गया ।

गुरदयालसिंह ने बताया कि अवतारसिंह ने अग्नेयास्त्रो का एक थैला खोला जिसमें

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वेदामृत

भ्रातृभाव से समृद्धि

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते,
सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय ।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां,
सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः॥

ऋग्० ५।६०।५ ।

हिन्दी अर्थ—ज्येष्ठ और कनिष्ठ (ऊच नीच, बडा छोटा) के भाव से रहित, ये मरुत (प्राण वायु) भाई के तुल्य रहते हुए सौभाग्य के लिए बढे हैं । सदा युवा और सुन्दर कर्म करने वाला रुद्र (जीवात्मा) इनका पिता है और सुन्दर अन्नादि समृद्धि देने वाली पृथिवी मरुतों के लिए शुभ दिन करे ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

इस अंक में पढ़िये

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

जिन्ना और इकबाल इस सदी के सबसे बड़े शैतान थे सिंधी नेता सैयद गुलाममुर्तजासे

बालकवि वैरागी की भेंटवार्ता

हम लोग होटल 'कनिष्क' के एक कमरे में 'जीए सिंध' आन्दोलन के जनक ८४ वर्षीय नेता जनाब गुलाम मुर्तजा सैयद साहब से बात कर रहे थे। दिल्ली के इस होटल मे वे अपने विश्वस्त लोगों के साथ लम्बे समय तक ठहरे। भारत में वे एक दो नही पूरे ३८ साल के बाद आए थे। इस बार उनका आना बादशाह खान की बीमारी के कारण हुआ था। उनका कहना था कि मैं बादशाह खान को लेने आया हूं।'

मिलने को तो आए दिन मैं न जाने किस किस से मिलता हूं पर इस भेंट का रोमांच ही अलग था। मैं उस आदमी से मिल रहा था जिसने कि १९४३ में सिंध असेम्बली में 'भारत विभाजन' का प्रस्ताव मुस्लिमलीग के एक सदस्य के तौर पर रखा था। खुद उसकी पुख्ता पैरवी की थी। जिसका खुद अपनी इस प्रस्ताव से १९४५ में मोहभंग हो गया था। ' जिसने बुझे हुए मन से १९४७ मे पाकिस्तान का स्वागत किया था।'''जो कि आज अपनी पूरी ताकत के साथ कह रहा था कि ''मोहम्मद अली जिन्ना और इकबाल इस सदी के सबसे बड़े शैतान थे।

हम तीनों जब कमरे में प्रविष्ट हुए तो सैयद साहब अपनी आराम कुर्सी पर तरोताजा बैठें हुए थे। हाथ जोडकर हमने प्रणाम किया तो सैयद साहब ने 'बन्दगी' करते हुए पहला ही वाक्य कहा 'माफ करना, मैं बीमारी के कारण खड़े होकर आपका स्वागत नहीं कर पा रहा हूं।'

बातो बातों मे एक दो प्रसंग कडवे भी आए, विशेषकर भाई श्री रामेश्वर नीखरा का बहुत सीधा और तीखा यह सवाल, 'सैयद साहब ! भारत में आज जितने भी सिंधी परिवार हैं वे आजादी के ४० साल के बाद भी सिंध के मुसलमानों के प्रति आखिर इतनी घृणा से क्यों भरे हुए हैं ?

कोई दूसरा होता तो शायद सारी बैठक बिगड़ जाती। पर सैयद साहब के चेहरे पर शिकन नहीं आई। उनके खिदमतगार भी चिढ़े अपना आपा खो बैठें। उन्होने तपाक से कहा 'यह सब गलत है। सिंध के मुसलमानों ने तब हिन्दुओं के साथ किसी किस्म की बदसलूकी नहीं की। सिंध से तो जो भी हिन्दू निकले जान-माल सहित सुरक्षित निकले कि अपने साथ अपना तोता तक पिंजरे समेत लेकर भारत पहुंचे। आप पूछताछ कर लीजिए।' तभी सैयद साहब ने उन्हें इशारे से मना किया, रोका और बोले, 'उन हिन्दू भाइयों के साथ सिंध के मुसलमानों ने किसी तरह की बदसलूकी नहीं की। बदसलूकी की सिंध में बसने वाले पंजाबी मुसलमानों ने। वे तब भी जाहिल थे और आज भी उनकी जहालत कमतर नहीं है। हम लोग तब भी उनसे लड रहे थे और आज भी हमारी लड़ाई उनसे मुसलसल है। जीए सिंध आन्दोलन का यह भी एक खास मुद्दा है। तब सिंध में केवल बीस फीसदी गैर सिंधी थे, आज गैर सिंधियों की तादाद अड़तालीस फीसदी है। अब आप ही कहिए, हमारी लड़ाई किस तरह चल रही होगी। हिंदू तो तब तेरह लाख ही भागे थे पर हमारी छाती पर तो आज ४८ फीसदी ये लोग आकर बैठ गये हैं जिनसे हमें जिन्दगी भर लड़ना है।'

मैंने पूछा, 'सैयद साहब ! पाकिस्तान का भविष्य क्या है ?' सैयद साहब बेसाख्ता बोले 'पाकिस्तान को टूटना है, वह टूटेगा, इसे दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा सकती है। इसकी नींव नफरत पर रखी गई है। जिन्ना की बद-नामी और इकबाल जैसे सिरे हुए आदमी के कारण यह सारा खून खराबा हुआ है। जिन्ना अपने आपको तवारीख में अमर करना चाहता था। उसकी हविस जिस कीमत पर पूरी हुई है, वह आप लोगों के सामने है। इकबाल बहुत बेहूदा और पाखण्डी आदमी था। इकबाल पहला शख्स था जिसने खुदा को केवल 'मुसलमानो का खुदा' बनाकर रख दिया। इकबाल से पहले खुदा हिंदु मुसलमान सभी का था। इकबाल ने खुदा को मस्जिदों में कैद करने का पाप किया है। जिन्ना ने मुल्क को तोड़ा और इकबाल ने खुदा के इकबाल को बाटने की बेहूदा कोशिश की।'

मेरा अगला सवाल था, 'जीए सिंध' आन्दोलन का अब क्या हाल है ?'

सिंध आजाद होगा और जल्द होगा। मेरा आन्दोलन 'पाकिस्तान की मौत' के साथ ही पूरा होगा। सन १९८६ में मैंने सिंध में, बादशाह खान को बुलाकर आजाद सिंध के बारे मे जबरदस्त मीटिंग की थी। उसमे पाकिस्तान के डिफेंस मिनिस्टर अली अहमद और वहां के गवर्नर मुमताज अली भुट्टो भी शामिल हुए। सभा मे करीब डेढ़ लाख लोग जुटे। मेरा एक ही सपना है कि पाकिस्तान टूट जाए। इसका जो भी हिस्सा जिसमें भी मिलना हो मिल जाए ' नफरत की नींव पर रखा हुआ यह नकली मुल्क सांस तोड़ दे।'

बकौल सैयद साहब जिन्ना और इकबाल के बाद अगर उनकी नजर में सबसे ज्यादा धूर्त और मक्कार कोई आदमी हुए हैं तो वे थे पाकिस्तान के पहले प्रधानमन्त्री जनाब लियाकत अली साहब और उर्दू 'डान' के सम्पादक अल्ताफ हुसैन साहब।

'क्या आपको कभी अपने किये का मलाल होता है ?' मैंने पूछा।

सैयद साहब लम्बी सांस लेकर कहते है, मैं भी भारत को तोड़ने के महा-पाप का भागीदार हूं। भारतीय कानून के अनुसार आदमी को मार डालने की सजा या तो मौत है या फिर जिन्दगी भर की कैद।' और मैं जानता हूं कि भारत में उस कैद की सजा काट छांटकर १४ साल में पूरी हो जाती है। आप लोगों को पता नहीं होगा पर आप जिस सैयद से बात कर रहे हैं वह २६ साल से पाकिस्तान की कैद में जी रहा है। इस समय भी मैं नजरबन्द हूं और पैरोल पर भारत आया हुआ हूं। १४ साल भारत में आदमी की जान लेने वाला वापस सोसायटी में आ जाता है। बाबा ! मुझे २६ साल ही बचे, मैं आपसे और भारत से माफी मांगता हूं।' ''कहते कहते सैयद साहब ने दोनों हाथ जोड़े और आंखें मूंदकर अपना माथा आरामकुर्सी पर टिका लिया।

मेरा आन्दोलन पाकिस्तान की मौत के साथ ही पूरा होगा

मैंने वक्त की नजाकत को समझा और विषय बदलने की कोशिश की, 'सैयद साहब ! आपकी कितनी किताबें आई हैं और आप लिखने का समय कब निकालते हैं ?

'मेरी ५२ किताबें आ चुकी हैं। इनमें से २० पुस्तक प्रतिबंधित हैं। जब जब पाकिस्तान का निजाम मुझे कैद करता है, तब तब कलम लेकर लिखने बैठ जाता हूं। '' 'पैगाम ए लतीफ' और 'जदीद सियासत के नवरत्न' मेरी पुस्तकें शायद आपकी नजरों से निकली हों।' हम तीनों लोग इन पुस्तकों से अपरिचित थे। मैंने वातावरण को और हल्का बनाने के लिहाज से पूछा, 'पाकिस्तान सरकार को राजनेता सैयद से ज्यादा खतरा है या लेखक सैयद गुलाम मुर्तजा साहब से ?'

वे खुलकर हंसे। बोले, 'पाकिस्तान की सरकार मेरे दोनों रूपों से परेशान है। लिखता हूं तो जब्त कर लेती है। नहीं लिखता तो कैद कर लेती है। परेशानी उसे दोनों तरफ से है।'

'भारत के लोगों से आप क्या उम्मीद करते हैं ?' नीखराजी का सवाल था।

'मुझे भारत के लोगों से न पैसा चाहिए, न प्रचार। मुझे उनसे बस एक दिली मोहब्बत चाहिए। वे मेरी गलतियों को भूलकर मुझे माफ कर दें। सिंध जब आजाद हो तब वे एक चिराग महात्मा गांधी के नाम का जलाकर हमारी आजादी का इस्तकबाल करें, और खुदा भारत को आईं इतनी बड़ी और ताकतवर बनाए कि हम एक दिन फिर से भारत के कलेजे से जुड़ जाए ' आमीन !'

मैं बाहर आकर हमदाद भाई का शुक्रिया अदा करता हूं। लिया भाई को धन्यवाद देता हूं। वह मुझे विदा देने लिफ्ट तक आते हैं। मैं उनसे पूछता हूं, 'भारत से वापसी पर सैयद साहब का क्या होगा ?' वह हंसते हुए कहते हैं, 'अपने गांव 'सन' जायेंगे। 'सन' की आबादी करीब १०००० है। वहां जाते ही वापस वही नजरबन्दी, वही कैद, वही लिखना पढ़ना, बोलना कहना और सिंध की आजादी का इंतजार करना।'

सम्पादकीय

शान्ति-शक्ति में ही निहित है

क्या विश्वास किया था और क्या होने लगा। पंजाब में आतंकवाद फिर से सिर उठा रहा है निश्चय ही अवसरवादी दोगली राजनीति का पैदा हुआ पुत्र है जो पालने में ही सरकार को पैरों से मारना शुरु करता है। इस-दानव के प्रति विद्रोह का झण्डा एक दिन लेकर खड़े होना ही होगा। सरकार का मुह न देखकर जनता को ही आत्मरक्षार्थ जुझारू होना पड़ेगा।

हमें सदा से "मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि" का पाठ पढ़ाया गया है हम मार खाते रहे हैं पर किसी पर हमलावर नही हुए हैं। लेकिन मार खाने की भी एक सीमा रेखा है।

जनता को सरकार का मुंह न देखकर अपने पौरुष पर भरोसा करना पड़ेगा। देर-सबेर केन्द्र और जनता को भी अपनी शक्ति का परिचय देना पड़ेगा।

अहिंसा और शान्ति अच्छी बात पर यह नही विस्मृत करना चाहिये, कि शान्ति के लिये भी शक्ति (युद्ध) अनिवार्य है। परिस्थितियों से बंधकर ही युद्ध एक आवश्यक और अनिवार्य वस्तु बन जाती है। जिसे हम एक आदर्श भी मानकर चलते हैं। निर्दयी कपटी बेरहम के सामने शान्ति व अहिंसा के पाठ का दुरुपयोग ही है।

शान्ति की रक्षार्थ ही भगवानराम ने जंगलों की खाक छानी, राक्षसों का वध किया। अतिवादियों का सहार किया विस्तारवादी रावण का वध किया।

योगीराज कृष्ण ने दूत बनकर जब युद्ध व हिंसा को बचाकर समझौते की समस्त कोशिशे असफल हुई तब महाभारत का आदर्श स्थापित किया। मैदान से भागते अर्जुन को क्षत्री धर्म का मर्म समझाकर युद्ध के लिये तैयार किया।

महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी /के शान्ति सन्देश व्यर्थ ही गये। इनके शान्ति सन्देश हिंसा की भाषा समझने वालों के लिये अनर्गल प्रलाप ही हैं।

हमारी सरकार को एक दिन यह स्वीकारना होगा कि शक्ति के प्रयोग को छोड़कर राम यदि चर्खा चलाकर सीता को पाना चाहते तो असम्भव था शक्ति का प्रदर्शन यदि लंका के लिये श्री राजीव गांधी को उचित था, तो पजाब मे शक्ति का प्रदर्शन करने में क्या रुकावट है। शक्ति के बिना शान्ति दिवा स्वप्न है।

गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज ने शान्ति के सभी उपाय व्यर्थ होने की दशा में देश धर्म जाति की रक्षा के लिये शक्ति का प्रदर्शन किया।

आज देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त विघटनकारी तत्वों के घटनाक्रमों को देखते हुए केन्द्रीय सरकार की दुर्बल नीति का जिस प्रकार मजाक (उपहास) किया है कि आज देश आतंकवाद के घेरे में सांस ले रहा है। सरकार के अब तक के सभी कदम चाटुकारितापूर्ण रहे हैं अतः आतंकवादियों की दृष्टि में पानी के बुलबुले ही सिद्ध हुए हैं।

विद्रोह को दबाने के अलावा, राजनीतिक शक्तियं ने उन्हें और बढ़ावा दिया है।

सुब्रह्मण्यम् स्वामी मेरठ गांव को हत्याओंको लेकर भूख हडताल करते हैं। मधु दण्डवते के साथ जमात के लोग धरना देते हैं पर जब गांव के मृत व्यक्ति वापस आ गये तो फिर आज तक किसी ने भी आंवाज नहीं उठाई।

जहां-जहां भी दगे हुए व उनमें हिन्दू मारा गया और उनकी सम्पत्ति नष्ट हुई उसके लिये किसी ने भी भूख हड़ताल नहीं की, किसी ने भी उनके आंसू पोंछने के लिये धरना नही दिया आतंक को दबाने में पुलिस कुछ न करे, तो उसकी निन्दा और यदि वह सख्त कदम अफसर के कहने पर उठाये, तो उसके विरोध में बगावत का झण्डा खडा किया जाता है। परन्तु यह दंगे किसने किये और क्यों व कैसे किये। इस पर किसी भी पार्टी ने अश्रुपात नही किया।

यह घोष कि सरकार मुट्ठीभर सिक्खों को दबा न सकी। फिर यदि २० करोड मुसलमान सड़कों पर निकल आये तो उन्हें दबा न सकोगे। यह मेरठ व दिल्ली के विद्रोही दगे। उस घोषणा के प्रतीक मात्र थे और उन्होने दिखा दिया कि हमारे विद्रोह को तुम दबा नहीं सकते। किसी भी सरकार को फेल करना हो, तो देश की आर्थिक सामाजिक राजनैतिक गतिविधियों को जाम कर दो, सरकार स्वयं फेल हो जायेगी।

हर बार इन लोगों ने अपनी मारक और प्रतिरोधात्मक शक्ति का बढ़-चढ़कर प्रदर्शन किया है। आज पंजाब दिल्ली मेरठ का ही नहीं समस्त देश का जनमानस मौत के साये में जी रहा है इस आतंक से यदि मुक्ति पानी है तो सबसे बड़ी आवश्यकता है कि सरकार व राष्ट्र की राष्ट्रीयता अखण्डता सुरक्षित रहें। तो आज हिन्दू राष्ट्रवादी शक्तियों को सम्भलकर खड़ा होना पड़ेगा। यदि पुलिस फौज, पी०ए०सी० के सहारे जिन्दा रहना चाहते हो, तो तुम्हें भगवान भी नही बचा सकता। अतः याद रखो! शक्तिशाली के सामने दुनियां झुकती है और जब ऐसा किया है तब दुनियां नतमस्तक हुई है।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का भारतोदय पत्र सम्मानित

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार का प्राचीन-पत्र "भारतोदय" अपने मीठे कडवे जीवन के अनुभवों को लेकर जी रहा है। इसके सम्पादक रहे हैं, प० पद्मसिंह शर्मा प० हरिदत्त जी शास्त्री और सम्पादक रहे हैं—आचार्य पं० हरिगोपाल जी शास्त्री समय-समय के झझावातो में से गुजर कर आज भी प्राणवान हैं।

१—इसका सबसे प्रथम उदाहरण प्रस्तुत करें तो एक बार डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने राष्ट्रपति के रूप में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की पावन भूमि में कहा था दीक्षान्त भाषण करते हुए कि मैंने सम्पादकीय का मूल तत्व अगर सीखा था तो इसी भूमि में पं० पद्मसिंह जी शर्मा के सान्निध्य में भारतोदय को पढ़कर ही। ऐसी गरिमा वाला यह "भारतोदय" है।

२—आज भूले बिसरे प्रांतोंसे हटकर यदि देखे तो स्पष्ट हो जाता है कि—केरल-सस्कृत अकादमी की ओर से भारत के सस्कृत पत्रों में सर्व श्रेष्ठ पत्रिका घोषित प्रथम स्थान प्रदान किया है। साथ ही प्रथम पुरस्कार एव प्रशस्ति पत्र प्रदान किया है। इस पत्रिका का सम्मान जहां उन उद्भट विद्वान् पत्रकारों को श्रेय है वही आज की पत्रिका के सम्पादक श्री पं० हरिगोपाल जी शास्त्री आचार्य को वह यश उपलब्ध है पत्रिका को गौरवशाली बनाये रखने में।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रेमी सहृदय भक्त तथा गुरुकुल के स्नातकों से आग्रह पूर्वक निवेदन है कि इन अपने प्राचीन पत्र भारतोदय को यशस्वी बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

—सम्पादक

मध्य एशिया के मुसलमानों से क्रेमलिन की परेशानी

मार्टिन साइनर्फ-वाशिंगटन टाइम्स

सोवियत नेता श्री मीनाइल गोर्बाचोफ मध्य एशिया के तुरकी नसल के मुसलमानो मे बढते हुए धार्मिक कट्टरपन को कुचलने के लिए प्रयत्नशील है। यथा गत दिसम्बर मे उन्होने राजनीतिक शिक्षण का आन्दोलन चलाया और कम्युनिस्ट पार्टी के काजिक नेता दीनमुहम्मद कोनाइफ को पृथक करके उसी जाति के बयारी कोल्हन को नियुक्त किया। लगभग हजार पुलिस अधिकारियो को विभिन्न अपराधो मे हटाया गया और २४ न्यायकर्ता न्यायाधीशो को भी हटाया गया।

कोनाइफ को हटाने के विरोधस्वरूप उपद्रवकारी संघर्ष मे काजकिस्तान की राजधानी अल्मा आता मे रूसी अधिकारियो के वक्तव्य के अनुसार २ व्यक्ति मारे गए। परन्तु मास्को मे पश्चिमी देशो के दूतावास के सूत्रो के अनुसार मृतको की संख्या ३० तक पहुच गई है इस उपद्रव से क्रेमलिन के सत्ताधारी तत्व चौंक पडे। और उन्होने इस्लामी समुदाय के वचस्व को ध्वस्त करने का आन्दोलन खडा कर दिया।

परन्तु ज्ञात होता है कि इस योजना मे उन्हें सफलता नही मिली। ताजकिया के एक कम्युनिस्ट पत्र ने १७ जुलाई के अक मे समाचार दिया है कि ताजकिस्तान मे धार्मिक छुट्टियो के अवसर पर बडी भीड होती है और कभी तो इस भीड के कारण मस्जिदो के दरवाजों पर लोग घायल भी हो जाते हैं।

उक्त पत्र ने यह समाचार भी दिया है कि गत अप्रैल मे अफगानिस्तान की सीमा से केवल ० मील के अन्तर पर स्थित कलखाय के दक्षिण पश्चिम मे सोवियत और अफगान सेनाओ स युद्ध रत अपगान मुसलमान विद्रोही सोवियत सीमाओ मे घुस आए और कतवा प्यान्डज मे दो सीमा सुरक्षा सैनिको की हत्या कर दी। दिसम्बर १९७९ मे अफगानिस्तान पर सोवियत सैन्य अभियान के पश्चात से यह पहला अवसर था कि अफगान छापा मार सोवियत सीमाओ मे घुस आए। के० जी० बी० सुरक्षा पुलिस के मुख्य अधिकारी चेरीकोफ ने घटना के पश्चात् तुरन्त क्षत्र का दौरा किया।

मिस्टर ब्रजनेफके काल मे तुक मुस्लिम संगठनोंके साथ कुछ नर्मी बरती गई। पार्टी के नेता सम्भ्रान्त तुक खान्दानो मे से चुने जाते थे। व स्थानीय प्रबन्धो मे मास्को का कोई हस्तक्षप नही होता था। परन्तु गोर्बाचेफ के शासन काल मे परिस्थितिया बदल गई है।

२४ नवम्बर को ताशकन्द मे भाषण देते हुए मिस्टर गोर्बाचेफ ने धर्म पर व मस्जिदो मे प्राथना करने की पार्टी के अधिकारियो पर प्रतिबन्ध लगाने का आग्रह किया। परन्तु उनकी इस नीति पर क्रेमलिन के नेतृत्व में मतभेद उत्पन्न हो गया। मिस्टर गोर्बाचेफ के बाद दूसरे सदस्य के नीति निर्धारिक ऐग्रेसेकाचीफ ने इस बात पर बल दिया कि नेतृत्वपूर्ण पदो पर नसली अल्पसख्यको की नियुक्ति कम न की जाए। अपितु उनमे वृद्धि की जाए।

तुर्की मुसलमानो की बढती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए भी मिस्टर गोर्बाचोफ प्रयत्नशील हैं। ताजकिस्तान के मन्त्रिमण्डल के प्रधान ने कहा कि उनका शासन स्त्रिओं को कम बच्चे पैदा करने का एक आन्दोलन प्रारम्भ करने वाला है। तुर्की नसल के मुसलमान इस समय तुर्किस्तान से अधिक सोवियत संघ मे हैं। एक अनुमान के अनुसार आगामी ३० वर्षों मे सोवियत यूनियन मे उनका बहुमत हो जाएगा। उनके खानदानो में १ से ६ बच्चे पैदा होते हैं। जब कि रूसी नसल वालो का जन्म संख्या कम है जिसका कारण किसी सीमा तक रूसी जीवन पद्धति में गर्भपात की सुविधा है।

संयुक्त राष्ट्र के एक नवीन अध्ययन के अनुसार एक सामान्य सोवियत नारी अपने जीवन मे ६ बार गर्भपात करती है। मुसलमान स्त्रियां इसे धर्म के विरुद्ध समझती हैं और शायद ही कभी गर्भपात करती हैं फलत १९५९ मे ताजकिस्तान में जनसंख्या ३ प्रतिशत वार्षिक के दर से बढी है। जो सामूहिक सोवियत की दर से तीन गुनी अधिक है।

मध्य ऐशिया के सम्बन्ध मे एक अमेरिकन विशेषज्ञ का कहना है कि रूसियो को मुसलमानो के कारण कठिन परिस्थितिओ का सामना करना पड रहा है। क्रेमलिन का प्रयत्न यह है कि उनकी तुर्की नसल अल्पसंख्यक जीवन पद्धति व्यवसायिक चिन्तन के रूप मे तुर्की की ओर न देखे इसीलिए वह सदा तुर्की की निन्दा व अपमान किया करता है।

सोवियत यूनियन मे तुर्की नसल के लोग तुर्की से आने वालो के लिए अहानिकारक होते हैं। और रूसिओ के दृष्किोण से यह भयप्रद परिस्थिति है फिर भी प्राय ऐसा ही होती है। उजबकिस्तान वाले देखते हैं कि तुर्क अपने देश मे तुर्की भाषा बोलते हैं। और उन्हे अपनी उन्नति के लिय अग्रेजी का सहारा लेना पडता है तो फिर मध्य ऐशिया वालो के लिए रूसी भाषा अनिवार्य क्यो है?

अमेरिकन सर्वेक्षणकर्ता का कहना है कि सोवियत नेतृत्व तुर्कीको कमजोर करने की नीति पर काय कर रही है। गत दशाब्दी मे उसने आतंकवादी दलों के द्वारा ऐसे प्रयत्न किए किन्तु तुर्की मे सेना ने शासन अपने हाथ मे लेकर परिस्थितिओ पर अधिकार प्राप्त कर लिया। अब नवनिर्वाचित शासन पुन स्थापित हो गया है तो रूस को कार्यकर्ता दल और आर्मीनियम मुक्ति सेना के द्वारा इस उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करना पड रहा है। जिससे वह अब तुर्क नसल के निवासिओं को विश्वास दिला सकें कि उन्हें अपने रूसी "बडे भाई" की कितनी आवश्यकता है। ●

सत्य सनातन वैदिक धर्म ही एकमात्र मानव धर्म है

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा डा० गोस्वामी गिरधारीलाल के ७०वें दिवस पर स्वागत भाषण

नई दिल्ली। २१ अगस्त स्थानीय प्रसिद्ध धर्म भवन साउथ एक्सटेंशन मे धर्म भवन के सस्थापक समाज सेवी श्री रामेश्वरदास गुप्त द्वारा एक विशाल आयोजन किया गया जिसमें सनातन धर्म के प्रकाण्ड विद्वान महान् ज्योतिष विद डा० गोस्वामी गिरधारीलाल के ७०वे जन्म दिवस पर उनका हार्दिक अभिनन्दन किया गया। समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज के मूर्धन्य महात्मा श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की।

इस अवसर पर भाषण करते हुए विभिन्न धर्मों के नेताओ ने लोगो से अपील की कि वे हिन्दू मन्दिरो की सफाई व चढावो की व्यवस्था को सुधारने का प्रयत्न करें जिसके बिना मन्दिरो की प्रतिष्ठा दिनो दिन गिरती जा रही है। मन्दिरो की आय का सदुपयोग होना परमावश्यक है।

अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि मन्दिरो की आय का सदुपयोग होने से समाज के अनेक महत्वपूर्ण काय सम्पन्न हो सकते हैं। संस्कृत पठन-पाठन की महान् आवश्यकता है जिसकी व्यवस्था मन्दिरो की आय से पूरी हो सकती है। धन के सदुपयोग से मन्दिरो की प्रतिष्ठा बढेगी।

वास्तव में सत्य सनातन धर्म वैदिक धर्म का ही रूप है। मेरे विचार में धर्म के सत्य स्वरूप को हमे जन-जन तक पहुंचाना चाहिए ताकि पता चले कि हमारे दिव्य गुरुओ ने सत्य सनातन वैदिक जीवन के क्या क्या आदर्श हमें बताए है।

स्वामी जी ने युवको से अधिक से अधिक धार्मिक व सामाजिक कार्यों में भाग लेने की अपील की।

प्रसिद्ध पत्रकार श्री अक्षयकुमार जैन ने कहा हमारा समाज आज की अच्छी परम्पराओ को जीवित रखे हुए है कि हम उपयुक्त अवसरों पर अपने गुरुजनो साहित्यकारो व समाज सेवको का स्वागत सम्मान करते हैं। यह परम्परा जीवित रहनी ही चाहिए।

हिन्दू कितने साम्प्रदायिक हैं ?

—आनन्दशंकर पंडया—

भारत मे साम्प्रदायिक नफरत व हिंसा की समस्या सेंकडो वर्षो से चली आ रही है, उसे सुलझाने के सब प्रयास असफल हुए हैं, पहले तो उसका सारा दोष विदेशी सरकारों की 'फूट डालो राज्य करो' की नीति पर डाला जाता था पर आजादी के बाद भी हमारी सरकार इस समस्या को हल करने मे असफल रही है। इसका कारण यह है कि गाधी, नेहरू और विनोबा की तरह सभी हिन्दू सिर्फ एक तरफा 'सर्व धर्म समभाव' मे विश्वास करते रहे हैं, मुस्लिम लीग जैसी सस्थाओ के कट्टरपथी नेताओ को हमेशा सौम्य स्वभाव के उन हिन्दू नेताओ के साथ एक ही तराजू पर तोला गया है जो बचपन से एक चीटी भी मारना अधर्म समझते हैं हिन्दुओ के प्रति इस अन्याय ने ही मुस्लिम नेताओ को अपनी दुस्साहस पूर्ण हिंसात्मक कार्यो मे उत्साहित किया है। जब तक इस अन्याय का पूर्ण पर्दाफाश नही होता है तब तक साम्प्रदायिक हिंसा की समस्या कदापि नही सुलझेगी।

हमारा राष्ट्रीय आदर्श 'सत्यमेव जयते' है पर हम बिल्कुल उल्टा मार्ग ग्रहण कर रहे हैं, उदाहरण स्वरूप भारत में यदि कोई सत्य बोलता है तो उसका अनादर होता है और वो साम्प्रदायिक कहलाता है, और यदि वो झूठ बोलता है तो उसका राजनीति क्षेत्र मे आदर होता है और वो सेक्युलर कहलाता है पर इतिहास बतलाता है कि जो देश झूठ की नीव पर बनता है वो शीघ्र ही विघटित होकर नष्ट हो जाता है। आज भारत मे जो भी खराबिया उत्पन्न हो गई है वे सिर्फ सत्य के प्रकाशित करने से ही दूर हो सकती है, इस सत्य को छिपाने से सारा देश नष्ट हो जायेगा फिर इसे कोई भी नही बचा सकता।

एक ऐसा ही झूठ है कि हिन्दू सस्थाऐ साम्प्रदायिक हैं, नीचे लिखे तथ्य इस दोषारोपण का खडन करते हैं।

हिन्दुओं ने कभी भी अन्य धर्मावलम्बियो के पूजा स्थलो, उनकी सस्थाओ व धर्मग्रन्थो को नष्ट नही किया यद्यपि उनके हजारो मन्दिर मठ धार्मिक सस्थाए व धार्मिक ग्रन्थ विधर्मी आक्रमणकारियो द्वारा एक वर्ष तक जलाये जाते रहे, इस तरह दासता के ७०० वर्षों मे हिन्दुओ पर अनेक अत्याचार हुए पर फिर भी हिन्दू अपने सर्व धर्म समभाव के आदर्श को आज तक नही भूले साम्प्रदायिक कटुता को दूर करने के लिए यद्यपि सैंकडो वर्षों से श्री कबीर और नानक जैसे सन्तो ने अनेक भावनात्मक व आदर्शवादी बातें की पर उससे कोई समस्या हल नहीं हुई।

वेद, गीता और रामायण में निहित तथा वेदव्यास, शकराचार्य, महावीर बुद्ध, गाधी इत्यादि के द्वारा प्रचारित "वसुधैव कुटुम्बकम' के आदर्श के कारण हिन्दुओ ने देश के बटवारे के बाद हिन्दुस्तान को एक हिन्दू राज्य घोषित नहीं किया तथा अल्पसख्यको को ऐसे विशेषाधिकार दिये जो हिन्दुओ को भी प्राप्त नही है, यद्यपि पाकिस्तान ने इन सब बातो के विरुद्ध ही कार्य किया।

मध्ययुगीन इतिहास मे हिन्दुओ के हजारो मन्दिर नष्ट कर दिये गये तथा उन पर मस्जिद बनाकर मुसलमानो ने कब्जा कर लिया पर आजादी के बाद भी हिन्दुओ ने उन्हे वापिस माग कर अपने कानूनी अधिकार का प्रयोग नही किया उन्होने अहमदाबाद, औरगाबाद, इलाहाबाद जैसे शहर तथा हजारो सडको के मुसलमानी नामो को कभी बदलने की कोशिश नही की यद्यपि पाकिस्तान मे सम्पूर्ण शहर व सडको के नाम बदलकर मुसलमानी ही कर दिये गये हैं तथा पचासो मन्दिर तोड दिये गये हैं, पर हिन्दुओ की इस उदारता व शातिप्रिय नीति को कायरता समझकर उनकी एक सर्वोपरि आराध्य भूमि अयोध्या भी उन्हें वापिस नही दी जा रही है।

गाधी, नेहरू, विनोबा भावे, जयप्रकाश इत्यादि के विचार अत्यन्त उदार व विश्वव्यापी थे क्योकि वे हिन्दू थे, उन्होने सेक्युलरिज्म का सिर्फ प्रचार ही नही किया बल्कि उन्हे मनसा, वाचा, कर्मणा अपने जीवन मे उतारा भी।

अपने इन नेताओं के उपदेश मानकर हिन्दुओं ने विश्वास के साथ 'ईश्वर अल्ला तेरे नाम' के भजन गाये जब 'हिन्दू मुस्लिम भाई भाई' के नारे लगाये गये तब सिर्फ हिन्दुओ ने ही उस पर सच्चाई से अमल किया अन्य धर्मावलम्बियो ने इसे काफिरो व कायरो के लक्षण मानकर उसकी हसी उडाई, 'हिन्दू हिन्दू भाई भाई' ही एक ऐसा नारा है जो उन्होने कभी नहीं लगाया और यही सब दुर्भाग्य का कारण रहा है, इस तरह जो उदारता हिन्दुओ ने अपना धर्म मानकर अन्य धर्मावलम्बियो के प्रति दिखलाई उसे हिन्दुओ की कायरता समझी गई।

मुहर्रम मे हिन्दू लोग ताजिया की सजावट के लिए उदारता पूर्वक धन देते रहे हैं, हिन्दू राजाओ व व्यापारियो ने भूतकाल मे मस्जिदें तथा अलीगढ यूनिवर्सिटी बनाने के लिए बहुत धन दिया है पर आज मस्जिद मे मुल्ला लोग जोर जोर से लाउडस्पीकर पर पाच बार नमाज पढ सकते हैं और यदि हिन्दुओ का जुलूस बाजे गाजे के साथ भजन गाता हुआ मस्जिद के सामने से निकलता है तो उस जुलूस पर पत्थर फेंके जाते हैं और दगा शुरू हो जाता है।

हिन्दुस्तान मे पचासो मुसलमानो को देश के ऊचे ऊचे पदो पर नियुक्त किया उन्हे राष्ट्रपति उपराष्ट्रपति, मुख्य न्यायाधीश, राजदूत, गवर्नर एम० पी० इत्यादि सभी बनाया जाता है जबकि किसी इस्लामिक देश मे हिन्दू, बौद्ध अथवा ईसाई को एम० पी० भी नही बनने दिया जाता।

महाराष्ट्र जैसे प्रान्त मे जहा मुसलमानो की ५ प्रतिशत आबादी है एक मुसलमान मुख्यमन्त्री बन सकता है परन्तु जम्मू और काश्मीर मे जहा ३० प्रतिशत हिन्दू हैं एक हिन्दू मुख्यमन्त्री बनने की कल्पना भी नही की जा सकती भारत मे बहुत से ऐसे मुस्लिमो को राष्ट्रीय सम्मान व अवार्ड मिले हैं तथा सडके उनके नाम पर बनाई गई है, इस्लाम का प्रसिद्ध विद्वान वेन्टवेल स्मिथ कहता है 'शायद दुनिया के किसी भी इस्लामिक देश मे एक मुसलमान इतना स्वतन्त्र नही है जितना वह भारत मे है वो यहा अपना ईमानदारी व लगन से अपनी धार्मिक समस्याओ को सुलझाने मे लगा सकता और निर्भय होकर कुछ भी बोल सकता है या लिखकर छपवा सकता है'।

(लेखक एम के घोष मुस्लिम इण्डियन)

१९८४ मे विश्व हिन्दू परिषद ने भारत में उत्तर से लेकर दक्षिण तक एकात्मता यात्रा निकाली जिसमे लगभग ८ करोड व्यक्तियो ने भाग लिया पर उसमे एक छोटी घटना के अलावा कही भी हिंसा व अल्पसख्यको को परेशान करने की वारदात नही हुई थी इसी तरह अयोध्या मे रामनवमी पर १० लाख हिन्दू एकत्र हुए थे पर उन्होने वहा बसे हुए थोडे से मुसलमानो को सताया नही, इस तरह के सैकडो उदाहरण दिये जा सकते हैं।

इसके विरुद्ध विश्व के इस्लामिक देशो मे हिन्दुओ को उनके दिवाली विजयादशमी जैसे धार्मिक त्योहारो पर कोई छुट्टी नहीं दी जाती जिस तरह



मुसलमानों को भारत में उनके ईद और मुहर्रम मे दी जाती हैं हिन्दू लोग गीता या रामायण जैसी धार्मिक पुस्तको को छपवाया वेच नही सकते, यदि कोई हिन्दू किसी मुसलमान का धर्म परिवर्तन करने की कोशिश करेगा या सुअर का मास बेचेगा उसे जीवन कारावास की सजा दी जायेगी।

हिन्दुओ को खुले स्थान मे अपने भजन गाना व पूजा करने की इजाजत नही दी जाती न वे अपने शवो का अग्निदाह कर सकते हैं, वे अपनी भाषा का प्रयोग नही कर सकते तथा उन्हे सरकारी दफ्तरो में अल्पसख्यको के अधिकार के नाम पर नौकरिया मिलने मे कोई सुविधा नही की जाती, वे अपने घरो मे कोई हिन्दू नेताओं की तस्वीर नही लगा सकते।

हिन्दू लोग चुनावो मे कोई भाग नहीं ले सकते। वे किसी इस्लामिक देश के प्रेसिडेन्ट, गवर्नर, मुख्य न्यायाधीश अथवा मन्त्री नही बन सकते। हिन्दू लोग कोई व्यापार तब तक शुरु नही कर सकते जब तक वे किसी मुसलमान को अपने व्यापार मे ५१ प्रतिशत का हिस्सेदार ना बनावे।

इतिहास मे हिन्दुओ पर उनके ही देश हिन्दुस्तान मे अन्य धर्मावलम्बियो द्वारा असख्य अत्याचार किए गये। पाकिस्तान बनने के समय भी उन पर अनेको जघन्य अत्याचार किये गये थे पर हिन्दुओ ने कभी उनकी चर्चा नही की इस तरह उन्होंने लगातार विधर्मियो तथा आक्रमण कारियो को क्षमा किया क्योकि हिन्दू लोग आत्म त्याग करके भी साम्प्रदायिक शांति व सद्भाव बनाये रखना चाहते हैं। ससार के किसी भी देश मे बहुसख्यकों ने अल्पसख्यको के लिए इतना आत्मत्याग नही किया है।

हिन्दू नेता लेखक, कवि और फिल्म बनाने वालों ने भी हमेशा मुसलमानो तथा ईसाइयो के प्रति बहुत आदर दिखलाया है पर उनकी हृदय की विशालता के बदले हिन्दुओ को हमेशा तिरस्कार ओर गालिया ही मिली है क्या कभी भी किसी ने हिन्दुओं के इस गुण की प्रशसा की है।

जब किसी हाकी या क्रिकेट के मैच मे पाकिस्तानी टीम हिन्दुस्तान की टीम से जीत जाती है तब हिन्दुस्तान के मुसलमान अल्ला हो अकबर चिल्लाते हैं तथा अपने रेडियो को माला पहनाते हैं उनके घर मे आयातुल्ला खुमैनी या सद्दाम हुसैन के चित्र लगे रहते हैं ना कि गाधी जी के, और यद्यपि गाधी जी ने मुसलमानो की रक्षा करने के लिए अपना सारा जीवन अर्पण कर दिया पर किसी मुसलमान नेता ने उनकी प्रशसा नही की बल्कि उलटा मौलाना मुहम्मद अली ने जिसे गाँधी जी ने १९८३ मे काकीनाडा काग्रेस का प्रेसीडेन्ट बनाया था यह कहा कि नीच से नीच मुसलमान भी मेरे लिए महात्मा गाधी के मुकाबले हजारो गुना बेहतर हैं।

अत आज हिन्दू समाज यह अनुभव करने लगा है कि यदि 'सर्व धर्म समभाव' व सेक्युलरिज्म के नाम पर किया हुआ शताब्दियो का हिन्दू समाज का आत्म त्याग व बलिदान इन अल्पसख्यकों को हिन्दू धर्म व समाज की उदारता के बारे मे विश्वास नही दिला सका तो फिर इस उदारता का आखिर मे क्या उपयोग है। धार्मिक सहनशीलता के नाम पर एक बहुत बडी कीमत अदा की गई। अत जब हिन्दू सस्कृति पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं तब हिन्दू का अपनी इस सहनशीलता व उदारता पर से विश्वास उठ रहा है हिन्दुओ को यह अनुभव होने लगा है कि उन्होने अल्पसख्यको को जितनी अधिक से अधिक सुविधा देने की कोशिश की है उतने ही अल्पसख्यक लोग आक्रामक बनकर अधिकाधिक अधिकार मागने लगे हैं। वे जिस मकान मे मेहमान की तरह रखे गए थ उसके वे मालिक बनना चाहते हैं तथा असली मालिक को निकाल बाहर करना चाहते हैं। दुर्भाग्य से प्रेस ने भी इस सत्य को बजाय उजागर करने के हमेशा छिपाने की कोशिश की जिसके कारण आम मुसलमान यही समझ रहे हैं कि हिन्दुओं ने उन पर बहुत अन्याय किया है। (क्रमश)

लन्दन में संस्कृत शिक्षा अनिवार्य है

जयपुर में प्रकाशित पाक्षिक पत्र 'लोक शिक्षक' के १५ जुलाई १९८७ के अक मे एक लेख छपा है जिसका शीर्षक है भारत में सस्कृत भाषा को वैकल्पिक विषय रखा जाता है जब कि लन्दन मे वह अनिवार्य विषय है—इसके लेखक हैं श्री नारायण भगत।

इसके कुछ महत्वपूर्ण अश इस प्रकार हैं। लन्दन मे एक विद्यालय कोन्सिगटन क्षेत्र में क्वीन्स गेट पर स्थित है इसका नाम है सेन्ट जेम्स इण्डिपेन्डेन्ट स्कूल फार बायज एण्ड गर्ल्स है इसके मुख्याध्यापक श्री निकोलस डबनहेम हैं। इसमे ६०० विद्यार्थी है जिसमे ९९ प्रतिशत अग्रेज ही है इनमे आधी बालिकाये हैं पर सह शिक्षा नही है। बालिकाओ की कक्षायें पृथक लगती हैं। यहा सस्कृत भाषा पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाता है। सब विषयो को पढाने वाले शिक्षक को सस्कृत भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है। सस्कृत का ज्ञान हुए बिना किसी भी शिक्षक को स्थान नही दिया जाता है। बाल्यकाल से ही महर्षि पाणिनि विरचित व्याकरण लघु सिद्धान्त-कौमुदी आदि का गहन अभ्यास करवाया जाता है। १८ वर्ष की आयु तक अनिवार्य रूप से सस्कृत पढना पडता है।

भारत के जगन्नाथपुरी के गोवर्द्धन पीठ के ब्रह्मलीन जगद्गुरु शकराचार्य श्री भारती कृष्ण तीर्थ विरचित 'वैदिक गणित' भी यहा पढाया जाता है। यहा पर सात्विक व शाकाहारी भोजन ही दिया जाता है जिससे विद्यार्थी भावी जीवन मे शाकाहारी रहकर वैदिक सस्कृति के अनुसार अपना जीवन यापन कर सकें। सस्था मे बालको के रहन-सहन व मन्त्र पाठो को सुनकर ऐसा लगता है कि हम लन्दन मे नही भारत के किसी प्राचीन गुरुकुल मे है।

डरबन मे ये वेस्टवील विश्वविद्यालय का प्रतीक सत्यमेव जयते' है वहा भी सस्कृत पढाई जाती है विद्यालय मे छात्र व अध्यापक कहते है कि सस्कृत द्वारा ही सस्कृति की रक्षा की जा सकती है ऐसी हमारी श्रद्धा है। भारत से सस्कृत के पण्डित नही मिलते अत उन्होने जर्मनी के प्रोफसरो को नियुक्त किया है।

विश्व विद्यालय के उपकुलपति ने बताया कि उनकी ऐसी इच्छा रहती है कि इस विश्व विद्यालय मे ऐसे प्रोफसर हो जो सस्कृत भाषा अच्छी तरह पढा सकने के अतिरिक्त वैदिक कर्मकाण्ड भी अच्छी तरह करा सके।

—सकलनकर्ता प्रतापचन्द मन्त्री आर्यसमाज साकेत मेरठ

शरीर में आत्मा का निवास स्थान

—कर्मनारायण कपूर —

१—इस विषय पर पत्र-पत्रिकाओं में अनेको लेख छप चुके हैं। किन्तु प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस ऊहा-पोहा का क्या लाभ है ? हां विद्वानों के मस्तिष्कों का व्यायाम अवश्य हो जाता है। दोनों पक्षों वाले यह तो मानते है कि आत्मा का निवास हृदय मे होता है। कोई विद्वान हृदय का स्थान मस्तिष्क मे मानते हैं अन्यो के विचार मे वह नाभि और कण्ठ के मध्यम मे है। इस समस्या का हल करने हेतु निम्न विचारो को ध्यान मे रखना होगा —

(क) आत्मा मन मे प्रविष्ठत रहता है एको हि देवो मनसि प्रविष्ट।
(अथर्वेद १० ८-२८)

(ख) मन हृदय में प्रविष्ट है — हृत्प्रतिष्ठं तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु।
(यजुर्वेद २४-६)

(ग) आर्यों की सन्ध्या के दूसरे और तीसरे मन्त्र में हृदय का स्थान नाभि और कण्ठ के मध्य मे दर्शाया गया है।

(घ) यजुर्वेद (८ २१) मे भी चक्षु, श्रोत्र, वाणी, मन और आत्मा का क्रमवार वर्णन किया गया है।

(ङ) यदि हृदय शिर का एक अंग है तो इसकी पृथक संज्ञा देना अनावश्यक हो जाता है। अपरच आर्यों के सन्ध्या के दूसरे व तीसरे मन्त्र मे हृदय का पृथक विवरण तर्क रहित हो जाता है।

(च) हृदय को हृदय इसलिये कहते हैं कि वह तीन काम करता है— 'हृ' से हरति "द" से ददाति 'य" से याति — यह लेता है देता है और चलता है। हृदय शरीर के अशुद्ध रुधिर को लेता है, उसको शुद्ध करके शरीर को देता है और सदा गति करता रहता। (निरुक्त)

(छ) विश्व विख्यात मस्तिष्क शल्य चिकित्सक डा० पैन फील्ड का विचार है कि स्मृति केन्द्र मस्तिष्क के किसी भाग में स्थित नही किन्तु वह देह मे अन्य स्थित है। जब मस्तिष्क के किसी भाग को विद्युत धारा (electrode) द्वारा उत्तेजित किया जाता है तो शरीर के अन्यत्र (अज्ञात) मे प्रेरणा होने के कारण स्मृति जागृत हो जाती है।

वैदिक विचार धारा के अनुसार मन स्मृति का भण्डार है और वह हृदय मे स्थित है। आधुनिक वैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि मन पूर्व स्मृतियो का केन्द्र है। अचेतन मन की तुलना मे चेतन मन बहुत छोटा है अचेतन पूर्व की स्मृतियो, विचारों और भावनाओ का भण्डार है।

•(डा० पाल बो-सफील्ड एम० आर० सी० एस०)

अपरच मस्तिष्क पूर्व स्मृतियो का केन्द्र इसलिये नही हो सकता कि यह प्रत्येक जन्म मे नवीन प्राप्त होता है किन्तु मन ही आत्मा का सदैव साथ रहने वाला अंश है।

(ज) 'शरीर की जब "जाग्रतावस्था' होती है, तब आत्म तत्व का जाग्रत स्थान होता है और वह स्थान है 'आंख'। शरीर की जब स्वप्नावस्था होती है, तब आत्म-तत्व का स्वप्न स्थान होता है और वह स्थान है 'हृदय" शरीर की जब सुषुप्ति अवस्था होती है तब आत्म तत्व का सुषुप्ति अवस्था होती है तब आत्म-तत्व को सुसुप्ति स्थान होता है और वह स्थान है प्राण……शरीर की इन अवस्थाओ के अनुसार आत्म-तत्व अपनी सत्ता के प्रकाश के 'स्थान' बदलता रहता है।'

(द्र एकादशोपनिषत—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार पृ० ५२७)

किन्तु यह सिद्धान्त (क) (ख) मे वर्णित वेद सूक्तियो के प्रतिकूल प्रतीत होता है।

(झ) डाक्टरो ने रुधिर शुद्ध करने वाले हृदय का जो चित्र प्रकाशित किया है उसमे "हृदयाकाश" तो स्पष्ट रूप से दिखाई देता है किन्तु ऐसे "हृदयाकाश" का मस्तिष्क मे होना सम्भव प्रतीत नही होता क्योंकि मस्तिष्क मे लगभग १० अरब जीवाणु (cell) होते हैं जिनकी अनेको प्रकार से क्षति विक्रिया होती रहती हैं।

(ञ) कुछ वर्षों पूर्व जापान से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका सोका गक्की (soka gakki) में दूसरे विश्व युद्ध की निम्न घटना का उल्लेख हुआ था : —

"जापानी सिपाही युद्ध बन्दियों की हत्या भी करते थे। वे पृथिवी मे एक गड्ढा बना लेते थे और युद्ध बन्दी के सिर को उस गड्ढे के किनारे रख कर उसका सिर काट दिया करते थे। एक बार एक युद्ध बन्दी का सिर कट कर गड्ढे में गिर गया तो कुछ सैकडों में मृतक का धड पृथिवी से उठ कर चलने लगा। जापानी सिपाही यह दृश्य देख कर भय भीत हो गए। एक दो कदम चल कर वह धड पृथिवी पर गिर कर सदा के लिये शांत हो गया।

यह घटना सिद्ध करती है कि जीवात्मा का स्थान सिर मे नही किन्तु वक्षास्थलीय हृदय है।

अन्त मे एक शंका का समाधान करना है आजकल डाक्टर हृदय रोगी के हृदय को कभी कभी शरीर से निकाल कर शून्य क्रिया करते हैं। प्रश्न उत्पन्न होता है उस समय आत्मा कहा रहता है। इसके दो उत्तर हैं। प्रथम जैसा राजा अपनी राजधानी से बाहर निकल कर राष्ट्र के किसी अन्य स्थान पर चला जाता है वैसे आत्मा भी हृदय को छोड कर शरीर के किसी अन्य भाग में चला जाता है। दूसरा वह हृदय मे ही रहता है। आत्मा के शरीर से निकल कर वायु मे विचरने के अनेकों उदाहरण हैं। आत्मा विचरने के पश्चात पुन शरीर मे आ जाता है।

स्वामी दयानन्द ने कर्नल अल्काट को बताया था कि वह अपनी आत्मा को शरीर के किसी भाग मे केन्द्रित कर सकते हैं जिससे शरीर के अन्य भाग जीवन-रहित हो जावें।

(द्र हरविलास शारदा कृत दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र)

समझौते से चिढ़ा पाकिस्तान

पाकिस्तान ने भारत श्रीलंका समझौते का विरोध उस वक्त किया है जब वह सफलता के कई सोपान पार कर चुका है। श्रीलंका की सेना युद्धविराम कर वापिस बैरकों मे जा चुकी है। तमिल उग्रवादियो ने बडी तादाद मे शस्त्र समर्पण किया है। श्रीलंका के प्रधानमन्त्री और रक्षामन्त्री का भयानक समझौता विरोधी रुख नरम पडा है। श्रीमती सिरिमावो भण्डारनायक फ्रीडम पार्टी ने भी समझौते के साथ प्रतिबद्धता व्यक्त की है। विदेशो मे प्रतिक्रिया इसके समर्थन मे हुई है। ऐसे मे पाकिस्तान के विदेश सचिव अब्दुल सत्तार के विरोध का क्या मतलब रह जाता है ?

लेकिन पाक नेताओ की निराशा समझना मुश्किल नही। पाकिस्तान की यह सहज इच्छा हो सकती है कि श्रीलंका में हिंसक तनाव चलना रहे। इसके उसे दो साफ फायदे है। एक जाफना के तमिलों का रोष तमिलनाडु मे असन्तोष का कारण बन रहा था और भारत के किसी भी कोने मे सुलगता असन्तोष पाकिस्तान को प्रसन्नता देता है।

दूसरी ओर तमिलो के सशस्त्र संघर्ष के चलते वह भारत पर श्रीलंका को तोडने का आरोप लगाता रह सकता था। अपने देश मे सिन्धी और बलूची असन्तोष को वह भारत से प्रेरित कह सकता था और भारतीय पंजाब मे अपनी उग्रवादी दखलन्दाजी को छिपाए रख सकता था। एक समझौते से उसे एक साथ मिल रहे इतने सारे फायदे बन्द या कम हो गए।

समझौते के बाद श्रीलंका के राष्ट्रपति जयवर्धन ने जिस स्पष्टवादिता के साथ दक्षिण एशिया मे भारत की क्षत्रीय श्रेष्ठता को स्वीकार किया उसे पचा पाना पाकिस्तान के लिए आसान नही है। जनशक्ति, प्राकृतिक ससाधनो और आकार की दृष्टि से भारत से कही पीछे होने पर भी पाकिस्तान ने हमेशा खुद को भारत का समकक्ष और प्रतिद्वन्दी माना। जाहिर है कि इस समझौते के कारण दक्षिण एशिया के दूसरे देशो मे भी भारत की प्रतिष्ठा और प्रभाव बढे हैं। इन्हे खत्म करने की दृष्टि से पाक-विरोध मुखर हुआ है।

पाकिस्तान को इस बात का भी कोई कम दुख नही है कि इस समझौते के कारण श्रीलंका मे पाकिस्तानी पहुच को धक्का लगा है और पाकिस्तान इस भ्रान्ति मे जी नही सकता कि भारत के गडबडी वाले इलाको मे शान्ति स्थापित करने के लिए सैन्य दखल का हक इस समझौते की तर्ज पर उसे मिल जाता है। भारत अपनी समस्याए खुद हल करने मे समर्थ है और अपने सैन्य दखल का फल पाकिस्तान तीन बार भुगत चुका है।

पाकिस्तान के मनोविज्ञान का सबसे बड प्रमाण बादशाह खान को लेकर उसकी खीझ है। भारत बादशाह खान को महात्मा गाधी का एक उत्तराधिकारी और स्वतन्त्र्य आन्दोलन का जीवित प्रकाशस्तम्भ मानता है। सीमान्त गाधी को 'भारत रत्न' का सम्मान देकर भारत सरकार ने बादशाह खान का नही, पूरे उपमहाद्वीप की भावनाओ का सम्मान किया है। पर यह भावना पाकिस्तान को अपनी जडो पर ही प्रहार करती लगती हैं।

लोकसभा में प्रश्नोत्तर

हैदराबाद आर्य सत्याग्रही स्वतन्त्रता सेनानी माने गए

नई दिल्ली, २५ अगस्त। सरकार ने भू० पू० रियासत हैदराबाद में चलाए गए आर्य समाज आन्दोलन को स्वतन्त्रता आन्दोलन के रूप में स्वीकार कर लिया। इस आन्दोलन में जिन लोगो ने भाग लिया था वे लोग स्वतन्त्रता सेनानियों को दी जाने वाली पेंशन के अधिकारी माने जायेंगे। इसकी घोषणा राज्यसभा में गृहविभाग के राज्यमन्त्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही ने की। उन्होंने कहा कि हैदराबाद स्क्रीनिंग कमेटी व गैर सरकारी आर्य समाज स्क्रीनिंग कमेटी के पास चार हजार से अधिक प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए थे। उनमे से केवल १४०० प्रार्थना पत्र अभी तक निबटाए गए हैं। उन्होने कहा यह प्रार्थना पत्र १ या २ मास तक निबटाए जा सकेंगे। पेंशन के विचाराधीन मामलो के सम्बन्ध मे मुख्य प्रश्न के उत्तर देते हुए श्री पाणीग्रही जी ने श्री एस० पी० म विया (भ क दल) से कहा कि आर्य समाज के ५५ मामले एक वर्ष से विचाराधीन हैं। उन्होने बताया कि अब तक देश के विभिन्न क्षेत्रो से विभिन्न वर्गों के स्वतन्त्रता सेनानियो का ४ लाख ४५ हजार प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए थे उनमे से १ लाख ४२ हजार की पेंशनें स्वीकृत की गई। श्री पाणीग्रही ने कहा कि उपरोक्त आकडो मे १८९०१ वह पेंशनें हैं जो स्वतन्त्रता आन्दोलन मे इण्डियन नैशनल आरमी (श्री सुभाषचन्द्र बोस की सेना) को भूतपूर्व सैनिको को दी गई मन्त्री महोदय ने इस तथ्य को स्वीकार किया कि १४ अगस्त १९८६ को जैसा कि प्रधानमन्त्री की आज्ञा थी पेंशन के सभी मामलो को निबटाने की अन्तिम तिथि थी परन्तु चूकि प्रान्तो से अधिक प्रार्थना पत्र पुनर्निरीक्षण के लिए आते गए अत उनके निबटाने में देरी हुई। उनके अनुसार ऐसी कुल ७२ हजार प्रार्थना पत्र अपर्याप्त प्रमाण के कारण निरस्त कर दी गई। परन्तु बाद मे फ्रीडम फाईटर्स एसोसिएशन और प्रान्तीय सरकारो ने ९ हजार मामले पुर्नविचार के लिए भेजे। प्रत्येक दशा मे शेष सभी मामले यथासम्भव शीघ्र निबटाए जायेंगे। उन्होने असन्तुष्ट सदस्यो को विश्वास दिलाया कि स्वतन्त्रता सेनानिओ पेंशन के विलम्ब से एक गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गई है। उन्होने यह माग निरस्त कर दी कि केन्द्र प्रान्तो को पेंशन की समान दर के लिए आदेश दे और कहा कि पेंशन की राशि प्रान्तो ने अपने ऐसे साधनो का दृष्टिगत रखते हुए निश्चित की है। मन्त्री महोदय ने विशेष बताया कि जुलाई अगस्त १९८५ के मध्य एक विशेष आन्दोलन के परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानिओ के सभी मामले (हैदराबाद आर्य सत्याग्रहिओ के मामलो के अतिरिक्त) निबटाए गए हैं। और जहा पर्याप्त प्रमाण थे पेंशन स्वीकृत कर दी गई थी। सदस्यों के स्वतन्त्रता सेनानिओ के मामलो मे विलम्ब का कठोर शब्दो मे नोटिस लिया। और ऐसे कई मामले प्रस्तुत किए कि मुख्य स्वतन्त्रता सेनानिओं को पेंशन प्राप्त करने मे काफी कठिनाई पेश आई।

सत्यार्थ प्रकाश में सृष्टि-विज्ञान की समीक्षा

—स्वामी मोक्षानन्द 'सरस्वती'—

आधुनिक युग में यदि किसी ऐसे सन्त का इतिहास लिखा जायेगा कि जिसने सृष्टिगत् प्रत्येक विषय पर वैज्ञानिक लेखनी से सर्वांगीण चतुर्मुखी रचनात्मक दिग्दर्शन दिया हो एव अपने साहित्यक सृजन से विश्व को सर्वांगिक विकासमान पथ की ओर आकृष्ट करके क्रान्तकारी अतीत की ओर उन्मुखी होने के लिए विवश किया हो तो ऐसे महानतम युग पुरुष के रूप मे युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की यशावली ही स्वाभाविक रूप से विश्व मानस पटल पर स्वयमेव साक्षात प्रकट हो जायेगी।

इस विश्व मे 'एक धर्म एव ईश्वर के नाम पर" असख्य मत, मजहब, पन्थ एव सम्प्रदाय प्रचलित थे। सभी अपने अपने को ईश्वरीय सिद्ध करने की धृष्टता करते हुए विश्व मानस पटल पर बुरी तरह छाये हुए थे। सभी की सीमा सकीर्ण अवैज्ञानिक मान्यताओ मे जकडी हुई थी। निर्णायक सत्यान्वेषी शास्त्रार्थ-परम्परा का सर्वथा लोप हो चुका था। पूरा विश्व जीवन के वास्तविक पथ से सर्वथा अनभिज्ञ एव विमुख हो चुका था। महर्षि ने मत मजहबियो को प्रबलतम वैदिक नाद से परास्त करके वैदिकता की ईश्वरीय अनादि धारा की ओर चिन्तन करने को बाध्य किया।

महर्षि दयानन्द ने युग की उन ज्वलन्त समस्याओं को ही विशेष प्रश्नगत् किया कि जिनसे "विश्व" जीवन के वास्तविक मूल्यो से भटका हुआ था। 'पुनर्जीवित' अपनी शास्त्रार्थ परम्परा से उन्ही प्रमुख जीवन-मूल प्रश्नों को ही जोडा। यथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा वेद परम्परानुरूप 'कृति' 'सत्यार्थ प्रकाश' के 'अष्टम समुल्लास' के उदाहरण प्रस्तुत हैं। इस अष्टम समुल्लास मे प्रमुख रूप से निम्न जीवन मूल्यो का दिग्दर्शन कराया गया है—

(१) यह विश्व एवं जगत क्या है ?

"जगत् एव विश्व" शब्दो का शाब्दिक अर्थ उत्पन्न होकर पुन अपने उन्ही जनक पदार्थो मे तत्वों मे बदल जाना अथवा रूपान्तरित हो जाना कि जिनके सहयोग से इस प्रकट स्थूल जगत की रचना हुई होती है। इससे सिद्ध होता है कि वर्तमान जगत की रचना से पूर्व रचना करने वाली सामग्री (उपादान कारण प्रकृति तत्व) सृष्टि पूर्व अवश्य अपनी स्वाभाविक मूल सत्ता के रूप मे वर्तमान रही होगी। यदि लकडी रूपी कच्चा माल (उपादान कारण) पहले से उपलब्ध न होते तो बढई मेज, कुर्सी आदि सामान नही बना पाता। ठीक इसी प्रकार प्रकृति के मूल मे लकडी उत्पन्न करने वाले बीज न होते तो लकडी भी न बनती। वृक्षो के बीज प्रकृति मे और वृक्षो से 'लकडी' से मेज, कुर्सी, तख्त आदि बनना किन्तु कालान्तर मे ये ही लकडी के सामान अपने उसी जनक प्रकृति तत्व मे (सड गल टूट फुट) पुन रूपान्तरित (मिट्टी) हो जाते हैं ठीक इसी प्रकार विश्व व जगत (उत्पत्ति एव लय प्रलयादि) चक्र में चलता ही रहता है। अर्थात इसकी रचना एव प्रलय का आदि एव अन्त नही हैं। यह विश्व की सृष्टि एव लय का चक्र प्रवाह से अनादि है। इसीलिए इस सृष्टि को जगत एव विश्व के शाब्दिक रूपो मे पुकारा जाता है (उपादान-कारण समीक्षा)।

(२) विश्व की रचना का कारण :

कुछ अविवेकी मूढजनो का कथन है कि यदि ईश्वर जगत न बनाता तो स्वय ही ईश्वर निश्चिन्त रहता और असख्य जीव आत्माओ को जन्म मरण चक्र में पडकर दुःख न भोगना पडता। विचारणीय तत्व तो यह कि प्रलय अवस्था में क्या सुख दुःख का अनुभूति हो सकती है ? वह काल तो मूढवत् अचेतन अवस्था का कारावास (सुषुप्ति व तुर्यावस्था) ही है। जीवात्मा का स्वभाव तो परतन्त्रता से छूटकर स्वतन्त्रता की ओर चलने का ही होता है। पूर्व सृष्टि के अनुसार कुछ आत्माओ को मौलिक स्वतन्त्रता (मोक्ष का अधिकार इस वर्तमान सृष्टि से मिलने जा रहा है एव कुछ को विशेष पारितोषिक (स्वर्ग) का अधिकार मिलना हो और अज्ञानियो के विचारो से ईश्वर सहमत हो जाय एवं सृष्टि न करता तब ईश्वरीय न्यायकारी सत्ता पर दोष आ जाता अथवा नही ? जबकि ईश्वर स्वभाव से माता-पिता, आचार्य तुल्य रक्षा, अनुशासक रक्षक एव न्यायाधीश ही है। वह आत्माओ के मिलने वाले मोक्ष एव स्वर्ग से वंचित किस आलस्य-प्रमाद ईर्ष्या द्वेषादि से करेगा। यदि इसी प्रकार कुछ अनाधिकार चेष्टी आत्माओ को दण्ड इसी सृष्टि मे मिलने का योग होवे और ईश्वर सृष्टि न करे; तब वे दण्ड से वंचित आत्मायें दण्ड न पाने की दशा मे ईश्वर न्यायकारी रह सकेगा। चूंकि दण्ड का अर्थ बदला देना-लेना नही है वरन् केवल पाप की, अपराध की वृत्ति दोष दूर करना मात्र है। अत ईश्वर सृष्टि चक्र को अनादि रूप मे अपनी स्वाभाविकी दशा मे, न्याय, पालन आदि के कारणो अर्थात् आत्माओ के मौलिक स्वतन्त्रता मोक्ष रूपी लक्ष्य प्राप्त करने हेतु सृष्टि-कर्त्ता है। ईश्वर की स्वाभाविक सत्ता तभी साधक एव प्रकट हो सकती है कि जब वह अपने स्वभाव से ही आत्माओ के लिए सृष्टि धारण एव पालन न्याय आदि व्यवस्था एव प्रलय करता रहे। क्योकि सृष्टि के अभाव मे किंचित न्याय आदि व्यवस्था का दोष ईश्वरीय सत्ता की दुर्बलता है। जगत् रचना का कारण आत्माओ के मौलिक लक्ष्य एव स्वतन्त्रता का (मोक्ष) हित साधन है (साधारण कारण समीक्षा)।

(३) जगत् कर्ता की आवश्यकता क्यों ?

कुछ अन ईश्वर वादी कहते हैं कि यह सृष्टि तो स्वभाव से स्वमव उत्पन्न एव स्थित व प्रलय क्रिया चक्र मे चलती रहती है। इसमे ईश्वर की कोई आवश्यकता नही है। इन अन-ईश्वरवादियो को जड पदार्थो के स्वभाव व सत्ता का बोध नही है। स्वभाव से उत्पत्ति मानने पर प्रलय आदि किंचित परिवर्तन सम्भव नही है। ठीक इसी प्रकार स्वभाव से प्रलय आदि परिवर्तन माना जाये तो उत्पत्ति सर्वदा ही असम्भव है। क्योकि जड तत्वोमे ज्ञान क्रिया, प्रयोजन आदि क्रियायें नैमित्तक है स्वभाव नही। कोई पदार्थ अपने जनक तत्वो के स्वभावो से परिचित नही देखा गया। साथ ही सृजन काल मे अपने जनक तत्वो की मात्रा एव गुणात्मक विवेचना करने व चुनाव करते भी नही देखा जाता। अर्थात् प्रत्येक मौलिक सरचना मे आने वाला तत्व अपने आप मे ज्ञान, प्रयत्न, क्रिया एव प्रयोजन शून्य होने से रचना सम्बन्धी सकल्प-विकल्पो से सवथा अपग एव असमर्थ है। प्रत्येक सरचना मे ज्ञान, प्रयोजन, बल एव प्रयत्न आदि उपादेयो एव रचना क्रम मे आने वाले पदार्थों का गुणात्मक एव मात्रात्मक विवेचनात्मक चुनाव आदि चेतन सत्ता का स्वभाव व गुण है-जड पदार्थो का नही। इसी दृष्टि से जगत की व्यापकता विचित्र असख्य रचनाऐ देखने पर ज्ञात होता कि ये सृष्टि अवश्य ही किसी सर्व व्यापक सर्व विज्ञान सम्पन्न चेतन (ईश्वरीय) सत्ता की ही कृति है स्वाभाविक ही नही है। यदि जड तत्वो में स्वय सृजन शक्ति होती तो वह अपने उपभोक्ता की इच्छानुसार विभिन्न भोग उत्पन्न करते देखे गए होते। उक्त दशा मे अन-ईश्वरवादी का हाथ पैर भी न हिलाने पडते। 'प्रकृति तत्व' सब भोजन आदि उन्ही की इच्छानुसार बनाकर ही देते। कभी कभी प्रकृति एव उसके उपभोक्ता अन-ईश्वरवादियो मे इच्छाओ का भयकर टकराव भी होता। उस समय जड प्रकृति तत्वो की ही विजय होती। चेतन, शक्तिशाली अन ईश्वरवादी 'जड सत्ता" से पिटता मिटता होगा। यह सब स्वय रोग, हानि, वियोग अतिवृष्टि अनावृष्टि, सूखा, तूफान आदि सुख दुःख किसकी देन है ? यह दण्ड है अथवा पारितोषक है। क्या इन सब आपदाओ को नास्तिक जड सृष्टि की ही देन मानते हैं-स्वय स्वेच्छा से स्वीकारते है ? सबल चेतन अन-ईश्वर वादी पर 'जड प्रकृति' जो दुर्बल ही नही बल्कि मृत्तिका मृतका-त्रणरेणु की विजय सर्वदा असम्भव पर सम्भव की अविवेकीवत् मान्यता का आरोपण करता ही है। जबकि प्रकृति का कोई त्रणरेणु बिना उस सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान सत्ता के गतिवान नही हो सकता। क्योकि प्रकृति मे अपनी स्वय की कोई गति एव चेतना नही होती केवल जड ही है। साथ ही उसका कोई कार्य निष्प्रयोजित नही हुआ करता है। उसके प्रकृति मे होने वाले उथल-पुथल अथवा जीवात्माओ की अपेक्षाकृत भोग व्यवस्था (दण्ड व पारितोपक) से चक्रवत् चला करते हैं अत. सिद्ध होता है कि ईश्वर ही इस और उस सभी का नियामक एव नियता है। उसके बिना ससार मे कोई गति व न्याय आदि व्यवस्था सम्भव नही है (निमित्त कारण समीक्षा)।

सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाएं

सत्यार्थप्रकाश की चार प्रकार की परीक्षाए सत्यार्थ रत्न, सुबध, विशारद व शास्त्री इस वर्ष भी आर्य-युवक परिषद, दिल्ली (पंजीकृत) द्वारा २० सितम्बर १९८७ को सारे भारतवर्ष में आयोजित की जा रही हैं। इन परीक्षाओं मे अधिक से अधिक सख्या में बैठकर महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करे।

सभी प्रकार की जानकारी के लिए परीक्षा मन्त्री श्री चमनलाल, एच ६४ अशोक विहार, दिल्ली-५२ से अविलम्ब सम्पर्क करें। —चमनलाल

आवश्यक सूचना

उ० प्र० के समस्त आर्य वीर दल शाखाओ तथा आर्य समाज मन्त्रियो को सूचित किया जाता है कि आर्य वीर दल का शिविर तथा सम्मेलन आयोजन करने से पूर्व अपने प्रान्तीय सचालक की स्वीकृति लेकर ही कार्यक्रम करें। प्रधान सचालक महोदय को आमन्त्रित करने से पूर्व प्रान्तीय सचालक को सूचित करना आवश्यक होगा। जिससे उनके सम्मान के अनुरूप कार्यक्रम बनाया जा सके।

आशा है सभी अधिकारी इस आदेश का पालन करते हुये अनुशासन का परिचय देंगे। —आर्यप्रकाश आर्य

श्रावणी पर्व (रक्षा बन्धन) महोत्सव

आकोट ता० ९-८-८७ रविवार को प्रात ९ से १२ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर में माननीय सखाराम जी कोल्हे इनके अध्यक्षता में श्रावणी पर्व (रक्षा बन्धन) का भव्य कार्यक्रम बहुतही उत्साहके साथ सम्पन्न हुआ है। प्रथम श्री नामदेवराव शास्त्री आर्योपदेशक आकोट इनके हस्ते ध्वजारोहण ध्वजगीत हुआ। पश्चात् गरीब विद्यार्थियों को आर्य समाज की ओर से व व वस्त्र भेंट किये गये हैं। पश्चात् महायज्ञ एव यज्ञोपवीत धारण का महान् कार्यक्रम श्री नामदेवराव जी शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञ वेदी पर यजमान (सहपत्नी) श्री मोहनभाई चावडा, नारायणराव व बुसकर दिनेश कुमार जी वैद्य, हरगोविन्द जी चावडा, हरिश्चन्द्र जी डेम्ला, सखाराम जी कोल्हे आदि स्थानापन्न थे। श्रावणी पर्व का महत्व बतलाते हुये श्री नामदेव राव जी शास्त्री ने अपने भाषण में कहा कि "रक्षा बन्धन" यह पर्व अपने राष्ट्र सस्कृति धर्मरक्षार्थ व्रत (प्रतिज्ञा) धारण करने के लिये है अत सभी लोग राष्ट्र, सस्कृति, धर्म, रक्षणार्थ यज्ञोपवीत द्वारा व्रत (प्रतिज्ञा) धारण करें। पश्चात् श्री सखाराम जी कोल्हे इनका अध्यक्षीय भाषण हुआ। इस कार्यक्रम मे असख्य महिला व पुरुष उपस्थित थे।

—नामदेव शास्त्री गुहे

समस्त धर्मप्रेमी बन्धुओं के नाम—

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) की मार्मिक

अपील

आर्य बन्धुओ !! आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) ऐसे पिछड़े क्षेत्र में वैदिक शिक्षा का प्रचार, एव प्रसार कर रहा है जहा बहुधा लोग वैदिकधर्म से अपरिचित है तथा अवैदिक मत मतान्तरों में ग्रस्त हैं। इस गुरुकुल के पास पर्याप्त सामग्री, सामर्थ्य न होने पर भी यह आवासस्थ सभी ब्रह्मचारियों को निःशुल्क शिक्षा वस्त्र, भोजनादि प्रदान कर रहा है। हमारा उद्देश्य है कि राष्ट्र के लिए ऐसे ब्रह्मचारियो का निर्माण करे जो भविष्य मे उत्कृष्ट विद्वान तथा देश सेवक बनकर इस देश की रक्षा करें।

यह सब कार्य धनाभाव के कारण मूतरूप नही हो सकेंगे। क्योंकि वर्तमान समय में अर्थ के बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। अत इस पवित्र कार्य मे आपका पुनीत सहयोग अतीव आवश्यक है।

हमारी प्रमुख आवश्यकताए जिनके बिना गुरुकुल का कार्य महत्त्वपूर्ण ढग से सम्पन्न नही हो पा रहा है।

(१) यज्ञशाला (२५×२५) यज्ञ पर छोज हेतु

(२) विशाल छात्रावास (३०×५०) लगभग ५० बालकों के निवास हेतु

(३) विद्यालय भवन (५० बालकों के अध्ययन हेतु।

एक मात्र ऋषि पद्धति पर आधारित इस गुरुकुल को आप अपना पवित्र सहयोग अवश्य प्रदान करे। इस गुरुकुल को दिया हुआ दान धारा ८० के अन्तर्गत आयकर से मुक्त होगा। आप याद रखें। भूल न जावें।

दक्षिणावन्तोऽमृत भजन्ते। दानी स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।

आचार्य राजदेव नैष्ठिक — प्रधानाचार्य

श्याम मुनि आर्य — प्रबन्धक

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) उ० प्र०

समाचार

आर्य समाज टकारा सचालित बाल मन्दिर का सातवा स्थापना दिन बड़े धूमधाम से मनाया गया। इसमे 'बाल रोग निदान यज्ञ" का विशेष आयोजन किया गया। राजकोट के प्रसिद्ध बाल रोग विशेषज्ञ डाक्टरो ने अपना योगदान दिया ३५० रोगी बच्चो का निदान कर आर्यसमाज टकारा की ओर से सबको मुफ्त दवाइयाँ दी गई। आर्य समाज के इस आयोजन पर आम जनता ने प्रशसा की।

खुश खबरी　　खुश खबरी　　खुश खबरी

हवन सामग्री भण्डार

६११, शिवनगर, दिल्ली ३५

दूरभाष ७२१७४३३ PP

हवन सामग्री भण्डार, शिवनगर दिल्ली ३५ वालों की ओर से पूरे भारतवर्ष की आर्य समाजों एवम् आम ग्राहकों के लिए विशेष छूट योजना।

१—इस योजना के अन्तर्गत आप विशेष छूट का लाभ प्राप्त कर सकते है, अर्थात आप इस समय जहां से भी हवन सामग्री मगवा रहे हैं, उस विक्रेता का आखिरी बिल जोकि वर्ष ८७ का हो, वह बिल हमे भेज दें, हम उससे कम एव उससे कम भाव पर आपको उससे बढ़िया हवन सामग्री देंगे।

२—हमारी हवन सामग्री की शुद्धता को देखकर भारत सरकार ने पूरे भारतवर्ष में हवन सामग्री का निर्यात् अधिकार (Export Lisense) सिर्फ हमें प्रदान किया है।

३—हमारे यहां लोहे की मोटी मजबूत चादर से विधि अनुसार बने हुए (बन्द वाले मजीदार स्टैण्ड सहित) हवन कुण्ड भी मिलते हैं, जिनका मूल्य इस प्रकार है .—

८×८ इन्ची (बन्द वाले स्टैण्ड सहित) ९०) रुपये प्रति हवन कुण्ड
१०×१० „ („ „ „ „) १००), „ „ „
१२×१३ „ („ „ „ „) १२५), „ „ „

हमारे यहां तांबे की मोटी चादर का बहुत सुन्दर बना हुआ हवन कुण्ड ७×७ इन्ची भी मिलता है जिसका मूल्य ६० प्रतिशत रुपये प्रति हवन कुण्ड है तथा पूरे भारत में भेजने की व्यवस्था है।

बंगाल में वैदिक प्रचार योजना

आर्य समाज हवड़ा द्वारा सचालित उपदेशक विद्यालय के सिद्धात विशारद परीक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियो का दीक्षान्त समारोह दिनाक १५ अगस्त ८७ को सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री गजानन्द जी आर्य (मन्त्री परोपकारिणी सभा) ने की एव दीक्षान्त भाषण तथा प्रमाण पत्र वितरण श्री क्षितीश वेदालकार (सम्पादक साप्ताहिक आर्य जगत) ने किया अन्य विद्वान एव अधिकारियो की उपस्थिति इस प्रकार थी—

प० उमाकान्त जी उपाध्याय
„ रामनरेश शास्त्री
„ ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति
„ सत्य नारायण शर्मा
स्वामी अरुपानन्द सरस्वती
श्री बटू कृष्ण बर्मन (प्रधान आ० प्रति० सभा बगाल)
श्री सीताराम जी आर्य (प्रधान कलकत्ता आर्य समाज)
श्री चाद रतन दम्मानी (प्रधान बड़ा बाजार आर्य समाज)
श्री महाशय रघुवीर प्रसाद गुप्त (भूतपूर्व प्रधान आ प्र स बगाल)
डा० ए० एस० चक्रवर्ती (प्रतिनिधि सभा बगाल)

वैदिक उपदेशक विद्यालय का प्रारम्भ एक वर्ष पहले ६ बगभाषी विद्यार्थियो को लेकर शुरू किया गया था इसका मुख्य उद्देश्य है कि बग प्रान्त में बगला भाषी उपदेशकों के द्वारा प्रचार किया जावे। —मन्त्री

आवश्यकता है प्रधानाचार्य की

श्री मद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय खेड़ा खुर्द दिल्ली-८२ (शिक्षा विभाग दिल्ल प्रशासन से मान्यता एव सहायता प्राप्त) मे प्रार्थी निम्नलिखित योग्यताय पूरी करते हो ?

१—आचार्य उपाधि।
२—तीन वर्ष का प्रधानाचार्य का प्रशासनिक अनुभव।
३—आचाय कक्षाओ के पढ़ाने का कम से कम पाच वर्ष का अनुभव
४—वैदिक सिद्धान्तो का ममज्ञ, सस्कृत लेखन और सभाषण में प्रवीण विद्वान् को वरीयता दी जायेगी।

प्रार्थना पत्र विज्ञापन के २१ दिन के अन्दर प्रबन्धक प्रकाशचन्द्र शास्त्री, आर्यसमाज बाजार सीताराम, दिल्ली ११०००६ पर भेज।

पचास रूपये बचाइये

एक सौ साठ रूपये के पांच नये कैसेट
केवल एक सौ दस रूपये में

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने आर्य समाज से प्रसिध्द विद्वान् उपदशक स्व प प्रकाशचन्द्र कविरत्न के भजन उनक अन्यतम शिष्य प महेशचन्द्र सगीतरत्न के स्वर मे तथा आर्यसमाज के उदीयमान ओजस्वी नवयुवक भजनोपदेशक प सत्यपाल सरल के स्वर मे नये गातो के दो कैसेट तैयार कर लिये है जिन सज्जनो ने हमे 100 रूपये 14 अगस्त 1987 तक अग्रिम भेज थे उन्हे ये दो कैसेट भेज दिये गये है तीन अन्य नये कैसेट उन्हे दीपावली तक दिये जायेगे।

यदि आप भी ये पाच केसेट प्राप्त करना चाहते है तो हमें 17 अक्तूबर 1987 तक एक सौ दस रूपये भेज दीजिये तैयार दो कैसेट आपको तुरन्त भेज दिये जायेंगे शेष तीन कैसेट दीपावली तक आपको मिलगे। बाद में प्रति कैसेट तीस रूपये का होगा तथा डाक व्यय भी आपको देना हागा।

जो सज्जन केवल इन नये दो कैसेटो को ही प्राप्त करना चाहते हे व डाक व्यय सहित केवल 60 00 रु भेज दे अथवा 65 00 रु का वी पी का आदेश भेजे अपने घर में वैदिक विचारो का वातावरण बनाने तथा आर्य समाज के प्रचार प्रसार मे अपना पूरा योगदान देने के लिये अपने लिये 5 कैसेट सुरक्षित करवा लीजिये। पाचो नय केसेट 1 1 घन्टे के होगे।

विशेष उपहार *10 कैसेट के केवल 215 रुपये भेजने वालो का एक कैसेट फ्री भेट दिया जायेगा।*

सूचना *50 रूपये की छूट म 40 रूपये केसेट मूल्य म तथा 10 रूपये डाक व्यय छूट के है*

प्रस्तुत कर्ता

संसार साहित्य मण्डल

141 मुलुण्ड कालोनी बम्बई 82 फोन 5617137

आतंकवाद का अड्डा

(पृष्ठ ९ का शेष)

एक स्टेनगन एक पिस्तोल तथा कुछ अन्य हथियार थे। बाद मे उससे कहा गया कि वह इनमें से एक हथियार ले ले। गुरदयाल सिंह ने जब कहा कि उसे अग्नेयास्त्र चलाना नहीं आता तो उसे चलाकर दिखाया गया लेकिन उसकी समझ मे नही आया। बाद में गुरदयाल सिंह को टार्च सम्भालने का काम दिया गया।

अवतारसिंह ने इन चारों को उस मकान की ओर चलने को कहा जहां से ढोल की आवाज आ रही थी। इसी दौरान अवतारसिंह ने बताया कि जिनकी हत्या करनी है वे केन्द्रीय मन्त्री के रिश्तेदार हैं।

अवतारसिंह को इलाके की जानकारी पहले से ही रही होगी लेकिन वह फिर से देखने समझने के लिए वहां गली में दोबारा गया। गुरदयाल ने बताया कि अवतारसिंह ने गृहमन्त्री के चचेरे भाई अमरीकसिंह के बारे मे में पूछा। अमरीकसिंह उसी शाम को मौसम [illegible] गांव से शादी करके लौटा था।

मकान के आंगन में बैठी महिलाओं को हट जाने के लिए कहा गया और गोली चलनी शुरू हो गयी। [illegible] के एक अन्य चचेरे भाई की पत्नी [illegible] की गोली लगने से तत्काल मौत हो गयी। वह दुल्हन को बचाने की कोशिश कर रही थी।

गुरदयाल ने बताया कि ज्यादातर गोलियां अवतारसिंह ने ही चलाई। उसने स्टेनगन ले रखी थी। घटना स्थल से बरामद कारतूस से मालूम होता है कि कुछ गोलियां पिस्तौल से भी चलाई गयी।

गुरदयाल ने इस बात की पुष्टी की कि घटना स्थल से भागने से पहले उन्होंने खालिस्तान समर्थक नारे भी लगाये थे।

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल का उद्घाटन

हल्द्वानी, २१ अगस्त। कुमाऊं क्षेत्र के प्रवेश द्वार [illegible] हल्द्वानी नगर में आज प्रबन्धकर्त्री डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति ने अपना "डी०ए०वी० हल्द्वानी पब्लिक स्कूल" का शुभारम्भ किया। स्कूल का उद्घाटन डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति के [illegible], श्री [illegible] के द्वारा किया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता मारीशस के भूतपूर्व मन्त्री डी०ए०वी० इस्टर्न कालेज मारीशस के मैनेजर तथा आर्य सभा मारीशस के कोषाध्यक्ष श्री [illegible] ने की। समारोह में हल्द्वानी नगर तथा इसके समीप वर्ती क्षेत्रो के हजारों व्यक्ति सम्मिलित हुए। इस अवसर पर कुमाऊ क्षेत्र के सुप्रसिद्ध समाज सेवी तथा आर्य नेता डा० [illegible] की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

—प्रचार विभाग

अपील

२० वर्षो से आर्य समाज [illegible] वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करते हुए हिन्दू धर्म एवम् संस्कृति की रक्षा करने का कार्य कर रहे हैं।

ईश्वर की कृपा से हम लोगों ने [illegible] परिश्रम करके मन्दिर निर्माण हेतु [illegible] में स्थान प्राप्त किया लेकिन धनाभाव के कारण इसके निर्माण में बाधा उत्पन्न हो रहा है।

दानी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि इस पवित्र कार्य में अपना पूर्ण सहयोग देकर 'आर्य समाज मन्दिर' के निर्माण में हमारा सहयोग करें। अधिक से अधिक दान देनेवालों का नाम सगमरमर पत्थर पर लिखा जायेगा।

—[illegible] आर्य, प्रधान

—श्री० [illegible] आर्य, मन्त्री



सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा [illegible] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible]

ओ३म्

सार्वदेशिक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक ३७] आश्विन कृ० ६ सं० २०४४ रविवार १३ सितम्बर १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

९५ वर्षीय आर्य सन्यासी

महात्मा अमर स्वामी जी का देहावसान

आर्य समाज के अजेय शास्त्रार्थ महारथी नहीं रहे

४ सितम्बर को साय ६ बजे आर्य जगत् के मूर्धन्य सन्यासी व अजेय शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी सरस्वती का देहान्त हो गया। स्वामी जी गत ४ मास से बिना अन्न के जीवन मृत्यु के सघर्ष मे रोग शंया पर पडे थे। डाक्टरो ने उन्हे कैंसर घोषित कर दिया था। अन्तिम उपाय उनका पेट चीरकर एक नली द्वारा भोजन पहुचाने का किया गया परन्तु उसके १५ दिन बाद वे कालकवलित हो गए।

उनका अन्तिम सस्कार गाजियाबाद हिन्डन नदी के तट पर सैकडो उनके भक्तो व प्रशंसको की उपस्थिति मे किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती, आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री तथा दिल्ली व गाजियाबाद के सैकडो आर्य बन्धु इस अवसर पर उपस्थित थे।

सार्वदेशिक सभा का कार्यालय इस शोक मे बन्द कर दिया गया। इससे पूर्व सभा भवन की शोक सभा मे भाषण देते हुए स्वामी जी ने बडी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि दी। श्री अमर स्वामी जी के जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाये सुनाते हुए स्वामी जी ने कहा कि इतना ज्ञान गम्भीर विचारक व ओजस्वी वक्ता जो शास्त्रार्थों मे सिंह के समान गर्जता रहा अब आयसमाज को कहा मिलेगा। अमर स्वामी जी मृत्यु आर्य समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

श्री अमर स्वामी जी का बहुमूल्य पुस्तकालय जिसमें असम्य ग्रन्थो का सग्रह है सार्वदेशिक सभा को सौंप गए हैं। स्वामी जी ने न केवल जीवन भर आर्य समाज का काम किया अनेकों मिशनरी उपदेशक भी उन्होने पैदा किए। उनका जीवन जीता जागता आर्य समाज का इतिहास रहा है। उन्होने अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं।

शोक सभा मे एक प्रस्ताव द्वारा प्रभु से उनकी आत्मा की सद्गति की प्रार्थना व आर्य जगत् को इस दारुण दु:ख को सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

दरबार साहिब में घिनौना, शर्मनाक कृत्य !

अमृतसर, ६ सितम्बर (अशोक सोनी) : छहर्टा के निकट सुरक्षा बलों द्वारा पकड़े गए १४ वर्षीय बालक प्रदीप सिंह और १५ वर्षीय नरेन्द्र सिंह को संवाददाता सम्मेलन में पेश करते हुए जिला पुलिस प्रमुख मोहम्मद इजहार आलम ने बताया कि इन दोनों बालकों से की गई पूछताछ से कुछ सनसनी खेज रहस्योद्घाटन हुए हैं। दरबार साहिब की परिक्रमा मे बैठे आतंकवादी वहां दर्शनों के लिए आने वाले अथवा घरों से भागे बालकों को 'गायब' कर देते है और उनसे मुंह काला तो करते ही है, इसके अलावा उन्हें हथियार एक जगह से दूसरी जगह ले जाने और परिसर के बाहर उग्रवादियों के साथ सम्पर्क सूत्र के रूप में प्रयोग करते हैं। इसी तरह महिलाओं, जिनमे अधिकांश गरीब और विधवाएं होती हैं, के साथ संभोग करते हैं और हथियार लाने-ले जाने का काम कराते हैं। उन्हें २०० से ५०० रुपए तक पारिश्रमिक मिलता है।

वेदामृत

पुत्र कर्मठ और कृतज्ञ हों

ते सूनवः स्वपसः सुदंससो,
मही जज्ञुर्मातरा पूर्वचित्तये।
स्थातुश्च सत्यं जगतश्च धर्मणि
पुत्रस्य पाथः पदमद्वयाविनः ॥
ऋग्० १-१५९-३ ॥

हिन्दी अर्थ—वे सुन्दर कर्म करने वाले, आश्चर्यजनक शक्ति-सम्पन्न पुत्र प्रातिभज्ञान ईश्वरीय ज्ञान) के लिए मातृतुल्य महान् द्युलोक और पृथिवी को जानते हैं। चर और अचर जगत् के निश्छल पुत्र के मार्ग की धार्मिक कार्यों में (ये दोनों) अवश्य रक्षा करते हैं।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

इस अंक में पढ़िये

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

परमात्मा का स्वरूप

ले : श्री कर्मनारायण कपूर

१—वह परमात्मा सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, काया रहित, छिद्र-रहित, नाडी रहित पाप रहित, शुद्ध, कवि (त्रिकालज्ञ), मनीषी, अन्तर्यामी और अजन्मा है। वह सनातन काल से होने वाली प्रजा के हितार्थ यथायोग्य तत्वों को रचता है। (यजु० ४०।८)

२—जिस परमेश्वर का यश महान है उसकी कोई प्रतिमा नही है। (यजु० ३२।३)

३—वह परमेश्वर सारे जगत को चला रहा है किन्तु वह स्वयमेव एक रस निश्चल तथा कूटस्थ है। वह अविद्वानों से दूर तथा धर्मात्माओ के समीप है। वह सकल ससार तथा जीवो के भीतर तथा बाहर वर्तमान है। (यजु० ४०।५)

४—जिससे पूर्व कुछ भी उत्पन्न नही था और जो समस्त लोकों मे व्याप्त रहा है वह सोलह कलाओं से पूर्ण प्रजापति परमेश्वर अपनी प्रजा (सृष्टि) मे तीन प्रकार की ज्योतियो—अग्नि, विद्युत तथा सूर्य—से रमण करता है। (यजु० ३२।५)

५—पूर्ण परमेश्वर से यह पूर्ण ससार उत्पन्न होता है। परिपूर्ण परमेश्वर से ही यह समस्त ससार (माली से वाटिका के समान) सींचा जाता है। (अथर्व० १०।८।२९)

६—ईश्वर देवो का भी देव है, वह अद्भुत मित्र है और अपने का मुख्य साधन है। वह ज्ञानादि यज्ञ मे अत्यन्त शोभायमान है। हे भगवन हम आपकी अति विस्तीर्ण रक्षा तथा आश्रय मे रहे। आपकी मित्रता मे हम कभी दुःखी न हो। (ऋग० १ ९४।१३)

७—सब को बसाने वाले परमेश्वर आप निश्चय से हमारे पिता हैं और हमारी माता हैं। आप अनन्त कर्मों के कर्त्ता हैं। (ऋग० ८।९८।११)

८—वह परमेश्वर असख्य सिरो वाला, अनन्त आखो तथा अनन्त पैरो वाला है (अर्थात वह सर्वज्ञ है सब द्रष्टा है और सर्वव्यापक है।) (यजु० ३१।१)

९—वह परमेश्वर हमारा पिता है और हमारी माता है। वह ही हमारा विधाता, शासक और कर्म फल प्रदाता है। वह सकल लोको को जानता है। (ऋग० १० ८२।३)

१०—परमात्मा और आत्मा दो पक्षियो के समान है जो एक दूसरे के सखा बन कर एक समान वृक्ष पर स्थित हैं। उनमे से एक (जीवात्मा) तो वृक्ष के स्वादु फल खाता है और दूसरा (परमात्मा) फल को न खाता हुआ पहिले देखता है। ऋग० १।१६४।२०)

११—देवों की न जीती जा सकने वाली नगरी के आठ चक्र और नौ द्वार हैं। उस नगरी में घिरा हुआ स्वर्गमय आनन्द तक ले जाने वाला कोष है। उस तीन अरो वाले, तीन के सहारे रहने वाले सुवर्णमय कोष में आत्म-वान जो (यज्ञ) यक्ष (ईश्वर) है, ब्रह्मवेत्ता उसे प्राप्त करते हैं। (अथर्व० १०।२।३१, ३२)

१२—ईश्वर से न कुछ परे है और न वरे है। उससे न कुछ सूक्ष्मतर है और न ही महत्तर है, जैसे पृथिवी मे जमा हुआ वृक्ष आकाश मे सिर उठाये खड़ा होता है, वैसे ही परमात्मा ने सब को पूर्ण किया हुआ है। (श्वेताश्वतर उ० ३।९)

१३—ईश्वर को अपने लिये कुछ भी नही करना है। उसके समान कोई नहीं दीख पड़ता और न ही उससे अधिक, सुनते हैं कि उसकी शक्ति परम है और विविध हैं। उसमे ज्ञान, बल, क्रिया स्वाभाविक है।

लोक मे उसका कोई पति नही है, न ही उसका कोई लिंग व चिन्ह है। वह ससार का कारण है। उसका कोई उत्पादक नही और न ही अधिपति है। (श्वेताश्वतर उप० ६।९८)

१५—ईश्वर इन भुवनो को रचता है, इनका पालन करता है और अन्त मे इनको समेट लेता है। (श्वे उप० ३।२)

१६—सर्वव्यापक परमात्मा किसी के पाप पुण्य कर्म के सयोग का निर्माण नही करता है किन्तु स्वभाव (प्रकृति) ही सब कुछ करती है। (गीता ५।१४)

१७—सर्वव्यापक परमेश्वर किसी के पाप और किसी के पुण्य को नहीं लेता है। अज्ञान से ढके हुए ज्ञान कारण मनुष्य मोहित हो जाते हैं। (गीता० ५।१५)

१८—जो व्यक्ति, सर्वज्ञ, पुरातन, सब के नियन्ता, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, सब को धारण करने वाले, अचिन्त्यरूप, सूर्य के सदृश देदीप्यमान, अन्धकार से परे परमेश्वर का स्मरण करता है वह अन्तकाल मे योगबल से भृकुटी के मध्य मे प्राण को भली भाति स्थिर कर अचल मन से भक्ति करता है, वह परम दिव्य पुरुष (परमेश्वर) को ही प्राप्त होता है। (गीता० ८।९।१०)

१९—वह ब्रह्म सब भूतो के भीतर बाहर है चर और अचर है, सूक्ष्म होने के कारण अविज्ञेय है, और दूर भी और समीप भी रहता है। (गीता० १३।१५)

२०—अनादि और निर्गुण होने के कारण अविनाशी परमात्मा शरीर मे व्याप्त होता हुआ भी कुछ कर्म नही करता और न ही किसी में लिप्त होता है। (गीता० १३ ३१)

(क्रमश)

पं० उदयवीर जी शास्त्री को पक्षाघात

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक सुविख्यात आर्य विद्वान दर्शनो के प्रकाण्ड पण्डित और भाष्यकार सरदार भगतसिंह के गुरु आदरणीय शास्त्री श्री प० उदयवीर जी शास्त्री को पक्षाघात के कारण अजमेर के जवाहरलाल नेहरू हस्पताल मे दाखिल कराया गया है। शास्त्री जी ८३ वर्ष के हैं। अपनी धर्म पत्नी सहित (जो पक्षाघात ग्रस्त हैं) अपनी पुत्री श्रीमती सुधा जी के यहां ठहरे हुए थे। उनका स्वास्थ्य ठीक चल रहा था अचानक ४ अगस्त को सन्ध्या करते हुए उन्हें पैरो मे सुन-सुन लगा व दाए भाग मे सज्ञा शून्यता। तत्काल उन्हें हस्पताल पहुंचाया गया। इलाज चल रहा है। आर्य समाज का ऐसा देदीप्यमान रत्न शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करे ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है।

—सम्पादक

आवश्यकता है

पूर्वी अफ्रीका (केन्या) स्थित आर्य समाजो के लिए एक वैदिक प्रचारक की आवश्यकता है। सस्कृत हिन्दी तथा अग्रेजी का सम्यक् ज्ञान अनिवार्य है। विवाह आदि सस्कार कराने का अनुभव भी होना चाहिए। रविवार के दिन आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगो तथा पारिवारिक यज्ञादि के अवसर पर भजन आदि बोलने के लिए थोडा सगीत का ज्ञान भी आवश्यक है। उचित वेतन तथा अन्य सुविधाए आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका (नैरोबी) की ओर से प्रदान की जायेंगी।

सम्बन्धित व्यक्ति अपने प्रार्थना पत्र, प्रमाणपत्रों की प्रमाणित प्रतिलिपियो सहित प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-२, के पास शीघ्र से शीघ्र भेज देवें।

—मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

सम्पादकीय

एक और अध्याय समाप्त

गत २० वर्षों में आर्यसमाज के महान् विद्वानो की पुरानी पीढी समाप्त होती जा रही है उसी शृंखला मे आर्य समाज की लगातार ७५ वर्ष करते हुए शास्त्रार्थ महारथी आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी महात्मा अमर स्वामी सरस्वती ४ सितम्बर १९८७ को ९७ वर्ष की आयु मे प्रभु के प्यारे हो गए।

स्वामी जी सार्वदेशिक आर्य सन्यासी मण्डल के अध्यक्ष थे। अपने स्वनाम धन्य महात्मा हसराज के साथ १८ वर्ष तक आर्य प्रादेशिक सभा पजाब की सेवा की महात्मा जी की मृत्यु के पश्चात् भी आप सभा के जीवन भर सेवा करते रहे। हरिद्वार मे प्रादेशिक सभा द्वारा सचालित उपदेशक विद्यालय के आचार्य रहे। हिसार मे दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय के आचाय रहे।

अपने जीवन में सनातनधर्मी, मुसलमान व ईसाइयो से अनेको शास्त्रार्थ किए। सभी शास्त्रार्थों मे अपने आर्यसमाज को विजयी बनाया। आपके जीवन का एक-एक क्षण आर्यसमाज की सेवा मे ही बीता अनेको उपदेशक व भजनोपदेशक आपने शिक्षित करके आर्य समाज को दिए।

लाहौर मे रहकर आपने आर्यसमाज के लिए एक ऐसा महान् ग्रन्थ लिखकर दिया जिसे प्रादेशिक सभा ने प्रकाशित किया यह ग्रन्थ आर्य समाज के सभी सिद्धान्तो पर एक प्रमाणिक सग्रह था। इसके पश्चात् तो आर्यसमाज के सिद्धान्ता पर अनेक पुस्तक लिख-लिखकर आर्यसमाज के पक्ष को सुदृढ बनाने के लिए महान् सेवा की। अन्तिम दिनो मे अपने आर्यसमाज के विद्वानो द्वारा अन्य मतावलम्बियो से किए गए शास्त्रार्थों का सग्रह भी 'निर्णय के तट पर" तैयार किया जिसका प्रकाशन आपके शिष्य श्री लाजपतराय ने अमर स्वामी प्रकाशन १०५८ विवेकानन्द नगर गाजियाबाद से प्रकाशित किया है।

स्वामी जी के न रहने से आर्यसमाज का अजेय शास्त्राथ महारथी नही रहा।

आप वर्षों से बीमार चले आ रहे थे आप रुग्णावस्था मे भी निरन्तर आर्यसमाजो के उत्सवो मे जाते रहे वे निरन्तर लेखन का काम करते रहे।

सच तो यह है कि आप एक व्रतधारी थे। शहीदे अकबर श्री प० लेखराम जी के अन्तिम आदेश—"आर्य समाज से वाणी व लेखनी का काम बन्द नहीं होना चाहिए" इसकी पूर्ति के स्वनाम-धन्य प० भोजदत्त आर्य मुसाफिर ने बीडा उठाया था। उन्ही के शिष्यो में साधु महेशप्रसाद जी मौलवी फाजिल, कुवर सुखलाल आर्य मुसाफिर आदि अनेक महारथी थे। स्वामी जी भी उसी मिशनरी सस्था मे पढे और जीवन भर उस मिशन की पूर्ति में लगे रहे।

अरनिया (बुलन्द शहर) देश का एक ऐसा गाव है जिसने आर्य समाज को अनोखे रत्न दिये। स्वामी जी भी अरनिया की ही देन थे। अरनिया ने ही आचार्य शिवराज शास्त्री एम०ए० मौलवी फाजिल, डाक्टर योगेन्द्रकुमार शास्त्री जैसे रत्न आर्यसमाज को दिए हैं।

इस समाचार से सारे आर्य जगत् मे शोक का सागर उमड पडा है हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे व शोकाकुल आर्य जगत् को इस असह्य दुख सहने की शक्ति प्रदान करे। ●

कैनाडा में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

टोरटो (कैनाडा) आर्यसमाज के प्रधान श्री अमरचन्द एरी ने कैनाडा की आर्य समाजिक गतिविधियो के सम्बन्ध मे बडा आशा-जनक व सन्तोषजनक रिपोर्ट भेजी है। भारत के वास्तविक सास्कृतिक प्रतिनिधित्व के रूप मे आर्यसमाज का विदेशो मे विस्तार परमावश्यक है। भारतीय सस्कृति धर्म व योग के नाम पर अनेक भारतीयो ने व्यवसायिक ढग से कई ऐसे कार्य किए जिससे भारत की छवि धूमिल हुई। ताजा उदाहरण आचार्य रजनीश का सारे भारत मे चिता का विषय बना।

सार्वदेशिक सभा की सदा यह इच्छा व प्रेरणा रही है कि भारत का सच्चा सन्देश वैदिक सभ्यता व सस्कृति के रूप मे सारे ससार मे पहुचे। इसके लिए योग्य प्रतिभाशाली एव सच्चे प्रचारको का अभाव खटकता है। विदेशो मे भारत की आध्यात्मिक पिपासा दिनो दिन बढती ही जा रही है। हम आशा करते हैं कि उसी मात्रा मे भारत मे भी बुद्धि जीवियो मे मिशनरी भाव जगेगा और भारत का यह स्वप्न अवश्य पूरा होगा। आर्यसमाज का तो मिशन ही है कि—

सारे ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।

उराव जाति में धर्मान्तरण

—डी० आर० यादव, मंडल संयोजक—

उराव जनजाति के लोग जैसे-जैसे बाहरी लोगो के सम्पर्क मे आते गए, उनके धर्म का स्वरूप भी बदलता गया। सन १८५७ के पूर्व भारत मे निवास करने वाली जनजातियो का धर्म पूर्णतया जनजातीय धर्म था। ये लोग हिन्दुओ की भाति सूर्य, धरती, अग्नि के अलावा हिन्दू देवी देवताओ की भी पूजा अर्चना करते थे। किन्तु १८५७ के पश्चात अंग्रेजी सरकार की नीति बदली और उन्होंने भारत में अपनी सत्ता को दृढ करने का प्रयास किया। इस हेतु ईसाइयत का प्रचार और प्रसार को साधन बनाया गया। छोटा नागपुर तथा कुछ अन्य स्थानो को प्रचार का केन्द्र बनाया गया। इससे उराव जाति को विशेष रूप से प्रभावित होना पडा।

सन १९५९ में प्रधान मन्त्री लार्ड पामर्स्तन ने लदन की पार्लियामेन्ट मे इस नीति की घोषणा करते हुए कहा, "यह केवल हमारा कर्तव्य ही नही, बल्कि हमारे हित की बात भी है कि जहा तक सम्भव हो समूचे भारत मे ईसाइयत के प्रचार को प्रोत्साहन दें।" उस समय भारत के प्रथम वायसराय लार्ड कैनिंग बम्बई के गवर्नर लार्ड सर चार्ल्स इप्पलटर ने न केवल इन विचारो की पुष्टि ही की, बल्कि इनको प्रमाणित करने का भरसक प्रयास किया।

इस कार्य के लिए छोटा नागपुर क्षेत्र की विशेष रूप से मुण्डा उराव जन-जातियों को चुना गया, क्योकि वहा की भूमि सम्बन्धी परिस्थिति ऐसी थी कि उन्हें शीघ्र ईसाई बनाया जा सकता था। सन १८४५ में राची मे जर्मन गैसनर मिशन ने ईसाइयत प्रचार का कार्य आरम्भ किया। मगर ८ वर्ष के लगातार प्रचार कार्य से केवल एक उराव ईसाई बन पाया। प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध तक इस क्षेत्र मे लगभग ६०० ईसाई बने थे। परन्तु स्वतन्त्रता उन्माद को देखकर ईसाई विचलित होकर देश छोडकर चले गये।

१८५७ के गदर के पश्चात शान्ति स्थापना के नाम पर आतक का राज्य कायम हुआ। विद्रोह मे भाग लेने के नाम पर लोगो को तरह-तरह के दड दिये जाने लगे। इससे बचने का केवल एक ही उपाय था और वह था पादरी की शरण मे जाकर ईसाई बन जाना। इस प्रकार अपने बचाव के लिए हजारो परिवारो ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया।

धर्मान्तरण का क्रम जोर पकडने लगा। कई मिशनो की स्थापना हुई, खासकर छोटा नागपुर क्षेत्र मे ईसाई प्रभाव बढता गया। जर्मन गैसनर मिशन पहले से ही कार्यरत था, सरकारी मिशन भी आ गया। इसके बाद आयरलैण्ड नार्वे, स्वीडन, स्विटजरलैण्ड, अमेरिका, बैल्जियम आदि देशो से विशेष मिसन आ गये। सबसे बढकर रोमन कैथोलिक मिशन था। पोप की आज्ञा से बैल्जियम की जेसुइट पादरी सोमायटी ने इस क्षेत्र का कार्य सभाला।

ईसाई सिद्धान्तो का प्रचार प्रसार किया जाना अत्यन्त कठिन था। क्योकि इसमे न तर्क का काम था, न बुद्धि का। सिर्फ विशेष परिस्थिति पैदा कर लोगो की असहाय अवस्था का लाभ उठाकर जनजाति के लोगों को ईसाई बनने पर विवश किया गया।

उरावो की सबसे बडी समस्या भूमि की थी। राजा जमीदार ठेकेदार और उनके एजेण्टो ने उन पर भीषण अत्याचार किये थे। कानूनी अदालतों मे जाकर उराव हार चुके थे। मगर पादरियो ने इन्ही अदालतो पर इनके पक्ष में फैसले किये। इस सारे क्षेत्र में यह बात फैल गयी कि अत्याचारो से बचने और भूमि पर अपना अधिकार जमाने का एक ही साधन है और वह है ईसाई बनकर पादरी की पुष्टि प्राप्त करना। इन घटनाओं से जनमानस पर बहुत गहरा प्रभाव पडा। पीडित, शोषित ग्रसित, त्रसित, उराव लोग, ग्राम के ग्राम ईसाई धर्म स्वीकार करने लगे। तामड थाना जो कि बिहार प्रदेश मे स्थित है जहा ईसाइयत के खिलाफ भीषण विद्रोह हो गया था। परिस्थितियों में एक दिन मे ही लगभग ४०० व्यक्तियो ने अत्याचार से मुक्ति पाने के लिए ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया।

ईसाईयो ने जमीनो पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया। जमीदारों, जागीरदारों को पीटा और वे कचहरियो में भी जीत गये। मिस्टर रिड ने लिखा है "कोल ईसाई समझने लगे कि उनपर ईसाई सरकार की विशेष कृपा है। जनगणना लेखक ने भी माना कि सासारिक प्रलोभन ही ईसाईयत का प्रधान साधन है।

धर्मान्तरण के विरोध में कई आन्दोलन हुए। परन्तु आन्दोलनों को सरकार ने सेना और पुलिस के द्वारा कुचल दिया। हर आन्दोलन के अन्त में पकड धकड मुकद्दमो सम्पत्ति जातियो एव तरह तरह के दण्ड विधानों का दौर चला। हर ऐसे दौर मे पादरियो की शरण और सहायता लाभदायक थी। ईसाई बन जाना ही इस आतक मे छूटने का एकमात्र साधन था। अत. लोग धडाधड ईसाई बनने लगे।

सन १८७७ और १५९६ में दो भीषण अकाल पडे। ऐसे समय में ईसाई मिशनरियो ने असहाय लोगो को धन देकर ईसाई बनाया। बच्चो को मोल लेकर या अनाथो को ईसाई बनाया।

इस प्रकार सन १८४५ से १८७७ तक के वर्षों मे धर्मान्तरन उराव जनजाति के ऊपर बलात थोपा गया। उनके सामने इस प्रकार विषम परिस्थिति निर्मित की गई कि उन्होने विवश होकर ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। तत्कालीन अत्याचारो शोषण, आतक से छुटकारा पाने के लिए ईसाई धर्म स्वीकार कर लेना ही एकमात्र उपाय था। धर्मान्तरण का प्रारम्भ मात्र मजबूरी के लिए ही हुआ। परन्तु १८९९ तक प्राकृतिक विपदाओ के वशीभूत होकर भी लोगों ने ईसाई धर्म स्वीकार किया।

धर्मान्तरण के इसी क्रम मे ईसाई मिशनरियो द्वारा स्थापित स्कूल, कालेज अस्पताल तथा अन्य सगठनो से प्रदत्त सुविधाओं ने भी उराव जनजाति के सदस्यो को काफी आकर्षित किया।

स्वतन्त्रता के पूर्व उराव जनजाति मे धर्मान्तरण विवशता के कारण हुआ। कालान्तर मे वशानुक्रम से पीढी दर पीढी लोग ईसाई धर्म मानने लगे। यद्यपि पूर्व मे काफी धार्मिक कट्टरता लोगो मे थी। और परिस्थितियों में विवश होकर ही धर्म स्वीकार किया था। पर बाद मे लोग स्वेच्छा से मानने लगे। फलस्वरूप ईसाई धर्म मानने वालो की सख्या काफी अधिक हो गयी। छोटा नागपुर क्षेत्र मे ईसाई मत का बोलबाला हो गया, इसका प्रभाव निकटवर्ती रायगढ तथा सरगुजा जिले मे पडा। ईसाई बनना लोगो के लिए एक फैसन एव प्रलोभन के रूप मे प्रचलित हो गया। लोग स्वेच्छा से धर्म स्वीकार करने लगे। धार्मिक कट्टरता मे कुछ परिवर्तन हो गया। साथ ही ईसाईयत के कारण शिक्षा के क्षेत्र मे हुई प्रगति आकर्षण का एक मुख्य कारण बन गयी।

ग्रामीण क्षेत्रो मे ईसाईयत के प्रचार एव प्रसार के लिए प्रथमत प्रत्येक सम्बन्धित ग्रामो मे पादरी के प्रतिनिधि के रूप मे "प्रचारक" की नियुक्ति की गई, जो लोगो को धर्मान्तरण के सम्बन्ध मे बताता है। इसी के माध्यम से लोग ईसाई धर्म स्वीकार करते हैं। वह ईसाई धर्म का प्रचार एव प्रसार करता है। आज भी उसका स्वरूप सम्बन्धित ग्रामो मे देखने को मिलता है। प्रचार के माध्यम से ही उराव ईसाईयो को कूप खोदने के लिए खेत बनाने के लिए गेहूँ एव सोयाबीन तेल आदि का प्रदान किया जाता है। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रो मे माध्यमिक एव उच्चतर माध्यमिक शालाओ की स्थापना तथा अस्पताल खोलकर स्वास्थ्य सेवाओ का सुलभ करना भी आकर्षण का मुख्य कारण है।

वर्तमान मे धर्मान्तरण नही के बराबर हो रहा है। जो लोग पूर्व मे ईसाई धर्म स्वीकार कर चुके हैं वे ही इसके अनुयायी है।

शेष लोग अपने को हिन्दू मानकर हिन्दू देवी देवताओ की पूजा अर्चना करते हैं। वे अपने को 'ससारिया' उराव कहते हैं। ये लोग उराव से अपने को उच्च मानते हैं। साथ ही सामाजिक रूप से ईसाईयो से विवाह सम्बन्ध स्थापित नही करते। (परियोजना पत्रिका अंक १, वर्ष १९८६ से उधृत)

वधू की आवश्यकता

हिन्दू कितने साम्प्रदायिक हैं ?(२)

—आनन्द शंकर पंडया—

कट्टरपंथी हिन्दू

मुसलमानो के इस देश पर आक्रमण के पहले हिन्दुओ को यह मालूम ही नही था कि धर्मान्धता अथवा सांप्रदायिकता क्या वस्तु होती है और एक धर्म के अनुयायी अन्य धर्मावलम्बियों के पूजास्थल नष्ट करना भी अपना धर्म मान सकते हैं। आज यदि कुछ हिन्दुओ के कार्य अथवा भाषण साम्प्रदायिक हैं तो वे कट्टरपंथी मुसलमानो को निरन्तर कार्य व भाषणो के प्रतिक्रिया स्वरूप ही है आखिर म सहनशीलता की भी कोई मानवीय सीमा होती है। मुसलमान लोग विश्व के सब देशो मे कट्टरपंथिता का पाठ पढाते रहे हैं।

विश्व के विद्वानो के रिसर्च ने यह साबित कर दिया है कि हिन्दू धर्म ही विश्व के धर्मों की जननी है, और इसने हमेशा अन्य धर्मो को भारत में फलने फूलने में मदद किया है क्योंकि हिन्दू धर्म 'सर्व धर्म समभाव' तथा सब धर्मों के सह अस्तित्व की नीव पर ही बना हुआ है, हिन्दुओ का इसमें कट्टर विश्वास है और यही हिन्दू कट्टरवादिता है, उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म व समाज सेक्युलरिज्म का मूर्तिमान स्वरूप है पर उसकी उदारता का हमेशा उसी के विरुद्ध दुरुपयोग हुआ है।

इस तरह के उदार धर्म व समाज को सांप्रदायिक कहना दुनिया का सबसे बड़ा झूठ है, यह पाखण्ड की पराकाष्ठा है और एक महान संस्कृति को नष्ट करने का संगठित प्रयत्न है, आखिरकार इन पाश्चात्य विचार वाले लोगो को किसने यह अधिकार दिया है कि वे इस झूठ का प्रचार करे।

यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि जब मुसलमान, ईसाई, यहूदी इत्यादि विश्व के सब समाज दिन और रात अपने समाज के उत्थान के लिए काम करना अपना कर्तव्य समझते हैं तब पाश्चात्य विचार वाले हिन्दू अपने समाज की रक्षा व नैतिक उत्थान करने वालो को साम्प्रदायिक कहकर उनका अनादर करके हिन्दू समाज की नीव खोदना चाहते हैं।

वास्तव में यह एक गलत भावना है, यदि अन्य समाज को नुकसान पहुंचाये बिना कोई व्यक्ति या संस्था अपने धर्म व समाज का उत्थान करती है तो वो कदापि साम्प्रदायिक नहीं है, मा यदि अपने बच्चो को दूध पिलाती है और दूसरों को बाद मे देती है तो क्या वो स्वार्थी व साम्प्रदायिक कहलायेगी हिन्दू लोग जब इस सत्य को समझ लेंगे तभी से उनकी अनेक समस्याए हल होने लगेगी।

यह स्पष्ट रूप से समझ लिया जाना चाहिए कि देश मे सब साम्प्रदायिकता की जड़ तथा राष्ट्र में विघटनकारी शक्तियो के बढने का प्रथम कारण है, खोखले आदर्शवाद व झूठे नकली सेक्युलरिज्म के नाम पर अल्पसंख्यको का अन्धाधुन्ध तुष्टिकरण तथा दूसरा कारण है इस झूठ का प्रचार कि जो हिन्दू संस्थाएं अपने समाज की सेवा करती हैं वे साम्प्रदायिक हैं, झूठ प्रचार के आधार पर किसी देश में भावनात्मक एकता उत्पन्न नहीं की जा सकती है जब तक इन दो दोषों का परिमार्जन नहीं होता है तब तक देश की सांप्रदायिक व राजनीतिक परिस्थिति बिगड़ती ही रहेगी इसे कोई भी रोक नही सकेगा।

सेक्युलरिज्म का दुरुपयोग

श्री राजगोपालाचार्य जी ने कहा था कि "सेक्युलरिज्म एक अत्यन्त गलत समझा हुआ शब्द है, अल्पसंख्यकों के साथ न्याय करने का अर्थ यह नहीं है कि बहुसंख्यकों के साथ अन्याय किया जाए" (स्वराज्य वार्षिक अंक १९७१)' सेक्युलरिज्म का यह अर्थ कदापि नही है कि हिन्दू लोग अपने अस्तित्व व पहचान को ही खो बैठे, यह स्वाभाविक ही है कि हिन्दू मन व अपने हिन्दुत्व की रक्षा के लिए चिन्तित हों' (ए के घोष मुस्लिम इंडियन)

हिन्दुओं का जो भारत की आबादी के ८५ प्रतिशत और समस्त विश्व की आबादी के १५ प्रतिशत है यह पूरा लोकतांत्रिक व संवैधानिक अधिकार है कि वे अपने सांस्कृतिक व नैतिक अधिकारों की रक्षा करें। अल्पसंख्यकों को यह समझना चाहिए कि जबकि विश्व में मुसलमान व ईसाइयों के पचासों देश हैं परन्तु हिन्दुओं की सिर्फ एक ही मातृभूमि हिन्दुस्तान है अत उसकी रक्षा करने का उन्हें पूर्ण अधिकार है। पर आज सेक्युलरिज्म के नाम पर हिन्दुओं के अधिकारो का हनन हो रहा है जबकि अल्पसंख्यक उसके नाम से अधिक से अधिक लाभ उठाना अपना अधिकार समझते हैं।

बाबरी मस्जिद पर दिये मुस्लिम नेताओ के भाषण अत्यन्त आपत्तिजनक है पर विश्व हिन्दू परिषद जैसी संस्थाओं के अहिंसक नेताओ द्वारा दिए गये भाषणो को उनके समकक्ष रखकर दोनो को एक ही तराजू पर तोलना और अधिक झूठी व शर्मनाक बात है प्रसिद्ध लेखक श्री सीताराम गोयल के अनुसार हिन्दुओं को उन्ही के देश मे साम्प्रदायिक कहना दुनिया का नौंवा आश्चर्य है।

आज मुस्लिम नेता यह चिल्लाने लगे हैं कि वे आजादी के ४० वर्षो के बाद भी अपनी गरीबी दूर नहीं कर सके हैं, पर इसके लिए कौन जिम्मेदार है? मुस्लिम लोग स्वयं ही अपने पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार हैं वे अपना पिछड़ापन आधुनिक शिक्षा प्राप्त करके अपनी बुद्धि व योग्यता बढ़ाकर तथा हिन्दुओं के साथ बजाय विदेशी प्रभाव मे आकर झगड़ा करने के प्रेम से साथ रहकर ही कर सकते हैं।

दुर्भाग्य से उनके नेता भी अपने स्वार्थवश उन्हें झूठा डराते रहते हैं कि उन्हे हिन्दू समाज से खतरा है जिससे आम मुसलमान उत्तेजित रहता है अत प्रेस तथा सरकार को चाहिए कि वे इस सत्य का कि हिन्दू समाज विश्व में सबसे उदार है उदाहरण सहित प्रचार करें यही आपसी सम्बन्ध सुधरने का एक मात्र मार्ग बचा है।

स्वतन्त्रता व लोकतन्त्र

महात्मा गांधी यह जानते थे कि देश मे नागरिकों की स्वतन्त्रता, लोकतन्त्र, समाजवाद व सर्वधर्म समभाव तभी तक सुरक्षित रह सकता है जब तक हिन्दुस्तान मे हिन्दू धर्म सुरक्षित है अत गांधी जी हमेशा रामराज्य की बात करते थे गांधी जी कहते थे कि 'हिन्दू धर्म सब धर्मों व सम्प्रदायो के कल्याण के लिए प्रयत्नशील है और उनके द्वारा वो समस्त विश्व का कल्याण करना चाहता है। अत हिन्दू धर्म मानव धर्म के रूप मे एक अत्यन्त बहुमूल्य धरोहर है जिसकी विश्व के समस्त लोगो को रक्षा करनी चाहिए। यह समझ लिया जाना चाहिए कि हिन्दू धर्म का दुश्मन समस्त मानव जाति का दुश्मन है। यदि आज गांधी जी जीवित होते तो वे अपनी पिछली भूलों को स्वीकार करके हिन्दू समाज व धर्म के उत्थान के लिए अवश्य कार्य करते चाहे उन्हें कुछ स्वार्थी हित वाले उनके इस कार्य के लिए साम्प्रदायिक ही क्यों न कहते। (हिन्दू समाज के प्रति विश्वासघात नामक पुस्तक से उद्धरित)

वेद और समाज

डा० कपिलदेव द्विवेदी, वाराणसी

समाजशास्त्रीय दृष्टि से वेदो मे बहुमूल्य सामग्री प्राप्त होती है। वेदो मे न केवल आदर्श समाज का ही विशद चित्रण मिलता है, अपितु सर्वतोमुखी विकासयुक्त राष्ट्र एव समाज के स्वरूप का दर्शन होता है। समष्टि और व्यष्टि के समन्वित रूप का ही समाज है। वेदो मे एक और कतिपय सामूहिक कर्त्तव्यो का उल्लेख प्राप्त होता है तो दूसरी और व्यक्ति के चारित्रिक विकास आदि की शिक्षा प्राप्त होती है। वेदो मे वैयक्तिक और सामाजिक दोनो प्रकार की उन्नति का निर्देश मिलता है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सभी प्रकार की सुविधाए प्राप्त हो, उसे समान अधिकार प्राप्त हो, उसे उन्नति के लिए प्रेरणा मिले, इत्यादि बातो का विस्तृत विवेचन वेदो में प्राप्त होता है। सामाजिक दृष्टि से स्त्रियो को भी समाज मे उच्च स्थान दिया गया है।

समाज को उन्नत बनाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि समाज का जीवन स्तर उच्च हो। वे आचार-विचार की दृष्टि से उन्नत हो। उन्नत आचार-विचार से युक्त व्यक्ति को ही वेदो में आर्य कहा गया है। इसी दृष्टि से वेद का यह कथन अत्यन्त महत्व-पूर्ण है कि विश्व-हित और विश्व-कल्याण के लिए विश्व भर को आर्य बनाया जाए।

इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अरावण ।। ऋग्० ९। ६३। ५।।

इस मन्त्र मे इस ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया है किसी राष्ट्र की उन्नति तब तक नही हो सकती है, जब तक उसमे स्वार्थी तत्वो का बाहुल्य रहेगा। इन स्वार्थी तत्वो को वेदो में अराति और अरावन् शब्दो से प्रकट किया गया है। अराति का शाब्दिक अर्थ है—न देने वाला। अ नहीं, राति देना। सामाजिक दृष्टि से न देने वाला इतना निकृष्ट है कि उसको समाज का शत्रु कहा गया है। इस प्रकार अशान्ति शब्द शत्रु का वाचक हो गया। इसी प्रकार अरावन् का अर्थ भी न देने वाला है। अ-नहीं, रावन्-देना। वेद के इस मन्त्र में अपघ्नन्तो अरावण के द्वारा अरावन् या अदाता के नाश का आदेश दिया गया है। इस आदेश का पालन करने पर ही किसी समाज या राष्ट्र का विकास हो सकता है। इसी भाव को 'इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर' के द्वारा प्रकट किया गया है।

वेदों में विश्व-कल्याण की भावना की प्रधानता दी गयी है और प्रार्थना की गयी है कि समस्त ससार का कल्याण हो।

स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्य ।
विश्व सुभूत सुविदत्र नो अस्तु ।। अथर्व० १।३१।४।।

वेद मे राष्ट्र की उन्नति के साथ ही विश्व के कल्याण की कामना की गयी है। अतएव विश्वभृत् का अभिप्राय यह है कि विश्वभर का भरण पोषण हो। इस प्रकार की राष्ट्रीय उन्नति को शुभ माना गया है। विश्वभृत् के साथ जनभृत् का भी विधान है। इसका अभिप्राय यह है कि विश्वहित के साथ ही जन साधारण का भी हित होना चाहिए। इन दोनो कार्यों की सिद्धि के लिए स्वराज्य की स्थापना की आवश्यक बतायाहै। इस प्रकार विश्वभृत जनभृत और स्वराज्य परस्पर सम्बन्ध हैं। अतएव मन्त्र मे इन तीनो का एक साथ उल्लेख मिलता है।

जनभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्र मे दत्त।
विश्वभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्र मे दत्त ।।
स्वराज स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्म दत्त ।। यजु० १०।४।।

वेद मे स्वराज्य को मानव का जन्मसिद्ध अधिकार बताया गया है। साथ ही कहा गया है कि इसके छीनने का अधिकार न देवो को है और न किसी अन्य शक्तिशाली को।

यस्य ते नू चिदादिश, न मिनन्ति स्वराज्यम्।
न देवो नाध्रिगुर्जन ।। ऋग् ८।९३।११।।

वेद मे स्वराज्य के साथ ही महान् जनराज्य या जनतन्त्र का उल्लेख प्राप्त होता है। जनराज्य जनतन्त्र या लोकतन्त्र का बोधक है। महान् जनराज्य के द्वारा इसकी विश्वव्यापी उपयोगिता की ओर सकेत किया गया है।

महत जानराज्याय, इन्द्रस्येन्द्रियाय ।। ९।४० ।।

वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना मे समाज के आदर्श स्वरूप के वर्णन के साथ ही प्रार्थना की गयी है कि समाज में ब्राह्मण तेजस्वी, क्षत्रिय शूरवीर, बालक वीर, स्त्रियां गृहस्वामिनी हों और राष्ट्र में सभी प्रकार की अन्न और धन की समृद्धि हो।

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्,
आ राष्ट्र राजन्य शूर-योगक्षेमो न कल्पताम् ।।
यजु० २२।२२ ।।

किसी भी समाज की तभी उन्नति हो सकती है, जब वह वेदो के आदेशों के अनुसार आचरण करे। इसलिए आदेश दिया गया है कि वेदो के अनुसार कर्म करे।

मन्त्रश्रुत्य चरामसि। ऋग्० १०।१३४।७ ।।

वैदिक शिक्षाओ में आचार और सयम पर बहुत अधिक बल दिया गया है। जिस समाज मे आचार और सयम का महत्व है, वही समाज उन्नति कर सकता है।

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्र वि रक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ।। अथर्व० ११।५।१७

समाज की उन्नति और देश की सुरक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतएव वेद में जहा एक और सभी देशवासियों की समृद्धि की कामना की गयी है, वहीं दूसरी ओर उन्हें देश की रक्षा के लिए आत्मसमर्पण की शिक्षा दी गयी है।

वेदो में अनेक स्थानो पर मातृभूमि के लिए जीवन देने और बलिदान होने का आदेश मिलता है।

वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ॥ अथर्व० १२।१।६२ ॥

ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरासो ये तनूत्यजः ॥

ऋग्० १०।१५४।३; अथर्व० १८।२।१७॥

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः स्वाहा ॥ यजु० ९।२३॥

वेदो में समाज के प्रत्येक अंग की समृद्धि और तेजस्विता की प्रार्थना की गयी है। जब समाज के प्रत्येक अंग पुष्ट होंगे, तभी सम्पूर्ण समाज पुष्ट होगा।

संशितं मे ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम् । यजु० ११।८१ ॥

वयं पञ्च चर्षणीरभि, रयिं येन वनामहै ऋग्० ९।१०१।९

वेदो में चारो वर्णों के कर्त्तव्यो का यथास्थान विधान किया गया है। ब्राह्मण को शिक्षा क्षत्रिय को रक्षा, वैश्य को व्यापार और शूद्र को शिल्प कार्य विशेष रूप से दिया गया है।

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यम्, मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रम् ।

यजु० ३०।५॥

वेदो मे स्पष्ट रूप से इस बात का वर्णन है कि समाज के सभी व्यक्ति बराबर हैं। किसी भी प्रकार का ऊंच-नीच का भेद-भाव सामाजिक उन्नति मे बाधक है।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते।

सम्भ्रातरो वावृधुः सौभगाय ॥ ऋग्० ५।६०।५॥

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो० ॥ ऋग्० १।२७।१३॥

वेदो में चारो वर्णों को यज्ञ करने का अधिकार प्रदान किया गया है। पञ्चजना शब्द के द्वारा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के अतिरिक्त अतिशूद्र को भी यज्ञ करने का अधिकार दिया गया है।

जना यदग्निमयजन्त पञ्च ॥ ऋग्० १०-४५-६ यजु० १२-२३

वेद मे सामाजिक एकता को सुदृढ करने के लिए सहभोज और सहपान का भी प्रावधान किया गया है। खानपान मे सहभागी होने पर ही समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगो मे आत्मीयता का भाव जागृत होता है।

समानी प्रपा सह वो अन्नभागः ॥ अथर्व० ३-३०-६ ॥

सामाजिक एकता के लिए निम्नलिखित गुणो की आवश्यकता है—हार्दिक एकता, समान विचार होना, मिलकर सोचना, मिलकर चलना, मिलकर विचार करना, मिलकर कार्य करना आदि। वेदो में इन गुणो का अनेक स्थलो पर विस्तार के साथ वर्णन किया गया है।

सहृदयं सामनस्यम्, अविद्वेषं कृणोमि वः ॥ अथर्व० ३-३०-१

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ॥ ऋग्० १०-१९१-२

समानो मन्त्रः समितिः समानी० ॥ ऋग्० १०-१९१-३,

अथर्व० ६ ६४-२

समानी व आकूतिः, समाना हृदयानि वः ॥ ऋग्० १०-१९१-४

सं वो मनांसि सं व्रता, समाकूतीर्नमामसि ॥ अथर्व० ३ ८-५

समाज की उन्नति शिक्षा पर निर्भर है। अतः शिक्षा और संस्कृति के उन्नयन के लिए वेदों का ज्ञान चारो वर्णों के लिए आवश्यक बताया गया है। इस मन्त्र मे वेद की वाणी को कल्याणी कहकर सबके लिए शुभ और मंगलकारी बताया गया है।

यथेमां वाचं कल्याणीम् आवदानि जनेभ्यः ।

ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।

यजु० २६ २ ॥

अथर्ववेद मे बताया गया है कि भाषाभेद और धर्मभेद से सामाजिक एकता मे कोई अन्तर नही आता है। सभी परिवार के एक अंग के रूप मे हैं, अतः मिलकर कार्य करे।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं ।

नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम् ॥ अथर्व १२-१-४५ ॥

समाज की उन्नति के लिए यह भी आवश्यक है कि उसका कोई एक सुयोग्य नेता हो, जो समाज का उचित नियमन कर सके तथा उन्हे उचित मार्ग दर्शन कर सके।

मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि ।

मम यातमनुवर्त्मानि एत ॥ अथर्व० ३ ८ ६ ॥

समाज की उन्नति के लिए यह भी आवश्यक बताया गया है कि प्राचीन परम्पराओ को भी न छोड़ा जाए। प्राचीन परम्पराएं प्रत्येक समाज और संस्कृति के आधार हैं। उनको आधार रूप मे ग्रहण करने वाला समाज ही संतुलित रूप से आगे बढ पाता है।

पथा न पूर्वमपरो जहाति० अथर्व० १२-२-२५, ऋग्० १० १८ ५

वेद मे आदर्श समाज के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि समाज मे कोई भूखा और प्यासा न रहे। सबको अन्न सुलभ हो।

एष वां द्यावापृथिवी उपस्थे।

मा क्षुधन्मा तृषत् ॥ अथर्व० २ २९-४ ॥

समाज के सभी व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट और नीरोग हो। प्रत्येक व्यक्ति वीर, विजयी और अजय हो।

विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम्।

ऋग्० १-११४ १ यजु० १६-४८ ॥

उग्रा वः सन्तु बाहवो, अनाधृष्या यथासथ ॥

यजु० १७-४६, अथर्व० ३-१९ ७ ॥

शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान् जेता० ॥ ऋग्० ९-९०-३ ॥

समाज के विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि समाज के शोषको और शत्रुओ का नाश किया जाए। समाज के शोषको को अघ (अकेला खाने वाला) कहा गया है।

अप्रजाः सन्तु अत्रिणः ॥ १-२१-५

मान्तः स्थुर्नो अरातयः ॥ अथर्व० १३-१-५९,

ऋग्० १०-५७-१ ॥

समाज का प्रत्येक व्यक्ति यशस्वी और तेजस्वी हो, अतः आवश्यक है कि उनकी शुभ कर्मों मे प्रवृत्ति हो। वे सन्मार्ग को न छोड़ें।

अकर्म ते स्वपसो अभूम, ऋतमवस्रन् उषसो विभातीः ॥

अथर्व० १८-३ २४, ऋग्० ४-२-१९ ॥

दूरदर्शन का समाज पर दुष्प्रभाव

—आर्येन्दु द्विवेदी—

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों से समाज मे सभी आयु वर्ग के लोगो मे दुष्प्रभाव पड रहा है। दूरदर्शन आजकल समाज में नैतिक पतन करने का सबसे सस्ता एव लोकप्रिय साधन के रूप मे उभर रहा है। इस समय दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में भारतीय सस्कृति एव नैतिकता जिसके लिए भारत प्रसिद्ध है उसकी घोर उपेक्षा की जा रही है। सम्भवत दूरदर्शन भारतीय सस्कृति को जल्दी से जल्दी इक्कीसवी शती में पहुचाने का प्रयास कर रहा है। आजकल सभी वर्ग की आयु के लोगो में चित्रहार सबसे लोकप्रिय है लेकिन इस चित्रहार में अधिकतर गानो मे अश्लीलता की स्पष्ट झलक देखी जा सकती है एव कुछ गाने ऐसे भी होते हैं जिनमे बच्चो के सामने बडो का सिर शर्म से झुक जाता है। अधिकतर गानो मे गन्दे दृश्य चुम्बन दृश्य एव यहा तक कि लडकियो की भडकीली पोशाक, कम वस्त्र एव अधनग्न युवतियो को दिखाने में दूरदर्शन वाले नहीं चूकते। जबकि दूरदर्शन वालो को गाने प्रसारित करने से पहले यह देख लेना चाहिए कि इसमे अश्लीलता तो नही है।

आजकल टी० वी० पर नए नए सीरियल निकल पडे हैं। उनमे से एक चुनौती सीरियल मे नये छात्रों की किस प्रकार रैगिंग ली जाती है, किस प्रकार परेशान किया जाता है तथा छात्र रैगिंग के मारे होस्टल छोडकर भाग जाता है। इस सीरियल के द्वारा दिखाया गया है। आज भी अधिकाश कालेजो मे रैगिग प्रथा प्रचलित नही है परन्तु दूरदर्शन वाले नये शिक्षा सत्र के आरम्भ होने से पहले भारत के युवाओं को रैगिंग की शिक्षा दे रहें हैं एव इस कुप्रथा को प्रोत्साहन देने का प्रयास कहा तक उचित है यह टी० वी० के अधिकारी ही जानते हैं।

अभी कुछ दिनो पूर्व प्रसारित 'सुबह' सीरियल में गाजा, भाग चरस एव अन्य नशीली वस्तुओ का सेवन युवा पीढी किस प्रकार करती है यह सब चीजें विस्तृत रूप मे दिखाने से आजकल के अधिकाश युवक इन नशीली वस्तुओं के सेवन की प्रेरणा दूरदर्शन से लेकर पहली बार नशीली वस्तु को मजाक मे या जायका लेने मात्र से शुरुआत करते हैं धीरे-धीरे इनके आदी हो जाते है। इस सीरियल मे दिखाए गए कुछ दृश्य दिखाने लायक नहीं थे।

आजकल देर रात मे प्रत्येक शुक्रवार को वयस्क फिल्में पूरे राष्ट्र में दिखाने का निर्णय किया गया है। अभी अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि देर रात की फिल्मे वयस्को के साथ बच्चे भी देखते हैं एव रात मे एक या दो बजे तक फिल्में देखने से लोग सुबह देर से उठते हैं तथा नौकरी पेशे वाले लोगों का आफिस मे देर से पहुचना एव महिलाओ को सुबह बच्चों को समय से स्कूल भेजने एव दिन भर नीद पूरी न होने पर ऊबाई लेते रहना एव अनेक दुष्प्रभाव देखने मे आए हैं। देर रात की फिल्मो मे अश्लील दृश्यों की भरमार से भारतीय युवाओ पर क्या दुष्प्रभाव पडता है तथा लडकियों के प्रति नित्य जो अपराध बढ रहे हैं उनको बढाने मे क्या दूरदर्शन कम जिम्मेदार है? समाज का पतन करने मे आजकल घर मे लगे टी० वी० सेट फिल्मों से अधिक अपराध बढा रहे हैं क्योकि फिल्मे ३ घटे चलती हैं जबकि दूरदर्शन के कार्यक्रम नित्य देखे जाते हैं।

भारत की गौरवमयी सस्कृति जिसके लिए भारत प्रसिद्ध है धीरे धीरे इसकी उपेक्षा करके दूरदर्शन द्वारा सस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है।

भारतीय नारी जिसकी की प्राचीन समय से ही पूजा होती थी तथा यह कहा जाता था कि जहा नारी की पूजा होती वहाँ देवता निवास करते हैं—(यत्र नार्यो पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता) की मान मर्यादा की घोर उपेक्षा करके भारतीय नारी को दूरदर्शन पर अश्लील रूप में एव अर्धनग्न एवं रात की फिल्मो में भद्दे दृश्य दिखाकर दूरदर्शन के माध्यम से माताओं एव बहनों के साथ मनोरजन के नाम पर खिलवाड किया जा रहा है जिससे नारी के प्रति सम्मान की भावना नष्ट हो रही हैं एव अपराध बढ रहे हैं।

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले विज्ञापन में कोई नैतिकता का मापदण्ड नहीं है दूरदर्शन अधिकारी केवल पैसा बटोरने का प्रयत्न दूरदर्शन के माध्यम से करते हैं चाहे वह विज्ञापन कितने भद्दे या अश्लील हों टी० वी० पर दिखाए जाते हैं। दूरदर्शन देखने वाले लोगों का मत है कि विज्ञापन जो वस्तुओं एव सामानो के प्रचार के लिए होती है उनमे जबरदस्ती नारी के देह का प्रदर्शन कहां तक उचित है यह टी० वी० वाले जानते होंगे।

सिरिल बर्म्स अप एव अन्य विज्ञापनों में अर्धनग्न युवती के दर्शन होते हैं जिसे रोका जाना चाहिए तथा दूरदर्शन को अश्लील विज्ञापनों पर रोक लगा देनी चाहिए।

दूरदर्शन के माध्यम से शीघ्रातिशीघ्र भारतीय समाज को २१वीं शती में ले जाने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया गया है तथा उसने विदेशी दूरदर्शन के कार्यक्रमों की तरह अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है तथा दूरदर्शन के माध्यम से मनोरजन कम हो रहा है तथा उसका समाज पर दुष्प्रभाव अधिक पड रहा है।

आर्यजगत् के समाचार

कन्याओं का एक मात्र आयुर्वेद महाविद्यालय

आर्य कन्या आयुर्वेद महाविद्यालय बड़ौदा

आर्य कन्या आयुर्वेद महाविद्यालय बड़ौदा ने अपने रजत जयन्ती (२५वें) वर्ष मे प्रविष्ट कर देश में कन्याओ के चिकित्सा विभाग मे सफलतापूर्वक प्रवेश कराकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस संस्था का विकास गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, गुजरात सरकार तथा केन्द्रीय सरकार कौंसिल आफ इण्डियन मेडिसन के नियमो व विधानो के अनुरूप संस्था के स्व० प्रमुख राजा नारायणलाल पित्ती तथा वर्तमान प्रमुख राजा मधुसूदनलाल जी पित्ती के समय समय पर दिए विपुलदान की सहायता के साथ पित्ती की स्मृति मे आयुर्वेद हास्पिटल के निर्माण तथा विकास के लिए लाखो की सहायता संस्था को प्रदान की है। परिणाम स्वरूप गतवर्षों मे ७००० से अधिक आई० पी० डी० विभाग व चार लाख से अधिक ओ० पी० डी० विभाग मे रोगियो को लाभ मिला है।

आज केवल ५० पैसे की नगण्य राशि से सामान्य रोगियो का व केवल २५) की राशि से प्राकृतिक चिकित्सा विभाग मे रोगी की सम्पूर्ण चिकित्सा प्राप्त होती है। हस्पताल मे ६० रोग शैय्याएं उपलब्ध है।

कालेज विभाग का परीक्षा परिणाम ८० प्रतिशत रहता आया है। जब कि चालू वर्ष, प्रथम वर्ष एव पचम वर्ष मे १०० प्रतिशत परीक्षा परिणाम आने से संस्था यूनिवर्सिटी में अग्रगण्य रही है। प्रथम ५ परीक्षार्थियों में हमारी कन्याएं ही अग्रगण्य रही हैं।

कन्याओ को अन्तकालेज वक्तृत्व स्पर्धा, सास्कृतिक कार्यक्रम सतीत स्पर्धा, निबन्ध स्पर्धा आदि मे अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। एन०सी०सी० प्रवृत्ति इस संस्था की विशेष प्रवृत्ति है। खेलकूद मे भी कन्याएं बहुत उत्तम स्थान रखती हैं।

संस्था का प्रबन्ध व स्टाफ इतना उच्चकोटि का है कि अन्य संस्थाओ की भांति कभी कोई अनुशासन भग हड़ताल आदि की कोई कल्पना ही नही करता।

आजकल कालेज मे ३०० महिला चिकित्सक देश को प्रदान की हैं।

कालेज के स्टाफ मे उच्चकोटि का स्टाफ है जिनमे एम एफ. ए एम एस. एम. डी. व पी. एच. डी. योग्यता के शिक्षक है।

धनवन्तरी वनस्पति उद्यान के द्वारा औषधियो के लिए आवश्यक काष्ट आदि का आयोजन किया गया है।

कालेज के फार्मेसी विभाग मे कन्याओ को औषधि निर्माण की सम्पूर्ण शिक्षा दी जाती है।

नारी जाति की महान निर्मातृ इस संस्था का देश भर मे अत्यन्त उच्च स्थान है।

कैनेडा के सिखों का झूठ

संसद सदस्य ने भण्डा फोड़ किया

ओटावा २४ अगस्त। ब्रिटिश को अम्बिका से पालियामेट के सदस्य श्री डेन, हेबिमन ने जो शीघ्र ही एक देश सभा के सदस्यो के प्रतिनिधि मण्डल के नेता के रूप मे आए ये बताया कि इस देश मे कुछ सिख दल हमसे यह आशा करते हैं कि हम यह कहे कि पजाब मे ऐसी परिस्थितिया उत्पन्न हो चुकी हैं कि जिनके आधार पर "खालिस्तान" बनना आवश्यक हो गया है।

उन्होंने बताया कि भारत से विदा होने से पूर्व इन सिखो ने बताया था कि आपको अमृतसर शहर मे कोई सिख युवक दिखाई नही देगा परन्तु जब हम अमृतसर गए तो पर्याप्त संख्या मे सिख नवयुवक अपने-अपने कार्यो मे सलग्न पाए गए। उन्होने बताया कि कनाडा के सिखो ने अनुदारता का दृष्टिकोण अपनाया हुआ है। यह लोग कनाडा में बैठकर पजाब में खालिस्तान बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

वृष्टि यज्ञ की महिमा

एक मुस्लिम श्रद्धालु ने ५१००) रुपया यज्ञशाला में आकर दान किया

आर्य समाज खण्डवा म०प्र० के तत्वावधान में दिनाक ५ ८ से १२ ८-८७ तक विख्यात वैदिक कर्मकाण्डी विद्वान ने वर्षा यज्ञ कराया परिणाम ८ से १० इच तक वर्षा हुई इस यज्ञ मे सेंधवा म० प्र० के श्री शाह अहम्मद ने लगभग ६० किलो मीटर की यात्रा कर खण्डवा की यज्ञशाला में उपस्थित होकर ५१००) रुपया दान किया व परमेश्वर से सुखद वर्षा की प्रार्थना की।

श्री शाह अहम्मद अत्यन्त ही श्रद्धालु एव दानी हैं लोग इन्हे प्यार से श्याम अहम्मद कहते हैं।

इस यज्ञ मे खण्डवा के बिशप इब्राहम बितकुल गुरा (ईसाई धर्माचार्य) शहर काजी कादर अली, गुरुसिंह सभा के सन्तोखसिंह चावला बोहरा समाज के प्रमुख आमिला-सा तथा अनेको नागरिको ने स्वेच्छा से यज्ञ हेतु दान भी दिया व सेवा कार्य भी किया।

सार्वदेशिक समाचार सेवा

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की

भारतोदय पत्रिका पुरस्कृत

ज्वालापुर गुरुकुल महाविद्यालय से प्रकाशित मासिक संस्कृत पत्रिका भारतोदय को केरल संस्कृत अकादमी की ओर से भारत की सर्वश्रेष्ठ संस्कृत पत्रिका मान कर १९८७ ई० का प्रथम पुरस्कार एव प्रशस्ति पत्र प्रदान किया है। इसके प्रधान सम्पादक श्री हरिगोपाल शास्त्री हैं। इस पत्रिका मे राष्ट्रीय रचनाओ को प्रमुख स्थान दिया जाता। जैसा कि इसके नाम से ही प्रकट है, इसकी भाषा सरल और परिनिष्ठित है। इसमे भारत के उच्च कोटि के विद्वानो की मौलिक रचनाएं प्रकाशित होती हैं। वर्ष मे प्राय इसका एक विशेषाक वेद, दर्शन, अध्यात्म एव संस्कृति मुख्य विशेषाक भी प्रकाशित होते हैं। इसकी ग्राहक संख्या भी अन्य संस्कृत पत्र पत्रिकाओ की तुलना मे सर्वाधिक है। विदेश मे भी यह पत्रिका पढी जाती है।

—गौरीशंकर आचार्य
प्रधान सभा

रूस में हरे राम हरे कृष्ण जेलों व पागलखाने में बन्दी

मास्को, ३० अगस्त। सोवियत सघ मे हरे कृष्ण पथ के करीब सौ से अधिक सदस्यो ने कल शाम यहा अपने कुछ साथियो की रिहाई के लिए प्रदर्शन किया।

वे मांग कर रहे थे कि व्यस्त चौराहे पर भजन गाने के आरोप मे १७ अगस्त को गिरफ्तार किए गए उनके दर्जनो साथियो को रिहा किया जाए।

पथ के सदस्यो ने यह माग भी की है कि हरे कृष्ण पथ को आधिकारिक धार्मिक पथ का दर्जा दिया जाए।

उन्होने आरोप लगाया कि पथ के अनेक लोगो को अपनी धार्मिक आस्था की वजह से जेलो और पागलखानो में बन्द रखा जा रहा है। प्रदर्शनकारियो ने उनकी रिहाई की माग भी की।

चमोली में हरिजन धर्मपरिवर्तन नहीं करेंगे

पिछले दिनो अमर उजाला मे समाचार प्रकाशित हुआ था कि चमोली जिले के २५० हरिजन ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले हैं। इस समाचार की पुष्टि के लिए सार्वदेशिक सभा ने अपने कार्यकर्ताओ से चमोली मे सम्पर्क किया। हमारे कार्यकर्ता श्री जबरसिंह राणा ने समाचार दिया है कि हरिजनो को सवर्णों के भेदभाव की कुछ शिकायतें अवश्य हैं किन्तु सभी हरिजन अच्छी तरह समझते हैं कि वह हिन्दू जाति के अभिन्न अग हैं, इसी मे बना रहना उनकी शोभा है। कोई हरिजन धर्म परिवर्तन करना नही चाहता है।

आर्य समाज का सगठन बनाने के लिए विशेष प्रयत्न किए जा रहे हैं। ताकि जातिगत भेदभाव दूर किया जा सके।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज मुगलसराय द्वारा गोरक्षा का सफल अभियान

अब तक ६०० बैल कटने से बचाये गये मुगलसराय । १० अगस्त ८७

यहा रेल मार्ग से कलकत्ता जा रही ५८ वैगनों में लदे ६०० बैलों को आर्य समाज मुगलसराय के कार्यकर्ताओं द्वारा रोक लिया गया । यह घटना २३ जुलाई ८७ की है । गोरक्षकों ने रेलवे मजिस्ट्रेट के पास एक याचिका दायर कर रोके गये बैलों की सुपुर्दगी की याचना की । मान्य मजिस्ट्रेट ने स्वीकार करके तत्काल रेलवे शासन को आदेश दिया कि गोरक्षा समिति को ये बैल सौंप दिये जायें क्योंकि ये बैल गैर कानूनी ढग से फर्जी परमिट बनाकर अवैधरूप से कलकत्ता कसाई खाने में कटने जा रहे हैं ।

रेलवे अफसरो ने धासफीताशाही का इस्तेमाल करते हुए उन वैगनों को हावड़ा स्टेशन के लिये रवाना करवा दिया । पुन दुबारा याचिका दायर करने पर एव सत्याग्रह पर उतर आने पर खलबली मची । परिणाम हुआ कि ३ अगस्त को हावड़ा से पुन वे वैगन वापस आ गये । ९ दिनों तक यार्ड में रुके रहने के बाद वे सभी बैल गोरक्षा समिति को सौंप दिये गये ।

ज्ञातव्य है कि आर्य समाज मुगलसराय ने गोरक्षा समिति नामक एक सस्था बना रखी है जिसको स्थानीय जनता का पूर्ण सहयोग प्राप्त है । यह सस्था सन १९०९ से ही रेल और सड़क मार्ग से कलकत्ता कसाई खाने में गोवंश को जाने से रोकती है । अब तक लगभग ५००० गायो एव बैलों को बचाया जा चुका है ।

इस कार्य को और व्यापक रूप देने के लिये आर्य समाज मुगलसराय का भव्य मन्दिर बनाया जा रहा है । लगभग ७५ प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है मन्दिर पूर्ण होते ही यहा सालों भर अखिल भारतीय स्तर पर गोरक्षा कैम्प लगाने का भी प्रस्ताव है ताकि गोवंश को बचाया जा सके । कुल मिला कर आर्य समाज मन्दिर मुगलसराय भारतवर्ष का प्रथम आर्य समाज है जहा इतने व्यापक पैमाने पर गो रक्षा आन्दोलन चलाये जाते हैं ।

— आशीष कुमार गोस्वामी
आर्य समाज मन्दिर, मुगलसराय

रात्रि जागरण : एक अंध विश्वास
रामपुर कालेज के विद्यार्थियों की घोषणा

रामपुर । रजा स्नातकोत्तर कालेज व जैन कालेज के ५० विद्यार्थियो ने एक पुस्तिका प्रकाशित कर देवी जागरण व अन्य अन्धविश्वासो का कड़ा विरोध किया है । विद्यार्थियो ने इतिहास के उदाहरणो के आधार पर ऐसे अन्धविश्वासों को राष्ट्र विनाशक व मानवता विरोधी सिद्ध किया है । हल्ला गुल्ला से विद्यार्थियों की पढ़ाई में जो हानि होती है यह पुस्तक प्रकाशन का मुख्य आधार है ।

हिन्दुओं की भूल : हरिजनों पर नन्दा देवी की यात्रा पर रोक

केदारनाथ चमोली उ० प्र० के गोपीराव अमरसिंह राणा ने एक पत्र द्वारा सूचित किया है कि इस क्षेत्र के हरिजनों पर सवर्ण हिन्दुओं ने रोक लगाई है कि वे नन्दा देवी की यात्रा नहीं करें इससे क्षुब्ध होकर चमोली जिला भरमण में १७ अगस्त को हरिजनो की एक गोष्ठी हुई कि सवर्ण हिन्दू हरिजनों के प्रति भेदभाव का बर्ताव नही छोड़ेंगे तो क्षेत्र के अधिकांश हरिजनो का धर्मान्तरण सम्भव है । राणा हरिजनों को समझाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं । सभी हिन्दुत्व निष्ठ सस्थाओ को उनके धर्मरक्षा अभियान में सहयोग देकर हरिजनों के कष्ट निवारण व हिन्दुत्व प्रेमी बनाने में सहयोग देना चाहिए । कट्टरपंथी हिन्दुओं को भी अपनी भूल सुधार हरिजन भाइयो के प्रति उदारता का व्यवहार करना चाहिए । अस्पृश्यता निवारण का प्रस्ताव सनातन धर्म सभाऐं भी पास कर चुकी है । फिर हरिजनों से भेदभाव कैसा ?

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती सम्मानित

हिन्डोन सिटी । स्थानीय नगर आर्य समाज ने ९ अगस्त से १६ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह व कृष्ण जन्माष्टमी पर यजुर्वेद पारायण का यज्ञ आयोजित किया । इसी शुभ अवसर श्री घूडमल आर्य पुरस्कार की राशि १५०१ रुपये शाल व अभिनन्दन-पत्र भेंट किए । डा ओमप्रकाश विद्यालंकार ने आयोजन सफल बनाया । प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु का भाषण हुआ ।

निर्वाचन

—आर्य समाज वैदिक आश्रम रेलवे रोड ऋषिकेश देहरादून के निर्वाचन मे श्री रामलाल दवे प्रधान व श्रीमती पाल त्यागी मन्त्री चुने गए ।

—आर्य समाज शाहजहांपुर के चुनाव मे प्रधान डा शान्तिदेव मन्त्री ओमप्रकाश बाजपेई चुने गए ।

—आर्य समाज चिटगुप्पा ता० हुमनाबाद (बीदर) के चुनाव मे श्री डा० अरुणाचल मकाल प्रधान व श्री रामजीराव हिरारकर मन्त्री चुने गए ।

—आर्य समाज देहरादून प्रधान श्री यशपाल आर्य मन्त्री, श्री देवदत्त बाली चुने गए ।



आर्य कन्या आयुर्वेद महाविद्यालय जो एक मात्र भारत कन्याओं की संस्था है। श्री राजा मधुसूदन लाल पिती खाद्यमन्त्री श्री वल्लभ भाई पटेल सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती गुजरात आयुर्वेद यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री वी० आर० मेहता बोलते हुए।

श्री आशुराम आर्य के वेद भाष्य काश्मीर के मुख्यमन्त्री जी को भेंट

विश्व वेद परिषद अलीगढ़ के महामन्त्री श्री प० आशुराम आर्य जिन्होंने उर्दू भाषा में वेद भाष्य के अनुवाद प्रकाशित किए हैं आपने अपने बहुमूल्य ग्रन्थ जम्मू काश्मीर राज्य के मुख्य मन्त्री श्री फारूक अब्दुल्ला को भेंट किए। मुख्य मन्त्री ने सहर्ष उसे स्वीकार कर कहा आपके इस महत्वपूर्ण कार्य से मानव मात्र की सामूहिक उन्नति के लिए विभिन्न धर्मों की कल्याणकारी शिक्षाओं को समझने में सहायता मिलेगी।

आवश्यक सूचना

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा मुनीश्वरानन्द भवन पटना ४ के विधिवत् निर्वाचित पदाधिकारी श्री भुवनारायण शास्त्री प्रधान तथा श्री रामाज्ञा वैरागी मन्त्री एवं श्री द्वारका प्रसाद ओज कोषाध्यक्ष चुने गए। उक्त चुनाव शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में हुआ था।

नियमानुसार किसी भी प्रान्त में एक ही प्रतिनिधि सभा बनती है। इसके विपरीत कोई भी सभा बनाले वे नियम विरुद्ध कार्य करे तो यह कार्य अनुशासन हीनता की कोटि में आता है।

बिहार प्रान्त में ५०२ आर्य समाज हैं जो उक्त सभा के साथ प्रतिबद्ध (पञ्जीकृत) हैं। सभी समाजों को उक्त सभा के अनुशासन में ही कार्य करना चाहिए किसी के भी बहकावे में आकर किसी प्रतिद्वन्दी सभा की स्थापना करना या किसी के बहकावे में आकर भ्रमित होना हानिकारक हैं। अतः प्रान्त की सभा आर्य समाजों व आर्य बन्धुओं को उक्त सभा के संगठन के अन्तर्गत ही कार्य करना चाहिए।

—सभा मन्त्री

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज ठाकुरद्वारा रोड मुरादाबाद में जनपदीय आर्य सम्मेलन १५ से १८ अक्टूबर तक होगा।

—दयानन्द मठ चम्बा वार्षिकोत्सव ६-८ नवम्बर १९८७ को होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में वैदिक यति मण्डल का महत्वपूर्ण सम्मेलन भी होगा। सभी मान्य यतिवर्ग अपने पधारने की सूचना मठ को भेजकर कृतार्थ करें।

—स्वा० सुमेधानन्द
दयानन्द मठ चम्बा हि० प्र०

—आर्य समाज हरदोई का १०२ वां वार्षिक महोत्सव ११ सितम्बर व २१ अक्टूबर ८७ को धूमधाम से मनाया जायेगा।

जिसमें विद्वान सन्यासी भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

रामेश्वरदयाल शुद्धि मन्त्री

—आर्य समाज दानापुर का उत्सव २५ से ८ सितम्बर तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

—वेद प्रकाश मन्त्री

—आर्य समाज पुरानी गोन्डा का वार्षिकोत्सव २ से ५ अक्टूबर तक मनाया जाएगा।

—आर्य समाज खैर अलीगढ़ में १४ से १७ तक वेद प्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया गया।

कोटा श्रावणी (रक्षा बन्धन) पर्व के अवसर पर आर्य वीर दल कोटा द्वारा रंग बाड़ी पर १८ वन रोपन का आयोजन किया गया जिसमें कोटा क्षेत्र के लगभग ० आर्य वीरों ने भाग लिया।

यज्ञोपवीत बदल कर आर्य वीरों ने यज्ञ (हवन) किया। एक दूसरे को राखियां बांध कर मंगल कामनाएं की। इसके पश्चात् व्यायाम आदि का कार्यक्रम हुआ।

सायंकाल आर्यवीरों द्वारा लाठी तथा अन्य आत्म रक्षा के उपायों का प्रदर्शन किया गया।

जीन्द (हरियाणा) में आर्य वीर महासम्मेलन

आपको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन हरियाणा के ऐतिहासिक नगर जीन्द में शनिवार एवं रविवार दिनांक २६ तथा २७ सितम्बर १९८७ को सोत्साह मनाया जा रहा है जिसमें उच्च कोटि के सन्यासी विद्वान भजनोपदेशक एवं संगीतकार तथा क्रान्तिकारी युवा विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है। इस अवसर पर एक हजार आर्यवीरों का विशाल प्रदर्शन आर्यवीर गोष्ठी तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन होगा।

देश की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की युवाशक्ति का सशक्त संगठन (केवल आर्य वीर दल ही समय की पुकार है अतः समस्त भारत की आर्य समाजों आर्य संस्थाओं के अधिकारियों सदस्यों अभिभावकों से प्रार्थना है कि वे उक्त सम्मेलन में तन मन धन से अपना सहयोग देकर सम्मेलन को सफल बनाएं।

—उम्मेदसिंह संचालक

प्रचारकों की आवश्यकता

स्वामी शान्तानन्द आश्रम मरोड़ा में एक वानप्रस्थी महाशय की आवश्यकता है जो साधारण यज्ञ सन्ध्या आदि बच्चों को करा सके। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जावेगी।

वेद प्रचार मण्डल के अन्तर्गत ग्रामों में साईकिल पर घूम घूम कर प्रचार कार्य कर सके। एक प्रचारक की आवश्यकता है। योग्यतानुसार दक्षिणा दी जावेगी। पता—

—पदमचन्द आर्य मन्त्री
आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात
(मुकाम पो० नगीना (गुड़गांव))

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१३-९-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाईसेंस न० U ४३
R.N. 606/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U 03 Post in D.P.S.O. on 10 9-1987

वेद प्रचार सप्ताह

देहरादून । आर्य समाज द्वारा श्रावणी पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। विशेषयज्ञ श्री पण्डित देवदत्त जी शास्त्री का सारगर्भित प्रवचन हुआ। ... से ३१ अगस्त तक नगरके विभिन्न क्षेत्रोमे लोगो के घर पर प्रात कालीन सत्सगो का आयोजन होता रहा। श्री यशपाल आर्य, श्री देवदत्त शास्त्री व डा० श्रीमती ब्रह्मवती नारग के भाषण होते रहे। इसी श्रृ खला मे न्यू फोरेस्ट मे वेद प्रचार पखवाडा आयोजित किया। यज्ञ श्री रमेशचन्द्र शर्मा के पौरोहित्य मे हुआ। तीसरी श्रृ खला मे राजेन्द्र नगर मे सप्ताह भर का कार्यक्रम मनाया गया। २३-८-८७ को समापन हुआ।

—आर्य समाज बागपत (मेरठ) मे वेद प्रचार सप्ताह १७ से २३ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रात यज्ञ साय आचार्य देवव्रत जी, आचार्य शिवराज शास्त्री के प्रवचनों के साथ प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरदेव का मधुर सगीत जनता को आनन्दित करता १७वी मध्याह्नोत्तर समापन समारोह मे निबन्ध लिखने वालों को सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सचालक श्री बालदिवाकर जी हस द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। श्री मुरारीलालजी का साहित्यिक सहयोग प्राप्त हुआ। वीरेन्द्रसिंह राणा प्रधान व सत्यप्रकाशजी गोड ने उत्सव को सफल बनाने मे पूर्ण परिश्रम किया।

—आर्य समाज शोलापुर मे ९ से १७ तक वेद प्रचार सप्ताह हैदराबाद सत्याग्रह दिवस एव सस्कृत दिवस मनाया गया। आचार्य गणेशदेव प्रो० सुरेशचन्द्र वात्स्यायन प्रो० सी० ठकार, प्रो० सी० आपटे, पण्डित राजवीर विद्यावाचस्पति, प्रि० देवराज गुप्ता आदि के प्रवचन हुए।

—आर्य समाज जौनपुर के तत्वावधान मे ९ से १६ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया पण्डित केशवदेव जी शास्त्री की कथा हुई। जन्माष्टमी पर स्थानीय आर्य विद्वानो के भाषण हुए।

— आर्य समाज ऋषिकेश में १८ से २३ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताहपूर्वक मनाया गया। गुरुकुल कागडी के प्रोफेसर डा सत्यव्रत राजेश की प्रभावशाली कथाए होती रही।

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

...ाह व कृष्ण ...र शास्त्री के बडे श्रद्धामय ...

रात्रि को लगातार डा योगेन्द्र कुमार की वेद कथाए बड़े प्रभावशाली रूप से होती रही।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन व कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर डा योगेन्द्रकुमार शास्त्री, पण्डित प्रकाशचन्द्र शास्त्री, डा. सोमदेव शास्त्री, श्रीराम जी आर्य, श्री भगवती प्रसाद गुप्त व कैप्टन देवरत्न आर्य के ओजस्वी व प्रेरणाप्रद भाषण हुए।

—आर्य समाज केराकत (जौनपुर) के तत्वावधान मे ९ से १६ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह सफलता पूर्वक मनाया। डा सत्यव्रत वानप्रस्थी के के वेद प्रवचन हुए।

—आर्य समाज धर्मपुर देहरादून द्वारा वेद प्रचार सप्ताह प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री कपूरचन्द आर्य वानप्रस्थी का प्रवचन व भजनोपदेश हुआ।

—आर्य समाज सासनी गेट हाथरस द्वारा वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष मे मूलराजजी व रामचन्द्र शर्मा जी के वेद प्रवचन व धर्मोपदेश हुए।

—गुरुकुल रामलिंग येडशी धाराशिव महाराष्ट्र का चतुर्थ वर्षापनोत्सव २९ व ३० अगस्त को मनाया गया।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित ।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

राष्ट्र देवो भव

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सारे संसार को आर्य बनाओ।

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक ३८] | आश्विन कृ० १३ सं० २०४४ रविवार २० सितम्बर १९८७ | वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ६० पैसे

सूखे से पीड़ित आदिवासियों की सहायतार्थ आर्यसमाज द्वारा सहायता कार्य प्रारम्भ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की समस्त आर्यसमाजों से अपील

महोदय, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने झाबुआ, रतलाम, बांसवाडा तथा कुशलगढ आदि मे सूखे से पीडित आदिवासियों की सहायतार्थ सभा में राहत-कोष की स्थापना कर दी है। इन क्षेत्रों मे मिशनरी वर्षों से आदिवासियों को नाना प्रकार के प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन की प्रेरणा करते रहे हैं। आर्य समाज भी खतरे से जागरूक होकर उन क्षेत्रों मे जुटा हुआ है। वर्तमान समय मे भूख व गरीबी के चंगुल मे फसे हुए आदिवासियो के धर्मान्तरण का लाभ उठाने के लिए मिशनरी सक्रिय हो रहे हैं।

अतः आर्य समाजो, आर्य जनों व दानी महानुभावो से निवेदन है कि दिल खोलकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सूखा-पीडित सहायता कोष मे अधिक धन व अन्न भेजकर मानवीय सेवा और धर्म रक्षा के कार्य में सभा के हाथ मजबूत करें।

नोट—धनराशि मनीआर्डर/चैक वा बैंक ड्राफ्ट द्वारा सभा के पते पर ही भेजें।

निवेदक

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री-सभा

पृथ्वीराज शास्त्री
उपमन्त्री-सभा

सनातन धर्म के दो आचार्यों में मतभेद

कांची काम कोटि के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती : पुरी के शंकराचार्य का विरोध

तिरुपति कांची काम कोटि के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती पिछले दिनों अज्ञातवास पर चले गये थे। उनके स्थान पर नए शंकराचार्य की नियुक्ति कर दी गई। श्री जयेन्द्र सरस्वती के स्थान पर १८ वर्षीय श्री विजेन्द्र सरस्वती चुने गए हैं जिसकी पुष्टि श्री जयेन्द्र सरस्वती ने यह कहकर की कि मैंने ही नए शंकराचार्य को उत्तराधिकारी नियुक्त किया था।

अब यह विवाद दो शंकराचार्यों के मध्य मतभेद का कारण बन गया है

पुरी के शंकराचार्य श्री स्वामी निरंजनदेव तीर्थ ने दिल्ली मे एक वक्तव्य में कहा कि कांची के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती ने स्वयं गद्दी नहीं छोडी बल्कि उनके व्यवहार व हिन्दू विरोधी घोषणाओं के कारण उन्हे निकाला गया है। आपने कहा कि स्वामी जयेन्द्र सरस्वती ने अपना दण्ड व कमण्डल छोडकर कामकोटि पीठ से भाग कर हिन्दू धर्म को कलंकित किया है। इसलिए उन्होने कामकोटि के शंकराचार्य बने रहने के अधिकार को खो दिया है।

इसके विरोध मे श्री जयेन्द्र सरस्वती ने कहा है कि:—

मैं मरते दम तक शंकराचार्य ही बना रहूगा। मैं धर्म और राजनीति को मिलाने के विरुद्ध हूं। २ अक्तूबर को एक प्रोग्राम की घोषणा करूगा जो अधिकतर युवको के लिए होगा। वह राजनीतिक नही अपितु आध्यात्मिक व नैतिक उत्थान का होगा।

उन्होने पत्रकारों को धमकी दी कि यदि वे उन्हे भूतपूर्व शंकराचार्य लिखेगे तो वे उनके विरुद्ध अदालती कार्यवाही करेगे।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

सांई बाबा को शिक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित न करें

श्री आनन्दबोध सरस्वती द्वारा महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री को पत्र

प्रिय श्री चह्वाण

आपके महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमन्त्री का पद ग्रहण करने के बाद मैं आपको यह पहला ही पत्र लिख रहा हूँ। आपने इस पद का कार्य भार जिस सुचारु रूप से उठाया है उसकी सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में गृहमन्त्री के रूप में भी आपका कार्य सराहनीय रहा था।

अस्तु !

मैं आपका ध्यान अंग्रेजी समाचार पत्र "स्टेटसमैन" के २५ अगस्त १९८७ के अंक में प्रकाशित एक समाचार की ओर दिलाना चाहता हूँ, जिसके अनुसार आपके कार्यालय ने महाराष्ट्र के लगभग ३०० स्कूलों के पाठ्यक्रमों में श्री साईं बाबा को समाविष्ट करने की योजना है। साधारणतया मुझे इस बारे में कोई आपत्ति नहीं होती। किन्तु श्री साईं बाबा वास्तव में अवतारी पुरुष हैं या नहीं यह मुद्दा ऐसा मुद्दा है जिस पर काफी मतभेद है। इस तरह देखा जाय तो हमारे देश में कितने और भी साधु महात्मा हैं, जो साईं बाबा से भी ऊपर अवतारी पुरुष (भगवान्) माने जाते हैं। और जिनकी ओर आपका ध्यान जाना चाहिये था।

मुझे खेद सहित कहना पड़ता है कि आपका इस दिशा में किया जा रहा प्रयत्न कई प्रकार की कठिनतायें उत्पन्न करेगा। अन्य सम्प्रदायवादी भी अपने अपने धर्माचार्यों तथा अवतारी पुरुषों को स्कूलों कालेजों के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने का आग्रह कर सकते हैं। इस तरह से आप अपने लिये कई तरह की समस्यायें खड़ी करेंगे जिनका समाधान बहुत कठिन होगा।

अतः मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि आप अपने प्रस्तावित निर्देश को वापिस लेते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को तुरन्त सूचित करें कि श्री साईं बाबा को, जिनका व्यक्तित्व विवादग्रस्त है। स्कूलों आदि के पाठ्य-क्रमों में शामिल न करें।

धन्यवाद

—आनन्दबोध सरस्वती सभा प्रधान

सती प्रथा पर राजस्थान में विचारों का टकराव

जयपुर। ४ सितम्बर को सीकर जिले के दिवराला ग्राम में एक राजपूत नौजवान की चिता पर उसकी १८ वर्षीय पत्नी रूप कुंवर के सती हो जाने से जहां एक ओर क्षेत्र में सती प्रथा के भक्तों का चिता स्थल पर दर्शनार्थ तांता लग गया है और हजारों स्त्री पुरुष अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करने आ रहे हैं वहां राजस्थान के गृह सचिव श्री एम० एल० मेहता ने सवाई माधोपुर के सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट को इस मामले की जांच करने के आदेश दिए हैं। उन्होंने कहा कि मृतक के परिवार के सदस्यों के विरुद्ध उसे आत्महत्या करने को प्रोत्साहित करने के विरुद्ध पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई है। कई महिला संस्थाओं ने इस बर्बर कांड की निन्दा की है। दिल्ली में हुए एक आत्मदाह कांड के विरुद्ध प्रदर्शन करने की योजना भी बनाई जा रही है। कुमारी हेमलता प्रभु के नेतृत्व में इन संस्थाओं ने एक समिति का गठन किया है कुमारी प्रभु पीपुल्स यूनियन सिविल लिबर्टीज की प्रान्तीय सचिव हैं। उन्होंने यह भी निश्चय किया कि १४ सितम्बर को एक विशाल रैली का आयोजन किया जाए। उन्होंने श्री राजीव गांधी व नारी कल्याण मन्त्री श्रीमती मार्गरेट अल्वा को तार भेजकर इस सम्बन्ध में हस्तक्षेप करने की प्रार्थना की है। कहा गया है कि १६ सितम्बर को दिवराला में चिता स्थल पर चुनरी महोत्सव मनाया जायगा जिसमें लगभग दो लाख व्यक्तियों के भाग लेने की सम्भावना है। यहां रूप कुंवर की चिता स्थली पर मन्दिर व छतरी का निर्माण होगा। यहां पहले ही दो छतरियां एवं मन्दिर बना है जो तीन सतियों की स्मृति में बना हुआ है जो ७० वर्ष पूर्व सती हुई थीं।



संस्कार शिविर का दृश्य, आचार्य श्री ... शास्त्री तथा आचार्य कपिलदेव द्विवेदी दिखाई दे रहे हैं।



संस्कार शिविर में भाग लेने वाले युवकों का दृश्य

काशी में संस्कार शिक्षण सत्र

ज्ञानपुर (वाराणसी) विश्वभारती अनुसंधान परिषद में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के सहयोग से २१ दिवसीय 'कर्मकाण्ड प्रशिक्षण शिविर (१९ अगस्त से ८ सितम्बर) की व्याख्यानमाला शुभारम्भ गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी के व्याख्यान से हुआ। डा० द्विवेदी ने व्याख्यान माला के निर्धारित विभिन्न विषयों और आमन्त्रित वक्ताओं का परिचय देते हुए कहा कि वही १६ संस्कारों के माध्यम से ही व्यक्तित्व का पूर्ण विकास सम्भव है। आपने वर्तमान युग में संस्कारों के महत्व को दर्शाते हुए कहा कि व्यक्ति में इन्हीं संस्कारों के माध्यम से शुचिता, पवित्रता एवं लोककल्याण की भावना पैदा होती है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने कर्मकाण्ड की महत्ता विषय पर अपने व्याख्यान में कहा कि विभिन्न प्रकार और पर्वोत्सव हिन्दुत्व और आर्य संस्कृति के मेरुदण्ड हैं, इन्हीं के कारण हजारों वर्ष की लम्बी गुलामी में अनेक आक्रमणों और प्रहारों को सहकर भी हमारा धर्म और हमारी संस्कृति जीवित रह सकी है।

आज पुरोहितों और मीमांसकों से यह अपेक्षा है कि वे पद वैदिक विधि के अनुरूप हिन्दू समाज में कर्मकाण्डों को प्रचारित करें ताकि इनकी शक्ति का वास्तविक महत्व हम ग्रहण कर सकें।

हिन्दू जनता विभिन्न उपदेशों और तथाकथित चमत्कारी पीरों, बाबाओं के चक्र में पड़कर अपने धर्म से विमुख रही है। इन्हीं कर्मकाण्डों

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादकीय

महात्मा गांधी और अल्लोपनिषद्

इस अल्लोपनिषद् के नाम की रचना से जिसमे किसी अरबी संस्कृत का भद्दा सा असंगत सम्मिश्रण है किसी मुसलमानी मन को वेद और उपनिषद् के अनुकूल दिखाकर आर्य हिन्दू जनता को बहकाने व फंसाने के लिए इस कृत्रिम ग्रन्थ की रचना की है महात्मा गांधी जी का उसे प्रामाणिक उपनिषद् जैसा मानकर प्रवचन मे उल्लेख कर देना सर्वथा भ्रम उत्पन्न करने वाला था।

इसकी आलोचना का जब महात्मा जी को पता चला, इसके पश्चात् महात्मा जी ने अपने प्रवचन मे कहा कि—

"कई लोगो ने अल्लोपनिषद्" विषयक मेरे वक्तव्य पर असन्तोष के साथ आक्षेप भी किया है और उसे अप्रामाणिक भी बताया है। गांधी जी कहते हैं कि जब मैंने यह बात कही थी तो स्मृति से जुबानी कहा था और एक विद्वान को लिखकर पूछा उन्होने मुझे बताया, कि यह उपनिषद् आथर्वण संग्रह मे है। प्रो० जयदेव विद्यालंकार ने मुझे पत्र जो लिखा है उससे स्पष्ट है कि राणा कुम्भा का जो विजय स्तम्भ चित्तौड़ मे बना हुआ है वहां ब्रह्मा विष्णु महेश की त्रिमूर्ति के साथ अरबी मे अल्ला भी खुदा हुआ है इत्यादि इन बातो से हरिजन "हरिजन सेवक" के पाठको पर यह प्रभाव पड़ा। कि म० गांधी जी इस अल्लोपनिषद् की वास्तविकता का समर्थन कर रहे हैं। १०८ उपनिषदो का संग्रह तथा अल्लोपनिषद् पर अनुसन्धान करना उचित समझकर समय समय पर वैदिक साहित्य और धर्म के नाम पर मनमाने अर्थ के अनर्थ प्रस्तुत किए जाते रहे हैं। जिनका समय समय पर उत्तर देना सर्वथा उपयुक्त समझकर दिया गया।

(१) सर्वप्रथम—बात जो १०८ उपनिषदो के संग्रह को निर्णय सागर प्रेस बम्बई मे सन् १९१३ में "ईशाद्यष्टोत्तर शतोपनिषद्" इस नाम से प्रकाशित ध्यान पूर्वक देखने पर हम इस निश्चय से कह सकते हैं इसमे अल्लोपनिषद् सम्मिलित नही है। इसी ११ मई ४७ ई० के अंग्रेजी हरिजन मे प्रकाशित महात्मा गांधी का कथन कि—

'जिन्होंने हिन्दू धर्म ग्रन्थों का अध्ययन किया है उनको ज्ञात है कि १०८ उपनिषदों में अल्लोपनिषद् भी हैं? कितना अयथार्थ है।

(२) १०८ उपनिषदों में न होने पर भी अल्लोपनिषद् के नाम से एक लघु ग्रन्थ प० श्री कृष्ण मोहन जी शर्मा कार्त्तान्तिक पुस्तकालय मांडवी बम्बई द्वारा सन १९०४ मे प्रकाशित हुआ था यह निश्चय से प्रतीत होता है कि ऋषि दयानन्द के जीवन काल मे भी यह ग्रन्थ किसी न किसी रूप मे छपकर विद्यमान था। जिसके उद्धरण उन्होने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास मे दिए हैं। सत्यार्थ प्रकाश और उस अल्लोपनिषद् प्रति से अविकल रूप से उधृत कर रहा हूं ताकि आम जनता इसके विषय मे अपनी ठीक-२ सम्मति बना सके। अकबर के समय में जब दीने इलाही मजहब चला तब टोडरमल को शिक्षा विभाग देकर खिचड़ी भाषा बनवा कर हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का ढोंग रचा गया और इस प्रकार की पुस्तकों की रचना पैसा देकर तैयार कराई गई।

अल्लोपनिषद्

श्री गणेशाय नम। हरिः ओ३म् अस्मल्लां इल्ले मित्रावरुणा दिव्यानि धत्ते इल्लल्ले वरुणो राजा पुनर्ददुः। हयामि मित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरुणो मित्रस्तेजस्काम ॥१॥

होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्र महासुरिन्द्राः। अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्णं ब्रह्माणं अल्लाम् ॥२॥

अल्लो रसूल महामदरकबरस्य अल्लो अल्लाम्। आदल्लाबूकमेककम्। अल्लाबूक निखातकम् ॥३॥

अल्लो यज्ञेन हुतहुत्वा। अल्ला सूर्यचन्द्रसर्वनक्षत्राः। अल्लो ऋषीणां सर्वदिव्यां इन्द्राय पूर्वं माया परममन्तरिक्षाः ॥४॥

अल्लो पृथिव्या अन्तरिक्षं विश्वरूपम्। इल्लां कबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्ला ॥५॥

हरि ओं अल्ला इल्ला इल्लल्ले मित्रा वरुणो राजा पूर्ण दध्यु हयामि मित्रों इल्लां रसूल महमदर कबरस्य अल्ले-अल्लो पूर्ण दध्यु ॥६॥

हरि ओं अल्ला इल्लल्ला अनादि स्वरूपाय अथर्वणी शाखा ह्रीं जनान पशून् सिद्धान् जलचरान् अदृष्टं कुरु कुरु फट्। असुर संहारिणी हुं अल्लो रसूल महमदर कबरस्यल्ले अल्लो इल्लल्लेतिल्लल्ला ॥७॥

इति आथर्वण शाखाया लक्ष्म्युपनिषद् सम्पूर्णम् ॥

इस प्रकार यह लघु ग्रन्थ समाप्त होता है जिसका नाम ऊपर अल्लोपनिषद् और अन्त मे लक्ष्मी उपनिषत् लिखा है। इसकी रचना सर्वथा कृत्रिम और शब्द जाल के अतिरिक्त कुछ भी भाव पूर्ण नही है हमारा निश्चित मत है कि यह कि यह किसी ऐसे चालाक आदमी की भोले भाले आर्य हिन्दुओ को इस्लाम के जाल मे फसाने के लिए की गई रचना मात्र है। जो संस्कृत और अरबी से परिचय रखता है। आथर्वण शाखा का नाम देकर उसने अपने कल्पित सर्वथा कृत्रिम ग्रन्थ को वैदिक साहित्य का अंग दिखाकर अत्यन्त निन्दनीय कार्य किया था। महर्षि दयानन्द का यह महान उपकार है कि उन्होने विवेकशक्ति से काम लेकर इस लघु ग्रन्थ की कृत्रिमता का स्पष्टता प्रतिपादन किया है। जबकि वाचस्पत्य बृहदभिधान नामक सुप्रसिद्ध संस्कृत कोष के संपादक प० तारानाथ जी तर्क वाचस्पति और शब्द कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ कोष के निर्माता राजा राधाकान्त देव मुसलमानो के इस जाल मे फंसकर "अल्लोपनिषद्" के नाम से संकलित इन ऊपर उद्धृत वचनो को अथर्ववेद के नाम से लिखने अक्षमनीय भूल की है। उदाहरणार्थ वाचस्पत्य बृहदभिधान के प्रथम खण्ड के पृ० ४१५ पर अल्ला शब्द पर निम्न व्याख्या अंकित की है।

अल्ला स्त्री अलनत इति अल क्विप् अले भूषायै लाति सर्वान् अस्तिगृह्णाति १ मातरि अलतीनि अल् पर्याप्त सन् लाति सर्वान् अस्ति गृह्णाति जानाति वा ॥

(२) सर्वज्ञाया सर्वभक्षिकाया परमात्म देवतायाम् सा च अथर्ववेदे अल्लाल्लेत्यादि सूक्ते प्रसिद्धा ॥

यहां पर प० तारानाथ तर्क वाचस्पति ने संस्कृत के अल्ला शब्द के माता और परमात्मा ये दो अर्थ देते हुए अथर्ववेद के अल्लाल्ला इत्यादि सूक्त में परमात्मा का अल्ला नाम आया है ऐसा माना है।

उनका तात्पर्य इसी अल्लोपनिषत के नाम से प्रसिद्ध कृत्रिम ग्रन्थ से है यह स्पष्ट है कि इसे अथर्ववेद का बताना बड़ी भूल है पाठक स्वयं समझ लेंगे।

ऐसी भयंकर भूल "शब्द कल्पद्रुम" नामक विस्तृत शब्द कोष सम्पादक राजा राधाकान्त देव ने की है इस कोष के प्रथम खण्ड पृ० १२१ मे 'अल्ला' शब्द की व्याख्या मे उन्होने लिखा है

अल्ला परमेश्वर। एतन्नाम्ना यवना उपासते अर्थात अल्ला का अर्थ परमेश्वर है इस नाम से (मुसलमान) उसकी उपासना करते हैं यह कहकर उन्होने "अल्लोपनिषत्' मे से "इल्लाल्ला" इल्ले मित्रावरुणानि धत्ते, इत्यादि को उद्धृत करके इत्याथर्वण सूक्तम् लिखा है। जिसका अर्थ है कि यह अथर्ववेद का सूक्त है इसके बाद वहां लिखा है—

"अल्ला" अल्यते इत्यल् क्विप अले भूषायै लाति गृह्णाति नाटयोक्तो माता इति बोपदेव। अथर्ववेदे अल्लाल्लेत्यादि ख्यातो यवनोपास्य परमेश्वर।

(शब्द कल्पद्रुम राजा राधाकान्त देव संकलित प्रथम खण्ड पृ० १२१)

अर्थात् अल्ला का अर्थ माता और अथर्ववेद मे अल्लाल्ला इत्यादि करके प्रसिद्ध यवनो द्वारा उपास्य परमेश्वर है। यहां भी इस कल्पित अल्लोपनिषत् को अथर्ववेद के नाम से लिखा है जो सर्वथा अशुद्ध है।

कुछ स्वार्थी पण्डितो के एक कल्पित ग्रन्थ को उपनिषत् या वेद नाम से कह देने से वह प्रामाणिक नहीं बन जाता।

म० गांधी जी का "अल्लोपनिषत्" को एक प्रामाणिक उपनिषत् मान लेना भ्रम मात्र है। यदि किसी पंडित के कथनानुसार कि (अल्लोपनिषत्) आथर्वण संग्रह में पाई गई है तो उसने वही भयंकर भूल की है। जो प० तारानाथ तर्क वाचस्पति ने तथा राजा राधाकान्त देव ने की है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

नास्तिक होना

राजीव गाधी जब उपराष्ट्रपति पद के लिए विपक्षी नेताओं से सलाह-मशविरा कर रहे थे तो कई नामो पर उन्होने काफी दिलचस्प टिप्पणिया कीं। ऐसी ही एक टिप्पणी नूरुल हसन के बारे में थी जो इन दिनो पश्चिम बगाल के राज्यपाल हैं। राजीव गांधी ने कहा कि उनकें कुछ सहयोगियो को नुरुल सहन के नाम पर एतराज है। इस एतराज का कारण यह है कि वे उन्हें नास्तिक मानते हैं। बैठक मे तो किसी ने राजीव गांधी से अपनी इस टिप्पणी का खुलासा करने के लिए नही कहा। मगर अब यह सवाल उठाया जा रहा है कि किसी नास्तिक को भारत का उपराष्ट्रपति होने का अधिकार है या नही। यह सवाल सबसे तीखे ढग से साम्यवादी दल के इन्द्रजीत गुप्ता ने पूछा है। उनको बेचैनी स्वाभाविक है क्योकि साम्यवादी व्यक्तिगत सस्कारो से चाहे ईश्वर को मानते ही हो सैद्धान्तिक रूप से तो वे अपने आपको नास्तिक ही बताते हैं। फिर भला वे यह कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं। कि देश के ऊचे पदो पर नास्तिकता अयोग्यता मानी जाने लगे।

राजीव गाधी खुद ईश्वर मे विश्वास करते हैं या नही इसका किसी को पता नही है। वे उन सब मौको से दूर ही रहते हैं जहा कोई व्यक्ति ईश्वर मे अपनी आस्था प्रकट करता है। और तो और उन्हे इस देश के बडे त्यौहारो से भी कुछ लेना देना नही दिखाई देता। ईश्वर मे आस्था तो दूर वे अपने आपको जन्म से किसी धर्म जुडा हुआ व्यक्ति भी दिखाने के लिए तैयार नही है। मगर किसी ने कभी उनसे पूछा नहीं कि देश की बुनियादी आस्थाओ और सस्कृति से निर्लिप्त रहते हुए वे इस देश के प्रधानमन्त्री कैसे हो सकते हैं? इसकी सीधी वजह यह है कि हमारे यहा धर्म को किसी विशेष ईश्वर रूप, सम्प्रदाय या पुस्तक से जोडकर नही देखा जाता धर्म की गाधी जी ने बडी सटीक और भारतीय व्याख्या की थी। उन्होंने कहा था कि अगर कोई बडे से बडा नास्तिक भी इस सृष्टि की नैतिक व्यवस्था में विश्वास करता हो तो वह धार्मिक ही है। हमारे यहा वेद-उपनिषदो या महावीर और गौतम जैसे महापुरुषो ने उसकी यही व्याख्या की है।

राजीव गाधी ने जब नूरुल हसन को नास्तिक बताया तो क्या वे इस उदार भारतीय दृष्टि को छोडना चाहते थे? दरअसल ऐसी कोई बात नही है। बेचारे राजीव गाधी के लिए धर्म की यह व्याख्या अनजानी ही होगी। नूरुल हसन को नास्तिक वे सिर्फ इस अर्थ मे कह रहे थे कि मुसलमान उन्हे मजहबी आदमी नहीं मानते। अगर उपराष्ट्रपति पद पर उनका चुनाव देश के मुसलमानो को खुश करने के लिए ही किया जा रहा तो उसका क्या फायदा क्योकि नूरुल हसन को कोई मुसलमान तो मुसलमान मानता नही है। इस्लाम में अल्लाह पर यकीन भी उतना महत्त्वपूर्ण नही है जितना मुहम्मद साहिब पर। ऐसे मजहबमें नूरुल हसन जैसे आदमी की क्या औकात जो अपने मार्क्सवादी विचारो के कारण कम से कम घोषित तौर पर न मुहम्मद को मानतेहैं न अल्लाह को। राजीव गाधी के लिए नूरुल हसन की यह नास्तिकता उनकी अयोग्यता न बनती अगर उपराष्ट्रपति पद का फैसला वे साम्प्रदायिक आधार पर न कर रहे होते। इन्द्रजीत गुप्ता पता नही मुसलमानो के इस दृष्टिकोण से एतराज करेगे या नही क्योंकि हैं तो वे अल्पसख्यको के तरफदार ही। मगर दूसरे लोगो को यह सोचना पडेगा कि भारत में हम राजनैतिक मामलो मे आस्तिकता नास्तिकता की ऐसी सकीर्ण व्याख्याए करके चल सकते हैं या नही।

आतंकवादी (निवारण) विधेयक क्या है

नई दिल्ली। आतकवादी और विध्वसक कार्यकलाप (निवारण) विधेयक से सरकार (केन्द्र और राज्य दोनो) को आतकवाद से लडने के लिए मनचाहा अधिकार मिल गया है। यह विधेयक कल लोकसभा मे मजूर हो गया।

यह विधेयक २३ मई से लागू अध्यादेश की कानून की शक्ल देगा। अध्यादेश के कारण इसके बारे में कम जानकारी थी। विधेयक पर बहस के दौरान इसके हर पहलू पर सरकार और विपक्ष के तर्कों और आशकाओ से ज्यादा रोशनी पडी है। सरकार मानती है कि पहले के कानून की कमियों को इसमें दूर किया गया है। १९८५ मे आतकवादी और विध्वसक कार्यकलाप (निवारण) कानून बना था। वह दो साल के लिए था। उम्मीद की गई थी कि उसके बाद कानून की जरूरत नही रहेगी। सरकार उस कानून से आतकवाद खत्म करने का सपना देखती थी।

पहले वाले कानून मे तीन बाते शामिल की गई है। एक आतकवादी कार्यों के लिए दण्ड बढा कर भय पैदा करने की व्यवस्था है। दो केन्द्र सरकार अभिहित न्यायलय बना सकती है। तीन केन्द्र सरकार को नियम बनाने की शक्ति दी गई है। इनके अधीन विधेयक मे चार नई व्यवस्था है। उनसे ही वह ज्यादा ताकतवर हो गया है। वे व्यवस्थाए इस प्रकार हैं—एक गैरकानूनी हथियार या बारूद वगैरह रखने की सजा कम से कम पाच साल कर दी गई है। वह सजा आजीवन भी हो सकती है। दो भारतीय साक्ष्य अधिनियम १८७२ मे यह जोडा गया है कि पुलिस अधीक्षक या उसके बराबर के अफसर के सामने दी गई गवाही सबूत होगी। उसे सबूत के तौर पर अदालत मे पेश किया जायेगा। तीन—किसी आतकवादी की पहचान के लिए शिनाख्त परेड की जरूरत खत्म कर दी गई है। उसे उसके फोटो से पहचाना जाएगा। चार—अगर आतकवादी पुलिस के सामने अपराध कबूल करता है तो अपराध साबित माना जाएगा। यह भी उसके खिलाफ एक सबूत होगा। अगर साथी ने कबूला कि उसके सहयोगी ने अपराध किया तो वह भी सबूत समझा जाएगा।

इन व्यवस्थाओ से शक्ति पाकर पुलिस आतकवाद को खत्म करेगी। इन व्यवस्थाओ के दुरुपयोग के भी खतरे हैं। पुलिस ज्यादा खूखार बन सकती है। यह विधयक पूरे भारत के अलावा भारत के अलावा भारत के बाहर के भारतीयो सरकारी सेवाओ और सेनाओ पर लागू होगा।

यह विधेयक आतकवादी कार्य की परिभाषा मे बताता है कि सामाजिक सौहार्द तोडने सरकार को आतकित करने, बम, बारूद या बन्दूक से किसी व्यक्ति या व्यक्तियो को नुकसान पहुँचाने का कार्य इस श्रेणी मे माना जाएगा। आतकवादी को फासी या आजीवन कारावास या कम से कम पाच साल की सजा दी जा सकती है। आतकवादी साजिश की सजा का भी इसमें जिक्र है। आतकवादियो को सरक्षण देने की भी सजा है। इसमे विध्वसक कार्यकलाप की भी परिभाषा और उसकी सजा बताई गई है।

एक अधिसूचना के जरिए इस कानून के अमल के लिए अभिहित अदालत (डिजिगनेटेड कोर्ट) बनाई जाएगी। उसके बारे मे अगर कोई सवाल पैदा हो तो केन्द्र का फैसला आखिरी होगा।

नये प्रकाशन

१—वीर वैरागी लेखक—भाई परमानन्द
कीमत ८) सभा ने केवल ४) कर दी है।

२—Bankim-Tilak-Dayanand by Aurobindo.
कीमत ४) सभा ने केवल २)५० कर दी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

राजनीति और धर्म की चर्चा के प्रसंग में आर्यसमाज

—डा० भवानीलाल भारतीय—

जनसत्ता के ३१ अगस्त के अक मे उपर्युक्त विषय से सम्बन्धित श्री पुखराज का लेख यद्यपि बहुत कुछ तथ्याधारित है, किन्तु लेखक ने आर्यसमाज की विवेचना के प्रसग मे जो मूल्याकन किया वह बहुत कुछ आलोचना सापेक्ष है। लेखक ने आर्यसमाज के अनुयायियो में आई कट्टरता को सामी मजहबो का दुष्प्रभाव कहा है। वस्तुत किसी व्यक्ति को मजहबी दृष्टि से कट्टर कहना अपने आप में विवादास्पद है। यदि कोई व्यक्ति अपनी धार्मिक आस्थाओ तथा अपने दार्शनिक मतवाद पर दृढता से आरूढ रहता है तो क्या इसे कट्टरता कहेंगे ? आर्यसमाज के अनुयायियो मे यदि लेखक को कदाचित कोई असहिष्णुता दिखाई दी, तो उसके कारणो की छानबीन के लिए इतिहास के गहरे तथ्यो मे जाना पडेगा। यदा कदा अन्य मत सम्प्रदायो के द्वारा धर्म मे नाम पर किये जाने वाले अत्याचार और दुर्व्यवहार की प्रतिक्रिया के रूप मे जिस धर्म या मत को समबद्ध होना पडता है तो उसे भी आलोचक कट्टरता की सज्ञा दे ही देते हैं।

आर्यसमाज ने ईसाईयत और इस्लाम के आक्रमणो का मुकाबिला करने के लिये हिन्दू धर्म और समाज को जिस प्रकार सुदृढ और सशक्त किया, उसी के परिणाम स्वरूप हिन्दू धम आक्रमको की चुनौती का सामना करने की जो शक्ति आई, लेखक का इशारा शायद उसी ओर है किन्तु क्या इसे कटटरता कहना समीचीन होगा ?

पुन लेखक का यह कथन तो अत्यन्त भ्रामक है कि स्वामी दयानन्द ने धर्म की बडी सकीर्ण व्याख्या की है । ऐसा लगता है कि लेखक ने स्वामी दयानन्द के धर्म सम्बन्धी विचारो को पढा ही नही। स्वामी दयानन्द के धर्म विषयक विचार कोई उनके निजी गढे हुए विचार नही हैं। वे वेद, उपनिषद् स्मृति आदि प्राचीन आर्य शास्त्रो पर ही आधारित है। उन्होने सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे धर्म की जो परिभाषा दी है वह इस प्रकार है— जो पक्षपात रहित, न्यायाचरण, सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा है उसको धर्म कहते हैं" मेरे विचार से धर्म की इससे अधिक तर्क सम्मत निर्विवाद तथा सर्व स्वीकार्य अन्य परिभाषा नही होसकती।

लेखक का यह कथन तो निश्चय ही त्रुटिपूर्ण है कि स्वामी दयानन्द ने धर्म के अन्तरग स्वरूप की ओर ध्यान न देकर शास्त्रार्थ और तर्क कुतर्क मे दिलचस्पी दिखाई। यहा मे इतना निवेदन अवश्य कर दू कि स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास के अन्त मे धर्म और सम्प्रदाय का सूक्ष्म अन्तर स्पष्ट करते हुए सत्य भाषण, विद्याध्ययन, ब्रह्मचर्यधारण, सत्सग, पुरुषार्थ, सत्य व्यवहार आदि को धर्म मौलिक तत्त्व कहा है। मैं नही समझ सका कि इनसे भिन्न धर्म का अन्य अन्तरग स्वरूप और क्या हो सकता है। शास्त्रार्थों मे दिलचस्पी दिखाना आज के युग मे भले ही हमें अटपटा लगे, किन्तु जिस परिवेश मे दयानन्द पले बढे और धर्म सशोधन का कार्य किया, उसे देखते हुए शास्त्रार्थों को अनुचित कैसे कहा जा सकता है। यदि स्वामीजी की शास्त्रार्थ करने मे रुचि थी तो उतनी ही रुचि उनके प्रतिद्वद्वियो मे भी थी, जिन्हे वे शास्त्रार्थ के लिये आहूत करते थे, अन्यथा एक पक्षी शास्त्रार्थ तो होता नहीं। तब केवल दयानन्द की आलोचना करना क्या एकाकी नहीं है।

तर्क और कुतर्क में दिलचस्पी दिखाना अलग-अलग बात है। सुकरात को यदि तर्क करने में रुचि थी तो आप उसे कुतर्की कैसे कह सकते हैं ? यही बात दयानन्द पर भी लागू होती है। हमारे शास्त्रों मे यत्र तत्र तर्क की आलोचना मिलती है तो अन्यत्र तर्क को ऋषि (निरुक्त) कहा गया है तथा तर्क की सहायता से ही धर्म की उपलब्धि (मनुस्मृति) मानी गई है। स्वामी दयानन्द पर लेखक का यह आरोप तो नितान्त अन्यायपूण है कि उन्होने वैदिक अनुभूति को वैदिक वितण्डावाद में बदल दिया। स्वामी दयानन्द का समस्त चिन्तन और कार्य वैदिक भावनाओ से ही स्फूर्त, अनुप्राणित तथा ओत-प्रोत है, किन्तु वैदिक वितण्डावाद का यदि लेखक यह अर्थ लेता है कि स्वामीजी ने वेदार्थ करने की एक निश्चित परिपाटी का आग्रह किया था, तो इसमे दोष देखना निरर्थक है। वैदिक काल से ही वेदार्थ करने की भिन्न-भिन्न परिपाटिया प्रचलित रही हैं। याज्ञिक, आध्यात्मिक ऐतिहासिक आदि विभिन्न पक्षो को लेकर वेद के अर्थ किये जाते रहे हैं। पुरातन आचार्यों मे वेदार्थ की विभिन्न दृष्टियो को लेकर मतभेद भी रहे हैं। किन्तु किसी ने इस वैदिक वितण्डावाद नही कहा।

लेखक ने इस बात पर खेद प्रकट किया है कि सामी परम्परा से प्रभावित सगठन अपने आपको आधुनिक बनाने के चक्कर मे पश्चिमी सभ्यता के गुण अवगुण ग्रहण करते चले जाते हैं। निवेदन है कि पश्चिमी सभ्यता के गुणो को स्वीकार करना कैसे निन्दास्पद कहा जा सकता है ? अवगुणो की बात भिन्न है। यो तो राममोहन राय से लेकर अरविन्द और गाधी तक सभी महापुरुषो ने पश्चिम की कतिपय ग्राह्य बातो को आत्मसात् किया ही है। यदि ऐसा हुआ है तो इसे निश्चय ही सामी परम्परा से प्रभावित कहने का क्या औचित्य है। यह दूसरी बात है कि भारतीय जीवन मे भौतिकवाद की जो चाकचिक्य दिखाई पडती है, उसे यदि हम पश्चिम का अन्धानुकरण कहे तो किसी को क्या आपत्ति होगी ? लेखक का यह सकेत भी आपत्तिजनक कहा जा सकता है कि इन सगठनो से (लेखक अभिप्राय सम्भवत आर्यसमाज से ही है) जुडे हुए लोग श्रद्धा के बजाय तर्क, कर्मकाण्ड के बजाय शास्त्रार्थ और वितण्डा पर ही अधिक जोर देते हैं। जहा तक आयसमाज का सम्बन्ध है, वह श्रद्धा और तर्क को समान महत्व देता है और कर्मकाण्ड की अपेक्षा उसने वितण्डा को वरीयता प्रदान की, यह तो उसका कट्टर से कट्टर विरोधी भी नही कहेगा। वर्तमान हिन्दू धर्म के इतिहास का यह प्रामाणिक तथ्य है कि आर्यसमाज ने वैदिक कर्मकाण्ड को पुनरजीवित हो नही किया उसमे प्राणो की ऊष्मा भी भरी तथा मध्यकालीन जटिल कमकाण्डो की शुष्कता, दुरूहता तथा व्यर्थता को हटाकर उसका उपयुक्त सरलीकरण भी किया। कर्मकाण्ड को तर्काधारित तथा मानव मनोविज्ञान के अनुरूप बनाने मे भी उसका योगदान रहा है।

लेखक का यह कथन सत्य है कि भारत की धर्म चेतना अनेकान्त की भावना पर चलती रही है, किन्तु इस प्रसग मे यह भी याद रखना आवश्यक है कि किसी धर्म सस्था द्वारा चचका रूप अख्त्यार कर लेना या उसका आक्रामक बन जाना परिस्थितियों पर ही निर्भर होता है। तत्कालीन परिस्थितियो ने ही ब्रह्मसमाज, प्रार्थना-समाज और आर्यसमाज जैसे धर्मान्दोलनो को चर्च का रूप लेने के लिए बाध्य कियाथा। यहा तक कि स्वामी विवेकानन्द जैसे समन्वय बुद्धि वाले व्यक्ति को भी रामकृष्ण मिशन के रूप मे एक चर्च बनाना पडा था। जहा तक आक्रामकता का प्रश्न है, आक्षेप करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि कभी-कभी किसी धर्म सस्था को आक्रामक बनने के लिये भी परिस्थितिया के ही द्वारा विवश किया जाता है। ये परिस्थितियो दो प्रकार की होती है। प्रथम तो कोई धर्म या समाज जब अन्य धर्मों या मतावलम्बियो के आक्रमण का शिकार होता है तो उसमे किंचित् हीन भावना का जन्म हो जाता है। ईसाई मिशनरियो द्वारा किये गये आक्रमणो से विवश

(शेष पृष्ठ ६ पर)

परमात्मा का स्वरूप २

ले : श्री कर्मनारायण कपूर

आत्मा का स्वरूप अथवा गुण

१—मेरा आत्मा तथा शरीर आदि यज्ञ से पवित्र हों। (यजु० १८।३)

२—आत्मा बाल से भी सूक्ष्म है और प्रकृति नहीं के समान दीखती है। इन दोनों मे जो देवता (ईश्वर) व्यापक है वह मुक्त (जीवात्मा) को प्रिय लगता है। (अथर्व० १०।८।२५)

३—हे जीवात्मा तू स्त्री है, तू पुरुष है, तू कुमार है और तू कुमारी है। जब तेरा शरीर बूढ़ा हो जाता है तो तू दण्ड को हाथ में लेकर चलता है। तू ही शरीर धारण करके अनेकों योनियों को प्राप्त होता है।

(अथर्व० १०।८।२७)

४—जीवात्मा कभी इन बालकों का पिता बनता है और कभी इनका पुत्र बन जाता है। कभी इनका ज्येष्ठ भाई और कभी कनिष्ठ भाई, एक जीवात्मा मन में प्रविष्ट करता हुआ पूर्व भी शरीर धारण करता है और तत्पश्चात गर्भ के अन्दर रहता हुआ पुनः नवीन शरीर को प्राप्त होता है।

(अथर्व० १०-५-२८)

५—(क) आत्मा अनेकों शरीरो को प्राप्त करता है।

(ऋ० १०।८।१७७।३)

(ख) आत्मा, औषधियों, वनस्पतियों तथा सब भूतों में विद्यमान है। (यजु० १२।३७)

६—मैं वही आत्मा हूं जो पूर्व जन्म मे था। (ऋग० १०५।७)

७—आत्माएं असंख्य हैं जिनकी गणना नही हो सकती।

(अथर्व० १०।८।१०)

८—जीवात्मा शरीर धारण करके माता के गर्भ मे दस मास तक सोता रहता है। (ऋग० ६-७८-९)

९—जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर सत्तरह (१७) तत्वों—पाच प्राण, पाच ज्ञानेन्द्रिय, पांच सूक्ष्म भूत मन तथा बुद्धि का समुदाय है। (सांख्य०सू० ३।९)

१०—प्राण, अपान' आंख का मींचना व खोलना, जीवन, मनन, गीत, इन्द्रियों का चलाना, अन्तरविकार, सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, आत्मा के गुण हैं। (वैशेषिक सू० ३।२,४)

११—आत्मा विद्या तथा तप से शुद्ध होता है। मनु० ५।१०९)

१२—आत्मा वायु के समान दिखाई नही देता है। (पैंगल उ० ४।२१)

१३—मन से परे बुद्धि है और बुद्धि से परे आत्मा है।

(कठ० उप० १।३।२०)

१४—आत्मा को रथी जानो, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथि और मन को लगाम। (कठ. उप. १।३।३)

१५—आत्मा अपने कर्मों के अनुसार अनेक स्थूल तथा सूक्ष्म रूपों देहों) को प्राप्त होता है। (श्वेता० उप० ५।१२)

१६—यह आत्मा न स्त्री है, न पुरुष है और न ही नपुंसक है। जिस शरीर को यह प्राप्त करता है वह उससे रक्षा किया जाता है। (श्वे उप० ५।७)

१७—जिस प्रकार वायु जिस पात्र में प्रविष्ट करती है उस रूप वाली हो जाती है, वैसे ही जीवात्मा भी जिस देह को प्राप्त होता है उसका प्रतिरूप हो जाता है। (कठ उप० २।२।१०)

१८—यह आत्मा ही देखने वाला, स्पर्श करने वाला, सुनने वाला, सूंघने वाला, स्वाद लेने वाला, मनन जानने वाला, और कर्ता है।

(प्रश्न उप० ४।९)

१९—अशरीरी आत्मा को प्रिय व अप्रिय नही छुते हैं। (छा०उ० १२-१)

२०—मृत्यु काल में आत्मा ज्ञान युक्त होता हुआ, आंख, मूर्धा तथा शरीर के किसी अन्य द्वार से निकलता है (बृह० उ० ४।४।२)

२१—पति, पत्नी, पुत्रादि इसलिये प्रिय होते हैं कि वे अपनी आत्मा की कामनाओं को पूर्ण करते हैं। बृह० उप० ४।५।७)

२२—जिस प्रकार तिलों मे तेल; दही में घृत; स्रोतों में जल; अरणियों मे अग्नि रहती है और तिलो को पीसने से, दही के बिलने से, स्रोतों को खोदने से, अरणियो को रगड़ने से ये प्रकट होते हैं वैसे जीवात्मा में परमात्मा निहित है और वही उसका ग्रहण होता है किन्तु वह सत्य और तप द्वारा देखा जाता है। (श्वे० उ० १।१५)

२३—यह आत्मा न जन्मता है और न मरता है। न यह उत्पन्न होकर पुन. उत्पन्न होता है। यह अजन्मा, नित्य, सनातन, है। शरीर के नष्ट होने पर यह मरता नही है। (गीता० २।२०)

२४—जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़ कर नये वस्त्र ग्रहण करता है वैसे ही आत्मा जीर्ण शरीर को छोड़ कर नवीन देहों को प्राप्त करता।

(गीता २।२२)

२५—इस आत्मा को शस्त्र काट नही सकते, अग्नि जला नहीं सकती, जल गला नही सकता और वायु सुखा नहीं सकती। (गीता० २।२३)

२६—यह आत्मा अव्यक्त, अचिन्त्य और विकार रहित कहा जाता है।

(गीता० २।२५)

२७—सब प्राणी जन्म से पूर्व अव्यक्त होते हैं और मरने के पश्चात् अव्यक्त हो जाते हैं; मध्य मे (जीवन काल में) वे व्यक्त अर्थात प्रकट रहते हैं। (गीता० २।२८)

२८—कोई इस आत्मा को आश्चर्य तत्व मानकर देखता है, कोई इसको आश्चर्य की भांति वर्णन करता है; कोई इसको आश्चर्य की भांति सुनता है; और कोई इसको सुनकर भी नहीं जानता है। (गीता० २।२९)

राजनीति और धर्म

(पृष्ठ ५ का शेष)

होकर तथा उनके द्वारा अपने धर्म पर किये गये आक्षेपों को सुनकर निरुत्तर हुए विगत शती के लोग ही स्वधर्म को त्याग कर ईसाई मत की शरण में गये थे। किन्तु जब इसी धर्म पर हुए आक्रमणों का मुकाबिला करने के लिए राममोहनराय और दयानन्द ने एक बचाव की दीवार खड़ी कर दी तो आक्रमक धर्म प्रचारकों के मनसूबे मिट्टी में मिल गये। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि हिन्दू धर्म की सुरक्षा पंक्ति के निर्माण का कार्य ही इन लोगों ने किया था। इसके पश्चात् यदि हिन्दू धर्म में भी आक्रामकता की प्रवृत्ति पनपी तो उसे यथायोग्य व्यवहार या 'शठे प्रति शाठ्यं की नीति ही कहा जायेगा। मूलतः राममोहनराय और दयानन्द के व्यक्तित्व में किसी प्रकार की आक्रामता जिसे हमें विरोधी को हानि पहुंचाने का भाव ही कहेंगे, हमें दिखाई नहीं देती। उनके भक्तों और प्रशंसकों की मण्डली में हिन्दू धर्म से भिन्न लोग भी प्रचुर संख्या में थे।

सच बात तो यह है कि यदि आर्यसमाज जैसी संस्था ने ईसाइयत और इस्लाम के आक्रमणों के मुकाबले पर हिन्दू धर्म और समाज को संगठित नहीं किया होता तो उसका वह मौलिक रूप और संस्कार भी नष्ट हो जाता, जिसे लेखक ने धर्म का अन्तरंग स्वरूप कहा है। दिनकर जैसे निष्पक्ष इतिहासकार ने भी आर्यसमाज के इस "धर्म रक्षक" रूप की तो श्लाघा ही की है, चाहे अन्य बातों में उन्होंने अपना मतभेद ही व्यक्त क्यों न किया हो।

साहित्य द्वारा आर्यसमाज के प्रचार की योजना

—श्री डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार—

आर्य समाज को तीव्र गति देने के लिए इतना ही आवश्यक नही है कि हम अपनी गति विधि को साप्ताहिक सत्संगों तक ही सीमित रखें, यह भी आवश्यक है कि हम ऐसे कदम उठावें ताकि समाज का साहित्य घर-घर में मौजूद हो ताकि समय मिलने पर या समय निकाल कर गृहस्थी लोग स्वयं तथा उनके पुत्र-पुत्रियां एवं मित्रगण उस साहित्य से लाभ उठा सकें। सत्संगो मे कई आते हैं, कई नही आते। इसके अतिरिक्त हमे सिर्फ आर्य समाज के सदस्यो तक ही अपने को सीमित नही रखना सभी के यहा पहुँचना है। उत्तम साहित्य का चुनाव भी हर कोई नही कर सकता, न हर कोई धार्मिक तथा सामाजिक साहित्य की खोज मे भागा फिरता है। कई लोग पूछा करते हैं कि कौन-सा ग्रन्थ पढ़ें। जो संस्था अपना प्रचार करती है वह सत्संग के अलावा अपना साहित्य घर घर पहुँचाने का भी प्रयत्न करती है। ईसाइयों ने इस दिशा मे बहुत प्रगति की है। कई आर्य समाजो ने अपने यहा आर्य साहित्य की बिक्री का भी प्रबन्ध किया हुआ है। दीवान हाल आर्य समाज के हाल में सार्वदेशिक सभा ने अपने सम्पूर्ण साहित्य की बिक्री का प्रबन्ध किया है, परन्तु सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य के अलावा अन्य व्यक्तियो तथा संस्थाओ ने भी अत्यन्त उच्चकोटि का आर्य सामाजिक तथा वैदिक साहित्य प्रकाशित किया है जिसका महत्व बहुत अधिक है। इसी प्रकार कई आर्य समाजें सिर्फ पुस्तकालय खोलकर ही सन्तुष्ट नही क्योंकि पुस्तकालय का समय सबको अनुकूल नही पडता, उनका अपना बिक्री विभाग भी है परन्तु उसमे भी आर्य समाज का उच्च कोटि का साहित्य है—यह सन्देहास्पद है। आर्य समाजें फिलहाल बिक्री विभाग की विस्तृत योजना को चलाने मे कदम नही बढा सकती क्योंकि बिक्री विभाग खोल देने की योजना मे बहुत अधिक व्यय तथा प्रबन्ध करने की आवश्यकता है। अनेक आर्य समाजों ने पुस्तकालय तो खोले हैं, परन्तु उनका कुछ उपयोग नही हुआ न हो रहा है। जमाना ऐसा है कि लोग घर बैठे सब काम चाहते हैं। इन सब बातो को दृष्टि मे रखते हुए मैं समझता हूं कि निम्न योजना को आधार बनाकर काम शुरू कर उचित होगा।

हमारे साहित्य को दो भागो में बाटा जा सकता है। एक साहित्य ट्रैक्टों के रूप मे है। आर्य समाज की विचारधारा पर सैकडो ट्रैक्ट छपे हुए हैं। इनको चुनकर और यह देखकर कि कौन से समयानुकूल हैं उन्हें हमे घर घर मुफ्त पहुचाना चाहिए जैसा ईसाई लोग करते हैं। दूसरा साहित्य वह है जो उच्चकोटि का है, जिसे मुफ्त नही बाटा जा सकता, परन्तु जो आर्यसमाज की निधि है जिसमें वेद, उपनिषद्, गीता, इनके भाष्य तथा वैदिक विचारो को स्पष्ट करने वाले ग्रन्थ आदि आते हैं, जिनका व्यक्ति घर बैठे स्वाध्याय कर सकता है। ऐसे ग्रन्थ उर्दू, हिन्दी तथा अंग्रेजी मे हो सकते हैं। इनका अनेक व्यक्तियों को पता तक नहीं है।

लघु तथा बृहद दोनो प्रकार के आर्य साहित्य का प्रचार करने के उद्देश्य से निम्न योजना को प्रत्येक आर्य समाज क्रियान्वित कर सकती है। किस प्रकार क्रियान्वित कर सकती है—इस सम्बन्ध मे निम्न बातों पर विचार किया जा सकता है।

(१) उक्त उद्देश्य को क्रियान्वित करने के लिए प्रत्येक आर्य समाज ट्रैक्ट तथा उच्च-कोटि के आर्य साहित्य की सूची बना कर प्रचार-कार्य तथा स्वाध्याय के योग्य पुस्तको को घर घर पहुँचाने की व्यवस्था करे।

(२) इस उद्देश्य से कुछ विद्वानों की एक उपसमिति नियुक्त की जाये जो इस सूची को तैयार करे। इस उपसमिति के कोई एक विद्वान संयोजक नियुक्त किये जायें जो इस सम्बन्ध मे सब कार्यवाही करे। उपयुक्त यह होगा कि स्थानीय आर्य समाज के पुरोहित यह कार्य करे जो विद्वानों से सम्पर्क स्थापित कर इस सूची को तैयार करे।

(३) यह व्यवस्था शीघ्रातिशीघ्र क्रियान्वित की जानी चाहिए।

(४) फिलहाल ट्रैक्टो को आर्य समाज अपने दाम से खरीदे या प्रकाशित करे और अन्य उच्चकोटि की पुस्तकों को प्रकाशकों तथा लेखको से मास के उधार पर लेने का प्रयत्न करे। प्रयत्न किया जाये कि यह धन राशि दान के रूप में किसी सज्जन से प्राप्त कर ली जाये। अगर दान रूप में नहीं प्राप्त होती तो भी आर्य समाज के फंड से इतनी या जितनी उचित समझी जाये—जो ५० रु० प्रतिमास से कम नहीं हो—ट्रैक्टों के वितरण मे व्यय की जाये।

(५) जिन विशिष्ट पुस्तको को घर घर पहुचाने की योजना बनानी हो उनके लेखको तथा प्रकाशको से संयोजक महोदय सम्बन्ध स्थापित करके यह निश्चय करे कि वे प्रचारार्थ अपनी पुस्तको पर ज्यादा से ज्यादा क्या कमीशन देंगे। प्रयत्न किया जाए कि ३० प्रतिशत पर पुस्तकें एक मास के उधार पर प्राप्त की जायें। इस सम्बन्ध में अंतिम निश्चय उपसमिति पर छोड दिया जाये।

(६) शुरू शुरू मे ट्रैक्टो के अलावा शेष सिर्फ उन पुस्तको का चयन कर जो उधार मिल सकें उनसे कार्य प्रारम्भ किया जाये। धीरे धीरे उपयुक्त पुस्तको की संख्या बढाई जाए और उन्हें घर घर पहुचाया जायें।

(७) आर्य समाज के सेवक के पास चन्दा एकत्रित करने के काम के अलावा समय पर्याप्त रहता है। इस साहित्य को घर-घर ले जाकर दिखलाना और जो उसे खरीदना चाहें उन्हे पुस्तकें बेच देना। साहित्य सम्पर्क का यह कार्य सिर्फ आर्यसमाजी घरानों में ही नहीं, जहा तक सभव हो ज्यादा से ज्यादा घरानो मे सम्पर्क स्थापित किया जाये।

(८) पुस्तकों को सभालकर रखने की जिम्मेवारी आर्य समाज के सेवक की रहे। जहा सेवक न हो वहा आर्य समाज का पुस्तकालयाध्यक्ष यह सेवा कार्य करे।

(९) अगर आर्य समाज का सेवक यह कार्य करे तो जो बिक्री हो उसका १५ प्रतिशत आर्यसमाज के सेवक को दिया जाये ताकि वह इस कार्य को रुचि पूर्वक करे।

(१०) जब कार्य बढ जाये तब इस कार्य को स्थिर रूप देने के लिए नवीन योजना बनाई जाये।

(११) इस योजना को क्रियान्वित करने के लिए मिलने तथा पत्र-व्यवहारादि मे संयोजक को जो व्यय करना हो उसके लिए ५० रु० अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत किया जाये।

आर्य जगत् के समाचार

पंजाब के साथ कश्मीर को भी संकट में का डालने कुचक्र

२१ मास तक कश्मीर के मुख्यमन्त्री पर राज करने वाले श्री गुलाम मुहम्मद शाह ने २० अगस्त को मुस्लिम युनाइटेड फ्रंट की एक रैली में भाषण देते हुए कहा था कि मैं राजनीति से सन्यास ले रहा हू चू कि मैं एक पाकिस्तानी हूं। उन्होंने यह भी कहा कि हर काश्मीरी पाकिस्तानी है। काश्मीर का भारत में विलय हमें स्वीकार नही। रेली में पाकिस्तानी झण्डा भी फहराया गया तथा तिरगा झण्डा भी जलाया गया।

मिस्टर गुलाम मुहम्मद शाह सगठनात्मक रूप मे अपने को स्थापित कर रहे है। उन्हे ज्ञात है कि काश्मीर वैली के २०० स्कूलो पर अपना अधिकार रखने वाली सस्था जमाते इस्लामी के अध्यक्ष सैयद अलीशाह गैलानी ने भी इस्लाम खतरे मे है का नारा लगाकर मुसलमानो मे भारत विरोधी प्रचार के लिए जिहाद का नारा लगाया था। गैलानी ने एम०यू०एफ० को भी इस आन्दोलन में भाग लेने का आमन्त्रण दिया है।

बहुत प्रयत्न करने पर भी फारुक अब्दुल्ला की सरकार गैलानी के नियन्त्रण से इन स्कूलो व जमाते इस्लामी को मुक्त नही कर पाई है।

आज का ताजा समाचार है कि काफी मात्रा मे पाकिस्तान व पजाब से आतकवादी नए नए घातक हथियारो के साथ काश्मीर की सीमाओ मे प्रवेश कर गए हैं।

बेतूल में शुद्धि

जिला वेद प्रचार अधिष्ठाता विजय आर्य स्नेही के पौरोहित्य मे श्री फ्रासिस पुत्र जान डिसोजा तथा कुमारी कारमिलिन पुत्री अन्थोनी डिमोजा वरौरा जि० चन्द्रपुर निवासी को वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया तथा प्रशान्त व प्रीति का नामकरण कर उनका वैदिक रीति से विवाह कराया गया।

उत्तर प्रदेश विद्यार्य सभा द्वारा सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की विद्यार्य सभा ने प्रदेश के तीनों अचलों, मध्य, पूर्व व पश्चिम में आर्य विद्यालयों के प्रबन्धको व प्रधानाचार्यो के सम्मेलन हरिद्वार लखनऊ व गोरखपुर में आयोजित किए। हरिद्वार व लखनऊ के सम्मेलनों की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० इन्द्रराज जी ने की। गोरखपुर के सम्मेलनो की अध्यक्षता स्वा० ज्ञानानन्द जी ने की।

इन सम्मेलनों मे नई शिक्षा नीति मे सस्कृत भाषा की उपेक्षा, उर्दू को बरबस थोपने तथा आर्य विद्यालयो मे अन्य धर्मावलम्बियों की नियुक्तियों पर गहरी चिन्ता व्यक्त की गई। सर्व सम्मति से निश्चय किया गया कि सस्कृत भाषा जो सभी भाषाओ की जननी है राष्ट्रीय एकता की एकमात्र सुदृढ कडी है। समस्त प्राचीन वाङ्मय का प्रजस्रस्रोत है जिसके दोहन की ओर आज समस्त विश्व का ध्यान आकृष्ट है। भारतीयो के सस्कार प्रधान जीवन का प्रमुख अग है उसे माध्यमिक पाठयक्रम मे यथापूर्व स्थान प्रदान किया जाए जिससे उच्च कक्षाओ मे उसका अध्ययन सम्भव हो सके। यह ज्ञात होने पर कि उर्दू के फार्मूले के अन्तर्गत कुछ आर्य विद्यालयो में भी लागू करने के विभागीय आदेश निर्गत किये गये हैं यह निश्चय किया गया कि उर्दू को जो किसी प्रांत विशेष की मातृभाषा नही है, किसी विद्यालय पर किसी अन्य भाषा के स्थान पर बरबस न थोपा जावे, क्योकि यह त्रिभाषा फार्मूले की भावना के प्रतिकूल होगा। सम्मेलनोमे इस बात पर रोष प्रकट कियागया कि कुछ आर्य विद्यालयो के प्रधानाचार्य पद पर अन्य मतावलम्बियो की नियुक्ति की गई है। यह प्रक्रिया आर्य विद्यालयो के उद्देश्यो के सर्वथा विपरीत है। इन उद्देश्यो का सम्मान करना शिक्षा विभाग का परम कर्त्तव्य है। उत्तर प्रदेश सरकार से आग्रह किया गया है कि वे इन नियुक्तियो को येन केन प्रकारेण समाप्त करे तथा भविष्य मे आर्य विचार धारा के व्यक्तियो का ही चयन किया जावे, जो विद्यालयों के उद्देश्यो की पूर्ति मे सहायक सिद्ध हो सके।

वेद वेदाग पुरस्कार १९८८

आर्य समाज सान्ताक्रुज प्रतिवर्ष वेद वेदाग पुरस्कर के अन्तर्गत किसी एक ऐसे विद्वान को पुरस्कृत करने की योजना कार्यान्वित की है—जिन्होंने जीवन पर्यन्त आर्य समाज एव महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो का प्रचार प्रसार एवं अनुसंधान का करते हुए अपने को समर्पित किया हो।

इस पुरस्कार की राशि २१०००/= रुपये के साथ एक रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र एव शाल भेंट किया जाता है।

इसी योजना के अन्तर्गत "वेदोपदेशक पुरस्कार" से किसी एक ऐसे विद्वान को ११०००/= रुपये अभिनन्दन पत्र, रजत ट्राफी तथा शाल भेंट कर सम्मानित किया जाएगा जिन्हो वेदोपदेशक, भजनोपदेश अथवा प्रचारक या कार्यकर्ता ने जीवन पर्यन्त आर्य समाज की सेवा की हो।

नियमो में उद्धृत सीमाओ के अन्तर्गत आपकी दृष्टि मे जो विद्वान पुरस्कार के योग्य हो उनके नाम तथा विस्तृत विवरण सहित जानकारी भेजने की कृपा करे ताकि पुरस्कार के लिए विद्वान का चयन किया जा सके।

वेद वेदाग पुरस्कार समारोह का आयोजन हम १९८८ मे करना चाहते। पत्र का उत्तर दिनांक ३०-९-८७ तक अवश्य भेज कर अनुगृहीत करे।

(कैप्टिन देवरत्न आर्य) उप प्रधान
सयोजक—वेद प्रचार समिति, आर्य समाज
सान्ताक्रुज बम्बई-५४

बरेली मे शुद्धि

बरेली आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे ग्राम सागलपुर मझौला पो० भोजीपुर, बरेली के एक ईसाई परिवार की शुद्धि हुई। दभौरा आर्यसमाज के मन्त्री श्री हरिशकुमार आर्य की प्ररणा से परिवार ने वैदिक धर्म स्वीकार किया परिवार मे ४ पुरुष ४ महिलाय व ४ बच्चे भी हैं। ग्राम के सभी बन्धुओ ने सहभोज में भाग लिया।

डा० प्रहलाद कुमार स्मारक समिति

डा०प्रहलादकुमार स्मारक समिति द्वारा आयोजित सभा मे डा० सत्यकाम वर्मा का "विश्व संस्कृतियो का उद्गम वैदिक सस्कृति" विषय पर ११ सितम्बर को कक्ष २२ कलासकाय भवन दिल्ली विश्व विद्यालय मे महत्वपूर्ण भाषण हुआ। समारोह के अध्यक्ष डा०, ब्रजमोहन चतुर्वेदी अध्यक्ष सस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय थे। श्री कुमानन्द भारतीय कार्यकारी पार्षद शिक्षा दिल्ली प्रशासन मुख्य अतिथि थे। —प्रशान्त वेदालकार



बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामाज्ञा "वैरागी" द्वारा बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों का दौरा

राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामाज्ञा "वैरागी" ने उत्तर बिहार के बाढग्रस्त क्षेत्रो का दौरा किया। उन्होने मुजफ्फरपुर पूर्वी एव पश्चिमी चम्पारण, दरभगा, मधुबनी, समस्तीपुर, सीतामढी, बरगेनिया आदि स्थानों में आयी भयकर बाढ़ एव उससे हुई तबाही का मुआयना किया और उन-उन क्षेत्रो की आर्य सस्थाओ एव समाज सेवी सस्थाओ को राहत कार्य के लिए कारगर कदम उठाने की प्रेरणा दी। इस सम्बन्ध मे सहायतार्थ अन्य प्रान्तो के वरिष्ठ समाजो से धन भेजने की अपील भी की है।

शकरपुर दिल्ली मे वृष्टि यज्ञ का सफल प्रयोग

दिल्ली २८ अगस्त। श्री उत्थानमुनि वानप्रस्थी की प्रेरणा पर विकास मार्ग व्यापारी वर्ग एव पचायती धर्मशाला के सहयोग से २६,२७ २८ अगस्त १९८७ मे वृष्टि यज्ञ का आयोजन हुआ। शास्त्रोक्त उत्तम सामग्री तैयार की गई। इन्द्रप्रस्थ की पहाडियो से करील की समिधा लाई गई। परमपिता परमात्मा की दया से २८ अगस्त को प्रात १ ३० बजे से तीजन की सबसे तेज और देर तक चलने वाली वर्षा हुई। क्षेत्र मे सर्वत्र शास्त्रों की सत्यता की चर्चा एवम् प्रसन्नता का वातावरण बना हुआ है।

वेद सप्ताह

—आर्य समाज मिर्जापुर द्वारा वेद सप्ताह व जन्माष्टमी पव समारोहपूर्वक मनाया गया।

—आर्य समाज जमानिया (गाजीपुर) मे प० शिवनन्दनजी द्वारा सामवेद पारायण यज्ञ किया गया। श्री धर्मेन्द्रदेव वर्मा द्वारा १०००) रुपये की पुस्तकें नि शुल्क वितरित की गई।

—आयसमाज जयचन्दपुर (बिजनौर)मे १० से १५ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया स्वा० इन्द्रदेव मुनि व वागीश्वर शास्त्री के भाषण हुए।

—आर्य समाज गोरखपुर मे ९ से १६ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। श्री आनन्द स्वरूप चावला के पौरोहित्य मे चारो वेदो के १०० १०० मन्त्रों द्वारा यज्ञ किया गया।

—आर्य समाज कासगज मे ९ से १६ तक वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष मे सामवेद पारायण यज्ञ हुआ।

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज एव महिला आर्य समाज रेल्वे रोड अम्बाला की ओर से ९ से १७ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया। स्वा० दयानन्द जी विदेह के प्रभावशाली प्रवचन हुए। १६ ८ ८७ को श्रीमती डा० वेदाङ्गना जी की अध्यक्षता में जयरामदास आय गर्ल्स हाई स्कूल मे भाषण प्रतियोगिता सफलतापूर्वक आयोजित की गई।

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य सभा द्वारा आयोजित पारितोषिक वितरण और स्वागत समारोह

श्रीमान गुलाब जोशी द्वारा रु० ५००१ का अनुदान

आर्य समाज लोअर परेल संस्था की ओर से गरीब विद्यार्थियों को नि:शुल्क कापी बुक, और पारितोषिक वितरण तथा स्वागत समारोह का आयोजन संस्था के हितचिंतक श्रीमान गुलाब जोशी, कामगार नेता की अध्यक्षता में दिनांक १६-८-१९७८ को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महाराष्ट्र राज्य के कामगार आयुक्त श्रीमान सी० बी० डीमरे, उद्योगपति श्रीमान दीपक जोशी एवम् समाज सेविका सौ० सुनन्दा मोरे भी माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

सर्वप्रथम संस्था के प्रचार मन्त्री श्री आतमाराम गोवलकर ने अतिथियों का स्वागत किया। श्रीमान गुलाब जोशी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्था की गौरव गाथा का ब्यौरा देते हुए कहा कि, मैं इस संस्था को अपना परिवार समझ कर ही इन समारोह में उपस्थित हुआ हूँ। आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि इस संस्था की मदद करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ इन शब्दों के साथ ही उन्होंने संस्था के कार्य के लिए रुपये ५००१ का अनुदान जाहिर करते हुए भविष्य में भी मदद करने का आश्वासन दिया।

कामगार आयुक्त श्री सी० सी० बी० डीमरे ने अपने भाषण में कहा समाज में बिखरे हुए हिन्दू समाज को संवारने का प्रयत्न करने के साथ-साथ शैक्षणिक कार्य करते हुए समाज की भावी पीढ़ी के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का कार्यक्रम भी गौरवपूर्ण तरीके से यह संस्था कर रही है।

उद्योगपति श्री दीपक जोशी ने सम्पूर्ण भारत के आधार स्तम्भ आर्य-समाज को बताते हुए संस्था को गौरव प्रदान किया और अपनी तरफ से अध्यक्ष को २५०१) का अनुदान दिया।

इस अवसर पर केप्टन श्री देवरत्न आर्य, और संस्था के अध्यक्ष श्री राम बल्साखेत्रे बी ए एल एल बी उप-आयुक्त (कामगार) महाराष्ट्र राज्य, तथा उपाध्यक्ष श्री चन्द्रकान्त पुणदरे (पत्रकार) आदि के समयोचित भाषण हुए।

अल्लोपनिषद्

(पृष्ठ ३ का शेष)

(३) अल्ला शब्द यदि राणा कुम्भा के विजयस्तम्भ में उल्लिखित है तो इससे कुछ सिद्ध नहीं होता। अल्ला शब्द का प्रयोग संस्कृत में माता के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे अन्यत्र भी है।

अम्बार्थनद्योर्ह्रस्व के अनुसार अम्ब अक्क अल्ल मातृवाचक शब्द माने हैं। जगन्माता (परमेश्वर) के लिए अल्लाशब्द का प्रयोग संस्कृत की दृष्टि से ठीक ही है किन्तु इससे अल्लोपनिषद् के कृत्रिम शब्दाडम्बर पूर्ण ग्रन्थ की प्रामाणिकता सिद्ध नहीं होती है भाषणों में भ्रमजनक बातें कह देने से वक्ता को यश मिल सकता है किन्तु समाज जाति धर्म का बड़ा अहित हो सकता है जिससे सावधानी बरतनी आवश्यक है।

कांची कामकोटि का शंकराचार्य मैं ही हूं

स्वा० जयेन्द्र सरस्वती का दावा

बंगलोर। (यू०एन०आई०) कांची कामकोटि पीठ के पू०पू० शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती ने आज कहा कि मठ से उनकी अनुपस्थिति का अर्थ यह नहीं कि उन्होंने मठ छोड़ दी है। यहीं पीठ की शाखा में पत्रकारों से वार्तालाप करते हुए उन्होंने कहा कि भूतकाल में भी मैं लम्बे अरसों तक मठ से अनुपस्थित रह चुका हूं। उन्होंने कहा कि मुझे भूतपूर्व शंकराचार्य नहीं कहा जा सकता। ब्रह्मशास्त्र में दोबारा दण्ड धारण करने की आज्ञा है और इसमें कोई हानि नहीं।

श्री जयेन्द्र सरस्वती आज प्रातः कांचीपुरम होते हुए यहां गुरु दर्शन के लिए ठहरे। उन्होंने कहा कि मैं आगामी कार्यक्रम की घोषणा विजयदशमी के दिन करूंगा। उन्होंने कहा कि मैं तल कावेरी जाने का कोई विचार नहीं रखता। उन विज्ञप्तियों के सम्बन्ध में एक प्रश्न पर कि मठ से उनकी अनुपस्थिति हो जाना हिन्दू धर्म पर कलंक था श्री सरस्वती मुस्कराए और कहा कि यदि मनुष्य अपना संतुलन बनाए रखे तो कुछ नहीं होता। कहने वालों को कहने दीजिए।

उन्होंने कहा कि वह सूखे प्रभावित लोगों के लिए कांचीपुरम में विशेष रूप से प्रार्थना करेंगे कांचीपुरम में १-२ दिन निवास कर के वे तिरुपति चले जाऐंगे।

कोटा में आर्य वीरांगना दल की स्थापना

आर्य वीरांगना दल की प्रथम व्यायामशाला का शुभारम्भ १० अगस्त ८७ को सायं ६ बजे आर्य समाज विज्ञाननगर के प्रांगण में श्री कृष्ण गोपाल आर्य, संचालक आर्यवीर दल, कोटा द्वारा ध्वजारोहण के साथ किया गया तथा उन्होंने विज्ञान नगर एवं आस पास के क्षेत्र की बालिकाओं से नित्यप्रति सायंकाल व्यायामशाला में आकर स्वास्थ्य लाभ उठाने का आग्रह किया। दल का संचालन श्री कृष्णगोपाल आर्य की देखरेख में होगा।



सभा प्रधाना माता कौशल्या देवी का स्वागत करते हुए खण्डवा आर्य सभा के प्रधान रामचन्द्र आर्य एवं पत्रकार श्री कैलाश पालीवाल एवं महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती शान्ति खण्डेलवाल एवं मन्त्राणी चन्द्रकान्ता पालीवाल ।

चिन्तन से प्रकाश पैदा होता है

—श्रीमती कौशल्या देवी

खण्डवा । मध्य प्रदेश की आर्यसमाज की प्रधान माता कौशल्यादेवी ने आर्य समाज द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में कहा कि आज मानव की कथनी और करनी में अन्तर आ गया है । महर्षि दयानन्द जो कहते थे उसे ही आचरित करते थे। उनका सन्देश था कि जब तक देश चरित्रवान नहीं बनता, राष्ट्र विकसित भी नहीं हो सकता है ।

आज का मानव अधिकार तो बहुत मांगता है लेकिन करना कुछ भी नहीं चाहता है । देश खोखली बातों भाषणों और कोरे नारो से नहीं बनता है उसको बनाने के लिए त्याग, बलिदान तपस्या और निःस्वार्थ सेवाभाव की जरूरत है । देश इस वक्त गम्भीर संकट से गुजर रहा है । साम्प्रदायिकता के जहर का मिलजुल कर मुकाबला करना होगा । देश मे भाषाओं की कमी नहीं है कोई भी कार्य धन के अभाव मे नहीं रुकता है । लगन व मेहनत की आवश्यकता होना चाहिए । चिन्तन से ही प्रकाश पैदा होता है । छोटे बीज से बड़ा वृक्ष बनता है । मानव कर्तव्य से बनता है ।

इस समारोह में वृष्टियज्ञ में सहयोग देने वाले श्री कैलाशचन्द्र मवर जनप्रतिनिधि श्री शारदाप्रसाद शुक्ल कांग्रेस (इ) के महामन्त्री श्री जवेरी लाल जैन श्रीमती शान्ता खण्डेलवाल श्रीमती चन्द्रकान्ता पालीवाल एवं पाठशाला की पाठिकाओं सेविकाओं का श्रीफल और प्रशंसापत्र देकर सम्मान किया गया ।

इस अवसर पर आर्य समाज खण्डवा के सचिव श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल एवं प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य ने बताया कि खण्डवा आर्यसमाज की स्थापना १८७१ में हुई इसके पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती सन् १८७३ सितम्बर मे ग्राम सार्ई के बगीचे में पधारे थे । उन्हीं की प्रेरणा से समाज की स्थापना हुई । १९६३ से आर्य मन्दिर की स्थापना, ४ साल बाद आगमनी १९८२ से मिडिल स्कूल रक्षाकालोनी मे शुरू किया गया ।

इस प्रकार इस वक्त हमारी सभी शालाओं में १२५० विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं । ४५ पाठिकाएं एवं १२ सेविकाएं हैं । इसे इस वक्त दो लाख का खर्च आता है व हम शासन से किसी प्रकार का अनुदान नहीं लेते हैं । जनता के सहयोग से हम सभी कार्य कर रहे हैं । ४ कूलाघर चलाये जा रहे हैं । दो प्याऊ आर्य समाज मन्दिर के पास प्रतीक्षालय व इसके ऊपर वृष्टि यज्ञ किये जा चुके हैं । इनके करने के बाद हर वर्ष सुखद वर्षा का अनुभव हुआ है । इस वक्त खण्डवा आर्य समाज के पास २० लाख की स्वयं की जायदाद है । हम ५२ सप्ताह तक वैदिक धर्म का प्रचार व नियमित हवन करते हैं । इसी प्रकार मोहल्ले मोहल्ले जाकर हवन का आयोजन भी किया जाता है । इस वक्त जिले मे समाज की ११ शाखायें चल रही हैं । प्रदेश के सभा मे हमारे प्रतिनिधि १८ मे से ५ हैं । देश की महासभा मे भी खण्डवा के प्रतिनिधि के रूप मे रामचन्द्र आर्य हैं ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् को स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के करकमलों द्वारा मोटर साईकिल व मोपेट भेंट

अभी सप्ताह करीब बाद नई दिल्ली मे श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल आर्य को राजदूत मोटर साईकिल व टी० वी० एस० मोपेड की चाबियां भेंट कर युवा शक्ति को अपना आशीर्वाद दिया । यह श्री रामलाल मलिक के प्रयत्नों से आर्य समाज कालकाजी द्वारा भेंट की गई ।

इस अवसर पर आर्य नेता सांसद श्री रामचन्द्र विकल, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री डा० धर्मपाल आर्य पं० ...... सत्यपाल ......, आर्य सन्देश के व्यायाम विकास केन्द्र के प्रधान श्री ...... , आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य की अधिमन्त्री ...... आर्या, आर्य समाज के प्रधान श्री ...... मल्ला, मन्त्री श्री ओमप्रकाश ...... ने अपने विचार रखे व युवकों को आशीर्वाद दिया ।

श्री विकल के आह्वान पर श्री रामलाल मलिक ने आश्वासन दिया युवकों का कार्य सन्तोष प्रद रहा तो अगले वर्ष मेटाडोर भेंट की जायेगी ।

—चन्द्रमोहन आर्य
प्रेस सचिव

भूल सुधार

११ ८ ८७ के अंक में आर्य स्पेशल ट्रेन के विज्ञापन में अन्तिम १७ नवम्बर छपा है वास्तव में २० नवम्बर है । पाठक सुधार लें ।

—सम्पादक

वैदिक शोध संगोष्ठी सम्पन्न

दिनांक २२ ८ ८७ को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम में वैदिक संहिताओं में नैतिक तत्व विषय पर एक महत्वपूर्ण शोध गोष्ठी वेदो के मर्मज्ञ विद्वान गुरुकुल के आचार्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज के तत्वावधान मे सम्पन्न हुई । गोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० फतहसिंह अध्यक्ष वेदसंस्थान नई दिल्ली ने की । दिल्ली विश्व विद्यालय से पधारे डा० सत्यपाल नारंग ने मुख्य निबन्ध पढ़ा । इसके अतिरिक्त दूर २ से पधारे अनेक वैदिक विद्वानों ने भी गोष्ठी में सोत्साह भाग लिया । गोष्ठी का संचालन शोध संस्थान के निर्देशक डा० विजयपाल जी विद्यावकार ने किया ।

— श्री वत्स विद्यालंकार

सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर को अपने प्रदेश मे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ एक मधुरकण्ठ वाले भजनोपदेशक तथा एक योग्य उपदेशक की आवश्यकता है। उत्सुक महानुभाव सभा मन्त्री को निम्न पते पर अपने आवेदन पत्र एक पखवाडे के अन्दर भेजें। न्यूनतम पारिश्रमिक आठ सौ रुपये मासिक होगा।

हरिश्चन्द्र शास्त्री—मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर
कार्यालय—आर्य समाज दयानन्द मार्ग
तवी जम्मू ।

रजि० न० डो० (सी०) १७७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२० ९-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाईसस न० U ११
R N 626/57 Licensed to post without prepay ment Licence No. U 93 Post in D.P.S.O. on 17 9 1987

सस्कार शिक्षण

(पृष्ठ २ का शेष)

तरह समझना होगा कि सच्चे ईश्वर के प्रति अनन्य भाव रखकर शुद्ध कर्मानुष्ठान और साधना द्वारा ही हम अपनी और अपने समाज की उन्नति कर सकगे।

डा० भारतेन्दु द्विवेदी ने गायत्री आदि दैनिक सस्कार यज्ञ मन्त्रो का परिचय देकर इनके महत्व के प्रभाव को निरूपित किया। शुद्ध भाव रखकर शास्त्री विधि से यदि इनका पाठ किया जाय तो मनुष्य प्रेयस और श्रेयस दोनो की उपलब्धि कर सकता है।

डा० विभुराम मिश्र ने विभिन्न सस्कारो के आध्यात्मिक और लौकिक पक्ष का विवरण आज के सन्दभ मे सिद्ध किया।

डा० राधामोहन ने यज्ञ की उपयोगिता आज के सन्दभ मे सिद्ध की चरित्र सकट के इस वतमान युग मे पवित्र कर्म अनुष्ठान से बढकर कोई यज्ञ या हवन नही है। श्रीमती सविता द्विवेदी ने 'विवाह सस्कार के महत्व का निरूपण करते हुए बताया कि पूरी दुनिया मे हिन्दू विवाह सर्वश्रेष्ठ विवाह अपनी गौरवमयी सस्कृति के कारण माना जाता है आपने सप्तपदी कन्यादान एव विधियों का महत्व प्रतिपादित किया।

डा० चन्द्रविजय चतुर्वेदी ने यज्ञ का वैज्ञानिक महत्व" विषय पर बोलते हुए कहा कि कमकाड सस्कार यज्ञ आदि का वैज्ञानिक ढग से परीक्षण करके ही इनके प्रति लुप्त प्राय सस्कृति पुन जागृत की जा सकती है।

प्रो० अरुण प्रकाश श्रीवास्तव ने शैक्षणिक सस्कारो के महत्व पर अपना व्याख्यान दिया। श्री अर्जुनराम यादव ने सस्कार और सस्कृति विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

ग्राम सुनहडा जनपद मेरठ मे सामवेद-पारायण यज्ञ २६ ८ ८६ से २९ ८ ८६ तक चला। इस यज्ञ के ब्रह्मा थे प्रभात आश्रम के आचार्य योगीराज स्वामी विवेकानन्द जी महाराज तथा वेदपाठी भी इसी गुरुकुल के थे। यजमान श्री सुरतसिंह जी की बीसियो दिन पूर्व घोषणा थी कि पूज्य श्री स्वामी जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ होगा तो निश्चित वृष्टि भी होगी। अत्यन्त महत् सुखद आश्चय के साथ जनता ने देखा कि यज्ञ प्रारम्भ होने के पश्चात् दूसरे दिन २६ को रात्रि दस बजे वृष्टि प्रारम्भ हुई और २८ को प्रात २ बजे पुन आठ बजे दिन में भी वर्षा हुई। चतुर्दिक प्रसन्नता का वातावरण छा गया एव जनता के हृदय में श्रद्धा एव उत्साह की तरगें उठने लगी। इसे दैवयोग कहे या सयोग उसी दिन दूर २ तक अन्य स्थानों पर भी भारी वृष्टि हुई। लोगों को शान्ति मिली और यजमान की अभिलाषा पूर्ण हुई।

---

२१ दिवसीय कमकाण्ड शिविर मे उ०प्र० बिहार और मध्य प्रदेश से प्रशिक्षणार्थी भाग लेने आए हैं।

आर्येन्दु द्विवेदी, प्रचार मन्त्री
विश्वभारती अनुसधान परिषद
ज्ञानपुर (वाराणसी)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३२४७७१
वर्ष २२ अंक ३९] आश्विन शु० ४ सं० २०४४ रविवार २७ सितम्बर १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

भारतीय नारी जाति के जीवन से खिलवाड़

सरकारी व्यवस्था की धज्जियां उड़ा दी गईं

राजस्थान के देवराला गांव में हुए सतीकांड की आर्यसमाज द्वारा निन्दा

दिल्ली २१ सितम्बर।

४ सितम्बर १९८७ को राजस्थान के देवराला गाव में रूप कुवर के सती होने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी समिति द्वारा इस अमानवीय काण्ड की भर्त्सना की गई। सभा की अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। सभा द्वारा पारित प्रस्ताव मे कहा गया कि हिन्दू समाज की इस हठीवादी कुप्रथा का राजा राम मोहनराय और महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भरसक विरोध किया था और सरकार ने भी एक कानून बनाकर सती प्रथा को नारी जाति पर घोर अमानुषिक अत्याचार की संज्ञा दी थी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा मे देश के कोने-कोने से आर्य समाज के नेता उपस्थित थे। उन्होने सर्वसम्मति से इस अत्याचारी प्रथा को समाप्त करने के लिए देश भर के नारी सगठनो का आह्वान किया। सभा ने राजस्थान सरकार पर इस काण्ड में उपेक्षापूर्ण नीति अपनाने और अपने ही कानून की रक्षा न कर सकने पर अप्रत्यक्ष रूप से इस घोर अपराध मे सहायक होने का आरोप लगाया।

राजस्थान सरकार द्वारा चुनरी महोत्सव को न रोकने पर भी सभा मे आश्चर्य व्यक्त किया गया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रस्ताव को पारित करते हुए देश भर के युवक सगठनो तथा महिलाओ से इस कुप्रथा के विरुद्ध देशव्यापी अभियान छेड़ने का निवेदन किया।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

वेदामृत

पुत्र वीर कर्मठ सुयोग्य हो

तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु
देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व।
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो
युक्तग्रावा जायते देवकामः॥

ऋग्० १-४-६, ५-२-६,
तैत्ति० सं० ३-१-११-१

हिन्दी अर्थ—हे सृष्टि कर्ता देव ! तुम दाता हो। तुम शीघ्र प्रभावकारी और पोषक वीर्य हमें दो, जिससे वीर, कर्मठ, अतिनिपुण, सोमरस निकालने वाला और आस्तिक पुत्र पैदा हो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री अस्वस्थ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से यह सूचना देते हुए हार्दिक कष्ट हो रहा है कि आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् माननीय आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री, जो बड़ौदा से सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की बैठक तथा सार्वदेशिक सभा की अन्तरग बैठक मे भाग लेने दिल्ली पधारे थे, अचानक गत १६ सितम्बर १९८७ को उन्हे फालिज (लकवा) का रोग हो गया है। उन्हे तत्काल हस्पतालमें उपचार के लिए दाखिल करायागया। सार्वदेशिक सभाके प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के प्रयत्नो से आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री को दिल्ली के प्रसिद्ध चिकित्सालय गोविन्द वल्लभ पन्त अस्पताल मे वार्ड न० १२ के प्राइवेट कक्ष मे २०८ नम्बर कमरे मे रखा गया है।

हम सब आचार्य जी के लिए यथाशीघ्र पूर्ण स्वास्थ्यलाभ की कामना करते हैं।

सच्चिदानन्द शास्त्री

केवल स्त्री का सती होना

लेखक : श्री शरद जोशी

जिस व्यक्ति ने विधवा और वैधव्य जैसे शब्द की रचना की और इस धारणा पर सोचा उसने स्त्री के दुर्भाग्य का पहला अध्याय लिखा। यह अन्याय ही है कि क्रिया किसी की हो और विशेषण दूसरे पर लगे। मरे आदमी को मृतक कह देना मात्र काफी न था। औरत पर विधवा लेबल चिपकाया गया। जैसे अब वह स्त्री होने के अतिरिक्त कुछ और हो गई हो। पति की अनुपस्थिति से स्त्री मे भी जैसे कुछ अनुपस्थिति हो जाता है और वह उसे त्याज्य और अभिशप्त बनाता है। यह विधवा शब्द और वैधव्य की कल्पना एक मनोवैज्ञानिक भय, एक दहशत बन कर औरत के मन में गहरे घर कर गई। आदमी मर गया, यह सूचना है, औरत विधवा हो गई, यह एक कलपाने वाला भय है, जो औरत के निरर्थक हो जाने को रेखांकित करता है। चूंकि पति मर गया, अत अब वह शरीर के रूप मे व्यर्थ है, समाज पर भार है। वह अब सास लेती है, पहनती है पर वह उत्पादक इकाई नही रही। जैसे बच्चे पैदा करना ही स्त्री का उत्पादक इकाई होना है। दूसरी यह धारणा कि स्त्री का शरीर एक दासी का शरीर है और मालिक को परलोक जाते समय भी अपनी दासी को साथ ले जाने का अधिकार है। इन धारणाओ ने स्त्री के मन में यह बात गहरी बिठा दी कि वर मर गया तो जीवन मृत्यु के समान है। यदि पाच पाण्डवों में से कोई एक मर जाता तो क्या द्रोपदी उसके साथ सती होने की जिद करती ? अथवा क्या वह स्वय को विधवा महसूस करती ? यदि करती तो क्या शेष पाण्डव उसे ऐसा करने देते ? वे विवाहित पति थे, माना, पर किसी स्त्री के एकमात्र पति के मर जाने पर उससे विवाह की योग्यता, इच्छा और अधिकार रखने वाले अन्य सारे लोग तो मर नही जाते। यह ससार जिस तरह स्त्रियो से खाली नही होता, उस तरह वह पुरुषों से भी खाली नही होता। यदि अयोग्य पुरुषो से तलाक ले विवाह करना अनुचित नही है तो मृत हो गए पुरुष से मुक्ति पाने पर विवाह करना क्या अनुचित है ?

ये विधवा और वैधव्य जैसे शब्द समाज को अपने शब्दकोष से खारिज कर देने चाहिए। पति के मरने के बाद स्त्री को वैसे ही सामान्य सज सवर का और स्वाभ रहना चाहिए। बिन्दी भी चूड़िया भी। शोक होना सम्भाविक है। पर कोई भी भावना मन मे सती होती है, उसकी कपडो अथवा चिह्नों द्वारा अभिव्यक्ति एक पाखण्ड है। विधवा का सा जीवन जीना ही पाखण्ड है।

चूंकि विधवा हो जाने दहशत मन में है, अत सती हो जाने का मोह भी है। कमजोर मानसिकता के व्यक्ति को मृत्यु आकर्षित करती है। वे आत्महत्या करते हैं। जिस तरह इम्तहान मे फेल हो जाने के बाद परिवार और समाज मे निरादृत होने का डर एक कमजोर छात्र को रेल की पटरी या तालाब की ओर ले जाता है, इसी तरह कमजोर बहुए पति की मृत्यु के बाद आत्महत्या करती हैं। जिस तरह पशुओं के समाज मे होता है कि जो पशु कमजोर होता है, अद्धमृत होता है, उसे शेष पशु सहारा न दे, मरने दिया देना चाहते है वैसे ही मनुष्यो मे होता है। कमजोरी को मृत्यु से जोड़ना पाशविक षडयन्त्र है। जो मर सकता है हम उसे मरने की दिशा मे प्रवृत्त कराते हैं। सती हो जाना उसी दूषित हवा का परिणाम है, जो स्त्री को लेकर समाज मे वर्षो से बह रही है। इस प्रकार का मनोवैज्ञानिक दबाव आमतौर पर जीवन भर रहना है। पुरुष समाज की चाल यह है कि इस दबाव से औरत मे किसी कमजोरी को हम महिमान्वित करते हैं। गौरवान्वित करते है। औरत का विरह मे सूखना, उदास होना, दीपक की बाती सा जलना, सादगी, त्याग अकेलापन इसकी अनेक-अनेक शब्दो मे प्रशसा की जाती है। इसका परिणाम है कि औरत को अपना जीवन यही लगता है।

सती प्रथा औरत की कमजोरी को महिमान्वित करने का दुष्ट नाटक है। हम ढोल, मजीरे, शख बजा रहे हैं, देखो एक औरत आदमी के साथ मर गई। किसी ने ठीक प्रश्न पूछा था, औरत सती होती है, कभी कोई आदमी औरत के मरने पर सता क्यों नही होता ?

सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

जनपद (सहारनपुर) उ० प्र० में राजा महेन्द्र प्रताप इण्टर कालेज गुरुकुल नारसन मे आर्यसमाज २९ सितम्बर मगलवार से ८ अक्टूबर बृहस्पतिवार १९८७ तक आर्यवीर दल ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन कर रही है। इस समय चरित्र निर्माण की अत्यन्त आवश्यकता है अत आर्यसमाज के नवयुवको को राष्ट्र उपयोगी बनाने के लिए इसका आयोजन किया गया है।

प्रशिक्षण का सचालन आचार्य देवव्रत उपसचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल (दिल्ली) करेंगे।

नियम

१ शिविर मे आवास भोजन, प्रशिक्षण, नि शुल्क होगा।

२ प्रवेश शुल्क पन्द्रह रुपये आवेदन पत्र के साथ देय होगा।

३ निर्धन के लिए शुल्क मुक्ति की व्यवस्था है।

४ प्रशिक्षणार्थियो को अपने साथ पूर्ण गणवेश, खाकी नीकर, सैंडोकट सफेद बनियान, शोल्डर युक्त सफेद कमीज, ब्राउन रग के कपड़े का जूता, सफेद मोजे, दो काले कच्छे दो लगोट, कान के समान लम्बाई की लाठी, बिस्तर, थाली कटोरा, पैन, व दो कापी लाना आवश्यक है।

५ शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र, तथा प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वालो को विशेष पुरस्कार दिये जायेंगे।

जनपद सहारनपुर की जनता व समस्त आर्यसमाजो से प्रार्थना है कि वह तन मन धन से सहयोग कर कार्य क्रम को सफल बनायें।

विनीत

आर्यप्रतिनिधिसभा क्षेत्रीयआर्यसमिति सार्वदेशिकआर्यवीरदल
सहारनपुर गुरुकुल नारसन जनपद-सहारनपुर

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज हरदोई का १०२वां वार्षिकोत्सव ३० सितम्बर से २ अक्टूबर तक समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। आर्य जगत के प्रमुख विद्वान व भजनोपदेशक इसमे भाग लेंगे। अनेक उपयोगी सामयिक सम्मेलन भी होंगे, महिला सम्मेलन जिला आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन भी होगा।

—आर्य समाज बारा कोटा का ५६वा वार्षिकोत्सव ८ से ११ अक्टूबर ८७ को होगा। उच्चकोटि के विद्वान व भजनीक भाग लेंगे।

सम्पादकीय

म० गांधी की प्रार्थना में वेद और कुरान पर आपत्ति

पूज्य महात्मा गांधी जी २ मई १९४७ को भंगी बस्ती में प्रार्थना के लिए जब उपस्थित हुए और प्रतिदिन की भांति कुरान की आयतों का पाठ होने लगा, तो किसी व्यक्ति ने इस पर आक्षेप किया। पुलिस ने उसे पकड़ लिया, महात्मा जी ने उसी समय प्रार्थना बन्द कर दी। परन्तु अपने भाषण में ऐसी संकुचित विचारधारा वाली हृदयता पर गहरा दुःख प्रकट किया। साथ ही कहा कि मेरी समझ में नहीं आता, कि कुछ हिन्दू प्रार्थना में कुरान की आयतें पढ़ने पर क्यों आक्षेप करते हैं। इन वाक्यों में ईश्वर (खुदा) की स्तुति और प्रार्थना की गई है। इससे हिन्दू धर्म को क्या हानि पहुँच सकती है ?

इस प्रसंग में ११ मई अंग्रेजी हरिजन के अंक में मुख्य बात कही कि— मुझे एक मित्र ने बताया कि उसी आशय की एक प्रार्थना यजुर्वेद मे भी है। जिन्होंने हिन्दू विचार धारा को पढ़ा है वे जानते हैं कि १०८ उपनिषदो मे में से एक 'अल्लोपनिषद्" भी है क्या जिस व्यक्ति ने उसे लिखा उसे अपने धर्म का ज्ञान न था ?

महात्मा जी के प्रवचन में जिस प्रकार "अल्लोपनिषद्" का निर्देश किया गया है उससे पर्याप्त भ्रम फैलने की सम्भावना है अत इस पर कुछ प्रकाश डालना अति आवश्यकीय है। वस्तुत बात यह है कि ईश केन कठ प्रश्न मुण्डक माण्डूक्य, ऐतरेय, तैतिरीय, छान्दोग्य बृहदारण्यक, और श्वेताश्वेतर ये ११ ऋषिकृत उपनिषदें हैं। इनके अतिरिक्त सौ के लगभग नृसिंह तापनी, राम तापनी, गोपाल तापनी, आदि साम्प्रदायिक ग्रन्थ स्वार्थी लोगो ने उपनिषदो के नाम पर घड़ लिए, जिनमें से एक अल्लोपनिषद् भी है। इसके विषय मे महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दश समुल्लास के अन्त मे ठीक ही लिखा है कि—

अकबर के समय में यह किसी संस्कृत और अरबी के पढ़े हुए ने बनाई है यदि इसका अर्थ देखा जाय तो यह कृत्रिम अयुक्त वेद और व्याकरण रीति से विरुद्ध है। जैसी यह उपनिषद बनाई है वैसी बहुत सी उपनिषदें मत-मतान्तर वाले पक्ष-पातियो ने बनाली हैं जैसा कि स्वरोपनिषद नृसिंह तापनी आदि बनाली हैं। मिलावट के कुछ उद्धरण भी प्रस्तुत हैं ?

अस्माल्लां इल्ले मित्रा वरुणा दिव्यानि धत्ते। इल्लल्ले वरुणो राजा पुनर्ददु। मित्रों इल्लां इल्लल्ले वरुणो मित्रस्तेजस्काम ॥ अल्लो ज्येष्ठ श्रेष्ठ परम पूर्ण ब्रह्माणम् अल्लाम् ॥

इल्लां कबर इल्लां कबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्ला। ओम अल्ला इल्लल्ला अनादि स्वरूपाय अथर्वणा श्यामा हुं ह्रीम अल्लों रसूल महमदर-कबरस्य अल्लो अल्लाम इल्लल्लेति इल्लल्ला।

इस रचना मे जिसमे अरबी और संस्कृत का भद्दा असगत सम्मिश्रण है स्पष्ट है कि किसी ने मुसलमानी मत को भी वेद व उपनिषद के अनुकूल दिखाकर आर्य हिन्दुओं को फसाने के लिए इस बनावटी ग्रन्थ की उपनिषद् के नाम से रचना कर डाली।

म० गांधी जी का उसे प्रामाणिक उपनिषद जैसा मानकर प्रवचन मे उल्लेख करना सर्वथा भ्रम पैदा करने वाला है। महात्मा जी का वेदादि सत्य शास्त्रों का ज्ञान अत्यन्त सीमित था ऐसा वह स्वयं भी मानते थे।

प्रार्थना में कुरान का पाठ

इसमें हमें विचार यह करना है कि हिन्दू मन्दिर मे कुरान की आयतो का पाठ कहां तक उचित था ? म० गांधी सब मतो की समानता मे विश्वास रखते थे। अत वे वेद उपनिषद गीता के वचनो के साथ प्रार्थना के समय अन्य कई मतो की भी प्रार्थना करवाते थे। मैं एक सनातनी हिन्दू मजहब और सब मजहबो का निचोड़ रूपी मजहबों मे धार्मिक सहिष्णुता है। अत मैं कहता हूं कि मैं अच्छा हिन्दू होने के साथ अच्छा यवन व ईसाई भी हूँ अपने मजहबों को दूसरे मजहबों से सच्ची मजहबी भावना के प्रतिकूल है। अहिंसा के लिये नम्रता जरूरी हैं क्या हिन्दू धर्म शास्त्रों मे भगवान के हजारों नाम नही कहे हैं। रहीम भी उनमे एक क्यो न हों। कलमे में सिर्फ भगवान की तारीफ की गई है और मुहम्मद साहब को उनका पैगम्बर माना गया है। जिस तरह मैं बुद्ध, ईसा और जरदुस्त को मानता हूं। उसी प्रकार मुझे खुदा को मानने तथा तारीफ करने और मुहम्मद साहब को पैगम्बर मानने में कोई हिचकिचाहट नही है (हरिजन ११ मई ४७ ई०।) हम महात्मा जी के इन विचारो से सहमत नही है। हम यदि वैदिक धर्म को युक्ति युक्त पक्षपात रहित तथा सार्वभौम होने के कारण ही सर्वोत्तम मानते हैं तो इसे सच्ची धार्मिक भावना के विरुद्ध कैसे कहा जा सकता है ? धार्मिक सहिष्णुता का यह अर्थ है कि अन्य मतवालो से भी हमारा द्वेष न हो और उनकी बातो को सुनकर हम उन पर विचार करे और युक्तियों से ही उनके विचारों को बदलने का प्रयत्न करे न कि ओर जबर्दस्ती व तलवार के बल से किन्तु इसका अर्थ उनकी बुद्धि विरुद्ध असगत बातो को मानना नही है। क्या अहिंसा ब्रह्मचर्य दयालुता आदि धैर्यपूर्वक जो आदर्श आर्यों के धर्म शास्त्रों मे निहित है क्या वही कुरान है ? हमे इन आदेशो मे जमीन आसमान का अन्तर प्रतीत होता है। कहा तो हमारे धर्मशास्त्रो का दूर देश और कुल का विवाह आदेश और एक पत्निव्रत व पतिव्रत का आदर्श तथा कहा मामे, चाचे की पुत्री बहनो के साथ विवाह और यथेच्छ तलाक आदि ?

कहा निराकार सर्व व्यापक न्यायकारी ईश्वर और कहा आसमान में तख्त पर बैठने वाला शरीरधारी खुदा। ऐसी अवस्था मे सब मतो को विशुद्ध सार्वभौम युक्ति सगत वैदिक धर्म के समान ही मानना हमे सर्वथा अयथार्थ प्रतीत होता है। वेदादि शास्त्रो मे 'एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" कहकर भगवान के हजारो और अनन्त गुण सूचक नाम बताये गये हैं। यदि ईश्वर के लिए रहीम आदि नाम भी कोई प्रयुक्त करे तो इसमे विशेष आक्षेप की बात नही। उन्होने जो यह लिखा है कि मुझे इसका कोई कारण नही दिखाई देता, कि मैं कलमा क्यो न पढ़ूं, अल्लाह की स्तुति क्यों न करूं और मुहम्मद साहब को अपना पैगम्बर मानकर उनकी इज्जत क्यों न करूं ? हर मजहब के महान पैगम्बरो और साधु सन्तो मे मेरा विश्वास है। हरि० से बक २,४।४ कलमा का यह भाव तो ठीक है कि ईश्वर एक और अनुपम है किन्तु— "मुहम्मद रसूलिल्लाह" अर्थात मुहम्मद खुदा का दूत है ऐसा कहना और जो मुहम्मद साहब को पैगम्बर नही मानते, चाहे वे कितने ही अच्छे क्यो न हों, उनको जन्नत न मिलेगी। दोजख का अधिकारी बताया गया है।

जैसे कि कुरान की आयतो और हदीसो में सब पुराने और प्रामाणिक भाष्यकारो के अनुसार बताया गया है वह सर्वथा अनुचित तथा युक्ति के विपरीत है। मुहम्मद साहब ने मूर्तिपूजा, मद्यपान लडकियो को मार डालना जुआ खोरी, सूदखोरी आदि कई बुरी प्रथाओ को दूर करने के लिए जो प्रयत्न किये हैं उसकी हम प्रशंसा करते हैं किन्तु उनके उनकी पुत्रवधू जैनब के साथ लगभग ५५ वर्ष की आयु मे ९ वर्ष की आयशा और स्वय अधिक से अधिक ४ स्त्रियो के साथ विवाह का नियम बना ११ स्त्रियो से विवाह इत्यादि बातो को हम कैसे आदर्श व अनुकरणीय मान सकते हैं ? कैसे उनकी बुद्ध ईसा मसीह तथा दयानन्द आदि के साथ तुलना की जा सकती है ?

महात्मा जी के इस प्रकार के लेखो, भाषणो से सर्व साधारण जनता बहुत भ्रम मे पडी। इसमे सन्देह नही। कि जो कुरान की आयतें महात्मा जी ने प्रार्थना मे पढी हैं (उनका अनुवाद ख्वाजा हसन निजामी) के शब्दो मे इस प्रकार हैं कि—

हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह ही को योग्य है जो सर्व संसार का पालन करता है और जो बड़ा कृपालु है, कर्मों के मिलने वाले दिन का मालिक अर्थात प्रलय के दिन का बादशाह है। हम तेरी ही स्तुति करते हैं और तुझसे ही सहायता मांगते हैं। हमे सीधा मार्ग दिखा उन लोगो का मार्ग जिन पर तूने कृपा की और अपने प्रदान से उनको हिस्सा दिया। उनका नही जिन पर क्रोध किया गया अर्थात् जो बेराह हैं और उनका जो मार्ग से भटके हुए हैं। और ये दोनो समूह आज्ञा न मानने के कारण तेरे क्रोध भाजन बनते रहते हैं) कुरान पृ० २) स्वय विशेष आक्षेप योग्य नही, विशेष आक्षप योग्य नही, विशेष इस लिए कि इसमे भी खुदा को प्रलय के दिन का बादशाह माना गया

(शेष पृष्ठ ४ पर)

उग्रवादी सगठनों ने शिरोमणि कमेटी को धमकाया

अमृतसर, १३ सितम्बर (जनसत्ता)। तीन प्रमुख उग्रवादी सगठनों ने शिरोमणि गुरद्वारा प्रबन्धक कमेटी को चेतावनी दी है कि वह आगे से चारों मुख्य ग्रन्थियो के खिलाफ कोई बयान न दे। पंथिक कमेटी, खालिस्तान कमाडो फोर्स और आल इण्डिया सिख स्टूडेंटस फेडरेशन (गुरजीत गुट) ने अलग अलग बयान जारी कर प्रबन्धक कमेटी को धमकाया है कि प्रबन्धक कमेटी ने मुख्यग्रन्थियो की अब अगर आलोचना की तो मुह बन्द कर दिया जाएगा।

बयानो मे प्रबन्धक कमेटी को मुख्यमन्त्रियों की आलोचना के लिए कोसा गया है और कहा गया है कि यह बयान केन्द्र सरकार के इशारे पर दिया गया है। तीन सगठनो ने जनवरी १९८६ के सरबत खालसा का जिक्र करते हुए कहा था कि उस समय प्रबन्धक कमेटी भग कर दी गई थी और मुख्य ग्रन्थियो की नियुक्ति का काम सरबत खालसा के जरिए तय हुआ था। इसके बाद प्रबन्धक कमेटी या किसी और सगठन के हाथ मे कुछ नही रहा। बयान मे कहा गया है कि २३ जनवरी को प्रबन्धक कमेटी ने पाच मुख्य-ग्रन्थियो का चुनाव किया था और तीन दिन बाद हुए सरबत खालसा में इसे मन्जूरी दी गई थी। चारो मुख्यग्रन्थियो और उग्रवादियों के एक तरफ हो जाने और प्रबन्धक कमेटी के अलग पड जाने पर भी स्वर्ण मन्दिर के सराय क्षेत्र मे आज कामकाज सामान्य ढग से चलता रहा। इसी इलाके मे प्रबन्धक कमेटी का दफ्तर है। प्रबन्धक कमेटी के सेक्रेटरी मानसिंह जरूर दफ्तर नही आ रहे और घर पर ही दफ्तर का काम देख रहे हैं। उन्होने छह महीने की छुट्टीके लिए दरखास्त दी थी पर प्रबन्धक कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष हरिचरसिंह तरनतारनी ने उनकी छुट्टिया मन्जूर नही की।

पंथिक कमेटी का हाथ से लिखा पर बिना दस्तखत किया जो बयान जारी किया है उसमे चारो मुख्यग्रन्थियो द्वारा की गई कार्यवाहक जत्थेदार दर्शनसिंह रागी और अकाली नेतृत्व की खिचाई को जायज ठहराया गया है। स्वर्णमन्दिर के मुख्यमन्त्री पूरनसिंह ९ सितम्बर को हुई प्रेस कान्फ्रेंस मे रागी और अकाली नेतृत्व की खिचाई शुरू होने से पहले ही उठ कर चले गए थे।

खालिस्तान कमाडो फोर्स और पंथिक कमेटी दोनों ने प्रबन्धक कमेटी को केन्द्र सरकार का एजेंट बताया है और कहा है कि कमेटी ने सरकार के इशारे पर मुख्यग्रन्थियो के खिलाफ बयान दिया। तीनों सगठनों का दावा है कि मुख्यग्रन्थियों ने जो सितम्बर को जो बयान जारी किया उसका सिखो ने तहेदिल से स्वागत किया है और अकाली नेताओं समेत प्रबन्धक कमेटी अपने आप अलग अलग पड गई है। पंथिक कमेटी के अलावा बाकी दोनों सगठनो के बयान भी हाथ से लिखे हुए हैं। खालिस्तान कमांडो फोर्स की विज्ञप्ति में भी जारी करने वाले का नाम नही है जब कि सिख स्टूडेंट्स फेडरेशन की विज्ञप्ति उसके कार्यकारी अध्यक्ष गुरजीतसिंह के नाम से जारी हुई है।

९ सितम्बर की प्रेस कान्फ्रेंस मे मुख्यग्रन्थियों ने सिखों से अपील की थी कि वे 'गुलामी की जजीर' तोडने के लिए नौजवानों की मुहिम को पूरा समर्थन दे। इसमें दर्शनसिंह रागी को मैदान छोडकर भागने वाला जनरल और अकाली नेतृत्व को नपुसक बताते हुए कोसा गया है।

प्रबन्धक कमेटी की तारीफ—इधर विभिन्न क्षेत्रों में प्रबन्धक कमेटी के रवैए की तारीफ की गई है जब कि कई नेताओ ने इसे 'उन लोगों का अन्दरूनी मामला' बता कर चुप्पी साध ली है।

गांधी जी की प्रार्थना

(पृष्ठ ३ का शेष)

है और उसके क्रोध का भी वर्णन है तथा यजुर्वेद अ० ४० के सुप्रसिद्ध मन्त्र - (अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्०) अर्थात् हे ज्ञान स्वरूप प्रभू! हमें सब प्रकार की प्राप्ति के लिये सदा उत्तम धर्म मार्ग पर चलाके साथ कुछ समानता है तथापि यह भय अवश्य है कि लोग कुरान आदि की दूसरी आयतों को भी वैसे ही मान्य न समझने लग जाय जिससे बडी हानि की सम्भावना है। म० गाधी की सब मतो की समानता पर अत्यधिक बल देने से यह सम्भावना और भी अधिक बढ जाती है। अत हमें यह स्वीकार करते हुए भी जैसा कि महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि सब मतो मे कई सच्ची तथा अच्छी बातें हैं हिन्दू मन्दिरो मे कुरान की आयतो को वेद, उपनिषद् गीतादि के साथ पढने की प्रवृत्ति वाछनीय नही प्रतीत होती है। हां ऐसे वाक्यों का महात्मा जी प्रयोग करते अपने प्रवचनो में तुलनात्मक रूप से तो कोई हानि नही। इसी से भ्रम फैलाने वाले भाषणों मे सदा ही आर्य हिन्दू अपने अपमान का घूट न पीकर विपरीत भाव से उन विचारो का विरोध करने को तत्पर होता है। जिसका सदा ध्यान रखने की आवश्यकता रही हैं और रहेगी। तभी सच्ची प्रार्थनायें भी हो सकेंगी।

अलग देश पंजाब नहीं होने देंगे

गुलशन को बरबाद नही होने दगे।
कातिल को आजाद नही होने देगे॥
जो अपने को भारत का दुश्मन कहता।
लूट और हत्या में जिसका मन रहता॥
फूट डालने वालो को अपना कहता।
देश विरोधी जालसाजियो को सहता॥
नही प्रेम से देशवासियो में रहता।
मा के टुकडे टुकड करने को बैठा॥
आग लगाता निरपराध जान लेता।
हरी भरी भूमि को राख बना देता॥
भारत मे जेहाद नही होने दगे।
देश द्रोह सम्वाद नही होने दगे॥
गुलशन को बरबाद नही होने देगे।
कातिल को आजाद नही होने देगे॥
आज जुबानो पर ताले जो लगा रहे।
मासूमो के खून से होली मना रहे॥
सविधान को फाड़-फाड़ कर जला रहे।
बैंक लूट कर अपने घर को सजा रहे॥
देश भक्त पर गोली, गोले चला रहे।
बस्ती को वीराना जगल बना रहे॥
खालिस्तानी नारे सब में लगा रहे।
अलग देश और कौम जो अपनी बना रहे॥
पूरी आज मुराद नही होने देगे।
मा का नष्ट सुहाग नही होने देगे॥
गुलशन को बरबाद नही होने देगे।
कातिल को आजाद नही होने देगे॥
भारत के जो नहीं नागरिक कहलाते।
नही देश के मूल निवासी रह जाते॥
अलग रियासत बनें यही बस चिल्लाते।
औरो का हक छीन-छीन कर खा जाते॥
खत्म हुए उनके सब ही रिश्ते नाते।
नही देश के साज बाज उनको भाते॥
उनसे पूछो वे फिर किस के रह जाते।
खालिस्तानी झण्डा क्यो वे लहराते॥
नया देश आबाद नही होने देगे।
अलग कभी पजाब नही होने देगे॥
गुलशन को बरबाद नही होने देगे।
कातिल को आजाद नही होने देगे॥

—डा० रविदत्त शर्मा आचार्य
हिसार (हरियाणा)

अमृतसर से लेकर कोचीन तक हिन्दी ही हिन्दी

मुखर सांसद, इतिहासवेत्ता और साहित्यकार नरेशचन्द्र चतुर्वेदी

भारतीय संविधान में, भाग १७ में अनुच्छेद ३४३ से लेकर ३५१ तक जो धाराएं रखी गई हैं, उसमें राजभाषा हिन्दी, उसकी लिपि देवनागरी, उसके अंक, अन्तर्राष्ट्रीय-भारतीय अंक, ये सब स्पष्ट निर्देश दिए हुए हैं कि वह किस तरह से प्रयोग होगी और कैसा रूप ग्रहण करेगी, इसके सम्बन्ध में भी ३५१ में बहुत स्पष्ट उल्लेख किया गया है। यह भी उल्लेख किया गया है कि संस्कृत से मूलत: और भारतीय भाषाओं से गौणत: शब्द ग्रहण करेगी, जो हमारी राजभाषा है, लेकिन हिन्दी के सम्बन्ध में कुछ भ्रम ऐसे फैला दिए गए हैं कि उनका स्पष्टीकरण बहुत जरूरी है।

सबसे पहली बात तो यह कही जाती है कि हिन्दी का सम्पर्क भाषा के रूप में विकास किए बिना, उसमें काम करना असम्भव होगा। संक्षिप्त इतिहास के जाने बिना हमारे सविधान का मूलधारा और धारणाओं का स्पष्टीकरण नही हो सकेगा। जब बारहवीं शताब्दी में संस्कृत राजभाषा नही रह गई थी और उन्नीसवीं शताब्दी के पहले तक अंग्रेजी में कोई सम्पर्क नहीं हो सकता था, तब इन सात सौ वर्षों में रामेश्वरम से लेकर बद्रीनाथ तक जाने वाले लोग और द्वारकापुरी से जगन्नाथपुरी तक जाने वाले लोग किस भाषा का इस्तेमाल करते थे, यह बात हमको बहुत स्पष्ट हो जानी चाहिए कि वह भाषा हिन्दी ही थी, जो सात सौ वर्षों से लगातार इस देश की सम्पर्क भाषा के रूप में काम करती रही है। जिस राजभाषा या राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को हम जानते हैं, उसका उन्नयन, उसका बढ़ावा और राष्ट्रभाषा के रूप में उसकी मांग किसी हिन्दी वाले ने नहीं की थी, यह बात हमको बहुत अच्छी तरह से जान लेनी चाहिए। सबसे पहले बंगाल को यह श्रेय है कि उसने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। सन् १८३८ में राजा राममोहन राय ने,१८७५ में श्री केशवचन्द्र सेन ने और १८७८ में बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, रवीन्द्रनाथ टैगोर, सुभाषचन्द्र बोस, इस सब लोगों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान कर सबसे पहले देश का ध्यान आकर्षित किया। १८७५ में केशवचन्द्र सेन ने कहा था—'अगर हम हिन्दी को नहीं अपनायेंगे तो राष्ट्र की एकता को नहीं बना पायेंगे।' १८७८ में अपने 'बंग दर्शन' में बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने एक कालम में लिखा कि 'अगर हम सब भारत की एकता और भारत को विकसित करना चाहते हैं तो हमको हिन्दी को अपनाना पड़गा।' सुभाषचन्द्र बोस ने कलकत्ता कांग्रेस के अवसर पर स्वागत भाषण करते हुए कहा — 'बंगाल को इस बात का गौरव और गर्व है कि उसने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में बढ़ावा दिया है।' मैं आपसे बहुत ही विनम्रता के साथ निवेदन करना चाहता हूं कि दक्षिण के आचार्यों के बिना हिन्दी में कुछ हो नहीं सकता था। आज जो राधा-कृष्ण, राम-सीता, कबीर और तुलसी की पूजा होती है, यह हमारे दक्षिण के आचार्यों की देन है। कौन नहीं जानता कि वल्लभाचार्य दक्षिण के थे। राधाकृष्ण की पूजा और कृष्ण का भक्ति साहित्य यह सब दक्षिण की देन है, दक्षिण की विचारधारा की देन है। रामानुजाचार्य, उनके शिष्य रामानन्द और रामानन्द के शिष्य कबीर के द्वैत-अद्वैत के सिद्धान्त को, जो भी सोलहवीं सदी में हिन्दी साहित्य मे आया, वह सब दक्षिण के आचार्यों की देन है। रामानुजाचाय, वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य और माध्वाचार्य, इन चारों लोगो की विचारधाराओं को आप देखें और इससे पहले केरल के कालड़ी में जन्मे हुए आदि आचार्य शंकर, जिन्होंने सम्पूर्ण भारत को सांस्कृतिक और धार्मिक एकता देकर पूरे देश का निर्माण किया था, अद्वैत के नाम पर आठवीं शताब्दी में उन्होंने जी कुछ भी दिया, हिन्दी में वही साहित्य मौजूद है। मेरा आपसे निवेदन है कि आठ सौ वर्षों से जिस हिन्दी ने सम्पर्क भाषा के रूप में सारे देश का ध्यान आकर्षित किया और बंगाल, जिसने आधुनिक भारत के निर्माण का सबसे पहले काम शुरू किया, उसने हिन्दी की राष्ट्रभाषा के रूप में शुरू कराया। आपको यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि सबसे पहले बंगाल ने राष्ट्रभाषा के आन्दोलन का नेतृत्व किया, उसके बाद नेतृत्व किया, आधुनिक भारत के महाराष्ट्र में। लोकमान्य तिलक जैसे नेताओं ने हिन्दी का समर्थन किया। महात्मा गांधी को कौन नहीं जानता। जिन्होने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में व्याख्यायित किया। यह भी जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि भारतीय संविधान में आज जब थोड़े-थोड़े विरोध के स्वर उठते हैं तो मुझे कहना पड़ता है कि भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा किसने बनाया। तमिलनाडु के डा० गोपालस्वामी आयंगर ने संविधान के भाग सत्रह को स्वीकृत कराया था। अहिन्दी क्षेत्रों ने ही उसका समर्थन किया था। हिन्दी संस्कृतमयी, हिन्दी देवनागरी, इसका समर्थन संविधान परिषद में हिन्दी के क्षेत्रों से कम हुआ था। यह लोगों को मालूम नहीं है कि उत्तर भारत के अनेक सदस्यों ने हिन्दुस्तानी के पक्ष में मत दिया था और सम्पूर्ण दक्षिण तथा गैर हिन्दी क्षेत्रों ने हिन्दी और देवनागरी के पक्ष में मत दिया था, तब भारतीय संविधान में हिन्दी राजभाषा और देवनागरी लिपि हुई थी।

आपको यह जानकर भी सुखद आश्चर्य होगा कि इसी सदन को सम्बोधित करते हुए श्री के० हनुमंतैया ने कहा था और प० नेहरू जी से ही कहा था कि पडितजी जो हिन्दी आप बोलते हैं,वह हमारी समझ में नहीं आती, दक्षिण उसको स्वीकार नहीं करेगा, लेकिन जो हिन्दी प्रकाशवीर शास्त्री बोलते हैं, वह हिन्दी दक्षिण को हमेशा स्वीकार होगी।' लेकिन हिन्दी के स्वरूप के बारे में, उसके दृष्टिकोण के बारे में, आज में हिन्दी गद्य के इतिहास की बात इसलिए बताना चाहता हूं कि लोगों को मालूम होना चाहिए कि आधुनिक हिन्दी, जिसे हम राष्ट्रभाषा कहते हैं, इसका गद्य कहां से शुरू होता है। यह आंध्र के तेलंगाना से शुरू होता है, तेलंगाना के मुस्लिम लेखकों ने इसको बढ़ाया है। आधुनिक हिन्दी गद्य की स्थापना उन मुस्लिम लेखकों से होती है, जिसे हम दक्खिनी हिन्दी के नाम से जानते हैं और आधुनिक हिन्दी के जिस गद्य को हम अपनाते हैं, उसकी शुरुआत करने वाले ईशा अल्ला खां साहब थे।

हिन्दी की तीन स्थितियां हैं। एक हिन्दी मातृभाषा है, एक हिन्दी राष्ट्रभाषा है और एक हिन्दी राजभाषा है। राष्ट्रभाषा के रूप में, सम्पर्क भाषा के रूप में हम हिन्दी के बारे में क्या करेंगे, वह तो हिन्दुस्तान के सभी लोग करेंगे, करोड़ों लोग कर रहे हैं और करेंगे। मातृभाषा के रूप में कोई अवधी का रूप बोलता है, कोई बृजभाषा के रूप में कोई अवधी का रूप बोलता है और कोई बुन्देली इत्यादि का रूप बोलता है, लेकिन राजभाषा के रूप में भारत सरकार की जिम्मेदारी है और राजभाषा के सम्बन्ध में हमारे सविधान में भाग १७ में ३४३ से लेकर ३५१ तक जो रूप निर्दिष्ट किया गया है, आपको उसका काम करना है, लेकिन सरकार की ओर से बार-बार यह कहा जाता है कि पहले हिन्दी को विकसित करना है, हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित करना है। मैं कहना चाहता हूं कि सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दुस्तान के करोड़ों लोग जिस भाषा का व्यवहार करते हैं और करेंगे, वह हिन्दी ही है। आज भी अमृतसर से जो ट्रक चलता है, उसमें ड्राइवर और क्लीनर चलते हैं, जब वह कोचीन तक ट्रक लेकर चलते हैं वह किसी भाषा के माध्यम से सम्पर्क करते हैं, उनकी सम्पर्क भाषा कौन-सी होती है? क्या यह कहने की जरूरत है? करोड़ों लोग जो हिन्दुस्तान के एक कोने से

दूसरे कोने तक जाते है, वह लोग किस भाषा के माध्यम से सम्पर्क करते हैं, क्या हिन्दी के अलावा कोई दूसरी भाषा है ?

एक बात मैं और कहना चाहता हूं कि मुसलमानो का जितना योगदान हिन्दी के बारे मे है, उतना हिन्दी वाले भी गर्व नही कर सकते। कौन नही जानता कि तुलसीदास को जो पढे वह अब्दुर्रहीम खानखाना को न पढे, सूर को पढे और रसखान को न पढे, घनानन्द को पढे, बिहारी को पढ और शेख, आलम और जायसी को न पढे, तो साहित्य का उसका अध्ययन पूरा नही हो सकता। कौन नही जानता कि तुलसीदास के रामचरित मानस से ४० साल पहले जायसी ने पद्मावत लिखी थी, उसकी चौपाई और दोहे की जिस शैली को तुलसीदास ने अपनाया, रामचरितमानस मे जो शिल्प दिया हुआ है, वह जायसी जैसे मुसलमान कवि का है।

यह मामला इतना नाजुक है कि ऐसी चीजो को सामने आना चाहिए। हिन्दी को बनाने वाले मुख्यत मुसलमान और गैर हिन्दी क्षेत्र वाले हैं। आज जो भारतवर्ष के सविधान की भाषा है, उसके बारे मे नई-नई बाते गढ दी जाती हैं तो मुझ दु ख होता है। कभी कहा जाता है एक मत से हिन्दी राष्ट्रभाषा हुई कितना बडा भ्रम है। यहा की लाइब्रेरी मे सारी सविधान सभा की कार्रवाई रखी हुई है। लोगो को मालूम नहीं है कि एकमत से हिन्दी और हिन्दुस्तानी के नाम का निर्णय हुआ था काग्रेस के दल मे लेकिन सविधान सभा मे सर्वसम्मति से हिन्दी राष्ट्र भाषा बनाई गई थी कही पर कोई मतभेद नही हुआ था कही कोई रोष या विरोध नहीं था आज इन सब बातो को लेकर कुछ चीजे उलझाई जाती हैं। मेरी शिकायत है कि सारी चीजो को तथ्यो को समझे बिना बहुत-सी बाते कही जाती हैं। जब कहा जाता है हिन्दी किसी पर थोपी नही जाएगी तो मुझ बहुत दु ख होता है।

मुझ दु ख होना है कि अगर सम्पूर्ण सविधान लादा हुआ है तो सविधान का भाग १७ कैसे लादा हुआ है। कैसी बात आप कहते हैं कि हिन्दी लादी नही जाएगी या हिन्दी थोपी नही जाएगी। भारतीय सविधान के २२ भागों में से २१ भाग तो लागू हैं परन्तु एक भाग के बारे मे आप कैसे कहते हैं कि उसे लादा नहीं जाएगा। अगर सविधान लागू है तो हिन्दी राजभाषा भी लागू है। अगर सविधान लादा हुआ है तो हिन्दी राजभाषा को भी लादा हुआ है, लेकिन जैसी कि हमारी काग्रेस की यह परम्परा रही है कि बहुमत के आधार पर कोई भी काम जबदस्ती नही किया जाएगा और ऐसा काम हम अब भी नही करेंगे। सविधान से स्पष्ट निर्देश था कि ५ वर्ष बाद एक कमीशन बनाया जाएगा, लेकिन वह ९ साल बाद बना। उसके बाद दो कमीशन क्रमश १९५५, १९६० और १९६५ में बनाए जाने थे, लेकिन तीन मे से केवल एक बना और उसकी रिपोर्ट भी १९६० मे जाकर आई। शेष दो १९६० और १९६५ के कमीशन बने ही नही। जब सविधान लागू हो गया और राजभाषा हिन्दी हो गई तो अहिन्दी भाषी राज्यों की ओर से एक आवाज उठी कि १५ वर्षों से हम अग्रेजी को हटाकर पूरी तरह से हिन्दी नही सीख सके है। अत १९६३ मे पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने इसी सदन में एक दूसरा राजभाषा अधिनियम पास किया, क्योकि सविधान मे स्पष्ट निर्देश था कि १५ साल के बाद २६ जनवरी १९६५ को हिन्दी सारे देश की राजभाषा हो जाएगी। इसीलिए उसमे सशोधन हुआ कि अग्रेजी तब तक इस देश में चलेगी, जब तक कि हिन्दी उसका पूरा-पूरा स्थान न ले ले। इस १९६३ के निणय के बाद १९६७ में एक और सशोधन हुआ और उसके बाद १९७६ मे इन्दिरा गाधी ने राजभाषा की नीति के सम्बन्ध मे स्पष्ट आदेश दिलवाए थे और एक अधिनियम पास किया था, जिसको देखकर हमे बहुत खुशी हुई क्योकि अब किसी आदमी को कुछ कहने का शिकायत करने का मौका नही रह गया था। उन्होने सम्पूर्ण देश के विभिन्न राज्यो को तीन भागो में बाट दिया और स्पष्ट रूप से सरकार को निर्देश दिए गए कि 'क' वर्ग के राज्यो के साथ जिसमे उत्तर प्रदेश बिहार, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश और केन्द्र शासित दिल्ली प्रदेश आदि हिन्दी क्षेत्र में आते हैं? केवल हिन्दी मे ही काम होगा, 'ख' वर्ग के राज्यो के साथ, जिनमे गुजरात महाराष्ट्र, बगाल, उडीसा आदि प्रदेश थे, यदि वे चाहेंगे तो हिन्दी मे काम होगा तथा 'ग' वर्ग के राज्यो के साथ जिनमे शेष भारत के राज्य आते हैं, उनके लिए यह कहा गया था कि यदि वे चाहेंगे, तब उनके साथ हिन्दी मे पत्र-व्यवहार किया जाएगा। यदि उनके किसी दूसरे प्रदेश या केन्द्र से दूसरी भाषा मे कोई चीज जाएगी तो उसका अग्रेजी अनुवाद साथ जाएगा। दूसरे उन्होने यह भी निर्देश दे रखे थे कि हिन्दी भाषी राज्यो कोई पत्र अग्रेजी मे भेजा जाता है तो उसका हिन्दी अनुवाद भी साथ जाएगा ? लेकिन आज हम देखते हैं कि स्थिति उल्टी है। आज स्थिति यह है कि केवल अग्रेजी भौका मे ही सारा पत्र व्यवहार हो रहा है।

(क्रमश)

संस्कृत: अन्तर्राष्ट्रीय भाषा

—ब्रह्मदत्त स्नातक—
सी ४ बी० ३३२ बी० जनकपुरी, दिल्ली

हिन्दी कभी राजभाषा और राष्ट्रभाषा बनेगी, यह किसी को अब से २०० वर्ष पहले कल्पना भी नहीं थी, परन्तु वह आज उस पद पर सम्मान पूर्वक प्रतिष्ठित है। सारे देश में हिन्दी को सीखने की चाह है और उसको शुद्ध रूप में जानना आवश्यक हो गया है। यह निर्विवाद है कि अच्छी हिन्दी अथवा शुद्ध हिन्दी के परिज्ञान के लिये सस्कृत का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे भी स्थान ग्रहण करने के लिये सस्कृत का आश्रय लेकर आगे बढना होगा। पजाबी, गुजराती मराठी, उडिया, आसामी, के अतिरिक्त दक्षिण की चारो भाषाए मलयालम, कन्नड, तमिल और तेलगु भी सस्कृत से ही प्रेरणा ग्रहण करती हैं। और उनमे से कुछ तो ८० प्रतिशत शब्द सस्कृत से तत्सम रूप में ग्रहण करती हैं। आज भी काश्मीर को कन्या कुमारी एव सुदूर कच्छ को आसाम प्रान्त से और उत्तुङ्ग हिमालय को दक्षिण विन्ध्याचल से जोडने, सयुक्त करने वाली सास्कृतिक शृ खला सस्कृत ही है। दक्षिण के आचार्य शंकर, माध्व और रामानुज ने उत्तरा पथ का विजय इस सस्कृत भाषा के द्वारा ही किया था। आज भी सस्कृत भाषा तीस कोटि भारतीयो के जन्म और जन्म से भी पूर्व गर्भाधान से लेकर मृत्यु और मरणोत्तर सस्कारो द्वारा अपना अच्छेद्य शाश्वत सम्बन्ध प्रकट कर रही है। भाषा विज्ञान शास्त्रियो के अनुसार ससार के विशाल भूभाग पर वर्तमान आय भाषाओ को समवाय सम्बन्ध सस्कृत से ही जुडता है।

सस्कृत का वर्तमान स्वरूप कितना प्राचीन है इस विषय की गहनता को एक ओर रखते हुए यह तथ्य विशेष रूप से ग्रहण कर लेना चाहिए कि सस्कृत सुदूर भूत मे ही मण्डन मिश्र के घर की "कीरांगना यत्र गिर गिरन्ति" वाली लोक भाषा नही रही है अपितु आज भी उसका जीवित प्रभाव हमारे दैनिक व्यवहार और मानस पट पर अकित विभिन्न रेखाचित्रो से ज्ञात होता है। प्रातीय भाषाओ के साहित्य मे से यदि सस्कृत की पृष्टभूमि निकल जाय तो उनकी काव्य निझरिणी का रव सुनना हो तो दूर, उनकी सत्ता भी दृष्टि से ओझल हो जायगी। भारत के भू भागो की बात छोडिये अपितु सुदूर दक्षिण पूर्वी एशिया के श्री लका, ब्रह्मा, स्याम, कम्बोडिया, जावा, सुमात्रा, इन्डोनेशिया तथा चीन-जापान जैसे अन्य देश भी अपनी सस्कृतियो का पोषण अतीत और वर्त्तमान मे भाषा जननी सस्कृत से करते रहे हैं। तथ्य की दृष्टि से सस्कृत आज भी एक अन्तराष्ट्रीय भाषा है।

पारसियो की धर्म पुस्तक अवस्ता की भाषा तो सस्कृत से मिलती जुलती है, परन्तु मुसलमानो की धार्मिक आपत्ति का मिथ्या आवरण दिखाकर सस्कृत को जो शासकीय प्रश्रय नही मिल रहा वह सर्वथा भ्रमपूर्ण है। विभिन्न प्रान्तो के मुसलमान आज भी प्रान्तीय भाषाओ मे बहुलता से व्यवहार किये जाने वाले सस्कृत के तत्सम और तदभव शब्दो को भली प्रकार ग्रहण और व्यवहार करते हैं। सेना के लिए 'वाहिनी' शब्द बगला देश के मुसलमानो में प्रयुक्त होता है। शत प्रतिशत मुसलमानो के राजनीतिक समुदाय का 'कृषक प्रजा दल' नाम सस्कृत के ज्वलन्त प्रभाव को दर्शा रहा है। इस सम्बन्ध से आज के प्रसिद्ध बगला कवि नजरुल इस्लाम और हिन्दी के प्राचीन कवि रहीम की सस्कृतमयी पद्य रचना से शतश उदाहरण दिये जा सकते हैं। मुसलमान शासको मे सबसे अधिक धर्मान्ध मुहम्मद गोरी के सिक्के पर नागरी मे खुदा हुआ 'अव्यक्तमेक मुहम्मद अवतार नृपति महमूद' तथा दूसरी ओर खुदा हुआ 'अय टक महमूदपुर (लाहौर) घटिने हिजरियेन सम्वति ४१८' वाक्याश सस्कृत के व्यापक और सम्प्रदाय पक्षपात विहीन चरित्र की ओर निर्देश करता है।

विचारको का ध्यान भारत द्वारा राजनीतिक स्वतन्त्रता पाने के पश्चात् अब उसका सास्कृतिक अभ्युत्थान करने की ओर लगा है। सस्कृत का अध्ययन उसकी पहली सीढी है। लेखको ने प्रस्तुत उद्देश्य की सिद्धि के लिये ही पुस्तक की रचना की है। सस्कृत को लोक भाषा बनाने के लिये और इतना ही नही अपितु आदश हिन्दी के ज्ञान के लिये भी सस्कृत अध्ययन करने की विधि को सरल और सुगम बनाना नितान्त बोधनीय है। धार्मिक दृष्टि से तो वह अत्यन्त ग्रहणीय है ही। आचार्यवर पाणिनि परिबद्ध करके सस्कृत को जिस प्रणलिका-मार्ग से ले गये हैं, उसको आज के कोमलमति छात्रो और सस्कृताध्ययन के अभिलाषियों के लिये सुकरातिसुकर बनाना अत्यन्त उपयोगी है। विश्व मे अग्र जी के प्रसार के लिये जिस बेसिक इ ग्लिश' का निर्माण शिक्षा शास्त्रियो ने किया, सस्कृत के धारावाही विस्तार के लिये कुछ कुछ वैसा ही प्रयत्न बडे आधार पर किया जाना आवश्यक है।

पर्व विचार

—बाल मुकुन्द शर्मा —

आर्य जगत मे संवत्सर का प्रथम दिवस विशेष महत्व रखता है। इस दिन हमारे दो पर्व पड़ते हैं (१) नव संवत्सरेष्टि (२) आर्य समाज स्थापना दिवस। ये दोनों पर्व चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को मनाये जाते हैं। आगामी संवत् २०४५ वि० चैत्र शुक्ला प्रतिपदा पचांगों मे लुप्त है। चैत्र शुक्ल २ को शनिवार है और पूर्व दिवस शुक्रवार को चैत्र कृष्ण १० (अमावस्या) संवत् २०४४ वि० है। अब प्रश्न है कि उपरोक्त दोनों पर्व मनाए जाए तो कब? शुक्र अमावस्या को या शनि द्वितीया को ?

ऐसी ही समस्या उन व्यक्तियों का जन्म दिवस मनाते समय सम्मुख होती है जिनका जन्म २९ फरवरी का होता है जैसे भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई जी का। ऐसी स्थिति मे तो स्पष्ट है कि यदि लीप वर्ष नही है तो २८ फरवरी और १ मार्च के बीच २९ फरवरी एक क्षण के लिए भी नही होगी अत उन्हें अपना जन्म दिवस या तो बिना मनाए रहना पड़ेगा अथवा एक दिन पूर्व २८ फरवरी को या एक दिन पश्चात १ मार्च को मनाना पड़ेगा। तीनो रीतियो मे से कोई भी वैज्ञानिक नही कही जा सकती।

अब भारतीय तिथि पर विचार करते हैं। सर्वप्रथम हमे यह जानना चाहिए कि जैसे ख्रास्ती शैली में दिन और दिनांक मध्य रात्रि से आरम्भ होते हैं वैसा भारतीय शैली मे नही है। दिन गण तो मध्य रात्रि से ही आरम्भ होता है जिसे अहर्गण कहते हैं परन्तु तिथि सूर्य चन्द्र से बने कोण के समय पर निर्भर करती है अर्थात शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पृथ्वी पर के स्थान विशेष से सूर्य चन्द्र से बने शून्य अंश कोण से आरम्भ होती है और १२ अंश पर समाप्त होकर द्वितीया आरम्भ हो जाती है। इसी प्रकार से बारह अंश के अन्तर से समस्त तिथियां समझनी चाहिए।

यह कोण प्रात ६ बजे भी हो सकता है, मध्यान्ह १२ बजे भी, रात्रि के २ बजे भी जिसे प्रत्यक्ष कोणमापी यन्त्र से भी मापा जा सकता है और ज्योतिष सम्बन्धी सौर चान्द्र गति की गणना के द्वारा भी ज्ञात किया जा सकता है। दूसरा तथ्य यह भी जानने योग्य है कि पचांग पुस्तिका में सूर्योदय कालीन स्थान विशेष का ही पचांग अंकित होता है।

अब आपको उदाहरण से उपरोक्त प्रश्न का उत्तर समझने के लिए स० २०४४ और स० २०४५ के पचांग अपने सामने रखने चाहिए। "कालचक्र आर्य पचांग स० '२०४४" का अन्तिम वार शुक्रवार है चैत्र कृष्ण ३० (अमावस्या) तिथि है जो ३ घड़ी १२ पल अर्थात् (३।१२)×२/५=१/१७ घंटे या १/१७+६।३४=७।५१ बजे प्रात तक वर्तमान रहेगी। इसके पश्चात् चैत्र शुक्ला प्रतिपदा आ जाएगी, दिवस शुक्रवार ही होगा।

"कालचक्र आर्य पचांग स० २०४५ वि० का प्रथम वार शनिवार है, चैत्र शुक्ल द्वितीया तिथि है जो ५३ घड़ी ३५ पल अर्थात (५३।३५)×२/५ २१।२६ घंटे या २१।२६ +६।३३ = २८ बजे या रात्रि ४ बजे तक वर्तमान रहेगी। इसके पश्चात् चैत्र शुक्ला तृतीया आ जाएगी दिवस रविवार हो जाएगा।

उपरोक्त कथन से स्पष्ट हुआ कि यद्यपि पचांग में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा उल्लिखित नही है परन्तु वह शुक्रवार प्रात ७ ५१ बजे से शनिवार प्रात ४ बजे तक रहेगी।

अत सिद्ध हुआ कि हमे अपने उपरोक्त दोनों पर्व संवत्सरेष्टि और आर्य समाज स्थापना दिवस शुक्रवार प्रात ७-५१ बजे राष्ट्रीय दिनांक २९ फाल्गुन ख्रास्ती दिनांक १९ मार्च को मनाने चाहिए। ऐसा ही हमने पचांग में संकेत से इंगित भी कर दिया है।

भविष्य के लिए भी इस प्रसिद्धि को ध्यान में रखना चाहिए कि पचांग मे जब किसी तिथि का लोप दिखाया गया हो तो उसे पूर्व तिथि में इसी प्रकार समझना चाहिए और जब कोई तिथि अधिक हो जाए तो प्रथम दिन ही को प्रमुखता देनी चाहिए। जैसे स० २०४४ वि० मे हरि तृतीया पर्व श्रावण शुक्ल ३ मंगलवार को था बुधवार को नहीं। इति

आर्य जगत् के समाचार

महर्षि की तपोभूमि कर्णवास

नई दिल्ली, २८ अगस्त १९८७

ध्यानयोगी स्वामी मुक्तानन्द जी सरस्वती को महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। समारोह मे भाग लेने २८ अगस्त १९८७ को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज के नेतृत्व मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रचारवाहनी द्वारा एक शिष्ट मण्डल कर्णवास पहुचा।

इसमे श्री सरदारी लाल वर्मा, उनकी धर्म पत्नी श्रीमती आशा वर्मा, आर्यसमाज हनुमान रोड के धर्माचार्य डा० रूपकिशोर एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सन्तोष तथा सुपुत्री सुमेधा, श्री नन्द लाल दुआ, और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी थो

स्वामी मुक्तानन्द जी महागज को सम्मान पूर्वक प्रचार वाहन मे स्थानीय लोगो के सहयोग से एक विशाल शोभायात्रा में महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास मे अध्यक्ष पद पर आसीन कराया गया।

महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास ग गा तट पर डिबाइ से ८ किलोमीटर की दूरी पर है, इस स्थान पर आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज १० बार पधारे थे। यहा उन्होने सैकडो राजपूतो को यज्ञोपवीत तथा वेदोपदेश दिया था। यही वह स्थान है जहा महर्षि के अकाट्य प्रमाणो से प्रभावित होकर श्री हीरा बल्लभ शास्त्री ने अपना ठाकुर पूजा का समान व अपनी मूर्तियां ग गा मे प्रवाहित कर दी थी। इसी पावन स्थली पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राव करण सिंह के तलवार के वार को विफल करके दो टुकडे का दिया था। तथा अपने ब्रह्मबल व छात्रबल कर परिचय दिया था।

डा० धर्मपाल
महामन्त्री

डा० भवानीलाल भारतीय षष्टिपूर्त्ति स्मारिका

आर्य समाज के प्रसिद्ध साहित्यकार, शोध विद्वान तथा सुपरिचित लेखक डा० भवानीलाल भारतीय जून १९८८ ई० में अपने जीवन के ६० वसन्त पूरे कर रहे हैं। इस अवसर पर 'डा० भवानीलाल भारतीय षष्टिपूर्त्ति स्मारिका' का प्रकाशन किया जा रहा है। डा० भारतीय दयानन्द जीवनी-साहित्य के अनथक अध्येता, तथा प्रामाणिक कृतिकार हैं। उन्होंने महर्षि दयानन्द, आर्य समाज तथा आर्य साहित्यकारो से सम्बन्धित लगभग ४ दर्जन ग्रन्थो का लेखन और सम्पादन किया है। आर्य समाज के सभी पत्र-पत्रिकाओ में वे निरन्तर लिखते रहते हैं और अभी भी उनकी लेखनी अवस्रगति से प्रवाहित हो रही है। आर्यजगत् के लेखको पाठको, सम्पादको आर्य सज्जनो तथा अधिकारियो से निवेदन है कि इस स्मारिका निमित्त अपना लेख, सन्देश शुभकामनायें तथा सहयोग देकर आर्य समाज के यशस्वी लेखक श्री भारतीय का अभिनन्दन करें।

पत्र व्यवहार का पता —
आर्य समाज अमेठी
पिन-२२७४०५
(उ० प्र०)

—डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री
प्रधान सम्पादक
डा० भवानीलाल भारतीय
षष्टि पूर्ति स्मारिका

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के शतवर्षीय इतिहास का लेखन

राजस्थान के आर्य जनो को यह जानकर हर्ष होगा कि हमारे प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा अपने यशस्वी जीवन के १०० वर्ष पूरे कर द्वितीय शताब्दी मे प्रविष्ट हो रही हैं। इस अवसर पर अन्य समारोह तो आयोजित किये ही जायेंगे। यह भी निश्चय किया गया है इस उपलक्ष्य मे सभा का शतवर्षीय इतिहास लिखकर प्रकाशित किया जाय। इतिहास लेखन के लिये जो समिति हमारी सभा ने गठित की है उसका सयोजक मुझे नियत किया गया है इतिहास मे गत १०० वर्षों की हमारी प्रान्तीय सभा की सभी गतिविधियों का सकलन, सम्पादन व लेखन किया जायेगा। इसमे आपका सहयोग नितान्त अपेक्षित है अत आपसे प्रार्थना है कि राजस्थान की आर्य-समाजो के अधिकारीगण अपनी आर्य समाजो की पुरानी वार्षिक रिपोर्टें तथा अन्य आवश्यक जानकारी अविलम्ब मुझे भेजें। उपयोग के अनन्तर यह सामग्री उन्हें सुरक्षित लौटा दी जायेगी।

—भवानीलाल भारतीय
बी-३ पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ १६००१४

आर्य युवकों की साईकिल द्वारा छः दिवसीय प्रचार यात्रा

आर्य समाज मन्दिर नया बास दिल्ली-६ के तत्वावधान मे २ अक्टूबर (शुक्रवार) प्रात ८ बजे से आर्य युवकों की छ दिवसीय साईकिल प्रचार यात्रा का आयोजन किया जा रहा है यह यात्रा दिल्ली से प्रारम्भ होकर फरीदाबाद, बल्लभगढ़, पलवल, होडल, कोसीकला, छाता, मथुरा होते हुए आगरा तक प्रचार करते हुए दिल्ली में समाप्त होगी। जाने के इच्छुक युवक, प्रचारक बन्धु सयोजक श्री नरेशपाल आर्य ७४२ चर्च मिशन रोड फतेहपुरी दिल्ली-६ दूरभाष २५२८०५८ से सम्पर्क करें।

पं० सेवाराम आर्य अस्पताल में

नई दिल्ली, अगस्त २८। रघुपुरा निवासी (आगरा) प० सेवाराम आर्य अपने घर से आकर गले के कैंसर का इलाज कराने स्थानीय सैनिक अस्तपताल मे दाखिल हैं। वहा उनके नीचे के होंठ और मुह गले का आपरेशन कर दिया गया है। ७२ वर्षीय प० सेवाराम आर्य वर्षों तक आर्य समाज दीवान हाल की ग्राम प्रचार मडली के साथ दिल्ली हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश क क्षत्रो मे वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे हैं आपरेशन के पश्चात मैंने भी उनको देखा था।

ब्रह्मदत्त स्नातक
जनकपुरी
सी ४ बी/११२ बी

आर्यसमाज की गतिविधियां

वेद प्रचार सप्ताह

—आर्य समाज भीमगंज मण्डी कोटा द्वारा १८ से २३-८-८७ तक सोत्साह वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। प्रो० बुद्धिप्रकाश जी के प्रवचन व श्री अमर सिंह जी के भजनोपदेश हुए।

—आर्य समाज तिजारा अलवर द्वारा वेद प्रचार सप्ताह ९ से १६ अगस्त तक समारोह पूर्वक मनाया गया श्री वेद मुनि वानप्रस्थी द्वारा वेदकथा हुई श्रीकृष्ण जन्माष्टमी बड़े धूमधाम से मनाई गई।

आर्यसमाज वमौल (नवादा) में वेदप्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया।

—आर्यसमाज पथरोट (अमरावती) में ९ से १६ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह बड़े धूमधाम से मनाया गया श्री नामदेव राम शास्त्री के प्रवचन हुए। इस अवसर पर १६ अगस्त को ईसाई प्रचारक श्री मनमोहन कसमकर को विधिवत हिन्दू (वैदिक) धर्म में प्रविष्ट कराया गया।

—आर्य समाज नया बास दिल्ली में वेदप्रचार के सम्बन्ध मे श्री आचार्य ओंकारनाथ प्रणव शास्त्री के वेद प्रवचन व श्री महेश जी के भजनोपदेश हुए। आर्य समाज के सेवक श्री ब मद जी को उनकी सेवाओं के लिए पुरस्कार रूप में पुरस्कार प्रदान किया गया।

—आर्य समाज परली बैजनाथ (बीड) में ३ से ९ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया श्री योगेन्द्र कुमार शास्त्री जम्मू के ब्रह्मात्व मे यज्ञ व प्रवचन तथा श्री प्रेमचन्द प्रेम के भजनोपदेश हुए।

—आर्य समाज दानापुर पटना के तत्वावधान मे ६ से १६ अगस्त तक समारोह पूर्वक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। आचार्य सत्यप्रिय मुनि (अलवर) के प्रवचन व शिवचर जी के भजन हुए प० त्रिगुणित शास्त्री ने यज्ञ के ब्रह्मात्व का कार्य सम्पादन किया।

—आर्य समाज कालका जी (नई दिल्ली) मे १७ से २३ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष मे स्वा० मुनीश्वरानन्द जी का प्रवचन व श्री गुलाब सिंह राघव के भजनोपदेश हुए।

—आर्य समाज काशीपुर (नैनीताल) मे वेद प्रचार सप्ताह मे श्री वीरमुनि वा प्रस्थी, स्वामी ओमानन्द जी के प्रवचन ९ से २३ अगस्त तक विभिन्न स्थानो पर आयोजित हुए।

—आर्यसमाज सिलीगुड़ी प्रभातनगर (दार्जिलिंग) में ८ से १६ तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। ब्र० अखिलेश्वर जी (हरियाणा) की वेद कथा की। श्री अवधविहारी दास के जादू के खेल दिखाए गए।

—आर्यसमाज शाहपुरा (राजस्थान) की ओर से ९ से १६ अगस्त तक मनाया गया। हर मोहल्लव मे प्रचार यज्ञ हुआ। हरिजनो के मोहल्लो मे भी आर्य समाज का प्रचार हुआ। नए सदस्य भी बनाए गए।

—केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् बाग कड़े खा दिल्ली शाखा के तत्वावधान मे वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया।

— आर्यसमाज हिवरखेड (अकोला) के तत्वावधान मे वेद प्रचार पृथक् पृथक् स्थानो पर यज्ञ प्रवचन के रूप में मनाया गया।

—आर्यसमाज पचपुरी गढवाल की ओर से वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया।

—आर्यसमाज सगरूर द्वारा वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया। स्वामी सत्यानन्द जी के प्रवचन व श्री सत्यपाल पथिक के भजन हुए।

—आर्यसमाज मानसा मण्डी (भटिण्डा) मे वेद प्रचार सप्ताह बड़ समारोह पूवक मनाया गया ओमप्रकाश आर्य के प्रवचन होते रहे।

—आर्यसमाज रामपुरा कोटा मे वेद प्रचार सप्ताह समारोह मनाया गया श्री शांतीप्रकाश वेद वागीश के प्रवचन व श्री अमरसिंह जी के भजनोपदेश हुए।

— आर्यसमाज दयानन्द मार्ग उदयपुर द्वारा वेद प्रचार सप्ताह बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया महात्मा आर्यभिक्षु जी (ज्वालापुर) के प्रवचन व विजयसिंह 'विजय' के भजनोपदेश हुए। इस अवसर पर समाज के तत्वावधान में प्राप्त भूमि (हिरननगरी सैक्टर ४ मे, २३ अगस्त को यज्ञशाला की आधारशिला दानवीर श्री हनुमानप्रसाद चौधरी द्वारा रखी गई इस यज्ञशाला का सारा व्यय श्री चौधरी साहब ने करने का सकल्प किया।

स्वामी अभ्युदयानन्द सरस्वती का देहान्त

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान बरेली निवासी स्वामी अभ्युदयानन्द सरस्वती का १६ जुलाई १९८७ को काशी में देहान्त हो गया। वे लगभग ९० वर्ष के थे।

बाल्यकाल से ही वे आर्यसमाज में सक्रिय हो गए। स्वाधीनता संग्राम में उन्होंने भाग लिया। अरबी, फारसी, हिन्दी, सस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं पर उनका अच्छा अधिकार था। बरेली कालेज, बरेली मे वे अंग्रेजी के प्रवक्ता रहे। उनका सन्यास से पूर्व का नाम (प्रो०) रघुनन्दन प्रसाद चौधुरी था। वे आजन्म ब्रह्मचारी रहे।

परमेश्वर और अध्यात्म मे रुचि के कारण लगभग ६१ वर्ष की अवस्था मे अष्टाध्यायी और महाभाष्य का अध्ययन करने श्री प० युधिष्ठिर जी मीमांसक के पास गए। महर्षि दयानन्द जी की पुस्तक 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' का अंग्रेजी में अनुवाद किया। पश्चात स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती के शिष्य बने तथा ऋषिकेश चले गये।

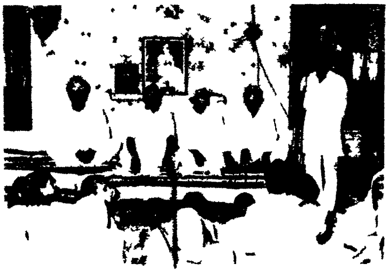
महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित 'सन्ध्या' का त्रिविध (आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक) भाष्य संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी मे किया। 'वैदिक उपासना योग' नामक यह वृहद ग्रन्थ आर्यसमाज सिवाथी कालोनी, रोहतक (हरियाणा) से प्रकाशित हुआ है। स्वामी जी का निधन एक अपूरणीय क्षति है।　—सन्तोष 'कण्व'

आर्य समाज एवं महिला आर्य समाज रेलवे रोड,

अम्बाला नगर की ओर से दिनाक २३-८-८७ को हुई विशेष बैठक पूज्य स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती के अकस्मात् निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।　—छमनलाल, मन्त्री



आयसमाज लोअर परेल बम्बई की ओर से आयोजित किया हुआ बक्षिस वितरण और सत्कार समारोह के अवसर पर सानाक्रज आयसमाज के उपप्रधान कैप्टन श्री देवरत्न आर्य सभाषण देते हुये छायाचित्र। बाय ओर बैठ हुये आयसमाज लोअर परेल सस्था के मन्त्री श्री मधुकर यादव प्रचारमन्त्री श्री शान्ताराम गोवलकर उपप्रधान श्री चन्द्रकान्त पुरदरे (पत्रकार) प्रधान श्री रामवस खेत्र (कामगार उपायुक्त) समारोह के अध्यक्ष श्री गुलाव जोशी (समाज-सेवक और महाराष्ट्र के कामगार आयुक्त श्री सी०टी० डिगरे।



आर्यसमाज वागपत मे वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर ब्र० देवव्रत मा० मुरारीलाल जी बाल दिवाकर हस आचाय शिवराज शास्त्री समाज मन्त्री श्री गौड।

सूखा पीड़ित आदिवासियों के लिए

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को १०० बोरी गेहूं दान

दिल्ली १५ अक्टूबर आय समाज रानी बाग दिल्ली की ओर से सूखा पीड़ित आदिवासी (भील गोंड सथाल) क्षेत्रों मे वितरित करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को १०० बोरी गेहूं का दान दिया। सार्वदेशिक सभा द्वारा मध्य प्रदेश मे ईसाई प्रभावित क्षत्रो के धर्मरक्षा अभियान के सम्बन्ध मे यह सहायता वितरित की जाएगी।

आर्य महिला सभा प्रतिनिधि मण्डल राष्ट्रपति से मिला

नई दिल्ली,

प्रान्तीय आर्य महिला सभा का एक शिष्ट मण्डल गत दिनो भारत के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति श्री आर० वकटरमण से उनके निवास स्थान पर मिला शिष्ट मण्डल की ओर से राष्ट्रपति जी को रक्षा बधन एव निर्वाचित होने की शुभकामनाय दी और उन्हे वैदिक साहित्य भी भट किया गया। राष्ट्रपति भाव विभोर होकर बहनो का धन्यवाद किया और अतिथि सत्कार के साथ ५००/ रुपए की राशि महिला सभा को भट की। —(प्रकाश आर्या) महा मन्त्रिणी

गढमुक्तेश्वर मेला वैदिक धर्म प्रचार

प्रतिवर्ष की भाति इसवर्ष भी आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला गाजियाबाद एव मेरठ की ओर से गगा मेला गढमुक्तेश्वर कार्तिक शुक्ला ११ नवम्बर से कार्तिक पूर्णमासी बृहस्पतिवार १५ नवम्बर ८७ तक वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आय जगत के प्रसिद्ध सन्यासी, नेता और भजनोपदेशक पधारेंगे। शिविर मे एक आर्य नगर बसाने का विचार है इसलिए आय समाजो और आय परिवारो से प्रार्थना है कि अभी से ही अपनी छोलदारिया आरक्षित करवा लें।

माधवसिंह, प्रधान इन्द्रराज, मन्त्री

गायत्री परिवार के श्रीराम शर्मा के शिष्य स्वामी प्रज्ञानन्द जी ने डी. फिल. की उपाधि लौटा दी

जबलपुर। प्रसिद्ध गायत्री उपासक श्री राम शर्मा के अनन्य अनुयायी श्री स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती ने शर्मा जी के सानिध्य मे रहकर डी०फिल०की उपाधि मेरठ विश्व विद्यालय से प्राप्त की थी। परन्तु श्री राम जी शर्मा के प्रति उनका मोह भग हो जाने से उनकी आत्मा को इतना दुख हुआ है कि उन्होने अपनी उपाधि मेरठ विश्व विद्यालय को लौटा दी है और अपना शोध निबध जो शर्मा जी से सम्बन्धित था उसे विश्व विद्यालय से वापिस ले लिया है।

गायत्री परिवार के नाम पर करवो रुपये सम्पत्ति अर्जित करने वाले श्रीराम शर्मा पहले आय समाज चौक मथुरा व विरजानन्द ट्रस्ट के अध्यक्ष रह चके हैं बाद मे उन्होने अपना व्यवसाय स्वतन्त्र रूप से जमा लिया है। स्वामी प्रज्ञानन्द जी ने श्रीराम शर्मा को एक ढोंगी पुरुष बताया है।

रजि० न० डी० (डी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२७ ९-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाईसंस न० U ६३
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U 63 Post in D.P.S.O. on 24 9 1987

एक आवश्यक निवेदन

आर्य जगत् के लब्ध प्रतिष्ठ प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द नई सडक दिल्ली के आदेश से मैं स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पूर्ण साहित्य का सम्पादन श्रद्धानन्द ग्रन्थावली के दस खण्डो के अन्तर्गत कर रहा हूँ। स्वामी जी के अधिकाश ग्रन्थ मुझे प्राप्त हो चुके हैं, किन्तु निम्न ग्रन्थो की आवश्यकता है। जिन सज्जनो या आर्यसमाजो के पास ये ग्रन्थ हो वे कृपया रजिस्टर्ड पोस्ट से मुझ निम्न पते पर भिजवादे। इनका उपयोग कर मैं इन्हे सुरक्षित रूप से आपको लौटा दूगा तथा ग्रन्थावली का वह खण्ड भी भेट करूगा जिसमे आपके द्वारा प्रेषित ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है—

१ आचार अनाचार छूतछात
२ पचमहायज्ञ विधि
३ आर्य सगीतमाला
४. मानव धर्म शास्त्र और राज्य व्यवस्था
५ गढवाल का दुर्भिक्ष
६. उत्तराखण्ड महिमा
७ हिन्दुओ सावधान
८ दि फ्यूचर आफ आर्यसमाज।

प्रार्थी
डा० भवानीलाल भारतीय
दयानन्द शोध पीठ,
पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ।
१६०००४

क०ल ७ ... ६ ७ ८७) के निधन से केरल क्षेत्र मे आर्य समाज को अपूर्णा ... है। आपने १० वर्ष पूर्व राज्य की वरिष्ट सेवा से निवृत्त लेकर ७२ वर्ष की (निधन समय) आयु तक निरन्तर आर्य समाज प्रचार का ही कार्य किया। मीनाक्षीपुरम मे आर्य समाज द्वारा शुद्धि कार्यक्रम में सम्पूर्णत भाग लिया।

यज्ञ गायत्री एव सन्ध्या का अपने क्षेत्र मे भरपूर प्रचार किया तथा मलयालम भाषा मे साहित्य अनुवाद कर केरलीय जनता को आध्यात्मिक लाभ प्रदान किया।

विश्व संस्कृतियों का उद्गगम वैदिक संस्कृति

डा० प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति की ओर से दिल्ली विश्व विद्यालय के सस्कृत विभागाध्यक्ष, श्री प्रो ब्रज मोहन चतुर्वेदी की अध्यक्षता में गुरुकुल कांगड़ी के भू०पू० कुलाधिपति, श्री डा० सत्यकाम वर्मा का "विश्व सस्कृतियों का उदगम स्थान वैदिक सस्कृति' विषय पर दिल्ली विश्व विद्यालय मे भाषण हुआ। डा० वर्मा ने अपने विदेशों के अनुभव के आधार पर विषय की सम्पुष्टि में ठोस प्रमाण व उदाहरण प्रस्तुत किए।

निर्वाचन

—आर्य समाज आलोरिया का बास रामचौक जोधपुर के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री मोहनलाल तवर मन्त्री श्री रामस्वरूप टाक चुने गए।

—आर्यसमाज श्रीमग ज मण्डी कोटा के निर्वाचन में प्रधान श्री सन्तराम व मन्त्री श्री रामदेव शर्मा चुने गए।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ... सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ...

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

राष्ट्र का देवता मानो

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८ | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक ४०] | आश्विन शु० १२ सं० २०४४ रविवार ४ अक्तूबर १९८७ | वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

पंजाब समस्या का समाधान

सरकार विघटनकारी तत्वों से बात न करे

आतंकवाद को सख्ती से दबाया जाय

जींद में प्रान्तीय आर्य वीर सम्मेलन के प्रस्ताव

वेदामृत

वीर पुत्रों से युक्त होऊँ

भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः
स्याꣳ सुवीरो वीरैः
सुपोषः पोषैः ।
नर्य प्रजां मे पाहि शꣳस्य पशून्
मे पाह्यथर्य पितुं मे पाहि ॥
यजु० ३ । ३७ ॥

हिन्दी अर्थ—हे सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मन् ! मैं सन्तानों से सु-सन्तान वाला, वीर-पुत्रों में वीर पुत्र वाला और ऐश्वर्य से ऐश्वर्य सम्पन्न होऊं । हे मनुष्यों के हितकारी ! तुम मेरी सन्तानों की रक्षा करो । हे प्रशंसनीय ! तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो । हे सतत अविनाशी ! तुम मेरे अन्नादि की रक्षा करो ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

जींद २७ सितम्बर ।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा के दो दिवसीय सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की वर्तमान स्थिति का वर्णन करते हुए पंजाब की समस्या पर विशेष रूप से प्रकाश डाला और सरकार से अनुरोध किया कि निरपराध हत्याओं के जारी रहते वह पंजाब समस्या के समाधान पर विघटनकारी शक्तियों से बात न करे । उन्होंने पाकिस्तान से मिली सीमा पर सुरक्षापट्टी बनाने की भी सरकार से जोरदार अपील की और मांग की कि आतंकवाद को सख्ती से दबाया जाय ।

उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी के चलन, नशीली वस्तुएं और नारी जाति के अर्द्धनग्न प्रदर्शन के विरुद्ध आवाज उठाकर आर्य वीरों को प्रेरणा दी कि वह इन समस्याओं के निदानार्थ कर्मक्षेत्र में उतरने को तैयार रहें ।

इससे पूर्व यह सम्मेलन विशाल शोभा यात्रा के साथ प्रारम्भ हुआ । जींद की जनता

(शेष पृष्ठ ११ पर)



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा राजस्थान व मध्यप्रदेश के सूखा ग्रस्त क्षेत्रों के [illegible] द्वारा भेजी जा रही हैं जो आर्यसमाज रानीबाग

आर्य समाज सत्याग्रहियों की सूची जिनको सम्मान पेंशन स्वीकार हुई है,

भारत सरकार ने आर्य समाज सत्याग्रह, हैदराबाद (१९३८-३९) के सत्याग्रहियो मे से जो लोग जेल के प्रमाण पत्र, जेल मे रहने की अवधि आदि शर्तों को पूरा कर पाये हैं, उन्हे सम्मान पेन्शन देने की स्वीकृति की सूचना गैर सरकारी स्क्रनिंग कमेटी को दे दी है। भारत सरकार के गृहमन्त्रालय (स्वतन्त्रता सेनानी विभाग) ने निम्न सत्याग्रहियो के लिए सम्मान पेन्शन स्वीकार की है—

(१) श्री ब्रह्मदत्त स्नातक पुत्र श्री गगादत्त शर्मा,
सी० ४ बी०/३३२ जनकपुरी, नई दिल्ली

(२) श्री दयाशकर चौधरी पुत्र श्री ललिता प्रसाद,
सुभाषरोड, चन्दौसी २०२४१२

(३) श्री विद्यासागर पुत्र श्री प्रेम सागर, ४८४ दालमण्डी, सदर, मेरठ

(४) श्री वासुदेव पुत्र श्री बालकृष्ण कुलकर्णी, मलगामवस, राधानिवास, मकान न० १९७६, गाव पो० तालुका, मिराज, जिला-सागली (महाराष्ट्र)

(५) श्री हरीदत्त बमल पुत्र श्री विशाल सिह,
गाव पो० भाटोल जाखान जिला हिसार

(६) श्री प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी पुत्र श्री नारायणदास आर्य गुरुकुल काङला समालखा जि० करनाल

(७) श्री वीरेन्द्र कुमार पुत्र श्री दलीपसिंह बी० १-१६ माडल टाउन, दिल्ली-९

(८) श्री सतीश कुमार, द्वारा दत्तात्रेय प्रसाद तिवारी,
टी० ८ ग्रीनपार्क, एक्सटेनशन नई दिल्ली १६

(९) श्री नरदेव स्नातक पुत्र श्री घासीराम, ३१८८, कृष्णपुरी, मथुरा

(१०) श्री विष्णु पुत्र श्री नारायण दीक्षित,
१४ बी० साहूमिल कालोनी, कोल्हापुर

(११) श्री विटठल पुत्र श्री गोविन्द चव्हाण,
६३१ शिवाजी नगर, पूने-४११००४

(१२) श्री बुद्धदेव पुत्र श्री श्याम सुन्दर सत्यव्रत,
कन्या गुरुकुल पो० कनखल, हरिद्वार

(१३) श्री क्षितीश कुमार (छत्तीसगढ़ा) पुत्र श्री मनोहरचन्द
डी० ८१ गुलमोहर पार्क नई दिल्ली

(१४) श्री भीमराव पुत्र श्री रावजी जिराजने घटकोपर (ईस्ट) पन्तनगर
बिल्डिंग न० ६०५ कमरा न० ३१७४ बम्बई ७५

(१५) श्री शकर यशवत हादावारकर मार्ग सी० एस० न० ९५८ ए० कोठ वाली गली तालुका मिराज जि० सागला (महाराष्ट्र)

(१६) श्री ठिलराम पुत्र श्री रामचन्द्र पो० सिकन्दराबाद जि० लातूर

(१७) श्री भास्कर पुत्र रामकृष्ण कुलकर्णी द्वारा यू० आर० कुलकर्णी
बी० ११ बैक आफ इडिया कालोनी, विलेपार्ले ईस्ट, बम्बई ५७

(१८) श्री प्रेमचन्द्र (मोहनलाल) पुत्र श्री दुर्गा प्रसाद सीताराम
मारवाड़ी गली, मदनूर जि० निजामाबाद

(१९) श्री गणपतसिंह पुत्र श्री रामचन्द्र ५५६ ३ राधास्वामी मन्दिर के पास,
बासीरोड गुड़गाव

(२०) श्री राजेश्वर रावपुत्र श्री सन्ना [illegible] रेलोवेसी क्वार्टर ११ सी० [illegible]

(२१) श्री बालचन्द्र रंगानाथ [illegible] महाराष्ट्र [illegible]
[illegible] मुलुंड [illegible]

(२२) श्रीमती कमला बाई पत्नी स्व० [illegible] सम्भारण रोड सरवतवाण। पो० [illegible] महाराष्ट्र

२३ श्री नीलकठ माधवराव, ढेंन्टले, बनकेनिवास जनता कुम्हारपुरा
माधीबाग नागपुर

२४ —श्री नारायण विष्णु डामले, पुत्र, श्री विष्णु काशीनाथ डामले
७ सावरकर सदन, डा० रावतरोड, शिवाजी पार्क दादर, बम्बई

२५—श्री दयानन्द पुत्र श्री शेरसिंह गाव पो० बरहर जिला रोहतक

२६—श्री रतनलाल पुत्र श्री इन्द्रराम आर्य उर्दगिर जिला उस्मानाबाद

२७—श्री शिवभक्त चरन जगन्नाथ मुन्शी, काडिया नाका, बंबियापुर,
अहमदाबाद

२८—श्री दत्तात्रेय परशराम मोखले बी० वार्ड न० ११७१ मगलवाडपथ,
कोल्हापुर

२९—श्री दयानन्द (नित्यानन्द) पुत्र पोकीराम शर्मा गोविन्दबाग, वृन्दावन,
मथुरा

३०—श्री बालप्पा पुत्र श्री हीरोजादे पो० नन्दतुर्गा तालुका औसा लातूर

३१—श्री नन्दलाल पुत्र श्री मुन्नालाल आर्य रामनगर, सदर बाजार, जालना

३२—श्री दामोदरदास पुत्र श्री रामनिवासराम, राधाकृष्ण चावलमलकापुर
जिला बुलडाना

३३ महादेव पुत्र श्री नरहर खाडिलकर ५८९ कसबा, सोलापुर

३३—श्री रामप्रसाद पत्र श्री गणशराम मकान न० ४४५।३८ गणेशभवन,
बिचला नाला, अजमेर

—स्वामी आनन्दबोध
चेयरमैन स्क्रीनिंग कमेटी

जागो और जगाओ

आज राष्ट्र की कहा सो रही।
जाग्रत सी तरुणाई है॥
नष्ट विनष्ट हुई यह कैसे।
बाल अरुण अरुणाई है॥

लुप्त हुई है आज कहा पर।
सत्य शिवम् सुन्दर मर्यादा॥
जिसे राम ने दिया हमे था।
उच्च विचार जीवन सादा॥

पशु प्रवृत्तियो का वसुधा पर।
होता है क्यो अब अभिषेक॥
लुप्त हुआ है पुण्य हमारा।
धर्म आचरण तथा विवेक॥

क्रन्दन करती मानवता है।
आज धरा के प्रागण मे॥
आर्त निनादो की ध्वनि उठती।
आज धरा के कण-कण मे॥

श्रेयस् मार्ग हमारा प्यारा।
हुआ कण्टको से आकीर्ण॥
दनुज वृत्तिया जन जन उर मे।
होती हैं निर्भीक विकीर्ण॥

फैल रहा है दिव्य राष्ट्र मे।
सतत—अभय अन्याय अनय॥
बलात्कार अपहरण हो रहा।
होती दानवता की जय॥

उठो ! उठो ! हे आर्य सपूतो !
दनुज वृत्तियो से टकराओ॥
भूमण्डल की सैन्य दानवी।
बढती मार गिराओ॥

बढो ! शपथ है रामचन्द्र की।
अबलाओ की लाज बचाओ॥
दानवता को करो पराजित।
जागो और जगाओ॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

सम्पादकीय

राजा राममोहनराय और स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जब सामाजिक चेतना दी ?

श्रीमती रूपकुंवर का बलिदान रंग तो अवश्य लायेगा ? पर नारी जाति के जीवन से इस कुंठित समाज ने जो निर्दयता पूर्ण कार्य किया है उसकी जितनी भी निन्दा की जाय, थोड़ी ही है। चिता जलने से लेकर चुनरी कांड तक राजस्थान सरकार तक ने कुछ भी नहीं किया। १७ सित० को दो लाख लोगों की भीड़ ने सती की जय-जयकार की, और सती के मन्दिर बनाने हेतु ३०-४० लाख रुपया भी एकत्रित किया गया। पर वहां पर प्रशासन के नाम पर सब कुछ शून्य था। परन्तु दुखदायी बात यह थी कि दिशा देने वाले इन्दिरा ग्रुप कांग्रेस, भाजपा आदि के नेता भी शामिल थे सती को श्रद्धांजलि भी इनके द्वारा दी गई। इस पर हम कुछ टिप्पणी करें इससे पूर्व विचार उन परिस्थितियों पर करें जिनके कारण सती प्रथा का प्रारम्भ हुआ।

जब यवन आक्रमण कारी भारत वर्ष मे आए, उस समय कई प्रकार की कुप्रथाओं ने समाज मे जन्म लिया। हिन्दू देवी कन्याओं का यवन अपहरण कर लेते थे अत. माता-पिता लड़कियो का छोटी अवस्था मे विवाह करके मुक्ति पा लेते थे यह सुरक्षा की दृष्टि से स्वाभाविक था वहां छोटी दशा में लड़कियो मे छिपने के भाव से परदे की प्रथा ने भी जन्म लिया। पढ़ना-लिखना व घर से बाहर निकलना आदि सब कुछ बन्द हो गया। परिणामत छोटी अवस्था मे (बाल विवाहों) का प्रचलन भी गया। साथ ही छोटी उम्र मे ब्याह के भरण-पोषण हेतु दहेज के रूप मे बेटी वालो से धन भी प्राप्त करना शुरू कर दिया।

काश ! छोटी अवस्था में किसी स्त्री का पति मर गया तो उसे अपना शेष जीवन काटना भी दूभर हो गया। घर के लोग नाना प्रकार के ताने भी देने लग जाते थे। आश्रय भी उसे नही मिलता बल्कि श्वसुर-घर, या मां-बाप के घर रहकर जीना भी कठिन था ऐसा करने पर संकीर्ण सामाजिक दृष्टिकोण उसके चरित्र पर लांछन लगाने से बाज न आते। तब उचित यह समझा गया कि मृत पति के साथ पत्नि को भी सती प्रथा का रूप देकर जला दिया जाय, तों जीवन से मुक्ति तो मिल गई, मरना तो एक बार पड़ेगा ही ! रोज-रोज के तानों से तो छुटकारा भी मिल जायेगा।

इतिहास साक्षी है जब सती प्रथा इस देश में प्रचलित थी तब सती होने वाली स्त्रियां अधिकतर चिता से जलने की पीड़ा के कारण आग से निकलकर भागती और बचने का प्रयास करती थी ! लोग धक्के देकर उसे चिता में धकेलकर जलाते थे।

स्वयं राजा राममोहन राय ने अपने बड़े भाई की पत्नि को चिता मे जलते देखा और प्राणों की रक्षार्थ आग से बचकर भागते भी देखा किन्तु निर्दयी समाज ने जबरंस्ती धकेल कर भस्मसात करके प्रथा को जीवित रखा, इसी वीभत्स कांड को देखकर ही राजा राममोहन राय ने इस सती प्रथा का घोर विरोध कर हिन्दू समाज से इसे हटाने का दृढ़ संकल्प लिया। आज लड़की का जन्म लेना ही परिवार में अभिशाप माना जाता है, नारी ही नारी समाज को घृणा की दृष्टि से देखती है स्त्रियो की इस दयनीय दशा पर कन्या का जन्म ही परिवार में तिरस्कार पूर्ण मानी जाती थी। लड़के से हमारा वंश चलेगा, कन्या हमारे लिए भार स्वरूप है। इस प्रकार की घटनाएं समाज में कम नहीं हैं।

मैंने ऊपर स्पष्ट लिखा है कि सती प्रथा यवन आक्रमण कारियों के काल मे अनेक सामाजिक बुराइयो के साथ हमारे हिन्दू समाज मे घर कर गई। उस समय समाज को नवीन चेतना देने मे राजा राममोहन राय और स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे महान सुधारकों ने समाज को कलंकित करने वाली शर्मनाक कुरीतियों के विपरीत पूरी शक्ति के साथ आवाज उठाई। अन्तत: १८२९ मे सती प्रथा पर कानूनन प्रतिबन्ध लगाया गया। समय समय पर ऐसे जघन्य अपराध सुनने को मिलते रहे। इस प्रथा की पुनरावृत्ति १५८ वर्ष के उपरान्त भारतीय स्वाधीनता के ४० वर्षों में दिवराला राज० मे घटना घटी।

इस सती काण्ड पर ऐसे अनेक रहस्य हैं जिन पर चर्चा करना आवश्यक है—

(१) रूप कुंवर के पति का शव १० बजे प्रात लाया गया और १२॥ बजे दाहसंस्कार श्मशान भूमि में न करके अन्यत्र किया गया।

(२) रूपकुंवर के मां बाप को इसकी सूचना तक नही दी गई। जिससे कोई संस्कार मे सम्मिलित न हो सका।

(३) चिता जलने पर रूपकुंवर ने चिता से निकलकर बचाने की चेष्टा की। पर दरिन्दों ने उसे धकेल कर आग को समर्पित कर दिया। पति की मृत्यु का कारण भी रूपकुंवर को ही दोषी बताया गया।

इस प्रकार का काण्ड आज भी इस जागरुक जमाने में किया जाय, जबकि समाज काफी आगे बढ़ चुका है।

सामाजिक चेतना के इस युग मे जबकि देश की नारी प्रधानमन्त्री, मन्त्री सुरक्षा परिषद की अध्यक्षा तथा नव जागरण मे काफी अग्रणी हैं और देश को २१ वी सदी की ओर अग्रसर किया जा रहा है।

एक लड़की सती हो जाय, या सती कर दी जाय। समाज या शासन के जिम्मेदार नेता इस सामाजिक अपराध की निन्दा के बजाय उसमे सम्मिलित होकर नारी सती को श्रद्धाजंलि दे रहे हैं।

आज महिलाओ के दृष्टिकोण में परिवर्तन आना जरूरी है कि वह आत्म-रक्षार्थ रूढ़ियो के विरोध हेतु खड़ी होकर एक बुलन्द आवाज दे सके, सच्चाई यह है कि—

बाड़ ही खेत को खा रही है। नारी ही नारी की दुश्मन है, कन्या के पैदा होने पर घर मे पत्थर पड गए, यह कौन कहता है ? नारी !, लड़का होने पर सारे मुहल्ले मे बधाई मनाती है यह भेदभाव की दीवार किसने पैदा की है, नारी समाज ने। अत पुरुषो को दोष देने के बजाय नारी स्वयं चिंतन करे। नारी समाज को इतना शिक्षित अवश्य किया जाय जो वह अपना हानि लाभ स्वयं सोच सके।

महिलाओ के दृष्टिकोण मे परिवर्तन आया है वह स्वयं ही अपने दुखों का निवारण करने का उपाय सोचें। यदि कोई कन्या भरी जवानी मे विधवा हो जाय, तो उसके आन्तरिक मनोभावो को समझते हुए उसे पुनर्विवाह के लिए प्रेरणा दी जाय, और विवाह की अनुमति भी दी जाय। जिससे भावी जीवन सुख से बिता सकें, जो विधवायें विवाह न करना चाहें उन्हें बाध्य न करके समाज मे सम्मान दिया जाय।

आज के इस घृणित काण्ड से नारी को कभी प्रताड़ित न किया जाय और न सती जैसे काण्ड के लिए बाध्य ही किया जाय।

रूप कुंवर के इस बलिदान से नारी समाज में जोरदार एक आवाज उठी, कराहती मानवता को दानवता से छुटकारा दिलाने के लिए भविष्य में इस प्रकार घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो, ऐसा जन-जागरण उत्पन्न हो—

पति को आठ हजार रुपये मिल गए पत्नी को हजारों यातनाएं

पति उसे कोठे पर बेच आया, भाई ने मुक्त करा लिया। उसकी गोद में बच्चा आया और भगवान को प्यारा हो गया। शायद उसे घिन और पशुता से भरा मां का जीवन नहीं भाया।

आज खगीसरा आजाद है। लेकिन पिछले ११ महीनो ने उससे उसका सुखद विगत ही नही छीन लिया, उसके भावी को भी बोझिल बना कर छोड दिया है।

नेपाल मे पैदा हुई खगीसरा। उसका जीवन निर्मल झील की तरह शान्त था। शादी हुई, पेट में बच्चा भी आ गया। तभी उसके पति ने जहर से भरी ऐसी ककरी उस झील में फेंक दी कि जीवन का हर पल विष का घूंट बनकर रह गया।

पिछले सप्ताह पदमा के कोठे से मुक्त कराई गई खगीसरा ने रो-रो कर अपनी दास्तान तीस हजारी अदालत मे सुनाई। पति का नाम जब-जब इस दास्तान मे आया, वह कडवा घूंट पीकर रह गई। अब तो उसे अपने पति के रूप में किसी परमेश्वर की कल्पना ही नही होती। उसे उसमे कही पशु नजर आता है, जो उसे चारा समझ कर दिन मे कई बार, कई रूपो मे उसके कोठे पर आता रहा।

उसके पति का नाम है हेमराज कपडेल। उसने शादी के बाद १४ महीने तक उसे अपने पास रखा—एकाधिकार सहित। ग्यारह मास पहले इसने अपना यह एकाधिकार आठ हजार रुपए मे एक कोठे पर बेच दिया। यह भी नही सोचा कि चन्द दिन बाद ही वह उसे सन्तान के रूप मे बेटा देने वाली है।

वह उसे यह कह कर दिल्ली लाया था कि उसे यहा नौकरी मिल रही है। यहा एक होटल मे ठहरे। अजनबी शहर होते हुए भी खगीसरा को आशा थी कि वह उसकी प्रसूति के लिए उचित व्यवस्था जरूर कर देगा। उसी दिन जब वह होटल मे अपने साथ पदमा, मीनू और भक्तिराम पाडेय को लेकर आया तो खगीसरा यही समझती रही कि वे उसी की मदद को आए हैं।

दिन गुजरा रात आई, अमावस की पूर्ण कालिमा लिए हुए। उसका पति दिन मे ही उक्त लोगो को कमरे मे छोडकर ऐसा गया कि रात तक नही आया। जब देर रात हो गई तो उसने पूछा—वे कहा चले गए? कब आयेगे?

जवाब मिला—वह अब क्यो आएगा? वह तुझ आठ हजार मे बेच गया है, हमारे हाथो।

खगीसरा पर बिजली गिरी। वह मूर्छित सी होने लगी। उनके हाथ उठे, दिलासा देने के लिए नही, उसके शान्त दाम्पत्य जीवन को झकझोर देने के लिए। उसके बाद हर प्रतिरोध पर वे हाथ कई बार उस पर उठे। जब जब जबान खुली, इन्ही हाथो ने उसे बन्द करा दिया।

अगले दिन खगीसरा कोठे पर थी। अगले दो दिन उसकी गोद मे बच्चा आ गया। हिदायत यह दी गई—खबरदार इसे दूध पिलाया, तो जान से मार देंगे।

बच्चा उससे छीन लिया गया। दूध का पाउडर पानी मे घोल पिलाया जाने लगा। मा के लालन-पालन से वंचित यह बच्चा चार महीने तक जिया।

प्रसव के छह दिन बाद ही, खगीसरा के लिए नर्क के दरवाजे खोल दिए गए। अब वह एक गन्दी कोठरी मे रखा जाता थी। उसे चरने के लिए एक-दो नही, पन्द्रह-सोलह तक पशु आने लगे।

धन्धे बाजों ने उसे आठ हजार मे खरीदा था। उन्हे सिर्फ अपनी मूल रकम ही वसूल नहीं करनी थी, कुछ कमाना भी था।

२२ वर्ष की खगीसरा की देह कई तरह से तोडी गई। चारा चरने वाले तो तोडते ही, जरा सी शिकायत करने पर वे हाथ भी उसे तोडते जो उसके 'रखवाले' थे और शिकजा भी।

उसका बदन सूजा। खून जाने की बीमारी हुई। लेकिन इलाज के साथ धमकी भी मिलती। जल्दी ठीक हो जाओ। हमारा धन्धा बिगडता है।

बीमार होती तो अधमरी-सी हुई पडी रहती। कोई दवा पिलाने वाला नहीं। कोई पानी पूछने वाला नहीं। पूछा जाता तो सिर्फ एक बात? शुरू करे, धन्धा?

निराशा के सागर मे डुबकिया लगाती वह अपने सास गिन ही रही थी कि एक रात उसका भाई रामप्रसाद आ गया। वह शर्म से गड गई। लेकिन भाई उन लोगो की तरह नही आया था, जो पिशाची आखे लिए आते थे। वह रात बहन-भाई ने रोते रोते आसूओ में भिगो डाली। यह १० सितम्बर की बात है। ११सितम्बर की बात है। ११ सितम्बर की रात भी उससे भाई ने खरीद ली।

१६ सितम्बर को प्रवासी नेपाली एकता मच, पीपल्स राईट्स आर्गनाइजेशन, सर्वहारा पार्टी, नेपाल तथा जनतन्त्र समाज के नेताओ ने खगीसरा के भाई रामप्रसाद को साथ लेकर पुलिस मुख्यालय मे डी०सी०पी० विमला मेहरा और ए०सी०पी० यामीन हजारिका को हैवानियत की यह दास्तान सुनाई।

इन दोनो पुलिस अधिकारियो ने इसी दिन जी०बी० रोड के कोठा नम्बर ६६ पर छापा मारा। खगीसरा के अलावा चार लडकियो सहित करीब ४० ग्राहको को भी गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस के इस छापे मे कोठा मालकिन पदमा और उसकी "मैनेजर" मीनू गिरफ्तार कर ली गई, परन्तु नेपाली युवतियो की खरीद फरोख्त मे कडी के रूप मे काम करने वाला भक्तिराम पाण्डे हाथ नही आया।

खगीसरा ने अदालत मे अपने ऊपर हुए जुल्म की पूरी दास्तान दर्ज करवा दी। परन्तु उस भय है कि उसे और उसे मुक्त कराने के प्रयास मे सफल होने वाले प्रवासी नेपाली युवको, विशेषकर उसके भाई पर कभी हमला हो सकता है। जब यह सम्वाददाता उससे बातचीत कर रहा था तब करीब दो दर्जन नेपाली युवक उसकी सुरक्षा के लिए आसपास मडरा रहे थे।

खगीसरा अपने भाई के साथ लौट रही है। उसे बहुत मलाल है, लेकिन सन्तोष की एक सास भी। उसकी मुक्ति के साथ ही, उस जसी चार अन्य भी मुक्त हो गई।

—हबीब अख्तर

(नवभारत टाइम्स २२ सितम्बर से साभार)

महात्मा अमरस्वामी के पावन संस्मरण

लेखक—डा. भवानीलाल भारतीय

महात्मा अमरस्वामी जी के निधन से आर्यसमाज के विद्वानों वेद और शास्त्र महारथियों की एक परम्परा ही समाप्त हो गई है। अपनी ९६ वर्ष की सुदीर्घ आयु में ७५ ७६ वर्ष उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में लगाये। लगभग पौन शती तक सक्रिय रह कर आर्य समाज की सेवा करने वाले महापुरुष विरल ही हैं। अमरस्वामी का जन्म यद्यपि क्षत्रिय कुल में हुआ था, शास्त्रार्थों में उनकी क्षत्रिय सुलभ ओजस्विता तथा विरोधी पर आक्रामक भाव प्रकट होता था, किन्तु प्रकृत्या वे ब्राह्मण ही थे। उनके स्वभाव की सरलता, कोमलता आर्य समाजों के छोटे से कार्यकर्ता से लेकर बड़े से बड़े नेता के प्रति उनका सम्मान का भाव तथा गुण ग्राहकता उन्हें उन तपोपूत ब्राह्मणों की श्रेणी में खड़ा कर देती थी, जो सम्मान को तो विष के तुल्य दूर ही रखते हैं, किन्तु सम्भावित अपमान को गले लगाने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता।

१८ वर्ष आयु में युवावस्था में प्रवेश करते करते ही वे लाहौर पहुँच गये और आर्य प्रादेशिक सभा में उपदेशक का कार्य करने लगे। उसके पश्चात् अपने सुदीर्घ अध्ययन, शास्त्राभ्यास और शास्त्रार्थ पाटव के कारण वे आर्यसमाज के महोपदेशको की अग्रिम पंक्ति मे आ बैठे। महात्मा हंसराज जैसे मूर्धन्य नेताओं के मार्गदर्शन मे वे सुदीर्घ काल से प्रादेशिक सभा के माध्यम से धर्म प्रचार करते रहे। समय-समय पर वे हिसार, कलकत्ता, गाजियाबाद, अरनिया आदि स्थानो को केन्द्र बना कर विभिन्न प्रकार कार्य मे रत रहे। कभी उपदेशक विद्यालय के आचार्य बने तो कभी कलकत्ता आर्य समाज के आचार्य पद को सुशोभित किया। कभी सन्यास आश्रम गाजियाबाद को सुशोभित करते रहे तो जीवन के अन्तिम वर्षों मे वेद मन्दिर गाजियाबाद में रह कर साहित्य साधना की।

उन्होंने अपने जीवन मे सैकड़ों शास्त्रार्थ किये। पौराणिक, ईसाई और मुसलमान तीनों मतो के विद्वानों, से शास्त्रार्थ सभा में भिड़ने मे उन्हें कभी संकोच नही हुआ। अपने विस्तृत शास्त्रार्थ काल के अनुभवो को उन्होने 'निर्णय के तट' पर शीर्षक वाले बृहद् ग्रन्थो मे लेख बद्ध किया है। इस ग्रन्थ का तीसरा खण्ड वे तैयार कर ही रहे थे कि उन्हे विधाता के विधान को स्वीकार कर परलोक प्रस्थान करना पड़ा। आशा है श्री लाजपतराय निर्णय के तट के तृतीय खण्डकी सामग्री को व्यवस्थित कर शीघ्र प्रकाशित करायेंगे।

अमरस्वामी उपदेशक काल में 'ठाकुर अमरसिंह आर्य पथिक' के नाम से जाने जाते थे। उन्होंने उपदेशक का प्रशिक्षण सुप्रसिद्ध पं० भोजदत्त आर्य मुसाफिर के आगरा स्थित मुसाफिर विद्यालय में प्राप्त किया था, जहां पं० बिहारीलाल शास्त्री कभी उनके अध्यापक भी रहे थे। आर्य मुसाफिर पं० लेखराम की विरासत को स्वीकार करते हुए ठा० अमरसिंह ने तहरीर (लेखन) और तकरीर (व्याख्यान) के कार्य को कभी नही छोड़ा। वे प्रगल्भ वक्ता, शास्त्रों के अपूर्व वक्ता और सरस वाणी के धनी प्रवाचक थे। उन्होंने सरस काव्य तथा भजनो का सग्रह प्रकाशित हो चुका है। उनके द्वारा लिखे ग्रन्थो की सख्या पर्याप्त है। आर्य सिद्धान्त सागर की रचना उन्होंने लाहौर रहते ही की थी और इस ग्रन्थ मे वैदिक सिद्धान्तो की पुष्टि तथा अवैदिक मन्तव्यो के खण्डन में प्रचुर प्रमाण राशि एक ही स्थान पर जुटाई थी। शास्त्रार्थ कर्ताओ, उपदेशको के तथा धर्म प्रचारकों के लिये इस ग्रन्थ का बड़ा महत्व है। खेद है कि यह उपयोगी ग्रन्थ अभी तक दुबारा नहीं छपा।

जीवित पितर, गीता और ऋषि दयानन्द आदि उनके अन्य उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं। वे गीता के बड़े प्रबल पोषक थे तथा इस ग्रन्थ को (स्वल्प अंश को छोड़ कर) वैदिक सिद्धान्तो का परम पोषक मानते थे। रामायण तथा महाभारत के कतिपय विवादास्पद प्रश्नो का समाधान करते हुए उन्होने कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे थे। दशहरा के दिन रावण का मारा जाना, द्रोपदी का बहुपतित्व जैसे प्रश्नो का उन्होंने विस्तृत और सतर्क समाधान किया था। उनके शास्त्रार्थों के विवरण तो आर्य समाज के साहित्य की स्थायी निधि ही बन गये हैं। यह अच्छा रहा कि उनके जीवनकाल मे ही श्री विक्रमसिंह के पुरुषार्थ से उनका अभिनन्दन ग्रन्थ भी छप गया अन्यथा आर्य समाज मे विद्वान के निधन के पश्चात मौखिक श्रद्धांजलि के अतिरिक्त और होता ही क्या है?

मेरा अमरस्वामी जी से लगभग ३० वर्ष पुराना सम्बन्ध था। जब वे प्रथम बार आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर के वार्षिकोत्सव में पधारे थे तब मैं उस समाज का मन्त्री था। उन्होने गाजियाबाद रहते हुए वेदपथ मासिक सफल सम्पादन किया। मेरे लेख इसमे बराबर छपते थे। एक बार रतलाम और बड़नगर के प्रचार कार्यक्रम मे भी उनके साथ रहने का अवसर मिला। चण्डीगढ़ में तो अभी दो वर्ष पहले ही उनके दर्शन हुए थे। उन्होंने मेरे निवास पर आकर मुझे कृतार्थ किया था।

आर्य समाज के इतिहास की उन्हे विशद जानकारी थी। मेरी स्वय की इस विषय मे रुचि होने के कारण मुझे कई पुरानी बातें बताई और १० विश्वबन्धु शास्त्री विषयक प्राचीन विवाद के दौरान अपनी उर्दू पुस्तक विश्वबन्धु का चालीसा मुझे अपने पुस्तकालय के लिये भेजी। जब किसी व्यक्ति ने आर्य पत्रो में यह प्रकाशित करा दिया कि महात्मा हंसराज ७५ रुपया मासिक वृत्ति डी० ए० वी० कालेज कमेटी से लेते थे, तो महात्मा जी ने इसका प्रबल प्रतिवाद किया। इस सम्बन्ध मे उन्होने मुझे भी पत्र लिखा जो उनका मुझे लिखा अन्तिम पत्र ही था। अचानक ही वे कैंसर जैसे भयानक रोग से ग्रस्त हो गये और दिन प्रतिदिन अवसान की ओर बढ़ते गये। अपने पांचभौतिक शरीर के रूप मे चाहे वे हमारे बीच नही हैं, किन्तु उनकी यश, काया सदा रहेगी। कीर्तिर्यस्य स जीवति।

अमृतसर से लेकर कोचीन तक हिन्दी ही हिन्दी (२)

मुखर सांसद, इतिहासवेत्ता और साहित्यकार नरेशचन्द्र चतुर्वेदी

हिन्दी भाषी राज्यो से जब हिन्दी मे ही पत्र-व्यवहार होना चाहिए तो केन्द्र की ओर से उनको अंग्रेजी मे ही पत्र क्यो भेजे जा रहे हैं और केन्द्रीय सरकार की नीति के कारण ही उनको अंग्रेजी मे पत्र भेजने के लिए बाध्य होना पड रहा है अन्यथा उत्तर प्रदेश मध्यप्रदेश जैसे हिन्दी भाषी क्षेत्रोमे तो कम से कम पूर्णत राजभाषा हिन्दी होनी चाहिए, उनका सारा काम हिन्दी मे होना चाहिए, लेकिन आप उनको भी अंग्रेजी में पत्र लिखते हैं, क्योकि आपकी व्यावहारिक नीति दूसरी है, सिद्धान्त मे जो कुछ कह रहे है,व्यवहार मे ठीक उससे उलट कर रहे हैं। जहा भारत सरकार के स्पष्ट निर्देश हैं कि सभी काम द्विभाषी रूप में होने चाहिए वहा आपका आधे से ज्यादा काम एक ही भाषा मे होता है। हम जैसे लोग जोरदार तरीके से माग करते हैं तो हमे भले ही कोई पत्र हिन्दी में मिल जाए, लेकिन यह बात सच है कि हिन्दी के पत्रकारो को कोई भी रिपोट, वक्तव्य प्रस-सामग्री आदि हिन्दी मे उपलब्ध नही होती। हिन्दीभाषी को द्वितीय श्रेणी का नागरिक बनाकर आपने रख दिया है। हम नही चाहते कि जो लोग हिन्दी को नही चाहते, वे हिन्दी में काम करे, लेकिन जो लोग हिन्दी मे काम करना चाहते हैं, उन पर आप अंग्रेजी क्यो थोपते हैं। यह बात १९७६ के प्रावधानो मे स्पष्ट रूप से कही गई है लेकिन आज १० वर्ष बाद भी ठीक उसके उलट काम हो रहा है। इन्दिरा गाधी ने जिस काम को शुरू किया था उसको आपने बिलकुल उलट दिया।

डा॰ सुनीति कुमार चटर्जी का 'भारतीय आर्य भाषाए और हिन्दी' को पढ लीजिए, डा॰ ग्रियसन का सर्वे आफ इण्डियन लैंग्वेज' पढ लीजिए, उसमे क्या लिखा है पिंकाट को पढ लीजिए, जो लदन से लिखता था, ग्रीब्ज को पढिए, तब आपको मालूम पड जाएगा कि हिन्दी के विषय मे क्या कहा गया है। उनकी सख्या कितनी है। मैं उस सख्या के बारे मे कुछ नही कहता हू। आप हिन्दी के जिस रूप को ग्रहण करके कह रहे हैं वह उसमे नही है। मेरे कहने का मतलब यह भी है कि दक्षिण मे हिन्दी का काम सबसे अधिक हुआ है।

इस बात से कौन इन्कार करेगा कि महात्मा गाधी ने सन् १९१८ मे मद्रास मे दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की। गाधी जी के पुत्र देवदास और राजाजी की पुत्री ने वहा उस हिन्दी को ही बढावा दिया। मोटूरी सत्यनारायन ने हरिहर शर्मा ने, इन लोगो ने हिन्दी को बढ़ावा दिया है।

क्या कारण है कि आई॰ आई॰ टी॰ दिल्ली मे किसी ने अपना शोध प्रकल्प हिन्दी मे दिया, तो हमको प्रधानमन्त्री की शरण लेनी पडी, तब उसकी थीसिस स्वीकार हुई। उसके बाद राष्ट्रभाषा मे ही नही, सम्पूर्ण भारतीय भाषाओ में प्रकल्प रिपोर्ट लेने की नीति पास हो गई और आज भी अमरेंद्रसिह की थीसिस लटकी हुई है। भारत के शिक्षामन्त्री की अध्यक्षता मे आई॰आई॰ टी॰ को प्रस्ताव पास करना होगा कि सब भारतीय भाषाओ में प्रकल्प स्वीकार किए जायगे। यह काम भारत सरकार नहीं करेगी तो कौन करेगा?

मैं कहना चाहता हूं कि मद्रास मे दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा मे २ लाख ८२ हजार लडके-लडकिया हिन्दी मे परीक्षा देते हैं क्या यह भी मिथ्या वर्णन है? अगर दक्षिण भारत मे हिन्दी का प्रचार-प्रसार न हुआ होता, तो कैसे पौने तीन लाख बच्चे प्रतिवर्ष हिन्दी की परीक्षाए देते। मैं बड गर्व के साथ कहता हूं कि उत्तर भारत मे जितने भी आफीसर हिन्दी मे जितना अच्छा काम करते हैं और जितना अच्छा ज्ञान रखते हैं, जो उतना अच्छा काम और वैसा हिन्दी का ज्ञान नही रखते हैं।

आज हम देखते हैं जब हमारे श्री नरसिह राव जी बोलते हैं, शकरानन्द जी और श्री शिवशकर जी बोलते हैं या दक्षिण के अन्य लोग बोलते हैं तो आपने देखा होगा कि हिन्दी के लोग उतनी अच्छी नही बोलते हैं।

ससदीय कार्यमन्त्री का भी मैं ध्यान दिलाना चाहता हू कि राजभाषा समिति में और हिन्दी की समितियो में आपने जिन आदमियो को रखा है उनको हिन्दी का कोई विशेष ज्ञान नही है, हिन्दी की परम्परा का कोई ज्ञान नही है इसलिए हिन्दी का काम वहा पर नही होता।

राष्ट्रभाषा हिन्दी केवल हिन्दी वालो की है,यह मैं नहीं मानता। बिना मुसलमानो के और बिना अहिन्दी क्षेत्रो के हिन्दी का कोई अस्तित्व मैं नही मानता। हिन्दी का अस्तित्व ही इन लोगो के कारण से है। जिन लोगो को राजनीतिक कारण से हिन्दी के नाम पर उलझन होती है वह लोग देश के लिए खतरा ही बनगे। हमेशा के लिए उस खतरनाक स्थिति को मत आने दीजिए और हिन्दी के प्रति सविधान के उपबन्धो को पूरी निष्ठा के साथ लागू कीजिए यही मेरा निवेदन है। ●

छायावाद का अन्तिम स्तम्भ भी टूट गया

—वीरेन्द्र प्रसाद सिंह, देवघर—

११ सितम्बर ८७ की रात हिन्दी साहित्य के लिए सबसे दुर्भाग्यपूर्ण और भयानक साबित हुई। इस रात ने हिन्दी साहित्याकाश से उस नक्षत्र को छीन लिया जिसके प्रकाश से साहित्य का एक युग प्रकाशित हो रहा था। साहित्य में छायावाद की जो धारा प्रसाद से शुरू होकर निराला की कठोर प्रतिभा और पंत के सुकुमार व्यक्तित्व को छूती हुई महादेवी की वेदना की खाई में अटक गई थी, इस भयानक भूकम्प में न जाने कहा खो जायेगी। सबका कहना है कि महादेवी की मृत्यु से एक कवियित्री और एक युग का अन्त हुआ पर मैं कहता हूँ कि उनकी मृत्यु से हिन्दी साहित्य की सबसे समृद्ध परम्परा का अन्त हो गया।

छायावाद साहित्य के कला और भाव के क्षेत्र में एक आन्दोलन का नाम है। इस आन्दोलन के माध्यम से साहित्य ने अपनी रूढ़िवादी मानसिकता जीवन और जगत की जड़ता एवं पुरातन, इतिवृत्तात्मक शैली के विरुद्ध विद्रोह किया और बदले में आधुनिक मानवतावादी साहित्यिक चेतना, जड़ में जीवन का भाव और स्वच्छन्द काव्य शैली को प्रतिष्ठित किया। एक शब्द में कहा जा सकता है कि छायावाद भाषा, भाव और शिल्प की दृष्टि से हिन्दी साहित्य की प्रौढ़तम काव्यधारा है।

छायावाद के क्षेत्र में महादेवी वर्मा का प्रवेश प्रसाद, निराला और पन्त के बाद हुआ किन्तु इन महाकवियो की अपेक्षा कवियित्री ने ही अधिक समय तक पूर्ण दृढ़ता के साथ इसका साथ दिया। कहा जाए कि उक्त तीनो स्तम्भ के मरने के बाद महादेवी ने अकेले ही छायावाद की गाड़ी के जुए को अपने सबल कन्धे पर खींचा। साहित्य की प्रवृत्ति बदल रही है। नयी कविता ने हिन्दी काव्य की दिशा बदल दी है, छायावाद की सारी मान्यताएं अब परिवर्तित रूप में पेश हो रही है। अतः हम कह सकते हैं कि १२ सितम्बर की शाम को इलाहाबाद के पवित्र गंगा तट पर हमने महाकवियित्री महादेवी वर्मा के साथ-साथ छायावाद को भी मुखाग्नि दे दी।

महादेवी के काव्य का प्रधान विषय पीड़ा है। कुछ आलोचको ने तो इन्हें पीड़ावाद की कवियित्री तक कहा है। इनके काव्य की पीड़ा या वेदना भौतिक नहीं आध्यात्मिक है। महादेवी कबीर के रहस्यवाद से अधिक प्रभावित थी। अतः उनकी कविता में आत्मा का परमात्मा के प्रति आकुल प्रणय निवेदन का स्वर मुखर हो उठा है। कवियित्री की आत्मा मानो संसार में बिछड़ी हुई प्रेयसी की भांति अपने प्रियतम (परमात्मा) को याद करती है। परमात्मा के प्रति अभिन्नता प्रकट करती हुई वे कहती हैं—

बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।

छायावाद का जन्म और विकास राष्ट्रीय जागरण की जिस सामन्तवाद और साम्राज्यवाद विरोधी पृष्ठभूमि में हुई। उसमें व्यक्तिगत दुःख और वेदना प्रतिध्वनित होती है। महादेवी की यह विशेषता है कि उन्होंने व्यक्ति और समाज की जिस व्यापक असन्तुष्ट भावना को अभिव्यक्ति दी है उसमें उन्होंने भारतीय नारी के असन्तोष, पीड़ा, दर्द और आकांक्षा को भी जोड़कर रखा है। उनके काव्य में भारतीय नारी की निराशा, असन्तोष और आकांक्षा की गहरी अनुभूति है। वैयक्तिक अनुभूति के तल पर कवियित्री ने समाज के बन्धनों में ग्रस्त भारतीय नारी जीवन की वेदना विवशता एवं व्याकुलता को वाणी दी है—

"मैं नीर भरी दुःख की बदली।"

महादेवी को पीड़ा अत्यन्त प्रिय थी। उन्होंने प्रभु को पीड़ा में और पीड़ा को प्रभु में ढूंढा था।

"तुमको पीड़ा में ढूंढा, तुममें ढूंढगी पीड़ा।"

स्वयं महादेवी जी ने लिखा है—"दुःख मेरे जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बांध रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुँचा सके किन्तु हमारा एक बूंद भी जीवन को अधिक उर्वर बनाये बिना नहीं गिर सकता। ...विश्व जीवन में अपने जीवन को, विश्व वेदना में अपनी वेदना को इस प्रकार मिला देना जिस प्रकार एक-एक जल बिन्दु समुद्र में मिल जाता है, कवि का मोक्ष है।" इसी प्रसंग में पुनः आगे कहती हैं—"मुझे दुःख के दोनो ही रूप प्रिय हैं, एक वह जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बन्धन में बांध देता है और दूसरा वह जो काल और बन्धन की सीमा में पड़े असीम चेतना का करुण क्रन्दन है।" कवि की यह पीड़ा वैयक्तिक न होकर सामन्ती पाशों एवं सामाजिक रूढ़ियों से ग्रस्त भारतीय नारी जीवन की रोती आत्मा सिसकती जुबान एवं जलते दिल का एक करुण क्रन्दन है।

महादेवी का संवेदनशील हृदय गद्य के क्षेत्र में सारे संसार को एक अविच्छिन्न बन्धन में बांध देने वाली आत्मीयता, करुणा और सहानुभूति के रूप में व्यक्त हुआ है। 'स्मृति की रेखाएं' 'शृंखला की कड़ियां' 'अतीत के चल चित्र' और 'पथ के साथी' देवी जी की ऐसी ही गद्यकृति हैं जिसमें समाज के हर वर्ग के लोगों का अत्यन्त मार्मिक और करुणा से रंजित चित्रों को चित्रित किया है।

महादेवी का कलापक्ष भी उतना ही उज्ज्वल है जितना कि भाव पक्ष इनकी भाषा परिष्कृत, कोमल एवं संगीतमय है। गद्य के क्षेत्र में इनकी भाषा का सबसे सबल पक्ष बिम्ब है। डा० इन्द्रनाथ मदान ने इनकी भाषा की चर्चा करते हुए लिखा है—"छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि प्रकृति तत्व को मिलाया, निराला ने मुक्त छन्द दिया, पन्त ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर सुडौल और सरस बनाया तो महादेवी जी ने उसमें प्राण डाले।"

अपनी प्रतिभा से संसार को सुगन्धित करने वाली वह कवियित्री संसार को छोड़कर चल बसी। हम जानते थे कि एक न एक दिन प्रकृति का क्रूर नियम अपने कठोर हाथों से साहित्य के बगीचा का यह सुन्दर फूल भी तोड़ लेगा, किन्तु यह पता नहीं था कि इतनी ही जल्दी। अज्ञेय को खोने का दर्द अभी दिल से हटा नहीं था कि उस पर महादेवी के उठ जाने का एक भयंकर आघात लगा। साहित्य का संसार सूना हो गया, सारे साहित्य प्रेमियों का दिल रो उठा। कैसे पूरी होगी यह अपूर्णनीय क्षति? महादेवी वर्मा साहित्य की दुनिया का वह जाना पहचाना नाम था जिनसे साहित्य के मूल्य निर्धारित हो रहे थे। जीवन पर्यन्त जिस निष्ठा से उन्होंने साहित्य की सेवा की, उसके लिए हिन्दी साहित्य सदा उनका ऋणी रहेगा। महादेवी ने साहित्य में जिस लोक का निर्माण किया था वे कभी भी अवरुद्ध होने को नहीं है। वह पथ सदा ही नयी पीढ़ी के लोगों के लिए प्रेरणा का स्तम्भ बना रहेगा।

आर्य समाज ने भी समर्पित भावना से हिन्दी साहित्य की सेवा की है। महादेवी जी की मृत्यु से साहित्य की जो अपूर्णनीय क्षति हुई है उसे यह समाज अपनी क्षति मानकर शोक से विह्वल है। महादेवी जी से अभी हम साहित्य प्रेमियो को बहुत सारी अपेक्षायें थी। महादेवी ने स्वयं लिखा था —

"पर न अन्तिम छन्द व्यथा का मैं अभी तक गा सकी हूँ।

व्यथा के उस अन्तिम छन्द को गाये बगैर ही कवियित्री हमारे बीच से सदा के लिए चली गयी। मैं अपनी ओर से तथा सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से उस महान कवियित्री के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ एवं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

पाकिस्तान के अणु-संयन्त्र पर इजराइल हमले की सम्भावना ?

येरूशलम से प्राप्त खबरों के अनुसार इजराइली सामरिक नीति निर्धारण-समिति के विशेषज्ञों ने इस बात का संकेत दिया है कि यदि पाकिस्तान अपने परमाणु-हथियार किसी अन्य अरब देश को देने का प्रस्ताव करेगा तब इजराइल भारत के सहयोग द्वारा इसके विरुद्ध कार्यवाही कर सकता है। सन १६६१ में इजराइल ने इराकी अणु-संयन्त्र को ध्वस्त कर, दिया था। यह प्रमाणित करता है कि वह आवश्यकता पड़ने पर, भविष्य में भी ऐसा कदम उठा सकता है।

तेल-अवीव विश्वविद्यालय के "सामरिक नीति शिक्षा केन्द्र" द्वारा प्रकाशित अपने वार्षिक पत्र" मध्य पूर्व सैन्य सतुलन १६८६" में कहा गया है कि सन् १६८७ तक पाकिस्तान परमाणु-बम विस्फोट के लिये प्लुटो नियम तथा परिष्कृत यूरे नियम' पर्याप्त मात्रा मे प्राप्त करने में सफल हो जायगा, जिससे वह कम शक्ति के कई परमाणु बम बना सकता है। परन्तु इजराइली विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि पाकिस्तान शायद किसी अन्य इस्लामी देश को अपनी परमाणु क्षमता का भागीदार नहीं बनायेगा। पाकिस्तान को अन्य मुस्लिम देशो से विशेष प्रेम हो सकता है। जैसा कि कहा जाता है अरब नेता, कर्नल गद्दाफी ने तो पाकिस्तान को अणु बम बनाने की क्षमता प्राप्त करने के लिये पर्याप्त आर्थिक सहायता भी दी है। फिर भी इस बात की सम्भावना कम है कि पाकिस्तान अपनी इस शक्ति से किसी अन्य मुस्लिम देश को लाभ पहुंचायगा।

उपर्युक्त रिपोर्ट के स ा दक सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर जनरल बहरान का मत है कि आज तक किसी भी देश ने अपनी परमाणु शक्ति का रहस्य किसी अन्य देश को हस्तान्तरित किया हो ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। अत यह कहना कठिन ही है कि पाकिस्तान इस परिपाटी को तोड़ने की चेष्टा करेगा। कम से कम निकट भविष्य मे तो इसकी सम्भावना बहुत कम है।

पाकिस्तान यदि इस प्रकार का निर्णय ले भी ले, तब भी इजराइल का अनन्य मित्र, अमरिका, उसे ऐसा करने, नहीं देगा। अपनी सामरिक शक्ति को बढ़ाने मे सम्पूर्ण सहयोग देने वाले देश को पाकिस्तान नाराज नहीं कर सकता। फिर भी यदि पाकिस्तान इस दिशा में कोई अगला कदम उठाता है तो उससे यह भी प्रकट हो जायगा कि वह परमाणु बम बना रहा है। जिस भेद को वह आज तक छिपाने का प्रयत्न करता आ रहा है वह सबके सामने आ जायगा। इजराइली ब्रिगेडियर जनरल का यह भी कथन है कि ऐसा करने से मुस्लिम देशो में पाकिस्तान का महत्व कम हो जायगा। इस समय तो मुस्लिम देशों में वही एकमात्र देश है जो परमाणु बम बनाने की क्षमता रखने का दावा कर सकता है। पाकिस्तानी अधिकारी यह भी जानते हैं कि यदि पाकिस्तान इस दशा में कोई पहल करता है तो इजराइल बदला लेने की दृष्टि से भारत की सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा।

इजराइली मेजर जनरल बहराम यारिव ने इस बात की पुष्टि करते हुए कहा कि "यदि मैं गुप्तचर विभाग का निर्देशक होता तो सतर्कता के साथ आगे बढ़ने के लिए कहता।" इजराइली अधिकारी यह जानते हैं कि पाकिस्तान "परमाणु संघ' द्वारा निर्धारित शर्तों का पालन नहीं करेगा। यदि सामरिक महत्व के विषयों का अध्ययन करने वाले इजराइली केन्द्र की रिपोर्टों का सारांश निकाला जाय तो यह स्पष्ट है कि वर्तमान में भारत-इजराइली सम्बन्ध अच्छे न हों तब भी भविष्य में दोनों देशो का आपसी सहयोग सम्भव हो सकता है।

(दैनिक स्टेटमैन से साभार)

गुप्तचर विभाग की रिपोर्ट :

मेरठ के दंगाइयों को आतंकवादियो ने हथियारों का प्रबन्ध किया था

पंजाब के आतंकवादियों तथा मेरठ के दंगों में भाग लेने दंगाइयो का गठबन्धन था यह सत्य प्रकाश में आया, जब दमदमी टकसाल के कोई कुछ चिन्हों का गुप्तचर विभाग को पता लगा है।

गुप्तचर विभाग की रिपोर्ट के अनुसार १६८४ के स्वर्णमन्दिर के ब्लू स्टार आपरेशन के बाद दमदमी टकसाल को छोड़कर देश से गायब हो गया था। यह करनैलसिंह भिण्डरेवाला का विश्वस्त सहायक था और उसे आतंकवादियों के कई कांडों का पूरा ज्ञान था।

देश से भागकर उसने पड़ौसी देश में शरण ली थी और ऐसा पता लगा है कि आतंकवादियों को फिर तैयार करने मे उसे पूरा सहयोग मिला था जो सुरक्षा बलों द्वारा दबा दिये गए थे। उसे आदेश प्राप्त था कि वह अन्य सम्प्रदाय के आतंकवादियों से भी निकट सम्पर्क व सहायता प्राप्त करे उसे यह भी आदेश था कि वह आतंकवादियों को पूरा प्रशिक्षण दे और अराजक तत्वों को भी शिक्षण इस बात का दे जिससे वह उपद्रव व अराजकता फैला सकें।

अजायब सिंह को यह आश्वासन दिया गया था कि सिख आतंकवादियों को हिन्दुस्तान में कुछ व्यक्तियों के द्वारा हिदायतें पहुंचा दी गई है, जिससे वे हत्याकाण्डों की देश भर में साइन बिछादे।

अमृतसर के मार्ग से फिर भारत में फिर कुछ मास पूर्व दाखिल होने के बाद अजायब सिंह ने मेरठ के दंगाइयों को हथियार पहुंचाने का काम पूरा किया। यह पहला अवसर था कि उच्चकोटि के हथियार दंगाइयों के पास जिनमें टैलिस्कोपिक रायफलों का भी अपने सामने लड़ने वाली शक्तियों के सामने प्रयोग किया गया था। ऐसा गुप्त विभाग की रिपोर्ट मे कहा गया है, जो हथियार इस बार मेरठ के दंगों में पकड़े गए हैं वे सदा की भांति हाथ के बने हथियारों से बहुत बढ़िया है। प्राय दंगों मे पहले साधारण हथियार बरते जाते रहे हैं। अब दंगाइयो से सैनिक व अर्ध सैनिक बलों का संघर्ष हुआ तो दंगाईयो के हथियार अत्याधुनिक पाए गए। दंगाइयों को इन हथियारो के प्रयोग व गुरिल्ला युद्ध की ट्रेनिंग मिली हुई थी।

विगत जुलाई मे हरियाणा बस कांड में ६४ यात्रियों की हत्या की योजना बनाने वाला कुलविन्दर सिंह माल्हो कैनेडा से शिक्षा प्राप्त करके आया था और उसने पड़ोसी देश से अत्याधुनिक हथियार प्राप्त किये थे। उसे हाल ही हरियाणा पुलिस ने गिरफ्तार किया है। हरियाणा में अनेक स्थानों पर होने वाले उपद्रव इस बात का प्रमाण है कि यह तत्व देशभर में उपद्रव व अराजकता पैदा करना चाहते थे। अजायबसिंह पुलिस की सतर्कता के कारण भूमिगत हो गया।

सम्पादक के नाम पत्र

श्रद्धेय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते !

आपके 'सार्वदेशिक' ता० २६-६-८७ में प्रकाशित "ऋषि दयानन्द प्रदर्शित आर्य समाज का मार्ग" शीर्षक लेख लेखक डा० भवानीलाल भारतीय का पढ़ा। पढ़ने पर मुझे आर्य समाज के राजनैतिक सिद्धान्त का मार्ग दर्शन हुआ। अस्तु ! आपके "सार्वदेशिक" द्वारा ही मैं इस लेख के लेखक डा० भवानीलाल भारतीय जी को धन्यवाद भेज रहा हूं।

साथ आशा करता हूं कि भविष्य मे इसी तरह के लेख से हम लोगों को लाभान्वित करते रहेंगे।

त्रिभुवन पाठक 'शास्त्री'
मन्त्री आर्यसमाज
ग्रा० पो० मधा—विपराही
जि० सीतामढ़ी (बिहार)

सार्वदेशिक पत्र के बढ़ते हुए आजीवन सदस्य

ग्राहक संख्या — नाम तथा पता

७९१४ श्री कोषाध्यक्ष, आर्य समाज सोहन गंज, सब्जी मण्डी दिल्ली।

१३५७४ ,, आदित्य वीर २६५ आर्य निवास बाहवाई, बरेली (उ० प्र०)।

२३७६ ,, जानकी देवी धीर, धीर लाज, डिग्गी रोड अलीगढ (उ० प्र०)।

४९६० ,, जगलाल प्रसाद, सहदेव प्रसाद, जमालपुर गोगरी मुगेर।

२०५ ,, मन्त्री जी, आर्य समाज कोडिया गंज अलीगढ (उ०प्र०)

४८९६ ,, के० बख्शी एडवोकेट, ई-१२ बाली नगर नई दिल्ली।

१३६२३ ,, कालूराम जी दुकानदार ग्राम घौलाड़ी, मेरठ (उ०प्र०)

१३३१५ ,, मन्त्री जी, आर्य समाज सैक्टर सात फरीदाबाद (हरि०)

७९४६ ,, मन्त्री जी, आर्य समाज मंदिर डा० बी० बरुआ रोड गोहाटी।

११३६ ,, मंत्री जी, आर्य समाज गुरम बस्ती प्रधान नगर सिलीगुडी।

१०१०७ ,, कोषाध्यक्ष आर्य समाज किलेधारूर, केज जि० बीड।

११२५० ,, अशोक आदित्य सिंह राठौर फतेहपुर, उदयपुर।

७६७४ ,, हीरा लाल दलाल पीतल कारखाने के सामने जम्मू तवी।

१३६९० ,, सूबेदार आर्य एण्ड संस, आयुर्वेदिक प्रयोगशाला बेवर मैनपुरी।

१३६९५ ,, मती आशा बत्रा, एस ब्लाक ३१७ ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली।

१३६९७ ,, वी० एम० दुआ १६१/४बी कोटला रोड नागपुर।

८७६८ ,, विद्या सागर दीक्षित प्रधान आर्य समाज हस्तिनापुर मेरठ (उ० प्र०)।

१६३१ ,, आर्य समाज रामनगर रुडकी।

८७७७ ,, देवीदास आर्य, प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा गोविन्द नगर कानपुर।

१२१६६ ,, नन्दबिहारी साहू, साहू निवास, पल्टन बाजार बलान नगर डिब्रूगढ।

११८४० ,, विश्ववर्धन आर्य, ग्राम कटोरी पो० केशरी जि० मैनपुरी (उ० प्र०)।

१०१३८ ,, शान्ति स्वरूप अशोक कुमार बजाज हिंडौन सिटी सवाई माधोपुर।

१३७३९ ,, घूडमल आर्य, वाचनालय हिण्डौन सिटी (राज०)।

१३७३६ ,, मती शोभा शर्मा, १११८/१२ नाई वाली गली करोल बाग नई दिल्ली।

९९९५ ,, धर्मेन्द्र कुमार आर्य, ५-५६१ स्कूल ब्लाक शकरपुर दिल्ली।

१३७६६ ,, नरेश चन्द्र जैन, किनारी बाजार दरिबा कला दिल्ली।

१३७९८ ,, के० सी० जेठा डी ७५ पचशील इन्क्लेव नई दिल्ली।

१३७१८ ,, मन्त्री जी, आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश १ नई दिल्ली।

३७१६ए ,, मन्त्री जी आर्य समाज साभर लेक (राज०)।

१३५६६ ,, शिव कुमार ओम प्रकाश वर्मा, सारडा स्टेशन विभाग मुर्तिजापुर।

१३७९० ,, मन्त्री जी, आर्य समाज साकेत नई दिल्ली।

१०५७२ ,, जगदीश चन्द्र अग्रवाल द्वारा फोटो काफी हाउस सोजती गेट के बाहर जोधपुर।

१३८१८ ,, महेन्द्र कुमार आर्य, आर्य वीर निकेतन बिन्दकी फतेहपुर।

१३८५४ ,, शिवकुमार शास्त्री, जे १८६ त्रिकासपुरी नई दिल्ली।

१३८३५ ,, डा० उमेश पतरी डी० ए० वी० कालेज कोरापुर उडीसा।

९८२६ ,, आर० एस० मेहता वार्ड न० ५ म० न० ४६५ महरौली नई दिल्ली।

८६६० ,, प्रधान जी, आर्य समाज मदनूर जि० निजामाबाद (आ० प्र०)।

६१२३ ,, प्रधान जी, आर्य समाज कालका जी, नई दिल्ली।

१३८०६ ,, पवन कलर स्टूडियो सिकन्दराबाद हैदराबाद (आ प्र)

नोट – बार-बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए एक बार २५०) भेजकर सार्वदेशिक पत्र के आजीवन सदस्य बन।

वार्षिक शुल्क—२५) रुपये।

व्यवस्थापक
सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र

प्रेरक प्रसंग

प्रयाग में गंगा तट पर एक महात्मा रहते थे। वे वयोवृद्ध थे जब कभी महर्षि दयानन्द जी उन्हें मिलते, तो वे महर्षि जी को "बच्चा" कहकर सबोधन करते थे। एक दिन उस वृद्ध संत ने महर्षि जी को कहा—"बच्चा अगर आप पहले के ही निवृत्ति मार्ग पर स्थिर रहते और परोपकार के झगडे में न पड़ते तो आपकी इसी जन्म मे मुक्ति हो जाती। अब तो आपको एक और जन्म धारण करना पडेगा।"

महर्षि जी ने कहा—"महात्मन्! मुझे अपनी मुक्ति का कुछ भी ध्यान नहीं है। जिन लाखों मनुष्यों की मुक्ति चिन्ता मुझे चलायमान कर रही है, उनकी मुक्ति हो जाय, मुझे भले ही क्यों न कई जन्म धारण करने पड़ें। दुःखों के त्रास से, दीन दशा से और दुर्बल अवस्था से परम पिता के पुत्रों को मुक्ति दिलाते, मैं आप ही आ मुक्त हो जाऊंगा।"

आर्य जगत् के समाचार

गुरुकुल कांगड़ी के नये आयाम

गुरुकुल कांगड़ी को विद्यालय विभाग अब अपने नये स्वरूप को प्राप्त कर अग्रसर हो रहा है। विद्यालय का शिक्षा विभाग बरम् श्रेणी मान्यता प्राप्त अपने वैभव पर है।

छात्रावास की सुविधा, भोजन-जलपान का सुप्रबन्ध, क्रीडा (खेल) का विशेष प्रबन्ध स्वच्छ सरल जीवन सन्ध्या हवन, से पूर्ण आध्यात्मिक वातावरण शिष्यों को गुरुओं का निष्कपट सान्निध्य, इस प्रकार विद्या उपार्जन कराने का एक मात्र शिक्षा का केन्द्र अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का गुरुकुल कांगड़ी विद्यार्थियों के प्रवेश के पश्चात विद्याध्ययन प्रारम्भ स्थान-अभाव से बहुत से छात्रों को प्रवेश न मिल सका, अत उन्हें निराश होकर ही जाना पड़ा। स्वामी श्रद्धानन्द का गुरुकुल, आपका अपना गुरुकुल है, इस संस्था की सेवा में आपका योगदान सदा की भांति आगे भी देते रहें।

गुरुकुल कांगड़ी की गौशाला

दानी महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि इस गोशाला को अच्छे नस्ल की अच्छी गौओं की तुरन्त ही आवश्यकता है। आप अपनी सात्विक राशि से कुछ राशि निकाल कर गोशाला को अच्छी गौए प्रदान करावें। विद्यार्थियों को दुग्ध की इस कमी को आप शीघ्र पूरित करें।

—अर्जुनदेव, मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के ६२वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर जो १ नवम्बर ८७ से ८ नवम्बर ८७ तक मनाया जाएगा ७ नवम्बर को आर्य समाज के यशस्वी प्रधान श्री रामगूति केलाजी के स्वर्गीय सुपुत्र श्री राकेश केला की पुण्यस्मृति में समाज मन्दिर मे ही प्रात १० बजे 'महर्षि दयानन्द एवं शिक्षा पद्धति विषय पर विद्यार्थियो द्वारा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। प्रथम द्वितीय तृतीय आनेवाले छात्रो को क्रमश २५०) १५१) व १०१ तथा उतना ही अन्य पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। प्रधानाचार्य अपने छात्रो के नाम ५ नवम्बर तक आर्य समाज १५ हनुमान रोड को भेज दे।

वेद प्रचार सप्ताह

—आर्य समाज सिवरिया (सिवान) द्वारा वेद प्रचार सप्ताह सोल्लास मनाया गया। विमल चन्द्रदेव ने यज्ञोपवीत व राखी बन्धन किया। श्री तपनारायणराम, श्री शिवाश्रयराम, श्री रामछबीला बाबू के प्रेरक प्रवचन हुए।

—आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर में वेद प्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया गया। डा० मुंशीराम शर्मा, डा० प्रकाशमित्र शास्त्री, डा० शिववालक द्विवेदी, प्रो० लक्ष्मीनारायण शर्मा, श्री ब्रजदेव गुप्त, श्री सहदेव शास्त्री, डा गोविन्द नारायण मालवीय के दैनिक प्रवचन हुए।

—आर्य समाज तिजारा (अलवर) द्वार वेद प्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया गया। वेद कथा श्री वेदमुनि वानप्रस्थी द्वारा तथा भजनोपदेश, श्री प० मुन्शीराम जी द्वारा हुआ। यज्ञ पर यज्ञोपवीत संस्कार युवकों का किया गया। जनता पर अच्छा प्रभाव रहा।

निर्वाचन

—महर्षि दयानन्दार्य गुरुकुल कृष्णपुर [illegible] के लिए वार्षिक चुनाव में प्रधान श्री मनुदेवार्य मन्त्री श्री अशोक कुमारार्य चुने गए।

—आर्य समाज पिपीय हजारी बाग के निर्वाचन में प्रधान श्री केवलस्वामी जी व मन्त्री श्री विष्णुधारी पोद्दार चुने गए।

—आर्य समाज गया (बिहार के वार्षिक निर्वाचन में श्रीमती शान्ति देवी प्रधान एवं मन्त्री श्री जगदम्बा प्रसाद चुने गए।

—आर्य समाज मानसरवा नई दिल्ली के वार्षिक निर्वाचन में श्री युधिष्ठिर वर्मा प्रधान व श्री हरिकिशन सिंह मन्त्री चुने गए।

—आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर (तलवंडी) कोटा के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री ओमराज कुमरावत मन्त्री श्री मूलचन्द आर्य चुने गए।

आर्यसमाज स्वा० श्रद्धानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के वार्षिक निर्वाचन मे श्री नरेन्द्रसिंह भल्ला प्रधान व श्री रोशनलाल शर्मा मन्त्री चुने गए। अनेक उपयोगी उपसमितियों की नियुक्ति की गई।

श्री अमर स्वामी सरस्वती के निधन पर आर्य जगत के शोक प्रस्ताव

—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा समस्त दिल्ली की आर्य समाजों द्वारा आयोजित विशद् शोक सभा मे मूर्धन्य महात्माओं व विद्वानों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई। दिवगत आत्मा के लिए सद्गति की तथा शोक सतप्त आर्य जगत को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति की प्रार्थना की गई।

—आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर द्वारा शोक प्रस्ताव में महात्मा अमर स्वामी जी की महान सेवाओ की सराहना की गई।

—आर्य समाज मयाबास दिल्ली द्वारा शोक प्रस्ताव मे स्वामी जी को अजेय शास्त्रार्थ महारथी के रूप म श्रद्धांजलि दी गई।

—आर्य समाज पंजाबी बाग (पश्चिमी) नई दिल्ली ने एक शोक प्रस्ताव मे श्री अमर स्वामी सरस्वती के निधन को समाज की अपूरणीय क्षति बताया है। स्वामी जी विचित्र तार्किकता और व्युत्पन्न मति के धनी थे। प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर ने एक शोक प्रस्ताव द्वारा श्री अमर स्वामी जी सरस्वती के निधन को आर्य समाज की बहुत बड़ी क्षति बताकर दिवगत स्वामी जी आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

—आर्य पुरोहित सभा दिल्ली की ओर से आर्यसमाज करोल बाग मे नगर के सभी आर्य विद्वानो द्वारा शोक प्रस्ताव में श्री अमर स्वामी सरस्वती की महान सेवाओ की सराहना की गई। उनके देहावसान से एक स्तम्भ टूट गया प्रभु दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—आर्य समाज नामनेर आगरा (जहां अमर स्वामी जी महाराज ने प० भोजदत्त जी से शिक्षा प्राप्त की) द्वारा एक शोक सभा में महात्मा अमर स्वामी जी को शास्त्रार्थ समर का अन्तिम स्तम्भ बताया गया और आशा की गई कि परमात्मा उन्हें पुनर्जन्म देकर छोड़े गए कार्यकी पूर्ति करे।

—आर्य समाज तिजारा (अलवर) की एक शोक सभा में शोक सभा द्वारा अमर स्वामी जी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

मेरठ राहत कोष के लिये दान दाताओं के नाम

	धन राशि
(१) श्री पुनीत दास	१०)
(२) „ वी० पी० यादव	१०)
(३) „ पी० डी० पाण्डे	१०)
(४) „ प्रेम शकर आर्य	१०)
(५) „ शिवव्रत वानप्रस्थ	१०)
(६) „ बद्री नारायण गुप्त	१०)
(७) „ शम्भुशरण शर्मा	१०)
(८) „ भीम सिंह खत्री	१०)
(९) „ रामप्रसाद साहू	१०)
(१०) श्री नवल किशोल आर्य	१०)
(११) „ मनोहर पाहवा	१०)
(१२) „ राम बृन्दावन राय	१०)
(१३) „ कृष्ण चन्द जी	१०)
(१४) „ सत्यदेव प्रसाद आर्य	१५)
(१५) „ मुनेश्वर चौधरी	१०)
(१६) „ किशोरी लाल जी	१०)
(१७) „ हरि नारायण वैद्य	१०)
(१८) „ राम औतार चौरसिया	१०)
(१९) „ सीता राम चौधरी	१०)
(२०) „ सन्त राम पजारी	१०)
(२१) „ देवेन्द्र माटा	१०)
(२२) „ थाना राम जी	१५)
(२३) „ चुन्नी लाल चादना	१५)
(२४) „ गुप्त दान	५)
योग	२५१)

समाज मन्दिर निर्माण मे सहायता दें

आर्यसमाज हमीरपुर [उ०प्र०] मे भवन निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा है। यह जिला स्तर का मन्दिर है। उत्तर प्रदेश के आर्थिक दृष्टि से पिछले इस क्षेत्र मे आर्यसमाज के गौरव को बढाने के लिए उदार आर्य दानियो से निवेदन है कि वे अपनी सहायता निम्न पते पर भेज।

ज्ञानचन्द आर्य
प्रधान आर्यसमाज जनरल स्टोर
अमर बाजार हमीरपुर (उ० प्र०)

नौकरी में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त हो
आर्य समाज में हिन्दी दिवस

कानपुर — आर्य समाज हाल गोविन्द नगर मे आर्य समाज के तत्वावधान मे केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे हिन्दी दिवस पर सभा का आयोजन किया गया। जिसमे नौकरी मे अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करने की सरकार से माग की गयी। देश मे सरकारी नीति के कारण दिन प्रतिदिन अंग्रेजी के प्रति बढते मोह पर चिन्ता प्रकट करते हिन्दी को अपनाने का सकल्प किया गया।

सभा मे सर्व श्री जातिभूषण, बालगोविन्द अवस्थी, शुभकुमार, जगन्नाथ शास्त्री, श्रीमती दर्शना कपूर आदि के भाषण हुये।

श्याम प्रकाश
मंत्री,
केन्द्रीय आर्य सभा
कानपुर

सार्वदेशिक सभा द्वारा सूखा राहत कार्यक्रम के अन्तर्गत १४० बोरी गेंहू की पहली खेप रतलाम को रवाना

दिल्ली २३ सितम्बर १९८७।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक प्रेस विज्ञप्ति मे बताया कि आर्य समाज सूखा राहत कार्यक्रम के अन्तर्गत आज दिल्ली से १४० बोरी अनाज की पहली खेप रतलाम झाबुआ। बांसवाडा और कुशलगढ के सूखाग्रस्त आदिवासियो की सहायतार्थ भिजवा दी गई है। यह अन्न वहा आर्य समाज द्वारा सचालित बालवाडियो के माध्यम से वितरित किया जायेगा।

श्री स्वामी जी ने धर्म प्रेमियो, दानशील महानुभावो, धार्मिक सस्थाओ तथा व्यापारी वर्ग से विशेष अनुरोध करते हुए कहा कि इस पुनीत कार्य मे अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर।

उन्होने कहा कि उपरोक्त क्षेत्रो मे ईसाई मिशनरी- गरीब और सूखे से प्रभावित आदिवासियो के धर्मपरिवतन के कार्य मे लगे हुए हैं, इसलिए आर्य समाज ने इसी क्षेत्र से सूखाराहत कार्यक्रम प्रारम्भ किया है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

आतंकवाद को सख्ती से दबाया जाय

(पृष्ठ ९ का शेष)

ने आर्य वीरो के व्यायाम, कौशल की मुक्त कण्ठ से प्रशसा की और उनके उत्तेजक तथा आप्लावित कर देने वाले नारो के उत्तर दे देकर उनका हार्दिक स्वागत किया।

आर्य वीर जन जागृति सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन क्रमश प० बालदिवाकर जी हस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल एव राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुए। श्री क्षितीशकुमार वेदालकार, श्री उत्तमचन्द जी शरर श्री उमेद शर्मा, श्री वेदप्रकाश जी के व्याख्यान भी काफी प्रभावोत्पादक रहे।

इस अवसर पर कन्या गुरुकुल और गुरुकुल झज्जर के आर्य वीरो और वीरागनाओ के साथ प्रत्येक जिले की ईकाई के आर्य वीरो ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

—प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

निर्वाचन

—मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा तात्याटोपे नगर भोपाल का वर्ष १९८७ ८८ का निर्वाचन १९, १३ सितम्बर १९८७ को आर्य समाज मुरार मे सम्पन्न हुआ।

प्रधान — श्री इन्द्रप्रकाश गाधी
उपप्रधान—श्री परमालसिंह, श्री मूलचन्द आर्य, श्री सेवाराम आर्य श्री गौरीशकर, श्री ओमप्रकाश आर्य।
वरिष्ठ उपप्रधान—श्री अजयकुमार सेठो
मन्त्री—श्री यशपाल आर्य
१५ अन्तरग सदस्य चुने गये।

—आर्यसमाज झापा नेपाल के वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान श्री कमलाकान्त आत्रेय [शास्त्री] मन्त्री श्री पुण्य प्रताप उप्रेती (एम० ए०) चुने गए।

—आर्यसमाज राजेन्द्रनगर नई दिल्ली के निर्वाचन मे प्रधान श्री नेमराज आर्य व मन्त्री श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्ता चुने गए।

पंजि० न० डी० (सी०) १७० सार्वदेशिक साप्ताहिक (४-१०-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९१
R.N 626/57 Licensed to post without prepayment licence No. U 91 Posting D.P.S.O. on 11 1-10-1987

समालोचना

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 'अपना जन्मचरित्र'

सम्पादक—डा० आदित्यपालसिंह आर्य एव डा० वेदव्रत 'आलोक'
प्रकाशक—अदिति प्रकाशन, १५१५ हरध्यानसिंह मार्ग,
करोल बाग, नई दिल्ली-५
मूल्य पुस्तकालय सस्करण १००) साधारण सस्करण ६०)

थियोसोफिस्ट' के अपनी आत्मकथा की पहली किरन भेजते हुए १८०९ मे महर्षि ने इसका शीर्षक स्वय इन शब्दो मे निर्धारित किया था—'मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती, सक्षेप से अपना जन्मचरित्र' लिखता हूँ।" पत्रिका के लिए भेजी और स्वय लिखाई इस जीवनी से पहले १८७५ मे 'पूना प्रवचन' के १५वें उपदेश मे भी वे अपने प्रारम्भिक जीवन का सार्वजनिक रूप से कुछ सक्षिप्त परिचय दे चुके थे और इन दोनो अवसरो से पहले १८७३ मे कलकत्ता के बाराहनगर मे दस दिन तक एकान्तवास करते हुए महर्षि ने 'ग्रन्थ-प्रणयन' द्वारा ब्रह्मसमाजी जिज्ञासुओ को पर्याप्त विस्तृत विवरण लिखाए थे, जो बहुत समय तक लुप्त रहे। बाद मे प० दीनबन्धु जी वेद शास्त्री ने खोजकर इन्हें महर्षि की अज्ञात जीवनी। नाम से सार्वदेशिक मे छपवाया और स्वामी सच्चिदानन्द योगी ने पुस्तक रूप मे 'योगी का आत्म चरित्र' नाम से सम्पादित किया। इन तीनो जीवनियो के सम्पूर्ण सन्तुलन की बडी अपेक्षा थी। उसी अपेक्षा की पूर्ति है यह ग्रन्थ 'अपना जन्मचरित्र'।

प्रारम्भ में ४५ पृष्ठों का 'सम्पादकीय वक्तव्य' इन तीनों जीवनियो का विद्वत्तापूर्ण और आत्म स्पष्टीकरण करता है। जन्मचरित्र के तीन सौ से कुछ अधिक पृष्ठो मे पचासो से अधिक टिप्पणिया अन्वेषण, विद्वत्ता, सूझबूझ तर्क और सत्य-निष्कर्ष-क्षमता को खूबी प्रमाणित करती हैं। अनेक परिशिष्टो मे थियोसोफिस्ट में छपी अग्रेजी आटोबायोग्राफी, अज्ञात-जीवनी की प० दीनबन्धु जी द्वारा लिखित पृष्ठभूमि, ऋषि दयानन्द की जन्मतिथि, ऋषि दयानन्द के प्रारम्भिक ४० वर्षों का पाठनक्रम और यापनक्रम, शब्दानुक्रमणिका आदि प्रमुख है।

—सम्पादक

लेः
प्रक ... भारतभूषण कुकरेजा धर्मार्थ ट्रस्ट गुहाटी
मूल्य रुपये १५

लेखक स्वय योग के साधक हैं। अग्रेजी भाषा में इस समय तक अनेक पुस्तकें योग पर लिखी गई है। परन्तु योग की क्रियाओ पर जितनी सरलता व प्रमाणिक रूप से इस पुस्तक मे विवेचन किया गया। अन्यत्र दुर्लभ है। व्यवहारिक रूप से योग क्रियायें सीखने के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी व सरल है। साधक स्वय चिकित्सक होने के कारण शरीर शास्त्र की सभी ... करते हैं। हम अग्रेजी भाषा के पाठकों से इस उपयोगी पुस्तक के अध्ययन की प्रार्थना करते है। इसका हिन्दी रूपान्तर होने से किसी भाषा भाषी भी लाभान्वित हो सकेंगे।

—सम्पादक

महात्मा अमर स्वामी जी को श्रद्धांजलि

—आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर द्वारा महात्मा अमर स्वामी जी के देहावसान पर शोक सभा द्वारा श्रद्धाजलि अर्पित की। सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य ने की।

—नगर महिला आर्यसमाज गाजियाबाद द्वारा एक शोक सभा में महात्मा अमर स्वामी जी के देहावसान को अपूरणीय क्षति बताकर श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८८] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष। ३७४७७१
वर्ष २२ अंक ४१] कार्तिक कृ० १२ स० २०४४ रविवार ११ अक्तूबर १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

राजस्थान में सती निरोधक अध्यादेश लागू

वेदामृत

घर में सुख समृद्धि हो

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि,
गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो।
अजरासस्ते सख्ये स्याम,
पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व॥
ऋग्० ७ ५४।२॥

हिन्दी अर्थ—हे गृहपति यज्ञिय अग्नि! तुम हमारे उद्धारक होओ। हे चन्द्रतुल्य आह्लादक! तुम गायों और घोडो से हमारे घर की समृद्धि करो। तुम्हारी मित्रता मे रहते हुए हम अजर (वृद्धावस्था से रहित) हों। पिता जिस प्रकार पुत्रों को, उसी प्रकार हमें आनन्दित करो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

जयपुर, १ अक्तूबर। राजस्थान सरकार ने आज सती निरोधक एक अध्यादेश जारी किया है जिसमें सती होने को उकसाने और गौरवान्वित करने वालो के लिए कडी सजा देने का प्रावधान किया है।

मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी ने मन्त्रीमण्डल की बैठक के बाद बताया कि सती होने वाले सभी मामलो की सुनवाई सत्र न्यायाधीश विशेष न्यायालय मे करेंगे। यह अध्यादेश आज से लागू हो गया है। इस पर राज्यपाल श्री बसन्त दादा पाटिल ने स्वीकृति दे दी है।

सती होने के प्रयास पर इस अध्यादेश के लागू होने के बाद से १ वर्ष से ५ वर्ष की कैद तथा जुर्माने की सजा का प्रावधान किया गया है। सती के लिए उकसाने वाले व्यक्ति अथवा व्यक्तियो को मृत्युदड अथवा उम्रकैद और जुर्माने की सजा दी जा सकेगी।

सती होने को गौरवान्वित करने वालो की १ वर्ष से ७ वर्ष की कैद और पाच हजार रुपए के जुर्माने की सजा दी जाएगी। जिला मजिस्ट्रेट द्वारा लगाए गए प्रतिबन्ध की अवहेलना करने वाले को ५ वर्ष तक कैद और दो हजार रुपयो तक का जुर्माना किया जा सकेगा।

इस अध्यादेश के बाद जिला मजिस्ट्रेट को यह अधिकार प्राप्त है कि वह सती स्थल को हटा सकता है और वहा एकत्रित धन और सामग्री को जब्त कर सकता है।

मुख्यमन्त्री श्री जोशी ने कहा कि इस अध्यादेश का उद्देश्य सती प्रथा की सामाजिक कुरीति को रोकना है।

वार्ता के अनुसार अध्यादेश मे स्पष्ट किया गया है कि यह प्रावधान एक सितम्बर १९८७ से पहले बने मन्दिरो या ढाचों पर लागू नही होगा।

अध्यादेश में सती से तात्पर्य उस आचरण को बताया गया है जिसमें किसी विधवा को उसके पति के शव अथवा उससे सम्बन्धित किसी अन्य वस्तु के साथ जलाया जाए या गाडा जाए, भले ही ऐसा उस विधवा की इच्छा से ही क्यो न हो।

अध्यादेश मे प्रावधान है कि अब यदि कोई महिला सती होने का प्रयास करती है तो उसे एक से पाच साल तक की सजा के साथ ही जुर्माना भी भुगतना पडेगा।

इस अध्यादेश में यह भी व्यवस्था है कि यदि कोई व्यक्ति किसी विधवा महिला को सती होने का प्रयास करने मे भागीदार पाया जायेगा तो उसे उम्र कैद व जुर्माने की सजा दी जा सकेगी।

अध्यादेश के अनुसार सती से सम्बन्धित अपराधो की सुनवाई सिर्फ विशेष न्यायालय मे ही हो सकेगी। इस तरह के विशेष न्यायालय का गठन राज्य सरकार उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श के बाद करेगी तथा इसका न्यायाधीश सत्र न्यायाधीश स्तर का होगा।

उल्लेखनीय है कि इसी अध्यादेश को लाने के लिए राज्य सरकार को कल राज्य विधान सभा के पावस अधिवेशन को अनिश्चित काल के लिए स्थगित करना पडा था।

आर्य नेता श्री मुलखराज भल्ला दिवंगत



दिल्ली ५ अक्टूबर। आय समाज के प्रसिद्ध नेता, श्री मुलखराज भल्ला का ३० सितम्बर को एक कार दुर्घटना में देहान्त हो गया। आप गत सप्ताह शिमला के निकट अपने फार्म पर २ दिन के लिए गए थे। लौटते हुए पहाड़ की ऊचाई पर कार मे खराबी आने के कारण उनकी गाडी ३५ फुट नीचे खड्ड मे जा गिरी। उनका ड्राइवर व दो साथी छलाग लगाकर बच गए परन्तु श्री भल्ला जी कार समेत नीचे खड्ड मे जा गिरे। बडी ही रोमाच कारी स्थिति मे श्री भल्ला जी को ऊपर लाया गया। थोड़ समय पश्चात् रास्ते मे ही उनका देहान्त हो गया। पहाडों से प्यार करने वाला धर्मपरायण निर्लेप निस्काम सेवी आर्य रत्न हिमालय की गोद मे ही अन्तिम श्वास लेता हुआ सदा के लिए सो गया।

भल्ला जी के शव को दिल्ली लाया गया। शोक सतप्त परिवार तथा आर्य जगत के अश्रु पूरित नेत्रो से दानवीर श्री भल्ला जी को निगम बोध घाट पर वेद मन्त्रो की पवित्र ध्वनि के साथ उनके पुत्र ने अग्नि देव को समर्पित कर दिया। उनके अन्तिम सस्कार के समय श्मसान घाट पर श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री रामनाथ सहगल श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आ प्र सभा तथा दिल्ली के सेकडों आर्य नेता व विद्वान व भल्ला जी परिवार जन उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि सभा

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली तथा आय समाज मन्दिर मार्ग दिल्ली के तत्वावधान मे एक शोक सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे आयोजित की गई। आर्य समाज के अनेक नेताओ ने अपने भाषणों मे श्री मुलखराज जी भल्ला की आय समाज के प्रति किए गए महान सेवा कार्यो की प्रशसा करते हुए भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। श्री भल्ला जी वर्षों तक सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा डी० ए० वी० कालेज मेनेजिंग कमेटी के उप प्रधान पद पर काम करते रहे वे अनेक सस्थाओ के सचालक थे।

श्री मुलखराज भल्ला का जन्म पट्टी (पजाब) मे हुआ। वे बहुत बडे उद्योगपति थे। पट्टी मे आय सस्थाओ के सचालन मे भी उन्होने खुले हाथों से दान दिया। उनकी मृत्यु से आर्य समाज अपने एक सच्चे हितैषी व सेवक से वचित हो गया जिसकी स्थान पूर्ति असम्भव दिखाई देती है।

श्री वीरेन्द्र (प्रताप) का एक विवादास्पद लेख

और हम उस देश मे रहते हैं "जिस देश मे गगा बहती है

ग गा तो बह रही है हजारो वर्षो से अपनी शान के साथ एक ही तरह से बह रही है। इसमे कोई फर्क नही आया परन्तु वह लोग जो गगा स्नान के लिए जाते हैं वह बदलते जा रहे हैं। कभी यहा कुछ महिलाए अपने आपको अपने पति के साथ जला दिया करती थी उन्हें लोग सती कहा करते थे। परिस्थितिया बदलती गई और उसके साथ यह रिवाज भी समाप्त हो गया। और उसका स्थान तलाक (पति पत्नी का सम्बन्ध विच्छेद) ने धीरे धीरे ले लिया। (स्मरण रहे कि मुगल शासन से पूर्व की इस प्रकार की ऐतिहासिक घटना का कही कोई उल्लेख इतिहास में उपलब्ध नही—सम्पादक)

एक समय था जब यह समझा जाता था कि विवाह के द्वारा स्त्री पुरुष का बन्धन फिर आयु भर कभी टूट नहीं सकता। पुरुषो की अपेक्षा स्त्रिया अधिक इस धार्मिक बन्धन का पालन करना अपना परम धर्म समझती थी। यही कारण था कि जब किसी के पति का देहान्त होता था तो वह भी उसके साथ अग्निदाह करती थी लोग उसे सती कहते थे और इसका रिवाज राजस्थान मे बहुत अधिक था। राजपूतो की मुगलो के साथ बहुत देर तक लडाइया होती रही हैं। कई बार कई मुगल सैनिक राजपूत सैनिक की मृत्यु के बाद उसकी धर्म पत्नी को पकड लिया करते थे। उनसे बचने के लिए औरतो ने सती हो जाना श्रेयस्कर समझा और इस प्रकार यह क्रम दीर्घकाल तक चलता रहा। इसका एक ही उदाहरण नही। १९४७ मे भी देखने को मिला जब हमारी बहू बेटियो को पाकिस्तान मे अपहरण करने के प्रयत्न किये गये। उनमे से अनेको ने आत्म हत्या कर ली थी। ऐसी भी कई महिलाऐ जिन्होने विषपान कर लिया था। कईयो ने कुओं में छलाग लगाली थी उनमें कुमारिकाऐ भी थी, विवाहित महिलाए भी थी।

इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि हमारी परम्पराऐ क्या थी? और हमारी नारियो का चरित्र कैसा था।

अब परिस्थितिया बदल रहा हैं अब पति पत्नी सम्बद्ध विच्छेद का समय आ गया है। अब तो यह रिवाज 'चट मगनी पट विवाह और फट तलाक'। ऐसे बीसियो उदाहरण मिलते हैं जहा विवाह के एक वर्ष के अन्दर ही सम्बन्ध विच्छेद हो गया। इसके लिये मैं केवल स्त्रियो को ही उत्तरदायी नही ठहराता पुरुष का उत्तरदायित्व भी कम नही। कई परिस्थितियो मे पुरुष का उत्तरदायित्व बहुत अधिक होता है। मैं इस समय इस विवाद मे नही पड़ना चाहता कि किसका उत्तरदायित्व अधिक है और किसका कम। मैं तो एक सत्य का वर्णन कर रहा हूँ कि हमारे देश मे स्त्री पुरुष सम्बन्ध विच्छेद का रोग बढ रहा है। और यह वह देश है जहा स्त्रिया सती हो जाया करती थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि आज भी हमारे देश मे वे देविया विद्यमान हैं जो नारी जाति के सम्मान और प्रतिष्ठा को स्थापित रखने के लिये अपने आपको बलिदान कर सकती हैं। विगत दिवसो मे राजस्थान के एक ग्राम मे जो सीकर जिले मे हैं एक व्यक्ति मानसिंह का पेट की किसी बीमारी के कारण देहान्त हो गया और उसका कुछ समय पूर्व ही एक रूपकुवर नाम की अठारह वर्षीय कन्या से विवाह था। जब उसके पति का शव चिता पर रख दिया गया तो वह लडकी दुलहन के लिबास मे वहा पहुच गई। जब उसके पति की चिता को अग्नि दी गई तो वह भी वहा आकर बैठ गई। अपने पति का सिर उसने अपनी गोद मे रख लिया और वह उस जलती हुई चिता में बैठी की बैठी बैठी रही। अपने पति के साथ ही उसकी भी मिट्टी मिट्टी में मिल गई।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादकीय

२ अक्टूबर का संदेश

२ अक्टूबर इस वर्ष देश में दो विशेष संदेश लेकर आया। दोनों ही सन्देश विवेकशील भारतीय जनता के लिए न केवल चिन्तन का विषय बनकर आए अपितु हमें कुछ झकझोरने भी आए।

२ अक्टूबर को हमने विजयादशमी पर्व मनाया जिसे हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने अनेक बार असत्य पर सत्य की विजय का पर्व कहकर अभिव्यक्त किया है। हमारे ऋषियों ने सदा 'सत्यमेव जयते नानृतम' का नारा लगाया था जिस नारे को हमारे राष्ट्र नेताओं ने भारतीय शासन का मूल मन्त्र बनाया है। २ अक्टूबर को ही भारतीय राष्ट्र के राष्ट्र पिता के रूप में जन्म लेने वाले, सत्य व अहिंसा के पुजारी महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी का जन्म दिवस है। जिनका बलिदान सत्य की रक्षा के रूप में आज तक राष्ट्र की अमर सम्पत्ति के रूप में सुरक्षित है।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने भी सत्य की ही रक्षा व सत्य धर्म की ही स्थापना के लिए विषपान किया था।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का जीवन भी सत्य धर्म के पालन व सत्य मर्यादाओं की स्थापना का एक अनुपम उदाहरण है।

आओ हम विचारें कि श्रीराम को सत्य का यह सन्देश कहां से प्राप्त हुआ था। रामचरित के सर्वश्रेष्ठ लेखक महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम के बारे में लिखा है कि श्री राम का जीवन क्या था और वे कौन थे —वे लिखते हैं—

आर्य सर्व समश्चैव सदैव प्रिय दर्शनि

वेद वेदाङ्ग तत्वज्ञ धनुर्वेद चनिष्ठित्

श्रीराम जी आर्य थे एवं प्रभु की वाणी वेद व वेद के सभी अंगों के तत्वों का पूर्णज्ञान रखते थे।

लाखों वर्ष से हम श्रीराम को याद करते हैं और अब तो उनकी लीलायें भी मनाई जाने लगी है। जिस पर देश की जनता अरबों रुपए व्यय करती है। कुछ लोग अवतारवादी उनके फिर जन्म लेने की आशा लगाए बैठे हैं। वे भक्तों का संकट हरने आते हैं। परन्तु क्या आश्चर्य है कि प्रतिवर्ष हम नकली राम व नकली रावण बनाते हैं। फिर भी राम की विचारधारा की बजाय समाज में रावण की विचारधारा का अधिक प्रभाव बढ़ रहा है।

जिस रावण को हम जलाते हैं उसने मनुष्य जाति का बदला लेने के लिए सीता का अपहरण अवश्य किया परन्तु माता सीता के सतीत्व पर आंच नहीं आने दी आज न जाने कितनी सीताओं के न केवल अपहरण होते हैं उनके सतीत्व भी नष्ट किए जाते हैं व हत्याएं भी कर दी जाती हैं। कोई राम-रावण युद्ध की कल्पना भी नहीं करता। हमारा नैतिक पतन राक्षसों जैसा भी न रहकर घोर अधमता को प्राप्त हो गया है।

क्या भारत वही भारत है जिसमें राम राज्य की स्थापना का देखने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी प्रतिक्षण राम ही राम पुकारते थे। कहां गई राष्ट्र-पिता की वह कल्पना। राष्ट्र को आज कोई मर्यादा पुरुषोत्तम राम का उत्तराधिकारी नहीं दीखता। राष्ट्रपिता के उपदेश उनके रचित ग्रन्थों में ही खोजा पा रहे हैं।

केवल दयानन्द का सिपाही आर्यसमाज वेद वेदांग की बात करता है। आज प्रचार का युग है। रावण वाद के प्रचार के मुकाबले में आर्य समाज की शक्ति नगण्य ही कही जा सकती है।

क्या गांधी के उत्तराधिकारी राष्ट्र के सामाजिक राजनैतिक व आध्यात्मिक प्रश्नों पर उस दृष्टिकोण से विचार करते हैं जिसकी अपेक्षा राष्ट्रपिता ने उनसे की थी।

केवल वोट के सहारे राज चलाने वालो ने कभी अपने वोट दाताओं के जीवन के महान मूल्यों का मूल्यांकन किया है। राम संस्कृति व रावण संस्कृति के भेद को उन्होंने समझा है। संसार के सभी देश अपने भविष्य की चिन्ता से चिन्तित हैं क्योंकि उनका अतीत कुछ नहीं। परन्तु भारत तो महान अतीत का उत्तराधिकारी है। इसीलिए राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा था—

हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी

आओ विचारें बैठकर सारी समस्याएं सभी

काश कि २ अक्टूबर के इस महान पर्वो के मूल गम्भीर संदेश को हम समझ पाते व भारत की महानता के निर्माण का प्रयास कर पाते।

वैदिक गणित की महत्ता

पश्चिमी देशो के वैज्ञानिक अब वैदिक गणित-पद्धति पर शोध कर आज की आधुनिक गणित की गुत्थियो को सुलझाने का उसे सबसे सरल साधन बता रहे हैं और गणना में कम्प्यूटर से भी आगे रहने की क्षमता बताकर इसकी महत्ता की ओर ध्यान आकृष्ट कर रहे हैं, हमारे देश के वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों की इस ओर उदासीनता बड़े दुख और खेद की बात है। इंग्लैण्ड के भौतिकी के जाने-माने विद्वान और लन्दन पालीटेकनिक के प्रोफेसर निकोलसने वैदिक गणित पद्धति की व्याख्या पर कई पुस्तकें लिखी हैं। उनका कहना है कि वैदिक गणित पद्धति के आधार पर कम्प्यूटर का निर्माण वैज्ञानिक शोध की बहुत बड़ी उपलब्धि है। अभी हाल की अपनी भारत यात्रा के दौरान वहुकी विश्वविद्यालय परिसर मे वैदिक गणित शोध सम्बन्धी कार्यशाला और गोष्ठी मे अपने भाषण में प्रोफेसर निकोलसने भारत में एक ऐसे केन्द्र की स्थापना देखने की अपनी आकांक्षा प्रकट की जहां संस्कृत के गूढ़ अध्ययन की व्यवस्था के साथ वैज्ञानिक शोध का धरातल और कम्प्यूटर की भी सुविधा हो। सर्व विद्या की राजधानी' माने जाने वाले बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय में यह सब सुलभ हैं। विशेष बात यह भी कि वैदिक गणित पर शोध कर स्वनामधन्य जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थ ने जो प्रथम पुस्तक तैयार की थी उसका प्रकाशन महामना मालवीय जी के आग्रह पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से ही हुआ था। यद्यपि वैदिक गणित सम्बन्धी वह प्रथम प्रकाशन अब दुर्लभ है लेकिन देश-विदेश मे उसके पांच 'संस्करण हो चुके हैं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर और सम्बद्ध विभागों के विद्वान और अधिकारी कम्प्यूटर समन्वित वैदिक गणित शोध केन्द्र की स्थापना के वैदिक गणित के विदेशी विद्वान के स्वप्न को चरितार्थ करने की ओर अग्रसर होंगे, ऐसी आशा की जानी चाहिए।

रूपकुंवर स्वेच्छा से सती नहीं हुई

देवराला (राजस्थान) क्या रूपकुंवर स्वेच्छा से अपने पति मालसिंह की चिता पर सती हुई ? इस प्रश्न का उत्तर अत्यन्त रोमांचकारी शीघ्र मिलने की सम्भावना है। तब सम्भवतया उन लोगो को गम्भीर आघात लगेगा जो सती प्रथा को उचित सिद्ध करने के लिए भरपूर प्रयत्न कर रहे हैं। अब जब कि गाव के प्रमुख शहरियो ने दबी जबान से कुछ-कुछ बोलना प्रारम्भ कर दिया है। आश्चर्य जनक रहस्योद्घाटन होने लगे हैं। अत्यन्त विश्वासनीय सूत्रो से पता चला है कि रूप कुंवर से विवाह होने के पश्चात् से ही मालसिंह का नपुंसकता आदि का इलाज चल रहा था। यह बात भी सामने आई है कि १७ जनवरी १९८७ को विवाह होने के पश्चात् और ७ सितम्बर को सती होने तक रूपकुंवर मुश्किल से २० दिन ही अपने पति के घर रही। डोली आने के १० दिन बाद वह अपने पिता के घर जयपुर लौट गई थी और पति की बीमारी की खबर सुनकर कुछ दिन पूर्व ही वह सुसराल वापिस आई थी। मालसिंह को इलाज के लिए जयपुर या कही और उत्तम इलाज के लिए अच्छे हस्पताल की बजाए सीकर हस्पताल ले जाया गया क्योकि शायद उसके घर वाले कुछ छुपाना चाहते थे।

पता चला है कि जयपुर मे अपने निवास के बीच रूपकुंवर की मित्रता माली जाति के एक नवयुवक से होगई। और वह उसके साथ तीन दिन गायब भी रही। इस प्रकार स्वेच्छा से सती होने की बात मिथ्या सिद्ध होती है। क्योकि पति पत्नी अधिक समय इकट्ठे रहे नही न इन दिनो में इतना लगाव उत्पन्न हुआ कि वह पति का वियोग न सह पाती। यह भी कहा जा रहा है कि शहर मे पढी लिखी और वहा के वातावरण मे ढली रूपकुंवर इस देहात के दूरवर्ती गाव मे कैसे ब्याही गई। जहा पक्की सडक तक नही है। इसका उत्तर मिला है कि जात पात के बन्धन बडे कठोर होते हैं। राजपूत केवल राजपूतो मे ही विवाह कर सकते हैं। वे अन्यो मे विवाह कर ही नही सकते फिर दहेज की समस्या भी है। यह समस्या तो इतनी भयकर है कि दूल्हों का अपहरण करके बलपूर्वक विवाह रचाया जाता है रूपकुंवर की हत्या या आत्महत्या के केस मे कानून के अनुसार तो कार्यवाही की ही जाएगी। परन्तु जिस बात को सयम करना कठिन है वह यह है कि राजपूतो मे उत्साह प्रान्त मे इतना है कि सैकडो की सख्या मे अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने सती स्थल पर लोग चले आ रहे हैं। पढा लिखा हो या अनपढ शहरी या देहाती उसे आज के युग परिवर्तन से कोई अन्तर नही पडता नहीं इस रोमाचकारी घटना से कोई लज्जा का अनुभव होता है।

नंगी तलवारो के साए में सती की चुनरी रस्म सम्पन्न लाखों की भीड़ सरकारी पाबन्दी की धज्जियां

भारतवर्ष का इतिहास करोडों वर्ष पुराना है। इतिहास की इस लम्बी परम्परा में किसी प्रामाणिक पुस्तक वेद उपवेद ब्राह्मण ग्रन्थ उपनिषद रामायण महाभारत आदि मे कही सती प्रथा की वैधता या उसकी कोई चर्चा नहीं पाई जाती।

केवल मुगल काल में भारतीय ललनाओ ने अपने धर्म की रक्षा के लिए जौहर की ज्वाला जलाई थी। कुछ स्वार्थी पण्डितो ने इस प्रथा को धार्मिक रूप देने के लिए सतियो के चबूतरे सतियों के मन्दिरों का निर्माण करके उस पर मन्दिरकी मूर्तियो की भांति चढ़ावा व व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया। फिर इस प्रथा की धार्मिकता का रूप देकर देश मे सती प्रथा को बढावा दिया।

ब्रटिश काल में इस प्रथा को अमानवीय व अधार्मिक मानकर इसके विरुद्ध न केवल अखिल भारतीय आंदोलन किया अपितु उसके सम्बन्ध में एक अखिल भारतीय सती प्रथा निरोध कानून भी पास कराया। देश के सभी समझदार मानवता वादियों ने इसका स्वागत किया।

सती प्रथा व आर्यसमाज

श्री बृजमोहन तूफान उपाध्याय
जनता पार्टी दिल्ली सदस्य

तलाक के सम्बन्ध में जो भी सम्मति श्री वीरेन्द्र जी की हो वे रखे परन्तु सती की यह घटना एक भयानक नैतिक गिरावट का नमूना है। हमारा समाज एक विधवा का ठीक पालन का प्रबन्ध भी नही कर सकता न उसे मानसिक सुरक्षा प्रदान कर सकता है। सती मन्दिर मे पूजा करने से न तो तलाक प्रथा समाप्त होगी न स्त्रियो को समाज मे कोई स्थान मिलेगा।

यह असम्भव है कि अग्नि की गर्मी और जलन से कोई व्यक्ति अपनी जान बचाकर भागने का प्रयत्न न करे। सती की पुरानी घटनाय और इतिहास के जानकर यह जानते हैं कि स्त्रियो को सती होने पर कैसे विवश किया जा सकता था। जौहर की रस्म का किसी विशेष पाशविक युग मे होना समझ में आ सकता है परन्तु यह सती की घटना केवल रोगटे ही खडे नही करती अपितु यह भी सिद्ध करती है कि अभी हमे अज्ञान व पिछडेपन से निपटने के लिए सैकडो वर्ष और चाहिए। मनुष्य किसी विशेष उद्देश्य के लिए प्रसन्नता से जान दे सकता है परन्तु पति के मर जाने पर उसकी पत्नी जीवित न रहना चाहे और जलकर मर जाए यह किसी समाज के लिए गौरवप्रद बात नही। विशेषतया आर्यसमाज के नाम लेवाओ के लिए जिन्होंने स्त्रियो की शिक्षा का काम प्रारम्भ किया था। राजपूती शान क्या जलकर मरने का नाम है कोई मर्द आज तक क्यो नही जलकर मर गया। यह राजपूती शान क्या केवल स्त्रियो के जलाने तक ही सीमित है।

(दैनिक प्रताप से साभार)

हाल ही मे सीकर जिला राजस्थान के ग्राम देवराला मे एक १८ वर्षीय विवाहिता को परिवार के लोगो ने विवश कर अपने पति के साथ सती कर दिया। इसके विरोध मे राजस्थान की महिला संस्थाओं ने मिलकर राजस्थान हाईकोर्ट मेरिट दायर करके हाईकोट का आदेश प्राप्त किया है। अपने आदेश मे हाई कोट मे राजस्थान सरकार को आदेश दिया है कि वह इस काण्ड के अपराधियोको दण्डित कराने की पूरी कार्यवाही करे। १६ सितम्बर को सती प्रथा के कुछ समर्थक लोग सती स्थल पर एक चुनरी महोत्सव मनाने की योजना बना रहे थे हाईकोर्ट में उस पर रोक लगादी है। आदेश दिया है कि इस सर्वथा कानून विरुद्ध व अमानवीय प्रथा के प्रचारक उत्सव की पूरी शक्ति से रोक दे जिससे भविष्य के लिए कोई भी दुराग्रह इस इस काण्ड को न दोहरा सके। राजस्थान के गृहमन्त्री श्री गुलाबसिंह ने इस सती काण्ड की घोर निन्दा की है व अपराधी पाए जाने वाले व्यक्तियों को दण्डित करने का आदेश दिया। राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी ने भी इस घटना को सर्वथा अमानवीय व अपराधपूर्ण बताया है जिसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाएगी।

रोक के बावजूद सती समारोह सम्पन्न राज्य के सभी उपायों व हाईकोट द्वारा आदेश के बावजूद १६ सितम्बर को १ लाख भक्तों ने सम्मिलित होकर चुनरी महोत्सव को सफल बनाया। वैसे भी पिछले १०-१२ दिनों से दर्शनार्थ यात्रियों व श्रद्धालुओं का तांता ही लगा रहा व लाखों नारियल चढ़ाए गए।

राजस्थान सरकार के कर्मचारियों ने इसी वर्ष २७ अप्रैल को पाली जिले के बायडी गांव में पुलिस द्वारा कुमारी भवरीदेवी को सती होने से बचाया था। १० हजार की भीड़ में से पुलिस इस कन्या को बचा लाई थी। १२ मई १९८६ को भी जिला जयपुर के देवीपुरा गांव से जमली बलवन्त कुंवर को सती होने से बचा लिया गया था। २७ जनवरी १९८३ में झाबुआ के पास रानौता गांव की श्रीमती मोकुलबाई को भी पति के साथ जलाने से रोक लिया था। परन्तु इस बार पुलिस की अकर्मण्यताओं के कारण ऐसी अमानिक घटना को न रोका जा सका।

भारतीय भाषाओं की प्रवृत्ति संस्कृत की ओर

—डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री एम०ए०, पी.एच.डी., रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी—

आज नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत भाषाओं के अध्ययन-क्रम मे हिन्दी भाषी छात्रो के लिए हिन्दीतर भारतीय भाषा का अध्ययन अनिवार्य माना गया है। इसी कारण सस्कृत को अनिवार्य ही नही वैकल्पिक रूप मे भी पठन-पाठन के क्रम स्थान नही दिया जा रहा है। यह घातक दृष्टिकोण तथा चिन्तन है। भारतीय भाषाओ की स्वाभाविक प्रवृत्ति सस्कृत की ओर है। हिन्दी, सस्कृत, अग्रेजी, पालि आदि भाषाओ के प्रकाण्ड विद्वान्, प्रसिद्ध लेखक, समालोचक, कथा साहित्य के नवीन शिल्पकर्त्ता तथा भाषा विज्ञान के मर्मज्ञ स्व० प० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने आज से ८४ वर्ष पूर्व १९०३ ई० मे इस सम्बन्ध मे जो लिखा है, वह सक्षेप मे यहा दिया जा रहा है—"लोग पालिसी मे चाहे जो कुछ भी कह जाए, किन्तु अपनी लेखनी की गति को नही बदल सकते। पवित्र हिन्दी का सोता (स्रोत) सदा सस्कृत ही रहेगा। एक बात और बडी मजेदार है। बग भाषा के वैयाकरण सस्कृत की भरमार का सदा निषेध करते आये हैं। हिन्दी वाले भी ठेठ और तद्भव के पक्षपाती रहे हैं। मराठी लेखक भी 'देशज' पदो की स्तुति किया करते हैं। फिर क्या कारण है कि तीनो भाषाय सस्कृत से पेट भर शब्द लिए जाती हैं? इसका कारण ढूढने को दूर नही जाना पडगा। इन भाषाओ की नैसर्गिक प्रवृत्ति सस्कृत की ओर है और बच्चे को माता का दूध छुडाकर मैलन्स फुड" पर पालना कदापि ठीक नही होगा।"

'समालोचक' सख्या २०-२१ अत यह स्पष्ट है कि भारतीय भाषाओ का पोषण सस्कृत से ही होना चाहिए। सस्कृत का शब्द भण्डार विपुल और अक्षुण्ण है, यह इन सभी भाषाओ की जननी निसर्ग रूप से इनका स्वरूप और पोषण सस्कृत पर ही अवलम्बित है।

गुलेरी जी सस्कृत को देशीय और प्रान्तीय भाषाओ की जननी तथा पोषिका ही नही मानते थे वरन् पुरातत्व की खोज और धार्मिक ज्ञान के लिए इसमें व्युत्पत्ति होना आवश्यक समझते थे। उनकी मान्यता थी कि पुराकाल मे सस्कृत अवश्य ही बोलचाल की भाषा थी। इस विषय में "समालोचक" पत्र के २२व अक मे 'अत्र तत्र सर्वत्र' स्तम्भ के अन्तर्गत वे लिखते हैं—"क्या सस्कृत हमारी भाषा थी? समय के फेर से यह प्रश्न भी अब विवादास्पद हो गया है और बौद्ध साहित्य के प्रेमी और पक्षपाती सिद्ध करते हैं कि सस्कृत भारतवर्ष की भाषा (सर्वसाधारण की बोलचाल) कभी भी न हुई। गत दो महीनो से लदन की एशियाटिक सोसाइटी मे इस विषय का अच्छा विवाद चल रहा है। अवश्य ही पुरैतिहासिक वैदिक काल की बात छोड देनी चाहिए, किन्तु यह सिद्ध करना कठिन नही है कि ईस्वी सन् के प्रारम्भ मे सस्कृत सबकी भाषा थी। आजकल यदि इगलैण्ड मे समाचार पत्र और रेलतार न हो तो वहा भी कई प्रकार की 'प्राकृत' भाषाये चल जाय और इनके होते भी 'टाइम्स' और रस्किन की जो अग्रेजी है, वह वेल्स और स्काटलैण्ड की कभी नही है। रही यह बात कि चक्रवर्ती अशोक ने अपने लेख पालि मे लिखवाए, नाटको मे सबको समझाने को विदूषक प्राकृत मे मजाक करता है और सस्कृत केवल ब्राह्मणों की भाषा थी, इस पर वक्तव्य यह है कि साधुभाषा और व्यवहार की भाषा सदा ब्राह्मणो की ही होती है, भेद इतना ही है कि इगलैण्ड मे ब्राह्मण (साहित्य सेवी) घृणा से नही देखे जाते और सदा बदलते रहते हैं और यहा ब्राह्मणत्व जन्म के अधीन है। आम्निबस हाकने वालों की भाषा समाचार पत्रो की भाषा से भिन्न है, और भारत-मित्र' (यह गुलेरी जी के समय प्रसिद्ध हिन्दी पत्र था—लेखक) की भाषा दिल्ली के कहारो की भाषा नहीं है। टेनिसन के मोन्डरोजर की भाषा देखकर क्या कह सकते हैं कि साधु अग्रेजी केवल अग्रेज ब्राह्मणो की भाषा है? अशोक के काल मे शिथिल होकर सस्कृत फिर प्रबल हुई, क्योकि पालि और मागधी ग्रन्थो की टीकाये सस्कृत मे लिखी गई और जब बौद्धो का निर्वासन सस्कृत से ही हुआ तो अवश्य ही वह सर्वगम्य होगी। वर्तमान काल मे अवश्य ही सस्कृत का बुरा काल है, (यह लेख आज से ८४ वर्ष पूर्व का है, इस समय सस्कृत का हाल और ही गया गुजरा है और उसका भारतवर्ष की भाषा होना स्वप्न ही है। अब का भारतवर्ष सस्कृत के भारतवर्ष से बडा है। इस समय ऐसा नही है क्योकि स्वतन्त्रता के बाद भारत खण्डित हो चुका है। पाकिस्तान में, अफगानिस्तान मे तथा बगला देश मे सस्कृत पठन-पाठन सर्वथा बन्द हो चुका है। १९३८ ई० मे वर्मा (ब्रह्मदेश) भी भारत से अलग हो चुका है—लेखक) और अब वह केवल ब्राह्मण पुरुषो की ही भाषा रह गई है, अब्राह्मण और स्त्रिये इससे पृथक् हैं। (इस समय स्त्रियो या ब्राह्मणेतर वर्णों मे भी सस्कृतज्ञ प्रभूत सख्या मे हैं और इसका श्रेय महर्षि दयानन्द की धार्मिक क्रान्ति तथा उनकी स्थापित सस्था आर्यसमाज को है—लेखक) पहिले पिक, तामरस, नेम आदि शब्द और कई ज्योतिष शब्द सस्कृत ने यावनी भाषाओ से लिये थे और भवभूति काल में पालि से भी शब्द लिए गये। अब भी यदि सस्कृत का व्यवहार हो तो उसका व्याकरण शिथिल करना पडगा। किन्तु पुरातत्व की खोज और धर्म के सम्बन्ध मे उसकी चर्चा सदा विद्यमान रहेगी, इसमे सन्देह नही।"

हनुमान वेदो के ज्ञाता थे

—कर्मनारायण कपूर

(१) राम-रावण युद्ध की सबसे सनातन तथा प्रामाणिक पुस्तक वाल्मीकि रामायण है। उसके किष्कन्धा काण्ड (३-२८।२९) में लिखा है कि जब सीता जी की खोज करते हुए राम लक्ष्मण हनुमान से मिले तो हनुमान ने उनसे संस्कृत भाषा में वार्तालाप की। उनकी भाषा की सराहना करते हुए श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा—

जिस व्यक्ति ने ऋग्वेद के अध्ययन से अनेक की शिक्षा नहीं पाया, जिसने यजुर्वेद के पारायण से कुशलता प्राप्त नहीं की और जो सामवेद में प्रवीण नहीं वह ऐसी सुन्दर भाषा नहीं बोल सकता है।

(२) अशोक वाटिका (लंका) में हनुमान की सीता जी के साथ भेंट तथा वार्तालाप, युद्ध के पूर्व, युद्ध के मध्य तथा युद्ध के पश्चात हनुमान जी के सब कार्य इस बात के द्योतक हैं कि वह एक बुद्धिमान, चतुर तथा वीर योद्धा था जिस पर श्रीराम को पूर्ण विश्वास था।

(३) ऐसी स्थिति में यह महान आश्चर्य है कि ऐसे योद्धा को चित्रों में पूछ युक्त बन्दर दर्शाया गया है क्या ऐसे आदर्श पुरुष का यह अपमान नहीं है?

(४) हनुमान पवन पुत्र के नाम से जाना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह नाम उसे इसलिये दिया गया कि वह वायु (पवन) में उड सकता था। या तो उसने वायु में उडने की सिद्धी प्राप्त की हुई थी जिसका उल्लेख पातञ्जल योग दर्शन (३-४१) में मिलता अथवा उसके पास अकेले उडने वाला यन्त्र था जो पीठ पर बांधा जाता था और जिसमें से नाली द्वारा व्यर्थ धुएं का निष्कासन होता था। आधुनिक युग मे भी वायुयानों तथा मोटर गाडियो मे पीछे छोडने वाली नालियां होती हैं जिसके द्वारा दूषित वायु का निष्कासन होता रहता है। चित्रकारो ने अज्ञानता के कारण इस नाली को पूछ बना दिया है। हनुमान के बन्दर रूपी मुख बनाने का रहस्य है कि उडान करते हुए हनुमान मुख पर आवरण लगा लेता था जिससे श्वास मे सुविधा हो, और कीटाणुओ के आखो मे पडने से बाध्य हो।

इस सन्दर्भ मे किष्किन्धा काड मे अति सार्थक उल्लेख है कि जब हनुमान राम लक्ष्मण को मिलने गया तो उसने अपना कपि रूप त्याग दिया और सामान्य तपस्वी का रूप धारण कर लिया।

यह स्मरण रहना चाहिए कि उन दिनो वायुयान थे। रावण के पास पुष्पक नामी विमान था जिसमे राम लक्ष्मण आदि युद्ध की समाप्ति पर बैठ कर अयोध्या आये थे।

श्री राम को अपना परिचय देते हुए हनुमान ने कहा था कि वह वानर जाति का है और उसका नेता सुग्रीव वानर राज है। वनों में रहने वाले व्यक्ति वानर कहलाते हैं।

यह विचार कितना अज्ञानता पूर्वक है कि राम लक्ष्मण ने राक्षसो के राजा रावण को सुग्रीव की बन्दर सेना से पराजय किया था?

(६) अन्त में इतना कहना पर्याप्त होगा कि आजकल व्यंग चित्रकार मनुष्यों के मुखों को गधो, सिंहो, कुत्ते आदि के मुखों के समान चित्रित करते हैं। इन व्यंग-चित्रो के आधार पर आने वाली पीढी में कोई व्यक्ति सत्यता पूर्वक नही कह सकेगा कि इसके पूर्वजों के मुख जानवरों की आकृति वाले होते थे।

बाइबिल की सच्चाई संदेहों के घेरे में

मोरिस शिटेन्डन। प्रस्तुति—श्री प्रह्लादत्त स्नातक

बाइबिल की सच्चाई वास्तविक नही लगती है। सेंन्ट ल्यूक ने बाइबिल की सच्चाई के बारे में जो कुछ लिखा है वह एक धोखा है।

कहा जाता है कि सेन्ट ल्यूक ने उस समय के यहूदी इतिहास की रचनाओ से अपना मन्तव्य चित्रित किया है और बाइबिल के पात्रो की जीवन घटनाए क्राइस्ट (ईसा) के नाम पर घडी गई है, जिससे की उनको ज्यादा से ज्यादा लोग पढ़ सके।

यह पहली बार नही है कि बाइबिल की सच्चाई पर प्रश्नचिह्न लगाया गया। इससे पहले डा० ह्यूशोन फील्ड भी ईसाइयो के इस पवित्र धारणा का खण्डन कर चुके हैं। उनका यह विश्वास है कि उनकी नई खोजो से न्यू टैस्टामेन्ट पुस्तक को ईश्वर रचित मानने की धारणा पूरी तरह चकना चूर हो जाएगी।

उन्होने अपनी "द पास ओवर प्लाट" मे सुझाव दिया है कि ईसा ने सूली पर चढने का इन्तजाम स्वयं किया था और अपने शरारतपूर्ण टिप्पणी की थी कि प्रसिद्ध पाप संगीत गायक बीटल्स ईसा से कही अधिक प्रसिद्ध है। इस पुस्तक की १० लाख प्रतियाँ बेची जा चुकी है।

अब से ४० वर्ष पहले यह इतिहास कार ओम्-रान की गुफा में पहुचने वालों में से पहला व्यक्ति था, जहा कि उसे डैड सी के प्राचीन ग्रन्थो के पृष्ठ मिले थे। इसके कारण पीटर ने जो दूसरा विवरण दिया है वह अपने आप तथ्यहीन हो जाता है। उसका यह भी कहना है कि जोन की बाइबिल दूसरे दोनो जोनो द्वारा दिये गये गेलीलियो के मछली मारने की कहानी से कोई सम्बन्ध नही रखती।

शौन फील्ड को अपनी इस ताजी खोज का सूत्र तब मिला जब कि वह अंग्रेजी मे बाइबिल का अनुवाद करने वाले पहले यहूदी के रूप मे सामने आया उसके यह सारे कागजात हाल मे रेगिस्तान में से खोदकर निकाले गये हैं।

नये प्रमाण उपलब्ध

शौन फील्ड के समय की बालू चाहे आज ८६ वर्ष पहले पुरानी हो चुकी हो परन्तु उसका विश्वास है कि उसके द्वारा प्रस्तुत प्रमाण बहुत मजबूत है।

संक्षेप में शौन फील्ड का यह कहना है कि ईसा में मैं विश्वास तो रखता हू और उसको अपना मसीहा भी मानता हूं परन्तु ईसा को ईश्वर का वास्तविक पुत्र मानने को नहीं तैयार हूं इससे स्पष्ट कह दिया है कि किसी एक धर्म को नीचा करने या किसी को ऊचा करने के लिए मैं यह सब नहीं लिख रहा हूं। मेरे सारे लेखन और खोज एक साहित्यिक और ऐतिहासिक संदर्भ से जुडे हुए हैं।

(टाइम्स आफ इण्डिया से ५ ६ ८७ की रिपोर्ट)

आर्यसमाज के गगन मण्डल का चमकता
एक और तारा डूब गया

—श्री नेमपाल शास्त्री, श्रीनगर (कश्मीर)—

श्री पूज्यपाद अमर स्वामी जी महाराज गले के कैंसर से पीड़ित हैं यह बात तो सभी को विदित थी। गाजियाबाद में अपने आश्रम मे मृत्यु की घड़ियां गिन रहे हैं यह भी सभी जानते थे। परन्तु इतनी जल्दी चले जायेंगे ऐसा विश्वास किसी को भी नहीं था। अब मुझे यह शरीर त्यागना ही पड़ेगा ऐसा स्वामी जी को भासित हो चुका था। इतने पर भी स्वामी जी आन्तरिक रूप से भयभीत नहीं थे। उन्होंने अपने आपको लम्बी यात्रा के लिए पूरी तरह से तैयार किया हुआ था।

जीवन की सन्ध्या में "सांची मान सहेली परसों प्रीतम लेने आवेगें" ठाकुर जी के इस गीत को बिहाग राग में यदा-कदा गुन गुनाने लगे थे। वे ६ सितम्बर सन् १९८७ को अपने प्रीतम के साथ चले गए। मुड़कर देखा भी नहीं।

अरनियां (बुलन्दशहर) उ० प्र० जिस गांव की रजकण में आर्य समाज व्याप्त था, उसी अरनिया गांव की कुटियों में दो लाल उत्पन्न हुए अमर स्वामी जी महाराज और सितारे हिन्द कु० सुखलाल आर्य मुसाफिर।

आपकी शिक्षा दीक्षा श्री प० भोजदत्त जी द्वारा स्थापित व संचालित आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा में सम्पन्न हुई थी।

वैदिक सिद्धांतों पर तर्कपूर्ण ओजस्वी भाषणो से महात्मा हंसराज जी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने १५ वर्ष की अल्प आयु में ही स्वामी जी को प्रादेशिक सभा लाहौर का उपदेशक नियुक्त कर दिया था। निरन्तर १९४४ तक प्रादेशिक सभा के अन्तर्गत उपदेष्टा के रूप मे कार्य किया।

पूज्य अमर स्वामी जी आर्यसमाज के अतिरिक्त और कुछ भी नही थे। वे जीवन पर्यन्त आर्य समाज को ही समर्पित रहे। वे राष्ट्र की उन्नति आर्य समाज के द्वारा ही मानते थे इसलिये उन्होंने कभी भूलकर भी राजनीति मे भाग नही लिया।

शास्त्रार्थ में श्री स्वामी जी प्रतिभा सम्पन्न कुशाग्र बुद्धि प्रत्युत्पन्नमति, निष्णात, कुशल थे। जैसे एक योद्धा (सैनिक) युद्ध में विजयी होने के लिए अपने को पूर्णतया तैयार रखता है वैसे ही पूज्य स्वामी जी हर समय तैयार रहते थे। अपने जीवन में अनेक शास्त्रार्थ किये और सभी में विजयी रहे।

क्षत्रिय होने पर भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया। हिन्दू और हिन्दुओ से अतिरिक्त जितने भी मतावलम्बी है स्वामी जी ने उनके सिद्धान्तो का मान्यताओं का दार्शनिक सामाजिक धार्मिक तथा तार्किक दृष्टि से, गहन अध्ययन किया था। उसी प्रकार इस्लाम मजहब को ईसाई मत को पारसी यहूदी सम्प्रदायो को डार्विन के विकासवाद को और कार्लमार्क्स के साम्यवाद को गहराई से पढ़ा था। और सबके साथ शास्त्रार्थ करने करने की क्षमता रखते थे।

श्री स्वामी जी ने संगीत (गायन, वादन, नृत्य) तीनो विधाओ को विधिवत अनेक गुरुओं से सीखा था। लाहौर मे शास्त्रीय संगीतज्ञो मे उनका विशेष स्थान था अनक वाद्य यन्त्रो के बजाने मे कुशल थे।

स्वामी जी एक अच्छे लेखक थ। उन्होंने अपन जीवन काल मे अनक पुस्तकें लिखी है। जिनसे आर्य जगत भली भांति परिचित हैं। स्वामी जी जहां एक लेखक थे वहा वे एक अच्छे कवि भी थ। उनके गीत प्रकाशित हो चुके हैं।

उनके जीवन का लक्ष्य धन अर्जित करना नही था उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार-प्रसार करना ही था। इसलिए उन्होंने धनोपार्जन की ओर कभी ध्यान नही दिया।

स्वामी जी स्वयं में एक चलती फिरती लाइब्रेरी थे। उनकी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र थी। उनको सब कुछ उपस्थित था। उनका अपना पुस्तकालय [illegible] उन्होंने भरपूर लाभ उठाया।

स्वामी जी ने [illegible] अधिक उपदेशक [illegible] तथा प्रचारक दिए हैं। जो सम्प्रति सर्वत्र उत्तम कार्य कर रहे हैं।

हरिद्वार उपदेशक विद्यालय के पश्चात स्वामी जी ने अपने गांव अरनिया में वेद मन्दिर की स्थापना की। जिसमे दस विद्यार्थी तक रहकर पढ़ाया करते थे। वहा भी विकराल बाधाओं के कारण न चल सका। उसके बाद स्वामी जी वेद मन्दिर अरनिया को छोड़कर दयानन्दमठ धर्मार्थ आश्रम चले गये जहां से उनको अपने ही लोगो ने अपमानित करके निकाल दिया। उनका प्रकाशन विभाग तोड़कर फिकवा दिया। आर्य समाज व अपने ही लोगों का ऐसा जघन्य व क्रूरतम व्यवहार स्वामी जी जीवन के अन्त तक नहीं भूल सके। अन्त मे श्री स्वामी जी विवेकानन्द नगर गाजियाबाद में ही अपना वेद मन्दिर बनाकर रह रहे थे। तीन-चार झोंपड़ियों का नाम वेद मन्दिर है। जिसमे सुख सुविधा नाम की कोई चीज नही है। गत दस वर्ष से स्वामी जी उन्ही फूस की झोपड़ियो में रह रहे थे। वहा भी क्रूर ग्रहों की कुदृष्टि निरन्तर पड़ती रहती थी।

स्वामी जी महाराज अपने पूर्व जन्म की बातें भी सुनाया करते थे।

जिस समय सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगा पटियाला रियासत मे आर्यसमाज पर प्रतिबन्ध तथा हैदराबाद दक्षिण में हिन्दुओं पर प्रतिबन्ध लगे उस समय स्वामी जी ने लगाये गये प्रतिबन्धों को तोड़ने के लिए चलाये गये आन्दोलनों मे बढ़ चढ़कर भाग लिया था। हैदराबाद सत्याग्रह मे जेल भी गये थे। मैं भी उनके साथ ही था।

स्वामी जी बहुत ही उदार थे। जीवन मे अनेक बार स्वामी जी को आर्यसमाजो से केवल धन्यवाद ही मिला है फलस्वरूप उनको अपनी जेब से ही किराया खर्च करना पड़ा है। न तो उन्होंने उस समाज से शिकायत की और न ही दुबारा बुलाने पर इन्कार ही किया। वे दाता थे, विनम्र और व्यवहार कुशल थे।

गरीब किसानो का गांव अरनिया में कच्चे मकान मे एक आर्य समाज मन्दिर और एक कन्या पाठशाला थी बरसातो के कारण आर्य समाज का ढह गया, पाठशाला २० वर्ष चलकर टूट गई।

आर्य समाज की उपज है गांव मे आर्य समाज मन्दिर और पाठशाला होनी चाहिये। उक्त सज्जनो के साथ कुंवर सुखलाल जी ससार से चले गए अमर स्वामी जी को गांव मे आर्य समाज मन्दिर की कमी अखरती थी। भूमि नही थी। भूमि की पूर्ति तो वे ५०० गज (पांच सौ गज) का प्लाट देकर पूरा कर गये हैं। जीवित रहते तो अवश्य ही समाज मन्दिर बना देते।

चमकते सितारे आर्य समाज के गगन मण्डल से टूटते जा रहे हैं खेद है तो इस बात का कि उनके स्थान पर [illegible] दिखाई दे रहे हैं। यदि ऐसी अवस्था रही तो आर्य समाज का क्या बनेगा?

दौलत के लिए आतंकवादियों में खींचतान

आनन्दपुर साहिब (पंजाब), २२ सितम्बर। पंजाब के सिख चरमपंथी समूहों में बड़ी जल्दी ही झगड़ा बढ़ने वाला है। इसका कारण स्वर्ण मन्दिर में चल रही कार सेवा में एकत्र करोड़ों रुपयों का सोना है। पंथिक कमेटी और कार सेवा के प्रभारी पांच महन्तों के बीच ७५ किलो सोने को लेकर जो खींचतान शुरू हुई है, वह किसी भी दिन खून की होली में बदल सकती है।

स्वर्ण मन्दिर व अकाल तख्त की कार सेवा की जिम्मेदारी पांच महन्तों सन्त उत्तमसिंह (खडूर साहब), सन्त जगतारसिंह (तरनतारन), सन्त हरबन्स सिंह (दिल्ली) सन्त करमसिंह (अमृतसर) और बाबा ठाकुरसिंह (दमदमी टकसाल) पर है। कार सेवा लगभग समाप्ति पर है और नवनिर्मित अकाल तख्त के गुम्बदों पर सोना चढ़ाया जाना बाकी है। ७५ किलोग्राम का यह सोना आज किसी भी हालात में पांच छह करोड़ रुपए से कम मूल्य का नहीं है। सारी खींचतान इस सोने को लेकर हो रही है।

चरमपंथी अलगाववादियों का कहना है कि यह सोना उन्हें दे दिया जाए ताकि वह इससे हथियार खरीद सकें। उनका तर्क है कि लुधियाना के बैंक से लूटा गया रुपया अब प्रायः समाप्ति पर है और धन से चीन निर्मित राइफलें और अन्य असलाह खरीदा गया था, वह मुठभेड़ों में पुलिस के पास पहुंच गया है। हरजिन्दरसिंह जिन्दा की गिरफ्तारी से भी उन्हें हथियार और पैसे की भारी कमी महसूस हो रही है। उधर कार सेवा महन्तों की दलील है कि चूंकि इसे सिख धर्मावलम्बियों ने केवल अकाल तख्त पर चढ़ाने के लिए दिया है, इस सोने से उनकी भावनाएं जुड़ी हुई हैं, इसलिए दूसरे कामों में खर्च नहीं किया जा सकता।

इस विषय से पांच में से तीन महन्तों ने कार सेवा के प्रबन्ध से अपना हाथ खींच लिया है। केवल सन्त उत्तमसिंह और सन्त जगतारसिंह ही इन दिनों कार सेवा की देखरेख कर रहे हैं। लेकिन अन्य तीन संत भी सोने के प्रश्न पर दोनों सन्तों के साथ हैं। सोना इस समय महन्तों के कब्जे में है और वह अपने सामने स्वर्ण मन्दिर की दर्शनी ड्योढ़ी और अकाल तख्त के बीच सोने के पत्तर बनवा रहे हैं। सोना मिलने से इनकार से चरमपंथी अलगाववादियों की भौंहें तन गई हैं।

आनन्दपुर साहब में एक भरोसेमन्द सूत्र ने इस संवाददाता को बताया कि कार सेवा के नाम पर आए दो करोड़ रुपए के घोटमाल को लेकर भी पंथिक कमेटी और कार सेवा करने वालों के बीच भारी खींचतान जारी है। सूत्र का कहना है कि दो करोड़ रुपये का घोटमाल पंथिक कमेटी के एक सदस्य ने किया है। घोटमाल करने के बाद वह हरियाणा में कहीं जा छुपा। यह भी कहा जा रहा है कि उस पंथी ने वहां अपना विवाह भी रचा लिया है। बताया जाता है कि जब चरमपंथी उसे ढूंढते हुए हरियाणा पहुंचे, उससे पहले ही वह फरार होकर वहां से भी निकल गया। पता लगा है कि वह इन दिनों पूर्वोत्तर भारत के किसी राज्य में रह रहा है।

सूत्र का यह भी कहना है कि कार सेवा के नाम पर लाखों से ४० से ५० लाख रुपए प्रतिमास देश-विदेश के सिखों की ओर से आते रहे हैं। मुश्किल से उसका २५ प्रतिशत हिस्सा कार सेवा में लगा होगा। शेष सब चरमपंथी आपस में बांटते रहे हैं। और कार सेवा के लिए महन्त अपने प्रभाव से काम चला रहे हैं। किन्हीं कारणों से महन्त अभी तक चुप रहे, किन्तु सोने के प्रश्न पर वे बिफर गये।

कार सेवा में आने वाले सिखों के लिए स्वर्ण मन्दिर में लंगर में गांवों से काफी मात्रा में गेहूं और चावल आता रहा है। किन्तु पिछले छह महीनों से उसका रुख चरमपंथी अलगाववादियों ने जबरन दमदमी टकसाल की ओर मोड़ लिया है। सूत्र का कहना है कि लगभग ३५ से ४० लाख का दाम का गेहूं चरमपंथियों ने चुपचाप बेच डाला है। कार सेवा के लिए आने वाली सिख संगत अपने लिए भोजन खुद लाती है। स्वर्ण मन्दिर के लंगर के लिए दान में आने वाले देसी घी पर भी चरमपंथी अलगाववादियों की खास नजर रहती है। सूत्र का कहना है कि प्रतिदिन १०-१२ कनस्तर देसी घी पिस्तौल की नोक पर लंगर से उठवा कर बाजार में तीन सौ रुपये प्रति कनस्तर के भाव से बिकवा दिया जाता है जब कि पूरे कनस्तर की कीमत नौ सौ रुपये के आस-पास है। घी के सवाल पर तीसरी और चौथी पांत के चरमपंथियों की दलील है जब बड़े भ्रा करोड़ों रुपये हजम कर सकते हैं तो उन्हें कम से कम घी हजम करने का तो अधिकार मिलना ही चाहिए।

कुल मिलाकर सोना, रुपया, गेहूं, चावल और घी के सवाल पर अच्छा खासा विवाद पेश हो गया है। सूत्र का कहना है कि इस झगड़े को चार मुख्य मन्त्रियों के सामने भी लाया गया है लेकिन यह पता नहीं चल सका कि इस बारे में वह क्या फैसला करते हैं?



"भारत के मुसलमानो ! जरा सोचो !"

लेखक—ए० एन० बिस्मिल D C R E जामिया मिलिया यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली

सुख और खुशहाली के लिये भारत मे रह रहे मुसलमानों को यह चाहिए कि वे संगठित होकर भारत के प्रति सदा अपनी वफादारी का परिचय दें। सब प्रकार की अफवाहों से दूर रह कर वे विदेशी शक्ति तथा धन पर इशारा कर भारतवर्ष के प्रति गद्दारी की भावना रखने वाले चन्द सिर फिरे मुसलमानों से सदा दूर रहें।

इस प्रकार के तथाकथित मुसलमान नेता शान्ति के साथ खुशहाली की ओर बढ़ रहे सच्चे मुसलमानो के सख्त दुश्मन हैं। ऐसे नेता मात्र अपनी कुर्सी के लोभ में दूसरी कौमों के घरो को आग लगा कर अपने हाथ सेकना ही जीवन का मुख्य उद्देश्य समझते हैं।

मेरे प्यारे मुसलमान भाईयो ! आज हमे भारत जैसे हिन्दू प्रधान देश मे रहते हुए, जिस स्वतन्त्रता के साथ अपने मजहबी असूलो के अनुसार चलने अर्थात् मुस्लिम युनिवर्सिटिया खोल कर अपने बच्चों को उर्दू-माध्यम से शिक्षा देने, अपनी रीति रिवाज के अनुसार एक साथ अनेक स्त्रियो से विवाह करने, निर्भीकता से मजहबी जलसे जलूस निकालने, भारत सरकार की ओर से अपने ईद आदि 'त्योहारों की छुट्टिया पाने यहा अपने नाम पर पर मन पसन्द जमीने खरीदने, बे रोक टोक व्यापार करने, इच्छा के अनुसार अधिक से अधिक मस्जिदें बना कर इस्लाम का प्रचार करने, अल्प सख्यक होने के नाते कालेजो, चुनावो तथा सरकारी नौकरियों मे विशेष सीटें प्राप्त करने और यहां तक कि भारतवर्ष की राजनीति मे भाग लेकर राष्ट्रपति तक बनने की जितनी छूट यहा इस गैर मुस्लिम देश हिन्दुस्तान में प्राप्त है। यथा— चीन में कोई भी मुसलमान भाई एक से अधिक पत्नी नही रख सकता तथा न ही दो से अधिक बच्चे ही पैदा कर सकता है। सिंगापुर मे तमाम कबरो को तोड कर बिजली द्वारा मुर्दों को जलाया जाता है। जापान के मुसलमानों को अपने मुर्दों के लिये कबरे बनाने की आज्ञा नही। इसराईल आदि देशों में कोई मुसलमान अपने मजहब का प्रचार नही कर सकता। नेपाल आदि देशों में कोई मुसलमान किसी भी प्रकार से किसी हिन्दू का मजहब बदल कर उसे मुसलमान नहीं बना सकता, ऐसा करने वाले को कठोर दण्ड मिलता है।

साथियो ! आज इस हिन्दूधर्म प्रधान देश मे रहते हुए, हम मुसलमानों को जितनी सुविधायें प्राप्त हैं, उन सब का एक अ श भी इन सिख जैन तथा बौद्ध आदि हिन्दुओं को किसी भी मुस्लिम देश मे प्राप्त नहीं है।

अरब, ईराक, ईरान अथवा पाकिस्तान आदि मुस्लिम देशो मे कोई भी सिख, जैन तथा बौद्ध आदि हिन्दू सरकार की सहायता से वहा धार्मिक, सामाजिक अथवा राजनैतिक स्वतन्त्रता या सुविधा प्राप्त नहीं कर सकता। यथा —

१—कोई भी सिख, जैन तथा बौद्ध आदि हिन्दू, मुस्लिम देशों में अपने धर्म एव भाषा के अनुसार न तो कोई विद्यालय अथवा विश्वविद्यालय ही खोल सकता है और न ही भारत में चल रहे हमारे अलीगढ तथा जामिया आदि विश्वविद्यालयों की तरह हिन्दी माध्यम से पढने की सुविधा ही पा सकता है।

२—हिन्दुस्तान में उर्दू माध्यम से चल रहे आम विद्यालयों तथा मस्जिदों में चल रहे हजारों मजहबी पाठशालाओं की तरह न तो वहां उन मुसलिम देशों में ऐसा कोई संस्कृत वेद—विद्यालय ही खोल सकता है और न ही किसी सरकारी विद्यालय में अपने धर्म के अनुसार हमारे जुम्मे की तरह मन मानी छुट्टी ही कर सकता है ?

३—कोई भी हिन्दू वहां पर न तो हिन्दी भाषा मे कोई काम-काज ही कर सकता है और न ही किसी को सरकार की ओर से ईद आदि की तरह श्री रामनवमी, श्री कृष्णाष्टमी, दशहरा अथवा दीपावली की छुट्टी हो मिल सकती है।

४—हिन्दी अथवा संस्कृत माध्यम से कोई हिन्दू उन मुस्लिम देशों में किसी भी प्रकार का रेडियो अथवा टी० वी० का कार्यक्रम नहीं सुन सकता। राम नवमी आदि धार्मिक प्रोग्रामो को सुनना या [illegible] प्रति-दिन काम में आने वाले साधारण समाचार भी अपनी भाषाओं में नहीं सुन सकता।

५—हम मुसलमानो की तरह अपना राष्ट्रपति चुनना तो दूर अपितु वहा हिन्दुओं के अल्प सख्यक होने के नाते न तो उन्हें राजनीति मे भाग लेने की आज्ञा है और न ही कोई चुनाव लडने की। यहा तक कि अल्पसख्यक के नाम पर किसी स्कूल या कालेज मे भी सीट नही ले सकता।

६ वहा रह रहे हिन्दुओ के द्वारा उन मुसलिम देशों मे अपने धर्म या सस्था के नाम पर किसी अलग हिन्दुस्तान की माग करना तो दूर अपितु वे हिन्दू होने के नाते एक छोटी सी सरकारी नौकरी भी प्राप्त नही कर सकते।

७—भारत मे सरकारी कार्यालयो में लगे हुए मुसलिम राष्ट्रपति के चित्र की तरह अथवा उन देशो मे शेख के चित्र की तरह कोई भी भारतीय अपने हिन्दू नेता का कोई चित्र नहीं लगा सकता।

८—भारत के राष्ट्रपति भवन मे पाकिस्तान के जनरल जियाउलहक के नमाज पढने की तरह कोई भी हिन्दू किसी सामान्य सरकारी स्थान पर भी यज्ञ-हवन नही कर सकता।

९—अपने हिन्दूधम के अनुसार बैण्ड बाजे बजाकर न तो कोई हिन्दू जलसा जलूस ही निकाल सकता है और न ही हमारे यहा साथियो की तरह अपने धर्म का वहा खुला प्रचार ही कर सकता है।

१०—मीनाक्षी पुरम की तरह वहा के हिन्दुओ द्वारा खुलेआम किसी मुसलमान को हिन्दू बनाना तो बहुत दूर बल्कि खुलेआम वे अपने धर्म का पालन नही कर सकते।

११—हिन्दुस्तान मे चल रही लाखो हलाल मास की दुकानो की तरह झटके के मास पर पूर्ण प्रतिबन्ध है। और वहा किसी सिख के द्वारा सूअर के मास की दुकान चलाना तो मृत्यु को ही बुलाना है।

१२—कोई भी हिन्दू वहां पर अपने पूज्य पशु गाय के मास को खाने से नही रोक सकता, जो कि मुसलमानो के द्वारा वहा खुलेआम खाया जाता है।

१३—किसी हिन्दू के द्वारा इस मुसलिम देशो में खुलेआम अपने धर्म की किताब वेद, शास्त्र, रामायण अथवा गीता तथा अन्य किसी कोई किताब, छापना या बेचना तो दूर अपितु किसी दुकान पर इन ग्रन्थो को केवल रख भी नही सकता। और आर्य समाजियो के सत्यार्थ प्रकाश पर तो पूर्ण प्रतिबन्ध है।

१४—भारत मे श्रीनगर जैसी मुस्लिम बाहुल्य वाली सरकार की तरह उन अरब आदि देशो में शराब की दुकान खोलना तो दूर बल्कि पीता हुआ यदि कोई पकडा जावे तो, कठोर कोडों की सजा को पाता है।

१५—मैं भारत में अपने बहुत से मुस्लिम भाईयों की कबरो को कही कही तो बडे बडे राजकीय मार्गों को रोका हुआ देखता हूं। परन्तु मुसलमानी देशों में कोई हिन्दू किसी एकान्त स्थल मे, अपने धर्म के नाम पर मन्दिर, मठ अथवा गुरुद्वारे के नाम पर डेढ़ ईंट भी नही लगा सकता।

१६—कोई भी हिन्दू उन अरबादि देशो में धोती पहन कर अथवा गले मे किरपाण लटका कर, कार्य नहीं कर सकता। बाहर तो क्या इस देश मे तो वह अपने घर पर भी डरता होगा। आपको यह भी पता होना चाहिए कि सऊदी अरब में कोई 'हिन्दू जावदा' अर्थात् सिख आज भी प्रवेश नही पा सकता।

१७—कोई हिन्दू चाहे वह पण्डित हो या सिख मिलेट्री अथवा पुलिस मे तो नौकरी पाना दूर अपितु अन्य सरकारी कार्यालयो में भी नौकरी नही पा सकता।

१८—कोई हिन्दू वहा पर अपनी फैक्टरी व व्यापार के लिये जमीन नहीं ले सकता, किसी प्रकार का भी स्वतन्त्र व्यापार नही कर सकता। कोई भी हिन्दू उसी हालत में वहां व्यापार कर सकता है जब कि वह अपना दूसरा पार्टनर किसी [illegible] को नक्द कर करें ५। प्रतिशत का [illegible] ...

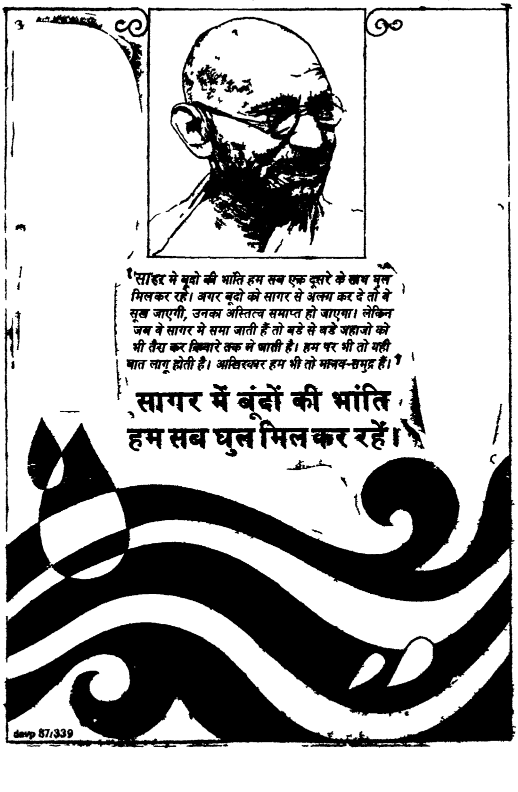
(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्य जगत् के समाचार

वेदानन्दो हा ! दिवंगत

संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान श्रीमद्दयानन्द आर्यविद्यापीठ के प्रस्तोता स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश के अचानक निधन से सुरभारती का अनन्य उपासक हमारे बीच से उठ गया। स्वामी जी महाराज संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान लेखक एवं वक्ता थे। उनके अचानक निधन से गुरुकुल प्रभात आश्रम परिवार को महान कष्ट हुआ। उनकी पुण्यस्मृति में एक शोकसभा का आयोजन गुरुकुल के आचार्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे हुआ। ब्रह्मचारियो ने उस दिवंगत आत्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

स्वामी जी महाराज जहा सरस्वती सेवक थे वहा उज्ज्वल आदर्शों के प्रति भी अगाध श्रद्धा रखते थे। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक द्वारा आयोजित परीक्षाओ मे गुरुकुलीय छात्रो द्वारा अनुकरण की प्रवृत्ति को देखकर उनकी आत्मा चीत्कार कर उठी और वहा उस केन्द्र पर प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों को अनुकरण न करते हुए देखकर वे अति प्रसन्न हुए तथा ब्रह्मचारियो को शुभ आशीर्वाद प्रदान किया। इतना ही नहीं, इस सम्बन्ध मे उन्होंने गुरुकुल प्रभात आश्रम के आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज को एक पत्र भी लिखा। उनका पत्र सत्य मार्ग पर चलने वालो को आज भी प्रोत्साहन दे रहा है। दुःख है कि क्या हम लोग उसका पालन कर सकेंगे ? परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री वेदानन्द सरस्वती की आत्मा को शान्ति प्रदान करे।



निर्वाचन

—आर्यसमाज शिवस (कुरुक्षेत्र) की नवीन समाज का चयन सर्वश्री धर्मदेवसिंह आर्य के प्रयत्नों से हुआ। प्रधान रामगोपाल चौहान, उपप्रधान गुलाब और सागर, मन्त्री दीपक जी डालचकर कोषाध्यक्ष, हेमन्त सोलंकी चुने गए। सभी नए कार्यकर्ता बड़े उत्साही व लगन हैं।

—केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान सर्वश्री अनिल आर्य, मन्त्री धर्मपाल आर्य चुने गए।

—आर्य-समाज कालकिया रोड (महर्षि दयानन्द मार्ग) अहमदाबाद के वार्षिक चुनाव में प्रधान सर्वश्री रतन प्रकाश गुप्त, मन्त्री पुरुषोत्तम-दास विन्दल चुने गए।

—आर्य समाज अजमेर के १०६ वां वार्षिक निर्वाचन में प्रधान सर्वश्री दत्तात्रेय आर्य व मन्त्री श्री रासासिंह जी चुने गए।

—आर्य समाज आर्य नगर पो० रामनगर (प० चम्पारण) बिहार के प्रधान श्री एम०एल० पोद्दार मन्त्री, श्री राजकुमार भाटिया चुने गए।

—आर्यसमाज उस्काबाजार (बस्ती) के प्रधान श्री करुणानन्द आर्य, मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य चुने गए।

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा सीतापुर के प्रधान पं० सूर्यवली पाण्डेय, मन्त्री श्री देवेन्द्रनाथ चुने गए।

आर्यसमाज की गतिविधियां

अन्तः प्रेरणा के आग्रह पर पी. एच. डी. उपाधि ठुकरा दी

नई दिल्ली ३ सितम्बर (भास्कर) जबलपुर निवासी प्रज्ञानन्द ने शोध प्रबन्ध मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा दी गई पी० एच० डी० की उपाधि को राष्ट्रपति आर० व्यंकटरमन को लौटा दी है।

जबलपुर स्थित शासकीय विज्ञान महाविद्यालय के भूतपूर्व टीचर फेलो प्रज्ञानन्द ने सोमवार ३१ अगस्त को राष्ट्रपति को उपाधि लौटाते समय एक पत्र भी दिया। जिसमे उपाधि लौटाने का विस्तृत विवरण दिया है।

शोध प्रबन्ध का विषय था 'आचार्य श्रीराम शर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व। पत्र मे लिखा है कि प्रज्ञानन्द ने अध्ययन क्रम मे पाया कि स्वय श्रीराम शर्मा आचार्य तथा उनके निकटस्थ सूत्रो से जो सामग्री उपलब्ध हुई थी उसकी अकट्यता एव प्रामाणिकता पर प्रश्नचिन्ह लगा हुआ है। साथ ही,विगत दो वर्षो से श्रीराम शर्मा आचार्य की अनेक गतिविधियो ने यह सिद्ध कर दिया है कि उनकी अभिव्यक्ति और उनके कृतित्व मे सामजस्य नही,है तथा ऊपर से दीख पडने वाला व्यस्त व्यक्तित्व उनकी आतरिक विसगतियो को ढक लेने वाला आवरण मात्र है। जिसके द्वारा अन्य श्रद्धालुओ को सम्मोहित करने का प्रपच रच गया है।

पत्र मे लिखा है कि अत्यन्त श्रम से तैयार किया गया शोध प्रबन्ध ग्रन्थ मुद्रक प्रोत्साहित करने एव सामिग्री द्वारा तथ्यो का गलत रूप सामने आया है,और जनता के गुमराह होने की सभावना बढ गयी है। ऐसी स्थिति मे मेरी अत प्रेरणा का आग्रह है कि मैं अपना शोध प्रबन्ध वापिस ले लू और प्राप्त पी० एच० डी० की उपाधि को विनम्रता पूर्वक लौटा दू।

पत्र मे लिखा है कि इस शोध काय के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने फेकल्टी इ वेस्टमेंट प्रोग्राम के अतर्गत चार वर्ष तक सवैतनिक अवकाश एव निविष एक्सपेन्स के साथ छह हजार रुपये की राशि कन्टेजेन्सी के रूप मे व्यय की हैं। प्रज्ञानन्द का कहना हैं कि राष्ट्रपति यदि अनुमति दें तो यह समस्त राशि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को चार वार्षिक किस्तो मे लौटाना चाहता हूं।

(दैनिक भास्कर इन्दौर, ४ सितम्बर १९८७)

अजेय शास्त्रार्थ महारथी

आर्य जगत् के अजेय शास्त्रार्थ महारथी मूर्धन्य सन्यासी, अदभुत वक्ता एव उच्चकोटि के लेखक और वैदिक सिद्धान्तो के ममज्ञ महात्मा अमर स्वामी जी सरस्वती के निधन से आर्य समाज के सैद्धान्तिक प्रचार केन्द्र एक युग का पटाक्षेप हुआ। श्रद्धेय पडित रामचन्द्र देहलवी और प० बिहारीलाल शास्त्री के निधन के उपरान्त आर्य समाज पर एक और बज्रपात हुआ हैं। स्वाध्याय और शास्त्रार्थ के कारण ही अपने प्रारम्भिक काल मे आर्य-समाज का प्रचार बहुत तीव्रता से हो सका।

महात्मा अमर स्वामी जी महाराज ने इसी शास्त्राथ परम्परा को जीवन्त रखने का कार्य मृत्यु पर्यन्त किया। उनके देहावसान के बाद जो अपूर्णीय रिक्तता उत्पन्न हुई हैं, उस ओर सभी आर्य सस्थाओ को गम्भीर चिन्तन करना चाहिए। महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति ट्रस्ट की स्थापना इस वर्ष के प्रारम्भ मे उन्ही की प्रेरणा और आशीर्वाद से की गई और वे इसके सस्थापक अध्यक्ष भी बने। आर्य समाज की अन्तर्गत शास्त्रार्थ परम्परा को बल प्रदान करने के विशेष उद्देश्य से ही इस ट्रस्ट की स्थापना हुई और इसे अभी महात्मा अमर स्वामी के मार्गदर्शन की बहुत बहुत बडी आवश्यकता थी। हम दिवगत आत्मा के प्रति अपनी भावनामयी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए, उनके आदर्शो के प्रति समर्पित होने और उनके प्रिय कार्यो को सदा करते रहने का निश्चय करते हैं। परमात्मा हम आर्य जनो को धैर्य, उत्साह और सिद्धान्तो के प्रति सच्ची आस्था प्रदान करे।

—डा० आनन्द प्रकाश
मन्त्री महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति ट्रस्ट, वाराणसी
उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

आर्य समाज हरदोई का उत्सव सम्पन्न

हरदोई। आर्य समाज हरदोई का वार्षिकोत्सव ३०, १, २ अक्टूबर ८७ को आर्य कन्या इन्टर कालिज के प्रागण मे सम्पन्न हुआ। स्वामी वेदमुनि परिव्राजक व प० ओकार मिश्र प्रणव के सारगर्भित भाषणो एव प० ब्रजपाल शर्मा कर्मठ के भजनोपदेशो से जनता अति प्रभावित हुई।

समारोह के आकर्षण सस्कृत सम्मेलन, राष्ट्रभाषा सम्मेलन के साथ छात्राओ द्वारा सास्कृतिक सम्मेलनो का भी आयोजन किया गया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का शुभागमन

२ अक्टूबर को प्रात लखनऊ मेल से हरदोई पधारने पर समाज के सदस्यो द्वारा स्टेशन पर भव्य स्वागत किया गया और श्री लाल जी गोपाल जी टन्डन के आतिथ्य को स्वीकार कर उनके घर पर ही ठहरे।

रात्रि मे आपका विभिन्न व्यक्तियो द्वारा मालाओ से स्वागत व अभिनन्दन पत्र भी दिया गया तथा सभा प्रधान जी को १०२१) रुपये की धनराशि भी भेंट की गई।

स्वामी जी ने हजारो लोगो के मध्य देश की वर्तमान स्थिति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज देश पुन सन ४७ के पूर्व की स्थिति मे जा रहा है। कश्मीर व मेरठ आदि देश के विभिन्न क्षेत्रो मे घटे घटनाक्रमो की चर्चा करते हुए आर्य समाज के द्वारा की गई सेवाओ की चर्चा की। पजाब की समस्या व देश मे सूखा पीडित समस्या का भी ज्ञान कराया।

स्वामी जी उसी रात लखनऊ मेल से दिल्ली वापस आ गए, आर्यसमाज के प्रधान श्री स्वयवर सिंह जी स्वामी जो महाराज व सभी आगन्तुक सज्जनो का आभार व्यक्त किया।

स्त्री आर्य समाज हरदोई

महिला सम्मेलन का आयोजन श्रीमती सत्यवती विदुषी के द्वारा आयोजित किया गया। इसमे वेदमुनि परिव्राजक व रश्मि जी ने अपने विचार दिये और आज की नारी समस्याओ से भी अवगत कराया।

विवादास्पद लेख

(पृष्ठ २ का शेष)

कितना बडा बलिदान था उस लडकी का। उसकी आयु केवल १८ वर्ष की थी। अभी कोई बच्चा भी पैदा नही हुआ था। उसे किसी ने भी नही कहा था कि वह अपने पति के साथ सती हो जाए। उसने स्वय ही यह सोचा था और अपने आप तैयार होकर अपने पति के साथ चिता मे बैठ गई। और जिस अग्नि के चारो ओर फेरे लेते हुए कभी उसने अपने पति के साथ वचन दिये थे उस आग की ज्वालाओ मे अपने पति के साथ ही उसने अपने वह वचन पूरे कर दिये।

उस स्थान को जहा रूपकुवर सती हुई थी सती-स्थल का नाम दिया गया है। वहा हजारो लोग उस देवी की पूजा के लिये जाते हैं, राजपूत नवयुवक अपनी तलवारे निकाल कर उस सती-स्थल की रक्षा कर रहे हैं। उनका कहना है कि रूपकुवर ने प्राचीन राजपूती सम्मान को पुनर्जीवित कर दिया है। तेरह दिन के पश्चात उसके माता-पिता उसी स्थान पर चुनरी चढाने के लिये आये थे उस समय भी वहा हजारो लोग उपस्थित थे। वह कहते हैं कि वह एक देवी थी और प्रायः वहा नारे लगते है 'महासती की जय हो'।

और यह सब कुछ हमारे देश मे हुआ है वहा कई बार एक दिन विवाह होता है दूसरे दिन तलाक की चर्चा प्रारम्भ हो जाती है। इस एक घटना से हम अनुमान लगा सकते हैं कि हम कहा से कहा पहुच गये हैं। मैंने ऊपर लिखा है हम उस देश के रहने वाले हैं जिस देश मे गगा बहती है। गगा तो फिर भी उसी प्रकार बहती रहेगी।

परन्तु हमारा देश रहेगा या नही। इसके सम्बध मे सदेह होने लगता है। हम जिस नैतिक पतन की ओर बढ़ रहे हैं उसे देखकर कई बार लज्जा से सिर नीचा हो जाता है। परन्तु यदि कुछ आशा दिखाई देती हैं तो केवल इसलिए कि आज भी रूपकुवर जैसी देवियां हमारे देश मे मौजूद हैं। हजारों वर्ष बीत जाने पर भी हम सीता को नही भूले उसी प्रकार रूपकुवर की याद भी हमारे देश की भूली भटकी जनता को वर्षों उसके महान बलिदान की याद दिलाती रहेगी।

(दैनिक प्रताप से साभार)

पंजि० न० डो० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (११-१०-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाईसस न० U ११
R N 626/57 Licensed to post without prepay ment Licence No. U 73 Post in D.P.S.O. on 8-10 1987

भारत के मुसलमान !

(पृष्ठ ६ का शेष)

१९—हिन्दुस्तान की आजादी के बादहमारे और हिन्दुओ के बीच अनेक बार गोहत्या के सवाल पर झगड हो चुके हैं। झगडे कभी भी किसी वर्ग के लिए लाभदायक नही होते। सऊदी अरब मे गोहत्या करने वाले को मौत की सजा मिलती है। ऐसी स्थिति मे भी वहा बिना गाय काटे मुसलमानो की शादिया पूर्ण सफल होती हैं। यदि हमारे मुसलमान भाई सऊदी अरब की तरह यहा भी गाय को न मारने का दृढ निश्चय कर लें तो भारत मे हिन्दू तथा मुसलमान अमन से जी सकते हैं।

२०—देश के कुछ गद्दार लोग हम मुसलमानो को यह कह कर भी दगो के लिए भडकाते हैं कि हिन्दुस्तान मे इस्लाम मजहब सुरक्षित नही है। एक मुसलमान होने के नाते मैं यह समझता हूँ कि इस बात से बडा कोई दूसरा सफेद झूठ नही हो सकता। इस अफवाह की असलियत का, तो इसी से पता चलता है कि १९४७ के पश्चात् हिन्दुस्तान मे हमारी नई मसजिदे, हजार नये उर्दू माध्यम के स्कूल तथा अलीगढ, जामिया तथा देवबन्द जैसी यूनिवर्सिटिया बेखौफ चल रही है। जब कि दूसरी ओर पाकिस्तान मे हिन्दुओ के उगलियों पर गिने जाने वाले दो चार धर्मस्थान ही बचे हैं। पाकिस्तान में हिन्दुओ से ऐसा व्यवहार होते हुए भी यहा पर अनेको मुसलमान स्थानों को नया बनाना, तो वास्तव मे हम मुसलमानो के साथ भारत सरकार के उत्तम भाई-चारे के व्यवहार का ही प्रतीक है न कि अत्याचार का।

२१—पाकिस्तान, ईरान, ईराक अथवा सऊदी अरब आदि मुसलिम देशो की क्रिकेट, फुटबाल अथवा हाकी आदि की टीमो मे कोई भी हिन्दू खिलाडी नही खेलते है जब कि दूसरी ओर हिन्दुस्तान की अधिकतर खेल की टीमो मे बहुत से अपने मसलमान भाई खिलाडी हैं। यहा तक कि एशियाड मे हाकी की दुर्भाग्यवश हारने वाली टीम मे कप्तान जफर इकबाल भी मुसलमान ही ... गे का कितने अधिकार प्राप्त ह

इन उपरोक्त सब बातो को ध्यान मे रखते हुए सब मुसलमानो को चाहिए कि अपनी सर्वांगीण उन्नति के लिए हिन्दुस्तान के प्रति वफादार बन कर रहे। भारत सरकार की हम पर बहुत बडी कृपा है कि उसने १९४७ मे हम अपने मुसलमान धर्म के अनुसार पाकिस्तान देश अलग दे देने पर भी यहा हिन्दुस्तान मे अपने मजहब के अनुसार चलने की सब सुविधायें दे रखी हैं।

प्रिय भाईयो ! आज जो कथित मुसलमान नेता विदेशो के इशारे पर नाच कर अपनी कुर्सी या धन के लिए मेरठ, मुरादाबाद, बडौदा अहमदाबाद, काश्मीर, केरल अथवा सबल मे जातीय दगे करवा रहे हैं, वे वास्तव में मुसलमान मजहब को धब्बा लगा कर देश मे गद्दार बन कर यहां हमारे लिए काटो को बो रहे हैं। उससे हमें दूर रहना चाहिए।

मेरा सभी मुसलमान भाईयो को यही अनुरोध है कि वे इस पर्चे को अधिक से अधिक उर्दू इगलिस तथा हिन्दी मे छपवाकर सब मुसलमानो तक पहुचाने का कष्ट करें। जिससे कि भारत में शान्ति से रहते हुए मुसलमान लोग तथा मुसलमान मजहब शान्ति से उन्नत हो सके और आपस मे झगडो के होने पर हमें यहा से उजडना न पडे।

❀ खुदा हाफिज ❀

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

राष्ट्र देवो भव

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८८]
वर्ष २२ अंक ४ ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
कार्तिक कृ० ११ सं० २०४४ रविवार १८ अक्तूबर १९८७

दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३०४७७१
वार्षिक शुल्क २५) एक प्रति ६० पैसे

पुरी के शंकराचार्य

निरंजनदेव तीर्थ को आर्यसमाज का चैलेंज

ऋग्वेद का वह मन्त्र दिखाओ जिसमें पति के मरने पर पत्नी को जला देने का विधान है

सिसकती हुई गरीब हिन्दू विधवाओं पर तरस खाओ

हिन्दू समाज के सभी घटक एक जुट होकर सती प्रथा का विरोध करें

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की स्पष्ट घोषणा

वेदामृत

परिवार निर्भय हो

गृहा मा बिभीत मा वेपध्वम्
ऊर्जं बिभ्रत एमसि।
ऊर्जं बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा
गृहानैमि मनसा मोदमानः ॥
यजु० ३। ४१ ॥

हिन्दी अर्थ हे परिवार के लोगो ! तुम (किसी प्रकार के भय से) न भयभीत हो और न कांपो। शक्तिशाली तुम लोगों के सहायतार्थ हम आते हैं। मैं शक्तिशाली प्रसन्नचित्त बुद्धिमान् मन से आनन्दित होता हुआ तुम्हारे घर आता हूँ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री



दिल्ली ८ अक्तूबर।

आर्य समाज के नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सती प्रथा को नारी जाति पर अमानुषिक अत्याचार की संज्ञा देते हुए हिन्दू समाज के संन्यासियों साधु संतों तथा धार्मिक नेताओं से अपील की है कि वे एक जुट होकर इस कुप्रथा का देशव्यापी विरोध करें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजनदेव तीर्थ के उस वक्तव्य को दुर्भाग्यपूर्ण कहा जिसमें उन्होंने सती प्रथा के समर्थन में ऋग्वेद का नाम लेकर राजा राम मोहनराय के सती प्रथा विरोधी आन्दोलन को १५८ वर्ष पूर्व किया गया पाप कहा है।

श्री स्वामी जी ने श्री निरंजनदेव तीर्थ को चुनौती देकर कहा है कि वे ऋग्वेद का वह मन्त्र प्रस्तुत करें जिसमें पति के मरने पर पत्नी को साथ जला देने का विधान हो।

उन्होंने कहा कि फ्रांस के डा० बर्नियर ने अपनी भारत यात्रा में इस कुप्रथा के वीभत्स दृश्य को देखकर इसे भारत के माथे पर कलंक कहा था।

स्वामी जी ने शंकराचार्य से अपील की है कि वे हिन्दू जाति की दुरावस्था पर तरस करें और अन्धविश्वास में फंसकर विधवाओं के जीवन के साथ खिलवाड़ न करें। उन्होंने स्वामी निरंजन देव तीर्थ को याद कराया कि पिछले दिनों इन्दौर में व्यवस्था दी थी कि स्त्रियों को गायत्री मन्त्र पढ़ने का अधिकार नहीं है उनके ऐसा कहने पर सैकड़ों महिलाओं ने उनका घेराव किया था।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य समाज सनातन धर्म तथा हिन्दू जाति के नवयुवकों तथा महिला संगठनों से अपील की है कि वे इस प्रकार के पाखण्डों का खुलकर विरोध करें और आर्य परम्परा को कुण्ठित करने वालों का डट कर सामना करें।

सच्चिदानन्द शास्त्री

हम यज्ञ क्यों करें ?

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती—

यज्ञ प्राचीनतम भारतीय परिपाटी है। वेद ने भी मनुष्यों को यज्ञ करने का आदेश दिया है। परमात्मा के द्वारा की गई सृष्टि रचना को भी वेद ने यज्ञ का रूपक मानकर मानव जाति को अपने कर्त्तव्य का बोध कराया है। यज्ञ का वास्तविक अर्थ है दान, आत्म-सयम और सेवा। अत वह प्रत्येक कार्य जो हम दूसरे के हित के लिए करते है, यज्ञ कहलाता है। उपनिषद् एव शास्त्रकारो ने सूर्य, चन्द्रमा को भी अपने कर्त्तव्य पथ पर चलते हुए सृष्टि का महायज्ञ कहा है।'

ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र है, अग्निमीले पुरोहित यज्ञस्य देव-मृत्वजम्। होतार रत्नधात् मम ॥ इस मन्त्र मे परमात्मा को अग्नि, नाम से सम्बोधित करके इस ब्रह्माण्ड मे निरन्तर चल रहे यज्ञ का पुरोहित कहा गया है। अग्नि रूप सूर्य के प्रचण्ड तेज से ही चराचर जगत् को जीवन प्राप्त होना है। यज्ञ का कोई भी कार्यक्रम अग्नि के बिना नही हो सकता। अग्नि ही शक्ति है जो सारे ससार को चलाती है और अग्नि का प्रादुर्भाव सूर्य से होता है। अपनी धुरी पर घूमता हुआ सूर्य सभी ग्रह और उपग्रहो को सचालित करता है। यदि सूर्य की शक्ति कम हो जाय और वह ठण्डा पड जाय तो ससार मे प्रलय हो जाती है। यज्ञ का शाब्दिक अर्थ (यज् धातु से) है, अग्नि को समर्पित आहुतियों से परमात्मा की आराधना-उपासना करना। यह आहुतिया सूर्य की ओर जाती हैं और बादलो को फाड कर वर्षा का कारण बनती है, घी और सामग्री की आहुतियो से जो वातावरण उत्पन्न होता है, वह सब प्रकार से प्रदूषण और दुर्गन्ध दूर करने मे समर्थ होता है।

वैदिक धर्म मे प्रत्येक व्यक्ति के लिए यज्ञ का विधान किया गया है क्योंकि इसके द्वारा ही यज्ञ कर्त्ता को परमात्मा की सान्निध्य प्राप्त होना है और उसे चरित्र बल की प्राप्ति होती है। प्राचीन-काल मे प्रत्येक घर मे यज्ञ होता था। इसके आधार पर महाराज अश्वपति अपने दरबार मे उपस्थित ऋषि-मुनियो से कहा था—

नमेस तेनो जनपदे न कदयो न मद्यपा।
ना नाहिताग्नि ना अविद्वान ना स्वयी स्वयंणी कुत ॥

अर्थात् मेरे राज्य मे न कोई चोर-डाकू है और न कोई व्यभिचारी है। कोई शराबी भी नही। ऐसा कोई व्यक्ति नही जो प्रति दिन यज्ञ न करता हो। अपने राष्ट्र का स्वरूप बताते हुए महाराज अश्वपति ने कहा कि यज्ञ करने वाले शराब नही पीते, चोरी नही करते। इसलिए आज अपने देश की युवा पीढी को चरित्रवान बनाने के लिए यज्ञ की आवश्यकता है।

वैदिक धर्मावलम्बी कश्मीर से कन्या कुमारी तथा कच्छ से कामरूप तक अपने विवाह आदि अग्नि को साक्षी मानकर वेद मन्त्रा द्वारा सम्पादित करते है। यह हिन्दू जाति की राष्ट्रीय एकता एव सामाजिक एकरूपता का एक प्रबल प्रमाण है। इसलिए हमे सदा यज्ञ करना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती लगभग ५००० वर्ष के बाद वेद-शास्त्रों के आधार पर हिंसा रहित यज्ञो की परिपाटी ससार के सामने रखी। उनकी मान्यता थी कि प्राचीन काल मे यज्ञो से ही राष्ट्रो का निर्माण होता था। इसलिए पुरातन काल के राजा महाराज चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना के लिए अश्वमेघ यज्ञ करते थे। मध्यकालीन ब्राह्मणो आचार्यों ने इस भ्राति-पूर्ण भावना को जन्म दिया कि अश्वमेध यज्ञ मे घोडे को मारकर उसके माम की आहुति दी जाती थी। महर्षि दयानन्द ने यज्ञो की प्राचीन परम्परा का समर्थन करते हुए अश्वमेध यज्ञ का वास्तविक अर्थ पौराणिक आचार्यों के सामने रखा। उन्होने शतपथ ब्राह्मण के आधार पर कहा—

राष्ट्र वै अश्वमेधा

स्वामी जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे बताया कि राष्ट्र का निर्माण ही अश्वमेध यज्ञ है। धर्म के स्वरूप को धूमिल करने वाले पाखण्डी लोगो ने अश्वमेध के नाम पर यज्ञ मे घोडे मारने जैसी वीभत्स क्रिया को जन्म दिया। स्वामी दयानन्द ने इसका विरोध करते हुए अश्वमेध यज्ञ का सही स्वरूप सामने रखा।

यज्ञ मे धूप और सामग्री की आहुतियो से वातावरण शुद्ध होकर विभिन्न प्रकार के रोगो का निवारण होता है। तथा मन्त्रो के पाठ से मन के पाप और दुर्गुण दूर होते हैं। वातावरण पवित्र होता है। अत वेद मे प्रत्येक आर्य को रोज यज्ञ करने का आदेश दिया गया है ●

सूखा पीड़ित सहायता कोष में दान देने वाले दानियों की सूची

१—श्री शिव जी प्रेम जी प्रधान आर्य समाज कच्छ	१०००
२—आर्यसमाज नारनौल (हरि०)	५००
३ मेजर आर० के० आर्य ९९ ए० पी० ओ०	१०१
४—प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी गुरुकुल सस्कृत का महा०वि०डिकाडला	१००
५—गुप्त दान	१००
६—श्री सदानन्द सरस्वती, आर्यसमाज राजपुरा	१००
७—श्री देवेन्द्रकुमार, स्टेट बैंक कालोनी दिल्ली	३२
८—श्रीमती नीलिमा देवी, स्टेट बैंक कालोनी दिल्ली	२२
९—रमेशचन्द चन्दौसी	१०

महीयसी महादेवी के प्रति

उषा सा स्वर्णिम स्नेह सुहास, प्रभामय पूर्ण प्रभाती गान।
अरुण अरविन्द भरा कविलास, सहज सध्या का प्रीति विधान। १।
'निहारो' मे निर्झर समनीर 'साध्य-गीतो' में करुण विहान।
दिये राका को शाश्वत गीत, जल गई 'दीप शिखा' अम्लान। २।
आह, करुणा की वह प्रतिमूर्ति, वेदना से क्यो हुई अजान।
लगाई फिर असीम से प्रीति, न सोचा क्या होगा अवसान। ३।
आज अमर है पीर निमग्न, मलिन कल कूजन खग कुल तान।
देवी श्री चरणो मे सस्नेह, समर्पित सहज स्नेह सम्मान। ४।

—विश्वेश्वर नाथ त्रिपाठी

हिन्दी की धार्मिक परीक्षायें

भारतीय जीवन को धार्मिक तथा उन्नत बनाने हेतु और आधुनिक सन्तति मे चरित्र निर्माण करने के लिये भारतीय सिद्धान्त परिषद् नजीबाबाद निम्न लिखित परीक्षायें प्रति वर्ष आयोजित करती है। १—सिद्धान्त प्रवेश, २—सिद्धान्त कोविद ३—सिद्धान्त शास्त्री, ४—सिद्धान्त वाचस्पति। शीघ्र ही नियमावली मगाकर अपने यहा केन्द्र स्थापित कीजिये।

चन्द्र प्रकाश आर्य
प्रधान

विद्यारत्न आर्य
मन्त्री

भारतीय सिद्धान्त परिषद् नजीबाबाद (उ. प्र.)

आर्यसमाज द्वारा मध्य प्रदेश आदिवासी परिवारों में अन्न वितरण

सार्वदेशिक सभा से सूखापीडितो की सहायतार्थ जो १४० बोरी अन्न रतलाम शेष भेजा गया था, आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने उसका वितरण—झाबुआ, बादला, रतलाम आदि क्षेत्रो के आदिवासी परिवारों में करा दिया है। प्रत्येक परिवार को ४०-४० किलो गेहूँ दिया गया है। अभी इस प्रकार की सहायता की वहा बडी आवश्यकता है सार्वदेशिक सभा इसके लिए प्रयत्नशील है।

सम्पादकीय

यह सती नहीं-हत्या कांड था ?

स्वामी निरंजन देव तीर्थ शंकराचार्य से एक प्रश्न ?

सती रूपकुंवर के सती होने के जो भी कारण हों, परन्तु आज पुरातन पीढ़ी के ढोंगी उसी प्रकार की पिटी पिटी सती होने के पक्ष में आवाज बुलन्द कर रहे हैं। पुरी के शंकराचार्य निरञ्जन देव तीर्थ ने घोषणा की है कि मुझे चाहे फांसी पर लटका दिया जाय ? मैं इस प्रथा का पक्षपाती हूँ सती प्रथा हमारी परम्पराओं व सिद्धातों की प्रतीक है।

लेकिन २१ वीं सदी का नारा लगाने वाली सरकार के लिए यह शर्मनाक घोषणा है इस ढोंगी सन्यासी को गिरफ्तार क्यों नहीं किया गया २० वी सदी के सुधारवादी आन्दोलनो ने नारी जाति को समाज मे किस प्रतिष्ठा के साथ सम्मानित किया है।

फिर आज इस रूढ़िवादी परम्परा की पुनरावृत्ति हो रही हैं। आज समाज सेवी, संगठनो सती प्रथा का घोर विरोध करने तथा समाज मे महिलाओं को अत्याचारो से मुक्ति दिलाने के दावेदार भिन्न भिन्न संगठनो के लिए अतिनिन्दा और लज्जाजनक तो हैं ही, हम प्रसन्न है कि आज देश २१ वी सदी की ओर बढ रहा है।

पुरी के शंकराचार्य का यह कहना कितना उपहास के योग्य है कि १५८ वर्ष पूर्व कोई स्त्री विधवा नही थी। पता नही स्वामी जी ने पिछला अन्धकार पूर्ण इतिहास कैसे भुला दिया। जब हजारो महिलायें प्रतिवर्ष विधवा हो जाती थी जो या तो वेश्यावृत्ति के लिए चकलो मे अनैतिक व्यापार मे लगाई जाती थी या विधर्मियो के चंगुल मे फंसकर विधर्मी बन जाती थी।

आज भी यह शर्मनाक घटना भारत की अखंडता के मस्तक पर कलंक का टीका है। राजा राममोहन राय तथा स्वामी दयानन्द ने अपना सारा जीवन नारी जाति के सुधार मे लगा दिया।

फिर भी पुरी के शंकराचार्य जैसे पतित व्यक्ति आज भी सती प्रथा को ऋग्वेद से सिद्ध करने मे उद्यत हैं। शंकराचार्य ने ऋग्वेद के मन्त्र का उद्धरण न देकर पति की मृत्यु के पश्चात् पत्नि का पति के साथ चिता मे जल मरने का विधान बताकर सती प्रथा की घृणित वकालत की है।

कैसा उपहास है ?

सुना है कुछ नवयुवको ने जुलूस निकालकर मन्दिर बनवाने की प्रतिज्ञा की है ? पुरी शंकराचार्य की वकालत, तथा नवयुवको के यह घृणित वक्तव्य से क्या शर्मोहया शेष बची है। काशी मे सती प्रथा के नाम पर नारी की हत्या करके उसे बढ़ावा दे रहे हैं ऐसे साधु व छात्र निरक्षर अज्ञानी हैं जो ज्ञान प्राप्त करके भी आज अन्धकार मे हैं।

एक भी नवयुवक राजा राममोहन राय के पद चिन्हो पर न चल सका। धिक्कार है आज के समाज सेवियों को, नेता और सरकार के मन्त्री व अधिकारियो को, और सान्त हैं अदालत के आदेशो व सरकारी तन्त्र के सरक्षको को, जिनके रहते देश मे आज ऐसे घृणित कार्य हो रहे हो, तथा आगे के लिए बढ़ावा दिया जा रहा हो।

प्रगति शील क्या कर रहे थे ?

नव विवाहिता जिन्दा जला दी गई ? हमारे वीर राजपूतो ने बाजे गाजो के साथ उसे चिता में बैठाकर आग लगादी ? सती के जय जयकारो से वातावरण गुंजाकर उस नारी की आत्मा की चीत्कार को दबा दिया गया। पर हम सभी प्रगतिशील मे से ऐसा कोई न निकला जो उस बर्बर दहन को रोकने में जान की बाजी लगा देता। या संघर्ष कर उसके विरुद्ध प्रदर्शन करके लड सकता।

सिनेमा की खिडकी पर टिकट की छूट न मिलने पर बसें दुकानें जलाई जा सकती है, यातायात रोका जा सकता है पर आज का तथाकथित नवा रक्त इस कृतघ्न कार्य को रोकने के लिए कोई समाज सुधारक सस्थान के रूप में सामने नहीं आया ? क्या उन्हें इस काण्ड की जरा भी सनक नहीं मिली थी।

कोई मर्द नहीं था ?

लड़कियाँ दूसरी कुप्रथा पर आज आवाजें लगा रहे हैं। सरकार भी छोटें पापियों को दण्ड दो पुलिस वालो को सजा दो। पर यह कोई नहीं कहता कि—

आज इस प्रकाश युग में भी अधखिली कली को समाज मसल देता है दहेज की आड में जिन्दा जला दिया जाता है। परन्तु उसके हत्यारे निर्भय होकर घूमते हैं उन्हें कानून व समाज कुछ नहीं कहता है।

ऐसों को फांसी दी जाए ?

प्रशासन को ठेंगा दिखाकर घर वालो ने सती कर दिया। इस रोमहर्षक घटना को नौटकी के रूप में देखने वालो की भीड ने क्या सम्पूर्ण मानवीय सम्वेदनाओ को धर्म के नाम पर बलिदान कर दिया। शंकराचार्य निरञ्जन देव तीर्थ जैसे धर्माचार्यों की मानसिकता और धर्मान्धता की पराकाष्ठा ही है पर धर्म के नाम पर तथाकथित धर्मावलम्बियो द्वारा इस कुकृत्य को आज भी बढ़ावा दिया जा रहा है। पुरातन स्वामी दयानन्द जैसे धुरन्धरों ने इस आग को मसलकर बुझा दिया था जिसे आज के शंकराचार्य ने पुन हवा देकर दावानल बना दिया है। सुरक्षित नारी जाति को फिर आग मे धकेल कर उसके साथ अन्याय किया है।

स्वार्थी तत्वो ने इस काण्ड की जाली तस्वीरें बनाकर लाखो रुपए उन्हें बेचकर अन्धविश्वासियो से ऐंठे जा रहे हैं।

सती प्रथा की वकालत करने वाले राजपूत भी इसे धार्मिक कृत्य बताकर पतिव्रता नारियो का धर्म और राजपूती परम्परा अनुरूप कार्य बताकर सती प्रथा वर्तमान मे अत्यावश्यक। विधवा नारी के चरित्र पर प्रश्न चिन्ह लगाकर उसे पतित होने से बचाकर मारने मे गौरव समझते हैं। एक नारी के मरने पर कितने पुरुष सती होते हैं जो नारी के बिना समाज मे चरित्र को ताक मे रखकर परनारी से जीवन मे खिलवाड करते हैं। नारी की अपेक्षा नर-समाज मे कितने घृणित कार्य करता है फिर उसे सती क्यो नही किया जाता। उसके लिए धर्म के कानून क्यो नही लागू किये जाते। अन्धविश्वास के नाम पर नारी का शोषण किया जाता है और फिर उसे समाज में प्रतिष्ठा का मापदण्ड देकर धर्म का स्थान दिया जाता है।

आज ऐसे शंकर के नराधमो को समाज घृणा का पात्र क्यो नही मानती। सती प्रथा को सैद्धांतिक व साहसिक कार्य बताने वालो से प्रार्थना है कि वे पत्नि के मरणोपरान्त सती होने का साहस क्यो नही करते। सती प्रथा को १८२९ मे बने कानून में प्रतिबन्धित किया है। आज के काण्ड लार्ड विलियम बेंटिंग के जमाने की वापिसी की याद दिलाती है।

कलियो के मसलने वालो से,
फूलो की हिफाजत क्या होगी।

नारी निन्दा मत करो, नारी नर की खान।
नारी से नर ऊपजे ध्रुव प्रहलाद समान ॥

नारी के जीवन को खिलवाड समझना, दकियानूसी मानसिकता रखने वालो ने तो अबला जीवन को एक मिट्टी का खिलौना समझ रखा है जब तक चाहा खेला और जब चाहा तोड कर मसल दिया। ऐसे लोग नारी अस्तित्व को क्या समझें।

ऐसे लोगो ने रामलीला के पात्रो की भांति उन्हें मारना व जलाना ही सीखा हैं और देश को २१ वी सदी की ओर बढ़ाना ऐसे ही सीखा है और देश को आगे बढाने के सपने देख रहे हैं पता नही क्यो उन्होने इतिहास के पन्नो पर दृष्टि नही डाली ? जिस देश मे—

सतमहापुरुषों को जिस नारी ने अपनी कोख से जन्म देकर महापुरुष बनाया हो, वह नारी निन्दा की पात्र कैसे बनी।

प्रताप, शिवा, बन्दा बैरागी, दस गुरुओं की परम्परा, शंकरानन्द गान्धी जैसे वीरो को जन्म देकर समाज को नई दिशा दी हो, वह अभागिनी कैसे हुई।

उन्हें समझना होगा।

'कालीदास को महामूर्ख से महान कवि किसने बनाया ?

तुलसी दास को महाकवि बनाने वाली नारी ही थी।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने नेतृत्व से देश को प्रगति की ओर बढाया। वह भी एक विधवा नारी ही थी।

अत समाज सुधारकों के उजले पृष्ठो को पढो और नारी के असम्मान जनक घटनो से हटकर अपनी प्रतिष्ठा बचाओ।

—इन्दुजा भारती एम० ए०, हरदोई

राष्ट्र देवो भव

राष्ट्र देवो भव —यह वेद वाक्य है । राष्ट को देवता मानो । हमारे कई प्राचीन ग्रन्थो मे भारत की प्रमुख नदियो और पर्वतो का वणन मिलता है । अनादि काल से हमारे पूवजो ने समस्त राष्ट्र को सम्मान की दृष्टि से देखा । राष्ट्रीय भावना को जागत करना हमारा धम है और राष्ट्रप्रेम से ही हमारा उत्थान सम्भव है ।

इतिहास साक्षी है कि जब भी राष्ट्र भक्ति की कमी हुई हमारा पतन हुआ । आज भी देश की स्थिति बहुत चिन्ताजनक है । चारो ओर विघटन कारी शक्तिया सक्रिय है । जरूरत है भारत जोडो अभियान की । इस दिशा मे बाबा आमटे बहुत काम कर रहे हैं । हमे भी उनके दर्शाए हुए माग पर चलकर देश की उ नति के लिए कायरत होना है ।

राष्ट्र को देवता मानो । राष्ट्रभाषा हि दी को अपनाना राष्ट्र देव की पूजा है । राष्ट्र ध्वज का आदर करना हमारा कत्तव्य है । राष्ट्रगान हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत होना चाहिए ।

हमे एक सूत्र मे बाधने वाली हमारी सस्कृति है । इस विशाल देश मे कई प्रकार की भिन्नताए हैं पर हमे उन तत्वो की खोज करनी है जो हमारे बीच एकता ला सक । वैदिक सस्कृति का प्रचार और प्रसार हमे सगठित कर सकता है ।

हमारे रास्ते मे बडी रुकावट हमारी शिक्षा प्रणाली है । हमारे स्कूलो और कालिजो मे हिन्दी से अधिक अ ग्रेजी पर जोर है । सस्कृत का पठन पाठन बहुत कम होता जा रहा है । दिन प्रतिदिन हमारी वेशभूषा विदेशी ढग की होती जा रही है ।

इतिहास हमारा माग दशन कर सकता है परन्तु अभी भी इतिहास की उन्ही पुस्तको को अधिक मान्यता दी जाती है जो विदेशियो ने लिखी हैं । जरूरत है नए सिरे से इतिहास लिखने की जिससे यह सिद्ध हो कि किस प्रकार यह देश विकट परिस्थितियो मे अपनी सभ्यता को सुरक्षित रख सको ।

महापुरुषो का आदर आवश्यक है । स्वामी दयान द सरद र भगतसिह नेताजी सुभाषच द्र बोस जैसे युगपुरुषो की जीवनिया अनिवाय रूप से विद्या लयो मे पढ़ाइ जानी चाहिए । ऐसे साहित्य की रचना जरूरी है जिससे हमे यह ज्ञान प्राप्त हो सके कि किस प्रकार दश शक्तिशाली बन सकता है ।

महान लेखक कारलाइल से पूछा गया कि अ ग्रेजी साम्राज्य का महत्व अधिक है या शेक्सपीयर का । उनका उत्तर था शेक्सपीयर की महानता ज्यादा है ।

राष्ट्र निर्माण का आधार व्यक्ति का चरित्र है । देश की नि स्व थ सेवा से ही हमारा कल्याण हो सकता है । लई पास्चर ने अपने देश के युवकों से कहा था कि वे अपने आपमे यह प्रश्न पूछे (what have I done for my Countrv) हमे भी इसी प्रकार सोचना चाहिए ।

आजादी मिलने क बाद तप और त्याग की भावना कम हो गई है हमे ऐसे नेताओ की आवश्यकता है जि हे पद का लालच पथभ्रष्ट न कर सके । इस सम्ब ध मे श्री लालबहादुर श स्त्री क जीवन अनुकरणीय है । च णक्य एक महान राष्ट्र के प्रधान मन्त्री होत हुए एक कुटिया मे रहते थे ।

राष्ट्र देवो भव इसी धारणा के अनुरूप हमारा आचरण होना चाहिए । स्वामी विवेकानन्द के अनुसार उठो जागो और तब तक दम न लो जब तक म जिल पर न पहुच जाओ । हमारी मजिल राष्ट्र को उ नति के शिखर पर ले जाना है राष्ट्र का गौरव बढाना हम रा ध्येय है ।

—कृष्ण लाल मल्हा

एक जर्मन सैनिक का संस्कृत प्रेम

—डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री, आर्यसमाज अमेठी—

सन् १८६० ई० मे फ्रास और जर्मनी मे बडी भारी लडाई हुई थी । उसमे सारे साम्राज्य काप उठे थे । उन्ही दिनो योरोप में सस्कृत पढने की चर्चा खूब चल रही थी । जमन सेना के एक सवार ने १ सितम्बर १८७० ई० के युद्ध का वृत्तान्त २ सितम्बर को अपने एक स्वदेशी मित्र को सस्कृत मे लिख भेजा । उस पत्र मे ऋग्वेद का एक मन्त्राश कुछ परिवर्त्तित रूप मे दृष्टान्त रूप से लिखा है । पत्र यह है—

ह्यो महायद्धम् अभवत् । शत्रव सर्वे निर्जिता । सर्वा तेषा सेना महाराजश्च स्वय बद्ध । त्वष्टा तो वज्र स्वम ततक्ष अहन्मा॑ स्वविले शिश्रियाणाम् (ऋग्वेद १।३२।२) अह सकुशलोऽस्मि युद्ध न महदभय गतोऽहम् यद एतस्मिन् क्षत्र सुपाषते पदातय एव योद्धु शक्नुवन्ति तुरगिस्तु नाहन्ति ।

महत्या सेवाया भवत शिष्य
जुरिस वौन थीलमान

इस जर्मन अश्वारोही के सस्कृत पत्र का हिन्दी अथ सामान्य पाठको के लिए प्रस्तुत करता हू— कल बडी लडाई हुई । शत्रु सब जीत लिये गये । सब उनकी सेना महाराज भी बाध लिये गये । इन्द्र ने हमारा दैवी वज्र बनाया, हमने अपने बिल मे बैठे अहि (वृत्र सप, मेघ) को मारा । मे प्रस न हू युद्ध मे बहुत डर नही लगा क्योकि इस पहाडी खेत मे पैदल ही लड सकते घुड-सवार नही ।

बडी सेवा मे तुम्हारा शिष्य
जुरिस वौन थीलमान

इस पत्र को हि दी के प्र सद्ध पत्र 'समालोचक' ने १९०३ ई० मे छापा था । इस पत्र के सम्पादक प्रसिद्ध विद्वान् आलोचक तथा लेखक प० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी थे । 'समालोचक' के १७वे अक मे इस सस्कृत पत्र को प्रक शित करते हुए श्री गुलेरी जी ने लिखा था—' जिस देश मे सस्कृत के अभ्यास का यह प्रम है वह देश धन्य है । जो मनुष्य यद्ध क्षत्र मे भी इस हमारी भाषा को नही छोडता था, वह मनुष्य धन्य है । सस्कृत देववाणी ही है और इसके चाहने वाले देव' और उपेक्षा करने वाले पशु बन ही जाते है । जमन अश्वारोही द्वारा लिखे गये उक्त सस्कृत पत्र मे जिस ऋग्वेद का त्रुटित मन्त्र उदधृत है, वह मन्त्राश शुद्ध रूप मे यह है—' अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाण त्वष्टाऽस्मै वज्र स्वय ततक्ष । ऋ० १।३२।२)

अप्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्ष ज्ञान

श्री कर्मनारायण कपूर

१—ईश्वर, आत्मा तथा प्रकृति तीन शाश्वत तथा सूक्ष्म तत्व हैं। इनका ज्ञान सर्वज्ञ परमात्मा ही देता है। अपरच यह अप्रत्यक्ष ज्ञान आप्त पुरुषों, तथा तर्क और बुद्धि से प्राप्त होता है।

२—श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा और घ्राण इन्द्रियों के साथ मन का और मन के साथ आत्मा के संयोग से जो ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं।

(स० प्र० तृतीय समुल्लास पृ० ५२) जो अव्यपदेश्य, अव्यभिचारि और निश्चयात्मक ज्ञान है, उसी को प्रत्यक्ष कहते हैं (वही),

प्रत्यक्ष ज्ञान अनुमान तथा आप्त पुरुषों के उपदेश से भी प्राप्त होता है।

इन्द्रियों द्वारा अनुभव किया हुआ तथा प्राप्त किया हुआ निम्न प्रकार का ज्ञान निश्चयात्मक न होने के कारण प्रत्यक्ष व सत्य नहीं होता। वह तो केवल भ्रम उत्पन्न करता है —

(क) स्वप्न ज्ञान

(ख) मृगतृष्णा ज्ञान (Mirage) मरुभूमि मे ग्रीष्म काल में दूर से जलाशय तथा वृक्षों के कुञ्ज की प्रतीति।

(ग) जादूगर द्वारा दिखलाये हुए इन्द्रजालिक खेल व दृश्य।

(घ) चलती हुई रेलगाड़ी में बैठे हुए यात्री को दूरस्थ वृक्षों के गति करने का आभास।

(ङ) पृथ्वी के प्रत्यक्ष रूप स्थिर होने का ज्ञान।

(च) प्रत्यक्ष रूप में सूर्य का गति करना।

(छ) प्रतिमास चन्द्र का नवीन रूप से उत्पन्न होना।

४—सूर्य की गतिशीलता की पुष्टि में यजुर्वेद (२३ १०, ४६) का यह मन्त्र प्रस्तुत किया जाता है "सूर्य ऽ एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुन" अर्थात् सूर्य अकेला विचरता है और चन्द्र बार-बार पैदा होता है। सूर्य की गति के सम्बन्ध में निम्न वेद सूक्तियां ध्यान में रखने योग्य हैं —

(क) सविता रथेन याति, अर्थात् सूर्य रथ से जाता है (यजु ३३ ४३, ऋ० १-३५-२)।

(ख) सूर्यो देवी मुषस अभि एति अर्थात् सूर्य उषा के पीछे-पीछे चलता है (ऋ० १-११५-२)।

(ग) उद्यन्नद्य आरोहन्नुत्तरां सूर्य (ऋ० १ ५० ११) अर्थात् उदय होता और उत्तर को चढ़ता हुआ सूर्य है किन्तु ध्यान रखना होगा कि प्रत्येक प्रत्यक्ष वस्तु व दृश्य सत्य नहीं होता किन्तु उसकी प्रतीति तथा आभास ही होता है। मनीषियों का यह कर्तव्य है कि प्रत्यक्ष के अन्तर्हित रहस्य को जान कर उसका प्रतिपादन करें।

५—यजुर्वेद (२३ १०, ४६) के मन्त्र का अर्थ स्वामी दयानन्द इसी प्रकार करते हैं।

"हे जानने की इच्छा करने वाले मनुष्यो (सूर्य) सूर्य (एकाकी) बिना सहाय अपनी कक्षा में (चरति) चलता है (पुन) फिर इसी सूर्य के प्रकाश से (चन्द्रमा) चन्द्र लोक (जायते) प्रकाशित होता है।

स्वामी जी के किये हुए अर्थ प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले दृश्य के अन्तर्हित रहस्य व सिद्धान्त को प्रकट करता है। आधुनिक विज्ञान का भी यह ही सिद्धान्त है। सत्यार्थ प्रकाश (पृ २१६) में स्वामी दयानन्द ने लिखा है जो लोग कहते हैं कि सूर्य घूमता है और पृथिवी नहीं घूमती वे सब अज्ञ हैं क्योंकि जो ऐसा होता तो कई सहस्र वर्ष के दिन और रात होते। पृथिव्यादि लोक का घूम कर जितना भाग सूर्य के सामने आता है उतने में दिन और जितना पृष्ठ में अर्थात् आड़ में होता है उतने में रात होती है।

सूर्य और चन्द्र का घनिष्ठ सम्बन्ध है। सूर्य की ज्योति से ही चन्द्र प्रकाशित होता है। चन्द्र का रूप तथा आकार सर्वदा एक समान रहता है। इसकी न्यूनाधिकता नहीं होती है किन्तु ग्रह-उपग्रहों की ब्रह्माण्ड में गति करने से चन्द्र-सूर्य के प्रकाश का आकार चक्रिक रूप से होता है। केवल पूर्णमासी के दिन चन्द्र पूर्ण प्रकाशित होता है। इस सन्दर्भ में यह स्मरण रहना चाहिए कि वेद केवल ज्ञानियों तथा मेधावियों (ब्राह्मणों) के लिये नहीं है।

क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र (जो प्राय अल्प बुद्धि व मन्द बुद्धि होते हैं) भी वेदों के पढ़ने के अधिकारी हैं (द्र० यजु० २६ २ तथा सत्यार्थ प्रकाश पृ ६१) वेद में जो प्रत्यक्ष असत्य ज्ञान दिया गया है वह सब अल्प व मन्द बुद्धि वालों के लिये दिया गया है ताकि वह उस ज्ञान का सहारा लेकर उसमें अन्तर्हित अप्रत्यक्ष ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयत्न करे। यदि वेद मन्त्र मे यह स्पष्ट लिखा होता कि सूर्य स्थिर रहता है और पृथिवी उसके चारों ओर घूमती रहती है तो अल्पज्ञ तथा अज्ञ व्यक्ति चक्कर तथा भ्रम मे पड़ जाते क्योंकि सूर्य साक्षात चलता हुआ दिखाई देता है और पृथिवी स्थिर रहती मालूम होती है।

ऐसी स्थिति में उनका वेद में विश्वास न रहता। इसीलिए ही यास्काचार्य ने लिखा है कि जो व्यक्ति ऋषि व तपस्वी नहीं वह वेद के गूढ़ रहस्यों को नहीं जान सकता है।

६—यजुर्वेद की उक्त सूक्ति में सूर्य का अर्थ आत्मा और चन्द्र का अर्थ मन की मनन शक्ति भी हो सकता है क्योंकि केवल आत्मा ही अन्य जन्मान्तरो में अकेला विचरता रहता है और मन की मनन शक्ति आत्मा को मनुष्य योनि मे आने पर पुन प्राप्त हो जाती है। पशु-पक्षी तथा वनस्पति योनियों में मन की मनन शक्ति का प्राय लोप हो जाता है।

किन्तु ऐसा अर्थ करने मे एक बाधा आ जाती है। मन्त्र के पहिले चरण और दूसरे चरण में सूर्य, चन्द्र अग्नि तथा पृथिवि का उल्लेख है, यह सब भौतिक पदार्थ हैं। यदि सूर्य और चन्द्र का आध्यात्मिक अर्थ अर्थात् आत्मा व मन की मनन शक्ति की जावे तो वह असंगत सा हो जाता है। अत यह अर्थ उचित नहीं है।

महर्षि दयानन्द का सृष्टि विज्ञान

श्री स्वामी मोक्षानन्द जी सरस्वती बाजना (मथुरा)

ईश्वर एवं प्रकृति के अतिरिक्त जीवात्मा की सत्ता:—

ससार में पदार्थ-निर्माणवाद में होता है। उससे पूर्व आवश्यकता रूपी अभाव का जन्म होता है। अर्थात् आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है। किन्तु प्रश्न उठता है कि अभाव जड़ तत्वों का विषय है या चेतन सत्ता का क्योंकि संसार में भोग एव भोगता दो ही कोटि दृष्टिगोचर होती है। यदि एक पक्ष है तो दूसरे पक्ष का बोध अवश्य उसे देखकर दृष्टिगोचर होता है। अब निर्णय करना है कि इसमें भोग एवं भोगता कौन है? सामान्य परीक्षण से ज्ञात होता है कि भोग अपने भोक्ता की अपेक्षा सबल चेतन एवं ज्ञान-वान परीक्षक होता है। जब कि भोग दुर्बल, ज्ञान शून्य केवल जड़ ही होता है। भोक्ता अपने भोग की अपेक्षा सबल होने से उसका स्वभाव से स्वामी बन जाता है। चू कि कोई भी जड़-प्रकृति अन्य वस्तु स्वयं अपनी ही भोक्ता नही होती एव न ही उसकी अपनी कोई अभाव रूपी आवश्यकता होती है। न ही इनमें भोग शक्ति। उदाहरणार्थ—मकान, मकान का भोक्ता व स्वामी नहीं होता। मेज-मेज की भोग रूपी आवश्यकता की पूरक नहीं है। न ही रोटी-रोटी की भोक्ता होती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है। प्रकृति जन्य जड़ वस्तुओं की उत्पन्नशील उपादेयता, प्रयोजन भोग सम्बन्धी आवश्यकता स्वय अपने लिये नही है। इसलिये जड़ प्रकृति भी अपनी भोग आवश्यकता प्रयोजन आदि उपादेयताओं की दृष्टि से स्वय ही स्वतन्त्र एव रहित मात्र भोग साधन ही है। भोग प्रयो-जन, आवश्यकता रूपी अभाव चेतनायुक्त ज्ञानवान सत्ता-सत्ता की ही उपादेयतायें हैं। ईश्वर पूर्ण, अक्षर ब्रह्म होने से इन अभाव रूपी भोगों से रहित हैं। अत ईश्वर एव प्रकृति के अतिरिक्त ही कोई तीसरी ज्ञानवान चेतन सत्ता इन प्रकृति रूपी भोगों का भोक्ता का होना आवश्यक है इसी को शरीरधारी जीवात्मा कहते हैं।

इससे सिद्ध होता है कि ईश्वर एव प्रकृति के अतिरिक्त एक तीसरी सत्ता जीवात्मा इस ससार में हैं जो स्वाभाव से भोक्ता एवं अविनाशी चेतन सत्ता है। इस तीसरी सत्ता जीवात्मा के अभाव में सृष्टि सर्वथा असम्भव है। चू कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, अविकारी, अशरीरी पूर्णब्रह्म, पवित्र है अत. उस सर्वव्यापक सत्ता ईश्वर में न्यून से न्यून अभाव एव विकार आदि का होना सर्वथा असम्भव है अत जन्म-मरण चक्र को विभिन्न शरीर एवं योनियों में धारण करने वाला यह जीवात्मा अपने शरीरस्थ अभावों की पूर्ति प्रकृति से करने वाला ही भोक्ता तीसरी "आत्मा" नामक सत्ता है। ईश्वर पूर्ण ब्रह्म होने से आवश्यकताओं एवं अभावों से सर्वथा रहित-सर्वशक्ति, अक्षर, अविनाशी एव स्वभाव से ही आनन्दमय भण्डार है।

सृष्टि के कारण:—

जगत् सृजन में केवल तीन ही कारण होते हैं?

(१) निमित्त कारण (२) उपादान कारण (३) साधारण कारण।

(अ) निमित्त कारण वह है जिसकी चेतन प्रेरणा व बनाने के बिना कुछ बन ही न सके। जो रचना प्रक्रिया से सदैव स्वतन्त्रता ही रहे। उसे बनाने वाला कोई न हो। एव न स्वयं बने। उसके पृथक अवयव हो ही नही अथवा अपने स्वाभाव से अविनाशी ही हो। उक्त स्वतन्त्र अविनाशी सत्ता के रूप में अन्य तत्वों से प्रकारान्तर ही रचना करे।

(ब) उपादान कारण—वह होता है कि जिसके बिना कुछ रचना की ही न जा सके। एवं अपने कर्ता के रचना चक्र के साथ-साथ अन्य रूपों में रूपान्तरित (लयादि) अथवा अवस्थान्तरित भी होता रहे। इसे प्रकृति परमाणु कहते हैं। ससार बनाने की यही सामग्री है।

(स) साधारण कारण—जो बनानें में साधारण भूमिका रखें। उपभोक्ता कोटि में होवें। जिसके अभाव में सृष्टि सर्वथा ही असम्भव हो।

सृष्टि विज्ञान का क्रमिक प्रारूप

पूर्व जगत के प्रलय उपरान्त प्रकृति अपनी मूल स्वरूप में सर्वत्र आच्छादित रहती है। ईश्वरीय व्यवस्था अनुसार जब उसमें सृजन उपयोगिता आ जाती है एवं रचना काल आता है तब ईश्वर प्रकृति परमाणुओं में सृजनात्मक गति देता है। परमाणुओं में ईश्वरीय गति से हलचल होने लगतीं है। जिससे प्रकृति मे आकाश (रिक्त स्थान) प्रकट होता है। आकाश रूपी पोल प्रकट होते ही उसमें वायु तत्व उत्पन्न होता है। ठीक इसी क्रम में वायु परमाणु संघर्षण से अग्नि, पुन: जल एव पृथ्वी उत्पन्न होती है। इसी क्रम को तैत्तिरीय उपनिषद ने वैज्ञानिक सरचना निम्न प्रकार प्रस्तुत की है:—

(क) नित्यायाः सत्वरजस्तमसां साम्यावस्थायाः प्रकृतेरुत्पन्नानां परमसूक्ष्माणां पृथक पृथग्वर्तमानानां तत्व परमाणूनां प्रथमः संयोगविशेषादवस्थान्तरस्य स्थूलाकार प्राप्तिः सृष्टिरुच्यते ॥

अनादि नित्यस्वरूप सत्व, रजस एवं तमोगुण की एकावस्थारूप प्रकृति से उत्पन्न जो परम सूक्ष्म पृथक्-पृथक् तत्वोंवयव विद्यमान है, उन्हीं का प्रथम ही जो सयोग प्रारम्भ है, इस संयोग विशेषों से अवस्थान्तर विभिन्न तात्विक अवस्था को सूक्ष्म से स्थूल एवं स्थूला-न्तरितहोते यह विचित्रता उत्पन्न हुयी।

(ख) तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधिभ्योऽन्नम्। अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः॥

उस परमेश्वर एवं प्रकृति से आकाश प्रकट होता है। आकाश के पश्चात् वायु। वायु के पश्चात् अग्नि। अग्नि के पश्चात् जल। जल के पश्चात् पृथिवी। पृथिवी से औषधि। औषधियों से अन्न। रज-वीर्य। रज-वीर्य के द्वारा पुरुष अर्थात् शरीर उत्पन्न होते हैं चू कि ईश्वर (निमित्त-कारण), जीवात्मा (साधारण निमित्त व भोक्ता), प्रकृति (उपादान कारण संसार बनाने की सामग्री) अनादि अत: यह सृष्टि प्रवाह रूप से अनादि है। सृजन, वृद्धि, स्थिरता,

ह्रास, एव लय (प्रलय) के चक्र में प्रवाहित रहती है। इसी कारण इसे विश्व, जगत, शब्दों से उद्बोधित किया जाता है। सृष्टि के उपरान्त प्रलय एव पुन सृष्टि-प्रलय इसी प्रवाह में सदैव चक्र चलता रहता है। यही इस सृष्टि का क्रमिक विज्ञान है।

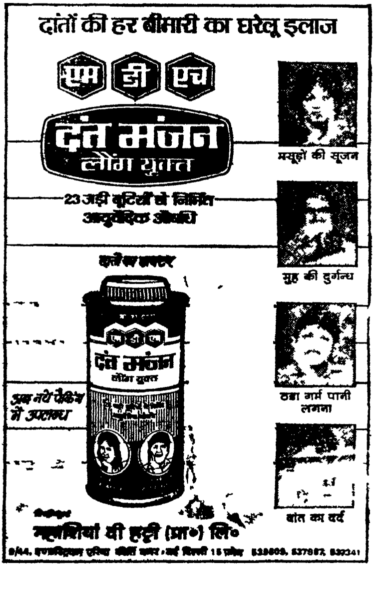
ईश्वरीय सत्ता का स्वरूप:—

यदि ईश्वर प्रकृति अव्यवो के योग से बना व उत्पन्न हुआ होता तो जिन अवयवो से उत्पन्न हुआ था। उन विकारयुक्त स्वाभावी अवयवों उत्पत्ति, वृद्धि, स्थिरता, ह्रास एव लय (विनाश) रूपी विकार ईश्वर में अवश्य होते। उक्त दशा मे ईश्वर अविनाशी, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापकत्व, गुणो से सवत शून्य हो जाता। क्योंकि उपादान कारण जड-प्रकृति अव्यवो के गुण पूर्वक कार्य गुणो दृष्ट (वैशेषिक-सूत्र) अत ईश्वर कहते ही उसे हैं जो अनादि, अनन्त, अखण्ड, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वन्तरयामी, अजर-अमर, नित्य-पवित्र एव एकरस स्वभाव से रहता है। क्योंकि उपनिषदकार कहते हैं कि—"आदावन्ते च यन्नास्ति वर्तमानेऽपि तत्तथा।

(माण्डूक्योपनिषद)

अर्थात् जो (सृष्टि पूर्व) प्रथम न हो, अन्त में न रहे वर्तमान में भी जब सृष्टि पूर्व नहीं था तो वह अब क्यो नहीं? प्रलय उपरान्त क्यो नहीं रहेगा? यदि काल भेद से ईश्वरीय सत्तात्मक गुण व स्वाभाव विभाजित हो जायेगा तो वह अखण्ड, अविनाशी न रहेगा। साकार (अवयवी) होने से विकारी होकर नष्ट हो जायेगा। अत ईश्वर निराकार निरवयी है? महर्षि दयानन्द महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ १४४ पर साकार ईश्वरत्व पर वैज्ञानिक प्रहार करते हुए निराकार ईश्वरत्व का प्रतिपादन किया है—"जो साकार अर्थात् शरीरयुक्त है वह ईश्वर ही नही। क्योकि परिमित-शक्तियक्त, देश, काल वस्तुओ मे परिछिन्न, क्षुदा, तृषा, छेदन, भेदन, शीतोष्ण, ज्वर, पीड़ादि सहित होवेगा। उसमे जीव के बिना ईश्वर के गुण कभी नही घट सकते। जैसे तुम और हम साकार अर्थात् शरीरधारी है इससे (शरीर से) तृषरेणु, परमाणु और प्रकृति को अपने वश मे नही कर सकते। न ही उस सूक्ष्म पदार्थों को पकड कर स्थूल बना सकते हैं। वैसे ही स्थूल देहधारी परमेश्वर भी सूक्ष्म प्रकृति से स्थूल जगत नही बना सकता अत ईश्वर भौतिक इन्द्रिय गोलक, हस्त पादादि अवयवो से रहित है। परन्तु उसकी स्वाभाविक अनन्त शक्ति बल-पराक्रम है—उनसे ही सब काम करता है। जो जीव, जड प्रकृति से ऐसे काम नही हो सकते। जब वह प्रकृति से सूक्ष्म और उनमे व्यापक है तभी तो प्रकृति-सत्ता को नियन्त्रित एव गति देकर उन्ही से स्थूलाकार जगत रचता है और सर्वव्यापक होने से ही धारण एव प्रलयादि व्यवस्था करता है। यह सब काम ईश्वर के निराकार होने से ही सम्भव है।"

महर्षि दयानन्द महाराज नैतिक पापो की 'ईश्वर" को साकार व मूर्ति के रूप में मानना एव मूर्ति पूजा करना मानते थे उनका उपदेश था कि "जो ईश्वर को मूर्ति के रूप मे एक देशीय मानकर पूजता है वह न ईश्वर को जानता है व मानता हैं, न ही ईश्वरीय व्यवस्था को समझता है। मूर्ति पूजा ईश्वर का उपहास एव अपमान करना है। ईश्वर को साकार मूर्ति मानकर पूजने वाला सर्वव्यापक ईश्वर को न समझता है न ही उसकी सर्वव्यापक सत्ता सामर्थ्य दण्ड, न्यायादि व्यवस्था को स्वीकार करता है। बल्कि ईश्वर को एक देशीय मूर्ति एव मन्दिरो में मानकर अन्यत्र असख्य नित्य ही पाप करता रहता है। ईश्वर को सर्वव्यापक सर्वान्तरयामी निराकार मानकर आत्मस्थ ध्यानावस्थित हो जो उपासना करता है वही ईश्वरीय व्यवस्था को सर्व व्यापक मानकर अर्थात् ईश्वर को सर्वत्र मानने व जानने से पाप करने का ईश्वर रहित स्थान न पाने पाप करने से बचता है। क्योंकि निराकार वादी ईश्वर को सर्वत्र ही अनुभव करता है। अत दण्ड एव न्यायादि व्यवस्थापक के समक्ष छिपकर व बचकर पाप करने के स्थान का सर्वथा ही अभाव जानता है। अत वह कहीं भी पाप नहीं कर सकता। क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापी है। जो साकार वादी है वह जड पूजन करते करते पूर्णतया नास्तिक अर्थात् अपने ही उपास्य साकार ईश्वरो की सत्ता एव उसके स्वत्व हरण करते देखे जाते हैं। मन्दिरो में मूर्तियो की चोरी कौन करता है? इन मूर्तियो ईश्वरो के सिर, नाक, कान, हाथ, पैर आदि तोडकर आभूषणों की चोरी करने वाले व कराने वाले मूर्तिपूजक, पुजारी महन्त ही तो है पाप करते करते उपास्य ईश्वरो (मूर्तियो) को भी तोडते-फोडते एव चोरी करके बेचते देखे एव पकडकर दण्ड पाते देखे जाते हैं। यह नास्तिक जडो मूर्तियों को पूजते-पूजते अपनी बुद्धि को भी जड बना डालते हैं। विदेशियो ने इसीलिए इनके मन्दिरो मे एकत्र असख्य सम्पदा, मूर्तियो सहित मन्दिरो को ध्वस्त एव पुजारी वर्ग को मारकर लूटा था। महर्षि दयानन्द महाराज का कथन है कि जो वर्ग सत्य सिद्धान्तो एव विज्ञान का विरोधी होता है वह अपने साथ-साथ अपने शुभचिन्तको, इष्ट परिवार एव बन्धुजनो का अपनी मूर्खता से विनाश करा डालता है। ऐसा अनर्थ इन मूर्ति पूजक धृष्ट अज्ञानी, सत्य सिद्धान्त विरोधियो ने मूर्ति पूजा के कारणो सर्वनाश इस महान् आर्यावर्त राष्ट्र का कराया।



क्या वेद के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय हैं ?

—पंडिता डा० प्रज्ञादेवी—

प्राचीन वेदज्ञ ऋषि मुनियों द्वारा अनुमोदित एवं इस युग के वेदार्थ के परमज्ञाता महर्षि दयानन्द द्वारा साक्षात् प्रतिपादित वेद मन्त्रों की आधिदैविक प्रक्रिया एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है। वेदों में पृथिवी से लेकर द्युलोक पर्यन्त जितने सूक्ष्म एवं अद्वितीय पदार्थ हैं उनमें लोक-लोकान्तरो का समस्त ज्ञान निहित है। अन्तरिक्षस्थ विद्युत्, वायु जल कण, उनके वर्षण का प्रकार द्युलोकस्थ सूर्य, चन्द्र, ग्रह, उपग्रह, सूर्य रश्मियां ये सब किस प्रकार अपनी-अपनी क्रियाओं में संलग्न होकर पृथिवी लोक को भी परस्पर प्रभावित कर रहे हैं इस समस्त आधिदैविक ज्ञान का मूल वेद को ही मानना होगा। संक्षेप में यदि आज की सायन दृष्टार्थ तक ही सीमित है तो वेद इससे कहीं आगे जाकर ब्रह्माण्डस्थ अतिसूक्ष्म सृष्टि की उस प्रक्रिया को बताते हुए हमारे समक्ष अनन्त ज्ञान भण्डार को खोल देता है जो अन्यत्र कहीं सम्भव नहीं है। इसीलिये वेद समस्त विद्याओं का मूल है ऐसा कहा गया है।

प्रश्न होता है कि एक ही मन्त्र आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक इन तीनों प्रक्रियाओं में भिन्न-भिन्न अर्थ कैसे दे सकता है ? इसका उत्तर हमे इस प्रकार जानना होगा कि वेद के प्रत्येक शब्दों का यौगिकार्थ मानने पर यह सब सम्भव है। प्रकरण और विशेषण के बल से एक ही मन्त्र के अनेक अर्थ हो सकते हैं। इस सिद्धान्त को ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य में पदे-पदे जहां 'वाति सोऽयं वायु सर्वगतत्वात् ईश्वर बलिमत्वात् भौतिकोऽपि गृह्यते" 'अग्नि परमेश्वर भौतिको वा" "इन्द्र परमेश्वर सूर्यो वा" "सोम सुवति चराचर जगत् जगदीश्वर' अथवा सूर्यन्ते रसा यस्मात् स सोम ओषधिराज" वायु, अग्नि इन्द्र, सोम आदि के व्युत्पत्ति परक सहेतुक अर्थ प्रदर्शित किये गये हैं जाना जा सकता है। ऋषि दयानन्द के अनन्तर उनकी इस शैली को सिद्धान्ततः स्वीकार करते हुए ही अनेकों वेदभाष्य आज तक हमे उपलब्ध हो रहे हैं यह ठीक है किन्तु आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक की अपेक्षा आधिदैविक प्रक्रिया मे मन्त्रार्थ प्रदर्शित करना आसान खेल नहीं और इसीलिए इस प्रकार के वेदभाष्यो की अपेक्षा आज भी है। इस विषय में यास्क महर्षि का 'पारोवर्यवित्सु तु खलु वेदितृषु भूयोविद्य प्रशस्यो भवति" यह वचन वस्तुतः स्मरणीय है। आधिदैविक भाषा को जिसे हमने देखा नहीं या जानते नहीं उसको वेदमन्त्रों द्वारा समझने के लिये निःसन्देह ब्राह्मण ग्रन्थो य ज्ञिक प्रक्रियाओ (जिनकी प्रवृत्ति इस सृष्टिगत रहस्यों को समझने के लिये हुई) का अनुशीलन परम सहायक है और इस आधार पर आधिदैविक अर्थों की पकड की जा सकती है। इसके अतिरिक्त महर्षि यास्क का निरुक्त इस सम्बन्ध में हमे जाज्वल्यमान प्रकाश देता है। जहां मन्त्रों के आधिदैविक अर्थों की ही प्रधानता है। ऐसा नही कि महर्षि यास्क को तीनो प्रकार के अर्थ सूझ ही नहीं। वे कहीं कहीं मन्त्र के "इत्यधिदैवतम्, अथाध्यात्मम्,[1] इत्यधियज्ञम्"[2] कहकर तीनों प्रकार के मन्त्रो के अर्थ करते हैं किन्तु दुष्परिज्ञेय[3] अगोचर अर्थ को उपस्थित करना निरुक्तकार का मुख्य लक्ष्य है और यही कारण है कि वेदाध्येता के लिये निरुक्त का मर्म समझना परमावश्यक है। यह उचित नहीं कि निरुक्तकार जहां 'वैश्वानरादि शब्दों के सूर्य उसके रश्मि जाल आदि अर्थ करते हुए किसी वेदमन्त्र का उदाहरण दे रहे हो वहां निरुक्त का भाष्य करते हुए हम उस मन्त्र की गृहस्थ परक व्याख्या कर दें। गृहस्थ परक व्याख्या उस मन्त्र की हो सकती है किन्तु वहां यास्क के आशय से वह विरुद्ध होगा।

आधिदैविक प्रक्रिया मे अर्थ कर पाने में सबसे बडी कठिनता यही है कि हम उस ज्ञान विज्ञान से अपरिचित हैं फिर कैसे सृष्टिगत रहस्यों को खोला जाये जब एक ही शब्द पृथिवीस्थ, अन्तरिक्षस्थ तथा द्युलोकस्थ पदार्थों का भी वाचक यौगिक प्रक्रिया के आधार पर बन रहा हो तो सीधा अर्थ उस मन्त्र का आध्यात्मिक या आधिभौतिक ही हमें सूझ पडता है आधिदैविक नहीं। किन्तु वेद अपरिमेय है उसका वह अर्थ भी अन्वेष्टव्य है उपेक्षणीय[4] नहीं।

निरुक्तादि की शैली के अनुसार मन्त्रों के आधिदैविक अर्थों का अब तक विस्तार कुछ कम ही हो पाया है यह खेद की बात है किन्तु इससे भी अधिक खेदावह यह बात है कि हम मन्त्रों के अर्थों की इयत्ता स्वीकार करते हुए यह कह बैठें कि "अमुक मन्त्र का मात्र यही अर्थ हो सकता है और कोई नहीं।" मैं इस प्रसंग मे चर्चा करना चाहूँगी, आर्य समाज में बहुचर्चित 'वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त" ग्रन्थ की जो तीन भागो मे मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ से प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ के लेखन मे विद्वान यशस्वी लेखक श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदमार्तण्ड ने निःसन्देह बडा परिश्रम किया है और वेदमन्त्रों के अधिराष्ट्र परक अर्थों को प्रदर्शित करते हुए यह सिद्ध कर दिया है कि राज्य, राज्यशासन, राजा सम्बन्धी सांगोपांग प्रत्येक बातो का विवरण वेद में उपलब्ध है। विद्वान लेखक का यह परिश्रम उनके वेद के प्रति समर्पित जीवन का ही द्योतक है, परिश्रम सर्वथा प्रशंसनीय होते हुए भी मन्त्रार्थ सम्बन्ध में कुछ जमकर भूलें हैं जिनकी ओर मैं इस लेख में संकेत करती हूं।

श्री आचार्य जी अग्नि का अर्थ सम्राट,[5] सोम का अर्थ स्नातक, न्याय विभाग का मन्त्री[6] करते हुए उदाहरण रूप में जिन जिन मन्त्रों को प्रस्तुत करते हैं वहां सर्वत्र यह लिखते है कि 'यहां मन्त्र गत अग्नि शब्द का आग अर्थ कभी नहीं हो सकता, अमुक मन्त्र के विशेषणों को देखते हुए यह मन्त्र आग मे कभी नही घट सकता' 'अमुक मन्त्रों में सोम का अर्थ सर्वत्र सोम नामक बूटी या चन्द्रमा या अन्य कोई पदार्थ नही किया जा सकता है"।

मुझे श्री आचार्य जी के इस 'नहीं हो सकता" शब्द पर बडी आपत्ति है। श्री आचार्य जी अपनी मान्यताओ को सिद्ध करने हेतु थोक के भाव बीस-बीस, पच्चीस पच्चीस, तीस तीस मन्त्र एक साथ प्रस्तुत करते हैं और कहते हैं "यहां यही अर्थ हो सकता है। जबकि इन उदाहरणों में से बहुत से मन्त्रों के महर्षि दयानन्द कृत अर्थ स्वयं आचार्य जी की स्थापना के विरुद्ध हैं। उदाहरणार्थ—

"ऋ० १, १२ २ में (हवीमभि) ग्रहण करने योग्य उपासनादिकों तथा शिल्प विद्या साधनों से (पुरुप्रियम) बहुत सुख कराने वाले (विश्पतिम्) प्रजाओ को पालने हेतु (हव्यवाहम) देने लेने योग्य पदार्थों को देने और इधर उधर पहुंचाने वाले (अग्निम्) परमेश्वर प्रसिद्ध अग्नि और बिजली को (वृणीमहे) स्वीकार करते हैं। यह अर्थ महर्षि ने किया है। ऋ० १।१२।७ में ऋषि दयानन्द अग्नि को 'आहार वाहक या" कहते हैं। मन्त्रगत जिन विश्पतिम, चर्षणीनाम्, मर्त्यानाम्, कृष्टीनाम् आदि शब्दों को देखकर यह घबराहट है कि इनके अर्थ मनुष्य परक ही हो सकते हैं अन्य भौतिक पदार्थ नहीं यह व्यर्थ है। यहा देखें इन शब्दों के ऋषि प्रदर्शित कुछ अर्थ—

(क) विश्पतिम् = प्रजाया पालकम् सूर्यम् (ऋ० १, १६४, १)

(ख) चर्षणीनाम् = ऐश्वर्येण प्रकाशमानानाम् (ऋ० ४, ८, ८)

चर्षणी = प्रवर्षणी सम्यक् सुखप्रापक (ऋ० १ १०६ ५)

चर्षणि = चायिता आदित्य (निरु० ५ २४)

(ग) मर्त्येषु = गच्छमानेषु पदार्थेषु (ऋ० १ ५७ १)

(घ) कृष्टीभि = विलेखनक्रियाभि (ऋ० १, १००, १०)

(क्रमश)

(१) द्र० निरु० ३, १२ ॥

(२) द्र० निरु० १'

(३) इस विषय में निरुक्त के टीकाकार दुर्गाचार्य का यह लेख द्रष्टव्य है— न हि एतेषु (मन्त्रेषु) अर्थस्येयत्तावधारणमस्ति, महार्था ह्येते दुष्परिज्ञेयाश्च" निरु० २ ८ ॥

(४) पुन देखें दुर्गाचार्य का यही स्थल—"प्रस्तावेष्वेषु वाक्योऽर्थो उपपद्येरन् आधिदैवाध्यात्माधियज्ञाश्रया' अर्थ एव ते योज्याः नात्रापराधोऽस्ति" निरु० २ । ८ ॥

(५) देखें—पृ० ७६ एवं राजा का चुनाव प्रकरण भाग-१, यह सम्पूर्ण प्रकरण ही आपत्ति जनक है।

(६) देखें पृ० १६१-१७१

आर्य जगत् के समाचार

नम्र निवेदन एवं प्रार्थना

आर्यसमाज, शास्त्रीनगर मेरठ की स्थापना १९७१ मे हुई थी वर्ष १९८० मे आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० से इसने अपने आपको सम्बद्ध कराया। किसी भी सस्था को कार्य सचालन हेतु अपना भवन होना आवश्यक है इस आवश्यक्ता की पूर्ति के लिये आर्य समाज शास्त्रीनगर अपने जन्मकाल मे ही भूमि प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील था। आवास विकास परिषद उ०प्र० ने उसकी इस समस्या का समाधान आयसमाज को लगभग १००० गज भूमि आवटित की है। इस भूमि को कानूनी रूप से आवटित कराने तथा उस पर भवन बनाने हेतु एक विशाल धनराशि की आवश्यकता है। जिसकी पूर्ति के लिए आर्यसमाज, शास्त्रीनगर, मेरठ का प्रत्येक सिपाही इस काय मे जुटा हुआ है। हम प्रदेश के सभी आर्य समाजो से अपेक्षा एव प्राथना करत हैं कि वे भी इस पुनीत काय मे हमारी सहायता कर पुण्य एव यश के भागी बन। जो भी व्यक्ति या आर्यसमाज हमारी सहायता करता है उनका नाम आर्य समाज, शास्त्रीनगर के भवन एव दानदाताओ के नामपट पर भी अकित किया जायेगा। सगठन मे ही शक्ति है।

सहयोग की आकाक्षा मे आपका अपना
राजेन्द्रकुमार, मन्त्री

श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का का हिन्दी सेवा के रूप मे अभिनन्दन

दिनाक १४ ९-८७ साय ५ वजे राष्ट्रीय हिन्दी परिषद् (पजी०) मेरठ की ओर से हिन्दी दिवस के उपलक्षमे देवनागरी इण्टर कालेज मेरठ के हाल में एक भव्य आयोजन किया गया। जिसमे मेरठ मण्डलायुक्त मेरठ माननीय श्री वी०के० दीवान जी ने सभा प्रधान जी को एक अलकरण करके एव एक दोशाला उढवाकर हिन्दी सेवी के रूप मे अभिनन्दन किया। उनके साथ ही ५ और प्रमुख नागरिको का भी अभिनन्दन किया गया। अपना समस्त काम हिन्दी मे करने का व्रत लिया गया।

आयसमाज चिटावदा मुजफ्फरनगर मन्दिर का उद्घाटन

१ वष पूर्व स्थापित इस आयसमाज के नव निर्मित मन्दिर का उदघाटन जिला सभा प्रधान श्री म्लेकचन्द जी के कर कमलो द्वारा किया गया। इस अवसर पर अनेक प्रेरक प्रोग्राम आयोजित किए गए। अनेक सम्भ्रान्त व आय सज्जनो न समारोह मे भाग लिया।

भूल सुधार

आयसमाज रेलवे रोड ऋषिकेश देहरादून के चुनाव मे श्री रामलाल डग प्रधान मन्त्र। श्री महीपाल त्यागी चुने गए है। भूल के लिए क्षमा याचना। - सम्पादक

होम्योपैथिक औषधालय

आय समाज हनुमान रोड नई दिल्ली द्वारा एक नि शुल्क होम्योपैथिक औषधालय द्वारा सेवा की जा रही है। उसके लिए समाज को अत्यन्त कुशल अनुभवी चिकित्सक श्री डा० जियालाल सूद की सेवाए प्राप्त हो गई है। रोगियो को लाभ लेने की प्रार्थना है। के० एन० भाटिया मन्त्री

आय वीर दल का उद्घाटन

आर्यसमाज केकडी (अजमेर) के तत्वावधान मे आर्य वीर दल की नियमित शाखा का उद्घाटन श्री अशोक आर्य के सचालकत्व मे किया गया। अलवर मे होन वाले राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह मे १०० आय वीरो को भेजने का सकल्प लिया गया। —छोटूलाल मन्त्री

वार्षिकोत्सव

—आय गुरुकुल एका कटरा इटावा का वार्षिकोत्सव ८ से ११ अक्तूबर तक होगा। विद्वान् सन्यासी इसमे पधार रहे है।

—आर्यसमाज नकुड सहारनपुर का वार्षिकोत्सव ४-५ ६ नवम्बर को समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। उच्च कोटि के विद्वान् इसमे भाग लेगे।

महिला आय समाज उन्नाव के तत्वावधान मे ५ से ८ नवम्बर तक आर्यसमाज मन्दिर मे वैदिक ज्ञान मेला का आयोजन कार्तिक पूर्णिमा के उपलक्ष मे आयोजित किया जायेगा है। उच्च कोटि के विद्वान व भजनोपदेशक पधारगे।

—आयसमाज रेलवे कालोनी समस्तीपुर विहार का वार्षिकोत्सव ११ नवम्बर से १५ नवम्बर तक धूमधाम से मनाया जाएगा। प्रसिद्ध विद्वान व भजनोपदेशक इसमे भाग ले रहे हैं।

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के तत्वावधान में जिला आर्य सम्मेलन १५ से १६ अक्तूबर तक आयसमाज ठाकर द्वारा मे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा जिसका आकषक कार्यक्रम बनाया गया है। कोटि के विद्वान व भजनोपदेशक इसमे सम्मिलित होगे।

—गुरुकुल शुकताल (मुजफ्फरनगर) का वार्षिकोत्सव ३ ४ नवम्बर १९८७ को गुरुकुल भवन मे मनाया जायेगा उच्चकोटि के महात्मा सन्यासी विद्वान पधार रहे हैं।

—आर्यसमाज बागपत मेरठ का वार्षिकोत्सव २७ २८ २९ नवम्बर को समारोह पूर्वक मनाया जाएगा देश के कोटि के महात्मा विद्वान इसमे भाग ले रहे हैं।

पातजल योगधाम आर्य नगर ज्वालापुर हरिद्वार द्वारा ध्यान योग शिविर का आयोजन १३ से २० अक्तूबर तक किया गया। स्व० योगानन्द जी स्व० सोमानन्द जी तथा श्री रणजीत मुनि जी शिक्षण व्यवस्था करगे।

अमर स्वामी महाराज

कर जीवन कृत कृत्य अमर हो गये अमर स्वामी महाराज।
दिव्य ज्ञान से आलोकित हो उठा हमारा आर्य समाज ॥१॥
स्व ध्याय का पावन व्रत ले किया नित्य शास्त्रीय विचार।
तक कसौटी पर परखा था वैदिक सिद्धान्तो का सार ॥२॥
एक लक्ष्य था इस जीवन का वेद सुधा बरसाऊ मैं।
आलोकित कर मानव पथ को दीप शिखा बन जाऊँ मैं ॥३॥
धनी रहे वैदिक वाङमय क गीत मधुर गाते।
सुना गये जीवन गाथा के मम सभी जन जात ॥४॥
यद्यपि रोगाकुल काया थी वाहन हृदय कराह उठा।
वाणी का बल क्षीण हुआ सा मानस ताप विशेष बढा ॥५॥
किन्तु आत्मा तडप रही थी निज अनुभूति सुनाने को।
जो कुछ थे अवशेष हृदय के गीत मधुर फिर गाने को ॥६॥
भक्त सभी आये दशन को अपनी पीडा भी न कही।
अपलक नयनो में ही केवल अपने उर की व्यथा सही ॥७॥
शास्त्रार्थ का वज्र हाथ ले लिया विपक्षी मत खण्डन।
सत्य धर्म की बलिवेदी पर करते रहे आत्म दशन ॥८॥
कवि तुम थे सहृदय स्वभाव से सरस गीति स्वर साधक थे।
छाया बन वात्सल्य मयी तुम हम सब के अभिभावक थे ॥९॥
आज कहा तुमको खोजें हम ब्रह्म तत्र के भव्य स्वरूप।
सुन न सकेंगे अब उस मुख से वेदो के मन्त्र अनूप ॥१०॥
स्वग लोक के वासी हो तुम श्रद्धाञ्जलि स्वीकार करो।
अमर हुतात्मा दिव्य लोक से शुभ सन्देश प्रसार करो ॥११॥

—सावित्री देवी शर्मा बरेली

महर्षि निर्वाणोत्सव बड़े समारोह पूर्वक मनायें

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती की अपील

दिल्ली १२ अक्टूबर सदा की भांति आर्य समाज को जगाने व नव सन्देश देने महर्षि का निर्वाणोत्सव २२ अक्तूबर १९८७ बृहस्पतिवार (दीपावली के अवसर पर) आ रहा है। देश विदेश में सर्वत्र यह बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस वर्ष संसार भर की राजनीतिक सामाजिक व धार्मिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए महर्षि की विचारधारा हमें किस प्रकार वर्तमान संकटों से बचा सकती है यह संदेश जन जन के हृदय तक पहुंचाने के लिए पूरी तैयारी व योजना पूर्वक निर्वाणोत्सव मनाया जाए। यह प्रचार युग है हम प्रचार के सभी साधनों का उपयोग करें। समारोह में पत्र प्रतिनिधियों को विशेषतया आमन्त्रित करें। जहां सम्भव हो रेडियो व दूरदर्शन की सेवायें प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाए जिससे घर घर में आर्यसमाज की आवाज पहुंच सके। समारोहों में स्थानीय विद्वानों व जन नेताओं को महर्षि के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिये विशेषतया आमन्त्रित किया जाए। आज आर्यसमाज की विचारधारा की संसार को कितनी महान् आवश्यकता है यह अब जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सभी अनुभव करते हैं। सभी को मानव कल्याण के इस महान कार्य में सहयोग प्राप्त करना चाहिए।

स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती-- एक ज्योतिपुञ्ज

आर्य जगत की महान विभूति जो ८-८-८७ को हमें सदा सदा के लिए छोड़ कर चली गई वे अमर आत्मा स्वामी वेदानन्द सरस्वती समस्त आर्य जगत के लिए ज्योति पुंज के रूप में सदैव देदीप्यमान रहेंगे। जहां वे वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे वहां वे प्रखर वक्ता थे।

वे सन्त शिरोमणि थे युवक हृदय सम्राट थे हृदय स्पर्शी लेखक थे, सफल नेतृत्व के धनी थे आदित्य ब्रह्मचारी थे हाथी के तुल्य बलवान थे धीर थे, गम्भीर थे, परम तपस्वी थे पहुंचे हुए योगी थे और वे आर्य जगत के ज्योति स्तम्भ। वे भारत के प्रत्येक प्रान्त में जाकर वेदों का सन्देश सुनाते थे। उनके हजारों भक्त एवं शिष्य हैं। अनेक आर्यसमाजों में उनकी वेद कथायें बड़ी उत्सुकता के साथ सुनी जाती थी। अपनी अन्तिम वेला १७ अगस्त की रात्रि को भी वे आर्यसमाज तलवाड़ा में वेद कथा कर रहे थे।

स्वामी जी युवकों के मुख्य आकर्षण बिन्दु एवं प्रेरणा के स्रोत थे उन्होंने २१ वर्ष पहले रोपड़ में वैदिक साधु आश्रम की स्थापना करके आर्य समाज के एक साधना मन्दिर व प्रचार केन्द्र का शुभारम्भ किया था। उसी आश्रम को केन्द्र बनाकर स्वामी जी देश भर में प्रचार के लिए जाते थे। आश्रम उनकी तपस्थली है।

—स्वामी आनन्दवेश वैदिक साधुआश्रम रोपड़

डी. ए. वी. स्थापना शताब्दी का समापन समारोह

डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्ता समिति की स्थापना एक जून १८८६ को हुई थी। तब लगाए गए इस पौधे ने पिछले १०० वर्षों में एक वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। समिति की स्थापना की शताब्दी सम्बन्धी कार्यक्रमों की शुरुआत जून १९८६ से हुई थी। अब शताब्दी का समापन समारोह विशाल पैमाने पर रविवार १५ नवम्बर १९८७ को प्रातः १० बजे से नई दिल्ली के प्रसिद्ध तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में मनाया जाएगा। इस अवसर पर समिति के प्रधान माननीय वेद व्यास जी को एक अभिनन्दन ग्रन्थ और एक करोड़ रुपए की थैली भेंट की जाएगी।

(२) मुख्य अतिथि होने के लिए महामहिम राष्ट्रपति जी श्री रामास्वामी वैंकटरमण से निवेदन किया जा रहा है। इनके अतिरिक्त अनेक साधु संन्यासियों, विद्वानों और केन्द्रीय मन्त्रियों को भी आमन्त्रित किया जा रहा है।

—दरबारी लाल, सम्पर्क सचिव

मध्यप्रदेश में अन्न वितरण



मध्यप्रदेश रतलाम से संलग्न सूखाग्रस्त क्षेत्र में सार्वदेशिक सभा में सहायतार्थ अन्न की पहली खेप वितरण से पूर्व सामूहिक यज्ञ कार्य। जिसे दिल्ली से गये हुए प्रतिनिधि श्री रामकृष्ण बजाज व श्री अमरसिंह जी करा रहे हैं।



सामूहिक यज्ञ की सम्पत्ति पर सर्व श्री रामकृष्ण जी बजाज तथा श्री अमरसिंह जी अन्न बांटते हुए।

आर्य समाज वारजे मालवाडी पुणे निर्माण योजना को अपील

महर्षि दयानन्द के मिशन को फैलाने के लिए सभी बड़े शहरों में आर्य समाज और उनके स्कूल के भवन स्थापित हैं। किन्तु दुःख का विषय है कि पूना जैसे बड़े शहर में आर्य समाज का प्रचार कम है और स्कूल भी नहीं हो सका है। महर्षि दयानन्द ने पूना में सुप्रसिद्ध व्याख्यान दिये थे जो कि उपदेश मंजरी में संकलित है, आर्य समाज को जन साधारण तक पहुंचाने हेतु, ले० कर्नल एस० एन० बख्शी ने पूना शहर के वारजे मालवाडी क्षेत्र में एक आर्य समाज तथा स्कूल स्थापित करने का प्रण किया है। दो कमरे और यज्ञशाला बनवा दिये हैं। लेकिन एक व्यक्ति की शक्ति भी सीमित होती है। यदि भारत के सभी आर्य इस उद्देश्य में आर्य समाज वारजे मालवाडी पुणे की सहायता करें तो आर्यों का यह सपना जल्दी सफल हो जायेगा। इसी उद्देश्य को सफल बनाने हेतु श्री कर्तराम अग्रवाल ने आर्य समाज खड़की पुणे व उनके परिवार ने ३१००) रु० और ले० कर्नल बख्शी ने १००१ रु० आर्यसमाज वारजे मालवाडी को दान में दिये हैं।

आओ। इससे प्रेरणा लेकर आप भी खुले दिल से दान देकर महर्षि के सपने को सफल बनाओ। पूना में आर्य ज्योति को जलाय।

उपदेशक विद्यालय में प्रवेशार्थ सूचना

हाई स्कूल या इसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण आजीवन वेदप्रचार का संकल्प १६ से २५ वर्ष की आयु के सभ्य स्वस्थ युवक प्रवेश के लिए सम्पर्क करें। शिक्षा निवास भोजनादि सभी व्यवस्थायें सर्वथा निःशुल्क हैं।

—स्वामी वेदानन्द वैदिक
वेदोपदेशक विद्यालय ब्रह्मकुटी वेदमन्दिर
ब्रजघाट जिला गाजियाबाद (उ० प्र०) २४५२०५

पानीपत मे वृष्टि महायज्ञ का दूसरा सफल परीक्षण

हरियाणा भी सूखे की चपेट मे है। पानीपत भी वर्षा के अभाव से त्रस्त था। पानीपत बड़ा बाजार आर्य समाज के अधिकारियो ने समाचार पत्रो मे पढा कि ११ जून १९८७ से १४ जून तक हैदराबाद मे अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान की ओर से वृष्टि महायज्ञ का आयोजन किया गया परिणामत भरपूर वर्षा हुई तो पानीपत आर्य समाज ने भी वृष्टि महायज्ञ की योजना बनाई और हैदराबाद के आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तराष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद २७ से सपर्क स्थापित किया।

आचार्य वेदभूषण ने २० अगस्त २७ से ✓ अगस्त तक वृष्टि महायज्ञ कराने का निमन्त्रण स्वीकार किया। पानीपत मे वृष्टि महायज्ञ आरम्भ हुआ। वर्षा के अभाव से सारा क्षेत्र त्रस्त था। यज्ञ के परिणाम स्वरूप २४ अगस्त से आसपास के क्षेत्र मे वर्षा होने लगी। २६ अगस्त की पूर्णाहुति के दूसरे दिन से पानीपत मे तेज वर्षा आरम्भ हो गई और चार पाच दिन तक भारी वर्षा हुई। सारे क्षेत्र मे यज्ञस्थल से सौ सौ मील के क्षेत्र मे सूखे की स्थिति समाप्त हो गई।

आचार्य वेदभूषण जी का कथन है कि पर्यावरणीय प्रदूषण ही अनावृष्टि और अतिवृष्टि का कारण है। यज्ञ से प्रदूषण नष्ट होता है और ऋतुचक्र ठीक काम करने लगता है। वर्षा ऋतु मे वृष्टि यज्ञ से वर्षा की निश्चित रूप से प्राप्ति होती है।

आर्यवीर महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न

रोहतक। आर्यवीर दल हरियाणा का ११ वा प्रान्तीय महासम्मेलन २६ २७ सितम्बर १९८७ का गीता विद्या मन्दिर जींद शहर मे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

शनिव ... ल
शोभा या ...
रात्री ७, ... नापति
सार्वदेशिक आर्यवीर दल ...

रविवार प्रात आर्य वीर गोष्ठी मे आ... इसकी अध्यक्षता श्री उमेदसिंह शर्मा प्रान्तीय सचालक ने की।

आर्य वीरो द्वारा प्रदर्शित व्यायाम प्रदर्शन सबके आकर्षण एव मुख्य चर्चा का विषय रहा जो डा० देवव्रत जी आर्य उप प्रधान सेनापति की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

दोपहर बाद राष्ट्ररक्षा सम्मेलन स्वामी ओमानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे हुआ जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने पजाब को सेना के हवाले करने पर बल दिया तथा आर्य वीरो को प्रत्येक गाव मे शाखाए सगठित करने पर बल दिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के महामन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी प० क्षितीश जी वेदालकार ने भी राष्ट्र की समस्याओ से अवगत कराया।

निर्वाचन

—स्त्री आर्य समाज मध्य कलकत्ता ८२ न्यूयार्क स्ट्रीट कलकत्ता के वार्षिक चुनाव मे प्रधाना श्रीमती प्रेमलता सहगल मन्त्री सुदर्शन जी मानकटाला चुनी गई।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
... नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८८ | मा र्शिक आर्य निनिधि सभा का मुखपत्र | 63 दूरभाष 3७४७७१
वर्ष २२ अंक ४३] | क नि ग्रा० म० ५ ४४ रविवार ५ अक्तूबर १९८७ | एक प्रति ६० पैसे

अलवर में विशाल रैली :

हजारों स्त्री पुरुषों द्वारा सतीप्रथा का विरोध

हमें धर्म के नाम पर हर प्रकार के पाखण्ड को हटाना है

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की घोषणा

अलवर, १७ अक्तूबर। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट के आह्वान पर आज महिलाओ की एक विशाल रैली सती प्रथा के विरोध मे आयोजित की गई। हजारो महिलाओ ने ओ३म के झण्डो के साथ नारी जाति के विरुद्ध किए जा रहे सती प्रथा के नाम पर बर्बर अत्याचार के विरोध मे अपना असन्तोष प्रकट किया।

इस रैली मे दिल्ली की आर्य महिला सभा की भी महिलाओ ने श्रीमती प्रकाश आर्य श्रीमती सरला महता के नेतृत्व मे अलवर पहुचकर भाग लिया।

रैली का नेतृत्व विशेषतया पधारे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने किया। रैली के पश्चात् हजारो स्त्री पुरुषो की विराट जनसभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा सतीप्रथा अवैधानिक वेद शास्त्रो की आज्ञा के सर्वथा विपरीत है। वेद की एक भी ऋचा सती प्रथा का समर्थन नही करती उन्होने सती प्रथा समर्थक धर्माचार्यो को चुनौती दी कि उनमे साहस है तो वे आर्यसमाज के विद्वानो से शास्त्रार्थ कर।

भारी करतल ध्वनि के बीच उन्होने कहा राजाराम मोहनराय और महर्षि दयानन्द की आत्मा मरी नही है। अब देश के किसी कोने मे हम अपनी बहु बेटियो को जिन्दा नही जलने देगे।

'दिवराला सती' काण्ड पर अपना गहरा शोक व रोष प्रकट करते हुए स्वामी आनन्द बोध जी ने कहा कि पुलिस रिपोर्ट व समाचार पत्रो से यह बात स्पष्ट हो गई कि १८ वर्षीया

(शेष पृष्ठ १२ पर)



वेदामृत

बसाने वाले पालक

पुनरेहि वाचस्पते
देवेन मनसा सह।
वसोष्पते निरमय
मय्येवास्तु मयि श्रुतम्॥
अथर्व० प्रथम काण्ड
प्रथम सूक्त मन्त्र ३

पुन वाचस्पते आओ
देवमन संग तुम।
वसोष्पते रमो सदा
मुझमे हो मेरा सुना॥

भाषान्तर

आओ हे वाणी के स्वामी
बारम्बार निरन्तर आओ।
मेरे मन मे बसो निरन्तर
शुद्ध हृदय मन दिव्य बनाओ॥
रमण करो मुझमे श्रुति वाले
वेद ज्ञान मे रमण कराओ।
सदा बसाने वाले पालक
ज्ञान रूप सद् धन दे जाओ॥
मुझमे रहे वेद निधि अविरल
कभी न हो विस्मृति जीवनमे।
शुद्ध हृदय को सदा ज्ञान रस
धारा द्वारा सरस बनाओ॥

—रामनिवास विद्यार्थी
सुन्दर सदन फजलपुर
वाया बिनौली (मेरठ)

सम्पादक—

अकाल पीड़ित सहायता कोष में दान

मन्त्री आर्य समाज मवाना रोड मेरठ	५००)
बहिन सरला कपिला जी ए ११ ग्रीन पार्क नई दिल्ली	२००)
लीलावती पृथ्वीचन्द्र आर्य द्वारा आर्य समाज प्रागपुर (कांगड़ा)	१००)
आर्य समाज प्रागपुर (कांगड़ा)	१००)
भारत बन्धु आर्य कांगड़ा	१००)
मन्त्री आर्य समाज तिमारपुर दिल्ली	१०१)
परमानन्द जी ए-२१ हौजखास नई दिल्ली	१०१)
आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी (मेरठ)	२१००)
आर्य समाज कपूरथला पंजाब	५००)
मन्त्री आर्य समाज कस्तूरबा नगर डिफेन्स कालोनी नई दिल्ली	५००)
जयचन्द्र गुप्त मन्त्री आर्य समाज पुवाया शाहजहांपुर (उ० प्र०)	१०१)
रतनलाल आर्य मन्त्री आर्य समाज मीरानपुर कटरा शाहजहांपुर (उ० प्र०)	१५०)
प्रधान आर्य समाज बीसलपुर पीलीभीत	१५१)
मन्त्री आ समाज तिमारपुर दिल्ली-७	२०१)
सुशील कुमार जी नागिया, १७ जवाहर नगर दिल्ली-७	२५१)
आर्य समाज हरदोई (उ० प्र०)	१००१)
रामदेवजी अग्निहोत्री-हरदोई (उ० प्र०)	२५)
श्री वीरेन्द्र सहरावत पलडी पानीपत (हरियाणा)	३०)
मन्त्री आर्य समाज मन्दिर सासनी गेट अलीगढ़	५१)
प्रधान आर्य समाज सीवान	२००)
भगवत सरन रस्तोगी बदायूं	५००)
प्रधान आर्य समाज रायगढ (म० प्र०)	५०१)
आर्य समाज तिलक नगर दिल्ली	२०१)
आर्य समाज ग्रेटर कैलाश प्रथम नई दिल्ली	३८००)
स्त्री आर्य समाज ग्रेटर कैलाश	१२००)
आर्य समाज अमरोहा मुरादाबाद	५०१)
श्री राम गुप्ता अमरोहा मुरादाबाद	१५१)
दयानन्द बाल मन्दिर अमरोहा	२५१)
कुरेशी आर्य समाज अमरोहा	१५१)
स्त्री आर्य समाज अमरोहा	२५१)
डा० उर्मिला अग्रवाल	५०१)
गुप्त दान	५१)
सुमित्रा देवी ग्रोवर १०५ शकर नगर नागपुर	५००)
गुप्त दान श्री स्वामी आनन्द बोध जी द्वारा	२५०)
शम्भु दयाल वैदिक सन्यास आश्रम दयानन्द नगर गाजियाबाद	५००)
रतनलाल जी राय, द्वारा सन्यास आश्रम गाजियाबाद	२००)
श्री मूलचन्द बजाज गुरुदासपुर	२०)
सत्यप्रकाश मन्त्री आर्य समाज छर्रा अलीगढ़	२५१)
हरिओम अग्रवाल सिविल कोर्ट बरेली	१०)
प्रेमचन्द विनोद कुमार एण्ड कम्पनी १७७५ कूचा लड्डूशाह दरिबाकलां दिल्ली	२५१
सत्यदेव आनन्द हैदराबाद	१००)
हरबंशलाल प्रधान आर्य समाज, दयानन्दगंज इन्दौर	५०)
मन्त्री आर्य समाज गोधना जिला सोनीपत	१६०)
आर्य समाज बाबला जि० मुजफ्फरनगर	१००)
मन्त्री आर्य समाज उकलाना मण्डी हिसार	२०१)
मन्त्री आर्य समाज देवलाली कैम्प	५०)
मोहनलाल कपूर जनरल मर्चेन्ट दर्शनी ड्योढी अमृतसर	२५१)
मन्त्री आर्य समाज मन्दिर शोलापुर	१०१)
डा० नारायणदास गुहाटी	१००)

ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद) के आर्य सम्मेलन में

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का भाषण

ठाकुरद्वारा अक्तूबर, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के पहली बार पधारने पर आर्य बन्धुओं द्वारा उनका स्वागत किया गया व उन्हे मानपत्र भेंट किया गया।

आर्य सम्मेलन में पधारे हजारों की सख्या में उपस्थित जन-समूह को सम्बोधित करतेहुए स्वामीजी ने कहा कि इस समय संसार में चारों ओर मानवता कराह रही है। अपने भारतवर्ष में भी अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। पैट्रो डालर से धर्म परिवर्तन, देश के विभिन्न भागो में साम्प्रदायिकता का ताण्डव नृत्य देवराला मे सती काण्ड आदि अनेक ज्वलन्त प्रश्न है जिनका आर्यसमाज को विचार करना चाहिए।

स्वामी जी ने आर्य जनो को संगठित होकर वैदिक धर्म प्रचार में लग जाने का आह्वान किया।

सूखा पीड़ितो के लिए ४१००) की थैली भेंट

दिल्ली १८ अक्तूबर। आज प्रातः सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को आर्यसमाज राजौरी गार्डन दिल्ली द्वारा मध्य प्रदेश अकाल पीडित कोष के लिए ४१००) की थैली भेंट की गई।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अपील

निर्माण विहार में आर्य समाज मन्दिर

दिल्ली, १८ अक्तूबर। आर्यसमाज निर्माण विहार के वार्षिक उत्सव पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने निर्माणाधीन मन्दिर के निमित्त अपील की। अपने भाषण में सूखा पीडित क्षेत्रो में ईसाई पादरियो का अतिक्रमण रोकने लिए आर्यसमाज द्वारा की जा रही अकाल पीडितों की सहायता का वर्णन करते हुए आर्यसमाज का कर्त्तव्य बोध कराया। सभीसे इस कार्यमें सहयोगका आह्वान किया।

सभा को आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सूर्यदेव जी महामन्त्री श्री डा० धर्मपाल जी व श्री यशपाल सुधांशु जी, श्री क्षितीश कुमार वेदालकार व सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने सम्बोधित किया।

दयानन्द के सेनानी

दयानन्द के वह सेनानी, हार नही जिन्होने मानी,
श्रद्धानन्द सी श्रद्धा वाला लेखराम जैसा मतवाला,
निर्भय होकर विचरण करना, मृत्यु से किंचित नही डरना
अमिट आज है जिनकी कहानी ॥१॥

गुरुदत्त गुरुवर का पुजारी, मान मर्दन करने को मुरारी,
धर्म भिक्षुक रहे धर्म की खातिर, लाज, राज भी बने मुसाफिर,
लाहौरी नेता बलिदानी ॥२॥

दर्शनानन्द दर्शनो के ज्ञाता, शास्त्रार्थ पटु कुशल व्याख्याता,
गणपति की गर्जन के आगे, मुल्ला पोप पादरी भागे,
याद आ गई सबके नानी ॥३॥

मन्शा तोप चले जय गोले, गए प्राण पाखण्डी बोले,
देहलवी, दहला गए अकल मे, श्री बुद्धदेव, के विद्या बल से
चक्कर मे पड गये अभिमानी ॥४॥

बिहारी, बाहार कहा वह पहली, अमरसिंह सिंह सी अटखेली,
प्रकाशवीर, प्रकाश मे आया, देहली ससद मे गुर्राया,
रग लाई थोडे दिन जवानी ॥५।

तेजसिंह, तेज गति से निकले बस्तीराम, राह के इकले,
सुखलाल, सुख की नही चाहना, भीष्म बना मरदाना
सुन जनता रही पानी पानी ॥६॥

बनी आज क्या दशा हमारी, ढपली अपनी न्यारी न्यारी
कौन सुने और किसे सुनाबे "श्रीपाल" दृग् नीर बहावें,
कर, कर, गाथा याद पुरानी ॥७॥

—श्रीपाल आर्योपदेशक, (मेरठ)

सम्पादकीय

ऋषि निर्वाण का महान् मिशन

महर्षि का निर्वाणोत्सव प्रतिवर्ष हमें नितनूतन संदेश देने आता है। ऋषिराज का जीवन काल तो अत्यन्त महत्वपूर्ण व मूल्यवान रहा ही था, निर्वाण ने एक नई दिशा देश को प्रदान की। महर्षि की दिव्य दृष्टि ने भारत व संसार की राजनीतिक सामाजिक व आध्यात्मिक दशा को बहुत बारीकी से अध्ययन किया था। उनके महान ग्रन्थों को पढ़कर सहज ही यह अनुभव होता है कि जीवन के किसी भी अंग को उन्होंने अपने विचारों से अछूता नहीं छोड़ा था। प्रत्येक समस्या का समाधान प्रस्तुत किया था।

धार्मिक क्षेत्र में जो आपा धापी मची हुई थी उससे मनुष्य-मनुष्य में जो वैर वैमनस्य पनप रहा था उसका इतिहास रक्तरंजित बन चुका था। एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदायों को नष्ट भ्रष्ट करने के घोर घृणित उपायों का अवलम्बन करता था। तथाकथित हिन्दू धर्म के पुराण आदि साहित्य को पढ़कर यह निष्कर्ष निकलता है कि बहु देवता वाद व पाषाण पूजन ने हिन्दू समाज को क्षत विक्षत कर दिया था। स्वतन्त्रता के सूर्य कहे जाने वाले महाराणा प्रताप के बच्चे घास की रोटियां खा रहे थे जबकि देश का सारा धन दौलत मन्दिरों में एकत्रित थी जिसे विदेशी आक्रामक सरलता से लूटकर विदेशों को ढो ले गये। देश दरिद्रता के द्वार पर खड़ा किंकर्तव्यविमूढ़ बन गया। १००० वर्ष तक लूटपाट का यह क्रम चलता रहा। दासता हमारी भाग्य रेखा बन गई।

मत मतान्तरों के कुचक्र में फंसी हिन्दू समाज को महर्षि ने प्रभु की कल्याणी वाणी वेद का शाश्वत सन्देश सुनाकर एकता के सूत्र में पिरोने का दिव्य प्रयत्न किया। बिखरी हुई हिन्दू जाति से पहली बार अपने गत गौरव का ज्ञान हुआ। देश के स्वतन्त्रता आन्दोलनों में महर्षि की ही दिव्य विचारधाराओं ने चमत्कारिक काम का [illegible] बालगंगाधर तिलक व महात्मा गांधी ऋषि मार्ग पर ही चले।

शिक्षा के क्षेत्र में ऋषि के बताये मार्ग पर चलकर देश में नारी जाति की शिक्षा व बालकों की शिक्षा में चमत्कारिक प्रयोग किए गये। डी०ए०वी० आन्दोलन जिसका प्रारम्भ महर्षि के शिष्य पं० गुरुदत्त एम ए, म० हंसराज व लाला लाजपत राय ने किया देश की उन्नति का महान साधक बना। आज यह देश विदेशों में भी फैल रहा है।

वेद वेदांगों के प्रकाशन व जन-जन तक पहुंच जाने से जनता में मिथ्या मत मतान्तरों के प्रति अरुचि बढ़ी। वेद के सूर्य के सन्मुख ये केवल एक सृष्टि के टिमटिमाते दीपक बन कर रह गये जिनका उपयोग केवल व्यापार बनकर रह गया है।

राजनीतिक क्षेत्र में महर्षि के सुधारवादी कार्यक्रमों पर चलकर ही राष्ट्रोत्थान का कार्यक्रम बना। आज भी देश को सदियों कुप्रथाओं के अभिशाप [illegible] कर्तव्य बन गया है।

प्रजातन्त्र की मौलिक शिक्षा ऋषि ने आर्य समाज की स्थापना के रूप में प्रस्तुत की। आर्य समाज का विधान लोकतन्त्र पद्धति का प्रथम व अनुपम उदाहरण था।

देश विदेश में आज आर्यसमाज की विजय वैजयन्ती फहरा रही है। जीवन में जो कार्य महर्षि पूरा नहीं कर पाए थे उनके निर्वाण के अनन्तर उनके सुयोग्य शिष्यों ने उसे पूरा किया। बलिदान की बलिवेदी पर [illegible] पं० लेखराम व [illegible] स्वा० श्रद्धानन्द जी ने देश की [illegible] आर्य समाज का इतिहास ही बलिदानियों की [illegible] है।

[illegible] आर्य समाज, समाज व देशहित के प्रत्येक क्षण जागरूक [illegible] का कार्य कर रहा है। कोई प्रसंग [illegible] राजनीतिक हो या धार्मिक हो उसके बारे में आर्य समाज के स्वर बड़े मौलिक व मुखर होते हैं। सर्वत्र उसका स्वागत सम्मान होता है।

महर्षि हमें एक ऐसा मिशन व एक ऐसा वाङ्मय प्रदान कर गये हैं जिसके सहारे हम सभी संकटों से सुरक्षित रह सकते हैं।

आवश्यकता है कि हम ऋषि के मिशन को समझें व जन जन तक उनके अमर दिव्य व प्रेरणादायक सन्देश को पहुंचाएं।

कुछ कमजोरियां समाज में अभी भी अपना स्थान बनाए हुए हैं जिससे समाज दिग्भ्रमित हो रहा है। आर्य समाज का कर्तव्य है वह उनको पहचानें व उनके निराकरण के लिये सतत प्रयत्न करें आर्य समाज आज पहले से अधिक शक्तिशाली है परन्तु विदेशी व विधर्मी शक्तियों का प्रभाव समाज में घोर घृणित उत्पात व उपद्रव उत्पन्न कर पाते हैं। आर्य समाज अपने व्यक्तिगत विवादों से ऊपर उठकर देश व समाज का सही नेतृत्व करें यह आज का ज्वलन्त प्रश्न है। म० हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द व लाला लाजपत राय के धर्म प्रेम देश भक्ति व यज्ञमय जीवन से प्रेरणाएँ प्राप्त कर हम राष्ट्र व समाज की सेवा के लिए अपना जीवन अर्पण करें तभी महर्षि का 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न साकार हो सकेगा।

नव युग निर्माता महर्षि दयानन्द

आर्यवर्त की पुण्य धरा पर।
चिरकाल बाद एक ऋषि आया॥
किया सर्वस्व निछावर अपना।
वेदों का पाठ पढ़ाया॥

कण्टका कीर्ण पथ पर पल-पल।
बढ़ते ही रहे दृढ़ पग अविरल॥
जिनको न डिगा सका अरिदल।
गिरि कानन गह्वर सागर स्थल॥
लख मनुज जिन्हें हर्षाया॥ आर्यवर्त...

भय खाता रहा जिनसे खल दल।
नहीं भाया जिन्हें कभी छल बल॥
पावन था जिनका अन्तस्तल।
ध्रुव गंगा के जल सा निर्मल।
जिनके न क्रोध डिग जा पाया॥ आर्यवर्त

दिनकर ज्यों होकर नित्य उदित।
करता जो सृष्टि को प्रमुदित॥
रहते जिनसे निन्दक क्षोभित।
जिनका है जग में सुयश विदित॥
नहीं गर्व जिन्हें छू पाया॥ आर्यवर्त

—आदर्श शर्मा, एम०ए०
नाटिंघम, इंगलैंड

दीपावली की शुभकामनायें

ले० स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग

(कुण्डलिया १)

आई है दीपावलि, लेकर शुभ सन्देश।
दीप जलाओ प्रेम के, रहो प्रसन्न हमेश॥
रहो प्रसन्न हमेश, रहे घर घर खुशहाली।
करो देव पूजन आज, त्यौहार दिवाली॥
घर आंगन में इठलाती डोले तरुणाई।
सुख शान्ति मंगलमय, दीवाली आई॥

(कुण्डलिया २)

भूलो कभी न ईश को, घट घट रहा समाय।
अज्ञान रूपी तम मिटे, दीपक ऐसो जलाय॥
दीपक ऐसो जलाय संगठन सुदृढ़ बनाओ।
देश राष्ट्र रक्षार्थ, निरन्तर कदम बढ़ाओ॥
द्वेष घृणा को त्याग, सौरभ झूले में झूलो।
देश रहो या विदेश, मगर कर्तव्य न भूलो॥

महर्षि दयानन्द का बलिदान : हिन्दू जाति के लिए

आचार्य शिवराज शास्त्री एम०ए० मौलवी फाजिल

क्या कोई तर्क कोई विचार इस बारे में संगत लगता है कि जिस देश में प्रभु प्यारे ने अपनी सर्व प्रथम मानव सन्तति पर अपना सर्वश्रेष्ठ ज्ञान वेद उतारा जिसकी साक्षी संसार का प्रत्येक आर्येतर धर्मग्रन्थ कर रहा है, जिस देश ने ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषियों की परम्परा स्थापित की करोड़ों वर्ष तक जिसको गुलाम बनाने की कोशिश तो क्या कोई स्वप्न भी नहीं देख पाया वह देश एक सर्वथा नवीन व आध्यात्मिक सामाजिक व राजनीतिक साहित्य से शून्य विदेशी विचारधाराओं से कैसे प्रभावित होकर अपने ही देश में न केवल १।। हजार वर्ष की दयनीय दासता सहता रहा अपितु अपने ही देश के निवासियों को करोड़ों की संख्या में विधर्मी व विदेशी सम्प्रदायों के सुपुर्द कर आज उनसे संघर्षरत देश को संकट उत्पन्न स्थिति में डाल बैठा है। आज के करोड़ों की संख्या में मुसलमान अरब ईरान देशों के निवासी नहीं हैं। वे हमारे ही देश के हिन्दू जाति के वंशधर हैं जो हमारी ही कमजोरियों के कारण हम से बहुत-बहुत दूर चले गए हैं।

आओ महर्षि के आगमन से पूर्व की सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करें। इस अध्ययन में हमें प्रश्न का भी उत्तर मिलेगा कि क्या कारण है कि पिछले १।। हजार वर्ष से भारत की हिन्दू जाति पर होने वाले अत्याचारों पर किसी शंकराचार्य या किसी तथा-कथित सनातनधर्मी धर्माचार्य की लेखनी से लिखी हुई एक भी पुस्तक क्यों उपलब्ध नही है। केवल महर्षि दयानन्द ही पहले व्यक्ति हैं जिन्होने हिन्दू समाज के इस घोर दारुण दर्द का इलाज अपनी तीव्र औषधि से प्रस्तुत किया और पुरस्कार स्वरूप विष के प्याले पिए और अन्तिम प्याला जिसकी चर्चा बेचारे जगन्नाथ के नाम पर की जाती है वह उनका प्राण लेवा ही बन गया। कोई बारीकी से नहीं विचारता कि बेचारे जगन्नाथ का ऋषि ने क्या बिगाड़ा था। जोधपुर दरबार तो महर्षि के परम भक्त थे। परन्तु इस अन्तिम विष का प्याला किसने भिजवाया जो देव दयानन्द की जान ही ले बैठा।

महर्षि दयानन्द पहले ऋषि हैं जिन्होंने भारत की दुर्दशा पर न केवल गम्भीरता पूर्वक मनन किया अपितु देश के सभी महारोगों का एक सफल चिकित्सक की भांति इलाज भी किया।

ऋषि के काल में करोड़ों की संख्या में हिन्दू धर्मान्तरण कर मुसलमान बन चुके थे व बन रहे थे। उर्दू को हिन्दुस्तान की भाषा बनाने का महान् अभियान चलाने वाले बबाए उर्दू मौलाना अब्दुल हक के पूर्वज कायस्थ थे प्रसिद्ध कवि इकबाल के पूर्वज ब्राह्मण थे जिन्ना सा० के पूर्वज गुजरात के भाटिया थे। सारा देश हिन्दू धर्म छोड़कर इस्लाम की शरण में जाने को तैयार ही था कि अनायास महर्षि ने बड़े मनोयोग पूर्वक इस लहर को लगाम लगाई।

महर्षि से पूर्व

१८४५ ई० में मुहम्मद इदरीस बोकनी ने एक पुस्तक 'रद्दे हिन्दू' में हिन्दू धर्म के घोर घृणित स्वरूप का वर्णन करते हुए हिन्दुओं को मुसलमान बनने की दावत दी। यही पुस्तक १८४६ में मुहम्मद इदरीस बिन अब्दुल्ला बिल्माहं ने प्रकाशित की। इसका एक संस्करण जहां बम्बई में छपा दूसरा कानपुर में १८५० प्रकाशित हुआ। इसका उत्तर चौबे बद्रीदास ने रद्दे मुसलमान व अन्सालुल मरबासमीन नाम से लिखा १८५१-५२ में मौ० उबेल्ला नामक नौ मुस्लिम ने (जो अनन्तराम था और १८४८ में मुसलमान बना) तोहफतुल हिन्द नामक पुस्तक लिखी इसका उत्तर फारसी भाषा में मुंशी इन्द्रमन ने तोहफतुल इस्लाम के नाम से लिखा। जिसका उत्तर सैयद मेहमूद हुसैन ने 'सब बते हनूद' नाम से १८६४ में प्रकाशित किया हुआ प्रत्युत्तर में १८६६ में मुन्शी इन्द्रमन ने पैकाशे इस्लाम फारसी भाषा में लिखी। बरेली के किसी मुसलमान ने एक कविता दीने हिन्दू नाम से लिखी जिसका उत्तर मुंशी इन्द्रमन ने 'मसवी दीने महमद' के नाम से दिया। मुहम्मद हुसैन फकीर की पुस्तक 'तेगे फकीर बर गर्दने शरीर' १८६१ में प्रकाशित हुई। मुरादाबाद के मौ० अहमददीनने रोजाजे मुहमम्मदी और मौ० कुतुब आलम ने 'बदिया अस्लाम' हिन्दू धर्म पर घृणित पुस्तकें लिखीं तो १८६५ में मुंशी इन्द्रमन 'हमल हिन्द व सहसामे हिन्द, प्रकाशित की १८६७ में उन्हीं की पुस्तक सौलते हिन्दीमें प्रकाशित हुई। तोहफतुलहिन्द का दूसरा संस्करण १८६४ में प्रकाशित उस पर लेखक का नाम में अब्दुल्ला लिखा हुआ है हिन्दू मुस्लिम संघर्ष का यह विचित्र व रोचक संग्राम था।

महर्षि के कार्य का प्रारम्भ १८६३ से था उससे पूर्व धर्म के नाम पर बहुत उपद्रव मचा हुआ था स्वामी जी बड़े गम्भीर चिन्तक व कट्टर अनुरागी थे लगातार दश वर्ष तक प्रचार काल उन्हें भान्ति-भांति के अनुभव हुए। परिणाम स्वरूप उनका विचार अपने समाज की रक्षा व हिन्दूजाति की रक्षा के उपायों के लिए उपयोगी साहित्य बनाने का हुआ। ताकि सर्वसाधारण उनके विचारों से लाभान्वित हो सके।

फलतः जहां उन्होंने प्राचीन सभ्यता संस्कृति के वैदिक शुद्ध स्वरूप को सत्यार्थप्रकाश के १० समुल्लासों के रूप में रचा वहां उस समय के मिथ्या मतमतान्तरों पर भी आलोचनात्मक ११वां १२ वां १३वां समुल्लास लिखा। स्वामी जी ने पहले हिन्दू महान् पुरुष थे जिन्होंने १८७७ में मौ० अहमद हसन उपनाम बली मुहम्मद जालंधर से इस्लाम धर्म के सम्बन्ध में शास्त्रार्थ किया। १८७१ में सुपरेटेन्डेट २ पुलिस मौलवी अब्दुलरहमान से (जो अदालत में जज भी थे) इस्लाम के सम्बन्ध में शास्त्रार्थ किया जिसका प्रबन्ध कर्नल बंसल व कैप्टन स्टुअर्ट ने किया अनेक बड़े-बड़े सरकारी कर्मचारी व सम्भ्रान्त नागरिक इन शास्त्रार्थों में उपस्थित थे।

लाहौर में स्वामी जी ने नवजिल अली की कोठी में इस्लाम के सम्बन्ध में एक बड़ा लम्बा व्याख्यान दिया।

स्वामी जी ने कुरान का कितना गहन अध्ययन किया था कि वे मौ० मोहम्मद कासिम को अपने पत्र में १५ अगस्त १८७८ को लिखते हैं "मैं केवल कुरान पर ही आक्षेप करूंगा आप केवल वेद पर ही कीजिए" जीवन चरित्र पं० लेखराम पृष्ठ ७५१-५२ इसके पश्चात् तो १४व समुल्लास में महर्षि ने इस्लाम पर जो आलोचना की है इस्लाम की बढ़ती हुई लहर को ही रोक दिया आज हिन्दू जाति के लोग भी कभी-कभी आर्यसमाज व उसके प्रवर्तक को आलोचना का दोषी सिद्ध करते हुए नहीं ले जाते। जातियां कैसे बनती बिगड़ती हैं। कोई दयानन्द सा त्यागी तपस्वी ही अपने जीवन का बलिदान देकर उन्हें बचा सकता है। काश कि हम ऋषि के बलिदान का सही मूल्यांकन कर पाते आज भी संकट की घड़ियों में हमें ऋषि निर्देशित मार्ग ही बचा सकता है। हिन्दू जाति अपने कर्तव्य को पहचाने।

प्रेरक प्रसंग

कानपुर की एक घटना का वर्णन करते हुए पं० सोहन लाल विष्णुलाल पाण्ड्या ने कहा कि कुछ लोगों ने लाठी और ढेलों से महाराज पर आक्रमण किया। स्वामी जी ने आगे बढ़कर उन की लाठी पकड़ली और कई को गंगा में धकेल दिया और पास के एक वृक्ष की शाखा तोड़कर कई मनुष्यों को मारा और कहा मैं गिरा साधु ही नहीं हूं। इसके पश्चात् वह लोग चले गये और स्वामी जी गंगा में तैरने लगे। महाराज तैरने में भी बड़े निपुण थे। कानपुर में कई-कई मील तैरते हुए यमुना की एक धार से दूसरी धार में चले जाते थे।

संस्कृत धर्म-शास्त्रीय मान्यतायें एवं स्त्रियोंके विशेषाधिकार

ले० डा० आशारानीराय आचार्य-कानपुर विद्यामन्दिर महिला महाविद्यालय

'स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्' अर्थात् स्त्रियो व शूद्रों को अध्ययन का अधिकार नहीं है, कथित स्वार्थीजनों के कथनों ने स्त्रियों को अज्ञानवश जीवित जलने तक के लिए (सती प्रथा) बाध्य तथा देवदासी* बनने के लिए विवश किया। वैदिक साहित्य व गृह्यसूत्रों आदि में कहीं ऐसे प्रमाण नहीं है, वरन् वेदों में तो स्त्रियों के सर्वविद्या से विभूषित होने के प्रमाण है। यजुर्वेद के १०।२६-२७ में मन्त्र जिसके देवता राजपत्नी है में बताया है कि राजाओं की स्त्रिया न्याय विद्या व राजनीति की शिक्षा दूसरों को दें, जिस प्रकार चक्रवर्ती राजा न्याय करता है, उसी प्रकार राजपत्नी स्त्रिया स्त्रियों का न्याय यथोचित करें।† ऋग्वेद ४।२२।७ में भी कहा है कि स्त्रियां स्त्रियों का न्याय करें ऐसा करने पर राजधर्म दृढ़ होता है।‡ यजुर्वेद १२।६४ में नारीकोकुल्टों को नवनीत करने वाली कहा। ऋग्वेद ६।६।१३ एव ऋग्वेद ७।३१।२ में कहा कि स्त्रिया भूगर्भादि को जानने वाली होवें। यजुर्वेद १०।१६ में कहा कि स्त्री को काल गणना के सूक्ष्म अवयवो को भली प्रकार जानने वाली होना चाहिए। ऋग्वेद १०।११४।३ मे स्त्री को "चतुष्कपर्दा' कहा गया है, जिसका अर्थ है कि धर्म, अर्थ काम मोक्ष रूपी जीवन के चार तत्त्वों को जानने वाली अथवा चतुष्कोण वेदी की निर्माण प्रक्रिया को जानने वाली कहा है। ऋग्वेद १०।१४६ सूक्त का देवता ही 'अरण्यानी' है जिसका अर्थ है सन्यास आश्रम को प्राप्त होने वाली विदुषी नारी। उक्त उदाहरणो व प्रमाणों से स्पष्ट है कि ऐसी कोई भी विद्या या ज्ञान नही है जो स्त्रियो के लिए त्याज्य या वर्ज्य हो, जिसके कारण स्त्री समाज मे निम्न या अधिकारो के लिए कातर हो अपितु स्त्रियो को पुरुषों के समान ही अथवा कहीं-कहीं पुरुषों से अधिक अधिकार प्राप्त थे।

आज कुछ विद्वान स्त्रियो के उपनयन संस्कार अथवा यज्ञोपवीत धारण करने को उपहास में लेते है। स्मृति चन्द्रिका मे उद्धृत हारीतधर्मसूत्र मे में वर्णित है कि स्त्रियों के दो प्रकार हैं—१ ब्रह्मवादिनी, २ सद्यो वधू। इनमें ब्रह्मवादिनी को उपनयन करना, अग्निहोत्र करना, वेदाध्ययन करना पड़ता था, किन्तु सद्योवधूओ का विवाहके समय उपनयनकर दिया जाता था। गोभिल गृह्यसूत्र* २।१।१९ के अनुसार लड़कियो को उपनयन के प्रतीक रूप में यज्ञोपवीत धारण करना पड़ता था। महाभारत के वनपर्व में आया है कि एक ब्राह्मण ने पाण्डवो की माता को अथर्वशीर्ष के मन्त्र पढाए थे। यम ने भी लिखा है कि प्राचीन काल में मूंज की मेखला का बांधना नारियो के लिए भी एक नियम था उन्हें वेद पढ़ाया जाता था, वे गायत्री मन्त्र का उच्चारण करती थी, उन्हें उनके पिता, चाचा या भाई पढ़ा सकते थे, उन्हें मृगचर्म वल्कल वस्त्र नही पहनना पड़ता था, न वे जटायें रखती थी।*

मध्य एव वर्तमान युग की अपेक्षा प्राचीन काल मे स्त्रियों की शिक्षा सम्बन्धी व्यवस्था अत्यन्त उच्चकोटि की थी। अपितु विश्ववारा, अपाला, घोषा आदि विदुषियां ऋषिकाए थी। जिन्होंने वेदो के मन्त्रो का साक्षात्कार किया था। आश्वलायनगृह्यसूत्र ३।४ में गार्गी वाचक्नवी, वडवा प्रातिथेयी, एवं सुलभा मैत्रेयी नामक तीन नारीशिक्षिकाओं के नाम आते हैं। पाणिनी (४-१-४९) एवं ३।३।२१) की काशिका वृत्ति में आचार्या एव उपाध्याया नामक शब्दों के व्याकरणार्थ व्युत्पत्ति की है। पातञ्जलि ने महाभाष्य (भाग २ २०५, पाणिनी के ४।१।१४ के वार्तिक ३ पर) में बताया कि क्यों व कैसे ब्राह्मण नारी 'आपिशला' (जो आपिशलि का व्याकरण पढ़ती है) एव क्यों 'काशकृत्स्ना' (जो काशकृत्स्नका मीमांसाग्रन्थ पढ़ती है) कही जाती है। उन्होंने औदमेध्या उपाधि की व्युत्पत्ति की है, जिसका तात्पर्य है, "औदमेध्या नामक स्त्री शिक्षिकों के शिष्य। गोभिलगृह्यसूत्र (२।१।१९-२०) एव काठकगृह्यसूक्त (२५-२३) से पता चलता है कि वधुए पढ़ी लिखी होती थी [क्योंकि उन्हें मन्त्रों का उच्चारण करना होता था। स्पष्ट है कि सूत्रकाल में स्त्रिया वेद मन्त्रों का उच्चारण करती थी। वात्स्यायन के कामसूत्र १।२।५-१ में आया है कि लड़कियों को अपने पिता के घर मे कामसूत्र एव इसके अन्य सहायक अंग (यथा ६४ कलाए-गान नृत्य चित्रकला आदि) सीखने चाहिए एव विवाहोपरान्त पति की आज्ञा से इन्हें करना चाहिए। ६४ कलाओ में प्रहेलिकाए, पुस्तकवाचन, काव्यसमस्या पूरण, छन्द व अलंकार ज्ञान भी शामिल थे। राजशेखर आदि के काव्यसंग्रहों से विदित है कि विज्जा सीता आदि ऐसी प्रसिद्ध कवयित्रियां थीं, जिनकी कविताए संग्रहीत होती थीं।

न केवल शैक्षिक पृष्ठभूमि अपितु सामाजिक रूप से एव परिवार में स्त्रियो को सम्मान प्राप्त था। याज्ञवल्क्य (१ १०५) के अनुसार बच्चों, पुत्रियो, बहनों जिनका विवाह हो गया हो किन्तु अभी अपने माता पिता व भाइयों के साथ हो, गर्भवती स्त्रियों, अविवाहित पुत्रियों, अतिथियो व नौकरों को घर के मालिक मालकिन से पहले भोजन खिलाना चाहिए। (मनु ४।११४) विष्णु धर्म सूत्र (६७)-३९) के अनुसार "कुल की नवविवाहित लड़कियों, अविवाहित पुत्रियों व गर्भवती नारियों को अतिथियों से भी पहले खिलाना चाहिए।"

आश्रम परम्परा में भी स्त्रिया चारो आश्रमों का भली प्रकार सेवन करती थी, यहा तक कि स्त्रिया सन्यास धारण करती थी। पातञ्जलि ने अपने महाभाष्य में शंकरा नामक परिव्राजिका का उल्लेख किया है। कालिदास ने अपने नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' पण्डिता कौशिकी को सन्यासी के वेश में दर्शाया है (१।१४)।

मनुस्मृति में मनु ने कन्याओ को सम्पत्ति पद पर समान रूप से पुत्र के समान अधिकारी बताया—

अविशेषेण पुत्राणां दायो भवति धर्मत।
मिथुनानां विसर्गादौ मनु स्वायम्भुवोऽब्रवीत्॥

इसी प्रकार प्राचीन ग्रन्थो मे कहीं बालविवाह का पोषण नही किया गया अपितु अथर्ववेद मे 'ब्रह्मचर्येण कन्या युवान विन्दते पति "अर्थात् पूर्ण युवावस्था को प्राप्त कन्या पति का वरण करे इसी प्रकार ऋग्वेद २१।२५।३१ में भी युवावस्था मे विवाह का विधान है। श्रौतसूत्रादि में 'इम मन्त्र पत्नी पठेत्" से भी कन्या का समान अधिकार व विदुषी होने का प्रमाण है विवाह के अवसर पर दोनों पक्षो के पुरोहित मन्त्रोच्चारण नही करते थे, अपितु कन्या व वर से करवाते थे। ऋग्वेद से १०।८५।५ मे विधवा विवाह का प्रमाण है। मनुस्मृति के अनुसार कन्या को उपहार मे दिये गए धन को यदि वर पक्ष के लोग ले लेते हैं तो वे पाप के भागी होंगे—

"स्त्री धनानि तु ये मोहादुपजीवन्ति बान्धवा।
नारीयानानि वस्त्रं वा ते पापा यान्त्यधोगतिम्॥"

जो पति पक्ष के बान्धव स्त्रीधन को लोभ से ले लेते हैं, वे पापी अधोगति को जाते हैं, यहां तक कि प्राचीन काल मे विवाह अवसर पर कहे गए वचन भी स्त्रीधन के अन्तर्गत आते थे।

ऋग्वेद १०।८५।३३ मे लोगो को विवाह के समय कन्या की ओर देखने को कहा है—"यह कन्या मंगलमय है, एकत्र हो ओ व इसे देखो इसे आशीष देकर ही तुम लोग अपने घर जा सकते हो।" आश्वलायन गृह्यसूत्र (१।८।७)

(शेष पृष्ठ ८ पर)

* "जय सोमनाथ" लेखक के० एम० मुन्शी

† अध्वोऽसि जुहुरसि धरुणा योनिरसि।
अध्वोपासीन जुहूपासीन धरुणा योनिमासीद॥
नि षसाद धृतव्रतो वरुण पस्त्यास्वा। साम्राज्याय सुक्रतु॥

‡ ब्रह्म तु ते इन्द्रियवन्तो व वेदोरजोभिरिन्द्र स्तवन्त स्वाकर।
यत् तीवन्तु मरुषो वज्रवाता वीरमिन्द्रु प्रसिति स्वन्यव्यो।

● आसुंज यज्ञोपवीतिनीमभ्युदानयन् जपेद् सोमो ददद् गन्धर्वायेति॥

¶ "पुराकाले कुमारीणां मौञ्जीबन्धनमिष्यते। अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवाचनं तथा। ... सुक्तम् १" वनपर्व ३०५।२०

* वेनापि। पुराकल्पे कुमारीणां मौञ्जीबन्धनमिष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवाचनं तथा। पिता पितृव्यो भ्राता वा नैनामध्यापयेत्पर। स्वगृहे चैव कन्याया भैक्षचर्या विधीयते। वर्जयेदजिनं चीरं जटाधारणमेव च॥ संस्कार प्रकाश पृष्ठ ४०२-४०३, स्मृति चन्द्रिका भाग (भाग-१ पृष्ठ २४)

क्या वेद के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय हैं ?

—पण्डिता डा० प्रज्ञा देवी, वाराणसी-१०—

(गतांक से आगे)

इन अर्थों तथा लुप्तोपमालंकारादि द्वारा स्वामी जी ने अग्नि शब्द के इन विशेषणों का प्राय तीनों प्रकार कर अर्थ किया है। इसी प्रकार जहां सोम शब्द के 'सुवीर' आदि विशेषण आये हैं उन्हें भी समझ लेना चाहिए। जिस प्रकार 'आयुर्वै घृतम्" कहकर घृत जो आयु का हेतु है उसे आयु शब्द से कहा गया उसी प्रकार बलोत्पादक सोम औषधि को सुवीर सोम कहा जा सकता है।

आचार्य जी "सोमास आयव पवन्ते मद्यम मदम्' जैसे मन्त्रों "आयु"[1] शब्द को निघण्टु मे मनुष्य नामों में पढा हुआ देखकर यह मानते हैं कि मन्त्र गत सोम शब्द आयु शब्द के साथ आने के कारण मनुष्य अर्थ वाला ही हो सकता है कि "एति निरन्तर गच्छतीति आयु आदित्य" (यजु० १५, ६३) ऐसा अर्थ महीधर ने भी आयु शब्द का किया है तथा "आयो प्राप्तु योग्यस्य (मेघस्य) ऋ० १। १०४। ४ में ऋषि दयानन्द ने भी प्राप्त होने योग्य अर्थ किया है फिर इन मन्त्रों के आधिदैविक अर्थ होने मे क्या सन्देह है ? एक बहुत बडी बात "सोमो वधूयुरभवत्" (ऋ० १०। ८५। ९) मन्त्र को उद्धृत करते हुए आचार्य जी पृ० १५२ में फिर कहते है "सम्पूर्ण वेद मे सोम के सिवाय किसी देवता को 'वधूयु नहीं कहा है इन युक्तियो से स्पष्ट है कि सोम ऐसा विद्वान है जो अभी अभी शिक्षा सस्थाओं गुरुकुलो से पढकर आया है।'

वाह रे आचार्य जी ! इस दशम मण्डल के ८५ वें सूक्त की जिसकी ऋषिका सूर्या सावित्री है, वह सम्पूर्ण सूक्त कुछ मन्त्र भेदसे अथर्ववेद के काण्ड १४ सूक्त १ २ मे भी आया है। इसमें तो आधिदैविक वर्णन इतना प्रिय और आलंकारिक है कि इसका केवल मनुष्य परक बता देने से सब सौन्दर्य ही नष्ट हो जाता हैं। 'सोमो वधूयुरभवत् का अर्थ हुआ सोम=चन्द्रमा मानो वधू की इच्छा वाला हुआ तो सूर्य ने अपनी बेटी सूर्या = अपनी किरणों का विवाह मानो चन्द्रमा से किया, जब सूर्य की पुत्री किरणें अपने पति चन्द्रमा के पास जाने लगी तो सविता = सूर्य ने अपनी पुत्री[2] को कुछ यौतुक = दायज दिया, वह दायज क्या था ? इसको अगले मन्त्र मे बताया—

"मनो अस्या अन आसीद्द्यौरासीदुत छदि ।
शुक्रावनड्वाहावास्ता यदयात्सूर्या गृहम् ॥ ऋ० १० । ८५ । १०

अर्थात् सूर्या पुत्री का मन रूपी रथ था जिसमे दो बैल ऋक् और साम के रूप मे बधे थे इसी प्रकार आगे भी कहा कि सूर्य ने जो उसको (अपनी पुत्री को) बिछावन दिया मानो चित्ति[2] = ज्ञान ही इसका बिछावन था चक्षु ही अभ्यञ्जन = कजरोटा था तथा द्यौलोक और पृथिवी लोक उसका सुहाग पिटारा था। वेद का यह सारा आलंकारिक सोम = चन्द्रमा का विवाह और दहेज यह बताता है कि पृथिवी लोक मे भी हम अपनी पुत्रियो के विवाह मे ज्ञान रूपी बिछावन तथा उत्तम भावनाओ से परिष्कृत कल्याणमय वचन रूपी वस्त्र, पति की गुण ग्राहक बुद्धि आदि दहेज मे दें व्यर्थ के भौतिक आडम्बर नहीं तब कल्याण हो सकता है, यह वेद की कितनी बडी खूबी है कि आधिदैविक के साथ साथ मनुष्यों के लिये बहुत बडी शिक्षा दे दी।

इन सम्पूर्ण मन्त्रो को स्नातक परक सिद्ध करने के लिये आचार्य जी ने औषधि शब्द का व्युत्पत्ति के बल से शिक्षा सस्थायें अर्थ करने में पर्याप्त हेतु दिखाया है यदि औषधि शब्द का व्युत्पत्ति बल से शिक्षा सस्थायें अर्थ किया जा सकता है तो सोम शब्द का इन मन्त्रों मे स्नातक अर्थ के सिवाय और अर्थ नहीं हो सकता ऐसा अवरोध क्यो ? ग्रन्थ मे उद्धृत मन्त्रो की राष्ट्र परक व्याख्या समुचित है इसमें सन्देह नहीं किन्तु "और अर्थ इनके नहीं हो सकते" यह कथन अनुचित है।

(२) श्री आचार्य जी "राष्ट्र में बहुरें खुशहाली आवें'[3] प्रकरण में तीन ऐसे प्रसिद्ध मन्त्र उपस्थित करते हैं जिनमें "अहि" शब्द आया है। मन्त्र हैं—

(क) इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचम् ······ ऋ० १।३२।१
(ख) अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणम् ऋ० १।३२।२
(ग) दासपत्नीरहि गोपा अतिष्ठन् " ऋ० १।३२।११

यहां आचार्य जी लिखते हैं कि प्रस्तुत मन्त्रों मे अहि शब्द का मेघ अर्थ नहीं लिया जा सकता यदि पर्वत का अर्थ मेघ लें तो दूसरे मन्त्र के अनुसार मेघ मे रहने वाला मेघ कौन होगा वाक्य में बिल का छिद्र कौन से होंगे ? वे रुकेंगे किस चीज से इत्यादि अतः इन तीनों मन्त्रों में अहि का अर्थ किसान कृषि, जल निरोधक पदार्थ ही है।"

यहां देखें प्रथम एव द्वितीय मन्त्र दोनों ही महर्षि द्वारा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका मे व्याख्यात हैं। दोनों मन्त्रों मे अहन् अहिम् (अहि) मेघ को त्वष्टा (सूर्य) ने मारा यह चर्चा है। प्रथम मन्त्र में जब त्वष्टा ने अहि को मारा तो वह अहि = मेघ आकाश मे से नीचे अवश्य गिरा किन्तु उसका (मेघ का) शरीर अभी पृथिवी मे जल के रूप मे नहीं गिरा क्योंकि उसने (पर्वते शिश्रियाणम्) मेघ मण्डल का आश्रय ले लिया वहां जब टिक गया तब पुन त्वष्टा ने उस पर अपने प्रकाशमय किरण रूप विद्युत को फेंका, उससे प्रहार किया, तब जा करके वह मरा और उसका शरीर पृथिवी पर जल रूप गिरने लिए इसी मन्त्र मे कहा कि वह वृत्र के शरीर रूपी जल समुद्र की ओर ऐसे वह चला जैसे बछड़े वाली गौ बछड़े की ओर भाग चलती है। सभी जानते है कि मेघ मण्डल मे जब विद्युत् का सघर्षण होता है तभी वर्षा होती है। प्रथम बार वृत्र मेघ को मारा गया तो वह आकाश से कुछ नीचे आकर मेघ मण्डल में स्थित हुआ उसके पश्चात् मारने पर वर्षा हुई यही दोनों मन्त्रो का भाव है और इसीलिए द्वितीय मन्त्र के भाष्य मे ऋषि दयानन्द ने गर्जनशील मेघ अर्थ किया है तथा प्रथम मन्त्र में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे फिर यही मेघ आकाश में से नीचे गिर करके पर्वत अर्थात मेघ मण्डल का पुन आश्रय लेता है' ऐसा अर्थ किया है। यह है मेघ में रहने वाला मेघ जिसके अर्थ में श्री आचार्य जी को बड़ी भारी आपत्ति है। यह बड़े आश्चर्य की ही बात है कि प्रणयन के समय इन मन्त्रों के ऋषिवर के स्वय किये भाष्यो को कैसे नहीं देखा गया ? आचार्य जी का तृतीय आपत्ति जनक मन्त्र जिसमें वे अहि शब्द का मेघ अर्थ नहीं मानते उसकी भी निरुक्तगत व्याख्या तथा महर्षि दयानन्द का भाष्य यहां देखने योग्य है ताकि भ्रम दूर हो सके।

निरुक्त २।१७ मे तृतीय मन्त्र व्याख्यात है वहां अहि का अर्थ स्पष्ट ही 'अहि, अयनात् एति अन्तरिक्षे' करके व्याख्या की गई है। दासपत्नी का अर्थ दुर्ग ने 'उपक्षयति कृष्यादीनि कर्माणि" तथा "बिलम्" का यास्क ने 'बिल भर भवति' अर्थ किया है। प्रथम मन्त्र भी निरुक्त ७। १ में आया है जिसका सभी निरुक्त भाष्यकारों ने सूर्य मेघ का हनन करता है ऐसा निरुक्त के आशयानुसार आधिदैविक अर्थ किया है। महर्षि दयानन्द ऋ० १।३२ सूक्त के प्रारम्भ में ही—'तत्रादो इन्द्रशब्देन सूर्यलोकदृष्टान्तेन राजगुणा उपदिश्यन्ते' ऐसा लिखते हैं। ऋषि दयानन्द इन मन्त्रों में क्रमश अहि एव इन्द्र का मेघ तथा सूर्य ही अर्थ करते हैं और उपमालंकार द्वारा यह बताते हैं कि जैसे मेघ को मारकर सूर्य जल को पृथिवी पर गिराता है वैसे शत्रुओं को राजा छिन्न भिन्न करें। इतने सुन्दर स्पष्ट और प्रसिद्ध अर्थों के होते हुए इन तीनो मन्त्रों मे मेघ अर्थ नहीं है यह कहना भूल है। (क्रमश)

( ) देखें पृ० १४७ भाग १,
(२) चित्तिरा उपबर्हणम् चक्षुरा अभ्यञ्जनम्।
द्यौर्भूमि कोश आसीद्यदयात्सूर्या पतिम् ॥ ऋ० १०. ८५. ७ ॥
(३) देखें पृ० १० भाग २

सती काण्ड की गूंज जारी है

अपने पाठकों के तीन पत्र दिवराला सती कांड के सम्बन्ध में हमने छापे थे जिनमें से दो में तो सती प्रथा प्रथा सम्बन्धी उन्हीं विचारों का समर्थन किया था जो अपने २१ सितम्बर के लेख 'रूप कंवर का बलिदान रंग लाएगा' और २७ सितम्बर लेख 'नारी कब इंसान समझी जाएगी' में हमने व्यक्त किए थे जबकि तीसरे पत्र में श्री कर्ण चन्द्र ने सती प्रथा के समर्थन में अपने विचार व्यक्त किए हैं और यह भी लिखा है कि रूप कंवर को जबर्दस्ती सती नहीं किया गया। इस सम्बन्ध मे उन्होंने उस समाचार की भी चर्चा की है जिसमें कहा गया था कि पति की चिता की ओर जाते समय रूप कंवर के चेहरे पर परेशानी या डर के लक्षण नहीं थे इसके साथ ही उन्होंने इस बात को भी गलत बताया है कि रूप कंवर के पति माल सिंह के दाह संस्कार में कोई जल्दी की गई या परिवार के लोगों ने रूप कंवर को माल सिंह की मृत्यु के लिये दोषी ठहराया।

इस संदर्भ में हम यह लिखना चाहेंगे कि हमने जितनी भी जानकारी इस सम्बन्ध में अपने लेखो मे अब तक दी है वह सब या तो विभिन्न अखबारो के संवाददाताओं की रिपोर्टों पर आधारित है या संवाद समितियो की सर्वज्ञ रिपोर्टों पर। हाल ही में फिर एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक के संवाददाता ने अपनी रिपोर्ट में बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहा कि—

इस बात के कितने ही प्रमाण हैं कि रूप कंवर को जबर्दस्ती उसके पति की चिता मे धकेला गया और इस बात का मुश्किल से ही कोई प्रमाण है कि वह स्वयं अलौकिक प्रेरणा से सती हो गई। निर्दलीय विधायक और राजस्थान के एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ श्री मोहन छिपानी के शब्दो मे यह एक निर्मम हत्या का मामला है।

यहा यह लिखना भी असंगत नहीं होगा कि दिवराला का कोई भी व्यक्ति इस मामले मे सही जानकारी देने के लिए आगे नही आ रहा है क्योंकि जो भी व्यक्ति यह कहेगा कि सती होने के अवसर पर अमुक बात अपनी आंखो से उसने देखी है वही कानून की नजर मे जुर्म का भागीदार समझा जाएगा। यह भी कितनी विचित्र बात है कि रूप कंवर के पति श्री बल सिंह राठौड़ जयपुर में प्रमुख ट्रांसपोर्टर हैं परन्तु उन्हें सती होने के अवसर पर बुलाया तक नही गया और उन्हे इस कांड का पता समाचार पत्रों से ही चला। यह अलग बात है कि इस मामले पर कोई आपत्ति उन्होंने बाद मे नहीं की आखिर एक घटना जब हो ही चुकी है तो वह उस पर आपत्ति करके अपने बिरादरी मे महासती के पिता कहलाने के गौरव से क्यों वंचित होने चाहते और उस बिरादरी का रोष कि तरह मोल लेते जिसमें उन्हें रहना है इसलिये उन्होंने भी चुनरी-महोत्सव पर लाल पगड़ी पहन ली। अलबत्ता एक पत्रकार को उन्होंने भी यही कहा कि अगर उन्हें अपने दामाद की मृत्यु का पता समय पर लग जाता तो वह उसके अंतिम संस्कार में अवश्य पहुंचते और रूप कंवर को सती होने से रोकते-अपनी औलाद को इस तरह मरते हुए कौन देख सकता है।

यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि जो विवरण समाचार पत्रो में आया है उसके अनुसार रूप कंवर परदा प्रथा के विरुद्ध थी और साज सिंगार करके रहना और ब्यूटी पार्लर मे जाना पसन्द करती थी और यह बात बिरादरी के उन लोगो की आंखो मे खटकती थी जो नारी को आज भी दबाकर रखने मे विश्वास रखते हैं। रूप कंवर दिवराला में रहना भी नहीं चाहती थी। अपने विवाह के नौ महीनों में उसने केवल दस दिन ही पति के साथ गुजारे थे और यह मात्र एक संयोग था कि जिस दिन माल सिंह की मृत्यु हुई उस दिन वह दिवराला मे थी।

कुछ लोग रूप कंवर को शुरू से ही अत्यधिक धार्मिक विचार धारा की लड़की बताते हुए कहते हैं कि वह तो बचपन मे ही सती माता के मन्दिर मे जाकर उनकी पूजा करती थी और स्वयं भी सती होने की इच्छा व्यक्त किया करती थी मगर यह बात ठीक नहीं है, वह बिल्कुल एक साधारण लड़की थी ? स्कूल में उसके एक टीचर का कहना है कि रूप कभी भी बहुत ज्यादा अन्धविश्वासी या धार्मिक विचारो की लड़की नहीं थी।

अखबारों में यहां यह खबरें छपी हैं कि माल सिंह की मृत्यु के लिए उसके परिवार वालों ने रूप कंवर को दोषी ठहराया था वहां ऐसी भी खबरें हैं कि गांव के एक ब्राह्मण ने रूप कंवर को रह-रहकर यह समझाया कि राजपूतो मे एक विधवा का जीवन नर्क जीवन से भी बदतर होता है इसलिए वह सती होकर देवी की तरह पूजे जाने का महान अवसर क्यों खो रही है ? लोगों का कहना है कि जब इसके बावजूद भी रूप कंवर सती होने को तैयार नही हुई तो उसे भारी मात्रा मे कोई नशीला पदार्थ पिला दिया गया। यह ब्राह्मण ४ सितम्बर से ही लापता बताया जाता है।

दिवराला की कुछ महिलाओं का कहना है कि सती प्रथा इसलिए ठीक है क्योंकि राजपूत समाज मे विधवा जीते जी ही मर जाती है, वह दोबारा शादी नहीं कर सकती, अच्छे कपड़े और गहने नही पहन सकती, सारी उम्र घर मे ही उसे बंदी की तरह काटनी पड़ती है, किसी भी शुभ अवसर पर उसका मौजूद होना अपशकुन माना जाता है और हर स्थान पर अनादर और अपमान ही उसे सहना पड़ता है।

श्री कर्ण चन्द्र ने सती प्रथा को उचित ठहराते हुए सती सुलोचना की भी चर्चा की है मगर वह यह भूल गए कि उसी युग मे न तो महाराजा दशरथ की पत्नियां ही उनके साथ सती हुईं और न ही लंकापति रावण की पत्नी मंदोदरी रावण के साथ सती हुई।

बहरहाल, हम इस बहस को लम्बा न करते हुए केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि सामाजिक कुरीतियां चाहे वह समाज के किसी भी वर्ग या समुदाय से सम्बन्ध रखती हो दूर की जानी चाहिए और उन्हे आवश्यक रूप से धार्मिक भावनाओं से जोड़ने का प्रयत्न नही किया जाना चाहिए। परदा प्रथा, दहेज, बाल विवाह, छूतछात और सती आदि अनेक समस्याएं ऐसी हैं जिन पर हर हालत मे रोक लगाई ही जानी चाहिए।

सचमुच यह भी एक विडम्बना ही है कि जिस सती प्रथा का विरोध आज सारा देश और देश भर के नारी संगठन कर रहे हैं उस पर रोक के सिलसिले मे जारी किए गए अध्यादेश के विरोध मे गत दिनो राजस्थान की राजधानी जयपुर मे एक रैली का आयोजन किया गया, राजस्थान जनता पार्टी के प्रधान श्री कल्याण सिंह कालवी तक ने उसे सम्बोधित किया प्रधान मन्त्री के विरुद्ध अपमानजनक नारे लगाए गए। राजा राम मोहन राय को एक पापी बताया और सती विरोधी महिलाओं को वेश्याओ की संज्ञा दी गई।

इतना ही नही श्री कल्याण सिंह ही नही अन्य अनेक राजनीति दलो (जिनमे इंका लोकदल (ब) भाजपा शामिल हैं) के प्रमुख नेताओ ने भी सती का समर्थन किया है और इससे भी अधिक दुखदाई बात यह कि पुरी के शंकराचार्य तक ने ऋग्वेद का नाम लेकर सती प्रथा का समर्थन कर दिया है जिसे चुनौती देते हुए आर्य नेता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा है कि ऋग्वेद मे पति के साथ पत्नी को जला देने का कोई विधान नहीं है। उन्होने सभी संतो संन्यासियों और धार्मिक नेताओं से कहा है कि वे एकजुट होकर इस सामाजिक कलंक का विरोध करे।

हम समझते हैं कि किसी भी जोश मे होश खोने की आवश्यकता नही है बल्कि सम्पूर्ण स्थिति को मानवीय मूल्यो के आधार पर ही मापना और परखना चाहिए और किसी भी कीमत पर कोई काम ऐसा नही होना चाहिए जो मानवता के विरुद्ध जाता हो।

(दिनांक १३ १०-८७ के पंजाब केसरी से साभार

दीपों में अमर दीप और देवों में महादेव

दीपावली की अमावस्या रात्रि के घोर घने अन्धकार को दूर करने के लिये करोड़ो दीप जलाये जाते हैं जो संसार से अज्ञान अविद्या समाप्त करने की हमारी शाश्वत वैदिक परम्परा के द्योतक हैं। इस प्रकाश पर्व के अवसर पर हम इन असंख्य दीपों के मध्य देदीप्यमान एक अमर दीप को अपनी श्रद्धाञ्जलि दिया करते हैं, जिसने महाभारत काल के उपरान्त विश्वव्यापी अज्ञानान्धकार मे भटकती मानवता को पुनः सत्पथ का दिग्दर्शन कराया— उस महामानव का नाम युगनिर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती था। सहस्रों ज्ञानदीप जलाने वाला और अनगिनत मानवों को आलोकित करने वाला यह अमरदीप अब कभी बुझने वाला नहीं है। जैसे पृथ्वी के समस्त दीप, अजस्र प्रकाशपुञ्ज सूर्य से प्रकाश और ऊर्जा प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार इस "अमर ज्ञान दीप' की अदृश्य डोर महानतम प्रकाशपुञ्ज एवं शक्ति के अनन्त स्रोत, उत्तम ज्योति (ज्योतिरुत्तम) परमात्मा (आदित्य वर्णम् तमस परस्तात्) से जुड़ी हुयी है। देव शब्द का अर्थ है जिसमें कुछ दे सकने की सामर्थ्य हो अथवा जो प्रकाशित हो और प्रकाश करने वाला हो (देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीतिवा) देव दयानन्द देवों में महादेव इसलिये हैं क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति के सर्वांगीण उत्थान के निमित्त उन्होंने जो कुछ उन्होंने किया, वह मानव जाति के पिछले पांच हजार वर्षों के इतिहास में अद्वितीय था। ज्ञान विज्ञान, भक्ति और अध्यात्म के अद्भुत भंडार को, अपनी मुक्ति के मोह को त्याग कर वैदिक धर्म और संस्कृति की पुनर्स्थापना हेतु समर्पित कर, बदले में २१ बार गरल पान स्वीकार किया। ऋषिवर के निर्वाण (बलिदान) की द्वितीय शती के तृतीय स्मृति दिवस पर हम उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह द्वारा उस अवसर (३० अक्टूबर, १९८३ तदनुसार कार्तिक अमावस्या, सम्वत् १९४० विक्रमी) पर दी गयी श्रद्धाञ्जलि को दोहराते हैं —

नभ चव-ग्रह-ससि दोर-दिन दयानन्द सह सरव।
वय उनसठ वत्सर विषै, भयो तन पचत्व॥
जाके जोह जोर तें प्रपंच फिलासिफन को।
अस्त सो समस्त आर्य्य-मण्ड तें मान्यो मैं॥
वेद के विरुद्ध मत मत के कुबुद्धि मन्द।
भद्र भद्र मादिन पै सिंह अनुमान्यो मैं॥
ज्ञाता षटशास्त्रन को वेद को प्रणेता जेता।
आर्य विद्यार्क हू को अस्ताचल जान्यो मैं॥
स्वामी दयानन्दजू के विष्णु-पद प्राप्त हू तें।
पारिजात को सो आज पतन प्रमान्यो मैं॥

महर्षि दयानन्द निश्चय ही एक महान सन्त और नीर क्षीर विवेकी परमहंस थे। सन्त कवि तुलसीदास ने साधु के चरित्र की तुलना कपास से की है जैसे कपास को पैदा होते ही चर्खों में ओटा जाता है, फिर धुनकी से धुनकर तकुवे पर कता है, तत्पश्चात् करघे में बुना जाता है, फिर धोबी उसको घाट पर पीट-पीट कर पछाड़ता है और धोता है। सूखने पर उसकी कुन्दी की जाती है, फिर दर्जी उसकी खण्ड खण्ड काट कर, सुई से बेधकर वस्त्र तैयार करता है, जो परहित साधता है। इसी प्रकार परमहंस दयानन्द ने भी गृह त्याग करने के उपरान्त अकथनीय कष्ट सहे और परहित में ही सर्वस्व समर्पित कर दिया। यहां तक कि दया और क्षमा की प्रतिमूर्ति ने कालकूट विष देने वाले को भी, किसी को जानकारी हो न सके, इससे पूर्व ही राज्य की सीमा से बाहर भिजवा दिया। कवि ने ठीक ही कहा है—देखा न कोई देवता प्यारे ऋषि की शान का। सर पर सही मुसीबतें सोचा भला जहान का।

—आनन्द प्रकाश

उपमन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
एवं
मन्त्री, महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ स्मृति ट्रस्ट

सार्वदेशिक सभा के बहुमूल्य प्रकाशन

स्त्रियों के विशेषाधिकार

(पृष्ठ ५ का शेष)

के अनुसार वधू को घर ले जाते समय दूल्हे को चाहिए कि वह प्रत्येक निर्देशस्थान (रुकने के स्थान) पर दर्शकों को ऋग्वेद १०।८५।३३ के उपर्युक्त मन्त्र के साथ दिखाये, इससे स्पष्ट है कि उन दिनों वधुओं द्वारा अवगुण्ठन (घूंघट) नही धारण किया जाता था। रामायण (युद्धकाण्ड ११६।२८) विपत्ति के समय युद्धों में, स्वयंवर में यज्ञ व विवाह में स्त्री का बाहर जनता मे आना अपराध नही है।" सभापर्व (६९।९) में द्रोपदी कहती है "हमने सुना है कि प्राचीन काल में लोग विवाहित स्त्रियों को जनसाधारण की सभा या समूह मे नहीं ले जाते थे, चिरकाल की प्राचीन प्रथा को कौरवों ने तोड़ दिया।" इससे स्पष्ट कि अवगुण्ठन प्रथा तत्कालीन समय में नहीं थी।

इस प्रकार वैदिक साहित्य एवं शास्त्रीय ग्रन्थों मे स्त्रियों के अधिकारों के सदस्यो उदाहरण उपलब्ध हैं, जिनके आधार पर स्त्रियों का स्थान समाज में सर्वोच्च था, उसे माता जननी आदि सम्बोधन दिए गए हैं, इन्हीं दिव्य गुणों से सम्पन्न होने के कारण राष्ट्र को मातृभूमि का सम्बोधन दिया गया है।

काव्य सुधा—

ऋणी धरा है तथा गगन

वैदिक संस्कृति का जितने फिर वसुधा पर उद्धार किया,
कष्ट अनेकानेक सहे, पर जगती का उपकार किया,
नव्य चेतना, नव जागृति का कण-कण मे भर स्पन्दन,
मध्य भंवर में फंसी तरणि मानवता की, फिर पार किया,
काल जयी। ऋषि दयानन्द की ऋणी धरा है तथा गगन।
व्रती तपस्वी के चरणों में अर्पित युग का कोटि नमन ॥
मानवता का मन्त्र दिया वेदो की अलख जगायी,
अन्ध निशा की गहन तमिस्रा तुमने यती भगायी,
जीवन की ले शक्ति अपरिमित जगे यहां पर जन-जन,
जागो-जागो। आर्य बनो हे!, रट है सतत लगायी,
ज्योति मान हुआ जग सारा, जाग उठा भू कन-कन।
काल जयी ऋषि दयानन्द की ऋणी धरा है तथा गगन ॥
दिया तुम्हीं ने भारत को ऋषि! स्वतन्त्रता सन्देश,
सद्यत्नों से दिव्य तुम्हारे, गौरव-अन्वित हुआ स्वदेश,
त्याग तथा बलिदानों का पथ तुमने सहज दिखाया,
हुआ अग्रसर, अन्ध जाल को तोड मधुरमय देश,
वृक्ष धर्म के, सत्य अहिंसा के खिल उठे सुमन।
काल जयी। ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन ॥
प्राची से फूटी जागृति की, नयी ऊषा अरुणायी,
तिमिर ज्योति की, सत्य असत्य की, भीषण हुई लडायी,
हुआ जयी आलोक, सत्य, शुचि धर्म दिव्य वेदो का,
हुलसे सभी अभय हो भारत पुत्रो की तरुणायी,
देती नव सन्देश सत्य का, निकली स्वर्णिम सूर्य किरन।
काल जयी। ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन ॥
पावन पथ वेदों का भू पर, हुआ प्रकाम्य प्रशस्त,
तिमिराच्छादित परम्पराए हुई अनय की अस्त,
नव आशा अभिलाषाओं की लहरी नयी तरगें,
सत्य शिवम् सुन्दरता पूरित, बहीं वायु अलमस्त,
परहित में अर्पित कर डाला, जिसने तन मन-धन।
काल जयी। ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन ॥
व्रती तपस्वी के चरणों मे अर्पित युग का कोटि नमन ॥

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, मुजफ्फरनगर

ऋषि महिमा

करने जन कल्याण धरा पर वेद धर्म दर्शाने को।
ऋषि दयानन्द आये थे, शान्ति सुधा बरसाने को ॥

योगी थे वे यति व्रती, वे पुरुष पुरातन पावन थे।
साधक सिद्ध सुधी सज्जन थे जन जन के मन भावक थे ॥
ऋषियो के अनुगामी बन गये विश्व को आर्य बनाने ॥ करने··
गुण सागर थे करुणाकर थे उज्जवल और उजागर थे।
शाश्वत सुख के सागर थे वे न्याय नीति के नागर थे ॥
सबको लगाया जग मे दुखियो का दर्द मिटाने को ॥ करने···
समदर्शी थे सद्गुरु थे वे पूरण पुण्य प्रभाकर थे।
इस धरती के देव स्वर्ग के सवस्व सुधाकर थे ॥
राग द्वेष का त्याग करके प्रेम भाव दिखाने को ॥ करने···
आये थे वे दिव्य धरा पर दुख दीनो का हरने को।
चले गये फिर स्वर्ग लोक को अमर साधना करने को ॥
सतरह बार विष खाया सनातन वैदिक धर्म बचाने को। करने··
आओ उनकी चरण धूलि को हम तुम सब धारण कर ले।
उनकी सद् शिक्षाओ को हम मन के आंगन में धर ले ॥
वेदामृत का पान करे, जग से अज्ञान भगाने को ॥ करने··

—ओमदत्त शर्मा, मादिपुर, इंगलैंड

दिवाली की शाम

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार

कार्तिक कृष्णा अमावस, उन्नीसो वैतालीस।
सन् अठारह सो तिरासी, था अक्टूबर तीस।
था अक्टूबर तीस, शाम का समय सुहाना।
दीपों का त्योहार, मानता सभी जमाना।
कहे 'स्वरूपानन्द' विदाई ले रहे स्वामी।
अच्छी लीला मुझे दिखाई अन्तरयामी ॥

दीप करोडो जल रहे, दुनिया मे जिस वक्त।
मृत्यु शय्य अजमेर मे, देख रहे ऋषि भक्त ॥
देख रहे ऋषि भक्त ऋषि मुस्कराय रहे हैं।
सभी आर्यों को ऐसे समझाय रहे हैं ॥
कृण्वन्तो विश्व मार्यम नही भुलाना।
मेरी अस्थिया गगा जी, में नही बहाना ॥

खड़े हुए गुरुदत्त जी, देख रहे यह रग।
इस मृत्यू के दृश्य को देख रह गये दग ॥
देख रह गये दग निरख योगी की काया।
ईश्वर का सच्चा विश्वासी उन्हे बनाया ॥
दूर हुआ सन्देह देखकर अजब नजारा।
बने आस्तिक कभी न प्रभु का नाम बिसारा ॥

निहार रहे सब आर्यजन, ऋषि मुखको चुपचाप।
फिर मुनिवर करने लगे, गायत्री का जाप ॥
गायत्री का जाप, ओ३म् का नाम उचारा।
चौथा प्राणायाम, प्राणो को बाहर निकारा ॥
वह था सन्ध्या काल, ठीक छै बजने आये।
नश्वर तन को त्याग, ऋषि परलोक सिधाये ॥

आर्य जगत् के समाचार

यज्ञोपवीत हिन्दुओं का परिचय पत्र है

डा० आनन्द सुमन

सादड़ी (हरदोई) यज्ञोपवीत हिन्दुओं का परिचय पत्र है जो यज्ञोपवीत धारण नही करता वह हिन्दू कहलाने का अधिकारी नहीं हिन्दू धर्म में शिखा सूत्र का महत्व है अत सभी हिन्दुओ को यज्ञोपवीत धारण करना उतना ही आवश्यक है जितना राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना।

यह विचार डा० आनन्द सुमन वैदिक प्रवक्ता (प्रचारक सार्वदेशिक सभा) ने यहा आर्य समाज के ५०वें वार्षिकोत्सव में व्यक्त किये।

तीन दिनो तक आर्य समाज के मच से हजारों हिन्दुओ ने डा० सुमन जी के विद्वता पूर्ण क्रांतिकारी एव ओजस्वी विचारों का लाभ उठाया। डा० सुमन के आह्वान पर १०० युवको ने श्रद्धापूर्वक यज्ञोपवीत धारण किया और राष्ट्र एव धर्म रक्षा का सकल्प लिया उत्सव में श्री ओकार जी प्रणव शास्त्री, ब्रह्मानन्द आर्य एव शिव देव बेधड़क ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

—केशवदेव शास्त्री
प्रधान आर्य समाज साण्डी हरदोई

झुंझनु में यवन नटों के ९ परिवारों की शुद्धि

दिनाक ७ अक्टूबर १९८७ को गांव बडवर भवाना जिला झुझनू मे हिन्दू शुद्धि सरक्षण समिति के सयोजक श्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती और आर्य समाज समासखा के उपदेशक श्री मांगेराम जी ने प्रात यज्ञ कराया उसके बाद यवन नटों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया और, हिन्दू नटों के साथ उनकी रोटी-बेटी के रिश्ते भी कायम कराये गये। इस शुद्धि समारोह मे गांव बडवर और आवडुवी आदि के व्यक्तियों ने उत्साह से भाग लिया। उक्त नौ परिवारो के ६८ सदस्य इस अवसर पर शुद्ध हुए।

—आर्य समाज समासखा करनाल

राष्ट्रीय एकता दिवस सम्पन्न

२ अक्टूबर दिल्ली, ग्रामीण शिक्षा समिति के तत्वावधान मे २ अक्टूबर महात्मा गांधी के जन्म दिवस पर राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता प० खुशी राम शर्मा ने की जिसमें निम्न नेताओ ने भाग लिया डा० धर्मप्रकाश, डा० जे. के. सिंह, श्री महेन्द्र जी आदि नेताओं ने राष्ट्रीय एकता के विषय में अपने विचार रखें समिति के सचिव देवशर्मा जी ने सभी आगन्तुको का आभार व्यक्त किया।

निर्वाचन

—आर्य समाज तीमारपुर दिल्ली के वार्षिक चुनाव मे प्रधान, श्री भीमसिंह व उपमन्त्री श्री विमलकान्त शर्मा चुने गए।

—आर्य समाज निजामबाद (इन्दौर) के वार्षिक चुनाव में प्रधान श्री गगाराम आर्य, मन्त्री श्री नरसिंहराव जी चुने गए।

—आर्य युवा परिषद समस्तीपुर के प्रधान श्री कमलकुमार आर्य, मन्त्री श्री गणेशप्रसाद आर्य चुने गए।

—आर्य समाज कोसी कला के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री रामजीवन आर्य, मन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार आर्य चुने गए।

—आर्य समाज आर्य नगर (आरे पल्ली) वरगल के चुनाव मे प्रधान श्री पैठान सूयनारायण आर्य, मन्त्री के० सत्यनारायण आर्य चुने गए।

—आर्य समाज हाजीपुर जिला बुलन्दशहर के प्रधान श्री रामचन्द्र जी व मन्त्री श्री शिवलाल जी चुने गए।

समालोचना

स्वामी दयानन्द

बाई वन्देमातरम वीरभद्र राव
Pub. यू जी प्रकाशन सस्था
१४-३-१७८, गोशा महल हैदराबाद-५०००१२
मूल्य ४) रुपए

लेखक उच्चकोटि के साधक योगी व महर्षि दयानन्द के परमभक्त है। आप आर्य रत्न श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम के सहोदर भ्राता हैं। महर्षि दयानन्द के जीवन को अग्रेजी भाषा मे सरल सुबोध व आध्यात्मिक रूप में अपने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अग्रेजी भाषी जनता को महर्षि जीवन के प्रति आकृष्ट करने के लिए इस पुस्तक का जितना भी वितरण किया जायगा। उतना आर्यसमाज के प्रति पाठको का प्रेम बढ़ेगा। थोड़े मूल्य की यह पुस्तक समाजों को मगवाकर शिक्षित जनता मे आर्य समाज व महर्षि भक्ति का प्रचार करना चाहिए।　—सम्पादक

महात्मा अमर स्वामी को श्रद्धांजलि

आज मैंने जैसे ही आर्य मन्देश में अमर स्वामी के स्वर्ग सिधारने का समाचार पढ़ा। मैं पढ़कर सन्न रह गया। अचानक ही मेरे मुख से ये शब्द निकल पड़े आर्य समाज में शास्त्रार्थ का युग समाप्त हो गया। मुझे यह किसी भी पत्र पत्रिका से मालूम नही हुआ कि अमर स्वामी महाराज रुग्ण है। मैं उनको ४० ४२ वर्षों से जानता हूँ। जब वे ठा० अमरसिंह के नाम से प्रसिद्ध थे। ज्यादातर कलकत्ते मे ही रहा करते थे। उनके उपदेशों को सुन कर श्रोता गण मुग्ध हो जाते थे। उनके उपदेश बड़े सरल तथा शिक्षाप्रद होते थे। वे इतिहास की बातें बड़े ध्यान से सुनाया करते थे। मैं भी उनके उपदेशों से बड़ा प्रभावित हूँ। जब से उन्होंने सन्यास लिया और शास्त्रार्थ करने लगे। तब तो उनकी और भी धाक् जम गई जिस उत्सव मे वे नहीं होते थे वह उत्सव फीका-सा मालूम होता था। जब वे जलसों मे जाते थे तो रोनक बढ़ जाया करती थी। जिस समय वह शास्त्रार्थ करते थे। उनके सामने कोई ठहर नही पाता था वह बड़े ही हाजिर जवाब थे। परमात्मा फिर हम आर्यों के बीच ऐसा तार्किक पैदा करे जो रिक्त स्थान की पूर्ति कर सके और रुके हुए कार्य कार्य की पूर्ति कर सके। जब तक तर्क वितर्क का कार्य नही होगा, आर्यों के भाग्य का उदय नही होगा। मुझे प० लेखराम के वे शब्द याद आते हैं। जो उन्होंने मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए कहे थे। मेरी इच्छा है कि आर्य समाज से तहरीर और तकरीर का कार्य बन्द न हो। अमर स्वामी जी महाराज को श्रद्धाजलि यही होगी। उनके रुके कार्यों को पूरा करे। और वेदो का उपदेश करे और कराव।　—पुष्करलाल आर्य
१०८ हार्उसिंग बोर्ड, भिवानी (हरियाणा)



आर्य युवकों का साइकिल द्वारा छः दिवसीय प्रचार यात्रा के दिल्ली पहुचने पर भव्य स्वागत

आर्य समाज नयाबास दिल्ली ६ के तत्वावधान मे आयोजित आय युवको की छ दिवसीय साइकिल द्वारा प्रचार यात्रा का उद्घाटन आर्य नेता श्री रामनाथ सहगल ने २ अक्टूबर १९८७ को प्रात वैदिक रीति के अनुसार नारियल तोडकर किया।

यह यात्रा दिल्ली मे आरम्भ होकर फरीदाबाद, बल्लभगढ गुरुकुल गदपुरी पलवल होडल कोसीकला छाता मथुरा होते हुए आगरा तक भिन्न भिन्न छोटे बड गाव कस्बो और शहरो मे प्रचार करते हुए पहुची और ७ अक्टूबर को साय आय समाज नयाबास दिल्ली पर समाप्त हुई।

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के रामलीला मैदान स्थित कार्यालय पर सभा की ओर से युवको का स्वागत हुआ। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रो० शेरसिंह व आयवीर दल के सचालक श्री बालदिवाकर हस ने युवको के काय की भरी भरी प्रशसा करते हुए भविष्य मे ऐसे कायक्रमो पर पूण सहयोग का आश्वासन दिया। —चन्द्रमोहन आय
(प्रेस सचिव)

ऊपर कुर्सी पर दाहिने से श्री प० बाल दिवाकरहस, पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और श्री सच्चिदानन्द तथा सयोजक नरेशपाल आय प्रचार यात्रा की जानकारी देते हुए।



गौ पालन धार्मिक नहीं, वरन आर्थिक दृष्टिकोण का प्रश्न

श्री राधाकृष्ण बजाज

गत ७ अक्टूबर को आय समाज खण्डवा की ओर से गो रक्षा दिवस निमाड चेम्बर आफ कामस के महामन्त्री श्री अमरचन्द कटारिया की अध्यक्षता मे मनाया गया। मुख्य अतिथि स्व० जमनालाल बजाज के भतीज एव गो सेवा सघ वर्धा के कार्याध्यक्ष श्री राधाकृष्ण बजाज ने कहा कि आजादी के बाद इस देश मे हिन्दी व गाय की बहुत उपेक्षा हुई है। हम धम निरपेक्ष का अथ, धम रहित समझ गए है। जब कि सभी धर्मों का आदर करना हिल मिलकर रहना होता है। आज सरे आम गो वध हो रहा है। शासन मूक दर्शक के समान खडा देख रहा है। हिन्दू कतव्य से विमुख हो गोपालन नही कर रहा है।

साहित्यकार प० रामनारायण उपाध्याय ने कहा कि जब जब इस देश में गो की महत्ता समझी है, देश में दूध दही की नदिया बही हैं।

अध्यक्षता करते हुए श्री अमरचन्द कटारिया ने कहा कि हमारे द्वारा म घन घन से ही गो शालाओ को अपनी आर्थिक मदद देनी चाहिए ताकि गो शालायें सदढ हो और अधिक गो पालन हो सके।

इस अवसर पर आय समाज की ओरसे श्री राधाकृष्ण बजाज का स्वागत करते हुए शाल, श्रीफल सत्याथ प्रकाश प्रशस्ति पत्र के साथ साथ बुरहानपुर गोशाला की ओर से २५० रु० भट किए गये।

ऋषि - निर्वाणोत्सव

आय केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान मे दीपावली वीरवार २२ अक्तूबर १९८७ स्थान रामलीला मैदान समय प्रात ८ से १२ बजे तक अध्यक्ष स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती तथा मुख्यातिथि श्री कुलानन्द भारतीय कायकारी पापद (शिक्षा) एव श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती श्री डी० पी० यादव भूतपूव राज्यमन्त्री भारत सरकार डा० वेदप्रताप वैदिक श्री सन्तकुमार सिंह (दक्षिणी अफ्रीका) श्रीमती डा० सरोज दीक्षा' विद्यालकार सभा ने सम्बोधित किया।

महाशय धर्मपाल
प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री
महामन्त्री

पंजि० नं० डी० (सी०) १७४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२५-१०-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाईसेंस नं० ११
R.N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. 11 93 Post in D.P.S.O. on 23-10-1987

अरब देशों के धन से केरल में मस्जिदों की बाढ़

खाड़ी देशों के अरब लोग लड़कों और युवतियों की तस्करी के बदले केरल को भारी मात्रा में धन भेजकर नई नई आलीशान मस्जिदों का निर्माण करा रहे हैं। दक्षिणी केरल में गत दस वर्षों के अन्दर १० ०० से ज्यादा ऐसी मस्जिदों का निर्माण हुआ है जो विदेशी धन से बनाई गई हैं। इन नई मस्जिदों की बढ़ती संख्या के साथ मध्य केरल के समस्त मानव के एक तबके में असन्तोष, भय तथा तनाव भी बढ़ता जा रहा है।

अरब देशों के धन को पाने के लिए केरल के मुल्ला मौलवियों में प्रतिस्पर्धा भी शुरू हो गई है। अनेक मुल्ला मौलवियों ने तो खाड़ी के देशों में जाकर मस्जिदों तथा इस्लामीकरण के नाम पर चन्दा इकट्ठा करना अपना पेशा ही बना लिया है।

अनेक मुल्ला मौलवियों ने मस्जिद निर्माण की आड़ में तस्करी का भी अपना धन्धा बनाया हुआ है।

सितम्बर के पहले सप्ताह में कालीकट में परपनगड़ी की एक मस्जिद के मौलवी के० अब्दुल्ला को कस्टम अधिकारियों ने १६२ स्वर्ण मुद्राओं सहित गिरफ्तार किया है। के० अब्दुल्ला अरब देशों में मस्जिदों के लिए चन्दा इकट्ठा करने की आड़ में तस्करी में लिप्त था। इससे पहले भी अनेक व्यक्ति अरब देशों से तस्करी करते हुए पकड़ गये हैं। ये सब अपने को वक्फ बोर्ड का सदस्य बताते थे।

अरब देशों के धन से बनाई जाने वाली इन बहुमंजिली तथा पचतारा होटलों के समान शानदार मस्जिदों के बारे में मुस्लिम समुदाय में भी भारी मतभेद पैदा हो गये हैं। मलयालम् में कुरान का अनुवाद करने वाले मौलवी सी० एन० अहमद ने तो स्पष्ट विरोध करते हुए कहा है कि विदेशी धन के बल पर पचतारा होटलों जैसी आलीशान मस्जिदें बनाया जाना इस्लाम की सादगी ... कमाई से बनाई जानी चाहिए।

त्रिवेन्द्रम की जामा मस्जिद के ... मौलवी ने भी स्वीकार किया है कि ... ऐसी मस्जिदें तनाव पैदा ... हैं।'

केरल में मस्जिदों की संख्या बढ़कर ६३६७ हो गई है। इनमें से अधिकांश विदेशी धन से बनाई गई हैं।

पता चला है कि इन मस्जिदों के नाम पर आने वाले विदेशी धन का जहां दुरुपयोग हो रहा है वहीं कट्टरपंथी ताकतें भी पनपती जा रही हैं। अरब देशों से प्राप्त धन का उपयोग इस्लामीकरण तथा हिन्दुओं के धर्म-परिवर्तन के काम पर भी किया जा रहा है। —शिवकुमार गोयल

(पृष्ठ १ का शेष)

सती प्रथा का विरोध

रूपकुंवर बेबस थी उसकी मूक आहें व चिता का धुआं सारे भारत के आकाश में फैल गया है, जो देशवासियों को अन्धविश्वासों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए ललकार रहा है।

स्वामी जी ने राजनीतिक नेताओं को चेतावनी दी कि वे इस प्रथा को चुनाव की राजनीति में न घसीटें और न इस गर्म तवे पर स्वार्थ की रोटियां सेकने का प्रयत्न करें।

रैली व जन सभा को सभी राजनीतिक व सामाजिक संस्थाओं का पूर्ण समर्थन प्राप्त था।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

आर्य

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८८ | मा-र्दे।० क आय प्रा तिनिधि मभा क। मुखपत्र | ५ ७६ न ७ ३
वर्ष २२ अंक ८) | कार्तिक सं० २०४४ | १९८७ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

हम अपनी बहन-बेटियों को जलने नहीं देंगे

महर्षि निर्वाणोत्सव में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की घोषणा

हिन्दी के लिए आर्यसमाज देशव्यापी आंदोलन चलाए

—वेदप्रताप वैदिक

नई दिल्ली। २२ अक्तूबर आज के प्रकाशयुग मे भी देश मे रूपकुंवर सतीकाड हो रहे है व पुरी के शकराचार्य उसका समर्थन कर रहे हैं परन्तु हम अपनी माताओ बहनो व बेटियो को जलने नही देंगे चाहे इसके लिए हमे कितनी ही कुर्बानी करनी पडे यह उदगार सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा दीपावली पर आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०४वे निर्वाणोत्सव का उदघाटन करते हुए व्यक्त किए। उन्होने आगे कहा कि आज राष्ट्र की एकता व अखण्डता को सुदृढ करने मे आर्यसमाज को सदा की भाति अहम भूमिका निभानी

(शेष पृष्ठ २ पर)



अलवर मे सती प्रथा विरोधी विशाल रैली मे श्रीमती प्रकाश आर्य व सरला मेहता ओ३म्ध्वजा लेकर नारे लगा रही हैं।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

हैदराबाद सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों के सम्बन्ध में निर्णय

हाल ही मे भारत सरकार के गृह मन्त्रालय से निम्नलिखित व्यक्तियो के बारे मे सम्बन्धित राज्य सरकारो को लिखा गया है कि उन्हे केन्द्र के नियमो के अनुसार स्वाधीनता सेनानी सम्मान पेंशन देना सम्भव नही है क्योकि या तो उनकी निर्धारित कारावास की अवधि ५ माह से कम है अथवा कोई अन्य निर्दिष्ट कमी पाई गई है।

ऐसे व्यक्तियो के मामले सम्बन्धित राज्य सरकारो को इस आशय के साथ भेज दिए गए हैं कि राज्य सरकारों के नियमानुसार ऐसे मामलो मे राज्य सरकार द्वारा सम्मान पेंशन दी जाती है। उन पर भली भांति विचार करके यदि वे पात्र पाये जायें तो सम्बन्धित राज्य सरकारे ऐसे मामलो मे पेंशन जारी करे।

निम्न ३३ व्यक्तियो की इस सूची मे केवल तीन व्यक्तियो को छोडकर शेष सब हरियाणा के निवासी हैं और उनके मामले चण्डीगढ मे हरियाणा सरकार को भज दिये गये हैं। मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश व बिहार के इस प्रकार के मामले भी क्रमश भोपाल और लखनऊ और पटना भेज दिये गयेहैं।

हैदराबाद सत्याग्रह सेनानी जिनकी पेंशन स्वीकृत हुई है

(१) श्री जगतलाल पुत्र श्री हैयपन
ग्राम पोस्ट किटाना, जिला जिन्द (हरियाणा)

(२) श्री जयलाल पुत्र बदलू राम
ग्राम पोस्ट छारा, जिला रोहतक (हरियाणा)

(३) श्री देसराम पुत्र उदमीराम
ग्राम पोस्ट भापरोदा, जिला रोहतक (हरियाणा)

(४) श्रीमती आमवती पत्नी श्री करता
ग्राम पोस्ट बापोली, जिला पानीपत (हरियाणा)

(५) श्री शानीराम पुत्र श्री फूलसिंह
ग्राम पोस्ट छाता कलां, जिला सोनीपत (हरियाणा)

(६) श्री मथाराम पुत्र श्री कन्हैया
ग्राम पोस्ट भापरोदा, जिला रोहतक

(७) श्री ईश्वर पुत्र श्री अमर सिंह
ग्राम पोस्ट छारा, जिला रोहतक (हरियाणा)

(८) श्री मातूराम पुत्र श्री रामशरण
ग्राम पोस्ट भापरोदा, जिला रोहतक (हरियाणा)

(९) श्री हरिश्चन्द्र पुत्र श्री कन्हैयालाल
पंजाबी मोहल्ला अम्बाला कैंट (हरियाणा)

(१०) श्री गीतानन्द पुत्र श्री बाडराम
ग्राम पोस्ट किठाना जिला जिन्द (हरियाणा)

(११) श्रीमती तेजो देवी पत्नी स्व० श्री रामस्वरूप
ग्राम पोस्ट मिलकपुर जिला हिसार (हरियाणा)

(१२) श्री प० रामचन्द्र पुत्र श्री बिहारी लाल
मीनोआश्रम मीना बाजार मादपुर (देवघर बिहार)

(१३) श्री चरणसिंह पुत्र श्री बख्तावरसिंह
ग्राम धूमूपट्टी गाव कीरक कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

(१४) श्रीमती सुनहरी देवी पत्नी श्री शानीराम
ग्राम पो० कासन्दा जिला सोनीपत (हरियाणा)

(१५) श्रीमती खजानी देवी पत्नी श्री सुरजभान
ग्राम पोस्ट भापरोदा जिला रोहतक (हरियाणा)

(१६) श्री रिसालसिंह पुत्र श्री सुरजनसिंह
ग्राम पोस्ट भापरोदा जिला रोहतक (हरियाणा)

(१७) श्री बागेराम पुत्र श्री रामसिंह
ग्राम पोस्ट पाकसमा जिला रोहतक (हरियाणा)

(१८) श्री हनवन्त सिंह पुत्र श्री दीवराम
ग्राम पोस्ट बालन्द जिला रोहतक (हरियाणा)

(१९) श्री वेदानन्द पुत्र श्री राजाराम
ग्राम पोस्ट गुरुकुल झज्झर जिला रोहतक (हरियाणा)

(२०) श्री प्रेमदत्त स्वरूप पुत्र श्री महेन्द्र दत्त
निवासी सेठ गली आगरा ३ (उ० प्र०)

(२१) श्री ब्रिजलाल पुत्र श्री गजाराम
मैसज जयप्रकाश सत्यदेव आइरन मर्चेन्ट कैथल जिला कुरुक्षेत्र (हरि०)

(२२) श्री हीरासिंह पुत्र श्री रैवतिया राम
ग्राम गुरियाखेडा तहसील व जिला सिरसा (हरियाणा)

(२३) श्री बलवन्त सिंह पुत्र श्री भोमराज
ग्राम पोस्ट नीलोटी तहसील बहादुर गढ जिला रोहतक (हरियाणा)

(२४) श्री प्रह्लाद सिंह पुरोहित पुत्र श्री भैरो सिंह
ग्राम पो० खिवरड जिला रतलाम (मध्य प्रदेश)

(२५) श्री हारदे पुत्र श्री केसरी
ग्राम पोस्ट भापरोदा जिला रोहतक (हरियाणा)

(२६) श्री मुखीराम पुत्र श्री भोलासिंह
ग्राम पो० बालन्द जिला रोहतक (हरियाणा)

(२७) श्री जगदीश मित्र पुत्र श्री नन्दाराम
मकान न० १३९८ माडल टाउन रोहतक (हरियाणा)

(२८) श्रीमती आशादेवी पत्नी श्री आगार
ग्राम पोस्ट सुताना तहसील पानीपत जिला करनाल (हरियाणा)

(२९) श्री अमरसिंह पुत्र श्री लाल जी
ग्राम पोस्ट मैनी सुरजन जिला रोहतक (हरियाणा)

(३०) श्रीमती परमेश्वरी देवी पत्नी श्री उदयराम
ग्राम पो० गुरिया खेडा जिला सिरसा (हरियाणा)

(३१) डा० स्वरूपसिंह पुत्र श्री रामदास
ग्राम पो० बलियाना, जिला रोहतक (हरियाणा)

(३२) श्री छोटाराम पुत्र श्री रामजीलाल
ग्राम पोस्ट कालखा तहसील पानीपत जिला करनाल (हरियाणा)

(३३) श्री चन्दन नम्बरदार पुत्र श्री रामजीलाल
ग्राम पोस्ट कालखा, तहसील पानीपत जिला करनाल (हरियाणा)

बहन-बेटियों को जलने नहीं देंगे

(पृष्ठ १ का शेष)

पाखण्डो व अन्धविश्वासो से सघर्ष करना है।

सुप्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार एव भाषा के सम्पादक डा० वेदप्रताप वैदिक ने कहा आयसमाज एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है इसे हमे एक सकल्प दिवस के रूपमे मनाना चाहिए। हिन्दी के समर्थन मैं एक देशव्यापी आन्दोलन की आवश्यकता पर वैदिक जो ने जोर दिया।

डा० वैदिक ने आर्यसमाज के सर्वोच्च सगठन सावदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दवोध सरस्वती की महान् सेवाओ व सफल नेतृत्व की सराहना करते हुए सभी आर्य भाई-बहनो से अपील की कि वे देशहित मे आर्यसमाज को और प्रभावी व सुदृढ बनावे।

सासद व पूव राज्यमन्त्री श्री डी०पी० यादव ने कहा आज देश महर्षि के बनाए मार्ग पर चलकर ही सकटो से उभर सकता है। श्रीमती डा० सरोज दीक्षा विद्यालकार ने कहा – महर्षि दयानन्द के नारी जाति पर बहुत उपकार हैं परन्तु अभी बहुत कार्य करना वाकी है। हमे कुप्रथाओ को मिटाना है।

दक्षिण अफ्रीका से पधारे श्री सन्तकुमारसिह ने महर्षि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। श्री स्वामी विद्यानन्द जी आचार्य विशुद्धानन्द जी स्वामी अग्निवेश जी ने भी महर्षि को श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत की।

अध्यक्ष पद से डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी ने वैदिक साहित्य के प्रकाशन, प्रचार व प्रसार को अत्यावश्यक बताया।

आर्य केन्द्रीय सभा महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने दिल्ली प्रशासन से मांग की कि वह हिन्दुओं के महान पर्व शिवरात्रि पर सार्वजनिक अवकाश घोषित करें।

सम्पादकीय

आर्यसमाज का कर्तव्य भार

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके आर्यों के ऊपर कर्तव्यों का जो भार सौंपा है वह असीम है। उन्होंने नियम बनाया है—

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।

उद्देश्य के पूर्ति के लिए समाज मानव समाज के एक उपेक्षित व प्रताड़ित वर्ग नारी जाति के कल्याण के लिए अपने जन्मकाल से ही न केवल जागरुक रहा है। नारी जाति के उत्थान व विकास के लिए उसने रचनात्मक रूप से शिक्षा संस्थाओं की स्थापना कर महान नारी जाति के गौरव को बढ़ाया है। महर्षि दयानन्द ने बंगाल के राजा राममोहन राय के स्वरों में स्वर मिलाकर सती प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई और कन्याओं के अधिकारों के संरक्षण के लिए अनेक प्रकार के शिक्षण तन्त्रों का निर्माण किया।

देश के कुछ क्षेत्र तथा कथित सनातन धर्म के धर्माचार्यों द्वारा अभी तक घोर अंधकार में बनाए रखने के कुचक्रों के केन्द्र बने हुए हैं यही कारण है कि दिवराला (सीकर) राजस्थान में गत दिनों रूपकुंवर नामक १८ वर्षीय विधवा को जीवित चिता में जला दिया गया। सारे देश ने इस बर्बर काण्ड की भर्त्सना की है। परन्तु नामधारी शंकराचार्य निरंजन देव तीर्थ ने इस काण्ड की न केवल सराहना की हैं अपितु इसे वेद सम्मत बताया है।

शंकराचार्य निरंजन देव तीर्थ की ज्ञान की सीमा तो तभी समाप्त हो गई जब उन्होंने प्रभु वाणी को भी लांछित करने का साहस कर लिया। आर्य समाज द्वारा उन्हें शास्त्रार्थो के चेलेंज पर चेलेंज दिए जा रहे हैं परन्तु वे उत्तर देने का साहस नहीं जुटा पा रहे हैं। वास्तव में सती पूजा के नाम पर राजस्थान वासी मारवाड़ी व्यापारियों की अंध श्रद्धा व एक सुनिश्चित व्यापार योजना का निहित स्वार्थ ही कारण है परन्तु सामान्य हिन्दू सनातनी जनता के कल्याण के इस घोर विरोधी दल को क्या हिन्दू समाज सहन करने को तैयार है। शंकराचार्य के भ्रम पर तो वेद का नाम लेने वाली नारी जाति के कान में गर्म किया हुआ सीसा डालने की व्यवस्था स्थापित कर दी गई थी। क्या इस जागृत काल में कोई विवेकशील व्यक्ति शकराचार्य की इस घोर घृणित शिक्षा को स्वीकार करने को तैयार है।

राजस्थान अभी शिक्षा के दृष्टिकोण से उतना विकसित नही हो पाया है। आर्य समाज का कर्तव्य है कि वह राजस्थान की अशिक्षित व अन्ध-विश्वासी प्रजा के इन मानवता विरोधी कुसस्कारो को दूर करने के लिए सतत प्रयत्न करें।

महर्षि के हृदय में राजस्थान के प्रति अत्यन्त श्रद्धा थी वे राजस्थान के विकास के लिए तत्कालीन राजा महाराजाओं से सम्पर्क साध रहे थे कि निहित स्वार्थों के कारण उनका स्वप्न साकार नही हो पाया और राजस्थान ही उनकी निर्वाण स्थली बन गया। राजस्थान भारत का हृदय देश है महर्षि की परोपकारिणी सभा का मुख्यालय भी राजस्थान मे है। वे राजस्थान की रूढ़ियों के विरुद्ध जो कार्य करना चाहते थे आज हमारा कर्तव्य है कि हम उस कर्तव्य भार को अपने कंधों पर उठावे व राजस्थान के ग्राम-ग्राम मे आर्य समाज का दिव्य संदेश प्रचारित व प्रसारित करें जिससे फिर कभी किसी रूपकुंवर के जीवित जलाने का अवसर ही उत्पन्न न हो सके। यह सरकारी व कानून व व्यवस्था का ही नही। जनता के हृदय परिवर्तन के बिना इस समस्या का समाधान सम्भव नही।

निश्चय ही आर्य समाज के स्वरों मे स्वर मिलाकर जनता की सेवा करने वाली संस्थाऐं भी समाज में बन रही है परन्तु उनका दिशा निर्देश तो आर्य समाज ही दे सकता है। आर्यसमाज की शिरोमणि सस्था सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वा० आनन्दबोध सरस्वती की आत्मा इस विधवा दहन से कितनी उद्वेलित हुई है यह उनके नित्य प्रति समाचार पत्रो मे प्रकाशित होने वाले वक्तव्यों से स्पष्ट ही मुखरित हो रहा है। आर्य समाजें व अन्य जनकल्याण कारी संस्थाऐं अपने कर्तव्यों का पालन करें। नारी जाति मातृ सत्ता है जिस जाति की मातृ सत्ता पीड़ित हो उसका उद्धार कैसे सम्भव है।

महान नारी जाति के गौरव को सुरक्षित रखने के लिए उसमें वास्तविक शिक्षा व सुधार की परमावश्यकता है। हिन्दू जाति के कर्णधार अपना कर्तव्य पहचानें।

जान बचाने के लिए भूसे के कोठे में जा छिपी रूपकंवर को घसीट कर चिता में झोंका गया

बम्बई २० अक्तूबर रूपकुंवर को जब यह पता चला कि उसे 'सती' करने की तैयारियां हो रही हैं तो वह भागकर भूसे के एक कोठे में जा छिपी।

हाल में दिवराला के दौरे पर गई बम्बई पत्रकार यूनियन के एक अध्ययन दल को वहां यह बात बताई गई। दिवराला के एक कांग्रेस (इ) कार्यकर्ता ने इस दल को बताया कि रूपकंवर को इस कोठे से घसीट कर बाहर लाया गया और पति की चिता पर बिठाकर जला दिया गया। इस दल ने दिवराला के लोगों पुलिस, महिला संगठनो तथा सरकारी अधिकारियों से बातचीत की। दल में यूनियन की महिला तथा मीडिया समिति के तीन सदस्य थे। दल ने प्रत्यक्षदर्शियों के बयानों से यह भी पता लगाया है कि रूपकंवर के स्वेच्छा से सती होने की बात सही नहीं है।

इस मामले की जांच कर रहे सी०आई०डी० के अधिकारी एम० एम० महर्षि ने कहा कि डाक्टर अभी तक यह तय नही कर पाये हैं कि रूपकंवर के पति मालसिंह की मृत्यु किस वजह से हुई। पुलिस ने इस अध्ययन दल को बताया कि यह भी हो सकता है कि मालसिंह के पारिवारिक चिकित्सक डा० मगनसिंह ने रूपकंवर को नशीले इंजेक्शन दिए हो। वह इस मामले में महत्वपूर्ण सुराग दे सकता है, लेकिन वह अभी तक फरार है। पुलिस का कहना है कि रूपकंवर अपने ४४० ग्राम सोना दहेज में लाई थी। इसके अलावा ३०,००० रुपये उसके नाम बैंक में जमा थे। रंगीन टी०वी० सैट, कुकिंग रेंज तथा रेफ्रिजरेटर भी वह दहेज में लाई थी। राजपूत नियमों के अनुसार यदि सती के कोई सन्तान न हो और उसके पति की मृत्यु हो जाए तो वह यह सामान वापस मायके ले जा सकती है। पुलिस ने पत्रकार दल को बताया कि यह तथ्य इस मामले में महत्वपूर्ण हो सकता है।

राजस्थान के मुख्यमन्त्री हरिदेव जोशी ने इस तरह का कोई बयान देने से इन्कार किया कि रूपकंवर स्वेच्छा से सती हुई थी। श्री जोशी ने इस टीम को बताया कि 'अखिल भारतीय कांग्रेस (इ) समिति के महासचिव नरेशचन्द्र चतुर्वेदी ने दरअसल मुझसे ऐसा कहलवा लिया। एक सरकारी प्रवक्ता के अनुसार इस घटना के सुर्खियों में आ जाने की तीन वजहें हैं, प्रचार माध्यमों द्वारा इस मामले को व्यापक कवरेज देना, भूतपूर्व वित्तमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह द्वारा इस मसले पर राजपूतों को एकजुट करने को इच्छा तथा न्यायपालिका का निर्णय।

अध्ययन दल के अनुसार सती प्रथा का मूल वजह राजपूत समाज में महिलाओं की स्थिति है। आजादी के बाद से वहां ३८ महिलायें सती हो चुकी हैं। एक राजपूत स्त्री के लिए उसके पति की मौत के साथ उसकी भी जिन्दगी खत्म हो जाती है। उसे फर्श पर सोना पड़ता है। मांस वह खा नहीं सकती। रंगीन कपड़े वह पहन नहीं सकती, किसी तीज त्यौहार, शादी ब्याह में वह शामिल नहीं हो सकती तथा पति के मर जाने के बाद परिवार के पुरुष सदस्यों की बुरी नजरें भी उसे झेलनी पड़ती है। टीम ने सीकर जिला मुख्यालय में ग्रामीण महिलाओं की एक सभा में भी हिस्सा लिया, जिसमें महिलाओं ने कहा कि पति की मृत्यु के बाद उसकी चिता के साथ जल मरने की उनकी कोई इच्छा नही है।

टीम ने यह भी पाया कि श्री ओमप्रकाश (भाजपा), जयसिंह (लोकदल), ठाकुर ओंकारसिंह (सेवानिवृत्त आई०ए०एस० अधिकारी) नरेन्द्रसिंह राजावत (संयोजक धर्म रक्षा समिति) तथा कल्याणसिंह कालवी (अध्यक्ष प्रदेश जनता पार्टी) जैसे शीर्ष राजपूत नेता सभी यह मानते थे कि सरकार तथा उच्च एजेंसियों को इस मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। (पंजाब केसरी २१-१०-८७ से साभार)

देश को शिक्षित बनाने में डी०ए०वी० संस्थाओं की विशेष भूमिका

१६ अक्तूबर १९८७

उक्त शब्द लोकसभा सदस्य श्री रघुनन्दन लाल भाटिया ने डी०ए०वी० माडल स्कूल, शालीमार बाग, दिल्ली के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर अपने भाषण में कहे। उन्होंने विस्तार से बताया कि स्वतन्त्रता के ४० वर्ष बीत जाने पर भी सरकार अपने साधनों से केवल ३५ प्रतिशत देशवासियों को ही साक्षर बना पाई है। वह कितना भी प्रयत्न करे, उसके सीमित साधनों को देखते हुए ऐसा नहीं लगता कि सरकार अपने भरोसे पर देश में शिक्षा का पूरा विस्तार कर सकेगी। इस कमी को पूरा करने में देश की सार्वजनिक संस्थाओं की विशेष भूमिका है। इस क्षेत्र में पिछले १०० वर्षों में डी०ए०वी० संस्थाओं ने जो शानदार और निस्वार्थ भाव से कार्य किया है उसको देखते हुए मुझे पूरी आशा है कि आगामी वर्षों के लिए डी०ए०वी० प्रबन्धकर्तृ समिति ने शिक्षा के क्षेत्र में विस्तार का जो कार्यक्रम बनाया है वह अवश्य पूरा होगा।

२—समारोह की अध्यक्षता डी०ए०वी० कालिज प्रबन्धकर्तृ समिति के प्रधान प्रो० वेदव्यास ने की। इस अवसर पर पंजाब केसरी के प्रबन्ध निदेशक श्री अश्विनी कुमार जी भी उपस्थित थे। इन दोनों महानुभावों का डी०ए०वी० प्रबन्धकर्तृ समिति की ओर से उसके महासचिव श्री जी० पी० चोपडा, संगठन सचिव श्री दरबारीलाल, कुमारी विद्यावती, श्री रामनाथ सहगल, प्रिंसिपल सन्तोष तनेजा आदि ने मालार्पण द्वारा स्वागत किया। स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती आदर्श कोहली ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। श्री अश्विनी कुमार जी ने अपने कर कमलों द्वारा पुरस्कार वितरण किया।

३—इस अवसर का सबसे अधिक आकर्षण स्कूल के बच्चों द्वारा स्तुन "वन्दना" तथा नृत्य नाटिका "मानव किस ओर ?" थे। यह नृत्य नाटिका इतनी भव्य और आकर्षक थी कि भरे हुए पंडाल से सभी श्रोता और दर्शक मन्त्र-मुग्ध होकर सुनते और देखते रहे और निरन्तर करतल ध्वनि द्वारा पंडाल को गुंजायमान बनाए रखा। इस नृत्य नाटिका में महाप्रलय के बाद पृथ्वी के उद्भव, उस पर वृक्षों और वनस्पतियों की उत्पत्ति, मानव की उत्पत्ति और उसके विभिन्न चरणों में प्रगति का सफल प्रदर्शन किया गया। इसमें यह भी बताया गया कि किस प्रकार मानव विज्ञान के द्वारा अत्याधिक उन्नति करते हुए अब अपने आपको उसके सामने बेबस महसूस कर रहा है।

महर्षि दयानन्द स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी आदि महामानवों के उपदेशों से प्रभावित होकर अब मानव ने शान्ति की ओर अग्रसर होने के लिए किस प्रकार मार्ग निकाला है, यह भी नृत्य नाटिका में दिखाया गया था। दर्शक बैठे हुए बराबर यह भी नृत्य नाटिका में दिखाया गया था। दर्शक बैठे हुए बराबर यह मांग कर रहे थे कि इस नृत्य नाटिका का फिर किसी अवसर पर प्रदर्शन किया जाए।

दरबारीलाल संगठन सचिव
डी०ए०वी० कालिज प्रबन्धकर्तृ समिति,
चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली।

मानवता की भावना से ओत-प्रोत हिन्दू हृदय व चौ० खलीकुज्जमा

—प्रस्तुति श्री ब्रह्मदत्त स्नातक—

संयुक्त प्रान्त की मुस्लिम लीग के प्रभावशाली अध्यक्ष चौ० खलीकुज्जमा सात वर्षों तक लखनऊ म्युनिस्पैलिटी के प्रधान रहे। प्रारम्भ में वे राष्ट्रवादी व कांग्रेसी थे परन्तु मुहम्मदअली जिन्ना की भांति वे भी मुस्लिम लीग कैम्प में चले गए।

चौ० खलीकुज्जमा देश के विभाजन के पश्चात् भारतीय संविधान परिषद के सदस्य निर्वाचित हुए और उस प्रक्रिया में उन्होंने भारतीय संविधान के प्रति दृढ़ निष्ठा की शपथ भी ली। राजनीति के पण्डितों को यह देखकर तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ कि पाकिस्तान की विचारधारा को जन्म देने वाले मुस्लिम लीगी नेता खलीकुज्जमां अपने परिवार के साथ चुपचाप पाकिस्तान खिसक गए। उनके पीछे-पीछे अब्दुर्रहमान लहरी भी पाकिस्तान चले गए। हाल ही में चौधरी साहब की आत्मकथा प्रकाशित हुई है जिसमें उन्होंने राजनैतिक विरोधियों व कट्टर हिन्दूत्ववादी तथा वर्षों यू०पी० आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री रहने वाले पं० रासबिहारी तिवारी के जीवन के अन्तिम क्षणों का उल्लेख किया है।

वे लिखते हैं कि मेरे राजनीतिक प्रतिद्वन्दी (जिनके नाम से मुस्लिम झण्डे कांपते थे) उनके क्षयरोग से ग्रस्त हो जाने पर अन्तिम क्षणों में चौ० खलीकुज्जमां उनको हस्पताल देखने को गए उस समय वहां पर श्री रासबिहारी जी के पुत्र स्व० पं० भृगुदत्त तिवारी वहां मौजूद थे। तिवारी जी ने अपने पुत्र से कहा कि बेटा मैं तो अब दुनिया से जा रहा हूं और आगे से तुम खलीकुज्जमां को मेरे स्थान पर मानना। और तुम इनके चरण स्पर्श करो। पुत्र ने वैसा ही किया। अपनी आत्मकथा में चौधरी साहब हिन्दू के इस विशाल हृदय की सराहना करते हुए लिखते हैं कि उस दिन से मेरा मन धार्मिक कट्टरता से उखड़ गया।

स्व० भृगुदत्त तिवारी और उनके देहान्त के पश्चात् उनके पौत्र श्री मनमोहन तिवारी वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री चले आ रहे है व हिन्दुत्व की गौरवशाली परम्परा का निर्वाह कर रहे है।

दो मुसलमान कन्याओं ने हिन्दूधर्म अपनाया

दोनों ने इस्लाम को मानवता विरोधी बताया

कानपुर। आर्यसमाज गोविन्दनगर में आर्य नेता श्री देवीदास आर्य की प्रेरणा से २ मुसलमान लड़कियों ने हिन्दू धर्म की दीक्षा लेकर अपनी पसन्द के २ हिन्दू युवकों से विवाह किया। इनमें एक २५ साला जहां आरा एम०ए० तक शिक्षित व आल इण्डिया रेडियो की उद्घोषक है उसने श्री रत्नाकर भारती एम०ए० से विवाह किया। अपने वक्तव्य में उसने कहा मुझे हिन्दू धर्म की यह बात पसन्द है कि हिन्दू पति जीवनभर साथ निभाने का वचन देता है जब कि इस्लाम में तीन बार तलाक कहने पर स्त्री सदा के लिए भाररूप हो जाती है।

दूसरी लड़की २२ वर्षीय सन्नो बेगम ने श्री राजीव को माला पहनाते हुए कहा कि हिन्दू मुसलमानों की भांति ४ विवाह न करके एक विवाह करता है। श्री देवीदास ने दोनों कन्याओं को आशीर्वाद दिया। सभी हिन्दू जनता ने उनका स्वागत किया।

महर्षि दयानन्द महिमा

—सावित्री देवी शर्मा, एम. ए. वेदाचार्य—
१०, केलाबाग, सावित्री सदन, बरेली, उ० प्र०

टकारेति सदासमृद्धि बहुले मोवीप्रदेशस्थिते ।
ग्रामे शास्त्रपुराणपरठ कुशले सुब्राह्मणै सेविते ।।
श्रीकृष्णाख्य द्विजगृह स्वजनुषा सो वै समालोकयत् ।
मामाहुर्यि मनस्विने मुनिदयानन्दाय तस्मै नम ।।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व पटल पर छाई हुई विविध-विकृतियों के सुधारक के रूप मे इस शस्यश्यामला भारत भूमि पर अवतीर्ण हुए । अलकनन्दा के तट पर खडे होकर उस ऋषि ने अपने ज्योतिर्मय नयनो से जिधर देखा उधर अन्धकारमयी तमिस्रा ही दीखी । आध्यात्मिक, शास्त्रीय सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक एव आर्थिक सभी दुखद समस्याये किसी मन्त्रार्थ द्रष्टा दार्शनिक का समाधान माग रही थी । महर्षि ने वस्तुत सत्यार्थ प्रकाश को वेदचतुष्टय को ही अपना परम आधार मानकर कुशल वैद्य केसमान सभी रोगो का निदान एव सफल चिकित्सा प्रारम्भ की जिनका क्रमश विवरण निम्नाकित है—

(१) आध्यात्मिक—आध्यात्मिक क्षेत्र मे विभिन्नवादो मे दार्शनिक उलझे हुए थे । अद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद जैसे विषयो के साम्प्रदायिक खण्डन-मण्डन मे ही अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर रहे थे । ऋषिवर ने ईश्वर-जीव प्रकृति रूप मे तीन अनादि सत्ताओ की तर्कसगत समीक्षा प्रस्तुत कर त्रैतवाद का उद्घोष किया है । सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा जगत्पति है । अनन्त जीवो के कल्याणार्थ उसने इस दृश्यमान जगत की रचना की । ससार की अनेक भाषाओं के कारण उस प्रभु के नाम भिन्न-भिन्न हो सकते हैं किन्तु सकल विश्व की नियामक शक्ति एक परमेश्वर ही हैं । हम सभी आत्मायें उसकी अमृत सन्तानें हैं । प्रकृति हमारी जगदम्बा माता तथा परमात्मा सबका पिता है । अत साम्प्रदायिक सघर्षों का कोई औचित्य प्रतीत नही होता है ।

(२) शास्त्रीय—'ऋषि दयानन्द के अवतरण से पूर्व भारतीय दर्शनो में अन्तर्निहित एकरूपता का न समझ कर दार्शनिक इन्हे अलग अलग साम्प्रदायिक ग्रन्थ समझते थे । ऋषि ने इन षडदर्शनो को वेदार्थ ज्ञान का आधार बताकर विद्वानो के समक्ष इनका समन्वितरूप प्रस्तुत किया । अवरुद्ध मार्ग खुला । पौरस्त्य एव पाश्चात्य विद्वानो ने इस दृष्टि से दर्शनो के स्वाध्याय से वैदिक ज्ञान के गाम्भीर्य को समझाने की चेष्टा की ।

"सूत्र ग्रन्थो के आधार पर चलने वाली पुरातन वेदभाष्य प्रणाली को नई दिशा देते हुए महर्षि ने यथार्थ बोध के लिए यास्क प्रणीत नैरुक्त प्रक्रिया का अवलम्बन किया जिससे वेद के विलक्षण प्रतीको द्वारा दिग्भ्रान्त विचारको की अन्तर्दृष्टि खुली । विदेशियो द्वारा गडरियो के गीत कहे जाने वाले वेद आज सार्वभौम विश्वसस्कृति के प्राण स्वरूप प्रतीत हुए । ऋषि दयानन्द की उद्बोधन शैली का यह लोकोत्तर प्रभाव था । साथ ही ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त आर्ष परम्परा से परिपुष्ट भाष्य का आदर्श भी ऋग्वेद यजुर्वेद भाष्यों मे प्रकट किया ।

(३) सामाजिक—अनेक सामाजिक कुरीतियो के प्रचलन से देश की जगत स्थिति बिगड चुकी थी । वर्ग सघर्ष विकराल रूप से मानवता को जर्जर बना रहा था । वर्णाश्रम व्यवस्था के मौलिक चिन्तन से इन सभी "बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अस्पृश्यता नारी जाति मे अशिक्षा, समस्याओ का तात्त्विक समाधान प्रकाशित किया । आज की अशिक्षता नारी मे उन्हे गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, भारती, विद्योत्तमा, सीता, सावित्री जैसी विदुषी देवियो के दर्शन हुए । उनकी दृष्टि मे सम्मानित मातृशक्ति ही विश्व मे स्वर्गीय साम्राज्य की सस्थापिका है । परिणामत आज भारत के कोने कोने मे कन्या गुरुकुलो की स्थापना हुई । असख्य देविया वेद शास्त्रो मे पारगत सारस्वत वैभव की अधिकारिणी बनी । यह था ऋषि कृपा का प्रसाद ।

(४) राजनैतिक—विदेशी शासको के पारतन्त्र्य से मुक्त स्वतन्त्र भारत की कल्पना को साकार करने के लिए ऋषि ने सर्वप्रथम "स्वराज्य" शब्द का उद्घोष किया । प्रजा पर पुत्रवत् कृपा दृष्टि रखने वाला, निष्पक्ष, न्यायप्रिय होने पर भी विदेशी राजा स्वदेश के लिए कभी हितकारी नही हो सकता । अपने देश मे अपना ही राजा हो । सत्यार्थ प्रकाश के छटे समुल्लास में वेदानुमोदित राजनैतिक व्यवस्था एव वैदिक सविधान पर प्रकाश डाला है ।

(५) आर्थिक—अपने देश की आर्थिक विपन्नता को देखकर महर्षि का वीतराग हृदय भी द्रवित हो उठा । देश को पूर्ववत् समृद्धिशाली बनाने के लिए 'गोकरुणानिधि' नामक पुस्तक लिखकर ससार के अर्थ-शास्त्रियो को चुनौती दी । गोरक्षा द्वारा कृषि उत्पादन मे अभिवृद्धि होने से ही दरिद्रता का समूलनाश सम्भव है । इस प्रयोजन के लिए अनेक स्थानों पर गोकृष्यादिरक्षणी सभाओ का भी निर्माण किया ।

(६) धार्मिक—इस धराधाम पर महर्षि के शुभागमन से पूर्व धर्म शब्द मत, सम्प्रदाय या मजहब का पर्यायवाची समझा जाता था । अत हमारा धर्म धर्मग्रन्थ, धर्मस्थान, धार्मिक महापुरुष सभी बटे हुए थे । धर्म के नाम से वैदिक धर्म का डका बजाया । इस सदाचारमय धर्मचक्र के प्रवर्तनार्थ विश्व के श्रेष्ठ पुरुषो को एकता के सूत्र मे आबद्ध होने के लिए सादर आवाहन किया ।

(७) पारिवारिक—पारिवारिक सगठन को विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्राथमिक विद्यालय मानकर गुरुवर दयानन्द ने आश्रमो मे सर्वश्रेष्ठ गृहस्थाश्रम के लिए सुनियोजित आचार सहिता बनाई । फलस्वरूप इन्ही सभ्य परिवारो में प्रशिक्षित कितने ही देशभक्तो 'लाला लाजपत राय, महात्मा हसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, सरदार भगतसिह, रामप्रसाद बिस्मिल इत्यादि, ने देशहित मे अपना तन मन धन समर्पित किया ।

अत हम कह सकते हैं कि सत्य सनातन वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द ने आजीवन देश की विकट परिस्थितियो मे सघर्षरत रहकर सार्वजनिक कल्याण मार्ग का प्रदर्शन किया । आधुनिक स्वतन्त्र भारत के कर्णधार यदि ध्यानपूर्वक उनके आदर्श सिद्धातो का आचरण करें तो स्वदेश में व्याप्त अराजकता एव भ्रष्टाचारो का निवारण अवश्यम्भावी है । योगी अरविन्द ने कहा था—यदि ससार के महापुरुषो को पर्वत की चोटिया माना जाये तो देव दयानन्द उन सब मे सर्वोच्च शिखर माने जायेंगे ।

पापार्णैरत्याहतोपि सुमना प्रादात् शुभ सौरभम् ।
साक्षान्मातृवसुन्धरेव मनस सद्भावमावेद्यत् ।।
कष्टैयेनं परोपकारव्रतिना सज्जीवन मर्पितम् ।
श्रद्धेयाय महर्षये गुरुदयानन्दाय तस्मै नम. ।।

खालिस्तान तो शेखचिल्ली की उड़ान है

—पृथ्वी आज़ाद --

सिख इन दिनों बड़े ही नाजुक दौर से गुजर रहे हैं। सिखों का इस समय ऐसा कोई नेता नहीं है जिस पर पूरे सिख-समुदाय को यकीन हो। सिखों की लीडरी अकालियों के हाथों में रही है लेकिन इसे क्या कहा जाए कि इस नाजुक घड़ी में खुद अकालियों का ही ऐसा कोई लीडर नहीं है जो पूरे सिख पंथ की तरफ से बात कर सके। पिछले ६६ वर्ष के सिख इतिहास में यह नौबत पहली बार आई है। लगातार सुलग रहे पंजाब में आज न तो कोई बाबा खड़क सिंह है, न मास्टर तारा सिंह और न ही सन्त फतेह सिंह। एक वक्त था जब सिर्फ अकाली दल हुआ करता था और आज कितने अकाली दल बन चुके हैं? इसका जवाब कोई आम सिख भी आसानी से नहीं दे सकता है। और भी कई बातें हैं जो पहली बार हो रही हैं। जैसे, अकाल तख्त का कोई जत्थेदार नहीं है। कार्यवाहक जत्थेदार, प्रो० दर्शनसिंह अमृतसर छोड़ कर अपने गांव जिरकपुर जाकर हालांकि यह दावा कर रहे हैं कि वह कार्यवाहक जत्थेदार हैं लेकिन हकीकत यह भी है कि प्रो० दर्शनसिंह हाल ही में एक दिन चुपचाप अमृतसर पहुँचे तो हरमंदर साहिब (स्वर्ण मन्दिर) में दाखिल होने तक की जुरंत नहीं कर पाए और बाहर ही प्रेस कांफ्रेंस करके चले गये। इतना ही नहीं, पांच-मेंबरी (सदस्यीय) पंथक कमेटी ने तो एक बयान जारी करके प्रो० दर्शनसिंह पर इतने आरोप ठोक दिये हैं कि उन्हें याद रख सकना मुश्किल है।

गुरुद्वारों का काम-काज शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की जिम्मेदारी माना जाता रहा है। मगर यह कमेटी आज है कहां? यह भी पहली बार हुआ है कि गुरुद्वारों का प्रबन्ध शिरोमणि कमेटी के हाथों में नहीं है। शिरोमणि कमेटी के प्रधान जेल में हैं। शिरोमणि कमेटी के सेक्रेटरी सरदार अविनाश सिंह कई महीने से लापता है। अब तो यह मान लिया गया है कि दहशतपसंदों ने उनका काम तमाम करके उन बेचारों को कहीं ठिकाने लगा दिया होगा। ऐसा कोई माई का लाल दिखाई नहीं दे रहा जो छाती ठोक कर कह सके कि वह शिरोमणि कमेटी की बागडोर संभालने के लिए तैयार है। यह भी पहली बार हो रहा है।

अमृतसर में दरबार साहिब के दर्शन के लिए जाने वालों की भीड़ कम, बहुत कम हो गई है। जिस गुरु के दरबार में सिखों, मोनों (हिन्दू) और दूसरी जातियों के लोगों का भी तांता लगा रहता था, उस पवित्र दरबार में इन दिनों जाने की हिम्मत कर रहे लोगों को उंगलियों पर गिना जा सकता है। यह नौबत भी लेखक की याददाश्त में तो पहली बार ही आई है। हालत यह है कि आदत से मजबूर यह लेखक हर महीने पंजाब जाते वक्त जिस किसी यार दोस्त से भी साथ चलने को कहता है, वही हाथ जोड़ देता है। इतना ही नहीं, लेखक के शुभचिंतक लेखक को हर बार समझाते भी हैं कि इन दिनों पंजाब जाना अक्लमंदी का काम नहीं है।

यानि हालात अच्छे नहीं है। सिख पंथ खतरे में हैं जिस कारण पंजाब में रह रहा हर शख्स खतरे में रह रहा है और पंजाब से बाहर, मुल्क के दूसरे हिस्सों में रह रहे सिख भी परेशान हैं।

सिखों के दसवें और आखिरी गुरु श्रीगुरु गोबिंद साहिब जी ने आनन्दपुर में जब खालसा सजाया तो उसके बाद कहा, "आज्ञा भई अकाली की, तभी चलायो पंथ।" (अर्थात् खालसा पंथ वाहेगुरु यानि परमात्मा की आज्ञा पर शुरू किया जा रहा है। गुरु जी ने कभी, किसी जगह यह नहीं कहा कि वह सिख पंथ नहीं बल्कि 'सिख कौम' बना रहे हैं। खास-खास असूलों पर चलने वालों को ही उन्होंने "खालसा" का नाम दिया और खालसा पंथ चलाया। इसलिए कहा भी—

सकल जगत में खालसा पंथ गाजे
मेरा धर्म हिन्दू सकल द्वंद्व भाजे।

गुरु जी ने हिन्दू धर्म का पतन कभी नहीं चाहा बल्कि इस धर्म की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए पहले तो अपने पिता, गुरु तेग बहादुर (नौवें गुरु) को शहीदी देने के लिए प्रेरित किया (उस समय जब गोबिंद सिंह बालक मात्र थे) और फिर बड़े होकर हिन्दू धर्म पर अपने चारों लाल (बेटे) एक-एक करके कुर्बान कर दिये।

खुद को उस महान गुरु के चेले कहने वाले लोग आज अगर यह कहने लगें कि "सिख एक अलग कौम है" तो इसे उनकी, हमारी और देश की भी बदकिस्मती ही कहा जा सकता है क्योंकि कुछेक गुमराह लोग "कौम" का अर्थ अलग राष्ट्र से लगा रहे है। आठ अक्तूबर के अखबार इसका सबूत देते हैं जिनमें पंथक कमेटी द्वारा 'खालिस्तान परिषद' का गठन सम्बन्धी एलान छपा है। पंथक कमेटी के एक प्रवक्ता ने अमृतसर में प्रेस कांफ्रेंस में तत्सम्बन्धी घोषणा करते हुए बड़े घमण्ड के साथ यह दावा भी किया कि अमरीका और कनाडा में सक्रिय उग्रवादी संगठनों को भी इस "खालिस्तान परिषद्" में नुमाइंदगी दी गई है जबकि इंग्लैंड के सिखों से तालमेल का काम भी शुरू किया जा रहा है।

"कौम"—उर्दू का शब्द है। हिन्दी में आम तौर पर इसके लिए "राष्ट्र" शब्द इस्तेमाल होता है जब कि इस शब्द के बदले में अंग्रेजी में दो शब्द मिलते हैं—"नेशन" तथा "कम्यूनिटी"। स्वर्गीय सन्त हरचन्दसिंह लोंगोवाल ने "सिख कौम" शब्द इस्तेमाल हालांकि कई बार किया लेकिन वह यह भी कहते रहे कि उनकी मांग अलग राष्ट्र की नहीं है। प्रो० दर्शनसिंह ने भी ने भी इस शब्द का जिक्र किया है लेकिन बार-बार यह स्पष्ट भी किया है कि वह अलग देश नहीं बल्कि देश में ही ऐसा क्षेत्र चाहते हैं जहां "खालसा जी का बोलबाला" हो। आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव में भी यही बात कही गई है।

दहशतपसन्दों का शब्दकोष ही अलग है। उनकी जिद है कि "सिख कौम" का अर्थ एक अलग राष्ट्र है जिसे वे "खालिस्तान" का नाम दे रहे हैं। ध्यान से सुने तो यह आवाज उन मुस्लिम लीगियों की आवाज से मिलती-जुलती लगती है जो मुसलमानों के लिए भारत से अलग एक राष्ट्र के लिए ज्यादा ही उतावले हो उठे थे। और उन्होंने एक पृथक् राष्ट्र बना भी लिया। मक्कार अंग्रेज हम नासमझ भारतीयों की झोली में आजादी की खैरात डाल कर जाते-जाते के नया देश, पाकिस्तान बना गए। बहुत खून-खराबा हुआ। हिन्दू कटे, मुसलमान मरे। मजहब के नाम पर गला फाड़-फाड़ कर लगाए गए नारों की गर्मी में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान जैसे राज्यों के वे मुसलमान पाकिस्तान चले गए जिनकी जड़ें इस देश में थीं। इस्लामी देश में जाने की खुशी में फूल कर कुप्पा हो रहे थे। मुस्लिम लीग द्वारा भड़का दिए गए वे लोग इस्लाम की तलाश में घर-बार छोड़ कर पाकिस्तान चले गए लेकिन हुआ बुरा हुआ। सिन्ध, सीमाप्रान्त और पश्चिमी पंजाब में पहले से बसे लोगों ने

भारत से गए मुसलमानों को बर्दाश्त नहीं किया। उन्हें बाहर से आए लोग कहा। दबे हुए। अब भी हो रहे हैं। आपस में एक-दूसरे पर गोलियां दागी जा रही हैं। पहले बंगलादेश ने जोर मारा और पाकिस्तान से अलग हो गया। अब सिन्ध, बलोचिस्तान और सीमा प्रांत भी अलग होना चाहते हैं।

मुद्दा यह कि एक अलग सिख कौम के दावेदार आज जो हालात पैदा कर रहे? उसका अन्त वही है जो भारत से पाकिस्तान गए मुसलमानों का हुआ है। दूर के ढोल सुहाने जरूर लगा करते हैं लेकिन पास जाओ तो कान फटने लगते हैं। अलग राष्ट्र संभव नहीं है। एक देश में दो राष्ट्रों की कल्पना करना भी नासमझी है। खालिस्तान शेखचिल्ली की उड़ान ही है। वैसे भी, सिखों का बहुमत इसके खिलाफ है। आज पंजाब में दहशतपसन्दों की गोलियों के शिकार सिख भी हो रहे हैं और हिन्दू भी। औरतों की हत्याएं भी हुई हैं। होशियारपुर जिले के राडिया गांव में ६ अक्तूबर को आतंकवादियों ने जिन छह लोगों को गोलियों से भून डाला, उनमें एक औरत भी थी और एक सरदार जी भी। खालिस्तान के हिमायती पंजाब से बाहर रह रहे सिखों से ही एक बार पूछ लें तो उनकी आंखों पर चढ़ा पर्दा खुद-ब-खुद हट जाएगा।

लेख की शुरूआत इस वाक्य से हुई है कि सिखों पर इन दिनों संकट की घड़ी है। यह बात पढ़ने में भले ही अजीब लगे लेकिन है बिलकुल सच। पंजाब में सिखों और मोनों की गिनती में ज्यादा फर्क अभी भी नहीं आया है। जालन्धर जैसे शहर तो ऐसे शहर हैं जहां मोने गिनती में कम तो कतई नहीं कहे जा सकते हैं। पंजाब में दोनों वर्ग के लोगों में रोटी-बेटी का रिश्ता अब भी कायम है। होता यह है कि आतंकवादी की किसी भी वारदात के बाद पंजाब में सिख की नजरें मोने के सामने फिर नीची हो जाती हैं क्योंकि मरे भले ही सिख हो या मोने, मारने वाले देखने-भालने में तो सिख ही दिखाई देते हैं। 'देखने-भालने" में इस कारण कि सरहद पार बैठा हमारा पड़ोसी देश आतंकवादियों को खुलेआम शह दे रहा है। गुरदासपुर जिले के बटाला नगर के करीब मसानिया गांव में पिछले दिनों दहशतपसन्दों ने दुकानदारों और दूसरे लोगों को शाम के वक्त चुन चुन कर मारा। परन्तु पुलिस को इसकी खबर अगली सुबह ही मिल सकी क्योंकि डरे हुए गांववाले इस हत्याकांड के बाद रात भर घरों में ही दुबके रहे। लेकिन एक बात ऐसी हो गई कि दहशतपसन्दों से पाकिस्तान की सांठ गांठ की पोल एक बार फिर खुल गई। पाकिस्तान टेलीविजन ने वारदात वाली रात में मसानिया हत्याकांड की खबर दुनिया भर को दे दी। अब केन्द्र सरकार यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि शाम की जिस वारदात की खबर सम्बन्धित जिला पुलिस को अब अगली सुबह ही लग सकी तो पाकिस्तान के हुक्मरानों को यह खबर रात में हो कैसे मिल गई?

दहशतपसन्दों के लिए गुरु की वाणी पढ़ना और उसका अर्थ समझना बहुत जरूरी हो गया है। उन्हें यह समझ में तो आए कि गुरु गोबिन्दसिंह जी किस धर्म की रक्षा चाहते थे? उसी धर्म की जिसका आधार वेद है। वह कहते हैं—"ब्रह्मा चार ही वेद बनाए।"

सिख संकट में हैं। पंजाब में भी और पंजाब से बाहर भी। करें तो क्या करें? मुट्ठी भर गुमराह लोगों ने जिन्दगी दुश्वार कर दी है। आम सिख अपनी नजर में आज खुद ही शर्मिन्दा है। यकीन न हो तो किसी महफिल, किसी बैठक में मौजूद किसी समझदार सिख से इस मामले पर बात करने की कोशिश कर देखिए। सरदार जी या तो खामोश रहेंगे या फिर एक-आध बात कह कर दूसरी तरफ चले जाएंगे। कहें तो क्या कहें? और किससे कहें? ●

उठो ! आर्य वीरो !

धरा है प्रकम्पित, गगन रो रहा है,
भरत भूमि का क्यों तरुण सो रहा है,
मिटी जा रही है सुसंस्कृति हमारी,
सहम सी गई है स्वयं भूमि प्यारी।
मनुजता डरी सी यहां छटपटाती,
दनुजता विहंसती, उसे है डराती।
बिलखती है सीता, बिलखता है मनुजत्व,
निडर बन बढ़ा जा रहा आज दनुजत्व।
पौरुष हमारा पराजित हुआ है,
सवर्ण जनहित का चित अब हुआ है।
अन्याय बढ़ता अनय है निरन्तर,
हुआ भ्रष्ट धन जनका है आचरण।
लज्जा है लुटती यहां नारियों की,
नहीं शील संकोच शुचिता है बाकी।
कहां सो रहे हैं यहां राम वंशज
बढ़े जा रहे हैं असुरों के अग्रज।
उठो! आर्य वीरो! तुम्हें अब शपथ है,
चुनौती है आयी, खुला आज पथ है।
तुम्हें राम बनना, है हनुमान बनना,
दनुजता से बढ़कर तुम्हें आज लड़ना।
उठो! मातृभू को चलो सांत्वना दो,
नरक तुल्य धरती को स्वर्णिम बनादो।
दनुजता के कदमों को, छोटा करो तुम,
दलित दीन के कष्ट बढ़कर हरो तुम।
दयानन्द के स्वप्न साकार करना,
तुम्हें आर्य बनकर, प्रशस्त पथ है करना।

—राधेश्याम आर्य, सुलतानपुर।

क्या वेद के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय हैं ?

—पण्डिता डा० प्रज्ञा देवी, वाराणसी-१०—

(गतांक से आगे)

(३) प्रस्तुत ग्रन्थ के "राज्य शिल्पों और उद्योग धन्धों को प्रोत्साहित करें"[1] इस प्रकरण में ग्रन्थ लेखक कहते हैं कि—ऋभु पृथिवी लोक में रहने वाले सामान्य मनुष्य ही हैं,यह लिखते हुए वे जो मन्त्र उदाहरण रूप मे प्रस्तुत करते हैं वे सब ऐसे हैं जिनमें नृभ्य:, नर:; नृभि:, मर्त्यास शब्द आया है और बस यही हेतु ऋभुओं को मनुष्य बताने में आचार्य जी का है। क्या कहूं आचार्य जी द्वारा दिये गये प्रथम उदाहरण—आ अनीवामन्तरिक्षस्य नृभ्य:" (ऋ० १।११०।६) में ही जहां नृभ्य: शब्द है वहां अन्तरिक्षस्य शब्द भी तो ध्यान देने योग्य है। इसके अतिरिक्त अन्य मन्त्रों मे सौधन्वना एवं सौधन्व-नेभि. शब्द आया है, धन्वन् अन्तरिक्ष नामों से निघण्टु मे है तदनुसार सुधन्वन् अन्तरिक्ष के पुत्र अन्तरिक्ष मे होने वाले ये सौधन्वन् ऋभु पृथिवी लोक में नर नही कहे जा सकते। अन्य मन्त्र (ऋ० १। ११०।८) मातर = अन्तरिक्षम्[2] आदि में भी आधिदैविक अर्थ स्पष्ट है फिर नर: शब्द देखकर इन मन्त्रों का अर्थ पृथिवीस्थ नर ही लगाना ठीक नही। 'नर: शब्द समग्र संस्कृत साहित्य में मनुष्यों का वाचक है[3] आचार्य जी की यह स्थापना निर्मूल है। स्कन्द स्वामी ने (ऋ० १।८६।८) एव (ऋ० १।६५।८) के अपने वेदभाष्य में नर: का "मनुष्याकारा: मरुत:" अर्थ किया है तथा मुद्गल ने "वृष्ट्यादेर्नेतारो मरुत:" किया है अत. अन्तरिक्षस्य नृभ्य का अन्तरिक्ष के नरों ऋभुओं के लिए अर्थ करना उचित है। वस्तुत: आचार्य जी को समग्र संस्कृत साहित्य की अपेक्षा "समग्र वैदिक वाङ्मय ऐसी स्थापना करनी चाहिये थी। इस प्रकरण में आचार्य जी ने 'मर्तास: सन्त:' शब्द की खूब पिसाई की है और उससे मरण धर्मा मनुष्य ऐसा अर्थ निकालने की चेष्टा की है। वे इस विषय सायणाचार्य के 'मनुष्या: सन्त:' इस कथन को अत्यन्त ही प्रमाण कोटि में रख रहे। यहा विचार करने की बात है कि इस मन्त्र में भी सूरचक्षस: भव: का विशेषण ऐसा है जो पुकार-पुकार कर कह रहा है कि ऋभु सूर्य की चमक वाले हैं सवत्सर से सम्बद्ध होते हैं वे (मर्तास: सन्त:) क्षण में नष्ट होने वाले होते हुए भी (अमृतत्वम्) अविनाशित्व = देवपन को प्राप्त हुए। इस सूक्त के तृतीय मन्त्र मे भी—"तत्सविता वो अमृतत्वमासुवत्" अर्थात् उस सविता ने हे ऋभुओ। तुममे अमृतत्व उत्पन्न किया ऐसा कहा है।

निरुक्त ११।१६ मे मर्तास: सन्त: की व्याख्या स्कन्द स्वामी ने—"मरणधर्माण: क्षणविनाशिन: ·····सौधन्वना धनमन्तरिक्ष कोमन च धन्व सुधन्व तस्मिन् धन्वनि भवास्ते ऋभवो [illegible] रश्मिविशेषा: ······कथं ज्ञायते अमृतत्वमानशुरिति···[illegible] कर्मभि: पुनरपि वृष्टिं कुर्वन्त्येवेत्यर्थ: 'ऐसा अर्थ किया है, क्योंकि पृथिवी में स्थित जल जो मर्तास: सन्त: थे को सूर्य किरणो ने ऊपर खींच लिया अत: वे पृथिवीस्थ जल मरण-धर्मा थे और सुधन्वा में स्थित कर दिया गया तो वे अविनाशित्व को प्राप्त हो गये यही यहां मन्त्र का भाव है। निरुक्त की व्युत्पत्ति 'उरु भान्तीति वा ऋतेन भान्तीतिवा ऋतेन भवन्तीति वा'[4] भी यह नही कहती कि मन्त्रगत ऋभु शब्द का केवल शिल्पी ही अर्थ किया जाये, उपर्युक्त विशेषणों को देख-कर आदित्य किरणें आदि अर्थ न किया जाये। यहां विस्तार भय से ऋभु के तीनो भाई जो ऋभु, विभ्वा, वाज के नाम से निरुक्त में भी कहे हैं की व्याख्या नही दी जा रही है।

इस ग्रन्थ के "राज्य और न्याय विभाग"[5] में भी आचार्य जी लिखते हैं कि—"सायणादि ग्रावा का अर्थ पत्थर करते हैं···यह इन भाष्यकारों की भूल है···क्योंकि ग्रावा शब्द गॄ शब्दे धातु से बनता है अत: इस का अर्थ उप-देश करने वाला ही होगा···।' वस्तुत: किसी भी आग्रह में आकर ग्रावा शब्द का अर्थ पत्थर न मानना समस्त श्रौत कर्म एवं संस्कृत वाङ्मय की भी अव-हेलना करना है। आचार्य जी ने ग्रावा शब्द के साथ भी वेदमन्त्र ऋ० १०-७६,६-८ मे नर: शब्द देखकर पूर्ववत् ही ग्रावा का अर्थ उपदेश कर्ता मनुष्य किया है। समग्र संस्कृत साहित्य में ग्रावा शब्द पत्थर का वाचक नही है ऐसा दावा भी आचार्य जी यहां नही कर सकते क्योंकि ग्रावा शब्द संस्कृत कोशों मे बार-बार पत्थर अर्थ में आता है। निघण्टु में ग्रावा शब्द मेघ अर्थ में आया है याज्ञिक क्रियाओं मे अधिषवण फलक के ऊपर जिस पत्थर को रखकर सोम ओषधि को कूटा जाता है वह पत्थर ग्रावा ही कहलाता है क्योंकि सोमयोग की याज्ञिक क्रियाओं द्वारा मेघ अन्तरिक्षस्थ सोम (जल कण) मेघों के विद्युत्-गर्जन आदि क्रियाओं को = वृष्टि विज्ञान को समझाया जा रहा होता है अत: अन्तरिक्षस्थ मेघ का प्रतिनिधि रूप ग्रावा पत्थर यहां सोम कूटने के लिए रखा जाता है। सोम कूटने का खट् खट् शब्द मानो अन्तरिक्षस्थ बादल का गरजना है। ये सब आधिदैविक प्रक्रिया पृथिवी लोक में याग द्वारा समझायी जा रही होती है अत: ग्रावा शब्द का अर्थ विशेषण बल से अधिराष्ट्र परक कुछ भी किया जाये किन्तु इसका पत्थर अर्थ न मानना बहुत बड़े सत्य से मुख मोड़ना होगा।

मुझे दु:ख है कि श्री आचार्य जी जो ग्रन्थ के अनेकों स्थलों पर महर्षि दयानन्द को श्रद्धानत स्मरण ही नही करते अपितु उनके यौगिकवाद को भी स्वीकारते हैं वहीं इन स्थलो में दयानन्द या यास्क के मन्तव्यों को क्यों लांघ जाते हैं ? आचार्य जी स्वय ग्रन्थ के 'विषय प्रवेश" में पृ० ७ पर लिखते हैं कि—'वेद मे रूढ़िवाद का स्थान नहीं होना चाहिए···'। पुन: रूढ़िवाद स्वीकार लेना आश्चर्य जनक है। वे पृ० १६७ भाग २ पर लिखते हैं—'दया-नन्द के अनुयायी वेद मे यौगिक अर्थ वहां करते हैं जहां वैसा किये बिना वेद निरर्थक और विज्ञान विरुद्ध बात कहता हुआ प्रतीत हो। जहां रूढ़ि अर्थ मान कर भी वेद शिक्षाप्रद वैज्ञानिक अर्थ देता हो वहा हम यौगिकवाद का सहारा नही लेते हैं।'[6] भला बताइये। आचार्य जी के कथनानुसार क्या माना जावे वेद का यौगिकवाद या रूढ़िवाद। वैसे वेद में रूढ़ मानना आर्ष प्रणाली की जान मसल देना है।

ये कुछ तथ्य स्थालीपुलाक न्याय से मैंने अपने इस लेख में सनम्र भाव से सुधी विचार हेतु उद्धृत किये हैं। जिस प्रकार केवल याज्ञिक प्रक्रिया में किये गये सायणादि के अर्थ हम इसीलिए अपूर्ण मानते हैं कि उनमें अन्य प्रक्रियाओं में अर्थ नहीं है उसी प्रकार अन्यत्र भी समझना होगा। केवल आध्यात्मिक, आधिभौतिक या आधिदैविक किसी एक प्रक्रिया में किये गये वेदार्थ के लिए यह नही कहा जा सकता कि 'अमुक मन्त्र का मात्र इतना ही अर्थ है।' हमें सोचना होगा और विशेष रूप से आधिदैविक प्रक्रिया के सम्बन्ध में सोचना होगा कि किस प्रकार हम वेद मन्त्रों द्वारा इस प्रक्रिया को उजागर कर सकें, यह बहुत बड़ा कार्य है और इसके लिए आधार हमारा प्राचीन वाङ्मय तथा स्वयं वेद भी है।

(१) देखें—पृ० १४२ भाग २
(२) द्र० मातान्तरिक्षं निर्मीयन्तेऽस्मिन् भूतानि (निरु० २।८१)
(३) देखें—पृ० १४२ भाग २
(४) द्र० निरु० ११।१३ तथा आदित्य रश्मयोऽप्यृभव उच्यन्ते ॥
(५) देखें पृ० ५५६ भाग १
(६) ग्रन्थ के तीसरे भाग पृ० में भी यही बात पुन: दोहराई गई है।

आर्य समाज के समर्पित व्यक्तित्व स्व० श्री अमर स्वामी जी

लेखक—डा. योगेन्द्र कुमार जम्मू

पूज्य अमर स्वामी जी भौतिक शरीर से हमारे बीच में नहीं हैं, परन्तु यश रूपी शरीर से अब भी विद्यमान हैं और भी रहेंगे। उनका जन्म अरनिया गांव जिला बुलन्द शहर उ. प्र. में हुआ। अरनियां गांव में पहले कबीर पन्थ प्रचलित था। वहां पर जब आर्य समाज का प्रवेश हुआ तो सम्पूर्ण गांव आर्य समाजी बन गया। आज अरनिया गांव के उपदेशक, विद्वान सन्यासी, भारतवर्ष में सक्रिय हैं।

कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर एवं अमर स्वामी जी इसी गांव की देन हैं। वर्तमान समय में इसी गाव के श्री नेत्रपाल शास्त्री, श्रीनगर में, मैं (डा० योगेन्द्र कुमार) जम्मू में। श्री सोमवीर शास्त्री पठानकोट मे पुरोहित श्री नरेन्द्र कुमार शास्त्री अशोक विहार दिल्ली में पुरोहित। श्री स्वा० सुकर्मानन्द जी उ. प्र. प्रतिनिधि सभा में महोपदेशक श्री जगतवीरसिंह स्नेही उ. प्र. सभा में श्री शिवराजसिंह शास्त्री जी सार्वदेशिक सभा में आर्य समाज के प्रचार में लगे हुए हैं दो रत्न दिवगत हो गये हैं जिनकी याद आर्य जगत में भुलाई नहीं जा सकती कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर और अमर स्वामी जी। दोनों का व्यक्तित्व अनुपम था।

अमर स्वामी जी एवं स्वामी सुकर्मानन्द जी (मेरे पिता जी) दोनों मित्र रहे दोनों ने आर्य समाज अरनिया की उन्नति की। बच्चों को सन्ध्या हवन सिखलाना और स्वयं हररोज प्रातः साय सन्ध्या हवन करना दोनों का कर्तव्य था। अमर स्वामी जी प्रतिदिन स्वयं बच्चों को इकट्ठा करके सन्ध्या कराते थे जिससे हम बच्चों ने सन्ध्या सीखी। कभी वे राजाभोज का दरबार लगा कर हम बच्चों को दरबारी कवि बनाकर श्लोक पढ़वाते थे तो कभी प्रवचन देना सिखाते थे। मेरा यज्ञोपवीत सस्कार और विवाह सस्कार उन्होने ही कराया था। उनके आशीर्वाद से और प्रयत्न से गांव के बच्चों में वे सस्कार पड़े कि अरनियां गांव के बच्चे जब गलियों मे खेलते थे तो रेत का हवन कुण्ड बना कर उसमें स्वाहा बोलकर रेत की आहुति देते रहते थे। यह है संस्कारों की बात। इन संस्कारों से ही अरनियां मे इतने रत्न निकले।

अमर स्वामी जी की स्मरण शक्ति इतनी तेज रही कि अन्तिम समय तक सभी प्रमाण कण्ठस्थ रहे। जिस व्यक्ति को एक बार देख लेते थे तो उसका नाम उन्हें हमेशा स्मरण रहता था। उन्होने स्वाध्याय इतना किया था कि उनके पुस्तकालय मे अनेकों पुस्तकें थी। सबके भीतर विशेष स्थानों पर निशान लगे मिलते थे।

संगीत, नृत्यकला, औषधि विज्ञान, कविता, वक्तृत्व लेखनी कला, शास्त्रार्थ शक्ति, सब कुछ उनमें था। वे सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी थे। जुलाई के मध्य मे मैं उनके गाजियाबाद आश्रम में मिलने गया। मुझे उन्होंने पहचाना और कहा कि योगेन्द्र मुझे मृत्यु से भय तो नही लग रहा है किन्तु वेदव्यास जी को एकपत्र लिखा कि मेरा इलाज चण्डीगढ़ मे करावें। मुझे पता चला कि अब सभी प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध होगे क्यों कि गले का आप्रेशन नही हो सकेगा। इसके बाद जब मैं बम्बई के एवं महाराष्ट्र के वेद सप्ताहों में भाग लेकर जम्मू पहुँचा तो पता चला कि वे दिवगत हो गये। दुर्भाग्यवश मैं उनके अन्तिम सस्कार मे सम्मिलित नही हो सका।

आर्य समाज के प्रत्येक आन्दोलनो मे वे जेल गये प्रत्येक शताब्दी मे उपस्थित रहे। राजपूत परिवार मे जन्म लेने के कारण उनमें वीरता, स्वाभिमान और सहानुभूति के गुण स्वाभाविक थे। मैं उन्हें ताऊ जी तथा गुरु जी दोनों शब्दों से बुलाया करता था। मुझे उनसे काफी सस्कार मिले। उनके शिष्य सम्पूर्ण भारत में कही न कही मिल जाते हैं।

आर्य जगत में इस प्रकार के सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी विद्वान सन्यासी उनके बराबर मिलना कठिन है। वे बड़े ही मिलनसार, नम्र, सरल और मधुर स्वभाव के व्यक्ति थे आज उनकी याद ही हमारे पास रह गई है।

हमारे बाबा बलवन्तसिंह जी महर्षि दयानन्द के समय के आर्य समाजी अमर स्वामी जी से शास्त्रीय प्रमाण लेकर अपनी जेब में हर समय रखते थे और विधर्मियों से बहस करते थे।

अन्तिम समय में अमर स्वामी जी ने ४०० गज भूमि आर्य समाज अरनियां को दान में दी और वहां आर्य समाज बनाने का संकल्प किया परन्तु उनका सकल्प अधूरा रह गया है आर्य जगत के सहयोग से यदि वह आर्य-समाज मन्दिर बन जाता है तो वही उनका स्मारक अरनियां गांव में बन सकता है।

अमर स्वामी तुम्हें प्रणाम

वैदिक पथ के महापथिक तुम- थे, वेदों के अनुयायी।
वेदो के पावन प्रचार में- तुमने सारी शक्ति लगायी॥
जीवन रहा तुम्हारा पावन–सत्य-शिवम-सुन्दर ललाम।
'अमर स्वामी जी' तुम्हें प्रणाम॥

ऋषिवर दयानन्द के सच्चे, तुम थे अनुगामी अनुचर।
रहे जूझते अनय-असत्य से-निर्भर होकर जीवन भर॥
तेरी सिंह गर्जना युग-युग, गूंजेगी हर नगर-ग्राम।
'अमर स्वामी जी' तुम्हें प्रणाम॥

शास्त्रार्थों का तुमने स्वामी, नव अभियान चलाया।
महारथी बन शास्त्रार्थ के प्रतिपक्षी को सदा हराया॥
'निर्णय के तट पर' हे स्वामिन्, डटे रहे तुम निडर निकाम।
'अमर स्वामी जी' तुम्हें प्रणाम॥

—राधेश्याम आर्य

महात्मा अमर स्वामी जी को श्रद्धांजलि

—श्री आर्य गुरुकुल ऐसा कटरा इटावा द्वारा शोक प्रस्ताव पारित कर स्वामी जी को श्रद्धांजलि दी गई।

—आर्य समाज मुगलसराय वाराणसी द्वारा शोक प्रस्ताव पारित कर स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

—आर्य समाज व महिला आर्य समाज रेल्वे रोड अम्बाला नगर द्वारा स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि प्रस्ताव पारित किया गया।

—आर्य समाज बालको नगर (कोरबा) म० प्र० द्वारा प्रस्ताव पारित कर स्वामी जी को श्रद्धांजलि दी गई।

—यज्ञ प्रचार समिति धामपुर (बिजनौर) द्वारा प्रस्ताव पारित कर स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

—आर्य समाज शास्त्री नगर मेरठ द्वारा प्रस्ताव पारित कर स्वामी जी को श्रद्धाजलि दी गई।

—आर्य समाज वाराणसी छावनी द्वारा प्रस्ताव पारित कर स्वामी जी को श्रद्धांजलि दी गई।

—आर्य समाज गुमानपुरा कोटा द्वारा शोक प्रस्ताव पारित कर स्वामी जी को श्रद्धांजलि दी गई।

—आर्य समाज गणप्रसाद रोड लखनऊ द्वारा स्वामी जी के देहावसान पर शोक प्रस्ताव पारित कर श्रद्धांजलि भेंट की गई।

—केन्द्रीय आर्य युवक परिषद लुधियाना की ओर से स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक प्रस्ताव पास हुआ।

—आर्य समाज बागपत मेरठ मे शोक प्रस्ताव द्वारा महात्मा अमर स्वामीजी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

—आर्य समाज गांधी कालोनी मुजफ्फर नगर ने शोक प्रस्ताव द्वारा स्वामी जी को श्रद्धाजलि प्रदान की।

—आर्य समाज शोलापुर द्वारा एक शोक प्रस्ताव में स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

—सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर द्वारा आयोजित सभा से अनेक सुप्रसिद्ध विद्वानों महात्माओ ने स्वामी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। आश्रम के प्रधान स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने सब महात्माओं को स्वामी जी के चरण चिन्हों पर चलने की प्रेरणा की।

आर्य जगत् के समाचार

आर्यसमाज अमरोहा द्वारा

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को थैली

अमरोहा। स्थानीय आर्यसमाज के ८६वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को ११ अक्तूबर को पधारने पर उन्हें सूखा पीडित राहत कोष" में १८५७) की थैली भेंट की श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य द्वारा आपका स्वागत किया गया व अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

अपने भाषण में आपने देश की वर्तमान परिस्थिति का विशद वर्णन करते हुए देश की समस्याओं पर आर्यसमाज के कर्त्तव्य का बोध कराया। वार्षिकोत्सव में पं० इन्द्रराज जी स्वामी ओमानन्द जी, उत्तमचन्द शरर एवं पं० सत्यप्रिय शास्त्री जी के भी सामयिक व सिद्धान्तों पर भाषण हुए।

आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री सम्मानित

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित निर्वाणोत्सव के अवसर पर आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान आचार्य पं० विशुद्धानन्द शास्त्री का अभिनन्दन किया गया। स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती द्वारा अपने पूज्य पिता जी की स्मृति में स्थापित स्थिरनिधि में से आचार्य जी को ११००) की पुरस्कार राशि एवं प्रशस्ति पत्र व चांदी की तश्तरी भेंट की गई।

आचार्य श्री ने स्वामी करपात्री जी के बहुचर्चित ग्रन्थ वेदार्थ पारिजात का उच्चस्तरीय समाधान कारक उत्तर वेदार्थ कल्पद्रुम के रूप में दिया है जिसकी सारे विद्वत्समाज में बहुत ही प्रशंसा हुई है। आर्यसमाज के गौरवशाली आचार्य के रूप सर्वत्र आपका सम्मान किया गया है।

कश्मीर मुस्लिम फ्रंट के वरिष्ठ नेता गिरफ्तार

श्रीनगर १९ अक्तूबर। मुस्लिम यूनाइटेड फ्रंट के चार वरिष्ठ नेताओं को आज सवेरे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। ये लोग सचिवालय के सामने प्रदर्शन कर रहे थे।

वे गिरफ्तार नेता हैं फ्रंट के कार्यवाहक संयोजक काजी निसार, स्वायतत्ता सार्थक पीपुल्स कान्फ्रेंस के अध्यक्ष अब्दुल गनी लोने, सैयद अली शाह जीलानी और गुलाम अहमद सुमजी। जीलानी और सुमजी विधायक हैं।

पुलिस ने बताया कि इन नेताओं को आतंकवाद विरोधी कानून के तहत गिरफ्तार किया गया। बाद में उन्हें कोठीबाग थाने ले जाया गया। पुलिस ने दो फ्रंट समर्थकों को भी हिरासत में ले लिया है और उनके बैनर जब्त कर लिए हैं।

मुस्लिम फ्रंट ने पार्टी के कार्यकर्ताओं पर पुलिस ज्यादतियों के खिलाफ तथा तकनीकी संस्थाओं और सरकरी नौकरियों में मुसलमानों की नियुक्तियों की मांग को लेकर आज से आन्दोलन छेड़ने की घोषणा की थी।

न्यूजीलैंड ने फीजी के विरुद्ध प्रतिबन्ध लगाए

वेलिंगटन १९ अक्तूबर। न्यूजीलैंड ने आज फीजी के विरुद्ध एक मुश्त प्रतिबन्ध की घोषणाकी। यह प्रतिबन्ध उसने फीजी की स्थिति में परिवर्तन कर उसे गणराज्य बना दिए जाने के कारण लगायाहै।

एक सरकारी घोषणा में कहा गया है कि न्यूजीलैंड फीजी की आर्थिक सहायता तथा सैनिक सहयोग तुरन्त बन्द कर रहा है।

घोषणा में यह भी कहा गया है कि फीजी से चीनी खरीदने के समझौते का नवीनीकरण नहीं कराया जाएगा।

पानीपत में डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के भवन का उद्घाटन

१ अक्तूबर, १९८७ को पानीपत थर्मल पावर प्लांट में हरियाणा राज्य के विद्युत एवं सिंचाई मन्त्री माननीय वीरेन्द्रसिंह जी ने अपने कर-कमलों द्वारा डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के भवन का उद्घाटन किया और डी० ए० वी० प्रबन्धकर्तृ समिति द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने इस संस्था को अपने सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन भी दिया। अध्यक्षता हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के अध्यक्ष श्री आ० एस० वर्मा, आरई०ए० एस० ने की।

समिति के संगठन सचिव श्री दरबारीलाल ने बताया कि अब डी.ए.वी. संस्थाएं भारत की परिधि तक सीमित न रह विदेशों में भी खुल रही हैं। हाल ही में मारीशस में इस समिति ने तीन कालेजों का संचालन अपने हाथ में लिया है और निकट भविष्य में न्यूयार्क में समिति द्वारा कालेजों की स्थापना की जाएगी।

—विशेष कार्य अधिकार
डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति,
नई दिल्ली-११००५५

आर्य समाज माडल टाउन पानीपत का २०वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज माडल टाउन पानीपत का वार्षिकोत्सव ३०, ३१ अक्टूबर व १ नवम्बर १९८७ को बड़ी धू-धाम से मनाया जा रहाहै। जिसमें आर्यजगत् के उच्च कोटि के सन्यासी, विद्वान, संगीताचार्य पधार रहे हैं। इस अवसर पर स्त्री सम्मेलन, राष्ट्र भाषा सम्मेलन भी होंगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्व०आनन्दबोध जी सरस्वती श्री के०नरेन्द्रजी सम्पादक प्रताप, वीर अर्जुन दिल्ली, श्री रामप्रसाद जी वेदालंकार, गुरुकुल कांगड़ी तथा मानाचार्य जी सरस्वती लोवा कलां के पधारने की आशा है।

—भगवत भिक्षु वानप्रस्थी, मन्त्री

महात्मा नारायण स्वामी का ४०वां पुण्यस्मृति महोत्सव

बरेली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान व आर्यसमाज के महान पथप्रदर्शक महात्मा नारायण स्वामी जी का ४०वां पुण्यस्मृति महोत्सव १३ से १६ अक्टूबर तक मोती पार्क बरोली में समारोहपूर्वक मनाया गया सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, भूतपूर्व सांसद प० शिवकुमार शास्त्री, स्वामी जगदीश्वरानन्द जी दिल्ली, श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री श्री सत्यप्रिय शास्त्री वेदाचार्य, सावित्रीदेवी शर्मा ने भाग लिया नियमित यज्ञ सत्संग व शोभायात्रा निकाली।

राष्ट्ररक्षा के लिए युवकों का आह्वान

कोसी कलां। आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भाषण देते हुए राष्ट्ररक्षा के लिए युवकों का आह्वान किया। उन्होंने कहा देश संकट की घड़ियों में से गुजर रहा है। आर्य समाज देश की रक्षा का सजग प्रहरी है। हमें आर्य वीर व सच्चे देशभक्त पैदा करने चाहिए जो देश को संकट से उबार सके।

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक ४५] मार्गशीर्ष कृ० ३ सं० २०४४ रविवार - नवम्बर १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

नारी पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध समाज को जगाना आर्यसमाज का मिशन

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

आर्यसमाज ही महान नारी का परम उद्धारक है

—वेद प्रताप वैदिक

नई दिल्ली १ नवम्बर। सती प्रथा को धर्म के विरुद्ध बताते हुए आर्य समाज और महिला मुक्ति मोर्चा के संयुक्त मंच से आज वक्ताओं ने सती प्रथा और दहेज प्रथा के विरुद्ध गांवों की पिछड़ी और अनपढ़ महिलाओं में जागृति-अभियान की आवश्यकता पर जोर दिया। मंच से राजधानी के ३६ महिला संगठनों के सती विरोधी मोर्चे की ओर से ६ नवम्बर को बोट क्लब पर धरना देने की घोषणा की गई।

मावलंकर हाल में नारी अधिकार दिवस के संदर्भ में आयोजित सम्मेलन में सती प्रथा और नारी अत्याचार के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी जन जागरण अभियान शुरू करने का प्रस्ताव भी स्वीकार किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की।

राजस्थान के दिवराला गांव में हुए सती कांड पर तीव्र रोष व्यक्त करते हुए वक्ताओं ने कहा कि १८ वर्षीय युवती रूपकंवर की निर्मम हत्या की गई है। सती प्रथा सम्पूर्ण मानवता के माथे पर कलंक और दहेज प्रथा के खिलाफ केन्द्रीय कानून बनाने की मांग की। उनका कहना था कि दिवराला कांड से समाज सिहर उठा है।

जिस प्रस्ताव के संदर्भ में वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए, उसमें कहा गया है कि यह कटु यथार्थ है कि समाज में स्त्रियों को समान अधिकार से वंचित किया गया, उन्हें दहेज की आड़ में डायन-चंडाल बताकर उनकी हत्या, कन्या का जन्म रोकने के लिए भ्रूण हत्या और कौमार्य-परीक्षण के नाम पर महिला-जाति को लज्जित करने का सिलसिला जारी है। इतना ही नहीं, बल्कि विज्ञापनों और पोस्टरों के जरिए भी स्त्रियों को नंगा दिखाने की कुचेष्टा लगातार की जा रही है। नारी जाति को हेय बनाकर प्रस्तुत किया जा रहा है।

महिला आर्यसमाज की अध्यक्ष श्रीमती सरला मेहता ने कहा कि आज के युग में सती होने जैसा कांड रोंगटे खड़ा कर देने वाला है। यह एक कलंक है।

उन्होंने कहा कि वेद में कहीं नहीं कहा है कि पति की मृत्यु के बाद उसकी विधवा को सती कर दिया जाए। २१वीं सदी में जाते उन्नत युग और ऋषि-मुनियों की इस तपोभूमि पर राम, कृष्ण, अवतार की जननी और पुरुष की सहधर्मिणी सहयोगी कहलाने वाली नारी को निर्ममता पूर्वक जलाया जाना शर्मनाक है।

श्रीमती मेहता ने कहा कि रूपकंवर को धन के लोभ में जलाकर मार दिया गया। कारण यह है कि राजस्थान के गांवों में आज भी रीति चली आ रही है कि निःसन्तान विधवा होने पर दहेज का सारा सामान मायके वालों को लौटाना होता है और रूपकंवर अपने साथ अच्छा खासा दहेज लेकर आई थी। किसी को जिन्दा आग में झोंकना कत्ल से भी ज्यादा बड़ा अपराध है।

उन्होंने महिलाओं के चरित्र हनन वाले चित्रों को दूरदर्शन और विज्ञापनों में नहीं दिखाने का आग्रह करते हुए कहा कि रूपकंवर की चिता का धुआं सारे विश्व में फैल रहा है।

सती विरोधी मोर्चे की श्रीमती ज्योत्सना चटर्जी ने कहा कि इस कांड से लगा कि हमने महिलाओं में जागृति लाने के लिए कुछ किया ही नहीं, दरअसल हम सोते रहे। रूपकंवर के खून से हम जागे हैं। इस खून ने ही हमें जगाया है।

महिला दक्षता समिति की उपाध्यक्ष श्रीमती कैलाश रेखी ने कहा कि दहेज कुप्रथा नारी अत्याचार, नग्न-प्रदर्शन के लिए पुरुष समाज तो कसूरवार है ही, पर उससे ज्यादा कसूर शायद हम महिलाओं का है। अधिकार मांगे नहीं, लिए जाते हैं। अच्छी नीति के साथ पुरुष के सामने मुकाबले में खड़ी होइए काम करके दिखाइए फिर देखिए पुरुष समाज में आपका सम्मान कैसे नहीं होता है।

श्रीमती रेखी ने कहा कि नारी शिक्षा के अभाव के कारण ही दिवराला कांड हुआ और सबसे ज्यादा निर्लज्जता की बात तो यह रही कि रूपकुंवर के चुनरी उत्सव में कुछ राजनैतिक दलों के नेता भी शामिल हुए। इस संदर्भ में उन्होंने राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी की भूमिका की कड़ी आलोचना की।

डा० वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि स्त्री-पुरुष की गैर बराबरी सती प्रथा का मूल और प्रथा की पराकाष्ठा है। आर्य समाज ही एकमात्र ऐसा है, जिसके १६ संस्कार औरत को समान दर्जा देते हैं। उन्होंने कहा कि सामाजिक परि-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सैनानियों की स्वीकृति सूची

जिनके मामले पेंशन की स्वीकृति के लिए राज्य सरकारों को भेज दिए गए हैं।

(१) श्रीमती कमलादेवी अग्रवाल पत्नी स्व० श्री रवीन्द्र प्रसाद अग्रवाल निवासी मकान नं० १६ गोविन्दनगर (देवरिया) पो० किच्छा जिला नैनीताल (उ० प्र०)

(२) श्री अतरसिंह त्यागी पुत्र स्व० श्री गोविन्द सहाय ग्राम मुबारकपुरा पोस्ट खास बाछा खेकडा जिला मेरठ, उ० प्र०

(३ श्रीमती धर्मादेवी पत्नी श्री माधव प्रसाद, गांधीनगर उतरौला जिला गोंडा, उ० प्र०

(४) श्री रतिराम वैद्य पुत्र स्व० श्री बलवन्तसिंह ग्राम पो० फजलपुर बाया बिनौला जि० मेरठ (उ० प्र०)

(५) श्री शिवपाल शास्त्री, पुत्र स्व० श्री भगसिंह बड़वार जिला बलिया (उ० प्र०)

(६) श्री हरनामसिंह पुत्र श्री गोविन्द सिंह डी-२८ आवास विकास इन्द्रनगर इजाजत नगर बरेली (उ० उ०)

(७) श्री रामलखन पुत्र स्व० श्री गोपाल गांधीनगर उतरौला जिला गोण्डा (उ० प्र०)

(८) श्री विश्वनाथ शर्मा पुत्र स्व० श्री बद्रीप्रसाद खिरकी (पटेल नगर) उतरौला जि० गोंडा उ० प्र०

(९) श्री हाकिमसिंह पुत्र श्री लालसिंह मकान न० १४ गोपाल नगर नुमाइश गाहू सहारनपुर उ० प्र०

(१०) श्रीमती रामकली देवी पत्नी श्री बसन्तसिंह ग्राम पो० जगतपुर जिला मैनपुरी उ० प्र०

(११) श्री चन्द्रसिंह नेगी पुत्र श्री मोहनसिंह नेगी १९९ धर्मपुरा नेगीभवन देहरादून उ० प्र०

(१२) श्री चन्द्रमित्र पुत्र श्री हरिशंकर ग्राम पो० पूर्व करथूम अलीगंज बाजार सुल्तानपुर (उ० प्र०)

(१३) श्री गुलाब सिंह पुत्र श्री माधव सिंह ग्राम पो० किशनपुरी जिला पौढी गढवाल (उ० प्र०)

(१४) श्री विद्या प्रकाश गोपाल पुत्र श्री राधालाल गोपाल, गोपाल ट्रेडर्स शुगरमिल रोड मोरण्डा रोपड (पंजाब)

(१५) श्री लछमूराम पुत्र श्री तेजराम हिन्दू हाई स्कूल के सामने रामा मण्डी भटिण्डा (पंजाब)

(१६) श्री आनन्द स्वरूप पुत्र हुसमत अली, न्यू बस्ती पो० रामामण्डी भटिण्डा, पंजाब

(१७) श्री विश्वमित्र पुत्र तिलकराम मकान न० १३४ रामामण्डी भटिण्डा पंजाब।

(१८) श्री केशव देव गुप्ता पुत्र श्री रोशनलाल मकान न० १८६८ गांधीस्ट्रीट चौक आर्य समाज भटिण्डा

(१९) श्री पव्लू पुत्र श्री विन्हप्पा स्वामी, ग्राम हसम्ब तहसील उदगीर जिला लातूर (महाराष्ट्र)

(२०) श्री यशवन्त शंकर सरना सिविल बोर्ड तहसील पुसद जिला यवतमाल (महाराष्ट्र)

(२१) श्री विट्ठल पुत्र बापूराव भगवत विकवाडं पुसद जि० यवतमाल (महाराष्ट्र)

(२२) श्री दत्ताराम पुत्र बाला जी कदम टिकवाडं पुसद जिला यवतमाल (महाराष्ट्र)

(२३) श्री रघुनाथ पुत्र लखाराम वर्मा ११ भगतराम कालोनी लाल बहादुर शास्त्री मार्ग भाण्डुप बम्बई-७८

(२४) श्री रामबाबू पुत्र प्रहलाद मोमी मटकेश्वर वार्ड नरसिंह मन्दिर पुसद यवतमाल (महाराष्ट्र)

(२५) श्री कसारा पुत्र उढा कामन देवी वार्ड पुसद जिला यवतमाल (महाराष्ट्र)

(२६) श्री देवदत्त देवराज पुत्र बनवारी लाल २६८९ कूचा माईदास बाजार सीताराम दिल्ली-६

(२७) श्री ब्रह्मानन्द पुत्र चन्दनदत्त शर्मा ७७२/१ गली ११ गवानपुरा दिल्ली-५३

(२८) श्रीमती सुगनकुंवर पत्नी स्वर्गीय जगदेव सिंह वर्मा ५९ मदरामपुरा सिविल लाइन हाउसिंग कालोनी जयपुर (राजस्थान)

(२९) श्री रामकिशन पुत्र हरनाम ग्राम कूठपेट तेह कैथल जिला कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

(३०) श्री चन्द्रसेन आर्य पुत्र रोशनलाल ११/८३८ देहलीरोड सोनीपत (हरियाणा)

(३१) श्री वेदप्रकाश सागरमल जाजू पुत्र देवकरनदास गाव पोस्ट कनीना तहसील व जिला महेन्द्र गढ हरियाणा

(३२) श्री भोगालसिंह पुत्र उदमीराम ग्राम पोस्ट कुलादी जिला हिसार (हरियाणा)

(३३) श्री शिवचन्द पुत्र श्री कूडाराम ग्राम पोस्ट मिरचपुर जिला हिसार (हरियाणा)

(३४) श्री बेगराज पुत्र बल्लाराम ग्राम पोस्ट राजपुर तहसील गन्नौर जिला सोनीपत (हरियाणा)

(३५) श्री छोटू लाल यशपाल सिंह पुत्र किशन सहाय ग्राम पोस्ट लूखी जिला महेन्द्रगढ (हरियाणा)

(३६) श्री मगतराम कोचर पुत्र ठाकुरदास २८९ महेश नगर अम्बाला कैन्ट (हरियाणा)

(३७) श्रीमती सरूपीदेवी पत्नी श्री हेतराम गाव पो० भापरौदा जिला रोहतक (हरियाणा)

(३८) श्री भीमसेन पुत्र लेखराम गाव पो० लूखी जिला महिन्द्रगढ (हरि०)

(३९) श्री वासुदेव पुत्र श्री रामसिंह ग्राम पोस्ट गुमाना जि० रोहतक (हरि०)

(४०) श्री कन्हैया पुत्र खुशिया ग्राम पोस्ट भापरौदा जि० रोहतक (हरि०)

(४१) श्रीमती समित्रा कुमारी पत्नी श्री बलदेव ३१७/१२ गली न० ८ अमरगढ कालोनी कैथल (हरियाणा)

(४२) श्री रिसालसिंह हर्षसिंह पुत्र मातूराम गाव पो० किठाना जिला जींद (हरियाणा)

आर्य वीर दल एवं आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं पर असामाजिक तत्वों द्वारा हमला

कोटा। आज दिनांक ६-१०-८७ को हाडौती आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कृष्ण जी साधक की अध्यक्षता मे हुई आर्य समाज एव आर्य वीर दल कोटा के कार्यकर्ताओं की बैठक मे आज सती प्रथा विरोधी मंच के तत्वावधान मे निकाले गये मौन जुलूस मे शामिल आर्य समाज एव आर्य वीर दल के कार्यकर्ता श्री रामकृष्ण आर्य, श्री धर्मबन्धु आर्य तथा श्री वेदभूषण आर्य पर कुछ असामाजिक तत्वो द्वारा किये गये हमले की भर्त्सना करते हुए प्रस्ताव पारित कर राजस्थान सरकार एव कोटा के प्रशासन से हमलावरो को तुरन्त गिरफ्तार करके कड़ी सजा देने की माग की है।

बैठक मे यह भी कहा गया कि सती प्रथा धर्म नही बल्कि अन्धविश्वास है तथा इस प्रथा को मूल से ही समाप्त किया जाना चाहिये।

बैठक मे सरकार द्वारा सती प्रथा विरोधी अध्यादेश जारी किये जाने का स्वागत करते हुये पूर्ण समर्थन किया गया।

बैठक का सयोजन श्री ए० डी चड्ढा उपप्रधान, आर्य समाज विज्ञान नगर द्वारा किया गया। श्री चड्ढा ने आर्य समाज के कार्यकर्ताओं से शान्ती बनाये रखने की भी अपील की।

श्रीकृष्ण साधक, प्रधान
हाडौती आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कोटा

सम्पादकीय

नारी अधिकार रक्षा अभियान

दिवराला रूप कुंवर सती काण्ड ने भारत की नारी समाज की अनेक समस्याओं पर आज एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। पुरुष समाज ने स्वार्थ-वश नारी की पराधीनता व नारी जीवन की हीनता के जो जाल बुने हैं वे इससे उजागर हुए हैं। पूरी खोजबीन के बाद अब यह सच्चाई जनता के सामने आ गई है कि रूपकुंवर की हत्या मे धन लोलुपता ही प्रधान कारण है, लगभग एक लाख रुपए का दहेज हड़पने के लिए मालसिंह के परिवार ने जबरदस्ती उसे जीवित जला दिया गया जबकि वह भयभीत दशा मे भूसे के कोठे में जा छिपी थी।

नारी दहन की इस घटना ने जयपुर की महिलाओ को उद्वेलित किया और इस सच्चाई मे अब किसी को सन्देह नही रहा कि राजस्थान शासन एक चपरासी से लेकर राज्यपाल तक किंकर्तव्य विमूढ़ ही बना रहा।

पुरुष प्रधान समाज मे नारी के इस शोषण ने पुरुष समाज का नारी के प्रति बर्बर व आक्रामक रवैए ने एक बार फिर नारी जाति को झकझोर कर रख दिया है। अभी दहेज की लौमाग्नि मे जलने वाली नव वधुओं का क्रन्दन समाप्त नही हुआ। कोई कानून इस पाप के निवारण मे सफल नही हो पा रहा कि धर्म के नाम पर भोली जनता को ठगने व धर्म को कमाई का धन्धा बनाने वाले धर्माचार्य भी इस अधार्मिक कार्य में अपना समर्थन प्रदान कर रहे हैं।

सच्चाई तो यह है नारी के समानता के अधिकारो को गत १००० वर्षों से ही ऐसी चुनौती पूर्ण दुर्दशा प्राप्त हुई है। करोड़ो वर्षों का भारतीय नारी का इतिहास इतना उज्ज्वल व महान है कि उसकी तुलना किसी भी स्वर्ण युग से की जा सकती है।

यह बड़े सौभाग्य का विषय है कि आर्य समाज जैसे महान क्रान्तिकारी संगठन को इस दिशा मे मार्गदर्शन का सुअवसर प्राप्त हुआ है। सार्वदेशिक सभा के कर्मयोगी प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती की तो इस घटना ने नींद हराम कर दी है। १ नवम्बर को महिला मुक्ति मोर्चा के तत्वावधान मे आर्य महिला सभा व महिलाओ की अनेक संस्थाओ की ओर से प्रसिद्ध क्रान्तिकारी आर्य सन्यासी श्री अग्निवेश जी के नेतृत्व मे नारी के प्रति होने वाले अन्यायो व अत्याचारों के विरुद्ध शंखनाद किया गया। स्वामी आनन्दबोध जी ने इस समारोह की दिल्ली के मावलंकर हाल मे अध्यक्षता की।

वास्तव मे आज नारी का शोषण अनेक दिशाओं मे हो रहा है। पुरुष समाज की जैसे आत्मा ही सो गई है कि वह अपनी बहन बेटियो के प्रति इतना कर्तव्यहीन हो गया है।

आज देश के पिछड़े, अशिक्षित समाज मे नारी के प्रति फैली व फैलाई गई हीनत्व की भावनाओ का निवारण परमावश्यक है। हिन्दू समाज के स्वार्थी व धन लोलुप धर्माचार्य वेद शास्त्रो की मर्यादाओ को भंग करते हुए मन माने फतवे देकर नारी जाति का घोर अपमान कर रहे हैं। उन्हे अपनी जननी मातृशक्ति के प्रति भी कर्तव्य की भावना भूल गई है।

जिस देश व जाति में नारी के सम्मान व उसके अधिकारो की रक्षा नही हो सकती वह जाति व देश अपनी प्रतिष्ठा नष्ट कर देता है। आज आवश्यकता है कि हम समाज को मनु महाराज का वह शाश्वत संदेश सुनाए जिसमें उन्होंने कहा है—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

यह ३३ कोटि देवताओं का देश अपनी सभ्यता व संस्कृति की क्या रक्षा नही कर पाएगा। अब आसुरी प्रवृत्तिया सिर उठा रही है। बाजार में नारी के रूप का कुत्सित प्रदर्शन किया जा रहा है। उसके अधिकारो की तो बात कौन करे उसके अस्तित्व को ही चुनौती दी जा रही है।

आर्य समाज ने महान नारी जाति की प्रतिष्ठा व उसे समाज का महान अंग मानकर शिक्षा के क्षेत्र में जो आदर्श सेवाए की है वे आज भी अपना एक नया इतिहास निर्माण कर रही है।

हम स्वा० आनन्द बोध सरस्वती व श्री अग्निवेश जी के प्रयासो की न केवल सराहना व समर्थन करते हैं। आशा करते हैं कि अब यह आन्दोलन एक देशव्यापी रूप ग्रहण करेगा व समाज फिर अपने गत गौरव को प्राप्त करेगा।

प्रसन्नता की बात है कि आर्य महिलाऐ इस अभियान मे बड़े उत्साह से भाग ले रही हैं। हम सभी शिक्षित माताओ, बहनो को इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने का आवाहन करते हैं। ●

प्रेरक प्रसंग

एक बार स्वामी दयानन्द जी के भक्त श्री इन्द्रमन जी ने स्वामी जी से निवेदन किया—आप परस्पर नमस्ते कहने का आदेश देते है, परन्तु हमने पहले जयगोपाल शब्द चलाया था और 'परमात्मा जीते" आरम्भ कर दिया। पहले शब्दो पर ही लोगो ने बहुतेरे कटाक्ष किये थे अब यदि नया "नमस्ते" शब्द चलाया तो लोग हमारी खिल्ली उड़ाने लगेंगे। वैसे भी देख तो मेल मिलाप मे परमात्मा जीते' ऐसा कहना बहुत ही उचित है। छोटा तो बड़ को नमस्ते' करना अच्छा लगता है परन्तु पिता पुत्र को, स्वामी नौकर को और राजा अपने चपरासी को 'नमस्ते" कहे यह बात शोभा नही देती। 'स्वामी जी ने कहा—' इन्द्रमन जो! अभिमानी पुरुष बड़ा नही होता बड़ा वही जिसने अपने अहंकार को जीता! जो वास्तव मे बड़े हैं वे अपने बड़प्पन को आप प्रकट नही किया करते। हमारे पूर्वजो मे जितने भी ऋषि महर्षि और राजे महाराजे हुए हैं, उनमे मुख से अपनी बड़ाई नही बताई। "नमस्ते" का अर्थ पाव पकड़ना नही है, इसका अर्थ है, सम्मान सत्कार। सभी ऊंचे नीचे और छोटे बड़ मेल-मिलाप मे सम्मान-सत्कार के भागी हैं। सर्वत्र होता भी ऐसा ही है। अच्छा, आप ही अपने अन्त करण से से कह कि जब कोई मनुष्य अपने घर पर आता है तो उस समय आपके हृदय मे क्या भाव उत्पन्न होता है?

इन्द्रमन जी इस पर मौन साध रहे। तब स्वामी जी ने फिर कहा—' महाशय! इस बात को सभी जान जाते हैं कि जब कोई पूज्य और प्रतिष्ठित मनुष्य घर पर आता है तो उसे देख अभ्युत्थान और झुककर सम्मान देने को जा चाहता है। पुत्र से प्यार करने का भाव उत्पन्न होता है। नौकर चाकरो को अन्न-जल और आइए, बैठिये आदि शब्दो से सत्कार करने को हृदय प्रेरणा करता है। ऊपर कहे सारे भावो का प्रकाश 'नमस्ते' से तो हो जाता है परन्तु उस परमेश्वर का नाम लेना अप्रसंग है, आत्मगत भावो के विपरीत है। जो भाव भीतर हो उसी को करना शोभा देता है।

[२]

डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी पिछले दिनो अमृतसर आर्य समाज मे कई दिनो से वेदो, उपनिषदो पर कथा कर रहे थे, समाज के अधिकारी व श्रोतागण बडे ध्यान मग्न होकर सुनते थे। स्वामी जी ने यह महसूस किया कि उनके सुनने वालोमें कुछ लोग मासाहारी हैं तो अपने प्रवास के अन्तिम दिन उन्होने उसी विषय को लेना उचित समझा तथा वेदो के आधार पर अण्डे व मास के उपयोग कर कस कर प्रहार किया तथा उससे होने वाले शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक हानियो का उल्लेख किया।

कथा के बाद समाज के एक अधिकारी (जो सम्भवतया शाकाहारी न था) ने स्वामी जी से कहा, आज की कथा में मजा नही आया। स्वामी जी ने विनोद में कहा कि पिछले दिनो की कथा में आपके ग्रहण करने लायक कुछ था ही नही। आप मात्र कर्णोंरस का सेवन करते थे। आज आपको कुछ करने के लिए, कुछ त्यागने के लिए प्रेरित किया गया था ताकि पिछले दिनो की कथा के आध्यात्मिक गुणो को आप ग्रहण कर सके। आपके कथा मे मात्र शामिल होने से कोई आपके पाप कटने वाले नही। आपका आना निरर्थक है अगर आप स्वय के जीवन को वेदानुकूल न बना सको तथा आगे पाप (मास सेवन आदि) न करने का संकल्प न ले सको।

—प्रस्तोता श्री सत्यानन्द आर्य

रामलीला व इतिहास का विकृत स्वरूप

श्री विमलदेव भारद्वाज आर ६६ माडल टाउन दिल्ली

आजकल सारे देश में रामलीला का मौसम है—वर्षों से वही ढर्रा—घटिया अभिनय-निम्न संगीत। मुखौटे लगाकर मञ्च पर उछल कूद करते घिसे पिटे अभिनेताओ को देखकर लोग पता नहीं क्योंकर सन्तुष्ट हो जाते हैं। यहां तक कि बड़े-बड़े मन्त्री एव राष्ट्रपति तक रामलीलाओं में भाग लेकर जीवन धन्य करते है।

कुछ लोग सोचते अवश्य होगे। यह सब क्या है? करोड़ों रुपए व्यय करके राष्ट्र को क्या लाभ होता है? अथवा हिन्दुओं को अपने पूर्वजों की छवि तोडमरोड़ कर देखने में किस धार्मिक सुख की प्राप्ति होती है? जहां तक रामकथा का सम्बन्ध है वहां तक हम उसके मंचन रसास्वादन के विरुद्ध नहीं है, परन्तु अपने इतिहास के गौरव पूर्ण महापुरुषो का मजाक बनाकर जो रामलीलाए आजकल प्रचलित है वे बन्द होनी चाहिए। वास्तव में ये एक प्रकार की तमाशबीनी है, जिससे कोई धार्मिक अथवा आध्यात्मिक तकाजा पूरा नहीं होता, नहीं कोई प्रेरणा मिलती है। हां कुछ पेशेवर रामलीला आयोजकों की चांदी अवश्य हो जाती है।

आज हम तथाकथित रामलीलाओ के पात्रों पर दृष्टि डालेगे। यथा ताड़का प्रकरण में हम उसे बड़ी भयानक कुरूप तथा लम्बे दांतों वाली राक्षसी के रूप में देखते हैं। वास्तव में वह परमसुन्दरी यक्षिणी थी, महावीर सुन्दर राक्षस की पत्नी थी एव शक्तिशालिनी थी। उसके पति को देवताओं ने छल से मारा था अत वह देव पक्षधर ऋषियों की शत्रु वन गई थी एव प्रतिशोध की आग में उसने अनेक आश्रमो को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला था।

२—शूपर्णखां एक विश्वविजयी सम्राट रावण की लाडली बहिन थी सुन्दर ब्राह्मण पुत्री थी उसे कुरूपा तथा क्रूर राक्षसी दिखाया जाता है। वह राम की दोषी भी नही थी। उन दिनों ऐच्छिक विवाह धर्मसंगत थे। फिर राम की राय पूछकर उसने कोई अपराध नहीं किया उल्टे राम ने उसे लक्ष्मण के पास भेजकर उसका उपहास किया। यही कारण रावण द्वारा सतीहरण का कारण बना।

३—(क) हनुमान एव सुग्रीव आदि को बन्दर का रूप दिया जाता है, जो इतिहास विरुद्ध है एवं अपने पूर्वजो का स्वय मजाक उड़ाने जैसा है। हनुमान् सुवर्णगिरि के राजा "केशरी" एवं स्वर्ग-अप्सरा अञ्जना के पुत्र थे अत्यन्त तेजस्वी व्यक्तित्व वाले ब्राह्मण ब्रह्मचारी थे। यज्ञोपवीत धारण करते थे। इनके सभी वैदिक संस्कार हुए थे। फिर उन्हें बन्दर कहना मूर्खता होगी। भला एक बन्दर के ब्रह्मचारी होने का क्या अर्थ?

(ख) हनुमान से प्रथम मिलन के अवसर पर भगवान राम ने लक्ष्मण से कहा—"देखो इस महापुरुष में कितना ओज है। क्या यह एक बन्दर के विषय में कहा गया?

(ग) यदि हनुमान वन्दर होते तो उन्हें सीता से मिलने अशोक वाटिका में छुपकर न जाना पड़ता एवं दिन ढलने की प्रतीक्षा न करनी पडती।

(घ) जब वर्षा ऋतु के बाद राम ने लक्ष्मण को सुग्रीव से मिलने भेजा तो उसके स्वागत के लिए सुग्रीव ने तारा को भेजा एवं कहा—"लक्ष्मण आया है तुम स्वयं जाकर उसे ले आओ वह कही क्रोध में न हो तुम आकर्षक हो मधुरभाषिणी हो"—तारा उस समय शराब के नशे में चूर थी। लड़खड़ती हुई लक्ष्मण के स्वागत को गई। क्या यह एक बन्दरी का करिश्मा था?

४—इसी प्रकार राक्षस भी हमारी तरह मनुष्य थे सुन्दर एव ज्ञानवान थे, आर्य थे एवं वेदों का अध्ययन करते थे रावण के बराबर सुन्दर एव सजीला जवान उस समय त्रिलोक में न था। अशोक वाटिका में जब हनुमान ने रावण को देखा तो बरवस कह उठा"

अहो रूपम्! अहो धैर्यम्! अहो सत्यम्! अहो द्युतिः।
अहो राक्षस राजस्य सर्व लक्षण युक्तता॥

रावण को देखकर मन्दोदरी का पिता मयदानव कहने लगा—हे राक्षस अप्सरा हेमा मालिनी की कोख से जन्मी मेरी पुत्री का पाणिग्रहण करो।"

यदि रावण ऊबड-खाबड या भयकर आकृति वाला होता तो कौन एक विश्व सुन्दरी को रावण के पल्ले बांध देता।

स्वय राम ने रावण को महात्मा आहिताग्नि महा तपस्वी एव वेदान्त वेत्ता कहा।

हनुमान ने जब लङ्का में प्रवेश किया तो उसने घर-घर में ब्रह्मघोष सुने यज्ञ होते देखे। यह रावण राज्य था।

परन्तु हम हैं कि उस महान् विजेता के १० सिरों पर गधे का सर लगा देते हैं एव हजारों वर्षो से उसका पुतला जलाकर उसे सजा देते आ रहे हैं।

हमारी संस्कृति तो "क्षमा करो एवं भूल जाओ" की है तथा मरने के साथ ही शत्रु से शत्रुता समाप्त कर देने की है फिर यह आए वर्ष का तमाशा क्यों?

आओ हम मिलकर प्रयास करें एवं अगले वर्ष से सभ्य एवं सुन्दर ढंग से रामलीला करे। ●

सत्यमेव जयते

—श्री गजानन्द आर्य—

"सत्यमेव जयते" यह हमारे राष्ट्र का आदर्श वाक्य है। यह वाक्य निश्चय ही मडुक उपनिषद से लिया गया है, क्यो कि साधारण सस्कृत मे वाक्य बनता है सत्यमेव जयति। उपनिषद में सत्यमेव जयते है, जिसका सरल अर्थ है सत्य की ही विजय होती है। देश के प्रत्येक विभाग की फाईलो मे "सत्यमेव जयते" वाक्य की भरमार है। लगता ऐसा है कि यह वाक्य कहने भर का है, अधिकाश मे विजय असत्य की हो रही लगती है। सर्वत्र छल-कपट और झूठ का बोलबाला है। सच्चा व्यक्ति भूखो मरता है। कपटी व मिथ्यावादी मौजे करता है। न्यायालय मे झूठ गवाहो के बल पर मुकद्दमे जीते जाते हैं। सद्चरित्र व्यक्ति दुष्चरित्र के मुकाबले चुनाव हार जाता है। ऐसा सर्वत्र देखा जाता है, फिर भी हम कहते हैं 'सत्यमेव जयते'। एक और प्रत्यक्ष प्रमाण है दूसरी ओर आप्त शब्द। आप्त शब्द को मिथ्या कहते भी नही बनता। अवश्य ही हमसे कही भूल हुई है और वह भूल यह है कि हमारा यह वाक्य अधूरा है। हमे मानना चाहिए था 'सत्यमेव जयते नानृतम्" अर्थात् सत्य की ही जय होती है बशर्ते वह अनृत शब्द से सत्य की कसौटी निखारना अभिप्रेत है। यदि सीधा सादा आशय होता तो कह सकते थे "सत्यमेव जयते नासत्यम्"।

ऋत और सत्य शब्द पर्यायवाची माने जाते हैं। सीधा सा अर्थ बनता है सच। इसके विपरीत शब्द है अनृत और असत्य अर्थात् झूठ, पर वेद मन्त्रों मे दोनो शब्द साथ साथ आये हैं जैसे—

ऋत च सत्य चभिद्धात्पसो··· ऋग०

ऋत वदिष्यामि सत्य वदिष्यामि तै० आ०

ऋत च स्वाध्याय प्रवचने च। सत्त च स्वा० तैतरीयो

एकार्थवाची होने पर भी एक मौलिक अन्तर यह है कि ऋत का अर्थ यथार्थ ज्ञान है। जो कभी असत्य नही हो सकता। प्राकृतिक नियम और वेदो का ज्ञान जिसके अधीन प्राणियो को कर्मव्यवस्था और समस्त लोक लोकान्तरों का नियमपूर्वक सचालन है। ऐसी व्यवस्था को मानना ऋत है। इसी ऋत के बल पर भूगोल और खगोल शास्त्री एव वैज्ञानिक गण अपना परीक्षण करते रहते हैं। परीक्षण में असफल हो जाने पर उनको ऋत के प्रति कोई सन्देह नही रहता, किन्तु अपनी भूल ही माननी पडती है। इसी प्रकार ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर विश्वास करना ऋत है। भयकर दुख और असफलता में भी ईश्वर को दोष न देना ऋत का पालन है। ऋत प्रत्येक अवस्था मे सत्य है निरभ्रम है।

प्राणी मात्र को स्वाभाविक ज्ञान और पृथक् पृथक् आकृति की पहचान ऋत है। सूर्य चन्द्र आदि नक्षत्रो की नियमपूर्वक गति ऋत है। जल की शीतलता और अग्नि की उष्णता ऋत है। एक जाति के नर मादा के सयोग से सतति होना ऋत है। खेत मे जैसे बीज डालो वैसा ही फल आना ऋत है। इस प्रकार ऋत एक ऐसा सत्य है जिसके आधार पर मानव अपने पुरुषार्थ से सत्य का विस्तार कर सकता है। सक्षेप में ऋत एक सूत्र है और सत्य एक प्रयोग। सत्य का प्रयोग और अन्वेषण करना मनुष्य की बुद्धि, विद्या विस्तार और धर्म अर्थ मोक्ष प्राप्ति के अनिवार्य अग हैं। ईश्वर प्राप्ति और मोक्ष के लिए मनुष्य उद्योग करता आ रहा है। बीज रूप से इसका परिचय वेदो में है। वेदानुकूल किया गया श्रम सफल हो सकता है, किन्तु मानव अपनी अलग-अलग कल्पनाओ से विभिन्न उपाय अपनाता है और अपने उपायो को सत्य मान लेता है। इस प्रकार का सत्य भ्रम बन जाता है। सत्य मे असत्य की मिलावट हो जाती है।

ऋत और सत्य के भेदभाव को समझने का एक सरल उदाहरण दूध का ले सकते है। गौ के स्तन में दूध है केवल मात्र दूध है, ऐसा निश्चयात्मक ज्ञान ऋत है। स्तन से निकल जाने पर मनुष्य द्वारा सग्रह किया हुआ दूध कितना सत्य है, यही से सत्य असत्य की भेद-मूलक धारणा बन जाती है। दूध में जलमिल गया क्या? दूध मे अन्नमिल गया क्या? दूध पाऊडर का तो नही है इत्यादि सशय को दूर कर देने की प्रक्रिया सत्य का निर्णय कर देने की प्रक्रिया सत्य असत्य का निर्णय करना है। असली दूध की पहचान तभी सिद्ध होगी जब विश्वास हो जाय कि दूध का गुण और स्वाद ठीक स्तन से निकले दूध जैसा है। खेत मे बोया जाने वाला बीज तभी अकुर बनेगा जब वह बीज यथार्थरूप मे होगा। बीज मे विकृति आ जाने पर अकुरित नही हो सकता। इसलिए यह एक सूत्र बन गया कि अकुरित बीज अवश्य ही यथार्थ है अर्थात् ऋत है। बीज यदि अनृत होता तो कदापि अकुरित नही हो सकता था।

शास्त्र की भाषा मे ऋत स्वत प्रमाण है। वेद ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है और ईश्वरीय ज्ञान ऋत है। जिस प्रकार अन्य शास्त्र परत प्रमाण है, उसी प्रकार सत्य परत प्रमाण है। ईश्वर ने मानव को सत्याचरण करने और सत्यासत्य के विवेक के लिए बुद्धि प्रदान की है। सत्यासत्य का निर्णय और आचरण सर्वदा करते रहने से ही सत्य बना रह सकता है, क्यो कि इसमे असत्य के मिल जाने की बहुत सभावना रहती है। इसीलिये आर्य समाज का चौथा नियम है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। आर्य समाज का पहला नियम ऋत को स्वीकार करने का है।

असत्य और अनृत, सत्य और ऋत विपरीतार्थक शब्द हैं किन्तु एक अन्तर है दोनो मे, असत्य शब्द सत्य का विपरीत होने पर भी सत्य में घुलमिल सकता है। कोई घटना कोई पदार्थ ऐसा हो सकता है जिसमे आधा सच और आधा झूठ छिपा हो। सत्य असत्य का यही मिश्रण सर्वत्र धोखे का कारण बनता है। न्यायालय में लडने वाले दोनो पक्ष मे कुछ सच्चाई अवश्य हो सकती। वास्तविक दूध मे कुछ पानी भी ठहर जाता है। प्रत्येक पैदा होने वाले भगवानो, पगम्बरो और गुरुओ मे कुछ सच्चाई अवश्य होती है, जिसके बल पर उनकी झूठ चल निकलती है। सच और झूठ के इस मिश्रण को लक्ष्य करके ही ऋषि ने लिखा था मनुष्य की आत्मा सत्य और असत्य को जानने हारा है, असत्य और सत्य मे घुलमिल जाता है वहा अनृत की स्थिति बिल्कुल भिन्न है। अनृत मे ऋत लेश मात्र नही हो सकता। अनृत का अर्थ है ईश्वर नियम के प्रतिकूल प्रकाश मे अन्धकार नही समा सकता उसी प्रकार ऋत मे अनृत का स्थान कदापि नही है। अनृत के इस अर्थ को जान लेने पर "नानृतम्" का तात्पर्य बहुत सुगम हो जाता है। सत्य की परिभाषा सकीर्ण न होकर विस्तृत हो जाती है। तब हम समझ सकते हैं कि सत्य केवल वही नही है जो हम वर्तमान मे देख रहे है। हमारी दृष्टि और ज्ञान अल्प है क्यो कि हम अल्पज्ञ हैं। सर्वज्ञ व्यवस्थापक की व्यवस्था मे त्रुटि नही हो सकती, ऐसा निश्चय होने पर हमारा समझना सार्थक होता है—'सत्यमेव जयते नानृतम्"। भौतिक जगत मे दक्षता प्राप्त करने वाले वैज्ञानिक खगोल और भूगोलवेत्ता तथा चिकित्सकगण ईश्वर पुरस्त ऋत के कायल है। उन सबके परीक्षण-प्राकृतिक नियमो को आधार मानकर होते है। इसी प्रकार का अटल निश्चय व विश्वास ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर होने के पश्चात् किसी का छल कपट द्वारा समृद्ध बन जाना अथवा झूठे मुकद्दमे जीत लेना कुछ महत्व नही रखता। खोटे अथवा अच्छे कर्मों का भुगतान अवश्य होगा। इस एक धारणा को हृदयगम कर लेना सत्यमेव जयते को सार्थक बनाता है। जिस सत्य में ऋत नही

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्व० माता प्रियम्वदा--एक व्यक्तित्व

--सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री-सार्वदेशिक सभा—



हरदोई। आर्य समाज के एक सौ वर्ष के इतिहास पर जब दृष्टिपात करते हैं उनमे जिन महान विभूतियो ने तप त्याग एव कर्त्तव्य निष्ठा की भावना से कार्य किया है। उनमे एक लम्बी आयु प्राप्त महिला माता प्रियम्वदा के नाम से जानी जाती थी खद्दर की मोटी धोती, सादा लिबास मे आर्य समाज के वर्षो तक क्रिया-कलापो को न केवल अपनी आखों से देखा है बल्कि उनका सारा जीवन ही एक आर्यत्व की जीती-जागती बोलती तसवीर रही हैं। मैंने जब जब भी उनसे सम्पर्क किया तो देखते ही प्रसन्न हो जाती थी तथा इतने आशीर्वादो को प्रदान करती थी कि उनके वाक्य हमारे जीवन को सदा आगे के लिए प्रेरणा देते रहते है।

आपका जीवन बरेली के स्व० मुरलीधर जी अध्यापक थे उनके यहा जन्म लेकर आगे बढ़ा। ऋषि दयानन्द के प्रेरणाप्रद जीवन से आर्य समाज मे आई और विहारीपुर बरेली मे १९०६ के कार्यक्रमो मे भाग लेकर अपने विचारो को आगे बढ़ाया। अत कहना होगा कि माता प्रियम्वदा के आर्य समाजी विचार अपने बाल्यकाल से ही माता-पिता से प्र प्त किए।

आपका वैवाहिक जीवन भी एक आर्य विचारो वाले परिवार से प्रारम्भ हुआ हरदोई के डा० जगदम्बा प्रसाद जी से विवाह सम्पन्न हुआ। उस समय हरदोई मे भी आय समाज का कार्य तेजी पर था। परन्तु स्त्री आय समाज नही था। आपने प्रयास से स्त्री समाज की स्थापना की। उस समय महिलाओं का घर से बाहर निकलना और सामाजिक कार्य करना कठिन था जिस महिला ने भी घर से बाहर पैर रखा, उसकी बुरी आलोचना की जाती थी। उस समय माता प्रियम्वदा जी आर्य समाज के समाज सुधार हेतु घर-घर जाने के लिए परदे मे जाना पड़ता था।

स्त्री शिक्षा हेतु हरदोई मे कन्या विद्यालय खोला, जबकि शिक्षा की दयनीय स्थिति थी तब १९१६ मे विद्यालय की स्थापना की कन्या महा विद्यालय जालन्धर की आचार्या कु० लज्जावती जी के करकमलो से की गई जो आज विशाल वृक्ष बनकर नगर के मध्य प्रशिक्षण का काय कर रहा है।

आपके जीवन से प्रभावित होकर जाति बिरादरी और अन्य जो भी आपके सम्पर्क मे आया, उस पर आपकी अमिट छाप पड़ी। आप स्त्री समाज की प्रधाना रही, विद्यालय कमेटी की सदस्य रही और आय प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की आप उपप्रधाना भी रही। आपका परिवार भी आप जैसा ही कर्मठ क्रियाशील है आपके बड़े पुत्र डा० पूर्णदेव जी आर्य समाज के अधिकारी तथा विद्यालय कमेटी के सचालक रहे हैं।

जन्मगत जाति पाति से दूर होकर माता जी ने अपनी कन्या का विवाह एक ब्राह्मण परिवार के लड़के से किया। लड़को की शादी मे भी जाति तथा दहेज का बन्धन नही रखा।

आपने सामाजिक क्षेत्र के विकसित करने के लिए तथा उनमे फैली हुई हानिकारक रूढियो को सम प्त करने मे, अछूतोंद्धार, मद्य मास निषेध और दुर्गुंण दुर्व्यसनो से बचाने का सदा प्रयत्न किया। नारी शिक्षा पर बल देकर उनके प्रति किये गये समाज मे दुव्यवहारो पर विशेष ध्यान दिया। जिसका समाज मे अच्छा प्रभाव दृष्टिगत रहा।

आर्य समाज की कार्यप्रणाली व ढिलाई आ जाने पर आप काफी दुखी हो जाती थी और घर-घर जाकर आर्य समाज के अधिकारियों को डाटकर काम करने की सदा प्रेरणा देती रहती थी। माता जी के सामने आते देखकर हर आर्य समाजी डरता था कि माता जी अवश्य डाटेंगी। उनके डाटने व समझाने पर कोई व्यक्ति असन्तुष्ट नही होता था। किसी उत्साही कार्यकर्ता को पाकर अति प्रसन्न हो जाती थी। आर्य समाज की गतिविधियो पर बात करते समय कहती थी कि—हमने पदो अधिकारो के विवादो मे पड़कर आर्य समाज के प्रचार प्रसार तथा मान्यताओ को पीछे छोड दिया है इस पर भविष्य के चिन्ता व्यक्त करती थी।

वह आर्य समाज के लिए एक चलती फिरती प्रचारक व अर्पित जीवन वाली महिला थी। मैं जब भी उनसे मिलता तो देखकर प्रसन्न हो जाती थी और फल खिलाती फिर ५) पाच रुपए अवश्यमेव मीठा खाने को देती थी कहती कि तुम्हे देखकर तबियत खुश हो जाया करती है।

आज माता प्रियम्व ◌े । ◌ ◌े बीच नही रही, वह ईश्वर को प्यारी हो गई है। उनका सारा व्य त व कृतित्व हमारे सामने हैं हमे चाहिए कि हम उनकी शिक्षाओ को ग्रहण करे और अपना भविष्य उज्ज्वल करे।

सत्यमेव जयते

[पृष्ठ ५ का शेष]

है, वह सत्य कभी नही हो सकता। महर्षि ने सस्कार विधि मे—गृहस्थियो को चेतावनी दी है कि मनुष्य निश्चय करके जाने कि ससार मे जैसे गाय की सेवा का फल (दूध आदि) शीघ्र नही होता वैसे ही अधर्म से किये गये कार्यों का फल भी शीघ्र नही होता। अधर्मकर्ता के सुखो का धीरे-धीरे क्षय होता है। और एक दिन सब सुखो से वचित होकर दुख ही दुख भोगता है।

मनु० ४।१७२

यदि अधर्म द्वारा प्राप्त सुखो का दुष्फल वर्तमान जीवन मे न मिले तो उसके पुत्रो को यदि पुत्रो को भी न मिले तो नातियो के समय मे अवश्य प्राप्त होनी है, किन्तु यह कभी नही हो सकता कि कर्ता का किया हुआ कर्म निष्फल हो जावे।

मनु० ४।१७३

सती प्रथा और वेद

[डा० गंगाराम निदेशक—वैदिक शोध संस्थान, अलीगढ़]

दिवराला सती काण्ड की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बाद हिन्दू समाज के एक वर्ग द्वारा सती प्रथा को महिमा मण्डित किया जा रहा है। दिवराला और रांची में मृतका, रूप कंवर के नाम पर सती मन्दिर बनाये जाने के प्रयास किये जा रहे हैं। ८ अक्टूबर को जयपुर में सती प्रथा के समर्थकों ने एक जलूस भी निकाला जिसमें रूप कंवर की जय-जयकार के नारे लगाये गये। राजस्थान सरकार ने सती प्रथा को रोकने के लिये सती निरोधक अध्यादेश जारी किया है जिसे कुछ भ्रमित राजपूतों ने अपने धार्मिक मामलों में हस्त-क्षेप बताया है। पुरी के शंकराचार्य श्री निरजन देव तीर्थ ने तो सती प्रथा को ऋग्वेद के अनुकूल बताया है। तथा उनका कहना है कि १८२९ में सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगवाकर राजा राममोहन राय ने जघन्य पाप किया था।

लेकिन देश के अन्दर ऐसे प्रबुद्ध लोग भी है जो सती प्रथा को मानवता के नाम पर कलंक मानते हैं। समाचार पत्रों और सरकारी प्रचार साधनों ने भी सती प्रथा की डट कर आलोचना की है। देश के अनेक महिला संगठनों ने तो इस कुप्रथा को महिलाओं पर भीषण अत्याचार बताते हुये, इन सभी लोगों को फांसी की सजा देने की मांग की है जो रूपकंवर के आग में जीवित जलने के लिये उत्तरदायी हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महात्मा आनन्दबोध सरस्वी ने तो यहां तक कहा है कि रूपकवर को अफीम खिला कर पहले चेतनाशून्य कर दिया गया और फिर उसे अग्नि को समर्पित कर दिया गया। पूज्य महात्मा जी ने शकराचार्य श्री निरन्जनदेव की भर्त्संना करते हुये उन्हें चुनौती दी है कि वे ऋग्वेद में एक भी ऐसा मन्त्र बतायें जहां सती प्रथा का समर्थन हों।

ऋग्वेद तो क्या, किसी भी वेद में सती प्रथा का समर्थन नहीं है। यहां तक शंकराचार्य श्री निरजनदेव तीर्थ का प्रश्न है, उनसे एक बार लगभग १ घण्टे वार्ता करने के बाद मैंने पाया कि वर्णव्यवस्था, परमात्मा, जीवात्मा, प्रकृति, मोक्ष आदि विषयों पर उनका सामवेद के अनुकूल न होकर पुराणों के अनुकूल है। वैदिक ज्ञान तर्क, विज्ञान और सार्वभौमिकता की कसौटी पर खरा उतरता है, जबकि पुराणों में धर्म और दर्शन की दृष्टि से तर्क विरोधी बातें हैं। वेद अपौरुषेय हैं तथा सृष्टि के आदि काल में ईश्वरीय ज्ञान अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों के माध्यम से प्रकट हुआ।

ऋग्वेद न केवल विधवाओं के जीवित रहने की बात रहता है, अपितु नियोग पद्धति से नियुक्त पति द्वारा उन्हे सन्तान उत्पन्न करने का सन्देश भी देता है। ऋग्वेद के दशम् मण्डल मे इस प्रकार के दो मन्त्र हैं :—

"उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोक गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्त ग्राभस्य दधिषोस्तवेद पत्युर्जनित्वमभि स बभूथ॥
सू० १८। म० ८॥

(अर्थ—हे नारी! तू जीवित जनों को लक्ष्य कर उठ खड़ी हो। तू जो इस निष्प्राण के निकट पड़ी है। उठ कर आ, पाणिग्रहण करने वाले और पोषण करने वाले तथा पालक पति की इस सन्तान को लक्ष्य करके तू उसके साथ रह। यदि सन्तान जीवित न हो केवल सन्तान के लिये नियोग विधि से बालक को जन्म दे।)

"कुह स्विद्दोषा कुह वस्तोरश्विना कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः।
को वां शयुत्रा विधवेव देवर मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ॥
सू० ४०। मं० २॥

(अर्थ—स्त्री-पुरुषों को अपना जीवन सदैव प्रेमयुक्त बनाना चाहिये। जिस प्रकार विवाह के समय वर-वधू में स्नेह होता है, वह सदैव बना रहना चाहिये। यदि मृत्यु के कारण पति का पत्नी से वियोग हो जाय तो पत्नी सन्तान की इच्छा होने पर देवर तुल्य पुरुष से नियोग द्वारा सन्तान प्राप्त कर सकती है।)

इसी प्रकार विधवा के दूसरे वर के बारे मे यास्काचार्य 'निरुक्त' में लिखते हैं, देवरः कस्माद द्वितीयो वर उच्यते।" अ० ३। खण्ड १५॥

विधवा के देवर से पुनर्विवाह के बारे मे मनु महाराज के ये शब्द भी पठनीय है—'शतवनेन विधानेन निजो विन्देत देवरः।" अर्थात् जो अक्षतयोनि स्त्री विधवा हो जाय तो पति का निज छोटा भाई भी उससे विवाह कर सकता है।

उपरोक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि वेदादि सत्यशास्त्रों में नियोग का उल्लेख और समर्थन है। मनुस्मृति में द्विज स्त्री और पुरुष के लिए पाणिग्रहण संस्कार के बाद संयोग न होने पर पुनर्विवाह का स्पष्ट उल्लेख है। यथा,

"या स्त्री त्वक्षतयोनिः स्याद् गत प्रत्यागतापि वा।
पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कार मर्हति॥मनुस्मृति॥

गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपनी विधवा भाभी ध्रुवदेवी से विवाह किया। यदि सतीप्रथा शास्त्रानुकूल होती तो ध्रुवदेवी को अपने पति रामगुप्त के साथ जीवित जलना पड़ता। त्रेता काल मे राजा दशरथ की मृत्यु के पश्चात् उसकी तीन रानियों का जीवित रहना तथा द्वापर युग में युवा अभिमन्यु की मृत्यु के पश्चात उसकी पत्नी उत्तरा का सती न होना क्या यह सिद्ध नही करना कि सती प्रथा का हिन्दू धर्मशास्त्रों से कोई सम्बन्ध नही है। द्वापर युग में ही चित्रांगद और विचित्रवीर्य के मर जाने के पश्चात अपने भाईयों की स्त्रियों से व्यास जी ने नियोग करके अम्बिका से धृतराष्ट्र और अम्बालिका से पाण्डु की उत्पति की। गुप्तकाल में प्रभावती गुप्ता, वर्धन काल में राजश्री और राजपूत काल में गुजरात के सोलंकी वंश की मिल्लण देवी विधवा हो जाने के बावजूद भी शासन करती रही।

सल्तनत और मुगलकाल में तुर्क, पठान, अफगान और मुगल शासकों के अत्याचारों के कारण यहां बालविवाह, परदा प्रथा, अशिक्षा और जन्मना जातिवाद की कट्टरता जैसी कुरीतियां हिन्दू समाज में घर कर गईं, वहीं सती प्रथा भी प्रचलित हो गई। जौहर प्रथा और सती प्रथा सूर्यवंशीय और चन्द्रवंशीय क्षत्रियों में विद्यमान न थी। ये दोनों प्रथाएं राजपूत काल के पश्चात मुस्लिम सुल्तानों और बादशाहों के अत्याचारों के कारण हिन्दू समाज में इसलिए प्रचलित हुई ताकि विधवाओं द्वारा अपने सतीत्व की रक्षा की जा सके।

आज जबकि हिन्दुस्तान २१ वी शताब्दी की ओर अग्रसर है, सती प्रथा जैसे सामाजिक कोढ़ का होना और इसका समर्थन करना हिन्दू समाज के लिए चुनौती का विषय है। समय के साथ हिन्दू समाज में परिवर्तन आते रहे हैं ताकि इसकी जीवन्तता बनी रहे। देश के हिन्दू चिन्तकों, धर्माचार्यों और संगठन कर्ताओं को आधुनिक समय में सती प्रथा को चुनौती के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

यज्ञों में एक रूपता आवश्यक (२)

[श्री काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)]

उपर्युक्त लेख की पहिली किश्त दिनांक २३ अगस्त ८७ के 'सार्वदेशिक' मे प्रकाशित हो चुकी है। उसमें उसे ओ३म् के प्रयोग पर विचार किया है और ऋषि दयानन्द के मन्तव्यानुसार यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ मे ओ३म का प्रयोग अवश्य होना चाहिये। संस्कारविधि मे ओ३म् के प्रयोग सम्बन्धी भिन्नताओं से यह तर्क समीचीन नहीं है कि ऋषि ने जहा पर ओ३म लगाया है वहा लगाना चाहिये। जहा पर नहीं लगाया वहा नही लगाना चाहिये। मन्त्र के आदि और अन्त दोनों में ओ३म् के उच्चारण की बात भी युक्ति युक्त नही है। इस सम्बन्ध मे जो प्रमाण दिये जाते हैं वे वेद व्ययन, वेद-पाठ या वेद पारायण के सम्बन्ध के हैं न कि यज्ञों मे प्रत्येक मन्त्र के अन्त में भी ओ३म् का उच्चारण करने के सम्बन्ध में।

अब हम इस लेख में यज्ञो मे अनेक रूपता के प्रमुख कारण यज्ञविधि के क्रम पर विचार करने से पूर्व हमें निम्नलिखित दो बातें भली प्रकार ध्यान में रखनी होगी —

[१] ऋषि दयानन्द ने पचमहायज्ञ विधि और संस्कार विधि के गृहाश्रम प्रकरण मे दैनिक यज्ञ पद्धति लिखी है। दोनों मे कोई मौलिक अन्तर भी नही है। अत उन पर कुछ विशेष नहीं कहना है।

[२] बृहदयज्ञो की कोई पद्धति ऋषि ने पृथक् से कही नही लिखी। केवल संस्कारविधि का जो सामान्य प्रकरण है वही बृहद् यज्ञ का स्वरूप व क्रम निर्धारित करता है। वह विषय सूची मात्र नही है। यदि सामान्य प्रकरण भूमिका या सूची मात्र होता तो उसमें 'इसके पश्चात् या इसके अनन्तर यह करे' ऐसे विधि वाक्य या निर्देश स्थान-स्थान पर क्यों लिखे होते? अत यह मानना पडेगा कि संस्कारविधि का सामान्य प्रकरण विषय सूची मात्र नही है। सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की भी यही मान्यता है। किन्तु सामान्य प्रकरण के आधार पर बृहद् यज्ञों की रूप रेखा निर्धारित करते समय यह ध्यान मे रखना होगा कि वह विधि संस्कारों में अपनायी गयी प्रारम्भिक सामान्य विधि के विपरीत न हो। वैसे ऋषि दयानन्द ने प्रत्येक संस्कार की पद्धति उस संस्कार मे यथा स्थान पृथक् से भी लिख दी है। अतएव उस पर तो किसी को कुछ कहना नही हो सकता।

यज्ञों में अनेक रूपता का मुख्य कारण :—

यज्ञो मे अनेक रूपता का मुख्य कारण वर्तमान मे प्रचलित पूर्णाहुति प्रकरण है अर्थात् "नित्य (दैनिक) यज्ञों और बृहद् यज्ञो मे मुख्य या प्रधान होम के पश्चात् 'ओ अग्नये स्वाहा' इत्यादि चार आघारावाज्यभागाहुति से लेकर 'ओ त्व नो अग्ने' इ० अष्टाज्याहुति पर्यन्त आहुतिया अन्त में देने के पश्चात् 'ओ सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।' इस मन्त्र से तीन आहुति देवें।" ऐसा समझने और प्रचलित करने मे भयकर भूल हुई है क्योंकि यदि ऋषि दयानन्द का ऐसा आशय होता तो किसी भी संस्कार मे कही भी तो प्रचलित पूर्णाहुति प्रकरण रखा होता है। किन्तु हम देखते हैं कि] प्रत्येक संस्कार में आघारावाज्यभागाहुति से लेकर अष्टाज्याहुति पर्यन्त मन्त्रों का क्रम व स्थान वही है जो संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण में] दिया हुआ है अर्थात् ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण और अग्न्याधानादि से लेकर अष्टाज्याहुति पर्यन्त यज्ञ विधि यज्ञ के आरम्भ मे ही दी गई है। यह बात दूसरी है कि जिस संस्कार मे बीच मे या अन्त मे जहा कही ओं भूरग्नये इ० व्याहृति की या ओ यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिच की स्विष्टकृत इ० की आहुतियां देना अभीष्ट समझा है वहा उन्हें पुन देने का वही पर स्पष्ट निर्देश कर दिया है।

"चार आघारावाज्यभागाहुति देके जब प्रधान होम अर्थात् जिस-जिस कर्म में जितना-जितना होम करना हो करके पश्चात् पूर्णाहुति पूर्वोक्त चार (आघारवाज्य भागा०) देवें" सामान्य प्रकरण में आघारावाज्य भागा० के अर्थों पश्चात् लिखित उपर्युक्त वाक्य के आशय को समझने में यज्ञ पद्धति के निर्माताओं ने वास्तव मे भूल की है। यदि प्रधान होम के पश्चात पुनः चार आघारावाज्यभागाहुति देने का उल्लेख है तो इसका यह आशय नहीं है कि उसके पश्चात् जो भी अन्य आहुतियां लिखी हैं उन्हें निर्दिष्ट स्थान पर न देकर सम्पूर्ण भाग पूर्णाहुति प्रकरण के नाम से अन्त में दिया जावें। इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के धर्माधिकारी आचार्य श्री वैद्यनाथ शास्त्री की निम्नांकित सम्मति है। वे अपनी पुस्तक 'वैदिक यज्ञ दर्शन' के पृष्ठ ७१ पर लिखते हैं—'कुछ लोग स्विष्टकृत आहुति को पूर्णाहुति के पूर्व ही देने को प्रामाणिक मानते हैं। मध्य मे नही। परन्तु संस्कारविधि में जहा पर सामान्य प्रकरण मे यह मन्त्र लिखा है वहा पर तो इसे बोल कर आहुति देनी ही चाहिये। बाद में पूर्णाहुति के पूर्व भी देना चाहिये।'

सारांश यह है कि आघारावाज्यभागाहुति के पश्चात् सम्पूर्ण शेष आहुतियां अन्त मे देना ऋषि दयानन्द के मन्तव्य के सर्वथा विरुद्ध है।

अन्त मे आर्य विद्वानों से निवेदन है कि प्रस्तुत लेख में चर्चित, प्रचलित पूर्णाहुति प्रकरण पर निष्पक्ष विचार करें और अपनी सम्मति से अवगत करें। यज्ञपद्धति की शेष विसगतियो पर हम अगले लेख में प्रकाश डालेंगे। हमारा यह भी प्रयास होगा कि सम्पूर्ण लेख की समाप्ति पर सरल एवं स्पष्ट निर्देशों यज्ञ-पद्धति की एक रूप रेखा ऋषि के मन्तव्यानुसार यथामति तैयार करके तत्सम्बन्धी प्रकाशित अपने सभी लेखों सहित सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की सेवा में योग्य विचारार्थ एवं निर्णय हेतु इस अपेक्षा से भेजेंगे कि धर्मार्य सभा यदि आवश्यक समझेगी तो वर्तमान यज्ञपद्धति मे आवश्यक संशोधन करके उसे पुन प्रकाशित करेगी।

जनसंख्या में वृद्धि को रोकने के लिए एशिया के सांसदों का सम्मेलन

प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

चीन की राजधानी बेजिंग में २३ सितम्बर से २५ देशों के सांसदों का एक सम्मेलन राष्ट्र सघ के सहयोग से हुआ। इस सम्मेलन में सभी देशों के और उन देशों के सत्ताधारी तथा विरोधी दलों के सांसदों ने भाग लिया। । भारत की ओर से भी कांग्रेस तथा विरोधी दलों के १८ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। एशिया महाद्वीप में बढती हुई जनसख्या पर रोक लगाने के लिए यह दूसरा सम्मेलन भारत मे हुआ था, और तोसरा सम्मेलन आगे में थाईलैण्ड में होने की सभावना है। इस सस्था के अधिकारियों में अध्यक्ष जापान का, संयुक्त अध्यक्ष चीन का तथा महामन्त्री भारत का चुना गया। एशिया महाद्वीप में न होते हुए भी आस्ट्रेलिया भी इस सम्मेलन में सम्मिलित हुआ और कोषाध्यक्ष का पद उसको दिया गया। ५ अन्य देशो के उपाध्यक्ष बनाये गये। विश्व की जनसख्या अब ५ अरब हो चुकी है और उसका ५८ प्रतिशत केवल एशिया में निवास करता है। कुछ ही वर्षो में एशिया की जनसंख्या ३ अरब को पारकर जायेगी। एशिया अफरिका और दक्षिण अमरीका में जनसख्या तेजी से बढ रही है और यहो तीनों महाद्वीप गरीबी और भुखमरी के शिकार है। इस सम्मेलन में मुख्य मुद्दे यही थे कि गरीब राष्ट्रों की आर्थिक और सामाजिक उन्नति कैसे हो, और इनकी तेजी से बढ़ती हुई आवादी पर नियन्त्रण किसी प्रकार किया जाये। एशिया में बढती हुई आबादी और बेरोजगारी के कारण आबादी का शहरीकरण बढता जा रहा है, लोग देहात से रोजगार की तलाश में शहरों में जाते है और वहां गन्दी बस्तियां बनाकर रहने लगते है। शहरों में बढ़ती हुई आबादी को सुविधाये देते-देते ग्रामीण जनता जीवन की कम से कम सुविधाओ से भी वंचित रहते है और शहरों में उनका पलायन अधिक होता जाता है। ऐसा अनुमान है कि सन् २०२५ तक एशिया में शहरों की आबादी जो १० वर्ष पहिले तक केवल २० प्रतिशत थी वह ४० प्रतिशत हो जायेगी। यह आवश्यकता अनुभव की गई कि छोटे कस्बे और छोटे शहर ही बसे, उद्योग बडे शहरो में इकट्ठे न हों, देहातो में लगाये जाये और उन जगहो पर छोटे कस्बे और शहर बन जाये। पुरुषों और महिलाओं तथा लड़के लड़कियो के बीच भेदभाव समाप्त है, बुढ़ापे में जीवन चलाने के लिए पेन्शन और मुफ्त इलाज की सुविधा सबको मिले और दो से ज्यादा बच्चे एक दम्पत्ति के द्वारा पैदा न किये जायें। आबादी की बढोतरी रोकना और देहातों में शहरी जीवन वैसी ही जीवन की मौलिक जरूरतों का प्रबन्ध करना चाहिये। सबके लिये दो समय की रोटी, पीने को अच्छे साफ पानी, इलाज का प्रबन्ध रहने के लिये मकान, शिक्षा और रोजगार आदि का समुचित प्रबन्ध हों। अपने-अपने देशों के सांसद अपनी संसदों में इस प्रकार के कानून बनवाये अपनी-अपनी सरकारों से उन कानूनों पर सख्ती से अमल करवाये। मेरे इस प्रस्ताव को भी सब ने स्वीकार किया कि मालदार और उन्नत राष्ट्र हथियारों की होड समाप्त करे परमाणु अस्त्रों की समाप्त करे और ६०० अरब डालर जो वर्ष भर में हथियारों पर खर्च होते है उनसे बचाकर कम से कम उसका चौथाई यदि गरीब देशो की उन्नति में लगाये तो गरीब राष्ट्र भी उन्नति के रास्ते पर आगे बढ़ सकते है और बुढापे को सम्मानपूर्वक बिताने के लिये यदि उस धन में से सुविधा मिलने लगे तथा गांव भी शहरों की तरह सब प्रकार की सुविधाये प्राप्त कर पायें तो शहरीकरण, बेरोजगारी आबादी की बाढ, भुखमरी, निरक्षरता आदि समाप्त हो सकती है और सभी इन्सानों जैसा जीवन जीने का मौका मिल सकता है। गरीब राष्ट्रों को भी अपनी समस्याएँ बात-चीत के द्वारा हल करने का सकल्प लेना चाहिये, ताकि उनका धन हथियारो में खर्च न होकर गरीबों और देहातों में बसने वालों का जीवन अच्छा और सुखी बनाने में लगे। अनेक विद्वानों ने अलग विषयो पर अपने निबन्ध पढे और समस्याओं की तह तक गये। तीन दिन तक खुलकर चर्चा हुई। एक-एक विषय को लेकर दिन में चार-चार बैठके होती थी और ८ विषयों पर बैठके होने के पश्चात् उसका निचोड निकालकर एक घोषणा पत्र तैयार किया गया, जिस के आधार पर सभी राष्ट्रो के सांसद अपने-अपने राष्ट्रों की सरकारों पर अमल करने के लिए जोर देगे। क्योकि सभी सत्ताधारी तथा विरोधी दलों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए इसलिए इसमें कोई विवाद की बात नही उठ सकेगी और इस दिशा में सभी राष्ट्रों में इस दिशाँ में कारगर कदम उठ सकेगे।

आर्य जगत् के समाचार

आर्य वीर दल कोटा द्वारा विजय दिवस समारोह सम्पन्न

कोटा। २ १० ८७, आज आर्य वीर दल, कोटा द्वारा विजय दशमी पर्व को विजय दिवस समारोह के रूप में मनाया गया।

आर्य वीर दल कोटा द्वारा स्व० श्री मदनसिंह जी आर्य की पुण्य तिथि (दि० ८-१० ८७) को आर्य वीर दल दिवस के रूप मे मनाया गया।

—आर्य समाज नाथ नगर (भागलपुर) बिहार के निर्वाचन मे प्रधान श्री बनारसी प्रसाद गुप्ता, मन्त्री श्री नरेन्द्र नारायण वर्मा "भुवन श्री" चुने गए।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा शाहजहांपुर के निर्वाचन मे प्रधान श्री राजेन्द्र शर्मा एम० ए० मन्त्री डा० श्याम सुन्दरलाल चुने गये।

—आर्यसमाज मीरानपुर कटरा के चुनाव मे प्रधान श्री नवाबसिंह आर्य, मन्त्री श्री रतनलाल आर्य चुने गये।

—आर्य समाज नारनौल के वार्षिक चुनाव में प्रधान महाशय ताराचन्द आर्य व मन्त्री प० कालूराम जी शर्मा चुने गए।

—आर्योप प्रतिनिधि सभा वाराणसी के वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान श्री शकरलाल पोद्दार, मन्त्री श्री अशोक कुमार त्रिपाठी चुने गए।

—केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री मामसिंह वर्मा व मन्त्री श्री प० इन्द्रराज जी चुने गए।

—प्रयाग केन्द्रीय आर्यसभा के चुनाव मे प्रधान श्री कमला प्रसाद जी वानप्रस्थी, मन्त्री श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री चुने गए।

—आर्य समाज छपरा सारण (बिहार) के निर्वाचन मे प्रधान श्री त्रिलोकनाथ गुप्त, मन्त्री श्यामनन्दन प्रसाद वर्मा चुने गए।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव

म० आ० प्र० निधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव दि० ३१।५।८७ को सम्पन्न हुआ। पदाधिकारी साधारण सभा में निर्वाचित हुए है।

सर्वश्री दौलतराम जी चड्ढा प्रधान
प० आर्यमुनी जी वानप्रस्थी उपप्रधान
भगवन्तसिंह जी कपूर　　"
केशवराव जी होलीकर　　"
हरिश्चन्द्र गुरुजी सूर्यवंशी मन्त्री
प्रो० सत्यकाम जी पाठक उपमन्त्री
सोमरत्न जी आर्य　　"
दिगम्बर जी वानप्रस्थी
दौलतराव जी शिरवलकर कोषाध्यक्ष
विजय कुमार जी शिर्वे पुस्तकाध्यक्ष
प० गणेशदेव जी आर्य वेदप्रचार अधिष्ठाता
रामचन्द्र मरड आर्य वीर दल अधिष्ठाता
प० उत्तममुनी जी वानप्रस्थी संरक्षक

अन्तरंग सदस्य

श्री देवकुमार जी वेदालंकार, डा० सुग्रीव जी काके, श्री बकीराम पाटील, श्री शकरराव मध्याचारी, श्री दयालदास तीरथदास जुला, प० प्रह्लाद जी आर्य, श्री श्री राधाराम जी अकम, श्री गुलाबचन्द जी श्री सत्यपाल राठौर, श्री दामोदर सुतार, श्री प० कुशलदेव जी शास्त्री, प० देवमुनी वानप्रस्थी, श्रीमती सरलादेवी वानप्रस्थी, श्री नन्दलाल शर्मा, अण्ड निवृत्तीराव होलीकर।

प्रतिष्ठित सदस्य

श्री आचार्य तानाजीराव, प्रा० देवदत्त तु मार, श्री शिवकरराम देशपांडे, डा० हरिश्चन्द्र वगे, श्रीमती सुमित्रा वाघमारे।

सार्वदेशिक प्रतिनिधि

सर्वश्री दौलतराम जी मोहनलाल जी चड्ढा
हरिश्चन्द्र रामराव सूर्यवंशी गुरुजी
प० आर्यमुनी जी वानप्रस्थी
प्रा० विजयकुमार जी शिंदे
भगवन्तसिंह जी कपूर
निवृत्तीराव जी होलीकर　　—हरिश्चन्द्र, मन्त्री

आर्य समाज ग्रेटर शिकागो (अमरीका) में आर्य समाज की स्थापना

अमेरिका में भारतीय मूल के लगभग १॥ लाख लोगों की रुचि व भारतीय संस्कृति प्रेम के प्रतीक "हरिओम मन्दिर" मे मुख्य शिकागो से २६ मील दूर उपनगर मदाहुना मे श्री ओमप्रकाश जी (बर्मा वाले) के सत्प्रयत्नों से आर्य समाज की विधिवत स्थापना हो गई है। १२ वर्ष से श्री डा० सुखदेव जी सोनी एम डी शिकागो के ही एक उपनगर ओलियट मे एक मासिक सत्संग वैदिक विधि से लगाते थे। अब वे ही नवगठित समाज के प्रधान बनाए गए हैं। उप प्रधान श्री अशोक मरवाह व मन्त्री श्री विद्यासागर चुने गए हैं। समाज का कार्यक्षेत्र उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

मारीशस में वेद प्रचार

आर्य समाज ग्रांबे मारिशस के मन्त्री श्री विष्णुदेव वर्मा सूचित करते हैं कि समाज बड़े उत्साह से वेद प्रचार काय मे संलग्न है। २३ सितम्बर से प्रो० बी० बिशनदयाल घर घर नित्य यज्ञ भजन व कथाऐं कर रहे हैं। हिन्दी कक्षाए चलती हैं। २२ जुलाई को कृषि मन्त्री श्री आर मुगम परसुरामन द्वारा समाज को ४ वेद व रामायण प्रदान की गई।

भूल सुधार

३०-८-८७ के पृष्ठ १० पर सार्वदेशिक मे आर्य समाज बुलानाला काशी का निर्वाचन प्रकाशित भूल वश हुआ है। वास्तव मे समाज के प्रशासक आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा श्री रामयश सिंह जी को नियुक्त किया गया है। उक्त आर्य समाज का सगठन सभा द्वारा निलम्बित किया गया है। पाठक सुधार लें।　　—सम्पादक

आर्य समाज लोहगढ़ अमृतसर वार्षिकोत्सव

अमृतसर की सबसे प्राचीन व बड़ी समाज आर्य समाज लोहगढ़ अमृतसर २ से ८ नवम्बर तक अपना वार्षिकोत्सव मना रही है। आर्य जगत के चोटी के विद्वान व भजनोपदेशक भाग ले रहे हैं।　　—प्रधान

आदर्श अन्तर्जातीय विवाह

श्री पवन देव वानप्रस्थी के पुत्र श्री करनसिंह का विवाह कुमारी राधारानी (सुपुत्री श्री जगदीश प्रसाद प्रधान आर्य समाज उसम सहारनपुर के साथ जात पात तोड़कर प०राजाराम शास्त्री के पौरोहित्य में हुआ। बरातियों को १-१ प्रति सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया।

नगर आर्य समाज लखनऊ : मुस्लिम परिवार की शुद्धि

नगर आर्य समाज लखनऊ द्वारा १०-१०-८७ को १ मुस्लिम युवक को सपरिवार शुद्ध किया गया। इस समाज ने अपने क्षेत्र के पुराने आर्य बन्धुओं का भी स्वागत व अभिनन्दन किया। यही समाज है जिसने स्वनाम धन्य स्व० प० धर्मभिक्षु जैसे शास्त्रार्थ महारथी को पैदा किया गया था।

निर्वाचन

—आर्य समाज हावड़ा कलकत्ता के वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान श्री पुष्करलाल आर्य प्रधान व श्री आनन्ददेव आर्य मन्त्री चुने गये।

—आर्य समाज मस्जिद मोठ नई दिल्ली के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री फकीरचन्द जी व मन्त्री श्री रोशनलाल प्रजापति चुने गये।

—आर्य समाज मानिकतल्ला काचरापाड़ा जिला २४ परगना (बंगाल) के वार्षिक चुनाव में प्रधान श्री पन्नालाल सिंह आर्य मन्त्री श्री आत्मानन्द आर्य चुने गये।

—आर्य समाज फफवपुर (सुन्दरनगर) जिला मेरठ के निर्वाचन मे प्रधान श्री बा० सोहनलाल व मन्त्री श्री रामबहादुर राय आर्य चुने गए।

—आसाम आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक चुनाव मे प्रधान डा० नारायणदास व मन्त्री श्री अरुण शर्मा निर्वाचित हुए।

ि त्र ा ानुम ाा । ग्रम्मा का शुभारम्भ ममाराह

२२ नवम्बर म धमपुरा ानोनी [अोरन र र वे ा रोड निकट अ ०टी०आई यमुनानगर म नवम्ब । ीम यश गुप्ता करनाल द्वारा किया जा रहा है। इस अवसर च कोटि के विद्वान व उपदेशक पधार रहे हैं।

—अ यक्ष स्वा० सच्चिदा न

आर्यसमाज बडा बाजार कलकत्ता
श्री पन्नालाल पीयूष का अभिनन्दन

आयसमाज बडा बाजार कलकत्ता के वार्षिकोत्सव पर आय समाज के ७६ वर्षीय सगीताचाय श्री प नालाल जी पीयष का साव जनिक अभिन दन किया गया व ४१००) को थली भट की गई। समारोह की अध्यक्षता परोपकारिणी सभा के महामन्त्री श्री गजान द आय ने की।

आर्यसमाज धार म०प्र० योग शक्ति के प्रदर्शन

आय समाज धार म०प्र० के तत्वावधान मे योगीराज छाना न द सरस्वती ने ३१ ८ ८७ से १५] दिन तक प्रशिक्षार्थियो को योग की व्यायाम पद्धति का प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर प्रा त २७००) आय मे से १२००) आय वीर दल धार व ११००) रामलिग गुरुकुल येडशी उस्मानाबाद को प्रदान किए गए।

आय समाज १९ विधान सरनी कलकत्ता
सती प्रथा का विरोध

कलकत्ता की प्रमुख समाज आयसमाज १९ विधान सरनी कलकत्ता न एक प्रस्ताव द्वारा दिवराला सतीकाण्ड की नि दा की है एव पुरी के शकराचाय को कहा है कि वे अविलम्ब अपना वक्तव्य वापिस ले या शास्त्राथ की चनौती स्वीकार करे।

य । । त्र माज द्वारा
श्री स्वामी आनन्दबाध सरस्वती को थैली भेंट



श्री व रे द्र म प्रधान खडे है एव श्री म त्री जा थली भट कर हे हैं।

प्रान्तीय आय युवक दल हरियाणा

का द्वितीय म ाम्मेलन [७ व ८ नवम्बर १९८७ शनिवार रविवार का] आयसमाज नागोरी गे टिमारपुर के विशाल प्रागण मे आय जगत के मूध य तपस्वी अ र नेता चौ शिव राम वर्मा की अ यक्षता म समा । पन्न मना । जा रहा है।

आय समाज एर वा ए स्टेट गामना पूना द्वारा शुद्धि

अ य समाज के उ स्ता२ म एक ईस ई महिला एलिस को शुद्ध करके स्नेहा नाम रखा और उसका विवाह हि दू युवक सरे द्र सिंह से श्री जयदेव ब घ के पौरोहि य म करा या



हरियाणा मे आय युवको के बढते कदम

आर्यसमाज का मिशन

इन नहीं बल्कि ... समाज ... और ... अनुसार जन ... बनाकर जो सती ... के खिलाफ ... सकता है

... विशेष समिति की ... सती ... चिता में झोंकने के पाप ... और ... का उल्लेख करते हुए ... पकड़कर ... बचाने के लिए न भी नहीं दिया गया इसके लिए ससुराल वालों को जिम्मेदारी से मुक्त नहीं किया जा सकता। सती प्रथा का कुरीति आज भी वहां मौजूद है। जिसके खिलाफ जेहाद छेड़ने की जरूरत है।

हैदराबाद के श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम ने कहा कि विडम्बना यह है कि इस समाज में सती काण्ड होते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने तो ऐसी कुप्रथाओं को रोकने में अपने जीते जी सफलता हासिल कर ली थी लेकिन अब वही कुप्रथाएं फिर सिर उठा रही हैं। दिवराला काण्ड आत्महत्या या आत्मोत्सर्ग नहीं, रूपकंवर की निर्मम हत्या है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक शंकराचार्य द्वारा सती प्रथा को वेद सम्मत बताने की कड़ी आलोचना की और चुनौती दी कि आर्य समाज इस विषय पर दिल्ली के किसी भी खुले मैदान में शास्त्रार्थ के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि इस चुनौती का दो मास में कोई जवाब नहीं आया है। शंकराचार्य क्यों नहीं बताते कि वेद के किस मन्त्र में पति की मृत्यु के बाद स्त्री को जीवित जलाने के विधान का उल्लेख है? दहेज प्रथा होती तो कैकेयी सती हो गई होती महारानी झांसी बेटे को पीठ से बांधकर युद्ध के मैदान में नहीं कूदी होती।

... बोध ने दहेज और सती प्रथा के खिलाफ देश व्यापी आन्दोलन की ... शासन को आर्य समाज के समर्थन ... सहयोग की अपील की ... और सती प्रथा विषय पर एक ... ने कहा कि विधवा बहन को सती के नाम से महिमा मण्डित ... समाज में सेठों एवं सत्ता के जन विरोधी गठबंधन और बढ़ते धार्मिक कठमुल्लावाद का नतीजा है

खण्डवा में मध्य प्रान्तीय सर्वधर्म सम्मेलन

आर्यसमाज के मन्त्री श्री कैलाशचन्द पालीवाल ने बताया कि आगामी ७-८ नवम्बर को खण्डवा में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के अन्तर्गत प्रान्तीय स्तर पर एकता एवम् सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री गिरीधर गोमांगो उपमन्त्री समाज कल्याण भारत सरकार नई दिल्ली करेंगे। इस सम्मेलन का समापन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती करेंगे। इस अवसर ... तारीख को महिला सम्मेलन किया जा रहा है। इसमें श्रीमती विमला श्रीवास्तव प्राचार्य लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला (पंजाब) श्रीमती प्रज्ञादेवी बनारस पद्मावती गायकवाड जबलपुर आदि आर्य विदुषी महिलाएं पधार रही हैं।

इस एकता सम्मेलन में पण्डित राजगुरु जी शर्मा माता कौशल्या देवी रायपुर श्री रमेशचन्द श्रीवास्तव भिलाई राष्ट्र कवि श्री निर्भयहाथरसी कवि श्री कृष्ण कुमार चौबे नागपुर श्री काशीनाथ जी शास्त्री गोंदिया आदि पधार रहे हैं।

सार्वदेशिक प्रेस ... नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८८ | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | ज्वालन्त्यस्य १६३ दूरभाष : ९७४७७१
वर्ष २२ अंक ४६ | मार्गशीर्ष कृ० ९ सं० २०४४ रविवार १५ नवम्बर १९८७ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

म. भारत के आदिवासियों का धर्मरक्षा अभियान

सार्वदेशिक सभा द्वारा अकाल पीड़ित सहायता

वेदामृत

स्त्री से परिवार की समृद्धि

यन्त्री राड् यन्त्र्यसि यमनी
ध्रुवासि धरित्री।
इषे त्वोर्जे त्वा रय्यै
त्वा पोषाय त्वा॥
यजु० १४-२२॥

हिन्दी अर्थ—स्त्री परिवार का नियन्त्रण करने वाली, तेजस्विनी, स्वय नियन्त्रण में रहने वाली और सबको नियम में रखने वाली है। वह परिवार मे निश्चल भाव से रहने वाली और परिवार की धारक (पोषक) है। तुझे अन्न-समृद्धि के लिए, शक्ति के लिए, श्री वृद्धि के लिए और घर की पुष्टि के लिए रखते हैं।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

देश के आदिवासियो के प्रति हिन्दू समाज की उपेक्षा का लाभ उठाकर वर्षों से ईसाई मिशनरी उन्हे ईसाई बनाने की घात लगाए बैठे रहते हैं। १९१७ में ऐसे ही एक अकाल के समय स्व० महात्मा हसराज जी को जब पता लगा कि मध्य प्रदेश के रतलाम क्षेत्र के ४० हजार भील ईसाई बन चुके हैं तो उन्होंने अपने अत्यन्त निकट सहयोगी स्व० प० देवप्रकाश जी को भीलों की सेवा के लिए अन्न व धन देकर भेजा था तब से मृत्यु पर्यन्त पडित जी उस क्षेत्र से जुड़े रहे।

पडित जी अपने जीवन काल मे ही यह कार्यभार लाला रामगोपाल जी (वर्तमान स्वा० आनन्दबोध जी) को सौंप गए थे। वर्षों से सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष रूप में स्वामी जी उस क्षेत्र में धर्मरक्षा अभियान चला रहे हैं।

अनेक शिक्षण सस्थाऐं सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत वहा चलाई जा रही हैं। दयानन्द सेवा सघ के प्राण प० पृथ्वीराज शास्त्री प्राणपण से इस सेवा कार्य में जुटे हैं।

वर्तमान अकाल की छाया में कहीं कोई भूखा भील फिर ईसाई मिशन की ओर न झुके। इसलिये सभा प्रधान स्वा० आनन्दबोध जी ने ट्रकों द्वारा दिल्ली से भारी मात्रा में अन्न की सहायता पहुचाई। लगभग ४० हजार रुपए की तात्कालिक सहायता लेकर पडित पृथ्वीराज जी शास्त्री मध्यप्रदेश के दौरे पर गये हैं। सभा प्रधान श्री आनन्दबोध जी भी उसी क्षेत्र मे शीघ्र पधारे हैं। धर्मरक्षा अभियान को और तीव्र गति प्रदान करने के लिए श्री स्वामी जी ने आर्य जगत से अपील की है ताकि सभा अपने कार्यक्षेत्र को अधिक से अधिक विस्तृत कर सके।

पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ी

देश को तोड़ने का खतरा नहीं उठाया जा सकता

नई दिल्ली ९ नवम्बर। पजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि ६ महीने और बढ़ाने के प्रस्ताव को आज लोक सभा मे स्वीकृति प्राप्त हो गई। गृहमन्त्री बूटासिंह व गृहराज्य मन्त्री श्री चिदम्बरम ने पजाब की स्थिति पर विस्तृत वक्तव्य दिए। अपने वक्तव्य मे श्री बूटासिंह ने बताया कि स्वर्ण मन्दिर से चल रही सभी अराष्ट्रीय गतिविधियो के लिए गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष श्री गुरचरण सिंह टोहरा जिम्मेदार हैं। उन्होंने बताया कि पजाब में आतकवादी विभिन्न राजनीतिक दलों के ५३ सक्रिय नेताओ की हत्या कर चुके हैं जिनमे कांग्रेस (ई) के १९ जनता पार्टी के १९ व कम्युनिस्ट दलो के ११ हैं। काफी सख्या मे साधारण कार्यकर्ता भी मारे गए हैं जिनमे अकेले कांग्रेस (ई) के ३०० कार्यकर्ता हैं। हिन्दुओ की सख्या तो हजारों में है।

उन्होंने कहा कि पंथक कमेटी के पांचों सदस्य न केवल आतकवादी हैं अपितु उनका सीमा पार से गहरा सम्बन्ध है। वे विदेशो से हथियार व धन प्राप्त कर रहे हैं। जब तक आतकवादी हथियार नही डाल देते और राज्य मे शान्ति व्यवस्था स्थापित नही हो जाती, राजनैतिक समाधान की कोई चर्चा नही चलाई जा सकती। देश को खण्डित करने वालो को मुह तोड उत्तर दिया जाएगा। सरकार किसी दबाव मे नहीं झुकेगी। [illegible] के लिए देश को बांटने से न रुकें।

धर्म चर्चा

पण्डित--पादरी

—कर्मनारायण कपूर

पण्डित—पादरी जी नमस्ते। अच्छा हुआ आप से भेंट हो गई। कई दिनो से आपको मिलने का विचार कर रहा था।

पादरी—पण्डित जी किस विशेष काय के लिए मिलना चाहते थे।

पण्डित—आपके मत धम) के सम्बन्ध मे कुछ जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ।

पादरी—बडी खुशी से पूछिए।

पण्डित—ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी धम पुस्तक बाइबल की रचना ईसा मसीह के शिष्यो ने ईसा की मृत्यु के पश्चात की थी। ऐसी स्थिति मे बाइबल ईश्वरीय ज्ञान नही हो सकता। ईश्वरीय ज्ञान तो ईश्वर, सृष्टि के आरम्भ मे मानव के साथ दे देता है।

अपर च यह सब विदित है कि आधुनिक बाईबल तो सम्राट कानस्टेन्टाईन के आदेशानुसार उस समय प्रचलित अनेको बाइबल की पुस्तकों में से निकाली गई थी और बाकी सब धम पुस्तकें नष्ट कर दी गई थी।

पादरी—पण्डित जी। इस सम्बन्ध मे मैं कुछ प्रकाश नही डाल सकता हूँ इस विषय मे अध्ययन करके आपको उत्तर दूगा।

पण्डित—पादरी जी। बाइबल मे लिखा है कि ईश्वर ने मनुष्य को आकृति के अनुसार बनाया है। इसका मतलब है कि ईश्वर की सूरत भी मनुष्य के समान है। आपकी धम पुस्तक मे यह भी लिखा है कि ईश्वर स्वग मे सिहासन पर बैठा हुआ है। यदि यह सत्य है तो ईश्वर अपने भक्तो को दशन देने के लिए क्यो नही आता है।

पादरी—पण्डित जी यह बात तो ईश्वर ही जानता है कि वह क्यो प्रकट होकर भक्तो को दशन नही देता है।

पण्डित—पादरी जी आप मानते हैं कि मनुष्यो के शरीरो मे आत्मा होती है और ईश्वर गर्भाधान के समय आत्मा की रचना करता है। इससे सिद्ध होता है कि आजकल जो जनसख्या का विस्फोट हो रहा है उसका एक मात्र कारण ईश्वर है जो आत्माओ का सृजन कर रहा है। वह नई नई आत्माओ का और अधिक सख्या मे क्यो सृजन करता है?

पादरी—यह ईश्वर के काय हैं उसमें मनुष्य की बुद्धि की गति नही हो सकती।

पण्डित—अच्छा आप यह तो मानते हैं कि निणय दिवस में सब आत्मायें कबरो से उठेगी और ईश्वर के न्याय के अनुसार सदा के लिए स्वग व नरक मे भेजी जायेंगी। इससे यह अवगत होता है कि जो आत्माए स्वग को भेजी जावेगी उनको उनके बुरे कर्मों का फल नही मिलेगा। इसी प्रकार जो आत्माए नरक को भेजी जावेंगी उनको उनके अच्छे कर्मो का फल नही मिलेगा।

कृपा करके यह बताने का कष्ट भी करें कि जो आत्माऐ एक दो, चार दस वष की आयु में मर गई थी उनको किन कर्मों के आधार पर स्वग व नरक मे भेजा जावेगा। उन्होने अपने जीवन काल मे शिशु अवस्था मे कोई पाप व पुण्य नही किया होता।

अपर च यह बुद्धि गम्य नही कि दस बीस, पचास व सौ वर्षो के कर्मो के आधार पर आत्मा को निरन्तर काल के लिए स्वग व नरक मे भेजा जावेगा।

पादरी—पण्डित जी धम के सम्बन्ध में और ईश्वरीय व्यवस्था के बारे मे मनुष्य की बुद्धि तथा तक काम नही करता। बुद्धि तथा तर्क तो सासारिक कर्मों मे प्रयोग हो सकता है। अत आपको इस माथा पच्ची मे नही पडना चाहिए।

पण्डित—आप के मत के अनुसार मनुष्य का जन्म प्रथम तथा अन्तिम होता है। तो मनुष्य को जो सुख दुख, निर्धनता तथा ऐश्वय, सुन्दर तथा विकलाग शरीर मिलता है वे सब ईश्वर अपनी इच्छा से दे रहा है। क्या ऐसी अवस्था में ईश्वर अन्यायी तथा पक्षपाती नहीं बन जाता है।

पादरी—यह तो सत्य है कि यह मनुष्य जीवन प्रथम तथा अन्तिम है। मैं पहिले भी कह चुका हूँ कि ईश्वरीय व्यवस्था को जानना मनुष्य की बुद्धि से बाहर है।

पण्डित—पादरी जी। ईसाई मत कोई नया मत नही है। यह यहूदी मत का सशोधित रूप है। यहूदी मत से पूर्व भी कोई न कोई मत होगा। यदि यहूदी मत ईश्वरीय मत होता तो उसमे सशोधन की आवश्यकता नही होती क्योकि ईश्वर का ज्ञान सदा एक समान तथा पूण होता है बाइबल के किनारे पर लिखा है कि ४००४ ईस पूव सृष्टि की रचना हुई थी। परन्तु विज्ञानिको के विचार मे सृष्टि को बने हुए कई अरब वष हो चुके हैं। अत यह स्वीकार नही किया जा सकता कि बाईबल ईश्वरीय धम पुस्तक है।

पादरी—यह सत्य है कि ईसाई मत यहूदी मत पर आधारित है। ईसाई नई अजील तथा पुरानी अजील को मानते हैं। बाईबल के किनारे पर लिखे हुए सृष्टि काल के बारे मे मैं कुछ प्रकाश नही डाल सकता हूँ।

पण्डित—क्या यह सत्य नही कि हिन्दू भारत मे सृष्टि को आदि से बस रहे हैं। यदि यह सत्य है तो हिन्दू धम सबसे सनातन धम है।

पादरी—इस विषय पर मेरा अपना विचार कुछ नही है। कई विद्वानों का मत है कि आर्य (हिन्दू) बाहर से आये थे। उनके पूव यहा आदिवासी रहते थे।

पण्डित—तो क्या आप बता सकते हैं कि उन आदिवासियो का क्या धम था।

पादरी—पण्डित जी इसका मुझ ज्ञान नही।

पण्डित—पादरी जी यह तो आप मानते हैं कि जो मनुष्य भारत मे अथवा अन्य देशो मे आदि काल से रह रहे हैं उनको ईश्वर ने ज्ञान अवश्य ही दिया होगा क्योकि कोई व्यक्ति स्वय ज्ञान प्राप्त नही कर सकता उसे दूसरो से ज्ञान प्राप्त करना होता है। छोटे बच्चे मा बाप से खाना पीना, चलना, बोलना आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं। वे स्वय यह ज्ञान प्राप्त नही कर सकते आपके विचार मे वह ईश्वरीय ज्ञान कौन सा है?

पादरी—मैं आपके दृष्टिकोण से तो सहमत हूँ परन्तु इस पर मैंने कोई धारणा नही बनाई है। अत मैं कोई विचार प्रकट नही कर सकता हूँ।

पण्डित—पादरी जी मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। आपने जो विचार दिए हैं उन पर आप मनन करें।

प्रेरक प्रसग : श्री सत्यानन्द आर्य

मिर्जापुर मे बूढ महादेव के प्रसिद्ध मन्दिर का पुजारी छोटूगिरी गोस्वामी जो बडा हृष्ट पुष्ट और बलिष्ठ था, एक दिन अपने कुछ साथियों को लेकर स्वामी जी के पास आया और उनकी जघा से जघा मिलाकर बैठ गया और चिल्लाकर बोला कि बच्चा हम तेरे गुरु है आज खण्डन करने का फल तुझ ज्ञात हो जायेगा। स्वामी जी ने देखा छोटगिरी दुष्टता करना चाहता है, वह खडे हो गये और सिरहाने का पत्थर उठाकर हुकार किया और कहा कि मुर्ख तू मुझ भय दिखाता है। यदि मैं ऐसे ही भय खाता तो देश मे घूम-कर खण्डन कैसे करता? और ललकार कर बोले कोई है? किवाड बन्द कर दो इसे अकेला ही पीट सकता हू। महाराज की हुकृति से ही वह दुष्ट और उसके साथी भय से कापने लगे।

इसी छोटूगिरी ने एक दो गुण्डो को स्वामी जी को पीटने भेजा। वह जाकर स्वामी जी के पास बैठ गये। उस समय स्वामी जी प० रामप्रसाद को कुछ शास्त्र की बात बता रहे थे। ये गुण्डे बीच-बीच मे हसने और व्यगपूण बात करने लगे। एक दो बार महाराज ने उन्हे सभ्यतापूवक और कोमल शब्दो मे रोका परन्तु वे न माने। तब महाराज ने उठकर ऐसा हुकार किया कि दोनो भय से काप-कर भूमि पर गिर पड। यहा तक कि उनका मूत्र पुरीष भी निकल गया और सज्ञा रहित हो गये। प० रामप्रसाद को भी यह हुकार-नाद इतना असह्य हुआ कि उन्होने अपने कानों में उगलिया डाल दी। तब दोनो गुण्डो को जल के छीटे देकर होश मे लाया गया और स्वामी जी ने उन्हे उचित शिक्षा देकर विदा किया।

सम्पादकीय

आर्यसमाज व साहित्य

मानव जीवन में ज्ञान का कितना महत्व है यह कोई विवाद का विषय नहीं। आज संसार में ज्ञान, विज्ञान के सहारे जो राष्ट्र व समाज उन्नति के शिखर पर पहुंच गए उनका प्रत्यक्ष प्रमाण ही इस सत्य की सबसे बड़ी साक्षी है।

भारत संसार का प्राचीनतम राष्ट्र होते हुए भी गत १००० वर्षों मे उत्थान पतन की जो भीषण विभीषिका में ग्रस्त हुआ उसका कारण ही यह था कि हमने अतीत के ज्ञान विज्ञान से आंखे मूंदकर अन्धपरम्परा को अपना मार्ग दर्शक बना लिया।

हिन्दुओं की कमजोरी का लाभ उठाकर देश में ईसाई व मुसलमान संस्थाओं ने अपना प्रचार तन्त्र इतना सुदृढ बना लिया था कि वे कुरान व बाइबिल के प्रकाशन पर करोड़ों रुपए व्यय कर रहे थे। आर्य समाज की स्थापना से पूर्व उस साहित्य से प्रभावित करोड़ो अनपढ़ व अर्धशिक्षित हिन्दू ईसाइयत व इस्लाम के कुचक्रों मे फस कर हिन्दू धर्म का ही परित्याग कर बैठे। देश एक राष्ट्र न रहकर विभिन्न विचारधाराओं का चूं चूं का मुरब्बा बन गया।

भारत में फैले मिथ्या मतान्तरो ने उसके विकास की गति ही अवरुद्ध नहीं कर दी उसे दासता की जंजीरो में जकड दिया।

महर्षि दयानन्द ने इस कमजोरी को भाप कर सत्यज्ञान का जो प्रकाश फैलाया उसी का चमत्कार था कि देश न केवल पराधीनता से मुक्त हुआ ज्ञान-विज्ञान का एक नया युग प्रारम्भ हो गया।

महर्षि ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करके आर्य समाज का दिशा निर्देश किया फिर तो जैसे साहित्य का प्रचार प्रसार आर्यसमाज ने अपना मिशन बना लिया। परोपकारिणी सभा केवल महर्षि के ग्रन्थों का ही प्रकाशन करती है। परोपकारिणी सभा के पास अपना एक विशाल प्रेस है जिसमे महर्षि के ग्रन्थों के अतिरिक्त रेलवे आदि विभागो का मुद्रण कार्य भी होता है। फिर भी महर्षि के साहित्य प्रकाशन की सेवाए अत्यन्त प्रशसनीय है। महर्षि के हस्तलेख भी वहीं सुरक्षित है।

इधर समय की आवश्यकतानुसार समाज मे साहित्य रचना का एक तीव्र वेग चला। राजपाल ऐंड सन्स व गोविन्दराम हासानन्द जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशकों के अतिरिक्त भी दर्जनो प्रकाशक इस क्षेत्र में उतरे।

१९७२ में आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा ने लाला रामगोपाल शालवाले (वर्तमान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती) के नेतृत्व मे यह अनुभव किया कि आर्यसमाज का एक प्रामाणिक व केन्द्रीय प्रकाशन संस्थान अवश्य होना चाहिए। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए सभा ने विशाल स्तर प्रकाशन का कार्य हाथ मे लिया। आज सभा के प्रकाशन मे चारों वेदों के भाष्यों व उनके अंग्रेजी रूपान्तरो के अतिरिक्त दर्जनो हिन्दी व अंग्रेजी में महत्वपूर्ण विषयो पर प्रकाशन है। सार्वदेशिक सभा द्वारा लाखों रुपए का साहित्य प्रकाशित किया गया और आज भी लाखो रुपए की उसकी प्रकाशन की विशाल संस्था है। सौभाग्य का विषय है कि आर्य जनता मे इस साहित्य के प्रति गंभीर रुचि है।

यद्यपि देश में और भी अनेक विद्वान स्वतन्त्र व संस्था रूप में साहित्य का प्रकाशन कर रहे हैं व आर्य जनता बड़े चाव से उसका लाभ उठा रही है।

साहित्य किसी संस्था का प्राण व जीवनाधार होता है। अमर शहीद प० लेखराम जी ने अपनी अन्तिम वसीयत इन्हीं शब्दो मे की थी कि —

आर्य समाज से लेखन व भाषण कदापि न रुक पाए। स्वयं प० लेखराम जी का जीवन साहित्य का खजाना ही था इस वसीयत को आर्य समाज ने अपनी थाती समझकर अपनाया है। सार्वदेशिक सभा का गौरव भी साहित्य के द्वारा बढ़ा है। विदेशों में भी सभा का साहित्य भारी मात्रा में जाता है। सभा द्वारा पुराने अलभ्य ग्रन्थों का भी प्रकाशन किया है उनके भाषान्तर भी प्रकाशित हो रहे हैं।

आर्य समाज के मौखिक प्रचार से अधिक महत्वपूर्ण साहित्य द्वारा प्रचार होता है। साहित्य पाठक के हृदय पर स्थायी प्रभाव बनाता है। आर्य समाज के बढ़ते हुए कदमों में साहित्य का एक स्थायी व सुदृढ़ स्थान है। यह बड़े सन्तोष का विषय है कि आर्य जनता में साहित्य के लिए रुचि बढी है। लेखको मे भी नए नए आयाम स्थापित करने की रुचि बढ़ रही है। अभी भी लेखकों के लिए बहुत से ऐसे आवश्यक विषयों पर लिखने की गुंजाइश है जो काल के बढते चरणों से समताल बन सके। विज्ञान ने खोज के नए-नए लक्ष्य बनाए हैं उनके साथ सन्तुलन बनाए रखने के लिए हमें भी ऊहा अनुशीलन व विचार दर्शन की आवश्यकता है।

आर्य समाज के भविष्य के लिए भी यह परमावश्यक है कि हम आर्य समाज मे पुस्तकालयो की ओर विशेष ध्यान दें। आर्य समाज का बहुमूल्य साहित्य ही हमारे मन्दिरो की अमोल निधि है। पुस्तकालयों मे इतनी मात्रा मे साहित्य अवश्य होना चाहिए जिससे सर्वसाधारण पूरा लाभ उठा सकें।

। सम्पादक

जैलसिंह की मौत से मुलाकात

अब तो अन्त समय आ ही गया। अब यह शरीर और साथ नही देगा। अब तो यह शरीर छोड़ना ही है और यह दुनिया भी। सब जंजाल छोड़ो और भूल जाओ इस दुनिया को। अपने-पराये, नातेदार-रिश्तेदार सब को भूल जाओ आओ और उस परमपिता परमात्मा मे ध्यान लगाओ।

इस तरह के विचार भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानीजैलसिंह के अन्तर्मन मे ११ अक्तूबर को बलिया के निकट उस समय जागे जब उनके सीने मे बहुत तेज दर्द उठ रहा था, शरीर पसीना-पसीना हो गया था और हाथ पैर ठंडे हुए जा रहे थे। इस दिन ज्ञानी जी स्वर्गीय जयप्रकाश नारायण के जन्मदिन से सम्बद्ध कार्यक्रम मे भाग लेने उनके गांव सिताबदियारा जा रहे थे।

उन्होने अपने आपको समझाया—शरीर छूट रहा है तो क्या हुआ। इस दुनिया फानी मे कौन रहा है, कौन रहेगा। अब तो प्रभु मे मन लगाओ। परमात्मा से आत्मा का मिलन होगा। शरीर ही तो साथ छोड़ रहा है, अपनी आत्मा तो अजर-अमर है। इसके साथ ही उन्हें आत्मा के बारे मे गीता मे लिखी भगवान कृष्ण की वे बातें याद आईं कि आत्मा को न कोई जला सकता है, न डुबो सकता है, न सुखा सकता है .....।

आत्मा और परमात्मा मे ध्यान लगा तो ज्ञानी जी के मन में विचार कौंधा कि उन्हे स्वर्ग मिलेगा या नर्क। इसका जवाब भी उन्हें तुरन्त अपने अवचेतन में मिल गया और उन्हें यह चौपाई आई—

नरक स्वरग न हो रहओ सतगुरु के प्रसाद।
चरण कमल की मौज में रहओं अन्त अर आद॥

ईश्वर की अनुकम्पा से न मुझे स्वर्ग मिलेगा और न नर्क। मैं तो आरम्भ से ही ईश्वर के चरणो की सेवा मे मस्त रहा हूं और अन्त तक उनके चरणों में ही रहूंगा।

इस बीच एम्बुलेंस (चिकित्सा वाहन) मे उनके सीने की मालिश मे जुटे डाक्टर से उन्होने कहा कि जहां प्राण निकलें, मेरा अन्तिम संस्कार उसी स्थान पर करा देना। पूरे हिन्दुस्तान की मिट्टी मेरे लिए एक जैसी है। कफन की भी जरूरत नही जो भी कपड़े पहने हुए हूं ये ही काफी हैं। नहलाने के चक्कर में भी मत पड़ना। ये शब्द कहते-कहते अन्ततः उन पर मूर्च्छा छा गई।

ज्ञानी जी इस संवाददाता को गुरुवार की शाम अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के निजी वार्ड के कक्ष संख्या १०१ मे कुर्सी पर बैठें ये सब बातें बताते-बताते कहीं खो से गये थे। कई बार वे खुलकर मुस्कुराए भी लेकिन उनके चेहरे को देखने लगता है कि उस घटना की गहरी और काली छाया से १९ दिन के अन्तराल के बाद भी वह पूर्णतः मुक्त नही हो पाए। ७१ वर्षीय भूतपूर्व राष्ट्रपति ने बताया कि उन्हे पहले भी दो बार इस तरह की स्थिति से दो चार होना पड़ा है किन्तु इस बार का हादसा सबसे भयकर था। जाने कैसे ईश्वर ने प्राण रोक दिए।

कक्ष के बाहर सफेद रंग की एक पट्टिका लटकी हुई है जिस पर अंग्रेजी मे लाल स्याही से कुछ लिखा हुआ है जिसका भावार्थ कुछ इस तरह से निकलता है—'आप मुझे देखने आए। मैं आपकी चिन्ता की सराहना करता हूं किन्तु डाक्टरो ने मुझसे आराम के लिए कहा है। कृपया मुझे आराम करने दें। धन्यवाद! फिर मिलेंगे।"

—नरेश कुमार

मुस्लिम समस्या का ईसाई व साम्यवादी समाधान

रूस—१९०७ में मस्जिदो की कुल सख्या ७००० थी। १९४२ में यह सख्या घटकर हुई १११२ और आज तो मात्र २३ बची हैं। ताशकन्द मे १५, बाकू में २, समरकन्द मे ३, बुखारा मे ३। सारे देश में केवल १ मदरसा है। एक से अधिक विवाह निषिद्ध है।

चीन—कम्युनिष्ट क्रांति के बाद माओ के निर्देश से मुस्लिम बहुल सिंकियांग प्रदेश की १००० मस्जिदें मिट्टी मे मिला दी गई। एक से अधिक विवाह एव सन्तान उत्पन्न, सामूहिक हज यात्रा एव विदेशो से पैसे लाने पर प्रतिबन्ध लगाया गया। स्पष्ट कहा गया कि धर्म व्यक्तिगत आचरण की बात है अत घर बैठ कर ही करें, सगठित होकर नही।

कम्पुचिया—साम्यवादी 'पोलपट' सरकार के शासन मे कुरान पर प्रतिबन्ध लगाया गया। देश के ३० प्रतिशत मुसलमानो की हत्या की गई। बुलडोजर द्वारा ११४ मस्जिदें भूमिसात की गई। शेष मस्जिदें सुअर के बाडे एव खाद गोदाम मे परिणित कर दी गई। २००० मुसलमान थाईलेंड होकर मलेशिया भाग गये। यहा ८ प्रतिशत मुसलमानो को निर्मूल करने का कारण यह था कि वे कम्पुचियाई सस्कृति की जगह कुरान एव अरबी भाषा के प्रति आसक्त थे।

बुलगेरिया—यहा की साम्यवादी सरकार के 'आपरेशन बलगेरियाई-जेशन' के विरुद्ध मुस्लिम जगत मे खूब हो-हल्ला हुआ है। आरोप है कि बुलगेरिया में तुर्की भाषा पढने पर रोक लगा दी है, कब्र व मस्जिदें बुलडोजर एव डायनामाइट के द्वारा ध्वस्त की गई है, शेष गोदाम बना दी गई हैं। मुसलमानो की हत्या व गिरफ्तारी हुई हैं, अनेक पडोसी देशो मे भाग गये हैं। शासक वर्ग का कहना है कि जिन पूर्वजों ने भय से इस्लाम ग्रहण किया था, उनके वशजो ने फिर से स्वधर्म व अपने अधिकारो की प्रतिष्ठा की है। भारत मे भी तलवार की सहायता से हिन्दुओ को मुसलमान बनाया गया था। जब कि धर्मान्तरण के सम्बन्ध मे मुहम्मद ने कहा है जो व्यक्ति स्वधर्म छोडे उसकी हत्या करो (बुखारी हदीस पृ०—४८५)

साइप्रस—पूर्व भूमध्यसागर पर स्थित इस द्वीप के लोग १२वी शताब्दी तक ग्रीक सस्कृति के अन्तर्गत थे। रोमन शासनाधीन होने पर वे ईसाई बनाये गये और जब तुर्की के अधीनस्थ हुए तो आये हुए मुट्ठी भर तुर्की सख्या वृद्धि के कोरानिक उपायो [बहुविवाह एव तलाक के द्वारा असख्य सन्तान उत्पादन, धर्मान्तरण, घुसपैठ आदि] द्वारा धीरे-धीरे १८ प्रतिशत हो गये। सन १८७८ मे साइप्रस ब्रिटेन के अधिकार मे आ गया। १९५० मे EOKA नामक राजनीतिक दल के हाथों इस शर्त पर साइप्रस स्वाधीन किया गया कि वे पुन ग्रीस के अ ग नही बनेंगे। किन्तु मुसलमानो ने माग रखी कि या तो साइप्रस का मुस्लिम हिस्सा टर्की में मिलाया जाय या स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित हो या फिर ब्रिटिश पूर्ववत बने रहे। इसी कारण १९६० मे साइप्रस रिपब्लिक की घोषणा होने पर मुसलमानो ने कुरान के निर्देशानुसार जिहाद यानि भयकर दगो हगामो का दौर शुरू किया। अन्त मे १९६७ में साइप्रस व मुस्लिम साइप्रस इन दो राष्ट्रो का जन्म हुआ। विश्व का इतिहास साक्षी है कि जिस देश मे मुसलमान ३० प्रतिशत हो जाता है वही देश का विभाजन करना पडता है। खण्डित भारत मे मुसलमानो के अनुसार उनकी जनसख्या २२ करोड यानि लगभग २८ प्रतिशत हो गई है।

लेबनान—सन १९४६ मे फ्रांसीसी शासन से मुक्त होने के बाद १९५८ तक तो शाति रही लेकिन साइप्रस की भाति यहा भी पेलेस्टाइन एव सीरिया से लाखो की सख्या मे घुसपैठें होने के कारण ईसाई मुस्लिम जनसख्या का सन्तुलन बिगड गया। फलत लोमहर्षक द गे शुरू हुए। अब तक ६००० लोग मारे जा चुके है। द गे जारी हैं। भगवान ही जाने लेबनान का भविष्य।

स्पेन व पुर्तगाल—७११ ई० के मुस्लिम शासक मूसा द्वारा दक्षिण के शासक रूप मे नियुक्त तारिक नामक एक युवक ने परिवेश अनुकूल पाकर ७०८० बर्छीधारी सैनिकों को लाकर जिब्राल्टर पहाडी पर एक किले का निर्माण किया तथा आस्टुरिया नामक एक छोटे क्षेत्र को छोडकर शेष सारे ईसाई बहुल क्षेत्र को जीत लिया। फिर शुरू हुआ कुरान के निर्देशानुसार लाखो ईसाइयो की हत्या, धर्मान्तरण, नारी अपहरण एव गिरजा का मस्जदीकरण। १४९२ तक अरबी मुसलमान स्पेन व पुर्तगाल के शासन का भोग करते रहे। इसी बीच बाहर से आये लाखों मूर मुसलमानों के साथ स्थानीय मुसलमानों की अन्तर्कलह का लाभ उठाकर ईसाइयों १९४२ साल में अपने देश को उनके हाथों से छीन लिया। अब बदला लेने की बारी ईसाइयो की थी। द्वितीय फिलीप ने ग्रानारा के प्रधान ईसाई पुरोहित के माध्यम से आदेश जारी करवाया कि एक दिन के भीतर मुसलमानों को स्पेनीय नाम, भाषा, पोषाक इत्यादि अपनाना होगा। विद्रोह करने पर लाखों मुसलमानो की हत्या की गई। कई लाख मुसलमान भाग गये। बाकी ईसाई बन गये। मुस्लिम बहुल पर्वतीय इलाकों को अग्नि के भेट चढा दिया गया। इस प्रकार मुस्लिम समस्या का स्थायी समाधान हुआ।

ब्रह्मदेश—राजधानी र गून की डलहौजी स्ट्रीट पर विख्यात सूले पगोडा और एक बडी मस्जिद आमने-सामने स्थित थे। जुलाई १९३७ मे बौद्धो को एक नृत्य गीत वाद्ययुक्त जलूस निकलने वाला था। एक दिन पूर्व मुसलमानों ने आपत्ति की कि मस्जिद के सामने से बाजा बजाकर जलूस नही जा सकेगा। बौद्धो का जवाब था तुम लोग इस देश मे अतिथि, यदि अपना आचरण ठीक नही करते और उपद्रव करोगे तो आप लोगो को पीटकर इस देश से बाहर कर दिया जाएगा। ख्याल रहे ऐसी बात भविष्य मे कभी मुह से न निकले। अगले दिन जलूस ज्योहि मस्जिद के सामने पहुचा कि भीतर से ई ट, पत्थर सोडावाटर की बोतले फेंकी जाने लगी। तीन बौद्धो को छुरी से वहीं ढेर कर दिया गया। शातिप्रिय बर्मियो के लिए यह नया अनुभव था किन्तु तीन घ टे मे ही वही लोग खुली तलवार लेकर सडकों पर आ गये। इन द गो में सारे देश भर मे कुल १००० मुसलमान निहत हुए। प्रधान भिक्षु के आदेश से ९० प्रतिशत मुसलमान मात्र ६ मास में बर्मा छोड कर भारत आ गये। शेष १० प्रतिशत मुस्लिम पिता व बर्मी माता की सन्तान थे। ब्रह्मदेश स्वाधीन होते ही सरकारी आदेश स य बौद्ध बन गये।

भारत—गत १३०० वर्षो से मुस्लिम अत्याचार से ग्रस्त हिन्दुओ का व्यवहार उनके प्रति सदैव नरम एव कुरान, मस्जिद एव मुस्लिम महिलाओं के प्रति सम्मान का रहा है। खडित भारत मे मेहमान के रूप मे बचे हुए इन लोगो को राष्ट्रपति पद पर भी बैठाया गया तथापि अपवाद छोडकर इनकी निष्ठा हिन्दुस्तान के प्रति सदेहास्पद ही रही है। बहु-विवाह एव सहज तलाक के द्वारा असख्य सन्तान उत्पन्न, धर्मान्तरण एव घुसपैठ द्वारा सख्या बढाकर भारत को हडपना, वैश्यावृत्ति, नशीले पदार्थो की बिक्री, अपह रण आदि उपायो से हिन्दू युवा पीढी को पगु बनाना, इनका मानो एकमेव लक्ष्य हो गया है। उपयु क्त देशो की एव भारत की मुस्लिम समस्या का स्वरूप लगभग एक सा है फिर भी शान्तिप्रिय हिन्दुओं ने समाधान के उपरोक्त उपाय से भिन्न शान्तिवादी उपाय ढू ढने मे देश विभाजन तक कर डाला लेकिन समस्या १० गुणी अधिक बढ गई है। अस्तु, आज हिन्दू मानस विवश हुआ है मुस्लिम मानसिकता से ठीक-ठीक परिचित होने के लिए, कुरान व हदीस पढने को तथा सोच रहा है कि मुस्लिम समस्या के निर्णायक हल के लिए उपरोक्त ईसाई व साम्यवादी समाधान ही क्या एकमेव मार्ग है।

शान्ति कामना

श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम.ए.एल.टी., आर्यसमाज गोरखपुर

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।

तैत्तिरीयारण्य १।३२

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ १ । ३३

ओ३म् सत्य यश श्रीर्मयि श्री श्रयताम् स्वाहा ।१ । ३४

इन तीनों मन्त्रों से देव यज्ञ मे बैठने वाले यजमान ऋत्विज् तथा संस्कार में उपस्थित सब लोग इस भावना से बैठे हैं मानो अमृत स्वरूप भगवान की गोद में बैठे हैं । उनका बिछौना भी वह है, ओढ़ना भी वह = ही है । कितना काव्यमय वर्णन किया गया है । काव्य का तात्पर्य है 'वाक्यम् रसात्मक काव्यम्' रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं । सन्ध्या या हवन आदि करते हुए यदि हमें आनन्द नही आया, सरसता नहीं आयी तो यह हमारे कार्य उपयोगी नहीं होंगे ? आचमन तो जल से किया जाता है परन्तु प्रश्न उपस्थित होता है कि जल शब्द का ब्रह्म अर्थ कैसे होगा ? जल को संस्कृत में 'आप' कहते हैं। ब्रह्म को वैदिक साहित्य में 'रस' भी कहते हैं । अग्नि होत्र के मन्त्रों में एक मन्त्र है

ओ३म् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥

(तै० आ १० प्रपा २७ अनु)

इसमें आप, ज्योति, रस, अमृतम् ब्रह्म भू भुव, स्व और ओ३म् इन शब्दों को पर्यायवाची माना है । इसलिए प्रतीत हुआ कि चूंकि 'रस' शब्द ब्रह्म के अर्थ में प्रयुक्त होता है अत 'ब्रह्म' रस रूप है ।

इसी प्रकार तैत्तिरीयोपनिषद् में लिखा है कि "रसो वै स. । रस ह्येवाय लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति । (तै० उप० ब्रह्मानन्दवल्ली अनुवाक ७) अर्थात् वह ब्रह्म रस है । इस रस को यह जगत प्राप्त कर आनन्दी अर्थात आनन्द वाला हो जाता है ।

शंकराचार्य ने भी इस वाक्य की व्याख्या मे लिखा है—

आनन्दम प्रस्तुत्य रसो वै स इति तस्यैव

रसत्व मुक्तवोच्यते" रस ह्येवायम् ।

वेदा सू १ । १ । १२

इसी प्रकार वेद में भी प्रभु को आप. = जल प्रभु कहा गया है । अथर्ववेद के १०-८-४४ मन्त्र में कहा गया है "रसेन तृप्तो न कुतश्चनोन" यज्ञ करने वाला व्यक्ति रस चाहता है और रस के लिए जहा रस हो वहा जाना चाहिए । और वह परमेश्वर रस से भरपूर है रस से तृप्त है । रस से तृप्त होने का कारण है 'न कुतश्चनोन' वह किसी प्रकार से न्यून नहीं है । कामना के कारण रस में विघात पड़ता है । और कामना कमी की द्योतक है । भगवान मे किसी प्रकार की ऊनता = न्यूनता = कमी नही है । अमृत है मृत्यु के भय से बचने के लिए अमृत की गोद में जाना चाहिए ।

इस प्रकार यज्ञ प्रारम्भ करने से पूर्व उस अमृत को बिछाकर, उसको ओढ़कर यज्ञ करने वाले प्रतिज्ञा करते हैं कि वे झूठा यश नही चाहेंगे अगर वे यश चाहेंगे तो सचाई से प्राप्त यश चाहेंगे, इसी प्रकार वे प्रतिज्ञा करते हैं कि जो धन वे चाहेंगे वह सचाई और ईमानदारी से कमाया हुआ धन होगा । वह धन धोखा धड़ी से कमाया हुआ नहीं होगा । सत्य ब्राह्मण का अमृत है यश क्षत्रिय का अमृत है और धन वैश्य का अमृत है इनमें से जो भी अमृत मेरे हृदय में इस ओढ़ने और बिछौने के बीच धारण करे ।

देवयज्ञ में भी जल का आचमन करते हुए यह भावना दिखाई गई है कि मानो इस जल के आचमन की क्रिया मे उस अमृत परमात्मा को हम अपने अन्दर ले रहे हैं, उसकी आहुति हम अपने भीतर के प्राणों में, भीतर के जीवन में दे रहे हैं, जीवात्मा के इस आध्यात्मिक बिस्तरे और ओढ़ने को हम रचा रहे हैं । बिस्तरे और ओढ़नी में आदमी सुख पूर्वक सोया करता है, हम प्रथम दो आचमनों द्वारा अपने जीवात्मा को यह विचार देना चाहते हैं कि हे जीवात्मन् तू किस प्राकृतिक शरीर के बिस्तरे के शरीर मे लेटकर और प्राकृतिक वस्तुओं की ओढ़नी ओढ़कर मस्त लेटा पड़ा है, सोया हुआ है । अरे ! शठ ! जाग ! और पहिचान । कि तुझे कहां सोना था और कहां सो रहा है ? अरे जीवात्मन । तू इस परमात्ममय बिस्तरे को अपने भीतर बिछा और इसी की ओढनी ओढ और उसमे मस्त होकर पड़ा रह । आचमन के तीसरे मन्त्र द्वारा सत्य, यश और श्री को अपने भीतर स्थापित कर रहा हूं । उपनिषद् में लिखा है—

अमृतमस्यमृतो पस्तरणमस्यामृत प्राणे जुहोमि ।

अर्थात् तू अमृत है, अमृत का तू बिछौना है, तुझ अमृत को मैं अपने प्राणो मे अमृत रूप मे देता हूं । वह आचमन करता हुआ मन मे अनुभव करे कि मैं शान्त परमात्मा का पान कर रहा हूं इसकी आहुति अपने प्राणों में दे रहा हूं ।

आचमन मे बताए सत्य, यश और श्री की भावना को लेकर यदि हम यज्ञ करेंगे तो हमे शान्ति प्राप्त होगी । उस समय हमारे मन मे मैत्री करुणा, मुदिता, उपेक्षा आदि के भाव आयेंगे । उस समय सबके साथ आत्मीयता, विश्व के मैत्री, पड़ौसियों की सुख समृद्धि में प्रफुल्लता, दीन दुखियों के प्रति करुणा और नासमझों के प्रति उपेक्षा की भावनायें चित्त मे विकसित और परिपुष्ट होने लगेंगी । शान्ति की यही धारायें हैं । गीता २-६६ मे आया है "न चाभावयत शान्ति" जिसमें ये भावनायें नही रहेंगी उसे शान्ति नही मिलेगी । यही शान्ति की धारायें हैं और उस समय हमारे हृदय से निकल पड़ेगा—

हे मेरे जीवन अमृत ! तुम ही असली वरेण्य हो । तुम्हारे दर्शन, मिलन और स्पर्शन में जो तृप्ति और आनन्द है, वह शाश्वत और अपरिच्छिन्न है । सांसारिक पदार्थों से प्राप्त होने वाला सुख, क्षणिक और अस्थायी है । मनोवांछित तृप्ति और पूर्ण शान्ति की भावना इनसे सम्भव नही, यह समझते हुए तेरी शरण आते हैं । तुझे अपना ओढना और बिछौना बनाते हैं । अपने चरणों में स्थान दे । हमारे आत्मा को अपने रस से तृप्त होने दो ।

शान्ति प्राप्त करने के लिए हम उत्सुक हैं । अविचल शान्ति के लिए मुख उठाये हुए हैं । इसलिए "शान्ति के दिव्य मेघ बरसो, सहस्रों धाराओं में बरसो ! हमारे भीतर और बाहर अमृत की, सत्य की धारायें प्रवाहित हों । इन शान्ति की धाराओं की चिरकाल से हमें प्रबल आकांक्षा है, प्रतीक्षा है । शान्ति की धाराओ आओ हमारी पिपासा बुझा जाओ, सात्विक तृप्ति जगा जाओ, आन्तरिक अशान्ति मिटा जाओ, सर्वत्र प्रफुल्लता फैला जाओ ।"

चिता से लौटाकर पुनर्विवाह कराने वाली ऋचाएं

श्री विष्णु खरे

प्राचीन धर्म का पालन कर पतिलोक की कामना करती हुई यह स्त्री मृत पति का त्याग कर तेरे पास आई है। इस धर्म को पालन करनेवाली स्त्री को तू इस संसार से सन्तान और धन दे। हे स्त्री! तू जो इस मृत पति के पास लेटी है, उठकर उसके पास से चली आ। ·· ··

—अथर्ववेद (१८, ३, १-४)

यह देखकर अचम्भा और सदमा होता है कि आज भी हिन्दुओं में यह माना जा रहा है कि सती-प्रथा निर्विवाद रूप से शास्त्रोक्त है और वह बहु-प्रचलित रही है। सिर्फ सती प्रथा ही नहीं, हिन्दुओं के तमाम इस तरह के विश्वासों को यदि शास्त्रों या अन्य प्रमाणों की कसौटी पर परखा जाए तो वे अधिक से अधिक अर्धसत्य ही ठहरते हैं। लेकिन कोई धूर्त या मूर्ख 'फलां वेद/अमुक शास्त्र में ऐसा कहा गया है' से शुरू कर किसी भी मानवद्रोही विचार को वर्षों के लिए प्रचलित कर सकता है।

चूंकि सती की अवधारणा स्त्री के विधवा होने से जुड़ी हुई है इसलिए देखना यह होगा कि हिन्दू संस्कृति के आदिकाल वैदिक युग में विधवाओं का क्या स्थान था। सबसे पहला तथ्य यह है कि उस युग में विधवा होना कोई दुर्भाग्य, कलंक या विपत्ति नहीं माना जाता था। तब समाज में विधवा को केवल विधवा रहकर भी जीने का अधिकार था। एक ऋग्वेदीय ऋचा में ऐसी स्त्रियों (नारीर विधवा, १०, १८, ७) का उल्लेख है।

लेकिन यह कहीं भी अनिवार्य न था कि विधवाएं विधवा ही रहें। उन्हें पुनर्विवाह का अधिकार था। अथर्ववेद में ऐसी पुनर्विवाहित स्त्रियों को 'पुनर्भू' कहा गया है। ऐसे पुनर्विवाह का ठोस प्रमाण इस तरह मिलता है —

या पूर्वं पति वित्वाथान्य विन्दते परम्।
पचौदन च तावज द दातो न वि योषत ॥
समानलोको भवति पुनर्भुवापर पति।
योऽज पचौदन दक्षिणाज्योतिष ददाति ॥

(अथर्ववेद ९, ५, २७ २८)

"जिस स्त्री का पहले पति था यदि वह दूसरे से विवाह करती है और यदि वे पति-पत्नी पचौदन (पचमेल भोजन या भात) के साथ देते हैं तो वे कभी अलग नहीं होंगे। दूसरा पति अपनी इस दूसरा विवाह करने वाली पत्नी के साथ उसी लोक को प्राप्त करेगा ··· "

इससे यह संकेत अवश्य मिलता है कि पचौदन के रूप में पुनर्विवाह का कोई सामाजिक शुल्क प्रायश्चित शुल्क दिया जाता था। किन्तु यह एक 'टोकन' के अलावा कुछ न था।

कुछ लोगों का ऐसा मत है कि अथर्ववेद में विधवाओं के पुनर्विवाह का प्रकारांतर से एक और उल्लेख है —

उत् यत् पतयो दश स्त्रियाः पूर्वे अब्राह्मणा।
ब्रह्मा चेद्धस्तमग्रहीत् स एव पतिरेकधा ॥
ब्राह्मण एव पतिर्न राजन्यो न वैश्यः ॥

(५, १७, ८-९)

"किसी नारी के दस अब्राह्मण पति भी हो चुके हों किन्तु यदि ब्राह्मण उससे विवाह करे तो वही उसका वास्तविक पति माना जायेगा। वह ब्राह्मण ही उसका पति होगा, (पिछले) क्षत्रिय या वैश्य नहीं।"

असंदिग्ध प्रमाण होने के बावजूद वैदिक साहित्य में विधवा पुनर्विवाह के उल्लेख इसलिए अधिक नहीं पाए जाते क्योंकि तत्कालीन समाज में संतानोत्पत्ति स्त्री का चरम साफल्य माना जाता। उसके लिए उसका विधिवत विवाह करना आवश्यक न था क्योंकि तब नियोग नामक प्रथा भी विवाह जितनी ही समादृत और प्रचलित थी। नियोग के अन्तर्गत निस्संतान विधवा (या नपुंसक की पत्नी) अपने देवर या उस उद्देश्य के लिए आयत किसी अन्य नजदीकी रिश्तेदार से सन्तान प्राप्त कर सकती थी। नियोग-प्रथा से प्राप्त किया गया पुत्र दत्तक पुत्र से ज्यादा श्रेयस्कर समझा जाता था।

अश्वि-युगल को सम्बोधित करते हुए ऋग्वेद में एक जगह कहा गया है: 'तुम्हें उस तरह कौन बुलाता है, जैसे विधवा अपने देवर को बुलाती है? को वां शयुत्रा विधवेव देवर (१०, ४०, २)। इससे देवर से विवाह या नियोग का स्पष्ट संकेत नहीं मिलता लेकिन निरुक्त (३/१५) में इस ऋचा की व्याख्या में देवर को दूसरा पति माना गया है।

वैधव्य, सती-प्रथा और समाज में विधवा के पुनर्स्वीकार के बारे में एक महत्वपूर्ण उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है, जिसमें नियोग प्रथा का भी स्पष्ट हवाला है —

इयं नारी पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उपत्वा मर्त्य प्रेतम्।
धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि ॥
उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ ॥
अपश्यं युवतिं नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम्।
अन्धेन यत् तमसा प्रावृतासीत् प्राक्तो अपाचीमनयं तदेनाम् ॥
प्रजानत्यघ्न्ये जीवलोकं देवानां पन्थामनुसंचरन्ती।
अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमधि रोहयैनम्।

अथर्ववेद १८, ३, १-४)

इन ऋचाओं का सदर्भ इस तरह है प्राचीन धर्म का पालन कर पहले मन्त्र में विधवा अपने मृत पति के साथ लेट जाती है। तब दूसरे मन्त्र में उसका देवर या अन्य कोई निकट का सम्बन्धी उसे चिता पर से उठने के लिए कहता है। तीसरे मन्त्र में उसे वापस घर ले आया जाता है और अन्त में जो भी योग्य पुरुष उससे विवाह की कामना करे उसके बारे में कहा जाता है कि यही तेरा पति है।

प्राचीन धर्म का पालन कर पतिलोक की कामना करती हुई यह स्त्री मृत पति को त्याग कर तेरे पास आई है। इस धर्म को पालन करने वाली स्त्री को तू इस संसार में संतान और धन दे। हे स्त्री! तू जो इस मृत पति के पास लेटी है, उठकर उसके पास से चली आ। संसार में लौटकर तेरा पाणिग्रहण करने वाले (अपने दूसरे) पति की सन्तान को प्राप्त हो। श्मशान की ओर जीवित से लाई गई और मृत मनुष्यों के बीच से वापस लाई गई युवती को मैंने पुनर्विवाह किया देखा है। जो शोकजनित अंधियारे से घिरी हुई थी उस घर की ओर आने वाली इस स्त्री को यहाँ समझा जाता है। हे अवध्य स्त्री! संसार को खूब जानती हुई और देवताओं की राह पर चलती हुई, यह जो तेरा गोपति (नया पति) है उससे प्रेम कर। इस तरह इस गोपति को स्वर्ग का पात्र बना।"

सती-प्रथा पर किसी भी बहस के लिए अथर्ववेद का यह उद्धरण केन्द्रीय महत्व का है। अव्वल तो धर्म पुराणमनुपालयन्ती से स्पष्ट संकेत मिलता है

(शेष पृष्ठ ८ पर)

मृत्यु के बाद जीवात्मा की अवस्थायें

श्री जीवानन्द नैलवाल (एम.ए.बी.एड.)

शरीर त्यागने के बाद जीवात्मा किस-किस स्थान में घूमता हुआ कितने समय में माता के गर्भ में प्रवेश करता है। इस तथ्य को यजुर्वेद के निम्न मन्त्र में स्पष्ट किया गया है।

सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीयेऽ आदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमाः पञ्चम ऽ ऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे। मित्रो नवमे वरुणो दशम ऽ इन्द्र ऽ एकादशे विश्वे देवा द्वादशे ॥

यजुर्वेद अ० ३९ मं० ६ ॥

दयानन्द महाराज ने इस मन्त्र का भावार्थ इस प्रकार किया है कि "हे मनुष्यो ! जब ये जीव शरीर को छोड़ते हैं, तब सूर्य प्रकाश आदि पदार्थों को प्राप्त होकर कुछ काल भ्रमण कर अपने कार्यों के अनुकूल गर्भाशय को प्राप्त हो शरीर धारण कर उत्पन्न होते हैं। तभी पुण्य पाप कर्म से सुखदुःख रूप फलों को भोगते हैं।"

सूर्य प्रकाश आदि उपरोक्त वाक्यानुसार मृत्यु के पश्चात आत्मा जिन-जिन तत्वों में प्रवेश करता है उन तत्वों में उसका प्रवेश सूक्ष्म शरीर के मलो के प्रक्षालन होता है। वृहस्पति से पहले सभी तत्वों में आत्मा का प्रवेश मलों के मार्जन के लिए ही होता है। मन्त्र के प्रत्येक पद की व्याख्या से इसे भली प्रकार समझा जा सकता है:—

प्रथमेऽहनि सविता

प्रथम दिन में सविता में जीवात्मा का प्रवेश बिना किसी प्रयत्न के ही हो जाता है। क्योंकि सम्पूर्ण भूमण्डल में सूर्य की किरणें फैली हुई हैं। इसलिए सूर्य की किरणों में प्रवेश पाने में आत्मा को कष्ट नहीं उठाना पड़ता है। भूमण्डल में फैली ये सूर्य किरणे अग्नि के सहयोग से ही कार्य करती हैं। इसलिए सूर्य की किरणों में प्रविष्टि के साथ ही आत्मा का अग्नि से भी सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। मलों के प्रक्षालन में अग्नि सबसे सर्वश्रेष्ठ मानी जाती इसीलिए "अग्निमीडे पुरोहितम्" की बात वेद ने कही है। मन्त्र का दूसरा पद इसी से सम्बन्धित है:—

अग्निः द्वितीयेः

मृत्यु के दूसरे दिन जीवात्मा अग्नि में प्रवेश पाता है। अग्नि तत्व मलों का भली भांति मार्जन हो जाने पर शुद्ध हुई आत्मा को ऊर्ध्व गति का अवसर प्राप्त हो जाता है। भूमण्डल से अन्तरिक्ष की ओर जाने का अवसर आत्मा को मिलता है। अन्तरिक्ष का अधिष्ठाता देव वायु है। जब जल तत्व को सविता और अग्नि बाष्प में बदल देते हैं तो बाष्प को वायु ग्रहण कर लेती है। इस प्रकार सविता और अग्नि में मार्जित आत्मा अन्तरिक्ष में वायु तत्व में प्रवेश पा जाती है। वायुतत्व में प्रवेश पाने पर आत्मा के साथ लगे सूक्ष्म शरीर में स्थित प्राण तत्व का प्रक्षालन हो जाता है। इसी बात को मन्त्र का निम्न पद प्रदर्शित कर रहा है:—

वायुस्तृतीये

जीवात्मा तीसरे दिन वायु मे प्रविष्ट होता है। सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा वायु में प्रवेश पाते ही वायु से होती हुई आगे को बढ़ने वाली आदित्य की रश्मिमालाओं का आलिंगन कर लेता है। आदित्य की किरणों में तपता हुआ विशुद्ध होकर आगे को बढ़ता है इसी चौथी अवस्था के लिए मन्त्र कहता है.—

आदित्यश्चतुर्थे

चौथे दिन आत्मा आदित्य की किरणों में प्रविष्ट हो जाता है। आदित्य की रश्मिमालाओं के बीच तपता हुआ सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा अब शान्ति प्राप्त करने की इच्छा से वायुमण्डल के ही किसी शीतल प्रदेश की कामना करता हुआ चन्द्रमा की किरणों में प्रविष्ट हो जाता है। इसीलिए पञ्चम स्तव के बारे में लिखा है:—

चन्द्रमाः पञ्चमे

पांचवें दिन जीवात्मा चन्द्र किरणों में प्रवेश करता है। तपने योग्य आवश्यक तत्वों में तप करके भ्रमण करता हुआ जीवात्मा चन्द्र किरणों के माध्यम से खुले वायुमण्डल में प्रवेश करता है। खुले वायुमण्डल में किसी न किसी ऋतु का होना स्वाभाविक ही है। इसीलिए अगले पद में मन्त्र कह रहा है.—

ऋतुः षष्ठे

मृत्यु से छटे दिन आत्मा ऋतु में प्रवेश करता है। ऋतु में प्रवेश करने से पूर्व सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा के सभी मलों का प्रक्षालन हो जाता है। अब आत्मा सूक्ष्म शरीर के तत्वों से सहयोग प्राप्त करके गर्भ में प्रवेश पाने का प्रयत्न करता है। इसके लिए वह मरुत तत्वों से भी सम्बन्ध स्थापित करता है। इन मरुत तत्वों की संख्या ४९ के लगभग होती है। जिनमें विद्युत का भी मेल रहता है। गर्भ में प्रविष्टि के लिए आत्मा ऋतु मण्डल से निकल कर मरुत तत्व के सम्पर्क में आता है। तभी वेद ने बताया है—

मरुतः सप्तमे

सातवे दिन जीवात्मा मरुत में प्रविष्ट होता है। सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा का मरुत तक पहुंचते-पहुंचते जो भी शोधन हुए थे सब भौतिक शोधन थे। जीवात्मा को किस माता के गर्भ में प्रवेश करना है और अपने किये कर्मों के फल भोगनेके वास्ते अब स्वयं परमपिता, परमेश्वर वृहस्पति आत्मा को अपने नियन्त्रण में कर लेते हैं। तभी तो मन्त्र का आगे का पद कह रहा है :—

वृहस्पतिरष्टमे

आठवे दिन आत्मा वृहस्पति में प्रवेश करता है यानि परमात्मा के नियन्त्रण में हो जाता है। परमात्मा जीवात्मा के सूक्ष्म तत्वों के साथ स्थूल तत्वों को मिलाकर गर्भ में प्रविष्ट होने योग्य बना देते हैं। इसी बात को आगे कहा है:—

मित्रो नवमे, वरुणो दशमे

जीवात्मा नवे दिन मित्र से और दशवे दिन वरुण से मिल जाता है प्राण और उदान को मित्र और वरुण नामों से कहा है। शरीर को चलाने में प्राण तत्व मुख्य है। सूक्ष्म शरीर के प्राण तत्व को स्थूल शरीर को कायम रखने के लिए वाह्य प्राण तत्व की सहायता लेनी पड़ती है। प्राण और उदान के सम्पर्क से गर्भ में स्थूल शरीर का विकास होने लगता है। इसी प्रकार ईश्वर कृपा से आत्मा शक्ति को प्राप्त करता है। मित्र और वरुण के सहयोग से आगे को बढ़ते हुए जीवात्मा को इन्द्र अर्थात् विद्युत शक्ति का सहयोग प्राप्त होता है। और आत्मा जाग उठता है। तभी तो कहा गया है:—

इन्द्र एकादशे

एकादश दिन में आत्मा इन्द्र अर्थात् विद्युत की ज्योति में प्रवेश करता है। सूक्ष्म शरीर के साथ सूक्ष्म महाभूतों का सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर स्थूलाकार हो जाता है। और माता के गर्भ में रहने की क्षमता जीवात्मा में आ जाती है। और इसके लिए आत्मा को अब सब देवो का सहयोग मिलने लग जाता है। तभी तो कहा है:—

विश्वे देवा द्वादशे

बारहवे दिन में जीवात्मा पृथ्वी आदि देवो में प्रविष्ट हो जाता है। इस प्रकार सूक्ष्म शरीर की बारह अवस्थाओ के अनन्तर जीवात्मा पूर्व स्थूल शरीर के त्यागने के बारहवें दिन में माता के गर्भ में प्रवेश पा जाता है।

मन्त्र में मृत्यु के बाद की जीवात्मा की दशाओं का वर्णन सुन्दर ढंग से क्रमबद्धता के साथ किया गया है।

चिता से लौटाकर पुनर्विवाह

(पृष्ठ ५ का शेष)

कि मृत पति के साथ जीवित पत्नी को जला दिया जाता वेदों से भी कहीं बहुत पहले एक प्रथा थी जिसकी अमानवीयता और अन्याय को वैदिक समाज ने समझ लिया था। किन्तु उसे प्रतीकात्मक आदर देते हुए विधवा का मृत पति के शरीर के पास लेटना और बाद में उठ बैठना ही बनाया था, ठीक उसी तरह जिस तरह ऐसी सैकड़ों प्राचीन प्रथाएं सिर्फ प्रतीक रूप में अभिनय की जाती हैं। ऐसी 'प्रतीकात्मक अभिनय' संसार की हर सभ्यता में मिलता है।

महत्वपूर्ण यह है कि वेद में मृत पति के शरीर के पास से उठकर संसार में पाणिग्रहण करने वाले नए पति और संतान को प्राप्त होने का आह्वान असंदिग्ध है। मृत पति के शव के साथ श्मशान जाने और शोकाच्छादित वापस लौटाने के चित्र वैदिक ऋषियों के हृदय में विधवा के प्रति गहरी सहानुभूति के प्रमाण हैं। इसीलिए वे उस जाने वाली को वापस लाते हैं। बर्बर सती प्रथा की धूमिल स्मृतियां शेष हैं, लेकिन विधवा के जीवन के अधिकार की भावना विजयी हो चुकी है। इसीलिए ऋचा स्पष्ट कहती है कि यह वापस आई हुई नारी मारने के नितांत अयोग्य है। चरमोत्कर्ष यह है कि ऐसी नारी को संसार की ज्ञाता तथा देवमार्ग अनुगामिनी माना गया है, जिससे (पुन) विवाह कर उसका (दूसरा) पति स्वर्ग की प्राप्ति करेगा।

अथर्ववेद की यह आठ पंक्तियां सती-प्रथा की सारी प्राचीन कथाओं का तूमताड़ छिन्न-भिन्न कर देती हैं। दरअसल ऋग्वेद में ऐसा कोई उद्धरण नहीं है जिससे सती-प्रथा के थोड़े से भी अस्तित्व या समर्थन का आभास भी मिल सके। वेदों से बहुत पहले, जब आर्य महज एक घुमन्तू कबीले थे, तब उनमें; स्वयं उनके विश्वासों के कारण या किसी अन्य प्रभाव से, शायद कभी सती-प्रथा रही हो, यद्यपि इसका भी स्पष्ट उल्लेख कहीं नहीं है।

बृहद्देवता में भी एक उल्लेख है जिससे पति की चिता पर विधवा के प्रतीकात्मक रूप से लेट जाने की प्रथा का पता चलता है। लेकिन उस विधवा का देवर उसे चिता में जलने नहीं देता था :—

उदीर्ष्व नारीत्यनया मृतं पत्न्येनुरोहति।
भ्राता कनीयान्प्रेतस्य निगद्य प्रतिषेधति॥

(७, १३)

यहां यह भी व्यवस्था है कि यदि देवर न हो तो विधवा को चिता से उतारने का कार्य उपस्थित होता को करना चाहिए :—

कुर्यादेतत्कर्म होता देवरो न भवेद्यदि।

(७, १४)

बृहद्देवता' के इस उल्लेख से और भी साफ हो जाता है कि मृत पति की चिता पर चढ़ने की प्रथा और भी अधिक प्रतीकात्मक हो चुकी थी क्योंकि विधवा को उसका देवर या होता अथर्ववेद की उपरोक्त ऋचा को दोहराते हुआ रोकता था। उसका एक मंत्र "उदीर्ष्व नार्यभि···द बभूथ" ज्यों का त्यों ऋग्वेद (१०, १८, ८) में भी मिलता है।

वेद में न केवल सती-प्रथा का उल्लेख नहीं मिलता बल्कि एक स्वस्थ समाज होने के नाते वैदिक युग में विधवाओं को लम्बे या आजीवन शोक के आत्मपीड़क रोग से बचने का स्पष्ट आह्वान है —

इमानारीरविधवा सपत्नी राञ्जनेन सर्पिषा संविशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवा सुरत्ना आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे॥

(ऋग्वेद १०/१८/७)

इस ऋचा के अन्त में 'अग्रे' को अग्ने' पढ़ कर कुछ तथाकथित विद्वानों ने ऋग्वेद में सती-प्रथा का समर्थन खोजा है। लेकिन ऋग्वेद की जितनी प्रतियां उपलब्ध हैं उनमें अग्रे' पाठ ही मिलता है। नारी की सधवता और जीवन के सारे सुख प्रदान करने की कामना करती हुई यह ऋचा आज भी भारतीय समाज के लिए एक चुनौती है —

'ये विधवाएं वैधव्य से दूर हों, दूसरे सुन्दर पति का वरण करें, आंखों में काजल आंजें स्यापे को दूर भगाएं, रोगों को न पावें, खूब गहने पहनें और शृंगार कर अपने घरों को जाएं।"

वैदिक समाज में सती का चीत्कार और विधवाओं का क्रन्दन नहीं, पुनर्विवाहिताओं की हंसी और उनकी भरी-पूरी गृहस्थी की चहलापहली की ही प्रतिध्वनियां हैं। विधवा को सती बनाना, उसे अवमानना के स्वर में विधवा कहना अवैदिक है।

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग का प्रशंसनीय कदम

विदित होगा कि पूज्य अमर स्वामीजी महाराज के स्वर्गवास के बाद मैंने यह निश्चय किया है कि स्वामी जी महाराज द्वारा जो प्राचीन शास्त्रार्थों का संग्रह 'निर्णय के तट पर" नाम से छप रहा था, इस ग्रन्थ का प्रकाशन सुविधा के हिसाब से ही कराया गया था, आज एकसौ प्रतियां अधिक हैं।

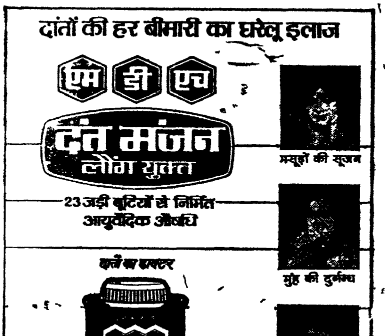
पूज्य स्वामी जी महाराज की पावन स्मृति में उन शेष एकसौ प्रतियों पर भी वही पूर्ववत् छूट दी जा रही है। अन्य दिसम्बर माह के अन्त तक तैय्यार हो जावेगा। "अत आप प्रथम व तृतीय भाग जो अब २५० रुपये के हैं, मात्र रियायती दर से १२० रु० दोनों भागों के भेज कर बुक करवावें" यह कदम प्रचार की दृष्टी से पूज्य अमर स्वामी जी महाराज की पावन स्मृति में उठाया गया है। जो शास्त्रार्थ सामग्री इन भागों में छपी है ऐसी अद्भुत सामग्री शायद ही कहीं आपको प्राप्त न होगी। द्वितीय भाग के लिए जो बहुत समय पहले से उपलब्ध है निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें —

—लाजपतराय अग्रवाल
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८ विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद (उ. प्र)

वधू चाहिये

२६ वर्षीय जाट कुलीन (आर्य) कद ५ फिट ४ इंच, आचार्य, पी-एच.डी (संस्कृत) प्रवक्ता, वैदिक विचारधारा वाले प्रतिभावान् सादगी पसन्द धार्मिक मध्यवर्गीय युवक हेतु अनुरूप, सुयोग्य सुन्दर सुशील वधू चाहिये। कोई रूढ़ि-बन्धन नहीं। कृपया प्रथमबार में ही पूरा विवरण निम्न पते पर लिखें।

पत्र व्यवहार का पता—
श्री आचार्य, बी-४ आनन्दपुरी, जयपुर



आर्य जगत् के समाचार

असद मदनी को भाषण अधूरा छोड़कर भागना पड़ा

सरौली, २ नवम्बर। जमीयत उल्मा ए हिन्द के अध्यक्ष मौलाना असद मदनी का स्थानीय अकबरी मस्जिद में कथित उत्तेजनात्मक तथा विद्वेषपूर्ण भाषण का अनेक मुस्लिम युवकों ने विरोध किया और उनके विरुद्ध नारेबाजी की जिसके कारण श्री मदनी को अधूरा भाषण छोड़कर चले जाना पड़ा।

श्री मदनी ने उक्त मस्जिद में आकर ईरान इराक युद्ध पर बोलते हुए शिया सुन्नी मुसलमानों में भेद करते हुए इनमें से एक वर्ग के प्रति कथितरूप से आपत्तिजनक शब्दों का प्रयोग करते हुए एक समुदाय को यहूदियों का वंशज बताया तथा उसके विरुद्ध दूसरे वर्ग को भड़काने की चेष्टा की जिस पर अनेक युवक उन्हीं के खिलाफ भड़क उठे और श्री मदनी से अनेक सवाल करने शुरू कर दिये। युवकों ने पूछा कि ईरान-इराक की बात तो करते हो अपने देश की क्यों नहीं करते जब मेरठ में दंगे हो रहे थे तो तब आप कहां छिपे थे।

कुछ युवकों ने श्री मदनी द्वारा मुल्क ए मिल्लित तहरीक के लिए एकत्रित किये गये चन्दे का उनसे हिसाब पूछा तो बताया जाता है कि मौलाना ने हिसाब देने में आनाकानी की इसमें श्रोता अधिक उत्तेजित हो गये और उन्होंने मौलाना के विरुद्ध कड़ी नारेबाजी शुरू कर दी और उन्हें कौम के खिलाफ आचरण करने वाला बताते हुए उन पर देश की शान्ति भंग करने के प्रयासों में लिप्त होने का आरोप लगाया।

स्थानीय एक मुसलमान नेता ने बताया कि उत्तेजित लोगों ने उन पर मस्जिद में ही पत्थर फेंकने शुरू कर दिये तो मौलाना असद मदनी तुरन्त दूसरे दरवाजे से भाग निकले।

इससे पूर्व अब्दुल हलीम फारुकी लखनवी तथा मौलाना निसार ने भी सभा को सम्बोधित किया।

आचार्य पं० रामानन्द शास्त्री अभिनन्दन-समारोह

आर्यसमाज बेतिया चम्पारण में जिला आर्य सभा द्वारा बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक आचार्य पं० रामानन्द शास्त्रार्थ महारथी की दीर्घकालीन सेवाओं का सम्मान करने के के लिए अभिनन्दन-समारोह आर्य समाज बेतिया में करने को तथा साथ ही एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन की योजना बनायी है।

आचार्य पं० रामानन्द शास्त्री के सम्बन्ध में संस्मरण, शंका समाधान संस्मरण, जीवनवृत्त, शुभ कामना शुभसन्देश विद्वानों की सम्मतियां आदि अभिनन्दन ग्रन्थ में छापे जायेंगे। इस समारोह एवं ग्रन्थ प्रकाशन में करीब सात हजार रुपये का अनुमानिक खर्च है। अधिक से अधिक अपनी अनुग्रह राशि प्रदान कर यश के भागी बनें।

रामाज्ञा वैरागी प्रधान जि० सभा बी०के०शास्त्री मन्त्री जिला सभा

महर्षि निर्वाण दिवस

—आर्य समाज मेस्टनरोड कानपुर द्वारा महर्षि निर्वाण दिवस बड़े समारोह पूवक मनाया गया। अनेक विद्वानों ने महर्षि को भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि भेंट की।

—आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद द्वारा सैक्टर १० में महर्षि निर्वाण दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। पं० शिवकुमार शास्त्री (पू० सांसद) ने अध्यक्षता की। ब्र० आर्य नरेश आदि अनेक विद्वानों के ऋषि भक्ति व उनकी संसार को देने के सम्बन्ध में प्रवचन हुए। उत्सव बहुत सफल रहा।

—आर्य वीर दल कोटा की ओर से आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर तलवंडी कोटा में बड़े धूमधाम से निर्वाणदिवस मनाया गया।

—आर्यसमाज अजमेर में महर्षि निर्वाणोत्सव बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया काशी के हिन्दू विश्व विद्यालय के रीडर श्री डा० आनन्दप्रकाश ने अध्यक्षता की स्थानीय व बाहर के उच्चकोटि के विद्वानों ने महर्षि को श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की।

—आर्यसमाज मसूदा [अजमेर] में महर्षि निर्वाणोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। स्वामी केवलानन्द जी व अन्य विद्वानों के सार गर्भित भाषण हुए।

उदयपुर आर्यसमाज में यज्ञशाला का उद्घाटन

उदयपुर आर्यसमाज के तत्वावधान में हिरणनगरी सेक्टर ४ में एक यज्ञशाला का निर्माण हो रहा है जिसका उद्घाटन वीतराग महात्मा आर्यभिक्षु जी (ज्वालापुर) ने २४ अक्टूबर को किया।

आर्यसमाज की गतिविधियां

डी. ए. वी. कालेज, माण्डुप, बम्बई का शिलान्यास समारोह

डी ए वी कालेज, मण्डुप, बम्बई का शिलान्यास समारोह बड़े समारोह पूर्वक, रविवार प्रात १० बजे से २५ अक्टूबर, १९८७ को कालेज के विशाल मैदान मे प्रो० वेदव्यास, प्रधान डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली की अध्यक्षता मे मनाया गया। इसके मुख्य अतिथि माननीय डा० रमेश य प्रभु महापौर, बम्बई महानगर पालिका थे। आर्यसमाज के प्रतिष्ठित सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी महाराज द्वारा भवन का शिलान्यास किया गया। कैप्टन देवरत्न आर्य जो इस समारोह के सयोजक थे। इस शुभ अवसर पर बम्बई के सम्भ्रान्त नागरिक श्री गुरुदास कामत, ससद सदस्य, डा० राममनोहर त्रिपाठी, श्री हसु पी० अडवानी, भूतपूर्व मन्त्री, श्री वीना बामा पाटिल, डा० बर शेरेकर, श्री सत्यप्रकाश आर्य, वीरेन्द्र मोहन अग्रवाल, मधु देशलेकर, श्री रोशनलाल, डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी बम्बई के अध्यक्ष श्री योगीराज मेकर, श्री राजपाल श्री ओंकारनाथ आर्य और श्री धर्मवीर भुनाटी भी उपस्थित थे। दिल्ली से प्रो० वेदव्यास जी, श्री रामनाथ सहगल कमेटी सदस्य श्री हीरालाल चावला, प्रिंसिपल विशनसिंह आर्य तथा प्रिंसिपल बी० बी० मक्कड़ थे। इस अवसर पर बोलने मे मुख्य बाबू दरबारीनाथ ने कहा कि डी० ए० वी० की इस समय सारे भारत मे ५००० सस्थायें हैं जिनमें ५० डी० ए० वी० कालेज हैं और इस शृंखला मे यह कालेज अब डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के साथ जुड गया है। उन्होने यह भी कहा कि हमारा कालेज तथा विद्यालय खोलने का मन्तव्य स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तो और विचारों का प्रचार करना है। इस अवसर पर स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज ने आशीर्वाद दिया। सभा के मन्त्री श्री राजपाल कपूर ने डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी समस्त आर्य जनो को विश्वास दिलाया कि वह हर कार्य मे पूरा सहयोग देंगे।

श्रद्धानन्द आर्य स्पेशल ट्रेन का भव्य स्वागत

नीमच। महर्षि दयानन्द के अमर सन्देश के साथ वैदिक धर्म की ध्वजा फहराते हुए आर्य रत्न श्री रामलाल जी मलिक के नेतृत्व में ४५० आर्य वीरो व महिलाओ की स्पेशल ट्रेन का नीमच रेलवे स्टेशन पर आर्य समाज नीमच, आर्य समाज छोटी टादडी व अन्य नागरिकों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इस आर्य स्पेशल मे भारत के विभिन्न प्रान्तों के नागरिको के (अतिरिक्त विदेशो से पधारे आर्य वीर भी हैं।

वैदिक धर्म एव महर्षि दयानन्द की जय के नारो के साथ सारा प्लेटफार्म गूंज उठा। यह स्पेशल ट्रेन दिनांक २५ को दिल्ली से चलकर २५ दिनों में वापस दिल्ली पहुंचेगी।

आर्य समाज नीमच के प्रधान डा० मोहनदास जी व मन्त्री श्री भगवती प्रसाद जी कालानी ने उन सभी सस्थाओं एव नागरिको का आभार प्रदर्शन किया जिन्होंने स्टेशन आकर आर्य स्पेशल ट्रेन का स्वागत किया।

—जगदीश प्रसाद आर्य

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा की कार्य-कारिणी

आगामी वर्ष १९८७-८८ के लिए दल के अधिकारियों की नियुक्तियां श्री उमेदसिंह शर्मा प्रान्तीय सचालक ने इस प्रकार की :—

१ सरक्षक—(१) प्रो० उत्तमचन्द शरर (३०/८ कैलन्दर चौक पानीपत), (२) स्वामी ओमानन्द (गुरुकुल झज्जर), (३) श्री ला० लक्ष्मणदास आर्य (५ आई साबुन मोहल्ला मार्ग बल्लबगढ), (४) श्री कन्हैयालाल महत्ता (ई ४१ नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद), (५) श्री प० सत्यदेव भारद्वाज (ई १८ ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली), (६) ला० जगन्नाथ आर्य (आर्यसमाज रामनगर जीन्द)।

२ सहसचालक—(१) श्री मनोहरलाल आनन्द (कार्यकारी अभियन्ता) (मकान न० ३७ वार्ड न० २७ सुभाष नगर रोहतक)।

३ सहसचालक (१) श्री सतीशकुमार आर्य (२७/८ न्यू कालोनी पलवल) (२) प्रो० प्रो० ओमकुमार (किसान कालेज जीन्द), (३) श्री सीताराम आर्य राज रीलिंग शहर बास सामन्य रोड हिसार)।

४ प्रान्तीय मन्त्री—(१) श्री वेदप्रकाश आर्य (४७/८ शिवाजी कालोनी रोहतक)।

५. प्रचार मन्त्री—(१) वीर भान आर्य (१-एल न्यू कालोनी पलवल)।

६ कोषाध्यक्ष—(१) श्री राम किशन पूनिया (नरवाना)।

७ लेखा निरीक्षक (१) श्री राज कुमार आर्य (आर्य समाज नरवाना)।

८ बौद्धिकाध्यक्ष—(१) श्री महेन्द्रपाल शास्त्री (गुडगांव), (२) श्री कृष्णदेव शास्त्री (जीन्द), (३) श्री स्वामी रत्न देव (बरल), (४) श्री लाजपतराय (करनाल), (५) श्री देवव्रत आचार्य (गुरुकुल कुरुक्षेत्र)।

(९) मण्डलपति—(१) फरीदाबाद श्री सत्यपाल आर्य (वीर सिलाई मशीन पलवल) (२) उपमण्डलपति श्री वेदप्रकाश आर्य बल्लभगढ़, (३) सोनीपत श्री हरिचन्द स्नेही (मार्फत आर्यसमाज शास्त्री नगर सोनीपत), (३) अम्बाला श्री त्रिलोकचन्द आर्य सुपुत्र श्री ओमप्रकाश आर्य रोशन सा मली, देवी भवन, बाजार जग धरी, (४) जीन्द श्री कर्णसिंह आर्य, आर्य वेल्डिंग वर्कस चकोर रोड काठ मन्डी जीन्द। (४) कुरुक्षेत्र ला० हरिराम आर्य मेन बाजार कैथल, (६) हिसार श्री सत्यकाम आर्य राज रीलिंग शहर बास रोड हिसार, (७) सिरसा श्री नोरगसिंह एडवोकेट जिला कोर्ट सिरसा, (८) रोहतक श्री जगदीश मित्र (मकान न० १०६ वार्ड न० ५ रोहतक)।

१० भिवानी—श्री रामलाल आर्य (जिला आदेश गृह रक्षी भिवानी), उपमण्डल पति श्री विमलेश कुमार आर्य।

११ गुडगाव—श्री ओमप्रकाश कालडा ४३३/४ अर्बन एस्टेट गुडगाव, उपमण्डल पति श्री सोमदत्त जी आर्य ४००/७ अर्बन एस्टेट गुडगाव।

१२. महेन्द्रगढ़—श्री प्रभुदयाल आर्य (मार्फत आर्य समाज नारनौल) आर्य वीरगना दल बहन सन्तोष आर्य कुन्जपुरा।

उमेदसिंह शर्मा	वेदप्रकाश आर्य	वीरभान आर्य
प्रान्तीय सचालक	प्रान्तीय मन्त्री	प्रचार मन्त्री
१२७/८ प्रेम नगी कैथल		

तिलहर आर्य समाज का शताब्दी समारोह सम्पन्न

आर्य समाज तिलहर ने अपना शताब्दी समारोह बड़े समारोह पूर्वक मनाया। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा आज आर्य समाज के सामने अनेक चुनौतियां हैं जिनका दृढ़ता के साथ हमें मुकाबला करना है। समारोह में विदुषी बहन प्रज्ञादेवी जी, सावित्रीदेवी जी, सार्वदेशिक सभा मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री स्वामी मोक्षानन्द जी डा० जयसन्त कुमार शास्त्री के भी प्रभावशाली प्रवचन हुए।

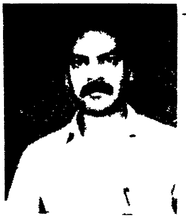
खानपुर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। आर्य वीर दल सम्मेलन श्री बालदिवाकर हस की अध्यक्षता में हुआ। जनता में समारोह के प्रति भारी उत्साह रहा उत्सवपूर्ण सफलत रहा।

आर्य समाज रीवां

द्वारा ऋषि निर्वाणोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया श्री गणेश प्रसाद शाहाब आर्य व श्री रामबोधा मिश्र एडवोकेट को श्रद्धाञ्जलि प्रदान कर आर्य समाज की आवश्यकता व उसके कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। २० से २४ नवम्बर तक आर्य समाज का वार्षिकोत्सव मनाना निश्चय हुआ।



श्रीमती वीना



श्री रविन्द्र चिलाढ

आर्यसमाज गुलबर्गा का जीर्णोद्धार
मुस्लिम युवती की शुद्धि व विवाह

गुलबर्गा। २७ सितम्बर १९८७ को आर्यसमाज दयानन्द चौक शाहबाजार गुलबर्गा का जीर्णोद्धार समारोह उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। भूतपूर्व सासद श्री रामचन्द्र वीरप्पा व विद्याधर गुरुजी मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर एक मुस्लिम कन्या नाजिया परवीन (बेलगाव निवासी) ने इस्लाम धर्म छोडकर वैदिक धर्म स्वीकार किया। कुमारी वीणा का विवाह श्री प० धर्मपाल आर्य के पौरोहित्य मे कुमार रवीन्द्र चिल्लाल से वैदिक विधि से कर दिया गया। धर्मपाल मनोहरसिह, ठाकुर न सिह डडप्पा, श्री भीमराव विठल मन्त्री विठलप्रसाद, नारायणसिह का सहयोग रहा।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हाल्ल फरीदाबाद का २१ वा वार्षिकोत्सव १३ से १५ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती व विद्वान वक्ता तथा भजनोपदेशक पधार रहे है।

विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ
श्री बी. के. दीवान का निधन

परिषद् के अत्यन्त सहयोगी उदार व निष्काम सेवक श्री बी के दीवान के असामयिक निधन पर परिषद् ने शोक प्रस्ताव द्वारा प्रभु से उनकी आत्मा की सद्गति व परिवार के प्रति सम्वेदना प्रकट की।

आर्य समाज पचपुरी गढवाल

द्वारा गढवाल के प्रसिद्ध आर्य नेता सग्राम सेनानी श्री जयानन्द भारती की १०७वी जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई। यज्ञ व श्रद्धाञ्जलि सम्मेलन मे भारी सख्या मे आर्य बन्धुओ ने भाग लिया।

आर्य समाज मगरूर

मे ऋषि निर्वाणोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया, श्री धर्मवीर भारती ने महर्षि को श्रद्धाजलि अर्पित की।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

अन्तरग सभा की बैठक	१४ नवम्बर १९८७	(प्रात १० बजे)
बृहदधिवेशन	१४ नवम्बर १९८७	(मध्यान्होत्तर ३ बजे)
निर्वाचन	१५ नवम्बर १९८७	(प्रात ११ बजे)

स्थान—डी० ए० वी० कालेज, मोती नगर, लखनऊ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरग सभा दिनाक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ मे सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमे बृहदधिवेशन एव वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

समालोचना

चौदहवीं का चांद (उर्दू)

ले० स्व० प० चमूपति एम० ए०
पृष्ठ २८८ मूल्य १२)
प्रकाशक—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली ११०००१

महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म की स्थापना जहा १० समुल्लासो द्वारा अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे की है वहा वैदिक धर्म से मतभेद रखने वाले सभी मतमतान्तरो की गहरी छानबीन करके ४ समुल्लास और लिखे हैं। इनमे अन्तिम समुल्लास इस्लाम धर्म से सम्बन्धित है। इस्लाम केवल धर्म ही नही था। भारत मे ९०० वर्ष तक शासन करने के कारण वह एक आतकवाद का सा रूप धारण कर चुका था महर्षि से पूर्व नए नए मुसलमान लेखको ने हिन्दू समाज मे फैले अवैदिक मतो का आश्रय लेकर इतना वीभत्स साहित्य तैयार कर दिया था कि हिन्दू समाज से घृणा हो जाने से लाखो हिन्दू मुसलमान बनते जा रहे थे। हिन्दू राजा भी कुरान पर परिश्रम करने लग पडे थे। उसका प्रमाण अलवर महाराज द्वारा सुवर्णाक्षरो मे तैयार किया वह कुरान है जिसका आज लाखों रुपया मूल्य बताया जाता है। हिन्दुओ मे स्वामीजी से पूर्व मुन्शी इन्दरमन ने मुसलमान लेखको के उत्तरमे फारसी भाषा (जो उस समय राजभाषा समझी जाती थी) मे साहित्य लिखा। मुसलमानो से उनकी पुस्तको का उत्तर नही बन पाया तो उन्होने मुन्शी जी के विरुद्ध न्यायालय मे वाद प्रस्तुत कर दिया। निचली कोर्ट मे अपनी कार्य कुशलता से वे विजयी भी हो गए। यह समाचार महर्षि को मिला तो मुन्शी इन्दरमन जी को मदद के लिए एक समिति बनाकर उच्च न्यायालय मे अपील करादी जहा से मुशी जी न केवल निर्दोष मुक्त हुए अपितु उनका जुर्माना भी छूट गया और पुस्तके भी प्रतिबन्ध से मुक्त हो गई।

फिर तो महर्षि ने इस्लाम का नग्न चित्र ससार के सन्मुख प्रस्तुत करना अपना कर्त्तव्य बना लिया। कुरान पर पूरी जाच पडताल करके १४वें समुल्लास की रचना की।

मुसलमानो के लिए तो यह एक प्रकार का अणुबम था। वे स्वप्न मे भी नही सोच सकते थे कि उनके धर्म ग्रन्थ पर कोई आलोचना भी कर सकेगा। इस सम्बन्ध मे अनेक मुसलमान लेखको ने किताबें भी लिखी परन्तु अन्तिम किताब हक प्रकाश अमृतसर के प्रसिद्ध मौलाना सनाउल्ला साहब ने लिखी है। उसके उत्तर मे आर्य समाज के स्वनामधन्य विद्वान प० चमूपति एम ए ने चौदहवी का चाद लिखा। इस पुस्तक के प्रकाशित होते ही मुसलमान विद्वानो की बोलती बन्द हो गई। आजतक इस पुस्तक का उत्तर देने का साहस किसी ने नही कर पाया।

पुस्तक क्या है इस्लाम के सभी प्रामाणिक ग्रन्थो से महर्षि की सत्यालोचना को सिद्ध करने का सफल प्रयास है। उर्दू भाषा, तर्कशैली, भाषा सौष्ठव के दृष्टि मे यह साहित्य का एक अनमोल रत्न है।

गत ५० वर्षो से इस पुस्तक की माग थी, वह अब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पूरी कर दी गई है।

पुस्तक २८८ पृष्ठ की होने पर भी मूल्य केवल १२) ही रखा गया है। है। आर्य समाजें अधिक से अधिक सख्या मे इसे मगाकर मुसलमानो मे भी वितरित करेंगे तो उसके आश्चर्य जनक परिणाम निकलेंगे।

—आचार्य शिवराज शास्त्री एम० ए० मौलवी फाजिल

आर्य समाज भरतपुर शुद्धि

श्री कवरचन्द नामक हिन्दू को मुसलमान बनाया गया था मेवात मण्डल के उपदेशक को ममलदेव के प्रयत्न से उसे पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित कर हिन्दू बना लिया गया।

आर्य समाज का इतिहास

सम्पादक—डा० सत्यकेतु विद्यालकार

सात-सात सौ से भी अधिक पृष्ठो के सात भागो मे आर्य समाज का का विस्तृत इतिहास सम्पादित व प्रकाशित करने का जो कार्य हमने प्रारम्भ किया था, वह अब पूर्ण होने को है। उसके छ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। और सातवा भाग मई, १९८८ तक छपकर तैयार हो जाएगा। यह इतिहास आर्य समाज के विश्वकोष के समान है, जिसे सब आर्य समाजो तथा शिक्षण-सस्थाओ के पुस्तकालयो मे अवश्य हो रहना चाहिये।

'इतिहास' के प्रत्येक भाग का मूल्य एक सौ रुपये (पुस्तकालय सस्करण का एक सौ पच्चीस रुपये) है, पर सातो भागो के पूरे सेट का मूल्य केवल पाच सौ रुपये रखा गया है पहले भाग की बहुत थोडी सी प्रतिया अब शेष बची हैं, अत जो महानुभाव 'इतिहास' का पूरा सेट लेना चाहे वे शीघ्र पाच सौ रुपये भेजने की कृपा करे। जिनके प्राप्त होते ही छ भाग तुरन्त उनकी सेवा मे भेज दिये जाए गे। और सातवा भाग मई, १९८८ मे उनके पते पर पहुचा दिया जाएगा। पहले भाग के समाप्त हो जाने पर पूरा सेट प्राप्त कर सकना सम्भव नही रहेगा।

आर्य बन्धुओ से यह भी प्रार्थना है कि आर्यो द्वारा जो विविध ट्रस्ट व स्थायी निधिया, स्थापित हैं। उनके विवरण भी हमे शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। ताकि सातवें भाग मे उन्हे प्रकाशित किया जा सकें।

आर्य स्वाध्याय केन्द्र
ए-१/३२ सफदरजग एन्क्लेव, नई दिल्ली-२९
फोन ६०१५३९

मे ऋषि निर
श्री भारतभूषण,
प्रिंसिपल के प्रभा

मे आर्यमुनि
सम्बन्ध मे शाल व श्रीफल द्वारा सम्मा...
पौत्रियो का यज्ञोपवीत सस्कार भी इस अवसर पर किया गया।
सेनानियो का भी स्वागत किया गया। जनता पर अच्छा प्रभाव पडा।

अन्तर्जातीय विवाह

आर्य समाज बामगाव के तत्वावधान मे श्री मोहनरामदास सडतकर व कुसुम तुलसीराम मस्तुद का अन्तर्जातीय विवाह वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल होशंगाबाद की हीरक जयन्ती

२५ अक्टूबर को आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ की प्रान्तीय कार्यकारिणी की बैठक गुरुकुल होशगाबाद मे माता कौशल्यादेवीकी अध्यक्षता मे हुई। श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव मन्त्री जी ने बताया कि गुरुकुल होशगाबाद को स्थापित हुए ७५ वर्ष हो गये हैं। गुरुकुल ने इन ७५ वर्षो मे कई विद्वानो का निर्माण किया। गुरुकुल हीरक जयन्ती मनाई जायेगी एव स्मारिका प्रकाशित की जायेगी।

—आर्य समाज महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड वाराणसी के चुनाव मे श्री यज्ञदत्त गौतम प्रधान तथा श्री शिवमित्र शास्त्री मन्त्री चुन गए।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८]
वर्ष २२ अंक ४७]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
मार्गशीर्ष शु० १ सं० २०४४ रविवार २२ नवम्बर १९८७

दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष । ३२७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

आर्यसमाज खण्डवा का वार्षिक महोत्सव

आर्य प्रतीक्षालय दयानन्द वैदिक पुस्तकालय तथा स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष का उद्घाटन

रमा कालोनी में आर्य वीर दल का प्रदर्शन

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का भव्य स्वागत

खण्डवा ९ नवम्बर, आज प्रात काल सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के पधारने पर खण्डवा रेल्वे स्टेशन पर सैकड़ों आर्य वीरो ने भव्य स्वागत किया। मध्यप्रदेश सरकार की ओर से विशेष रूप से श्री तनवन्तसिंह कीरजी राज्यमन्त्री स्टेशन पर स्वागत समारोह में उपस्थित थे। सबसे पूर्व श्री तनवन्तसिंह जी ने स्वामी जी को फूलमाला पहनाकर स्वागत किया। आर्यसमाज खण्डवा के प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य तथा मन्त्री श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल तथा आर्यसमाज खण्डवा के सदस्य तथा आर्य वीर दल के सैनिक बडी सख्या में उपस्थित थे। रेल्वे स्टेशन वैदिक धर्म के जयकारों से गूज उठा। जनता का उत्साह दर्शनीय था।

तत्पश्चात् आर्यसमाज द्वारा निर्मित आर्य प्रतीक्षालय, महर्षि दयानन्द वैदिक पुस्तकालय तथा श्री स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष का स्वामी जी ने उद्घाटन किया। ९ नवम्बर को मध्याह्न मे कार्य कर्ता सम्मेलन एव साय ४ बजे एक विशाल शोभायात्रा मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव मन्त्री प्रान्तीय सभा श्रीमती विमला श्रीवास्तव आदि गण्यमान्य महानुभावो ने भाग लिया।

साय ६ बजे रमा कालोनी मे आर्य वीर दल का व्यायाम प्रदर्शन हुआ जिसमें स्वामी ने खण्डवा मे आर्य हिन्दू पहलवानो को पगडिया भेट की।

रात्रि ८ बजे खण्डवा की समस्त सस्थाओ की ओर से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का नागरिक अभिनन्दन किया गया। स्वामी जी के अपने ओजस्वी उद्बोधन से खण्डवा की जनता मे वैदिक धर्म के प्रति नई आस्था तथा विश्वास तथा युवा पीढी मे धर्म कार्यो में सहयोग देने की भावना जागृत हुई।

श्री स्वामी जी ने कहा कि लोग जो अपनी जान को जोखिम मे डालकर हिमालय की ऊंचाईयों में रहकर देश की अखण्डता की रक्षा कर रहे हैं तथा देश में हम धर्म, भाषा, पथ सम्प्रदाय के नाम पर लडकर देश को कमजोर कर रहे है। यह कहा तक न्यायोचित है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आर्यसमाज ने सद्भावना एकता की जो मिसाल कायम की वह अभिनन्दनीय हैं। हमें आपसी मतभेदो को मिटाकर देश के नवनिर्माण का चिन्तन करना चाहिए।

मुख्य अतिथि सांसद श्री कालीचरण सकरगाये ने कहा कि देश में जो विघटनकारी अलगाववादी ताकते सिर ऊंचा कर रही हैं उनसे सचेत रहना चाहिये। अध्यक्षता करते हुए श्री तनवन्तसिंह कीर ने कहा कि आर्यसमाज का आजादी के पूर्व से लेकर आज तक रचनात्मक सुधारवादी स्वरूप रहा है। महर्षि दयानन्द जी की बडी कृपा है कि उनके बताये हुए आदर्शो पर हजारो आर्य समाजे देश के नव निर्माण में लगी हुई है। कार्यक्रम का सचालन एव आभार प्रदर्शन मन्त्री जी कैलाशचन्द्र पालीवाल तथा स्वागत प० रामचन्द्र आर्य ने किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक निर्वाचन

श्री इन्द्रराज जी प्रधान, श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री व श्री यशपाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

लखनऊ १५ नवम्बर, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की साधारण सभा की वार्षिक बैठक डी०ए०वी० कालेज के विशाल प्रांगण में भव्य शामियाने में सम्पन्न हुई जिसमें उत्तर प्रदेश के सभी भागो से लगभग ८१० आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो ने बडे उत्साह व उल्लासमय वातावरण में भाग लिया।

बैठक की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। स्वामी जी महाराज ने सभा की गरिमा व आर्यसमाज के सामने फैले विशाल कार्यक्रम की चर्चा करते हुए आर्यो को एक जुट होकर राष्ट्रव्यापी समस्या को हल करने में जुटने का आह्वान किया।

कुमारी सन्तोष कपूर ने सभा प्रधान पद के लिए प० इन्द्रराज जी का नाम प्रस्तावित किया जिसका अनुमोदन देहरादून के श्री

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रही

जिनके पेंशन के लिए प्रान्तों को भारत सरकार ने लिखा है

(१) श्री रामस्वरूप पुत्र नाथनाथ गांव पो० रामराय (जिन्द) हरि०
(२) श्री अगन पुत्र इन्द्राज गांव पो० छारा (रोहतक) हरि०
(३) श्री छोटूराम पुत्र रामानन्द गांव पो० फरमाना (सोनीपत) हरि०
(४) श्री जोधाराम भाटिया पुत्र हिम्मतलाल म० १६८४ रामपुरा (हिसार) हरि०
(५) श्री जसवन्तराम पुत्र रेमलदास निकट मोहल्ला खटीक बहादुरगढ़ रोहतक (हरियाणा)
(६) श्री जीताराम पुत्र जैराम ग्राम पो० भिरचपुर तेह० हांसी जि० हिसार (हरियाणा)
(७) श्री भगवानलाल पुत्र शाबरातलाल, मोहल्ला मियानी गाजीपुर (उ० प्र०)
(८) श्री शादीराम पुत्र कुंवरसिंह गांव पो० भापरोदा, जि० रोहतक (हरियाणा)
(९) श्री माधोसिंह पुत्र महिपाल वर्मा गांव पो० कनीना जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
(१०) श्री महासिंह वर्मा पुत्र जुमलाल ग्राम पो० सांघी जि० रोहतक (हरि०)
(११) श्री परमानन्द आर्य वीर रतनराम आर्य श्रीराम ज्वेलर्स सोनापट्टी भागलपुर बिहार
(१२) श्री भारतसिंह पुत्र जीतराम दयानन्द मठ गोहाना रोड रोहतक (हरियाणा)
(१३) श्रीमती भोरादेवी पत्नी मनोहर ग्राम पो० पाकसमा (रोहतक)
(१४) श्री बनवारीलाल पुत्र धादी गांव पो० मिलकपुर ते० हांसी जि० हिसार (हरियाणा)
(१५) श्रीमती शान्तीदेवी पत्नी स्व० बलदेव गांव पो० भापरोदा (रोहतक)
(१६) श्री रामचन्द्र पुत्र जयलाल गांव पो. बीरी जिला रोहतक (हरि०)
(१७) श्री लालचन्द पुत्र झब्बर गांव पो० गोरार जि० सोनीपत (हरि०)
(१८) श्री पुस्करराज पुत्र पोकरराज गांव खाण्डा खेड़ी तेह० हांसी जिला हिसार (हरियाणा)
(१९) श्रीमती रामदुलारी शुक्ला पत्नी श्री गिरधारीशंकर शुक्ला सकीना मंजिल घी मण्डी दौलतगंज उज्जैन (म० प्र०)
(२०) श्री तारकी प्रसाद मिश्रा पुत्र सन्तलाल मिश्रा गांव पो० शंकरपुर जि० मुंगेर (बिहार)
(२१) श्री भागीरथ ठाकुर पुत्र गुरुप्रसाद ठाकुर मकस बाजार मुंगेर (बिहार)
(२२) श्री जगदीशचन्द्र पुत्र उग्रसेन ३६१/१ विश्वकर्मा कालोनी देहरादून (उ० प्र०)
(२२) श्री लालचन्द पुत्र माधू गांव पोस्ट छारा जि० रोहतक (हरियाणा)
(२३) श्री देवराज पुत्र सखी ग्राम पो० कटूठी कलां तेह० हांसी जिला हिसार (हरियाण)
(२४) श्री खुशीराम पुत्र मूलचन्द ग्राम ते० जिन्द (हरियाणा)

सूखा राहत कोष

मन्त्री आर्यसमाज पिपराइच (गोरखपुर) द्वारा ५१) सत्यनारायण प्रसाद गुप्त अध्यक्ष, ५१) सत्यनारायण प्रसाद आर्य उपाध्यक्ष, १५) अशोक कुमार गुप्त सदस्य, १५) विनोद कुमार गुप्त सदस्य, १०) रमाकान्त वर्मा सदस्य, (१०) दीनानाथ गुप्त सदस्य, १०) अर्जुन प्रसाद गुप्त सदस्य, १०) गुलाबचन्द आचार्य सदस्य, ५) मालीराम टिबड़ेवाल सदस्य, ५) रामनयनलाल वैद्य संगठन मन्त्री, ५) त्रिवेणी प्रसाद नागरिक, ५) महेशराम सदस्य, १६) सत्यनामसिंह मन्त्री।

आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन

(पृष्ठ १ का शेष)

धर्मेन्द्रसिंह जी ने किया। सर्वसम्मति से पं० इन्द्रराज जी के प्रधान चुने जाने पर सभास्थल जय-जयकारों से गूंज उठा। प्रधान के निर्वाचित होने के पश्चात् मन्त्री पद के लिए श्री मनमोहन तिवारी का नाम प्रस्तावित हुआ जो सर्वसम्मति से पारित हुआ।

कोषाध्यक्ष पद के लिए देहरादून के श्री यशपाल आर्य निर्वाचित हुए। श्री इन्द्रराज जी ने वरिष्ठ उपप्रधान पद के लिए कुमारी सन्तोषकपूर के नाम की घोषणा की अन्य उपप्रधान सर्वश्री धर्मेन्द्र सिंह देहरादून पं० विशुद्धानन्द शास्त्री, एवं प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री चुने गए।

सभा के अन्तरंग सदस्यों के नाम की घोषणा की गई।

सारा कार्य बड़े सौहार्द पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। १४ नवम्बर की रात्रि ८ बजे से एक विराट कवि सम्मेलन हुआ जो प्रातः ५ बजे तक चलता रहा जिसमें उच्चकोटि के कवियों (यथा श्री निर्भय हाथरसी आदि) ने भाग लेकर सम्मेलनको सफल बनाया।

पण्डाल के बाहर पुस्तकों की दुकानों का बाजार सा लगा हुआ था जैसे कोई विशाल मेले का आयोजन हो रहा है।

सभा के मन्त्री श्री प० मनमोहन तिवारी ने सभी आगन्तुक सदस्यों का भाव भीने शब्दों में आभार प्रकट किया एवं यह संकल्प प्रकट किया कि जैसे उनके बाबा स्वनामधन्य स्वर्गीय पं० रास-बिहारी तिवारी ने जीवन भर आर्यसमाज की महान् सेवायें की वे भी उन्हीं के चरणचिह्नों पर चलकर आर्यसमाज के महान् मिशन को जन-जन तक पहुंचाने का सम्पूर्ण प्रयास करते रहेंगे। ●

बच्चों के लिए रोचक कार्यक्रमों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्यवीर दल द्वारा बच्चों में भाईचारा, एवं उनके सर्वांगीण विकास के लिए दिल्ली के विभिन्न स्कूलों में भाषण, वाद-विवाद, चित्रकला, खेलकूद आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है।

रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनी नगर में आयोजित तृतीय युवा महासम्मेलन के अन्तर्गत चित्रकला एवं निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का ७ नवम्बर को उद्घाटन करते हुए प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा कि बच्चों में राष्ट्रप्रेम, विश्वबन्धुत्व व वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए ऐसी प्रतियोगिताओं के आयोजन का विशेष महत्व है। सभा मन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि ऐसे रोचक कार्यक्रमों द्वारा आपसी सद्भावना, राष्ट्रीय एकता व अखण्डता सुदृढ़ होती है। २० विद्यालयों के १२० छात्र-छात्राओं ने प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

१४ नवम्बर को बाल दिवस के अवसर पर सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली ने विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों ने खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लिया। उल्लेखनीय है कि ६ दिसम्बर को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे विजयी छात्र-छात्राओं को एक भव्य समारोह में पुरस्कृत किया जायेगा। —विमलकान्त शर्मा, प्रचार सचिव

सम्पादकीय

आर्य समाज व वैदिक धर्म

गत अंक में हमने आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साहित्य सेवा की चर्चा की थी। नि सन्देह साहित्य किसी संस्था का प्राण होता है। आर्य समाज के गौरवपूर्ण अतीत में समाज के विकास मे साहित्य का बड़ा भारी योगदान रहा है। इसीलिए सार्वदेशिक सभा ने इस महत्वपूर्ण अंग के विकास का बीड़ा उठाया। आज सभा भवन वैदिक साहित्य से भरा पड़ा है। सभा को अब स्थानाभाव का संकट भी खड़ा हो गया है। देश विदेशों में सभा की इस विषय में साख बढ़ती ही जा रही है। इसका सारा श्रेय श्रद्धेय श्री स्वामी आनन्दबोध जी को जाता है जो एक जागरूक प्रहरी की भांति साहित्य रचना व रक्षा में लगे हैं।

हाल ही में उन्होंने स्वर्गीय प० चमूपति एम० ए० के अमर ग्रन्थ चौदहवीं के चांद का उर्दू संस्करण भी प्रकाशित कर दिया है जो अपने आपमें दुर्लभ व अनुपम रचना है।

सार्वदेशिक सभा ने महर्षि दयानन्द के भाष्य के साथ ही शेष भाष्यों के भी प्रामाणिक भाष्य प्रकाशित कर दिए हैं। अंग्रेजी भाषा में भी वेद भाष्यों का प्रकाशन सभा द्वारा किया गया है जिसमें सभा के धर्माधिकारी आचार्य वैद्यनाथ जी का अथर्ववेद का अंग्रेजी अनुवाद व स्वर्गीय स्वामी धर्मानन्द जी (प० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड) का ऋग्वेद का अंग्रेजी भाष्य अनुपम रचना है।

सभा द्वारा महात्मा नारायण स्वामी जी का बहुमूल्य साहित्य भी प्रकाशित किया गया है।

साहित्य प्रकाश के अनेक भाषाओं में सभा के प्रकाशन हैं प्राचीनकाल में आर्य जाति ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के लिए संसार मे प्रसिद्ध थी। हजारों वर्षों के अन्धकार व पराधीनता के युग के अन्त मे महर्षि दयानन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे व ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका मे विज्ञान व उसके चमत्कारों की चर्चा की थी। विज्ञान सम्बन्धी अनेक अलभ्य ग्रन्थ भारत मे रचे गए थे परन्तु वे कुछ तो यवनों ने भस्मसात कर दिए कुछ ब्राह्मणों ने भय से स्वयं नष्ट कर दिए। कुछ उपयोगी ग्रन्थ विदेशी योरोप में उठाकर ले गए इसीलिए अमेरिका वासी विदुषी महिला श्रीमती व्हीलर विल्काक्स ने एक बार कहा था —

हमने प्राचीन भारत के धर्म के विषय में पढ़ा व सुना है यह उन महान वेदों की भूमि है जहां अत्यन्त अद्भुत ग्रन्थ है जिनमे बड़ा पूर्ण जीवन के लिए उपयोगी शिक्षा तत्व है वहां विज्ञान के आविष्कृत बिजली रेडियम इलैक्ट्रोन्स विमान आदि की भी चर्चा है।

राइट बन्धुओं के जब विमान उड़ने लगे तो संसार को महर्षि के वेद पर विश्वास करना पड़ा।

महर्षि भारद्वाज ने लिखा है —

निमथ्यं तद्वेदाम्बुधि भरद्वाजोमहामुनि।

वेद ही समस्त संसार की विद्याओं के भण्डार हैं।

इस महान ग्रन्थ बृहद् विमान शास्त्र को सार्वदेशिक सभा ने प्रकाशित कराया। पिछले दिनों सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने उसकी प्रति श्री राजीव गांधी को भेंट की। फलत उसकी अंग्रेजी भाषान्तर की संभावना उत्पन्न हो गई है। राजीव जी ने इस सम्बन्ध मे निर्देश कर दिया है।

बृहद् विमान शास्त्र में ९७ ऐसे महान ग्रन्थों को उद्धृत किया गया है जो विमान विद्या के सम्बन्ध में आर्य विद्वानो द्वारा समय-समय पर लिखे गए।

सभा द्वारा ऐसे अलभ्य ग्रन्थों की खोज जारी है। आर्य समाज के विद्वान अहर्निश इस सेवा कार्य में जुटे हैं।

प्रान्तीय सभाओं को से हम निवेदन करना चाहते हैं कि व भी सार्वदेशिक के इस महान मिशन के साथ कदम से कदम मिला कर चले। प्रत्येक समाज प्रत्येक जाति अपने उच्चस्तरीय ज्ञान के सहारे ही संसार में अपना स्थान बना सकती है।

नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते —

ऐयर इंडिया द्वारा हिन्दी कार्यालय का आयोजन

नई दिल्ली, १० नवम्बर। एअर इण्डिया द्वारा अपने सुपरवाइजरी वर्ग के स्टाफ के लिए इन्दिरा गांधी अन्तराष्ट्रीय एअरपोर्ट पर पांच दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया है। कार्यशाला का उद्घाटन प्रसिद्ध साहित्यकार श्री यशपाल जैन ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कार्यशाला के आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा और राजभाषा है। भारतीय संविधान में उसे यह मान्यता प्रदान की गई है। किन्तु दुःख की बात है कि अब तक उसे अपना उचित स्थान नहीं मिल पाया और अंग्रेजी का वर्चस्व बना हुआ है। अब समय आ गया है कि राष्ट्रभाषा के प्रति देश का स्वाभिमान जागृत हो और अपने राष्ट्र का सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में हो।

यशपाल जी ने अपने विदेशी प्रवासों के कुछ अनुभव सुनाते हुए कहा कि रूस, जापान चीन तथा अन्य अनेक देशों में जब अपनी भाषा के द्वारा सारा राजकाज चलाया जाता है, तो कोई कारण नहीं कि हम अपने देश में हिन्दी के द्वारा सारा कार्य न कर सके। उन्होंने कार्यशाला के संयोजकों को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि वे दृढ़ संकल्प से हिन्दी के कार्य को आगे बढ़ाएंगे। कार्यशाला १३ नवम्बर तक चलेगी।

(हिन्दुस्तान)

राम जन्मभूमि हिन्दुओं को देने के लिए मुस्लिम रैली

लखनऊ, १० नवम्बर। अयोध्या में आगामी २९ नवम्बर को आयोजित होने वाली एक मुस्लिम रैली में राम जन्मभूमि को हिन्दुओं को सौंपने का समर्थन किया जाएगा।

इस रैली का आयोजन भारतीय मुस्लिम युवा सम्मेलन के तत्वावधान मे किया जाएगा। सम्मेलन के संयोजक श्री मुख्तार अब्बास नकवी के अनुसार इस रैली मे देश भर के एक लाख मुसलमान भाग लेंगे।

इसके अलावा रैली मे १० लाख राष्ट्रवादी मुस्लिमों के हस्ताक्षरो से युक्त एक ज्ञापन भी पेश किया जाएगा। जिसमें राम जन्मभूमि को हिन्दुओं को सौंपने की मांग की जाएगी।

श्री नकवी ने कहा कि मुसलमान बड़ी संख्या में इस फैसले के समर्थक हैं लेकिन वे कठमुल्लाओं के डर से खुलकर सामने नहीं आ रहे हैं पर रैली में आने के लिए वे अवश्य हिम्मत करेंगे।

(हिन्दुस्तान)

शंकराचार्य को जेल में डालने की मांग

नई दिल्ली, १० नवम्बर। सती प्रथा के समर्थन के लिये पुरी के शंकराचार्य को तत्काल गिरफ्तार कर जेल में बन्द करने की मांग आज राज्यसभा में की गई।

कांग्रेस (इ) के श्री रत्नाकर पांडे ने दिवराला सती कांड पर अल्पकालिक चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि सरकार में हिम्मत है तो सती समर्थकों के साथ कड़ाई से निपटे।

उन्होंने सती प्रथा को धार्मिक समर्थन प्राप्त होने के शंकराचार्य के दावे को चुनौती दी और कहा कि एक विद्वत परिषद बुलाकर खुली चर्चा की जाए कि सती प्रथा धार्मिक है अथवा नही।

श्री पांडे ने कहा कि सती प्रथा का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समर्थन करने वालों से सख्ती से पेश आना चाहिए।

आज सभी पक्षों के समर्थकों ने दिवराला गांव में गत चार सितम्बर को हुई सती की घटना को 'राष्ट्रीय शर्म' कहकर कड़ी निन्दा की।

सदस्यों ने दलगत भावनाओं से ऊपर उठकर सरकार से एक स्वर में अपील की कि वह सती की घटना को गौरवान्वित करने तथा भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति नही होने देने के लिए कारगर कदम उठाए।

सदस्यों ने इस सामाजिक कलंक को समाप्त करने के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन चलाने पर भी बल दिया।

संसद के इतिहास में इस विषय पर आज की चर्चा संभवत अपने किस्म की प्रथम चर्चा थी। चर्चा की शुरुआत भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गुरुदास गुप्त ने की।

श्री दास गुप्त ने कहा कि दिवराला की घटना समस्त भारत के लिये अपमान जनक बात है। इसने सारे देश की चेतना को झकझोर दिया है। उन्होंने कहा कि दिवराला में सती के नाम पर १८ वर्ष की एक जवान महिला रूपकंवर को जिंदा जला दिया गया।

उन्होंने कहा कि रूपकंवर सती होना नही चाहती थी। उसने चिता स्थल से भागने की कोशिश की लेकिन धार्मिक उन्माद से ग्रस्त भीड़ ने उसे ऐसा नही करने दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि रूपकंवर की सम्पत्ति हड़पने के इरादे से उसे जलाया गया।

श्री दासगुप्त ने राजस्थान सरकार की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि राज्य सरकार ने अपने संवैधानिक दायित्व का पालन नही किया है। उसे सत्ता में बने रहने का कोई अधिकार नही है।

कांग्रेस (इ) की जयन्ती नटराजन ने कहा कि रूपकंवर स्वेच्छा से सती नही हुई उसे इसके लिये मजबूर किया गया। उन्होंने कहा कि वास्तव में समाज में स्वेच्छा से सती होने जैसी कोई बात नही है और न तो यह धर्म सम्मत करना जरूरी है। यदि इसे समाप्त नही किया गया तो हमारी सभ्यता ही खतरे में पड़ जाएगी।

श्रीमती नटराजन ने कहा कि सतीप्रथा संविधान की धारा २१ के विपरीत है क्योंकि इस धारा के अन्तर्गत सबको समान रूप से जीने का अधिकार है। उन्होंने कहा कि सती की प्रथा को गौरवान्वित करना बन्द होना चाहिये। यह राज्य सरकार की जिम्मेदारी है लेकिन यह काम केवल कानून के जरिए नही हो सकता। इसके लिये देशव्यापी चेतना जगाने की जरूरत है।

मार्क्सवादी पार्टी की श्रीमती कनक मुखर्जी ने दिवराला के सती कांड को विश्व के लिये एक शर्मनाक बात बताते हुए कहा कि रूपकंवर को आत्महत्या करने पर मजबूर किया गया उन्होंने इस घटना के लिए जिम्मेदार लोगों को कड़े से कड़ा दंड दिये जाने की मांग की।

कांग्रेस (इ) की श्रीमती वीणा शर्मा की मांग थी कि दिवराला के सती कांड की जांच के लिए संसदीय समिति गठित की जाए। उन्होंने कहा कि देश में उन शक्तियों का पर्दाफाश किया जाना चाहिए जो रूपकंवर जैसी युवतियों को सती होने के लिए मजबूर करती है। उन्होंने इस कांड की सख्त शब्दों में भर्त्सना करते हुए कहा कि हमारा कानून भी हिन्दू समाज की तरह क्रूर है, क्योंकि यह महिलाओं को संरक्षण देने में असमर्थ है।

श्रीमती शर्मा तथा कई अन्य सदस्यों ने सती प्रथा के पीछे पीढ़ा की भावना जोड़ने वाली इस कुप्रथा पर रोक लगाने के लिए कड़े से कड़ा कदम उठाने की मांग की।

अन्नाद्रमुक के वी. स्वामीनाथन का आरोप था कि कुछ लोगों ने इसे कांड की आड़ में धन्धा बना लिया है। इस तरह के व्यापार पर रोक लगाने के लिए सख्त कदम उठाने की जरूरत है।

कांग्रेस (इ) के डा० रत्नाकर पांडेय ने इस घटना को मानवता के नाम एक कलंक बताते हुए कहा कि सती प्रथा को धर्म से जोड़ना धर्म का अपमान करना है। उन्होंने सती प्रथा के समर्थन में पुरी के शंकराचार्य के वक्तव्य की कड़ी निंदा करते हुए उन्हें गिरफ्तार करने की मांग की। इसके साथ ही उन्होंने सती प्रथा से सम्बन्धित साहित्य पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग की।

उन्हीं की पार्टी की श्रीमती सूर्यकांता पाटिल ने सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों को रोकने के लिए एक क्रांति लाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि रूपकंवर को उसके पति के गुनाहों को छुपाने के लिए सती बनाया गया।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

उन्हें आज भी धर्म के नाम पर वेश्या बनाया जाता है

बम्बई, १० नवम्बर। भारतीय स्वास्थ्य संगठन के दो डाक्टरों ने एक अध्ययन करके पता लगाया है कि कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में छोटी लड़कियों को किसी देवी को अर्पित कर देने और रजस्वला होते ही उन्हें वेश्यावृत्ति में डाल देने की परम्परा आज भी फल-फूल रही है। इसका मुख्य कारण सामाजिक पिछड़ापन गरीबी और अशिक्षा है।

सामाजिक पिछड़ापन देवदासी प्रथा और वेश्यावृत्ति दोनों के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार है क्योंकि अर्पित की जाने वाली ज्यादातर लड़कियां हरिजन परिवारों की होती हैं। ये विचार भारतीय स्वास्थ्य संगठन के अवैतनिक सचिव डा० आई एस गिलड़ा और मनोचिकित्सक डा विजय ठाकुर ने सितम्बर में स्टुटगार्ट (पश्चिम-जर्मनी) में हुए एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में व्यक्त किए।

देवदासी प्रथा सामंती वर्ग और पुजारियों के बीच हुई एक साजिश का नतीजा थी। इन लोगो ने चालाकी से काम लेते हुए, किसानों व दूसरे वर्गों पर अपनी श्रेष्ठता का फायदा उठाते हुए वेश्यावृत्ति को धार्मिक मान्यता दिला दी।

दोनों डाक्टरों ने सम्मेलन में पढ़े गये अपने शोध-पत्र में यह भी कहा है कि रखैल रखने की प्राचीन परम्परा विश्व युद्ध के बाद हुए सामाजिक परिवर्तनों और शहरीकरण व औद्योगीकरण में तेजी आने के कारण शहरी वेश्यावृत्ति का हिस्सा बन गई।

(जनसत्ता से साभार)

आज दयानन्द की याद आती है

डा० प्रशान्त वेदालंकार, ७/२ रूपनगर, दिल्ली

जब से देवराला में रूपकुवर (१८) ने अपने पति के साथ अपने प्राणो की आहुति दी है तब से मुझे बराबर यह लग रहा है कि यदि आज दयानन्द होते तो वे शीघ्र देवराला जा पहुचते और वहाँ के राजपूतो को एकत्र कर उनसे ,पूछते—जिस देश की प्रधानमन्त्री विधवा रही हो वहा सती प्रथा का क्या औचित्य है ? यदि श्रीमती इन्दिरा गांधी विधवा होने के उपरान्त अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय जीवन मे सामान्य रूप से सक्रिय रह सकती हैं तो क्या रूपकवर जीवित भी नहीं रह सकती थी ? वे रूपकवर के नाम से सती मन्दिर के स्थान पर एक विशाल वनिता आश्रम की स्थापना करते, जहा रूपकवर जैसी बाल व युवा विधवाओ की शिक्षा व उनके पुनर्विवाह की व्यवस्था होती और यदि कोई उनकी इस बात का विरोध करता तो वे अपनी हुकार से उसको शास्त्रार्थ के लिए ललकारते और उसे निरुत्तर कर अन्तत अपनी मधुर वाणी से उसे अपने वश मे करके उसे वनिता आश्रम का कार्यकर्त्ता बना देते। यह उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द ने घोषणा की थी कि ईश्वर के समीप,स्त्री-पुरुष दोनो बराबर हैं, क्योंकि वह न्यायकारी है, इसमे पक्षपात का लेश नही है। जब पुरुषो को पुनर्विवाह करने की आज्ञा दी जाए तो स्त्रियो को दूसरे विवाह से क्यों रोका जाए ? महर्षि दयानन्द ने उस काल मे ही राजस्थान के राजाओं के विधवाओ की दयनीय स्थिति को सुधारने के लिएँ अपनें बजट का कुछ अश निर्धारित करने की प्रेरणा दी थी।

और यदि पुरी के शकराचार्य स्वामी निरजनदेव तीर्थ की यह बात उनके कानो में पड जाती कि वे शास्त्रार्थ द्वारा यह प्रमाणित कर सकते हैं कि सती प्रथा सही तो वे झट ऋग्वेद और अथर्ववेद का निम्नलिखित मन्त्र उद्धृत कर देते -

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोक गतासुमेतमुप शेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि स बभूथ ॥
ऋग् ।१०।१८।८, अथर्व० १८।३।२ ॥

इस मन्त्र का भावार्थ सायणाचार्य के अनुसार इस प्रकार है—हे मरे हुए पति की पत्नि ! जीवित लडको, पोतो का लोक अर्थात् जो गृह है, उसका विचार करके इस जगह से उठ ! प्राणान्त हुए पति के समीप तू न सो वहा से आ। जिससे तू पाणिग्रहण करने वाले गर्भ को धारण करने वाले (द्वितीय) पति के सम्बन्ध से आए हुए इस (व्यक्ति) की स्त्री होने के विचार से निश्चय पूर्वक अनुसरण कर।

अथर्ववेद के एक अन्य मन्त्र [१८।३।१] मे भी विधवा स्त्री के दूसरे पति का स्पष्ट रूप से उल्लेख है। सच तो यह है कि सम्पूर्ण वैदिक साहित्य यहाँ तक कि मनुस्मति [९।६९] वशिष्ठ धर्म सूत्र [१७।१९], बोधायन धर्म सूत्र [४।१।१६] व मानव धर्म सूत्र [९।१७५] आदि ग्रन्थों में भी स्त्री के दूसरे विवाह के समर्थक अनेक प्रमाण भरे हुए हैं। दयानन्द के सामने कोई 'निरजन' ठहर नही पाता। वे श्री निरजन के कि "राजाराम मोहनराय के विरुद्ध बोलने तथा यह कहने कि पर 'सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाने से देश में विधवाओ की समस्या उत्पन्न हुई है—के उत्तर में 'नारी जागरण' का ऐसा आन्दोलन खडा कर देते कि कोई भी कुमारी कन्या किसी विधुर से विवाह न करती।

दयानन्द में निर्भीकता, सप्रमाण शास्त्रार्थ करने की योग्यता तथा सामाजिक आन्दोलन चलाने की अद्भुत शक्ति थी। जो काम सरकारी कानून नही कर सकते थे उनके आन्दोलन कर दिखाते थे।

महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय एकता के जबरदस्त पक्षधर थे। राष्ट्रीय एकता के लिए वे राष्ट्र में सस्कृत तथा हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य समझते थे। यदि कोई प्रधानमन्त्री उनके सम्मुख अपनी नयी शिक्षा नीति में माध्यमिक कक्षाओ मे सस्कृत पर प्रतिबन्ध लगाता तो वे उसके विरुद्ध खड हो जाते। आर्यसमाज की ५ हजार से अधिक शिक्षा सस्थाओ में सस्कृत को अनिवार्य घोषित कर वे सरकारी नीति की अवहेलना करते। सस्कृत की समर्थक अन्य सस्थाओं को भी अपने इस आन्दोलन में शामिल कर लेते। वे कहते—सस्कृत पर जो सकट मुस्लिम व ब्रिटिश राज्य भी नहीं ला सके उसे स्वतन्त्र भारत में भारत की सरकार कैसे ला सकती है ? यह उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द ने स्वय अनेक विद्यालयो की स्थापना कर सस्कृत अध्यापन पर बल दिया था। २३ मई १८८१ को उन्होंने अपनी फर्रुखाबाद की पाठशाला के सचालक सेठ निर्भयराम जी को लिखा था—'आप लोग देखते हैं कि बहुत काल से आर्यावर्त में सस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन् सस्कृत रूपी मातृभाषा की जगह अग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। अग्रेजी का प्रचार तो जगह-जगह सम्राट की ओर से जिनकी यह मातृभाषा है, भली प्रकार हो रहा है। अब इसकी वृद्धि में हम तुमको इतनी आवश्यकता नहीं दीखती। और न सम्राट् के समान कुछ कर सकते हैं। हां, हमारी अति प्राचीन मातृभाषा सस्कृत के प्रचारार्थ आप लोगों ने यह पाठशाला स्थापित की है। तो यह भी उचित कर्त्तव्य अवश्य है कि सदैव पूर्व इष्ट की सिद्धि पर दृष्टि रखी जावे।"

वे भारत सरकार के विरुद्ध भी खडे हो जाते। भारत सरकार को बताते कि इस देश की कोई भाषा ऐसी नही है जिसका शब्द भण्डार सस्कृत का न हो। केवल आर्य भाषाएं नहीं, दक्षिण की भाषाएं भी सस्कृत शब्द भण्डार पर ही आधारित हैं। तेलगू कन्नड और मलयालम में ५५ प्रतिशत तथा तमिल में ६० प्रतिशत से अधिक सस्कृत के शब्द हैं। देश की सभी भाषाओ के साहित्यकार साहित्य रचना के लिए सस्कृत साहित्य का अवलम्ब ग्रहण करते हैं।

दयानन्द पहले गैर हिन्दी राज्य के व्यक्ति थे जिन्होंने राष्ट्रीय एकता के लिए सस्कृत के साथ हिन्दी का प्रयोग आवश्यक समझा था। उन्होने अपने भाषण व लेखन का कार्य सस्कृत के साथ हिन्दी मे प्रारम्भ किया। महर्षि दयानन्द ने कहा था—"दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं कि जब कश्मीर से कन्या कुमारी तक और अटक से कटक तक देवनागरी अक्षरों का ही प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त भर मे भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिए ही अपने सकल ग्रन्थ आर्यभाषा मे लिखे और प्रकाशित किये हैं।

जब मैं सुनता हूं कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के ४० वर्षों के बाद भी देश की ७० प्रतिशत जनता अशिक्षित है तब भी मुझे महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास के निम्नलिखित अमर वाक्य याद आते हैं—इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पाचवे अथवा आठवे वर्ष से आगे अपने लडके और लडकियो को घर मे न रख सकें। पाठशाला में अवश्य भेज देवे। जो न भेजे वह दण्डनीय है।" महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा व्यवस्था देश की शिक्षा व्यवस्था के लिए निर्देशक का कार्य कर सकती है। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा प्रणाली के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास है। युवको मे बढती अपराध वृत्ति की रोकथाम दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अनुसार शिक्षा प्रणाली ही कर सकती है। खर्चीले पब्लिक स्कूलो की नकल पर नयी शिक्षा नीति में प्रस्तावित आदर्श विद्यालय देश के नागरिकों में भेदवृत्ति ही उत्पन्न करेंगे।

महर्षि दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने वर्णव्यवस्था को गुण कर्मानुसार बताकर वर्ण और जाति के आधार पर उत्पन्न उच्च

और नीच भावना पर कुठाराघात किया था। वे भी शूद्रों को विशेषाधिकार देना चाहते थे। शूद्र बालक को घर के कलुषित वातावरण से हटाकर अध्यापक व व्यापारी के पुत्र के साथ रखकर सबको समान खान पान रहन-सहन व समान शिक्षा देने के वे पक्षधर थे। वे भारतीय सविधान की इस व्यवस्था पर जबर्दस्त चोट करते। जिसके अनुसार शिक्षित, धनी व समाज में मान्य हरिजनो के लिए भी आरक्षण की व्यवस्था है। यह दलित और पीडित हरिजन को यह सविधान कोई अधिकार नही दिलवा पा रहा।

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित अर्थव्यवस्था मे कोई भूखा नही रह सकता। किसान को देश का राजा कहकर उन्होने कृषि व ग्रामोन्नति तथा स्वदेशी पर निर्भर रहकर देशको स्वावलम्बी बनाने का पाठ पढाया था। उन्होने वैश्य को धनसग्रह का अधिकार अवश्य दिया पर ५० वर्षों की आयु के उपरान्त उसे वानप्रस्थी बनाकर सारा धन छोड जाने की भी व्यवस्था की।

महर्षि दयानन्द को वैदिक धम का पुनरुद्धारक कहकर आर्यसमाज नामक नये मत का प्रवतक कह दिया जाता है। पर महर्षि का स्पष्ट मत था—"मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हू जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा नवीन कल्पना का मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है, उसको छोडना और छुडवाना, मुझको अभीष्ट है। सत्यार्थप्रकाश मे लिखा—सब सत्य भाषण मे धर्म और असत्य भाषण मे अधर्म मानते हैं। इसी प्रकार विद्या पढने, ब्रह्मचर्य करने, पूर्ण युवावस्था मे विवाह सत्सग पुरुषार्थ आदि को भी सत्य धर्म मानते हैं। धर्म की इस व्याख्या से महर्षि ने सभी धर्मों एव सम्प्रदायो मे एकता कर सबको देश की उन्नति की प्रेरणा दी। दयानन्द के इन प्रयत्नो से एक नयी दिशा मिली और देश मे नव जागरण की एक लहर सी आ गई। यदि वे आज होते तो सब धर्मों को मानवता के कल्याण मे लगा देते।

यदि आज महर्षि दयानन्द होते तो वे राजीव को मनु का "दण्ड शास्ति प्रजा सर्वा" का पाठ पढाते और समझाते कि पजाब में सेना भेजो, गोरखालैण्ड और उत्तराखण्ड जैसी मागोके पीछे विदेशी शक्तियो के षडयन्त्र को पहचानो अणुबम का निर्माण कर पाकिस्तान, श्रीलका तथा अन्य पडौसी राष्ट्रो के कारण उत्पन्न तनावों को दूर भगाओ। विश्व की एक महान् शक्ति बन जाओ। तभी तुम फिजी तथा विश्व के अन्य देशो में रह रहे प्रवासी भारतीयो की रक्षा कर सकोगे।

दयानन्द ने प्रजातन्त्र और विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त के आधार पर राज्यो का विभाजन व उनकी शासन व्यवस्था की योजना प्रस्तुत की थी। और अपने देश की उन्नति के बाद सारे विश्व मे एक सार्वभौम राज्य की स्थापना कर विश्व शान्ति का उन्होने मार्ग प्रशस्त किया था। पर महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित राज्य व्यवस्था मे प्रजा की इच्छा और उसका कल्याण प्रमुख था। कोई भी राजा निरकुश नही हो सकता। सत्यार्थप्रकाश के षष्ठ समुल्लास मे उन्होंने 'राजा' को राजार्य, धर्मार्य व विद्यार्य इन सभाओ के निर्णयो को क्रियान्वित करने वाला कहा है। वह प्रजा का भृत्य है, उसे प्रजा को पुत्र मानकर पितृवत् उसका पालन करना चाहिए। यदि आज दयानन्द होते तो वे प्रजातन्त्र का स्वरूप दलो के परस्पर विरोध के स्थान पर सबके मिलकर राष्ट्र की उन्नति के प्रयत्न पर निर्भर होता।

१ जनवरी १८७७ को दिल्ली मे महारानी विक्टोरिया के महारानी होने पर आयोजित दरबार मे म० दयानन्द ने दिल्ली पहुचकर एक ओर आर्यावर्त के समस्त राजाओ के हृदय में सच्चे आर्य धर्म को जगाकर देश जगाने का प्रयत्न किया तथा साथ ही देश मे भिन्न-भिन्न धार्मिक नेताओ को एकत्र करके ऐसा महानद ढूढने का प्रयत्न किया, जिसमे सब सम्प्रदाय रूपी नाले आकर मिल जाए। सभी परस्पर झगडो में पड हैं। स्वामी जी के निमन्त्रण पर बा० केशवचन्द्र सेन, सर सय्यद अहमद खा, मुशी कन्हैयालाल अलखधारी बा० नवीन चन्द्रराय, मुशी इन्द्रमणि और बा० हरिश्चन्द्र चिन्तामणि आदि महानुभाव इकट्ठ हुए। इसमे बगाल, बम्बई, उत्तरप्रदेश और पजाब से आए इस्लाम, ब्राह्म समाज, सनातन धर्म तथा आर्यसमाज के प्रतिनिधि विद्यमान थे। स्वामी जी ने सभी मतवालो से कहा—"आर्यसमाज से मिलकर भारत की उन्नति का कार्य करे, क्योकि जिस देश का अन्न खावे, शरीर पले उस देश की उन्नति करना परम कत्तव्य है।'

महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य, स्वदेशोन्नति और स्वायत्त शासन के सत्यार्थप्रकाश मे न केवल कुछ पत्र लिखे थे, वरन् क्रियात्मक जीवन से देश की स्वाधीनता के लिए अथक प्रयत्न किया था। डी बैल्ले के अनुसार वर्तमान स्वतन्त्र भारत की वास्तविक आधारशिला दयानन्द ने रखी थी। रोम्यारोला का कथन है—'राष्ट्रीय पुनर्जागरण मे, जो इस समय दीख पड रहा है, दयानन्द ने प्रबल शक्ति के रूप मे कार्य किया था। थियोसोफिकल सोसाइटी की मैडम ब्लेवत्स्की ने कहा था –महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम नारा लगाया था कि भारत भारतीयो का है। सर वैलजटाइन चिरोल के अनुसार महर्षि दयानन्द के उपदेश हिन्दुओ में सुधार के लिए न होकर केवल भारत मे विदेशी प्रभाव का विरोध करने के लिए है। दादा भाई नैरोजी ने सन् १९०४ में कहा—मैंने स्वराज्य शब्द सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो से सीखा।

आज दयानन्द की याद आती है। देश स्वतन्त्र हो गया, पर उन्नति का ठीक मार्ग वह नही खोज पा रहा। मार्ग मिल भी जाता है तो उस पर सत्य और दृढता पूर्वक चलना सिखाने के लिए दयानन्द की आवश्यकता है, जिसकी अगुली पकडकर वह आगे बढ सके। ●

स्वामी दयानन्द की प्रासांगिकता

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री—

आज का मनुष्य जिन्दगी की आपाधापी में इतना फसा हुआ है कि जीवन को पूर्ण रूप मे देखने का न तो उसके पास समय है और न ही रुचि। उसका जानने का सोचने का,कार्य करने का ढग टुकडो मे बट गया है। इसी खण्डित जीवन दृष्टि के कारण धर्म और विज्ञान तथा परिवर्तन और अध्यात्म एक दूसरे के पूरक न रहकर परस्पर विरोधी से हो गए हैं लगते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि धर्म विज्ञान और क्रान्ति के समन्वय का बार बार विरोध करके हम समाज का समग्रता का ही विरोध कर रहे हैं और आपको टुकडो में बाट रहे हैं।

हमारे देश मे लोगो में जीवन के प्रति समग्र दृष्टि का सचार करने वाले अनेक महापुरुष हुए हैं। ये सभी महापुरुष इसलिए माने गए हैं कि इन्होने जीवन को समग्रता मे देखा था और उसे प्रचारित किया था। इन्होंने समाज को टुकडो मे नही बाटा। इन्होंने धर्म को सामाजिक स्थायित्व का मूलाधार माना। धर्म का विशेष पूजा पद्धति वाला सकीर्ण अर्थ यहा अभीष्ट नही है। बल्कि धर्म से तात्पर्य उन कर्त्तव्यों से है जो मानवमात्र का कल्याण करने वाले हैं, उन कार्यों से हैं, जो तोडते नही जोडते हैं, उन मान्यताओं से है जो दीवारे खडी नही करता बल्कि एक आगन मे सबको बिठाती हैं। भारत का गुट निरपेक्ष आदोलन मे नेतृत्व और सयुक्तराष्ट्र को मजबूत बनाने में सहयोग इसी के लक्ष्य की दिशा में पुनीत प्रयास है।

स्वामी दयानन्द ने लोगो को स्वधर्म, स्वभाषा, स्वदेशी तथा स्वराष्ट्र की प्रेरणा दी। उनकी कथनी करनी मे अन्तर न था। राष्ट्रीयता की भावना उनकी रग-रग में समायी हुई थी। तेजस्विता उनके जीवन का एक विशेष गुण था।

१९५० के मध्य भारत जब स्वाधीनता के प्रधान सग्राम की शताब्दी मनाये जाने की योजना बन रही थी उस समय एक वैदिक विद्वान स्वामी वेदानन्द सरस्वती ने १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम से सम्बन्धित लेखो का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि महर्षि दयानन्द ने इसमें बडा ही सक्रिय योगदान किया था। हालाकि इस सम्बन्ध में कहीं विवाद रहा है कि स्वामी दयानन्द ने १८५७ के सग्राम में भाग लिया या नही। उस समय उनकी ३२ वर्ष की आयु थी। लेकिन जो व्यक्ति घर छोडकर आया हो, जिसका उद्देश्य ससार की भलाई करना हो और जिसकी विचारधारा विद्रोहात्मक हो —क्या ऐसा व्यक्ति इस प्रकार के आदोलन से एक दम निस्पृह रह सकता है? वैसे इन तीन वर्षों के उनके जीवन की घटनाए भी लगभग अज्ञात हैं। लेकिन बाद के लेखो से स्पष्ट है कि दयानन्द जी ने प्रथम स्वाधीनता सग्राम मे सक्रिय भाग लिया था। उन्होंने स्वदेश और स्वराज्य का प्रचार किया था। वे राजनीति से अछूते नहीं थे। उनके ग्रन्थो मे अनेक स्थानो पर पराधीनता के जुए को उतार फेकने की बात मिलती है। यही नहीं उनके जीवन से प्रेरणा लेकर कई लोगो ने अपना घरबार त्याग कर देश को स्वतन्त्र कराने का सकल्प किया और सारा जीवन इसी काम मे लगा दिया। शिक्षा के क्षेत्र मे भी स्वामी जी की ऐतिहासिक भूमिका रही है। उनकी प्रेरणा से डी०ए०वी सस्थाये स्थापित हुई जिनमे छात्रो में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने और आधुनिक दृष्टिकोण विकसित करने पर बल दिया गया।

महर्षि दयानन्द किसी के कधे पर चढकर आगे नही बढे। उन्हें अग्रेजी भाषा का ज्ञान नही था। फिर भी वे किसी प्रकार हीन भावना से ग्रस्त नही थे जैसे कि आज के नेता हैं।

उन्होने अपनी सरल हिन्दी भाषा में सत्यार्थप्रकाश जैसा गौरव ग्रन्थ लिखा। इस महान् ग्रन्थ मे उन्होने हिन्दू समाज मे व्याप्त कुरीतियो को दूर करने पर बल दिया। बाल विवाह, पर्दाप्रथा, सती प्रथा, महिलाओ की शिक्षा की उपेक्षा, अस्पृश्यता, धर्म के नाम पनपे पाखण्ड आदि पर जोरदार प्रहार किया।

राजाराम मोहनराय ने इन कुरीतियो के लिए वैदिक हिन्दू धर्म को दोषी ठहराया था। वे पाश्चात्य चिन्तन धारा से प्रभावित थे, लेकिन स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट किया कि वैदिक हिन्दू धर्म इन सब कुरीतियो से ऊपर है। वह पूर्णत वैज्ञानिक और दोषमुक्त है। ये कुरीतियो मध्यकालीन सास्कृतिक सम्मिश्रण की उपज है। हम अपने मूल आदर्शों और सिद्धान्तो पर आचरण कर तो इन बुराइयो से छुटकारा पाया जा सकता है।

दिवराला सती काण्ड आज का जीता जागता अन्धविश्वास का नमूना है। जीवित प्राणी का देह-दहन किसी भी धर्म के नाम पर कलक है। आज नारी को समानाधिकार हैं। फिर ये अधिकार केवल कागजो मे क्योकि इस व्यवहार मे लाना हमारा कर्त्तव्य है। स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी इस कुप्रथा को समाप्त कराने के लिए आज भी कायरत हैं।

स्वामी जी ने गाय को भारतीय कृषि व्यवस्था का मूलाधार माना था वे ग्रामो के उत्थान के लिए किसानो की शिक्षा की ओर ध्यान देना अत्यावश्यक मानते थे। ये सब बात आज भी उतनी ही प्रासगिक है, जितनी उनके समय मे थी।

दीपावली पर रेडियो भाषण

यह 'सवसांझी गुरबाणी' कैसे ? ऐसे !

—चौ० [illegible] सिंह, एडवोकेट जालन्धर—

'साझी' और फिर 'सर्वसाझी" किस के साथ ? और कैसे ?

प्रायः यह देखा गया है कि मजहबी लोग अपने विचारों का प्रचार करने हेतु मनमाने ऐसे विचार प्रस्तुत कर देते हैं जो अप्रासंगिक होते हैं, और वह सत्य की कसौटी पर भी पूरे नहीं उतरते। तर्क संगत नहीं होते।

पौराणिक संदर्भ में 'गुरु' की बड़ी महिमा गाई जाती है, और यहां तक कि "गुरु" को ईश्वर से भी अधिक महत्व दे दिया जाता है यथा—

'गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागू पांये।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दिया मिलाये॥

और इस प्रकार, एक अल्पज्ञ का सर्वज्ञ पर, एक अणु का विभु पर, और एक सीमित शक्ति वाले का सर्वशक्तिमान पर अधिमान दे दिया जाता है। पर भला एक दीपक का सूर्य से क्या मुकाबला। दीपक-दीपक ही रहेगा और सूरज-सूरज ही।

इसी प्रकार 'गुरुडम' की विचारधारा को 'पौराणिक मत' के स्रोत से लेकर कुछेक ३६ सन्तों-महन्तों-गुरुओं आदि के कहे हुए वचनों को संकलित करके एक पुस्तक रूप में प्रस्तुत कर १४३० पृष्ठों की इस पुस्तक का नाम "गुरु ग्रन्थ साहब" रख दिया गया। इस ग्रन्थ में मुख्य प्रेरणा यही दी गई है कि "राम नाम" जपो, गुरु के चरणों में आओ, और वेदों का गुणगान है। यह पन्थ भी अन्य कई पन्थों की भांति "गुरुडम" में विश्वास करके, जीवन को सफल बनाना, लक्ष्य समझता है, चाहे इसी 'गुरु ग्रन्थ साहब' का भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय, भिन्न-भिन्न रूप में अपने विचारों की सुविधानुसार अपना-अपना अर्थ निकालते हैं। जीवित और स्वर्गवासी गुरुओं के मानने न मानने पर भी कई प्रकार के विवाद बन गए हैं। निरंकारी मत, राधा स्वामी मत, नामधारी मत, उदासी मत और भी कई छुटपुट सम्प्रदायें, आपस में सहमत नहीं है, जो केवल मात्र हिन्दुओं में से ही पनपे हैं।

इस्लाम और ईसाई मत जो बाहर से इस देश में आये हैं, उनका स्पष्ट अपना-अपना मार्ग है, जिनकी अपनी-अपनी मजहबी पुस्तकें "कुरान शरीफ" और "बाईबल" हैं, और अपने अपने ही पैगम्बर 'मुहम्मद साहब' और 'यसु मसीह' के अतिरिक्त यह लोग स्वप्न में भी किसी अन्य मजहब के गुरु, सन्त, अथवा महन्त को मानने को तैयार नहीं हैं।

जहां सांझ है वहां से सांझ समाप्त की जा रही है इस ग्रन्थ के मानने वालों द्वारा और जहां सांझ (रोटी-बेटी का व्यवहार) नहीं वहां जबरदस्ती सांझ बनाने की चेष्टा। वाह ! मान न मान, मैं तेरा मेहमान।

अब, जहां तक ईसाई मत का प्रश्न है 'गुरु ग्रन्थ साहब' में लेश मात्र भी इस मजहब बारे, कोई वचन नहीं। वह इसलिए कि उस समय ईसाई मत बारे वहां किसी को पता ही नहीं था, चाहे ईसाई मत की आयु लगभग २००० वर्ष है, इन ईसाईयों के इस विश्व में लगभग ६० देश हैं और उनकी जनसंख्या लगभग एक अरब है। वैसे ईसाई मत में भी कई प्रकार के सम्प्रदाय हैं जिनकी आपस में कोई 'सांझ' नहीं।

रहा इस्लाम के बारे में ! तो मुसलमान तो किसी भी व्यक्ति को अपनी धर्मस्थिति में आना नहीं करता। 'गुरु ग्रन्थ साहब' को चार-पांच सौ वर्ष की ही बात है। कादयानी अथवा अहमदिया मत प्रत्येक भांति कट्टर मुसलमान हैं, और जिनकी संख्या, विश्व में, लगभग उतनी है जितनी कि सिक्खों की है अर्थात लगभग एक या डेढ़ करोड़, परन्तु जो अत्याचार इन पर पाकिस्तान में कत्ले आम करके किया गया, और उनको मुसलमान कहने से भी खारिज कर दिया गया, उनके मजहबी स्थानों से मस्जिद का शब्द मिटा दिया गया। मुस्लिम देशों की संख्या लगभग ३४ है और विश्व भर में इनकी भी जन-संख्या लगभग १०० करोड़ है चाहे वह शिया' और 'सुन्नी' सम्प्रदायों में बंटकर लड़ मरते हैं। ईरान और इराक का ८ वर्षों से चला आ रहा युद्ध हमारे सम्मुख है। दोनों देश कट्टर मुसलमान देश हैं और फिर "अहले इस्लाम" का यह हाल है, तो 'अहले हरब' (जहां लड़ाई और उपद्रव करके गैर इस्लामी देश को इसलामी बनाना इनका मजहबी लक्ष्य है) गैर इस्लामी देशों में क्या इनके साथ किसी भी "सांझ" का सवाल भी पैदा हो सकता है ? कभी नहीं।

हाल ही के, श्री ए० एन० सिस्मिक, जामिया मिलिया यूनीवर्सिटी, के विचार पूर्ण लेख से पता चलता है—

(१) मुस्लिम देशों में कोई अन्य धर्म वाला, अपनी धर्मपुस्तक को छापना या बेचना तो दूर, अपितु किसी दुकान पर इन ग्रन्थों को केवल रख भी नहीं सकता।

(२) कि इन मुस्लिम देशों में अपने धर्म के कोई चर्च, मन्दिर, मठ अथवा गुरुद्वारे के नाम पर डेढ़ ईंट भी नहीं, कोई लगा सकता।

(३) कि अरब आदि देशों में धोती पहनकर अथवा तिलक लगाकर कार्य नहीं कर सकता।

(४) कि, यहां तक कि सऊदी अरब में कोई भी 'हिन्दुस्तानी' अर्थात सिख आज भी प्रवेश नहीं पा सकता।

(५) सिख मिलट्री अथवा पुलिस में तो दरकिनार, सरकारी कार्यालय में भी, नौकरी नहीं पा सकता।

(६) झटके की दुकान उन देशों में कोई खोल के तो बताए, और यहां किसी सिख के द्वारा सूअर के मांस की दुकान चलाना, तो मौत को ही बुलाना है,

(७) यहां तक कि किसी मुसलमान को हिन्दू सिख बनाना तो बहुत दूर, बल्कि खुलेआम वह अपने धर्म का पालन नहीं कर सकते। इत्यादि। और भी बहुत सी बातें जो 'सांझ' से मेल नहीं खाती।

क्या फरीद या कबीर इत्यादि का कोई महत्व इस्लाम मजहब में है ? बिल्कुल नहीं है, इन हिन्दुस्तानियों का। यहां तक कि इनकी फिलास्फी में झांक कर देखा जाये, कबीर, फरीद, रविदास व अन्य अनपढ़ अथवा ज्ञानवान सीधे साधे सन्तों महन्तों इत्यादि में मतभेद है और यदि ऐसी स्थिति है, तो जो स्वयमेव भिन्न भिन्न विचारों का संग्रह है, वह विश्व के इन बड़े मतों से क्या सांझ रख सकता है ? जबकि किसी अन्य मत के अनुयायी ने 'गुरु ग्रन्थ साहब" को अपने मजहबी ठिकानों में कभी नहीं रखा, और न ही "गुरु साहबान" के चित्रों को ही इन्होंने अपने घरों इत्यादि में ही रखा। सबको याद होगा कि पिछले वर्षों, मालेर कोटला के एक मुस्लिम एम० एल० ए० (जो कथित अकाली भी बने) जब अपने कुछेक साथियों के साथ, एक बार "हरमंदिर साहब" गए, तो उन्होंने वहां 'अल्ला हो अकबर' के नारों के जयकारे लगाये, और वहां की मर्यादानुसार मत्था वगैरहा भी उन्होंने नहीं टेका, क्योंकि वह मुहम्मद साहब के अतिरिक्त किसी को नहीं मानते। कितना स्पष्ट है ? कैसी सांझ ?

हां वह व्यक्ति किसी हिन्दू कहलाने वाले पर ही पूरी उतरती हैं और उभर सकती है, कि वह "सांझा" व्यक्ति है। क्योंकि हिन्दू का कोई दीन-ईमान नहीं, और सारे दीन-ईमान इसके हैं भी। क्योंकि वह हर मजहब के आगे चाहे पुस्तक हो, मूर्ति हो, कबर हो, अथवा कुछ भी हो माथा टेकता रहता है।

एक ओर तो अपनी 'एकता' बनाने के प्रयास की व्यवस्था में एक ओर

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सर्वसांझी गुरवाणी

(पृष्ठ ६ का शेष)

प्रचार के समान है और दूसरी ओर सांझी और सर्वसांझी बातों को बिना दुविधा और प्राथमिकता रहा जा रहा है। यह परस्पर विरोधी बातें हैं और सम्भवतया ऐसी बातों और मज़हबी झगड़े फिसादों के कारण, विश्व में एक भारी संख्या उन लोगों की भी हो गई है जो मज़हबों में वैसे ही विश्वास नहीं करते। नास्तिक हैं। उनसे तो वैसे ही "धर्म" का प्रश्न नहीं उठता। प्रश्न है केवल मनुष्य और मनुष्यता का, जो केवल ऐसे ग्रन्थों से मिल सकती है, जिनमें हिन्दू, मुस्लिम, इसाई, सिख, जैनी बौद्ध, पारसी और सहस्रों मत-मतान्तर इत्यादि का कोई वर्णन न हो और न विकास से यह ज्ञान चला आ रहा हो, अन्यथा ईश्वर पर अन्याय करने का दोष लग जायेगा क्योंकि बाद के कथित अवतरित ज्ञान से वह सभी पुरखे वंचित रह गए होंगे, जो उस ज्ञान पुस्तक के आने से पूर्व ही मर चुके हैं। ईश्वर ऐसा पक्षपात नहीं कर सकता। —

ज्ञान तो वह प्रकाश है जो मनुष्य के मन और मस्तिष्क का अन्धकार समाप्त कर देता है। सृष्टि के आदि में मानव के मार्ग दर्शन और कल्याण के लिए प्रभु ने जो ज्ञान प्रकाश दिया उसका नाम ही तो 'वेद' है।

अतः गुरु नानक देव जी ने अपने ढंग से उसी ज्ञान को जो "वेदों" में कहा गया, का प्रचार और प्रसार किया, और इन्हीं वेदों की महिमा 'गुरु ग्रन्थ साहब' में बार बार गाई गई है जिसने मनुष्यता को उभारा है, यथा—

ब्रह्मा चार ही वेद बनाये —

(१) असंख्य ग्रन्थ, मुख्य वेद पाठ।

(२) रचे चार वेद जिन साचे, चार खाणी चार बुणा।

(३) वेद बखान करत साधु जन, भाग्यहीन समझन नाहीं।

(४) वेद कतेब कहो मत झूठे, झूठा जो न विचारे।

(५) चारों वेद हुए सच्चियार, पढ़ें गुणहि तिन चार विचार।

(गुरु ग्रन्थ साहब पृष्ठ ४७०) इत्यादि।

(अर्थ—चार वेद "ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद" सत्यज्ञान के भण्डार हैं, अतः मनुष्य इन चारों को विचार पूर्वक पढ़ें और उन पर आचरण करें)

अतः यह वाणी इस रूप में सांझी और सर्वसांझी है। सत्य ज्ञान सत्य ही है, वह सब मानवता, सब कालों और सब देशों के लिए एक जैसा होता है। कोई माने न माने, कोई कहे न कहे, सत्य तो सत्य ही है। ना नया होता है ना पुराना। पूर्व आदिकाल से है और सब मनुष्यता को, बिना भेदभाव के 'ज्ञान' पहुंचाता रहा है, पहुंचाता है, और पहुंचाता रहेगा।

गुरु नानक देव जी ने वेदों की गुरवाणी द्वारा ठीक ही गुणगान गाया है जो सर्व सांझा है।

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है,
वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना,
सब श्रेष्ठ व्यक्तियों का परम कर्त्तव्य है।"

पंजाब में संस्कृत पर रोक के प्रयास : मिश्र

नई दिल्ली। लोकसभा में इस बात पर चिन्ता व्यक्त की गई कि पजाब में संस्कृत के पठन-पाठन पर रोक लगाने के प्रयास किए जा रहे हैं। कांग्रेस (इ) सांसद उमाकांत मिश्र ने विशेष उल्लेख करते हुए प्रधानमन्त्री तथा मानव ससाधन विकासमन्त्री से अनुरोध किया कि वे पजाब सरकार को सस्कृत को प्रोत्साहन देने का निर्देश दें। श्री मिश्र ने कहा कि सस्कृत का किसी भी क्षेत्रीय भाषा से कोई विवाद नहीं है। इसके विपरीत वह उनकी सहायक और पोषक है। श्री मिश्र ने खेद व्यक्त किया कि पजाब मे सस्कृत शिक्षको के पद खत्म किए जा रहे हैं। सस्कृत पाठशालाओ तथा मेधावी छात्रो को सहायता नही दी जा रही है। उन्होने कहा कि पजाब सरकार सस्कृत आयोग की सिफारिशो की भी उपेक्षा कर रही है।

रामायण धर्म निरपेक्ष नहीं

पनजी – १० नवम्बर, दूरदर्शन पर दिखाए जा रहे सीरियल रामायण व बहादुरशाह जफर धर्मनिरपेक्ष नहीं हैं, यह विचार दिल्ली विश्व विद्यालय के इतिहास विभाग के प्रमुख डा० एन झा ने यहां हो रही भारतीय इतिहास कांग्रेस के स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर व्यक्त किए। विद्यार्थियों ने कांग्रेस को ऊपर सरकार द्वारा अन्धाधुन्ध खर्च किए जाने के विरोध मे कांग्रेस का विरोध किया है।

(हिन्दुस्तान टाइम्स)

भूल सुधार

गताक में वर की आवश्यकता में पाठक कृपया निम्न पता सुधार ले—

भारतभूषण २११ सी पाकेट १, मयूर विहार दिल्ली

हींग मसाला नहीं औषधि भी है ?

भोजन को स्वादिष्ट व सुगन्धित बनाने वाली हींग पेट की बीमारियों मे रामबाण औषधि मानी जाती है। हींग गर्म प्रकृति की होती है यह खून को साफ करके शरीर को गर्मी पहुंचाती है। आयुर्वेद के अनुसार हींग कफ वात का नाश करने वाली, खांसी के विकारो को दूर करने वाली, अपनी तेज गन्ध से शरीर के दुर्गन्धो को दूर करने वाली व मल को साफ करने वाली है। इसके चूर्ण का लगातार सेवन करने से मुंह की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

हींग, गोंद व राल जैसा पदार्थ होता है जिसमें करीब २५ प्रतिशत गोंद, ४० से ६४ प्रतिशत राल व ६ से १७ प्रतिशत एसेंसियल तेल रहता है। इसके राल में फरूलिक एसिड होता है।

भारत में हींग की खेती पंजाब व कश्मीर मे होती है। काबुल व अफगानिस्तान मे हींग बहुत पैदा होती है। अच्छी हींग दानेदार मानी जाती है। रहीजोम' पेड या 'फेरूला फीटीडा' की जडो या तने से एक रसदार पदार्थ बहकर जम जाता है, वही हींग है।

हींग पेट की हर बीमारी दूर करती है। पेट में गैस बने तो दाल सब्जी में हींग का छौंक आवश्यक है। कब्ज हो तो हींग के चूर्ण में थोडा मीठा सोडा मिलाकर फांकने से फायदा होगा। यदि खाना हजम न हो रहा हो तो थोडी-सी हींग, सेंधा नमक जीरा पीसकर गुनगुने पानी के साथ फाक लेने से खाना हजम हो जाएगा। अफारे मे हींग को भूनकर उसमे काला नमक मिलाकर उसे पीसकर गुनगुने पानी से सेवन करने से फायदा होगा। यदि यात्रा मे नई जगह पर पानी बदलने से अपच की शिकायत हो जाए तो हींग का चूर्ण हर तकलीफ दूर कर देगा।

शिशु के छ महीने तक पेट मे वायु बनती है जिससे वह पेट दर्द से रोने लगता है अत सरसों के दाने के बराबर हींग पीसकर छोटे चम्मच में दूध में मिलाकर शिशु को दे, उसे आराम मिलेगा। बच्चे का पेट कडा हो तो गरम पानी मे हींग घोलकर उसके पेट पर हल्का-हल्का मल।

जिन व्यक्तियो के जोडों मे दर्द रहता हो उन्हें हींग का नियमित सेवन करना चाहिए इससे उनका दर्द दूर हो जाएगा। कम रक्त दाब में हींग का प्रयोग लाभकारी होता है।

शरीर पर जख्म हो तो उस पर हींग का चूर्ण बांधने से जख्म के कीडे मर जायगे। अगर घाव ज्यादा सडने लग गया हो तो हींग को नीम के पत्तो के साथ घिसकर बांधने से लाभ होगा। दाढ के दर्द में थोडी सी भूनी हुई हींग रुई के फाहे के साथ दाढ पर लगाने से दर्द कम हो जाएगा। सर्दी मे कान बधिर हो जाने पर हींग का फाहा कान पर लगाने से कान ठीक हो जाएगा।

निमोनिया होने पर गुनगुने पानी मे जरा-सी हींग घोलकर पीने से आराम मिलेगा। कई बार बुखार से शरीर ठंडा पडने लग जाता है जिसे सन्निपात कहते हैं, तब रोगी के हाथ पैरो पर हींग को पानी में घिसकर मलने से फायदेमन्द रहेगा।

दाद पर हींग को पानी में घिसकर लगाने से फायदा होगा क्योंकि हींग मे एंटीसेप्टिक गुण भी है। हिस्टीरिया के दौरा पडने पर हींग सुंघाने से फायदा होगा व रोगी को जरा-सी हींग मिश्री के साथ खिलाई जाए तो जल्दी ही वह सामान्य हो जाएगा।

अपच की तकलीफ में एक छोटा चम्मच हिंग्वाष्टक चूर्ण घी व पके चावल के साथ सेवन करने से अपच दूर होगी।

असली हींग की पहचान—एक छोटे चम्मच में जरा सी हींग घोलकर गिलास भरे पानी में डाले। शुद्ध हींग घुलकर सारे पानी को सफेद बना देगी। [illegible] है [illegible] मिट्टी आदि रह जाएगी।

—[illegible]

आर्यसमाज की गतिविधियां

गया पुष्कुम्बा मेला मे वैदिक धर्म प्रचार महोत्सव

बिहार प्रान्त के गया शहर में विशाल पशु मेला गया जिला आर्य सभा ने वेद प्रचार चतुर्दिवसीय कार्यक्रम बनाया था। इस अवसर पर सर्वश्री सोममित्र शास्त्री, डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, डा० इन्द्रदेवसिंह एव श्री भिखरसिंह के उपदेश एव भजन होते रहे हजारो लोगो ने लाभ उठाया।

—मन्त्री जगदम्बा प्रसाद आर्य एम०ए०

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी को सात्विक दान

आर्य जनों के लिये यह हर्ष का विषय है कि पाणिनि कन्या महाविद्यालय संस्कृत एव संस्कृति की सेवा में अपने उच्च आदर्शों के साथ प्राणपण से जुटा है।

अभी-अभी इस विद्यालय को गोरखपुर निवासी किन्ही उदाराशय सज्जन ने १० सहस्र रु० का गुप्त दान किन्हीं सज्जन के माध्यम से भेजा है और अपना नाम तक प्रकट नहीं किया है ऐसे सात्विक दानी महानुभाव के हम सब गुरुकुलवासी आभारी हैं तथा परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह सर्वथा सपरिवार स्वस्थ सानन्द रहते हुये समस्त वैभवों को प्राप्त करे।

निवेदिका—प्रज्ञादेवी
आचार्या पाणिनि० कन्या विद्यालय

निर्वाचन

—आर्य महिला समाज महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड वाराणसी की नवगठित समिति में प्रथम श्रीमती सज्जावती गौतम प्रधान तथा श्रीमती विद्योत्तमादेवी मन्त्री चुनी गई।

—आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद (निर्मित क्षेत्र) का गठन होकर उसके प्रधान श्री लक्ष्मणदास मन्त्री श्री बलबीरसिंह आर्य चुने गए हैं।

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर के वार्षिक चुनाव में श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा प्रधान व श्री कुंवरपालसिंह मन्त्री चुने गए।



(ऊपर) स्वामी आनन्द बोध सरस्वती आर्य प्रतीक्षालय खण्डवा का उद्घाटन करते हुए
(नीचे) सभास्थल पर श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती साथ में श्री कालीचरण सांसद म० प्र० सरकार राज्यमन्त्री श्री तनवन्तसिंह कीर श्री रामचन्द आर्य एवं श्री कलाशचन्द पालीवाल

आर्यसमाज महावीर नगर नई दिल्ली वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज महावीर नगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव ६ से ८ तक बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। महात्मा रामस्वरूप जी की अध्यक्षता मे १ सप्ताह सामवेद प्रचारयज्ञ किया। ७ को विशाल शोभायात्रा निकली। प्रि० चड्ढा जी का पूर्ण सहयोग रहा। रविवार यज्ञ की पूर्णाहुति का दृश्य अति सुन्दर रहा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री डा० धर्मपाल जी व डा० शिवकुमार शास्त्री के प्रेरणादायक भाषण हुए ऋषि लंगर मे २ हजार व्यक्तियों ने भोजन किया जिसमें हरिजन बन्धुओं ने भाग लिया।

—चन्द्रप्रकाश मन्त्री

जिला आर्य उ० सभा बुलन्द शहर द्वारा शुद्धि

२४ अक्टूबर को डा० लोकेन्द्रसिंह जी के प्रयत्न से ईकरमाई (नरहान) के डा० मोहम्मदअली को शुद्ध करके वैदिक धर्म मे प्रविष्ट किया गया व कार्तिक पूर्णिमा पर जिला सभा की ओर से अनूपशहर मेले मे वैदिक धर्म प्रचार का शिविर सफलतापूर्वक लगा। —कुशलपालसिंह मन्त्री

आर्य समाज इटारसी होशंगाबाद अन्तर्जातीय विवाह

समाज के प्रयत्न से गुलाबसिंह व कुसुमबाई का अन्तर्जातीय विवाह उनके माता पिता की सहमति से नागरिकों की उपस्थिति मे कराया गया।

आर्य समाज समालखा में शुद्धि

स्वामी सेवानन्द जी के प्रयत्नो से मुसलमानो की शुद्धि की गई तथा उनको यज्ञोपवीत धारण कराया गया श्री ,,, ,,, मागेराम जी का सहयोग रहा।



विजय दशमी के अवसर पर तकवें ग्राम (तिरुनलवेली) मे डी ए वी स्कूल का प्रारम्भ करते हुए श्री नारायणस्वामी

आर्यसमाज सदर बाजार लखनऊ की स्वर्णजयन्ती समारोह

लखनऊ की पुरानी कर्त्तव्य परायण आर्यसमाज कैन्टूनमेंट (सदर बाजार लखनऊ ने अपने स्वर्णजयन्ती बडे समारोह पूर्व ५ से ८ नवम्बर ८७ तक मनाई।

इस अवसर पर मूर्धन्य सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती महाराज ने ध्वजारोहण सम्पन्न कराया।

आर्य सम्मेलन का उदघाटन भाषण देते हुए सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश व जाति के सन्मुख आए महान् प्रश्नो पर विशद विवेचन करते हुए आर्यो को आह्वान किया कि वे इन चैलेंजो को स्वीकार कर देश को विघटन से बचाए।

महिला सम्मेलन की मुख्य वक्ता वेदाचार्य सावित्री देवी जी ने सती प्रथा के सम्बन्ध में पुरी के शंकराचार्य को शास्त्रार्थ के लिए चैलेंज किया। आपने कहा कि समस्याओं को महान् नारी ही हल करेगी। आर्यसमाज ने नारी समाज पर बडे उपकार हैं।

५ से ८ नवम्बर तक प० इन्द्रदेव जी के ब्रह्मात्व मे बृहद यज्ञ का सफल आयोजन रहा। ५ तारीख को क्षेत्र मे शोभायात्रा निकाली गई।

विभिन्न सम्मेलनो व कार्यक्रमो मे उ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान प० इन्द्रराज जी सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री पण्डित सच्चिदानन्द शास्त्री महर्षि आर्य भिक्षु जी प० मनमोहन तिवारी व अन्य स्थानीय विद्वानो के प्रेरक भाषण हुए सम्मेलन पूर्ण सफल रहा।

आर्य समाज रकाबगंज लखनऊ में शुद्धि

समाज के तत्वावधान में डा० अलीकुल्लाया को शुद्ध कर उनका नाम डा० श्रीराम शर्मा रखा गया। —चन्द्रभूषण शर्मा

अमर

आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी महात्मा अमर स्वामी जी ने अपने जीवन काल मे ही अपने बाद वेदमन्दिर के कार्य संचालन के लिए स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती के संरक्षण मे एक समिति का निर्माण कर दिया था, जिसके सदस्यो की बैठक मे निम्नलिखित पदाधिकारी तदर्थ रूप से चुने गये —

सर्वश्री सुन्दरलाल चावला—प्रधान, रामेश्वर दयाल गुप्त—मन्त्री, चौधरी अमरसिंह—कोषाध्यक्ष, शिवकुमार शास्त्री, स्वामी विद्यानन्द जी, देवराज बहल, प्रो० रत्नसिंह, बालदिवाकर हंस, डा० जगदीशचन्द, पी० चन्द्रा जी, आचार्य सोमव्रत शास्त्री, आचार्य प्रेमसिंह नागर, लाजपत राय आर्य, स्वामी प्रेमानन्द एव धनजय सिंह—सभी सदस्य।

बैठक मे लिये गये निर्णय के अनुसार अब वेद मन्दिर का नाम बदलकर 'अमर स्वामी वेद मन्दिर' कर दिया गया है। सहायतार्थ एव अन्य उद्देश्य से भेजी जाने वाली राशि केवल मन्त्री, अमर स्वामी वेद मन्दिर समिति, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद, उ० प्र० के पते पर ही भेजी जाये। — मन्त्री

आर्य समाज आंवला (बरेली) में शुद्धि

आर्य समाज आंवला द्वारा २ मुस्लिम परिवारो की शुद्धि कर वैदिक धर्म मे प्रविष्ट किया गया अनेक विद्वानो व नागरिकों ने इस समारोह में भाग लिया।

— रामजी शरण अकिंचन

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सारे संसार को आर्य बनाओ

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक ४८] मार्गशीर्ष शु० ६ सं० २०४४ रविवार २९ नवम्बर १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

'इंडियन कोड बिल' नागरिक संहिता बने

बहुसंख्यक विरोधी नीति से हिन्दुओं के अल्पसंख्यक हो जाने की आशंका

—महात्मा आनन्दबोध सरस्वती

लखनऊ १५ नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने माग की है कि सरकार भारत मे सबके लिये समान नागरिक सहिता लागू करे तथा हिन्दू कोड बिल का नाम बदलकर इण्डियन कोड बिल रखे।

आज यहा पत्रकारो से बातचीत करते हुए उन्होने कहा कि सविधान के अनुच्छेद ३० के तहत सरकार द्वारा अल्पसख्यको की शिक्षण सस्थाओ को तमाम सुविधाए व साधन मुहैय्या कराये जा रहे हैं जब कि ऐसी किसी भी सस्था पर सरकार का कोई नियन्त्रण नही है और वे मनमानी कर रही हैं। उन्होने कहा कि अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय को केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्यादा साधन उपलब्ध कराता है। परन्तु वहां सरकार कोई भी हस्तक्षेप कर सकने मे सक्षम नही है। उन्होने कहा कि अलीगढ वि०वि० मे २० मस्जिदे है, और सारा खर्चा सरकार द्वारा वहन किया जाता है।

उन्होने कहा कि इसके विपरीत हिन्दुओ की ऐसी शिक्षण सस्थाओ के अपनी व्यवस्था अपने ढग से चलाने की छूट नही है और उनमे सरकारी नियन्त्रण व दखलन्दाजी पक्षापातपूर्ण बात है। उन्होने कहा कि आज आर्य समाज के कन्या विद्यालयो में ऐसे शिक्षको को थोपा जा रहा है, जिनका हमारे धर्म या वैदिक सस्कृति से कोई सम्बन्ध ही नही है। सरकार हम पर स्वेच्छा से अपने स्कूल विद्यालयो मे धर्म व सस्कृति की शिक्षा देने पर रोक लगा बैठी है।

उन्होने पुरजोर शब्दो मे माग की कि सरकार सविधान के अनुच्छेद ३० मे सशोधन के करे या तो हिन्दू शिक्षण सस्थाओ को भी समान अधिकार दे या फिर इस धारा को ही रदद कर दिया जाये।

उन्होने कहा कि परिवार नियोजन जैसा राष्ट्रीय कार्यक्रम हिन्दुओ पर ही थोपा जा रहा है और अल्पसख्यक लगातार अपनी आबादी बढाते जा रहे हैं। यही स्थिति रही तो अगले कुछ वर्षों मे देश का नक्शा ही बदल जायेगा। उन्होने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने अल्पसख्यको की हित की रक्षा के लिए कोई विशेष कानून बनाया तो वे इसका विरोध करगे। यही नही, यदि मुसलमान, भारत के इस्लामी राज्य बनाने के लिए जनसख्या बढाते रहे तो भी हम इसका विरोध करेगे। उन्होंने कहा कि भारत मे हिन्दू को अल्पमत मे करने का कुचक्र रचा जा रहा है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आज ईसाई मिशनरियां विदेशी पैसे के बूते पर गरीब हिन्दुओ को धर्म परिवर्तन के लिए विवश कर रही हैं।

उन्होने माग की कि सरकार खाडी देशो से आ रहे पेट्रो-डालर पर तुरन्त रोक लगाए व उसे अपने नियन्त्रण मे ले।

पजाब मे राष्ट्रपति शासन बढाये जाने का स्वागत करते हुए उन्होने इस बात पर खेद प्रकट कि पजाब व कश्मीर की रक्षा हेतु जैसलमेर से कश्मीर तक ४१ लाख भूतपूर्व सैनिको के परिवारो के सीमा पट्टी बनाकर बसाने का उनका प्रस्ताव प्रधानमन्त्री की सहमति के बाद भी खटाई मे पड गया। उन्होने कहा कि जम्मू के हिन्दू अब यह महसूस करने लगे हैं कि सरकार यदि [illegible]

वेदामृत

पुत्र वीर कर्मठ सुयोग्य हो

तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु
देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व।
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो
युक्तग्रावा जायते देवकामः॥

ऋग्० ३-४-९,७-२-९,
तैत्ति० स० ३-१ ११।१॥

हिन्दी अर्थ—हे सृष्टि कर्ता देव! तुम दाता हो। तुम शीघ्र प्रभावकारी और पोषक वीर्य हमे दो, जिससे वीर, कर्मठ, अतिनिपुण, सोमरस निकालने वाला और आस्तिक पुत्र पैदा हो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

सूखा पीड़ित सहायता कोष में दान

कोषाध्यक्ष वृन्दा प्रसाद आर्य नरेल भोई वाडा समाज मन्दिर बम्बई	१००)
मन्त्री आर्य समाज पंजाबी बाग नई दिल्ली	१८७२)
बलराज नाईक दयाल बाग आगरा	१००)
श्री यशपाल डोगरा नया नगर	१०१)
मन्त्री जी आर्य समाज पिपराईच; जिला गोरखपुर	२००)
प्रधान जी आर्य समाज डी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली	२५०)
मन्त्री आर्यसमाज नेपा नगर (एम० पी०)	२५)
रघबीर सिंह जी आय समाज जगतपुर पीलीभीत	२५)
केशोराम नरेन्द्र कुमार चौक बाजार कैराना मुजफ्फरनगर	५०)
जवाहर लाल आगरा	५१)
हुकुमचन्द जी आर्य समाज चौक लखनऊ	५१)
मन्त्री आर्य समाज सै० ९ रामकृष्ण पुरम नई दिल्ली-२१	५००)
मन्त्री आर्य समाज पिलानी (राज०)	१५०)
आर्यन क्लब द्वारा आर्य समाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली	५००)
आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली	३१००)
प्रधान जी आर्य समाज चूना मण्डी पहाड़गंज नई दिल्ली	६००)
नारायणदास नागपाल बी० सी० १ हौजखास नई दिल्ली	५०)
मन्त्री आर्य समाज इलाहाबाद	५१)
राजेन्दर कुमार ,,	१०)
जयकृष्ण ,,	५१)
आर० पी० सिंह ,,	१०)
रामफल ,,	१०)
बाकेलाल ,,	१०)
रविन्दर कुमार ,	५)
बंशीलाल ,,	१०)
ज्ञानचन्द ,,	५५)
कृष्णचन्द आर्य मन्त्री आर्य समाज प्रताप नगर दिल्ली	१०००)
खूबीराम जी	५०)
मन्त्री आर्य समाज फतेहगढ जि० गुरदास पुर	१००)
कमला भाटिया डी० ३ कालिन्दी कालोनी नई दिल्ली	२००)
जयन्तपाल मद्रास कटिया स्टेशन	३०)
आर्य समाज जंगपुरा नई दिल्ली	५००१)
आर्य समाज बोट क्लब नई दिल्ली	१००)
ओमप्रकाश टक्कर जंगपुरा विस्तार के-३७ नई दिल्ली	५०१)
आर्य समाज अमर कालोनी नई दिल्ली	१०००)
प्रेमनाथ जी द्वारा आर्य समाज लाजपत नगर नई दिल्ली	५०१)
के० एन० सिक्का आर्यसमाज जंगपुरा विस्तार लिंक रोड नई दिल्ली	५०१)
माता धर्मदेवी जी द्वारा श्री रामसरण	२१)
सतीश कुमार मच्छर फतेहगढ पुराना बाजार गुरदासपुर	१००)
विजयादेवी शर्मा यू० के०	२२८०)
मन्त्री आर्यसमाज मोड बन्द विस्तार बदरपुर नई दिल्ली	५१)
एम० सी० मेहता जम्मू	५०१)
आर्य समाज रुद्रपुर नैनीताल	२०१)
मन्त्री आर्य समाज बादी कुई जयपुर	१३३)

इंडियन कोड बिल

(पृष्ठ १ का शेष)

उन्होने कहा कि श्रीलंका की जातीय समस्या मे सरकार फसी हुई है फिजी मे भारतीय मारे जा रहे हैं।

स्वामी जी ने कहा कि राम जन्मभूमि, अयोध्या हिन्दुओ की है और वह उन्हे मिलनी ही चाहिए। उन्होने कहा कि हमे विश्वास है कि मुस्लिम वर्ग इसे हिन्दुओ को सौंप देगा। उन्होने कहा कि किसी भी सन्त को यह कहने का कोई हक नही कि इसे पुरातत्व विभाग को सौंप दिया जाये। उन्होने दिवराला सती कांड की भी निन्दा की।

भगवान् भारतवर्ष को ललनायें ऐसी दीजिए

भारत धरा की बालिकाओ! काल को पहचान लो।
कैसा भयकर काल है अकाल को तुम जान लो॥
था विभाजन मास का उत्सव यहा थे हो रहे।
यवनो के अत्याचार से सहार अगणित हो रहे॥
पिन्डी के थोहा खालसा के पिन्ड मे घटना घटी।
आर्य ललनाओ की आयी थी परीक्षा की घडी॥
सग्राम करते शत्रु को जब तीन दिन थे हो रहे।
पानी से व्याकुल थे सभी और बालजात थे रो रहे॥
इस काल यवनो को इन्होने यू कहा सुन लो अरे।
पानी तो लाने दो हमे तुम कर रहे हो क्या अरे॥
जल कलश लेकर इन्होने नारिया थी भेज दी।
मानो स्वयम किस्मत इन्होने आप अपनी फोड दी॥
कूप पर जब चढ गई थी नीर भरने नारिया।
बद जुबा होने लगे करने लगे बद कारिया॥
लाजवन्ती ने कहा सुनती नही हो क्या अरी।
सकट घना निज धर्म पर तुम बात मानो री मेरी॥
मुह हाथ धोकर प्रार्थना करने लगी भगवान से।
निज स्वामियो के सामने करबद्ध थी ये ध्यान से॥
कद करके कूप मे थी लाजवन्ती चल बसी।
अनुगामिनी सब ही बनी निज लाज रक्षा कर सकी॥
दी मन्त्रियो को सूचना खुशहाल चन्द आगे बढे।
सेना ने रक्षा की तभी ये वीर प्रादेशिक बढे॥
हे बालको! इस वीरता के कारनामे जान लो।
उन पूर्वजो की शान को तुम ध्यान से पहचान लो॥
भगवान भारत वर्ष को ललनाए ऐसी दीजिए।
अनुगामिनी इनकी बनें यह भावना भर दीजिए॥ (क्रमश)

—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
शास्त्री सदन पश्चिमी आजादनगर, दिल्ली-३१

समालोचना

क्रिया योग

लेखक—डा० नारायण दास साधक
प्रधान—असम आर्य प्रतिनिधि सभा गोहाटी
प्रकाशक—डा० नारायण दास भारतभूषण कुकरेजा
चैरीटेबल, ट्रस्ट गोहाटी
मिलने का पता—मैसर्ज गोविन्दराम हासानन्द, नई सडक दिल्ली
२—पतञ्जली योग केन्द्र कृष्ण नगर
छतरीबारी रोड, गोहाटी ७८१००१
कीमत—१५ रुपया

यह पुस्तक आर्य जगत मे एक ऐसे अभाव को पूर्ण करेगी जिससे कि जीवन का निर्माण होता है। डाक्टर साहब जहा कुशल चिकित्सक हैं वहा उन्होने इस पुस्तक मे वर्णित क्रियाओ का अभ्यास करके अपना जीवन बहुत उज्ज्वल बनाया है आपका जीवन योगमय जीवन है इस पुस्तक मे—

(१) प्रत्याहार धारण तथा ध्यान की सिद्धि के लिए २० क्रियायें चित्रों सहित हैं।
(२) उज्जयी प्राणायाम से "ओ३म्" के जाप की विधि
(३) योग निद्रा
(४) अजपा जाप
(५) बहुच प्राणायाम
(६) कोष का वर्णन तथा उनमें कैसे प्रवेश किया जावे बड़े सरल ढग से लिखा गया है—इसे पढकर लाभ उठावें।

सम्पादकीय

आर्यसमाज के बढ़ते कदम-२

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वभर के आर्यों का सर्वोत्तम शिरोमणि संगठन है। प्रान्तों की सभाएँ भी अपने क्षेत्रों का प्रबन्ध सम्भालती हैं। उनका कार्य क्षेत्र प्रान्तों तक सीमित है। परन्तु सार्वदेशिक सभा का कार्यक्षेत्र सीमा रहित होने से इतना विशाल है कि सभा को आर्यसमाज के सभी सेवा कार्यों की न केवल सम्पूर्ण देखरेख रखनी होती है। समाज के ऊपर आने वाले सभी संकटों का निवारण करना अनिवार्य होता है।

गतांक में हमने सभा द्वारा किए जा रहे साहित्य सेवा की चर्चा की थी। आज हम सेवा के कुछ ऐसे आयामों पर प्रकाश डाल रहे हैं जिनका आर्य (हिन्दू) जाति के जीवन मरण से सम्बन्ध है।

हिन्दू जाति की बहुलता हमें कई बार दिग्भ्रमित करती है। परन्तु क्या हमने कभी विचार है कि इस बहुमत का क्या स्वरूप है। उदाहरण स्वरूप हम केवल मध्यप्रदेश की ओर ध्यान दिलाते हैं। मध्यप्रदेश की हिन्दू जनसंख्या में हर चार व्यक्ति में १ आदिवासी हैं १।। हरिजन हैं। दुर्ग के सरकारी विभाग के एक उच्चाधिकारी ने बताया कि मध्यप्रदेश के कुल बजट का लगभग ५० प्रतिशत आदिवासियों व हरिजन एवं पिछड़ी हुई जातियों के कल्याण कार्यों में ही व्यय होता है। परन्तु इन वर्गों में दरिद्रता का स्तर इतना निम्न है कि वह व्यय ऊंट के मुंह में जीरे के समान ही लगता है।

दरिद्रता एक महाअभिशाप है जिसका लाभ ईसाई व मुसलमानों ने भारत में भरपूर उठाया आज करोड़ों ईसाई मुसलमान इसी का शिकार आर्य (हिन्दू) जाति के शत्रु बने हुए भारत व उसकी प्राचीन संस्कृति को नष्ट करने में पूरी शक्ति व साधनों के साथ संघर्षरत हैं।

ईसाई मिशन असीम धन राशि इस आशा पर इन क्षेत्रों में खर्च कर रहे हैं कि जब भी अवसर प्राप्त हो वह आदिवासियों को अपने मायाजाल में फंसालें। आर्यसमाज ने ईसाइयो के इस षड्यन्त्र को भली प्रकार माप कर आज पचास वर्षों से मध्यप्रदेश में आदिवासियों के धर्मरक्षा अभियान में जुटा हुई है।

मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग रतलाम झाबुआ सैलाना कुशलगढ़ थादंला क्षेत्रों के आदिवासियो सार्वदेशिक सभा अपने ही एक संस्थान दयानन्द सेवा संघ के माध्यम से उनकी शैक्षणिक उन्नति के लिए अनेक आश्रम व बालवाड़ियों के द्वारा सेवा का महान् कार्य कर रहा है। यद्यपि ईसाइयों के भी वहां स्थान-स्थान पर केन्द्र बने हुए हैं परन्तु आर्यसमाज के सेवा कार्य के कारण वे सफल नहीं हो पा रहे। हाल के अकाल पीड़ित व दुर्भिक्ष ग्रस्त लोगों को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी की अपील पर प्राप्त अन्न वस्त्र व धन राशि लेकर सभा के कार्यकर्ता क्षेत्र में कष्ट निवारण में जुटे हैं। सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री पं० पृथ्वीराज जी शास्त्री (रुग्ण शैया से उठते ही) मध्यप्रदेश का दौरा करते वहां पहुंचे स्थान-स्थान पर उनका आदिवासियों ने भव्य स्वागत किया उन्होंने सहायता वितरण के अतिरिक्त नई बाल वाडियों खोलने की भी स्वीकृति प्रदान की।

यह उल्लेखनीय है कि दयानन्द सेवाश्रम में श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री के परिश्रम से नित नई शक्ति व सामर्थ्य पैदा हो रही है वे शहर को अपना सम्पूर्ण जीवन प्रदान कर चुके हैं। भील बच्चों की अपनी सन्तान की भांति लालन पालन कर वे इन्हीं में से वैदिक मिशनरी बनाते हैं जो अत्यन्त सफलता पूर्वक ईसाइयो का मुकाबिला कर सकते हैं। यही कारण है कि इस क्षेत्र से निराश ईसाइयों ने अपना पूरा ध्यान मध्यप्रदेश के ही छत्तीसगढ इलाके में लगाया हुआ है। यह इलाका आदिवासी बहुल होने के कारण अनेक देशों के बड़े-बड़े पादरी यहां अपना जीवन लगा रहे हैं। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कई बार इनके 'देश बाहर' के आदेशों की भी अवहेलना करके वे किसी 'अदृश्य शक्ति के सहारे इस क्षेत्र में बैठे हुए किसी सुअवसर की प्रतीक्षा कर रहे है। सरकारी आदेशों की उन्हें कोई परवाह नहीं।

हिन्दू समाज को अपने इस भीषण राजनीतिक संकट की कोई चिन्ता नहीं। देश के विभाजन से आतंकित व वोट की राजनीति की शिकार राजनीतिक संस्थाएं मुसलमान व ईसाइयों को भरपूर प्रोत्साहन देती है। पिछले दिनों शहाबुद्दीन जैसे घोर साम्प्रदायिक व्यक्ति का जनता पार्टी द्वारा सहारा दिया जाना इसका प्रबल प्रमाण है। कांग्रेस तो प्रारम्भ में ही इस राजनीतिक संकट का शिकार रही है। कांग्रेस द्वारा हिन्दुओं की घोर उपेक्षा व उनके हितों के प्रति अपराध पूर्ण उदासीनता तो जग जाहिर है।

आर्यसमाज एक जागरुक प्रहरी की भान्ति हिन्दुओं को जगाता भी रहता है और स्वयं प्राण पण से जाति के धर्मरक्षा अभियान को चलाता भी है। परन्तु जितने असीम साधन ईसाइयों के पास हैं उतने आर्यसमाज के पास नहीं। हिन्दुओं की असीमित धनराशि उसके मठ मन्दिरों तीर्थ स्थानों व अन्य अन्धविश्वास के स्रोतों में लगी हुई है जहां से जाति की रक्षा का कोई भी स्वर नहीं निकलता यदि एक वर्ष का हिन्दू धर्मस्थानों की दान राशि आर्यसमाज को प्राप्त हो जाए तो आर्यसमाज इस समस्या का सफलतापूर्वक समाधान कर सकता है।

हिन्दू जनसंख्या में गत ४० वर्षों में जो ह्रास हुआ है और मुसलमान ईसाइयों की जनसंख्या में जिस अनुपात से वृद्धि हुई है अरब देशों का अरबों रुपया इस्लाम रक्षा के नाम पर भारत में आ रहा है। मुसलमान उसका भरपूर लाभ छोटी जातियों के इस्लामीकरण में ले रहे हैं। उसे देखते हुए प्रत्येक हिन्दू का हितैषी चिन्ता ग्रस्त होना स्वाभाविक है। कहीं हमारे ऊपर आए संकटों के प्रति हमारा यह उदासीनता व उपेक्षा भाव हमें कहीं अल्पमत में न कर दें। इसीलिए प्रत्येक हिन्दू हितैषी व आर्यबन्धु से हम अपील करते हैं कि वह सार्वदेशिक सभा के हाथ मजबूत करें जिससे सभा अपने सेवा कार्य के क्षेत्रों को बढ़ाकर हिन्दू जाति के ऊपर छाए इन संकटों से उसकी रक्षा कर सके।

सार्वदेशिक सभा बिहार, आसाम, नागालैण्ड आदि क्षेत्रों में भी ऐसे ही पिछड़े हुए वर्गों के धर्म रक्षा अभियान के महान् सेवा कार्यों में लगी है जिसकी चर्चा हम इसी स्तम्भ में आगामी अंक में करेंगे। (क्रमशः)

उर्दू एकादमी द्वारा आयोजित सम्मेलन से देश की एकता व अखण्डता को खतरा

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का प्रधानमन्त्री से अनुरोध

नई दिल्ली १७ नवम्बर १९८७। देश मे उभर रहे भाषावाद, सम्प्रदायवाद को निर्मूल करने के लिए किसी भी जिम्मेदार नेताओ बुद्धि जीवियो, कवियो, शायरो आदि को उन आयोजनो मे भाग नही लेना चाहिए जो देश मे धर्म, सम्प्रदाय या जाति के नाम पर अल्पसख्यक या बहुसख्यक के रूप मे आयोजित किए जा रहे हैं।

यह अपील सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज यहा एक वक्तव्य मे की है। उन्होने प्रधानमन्त्री श्री राजीवगाधी को एक विशेष पत्र मे उर्दू अकादमी दिल्ली की ओर से आयोजित अल्पसख्यक दिवस के अन्तर्गत आयोजित होने वाले उस सम्मेलन की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया है, जिसमे उर्दू के बुद्धि जीवी, बुजुर्ग व युवा व्यक्ति भाग ले रहे है। स्वामी आनन्दबोध ने अपने पत्र मे लिखा है कि इन आयोजनो दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो० यूनिस रजा, सासद शमीम अहमद सिद्दीकी और डा० नजमा हैपतुल्ला आदि प्रमुख रूप से भाग ले रहे हैं जो अल्पसख्यको के नाम पर साम्प्रदायिकता के विषैले प्रचार के अतिरिक्त और कुछ नही हैं।

उन्होने कहा कि उर्दू का विकास अच्छी बात है, परन्तु किसी भाषा का अल्पसख्यक या बहुसख्यक वर्ग या सम्प्रदाय के साथ जोडना देश की एकता व अखण्डता के लिए खतरा है।

पत्र मे प्रधान मन्त्री श्री राजीवगाधी से अनुरोध किया गया हैं कि वे इन सम्मेलनो मे उन नेताओ आदि के भाग लेने पर गम्भीरता से विचार करे, क्योकि इसके पीछे देश मे सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भाषावाद आदि अलगाववादी घृणा व द्वेष की प्रवृत्तियो को पनपाना मुख्य उद्देश्य है।

आर्य कौन है ?

इसके साथ मैं और एक प्रश्न पर विचार करना चाहता हू जो खासकर मद्रास से सम्बन्ध रखता है। एक मत है कि दक्षिण भारत मे द्रविड नाम की एक जाति के मनुष्य थे जो उत्तर भारत की आर्य जाति से बिलकुल जुदा थे और दक्षिण-भारत के ब्राह्मण ही उत्तर भारत से गए हुए आर्य हैं, वहा की अन्यान्य जातिया दक्षिणी ब्राह्मणो से सम्पूर्ण पृथक् जाति की हैं। भाषातत्ववित् महाशय, मुझे क्षमा कीजिएगा, यह मत बिल्कुल निराधारहै। इसका एकमात्र प्रमाण यह है कि उत्तर और दक्षिण की भाषा मे भेद हैं। दूसरा भेद मेरी नजर मैं नही आता। यहा हम उत्तर-भारत के इतने मनुष्य हैं, मैं अपने यूरोपीय मित्रो से कहता हू वे इस सभा मे उत्तरी भारत और दक्षिणी भारत के मनुष्यो को चुनकर अलग कर दे। भेद कहा है ? जरा सा भेद भाषामें है। पूर्वोक्त मतवादी कहते हैं कि दक्षिणी ब्राह्मण जब उत्तर से आए थे तब वे सस्कृत बोलते थे, अभी यहा आकर द्राविडी भाषा बोलते-बोलते सस्कृत भूल गए। यदि ब्राह्मणो के सम्बन्ध मे ऐसी बात है तो फिर दूसरी जातियो के सम्बन्ध मे भी यही बात क्यो न होगी ? क्यो न कहा जाय कि दूसरी जातिया भी एक एक करके उत्तर-भारत से आई हैं—उन्होने द्राविडी भाषा को अपनाया और सस्कृत भूल गई ? वह युक्ति तो दोनो ओर लग सकती है। ऐसी वाहियात बातो पर विश्वास न करो। मारे भारत के मनुष्य आर्यों के सिवा और कोई नही।

हमारे शास्त्रो मे एक भी शब्द नहीं है जो प्रमाण दे सके कि आर्य भारत के बाहर से किसी देश से आये। हा प्राचीन भारत मे अफगानिस्तान भी शामिल था, बस ! और यह सिद्धान्त भी कि शूद्र अनार्य और असभ्य थे, बिलकुल अयौक्तिक है। उनके लिए यह सम्भव ही नही था कि मुट्ठीभर आर्य यहा आकर लाखो अनार्यों पर अधिकार जमाकर बसने लगे हो। अजी, पाच ही मिनट मे वे अनार्य उन्हे खा जाते, उनकी चटनी बना डालते। —स्वामी विवेकानन्द

सती प्रथा नारी हत्या का भीषण षड्यन्त्र है

आर्यसमाज होडल के वार्षिकोत्सव पर आर्य नेताओं की सिंह गर्जना

आर्यसमाज सोई जाति को जाग्रत कर सकता है — —सिंगला

होडल। आर्यसमाज होडल का इक्कीसवा वार्षिकोत्सव इस वर्ष बडी धूम-धाम और वैचारिक क्रान्ति प्रदातासिद्ध हुआ। शोभा यात्रा ने सारे नगर को गुञ्जायमान करते हुए जन-साधारण को उत्सव मे पधारने का मधुर आमन्त्रण दिया सारे नगर को गुरुवर विरजानन्द, महर्षि दयानन्द, लाजपत आदि नेताओं के नामो पर द्वारो से सजाया गया था। सारे नगर में लगभग २० स्थानों पर ध्वनिविस्तारक यन्त्र लगाकर सारे कार्यक्रम को सुनने की सुविधा नागरिको को प्रदान की गई थी।

इस अवसर पर सवश्री स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती प्रसिद्ध विचारक श्री प्रेमभिक्षु जी (मथुरा) बाल दिवाकर जी हस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, शिवराज शास्त्री, माननीय श्री सीताराम जी सिंगला औद्योगिक प्रशिक्षण एव व्यावसायिक शिक्षामन्त्री श्री सुभाषचन्द्र कतियाल श्रममन्त्री हरियाणा सरकार भी पधारे थे दोनो मन्त्री महोदयो ने क्रमश ११०००) और ११००) देकर आर्य समाज के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशसा की।

सर्वश्री शोभाराम जी मेरठ, मुल्लसिंह आर्य (मथुरा) खेमसिंह जी, गजराजसिंह जी के भजनोपदेशो और कविता पाठो का सभा श्रोताओ का मन्त्र मुग्ध कर देता था। श्री प० बालदिवाकर जी हस ने सती प्रथा को अत्यन्त घातक षडयन्त्र की सज्ञा देते हुए नारी हत्या की सज्ञा दी और आपने कहा सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने पुरी शकराचार्य को शास्त्रो अथवा वेद मे सती प्रथा न होने के अनेक प्रमाण उपस्थित करते हुए उन्हे शास्त्रार्थ के लिये ललकारा है—प्रस्ताव सर्व सम्मति मे पारित हुआ।

आर्यसमाज के प्रधान एव मन्त्री के साथ उनके सहयोगी टीम के रूप मे सेवा कर रहे थे। इस अवसर पर सब साधारण के लिये ऋषि लगर लगाकर सुस्वादु भोजन भी सबको उपलब्ध था।

सक्षप मे इक्कीसवा वार्षिकोत्सव शताब्दि समारोह जैसी छवि छोड गया जिसे होडल और आसपास की जनता हार्दिक भाव से सराहा।

सती समर्थक पुरी शंकराचार्य जी को चैलेञ्ज तथा राजदण्ड की मांग

सूर्या कुमारी "विस्फोटिका" व्याकरणाचार्या, वाराणसी

गत दिनों ४ सितम्बर १९८७ को राजस्थान दिवराला ग्राम के निवासी मृत मालसिंह के साथ उसकी धर्मपत्नी १८वर्षीया रूपकंवर को धर्म के ठेकेदार आग्रहिल पण्डितों ने बलात् अग्नि में झोंकवा दिया और चिता से आने वाली रूपकंवर की चित्कारो को "रूपकंवर गायत्री माता का जाप कर रही है" ऐसा बताकर उन चीत्कारों को "सती रूपकंवर की जय" के नारों में विलीन कर दिया गया। इस अमानुषिक कृत्य से पूरा देश दहल उठा है। इस नृशंस कृत्य के विरोध में राजकीय नेताओं द्वारा ठोस कदम उठाये जाने पर एतादृश पाशविककृत्यो के उदभावक मठाधीश सती प्रथा को धर्म नाम देकर राजकीय नेताओं को संस्कृति उन्मूलक बता रहे हैं।

एतद विषयक विचार सती प्रथा को धर्म बताने वालों में अग्रगण्य पुरी के शंकराचार्य निरजनदेव तीर्थ जो के ५ अक्तूबर १९८७ के दैनिक पत्र "आज" में तथा ७ अक्तूबर १९८७ के दैनिक पत्र "दैनिक जागरण" में "सती धर्म पर कुठाराघात का सरकार पर पुरी शकराचार्य का आरोप एवं "फांसी के तख्ते पर लटक कर भी सती धर्म का समर्थन करूंगा" इन दो शीर्षकों में पढे, जो मानवीयता के प्रथम गुण सवेदनशीलता से कोसों दूर थे। उनका कहना है कि--"सती धर्म पर सरकार का हस्तक्षेप करना भारतीय संस्कृति को नष्ट कर भ्रूणहत्या तथा गर्भपात को प्रश्रय देना है एवं विधवाओं की भीड़ खड़ी करना है अत. सती प्रथा देश में बरकरार रखनी चाहिए।"

मैं इस प्रसंग में श्री शंकराचार्य जी से पूछना चाहती हूँ कि—

१—गुरु पद विभूषित स्वामी करपात्री जी, स्वामी भास्करानन्द जी तथा अखण्डानन्द जी जैसे मान्य संन्यासियों ने अपने जीते जी अपनी अल्पवयस्का बालधर्म पत्नियों को छोड़कर क्या भ्रूणहत्या गर्भपातादि सदृश कदाचारों को समाज में जन्म नहीं दिया ?

२—यदि पति के मरजाने पर पत्नी के माता-पिता भाई-बन्धु के रहते हुये भी पत्नी को व्यभिचार से बचाने के लिये पति के साथ जलने के लिये विवश किया जाता है, तो क्यो नही पति से पहले सौभाग्यवती पत्नी के स्वर्गत हो जाने पर पति को भी पत्नी के साथ जलने के लिये विवश किया जाता ? क्योंकि पत्नी के न रहने पर पति भी तो इहलोक में अकेला होकर न जाने किन-किन व्यभिचारो को अपना सकता है। ऐसी अवस्था में स्वेच्छाचारी पुरुष तथा स्वेच्छाचारिणी स्त्रियों की पुन: बाढ़ आ सकती है। मेरी समझ में पुरुष को भी सता होने की व्यवस्था होनी ही चाहिये। जब नारी पुरुष की अर्धाङ्गिणी है और पुरुष नारी का अर्धाङ्गी है तो पुरुष को भी स्त्री के साथ आहुत करने पर ही अर्धाङ्गीत्व भी सफल होगा और नर-नारी दोनों का सतीत्व भी सुरक्षित रहेगा।

३—तीसरी बात यह है कि क्या शकराचार्य जी इसकी गारटी दे सकते हैं कि देश में विधवाओं के अतिरिक्त कोई भी व्यभिचार नहीं फैला रहा है ?

वस्तुत: "सती" "शब्द" "अस भुवि" धातु से शतृ प्रत्यय करके बना है। जिसका अर्थ है "विद्यमान रहती हुई" न कि जलायी जाती हुई। सती शब्द का प्रथा शब्द के साथ समास होने पर अर्थ है—"सत्याः कर्मणां प्रथा इति सतीप्रथा" अर्थात् विद्यमान रहती हुई पत्नी के कर्मों की ख्याति। इस "सती" शब्द शब्द को मध्यकाल के जोहर का पर्यायवाची मानना अपनी शब्दार्थ अनभिज्ञता को ही प्रकट करना है। सती प्रथा का उल्लेख चारों वेदों एवं मनुस्मत्यादि स्मृतियों में कहीं पर नहीं हैं, नहीं यह सती प्रथा हमारी भारतीय संस्कृति की स्तम्भ है, यदि शकराचार्य जी वेदों से सती प्रथा को सिद्ध कर सकते हैं तो "पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी" का चैलेञ्ज है कि इस विषय पर कन्याओं से शास्त्रार्थ करने के लिये शीघ्रातिशीघ्र दिन निश्चित कर ले।

मध्यकाल में राजपूतानी क्षत्राणियों ने यवनो से अपनी पवित्रता बनाये रखने के लिये जो समयोचित जौहर स्वरूपकृत्य किया वह शाश्वत धर्म नही था, सामाजिक विवशता थी और अपने अस्तित्व की रक्षा का उपाय था। इस जौहर को तत्कालीन पण्डितों धर्म का नाम देकर न जाने कितनी पतिरहिता नारियों को यमलोक पहुंचाया और सती मन्दिर बनवाये जो उनके आयस्त्रोत बने हुये हैं। महान् आश्चर्य है कि भूना तो जीवित जागृत स्त्रियों को गया और माल के भागीदार बन गये स्वार्थान्धी महन्त ! इन कट्टर पन्थियों की सतीधर्म की पोललीला ने बगाल एवं राजस्थान में अधिक जोर पकडा, जिसका आज से लगभग सौ साल पूर्व राजा राममोहनराय एव ऋषि दयानन्द जी जैसे समाज सुधारकों ने डटकर विरोध किया था एव आशातीत सफलता प्राप्त की। इन्ही के विरोध के फलस्वरूप तत्कालीन लार्ड विलियम बेण्टिक ने सन् १८२९ ई० में इस सतीप्रथा को अवैध घोषित किया था। अत: आज राजनेताओं से भी यही मांग है कि सतीप्रथा को कायम रखने वाले विरोधियों को दण्ड दिया जावे। सतीप्रथा न धर्म है न ही आर्य संस्कृति का अंग और न ही सदाचार की रक्षक है किन्तु नर-पिशाचिका अवश्य है। विस्तृत भारतीय सस्कृति की अवयव सप्तमर्यादाओं का शतशः पालन करने पर ही हमारी सस्कृति अक्षुण्ण एवं चिरस्थायी रह सकती है। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि इन मर्यादाओं के पालन से ही व्यभिचारादि समाज के कलंक दूर हो सकते हैं। इन मर्यादाओं का विधान ऋ० १०।५।६ के—

सप्तमर्यादा: कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यहुरोऽगात्।

इत्यादि जैसे मन्त्रों में किया गया। जिनका परिगणन महर्षि यास्क इस प्रकार करते हैं—

१—स्तेय=चोरी। २—तल्पारोहण=परस्त्री गमन। ३—ब्रह्महत्या=वेदज्ञ ब्राह्मणो की हत्या। ४—भ्रूणहत्या गर्भपात। ५-सुरापान। ६—दुष्कृतस्य कर्मणः पुन. पुन. सेवा=किसी बुरे काम को पुनः जानकर करना। ७—पातकेऽनृतोद्यम्=किसी पाप के छिपाने में झूठ बोलना अर्थात् ये मर्यादाये मनुष्यमात्र की परिपालनीय हैं, इन पापजनक पाशों को नही अपनाना चाहिये।

वस्तुत: श्री शकराचार्य जी को जिस प्रकार विधवा-वृद्धि का भय हो रहा है उससे कही अधिक हमें विधुर-वृद्धि का भय है, अत: विधुरों की वृद्धि से होने वाले व्यभिचार कुकर्म को दूर करने के लिये श्री शकराचार्य जी को यथाशीघ्र सताप्रथा बनाने का आंदोलन छेड़ देना चाहिए। जब हमारा भारतीय सविधान नर-नारी दोनों को समानता प्रदान करता है तो सतीप्रथा के साथ-साथ पुरुषों के लिये भी ऐसा कानून बनाना ही चाहिए।

सतीप्रथा के समर्थन में श्री शंकराचार्य जी का बलिदान बड़ा अनूठा है। ऐसे बलीदानी वीर से हम बहिने यह भी बलपूर्वक आग्रह करना चाहेंगी कि वे देश की वर्त्तमान स्थितियों एव गोरक्षा हेतु अपनी-अपनी गद्दी छोड़कर फांसी के तख्ते पर लटक जाये तो देश का बड़ा कल्याण होगा।

वेदों में राम का उल्लेख

—डा० भवानीलाल भारतीय, चंडीगढ़—

दैनिक ट्रिब्यून पत्र के २८ अक्तूबर के अंक में श्री वाचस्पति शर्मा का पत्र 'वेदों में राम' शीर्षक छपा है। इस सम्बन्ध में मुझे अपने मत को निम्न प्रकार स्पष्ट करने की आप आज्ञा दें। वेदों में लौकिक इतिहास का उल्लेख किसी भी प्राचीन या अर्वाचीन वेदभाष्यकार को स्वीकार नहीं है। प्राचीनतम भाष्यकार स्कन्द स्वामी वेंकट माधव, सायण आदि ने वेद मन्त्रों में यत्र तत्र आये राम, सीता, दशरथ, कृष्ण आदि शब्दों का इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों से कभी अभिप्राय ग्रहण नहीं किया। एक ही उदाहरण देना पर्याप्त है। अथर्ववेद के तीसरे काण्ड के १७वें सूक्त के तीन मन्त्रों (४,८,९) में सीता शब्द प्रयुक्त हुआ है, किन्तु इसका अर्थ सभी भाष्यकारों ने हल की फाल के अर्थ में किया है न कि जनक पुत्री सीता के अर्थ में। बात सीधी सी है यदि राम, कृष्ण आदि का उल्लेख वेदों में मान लिया जाय तो रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों के उन उल्लेखों का क्या होगा, जिनमें यह कहा गया है कि इन लोगों ने अपने गुरुओं से विधिवत् वेद का अध्ययन किया। यदि राम आदि उन वेदों को पढ़ते हैं जिनमें स्वयं उनका ही उल्लेख है तो क्या यह विप्रतिपात्मक स्थिति नहीं हो जायेगी। पत्र लेखक महोदय का यह कथन तो नितान्त तथ्यहीन है कि आर्यसमाज वेदों में इतिहास की सत्ता को मानता है। इसके विपरीत स्वामी दयानन्द तथा उनके अनुयायी सभी वेद व्याख्याताओं करने निरुक्तकी वेदार्थ प्रणाली को अपना कर वेद में आपाततः प्रतीत होने वाले इतिहासभास का खण्डन किया है। वेदों को सर्व विद्याओं का भण्डार कहने का यह अभिप्राय नहीं है कि उसमें सामयिक इतिहास की सत्ता भी मानी जाय। तब तो यह भी मानना होगा कि वेदों में श्री लंका समझौते तथा पंजाब समस्या का भी उल्लेख है क्योंकि ये घटनाएं भी इतिहास में अंकित हो चुकी हैं।

यूरोपियन विद्वानों के आक्षेप का निराकरण करने के लिये वेदों में इतिहास को मानने की आवश्यकता नहीं है। रामायण, महाभारत, पुराण, राजतरंगिणी, नीलमत पुराण, हर्ष चरित आदि प्राचीनग्रन्थ इस तथ्य को प्रमाणित करने मे पर्याप्त हैं कि भारतीयो को इतिहास लेखन में क्षमता प्राप्त थी। श्री वाचस्पति शर्मा को सम्भवत. इस बात का ज्ञान नहीं है कि स्वामी दयानन्द का वेदार्थ किन दृष्टियों को लेकर किया गयाहै। दयानन्द भाष्य आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिकभौतिक पद्धतियों को स्वीकार करता है न कि ऐतिहासिक पद्धति को। यहां तक कि विलसन, मैक्समूलर और ग्रिफिथ जैसे पश्चिमी वेदज्ञों ने भी वेदो में राम, सीता आदि की चर्चा स्वीकार नहीं की है।

राम का ईश्वरत्व परवर्ती काल की कल्पना है। यहां तक कि बाल्मीकीय रामायण में भी उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम ही कहा गया है। वेद का ईश्वरवाद तथा देवतावाद भिन्न वस्तुहै उसका अवतारवाद से कोई लेना देना नहीं है। वेदों में इतिहास को स्वीकार करना या न करना यह अन्यों की मान्यताओं को सम्मान देने या न देने का प्रश्न नहीं है। यहां तो इतना ही देखना होगा कि वेदों पर लिखी गई व्याख्याओं में क्या इस प्रकार का अर्थ किया गया है या नहीं। वेदार्थ की परिपाटियां अत्यन्त प्राचीनकाल से ही प्रचलित हैं और उनसे इधर-उधर होने का प्रश्न ही नहीं है। केवल शब्द साम्य को देखकर ही यदि वेदार्थ किया जायेगा तब तो उसमें हमारे और आपके नाम भी मिल जायगे। इसे संकीर्णता या व्यापक दृष्टि का विवाद मानना भी अनुचित है। अन्त में श्री शर्मा लिखते हैं कि यदि वेद में तार की चर्चा हो सकती है तो राम की क्यों नहीं यहां इतना ही निवेदन है कि विज्ञान सार्वकालिक होता है जब कि इतिहास नियत काल की घटना है अग्नि, विद्युत, तार आदि के सिद्धान्त सार्वत्रिक हैं जब कि राम का जीवन और उनके कार्य एक देशीय तथा एक काल के ही रहे हैं। ●

आर्यसमाज का इस्लाम पर प्रभाव

इस्लाम की युक्तियुक्त स्पष्ट आलोचना महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लास में की है। इसको पढकर विचारशील मुसलमानों ने कुरान की नई व्याख्या उनके आक्षेपों से बचने के लिये प्रस्तुत की, जिनमें महर्षि दयानन्द के परम भक्त और मित्र सर सय्यद खां (अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक) अहमदिया सम्प्रदाय मौलाना मुहम्मद अली और मौलाना अब्दुल कलाम आजाद का नाम विशेष उल्लेखनीय है। सर सय्यद अहमद खां ने लिखा—"अगर बहिश्त के मानी वही हैं जो आज कल लिये जाते हैं तो बहिश्त से रण्डियों का चकला अच्छा है।" उन्होंने बहिश्त से उत्तम गृहस्थाश्रम का मतलब बताया।

सरसय्यद का महर्षि दयानन्द के प्रति कितना आदर का भाव था यह उनके उन शब्दों से स्पष्ट ज्ञात होता है जो उन्होंने महर्षि दयानन्द के देहवासान के पश्चात् ६ नवम्बर १८८३ के अलीगढ़ इन्सीट्यूट मैगजीन में लिखे थे। उन्होंने लिखा—'निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहब ने जो संस्कृत के बड़े आलम और वेद के बहुत बड़े मुहक्किक थे ३० अक्तूबर को शाम अजमेर में इन्तकाल किया। इलावा इलाम फजल के निहायत नेक और दरवेश सिफत दरवेश सिफत आदमी थे। इनके मोहतकिद (अनुयायी) इनको देवता मानते थे और बेशक वे इसी लायक थे। वे सिर्फ ज्योति स्वरूप निराकार के सिवाय दूसरे की पूजा जायज नहीं रखते थे। हम से और स्वामी दयानन्द मरहूम से बहुत मुलाकात थी। हमेशा इनका निहायत अदब (आदर) करते थे कि हरेक मजहब वाले को इनका अदब लाजिम था। बहरहाल वे ऐसे शख्स थे जिनका मसल इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है। और हरेक शख्स को उनकी वफात का गम करना लाजमी है कि ऐसा बेसजीर शख्स (अनुपम मनुष्य) इनके दरमियान से जाता रहा।

(सरसय्यद अहमद खां—अलीगढ इन्स्टीट्यूट मैगजीन)

सिख नेता पापों का प्रायश्चित करें तब पंजाब के ग्रह टलेंगे

पंजाब के वयोवृद्ध नेता जत्थेदार जीवनसिंह उमरानंगल से बातचीत

पंजाब के साथ वितकरा है। पहले पंजाबी सूबे का 'रेडका' डाले रखा। समय नष्ट हुआ। यदि अन्य राज्य बोली के आधार पर बन सकते हैं तो यह क्यों नहीं? और यदि आखिरकार बनाना ही पड़ा तो हद बन्दी सही क्यों नहीं की? अब चण्डीगढ़ के बदले में ७०,००० एकड़। क्यों भाई, पंजाबी भाषी गाव दीजिए और हरियाणा की भाषा बोलने वाले ले लीजिए। उसूल के आधार पर लेन-देन कर लें गाव को ईकाई मानकर। हरियाणा में भी कारीडोर बनाकर पंजाबी भाषी गाव दें।

"चालीस वर्षों के बाद फैसला करना पड़ा राजीव-लोंगोवाल समझौता लोकसभा में अनुमोदन हुआ। स्थिति सामान्य करने के लिए समझौता किया था। अब कहते हैं कि पहले सामान्य स्थिति, फिर समझौता लागू हुआ। कहते होंगे, चलो मरते रहें। मरते भी तो ७५ प्रतिशत सिख ही हैं। हल्के कर लो।

"इधर यह भी बदमाशों का टोला है। किसी खालिस्तान के लिए 'सिसीअर' कोई नहीं। इन्हे भी पता है मिलना नहीं और हमे भी मालूम है। इन्हें जोरी तौर पर यह बात करनी चाहिए कि समझौता लागू करो।

'भारत के संविधान के अन्दर ही कोई 'कलमा' लगाना चाहिए'—(सिखों को)।

'एक सवाल है जो कि यदि लड़का मौसी को मा कहे तो मा भी उसे बेदखल कर देती है? मेरा इशारा मातृभाषा की समस्या की ओर है। जो हिन्दुओं ने किसी तअस्सुब या भय या दोनों के वशीभूत हिन्दी लिखवाई थी।"

"भाषा का यह सवाल भी कांग्रेस ने छेड़ा था कि (मातृ) भाषा पंजाबी न लिखवाओ ताकि पंजाबी सूबा न बने।"

"मां-मा होती है। हिन्दी मौसी है। बोली आबोहवा से बनती है। गुरु ने कहा है कि धरती सबसे बड़ी मा है—जन्म देने वाली मा से बड़ी क्योंकि खुराक धरती में से। एक बार मैंने देवीलाल से कहा था—हमारी मा है पंजाबी बोली। पंजाब की धरती हमारी मा है, तू हमारी मा का दूध न पी।"

यहा हमने अपनी बात खत्म कर ली। घर वालों ने कहा कि रोटी अभी दस मिनट लगेंगे। जत्थेदार जी कहने लगे—चल फिर बिटिया कुछ और पूछ ले। दस मिनटों का फायदा उठा लिया जाए। इसके बाद ये बातें हुईं—

खालिस्तान

"सच्ची बात यह है कि खालिस्तान वाला कोई नहीं। पाकिस्तान गुमराह करना चाहता है। बदला देश का बदला—पैसा, हथियार ये वहा से लेते हैं। बड़ा नेता कोई साथ नहीं। बादल, टोहरा, मैं सबको बहुत पुराना जानता हूं। टोहरा लोगों को फसाने वाली प्रवृत्ति का है। गावों में ऐसे शरारती होते हैं। खालिस्तान के लिए सारी कौम साथ नहीं। एक प्रतिशत सिख भी नहीं। वितकरे हैं लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि जिस देश को आजाद कराने के लिए और जिस धर्म की रक्षा के लिए गुरुओं ने बलिदान दिये, गुरु नानक ने समस्त भारत में ढिंढोरा दिया, जो गुरुओं ने बलिदान दिये तथा देशभक्ति की, हम भूलकर उनके साथ चलेंगे, जिन्होंने शहीद किये, ८० रुपये सिखों के सिर की कीमत डाली जिन्होंने गुरु गोविन्द सिंह के छुरा घोंपा था। कहते हैं न, बुखार से मरे थे? असल में पैंडे खान के किसी पोते पड़पोते ने छुरा घोंपा था उलटा चक्कर दे देंगे इतिहास को? विमुख हो जायेंगे? ऐसा नहीं हो सकता। हम गुरु वाले हैं।

एक शब्द है—

> जब छोडो सहिसा नहीं कोए, बाप दिसे बेजात न होए॥

अर्थ – माया के पुत्र को गुरु नानक ने कहा है कि जैसे वेश्या का पुत्र होउसका नाम नहीं होता, उसे हरामी कहा जाता है। बाप का बेटा बेजात नहीं होता। सो हम हरामी कैसे हो जायेंगे।

खालिस्तान किसी ने तश्तरी में रख कर देना नहीं। पाकिस्तान कमजोर है। वह अपने अस्तित्व को सिखों की खातिर खतरे मे नहीं डाल सकता। बाहरी सहायता के बगैर यह बन नहीं सकता और यदि कोई सहायता दे भी तो क्या होगा? तीसरा (विश्व) युद्ध। पाकिस्तान अमरीका एक ओर, भारत रूस दूसरी ओर।

'यदि तीसरा युद्ध हुआ तो भारत वाले गाडिया खड़ी कर देंगे। सिखों को भारत के कोने-कोने मे छितरा देंगे और मुड़कर कोई इधर मुंह नहीं कर सकेगा।'

'पाकिस्तान खालिस्तान मे अड्डे बनाएगा। सिखों को फौज मे भर्ती करेगा। कहेगा दिल्ली से टकराओ—नहीं तो पीछे से गोली मारेगा। आगे से वह गोली मारेंगे। अपनी लड़ाई मे मोहरा बना लेगा।'

'अरी बिटिया, आजकल के लड़के चक्की के दो पाटों मे फसे हैं। यहा से भागते हैं तो वहा से हथियार और पैसे मिलते है कि जाओ मारो नहीं तो तुम्हे मारेंगे। इन्होंने जाकर बताना होता है कि आज सात मारे या आठ मारे। फिर शाबाशी मिलती है और पैसा।

कोई पढ़ता है नहीं गुरु ग्रन्थ साहिब को जिसमे लिखा है—

> रघुवंस तिलक सुन्दर दशरथ घर, मुन बाछे जा की सरन।

रामदास गुरु रामचन्द्र जी ही थे। यह गुरु ग्रन्थ साहब मे लिखा है। बड़े ग्रन्थी भी नहीं जानते। हम किस प्रकार गलत कह सकते हैं? हम सही मानते हैं। फिर इन्हे (हिन्दुओं को) किस प्रकार अलग किया जा सकता है? हम नानक को गुरु मानते हैं। गुरु नानक के पुत्रों श्री चन्द तथा लखमी चन्द के सम्प्रदाय हैं-वह भी गुरु नानक को मानते हैं उनका नानक अलग कैसे कर देंगे? नानक दोनों स्थानों पर विभाजित कैसे हो जाएगा।

'हिन्दुओं को तो कहना चाहिए कि आप नानक के कौन होते हैं? वह खत्तरी था, मोना था। (हंसकर अपने साथियों से) मैं कहीं इनमे होऊं तो शोर मचाकर इनके गले दबवा दूं। लेकिन वह कमजोर हैं। गुरु रामदास की सोढी दुनिया अधिकांश मोनी है। गुरु गोविंद सिंह साहब भी हिन्दू के घर जन्मे। सिखी बड़ी विशाल है। एक शब्द है—

> सतगुर खेमा तानया। जुग जुग समावे।

अर्थ गुरु जी ने सिख धर्म का तम्बू बनाया है कि चारों युगों के लोग इसमे आ समायेंगे। जो अवतार ऋषि मुनि हुए है चार युगों मे वह इस सिख धर्म मे ही समाएंगे। हम किसी का डंडा खा कर बाहर नहीं निकल सकते।

'सरबत के भले के मुताबिक मैं एक फार्मूला देता हूं। १९८१-८२ से शुरू हुए कत्ल। कोई २२ पाठ मैंने किये हैं—ब्लू स्टार, इन्दिरा गांधी, बेकसूरों आदि सभी की आत्मा की शांति के लिए।

सुखदेव (बेटे) के भोग में अरदास की थी।

'पहले लोग कहते थे कि यह कांग्रेस का एजेंट है (जब मैंने सही बात करनी) छ साल मैं कशमकश में रहा। मेरा सारा शरीर खिचा जाता था। सिख बनना बहुत कठिन है। आई ट्राई टू बी ए टू सिख। मैं सोचता रहता था सिख होकर डर मानूं ? मुझे नेताओं पर बड़ा अफसोस है। पहले बैठकें मेरे घर हुआ करती थी। फिर डर के मारे पानी भी नही पीते थे—अरे तेरा क्या पता किसी समय मरा कि मरा। उन्होने खुद मुझे बताया, हम डरते नही आते जिन्होने नेतृत्व देना है वह इतने कमजोर हो जाए तो नेतृत्व कौन देगा ? सिर्फ कुर्सी की खातिर ।

'गुरुओ की वाणी पशुओ के वस पड गई। हमने परम्पराऐ तोडी हैं। राम र ज रामदासपुर।'

अमृतसर को राम दासपुर कहा जाता था। यहा यह रामराज है कि कत्लगाह ? जो यहा होना है, उसे बताते हुए शर्म आती है। गैरत ही नही रह गई। आम सिखों को क्या कहना, लीडरों को ही···

लोग उगली क्यो करें हरमन्दिर साहब की ओर, इतना गद घोल दिया।

'आज तक जो कत्ले आम हुआ है। मैंने पूछा दशो मे ? तो उन्होंने कहा—सारा, आज तक हजारो बच्चे मारे गये, हजारों विधवाए - मा बाप की आत्मा क्या कहती होगी, कितनी दुखी होगी इन सब दुखी आत्माओ की बद-दुआओ से आप सब लोग झुलस जायेंगे।

यह जो गुनाह का केन्द्र बना लिया है, काम्पलैक्स जो भगवान का घर है। गुरु रामदास की करोपी अवश्य होगी।

गुनाहगार कौन है ? दिल्ली वाले, शिरोमणि कमेटी के प्रबन्धक

'जैलसिंह कहता है, तीन हैं, मैं कहता हूं चार जिम्मेदार हैं—दो मर चुके हैं, एक जेल मे है, एक बाहर है।

'यह नही टलेंगे जब तक अकाल तख्त के आगे आकर प्रायश्चित नहीं करते।

'अमृतसर के सम्बन्ध मे लिखा है—

"हुण हुकम होया मेहरबान दा, मैं कोएना किसे रजान दा।"

इस नगर मे अब कोई किसी को रज नही देगा--हजारो नौजवान विधवाए कर दी।

और लिखा है—सदा सुखाली दुनिया। एक होकर इलाही शब्द जीयो।' शिरोमणि कमेटी वालो को कहता हूं कि यह मर्यादा किसने कायम रखनी है ? ये सब देनदार हैं भगवान के, समेत ब्याज के कत्लेआमों के, पापों के भोगी हैं। यहा भी सजा मिलनी है और आगे भी, यदि भगवान है।

'दूसरा पाप इन्होंने जो तेरा घर वाला मार दिया, तेरा बेटा, गुस्सा है लेकिन अफसोस ब्याज, लोगों के खून मे से नौकरी लगवाने वालों पर जिनने लड़कों को उलटी तरफ लगाया, मोटर साइकिल दी, काम्पलैक्स के अन्दर साढ़े तीन साल तक क्लास लगती रही। किसी के बेटे बेटी को उलटी बुद्धि देने वालो से बडा पापी कोई नही।

"अब काम यह है कि लडके भी बचाने हैं और जिन्हें भी बचाना है।

"चाहे इन्होने जितने मर्जी कत्ल कर लिये, यह बहुत समय तक नही चलेगा इन्हें कह दो कि आप अपनी गलतियो का एहसास करो और आनन्दपुर साहब जाकर अपनी गलतिया बख्शा लो। और फिर सभी लोग वहां कसमे खाओ कि हम यह कत्लो-गारत, लटमार नही करेंगे। आगे के लिए जीवन को सुधारो। यदि सुधार लोगे तो बहुत सी दुनिया ऐसी हुई है कि जो बहुत बुरे थे वे ऋषि मुनि बन गये—कही से ज्ञान आ गया। यदि माफी मागें तो माफ कर देना चाहिए।

"यदि मेरे बेटे के कातिल कह दें आकर कि बापू जी गलती हो गई है तो लिख कर दे दूंगा कि मैंने मुकद्दमा नही करना न गोली मारिएगा, तक ठीक है, लेकिन आगे किसी को मत मारने चल पडना। यदि इतना भी न करें, फिर भी इन्हें बचाना है।

'पागल कुत्तो जैसी हालत। जजीर डालनी पडेगी। लाठी न मारेंगे, तो लोगों को काटेंगे। लोगों ने भी कोई बहुत अधिक देर तक बर्दाश्त नही करना है, लाठिया लेकर पीछे भागने लगेंगे। फिर गोलियां भी नही चला करती। ये छिप जाते हैं। पाकिस्तान मद अ दि फिर क्या करें ? फिर इनके मा बाप को, पनाह देने वालो को, कानून मे तरमीम (संशोधन) करके पकड़ना चाहिए। साईबेरिया की तरह ३५ ४० कों एक ही जगह पर करके रोटी दिये जाओ। त्रिपुरा नागालैंड, असम की ओर कही तारो के बाड़ करके बन्द कर दो और रोटी देते जाओ। और रोटी भी वह दो कि जो न खाई जा सके और न छोड़ी जा सके। ऐसा करने पर गोली की आवश्यकता नहीं, बल्कि सच कहता हूं वा वा करते हाजिर होंगे।

लड़कों को भी कहना चाहता हूं कि तुमको जिन लोगों ने भी तुम्हें खालिस्तान के सब्ज बाग दिखाए वह एक एक होकर छोड गये, टोहरा यू० ए० डी० छोड रहा है, अत्येद्र र टोहरा कहता था मेरी लाश से होकर पुलिस अन्दर घुसेगी वह लाशो पर पैर रखता हुआ बाहर आ गया।

पिछले दिनो हैड ग्रन्थी पूर्णसिंह ने पूछा था कि सिद्ध कर दे कोई कि उग्रवादी यहा रहते हैं तो इस्तीफा दे देंगे। व्यक्तिगत बातें क्या करनी—क्योंकि व्यक्तिगत बातें करेंगे तो लोग न जाने क्या कहेंगे, इतना कहता हूं कि काम्पलैक्स के गुरुद्वारों का एक ग्रन्थी सुखदेव (बेटे) के हत्यारों के साथ था। उस ग्रन्थी का नाम मैं नहीं बताता। उस ग्रन्थी के बारे मे उन्हें भी पता है। ग्रन्थी ने शिक्षा देनी होती कि मारना होता है ?

'तब ग्रन्थी होते थे। इन्होने अकाल तख्त पर खालिस्तान की अरदास की थी। पुलिस ने पकड लिया। उनके कुछ लोग मेरे पास आकर कहने लगे कि छुडाओ। मैं कोतवाली जाकर कहने लगा कि छुड़ाओ। पुलिस के सामने जाकर मैंने कहा कि मैं तुमको मुकराने' के लिए नही आया। आप सब हो। सिख तो साधारण भी बात करे तो पीछे नहीं हटता। अरदास की है तो डट जाओ। लेकिन वे मेरे सामने मुकर गए। यह दिलचस्प कहानी है कि मैंने अरदास नही की। फिर मैंने पुलिस वालो से कहा कि अगर अरदास नहीं की तो छोड दो। उन्होंने आगे उनसे कहा कि सोच कर बात करो। फिर वह बोले कि एक आदमी की आवाज मेरे से मिलती है। उसने की थी। उसकी जगह पर मुझे पकड लिया। पुलिस ने कहा कि वह आदमी बता दो। फिर उत्तर कोई न सूझा। लगे ऊपर-नीचे देखने। पुलिस वालों ने मुझसे कहा कि हम तो बदनाम है। लेकिन हमारा भी कोई दीन ईमान है। कोई ग्रन्थी सिंह अच्छे लाया करो। इतना जानते हैं इनके बारे में कि क्या नहीं करते। ये तो छोटी बात से भी मुकर जाते हैं। भिण्डरावाले के कितने सिक्ख थे। इनमें

बताते थे लेकिन मुझे मत कहते हैं कि कभी-कभी मेरी ड्यूटी होती थी तो भिंडरावाला माथा टेकने आता था। लोग कहते थे कि यह भिंडरावाला हैं। बस इतना ही जानता हूँ।"

"सबको इनके पीछे लगते हो ? ये कहते हैं, बायडोर आपको पकड़वादी, आपको मरवाना चाहते हैं बिटिया पूनम यदि उग्रवादियो मे कोई फस जाए तो उसको निकलने नही देते। सारी कहानी टेप कर लेते हैं। सुना भाई, तो फिर तू किस तरह गया ? किस तरह दीवार फांदी ? फिर पुलिस का डर देकर फसाए रखते हैं। कई औरतें फसाई गई हैं। इसी तरह टेप करके। लड़कों को लीडरी मे घुमाके फसाया। अब छोड़छाड़ कर खिसकते जाते हैं। इन्हे त्यागपत्र देना या प्रायश्चित करना चाहिए।

वह मुझे चिट्ठी दिखाते हैं जो हाल ही मे उन्हे मिली है। इसमे उमरानागल जी को 'कफर' आदि कहा गया है। इसमे कहा गया है कि उनकी बोटी बोटी करने से पहले तथा उनके कतूरे सुखदेव के पास नरक मे पहुचाने से पहले उनके घर की किसी औरत, बेटी, बहू या पोती को भगवा करके ले जाया जाएगा और 'मौहूरें' लगाकर छोड़ा जाएगा।'

ये चिट्ठी पढ़वाते हुए तथा इसे पकड़ कर बैठे हुए उनकी आखे फटी की फटी रह गई थी। मुझ से भी पूछने हैं कि यह क्या लिखा है। यह महुरा (विष) है कि क्या ? बताओ इसमे लिखी वाली कौन सी बात है ? कैसे वाहियात लोग हैं—ऐसी गन्दी बोली, बुरे शब्द, सुखदेव को मारकर इनका जी नहीं भरा। अरे गालिया ही निकालनी हैं तो ढंग की निकाल लो।

चिट्ठी में '१ऊँ के बाद 'हरामी कुत्त उमरानगल' का सम्बोधन किया गया है। चिट्ठी मे लिखा है कि—हम कल ही बार्डर से आए हैं।" 'हमे आर्डर मिला है।" "रिबैरो की कह मुझे बचाए।" चिट्ठी पढ़कर सुनाते हुए उन्होंने अपने लिए लिखी हुई गालियां तो पढ़ दी लेकिन बहू बेटियो के लिये लिखी हुई गालिया पढ़ने से झिझक गए।

मैं रोटी का प्रबन्ध पूछने गई और वापस आई तो उनके साथी उनसे टोहरा की बाबत पूछ रहे थे कि साथ कैसे छोड़ा। वह कह रहे थे, 'मैंने उससे कहा, टोहरा तेरी मेरी सतश्री अकाल। तेरी मेरी निभनी नहीं। तूने कौम को मरवा देना है। सदा अपने असूल पर डटा रहे। कभी कहेगा मुझे छोड़ गया, अच्छा आदमी था।

सियासत फकीरी है, दुकान नही कोई। धोखा दे दीवे नही वले कदे। लोग जो मर गये, मर गए, पर इन्होने कौन-सी धर्म की बात की है बिटिया इन्होने धर्म को मारने की बात की है।

"मैंने तो कह दिया था (१) दिल्ली वाले पजाब की समस्या हल करें, (२) भिंडरावाला कत्ल बन्द करे, (३) एस जी पी सी वाले पवित्रता कायम रखें—नही तो मैं इन सब के सिर चढ़कर मर जाऊंगा। मेरे बेटे ने कहा बापू जी आप कभी हमसे सलाह नही करते। आपने यह अपने आपको खत्म करने का ऐलान कर दिया है। वह तो आपको पहले ही मारना चाहते हैं। यदि मर गये तो वही सफल होते है। और अब यदि आप अपना ऐलान वापस लेते हैं तो लोग कहेंगे कि कहकर मुकर गया। लोगो की चिट्ठिया आती हैं। लोग यतीम हो जायेंगे। मैंने कहा, लोगो के प्यार के लिए, धर्म के लिए मरना नही ?' फिर मैंने कह दिया था कि "कलह वरतूगी जरूर। और ब्लू स्टार हुआ। दिल्ली वालो ने नही पूछा कि तेरे मन पर असर क्यो है ? लेकिन हमने तो गुरुओं की शिक्षा के अनुसार चलना है। बदी से टकराना है। भिंडरावाले के समय म मुझसे कहते रहे—समझौता कर। मैंने कहा, 'नही, हिंसा अहिंसा का समझौता नही हो सकता। फिर कहने लगे तुझे मारना है। मैंने कहा ठीक है, बच्चे जान से प्यारे होते हैं। सुखदेव की चिट्ठी आ गई। मैंने कहा ठीक है। बच्चो की जान हमारे हाथ नही। भगवान के हाथ है, समझौता नही करना। पूनम मैं कर सकता था।

मेरे आसू आखो मे चुभने लगे। लोग उग्रवादियो की एक बात के लिए सराहना करते हैं कि इन्हें मौत का भय नही। मानवता के शत्रुओं को मौत का भय नही। मैं सोचा करती थी कि मानवता को पालने वाले क्या जिन्दगी को इतना प्यार कर सकेंगे कि उसकी खातिर मर सकें' और सिर पर कफन बांध कर अपना ही नही अन्यों की भी कुर्बानी का बोझ सिर पर बांधे यह बाबा अब सामने बैठा था।

'किसी समय कहेंगे, उमरानगल ने सिखी रखी।"

"लोगो की चिट्ठियां आती हैं कि गुरु तेगबहादुर के बाद यदि कोई सिख हुआ है तो उमरानगल तू ही हुआ है" मैं तो मजलूमो की आवाज हूं।'

इस सच की खातिर, भर-भर कर दुःख के कटोरे पीने वाले व्यक्ति को मेरा सलाम। इसके दिमाग मे, आचरण मे, इसके बातचीत के सादा अन्दाज मे (जैसे कि कहते है) रब माफ करे, गुरुओ की पैड मिलती है इस पैड पर चलना सीखो, रास्ता मिल जाएगा।

—पूनम सिंह

पति की चिता पर जीवित पत्नी को जलाना या जलने को विवश करना पूर्णतया वेद विरुद्ध

आर्य समाज द्वारा शंकराचार्य को खुली चुनौती

कानपुर में शंकराचार्य शास्त्रार्थ से मुकर गये

कानपुर—३०-१०-८७ को राघवाश्रम कानपुर में एक समारोह में काशीपीठ के शंकराचार्य स्वामी शंकरानन्द जी एवं पुरु के शंकराचार्य स्वामी शिवानन्द जी ने सती प्रथा व बाल विवाह को वेद सम्मत बताया। आर्य-समाज सीसामऊ कानपुर का भी वार्षिकोत्सव चल रहा था समाचार पत्रों में उनकी घोषणा पढ़कर श्री प० लक्ष्मणकुमार शास्त्री प्रधान आर्यसमाज सीसामऊ ने सार्वजनिक सभा में उनसे इसके सिद्ध करने की बात की और सर्व-सम्मति से निश्चय करके ३१-१०-८७ को साय ठीक ४ बजे श्री देवीदास आर्य उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा कानपुर के नेतृत्व में कानपुर के भारी संख्या में आर्य नर-नारियो के साथ राघवाश्रम कबाड़ी मार्केट पहुँचकर शंकराचार्य जी को शास्त्रार्थ करने का कथन वापस करने की मांग की। काशीपीठ के शंकराचार्य ने नित्यकर्म में व्यस्तता का बहाना बनाकर पुरु के शंकराचार्य से मिलने को कहा। सभी आर्य नरनारी झण्डों व बैनर के साथ उनके पास जाकर उनसे शास्त्रार्थ करने का कथन वापस लेने की बात कही वे चर्चाओं में लगातार बहाने बाजी ही करते रहे। कभी कहा कि हम तो यहां मेहमान हैं हम शास्त्रार्थ की व्यवस्था कैसे करें फिर कहा कि पुस्तकें उपलब्ध कैसे होंगी। उस प्रदर्शन में आर्यमित्र-सम्पादक आचार्य वेदव्रत अवस्थी भी उपस्थित थे उन्होंने कहा कि आप शास्त्रार्थ स्वीकार करें एक घण्टे के अन्दर सभी ग्रन्थ आपको उपलब्ध करा दिये जायेंगे। फिर समयाभाव का बहाना बताया कि अभी ४ तारीख तक अति व्यस्तता है। इस पर श्री लक्ष्मणकुमार शास्त्री कानपुर ने उन्हे कहा कि आप ४ तारीख के बाद की तिथि तय करें तब उन्होंने बहाना बनाया कि उन्हे दिल्ली प्रदर्शन में जाना है अतः ७ तारीख तक बिल्कुल समय नही है अगर ७ को वहा गिरफ्तार हो गये फिर क्या होगा। शास्त्री जी ने कहा कि यदि ऐसा होता है तो वह तिथि परिवर्तित करके आपके छूटने के बाद रख दी जायेगी। फिर बहाना बनाया कि मध्यस्थ कौन होगा। सरकारी अधिकारी आर्य विद्वान हमारे विरुद्ध निर्णय देंगे। आचार्य अवस्थी ने कहा कि निर्णय जनता देगी, परन्तु जनता को भेड़ बकरी कहकर उससे भी मुकर गये। फलत. आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री श्यामप्रकाश ने लिखित चुनौती उन्हें दी और जनसमूह नारे लगाता हुआ आर्य समाज सीसामऊ में वापस पहुंचा और फिर वहा के महोत्सव कार्यक्रम में सभी विद्वानों ने सती प्रथा की निन्दा करते हुए उसे अवैदिक-अमानवीय कहा और इसका समर्थन करने वालों को शास्त्रार्थ की खुली चुनौती दी।

३१-१०-८७ को प्रातः प्रो० रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक 'आर्यमित्र' पत्रकार के रूप में काशीपीठेश्वर शंकराचार्य से भेंट करके उनके कथन का प्रमाण पूछा उनसे उन्होंने प्रमाण देने के बजाय केवल यह ही उत्तर दिया कि हमने जो किसी से सुना था वह कह दिया है। प्रो० रमेशचन्द्र जी ने उनसे कहा कि बिना प्रमाण कोई बात जनता में कहना उपयुक्त नहीं आप अपने कथन का प्रतिवाद दें। इस पर वे मौन हो गये।

उस भू पर क्यों अत्याचार

नारी जहां शक्ति की प्रेरक।
उस भू पर क्यों अत्याचार ?
वेद ज्योति धूमिल है लगती।
बढ़ता चहुं तामिस्त्र अपार॥
घोर अविद्या पाखण्डों से।
हुई प्रबलतम विष की धार॥
दानवता के बढ़ जाने पर।
आज मचा चहुं हा-हाकार॥
ऋषि हैं यदि, तो ऋषिकायें भी।
किया ऋचाओं का दर्शन।
गार्गी आदि विदुषियों ने॥
बस किया ज्ञान का ही वन्दन।
युद्ध सुनिपुणा कैकेयी सी।
आज वृथा क्यों बैठी हार ?
बर्बरता से जुड़ी हुई जो।
सती-प्रथा है कहलाई॥
मध्य युगीन विकृति होकर।
जो अमरबेल सी है छाई॥
जहां नाम मे पहिले नारी।
वहां हुई जाती क्यों क्षार ?
वेद शास्त्र से सिद्ध नही जो।
वृथा धर्म से क्यो जोड़ा ?
स्वार्थ लोभ के वशीभूत बन।
असमय जीवन घट फोड़ा।
जब समान नर-नारी दोनों।
क्या कुरीति का फिर आधार ?
रूपकुंवर सी जहां नारियां।
अग्नि भेंट चढ़ती जातीं॥
अन्यायों की बलि वेदी पर।
जो बलात लाई जाती॥
जड़तामय परिवेश निखिल जब।
सवेदन का कब संचार ?
जो विवेक सम्मत न कभी है।
क्यों स्वीकार किया जाता ?
देव निरजन से हठवादी।
सूझ न जिनको कुछ पाता॥
विस्मृत वेदमयी पयस्विनी।
पग-पग पर मिलते अंगार॥
कहने को वैज्ञानिक युग यह।
फिर भी सती काड चलते॥
धर्माडम्बर में रत होकर।
निज को हैं कितना छलते।
दुर्गा को पावन वसुधा पर।
महिषासुर का क्यों विस्तार ?

— डा० महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

सभा के वार्षिक निर्वाचन, दिनांक १५-११-८७ में निर्वाचित पदाधिकारियों की सूची

प्रधान—श्री प० इन्द्रराज जी, १२४५, गोहरीपुरा,
निकट ओडियन सिनेमा मरठ—समाज सेवा

उपप्रधान—१. श्रीमती सन्तोष कपूर, मिर्जापुर, एम एल सी —समाज सेव

" " २ श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य
१२। १ भगवानदास क्वाटर्स देहरादून—समाज सेवा

" " ३ श्री सच्चिदानन्द शास्त्री,
सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली – समाज सेवा

" " ४ श्री आ० विशुद्धानन्द शास्त्री,
आनन्द मन्दिरम् कूचा पाडा बदायू – समाज सेवा

मन्त्री—श्री प० मनमोहन तिवारी,
९, पुराना गणेशगज, लखनऊ—समाज सेवा

उप मन्त्री—१ श्री जयनारायण अरुण,
प्रसाद कुज सिविल लाइन्स बिजनौर—समाज सेवा

" " २ श्री डा० विनयप्रताप
आर्य समाज बक्शीपुर गोरखपुर—मेडिकल प्रेक्टिशनर

" " ३ श्री श्रीचन्द गौड,
आर्य समाज खालापार सहारनपुर—शिक्षक

" " ४ श्री वीरेन्द्रपाल आय,
१३९, सुनार गली बुलन्दशहर – समाज सेवा

कोषाध्यक्ष—श्री यशपाल आर्य, आर्य वस्तु भण्डार, देहरादून —व्यापार

स० कोषाध्यक्ष—श्री चन्दकिरण शर्मा,
नगला अक्खू, गाजियाबाद—समाज सेवा

पुस्तकाध्यक्ष—श्री विजयपाल शास्त्री,
आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर—समाज सेवा

स० पुस्तकाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र आर्य, आर्य समाज अमरोहा —व्यापार

आय-व्यय निरीक्षक—रोशनलाल आय, आर्य समाज आगरा —समाज सेवा

—मनमोहन तिवारी

स्व० श्रीमती रस्तोगी स्मृति स्थिर निधि

उपरोक्त निधि डा० भगवत रस्तोगी भू० पू० मन्त्री आर्य समाज बदायू द्वारा अखिलेश फार्मेस्यूटिकल्स, कानसेनरोड, चूनामण्डी बदायू द्वारा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला रस्तोगी के दिवगत होने पर उनकी स्मृति १० हजार रुपए से स्थापित की है। इसनिधि का ब्याज सभा द्वारा आर्य अनाथालयो तथा गोशालाओ को अनुदान रूपमे प्रतिवर्ष दिया जावेगा। यह निधि १४ दिसम्बर १९८६ की अन्तरग से स्वीकृत है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का द्विवार्षिक चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा का हिमाचल प्रदेश का द्विवार्षिक चुनाव स्वामी सुमेधानन्द जी की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से निम्नलिखित रुप मे सम्पन्न हुआ —

प्रधान—श्री कृष्णलाल आर्य, महामन्त्री—श्री भगवानदेव 'चैतन्य'

उप प्रधान—श्री कृष्णचन्द्र, श्री विद्याधर तथा श्री ज्ञानप्रकाश आर्य

उपमन्त्री—श्री रामकृष्ण गौतम तथा श्री रोशनलाल बहल

कोषाध्यक्ष—श्री अरुणेश सूद, सचालक आर्यवीरदल—श्री कृष्णचन्द्र आर्य

इसके अतिरिक्त १७ अन्तरग सदस्य चुने गए।

आर्य समाज मन्दिर सुलतानपुर का शिलान्यास

आर्य समाज के मन्दिर का शिलान्यास सिचाई मन्त्री मध्य प्रदेश श्री चन्द्र कुमार भनोत द्वारा गतवर्ष हुआ था उसका निर्माण कार्य हो रहा है। हरिजन व आदिवासी बहुल जनसख्या वाले इस क्षेत्र मे यह वदिक धर्म प्रचार का एक अत्यावश्यक केन्द्र निर्माण हो रहा है। आर्य जनता से उदारतापूर्वक इस पुण्य कार्य में सहायता की प्रार्थना है। मन्त्री—ओमप्रकाश मलिक

सियाचिन हिमनद (ग्लेशियर) का सैनिक भौगोलिक व यौद्धिक महत्व

पाकिस्तान उस पर कब्जा करने का बारम्बार प्रयत्न क्यों कर रहा है ?

लद्दाख के हिमनद 'सियाचिन ग्लैशिअर' पर अधिकार जमाने के लिए पाकिस्तान दो वर्ष पूर्व से सैन्य अभियान कर रहा है परन्तु वह असफल रहा। अब हाल मे ही सितम्बर १९८७ मे उसने फिर सैनिक कार्यवाही की और उसे फिर मुह की खानी पडी। पिछले दिनो जब पीपुल्स पार्टी की सम्मिलित अध्यक्षा मिस बेनजीर भुट्टो ने सियाचिन ग्लैशियर पर भारत के अधिकार के विरुद्ध प्रतिरोध किया था तो जनरल जिया उल हक ने कह दिया था कि यह एक ऐसा क्षेत्र है जहा घास का तिनका तक नही उगता। यह हिमनद दक्षिणी काश्मीर की नोबरा नदी के स्रोत के सर्वथा निकट स्थित है। इस क्षेत्र की भौगोलिक व सैनिक महत्ता तो है ही परन्तु उसका एक और महत्व है वह यह कि उसके कारण सिंध महानदी मे भारी और विनाशकारी बाढ आ सकती है। लगभग साठ वर्ष पूर्व एक बहुत बडा हिम शिखर गिरने से बरफ का एक बाध शेवक नदी के स्रोत के निकट बन गया जिसके कारण एक झील बन गई। शेवक व नोबरा दोनो नदिया सिंध महानन्द मे मिल जाती है। इस प्रकार दोनो ही सिंध की सहायक नदिया हैं। पाकिस्तान मे सिंध की यात्रा बहुत लम्बी है। यह नद तीन प्रान्तो मे होकर गुजरता है। नोबरा नदी सियाचिन ग्लैशियर से निकलती है। यह ग्लशियर ८० मील लम्बा है और यह नदी शेवक नदी मे जा मिलती है। इस प्रकार दोनो सिंध की सहायक नदिया है। भय है कि हिमालय मे जो भूकम्प आते रहते हैं उनके कारण बरफ का बाध बिखर सकता है। या ऋतु के परिवर्तन से बर्फ पिघल सकती है। परिणाम स्वरूप सिंध मे भीषण बाढ आ सकती है जिससे पाकिस्तान का तरबेला बाध नष्ट हो सकता है और सिंध के किनारे पर बसे शहर नष्ट हो सकते हैं। सियाचिन ग्लैशियर का सैनिक महत्व यह है कि यह लद्दाख के प्रवेश की घाटियो के निकट स्थित है। पाकिस्तान इस पर अधिकार करके भारत के लिए भारी कठिनाइया उत्पन्न कर सकता है। पाकिस्तान यह भी अनुभव करता है कि भारत सियाचिन ग्लैशियर पर अधिकार बनाए रखने की दशा मे पाकिस्तान व चीन के एकमात्र भूमि के मार्ग के राजमार्ग रेशम को काट सकता है। और इस प्रकार पाकिस्तान चीन की सहायता से वचित हो सकता है। पाकिस्तान के नेताओ को यह भी भय है कि यदि वह एटम बम बनाकर भारत के विरुद्ध प्रयोग करना चाहे तो भारत सियाचिन ग्लैशियर और रीहू ग्लेशीयर को प्रतिशोधात्मक कार्यवाही के रूप मे प्रयोग कर सकता है और इन दोनो हिमनदो को हवाई जहाज से बमबारी करके उडाए जाने की अवस्था मे पाकिस्तान के अधिकाश भाग को विनाशकारी बाढ का शिकार बना सकता है। इन अनेक कारणो से पाकिस्तान सियाचिन ग्लैशियर पर अधिकार करने का इच्छुक है।

शुद्धि

आर्य सभा समालखा हरियाणा मे स्व० सेवानन्दजी ने ४ नट मुसलमानो को शुद्ध कर हिन्दू बनाया। उन्हे सारी बिरादरी मे सम्मान प्रदान किया गया।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दूरभाष १९१ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २२ अंक ४१] पौष कृ० १ सं० २०४४ रविवार ६ दिसम्बर १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

आर्यसमाज बागपत द्वारा हजारों गायों को कसाइयों से मुक्त कराकर क्षेत्र के धार्मिक व जरूरतमन्दों में वितरण



श्री वीरेन्द्र राणा एम ए एम फिल
प्रधान आर्यसमाज बागपत

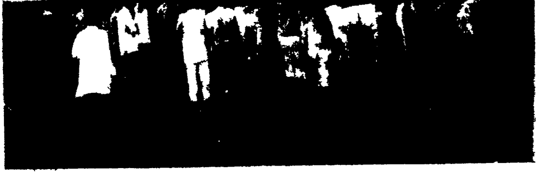
बागपत। आर्यसमाज बागपत के प्रधान श्री वीरेन्द्रसिंह राणा तथा प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता श्री भगवतप्रसाद कौशिक ने ३० अक्टूबर को यह जानकर कि हजारो गौए कत्लखाने ले जाई जा रही है स्थानीय थाने को सूचित किया। सूचना मिलते ही मेरठ से वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी व पुलिस अधिकारी भी घटना स्थल पर पहुँच गए।

क्षत्राधिकारी श्री नवनीतसिंह राणा व वरिष्ठ उपनिरीक्षक वसीम खा ने तत्काल उक्त क्षेत्र की घराब दी करली व अपराधी गण रहमत अली (बागपत) कृष्णा व वीरबल (अलवर) हफीजुल्ला नसीम मुस्तकीम, उसमान (बरनावा) अल्लामेहर (हरी) इसरार (नागल मेहली खेडी रेवडी कला) आदि १० व्यक्तियों को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। रात्रि के तीसरे पहर जिलाधिकारी श्री टी० जाज जोसेफ तथा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गिरधारीलाल शर्मा ने स्थिति की गम्भीरता को अनुभव करके समस्त गायो को उचित स्थानो पर पहुंचाने के आदेश दिए।

पुलिस ने तत्काल रात्रि मे ही दो ढाई सौ गायो को निकट वर्ती गोशालाओ, खेकडा मीनली बडौत ट्रको द्वारा भिजवा दिया। शेष गायो को निकटवर्ती गावो के गोपालक किसान मजदूरो की सुपुदगी मे दे दिया। पी०ए०सी० की दो पालटने व निकटवर्ती थानो की भारी पुलिस फोस ने बागपत को छावनी का रूप बना दिया। अपर जिलाधिकारी श्री देवशरण यादव ए०एस०पी० श्री हरिश्चन्द्र परगनाधिकारी श्री सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव तेहसील दार श्री आर० पी० सक्सेना अवश्य पुलिसबल के साथ स्थिति को नियन्त्रित करते रहे। दो नए थानाधिकारी बुलाए गए श्री प्रतापसिंह व श्री के०के० शर्मा ने स्थिति को सुन्दर ढग से सभाला खबर है कि पुलिस के पहुचने से पूर्व काफी मात्रा मे गाए ट्रको मे भर कर ये अपराधी भेज चुके थे। एक दर्जन गाए भयकर पीडा से तडप रही थी उनमे से एक ने तो दम ही तोड दिया था जिसकी खाल कसाइयो ने उतार ली थी केवल ककाल पडा था

(शेष पृष्ठ ११ पर)





ऊपर—हजारो गायो को वध के लिए ले जाते राज्यकर्मचारियो व समाज द्वारा पकडा गया।
नीचे—गायो को छुडाकर पात्र किसानो को पालन के लिए दिया जा रहा है।

पुरी (उड़ीसा) में एक लाख महिलाओं की विराट रैली

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा शंकराचार्य को शास्त्रार्थ की चुनौती

सती प्रथा वेद विरुद्ध है

पुरी ८ नवम्बर।

देश भर की १५० महिला सगठनो द्वारा आज शकराचाय के मठ के सामने विशाल रैली का आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता मुख्यमत्री श्री जानकी बल्लभ पटनायक की पत्नी श्रीमती जयन्ती पटनायक ने की। इस सम्मेलन मे मुख्यमन्त्री जानकी वल्लभ पटनायक तथा अनेक महिला सगठनो की विदुषी देविया भी उपस्थित थी।

सभा मे सावदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का विभिन्न सगठनो की ओर से जोरदार स्वागत किया गया। श्री स्वामी जी ने कहा कि शकराचार्य जी हमारे अच्छे मित्र और साथी रहे हैं। उन्होने गौरक्षा आदोलन में भी हमारा साथ दिया था। अत हमारी इच्छा है कि शकराचार्य जी माताओ-बहनो तथा नारी जाति पर जो अन्याय हो रहा है, उसे दूर करने मे मिलकर हमें सहयोग देव। स्वामी जी ने शकराचाय के वेदो मे सती प्रथा के समर्थन पर कडी आपत्ति व्यक्त की और कहा कि धर्माचायो, सतो और सुधारको को नारी जाति के हर प्रकार के सम्मान व सतीत्व की रक्षा के लिए काम करना चाहिए।

श्री स्वामी जी ने शकराचार्य को वेदो मे सती प्रथा को सिद्ध करने के लिए शास्त्रार्थ की चुनौती देते हुए कहा कि वह पुरी, दिल्ली, बम्बई अथवा जहा भी चाहे इस विषय मे आर्य समाज से शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार करे उडीसा आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रिय रामदास सभा मे थे स्वामी जी ने कहा हमारे श्री दास भी शास्त्रार्थ कर सकते हैं।

सम्मेलन का उद्घाटन उडीसा के राज्यपाल की पत्नी श्रीमती शान्ता पाण्डे ने किया। इस विशाल समारोह का आयोजन प्रसिद्ध समाज सेवी श्रीमती निर्मला देश पाण्ड ने किया था। श्रीमती पाण्ड ने इस सम्बन्ध मे देशव्यापी आन्दोलन चलाने पर जोर दिया। प्रस्ताव सासद श्रीमती जयन्ती पटनायक ने प्रस्ताव पारित किया।

समस्त आर्य समाजें ६ दिसम्बर को सती प्रथा विरोधी दिवस मनायें

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की मार्मिक अपील

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती ने सभी आर्य समाजो से अपील की है कि वे ६ दिसम्बर १९८७ रविवार को सती प्रथा विरोधी दिवस मनायें। नारी जाति के प्रति होने वाले इस अमानवीय कृत्य के प्रति निन्दा प्रस्ताव पास करें तथा सरकार से प्राथना करे कि वे दिवराला काण्ड के अपराधियो को कठोर दण्ड दें जिससे नारीसमाज के गौरव की रक्षा हो सके।

रुपकुंवर को नंगी तलवारों से भयभीत कर सती बनाया गया

नीम का थाना मे अभियोग प्रस्तुत

जयपुर। गत ४ सितम्बर को सीकर जिले के ग्राम दिवराला मे सती प्रथा की शिकार बनी राजपूत महिला रूपकुंवर ने अपने पति की चिता पर दो बार कुछ कहने का प्रयत्न किया व एक बार वहा से उठने का भी प्रयत्न किया परन्तु प्रत्येक बार इसके प्रयास को असफल कर दिया गया। नीम का थाना के मुंसिफ और ज्युडिशियल मजिस्ट्रेट की अदालत में सी आई. डी (अपराध शाखा) की ओर से ३२ व्यक्तियों के विरुद्ध प्रस्तुत अपराध पत्र में यह दावा किया गया है कि अपराधियों मे रूपकुंवर के ससुराल वाले भी सम्मिलित हैं, बाद मे कहा गया है कि जब रूपकुंवर को चिता स्थल पर ले जाया गया तो उसके चहुँ ओर नगी तलवार पकडे हुए चार व्यक्ति चल रहे थे। उसे चिता पर बिठाने के बाद उसके पति का सिर उसकी गोद में रख दिया गया। और उसके कन्धो तक लकड़ियों का ढेर लगा दिया गया कि प्रयत्न करने पर भी वह उठ न सके। उसने कुछ कहने का प्रयत्न किया परन्तु वहा उपस्थित दूसरे लोगो ने जय जय के नारे लगाकर उसकी आवाज को दबा दिया और कुछ क्षणो मे ही चिता को अग्नि दिखा दी। चिता के जलते ही रूपकुंवर ने उठकर कुछ बोलने का प्रयत्न किया जिससे अग्नि बुझ गई और चिता एक ओर को झुक गई। परन्तु अपराधियो ने आस पास से झाडिया आदि इकट्ठी करके उस पर डाल दी और चिता को फिर आग लगा दी जिससे वह जीवित ही जलकर मर गई।

सूखापीड़ितों के लिए सहायता

आर्य समाज माडल टाउन, देहली के अधिकारियो एव सदस्यों की ओर से सूखा पीडित जनता की सहायता के लिए ५० बोरी गेहूँ दान में दी गयी है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने धन्यवाद पूर्वक यह दान स्वीकार करते हुए आर्य समाज के कायकर्ताओ से निवेदन किया कि वे इस दान को बढाकर १०० बोरी कर देवें। आर्य समाज के प्रधान ने आश्वासन दिया कि वे नया बाजार देहली के व्यापारियों से मिलकर दान की राशि को १०० बोरी करने का प्रयत्न करेंगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एव मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षत्रो मे जो इस वष भयकर सूखे का सामना कर रहे हैं सभा अपना राहतकाय पूरे जोरो से कर रही है। दयानन्द सेवा सघ के द्वारा जगह-जगह बाल वाडी खोली गयी है। जहा आदिवासी बच्चो के लिये भोजन तथा वस्त्रादि की निशुल्क व्यवस्था की जाती है। झबुआ एव बासवाडा क्षत्रो मे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के सरक्षण मे यह बाल वाडिया अच्छा काम कर रही हैं। सावदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज शास्त्री हाल ही मे इन क्षेत्रो का दौरा करके लौटे हैं। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी स्वय भी निकट भविष्य मे इन क्षेत्रो का दौरा करने का विचार कर रहे हैं जिससे वहा सूखा-पीडित राहत कार्य को और आगे बढाया जा सके।

सूखा पीड़ित सहायतार्थ दान सूची

(१२ ११ ८७ से ३० ११ ८७ तक)

मन्त्री आर्य समाज सेक्टर ८ नागल	१०५)
सुभाष कपूर, जानकपुरी	१०)
मन्त्री आर्य समाज आर के पुरम, से० ३ नई दिल्ली	१७५)
मन्त्री आ० स कस्तूरबा नगर डिफेंस कालोनी नई दिल्ली	१०६४)
मित्र वर्मा, कटोरी मैनपुरी	१०)
ए एम. शर्मा, एम पी स्टोन प्रा लि, आनन्दनगर जबलपुर	२५१)
मन्त्री आर्य समाज बिजनौर	५००)
महिला आर्य समाज दयानन्द नगर गाजियाबाद	१०००)
राम वशिष्ठ आर्य, आगमाज	[illegible]
श्री राम किशन आयर हरिनिवास हिसार	[illegible]
„ सूबीराम गुप्ता स्टेट बेंक कालोनी दिल्ली	१००)
श्रीमती विरमादेवी „ „ „	११)
मन्त्री आर्यसमाज आजन्वर छावनी	[illegible]
आर्य समाज मन्दिर गांधी नगर दिल्ली	[illegible]
आर्य समाज रानी बिराट नगर जोगबनी [illegible]	[illegible]
सीताराम जी अग्रवाल सभा प्रधान जोगबनी पूर्णिया	१००)

(सभी दानदाताओं का धन्यवाद) —सभा मन्त्री

सम्पादकीय

आर्यसमाज के बढ़ते कदम-३

गताक मे इसी सदभ मे हमने देश की प्राचीनतम हिन्दू जातियो भील, गोड सथालो के प्रति हिन्दू धर्माचार्यों की उदासीनता व उपेक्षा ने उन्हें विदेशी व विधर्मी लोगो के हवाले कर दिया है इसका कुछ दिग्दशन कराया था। वास्तव मे इनको अग्र जो ने बडी चालाकी से हिन्दू समाज से पृथक किया। अग्र जो ने भारत के इतिहास के नाम पर जो पुस्तक लिखी उनमे सबमे यह घोषित किया कि हिन्दू (आर्य) जाति भारत की मूल निवासी नहीहै। यह लोग तो बाहर से आए और इन्होने भारत मे बसने वाली उपरोक्त आदिम जातियो पर आक्रमण करके उन्हे अपना दास बनाया। फलत वे बनवासी हिमवासी व हिन्दू सवर्ण लोगो से पृथक् अपना अस्तित्व बनाए भारत मे ही निवास कर रही थी।

अग्रेज जाति अति चतुर व अवसर का लाभ उठाने वाली जाति थी। गत २०० वर्षों मे भारत मे जिस प्रकार जातपात का विभाजन, नित नई भाषाओ का निर्माण हुआ वह देश को कमजोर व खण्डित करने का एक मही षडयन्त्र था।

गताक मे हमने वर्णन किया था कि किस प्रकार प्राणपण से इन जातियो को किसी भी मूल्य पर ईसाई बनाने के लिए विदेशी ईसाई धर्म प्रचारक असीमित धन राशि व्यय करके इन क्ष त्रो मे आजीवन पड रहते है। शिकारी जैसे किसी पक्षी को पकडने के लिए जाल बिछाकर जगल में पडा रहता है कि न जाने कब कोई भूखा प्यासा जीव उनकी हत्या का शिकार बन जाए। ईसाइयत के ससार भर मे फैलाव के ऐसे ही षडयन्त्रकारी कारनामे इतिहास की स्थिर सामग्री बन चुके हैं।

भारत स्वतन्त्रता के चालीस वर्षों मे भी अपनी इस भयकर भूल को नही सुधार पाया है। वह हिन्दू जाति की इस समस्या को केवल राजनीतिक दृष्टि से देखता है। ईसाइयो के कुचक्रो का मुकाबला करने के लिए सार्वदेशिक सभा ने १६७३ मे नागालैण्ड के क्ष त्र मे अपने केन्द्र स्थापित किए। डी०ए०वी० स्कूल, हस्पताल बालवाडियो, हस्पतालो व एम्बूलस सेवा, खादी निर्माण के द्वारा हिन्दू धर्म रक्षा अभियान का उपक्रम किया। ईसाइयो के इशारो पर ईसाई नागाओ ने बोकाजान में स्थापित हमारे सेन्टर को आग लगा दी, ईसाइयो द्वारा प्ररित नागाओ ने उत्तजित व हिंसक अवस्था मे हमारे डी०ए०वी० स्कूल का भवन जला दिया जिसका दुबारा सभा ने निर्माण किया। सभा के २ उच्चकोटि के कार्यकर्ताओ को गोली से उडा दिया गया जिनके परिवारो को सभा आजीवन २००-२०० रुपये मासिक की सहायता दे रही है। भारत सरकार को यह झूठी शिकायत करके कि यह आर०एस० एस० (जो सरकार की दष्टि मे एक साम्प्रदायिक राजनैतिक सगठन है) की सस्थाए हैं हमारी सरकार से अनुदान राशि बन्द करवादी जिसे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री से मिलकर दोबारा जारी करवाया। हमारी शिक्षण सस्थाओं मे सैकडो नागा बालक सामान्य शिक्षा के साथ वैदिक धर्म की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। खड्डियो के द्वारा नागा परिवारो को रोजगार प्रदान किया जाता है। सभा का हजारो लाखो रुपये का व्यय इन सेवा कार्यों पर होता है। सभा के महामन्त्री स्व० श्री ओम्प्रकाश त्यागी की तपस्या फलीभूत हो रही है। अब सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री कमठ कार्यकर्त्ता श्री प० पृथ्वीराज जी शास्त्री इस महान् सेवा काय की देखरेख दयानन्द सेवाश्रम सघ के अन्तगत इस पवित्र काय का सचालन कर रहे हैं।

आर्यसमाज को आशा है कि उसकी छत्रछाया मे शिक्षा पा रहे लगभग साढे पाच सौ नागा बालक जब हमारी सस्था से वैदिक विचारधारा से प्रभावित होकर नागा जाति का नेतृत्व करेंगे तो देशद्रोहियो व देश को खण्ड-खण्ड करने वाले तत्वो का वे सरलता व सशक्तता से सामुख्य कर सकगे। जैसे आजके ढिलमिल विचार के राजनीतिज्ञ के स्वर कभी-कभी नागा जाति को पृथकत्व का विषपान कराते हैं फिर यह हिन्दू समाज के अभिन्न अग के रूप मे भारत की गौरवशाली परम्पराओ की स्थापना करगे, उस समय नागालैंड भारत का ही एक स्थायी अभिन्न अग माना जाएगा। ईसाई लोग नागाओ को अभारतीयता व ईसाइयत के रग मे रगकर जो देश को खण्ड खण्ड करने के कुचक्र चलाते हैं वे स्वयमेव बिखर कर रह जायगे। आयसमाज की इस महान् विजयकी कल्पना मात्र से मन आत्म विभोर हो जाता है। आयसमाज की राष्ट्रीय कल्पना मे जो जो विघ्न-बाधाय हैं आर्यसमाज उन्हे दूर करने के लिए सजग प्रहरी की भाति सन्नद्ध हैं—

काटा लगे किसी को तडपते हैं हम अमीर।
सारे जहा का दर्द हमारे जिगर मे है॥

आसाम उडीसा की समस्या पर हम आगामी अक मे प्रकाश डालगे। ●

हिन्दू शिक्षा सगठन को कम सुविधाएं

लखनऊ १५ नवम्बर। सरकार हिन्दुओं की तुलना में अल्पसख्यको को ज्यादा महत्व देती है तथा अल्पसख्यकों के शैक्षिक सगठनों को हिन्दू शैक्षिक सगठनो की तुलना में काम करने की छूट ज्यादा है। सरकार का नियन्त्रण भी हिन्दू सगठनो पर ज्यादा है। यह बात आज आर्य प्रतिनिधि सभा के १०२वें अधिवेशन के अवसर पर सार्वदेशिक सभाके प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पत्रकारो को बताई।

उन्होंने कहा कि धारा ३० के अन्दर सरकार ने अल्पसख्यक शैक्षिक सगठनो को आर्थिक सहायता दी हैं तथा उनके काय कलापो में हस्तक्षप भी कम करती हैं। वही हिन्दू शैक्षिक सगठनों (आय प्रतिनिधि सभा) पर सरकार का हस्तक्षेप ज्यादा हैं। उन्होने कहा कि या तो सरकार दोनो के साथ समान व्यवहार करे या फिर धारा-३० को ही समाप्त कर दे।

उन्होने कहा कि सीमा क्षत्रो के हिन्दू सम्प्रदाय के लोग ज्यादा प्रताडित होते है। उन्होंने सुझाव दिया कि ऐसे क्षेत्रों मे एक ऐसी पट्टी बनाई जाए जहा भू० पूव सैनिको को बसाया जाए। जो इन समस्याओ से अच्छी तरह निपट सकेंगे।

सती प्रथा के सन्दभ मे उन्होंने कहा कि यह वेद सम्मत कही से भी नही है। यह औरतो का सामाजिक सुरक्षा के साथ खिलवाड हैं। उन्होने इस सन्दभ मे पुरी के शकराचाय की टिप्पणी पर कहा मैंने तो चुनौती दी थी कि शास्त्रों मे इसका कही भी उल्लेख हो तो बताऐ।

औरत जलाई तो जा सकती है सती नहीं हो सकती!

लेखक : वीरेन्द्र (प्रताप) जालन्धर

पिछले दिनो ४ सितम्बर का राजस्थान के एक कस्बा दिवराला मे एक १८ वर्षीय लडकी रूप कवर सती हो गई थी, उस दिन से यह घटना एक बहुत बडे विवाद का विषय बन गई है। एक ओर वह लोग है जो कहते हैं सती की रस्म को कानूनी तौर पर बन्द किया जाए और जो लोग रूप कवर के सती होने के लिए उत्तरदायी है उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाए। अत राजस्थान सरकार ने कुछ लोगों को गिरफ्तार भी कर लिया है और उनके विरुद्ध हत्या के आरोप मे कार्रवाई हो रही है। दूसरी ओर वह लोग हैं जो यह कहते है कि सती पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध धार्मिक मामलो मे हस्तक्षेप होगा। जो किसी भी स्थिति मे सहन नही होगा। एक शकराचार्य ने भी कुछ इसी प्रकार के विचार प्रकट किए हैं और राजस्थान मे तो ऐसे लाखो लोग हैं जो यह कहते हैं कि सती एक औरत की धार्मिक भावनाओ का परिणाम होता है इसलिए इस पर कोई प्रतिबन्ध लागू नही किया जा सकता। विगत दिनो राजस्थान ने कुछ लोगो के विरुद्ध जो कार्रवाई की थी उसके परिणाम स्वरूप भी वहा लोग भडक उठे हैं। राजपूतों मे तो विशेष तौर पर सती को अत्यन्त श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। इसलिए राजस्थान के राजपूत सती के सम्बन्ध मे सरकार की कार्रवाई के पूर्णतया विरुद्ध हैं।

यह दोनो प्रकार के लोग गलत हैं। सती के सम्बन्ध में किसी प्रकार की राय कायम करने से पहले यह देखना आवश्यक है कि यह आत्महत्या है या आत्म बलिदान। जहा किसी महिला को सती करने पर विवश कर दिया जाए या जो किसी घरेलू झगडे के कारण सती हो जाए उसे हम आत्महत्या तो कह सकते है। सती नही कहा जा सकता। सती वही होती है जहा कोई महिला अपने पति के लिए अत्यन्त श्रद्धा के कारण से उसकी मृत्यु को सहन न कर सके और उसके साथ सती हो जाये। आत्महत्या तो फिर भी वह होगी परन्तु जिस धारणा से यह पग उठाया जाता है उसे दृष्टिविगत नही किया जा सकता। सती का रिवाज हमारे देश मे नया नही है। राजस्थान मे विशेष रूप से उस जमाना से चल रहा है जब वहा मुगलो का शासन हुआ करता था। राजपूत उनसे लडते थे और जब वह मारे जाते थे तो उनकी पत्निया भी उनके साथ इस डर से सती हो जाती थी कि मुगल सिपाही उन्हे उठा कर न ले जायें। या उनका किसी प्रकार से अपमान न करें। राजस्थान मे यह रिवाज उसी समय से चल रहा हैं। इससे हम राजस्थान महिलाओ मे बलिदान और वफादारी की जो भावना हुआ करती थी उसका कुछ अनुमान लगा सकते हैं।

प्रश्न उत्पन्न होगा कि क्या आज की परिस्थितियों मे भी सती की अनुमति देनी चाहिए? अनुमति देने का तो प्रश्न ही नही उठता कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे को मरने की अनुमति नही दे सकता। और एक पति तो किसी भी स्थितिमे अपनी पत्नी को मरने की अनुमति नही देगा चाहेगा उसके साथ उसके सम्बन्ध कितने तनावपूर्ण क्यों न हो? परन्तु यदि कोई महिला अपने पति के बिना न रह सके और उसके साथ अपने आपको भी समाप्त करने को तैयार हो तो उसे कौन रोक सकता हैं। हमे यह न भूलना चाहिए कि हम काफी लम्बे समय तक अपनी लडकियो को सीता और सावित्री की कहानिया सुनाते रहे हैं। आज कोई नही सुनाता। आज तो फिल्मी कलाकारो की कहानिया सुनाई जाती हैं। परन्तु जिन्होने सीता-सावित्री जैसी देवियो की कहानी सुनी हो यदि उनके दिमाग मे अपने पति से वफादारी की वही भावना हो जो सीता और सावित्री मे थी तो फिर उसे सती होने से कौन रोक सकेगा? आज के लोग तो शायद यह कहेंगे कि सीता और सावित्री का दिमाग भी खराब था जो अपने पति की खातिर अपने आपका बलिदान देने को तैयार थी। आज जबकि मैं यह लेखनीबद्ध कर रहा हूं करवा चौथ है। अवश्य हिन्दू महिलाए आज व्रत रखती हैं और अपने पति की दीर्घायु के लिए प्रार्थना करती हैं। नई पीढी के लोग, पुरुष भी और महिलायें भी शायद इसे भी एक मूर्खतापूर्ण कार्य कहेंगे। आज के लोग इस भावनाओं को नही समझ सकते जो हमारी पुरातन संस्कृति ने हमारे दिमाग में बिठा रखी हैं और जिनके आधार पर हमारी मिहिलायें पति-परमेश्वर के दृष्टिकोण के अनुसार चलती रही हैं। यही वह दृष्टिकोण है जिसने रूप कवर को अपने पति के साथ सती होने के लिए तैयार किया था। इसलिए उस घटना को केवल कानूनी दृष्टिकोण से नही देखना चाहिए अपितु उस युवा लडकी की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए जिसने इस प्रकार अपने आपको अपने पति के साथ सती कर लिया। जो कुछ उसने किया उसका अनुमोदन तो नही किया जा सकता क्योंकि यह भी मालूम नही कि उसका पति इस योग्य भी था या नही कि उसकी पत्नी उसकी खातिर इस प्रकार बलिदान कर देती परन्तु यह एक ऐसी समस्या है जिसके सभी पक्षो पर गम्भीरता से विचार करने की जरूरत है।

इसी के साथ यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि हमारे देश मे प्रतिदिन जो नौजवान लडकिया जलाई जा रही हैं। क्या वह उचित है? क्या कारण हैं कि इस प्रकार की हत्याओं के विरुद्ध हमारा समाज और विशेष रूप से महिलाए वह शोर नही डालती जो सती के विरुद्ध डाला गया हैं। हालांकि इन जवान लडकियों को जलाने वाली कई महिलाए भी होती हैं। रूप कवर को किसी ने जलाया नही वह स्वय जली हैं। फिर क्या कारण हैं कि जब लडकियो को जलाया जाता है तो उतना शोर नही पडता जितना कि अब डाला जा रहा हैं।

किसी को मारना या मरने के लिए उकसाना यह दोनों अपराध हैं। कानून की दृष्टि मे हत्या करना, हत्या के लिए किसी को प्रेरित करना अथवा किसी की हत्या मे सहायक होना यह भी अपराध समझा जाता है, इसलिए कई बार उन लोगो को भी मृत्यु दण्ड दिया जाता है जो किसी की हत्या करने या कराने मे किसी भाति सहायक सिद्ध होते हैं।

रूप कवर स्वय सती हुई या उसे सती होने के लिए विवश किया गया यह अभी तक बहस योग्य प्रश्न है। इस सती काड के सम्बन्ध मे अभी तक केवल दो तथ्य सामने आए हैं। एक यह कि वह जब अपने पति की चिता पर जाकर बैठ गई उस समय भी किसी ने उसे न तो हटाने का प्रयास किया न उसे वहां से हटने के लिए कहा और दूसरा यह कि जब आग की लपटें उठने लगी और वह उसकी लपेट मे आने लगी उसने वहा से निकलने का प्रयास नही किया और अपने पति के साथ ही राख हो गई।

इस सारी घटना के सम्बन्ध में कई प्रकार के विचार व्यक्त किये जा रहे हैं और अभी कुछ समय यह बहस जारी रहेगी। एक प्राणी की मृत्यु किसी भी स्थिति मे सुखद नही होती और एक ऐसी महिला की मृत्यु तो विशेष रूप से सुखद नही हो सकती जो सती हुई हो। उसने जो कुछ किया है उस पर तो हमे खेद करना चाहिए परन्तु जिस भावना से प्रेरित होकर उसने यह किया है उसका सम्मान करना चाहिए। यह उस युग की स्मृति है जब पति पत्नी का सम्बन्ध अटूट समझा जाता था। आज के तलाक के युग मे इसका कोई मूल्य नही पड सकता।

परन्तु मेरे सामने तो प्रश्न का दूसरा पक्ष है जिस का मुझे उत्तर नही मिल रहा। एक लडकी के सती होने पर तो इतना शोर मचाया जा रहा है परन्तु प्रतिदिन जिन लडकियो को दहेज के कारण तेल डाल कर आग लगाई जाती है उसके विरुद्ध इस प्रकार शोर नहीं हुआ जितना कि रूप कवर के सती होने पर। महिलाओं की अनेक संस्थाए सती के विरुद्ध प्रदर्शन कर रही है और उन महिलाओ मे कई वह भी शामिल होंगी। जिन्होंने अपनी बहू को इसलिए घर से निकाल दिया होगा या तेल डालकर जला दिया वह काफी दहेज नही लाई थी। सती तो केवल एक रूप कवर हुई है यह भी बहुत देर के बाद। तेल डाल कर जलाने वाली लडकियों की घटनाए प्रतिदिन, हमारे सम्मुख आती है। क्या वह अपराध नहीं है? क्या कारण है कि इसके विरुद्ध इस प्रकार शोर नही मचाया जाता जितना कि रूप कवर के सती होने के विरुद्ध मचाया जा रहा है। क्या यह वास्तविकता है अथवा नही कि जिन लडकियो को तेल डाल कर जलाया जाता है उन पर तेल डालने वाली कई बार उसकी सास और ननद भी होती हैं? और जब वह लडकी मर जाती है तो उसकी जगह अपनी बेटी देने को कई महिलाए तैयार हो जाती है और

(शेष पृष्ठ १० पर)

शंकराचार्य का वाक् छल

—श्री पं० क्षितीश वेदालंकार—

जब जगन्नाथ पुरी के शंकराचार्य हिन्दू जाति के आदरास्पद श्री निरञ्जनदेव तीर्थ ने यह घोषणा की कि मैं सती प्रथा को वेदो से सिद्ध करके दिखाऊंगा, तब आर्य समाज के अनेक विद्वानो ने उनको शास्त्रार्थ की चुनौती दी। उसी सिलसिले मे कानपुर के वयोवृद्ध विद्वान् ८० वर्षीय डा० जगदानन्द राजपाल ने शंकराचार्य जी को एक पत्र लिखा और उनसे निवेदन किया कि वे कृपा करके सती प्रथा के समर्थक वेदमन्त्रो का हवाला देने का कष्ट करें। इस पर श्री शंकराचार्य ने अपनी ओर से उत्तर देने के बजाय (क्योकि प्रश्न और उत्तर के झंझट मे पडकर पत्र-व्यवहार करना सामान्य जनो का शिष्टाचार हो सकता है, परन्तु अपने आपको मानवोपरि समझने वाले महापुरुषो का नही) अपने शिष्य से उत्तर दिलवाया। श्री जगदानन्द जी ने उस पत्र की एक फोटो प्रति हमको भी भेजी है। पत्र इस प्रकार है—

श्री राजपाल जी, पुरी १९-१०-८७

शुभाशीष !

ऋग्वेद के अष्टक ७, अनुवाद ६ और वर्ग २७ मे देखने का कष्ट करें। इसी प्रकार धर्म सिन्धु" (खेमराज श्रीकृष्ण दास, वेंकटेश्वर प्रैस, सम्वत् १९६४ वि०,) पृष्ठ ३८४-३८५-३८६ मे "अथ सहगमनम्" देखें, जिसमें पूर्ण वर्णन है।

श्री चरणो की आज्ञा से

(हस्ताक्षर स्पष्ट नही हैं)

श्री जगदानन्द राजपाल द्वारा भेजे गये उक्त पत्र को पढकर हमने धर्म सिन्धु के उल्लेख को तो महत्व नही दिया क्योकि हमारी दृष्टि मे स्वत प्रमाण केवल वेद है, वेद से इतर जितने भी ग्रन्थ हैं वे सब परत प्रमाण हैं। इसलिये हमने ऋग्वेद के दिये गये हवाले को ही खोजा तो वह वही मन्त्र ('इमा नारीरविधवा'०) निकला जिसको हम आर्य जगत् के पिछले अको मे दो बार उद्धृत कर चुके हैं। वह मन्त्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के अठारहवें सूक्त का सातवा मन्त्र है। इसी मत्र मे"अग्रे"के स्थान पर"अग्ने"पाठ करके पण्डितो ने लार्ड बेंटिक के समय,अब से १५८वर्ष पूर्व (सन् १८२९मे)सती प्रथा उन्मूलन का कानून बनाये जाने के अवसर पर छल किया था। हमने पहले भी लिखा था कि जो छल उस समय के पण्डितो ने किया था, वही छल अब कदाचित् शंकराचार्य जी करना चाहते हैं। हमारा यह कथन सही सिद्ध हो गया। परन्तु हमने साथ ही यह भी लिखा था कि यदि वह छल उस समय सफल नही हुआ तो अब १५८ वर्ष बाद भी सफल नही हो सकेगा।

इसके अतिरिक्त "इमा नारीरविधवा" वाले मन्त्र से अगला मन्त्र हमारे मन्तव्य की और पुष्टि करता है, शंकराचार्य जी के मन्तव्य की नही। वह मन्त्र इस प्रकार है—

उदीर्ष्व नार्यभिजीवलोकं गतासुमेतमुपशेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ ॥
ऋक् मण्डल १०। सूक्त १८। मन्त्र ८॥

अर्थात् हे नारी ! इस मृत पति के पास शयन की आशा छोडकर तू उठ और जीव लोक (परलोक नही) की ओर आ। जीवित पुरुषो से योग्य वर का पाणिग्रहण कर और उसके द्वारा सन्तान प्राप्त कर।

यह मन्त्र स्पष्टरूप से सतीप्रथा का विरोधी और विधवा-विवाह का समर्थक है। यही मन्त्र कुछ थोडे से पाठ भेद के साथ अथर्ववेद मे भी आया है। पहले मन्त्र मे सती प्रथा का समर्थन माना जाए और दूसरे मन्त्र मे विधवा-विवाह का समर्थन तो दोनो मन्त्रो की सगति कैसे लगेगी ? इन दोनो पूर्वापर मन्त्रो की सगति केवल एक ही आधार पर लग सकती है और वह आधार ऋषि दयानन्द ने जिस तरह सुलझे हुए ढग से प्रस्तुत किया है उस तरह और किसी विद्वान् ने किया हो यह ध्यान नही आता। ऋषि दयानन्द का कहना है कि पति के दिवगत हो जाने पर विधवा हुई नारी ब्रह्मचर्य धारण करने मे असमर्थ हो तो दूसरे पति का वरण कर ले। पहला रास्ता तपस्या का है और दूसरा सामान्य जीवन जीने का है। विधवा के लिये विवाह अनिवार्य नही है। परन्तु जीवन भर वैधव्य के शाप से ग्रस्त होकर वाछित होना भी अभिप्रेत नहीहै। तपस्यामय जीवन मानव के उदात्तीकरण के लिये है। परन्तु वह कठोर है। इसीलिये वेद ने दूसरा विकल्प सुझाया है।

हिन्दू समाज मे विधवा को जिस प्रकार कुलच्छनी और कुल-कलकिनी बताकर सर्वथा अपमानित जीवन बिताना पडता है, वह वेद को किसी भी हालत में अभिप्रेत नही है। सच तो यह है कि जो हिन्दू समाज विधवाओ की इस प्रकार दुर्गति करता है वही समाज सती प्रथा के माध्यम से पति के साथ जलने वाली नारी को दिव्य मानकर पूजता है। दोनो प्रतिया अस्वाभाविक हैं। जिस समाज मे इस प्रकार जिन्दगी को तिरस्कृत किया जाए और मौत को गौरवान्वित किया जाए उस समय मे कानून बन जाने के बाद भी औरतो को जिन्दा जलाकर देवी बनाने का व्यावसायिक प्रलोभन जारी रहे तो आश्चर्य नही। इसी कुप्रथा के कारण विधवाओ का उद्धार करके उनको सामान्य जीवन जीने के लिये अवसर देने वाले लोगो को भी समाज से लाछित होना पडा है। क्या महर्षि कर्वे को, जो महाराष्ट्र में स्त्री शिक्षा के प्रबल पुरस्कर्ता माने जाते हैं, इसी कारण ईट पत्थरो की बौछार नही सहनी पडी थी ? जो समाज विधवा विवाह को तो पाप मानता है और व्यभिचार को पाप नही मानता उस समाज की बुद्धि को विकृत करने का सबसे बडा श्रेय हमारे धर्माचार्यो को ही है।

हम यहा डा० राजबली पाण्डेय द्वारा सम्पादित "हिन्दू धर्म कोष" का एक उद्धरण दे रहे हैं—

"अन्य देशो मे, जहा स्त्रिया पुरुषो की सम्पत्ति समझी जाती थी, मृत पति के साथ वे समाधि मे चुन दी जाती थी। परन्तु भारत के प्राचीनतम साहित्य मे इस प्रकार का कोई उल्लेख नही मिलता। ऐसा कोई वैदिक सूक्त अथवा मन्त्र नही मिलता जिसमें मृत पति की चिता पर विधवा के सती होने की चर्चा हो। गृह्यसूत्रो मे जिनमे अन्त्येष्टि का विस्तृत वर्णन पाया जाता है सती होने का कोई विधान नही है। ऐसा लगता है किसी आर्येतर अथवा विदेशी सम्पर्क के कारण यह प्रथा भारत मे प्रचलित हुई। धर्मसूत्रो मे से केवल 'विष्णु धर्म सूत्र' मे सती प्रथा का वैकल्पिक विधान है। मनुस्मृति में कही भी सती का उल्लेख नही पाया जाता। रामायण मे भी

सती का उल्लेख नही पाया जाता मेधातिथि ने मनुस्मृति पर भाष्य करते हुए सती प्रथा की तुलना श्येनयाग से की है जो एक प्रकार का का अभिचार (जादू टोना) था। मेधातिथि तथा कुछ अन्य टीकाकारो ने इसकी तुलना आत्म हत्या से की है इसे गर्हित बतलाया है।

'मुसलमानो के आक्रमणो से इस प्रथा को प्रोत्साहन मिला। अकबर ने अपने सुधारवादी शासन मे सती प्रथा को बन्द करना चाहा परन्तु यह बन्द नही हुई। आधुनिक युग में भी बनी रही। बगाल मे इसका सर्वाधिक प्रचार था। इसका कारण यह था कि वहाँ दाय भाग के अनुसार पत्नी को पति की मृत्यु के पश्चात् सयुक्त पारिवारिक सम्पत्ति मे पूर्ण अधिकार प्राप्त था इसलिये परिवार वाले यह चाहते थ कि विधवा मृत पति के साथ सती हो जाए। इसमे छल और बल का प्रयोग होने लगा। तभी राजाराम मोहन-राय के प्रयत्नो से लार्ड विलियम बेंटिक शासनकाल मे (१८२० ई०) सती प्रथा भारत मे निषिद्ध कर दी गई।"

ऊपर हमने यह उद्धरण इस विषय मे नीर क्षीर विवेक के लिए प्रस्तुत किया है। पौराणिक समाज मे भी जितने विवेकी और प्रगतिशील लोग हैं वे सती प्रथा के विरोधी और विधवा विवाह के समर्थक हैं। हम सन् १९३३ की एक घटना का वर्णन कर रहे हैं—

होशियारपुर मे सनातन धर्मियो के ही दो वर्ग बन गये। एक वर्ग विधवा विवाह का पक्षपाती बन गया। विधवा विवाह के विरोधियो ने सनातन धर्म के दिग्गज विद्वान् श्री प० अखिलानन्द और प० कालूराम शास्त्री को बुला लिया और विधवा विवाह के समर्थको को शास्त्रार्थ की चुनौती दे डाली। इतने बडे महारथियो से शास्त्रार्थ कौन करे? तब विधवा विवाह के समर्थक सनातनियो ने ही शास्त्रार्थ के लिये आर्यसमाज के पण्डितो का द्वार खटखटाया। वे ठा० अमरसिंह जी को, जो बाद मे सन्यास लेकर महात्मा अमर स्वामी जी के नाम से प्रसिद्ध हुए, और जिनका इसी सितम्बर मास में स्वर्गवास हुआ है, बडे आग्रह और मिन्नत के साथ उन दिग्गज सनातन धर्मी विद्वानो से शास्त्रार्थ करने के लिये बुलाकर लाये। ठाकुर अमरसिंह जी होशियारपुर पहुँच गये। ठाकुर जी ने विधवा विवाह के पक्ष मे अथर्ववेद का एक मन्त्र प्रस्तुत किया जो इस प्रकार था—

या पूर्वम् पतिम् वित्वा अथान्यम् विन्दते पतिम्।

अर्थात् पूर्व पति को मृत जानकर जो नारी दूसरे पति को प्राप्त करती है।

इस अर्थ को सुनकर श्री कालूराम शास्त्री ने कहा कि आपका यह अर्थ ठीक नही है। इस पर ठाकुर जी ने कहा कि अर्थ मेरा किया हुआ नही है, मैं वही अर्थ बोल रहा हू जो प० अखिलानन्द जी ने अपनी पुस्तक 'वैध्वसन चम्पू" मे लिखा है। ठाकुर जी की इस बात पर सब पौराणिक बगले झाकने लगे। तब प० अखिलानन्द ने कहा कि यह तो मेरा पूर्व पक्ष है। ठाकुर जी ने उत्तर दिया कि एक ही स्थान पर पहले पूर्व पक्ष की स्थापना करके उत्तर पक्ष के रूप मे उसका समाधान किया जाता है वह तो सामान्य प्रक्रिया है जो सब कही होती है, परन्तु एक पूरी पुस्तक को पूर्व पक्ष बताकर ३० वर्ष तक उसका उत्तर पक्ष न होने की बात ऐसी है जिस पर कोई विश्वास नही कर सकता। उन्होने कहा कि यह पुस्तक वास्तव मे प० अखिलानन्द जी ने तब लिखी थी जब वे आर्यसमाज के उपदेशक थे। (पाठको को यह बताने की आवश्यकता नही कि अखिलानन्द जी ने ही ऋषि दयानन्द की प्रशस्ति में 'दयानन्द दिग्विजय' नामक श्लोक बद्ध सस्कृत काव्य की रचना की थी, परन्तु बाद मे प्रलोभन वश वे पौराणिक बन गये थे।)

जिस तरह पौराणिक पण्डितो को विधवा विवाह का विरोध करने पर उस समय मुह की खानी पडी थी, उसी प्रकार शकराचार्य जी और उनके अनुयायियो की भी वही गति होगी। समस्त हिन्दू समाज के लिए उचित यही है कि वह आर्य समाज के साथ मिलकर इस प्रकार की सामाजिक कुरीतियो के जो समाज को पतन की ओर ले जाती है, उन्मूलन के लिए कटिबद्ध हो।

शरीर में भी जीवात्मा का स्थान

—श्री वीरेन्द्रसिंह पमार आयुर्वेद शास्त्री—

"दयानन्द सन्देश" के सितम्बर १९८७ के अंक में श्री राजवीर शास्त्री ने आचार्य उदयवीर जी के "सार्वदेशिक" पत्रिका में प्रकाशित "जीवात्मा का स्थान कहां है" शीर्षक लेख की आलोचना करते हुए लिखा है कि "आचार्य जी का मत वैदिक प्रमाणों से सिद्ध नहीं होता है। जीवात्मा का स्थान मस्तिष्क अथवा रक्त प्रक्षेपक हृदय न होकर शरीर में कहीं अन्यत्र है।" अपने पक्ष पोषण के लिये आपने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, उपासना विषय में उल्लिखित छान्दोग्य उपनिषद के एक मन्त्र का हिन्दी रूपान्तर देकर उसे स्वामी दयानन्द का मत बताकर अपनी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। परन्तु शास्त्री जी ने अपने मत के समर्थन में एक भी प्रमाण वेद, उपनिषद, अन्य वैदिक अथवा लौकिक साहित्य से उद्धृत नहीं किया है। इसका कारण यही है कि वैदिक वाङ्मय में कहीं भी ऐसा उल्लेख नहीं है जिससे यह सिद्ध किया जा सके कि हृदय शब्द का प्रयोग मस्तिष्क अथवा रक्त प्रक्षेपक अंग को छोड़कर शरीर के किसी अन्य अंग के लिये किया गया हो। शास्त्री जी की जानकारी के लिये वेद, उपनिषद, आयुर्वेद के प्रमाणों तथा प्रत्यक्ष दर्शन द्वारा यह सिद्ध करना कि "मस्तिष्क में ही जीवात्मा का स्थान है" आवश्यक समझकर यह समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है।

वेदों और उपनिषदों में हृदय शब्द का प्रयोग केवल मस्तिष्क के लिये ही किया गया है। आयुर्वेद में यह शब्द मस्तिष्क तथा रक्त प्रक्षेपक अंग के लिये भी आया है, परन्तु प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध में जहां भी हृदय शब्द का प्रयोग किया गया है, वहां मस्तिष्क के लिये ही किया गया है।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

(यजु० ३४।६)

इस मन्त्र में मन को "हृत्प्रतिष्ठ" बताया गया है। ऐतरेय उपनिषद (३।१।२) में हृदय और मन को पर्यायवाची मानते हुए लिखा है।

"यदेतत् हृदयं मनश्चैतत्। सज्ञानं, आज्ञान, विज्ञान.................. स्मृतिः, सकल्पः, क्रतुरसुः, कामो वश इति सर्वाज्येतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि।'

इससे स्पष्ट है कि मन, और बुद्धि के सभी कार्य इसी हृदय द्वारा सम्पन्न होते हैं। इससे यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि शरीर मे जहां मन का आवास है वही हृदय है। अनुभव मे भी यही आता है कि व्यक्ति के सोचने, विचारने और निर्णय करने की समूची शक्ति मस्तिष्क में ही केन्द्रित है।' वह जो पढ़ता है याद करता है, वह भी स्मृति के रूप में चित्त में अंकित हो जाता है, और वह चित्त भी मस्तिष्क में ही है।

आयुर्वेद में सुश्रुत सहिता के शरीरस्थान मे उल्लेख है:—

"हृदयं चेतनास्थान मुक्त सुश्रुत देहिनाम्। तमोभिभूते तस्मिंस्तु निद्रा विशति देहिनाम्।" अर्थात् तम से अभिभूत होने पर मनुष्य को नीद घेर लेती है और वह सो जाता है। इस पर और अधिक प्रकाश इसी ग्रन्थ में अगले श्लोक में डाला गया है।

"पुण्डरीकेण सदृशं हृदयं स्यादधोमुखम्। जाग्रतस्तद् विकसति स्वपतश्च निमीलति।" अर्थात् हृदय अधोमुख कमल के आकार का है। जाग्रत अवस्था में वह विकसित रहता है और स्वप्नावस्था में बन्द हो जाता है। ऐसा ही वर्णन प्रश्नोपनिषद में है, जो यहां उद्धृत किया जा रहा है:—

"तत्सर्वं परे देवे मनस्येकी भवति तेन र्ह्येष पुरुषो न शृणोति, न पश्यति; न जिघ्रति............ने यायते स्वपितीत्याचक्षते।" अर्थात् सोने के समय पुरुष की इन्द्रियों की सभी शक्तियां और कार्य मन में समाहित हो जाते है और वह सोया हुआ माना जाता है। चरक संहिता चिकित्सा स्थान के उन्माद चिकित्सा अध्याय में भी मस्तिष्क को हृदय शब्द से व्यक्त किया गया है, जो आगे लिखे श्लोकों से प्रमाणित है:—

"दौर्बल्य सत्त्वस्य मलाः प्रदुष्टा बुद्धेर्निवासं हृदयं प्रदूष्य।
स्रोतांस्यधिष्ठाय मनोवहानि प्रमोहयन्तीह नरस्य चेतः॥
धीविभ्रमः सत्त्व परिप्लवश्च पर्याकुला दृष्टिरधीरता च।
अबद्धवाक्त्वं हृदयं च शून्यम् सामान्य मुन्मादगदस्य लिंगम्॥
रूक्षाल्पशीतान्न विरेकधातुक्षयोपवसै रनिलोऽतिवृद्धः।
चिन्तादिजुष्टं हृदयं प्रदूष्य, बुद्धिस्मृतिं चाप्युपहन्ति शीघ्रम्॥

उक्त श्लोकों में असन्दिग्ध शब्दों में बताया गया है कि बुद्धि के निवास हृदय को जब चिन्तादिदोष दूषित कर देते हैं तब पुरुष की ज्ञान शक्ति, विवेक बुद्धि भ्रमित हो जाती है और वह ऊलजलूल बकने लगता है। उसके सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्ति यह कहने लगते हैं कि उसका दिमाग खराब हो गया है।" और इस दिमाग (मस्तिष्क) को इन श्लोकों में हृदय नाम से पुकारा गया है। यहां रक्त प्रक्षेपक हृदय का दूर से भी सम्बन्ध नहीं है।

शास्त्री जी ने हृदय शब्द को केवल रक्त प्रक्षेपक अंग का वाचक मान कर उपनिषदों में प्रयुक्त नाड़ी शब्द को शिरा और धमनी का पर्यायवाची मानकर उसका सम्बन्ध रक्त प्रक्षेपक अंग से जोड़ दिया है। यह भ्रममूलक है। वास्तविकता यह है कि उपनिषदों में प्रयुक्त नाड़ी शब्द ज्ञान तन्तुओं के लिये प्रयुक्त हुआ है। प्रश्नोपनिषद में एतत्सम्बन्धी मन्त्र इस प्रकार है।" हृदि ह्येष आत्मा। अत्रैतदेकशतं नाडीनां तासां शतं शतमेकैकस्यां द्वासप्तति-द्वासप्ततिः प्रतिशाखा नाडीसहस्राणि भवन्त्यासु व्यानश्चरति।" अर्थात् इस शरीर में जो हृदय प्रदेश है और जीवात्मा का भी निवास स्थान है, उसमें एकसो मूलभूत नाड़ियां हैं। इनमें से प्रत्येक नाड़ी की एक एकसो शाखा-नाड़ियां है, और प्रत्येक शाखा नाड़ी की बहत्तर बहत्तर हजार प्रतिशाखा-नाड़ियां हैं, जो सब मिलाकर संख्या में बहत्तर करोड़ हैं। इनसे व्यान वायु संचरण करता है। पांच वायुओं में व्यान भी है, जिसका लक्षण "अष्टांगहृदय" के सूत्रस्थान में इस प्रकार दिया गया है।" व्यानो हृदिस्थितः कृत्स्नदेहचारी महाजवः। गत्यपक्षेपणोत्क्षेप निमेषोन्मेषणादिकाः। प्रायः सर्वाः क्रियास्तस्मिन् प्रतिबद्धाः शरीरिणाम्।" व्यान वायु का मुख्य स्थान हृदय (मस्तिष्क) है। वह समस्त नाड़ियों को गति देता है, सन्देश मस्तिष्क तक पहुंचाना तथा मस्तिष्क द्वारा दिये आदेश को अंगों तक पहुंचाना, ये दोनों कार्य ज्ञानतन्तुओं के माध्यम से व्यान वायु बिजली की तरह और ज्ञानतन्तु बिजली के तारो की भांति काम करते हैं। इस प्रकार इन ज्ञानतन्तुओं का, जो मेरुदण्ड में होकर समस्त शरीर में फैले हुए हैं, सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से है। ये कार्य शिरा और धमनियों द्वारा सम्पन्न नही होते क्योंकि इनका सम्बन्ध रक्त प्रक्षेपक हृदय से रहता है, जहां ज्ञान का लेश मात्र भी नही है।

वैदिक वाङ्मय में हृदय शब्द का मस्तिष्क के लिये प्रयुक्त हुआ है, यह सिद्ध होने के पश्चात् प्रश्न रह जाता है कि जीवात्मा का निवास मस्तिष्क (हृदय) में है अथवा रक्त प्रक्षेपक हृदय मे। प्रश्नोपनिषद मे "हृदि ह्येष आत्मा" और बृहदारण्यक उपनिषद में "कतम आत्मेति, योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः" के द्वारा जीवात्मा का निवास स्थान हृदय मस्तिष्क बताया गया है। बृहदारण्यक के मन्त्रभाग का भाष्य करते हुए शंकराचार्य ने जिन स्पष्ट शब्दों में इसे अभिव्यक्त किया है, उनको यहां उद्धृत किया जा रहा है।" हृच्छब्देन पुण्डरीकाकारो मांसपिण्डम् तात्स्थ्या बुद्धिर्हृत्, तस्यां हृदि बुद्धो (अन्तर्ज्योतिः) ज्योतिरभासकत्वात् आत्मोच्यते।" इसमें यह स्पष्ट कर दिया गया है कि पुण्डरीकाकार हृदय में जो अन्तर्ज्योति है, वही जीवात्मा है। ऐतरेय उपनिषद (१।३) में एक उपाख्यान द्वारा यह बताया गया है कि ईश्वर ने जब मनुष्य शरीर की रचना करके उसे सजीव बना दिया तो उसने सोचा कि यह (जीवात्मा) अब स्वतन्त्र हो गया है तो यह मेरा अस्तित्व नहीं मानेगा। यह सोचकर परमात्मा "सीमान विदार्येतया द्वारा प्रापद्यत", ब्रह्मरन्ध्र को फाड़कर अन्दर मस्तिष्क (हृदय) में पहुंच गया। वहां जीवात्मा ने (स जातो भूतान्यभिव्यैख्यत् किमिहान्यं वावदिषदिति) प्राणियों को देखा और साथ ही मस्तिष्क मे किसी अन्य चेतन को भी पाया।" स एतमेव पुरुषं ब्रह्म ततममपश्यत्" उस समय उसने ब्रह्म के दर्शन किये और हर्ष के साथ बोल उठा "इदमदर्शमितीति ३" मैंने ब्रह्म के दर्शन कर लिये हैं।

आयुर्वेद में भी जीवात्मा का निवास हृदय (मस्तिष्क) को ही बताया

है। चरक संहिता सूत्रस्थान में लिखा है। "षडंगमंगं विज्ञानं इन्द्रियाण्यर्थ पञ्चकम्। आत्मा च सगुणश्चेतिः चिन्त्यं च हृदि संश्रितम्।" अर्थात् पांच ज्ञानेन्द्रियां और छठा आत्मा हृदय (मस्तिष्क) में बसता है। एक अन्य उद्धरण भी इस बात की पुष्टि करता है। "प्रतिष्ठार्थं हि भावाना मेषां हृदय मिष्यते। तस्योपघातात् मूर्च्छायं भेदान्मरणमृच्छति।" चक्रपाणि ने इसकी टीका करते हुए लिखा है।" मन, आत्मा, बुद्धि ज्ञान आदि का स्थान हृदय है। वहां चेतना और चिन्तन दोनों ही हैं। वहां ही सुख दुःख की अनुभूति होती है। उसमें चोट लगने से मनुष्य मूर्छित हो जाता है और उसके नष्ट होने पर प्राणी मर जाता है।"

आचार्य उदयवीर जी अपने उद्धृत अथर्ववेद के मन्त्र (कां० १० सू० २) शरीर में जिस स्थान का संकेत करते हैं वह मस्तिष्क के अतिरिक्त कोई अन्य स्थान हो ही नहीं सकता। श्री राजवीर शास्त्री का यह आरोप मिथ्या है कि इन मन्त्रों में हृदय शब्द न होने पर भी आचार्य जी ने इनको अपने मत के समर्थन में उद्धृत करके इन मन्त्रों के अर्थ से अनभिज्ञता का परिचय दिया है। श्री शास्त्री जी को सम्भवतः वेद मन्त्रों के सम्बन्ध में पूरी जानकारी नहीं है। अनेक वेद मन्त्र ऐसे हैं जिनमें वर्णित विषय का नामतः उल्लेख नहीं होता, अपितु वेदाध्यायी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह मन्त्र के शब्दों द्वारा प्रतिपादित रहस्य की जानकारी स्वयं करे। यह बात ऋग्वेद के मन्त्र (४। ५८। ३) से स्पष्ट हो जाती है। पूरा मन्त्र यहां उद्धृत किया जा रहा। "चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादाः द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभोरोरवीति महो देवो मर्त्यां आविवेश।" याज्ञिक इसका अर्थ चारवेद, तीन सवन आदि के साथ जोड़ते हैं। महाभाष्यकार नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात को चार शृंग मानकर इसका अर्थ करते हैं। मोक्षसाधक चार शृंगों को पुरुषार्थ चतुष्टय मानकर मन्त्र की व्याख्या करते हैं। इसका भौतिक अर्थ सूर्य को मन्त्र का देवता मानकर किया जाता है। मन्त्र में कहीं भी वर्णित विषय का नामतः उल्लेख नहीं है। वेदाध्येताओं ने अपने विषय के अनुसार मन्त्र का अर्थ किया है। शास्त्री जी इन भाष्यकारों के सम्बन्ध में किन शब्दों का प्रयोग करके इन सभी को वेदमन्त्रों का अनर्थ करने वाले बतायेंगे। क्या शास्त्री जी अब "अष्टाचक्रा नवद्वारा" आदि अथर्ववेद के मन्त्र को मस्तिष्क विषयक सिद्ध करने वाले आचार्य उदयवीर जी को वेद मन्त्रार्थ की अनभिज्ञता का प्रमाणपत्र देने का दुःसाहस कर सकेंगे।

शास्त्री जी आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की खोज को अधकचरी बताकर, आधुनिक शल्य चिकित्सकों द्वारा प्रत्यक्ष किये गये शरीर के विभिन्न अंगों के आकार तथा उनके स्थान आदि को भी मानने को तैयार नहीं। क्या सुश्रुत की बात भी यदि आधुनिक चिकित्सा शास्त्रियों से मेल खाती हो तो यह भी अमान्य कर देंगे। सुश्रुत ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि—

"प्रत्यक्षतो हि यद् दृष्टं च यद् भवेत्।
समासतस्तु तदुभयं भूयो ज्ञान विवर्धनम्।"

इसलिये शल्य-क्रिया द्वारा उपलब्ध मस्तिष्क विषयक ज्ञान, जिसका उल्लेख आचार्य उदयवीर जी ने कविराज गणनाथ सेन के शब्दों में अपने लेख में अभिव्यक्त किया है, अमान्य कैसे हो सकता है। मस्तिष्क के उपलब्ध चित्रों से और विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि मस्तिष्क की आकृति अधोमुख कमल के समान है और उसके अन्दर एक त्रिभुजाकार परिखा रिक्त स्थान है, जिसके अन्दर "ईषत् पीत द्रव" (चरक संहिता सूत्र स्थान) है। यही बात अथर्ववेद के मन्त्र कहते हैं।

शास्त्री जी वैदिक शब्दों को एकार्थवाची मानकर आचार्य जी द्वारा किये गये उन शब्दों के अन्य अर्थों को मिथ्या बताते हैं। ऐसा कहकर वे अपनी अज्ञानता का परिचय देते हैं। वेद मन्त्रों में प्रयुक्त शब्द यौगिक हैं और अनेकार्थवाची हैं। अग्नि, मरुत, इन्द्र, ज्योति, आदित्य, स्वर्ग, मूर्धा, पुरन्धि आदि शब्द इसके कुछ उदाहरण हैं—शास्त्री जी योग सूत्रों में प्रयुक्त ज्योतिषि, तथा यजुर्वेद के मन्त्र "योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्" में प्रयुक्त आदित्य शब्दों के अर्थ स्वमतानुसार करके आचार्य जी द्वारा दिये अर्थों को अशुद्ध बताते हैं। योग के मूर्ध ज्योतिषि का अर्थ शास्त्री जी करते हैं कि मूर्धा शिर से भिन्न है। उनको इस बात का बोध नहीं है कि मूर्धा, कपाल और शिर शब्द अनेक बार मस्तिष्क के लिये उसी प्रकार प्रयुक्त हुए हैं और किये जाते हैं, जिस प्रकार आत्मा शब्द जीवात्मा, परमात्मा और शरीर के लिये प्रयुक्त हुआ है और किया जाता है। आदित्य शब्द का अर्थ जो स्वामी दयानन्द ने किया हैं वह शास्त्री जी की समझ में नहीं आया है। यह भी संभव है कि जानबूझकर उसे अपने मत के समर्थन में गलत ढंग से प्रस्तुत किया हो। स्वामी जी आदित्य शब्द का अर्थ 'प्राण व सूर्य लोक' लिखते हैं और करते हैं कि "वह (ब्रह्म) और मैं (जीवात्मा) आकाश के समान व्यापक ब्रह्म ही है।" इसका तात्पर्य यह है कि प्राणलोक के (आदित्य में) स्थित जीव स्वय को अनुभव करता है कि वहां पर स्थित ब्रह्म भी उसी के समान (निराकार एवं चेतना) है। यह आदित्य ही हिरण्यकोश (मस्तिष्क) है। इस लेख में पूर्व उद्धृत ऐतरेय उपनिषद के उपाख्यान से इस अर्थ की तुलना की जा सकती है। स्वामी जी ने स्वय 'आदित्य' का अर्थ ऋ० १। १४। ३ मन्त्र में 'द्वादशमासान्', किया है, 'नभ' शब्द का अर्थ 'आकाश' तथा 'परद्रव्यापहारी का हन्ता'; तथा "हरी" (द्विवचन) का अर्थ "शुक्ल कृष्ण पक्षों" एवं "गमन धारण गुणों" किया। अनेकार्थक शब्दों का वास्तविक अर्थ प्रकरण एवं सन्दर्भ के अनुसार किया जाता है और किया जाना चाहिये। स्वामी दयानन्द ने इस सम्बन्ध में जो उदाहरण दिया है वह इसको पूरी तरह स्पष्ट करता है। स्वामी जी ने सेवक से कहा "सैन्धवमानय"। ऐसी स्थिति में सेवक को यह सोचना पड़ा कि स्वामी किस स्थिति में है, क्या प्रसंग है। यदि स्वामी भोजन कर रहे हैं तो सैन्धव लवण लाना है, परन्तु यदि वे कहीं जाने को उद्यत है तो सैन्धव घोड़ा लाना चाहिये। अन्यथा करने वाला सेवक मूर्ख समझा जायेगा। मन्त्रों का अर्थ करने के लिये शास्त्री जी को स्वामीजी द्वारा प्रस्तुत उदाहरण मार्गदर्शन सिद्ध होगा।

शास्त्री जी की आलोचना में अनेक शब्दों पर आपत्ति की गई है, जैसे यक्ष का अर्थ परमात्मा होना चाहिये। परन्तु उनको यह नहीं मालूम कि परमात्मा के लिये जहां कहीं यक्ष शब्द का प्रयोग किया गया है वहां सर्वत्र महत् शब्द उसका विशेषण मिलेगा। विवाह के समय हृदय स्पर्श की विधि गृह्यसूत्रों द्वारा स्थापित परम्परा है, कोई सिद्धान्त नहीं। उसी परम्परा में अनेक विधियां ऐसी हैं जो प्रतीक रूप में अन्य प्रकार से अथवा मात्र दिशा-दर्शन से सम्पन्न होती हैं। दिन में विवाह के समय ध्रुव और अरुन्धती का दर्शन केवल आकाश की ओर दृष्टि डालने से ही सम्पन्न माना जाता है, इसी प्रकार रात्रि के विवाह में सूर्यदर्शन। हृदय स्पर्श की विधि भी इसी प्रकार है। इसे प्रमाण मानना भूल है।

इस विषय पर बहुत अधिक प्रमाणों सहित लिखा जा सकता है, परन्तु विस्तारभय से इस लेख को यहीं समाप्त किया जाता है। विश्वास है कि श्री राजवीर शास्त्री अब रक्त प्रक्षेपक हृदय और वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त हृदय शब्द का भेद समझ कर जीवात्मा का स्थान शरीर में कहां है यह निश्चय कर सकेंगे। एक सावधानी बरतने का मैं आग्रह करूंगा कि भविष्य में वे किसी भी विषय का गम्भीर अध्ययन किये बिना पण्डितम्मानी के विशेषण से अपने को विभूषित न करें और किसी उच्चकोटि के विद्वान् को नासमझ कहकर सम्बोधित करने का साहस न करें। अभी तो यह प्रतीत होता है कि शास्त्री जी "हल्दी की एक गांठ लेकर ही पंसारी बने हुए हैं।"

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० का वार्षिक निर्वाचन १९८७-८८ की कार्यवाही

दिनांक—१५-११-१९८७

स्थान —डी० ए० वी० ई० कालेज, पाण्डाल, लखनऊ

समय प्रात —११ बजे, दिन रविवार

अध्यक्षता—श्री प० इन्द्रराज जी सभा प्रधान, आर्य समाज बुढाना गेट, मेरठ शहर।

(१) उपस्थिति—पृथक हस्ताक्षर पत्रिका पर प्रवेश-पत्र प्राप्त, उपस्थिति प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर लिए गये, जिनकी सख्या, ९२० पञीकृत प्रतिनिधियो में ६०५ उपस्थिति घोषित की गई।

(२) ईश-प्रार्थना—ईश्वर स्तुति प्राथना उपासना के वेद मन्त्रो के साथ सभा प्रधान प० इन्द्रराज जी ने प्रेम, सद्भावना और सर्व सम्मति से निर्वाचन करने की प्रतिनिधियो से अपील की।

(३) सभा के अधिकारियों एव अन्तरग सदस्यो का निर्वाचन—सभा प्रधान प० इन्द्रराज जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की नियमावली के आधार पर सभा का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न करने की घोषणा की। सर्व प्रथम प्रधान पद के लिए प्रत्याशियों के नाम आमन्त्रित किये।

१ प्रधान श्री धर्मेन्द्र सिंह जी ने सभा प्रधान पद हेतु प० इन्द्रराज जी का नाम प्रस्तावित किया, श्रीमती सन्तोष कपूर ने उनका समथन किया, अन्य कोई नाम नही आया, और सर्व सम्मति से प० इन्द्रराज को प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया।

४, उप प्रधान सर्वश्री यशपाल आर्य ने, (१) श्रीमती सन्तोष कपूर (२) धमन्द्र सिंह आर्य, (३) सच्चिदानन्द शास्त्री (४) आचार्य विशुद्धानन्द जी का नाम प्रस्तुत किया। अन्य कोई नाम प्रस्तुत नही हुआ। इन चारो नामो का श्री जयनारायण अरुण जी ने समथन किया और सर्वसम्मति से उपरोक्त चारो प्रत्याशी चार उप प्रधान घोषित हुए।

१, मन्त्री श्री इन्द्रराज जी ने मन्त्री पद हेतु श्री मनमोहन तिवारी का नाम प्रस्तुत किया और श्री धर्मेन्द्र सिंह एव श्री यशपाल जी ने उनके नाम का समर्थन किया, और कोई नाम प्रस्तुत नही हुआ। अत सर्व सम्मति से श्री मनमोहन तिवारी का नाम मन्त्री पद हेतु निर्वाचित घोषित हुआ।

४, उपमन्त्री श्री मनमोहन तिवारी निर्वाचित मन्त्री ने (१) श्री जयनारायण अरुण, डा० विनयप्रताप, श्रीचन्द गौड तथा श्री वीरेन्द्रपाल आय का नाम उपमन्त्री पद हेतु प्रस्तुत किया। श्री आचार्य विशुद्धानन्द जी ने इन चारो नामो का समथन किया, अन्य कोई नाम प्रस्तुत नही हुआ। अत सर्वसम्मति से उपरोक्त चारों प्रत्याशी, उपमन्त्री निर्वाचित घोषित हुए।

१, कोषाध्यक्ष श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने कोषाध्यक्ष पद हेतु श्री यशपाल आर्य का नाम प्रस्तुत किया, श्री आदित्य नारायण मिश्रा ने प्रस्तावित नाम का समर्थन किया, अन्य कोई नाम प्रस्तुत नही हुआ, अत सर्वसम्मति से श्री यशपाल आर्य कोषाध्यक्षपद हेतु निर्वाचित हुए।

१, सहायक कोषाध्यक्ष श्री यशपाल आय ने सहायक कोषाध्यक्ष पद हेतु श्री चन्द्रकिरन शर्मा का नाम प्रस्तावित किया, श्री वीरेन्द्र आर्य ने इस प्रस्तावित नाम का समर्थन किया, अन्य कोई नाम प्रस्तुत नही हुआ। अत सर्व सम्मति से श्री चन्द्रकिरन शर्मा सहायक कोषाध्यक्ष पद हेतु निर्वाचित घोषित हुए।

१, पुस्तकाध्यक्ष श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी पुस्तकाध्यक्ष के पद के लिए श्री विजयपाल शास्त्री का नाम प्रस्तुत किया, श्री धर्मेन्द्रसिंह जी ने इस प्रस्तावित नाम का समथन किया, अन्य कोई नाम प्रस्तुत नही हुआ। अत सर्व सम्मति से श्री विजयपाल शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष घोषित हुए।

१, सहायक पुस्तकाध्यक्ष श्री विनयप्रताप जी ने सहायक पुस्तकाध्यक्ष पद हेतु श्री वीरेन्द्र आर्य का नाम प्रस्तुत किया। श्री वीरेन्द्रपाल जी ने इस नाम का समथन किया, अन्य कोई नाम प्रस्तुत नही हुआ, अत सर्वसम्मति से श्री वीरेन्द्र आर्य सहायक पुस्तकाध्यक्ष निर्वाचित घोषित हुए।

१, आय-व्यय निरीक्षक श्री विजयपाल शास्त्री ने आय-व्यय निरीक्षक के पद के लिए श्री रोशनलाल आर्य का नाम प्रस्तुत किया। श्री चन्द्रकिरण शर्मा ने इस नाम का समर्थन किया। अन्य कोई नाम प्रस्तुत नही हुआ। अत सर्वसम्मति से आय व्यय निरीक्षक पद के लिए श्री प्रि० रोशनलाल जी का नाम निर्वाचित घोषित हुआ।

अन्तरग सदस्य सभा अध्यक्ष जी ने नियमानुसार अन्तरग सदस्यो के निर्वाचन की घोषणा की और निर्वाचन हेतु समस्त जिलो के उपस्थित प्रतिनिधियो को चयन परि पत्र वितरित किये। जिसके आधार पर बहुमत से निम्नलिखित अतरग सदस्य निर्वाचित घोषित किये गये।

चयपत्रों के अनुसार घोषित अतरगसदस्यो की सूची इस प्रकार है—

क०स० जिला	नाम
१—मेरठ	श्री धमपाल सिंह आर्य
२—फर्रुखाबाद	,, सच्चिदानन्द वानप्रस्थी
३—देहरादून	,, शम्भूदयाल
४—हमीरपुर	,, सुन्दरलाल आर्य
५—झांसी	,, महेश श्रीवास्तव
६—मथुरा	,, डा० राजेन्द्र सिंह स्नातक
७—मिर्जापुर	,, जेयनसिंह
८—नैनीताल	,, लाकेलाल
९—जौनपुर	,, रत्नाकर
१०—लखनऊ	,, अर्जुनदेव महात्मा
११—कानपुर महानगर	,, डा० आशा रानी आर्य
१२—कानपुर देहात	,, गया प्रसाद शास्त्री
१३—पीलीभीत	,, डा० ओंकार स्वरूप तिवारी
१४—इटावा	,, वेदप्रकाश आर्य
१५—बुलन्दशहर	,, कुशलपाल सिंह
१६—बहराइच	,, गोविन्दराम आर्य
१७—गाजियाबाद	,, डा० विजयभूषण आर्य
१८—आजमगढ	,, गोविन्दराम
१९—बरेली	,, ओमप्रकाश आर्य
२०—गोरखपुर	, सुरेशचन्द्र वेदालकार
२१—उन्नाव	,, विमलकुमार, एडवोकेट
२२—अलीगढ	,, डा० रघुवीर शास्त्री
२३—बलिया	,, सुदशन सिंह
२४—बस्ती	,, स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती
२५—सहारनपुर	,, प्रकाशचन्द्र
२६—गाजीपुर	,, जयकृष्ण आर्य
२७—देवरिया	,, कृष्ण धर्मालकार
२८—वाराणसी	,, डा० आनन्द प्रकाश
२९—फतेहपुर	,, रूपकिशोर अग्रवाल
३०—एटा	,, वागीश शर्मा
३१—मुरादाबाद	, विक्रमसिंह
३२—शाहजहांपुर	,, राजेन्द्र शर्मा
३३—रामपुर	श्री जयदेव सिंह आर्य
३४—मुजफ्फरनगर	,, देवपाल आर्य
३५—आगरा	,, हरपाल सिंह चौहान
३६—मैनपुरी	,, रामप्रकाश
३७—कोटद्वार	,, शमशेर सिंह
३८—सुल्तानपुर	,, ज्वलन्तकुमार शास्त्री
३९—बदायू	,, नरेन्द्रप्रकाश आर्य
४०—बाराबकी	,, माता प्रसाद त्रिपाठी
४१—बिजनौर	, आदित्य नारायण मिश्र
४२—जालौन	,, लक्ष्मीचन्द्र
४३—इलाहाबाद	,, बजान सिंह
४४—प्रतापगढ	,, अजित किशोर कपूर
४५—लखीमपुर खीरी	,, ओमप्रकाश आय
४६—अल्मोडा	,, जयदत्त उप्रेती
४७—हरदोई	,, डा० भगवती प्रसाद
४८—गोण्डा	,, जगदीश प्रसाद एडवोकेट

(शेष पृष्ठ १० पर)

केरल में वैदिक संस्कृति के प्रचारक विद्वान का अभिनन्दन

पानीपत १० नवम्बर। स्थानीय आर्य समाज बड़ा बाजार पिछले दस वर्षों से वार्षिकोत्सव के अवसर पर एक आर्य वैदिक विद्वान को नकद राशि शाल व वैदिक पुस्तकें भेंट कर सम्मानित व पुरस्कृत कर रहा है। इस बार आचार्य नरेन्द्र भूषण केरल निवासी को सम्मानित किया गया। श्री भूषण ने आर्य ग्रन्थो का ज्ञान हरियाणा से ही प्राप्त किया। वैदिक धर्म की दीक्षा लेने से पूर्व श्री भूषण मांस, सिगरेट आदि का सेवन किया करते थे, परन्तु अब वे इन समस्त दुर्व्यसनों का परित्याग कर चुके हैं।

अभिनन्दन के समय बताया गया कि केरल मे साम्प्रदायिक लोगों द्वारा उन पर तीन बार प्राण घातक हमले किये गये, परन्तु भूषण जी वैदिक प्रचार में लगे रहे तथा आज भी केरल विश्व विद्यालय की उपाधि व समस्त प्रमाण पत्रों को जलाकर रात दिन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में जुटे हैं।

आचार्य नरेन्द्र भूषण का अनेक भाषाओं पर पूर्ण अधिकार है। संस्कृत हिन्दी, मलयालम, अंग्रेजी, तमिल, तेलगू व कन्नड आदि भाषाओं मे वे ऋषि दयानन्द के सिद्धातो का प्रचार कर रहे हैं। केरल सरकार द्वारा भी उन्हें 'साहित्य पुरस्कार' दिया गया। यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले वे केरल के सबसे छोटी आयु के विद्वान हैं।

श्री भूषण ने ऋषि दयानन्द के हिन्दी ग्रन्थो का दक्षिण भारतीय भाषाओ में अनुवाद करने का एक कीर्तिमान स्थापित किया है। पत्रकारिता के क्षेत्र मे भी केरल निवासी उन्हें पत्रकार शिरोमणि कहकर सबोधित किया करते थे। आजकल भूषण जी 'आर्यनादम' साप्ताहिक पत्रिका निकाल रहे हैं।

अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता कर रहे स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने आर्य समाज बड़ा बाजार द्वारा आर्य विद्वानों को सम्मानित करने की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि जब से आर्यसमाज ने शास्त्रार्थ व खंडन का काय बन्द किया है, तब से देश में अंधविश्वास बढ़ता जा रहा है।

आर्य समाज बड़ा बाजार के प्रधान रामानन्द सिंगला ने आचार्य नरेन्द्र देव को १५ सौ रुपये की थैली पुस्तकें व अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

जलाना या सती होना

(पृष्ठ ४ का शेष)

उस लड़के को पहले से अधिक दहेज दिया जाता है। यह है वह लोग जिन्हें वास्तव मे ही फांसी पर लटकाना चाहिए परन्तु कोई नही लटकाता। वह पूर्ववत अपने समाज में दनदनाते फिरते हैं।

रूप कंवर के सती कांड पर कई बड़े-बड़े नेताओ ने बयान दिए हैं। कुछेक ने इसे पाशविक कुकर्म कहा है। सोचता हूँ कि यह लोग उस समय मौन क्यों हो जाते हैं जब कई विवाहित लड़कियों पर तेल डालकर जला दिया जाता है। उनमे से कुछेक के घर में उसी का बच्चा होता है जो उस लड़की को जलाने की योजना बनाता है।

वास्तविकता यह है कि आज हमारा समाज एक ऐसे चौराहे पर खड़ा है जहा हम अपनी प्राचीन परम्पराओं को छोड़ कर नई परम्पराओ को ग्रहण कर रहे हैं और हमें यह पता नहीं चलता कि हम किधर जाए। सती की परम्परा हमारी प्राचीन संस्कृति में न थी। यह तो विगत पाच-सात सौ वर्षों से प्रारम्भ हुई है। परन्तु पति भक्ति या पति परमेश्वर का दृष्टिकोण तो बहुत पुराना है। आज यदि पुराने युग की पत्नी नहीं मिलती तो पति भी नही मिलता। इसलिए पति परमेश्वर का दृष्टिकोण आज तो सही चल सकता। इसके यह अर्थ नही कि मनुष्य पशु बन जाए और किसी लड़की को केवल इसीलिए जला दिया जाए क्योंकि उसके माता-पिता पर्याप्त दहेज नही दे सके। पुराने युग मे शादी होती थी लड़के के गुणो को देख कर। यह ही कारण था कि उस समय स्वयंवर हुआ करता था। आज शादी दहेज के साथ होती है इसलिए लड़की का कोई मूल्य नही पड़ता और उस गरीब को जला दिया जाता है। यह कितना बड़ा पाप है? फिर भी न हमारा समाज इसके विरुद्ध आवाज उठाता है न हमारे नेता।

वैदिक मिशनरी गुरुकुल वेदमन्दिर, मथुरा

वैदिक मिशनरी गुरुकुल का शुभारम्भ ११ जुलाई ८७ (गुरु पूर्णिमा) को हुआ। इस गुरुकुल का मुख्य उद्देश्य मिशनरी भावना वाले जीवनदानी एव समयदानी ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है, जो अपने जीवन समर्पण की भावना को देश, समाज एव आर्य (हिन्दू) जाति के उत्थान के लिए लगायेंगे, इस कार्य में ऐसे प्रौढ व्यक्तियों को भी दीक्षित करने की योजना है, जिनके अन्दर मिशनरी भावना हो।

वर्तमान में प्रौढ वैदिक मिशनरियो के अलावा ८ नवयुवक एव बाल-विद्यार्थी इस गुरुकुल मे अध्ययनरत हैं। एक सन्यासी व एक आचार्य इनको प्रशिक्षण दे रहे हैं, इस कार्य के लिए और भी विद्वानो को नियुक्त करने की योजना है।

देश को ऐसी भयावह स्थिति मे हिन्दू समाज और महान भारत राष्ट्र की रक्षार्थ आर्य जनों के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि सैकड़ों और हजारो साधनाशील समर्पित जीवन आगे आयें, प्रशिक्षण प्राप्त करें और योजनाबद्ध रूप मे अपना समस्त जीवन राष्ट्र रक्षार्थ लगा दें। इन प्रशिक्षणोपरान्त समर्पित जीवनो को पूर्ण आर्थिक निश्चिन्तता सम्मान तथा रुचि अनुकूल कार्य क्षेत्र दिया जावे।

—आचार्य प्रेमभिक्षु

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन

(पृष्ठ ६ का शेष)

कुछ जनपदों का तत्काल प्रतिनिधित्व न होने के कारण सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि उनके स्थान की पूर्ति आगामी अन्तरंग सभा की बैठक में कर ली जाय।

प्रधान जी ने सूचित किया कि इस वर्ष १५ प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा के लिए भी निर्वाचित होने हैं, श्री सच्चिदानन्द जी ने निम्न १५ नाम प्रस्तुत किये, श्री वरुण जी ने इन नामों का समर्थन किया, प्रस्तुत नाम इस प्रकार हैं —

(१) श्री प० इन्द्रराज, मेरठ	(९) श्री कैलाश सोनी, मेरठ
(२) प० मनमोहन तिवारी, लखनऊ	(१०) „ वीरेन्द्र आर्य, अमरोहा
(३) श्री जयनारायण अरुण, बिजनौर	(११) „ आचार्य विशुद्धानन्द, बदायू
(४) श्रीमती सन्तोष कपूर, मिरजापुर	(१२) „ प्रि० रोशनलाल, आगरा
(५) श्री यशपाल आर्य, देहरादून	(१३) „ निरुपणजी विद्यालंकार, मेरठ
(६) „ सच्चिदानन्द शास्त्री, हरदोई	(१४) „ माधवसिंह जी, मेरठ
(७) „ लक्ष्मीचन्द्र आर्य, दिल्ली	(१५) श्रीमती आशारानी राय, अलीगढ़
(८) श्री शिवकुमार शास्त्री, दिल्ली	

अन्य कोई नाम प्रस्तुत नही हुआ, अत सर्वसम्मति से उपरोक्त १५ नाम निर्वाचित घोषित हुए।

विद्यार्य सभा (रिक्त स्थानो की पूर्ति) सर्वश्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री, माधवसिंह व लक्ष्मणकुमार के विद्यार्य सभा में इस वर्ष चार स्थान रिक्त हैं। विद्यार्य सभा के लिए श्री इन्द्रराज जी ने इनके स्थान पर अन्य ४ नाम प्रस्तावित किए, अन्य कोई नाम नहीं आया, विचार-विमर्श के उपरान्त सर्वसम्मति से (१) श्री माधवसिंह (२) श्री लक्ष्मणकुमार शास्त्री (३) डा० मनाराम अलीगढ, (४) ज्वलन्तकुमार शास्त्री, अमेठी सुल्तानपुर उपरोक्त चारों नाम प्रादेशिक विद्यार्य सभा के लिए निर्वाचित घोषित किए गए।

प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने धन्यवाद प्रस्तुत किया और सभी पदों पर सर्वसम्मति से सद्भावना पूर्वक निर्वाचन करने हेतु सदन का धन्यवाद किया।

शान्ति पाठ के उपरान्त निर्वाचन की कार्यवाही निर्विरोध समाप्त घोषित की गई।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ



म०प्र०के आदिवासी झाबुआ जिले मे ग्राम सूगापुरा मे ६ आदिवासी ग्रामो के सुखा पीडित लोगो को श्रीमती प्रमलता शास्त्री रानीबाग दिल्ली द्वारा अनाज वितरण करते हुए, पास खड श्री पृथ्वीराज शास्त्री, श्री भगवत इच्छु वानप्रस्थी पानीपत के श्री मुकन्ददास जी वानप्रस्थी जोधपुर निवासी श्री रामकृष्ण बजाज सचिव महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थादला श्री जगमोहन जी गुप्ता आर्यसमाज रानी बाग दिल्ली।



आर्यसमाज तिलहर स्थापना शताब्दी समारोह पर राष्ट्ररक्षा सम्मेलन मे अध्यक्षीय भाषण देतेहुए स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली बैठ मे दाये से सर्वश्री विश्वश्रवा व्यास बरेली, डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, श्री बालदिवाकर हस प्रधान सचालक आर्य वीर दल, श्री विश्वपाल जयन्त आधुनिक भीम" स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती तथा श्री सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली।



महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला (झाबुआ) म०प्र० पर सुखा ग्रस्त ७ गावो के आदिवासियो को अनाज वितरण करतेहुए श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री महामन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रमसघ दिल्ली उनके क्षेत्र के दौरे के समय दिनाक ७ ११ ८१ मे १० ७ ८७ तक पास खडे हैं श्री मुकन्ददास जी वानप्रस्थी जोधपुर निवासी श्री भवरसिह आर्य छात्रावास अधीक्षक महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थादला।

कसाइयो से गायो की मुक्ति

(पृष्ठ १ का शेष)

भूमि खून से लहुलुहान थी पुलिस ने ककाल को सील कर दिया व परीक्षण हेतु भेज दिया गया। एक बार स्थिति बहुत विस्फोटक होन लगी तो पुलिस को फायर करना पडा। कुछ अन्य अभियुक्तो की तलाश की जा रही है। थाने मे रिपोट पशु क्रूरता अधिनियम के अन्तगत कराई गई है। बताया जाता है कि यह घिनौना व्यापार काफी दिनो से निर्बाध गति से चल रहा था।

आर्यसमाज द्वारा आन्दोलन की धमकी

आर्यसमाज के प्रधान श्री वीरेन्द्र राणा ने एक प्रेस विज्ञप्ति मे कहा कि बागपत मे एक अर्से से चली आ रही गायो के इस अनैतिक व्यापार व तस्करी पर प्रतिबन्ध नही लगाया गया तो आर्यसमाज आन्दोलन चलाएगा।

आर्य समाज द्वारा १०१ सन्यासियों एवं समाज सेवियों को दिल्ली से देवराला तक ५ दिसम्बर से "पद यात्रा"

धर्म, परम्परा और सामाजिक मर्यादा के नाम पर सदियो से स्त्री जाति पर अत्याचार किये आते रहे हैं। उसे दासी भोगवस्तु नरक का द्वार और पैरो की जूती बना कर रखा गया। आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सबसे पहले परमात्मा की अमरवाणी वेद को आधार बना कर इस अन्याय के विरुद्ध सघर्ष का बिगुल बजाया।

लेकिन आज भी अनगिनत बहुए दहेजखोरो द्वारा जिन्दा जलाई जा रही हैं। पुत्री का जन्म मा बाप के लिए इतना बडा बोझ है कि गर्भस्थ शिशु परीक्षण करा कर बालिकाओ की जन्म से पहले ही हत्यायें की जाती है। पिछड इलाको मे डायन का लाछन लगाकर स्त्री हत्यायें होती हैं। गुडियो से खेलने की उम्र की हजारो बच्चिया जबरदस्ती डोली में चढा दी जाती हैं।

धन कमाने की होड मे लगे लोगों द्वारा सिनेमा के पदो विज्ञापनो, पोस्टरो आदि पर हमारी ही बहिन बेटियो को नगा करके दिखाया जा रहा है।

आज का वीभत्स काण्ड

इससे भी ज्यादा शर्मनाक और वीभत्स दिवराला का विधवा दहन का काण्ड है। प्राण बचाने के लिए भागती छपती ससुराल वालो के कदमो मे लिपटकर गिडगिडाती १८ साल की रूप कुवर को पति के मृत शरीर के साथ जिन्दा जला दिया गया। जलती चिता से भागने के लिए पिता जी 'पिता जी मैया मैया के नाम से की गई उसकी चीख पुकार 'सती मैया की जय के शोर मे दबा दी गई। इससे भी बडी विडम्बना यह कि कुछ धर्म के स्वयभू ठकेदार इसे धर्म सम्मत और शास्त्र सम्मत बता रहे है।

वेद एव उपनिषदो की गौरव गरिमा को अपना अक्षुण्ण धरोहर मानने वाले हम सबके लिये इससे बढकर अवैदिक और अनार्य चनौती क्या हो सकती है ? और कोई चुप बैठ तो बैठ पर देव दयानन्द के सैनिक चप्पी को तोडकर चुनोती स्वीकार करने आगे आ रहे हैं।

५ दिसम्बर को आर्य समाज दीवान हाल से श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा यात्रा आरम्भ का आह्वान होगा जो ४३ को सुबह देवराला मे पहुचेगी।

रजि० न० डा० (डी०) १७४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (६-१२-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाईसंस न० U ६१
R N 626/57 Licensed to post without prepay ment Licence No. U 93 Post in D.P.S.O on 4 12 1987

दयानन्द कालेज ट्रस्ट की स्थापना

आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर के अन्तर्गत संचालित दयानन्द कालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं की अचल सम्पत्ति की सुरक्षा हेतु "दयानन्द कालेज ट्रस्ट" की स्थापना की गई है। ट्रस्टी सर्व सम्मति से नामजद किए गए हैं। जिसमें न्यायमूर्ति श्री डी० डी० बेरी, डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेटी, दिल्ली के प्रधान प्रो० वेदव्यास व मन्त्री श्री दरबारीलाल, श्री दत्तात्रेय वाब्ले, श्री रामसिंह कैप्टन देवरत्न आर्य (बम्बई) श्री मेजर प्रभाकर वाब्ले श्री के साथ शामिल हैं।

रविवार १ नवम्बर को हुई ट्रस्ट की प्रथम बैठक में आर्य समाज शिक्षा सभा सम्पत्ति की सूची प्रस्तुत की गई। जिसमें लगभग चार करोड़ के छोटे-मोटे भवन हैं। बैठक में इन सभी का रख रखाव नक्शा व रजिस्टर सुव्यवस्थित रखने का निश्चय किया गया।

आर्य समाज सिंगापुर

आर्य समाज सिंगापुर का ६०वां वार्षिकोत्सव २६ व २७ दिसम्बर १९८७ को ११ /११४ सैयद अलवी रोड सिंगापुर आर्य समाज मन्दिर में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वानों के प्रोग्राम होंगे। सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वे इस महोत्सव में भाग लें। विस्तृत विवरण के लिए सम्पर्क करें।

—ओमप्रकाश [illegible]
आर्य समाज सिंगापुर

पं० धर्मदेव विद्यालंकार वानप्रस्थी बने

गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक एवं पूर्व मुख्याधिष्ठाता पं० धर्मदेव विद्यालंकार जो आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान हैं विधिवत् वानप्रस्थ आश्रम में दीक्षित हैं।

[illegible]

२५ अक्टूबर रात्रि समारोह

सतोष वैद, स्वर्ण शर्मा, कमला मिश्रा,
नीरा मार्कण्डेय, मीनाक्षी दोषक, सन्तोष शर्मा [illegible]
किए। बम्बई से विशेषतया पधारी श्रीमती बहुदेश [illegible] को भी अनुभव मोटा कि सहयोगिनी हैं ने सभी का मन मोह लिया।

२६ अक्टूबर को यज्ञ डा० श्रुतिशील के अध्यक्षता में हुआ। डा० सुरेश भारद्वाज ने अपने सारगर्भित ओजस्वी भाषण से सभी को भाव विभोर कर दिया। इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र भारद्वाज ने १०००० पौण्ड आर्य समाज को दान दिया।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

राष्ट्र देवो भव

राष्ट्र को देवता मानो

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

[illegible]

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८]
वर्ष २२ अंक ५०]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
पौष कृ० ८ सं० २०४४ रविवार १३ दिसम्बर १९८७

दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३२४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ५० पैसे

देश रक्षा के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य हो

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

महर्षि दयानन्द के मार्ग से ही राष्ट्रीय एकता : केसरी

वेदामृत

अशुभ लक्ष्मी से सदा बचें

या मा लक्ष्मी' पतयालूरजुष्टा-
अभिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम्।
अन्यत्रास्मत् सवितस्तामितो धा
हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः॥
अथर्व० ७।११५।२॥

हिन्दी अर्थ—जो पतन की ओर ले जाने वाली, निन्दनीय लक्ष्मी मुझ पर चढ गई है जैसे आकाशबेल किसी वृक्ष पर। हे संसार के प्रेरक परमात्मन् ! तुम्हारे हाथो मे सुवर्ण (ऐश्वर्य) है, तुम हमे ऐश्वर्य प्रदान करते हुए, उस दुष्ट लक्ष्मी को हमसे हटाकर यहा से अन्यत्र रखो।

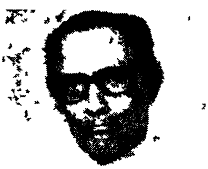
—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

तृतीय आर्य युवा सम्मेलन सम्पन्न

नई दिल्ली, ६ दिसम्बर। स्वामी दयानन्द ने न केवल स्वाधीनता का बिगुल बजाया था, अपितु सती प्रथा बाल विवाह, जैसी अनेक सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध भी सघर्ष छेडा था और उन्ही के मार्ग पर चलकर आज हम राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को सुदृढ कर सकते हैं। ये उदगार पूर्व केन्द्रीयमन्त्री श्री सीताराम केसरी ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ताल कटोरा स्टेडियम मे आयोजित तृतीय आर्य युवा महासम्मेलन के समापन अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओ के २०० विजयी छात्र-छात्राओ को पुरस्कार वितरण करते हुए व्यक्त किए।


स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

विजयी छात्र-छात्राओ ने अपने अदभुत व प्रेरक शारीरिक प्रदशन से जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। अनेक स्थानो पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओ का आज समापन समारोह हुआ।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि देश जिन विकट परिस्थितियो से गुजर रहा है उसे देखते हुए सैनिक शिक्षा अनिवार्य की जानी चाहिए प्रधान सूर्यदेव ने संस्था की गतिविधियो का परिचय देते हुए कहा कि आज युवा वर्ग दिशाहीन हो रहा है स्वामी दीक्षानन्द, श्रीमती सरला मेहता डा०धर्मपाल आर्य आदि ने भी बच्चो का मार्गदर्शन किया। कार्यकारी पार्षद श्री कुलानन्द भारतीय ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध जो सघर्ष छेडा था, उसके सम्बन्ध मे बच्चा को शिक्षण देने की बहुत आवश्यकता है।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी द्वारा आर्य युवा महासम्मेलन की सफलता के लिए भेजी गई शुभकामनाए भी पढ कर सुनाई गई।

दिवराला को पदयात्रा शुरू

नई दिल्ली ५ दिसम्बर। आर्यसमाज दीवानहाल मे हवन यज्ञ व उदबोधन के बाद १०१ सन्यासियो व समाज सेवियो का जत्था दिल्ली से दिवराला तक पद यात्रा पर प्रस्थान कर गया। उनके प्रस्थान करने से पूर्व उपस्थित जनसमूह को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, स्वामी सत्यप्रकाश, स्वामी दीक्षानन्द, माता प्रेमायति और नैरोबी आर्यसमाज के प्रधान श्री [illegible]देव भारद्वाज ने सम्बोधित किया। आर्यसमाज द्वारा स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे आयोजित इस पद यात्रा का उददेश्य नारी उत्पीडन के खिलाफ जनजागरण करना है रास्ते मे आने वाले पडावो—गुडगावा, मानेसर, धारुहेडा, रेवाडी सुठाणा, शाहजहापुर और जयपुर मे यह जत्था जन सभाओ मे व्याख्यानो समूह, गीतो, भजनो, नुक्कड, नाटका, सलाईड शो और पोस्टर, प्रदर्शनियो के माध्यम से जन-जागरण करेगा। यात्रा पर रवाना होने से पूर्व स्वामी अग्निवेश ने स्पष्ट किया कि इस पदयात्रा का उददेश्य सती प्रथा के खिलाफ जन जागरण के साथ ही दहेज प्रथा बाल-विवाह हत्या और कौमार्य परीक्षण के खिलाफ भी जनता को जागृत करना है।

हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रहियों की पेंशन सूची

जिनके नाम भारत सरकार द्वारा प्रान्तीय सरकारों में स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन के लिए विचारार्थ भेज दिए गए हैं।

(१) श्री परमानन्द पुत्र मगनलाल निवासी २६६ नवजीरी रोड बुरहानपुर खानदेश, मध्यप्रदेश ४५०३३१

(२) श्री उमाकान्त शास्त्री [पुत्र गोकुल प्रसाद रामलाल निवासी जमालपुर गोगरी जिला खगड़िया (बिहार)

(३) श्रीमती भागीरथी बाई पत्नी हरिकान्त राजेसकर निवासी गु बोटी ताल्लुका उमेरगाव जिला उस्मानाबाद

(४) श्रीमती चान्दकौर पत्नी टेकचन्द गांव कासन्डा तहसील गोहाना जिला सोनीपत (हरियाणा)

(५) श्रीमती सोनादेवी पत्नी सुगनचन्द, मकान न० १८, वार्ड ५, गली बेना रसिया, पोस्ट पानीपत जिला रोहतक (हरियाणा)

(६) श्री [illegible] पुत्र [illegible] निवासी [illegible], तहसील कैथल जिला जींद (हरियाणा)

(७) श्री [illegible] पुत्र [illegible] ग्राम पोस्ट [illegible] तहसील व जिला जींद (हरियाणा)

(८) श्री [illegible] स्वामी [illegible] ग्राम पोस्ट [illegible] तहसील कोसली जिला रोहतक (हरियाणा)

(९) श्रीमती [illegible] पत्नी [illegible] २३ [illegible] टाउन सोनीपत (हरियाणा)

(१०) श्री शेरसिंह खेरा पुत्र सुमराम गाव पोस्ट बांडा खेरी जिला हिसार (हरियाणा)

(११) श्री [illegible] पुत्र [illegible] गाव उमरा तहसील हांसी जिला हिसार हरियाणा

(१२) श्री [illegible] पुत्र [illegible] गांव [illegible] तहसील पानीपत जिला करनाल (हरियाणा)

(१३) श्री [illegible] पुत्र [illegible] गांव पोस्ट बड़ी मकडोली जिला रोहतक (हरियाणा)

(१४) श्रीमती [illegible] पत्नी हीरासिंह गाव पोस्ट उमरा तहसील हांसी जिला हिसार

(१५) श्रीमती पावती देवी पत्नी मनफूलसिंह ग्राम पोस्ट भापरोदा जिला रोहतक (हरियाणा)

(१६) श्री मनफूलसिंह पुत्र [illegible] गांव व पो० सुताना तहसील पानीपत जिला करनाल (हरियाणा)

(१७) श्री मोबीराम पुत्र जमना ग्राम पो० पखापुर जिला रोहतक (हरियाणा)

(१८) श्री बलदेव सिंह पुत्र हीरासिंह, ग्राम पो० सिदीपुरलिया तहसील बहादुरगढ जिला रोहतक (हरियाणा)

(१९) श्रीमती गौरी पत्नी [illegible] ग्राम पोस्ट सुटाना तहसील पानीपत जिला करनाल (हरियाणा)

(२०) श्री हाथीराम पुत्र मेहरचन्द ग्राम छोटा बाना पोस्ट बाना कला जिला सोनीपत

(२१) श्री भीमसिंह पुत्र कन्हैयासिंह ग्राम पोस्ट बूटाना तह० गोहाना जिला सोनीपत (हरियाणा)

(२२) श्री ओमप्रकाश छत्तरसिंह पुत्र [illegible] पोस्ट मिरचपुर तहसील हांसी जिला हिसार (हरियाणा)

(२३) श्री रामरूप पुत्र सोहबत ग्राम पो० छोड़ा तहसील बहादुर गढ जिला रोहतक (हरियाणा)

(२४) श्री [illegible] पुत्र सुजान तहसील गांव बहादुरगढ़ जिला रोहतक (हरि०)

(२५) श्री [illegible] पुत्र बखतावर सिंह ग्राम घुमपट्टी कोटक जिला कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

(२६) श्रीमती [illegible] पत्नी [illegible] गांव पोस्ट भापरोदा तहसील बहादुरगढ़ जिला रोहतक (हरियाणा)

(२७) श्री [illegible] पुत्र [illegible] प्रिंसिपल आयुर्वेदिक कालेज खानपुर जिला सोनीपत (हरियाणा)

(२८) श्री हरिसिंह डीगरा पुत्र लोढाराम वैदिक भक्ति आश्रम आर्य नगर जिला रोहतक (हरियाणा)

(२९) श्री रामसरूप पुत्र रामनाथ गाव पोस्ट रामराय जिला जींद (हरियाणा)

(३०) श्री [illegible] पुत्र इन्द्राज ग्राम पोस्ट छारा जिला जींद हरियाणा

(३१) श्री छोटूराम पुत्र रामानन्द ग्राम पोस्ट फरमाना जिला सोनीपत (हरियाणा)

(३२ श्री [illegible] भाटिया पुत्र हिम्मतलाल भाटिया १९७४ रामपुरा जिला हरियाणा

(३३) श्री जसवन्तराम पुत्र रायमलदास निकट खटीक मोहल्ला बहादुरगढ जिला रोहतक

(३४) श्री सीताराम पुत्र जीराम गाव पोस्ट मिरचपुर तहसील हांसी, जिला हिसार (हरियाणा)

(३५) श्री [illegible] पुत्र [illegible] [illegible] [illegible] जिला गाजीपुर (उ० प्र०)

(३६) श्री ज्ञानीराम पुत्र झज्जर सिंह गाव पोस्ट भापरोदा जिला रोहतक (हरियाणा)

(३७) श्री माधवसिंह [illegible] वर्मा पुत्र फूलाराम ग्राम पोस्ट [illegible] जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

(३८) श्री महासिंह वर्मा पुत्र जुगलाल ग्रा पो लाढोत जिला रोहतक (हरि)

(३९) श्री परमानन्द आर्य पुत्र श्री रतनराम आर्य, [illegible] सोनापट्टी भागपुर (बिहार)

(४०) श्री भरतसिंह पुत्र शीशराम दयानन्दमठ गोहाना रोड रोहतक (हरि०)

(४१) श्रीमती भोरादेवी पत्नी मनोहर ग्राम पो० [illegible] जिला रोहतक हरियाणा

(४२) श्री बनवारी लाल पुत्र शादी गाव पोस्ट मिलकपुर तहसील हांसी हिसार (हरियाणा)

(४३) श्रीमती शान्ति देवी पत्नी स्वर्गीय श्री जयदेव ग्राम पो० [illegible] जिला रोहतक (हरियाणा)

(४४) श्री रामचन्द्र पुत्र जयलाल गाव पोस्ट [illegible] जि० रोहतक (हरियाणा)

(४५) श्री लालचन्द पुत्र झज्जर गाव पोस्ट [illegible] जि० सोनीपत (हरियाणा)

(४६) श्री पुष्कर राव, पुत्र पोकरसिंह गाव पो० [illegible] तहसील हांसी जिला हिसार (हरियाणा)

(४७) श्रीमती रामदुलारी शुक्ला, पत्नी [illegible] [illegible] मस्जिद की मण्डी दौलत गज उज्जैन

(४८) श्री तरनीप्रसाद मिश्र पुत्र [illegible] मिश्रा गाव पो० [illegible] जिला मुंगेर (बिहार)

(४९) श्री भागीरथ ठाकुर पुत्र श्री गुरुप्रसाद ठाकुर [illegible] मुंगेर (बिहार)

(५०) श्री जगदीश चन्द्र पुत्र [illegible] १११/१ विश्वकर्मा कालोनी देहरादून (उ० प्र०)

(५१) श्री लालचन्द पुत्र नत्थू गाव पो० [illegible] जि० रोहतक (हरियाणा)

(५२) श्री देवराज पुत्र सुरसती गाव पो० [illegible] तहसील हांसी जिला हिसार

(५३) श्री खुशीराम पुत्र मूलचन्द जींद जिला जींद (हरियाणा)

आवश्यकता है

आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] प्रदेश, [illegible] के लिए [illegible] कलापूर्ण, योग्य तार्किक उपदेशक, प्रचारक एवं भजनोपदेशक की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त उसे वैदिक सिद्धान्तों का पूर्णज्ञान तथा [illegible] भाषा का ज्ञान होना अत्यन्तावश्यक है। जो महानुभाव इस सम्बन्ध में आवेदन पत्र देना चाहते हों तो उन्हें "कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] प्रदेश दयानन्द मार्ग सुल्तान [illegible] के पते पर ३० दिसम्बर १९८० से पूर्व भेज दें। [illegible] करें।

सम्पादकीय

सती काण्ड से भी घृणित नर-बलि प्रथा

दिवराला सती काण्ड ने भारत मे एक नई मानव चेतना को जन्म दिया था उसके विरोध के गडगडाते नगाडो मे कही मानव-बलि की मूल समस्या ही लुप्त न हो जाए इसलिए आज हम नर-बलि के इस घोर घृणित व अमानीय पहलू पर प्रकाश डालना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

मध्ययुगीन हिन्दू कर्मकाण्ड ने यज्ञो मे बलि के साथ ही नरबलि के ऐसे जघन्य अपराध स्थापित किए थे कि "गौतम बुद्ध" को न केवल यज्ञो के विरुद्ध ही आवाज उठाने का अवसर प्राप्त हुआ उन्होंने बलि द्वारा प्रसन्न हो जाने वाली देवीय सत्ताओ को भी धता बताया।

अभी भी नरबलि का यह जघन्य पाप भारत मे होताहै। पिछले पाच वर्षों में समाचार पत्रो मे देवो को प्रसन्न करने के निमित्त नर-बलि के ४५ समाचार प्रकाशित हुए हैं।

अभी ३० नवम्बर को मेरठ के पाछी गाव मे एक तात्रिक के बहकाने पर कि तुम यदि अपनी प्रिय वस्तु की बलि दोगे तो तुम्हे अतुलित वैभव की प्राप्ति हो जाएगी, दरिद्रावस्था मे जीवन काटते हुए महलो का सपना देखने वाले बाली व उसकी पत्नी जागरेशनी ने अपने सात वर्षीय पुत्र मुनीश की बलि काली माई की तात्रिक पूजा में चढा दी। पुलिस इन्सपैक्टर युद्धवीर सिंह ने उसके घर में घुसकर देखा कि मुनीश का कटा हुआ सर काली माता की मूर्ति के सामने थाली मे रखा है और उसके साथ दीपक जल रहाहै। मुनीश के बाबा की रिपोर्ट पर पुलिस हरकत मे आई परन्तु अपराधी फरार है। तात्रिक भी गायब है।

गत २ अक्तूबर को एक ऐसी ही घटना प्रेमनगर दिल्ली के एक मुस्लिम परिवार मे घटी, जहा एक मुस्लिम तात्रिक के बहकाने पर तावीज अली नामक एक मुस्लिम तान्त्रिक ने शकीला नामक एक मुस्लिम महिला को यह सलाह दी कि यदि वह किसी हिन्दुओं के पवित्र दिन किसी हिंदू कन्या का अपहरण कर उसे मुसलमान बनाकर उसकी बलि चढावे तो उसकी बेटी चमन को जिसका चार बार गर्भ गिर चुका है निश्चय ही सन्तान प्राप्त होगी। शकीला ने अपने एक किराएदार बाबूलाल की मदद से उसी बस्ती के व्यक्ति पालेराम की नातिन कविता का अपहरण करके उसकी हत्या कर दी व उसकी बची खुची लाश व पूजा का सामान पडोस की ही एक सीमेंट की नाद मे तैरती हुई मिली। जहा से पुलिस ने उसे बरामद किया।

तान्त्रिको का पहले समय के बदलते हालात से कुछ भय व आतंक के कारण अभाव हो चला था परन्तु अब तो समाचार पत्रो में यह समाचार आने लगे हैं कि बडे बडे मन्त्री व प्रधानमन्त्री भी इन तांत्रिको के कुचक्र में फसते जा रहे है। जैसा राजा वैसी प्रजा, महाजनो येन गता स पंथा राजा कालस्य कारणम्। यदि बडे लोग राजपुरुष ही इन घोर अन्धकार युगीन परम्पराओ से अपना पिण्ड नहीं छुडा पाए तो सामान्य प्रजा का क्या हाल होगा।

अन्धकार युग की नकल करते हुए हजरत इब्राहीम द्वारा अपने इस्माईल की जब बलि दी जाने लगी तो कहा जाता है कि अल्लाताला ने इसराईल को बचाने के लिए एक मेढा (भेडा) को उनके स्थान पर रख दिया। मुहम्मद साहब ने इस कहानी के आधार पर अपनी जमात को नरबलि से रोका था। गाय की बलि भी उन्होने यह कहकर रोकी थी कि "गाय का दूध दवाई है और गाय का मास रोगों का कारण है।" इसलिए न तो उन्होने ही, उनके किसी सहाबा ने अपने जीवन काल मे गाय की बलि दी। परन्तु हिन्दू तान्त्रिको की नकल करते हुए एक मुस्लिम तान्त्रिक ने नर-बलि का यह प्रयोग एक मुस्लिम महिला को सुझाया। जो इस्लाम धर्म की मान्यताओ के सर्वथा विरुद्ध था।

मानव समाज विशेषतया भारतीय अनपढ व अन्धकार ग्रस्त प्रजा को बहकाने वाले उन्हें पथभ्रष्ट करके अमानवीय कुकर्मों की प्रेरणा देने वाले तथाकथित धर्माचार्यों धर्मधुरन्धरो व तान्त्रिको की व उसी प्रकार मुसलमान पीरो फकीरो गन्ड तावीज करने वालो का एक बडा समुदाय देश मे कार्यरत है। मानवता के घोर शत्रु हैं इसमे दो राय नही।

आज आवश्यकता है कि देश के बुद्धिजीवी इन अमानवीय कृत्यो व पाखण्डो से मानवता की। रक्षा कैसे की जा सकती है इस पर विशद विवेचन करने के लिए सगोष्ठिया आयोजित करे, सेमीनार लगाए और एकबार पूरी शक्ति लगाकर मानव समाज को इन घोर अन्धकार युगीन परम्पराओसे मुक्ति दिलावे। सरकार सामान्य हत्या पर जब फासी का दण्ड विधान करती है तो इन तथाकथित हत्यारे तान्त्रिको से क्यो आखे बन्द करके बैठी है। क्या इसीलिए कि न जाने कब कोई तान्त्रिक इनके किसी मिनिस्टर को चुनावो मे विजय प्राप्त करा दे। क्या यह राज्य सत्ता की घोर अवैधानिक प्रणाली नही।

दिवराला सती काड की जघन्यता को ध्यान मे रखते हुए सरकार द्वारा जिस प्रकार मानवता के सरक्षण के लिए सती प्रथा विरोधी कानून बनाया जा सकता है तो क्या कोई आन्दोलन बुद्धिजीवियो द्वारा ऐसा क्यो नही चलाया जा सकता है। अन्धविश्वास, ढोंग पाखण्ड फैलाने वाले उसके द्वारा नर हत्याये कराने वाले व उन घोर घृणित प्रथाओ के नाम पर माल कमाने वाले अपराधियो को भी शूली पर चढाने वाला कानून पास किया जाए जिससे मानवता इन पापियो के कुचक्रों से बच सके।

ससार का कोई धर्म इस प्रकार के घृणित पापो के प्रचार प्रसार की आज्ञा नही देता। इस्लाम के मूल सिद्धान्तो के सर्वथा विपरीत हजारो की सख्या मुसलमान मुजाविर गन्ड तावीजो वाले व हिन्दू तान्त्रिको की भाति औलादे बाटने वाले लोग इस्लाम मे पनप रहे हैं। और हिन्दू जाति ने तो जैसे धर्म के नाम पर सर्वथा धर्म निरपेक्षता का लिबास पहन लिया है। इन्हे धर्म के नाम पर कोई भी किधर भी भटका बहका व पथभ्रष्ट कर सकताहै। न इन्हे यह पता कि इनके राम किस धर्म के अनुयायी थे न यह कि कृष्ण ने गीता मे किस धर्म का उपदेश दिया है। इनका तो धर्म ही खोजने से कोई पता नही लगता। तथाकथित धर्माचार्य हिन्दुओ को नितान्त अन्धकार मे रखे हुए हैं।

आर्यसमाज के प्रवर्तक देव दयानन्द ने हिन्दू समाज से बचाने के लिए हिन्दू जाति के सबसे प्राचीन धर्म ग्रन्थ ईश्वरीय वाणी वेद के नाम पर सगठित करना चाहा था। परन्तु गत सवासौ वर्ष में भी अभी हम इस महान् सगठन कार्य मे यथेष्ट सफलता प्राप्त नही कर पाए। आज भी देश मे ऐसे धर्माचार्य है जो प्रकाश के इस युग मे भी अन्धकार युगीन परम्पराओ को जिन्दा रखने के लिए प्रयत्नशील हैं। और हिन्दू धर्म के नाम पर मनमाने फतवे दे रहे हैं। धर्म ग्रन्थो से उनका कोई नाता नही रह गया है।

ऐसी विषम परिस्थितियो में हम देशभक्त मानव प्रेमी बुद्धिजीवियो से अपील करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं कि वे मानवता पर छाए इन दुष्ट ग्रहो से समाज की रक्षा करे।

कहने को देश २१वी शताब्दी की ओर ले जाया जा रहा है जब कि मानव समाज की बागडोर आज भी ८वी व १०वी शताब्दी के स्वार्थी व पथभ्रष्ट धर्म के ठेकेदारो ने सभाल रखी है। उन्होने प्रजा को अपने कुचक्रों मे ऐसा फसा रखा है कि बुद्धिवाद व मानव हितैषी कोई भी सुधारवादी आन्दोलन सफलता के शिखर तक नहीं पहुंच पाता। बुद्धि जीवी आगे आए व अपना कर्त्तव्य पालन करे।

अन्ध विश्वास का वीभत्सरूप

— श्री के० नरेन्द्र प्रताप दिल्ली —

संसार का कोई देश नहीं जहां आपको ऐसे लोग न मिल जावें जो अन्ध विश्वास मे ऐसी ऐसी बात कर जावें कि पढ़कर लज्जा अनुभव हो, जब दूसरे यह करते है तो लोगो के दिमाग पर बोझ पड़ता है परन्तु जब अपने करते हैं तो लज्जा से सिर झुक जाता है। प्राय कहा जाता है कि अनपढ़ लोग अन्ध विश्वास में ग्रस्त होते हैं। परन्तु मैं समझता हूं यह भोले अनपढ़ ग्रामीणो के प्रति अन्याय है। क्योंकि ऐसी ऐसी घटनायें देखने में आती हैं जिनमे अपने आपको शिक्षित कहने वाले ऐसी ऐसी बातें करते जिन पर किसी को लाज आ जायगी। पिछले दिनों राजस्थान में सती की घटना घटी। यह अनपढ़ लोगों मे तो नही घटी।

इसी प्रकार कुछ दूसरी घटना भी है। जिनको पढ़कर रोंगटे तो खड़े हो ही जाते परन्तु उन लोगों से लाज आजाती है जो इसके कर्ता होते हैं। ताजी घटना है —

जिला मेरठ के खरखोदा पुलिस स्टेशन के गांव पांछी की जहां एक माता व पिता ने मिलकर अपने सात साला बेटे का सर काट कर काली माता के चरणो पर रख दिया ताकि काली माता उन्हें वरदान दें कि वह पलक झपकते ही धनवान बन जायें ज्यूंही बेटे ने अपनी माता के पैर छूने के लिए सिर झुकाया बाप ने उसका सिर काट डाला और बेटे के गरम गरम रक्त से माता के माथे पर तिलक लगाया उसके बाद उसके कटे हुए सिर को काली माता की मूर्ति के सामने रख दिया।

पिछले दिनो दशहरा के पुण्य अवसर पर देहली के प्रेम नगर से १५ मास की एक लड़की का अपहरण किया गया। एक तान्त्रिक के कहने पर उस पर भभूति छिड़की गई और उसके बाद उसे एक विशेष तेल की मालिश की गई उसके बाद उसे एक तालाब में डुबो दिया गया।

१८ अगस्त के दिन केरल के जिला पालाघाट के गांव अनाकरन में एक स्कूल के अध्यापक ने अपने एक वर्ष के बच्चे का सिर काटकर उसका गर्म गर्म खून पी लिया।

अप्रैल के महीने में मध्य प्रदेश में एक पती पत्नी ने अपने नन्हे बच्चे की आखें निकाल दी और उसके गले मे एक छड घुसेड़ दी। यह सब देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किया गया।

इस प्रकार की लोम हर्षक घटनायें नित्यप्रति हो रही हैं। केवल हिन्दुओ मे ही नहीं। यद्यपि हिन्दुओ में औरों की अपेक्षा अधिक होतीहै। इनको पढ़कर कौन सभ्य मनुष्य होगा जिसका सर शर्म के मारे न झुक जाए। और जब यह कुकृत्य किसी धर्म के नाम से प्रेरित होकर किए जायें तो उस धर्म के प्रति किसी के दिल मे क्या श्रद्धा व सम्मान रहेगा। आश्चर्य तो इस बात का है कि प्राय इन घटनाओ का वर्णन समाचार पत्रो, दूरदर्शन व रेडियो पर व अन्य माध्यमों द्वारा होता रहता है। परन्तु यह लगातार हो रहे हैं। इससे अनुमान किया जा सकता है कि अन्ध विश्वास की जड़ें कितनी गहरी व दृढ़ होती हैं।

हिन्दू धर्म और संस्कृति खतरे में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्यसमाज लल्लापुर, वाराणसी के ६२वें वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन २२ नवम्बर को चेतगज विक्रीकर कार्यालय के मैदान मे विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए बड़े ही खेद पूर्ण स्वर में कहा कि यह एक कड़वी सच्चाई है कि भारत में हिन्दू धर्म और संस्कृति खतरे मे है। कश्मीर में ५ प्रतिशत हिन्दू बचे है। राम जन्म भूमि मन्दिर का ताला खुलने के विरोध में विद्रोही मुसलमानो ने कश्मीर के १०० से अधिक मन्दिर तोड़ दिये। कश्मीर के पण्डित भयभीत है। नई शिक्षा नीति से संस्कृत को निकाला जा रहा है और ४० जिले मुस्लिम बहुल घोषित किये गये हैं जहा के लोग हिन्दी नही पढ सकेगे। उर्दू भाषा को जबरन देश मे लादा जा रहा है। खाड़ी के ४४ मुस्लिम देश भारत मे पेट्रोडालर के बल पर गरीब हिन्दुओ और हरिजनो को धर्मान्तरण करके राष्ट्रीय एकता को चुनौती दे रहे हैं। तमिलनाडू के मिनाक्षीपुरम् गांव के १ हजार लोगो को मुसलमान बनाकर 'रहमतनगर' बनाया गया, जिसे आर्यसमाज द्वारा पुन हिन्दू धर्म में वापस लाकर वहां आर्यसमाज मन्दिर की स्थापना कर दी गयी है। स्वामी जी ने आगे कहा कि १ हजार वर्ष पहले जब मुसलमान आक्रान्त हिन्दुस्तान नहीं आये थे तब कोई भी मस्जिद देश में नही थी लेकिन मन्दिर तो देश में तब से है जब से इस देश का अस्तित्व है। सैयद शहाबुद्दीन को दूसरा जिन्ना बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि काशी मे आकर उन्होने क्या नही देखा कि काशी विश्वनाथ मन्दिर की एक दीवार से खडी मुस्लिम आक्रान्ताओ ने बनायी है। समूचे देश मे एक भी ऐसा उदाहरण नही है जहां मस्जिद तोड़कर मन्दिर बनाया गया हो। अत रामजन्म भूमि जिनकी है उनको मिलनी चाहिये।

अलीगढ मुस्लिम विश्व विद्यालय के अन्दर २० मस्जिदो का पूरा खर्चा सरकार देती है इसे बन्द करना चाहिये। मेरठ दगे मे पूरा हाथ श्रीमती मोहसिना किदवई का था। इसके इशारे पर मेरठ मे हिन्दुओ की करोड़ो की सम्पत्ति नष्ट की गयी। सती प्रथा पर आर्य समाज का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए स्वामी जी ने कहा कि वेद के किसी भी मन्त्र मे सती को जलाने का विधान नहीं है। शकराचार्य मे दम है तो एक भी मन्त्र प्रस्तुत करें और जहा चाहे आर्यसमाज से शास्त्रार्थ कर ले। सती प्रथा एक जघन्य अपराध है, इसको सख्ती से बन्द करना चाहिये। छुआछूत और दहेज प्रथा को पूरी तरह समाप्त करने का आह्वान स्वामी जी ने हिन्दुओ से किया और सरकार से यह माग की कि धारा ४८ के अन्तर्गत पूरे देश मे गो हत्या बन्दी का व्यापक कानून बनाया जाय और लागू किया जावे।

—रामगोपाल आर्य मन्त्री

विराटनगर (नेपाल) में गौशाला का निर्माण कार्य प्रारम्भ

विराट नगर आर्य समाज के प्रधान श्री सीताराम अग्रवाल जी ने सूचना दी है कि प्रसिद्ध गोभक्त श्री रामकुमार जी ने विराटनगर मे गोशाला के निर्माण के लिए २ बीघा जमीन दान मे दी है, और १९-११-८७ नवम्बर से २१ नवम्बर ८७ तक विराटनगर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर गोशाला के निर्माण हेतु करीब २० लाख रुपए के दान का संग्रह हो चुका है। इस समय गोशाला का निर्माण कार्य जोरों पर है और हरियाणा से अच्छी नस्ल की गउओं को ले जाने के लिए विराटनगर के गोभक्त हरियाणा पहुंचे हुए हैं।

श्री रामकुमार जी ने आर्य समाज मन्दिर व यज्ञशाला के लिए निर्माण के लिए भी काफी भूमि दान मे दी है।

आर्य समाज के विराटनगर के सभी अधिकारियों व कार्यकर्ताओं को सार्वदेशिक सभा अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रकट करती है।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान-सभा

वेद के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय नहीं

—आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार—

पण्डिता प्रज्ञादेवी जी ने आर्य जगत् व सार्वदेशिक के अको में "क्या वेद के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय हैं?" शीर्षक से मेरे ग्रन्थ "वेदो के राजनीतिक सिद्धान्त' की आलोचना की है । उन्होने मेरे ग्रन्थ की इस आलोचना मे यह जो परिणाम निकला है, जो उनके लेख के शीर्षक से भी झलकता है, कि वेदमन्त्रो के आधिदैविक अर्थ भी होते हैं—मैं इस बात को नही मानता हूं उनका यह परिणाम सही नही है । मै पूर्ण रूप से मानता हूं कि मन्त्रो के आधिदविक अर्थ भी हो सकते हैं । मैं मानता हूं कि मन्त्रो के क्षेत्र भेद से अनेक अर्थ हो सकते है जिनमें आधिदैविक अर्थ भी आ जाते है । ऋषि दयानन्द का प्रत्येक अनुयायी मन्त्रार्थो की विविधता के सिद्धान्त को तो आवश्यक रूप से मानेगा ही । मैं ऋषि दयानन्द का अनुयायी हू और इस सिद्धान्त को पूर्णत स्वीकार करता हूं । ऋषि दयानन्द मानते थे कि वेद विविध प्रकार के विद्या विज्ञानो के ग्रन्थ हैं । वेद मे विविध विद्या विज्ञानो का वर्णन तभी सम्भव हो सकता है जब कि मन्त्रो के विविध अर्थ किये जाय, मैं भी ऋषि दयानन्द के इस मत को मानता हूँ कि वेद मे भाति भाति के ज्ञान विज्ञानो का वर्णन है और उन विज्ञानो को वेद मे प्रदर्शित करने के लिये मन्त्रो के विविध अर्थ करने होगे । मैं इस बात को तथा मन्त्रो के आधिदैविक अर्थ होने की बात को नही मानता, यह परिणाम मेरे इस ग्रन्थ की आलोचना मे प्रज्ञा जी ने कैसे निकाल लिया, मेरी समझ मैं नही आया । मन्त्रो के आधिदैविक अर्थ दिखाना मेरे इस ग्रन्थ का विषय नही है । मेरे ग्रन्थ का विषय तो मन्त्रो मे वर्णित राजनीति विज्ञान को दिखाना है । इसलिये मैंने मन्त्रो के राजनीति विज्ञान विषयक अर्थ किये हैं, आधिदैविक नही ।

प्रज्ञा जी ने अपनी आलोचना मे यह भी लिख दिया है कि ऋषि दयानन्द ने मन्त्रो के जो आधिदैविक अर्थ किये हैं मैं उन्हे नही मानता । भला मैं ऐसा पाप कैसे कर सकता हूं? ऋषि ने जो आधिदैविक अर्थ किये है वे मेरे लिये सवथा माननीय है । प्रज्ञा जी को यह भ्रम भी पता नही कैसे हो गया ? क्योकि मेरे ग्रन्थ का विषय आधिदैविक अर्थ दिखाना नही है इस कारण मैंने अपने ग्रन्थ मे ऋषि के आधिदैविक अर्थो की चर्चा नही की ।

प्रज्ञाजी ने अपनी आलोचना मे यह भी दिखाने का प्रयत्न किया है कि मैं वेदार्थ की यौगिक पद्धति को भी शायद नही मानता । यह भी उनका भ्रम है । कौन मूर्ख होगा जो वेद मे विविध ज्ञान-विज्ञानो का वर्णन है इस बात को तो मानता है, पर मन्त्रार्थ की यौगिक पद्धति को नही मानता ? वेद के अध्ययन मे महर्षि यास्क और महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेदार्थ की यौगिक शैली को तो अपनाना ही होगा । तभी वेद मे नाना प्रकार के विद्या विज्ञानो का वर्णन उपलब्ध हो सकेगा । वेदार्थ की यौगिक शैली को तो सायणाचार्य आदि पौराणिक भाष्यकारो तक ने अपने भाष्योमे खूब अपनाया है भले ही उनके अर्थ और निष्कर्ष हमे मान्य न हो । मैंने भी अपने इस ग्रन्थ मे वेदार्थ की इस यौगिक पद्धति का यथावश्यक भरपूर उपयोग किया है ।

मैंने अपने ग्रन्थ मे अनेक प्रकरणो मे कितने ही शब्दो के अर्थ करते हुए यह लिख दिया है कि इस शब्द का जो अर्थ मैंने किया है, वही हो सकता है, अन्य नही । मेरे इस प्रकार के लेख को पढकर प्रज्ञाजी क्षुब्ध हो उठी हैं और आवेश मे भरकर अपनी आलोचना मे उपर्युक्त प्रकार की बात लिख गई हैं । उन प्रकरणो मे मेरे उक्त प्रकार के लिखने का तात्पर्य वह नही है जो प्रज्ञा जी ने समझ लिया है । मैं अपने वे प्रकरण राजनीति के दृष्टिकोण से लिख रहा हू । लिखते समय मेरा ध्यान उन शब्दो के सायणाचार्य आदि के अर्थो की ओर था । इन लोगो के अर्थ मुझ सगत नही लगे । इसलिये अपनी बात पर जोर देने के लिये मैंने वैसा लिखा दिया है । यो मेरा यह मत नही है कि उन शब्दो के मेरे अर्थों से भिन्न अर्थ बिल्कुल हो ही नही सकते । नही, उनके विषय भेद से दूसरे अर्थ भी हो सकते है । मैंने अपने ग्रन्थ की भूमिका मे तथा ग्रन्थ मे अनेक स्थलो पर इस बात को बहुत स्पष्ट शब्दो मे जोर देकर लिखा है कि वैदिक शब्दो के क्षेत्र-भेद या विषय-भेद के कारण अनेक अर्थ हो सकते हैं । मेरी इस मूल और प्रधान मान्यता के साहचर्य और प्रकाश मे ही इन प्रकरणो मे उक्त प्रकार के मेरे लेख का तात्पर्य देखना चाहिये ।

मैंने अपने ग्रन्थ की भूमिका मे 'वेद मे विविध ज्ञान विज्ञान" शीर्षक के नीचे पूरे डढ पृष्ठ म इस बात को स्पष्ट करके लिखा है कि वेद के शब्दो के क्षेत्र-भेद से विविध प्रकार के अर्थ हो जाते हैं जिससे वेद विविध प्रकार के ज्ञान-विज्ञानो का ग्रन्थ बन जाता है । वहा उदाहरण के रूप मे मैंने 'इन्द्र' शब्द के सम्बन्ध मे लिखा है कि वेद मे इस शब्द के परमात्मा, जीवात्मा, राजा और विद्युत तथा अनेक अर्थ हो जाते हैं । इन्द्र के वर्णनो और विशेषणो का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर इन्द्र का वर्णन वाले मत्रो से परमात्मा, जीवात्मा, राजा और विद्युत् आदि से सम्बध रखने वाले अनेक विद्या विज्ञानो का वणन उपलब्ध होने लगता है । इन्द्र के विद्युत अर्थ की चर्चा करते हुए वहा मैने लिखा है कि 'इसी भाति वेद के कितने ही स्थलो पर इन्द्र का अथ विद्युत है, उन वणनो से विद्युत्-विज्ञान विषयक निर्देश प्राप्त होते है । ' इस प्रकार इन्द्र का एक अर्थ विद्युत् भी होता है, यह कहकर मैंने स्पष्ट रूप मे स्वीकार किया है कि वेद मे इन्द्र के आधिदैविक अर्थ भी होते हैं । इन्द्र की भाति ही वेद के अग्निमित्र, वरुण सोम आदि शब्दो के भी आधिदविक अर्थ वेद मे होते हैं । ग्रन्थ की भूमिका के इस प्रकरण मे मैंने वैदिक मन्त्रो के अनेक अर्थ होते हैं अपनी इस मान्यता को असदिग्ध शब्दो मैं प्रकट किया है ।

मैंने अपने ग्रन्थ के प्रथम भाग के "देवमाला—मन्त्रिमण्डल" शीर्षक अठारहवे अध्याय मे वेद वर्णित इन्द्र, अग्नि, अश्विनी, विष्णु वरुण, पूषा, सोम आदि का अधिराष्ट्र या राजनीति विज्ञान-परक अर्थ निर्धारण करने का प्रयत्न किया है । वहा भी मैंने अपनी इस मान्यता को बहुत स्पष्ट कर दिया है कि वेद के इन शब्दो के अनेक अर्थ होते हैं । अग्नि का अधिराष्ट्र अथ हो सकता है, इस सम्बन्ध में

विचार करते हुए प्रारम्भ मे "अग्नि आदि देवताओ के अनेक अर्थ" इस शीर्षक के नीचे मैंने जो पंक्तियां लिखी हैं वे इस प्रकार हैं— हमने पीछे दिये वर्णनो मे अग्नि का सामान्य अर्थ सम्राट् किया है। अपने मत की स्थापना मे हमने वहा वेद के यथेष्ट प्रमाण उद्धृत किये हैं। अग्नि का सम्राट् या वेद मे अनेक स्थलो मे सगत हो सकता है और तब वहा राजनीतिक विषयक अनेक शिक्षाय दृष्टि-गोचर होने लगती हैं। अग्नि का अर्थ वेद मे केवल सम्राट या राजा ही नही होता। परमात्मा से लेकर हमारे चूल्हो मे जलने वाली आग तक क्षत्र भेद से अग्नि के अग्नि के वेद मे अनेक अर्थ होते हैं। अग्नि के सम्बन्ध में ही यह बात नही है। वेद के इन्द्र वरुण सोम और रुद्र आदि अन्य देवताओ के सम्बन्ध मे भी यही स्थिति है। इन सभी देवताओ के क्षेत्र भेद से परमात्मा और अन्य अनेक अर्थ हो जाते हैं। वेद में विभिन्न स्थानो पर इन देवताओ के विभिन्न स्थानो पर इन देवताओ के विभिन्न विशेषण और वर्णन आये हैं। देवताओ के विभिन्न विशेषण और वर्णन आये हैं। देवताओ के इन विभिन्न विशेषणो और वर्णनो से इन देवताओ के विभिन्न स्वरूपो पर प्रकाश पडता है। देवताओ के इन विभिन्न विशेषणो और वर्णनो के आधार पर उनके विविध रूपो का निर्धारण होता है। और देवताओ के इन विभिन्न वर्णनो से निकलने वाले निष्कर्षों से वेद में वर्णित विविध विद्या-विज्ञानो पर प्रकाश पडता है। इस प्रकार वेद अनेक विद्या विज्ञानो का उपदेश देने वाले ग्रन्थ बन जाते हैं। इसीलिये भारतीय आर्य विचारक आचार्य और ऋषि मुनि वेदो को सदा से विविध विद्या-विज्ञानो के ग्रन्थ मानते आये हैं" मैंने अपने ग्रन्थ के इस अध्याय मे देवताओ का जो विशिष्ट राजनीति विषयक-स्वरूप निर्धारण किया है वहा भी मैंने प्राय सब जगह इस आशय के शब्द लिख दिये हैं कि अमुक देवता का मेरे द्वारा निर्धारित रूप भी एक रूप हो सकता है, जिसका भाव है कि उसके अन्य रूप भी हो सकते हैं। अर्थात् मन्त्रो के दूसरे अर्थ भी हो सकते है।

वैदिक शब्दो और मन्त्रो की अनेकार्थकता के सम्बन्ध मे अपने ग्रन्थ मे इतना स्पष्ट लिख देने पर भी प्रज्ञा जी ने अपनी आलोचना मे मेरे सम्बन्ध मे उक्त प्रकार की अनेक बात जो बिल्कुल सही नहीं है, कैसे लिख दी यह समझ मे नही आता। यदि प्रज्ञा जी ने मेरे ग्रन्थ के इन स्थलो को ध्यान मे रखा होता और मेरे सारे ग्रन्थ की अन्तर्निहित भावना को अनुभव किया होता तो उनको अपनी यह आलोचना, जिसमे कई जगह मेरी हसी उडाई गई है तथा मेरे प्रति कटु और अवज्ञापूर्ण व्यग्यात्मक वाक्यो का प्रयोग भी किया गया है, लिखने की आवश्यकता न पडती।

जैसा मैंने ऊपर स्पष्ट किया है, मैं वैदिक मन्त्रो की विविधार्थता को भी मानता हूँ, वेदार्थ मे यास्काचार्य और महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित यौगिक पद्धति की परम उपयोगिता को भी स्वीकार करता हूँ, मन्त्रो के आधिदैविक अर्थ भी हो सकते हैं इसे भी मैं मानता हू, ऋषि दयानन्द ने मन्त्रो के जो आधिदैविक अर्थ किये हैं उन्हे भी मैं ठीक मानता हूँ।

मेरे ग्रन्थ की प्रज्ञा जी की इस आलोचना से आर्य विद्वानो और आर्य जनता मैं वेद विषयक मेरी मान्यताओ तथा महर्षि दयानन्द के प्रति मेरी सम्मान की भावना के सम्बन्ध मे बहुत भारी भ्रम के उत्पन्न होगा और आर्य जगत् मे मेरी प्रतिष्ठा को गहरा आघात पहुचेगा। इस भ्रम के निवारणार्थ उनकी आलोचना के प्रसग में अपने स्पष्टीकरण के रूप मे मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूँ।

पता—यज्ञनिवास, आर्य नगर, ज्वालापुर
सहारनपुर २४९४०७

स्वास्थ्य : कब्ज का प्राकृतिक इलाज

—बी. एस. वेदी

आंतों में अधिक देर तक मल के रुके रहनेको ही कब्ज कहते हैं। दूसरे शब्दो मे मल का शरीर मे रुका रहना या मल का बाहर न आना ही कब्ज कहलाता है। कब्ज कोई साधारण रोग नहीं है, और बडे-बडे डाक्टरों, वैद्यों और शरीर-शास्त्रियों का कथन है कि कब्ज सब बीमारियों की जननी है। ससार की सभी चिकित्सा पद्धतियों में कब्ज को ही सब रोगों की जड माना जाता है।

संचित मल ही सब रोगो की जड है। मल के अधिक देर तक रहने से पेट मे लम्बे लम्बे कीडे पैदा हो जाते हैं जिससे प्राणी अनेक बीमारियो मे फस जाता है। महामुनि चरक ने लिखा है कि कब्ज के कारण मुख का कुस्वाद भारी चीजों का देर से पचना, भोजन के बाद जलन, भोजन के पचने का अनुभव न होना, पैरो मे शोथ, कमजोरी का अनुभव करना, कम परिश्रम से भी थक जाना, पेट में मल का संचय, पेट का बढ़ जाना, पेट के आस पास के भागों मे पीडा होना, शरीर मे मल संचित रहने के कारण ही होते हैं।

अधिक देर आंतो मे मल के इकट्ठा रहने से रोगी का ओज, तेज और उससे रूप और रंग पर भी प्रभाव पडता है और वह कान्तिहीन हो जाता है। कई बार अधिक कब्ज के कारण प्राणियो का रंग पीला पड जाता है और देह में फुंसिया भी हो जाती हैं साथ ही सांस मे दुर्गन्ध आने लगती है।

कब्ज में औषधि के सेवन से लाभ कम, हानि अधिक होती है। यदि आहार ठीक न हो और यौगिक व्यायाम का नियमानुसार अभ्यास न हो तो कब्ज का रोग नही जा सकता। अधिक दवाइयों के सेवन से एक रोग से छुट्टी पाकर रोगी दूसरे रोग का शिकार हो जाता है। कब्ज का रोगी जिस दिन दवा लेता है उसी दिन लाभ होता है। पेट साफ होता है पर दूसरे दिन पेट की हालत ठीक नहीं रहती।

शरीर का वह भाग जो अन्न पचाता है, रस तैयार करता है और उसको रक्त में मिला देता है उस अन्न प्रणाली के हर भाग का काम अलग अलग है। जब उसके कामो मे कोई बाधा पड जाती है तो कब्ज हो जाती है। हमारे शरीर में मुख से लेकर गुदा तक ३० फुट लम्बी एक नली होती है। यह नली भोजन को पचाकर भिन्न भिन्न जगहों में भेज देती है।

पहले भोजन आमाशय में रहता है और फिर वह छोटी आत मे पहुचता है। छोटी आंत आमाशय के नीचे साप की तरह कुण्डली मारे रहती है। इस आंत की लम्बाई २२ २१ फुट के लगभग होती है। यहा का रस निकलता हुआ नालियो द्वारा जाकर आमाशय मे मिल जाता है। हमारा जिगर सबसे बडी और पाचक ग्रन्थि है और इसी से पित्त बनता है। आंतों में जिस समय यह पित्त पहुचता है, क्षार बन जाता है। हमारी आतो में क्षार के रहने से सडन कम होती है। यदि हमारी आतो में पित्त कम हो तो हमारे मल की बदबू अधिक आएगी। इसके बाद छोटी आंतों से होकर रस बडी आंत में जाता है।

कब्ज के मुख्य कारण

कब्ज के अनेक कारण हैं। पर, यदि प्राणी प्रकृति के कुछ नियमो का पालन करे और भोजन सम्बन्धी [illegible] से स्वस्थ भी रह सकता है, और कब्ज से बच सकता है। अधिकतर कब्ज का कारण भोजन की भूलें और [illegible] होता है। [illegible] और भोजन का गहरा सम्बन्ध है। [illegible] इसी कारण डाक्टर कहते हैं कि अधिक तली-भुनी वस्तुओं का प्रयोग न करें।

हमारे शरीर का भीतरी भाग जलमय है। यह जल हमारे शरीर में से मल-मूत्र, पसीना के रूप मे बाहर निकलता है। अगर हम उचित मात्रा में जल पीते रहें तो हमें कब्ज नहीं होगा। बर्फ का पानी या अधिक ठंडा पानी पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। यह आंतों के लिए विशेष हानिकारक है। भोजन के पहले पानी पीना ठीक नहीं क्योंकि इससे आमाशय कमजोर पड जाता है। भोजन के एक घंटे बाद पानी पिया जा सकता है। अगर आप अधिक सूखे पदार्थों का प्रयोग करेंगे तो आप कब्ज के शिकार हो जायेंगे। जहां तक हो सके भोजन का समय निश्चित करना चाहिए और असमय भोजन करने से कब्ज और अनेक प्रकार के रोग शरीर में पैदा हो जाते हैं। फलों का प्रयोग कब्ज के लिए लाभदायक है।

श्री निरंजनदेव तीर्थ की शास्त्रीय योग्यता : हिन्दुओं को डुबाएगी

—आचार्य शिवराज शास्त्री एम०ए० मौलवी फाजिल—

सती काण्ड पर पुरी शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ का ऊटपटांग वक्तव्य कोई आश्चर्य का विषय नहीं। उनके गुरु स्व० हरिहरानन्द करपात्री ने नारी के प्रति अपने जिन दुर्भावनापूर्ण विचारों को अपनी बदनाम पुस्तक "वेदार्थ पारिजात" में व्यक्त किया है वह नारी जाति के प्रति उनकी गहरी षड़यन्त्रकारी व घोर अपमान जनक व्यवस्था का प्रमाण है। स्वामी करपात्री जी विधवा विवाह का निषेध करते हुए वे लिखते हैं कि विधवा के लिए अग्निहोत्र देवपूजा आदि सम्पूर्ण कृत्य निषिद्ध हैं—इसी प्रसंग में वे लिखते हैं:—

तस्यास्तु सहमरणं ब्रह्मचर्याभ्यां वैधव्य पालनमेव विहितम ॥

वेदार्थ पारिजात पृष्ठ १७१८ ॥

अर्थात् उस विधवा को तो या पति के साथ जलकर मरना है या फिर ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन बितना ही विहित है।

पुरी की गद्दी पर निरंजनदेव जी को करपात्री जी ने ही स्थापित कराया था वे अपने आपको करपात्री जी का शिष्य ही बताते हैं।

उन्होंने समाचार पत्रों में वक्तव्य प्रकाशित किया था कि चाहें मुझे फांसी दे दी जाए परन्तु मैं सती प्रथा का समर्थन ही करूंगा। श्री निरजनदेव ने सती प्रथा को वेद सम्मत भी बताया। काशी के उनके एक सहयोगी शंकराचार्य के व्यवहार से भी पता लगा कि सनातन धर्म के नाम पर यह सभी इस बात का समर्थन करते हैं।

भारतवर्ष के अनेक विद्वानों विशेषतया आर्यसमाज द्वारा उन्हें वह वेदमन्त्र दिखाने का चैलज किया गया तो भी उन्होंने किसी हिन्दी पत्र में इस सम्बन्ध में कोई वक्तव्य प्रकाशित नहीं किया। केवल उत्कल भाषा के एक पत्र प्रजातन्त्र साप्ताहिक के सम्वाददाता को दिए अपने एक वक्तव्य में उन्होने कहा कि ऋग्वेद के मण्डल १० के आठवें सूक्त में यह मन्त्र है। सत्य तो यह है कि यह मन्त्र तो सर्वथा ही सती प्रथा का खण्डन करता है। इसका स्पष्ट आशय है कि विधवा स्त्री किसी भी जीवित पुरुष मुख्यतया देवर से सन्तान उत्पन्न कर सकती है। पतिशोक से छुड़ाने के लिए समझाकर उसे इस प्रकार का उद्बोधन देते हैं।

अथर्ववेद में तो इससे भी उत्तम व्यवस्था बताई गई है—

अपश्यं युवतिनीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम्।

अन्धेनयत तमसा प्रावृतासीत प्राक्तो अपाचीमनयंतदेवाम्।

अथर्ववेद १८।३।३॥

भावुकता अथवा जीवन मरण के सिद्धान्त को न जानते हुए कोई विधवा नारी आत्महत्या न कर ले इसीलिए वेद ने कहा है कि

अर्थात् मैंने (युवति, विधवा युवती को (मृतेभ्यः नीयमानाम्) मृतो के बीच में से निकालकर (जीवां परिणीयमानाम्) जीवितों के साथ पुनर्विवाह के लिए जाते हुए (अपश्यम्) देखा है। (यत) क्योंकि अन्धेन तमसा) पति विरह जन्य दुःख रूप अन्धकार से वह (प्रावृता आसीत) घिरी हुई थी (तत्) इसलिए (एनाम्) उस जीवित नारी को (प्राक्तः) पूर्व पत्नीत्व को (अनयम्) प्राप्त कर लिया है।

ऋग्वेद में भी (१०।३०।२) विधवे व देवाम् के द्वारा विधवा के जीवन को देवर के लिए ही विहित बताया है।

राजाराम मोहनराय ने जब सती प्रथा का विरोध करते हुए आन्दोलन चलाया तो बगाल के कुछ पण्डितों ने मन्त्र पाठ में हेरा-फेरी करके ऋग्वेद १०-१८-७ के आरोहन्तु जनयो यो निमग्रे मन्त्र में अग्रे के स्थान पर अग्ने पढ़कर सती प्रथा का समर्थन करना चाहा परन्तु उनकी यह धांधली नहीं चल पाई क्योंकि भाष्यकार सायणाचार्य ने भी पाठ में अग्रे मानकर ही व्याख्या की है।

ऐसी ही हेर-फेर की प्रणाली के आधार पर तथाकथित शंकराचार्य लोगों की आंखों में धूल झोंकना चाहते हैं। दुर्भाग्यवश कलकत्ता मारवाड़ का वेद ज्ञानशून्य व्यापारी समाज कुछ पुजारियों के भरण पोषण के लिए राजस्थान में सती मन्दिरों का निर्माण कर चुका है, उनके धर्म के पोषक होने के नाते पुरी के शकराचार्य जनता की आंखों में धूल झोकना चाहतेहैं। वेद वेदांग के ज्ञानसे शून्य मारवाड़ी बन्धुओं ने पुजारियो के पेट पालने के लिए सती माता के नाम पर कई मन्दिर बना रखे हैं जिसे पुजारियों के सरक्षक निरंजनदेव तीर्थ जैसे धर्माचार्यों का सर्थन प्राप्त है। सरकारी रिपोर्ट बताती है कि यह एक प्रकार का व्यापार बन चुका है। अनपढ़ जनता इस पाखण्ड की शिकार बनती है। नारी का उपयोग व उसकी महानता कोई तत्व ज्ञान इनको नहीं समझाया जाता। परन्तु अब जब कि महर्षि दयानन्द ने वेदों के भाष्यों व वैदिक सिद्धान्तों के सार्वभौम प्रचार से जनता व विशेषतया महान नारी जाति को भी वेदाचार्य व व्याकरणाचार्य बना दिया है। पुरी के शंकराचार्य जनता में अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए केवल पुरी की गुफाओं में बैठे ही मनमाने वक्तव्य दे रहे हैं। भिवानी के श्री पुष्कर लाल आर्य ने अपने एक पत्र द्वारा हमें सूचित किया कि निरजनदेव तीर्थ सार्वजनिक रूप से कभी शंका का समाधान ही नहीं करते। एक बार पत्र व्यवहार द्वारा पुरी में जाने पर पुष्करलाल जी के प्रश्नों से निरुत्तर होकर निरंजनदेव ने अपने गुण्डों द्वारा उनसे दुर्व्यवहार कराया तथा कथित सनातन धर्म का यह संरक्षक कब तक ऐसे आडम्बरों व मिथ्याचारों के द्वारा जनता की आंख में धूल झोंकता रहेगा और अज्ञानी हिन्दू प्रजा कब तक ऐसे झूठे व षड़यन्त्रकारियों के सहारे अपने तथाकथित सनातन धर्म की रक्षा करती रहेगी।

कब तक निरीह अबला नारी को पुरुष अपने निहित स्वार्थों के लिए जिन्दा जलाता रहेगा। कब तक नारी के रूप के खिलौने बनाकर हृदयहीन लोभी व्यापारी अपना माल बेचते रहेगे।

तथाकथित मनोरंजन के नाम पर कब तक नारी की महान् मूर्ति को अश्लील वीभत्स व नग रूपमें प्रदर्शित किया जाता रहेगा। और धर्म का दम्भ करने वाला हिन्दुओ का धर्माचार्य मडल अपने हलवे माण्डे की चिन्ता में नारी के इस घोर अपमान को सहता रहेगा। उसके हृदय में भगवान का यह सन्देश नही जागेगा—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

वेद शास्त्रों दर्शन शास्त्रों व उपनिषदो के महान् आध्यात्मिक तत्वों की अवहेलना करने वाले ढोंगी पाखण्डी इन धर्माचार्यों से क्या हिन्दू जाति की रक्षा हो सकेगी। यह तो गत १॥ हजार वर्षो से अपने स्वार्थी व दभी स्वभाव के कारण है। देश जाति के हितों से सदा खिलवाड़ ही करते रहे हैं। हिन्दू जाति को सत्वहीन व स्वाभिमान रहित बनने में इनका मुख्य हाथ है। समय आ रहा है यह आप भी डूबगे व अपने अनुयायियों को भी समाज की दृष्टि में अपमानित व लज्जित करेंगे।

यह इनकी तहजीब इनके खंजर से खुद ही जाकर हलाक होगा।
जो शाखे नाजुक पे आशियाना बनेगा गान पयदार होगा॥

संस्कृत ग्राम मत्तुरू

कर्णाटक राज्य के शिवमोगा जिलान्तर्गत एक छोटासा गांव मत्तुरू, जहां लोग संस्कृत भाषा में बातचीत करते हुये दिखाई देंगे। शिवमोगा से केवल ६ की० मी० दूरी पर स्थित यह छोटा सा ग्राम संस्कृत ग्राम के नाम से जाना जाता है।

संस्कृत पाठशाला को जाते हुये छोटे-छोटे बच्चे संस्कृत भाषा में संभाषण करते हुये दिखाई देंगे। खेतों की ओर जाते हुये, मजदूर लोग भी परस्पर संस्कृत में बोलते मिलेंगे।

छोटी-छोटी झोंपड़ियों में भी लोग संस्कृत में बातें करते हुये दिखाई देंगे। वहां के घरों के प्रवेश द्वार पर आपको एक बोर्ड दिखाई देगा, जिस पर—"इस घर में आप संस्कृत में बात कर सकते हैं— ऐसा लिखा रहेगा। घर के प्रत्येक वस्तु के नाम आपको संस्कृत में सुनने को मिलेंगे। दुकानों में भी वस्तुओं के नाम भी संस्कृत में लिखे मिलेंगे। ग्राहक को भी संस्कृत में बात करना पड़ता है।

बाग-बगीचों में काम करते हुये, विद्यार्थी लोग वेदमन्त्रों को मधुर स्वर में गाते दिखाई देते हैं। सूर्यास्त के समय सभी बच्चे-बड़े मिलकर तुंगा नदी के किनारे सामूहिक रूप से संध्या, प्रार्थना करते हैं। कुछ विद्वान् प्रतिदिन किसी एक संस्कृत के महाकाव्य पर चर्चा करते हैं। इस ग्राम में आकर ऐसा लगता है कि हम किसी वैदिक काल के एक ग्राम में आ गए हैं। विश्व में शायद ही ऐसा ग्राम होगा। मत्तुरू ग्राम का इतिहास मत्तुरू ग्राम में इस तरह का संस्कृतमय वातावरण के लिए अपना एक इतिहास है। विजयनगर साम्राज्य के समय इस ग्राम का नाम कृष्ण राजपुरम् था। एक बार तुंगा नदी में बाढ़ आने पर यह गांव बह गया और एक बार फिर यह ग्राम बसा, इसीलिए इस ग्राम का नाम 'मत्तुरू' रखा गया। कन्नड़ भाषा में 'मत्तुरू' का अर्थ 'फिर से बना गांव' होता है।

मैसूर के महाराज ने एक बार यज्ञ का आयोजन किया था, उसके लिए ब्राह्मणों को केरल में बुलाया गया। यज्ञ सम्पन्न होने के बाद, मैसूर के महाराज ने इन ब्राह्मणों को कर्नाटक में ही रहने की सलाह दी। इनमें से कुछ ब्राह्मण परिवार तुंगा नदि के किनारे इस गांव में आकर बस गए। यहां इन्होंने अपने उपजीवन के लिए नारीयल तथा सुपारी के बगीचे बनाकर रहने लगे। तभी से यहां संस्कृत भाषा अध्ययन तथा वैदिक संस्कृति के प्रचार में लोग लगे हुये हैं।

यहां की एक संस्था हिन्दू सेवा प्रतिष्ठान, संस्कृत संभाषण शिविरों की व्यवस्था करती है। जिसमें केवल संभाषण से बिना किसी पुस्तक या लिखीत रूप से, संस्कृत भाषा केवल बात-चीत से ही सिखायी जाती है। संभाषण शिविर के बाद 'अभ्यास वर्ग' चलाया जाता है, जिसमें संभाषण की गलतियों को सुधारा जाता है। तीसरे अन्तिम 'प्रशिक्षण शिविर' में दूसरों को पढ़ाने की विधि सिखाई जाती है। इस ग्राम में अधिकांश पत्र-पत्रिकाएं संस्कृत भाषा के ही आती है। नाटक, सार्वजनिक कार्यक्रम इत्यादि भी संस्कृत भाषा में ही सम्पन्न होते हैं। यहां की संस्कृत पुस्तकें भी प्रसिद्ध हैं, जैसे कन्नड़-संस्कृत कोष, व्यवहार सहस्त्री व्यवहार वाक्यानी इत्यादि।

संस्कृत पढने के इच्छुक व्यक्ति बम्बई, मद्रास आदि जगहो से आकर एक-दो सप्ताह में संस्कृत में बातचीत करना सीख जाते हैं। संस्कृत अध्ययन का एक केन्द्र बनाने का भी यहां प्रयत्न चल रहा है।

संस्कृत के प्रचार एवं प्रसार में यह ग्राम एक सराहनीय तथा अनुकरणीय कार्य कर रहा है।

—बी०एस० पतंगे गुलबर्गा, (कर्नाटक)

सती कुप्रथा न कोई धार्मिक परम्परा है न विश्वास :

हिन्दू धर्म में भी इसका कोई स्थान नहीं

राजस्थान उच्च न्यायालय की खंडपीठ का निर्णय : अध्यादेश से धार्मिक अधिकारों का उल्लंघन नहीं

जयपुर, २६ नवम्बर। राजस्थान उच्च न्यायालय की खण्डपीठ ने आज व्यवस्था दी कि सती प्रथा का हिन्दू धर्म मे कोई प्रावधान नहीं है और यह न तो धार्मिक परम्परा है और न ही धार्मिक विश्वास

दिवराला प्रकरण के सिलसिले मे राजस्थान सती निरोधक अध्यादेश तथा उसके तहत गिरफ्तारियो को चुनौती देने वाली विभिन्न याचिकाओ पर आज दिये अपने ऐतिहासिक फैसले मे खण्डपीठ ने स्पष्ट किया कि 'अध्यादेश के कारण संविधान में प्राप्त धार्मिक अधिकारों के उल्लंघन की बात निराधार है।'

उन्होने कहा कि भारतीय संविधान की धारा २५ व २६ मे जिन धार्मिक अधिकारो और अनुष्ठानों की छूट है, उन पर अध्यादेश के कारण कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि भारतीय संविधान मे विधवा द्वारा अपने मृत पति के साथ स्वेच्छा या लोगों के उकसाने पर जलने या सती प्रथा जैसी कुरीतियो का कोई स्थान नहीं है और न ही किसी प्रकार की मान्यता या छूट है। खण्डपीठ में कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश गुमान मल लोढा तथा न्यायमूर्ति धर्मा चन्द जैन हैं।

खण्डपीठ ने इस बहुचर्चित प्रकरण पर अपना फैसला कल से लिखवा शुरू किया था जो आज भी जारी रहा और इसके कल पूरा होने की सम्भावना है। कल से लिखाये जा रहे अपने फैसले को आगे बढ़ाते हुए विद्वान न्यायाधीशों ने विभिन्न धर्मग्रन्थों व उनके टीकाकारों का हवाला देते हुए स्वीकार किया कि ऋग्वेद में आये एक शब्द के अपभ्रंश के कारण सती प्रथा के शास्त्र सम्मत होने या न होने का महत्वपूर्ण विवाद शुरू हुआ। न्यायाधीशो के अनुसार अग्रे के स्थान पर अग्ने शब्द मानने वाले टीकाकारो ने यहा उसका अनुवाद यह किया कि उन नारियो को जिनके पति की मृत्यु हो गई है, वैधव्य जीवन व्यतीत करने की बजाय अच्छी पत्नी की भांति अपने आपको अग्नि में समर्पित कर अविनाशी व अमर हो जाना चाहिए। दूसरी ओर विल्सन और मैक्समूलर सरीखे टीकाकारो ने अग्रे शब्द के स्थान पर अग्ने शब्द की व्युत्पत्ति को धोखाधड़ी की संज्ञा दी है।

न्यायाधीशों ने कहा कि यह भी देखना होगा कि ऋषि मुनियों ने कहीं भी सती प्रथा या विधवा द्वारा अपने मृत पति के साथ जलने के न तो किसी प्रसंग का उल्लेख किया है न ही ऐसी किसी रीति नीति की बात की है।

खंडपीठ का मानना था कि इन तमाम बातो के बावजूद यह कहना उचित होगा कि एक समय अवश्य ऐसा आया जब सती के कई उदाहरण सामने आए। किन्तु साथ ही इतिहास के पन्नो से यह भी स्पष्ट है कि समय समय पर तत्कालीन शासको ने प्रतिबन्धित करने के भी प्रयास किये।

न्यायाधीशों ने एक टीकाकार के हवाले से विशेष रूप से अंकित कराया कि दशरथ की मृत्यु के बाद कौशल्या या अन्य किसी रानी के सती होने का वर्णन भी नहीं मिलता है।

भारतीय संविधान की धारा २५ और २६ का उल्लेख करते हुए न्यायाधीशों ने कहा कि इन धाराओं के तहत धार्मिक स्वतन्त्रता और धार्मिक अनुष्ठानों के स्वच्छतापूर्वक निर्वाह का तो अधिकार है किन्तु लोक व्यवस्था सदाचार और स्वास्थ्य सम्बन्धी उपबन्धो के साथ।

(२७ ११ ८७ के पंजाब केसरी से साभार)

शुभ विवाह

श्री अमरनाथ शर्मा के सुपुत्र चि० पीयूष शर्मा का शुभ विवाह, श्री न्यायकीश शर्मा की सुपुत्री सौ० सुवर्णा शर्मा के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार, जयपुर में सम्पन्न हुआ। श्री अमरनाथ जी शर्मा ने १२००) का दान वेद प्रचारार्थ विभिन्न आर्य संस्थाओं को दिया।

पुरी के शंकराचार्य की बेबुनियाद झूठी दलीलें

७ ८ वर्ष पहले मैं उनसे कुछ सन्तवाणी सुनने के लिये उनके निवास स्थान पुरी में गया था। मेरे जाते के साथ ही इन्दिरा गांधी सरकार को गन्दी आलोचना शुरू कर दिया बाद मे स्वामी दयानन्द जी के प्रति और आर्य समाज के प्रति अभद्रता की बातें करने लगा और मेरे पूछने पर कि आप तो छोटी-छोटी लड़कियो की शादी को भी जायज कहते हैं और नारी जाति को शिक्षित करना भी आपने पाप बताया, उसने कहा हां, ठीक है। मैंने पूछा कि कोई वेद का प्रमाण आप दे सकते हैं क्या लड़की पढ़ाना पाप है और छोटी लड़की की शादी कर देनी चाहिए। उसने कहा कि हां कि वेद का प्रमाण है। मैंने वेद लाकर दिखलाने को कहा। उसने मेरे सामने भागवत लाकर के रख दिया और कहने लगा कि वेद है। मैंने देखकर कहा कि यह तो भागवत है वेद नहीं है। वो बेबुनियाद झूठी बात का सहारा लेकर कहता है कि वेद व्यास की लिखी हुई झूठी हो सकती है। ये वेद ही हैं। मैंने कहा कि यह वेदव्यास की लिखी हुई भागवत नहीं है उसने उसी भागवत को ही वेद बतलाया और मेरे आपत्ति करने पर मेरे ऊपर गुंडों के द्वारा मारपीट करवा दी। मैंने डाक्टर का सर्टिफिकेट लिया चोटों के निशानों का। पुरी थाना मे इसके खिलाफ डायरी दी। कई समाचार पत्रो और पत्रिकाओं मे इसके काले कारनामों का उल्लेख किया गया। अब ऐसे ही रूपकुंवर जो दिवराला में सती हुई है बता दिया गया है। वेद मे इस सती प्रथा का विरोध किया है। उसको सती की संज्ञा देकर पुरी के शंकराचार्य ने जायज बतलाया है और कहता है कि वेद का प्रमाण है। वेद में इस सती प्रथा का वर्णन है। यदि वेदो में इसका उल्लेख होता तो वेदों के प्रकाण्ड पंडित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी इसको प्रकाशित कर देते। उसने सती प्रथा का विरोध किया है। झूठी शेखी मारने वाला वेदों की झूठी दलीलें देकर दुनिया को बतलाना चाहता है कि मैंने वेद पढ़ा है। उसने शायद वेदों को छुआ तक भी नहीं होगा। नम्बर एक क्रोधी है। इसमें कोई साधारण सन्तों वाली बात भी नहीं है। कोई भी उसकी बात का विश्वास न करे और न इसकी किसी बात को मान्यता दे।

एक बार यह गोरक्षा आन्दोलन मे कई दिनों के अनशन का बहाना बनाकर पुरी मे अपने निवास स्थान में ही आसन जमा लिया। मैं भी इनसे मिलने पुरी मे गया था। यह क्रोध में आ गया और कहने लगा यहां भाग कर तो आ जाते हैं ऊपर टेलीग्राम क्यो नहीं करते। मेरा अनुमान है ये दिखावा मात्र था। खाना पीना भी जारी था। क्योंकि ऊपर से झूठमूठ सन्तो का ताना बाना पहनने से कोई सत नहीं हो सकता। सन्तो वाले गुण, कर्म, स्वभाव भी होने चाहिए। इन जैसे झूठे सन्तों ने तो देश का भट्ठा बिठा दिया है। परमात्मा हमारे देश, राष्ट्र के कर्णधारो, सन्तों और विद्वानों को सद्बुद्धि प्रदान करे जिससे देश समृद्धशाली और सुखी हो।

—पुष्कर नाथ आर्य
१०७, हाउसिंग बोर्ड, भिवानी (हरियाणा)

आर्यसमाज की गतिविधियां

दिल्ली में 'वेद और कुरान' पर संगोष्ठी

भारतीय जन सचार सस्थान नयी दिल्ली में गत दिनों 'वेद और कुरान' विषय पर आयोजित सगोष्ठी में श्री शम्स नवेद उस्मानी ने तर्कपूर्ण विचार रखे। चौदह वर्षों तक वेदों और कुरान का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद शम्स नवेद श्री उस्मानी का मानना है कि आज की तमाम समस्याओं का हल वेदों मे वर्णित है। अगर उस ज्ञान को जन-जन तक पहुचाया जाय, तो साप्रदायिकता जैसी समस्याए चुटकी बजाते हल हो जायगी।

नवेद उस्मानी ने दुख प्रकट करते हुए कहा कि जिन वेदों की अहमियत को अग्रेजों तक ने समझा, कडी मेहनत से सस्कृत-अग्रेजी भाषा कोश तैयार कराया, जिन वेदों को जबरदस्ती ने तरजीह दी, आज वे अपने ही मुल्क में उपेक्षित है।

नवेद उस्मानी का यह भी मानना है कि वेद ज्ञान की शुरुआत है। उनके अनुसार कुरान मे 'आदम' शब्द सस्कृत से लिया गया है। क्योंकि आदम शब्द फारसी अरबी का नही है जो वेदों की प्राचीनता का द्योतक है।

श्री उस्मानी ने कहा कि जिस मुसलमान शब्द के पीछे इतने लडाई झगडे हो रहे हैं, फिरकापरस्ती फैल रही है, आश्चर्य की बात यह है कि 'मुसलमान' शब्द कुरान मे कहीं भी नहीं मिलता।

सगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे डा० रामजीलाल जांगिड ने श्री उस्मानी के कार्य को एक नयी सोच की सज्ञा दी। सचालन मुजफ्फर उल्ला खां ने किया। (पाञ्चजन्य ४ अक्टूबर १९८७ के सौजन्य से)

आर्य युवक सभा पंजाब का प्रतिनिधि अधिवेशन सम्पन्न

श्री रोशनलाल शर्मा, सर्वसम्मिति से प्रधान निर्वाचित

आर्य युवक सभा पजाब की ओर से आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे २४ १० ८७ रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक विचार गोष्ठी एव प्रतिनिधि अधिवेशन आयोजित किया गया। श्रीयुत रामप्रसाद जी वेदालकार, उपकुलपति गुरुकुल कागडी हरिद्वार ने युवको को सम्बोधित करते हुए कहा कि युवको को वेद के अनुसार अपना जीवन बनाना चाहिए। यही एक ढग है जिससे हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्न को साकार कर सकते हैं।

इसके पश्चात् पजाब के विभिन्न शहरों से आए हुए युवकों का प्रतिनिधि अधिवेशन श्री रोशनलाल शर्मा, सयोजक आर्य युवक सभा पजाब की अध्यक्षता में हुआ तथा मीटिंग की कार्यवाही श्री मनोहरलाल आर्य तलवाड़ द्वारा सचालित की गई। बाजार फील्ड गज, किदवई नगर, लुधियाना, रायकोट, मण्डल टाऊन शिप, बरनाला, तपा मलेरकोटला, अहमदगढ़, सगरूर, फिरोजपुर शहर, छावनी, फाजिल्का, तलवाडा, दसूहा, मुकेरियां, दीनानगर, अबोहर इत्यादि स्थानों पर शाखाए स्थापित हो चुकी है।

आगामी वर्ष के लिए प्रधान श्री रोशनलाल शर्मा महामन्त्री श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु चुने गए।

आवश्यकता

आर्य विद्या मन्दिर हाई स्कूल बल्लभगढ़ द्वारा (सचालित आर्य समाज) आवश्यकता —

१—अनुभवी मुख्याध्यापक (पोस्टग्रेजुएट को प्राथमिकता)

२—निम्न विषयों के लिए प्रशिक्षित स्नातक
विज्ञान, अग्रेजी, हिन्दी, सस्कृत व ड्राइंग

वेतन —योग्यता एवम् अनुभव के आधार पर

आवेदन-पत्र मैनेजर गुरुकुलप्रकाश वैदिक विद्यालय बल्लभगढ़ फरीदाबाद, हरियाणा को दिनांक २५ १२ ८७ तक भेजें।

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज समस्तीपुर रेलवे कालोनी समस्तीपुर बिहार का वार्षिकोत्सव ११ से १५ नवम्बर तक हुआ। उत्तरकाशी के स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती व अलीगढ़ के महीपालसिंह द्वारा उपदेश व भजनोपदेश हुए। प्रचार के प्रभाव से १० नए सदस्य बने।

—आर्य समाज पखारोड (सी ब्लाक) जनकपुरी दिल्ली का वार्षिकोत्सव ८ से १५ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया श्री दयानन्द स्नातक के प्रवचन व श्री मुलार्कसिंह राघव के भजनोपदेश हुए। महिला सम्मेलन में भारी सख्या में बहनों ने भाग लिया। प्रो० जगदीश मुखी, श्री कन्हैयालाल मेहता श्री सूर्यदेव जी डा० धर्मपाल श्री ओमप्रकाश आर्य व डा शिवकुमार शास्त्री ने भी सभा को सम्बोधित किया।

—विराट नगर (नेपाल) आर्य समाज का वार्षिकोत्सव १९ से २१ नवम्बर तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। उपस्थिति हजारों में रही श्री पीताम्बर शर्मा एम० ए० के सयोजकत्व में आर्य समाज का प्रभाव बढ़ रहा है। श्री सीताराम अग्रवाल की उदारता ने चार चाँद लगा दिए हैं। श्री रामकुमार जी ने समाज मन्दिर के लिए भूमि भी दान में दे दी है। प्रो० अखिलेश्वर उपाचार्य बाजना ने उत्सव की सफलता अपने विद्वत्तापूर्ण भाषणों से की।

—आर्य समाज सेवासदन बल्लभगढ़ (हरियाणा) में १२ से २० दिसम्बर तक आचार्य नरेन्द्र जी एम० ए० का वेद प्रवचन व रामअवतार आर्य के भजनोपदेश होंगे।

—आर्य समाज मैस्टन रोड कानपुर का १०८वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर १३ से १६ फरवरी ८८ को होगा। चोटि के विद्वान महात्मा सन्यासी भाग लेंगे।

—आर्य समाज मिरजापुर का स्थापना शताब्दी समारोह १७ से २० दिसम्बर तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। उच्च कोटि के सन्यासी विद्वान व भजनोपदेशक भाग लेंगे। विद्या सम्मेलन भी इस अवसर पर होगा।

—गोपाल नारायण श्रीवास्तव

आर्य जगत् के समाचार



आर्य वीर पेसूरामचन्द बानी मुकेश बोरनारे, रामचन्द हम्बरा, राजेन्द्र म गुर गुलाबसिंह, मेघराज उधवानी, भगवानदास सीनमरे, विष्णु सहसनानी, हुदलदास उधवानी, अनिल आर्य, महेश, बीच मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस जिला अलीगढ द्वारा सूखा पीड़ित सहायता कोष के लिए दान

कन्या गुरुकुल हाथरस की आचार्या श्रीमती अक्षय कुमारी जी शास्त्री ने गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों तथा अधिकारियो द्वारा कुछ समय के लिए घी छोड़कर संग्रहीत २०००) की राशि सार्वदेशिक सभाको सूखा पीड़ित सहायता कार्यक्रम के लिए भेजी है।

सार्वदेशिक सभा गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियो तथा अधिकारियो और मान्या अक्षय कुमारी जी शास्त्री के इस पुनीत सहयोग के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान-सभा

शुद्धि समाचार

हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरियाणा आर्य समाज मन्दिर समालखा जिला करनाल की ओरसे शुद्धि समिति के मन्त्री श्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती और प्रधान श्री ओमप्रकाश जी द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रो मे वर्ष १९८७ मे बहुत बड़ी सख्या मे शुद्धिया की गई हैं जिनका विवरण निम्न प्रकार है —

२६ जनवरी ८७ मुडा गाव, रायगढ मे १८ परिवारो के ३६० सदस्य

१७ जून ८७ पाबी गाव रोहतक के २ परिवारों के १६ सदस्य

फरवरी मे एक हरिजन लड़की को मुसलमान से मुक्त करा कर शुद्ध किया गया।

२३ जून ८७ को

खीवरखेडो, मुसलमानो का गाव, सहारनपुर १०० परिवारो के ६८५ सदस्य

७ अक्टूबर ८७ बेहवर मवाना जाखेडा भुभनु ८ परिवारो के ६८ सदस्य

२५ अक्टूबर ८७ को आर्य समाज ढोढपुर मे १ परिवार के ८ सदस्य

२८ अगस्त ८७ लाहली, रोहतक मे १ परिवार के १० सदस्य

१५ नवम्बर ८७ आर्य समाज समालखा २ परिवार के ७ सदस्य

२२ नवम्बर ८७ आर्य समाज किवाण २ परिवार के १० सदस्य

सार्वदेशिक सभा की प्रेरणा से हुए इस शुद्ध कार्यक्रम के लिए सभी कार्यकर्ताओ व अधिकारियो का धन्यवाद।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

आर्य समाज नकुड (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज का ४, ५ ६ नवम्बर को वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमे प्रसिद्ध विद्वान डा० प्रशान्त वेदालकार, डा० जयदेव विद्यालकार, डा० सरोजदीक्षा वेदालकार ने सम्बोधित प्रेरणाप्रद प्रवचन किए।

—सुरेन्द्र कुमार गोयल, मन्त्री

स्व० पं० प्रकाशचन्द्र कविरत्न का १०वां स्मृति दिवस

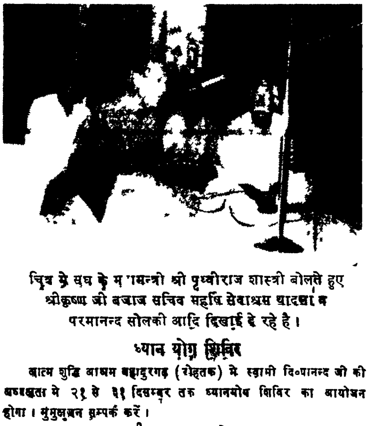
ता० ११ दिसम्बर ७७ को निधन

वेदों का डका आलम मे बजवादिया ऋषि दयानन्द ने।

इस अमर गीत के रचयिता प्रकाश जी ने आजीवन अपनी कविता, गीतो से वैदिक धर्म तथा आर्य समाज के सिद्धान्तो के प्रचार किया। रुग्णा अवस्था में भी रोग शैय्या पर पड़े पड़े २८ वष निरन्तर अपनी लेखनी चलाते रहे और भजन, गीत काव्य से प्रचार की अपूर्व सामग्री आर्य जगत को प्रदान करते रहे।

शोक समाचार

आर्य समाज आरपुर बख्तियारपुर पटना के उपप्रधान श्री शिवरत्न ठाकुर के देहावसान पर समाज द्वारा प्रस्ताव पारित कर शोक सन्तप्त परिवार के लिए सम्वेदना प्रकट की गई।



चित्र मे सघ के महामन्त्री श्री पृथ्वीराज शास्त्री बोलते हुए श्रीकृष्ण जी बजाज सचिव महर्षि सेवाश्रम धादखा व परमानन्द सोलकी आदि दिखाई दे रहे है।

ध्यान योग शिविर

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ (रोहतक) मे स्वामी दिव्यानन्द जी की अध्यक्षता मे २१ से ३१ दिसम्बर तक ध्यानयोग शिविर का आयोजन होगा। मुमुक्षुजन सम्पर्क करें।

आर्य युवा महासम्मेलन

आर्य वीर दल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से युवा निर्माण के सम्बन्ध मे ७ नवम्बर से ६ दिसम्बर तक मास भर के विभिन्न आयोजन किए गए है जिसमे भाषण प्रतियोगिता खेलकूद प्रतियोगिता, वाद विवाद प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, एव निबन्ध लेखन प्रतियोगिता सम्मिलित है।

दयानन्द मठ चम्बा वार्षिकोत्सव

श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे ६ से ८ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया दूर-दूर से भक्त मण्डली उत्सव मे सम्मिलित हुई। श्री पं० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री दिल्ली का स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। हिमाचल प्रदेश सभा के प्रधान श्री कृष्णलाल जी का भी अभिनन्दन किया गया।

खण्डवा में आर्य वीर दल का गठन

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के सत्प्रेरणा से खण्डवा मे विधिवत आर्य वीर दल का गठन हो गया है जिसका शिविर शीघ्र ही खण्डवा में लगाने जा रहा है।

गुरुकुल महाविद्यालय शुकताल (मुजफ्फर नगर) का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

२ से ५ नवम्बर तक गुरुकुल का महोत्सव बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। अनेक उच्चकोटि के सन्यासी विद्वान व सम्भ्रान्त महानुभावों ने उत्सव को सम्बोधित किया सम्मेलन मे लगभग ५०,००० लोगो ने भाग लिया स्वामी आनन्दबोधजी की अध्यक्षता मे सामवेद महायज्ञ हुआ। अनेक सस्थाओ द्वारा इस अवसर पर भण्डारे का प्रबन्ध किया गया।

सस्कृत भाषा की रक्षा

श्री ओमानन्द सरस्वती सर्वाधिकारी सस्कृत हिन्दी रक्षा समिति के सयोजकत्व मे एक विशेष बैठक ६ दिसम्बर १९८७ को दयानन्द मठ रोहतक मे हुई जिसमे सस्कृत व सस्कृति की रक्षा के व प्रचार प्रसार पर विशेष विचार किया गया।

अन्तर्राष्टीय दयानन्द वेदपीठ सगोष्ठी

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ के तत्वावधान में एक महत्वपूर्ण सगोष्ठी श्री स्वा० सत्यप्रकाश सरस्वती की अध्यक्षता मे हुई। जाने माने वैदिक विद्वान डा० भवानीलाल भारतीय डा० फतेहसिंह डा० बी० बी० के० हूजा ब्रह्ममित्र अवस्थी डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री ने भाग लिया। महत्वपूर्ण विषयो पर निर्णय लिए गए। —सत्यानन्द आर्य, सयोजक

नैपाल में चतुर्वेद शतकम यज्ञ

वेद प्रचार समिति के तत्वावधान मे वीरगंज नैपाल में रानी घाट [illegible] मन्दिर के [illegible] मे चतुर्वेद के शतकम महायज्ञ १० से १४ [illegible] स्वामी [illegible]नन्द जी के ब्रह्मत्व मे हुआ। वेद प्रचार [illegible] से हजारों व्यक्तियों ने लाभ उठाया।

बी० के० शर्मा, मन्त्री
पश्चिमी चम्पारण जिला आर्य सभा रक्सौल

आर्य वीर

महर्षि दयानन्द

१५१११० वर्गफीट देकर २९-१० ८७ को उसकी रजिस्ट्री करा दी है भूमि पर एक भव्य भवन निर्माण की आधार शिला आश्रम प्रधान श्री मक्खनलाल नागपाल व श्री गिरीशचन्द्र जी श्रीमान के हाथो रखी गई। —महेन्द्र मुनि मन्त्री

ककोडा मेला मे वेद प्रचार

आर्य समाज बदायू की ओर से क्षेत्र के सबसे बड़े गंगा जी के ककोडा मेला मे वैदिक धर्म प्रचार शिविर लगाया गया हजारो लोगो ने लाभ प्राप्त किया।

शोक समाचार

—आर्य समाज पीपाड़ नगर जोधपुर के पूर्व प्रधान श्री हीरालाल चौहान का निधन २१ नवम्बर को हो गया। श्री प्रेमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता शोक सभा हुई।

—आर्य समाज व महिला आर्य समाज रेल्वे रोड अम्बाला के एक सभा मे प्रसिद्ध समाजसेवी ला० दुनीचन्द अम्बालवी की धर्मपत्नी के निधन पर शोक प्रकट किया गया।

—आर्यसमाज झांसी ने वेदमन्दिर चान्दपुर के श्री बलदेव जी वानप्रस्थी के निधन पर शोक प्रकट किया।

ओ३म्
सार्वदेशिक
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८८] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : ३२७४७७१
वर्ष २२ अंक ५१] पौष कृ० १५ सं० २०४४ रविवार २० दिसम्बर १९८७ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति १० पैसे

अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष में २५ दिसम्बर को विशाल शोभा यात्रा

वेदामृत

विश्व-विख्यात ऐश्वर्य मिले

यस्य ते विश्वमानुषो,
भूरेर्दत्तस्य वेदति ।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥

ऋ० ८।४५।४२॥
अथर्व० २०।४३।३॥
साम० १०७१ ॥

अर्थ—हे परमात्मन् ! तुम्हारे जिस विशाल दान को सारा संसार जानता है, वह स्पृहणीय ऐश्वर्य हमें दीजिए ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

सम्पादक—

आर्यसमाजों से पूर्ण सहयोग की प्रार्थना



दिल्ली, सदा की भांति इस वर्ष भी आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली (पंजीकृत) के तत्वावधान में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस दिनांक २५ दिसम्बर १९८७ शुक्रवार को समारोह मनाया जाएगा ।

शोभायात्रा

यज्ञ हवन के पश्चात प्रात १० बजे से विशाल शोभा यात्रा श्रद्धानन्द भवन, श्रद्धानन्द बाजार से प्रारम्भ होकर निर्धारित मार्गों से होती हुई ३ बजे परेड ग्राउण्ड लालकिले पर पहुँचेगी । शोभा यात्रा मे नगर की सभी आर्य समाजो के बन्धु, विद्यालयो के छात्र व छात्राय, उत्तम भजन मण्डलियां मनोरम झांकियां ओ३म्ध्वजा सहित वैदिक नाद गुञ्जाती हुई भाग लेगी । जो परेड ग्राउण्ड मे एक विराट जनसभा के रूप मे परिवर्तित होगी । सभा मे चोटि के महात्मा, सन्यासियो, विद्वानो व केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधियो द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाञ्जलि समर्पित की जाएगी ।

समस्त आर्य समाजो, आर्य संस्थाओ व जनता से इस पुण्य कार्य मे पूरा सहयोग प्रदान करने की प्रार्थना है ।

महाशय धर्मपाल
प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री
महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य,
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली । दूरभाष ३११८६०, ३१०१५०, ५४२००१

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का भुवनेश्वर तथा पुरी आगमन

आर्य समाज की संस्थाओं का निरीक्षण

सती दाह प्रथा' जैसी घृणित परम्परा के विरोध मे जगन्नाथपुरी मे अनुष्ठित अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप मे भाग लेने के लिए दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा श्री स्वामी आनन्दबोध जी महाराज २७-११-८७ को साय ५-३० बजे भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर पहुचे। हवाई अड्डे पर पुष्पमालाओ से उनका भव्य स्वागत हुआ। वहा पर उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा चीफ इञ्जिनियर श्री प्रियव्रत दास, आचार्य योगेन्द्र कुमार उपाध्याय, इञ्जिनियर यज्ञप्रकाश दास तथा ओम्प्रकाश दास एव श्री दिलीप कुमार दास प्रभृति आर्य जन उपस्थित थे। वहा से श्री स्वामी जी राज्य अतिथि भवन मे पहुँचे। कुछ अस्वस्थ होने के बावजूद उन्होने श्री प्रियव्रत जी के साथ उडीसा मे आर्य समाज के प्रचार प्रसार के बारे मे विस्तृत चर्चा की।

२८ ता० प्रात श्री दास बाबू एव श्री मित्रसेन जी आर्य के साथ आर्य-समाज भुवनेश्वर मे पधारे। आर्य समाज के विशाल प्रागण तथा भव्य भवन, पुस्तकालय, सुन्दर यज्ञशाला आदि को देख के अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा इसके लिए साहित्य एव आर्थिक सहयोग देने का वचन दिया। इसके बाद वे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल को देखने गए, जिसे देखकर बडे प्रसन्न हुए और अपना आशीर्वाद दिया। प्रिंसिपल श्रीमती मूर्त्ति ने श्री शरद साहूर के साथ राज्य अतिथि भवन मे आई और भुवनेश्वर मे डी० ए० वी० के कार्यक्रमो से उन्हें अवगत कराया।

पश्चात् ११ बजे श्री स्वामी जी श्री दास बाबू के साथ पुरी रवाना हुए। जहा उन्होने विशाल महिला सम्मेलन मे अपना ऐतिहासिक उद्बोधन दिया।

—योगेन्द्र कुमार, आर्य समाज भुवनेश्वर

आर्यसमाज की पदयात्रा

पद यात्रा आर्य समाज की यह दिल्ली से चली है दिवराला।
करने को भस्म अन्याय अधर्म यह दयानन्द की है ज्वाला॥
इस ज्वाला से अब जाग उठा है सारा आर्यावर्त देश।
चल पड़े सेकड़ों सन्यासी, जन-जन धारण कर अग्निवेश॥
यह अग्नि रोके नही रुके, आगे ही बढती जायेगी।
नारी उत्पीडन, नारी दहन व अत्याचार मिटायेगी॥
श्री राम कृष्ण ऋषि मुनियो की जो जननी पूज्या नारी है।
उस मातृ शक्ति को भस्म करे वह पापी अत्याचारी है॥
यह अत्याचार, अन्याय, अधर्म, अज्ञान अधकार मिटाने को।
पद यात्रा निकली आर्यों की जन जन को आज जगाने को॥
धर्मान्ध जनो ने भस्म करी इक अबला नारी छल बल से।
यह अग्नि अब कर देगी भस्म इस दुष्ट प्रथा को भूतल से॥
यह आर्य जाति के सन्यासी, यह आर्य वीर, वीरागनाए।
सब मिलकर यह सब मेटेंगे अब देश धर्म की विपदाए॥
ऋषि दयानन्द के ये सनिक वैदिक सन्देश सुनाने को।
बलिदान दिवस श्रद्धानन्द का दिवराला चले मनाने को॥
यह यात्रा तीर्थ यात्रा है, जीवन यात्रा कर देगी सफल।
जीवन का पुण्य मिले उसको दस बीस कदम जो भी ले चल॥
यह आर्य समाज का अग्नि तेज अज्ञान अधकार मिटायेगा।
'भास्कर' बनकर वैदिक प्रकाश भारत भू को चमकायेगा।

—भगवती प्रसाद सिद्धात भास्कर
१४३०, प० शिवदीन माग, कृष्णपोल, जयपुर

आर्य समाज कांचरा पाडा (पश्चिम बंगाल) का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द माग मानिक तल्ला काचरा पाडा जिला २४ परगना (प० बगाल) का ६३ वा वार्षिकोत्सव २२ से २६ जनवरी ८८ तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वानो व भजनोपदेशको को आमन्त्रित किया गया है।

—आत्मानन्द आर्य, मन्त्री

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में १५, १६, १७ फरवरी को ऋषि बोधोत्सव मेला

नई दिल्ली। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी १५, १६, १७ फरवरी १९८८ को महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे ऋषि मेला मनाया जा रहा है। इस मेले मे हर वर्ष न केवल भारत से अपितु विदेशो से भी हजारों ऋषि भक्त उपस्थित होकर अपने गुरु महर्षि दयानन्द जी को अपनी श्रद्धा-जलि अर्पित करते हैं।

मेरी समस्त आर्य हिन्दू जाति से प्रार्थना है कि वे इन तिथियों को अभी से अकित कर लें और मेले के अवसर पर टकारा अवश्य पधारें। टकारा जाने वाले ऋषि भक्तो के आवास का तथा भोजन का प्रबन्ध टकारा ट्रस्ट की ओर से नि शुल्क किया जाता है।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

श्री शान्ति प्रकाश प्रेम ७४ वें वर्ष में २००) का सात्त्विक दान

आर्य समाज रावली आदि पचपुरी गढवाल (उ० प्र०) के प्रधान व कर्मठ कार्यकर्ता श्री शान्तिप्रकाश प्रेम अपने इलाज के लिए दिल्ली पधारे है और डी० १२६ मोती बाग-१ नई दिल्ली-२१ मे ठहरे हैं। उनका ७४ वा जन्म दिवस भी इसी स्थान पर १२ दिसम्बर को उनके श्रद्धालु मित्रो ने मनाया, प्रेम जी को देखने स्वामी आनन्दबोध सरस्वती उनके निवास स्थान पर गये। प्रेम जी ने सूखा पीडित कोष मे सार्वदेशिक सभा को २००) की राशि भेंट की। अभी आपका दाहिनी आख का सफल आप्रेशन हुआ। आप स्वतन्त्रता सेनानी हैं व अपने क्षेत्र के अत्यन्त लोकप्रिय समाज सेवक हैं।

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री का ७३वें वर्ष में प्रवेश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के धर्माधिकारी आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री को पिछले दिनो पक्षाघात का आघात पहुचा था वे अभी सभा भवन मे ही उपचार करा रहे हैं। ११ दिसम्बर की सायकाल मे उनके स्वास्थ्य की कामना के लिए विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। १२ दिसम्बर को उनके परिवार जनों व मित्र मण्डल ने उसको ७३वां जन्म दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया। व यज्ञ शेष वितरित किया गया।

सम्पादकीय

स्वामी श्रद्धानन्द जी का मिशन

२३ दिसम्बर १९२६ को भारत में एक ऐसे महापुरुष का बलिदान हुआ जिसे अपना कहने का प्रत्येक का हृदय तड़प उठा। वह कांग्रेस के थे इसलिए कि कांग्रेस की विकटतम संकट की घड़ियों में वह कांग्रेस की डूबती नैया के मांझी बने। वे हिन्दू सभाई भी थे इसलिए हिन्दुओं में संगठन के पवित्र मंत्र फूंकने वाले वे ही थे। मुसलमान भी उनके चाहने वालों में थे क्योंकि इस्लाम के इतिहास में पहली बार उन्होंने किसी गैर मुस्लिम को अपने मिम्बर पर खड़ा करके उनके श्रीमुख से गायत्री मन्त्र सुना। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को जिन्होंने अपने श्रीमुख से महात्मा पदवी प्रदान की। पं० जवाहरलाल नेहरू के पिता पं० मोतीलाल नेहरू को अपने साहस पर कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया। अंग्रेजों की संगीनों के आगे अपना सीना खोल दिया। इतने अप्रतिम अद्भुत नरपुंगव आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के १९१० से १९१७ तक प्रधान भी रहे। बलिदान से ३ वर्ष पूर्व तक भी १९२१-२३ तक पुनः सभा के प्रधान बने। पहले महात्मा मुन्शीराम जी के रूप में, बाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी के रूप में। सार्वदेशिक सभा उनके पवित्र बलिदान से गौरवान्वित हो उठी क्योंकि अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान भी सभा भवन में ही हुआ था। यह बलिदान मात्र बलिदान ही नहीं था। सार्वदेशिक सभा को निश्चित दिशा निर्देशन देने के लिए एक दैवीय घटना थी। बलिदान के समय सभा की बागडोर आर्य समाज के तपोधन महात्मा नारायण स्वामी जी सम्भाले हुए थे। उनका जीवन भी महान त्याग व तपस्या का जीवन था जिस पर कोई भी आर्य गौरवान्वित हो सकता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी अपने आप में एक सम्पूर्ण संस्था थे परिणाम स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान ने मृतप्राय: हिन्दू जाति को झकझोर कर जैसे प्राण फूंक दिये। निस्संदेह १९२६ से १९४७ तक का आर्य समाज का इतिहास महान क्रांतिकारी व स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

इस अवधि में स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रेरणा प्राप्त कर राष्ट्रोत्थान का जैसे सारा भार आर्य समाज के देशभक्त व त्यागी तपस्वी कार्यकर्ताओं ने अपने कंधों पर उठा लिया। स्वतन्त्रता संग्राम में हजारों आर्य नर नारी जेलों में गए। राष्ट्रीयता का घोर शत्रु निजाम हैदराबाद तो केवल आर्य समाज के ही बल पौरुष से ही स्वाधीन बन सका। स्वामी श्रद्धानन्द जी के ही पद-चिन्हों पर चलकर सार्वदेशिक सभा ने इस महान स्वतन्त्रता अभियान का सफल नेतृत्व किया।

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस सदा से मनाता आ रहा है। यह दिवस मनाने का एकमात्र उद्देश्य उनके छोड़े हुए कार्यों, हिन्दू समाज की रक्षा, वैदिक धर्म की स्थापना, वैदिक युग का निर्माण भारतीय राष्ट्र की एकता अखण्डता की रक्षा आदि अनेक गतिविधियां हैं जिन्हें आर्य समाज पूरा करने मे कृतसंकल्प है।

स्वामी जी महाराज ने महर्षि दयानन्द से सीधी प्रेरणा पाकर ही अपने जीवन को आर्य समाज को समर्पित किया था। वे ऋषि के विचारों व उनके कार्यक्रमों से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने ऋषि मिशन का केवल अनुयायी बनकर नहीं एक समर्पित मिशनरी के रूप में जीवन बिताया। महर्षि के देहावसान के बाद वे पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ कार्यकर्ता रहे। पं० लेखराम जी के ग्रन्थों का संकलन उन्होंने कुल्लियात आर्य मुसाफिर के रूप में प्रकाशित किया। वे मुसाफिर मिशन का भारत के उत्थान के लिए परमावश्यक समझते थे। कुल्लियात की भूमिका में बड़े मार्मिक शब्दों में हिन्दू राज्य व हिन्दू जाति के पतन पर प्रकाश डाला है। अपने देशभक्ति व शौर्य गुण के कारण वे प्रत्येक क्षेत्र में एक विजयी सेनापति की भांति अग्रसर हुए। गुरुकुल की स्थापना उनके धैर्य का अद्भुत परीक्षण था जिसमें वे सफल हुए। तत्कालीन वायसराय ने गुरुकुल कांगड़ी के निरीक्षण के पश्चात एक बड़ा मार्मिक लेख लिखा जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी की तुलना ईसा व सेंट पीटर से करते हुए उनके द्वारा किये जा रहे महान कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की थी।

स्वामी जी की कल्पना का भारत वैदिक काल का भारत था जिसकी संरचना में वे अहर्निश लगे रहे। मोहनदास कर्मचन्द गांधी को भी उन्होंने महात्मा की पदवी प्रदान कर भारत के आध्यात्मिक अभ्युत्थान की कल्पना की थी।

वे आर्य समाज के कार्यक्रमों को ही राष्ट्र की सेवा मानते थे यह सत्य भी है कि आर्य समाज के कार्यक्रमों के आधार पर ही राष्ट्र निर्माण राष्ट्रविकास की कल्पना के अतिरिक्त जिन बातों की ओर हमारा अधिक ध्यान गया है उससे धन बढ़ा हो पर देश का सिर ऊंचा नहीं हुआ। गत चालीस वर्षों में नैतिक रूप हमारा जो पतन हुआ है उसे देखते हुए कोई भी महर्षि की भविष्य वाणियों के प्रति नतमस्तक हो सकता है जो उन्होंने अपने अमर ग्रन्थों में भारतीय राष्ट्र के महान अतीत व वर्तमान दुर्दशा व भविष्य के निर्माण के लिए की थीं।

हमने जहां आध्यात्मिकता व नैतिकता से मुंह मोड़ा है वहीं वहीं हमारा जो अध:पतन हुआ है उसकी कहानी हमारा वर्तमान विषय नहीं परन्तु सच्चाई यह है कि आज भी देश को महर्षि दयानन्द के अमर सन्देश की आवश्यकता है जिसे कोई अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जैसा जांबाज सेनापति कार्यान्वित करे तभी देश व समाज वर्तमान सामाजिक व राजनीतिक संकटों से उबर सकेगा।

जिन समस्याओं पर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गहरे अध्ययन व चिन्तन पर अपनी लेखनी से महान प्रेरणादायक साहित्य लिखा है सौभाग्य से वह अब "गोविन्दराम हासानन्द" के द्वारा पुनः प्रकाशित कर दिया गया है। समस्याएं आज भी वही है। हमारा धर्म है गंभीर स्वामी श्रद्धानन्द जी के विचारों से लाभ उठावें और देश समाज की समस्याओं का समाधान उनके अनुभूत प्रयोगों में खोजें ताकि देश व समाज जिन विकट परिस्थितियों में होकर गुजर रहा है उसके कल्याण का सन्मार्ग प्रशस्त हो सके।

सामाजिक सेवा कार्यों के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का लगाया हुआ पौधा आज वट वृक्ष के रूप में आर्यों की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के रूप में उनके महान मिशन को पूरा करने में अहर्निश संलग्न है। वह विकसित होकर संसार भर में अपनी बहुंमुखी सेवाएं कर रहा है। जिस प्रकार स्वामी जी के काल में सारा देश उनके साथ था आज भी देश का सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त होने पर सभा स्वामी जी के महान मिशन को सफलता पूर्वक पूरा कर सकेगा। सभा को सुदृढ़ बनाने में ही हमारा देश व समाज सबका कल्याण है।

●

स्वामी श्रद्धानन्द की पुण्य स्मृति के अवसर पर :

कैसे कैसे मोड़ लिया जीवन ने

—सत्यानन्द आर्य—

कैसे छोटी-छोटी घटनायें मनुष्य के जीवन को प्रभावित करती हैं—यह अगर जानना हो तो झांक कर देखें स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन चरित्र को। कैसे एक शराबी, मांसाहारी, वैश्यागामी मनुष्य न केवल इन बुराइयों पर विजय प्राप्त कर सका, बल्कि इन बुराइयों के विरुद्ध लोहा लेने के लिए महात्मा और तदन्तर उच्चकोटि के संन्यासी के रूप में प्रकट हुए। भारत मां की आजादी की लड़ाई में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और भारत में स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार के लिए सही उत्तराधिकारी साबित हुए। उनके जीवन के प्रसंग हम सब लोगों के लिए प्रेरणादायक हैं।

बालक मुन्शीराम को उसके साथी मोटरकारों मे राग रंग नृत्य आदि में ले जाते। उसके साथी सब बिगड़े हुए रईस थे। उनके संग से वह भी भ्रष्टाचारी हो गया। एक दिन मुन्शीराम अपने साथियों के साथ खूब मद्यपान करके मद मे चूर होकर वेश्या के घर जा पहुंचे। न जाने भीतर प्रभु प्रेरणा से क्या भाव पैदा हुए कि मुख से ध्वनि निकलने लगी—अपवित्र! अपवित्र!

डगमगाते हुए वेश्या के कोठे से सहसा नीचे उतर आए। घर पहुंचे बड़ा नशा था। घर आते ही वमन होने लगा। उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी ने आकर सम्भाला। जूते उतारे, मुख धोया, मैले वस्त्र उतारे, बिस्तर पर लिटाकर सिर और मस्तक दबाना आरम्भ कर दिया। मुन्शीराम की घबराई आंखें गूढ़ निद्रा मे बन्द हो गई। रात के एक बजे निद्रा खुली तो शिवदेवी बैठी हुई पांव दबा रही थी। जल मांगने पर देवी ने गर्म दूध का गिलास मुंह से लगा दिया। नशा चूर हो गया। उस समय तक बराबर जागते रहने और भोजन न करने का कारण पूछने पर देवी ने कहा—"आपके भोजन किये बिना मैं कैसे खाती?"

मुन्शीराम प्रायः रोज भ्रमण पर जाया करते थे। भ्रमण करते करते लाहौर के अनारकली आर्यसमाज पहुंचे। जहां एक ओर स्वच्छ वायु का सेवन करते हुए वाटिकाओं के सुन्दर दृश्य देखे। वहां अनारकली के सामने से सिर पर मांस का टोकरा उठाए बोझ के दबाव से बचने के लिए एक आदमी भागा जा रहा था। टोकरे मे भेड़, बकरियों और बकरों की खाल उधड़ी टांग बाहर लटकती हुई एक भयानक दृश्य उपस्थित कर रही थी। श्रद्धानन्द जी का दिल दहला गया। वे बाल्यावस्था से मांसाहारी थे तथा उनके पिता मांस भक्षण स्वाभाविक समझते थे।

नित्य कर्मों से निवृत्त होकर सत्यार्थ प्रकाश का दशम समुल्लास भक्ष्याभक्ष्य के विषय मे मांस-भक्षण के दोष पढ़ते गये तथा प्रातःकाल का दृश्य मूर्तिमान् होकर उनके समक्ष खड़ा होता गया। एक एक शब्द ध्यानपूर्वक पढ़ते गये। भोजन का समय आ पहुंचा। अपने विचार मे निमग्न मुन्शीराम भोजनालय मे आ बैठे। अन्य खाद्य वस्तुओं के साथ ही मांस भी कटोरे में आया ही था उसे देखकर ऐसी घृणा हुई कि कांसी के कटोरे को उठा दीवार पर फैंक मारा। कटोरा टुकड़े टुकड़े हो गया।

उनके साथी सब घबराये। मुन्शीराम जी ने कहा कि मैंने आज पुराने संस्कारों की बेड़ियों को कांसी के बर्तन की तरह टुकड़े टुकड़े कर दिया है। मांस भक्षण आर्य मत में महापापों मे से एक है। उस दिन के पश्चात् मांस भक्षण तो दूर मांस खाने वालों की पंक्ति में बैठना उनके लिए असह्य हो गया। जीवन परिवर्तित हो गया।

१४ श्रावण संवत् १९३६ को क्रान्ति के अग्रदूत, महर्षि दयानन्द बरेली पधारे। मुन्शीराम जी के पिता श्री नानकचन्द्र जी को आदेश मिला कि पंडित दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानो में कोई उपद्रव न हो ऐसा प्रबन्ध करें। प्रबन्ध के लिए वे स्वयं सभा में गए और महर्षि के व्याख्यान से बड़े प्रभावित प्रभावित हुए, साथ ही उन्हे यह भी विश्वास हो गया कि उनके नास्तिक पुत्र की संशय-निवृत्ति उनके सत्संग में हो जाएगी। घर जाकर उन्होने मुंशीराम से कहा—"बेटा मुंशीराम! एक दण्डी सन्यासी आए हैं, बड़े विद्वान और योगिराज हैं। उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जायेंगे। कल मेरे साथ चलना।"

मुंशीराम व्याख्यान सुनने जाते थे और उनका हृदय महर्षि की ओर आकर्षित होता जाता था, जैसे कि अटके हुए पदार्थ का चमत्कार अलौकिक किरणों का प्रकाश पाकर तीव्रता से इधर बढ़ रहा हो। उस दिन व्याख्यान परमात्मा के निज नाम "ओ३म्" पर था। व्याख्यान के सम्बन्ध में मुंशीराम जी (जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द कहलाये) ने लिखा है—"उस पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी भूल नहीं सकता। नास्तिक रहते हुए भी आत्मिक आह्लाद में निमग्न कर देना ऋषि-आत्मा का ही काम था।"

पंजाब में ऋषि दयानन्द जी की स्मृति में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज बनाये गए। महात्मा मुंशीराम जी को इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि वेद प्रचार का काम खूब चले। संस्कृत शिक्षण का कार्य वैदिक पद्धति पर हो। महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में पढ़ा कि विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए तो आपने गुरुकुल स्थापना का दृढ़ संकल्प कर लिया। स्वामी जी के अथक प्रयत्नों से ही सन् १९०२ में हरिद्वार के निकट कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना का काम पूर्ण हुआ।

अब सवाल यह था कि पढ़ने वाले कहां से आयें। कौन माता-पिता अपने बच्चों को नये परीक्षण में एक लम्बे समय के लिए जंगलों में भेजने का साहस कर सकता है। इसके लिए भी सबसे पहला साहस मुंशीराम जी आगे बढ़े। आपने अपने दोनों पुत्रों हरिश्चन्द्र और इन्द्र को गुरुकुल में प्रविष्ट किया, शीघ्र ही कुछ अन्य मित्रों ने भी अनुकरण किया और अपने पुत्र दिए। आज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ख्याति चारों दिशाओं में व्याप्त है।

गुरुकुल की स्थापना करने के बाद महात्मा मुंशीराम को गुरुकुल को सुचारु रूप से चलाने के लिए धन की आवश्यकता महसूस हुई। आप घर से निकले और प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक तीस हजार रुपया एकत्रित न कर लूंगा घर न लौटूंगा। आपने समस्त देश का भ्रमण किया। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर स्थान स्थान पर व्याख्यान दिये। रुपया प्राप्त हुआ। परन्तु गुरुकुल चलाने के लिए कार्यकर्ताओं की चिन्ता थी। कहां से त्यागी और विद्वान सदाचारी कार्यकर्ता प्राप्त किये जायें। जो व्यवस्था संभाल सकें। सबसे पहले मुंशीराम जी ने वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया और वे सेवा कार्य के लिए स्वतन्त्र हो गए। अब तो सहयोगी व्यक्तियों का तांता लग गया। लाला शालिग्राम (जालन्धर) आजन्म रहने का व्रत लेकर गुरुकुल के काम में लग गये। लाला मुंशीराम जी के दो शुभ मित्र प० गंगादत्त और विष्णुमित्र ने उन्होने भी अपना पूरा समय गुरुकुल को समर्पित कर दिया इन तीनों व्यक्तियों के साथ प्रारम्भिक काम शुरु हो गया।

गुरुकुल कांगड़ी का उत्सव चल रहा था। गुरुकुल के लिए अपील के सम्बन्ध मे महात्मा मुंशीराम जी का उस दिन का व्याख्यान महत्वपूर्ण था, जिसका मुख्य आशय इस प्रकार था :

'कुछ समय हुआ, गुरुकुल के लिये धन संग्रह करने के निमित्त मै दिल्ली गया। वहां और प्रमुखजनो के साथ में शहर के सबसे बड़े रईस के घर चन्दा मांगने पहुंचा। उस रईस को जब गुरुकुल की शिक्षा मण्डली के आने का समाचार मिला तो वह घर के अन्दर चला गया और कहला भेजा कि रायसाहब घर से बाहर न आए। यह बात उस समय मुझे बहुत बुरी लगी और मैं असन्तुष्ट होकर मण्डली को लेकर वहां से चला आया। डेरे पर आकर मैंने अपनी अन्तरात्मा से पूछा कि ऐसा क्यों हुआ। मेरे अन्दर क्या कमी है, जिसके कारण वह धनी आदमी मुझसे बचने की चेष्टा कर रहा था। उसके बाहर न आने को मैंने बुरा माना? मेरी आत्मा ने उत्तर दिया कि इसका कारण यह है कि तूने अभी अपने आपको—सर्वतोभाव से धर्म की सेवा में अर्पण नहीं किया और तेरे मन में बची हुई सम्पति के कारण अहंकार है। उसी समय मैंने निश्चय किया कि मैं अहंकार की जड़ अपनी पुश्तैनी कोठी जो मेरी अन्तिम भौतिक सम्पति शेष है को भी गुरुकुल के अर्पण कर दूंगा तभी वस्तुतः धर्म की सेवा के योग्य हो सकूंगा।

महात्मा मुन्शीराम जी अपनी और समस्त सम्पत्ति प्रेस आदि पहले ही गुरुकुल कांगड़ी के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को समर्पित कर चुके थे। उस दिन उनकी इस असाधारण घोषणा से सभा में आये नर-नारियों के आंख विह्वल होकर आंखो में आंसू आ गये।

मैक्समूलर-विवेकानन्द-दयानन्द

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती—

'आर्य-जगत्' के १० अगस्त १९८७ को प्रकाशित संस्कृत विशेषांक के प्रारम्भ में 'ब्रह्मवादिन्' में लिखे स्वामी विवेकानन्द के एक लेख का कुछ अंश प्रकाशित हुआ है। स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है—

"मैक्समूलर का भारत पर कितना अनुराग है! मेरा अनुराग यदि उसका एक प्रतिशत भी होता तो मैं अपने को धन्य मानता। मैंने, उनसे कहा—"आप भारत कब आ रहे हैं? भारतवासियों की चिन्तन-राशि को आपने लोगों के सामने यथार्थ रूप में उपस्थित किया है।" वृद्ध ऋषि का मुख उज्ज्वल हो उठा।"

इस लेख से स्पष्ट है कि स्वामी विवेकानन्द के अनुसार मैक्स-मूलर—

१—ऋषि थे।

२—उसने भारत की चिन्तन-राशि को यथार्थ रूप में उप-स्थित किया।

३—उनका भारत पर इतना अनुराग था कि उसका एक प्रति-शत पाकर भी विवेकानन्द अपने आपको धन्य मानते।

यह विवेकानन्द का कहना है, परन्तु स्वयं मैक्समूलर का अपने विषय में क्या विचार था, यह उसके निम्न लेखों से पता चलता है—

मैक्समूलर के शब्दों में—"A large number of Vedic hymns are childish in the extreme,dedious, low and common place." (Chips from a German workshop. Ed. 1866. p 27) अर्थात् वैदिक सूक्तों की बड़ी सख्या बिल्कुल बचकानी, जटिल, निकृष्ट और मामूली है।

जिस उद्देश्य से मैक्समूलर ने वेदों का अनुवाद किया, उसके विषय में उसने अपनी पत्नी को लिखा—

"This edition of mine and the translation of the Veda will, hereafter, tell to a great extent on the fate of India. It is the root of their religion and to show them what the root is, I feel sure, is the only way of uprooting all that has sprung from it during the last three thousand years." (Life and Letters of F. Maxmuellar. Vol. I, chap XV, p. 34)

अर्थात् मेरा यह संस्करण और वेदों का अनुवाद भारत के भाग्य को दूर तक प्रभावित करेगा। यह उनके धर्म का मूल है और उन्हें (भारतीयों को) यह दिखाना कि यह मूल कैसा है, गत तीन हजार वर्षों में इससे उत्पन्न होने वाली सब बातों को मूलसहित उखाड़ फेंकने का एकमात्र उपाय है।

भारत सचिव (Secretary of State for India) के नाम १६ दिसम्बर १८६८ को लिखे अपने पत्र में मैक्समूलर ने लिखा—

"The ancient religion of India is doomed. Now, if Christianity does not step in, whose fault will it be?" (Ibid, Vol. I. chap. XVI, p. 378.)

अर्थात् भारत का धर्म नष्टप्राय है। अब, यदि ईसाइयत उसका स्थान नहीं लेती, तो यह किसका दोष होगा?

यह है मैक्समूलर की भारत भक्ति जिससे अभिभूत होकर स्वामी विवेकानन्द ने आक्सफोर्ड में २८ मई १८९६ को दोपहर के अवसर पर कहा था—

"When are you coming to India? All men there would welcome one who has done so much to place the thoughts of their ancestors in true light." (Vivekanand : A biography by Swami Nikhilananda, Pub 1953 by Advaita Ashram, Calcutta.)

आप भारत कब आ रहे हैं। वहां के लोग ऐसे व्यक्ति के शुभा-गमन पर आनन्दित हो उठेंगे जिसने उनके पूर्वजों द्वारा संचित ज्ञानराशि को सही रूप से प्रस्तुत करने के लिए इतना परिश्रम किया है।

मैक्समूलर से अभिभूत होकर स्वामी विवेकानन्द किस हद तक अपना सन्तुलन खो बैठे, इसका पता उन्हीं के आश्रम से प्रकाशित उपर्युक्त पुस्तक के निम्न उद्धरणों से चलता है—

He wrote to Mr. Leggette on July 6, 1986—"The British Empire with all its evils is the greatest machine that ever existed for dissemination of Knowledge." P. 207.

अर्थात् ब्रिटिश राज्य कितना ही बुरा क्यों न हो, उसने जितना ज्ञान का प्रसार किया है, उतना कभी किसी ने नहीं किया।

To the accusation from some orthodox Hindus that the Swami was eating forbidden food at the table of infidels, he reported—

'If the people of India want me to keep strictly to my Hindu diet, please tell them to send me a cook and money enough to keep him. Am I a nation's slave? I stand at nobody's dictation, No country has a special claim on me. I belong to the world as much as to India." P. 129

अर्थात् जब कुछ कट्टरपन्थी हिन्दुओं ने उनके म्लेच्छों (अधर्मियों) के साथ बैठकर गोमांस खाने पर आपत्ति की तो स्वामी विवेकानन्द ने उत्तर दिया—"उनसे कह दो कि यदि वे यह चाहते हैं कि मैं विशुद्ध हिन्दू भोजन करूं तो वे एक रसोइये को भेज दें और उसके वेतन का भी प्रबन्ध कर दें। क्या मैं किसी जाति का गुलाम हूं? मैं किसी का आदेश नहीं मानूंगा। किसी देश का मेरे ऊपर विशेष अधिकार नहीं है। मैं जितना भारत का हूं उतना ही दुनिया का हूं।"

On June 10, 1898 he wrote to Muslim gentleman at Nainital—"Without the help of Islam, the theories of Vedantism, however wonderful and fine they may be, are entirely valveless. For our own motherland, a junction of the two great religions of the world—Hinduism and Islam—Vedantic brain and Islamic body—is the only hope We want to lead mankind to the place where there is neither the Vedas, nor the Bible, nor the Koran." P. 255.

(शेष पृष्ठ ८ पर)

एक शिशुबलि से छिटकते सवाल

—विष्णु खरे—

दिवराला का विधवा-दहन प्रकरण पिछले करीब ढाई महीनों से इस तरह चर्चा में रहा है कि इसी दौरान समाज की एक और विडम्बना को लगभग भुला दिया गया है। रूपकंवर कांड पर जितनी बहस और कार्रवाई हो उतना अच्छा, लेकिन हमारी कौम में मौजूद अन्य विसंगतियों से यदि ध्यान हटा लिया गया तो दिवराला पर हो रहा वादविवाद निस्संदेह एकांगी और अंततः आत्मपराजयी बन सकता है।

जिस उदाहरण का हम जिक्र करने जा रहे हैं वह विरला या अनूठा नही है। दुखद यह है कि चूंकि वह विधवा-दहन की अपेक्षा कहीं ज्यादा 'परिचित' है इसलिए उसे औपचारिक लज्जा और आतंक-भाव प्रकट करने के बाद दाखिल-दफ्तर कर दिया जाता है। जिस घटना का हम उल्लेख करने वाले हैं वह इस वर्ष दो अक्टूबर को घटी। इस दिन जन्मे मोहनदास करमचन्द गांधी हिन्दू परम्परा में रहते हुए भी अन्धविश्वासों के विरोधी थे। दूसरी ओर इस वर्ष संयोगवश दशहरा भी दो अक्टूबर को पड़ा। उस दिन सुबह सैकड़ों लोगों ने राजघाट पर श्रद्धा-सुमन चढ़ाए थे और रामधुन गाई थी। उसी शाम को दिल्ली के मुहल्लों में सभी कलुषों के कुप्रतीक रावण को भस्म होता देखने के लिए लाखों लोग स्थानीय दशहरा मैदानों पर पहुंचे थे। लेकिन उसी दिन एक और घटना भी घटी।

पश्चिमी दिल्ली का प्रेमनगर इलाका निम्नवर्ग तथा निम्न मध्यवर्ग की एक बस्ती है। केन्द्रशासित दिल्ली में जो सैकड़ों गांव और गन्दी बस्तियां हैं, प्रेमनगर उनमें से एक है। दो अक्टूबर की रात को पालेराम अपनी सवा साल की नातिन कविता के साथ खुले में चारपाई पर सो रहा था। साढ़े दस बजे के करीब जब वह दिशा-मैदान से निबटकर लौटा तो उसने देखा कि कविता का नामोनिशान न था। उसकी खोज शुरू होने के कुछ देर बाद कविता की लाश कुछ ही दूर सीमेन्ट की एक नाद में तैरती मिली। उसके शरीर पर राख की एक झिल्ली-सी थी। कहीं-कहीं उस पर झुलसने के निशान भी थे। और कुछ राख उसके मुंह में भी थी। पूछताछ से मालूम पड़ा कि मुहल्ले का बाबूलाल नामक आदमी तथाकथित संदिग्ध रूप से वहां मंडराता देखा गया था। जब लोग उसे ढूंढने उसके घर पहुंचे तो पता चला कि वह अपनी मकान मालकिन शकीला के साथ फरार था।

पुलिस ७ अक्टूबर को शकीला और बाबूलाल को पकड़ पाई। तब पता चला कि शकीला की एक बेटी है चमन, जो चार बार गर्भवती होने के बावजूद मां नहीं बन सकी। कहा जाता है कि ताबीज अली नामक एक तांत्रिक ने शकीला को बताया कि दशहरे जैसे शुभ दिन किसी बच्चे की बलि देने से ही चमन को संतान हो सकती है। आरोप यह है कि शकीला ने चमन के कुछ रिश्तेदारों की मदद से बाबूलाल को कविता को उठा लाने पर मजबूर किया, फिर ताबीज अली की बताई गई विधि से मां-बेटी ने पूजा की, कविता की बलि चढ़ाई गई, उसकी लाश को नांद में फिंकवाया गया, उसके कपड़ों और बची हुई पूजा सामग्री और राख को शकीला ने अपने आंगन गाड़ा और इस तरह चमन की भावी सन्तान का प्रबन्ध किया गया।

चमन, शकीला, बाबूलाल, ताबीज अली और उनके तथाकथित सह-अपराधियों पर अभी न तो मुकदमा चला है और न उन्हें मुजरिम करार दिया गया है। यहां हमारा उद्देश्य उन्हें दोषी साबित करना नहीं है। यह चर्चा मूलतः सैद्धांतिक है न्यायिक नहीं। 'यदि', 'मान लीजिए', तथाकथित या 'आरोपित' जैसे शब्दों का बार-बार इस्तेमाल विचित्र लगेगा, फिर भी यह मानकर चलना होगा कि दोषी घोषित किए जाने से पहले तक मुल्जिम बेकसूर होता है।

अपना बार-बार निस्सन्तान रह जाने वाली बेटी चमन के लिए शकीला ने जो किया वह दिवराला की रूपकंवर की तरह एक बार फिर हमें याद दिलाता है कि भारतीय औरत का सुहागिन होना ही काफी नहीं, उसे बांझ निस्सन्तान भी नहीं होना चाहिए। निपूती औरत विधवा से कुछ ही कम बदनसीब और अशुभ मानी जाती है। चमन की समस्या फिलहाल बेटा पैदा करने की नहीं थी। उसे पहले अपनी गोद भरी देखनी थी। दिल्ली जैसे शहर में न किसी ने सोचा और न उसे बताया कि चमत्कार बर्म [illegible] मतलब उसकी या उसके पति की कोई शारीरिक समस्या हो सकती है, जिसका सम्भवतः इलाज भी हो सकता है। चमन के सामने निपूती होने की रुसवाई ही नहीं होगी, उसकी वजह से तलाक दिए जाने या सौत का खतरा भी होगा। जिस आदमी का नाम ही ताबीज अली हो, शकीला और चमन को उसमें पीर या फरिश्ता नजर आया। ताबीज अली ने दशहरे के मुकद्दस दिन पर किसी बच्चे की कुर्बानी की तजवीज रखी। वह कौन शिया है या सुन्नी?

अरब देशों में शायद हजरत मोहम्मद और इस्लाम के अवतार से पहले कई तरह की बलियों की, मानवबलि की भी, परम्परा रही हो। लेकिन हजरत मोहम्मद द्वारा इस्लाम की स्थापना के बाद मानव-बलि का कोई उल्लेख नहीं मिलता। हलाल जानवरों की कुर्बानी सिर्फ दो मौकों पर दी जाती है—ईदुलअजहा पर और नवजात शिशु के अकीके (मुंडन जैसी एक रस्म) पर। इस्लाम-पूर्व की बलि-परम्परा की एक ही निशानी यह रह गई है कि मुस्लिम हर जायज जानवर को मारने को एक धार्मिक कृत्य समझते हैं। 'जब्ह' और 'हलाल' की अवधारणाएं इसी अवस्था से जन्मी हैं।

वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ संसार में बलि के कर्मकांड की सबसे विशद व्यवस्था देते हैं किन्तु निराकार एकेश्वरवादी कुरान-शरीफ कुर्बानी से न तो आक्रांत है और न उसे इच्छा पूर्ण करने वाला चमत्कारी कृत्य मानता है।

अन्धविश्वास, लाचारी और शायद गरीबी ने शकीला और चमन को कुरान-शरीफ की हिदायतों को भूलने पर आमादा कर दिया। ऐसा नहीं है कि मुसलमान अन्धविश्वासों से पूरी तरह दूर रह सके हैं। दरगाहों में पीरों, फकीरों, औलियों के आस्तानों में, देव, आसेब और जिन्नात भगाने वालों में, गंडा-ताबीज बांधने वालों में ऐसा बहुत कुछ होता है जो इस्लाम के खिलाफ है। लेकिन हिन्दुओं में जिस तरह अन्धविश्वास एक महामारी की तरह फैला हुआ है उतना बुरा हाल तो मुसलमानों का नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुओं के कई रीति-रिवाजों ने दक्षिण एशियाई मुस्लिम को प्रभावित किया है।

शकीला और चमन इसके विलक्षण उदाहरण हैं ही ताबीज अली का किरदार भी कम दिलचस्प नहीं है। वह झाड़-फूंक करने वाला मुस्लिम 'तांत्रिक' है। यदि कुर्बानी और उसके फलस्वरूप होने वाली आसमानी मेहरबानी में आप यकीन करते-करवाते हैं तो आपको हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि के जकड़ने वाले बन्धनों से मुक्त होना होगा। दिल्ली में हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह है, और भी कई छोटी-बड़ी दरगाहें हैं, लेकिन ताबीज अली ने शकीला और चमन को वहां मिन्नतों के लिए नहीं भेजा। उसने कोई इस्लामी ताबीज भी उन्हें नहीं दिया। या शायद उसने यह सब करके देख लिया हो। शायद वह अपने हिन्दू शरणागतों को हिन्दू पद्धति से दैवी मदद दिलवाता रहा हो। वह छटपटाती हुई निराशा थी या असफलता, या फिर 'मुस्लिम' और 'हिन्दू' अन्धविश्वासों के मिश्रण से उपजा मदोन्मत्त तांत्रिक अहंकार या लगभग ईश्वर या खुदा हो पाने की लालसा, या हो जाने का उल्लास जिसने ताबीज अली को कविता के यमराज में बदल दिया? किस देवी, देवता, जिन्न, फरिश्ते, आसेब परीजाद को बलि चढ़ाई ताबीज अली ने? किस पद्धति से? कौन से मन्त्र, कौन सी आयतें, कौन-सा आचमन कौन सी वजू?

इसके पहले कि हम ताबीज अली, शकीला और चमन को एक खेमे में डाल दें और नन्ही कविता को दूसरे खेमे में, और कहें कि हाय इन हत्यारों ने एक फूल-सी चिड़िया की हत्या कर दी, हमें जानना होगा कि पिछले पांच वर्षों में अखबारों में कम से कम ४५ मानव बलियों के समाचार छपे हैं। इन ४५ बलियों में सिर्फ एक और कांड में एक मुस्लिम परिवार शामिल है। दिल दहलाने वाली चीज यह है कि २१ जून १९८३ को केरल के नेदुमकदम के एक मुस्लिम परिवार ने जिस १४ वर्षीय बच्चे मोहम्मद बलि दी वह उसी परिवार का बेटा था। उसके वालिद का नाम था हुसन अली, पड़ोसी की [illegible] कविता के मामले में एक बाबूलाल था तो उसी तरह नेदु[illegible] उसके साथ थी।

पिछले चंद वर्षों में हिन्दुओं ने अपने झूठे अन्धविश्वासों से लेकर नितांत बचकानियों को शिशुओं से लेकर बूढ़े-बूढ़ियों का मर्दों-औरतों को, गरीबों-अमीरों को बलि चढ़ाया है। बलि करने और बलि होने में औरतें भी शामिल हैं। अभी १० नवम्बर १९८७ को ही एक हिन्दू पति-पत्नी ने अपने सात वर्षीय छोटे बेटे मुनीश को बलि मेरठ के पास सांगी गाव में चढ़ा दी। वे अमीर होना चाहते थे। अमीरी से लेकर अमरत्व तक पाने के लिए भारतीयों ने नरबलि दी है।

हिमाचल प्रदेश से पिछले वर्ष नरबलि की एक लम्बी परम्परा का पता चला। जून १९८५ मे जब ओड़िसा में तीन बच्चो की बलि की खबर आई तो यह भी कहा गया कि १९७७ से १९८५ के बीच २१२ निरुद्देश्य, रहस्यमय हत्याए हुई हैं जो नरबलि लगती हैं। मई १९८५ में जब बोल्ला चेन्नय्या नामक बर्तन बेचने वाले की बलि का समाचार आन्ध्र-प्रदेश के एक गांव कानीवाड़ा से आया तो मालूम हुआ कि कानीवाड़ा मे हर तीन वर्ष में एक नरबलि देने की प्रथा है लेकिन उसकी चर्चा कोई करता न था।

सच तो यह है कि नरबलि की भयावह संख्या और प्रचलन की तुलना मे देखें तो दिवराला जैसा विधवादहन बहुत विरल और मामूली ठहरता है और इस पर जो उग्र विवाद चल रहा है वह दिग्भ्रमित लगता है। लेकिन यह तय करना मुश्किल है कि विधवा दहन ज्यादः अमानवीय है या नरबलि। वैसे विधवा-दहन भी नरबलि का एक रूप है। दोनो के पीछे गहरी मानसिक और सामाजिक बीमारियां हैं।

अन्धविश्वास किस तरह हिन्दू और मुसलमान को एक रास्ता है कविता का बलिदान इसका भयावह उदाहरण है। वह पहले मुसलमान को 'हिन्दू' बनाता है, ठीक उसी तरह जिस तरह दरगाहो, मजारो, पीरो, फकीरों के आगे हिन्दू मुसलमान' बन जाता है। फिर एक असली हिन्दू पर्व पर एक असली हिन्दू बच्ची का अपहरण किया जाता है। यह जानना दिलचस्प होगा कि मुस्लिम 'तांत्रिक' ने हिन्दू बच्चा ही लाने को कहा था या मुस्लिम बच्चा भी चल सकता था। लेकिन शायद नहीं चल सकता होगा क्योंकि हिन्दू देवी या देवता तो मुसलमान की बलि से अपवित्र और इसलिए कुपित हो जाते। अचम्भा देखिये कि मुसलमान तांत्रिक द्वारा हिन्दू बच्ची के मारे जाने पर कोई रामजन्मभूमि-बाबरी मस्जिद नहीं होता। गर्व से कहो कि ऐसे हरिजन मुसलमान पर कोटिन हिन्दू वारिए, क्योंकि ऐसे हिन्दुओ पर कोटिन मुसलमान भी अपने को वारने के लिए तैयार हो जायेंगे।

जरा इस घटना को धर्मनिरपेक्ष' बना दीजिए। यानी कल्पना कीजिए एक मुस्लिम तांत्रिक किसी हिन्दू लड़कीको भगा ले जाए या एकहिन्दू पुजारी किसी मुस्लिम औरतको। या पुजारी और तांत्रिक ही क्यों, कोई भी हिन्दु मुसलमान प्रेमी-युगल ले लीजिए। फिर देखिए कि भारी बावली, मलियाना, कमाठीपुरा, अहमदाबाद, अयोध्या दूर नही है।

इसी मे कही उस प्रारब्धवाद का रहस्य भी छिपा हुआ है जिसका प्रदर्शन कविता का परिवार कर रहा है। बताया जाता है कि जब पालेराम और कविता के माता-पिता से पुछा गया कि कविता के बारे मे वे क्या सोचते हैं तो उन्होंने कहा कि अब सोचकर क्या होगा, वह जितनी जिन्दगी लिखाकर लाई थी, उसे भोगकर चली गई। एक औरत निपूती होने की वजह से एक लड़की का बलिदान करवा देती है और जिस बच्ची का बलिदान होता है उसकी मां इसे भाग्य और पूर्वजन्म का लेख कहकर चुप हो जाती है। लेकिन यहां एक प्रश्न पूछे बगैर कोई मुक्ति नही है। क्या कविता की जगह कोई बेटा होता तो पालेराम के परिवार की यही प्रतिक्रिया होती ? क्या किसी देवी-देवता ने अबोध कन्या की ही मांग की थी, क्योंकि वही सबसे पवित्र मानी जाती है ?

कविता के बलिदान का एक विडम्बनामय पहलू यह भी है कि शकीला और पालेराम के परिवार एक-दूसरे को जानते थे और शकीला ने कभी [illegible] की दादी की सहायता से चमन के बच्चे जीवित रहने के लिए किसी ओझा या झाड़-फूंक करने वाले की तलाश की थी। इस तरह शकीला द्वारा किये जाने वाले भावी अपराध मे कविता का परिवार भी नैतिक रूप से शामिल हो चुका था। अचानक कविता की अकारण मौत में महाभारत और शेक्सपीयर और ग्रीक त्रासदी के तत्व पाये जाते हैं। ये तत्व जो हम सबके मस्तिष्क के गुहांधकार में छिपे टोटम-टोटाम की ओर भय तथा करुणा भरा इशारा करते हैं।

यह कहना निरर्थक होगा कि अच्छा हुआ कविता के बलिदान के कारण कोई हिन्दु-मुस्लिम दंगा नहीं हुआ, क्योंकि वह हो तो नहीं सकता था। जब पिछले पांच वर्षों मे सैकड़ों नरबलियों पर भारतीय समाज में कोई घृणा कोई आत्मालोचन पैदा ही नहीं हुआ, जब उसे आस्था का महज एक आत्यंतिक रूप ही समझा गया, तो इस घटनाको साम्प्रदायिक रूप कैसे दिया जा सकता है। आस्था, अकीदत, पूजा, वन्दना, कृतज्ञता ज्ञापन या याचना का चरम विवेकातीत रूप है बलिदान। जब हजरत मोहम्मद ने यह माना था कि हजरत इब्राहीम जब अपने बेटे इस्माईल की बलि चढ़ाने गए तो खुदा ने उसकी जगह एक मेंढा रख दिया, तो वे प्रतीक रूप मे खुद अल्लाहताला द्वारा नरबलि के नकार की स्थापना कर रहे थे। लेकिन दुनिया में अक्सर धार्मिक जैसी लगने वाली आस्था ही अन्धविश्वास और अविवेक को जन्म दे रही है। उसका मुकाबला सिर्फ बुद्धि विवेक तथा मानव को सर्वाधिक मूल्यवान समझने से ही किया जा सकता है। प्रेमनगर की नन्हीं कविता के बलिदान से जो जटिल प्रश्न उभरते हैं, उनका मुकाबला चालू समाजशास्त्र नहीं समूचे समाज को मानवीयता, विवेक और समता के रास्ते पर अग्रसर करके ही किया जा सकता है।

पाकिस्तान में साहिबा-परवीन को संगसार किया जायगा

नारी जाति पर अत्याचार का इस्लामी रूप

कराची १ दिसम्बर। शाहिदा परवीन ने अपनी सास से आंसू पोंछते हुए बताया कि उसे व्यभिचार का अपराधी घोषित किया गया है। और पाकिस्तान मे इस्लामी धर्म नियमो के अनुसार उसे संगसार (पत्थर मारकर हत्या) किया जाएगा। फैसला बाद की रहने वाली शाहिदा (२५ वर्ष) ने कैदियों का लिबास पहना हुआ था। उसकी उंगली में शादी की अंगूठी थी और नाक मे लौंग। शाहिदा ने कहा जब मैंने सजा सुनी तो उसपर विश्वास नहीं कर सकी। यह सर्वथा एक झूठा केस है। मैं अपनी निरपराधिता की प्रार्थना केवल खुदा से कर सकती हूँ। और सब कुछ उस पर छोड़ती हूँ। शाहिदा का इस बात पर आग्रह है कि वैधानिक रूप मे उसकी शादी रिश्ते के भाई मुहम्मद सावर से हुई थी। परन्तु अदालत ने उसका दावा निरस्त कर दिया। और यह निर्णय सुनाया कि वह अभी तक खुशी मुहम्मद की विवाहिता पत्नी है जिसने उसके विरुद्ध व्यभिचार का केस किया है। शाहिदा का कहना है कि खुशी मुहम्मद ने अप्रैल १९८१ में उसे तलाक दे दी थी। चूंकि कोई बच्चा नहीं हुआ था और किसी दूसरी स्त्री से विवाह करना चाहता था। फिर भी अदालत ने निर्णय दिया कि शाहिदा व सावर ने तलाक के जो कागजात प्रस्तुत किए हैं वह जाली है। और उनका निकाह अवैधानिक है।

जज श्री नसीरुद्दीन ने ७ नवम्बर को निर्णय सुनाया —मैं निर्णय देता हूं कि इन दोनों ने जिनाबिलजबर (बलात्कार) किया है। इसलिए मैं जिना आर्डिनेंस १९७९ के आधार पर व्यभिचार का अपराधी निर्धारित करता हूं। इन दोनों को सार्वजनिक स्थान पर संगसार कर दिया जावे।

शाहिदा अपनी गिरफ्तारी के लिए सौतेली मां खुर्शीद को जिम्मेदार मानती है जो खुशी मुहम्मद की बहन है। उसका कहना है कि खुर्शीद प्रसन्नता पूर्वक मुझे तलाक दिलवाने के पश्चात् मेरा विवाह एक और व्यक्ति से करवाना चाहती थी जो गूंगा और बहरा था। मैंने इन्कार कर दिया और अपनी इच्छा से शादी की। २४ साल सावर मुझसे प्रेम करता है। वह मेरी देखभाल करता है। खाने पीने का प्रबन्ध करता है। मेरी इज्जत करता है। मैं उसके साथ प्रसन्न हूं। शाहिदा ने बताया कि वह कराची छोड़कर अपनी बुआ के पास रहने के लिए लाहौर चली गई थी। पाकिस्तान के रूढ़िग्रस्त वातावरण में स्त्री का अकेले रहना कठिन था तलाक के ९० दिन के बाद बुआ के लड़के सावर ने मेरे साथ विवाह करने की स्वीकृति दी। मेरा विवाह हो गया वह प्रसन्नता केवल दो सप्ताह की ही सिद्ध हुई। एक दिन पुलिस मुझे और सावर को घर से गिरफ्तार कर थाने ले गई १२ दिन बाद मुझे जेल में बदल दिया गया।

शाहिदा जो एक बढ़ई की बेटी थी। १३ बरस की आयु में असम्मान से उसकी शादी ४० वर्षीय व्यक्ति के साथ कर दी गई। शाहिदा ने अपनी सफाई में कहा हमारे समाज में नारी अत्याचार से पीड़ित है। जब भी कोई गलत बात हुई उस पर सारा दोष धर दिया जाता है। उन्होंने कहा जब से निर्णय आया है मेरा सब कुछ नष्ट भ्रष्ट हो गया है। अब मैं केवल खुदा से ही अपने बचाव के लिए प्रार्थना करती हूं।

सरकारी वकील शम्सुद्दीन कुरैशी के विचार में इस्लामी कानून के अन्तर्गत दण्ड दिया जाना चाहिए। कुरैशी ने एक भेंट में बताया अपराधी इसका पात्र है कि उसे संगसार करके मार दिया जाए। इस्लामिक न्याय के अनुसार दोनो को दण्ड मिलना चाहिए। इसलिए कि दोनों तलाक का प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके। यह पूछे जाने पर कि क्या दण्ड अत्यन्त कठोर नहीं है श्री कुरैशी ने कहा यह दण्ड इस्लाम पर आधारित है। जनरल जिया की मार्शल-ला सरकार ने १९७९ में इस्लामी कानून प्रचलित किया था परन्तु उस समय से लेकर अब तक संगसारी के द्वारा कोई मृत्यु दण्ड नहीं सुनाया गया। दो स्त्रियों को दण्ड सुनाया गया था। परन्तु बाद में इसे कोड़ों की सजा में परिवर्तित कर दिया गया।

मैक्समूलर-विवेकानन्द-दयानन्द

(पृष्ठ ३ का शेष)

अर्थात् वेदान्त का सिद्धान्त, चाहे कितना ही अच्छा और अद्भुत क्यो न हो, इस्लाम की सहायता के बिना बेकार है। हमारी मातृभूमि का हित इसी में है कि वह संसार के दो बड़े धर्मों - हिन्दू और इस्लाम—को समान रूप से अपनायें। उसका शरीर इस्लाम का हो और मस्तिष्क हिन्दू धर्म का हो। हम मानवता को वहा ले जाना चाहते हैं जहा न वेद रहें, न बाइबल और न कुरान।"

वही स्वामी विवेकानन्द अन्यत्र लिखते हैं—

"किसी भी धर्म पन्थ ने इतना अधिक रक्तपात नहीं किया तथा दूसरो के प्रति इतनी क्रूरता नही बरती जितनी अरब के पैगम्बर द्वारा सस्थापित पन्थ इस्लाम ने। कुरान में यह सिद्धान्त है कि जो इसकी शिक्षाओ को नही मानता उसे मार डालना चाहिए। उसे कत्ल कर देना ही उस पर रहम करना है तथा बहिश्त (स्वर्ग) जहा हूरें (अप्सराए) तथा सभी प्रकार के भोगविलास मिलते हैं, उसे प्राप्त करने का पक्का रास्ता है, काफिरो को कत्ल करना। मनुष्य जितना अधिक स्वार्थी होता है, उतना ही अधिक अनैतिक बन जाता है। यही बात इस जाति के विषय मे भी सच है।"

—स्वामी विवेकानन्द ग्रन्थावली भाग २, पृ० १५७-५१

स्वामी विवेकानन्द क्या कहना चाहते हैं, इसका निर्णय पाठक स्वय करे।

मैक्समूलर भक्ति का रहस्य

मैक्समूलर ने A Real Mahatma or Shri Ramakrishna Paramhansa Dev नामक छोटी सी पुस्तक लिखी, जिसमें स्वामी दयानन्द और श्री रामकृष्ण परमहस की तुलना की गई थी। स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध मे मैक्समूलर ने लिखा—

"Dayananda Saraswati tried to introduce some reforms among the Brahmanas He was a scholar in a certain sense. He published a commentary in sanskrit on Rigveda. But in all his writings there is nothing to be quoted as original beyond his somewhat strange interpretations of words and whole passages of the Veda

The late Ramkrishna Paramhansa was a far better specimen of a Sanyasin, He seems to have been not only a high-souled man, a real Mahatman but a man of original thought" Page 7 8

दयानन्द सरस्वती ने ब्राह्मणो में कुछ सुधार करने का प्रयास किया। वह किन्ही अर्थों में विद्वान् था। उसने ऋग्वेद का भाष्य किया। परन्तु उसके ग्रन्थो मे ऐसा कुछ नही है जिसे मौलिक कहा जा सके, सिवा इसके कि उसने वेद के कुछ शब्दों या मन्त्रों के विचित्र अर्थ किए।

रामकृष्ण परमहस सन्यासियो के रूप में कहीं अधिक अच्छा था। वह केवल उच्चात्मा, असली महात्मा ही नहीं था, बल्कि उसके चिन्तन में मौलिकता भी थी।

स्वामी विवेकानन्द के लिए रामकृष्ण परमहस एक महापुरुष न होकर स्वयं ईश्वर थे—Ramkrishna was the greatest of all prophets form in this world Bhagwan Shri Ramakrishna incarnated himself in India. (Biography 93 94)

रामकृष्ण के प्रति मैक्समूलर की आसक्ति ने विवेकानन्द को उन्हें श्रद्धांजलि देने को विवश कर दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान की पृष्ठभूमि

–आचार्य शिवराज शास्त्री एम०ए० मौलवी फाजिल–

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का व्यक्तित्व अद्भुत व चमत्कारिक था, भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम के इतिहास में इतनी वीरता व लोकप्रियता उन्होंने दिखाई थी कि ब्रिटिश शासन काप उठा था।

जलिया वाला कांड के कारण जब काग्रेस के हौंसले भी पस्त हो गए थे यही नरसिंह थे जिन्होने प० मोतीलाल नेहरू को ढाडस बधाकर अमृतसर में काग्रेस का ऐतिहासिक सम्मेलन अपनी स्वागताध्यक्षता में आयोजित किया था।

हिन्दू-मुस्लिम एकता का जो दृश्य भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो ने १८५७ मे उपस्थित किया था उसकी पुनरावृत्ति स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस दृश्य से उपस्थित की जब दिल्ली की जामा-मस्जिद मे मुसलमान भाइयो ने उन्हे ससम्मान लेजाकर उनके गायत्री मन्त्र से प्रारम्भ किए भाषण को प्रेम व श्रद्धापूर्वक सुना। सारी दिल्ली के हिन्दू मुसलमान स्वामी जी को श्रद्धाभाव से देखते थे।

ऐसे दिव्य अलौकिक दृश्यको ब्रिटिश शासन सहन न कर सका। एक ओर निजामुद्दीन औलिया की गद्दी के उत्तराधिकारी ख्वाजा हसन निजामी को एक ऐसे कुकृत्य के लिए तयार किया जिसमे मुसलमानो के प्रत्येक वर्ग को इस्लामी धर्म के पुनरुत्थान व प्रचार के लिए आवाह्न किया गया था यह एक पुस्तक थी जिसे दाइए-इस्लाम के नाम से प्रकाशित किया गया इसके प्रथम सस्करण को पढकर व सुनकर 'महात्मा गाधी ने इस पुस्तक को कमीना व समाज के चरित्र को भ्रष्ट करने वाला घोषित किया। पुस्तक मे सर आगा से लेकर जमीअतुल उलमाए हिन्द तक व इस्लाम के पीरो औलियाओ, मुसलमान, जागीरदारो, वैश्याओ, भिखारियो तक से इस्लाम के प्रचार की अपील की गई थी। लेखक ने स्वय स्वीकार किया है कि उसने देशभर के सभी मुस्लिम नेताओ के परामर्श से यह योजना प्रकाशित की है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने राजपूत मल्कानो की शुद्धि का आन्दोलन चलाकर हिन्दू समाज को जो सबल बनाने का अभियान चलाया तो चिढकर लखनऊ के फरगीमहल के मुस्लिम धर्माचार्य मोलाना अब्दुल बारी ने हर उस ऐसे व्यक्ति को हत्या कर देने का फतवा निकाला जो मुसलमानों का धर्मान्तरण करे। यह फतवा नही स्वामी श्रद्धानन्द जी की मौत का वारट ही था।

उक्त दोनों पुस्तको के उत्तर मे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एक पुस्तक लिखी जिसका प्रथम सस्करण का नाम "हिन्दुओ के किले पर शबखून (डाका) रखा। परन्तु दूसरे सस्करण का नाम बदलकर "मुहम्मदी षडयन्त्र का भण्डाफोड कर दिया।" यह पुस्तक उर्दू भाषा में लगभग १०० पृष्ठ का ग्रन्थ है जिसमे इस्लाम के प्रचार-प्रसार के सम्पूर्ण इतिहास का चित्रण किया गया है कि कितने छलो छदमो हत्याओ व अत्याचारो के आधार पर इस्लाम के तथाकथित धर्म प्रचारको ने ससारभर मे इस्लाम को फैलाया है। स्वामी जी महाराज को इस ग्रन्थ की रचना के लिए भारत व भारतेतर देशो के अलभ्य इतिहास ग्रन्थो का विशद अध्ययन करना पडा। खेद है कि विगत ६५ वर्षो मे इसका हिन्दी रूपान्तर करने का किसी को साहस नहीं हुआ, अब इस लेखक ने इस महान् रचना का हिन्दी रूपान्तर कर दिया है परन्तु वह प्रकाशित नही हो सका।

इस पुस्तक के प्रकाशन से जैसे मुसलमानो मे हडकम्प मच गया और एक हत्यारे को स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या के लिए नियुक्त किया गया। व देश का यह नरपुगव कायरो की भान्ति बलिदान कर डाला।

' ~~स्वामी श्रद्धानन्द जी~~ के इस अमर ग्रन्थ की भूमिका का कुछ अंश हम निम्न में उद्धृत कर हैं जिससे पाठक पुस्तक की महत्ता का अनुमान कर सके। स्वामी जी अपनी पुस्तक का प्रयोजन प्रकट कर रहे हैं—

हिन्दू समाज की रक्षा की उन्हे कितनी चिन्ता थी यह इस लेख से प्रकट है—

पुस्तक का प्रारम्भ करते हुए स्वामी जी लिखते हैं—

"स्वावलम्बी सुरक्षा के सिद्धान्त पर जो मनुष्य कार्य नही करता उसे जीवित रहने का कोई अधिकार नही। इसी प्रकार जो मान व समूह एक समाज के रूप मे अपनी रक्षा के लिए योग्यता प्राप्त नही करता उसे इस अपराध का दण्ड मिलना ही चाहिए कि उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाए अतएव हिन्दुओ को सावधान करना मैंने अपना कर्त्तव्य समझा है।

धर्म का उद्देश्य

सम्प्रदाय मनुष्यो को केवल एक धागे मे पिरोने का नाम नही? अगर भारत देश के मुसलमान ख्वाजा हसन निजामी के परामर्श पर कार्यरत होगे तो पता नही कि किस मत के प्रचारक होगे। यदि हिन्दुओ को मुसलमान बनाने के लिए दुश्चरित्र स्त्रियो की भ्रष्टाचरिता जुआखोरी और उनके अतिभ्रष्ट आचरण को साधन बनाया जाना पुण्य कार्य है तीन जाने कि कुरान मजीदकी ने की व हार्दिक पवित्रता की ओर प्रेरणा देने वाली शिक्षाओ का क्या स्वरूप बनेगा। और यदि लखनऊ के मौलाना अब्दुल बारी (मुसलमानो के सबसे वड धर्म व्यवस्थापको का फतवा (धार्मिक निणय) जिसमे उन्होने मुसलमान के धर्म परिवर्तन पर वध करने का विधान किया हैं, उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी और उसे जानकर भारतवर्ष का हिन्दू कैसे लापरवाही से बैठा रह सकता है। अत मैंने अपना कर्त्तव्य समझा है कि मैं सच्चे (दीनदार) मुसलमानो को उनके कर्त्तव्यो के प्रति जागरूक बनाऊ। —श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द जी की इस पुस्तक ने मुसलमानो को निरुत्तर कर दिया।

इस्लाम के प्रचार कार्य मे जिन घोर घृणित उपायो छल छदमो का अत्याचार व बर्बरता का प्रयोग किया गया था स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उसे अपनी लोह लेखनी से नगा कर दिया। यह पुस्तक उर्दू भाषा मे लाहौर मे १९२३ मे शान्त स्वामी अनुभवानन्दजी सरस्वती के सम्पादकत्व मे प्रकाशित हुई। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की कुछ अन्य छोटी-छोटी रचनाओ का भी इसमे सकलनथा। भारतीय राष्ट्र के राजनीति सम्बन्धी महत्वपूण विषयो पर भी इसमें विस्तृत व तत्थ्यात्मक चर्चा थी। हिन्दू व मुस्लिम व राष्ट्रवादियो के प्रति मार्मिक अपील भी स्वामी जी महाराज ने की थी। परन्तु स्वामी जी के बलिदान के बाद लोगो का ध्यान इधर से उपेक्षा परक हो गया। यद्यपि आज के विषम साम्प्रदायिक वातावरण को वास्तव मे समझने के लिए स्वामी जी का यह आलेख अत्यन्त उपयोगी व प्रेरणादायक है।

अपनी पुस्तक मे स्वामी जी ने हिन्दुओ की उन कमियो व कमजोरियो को भी खूब उजागर किया है जिनके कारण करोडो हिन्दू अपना प्राचीन धर्म छोडकर इस्लाम के प्रभाव व उनके छल छदम मे फस गए व देश मे एक नया सघर्ष खडा हो गया।

जिन कारणो ने देश से खण्ड खण्ड किया जो बचैनी आज भी भारतीय राष्ट्र को व्याकुल बनाए हैं उसके मूल कारणो को समझने मे यह दस्तावेज परम सहायक हो सकता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस हम मनाते है तो हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम उनके अनुभवी प्रौढ विचारो से भी लाभान्वित होकर ~~उनके बताए सम्मान~~ से राष्ट्र कल्याण का पथ-प्रशस्त करे। ●

मुगलसराय में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का पदार्पण

मुगलसराय २२ नवम्बर।

एक लम्बे समय के अन्तराल के पश्चात् सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती २२ नवम्बर को काशी नगरी पहुंचे। मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर श्री स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया। बाजार में स्वागत जलूस का नेतृत्व मे माता कलावती देवी आर्या एव आर्य समाज के प्रधान श्री शकरलाल पोद्दार ने किया। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ ट्रस्ट के मन्त्री सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री डा० आनन्द प्रकाश भी उपस्थित थे। श्री स्वामी जी आर्य समाज के प्रांगण में झण्डारोहण सन्देश मे कहा कि इस सार्वभौम झण्डे को लहराये रखना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है।

मुगलसराय के गोरक्षा सम्मेलन मे स्वामी जी ने गोवध को भारत पर महान कलक बताया। उन्होने कहा पाकिस्तान जैसे देश मे भी गोहत्या पर पाबन्दी है लेकिन भारत जैसे देश मे अवैध ढग से फर्जी परमिटों गोधन कसाईखाने तक पहुंचाया जाता है। इस काय में राजनीतिक नेताओ, अफसरो एव पुलिस की मिलीभगत होती है। यदि हम गो दुग्धपान को अपने जीवन का अ ग बना सकें तो, जहा भारत में दूध का उत्पादन बढ़ जायेगा, वही इसकी नस्ल सुधार तथा हमारी आर्थिक प्रगति का नया सूत्रपात होगा। उन्होंने कहा मुगलसराय को गोरक्षा का गढ़ बनाया जावे क्योंकि यही से बडी मात्रा में गोवश कलकत्ता को भेजा जाता है।

स्वामी जी ने आर्य समाज मुगलसराय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन भी किया। इसके पश्चात् वह बनारस गए।

गोरखपुर में विशाल वैदिक यज्ञ

वेदाचार्य स्वामी अयोनन्द वैदिकयति के सयोजकत्व में वेद-मन्दिर शिवपुर निकट पसरा बाजार गोरखपुर मे विशाल वेदयज्ञ २४ से २८ फरवरी तक होगा जिसके ब्रह्मा तपोवन देहरादून के महात्मा दयानन्द जी व एटा के आचार्य विश्वदेव होगे। इस अवसर पर प्रचारार्थ अनेक विद्वानों व महात्माओं को भी आमन्त्रित किया गया है। आर्य जनता से निवेदन है कि इस अवसर पर पधार कर धर्मलाभ उठावें। —वैदिक महायज्ञ समिति

समालोचना

महर्षि याज्ञवल्क्य प्रणीत
शतपथ ब्राह्मण काण्ड १ व २

अनुवादक आचार्य वेदमुनि शास्त्री एम० ए० काव्यतीर्थ
प्रकाशक विश्ववेद परिषद सी ८७० महानगर लखनऊ-६
मूल्य—२० रुपये

प्रभु की कल्याणी वाणी वेद के पश्चात आर्य साहित्य मे ब्राह्मण ग्रन्थों की प्रामाणिकता व उपादेयता नि सदेह है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाणों का भरपूर उपयोग किया। इनमें भी शतपथ ब्राह्मण तो जैसे रत्नो की खान है, वैदिक यज्ञों व कर्मकाण्डो के द्वारा जीवन को किस प्रकार सार्थक व सफल बनाया जा सकता है। शतपथ उन मार्गों व विधि विधानों का अमोघ सागर है। सस्कृत भाषा मे ही होने से इसका भरपूर लाभ नही प्राप्त हो पाता था। इस अभाव की पूर्ति आर्य जगत के सुपरिचित विद्वान आचार्य वेद मुनि जी ने इसका हिन्दी रूपान्तर कर दिया है। यह ग्रथ १४ काण्डों मे समाप्त होगा जिसमें से १ व २ काण्ड हमारे सामने है। हम वैदिक विद्वानो आर्य जनता से इस ग्रथ को अपनाने की हार्दिक प्रार्थना करते हैं। साहित्य किसी जाति व समाज की सम्पत्ति होता है जिस समाज को साहित्य मे प्रेम व रुचि होती है वही अपने सिद्धान्तो मान्यताओं व अस्तित्व को सुरक्षित कर सकता है। महर्षि ने वैदिक साहित्य का पढना पढाना व सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म माना है। आर्य समाज इस ग्रथ का लाभ लें। हम पूज्य आचार्य जी के घोर परिश्रम व उच्च साधना की सराहना करते है। प्रभु उन्हें चिरायु करें ताकि वे अपनी साधना में सफल हों और आर्य समाज के इस महान मिशन को पूरा कर सके।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज शेखपुरा (मुंगेर) की यज्ञशाला पर श्री भगवानदास आर्य का धनराशि से अयोध्या गुरुकुल के कुलपति आचार्य वसुमित्र जी की अध्यक्षता मे १० से १५ नवम्बर तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ।



बाय से—डा० आनन्दप्रकाश (उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा) श्री शकरलाल पोद्दार (प्रधान आर्यसमाज मुगलसराय) स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा) झडोतोलन करते हुए श्री आशीषकुमार गोस्वामी (प्रचार मन्त्री आय प्रतिनिधि सभा वाराणसी)



आयसमाज बागपत जिला मेरठ के व षिकोत्सव पर स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती निर्धनो को कम्बल बाटते हुए। साथ मे समाज के मन्त्री मा०सत्यप्रकाश गौड है।

स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का विमोचन

स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली ग्यारह खण्डो मे छपकर तैयार हो गई है। इसका विधिवत विमोचन लोकसभा के अध्यक्ष माननीय डा० श्री बलराम जाखड ने २१ दिसम्बर को साय ४ ३० बजे करना स्वीकार कर लिया है। विमोचन समारोह की अध्यक्षता सावदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी करगे।

मुख्य वक्ता होग श्री स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती, श्री प्रो० सत्यकेतु विद्यालकार, श्री प्रो० वेदव्रत वेदालकार श्री चिरजीत, श्री आचाय क्षमचन्द्र सुमन।

स्थान है कन्स्टीटयूशन क्लब रफी माग, नई दिल्ली। ग्रन्थावली का प्रकाशन आय समाज के प्रमुख प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्दने किया है।

भूल सुधार

२९ ११ १९८७ सूखा पीडित सहायता कोष मे श्री रघुवीर सिह प्रधान आयसमाज जगतपुर के साथ जिला पीलीभीत भूल से छप गया है। वास्तव में जिला मैनपुरी पढा जाए। भूल के लिए क्षमा याचना। —सम्पादक

आर्य वीरदल जौनपुर

के अन्तगत आय वीरदल की शाखा २७ दिसम्बर रविवार आयसमाज मन्दिर केराकत मे होगी अनेक खेल प्रतियोगिताए, सास्कृतिक कायक्रम व मडल आय वीर सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

—शिवचन्द आय

आर्य समाज बागपत का वार्षिक उत्सव—

गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने की श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा मांग

बागपत १० नवम्बर। आय समाज बागपत का तीन दिवसीय वार्षिक महोत्सव २७ से २९ नवम्बर तक बडी धमधाम से मनाया गया। महोत्सव का उद्घाटन श्री के० नरेन्द्र तथा समापन सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने किया तथा समापन भाषण मे देश के समस्त राज्यों मे गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने की माग की।

इस अवसर पर उन्होने राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त मा० मुरारीलाल आय द्वारा रचित पुस्तक आयदपण का विमोचन किया निबल लोगो को रजाईया व कम्बल वितरित किये तथा कस्बे के सामाजिक कायकर्ताओ तथा निबन्ध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये।

महोत्सव मे सवश्री बालदिवाकर हस पण्डित इन्द्रराज, प्रो० धमपाल, धमपाल सुधासु (आय सन्देश) प्रो० वेदप्रकाश मेरठ तथा देश के लोकप्रिय भजनोपदेशक रामचन्द्र 'पथिक' ने भाग लिया।

तीन दिन के महोत्सव का सचालन समाज के मन्त्री म० सत्यप्रकाश गौड ने किया जबकि आय समाज बागपत के प्रधान वीरेन्द्रसिंह राणा ने पिछली वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी तथा भावी कायक्रमों पर प्रकाश डाला।

धन्य-धन्य ऋषि दयानन्द

अनूप शहर मे महर्षि दयानद पधारे।
स्वागत करने को पहुचे नर नारी सारे॥
स्वामी जी ने दिए कई व्याख्यान वहा पर।
करो सभी शुभ कम कहा सबका समझ कर॥
बोला धुनिया एक नाथ मैं हूं अति निधन
काम रुई धुनने का मैं करता हू भगवन।
मेरी भक्ति का मुझको साधन बतला दो।
दया करो दारुण दुखो से मुझ छुडा दो॥
स्वामी जी ने कहा, व्यथ, मत घबरा भाई।
अपने सदा काम में दिखलाना सच्चाई॥
शुभ कर्मों से मोक्ष, तुझ भी मिल जायेगी।
जीवन भर की लगी कालिमा धुल जाएगी॥
जिसकी जितनी रुई, उसे उतनी लौटाना।
कभी किसी की रुई भूलकर नही चुराना॥
सुन ऋषि का उपदेश, बहुत धुनिया हर्षाया।
"धन्य-धन्य ऋषि दयानन्द" कह घर को आया॥

—प० नन्द लाल 'निर्भय'

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२०-१२-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ६१
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U 93 Post in D.P.S.O on 17.12.1987

स्वाधीनता सेनानी सम्मान

भारत सरकार द्वारा स्वाधीनता सेनानी सम्मान दिए जाने पर अनेक मित्रो और शुभ चिन्तको ने अभिनन्दन तथा बधाई भेजकर अनुगृहीत किया है। मैं उन सभी का आभारी हूँ। पिछले १८ वर्ष लगातार प्रयत्न के बाद मुझे यह जो सम्मान मिला उसे मैं आर्य समाज की सेवा का फल मानता हूँ।

मुझे यह सम्मान मिलने के बाद उन हजारों सत्याग्रहियो या उनकी विधवाओ का स्मरण आ रहा है जो कि सबका इस सम्मान के पात्र होते हुए भी अब तक केन्द्र व राज्य से सम्मानित नही हो पाए हैं। पिछले १८ वर्षो की भांति मेरा आगे भी कार्यक्रम उन सब की सहायता और मार्ग दर्शन करना बना रहेगा। —ब्रह्मदत्त स्नातक

फोन ५५४७५२ सी ४ बी ३३२ बी जनकपुरी नई दिल्ली ५८

आर्य वीरदल समापन समारोह

६ दिसम्बर १९८७ को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम मे श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे हुआ जिसमे वेद मन्त्र पी० टी० प्रदर्शन, शारीरिक कार्यक्रम व योग प्रदर्शन, पुरस्कार वितरण व अध्यक्षीय भाषण हुआ।

बाद श्री लालाराम वाजपयी, मन्त्री श्री रामगोपाल गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री आराम गुप्ता सर्वसम्मति से चुने गए।

—आर्य समाज कण्डला के वार्षिक चुनाव मे प्रधान श्री ...जी भाई भानु जी, मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण म... चुने गये।

—आर्य समाज परेव जिला पटना के वार्षिक चुनाव मे प्रधान श्री रामलखन प्रसाद व मन्त्री श्री तुलसी प्रसाद चुने गए।

—आर्यसमाज महुवाखेड़ा (नैनीताल) के निर्वाचन में प्रधान श्री हीरासिंह जी मन्त्री श्री श्रीकृष्ण जी चुने गए।

—आर्य समाज बसन्त विहार नई दिल्ली निर्वाचन में प्रधान श्री धर्मवीर जी मन्त्री, श्री डा० जी० पी० गुप्ता चुने गए।

—आर्य महिला समाज उन्नाव के निर्वाचन मे प्रधाना श्रीमती कैलाश सूरी व मन्त्राणी श्रीमती प्रवेश तनी चुनी गई। महिला समाज द्वारा उन्नाव म गंगा मेला के उपलक्ष में ज्ञान मेला का आयोजन किया गया।

—आर्य समाज दादरी (गाजियाबाद) के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री गनीराम (अखेड़ा वाले) व मन्त्री श्री ब्रह्मसिंह प्राचार्य चुने गए।

—आर्य समाज अनूपशहर नरौरा बुलन्दशहर के निर्वाचन में प्रधान श्री एम० पी० सक्सेना व मन्त्री श्री वीरबलसिंह चुने गए।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ... शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ...

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव

राष्ट्र को देवता मानो

सार्वदेशिक

सारे संसार को आर्य बनाओ

साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८८) | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयान दाब्द १ ५ दूरभाष ५ ६
वर्ष २२ अंक ५४) | पौष शु० म २०४ रविवार निदम्बर १९८७ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ० पैसे

बांडी नदी पर संन्यासियों का धरना व यज्ञ

राजस्थान सरकार ने संविधान को रोका

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का सम्बोधन

जयपुर २१ दिसम्बर । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि राज्य सरकार ने दिवराला जा रही पदयात्रा को नही, भारत के संविधान को रोका है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को दिल्ली में पदयात्रा को रोकने की सूचना मिलते ही वे चोमू पहुचे थे।

राजस्थान सरकार ने स्पष्ट किया है कि स्वामी अग्निवेश तथा उनके दल को चोमू तहसील मे प्रवेश करने और सीकर की ओर जाने से रोकने का निर्णय सुरक्षा की दृष्टि से लिया गया है। सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट ने धारा १४४ के तहत जारी एक आदेश में स्वामी अग्निवेश तथा उनके दल को हरमाडा और चोमू के बीच कल एक नोटिस जारी कर बाडी नदी के पास रोक दिया था। स्वामी अग्निवेश तथा उनके दल पर हिंसक वारदात होने और उनको नुकसान पहुचाने की आशका होने से जिला प्रशासन ने यह कार्यवाही की।

जिला प्रशासन की इस बात से स्वामी अग्निवेश के दल के सदस्य सहमत हो गए हैं लेकिन श्री अग्निवेश का आग्रह है कि वह २३ दिसम्बर तक बाडी नदी के पास ही ठहरे रहेगे। सर्दी का मौसम होने से स्वामी अग्निवेश और उनके दल के लिए तम्बू और भोजन आदि की व्यवस्था में जिला प्रशासन पूर्ण सहयोग कर रहा है। अब तक की उनकी पदयात्रा के दौरान कुछ स्थानो पर हिंसा की आशका के कारण पर्याप्त सुरक्षा प्रबन्ध किया गया है तथा हिंसा करने वालो को गिरफ्तार किया गया है।

दल के सदस्यो ने बाडी नदी के पुल के निकट ही अखण्ड यज्ञ शुरु कर दिया है।

दल का नेतृत्व कर रहे स्वामी अग्निवेश ने बताया कि उन्हे यह आशका थी कि पुलिस पदयात्रियों को वहा से हटाएगी। इसी बात को ध्यान में रखकर पदयात्रियो ने यह यज्ञ शुरू किया है। जो २३ दिसम्बर तक जारी रहेगा।

बन्धुआ मुक्ति मोर्चा राजस्थान एव विश्वास नामक संस्था ने प्रधानमन्त्री राजीव गाधी एव केन्द्रीय गृह राज्यमन्त्री पी चिदम्बरम से माग की है कि दिवराला पदयात्रा के

(शेष पृष्ठ २ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का निर्वाचन

डा० धर्मपाल भारी बहुमत से विजयी

दिल्ली २० दिसम्बर। आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल में आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का निर्वाचन सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ ३७० प्रतिनिधियो ने भारी बहुमत से डा० धर्मपाल को प्रधान निर्वाचित किया।

श्री बाबू सोमनाथ एडवोकेट तथा राममूर्ति केला ने श्री सरदारी लाल वर्मा का नाम प्रधान पद के लिए पेश किया।

श्री सूर्यदेव जी ने डा० धर्मपाल का नाम पेश किया डा० जगन्नाथ जी ने समर्थन किया, डा० धर्मपाल को २८७ मत मिले और श्री सरदारी लाल को ६२ मत पड़, १७ प्रतिनिधियो ने मत नही दिए ४ मत पत्र अवैधानिक घोषित किये गये।

इस प्रकार डा० धर्मपाल भारी बहुमत से प्रधान निर्वाचित हुए अब सभा के निर्णय तथा अन्य सभी अधिकार सर्व सम्मति से डा० धर्मपाल को दिए गए।

वेदामृत

परिवार में योग-क्षेम हो

उपोहश्च समूहश्च,
क्षत्तारौ ते प्रजापते।
ताविहा वहतां स्फातिं,
बहुं भूमानमक्षितम् ॥
अथर्व० ३।२४।७॥

हिन्दी अर्थ—हे प्रजा के पालक परमात्मन्! धन का सग्रह और सवर्धन ये दोनो तेरे अग्रदूत हैं। ये दोनो यहां समृद्धि को लाव। ये बहुत अधिक अक्षय परिपूर्णता को भी दे।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

देश भक्ति, एकता एवं अदम्य साहस की महान आवश्यकता

—के. सी. पन्त, रक्षामन्त्री भारत सरकार

लखनऊ २९ नवम्बर। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेशन के ऐतिहासिक स्थान पर, जहां आज से ५९ वर्ष पूर्व ३० नवम्बर १९२८ को ब्रिटिश साइमन कमीशन का बहिष्कार किया गया था—के स्मृति दिवस पर, आयोजित एक विशाल जन सभा में अपने उद्गार प्रकट करते हुए रक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने देश की जनता को 'साइमन कमीशन के बहिष्कार' जैसी देश भक्ति, एकता एव अदम्य साहस की भावना के साथ राष्ट्र को आगे ले चलने का आह्वान किया।

लखनऊ मे इस ऐतिहासिक प्रदर्शन का नेतृत्व श्री प० जवाहरलाल नेहरू, प० गोविन्द बल्लभ पन्त एव प० रास बिहारी तिवारी, तत्कालीन मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश एव मेम्बर लेजिस्लेटिव कौंसिल ने किया था। बहिष्कार करने वाले इस विराट जलूस मे देशभक्तो की अपार भीड थी। सभी देश भक्त और आर्य नेता 'साइमन गो बैक' का नारा लगाते हुए शहर की प्रमुख सडको, अमीनाबाद, लाटूश रोड होते हुए चारबाग की ओर बढ रहे थे, तभी ब्रिटिश पुलिस और घुडसवारो ने इन निहत्थे नेताओ एव नवयुवको पर अचानक लाठियों से बर्बर हमला कर दिया जिसमें अनेक प्रमुख नेताओ को गम्भीर चोटें आयी थीं। प० जवाहरलाल नेहरू को बचाने के प्रयास मे श्री प० गोविन्द बल्लभ पन्त एव श्री प० रास बिहारी तिवारी अपनी शारीरिक लम्बाई का फायदा उठाते हुए सफल तो हो गये किन्तु स्वय गम्भीर रूप से घायल हो गये। प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री एव आर्य नेता श्री चन्द्रभानु गुप्त ने अपने साथियों सहित, इस अवसर पर पतगो मे 'कमीशन गो बैक' लिखकर उस स्थान पर गिराने की योजना कार्यान्वित की।

रक्षा मन्त्री श्री के० सी० पन्त एव श्रीमती इला पन्त के लखनऊ आगमन पर उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री अर्जुनदेव महाना तथा समाजो व आर्य शिक्षण सस्थाओं के प्रतिनिधियों सहित हवाई अड्डे पर उनका भव्य स्वागत किया। मान्य अतिथि के स्वागत में स्थान-स्थान पर फूलमालाओ से सजे स्वागत द्वार बने हुए थे। इस अवसर पर डी० ए० वी० कालेज, दयानन्द विद्या मन्दिर, दयानन्द शिशु मन्दिर तथा आर्य समाजो द्वारा आयोजित स्वागत समारोह मे रक्षा मन्त्री का भावभीना अभिनन्दन करते हुए श्री मनमोहन तिवारी ने आर्य समाज नैनीताल के सस्थापक सदस्य स्व० प० गोविन्द बल्लभ पन्त का स्मरण करते हुए इस परिवार द्वारा आर्य समाज के प्रति की गई सराहनीय सेवाओ के लिए आर्य जनता की ओर से उनका कृतज्ञता भरे स्वरो मे महान आभार प्रकट किया।

बांडी नदी पर संन्यासियों का धरना

(पृष्ठ १ का शेष)

पदयात्रियो पर किए गए निर्मम लाठीचार्ज की अविलम्ब न्यायिक जाच कराई जाए। इसके साथ ही उन्होने राज्य के गृहमन्त्री गुलाब सिह शक्तावत को तत्काल गृहमन्त्री पद से हटाने की भी माग की है। 'विश्वास' के अध्यक्ष पारस जैन ने प्रधानमन्त्री को भेजे गए अपने तार मे कहा है कि अब गृहमन्त्री का समानता एव नारी उत्पीडन समर्थक चेहरा सामने आ गया है। उन्होने कहा है कि जो सरकार सविधान में प्रदत्त नागरिको के अधिकारो की रक्षा एव न्यायपालिका के निर्देशो का पालन नही करवा सकती उसे सत्ता में रहने का कोई अधिकार नही है।

पदयात्रियो के खाने पीने की व्यवस्था फिलहाल राजस्थान विश्वविद्यालय की सामाजिक सस्थाए और चौमू का आर्यसमाज कर रहा है। गुरुकुल गोतमनगर दिल्ली के आचार्य हरिदेव अपने दल सहित आगामी २३ दिसम्बर को होने वाले महायज्ञ में शामिल होने के लिए पहुच गए है।

धारा १४४ निरस्त

राजस्थान उच्च न्यायालय ने अजमेरके उप-जिलाधीश द्वारा चोमू क्षेत्र में कल से लागू की गई धारा १४४ का आज निरस्त कर दिया।

आजादी के बाद भी....... हिन्दी माध्यम में परीक्षाएँ देने से वंचित क्यों ?

इन्स्टीट्यूशन आफ इन्जीनियर्स से सचालित ए० एम० आई० ई० की परीक्षा केवल अग्रेजी माध्यम मे ही ली जाती है। इस परीक्षा मे हिन्दी माध्यम की छूट नही है। यह हिन्दी भाषी तकनीकी छात्रो एव राष्ट्रभाषा का अपमान है और स्वतन्त्र भारतीयो के माथे पर कलक है। आजादी के ४० वर्षों बाद भी भारतीय तकनीज्ञों को हिन्दी माध्यम मे परीक्षाऐ देने से वचित किया गया है जो उनके और राष्ट्र भाषा के प्रति भेदभाव व अन्याय का द्योतक है तथा सस्थान की मानसिक दासता का ही प्रतीक है।

वर्षों से केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, हिन्दी व्यवहार सगठन, डिप्लोमा होल्डर इन्जीनियर ऐसोसिएशन आदि अनेक सस्थाओ और अनेक प्रतिभाशाली व्यक्तियो जिनमे डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धक समिति नई दिल्ली के सगठन सचिव माननीय दरबारी लाल जी भी सम्मिलित है, दी इन्स्टीट्यूशन आफ इन्जीनियर्स, ८, गोखले रोड, कलकत्ता को पत्र लिखकर हिन्दी माध्यम की छूट के लिए निवेदन करते रहे हैं लेकिन सस्थान ने अभी तक बात नही मानी है जिससे दिल्ली सहित सात हिन्दी प्रान्त एव गुजरात, महाराष्ट्र, पजाब आदि के अनेक हिन्दी भाषी छात्र इन परीक्षाओ का लाभ नही उठा पाते हैं।

वैसे भी अग्रेजी माध्यम में परीक्षाऐ पास बहुत से योग्य वैज्ञानिक एव इन्जीनियर तथा तकनीशी विदेशो मे जाकर बस जाते हैं। इस प्रकार अग्रेजी माध्यम प्रतिभा पलायन मे भी पूरी तरह सहायक है। जब प्रतिभा का मूल्याकन तकनीकि प्रश्नों के उत्तरो से हो जाता है तो फिर एक इन्जीनियर को धारा प्रवाह अग्रेजी आना आवश्यक क्यो है। समझ मे नही आता है कि आज तक इन परीक्षाओं मे अग्रेजी का प्रभुत्व किस उद्देश्य से रखा गया है।

अपनी राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा हेतु अपनी राष्ट्र भाषा को गौरवपूर्ण स्थान अवश्य ही मिलना चाहिए।

अग्रेजी माध्यम छात्रो के मूल चिंतन मे भी बाधक है। क्योकि वे पढते तो अग्रेजी माध्यम मे है लेकिन सोचते हिन्दी माध्यम मे ही, जिससे छात्रो मे चिंतन की क्षमता कम हो जाती है।

अत ए० एम० आई० ई० की परीक्षा मे हिन्दी माध्यम की छूट मिलनी ही चाहिए ताकि वैज्ञानिक एव इन्जीनियर पूरी दक्षता से देश की सेवा कर सके।

—विनोद कुमार गौतम

कस्बा पहासू जिला बुलन्दशहर, उ०प्र०- २०२३९६

आर्य वीर दल शिक्षक शिविर सम्पन्न

गुरुकुल येडशी रामलिंग, जिला धाराशिव (महाराष्ट्र) में दिनाक २५ अक्तूबर से ८ नवम्बर १९८७ तक मराठवाडा क्षेत्र का आर्य वीर दल शिक्षक शिविर श्री स्वामी स्वात्मानन्द जी की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य के नेतृत्व मे ५० आर्य वीरो ने प्रशिक्षण लिया। ८ नवम्बर को दीक्षान्त समारोह में ९ उपव्यायाम शिक्षक १ व्यायाम शिक्षक, १० शाखा नायक और शेष आर्य वीर की उपाधि से विभूषित किये गये। उपाधि एव प्रमाणपत्र वितरण आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र जी गुरुजी द्वारा किया गया।

मध्याह्न में दल की बैठक हुई जिसमें सचालक तानाजी राव आचार्य, उपसचालक श्री सुभाषचन्द्र आचार्य, मन्त्री श्री अर्जुन रावजी सोमवशी कोषाध्यक्ष श्री विजयकुमार कानडे की नियुक्तियां की गई। आगामी ग्रीष्मावकाश में पुन धारूर जिला बीड़ में शिक्षक शिविर लगाने का निर्णय लिया गया। शिविर को सफल बनाने के लिये डा० धर्मपाल आर्य, डा० सुग्रीव काले, आचार्य सुभाषचन्द्र जी तथा आर्य वीर दल उदगीर का विशेष योगदान रहा।

सम्पादकीय

दिवराला हत्या कांड व धर्मरक्षा समिति

यह निर्विवाद सत्य है कि रूपकुंवर (१८ वर्ष) की हत्या, सती प्रथा के नाम पर दिवराला में धन व झूठी प्रतिष्ठा के लोभियो ने की, नंगी तलवारों की छाया में चीखती चिल्लाती एक बाल विधवा को जीवित जला दिया गया। देश भर मे उसके विरुद्ध महान आन्दोलन हुआ। जहा सरकार ने इस हत्याकांड की न केवल भर्त्सना की वहा कानून ने भी इस अमानवीय प्रथा को रोकने के लिए कड़े कानूनो की व्यवस्था कर दी जिसमे यह प्रावधान किया गया है कि इस प्रकार की हत्या को प्रोत्साहित करने वालो को प्राण दण्ड तक दिया जाए। सामाजिक संस्थाओ ने देश भर मे विशाल रैलियो, सम्मेलनों व निन्दा प्रस्तावो द्वारा इस काण्ड की न केवल घोर निन्दा की अपितु नारी जाति के ऊपर होने वाले इस प्रकार के अत्याचारो के विरुद्ध जन जागरण के लिए स्थायी संकल्प लिए, इसी संदर्भ मे ५ दिसम्बर को देश के १०१ सन्यासियो व बुद्धिजीवियो का एक जत्था दिवराला गया है जो जनता में फैले अन्ध विश्वास व मिथ्या मान्यताओ के विरुद्ध जनता मे जन जागरण अभियान चलाएगा। यह जत्था २३ दिसम्बर को दिवराला मे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के अवसर पर भारतीय नारी के प्रति महान भारतीय वैदिक धर्मी आदर्शों व सिद्धान्तो का प्रचार करेगा। जिससे फिर किसी बाल विधवा के जीवित जलने का अवसर ही उपस्थित न हो पाए और ऐसे काण्डो की पुनरावृत्ति न हो सके।

इस हत्या काण्ड से पूर्व राजस्थान मे कोई धर्मरक्षा समिति स्थापित नहीं थी। परन्तु अपराधियो के इस घोर घृणित अमानवीय कृत्य का कोई विरोध न कर पाए इस उद्देश्य से एक धर्म रक्षा समिति का अभी अभी गठन किया गया है। इस धर्म रक्षा समिति ने न जाने किस धर्म के आधार पर समिति निर्मित की। देश भर की हिन्दू धर्म मे विश्वास रखने वाली संस्थाऐ जिस घटना का विरोध कर रही हैं। आर्य समाज ने देशभर मे तथाकथित सती प्रथा के समर्थकों को धर्म निर्णय के लिए शास्त्रार्थ के चेलेंज दे रखे हैं। सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती स्वयं पुरी जाकर पुरी के शंकराचार्य निरञ्जनदेव तीर्थ को अपनी गृहनगरी में एक विशाल सार्वजनिक सभा मे उन्हें शास्त्रार्थ के लिए चैलेंज दे आए हैं। कानपुर मे दो शंकराचार्य आर्य समाज द्वारा दिए चैलेंज से घबराकर बहाने बनाकर शास्त्रार्थ समर से पलायन कर चुके हैं। अब यह राजस्थान मे किस धर्म की ध्वजा लेकर धर्म रक्षा समिति तथाकथित धर्म की रक्षा के नाम पर १०१ सन्यासी व बुद्धिजीवियो के नारी अधिकार रक्षा अभियान का विरोध कर रही है। कौन से धर्म की किस पुस्तक को उन्होंने अपने पक्ष मे प्रस्तुत किया है इसका आज तक कोई समाचार, समाचार पत्रो मे प्रकाशित नहीं हुआ है। हुआ है तो केवल यही कि कुछ राजपूत व धर्म ध्वजी तलवारो लाठियो व हाकियो से लैस होकर १०१ सन्यासी व बुद्धिजीवियों का विरोध करने राजस्थान की सीमा पर पहुंचे हैं। धर्म रक्षा समिति के अधिकारियो ने जयपुर मे एक वाद भी न्यायालय में प्रस्तुत किया है जिसमें केवल न्याय व व्यवस्था का ही प्रश्न उठाया है। जबकि राजस्थान उच्च न्यायालय धर्मरक्षा समिति के लोगो द्वारा प्रस्तुत याचिका पर पूर्ण विचार करके अपना यह निर्णय दे चुका है कि हिन्दु धर्म के किसी भी ग्रन्थ में सती प्रथा का समर्थन प्राप्त नहीं अतः इस प्रथा को अवैधानिक व अमानवीय घोषित किया जाता है व इस प्रकार के हत्याकाण्डो में भाग लेने वाले प्रोत्साहित करने वालो को दण्ड भागी घोषित किया जाता है।

सभ्य सुशील अबर सभ्यता के हिमायती तथाकथित धर्म का नाम लेने वाले धर्मरक्षा समिति के ये मौसमी कीड़े यह नहीं समझ पा रहे हैं कि आज के युग में धर्म का प्रचार व धर्म की रक्षा तलवारो लाठियो व हाकियों के द्वारा नहीं हो सकती। एक समय था जब मुगल तुर्क व अन्य धर्मावलम्बियो ने तलवारों के बल पर हिन्दुओ का धर्म परिवर्तन किया था जिसके फल-स्वरूप आज भी करोड़ो हिन्दुओ में से धर्म परिवर्तन किये हुए तथाकथित मुसलमान भारत में मौजूद हैं। परन्तु जिन हिन्दू धर्म के रक्षको ने उनका मुकाबला करके इसलामी साम्राज्य का सदा के लिए अन्त कर दिया जैसा कि एक मुस्लिम कवि ने लिखा है—

वह दीने हजाजी का बेबाक बेड़ा
निशां जिसका अकसाए आलम में पहुंचा
न अम्मां में अटका न कुलजम में ठठका
किए पार जिसने सातो समुद्र
वह डूबा दिहाने में गंगा के आकर

तलवारों के द्वारा धर्म की रक्षा का युग समाप्त हो चुका है। आर्य समाज के प्रवर्तक देव दयानन्द ने बुद्धिवाद व वैदिक धर्म द्वारा वह युग प्रवर्तन किया है कि आज करोड़ो की संख्या मे जागृत हिन्दू राजस्थान के कुछ सिर-फिरे बर्बर धर्म ध्वजियो के आतंकवाद से घबराकर अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हो पायेंगे।

हम राजस्थान की तथाकथित धर्म रक्षा समिति के ऐसे पदाधिकारियो व उनके समर्थको को चैलेंज देते हैं कि यदि उनके पास कोई धर्मग्रन्थ है जिसे भारत के करोड़ो हिन्दू अपना धर्मग्रन्थ मानना स्वीकार करें तो वे सार्वजनिक रूप से सभाओ द्वारा जनमत तैयार करें अपने पक्ष में प्रमाणो को जनता के सन्मुख प्रस्तुत करें आर्य समाज उनके हर प्रश्न का उत्तर देने को तैयार है। आर्य समाज ने शास्त्रार्थ समर मे अपने सभी प्रतिद्वन्दियो व विरोधियो को बड़े धैर्य, शिष्टाचार मानवीय मर्यादाओ के आधार पर परास्त किया है। आर्य समाज का पक्ष निर्विवाद है यदि आर्य समाज से शास्त्रार्थ करना चाहे तो हिन्दू धर्मरक्षा समिति वाले कहीं भी किसी भी स्थान पर सहर्ष आमन्त्रित हैं। परन्तु बर्बरता व आतंकवाद के आगे आर्यसमाज ने कभी अपने हथियार नहीं डाले हैं। बर्बरता व आतंकवाद से तो आर्य समाज का पक्ष सदा ही प्रबल हुआ है—

चोट खाकर तो सीने उभर जायेंगे

धर्म रक्षा समिति ने अपने नाम के साथ धर्म का ठप्पा जोड़कर हिन्दू धर्म का अपमान किया है। धर्म बर्बरता अत्याचार व हिंसा का उपदेश नहीं देता। नहीं यह वैदिक आर्यो का क्षात्र धर्म है। अपने को राजपूत व क्षत्रिय कहने वाले दर्पण मे मुंह देखें कि वे किस मुख से अपने को क्षत्रिय कहते हैं कि निहत्थे सन्यासियो व बुद्धिजीवियो को वाणी से नहीं, तर्क से नहीं धर्म लेखो से नहीं तलवारो लाठियो व हाकियो से परास्त करना चाहते हैं। क्या इस प्रकार के कुकर्मों मे राजपूतो की प्रतिष्ठा बढ़ती। क्या इससे हिन्दू कुल सूर्य महाराणा प्रताप का यश बढ़ेगा जिनके वंशधरो ने महर्षि को गुरु मानकर अपनी नगरी उदयपुर मे ऋषि के द्वारा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना कराई थी। सच्चाई तो यह है कि कुछ कायर ढोंगी व धन लोभी ब्राह्मण पुजारी क्षत्रिय जाति को बलि का बकरा अपने निहित स्वार्थो के लिए बना रहे है वे स्वयं आगे आने मे डरते हैं उनके पास कोई प्रमाण नही तर्क नहीं धर्म लेख नहीं, धर्म के नाम पर भोले भाले अनपढ़ राजपूतो को बहकाकर वे अपने मन्दिरो व पुजापो के लोभ को व लाभ को सिद्ध करना चाहते है परन्तु वे याद रखें अब उनका यह धोखे का धर्म अधिक नहीं टिक पाएगा इस तथाकथित धर्म का भण्डा फोड़ हो चुका है। देश की प्रबुद्ध जनता जाग उठी है महान नारी जाति के अधिकारो व सम्मान की रक्षा आर्य समाज प्राणपण से करेगा।

जो शाखे नाजुक पे आशियाना बनेगा ना पायदार होगा।

बलिदान के देवता : स्वामी श्रद्धानन्द

लेखक—आचार्य यशपाल सुधांशु एम. ए.

श्रद्धा और आनन्द की इक खान श्रद्धानन्द थे।
धर्म पै जो हो गये बलिदान श्रद्धानन्द थे॥
हिन्दुओ के रक्त से सींची थी वैदिक वाटिका।
महर्षि जो राम थे, हनुमान् श्रद्धानन्द थे॥

पराधीन देश की अन्धकार पूर्ण घड़ियों मे सम्पूर्ण राष्ट्र की बीमार काया में नई स्फूर्ति और कर्म का स्पन्दन देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द उन अमर विभूतियो में से थे जिन्हे कृतज्ञ राष्ट्र युगो तक अपनी श्रद्धांजलि देता रहेगा।

उनका जन्म १८५६ मे पजाब के जालन्धर जिले के तलवन ग्राम मे हुआ। बचपन में नाम रखा गया था बृहस्पति, पर पिता श्री नानकचन्द उन्हे मुन्शराम पुकारने लगे और यही नाम प्रसिद्ध हो गया। उनका शिक्षा का प्रारम्भ वाराणसी से हुआ और उसका समापन उनके वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर हुआ। वे शुरू से ही तेजस्वी एव प्रतिभाशाली थे, किन्तु बुरे साथियो की सगत से उन का जीवन कुविचारो के अन्धार भटकने लगा था। बरेली मे जब महर्षि दयानन्द के प्रवचन को सुना तो मुन्शीराम के जीवन का रूप ही बदल गया। उन्ही के शब्दो मे—'ऋषिवर! तुम्हारे सहवास मे मुझे अत्यन्त गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया।'

सन् १८८६ मे आर्य समाज के नियमित सदस्य बने और कुछ ही वर्षों में आर्यसमाजकी सम्पूर्ण गतिविधियो पर छा गये। सार्व आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने। महर्षि दयानन्द के वैचारिक आन्दोलन को उन्होने सच्चे शिष्य बनाकर दिग्दिगन्तरो मे आन्दोलित कर दिया। २६-११-१८९८ को उन्होने गुरुकुल कागडी (हरिद्वार) मे वैदिक ऋषियो के आदर्शों के अनुरूप एक बेजोड़ विद्या केन्द्र गुरुकुल की स्थापना की। इसके पीछे यह भावना काम कर रही थी कि समाज मे ऐसे अच्छे नागरिको का निर्माण किया जाये, जिनका जीवन प्राचीन वैदिक आदर्शों और राष्ट्रीय दृष्टिकोण से पूर्णत अनुप्राणित हो। यह वही सस्थान था, जिसे देखने के लिए ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री रेम्जे मैकडानल्ड गये। मुन्शीराम की तुलना उन्होने बाइबिल मे वर्णित गेलिलो के तटो पर भ्रमण करने वाले पैगम्बर से की थी। उन्होने श्रद्धानत होकर कहा था—'वतमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई सजीव माडल चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति महात्मा मुन्शीराम की ओर इशारा करूगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सैन्टपीटर के चित्र के लिए नमूना मागेगा तो मैं उसे इस जीवित भव्य मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा दूगा।"

महात्मा गाधी दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद सर्वप्रथम गुरुकुल कागडी में आकर रहे, यही पर मिस्टर गाधी को मुन्शीराम ने 'महात्मा' की उपाधि देकर सम्मानित किया।

उन्होने १९१७ में सन्यासी बनकर श्रद्धानन्द नाम रखा। इसके बाद वे गुरुकुल से आकर दिल्ली रहने लगे। यहा उन्होने सामाजिक नैतिक तथा सास्कृतिक सुधार और जनसाधारण विशेषकर तथाकथित अछूतों की भलाई के लिए कई सस्थाओ की स्थापना की तथा दैनिक पत्र अर्जुन (हिन्दी), तेज (उर्दू) भी प्रारम्भ किये।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सग्राम के दौरान १९१९ में महात्मा गाधी के सहयोग मे पूरी तरह लग गये।

उन्होने जनता को उत्प्रेरित करने और ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाये गये रोलेट ऐक्ट के विरुद्ध हड़ताल और सगठित विरोध करने का आह्वान किया। ३० मार्च १९१९ को रोलेट ऐक्ट के प्रतिरोध को तीव्र करते हुए ४० हजार व्यक्तियों का एक जलूस निकाला गया।

सरदार पटेल के शब्दो मे—"स्वामी श्रद्धानन्द की याद आते ही १९१९ का दृश्य मेरी आखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी मे हैं, स्वामी जी छाती खोल कर आगे आते हैं और कहते हैं कि 'लो चलाओ गोलिया" उनकी वीरता पर कौन मुग्ध नही हो जाता? मैं चाहता हूँ कि वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।'

राष्ट्र की काया में चेतना का प्राण फूकते हुए हुए २३ दिसम्बर १९२६ को वे बलिदान हो गये। (टी० एस० वास्वामी ने कहा जोड़ते हुए)
वे लक्ष्य पर पहुचे? उन्हने सब कुछ पाया?
वह अपना नाम इतिहास में बहुत गहरा अकित कर गये?
प्रत्येक जीवन का कोई चिह्न होता है, उनके जीवन का चिह्न था सेवा।
कवि के शब्दो मे—

वीरो की गति जीना और सिखाया मरना,
वीरों की गति सिखा गये सकट से लड़ना।
दीनो के हित सबल बाहु सत्वर फैलाना,
सेवा के हित तन, मन, धन बलिदान चढ़ाना॥

युग वन्दन

सत्य धर्म की बलिवेदी पर,
जिसने अपना प्राण चढ़ाया।
सतत प्रयत्नो से धरती पर,
वैदिक धर्म ध्वजा लहराया।
भारत मा की स्वतन्त्रता हित,
बना वीर-पथ का अनुगामी।
सहन नही कर जो पाया था,
मातृभूमि की कुटिल गुलामी।
जिसने सीना तान दिया था,
सगीनो के सम्मुख निर्भय।
कभी नही अपने जीवन मे,
जिसने की स्वीकार पराजय।
दयानन्द ऋषि के स्वप्नो का,
गुरुकुल पावन कर स्थापित—
बिगुल बजाया था वेदों का,
वैदिक मत करके प्रतिपादित।
शुद्धि यज्ञ का जिस योद्धा ने,
सहस चलाया नव आन्दोलन।
आखें खोल दिया भारत की,
हरा शोषितो का उत्पीडन।
जाति-पाति के छूत-छात के,
भावो का प्रतिवाद किया।
प्यार भरा हर मानव उर मे,
निर्भय वाद-विवाद किया।
जिसने भरा धरा के उर मे,
वैदिकता का स्पन्दन।
उस स्वामी श्रद्धानन्द' को है,
मेरा शत शत युग वन्दन॥

राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

मुठभेड़ों में मरे आतंकवादियों के नाम पर सीमांत क्षेत्रों में गुरुद्वारों का निर्माण

सीमा सुरक्षा पट्टी न बनाने के दुष्परिणाम

गुरदासपुर, ८ दिसम्बर। आजकल चारों तरफ देश की एकता, अखंडता के साथ-साथ देश की सुरक्षा की चर्चा जोरों पर है और रह-रह कर भारत पाक सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाये जाने की मांग की जा रही है, लेकिन जब से सुरक्षा पट्टी बनाए जाने की मांग शुरू हुई है, तब से ही पाकिस्तान तथा आतंकवादियों ने सुरक्षा पट्टी के विरोध में बयान देने शुरू करके पंजाबवासियों विशेष कर सीमा पर रहने वाले लोगों के दिल में यह बात बिठाने की कोशिश शुरू की कि इसके निर्माण से किसानों का खेती योग्य क्षेत्र काफी नष्ट हो जायेगा। अकाली दलों विशेषतः अकाली दल के वह नेता, जिनके कथित तौर पर स्मगलरों तथा आतंकवादियों के साथ सम्बन्ध हैं, इस बारे में ज्यादा ही उत्तेजित भाषण देकर लोगों को गुमराह कर रहे हैं। दूसरी तरफ पाकिस्तान और आतंकवादियों ने इस योजना को कार्यरूप देना भी आरम्भ कर दिया है कि अगर आने वाले समय में सुरक्षा पट्टी का निर्माण शुरू हो जाए तो उससे किस ढंग से निपटना है और देश विरोधी गतिविधियां किस तरह जारी रखनी हैं।

पाकिस्तान तथा आतंकवादियों ने स्मगलरों की मदद से इस योजना के अधीन काम करना शुरू कर दिया है, जिससे आने वाले समय में देश की सुरक्षा को खतरा बन सकता है। सुरक्षा पट्टी बन जाने के बाद भी आतंकवादी, स्मगलरों की ओर से अपना काम जारी रखा जा सकता है। विरोधी धड़ों की ओर से भारत पाक सीमा पर ५ किलोमीटर चौड़ी पट्टी बनाने की मांग की जा रही है। जिस तरह पाकिस्तान से आतंकवादियों तथा स्मगलरों का खुलेआम आना जाना जारी है, उसको रोकने के लिए सुरक्षा पट्टी का बनाया जाना जरूरी है। परन्तु आतंकवादियों ने पाकिस्तान के सहयोग से इस क्षेत्र में इस तरह की गतिविधियां शुरू की हैं कि जिससे किसी को भी शक नहीं हो सकता कि इसके पीछे क्या उद्देश्य और योजना है। सीमा क्षेत्रों में आज कल इस तरह से गुरुद्वारों का निर्माण हो रहा है और विशेष तौर पर पुलिस तथा सुरक्षा बलों के साथ हुए मुकाबले में मारे गये कुछ प्रमुख आतंकवादियों के नाम पर यह गुरुद्वारे बन रहे हैं, उनसे यह सुरक्षा पट्टी तो क्या और भी कोई कदम उठाने के बावजूद देश की सुरक्षा को खतरा बन सकता है। बात गुरुद्वारे बनाने तक ही सीमित नहीं है। सीमा के पास वे मजार (मुसलमानों की जगह) जो काफी वर्षों से ऐसे ही बेकार पड़े थे तथा उनकी तरफ किसी ने आज तक ध्यान ही नहीं दिया था और अब तक बिल्कुल खंडहर बन चुके थे, रातो रात उनकी याद कैसे आ गई। सीमावर्ती क्षेत्रों विशेषकर डेरा बाबा नानक में जो कि आतंकवादियों तथा स्मगलरों के लिए स्वर्ग माना जाता है, यह गतिविधियां अधिक तेज हैं। यह गतिविधियां विशेष तौर पर गुरदासपुर डेरा बाबा नानक और अमृतसर से डेरा बाबा नानक सड़क पर ज्यादा जोर पकड़ रही हैं। नए गुरुद्वारों के साथ-साथ जहां कहीं मजार नहीं थे वहां भी इन मजारों का निर्माण कार्य जोरों से चल रहा है। इनका निर्माण या मरम्मत कौन करवा रहा है और किसके कहने पर हो रहा है, इसकी जानकारी किसी को नहीं है।

गत दिनों सीमा सुरक्षा बल के डायरेक्टर जनरल श्री हरगोबिन्द प्रसाद भटनागर ने एक प्रेस कान्फ्रेंस में यह स्वीकार किया गया है कि पाकिस्तानी अधिकारी सीमा पर स्मगलरों को उत्साहित कर रहे हैं ताकि आतंकवादी गतिविधियों पर पर्दा पड़ा रहे, प्रशासन अपनी योजनानुसार काम कर सके, जो अधिकारी इस तरह स्मगलिंग को बढ़ावा देकर आतंकवादी गतिविधियों को कवर कर रहे हैं, क्या वे अधिकारी इस तरह की नई योजना बनाकर काम नहीं कर सकते? बेशक भारतीय अधिकारी इस बात का प्रचार कर रहे हैं कि सीमा पूरी तरह सील है, पर इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि आतंकवादियों का सीमा पर आना जाना बना हुआ है और आतंकवादी सीमा पर से कहां से आते हैं और रात को कहां ठहरते हैं, इसकी जानकारी नहीं मिल रही है। अगर यह समस्या आज बनी हुई है तो कल आने वाले समय में धार्मिक स्थान बन जाने से क्या सीमावर्ती क्षेत्रों में आतंकवादियों तथा स्मगलरों के पक्के अड्डे नहीं बन सकते? ऐसी स्थिति में प्रशासन द्वारा इन धर्म स्थानों में कोई कार्रवाई किये जाने से आतंकवादियों को सरकार के विरुद्ध प्रचार का बहाना मिल सकता है और वे लोगों को सरकार के विरुद्ध उकसाने का प्रयत्न कर सकते हैं।

डेरा बाबा नानक क्षेत्र के गांव हरूवाल में और ठेठरके में इस तरह के ही दो नए गुरुद्वारे बन रहे हैं और यह दोनों ही सुरक्षा बलों तथा पुलिस मुकाबलों में मारे गये आतंकवादियों के नाम से बन रहे हैं। यह दोनों गुरुद्वारे एक मुख्य सड़क पर बन रहे हैं। आज भी हरूवाला गुरुद्वारे पर एक पत्थर की प्लेट लगी हुई है जो प्रशासन के लिए एक खुली चुनौती है। जो लोग यह कहते हैं कि आतंकवाद पर काबू पा लिया गया है, वे कांग्रेसी जिन्होंने अपना जन सम्पर्क अभियान डेरा बाबा नानक से शुरू किया था, उनके मुंह पर यह प्लेट एक चपत के समान है क्योंकि यह प्लेट सड़क की ओर लगी हुई और हर आने वाले के लिए आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। यह गुरुद्वारा लिबरेशन फोर्स के कबलजीत सिंह उर्फ कम्बा उर्फ शेरसिंह, जो कि ७ फरवरी १९८७ को एक मुकाबले में मारा गया था, की याद में आतंकवादी संगठनों की ओर से बनाया गया है। यह गुरुद्वारा भारत-पाक सीमा से केवल दो किलोमीटर की दूरी पर है। गुरुद्वारे पर लगा निशान साहिब इतना ऊंचा है कि वह २० किलोमीटर की दूरी से भी दिखाई देता है। उस पर लगा लाल रंग का बिजली का बल्ब भी रात को २० किलोमीटर क्षेत्र में दिखाई देता है।

एक खुफिया एजेंसी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि यह निशान साहिब पाकिस्तान से आने वाले आतंकवादियों, स्मगलरों और जासूसों के लिए एक मार्ग दर्शक का काम करता है क्योंकि रात के अंधेरे में ये लोग इस पर लगे हुए बल्ब की रोशनी से ही अनुमान लगाकर नाके की रास्ते की दिशा का अंदाजा लगाते हैं। अगर भविष्य में पाकिस्तान के साथ युद्ध होता है तो पाकिस्तानी सेना के लिए और उनके लड़ाकू विमानों के लिए यह निशान साहिब और उस पर जलने वाला बल्ब उनके लिए दिशा सूचक और क्षेत्र की जानकारी देने वाला साबित होगा। उसी तरह डेरा बाबा नानक क्षेत्र के गांव ठेठरके में बन रहा गुरुद्वारा भी सुरक्षा बलों के साथ हुई मुठभेड़ में मारे गये खालिस्तान आर्म्ड फोर्स के जनरल बलविन्द्र सिंह नाम के एक आतंकवादी की याद में बन रहा है। इसकी दूरी भी सीमा से २ कि० मी० के लगभग ही है। इस पर लगा निशान भी काफी ऊंचा है, इस पर बिजली का कोई बल्ब नहीं लगा है। इसी तरह का एक गुरुद्वारा बटाला सदर के गांव दयालगढ़ मे बन रहा है जो कि दयालगढ़ में मारे गये तीन प्रमुख आतंकवादियों की याद में बनाया जा रहा है।

डेरा बाबा नानक के क्षेत्र के गांव हरूवाला में एक गुरुद्वारा पंचायत की दी गई जमीन पर बन रहा है और उसको बिजली का कनैक्शन भी पहल के आधार पर दिया गया है। बिजली विभाग आम जनता को तो कनैक्शन दो-दो वर्ष नहीं देता, पर इस गुरुद्वारे को तो रातों रात ही पांच खम्भे खड़े करके कनैक्शन दे दिया गया। अब इस गांव के कुछ अन्य लोग आतंकवादियों के सहयोग से इस गुरुद्वारे की महानता का प्रचार कर रहे हैं। इस गुरुद्वारे के निर्माण मे मुख्य रुकावट आम गांवों की तरह इस गांव की धड़ेबन्दी है। गांव में दो दल बने हुए हैं। अगर एक दल किसी चीज का समर्थन करता है तो दूसरा दल स्वाभाविक तौर पर इस बात का विरोध करता है। कुछ गांव वासियों के अनुसार यह गुरुद्वारा गांव के बाहर पड़ता है, जिससे हर एक की नजर इस पर पड़ती है। इस तरह का देश विरोधी काम धर्म के नाम पर किया जाना गांव के माथे पर कलंक है, जबकि दूसरा धड़ा इसका निर्माण जल्दी से जल्दी करना चाहता है।

दूसरी ओर यह क्षेत्र लगभग सारा ही आतंकवादियों का गढ़ समझा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पाकिस्तान भागकर गए सिखों के कान काट दिए, हाथ-पांव तोड़ दिए : घोर अत्याचार

होशियारपुर ८ दिसम्बर धर्म के नाम पर गुमराह होकर पाकिस्तान मे जाकर ट्रेनिंग प्राप्त करने वाले व तथाकथित 'खालिस्तान' की स्थापना के स्वप्न लेने वाले नवयुवको के साथ पाकिस्तान में किस तरह के अत्याचार ढाए जाते हैं इसका विवरण लगभग ढाई वर्ष तक पाकिस्तान की जेलो मे कैद काट कर वापस लौटे एक नवयुवक सुरजीत सिंह ने यहा पत्रकारो को दिया।

सुरजीतसिंह जो होशियारपुर जिला के भटलमढ ग्राम का रहने वाला है, ने एस०एस०पी० श्री सुरेश अरोडा के दफ्तर मे पत्रकारो को बताया कि वह स्थानीय राजकीय कालेज में वर्ष १९८४ मे एम० ए० पंजाबी का छात्र था, अप्रैल ८४ मे माहिलपुर के निकटवर्ती ग्राम पाखन्वी मे उसके गांव के एक नवयुवक सतनामसिंह ने डाका डालकर एक बेंक कर्मचारी की हत्या कर दी थी व दूसरे दिन समाचार पत्रो मे यह प्रकाशित हुआ कि बेंक डकैती व हत्या मे भी संलिप्त था। उसने बताया कि मेरा नाम सतनामसिंह के परिवार के साथ जमानतबाजी के कारण शामिल कर लिया गया था। मैं पुलिस के भय से अमृतसर भाग गया जहा मेरी भेंट अकाली फेडरेशन के प्रमुख भाई कवरसिंह के साथ हुई। मेरे घर वाले कई बार दरबार साहब मे भाई कवरसिंह से मिले व मुझे उनके हवाले करने के लिए कहा लेकिन भाई कवरसिंह ने कहा कि अगर यह वापस अपने ग्राम गया तो गोली मार कर इसकी हत्या कर देंगे।

सुरजीतसिंह ने बताया कि आप्रेशन ब्ल्यू स्टर के समय एक दीवार तोडकर हम दरबार साहब से बाहर निकल आए व १२ के लगभग युवको की एक टोली पाकिस्तान चली गई। पाकिस्तान प्रवेश पर हमे पाक रजर नारोवाल चौकी ले गए, उसके बाद हमे स्यालकोट तथा छागा-मागा के रैस्ट हाउस में रखा गया। छागा-मागा मे पाक इटेंलीजेंस विभाग के अफसर हम से १०-१५ दिन तक पूछताछ करते रहे बाद मे फैसलाबाद जेल में ले गए व लगभग डेढ वर्ष तक इसी जेल मे हमे कैद मे भी रखा गया। उस समय इस जेल में हमें कैद भी रखा गया। उस समय इस जेल में लगभग २५० सिख जिनमे कई छोटी आयु के बच्चे तथा कुछ बुजुर्ग भी थे बन्द थे। हर कैदी को ६-६ माह के नजरबन्दी के कार्ड जारी किए गए थे।

फैसलाबाद जेल में तथाकथित खालिस्तान आन्दोलन के आला-दर्जन नेता आते रहे व सिख नजरबन्दो से भेंट करते रहे।

सुरजीतसिंह ने बताया कि इस जेल में बन्द लोगों मे कई बार लड़ाई झगडे भी हुए। उसने बताया कि पाकिस्तान की जेलो में बन्द लोगो को तरह-तरह की यातनाए दी गई व इन यातनाओ के कारण दो व्यक्ति पागल भी हो गए।

उसने बताया कि पाकिस्तानी जेल अधिकारियो के अत्याचारों से तंग आकर वहा बन्द सिख कैदियो ने उन्हे भारत वापिस भेजने की माग करनी आरम्भ कर दी लेकिन उन्होंने हमारी माग पर कोई ध्यान नही दिया व सिख कैदियो को मारपीट करके प्रतिदिन चक्की मे बन्द कर दिया जाता। २५ युवको ने एक मास का अल्टीमेटम देकर भारत वापस भेजने की पुन माग की व जेल में भूखहड़ताल भी की। उसने बताया कि जब पाकिस्तानी जेलो मे बन्द घायल लोग पानी मागते तो पाकिस्तानी जेल कर्मचारी कहते—"इन्हे पेशाब पिलाओ व इन सिखो से १९४७ का बदला लो। इन्होने विभाजन के समय हम पर भारी अत्याचार किये थे।" पाकिस्तानी अधिकारियो ने यह भी कहा कि तुम लोगो की मेहमान-नवाजी अब समाप्त हो गई है, तुम लोगो को अब हमारे कैदी बनकर ही रहना पडेगा। यह तुम्हारे घर की चार दीवारी नही, जेल है। तुम यहा से भाग नही सकते। सुरजीतसिंह ने बताया कि २०-२५ युवको ने अत्याचारो से तग आकर नवम्बर ८५ मे फैसलाबाद जेल से भागने की कोशिश की तो जेल कर्मचारियो द्वारा फायरिंग किए जाने से एक नवयुवक की मृत्यु हो गई व एक अन्य घायल हो गया था। एक नवयुवक भाग कर सीमा पर भी पहुच गया, जहा से उसे पुन गिरफ्तार कर लिया गया। उसने बताया कि भागने की कोशिश करने वाले अधिकाश युवको पर तरह-तरह से अत्याचार ढाए गए व कई एक के कान तक काट दिए गए व बहुतो के हाथ, बाजू तथा टाग तोड दी गई।

सुरजीतसिंह ने बताया कि जेल तोडकर भागने की कोशिश करने वाले घायल युवको को पहले फैसलाबाद सिविल अस्पताल मे और उसके पश्चात् लाहौर सिविल अस्पताल में इलाज के लिए भेजा गया जहा उन्हे घटिया प्रकार का भोजन दिया जाता था।"

सुरजीत ने बताया कि अगस्त ८७ के दौरान मुझे लाहौर अस्पताल से किसी अज्ञात स्थान पर ले जाया गया जहा भाई कवरसिंह ठहरा हुआ था। मुझे दो दिन भाई कवरसिंह के साथ रखा गया, जहा से मुझे गुरदासपुर सीमा पर लाकर छोड दिया गया। यहा मुझे बी०एस०एफ० वालो ने हिरासत मे ले लिया। गुरदासपुर तथा अमृतसर मे पूछताछ के बाद मुझे होशियारपुर पुलिस के हवाले कर दिया गया।

सुरजीत सिंह ने कहा कि अधिकाश युवको को पाकिस्तान में ऐश करवाने, कारो मे सैर-सपाटे करवाने और भारी धन-दौलत दिए जाने के प्रलोभन देकर यह कहकर भेजा जाता था कि वहा से ट्रेनिंग प्राप्त करने के पश्चात् भारत आकर वह खालिस्तान की स्थापना करवा सकेंगे और अपनी मनपसन्द जगहों पर उच्च पदों पर नौकरिया प्राप्त कर सकेंगे।

गुरुद्वारो का निर्माण

(पृष्ठ ५ का शेष)

जाता है। कई प्रमुख आतकवादी जो कि मारे जा चुके हैं पकडे जा चुके हैं या अब तक पकडे नही गये, इस क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। भारत-पाक सीमा से लगने वाले गाव आतकवादियों और स्मगलरो के लिए सैरगाह समझे जाते हैं। इस क्षेत्र से लगने वाले गाव शाहपुर-गोराया, जहा का प्रमुख आतकवादी भाई अमरीक सिंह जो कि पाकिस्तान मे अकाल फेडरेशन का प्रधान था और उसकी देखरेख मे एक ट्रेनिंग कैम्प भी चलता था रहने वाला है और आजकल वह जेल में है। ब्ल्यू स्टार आप्रेशन के बाद इस गाव के लगभग ३० नौजवान सीमा पार करके पाकिस्तान मे ट्रेनिंग लेने चले गये थे। इस तरह ही अगवान गाव के निवासी सतवत सिंह जो कि भारत की स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या मे शामिल था और प्रमुख आतकवादी कवलजीत सिंह कम्बा (मारा गया) मजन सिंह (जेल मे) और बलदेव सिंह गाव हरूवाल के साथ सम्बन्धित है। आतकवादी बलविन्द्र सिंह और रणजीत सिंह उर्फ राणा (दोनों मारे जा चुके,) जिनका खालिस्तान आर्म्ड फोर्स के साथ सम्बन्ध था, जो डेरा बाबा नानक क्षेत्र के गाव ठेठरके के रहने वाले थे। इसी तरह आल इंडिया सिख स्टूडेंट्स फेडरेशन मजीठ ग्रुप का जिला प्रधान इस क्षेत्र के गाव कादियां गुजरा का रहने वाला है।

इसी तरह इस क्षेत्र के गाव रूपोवाली, जो कि 'ए' श्रेणी का आतकवादी है और इसकी गिरफ्तारी के लिए एक लाख रुपये का इनाम है। इस गाव का ही तरसेम सिंह (जिसकी गिरफ्तारी के लिए ५० हजार रु० का इनाम है) गाव दोरागला निवासी बलदेव सिंह जो बब्बर खालसा से सम्बन्धित है, पुलिस को १० से अधिक हत्याओं मे वांछित है। यह सभी आतकवादी सीमा २ से ५ किलोमीटर के क्षेत्र के गावों मे रहते हैं। इसी तरह कई प्रमुख स्मगलर तथा जासूस भी इस क्षेत्र मे रहते हैं। ३० अगस्त को गुरदासपुर जिला पुलिस ने जिस कलाका निवासी युवक बलजीत सिंह को डाका पर करते हुए गिरफ्तार किया।

संथाल संस्कृति जो मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की प्राचीन सभ्यता है, पर विदेशी ईसाई मिशनरियों का हमला

—विशन स्वरूप गोयल—

आज हमारे वर्तमान प्रधानमन्त्री तथा सत्ताधारी नेता २१वी सदी मे जाने की बात करते हैं किन्तु शायद उन्हे यह पता नही है कि बिहार के सथाल परगना की प्रसिद्ध सस्कृति जो इतिहास मे मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सबसे प्राचीन सभ्यता के नाम से जानी जाती है उसे विदेशी ईसाई मिशनरिया पूरी तरह समाप्त करने के लिये उस पर हमला कर चुकी हैं और वे सारे सथाल परगने का ईसाईकरण कर इस सभ्यता को सदा के लिये नष्ट करने का षडयन्त्र रच चुके हैं। वहा के ईसाई बने सथाल मूल लोगो के मूल अधिकारो पर कुठाराघात कर उन्हे भी ईसाई बनाने के लिये विवश कर रहे हैं।

वैसे तो इस सभ्यता को नष्ट करने का श्री गणेश अग्रेजो के शासनकाल में ही आरम्भ हो गया था। सन् १९१६ से सन् १९३७ तक कुल मिलाकर ४८०२० मूल सथालो को बलात मजदूरी करने के लिए बर्मा मेसो पुटामिया फास, तथा टाआनगर आदि स्थानो पर भेजा गया था जहा इन्हे ईसाई भी बना दिया गया था। किन्तु आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के ४० साल बाद भी वहा ईसाई मिशनरिया और ईसाई बने सथाल उनके जो वहा के मूल सथाल ईसाई नही बने हैं मूल अधिकारो पर भी कुठाराघात कर उन्हे ईसाई बनाकर उन्हे ईसाई बनाकर पूरे सथाल परगने का ही ईसाईकरण कर हमारी इस प्राचीन सभ्यता को ही पूरी तरह समाप्त कर देना चाहते हैं। वहा आज भी इतने पिछड हुए मूल सथाल रहने हैं जो आज भी पाषाणयुग की तरह ही अपना जीवन बिता रहे हैं और गुफाओ मे रहते हैं और रेल के ईजन का धुआ तक नही देखा किन्तु वह अब भी अपनी सस्कृति से अलग न होकर ईसाई बनना नही चाहते किन्तु ईसाई मिशनरिया उन्हे आतकित कर प्रलोभन द्वारा बलात ईसाई बनाने का प्रयत्न कर रही है। इसके लिये न सरकार ही चिन्तित हैं और न ही सामाजिक सस्थाय जो ये दावा करती है कि हम शुद्धि करण का काम कर रही है मौन बैठ हैं इस सभ्यता को समाप्त करने वाले इस षडयन्त्र की शायद उन्हे भी जानकारी नही है या फिर वे इस ओर से उदासीन हैं।

इन मूल सथालो को न तो सरकार मे ही कोई प्रतिनिधित्व दिया गया है, न ससद या विधान सभा का चुनाव लडने के लिये टिकट ही दिया जाता है जिससे वे देश की जनता को अपनी दुख भरी कहानी इनके माध्यम से सुना सके और सरकार को भी इसका पता लग जाए। यही नही इन सथालो में आज तक न तो कोई कलक्टर बन सका है और न ही किसी सरकारी विभाग का विभागाध्यक्ष। इनके बच्चो की शिक्षा दीक्षा की भी उचित व्यवस्था नही की गयी है जो स्कूल हैं उनमे प्रवेश पाने के स्थानो मे से ९५ प्रतिशत स्थान ईसाई बने सथाल ही अपने अधिकार मे कर अपने बच्चो को प्रविष्ठ करा देते हैं और ये रह जाते हैं।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि मातृभूमि की आजादी के लिये ये मूल सथाल भी अपना बलिदान देने में पीछे नही रहे हैं सिद्धू कानू, चान्दभैरव तथा माझी जसे अनेको सथाल वीरो ने देश की आजादी के लिये अपने प्राणो की आहुति दी। यही मूल सथाल हमारी उस प्राचीन सभ्यता के प्रतीक हैं जिसे मोहनजोदडो और हड़प्पा की सभ्यता की सज्ञा दी गयी है। किन्तु हमारी सरकार और हमारे सामाजिक सगठनो की उपेक्षा ने उन्हे आज भी उसी पुरानी पाषाणयुग मे रहने के लिये विवश बना रखा है। आज वहा ईसाई मिशनरिया तथा ईसाई बने सथाल उन पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार कर उन्हे आतकित कर रहे हैं और सथाली भाषा उन्हें ईसाई बनाने के लिये प्रचार कार्य [illegible] तथा इलक्टोनक्स सयन्त्रो द्वारा ईसाईयत का प्रचार जोर शोर से हो रहा है। किन्तु हमारी केन्द्र तथा बिहार सरकार इस ओर से आख बन्द किये बैठी है। उन्हे अपनी प्राचीन सभ्यता की धरोहर के समाप्त होने की कोई चिन्ता नही है।

केन्द्र तथा बिहार सरकार और सामाजिक सगठनो का यह दायित्व हो जाता है कि वे इस देश की इस प्राचीन महान् सभ्यता को बचाने के लिये सक्रिय कदम उठाय ताकि इसकी रक्षा की जा सके। इसके लिये पूरे सथाल परगने से सभी विदेशी ईसाई मिशनरियो को तुरन्त निकाल दिया जाए और वहा के मूल सथाल लोगो के विकास के लिये युद्धस्तर पर विकास कार्य आरम्भ किये जाये उन्हे चुनाव लडने के लिये विधान सभा तथा ससद के लिये टिकट दिये जाये। उनके बच्चो को शिक्षा दीक्षा की पूरी उचित तथा नि शुल्क व्यवस्था सुचारू रूप से की जाए। सामाजिक सगठन वहा पर बने ईसाई संथालो को शुद्धिकरण करने का काम अपने हाथमे ल और सरकारे इसमे बाधक न बन। जो ईसाई बने सथाल मूल सथालो पर अत्याचार करते हैं उन्हे कठोर दण्ड देने की व्यवस्था की जाए इन सब कामो के करने से ही इन मूल सथालो और सथाल परगने के ईसाई करण को रोक कर बचाया जा सकता है ताकि जो हमारी प्राचीन सभ्यता है उस पर आच न आये और यही मूल सथाल उस सभ्यता के पोषक और प्रतीक है अत उन्हे बचाना अति आवश्यक काम है। हमारे आर्यसमाजी नेता जो इस शुद्धि के कार्य मे सलग्न है उन्हे वहा जाकर शुद्धि कार्य करना चाहिये और सरकार को उन्हे ईसाईयो से सरक्षण प्रदान किया जाना चाहिये। यदि अविलम्ब यह कार्यवाही न की गयी तो बहुत जल्दी ही हमारी प्राचीन सभ्यता नष्ट हो जायेगी और पूरा सथाल परगना ईसाई बन जायेगा जो ईसाई होम लैण्ड की माग कर सकता है। ●

इन तथाकथित प्राच्यविद्या विशारदों से समाज को बचाओ

—डा० रामेश्वर दयाल गुप्ता एम०ए०, पी०एच०डी०—

पिछले दिनो डाक्टर डी०सी० सरकार ने घोषणा की थी कि महाभारत हुआ ही नही। अब देखिये जिस ग्रन्थ मे वशावली दी हो, वह काल्पनिक कदापि नही हो सकता, वह तो इतिहास ही है। काल्पनिक ग्रन्थो उपन्यासो आदि मैं कल्पित व्यक्ति ही वर्णन का केन्द्र बिन्दु होता है। इसी प्रकार कुछ आधुनिक प्राच्य विद्या-विशारद रामायण की ऐतिहासिकता पर भी जनमास मे अपने अध-कचरे शोध लेखो द्वारा शका पैदा कर रहे हैं। कविवर कालिदास के रघुवश महाकाव्य मे रघु और अज के जीवन व्रत तथा उनकी विजय यात्राओ का सजीव वणन किया है और रामचन्द्र जी की वशावलि क्रमश दी है।

ऐसे ही कुछेक "विशारद" रामायण के रचयिता बाल्मीकि को (जो रामचन्द्र जी के समकालीन थे) बौद्ध साहित्य के जातको के बाद का व्यक्ति मानते हैं।

कलकत्ता नगर मे एशियाटिक सोसायटी द्वारा आयोजित सभा मे भाषण करते हुए डा० श्री सुनीति चटर्जी ने कहा कि 'कवि बाल्मीकि ने बौद्ध साहित्य के दशरथ जातक से प्रेरणा प्राप्त कर राम की कथा लिखी थी।" आपने अपने भाषण में यह भी कहा कि "ईसा के जन्म से ५०० वष पूर्व रामायण लिखी गई और ईसा की मृत्यु के बाद दूसरी शताब्दी मे रामायण को वर्तमान रूप मिला।"

हमारा यह कहना है कि बौद्ध मत केवल २५०० वर्ष का है और रामायण बहुत-बहुत पुरानी है।

त्रेतायुगे चतुर्विशे रावणस्तपस क्षयात्।
राम दाशरथि प्राप्य सगण क्षयमोयिवान्॥

(वायु पुराण उत्तरार्द्ध अध्याय ६ श्लोक ४८)

अर्थात् २४व त्रेतायुग मे रावण का सामर्थ्य क्षीण हुआ और तब दशरथ पुत्र राम को प्राप्त होकर वह बन्धु बान्धवो सहित मारा गया।

इस श्लोक के अन्दर रामायण २४व चतुर्युग की घटना है। अब २८वी चतुर्युगी है। इस प्रकार २८वी चतुर्युगी के त्रेतायुग तक रामायण काल की चार चतुर्युगी पूरी पूरी बीत गई। यदि हम यह मान ले कि रामायण की घटना २४वी चतुर्युगी के त्रेतायुग के इतने अन्त मे हुई थी कि तब उसका एक दिन भी शेष नही रह गया था तब भी उस चतुर्युगी से अब तक चार द्वापर चार कलियुग, चार सतयुग और त्रेतायुग लगाकर चार तो पूरी चतुर्युगी और इस चतुर्युगी (२८वी) का द्वापर सम्पूण तथा कलियुग का अब तक का समय रामायण काल भी बीत चुका है।

काल गणनानुसार कलियुग ४ ३२,००० सहस्र वष का होता है और क्रमश द्वापर दस से दो गुणा, त्रेता तीन गुणा तथा सतयुग चार गुणा होता है। इस प्रकार चारो युगो का काल ४३,२० ००० वर्ष हुआ। इन चारो युगो अर्थात् एक चतुर्युगी के काल ४३ २०,००० वष को चार से गुणा करने पर चार चतुर्युगियो का काल १,७२, ८० ००० सहस्र वर्ष होता है। यह अवधि दस चतुर्युगी के त्रेता के अन्त के साथ पूरी हो चुकी। इसमे इस अट्ठाइसवी चतुर्युगी के त्रेता के पश्चात का काल अर्थात् द्वापर के ८,६४,००० सहस्र वर्ष तथा सो कलियुग के अब तक के बीते हुये ५०८७ वर्ष और जोड देने पर १,८१ ४९ ०८७ वष रामायण काल को बीत चुके। परन्तु वायु पुराण की २४वे त्रेतायुग की बात में हमे कुछ सशय है।

महाप्रलय होने पर सब कुछ, सारा इतिहास था नाद में नष्ट हो जाना है। इस समय २८वी चतुर्युगी का महाप्रलय तक सुरक्षित रह सकेगा।

यो राम का जन्म काल निश्चित रूप से विदित है—शुक्ल नवमी दुपहर के ठीक दो बजे अर्थात् मार्च के अन्त में अथवा अप्रेल के प्रारम्भ मे। वर्ष के सम्बन्ध में अनिश्चितता है। प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार यह कलियुग है जो हिन्द समोच विद्यानुसार ईसा पूर्व ३१०२ को १८ फरवरी को दोपहर के २बजकर २६ मिनट ३० सैकेण्ड पर प्रारम्भ हुआ। ठीक उस क्षण मेष राशि मे सात ग्रहो का सयोग था।

कलियुग से पूर्व सतयुग, त्रेता और द्वापर युग हुए जिनका सम्पूर्णकाल क्रम क्रमश ४८००, ३६००, २४०० और १२०० दिव्य वर्षों में ४,३,२,१, के अनुपात से है। इन दिव्य वर्षों की गणना यदि मानव वर्षों मे की जाय तो क्रमश इस प्रकार होते हैं —

१७,२८०००, १२ ९६,०००, ८६४००० और ४,३२०००।

कलियुग के ४,३२,०००० मानव वर्षों में से अब तक कुल ५०८७ वर्ष बीते हैं। द्वापर के ८६४,००० वर्षों के साथ कलयुग के इन ५०८७ वर्षों को जोडा जाय तो कुल ८६,०७० हो जाती है। प्रत्येक युग के प्रारम्भ और अन्त का १२वा भाग सक्रान्ति काल कहा जाता है, इस प्रकार उपर्युक्त वष सख्या मे १०८००० वर्षों की सक्रान्ति अवधि जोड देना चाहिए। चू कि राम त्रेता युग के अन्त में हुए, इसका अभिप्राय यह हुआ कि रामायणकाल करीब-करीब दस लाख वर्ष का है। रावण की राजधानी लका में विशेष रूप से चार दात वाले हाथियो का वर्णन किया गया है हालाकि भारत मे उस समय दात वाले हाथी ही थे। पुरातत्व वेत्ताओ के अनुसार चार दात वाले हाथी करीब १० लाख वर्ष पूर्व समाप्त हो गये थे। यह तत्व है जिसके आधार पर १० लाख की अवधि सही प्रतीत होती है। (डार्विन्स थ्योरी आफ एवोल्यूशन) से भी यह ठीक प्रतीत होता है। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक श्री लेकमी डूनोई (लेकोम्टे डूनोए) १९४५ मे केली फोरनिया सयुक्त राज्य अमरीका से अपनी "ह्यमन" डसटिनी मे प्रथम मानव जन्म जो हाथी, समुद्री घोडा तथा सर्प आदि से परिवर्तन हुआ उसका काल भी दस लाख वर्ष मानते हैं। प्रथम जीवकरण (बेकटीरीया) इस पृथ्वी पर आठ हजार लाख वर्ष पूर्व प्रकाशमान हुआ। (एलीफेन्ट राहिन डियर) इत्यादि बहुमुखी तथा दानव शक्लो के ६ मिलयन से १० मिलयन वर्षों अर्थात् ६ लाख वर्षों से १० लाख वर्षों तक इस भूमि पर शामिल रहे। (क्रमश)

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को काशी यात्रा (३)

—डा० आनन्द प्रकाश—

२१ नवम्बर की प्रात काल स्वामी जी ने 'महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति ट्रस्ट" के आजीवन सदस्यो की विशेष बैठक मे भाग लिया। सन् १८६९ मे काशी में दुर्गाकुण्ड के समीप अमेठी राज्य के विशाल उद्यान, आनन्द बाग में महर्षि ने अपने जीवन का सबसे बडा शास्त्रार्थ किया था, जिसकी अध्यक्षता स्वयम काशी नरेश ने की थी और दर्शकों की सख्या, बडे-बडे अग्रेजी समाचार पत्रो के अनुसार ५० हजार थी। इस ऐतिहासिक शास्त्रार्थ मे युग प्रवर्तक दयानन्द ने उस काल की सबसे विद्वान् मानी जाने वाली पौराणिक पण्डित मण्डली को परास्त कर, अपनी अपराजेयता सिद्ध की। सुप्रसिद्ध इतिहासकारो और महर्षि के जीवनी लेखको ने यह मत व्यक्त किया है कि भाई काशी शास्त्रार्थ न हुआ होता, तो महर्षि दयानन्द को अपने जीवनकाल में ही विश्वप्रसिद्धि नही मिलती।

इसी स्थल पर एक भव्य यज्ञशाला निर्मित है और आर्यसमाज एव स्त्री आर्यसमाज भी स्थापित है। श्री सत्यप्रिय वानप्रस्थी जी स्थायी रूप से रहकर, अनेक वर्षों से कार्य कर रहे हैं। दैनिक, साप्ताहिक एव अन्य विशेष कार्यक्रमो के अतिरिक्त प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला द्वादशी को "काशी शास्त्रार्थ स्मृति दिवस" भी समारोह मनाया जाता है, जिसमें विद्वत् जन आयमम।ज की मूल मान्यताओ के सदर्भ में प्रचार करते हैं। आर्यसमाज के अन्तर्गत शास्त्रार्थ परम्परा को शक्तिशाली बनाने के निमित हो शास्त्रार्थ महारथी एव प्रसिद्ध सन्यासी पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज इसके प्रेरणा स्रोत थे और इस ट्रस्ट के सस्थापक प्रधान बने।

इसी ट्रस्ट की बैठक मे सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पधारे। ट्रस्ट के वर्तमान प्रधान श्री यज्ञदत्त गौतम ने उनका स्वागत किया और मन्त्री डा० आनन्दप्रकाश ने प्रथम वर्ष की प्रगति का परिचय दिया। परोपकारिणी सभा द्वारा "काशी शास्त्रार्थ" पुस्तिका का पुनर्मुद्रण कराया जा रहा है। स्वामी जी ने सारे विवरण को सुना और अपना सहयोग, इस पुनीत कार्य मे देने का आश्वासन दिया। उन्होने आशा व्यक्त की कि इस ट्रस्ट के निर्माण से काशी नगरी मे आयममाज के कार्य को नई दिशा मिलेगी। काशी नगरी का धम सस्कृति और विद्या की दृष्टि से पूरे देश मे सर्वोपरि स्थान है, अतएव यहा पर इस प्रकार के ट्रस्ट की उपयोगिता स्वयम् सिद्ध है। आवश्यकता तो काम करने की है, सहायक मिल ही जाते ह। आपने 'काशी शास्त्रार्थ स्थल" को ट्रस्ट को दिलाने हेतु प्रयास करने का भी आश्वासन दिया। महर्षि दयानन्द काशी को जगाना चाहते थे, यह कार्य इस ट्रस्ट के माध्यम से जारी रहना चाहिये।

बैठक मे प्रोफसर वीरेन्द्रकुमार वर्मा (विभागाध्यक्ष, सस्कृत विभागाध्यक्ष, सस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय), श्री बेचनसिंह, आर्य (मिर्जापुर) श्री आर्यमुनि जी (जौनपुर), श्री अमरनाथ सिंह (बम्बई), श्री भृगुनाथ जी (आसनसोल), डा० वसन्तकुमार शास्त्री (अमेठी), श्री कमलाकान्त इन्जीनियर (आकाशवाणी के अवकाश प्राप्त स्टेशन इन्चार्ज, श्री रवीन्द्रकुमार बेरी (विशेष कार्याधिकारी एव प्रैस मैनेजर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), श्री शिवमित्र शास्त्री एव श्री शकरलाल पोद्दार उपस्थित थे। श्री उत्तमचन्द शरर भी इस बैठक में विशेष आमन्त्रित के रूप में सम्मिलित हुए। ट्रस्ट की बैठक में भाग लेने के उपरान्त स्वामी जी काशी शास्त्रार्थ स्थल (आनन्द बाग) पधारे, जहा श्री सत्यप्रिय वानप्रस्थी के नेतृत्व मे आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल के सदस्यो ने उनका स्वागत किया। सक्षिप्त औपचारिकताओ के उपरान्त आपने उद्यान का निरीक्षण किया और उस जगह को देखा, जहा बैठकर स्वामी जी ने यह शास्त्रार्थ किया था।

स्वामी जी का आगामी कार्यक्रम पार्श्वनाथ जैन शोध सस्थान मे था। यह जैन शोध सस्थान राष्ट्रीय ख्याति का है और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है। पुस्तक मे जैनमत के साथ-साथ बौद्धमत और हिन्दुओ के अन्य सम्प्रदायो की धार्मिक पुस्तको का उच्चकोटि का विशाल सग्रह है। शोध सस्थान के निर्देशक डा० सागरमल जैन एव डा० सुदर्शनलाल जैन ने स्वामी जी की अगवानी की। उन्होने सस्थान मे हो रहे उच्चस्तरीय शोध कार्य, पुस्तकालय तथा प्रकाशनो का दिग्दर्शन कराया। स्वामी जी को अपने प्रकाशन भेट किये गए और पुस्तकालय के लिए आर्यसमाज के साहित्य और सार्वदेशिक सभा की पत्रिकाओ की माग की।

स्वामी आनन्दबोध जी का मुख्य भाषण हिन्दू विश्वविद्यालय में अधिकृत रूप से आयोजित किया गया और विभागाध्यक्ष महोदय ने स्वामी जी को बहुत समय पूर्व से ही आमन्त्रित किया हुआ था। यह सम्मान की बात समझी जाएगी कि आर्यसमाज के किसी सन्यासी अथवा विद्वान को इस विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग मे प्रथम बार भाषण देने के लिए यहा आमन्त्रित किया गया।

काशी के सस्कृत के विद्वानो द्वारा आर्यसमाज के एक सन्यासी का इतनी श्रद्धापूर्वक अभिवादन किया जाना, सचमुच एक रोमाचकारी दृश्य ही था। (शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य जगत् के समाचार

श्री देवीदास आर्य का बड़ौदा में अभिनन्दन

अखिल भारतीय सिंधी आर्य सभा के अध्यक्ष कानपुर के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री देवीदास आर्य का वारिसनगर बड़ौदा पधारने पर अनेक संस्थाओं द्वारा भव्य स्वागत कियागया। श्री ज्ञानचन्द आर्य की अध्यक्षता मे अभिनन्दन समारोह हुआ। श्री आर्य ने अपने भाषण में समाज मे इस प्रकाश युग मे भी होने वाली अन्धपरम्पराओं व नारी पर किये जा रहे अत्याचारो की निन्दा की। समाज को प्राणपण से इन बुराइयो से सघर्ष का आवाहन किया।

शुभ विवाह

दिनाक ३०-११ ८७ को श्री हर गोपाल नारग के सुपुत्र श्री अनिल नारग का शुभ विवाह कुमारी कमल पुत्री स्व० श्री किशन सिंह हाडा के साथ वैदिक रीति से आर्य समाज, शाहजहापुर की यज्ञ शाला मे श्रीयुत प० ब्रह्मदत्त रिटायर्ड प्रिंसिपल के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

मराठवाडा आर्यवीर दल की विधिवत् नियुक्तियां

उप प्रधान सचालक डा० देवव्रत द्वारा ये नियुक्तिया की गई।

सचालक—ब्र० डाक्टर ताना जी आचार्य (लातूर)

उप सचालक—आचार्य सुभाषचन्द्र गुरुकुल येडशी (धाराशिव)

मन्त्री—श्री अर्जुनराव सोमवशी उदगीर

कोषाध्यक्ष—श्री विजयकुमार कानेड (निलगा)

बौद्धिकाध्यक्ष—प० गणेश देव जी आर्य

सरक्षक—पू० स्वामी स्वात्मानन्द जी धर्मपाल जी तोषणीवाल

—गुरुकुल येडशी प्रति वर्ष अपने यहा आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करेगा। ऐसी घोषणा आचार्य सुभाषचन्द्र उप सचालक आर्यवीर दल ने अपने सहयोगियो से विचार विमर्श के बाद की, जिसका करतल ध्वनि करके सबने सराहा।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज रीवा का वार्षिकोत्सव २० से २३ नवम्बर तक हुआ। श्री श्री सत्यदेव शास्त्री, सियाराम निगम महीपाल सिंह सुरेन्द्रपाल, प्रमोदकुमार शास्त्री ने भाग लिया।

काशी यात्रा

(पृष्ठ ९ का शेष)

डा० आनन्दप्रकाश ने स्वामी जी का परिचय देते हुए कहा कि उनका जीवन अनेक सघर्षो से भरा हुआ है। नई शिक्षा नीति मे संस्कृत भाषा को उचित स्थान न मिलने पर स्वामी जी ने संस्कृत रक्षा समिति का गठन किया। स्वामी आनन्दबोध जी ने अपने उद्बोधनमे कहा कि महर्षि दयानन्द हिन्दूधर्म मे व्याप्त अज्ञान की बातो को समाप्त कर सत्य सनातन वैदिक धर्म की स्थापना करना चाहते थे। काशी को जगाना और विद्वानो को सामाजिक उत्थान के कार्य मे प्रेरित करना उनका विशेष मन्तव्य था। इसीलिए महर्षि दयानन्द ७ बार इस विद्या की नगरी मे पधारे और उस काल के विद्वानो को को धर्म चर्चा के लिए आमन्त्रित करते रहे।

स्वामी जी ने इस बात पर चिन्ता व्यक्त की कि आज संस्कृत पढने वालो की सख्या घटती जा रही है।

स्वामी आनन्दबोध जी ने अत्यन्त मार्मिक शब्दो मे संस्कृत भाषा की रक्षा पर बल दिया। अन्त मे प्रोफेसर भट्टाचार्य ने धन्यवाद प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वामी जी के भाषण से उनके मन में एक नई आशा उत्पन्न हुई है।

डा० आनन्दप्रकाश के निवास स्थान पर मध्याह्न भोज के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रमुख आर्यजन सम्मिलित हुये और स्वामी जी को विदाई दी। विश्वविद्यालय एक मात्र ऐसा विश्व विद्यालय है जहा महामना मदनमोहन मालवीय जी के समय मे मान्यता प्राप्त आर्यसमाज था। अभी भी आर्यसमाज का कार्य चलता है, यद्यपि सगठित आर्यसमाज नही है।

निर्वाचन

आर्य समाज तिलक द्वार मथुरा के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री राधाकृष्ण गर्ग व मन्त्री श्री मुशी नत्थीलाल यादव चुने गए।

हा शोक

—आर्य समाज दरियागज दिल्ली के प्रधान श्री बी. बी, सिनहा के सुपुत्र श्री शेखरकुमार का हृदयावरोध के कारण ५ दिसम्बर को देहान्त हो गया। ६ दिसम्बर के अन्त्येष्टि मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वा० आनन्दबोध सरस्वती, महामन्त्री सच्चिदानन्द शास्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी आदि ने भाग लिए। ४ दिसम्बर को आर्य समाज मन्दिर में शोक सभा मे एक शोक प्रस्ताव द्वारा दिवगत आत्मा की सद्गति व शोक सतप्त परिवार को धैर्य व सहनशक्ति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।

—वीरेन्द्र पाल, मन्त्री

—आर्य समाज गोला गोकरन नाथ खीरी) के भू पू मन्त्री व कमठ कार्यकर्ता श्री हरवश लाल सूरी के आकस्मिक निधन पर समाज में शोक सभा मे प्रस्ताव पारित कर स्वर्गीय आत्मा की सद्गति व शोक पीडित परिवार को सान्त्वना की प्रभु से प्रार्थना की गई।

—पूना बारजेबाडी आर्य समाज क कोषाध्यक्ष श्री एस० एस० कपूर के आकस्मिक निधन से समाज को बहुत क्षति हुई है। उन्होने बडी योग्यता से इस समाज की उन्नति मे भाग लिया था। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति व शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—राची बिहार आर्य समाज के जनक ९० वर्षीय श्री बाबू गोविन्द सहाय एडवोकेट के निधन से क्षेत्र को अपूर्णनीय क्षति पहुची है। सहाय जी बिहार तक ही सीमित न थे सार्वदेशिक सभा भवन के प्रवेश द्वार पर सगमरमर पटल पर आर्य समाज के नियम अकित कराके वे अपना स्थायी स्मारक बना गए हैं। उनका घर अन्य उपदेशको के लिए सदा खुला रहता था प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति व शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—ब्रह्मदत्त स्नातक, दिल्ली

—मैनपुरी जिला उपप्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री सियाराम जी के छोटे पुत्र श्री रामसरण जी के देहान्त पर आर्य समाज सिरसागज ने शोक सम्वेदना प्रकट की है।

आर्यसमाज की गतिविधियां

मराठवाड़ा (महाराष्ट्र) में आर्य वीर दल प्रगति पथ पर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपसंचालक डा० देवव्रत जी आचार्य ३ मास के लिये महाराष्ट्र प्रान्त के मराठ क्षेत्र में आर्य वीर दल का प्रचार प्रसार एवं संगठन करने हेतु गये हुये हैं। अभी तक उनके तीन शिविर गुरुकुल येडशी, आर्यसमाज परली एव मुकड में लग चुके हैं। चौथा शिविर दिनांक ४ से १७ दिसम्बर तक हैदराबाद रियासत मुक्ति संग्राम के अमर शहीद भाई श्यामलाल की स्मृति में निर्मित श्यामलाल स्मारक विद्यालय उदगीर में चल रहा है। इसके पश्चात् माजलगांव जि० बीड़ और १०-३१ जनवरी तक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर दोनों ही चलेगे । मराठवाड़ा क्षेत्र के आर्य वीरों ने निजाम हैदराबाद के अन्यायों के विरुद्ध दीर्घकालीन संघर्ष किया है। आर्यसमाज की विचारधारा के लिये यह उर्वरा भूमि है। यहां के आर्य वीर शेष महाराष्ट्र का मार्ग दर्शन करेंगे इसकी हमें पूर्ण आशा है।

शोक समाचार

आर्य समाज नगर उटारी (पलामू बिहार) के मन्त्री श्री विश्वनाथ आर्य की धर्मपत्नी के देहान्त का समाज द्वारा शोक प्रस्ताव पारित किया गया। दिवंगत देवी जी आर्यसमाज के सभी कार्यों में बहुत रुचि लेती रहीं।

—आर्यसमाज बिलसडा (पीलीभीत) द्वारा स्वामी दिव्यानन्द जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। स्वामी जी समाज को चारो वेद सहित ५३ पुस्तकें एक १४६) दान में दे गए हैं।

जैरोली में सामूहिक गोहत्या : तिजाराबन्द

१३ दिसम्बर को जैरोली में हुई सामूहिक गोहत्या के विरोध में आर्य-समाज तिजारा के तत्वावधान में सम्पूर्ण तिजारा बन्द का आयोजन किया गया। इस प्रसंग में एक रैली टीबा के प्रमुख बाजार होती हुई पुलिस स्टेशन के सामने सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। सभा से पुलिस को चेतावनी दी गई कि वे शीघ्र ही अपराधियों को गिरफ्तार कर दण्ड देने की व्यवस्था करें, अन्यथा गम्भीर परिणाम हो सकते हैं। रैली को समाज प्रधान श्री रामावतार आर्य, मन्त्री श्री रतनलाल आर्य, मा० मुन्शीराम, मामराज जी, लक्ष्मणसिंह जी व इन्द्रदेव जी ने सम्बोधित किया। श्री रामचरण आर्य द्वारा सभा सचालित की गई। स्थानीय विधायक श्री जगमालसिंह जी ने भी सभा को उदबोधन प्रदान किया।

शोध संगोष्ठी : वैदिक-स्त्री ऋषि

श्री स्वामी समर्पणानन्द शोध संस्थान की ओर से गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोला झाल, मेरठ "वैदिक-स्त्री ऋषि" विषय पर- १३ जनवरी १९८८ को प्रातः ११ बजे मकर संक्रान्ति के पावन पर्व पर शोध संगोष्ठी आयोजित की गई है।

आप अपने संक्षिप्त परिचय के साथ अपने शोध लेख का सार संक्षेप भी २५ दिसम्बर १९८७ तक भेजें, जिससे उसको प्रकाशित कर शोध-सगोष्ठी के अवसर पर विद्वानों के मध्य वितरित किया जा सके।

गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ से १५ कि० मी० दूर भोला झाल के पास गंग-नहर के तट पर अवस्थित है। यहा आने के लिये रोडवेज मेरठ बस स्टैण्ड से भोला के लिये राजकीय बस सेवा उपलब्ध है। मेरठ रोडवेज बस स्टैण्ड पर आपको लेने के लिये स्वयंसेवकों की व्यवस्था रहेगी।

स्वामी विवेकानन्द
आचार्य

निरूपण विद्यालंकार
निर्देशक-शोध संगोष्ठी

निर्वाचन

—आर्य समाज दयानन्द मार्ग रेल्वे रोड शकूरबस्ती दिल्ली के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान पं. वेदव्रत त्यागी व मन्त्री श्री डा. भारतभूषण चुने गए।

—आर्य समाज श्रद्धानन्द नगर पलवल (फरीदाबाद) के वार्षिक चुनाव में प्रधान श्री लालचन्द सपदेवा व मन्त्री श्री नवीन कुमार आर्य चुने गए।

संस्कृत किसी सम्प्रदाय विशेष की भाषा नहीं

इलाहाबाद। सस्कृत किसी सम्प्रदाय विशेष की भाषा न होकर मानव मात्र की भाषा है। उसे किसी धर्म विशेष से जोड़ देना छोटी बात है। यह हो सकता है कि उसका प्रयोग प्रमुखतः किसी धर्म के व्यवहार में किया गया हो, पर इससे वह सम्प्रदाय विशेष या धर्म विशेष की नहीं हो जाती।

ये विचार इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति श्री वहीद उद्दीन मलिक ने आर्य कन्या इण्टर कालेज में आयोजित जिज्ञासु सरलतम सस्कृत प्रचार समिति के १२वें दीक्षान्त समारोह में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि सस्कृत में नाद-सौन्दर्य है। संस्कृत वह भाषा है जिसमें घुंघरू बन्धे हैं, जब वह बोली जाती है तो उसमें घूंघरू सी आवाज पैदा होती है। इसके अतिरिक्त संस्कृत विश्व के समस्त भाषाओं की जननी है। मौलाना मुहम्मद हुसेन के अनुसार फारसी, सस्कृत की छोटी बहन है। उसके बहुत से शब्द सस्कृत से मिलते हैं।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में न्यायमूर्ति श्री बनवारीलाल यादव ने सस्कृत ग्रन्थों, मृच्छकटिकम्, गौतम स्मृति तथा बृहस्पति स्मृति में वर्णित कानून सम्बन्धी बातों का जिक्र करते हुए कहा कि "यह कहना कि भारत का सविधान पाश्चात्य देशों को नकल है, निराधार है।" मृच्छकटिकम् में कहा गया है कि मुलजिम ही एक ऐसा व्यक्ति है जो घटना के बारे में सर्वाधिक जानता है और उससे जिरह की जानी चाहिये। गौतम स्मृति में प्राग्न्याय के सिद्धान्त को बताया गया है तथा १६ प्रकार के व्यक्ति बताये गये हैं जिनके विरुद्ध निषेधाज्ञा नहीं लागू की जानी चाहिए। जबकि वर्तमान संविधान मे ६ प्रकार के ही व्यक्ति बताए गए हैं। इस प्रकार २५०० वर्ष पूर्व ही हमारे यहा विकसित कानून व्यवस्था मिलती है। उन्होंने अभी कुछ समय पूर्व ही हुए आविष्कार की चर्चा करते हुए कहा कि कम्प्यूटर द्वारा यह बात सिद्ध हो चुकी है कि सस्कृत ही विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा है। अतः सस्कृत को मृतक भाषा कहना पुरानी और निरर्थक बात है। महात्मा गांधी कहा करते थे कि संस्कृत भारत के प्रत्येक बालक को चाहे वह जिस धर्म का हो, पढ़ाया जाना चाहिए। अतएव सरकार को बी० ए० स्तर तक सस्कृत शिक्षा को अनिवार्य करना चाहिए उन्होंने सस्कृत की उन्नति के लिए सामाजिक एव स्वयसेवी संस्थाओं का भी आवाहन किया।

समारोह का प्रारम्भ आर्य कन्या डिग्री कालेज की सगीत प्रवक्ता कु० इला मालवीय के निर्देशन में छात्राओं के स्वागत-गीत से हुआ। समागत अतिथियों का स्वागत व माल्यार्पण आर्य समाज चौक के प्रधान श्री मूलचन्द्र अवस्थी द्वारा किया गया।

इस अवसर पर समिति द्वारा सचालित निःशुल्क त्रैमासीय सस्कृत शिक्षण शिविरों के ११० प्रशिक्षार्थियो को मुख्य-अतिथि श्री वहीद उद्दीन मलिक द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित किया गया। समिति के मन्त्री श्री राधेमोहन ने वार्षिक वृत्तान्त प्रस्तुत किया व उपमन्त्री डा० आनन्द कुमार श्रीवास्तव ने स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती के दीक्षान्त-भाषण का प्रवचन किया।

अन्त में समिति के प्रधान श्री विश्वम्भर नाथ अग्रवाल के धन्यवाद ज्ञापन व छात्राओं के वैदिक राष्ट्रगीत के पश्चात् समारोह समाप्त हुआ।

—सुरेशचन्द शास्त्री, प्रचार मन्त्री

दिल्ली ... सार्वदेशिक साप्ताहिक (२७-१२-१९८७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० ...
R N 626/57 Licensed to post without prepay ment License No. U 93 Post in D.P.S.O. on 24-12-1987

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद

प० रामदेव शास्त्री वेदालंकार एम. ए.

गुरुकुल का भूमि प्यारी थी तुमको, आर्य स्वामी उसे तुम कहां भूल गये हो।
...कर हलाहल गरल का प्याला सुधादता शकर कहां तुम गये हो ॥
किया था वह पौधा जिसे तूने पालित उम्मीदो की थाली रख गये हो।
... जरा भी हो न पाया, ... विरह की ... दे गये हो ॥
... गहनवन समावृत, निकट सुरसरि के सलिलाभिसिंचित।
... की विपिन स्थली मे शिशुओ के दुलारे कहां तुम गये हो ॥
... थी त्याग की भावना थी, पुरानी थी पद्धति नये थे तराने।
विदेशी शासक पद पद पर खड़े, पुरा संस्कृति को अपनाया तुम्ही ने ॥
... भाई, गरीबो के साथी, थे जन्म भूमि के सुलाल प्यारे।
आनन्द दया के सच्चे सिपाही, थे हिन्दू जाति के उत्तम सहारे ॥
... अभी भी तुम्हें याद करते, तेरी ही चर्चा मे जीवन बिताते।
... री व रातें, व काली घटायें, आती सदा है, पर स्वामी न आते ॥

मुस्लिम परिवार की शुद्धि

जिला सभा बुलन्दशहर के तत्वावधान मे प० शिवचरण लाल गौतम के प्रयत्नो से बधीन निवासी शेर खां को शुद्ध कर शेरसिंह बनाया गया, पत्नी ... को सुशीला देवी बनाया तथा परिवार के पुत्र पुत्रियां ... वैदिक धर्म मे दीक्षित हुई। जिला सभा ने प्रमाण पत्र भेंट किया।

—धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री

आर्य समाज (बी. एच. इ.) पिपला को भोपाल रजत जयन्ती महोत्सव

२१ से २५ दिसम्बर तक समारोहपूर्वक मनाया जाएगा जिसमें स्वा० दीक्षानन्द जी, स्वा० आत्मदेव जी, ब्रह्मचारी आदित्य कुमार आदि महानुभाव भाग लेंगे।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ... द्वार मे श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का १२६वां जयन्ती समारोह

मान्यवर,

यह सूचित करते हुए अत्यन्त ... अनुभव हो रहा है कि विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आपकी ... गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर द्वारा दर्शनो के उद्भट विद्वान्, तार्किक ... वीतराग ... दर्शनानन्द जी सरस्वती का १२६वा जयन्ती समारोह माघ ... दशमी तदनुसार दिनाक १२-१-८८ से १४-१-८८ (मगलवार ...) तक सोत्साह मनाया जा रहा है। सभी से भाग लेने की प्रार्थना ...

दर्शनाभिलाषी .

महावीरसिंह एडवोकेट
मुख्याधिष्ठाता

डा० हरिगोपाल शास्त्री
आचार्य

पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम सिंगापुर को हवाई अड्डे पर भावभीनी विदाई

दिल्ली २१ दिसम्बर, सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान व हैदराबाद सत्याग्रह के हीरो प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम, ... की राजधानी सिंगापुर में २५, २६, २७ दिसम्बर को होने वाले आर्य सम्मेलन में भाग लेने के हवाई मार्ग से सिंगापुर रवाना हो गए। हवाई अड्डे पर उन्हें भावभीनी विदाई दी गई।